सूर शब्द-सागर

सम्पादक

डॉ० हरदेव बाहरी
एम० ए०, एम० ओ० एल०, पी-एच० डी०, डी० लिट्०, शास्त्री

सहसम्पादक

डॉ० राजेन्द्र कुमार वर्मा, एम० ए०, डी० फिल्०
रीडर, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी
इलाहाबाद

स्मृति प्रकाशन
१२४, शहराराबाग, इलाहाबाद—२११००३

सूर शब्द सागर

SUR SHABDA SAGAR



प्रकाशक

स्मृति प्रकाशन
१२४, शहराराबाग,
इलाहाबाद

प्रथम संस्करण १९८१

मुद्रक
धारा प्रेस,
६०६, कटरा,
इलाहाबाद-२

मूल्य | सजिल्द १७५.०० रु०
अजिल्द १५०.०० रु०

दो-चार शब्द

[इस कोश का उपयोग और प्रयोग]

पच्चीस-तीस वर्ष पूर्व लखनऊ से 'ब्रजभाषा सूर-कोश' प्रकाशित हुआ था। सपादक की ओर से यह निवेदन किया गया था कि यदि सूरदास अथवा ब्रजभाषा के किसी भी कवि का कोई शब्द या अर्थ इस कोश मे न मिले तो पाठक सपादक को सूचना देने की कृपा करे। उन्ही दिनो मैं सूरदास की शब्दावली का सग्रह कर रहा था। मैंने उक्त कोश के पृष्ठ ८२२-८२३ पर उल्लिखित सूरदास के शब्दो की ओर सकेत करते हुए उन्हे लिखा कि इन दो पृष्ठो मे सूर के कुल १० शब्द* सर्दाभत हैं और निम्नलिखित २१ शब्द जो मुझे सूर-साहित्य मे मिले है, छूट ही गये हे—

दरकि, दरक्यौ, दरदरात, दरनि, दरपनहिं, दरभूपन, दररात,
दरवान, दरस, दरसत, दरसति, दरसन, दरसहि, दरसाइ,
दरसाई, दरसाउ, दरसाए, दरसाने, दरसावत, दरसावति,
दरसावहु।

मैंने यह लिखने की धृष्टता भी की कि जिस कोश मे सूरदास के एक तिहाई से भी कम शब्द हो, उसे 'सूर-कोश' तो नही कहना चाहिये। तभी मैंने सूर के एक वृहत् और व्यापक कोश की आवश्यकता का अनुभव किया था।

जब उपर्युक्त कोश तैयार किया गया था, तब नागरी प्रचारिणी सभा के 'सूरसागर' के केवल १४३२ पद छपे थे। सपादक महोदय ने इतने तक के शब्दो के सदर्भ तो नागरी प्रचारिणी सभा के सस्करण के दिये है, शेष के लिए वेकटेश्वर प्रेस के प्रथम सस्करण की पदसख्या दी है। कही-कही पृष्ठसख्या दे डाली है। इन कारणो से न तो शब्दो की वर्तनी मे एकरूपता है, न शब्दो की चुनाव-पद्धति मे, और न ही उद्धरण पाने मे पाठक को सुविधा होती है। वेकटेश्वर प्रेस का सस्करण अब दुर्लभ भी है।

इससे प्रकट है कि एक ऐसे सूर-कोश की आवश्यकता है जिसके शब्द और सदर्भ किसी सुलभ और सुसम्पादित सस्करण से लिये गये हो। मैंने नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'सूरसागर', प्रभुदयाल मीतल द्वारा सपादित 'साहित्य लहरी' और 'सूर सारावली' को आधार माना है और सूरदास के सारे साहित्य से शब्दो का सग्रह किया है।

● सूर शब्द सागर मे २८,००० शब्द दिये जा रहे हैं। यह न समझा जाये कि सूर की शब्दावली इतने तक ही सीमित है। हमने कई सौ ऐसे शब्द छोड दिये हैं जो सामान्य हिन्दी मे आम फहम है और जिन्हे हिन्दी प्रदेश का बच्चा-बच्चा समझता है, जैसे कमल, कृपा, सब, सिर, बार बार, बोले, अधिक, स्वामी, स्वाद, मन, बडे, बडाई, गुरु, ऊपर, यह, बिना, ऐसी, भक्त, बल, राजा, बात। ऐसे शब्द अवश्य दिये गये है जिनका उच्चारण अथवा जिनकी वर्तनी ब्रजभाषा मे सामान्य हिन्दी से भिन्न है। ऐसे सरल शब्द भी दिये गये हैं जिनके अर्थ विशिष्ट हैं या जिनके साथ कोई मुहावरा जुडा है। शब्द ही नही, हमने व्याकरणिक पद भी यथाक्रम दिये हे। जो लोग ब्रजभाषा नही जानते अथवा ब्रजभाषा की प्रकृति से पूरी तरह परिचित नही हैं, वे किसी शब्द के भिन्न-भिन्न रूपो को पहचान कर उनका अर्थ नही जान पाते। उनके लिए शब्द और पद का अन्तर समझना कठिन है। उदाहरण-स्वरूप 'धरि' शब्द को ले। इसका मूल शब्द तो 'धर' है जिससे 'धरि' के सारे अर्थो का ग्रहण नही हो पाता। धर का अर्थ रख, पकडा या पृथ्वी हो सकता है, परन्तु 'धरि' के अर्थ हैं—रखो, धारण करो, पकडो, रखकर, धारण करके, पकड कर, धैर्य। प्रसग के अनुसार व्याकरणिक रूप

---

* दरकी, दरजी, दर दर, दरन, दरपना, दरबार, दरबारी, दरवान, दरसन, दरसायौ।

से नाना अर्थ प्राप्त होते है—जैसे अकुलाई = व्याकुल होकर, व्याकुल हो गई। क्रिया का केवल सज्ञार्थक रूप दे देने से (जैसा कि प्राय कोशो मे होता है) प्रसगानुसार अर्थ सिद्ध नही होते। ब्रजभाषा मे परसर्गों या विभक्तियो का प्रयोग कम हुआ है। इसीलिए 'अवलनि' का अर्थ प्रसगानुसार अबलाएँ, अबलाओ, अबलाओ के, अबलाओ से हो सकता है।

अत सूर शब्दसागर मे पद अर्थात् व्याकरणिक रूप युक्त शब्द दिये गये है, जैसे कि सूर साहित्य मे मिलते है।

सूर साहित्य मे आये मुहावरो और लोकोक्तियो को गहरी खोज के बाद छाँटा गया है। किसी लेखक की कृतियो मे आये सारे मुहावरो का सग्रह पहली बार इसी कोश मे प्रस्तुत किया जा रहा है। शब्द और उसके अर्थ के बाद △ चिह्न का यही सकेत है कि यहाँ से इस शब्द के मुहावरे आरम्भ होते है।

यह कोश सूरदास की सूक्तियो का भडार भी है।

सारे कोश मे मुख्य शब्द या पद और मुहावरे काले टाइप मे दिये गये हैं। व्याकरणिक भेद वही दिखाया गया है जहाँ एक शब्द कई कोटियो मे प्रयुक्त हुआ है—उदाहरण-स्वरूप देखिए अहो, आछै, आतुर, आनत, आनि।

अर्थ प्रसगानुसार दिये गये है। किसी शब्द के अनेक अर्थ १, २, ३, ४ सख्याएँ (काले टाइप मे) देकर दिखाये गये है। मुहावरे और पदबध भी मोटे टाइप मे दिये गये है। प्रत्येक शब्द, पद, पदबध, मुहावरे, लोकोक्ति, सूक्ति अथवा प्रयोग का प्रमाण सूर साहित्य से दिया गया है। उद्धरण उतना ही पर्याप्त समझा गया है जितने से अर्थ और शब्द-प्रयोग स्पष्ट हो जाये। उद्धरण के बाद जहाँ पद-सख्या के बीच मे टेढी रेखा दिखाई गई है, उसमे पहला अक सूरसागर के स्कध का और सूसरा पद का है, जैसे १/१३२, २/८, ६/५५। दशम स्कध की केवल पदसख्या दी गई है, स्कध का सकेत नही किया गया, इसलिए जहाँ टेढी रेखा नही है और केवल पदसख्या है, वहाँ समझा जाये कि यह पद दशम स्कध का है, जैसे २४२, १२१३, ४१५५। परिशिष्ट एक का सकेत परि० १/..., परिशिष्ट दो का परि० २/..., सारावली का सारा०. , साहित्य लहरी का सा० ल०... सरल है।

मुख्य शब्द के अतर्गत मुहावरा आदि अथवा उद्धरण देते हुए उस मुख्य शब्द के स्थान पर ~ चिह्न दिया गया है। इससे हजारो सेंटीमीटर स्थान की बचत हो गई है। मुहावरे के बाद उद्धरण देते हुए ~— अथवा — ~ का अर्थ यही है कि मुख्य शब्द के साथ मुहावरा बनाने वाला शब्द पीछे है या पहले।

सूर साहित्य मे आये सभी पौराणिक नामो के साथ जुडी कथाएँ सक्षेप मे दे दी गई है।

कोश को अधिक से अधिक उपयोगी और प्रामाणिक बनाने मे भरसक प्रयत्न किया गया है, फिर भी प्रमादवश अथवा अज्ञानतावश कोई त्रुटि रह गई हो तो मैं पाठको से क्षमा चाहूँगा और यदि वे मुझे कोई सुझाव देंगे तो मैं आभार मानूँगा।

इस कार्य मे मुझे विशेष सहायता डॉ० राजकुमार सिंह (अजना भैरो, जिला फतेहपुर, के निवासी) से प्राप्त हुई है। उन्होने इस कार्य को आदि से अन्त तक निभाया है। अपने शिष्य को धन्यवाद क्या दूँ, मैं उन्हे हृदय से आशीर्वाद देता हूँ और उनके मगलमय भविष्य की कामना करता हूँ।

१०, दरभगा कैसल,
इलाहाबाद-२

हरदेव बाहरी

विशेष—कोश मे प्रयुक्त सक्षेपो और सकेतो की सूची पुस्तक के अत मे दी गई है।

सूर शब्द सागर

अक १ गोद (में) ~ लिए सुत रति करि स्याम १५७। २ हृदय (के) भेटे ~ बिचै १/१७१। △~ दई हृदय में लगा ली राधा ~—। △~ भरत गोद मे लेते हैं फिरि फिरि ~— १२००। △~ भरि हृदय से लगाकर भुजा जोरनि ~— हरि ७८१। △~ भरि लेत गोद में ले लेते हैं गिरत ~— उठावत। △~ भरि लीन्ही छाती मे लगा ली तब हों आनि ~— ३९१०, हित सा ~—। △~ भरें गले लगते हैं होडा होडी नृत्य करें रीझि रीझि ~— ११४९। △~ लीन्ही हृदय/छाती/गले मे लगा ली बिहँसि राधा कृष्न ~— १९८८। दे० अकम, अकमाल, अँकवारि। ३ आलिंगन सूर सुमित्रा ~ दीजियौ ९/३६। ४ अन्तर अद्भुत रामनाम के ~ १/९०। ५ अको गुन पाँमे क्रम ~ चारि १/६०। ६ चिह्न, धब्बे लसत कज्जल ~ ३५३। ७ सीमा नागरता कौ ~ २७४४। △ एको ~ न भाल मेरे भाग्य मे एक भी नहीं है जोग जुगति जप तप तीरथ ब्रत इनमे — ~ — १/१२७। पर्याय — अकम, अकमाल, अँकवार, अँकवारि, अँकोर।

अकम = अक १, २, ३। गोद (में), हृदय/छाती/गले (मे)· स्यामहिं ~ लाइ ४४४, ग्वाल गोप हँसि ~ लायौ ९२१। △~ दीन्हौ भेंट की, आलिंगन किया उभय भुजा भरि ~— ११२८। △~ देत गले लगाते हैं ~— अहीर ५७५। △ ~ दै छाती मे लगाकर ~— राधा घर पठई ६१२ △~ दै दै गले लगलगकर मिलत परस्पर ~— ८२६। △~ धर्यो मेलि छाती/हृदय से लगा रखा अरस परस दोऊ ~ — २०१०। △~ भरनी गोद मे लेना जसोमति ~— ४४। △~ भरि गले लगाते हुए, हृदय से लगाकर हँसि हँसि दौरि मिले ~— ३६। △~ भरि लई आलिंगन कर लिया रीझे प्रिय सूर स्याम ~— बाम २१४९। △~ भरी गले (हृदय मे) लगा ली स्यामा स्याम~—११६७। △~ भरे गोद मे लेता है कबहुँक सुत को ~— ६/५। △~ भर्यो गोद मे उठा लिया माता ध्रुव कौं ~— ४/९। △~ लैहौ आलिंगन किया • भुज भरि ~— २४४१।

अकमाल दे० अक १, २, ३। △ ~ दै आलिंगन किया भुज भरि~ — २७५। △ ~ लिए गले मे लगाया जननि लिए ~ १३९०।

अँकवार दे० अक १,२,३, गोद, हृदय, आलिंगन। △ भरत धरि ~ गले मे लगा रखते हैं (सखा) बार-बार —~ ४२९। △ भेटे ~ गले लगकर मिले रामभक्त निज जान बिभीषन भेटे हरि ~ मारा० २७९।

अँकवारि दे० अंक १,२,३। △ दीन्ही ~ गले लगाया दोउ भुज भरि —~ ३०४। △~ भरत गले लगाते है, इहिं लाल ~— हौं १५५४। △~ भरत धरि गले लगा रखा बरबस ही ~— १४३३। △ भरि ~ धरति गोद मे ले रखती थी ~—, मुख पोंछति ११११। भरि धरौ ~ भुजाओं मे कस कर पकड लूँ कोउ कहनि देखि मैं पाऊँ —~ २७३। △ भरि भरि धरि ~ बार-बार गले लगकर जुवतिनि घेरि लियो हरि कौं तब —~ १५३१। भरि लेत ~ गले लगा लेती है हरषि ब्रजनारि —~ १७४९। लियौ ~ गले मे लगा लिया महर —~ ३८७।

अंकित चिह्नित (हो गई): (बेनी) ~ दँमत सी ११९६।

अंकुरित १ फूटे, निकले ~ तरुपात ३०, फुरे द्रुम ~ पल्लव १०६८। २ उत्पन्न/प्रकट हुए ~ पुन्य फूले ३४।

अकुस १ अकुश, हाथी को हाँकने का काँटा, △~ देत अकुश मारा क्रोध गजपाल कैं ठठकि हाथी रह्यौ देत~मनकि कह मकान्यौ ३०५४। २ नियन्त्रण, दबाव ~ बिना मुकेरै १/२०६, कुल ~ आरजपथ तजिकै २३९५। △~ ज्ञानहु ज्ञान रूपी अकुश भी माथे नहीं महाबन मनगुरु ~— टूट्यौ ४०३७। ३ अकुश, अवतारों के चरणों मे एक चिह्न ~ प्रमुख चिह्न बनि आए १०४, ~ कुलिस बज्र ध्वज प्रगट ६३१।

अँकोर १ गोद, हृदय—देखिए अक। △~ देति हृदय/छाती/गले मे लगाती है चित्ते ~— २१३३। △ भरि लेति ~ गोद मे उठा लेती है मुख चूमति —~ ३९८। △ लयौ ~ हृदय मे लगाया नन भेट भयो यह —~ २३०६। दै हँसनि ~ हसकर गले लगा देते हो निट‍ [illegible] —~ २६८१। २ दे० अकोर।

अँकोरी/अँकोरी आलिंगन (में), गोद मे गहत [illegible] जु [illegible] ~ ३४७१।

अँकोरे अकोर/गोद मे [illegible] ~

~ मुख्य शब्द पडे। ~— मुख्य शब्द के साथ बना यही मुहावरा पडे। △ मुहावरा।

२२४ ।

अँकोर्यौ आलिंगन किया · इहिं विधि स्याम ~ १३२७ ।

अँखियन (एकव० अँखिया) आँखों के इन ~ आगे तैं मोहन २९६ ।

अँखियनि (एकव० अँखिया) १ आँखो इन ~ कै भाग १७७७ । २ आँखो को ~ यहई टेव परी २४०० । ३ आँखो से लागी झरनि ~ ३९५२ । △ **भरि भरि** ~ डबडबाई आखो से जब हरि चितवत — ~ २७५४ ।

अँखियाँ (एकव० अँखिया) आँखें ~ नाहिं न हाथ ३८६३, ~ तृषित चकोरी ३५५३ ~ हरि दरसन की भूखीं ३५५७, ~ जानि अजान भई १७८३, आनि अचानक ~ मीचे २८९६ ।

अँखिया आखे हरि ~ मूँदी आइ २२०५ ।

अँखियानि आखो मे · छवि ~ रही १४०० ।

अंग[1] १ शरीर का भाग, अवयव, अग गर्भवास अति त्रास में (रे) जहा न एकौ ~ १/३२५ । २ शरीर से ~ पुलकित रोम गदगद ९७९ । ३. शरीर को काली ~ लपेटत जात ५५४ । ४ शरीर मे राख ~ लपटावै २/१३, △ ~ छुअत हौं शपथ खाता हूँ सूर हृदय तै टरत न गोकुल ~ — तेरौ ४२९५ । △ ~ **ठानि ठान्यौ** शरीर को ऐसा बनाया है विधना ~ — १८३६ । △ ~ **न मोरैं** अँगडाई तक नहीं लेते, आलस्य नहीं करते . सीत उसन कहुँ ~ — ७९९ । △ ~ **न समाति** अत्यन्त प्रसन्न होती है . आनन्द भरी जसोदा उमँगि ~ — ३० । △ — **मोरत** अगडाई लेता है कबहुँ जम्हात कबहुँ ~ — २६३० । ५ गोद । ~ **भरैं** गोद मे लेती मुख के रेनु झारि अँचल सौं जसुमति ~ — ३२८१ । ~ **आवत** मुँह पर आ जाता है छलकत तक्र उफनि ~ — १६३८ । ~ **अंग** प्रत्येक अग, अग अग मे फूली गोपी ~ — ३४, ~ — छबि घेरि २२६९, नख सिख ~ — छवि देखत २१२६, ~ — बसै मुकुटवारौ १९१९ । **अंग-अंग-बल रूप सेन** अग प्रत्यग के बल और रूप की सेना (का समूह) · महाबीर ये उत ~ — पै धावै २२८८ । ~ **अंगनि** प्रत्येक अग मे . अग अग मे रही वह छवि ~ — ४१४० । ~ **अगा** प्रत्येक अग मे जड्यौ ~ — ९७ ।

अंग[2] अगीकार (करे), अपना (ले) जाकौ मन मोहन ~ करै १/३७ ।

अंग-त्रिभंग तीन जगह (गरदन, कमर और दाहिने पाँव) से मुडा हुआ शरीर, वशी बजाते समय कृष्ण की मुद्रा कैसौ बरन, वेष है कैसौ, कैसौ ~ १७७४ ।

अगद १ बाजूबन्द . ~ खरो विराजैं ४५१, ~ मुकुट छुद्र छुद्रा वलि परि० १/८६ । २ किष्किधा के राजा बालि का पुत्र (राम) ~ प्रीति बिचारी ९/१०० ।

अगदान बलि कौ दान मे दिया हुआ वलि का अग = पीठ ~ दै बैठी सा० ल० १०० ।

अंग-धातुहि (शरीर पर लगी) गेरू पोछति है सब अग ~ ५११ ।

अंगन (एकव० अग) अगा, अवयवो तऊ न घात भई ~ की सारा० १२१ ।

अंगना आँगन ठाढी हुती ~ द्वारै २११३ ।

अंगनाइ आगन (मे) नाचै फूल्यौ ~ ३९ ।

अंगनाई आँगन मे कबहुँ सदन, कबहू ~ १९७९ ।

अंगनि १ अग कोई न निस्तारत प्रभु गुननि ~ हीन १/१८२ । २ अगो सूर सकल ~ की यह गति ३५३४ । ३ अगो मे ~ कोटि अनग छबि ११८०; काम नृपति सैना दुहु ~ २०३२ ।

अगनि अंग[1], **अंगिन प्रति**[2] प्रत्येक अग मे ~[1] बनायौ १/२०५, जगमगात ~[2] गहनौ ९०३ ।

अंगनौ अगो मे नव सति साजि सिंगार नागरी मनिमय भूषन ~ २८३२ ।

अंग-प्रति प्रत्येक अग मे . ~ छवि तरग ६९ ।

अंग बंदन शरीर का बधन · लघु लघु छोरत है ~ ११५८ ।

अँगबान्यौ शरीर मे लगाया चन्दन और अरगजा आन्यौ अपने कर बल कै ~ १२१३ ।

अंग बिभाग शरीर के भाग, अवयव बरनि जाइ नहिं ~ २७७२ ।

अंग मरदन मालिश ~ करिबै कौं लागी १००० ।

अंग सिंगार शरीर का शृगार, ~ स्यामहित कीन्हे २०२८ ।

अंगसु शरीर के साथ अरु गोपिन सौं ~ अग करि नित प्रति करौं बिनोद सारा० ५८२ ।

अंगहि शरीर मे गहवर तै गजराज आइकै ~ गर्व बढायौ ४१४१ ।

अंगहि अंग अग अग, प्रत्येक अग ~ सरस रसकदा २१७१ ।

अंगा स्त्री० अगो वाली इहि विधि अधिक अनूपम ~ २४५४ । **पुं०** अग अग मे नखसिख ज्यौं मीनजाल जड्यौ अग ~ ९/९७ ।

अगाकरि अगाकरी, बाटी, मोटी रोटी अबही ~ तुरत बनाई १२१३ ।

अँगारनि (एकव० अगार) अगारो (से, मे) भूलि ~ को न चुनै ३७४० ।

अँगिया चोली कहू दरकी कुचनि पर ~ २०१०, सुभग इमेल कटाव की ~ १५४० । △ ~ **करि लहँगा** चोली का लहँगा बना लिया अर्थात् चोली कमर मे बाँध ली ~ — उर लाई ९८९ ।

अँगिरा अथर्ववेद के मुख्य ऋषि, ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों (प्रजापतियों) मे से एक । इनकी कृपा से चित्रकेतु के पुत्र की

उत्पत्ति और चित्रगुप्त का वैराग्य और उद्धार, दे० ६/५ ता गृह रिषि ~ मिधाए ६/५, भारद्वाज मरीचि ~ अत्रे मुनि अनन मारा० ७१४।
अँगीकार स्वीकार। ~ **कियौ** अपनाया जाकौं हरि ~— १/३८।
अँगीठ अँगीठी जरि बरि भइ ~ परि० १/१३८।
अँगुठा अँगूठा . कर गहे चरन ~ चचोरै ६२।
अँगुर अंगुल, अंगुली की चौडाई जितना नाप बित्ते का १२वाँ भाग (जेवरी) ~ द्वै घटि होति सबनि सौं ३४२।
अँगुरि अंगुली पर गिरि ~ धारी ३०८१।
अँगुरिनि, [एकव० अँगुरि, अँगुरिया] अंगुलियों मे ~ मुदरी पहुची पानि ११८०, अवधि गनत ~ छाले परे ३२५५।
अँगुरियनि अंगुलियों मे दुहत ~ भाव बतायौ ६६७।
अँगुरिया [एकव० अँगुरिया] अंगुलियाँ, केसी ~ रानति हे १८३४।
अँगुरिया अंगुली · गहे ~ नट की ८४१।
अँगुरी अंगुली कीर पिंजरे गहत ~ ४०८। △ ~ **लगाई** अंगुलि का सहारा देकर लै लगाई ~ नदरानी ११४।
अँगुरीनि [एकव० अँगुरी] अंगुलियों (मे, मे) हों ~ चलाऊँ २१४२। △ ~ **दंत दै रह्यौ** दाँतों तले उगली दबा ली, ठग रह गया ~— ४८४।
अँगोछि, अँगौछि पोंछकर ओदे बसन ~ ६०९।
अँगोछे, अँगौछे पोंछे : लै कर मुख कमल ~ १८३।
अँचइ पिये बैठी (हो) मनमोहन मोहनि ~ मी २११३।
अँचयौ १ पीकर जल ~ मुख धोइ। ४३१। २ पान किया, पिया देव दावानल कौं ~ १/२६, सो मोहन अति रुचि कर ~ १२१२, तैसैंहि राम केलि रस ~ ३१५३, जिन स्रवनन मुरली सुर ~ ३९२२।
अँचर आँचल, पल्ला निरखि स्याम तन ~ सम्हार्‌यौ परि० १/४१। △ ~ लेत बलाइ ९/८३।
अँचरा १ आँचल, पल्ला छाँडि देहु ~ मेरौ नीकैं १४७१। २ दुपट्टा सूर स्याम ~ धरि ठाढे १४९। ३ पल्ले/अचल से मैं ~ वायु डुलाऊँ २१०६।
अंचल १ पल्ला, आँचल दियौ ~ टारि २७२१, आनन्द उर ~ न सम्हारति २३, पा लागौ छाडहु अब ~ ८०७, चली बेहाल ~ न वारैं ९४८। २ आचल (से, मे) बदन झाँप्यौ झुकि ~ २७६८, ~ मुखहिं लुकावत २२२। △ **चचल** ~ आँचल लहरा रहा है · —~ फटी कचुकी ११९४। △ ~ **जोरे** पल्ले जोडकर, दीनता मे ~— करत बीनती वे० ३४२२। △ ~ **दै** घूँघट काढकर ~— मुसुकात ३३८। △ **लियौ** ~ घूँघट काढ लिया रुद्र कौ देखिकै मोहिनी लाज करि —~ ८/१०।
अंचल-पट कपडे के आँचल की चचल दृग ~ दुति छवि १४०।
अँचवत १ पीता है जैसे तृषावत जल ~ २१२१। २ पान करते हैं, पीते है · ~ अमर सवै री २८२१। ३ पीते ही, पीते हुए ~ पय ताती जब लाग्यौ १७४। ~ है/हैं पीता है, पीते है जे मुख मदा सुधा ~ ३८०४।
अँचवति पीती है अष्ट दस घट नीर ~ १/५६, चद बदन ~ जु सुधारस ३०६२।
अँचवन[1] १- आचमन ~ करि ब्रजराज पधारे मारा० ९०९। २ ~ **लै** पीकर ~— धोए कर मुख ३९६।
अँचवन[2] पीने को ~ माँगत पानी ४४२।
अँचवावत पिलाता है, पिलाते हैं वै रुचि सौं ~ १३०७।
अँचवावति आचमन कराती है, पिलाती है झारी कनक लिए ~ ५१४।
अँचवायौ आचमन कराया, पिलाया पहिले स्यामा कौ ~ सारा० १०२१।
अँचवाहि पिलाते हे (गइया कौं) अमृत जल ~ ४२७३।
अँचवौं पीऊँ(गा), आचमन करूँ(गा) आज अयोध्या जल नहिं ~ ९/४७।
अँचार अचार पापर बरी~ परम सुचि १२१३।
अँचै १ पीती है बैठी दूध ~ सो २८२६। २ पीने पर कालीदह जल ~ गए मरि ९५४।
अंजत अजन लगाते ~ ही इक नैन बिसार्‌यौ ११८०।
अंजन १ काजल, सुरमा ~ आड तिलक आभूषन सचि आयुध बड छोट सा० ला० उ० १६, सो ~ कर लै सुत चच्छुहि ४८७। २ रात उदित ~ पै अनोषी देव अगिन जराय मा० ल० ३२। ३ काजल जैसी काली उडत फूल उडगन नभ अतर ~ घटा घनी २/२८।
अंजनि अजन ~ आजि दियौ अँखियनि मैं २८९७।
अजलि अजुली ज्यौं ~ जल छीनौ १/६५।
अजली अँजुली मे स्नान करि ~ जल जबै नृप लियौ ८/१६।
अंजाइ अजन या सुरमा लगवाकर दाऊ आजु भले बने जु आए आँखि ~ २९००।
अंजुरिनि अजुलियों ~ तैं लै लै जल टारति १७५३।
अजुरी अजुली। △ **जल ~ कौ जानी** शीघ्र समाप्त होने वाली वस्तु जोवन रूप दिवस दम ही कौ ~— २५९२।
अजुल अजलि भर फेंट ऊपर तैं ~ तदुल ४२४५।
अजुलि अजलि (मे) वरषि सुरपति कुसुम ~ १०७१। △~ **पानी** अंजलि का जल अर्थात् बरावर घटते रहने वाला सिर पर मीच नीच नहिं चितवन आयु घटत ज्यौं ~— १/१४९। ~ **डारै** अजुलि मे पानी भरकर टालती है तिया स्याम तन ~— ११६५।
अजैहौं अजन लगाऊँगी अँखिया जु ~ परि० १/१२४।
अंजोरि १ छिन-उडाडे मन हरि लियौ ~ २७०। २ छीन, बटोर मारग तौ कोउ चलन न पावत धावत गोरस लेत

३२७।
अँजोरी छीन चित चिन्तामनि लियौ ~ १६४३, गोरस लेन ~ १८९४।
अँजौरी छीन ली लीन्ही सबै ~ १२५३।
अँटकरि अनुमान करके इनि पहचानी ~ २०४३।
अँटकाए उलझाए या फँसाए मनि आभरन डार डारनि प्रति देखत छवि मनही ~ ७८४।
अँटकायौ अटका दिया टूगि डारनि ~ १६१८।
अँटकावत अटकाता है, बाधक होता है घर आँगन अति चलत सुगम भए देहरि ~ १२५।
अँटकावै रोकते हैं गोपिन कौं मारग ~ १६०७।
अँटकि अटकी, रुकी अब लौं सकुच ~ रही १४४३। ~ **रहे** लग गये नैन नैननि ~ ११४९।
अँटकी अटक गई प्यारी एक अग पर ~ १९९५।
अँटके अटक गए, रम गए, लग गए ललित त्रिभगी छवि पर ~ २२४७, नैन माधुरी मुसुकनि ~ १०२३। ~ **जाइ** लग जाता है जाकौ मन जहँ ~ ११८०।
अँटक्यौ—अटक गया, उलझ गया, फँस गया सूर सनेह ग्वालि मन ~ ३०५।
अंड १ ब्रह्माण्ड . रोम रोम प्रति ~ कोटि रचे ४९७, एक ~ कौ भार वहत है ५७०। २ अडाकार इन सबकौ इक ~ बनायौ ३/१३।
अंडा गोल पिण्ड जिससे बच्चा पैदा होता है यह ~ चेतन नहिं होइ ३/१३।
अंत १ समाप्ति, अवसान, छोर, किनारा, पार लाज के साज मे हुती ज्यौं द्रौपदी बढ्यौ तन चीर नहिं ~ पायौ १।५।२ सीमा सोभा सिंधु न ~ रही री २९।३ अतकाल मे छन भगुर यह सबै स्याम बिनु ~ नही सँग जाइ १।३१७। ४ अन्यत्र ब्रज तजि ~ न जैहौ सारा० ५८६।५ आखिर ~ अहीर बिचारौ ३९६७। ६ अत मे फिर ~ काम बिगरैगौ १/७५।७ पश्चात सुरति ~ बैठे बनवारी १९९४। △ ~ **तै करहीन फनिग** (भुजग) का अतिम वर्ण हटा देने से भुज ~— फरकत फनिग बाँई ओर। △ ~ **तैं कर हीन मानै तीसरौ दो बार** तीसरा नक्षत्र कृत्तिका का दो बार करने से हुआ कृत्तका कृत्तका, इनके अतिम वर्ण हटाने से कृतकृत्य (कृतार्थ) सा० ल० शेष ४।
अंतक यमराज गिरा रहित वृक भ्रमित अजा लौं ~ आनि गह्यौ १/२०१। ~ **दमा** सन्निपात की सी दशा जिसमे रोगी किसी को पहचान नहीं पाता ~— भयौ भय आकुल ३११५।
अंतकारी अत या सहार करने वाला भक्त भय हरन असुर ~ ४१९४।
अंतत अतत, अंत मे जाति स्वभाव मिटै नहि सजनी ~ उवरी कुवरी ३७७७।
अंतर पुं० १ फर्क, भिन्नता जो जासौ अतर नहि राखै, सो क्यों ~ राखै १६१३।२ बीच का समय, मध्यान्तर, अन्तर्गत इहि ~ नृप तनया आई ९/३।३ ओट तृन ~ दै दृष्टि तरोधी दियो नयन जल ढारि ९/७९।४ परदा अब ~ मोसौं जनि राखहु ७९०।५ अत करण, मन ~ की गति जानत १/१३।६ मन मे धर्म धुजा ~ कछु नाहीं १/१२३।७ हृदय हौ ~ की जानौ १/२४३।८ हृदय मे ~ लगी सुरनि के टोरी १६४३।९ हृदय मे ~ गहत कनक कामिनि कौ १/५९। ~ **बीच कसी** छाती से कसकर लगा लेती है ~— ११९६। ~ **बीच** मन ही मन ~— जानति २२९१। ~ **जान लई** मन की (भावना) जान ली ~— १११०। **पल** ~ पल-भर मे —~ चलि जात १६६५। △ ~ **सोच पलै** मन मे सोचने लगे सीस धुनै दोऊ कर मीडै ~— ४२३५। **वि०** १ अतर्द्धान, लुप्त गर्व जानि पिय ~ ह्वै रहे १०९४।२ आतरिक मदिर आजु आपने राधा ~ प्रेम उमेठी सा० ल० १००। **क्रि० वि०** १ अलग, पृथक्, बिछुडे सूर स्याम ~ भए मोतैं अपनी चूक सुनाई १११०। २ भीतर, अन्दर, मे अपने काज फिरत बन ~ ३९८१। ~ **के जामी** अन्तर्यामी सुनहु स्याम ~— १७९२। ~ **क्रिया** अत क्रिया ~— रहित नहि जानै ५/२। ~ **तैं** भीतर से ~— हरि प्रगट भयौ ११३०।
अंतरगत १ अत.करण, मन सूर स्याम प्यारी दोऊ जानत ~ कौ भाइ ७५८। ~ की जानी ३९८७। २ अत करण मे ज्यौं गूँगे मीठे फल को रस ~ ही भावै १/२। ३ स्थित जैसे जननी जठर ~ १/११७। ~ **दह्यौ** हृदय जल गया सुनि ताको ~— ४१६७।
अतरगति १ हृदय मे सुख औरै ~ औरै ३५९१। २ अन्तर की गति चिन्तामनि चितै ~ १/२९।
अतरजामि अन्तर्यामी, मन की बात जानने वाले तुम हौ ~ कन्हाई १०२२।
अतरदाह हृदय की जलन ~ जु मिट्यौ व्यास कौ १/८९।
अतरद्वार दहलीज पर ~ आइ भए ठाढे २६९९।
अंतरधान अतर्धान, अदृश्य करि ~ हरि मोहिनी रूप कीं गरुड असवार ह्वै तहाँ आए ८/८।
अंतर-बाधा मन की बाधा मिटि गई ~ ७०५।
अंतर-हेत हार्दिक प्रेम माता ~ बिचार्‌यौ ४०७।
अतराइ लोप, सहार तिनकौ ~ हम करैं ११/३।
अंतरिच्छ १ आकाश मे ही किंकर करि बान लच्छ ~ काटी ९/९६।२ आकाश का ~ जल जात कहाँ यह ८७६। ३ अधर, ओठ तातें ~ छवि भारी सा० ल०४९।
अतरिच्छन दोनों अधर, ओष्ठों ~ सिंधु-सुत से कहत का

अनुमान सा० ल० ६९ ।

अँतरौटा साडी के नीचे पहनने का वस्त्र, अधोवस्त्र ~ अवलोकि कै असुर महा मदमाते (हो) १/८४ ।

अंतरगत मन मे, हृदय मे तब सिव ~ यौं लह्यो ४/५ ।

अतर्धाना अदृश्य राधा प्यारी सग लिए भए ~

अतहकरन अन करण . ~ जगत बिनु देखै परि० १/१३९ ।

अंतहि अन मे अत नहिं ~ लेहु ३१९६ ।

अतहि अत मे ~ कपट न बचिहो १/५९ ।

अंतहु अतत , अत मे भी ~ कान्ह आए ह गोकुल ३१७४ ।

अंतहूँ अत मे सर प्रभु पछिताहुगे तुम ~ गए गात ४०७४ ।

अंत:पुर राजप्रासाद, जनानखाना ~ महलनि रानी के ९८४ ।

अदरसे पिसे चावल की एक मिठाई ममि मम सुन्दर मरम ~१२१३ ।

अँदेस चिंता, सोच मिय ~ जानि सूरज प्रभु लियौ करज की कोर ९/२३ ।

अँदेसी चिंता को वर महँ ~ परि० १/१४१ ।

अँदेसौ १ चिंता, सोच सबके मन को देख ~ सीता आरत जानी मारा० २२५ । २ दुख गवि के उदय मिलन चकई को ममि के ममय ~ ३९९६ । ३ आशका, भय भली स्याम कुसलात सुनाए सुनतहि भयौ ~ ३८६८ ।

अदोर शोरगुल, हलचल घेरि चहुँ ओर करि सोर ~ बन ५९६ ।

अंध पु० १ अधा ~ करि अब छाडि गए हम ३८३६ । २ अधे काटौ न फद मो ~ के १/१८०, कुरुपति ~ मोह बस तिनकौं ४१६० । **वि०** १ उन्मत्त काम ~ कछु रही न सँभारि ६/७ । ३ अधे जैसे अधौं ~ कूप मे गनत न खाल पनार १/८४ । ~ **धुंध** अधाधुन्ध ~— दिसि बिदिसि भुलाने ८६० । ~ **अंध** अधा अधे को —~ टेकि चलै १/१२४ ।

अंधक एक राक्षस जो शिव के द्वारा मारा गया था ~ रिपु ता रिपु सुख-दैनी २७९८ ।

अंधक रिपु अधक के शत्रु (शकर) · ~ ता रिपु सुख दैनी २७९८ ।

अंधकार-अज्ञान अज्ञान रूपी अधकार ~ हरन कौं रवि-ममि-जुगल प्रकास १/९० । ~ **सिवारा** अधकार रूपी शैवाल बूडहे ~— १९६३ । △ ~ **आर्यौ** अधकार की भाँति छा गया है गह गहात, किलकिलात ~— ९/१३९ ।

अंधकाल अधकार मिट्यौ ~ ६१९ ।

अंधकाला अधकार चलत घहरात करि ~ ८५५ ।

अंधगति अन्धे की सी गति मर्व ~ मेरी १/१६५ ।

अधजाल अधियारा गोकुल भयौ ~ ८५७ ।

अंध-दसकध मतवाला दशानन (रावण) ~ कौं काल सूझत न प्रभु ९/१३६ ।

अंधधुंध १ घोर अँधेरा, अधाधुन्ध ~ भयौ सब गोकुल जो जहाँ रह्यौ सो तहीं छपायौ ७७ । २ अनरीति, अधेर सूरदास ऐसी क्यौं निबहै ~ सरकार ३९०९ ।

अधबाह अन्धड इहि अतर ~ उठ्यौ इक ७६ ।

अधमति दुर्बुद्धि, अधी मति वाला रे दसकध, ~ मूरख ९/१३४ ।

अँधरनि अधों (मे) ज्यों ~ में कानौ राजा परि० १/७४ ।

अँधरे अधे ~ ज्यौ टकटोइ ३७९४ ।

अध-सुत अधे धृतराष्ट्र के बेटे उलटि ~ लाजै १/३६ ।

अँधाधुंध १ घोर अधकार, अधाधुन्ध ~ भयौ सब गोकुल १०/७७ । २ घोर अधकार छाया हुआ है ~ पवनवर्त्तक घन ८७७ ।

अधियार अधकार दरसै निपट ही ~ १/८८ ।

अँध्यारी १ अधकार ~ आइ तहँ भारी ९/१७४ । २ अध-कारमयी ~ भादो की रात १२ ।

अँधियारैं १ अँधेरे मे सूर स्याम मदिर ~ (जुवति) निरखत बारबार २७७ । २ अधकारमय ~ घर स्याम रहे दुरि २७८ ।

अँधियारौ १ अधकारमय, प्रकाश रहित सजनी लागत जग~ सा० ल० ४० । २ सूना, निराशापूर्ण, उदास कहो सँदेस सूर के प्रभु को यह निर्गुन ~ ३९०४ ।

अंधु अधकारमय तुम्हारी कृपा बिनु सब जग ~ ११८० ।

अँधेरा अज्ञान महामत्त बुधिबल कौ हीनौ देखि करै ~१/१८६ ।

अँधेरि अधियारी मिटी मोह ~ २०८२ ।

अँधेरैं अधेरे मे कृष्ण कियौ मन ध्यान असुर इक बसत ~ ४३१ ।

अँधेरौ अन्धकार है गयौ दिवस ~ ८६९, बहुरौ ब्रज मे होत ~ २९९० ।

अँधौ अधा जैसे ~ अधकूप मे गनत न खात पनार १/८४ ।

अँध्यारी स्त्री वि० अधेरी, अधकारपूर्ण भादो की अधरात ~ ११ । **स्त्री०** अधेरा अलक पर वारनि ~ तिलक भाल सुदेस १८३५ ।

अँध्यारैं अधेरे मे कबहुँ ~ जात न धाम ।

अँध्यारौ अधेरा दीपक भौन ~ ३१९४ ।

अंब[1] आम फल बर ~ फरै ३९२१, ~ सुफल छाँडि कहा सेमर को धाऊँ १/१६६ ।

अंब[2] जल किसलय कुसुम पराग ~ पै फेन अहत २५८५ ।

अंब[3] माता सेवत अज सिव ~ मारा० १००१ ।

अंब-दल-मौर आम्र के पेडो के समूह के बौर मनौ ~ देखिकैं १९८१ ।

अंबनि आम के कागद नव दल ~ पात २८४५ ।

अंबर[1] १ वस्त्र ~ हरे जमुन तट जाइ ३७६९, द्रुपद तनया कौ ~ अक्षय कियौ १/१२१ । २ दुपट्टे मनि मानिक पाट-

वर ~ ३६ । ३ आकाश बढै दुकूल कोट ~ लौं नभा मॉफ पति रासी १/२७ । ४ आकाश मे कौतुक ~ छावे ४५ ।

अंवर[२] स्वर्ग ~ थके अमर ललना सग ५६५ ।

अवर-नृप राजा के वस्त्र रजक ~ धोवत ३०३७ ।

अँवर-वानी मेघ गर्जन ~ भई मजल वादर दल छाए ४१८८ ।

अँवराई आमो का वगीचा और सवै टपकत ~ १९९० ।

अंवरीष अयोध्या के एक सूर्यवशी राजा, राजा इक्ष्वाकु मे २८वीं पीढी मे जो विष्णु की भक्ति के लिए बहुत प्रसिद्ध हे ~ कौ साप निवारौ १/१७२ ।

अंवा माता, पार्वती . वानीपति अग्रज ~ तेहि १०७ ।

अंवाहि माता को . देत परम सुख पितु अरु ~ ११७ ।

अंविकावन (=) अवा वन, पौराणिक आख्यानों के अनुसार इलावृत्त खण्ड का वन जहॉं जाने से पुरुष स्त्री हो जाता है जाइ ~ तिय भयौ ९/२ ।

अंवु १ आम जवुवृक्ष कहौ क्यो लपट फल वर ~ फरै ३९२१ । २ ऑसू, सारग मुख तै परत ~ ढरि मनु सिव पूजति तपति विनास सा० ल० २८ । ३ जल • 'सूर' ~ लौं जरत मरत नहिं ३५७५ ।

अंवुआ आम : मौरे ~ द्रुमवेली मधुकर परिमल भूले २८५४ ।

अंवु-कन जलकण ~ के जोर ३५८ ।

अंवु-खंडन पपीहा • ~ सब्द सुनत ही ३६२३ ।

अंवुज १ कमल • सूर स्याम प्रात उठौ ~ कर धारी २०२, लोचन हरत ~ मान २२२० । ~ **विच** कमल के मध्य मे • किधौं अरुन ~— वैठी १८३२ । २ मुक्ता . ~ मात तात पति ता रिपु पति सा० ९६५ ।

अंवुज-कर कर कमल (कमलवत् कर) श्री राधा ~ भरि-भरि ११५८ ।

अंवुज गन कमलों का समूह ~ विनु पात ४११९, वारो मीन कोटि ~ २१३६ ।

अंवुजनि कमलों मे रस भरे ~ भीतर ३६४ ।

अवुज-नैन कमल-लोचन (श्याम) ~ भयौ भिनसार ४०३ ।

अंवुज-मात-तात पति ता रिपु ता पति मुक्ता की माता (सीपी) के तात (समुद्र) के पति (विष्णु) के शत्रु (दैत्य) के पति (क्रोध) ~ काम विगारे सारा० ९६५ ।

अंवुज-रस कमल-रस मधुकर ~ चाख्यौ १/१६८ ।

अंवुज-लोचन कमलवत् नयन . सूरदास प्रभु ~ ११९ ।

अंवुज हरि-मुख कृष्ण का कमलवत् मुख : ~ चारु कौ २४०८ ।

अवुनिधि समुद्र अगाध ~ ६२८ ।

अंवू-खंडन जल का खडन करने वाला अर्थात् पपीहा (के) ~ सब्द सुनत ही ३६२३ ।

अंवूजी कमलिनी वै अलि तें ~ २८२६ ।

अंवोधि सागर भव ~ नाम निज नौका, सूरहिं लेहु चढाय १/१५५ ।

अंभ जल मसि चदन अरु ~ छॉंटि गुन ३३६४ ।

अंभोज-भाजन कमल रूपी पात्र मनु उभै ~ ६२७ ।

अंभोज-माल कमल की माला ~ मॅवारि १६९ ।

अमृत अमृत विधु परसि दत विध्वत ~ चुवत २०३३, ~ निकार्यौ ८/८ ।

अंमृत-कुंडली स्वरमडल की तरह का एक वाजा, जिसका आकार एक कुडली मारे सर्प की तरह होता है, अमृत कुडली एक ~, इक डफ कर धारे २८८८ ।

अमृत-फल (सकेत) ठोटी ता ऊपर ~ लाग २११० ।

अँवा ऑवा (कुम्हार जिसमे मिट्टी का वरतन पकाते हैं), व्रज करि ~ जोग ईंधन सम ३७८१ ।

अंस[१] किरणें • सरद सुधा निधि सरद ~ ज्यौं १२४६ ।

अंस[२] १ अश, भाग, हिस्सा विष्णु ~ मौं दत्ता अवतरे ४/३ । २ पुत्र सो रोहिनि कौ ~ ३०४३ । ३ कधा सखा ~ दीन्हे ४७० । ~ **दियें** कधे पर डाले भुज सखा ~ — ९८० ।

अंस[३] कला सोभित पूरन ~ ससी ११९६ ।

अंस-धन कर राज ~ जो कछु उनकौ ८१५ ।

अंसनि भुज कधों पर हाथ . आलस जुत ~ दीने २१७६ ।

अंससुता सूर्य की पुत्री, यमुना • सूरदास प्रभु ~ तट क्रीडत ९७०२ ।

अंसी अशधारी कॉंधे गजदत धरे सूर ब्रह्म ~ ३०७५ ।

अंसु[१] ऑसू, प्रेमघट उच्छलित ह्वै है नैन ~ बनाइ २९४९ ।

अंसु[२] १ सूक्ष्म, लवा ~ उसास जात अंतर तैं करत न कछू विचार ३३८६ । २ किरणें • जागिये गोपाल लाल प्रगट भई ~ माल ६१९ । ३ किरणों वाला. सरद निसि को ~ अगनित इन्दु ३५१ ।

अँसुअन ऑसुओं • प्रेम पुलक वार वार ~ की ढरनि ३३४४ ।

अंसुकन अश्रुकण जग्र ~ आने २६०१ ।

अँसुपात अश्रुपात, ऑसुओं की झडी . इतनी सुनत मिमिटि सव आए प्रेम सहित धारे ~ ९/३८ ।

असुमान अयोध्या के एक सूर्यवशी राजा, सगर के पौत्र-जो राजा सगर का अश्वमेध घोडा कपिल मुनि के आश्रम मे लाये थे ~ की दियो पठाई ९/९ ।

अंसुमाल सूर्य की किरणें प्रगट भई ~ ६१९ ।

अंसुवन वहत पनारे ऑसुओं क पनाले वहते हैं चहुदिसि कान्ह कान्ह कहि टेरत ~ ४१०० ।

अंसुवनि ऑसुओं से ~ चीर निचोवति ११०७ ।

अँसुवा ऑसू, ~ ढरि ढरि परत करोटनि १८७ । ~ **ढारि**

आँसू बहाती हुई प्रेम उमँगि ~ — २७५४।

अइवौ आना होइ कान्ह कौ ~ ३७६६।

अइयै आयेंगे . बहुरि कि ह्याँहि ब्रज ~ ३६९२।

अइहौं आऊँगा धनुपजज्ञ दिखराइ कै तुरतहि ले ~ २९७६।

अकथ अकथ्य, अकथनीय ~ कथा गोपाल सुनाई २६३०।

अकनत सुनते हुए . नगर सोर ~ स्रवनन ३०२१।

अकनि कान लगाकर, कान लगाये . ~ रहत कहु सुनत नहीं कुछु ५०१।

अकबकात भौचक्का ~ सब ठाढे ३४७९।

अकरतौ अकड़ता है मूछहि फकरि ~ १/२०३।

अकरन न करने योग्य धर्म, अधर्म, अधर्म धर्म करि ~ करन करैं १/१०४।

अकरम अकर्म, दुष्कर्म . ~ अविधि अज्ञान अवज्ञा अनमारग अनरीति १/१२९।

अकरी महँगी, न मोल लेने योग्य लै आए ही नफा जानिकै सबै वस्तु ~ ३६६३।

अकर्षि खींचकर, निकाल कर . देवकि गर्भ ~ रोहिनी आप धाम करि लीन्हौ १०/४।

अकलंकित निष्कलंक अलक तिलक राजन ~ २१८४।

अकल अवयव रहित, सर्वांगपूर्ण, अखंड ब्रह्म अमल ~ अज भेद विवर्जित २/३८, पूरन ब्रह्म ~ अविनासी २।

अकल-कला अखंड कला ~ निगमहु तैं न्यारे २९२२।

अकलै विकल होता है मचला ~ मूल पातरैं खाऊँ खाऊँ करि भूखा १/१८६।

अकवार छाती से लगा लिया . भेंटि भरे ~ सारा० १०३०।

अकाज १ अकार्य कहा ~ भयौ दसरथ कौ ३१३३। २ हानि, नुकसान जातैं होई ~ आपनौ २१०२। ३ बेकार, महत्त्वहीन सब वृथा ~ १/९६। ~ **कियौ** बिगाड़ दिया कुल की लाज ~ कियो १९४०।

अकाजु बेकाम काम कर्‌यौ ~ २८१८।

अकाथ अकारथ, निरर्थक, व्यर्थ जानी रजनी जात ~ ३२०३।

अकार १ के आकार, समान दरस रवि ससि दुर्‌यौ बीरज स्वाम पवन ~ ३३०२। २ रूप में सूरदास सुख कहँ लौं कहिए आवे अतिथि ~ १८७४। ३ स्वरूप, आकार में . घनघटा मैं तड़ित तरल ~ २८४१।

अकारथ व्यर्थ, निष्प्रयोजन नातरु जन्म ~ जात ४२९७।

अकार्थ अकारथ, बेकार, निष्प्रयोजन साधु संग भक्ति बिना तन ~ जाई १/३३०।

अकाल असमय, कुसमय सूरजदास ~ प्रलय प्रभु मेटी दरस दिखाइ ९/११०।

अकास १ आकाश में चोंच इक पुहुमी लगाइ इक ~ समाइ ४२७, हरि अमृत लै गए ~ ७/७। २ स्वर्ग गई ~ देव तन धरिकै ९/२२। ३ शून्य हरि तजि भजहु ~ ३८१३। ४ नासिका, वाम ~ प्रमानित न्यारी ना० ल० ९८। △ **गहौ** ~ असंभव बात करते हो बातनि —~ सुनहि न आवै लाँम। ~ **तैं** आकाश से : कहा तौ चढ़हि लै ~ — ९/१४८।

अकास-बानी आकाशवाणी, देववाणी भई ~ तिहिं बार २/३७

अकासहि अंतरिक्ष में, आकाश में उड्‌यौ ~ तान ९/७४।

अकासैं आकाश में/को यह कहि कै सो चली पराइ जैसे तड़ित ~ जाइ ९/२।

अकास्यौ आकाश में हु रह्यो ~ परि० १/१६३।

अकिल बुद्धि इन्द्र ढीठ बलि जात हमारी देखो ~ गँवाई ९५३। ~ **गँवाई** बुद्धि खो दी देखो ~ — ९५३।

अकुचत लज्जित होते (हो) . जा अति हीं जिय ~ हो २७३२।

अकुलाइ १. व्याकुल जतु उठे ~ ९/१२१। २ व्याकुल होकर, व्याकुलतापूर्वक मैं अस्नान ~ अधिक लै, जरत माँक घृत नायौ १/१५४, तब ~ चली उठि बन कौं १६७७। ३ व्याकुल हो रहा है दरसन बिनु पाएं बारंबार ~ १९२६। ४ व्याकुल हो रहे हो बिबि राजन ~ २२०५।

अकुलाई १ व्याकुल होकर सुरपति सरन चल्या ~ ९४६। २ व्याकुल हुई, घबराई . उरग-नारि देखत ~ ५५०।

अकुलाए १ व्याकुल हुए, घबरा गए : लिखि मम अपराध जनम के चित्रगुप्त ~ १/१२५। २ चिन्तापूर्वक सोइ कानन अति ~ १/१६३।

अकुलात १. व्याकुलता हो रही तातैं हौं ~ कृपानिधि हौं ह्वै पेंडौ चितवत ९१८७। २ व्याकुल है मीन-मन ~ ३६०। ३ व्याकुल होते ह . राधा बिनु अतिहीं ~ २०२१। ४ व्याकुल हो रहा है तुमहीं काज कम ~ ५३०। ५ व्याकुल हो रहे थे . स्याम अति ~ २७३६। ६ व्याकुल हो उठते ह ओट भए ~ २३४६। ७ व्याकुल होता थी वजति नहिं ~ २१४४। ८ अकुला रही है अति आतुर ~ २११२।

अकुलाति अकुलाती ह अति व्याकुल ~ विरहिनी ४०६४।

अकुलान व्याकुल हुए डोलत महि अधार भयौ फनिपति स्रम अति ~ ९/२६।

अकुलानी १ व्याकुल होती ह, तड़फती है निदि निधि मान ललिल तें बिछुरे, तिहिं अति गति ~ ४१३७। २ बेचैन, व्याकुल हुई (हो गई) सखि देखि ~ २७५९। ३ व्याकुल होने लगी देखि दसा नहिं रुकी, मन हीं ~ २१०८। ४ व्याकुल हो कर . नेवनि धननि परी ~ ५४७।

अकुलाने १ व्याकुल हुए रामचद्र नरों ~ सारा० २२०। २ व्याकुल हो कर , कोउ दस्त धननि ~ ८६०। ३ व्याकुल होने लगे करि कोप रनाद ~ १८३।

अकुलानौ घबड़ाया, व्याकुल हुआ यह सुनि दूत गयौ लंका में सुनत नगर ~ ९/१२१ ।

अकुलान्यौ घबड़ाया, व्याकुल हो गया यह सुनि नद डराइ अतिहिं मन मन ~ ५८९ ।

अकुलाय व्याकुल होकर स्याम चले ~ सारा० ९७३ ।

अकुलायो व्याकुल हुए तब मन मे ~ सारा० ८५३ ।

अकुलायौ घबराया, सकपकाया कपिल कुलाहल सुनि ~ ९/९ ।

अकुलावत व्याकुल हो रहा है उडि न उडिवै ~ १३६८ ।

अकुलाहि व्याकुल हो जाता है नैकहिंमें ~ १८४० ।

अकुलाही १ अकुलाये रहते हैं वै उन विनु ~ २३४५ । २ व्याकुल होती है, घबडाती हे बार-बार ~ ४०९३ ।

अकूत जो कूता न जा सके, असीम, अपरिमित धन्य-भूमि ब्रज-वासी धनि धनि आनँद करत ~ ३६ ।

अकूहल अत्यधिक, असख्य, अपार, अनगिनत खेलत हँसत करत कौतूहल जुरे लोग जहँ तहाँ ~ ९०५ ।

अकृत आकृति नव ~ विकसित वदन प्रहसित २८४२ ।

अकेल अकेला, एकाकी दुरजोधन ~ रहि गयौ १/२८९ ।

अकेलौ अकेला, बिना साथी के सग लगाइ बीच ही छोड्यौ निपट अनाथ ~ १/१७५ ।

अकोट अगणित, करोडो नहसुत कील-कपाट सुलच्छन दै दृग द्वार ~ सा० ल० उ० १६ ।

अकोर भेंट, रिश्वत जौ कोउ उनसौ सुधि कहै देऊँ प्रान ~ ३९४४ ।

अक्रिय दुष्कर्मा हौं असौच ~ अपराधी १/१२८ ।

अक्रूर एक यादव जो श्री कृष्ण का चाचा लगता था। सुफलक (श्वफलक) और गादिनी का पुत्र था, जो कस की आज्ञा से श्याम और बलराम को मथुरा लिवा गया था इहिं अंतर ~ बुलायौ २९२७ ।

अक्रूरहि अक्रूर का सुन्यौ सूर ~ नाम २९८८ ।

अक्रूरहु तैं अक्रूर से भी यह ~ अति खोटौ ३८७५ ।

अखंड दृढ, अटूट सलिल ~ धार धर टूटत ८५८ ।

अखंड-धारा अनवरत गिरती हुई धारा ~ सलिल निझर्यौ ८८२ ।

अखंडित अखड सर्वोपरि आनद ~ १/८७ ।

अखाद अभक्ष्य, न खाने योग्य खाद ~ न छाँडे १/१८६ ।

अखारा अखाडा, रगस्थल नहाँ देखि अप्सरा ~ ९/४ ।

अखारे अखाडे इन कब देखे मल्ल ~ २९६८ ।

अखियनि नेत्रों के ~ मग ह्वै लेउँ अवै १७६० ।

अखिल समस्त, सम्पूर्ण, अति सुरूप सोभा की सीवाँ ~ लोक चतुराई ३६८०, ~ ब्रह्माडपति, तिहुँ भुवनाधिपति १०४७ ।

अखिल-अधिकारी ईश्वर, प्रभु परम-सुजान ~ १/२१२ ।

अखिल-भुवन की सोभा समस्त लोकों की सुन्दरता मानहुँ ~ १८२१ ।

अखुटित निरतर ~ रहत समीप ससकित सुकृत सब्द नहिं पावे १/४८ ।

अखूट अखट, अक्षय लूटन रूप ~ दाम को २२६६ ।

अखेट शिकार, आखेट जब ~ पर इच्छा होइ तब रथ साजि चले पुनि सोइ ४/१२ ।

अखेटक १ मृगया को, शिकार को दिन भए बहुरि ~ जाइ ४/१२ । २ शिकारी विषय ~ नृप मन राँच ४/१२ ।

अखेटक काज शिकार के लिए इक दिन तासु अनुज लै सो मनि गयौ ~ ४१९० ।

अखोट अत्यधिक करत शब्द ~ सा० ल० ९४ ।

अखोलि कसे हुए सुभुज बध ~ २१३२ ।

अगति १ दुर्गति, दुर्दशा सूरदास हरि भजौ गर्व तजि बिमुख ~ कौ जाही २/२३ । २ नरक रावन करौ ~ को ९/८४ ।

अगतिनि कुमार्गियो, पापी प्राणियों ~ का गति देनी ९/११ ।

अगतिनि-गति पापियो की शरण कृष्न कमल-लोचन ~ ९८१ ।

अगन अगणित दियौ दाइज ~ गनि न जाए ४२०० ।

अगनित अगणित, असख्य जे पद पदुम रमत वृदावन अहि सिर धरि ~ रिपु मारे १/९४, सूर प्रभु के चरित ~ ४२७, सूरदास प्रभु ~ महिमा ८८१ ।

अगनिया अगणित, अनगिनत व्यजन विविध ~ २३८ ।

अगनी अग्नि ज्यों घृत नाऐ ~ ४१२५ ।

अगने अपार, असख्य मोहन की लीला ~ ३८०३ ।

अगम[1] शास्त्र जो निगम ~ कृपा बिनु नहीं या रसहिं पावै १००६ ।

अगम[2] वि० १ पहुंच से परे, अगम्य प्रभु गति ~ अपार ३०९३, हरि ~ अगोचर लीलाधारी ३ । २ दुर्लभ भक्त जमुने सुगम ~ औरे १/२२२ । ३ अपार 'सूर' प्रभु ~ महिमा न कुछु कहि परति ३०७८ । ४ अथाह ~ सिंधु जतननि सजि नौका हठि क्रम भार भरत १/५५ । ५ समझ मे न आने वाला लका बसत दैत्य अरु दानव उनके ~ सरीर ९/८६ । ६ विशाल चले सब मिलि, जाइ देख्यौ ~ तन निकरार — ४२७ । पु० आगमन दादुर मोर कोकिला बोलै पावस ~ जनावं ३३१२ ।

अगम-बानी आगम बानी (पुराणवाणी) धरनिपति, गगनपति, ~ १९४७ ।

अगमति अत्यधिक, अपरिमित ~ देह बढ़ाऊँ ४९ ।

अगमन आगे, पहले सो राजा जो ~ पहुँचे सूर सु भवन,

उत्ताल २२३ ।

अगमने आगे (से), अगवानी करते हुए उठि अकुलाइ ~ लीन्हे मिलन नयन भरि आए नीर ४२२८ ।

अगमनै आगे सूरदास सो गई ~ ८०७ ।

अगमैया अगम्य, अपार, बुद्धि से परे मग मखा मब कहत परस्पर इनके गुन ~ ४२८ ।

अगर एक सुगंधित वृक्ष विशेष (अगरु) चंदन ~ कपूर अरगजा २१०६ ।

अगरु एक सुगंधित वृक्ष विशेष, ऊद ~ चन्दन कौ पालनौ ४१ ।

अगरौ वि० श्रेष्ठ है, आगे है • हम तुम सब वैस एक कातैं को ~ ३३६ । पुं० निपुण सूरदास को प्रभु सब गुननि माँहि ~ १४८९ ।

अगवानी स्त्री० आगे चलने की क्रिया पाँच पचीस साथ ~ सब मिलि काज विगारे १/१४३ । पुं० अगुवा, अग्रदूत याही ते अनुमान करति है षटपद से ~ ४०३९ ।

अगस्त एक फलीदार पेड • फरी ~ करी अमृत सम १२१३ ।

अगस्त्य मित्रावरुण के पुत्र एक ऋषि । कहते हैं कि इन्होंने एक बार सारा समुद्र पी डाला था आए ~ नही तिन जान ८/२ ।

अगह अगम्य, जो पकडा या धारण न किया जा सके जुक्ति जतन करि जोग ~ गहि ३७४४ ।

अगा आगे ही, पहले से ही कहति मँदोदरि सुनु पिय रावन मेरी बात ~ ९/११४ ।

अगाऊँ आगे ही • तातैं भज्यौं ~ ४१२६ ।

अगाऊ क्रि०वि० आगे, पहले प्रीतम हरि हमकाँ सिधि पाई आयौ जोग ~ ३६७० । वि० नोक पर धरि वराह रूप सो मार्यौ लै छिति दंत ~ २२१ ।

अगाध १ अथाह • जसुमति उदर ~ उदधि २९, ~ जलको १/९९ । २ अपार, अत्यंत दुख है बहुत ~ ८३३ । ३ अपरिमित वह ~ तुव तनक-तनक कर कैसे राख्यौ तात ९६९ ।

अगाधहि अथाह जल मे कबहुँ अंक भरि चलत ~ ११६४ ।

अगाधा १ अपार, असीम : बैठी मान दृढाइ ~ २८२८ । २ माहसी करनी करी ~ २००७ । ३ प्रगाढ़ प्रगटत प्रेम ~ १६४६ ।

अगाधै अगाध, असीम अगम अधार ~ ३८९५ ।

अगाधौ अगाध, असीम, अपार हरि कौ रूप ~ ३२३२ ।

अगामहि आगे के भाग पर छाँई कनक ~ २१३० ।

अगार आगार, भवन • दुख आवन कछु अटक न मानत सूनौ देखि ~ ३३८६ ।

अगाह अगाध निगम कौ ~ सहस आनन नहिं जानै ३०१८ ।

अगिआ जात आगे जाते हुए कबहुँक चार भ्रात मिलि ~ परम सुख पावत सारा० १९१ ।

अगिनि १ अग्नि विरह ~ प्रचड उनकैं ४१०८, जनक-तनया धरी ~ मे ९/६० । २ अग्नि की जल वरषि ~ ज्वाला बुझाई ४१९४ ।

अगिनि-छाप अग्नि की छाप ~ दै आई १३३७ ।

अगिनित अगणित कटक ~ जुर्यौ लंक खरभर पर्यौ ९/१०६ ।

अगिनि-तात-तेहि-तात-अंगना अग्नि के तात (जल) के तात (समुद्र) की पत्नी, अर्थात् वडवाग्नि ~ सारा० ९५९ ।

अगिनि-सुलाक अग्नि द्वारा सूराख • ~ देत नहि मुरकी १३३७ ।

अगिलौ अगला काहु ~ जनम विगारत ३३३८ ।

अगुसारी आगे या सामने चला आवत चल्यौ स्याम कैं सनमुख निदरि आपु ~ १३८७ ।

अगोचर १ इन्द्रिय ज्ञान से परे, इन्द्रियातीत मन वानी कौं अगम ~ जो जानै सो पावै १/२, नंदसुत महिमा ~ ८३६ । २ न दिखाई पड़ने वाला अदृश्य निगम ज्ञान मुनि ध्यान ~ ३८१६, निगमनि हू मन-वचन ~ ८/३ ।

अगोचर-मंदिर गुप्त भवन • वन, उपवन, गम अगम ~ ९/७५ ।

अगोट आड, रोक, अर्गला • वै दृग द्वार ~ २७६९ ।

अगोटी रुकी हुई, फँसी हुई झूठहिं धाम के काम ~ १६५ ।

अगोरि छिपाकर, रोककर घूँघट ओट ~ २३५७ ।

अगौहूँ आगे-आगे निसि भई ~ १९६३ ।

अग्निवर्त्तक अग्नि चक्र ~ जलद संग ल्याए ८५३ ।

अग्नि मनौ उजास मानो अग्नि के रूप मे दीप्त हो रहे है, करत भूषन ~ १०७१ ।

अग्नि-मुख अग्निमुख मे (जलती हुई अग्नि मे) मनौं तूल गन परत ~ ९/१५७ ।

अग्नीध्र स्वयभू मनु के आत्मज राजा प्रियव्रत का पुत्र प्रियव्रत कैं ~ सु भयौ ५/२ ।

अग्या आज्ञा ~ इहे मोहि प्रभु दीन्हौं २९२२ ।

अग्यान अजान मैं ~ अकुलाइ अधिक लै जरत माँझ घृत नायौ १/१५४ ।

अग्र पुं० नोक पर • दसन ~ पृथ्वी कौं धार्यौ ७/२, करज कैं ~ भुज वाम गिरवर १८७० । क्रि० वि० १ आगे निधरक भयौ चलौ व्रत आवत ~ फौजपति मैन ३३०४ । △~ दए आगे कर दिया डहकत फिरत आपने स्वारथ पाखंड ~—३५०७ । २ अभी से, आगे मे • याहि मारि तोहिं और विवाहौं ~ सोच क्यों मरई ४ ।

अग्रज पुं० वडा भाई • हलधर ~ संग लिए ३११० । वि०

शीघ्र बढने वाले इन्द्रिय मूल किमान महातृन ~ बीज बई १/१८५।

अग्र-घन बादलों के आगे-आगे ऐरावत आरूढ ~ ८६६।

अग्र-सोच आगे की सोच कर (कस) ~ क्यौं मरई ४।

अघ[1] पाप, अधर्म छत्री जन्म बहुत ~ कीन्हो सारा० ६१५, सुरसरि दरस कटत ~ भारे १/९४।

अघ[2] अघासुर नामक राक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था . नद नहिं निकट कारन ~ मघारन धीर सा० ९३, केसी, ~, पूतना निपाती ३०४३।

अघट न घटने वाली जहँ-तहँ मुनिवर निज मर्यादा थापी ~ अपार सारा० ३२७।

अघट-उपमा पूर्णोपमा अलकार सूर स्याम सुजान सुक्रिया ~ दाव सा० ल० १।

अघटित भक्ष्याभक्ष्य · ~ भोजन करतौ पूर्ण १/२०३।

अघट्ट अक्षय, जो न घटे . आदि अनन्त ~ अनूपम सारा० ८४६।

अघ-तारन पाप से मुक्त करने वाला ~ नर नाउँ १६९२।

अघनि १ पापो से ~ भर्यौ बहुभारी १/१७८। २ पापो मे . महा ~ वपु पाग्यौ १/७२।

अघ-बिदारन अघासुर का नाश करने वाले, श्रीकृष्ण ~ धीर सा० ल० ९३।

अघ बीत्यौ पाप समाप्त हो गया · उलटो नाम जपत ~ सारा० १५३।

अघ-मर्दन अघासुर का नाश करने वाला ~ बक बदन बिदारन ८६३।

अघ-मोचन पाप दूर करने वाले गौरी पति, पशुपति ~ ७९९।

अघ-सैनी पापो की सेना जानि कठिन कलिकाल कुटिल नृप सग सजी ~ ९/११।

अघहर पापों को दूर करने वाली अर्थात् त्रिवेणी (वेणी) अर्थात् कशपाश ~ एक सुकर सारँग तैं सा० ल० ७।

अघहरन पापो को हरने वाले . ~ पुनि परन बस हरि ४१८०।

अघहि पापों की ओर मोहि आत्मा मन करि ~ लगावैं १/४२।

अघा अघासुर नामक राक्षस . अनजानत सब परे ~ मुख भीतर माही ४३१।

अघाईं तृप्त हो पाते हे तदपि नाहि ~ २३६९।

अघाइ क्रि० १ तृप्त होता है विषय-भोग कबहू न ~ ४/१२। २ तृप्त होती हे व्योम, धर, नद, सैल, कानन इते चरि न ~ १/५६। क्रि० वि० पेट भर कर कहन लगे सब अपुन में सुरभी चरैं ~ ४३१, पीवौ छाँछ ~ कै १/२३८।

अघाई १ तृप्त होता है जब तैं जनम मरन अतर हरि करत न अघहि ~ १/१८७। २ तृप्त हो गए मुख चितवत दोउ नैन ~ ८२।

अघा-उदर अघासुर का पेट ~ तैं हमहिं बचायौ ९५४।

अघाऊँ १ तृप्त होऊँ ऐसो को दाता है समरथ जाके दिए ~ १/१६४। २ तृप्त कर दूँगा · करि कदन रुधिर भैरौं ~ ९/१२९।

अघाए १ तृप्त हुए लोचन कबहु न ~ परि० १/८८। २. तृप्त कर दिया कौरव काज चले रिपि सापन साक पत्र सु ~ १/१३।

अघात[1] १ तृप्त होता है ढोटा हू न ~ ३२६। २ तृप्त होती है पीवत हू न ~ इते जल ३८६०। ३ तृप्त होते हैं लोचन नाहि ~ १३७३। ४ ललचाए रहते अति लोभी अचवत ~ है २३२४।

अघात[2] १ भर-पूर मात्रा मे . दुहु कर माट गह्यौ नँदनदन छिटकि बूँद दधि परत ~ १५९। २ आघात/चोट मे · अति ~ सूझत नहि ४१८८।

अघाति तृप्त होती है . छुधित अति न ~ कबहू निगम द्रुम दल खाइ १/५६, अपजस हू न ~ १७०८।

अघाते सतुष्ट होते, अघाते लोचन पै न ~ ४०३१।

अघाने भोजन पान से तृप्त हुए, सतुष्ट हुए, छक गए सूर स्याम अब कहत ~ अचवन माँगत पानी, ते दधि-दोना माक ~ १६०८।

अघानौ तृप्त हुआ, अघाया, मन भरा याही करत अधीन भयो हों निद्रा अति न ~ १/४७, कान्ह कह्यौ हों मातु ~ ३९६।

अघा-बदन अघासुर का मह जैसे राखे ~ तब ९३६।

अघाय तृप्त होकर पियो अधर रस अति आनद ~ सारा० १०८४।

अघासुर एक राक्षस, श्रीकृष्ण ने जिसका वध किया था सबद कर्यौ आघात ~ टेरि पुकार्यौ ४३१।

अघैहौ तृप्त होगा चारि पहर दिन चरत फिरत वन तऊ न पेट ~ १/३३१।

अचंभ विस्मय, आश्चर्य वचन ~ जनाए ३६५७।

अचभु विस्मय, आश्चर्य एक कमल ब्रज ऊपर राजत निरखत नैन ~ २४६६।

अचंभौ १ आश्चर्य ब्रज मैं एक ~ देख्यो ४१५३, ऊधो यहै ~ बाढ ३६४२। २ आश्चर्य की बात यह ~ भारि १६२७। ३ आश्चर्यजनक कहति ~ बात २२६१। ४ आश्चर्य हो रहा है . 'सूरदास' प्रभु देखि ~ २७७८।

अचई पान कर ली सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन कौं मनमोहन ~ सी।

अचकाइ बलात् कृष्णहि गहि लावति ~ २८६०।

अचगरी १ ऊधम, शैतानी, शरारत, नटखटपन माखन-दधि, मेरौ सब खायौ बहुत ~ कीन्हीं २९७, निसि हूँ दिन ये करत ~ २२४६। २ खोटाई कहाँ कौ करिहै ~ १७४४। ३ छेड़छाड़ अतिहिं करत तुम स्याम ~ १४१५, औरनि ना करि रहे ~ १४०४।

अचगरौ नटखट, शरारती . ऐसौ नाहिं ~ मेरौ कहा बनावति बात २९०।

अचभौना विस्मयकारक, आश्चर्यजनक सखी सुनहु री ! बातैं जैसी, करत अतिहि ~ १४७०।

अचमन आचमन। ~ लीन्हौ आचमन (कुल्ला) किया भोजन करि नँद ~— २३८।

अचर स्थिर, अचल चर ~ गति विपरीति ६२३।

अचरज पुं० आश्चर्य . ~ एक सुनौ हो ऊधौ ३७२९, पुत्री भए, यह ~ भयौ ९/२। △ ~ आयौ आश्चर्य हुआ मोकौ तौ ~— ४/५। वि० आश्चर्यजनक ~ सुभग बेद जल जातक २४६५, ग्वाल कहत आजुहिं ~ बन ९०४। ~ मानहु आश्चर्य मानो जीवत रही आजु लौं सोचनि ~— एहु ४००६।

अचर्ज आश्चर्यजनक • सबै बात ~ इनकी परि० १/४७।

अचल १ पर्वत मदराचल ~ चले धाइ ८/८। २ स्थिर, जड • चल थाके ~ टरे ६२३। ३ स्थायी करिहौं नाम ~ पशुपति कौ ९/१३१। ~ चले जड चलायमान हो गए मुरली सुनत ~— १०६८।

अचलजा पर्वत की पुत्री, पार्वती, शिव की पत्नी ~ पति अग भूषन भार-हित हित सा० ल० ९३।

अचलजा-पति-अंग-भूषन-भार-हित-हित पार्वती के पति (शकर) का भूषण (सर्प) का भार (शेषनाग का भार) पृथ्वी के हितु (इन्द्र) के हितु मेघ अर्थात् घनश्याम कृष्ण : ~ सा० ल० ९३।

अचला अचल, जड, स्थिर ~ चलै चलत पुनि थाके ९/७८।

अचवन आचमन, पान ~ करि पुनि जल अचवायो सारा० १८८, भोजन पाछ ~ बी कौ २७३८।

अचवायो पिलाया अचवन करि पुनि जल ~ सारा० १८८।

अचवाहि पीते हैं अमृत जल ~ ८२७३।

अचिर नश्वर, क्षणस्थायी • का यह सुर ~ अपनी तनु १६६८।

अचिरज आश्चर्य ~ आइ सुनौ री १५४१।

अचुक अचूक, जो न चूके ~ अहेरी नाहिं अजान ३३२६।

अचेत १ सज्ञाशून्य, मूर्च्छित ह्वै गए भूप ~ ९/३९। २ जड, अचेत • थकित भए कछु मत्र न फुरई कीन्हे मोह ~ १/२९, अस्म ~ प्रगट पानी मे बनचर लै लै डारत ९/१२। ३ अबोध, मूर्ख ऐसो प्रभु छाँटि, क्यों भटकै अजहू चेति ~ १/२९६। ४ बेसुध होकर : कत रिस करति ~ ३४९।

अचै पीकर, पान करके मनु मकरद ~ रुचि कै १३७।

अचैन विकल, व्याकुल, बेचैन है सिकारी नाग मनसिज मसिन ओर ~ सा० ल० ९२।

अच्छ पु० नेत्र ~ चारौं ओर सा० ल० ३०। वि० अच्छा सारँग पच्छ ~ निर ऊपर सा० ल० १००।

अच्छत १ अक्षत, बिना टूटा चावल जो शुभ कार्यों मे काम आता है ~ दूब लिए रिषि ठाढे १९, दधि ~ फल फूल परम रुचि ४१८१। २ विद्यमानता मे, मौजूदगी मे जुद्ध कौं करत लाजत नहीं है तुम्ह, सुनि महाराज ~ हमारे ४१९४।

अच्छर १ अक्षर द्वादस ~ मत्र सुनायौ ८/९। २ भाग्य • पूरब कर्म लिखे विधि ~ ३६५४।

अच्छु आँख, नेत्र भद्र विध के खरक फरकत ~ चारौं ओर सा० ल० ३४।

अच्छेद-अभेद अखडच यह ~ अविनासी १२/४।

अच्छोहिणी पूरी चतुरगिणी सेना जिसमे १०९३५० पैदल, ६५६१० घोडे, २१८७० रथ और २१८७० हाथी होते थे तीन बीस ~ लै दल जरासध तहँ आयो सारा० ५५७।

अच्छौन अठारह अठारह अक्षौहिणी सेना (देखिए अच्छोहिणी) • जुरे नृपति ~ सारा० ७७९।

अच्युत वि० १ स्थिर, अटल, अविनाशी • अक्षर ~ अविकार है ११७५। २ स्थिर ~ रहै सदा जल-माइं। पु० विष्णु, कृष्ण हम गुनी नव बाल ~, तुम तरुन १०३०।

अछत पुं० १ अक्षत, बिना टूटा हुआ चावल जो पवित्र कार्यों मे प्रयोग किया जाता है ~ दूब दल बँधाइ ९५। २ क्षत या घाव से रहित छत अरु ~ एक रस अतर ३३८८। क्रि० वि० विद्यमान, रहते हुए, समक्ष : नैन ~ चातक की प्रीति जगत जानी ३५९८, तुम ~ साल्व मोहिं बाँधि लायौ ४२२१।

अछय अक्षय, जिसका अत न हो करषत सभा द्रुपद-तनया कौ अबर ~ कियौ १/१२१, ~ निधि जिनि लूटि पाइ १२६५।

अछय कुंवर अक्षय कुमार, रावण का एक पुत्र जो लका का अशोक-वन उजडते हुए हनुमान के द्वारा मारा गया था मत्री सुत पाँच-सहित ~ सुर ९/९६।

अछयनिधि न घटने वाली सपत्ति महा ~ पाइ अचानक २३२७।

अछूते कोरे, पूरे, भरे हुए दधि माखन द्वै माट ~ तोहिं सौंपति हौं महियो ३१३।

शीघ्र बढने वाले इन्द्रिय मूल किसान महातृन ~ बीज बई १/१८५।

अग्र-घन बादलों के आगे-आगे ऐरावत आरूढ ~ ८६६।

अग्र-सोच आगे की सोच कर (कर्म) ~ क्यों मरई ४।

अघ[1] पाप, अधर्म छत्री जन्म बहुत ~ कीन्हो सारा० ६१५, सुरसरि दरस कटत ~ भारे १/९४।

अघ[2] अघासुर नामक राक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था नद नहिं निकद कारन ~ म बारन धीर सा० ९३, केसी, ~, पूतना निपाती ३०४३।

अघट न घटने वाली जहँ-तहँ मुनिवर निज मर्यादा थापी ~ अपार सारा० ३०७।

अघट-उपमा पूर्णोपमा अलकार सूर स्याम सुजान सुक्रिया ~ दाव सा० ल० १।

अघटित भक्ष्याभक्ष्य • ~ भोजन करतौ पूर्ण १/२०३।

अघट्ट अक्षय, जो न घटे आदि अनन्त ~ अनूपम मारा० ८४६।

अघ-तारन पाप से मुक्त करने वाला ~ नर नाउँ १६९०।

अघनि १ पापो से ~ भर्यौ बहुभारी १/१७८। २ पापो मे . महा ~ बपु पाग्यौ १/७३।

अघ-बिदारन अघासुर का नाश करने वाले, श्रीकृष्ण • ~ धीर सा० ल० ९३।

अघ बीत्यौ पाप समाप्त हो गया • उलटो नाम जपत ~ सारा० १५३।

अघ-मर्दन अघासुर का नाश करने वाला ~ बक बदन बिदारन ८६३।

अघ-मोचन पाप दूर करने वाले गौरी पति, पशुपति ~ ७९९।

अघ-सैनी पापो की सेना जानि कठिन कलिकाल कुटिल नृप सग सजी ~ ९/११।

अघहर पापों को दूर करने वाली अर्थात् त्रिवेणी (वेणी) अर्थात् केशपाश ~ एक सुकर सारँग तैं सा० ल० ७।

अघहरन पापो को हरने वाले • ~ पुनि परन बस हरि ४१८०।

अघहि पापो की ओर . मोहि आतमा मन करि ~ लगावैं १/४२।

अघा अघासुर नामक राक्षस . अनजानत मब परे ~ मुख भीतर माँही ४३१।

अघाइँ तृप्त हो पाते है तदपि नाहि ~ २३६९।

अघाइ क्रि० १ तृप्त होता है विषय भोग कबहूं न ~ ४/१२। २ तृप्त होती है ब्योम, धर, नद, सैल, कानन इते चरि न ~ १/५६। क्रि० वि० पेट भर कर कहन लगे सब अपुन मैं सुरभी चरैं ~ ४३१, पीवौ छाँछ ~ कै १/२३८।

अघाईं १ तृप्त होता है जब तैं जनम मरन अतर हरि करत न अघहि ~ १/१८७। २ तृप्त हो गए मुख चितवत दोउ नैन ~ ८२।

अघा-उदर अघासुर का पेट ~ तैं हमहि बचायौ ९५४।

अघाऊँ १ तृप्त होऊँ ऐमो को दाता है समरथ जाके दिए ~ १/१६४। २ तृप्त कर दूँगा . करि कदन रुधिर भैरौं ~ ९/१२९।

अघाए १ तृप्त हुए लोचन कबहु न ~ परि० १/८८। २ तृप्त कर दिया कौरव-काज चले रिषि सापन साक पत्र सु ~ १/१३।

अघात[1] १ तृप्त होता है ढोटा हू न ~ ३२६। २ तृप्त होती है . पीवत हू न ~ इते जल ३८६०। ३ तृप्त होते ह लोचन नाहि ~ १३७३। ४ ललचाए रहते . अति लोभी अँचवत ~ हे २३०४।

अघात[2] १ भर-पूर मात्रा मे दुहुँ कर माट गह्यो नँदनदन छिटकि बूँद दधि परत ~ १५९। २ आघात/चोट मे अति ~ सूकत नहिं ४१८८।

अघाति तृप्त होती है छुधित अति न ~ कबहू निगम द्रुम दल खाइ १/५६, अपजस हू न ~ १७०८।

अघाते सतुष्ट होते, अघाते लोचन पै न ~ ४०३१।

अघाने भोजन पान से तृप्त हुए, सतुष्ट हुए, छक गए सूर स्याम अब कहत ~ अचवन माँगत पानी, ते दधि-दोना माँझ ~ १६०८।

अघानौ तृप्त हुआ, अघाया, मन भरा याही करत अधीन भयौ हौं निद्रा अति न ~ १/४७, कान्ह कह्यौ हौं मातु ~ ३९६।

अघा-बदन अघासुर का मुँह जैसे राखे ~ तब ९३६।

अघाय तृप्त होकर पियौ अधर रस अति आनद ~ सारा० १०८४।

अघासुर एक राक्षस, श्रीकृष्ण ने जिसका वध किया था सवद कर्यौ आघात ~ टेरि पुकार्यौ ४३१।

अघैहौ तृप्त होगा चारि पहर दिन चरत फिरत वन तऊ न पेट ~ १/३३१।

अचंभ विस्मय, आश्चर्य बचन ~ जनाए ३६५७।

अचंभु विस्मय, आश्चर्य एक कमल ब्रज ऊपर राजत निरखत नैन ~ २४६६।

अचंभौ १ आश्चर्य ब्रज मै एक ~ देख्यौ ४१५३, ऊधौ यहै ~ बाढ ३६४२। २ आश्चर्य की बात यह ~ भारि १६२७। ३ आश्चर्यजनक • कहति ~ बात २२६१। ४ आश्चर्य हो रहा है 'सूरदास' प्रभु देखि ~ २७७८।

अचई पान कर ली सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन कौ मनमोहन ~ सी।

अचकाइ बलात कृष्णहिं गहि लावति ~ २८६०।

अचगरी १ ऊधम, शैतानी, शरारत, नटखटपन माखन-दधि, मेरौ सब खायौ बहुत ~ कीन्ही २९७, निसि हू दिन ये करत ~ २२४६। २ खोटाई कहाँ कौ करिहै ~ १७४४। ३ छेड़छाड़ अतिहिं करत तुम स्याम ~ १४१५, औरनि ना करि रहे ~ १४०४।

अचगरौ नटखट, शरारती . ऐसौ नाहिं ~ मेरौ कहा बनावति बात २९०।

अचभौना विस्मयकारक, आश्चर्यजनक सखी सुनहु री ! बातें जैसी, करत अतिहि ~ १४७०।

अचमन आचमन। ~ **लीन्हौ** आचमन (कुल्ला) किया भोजन करि नंद ~— २३८।

अचर स्थिर, अचल चर ~ गति विपरीति ६२३।

अचरज **पुं०** आश्चर्य . ~ एक सुनौ हो ऊधौ ३७२९, पुत्री भई, यह ~ भयौ ९/२। △ ~ **आयौ** आश्चर्य हुआ मोको तौ ~— ४/५। **वि०** आश्चर्यजनक ~ सुभग वेद जल जातक २४६५, ग्वाल कहत आजुहिं ~ वन ९०४। ~ **मानहु** आश्चर्य मानो जीवत रही आजु लौं सोचनि ~— एहु ४००६।

अचर्ज आश्चर्यजनक · सबै बात ~ इनकी परि० १/४७।

अचल १ पर्वत . मदराचल ~ चले धाई ८/८। २ स्थिर, जड चल थाके ~ टरे ६२३। ३ स्थायी करिहौं नाम ~ पशुपति कौ ९/१३१। ~ **चले** जड चलायमान हो गए मुरली सुनत ~— १०६८।

अचलजा पर्वत की पुत्री, पार्वती, शिव की पत्नी ~ पति अग भूषन भार हित हित सा० ल० ९३।

अचलजा-पति-अंग-भूषन-भार-हित-हित पार्वती के पति (शंकर) का भूषण (सर्प) का भार (शेषनाग का भार) पृथ्वी के हितु (इन्द्र) के हितु मेघ अर्थात् घनश्याम कृष्ण ~ सा० ल० ९३।

अचला अचल, जड, स्थिर ~ चलै चलत पुनि थाके ९/७८।

अचवन आचमन, पान ~ करि पुनि जल अचवायो सारा० १८८, भोजन पाछें ~ घी कौ २७३८।

अचवायो पिलाया अचवन करि पुनि जल ~ सारा० १८८।

अचवाहि पीते हैं अमृत जल ~ ४२७३।

अचिर नश्वर, क्षणस्थायी : का यह सूर ~ अपनी तनु १६६८।

अचिरज आश्चर्य ~ आइ सुनौ री १५८१।

अचुक अचूक, जो न चूके ~ अहेरी नाहिं अजान ३३२६।

अचेत १ सज्ञाशून्य, मूर्च्छित ह्वै गए भूप ~ ९/३९। २ जड, अचेत · थकित भए कछु मत्र न फुरई कीन्हे मोह ~ १/२९, अस्म ~ प्रगट पानी मैं वनचर लै लै डारत ९/१२। ३ अबोध, मूर्ख ऐसो प्रभु छाँडि, क्यों भटके अजहूँ चेति ~ १/२९६। ४ बेसुध होकर · कत रिस करति ~ ३४९।

अचै पीकर, पान करके मनु मकरद ~ रुचि कै १३७।

अचैन विकल, व्याकुल, बेचैन . है सिकारी नाग मनसिज ससिन ओर ~ सा० ल० ९२।

अच्छ **पुं०** नेत्र ~ चारौ ओर सा० ल० ३०। **वि०** अच्छा सारँग पच्छ ~ सिर ऊपर सा० ल० १००।

अच्छत १ अक्षत, बिना टूटा चावल जो शुभ कार्यों मे काम आता है ~ दूब लिए रिषि ठाढे १९, दधि ~ फल फूल परम रुचि ४१८५। २ विद्यमानता मे, मौजूदगी मे जुद्ध कौं करत छाजत नहीं है तुम्है, सुनि महाराज ~ हमारे ४१९४।

अच्छर १ अक्षर द्वादस ~ मत्र सुनायौ ८/९। २ भाग्य · पूरब कर्म लिखे विधि ~ ३६५४।

अच्छु आँख, नेत्र मछ विध के खरक फरकत ~ चारौं ओर सा० ल० ३४।

अच्छेद-अभेद अखडय यह ~ अविनासी १२/४।

अच्छौहिणी पूरी चतुरगिणी सेना जिनमे १०९३५० पैदल, ६५६१० घोडे, २१८७० रथ और २१८७० हाथी होते थे तीन बीस ~ लै दल जरासध तहँ आयो सारा० ५५७।

अच्छौन अठारह अठारह अच्छौहिणी सेना (देखिए अच्छौहिणी) · जुरे नृपति ~ सारा० ७७९।

अच्युत **वि०** १ स्थिर, अटल, अविनाशी · अछर ~ अविकार है ११७५। २ स्थिर · ~ रहै सदा जल-माई। **पुं०** विष्णु, कृष्ण हम गुनी नव बाल ~, तुम तरुन १०३०।

अछत **पुं०** १ अक्षत, बिना टूटा हुआ चावल जो पवित्र कार्यों मे प्रयोग किया जाता है ~ दूब दल बँधाइ ९५। २ क्षत या घाव से रहित छत अरु ~ एक रस अतर ३३८८। **क्रि० वि०** विद्यमान, रहते हुए, समक्ष · नैन ~ चातक की प्रीति जगत जानी ३५९८, तुम ~ साल्व मोहि बाँधि लायौ ४२२१।

अछय अक्षय, जिसका अत न हो करषत सभा द्रुपद तनया कौ अबर ~ कियौ १/१२१, ~ निधि जिनि लूटि पाई १२६५।

अछय कुंवर अक्षय कुमार , रावण का एक पुत्र जो लका का अशोक-वन उजडते हुए हनुमान के द्वारा मारा गया था · मत्री सुत पाँच सहित ~ सूर ९/९६।

अछयनिधि न घटने वाली सपत्ति महा ~ पाइ अचानक २३२७।

अछूते कोरे, पूरे, भरे हुए दधि माखन द्वै माट ~ तोहिं सौंपति हौं महियौ ३१३।

अछेद जिसका छेदन न हो सके, अभेद्य . अभिद ~ रूप मम जान ३/१३ ।

अछै अक्षय हरि पद सरन ~ फल पावै २४७३ ।

अछै बृच्छ बट अक्षयवट, प्रयाग मे सगम के पास स्थित बरगद का वृक्ष, जो प्रलय मे भी नष्ट नहीं होता (ऐसी मान्यता है) ~ बचत निरन्तर ८५४ ।

अज **वि०** जो जन्म न ले, अजन्मा, स्वयभू ~ अविनासी अमर प्रभु २/३६; मैं, अविगत ~ अकल हो ११०१ । ब्रह्मा सेवत ~ सिव अम्ब सारा० १००१ ।

अजगुत **पुं०** १ असाधारण घटना, असगत बात तापै एक सुनौ री ~ लिखि-लिखि जोग पठावे ३६५८ । २ अनुचित बात, अयुक्त बात जाक ह मोहूँ कौ गारौ ~ किय तौ ३७३, नगर-नारि दै गारि कस कौ ~ जुद्ध बनाए ३०८७ । **वि०** अद्भुत, अयुक्त पापी जाउ जीभ गलि तेरी ~ बात विचारी ९/७९ ।

अजन जन्म-रहित, अजन्मा, स्वयभू सकल लोक नायक सुख दायक ~ रूप धरि आयौ ४ ।

अजन्म जन्म से रहित, नित्य, स्वयभू . आतम, ~ सदा अविनासी ५/४ ।

अजराइल अजर, टिकाउ, चिरस्थायी . स्याम रग ~ रैहै १९१२ ।

अजरायल पक्का, टिकाऊ, चिरस्थायी · दिना चारि मे सब मिटि जैहैं स्याम रग ~ रैहै १४८८ ।

अजरावन अजर भलौ सु दिन भयौ पूत अमर ~ रे २८ ।

अजवाइनि अजवायन, एक मसाला विशेष ~ सैंधो मिलाइ धरि १२१३ ।

अजस बदनामी का काम ~ करत जस पायौ १/१८८ ।

अजहुँ आज भी, अब भी ~ न आये श्याम पियारे २४७९, अवगुन मोपै ~ न छूटत १/१४७ । **~ न मानी हार** अब भी हार नही मानती · देखहु सूरज अधिक सूर तन, ~— १८१६ । **~ सँभारि** अब भी सँभल जा . हरि कह्यौ तू ~ — ४२०६ ।

अजहुँ लौं अब तक भी ~ तुम नहि जान्यौ, ब्रज अवतार ५५८ ।

अजहूँ १ अब भी, अभी भी ~ लाज न आवति, ~ दूरि करौ रिस उर तै २४२१; मानिनि ~ मान बिसारौ सा० ल० १९, निपट निलज्ज ~ न चलत उठि ३९४० । २ अभी तक नैन निरखि ~ न फिरे री २२९३ ।

अजहूँ लौं अब तक भी ~ राजत नीरधि तट करत साख्य विस्तार सारा० ५७ ।

अजा १ बकरी जोग अति कुषमाड जैसौ ~ मुख न समात ३९०२ । २ बकरी के . ~ कठ कुच सेइ १/२०० । △~ **लै दुहाऊँ** (कामधेनु छोडकर) बकरी दुहना अर्थात् श्रेष्ठ को छोडकर तुच्छ की शरण लेना कामधेनु छाँडि कहा ~— १/१६६ । ३ माया सूर ~ के भोग ये, सुनि लेहु न मोसौ ३०३८ । ४ मोह ब्रज ब्रू स्याम ~ भयौ हमकौं ३६१५ ।

अजाची अयाचक, जिसे माँगने की आवश्यकता न हो, धन-धान्य से परिपूर्ण सुदामा कियौ ~ १/१८, १/१३५, १/१६४ ।

अजातिहिं जातिहीन को : सूरदास प्रभु महाभक्ति तैं जाति ~ साजैं १/३६ ।

अजाद स्वतत्र जम के फद काटि मुकराये अभय ~ किये १/१७१ ।

अजान **वि०** अनजान, नासमझ, अज्ञानी . सिव ब्रह्मादिक कौन जाति, प्रभु हौं ~ नहिं जानौं १/११, मधुकर हम ~ मति भोरी ३५५३ । **क्रि०वि०** अज्ञानतावश जान ~ नाम जो लेई, हरि बैकुण्ठवास तिहि देइ ६/४ । **~ भई** अनजान बनी रही . अखियाँ जान ~— १७८३ ।

अजा-भख बकरी का भक्ष्य (पत्ता) = पत्र (चिठ्ठी) . ~ की हानि हमकौं सा० ल० २१ ।

अजामिल पुराणानुसार एक पापी नास्तिक ब्राह्मण, जो मरते समय अपने बेटे 'नारायण' का नाम पुकारने पर मुक्ति का भागी बन गया : हरि हरि कहत ~ तर्‌यौ ६/४, गनिका ब्याध ~ तारौ १/१५७ ।

अजामील पुराणानुसार एक पापी ब्राह्मण (दे० अजामिल) ~ सुत हित हरि भज्यौ १२/३, अधम कौन है ~ तैं, जम तहँ जात डरै १/३५ ।

अजित **वि०** अपराजित, अजेय पौरुष रहित ~ इद्रिनि बस १/१२१, रावन ~ जयौ ९८१५ । **पुं०** ब्रह्मा ~ देख्यौ तोकि ७०६ ।

अजितेंद्रि विषयासक्त, इद्रिय लोलुप ~ जिहिं देखि मोहित भए ८/१० ।

अजिर आगन · धरे निसान ~ गृहमण्डल ९/२५, घुटुरिनि चलत ~ मँह विहरत ९७ ।

अजिरहि आँगन मे जौ देखौ तौ ~ बैठे ७२६ ।

अजीरन अजीर्ण, अपच अब यह बिरह ~ ह्वैकै बमि लाग्यौ दुख दैन ३२३९ ।

अजुगुत अनुचित, ओछी ~ बात बिचारी ९/७९ ।

अजेरि रोग तन मन पलटि लियौ सखि मेरौ स्यौ दृग मूल ~ परि० १/८६ ।

अजोग अयोग्य, अनुचित अब लागीं तुम करन ~ १९२२ ।

अजोध्या-राव अयोध्या के राजा. दसरथ नृपति ~ ९/१५ ।

अजौं अब भी, आज भी बालक ~ अजान न जानै ३५६ ।

अजौ आज भी, अब भी : ~ अपुनपौ धारौ १/१५७ ।

अज्ञ अज्ञानी, अनजान ~ भवनि मति थोरी २५३।

अज्ञान वि० अज्ञानी, मूढ, अनजान में ~ कछू नहिं समुझ्यौ। पु० मूर्खता • मैं यह कहा कियौ ~ ६/५।

अज्ञानी-संग मूर्ख व्यक्तियों के साथ ~ होइ अज्ञान ३/१३।

अटक १ विघ्न, अड़चन, रुकावट घाट-बाट कहुँ ~ होइ नहिं, लोचन-मधुप ~ नहिं मानत १६५५। २ अकाज दिन दस-पाँच ~ जब कीन्हे परि० २/४९। ३ भटक ~ ह्वै कै गयौ ३०७३। ४ जरूरत ह्याँ ऊधो काहे कौ आए कौन सी ~ परी ३९७२। △~ **न मानत** सकोच नही करते सूरदास प्रभु ~ न मानत ७७४।

अटकत १ अटक जाता है ~ कटक कुटिल हृदय मैं ३८३२। २ अड बैठता है, हठ ठान लेता है ज्यौं बालक जननी सौ ~ २३५८।

अटकति अटकती है • ~ नकु अँजन की डोरी २३०६।

अटकर अटकल से, अनुमान करके रैन अँधेरी कछु नाहिं सूझत ~ आयौ सारा० ३७४। ~ **हीं अटकर करि आनत** अटकल ही अटकल से ला रहे थे, अनुमान लगाकर ही लाते थे जैसे-जैसे व्रज पहिचानत ~— ९३२।

अटकाइ बाँधकर एक बार माखन के काजे राखे मैं ~ ३१७२

अटकाई अटक गइ, उलझ गइ गृह कारज जननी ~ ३८३।

अटकाऊँ मैं अटक जाता, उलझ जाता हौं पचि एक कहौं निरगुन की ताहू मैं ~ ४१२६।

अटकाए अटका लिया, उलझा लिया 'सूर' स्याम वै गहि ~ २२७८।

अटकाय फँसे स्याम रहे ~ सारा० ४५३।

अटकायौ १ टाँग दिया, लटकाया लियो उपरना छीनि दूरि डारनि ~ ११२४। २ रोका पहुच्यौ जाइ राज द्वारे पर काहूं नहिं ~ ४२२७।

अटकावहु स्थिर रखते हो पग बाधत कैसे लै गैया ~ ४०१।

अटकावे रोकता है गोपिन कौ मारग ~ ११८६।

अटकि १ अटककर ~ मन तहाँ रीझे कन्हाई १०४१। २ रोककर • राखौ ~ जान नहिं पावै २३९४। ३ सकट • ~ प्राननि परयौ चटक करनी ३०७३। ~ **लटक्यौ** अटककर वहीं स्थिर हो गया मुकुट पर मन ~— १८१८।

अटकीं रुकी, अवरुद्ध हुई जा कारन जुवती सब ~ १५२८।

अटकी १ रुकी, ठहरी • ललित कपोल निरखि कोउ ~ ६४४। २ उलझी, फँसी देखी हरि राधा उत ~ १३०९। ३ बस गई हृदय माँझ ~ १६६०।

अटके १ रुके हुए हैं • ऊधव ये तव तैं ~ व्रज ३९४२, मारग मैं ~ सब लोई ९१९। २ रुक गए, अटक गए स्याम-बदन छबि देख जु ~ २३५७। ३ रम गए वै कुबिजा ~ ३६६७। ४ उलझे • दोउ जन भीजत ~ बातनि परि० १/११३, ललित त्रिभगी तनु छवि ~ २३३८। ५ रोकने मे इत चितवत, उतही फिर लागत, रहत नही ~ २३८९।

अटकैं बन्द कर रखा था, रोक रखा था कज्जल कुलुफ मेलि मन्दिर मैं पल सँदूक पट ~ २३२१। ~ **अटकैं** फँस फँस कर जनम सिरानौ ~— १/२९२।

अटक्यौ १ अटक गया, रम गया सूर स्याम छवि पर मन ~ १८४०, ता दिन तैं मधुकर मन ~ ३५६४। २ पकड लिया गया जब गजराज ग्राह सौं ~ १/३२। ३ रुका, रुक गया कौन काज ऐसो ~ है २९२८। ४ अटका हुआ था रसना ~ जम १६३५।

अटत घूमता रहा, भटकता रहा ~ दुरगम अगम अचल भारे १/१२०।

अटनि १ अटारियों लये जात जब ओट ~ की २९९८। २ अटारियों पर ऊँचे ~ छाज की सोभा सीस उचाइ निहारी ३०२३।

अटपट अटपटे (ढग से) ~ आसन बैठि कै ४०९।

अटपटात १ अटपटे हैं • नैन अरसात अरु बैन हू ~ २०१०। २ अटपटाते हुए ~ मुख बात न आवै २६३०।

अटपटी १ विचित्र, ऊटपटाग मधुकर छाँडि ~ बातें ३५४७। २ भद्दी छुवत ~ चाल गई मिटि ३६४८। ३ अटपटी बान, नटखटपन और ~ छाँडि नद सुत १४६८।

अटपटे १ गिरते पडते, लडखडाते निरतत लाल ललित मोहन पग परत ~ भू मैं १४७। २ ऊटपटाग, उलटा सीधा ~ बैन प्रिय रसमसे नैन २६३५। ३ टेढेमेढे, अट बड लटपट पेच ~ दीये २५५५।

अटल १ न टलने वाला, स्थिर, दृढ, नित्य ~ अस्थान निजु निगम गायौ १/११९, होइ ~ जगदीस भजन मैं १/२३३। २ चिरस्थायी दास ध्रुव कौं ~ पद दियौ १/१७६। ३, अडिग चिरजीवि सीता नरवर तर ~ न कबहूँ टरइ ९/९९।

अटा अट्टालिका, कोठा, छत श्री राधा रति कुंजनि ~ ११८०।

अटा-अटारी अट्टालिकाएँ रँगि गए सिगरे ~ २८७१।

अटारी अट्टालिका, छत, कोठा तुम्हरेहिं तेज-प्रताप रही बचि तुम्हरी यहै ~ ९/१००।

अटोर अटूट, सटीक उपमा देत ~ परि० २/६४।

अट्ठारहौं अठारहो जपत ~ भेद उनइस नही १७३९।

अठ-द्वादस बीस (आठ+बारह) पटद्दल ~ दल निरमल अजपा जाप जपाली ३८६६।

अठासी सहस अट्ठासी हजार रिसि ~ हुए स्रोता ४२२३।

अठिलात इठलाती हो काहे कौ ~ १४६१।

अठिलाति इठलाती हुई, इतराती हुई बात कहति ~ जाति सब १५१८।

अठिलानी इठलाकर, इतराती/इठलाती हुई तुम तरुनी डोलति ~ १४९०।

अडंबर आडंबर • जो तिहुँ लोक ~ १५१५।

अडारि छोड़कर, फेंककर . इच्छुदंड ~ हरि गुन ४०३५।

अडारी छोड़ दिया त्यौं हरि मेलि ~ ३८५१।

अडावत रुक रुक कर • आपुहिं खात ~ २३४१।

अडे अटक गए, फँस गए अब कैसे निकसत सुनि ऊधौ तिरछे ह्वै जु ~ ३७३१।

अडोल अडिग निरभय अमित ~ ३६१०।

अतंक भय, आतंक नैननि ओट होत पल एकौ मैं मन भरति ~ ६०५।

अतदगुन उसका गुण नहीं, अतद्गुण नामक अलंकार • भयौ ~ सूर सरस बढ बली वीर विख्यात सा० ल० ७४।

अताई दे० अदाई।

अति वि० १ अत्यधिक ये ~ उमँग भरे २३०७, सब दिन विरह अगिनि ~ तयौ ५/३। २ छोटे से सूर स्याम मेरौ ~ बालक मारत ताहि रिगाई ५१०। ३ आवश्यक • कंसराज ~ काज मँगायौ ५२३। ४ असंख्य • बढे ~ सायक किरन समान ९/१५८। ५ बडी हरि के जन की ~ ठकुराई १/४०। क्रि० वि० १ बहुत अच्छी तरह मन मूरति ~ भावति १८५३। २ अत्यंत ~ रस लुब्ध, महा मधु लपट २३४६, ~ विचित्र रचना रचि राखी २/२८। ३ तीव्र रूप मे (देवकी) नव-मनि, मुकुट प्रभा ~ उदित ७। पुं० सीमा आज के द्यौस कौ सखी ~ नहीं, जौ लाख लोचन अंग अंग होते १८५७।

अति उक्त अत्युक्ति, अधिक कथन सेस ना कहि सकत सोभा, जान जो ~ सा० ल० ९३।

अति गाजै बहुत गरजता है . (गजराज) ढूँढत है ~ सारा० ८७६।

अति-गुन अत्यधिक गुण वाला • अमृत हूँ तैं अमल ~ ९/१०।

अति नीक बहुत अच्छी गति ~ बिचारी सा० ल० १०२।

अति पूत अत्यधिक पुलकित/पवित्र • आन्दोलन भूलत करुणानिधि रमा सुखद ~ सारा० १४।

अति भारी बहुत बडे, अत्यंत विशाल यह बालक सुकुमार सरस बपु, असुर प्रबल ~ सारा० ५०५।

अतिसय वि० अत्यधिक ~ बन्यौ निरमान, जागे ~ दयाल २०५। क्रि०वि० अत्यन्त राजत हैं ~ रँग भीने २१७६।

अतिसी तीसी, अलसी • ~ कुसुम बरन मुख मुरली ३५०५, ~ कुसुम तन १३८५।

अतिसै अतिशय, अत्यधिक अनद ~ भयौ घर घर २६।

अतिहि वि० १ अत्यधिक बृन्दावन देख्यौ नंदनंदन ~ परम सुख पायौ ४१५, ~ मधुर गति १४९। २ बड़ा ही : वह सिसक, ~ ढीठ, बिटरे नहिं भाजै ९/९६। क्रि० वि० १ अत्यन्त ~ चपल बरज्यौ नहिं मानत २३६२, ~ पुनीत विष्नु-पादोदक ९/१२। २ बिलकुल ~ लागति फीकी २३४४। ~ **पिराने** बहुत दर्द करते हैं पग ~ — ११०१। ~ **लजानी** अत्यंत लज्जित हुई • मन मन ~ — १७६७।

अतिहि बडा ही, अत्यन्त ही बानक ~ बन्यौ मन मोहन ११८१।

अतिहीं वि० अत्यधिक • रिस मैं रिस ~ उपजाई ३४१; यह उनहूँ तैं ~ खोटी १९०१। क्रि०वि० अत्यन्त, बहुत ही राधा तू ~ है भोरी १९६०, ~ भए बिहाल सखी री २३११।

अतिहौ अत्यधिक हो अबलौ कहुँ देखे नाहीं मैं तुम ~ सुकुमार सारा० ६०८।

अतीत पु० संगीत मे 'सम' से दो मात्राओ के उपरान्त आने वाला स्थान सुर स्तुति तान बँधान अमित अति सप्त ~ अनागत आवत ६४८। क्रि०वि० परे, बाहर : गुन ~ अविगत न जनावै जस अपार स्तुति पार न पावै ३। वि० उदासीन . माया रहित ~ २९५।

अतीतनि अतीत के दरसन करन ~ ४९०।

अतुरई जल्दबाजी, शीघ्रता • करी मुखारी ~ १९६५।

अतुराइ १ आतुर होकर, हड़बड़ाकर मिले अतिहिं ~ स्याम कौं २२३६। २ शीघ्रतापूर्वक • राम पे भरत चले ~ ९/५१। ~ कै आतुर होकर उठे मुसुकाइ, अकुलाइ, ~ २०४०।

अतुराई १ आतुरतापूर्वक आए स्याम तहाँ ~ ८१८, चली आपु जल कौ ~ ८५१। २ शीघ्रता • जाहु न स्याम करहु ~ ७५७, नैंकु करौ ~ २२।

अतुराए आतुरतापूर्वक अग्रज कानि चले ~ २८७८।

अतुरात आतुर होता है एक इक पल जुग सबनि कौं मिलन कौ ~ ३४६३।

अतुरानी १ आतुर हो गई सूर स्याम बन धाम जानि कै दरसन कौ ~ २४३७। २ घबड़ा गई आतुर पिय जानि गवन प्यारी ~ री १९७८।

अतुराने १ आतुरतापूर्वक, घबड़ाकर चटपटाइ बैठे ~ १९७। २ आतुर हुए, घबड़ाए अधकार मिटि गयौ देखि जहँ-तहँ ~ ४३१। ३ अकड गए सो तुम कहि आगैं ~ १५५६।

अतुरावत आतुर होते हुए आवत चल्यौ व्रजहि ~ ९७६।

अतुल अमित, अपार, असीम कै रघुनाथ ~ वल राच्छस दसकधर डरहीं ९/९१।

अतुल-वल अपार वलशाली कै रघुनाथ ~ राच्छस दसकधर डरहीं ९/९१।

अतूथ अपूर्व देखो सखि अकथ रूप ~ परि० १/९।

अत्र १ यहाँ · सरन कर ~ हरि डर लहत कोउ नहि २०७९। २ यहीं ~ अवधि मिति खूटी ३२२१।

अत्रनि अस्त्रों को निमिष ~ टारि २२८७।

अत्रि एक ऋषि, प्रजापति ब्रह्मा के पुत्र, अनसूया के पति, दुर्वासा और दत्तात्रेय के पिता . ~ पुत्र हित वहुत तप कियौ ४/३।

अत्रिऽनुसूया अत्रि और अनसूया ~ का सुख दयौ ४/३।

अत्रे मुनी अत्रि मुनि (दे०अत्रि) भारद्वाज, मरीचि, अगिरा ~ सारा० ७१४।

अत्र अत्रि मुनि, (दे० अत्रि) ~ पुत्र भयो ब्रह्मा क सारा० ५८।

अथयौ १ अस्त हुआ मन्मथ मात तात सुत ~ सारा० ९४०। २ छिपे (सूर्यास्त होने तक) मारग रिपु वाजि धरा ~ १६७१।

अथवत अस्त होने पर, डूवने पर ~ आए गृह वहुरि उवन भानु उठौ प्राननाथ महा जान मनि जानकी २०३९।

अथानो अचार निवुआ, सूरन आम ~ और करौंदनि की रुचि न्यारी २४१।

अथाह १ अथाह (समुद्र के) मन क्रम दोष ~ तरगिनि १/६७। २ अत्यधिक, अपरिमित सूरज प्रभु गुन ~ धन्य धन्य श्री प्रियानाह ३०१८।

अथाहु जिसकी थाह न हो, अगाध गहवर वन दुख सिधु ~ ९/३४।

अथोर अधिक काज आपन समुझि कै किन करै आप ~ मा० ल० ६०।

अद्भुत अद्भुत, अनूठा, आश्चर्यजनक ~ जस विस्तार करन कौं १/२१५, ~ एक अनूपम वाग २११०।

अदया निर्दयता अव ~ देखति जादोपति ३७६४।

अदलपति-रिपु-पिता-पतिनी अदल (पार्वती) के पति (शिव) के शत्रु (कामदेव=प्रद्युम्न) के पिता कृष्ण की पत्नी अर्थात् यमुना ~ अव न जैहै फेर सा० ल० १०७।

अदाई चतुर, चालवाज, काइयाँ तुम अलि वडे ~ ३९००।

अदिति देवमाता, प्रजापति की पुत्री, कश्यप ऋषि की पत्नी विति दुर्वल अति ~ दृष्टचित ९/२०, तव दुख भयौ ~ के हियै ८/१२।

अदृष्ट पुं० भाग्य दुखदायक ~ मम मोकौं १/२९०। वि० लुप्त, ओझल वछरा भए ~ कहूँ खोजत नहिं पाए ४९२।

अदोस निर्दोष, दूषणहीन, निष्कलक · चपकली सी नासिका राजत अमल ~ २६१३।

अद्वै अद्वैत तुम निरगुन ~ निरकार ४३०१।

अद्वैत अद्वैत यह ~ दरसी रग ३४१४।

अध वि० १ अर्ध कच्छप ~ आसन अनूप अति २/२८। २ आधी भादों की ~ राति अँध्यारी १०/११। क्रि०वि० १ नीचे से · मेरुनि ~ तमधार धँसी री २४४७। २ नीचे ~ मुख रहित अनत नहि चितवति ४०७३। ~ **खातहि** आधा खाकर ही भूखे गए प्रात ~ — १३९८। ~ **जेवत** आधा भोजन किये हुए ~ — उठि धाए ४५४। ~ **पर** वीच मे ही ~— छाँडि दइ ३९१५। ~ **वीचहि** वीच धारा मे ही केवट थक्यौ, रही ~— ९/१४६। ~ **भरौ** आधा भरा हुआ जैसे घट पूरन न डोलै ~— डगडौर १८४३।

अधपैया पजे के वल पर, घुटने टेक कर वैठत हो ~— ७३४।

अधम १ अधर्मी, नीच, पापी प्रभु दीन ~ को तारे सारा० ८८७, हौं महा ~ ससारी १/१७३। २ अधर्मियों (पापियो) को ~ उधारनहारे १/२५।

अधमई स्त्री० नीचता (अधमता) सुनि मेरी अपराध ~ कोऊ निकट न आवै १/१९७। वि० अधमरी सूर-स्याम ~ हमहिं सव १४८२।

अधमनि नीचो, पापियो ~ के ये काम २३१८। ऐसौ सूरदास जन हरि कौ, सव ~ मैं मानी १/१२९।

अधमाइ नीचता · ऐसी मन कीन्ही ~ २२६३।

अधमाई नीचता हुती जिती जग मैं ~ सो मैं सवै करी १/१३०, मैं वहुतै कीन्ही ~ ९४६।

अधमिनि पापियो नैन अमीन ~ के वस १/६४।

अध मुख १ नीचे की ओर मुँह किए, मुह के वल मनौ भुजग, गगन तै उतरत ~ रह्यो झुलाई ६४१। २ औधे ~ रहति विरह व्याकुल २६००।

अधर होठ अरुन ~ छवि-दसन विराजत ४७६, रह्यौ ~ दोउ चापि ४३१। ~ **धरि वेनु** वंशी को होठों पर रखकर ~ — सु ललित वजाई ९८८।

अधर-विच होंठों के वीच मे विकसति ज्योति ~ मानौ ९१।

अधर-मधु होंठों का रस ~ मधु परक करि कै १०७१।

अधरम अधर्म लागै धरम वतावै ~ वाकी सवै रही १/१८५।

अधर-सुधा-उपदस अधर के अमृत की चाट (चटनी) ~ सींक

सुचि २८२२।

अधर-सुधा-रस होंठो का अमृत रस . मुरली ~ आनन ३८७७।

अधरनि १ होंठों कोउ निरखति ~ की सोभा ६४४, मुरली धरे अरुन ~ पर २१९६। २ होंठो का सुनहु सूर ~ रस अचवौं २४९३। ३ होंठो को मैं ~ परसाऊँ २१४१। ४ होंठो पर काजर ~ प्रगट देखियत २५०३, बसी ~ धरे ललित गति २२१९। ५ होंठो मे ~ बीरा रग २०२७।

अधरनि-रस होठो के रस मे सूर स्याम ~ सीचहुँ १०२४।

अधरहि होठो पर ~ अजन जानी २५१४।

अधरात अर्धरात्रि कहि जु गयौ ~ २९८१।

अधरातक अर्धरात्रि • ~ तै उठि सब बालक ४०३४।

अधरातका अधर (बीच मे) रहने वाले अर्थात् धुरे • आट केसर की करी ~ सुचि सोई सा० ल० १०५।

अधरातनि अर्धरात्रि मे बेनु बजाइ सुधाकर हरि मुख, बन बोली ~ ३५४९।

अधराति १ अर्धरात्रि मे पिय पिय करि ~ पुकारत ३३३८। २ अर्धरात्रि है भादौं की ~ अँध्यारी ११।

अधरामृत होठो के अमृत रस,का • ~ आस्वादिनि रसना ३६६६।

अधरु अधरों से • सूखे ~ न कहि आँव कछु ४१३७।

अधर्म पाप धर्म ~, ~ धर्म करि, अकरन करन करै १/१०४। ~ **बढि जाइ** पाप बढ जाता है जग ~ — ११७५।

अधर्मिनि अधर्मियों के नैन अमीन ~ कै बस १/६४।

अधर्मी पापी, विधर्मी बहुरि ~ होहि नृप, हौं तो महा ~ १/१८६।

अधार १ आधार, आश्रय अवधि ~ आस आवन को ३९७०, प्रभु मेरे तौ तुमही ~ २५२। २ आधार को जिहि ~ अनुसरई ९/४८। ३ आधार पर कौन ~ जिऐ ३५७५।

अधारि कधे के दोनो ओर लटकने वाला जोगियो का झोला जोग जुगुति हमकौं लिखि पठ्यौ मुद्रा भस्म ~ ४००४।

अधारी कधे के दोनो ओर लटकने वाला जोगियों का झोला (दे० अधारि) अब यह ज्ञान सिखावन आए भस्म ~ सेव ३४९६।

अधारौं आश्रय हे बूडत कतहुँ नाहि पावत गुरुजन ओट ~ १/२०९।

अधावट औटाया हुआ दूध जो अपने मूल का आधा रह जाता है कछु बलदाऊ को दीजै, अरु दूध ~ पीजै १८३।

अधिक १ ज्यादा : ~ तुम्हारे हैं कछु गैयाँ २४५। २ तीव्र पवन के गवन तैं ~ १/५। ३. बडी सूरदास प्रभु ~ कृपा तै १/२३।

अधिकइयै बढ़ा रहे हैं : प्रेम प्रीति ~ १/२३९।

अधिकई अधिकता दान ~ सौ लैवौ १४८५।

अधिकहि उत्तरोत्तर ज्यादा होती हुई अधिक ~ प्यास २१२२।

अधिकाइ १ अधिक खजन तैं ~ २२०३। २ अधिकता राधे तेरे रूप की ~ २७७६।

अधिकाई **वि०** अधिक, अत्यधिक ~ भाग सुहाग विराज २७५३, विकल होत ~ २८२६। **स्त्री०** १ अधिकता देखा काम प्रताप ~ १/२२९, छवि की ~ २२०१। २ चतुरता, कुशलता देखहिंगे तुम्हरी ~ ६६८। **क्रि०वि०** अधिक ही विकल भई ~ ३२५९।

अधिकाए अधिक हो गई सूरदास प्रभु पानि परसि नित काम बेलि ~ ६६१।

अधिकात अधिक होता है सारँग सुत छवि बिन नथुनी रस बिंदु बिना ~ सा० ल० ५०।

अधिकाति बढी-चढी दिनहि दिन ~ लागी अब करैगी बाद १२३४।

अधिकानी १ अधिक हो गई, वृद्धि प्राप्त की • देखत सूर अग्नि ~ ५९३। २ अधिक/तीव्र होकर दृग रकत प्रवाह चल्यौ ~ ७८।

अधिकायौ अधिक हो गए देखत-देखत अति ~ ९३०।

अधिकारिनि १ अधिकारियों • धर्म कर्म ~ सौ कछु नहि तुम्हरौं काज १/२१५। २ अधिकारिणी • वह तप ~ १३४३।

अधिकारी **पुं०** उपयुक्त पात्र ऊधौ कोउ नाहिंन ~ ३९०१। **स्त्री०** अधिकाई, ज्यादती अनजानत कीन्हीं ~ १०६६। **वि०** १ अधिकार रखने वाला • ~ जम लेखा माँगै १/१८५। २ अधिकारी बन सकता है गिरि बपुरे सौं को ~ ९१०। ३ अधिकारी बने हुए सूरदास प्रभु तहँ ~ ९०४। ४ श्रेष्ठ हरि के जन सबतैं ~ १/३४। ५ लिप्त, वशीभूत तू विषया ~ १/२२४। ६ वशीभूत कर लेने वाली, अत्यधिक : लोचन ललित, कपोलनि काजर छवि उपजति ~ ९१।

अधिकारे बहुत बहुत चौंकि परत ~ ३५७९।

अधिकी अधिक कहा भयौ ~ द्वै गैयाँ ७३५।

अधिकैऽब अब अधिक कत ~ डराहु ३२३३।

अधिकैया अधिक से अधिक जेवत रुचि अधिकौ ~ १२१३।

अधिकैहै बढेगा, अधिक होगा • दीन्हें ही ~ २२६७।

अधिकौ अत्यधिक ~ बिथा जनौव परि० १/१८२।

अधिकौ-अधिक अधिक से अधिक ~ स्याम सुख माँगत २१२४।

अधिपति स्वामी हमरे तौ गोपति-सुत ~ ३८४०।

अधिरात अर्ध रात्रि (मे/को) पट बिधु एकै रथ बैठे उदय कियौ ~ १२१६, चौंकि परी ~ ११९८।

अधिष्ठात्र अधिष्ठाता ~ तुम हौ भगवान ४३०१ ।
अधीन १ विवश, दीन, लाचार याही करत ~ भयौ हौं १/४७ । २ वशीभूत करति पियहिं ~ १०८० । ~ भए वश मे हो गए खग-मृग-मीन ~— मत्र अपनी गति बिसरायी ९९० ।
अधीनता परवशता सूरदास प्रभु की ~ देखत मेरे नैन सिरात १६१६ ।
अधीनी आश्रित, वश मे निसि दिन रहति गुपाल ~ २२४५ ।
अधीने परवश, आश्रित, वशीभूत ज्यौं डोरैं वस गुडी देखियत, डोलत सग ~ २३७८ ।
अधीन्यौं वशीभूत मन अति रहत ~ ८/१५ ।
अधीर १ व्याकुल थकित गति भयो समीर चद्रमा भयौ ~ ९१५४ । २ व्याकुल होकर सहति त्रिया ~ ३७६८ । ~ **भई तनु** शरीर विह्वल हो गया वह छवि निरखि ~— १०३७ ।
अधीरज पुं० अधैर्य पायक मन बानैत ~ १/१४१ । वि० धैर्यरहित जीवन अति सुकुमार ~ ३६१० ।
अधूरन अधूरा, अकेला सूर स्याम-स्यामा दोउ देखौं इत-उत कोउ न ~ १२८१ ।
अधेरैं अधेड (आधी अवस्था वाला) कृष्न कियो मन ध्यान, असुर इक बसत ~ ४३१ ।
अधोगति नीचे की ओर गति जनु सुरसरी ~ लीनी १९९३ ।
अधोमुख पुं० नीचे मुख किये हुए बिनै ~ नैन सूर प्रभु ३८५१, सिर तर सबी जानि ~ ११४ । वि० उल्टे मुख द्वादश ब्याल ~ भूलत ३८३७, गरभ बास दस मास ~ १/५७ ।
अध्यातम अध्यात्म बार-बार तुम कहत ~ ३९३८ ।
अनग १ कामदेव जिहि बस रहत अनत ~ २१३६, निरखि थाकित ~ १३४ । २ काम बाढत प्रबल ~ ११३६ । ~ **जीते** कामदेव को जीत लिया है अग अग ~ जीते १८१२ ।
अनॅग-उमॅग कामदेव की उमॅग अग ~ सा० ल० ८२ ।
अनॅग की ढेरी कामदेवो की राशि, ढेरों कामदेव ॲगनि प्रीति ~ १८५६ ।
अनंगत अगो की सुध भूल जाता है जाको देखि अनॅग ~ २०२० ।
अनंगबल कामबल ~ दूरि कै गोप जाकी २४९० ।
अनंगित शरीर-रहित जाकौं निरखि अनॅग ~ १४३८ ।
अनंगी कामदेव • सूरदास यह विरद स्रवन सुनि गरजत अधम ~ २/२१ ।
अनंतनि असख्य, अनेकानेक फिरी-फिरि जोनि ~ भरम्यौं १/१५६ ।

अनॅद पुं० १ आनद, उल्लास गोपिन मैं भयौ ~ परि० २/७, विविध विलास ~ रसिक १७४९ । २ आनद के बाज्यौ ~ निसान ४१८८ । वि० आनदित, प्रसन्नचित • विस्वामित्र ~ भयौ ९/२१ ।
अनॅद-बधाई आनन्दोत्सव घर-घर होत ~ ७० ।
अनॅद-रूप आनद-स्वरूप (श्रीकृष्ण) मे : नद ~ लिए कनियाॅ १०६ ।
अनॅदित १ आनदित, हर्षित मानौ गिरि पर मोर ~ ५६५ । २ आनदित होकर उठी रोहिनी परम ~ १८ ।
अनउतर निरुत्तर ~ महरि द्वै द्वार ठाढी ३०७ ।
अनउत्तर १ निरुत्तर तेरैं ~ सुनि-सुनि २८०१ । २ निरुत्तर होकर ~ कोउ कहै १६१८ ।
अनकत सुन कर मगर मोर ~ स्रवन ३०२१ ।
अनकही अवाक् रहकर । △ ~ **दै** अवाक् रहकर, चुप रह कर सूर ~— गोपिन सौ स्रवन मूँदि उठि धायौ ४१४९ ।
अनख खीझ, झुझलाहट, कुढन • धनि धनि ~ उरहनौ धनि-धनि ३८४, नैन निरखि, अग अग निरखि यौ ~ प्रिया जु तजै २८०४ । ~ **लागति है** बुरा (अप्रिय) लगता है हित की कहे ~— २८२६ ।
अनखनि क्रोध से 'सूर' इते पर ~ मरियत ऊधौ पीवत मामी ३६२९ ।
अनखाइ क्रोध करके, रुष्ट होकर अब ~ कहौ घर अपनैं राखौ बाँधि बिचारि १/१५० ।
अनखाई भभककर आगि उठी ~ ३९६८ ।
अनखाऊँ अप्रसन्न करूँ, खिझाऊँ न्हात खात सुख करत साहिबी कैसे करि ~ ९/१७२ ।
अनखात १ खीझता है इद्र आपने परिहँस कारन, बार-बार ~ । २ खीझती ब्रज बधू ~ ३१४९ ।
अनखाति खीझती है वह ~ नाउँ सुनि हमरौ १२८७ ।
अनखाती खीझती है, झल्लाती है पलक ओट निमि पर ~ यह दुख कहा समाइ ४०९६ ।
अनखानि क्रोध करती है निमि पर अति ~ १८११ ।
अनखानी झुझलाई, क्रोधित हो गई सूरदास जसुदा ~ ३१० ।
अनखारी डाह करने वाली जैसी यह ~ १२५० ।
अनखावत खिझाते हो काहे कौं ताकौ ~ २४१९ ।
अनखिहै खीझ रहे हो, क्रुद्ध हो रहे हो बेगि चलियै ~ तुम इहाँ, वह उहँ जरति है २८१० ।
अनखी चिढी हैं, क्रोधित हे हम ~ या बात कौ १६१८ ।
अनखैयत क्रोध किये काहे कौ री ~ है २६९७ ।
अनखौही अनुचित, बुरी, क्रोध की सूरदास बातें ~ नाहिंन मो पै जात सही १७०९ ।

अनगढ बिना गढा हुआ . ~ सोना डोलना (गढि) ल्याये चतुर सुनार ४० ।

अनगढी स्वयभू, जिसे किसी ने न बनाया हो कहत हौ ~ अनहद सुनत ही चपि जात ३९०२ ।

अनगन अगणित, अनगिनत जा गाये निरभय पद पाये अपराधी ~ रे १/६६, ~ भाँति करी बहु लीला ४१५७ ।

अनजानत बिना जाने, अज्ञानतावश ~ सब परे अघा मुख-भीतर माही ४३१, ~ सब करी अयानी १३९८ ।

अनजानही बिना बताये, चुपचाप डगरि गए ~ १४६१ ।

अनजाने बिना जाने, अज्ञानतावश, ~ मै करी बहुत तुम सौ बरियाई ४९२ ।

अनजानैं बिना जाने, अज्ञानतावश, नासमझी से ~ मन गर्व बढायौ ११२३ ।

अनत १ अन्यत्र, दूसरी जगह नदसुवन निसि ~ न होहिं २५३५, हरि बिनु ~ न ठाँव रे ३६१६, मयरा छाँडि ~ रति करिऐ ३०९० । ~ **न टारे** अन्यत्र नहीं टाला जा सकता यह विचारि चित ~— १७९७ । ~ **सिधारौ** अन्यत्र जाओगे . अब जु कालिह तैं ~— २७३३ । **२** और कहीं सूर मिली ढरि नँदनँदन कौ ~ नही पतियाति २४०२ ।

अनतहि अन्यत्र ही · ~ रैनि रहे कहुँ स्याम २५३५, ~ रहे जाइ कौन धौं राखे १११५ ।

अनतहीं अन्यत्र ही, दूसरी ओर सूर प्रभु ~ गमन कीन्हौ २४९५, रैनि करत सुख ~ २५२२ ।

अनतै अन्यत्र जाके गृह मैं प्रतिमा होइ, तिन तजि पूजै ~ सोइ १२/३, यह कहि ~ पगु धारे २४७८ ।

अनदेखत न देखते · सूर स्याम देखत ~ बनतन एको बीर सा० ल० ८२ ।

अनदेखे १ बिना देखे हुए देखेहु ~ से लागत २१२४ । **२** अनजाने ~ वै नैन लगे लोचन पथ माही ४१८८ ।

अनदोषे निर्दोष, निरपराध ~ को दोष लगावति २९२ ।

अनन्य एकनिष्ठ भक्ति ~ तुम्हारी होइ ७/२ ।

अनप्रासन अन्नप्राशन, बच्चे को पहली बार अन्न चटाने का सस्कार हरि ~ जोग भए ८८ ।

अनबोल चुपचाप बिछुरि रहे ~ १०४९ ।

अनबोली बिना बोले ही हौ पठई इक सखी मयानी ~ दै सैन ७४९ ।

अनबोलें मौन, चुपचाप पा लागौं तुम बडे सयाने ~ ही रहियौ ३८१०, ~ पूरौ दै निबह्यौ ४१२७ ।

अनब्योंगे बिना ब्योंत के, नासमझ ~ अलि बावरे ३६१६ ।

अनभली बुरी, निंदित, हेय भली ~ करतूति सगतिहि तैं बाँस बनभार को भई मुरली १३६३ ।

अनभले १ अनभले (दुष्ट) खरिक हूँ नहीं मिले, कहैं कहें ~ करनि दै तेहि गिले, तू दिननि थोरी १७३५ । **२** दुष्ट है, बुरे हैं ओ ~ बडाई तिनकी २२५५ ।

अनभव न होने वाले, अजन्मा (भगवान्) कहौ कहा गहियै ~ कौ ३९९० ।

अनभावत जो अच्छा न लगे ऊखल चढि सीकै कौ लीन्हौ ~ भुइँ माँ ढरकायो ३३१ ।

अनमनी अन्यमनस्क, खिन्न तबै आज ~ बत्यानी २४२९ ।

अनमारग कुमार्ग . अकरम अबिधि अज्ञान अवज्ञा ~ अनरीति १/१२९ ।

अनमिल उक्ति अक्रमातिशयोक्ति अलकार, जिसमे कारण के साथ ही कार्य का होना बताया जाता है . सूरज प्रभु मिलाप हित स्यानी ~ गनावै सा० ल० १५ ।

अनमिलत बेमेल, बेजोड · चक्रत भई मैं तुम जू कहत, ~ बात की १४९१ ।

अनमिलती बेमेल, बेजोड ~ बातैं कहति तातैं सुनियत नाहिं १४९/१ ।

अनमिलौ अनमेल का भी लै लागे ~ मिलावन २६४४ ।

अनमिष अनिमेष, आँख न झपकते ही जिनकैं बस ~ अनेक गन ४३०७ ।

अनमेष अपलक, एकटक ~ दृग दिये देखे ही मुख मडली, वर वारि २२१६ ।

अनमोली अनमोल हरषी सुभगन्नारि ~ ४२७६ ।

अनमोलै अनमोल · लागे नग ~ २८५७ ।

अनयास अनायास कृपा भई ~ ३४४३, आइ मिले प्रभु हरि ~ ४३०६ ।

अनरँग रगहीन, विकृत कारौ अपनौ रग न छाँडै ~ कबहुँ न होई /१६३ ।

अनरस उदासी से, खीझकर रस ~ सजोगिनि, बिरहिनि भरि छाँडत मन भाई २८५३ ।

अनरितु बिना ऋतु के, असमय वह रितु ~ नाहि हारत २३३२ ।

अनरीति कुरीति, कुप्रथा, अनुचित व्यवहार · यह ~ सुनि नहिं स्रवननि अब नई कहा करौ ९/९८ ।

अनरुचि बिना इच्छा के मधुकर ~ कैसे गावै ३९६४ ।

अनल १ अग्नि जैसे ~ ब्याल मुख राखे ८६७ , बिरह अनग ~ तन दाहन ३६७५ । **२** अग्निदेव · रवि, ससि, वरुन, ~ जमराजा ९५० ।

अनलहते अनहोने, अनुपयुक्त · ~ अपराध लगावति विकट बनावति बात ३२६ ।

अनलहि अग्नि की ~ औषधि अनल है २६९८ ।

अनलायक अयोग्य, नालायक . ~ हम हैं कि तुम हौ, कहौ न बाति उघारि २८८३ ।

अनसगत बेमेल, असगत अलकार · सूर ~ जनावत मा० ल० ३७।

अनसमै असमय, बेमौका रितु बसत ~ अधम मनि पिक सहाइ लै बावनि ४१४७।

अनसूया अनसूया, अत्रि मुनि की पत्नी ~ के गर्भ प्रगट ह्वै कियौ योग आराधि मारा० ६०।

अनसेर इन्तजार, चिन्ता तुव ~ करत मव ह्वै है १६९०।

अनहद हठ योग के अनुसार शरीर मे स्थित छह चक्रों मे से एक, अनाहत · कहत हौ अनगढ़ी ~ ३९०२।

अनहित १ शत्रु, हित न चाहने वाला · हित सौं बैर, नेह ~ सौं २८२६। २ बुराई, अपकार बाल-विनोद वचन हित ~ १/६०।

अनहोनी असभव बात : ~ कछु भई कन्हैया १८९।

अनागत क्रि०वि० अनजान, अज्ञात अथवा भविष्य की सकित वचन ~ कोऊ कहि जु गयौ अधरात २९८१। वि० १ अनादि, अजन्मा नित्य, अखड, अनूप ~। २ अपूर्व, अद्भुत कोक, ~ क्रीडा पर रचि २६२२। ३ व्यर्थ की, अनर्गल · बातैं कहत ~ १५०७।

अनाघात अनाहत, सगीत मे ताल का एक भेद उपजावत गावत अति सुन्दर ~ के ताल १२१६।

अनाचार अनाचार रूपी · ~ सेवक सौं मिलि कै करत चवाइनि काम १/१४१।

अनाथ निराश्रित, असहाय, दीन-हीन ह्वै गई सबै ~ मा० ल० २६, ह्वै ~ रघुनाथ पुकारे ९/१४७।

अनाथनि अनाथों (की) नाथ ~ की सुधि लीजै ३१९०।

अनाथ-बंधु असहायों के बधु (सहाय) श्री रघुनाथ ~ सों ९/१४४।

अनाथा असहाय नहिं मोतैं कोउ और ~ ९५०।

अनादि जिसका आदि न हो, नित्य अटल शक्ति अविनाश अधिक बल एक ~ अनूप सारा० ६३१, तुम प्रभु अजित ~ १/१८२।

अनायास बिना प्रयास के ~ चारिहुँ फल पावै १/२३३।

अनारँगी नारँगी (स्तन) विकच कज ~ पर लसित करन पय पान २१३२।

अनारी अनाड़ी, नासमझ · ऐसी कौन ~ ३९६५।

अनासाहर अनाश वाली, जीवनप्रद जलचर जा सुत सुन सी नामा, धरै ~ मा० ल० ३१।

अनाहतबानी आकाशवाणी, देववाणी मोकौं भई ~ तातैं सोच न दई ४।

अनियारी नुकीली, कँटीली · ~ अतिहिं विसाल चपल ~ २२०५ · निकसी नभ कमली ~ ११९४।

अनियारे तीक्ष्ण, नुकीले · मनमथ बान दुसह ~ २७३९, चपल नैन दीरघ ~ २९३६।

अनियारैं चुभने वाले, तीक्ष्ण . वचन हरति ~ २२२०।

अनियारौ नुकीला, तीक्ष्ण प्रान लै गयौ बान ~ ९/१५९।

अनिरुद्ध श्रीकृष्ण के पौत्र, प्रद्युम्न के पुत्र जिनको बाणासुर की पुत्री ऊषा ब्याही थी पुनि ~ भेद नारद के चित्ररेखा हरि लीन्हो मारा ७००, फाँसि करि कुँवर ~ बाँध्यो ३१०७।

अनिल वायु से मुख कै ~ सुखावत स्रम जल १२००।

अनिलवर्त्त एक राक्षस-विशेष, जो आधी, अक्कमड ला देता था ~, नलवर्त्त, वज्रव्रत। बोलत चले आपना बानी ९२६।

अनी १ नुकीले ह जुग नैन ~ २१८४। २ समूह, सेना दल नारदादि, सनकादि प्रजापति, सुर, नर, असुर ~ २/२८।

अनीक सेना, समूह मारग सुन नीकन मे मोहत मनो ~ निकार मा० ल० ३१।

अनीत १ नेत्रहीन, अधा मेरे जान ~ नयन कौ, कीना विधि उन बारौ सा० ल० ३८। २ अनीति सीस बेनी गूँथि, लोचन आँजि करी ~ २८७६।

अनीति अन्याय, दुराचार मारग चलत ~ करत है ३३८।

अनीतिभिति अनीति की सीमा अति ~ देखि कै २९१४।

अनीह इच्छारहित, नि स्पृह अज ~ अविरुद्ध एकरस यहै अधिक ये अवतारी १७१।

अनु अणु। ~ **अनु** चूर चूर : मनहु मान-गढ ~— भानी २८४६।

अनुकूल पक्ष मे, मुवाफिक भए ~ हरि १०।

अनुकूले एक-दूसरे किनारे, बिछुडे बैठे बिछुरि दुहूँ ~ २९०१।

अनुकूल्यौ अनुकूल निरखि स्याम आपुन ~ ७९९।

अनुक्त बिना कहा हुआ, अकथित है कहा सूर ~ मा० ल० ९३।

अनुक्रम क्रम मे ~ कथा सुनाई २८१६।

अनुघातन नाशक, मारने वाले अघ अरिष्ट धेनुक ~ ९८२।

अनुच नीच, अश्रेष्ठ इहि विधि उच्च ~ तन धरि धरि, देस-बिदेस बिचरतो १।२०३।

अनुचर दास, सेवक हा ~ रघुपति कौ ९/८४।

अनुज १ छोटा भाइ ~ धरनि सँग गए बनचारी १/१०८। २ छोटा भाई (लछमण) कह्यो ~ सौं, रहौ त्यों तुम, छाँटि जनि कहु जाइ ९।६०। ३ छोटा भाइ (विभीषण) लकापति कौ ~ सोन नायौ ९/१११।

अनुज्ञा निषेधाज्ञा, मनाही, एक अलकार करन ~ भूषन मोकौं मा० ल० ६८।

अनुदिन प्रतिदिन, नित्य ~ सुर-नर पच सुधा रस, चिंतामनि सुरधेनु ४८७, यहै प्रकृति परि आई उधौ ~ ४०३१।

अनुदिनहि प्रतिदिन ~ उपराग आन रचि २३८८।

अनुप बेजोड, अपूर्व हारि मानि उठि चल्यौ दीन है, मानि

~ तन खेद ४१२८ ।
अनुपम उपमारहित, अनोखा · खिरक ठाढौ देख अद्भुत, एक ~ मार सा० ल० १४, ~ अधरनि की अरुनाई ७१६ ।
अनुभवत अनुभव करती है पुन्य फल ~ सुतहिं बिलोकि कै नँद चरनि १०९ ।
अनुभूत अनुभव किया हुआ बदत नृप दूत ~ उर भीरुता ४२१३ ।
अनुभेद उपभेद कौन बडो को छोट भेद ~ न जानैं ५८९ ।
अनुभौ अनुभव करने वाले तुम ~ पद ल्याए ३७९१ ।
अनुमान १ अदाज, अटकल बुद्धि, विवेक ~ आपनै, सोधि गह्यौ सब सुकृतनि के फल १/२०४ । २ विचार, निश्चय सूर, प्रभु ~ कीन्हौ, हरो इनके चीर ७८३ । ३ मूल्याकन चित्त चकित ~ न पावति ७ । ४ अनुमान अलकार, जिसमे अटकल के आधार पर कोई बात कही जाय ~ यह गयौ कालीतट सूर सॉवरो माई सा० ल० १०१ ।
अनुमानत १ अनुमान करते कहौ कहा ~ है २३२७ । २ अनुमान करके ही ~ अनुराग अमोल १७९३ ।
अनुमानति १ अनुमान कर रही, विचार कर रही सूर-स्याम अँग अँग की शोभा, देखी कै ~ है १८३४ । २ अनुमान लगाती हूँ जिय ही जिय ~ हौं २८१८ ।
अनुमानि अनुमान करके, विचार करके यह ~ २८२५ ।
अनुमानैं अनुमान ही है : कहिबे के ~ ७३० ।
अनुमानै १ अनुमान करता है : अति निधरक ~ १४७६ । २ अनुमान करती है कह्यौ चहति कहत न बनै मन ही मन ~ २६५१ । ३ अनुमान या समझ मे आता है कहा रही मन घालि, न कछु ~ जू २८१० ।
अनुमानौं अनुमान करती हूँ, सोचती हूँ निमिष, मेटि वह छवि ~ १८५१ ।
अनुमान्यौ अनुमान किया, विचार किया मन ही मन ~ १९५० ।
अनुरक्त लीन होकर चित मे यह ~ बिचारत सारा० ४८ ।
अनुरत लीन, आसक्त . चरननि चित्त निरतर ~ १/१८९ ।
अनुराग पुं० १ प्रेम · सुमति सुरूप मँचै स्रद्धा-बिधि, उर अबुज ~ २/१२ । २. प्रेम (पूर्वक) . कह्यौ भागवत सुक ~ ११८० । वि० प्रेम-मग्न मनु ससि ~ चकोर १७६१ ।
अनुराग-अमोल अमूल्य प्रेम · अनुमानत ~ १७९३ ।
अनुरागत १ प्रेम करता है, लीन होता है कैसे मन इन सौं ~ १६३३ । २ प्रेमासक्त होता है इत सनेह अँग-अँग ~ २१२४ । ३ प्रसन्न होता है आपु-आपु ~ ६४५ । ४ प्रेम या अनुराग करते है : सूर-स्याम राधा-बर ऐसे, प्रीतिहिं, तैं ~ १९०५ ।
अनुरागति प्रीति बढाती है, आसक्त होती हैं . गूँगी बातनि यौ ~ १०७ ।
अनुरागनि १ अनुरागिणी सुनि राधिका परम बडभागिनि ~ हरि केरैं (री) २०७१ । २ प्रेम के कारण, प्रेम से ~ नमि नीठ २३७२ ।
अनुरागरि अनुरागिणी (राधा) मिलन प्रकास मनावत मन मन, कहा कहौ ~ कौ २०१९ ।
अनुरागहि अनुराग मे कहा कुटुब के बैन न, श्रीपति ~ ४१८८ ।
अनुरागहु अनुराग भी . ~ तेरे ही माथैं २८०१ ।
अनुरागि अनुरागपूर्वक, लगन के साथ, सप्रेम पुहुप मजरी मुक्तनि-माला अँग ~ धरे ६८९ ।
अनुरागिनि प्रेम करने वाली धन्य स्याम ~ २४४४ ।
अनुरागी १ प्रेम मे मग्न, प्रेमी स्याम, सुरँग ~ ३९०३, पवन मधुप ~ ३५३२ । २ अनुरागिणी · राधा नदनँदन ~ १९०९ । ३ अनुरक्त ऊधौ अँखिया अति ~ ३५७७ । ४ प्रेम मग्न हो उठा, खिल उठा · सुदर बदन बिलोकि कै, अँग-अँग ~ १९६५ । ५ स्नेह हो गया जान्यौ सकल देव ~ ४ ।
अनुरागूँ स्नेह करूँ जैसे धेनु बच्छ को चाटत, तैसे मै ~ सारा० १३३ ।
अनुरागे १ प्रेम मे डूबे हुए, प्रेमासक्त आजु लालन लटपटात माई आए ~ २६४३ मद-मद गरजनि बोलनि ~ २१७७ । २ आप्लावित होकर आवत है रति रँग ~ २१७९ । ३ स्नेह से भरकर दशरथ राम आपुजेंवत है अति आनँद ~ सारा० १८५ । ४ अनुरक्त हो गये देव लोक देखत सब कौतुक बाल केलि ~ ४१६ । ५ प्रेम विभोर हुए ग्वाल-मडली प्रगट देख ~ सारा० ५१० । ६ प्रेम से विह्वल होकर रोवत है ~ २३५८ । ७ प्रेम कर लिया है स्याम कमल पद सौं ~ २२७८ ।
अनुरागैं अनुराग करते है, अनुरक्त होते हैं हँसनि प्रकास सुमुखि कुडल मिलि चद सूर ~ ३५३० ।
अनुरागौ प्रेम करो, अनुरक्त रहो, प्रीति रखो हरि चरनारबिंद ~ ७/२ ।
अनुराग्यौ अनुराग किया सिव पद-कमल हृदय ~ ४/५ ।
अनुराध अनुरोध, विनय, प्रार्थना सूर स्याम मन देहि न मेरौ पुनि करिहौ ~ १८८६ ।
अनुराधौ अनुनय करोगे मैं आजु तुम्हें गहि बाँधौ, हा-हा करि-करि ~ १८३ ।
अनुराध्यौ आराधना की, विनती की, मनाया हरि मन ~ १९६६ ।
अनुसरई अनुसरण करे, साथ चले जिहिं अधार ~ १/४८ ।
अनुसरत अनुसरण करता है, पीछे चलता है जो नाहीं ~ नाम

जग १/२११।

अनुसरति अनुसरण करती है वाल-भाव ~ २६०१।

अनुसरतौ अनुसरण करता हौ तिनकौं ~ १/२०३।

अनुसरिए अनुसरण कीजिए का विचारि ~ परि० १/१३६।

अनुसरिहैं अनुसरण करेंगे कहत चरित रघुनाथ सरस्वति वौरी मति ~ सारा० ३१५।

अनुसरिहौं अनुसरण करूँगा, मानूँगा तुम्हारी आज्ञा मैं ~ ९/२।

अनुसरिहौ १ अनुसरण करूँगा प्रिय अक कुकुम कर राते ताही कौ ~ सारा० ५६६। २ अनुसरण करोगी जोग-पथ क्रम-क्रम ~ ४०९४।

अनुसरी १ अनुसरण की हरि-अवज्ञा तुम ~ १/२९०। २ ग्रहण किया मो तामस कर मन ~ ३/७।

अनुसरे अनुसरण करेगा सो महजहि मम पद ~ ११/४।

अनुसरैं अनुसरण/अनुकूल-आचरण करते ह ताही को मारग ~ ५/२।

अनुसरै १ अनुसरण करते है जो भक्तनि क वस ~ १/२७७। २ पालन करते हैं ध्रुपनि आयसु सब ~ १/२८४। ३ अनुसरण करे, नकल करे भक्ति-पथ का जो ~ २/२०, २/२१।

अनुसाँचै उसके अनुसार हो जाय मन वच क्रम ~ १/८१।

अनुसार अनुकूल खजरीट, मृग, मीन, मधुप, मिलि, रभा रुचि ~ २७६३।

अनुसारी स० क्रि० उच्चारी तव ब्रह्मा विनती ~ ७/२। संव० के अनुकूल सर इन्द्र पूजा ~ तुरत करो सव भोग सँवारौ ८९०। वि० अनुरूप सूरदास मम रूप नाम गुन अतर अनुचर ~ १७१।

अनुसारैं समान (हो गया है) • चढ अगिनि ~ ३५४८।

अनुसासन आदेश, आज्ञा यौरनि को जम क ~ १/१९७।

अनुसुया अनसूया, अत्रि मुनि का पत्नी रुचि कैं अत्रि नाम सुत भयौ, व्याहि ~ सा सो दयो ८/२।

अनुहरत उपयुक्त, अनुकूल तनु ~ भूपन भरन १०९।

अनुहार १ एकरूप, समान . खजन नैन बीच नासापुट राजत यह ~ सारा० १७५। २ चेहरे की वनावट, आकृति समुझि-समुझि ~ स्याम की ३६६७।

अनुहारि वि० १ समान चचल नैन चहूँ दिसि चितवत, जुग खजन ~ २११८, इ अँग-अँग मारँग का ~ २७७१। २ समान (सुदरता मे) चित दै सुनहू स्याम सुदर छवि, रति नाहीं ~ २११४। संज्ञा स्त्री० १ रूप, आकृति सुर सुर नर सबै मोहे निरखि यह ~ ११८। २ (इस) प्रकार सदन-रज-तन स्याम सोभित, सुभग इहिं ~ १६९। ३ वैसे ही बहु मिष्ठान्न बहुत विधि भोजन बहु व्यजन ~ ९५६। ४ जैसा, समान गिरिवर स्याम की ~ ८३७।

अनुहारी अनुसरण करने वाली भई मनौ ~ ३१९१।

अनुहारे समानता (मे) वै अपने सुख ही के गते तजियत यह ~ ३७५८।

अनुहारौ सदृश, समान कदली जुगल जघ ~ २७५१।

अनूज्ञा आज्ञा अनुज्ञा अलकार करत ~ भूपन मोको घन-स्याम चित आवै सा० ल० ६८।

अनूढा न्योछावर, अनूढा नायिका सूरज प्रभु पर होहु ~ सा० ल० ०।

अनूप १ अद्वितीय, अनुपम, वेजोड, अनोखा, अतुलनीय नख-सिख-रूप ~ विलोकत २२१९, देख री वृषभानुजा की दसा आज ~ सा० ल० ५९। २ अनोखी (वेजोड) मुरली स्याम ~ वजाई ९८९।

अनूपम अनोखा, अनुपम, वेजोड अद्भुत एक ~ बाग २११०, अविगत आदि अनन्त ~ अलख पुरुष अविनाशी सारा० १।

अनूपी अनोखा, वेजोड, अनुपम धन्य जोवन रूप अति ~ १७८८।

अनेत अनीति, अन्याय कहे दोउ तजि निरह ~ परि० १/१४४।

अनेरी सगरत, अँधेर . आनँद उर नहिं समात बात है ~ २७५।

अनेरे पुं० १ दूर से, अन्यायी, दुष्ट और देव सब एक भिखारी त्यागे वहुत ~ १/१७०। २ निरकुश लोक वेद कुल-कानि न मानत अनिहिं रहत ~ २३५२। वि० व्यर्थ, निरर्थक वारे ही त इनके ये ढग चचल, चपल ~ २३९६।

अनेरौ पुं० झूठा, अन्यायी, दुष्ट अजहूँ निय जानि मानि कान्ह है ~ २७६। वि० कटु, चुभते हुए रे रे चपल, विरूप, ढीठ, तू बोलत वचन ~ ९/१३२।

अनैस वुरी तरह मोट को यह गर्व सागर भरी आइ ~ सा० ल० १७।

अनैसी वुरी : तरुनिनि की यह प्रकृति ~ थोरेहिं वात सिसात १७७३।

अनैसे बुरे • गाध स्याम ~ १२५४, कहँ स्याम ~ १२९१।

अनैसैं रुठे • स्याम-रूप धन माँक समाने, सौंपि रहे ~ २३०२।

अनोखे अनूठे, निराले मेरे ~ ढोऊ सा० ल० १०२।

अनोखौ १ अनूठा, विचित्र : नई री पून ~ जायौ ३३१। २ निराला : काके नहीं ~ ढोटा ३३९।

अनोन्या एक अलकार, परस्पर : दोऊ लगन दुहुन तें सुन्दर भले ~ आज सा० ल० ४३।

अनौपी अनोखी • नित नितयौ फिरि दिखा ~ परि० २/२६।

अन्न अनाज • यहि मज ~ न खाऊँ ३२५३, रोहिनि करति ~

भोजन ८९२।

अन्नकूट १ अन्न का पर्वत : ~ ऐसौ रुचि राख्यौ, गिरि की उपमा पाइ ८३२। २ एक पर्व जो कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा को मनाया जाता है • ~ विधि करत लोग सब, नेम सहित करि-करि पकवान ८१६।

अन्न कौ कोट अन्न का ढेर : जैसे हैं गिरिराज जू तैसौ ~ ८४१।

अन्यत्र दूसरी जगह : रहत न सो ~ ४/१२।

अन्याइ अन्याय, अनीति • पुत्र ~ करै बहुतेरै ५/४।

अन्याइनि अन्याय करने वाली (मुरली) यह छिनारि लपट ~ कुल दाहत नहि बार १२९४।

अन्याई स्त्री० अन्याय • सेए नाहि चरन गिरिधर के बहुत करी ~ १/१४७। वि० अन्यायी : कहा कर्‌यौ तैं विप्र ~ ५७।

अन्याव अन्याय . करत ~ न बरजौ कबहूँ, अरु माखन की चोरी ३१७६।

अन्योन्या परस्पर, एक अलकार : सुन्दर भले ~ आज सा० ल० ४३।

अन्हवाइ स्नान करा के, नहलाकर फूली फिरति जसोदा तन मन, उबटि कान्ह ~ अमोल ९४।

अन्हवाऊँ स्नान कराऊँ, नहलाऊँ • मोहन, आउ तुम्हैं ~ १८५।

अन्हवाए स्नान कराया . अँग सुगंध मर्दन कियौ तुरतहिं ~ २४८९, गोवर्धन दूधहि ~ ९०६।

अन्हवाऐ स्नान कराने से, नहलाने मे • गज कौ कहा सरित ~ बहुरि धरै वह ढग १/३३२।

अन्हवायौ स्नान कराया . मर्दन करि ~ ४२३२।

अन्हवावति स्नान कराती है, नहलाती है : बलि बलि गई काहि काहि ~ ५१४।

अन्हवावन स्नान कराने को, नहलाने को जसुमति जबहि ~ रोइ गए हरि लोटत री १८६।

अन्हवावहु स्नान कराओ, नहलाओ बिप्रनि कह्यौ याहि ~ ५/३।

अन्हाइ १ स्नान करके . ज्यौं गयद ~ सरिता बहुरि वहै सुभाइ १/४५। २ स्नान कराके : प्रथम दूध ~ बहुरि गगाजल डार्‌यौ ८४१।

अन्हाउँ स्नान करूँ . गहिरे नीर ~ ४१७५।

अन्हाए नहाने . समुद तीर कौ जात ~ ९/१५०।

अन्हात १ नहाते हुए, स्नान करते हुए : कुसल रहे बलराम स्याम दोउ खेलत, खात ~ ५५७। २. स्नान करते समय . काली काल रूप दिखियत है, जमुना जलहि ~ ४०६९।

अन्हान स्नान करने/नहाने (को) : यह कहि कै रिसि गए ~ ९/५।

अन्हायौ स्नान किया • आजु राधिका रूप ~ ५६११।

अन्हावहु स्नान कराओ, नहलाओ : कान्ह कह्यौ गिरि दूध ~ ९०६।

अन्हावै स्नान करे, नहाए बेद धर्म, तजि कै न ~ ५/२।

अन्हैबो स्नान करें, नहाएँ नँदनंदन हमकौं देखैंगे कैसे करि जु ~ ७७९।

अपंग अपग (निहत्थे) हाव-भाव सर लरत कटाच्छनि, भृकुटी धनुष ~ २२८८।

अप १ अपना मगन भई ~ बपु न सम्हारति २९०१। २ अपने : कहियै ~ जी कौ ५९३४। **~माही** आप मे ही . सो तो है ~— ३९५४।

अपकर्म दुष्कर्म, बुरा काम : जुवती सेवा तऊ न त्यागै, जो पति कोटि करै ~ १०१५।

अपकाजी स्वार्थी, मुख्यत अपने ही काम का ध्यान रखने वाला • अहकारि लपट ~ सग न रह्यौ नदानी २०७७।

अपकारी अनिष्टकारी विरहनि अरु कमलिनि त्रासत कहुँ ~ रथ नहियत ३३५५।

अपगौ अपनी इद्रियो का • ~ जोग सँति किन राखहु ३५२७।

अपजस अपयश, बदनामी • ~ स्रवन अलेखे ३५३०।

अपजसहू अपयश से भी : जस ~ न डरत २०९१।

अपजोग बुरा योग सखि सीखे हैं ~ ३५९०।

अपडर डर, भय . कामधेनु आयौ लिए इद्र ~ डरि ९५२।

अपडाउ रार, झगडा . जन्महिं तैं ~ करत हैं २९२६।

अपडारे त्रस्त किया है : सुफलक सुत कछु भली न कीन्हीं, बैठे ही ~ ४०१०।

अपत वस्त्रहीन, नगी • तौ मेरी ~ करत कौरव सुत होत पडवनि ओते १/२५९।

अपतई निर्लज्जता • अतिहिं करी उन ~ हरि सौ समताई ५५५३।

अपथ कुमार्ग • ~ पथ लौ लायौ ३७४४, भ्रमत निसि-बासर ~ पथ १/५६।

अपद विना पैर के जतु (मछली, साँप) • ~ दुपद पसु भाषा बूझत ८/१४।

अपदाव चालबाजी, चालाकी . ऐसे ~ सब इनहि कीन्हे २२४०।

अपन-अपन अपना अपना : आठौं लोकपाल तब किए ~ अधिकार सारा० २०।

अपननि अपने . बूझति नहीं जाइ ~ कौं १९७३।

अपनपौ अपनापन (अपना स्वत्व) मोहि ~ भूल्यौ २७७४।

अपनाइ अपनाकर सुनहु 'सूर' ~ इनहुँ कौं २२५५। **लियौ** अपना लिया मन ~ १६७१।

अपनाई ग्रहण की, शरण मे लिया • भक्त जानि कै सब ~ ४२९७।

अपनाऊँ अपने वश में करूँ · सूर स्याम बिन देखे सजनी कैसे मन ~ २१०६।

अपनायौ अपनाया · कृपा-निधान सुदृष्टि हेरियै, निहिं पतितनि ~ १/२०५।

अपनियाँ अपनी · प्रेम विवस कछु सुधि न ~ १०६।

अपनिहि अपनी ही : ~ आगि दह्यौ कुल अपनौ १२४३।

अपनी स्व। △~ **सी बुधि पाई** विलक्षण बुद्धि पाई · अपने मे कर चरन नैन-मुख ~— १/१९५। △~ **सु जु करी** अपनी सी—मनमानी—की : घूँघट-ओट किए राखति ही ~— २३५०। △~ **अपनी** स्वार्थ दिखाते हैं, केवल अपनी ही चिंता करते हैं : कहा कृपिन की माया गनियै करत फिरत ~— १/३९। △~ **सी कीन्हीं** शक्ति भर प्रयत्न किया, भरसक चेष्टा की ~— मैं बहुतै कीन्हीं, रहति न तेरी आन। ~ **करी** अपना बनाया : ताहि ~— चले आग हरी ३०५१। ~ **गति बिसराई** अपनी सुधि-बुधि खो दी : खग मृग मीन अधीन भए सब ~— ९९०। ~ **प्रकृति लिए** : स्वाभाविक रूप युक्त · ~— बोलत हा ९/१६५।

अपने करि लीन्हे अपना बना लिया : उनि ~ री २२३६।

अपनेहि अपने ही · ~ मन दुख पावै ११११४।

अपनेहीं अपने ही · ~ सुख के पिय चाँडे, कबहू तौ बस आवहुगे २५२५।

अपनैं १ अपने : जसुमति सुत ~ पाइनि चलि ३५, तव सुधन्न ~ गृह आयौ ९/२, ~ औगुन कहँ लौं बरनौं १/१८४, मैं ~ कुलकानि डरानी १८८६। २ अपने यहाँ : ~ देखि चले कौ यह सुख ९/८७। ~ **अपनैं** अपने-अपने ~— रस विलास, काहू नहिं चीन्हौ ३९४। ~ **कर** अपने हाथों : ~— करि ताहि नरायौ ९/६६। ~ **चोप** अपनी इच्छा होने पर भी : ~— बहुत कहैं पइयै १८१२। △~ **ही सिर मानि लियौ** अपना दायित्व समझ लिया : सुनि सजनी यह करनी अपनी ~— री १८२८।

अपनैं बल अपनी शक्ति से . अब कैसे जैयतु ~ २८७।

अपनैं रँग अपनी मस्ती मे, अपने रंग मे रतन-जटित किंकिनि पग-नूपुर, ~ बजावहु १७९।

अपनैं हीं अपने ही . मूँड़ परै ~ २१५०।

अपनै १ अपने · ~ उर धरिहौं १८८७। २ आपको ते लोचन क्यों जाहिं और पथ लै पठये ~ ३६६६।

अपनै हीं अपने ही . ~ सुख मरत निसादिन २२६५।

अपनो अपना : दिन दस गएँ देवकी ~ वदन विलोकन लागी ४।

अपनोइ अपना ही · ~ पेट भरत हैं निसि-दिन २२६७।

अपनौं अपना : ~ काज करयौ २०९८।

अपनौ १ अपना · कृपा करी निज धाम पठायौ ~ रूप दिखाय सारा० १६१, कारौ ~ रंग न छाँडै। २ अपने · ~ ब्रह्म दिखावहु ऊधौ ३८०४। ३ अपनी · जुद्ध हित करक ~ हकारयौ ८१६१।

अपनौई अपना ही . अधर-रस ~ करि लीन्हौ १३०२।

अपनौ करि अपना समझकर : झूठौ सुख ~ जान्यौ १/६५।

अपनौ सौ अपना सा ही (अपने जैसा) : ~ जिय सब कौ जानि १२/२।

अपबंस अपने वश का हो · असुर कंस ~ बिनासन १०।

अपबल आत्मबल · गयौ ~ गाहि परि० १/४७।

अपबस वशीभूत, अपने वश मे . ~ करि इनकौं हरि लीन्हौ २३७७। ~ **करि पाऊँ** अपने वश मे कर पाऊँ · जो बिधना ~— १८४७।

अपमानत अपमान करते ह धाए जात तहीं कौं फिरि-फिरि, वै किननौ ~ २३१३।

अपमानतहू अपमान से भी : ~ मुडित, मूढ़ २०९१।

अपमानहि उल्लंघन होने को . डरपत हौ आज्ञा ~ ९/०७।

अपमानैं अपमान करती हैं · कोउ आदरैं कोउ ~ २४७५।

अपमारग बुरा मार्ग : चोरा, ~, बटपारयौ, इन पटतर के नहिं कोऊ ह १५८०।

अपमारगी बुरे मार्ग पर चलने वाला, कुमार्गी : ~ अन्यायी ये २२८५।

अपर १ दूसरा ~ कैसे जानी जानी ३८०९। २ दूसरे . ~ जोग कुसलात ३९७७।

अपरस १ (अस्पृष्ट) अलिप्त, अनासक्त, : ~ रहत सनेह तगा ते ३९५८ २ स्पर्श के बिना : ~ रटन उघारे ३५०४।

अपराधहि अपराध के : मारयौ मुनि बिन हीं ~ २२१।

अपराधिनि अपराधिनी : मैं ~ जानत बिछुरी ३२२९।

अपराधु अपराध · चारौ मुख अस्तुति करत छमौ मोहिं ~ ४९२।

अपराधौ अपराध · सुनौ सखी मेरोई ~ १८००।

अपरिमित अनन्त कृपा सिंधु अपराध ~ छमौ, सूर तें सब बिगरी १/११०।

अपरिमित-महिमा अपरिमित महिमा वाला . अलख, अनंत, ~ कटि तट कसे तुनीर ९/२६।

अपलोक अपयश, बदनामी · वृथा कत ~ लावत ३६९१।

अपसगुन अपशकुन : इहाँ ~ होत नित न १/२८३।

अपसमार रोग-विशेष, मिरगी, मूर्च्छा, (सञ्चारी भाव) ~ जहँ सूर समारत बढ विषाद उर पेरयौ सा० न० ६६।

अपसरा अप्सराएँ महम ~ सुंदर रूप ११/३।

अपसोसनि अफसोस या चिंता मे : तातैं सब सखियन ~ ४२५८।

अपसोसैं चिंता करते है मन ही मन ~ १६८२।

अपसोस्यौं चिंता करता हूँ राधा-कान्ह एक सँग बिलसत मन ही मन ~ १२२१।

अपस्वारथ अपने स्वार्थ · ये नैना ~ के २०८३।

अपस्वारथी स्वार्थ साधने वाला · अपराधी ~ मोकौं बिसराई २२५३।

अपहारी अपहरण करने वाला · भाजि पताल गयौ ~ १९६।

अपान १ अपेय, विष . कनक कलस ~ जैसे ३४१२। **२** अपेय, न पीने योग्य : भच्छि, अभच्छ ~ पान करि कबहु न मनसा धापी १/१४०।

अपार १ अनन्त, असीम : सोभा देति ~ ३७४९ । **२** अपरिमित तिन बाढ़यौ सुजस सारा० ८४० । **३** पहुँच के परे : (हरि) जस ~ स्तुति पार न पावे ३। **४** असख्य, अनेक . गृह गिरि-कदर करे ~ २/२०।

अपारा अपार, अनत : जिहिं गति अगम ~ ४।

अपारौ असीम, अनत, अपार · सरिता नैन ~ १/२०९।

अपुन १ अपने · ~ भरोसैं लरिहौं १/१३४ । **२** आपस (मे), परस्पर : कहन लगे सब ~ मैं सुरभी चरैं अघाइ ४३१। △ **~ करि** अपने अनुकूल बनाकर, अपना बनाकर . तौ को अस त्राता जु ~— कर कुठाँव पकरैगो १/७५।

अपुन तै अपने से अब वै पलक न देत ~ ३५३१।

अपुनपौ १ अपने आप को · रही ~ सानि ३८०६। **२** आत्म भाव, अपना पन : हठि ~ बँधायौ ११८९। **३** निज स्वरूप : इन्द्री स्वाद बिवस निसि बासर आप ~ हारौ १/१५२ । **४** अपना . कछुक जनाऊँ ~ अब लौं रह्य सुभाउ ४३१। **५** अपना स्वरूप : अगनित गुन हरिनाम तिहारै अजौं ~ वारौ १/५७। **~ राखै** आत्मरक्षा करे : वाकौं मारि ~— ६०।

अपुनौ स्वय, अपने · मनौ बिस्वकर्मा कर ~, रचि राखी गिरि-सीस ९/७५।

अपूठी उल्टी : रावन हति लै चलौं साथ ही, लका धरौं ~ ९/८७।

अपूठे अपूर्ण . हौ रस माँह ~ ३८९१।

अपूरब अपूर्व सेवाहीन ~ दरसन ३८६३।

अफनात घबराता है · पट जाल बाभि ~ १२०६।

अबकैं अबकी बार, इस बार : ~ यह ब्रज फेरि बसावहु ४०९०, तौ ~ वह मोहनि मूरति मोहि दिखावहु आनि।

अबतैं अब से : ~ सबकौं नेम धरौ २७३३।

अबध अवध्य · सिव न ~ सुदरी बधौ जिन २११७।

अबर अन्य, और : ~ न करहौ चेली सा० ल० ८४।

अबरन वर्णशून्य, अरूप : (हरि) ~ बरन सुरति नहिं धारै ३।

अबल बलहीन, निर्बल · गिरिधर नारि ~ अति कीन्ही २६२२, ये इत ~ अहीठ २३७२। △ **~ हुतासन मद्ध निकासौ** अजोर और अगिन के मध्य वर्णों के मिलाने से, जोगि अर्थात् योग : ~ हुतासन केर सँदेसौ तुमहूँ मद्ध निकासौ सा० ल० १०४।

अबलनि १ अबलाओ ~ अकेली करि अपने कुल नीति बिसरी अवधि सँग सकल सूर महराइ भाजै २८१६, मोहत कित सूरज ~ कौं ३७११। **२** अबलाओ के : ~ तन धौं चाहि ३७०५। **३** अबलाएँ : काम -नृप ससि नेव ~ दुर्ग ३७६८। **~ कौ १** अबलाओं का · ~— दुख ऐसौं ४०७६। **२** अबलाओं के · प्रति अब कह निठुर भए ~— ३५३७।

अबला १ अनाथ नारी · मन मैं डरी, कानि जिनि तोरै मोहि ~ जिय जानि ९/७९ । **२** राधा की एक सखी का नाम अमला, ~, कजा, मुकुता, हीरा, नीला, प्यारी २००८।

अबलौ अब तक · ~ कहुँ देखे नाही मैं तुम हौ अति सुकुमार सारा० ६०८।

अबलौं अब तक : सूर स्याम ~ तुहिं बकस्यौ, तेरी जानी घात ३२९, माँगत दान दही को ~, अब कछु औरै ठानी १४७४।

अबहि १ अभी : तब हरि कह्यौ कोउ जिन डरपे ~ तुरत मैं जैहौं सारा० ७७, ~ सिला तैं भई देव-गति। **२** अब भी चित कौ चोर ~ जौ पाऊँ, हृदय कपाट लगाइ, जतन करि अपने मनहिं मनाऊँ १९२९। **३** अब, अब तो कालिह कछु और, प्रातहिं कछू और ही, ~ कछु और ह्वै गई प्यारी १७२९। △ **~ करति बिनु पानी** अभी बेइज्जत करती है मेरी बात गई इन आगै ~— १७६७।

अबही अभी · मैं तुमकौं ~ बाँधौंगी १९३४, झझकि उठ्यौ सोवत हरि ~ २००।

अबहीं अभी सूर-स्याम बहुरौ मिलि बिलसहु जाति अवधि ~ २६०२।

अबहुँ अभी हरि कह्यौ ~ बुलावहु ताहि ४३०३।

अबहूँ अभी तक ~ वर्ण न पाये सारा० ५११।

अबाधौ निर्बाध रूप से, अपार · सँग खेलत दोउ झगरन लागे, सोभा बढ़ी ~ ७०५।

अबाधौं निर्बाध रूप मे, बिना रोक टोक के करिहै कहा अक्रूर हमारौ दैहै प्रान ~ २९७१।

अबार १ अविलम्ब, अभी-अभी . बान रहित जा पति पतिनी से बँधि बार ~ सा० ल० ३१। **२** विलम्ब, देर : बन मैं आजु ~ लगाई ४७१। **३** बिलब/देर से · पाँव ~ सु धारि रमा पति अजस करत जस पायौ १/१८८।

अबास आवास, घर चलौ न जाइ देखियै री वै राधा को जु ~ १६११।

अबिगत अव्यक्त, जो जाना न जा सके, ईश्वर का एक विशेषण

~ गति कछु कहत न आवै १/२, तुम कृपालु ~ अविनासी ९६६ ।

अविचल १ जो विचलित न हो · अजहू लगि उत्तानपाद-सुत ~ राज करै १/३७ २ बनी रहे, स्थिरर हे । देत असीस सकल ब्रज जुवती, जुग जुग ~ जोरी २८५८ ।

अविद्या मिथ्या ज्ञान, अज्ञान · सूरदास की सबै ~ दूरि करौ नदलाल १/१५३ ।

अविधि नियमविरुद्ध . रागद्वेष, विधि ~, असुचि, सुचि जिहिं प्रभु जहाँ सँभारौ १/१५७ ।

अविनासी अविनाशी, जिसका नाश न हो, ईश्वर का एक विशेषण : (हरि) जिनकें सग खेले ~ ३, अविगत, आदि, अनन्त, अनूपम, अलख पुरुष ~ सारा० १ ।

अविर रगीन बुकनी, गुलाल, जिसका होली मे प्रयोग होता है : केसरी चीर पर ~ मार्नो पर्यौ, खेल त फागु टार्यौ खिलारी ३०५९ ।

अविरल घने, गुथे हुए · अलक ~, चारु हाम-विलास, भृकुटी-भग ६२७ ।

अविरियाँ देर : गाइनि घेरि, टेरि बलरामहिं, ल्यावहु, करत ~ ४७० ।

अविहित अविहित, अशास्त्रीय : ~ बाद विवाद सकल मत इन लगि भेष धरत १/५५ ।

अवीर रगीन बुकनी, गुलाल (दे० अविर) : उडत गुलाल ~ जोर तहँ विदिस दीप उजियारी २३९१ ।

अवुधि अबोध, बुद्धिहीन · हम ~ कह जोग जानें ३९२३ ।

अवूझ अज्ञानी, बुद्धिहीन : हौं न ~ मूढ़ मति मेरी अनत नहीं चित भीजै परि० २/४६ ।

अवेर विलव, देर आजु ~ भई कछु खेलत, बोलि लेहु हरि कौं कोउ वाम री २३५ ।

अवेरौ विलव, देर , माखन छाँडि गइ मथि वैसेहिं, तब त कियो ~ २७१ ।

अवेस अत्यधिक , राजा रक ~ अहो हरि होरी है २९१४ ।

अवै अभी, इसी समय ~ मिलाऊँ तुम्हे सूर प्रभु ९/८४ ।

अवोले विना वोले हुए, मौन अजहूँ रहत ~ २४५८ ।

अभगी जिसकी कोई सुध न ले, भोले औरन को मरवसु लै मारत आपुन भए ~ ३५११ ।

अभगतनि अभक्तों/दुष्टों से : सूरदास कहै सुनहु गूढ हरि, भगतनि भजत, ~ भाजत १८०१ ।

अभच्छ अभक्ष्य, जो खाने योग्य न हो · भच्छि ~ अपान पान करि, कबहुँ न मनसा धापी १/१४० ।

अभपद अभयपद : ~ भुजदड मूल १३८४ ।

अभय निर्भय : सूरदास प्रभु ~ ताहि करि उरग-द्वीप-पहुँचाए ५७३ । △ ~ दयौ शरण दी . उनहूँ ताहि ~ नाँ दयौ । ~ कर नाई निर्भय कर दिया : सुरपति-भीम ~— ९५० ।

अभयकरन निर्भय बना देने वाले · दोष दलन, ~, कृपन मरन दार्द ३०७७ ।

अभयदान रक्षा का वचन, ~ दीन्हौं मघवा को सारा० ४८१, ~ प्रह्लादहिं दीन्हौ ७/२ ।

अभय-निसान निर्भयता का नगाडा · आनँद ~ बजायौ ९/१४१ ।

अभय-पद अभय-पद, जहाँ भय नहीं है या मोक्ष · निकसे सभ बीच तें नरहरि ताहि ~ दीन्हो १/१०४ ।

अभरन आभूषण . सूरदास कचन के ~ लै भगारिनि पहराई १६ ।

अभागि भाग्यहीना, अभागिन,अभागी (स्त्रियों की एक गाली) कवहुँ बाँधति, कवहुँ मारति, महरि बडी ~ ३८७ ।

अभागिनि भाग्यहीना, अभागिन , अति निसक, निरलज्ज ~ घर-घर फिरत न हारी १/१७३ ।

अभागी भाग्यहीना, अभागिन मोतें यह चूक परी, मैं बडी ~ २०८१ ।

अभागे भाग्यहीन सूरदास ऐसे स्वामी को देहिं पीठि सु ~ १/८ ।

अभागौ भाग्यहीन, अभागा : अपत, उतार, ~, कामी, विषयी निपट कुकर्मी १/१८६ ।

अभास प्रतिविंव, आभा नाथ तुम्हारी जोति ~ करत सकल जग मे परगास ४३०० ।

अभास्यौ आभासित हुआ निसि दिन प्रगट ~ परि० १/१६१

अभि-अंतर अभ्यतर, बीच मे मानहु कमल कोष ~, भ्रमत भ्रमत विनु प्रात २८६९ ।

अभिद अभेद : ~ अछेद रूप मम जानि ३/१३ ।

अभिमान अहकार, घमड : ब्रह्मा को ~ गया ४८६, करि ~ इद्र अरि लायौ ८६५ । △ बाँधे ~ गर्व मे युक्त, अभिमानी आदि रसाल जगफल के सुत जे —~ सा० ल० ७४ ।

अभिमाननि अभिमानियों मे धन मद मूढनि ~ गिलि, लोभ लिए दुर्बचन सहै १/५३ ।

अभिमानी घमडी, अहकारी पठयौ असुर कस ~ ७८ ।

अभिराम सुन्दर नैन चकोर नतन दरसन ममि कर अरनन ~ २/१२, गोपी मडल मडित स्याम, कनक नील मनि जनु ~ ११८० ।

अभिलाख अभिलाषा, इच्छा : वह ~ स्याम की आननि, दौउनि उर आनँद न समाइ २०३० ।

अभिलाखहि इच्छा होने पर · ईहि ~ मैं हरि प्रगटे, नि गिरि भवन सकुचानी २०२९ ।

[illegible]

~ ४९२।

अभिलाष इच्छा, कामना रिस मैं रिस अतिही उपजाई, जानि जननि ~ ३४१।

अभिलाषि इच्छा (करके) प्रान-उदान फिरै बन-बीथिनि अवलोकनि ~ ३३३६।

अभिलाषी चाहने वाला • कैसे बरन, भेष है कैसो, किहिं रस मैं ~ ३६३१।

अभिलाषे इच्छा की : तुम्हारे दुःख मिटावन कारण पूरण को ~ सारा० ४३१।

अभिलाष्यौ इच्छा की जब हिरनाच्छ जुद्ध ~ मन मैं अति गरवाऊ २२१।

अभिसारी अभिसार किया, विचरण किया • धनि इह पावन भूमि जहाँ गोबिंद ~ ३४४३।

अभिसेखे अभिषेक कराया • सूर प्रतिक्कत ~ परि० १/५९।

अभूत अपूर्व, अनोखी • उपमा एक ~ भई १०४।

अभूषन आभूषण • करि अलिंगन गोपिका पहिरै ~ चीर २६।

अभेद अभेद्य, ईश्वर का एक विशेषण • यह अच्छेद ~ अविनासी सर्वगती अरु सर्व उदासी १२/४।

अभै निर्भय, अभय : ध्रुवहिं ~ पद दियौ मुरारी १/२८। ~ **निभै कर माथैं दीन्हौ** निर्भय बना देने वाला वरद हस्त (इंद्र के) माथे पर रखा, ~ —, श्रीमुख बचन कह्यौ मुसक्याइ ९७८।

अभ्यन्तर १ भीतरी, आन्तरिक : ~ दृष्टी देखन कौं ३८६६। २ भीतर • निसि लौ मरत कोस ~ जो हिय कहो सु थोरी ३२४४।

अभ्यास अभ्यास, किसी काम को बार बार करना • ठौर ठौर ~ महाबल करत कुन्त-असि-बान ९/७५।

अभ्र आकाश : मनहुँ सोभित ~ अन्तर सभु भूषन बेष ६३५।

अमंगल अनिष्ट, अशुभ . भागे सकल ~ जग के ३२।

अमंद जो मद/धीमा न हो, तेज • पीवति किरनि ~ २०३।

अमर १ जो न मरे, चिरजीवी, ईश्वर का एक विशेषण . अज अबिनासी ~ प्रभु जनमै मरै न सोइ २/३६/ २ देवता • ~ बिमान चढे नभ देखत ८३९/ ३ देवताओ का • ~ उधारन, असुर सहारन, अतरजामी त्रिभुवन राइ १३।

अमरगन देवताओ का समूह : जय-जय धुनि करत ~ ९/२६।

अमर-घर-घरनि स्वर्गपुरी के घर घर मे : ब्रह्मा सुनी यह बात ~ कहानी ४३१।

अमर-नगर देव लोक, स्वर्गपुरी • ~ उतसाह अप्सरा गावन रे २८।

अमर-नाथ देवताओं के स्वामी, ईश्वर (यहा कृष्ण) : ~ अपराध छमा करि, पीठि ठोकि मुकरायौ ३६२४।

अमर-नारि देवताओ की पत्नियाँ : ~ अति हरष भरं ९८२।

अमरनि १ देवताओ को : ~ अपनौ भवन न भावत ४१६५। २ देवताओ ने : निरखि-निरखि ~ नभ जै-जै धुनि भने १०५१।

अमरपन अमरत्व . ताते चाहत ~ तन को सा०ल० ६४।

अमरपुर देवलोक, स्वर्ग : वाम कर गहि मुड डारिहौं ~ ३०५४।

अमरराज देवताओ के राजा, इद्र सूर चले फिरि ~ पै, ब्रज तैं भए निरादर ८८०।

अमरराजसुत इद्रसुत = अर्जुन = पार्थ = पाथ (पथ, मार्ग), रास्ता . ~ नाम रइनि दिन निरखत नीर बहो री ३२८३।

अमर-लोक देव लोक : पहुँचे ~ आनँद-मन ९५०।

अमरापति इन्द्र . कापर क्रोध कियौ ~ ९२६।

अमरावति अमरावती, देवपुरी जाकै सरवरि नहिं ~ ४१९५।

अमरा-सिव अमर शिव . ~ रबि ससि चतुरानन, हय गय बसह-हस मृग जावत ९७६।

अमल पुं० १. व्यसन, नशा हरि-दरसन ~ पर्यौ १८८७, आनँदकद चद मुख निसिदिन अवलोकन, यह ~ परयो १४५४। २ शासन . विषय गाँव ~ कौ टोटो १/६४। ~ **कमायौ** कर्म किया है, कमाई की है : हरि हौ ऐसौ ~— १/१४३। वि० निर्मल, स्वच्छ : पट ~ उलटि अकम हठि हारै २८२२, ~ अकल, अज, भेद-बिवर्जित २/३८।

अमल-कमल-बदनी स्वच्छ कमल के समान मुख वाली • नासा तिल-प्रसून, बिंबाधर ~ २१८४।

अमला . राधा की एक सखी गोपी का नाम . ~ अबला, कजा, मुकुता, नीला, प्यारि २००८।

अमाति आमत्रित करके • तुमहू करौ भोग-सामग्री, कुल-देवता ~ ८१३।

अमान अनत काल तक . भावै परौ आजु ही यह तन, भावै रहौ ~ २/३३।

अमाप जो मापा न जा सके . अपरमित कहियौ जाइ जोग आरावैं, अबिगत अकथ ~ ३४८९।

अमाया माया-रहित : (हरि) जरा-मरन तैं रहित ~३।

अमारग : कुमार्ग, कुराह : बहुत ~ जाति १/५१।

अमास बिना मौसम के बारिज बिबि रँग भयौ ~ ३४०६।

अमित अपरिमित, असीम, अनत : परम-स्वाद सबही सु निरन्तर ~ तोष उपजावै १/२, नमित सुधाकर बदन ~ छवि २१४३।

अमित-दान अमृत का दान : ~, बल-बिष हारी १७१।

अमिय पुं० १ अमृत: सुनत तिन ~ भडार खोले ९/१६३। वि० अमृतमय ~ बचन बोलौ तुतरात १५९।

अमी १ अमृत : ~ अगाध सिंधु सर बिहरत ३८६०। २ अमृतमय • ~ बचन अब सींचि पियारी २८२८।

अमी-अंसु-कन-जाल अमृत (सुधा) की किरणो के कण के जाल से •

मानौ इंदु नवल नलिनी दललकुन ~ ४११० ।
अमीरस अमृत रस : चंद-वदन अँचवनि जु ~ ३०६० ।
अमी-वचन अमृत के समान वचन : ~ सुनि होत कुलाहल, देवनि दिव दुंदुभी बजाए ९/१६९ ।
अमृत अमृत (धर्मग्रंथों और पुराणों के अनुसार ऐसा पेय द्रव जिसके पीने से अमरता प्राप्त हो जाती है।) : कपट रूप निसिचर तन धरिकै ~ पियौ पुन-मानी १/११२ । ~ **उपजावै** अमृत उत्पन्न करता है कामधेनु खर लेइ, काल ~ — ४१८८ । ~ **धार चितए** अमृत धार बरसाने वाली दृष्टि से देखे : उत सेनापति बरषत, ये इत ~— ९८३ । ~**पान कराय** अमृत पिला करके . ~ सुरन को कीन्हे चरित अनूप सारा० ३०० ।
अमृत-दाता अमृत प्रदान करने वाला : परम सीतल ~ ४०६४ ।
अमृत-दृष्टि अमृतमयी दृष्टि : ~ मरि चितए ५०१ ।
अमृत-वचन अमृतमय वचन : ~ स्रवननि कौं भावत १०२३ ।
अमोघ अचूक . प्रभु तव माया अगम ~ है ३४९४ ।
अमोचन न छूटने वाला . वेष्टित भुजा ~ २२०३ ।
अमोल अमूल्य (जिसका मूल्य न आँका जा सके) हीरा रतन~ ३६१० ।
अमोलक अमूल्य, बहुमूल्य : छाँडि कनक मनि रतन ~ काँच की किरच गही १/३२४ ।
अमोलनि बिना मूल्य : धन्य स्याम गुन गुनि कै ल्याए नागरि चतुर ~ १३६१ ।
अमोलिक अमूल्य : नीलमनि ढिग नग ~ परि० १/४१ ।
अमोले अमूल्य : नाना बिधि के बिबिध खिलौना रतनन अधिक ~ सारा० ४१३ ।
अम्रित अमृत : हरि कह्यौ माग पत्र मोहिं अति प्रिय, ~ ता सम नाहीं १२४१।
अयन निवास स्थान : जाको ~ जल मै ३७०० ।
अयान अनजान, अज्ञानी : बालक निपट ~ ग्वालिनी कछु सुधि जानि न जाय सारा० ८९१ ।
अयानी स्त्री० बुद्धिहीन, मूर्ख : सुंदर मँदिर भइ ~ सा० ल० ५४, सुनि सजनी तू भई ~ २२५५ । **पुं०** अयानपन, मूर्खता : अनजानत सब करी ~ १३९८ ।
अयाने अज्ञानी, मूर्ख : जानत तीन लोक की महिमा अबलनि काज ~ ३८१५ ।
अयानौ बुद्धिहीन, अज्ञानी जानि बूझि कैहो कत पर्यौ मठ बावरो ~ ४१२७ ।
अयान्यो अज्ञानता से युक्त, मूर्खता भरा . वे उनही को गए तदपि मन मेरी करनी समुझि ~ १८८४ ।
अयोध्या स्थान विशेष, राम की जन्म भूमि . सुभ कुरुक्षेत्र ~ मिथिला प्राग त्रिबेनी न्हाये सारा० ८२८ ।
अयौंपतिका आगतपतिका, ऐसी नायिका जिसका पति बाहर से आया हो : सूर अनसुग तजत नावन ~ सरूप सा० ला० ३७ ।
अयौं आते हुए, आया ~ सुंदर गात सा० ल० ६५ ।
अरंभ आरंभ, शुरू : जग ~ करि, नृप नहँ गयो ९।३ ।
अर १ अरि, शत्रु : गाजत मनमथ ~ ३२३८ । **२** जिद, हठ : डेखल्यो तेरी यो ~ ३७२
अरक सिवार ~ थान सुत माला गुदहिं १०७ ।
अरक-अरती जिद और हठ तुम छोटा ~ परि० १/३३
अरक-थान-सुत सेवार घास के स्थान का सुत अर्थात् कमल : ~ माला गुदहिं १०७ ।
अरगज अरगजा (शरीर मे लगने का एक सुगंधित द्रव्य), ~ अंग सरगजी माला, बसन सुगंध भरे हो २६०२ ।
अरगजा शरीर मे लगने का एक सुगंधित द्रव्य : ~ कौ कहा ~ लेपन भरकर भूषन अंग ११३३२ ।
अरगजैं-भीनी-माल अरगजा की सुगंधि जिसमें रची/बसी है, ऐसी माला . भले हो जू जाने लाल, ~, केसरि तिलक भाल, सैन मत्र काँचि २५४९ ।
अरगाइ १ स्तब्ध : देस-देस के नृपति देखि यह प्रीति रहे ~ ४२८२ । २. चुप्पी साधकर : ब्रह्मादिक सब रहे ~ ७१२ । ~ **रह्यौ** चुप रहे, मौन साध लिया : अपनी चाल समुझि मन ही मन गुनि ~ — ४१२७ ।
अरगाई १ स्तब्ध : आवत देखि सबनि मुख मूँद्यौ, जहँ-तहँ रहीं ~ १७४६ । २ चुप्पी साधकर : जसुमति समुझि रही ~ ७५४ ।
अरगानौ पृथक होकर, चुप्पी साधकर : सहज सुभाय, ठगोरी टारी, सीस फिरत ~ २२२२ ।
अरचन अर्चना नैन चकोर मनन दरसन ससि कर ~ अभिराम २/१२ ।
अरज अर्ज, विनती, विनय : फगुवा बहुत मँगाइ बावरे, कर जोरे ~ को २८९७ ।
अरजुन अर्जुन, पांडु के पुत्र पांडव मे से मझले, जो धनुर्विद्या में सबसे अधिक प्रवीण और महाभारत युद्ध में पांडव पक्ष के नायक थे : भीम ~ सहित विप्र कौ रूप धरि ४२१५ ।
अरत १ अट/रम जाते है : आतुर ~ अरसि अंग अंगनि, अनुरागनि नमि नीठ २३७२, नैंन मीन कमल-दल कौं चलि अधिक ~ २५८४ ।
अरत-परसौ परम हठ से : त्रोटि पर लव ~ ..., निरगि बिमुख को नाहिं २११६ ।
अरति अटती है, चिंता करती है : होनहार होई, ... कत ~ ३१३८ ।
अरथ अर्थ. याकौ ~ नहीं कोउ जानत २०४४ ।

अरथाइ समझा बुझाकर : यह कहियो ~ ९/४७।

अरधग १ अर्धांग (आधा अग राधा के साथ आधा बलभद्र के साथ) बलभद्र सहित गुपाल झूलत, राधिका ~ २८४२। २ आधे आधे अग · बनी बेसरि नासिका मिलि, मिले दोउ ~ २१३१।

अरधंगी अर्धांगिनी, पत्नी . आपु भए पति वह ~ ३१४४।

अरध आधा, : कहै तो जनक गेह दै पठवौं ~ लक कौ राज ९/७९।

अरध-धाम धाम (घर) का आधा (एक-भाग) = पक्ष (पखवारा =१५ दिन) · अरध बीच दै गए धाम क ˙ हरि अहार चलि जात सा० ल० ७२।

अरधासन आधा आसन : सबरी आस्रम रघुबर आए, ~ दै प्रभु बैठाए ९।६७।

अरनि यज्ञ की लकडी : मनसिज बिथा ~ लौं जरति ३३९०।

अरनी सन्ताप सुमिरत प्रीति होइ उर ~ ९/१०१।

अरन्य जगल : अति ही सघन ~ उजारि ४७२।

अरप रोप, विपत्ति . सूर कपट फल तबहि पाइहौ, अपनी ~ जब दहै मैन २५२४।

अरपत अर्पित करते है · मेरी बलि औरहिं लै ~ इनकी करौ सजाइ ८२२।

अरपन अर्पण है : तन, मन, प्रान सबै हरि ~ ४१२९।

अरपि अर्पण कर : तन मन सूर ~ रही स्यामहिं ३५०४। ~ **दियौ** अर्पण कर दिया : प्रथमहिं ~ हम सरबस ३७३५।

अरपित अर्पित : इक मन, इक चित ~ करिकै ८३५।

अरपी अर्पित किया · जाववती ~ कन्या भरि मणि राखी समुहाय मारा० ६४९।

अरपे अर्पित किए : तडित आघात तररात उतपात सुनि, नारि-नर सकुचि तन ~ ८५५।

अरपै अर्पित कर देता है . ज्यो पतग तन- मन- धन ~ ३९३५।

अरपौ अर्पण करो · ~ बलि मोकौं सबै परि० १/४४।

अरप्यौ अर्पण कर दिया . कहत कान्ह, बाबा तुम ~, देव नहीं कछु खाइ २६१, यह तनु सूर स्याम कौं ~ १६३३।

अरबराइ अडबडाकर, हडबडाकर ~ कर पानि गहावत, डग-मगाइ धरती धरै पैया ११५।

अरबिंदहि कमल से : अलि ज्यु मिलै ~ ३२७१।

अररात भीषण आवाज के साथ टूटने या गिरने का अररर शब्द करके : ~ दोउ बृच्छ गिरे धर ३९१।

अरराइ टूटने या गिरने का अररर शब्द करके : जर सहित ~ के आघात सब्द सुनाइ ३८७।

अररात अरररर का शब्द करते है घटा घन घोर घहरात, ~, दररात, थररात ब्रज लोग डरपे ८५५।

अरवाती छाजन का किनारा, जहाँ से वर्षा का पानी नीचे गिरता है, ओलती ~ को नीर बडेरी कैसे फिरिहैं धाई २३३७।

अरल अरल (सोना गाछ, ज्योतिष्मती, स्वर्ण जीवन्ती) गिरत कर ते कुसुम कुतल, ~ तरल-तरग २१३१।

अरस १ आलस्य , उपजत है मन कौं अति आनंद, अधरनि रँग नैननि कौ ~ २६५९। २ बहुत ऊंचा भवन,, बहुरि ~ तें आइकै तब अबर लीजौ ३०३८।

अरसई नीरसता। छाँडि दै ~ परि २/९।

अरस-परस परस्पर स्पर्श, आलिंगनादि : ठाढे जब कुंजनि तर, परम चतुर गिरिधर बर, राधापति, राधा ~ मोहै (जू) २८२९, ~ चुटिया गहैं १६२।

अरस-परस-छबि अरस परस (सभोग) की शोभा (चिह्नों) से . काहे कों तू मोहिं दुरावति, जानी ~ सेष २७२५।

अरस-परसनि स्पर्शालिंगन · वा छबि पर तृन तोरति, सर ~ ९६।

अरसाइ आलस्य करके · जम्हुआती ~ मोरि तनु परि० १/७७।

अरसात आलस्य करते है, नैन ~ अरु बैन हूँ अटपटात २०१०।

अरसाने आलस्ययुक्त हो गए करि सिंगार दोऊ ~ २०३७।

अरसाय आलस्य करके : और सोभा सोहाई अग-अग ~ बोलति है, कहा अलसायिनी १५८१।

अरसि-परसि परस्पर स्पर्शालिंगनादि करके ~ हँसि-हँसि लप टाहीं ९२०।

अराज बिना राजा का जग ~ ह्वै गयौ ९।१४।

अराधा आराधना · सो रस दिए सूर प्रभु तोको सिवा न लहति ~ १६९६।

अराधै आराधना करे निरगुन पथ ~ ३७०१।

अराध्यौ आराधना की . हम अलि गोकुलनाथ ~ ३५३०।

अरि पुं० शत्रु, केस गहौ ~ कस पछारौं १६१९, मारुत सुतपति अरि पुरवासी, पितु, बाहन भोजन न सुहाई २००९। **क्रि०** हठ करके, अडकर को माखन ~ खेह २९७४।

अरिपंथपिता पथ (रास्ते) की शत्रु = नदी = यमुना, उसके पिता =) सूर्य तहा ~ जुग उदित ३४०६।

अरिष्ट एक राक्षस, जिसका श्रीकृष्ण ने वध किया था . अघ, ~ केसी, काली मथि, दावानलहिं पियौ १/१२१।

अरिष्ट-निकंदन अरिष्ट का वध करने वाले श्रीकृष्ण : गोपी-बृ द मनोहर चहु दिसि, मध्य ~ ११५८।

अरि-सारंग सारग (सौन्दर्य) के शत्रु, वस्त्र, घूँघट : ~, राखि सारग कौ, गहि सारँग कौ जात ११९५।

अरी क्रि० वि० सबोधनार्थ अव्यय, जिसका प्रयोग प्रायः स्त्रियों के लिए ही होता है। ~~ सुदरनारि सुहागिन ९/४४। **क्रि०** अड गई रुक गई, : अब मो नाव ~ १/१८४।

अर्द्ध-निसा आधी रात (मि/को) · ~ मिलि हरषत १८०७।
अर्द्ध-निसि अर्ध रात्रि भयौ अकाज ~ बीता ९/१५५।
अर्द्ध-राति आधी रात : ~ हौं आई १८।
अर्धंगी अर्धांगिनी . ~ पूछति मोहन सों, कैसे हित हमारे ४२३०।
अर्ध-निसा अर्ध रात्रि (मि/को) : ~ ब्रजनारि संग लै, वन बसि लीला ठानी ४०३९।
अर्ध-पले आधे क्षण : यह प्रीतम सों प्रीति निरंतर रहै न ~ ३१८१।
अर्ध-रैनि आधी रात (मि/को) ~ चली घरनि तें ९९२।
अर्धांगिनि अर्धांगिनी (पत्नी) . सूर-स्याम की अब ~ रही भार लपटानी १३१८।
अर्धासन अपने आसन का आधा अंश, बराबरी का अंग . ~ दै तिन बैठाये ६/५।
अर्पत अर्पण करता है : करि-करि पाक जबै ~ है २४९।
अर्पन अर्पण : षटरस ~ कीन्हौं ७९८।
अर्पि अर्पण करके · मनसा करि प्रभुहिं ~ ९/९६।
अर्पित जो अर्पण हो चुका हो . सहस भाँति ~ सब ३७७३।
अर्पै अर्पण करने पर वदत वेद उपनिषद ब्रह्म रस ~ ४८७।
अर्यौ अड गया : स्याम रूप मैं री मन ~ १९१३, मान उर में ~ परि० २/६६।
अलंकृत १ विभूषित, सजा हुआ : हृदय-हार बिन, गुनहिं ~ २६३९।
अलंग ओर, तरफ : एकौ ~ न टूटी ३२२१।
अलंबन आश्रम, अवलंब · अब लगि अवधि ~ करि करि राख्यौ मनहिं सबाहि ३१४५।
अल बिच्छू का विष : निर्विष कियौ सकल ~ झार्यौ ५७४।
अलक[1] अत्यन्त मेरो ~ लडैतो मोहन ह्वैहै ३१७५।
अलक[2] बाल, बालों की लटे कुटिल ~, मोहनि मन बिहसनि ९३, ~ तिलक केसरि बनी ११८०। ~ **बिथुरे मुख** ऐसा मुख, जिस पर लटे बिखरी हुई है · साँस मिरछ ~~— १७७५। ~ **सु झुंडल** घुँघराली लटों के रूप मे भाडियों मोर-मुकुट सिर ~— ९१३।
अलकनि लटों · ~ की छवि अलि कुल गावत ६६५।
अलकलड़ैतो अति लाडला, दुलारा मेरो ~ मोहन ह्वै है करत सँकोच २७०७।
अलक सलोरी अत्यन्त लाडली, दुलारी . ऐसौ आदर कबहुँ न कीन्हौं मेरी ~ २२१०।
अलकावलि १ बालों की लटे · कोमल नील कुटिल ~ ३९५६। २ बालों में ~ मुक्तावलि गूँथी सारा० १७३।
अलकैं बालों की लटे : बिथरि ~ रहीं मुख पर २२५। ~ **दैहौं ओट** बालों की लटों की ओट दूँगी : कहा लगि ~— १८६९।
अलख अलक्ष्य, अगोचर, ईश्वर का एक विशेषण · ~ अनत, अपरिमित महिमा ९/२६।
अलगाइ अलग हो गए · तीरथ करत कोउ ~ ३/४।
अलप अल्प, न्यून, ईषत् : अंग फरकाइ ~ मुसुकाने ४६, ~ वयस अबला अहीरि मठ ३५५०। ~~ **जलपाई** थोडा-थोडा बोलते है खडित बचन देत पूरन सुख ~~— १०८। ~~ **दसना** छोटे छोटे दाँत सोभित सु कपोल-अधर ~~— ९०।
अलप-मति अल्प बुद्धि वाला बरनि सकै नहिं सूर ~ २२१९।
अलबेली अनोखी . सिरनि लिए दधि, दूध, सबै जोवन ~ १४६१।
अलस आलस्ययुक्त है ~ नैन आनँद निसि जागे २१७९।
अलसाई आलस्य · बात कहत आवत ~ २६४०।
अलसात १ आलस्ययुक्त हो रहे है निसि जागे ~ स्याम धौं २६३८। २ अलसा जाते हैं : अवलोकत ~ नवल छवि २३८३।
अलसाति आलस्य करती है · अति ~ जम्हाति पियारी २६६१।
अलसाने १ आलस्ययुक्त हो गये सोभित अरुन नैन ~ २६३६। २ अलसाए हुए : जागे प्रान निपट ~ सारा० १०१९।
अलसायिनी अलसाई हुई स्त्री . औरहि सोभा अंग-अंग की, बोलति है ~ २००९।
अलसौंहैं अलसाए हुए · बलया पीठि बचन ~ २६४२।
अलापि सुर खींचकर, ताल लगाकर . गौरी राग ~ बजावत १३६८।
अलाप्यौ अलापा · काहू राग मलार ~ ३३३२।
अलाभ लाभ का उल्टा, हानि . सुख दुख, लाभ ~ समुझि तुम कतहिं मरत हौ रोइ १/२६२।
अलिंगन आलिंगन, हृदय से लगाने की क्रिया बारबार ~ दीन्हो २१५०।
अलि पुं० १ भ्रमर मनो बँधूक कुसुम ऊपर ~ बैठ्यौ २११८। २ भ्रमर (उद्धव) . हम ~ गोकुलनाथ अराध्यौ ३५३०। १ **स्त्री०** सखी ए तौ ~ उनहीं के सभी ३८९८। २ भ्रमर जैसी रामराजी तापर ~ सारँग पर सारँग ३४०६। ~ **अंबुज-अनुरागी** भ्रमर कमल पर अनुरक्त होकर : सूर स्याम कैं हाथ बिकानी ~ — १००३।
अलि असकनि भ्रमर के शिशुओ, भ्रमर शावकों · ~ कृत लोल ३५०।
अलिअवली भ्रमरों की पंक्ति : ~ फिरि आई १०८।
अलिकुल भ्रमरों का समूह : अलकनि की छवि ~ गावत ६६५।
अलिगन भ्रमर-समूह . ~ पिक मंगल धुनि गावत २१७२।

अरुंधति वशिष्ठ मुनि की पत्नी का नाम : रमा, उमा, अरु सची, ~ निसि दिन देखन आवै १०५५।

अरु और, शब्दो या वाक्यो को जोडने वाला सयोजक शब्द : नव ~ सात बीस तोहि सोभित, काहै गहरु लगावति २७४७, परस्पर भिरत जब स्याम ~ मल्ल दोउ, देखि नारि-नर मष्ट मेलै ३०७१।

अरुचिनि अरुचि रखने वालो के ~ रुचि अकुर जिय जामै १२१३।

अरुझत उलझते हैं . इक परत उठत अनेक ~ मोह अति मनसा गही ४१८७।

अरुझति उलझ जाती है : जहँ-तहँ दृष्टि परति तहँ ~ ११९७।

अरुझाइ उलझाकर : नागरि मन गई ~ ६७८।

अरुझाई उलझा लिया है · रोम-रोम ~ ३९३१।

अरुझाए उलझा दिये . जहाँ तहाँ कुजनि ~ १५१२।

अरुझात उलझाते हो : कत मन इत ~ ३७१२।

अरुझानी उलझ गई : निकसति नहीं बहुत पचि हारी, रोम रोम ~ १६५७।

अरुझाने १ उलझ गई : तबहिं महरि माया ~ परि० १/१०। २ उलझ गए हो . टरे टरत न इक पल मधुकर ज्यौं रस मैं ~ २२९७।

अरुझानौ उलझ गया : मेरौ मन हरि चितवनि ~ १६६७।

अरुझावत उलझाते हो : जुवतिन कत ~ १५२३।

अरुझाहि उलझे, उलझा करें . जाइ न मिलहु सूर के प्रभु कौं, कहहु अरुझिन सौं ~ न १४८८।

अरुझि उलझ : ~ रहे मुक्ता निरुवारति २१८०। ~ **रह्यौ** उलझ गया : ~ — नँदलाल प्रेम रस, निमिष न इत उत जाइ ३८११।

अरुझिन उलझने वाली (टेढ़ी) : कहहु ~ सौं अरुझाहिं न १४८८।

अरुझी उलझ गई . ~ मुरलीधर कौं ६४७।

अरुझी उलझ गई : ~ कुडल लट बेसिर सौं पीत पट ११४९।

अरुझे उलझ गए : ~ अलि-कुल कमल कली १७०३।

अरुझ्यौ उलझ गया निरखि नैन ~ मन-मोहन १७३।

अरुन १ अरुण, लाल : ~ अधर छबि दसन बिराजत ४७६, भृकुटी कुटिल ~ अति लोचन ९/५६। २ सूर्य : ~ उदित अँधकार गयौ ५२०।

अरुन-किसल-तरु-बेष कोमल लाल पेड का वेष : मनहुँ बसत राज-रुचि-कीरति, ~ २७३४।

अरुनता अरुणाई, लालिमा · नान्ही एडियनि ~ १३४।

अरुनाई अरुणाई, लालिमा : अनुपम अधरनि की ~ ६१६।

अरुनाए लाल रग वाले : नीलाबर, पाटबर, सारी, सेत, पीत चुनरी ~ ७८४।

अरुनानी लाल हो गई : प्राची ~, भानु किरनि उज्यारी नभ छाई २०३८।

अरुनोदय सूर्योदय के समय : आजु सखी ~ मेरे नैननि कौं धोख भयौ २०५८।

अरुझति उलझती हो · लै लै नाम सुनावहु तुमहीं, मोसौं कहा ~ १५२६।

अरे क्रि० वि० सबोधनार्थक अव्यय मुनि ~ अध-दसकध ९/१२८। **क्रि० १.** हठ करते हैं, अड़े रहते है हम सौं रहत ~ ३३२९। २ हठ किये हैं, अड़े हैं . भूषन भुग ~ २४७२। ३ हठ पकड लिया, अड गया : इक दिन बहुत ~ ३५८६। ४ अड गए, ठहर गए . मानहु द्वै ससि आनि ~ १४१।

अरैं १ अटकते है : कटक कोटि ~ ३२४४। २ हठ करते हैं डरत नहीं फिरि-फिरि ~ २३८७।

अरै रुक जाता है तौ रवि रथहुँ ~ ३९८६।

अरैगौ अडेगा, उलझेगा . जोग रोग सो कौन ~ ३६१९।

अरो अड गया : नद ढोटौना ऐसी अरनि ~ २४६१।

अरोगैं भोजन करते है, खा रहे हैं : नद-भवन मे कान्ह ~ ३९६।

अरौ अडते हो · हित की कहत, कुहित की लागत इहाँ बेकाज ~ ३०६६।

अर्क सूर्य : बेदन ~ विभूषित सोभा सा० ल० १०२।

अर्घ : पूजन के १६ उपचारों मे से एक; दूब, दूध, चावल आदि मिला हुआ जल . ~ आरती साजि तिलक दधि माथैं कीन्यौ ४०९५।

अर्घ्य जलदान : कतहूँ ~ देत सूरज को कहुँ पूजत त्रिपुरार सारा० ६७८।

अर्घ्यादिक जलदान आदि धार्मिक कृत्य . ~ आनद अमृतमय ललित लोल लोचन जल धारौं २८२२।

अर्जुन[१] दो वृक्ष जो गोकुल मे थे। नारद के शाप से कुबेर के दो पुत्र नल कूबर और मणिग्रीव इन वृक्षों के रूप मे जन्मे थे। श्री कृष्ण ने इनका उद्धार किया था : किन ये दोऊ रूख हमारे, जमला ~ तोरे ३६३०।

अर्जुन[२] पाडु के पुत्रो पाडवों मे से एक . ~ इन मैं गाजैं १/३६।

अर्जुन[३] श्री कृष्ण के बाल सखाओं मे से एक : ~, भोजऽरु सुबल, सुदामा, मधुमगल इक ताक ४६४।

अर्थ १ शब्द का अभिप्राय या सकेत : एक ~ सो भाव दिखावति २४३६। २ चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) मे से एक : ~ धर्म अरु काम-मोच्छ फल चारि पदारथ देत गनी १/३९।

अर्थपति मतलब के पति, मतलबी, अर्थापत्ति नामक अलकार : जो ब्रज तजौ ~ 'सूरज' सब सुखदायक जोई सा० ल० १०४।

अलिप्त १ जो लिप्त न हो, असलग्न . ज्यों जल कमल ~ रहाई ३/१३ । २ राग द्वेष से मुक्त, अनासक्त ज्ञानी तन ~ करि मानै ५/४ ।

अलि-बाल-पगाति बाल भ्रमरों की पक्ति : कोउ कहति ~, जुरी एक सँजोग ६३६ ।

अलिवाहन भ्रमर का वाहन अर्थात् कमलिनी • ~ कौ प्रीतम वाला ता वाहन रिपु ताहि सतावै २७९६ ।

अलिवाहन कौ प्रीतम बाला ता वाहन रिपु भ्रमर के वाहन (कमलिनी) के प्रीतम (सिंधु) की स्त्री गगा के वाहन शिव के शत्रु अर्थात् कामदेव • ~ ताहि सतावै २७९६ ।

अलि वाहन-पति-वाहन-रिपु भ्रमर के वाहन (कमलिनी) के पति (चन्द्रमा) के वाहन (शिव) के शत्रु अर्थात् कामदेव ~ की तपन बढी तनु भारी सारा० ९३८ ।

अलि-वाहन-रिपु-वाहन-रिपु भ्रमर के वाहन (कमलिनी) का शत्रु (बैल) है वाहन जिनका, उन शिव के शत्रु अर्थात् कामदेव • ~ की तपति भई परि० २/५१ ।

अलि-माल भ्रमरों की माला (समूह) . कुटिल अलक ~ ३०६२ ।

अलियाँ सखियाँ : एक-रूप गुन ~ २६२० ।

अलि-सिसु भ्रमर का शिशु • निकस्यौ ~ कज तें २६१३ । ~ **जाल** भ्रमर के शिशुओं का समूह : कुटिल अलक विना बपन के, मनौ ~— २३४ ।

अलि-सुत भ्रमर का पुत्र (भ्रमर) • ~ प्रीति करी जल सुत सौं २८०९ ।

अलिसैन अलि (भ्रमरों) की सेना • अमित लरत ~ कज पर परि० १/१२ ।

अलि-स्रेनी भ्रमर पक्ति • मनौ ~ विराजति ६३८ ।

अली पुं० भ्रमर • बिथुर रही लट कुचित, मनहुँ ~ २६१९ । **स्त्री०** सखी गुन गावत मगल गीत, मिलि दस पाँच ~ २४ ।

अलीगन भ्रमरों का समूह गुजत फिरत ~ भूले २३३ ।

अलेखनि बिना देखे, अदृश्य धिकधिक जे दिन जात ~३४०५ ।

अलेखे १ अनगिनती, बे हिसाब अपजस स्रवन ~ ३०१४ । २ व्यर्थ • सब दिन गए ~ २/२५ । ३ असत्य, बिना समझे कहा करति तुम बात ~ १७७४ । ४ बिना देखे हुए • अपजस स्रवन ~ ३५३० ।

अलेखैं व्यर्थ, निष्फल, समान हैं . अरु जे बुद्धि सिखावहु, हमकौ, ते सब हमहि ~ ४०२७।

अलेप दुर्बोध, अज्ञेय • सजल उज्वल जलद मलयज प्रवल बलिनि ~ ६३५ ।

अल्प वि० १ क्षुद्र ~ सूर सुजान कामों कहौं मन की पीर सा० ल० ४२ । २ थोडी : ~ हँसी मुख हेरि लजानी २४९६ । **पुं०** एक अलकार, जिसमे आधेय की तुलना मे आधार की अल्पता का वर्णन हो : नैन सारँग सैन मोतन करी जानि अधीर । आठ रवि ते देस तव तें परत नाहिं गम्हीर । ~ सूर सुजान कासों कहो मन की पीर सा० ल० ४३ ।

अल्प-अहारी अल्पाहारी • अविगत ~ ८/१४ ।

अल्प बैस अल्पायु मे . परम चतुर जिन कीन्हे मोहन ~ हीं थोरी ४२८६ ।

अल्प मति थोडी बुद्धि वाला • हम अबला अज्ञान ~ ३६८३ ।

अल्प-मृत्यु १ अकाल मृत्यु : ~ तुव आइ तुलानी ९/१६० । २ अल्प अवस्था मे ही मृत्यु : ~ तुव आइ तुलानी ९/११६ ।

अल्प-हँसि थोडी हँसी करके खात ~ हेरौ १५९९ ।

अवंति एक स्थान का नाम . विद्या पढन काज गुरु गृह दोउ पुरी ~ पठायो सारा० ५३७ ।

अवगनि अवगुण वपु विचारि ~ इन इन ते परि० १/१४७ ।

अवगाई छान/खोज डाली • मुक्ति पुरी ~ ३९३९ ।

अवगाधि अवगाहन किया कीन्हों सुख ~ ११५६ ।

अवगारे समुझावे . सूर कहा याके मुख लागत कौन याहि ~ ३२६८ ।

अवगाह १ अत्यन्त गभीर, अथाह रस-सरिता ~ १२५७ । २ गिरवा • नाभी हृद ~ ६३७ ।

अवगाहत १ थाह लगा रहे थे निठरि रूप ~ २१२७ । २ विचार मे, उधेड बुन मे ह . मन-मन यह ~ २०२८ । ३ पकडना चाहते हे . पुनि-पुनि तिहिं ~ ११० । ४ सोचते विचारते ह जहँ-तहँ लोग रहैं ~ १०४९ । ५ धारण किये रहता हू (उसी भाव मे डूबा रहता हूँ) . स्तुति मति बारबार हृदय अपनौ ~ ११७५ ।

अवगाहन थाह, खोज, छानबीन ~ करि के देख्यौ तऊ न पायो पार सारा० १४७ ।

अवगाहि १ निरीक्षण करके • फिरि फिरि दुख ~ हमारे ३५९६ । २ विचारकर मन म यह ~ १३९६ । ३ थहा-कर . म देख्यौ ~ ९/७५ । ४. टटोलकर माता मन ~ २५३ । ५. डूबी हं : ~ आसु जुवारि २५७५ ।

अवगाही १ डुबकी लगाते ह • लोभ गहनि नीकें ~ २३७० । २ चित्त मे बसाया • जिहिं अब ला ~ ३६०६ ।

अवगाहु पार करो विरह सिधु ~ ३८१८ ।

अवगाहैं १ सोच विचार कर रही थीं . सब मिलि बुधि ~ ५८९ । २ स्नान कर रहो है ~ जमुना नदी मदमाती हो २८६२ ।

अवगाहै १ खोजता है • मुक्तिहु कौं सो नाहिं ~ ३/१३, रजोगुनी धन कुटुवऽवगाहै ३/१३ ।

अवगाहौं खोज कर रहा हू : ~ पूरन गुन स्वामी १/२०७ ।

अवगुन १ अवगुण, त्रुटि : पिता एक ~ नाहिं हेरै ५/४, ~ मोपै अजहुँ न छूटत १/१४७ । २ दुर्गुणों मे • मग्न रहै

कोटि ~ बिसारैं ९/१२९ ।

अवघट कठिन, विकट, दुर्घट • घाट बाट ~ जमुना तट १०२९ ।

अवछग गोद : सो लीन्हौं ~ जसोदा ४८७ ।

अवज्ञा १. अपमान, निरादर, अहिरिनि करी ~ प्रभु की ८५६ । २. अवहेलना : तुम मति करौ ~ नृप की ९/३६ । ३. आज्ञा का उल्लघन . अतिहि भई ~ जानी चक्र सुदर्शन मार्‍यो सारा० ७५६, अकरन अविधि अज्ञान ~ १/१२९ ।

अवटि औटा कर : सद्य दधि दूध ल्याई ~ अवहि हम १५९६ ।

अवडेरी १ चक्कर विना कष्ट यह फल न पाइहौ, जानति हौ ~ सी १३३८ । २ झंझट : कहा करति ~ सी १३३८ ।

अवढर उदार • लच्छ सौ बहु लच्छ दीन्हौ दान ~ ढरन १/१२२ ।

अवढेरि चक्कर मे डाले, फँसाये मन राखें ~ ३३७३ ।

अवतंस कुडल : गुजा फल ~ मुकुट मनि १३७०, ~ कोटिक भान ३५६१ ।

अवतरते जन्म लेते • देवै गर्भ नही ~ १६०७ ।

अवतरतौ उत्पन्न होता • मेरैं गर्भ आनि ~ ४/९ ।

अवतरि उत्पन्न हुए, प्रकट हुए एकै ह्वै है ब्रज मैं ~ १६९३ ।

अवतरी प्रकट हुई, उत्पन्न हुई : बहुरि हिमाचल कै ~ ४/५ ।

अवतरे १. अवतरित हुए • तेइ ~ आइ ५५७ । २. अवतरित होने से कहा भयो मधुपुरी ~ ३६५१ ।

अवतरैं उत्पन्न हों याकै (देवकी) गर्भ ~ जे सुत ४ ।

अवतर्‍यौ अवतीर्ण हुए . कुलीन अकुलीन ~ का कै ३१०१ ।

अवतारहि अवतार को • ता ~ सलिल वहावै २७७९ ।

अवतारा १. प्रकट होकर . (हरि) धरि नर-तन ~ ४ । २. अवतारी पुरुष परबत मैं कोउ है ~ ९४३ । ३. अवतरित हुए हे जहाँ तहाँ, जल-थल ~ ९५१ ।

अवतारि १. अवतार . अविनासी ~ ४९१ । २. अवतार लेकर • भक्त-हित-हेत ~ लीला करत २८२७ ।

अवतारी १. अलौकिक, देवांशधारी : बारबार विचारति जसुमति, यह लीला ~ १०/३३८ । २. अवतार लेकर • आनि गोकुल ~ ४९२ । ३. अवतरित किया बनि जसुमति ब्रह्महिं ~ ३११ ।

अवतारे पैदा किया है ते विधना काहैं ~ २२२७ ।

अवतार्‍यौ उत्पन्न किया : विधिना बहुरि कस ~२८३२ ।

अवध पुं० अयोध्या नगरी दसरथ चले ~ आनदत ९/२७ । **स्त्री०** १ अवसर : तवही ~ जानि कै ९/१०४ । २. अवधि है : यह निरुक्ति की ~ वाम तू भइ सूर हत सखी नवीन सा० ल० ९५ । ३. निर्धारित समय, मियाद : ~ गए पावस की आसा क्रम-क्रम करि निरवाहत २७७१ । **वि०** अवध्य, न मारने योग्य • सिव न ~ सुदरी वधो जिन १६८७ ।

अवधपुरी अयोध्या नगरी : ~ जब आयौ ९/१५० ।

अवधा राधा की एक सखी का नाम • सुखमा सीला ~ नदा बृंदा जमुना सारि १५८० ।

अवधि १. सीमा, पराकाष्ठा : कौतुक ~ रची २४४८ । २ निर्धारित समय, प्रतिज्ञात काल • ~ गनत इकटक मग जोवत ३५५७ । ३. अत समय, अतिम काल : तेरी ~ कहत सब कोऊ । △ ~ बदी समय नियत किया निसि बसिबे की ~— ।

अवधि लागि नतु . अवधि तक ही नाता (सबध) है सूरदास प्रभू ~ प्रान तजति ब्रजनारी ४१३७ ।

अवधिहि अवधि के : प्रान रहत ~ तट ४१२२ ।

अवधेस अवध के ईश श्री रामचद्र • दै सीता ~ पाइँ परि, रहु लकेस कहावत ९/१३३ ।

अवध्यौऽब अवधि भी अब : बदि जु गए ~ भराई ३२१७ ।

अवनि पृथ्वी : दधि ज्यौं ~ निहारी २६०० ।

अवनि अवलेखौ पृथ्वी पर खरोचते हो • मोसौं बात कहत किन मनमुख, कहा ~ ४१५४ ।

अवनिधर पृथ्वी को धारण करने वाले अर्थात् शेषनाग श्रृग कौ ट, ~ २७५० ।

अवनी पृथ्वी, भूमि : बरहा मुकुट लुठत ~ पर २८०४, ~ परि लोलै १०१ ।

अवनी-उदर पृथ्वी रूपी उदर की • ~ नाभि सरसी मैं १२०१ ।

अवर अन्य, और : मोहिं तजि कै ~ बिय ११/२ ।

अवराधन आराधना, उपासना : जोग न ज्ञान-ध्यान ~ ३६६९ ।

अवराधा उपासना की, सेवा अर्चना की, मन लगाया, ध्यान धरा • जो चित करि ~ ७०५, अरस-परस ~ १८५९ ।

अवराधि उपासना आराधना या ध्यान करके . जोगी जन ~ फिरत जिहिं ध्यान लगाए ४९२ ।

अवराधी प्रसन्न परति नहीं ~ १३१२ ।

अवराधे आराधना करे • को ~ ईस ३७२६ ।

अवराधैं उपासना/आराधना करते हैं . सकट सौं यह कहि ~ ७९९ ।

अवरु दूसरा • को है जो ऐसो ~ परि० ७/४१ ।

अवरेखत सोच रहे हो या देख रहे हो : ऐसे हि विधि ~ १५२८ ।

अवरेखिए चित्रित कीजिए • भीति जौ होइ तौ चित्र ~ ३०७ ।

अवरेखी चित्रित की : भीति चित्र ~ ३८१० ।

अवरेखे चित्रित, लिखे हुए अति कारे काजर ~ १०४८ ।

अवरेख्यौ १. चित्र लिखे से (चित्रित), स्तब्ध अग-अग ~ सारा० ९४७ । २ देखा : कनक भूमि ~ सारा० ८२० ।

अवरै अन्य, दूसरे, बदले हुए : ऊधौ हरि के ~ ढग ३३२७ ।

अवरोहि सान्त्वना, भरोसा : मन आयौ ~ २९७७।
अवलंघ्या लाँघ लिया, पार कर लिया • निहि अधार छिन मैं ~ ९/८९।
अवलंब सहारा • जल बूड़त ~ फेन कौ ३६२१।
अवलंबति टेक लगाती है • इक ~ इक अवलोकनि २९०१।
अवलबन सहारा : फिरि-फिरि वहै अवधि ~ ३९११।
अवलंबनि अवलम्बनों : सूर मनौं यह मान करनि हौं ~ की टेव ४२०४।
अवलंबि आश्रय/आधार लेकर • द्रुम साखा ~ वेलि गहि ११०७।
अवलंबित आश्रित, सहारे पर स्थित : चरन कमल ~ १८२४।
अवलंबै आश्रय देते हु : केहि ~ तात ३१७१।
अवला राधा की एक सखी गोपी का नाम अमला ~ कजा मुकुना हीरा नीला प्यारि १५८०।
अवलि १ पंक्ति : ~ बलाक बनावन ३६५। २ समूह • राजत मोहन मध्य ~ बालक छवि पाई ४९२।
अवलि बटोरी समूह जो एकत्र कर लिया • नृप-खग ~ ४२१६।
अवलि बलाक बगुलों का समूह : वारि ~ १८३५।
अवली पंक्ति • मंजुल अलि ~ फिरि आए १०८।
अवलेह चाट या चटनी • रसकनि कौ ~ ४०१८।
अवलोक देखकर • द्वादस वन ~ मधुपुरी सारा० ८२७।
अवलोकत १ देखते हुए • फिरत वृथा भाजन ~ १/१०३। २ देखती हुई • एक अंग ~ हरि कौं १७८३। ३ देखते ही • पिय ~ लगति ठगोरी २१३४। ४ देख रहे हैं • ठाढे सूर वीर ~ ३०४९। ५ देखता हूँ : उर स्याम सुंदर ~ १२४। ६ देखते हैं : चितवनि कृपाराम ~ सारा० २०८। ७ दिखाई पड़ती है • नहि अधार नाम ~ १/१७५। ८ खोजते रहे : सूरदास वन-वन ~ ९/६४।
अवलोकति निहारे चली जा रही थीं, देख रही थी अंग माधुरी ~ ब्रजबाम १०५३।
अवलोकति १ देखती हो • कैसे स्याम अंग ~ २०६४ : जबहीं इकटक करि ~ १८३०। २ देखता हूँ : मैं तो एक अंग ~ १७८२। ३ देख रही है : करि सिर तिलक वदन ~ ९६६।
अवलोकन १ देख-देख : ब्रज वनिता ~ करि करि १९०९। २ चितवन : ~ सह अमल पर्यौ १४५४। ३ देखने के लिए : उत निरगुन ~ मन कौ ३८९२। ~ **करिकै** देखकर : कृपा दृष्टि ~ — हत कपि कटक जियायो सारा० २९४। ~ **कीन्हौ** निरीक्षण किया, देखा • अंग-अंग ~ – १७८१।
अवलोकनि १ देखना : धनि ~ पिय सुखदायी २२१३। २ चितवन से : हँसि मुसुकानि वक ~ १३७६, नैन कटाच्छ चारु ~ १८९९। ३ देखने की भंगिमा, चितवन • ~ जलधार तेज अति १८१३। ४ देखती है : बार-बार उरजति ~ २०५२। ~ **विलास** देखने की भंगिमा शांतिदायिनी है • सुंदर ~— १८२५।
अवलोकनी देखना • ~ सधान ३५६१।
अवलोकहु देखो, निहारो : चित दै ~ नँदनदन पुरी २५६१।
अवलोकि १ देखकर • कजरध्र ~ सहचरी सारा० ८९९, बाल-दसा ~ स्याम की २६२। २ देखते (रहे) • रहे सुर ~ २१८। ~ **कै** देखकर : स्याम उठत ~ — १९६५। ~ **पाछैं** पीछे देखकर • ग्वालिनी ~ — ४१५८।
अवलोकी देखी है अहो वधु, काहूँ ~ इहि मग बधू अकेली ९/६४।
अवलोके देखे, दर्शन किए : चरन-सरोज बिना ~ ९/५२, जिहि लोचन ~ नख-सिख ३६६६।
अवलोकैं देखे : कमल नैन-मुख बिनु ~ २३८६।
अवलोकौं देखूँ : ~ मन लाई ३०६२।
अवलोक्यौ १ देखा : स्रवन सुन्यौ न कहूँ ~ ११३९। २ देख लिया जो तुम अंग अंग ~ १७८२।
अवसर १ समय, मौका : ~ गऐ बहुरि सुनि सूरज २०१। २ कभी : सेवा यहै नाम सर ~ (आयौ) १/१९३। △ ~ **के चूकें** अवसर का लाभ न उठाने पर, मौका हाथ से निकल जाने पर • सूरदास ~ — फिरि पछितैहौ देखि उघारी १/२४८। **सर** ~ बिना समय की प्रतीक्षा किये • —~ नहिं जान्यो १/१५८।
अवसान १ होश हवास, चेतना : गए ~ भीर नहिं भावै ७५०। ~ **भूले** होश उड़ गए, सिट्टी-पिट्टी गुम होने लगी : देखि सब समय ~— ५५२। **गए** ~ होश उड़ गये : —~ प्रभु के निहारे ३०७८।
अवसि अवश्य • दैहौं तुमहिं ~ करि भाग ९/३।
अवसेर १ चिन्ता करति ~ वृषभानु नारी २०१४। २ उलझाव • भयो मन माधव कौ ~ १६७७। ३ विलंब, देर : आज कहाँ ~ लगाई। ~ **लगाई** आने मे देर लगा दी : गई रही दधि बेचन मथुरा तहाँ आजु ~ —१०११।
अवसेरत देर लगाते है • बात सुनत सबकी ~ ४०५।
अवसेरन चिन्ता मे, व्यग्रता के कारण • अहो मधुप निसि-दिन मरियतु है कान्ह कुँवर ~ ३२७७।
अवसेरि १ अनुमान, याद • मन मन करन लगी ~ २५३७। २ चिन्ता : करन लगी ~ २०८२। ३ व्यग्र रहती है माधौ दरसन की ~ ३३७३। ~ **मिटावहु** दुःख को दूर करो • गाइनि की ~ — ४१२३।
अवसेरी १ चिंता • कहा करति ~ सो १३३८। २ बेचैनी • उनहि बिना ~ लागि २३१७।

अवसेरे व्यग्रता, चिन्ता . भई बेहाल करति ~ १८१३ ।
अवसेष बचा हुआ, शेष • हौं रहिहौं ~ ९/३८ ।
अवसेस शेष . इतनी कहत कहत स्यामा पै, कछु न रह्यो ~ ४०७८ ।
अवसेसैं शेष (दिन) . गनत गए अगुरिनि ~ ३५८५ ।
अवाज १ ध्वनि, शब्द • स्रवननि सुनी ~ १/१०८, गई बैकुंठ ~ खरी १/२४९ । २ यश लोकनि लोक ~ १/९६ ।
अवाजैं आवाजें करत ~ कामल ३३०४ ।
अवारजा संक्षिप्त लेखा या वृत्तांत • करि ~ प्रेम प्रीति कौ १/१४२ ।
अवास घर में, निवास-स्थान में बाजति नंद ~ बधाई ८१८ ।
अवासहिं निवास-भवन में बहुरि बीर जब गयौ ~ ९/७५ ।
अवासा वास-रहित, मकान छोड दिया • चितवत मंदिर भए ~ ३१०९ ।
अविगत १ अविज्ञात, अज्ञेय अथवा अव्यक्त: ~ की गति उन नहिं जानी ८०० । २ अनिर्वचनीय : ~ की गति कहि न परति १/१२ । ३ अनोखी : ~ गति करुनामय तेरी १/१०४ । ४ रहस्यमय • गुन अतीत ~ न जनावै ३ ।
अविगत-गति रहस्यमय गति : ~ कछु समुझि न परै ९/१७३ ।
अविचर अविचल, अटल . देति असीस सकल ब्रज-जुवती जुग-जुग ~ जोरी २३९३ ।
अविद्या अज्ञान : सूरदास की सबै ~ दूर करौ नंदलाल २/१५३ ।
अविनति झगडा • जुगल खंजन करत ~ २२५ ।
अविनासी १ अविनाशी, नष्ट न होने वाला . रुकमिनि लै आए जदुपति ~ ४१८४ । २ कृष्ण (जो अविनाशी हैं) . जोग कहत ~ ३५५५ ।
अविरुद्ध विरोधहीन अज-अनीह ~ एकरस १७१ ।
अविवेकहि अविवेक को . करि बहुप्रेम गह्यौ ~ ३५५४ ।
अविवेकी विवेक-रहित : ऐसौ अध अधम ~ १/१९८ ।
अवेस आवेशयुक्त, मदमत्त : सौरभ उडत ~ सारा० ९८७ ।
अशन आहार, भोजन • गरल ~ अहि भूषण धारी ८३७ ।
अष्ट आठ चंचल खग वसु ~ कंजदल २४६५ ~ सिद्धि नव-निधि २/१८ ।
अष्ट कंजदल आठ कमल पखुडियों के समान • चंचल खग वसु ~ २४६५ ।
अष्टकुल (नागों के) आठ कुल : स्रवन-हीन सुनि भए ~ नाग ९/२६ ।
अष्ट दस अट्ठारह • ~ घट नीर अँचवति १/५६ ।
अष्ट-दिसा आठ दिशाएं • ~ नभ-पूरि ९/२६ ।
अष्टम आठवाँ • ~ मास सँपूरन होइ ३/१३ ।
अष्टम ग्रह सूर्य से अष्टम ग्रह राहु, राह या रास्ता ~ में मिली नंदसुत अंग अनंग, उमंग सा० ल० ८२ ।
अष्ट-सिद्धि आठ सिद्धियाँ (अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्रकाम्य, ईश्वत्व और वशित्व ~ बहुरौ तहँ आई ५/१ ।
अष्ट-सुर [अष्ठ = आठ = वसु) + सुर=देव, वसुदेव] श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव • ~ इनकौं पठाए सा० ल० ३६ ।
अष्ट--सुरन-सुत वसुदेव के पुत्र कृष्ण • यहै हेमपुर ~ सा० ल० ९६ ।
अष्टहु आठों नायिका ~ दिसा सोहहीं १०५१ ।
अष्टांग (योग के) आठ अंग—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्यहार, धारणा, ध्यान और समाधि : सो ~ जोग कौं करै २/२१ ।
अष्टाकुल पुराणानुसार सर्पों के आठ कुल—शेष, वासुकि, कंबल कर्कोटिक, पद्म, महापद्म, शंख और कुलिक । दूसरों के मत से आठ कुल ये हैं—तक्षक, महापद्म, शंख, कुलिक, कंबल, अश्वतर, धृतराष्ट्र और बलाहक : पारथ-सीस सोधि ~ तब यदुनंदन ल्याये १/२९ ।
असंग निर्लिप्त, मायारहित, एकाकी • होइ ~ भजौ जदुराई ५/३ ।
असंगत अनुचित, अयुक्त : चलत ~ चाल १/१५३ ।
असंत दुष्ट, खल • हम ~ यह संत १३२४ ।
अस ऐसा, इस प्रकार का • नहिं ~ जनम बारबार १/२८, जिनि जायौ ~ पूत ३६ ।
असक्त आसक्त, फँसा हुआ विषय ~, अमित अघ ब्याकुल १/१०२ ।
असत १ असत्य : ~ कुमत रथ सूत १/१४१ । २ झूठा, असत्यभाषी : औघड ~ कुचीलनि सौं १/१२३ । ३ दुर्जनों की • ~ संगति १/१४४ ।
असद् व्यय बुरे कामों में व्यय, दुरुपयोग • हुतौ आढ्य तब कियौ ~ १/२१६ ।
असन भोजन, आहार आसन ~ अनल विष अहि सारा० ४०६७, ~ बाँटत खात बैठे ३२१६ ।
असन-काल भोजन के समय • रतिपति ~ गृह आए २८२२ ।
असन-बसन भोजन-वस्त्र . ~ की सुरतिहिं त्यागे ५/२ ।
असनान स्नान करि ~ अभूषन अंग भरि २४३८ ।
असनि बिजली, विद्युत ~ बाजि रथ ३३०४ ।
असबार चढकर, सवार होकर : गरुड ~ ह्वै तहाँ आए ८/८ ।
असम १ विषम . ~ काम अपार ३३२१ । २ ऊँचा नीचा, ऊबड-खाबड . कमठ पायौ ~ २१३१ ।
असमसर कामदेव मुख-सोभा पर वारौं अमित ~ १५१ ।

असमूच अधूरा : प्रतिविंबित ~ २४४५।
असरन अशरण, जिसे कहीं शरण न हो, अनाथ : राखि-राखि ~ मरनाइ, दीन वधु ~ के मरन २७१।
असरन-सरन अनाथों की शरण, जिसे कहीं शरण न हो, उसे शरण देने वाला · दीन वधु दया सिंधु ~ ४२१३, ~ कहावत हौ तुम।
असरन-सरनाई · अशरण के शरण · विनय सुनौ ~ ७/४।
असरार निरन्तर, लगातार : नैननि नीर वहैं ~ ३१४०।
असल १ वास्तविक वस्तु : निहचै एक ~ पै राखै १/१४२। २ अनचुभी, भोली · अव आए मोहि ~ सलावन २६४४। ३ मूल-धन को, असल को : करि अवारजा प्रेम प्रीति कौ ~ नहीं खतियावै १/१४२।
असलेहु असह्य · ~ साल मले ३१८१।
असवार सवार · रथनि भए ~ २९१४, नृपनि रिपिनि पर ह्वै ~ ६/७।
असवारी सवारी : विदु सरोवर आये माधव किए गरुड ~ सारा० ५१, निकले सबै कुँवर ~ ४१६६।
असाधु दुर्जन, छली : गहि ~ कह सव लोइ ३/१३।
असाधुहि असाधु (दुष्ट) को . कदली कटक साधु ~ १/२१७।
असार व्यर्थ, निरर्थक : दिन वीते जात ~ १/६८।
असावरि असावरी राग : मालवाई राग गौरी अरु ~ राग २८३१।
असि तलवार · चमकत रद ~ २४५५।
असित १ काली, श्यामवर्णी · ये सखि ~ देह धरे जेते ३५८९, ~ न अपनें होंहि ३५९५। २ नीला : ~ सुगध अरगजा लीन्हौ २८९२।
असित-अरुन-सित काले, लाल और सफेद · ~ आलस-लोचन ६५।
असितन काले लोगों · यह ~ को रोत्यौ ३३८३।
असित-सित काला और सफेद : अरुन ~ पीतऽनुहार ४३०१।
असिष आशीर्वाद · मनावति ~ दै दै नाम ३०२९।
असी अस्सी · ~ सहस किंकर-दल तेहिकें ९/१०४। ~ **इक** अस्सी एक (लगभग अस्सी), अस्सी एक = इक्यासी : ~ कर्म विप्र को लियौ ५/२।
असीस आशीर्वाद : देत ~ सूर, चिरजीवौ रामचन्द्र रनधीर ९/१८, उमँगि ~ देत सव हित ३०। ~ **दई** आशीर्वाद दिया : तवहिं ~— परसन ह्वै ४०३३। ~ **सुनाई** आशीर्वाद दिया : द्विज-गन ~— ९/१६९।
असीसैं आशीर्वाद देती हैं : जोरि कर विधि सौं मनावति ~ लै नाम २५६५।
असुचि अपवित्र : गो-सुत ~ तवहिं तैं भयौ ६/५, असुर ~ है मेरी जाति ७/२।
असुभ विपत्तियाँ · अखिल ~ हति राखे ३८५२।
असुरंतकारी असुरों का अंत करने वाले अर्थात् श्री कृष्ण · भक्त-भ्रम-हरन ~ ४१९४।
असुर राक्षस कसरी क वल ~ सहारे १५१५, जरासंध सौं ~ सवारौ १/१७२।
असुर-अहेरौ राक्षसों का शिकार · केतिक सत्र जुगै जुग वीते मानव ~ ९/१३२।
असुर-कुल असुर-समूह · उधरौं धरनि ~ मारौ ४।
असुर-गुरु चूर असुरों के गुरु शुक्र (हीरे) के चूर्ण में : किधौं ~ २६६८।
असुर-दिसि असुरों की ओर · ~ चितै मुसुक्याइ मोहे सकल ८/८।
असुर-देह राक्षस का शरीर : तू अव ~ धरि जाइ ६/५।
असुरनि १ असुरों : लरे भई ~ की हारि, मथि समुद्र सुर ~ के हित। ३ असुरों के · ~ पास वहुरि चलि गए १२/२। ४ असुरों को · सव ~ मारि वहाऊँ २२१। ५ असुरों ने · ~ विस्वरूप सौं कह्यौ ६/५। ६ असुरों में : खगपति अरि उर ~ सका १४३। ७ असुरों से · आइ ~ कह्यौ, लेहु यह अमृत तुम ८/८।
असुर-निकंदन राक्षसों का विनाश करने वाले : सूरदास प्रभु ~ ६४।
असुर-पति १ राक्षसराज (हिरण्यकश्यप) : कह्यौ ~ सौं यौं जाइ ७/२। २ राक्षसराज (वृषपर्वा) : करौ ~ अव तुम सोइ ९/१७४।
असुर-बुधि राक्षसी बुद्धि : ~ यह कीनी ३/११।
असुर मन राक्षस के मन में भयौ ~ अति अहलाद ७/२।
असुर-संहार राक्षस (हिरण्यकश्यप) का वध : करौ क्षमा कियौ ~ ७/२।
असुर-संहारन असुरों का नाश करने वाले · संत उवारन ~ १९२।
असुर-सुता · असुर (वृषपर्वा) की पुत्री शर्मिला ~ ताकै सँग दई ९/१७४।
असुर सैन असुरों की सेना : पहुँची तव ~ ९/९६।
असुरहन असुरों को मारने वाला · ओंकार आदि वेद ~ सारा० ९९३।
असुरहि असुर को · ज्ञान-बुद्धि ~ क्यौं भई ६/५।
असुरहूँ असुर ने भी · ~ देवगति तुरत पाई ८/९।
असुराधिप असुरों के राजा · रावण कुम्भकर्ण ~ वढे सकल जग माहि सारा० १४१।
असुरे राक्षस : ~ विद्या समर वहुरि लाग्यौ करन ४०२१।
असूया ईर्ष्या, एक संचारी भाव : एक अवल करि रही ~ सा० ल० ४७।

असेस अपार, अनत : मधुर मेह ~ २२९० ।
असोच बेफिक्र, निश्चिन्त • चिन्ता रहि ~ १/१०२ ।
असौच अपवित्र • हौ ~ अक्रित अपराधी १/१२८ ।
अस्त १ अस्ताचल . हिरनकस्यप बढ्यौ उदय अरु ~ लौं १/५ । २ डूबते : मानौ ~ होत रवि साँझ २५३० ।
अस्तन स्तन : ~ बिष जु निचोहिँ परि० १/३१ ।
अस्तन-पान स्तन-पान, दूध पीना • एक दिन ~ करावति सारा० ४२७ ।
अस्ति हड्डी : ~ रही कै चाम २८२३ ।
अस्ती मथुरेश कस की पत्नी : ~ अरु प्रारती दोउ पत्नी कसराय की सारा० ५९६ ।
अस्तुत १ प्रशसा (स्तुति) : कस ~ मुख गानी ५८९ । २ अप्रशसा, निंदा, व्याजस्तुति अलकार : विरह ~ पेर सा० ल० २९ ।
अस्तुति १ स्तुति, प्रार्थना, प्रशसा, वन्दना, विनय . करन लगे ~ या भाइ ४२९७, बहुरि इद्र ~ उच्चारी ७/२, बहुरि बहु भाइ प्रहलाद ~ करी ७/६ । ~ **करत** प्रशसा करती हुई • मन मन ~— बखानै ८९१ । ~ **करी** स्तुति की• इहिं बिधि बहु ~— ११७५ । ~ **कीन्ही** स्तुति की हाथ जोरि करि ~— ४१९० । ~ **गानी** स्तुति गायी धन्य-धन्य मुख ~— १७८२ । ~ **गावैं** • स्तुति वचन बोल रहे हैं : और सबै मुख ~— ९३६ । ~ **मुखनि** मुखो से स्तुति . सुरगन करत ~— ९७९ ।
अस्त्र फेंक कर चलाए जाने वाले हथियार : जाकै ~ तिनहिं तेहि मार्‌यौ ३०४९, ~ **दीन्हे डारि** अस्त्र डाल दिये दीन ह्वै सुरराज आगैं ~— ८८२ ।
अस्त्रनि अस्त्रों के • अग-अग बल अपने ~ २०३५ ।
अस्थान १ स्थान • निज ~ मन मै नहिं भावत २१८५ । २ स्थान पर : भग ~ नेत्र तब भए ६/८ । ३ (पूजा का) स्थल : ~ लीपि पात्र सब धोए २६० ।
अस्थामा अश्वत्थामा (द्रोणाचार्य का पुत्र) . भीषम दोन करन ~ १/२४९ ।
अस्थि हड्डी • आमिष रुधिर ~ अग १/७६ ।
अस्थित स्थित • जौ लगि ~ देहु ३५३९ ।
अस्थिर स्थिर, अचचल : भक्तनि हाट बैठि ~ ह्वै २/३१० ।
अस्नान स्नान : करति ~ सब प्रेम बुड्कीहिं दै १९११, राम गगादि, जमुनादि ~ करि ४२२३ ।
अस्पर्स स्पर्श से, छूने से : भऐ ~ देव तन धरिहै ८/२ ।
अस्म पत्थर . ~ लकुट पद त्रान १/१०३ ।
अस्म अचेत जड शिला या पत्थर : ~ प्रगट पानी मै ९/१२३ ।
अस्मय पाषाण ~ तन गौतम तिया १/४ ।
अस्मर कामदेव • निपट ~ दोऊ, निरखि देखि री सखि ३०६० ।
अस्रु आँसू रोमाच प्रगट भए आनँद ~ बहाइ ७१८ ।
अस्व १ घोडा • इद्र ~ कौं हरि लै गयौ ९/९, कहूँ ~ शृगार सारा० ६७४ । ~ **खोज** घोडे की खोज • ~— कतहूँ नहिं पाए ९/९ । ~ **चढि** घोडे पर चढकर : कहुँ मृगया को चले ~— श्री बसुदेव कुमार सारा० ६६५ ।
अस्वत्थाम, अस्वत्थामा अश्वत्थामा (द्रोणाचार्य का पुत्र) • ~ भय करि भग्यौ , ~ न जब लगि मारौं १/२८९ ।
अस्वमेध अश्वमेध (एक प्रकार का यज्ञ) : ~ जज्ञहु जो कीनै २/३, ~ करवाय युधिष्ठिर सारा० ८४१ ।
अस्विनि सुत अश्विनी कुमार (त्वष्टा की पुत्री प्रभा नामक स्त्री से उत्पन्न सूर्य के दो पुत्र) . ~ इहि अवसर आए ९/३ ।
अस्विनि-सुत-हित अश्विनी कुमार के लिए • ~ भाग उठायौ ९/३ ।
अहं अभिमान, अहकार . ~ ममता हमैं सदा लागी रहै ८/१६ ।
अहँकार--पटवारी अहकार रूपी पटवारी • ~ कपटी झूठी लिखत बही १/१८५ ।
अहँकार परे गर्व से हीन : देखियत दोउ ~ २१२५ ।
अहँकारी घमडी, अभिमानी • मेरौ सुत ~ ९६७ ।
अहंभाव अभिमान, अहकार, अपने को सब कुछ समझने का भाव . ~ तें तुम बिसराए १/२०८ ।
अहं-ममता अहकार और ममता : ~ हमे सदा लागी रहै ८/१६ ।
अह दिन ~ निसि यह तन जारौं १/२०९, ~ निसि नाथ रहत बेहाल ८/१२७ ।
अहत छूटती है • अब पै फेन ~ २५८५ ।
अहदी सिपाही (दूत) . जम ~ पठयौ १/६४ ।
अहनिसि रात दिन कोटि तैंतीस सुर सेव ~ करैं ९/१२७, ~ रहत पलक सुधि बिसरे २३०५ । ~ **बिसारी** दिन रात भुला दिया है : नींद अरु भूख ~ — ४१९४ ।
अहमिति अविद्या, अहकार ~ जनम बिगोइसि १/३३३ ।
अहरनिसि रात दिन प्रेम पय सींच्यौ ~ ३९१७ ।
अहलाद आनद, हर्ष . भयौ असुर मन अति ~, अति ~ भयौ जसुमति ३१ ।
अहल्या गौतम ऋषि की पत्नी, अहल्या का • मारग मे ~ उद्धारी सारा० २०२ ।
अहार भोजन : हरि ~ चलि जात ३९७६ ।
अहारी खाने वाला अविगत अल्प ~ ८/१४ ।
अहि १ नाग, सर्प • गोकुल कुल ~ बिरह डस्यौ ३८५०, कुटिल बिकट ~ कारे ३५९२ । २ कालिय नाग : ~ सिर धरि अगनित रिपु मारे १/९४ । ३ नाग को : ~ बेनी मोहयौ २७७७ ।

अहि-अंग-बिभूषन सर्प से विभूषित अंग वाले अर्थात् शिव : अहि-सायी, ~ अमित दान-बल-विष हारी १७१ ।

अहि-इन्द्र नागराज (कालिय नाग) : ~ पैं गयौ ५८४ ।

अहि कारौ काला सर्प : क्यौंऽब छुवहिं ~ ३७४२ ।

अहि-वरनी सर्पिणी : ~ न फिरी २३१५ ।

अहि-छत्र अहिछत्र (कुकुरमुत्ते) के : अनायास ~ छिनक मैं ९६८ ।

अहिनारि सर्पिणी (कालियनाग की स्त्री) : कर जोरे ~ ५६८ ।

अहित १ अकल्याण, बुराई : पांडव ~ विचारी । २ अकल्याण-कारी, नुकसानदायक : और ~ अभच्छ भच्छति १/५६ ।

अहिनि सर्पिणी, नागिन : सुभग वेनी भइ ~ कारी २०७९ ।

अहिनी सर्पिणी : मानहु अर्द्धचन्द्र तट ~ १८१४ ।

अहिपति १ सर्पों के राजा : ज्यों ~ केंचुरि कौ ११५८ । २ शेषनाग : कवरि ग्रथित ~ न सहस फन २११७ ।

अहिपति-सुता ऐरावत वंशी कौरव्य नाग राज की कन्या उलूपी : ~ सुवन सन्मुख ह्वै १/२९ ।

अहिपति-सुता-सुवन ऐरावत वंशी कौरव्य नागराज की कन्या उलूपी का पुत्र वभ्रुवाहन : ~ सन्मुख ह्वै वचन कह्यौ इक हीनौ १/२९ ।

अहि-फन कालिय नाग का फण : जे पद ~ फन प्रति धारी ९८१ ।

अहिवर सर्पों में श्रेष्ठ, सर्पराज : या विषधर स्याम ~ ७४५ ।

अहि-भूषन-धारी सर्प का आभूषण धारण करने वाले (शिव) : गरल-असन ~ ७९० ।

अहि-मैन सर्प रूपी कामदेव : डसी कठिन ~ ७४९ ।

अहिर अहीर (एक जाति विशेष) : ~ दुहत सब गैया ६७९, ~ जाति गोधन कौं मान १९२५ ।

अहिर जाति अहीर एक जाति विशेष : ~ ओछी मति कीन्ही ९०७ ।

अहिरनि १ अहीरों के : ~ काँधे जोरि ५८३ । २ अहीरों ने : ~ करी अवज्ञा प्रभु की ८५६ ।

अहिराइ अहिराय (कालियनाग) : मोकौं नहिं जानत ~ ५५५ ।

अहिराज सर्पराज (कालियनाग) : विनु जानैं ~ विष-ज्वाल वरसै । ~ **लजाने** सर्पराज (शेषनाग) लज्जित हो गए : भुजा देखि ~— १७५७ ।

अहिरावन रावण का एक पुत्र जो पाताल में रहता था : तुम्हें मारि ~ मारैं देहि विभीषन राइ ९/१४० ।

अहिलता नागवेलि, पान : ~ रंग मिट्यौ अधरन २६७९ ।

अहिलता रंग पान का रंग : ~ मिट्यौ अधरन २६७९ ।

अहिल्या गौतम ऋषि की पत्नी, जिसका सतीत्व इन्द्र ने भ्रष्ट किया था और जो पति के शाप से पत्थर हो गई थी, श्री राम के चरण स्पर्श से इसका उद्धार हुआ : वलि वह चरन ~ तारी १/३४ ।

अहिवात सौभाग्य, सोहाग (सुहाग) : चेरि कौं ~ दीजै ५७७ ।

अहि सयन शेषशायी (शेष पर शयन करने वाले) अर्थात् विष्णु : छीर-सिंधु ~ मुरारी २०२२ ।

अहिसायी सर्प पर शयन करने वाले अर्थात् विष्णु : ~ अहि अंग विभूषन १७१ ।

अहीठ १ अधकचरे : ये इन अवल ~ २३७२ । २ अधिष्ठ, सायी : अतिहि नवल ~ २२८७ ।

अहीर ग्वाला (एक जाति विशेष) : हम ~ व्रजवासी लोग १९२२ ।

अहीर-गृह अहीर के घर की : हम ~ नारि १६१८ ।

अहीरा अहीर : अति ही निठुर ~ परि० १/१५१ ।

अहीरि ग्वालिन, अहीरिन : हम अवला ~ व्रजवासि ३९०१, हम ~ कह जानैं, जोग जुगुति की रीति ४०९५ ।

अहीरी १ ग्वालिन, अहीरिन : नैंकु हूँ न थकत पानि निरदई ~ ३४८ । २ आभीर राग : मोहन राग ~ गाई ३२१७ ।

अहुँठ तीन और आधा, साढे तीन : ~ पैग वसुधा सब कीनीं १२५ ।

अहूठें नष्ट हो जाएगा : सूर वदन देखतहिं ~, यह सगीर कौ रोग ३३९३ ।

अहेरिया शिकारी : हेरि-हेरि ~ हरि ३५८४ ।

अहेरी १ आखेटक, शिकारी : अचूक ~ नहीं अजान ३३२६ । २ शिकारी ने : हम अवला ठगीं विवस ~ ४०९४ ।

अहेरौ शिकार : करत असाधु ~ ४२९५ ।

अहै वर्तमान है : राखनहार ~ कोउ औरै ७/३ ।

अहो अव्यय हे : ~ मधुप निमि दिन मरियत हैं ३८८९ । क्रि० १ है : ताकौ विषम विषाद ~ ९/७ । २ हो : वडे चतुर तुम ~ कन्हाई १६१० । सबोधन १ अरे : ~ सुवल श्रीदामा भैया ४६३ । २ अरी : ~ महरि सुन लेहु बुलाई ८१९ ।

अहो पति हे स्वामी : (देवकी) ~ सो उपाइ कछु कीजै १०/० ।

अहोभाग अहो भाग्य : ~, नदसुत तप कौ पुंज लियौ ४८६ ।

अहौ १ हे : ~ पथिक कहियौ उन हरि सौं ३१९१ । २ अहो ! : कहन लाग्य सुर ~ विचारौ ३०७० ।

अह्यौ नाग ने : मनु डसि गयौ ~ ३१३५ ।

आ

आँक बार एकहु ~ न हरि भजे १/३२५।
आँकुसा अकुश ~ राखि कुभ पर करष्यौ ३०५८।
आँकौं अक मे · ~ भरि आइ लीजै २७९१।
आँखनि आँखो से · देखत अपनी ~ तुमही ४०७१।
आँख-मिचाई आँख मिचौली . ह्यॉ हरि खेलत ~ ४०५०।
आँखि आँख . सिव की लागी हरि-पद तारी ताते नहि ~ उघारी ४/५। ~ **उघारि** आख खोली तब नारायन ~— ११/३। △ ~ **धूरि सी दीन्ही** मूर्ख बना दिया हरि की माया कोउ न जानै ~ — ६९४। ~ **नहि मारत** पलक तक नही गिराते है, एक पलक भी विलम्ब नहीं करते हैं तिहिं जल गाजत महावीर सब, तरत ~— ९/१२३। ~ **लगी** नीद आई बहुरौ भूलि न ~—३२६५। ~ **लुभी** नेत्र लुभाए रहते हैं घन तन-स्याम, पितावर दामिनि, चा तक ~ — १८७०। △ **देखौं भरि** ~ इच्छा भर कर देखूँ अवकैं जो परचो करि पावौं अरु —~ ९/१६४। △**आवत न ~ तर** कुछ नहीं समझता, तुच्छ मानता है और पतित —~— देखत अपनौ साज १/९६। △~ **गडि लागत** मनमे बसता है, पसद आता है . हमरे यौवन रूप ~ — १४६१। △ ~ **दिखावत** सक्रोध देखता है ~ — हौ जु कहा, तुम करिहौ कहा रिसाइ २९०७।
आँखिनि १ आँखो ~ मैं बसै, जिय मैं बसै, हिय मे बसत १९१९। २ आँखो मे करि निरध निवहे दै माई, ~ रथ पद धूरि ३१६०। ३ आँखो मे मेरी ~ कछु भूल भई सी २११३। △~ **धूरि दई** भ्रम मे डाला ब्याकुल होत हरे ज्यौ सरवस ~— १/५०।
आँखिनी आँखो ~ तैं छिनक कान्ह करि सकै न न्यारे ३५८२।
आँखि मिचाई आँख मिचौली हरि ग्वालनि मिलि खेलन लागे बन मैं ~ १३९७
आँखि-मुँदाई आँख मिचौली हरषि स्याम सब सखा बुलाए खेलन ~ २३९।
आँखी आँख मे मैं राखे धरि तुहि ~ परि० १/६३।
आँगनहि आँगन मे स्याम रहे ~ डराई ८९३।
आँगनही आँगन मे एक स्याम ~ देखे, इक गृह रहे समाइ २५२६।
आँगरी अँगुली · बिदुरित दनि जु अनूप ~ परि० १/१२०।
आँगुरिनि १ अँगुलियों के सुभग ~ मध्य बिराजत ६७५। २ अँगुलियों से कैसे आइ पावतौ, जौ ~ छियतौ ३७३।
आँगुरी अँगुलियाँ कहाँ मेरे कान्ह की तनक सी ~ ३०७।
आँगे अग से लगाए, अपनाए दिनहिं दिन अधिकार बाढ्यौ ~ रहत कन्हाइ १२७१।
आँचर १ आचल की गाँठि ~ छोरि कै, मोतिसरी लीन्ही हाथ २००६। २ आचल से स्रवन मूँदि, मुख ~ डाप्यौ ९/८३।
आँचि गमी मधुर ~ मै औटि सिरायौ १६००।
आँची गमी, तपन से काल डरत भ्रू भँग की ~ १/१८।
आँचे तपाया, भून दिया · बिरह अनल ~ २५४९।
आँजत अञ्जन लगा लिया . ~ नैन ११८१।
आँजति अञ्जन लगाती है बेंदी भाल, नैन नित ~ २०५१।
आँजन अजन लगाने की क्रिया ललिता लोचन ~ लागी २९०१।
आँजही अजन लगा रही थी नैन अजन अधर ~ ९९८।
आँजहु लगाओ : ~ भस्म जु मुद्रा सेल्ही ३४९२।
आँजि अजन लगाकर सीस बेनी गूँथि लोचन ~ करी अनीत २८७६।
आँजैं १ अजन लगाए लोचन मूँदि रहौ बिनु ~ ३८८३। २ अजन लगाने से सूरदास सोभा क्यौं पावत आँखि आँधरी ~ ३८२५
आँजै अजन लगाते है : सारँग सुत तहाँ ~ २७०६।
आँध (काम से) अन्धा चारु मोहिनी आइ ~ कियौ १/४३।
आँधरि अधी कच खुभि ~ काजर, कानी ३२३०।
आँधरी अन्धी बूची, खुभी ~ काजर, नकटी पहिरै बेसरि ३५५०।
आँधरौ अधा एक ~, हियकी फूटी, दौरत पहिरि खराऊँ ४१२६।
आँधे अधे . जोग गँभीर कूप आँधे सो ३७३०।
आँधौ अधा सेवक सूर लिखन कौ ~ पलक कपाट अरे ३३००।
आँब आम ~ आदि दै सबै सँधाने ३९६।
आँसु आँसू आनँद ~ ढरत लोचन भरि ४२९।
आँसुअनि आँसुओ मे स्याम बिनु ~ बूडत ४०७४।
आँसुवनि आँसुओ से : ~ **मुख धोवै** बहुत रो रहा है, विलाप कर रहा है इतनक मुख माखन लपटान्यौं डरनि ~ — ३४७।
आँसु-सलिल १ आँसू रूपी जल का : ~ प्रवाह मानौ, अर्घ नैननि देत ४१४४। २ आँसू रूपी जल मे . ~ बूडत सब गोकुल ४११३।
आँसू-ढरनि अश्रु पात ललित श्री गोपाललोचन लोल ~ ३५१।
आइ[१] **१** आ पहुँची ~ जसोदा रिस भरि ४१३, ~ गायौ सरस साँवरो सा० ल० ७। २ आई दुर्धर परहस्त सग ~ सैन भारी ९/९६। ३ आए . यह सुनि असुर इन्द्र-पुर ~ ६/५, द्वारै ~ स्याम घन सजनी १८८८। ४ आयगा

(होगा) मेरे कह्यो न मिथ्या ~ ६/५। ४ आया बकासुर छल करि ~ ४२७। ६ आकर हम मरवग नें बैठे ~ सहे-लियाँ ९/१९। △ ~ कढे आ निकले स्याम कहू न ~— हाँ १९६२। ~ नियरानी निकट आ गई ताका मृत्यु ~— ४२०६। ~ परें आ पड़े दुख सुख, कीरति भाग आपनें ~— १/६२। ~ बस्यो आकर बस गया कोऊ ~— समरथ नर ४२३६।

आइ² आयु तुम कह्यो सप्त दिवस मम ~ २/१।

आइके आकर एक बार ब्रज ~ हरि दरसन देते ३७८६।

आइगो आ गया है भू-सुत ~ इहि वेर मा० ल० ५३।

आइबें आने को। ~ तौ आइए आना है तो आएँ ~— हरि, पुनि सरीर समात ४०७४।

आइयाँ आया है, आ निकला है कम काम गढ खेलन कमल कारन ~ ५७७।

आइये आइए नैकुँ निकुंज कृपा करि ~ २५७०।

आईहें आएँगे कहि गए निसि ~ हरि २७११, अनहु कान्ह ~ गोकुल ३१७४।

आइहे आएगा सर्प इक ~ बहुरि तुम्हरे निकट ८/१६।

आइहौं आऊँगा मैं ले जु ~ कृपानिधानहि ९/९५। २ आऊँगी दरसन पाइ ~ अवही ८०३।

आइहौ आओगे : ~ पुनि कबै ३०७५।

आईं आईं ~ मंगल-कलस साजि के २७।

आई १ आकर बरष्यौ ब्रज पर ~ १/२०२, छुपनातर प्रग-ट्यो अब ~ ८४० । २ आ गए अब ऐसें ढँग ~ १९७२। ३ आ रही है यह तो परंपरा चलि ~ ३१२०। ~ चलि (रीति) चली आ रही है जैसिहिं भाँति मढा ~— ८८९। △ जे ~ मुख सबै कही बिना सोचे समझे जो बात ध्यान मे आई, कह दी भवन गई आतुर ह्वै नागरि —~— २६९२।

आउ आओ मोहन ~ तुम्हें अन्हवाऊँ १८५।

आउज आवज, ताश नामक एक वाद्य बीना झाँझ, पखावज ~ और राजसी भोग ९/७५।

आउझ आवज, एक वाद्य (दे० आउज) ~ बर मुहचंग, नैन सलोने री रँगराची ग्वालिनि २८६७।

आउ-बाउ आय-बाँय, बकवास मुख मोरिबो जु ~ कहि १४८५।

आऊँ १ आता हू जहँ-जहँ परत भीर भक्तन को तहाँ प्रगट हो ~ सारा० १३२। २ आती हूँ ऐसे ही रहि हा लालहि जौ लौं लै ~ २८०९।

आऊँगौ आऊँगा रैनि तुम्हारे ~ २४९३।

आऊ आओ - सब सौंडा मिलि ~ ४८१।

आए १ आ गए कमलनि चढि ~ मानौ ससि ३२। २ आए हुए . कीजे लाज मरन ~ की १/१११। ३ आने, आगमन गमचंद्र ~ की तुमका, देन बधाए आयौ ९/८७। ४ आने मे हमरी सुधि भूली अलि ~ ३८६२।

आएँ १ आए हुए बडा बार मोको भइ ~ १७५०। २ आने पर ज्यों ~ रितुराज मत्ता र्।, बेलि द्रुमनि महगन २३२९। ३ आने का • गये मोच ~ नहिँ आनँद २/१८।

आक मदार तूल ~ उवराइ २२२९।

आकरपन आकर्षण तिन माया ~ करी ९/२।

आकरपि आकर्षित करके ~ जिय लेन कबहुं १०६१।

आकरपे आकर्षित किया मुरली मन ~ ३६३०।

आक-रुई मदार की रुई फर फूटे ज्यौं ~ १८५५।

आकर्ष खींचा कालिंदी ~ कियो हरि मारे दैत्य अपार मारा० ३२३।

आकर्षति १ आकृष्ट कर लेते हैं ~ तन-मन जुवतिनि के १२२७। २ आकृष्ट कर लेती है दे भुवन ~ प्रान ११८०।

आकर्षि खींचकर भुज ~ बाम कर लीन्ही १६८०।

आकर्ष्यौ आकृष्ट कर लिया • चित ~ नंद सुत १६४०।

आकार १ रूप इत बरनि, उत ब्योम कै चित्र गुहा कै ~ ४२७। २ समान कपि घन कं ~ ९/१२४।

आकारि रूप मे . राजति इहिं ~ २११८।

आकास १ आकाश बहुरि ~ मग जाइ द्वारावती ४१८९। २ आकाश की ओर कोउ रहे ~ देखत। ३ आकाश मे धुव ~ विराजे १/३६ ~ गयौ आकाश मे (गूँज) गया टूटते धनुष के सब्द ~— ४२२१।

आकास-बानी आकाश-वाणी, देवताओं की वाणी सूर ~ भई तबै नहैं ९/७६।

आकास-मारग आकाश-मार्ग मे लंक-गढ माँहि ~ गयो ९/७६।

आकासहिँ आकाश मे पटकन सिला गइ ~, स्रोनित छिद्र उछरि ~ ९/१५८।

आकासैं आकाश मे पटकन सिला गइ ~ सारा० ३८२।

आकुलता व्याकुलता, घबराहट कबहुँक बिरह जरति अति व्याकुल ~ मन मे अति २४९८।

आकुलित उत्सुकतापूर्ण ~ पुलकित गात ६२३।

आकूती स्वायंभुव मनु की एक कन्या, जो रुचि नामक प्रजापति को व्याही गयी थी ~, देवहूती औ परसूता चतुर सुजान सारा० ४७।

आकृत आकृति/आकार का नख नैना ~ उर लागे १०८६।

आकैं मदार (के फूल) मे रुचि मानत हैं ~ २३५६।

आखत अक्षत, बिना टूटा हुआ चावल जो पवित्र कार्यों में प्रयुक्त होता है परम हित ~ अमल चढावौ मा० ल० ९।

आखुब चूहा : मेढा महिष, मगर गदरारौ, मोर ~ मन वाहन गावत ०७६।

आखेट शिकार (के लिए) ऊधौ अरु अक्रूर वधिक मति, ब्रज ~ ठए ३५८८।

आखौ सपूर्ण, सारा वकत रहौ दिन ~ ३५४०।

आगति-स्वागत आदर-सत्कार • कीजो ~ १९०५।

आगम १. आगमन निसि ~ जानि चले ब्रज ५०६। २ आशा : बहुरि मिलन कौ ~ कीन्हौं ९/८२। ३ समागम रति ~ हित अति उपजायौ २०३२। ४ आने का लक्षण • अब बरषा कौ ~ आयौ ३२९९। ५ शास्त्र सनक सकर ध्यान धारत, निगम ~ बरन १/३०८। ६ उत्पत्ति प्रथम समागम आनँद ~ दूलह वर दुलहिनीं दुलारी ४२०२।

आगमहि आगमन के लक्षण से ऋतु बसत के ~ मिलि झूमक हो २९०३।

आगर वि० चतुर, श्रेष्ठ हरि तैं और न ~ १/९१। **पुं०** दण्ट (अर्गल) ~ इक लोह-जटित, लीन्ही बरिवड ९/९६।

आगरि राशि, समूह 'सूरदास', राधा गुन ~ १९५६।

आगरी स्त्री० राशि थी, समूह थी, भरी हुई थी • नागरि सब गुन ~ ११८०। **वि०** समृद्ध, भरी-पुरी • तू अति भागनि ~ २८०१।

आगरे चतुर, श्रेष्ठ जैसे तुम अरु सखा तिहारे, गुनन ~ दोऊ ३९७९।

आगि अग्नि, आग ~ उठी अनराई ३९६८।

आगिलौ आगे आने वाला अबकौ जन्म, ~ तेरौ, दोऊ जनम सुधरतौ १/२९७।

आगिवर्त अग्निवर्त, एक प्रकार के मेघ, इद्र का एक सेनापति।

आगी आगे, पहले मिली जाइ सबहिनि तै ~ ८००।

आगे १ भविष्य या दुख तौ ~ कौं भारौ ९/३६। २ भविष्य के लिए • पछिले कर्म सम्हारत नाही करत नहीं कछु ~ १/६१। ३ समक्ष, सम्मुख श्रीदामा चले रोइ जाइ कहिहौं नँद ~ ५८९। ४ पूर्व, पहले ऊधो भले लोग ~ के ३९९१। △ ~ **लैन सिधाए** स्वागत किया, अभ्यर्थना की : हरि आगमन जानि कैं भीषम, ~ — ४१७८।

आगैं १ समक्ष, सम्मुख चुगली करी जाइ उन ~ २३३४। २ भविष्य मे, आगे चलकर यह तौ कथा चलैगी ~ सब पतितनि मैं हाँसी १/१९२। ३ और दूर, आगे बढकर यह कहि ऊधव ~ चले ३/४। ४ आगे, पहले मन पाछैं, ये ~ धावत २२८६। △ ~ **दै** आगे होकर ~— पुनि ल्यावत बर कौं ४२४। △ ~ **होइ लयौ** आगे बढकर स्वागत किया तब ब्रजराज सकल गोपी जन, ~— ४०९८।

आग्यौ पहले स्रवननि सुनि कहत, न एकौ सूर सुधारौ ~ १/७३।

आघात १ शब्द, ध्वनि, गूँज गरज, किलक ~ उठत, मनु दामिनि पावक भार ९/१२४। २ प्रहार, चोट, आक्रमण सुनत घहरानि ब्रज लोग चकित भए, कहा ~ धुनि करत आवै ६२।

आचरज आश्चर्य, विस्मय • मोहिं ~ एक पै लागत ४१३१।

आचरतौ आचरण करता, व्यवहार करता कर्म-वासना छाँडि कबहुँ नहिं साप पाप ~ १/२०३।

आच्छादित आवृत्त, ढक गया निसि-सम गगन भयौ ~ ८७७।

आछि आँख △ ~ **दिखावत** आँख दिखाते है, गुस्से होते है। फेटि कमरिया काध पै काहे —~ परि० १/३८।

आछी अच्छी, उत्तम, भली छिटकि रही ~ उजियरिया २४६।

आछे अच्छे, उत्तम, भले ~ मेरे लाल हो, ऐसी आरि न कीजै १९०।

आछेप आक्षेप, व्यग्य, आक्षेप अलकार सूर कर ~ राखौ, आजु के दिन नेग सा० ल० ३०।

आछैं क्रि० वि० अच्छी तरह सूर प्रेम भावनि सौं रीझे, स्याम-चतुर बर ~ २३८५। **वि०** अच्छे गो दोहन की बेर जानि सँग, लिये बछरुवा ~ २८२६।

आछौ १ अच्छा, उत्तम, भला ~ गात अकारथ गार्‌यौ १/१०१। २ मगलकारी, शुभ घडी वाला • ~ दिन सुनि महरि जसोदा, सखिनि बोलि सुभ गान कर्‌यौ ८८।

आछ्यौ अच्छा, भला ~ **बपु काछे** अच्छा वेश धारण किये हुए सूर स्याम ~— पटतर मेटि बिराने १७५६।

आज-काल आज कल और है ~ के राजा १/१४५।

आजन अजन नेह होत जस ~ ३७११।

आजीविका रोजी, जीवन का सहारा बिना ~ मरत सारी प्रजा ४/११।

आजु आज, वर्तमान दिन ~ मैं गाइ चरावन जैहौं ४११।

आजु-काल्हि आज-कल ~ दिन चारि-पाँच मैं, लका होति पराई ९/११७।

आजु लौं आज-तक मौन भई मैं रही ~ २३९४।

आजुहि आज ही ~ तें ऐसे ढँग आए २०८७।

आजुहि आज ही ~ पढि लीन्ही चतुराई १७००।

आजुही आज ही ~ रैनि दोउ सग ये मिलेगे २०२५।

आज्ञाकारि आज्ञाकारिणी नाम सुसीला, ताकी नारि, पतिव्रता,

पति ~ ४२२४।

आठ-वदन आठ मुख (बाँसुरी के आठ छेद) : ~ गरजति गरवीली १२४७।

आठ-रवि रवि से आठवाँ ग्रह=राहु=राह=मार्ग ~ तें देख तब तें परत नाहिं गँभीर सा० ल० ४७।

आठहूँ आठों, कुल आठ सूर स्याम सहाइ हैं, तौ ~ सिधि लेहि १/३१४।

आठें आठवे · ~ बुद्ध रोहिणी आठें सारा० ३६५।

आठैं अष्टमी तिथि ~ कृष्न पच्छ भादौं, महर कै दधि-काटौं १०/३१।

आठौ आठों ~ सिद्धि घरहिं अति आतुर ८९२।

आड स्त्रियों के माथे का आडा तिलक . कबहुं केसरि ~ रचति दर्पन हेरि २१९०, ~ मिटी छूटी अलकावलि परि० १/९३।

आडत रोकते ह, छेकते हैं प्रेम न होइ कौन विधि कहियै, झूठें ही तन ~ ३५७२।

आडि रोक उत जसुदा इत आपु परस्पर ~ रहे कर पाज परि० १/१७

आडे आड मे . अति सूछम कटि-तट ~ निमि ११९४।

आढ्य धनी हुतौ ~ तव कियौ असद्व्यय १/२१६।

आत-पत्र · छाता, छतरी ~ मयूर चंद्रिका लसति है रवि ऐनु ३२७७।

आतम वि० आत्म, अपना, निजी ~ रूप सकल घट दरस्यौ ७/३३। **स्त्री०** आतमा सदा एकरस ~ सोइ ७/२।

आतमा आत्मा तन ~ समरप्यौ तुमकौ ४१७१।

आतमा-निवेदन आत्म निवेदन सख्य और ~ प्रेम-लच्छणा जासु सारा० ११६।

आतुर वि० व्याकुल, व्यग्र, अधीर गरुड छाँडि ~ ह्वै धाए, ९/७। क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी जननी ~ करति रसोई १९७९। ~ **आए** व्यग्र होकर आए सुनतहिं हम सब ~ — ८८८। ~ **करि** जल्दी करके, शीघ्रता से ~ — बोले नँद जिनकौं ९०४। ~ **करी** व्याकुल कर दिया मदन तन ~ — ११८७। ~ **ह्वै धाए** हड़बड़ी के साथ दौड़े : सुनत बचन ~ — ९८४।

आतुर-काम कामातुर सूर-प्रभु स्याम, ब्रज-बाम, ~ १००९।

आतुरता १ व्याकुलता, व्यग्रता वाद-विवाद, हर्ष ~ इतौ द्वंद जिय सहियै ७/१८। २ उतावलापन, शीघ्रता कहा

आतुरे अधीर, उद्विग्न सूर-स्याम भए काम ~ २४१५।

आत्म आत्मा ~ अजन्म सदा अविनासी ५/४।

आथ गूढ अर्थ वाली बात : गीता, वेद, भागवत मैं प्रभु, यौं बोले हैं ~ १/१९६।

आदरैं आदर/सम्मान करती है कोउ ~ कोउ अपमानैं २४७५।

आदर्‍यौ आदर या सम्मान किया : तेहिं ~ त्रिभुवन कौ नायक ४२३५।

आदि इत्यादि, आदिक . ब्रह्मा कीट ~ के स्वामी ८९४। △ ~ दै आदि से लेकर : हिरनकसिपु, हिरनाच्छ ~ — रावन, कुम्भकरन कुल खोयौ १/५४।

आदिक आदि, इत्यादि · कौसिल्या ~ महतारी १/७९।

आदि घटत प जोई काजल का आदि अक्षर निकाल देने पर बच जाता है जल कारन अत अत तें घट कर ~ सा० ल० ५।

आदित सूर्य : लोगनि जान्यौ ~ आवत ४१९०।

आदित्य सूर्य दीन्ही मनि ~ स्यमतक, कोटिक सूर्य-प्रकाश सारा० ६४७।

आदि-दरपन-वान (दरपन=शीशा , वान=शर दोनों के आदि अक्षरों शी-।-श मिलाने से) शीश · इंद्र दिसि के आदि राखौ ~ सा० ल० ५६।

आदि-पसारी शुरू से विस्तारपूर्वक ब्रह्म कथा कहि ~ ९४५।

आदि-बुनियादि समूल ~ सब अहिर जारौं ५९०।

आदि रसाल जज्ञफल के सुत (रसाल=अब, यज्ञफल=धर्म, दोनों के आदि अक्षरों अ-।-ध मिलाने से अध=धृतराष्ट्र, उसके पुत्र) दुर्योधनादि ~ जे बाँबे अभिमान सा० ल० ७४।

आदेस आज्ञा चतुर चेटकी मधुरानाथ सौं जाइ करौ ३६१३।

आध अर्द्ध, आधा ~ पैंडि बसुधा दै राजा ८/१४।

आधार आश्रय, सहारा . सतन कौं, यह ~ मीन कौं ज्यौं जल १/२०४

आधीन १ आश्रित, वशीभूत त्यौं सठ वृथा तजत नहिं कबहू, रहत विषय ~ १/१०२। २ विवश, लाचार अति ~ हीन मति व्याकुल ३२९१।

आधीना आश्रित, वशीभूत मैं निज भक्तनि कैं ~

जानत ~ ३८४८ ।

आनँद हर्ष, प्रसन्नता, आह्लाद, मोद ~ भरे करत कौतूहल (नर-नारी), ~ आसु ढरत लोचन भरि ४२९। **अनुरागे** ~ आनद मे मग्न हो गए ब्रजबासी ~ — ९४० । ~ **उमंग-भरि** आनद/मोद और उत्साह मे भर कर . दियौ जाहि जोइ आए ~ — ९५२ । ~ **करत** हर्षित होते हुए, आनद मनाते हुए ~ — सबै ब्रज आए ९२० । ~ **कियौ** आनद मनाया ~ — देखि हरि कौ मुख ९८४। ~ **कीन्हौ** आनद मनाया ब्रज नर-नारी ~ — ९१७ । ~ **जागे** आनद उत्पन्न हुआ त्रिविध बहै पवन ~ — ९८८। ~ **बढाई** आनदित हुए खेलत मन ~ — ८९५। ~ **बढावत** आनदित होते है कान्ह सुनत ~ — ८३४। ~ **बढावै** आनदित होते है एते पर ~ — ९०५ । ~ **भरी** आनदित . गोपिका अति ~ — १५९८।

आनँदकद आनद के मूल, कृष्ण का एक विशेषण देखि री देखि ~ ६२७।

आनंदत आनदित होते, हर्षित होते मृदु मुसकान रोम ~ ३६८० ।

आनंदन आनद से चचल लोचन, निरखत अति ~ ४७६ ।

आनँद-निधि आनद के खजाना, कृष्ण जागिए गोपाल-लाल ~ २०५ ।

आनँद-निधि कदहिँ आनद-निधान (श्रीकृष्ण) से देह छाँडि, प्राननि भई प्रापत, सूर सु प्रभु ~ ८०३ ।

आनँद-पुंज आनद-राशि अलप हँसि ~ बढायौ १६८७।

आनँदमई १ आनदमय अति आतुर गति कान्ह लैन कौं मन ~ ३१२८/२ । २ आनदमयी : सूर-स्याम फल, कृपा-दृष्टि भऐ, अतिहि भई ~ ११२९ ।

आनँदरासी आनद-राशि सूरदास प्रभु ~ ५४९ ।

आनँद-हुलास आनद और उल्लास तब इक बुद्धि रची मन ही मन अति ~ १७६८ ।

आनदे आनदित हुए : ~ मधुवन के बासी ४१६२ ।

आनंदै पु० आनद ही ~ आनद बढयौ अति १०६। **अ० क्रि०** आनदित होती है ज्यौं चकई प्रतिबिब देखि कै, ~ पिय जानि ३२६८ ।

आन¹ १ मर्यादा अपनी सी मैं बहुतै कीन्ही रहति न तेरी ~ १६५२ । २ सौगध, शपथ मोहि ~ बृषभान बबा की सा० ल० १० । △ ~ **दै** शपथपूर्वक साँच कहति हौ ~ — ८०५ । ३ आन बान मेरै जान कनकपुरि फिरि है, रामचद्र की ~ ९/१२१

आन² १ अन्य, दूसरा . कह्यौ भगवान उपाय न ~ ६/५ । २ दूसरी · तुहीं पिय भावति नाहिन ~ २५७८ । ३ दूसरे एक जु आई ~ गाँव तैं, सुन्दर, परम, सुजान २८९५ । ४ दूसरे की आवत देखि ~ बनिता रत, द्वार-कपाट दियौ री २५३२ । ५ दूसरे को · निरखि है क्यौ ~ ४०३५ ।

आन³ आकर, उपस्थित होकर मन्य स्याम, सुभाग मानो, अली, बैठ्यो ~ १३७९ ।

आनक दुन्दुभी नगाडे, दुन्दुभि ताको लेन गए मथुरा को ~ बोले सारा० ४१३ ।

आनत वि० अत्यत झुका हुआ . मुख ~ ऊधौ तन चितवत ४०५९ । **अ० क्रि०** आती है, होती है नैकहुं लाज न ~ ३३१३ । **स० क्रि०** १ लाता है सबको मन अपन बस ~ ४२०० । २ लाती है विरह बिथा उर ~ ४०१४ । ३ लाते है . स्याम मन नहि नैकु ~ २९५८ ।

आनति लाती है, उपस्थित करती है उपमा ~ बुद्धि बनाई १८१० ।

आनति लाती है जियहि प्रतीति न ~ ४२५ ।

आनन मुख, चेहरा बिलम्बत सुधा जलज ~ पर ४१७ ।

आनन-बाल बाला (राधा) के मुख पर से परत स्रम बूँद टप-टपकि ~ २०३३ ।

आनसौं दूसरो से तिनकौ कहा ~ नातौ ३५४६ ।

आन-सौ दूसरो के समान राधे तेरौ रूप न ~ परि० १/९७ ।

आनहि¹ लाते है . पुनि भूलिहु चिंता नहिं ~ ११९५ ।

आनहि² दूसरे को सूर प्रभु तजि कैं ~ मानै परि० १/१७४।

आनहु १ आओ लै ~ चित्र बनाइ २० । २. लाओ, लाते हो ~ क्यो न स्याम रँग काजर ३५७३ ।

आनहू लाओ, लाइए, लाती हो काजर रोरा ~ ४० ।

आना अन्य, दूसरा बिना कृपा भगवान, उपाइ न सूरज ~ ४२४९ ।

आनि¹ हठ झूठें ही सब ~ गही १९७२ ।

आनि² स० क्रि० १ ला कसहि ~ बुलाइ १५४५ । ~ **दै** ला दे प्रथम ऊधौ ~ — हम सगुन डारे नापि ३५८४। २ लाओ यामैं कछु सदेह न ~ ६/५ । ३ लाकर . कै हरि हमकौ ~ मिलावहु कै लें चलियै साथे ३६०७। ~ **दुराऊँ** लाकर छिपा दूँ कमल कोस मैं ~ — १७६० । **अ० क्रि०** आकर, पहुँचकर चुपकहि ~ कान्ह मुख मेल्यौ २६२ । ~ **अगमने** पास आने पर नगर निकट रथ ~ — ४१८४ । ~ **अरे** आकर अड गए · रवि ससि एकै रथ ~ — ११९२ । △ ~ **बनी** आ पटी मेरें जिय ऐसी ~ — १४५८ ।

आनि³ अन्य, दूसरा तुम तौ कहत सँदेसौ ~ ३५४१ ।

आनियै ले आएँ, लाएँ नद-नदन अद्भुत कैसे ~ उर और ३७३२ ।

आनी अ० क्रि० १ आ : ज्यौं त्यौं करि गृह पहुँची ~ १८८३ । २ आई : राम-रुचि जबहिं स्याम-मन ~ १०३७ । ३. आकर : किनि कही बात यह, सो हजूर कहै ~ २५५९ । स० क्रि० १ लाई : श्रीफल मधुर चिरौंजी ~ २११ । २ लाई गई : जब गहि राजसभा मैं ~ १/२५० । ३. लाए, ले आए : काहे का पर तिय हरि ~ ९/११६ । ४ ठानी, निश्चित की : कह्यौ, इन्द्र, यह कहा मन ~ १ ५/२ ।

आने अ० क्रि० आए : जन्र, असुर-कन ~ ३८०१ । स० क्रि० लाए : स्याम भुज बाम गहि मँसुरा ~ २२०६ ।

आनैं अ० क्रि० आता है : तुमहिं बिनु कान्ह धीरज न ~ १७८८ । स० क्रि० लाएँ : कहौ कहा गहियै अनभव कौ, कैसैं उर मैं ~ ३९९० । २ लाती ह : एक पतिव्रत हरि रस जिनकैं, और हृदयै नहिं ~ ३५६२ ।

आनै[1] १ ला : जनि मन मैं कछु ~ १७०४ । २ लाए, ले आए : कालीदह के फूल मँगाए, को ~ वो जाइ ५२९ । ३ लाएँ : जिनकौं इक अनन्य व्रत सूझै, क्या दूजौ उर ~ ३७१५ । ४ लाता है : दीपक दया न ~ ३९३५ । ५ लाती है : तब महरि बाँह गहि ~ १८३ ।

आनैं[2] अन्य ही, कुछ और ही : विधना का गति ~ ४०९३ ।

आनौं १ लाएँ : कहौ सखी कैसैं उर ~ १८५१ । २ लाऊँगा : जदुपति कह्यौ बेरि हो ~ ४३८ ।

आनौ[1] लाओ : जब मोकौं सीतल जल ~ ३९६ ।

आनौ[2] शपथ : करत तिहारी ~ सा० ल० ९९ ।

आन्यौं अ० क्रि० १ आना : देखन रूप स्याम जिय ~ ३१०९ । २ आकर : ~ जोगहिं बाँचै ३९९२ । स० क्रि० १ लाया : मो कारन कछु ~ है बलि ४१८ । २ लाया, उत्पन्न किया (कोई भाव) : राम तब हृदै मैं क्रोध ~ ४१९६ । ३ लाई : चंदन और अरगजा ~ १२१३ ।

आपद विपत्ति : नैन जल भरि रोइ दीनों, त्रसित ~ दीन ४१०७ ।

आपन अपना, निजी : तब रिषि ~ जिय लै भाग्यौ ९/५ ।

आपनि अपनी : ~ मोह, कुल की कानी ४२०३ ।

आपनी अपनी, निज की : स्याम ~ चितवनि बरजौ १९९९ ।

आपने अपने : राम-लषण सँग लिये ~ चले सारा० २०७ ।

आपनेहि अपने ही : लोक-लाज उपहास न मान्यौ, न्यौति ~ आन्यौ १६६२ ।

आपनैं अपने ही : तू अति चपल ~ रस कौं ३५५२ ।

आपनैं अपने : सूरदास-प्रभु कृपा करहु अब, कैसेंहुँ जाहिं ~ भौन १५९३ ।

आपनो अपना : कम देखि निज-काल ~ मारा० ५१८ ।

आपनौं अपना : कहो तो दुख ~ सुनाऊँ ३५३८ ।

आपनौ अपना : मांति धरो यह जोग ~ ३५५१ ।

आप-बस अपने वश मे : सुर-असुर सब किए ~ ९/१२८ ।

आपसु मैं आपस मे, परस्पर : बात कहत ~ बादर ९४० ।

आपहु आप (स्वयं) भी : कम मारि राज करै ~ सिर-नावै ९/४ ।

आपहूँ अपने ही : 'सूरदास' प्रभु ~ कर कौर जु लीन्हौ १९८० ।

आपु १ अपने-आप, स्वय : हमकौं दाहति ~ दही १५३६ । २ स्वय को : तिन्ह लगि ~ बँधावै १/१२२ । ३ स्वय भी : ~ हँसी, प्रिय मुख अवलोकत २१०९ । ४ अपने समान : ~ स्वारथी सबै देखियत २०९९ । ~ दयौ अपने आपको समर्पित कर दिया : सर्वस ले, हरि ~ — ११८५ । ~ मैं अपने आप मे ~ — ~ समानें २/३६ ।

आपुन आप, स्वय : ~ चपल चपल कौ सगी ३८६९ ।

आपुनपौ आत्म स्वरूप : ~ आपुन ही बिसर्यौ २/२६ ।

आपुनहि स्वय ही : ऐसे ढँग ~ पढावत १४३१ ।

आपुनहीं स्वय ही : ~ अधीन ह्वै ठाढे २८२६ ।

आपुनही अपने आपको ही : ~ टहकाइ १९९९ ।

आपुनहूँ स्वय भी : ~ सट कारी ८०५४ ।

आपुनी अपनी, निज की : भक्ति अनन्य ~ दीजै ३/१३ ।

आपुने अपने : ~ धाम कौं ४/११ ।

आपुनैं अपने : ~ सम असुर ते हँकारे ३०७६ ।

आपुनौ अपना : ~ कियौ तिन आपु पायौ ४२०७ ।

आपुस परस्पर, आपस मे : ~ मैं सब करत कुलाहल ४४७ ।

आपुहि १ आप ही, स्वय ही : ~ खात प्रससत ~ १६८ । २ अपने आपको, स्वय को : सूरदास ~ समुझावै १/६३ । ~ आपु अपने आप ही : रीझे तौ कुबिजा सी दासी, ~ — हँसावत ४००० । ~ कही आपने कहा : ~ — करौ पति सेवा १०२२ ।

आपुहि स्वय ही : ~ बोलि मँगाइ ४५६ ।

आपुहीं आप ही : आपुहिं पिता, ~ माता ४०९४ ।

आपूरि भरा हुआ, घिरा : है मानौं पूरन चद्रमा, कुहर रह्यौ ~ ४३७ ।

आपे १ आप, स्वय : अपनौ बोयौ आप लुनौ तुम, ~ ही निरवारौ ३००४ । २ आपही : हत्ता-कर्त्ता ~ मोइ ७/२ ।

आपों-पर अपना-पराया : ~ समुझै नहीं २९१४ ।

आभरन आभूषण : रचि ~ सिंगार, अग सजि २१८४ ।

आभा काति, चमक : सुभग ललित कपोल ~ २२७१ । ~ खची काति अकित हो गई : मरम मनि मृदुल कचन सु ~ — ११९१ । ~ झलकति कांति झलक रही है : लोल कुंडल की ~ — गट १८२१ ।

आभार उपकार, निहोर : हरि करुना करि राखहु तहाँ, नित बिहार ~ दै ११८० ।

आभीर अहीर, ग्वाल कमलाहू नित पाय पै लोटत, हम तो है ~ सारा० ५६८।

आभूष आभूषण, गहना मुद्रिका गुजा मनि ~ अमोलनि परि० १/३०।

आभूषन आभूषण, गहना विविध सुगध चीर ~ ४१६०।

आमरू आम : कहूँ ~ डार विटप की सारा० ९०५।

आमिष मास, गोश्त लुबध्यौ स्वाद, मीन, ~ १/१०२।

आमी छोटा आम, अँबिया (जो बहुत खट्टी होती है) आई प्रीति उघटि कलई सी जैसी खाटी ~ ३६२९।

आमोद आनद, प्रसन्नता सूर सहित ~ चरन-जल लेकरि सीस धरे ९/१७१।

आय = आइ, आकर इतने माझ मधुप यक देख्यो ~ चरण लपटायो सारा० ५६५।

आयत विस्तृत, दीर्घ, विशाल ~ दृग अरुन लोल कुडल-मडित कपोल १३८४।

आयसहि आज्ञा ~ दीन्हो ८५३।

आयसु आज्ञा. ~ दीजै मातु मोहिं अब परि० १/२।

आयुध युद्ध के उपकरण, अस्त्र शस्त्र छै रथ उपजे ~ तुरग समेत सारा० ५९९। △ ~ **कीने** शस्त्र सजाए दोउन ~ — सारा० ५११। ~ **धर** शस्त्र धारण किये ~ — समस्त कवच साजि ९/१४१। ~ **धरैं** शस्त्र धारण करते है विविध ~ —, सुभट सेवत खरे ९/१२९। ~ **लौं** शस्त्र तक मुरली धरनि डारि ~ — १९८६।

आयो, आयौ १ आकार इहँ ढँग ~ ५२७। २ आई फिरि नहिं ~ स्वास ४१०। ३ आ गई पूर्व जन्म सुमिरत तहँ ~ ५/३। ४ आ पहुँचे सुर गुरुहूँ तिहिं औसर ~ ६/५। ५ आ रही है जुग जुग बिरद यहै चलि ~ ३०८५। ६ आता है वहै भेद मन ~ ११६३। ७ आ रहा है यहै बिरद चलि ~ ९/११२। ८ आया (दे सके) कछू न उत्तर ~ २७१४। ९ आ गया यह कहि कच अपनै गृह ~ ९/१७३। १० आया था करतै कौर डारि मैं आयौ १९९६। ११ आया हूँ देन बधाई ~ ९/८७। १२ आया है। छल करि ~ निसिचर कोऊ ९/८३। १३ आया हुआ है आजु सुन्यौ बन हाऊ ~ २२०। १४ आये. (हरि) अजन जन्म धरि ~ ४। १५ आये हो : बनचर, कौन देस ते ~ ९/८८। १६ आये हुए ~ देव और मुनिजन सारा० १६४। १७ आये हुए है लोक लोक को टीकौ ~ ३०९४।

आरभन शुरू जग्य ~ कीन्हौ ८४१।

आर १ लोहे की कील पिक की पुकार उर ~ सी लगाई परि० १/१४०। २ सोंटा चलत बैलहि ~ १/१९९। ३ हठ मघवा करी गोकुल ~ ३३२२।

आरज पंथ आर्य पथ ~ चलै कह सरिहै २१०२।

आरजपंथहुँ आर्य पथ भी सजनी ~ तैं बिडरी ३००४।

आरजपथहि आर्य पथ मे ~ डरौं १६६५।

आरत १ आकुलतापूर्वक अमित तोष अति ~ २३८३। २ आर्त्त, दुखी नद पुकारत ~ ब्याकुल ६०४, ~ बचन कहे जब हेरी १/२५१।

आरतवंत आर्त, दुखी (व्याकुल व्यक्ति) ~ पियौ ३५६५।

आरति[1] १ आरती ~ साजि सुमित्रा ल्याई ९/१६९। २ विनय प्यारी प्रीतम ~ करतु २८०४। ~ **करि** विनय (आरती) करके ~ — तब माथ नवायौ १७२३।

आरति[2] **पुं०** आर्त, दुखी, व्यथित ~ असम समान ३६७४, अति ~ न सम्हारति तन मन ४१४३। **स्त्री०** दुख, पीडा, व्याकुलता ~ हरै तन छीन ३८६७, बृथा ~ यह जोलै ३६४५।

आरति[3] हठ चदहि देखि करी अति ~ २००।

आरभटी साहस, लौकिक कर्म झूठौ मन झूठी सब काया झूठी ~ १/९८।

आरस आलस्य ~ सौं उठि बैठे अरस परस दोऊ दपति २०३४।

आरसी दर्पण मे काजर पीक ~ देख २७२५।

आराज अराजकता भयौ ~ जब ४/११।

आराधन आराधना, उपासना सदा करत ~ तोकौ २८२८।

आराधि आराधना अनसूया के गर्भ प्रकट ह्वै कियो योग ~ सारा० ६०।

आराधी आराधना की थी जो जुगुति सकर ~ २८९४।

आराधे आराधना करने से परम सुख पायो कृष्णचद्र ~ सारा० ८२१।

आराधैं आराधना करे कहियत जाइ जोग ~ ३४८९।

आराधै आराधना करे. जो मन जोग जुगुति ~ ४०७५।

आराध्यौ १ आराधना की तन मन करि मोकौं ~ ७९९। २ आराधना कीजिए ऐसी बिधि हरि कौ ~ ९/५।

आरि हठ काहे कौ करति ~ २४१८।

आरिन हठ मे जिहि कारन ~ गइ घर तैं ३१९९।

आरूढ १ चढकर ब्रह्मादिक ~ बिमाननि ९/१५८। २ चढे हुए ऐरावत ~ अग्रधन ८६६। ३ दीवानी अति आतुर ~ अधिक छबि ८०२

आरे आले जाइ लेहु ~ पर राख्यौ ६६९।

आरोगत १ खाते ~ हैं श्री गोपाल २९७। २ खाने पर ~ मुख की छबि रूरी ३९६।

आरोगित भोजन करते है ~ बलमोहन दोउ सारा० ९०७।

आरोगे खाये ताके फल ~ रघुपति सारा० २७२।

आरोधन चढाना मौनऽपवाद पवन ~ ३५३०।

आरोपे रोका रथ मारग ~ २९२३।
आरोहन आरोहण एक मराल-पीठि ~ १२४७।
आरौ, आर्‌यौ आग्रह पाइ परिकै महरि करति ~ ७५१।
आर्वदा आयु नृप ऐसी ~ पाई १२/३।
आलंबित सहारा लिये हुए • ~ सु पृष्ठ वल सुंदर १५७।
आल १ थाला : सींचि ~ मजीठ जेमे ३८००। २ आलय • स्वाद लुब्ध रस ~ ३३७२।
आलबाल थाला ~ रचि वेनि वई री २६६४।
आलय घर मे मनि मय भूमि नंद के ~ १२१।
आलस आलस्य सुनि मनमथ होन जिय ~ १/१४८। **~ गात** शिथिल शरीर ~ — जात ५०१। **~ जुत** आलस्य वश ~ — पहिरे २४७०। **~ वलित** सुस्ती मे ~ — मदै निमि जागे २६४५। **~ वत** आलस्यवश (अलसाए हुए) ~ — जन्हात २७१४।
आलापहु आलाप करो ~ गावहु के नाचहु परि० १/१६६।
आलापी बोलने वाला कटुक वचन ~ १/१४०।
आलि, आली सखी कहनि कहारी ~ १८६, विवस भई हो ~ १४०८।
आलै घर जौ पै प्रभु करुना के ~ ४१५४।
आव १ आ नहों तुहू ~ री २८८७। २ आता कह्यो न ~ नाम ४/१२। ३ है तन तरम दीपन ~ सा० ल० १।
आवई १ आना है, आती है गोरस नाम न ~ १६३५। २ आवेगा तुम्हरें काम न ~ परि० १/३८।
आवत १ आ जाते ह जा दिन सन पाहुने ~ २/१७ २ आता है इक ~ इक जात विदा है २५। ३ आता हुआ (आती हुई) हरि देखी जुवती ~ जब १५००। ४ आते ही ~ राधा पथ चरन रज ३६३३। ५ आते हुए (आते समय) ~ देखि स्वदनि मुख मूँद्यो १७४६। ६ आते हैं सर क्रीडा दिन देखन ~ ९/२०। ७ आते हो काहे कों छल करि-करि ~ ९/८३। ८ आने मे तुम तन ~ पावति २३३४। ९ आये ह वात कहन को नेकु ~ १५३२। १० आ रहे थे प्रथमहिं धनुष तोरि ~ ३१००। ११ आ रहे ह लै ले ~ ग्वाल घरनि तें ८३१। १२ निकलते मुख न ~ वैन १०३६। १३ निकालते हुए जल मथि माखन ~ ३७११। १४ पडता है दैंड न ~ भू पर ८७७। १५ पधारे ह ~ सखी सहित रस भीन ३८६७। १६ लगता है टर ~ मुख लेतहिं नाम ९६२। **~ जात** (क) आते जाते (आ जा रहे ह) ~ — चहू मे लोइ १२/४। (ख) ऊपर नीचे भटकते हुए ~ — वीचहीं भटक्यौ ९७१। △ **~ न आँखि तर** दिखाई नहीं देता और पतित ~ — १/९६।
आवतहि आते ही • जब मार्‌यौ हरि रजक ~ ३१११।
आवतहीं आते ही ~ यहै कहत २३५३।
आवति १ आनी ह कब ~ जानि २४०२। २ आते हुए मरती ~ देखि राधा २००६। ३ आवे काहे कों हम ब्रज नन ~ ६७३।
आवति १ आ जाती है छिन छिन वहै सुरनि ~ ३७१६। २ आती है (उठती है) पट सुत मोक सुरति उर ~ ७। ३ आते हुए अति अकुलानी ~ धाम २३५। ४ आती हो तुम गँवारि याही मग ~ १५६७। ५ आने मे जाति ~ हो थकी २८१०। ६ आने पर • चौंकि परनि कहु तन सुधि ~ १६२३। ७ आ रही थी तिहिं डर वात न ~ १६३२। ८ आ रहा ~ ह जुवती इतरान ५०९। ९ सूझती है। यह उपमा इक ~ १८०९।
आवते १ आने एक वार ब्रज ~ ३९९५। २ आते थे ईंहि गिरियाँ वन तैं ब्रज ~ ३२०१।
आवन १ आना, आगमन अजहू भयौ न ~ ३६६१। २ आगमन हुआ इहाँ विप्र कत ~ ८/१३। ३ आयेंगे. आजु कालि हरि ~ ३४७७। ४ आने भली वात वावा ~ दै १७१७। ५ आने को मैं घर ~ कह्यौ ४३७। **~ हार** आने वाले ह माधौ ~ — भए ४२७७।
आवनि आना, आगमन ~ जानि न जाइ २७२८।
आवनौ आगमन कियो वरसाने तें ~ २८३२।
आवहि १ आओ (आवे) जदुपति ~ नेंकु सवेरी ४१७२। २ आती है नित प्रति ~ जाहि १६१८। ३ आएँ (ऊधौ जो) हरि ~ तो प्रान रह ३७८७।
आवहिगे आवेंगे स्याम वहुरि कव ~ ३२७५।
आवहीं १ आते हैं लोचन भरि-भरि ~ ४१८८। २ आ जाती ह इन उत तें फिरि ~ ११२०।
आवहु १ आओ ऊधो जाइ वहुरि सुनि ~ ३८०८। २ आते हो काहे नहिं ~ तुम्हे चह्यो १११७।
आवहुगी आओगी सूर सुनहरी ग्वालिनि ~ पछिताई १४६१।
आवहुगे आओगे, होगे कवहू तो वस ~ २५२५।
आवहू आओ सर काज करि ~ २९३९।
आवागमन आने और जाने का हाल ~ सुनावहु अपनौ ९/१०४।
आविर्भाव उत्पत्ति, अवतार तार्के गृह कियौ ~ ९/१५।
आवेस आतुरता मे छत्री कुल ~ ४२१४।
आवैं १ आता है कछु कहत न ~ २३६४। २ आती हैं प्रति दिन देखन ~ १०५५। ३ आते ह जहँ तहँ गाढ परै तहँ ~ ९५१। ४ आये तो • तिहिं औसर जौ ~ १९२९। ५ आवेंगे जा दिन ~ कान्ह ३८२६। ६ आ

रहे है · ग्वाल-बाल सग ~ रग भीजै १३७४ । ७ आने लगी हम पै कब वै ~ २४०५ ।

आवैंगे आयेंगे कहि कब हरि ~ ऊधौ ३६८३ ।

आवै १ आता है जप तप सजम ध्यान न ~ ३ । २ आती है मुखहिं न ~ बात ५८९ । ३ आते हो . पुनि-पुनि तुमहि कहत कत ~ ३५४७ । ४ आते है फिरि इतही कौं ~ १२६ । ५ आना कान्हहिं कहति इहाँ जनि ~ ८९३ । ६ आने लगा · क्यो हमरे मन ~ ३७०९ । ७ आने के लिए कह्यौ इन्द्रानी मो पै ~ ६/७ । ८ आया राम-काज जो ~ ९/१५१ । ९ आये मेरे ह्याँ लै ~ री २३०८ । १० आये ये जेंवन महज भुजा धरि ~ ९३३ । ११ उत्पन्न होता है जब लगि ज्ञान हृदय नहिं ~ ३७८८ । १२ निकलता है लोचन सजल बचन नही ~ ११०३ । १३ बनता है ऊधौ अब कछु कहत न ~ ३६३९ । १४ बनती है · हरि की लीला कहत न ~ ४८२ । १५ होता है तुम्हारौ भरोसौ ~ १/१२२ । १६ होती है कहूँ न ~ हारि ७/३ ।

आवै-जावै आता-जाता रहता है योही ~ ३/१३ ।

आवैगी आएगी · सतयें दिवस होयगी परलय ~ इक नाव सारा० ९४ ।

आवैगो आएगा · उनसौं कहि फिरि ह्याँ ~ २०९५ ।

आवौं १ आऊँ दरस देखि ~ श्रीपति कौ ८०७ । २ आता हूँ जबै ~ साधु सगति १/४५ ।

आवौ आओ ~ वेगि ४/५ ।

आस १ आशा जिनकी ~ सदा हम राखें २३०२ । २ कामना धरि ब्रज वास ~ यह पूरन १०४४ । ३ सहारा है हमरे इक ~ ३५३६ △ ~ **पुराइ** आशा पूरी की ताके मन की ~ — ४१९२ ।

आसचर्ज आश्चर्य है कह्यौ वसुदेव जगदीस ~ यह ४२२१ ।

आसत आसक्ति, सामीप्य, मुक्ति ब्रह्म बिना नहिं ~ ३४२६ ।

आसननि आसन . कामरी के ~ कीनें ४६७ ।

आसन-सुत ब्रह्मा के आसन हस (सूर्य) का पुत्र सुग्रीव, सुन्दर ग्रीवा · पय-पिता ~ सोभित १२०२ ।

आसरौ भरोसा, आशा जब उनकौ ~ कर्‌यो जिय २२२७ ।

आसा आशा निसि दिन रहै दरस की ~ १८८३ । △ ~ **लागे** आशा मे लगे हुए प्रान रहत है ~ — ४००७ । ~ **पास बँधी** आशा के जाल मे बधी हुई ~ — हम बाल ११८० ।

आसावरि श्री की एक रागिनी . जैत श्री अरु पूर्वी टोडी ~ सारा० १०१६ ।

आसियाँ बलि भोग मुगति लै चलौ इन्द्र के ~ ८४१

आसिष-बानी आशीर्वाद वचन . यह प्रभु की है ~ ८८६ ।

आसिषा आशीर्वाद सूरदास की यहै ~ ३०९३ ।

आसी खाने वाला शभु भए बिष ~ ३३७५ ।

आसीस आशीर्वाद कहियौ जसुमति की ~ ४०९० । △ ~ **पढ़ी** शुभ कामना की सीस नाइ ~ — ९/१७० ।

आसीसा आशिर्वाद तब सब रिषिनि दई ~ ६/८ ।

आसौं आशा से · स्वाति बूँद की ~ ३९३५ ।

आस्रम आश्रम बुध कैं ~ सो पुनि आयौ ९/२ । △ ~ **कीन्हौं** निवास बना लिया गगा यमुना सरसुति ~ — आई १८१३ ।

आस्रमहि आश्रम मे गयो मरीच ~ तबही बाने वहु समझायो सारा० २३१ ।

आस्रित आश्रित, आश्रय लिये हुए कैसे कूल मूल ~ कौं १/१८१ ।

आस्वादिनि आस्वादन किया है अधरामृत ~ रसना ३६६६ ।

आस्विन सुदी क्वार महीने का शुक्ल पक्ष ~ नौमी को शुभ दिन हरि आये निज धाम सारा० ६५१ ।

आह है मेरौ पति सिव ~ ४/७ ।

आहि है इनमे को पति ~ तिहारे ९/४५ ।

आहि १ है नर सरीर सुर ऊपर ~ ५/४ । २ हो रही है मम पुत्री वय प्रापत ~ ९/४ ।

आही हे . रिचा स्तुति की सब ~ ११७५ ।

आहुति १ हवन सिव ~ बेरा जब आई ४/५ । २ होम-द्रव्य की वह मात्रा जो एक बार कुड मे डाली जाय ~ जज्ञ कुड मे डारी ४/५ । ३ आहुतियों से ~ अगिनि जिवाइ सँतोषी ९/१४१ ।

आहै है, होगा भए कहूँ जग ~ न ७७२ ।

आहै है प्रबल सत्रु ~ यह मार १/२९ ।

आह्निक दैनिक कर्म चले नित्य ~ सब घर सारा० २१६ ।

इ

इँडहर उरद और चने की दाल की पीठी का बना हुआ सालन अमृत ~ है रससागर १२१३।
इदा राधा की एक सखी ~ विंदा राधिका स्यामा १६१८।
इदवर नील कमल . मनो मरम ~ फूले सारा० २७०।
इदीवर-सुत नील कमल से उत्पन्न (नीला पराग), काजल ~ कर कपोल मे है सिंगार सा० ल० ८।
इदु चन्द्रमा जुगल कमल मनु ~ पर बैठि रहे ४३१।
इदुक चन्द्रमा ~ वदन विसेप परि० २/२९।
इदुवदनी चन्द्रमुखी अहो ~ सुनि २८२६।
इंदु-बहु-पाँति-विच अनेक चद्रमाओ के मण्डल के मध्य ~ अधिक छाजै १०३५।
इदुहि चन्द्रमा को पूरन ~ पाई १३६।
इदूर चूहों के सूरदास ~ सदन मे २४१०।
इद्र अरि दनुज इन्द्र उपवन ~ दनुजेन्द्र इष्ट सहाइ सा० ल० शेष १०।
इंद्र-आयुध इद्र का हथियार (वज्र) दधि सुता सुत अवनि उर पर ~ जानि २०८६।
इन्द्र उपवन इन्द्र अरि, दनुजेन्द्र इष्ट सहाइ, सुन्न एक जु पाप कीने होत, आदि मिलाइ इद्र उपवन (नदन कानन) इद्र आदि (दनुज) दनुजेन्द्र रावण का इष्ट महादेव का सहाइ (= नदी) सुन्न एक (एक और शून्य=१० दश) जु पाप कीने होत(=नरक) (नदन, दनुज, नदी, दश और नरक शब्दो के आदि अक्षरों के मिलाने मे नदनदन)=श्रीकृष्ण ~ सा० ल० शेष १०।
इद्रजित १ इन्द्रियों को जीतने वाला रुद्र कह्यौ ~ हौ कहावत हुतौ ८/१०। २ मेघनाद रघुपति जौ न ~ मारौं ९/१३७।
इन्द्रजीत मेघनाद लकपति ~ कौ बुलायौ ९/१३७।
इद्रदिसि के आदि इद्र=पाकशासन, दिशा=ईशान, इनके आदि वर्णो के मिलाने से पाई, पैर ~ गर्सौं सा० ल० ५६।
इंद्र धनु इद्र धनुष कीर नासा ~ भू ४१८६।
इद्रद्युम्न एक राजा जो अगस्त्य ऋषि के शाप से गज हो गया था और ग्राह से युद्ध होने पर जिसका उद्धार नारायण ने किया राजा ~ कियौ ध्यान ८/२।
इंद्र-पुजाई इद्र की पूजा की सुनत वात तहँ ~ ८९५।
इन्द्र-पुर इन्द्रपुरी (स्वर्ग) यह सुनि असुर ~ आइ ६/५।
इद्रप्रस्थ खाडव वन को जलाकर पाडवों द्वारा बसाया गया नगर जो आधुनिक दिल्ली के पास था ~ हरि गये कृपा करि पाडव कुल को तार सारा० ६५७।
इन्द्र-वधू शची उर्वसी रति ~ समेत ७०६।
इन्द्रवधूनि इन्द्र वधूटियों की मनौ ~ पगति ८२९।
इद्र वाहन इन्द्र की सवारी (ऐरावत)=हाथी ~ पास सा० ल० २७।
इंद्रमद इन्द्र का गर्व कत गिरि धर्‌यो ~ मेट्यौ ३५३७।
इद्रमात तेहि तात इन्द्र की माता (अदिति) के तात (दक्ष) ~ सो सरबस सारा० ९६४।
इद्र-राजहि इन्द्रासन नहुष ~ जव पायौ ६/७।
इद्रलोक सुरपुर अव तुम ~ कौ चलौ ९/२।
इंद्र सत्रु सुभाव इन्द्र के शत्रु (बलि) का स्वभाव (दानी, फा० सखा) सहेली ~ सरै चाह नाही आन सा० ल० शेष ५।
इद्र सहाइ इन्द्र के सहायक, मेघ ~ उठे चारो दिसि सा० ल० ८६।
इद्र सुत सुत इन्द्र के पुत्र (बालि) के पुत्र (अगद), बाजूबद ~ बीच उन लख्य सा० ल० शेष ६।
इद्र सुता तनया पति कौ सुत बिजली की तनया (नदी) के पति, समुद्र मे उत्पन्न, ज्वार, उफान, तूफान ~ ताके गुनै न पावै सा० ल० ९६२।
इद्र सुता पति इन्द्र की पुत्री (बिजली) के पति, मेघ ~ भुजा लगन लखि सारा० ९६२।
इंद्रहिँ १ इन्द्र ही ~ की दीन्ही राजधानी ८८६। २ इन्द्र को पै ~ सतोष न भयौ ६/५। ३ इन्द्र से यह कहि ~ जज्ञ करायो ६/५।
इंद्रहु इन्द्र · ~ कौ कछु दूषन नाहि ११/३।
इन्द्रादि इन्द्र आदि शिव-विरचि ~ अमर मुनि ७।
इंद्रानी शची ~ कौ देखि लुभायौ ६/७।
इद्रि-जित जितेन्द्रिय ~ हों कहावत हुतौ ८/१०।
इन्द्रिनि इन्द्रियो को करत ~ चेतन जोइ ३/१३।
इंद्रिनि १ इन्द्रियों ~ सहित मिल्यौ मन तबहीं २२३१। २ इन्द्रियो के पौरुष रहित अजित ~ वस १/१२१। ३ इन्द्रियों मे रुचि न ~ आन परि० १/१९९। ४ इन्द्रियों से येउ ~ मिलि घेरे २२२३।
इद्रियनि इन्द्रियो को मन तो गयौ ~ लैके २३०२।
इन्द्री इन्द्रियाँ ~ वाट मिली सब उनको १६५५।
इन्द्री जूथ इन्द्रियों के समूह को ~ सग लिए विहरत ४०३७।
इद्रीय इन्द्रिय ही ~ मूल किसान महातृन १/१८५।
इन्द्री सक्ति इन्द्रिय शक्ति ~ नसाइ ३/१३।
इंद्री-सुख इन्द्रियो का सुख ~ कौ दोऊ त्यागी ०/५।
इकत एकान्त मे बैठि ~ मत्र दृढ कीन्हौ २९४०।
इक १ एक हौ ~ नई बात सुनि आई २। २ एक तो.

~ सुन्दर दूजै अति नागर २२०७। ३ एक साथ ग्वाल बनें ~ धाए ४१७। ४ एकाग्र ~ मन ~ चित अरपित करि कै ८३५। ५ कुछ ~ ब्रज तें बन-काज ८२५।

इक तैं एक एक से बढकर एक ~ अनूप रूप त्रिभुवन मन मोहैं १६१८।

इकईस इक्कीस : तीनि ग्राम ~ मूर्छना १३५३।

इकचित्त दत्तचित्त : ~ ह्वै १/८९।

इकजोर एकत्र, एक जगह देखि सरित चारि चन्द्र ~ २४६७।

इकटक १ एकटक, अपलक . ~ अग अग अवलोकति २१२०। २ लगातार सूर निरख नारायन ~ १०६३। △ ~ **लौलीन** लगातार ध्यान लगाए रहे ~ — ११८३।

इकटकहि एकटक ही · चितै रही ~ निहारि ३०४।

इकटकहीं एकटक ही निसि बासर ~ राखे २१२६।

इकठाईं एक स्थान पर ठाढी ही ~ २६७३।

इकठाऊँ एक जगह हो जाते हैं ब्रह्मादिक रुद्रादिक ~ ९/१७२।

इकठाही एक ही स्थान पर बैठे ~ १९८०।

इकठौर १. एक जगह, एक साथ . जेंवत कान्ह नद ~ २२४। २ इकट्ठे, एकत्र बालक सब ~ भए ७/२।

इकतन एक ओर · ग्वाल ~ नारी २४०८।

इकता एक रूप, एकता करि हरि वह लोभनि सौं, ये रहत जु ~ ताने परि० १/१४७।

इकदाई एक बार एक बसै ~ २८३७।

इकदिसि एक तरफ जल ~ करि डारौ ९/२।

इकनाऊँ एक नाम वाली हस सहित ~ १५५३।

इकनाम एक नाम से, एक बार नाम लेने से महा जे खल तिनहुँ ते अति, तरत है ~ ३०४५।

इकनि एक ~ कर दधि दूध लीन्हे १६०१।

इकपतिनीब्रत एक पत्नी व्रत . त्रेता जुग ~ कियौ ३३६१।

इकबारा एक बार · माता ताकी गई जमुन जल कौं ~ ९/१४।

इक रसना एक जिह्वा से ~ क्यो गाऊ ११७२।

इकली अकेली राधा ~ खेलन आई २८९२।

इकलौ अकेले हरि हौ चुरायौ ~ चीर १०९३।

इकसार एक समान, एक सा · नीच-ऊँच हरि कै ~ ७/८।

इकसारि बराबर · भक्ति करौ ~ ७/३।

इकसारी एक समान : सदा वयस ~ १/१७३।

इकसैंतत कोई समेट रहा है . ~ घर के सब बासन ९३४।

इकादसि एकादशी . नद ~ बरनि सुभाई ९८४।

इकोस इक्कीस : कुल ~ तौ उधरै सोइ ७/२।

इच्छदंड ईख रूपी डडे ~ अडारि हरि गुन, गहत पानि बिषान ४०३५।

इच्छ्वाकु इक्ष्वाकु, वैवस्वत मनु का पुत्र और सूर्य वश का पहला राजा भयौ ~ सबनि सिरमौर ९/२।

इजै अजय ~ बिजै दोऊ आपस मैं १९९९।

इठलाति इठलाती है, मटकती है फिरति ~ गोपाल आगे ३०७।

इडा एक नाडी ~ पिंगला सुषमन नारी परि० १/१८१।

इत १, इधर ~ की भई न उत की सजनी २३१७। २ एक ओर ~ सुन्दरी बिचित्र उतै घनस्याम सलोना १६१८।

इत-उत इधर-उधर ~ देखि नृपति जब आयौ ९।

इतउतहि इधर उधर · बीच करि नाग ~ टेरै ३०५४।

इतते, इततैं इधर से ~ नँद बुलाइ लेत है ९८।

इतनक १ इतना सा, छोटा सा कमल नैन मेरो ~ सो री ३०५। २ इतना ही ~ बोल गुपुत माधौ कौ परि० २/३६।

इतननि १ इतना ~ जनि पतियाइ सखी री ३७५५। २ इतने ~ मैं कहि कौने लीन्हो २००८। ३ इतने लोगो ने सुनौ अनुज, इहिं बन ~ मिलि ९/६३। ४ इन सबको ~ को आराधै ३८९५।

इतनिक १ इतनी ~ दूरि जाहु चलि कासी ३९२९। २. थोडी सी बात ~ सौं एतौ कियौ १६१८।

इतनियै इतनी बसति ~ दूरी ३८४३।

इतनिहि इतनी ~ कला नसानी १७८४।

इतनेहिं १ इतना ही इहि पै दुसह जु ~ अन्तर २७६८ : २ इतने मै तो ~ माँझ बिकानी १७८२। ३ इतने से ही मै ~ भलौ मान्यौ प्रीतम २२५०।

इतनैं इतने . हमै तौ ~ ही सौं काज ३८३५।

इतनैंहि १ इतने ही कहा तुम ~ कौं गरवानी २५९२। २. इतने मे ही ~ रहो और जनि भाषहु २०५९।

इतनैंही इतने मे ही ~ सुख पावत १५२३।

इतनैहू इतने ही ~ पर बिन साखन घर परि० १/१३९।

इतनोइ इतना ही सूरदास प्रभु ~ लेखौ ३५५६।

इतनोहि इतना, इतने मे ही ~ धीरज दियौ सबनि कौ २९९३।

इतनौ इतना काहे कौ ~ रिस पावति २४१५।

इतनौइ इतना ही ~ ज्ञान बिचारौ १९५४।

इतबार विश्वास पकरौ साह चौर कौ छाँडौ, चुगलनि कौं ~ ३९०९।

इतर १ दूसरे ~ नृपति जिहि उचित निकट करि देत न मूठि रिती ११/१। २ दूसरी ओर सूर ~ ऊसर के बरषै २५९२।

इतराइ, इतराई इतराकर, ऐंठकर अहिर गए ~ ३०४१।

इतरात १ इठलाती, इतराती आवति है जुवती ~ ५०९। २. इठलाते हो काहे कौ ~ ३६८७। ३ इठलाते रहते

हे कूनर पै ~ ३८२७। ४ इठलाते हुए कहि बात ~ अति ५९०।

इतराति १ इतराती है बात कहति ग्वालिनि ~ १५०६। २ इतराती हो, इठलाती हो कहति कहा ~ १६२२।

इतराहि गर्व से फूल उठते हैं निरखि नवल ~ जाहि मिलि २३९०।

इतहि १ इधर ~ विरह उत ज्ञान ३८९२। २ इधर ही फिरि ~ कों आवै १२६।

इतहूँ इधर भी ~ की उतहू की सबै जुरि एकठी १९५१।

इती १ इतना (ही) हमकौं ~ कहा गोपाल ३७३८। २ इतनी : ~ बात तुमसौं कहियत है ३९५५।

इते १ इतना पीवतहू न अघात ~ जल ३८६०। २ इतनी ~ मान मेरी निठुराई ३/६२। ३ इतने . अरु देखौ मुसकाई ~ पर २६३९। ४ इसे सूर ~ सौं बार कहा हैं ३७५७। △~ **मान** इतने पर भी विश्वास कर के ~ — बानी चचलता सुनी न १८०४।

इतेहुँ इनने (भी) . ~ जतन कछुवै न सर्‍यौ री १८७२।

इतै १ इतना ~ महातम मोंहि दिखावति ४२०३। २ इधर, इस ओर नैकु ~ हँसि हेरौ २१६।

इतो इतना . किहिं बल ~ लह्यौ ९/७४।

इतोई इतना ही : ~ घृत सार २१४।

इतौ १ इतना ~ सँदेश कह्यो हरि सौं तुम ४०४१। २ इतना (बड़ा) . हार ~ उपकार करायौ २०१६। ३ इनने पर भी कहैं तू ~ रिसाइ ७७६। ४ इधर ~ मान मन गाढौ २८२६। ५ यह तो ~ राज की नीति ४२४३। ६ यहाँ . ~ हमारौ राज द्वारिका ४२७८।

इन १ इन . अचभौ ~ लोगनि कौ आवै २/१३। २. इन्होंने जानि बूझि ~ मोहिं भुलायौ ८५। ३ इनको ~ जान न दीजै ३८८७। ४ इनके . यहै बात कैहौं ~ आगे १९५०। ५ इनके द्वारा . गुरुजन तजे इहाँ ~ त्यागी २३१७।

इनकैं इनके जैसी बुद्धि हृदय है ~ १९२४। ~ **सुख** इन्हीं को आनदित करने के लिए . ~ — गिरि धरत मुरारी ९५१।

इनकौं १ इन्हे, इनको ~ पलक ओट नहिं करिहौ २१५१। ~ — २ इनके साथ . ~ कपट करै मथुरापति ३०६१। ३ इन पर ~ कृपा करौ गिरिराई ८४६।

इनकौ १ इनका ~ कह्यौ करत तुम रहियौ ८४३। २ इनके : ~ गुन औगुन हरि आगे २२५७। ३ इनको (इन्हे) . ~ हम ऐसे नहिं जानैं १९०६।

इनतैं इनसे ~ निठुर और नहिं कोइ २३३२। ~ **आन :** इनसे बढकरके कोई दूसरा : दृढ न ~ — १०२६।

इननि कौ इन सब चीजों का : लैहौं दान ~ तुमसौं १५४९।

इनसौं इनसे कहु सबध हमरौ ~ २१६३।

इनहि १ इन्हीं ~ चातुरी लोग बापुरे ३९६९। २ इनका, इनका ~ स्वाद जो लुब्ध सूर सोइ जानत १३५। ३ इनकी और ~ पटतर क्यों दीजै २२८३। ४ इनके ~ बिना वे उनहिं बिना २३३५। ५ इन्हे, इनको तातैं ~ बुलाई है २१६३। ६ इन्हे ही ~ रहौ तुम माने ८४२। ७ इन्हीं सूर सपथ मोहिं ~ दिननि मैं ९/९५। ८ इन्होने ही जम दूतनि कौं ~ निवार्‍यौ ६/४।

इनहि १. इनको हियौ भरत कहि ~ टराऊँ २२६४। २ इन्हीं से ~ तें यह मट १६०३।

इनहीं १ इन्हीं , ~ बातनि भए स्याम तनु २६८६। २ इन्हे, इनको ये तौ लोभी धिक ~ २२४१। ३ इन्होंने : सब ~ अपनाई २२४२। ४ इनके अब रैहौं ~ बिन २१०५। ५ इन्हीं के . ~ कारन करत पुजाई ९१५। ६ इन्ही ने कह्यौ ~ हिरनाच्छहिं मार्‍यौ ७/७। ७ इनसे ही ~ धौं बूझौ यह लेखौ १५२७। ८ ये ही . सूर स्याम कौं ~ जानै २०६०।

इनही इन्हीं। ध्यान करत नख शिख ~ की सारा० ७२९। ~ **तैं** इन्हों के द्वारा सकल सूर ~ — पावत ९/१६७।

इनहु इनको भी सुनहु 'सूर' अपनाइ ~ कौं २२२५। ~ **ते** इनसे भी . गृह को काज ~ — प्यारो ७९।

इनहूँ १ इन भी वैसी दसा भइ ~ की २३१६। २ इन्होने ~ मतौ जू कीन्हौ २९१६। ~ **मैं** इनमे ~ — घटताई कीन्ही १८५८।

इनामहि इनाम मे कर कचन जु ~ ४१६८।

इनि १ इन : ~ बीथिनि जन आवहु १६२४। २ इनसे . भवन लैं ~ भेद बूझौ २७२१। ३ इन्होंने, इनने औ ~ गरज सुनाई ३३०६। ४ इन्हे, ये विद्यमान सबहीं ~ देखत १९९९।

इनिकौं इनको ~ इतनी समुझ न भावत १२/३।

इनिही इन्ही ऐसे गुन ~ के २२५२।

इन्हनि इन ~ कौ काज मथुरा कहा है २९६७।

इन्हैं १ इनका सूरदास प्रभु ~ पत्याने २२५२। २. इनके ~ विचारत हैं है ज्ञान २/३७। ३ इन्हे, इनको कैसे ~ दुरैहौं २१५६।

इभ हाथी : ~ टूटत अरु अरुन पगु भए २७७६।

इमि १ इस तरह : नमित मुख ~ अधर सूचत ३५०। २ ऐसा अधकार ~ भयौ मनहुँ निसि बादर जोर्‍यौ ४३१। ३ ऐसी : अद्‌भुत ध्वनि उपजात ~ मिलिकै १०५८।

इरषा ईर्ष्या, डाह : इन्द्र देखि ~ मन लायौ ५/२।

इला इडा देवी : ~ सुता ताकैं गृह जाई ९।२।

इष्ट वि० आराध्य : कहाँ गये मेरे ~ देवता २६२। ~ **सुरनि**

इष्ट देवताओ को · ~ — बोलत नर तिहिँ मुनि ९/२६ ।
पुं० (इष्ट) देवता . ये वसिष्ठ कुल — ~ हमारे ९/१६३ ।
इहँ क्रि० वि० यहाँ आपुन जाइ बहुरि आए ~ २३०४ । **सर्व०** यह कहन कौं मत्र ~ कपि पठायौ ९/१२९ ।
इहँइ यहाँ ही, यही ~ रहौ तौ वदौं कन्हाई १४१९ ।
इहँई १ यहीं, यहाँ ही कै ~ पिय कौं न बुलावै २६९५ । २ यही पर ~ रहत कि औरै गाऊँ १६९९ ।
इहँहि यही, यहाँ ही . ~ आनि कै बोलति परि० १/६७ ।
इहाँ १. यहाँ ~ कोउ काहू कौ नाही ७/२ । ~ तै यहाँ से वेगि ~ — बाहिर जाहि ६/८ । ~ **लौं** यहा तक ~ — की वात जानति १६२७ । २ इधर ~ अपसगुन होत नित नए १/२८६ । ३ इह लोक मे, इस ससार मे ते दिन विसरि गए ~ आए १/३२० ।
इहाँउ यहाँ भी और ~ बिबेक अगिनि के बिरह-बिपाक दहौं ३/२ ।
इहा यहाँ ~ विप्र कत आवत ८/१३ ।
इहि सर्व० १. यह अब लौं नही कछु ~ जान्यौ १७१० । २ इसने सूर स्याम को ~ पहचान्यौ १७८७ । ३ इसे, इसको दुलै कचन मेरु ~ निहारी २८२४ । ४ इसकी ~ उपमा कवि कहै कहा री २२८ । ~ **केरी** इसकी महिमा को जानै ~ — । **वि०** १. यही सुपने मै देख्यौ ~ मूरति ८३५ । २. इस, इमी मैं भूली ~ लाज भरोसै २३९२ । ~ **अंतर** इसी बीच मे ~ — इक खेल उपायौ १०१० । ~ **बार** इस/इसी समय प्रगट्यौ जो ~ — ९/८३ । ~ **बिधि** इस प्रकार गगा ~ — भुव पर आई ९/९ । ~ **मग** इस रास्ते से · निकमे ~ — आनि १७८९ । ~ **मिस** इसी बहाने ~ — देखन कौ सव आई ९०३ । ~ **रूप** इसी (मानव) रूप से को भूल्यौ ~ — ९/१३४ । ~ **हेत** इसी लिए हमकौ नृप ~ — बुलाए ३०४९ ।
इहिकौ इसका देखौं धौ पुरुषारथ ~ ६०० ।
इहि १ इस, इससे अब ~ तै हद पारौ १/१९२ । २ इस तुम जानत ~ रूप कौ २७३१ । ३ इसी ~ लालच अँकवारि भरत है १५५४ । ~ **अतर** इसी वीच ~ — अकुलाइ उठे हरि ४३ । ~ **भाँति** इस रूप मे हम देखे ~ — गुपाल १७७८ ।
इही इसी · यह जिय-जानि ~ छिन भजि १/६८ । ~ **काज** इसलिए, इसी कारण ~ — तुमकौं हँकराए ९२८ ।
इहै १ इसी चद उयौ है ~ ठाव री ४१०३ । २ इसी को ~ कह्यौ प्रभु हेत मलै ३१०५ । ३. यही · सूरदास प्रभु ~ सूल जिय ३७८२ ।

ई

ईठ इष्ट मित्र रचे सकल ठग ~ ३८८१ ।
ईठी प्रेमी ह्याँ मिलवत सब ~ ३४९२ ।
ईतर १. इतराते है नान्हे लोग तनक धन ~ ९२४ । २ सिर चढ़ाना देखि महरि को कहि उठी सुत कीन्हौ ~ १४८६ ।
ईति खेती को नुकसान पहुँचाने वाले ६ उपद्रव — अतिवृष्टि आदि· सूरदास ब्रजनाथ बचैहौ ज्यौं नहि आवै ~ । २ बाधा, विघ्न बिनु टारे यह ~ ४०६७ ।
ईन्हौं इन्होने ही स्याम भुजनि छुटकायौ ~ १४५० ।
ईमन ऐमन रागिनी सूर मावत भूपाली ~ करत कान्हरो गान सारा० १०१३ ।
ईषद मन्द ~ हास दत दुति विगसति २१० ।
ईस १ शकर, शिव · जाकौ ~ शेष ब्रह्मादिक २०४ । ~ **पुर** शकर की पुरी, काशी ते सव बसत ~ — काशी ३९२८ । २ ईश्वर राखि सकत न ~ १/१०६ । ३ स्वामी . जो जगदीस ~ सबहिनि कौ २/१६ ।
ईस कौ ईस समर्थातिसमर्थ ईश्वर ~ करतार ससार को ९/१११ ।
ईसहि भगवान रुद्र को ~ लै दस सीस चढैहै ९/८१ ।
ईसहू ईश्वर भी भरम ही वलवत सब मै, ~ कें भाइ १/७० ।
ईस्वरता स्वामित्व, प्रभुत्व कै कहुँ रक कहु ~, नट वाजीगर जैसै १/२९३ ।

उ

उँचनि ऊँचाई माल मोतिन छवि कुच ~ मेरु गिरि अतिहिं लाजै १०४२ ।
उँजियारी उजाला सघन भई ~ परि० २/६६ ।
उँजियारे प्रकाश किये आत ~ २७४० ।
उइनस उन्नीस (कम) · जपत अट्ठारहौं भेद ~ नहीं १७३१ ।
उई उदय हुई : वह मूरति मन माँहि ~ १८५५ ।

उए उदित हुए • मानौ ससि द्वै उरहि ~ २६४२
उकठि सूखे ~ रहे जे गात ३० ।
उकठे अ० क्रि० सूख गये • ~ सब जर मूल ३९४४ । वि० सूखे ~ तरु भये पात १२४८ ।
उकठौ सूखा ~ काठ पल्लवै २८२४ ।
उकतात ऊबता है तातै मन ~ सा० ल० २२ ।
उकसारत समेटते हैं : इतनी कहि ~ बाँहि ३७४ ।
उकासत उखाड़ता है, खोदता है वृषभ सृ ग सों धरनि ~ १३८७ ।
उकास्यौ उकेरा निरगुन काल ~ परि० १/१६३ ।
उक्त कथन, वचन सूरदास तज ब्यान ~ सव मोसों कौन जतावै सा० ल० ८४ । ~ **गूढ** गूढ़ वचन, गुढोक्ति : ~ — तै भाव छदै सब सा० ल० ८५ ।
उक्ती वक्र टेढ़ा वचन, वक्रोक्ति अलंकार • सूर ~ कर कर सा० ल० ९० ।
उखारति उखाड़ती है • फिरति वेद-बन ऊख ~ १/५१ ।
उखारि उखाड़ कर : कहौ तौ लंक ~ हारि देउँ ९।८४ ।
उखारे उखाड़ दिये • तेउ ~ जर तें ८७३ ।
उखेरे उखाड़े, निकाले : सूर लटकि लागे अँग छवि पर निठुर न जात ~ २२२३ ।
उखेरौ उखाड़ उठाया : महि तैं पकरि ~ ८६९ ।
उगए निकले हों : जनु जुग भानु दुहुँ दिसि ~ २११८ ।
उगत उदय होता है, निकल रहा है • ~ अरुन निसा दीन २०५ ।
उगन उदय होने : कहौ तौ सूरज ~ देउँ नहिं ९/१४८ ।
उगवै उगे, उदय करती हो ~ सूर छुटै पसु बधन ३३७२ ।
उगाए उदित हो मनु द्वितीया चंद ~ २५१८ ।
उगार मुख द्रव, लार : रीझि लेत ~ १०८२ ।
उगारु रस, आनन्द : रीझि परसपर लेत ~ ११८० ।
उगाहत वसूलते हैं, उगाहते ह• हाट-बाट सब हमहि ~ ८५०६ ।
उगाहु उगाह : लीजै दान ~ १५९५ ।
उगिलत वमन कर रहा है, उगल रहा है मनो ~ राहु अमृत ११६६ ।
उगिल उगलता है : वेगि न ~ माटी २५५ ।
उगिलौ उगलते हो, • मोहन काहे न ~ माटी २५४ ।
उगे उदित हुए ह : व्रज मे ~ मानो आइ २८३१ ।
उगया उदित करने वाले, उगाने वाले • ब्रह्मादिक, रवि-ससि कोटि ~ १३१ ।
उग्यौ निकला, उदित हुआ . मानौं हर-तिलक कुहू ~ री ६०१ ।
उग्र तीव्र • रवि-ससि-कानि सु ~ भवन मैं २६७३ ।
उग्रसेन कंस के पिता और मथुरा के राजा • कालनेमि अरु ~ कुल ४ ।
उघरारी छितराई . लटैं ~ रही छुटि छुटि आनन त २०१२ ।
उघटत १ ताल देते ह • ~ स्याम, निरतनि नारि १०५९ । २ थिरकती है : नृत्य करत ~ नाना विधि ११४२ । ~ **बैन** बोल बोलते हे • कबहुं ~— ११४८ । ~ **सगीत** सगीन के साथ ताल देनी है : नृत्य करत ~ — गह ११३७ । △ ~ **भ्रम** भ्रम खुला, बोध हुआ : अपथ सकल चलि चाहि चहूँ दिसि — ~ सनिमद १/१२१ ।
उघटति १ खोलती है : जाति ~, पाँति ~ १३३५ । २. ताल देने लगती थी : कबहुं ~ रग १०५९ । ~ **हौ** उतर आई हो • ~ — तुम मात-पिता लौं १५०८ ।
उघटि तान छेड़ता है : कोउ निरतत कोउ ~ तार दै ४४८ ।
उघट्यौ १ खोल दिया, ताल दी, सम पर तान तोटा • ~ सकल संगीत रीति भव अगन १/२०५ ।
उघरत १ खुलता, खुलते नैन नहिं ~ २७३९ । २ खुलते ही ~ **नैन** किवार २, ~ मुख, परत दु:ख के कूप १/१०२ ।
उघरति उघड़ती, खुलती लगति पलक ~ न उघारें २६८०
उघरि १ खुल • सहज कपार ~ गए ३०९० । २ खुलकर ~ नाँची १९१० । ३ खुला अनाच्छादित • अचल टारि मुख ~ पर्यो है १६१३ । ४. नगा होकर अब हौं ~ नाच्यौ चाहत १/१३४ । ~ **आयौ** खुल गया है : ~ — परदेसी कौ नेहु ४२६० । △ ~ **गई कलई** पोल खुल गई सूर स्याम कौ बदन विलोकत ~ — परि० १/१२७ ।
उघरी १ खुल गई है प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु सब पानी ~ ३०७२ । २ मुक्त हो गये गज गनिका ~ १/१७८ ।
उघरे १ खुले हुए बडी बार भई लोचन ~ २५४ । २ उभरे हुए काम केलि उर नख ~ हौ २६३७ ।
उघर्यौ १ खुल गया डोलत सिर तनु अचल ~ २९८ । २ खुल गये द्वारे कौ कपाट ~ ८ ।
उघार १ खोलकर पलक नैक ~ देखत असो सुन्दर गात सा० ल० ६५ । २ खोल दे मानिन, बार बसन ~ सा० ल० ९० ।
उघारत १ खोलते ह झाडे धरन ~ मूँदत २७७ । २ खोल-खोलकर • चोरी करत ~ फरकी ३३३ ।
उघारन खोलने . लागी बदन ~ ४३९ ।
उघारि स० क्रि० १ खोलकर • बदन ~ दिखायो त्रिभुवन २५३ । २ खोल लोचन दए कुँवरि ~ ७६० । क्रि० वि० साफ साफ, स्पष्ट रूप से, खुलकर कोउ न कहति ~ १४९९ ।
उघारी स० क्रि० १. खोलकर नैनों कहीं ~ २५१८ । २.

खोली • तातै नहिं आँखि ~ ४/५ । ३. खुली निसि दिन रहत ~ ३५७० । ४. नग्न की अपनी जाँघ ~ १/१७३ । वि० नगी, निर्वस्त्र सवै रहीं जल माँझ ~ १५६१ ।

उघारे १ खोले नैन न जात ~ ९/५२ । २. खोल दिये छोरे निगड कपाट ~ ११ । ३. नगे ही • अह निसि रहत ~ ३५६६ ।

उघारैं १. उघाडते, खोलते पलक न नैकु ~ २५८७ । २. खोलने से लगति पलक उघरति न ~ २६८० ।

उघारौ १. खोल दो मेरे कहे ~ ७९३ । २. खोलती हो, दिखाती हो कचन घट काहे न ~ १५४२ । ३. खोलकर (घूँघट हटाकर) • तिनमै मूँड ~ री १३५ । ४ नग्न • तन करत ~ १/१७२ ।

उघार्यौ खोल दिया : बदन ~ नंद २०३ ।

उच ऊँचे परी दृष्टि ~ कुचनि पिया की १०५३ ।

उचकाइ उठाकर लै आवै ~ ९/७४ ।

उचकाई उठा लिया : गोवर्धन लीन्हो ~ ९३८ ।

उचकि उचककर ~ मदर लियौ ८७० ।

उचक्यौ उठकर ऊपर आया, उतराया बूडि गयौ, ~ नहीं ५८९ ।

उचटत छिटककर ~ भरि अगार गगन लौं ५९४ ।

उचटाइहौं खिन्न करके, उदास करके • अव न पियहिं ~ मोकौं सरमात २७२३ ।

उचटाए १. खिन्न कर दिये, उचटा दिये हमनै वे ~ २३३४ । २ खिन्न करने से • मोकौं ~ कहु पैहै १७०४ ।

उचटावत १. उचटा रहे हो, भडकाते हो जानि बूझि तिहि क्यौ ~ २४१९ । २. उचाट कर देता है तवही तव ~ ३४१८ ।

उचटावति हटवाती . तिनतैं मन ~ है १२३९ ।

उचटि उचटकर, छिटककर : उडगन कनी ~ इत आइ ३३५१ ।

उचटि-उचटि उचट उचट कर • ~ लागत प्रिय गात १४४१ ।

उचटे १. खुल गये . ~ सकल किवार ४०८ । २. उदासीन . हमसौं ~ रहत हैं १२९१ ।

उचटैं उदासीन रहते हैं • ये ~ वह पागै री १२८९ ।

उचरी उच्चरित की, कही : कही जो बातै हरि ~ १/२६८ ।

उचरै १. उच्चरित होता है, निकलता है • जो ~ सकेत ३९६९ । २. उच्चारण करता है . राम नाम मुख ~ सोई ६/४ ।

उचर्यौ उच्चारण हुआ है श्री मुख ग्यान पथ जौ ~ ४१५१ । -

उचाइ १. उठाकर : बाँह ~ कालिह की नाईं १७९ । २ उठा (लिया) • तुरत लई ~ ११४५ ।

उचाई उखाड, उठा : अब लीजियै ईहि ~ ८/८ ।

उचाउ (ऊपर) उठाकर सीस ~ निहारी ३०२३ ।

उचाए उठाया • सखिनि तव भुज गहि ~ २८११ ।

उचाटी अनमनी, विरक्त , उचट गई : भवन काज तैं भई ~ ७३६ ।

उचायौ उठा • तातै कर रहि गयौ ~ ९/३ ।

उचार उच्चारण, कथन : महामुनि नृपसौं कियौ ~ सारा० १०९२ ।

उचारत १ उच्चारण करता है : ज्यों सुक पिंजर माहिं ~ ४००८ । २ उच्चारण करते हैं : तव तव राधा नाम ~ १३५८ ।

उचारति कहती (हो) : मोसौं कहा ~ हौ १५८३ ।

उचारन उच्चारण करने : विप्र लगे धुनि वेद ~ ९/२४ ।

उचारा १ वोला • नृपति कछू नहिं वचन ~ ९/४ । २ वोले • (हरि) दीरघ वचन ~ ४ ।

उचारि बोलकर, उच्चारण करके • विप्रनि सौं यौं कह्यौ ~ १२/५ ।

उचारी १ उच्चारण किया • जय जय शब्द ~ सारा० १२४ । २ गान किया • सूर सुनि सुजस कीरति ~ ८/१७ । ३ वताई : कही जब यह बात ~ १/१७३ ।

उचारे उच्चारण किया, वोले : करि नमस्कार जै जै ~ ४२०८ ।

उचारैं कहते है, वोलते है जो जो मुख हरि नाम ~ ६/४ ।

उचारै १ उच्चारण कर रहे है : सिद्ध गधर्व जै जै ~ ९/१६३ । २. वोलता है, कहता है अतकाल जो नाम ~ ६/४ ।

उचारौं उच्चारण करूँ, कहूँ : दोउ कर जोरि विनती ~ ९/१२९ ।

उचारौ कहा • ब्रह्मा तव यह वचन ~ ७/७ ।

उचार्यौ पुकारा, उच्चारण किया, कहा : राम नाम तव कुवर ~ ७/२ ।

उचैस्रवा इन्द्र का घोडा, सफेद घोडा : निकले सवै कुवर अस वारी ~ के पोर ४१६६ ।

उच्च १ ऊँचा . इहिं विधि ~ अनुज तन धरि १/१२३ । २ ऊँचे • नीच दसा कै ~ परी ३१२३ ।

उच्चरतौ वखान करता, उच्चारण करता • साधु सील सद्रूप पुरुष कौ अपजस वहु ~ १/१२३ ।

उच्चरी उच्चारण की, कही : जश पुरुषवानी ~ ४/५ ।

उच्चरै उच्चारण करे, कहता है, लेता है ज्यों त्यो कोउ हरि नाम ~ ६/४ ।

उच्चरौं उच्चारण करूँ : अब मैं यहै विनै ~ ४/१२ ।

उच्चरौ उच्चारण करो, वोलो रामहिं राम सदा ~ ७/२ ।

उच्चर्यौ उच्चारण किया : तासौं वचन मधुर ~ ४/९ ।

उच्चार उच्चारण (करके) : अरध नाम ~ करि १/११९ ।

उच्चारी कही, की : वहुरि इद्र अस्तुति ~ ७/२ ।

उच्चारे उच्चारण किया, वर्णन किये : सो तौ मैं तुमसौं ~ २ ।

उच्चारैं उच्चारण करे, जपे • हरि हरि नाम सदा ~ ७/२ ।
उच्चार्यौ १ उच्चारण किया • वेद भली विधि मौं ~ ४/५ । २ कहा : तब राजा तिन मौं ~ १२/५ ।
उच्छंग गोद मे : उर ~ कन्हैया लै लै ३६५७ ।
उच्छलत उछलते हे महा आनद सुख-सिन्धु ~ दौड २२०४ ।
उच्छलित छलकता हुआ : प्रेमघट ~ ह्वै है नैन अमु वनाइ २९४९ ।
उछंग १ गोद मे : वालक लियौ ~ दुष्टमति ७० । २ छाती: लेत ~ गोद करि आली ४२४७ । ३ हृदय से : यशुमति मात ~ लगाये वलमोहन को आय मारा० ७१७ । ~ **लई** गोद मे भर लिया : ~ — वह मुख पहिचानी २०३० ।
उछंगन गोद, छाती • जान प्रभात ~ दम्पति लेन प्राण रम पेखे मारा० १०२० ।
उछंगना गोद मे : मातु जसोदा लेति ~ ११३ ।
उछंगहि गोद मे ~ लेत कन धरनि खसति २४१८ ।
उछरत १ उछलता हैं : ~ मिंधु धराधर काँपत ६४ । २ उछलती हैं ~ प्यारी रिम करि गात २२४४ ।
उछरि १ उछल कर . लगत ~ उमग २१३१ । २ उछल जाते ये स्रोनित छिंछ ~ आकामहिं ९/१५८ ।
उछलत छलकता है स्याम रस घर पूरि ~ १६७२ ।
उछलि उछलकर उमग्यौ जमुन-जल ~ लहर के ३० ।
उछलित छलकता हुआ . ~ भयौ सुधारम उर घट तैं २६७१ । ~ **भौ** हिलोरे ले रहा हो • रस समुद्र मानो ~ — १०६० ।
उछाँगे छलाग, उछाल तब लियौ स्याम ~ ४ ।
उछाइ उत्साह मन अति वढ्यौ ~ २९४७ ।
उछारि उछालकर गेंद ~ जु ताक्यौ ३००७ ।
उछाहु उत्साह : लोचन मन ~ २९४६ ।
उछेद नाश धर्म ~ करायौ १/१०४ ।
उछ्वास उच्छ्वास उर ऊँचे ~ तृनावर्त ३६२० ।
उजरि उजाड कर प्रभु सुख के दाता गोकुल चले ~ २९८७ ।
उजरै उलडे ~ ताकौ गाउँ परि० १/३८ ।
उजागर १ कीर्तिशाली सदा ~ वस ३५८७ । २ कुशल, चतुर : रति सग्राम ~ हो २६९० । ३ प्रसिद्ध, प्रकाशित हमही तैं ये भई ~ २४०६ । ४ भाग्यशाली • ऐसी कौन ~ २६७७ । ५ स्पष्ट . भक्ति कौ पथ ~ १/९१ ।
उजागरि स्त्री० चतुर नारी : रीझे घोष ~ कें २०१९ । वि० १ जगमगाती हुई रूप गुननि करि परम ~ १०८४ । २. निपुण, चतुर नागरि सब गुननि ~ २७४२ । ३. बढ चढकर इक इक तैं गुन रूप ~ १६०६ ।
उजागरी प्रकाशित करने वाली • तू रति-रूप ~ २८०१ ।
उजार उजाड कर : बिटप उखार ~ बिपिन को सारा० २८३ ।
उजारि उजाड कर, निर्जन करके अनिहिं मघन अरन्य ~ ४७२ ।
उजारी प्रकाशित कर दिया • दीप सौं दीप जैसे ~ २४९५ ।
उजारैं प्रकाशित करते हैं मन मोहन हँसि दीप ~ २८२२ ।
उजारो पु० उजाला तनक ~ खर कौ ३९८९ । वि० १. उजला हरि, वदन ~ लाग्यौ ४ । २ प्रकाशमान् . ताहि दमन जाको हियौ ~ ७६२ ।
उजार्यौ[१] प्रकाशित हुआ, चमक उठा मनु वादर न चद ~ ४०७ ।
उजार्यौ[२] १ उजाडना चाहत हठ करि घोष ~ ३३२० । २ उजाड दिया वीचहिं वाण ~ ९/१०३ । ३ निकला हो मानहु पय-निधि मथत फेन फटि चद ~ ४३१ ।
उजास उजाला (प्रियतम) वा राधा को जु ~ २०४० ।
उजियरिया चाँदनी छिटकि रही आछी ~ २४६ ।
उजियार उजाला, प्रकाश अपनी जोति कियो ~ ४३०० ।
उजियारी १ उजियाली, चाँदनी कवहुक रत्न महल चित्रसारी शरद निशा ~ मारा० ३१२ । २ प्रकाश, चमक, उजाला नैन कुज कुडल ~ १९६ ।
उजियारे प्रकाश मन मे रुचि उपजावै भावै त्रिभुवन के ~ ४१९ ।
उजियारौ प्रकट सव्हहि मव्द भयौ ~ ४/१३ ।
उजीर वजीर, मत्री पाप ~ वह्यौ सोइ मान्यौ १/६४ ।
उजेरत प्रकाशित करता है उठहु कान्ह रवि किरनि ~ ४०५ ।
उजेरौ प्रकाश वारत अग ~ मा० ल० ३३ ।
उज्जल श्वेत, सफेद हस ~ पख निर्मल अग मलि मलि न्हाहिं १/३३८ ।
उज्जागरी उज्ज्वल रूप रस आगरी, घोष ~ स्याम प्यारौ १७५१ ।
उज्यारी १ प्रकाश, उजाला • क्यों दुरि है ससि वदन ~ ११ । २ उज्ज्वल सोभा उमडत अमल ~ मा० ल० ४९ ।
उज्यारे प्रकाश, उजाला रवि किरनि ~ ४३९ ।
उज्यारौ प्रकाश चहु दिस भयौ ~ १३५ ।
उज्वल १ सफेद ~ गरी वदाम २१२ । २ साफ अति ~ है सेज तुम्हारी २४२
उज्ज्वलताई उज्ज्वलता • कहाँ कह ~ ८४१ ।
उझकत उछलते ~ फिरत कान्ह घर ही घर २०७३ ।
उझकति उचकती हुइ द्रुम-वेली पूछति मन ~ ११२४ ।
उझकि उछलकर, उचककर : जँह-तहँ ~ झरोखा झाकत मारा० २०८ ।
उटि उलटा करके • जोगी जरै मरै ~ सीमी ३६८९ ।
उठत १ उठता है : ~ पुकारि-पुकारि ९/६७ । २ उठती :

~ बैस कौ इहै दाँव री २५९७। ३ उठती है भूलि न ~ जसोदा जननी ४०९१। ४ उठते हैं बैठत ~ सेज सोवत मैं १२। ५ उठ जाती है ~ सभा दिन मधि ९/१७२। ६. उठ रही है गरज किलक आघात ~ ९/१७४। ७ उठाकर बादिहिं रटत ~ अपने जिय ३६१९। ८ उठते हो अधिक ~ अकुलाइ २३६०।

उठति फूटकर निकल रही है छवि की ~ भकोरै हो २७९४।

~ **पुकारि** चिल्ला उठती है. आपु ~ — १५५५।

उठति १ उठती है, उठ रही है: ~ राग रागिनी तरगनि २१४३। २ उठती · हृदय ~ है हूक ३६५४। ३ उठती हो कबहुँ ~ दै गारिनि १४७३।

उठन उठने: लालन ~ न पावै २३१।

उठनि १ उठने की सुनत ~ छवि कृपा निधान की २०३९। २ उठती है, बोलि ~ पुनि लेहु गुपालहिं १६३६।

उठहु उठो ~ भोजन करहु १२१०।

उठाइ १ उठा. लियौ ~ सैल भुज गहि कै ८६९। २ उठाकर · तब रिषि देख्यौ सीस ~ ९/३। ३ उठा लिये तब नरहरि जू ताहि ~ ७/२।

उठाई १ उठाकर · गिरत अक भरि लेत ~ १९। २ उठाया है. कौने धाम ~ ३९६८।

उठाए उठा लिया भुजगहि पार्थ ~ १/२९।

उठाऐ उठाये हुए तब वह दोऊ हाथ ~ १३९६।

उठान उठना, बढना थोरी बैस ~ परि० ७/३८।

उठाय उठा पाछे लोकपाल सब जीते सुरपति दियौ ~ सारा० १०६।

उठायो, उठायौ १ उठाया, उठा लिया · जबहीं सीस ~ १४०४। २ उठाये अस्विनि-सुत-हित भाग ~ ९/३।

उठावँ उस स्थान ~ को डोरी कैसे बाँधौ परि० १/६२।

उठावत उठाते है. आलस सौ कर कौर ~ ७७८।

उठावति उठाती है जल-बासन कर लै जु ~ १९१।

उठावहु उठाओ तटही बाँह ~ ७९१।

उठावै उठाती, जगाती पति क्यौं न ~ ५८९।

उठि १ उठ हाथ छुअत ~ आयौ ९/२८। २ उठकर मो बरजत बरजत ~ धाए २३१२। ३ उठो · ~ आभूषन साजु ९/७९।

उठिऐ जागिए, उठिए · ~ स्याम, कलेऊ कीजै २११।

उठिबै उठने को उडि न सकत ~ अकुलात १३६८।

उठिहै उठेगा सूर पतित तबही ~ १/१३४।

उठैं १ उठती हैं आवै लहरनि ~ समाइ ३६१०। २. उठते हे लेत ~ हरि नाम ३८०७। ३ उठने पर · ~ उठत बैठे बैठत हैं २१३८। ~

उठै १ उठता है ~ न कत महा अभिमानी ९/१६०। २ उठने लगी. बारबार ~ अकुलाई ९/५६।

उठैगी उठेगी ~ खुर नैन ३२२७।

उठौ उठो, जागो · ऊधौ ~ सबै पा लागै ३८१५; ~ नदलाल भयौ भिनुमार २०८।

उठ्यौ उठा · गगन ~ आघात ९/७४ सारा० ७३८।

उडगन तारे, नक्षत्र ~ उदित तिमिर नहिं नासत ८/६।

उडगन-पथ नक्षत्र मार्ग (आकाश) ~ गगा केरो २७६।

उडत १ उडता है बातचक्र ज्यौं तृनहिं ~ लै २२८६। २ उडता हुआ अचल ~ अधिक छवि लागति २६५९। ३ उडते ~ नहि बनत इत उतहिं टोलै १९६७। ४ उडने पर: ~ अचल प्रगटि कुच दोउ १०४५। ५ उडते हुए उर अचल ~ न जानि २४। ६ उडते है · ~ फूल उडगन नभ अतर २/२८। ७ उडती हुई गगन चिरैया ~ दिखावत १८८। **उडत** ~ उडते उडते — ~ शुक पहुँच्यौ तहा १/२२६।

उडति उडती हुई: ~ भँभीरी पकरी जाइ ३/५।

उडपति चन्द्रमा विथकति ~ ब्योम बिराजत ११३६।

उडयौ उडा महा दुष्ट लै ~ गुपालहि ७८।

उडराज चन्द्रमा ~ तजि गयौ २४५०।

उडाइ १. उड · भख्यौ न गयौ ~ २६६९। २ उडा. तिहिं सुख सकल ~ दिए ३६२०। ३ उडकर · चलै ~ सुरति गति लागी २२७८। ४ उडती है पवन लागि ज्यौं रुई ~ १२/३।

उडाई १. उडा बादर, जहँ-तहँ दिए ~ ६९२। २. उडाई है. डोरा बाँधि ~ ३९६८।

उडात १ उड पाते हे. छाँडिहु दियै ~ नहिं १६३५। २ उड रहे है गति तेज बमन बाने ~ २८४७।

उडानी उड रही हैं · मोर चद्रिका सबै ~ ३६३७।

उडाने उड़े: ताही तैं न ~ १७९८।

उडान्यौ उडा, उड गया माथे पर ह्वै काग ~ ५४१।

उडानौ उड गया: मो लख तुरत ~ सा० ल० ७२।

उडायौ उडा दिया है, बदनाम किया है: सूर-प्रभु नाम भूठै ~ १७१९।

उडाल्यौ उड गया काग ~ ५४१।

उडावत १ उडाती हैं चलत पग धूरि ~ ४३७। २ उडाते हुए सुरग अबीर गुलाल ~ सारा० १०३६। ३ उडाते हैं: भूठहिं लोग ~ घर-घर १९६०।

उडावति उडाती है · कर कचन कोकिला ~ ४११८।

उडावहि उडाते हैं सबै ~ छार २९१४।

उडावैं उडाते हैं: ब्रज उपहास ~ १९२१।

उडावै उडाता है · मसि सन्मुख जो धूरि ~ १/३४।

उडि १ उड: देखत हीं ~ गए हाथ तैं २३२९। २ उडकर ·

तिन ~ अपनौ आपु बचायौ । १/२२६ ।

उडि-उडि उड-उडकर ~ जान पार नहिं पावन २३१२ ।

उडबे, उडिबे उडने को : उडि न सकत ~ अकुलात १३६८ ।

उडिबौ उडना मन प्रतीति नहिं आवइ, ~ ही जानें ९/४२ ।

उडिया दुपट्टा लाल चोली नील ~ ११६८ ।

उडियै उडी ~ फिरति नैननि संग १८५५ ।

उडिहु उडकर भी : ~ न लागी धूरि ४०४८ ।

उड गन तारागण, नक्षत्र नील जलद पर ~ निरखत १०४।

उड गन अवलि तारावली . ~ समेत ३४९ ।

उडपति चन्द्रमा रैनि ~ निरखि तलफति ४८४ ।

उड नक्षत्रों की • माग ~ नव तरनि तर्योना २४३६ ।

उडै उडना है, उड जाता ज्यौं कचुकि अचरा ~ १४४३ ।

उडैहै उडायेगा कै है खाक ~ १/८६ ।

उडुगन तारागण, तारे : विमल ~ तीन २४६८ ।

उड यौ उडते : ~ अकामहिं जात ९/७४ ।

उढनियाँ ओढनी • ओढि ~ चलत १८४०, पान ~ कहाँ बिसारी ६९३ ।

उढाइ उढा (लिया) लिए ~ कामरी मोहन ४०१७ । ~ कै ढककर . दर भूषन खन-खन ~ — मा० ल० ३ ।

उढाई ओढा लिया लै कारी कामरी ~ १९९० ।

उढाऊँ उढाऊँ, ढकूँ कथा काहि ~ ४१२६ ।

उढाए ढक दिया . जननी पट पीत ~ १०४ ।

उढाय ढक वसन ~ रहे छिपि आपन पूरन परमानद सारा० ६०५ ।

उढायौ उढा लिया पाताम्बर जु ~ सारा० ३७२ ।

उढावत १ ओढाती है ये चूनरा ~ १९९२ । २ ओढाते हैं . सूर स्याम पट पीत ~ परि० १/१०५ ।

उतग १ ऊँचा, उच्च कुच ~ बर रचित कचुकी २६६६ । २ नग्न मे मधुर ~ सप्त सुर निकसै ३८०७ ।

उतगनि उन्नत, ऊँचे दन जुग उरज ~ को ८४६५ ।

उतगा उत्तुग, ऊँचा चार चक्कवे उरज ~ २६५८ ।

उत उधर ~ तें सखा हँसत सब आवत ८२६ ।

उतकठ उत्कण्ठित अति ~ नवीने २३७८ ।

उतकठा उत्कण्ठा, लालसा ~ हरि सौं बढी ११२० ।

उतका[1] उधर को हौं कहत न जाउ ~ मा० ल० ३० ।

उतका[2] उत्कठिता नायिका हौं कहत न जाउ ~ नद नदन वेग मा० ल० ३० ।

उतकौ उधर को ~ चितै रहा २६२७ ।

उतजोग उद्योग सबै करो अपने ~ १९२३ ।

उतते, उततैं उधर से इतते ये ~ तुम मन मिलि १९०४ ।

उतपति उत्पत्ति, सृष्टि ~ प्रलय करत हैं येई ३८० ।

उतपल कमल . कर ~ के कारन सौंक सर्मै तिन चावै सा० ल० ७९ ।

उतपाटि उखाड • द्रुम गहि ~ लिये ९/९६ ।

उतपात १ उथल पुथल, उत्पात गगन भयौ ~ ६४ । २ हिलने-डुलने • रवि रथ भया ~ ०/७४ ।

उतपाति नटखट, उपद्रवी सुनहु कान्ह ~ २६१८ ।

उतपाने उत्पन्न हुए अष्ट पुत्र नामौं ~ ९/२ ।

उतर उत्तर सूर स्याम यह ~ बनायौ २८० ।

उतरत १ उतरते चितर्तै कहुँ ~ नहिं श्री कुंजबिहारी २६५१ । २ उतरते ही ~ काम लहरि कै १६२६ । ३ उतर जाना है, उतर जाना है कृष्ण भजि भव जलनिधि ~ १/५५ । ४ उतर जाते ह सुनि मन ~ पार १/२१५ । ५ उतर रहे हैं मनौ भुजग गगन त ~ ६४१ ।

उतरतौ उतरता आयो चढत ~ १/१२३ ।

उतरात १ चढना जा रहा . विष जात ~ ५५२ । २ उतर रहा था माखन हो ~ २७० । ३ उतराना • (हौं) बूडत ~ ३६१४ ।

उतरानी उतराने लगी धीरे जल ~ ३३७ ।

उतरायौ तर गया, भला हुआ कहत सर ~ १/१५ ।

उतरावै उतारे, चलावे क्रम-क्रम करि ~ १२६ ।

उतरि १ उतर • ~ गइ तब गर्व खुमारी ९४७ । २ उतरकर रथ त ~ क्रेम गहि राजा ४ । ३ पार कर लो भजन करि करि ~ पल्ले पार १/८८ ।

उतरिहै उतरेगा या दुख पार ~ १/२९ ।

उतरी उतर गई • ~ पनच अब काम क कमान का २०३९ ।

उतरे १ उतर आए हो कहो कपि, कैसे ~ पार ९/८० । २ उतर आए हैं दौड ~ सागर-तीर ९/१२५ ।

उतरै उतर जाए : भक्ति करै सो ~ पार ४३०० ।

उतर्यौ १ उतरा, पार किया • किहि बिधि ~ जात १/१७१ । २ उतर गये, कर गये ~ जल निधि पार ०/७८ । ३ उतरा, प्रभाव दूर हुआ विष ~ नाहिंन तोहि २/३२ ।

उतसाह, उतसाहु उत्साह लोक मान ~ १/४० ।

उतहिं १ उधर गायौ हटकि ~ का धावत २००८ । २ उधर को : मन तिन ~ चलाए ३१२६ । ३ वहीं, उधर हा रहत नहिं नैकुहूँ, ~ जाहीं २२७३ ।

उतहि उधर (दूसरी ओर) : जेंवन देखि ~ सुत कीनौ ८३८ ।

उतहीं १ उधर हा : फिरि ~ को धावति २३७० । २ उधर : चली सग जनि, ~ जाहु ०/३४ ।

उतही उधर ही वैं ~ कौ गए हरषि मन १८८४ ।

उताइल उतावली से, शीघ्रता से : सुत सुभाव चल नाहीं ~ आइ मा० ल० ८७ ।

उताइली उतावलापन करत काहा पिय लगति ~ २०३१

उनकैं १ उनके इक अति निकट रहत हौ ~ ३८३०। २ उनको . वै हरि दीपक ज्योति ज्यौं नैंकुन ~ नेह ४०९५।

उनकै उनके : वै प्रभु बडे सखा तुम ~ ३८८६।

उनकौं उनको, उन्हे : ~ हम प्रति पाले प्रेम २२९४, नद-नँदन ~ हम जानति ११११३।

उनकौ १ उनका : सब मिलि जग जस गावत ~ ३९९५। २ उनका : जब ~ आसरौ कर्‌यौ जिय २२७७। ३. उनके (ऊपर) · गीध, ब्याध, गज, गौतम की तिय ~ कौन निहोरौ १/१३२। ४ उनको : कैसे ~ धोवै २२२८।

उनत उठे हुए . पीन पयोधर सघन ~ अति २४४७।

उनतैं उनसे, उन्हीं से : ~ कछू भयौ नहिं काजा ५२१।

उनपै १ उनके पास मैं ~ नहि जाउँ २४३१। २ उन पर : खोयौ गयौ नेह नग ~ ३७१४। ३ उनसे · हम ~ बन गाई चराई ३१६२।

उनमत १ मनमानी, उन्मत्त ~ सी ज्यौं बिचरन लागे ५/२। २ मदमत्त ~ ज्यौं सुख दुख नहिं जानै ४/१२।

उनमत्त मतवाला, मदाध · अति ~ मोह माया बस २/२५२।

उनमद उन्मत्त, मस्त · ~ अधिकाइ ८४१।

उनमाद उन्माद, गर्व : नद नदन कर ~ सा० ल० १०७।

उनमान १ अनुमान · सुनि स्रवननि ~ करति है परि० १/९२। २ समान : उरग इद्र ~ सुभग भुज १/६९।

उनमानि विचार कर · आठै उर ~ कै २९१५।

उनमीलित विकसित, उन्मीलित अलकार . सूर ~ निहारो सा० ल० ७७।

उनमैं उनमे . एक सखी ~ जो राधा ४०९६।

उनयें उमडे : गरजि गरजि बादर ~ है ३२२९।

उनयौ १ उमड आया है · स्याम जलद की ~ २०५८। २ झुक आया है . ~ अवर पान्यौ २८२६।

उन रँग उन (कृष्ण) का रग, स्याम, काजल ~ बिनु नीक न होउ सा० ल० ६३।

उनरि उमड कर · ~ **उनरि** उमड-उमड कर ~ वै परत आनिकै ३३१३।

उनसो उनसे . छिन नहि दूर स्याम तुव ~ सारा० ५८२।

उनसौं उनसे मुख देखत कहियौ तुम ~ ४०७५।

उनहार समान ब्रज मे वे ~ नही ३२१९।

उनहारि समान भई तमो ~ है २११६, अध सारग ~ २१११।

उनहि १ उन (का) . नाम ~ कौ सुनत गेह तजि ३५१५। २ उन (की) : यह करतूति ~ की नाही ३७४९। ३ उनके : ~ बिना अवसेरी लागि २३१७। ४ उनके ऊपर · अब कबहूँ जनि ~ ढरौ २५६७। ५ उनको : तुम तौ देखे ~ नहीं री १९५८। ६ उनको भी : आपुन खीझैं ~ खिझावैं १६०७। ७ उनमे · तुमहि ~ है जैसी २८२६। ८ वे : आपु काज कौं ~ चले मिलि २३२०। ~ **बरौं** · उन्हीं को वरण करूँगी . ~ — के तजौं परान ४१६७। ~ **बताऊँ** उन्हे परिचित कराये देता हूँ : डूँगर कौ वल ~ — ९२५।

उनहि उनमे नैना सीकैं ~ रए २२३३।

उनहीं १. उनके · दूरिहिं तै चितवति ~ तन २१५७। २ उनको (मोहन को) : नैना ~ देखै जीवत २३८२। ३ उन्हीं : ~ कै बल बैर बढावत २३२०। सुनहु 'सूर' यह ~ फावै १९२१। ४ उन्होंने ही : ढीठ कियौ मन कौं ~ री १८९०। ~ **पै** उन्हीं के पास · चलहु जु मिलि ~ — जैये १५१२। ~ **सौं** उन्ही से : ~ — रुचि मान्यौ २२२२।

उनही १ उन्हीं (के) : ~ कैं रँग राती २१५८, एतो अलि ~ सगी ३८९८। २ उन्ही को : ~ जाइ रिझाउ ३६१८।

उनहुँ, उनहूँ उन्होने ही : तुमकौं ~ जुहार कियौ १८८२। ~ **कौं** उनको भी · ~ वै भए वलाइ २२६३। ~ **तैं** उनसे भी हमतैं गए ~ — खोवै २२२८।

उनि १ उन (नवेलियों ने ही) : ~ घर लोग जगाए ११७०। २ उनको भली करी ~ स्याम बँधाए २२७०। ३ वे लोग : यह लीला ~ सब जनैहै १६५०।

उनिहारी तदनुसार · बालक-बच्छ बनाइ रचे वे ही ~ ४९२।

उनींद अर्धनिद्रित : लोचन अलस ~ उते २५०४।

उनींदे १ ऊघते, तन्द्रिल, उन्निद्रित · देखियत लाल ~ भए २६३४, मधुप ~ आए ४३२। २ उचटी हुई नींद वाले . कहुँ तें रैनि ~ मोहन २७१४।

उनींदैं उन्निद्रित · थकित सुभग दृग अरुन ~ परि० १/५७।

उनै[1] १ उनका . ~ मत्र मन जानिकै २९३९। २ उन्हे अब बूझियैं न यह ~ ३७४०।

उनै[2] उमड . ~ बदरिया आई ३३४७। ~ **उनै** उमड उमडकर ~ बरषत गिरि ऊपर ८७४।

उन्नत १ उठे हुए · देखि ~ कर ५०३। २ ऊँची . ~ स्वास बिरह बिरहातुर ४१३७। **जात** ~ उमड चले हैं धुज हुतासन — ~ २०८५।

उन्मत उन्मत्त · ~ मधुकर भ्रमत अपार २८४३।

उन्मद उन्मत्त ~ जोबन आनि ठाठि कै ३६७६।

उन्मूलति उखाडती हैं : दरस सलिल ~ ३७०५।

उन्हैं उनमे ~ भेद कहु कैसौ २/१४।

उन्है उन्हे ~ छाँडि गोकुल कत आए ३१३५।

उपग एक तरह का बाजा ताल मृदग ~ नैन २८६७।

उपँग सुत ऊद्धव तबहिं ~ आइ गए ३४२०।

उपंगी उपाग · सूर सुनाम सिली मुख जो पै बेधन कवच ~ ३५११।

उपकारिनि उपकारिणी, भलाई करने वाली तो मी नहीं और ~ ३३४१।

उपखान उपाख्यान, गाथा : इक ~ चलत त्रिभुवन मैं १५१८।

उपचार इलाज, दवा · ताहिं कछू ~ न लागत ७४८।

उपचारे विधान करे : पूरण काम मत्र ~ सारा० १०२६।

उपचारै १ उपचार, इलाज : करत बहु ~ ३५४८। २ उपचार करे : तिनहिं कौन ~ ३७७८।

उपचीर भलाई (व्यग्य मे), उपद्रव . क्यों न करौ ~ ३८४१।

उपज उत्पन्न होती है : कनक लता तैं ~ न मुकता ३६६६।

उपजत १ उत्पन्न होता है, पैदा होता है दरस देखि अति ही सुख ~ २२१४। २ उत्पन्न होती है : ~ प्रेम प्रीति अतरगत ३५५६। ३ उत्पन्न हो रहा है · एकनि सुख, एकनि दुख ~ १४३। ४ उत्पन्न हो रही है : जन्म जन्म की विषय वासना ~ लता नई १/१८७। ५ पैदा हुआ · ~ अति आनद २६१२। ६ पैदा होते ही : जन के ~ दुख किन काटन १/१०७। ~ **विनसत** उत्पन्न और नष्ट होता है . रहट घरी ज्यौं जग व्योहार ~ — बारबार १२/४।

उपजति १ उठ रही है : कोटिन कोटि तरगिनि ~ २४६९। २ उत्पन्न होता है : हँसत दमन इक सोभा ~ १८३२। ३ सूझती है उपमा एक अनूपम ~ १७९७।

उपजाइ १ उत्पन्न हो गया है : कासौं हित ~ ९/८३। २ उत्पन्न करके, रचना करके : हँसत भए अतर हम तुमसौं सहज खेल ~ ११२८।

उपजाई १ उत्पन्न की · मन चिंता अतिही ~ २०४२। २ उत्पन्न किया · हृदय माँझ कछु रिस ~ २१९१। ३ उत्पन्न हुई · मन मगन काम सौं बिरति नाहिं ~ १/१८७। ४ प्रकट की : नद सुवन यह बुधि ~ ८६१। ~ **दई** उत्पन्न कर दी : इक उर्वशी हृदय ~ — मारा० ७४।

उपजाउ वात बनाकर · सवै ये ~ १७४४।

उपजाऊँ उत्पन्न करूँ : ऐसैं रुचि ~ री २१०३।

उपजाय उत्पत्ति करके · मघ्न सुरन ~ बजावत सारा० ९४२।

उपजायो, उपजायौ १ उत्पन्न किया रति आगम हित अति ~ २०३२। २ उत्पन्न हुई : पुनि मरीचि कस्यप ~ ~ ९/२।

उपजावत १ उत्पन्न करता है · ~ सुख चैन १०३। २ उत्पन्न करते हे : प्रीति अधिक ~ १९९२। ३ उत्पन्न कर रहे हे : विद्याधर किन्नर कलोल मन ~। ४ विचार कर रहे हैं · मन ही मन ऐमी ~ ३११३।

उपजावति १ उत्पन्न करती है, देने लगती है · मोकौं दुख ~ १८५३। २ गढ़ लेती है . तवहिं वात ~ री २०१३।

उपजावहु उत्पन्न करो : सग जेवहु बलराम कै रुचि ~ मोहिं। ४३१।

उपजावैं उत्पन्न करते हे : कबहु पुत्र मोह ~ ११/३।

उपजावै १ उत्पन्न करता है : दुख सुख दोउ मन ~ १७। २ उत्पन्न कर देते हैं छन ही मैं ~ ४८२। ३ पैदा करेगा मन मैं रुचि ~ ४१९ ४ प्रदान (उत्पन्न) करे . अमित तोष ~ १/२।

उपजि उत्पन्न, ~**परी** उत्पन्न हो गई ~ — तातें यह वात ४१७१। ~ **परै** उत्पन्न हो जाती है ~ — कछु आन २७६८। ~ **परयौ** आ उपजा हो उत्पन्न हो गया हो · ~ — सिसु पुन्य फल १३८।

उपजी उत्पन्न हुई · ~ परम प्रतीति 'सूर' यह ३८३७। ~ **कामगुभी** काम का अकुर उत्पन्न हो गया मनमोहन निरखत ~ — १८७०। ~ **बाइ** मतवाला हो गई : मुरली सुनत ~ — ९९२।

उपजे उत्पन्न हुए ये ~ ओछे नछत्र के २३९६।

उपजैं १ उत्पन्न हों · कह्यौ पुरुष ~ बल भारी ४। २ उत्पन्न होता है ज्यों त्रिदोष ~ जक लागत ३५२९।

उपजै १ उत्पन्न हुआ · गोपिनि के ~ अभिमान ११८०। २ उत्पन्न हो . क्यों ~ परतीति ३७४१। ३ उत्पन्न होता है अचरज एक लता गिरि ~ २१३०।

उपजैहैं उत्पन्न होंगे मदन बहुत ~ सा० ल० ८१।

उपजौ उत्पन्न हुआ, आ पडा है · सकट मैं इक सकट ~ १/२२१।

उपज्यो, उपज्यौ १ उत्पन्न हुआ, पैदा हुआ · ब्रज भीतर ~ मेरो रिपु ६०। २ उत्पन्न हो गया : सुनत सुनत ~ वैराग ७/८। ३ उत्पन्न हो गई . ~ कठिन कुचैन १३७७। ४ उत्पन्न हो चुके : (सुरदेवी) तैसैहिं केस काल ~ हैं ४। ~ **मैनु** कामोदय हुआ : सुनि धुनि गोपिन ~ — ११-८०। ~ **हिरदै** हृदय मे उत्पन्न हुआ . देखत ही ~ — डर ४२३७। ~ **है** लगा है बडौ रोग ~ — तुमकौं ३५२९।

उपटाइ उखाडे · दुरद कौ दत ~ तुम लेत हौ ३०६६।

उपटि ~ **परै** उपट आये, निशान बन गये पीठि गटे ककन ~ — २८२६।

उपटित निशान पडा है तहँ ~ क्रीडा-रद-रोरी परि० १/५६।

उपटिन निशान पडा : स्याम गड ~ बर छोरी परि० १/५७।

उपदेस शिक्षा : सतगुरु को ~ हृदय धरि।

उपदेसक उपदेश करने वाला · ~ हरि दूरि रहे तैं ३७०९।

उपदेसत १ उपदेश देते हैं : सकर पारवती ~ २/३। २ उपदेश देते हो : कारे रूप ज्ञान ~ ३७५९;

उपदेसन १ उपदेश देने · इहिं ब्रज कौ ~ आयौ ३८७९, ~ आयौ हुतौ ४०९८।

उपदेसनि उपदेशो से : कहा होत ~ तेरै ४०९४।
उपदेसहु उपदेश दो : जोगिन जाइ जोग ~ ३७०२।
उपदेसियौ उपदेश देना : सोइ तुम ~ ३४३१।
उपदेसे उपदेश दे • तो तजि सगुन साँवरी मूरति कत ~ ज्ञानै ४०४२।
उपदेसैं उपदेशो को सूर बहु ~ सुनि सुनि १/८४।
उपदेसै उपदेश दे • सूरदास देखत उनकी गति, किहिं ~ ४२७१।
उपदेसौं उपदेश दूँ, शिक्षा दूँ : लखि बिस्वास, बहुरि ~ ४/९।
उपदेसौ १ उपदेश देते हैं : तब उन बेनु बजाइ बुलाई, अब निरगुन ~ ४०७६। २ उपदेश दो : कोटिन जतन ~ ३९९६। ३ बताओ : अब सोइ उपाय ~ ३७४४।
उपदेस्यौ १ उपदेश दिया था : तबही क्यौं न ज्ञान ~ ३६०३। २ उपदेश दिया है • तुम हमकौं ~ धर्म ११८०।
उपनंद गोप सरदार . नंद कह्यौ ~ ब्रज के, अरु महर बृषभानु ८१४।
उपनियाँ उपमा : कल कपोल की छवि न ~ १०६।
उपम उपमा : बरनि बरनि नहिं सकत वह ~ कोऊ २२०४।
उपमाइ उपमा देकर • मुक्तामाल बिसाल उर पर, कछु कहौं ~ २३४।
उपमाउँ उपमा दे-देकर कवि गावत ~ २३३२।
उपमाऊँ उपमित करता हूँ, उपमा देता हूँ . नास सुक ~ १५५३।
उपमान वह वस्तु जिससे उपमा दी जाय।
उपमान सारंग मृग है जिसका उपमान, नेत्र प्रथम ही ~ सो करावत हेत सा० ल० २।
उपर पर, ऊपर • मदन ललित बदन ~ कोटि वारि डारे २०५।
उपरना १ कबली : रहे ~ बीच समाई १९९०। २. दुपट्टा : कठ ~ मेलि कै परि० १/१२९। ३. दुपट्टे, ओढनियाँ . लिये ~ छीनि १६१८।
उपरफट व्यर्थ की • करत ~ बातै ६८१।
उपरा ऊपर : ~ उपरि छिरकि रस सर भरि २८५८।
उपराग (चन्द्र या सूर्य) ग्रहण . बिनु परबहि ~ आजु हरि २९८६।
उपराजी उत्पन्न की • विमल प्रीति ~ ३६४८।
उपरापरि एक दूसरे के ऊपर : ऐसौ खेल मच्यौ ~ २८६१।
उपरावटे अकडते हुए • कहा चलत ~ २६१८।
उपरि ऊपर : उपरा ~ छिरकि रस सर भरि २८५२।
उपरे फुले, उफन आए, फूल गये हैं बहु घृत पाइ आपही ~ १२१३।
उपरैन उपरैना, दुपट्टा उमगि ~ कौं २४५०।
उपरैना दुपट्टा : उघरि गयौ उर तै ~ २४८४।
उपलै पत्थर • इहिं बिधि ~ तरत पात ज्यौं ९/१२३।
उपवीत जनेउ संस्कार . शुभ ~ करायो सारा० ५३७।
उपसंग पास (आए) लै उछंग ~ हुतासन ९/१६२।
उपसुंद सुन्द दैत्य का छोटा भाई सुन्द ~ स्वेच्छा विहारी ८/११।
उपहत छूट जाता है • जोग ध्यान ~ परि० १/६१।
उपहार भेंट : मिलत लिए ~ २८३।
उपहारि लाकर . मधुबन तै ~ स्याम कौ, इहिं ब्रज कौं लै आउ ३३४०।
उपहास १. हँसी, मजाक : निंदा जग ~ करत १/१४१। २. निंदा : तौ इतनौ ~ सहै १९०६।
उपहास्यौ उपहास किया बोलत हौ ~ परि० १/१६३ •
उपाइ १. उपाय . कीजै कोटि ~ ३९९९। २. उपाय से (देवकी) जिहिं ~ अपनौ यह बालक ९। ३ (उपाय) सोचा : चतुरि सखिनि यह बुधि ~ २७५८।
उपाई १. उपाय . कहौ मोहिं सो करो ~ ६/५। २ उपाय सोचा, पैदा किया : तबहिं स्याम इक बुद्धि ~ ३८३। ३ जम आए हो : कीरी तनु ज्यौं पंख ~ ९२३।
उपाउ १ चालाकी • वाके सनहु ~ १७२१। २. उपाय : सखि मिलि करौ कछुक ~ २०८५। ३ उपाय से • दाउँ ~ मिलाइ 'सूर' प्रभु ३६०८।
उपाऊँ १ उत्पन्न करूँ : रस बिरह ~ २१४५। २ उपाय करूँ कै सुरभेद अनेक ~ परि० १/८०।
उपाऊ उपाय : कीजै कौन ~ ३६७०।
उपाए उत्पन्न किये . तीनि पुत्र तिन और ~ ९/२।
उपाजै पैदा/उत्पन्न कर रही है • ~ मुद्रिका अति जोति १०५६।
उपाटत उखाड देता है : खेतिहर निरखि ~ १/१०७।
उपाटि उखाड कर : तरुवर तब इक ~ ९/९६।
उपाटी उखाडी • सिला पवन-सुत ~ ९/९६।
उपाद्रि उपद्रव : सोई करै ~ १६१८।
उपाधा[१] उपद्रव : क्रीडत करत ~ १८५९।
उपाधा[२] लटका हुआ था • दामनि मोल ~ २००७।
उपाधि १ उपद्रव, उत्पात . करी ~ बनाइ ८५२।२ बला मुरली हमहिं ~ भई १२७२।
उपाम समान : सूर प्रभु नँद सुवन दोऊ हसवाल ~ ३०२९।
उपामा १ उपमा • त्रिभुवन नहीं ~ २१८१। २ शोभायमा है, आ विराजे हों . ससि सहस बीस द्वादस ~ १०४०।
उपायो, उपायौ १ उत्पन्न किया • दनुज हृदै हरि इहै ,

२९२७। ७ अर्जित किया धर्म पुत्र जव यज्ञ ~ १/२९ ।३ रचना की है : आजु हरि अद्‌भुत राम ~ ११४० । ४ बनाइ : कल्प रैनि रम हेत ~ ११७९ । ५ मोना : तिन सवहिनि मिलि मत्र ~ ६/७ ।

उपारत उखाडते हुए : मदराचल ~ भयो स्रम वहुत ८/८ ।

उपारि १ उखाड · लीन्हौ दत ~ ३०५८ । २ उखाड कर : कहौ तो सेल ~ पेढि तै ९/१०७ ।

उपारी उखाडी : क्रुद्ध होइ इक जटा ~ ६/५ ।

उपारे उखाड दिये यमलार्जुन विटप ~ काली को विष हरिहि सारा० ५७१ ।

उपारौं १ उखाड लूँ : उर ते भुजा ~ ९/१३७ । २ उखाड लूँगा . प्रवल कुवलादत ~ १६१९ ।

उपारौ १ उखाड लिया : खेल माँझ ~ ९६८ । २ उपाट/उधेड लो · गउ चटाइ, मम त्वचा ~ ६/५ ।

उपार्‌यौ उखाड लिया · दुहुनि एक एक दत ~ ३१०९ ।

उपाव १ उपाय करत ~ न पूछत काहू ९/१५७ । २ उपाय है · मम चलिवे कौ यहै ~ ९/२ ।

उपावै उत्पन्न करता है . वहुरौ ब्रह्मा सृष्टि ~ १०/४ ।

उपास उपासना के योग्य · यक सत्राजित यादव कहिये सूरज देव ~ मारा० ६४२ ।

उपासन १ सेवा, आराधना : कर्मयोग पुनि ज्ञान ~ मारा० ११०२ । २ उपासनाओं को : आन प्रसग ~ छाँडै ७/११ ।

उपासी १ उपासक हैं, उपासना करते ह : वै तुव चरन ~ ७८२६ । २ उपासिका हैं : 'सूर' सकल वे स्याम ~ ४११९ ।

उपैनी नगी (तरवारि) धरि करि कोप ~ ९/११ ।

उपैहौं सिद्ध करूँगा कुसल लागि इक मत्र ~ ८४१ ।

उफनत १ छलक-छलक कर गिर रहा था ~ तक्र चहू दिसि चितवत १६३९ । २ उफनते हुए, छलकते हुए ~ छीर जननि करि व्याकुल ३४७ ।

उफनि बाहर बहकर : छलकत तक्र ~ अग-आवत १६३८ ।

उफानी उमड पडी : 'सूर' सु मठी ~ ४१३० ।

उबटनौ उवटन तेल ~ त्यागौ दूरि १७८० ।

उबटि[1] उवटन लगाकर, उवटन करके . तव दोउ ~ सखि अन्हावाए ७८७८ । ~ **खोरि** उवटन प्रलेप इत ~ — सिंगार सखियन १०७७ ।

उबटि[2] कुमार्ग आवत ~ पर्‌यो ता ऊपर ३३५ ।

उबरत उवरता है · ~ नाहीं सोउ ३९७९ ।

उबरते उद्धार हो जाता है गोकुल लोग ~ ३७०८ ।

उबरन १ उद्धार : पुरुष न ~ पावें १/४४ । २ बचाव : कहा कहौं ~ या हरि के ६०७ ।

उबरी उद्धार हो सकेगा, मुक्त हो गई . दुख सागर ~ १/१६ ।

उबरे १ छूटने पाये . मारे मल्ल एक नहिं ~ ३१०९ । २ वचे, वच गये सुनहु सूर ये भजि ~ ह २३३६ । ३ बचेंगे . सुनत धुनि सव ग्वाल डरपे अव न ~ स्याम ४२७ ।

उबरैं मुक्त रहे, वच जायँ कैसेहुँ ये वालक दोउ ~ ५९५ ।

उबरै मुक्त हुए सरन गए ~ १/३७ ।

उबरो वचो ~ नहीं निदान अहो हरि होरी है ७९१४ ।

उबरौगे बचोगे, छुटकारा पाओगे इन पापनि तें क्यों ~ १/३३४ ।

उबर्‌यौ १ छूट गया मैं ~ तिहि पास ६०४ । २ वचा : लपकि लपकि हए, ~ नहि कोऊ ३०७४ । ३ वचा, शेष रहा ~ सो डार्‌यौ रिस करिकै ३१८ ।

उबार वचाव, छुटकारा यासो मेरौ नही ~ ५८५ ।

उबारि १ वचा जो अव लेइ ~ ९/११५ । २ वचाकर . राखि सकै ~ १६४९ ।

उबारी उद्धार किया था, वचा ली . गहत चीर हरि नाम उवारी १/२६ ।

उबारे १ उद्धार किया जिहि अगद-सुग्रीव ~ ९/८३ । २ वचा लिये पाडव जरत ~ १/२५ ।

उबारैं वचा ले तो भलैं मृत्यु- मुख तैं ~ ९/१२९ ।

उबारै १ उद्धार करे यहै कहत ब्रज कौन ~ ८५८ । २ वच जाय . मो तें ~ तव मोहिं मारै १० । ३ वचा ले (देवकी) जो यह वालक नैकु ~ १० ।

उबारौं वचाऊँ · कहँ लौं जीव ~ (देवकी) ४ ।

उबारौ १ उद्धार करो · गिरि धरि सकल ~ ४०३० । २ वचाओ की मारौ की मोहिं ~ ९४४ । ३ छुटकारा, मुक्ति यातें कैसें होत ~ २१६६ ।

उबार्‌यौ उवारा, उद्धार किया · कह्यौ इद्र निज खरन ~ १०/५, जहाँ तहा तुम हमहि ~ ९५८ ।

उबीठी अरुचि, वैमनस्य . करिहै कहा ~ ३४९२ ।

उबीठे ऊवते · वै खात न कवहू ~ १८३ ।

उभडत उभरते थे . गउ वच्छ मुरली सुनि ~ ४०९६ ।

उभडे उभरने लगे, उमड पडे · चहुँ दिसि तै दल वादल ~ ४७६८ ।

उभय दोनों . ~ उरग ज्यौं सुभट लरत २७७१ ।

उभय रास समेत दिनमनि कन्यका दूसरी राशि (वृष) दिनमनि (भानु), कन्यका (सुता) शब्दों को मिलाने से वृषभानु सुता, राधा · ~ ए दोइ सा० ल० शेष १० ।

उभयपट बारहो : उदित ~ भान ९/१५८ ।

उभय हरि दो चन्द्रमा (कृष्ण और राधा) · कहि अव सर ~ गाज्यौ ११९३ ।

उभ १ दो : द्वै मृणाल, मालूर ~ द्वै कदलि खभ बिन पात २११२ । २ दोनो : छाँडे कहा ~ सुत मोहन ३१३० ।

उमंग १ चाव, उमग सुनि आनद ~ भरे ६२३ । २ लहर लागत उछरि ~ २१३१ ।

उमँगत उमगित हो रहे हैं : नाचति नटी सुलय गति ~ १०७७ ।

उमँगसों उमँगपूर्वक बसे जाय आनद ~ गइया सुखद चरावै सारा० ४६३ ।

उमँगाति उमगित होता है • अति ~ स्याम घन छिरके परि० १/१२० ।

उमँगि १ उमग पिय सुमिरत ~ भरत २०९१ । २ उमगकर . चुइ परत ~ रस राग २७७२ । ३ उमग पूर्वक, उत्साह पूर्वक • तउ तैं ~ चले दोउ हठ करि २३६२ । ४. उमड कर : ~ मिले तजि तीर १९८६ । ५. उमड पडा है . बिनु बानी ये ~ प्रेम जल ३५३४ । **उमँगि** ~ उमड-उमडकर, बार बार उत्साह पूर्वक ~ — भुजा पसारत ४४ ।

उमँगी १ अपार • बढ़्यौ बसन ~ १/२१ । २ उमड पडी • ~ प्रेम-नदी छबि पावै ३२ । ३ उल्लसित हुई : ~ ब्रज नारि सुभग ९६ ।

उमँगे १ उमगित, फूले : जहँ तहँ ग्वाल फिरत ~ सब ८२६ । २ उमड आए • सूरदास ~ दोउ नैना १/२४७ । ३ तरगे उठ रही हैं • ~ जमुन जल ३४ ।

उमँग उमडा हुआ ~ प्रेम नैन मग ह्वैकै १३६ ।

उमँग्यौ १. उमडा : ~ प्रेम समुद्र दुहूँ दिसि ४२८२ । २. पुलकित हो गया : उर ~ रिस नहीं रह्यौ २५६९ ।

उमगत उमडने लगता (है) • अग अग रस भरि ~ है १३२४ ।

उमगे उल्लसित हुए : ~ लोग नगर के निरखत ९/२९ ।

उमग्यौ उमड आया, छा गया . क्रोध गयौ उर आनद ~ २५३३ ।

उमचि साहसकर : ~ जाति तबहीं तब सकुचाति १६११ ।

उमड बाढ, . बन्हि रिपु की ~ देखत सा० ल० ३० ।

उमडत १ उमडते हुए • ~ चले इद्र के पायक ८५४ । २ उमड रही है • सोभा ~ अमल उज्यारी सा० ल० ४९ ।

उमडि १ उमढ : बादर बहु ~ घुमडि ८५७ । २ उमडकर, उतराकर • ~ नयन जल भरि-भरि ढारत ९/६२ ।

उमडे उमगित हुए : ~ फिरत अहीर ८२८ ।

उमडै उमडती हैं वे ~ बारिधि के जल ज्यौं ४१२६ ।

उमडयौ उमडता चला आ रहा है : रिपु-सैना समूह जल ~ ९/१४६ ।

उमदानी मदमाती : तुम री जोबन मद ~ १४९० ।

उमधि हुलसी (उमँगी) • ~ गई तन सुरति सँभारी २७५८ ।

उमयौ उमडता रहा : हँसि हँसि के ~ १/६४ ।

उमराव सरदार, दरबारी • बैठे सब ~ १३९६ ।

उमही १ उमडी, उत्पन्न हुई है तुम पर बुधि ~ ४००३ । २ मगन हुई • नवल कान्ह कैं रस ~ १६७५ ।

उमहे उमडे, उमड पडे . कौतुक देखन सुर ~ ११८० ।

उमहै उठती है, उमग मे आती है • सती जानि ~ ३१८२ ।

उमहौ रमे रहो उत कबहूँ जनि ~ २९१८ ।

उमह्यौ १ उमड पटा . मदनगुपाल मिलन मन ~ ३८१९ । २ उमड पडी • सखि लोचन ~ ४१३१ । ३ उमड पढे ~ मानुष घोष यौं २८६७ ।

उमा पार्वती : ~ कही मैं तौ नहिं जानी १/२२६ ।

उमापति शकर : सिर सँभारि लै गयौ ~ ९/१५९ ।

उमापति रिपु कामदेव . ~ अधिक दहत है ४२६३ ।

उमाहल उन्मत्त हैं . अति आनद ~ ८२६ ।

उमाहूँ पार्वती भी ~ देखि पुनि ताहि मोहिनी भई ८/१० ।

उमेठी ऐठी हुई, अकटी हुई • अतर प्रेम ~ सा० ला० १०० ।

उमैठी टेढी की हुई . धनु उपमेय ~ सा० ल० शेष ८ ।

उम्दायौ उमड आया वह रस सिन्धु ~ ४१५१ ।

उये उगे हों, प्रकटे हों, उदय हुए हों . अग छबि मनहु ~ रबि ६२६ ।

उयौ उदित हुआ : चद ~ है इहै ठाँव री ४१०३ ।

उर १ स्तन, छाती . ~ निरखि चकवाक बिथके १७१५ । २ चित्त मे : हरि चरनारबिंद ~ धरौ २/१ । ३ वक्ष.स्थल का : प्यारी पीतावर ~ फटक्यौ १५३१ । ४ वक्ष.स्थल पर . गिरिवर ~ पीताम्बर डारे ९१३ । ५ हृदय मे, गले मे • (देवकी) पट सुत सोक सुरति ~ आवति ६ । ७ हृदय से : ब्रज बनिता ~ लाइ गही री २९ ।

उरहन उलाहना, उपालम्भ • ~ देइ चली जसुमति कै ७७१ ।

उर-उरनि हृदय-हृदय से • ~ भिरौ दोउ जुरे मन तैं २१२९ ।

उर अंतर अन्तस्तल मे, हृदय मे • सुरति साल ज्वाला ~ ९/४६ ।

उरग नाग, सर्प भई रीति हठि ~ छछूँदरि ३७३९ ।

उरग-इंद्र सर्पराज, वासुकी . ~ उनमान सुभग भुज सा० उ० १/६९ ।

उरग-घरनी नाग पत्नी, नागिन . अमर उद्धारिहौं ~ ५५१ ।

उरग-द्वीप नाग द्वीप • ~ पहुँचाए ५७३ ।

उरग-नारि सर्प की पत्नी, नागिन ~ देखत अकुलाई ५५० ।

उरग-लता नागवल्ली, पान : ~ रग लाग २७३४ ।

उरग-लता-रंग नागवल्ली या पान का रग ~ लाग २७३४ ।

उरगिनि, उरगिनी नागिन घूमत हौं मनु प्रिया ~ २५०३ ।

उर-चीर वक्ष स्थल के अचल को बिसारे ~ ६५८ ।

उर-चैन हृदय मे शान्ति : बुधि बल बसि न सकत ~ १७७६ ।

उरछत छाती पर के (नख) चिह्नों को • ~ देखि भई बेहाल

२४८५।
उरछाप उर पर चिह्न • उर ~ बनाए हौ २५५७।
उरज¹ उरोज, स्तन : तकत ~ कठोर सा० ल० ३०।
उरज² पयोधर, मेघ : ~ अनूप उठे चारो दिसि सा० ल० ३५।
उरज-कठोरी कठोर स्तनों वाली : भुजभरि भेंटति ~ ३०५।
उरज कुंभ-गज उरोज गज के मस्तक जैसे (विशाल) हैं • बाहु मृनाल भुज ~ ११९७।
उरजनि स्तनों (के) • अरु ~ के अंतर ४११२। २ उरोजों को • बार बार ~ अवलोकनि २०५२। ३ उरोजों पर • गोरे गात मनोहर ~ लसत कंचुकी भीनी २८२६। ४ स्तन : ~ कौं विष बाँटि लगायो १/१५८।
उरज-बिच (उन्नत) स्तनों के बीच : रुदन जल नदी-सम बहि चल्यो ~ १०१९।
उरजु स्तन : ~ भँवरी भँवर मानो १८३८।
उरझ्यौ उलझ गया हूँ : ~ बिवस कर्म निरन्तर १/१६२।
उरझाइ उलझा • रहे नैन ~ १३७२।
उरझानौ उलझा हुआ है : तामैं मन ~ ३६०८।
उरझि १ उलझ : प्रेम भ्रम ~ रह्यौ १८८७। २ उलझ गई : ~ मोह सिवार १/९९।
उरझी उलझ गई : श्रृंगार बिटप म ~ आनद बेल सारा० ९८५।
उरझे उलझ गए : बनमाल बीच आनि ~ हे दोउ जन ११४९।
उरझ्यौ १ उलझ गया : है ~ हृदगात ४०२५। २ उलझा रहा : जिह्वा स्वाद मीन ज्यौं ~ १/१४७।
उरदैन हृदय मे (शूल) उत्पन्न करने वाले • सुभट सुर ~ ९९१।
उरध ऊर्ध्व : कैसे ये बचै नाथ सॉम ~ डारे २०६५।
उर-धर हृदय मे धारण कर : यौं ~ ३/१३।
उर-धरि हृदय मे रखकर • श्री रघुनाथ चरन-व्रत ~ ९/१३४।
उरधारौ हृदय मे धारण करो • क्रोध अनल ~ ९/१४३।
उरनि हृदय मे, छाती पर : जोरि ~ नस देत १८६८।
उरबसी उर्वशी, उर्वशी नाम की अप्सरा • रति रभा ~ रमा मी २४४४।
उर भवन हृदय के भीतर • ता दिन ते ~ भयौ सखि ३३८६।
उर-भीतर हृदय मे, मन मे : सागर गरब बर्‌यौ ~ ९/१२१।
उर-माँझ हृदय मे : ले ~ धरी २३४३।
उर-मैं हृदय मे : ~ आनि दुरावत २१२३।
उरलाइ १. हृदय से लगाकर • भुज भरि धरि लीन्हो ~ २९८। २ छाती से लगा लिया • हरि हँसि भामिनि ~ ६९०।
उर लाए हृदय से लगा कर : मुख चूमति लै लै ~ ३९१।
उर लीन्हो हृदय से लगा लिया • उहि गिरिधर ~ १०९९।
उरवारे उबार लिया : मारि फौज सबही मागध की जरासंघ ~ सारा० ६०४।
उरसति ऊपर नीचे होता है • स्याम उदर ~ यौं मानौ ६५।
उर सारग उर (हृदय) = कोष, सारग कमल=कमल-कोष सारग हेरत ~ ते सा० ल० ४।
उरसाल हृदय को पीड़ा देने वाले • दुष्टनि के ~ ११३१।
उर सालक हृदय बेधकर सहार करने वाले हे • सुरपालक असुरनि ~ ३६३।
उर साली हृदय को बेध डाला हरि नितवनि ~ १४०८।
उरस्थल १ वक्ष स्थल : स्याम ~ पर नखरेखा २५०३। २ हृदय मे • उझकि ~ लाए ३६५७।
उरह वक्ष स्थल पर, छाती पर ~ छूरी तनी २७३०।
उरहन १ उलाहना, उपालम्भ • ~ देत रिसाई १५६४। २ उलाहना देने सब ब्रजनारि ~ आई ब्रजरानी के आगै सारा० ४४४।
उरहनौ उलाहना, उपालम्भ : दिन दिन देन ~ आवति ३७१।
उरहार हृदय का हार : चच्छुस्रवा ~ ग्रसी ज्यौं ३२२२।
उरहि १ हृदय : सूर स्याम चले गाइ चरावन कस ~ के सालक ४२६। २ हृदय मे, वक्ष स्थल पर • मानौ द्वै ससि ~ उए २६४२। ३ हृदय से भुज हरि ~ छुवावैं २७२।
उरिन ऋण से मुक्त कैसेहू करि ~ कीजै ३४३१।
उरोजन स्तनों पर • घसिकै गरल लगाय ~ सारा० ४१५।
उरोजनि १ स्तनों : को कहि सकै ~ की छबि २४४६। २ स्तनों पर, स्तनों मे गरल चढाइ ~ ४९।
उरोल छाती से बिहँसि लगति ~ २९२१।
उर्ग सर्प महलनि चित्रे ~ ३०२३।
उर्ध्व उलटा ~ धूम के घूँटै २/१९।
उर्‌यौ हृदय मे : अब लौं रह्यौ ~ २२२५।
उर्वसी उर्वशी : रमा, गौरी, ~, रती ७०६।
उलँघना पार करना : कठिन भयौ देहरी ~ ११३।
उलँघि लॉघ • देहरि ~ सकत नहिं मो अब ४८७।
उलँघी नॉघी, फाँदी जात नहिं ~ १२५।
उलटहु वापस जा रहे हो अब हलधर ~ काहें तुम २९०७।
उलटाइ उलटाकर महरि मुदित ~ के मुख चूमन लागी ६८।
उलटाने उलटे हो गये • भूषण सब ~ सारा० १०१९।
उलटावहु लौटा दो, लौटाओ : ~ दै हॉक ४६४।
उलटायौ उलटा दिया है : विधना सौ ~ ३५३५।
उलटावति लौटाने के लिए ज्यों ज्यों जतन करति ~ १८६४।
उलटि १ उलटकर, फिर से • ~ मधुपुरा जाहु ४०८९। २ उलटे अग अभरन ~ साजे १००७। ३ उलटा कर • मानौ विधि अब ~ रची री ४२५६। ४ उलटी, विपरीत • राधे यह छवि ~ भई २७७८। ५. उलटे-सुलटे • ~ भूषन सब

बनाए ११८२ । ६ लौट, चले ~ आहु नृप चरन सरन ९/७ । ७ लौटकर बहुरि न ~ जगत मैं नाचै ०/११ । ८ वापस तुम ~ मँगाई ९/४० । ~ फिरि घूम फिर कर . आवत जात ~ — बैठत ३७८७ । ~ बहायौ उल्टा प्रवाहित कर दिया जमुना ~— ११४० ।
उलटी १ उल्टी, विपरीत : मन की दिन दिन ~ चाल १/१२६ । २ मुड पडी हो ~ लै गगरी २३४३ ।
उलटे १ घूम पडे वे ~ मग मोहिं देखि २३४३ । २ निकल आए है : रितु वसंत फूली वन वेलो, ~ पान नए ४०७७ ।
उलटौ उलटा काहैं ~ जस बिथरायौ ३५१३ ।
उलटौइ उलटा ही ~ ज्ञान सकल उपदेसत ३९२१ ।
उलटौ रस रस का उलटा (सर), सरोवर ~ सारग हित सजनी सा० ल० १० ।
उलट्यौ उलटकर बह चला : ~ जु जमुना नीर ६०३ ।
उलहि उमड कर : चहुँ दिसि बादर ~ आए हे परि० १/११४ ।
उलही उमड कर बढ चली, लहलहा उठी : विरह बेलि ~ २९६५ ।
उलीचै उलीच सकती हैं • चिरिया कहा समुद्र ~ १/२३४ ।
उलूक उल्लू पक्षी : रवि की किरनि ~ न मानत १/११४ ।
उलूखन ऊखल मे भुजा ~ नाहिं बँधावै १६०७ ।
उले इधर, इस . ~ पार बिरहिनि ठाढी १०२२ ।
उलैंडे उँडेलते . नव केसरि के माट ~ ०९००।
उल्लंघि उल्लघन करके मनु मरजाद ~ अधिक ६१६ ।
उल्लेख वर्णन, चर्चा, उल्लेख अलकार • 'सूरज' प्रभु ~ सवन कौ सा० ल० ८ ।
उल्हरि उमड : ~ आयौ सीतल बूद पवन पुरवाई १९९० ।
उवत उदित होते, उगते मनु ~ रवि रथ हैं धँसी २८४१ ।
उवति उदित होती . जौ कहुँ जामिनि ~ जुन्हैया ३२७२ ।
उवन उदय होने को हुए • अथवत आए गृह, बहुरि ~ भानु, २०३९ ।
उवै १ उदय हो • रैनि रवि ~ बासर चद्र होइ ०८०४ । २ उदित होता है दामिनि दसन समान ~ रवि परि० १/३० ।
उष्न गरमी : सीत ~ सुख दुख नहिं मानै २/११ ।
उसरे हटे, उखडे : जलद नवीन मिली मनु दामिनी बरषि निसा ~ २४७० ।
उससि उसास लेकर : ~ सीस सचि ढरति गागरी परि० १/१२० ।
उससित ऊपर नीचे होता है • स्वास उदर ~ यौं मानौ दुग्ध सिन्धु छवि पावै ६५ ।
उसाँस उच्छ्वास • 'सूर' ~ छाँडि हा-हा ब्रज ४१५४ ।
उसाँसनि स्वासों : द्वार खरी इकटक मग जोवति उर्ध ~ लेत ४११५ ।
उसारी घर : लै चली अपनैं मेर ~ ०८९३ ।
उसारौ बढी कर रखा था कूपहि काल ~ ९/१५९ ।
उसास १ उच्छ्वास, आह . लेति ~ नयन जल भरि भरि ९/७३ । २ स्वास के साथ • उर कचुकी ~ ३६७४ ।
उसासि दीर्घ स्वास लेती है पग पग भरति ~ १०९० ।
उहइ, उहई वहा ही • तब तें थक्यौ मधुप मन ~ ३८२०; ~ रहो कहैंगी राधा २८१८ ।
उहही वहाँ ही • ~ तैं अरि जारै ३३५६ ।
उहाँ १ उसी • ~ ठौर लै आई १५६ । २ वहाँ • भागि चलौ कहि गयौ ~ तैं ४८१ ।
उहाँइ, उहाँई वहाँ ही हमहू बोलि ~ लीजौ ०५३९ ।
उहाँते, उहाँतैं वहाँ से . ये गीधे नहिं टरत ~ तैं २२५१ ।
उहि १ उसी • उन त्याग्यौ, हम हैं ~ नेम २०९४ । २ उन्हे अब ~ चाहियै फेरि जिवायौ ४/५ । ३ उन्होंने : कै ~ तज्यौ परान ९/७५ । ४ उस • प्रीति ~ देस न कोऊ जानत ४०१३ । ५ उसने ही, उसी ने ही • ~ यह कियौ पसारौ ३९५ । ६ उसी मे • अब कहु ~ धोखै करौ १४६१ । ७ उसे • कह्यो असुरनि ~ डार्‍यौ मार ९/१७३ ।
उही वहाँ ही ~ न तेज तची री ४०५६ ।
उहै वैसे ही • सबै सोवत ~ सहज सुभाइ १०६८ ।
उहै १ उसी • ~ रूप परवाने ३८४० । २ वही : ~ ध्यान मन आवत ०७५६ ।

ऊ

ऊँकार ओम् मत्र या इसका उच्चारण . ~ आदि बेद असुरहन सारा० ९९३ ।
ऊँख ऊख को रस की ~ उखारि 'सूर' प्रभु ३८३२ ।
ऊँच १ ऊँची : ~ अटनि पर छत्रनि की छवि ३०२२ । २ उच्च : महा ~ पदवी तिन पाइ ।
ऊँचे १. ऊँचे • ~ मदिर कौन काम के १/२४३ । २ लम्बे, बडे • उर ~ उच्छ्वास तृनावर्त ३६२० ।
ऊँचै १ ऊँचा • अरु ~ पाद पाएँ ऐनु ४८९ । २ ऊपर ते ~ धरीं पुलकित गात २४४२ ।
ऊँचौ ऊँचा : ~ गोकुल नगर जहाँ हरि खेलत होरी ०८७० ।
ऊँछ एक राग का नाम ~ अडाने के सुर सुनियत सारा० २०१४ ।
ऊख ईख • केरा आम ~ रस सीरा ०११ ।
ऊखा बाणासुर की कन्या जिसका व्याह अनिरुद्ध से हुआ था

~ को सुख दीन्हों सारा० ७०० ।
ऊगत उगते हुए ~ घेर्‌यो सूर २४४५ ।
ऊजर १ उजड़ा • बसो कि ~ हो उनहीं परि० १/३८ । २ उज्ज्वल • ~ कुचल कुपटी ३९२५ ।
ऊजर खेरे उजाड़ गाव : ज्यों ~ की पुतली ४०४४ ।
ऊटि साध/इच्छा से : जन्म जन्म की ~ ३१७४ ।
ऊतर उत्तर : जो बूझौ तो ~ दीजै ३८२८ ।
ऊत्तर कौ ऊतर प्रत्युत्तर, उत्तर का उत्तर ~ नहिं आवे ४१२८ ।
ऊतरुउत्तर ~ कहा बनाऊँगी परि० २/३१ ।
ऊघरौ खुल गया है . अब ~ ज्ञान गडे सो ४०७६ ।
ऊधव उद्धव . कहि ~ सो तत्वज्ञान ३/४ ।
ऊधौ उद्धव • ~ कौ ब्रज दियौ पठाई ३४१२ ।
ऊपजै पैदा होती है . अब न अनन मचि ~ २८६४ ।
ऊपर ऊपर : महरि करति ~ तरकारी ८९२, सेष सहस फन ~ छायो ४ ।
ऊब (घबराहट) • सब ब्रजकुल की ~ ३९८० ।
ऊबट ऊबड़ खाबट . ~ रपटै पाइँ ३५४४ ।
ऊबरी बच गई : साँप सौं ~ ६९८ ।
ऊभी खडी है चौदह सहस सुदरी ~ ९/१६० ।
ऊरज उरोज लागी ~ पत्र लिखाई २१२९ ।
ऊरध १ ऊपर • सप्त पताल ~ अध पृथ्वी ३८६६ । २ उर्ध्व, लम्बी-लम्बी • भरि भरि लेन ~ स्वास ४११० ।
ऊर्ध लम्बी : ~ उसास समीर तरगनि ४११३ ।
ऊर्ध्व उलटा • ~ धूम के घूटै २/१९ ।
ऊलास उल्लास, आनद : स्याम सग का ~ बखान सा० ल० ६७ ।
ऊलौ उछलकूद, उमग • देखत उमग्यौ प्रेम इहाँ कौ, धरे रहे सब ~ ४१२५ ।
ऊसर ऊसर, वह भूमि जिसमे कुछ जमता नहीं • ~ तामैं तानै भयौ ६/५ ।

ऋ

ऋच्छ रीछ • तब उन सिंह मारि मणि लीन्हो ~ मिल्यौ इकताय सारा० ६४४ ।
ऋन कर्ज : सबै कूर मोसौं ~ चाहत १/१९६ ।
ऋषभदेव विष्णु के २४ अवतारों मे से एक पुनि नारायन ~ २/३६ ।
ऋषिन ऋषियो रघुपति बहुत ~ सुख देन सारा० २४३ ।
ऋषिराइ ऋषिराज • सुनु ~ ३/५ ।

ए

ऍडिनि एडियों को बटे बडे बार जु ~ परसत २६१७ ।
ए यह, ने : छाड़त छिन मैं ~ जो सरीरहिं २७६९ ।
एइ ये ही ~ मावौ जिन मधु मारे री ३०३१ ।
एई ये ही हरन करन समर्थ ~ ३१०८ ।
एउ, एऊ यह भी वै चतुर ~ नहि भोरी १९०४ ।
एक अबल एक निर्बल (शरीर), एकावलि अलकार : ~ करि रही असूया सा० ल० ४७ ।
एक-इक एक एक : ~ बान भेज्यौ सकल नृपनि पै ४२०९ ।
एकई एक ही ~ रट रटत भामिनी ४१०८ ।
एक-एकहि १ एक दूसरे से . ~ बातबूझनि १६२५ । २ किसी को • ~ कछु सुरति नाहीं ९९८ ।
एक करे एक चित्त हो गये : बिहरन दोउ मन ~ २४६० ।
एक चित एकाग्रचित्त निरखि रही भाल चद्र ~ लाइ१८०२ । ~ **लाइ** एकाग्रचित्त होकर : निरखि रही भाल चन्द्र ~ — १८०२ । ~ **ह्वैके** एकाग्र चित्त से मोकौ भजौं ~ — १०३३ ।
एकठाँ एक ठौर पर : घालि ~ सान्यौ १६६२ ।
एकठी एक स्थान पर • इतहुँ की उतहुँ की सबै जुरी ~ १९५१ ।
एक दोइ जिनि भाषहु भेद वाली बात मत कहो : देखहु ~ १५८७ ।
एक द्वै तीन तजि छल-बुद्धि छोड़कर • ~ १७३९ ।
एकन एक • ~ को फगुवा इन्द्रासन सारा० २७ ।
एकनि १. एक को ~ दुख ~ सुख १४३ । २ एक ने : ~ हरे प्रान गोकुल के ३९७७ । ३. किसी के • ~ माथैं दूब-रोचना २५ ।
एक पौ एक पौं सर ~ नाम बिना नर फिरि फिरि बाजी हारी १/६० ।
एकमति एक मत होकर • कृष्न सौं ~ जमुन जाहीं, १७५१ ।
एकहि एक ही • बसियै ~ गाउँ १६१८ । ~ **एक** एक-एक करके : ~ — पछारौं ९/१०८ । ~ **ठौर** एक साथ • रहत ~ — २८१३ । ~ **सुर** एक ही स्वर से : ~ — सब मोहित कीन्हे११४० । ~ **से** एक समान : सब दिन ~ — नहिं होत ३७३७ ।
एकहि एक ही : ऊधौ मत तौ ~ साहि ३७२५, हम एक ~

सग ~ मति सब ११२७।

एकही एक ही : रहै ~ भाइ ३/१२।

एकहु १. एक भी रही न मन मै ~ पीर ४२२८। २ एक ही अब जु बरष ~ छिनु अमै ४०४४।

एकहू एक भी • सूर ~ अग न काँचो ४१२८।

एकादस १. ग्यारह (अक) . छकि पथ ~ ठानै १/६०। २. ग्यारहवी राशि (कुभ), उरोज, स्तन . ~ लै मिलौ बेग ही सा० ल० ७१।

एकादसी शुक्ल और कृष्ण पक्ष की ग्यारहवी तिथि ~ करै निराहार ९/५।

एकावरन एकाकी : ~ सुभाव उक्त कर सा० ल० ९१।

एकै १. एक, एक ही • सौ बातनि की ~ बात २/५। २ एक ही है : 'सूर' स्याम हम सब दिन ~ ४०३६। ३ एक हो जाता है जैसें नीर नीर मिलि ~ २२८६। ~ **एक** अकेली-अकेली • ~ — भई ६१२। ~ **बार** एक साथ • जैहै ~ ९/१२१।

एको एक : धन्य सूर ~ इहि सुत ९९।

एकौं एक भी • इनमैं ~ अक न भाल १/१२७।

एकौ एक भी ~ बात मानिहै नाही १७२४।

एड़ियनि एडियो को • नान्ही ~ अरुनता १३४।

एत इतना • सिसु पर तामस ~ ३४९।

एतिक इतना ~ देह बढाऊँ ९/१०७।

एती १. इतनी : ~ रिस कबतै कीजति है २८०१। २. ऐसी अब ~ केती तुम जो उनकी ३९५७।

एते १. इतना ~ मान कहा उहि कुबिजा ३९९३। २ इतने • हम कहा करै ~ पर ३५५५।

एतेहूँ इतने ही ~ पर नीर निठुर भयौ ३९१९।

एतैं इतनो को तो ~ प्रतिपारै ३८३४।

एतौ १. इतना जसोदा ~ कहा रिसानी ३४३। २ इतना ही है • सेवक कौ सेवापन ~ ९/९९। ३. ये तो ~ बालक अजान ३०६८।

एरी ऐ सखी ~ आनद सौं दधि मथति १४७।

एरे हे ! . ~ सुन्दर साँवरे तै चित लियौ चुराइ १३७२।

एलि इलायची • फूली निवारी ~ २९१७।

एवमस्तु ऐसा ही हो . ~ निज मुख कह्यौ ११७५।

एसैंहु इस तरह : ~ मैं पाए २४८९।

एसौं ऐसा ~ पुत्र जन्यौ जग तुमही ४३०।

एह ये : तरिहैं गाइ-गाइ गुन ~ ७/२।

एहि इस प्रकार : ~ घर बनी क्रीडा गज मोचन १/६।

एही इसी • फिरि फिरि दरस करतिं ~ मिम ९६६।

एहु १ यह : सुनौ मत्र सुत ~ ९/७४। २ ऐसे, इस प्रकार के कहा कहो दुख ~ ३५७३। ३ यह भी कौन सयानप ~ ४०१७।

ऐ

ऐंच खींच सवन की आन ~ सी राखी सा० ल० ४१।

ऐंचत १ खींचते कर गहि चीर कहा ~ हौ १५६५। २. खीचते हुए तेहि क्षण ~ पार न पायो सारा० ७७८।

ऐंचति खीचती है • जित ही जित ~ १/९८।

ऐंचि १. खींच • नीलाम्बर कर ~ लियौ हरि ४०७; ~ लाए थल में ८/५। २. खींच कर, निकालकर : ~ करौ जो कहौ किसोरी २४५५।

ऐंठति ऐंठती अब तौ तरकिं तरकि ~ है २४०५।

ऐंठि मरोट कर, ऐंठकर भुजा ~ रज-अग चढायौ ३६०६।

ऐंठी सिकोडे हो, अकटी हो • चूक समुझे बिन भौंह ~ २४२०।

ऐंठे ऐंठे हुए, गर्व-भरे . गरजत ज्यौं ~ १/२३।

ऐंठौ कस दिया, अकड दिखायी होहु तुम सजग कहि सबनि ~ ३०२४।

ऐंड़त अगटाई लेते ~ अग जम्हात बदन भरि ११७०।

ऐंड़ात १. अगटाइया लेती कर सौं कर जोरि कै जम्हाति ~ गात २६६०। २ अगडाई लेते हुए ~ गात दरसायौ २५११।

ऐंड़ाति अगटाई लेती जाति ~ गात गोरि बहियानि मेलि २०१०।

ऐंड़ानी अगटाई ली ~ कमनीय कामिनी २६६६।

ऐंड़ावत अगटाई लेते है बदन जम्हात अग ~ २४२।

ऐंड़ि ट्रोड निकसि कुंवरि खेल्यौ करि ~ ११८०।

ऐंडी ऐंठी हुई काहे न ~ टोलै ३६४५।

ऐंडौ-ऐंडौ ऐंठा-ऐंठा धन जोबन मद ~ ताकत नार पराई १/३२८।

ऐंई ये ही ~ सूरदास के जीवन ३१२२।

ऐकै=एकै, एक ही ~ देह बहुत करि राखे १६०५।

ऐते=एते, इतने ~ पर तुमहीं अब जानौ १६१३।

ऐन[1] हिरण की • बैन ~ — नैन सैन देखिए २६५८।

ऐन[2] आँखे ससि पर हरि के ~ १०३।

ऐन[3] घर (श्रीकृष्ण) को निगम ~ क्यों पावै १/४८।

ऐन[4] मार्ग मन मुख भरि भरि नैन ~ है ३४००।

ऐन[5] स्थान (श्री कृष्ण का कमल मुख) : चाहत अपनौ ~ १३७७।

ऐनु १ अयन, घर ब्रजवासिनि कै ~ ४९१। २. रास्ता, मार्ग सुभग कुंज-घर ~ ४४८।
ऐपन हल्दी और चावल से बना एक द्रव्य, उबटन ~ की सी पूतरी ४०।
ऐबो १ आओगी . कैसें अब इहि मग ~ १४८५। २ आना, आने का क्रिया · बनत नहिं जमुना कौ ७७९।
ऐया दादी, सास : बबकि उठि फूल बसुदेव ~ ३०७१।
ऐरावत इन्द्र का हाथी ऐरावत . मार्‌यौ ~ का धाद ६/५।
ऐरावति ऐरावत हाथी को . तब तिहि समय आनि ~ ३३०३।
ऐलगीत दल (गीत) : ~ पुनि भिक्षुगीत कहि सारा० ८४५।
ऐस ऐसा : मन कौ ~ तुम्हारी ढीठि २५७१।
ऐसनि ऐसों (इस प्रकार के योद्धाओं का) ~ का बल वे सब लैंह ५२१।
ऐसहि इसी प्रकार, ऐसे ही हम अपने ब्रज ~ रहिहं ३८४०।
ऐसहीं ऐसे ही इक सुनि 'सूर' ~ या तन ३८४३।
ऐसियै १. ऐसी, इस प्रकार का : ~ बसीठी ३७८०। २ ऐसा ही : ब्रह्मा कह्यो ~ होइ ७/२। ३ ऐसा है कि अब मेरैं मन ~ पटपट ३९७५।
ऐसिहि ऐसी ही ~ विधि अवरेखत १५२८।
ऐसी विधि इस प्रकार · हरि बिनु ~ ब्रज जीजै ३९१२।
ऐसीयै ऐसा ही सूरदास ~ कछु यह ३२१४। ~ **भाई** इस प्रकार की (बान) अच्छी लगती है : जाते मन ~ — १७७९।
ऐसीहि ऐसे ही पा लागों ~ रहन दै ३६२५।
ऐसेइ ऐसे ही ~ वचन कहत सब आगें २४९१।
ऐसेउ इस प्रकार के · सुनहु सूर ~ जन जग मैं २३५५।
ऐसेन ऐसे (व्यक्ति) · ~ कौ मुख नाउँ न लीजे ३१४८।
ऐसेनि इस प्रकार (के) · ~ कै सग लागै ३६५३।
ऐसेहि इसी प्रकार, ऐसे ही यह जानत हम ~ ब्रज मे ६०३।
ऐसेही ऐसे ही . ~ सुख दियौ मोहन ११६७।
ऐसेहू ऐसे ही, इस रूप मे भी : भली करी पिय ~ मेरें गृह आए २७३१।
ऐसैं १ इस प्रकार नद नदन कह्यौ ~ २८००। २ ऐसा · अब ~ ढँग आई १९७२। ३. इस प्रकार से · ~ भजी नद नदन कौ २२१६। ४ इस प्रकार है : 'सूर' स्याम रमासबल ~ २०२०। ५ ऐसी मनु तुषार कमलनि पर्‌यौ ~ कुम्हलानी १०१८। ६ ऐसे वै वैसें तुम ~ वेसैं २८२६। ७ ऐसे ही · ~ डरति रहति हौं वाका २०९५।
ऐसैंहि ऐसे ही : ~ जनम बहुत बौरायौ १/२७।
ऐसैंहि १ इस प्रकार . ~ भारत विलव न लायौ ३०९५। २ इस प्रकार का · ~ दोष लगावति २०५९। ३ इसी प्रकार, ऐसे ही : हम जानो ~ निवहैगी ३९८७।
ऐसैं ही ऐसे ही ~ जो जनम सिराइ ७/२।
ऐसैं ही ऐसे ही · ~ इन नैननि इकटक ३५६२।
ऐसोहू इस प्रकार भी दिन दस ~ करि देखौ ३८८३।
ऐसो ऐसा ~ और कौन त्रिभुवन मे ३५।
ऐसोइ ऐसा ही यह काम ~ रह्यौ ३०८३।
ऐसोई ऐसा ही : फिरि फिरि ~ है करत १/५५।
ऐसोहि ऐसा ही . ~ कर ५/२।
ऐसौं ऐसा · ~ सुनियत द्वै वैसाष ३९३७।
ऐसौ १ इस प्रकार : ~ रस विलसत नाना विधि २२३५। २ इस प्रकार का, ऐसा · ~ और कौन करुनामय १/१२२। ३ इस प्रकार के · ~ अपदाँव इनहि कीन्हे २२४०। ४ इस प्रकार से · ~ निठुर भयौ देखौ री २२२६। ५ इस प्रकार है, ऐसा है यह तो जोग स्वाद अलि ~ ३७१५। ६ ऐसी (धारणा) ~ जिय न धरौ रघुराइ ९/३५।
ऐसौई ऐसा ही · साँची कहौं नेह ~ १९०२।
ऐस्वर्य यश, कीर्ति बहु ~ बढैहे १०८६।
ऐहे १ आयेगी जब सन्मुख उठि ~ ३११६। २. आयेंगे, गुजरेंगे सुनि री सखी बहुरि हरि ~ १७३८।
ऐहै १ आ जायेगा . स्रम तें तुम्हे पसीना ~ १/१३०। २ आयेगी · महरि दौरि जब आगे ~ ३१२०।
ऐहौं १ आऊँगा : बहुरौ फिर ब्रज कौ नहि ~ १६१९, बहुरि गोकुल नहिं ~ १६१८। २ आऊँगी बरष सात बीतैं हौं ~ ९/२।
ऐहौ १ आओगी · काल्हि नहीं इहिं मारग ~ १४८४। २ आओगे : बूझि वेगि ब्रज ~ ३७०५।

ओ

ओइ वे ही : ये ह ऐसे ~ ९७२।
ओऊ १ उनको भी तुम देखे अरु ~ ३९७५। २ उसे : फेरि न लैह ~ ३८१२। ३ वे भी : कारे तुम अरु ~ ३९७९।
ओक घर, निवास स्थान · आये अपनें ~ ४१६२। ~ **ओक** १ स्थान स्थान को, प्रत्येक स्थान को : ~ — त्यागि, कहति धन्य धन्य ११५४। २ स्थान स्थान पर · ~ — आनदमई ३०८०।
ओक पति चौदह भुवनों के स्वामी : रुद्र पति, छुद्रपति, लोक पति, ~ १९४७।
ओकहि घर मे, भवन मे · पहुँचे जाइ इद्र के ~ ९२२।
ओग कर घर ते लीजौ ~ १५६८।

ओगहि कर, चुगी को . ~ लेत फिरौ इनके घर १५६९ ।
ओछनिहूँ तुच्छ (व्यक्तियों) मे ही . ~ व्योहारत १/१२ ।
ओछाई नीचता है • हमहि ~ यहै १६१८ ।
ओछि क्षुद्र ~ बुधि तै करी १६४९ ।
ओछी बुधि १ क्षुद्र बुद्धिवाली : ~ व्रजबाल ११२७ । २ तुच्छ बुद्धि से : ~ करी लरकाई ९७५ ।
ओछैं क्षुद्र के, तुच्छ के • ~ हाथ परी अपार निधि २३२४ ।
ओछोइ ओछा ही, क्षुद्र ही • ~ इतराई १२७१ ।
ओछौ १ ओछा, नीचता का . ~ गुन क्यो जाइ १६१८ । २ लघु • बिधि भाजन ~ रच्यौ १६४० ।
ओट १ ओट, आट : उठत ~ लै लखत सबनि कौ २८२ । २ ओट मे • राखति घूँघट ~ २३१३ । ३ ओझल, बाहर नैननि ~ होत पल एकौ ६०५ । ४ सहारा बडी है राम नाम की ~ १/२३२ । ~ **करि** ओट कर, आड कर के : सारग-रिपु की नैकु ~ — १७१४ ।
ओटनि ओट मे दूरि भई देखति दूरि ~ १८७ ।
ओट पट वस्त्र की ओट मे राखे रहति ~ जतननि २३०६ ।
ओटा ओट मे : मिलि घूँघट ~ परि० १/७१ ।
ओडहु पहनिए : ~ दच्छिन हाथ ९/८३ ।
ओड़ि १ ओढ, सहनकर : कै अपराध ~ तू मेरौ ९/८३ । २ दबी (भाषा मे) : हँसि बोले हरि बोली ~ ११८० ।
ओड़िये आड कीजिए, सहन कीजिए • ~ नँदनद जू के चलत ही दृग बान सा० ल० शेष ५ ।
ओड़ै सहन करे छाँडै बान विशाल जुद्ध ऐसौ को ~ ४१८८ ।
ओढत ओढता है • पीताम्बर वह सिर तै ~ ३३८ ।
ओढन ओढता हो . डासन काँस, कामरी ~ २८२६ ।
ओढनहार ओढने वाला ~ कमरि कौ १४८७ ।
ओढनहारे ओढने वाले • तुम कमरी के ~ १५१७ ।
ओढनि उपरैनी, ओढनी ~ आनि दिखाई मोकौ ६९५ ।
ओढि ओढ कर . ~ सुभग पीतबर १९९१ ।
ओढियत ओढा जाता है ~ है कि बिछैयत है ३९६६ ।
ओढे ओढ रखा हो : मानो ~ बारौ बारि-धर १५१ ।
ओढै १ ओढेगा • मृगछाल ~ कौन ३९९७ । २ ओढता है औ ढग ~ ओढनी १४४३ । ३ सहता है महाविपत तन ~ सा० ल० ४१ ।
ओढैया ओढने वाले कस पास है आइयै कामरी ~ ३०३८ ।
ओत चैन, विश्राम तऊ नाही ~ २३८०, कान्हहिं ~ देवैया ८७५ ।
ओद भीगे, मग्न • रहत केलि रस ~ ११९ ।
ओदन चावल, भात : यज्ञ करत ब्राह्मण मथुरा के ~ स्याम मँगायो सारा० ४८२ ।
ओदे गीले ~ बसन अँगौछि ६०९ ।
ओप १ उमंग ऐंचत ~ भरे ३५८६ । २ प्रकाश, चमक • आए ~ देन रघुकुल कौं ९/१९ । ~ **दीनी** शोभा बढ रही थी : बदन ~ — १६९४ । ~ **ओपी** चमकने लगा . सूरदास प्रभु प्रेम हमेज्यौ, अधिक ~ — ३१४८ । ~ **सौं** दीप्ति से • बैठारे सब मच ~ — कौतुक देखन लागे सारा० ५१० । ~ **सौं** प्रताप से (तेज से) . जहं बैठे सब भूप ~ — सारा० २१७ । ~ **हर्यो** तेज हर लिया आन ~ — २७५० ।
ओपी अनुरक्त, भरी हुई गोवर्धनधारी तिनकै नेहनि ~ २८६१ ।
ओबरी कोठरी (है) वह मथुरा काजर की ~ ३७६२ ।
ओभा चमक, आभा • देखौ झलक री मुकुट कुंडल की ~ ३४६० ।
ओर १ अन्त . मेरे दुख कौ ~ नहीं १३३७ । २ तरफ : बहुरौ देख्यौ ससि की ~ ५/३, नृप ~ कर जोरि कै ५८४ । △ ~ **निबाहे** अत तक कर्त्तव्य का पालन किया तीन्यौ पन मै ~ —, इहै स्वाग कौं काछै १/१३६ ।
ओर-अत ओर छोर • काल कर्म गुन ~ नहिं २/२८ ।
ओरहि प्रारम्भ से ही ~ तें हमसौ लरै १२९१ ।
ओरी ओर . बागुर चहु ~ १४६१ ।
ओरे ओले गरत गात जैसैं ~ ३३०३ ।
ओरैं छोर, अन लिखै गनेस जनम भरि मम कृत, तऊ दोष नहिं ~ १/१२५ ।
ओल १ गोद दई सबनि भरि ~ २९१५ । २ जमानत आये ~ मिलावन ऊधो ३७२० । ३ बधक, गिरवी देहु श्रीदामा ~ २९०७ ।
ओलै ओट (शरण) हरि गिरिधर की ~ १/२५६ ।
ओलनि ओलो ~ की माला कर अपनै ३९६८ ।
ओल्हर उमड • ~ आई हो घन घटा परि० १/११६ ।
ओसनि ओस से दूर होति करि ~ ४२५२ ।
ओसरौ हटाओ, छोड दो : अब निरगुन ~ ३७३५ ।
ओहि उसको छोरत काहे न ~ ३७५ ।
ओही वहीं मेरी बलि ~ सब खाई ९२१ ।
ओही उसी को • हौं तब तें चितवति ~ री १९१७ ।
ओहै वही • पहिलैं, ठग्यौ ठग ~ परि० १/१८३ ।

औ

औंके मिले हुए मन रुचि होइ नाज के ~ २२/३ ।
औचानक अचानक : तब हरि उठि आये ~ परि० १/११० ।
औंछि फिराकर : लई बलाइ कर ~ ६०० ।
औंजत औंजते हुए, उँडेलते हुए : ~ गागरि ढारियै २००४ ।
औंटि औटकर : कोटि बेर जल ~ मिरावै परि० १/८३९ ।
औ और, अन्य : हाँसि ~ दुख को सहै ३८६५, ~ रस लागत खारौ री १३५ ।
औगुन अवगुण : इनको गुन ~ हरि आग २२५७ ।
औगुन आगार अवगुण के भंडार . ~ दोऊ १२८६ ।
औगुननि १ अवगुणों का : गुन ~ दोष नहिं कीजतु ४०६६ । २ अवगुणों में ही ऐसी सह हठि ~ हिरानी १/२०४ ।
औघट दुर्गम चलनहार वै ~ घट के परि० २/४८ ।
औघर गति आरोह अवरोह से युक्त गति वाली . लेति सुघर ~ तान ११८० ।
औचक अचानक : ~ ही आँगन ह्वै निकसे २२५१ ।
औचकहीं अचानक ही : तवहीं ~ करि धावन ४१६६ ।
औचट १ अचानक : ~ भेंट भई तहाँ २७३५ । २ उत्सुक ~ गुनि गृह वन कों १/९ ।
औचित औचित्य, चित्त मे : धारौ ~ माँझ सा० ल० ३५ ।
औटाइ औटाकर : रस लै लै ~ करत गुर १/६३ ।
औटाए औटाने पर : फिरि ~ स्वाद जात है १/६३ ।
औटि औटकर : जिनि दुहि धेनु ~ पय चाख्यौ २३०६ ।
औट्यौ १ औटाकर आछ ~ मेलि मिठाइ २२९ । २ औटाया हुआ : ~ दूध मध दधि घृत मधु ४१९ ।
औंढ़ ओंडे जोग कहा ~ कि विछावै ४०९४ ।
औतरी उत्पन्न हुई कुवरि रुकमिनी कमला ~ ४१८६ ।
औतरै अवतरित होगा, उत्पन्न होगा (आकाशवाणी) याकी कोखि ~ जो सुत ४ ।
औतार अवतार : धार्यो नर ~ ४२२० ।
औधि अवधि, समय जाति मिलन की ~ टरी ८०६ ।
औनी आने की जोहत रहति गोपाल का ~ ४२६३ ।
औरई कुछ का कुछ : कहति और का ~ २६५३ ।
औरनि १ दूसरे ~ का मटुका कौ खायो १५९९ । २ दूसरे की ~ सीख धरौ ३६९९ । ३ दूसरों . ~ कौ तिरछै ह्वै चितवत २२८४ । ४ दूसरों को, औरों को : ~ देन सिकहरे तोरि ३२७ । ~ **सिर ढारत** दूसरे के सिर पर मढते हो : अपनौ गुन ~ — १५८६ । △ **वनति न ~ तैं** और किसी से नहीं बनता । ~ — ३८४२ ।
औरनि सी अन्य के समान, औरों के समान : ~ मोहूं कौं जाननि २०२६ ।
औरस जो सन्तान विवाहिता पत्नी से पैदा हो वैध : मैं हू अपने ~ पूत बहु दिननि म पायो ३३९ ।
औरहि १ दूसरे : आजु गए ~ काहू के २४७६ । २ दूसरे को : ~ नहीं पत्यात २२६५ । ३ और ही, दूसरे ही, ~ भाँति रची रचना रचि ४२३७ ।
औरहि और ही ~ सोभा अग अग की २००० ।
औरहीं दूसरों : निवहौ सदा ~ कौ हठ २८२६ ।
औरही भिन्न ही, और ही : काल्हि कछु और प्रातहिं कछु ~ २७२९ ।
औरहुँ दूसरा भी देखे ~ देस ४०७८ ।
औरहूँ दूसरे को भी आपुन लेहि ~ देते २२६६ ।
औरहू और भी, दूसरे भी : मारँग स्याम ~ मारंग ११९५ ।
औरासी विलक्षण : मोइ मथा देखत ~ २६६७, काल चाल ~ ४२८४ ।
औरि और है (निराली है) : नख सिखहि छवि ~ २२९५ ।
औरी १. और (से) : जहाँ तहाँ त चहु ~ की २८७२ । २. दूसरी : लखि नोसा न ~ १७३५ ।
औरे १ और ही, (निराली ही) : देखि सखि, कछु ~ सोभा ३२ । २ दूसरा : जो जानो ~ कोउ करता १६९२ । ३ दूसरी ईहिं अतर ग्वारिनि इक ~ ३४१ । ४ भिन्न : छिनु छिनु मैं ~ गति जिनकी २३४३ ।
औरे १ दूसरे ही . हम देखति हरि कौं ~ अँग २०६० । २ अन्यों के लिए : भक्त जसुने सुगम अगम ~ १/२२२ ।
औरेहि दूसरे ही : वसे जाइ अब ~ गाँउ २२५९ ।
औरै १ और भी : यह नी ~ न्यारे ३८७५ । २ दूसरा : तू हँसि कहति सुनै कोउ ~ १६९८ । ३ दूसरा ही, और ही . आपुन कह करे कछु ~ ३७०९ । ४ दूसरी, और : ऊधौ ~ कथा कहौ ३९०३, अति विपरीत रीति कछु ~ ९/३१ । ५ दूसरी ही (बात) : अब कछु कान्ह कहत हे ~ ३८६२ । ६ दूसरे ज्यौं गजराज काज के ~ ३६४७ । ७ दूसरे का : खाइ मारि कै ~ १/१८६ । ८ दूसरे ही, और ही . ऊधौ हरि के ~ ढग ३९४७ । ~ **और** कुछ का कुछ . ~ — बनावत १६३० ।
औरो १ अन्य : ~ लीला बहु विस्तार २ । २ और : ~ निठुर कहावै १८३० । ३ कोई और, दूसरा : ~ आइ निकसिहै १/१९१ ।
औरौ १ और भी : ~ सखी जाल वनि मोमिन २८५८ । २ और : दिन दस गए दिना दस ~ २८८३ । ३ दूसरा : ~ ढँढ-दाता कोउ आहि ६/४ । ४ दूसरे : ~ सुमन अनेक सुगधित ३९२१ । ५ दूसरों के : ~ गुन नैसे २१९५ ।

औषद ओषधि ~ वैद गरुडियौ हारि नहिं ३३२७।
औषधी दवा ~ गिलि गई ४/११।
औसर १ समय अवसर सुधि बिसरी तन की तिहिं ~ ३०१। २. समय मे . अत ~ अरघ नाम १/११९ । ३. समय पर, अवसर पर ना जानो सूरहिं इहिं ~ ८/३ । ४. उत्सव नदद्वार ~ रच्यौ २९०९।
औसर-बाग-बिसारद अवसरोपयुक्त वाणी कहने मे चतुर : ~ नारद हाहा जित गुन गाइ ३०१६।
औसरे इतजार : गोपनि बैठि ~ कीन्हे २८९२।
औसान १. चिन्ता, चेतना, चित्तवृत्ति ॰ अब ~ घटत कहि कैसैं ३८९६ । २ होश हवास सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस विनु फुरत नहीं ~ ३०१३।
औसेरनि चिंता से : कान्ह कुंवर ~ ३८८९।

क

कंकट कॅकडीला . ~ कर्म कामना कानन कौ मग दियौ दिखाई १/१८७।
कंकन १. कगन : करज मुद्रिका, कर ~ छबि २०१९ । २ कगन की कीजै ~ लाज ४१८८ । ३. विवाह के समय का कगना ॰ कर कपै ~ नहिं छूटै ९/२५।
कंकन-किंकिनि ककण और करधनी ~ पदिक विराजै ४०९४।
कंकन-चार ककणाचार (कॅगना खोलने का कृत्य) . ~ विचारि ब्याह-बिधि होइ १०७३।
कंकना कगन ~ कर रहत नाहीं ४१०७।
कॅखियाँ कॉख मे (बगल मे) : भामिनी-भवन ल्याई कर गहे ~ १३८५।
कॅगुरी छिगुनी, छोटी उँगली जैसे फिरत रध्र मन ~ तैसे मैंहुँ फिराऊँ पृ० ३११।
कॅगूर बुर्ज, कॅगूरा, शिखर : उच्च-उरोज मनोज नृपति के जोबन कोट ~ २६६८।
कॅगूरनि १ शिखर, चोटी . कचन कोट ~ की छबि मानौ बैठे मैन ३६३८ । २ कॅगूरे, बुर्ज : कटक रोम ~ प्रति मनौ अपनी-अपनी चोकी ३०२१।
कंचन पु० १ सोना : मनि ~ के चक्र जरे हैं १५४९ । २. सोने का कचन-हार दिऐं नहिं मानति १६ । ~ **सी** स्वर्ण के समान (सुदर) ~ — मम देह करी १/११६। वि० सुन्दर ॰ केतकी कुच-कलस ~ २८४४।
कचन-कोट स्वर्ण के परकोटों से युक्त लका के किले ~ ढहैहौं ९/११३, ~ ढहायो ९/११९।
कंचन-खभ १. स्वर्ण स्तम्भ (सोने का खभा) ~ डोर कचन की १९३७ । २. स्वर्ण-स्तम्भ मे . ~ खचित मरकत मनि ११८१।
कंचन-घट सोने के घडे जैसे सुंदर और सुडौल स्तन ~ काहे न उघारौ १५४२, सूर लह्यौ गोपाल आलिगन, सुफल किये ~ १४५२।
कंचन-तगा सोने का धागा (तार) मौनीयै मगुलि तामैं ~ ३९।
कंचन-थार १. स्वर्ण थाल . कर ककन ~ मगल साज लिए २४ । २. स्वर्णथाल मे ~ दूब-दधि रोचन २२।
कंचन-पुर स्वर्ण पुरी, सोने की लका ~ पति कौ जो भ्राता, ता प्रिय बलहिं न आवत ३६२३।
कंचन-पुर-पति लका का स्वामी अर्थात, रावण ~ कौ जो भ्राता, ता प्रिय वलहिं न आवत ३६२३।
कंचन-पुर-पति कौ जो भ्राता ता प्रिय स्वर्ण-पुरी के स्वामी (रावण) के भ्राता कुम्भकरण की प्रिय अर्थात निद्रा : ~ वलहिं न आवत ३६२३।
कंचन-बरन सोने के रग जैसे रग वाली . पीत ~ भामिनि १६७९।
कचन-भू स्वर्ण भूमि : ~ पर धारे सा० ल० १३।
कंचन-मनि हेम मणि (मणियों की एक कोटि) ॰ ~ डारि, काँच गर बॅधाऊँ १/१६६।
कंचन लता स्वर्ण लता ॰ किधौं ~ बीच सु तमाल तरु २१७०।
कंचनहार सोने का हार : ~ दिऐं नहिं मानति १६।
कंचुकि चोली, अंगिया ~ तें कुच कलस प्रगट है ४२९३।
कचुकि-पट चोली का वस्त्र ~ सुरत नहिं कबहूं ३२३६।
कंचुकि-बद चोली का बधन चीर फटे ~ छूटे ७९९।
कचुकी चोली : नील ~ मॉडनि लाल ११८०।
कंचुरि सॉप का केंचुल : ~ ज्यौं त्यागि फनिग फिरत नहीं तैसे २२३७।
कॅचुरी साप का केंचुल पन्नग ~ ज्यौं लपटानी ३७१४।
कचुलि सॉप का केंचुल सत फन मानौ ~ तजि दीनी १६९४।
कंज कमल : मानहुँ ~ मिलत ससि कौं लिए १५९८।
कज-दल कमल-दल : मानौ ~ सौवीस बसीन ३८६७।
कंजन हूँ कमल भी ~ की लगति पलक दल ३५७१।
कजनि कमलों को ॰ देखि ~ चद के बम २२५।
कज-रंध्र कमल-छिद्र ~ अवलोकि सहचरी सारा० ८९९।
कज-लताई कमल-नाल की (शोभा) . बाहु बली करि ~

२४३६।

कंज-सेज कमल की सेज पर · ~ राजे सुख गान २०३४।

कजा राधा की एक सखी अमला, अवला, ~, मुकुता, रीरा, नीला, प्यारी २००८।

कंट कँटीला जनि धावहु बलि चरन मनोहर, कठिन ~ मग ऐनु ५०२।

कंटक १ काँटा ~ चुभि गयौ पाइँ ३८२२। २ काँटे के समान (दुखदायी) सुनहु मधुप निरगुन ~ तें ३८९०।

कंठ १ गला, कण्ठ गदगद ~ बोल नहिं आवै १३, कफ ~ विरुध्यौ १/११८। २ गले मे विषहि ~ धारि लेइ १/२००, ~ मोतिनि की माला ८४१। ३ गले से भुज-भरि अपनें ~ लगाई १९९०। ४ स्वर मे उपजावत मिलि ~ अमित गति ६। △ ~ भरयौ गले मे लगा लिया तुम उनकों लै ~— १८८२। ~ लगाई गले मे लगा लिया भुज भरि अपनैं ~ — १९९०। ~ लगाए गले मे लगा लिए ~ — जोयौ १/४३। ~ लगायौ गले मे लगा लिया ताकों ~ — ४/९। ~ लाइ गले लगाकर राजा ~ — हित कर्‍यौ ४/९। ~ लागी गले मे लग गई सखिनि ~ — २०८१।

कंठनि १ गले उतारत हैं ~ तें हार ८८७। २ गले मे ~ मेलि पगा ९/११४।

कंठ-लच्छ लाखों का हार, नौलखा हार ~ राखी मुकठ मे सा० ल० ९८।

कंठ-श्री गले मे पहना जाने वाला सोने का एक गहना, कठश्री चिबुक-नर ~ माल-मोतीनि छवि १०४२।

कंठसिरी गले मे पहना जाने वाला सोने का एक आभूषण ~ उर पदिक विराजत २६१०।

कंठस्री गले मे पहना जाने वाला सोने का एक आभूषण, कठश्री · कवु-कठ राजति ~ परि० २/६४।

कँठहरिया कठी, माला ताकी छटा छार ~ ३७३५।

कंठहि कठ मे, गले मे भाल-लोचन चद चमकनि, कठिन ~ सेष ४०५५।

कंत १ प्रियतम प्रिया निरखति पथ, मिले कव हरि ~ १९८४। २ प्रियतम की ये सब ~ सुहागिनि नाही २४४४। ३ प्रियतम ने ~ गुन करि कमी २४११। ४ पति . तुम धरनी मैं ~ तुम्हारो ७९७।

कतहि पति को ~ छीनि लए परि० १/१७०।

कंता पति तव जान्यौ कमला के कता २९२२।

कती कानि नख मेटत मनि-मानिक ~ २९०१।

कंथा कथरी, गुदडी ~ पहिरि विभूति लगाऊँ ३२२६।

कंद गाँठदार या गूदेदार दूव चरति नहीं तृण ~ ३१५७।

कंदना क्रदन, चिल्लाहट मोकौं कछु न सुहाइ करै काम ~ ११५५।

कंदर १ गुफा, कदरा गृह गिरि ~ करे अपार २/२०। २ गुफाओं या कदराओं मे काम दहन गिरि ~ आसन ४३०६। ३ मूल प्रगट्यौ पूत सकल सुख-कदर ३२।

कंदरा १ गुफा, कदरा मानहु पर्वत ~ मुख सब गए समाइ ४३१। २ गुफा के : गृह ~ समान सेज भइ ३१९७।

कंदराहू कदरा (मे) निकसि ~ तें केहरि ४१४१।

कंदहि वादलों मे विज्जुलता सोहत मनु ~ १०७।

कंदुक गेंद ~ कर मो लाइ ४१६६। △ ~ केलि करति गेंद मे खेल रही है ~ — सुकुमारी ११९४।

कंद्रप कामदेव ~ कोटिक धरत कला परि० २/२८।

कंध १ कधा सुरभि ~ वृष जोत ३९९३। २ कधे पर ~ धरि चले दोउ वीर नीके बने ३०६०। ३ कधो से ~ उपारि डारिहौं भूतल ९/१३३। ~ चढावहु कधे पर बैठा लो कत मों मोंहि ~ — ११०१। ~ चढौं कधे पर चढूँगी ~ — यह वचन सुनायौ ११००। ~ धरि कधे पर रख कर गोप-वधुनि की भुजा ~ — ४२७२।

कंधनि कधो पर ~ बाहँ धरे नितवर्ति २९९४।

कंधर गरदन ~ की धर मेरु सखी री २०५७।

कंप १. कपित, काँपते हुए अति भय करति सु ~ हिए ३६२०। २ काँपने लगे अधर ~ रिस भौंह मरोर्‍यौ २४१४। ३ काँप रहा था · तन अति ~ विरह अति व्याकुल ४१०४।

कपत १ काँपता है . ~ सबै गात डरनि ३३०१। २ काँपने लगता है सुनत सँदेस अधिक तन ~ ३९९८। ३ काँपने लगे ~ कमठ सेष-वसुधा-नभ ९/७४। ४ भयभीत होकर, काँपते काँपते : ~ करत सो वात ९/४१।

कंपत काँपना है मात तैं तन ~ थर-थर ७८९।

कंपति काँपनी हैं थर थर अग ~ सुकुमारी ७९९।

कपति कँपकँपी छूटने लगती है मदन वान तें ~ २०८९।

कपायौ कँपा दिया, प्रकम्पित कर दिया · वान-वृष्टि करि सैंन ~ ९/१४१।

कंपावत १ हिलाता है, कपित करता है रिसनि ~ गात ५३७। २ हिलाते हो, हिलाकर धमकी देते हो · तुम्हरे टर हम डरपत नाहिंन कहा ~ बेत सारा० ८९२। रहहु ~ कपित करते रहो, कँपाते रहो और अटपटी छाँडि नद-सुत — ~ बेत १४६८।

कंपावै कँपाकर सकेत करता है · कुँवर सिर-नैन ~ १६१८।

कंपित वि० काँपता हुआ, कपायमान छोभित सिंध, सेष-सिर ~ ९/१५८, ~ तन कदलि पात ३६०५। क्रि० १ काँपने लगा · भए वलहीन खीन तन ~ ३१२४। २ काँपने लगे : मुनि-मन भीत भए भुव ~ ६३।

कंपै १. काँपता है ~ भुव १/२८६ । २. काँप उठे देखि सपन गति त्रिभुवन ~ ६५ । ३. काँपने लगा कर ~ ककन नहिं छूटै ९/२५ ।

कंप्यौ काँप उठा, भयभीत हुआ ~ गिरि अरु सेष सक्यौ १६६ ।

कंवर कम्बल : दीजै कान्ह काँधे कौ ~ १९९१ ।

कंबु १ शख . ~ कठ धर, कौस्तुभ-मनि धर ५७२ । २. शख के समान . ~ कठ नाना मनि-भूषण १०५५ ।

कंबुक हाथी . तब हरि पूँछ गह्यौ दच्छिन कर, ~ फेरि सिर वारि ३०५८ ।

कँवरें कुमार, बेटा : सलोनौ अति जसुदा कौ ~ री २८८६ ।

कंस मथुरा का एक अत्याचारी राजा, उग्रसेन का पुत्र, श्रीकृष्ण का मामा : को नृप भयौ ~ किन मार्‍यौ ३६२६, सूर, स्याम चले गाइ चरावन, ~ उरहिं के सालक : ४२६ ।

कंस-अरि कस के शत्रु, कस को मारने वाले, कृष्ण • कृपासिंधु कल्यान ~ ९८१ ।

कस उरहि के सालक कस के हृदय को सालने वाले अर्थात् कृष्ण : दे० कंस ।

कंस-काल कस के काल, श्रीकृष्ण • ~ जिय हरष बढ़ाए ५२३ ।

कंस-ताल झाँझ : ~ कटताल बजावत सारा० १०७५ ।

कंस-दर्प के दापक कस के अभिमान को नष्ट करने वाले अर्थात् कृष्ण • जो है ~ ९८४ ।

कंस-दुख-भंजन कस द्वारा दिये गये दु:खो का भजन करने वाले : दीनदयाल ~ ३१२२ ।

कंस-निकंदन कस का वध करने वाले सूरदास प्रभु ~ ५९ ।

कंस-निकंदा कस का विनाश करने वाला अर्थात् श्रीकृष्ण : उपज्यौ ~ १९२ ।

कंस-बधन कस का विनाश, कस-वध : ~ येई करिहैं ८५ ।

कंस राइ १. राजा कस • ~ के मल्ल पछारे ३०९८ । २ राजा कस के : ~ जिय सोच परी ४८ ।

कंसहि १ कस के : इक सुख ~ कमल पठाए ५८८ । २. कस के लिए : ~ चदन लिए जाति ही ३१०६ । ३ कस को : ~ पठै देउँ जलजात ५३० । ~ पैं कस के पास : लेखो करैं जाइ ~ — १५७० ।

कंसहि कस को : जाइ सबहि ~ गुहरावहु १५१३ ।

कँहलगि कहाँ तक : ~ करैं बडाई सारा० ५४७ ।

कई[1] काई • फाटी काम ~ ३३४२ ।

कई[2] किया • किन तू गवन खरिकहिं ~ री परि० १/९९ ।

कए १ करने पर, किए जाने पर : न्यारे होत न न्यारे ~ ११/४ । २. कहे . तिन सौं वचन ऐसी विधि ~ १०/२ ।

ककरी ककडी • सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ~ ३९८८ ।

ककोरत कचोटने लगता है तुम विनु देखें मेरो हियो ~ १९४५ ।

ककोरा ककोडा (सब्जी) कुनरू और ~ कौरे १२१३ ।

कखिआँ काँख, बाहुमूल भामिनी भवन ल्याई कर गहे ~ २३६६ ।

कगरी कगार, किनारा . हस-सुता की सुदर ~ अरु कुंजन की छाहीं ४१५७ ।

कगरौ कागज : कौने दियौ दिखावहु ~ १४६४ ।

कच[1] १ बाल : बलि-बलि जाउँ कुटिल ~ बिथुरे ६६४ । २ लट • चारु चखौड़ा पर कुचित ~ १४७ ।

कच[2] देव-गुरु बृहस्पति का पुत्र : तब तिन ~ कौं दियो पठाइ ९/१७३ ।

कचनार्‍यौ कचनार भी : ककरी, कचरी, अरु ~ १२१३ ।

कचरी १. ककडी की तरह की एक बेल, जिसका फल जो सुखा कर और तलकर खाया जाता है ककरी ~ अरु कचनार्‍यौ १२१३ । २ कचरी के फल और मूल, जो सब्जी बनाने के काम आते हैं : ~ चारू चिचींडा सौरे १२१३ ।

कचहि देवगुरु बृहस्पति के पुत्र कच को • सजीवनि तब ~ पठाई ९/१७३ ।

कचहूँ कच (दे० कच) ने भी : ~ ताहि कही या भाई ९/१७३ ।

कचोरा कटोरे मे • बिरत सुबास ~ नायो १२१३ ।

कचौरी कचौडी, एक व्यजन : पूरी पूरि ~ कौरी १२१३ ।

कच्छ[1] कछुआ : कबहुँ मैं ~ कौ रूप लीन्हौ ८/१६ ।

कच्छ[2] नदी के किनारे की जमीन, कछार मे • जमुन ~ बछ चरावै १२१८ ।

कच्छप कछुआ, विष्णु के चौबीस अवतारों मे से एक ~ अंग आसन अनूप अति २/२८ ।

कछनी घुटने के ऊपर चढा कर पहनी हुई छोटी धोती कटि ~ पीताम्बर बाँधे ६७२ ।

कछप-रूप कच्छप का रूप, कच्छपावतार, विष्णु के चौबीस अवतारो मे से एक : सुरनि-हित हरि ~ धार्‍यौ ८/८ ।

कछु वि० जरा, थोडा, थोडी मात्रा का . देत दान राख्यौ न भूप ~ ९/१६, जब हँसि कै मोहन ~ बोलै ३५ । सर्व० कुछ, कोई . हानि लाभ ~ सोच न राँचे २/११, जौ ~ कपट किए जाचति हौ ८०५ । ~~ कुछ-कुछ, थोडा थोडा : सूर स्याम ~ ~ लै खायौ २४१ ।

कछुक वि० थोडा, जरा, थोडी मात्रा का • ~ खात कछु लग्यौ कपोलनि १२१, प्यारी पिय मुख देखि ~ हँसि २४१४ । सर्व० कोई : सखि मिलि करो ~ उपाउ २०८५ । ~ बुझानी कुछ शान्त हुआ . यह सुनि सुनि रिस ~ — ०२७ । △ ~ कही नहि जात असमजस, दुविधा या सकोच के कारण कुछ कहा नहीं जाता . स्रवन सुनत अकुलात साँवरो

~ — सारा० ९४९ ।

कछुयक कुछ एक : वाल्मीकि मुनि कही कृपाकर ~ सूर जो गाई सारा० १९२ ।

कछुव कुछ : ~ न होत निकट उत लागत, मगन होत इत दीन १/१८१ ।

कछुवै १ कुछ : ~ कहत कछुक कहि आवत ३६११ । २. कुछ भी : मैं करमहीन ~ नहिं जानी ३५६७ । **~ न सर्यौ री** कुछ भी काम नहीं बन सका • इतेहुं जतन ~ — १८७२ । **~ वह जोई** देखता कुछ और है : कछू करत ~ — ९२४ ।

कछू १ कुछ : देखि रहत नहिं ~ सुहात २०२१ । २. कुछ भी • उन तौ बातें ~ न कीन्ही ३५३१ ।

कछे १. बनाए (सजाए) हुए : पींड सीखड सिर, वेष नटवर ~ २०६३ । २. कसे हुए : मोर मुकुट कछनी ~ २४९२ ।

कछ्यौ कर/सजा लिया . नाच ~ तब घूँघट छोर्यौ १६६१ ।

कजरा काजल : भरि आए नैन ढरकि गयौ ~ ३३०७ ।

कजराहि काजल को : दरपन लै ~ सँवारत २१८९ ।

कजरी काली आँखों वाली गाय : ~, धौरी, सेंदुरी, धूमरि मेरी गैया ६६६ ।

कज्जल काजल, अजन • ~ बरषि-बरषि उर ऊपर, सारँग-रिपु जल भीजै ३९१२ ।

कज्जल-कीच काजल का कीचड, आँसुओं के साथ मिलकर बना हुआ काजल का लेप • ~ कुलीन किए तट, अवर अधर कपोल ४११३ ।

कट कटिदेश, कमर : भूलत नहीं पीत पट ~ के परि० ७/४८ ।

कटक १. सेना, दल : जुद्ध-हित ~ अपनौ हँकार्यौ ४१६१ । २. सेना का : ~ मोर अति घोर दसौं दिसि ९/११५ । ३. सेना को : साल्व के भटनि लखि ~ भगवान कौ आपने नृपति सौं कह्यौ जाई ४२२१ । **~ कौ सेना का** • सुनौ भट, ~ — पार पायौ ९/१२९ ।

कटत १. कटती है : निसि ~ न क्यौं हूं १९६३ । २. कटते हैं, नष्ट या दूर होते हैं . कमल नैन की लीला गावत ~ अनेक विकार २/२ ।

कटतहूँ कटते समय भी • ~ नहिं अग मोर्यौ १३४० ।

कटतहू कटते समय भी, कटते हुए भी : ~ मुरी नहि १३६४ ।

कटहिं कटते हैं, बीतते हैं : ~ न माई ये दिन विकट परि० १/१५५ ।

बालक सब लये ~ जिवाई ५७८ ।

कटाच्छ-नाटसल तिरछी चितवन का वाण ऐसा जा धँसा है कि : मन मूरछा, ~, कढि न सकत हियरा ते २६८४ ।

कटाच्छनि कटाक्षों से, तिरछी चितवन से : नागरि कुटिल ~ हेरति २६२६ ।

कटाच्छनि तीर कटाक्ष रूपी वाण, तिरछी चितवन रूपी तीर : गुन-सधान निमेष घटत नहिं, छुटे ~ १९८६ ।

कटाव काटकर बनाये गए बेल-बूटे सुभग डुमेल ~ की, अँगिया, नगनि जरित की चौकी १५४० ।

कटि स्त्री० १. कमर : टेढी ~, टेढी कर मुरली २३२२ । २. कमर को : ~ निरखि केहरि लजाने २३४ । ३. कमर मे • ~ काछनी, वेष नटवर कौ १९३०; ~ पट पीत मेखला मुखरित ४५१ । ४. कमर से • दुस्सासन ~ बसन छुडावत १/१८ । **क्रि०** कटकर ज्यौं तरु ~ गिरि जाइ ४८९ । ~ **~ परे** कट-कट कर गिर पडता था : कोउ ~ ~ — ४१९४ ।

कटि-कंचुकी कमर मे चोली : ~ लँहगा उर धार्यौ ११८० ।

कटि-किंकिणि कमर मे स्थित करधनी की : ~ रुनु झुनु सुनि तन की हँस करत किलकारी सारा० १८१ ।

कटि-किंकिन कमर मे स्थित करधनी । चरन रुनित नूपूर, ~, ककन करतल ताल ११३६ ।

कटि-तट कटि-प्रदेश मे, कमर मे : ~ पीत पिछौरी बाँधे ९/२० ।

कटि-फेंट कमर का फेंटा : जाइ गही ~ १५३१ ।

कटी १. कट गई : ~ कठिन पग डोरी ४२१६ । २. दूर होती है, नष्ट होती है • बिनु गोपाल बिथा या तन की कैसैं जाति ~ १/९८ ।

कटीलियाँ कँटीली, घायल करने वाली : भौहैं काँट ~ (मोहि) मोह लियौ बिनु मोल १४५७ ।

कटीले काँटेदार : अब कवि-कुल साँचे से लागे रोम ~ नाल पृ० ३४८ (५८) ।

कटु १. (सुनने मे) कडवा, मन को बुरा लगने वाला : नृप सौं उन ~ वचन सुनाए ९/२ । २. छः रसों में से एक, चखने मे कडवा : कचन काँच कपूर ~ खरी एकहिं सँग क्यौं तोले ३८६९ ।

कटुक १. कडवा : काहैं काम ~ अग गरतौ ३२३१ । २. कडवी : ~ कथा लागी मोहिं मेरी ४१५१ । ३. कडवे, तीखे : इते पर इन ~ वचननि ३५६१ ।

१/१८०। २ काटे, खण्ड किये • तब बिलब नहिं कियौ सीस दस रावन ~ १/१८०।

कठिन वि० १ कठिन : सूरदास प्रभु ~ बिपति मौं रासि १/२५०। २. कठोर . ~ बचन सुनि स्रवन ९/७९। ३. कड़ा, सख्त : मन हठ ~ पर्‌यौ १/१००। ४. निष्ठुर • ~ कस मथुरा बसै १६१८। **स्त्री०** १ कठिनाई, मुसीबत, कठिनता • जब जब दीननि ~ परी १/१६। २ कठनाई मे : ऊधौ हम दोउ ~ परीं ३९४८। ~ **करि** कष्ट सहकर • किहिं न ~ — जायौ ३३९।

कठिनई १ कठिनता से • सो हम निपट ~ हठ करि ३७४४। २ कठिन व्रत : नैननि निपट ~ ठानी ३५६७।

कठीली कठोर . काठ तै कठिन ~ परि० १/१०१।

कठुला जेवर जो छोटे बच्चो को पहनाया जाता है, इसमे सोने, चादी या तॉवे की छोटी छोटी चौकियॉ एक मोटे तागे मे गुथी होती है। बीच बीच मे बाघ के नख तथा तावीजें भी पिरोयी होती हे : ~ कठ बघनहों नीके ११७।

कठोरहि कठोर को • श्री पति कमठ ~ ३३५९।

कठोरी कठोर • भुज भरि भेंटति उर ~ ३०५।

कठोहि कठोर, निर्दयी . कपटी कुटिल ~ २७१२।

कढत १. निकलते है : नाहिंन ~ और के काढे २५९९। २ निकलता है • कहौ कौन पै ~ कनूका ३५५३।

कढति निकलती हैं : अब वे सालति हे उर महियॉ कैसेंहु ~ नही ३००२

कढाइ खिचवाता हूँ, निकलवाता हूँ . तौ मैं जो वाही सौं कहिकै उनकी खाल ~ ३०४१।

कढाई निकलवाई : मो पै चीटी सबै ~ ३२२।

कढाऊँगौ निकलवाऊँगा • ते तुव हाथ ~ २४९३।

कढि निकल कर . सूर स्याम मिलि ~ पलकनि सौ २३९०।

कढिराइ घसीट कर सूर तबहुँ न द्वार छॉडै डारिहौ ~ १/१०६।

कढी दही और बेसन से बनायी जाने वाली एक प्रकार की सब्जी : खाटी ~ बिचित्र बनाई १२१३।

कढे निकले . ~ तहॉ तैं कुवर कन्हाई २८२८।

कढै १ निकले, दूर हो • सखि कैमैं ~ वियोग ३५९०। २ निकलता है सो सुख उर न ~ १७।

कढैहै निकलेगा . नैननि नीर ~ परि० १/१०१।

कढ्यौ १ निकला हो : ~ कलक पखारि २११८। २ निकले लादि पकज ~ बाहिर ५७७।

कत १ कहॉ : देखौं मैं बालक ~ छॉड्यौ ९३३। २ किसलिए, क्यों : ऊधौ ते ~ चतुर कहावत ३८८८, जननी दोष देति ~ मोकौं २४९। ~ **दृग दोइ दए** दो ही ऑखें क्यों दीं : ~ — विधना इतनी जानत है १८१२। ~ **पतियाई** क्यो विश्वास किया . कोउ कहै हम तुम ~ — ४२००।

कतव क्यों : द्वै मोहि ~ दए १८६७।

कतहि क्यो • लाल अनमने ~ होत हो २७६०।

कतहि क्यो • ~ बढावति रारि १६१८।

कतही क्यो • हौ पठयो ~ बे काजे ४१३०।

कतहु कहीं भी . बूडत ~ थाह नहिं पावत १/२०९।

कतहूँ १ कहीं बछरा ~ दूरि गए ४३८, भाजि गए दुरि देखत ~ ३२२। २ कहीं भी . अस्व-खोज ~ नहि पाए ९/९।

कति क्यो, कितनी : मोपर ~ सतरानी २४३२।

कतिक कितने ~ गोरस हानि जाकौं करति है अपमान ३५०।

कथ कहना, ~ **कथ** कह कह कर : रावण बहुत ज्ञान समझायौ ~ — कथा गँभीर सारा० २८५।

कथत १ कहते हुए • लीला ~ सहस मुख तोऊ अजहू पार न पायो सारा० ५७३। २ कहता है कहु सदेस ~ कत कूरे ३५७६।

कथन १ कहना है . कहा ~ मासी के आगै ३९४६। २ कहने मे • वासर भयौ गत तुम्हरैं ~ परि० १/९५।

कथा १ कथाएँ • और अनत ~ १/६। २ कहानी, बात सुनहु ~ यह कान दै ८०५। ३ चर्चा जन्म भूमि की ~ चलावत ९/१६७।

कदब[1] समूह : दुख ~ टारे ७०५।

कदंब[2] कदम का वृक्ष : कहि धौं कुद, ~ बकुल, वट १०९१।

कदन विनाश : करि ~ रुधिर भैरौं अघाऊँ ९/१२९।

कदम[1] १. कदम्ब वृक्ष सीतल कुज ~ की छहियॉ ४४५। २. कदम्ब वृक्ष पर ~ चढाए चीर १५६०।

कदम[2] सहेलियो का झुड, • राधे कैं सग ~ २९०१।

कदरात घबडाते (हो) काहे को ~ हौ २४४०।

कदरि कद्र, प्रतिष्ठा तब इहिं ~ न पाई १३५९।

कदलि केले के कपित तन ~ पात ३६०५। ~ **खभ** कदली के खभ जैसी जघाएँ • द्वै ~ — बिनु पात २११२।

कदलि-खंभ-जघनी केले के खम्भे की तरह जघाएँ • किंकिनि जुत ~ २१८४।

कदलि-जूप केले के खम्भे • सजे सजल कलस अरु ~ ९/१६६।

कदली १ केला • ~ कटक साधु असाधुहिं २/२१७। २. केले हैं (जघाएँ हैं) कमल ऊपर सरस ~ सा० ल० १४। ३ केले के : ~ सम जानै ३/१३। ४. केले के खभे जघन सघन बिपरित ~ १७०३।

कदली-ओट केले की आड मे : ~ निचोरत अचल ११२५।

कदली-खंभ केले के खभे • द्वादसै मृनाल द्वादस ~ ३८६७।

कदली जूथ केले के समूह • ~ अनूप किसल दल ४१८५।

कदुवा कुम्हडा : ~ करत मिठाइ घृत पक ८९२।

कद्रुज कश्यप की एक पत्नी कद्रू, उससे उत्पन्न कद्रुज, सर्प, नाग . ~ रहे पाताल दुरि २७७६ ।
कन¹ अनाज के दाने · बिनु ~ तुम कौं कूटै ७/१० ।
कन² १ कण · मनहुँ चढ ~ सीन ४३७ । २ कण के : भूठी बात तुमी सी बिन ~ ३८९८ । ३ कण को : कपट ~ दरस खग नैन मेरे २२७३ । : ~ कन कण-कण · जाँचत ~ — निर्धन १/१५९ ।
कन³ बूँद · तन-सुत ~ मे थन विचार के तुरत भूमि पै डारै सा० ल० ५ ।
कनक सोना, स्वर्ण · भारी ~ लिए अँचवावति ५१४ ।
कनक-अवास सोने का भवन · मनिमय ~ ९/८३ ।
कनक-कटोरा सोने का कटोरा : ~ भरि लीजै यह २२९ ।
कनक-कलस स्वर्णकलश · केहरि ~ अमृत के १५४९ ।
कनक-कुंडल-स्रवन कानों का स्वर्ण कुंडल · ~ विभ्रम ३५२ ।
कनक-कोपर सोने के थालों मे : दधि-फल-दूब ~ भरि ९/१८९ ।
कनक-खंभ सोने के खम्भे के : ~ मम जानै ३/१३ ।
कनक-गिरि सोने के पर्वत (स्तनों) : ~ पै धार ११६६ ।
कनक-घट स्वर्ण कलश : ~ रस सार ११४५ ।
कनक-छवि स्वर्ण सी कमनीय छवि : ~ तन मलय लेपन १०८१ ।
कनक-तनु स्वर्ण शरीर · ~ परतच्छ देखहु १५५२ ।
कनक-थार १ स्वर्ण थाल : ~ मैं हाथ धुवाए ३९६ । २ स्वर्ण थालों मे : ~ रोचन दधि तिलक बनावन रे २८ ।
कनक-डंड स्वर्ण दंड · ~ आपुन कर धरिहै १८१९ ।
कनक-दुलरि सोने की दुलडी : ~ कठ पीतावर खोही १४०० ।
कनक-पास सोने के फदे मे : बाँध्यौ ~ सुक सुदर २४४५ ।
कनक-पुर स्वर्ण-पुरी, लका : जीति ~ गाऊँ ९/७५ ।
कनक-पुरी स्वर्ण-पुरी, लका · सुनौ किन ~ के राइ ९/७८ ।
कनक-पुरी-पति स्वर्ण-पुरी के स्वामी, रावण : मानहु ~ के सिर ९८३ ।
कनक-फटक स्वर्णमयी स्फटिक शिला पर : ~ धरि फटकि पछारी ३९६ ।
कनक-बरन स्वर्ण वर्ण वाली थीं : तैसियै ~ सब सुदरि १०१० ।
कनक-बल्ली सोने की लताएँ : मानहु सूर ~ जुरि १७५३ ।
कनक-बेलि १ स्वर्ण लता ~ तमाल अरुझी २१३२ । २ स्वर्ण लता की : ~ सी क्यौं मुरझानी ११०८ ।
कनक-भू स्वर्ण भूमि : ~ पर रतन रेखा १८६ ।
कनक-भूमि स्वर्ण भूमि के · सूरदास मनु ~ ढिग १७५४ ।
कनक-मय १ स्वर्णमय : खेलत फिरत ~ आगन ९/१९ । २ स्वर्णमयी : ब्रज वनिता वर वारि ~ २७७२ ।
कनक-मृग स्वर्ण का मृग : लीला करत ~ मार्‌यौ ०/११५ ।
कनकमृगा सोने के हिरण : धावत ~ के पाछे १९८ ।
कनक मेखला स्वर्ण करधनी ~ कटि पीतावर १३६८ ।
कनक मेखला-झलक स्वर्ण किंकिनी की झलक सुन्दर ~ १८२७ ।
कनक-लता स्वर्णलता, हेमलता ~ सी गोरी १९०४ ।
कनखियनि कनखियों से बार-बार अवलोकि ~ २६८२ ।
कन-छेदन कर्ण-छेदन, हिन्दुओं का एक धार्मिक संस्कार जो बच्चों के प्रथम मुंडन के समय होता है : कान्ह-कुंवर कौ ~ है १८० ।
कनधार कर्णधार : राम प्रताप सत्य सीता कौ, यहै नाव ~ ९/८९ ।
कन-बज्र हीरे के कण दसन पर ~ वारों १८३७ ।
कन-मंजुत (दधि के) कणों से सुशोभित · ललित ~ कपोलनि ३५२ ।
कनिक गेहूँ (का आटा) · सरस ~ बेस न मिलै १९८० ।
कनिका कण, बूँद घट-जल छलकि कपोलनि ~ १४३९ ।
कनियाँ गोद मे · जसुमति दौरि लिए हरि ~ ४१८ ।
कनिया १ गोद · कबहुँ कि ~ लैहौं ३०११ । २ गोद में . हरि किलकत जसुदा की ~ ८१ ।
कनियारी कनक चपा का पेड, कनेर जाही जुही सेवती करना ~ १०९५ ।
कनी १ बूँद अमृत एक ~ १४७८ । २ चिनगारियाँ . उडुगन ~ उचटि इन आर्ट ३३५१ ।
कनीनिका पुतलियाँ सजल चपल ~ पल अरुन ३६४ ।
कनीर कनेर कुल केतकि किरनि ~ २९०३ ।
कनुका कण विद्रुम हेम बज्र के ~ १५४९ ।
कनेल कनेर केतकी ~ फूले २९१७ ।
कनौज कन्नौज का, (कन्नौज फर्रुखाबाद जिले मे स्थित है, जो किसी समय विस्तृत साम्राज्य की राजधानी थी) अजामिल विप्र ~ निवासी ६/४ ।
कनौडे एहसानमद, दबैल, क्रीतदास . अति आधीन सुजान ~ ६५७ ।
कन्यनि १ कन्याओं : सोरह सहस गोप ~ के ७८४ । २ कन्याओं ने सब ~ सौभरि कौ बर्‌यौ ९/८ ।
कन्या १ कन्या (रुक्मिणी) नृप ~ कौ ब्रत प्रति पार्‌यौ १/३१ । २ पुत्री · यह सीता जो जनक की ~ ९/११६ ।
कन्हाइ, कन्हाई श्री कृष्ण · उपज्यौ पूत ~ २२ ।
कपट पुं० १ छल, कपट ~ तजि पति करौ पूजा २०१६ । २ माया · खोलत नहीं ~ के फदहिं ८०३ । ~ करि धोखा देकर, छलपूर्वक : विष बाँटि लगाइ ~ — ५० । वि० १ कपटी कारो कुटिल ~ अति कान्हर ३६४७ : २. छल-युक्त कहौ ~ सुख दाना ०/४९ ।

कपट-जुवा छलपूर्ण जुआ है माया ~ १/१६५ ।
कपट-बानी कपटमयी वाणी स्याम-उर-प्रीति मुख ~ १०१९ ।
कपट-मृगा-हारी कपट मृग के द्वारा ठगे जाने वाले बालि-विरोधि ~ ८९१ ।
कपटिन १ कपटियों : ~ की चटसार ३७४९ । २ कपटी ~ कुटिल काठ की सगति १२९९ ।
कपटिनि कपटियो · सूरदास ऐसे ~ कौ २३६६ ।
कपनी कॅपकॅपी . मोहिं तो छूटति अति ~ २०९२ ।
कपाट १ किवाड, पट पलक ~ दिये २२८९ । २ फाटक पर द्वार ~ कोट भट रोके ११ ।
कपाटनि कपाटो को पलक ~ मूँदि लए री २३६२ ।
कपाल १ खोपडी . पूजा भस्म ~ ३५५६ । २ मुण्ड माल गरल ग्रीव, ~ उर ईहिं भाइ भए मदनारि १६९ ।
कपालिक एक प्रकार के साधु, कापालिक · जमन ~ जैनी ९/११ ।
कपि १ बन्दर · नारिकेल ~ कर ज्यो पायो १/७८। २ हनुमान जी : काकी ध्वजा बैठि ~ किलकिहिं १/२९ ।
कपि कटक बदरो की सेना : करि ~ चले लका कौ सारा० २८८ ।
कपि-कुल वानर दल के . करुनामय ~ हितकारी ९८१ ।
कपि-ध्वज अर्जुन के रथ की ध्वजा मे कपि का चिह्न था ~ सहित गिराऊँ १/२७० ।
कपि-पति बानरो का राजा, सुग्रीव : ईहिं गिरि पर ~ सुनियत हैं ९/६९ ।
कपिराइ हनुमान, वानरराज : कैसैं पुरी जरी ~ ९/१०५ ।
कपिराज सुग्रीव देखौ ~, भरत वै आए ९/१६८ ।
कपिल एक मुनि जिन्होने सगर के पुत्रो को भस्म कर दिया था . सुनियैं ज्ञान ~ सौं जाई ५/४ ।
कपिलास्रम कपिल के आश्रम मे . ~ लै ताकौं राख्यौ ९/९ ।
कपिस धूप के रग का : पुरइनि ~ निचोल १०४९ ।
कपिस्वरूप वानर रूप धारी पवन-पूत ~ ९/८५ ।
कपी बन्दर को : ~ ज्यौं नचावै ३९४ ।
कपूरनि कर्पूर से . मेवा मिलै ~ पूरी १२१३ ।
कपूर-मय भारी प्रचुर कपूर से युक्त हो गई धरनी-रज ~ — १०३९ ।
कपोत कबूतर खग ~, कोकिला, कीर १५४९ ।
कपोल गाल सुन्दर चारु ~ विराजत ४७३ ।
कपोलनि १ कपोलों की, गालो की . दरपन मलिन ~ सोभा २७७७ । २ कपोलो को : निरखि ~ लाजत २६२८ । ३ कपोलो पर, गालों मे : लोचन ललित ~ काजर ९१ । ~ **झलकत** कपोलों पर झलक रहे हैं : कुडल मकर ~ — १७७७ ।
कपोलैं कपोलो पर राजति सु ~ ३७०० ।
कपोलै कपोल : तजति न पानि ~ २८२६ ।
कपोलौ कपोलों मे : नागरी की पाक लीक लागी है ~ २५०७ ।
कफ कफ, बलगम · ~ कठ विरुध्यौ १/११८ ।
कबंध[1] बिना धड का शरीर, रुण्ड : परि ~ भहराइ रथनि तैं ९/१५८ ।
कबंध[2] एक राक्षस जो दनु और कश्यप का पुत्र था। कहा जाता है कि इसका मुंह इसके पेट मे था। इसी से दडकारण्य मे राम से युद्ध हुआ था । राम ने इसके हाथ पैर काट कर इसे जीता जमीन मे गाड दिया था . मारग मे ~ रिपु मार्यौ सुरपति काज सँवार्यौ सारा० २७१ ।
कबकी कब से · ~ टेरति कुंवर कन्हाई ६०९ ।
कबके कब से द्वारैं खरे रहे हैं ~ ३०५० ।
कबच युद्ध मे पहरने की लोहे की पोशाक : मान बचन सनाह ~ दै २०२६ ।
कबतैं कब से : भए ~ अधिकारी १६१८ ।
कबधौं भला कब . बिमुखनि तैं मैं ~ छूटौं १९२६ ।
कबरि वेणी . ~ ग्रथित अहिपति न सहस फन २११७ ।
कबरी वेणी, चोटी · ~ अति कमनीय सुभग सिर १०५५ । ~ **ग्रसत** चोटी को कवलित करना चाहता है : ~ — सिखडी अहिभ्रम ११२६ ।
कबरी अहि नागिन सी चोटी : ~ जनु हेम-खभ लगी ११९७ ।
कबरीहि चोटी मे : ग्रथित ~ निहारै २७०६ ।
कबहि कब मैया ~ बढैगी चोटी १७५ ।
कबहि लौं कब तक : अपने पाइनि ~ ११० ।
कबहुं १ कभी : ~ जम्हात ~ अंग मोरत २६३० । २ कभी भी : कृपन ~ नहि मानै भला ११८० । ~ **कबहुँ** कभी-कभी · ~ — आवत ये मोहि लेन २३५३ ।
कबहुँक १ कभी · ~ आँखि मूँदि कै चाहति ४१२३ । २ कभी तो . ~ चढौ तुरग १/१६१ ।
कबहूँ १ कभी · इन नैननि ~ नहिं देख्यौ ८/८६, ~ पुत्र मोह उपजावैं ११/३ । २ कभी भी : न्यारी होति न चितते ~ ३०२६ । ~ **गिरति** कभी तो गिर पडती है : ~ — धरनि पर व्याकुल १११० ।
कबहू कभी भी . ~ तीर न जैहौं सा० ल० १० ।
कबाइ पगडी . काहू कौं पटुका दयौ हो काहू कुलह ~ परि० १/७ ।
कबार कारबार, कार्य : सुर नर मुनि नहिं करत ~ ३१४० ।
कबि कवि, काव्य रचयिता : को ~ कहै निवारि २०७० ।
कबिअनि कवियों की : ~ बुद्धि नची २४४८ ।
कबिनि कवियों को : देत ~ छबि दान २७६८ । ~ **बरनत**

कविगण वर्णन करते हैं : ~ — नाम १८२३ ।

कबै १ कब : दीनबंधु ब्रजनाथ ~ मुख देखिहौं ४१८८ · २ कभी के : नतरु ~ उडि जाते २६६७ ।

कमंडली कमण्डल धारण करने वाले, ब्रह्मा : देखि गोप-मंडली ~ चितै रह्यौ ४८४ ।

कमंडलु कमण्डल : ~ हाथ विराजत माराο ३३३ ।

कमच्छ कच्छप : मच्छ ~ वाराह ।

कमठ कच्छप, कछुवा : कपत ~ सेप-वसुधा नभ ९/७४

कमनीय सुन्दर, मनोहर : रुचिर चारु ~ भाल पर १८२१ ।

कमरि कम्बल, कमरी : ओढ़नहार ~ कौ १४८७ ।

कमरिया कमरी, कम्बल : काध ~ हाथ लकुटिया ४८७ ।

कमरिहि कमरी के ही : ~ तैं सब भोग १५१५ ।

कमरी कमरी, कम्बल : वा ~ की छाँह १८१८ ।

कमल-कन कमलपत्र पर जल बिन्दु : मनहुँ ~ छायौ ३५६ ।

कमल कर कमलवत् हाथ से : कलित ~ कठ गहौ (हो) ९/३३ ।

कमल-काज कमल के लिए : ~ नृप ब्रज मारत हो ६०० ।

कमल-कोप-रस कमल के भीतर (पराग) के रस को : मानहुँ ~ चाखन १२१६ ।

कमल-कोस-वस कमल के कोष के वश मे · जैसैं मधुकर ~ २०६९ ।

कमल-कोस मैं नेत्र सम्पुट में : ~ आनि दुराऊँ १७६० ।

कमल-गुल्लाल-दल-तल्प कमल, गुलाल और कमल दल की सेज : ~ विरचै री २४५३ ।

कमल-जाल कमल समूह : मुकुलित भए ~ ६१९ ।

कमलदल-नैन कमल दल के समान नेत्र : ~मृदु वैन वदित वदन ३०७१ ।

कमल-दल-लोचन कमल के दल के समान नेत्र वाले · सुदर स्याम ~ १९४२ ।

कमल-नयन कमलवत् नेत्र वाले . ~ हरि करत कलेऊ १९८५ ।

कमल नाल कमल की डण्डी, मृणाल . छिप्यौ सो ~ मैं जाइ ६/५ ।

कमलनि १ कमलों · दादुर वसैं निकट ~ ३९६० । २ कमलों पर ~ चढि आए मानौ ससि ३२ ।

कमलनैन कमलवत् नेत्र वाले, (श्रीकृष्ण) . ~ मधुपुरी सिधारे ३६७६ ।

कमल नैन-मन कमलवत् नेत्र वाले कृष्ण के मन मे : ~ आनद उपज्यौ १९८ ।

कमल-पद कमलवत् पैर · स्याम ~ सौं अनुरागे २२७८ ।

कमल पितु पति भगिनि कमल के पिता = जल = क, पति भगिनी = ननद; अब 'क' और ननद दोनों के आदि वर्णो के मिलाने से हुआ 'कन', कन्न, कान्ह कहन लागी ~ की सब बात साο लο ६५ ।

कमल पुत्र ता सुत कर राजत ब्रह्मा के पुत्र (नारद) के हाथ मे सुशोभित, वीणा : ~ साराο ९४२ ।

कमल वदन कमल मुख जब तें ~ उन दरस्यौ २३२८ । ~ प्रकाश उनका कमल मुख प्रकाशमान हो रहा था : ~ — १०७१ ।

कमल वन कमल समूह : मधुप ~ छाँडि कै २६१३ ।

कमल लोचन १ कमल के समान नेत्र वाले (श्रीकृष्ण) . करी न प्रीति ~ मौं १/१०१ । ~ खरे खडे हुए राजीव लोचन : विस्व-पूरन-काम ~ — ९८० ।

कमल-सरदऽनूप अनुपमेय शरद के कमल के समान : नैना दोउ भृग रूप, वदन ~ १९७८ ।

कमलहिं कमल को : ~ कमल गहे लावत हैं ११९५ ।

कमला[१] लक्ष्मी : जाके पद ~ कर लीन्हे २५८२ ।

कमला[२] राधा की एक सखी का नाम ~ तारा, विमला, चदा, चद्रावलि सुकुमारि २००८ ।

कमलाकंत कमलापति, विष्णु, श्रीकृष्ण : अद्भुत लीला ~ २७७४ ।

कमला नायक लक्ष्मीपति, विष्णु : ~ त्रिभुवन दायक ४८७ ।

कमलापति लक्ष्मीपति, विष्णु : कहि धौं कमल कहाँ ~ १०९१ ।

कमलावाहन लक्ष्मी का वाहन ~ गहत कमल मों माराο ९६३ ।

कमलावली कमलों की पक्ति : विकसत ~ चले प्रपुंज चचरीक २०५ ।

कमलाहू कमला भी · ~ नित पाय पै लोटत हम तो है आभीर साराο ५६८ ।

कमलिन कमलवत् : उनकर ~ हृदय धर्‌यौ १८८२ ।

कमलिनि कमलिनी : जियहिं क्यों ~ काँटो हीन ३३६४ ।

कमाई अर्जित की है, सचय की है : तं कहा कुमनि ~ ९/१४० ।

कमायौ कमाया तिहि तिहिं यहै ~ १/१११ ।

कमुदिनि कमलिनी : ~ प्रफुल्लित १६७१ ।

कमोदिक काम को उद्दीप्त करने वाली : मनहुँ ~ मुरलि सुठाना २७८५ ।

कमोर मटका : सौंधें भर्‌यौ ~ २८६६ ।

कमोरी मटकी : माखन भरी ~ देखत २६५ ।

कयक कई एक : बूँद ~ ब्रज पर वरसाए ९३८ ।

कर्‌यौ किया . पिय पूरन काम ~ २८८९ ।

कर[१] १ सूँड : करमा ~ वारदार डुलावन ६३२ । २ सूँड के : जानु सु जघन करभ ~ आकृति २/६९ ।

कर[२] का . सखै सकल सिन्धु ~ पानी ९/११६ ।

कर[३] १ हाथ : खडग राव के ~ मैं २० ८/३ । [illegible] पर :

गोवर्धन ~ धार्यौ १/१५८। ३. हाथ मे : कछु गर कछु ~ लटक्यौ १५३१ । ४. हाथ से : मैया मै अपने ~ खैहौं ३१२। ५ हाथों मे : ~ ककन कचन थार २४। △ ~ जोरे प्रार्थना करती हुई : ~ — बिललाई सारा० ३८६। ~ देति सहारा देती है : अटपटात ~ — सुन्दरी १२०। ~ न पसारौं मॉगूँ न, याचना न करूँ : जो कहुँ ~ — ३७। ~ मलि मलि दुखी हो होकर : (देवकी) ~ — निज पतिहिं जगावति ७। ~ नावै हाथ डाले : अगिनि बरत देखत ~ — ९२४। ~ माथैं दीन्हो उसके सिर पर कृष्ण ने हाथ रखा : अभै निभै ~ — ९७८। ~ मारै हाथ मलता है, निराश या दुखी होता है : सीस धुनै ~ — १/२५७। ~ मीजि हाथ मींज कर : ~ — बोलति २८७६। ~ मीजैं हाथ मलकर, निराश होकर : ~ — पछिताइ ३१८६। ~ मीडति पछताता है : झॉकति झॅखति झरोखा बैठी ~ — ज्यौं मखियाँ ३२४०। ~ मीडैं दुखी होती है : ~ — पछताइ ४१७४। ~ मीडैं हाथ मींजती हैं : ~ — सहचरि पछितातीं ७४८। ~ राखी प्रदान किया . दोहुन कौं ~ — सा० ल० ७।

कर-अँगुरी हाथ की उँगली से . ~ रघुनाथ बताए ९/१६८।

करइयै कराई जाय का पै सेव ~ १/२३९।

करई १ करता है : (वासुदेव) पुरुष न तिय बध ~ ४। २ करते हो : हनू सोच कत ~ ९/९१। ३ करे : कहा अब ~ १/४८। ४. पैदा कर दे : सिंधु अचभौ ~ ९/७८।

कर-उतपल हस्तकमल : लालन ~ के कारन सा० ल० ७१।

कर-कंकन हाथ का कगन : कहुँ हिय-हार, कहूँ ~ ९/६४।

करकंजनि कमलवत हाथों से : रहे कच स्रमजल सो ~ सौं टरी १८८५।

करकत कसकता है, कष्ट देता है ~ घाव विकल ब्रज बनिता परि० १/२७६।

करक-बीज अनार के बीज को : ~ गहि चूँच २४४५।

कर-कमल कमलवत हाथों से : गिरि ~ लियौ १/१२१।

कर-करवार हाथ की तलवार : बरन बरन बादर बनैत अरु दामिनि ~ ४१६२।

करकस कर्कश, कठोर, सख्त : तब उपचार कियौ मै ~ २६००।

करकै कसकती है : हरि की प्रीति उर माँहिं ~ २९८७।

करज[1] नखों, नाखूनों : उरज करज निज ~ कौ, गर हार सँवारत २६५३।

करज[2] १ उँगलियों पर : ~ कर पर कमल वारत १८३५। २ उँगली · लियौ ~ की कोर ९/२३। ३ उँगली पर : तब तैं वाम ~ गिरि राख्यौ परि० १/४६। ४ उँगली मे ~ मुद्रिका, कर ककन छबि २२१९।

करज[3] ऋण, कर्ज : दूजे ~ दूरि करि दैयत नैंकु न तामें आवै १/१४२।

करजनि उँगलियों से : लोचन आँजि सुधारति ~ २०५१।

करजहि नख से। ~ राख्यौ नख पर उठा लिया : सूर स्याम गिरि ~ — ३३८।

करजीरा काला जीरा · कूट, कायफर, सोंठ, चिरइता, ~ कहुँ देखत १५२८।

कर-डोरि हाथ की कगना डोरी : तब ~ छुटै रघुपति जू ९/२५।

करत १. करके · ~ कोटि उपाइ थाकौ सा० ल० ५६। २. करता : कस बस को नास ~ है (देवकी) ४। ३ करता हूँ : सदा ~ मैं तिनकौ ध्यान २/३५। ४. करता है : सरबस हरत ~ अपने सुख ३९७९। ५ करती : ~ फिरत हमहूँ सौं चोरी २३०६। ६ करती हुई : चक्रित भई बिचार ~ यह १६११। ७ करती हैं : ~ चवाव सकल गोपीजन १६८१। ८ करते : एक दिना दधि मथन ~ ही महर घोष की रानी सारा० ४४८। ९. करते चले आ रहे हैं : यह पूजा हम ~ सदाई ८१८। १० करते हुए : जिनकौं पाप ~ दिन जाइ ६/२। ११. करते हैं सूरदास प्रभु ~ कलेवा २१२। १२ करते हो बरबस ही कत ~ रिसैंया २४५। १३ करना : ~ सिगार भुलानी १६६७। १४ करने में : भोजन ~ अधिक रुचि बाढ़ी ९१३। १५ करने लगी थी : गोविंद सौं, प्रीति ~ तबहिं क्यौं न हटकी १६६०। १६ करने लगे · आनद भरे ~ कौतूहल (नर नारि) ४। १७ कर रहा था : सुख ~ समाज ८७२। १८ कर रहा है तन मदन ~ जजाला ११८२। १९ कर रही हूँ · मैं तुव ~ बड़ाई २४८३। २० कर रहे थे · आनँद ~ सकल गिरिवर-तर ८७२। २१ कर रहे हैं · स्यामा स्याम ~ बिहार १६७९। २२ कर रहे हो कौन देव की ~ पुजाई ८१८। २३. करेगा : गिरि गोवर्धन ~ सहाइ ८७१। २४. किया करते थे : सदा ~ मद पान ९/७५। २५. किये जाने पर : ~ निरादर भई न लोल ११८०। २६ देते : तुम हमकौं उपदेस ~ हौ ३९४६। २७ बनाता है : ~ बृदा बन सौं ठाम १/७८। २८ बना देता है · ~ नैन गति पग ३६२६। ~ करत करते करते : ~ — स्रम हारौ १/१५७। ~ ख्याल विचार कर रहे हैं : मन-मन ~ — १०१९। ~ डर डर रहे हैं : देखि देखि ब्रज लोग ~ — ९३९। ~ दाह जलाता है . निसिकर ~ — दिनकर लौं ३७८३। ~ न कानैं ध्यान नहीं देती : ऐसी ~ — ३९९८। ~ पुकार रट लगाए ही रहता है : चातक ~ — ३७४९। ~ पुजाई पूजा करते हैं गोवर्धन की ~ — ९००। ~ फिरत करता घूमता है : ~ — अपनी अपनी १/३९। ~ बसीठी दूत का काम करते हैं हरि जुहारि जु ~ — १८१६। ~ बिलास आनद का उपभोग करते हैं ·

हरषि ~ — १०३६ । ~ बिहार क्रीडा करते है : जमुना-जल निर्भ्रम ~ — ११५९ । ~ वृथा व्यर्थ ही किया करते थे · ~ — तुम इन्द्र पुजाई ९१६ । ~ भए करते ही गए : गज युद्ध ~ — १/८२ । ~ भारी अत्यधिक करती हैं : परसपर कौतुहल ~ — १७५१ ~ मरत करते हुए मर रहा हूँ विनती ~ — हौं लाज १/९६ । ~ रंग हिलोर लहरों मे क्रीडा करते हुए : ~ — जमुना ११६७ । ~ सुख भारि खूब सुख भोग रहा है आपु ~ — १८४१ । ~ हिरदै फोर हृदय को वेध देती है ~ — १७९९ । ~ ही जाहीं करता ही जाएगा अह निमि पाप ~ — १२/३ । ~ हुते कर रहे थे काल्हिहिं ~ — हमरे अग ३८०८ ।

करतव काम, करतूत : ढेरौ आइ पूत को ~ ३३७ ।

करतल हाथों मे : ~ सोभित बान धनुहिया ९/१९ ।

करतहुँ करने से : जो ऐसी ~ नहिं मरे ७/२ ।

करतहु करते रहते हैं · क्रिया कर्म ~ निसि बासर १/९१ ।

करता १ कर्ता, स्रष्टा, निर्माता : जौ जानौ औरै कोउ ~ १६९२ । २ ब्रह्मा · ~ सों माँगियै चलौ १०४६ ।

करतार ईश्वर, स्वामी : पीर मेरी कौन जानै छाँडि इक ~ १३३३ ।

करतारी ताली, करतल ध्वनि . हँसत सखा ~ दै दै १५४७ ।

करताल[1] हाथ की ताली · दै ~ बजावति १३० ।

करताल[2] एक बाजा · कोउ ~ बजावत ८८० ।

करतालिका हाथ की ताली · पटकि पटकि ~ ८०९ ।

करताहि कर्ता को, ईश्वर को · कैसे चरित किए हरि अबहीं बार बार सुमिरहि ~ ३१६ ।

करति १ करत हैं · जो हम साध ~ अपनें मन १५९० । २ बना रही है · बहु-बहु भाँति ~ पकवानै ८९१ । ३ लगाती है : मनहिं ~ अनुमान १५९० । ~ अवसेरैं देर लगा रहे हैं · भई बिहाल ~ — १०८६ । ~ गान गीत गाने लगीं · कर कनक-थार तिय ~ — ९/१६६ ।

करति १ करती : या बन मैं तुम बनिज ~ हौ १५२४ । २ करती हुई · हा हा ~ पाइ हों लागति २१४१ । ३ करती हू : बचननि कौं बहुत ~ २०१ । ४ करती है सो मन मैं यह ~ बिचारि २४७६ । ५ करती हो, कर रही हो : हमहि कहौ तुम ~ कहा यह १६४४ । ६ करते हैं : कठिन कठिन कलि बीनि ~ न्यारी २६१६ । ७ करते : जननी मन अवसेरे ~ ही २००२ । ८ करने लगी है · सूरदास अब ~ चतुरई १७२३ । ९ कर रही थी : ~ अग सिंगार बैठी २२११ । १० कर रही थीं · सीता ~ बिचार मनहिं मन ९/८२ । ११ कर रही है : करुना ~ मँदोदरि रानी ९/१६० । १२ तैयार कर रही है : नेवज ~ जसोदा आतुर ८९२ । १३ तैयार कर रही थी : रोहिनि ~ अन्न भोजन तक ८९२ । १४ बना रही है भोजन ~ है बडी सभागी ८९२ । ~ अँकोर भेंट करती हूँ . कुच श्रीफल हौं ~ — १८७१ । ~ न जानी काइ काई कटनी नहीं जान पडतीं · मोहन तें न रूप रस आगरि, ~ — २७७३ । ~ रसोई खाना बनाती है . जननी आतुर ~ — १९७९ ।

करतु कर रहे है : प्यारी प्रीतम आरती ~ २८०४ । -

करतूति १ करतूत, कर्म · जब सुनिहौ ~ हमारी १३३२ । २ करतूत का दोष : सब ~ कैकई के सिर ९/५० । ३ करतूतों को, कृत्यों को जग जानै ~ कस की २/२३ । ४ करतब यह ~ करत तुम कैमें ९५१ ।

करतैं करते हीं मायाकाल कबहुँ नहि व्यापै सुमिरन ~ मोहि सारा० ३४२ ।

करतौ करता : तौ हौ आस न ~ १/२०३ ।

करधनि करधनी, कमर मे पहनने का एक गहना तनक कटि पर कनक ~ छीन छबि चमकाति १८४ ।

करन[1] हाथों मे · मो निज ~ सम्हारे सा० ल० १३ ।

करन[2] कुन्ती का सबसे बडा पुत्र जो सूर्य से उत्पन्न माना जाता है, दानी राजा कर्ण : भीषम द्रोन ~ सुनै १/२३८ ।

करन[3] १ कर्ण, कान ~ चाहत राख रोके सा० ल० ६० । २ कानों मे : ~ घूँट भरि लेत ३९६९ । ~ धरी कर्णों मे धारण कर लिया है : सुफलित ~ — ३६३३ ।

करन[4] पु० कर्त्ता · हरन ~ ससार ३०९० । क्रि० स० १ करना · ~ चहै नगी १/२१ । २ करने · हासी ~ सबै तुम आई ३९१ । ३ करने की . खेलत खेलत चित मे आई सृष्टि ~ विस्तार सारा० ५ । ४ करने के लिए : दच्छिन राज ~ सो पठाए ९/२ । ५ करने को : जो कुछ ~ कहत १/१६३ । ६ (सृष्टि) करने मे · हरन ~ समर्थ एई ३१०८ । ७ करने योग्य · अकरन ~ कर्यौ ३६४६ । ८ करने वाले हैं : हैं कृपा ~ रघुनदन ९/११५ । ९ बनाने के लिए · ब्रज की सरक ~ कित आवैं ३९८४ । ~ कारन करने और कराने वाले · ~ — महराज हैं आप ही ८/१६ । ~ विहारन क्रीडा करता है · ब्रज ही हैं नित ~ — ९५१ ।

करनख हाथ के नाखून · ~ पर गोवर्धन धारी १/२२ ।

करनखनि हाथ के नाखूनों से आपनें ~ अलक कुरवारहीं १९८८ ।

करननि सूर्य की मुकुट-कुडल किरनि ~ २३७९ ।

करन पितु कर्ण के पिता, सूर्य : बैरी ~ हित जाम सा० ल० ८८ ।

करन फूल कर्णफूल (कान का आभूषण) : ~ पहिराए ३६०१ ।

गोवर्धन ~ धार्‌यौ १/१५८। ३ हाथ मे : कछु गर कछु ~ लटक्यौ १५३१ । ४ हाथ से : मैया मै अपनै ~ खैहौं ३१२। ५ हाथों मे : ~ ककन कचन थार २४। △ ~ जोरें प्रार्थना करती हुई : ~ — बिललाई सारा० ३८६। ~ देति सहारा देती है : अटपटात ~ — सुन्दरी १२०। ~ न पसारौं मॉगूँन, याचना न करूँ . जो कहुँ ~ — ३७। ~ मलि मलि दुखी हो होकर (देवकी) ~ — निज पतिहिं जगावति ७। ~ नावै हाथ डाले : अगिनि वरत देखत ~ — ९२४। ~ माथैं दीन्हो उसके सिर पर कृष्ण ने हाथ रखा : अभै निभै ~ — ९७८। ~ मारै हाथ मलता है, निराश या दुखी होता है : सीस धुनै ~ — १/२५७। ~ मीजि हाथ मींज कर : ~ — बोलति २८७६। ~ मींजैं हाथ मलकर, निराश होकर . ~ — पछिताइ ३१८६। ~ मीडति पछताता है : भाँकति भँखति भरोखा बैठीं ~ — ज्यौं मखियाँ ३२४०। ~ मीडैं दुखी होती है : ~ — पछताइ ४१७४। ~ मीडैं हाथ मींजती हैं : ~ — सहचरि पछिताई ७४८। ~ राखी प्रदान किया : दोहुन कौं ~ — सा० ल० ७।

कर-अँगुरी हाथ की उँगली से ~ रघुनाथ बताए ९/१६८।

करइयै कराई जाय का पै सेव ~ १/२३९।

करई १. करता है · (वासुदेव) पुरुष न तिय वध ~ ४। २. करते हो : हनू सोच कत ~ ९/९९। ३ करे : कहा अब ~ १/४८। ४ पैदा कर दे : सिंधु अचभौ ~ ९/७८।

कर-उतपल हस्तकमल : लालन ~ के कारन सा० ल० ७९।

कर-कंकन हाथ का कगन : कहुँ हिय-हार, कहुँ ~ ९/६४।

करकंजनि कमलवत् हाथों से : रहे कच स्रमजल सो ~ सौं टरी १८८५।

करकत कसकता है, कष्ट देता है ~ घाव बिकल ब्रज वनिता परि० १/२७६।

करक-बीज अनार के बीज को : ~ गहि चूँच २४४५।

कर-कमल कमलवत् हाथों से · गिरि ~ लियौ १/१२१।

कर-करवार हाथ की तलवार . वरन वरन बादर बनैत अरु दामिनि ~ ४१६२।

करकस कर्कश, कठोर, सख्त : तब उपचार कियौ मैं ~ २६००।

करकै कसकती है : हरि की प्रीति उर माँहिं ~ २९८७।

करज[1] नखों, नाखूनों : उरज करज निज ~ कौ, गर हार सँवारत २६५३।

करज[2] १ उँगलियों पर : ~ कर पर कमल वारत १८३५। २ उँगली · लियौ ~ की कोर ९/७३। ३ उँगली पर : तब तैं वाम ~ गिरि राख्यौ परि० १/४६। ४ उँगली मे ~ मुद्रिका, कर ककन छबि २२१९।

करज[3] ऋण, कर्ज : दूजे ~ दूरि करि दैयत नैंकु न तामैं आवै १/१४२।

करजनि उँगलियों से : लोचन आँजि सुधारति ~ २०५१।

करजहिं नख से। ~ राख्यौ नख पर उठा लिया . सूर स्याम गिरि ~ — ३३८।

करजीरा काला जीरा कूट, कायफर, सोंठ, चिरइता, ~ कहुँ देखत १५२८।

कर-डोरि हाथ की कगना-डोरी · तब ~ छुटै रघुपति जू ९/२५।

करत १. करके · ~ कोटि उपाइ थाकौ सा० ल० ५६। २ करता : कस वस को नास ~ है (देवकी) ४। ३ करता हूँ : सदा ~ मैं तिनकौ ध्यान २/३५। ४ करता है · सरबस हरत ~ अपने सुख ३९७९। ५ करती : ~ फिरत हमहूँ सौं चोरी २३०६। ६ करती हुई चक्रित भई बिचार ~ यह १६११। ७ करती हैं : ~ चवाव सकल गोपीजन १६८१। ८ करते : एक दिना दधि मथन ~ ही महर घोष की रानी सारा० ४४८। ९. करते चले आ रहे हैं · यह पूजा हम ~ सदाई ८१८। १० करते हुए : जिनकौं पाप ~ दिन जाइ ६/२। ११ करते हैं सूरदास प्रभु ~ कलेवा २१२। १२ करते हो बरबस ही कत ~ रिसैंया २४५ १३ करना · ~ सिंगार भुलानौ १६६७। १४ करने मैं भोजन ~ अधिक रुचि बाढ़ी ९१३। १५ करने लगी · गोविंद सौं, प्रीति ~ तबहिं क्यौं न हटकी १६६०। करने लगे : आनद भरे ~ कौतूहल (नर नारि) ४। कर रहा था . सुख ~ समाज ८७२। १८. कर रह तन मदन ~ जजाला ११८२। १९ कर रही हू ~ बडाई २४८३। २० कर रहे थे · आनँद ~ गिरिवर तर ८७२। २१ कर रहे हैं · स्यामा विहार १६७९। २२ कर रहे हो कौन देव की ८१८। २३. करेगा : गिरि गोबर्धन ~ सहाइ किया करते थे : सदा ~ मद पान ९/७५। २ पर · ~ निरादर भई न लोल ११८०। २६ हमकौं उपदेस ~ हौ ३९४६। २७ बनाता है वन सौं ठाम १/७६। २८ बना देता है : ~ ३६२६। ~ करत करते करते : ~ — १/१५७। ~ ख्याल विचार कर रहे हैं १०१९। ~ डर डर रहे हैं . देखि देखि ९३९। ~ दाह जलाता है . निसिकर ~ ३७८३। ~ न कानैं ध्यान नहीं देते ३९९८। ~ पुकार रट लगाए ही रहता ३७४९। ~ पुजाई पूजा करते हैं · ९००। ~ फिरत करता घूमता है : १/३९। ~ बसीठी दूत का काम कर ~ — १८१६। ~ बिलास आन

करषन आकर्षित करना : हरष हरष ~ चित चाहत सा० ल० ५७।

करषा स्पर्धा : राति द्विवस बरषत भर लाए दिन दूनी ~ सौ ४११६।

करषि १. खींचकर : केस गहि ~ जमुना धार डारि ३०८२। २. नष्ट कर के : सकुचासन कुल सील ~ करि ३५३०।

करषी खींच लेती है : तियनि की देह-दसा ~ री १३८४।

करषे १. उत्पन्न करते रहते हैं : दुष्टन के उर सालक ~ ६०७। २. खींचने : ~ तैं न नई ३११८।

करषैं (उत्पन्न) करती हैं : ~ भौंह भाव भेदनि बहु परि० १/१३२।

करषै १. खींच ले गई · चित चतुराई ~ री १३७। २. खींचती हैं : जसुमति रिस करि-करि रजु ~ ३४२। ३ प्राप्त कर रही है : हरि क्रीडा सुख ~ २८६१।

करष्यौ १ खिंच गया : तब भोजन पर मन ~ १८३। २. खींच लिया था : जिहि भुज परसु राम बल ~ ९/९३। ३ खींचा : पुच्छ तुच्छ करि ~ ३१०९।

करहि[1] १. हाथ में : बैसी सारँग ~ लिए ३३६५। २. हाथ से : ~ छुवत तुव जोग जरैगौ ३६१९।

करहि[2] १ कर (उतार) रही है : आरति ~ बनाइ ९/२९। २. करैं : तब कह्यौ हरि चलहु सब मिलि मारि ~ विनास ४२७। ३. करते हैं · तुम सौं प्रीति ~ जो धीर ११८०।

करहिगे कर देंगे : छमा ~ श्री सुन्दर बर ९४६।

करहीं हाथ जोडकर : ~ बदन कीनौ ३८०९।

करहु करो : दिन आए अब ~ चँडाई ८११। ~ **निठोल** आनन्द करो : ब्रज सुबस ~ — ४१३५।

करहू करो : जनि हठ ~ सारँग नैनी २७९८।

कराइ कराकर : जज्ञ ~ प्रयाग न्हवायौ ६/८।

कराइयौ कराया : जुवा जुवति खिलाइ कुल ब्योहार सकल ~ ४१८६।

कराई १. करा दी · भोजन ही मैं साँझ ~ ४७१। २ कराया · रिषि अभिषेक ~ ९/१७।

कराऊँ १ कराऊँ · तुम सौं सुत पय-पान ~ १६१९। २. कराती हूँ : सुख अबहिं ~ २१०८।

कराऊँगी बनाऊँगा, कर लूँगा · जीवन सफल ~ २४९३।

कराए १ करा दिए : दनुज बम निरवस ~ ३०९५। २. करा दिया है : नैननि हरि कौं निठुर ~ २३३४। ३ किये

कराये करवाया : बालक आय देवकी जाने अस्तन पान ~ सारा० ७६७।

करायौ १. कराया . रिषि ता नृप सौं यज्ञ ~ ६/५। २. किया, कर लिया . मन कौ सुफल ~ १६९५। ३. दिया · उलटो नाम जपत अब बीत्यो पुनि उपदेश ~ सारा० १५३।

करार किनारे, तट पर : मैं तो स्याम स्याम कहि टेरति कालिंदी कें ~ ३२४३।

करारत कर्कश स्वर करता है · कदम ~ काग ११२६।

करारनि किनारे, तट पर · जमुना के कान्ह ~ ठाढे परि० १/११०।

करारि घाट, तट नदि ज्यौं बोरति कतहिं ~ ७५९१।

करारी प्रचड, तेज, प्रबल : भपटति लपट ~ ५९८।

कराल कठिन, कठोर . सुनि जातना ~ १/१८९।

करावत १. कराते हैं : जे हरि-सुरति ~ २/१७ : २ कराते थे · आनँद प्रकट ~ ३२०१। ३ बदल रहे हो : आस निरास ~ १०२१।

करावति कराती हो . एते पर तुम मान ~ २०९६।

करावति १. बनाती है : तब आपुन कौं निठुर ~ २०७६। २. कराती : अस्तन पान ~ है ७३। ३. कराती है : तुम सौं टहल ~ ५१३। ४ कराती हो पुनि पुनि क्रोध ~ री २०१३। ५. करा रही थी : एक दिन अस्तन पान ~ सारा० ४२७७।

करावन कराने के लिए पूतना पय-पान ~ प्रेम सहित चलि आई सारा० ७४६।

करावनौ कर रहे हों कुटल लोल कपोलनि ढिग मनु, रवि-परकास ~ २८३२।

करावहु कराओ मोकौं तुम अब जज्ञ ~ १२/५।

करावैं कराए : को अब सुरति ~ १/१७।

करावौ कराओ . मगल-गान ~ ९५।

कराहि १. करते हैं तिनकी सेव ~ ४२७३। २. पूर्ण करें : यह लालसा अधिय मेरैं जिय जो जगदीस ~ ७५।

करि[1] हाथी . ज्यौं ~ हेरि सगाल ९/१०४।

करि[2] १. हाथ मे . नहिं ~ लकुटि १/४८। २ बनाकर : अपनौ ~ प्रतिपाली ३८२३।

करि[3] क्रि० स०१ कर सूर स्याम भोजन ~ के सुचि जल सौं बदन पखारे ४१९। २. करके · भोजन ~ बन कौं चले २०९। ३. कर लेने पर ~ अस्नान प्रात जमुना कौं

अपने कर ~ काल हँकार्यौ ९/४८। ~ आदर आदरपूर्वक : हलधर लियौ बुलाइ कै, मोहन ~ — १९८०। ~ करि कर करके. केसैहुँ ~ — दिन गयौ १९६३। ~ करिके लगा-लगाकर गज बल ~ — थकि रह्यौ ८/२। ~ कोइ कोई करता है : काहू विधि ~ — १००८। ~ खैंचि खींचकर · हल ~ — करौं नदि नारौ ४२०३। ~ गारौ गर्व करके। जोबन धन ताकौ ~ — १५२४। ~ छाए छाया रहता है जद्यपि तून ~ — १/२४३। ~ जोरे ठान लिया : जुद्ध प्रगट ~ — १/३१। ~ डार्यौ कर डाला · रावन टूक टूक ~ — ९/१५९। ~ दियौ कर दिया है हमहूँ ~ — आगैं २२३३। ~ दीन्हीं कर दी अपनी ज्ञाति प्रकट ~ — ९०७। ~ दीन्हे कर दिये. द्वै लोचन तनु मै ~ — १८४९। ~ पाए कर लिया है : उन अप बस ~ — २२७०। ~ प्रतिपाल हमारी रक्षा कीजिए कर सौं कर धरि ~ — ११८०। ~ बान्यौ करके बनाया बेसन दारि-चनक ~ — ८९२। ~ भाव कलात्मकता पूर्वक : खेलत मैं ~ — चलत ६७१। ~ मानहु जानकर मानो, समझकर मानो : मेरी कही सत्य ~ — ८९९। ~ राखी बना रखा है. बिनु पावस पावस ~ — ३५७७। ~ राखे रखा जाये, सधारण किया जाये : क्यौ ~ — प्रान २७४२। ~ लाए लगा लिया : बाइ ह्वै ~ — ४२८८। ~ लियौ कर लिया : यहै बहानौ ~ — १९६६। ~ लीजत कर लेते हैं · बहुरि नयौ ~ — ४२८४। ~ लीजै कर लीजिए : सूर स्याम लेखौ ~ — १५२५। ~ लीन्हे कर लिए हैं : ते इन बस ~ — २२८२। ~ लीन्हौ कर लिया है : इनकौं ~ — अपने तुम १०२३। ~ लेखि कर लो : जीवन जन्म सफल ~ — ११८०। ~ लेखे कर लिया. स्तुति करी आपु वर पायौ जन्म सफल ~ — सारा० १६८। ~ लेखौं समझती हू जनम-सफल ~ — ९/३५। ~ लेख्यौ समझा : जीवन जन्म सफल ~ — ९११। ~ लेत कर देते हो. तव ~ — सहैया ८७५। ~ सँपूरन पूरा बना कर एक भोजन ~ — ९९५। ~ सकै कर सकेगी : क्यौ ~ — विषय जल तीरथ ३८७८। ~ सौंप सौंपकर · सति भामा ~ — पिता कौं ४१९१।

करि[४] नाग बेल, ताम्बूल. सुधा गेह मे ~ की सोभा सा० ल० ९७।

करिऐ १. करे : कहा मुख लै तुन्हैं विनै ~ १/११०। २ कीजिए : मथुरा छाँडि अनत रति ~ ३०९७।

करिनि १. हथिनियों के : मनौ मत्त गजराज बिराजत ~ जूथ सँग लाए ४२०१। २. हथिनी · मानौ भ्रज तैं ~ चली मद-माती हो २८६१।

करि बिपरीत धारा धारा को उलटा करो, राधा . ~ सा० ल० ८७।

करिबे १ करना · ~ होइ सु करौ उपाइ ७/२। २. करने : कोउ न समरथ अघ ~ कौ १/१३८। ३ करेंगे : ~ बहुत प्रसग सारा० ९९६। ४. रचने (को) : दियौ बरदान सृष्टि ~ कौ अस्तुति कर प्रमान सारा० ५२। ~ कौं लागी करने लगी थीं. अगमरदन ~ — १०००।

करिबै करें : हमहू कछु ~ गृह काज ११८०।

करिबौ १ करना झूठौ सब जतननि कौ ~ ३३५७। २ करने की रस बस ~ कान सा० ल० ६७।

करिय किया आपु ~ प्रकास १०६२।

करियत १ करते ~ है अनुमान एक मन ३६५७। २ करते है. मन भाँवरि ~ नागर पर परि० १/१३५। ३ कर रहा हू. तातैं ~ साथ ६७४।

करिया[१] करने योग्य हैं, किये जा सकते हे : मनमथ कोटि वारने ~ ६८८।

करिया[२] १ खेने वाले, (केवट) : सूर प्रभु निठुर ~ कहाँ है रहे १०१९। २ पतवार. यौं डालैं ज्यौं ~ बिन नाइ ३३३३।

करियै कीजिए. आप छमा ~ दिवराई २२९।

करियैं १ करे आवहु वहै मतौ री ~ २२२८। २ कीजिए ता पाछै ~ बरियाई १५५४। ~ कहा क्या किया जाए ~ — लाज मरियै जब १/१७३।

करियो करना. गोपिन सौं बिनती करि कहियो नितप्रति मन सुधि ~ सारा० ५४९।

करियौ करना · बधू, ~ राज सँभारे ९/५४।

करिवे करने के लिए अस्तुति ~ गये स्वर्ग को अभय हाथ करि दीन्हो सारा० ४५५।

करिहै १ करेंगी सब तिहारौ कह्यौ ~ ४१३५। २ करेंगे : कस बधन येई ~ ८५। ~ कानि मर्यादा का पालन करेंगी सजन बधु की ~ — ११८०।

करिहै १ करेगा मोपै ~ घात ६०। २ करेगी मेरौ कह्यौ न जौ तू ~ १/२२९। ३ करोगी : ~ कबहि कलोलै २८२६। ४ करोगे. रोकि कहा ~ खल खालहि ८०२।

करिहौं १ करूँगा : सुरभी कौं पय पान न ~ १९३। २ करूँगी अपनैं ही बस पिय कौ ~ २०७२।

करिहौ १ करो : जनि कछु प्रिया, सोच मन ~ ९/३४। २ करोगी दान देति की झगरौ ~ १५४४। ३. करोगे सगुन लै कहा ~ ८/१०। ~ मोचन छुडाओगे, मुक्त करोगे. कब धौं ~ — १९४२।

करी[१] १. गजराज (को) : लीन्हौ राखि ~ १/१६। २ पुंडरीक, कमल ~ छुवाइ दयौ माथे उन सा० ल० ८२।

करी[७] १ की ~ कृपा दीन्हो करुणा निधि सारा० १३५ । २ करना है बरजें वहे ~ री ७३६१ । ३ पालन किया अब लौं ~ लोक-मरजादा १६८९ । ४ बनाई · सेज्या सोभ ~ ३६३३ । ~ **अपराध छमाई** अपराध क्षमा करवाया ~ — १०१४ । ~ **अवज्ञा** उपेक्षा की थी ब्रज बासिनी सब ~ — ९२५ । ~ **गुहारि** दुहाई दी मनसिज ~ — ३६६२ । ~ **पुकार** पुकार लगाई : ~ — जाइ आठौं सुर ९४२ । ~ **बड़ी बिपरीति** बड़ा उल्टा काम किया है ~ — २०१३ । ~ **मन इच्छा** मनोकामना पूरी की · कुब्ज भुज परसि ~ — १०३७ । ~ **मिठाई** मिष्टान्न बनाया पाँच दिननि लौं ~ — ९०० । ~ **मुखारी** दातून किया, मुख साफ किया ~ — अतुराई १९६५ । ~ **लर-काइ** बचकानापन किया ओछी बुद्धि ~ — ९७५ । ~ **सु करी** किया सो किया : जो कुछ आजु ~ — ७७३३ ।

करीजै कीजिए अब मोपै प्रभु कृपा ~ ३/१३ ।

करील एक जगली झाडी जिसमे पत्तियाँ नहीं होती । पतली पतली हरे रग की शाखाएँ फूटती हैं । इसमे छोटे छोटे काँटे भी होते ह क्यों ~ फल भावै १/१६८ ।

करील-फल करील का फल, टेंटी . क्यों ~ भावै १/१६८ ।

करु करो . राधिका तजि मान मया ~ ७८१७ । ~ **जुहारा** प्रणाम करो · यहै वैदेहि है, ~ — ९/७६ ।

करुइ कटवी फलनि माँझ ज्यौं ~ तोमरी ३४४४ ।

करुई कडवी ज्यौं ~ ककरी ३९८८ ।

करुखिअनि तिरछी चितवन मे नैन प्रान सुख भयौ चितए ~ अनखनि दिये २०६९ ।

करुन करुणा · ~ मय पद कमल ११/२ ।

करुना[१] १. करुणा तव ~ हरि-हृदय भई ११२९ । २ करुण विलाप : ~ करति मंदोदरि रानी ९/१६० । ३ दया के : ~ सरिता भए १/२१ । ४ दु ख देखि सखी ~ अति इनकी ३८३७ । ५. दु खी है अति ~ रघुनाथ गुसाई ९/६३ । ~ **करि** कृपा करके सूर स्याम ~ — ताकौं ९६३ । ~ **करिजोहि** दया की दृष्टि से देखो करहु कृपा ~ — ११८० । ~ **करैं** दुखी होती है ~ — जसोदा माता ३१४० । ~ **मिटी** विरह-जन्य दु ख दूर हो गया कुच जुग चक्रवाक ~ — ११३६ ।

करुना[२] राधा की एक सखी का नाम : ~, ललना, लोभाऽनूप २००८ ।

करुनाकर करुणानिधान · कान्हहिं कृपा करौ ~ ८१७ ।

करुनाकरन करुणा करने वाले, दयालु करन दडवत मैं तुम्हैं ~ — ४१०८ ।

करुना-कातर दयार्द्र (होकर) · अति ~ — करुनामय ८/३ ।

करुनाधाम करुणा निधान · 'सूर' प्रभु स्याम तुव नाम ~ १९४७ ।

करुनानाथ करुणा नाथ होहु ~ बधू ४१४० ।

करुनानिधि दया के सागर, दयानिधान : दीन बधु ~ हौ प्रभु ३८५ ।

करुना बैन करुणामयी वाणी : सुनत ~ ८७० ।

करुनामय करुणामय, करुणाशील, दयार्द्र सबके ईस, परम ~ ९/१३४ ।

करुनामयी जिसका हृदय करुणा से भरा हो, करुणा मे युक्त : ~ मातु सो ४/१० ।

करुनामहि करुणामय ने . सोउ दीन्हे ~ ७१३० ।

करुनामूल करुणा के सिन्धु सुनौ ~ १/९९ ।

करुना-सरिता दया की नदी : स्रवन सुनत ~ भए, बाढ्यौ बसन उमगी १/२१ ।

करुनासिंधु दया के सागर, करुणानिधि . करनी ~ की १/४ ।

करुवावत कडवा लगने का सा मुंह बनाते हैं . बिस्सभर नगदीम जगत गुरु, परमत मुख ~ ८० ।

करुवौ तीक्ष्ण, कडवे ~ बचन स्रवन-सुनि मेरौ ९/१०४ ।

करे १ करता था अह निसि हरि हरि सुमिरन ~ ४७७४ । २. करता है जैसौ ~ सो तैसौं लहै ५/४ । ३ करते ही : पग सौ परस ~ ९/४१ । ४. करके : ~ कहति हौ लीकौ १७०७ । ५. करेगी : कहा ~ वह मान ७४२५ । ६. किया · ये ~ ह कौने आन ४८४ । ७ किये : यहै जानि अपराध ~ मैं १/१२५ । ८ धारण करके (हरि) तुम माँग्यो इहि भेष ~ ८ । ~ **अलोल** स्थिर करो नैना री ~ — ७७९७ ।

करेउ किया . मिख बिधान तप ~ बहुत दिन मारा० १००७ ।

करेजैं कलेजे को · छिदि छिदि जाति ~ ३८४७ ।

करेजौ कलेजा, हृदय तिनकौ कठिन ~ मरि री ३७७४ ।

करेरनि कडी चोटों मे . निरगुन कठिन ~ ३८८९ ।

करेरे कठोर : तेऊ देखियत ~ ३१८९ ।

करेहु करती हो : हम आतुर है माँगहीं, तुम नहिं नाहिं ~ परि० १/३८ ।

करैं १ करता है, कर रहा है देत न मक ~ ७४ । २ करती थीं ये जोइ कहें ~ हम मोई ७७८९ । ३ करती है सब नारि ~ हाँसी ३६५३ । ४ करते थे ~ सुरनि की कृष्न सहाई ३/९ । ५ करते ह . ~ उपाइ सो बिरथा जाइ ७/७ । ६ कर दें . ~ उनहिं घर घर के री ७७४४ । ७ करने लगीं · अति हित मगल गान ~ ९८७ । ८ करने मे · कबहूँ पाप ~ पावत धन ७/१५ । ९ कर लें : अब ये ~ आपनैं मन सुख ८३३ । १० करें : मधुकर हम सब कहा ~ ३८६३, आशाभग ~ हम क्यौं करि ३७१० । ११ करेंगे अब किन सुरति ~ गोकुल की ३६९५ । ~ **बड़ाई** आदर देंगे, बडाई करेंगे वे क्यौं ~ — १०७४ ।

करैंगी करेंगी वैसेई हम मान ~ ३७९५।
करैंगे करेंगे • तबहिं ~ वै जपती २०९२।
करै[1] कच्ची . को जानै मीठी अरु ~ परि० २/३५।
करै[2] १ करता है : हरि की भक्ति ~ जो कोई ९/३। २ करती है जतन ~ अरु पोषै १/११७। ३ कर दिया, बना दिया : आप समान ~ १/३५। ४ करे • कोऊ कोटि ~ नहिं छूटै २३९६, सुनहु सूर-प्रभु, कितिक बात यह ~ न पूरन काम। ५. करने लगे • क्यो प्रभु पान ~ री २८२१, जौ पति ~ कोटि अघकर्म १०१५। ६. कर लेगा, बिगाड लेगा कहा रिसाइ ~ कोऊ मेरौ १६६८। ७ करेंगे कहन देहु कह ~ हमारौ ३८७० । ८ करेगा • मोकौं कौन धारना ~ ९/९ । ९. करेगी . कीधौं नही ~ री २०८७ । १० बनाये को ~ बन गेहु ३९२३। ~ **उजियार** उजाला करे दीपक वारि ~ — ४३००। ~ **कहति है लीकैं** लकीर खीचकर कहती है ~ — १८२६। ~ **खई** झगडा मचाती है नैंकु रहौ तौ ~ — १७२०। **भेद** ~ छिपावे — ~ जौ लाडिली १९५७।
करैगी करेगी : कबहु राधिका मान ~ २५२५।
करैगौ करेगा . कहा ~ कोउ १६६३।
करैया करने वाला जब तैं ब्रज अवतार धर्यौ इन कोउ नहि घात ~ ४२८।
करौं करता हू : अरु गोपिन सौं अग सु अग करि नित प्रति ~ विनोद-सारा० ५८५।
करोटनि कटोरी-भर : अँसुवा ढुर ढुर परत ~ १८७।
करोटी करवट . एक दिना हरि लई ~ सारा० ४२१।
करोर करोड • देहि लाख ~ ४०१९।
करोरनि करोडो गुना, बहुत अधिक . सुनि दुख होत ~ ३३३०।
करोरी करोडों मिटत नहीं कोउ करौ ~ ३३८८।
करोवत १. कुरेदते हैं, खरोचते है धरनी नखनि ~ २१४६ २ खरोंच रहे हो क्यौं धरनी पग नखनि ~ २४८४/
करोवति खरोच रही : नख धरनी ~ है २७९१।
करौं १ कर डालूँगी . ~ प्रान कौ घात ९/७७। २ करता हूँ दिन दिन इनकी ~ बडाइ ३०४१, तदपि उपाई ~ हित तेरैं ९/३। ३ करूँ . ~ कहा मै जान दए री २३६२, कहा ~ मैं हारि धरी जिय २३६६ । ४ पहुँचा दूँगा . असुर ~ जम हाथ १६१८। ५ बनाऊँगी हृदय माँझ पिय घर ~ ११११। ६ मचा दूँ प्रलय ~ छिन माहीं ९/१३२। ~ **अपघात** आत्महत्या कर लूँगी पावक रचौं ~ — ४१७१।
करौंगी करूँगी . सूरदास तन यौंऽब ~ ३१९६।
करौंदनि करौंदों और ~ की रुचि न्यारी २४१।
करौ १ करती हो • बृथा क्रोध तिय क्यौं ~ २४१७। २. करते हो : क्यौं न ~ मन भायौ १६८४। ३ कर लो . कमल नैन हरि ~ कलेवा २१२। ४ करो : छमा ~ तौ देउँ बताइ ३/५। ५ करे : केतौ भोग ~ किन कोइ ९/८। ६ पूर्ण करूँगी कह्यौ मनोरथ तेरौ ~ ९/९ । ७. बदलो आस निरास ~ जनि साईं १०२५ । ८ बनाओ • तुरत ~ ज्यौनार ८३१। ~ **सम्हारी** सहायता करो • अब यह ~ — २०४६। ~ **सुख** आनद मनाओ श्री मुख कह्यौ ~ — जाई ९५०।
करौगी करोगी सूर राधिका कहत सखिनि सौं बहुरि आइ घर काज ~ १७५०।
करौगे करोगे : कहा ~ आइ ३९४३।
करौती छोटा पात्र काँच ~ जल ज्यौं जानति २७५५।
कर्ण कुन्ती का सबसे बडा पुत्र जो उसके कन्याकाल मे सूर्य के अश से उत्पन्न कहा जाता है . भीष्म ~ अरु द्रोण युधिष्ठिर सारा० ७१२।
कर्तरि कैंची ~ तीछन बहु विख्यात १/९०।
कर्त्ता निर्माता, स्रष्टा • सूर स्याम त्रिभुवन कौ ~ ३७७।
कर्दम स्वायभुव मन्वतरि के एक प्रजापति जिनकी पत्नी का नाम देवहूति और पुत्र का नाम कपिल देव था। छाया से उत्पन्न होने के कारण इनका नाम कर्दम पडा • देवहुती ~ को दीन्हो तिन कीन्हो तप भारी सारा० ५१।
कर्दम-तिय कर्दम की पत्नी, देवहूति • एक ~ भई ३/१२।
कर्म-कृत-रेखा भाग्य की रेखा हौं पुनि मानि ~ ९/३४।
कर्म-जोग कर्म योग ~ कौ करैं ३/१३।
कर्मन कर्मों का ~ भोग अभागे १/६१।
कर्मना कर्म से मनसा बाचा और ~ ३९६९।
कर्मनि कर्मों की। △ ~ **की मोटी** अत्यन्त भाग्यशालिनी भाग बडे ~ — १६५।
कर्म-फंद कर्म का फदा : ~ सब काटै ३४६।
कर्म-भवन कर्म स्थान ~ के ईस सनीचर ८६।
कर्म-भोग कर्म का फल जो कहौ ~ जब करिहैं ७/२।
कर्मयोग मन की शुद्धि के लिए किये जाने वाले धार्मिक कर्म • ~ पुनि ज्ञान उपासन सबही भ्रम भरमायौ सारा० ११०२।
कर्मरेख भाग्य का लेखा वाकौं न्याउ दोष सब हमकौं ~ को जानै ४०९३।
कर्मवाद अन्त.करण की शुद्धि के लिए किया जाने वाला धार्मिक कर्म ~ थापन को प्रगटे पृश्निगर्भ अवतार सारा० ३२१।
कर्महुँ कर्म से भी . यहै बात ~ तैं मोटी १३४७।
कर्मा कर्म • बेद-विहित-विधि ~ १/१०४।
कर्यौ १ करता था तासौं हेत अधिक ~ ६/४। २ करते हैं इद्रादिक जातैं भय ~ ७/२ । ३ किया, कर दिया : कछु

इक मत्र ~ चदन मैं ३६३९ । ४ कर वैठी मान ~ तिय विनु अपराधहिं २४२२ । ५ वना . रचना सेतु ~ ९/१२२ ।
कलंकहि कलक को मानौ चद ~ धोवत ७३३ ।
कलंकि कल्की . हरि करिहैं ~ अवतार १२/३ ।
कलंकी कलकयुक्त . ~ अरु मन मलिन १/१२८ ।
कल[1] चैन, शाति हरि देखें विन ~ न परै १६६६ ।
कल[2] १ मधुर कटि केहरि, कोकिल ~ वानी ९/६३ । २ मनोहर, सुन्दर . इदीवर सुत ~ कपोल मे है सा० ल० ६ । ३ मधुर ध्वनि या स्वर मे अरुन अधर छवि दसन विराजत, जव गावत ~ मदन ४७६ । ~ **पूरत** मधुर स्वर भरते हुए • मुरली अधर धरे ~ — १८०९ ।
कल[3] कला . राधे आज मदन मद मार्ती, सोहत सुन्दर सग स्याम के खरचत कोट काम ~ याती सा० ल० ४८ ।
कलई पालिश । △ **आई उघरि कनक** ~ सच्चा रूप सामने आ गया, वास्तविकता ज्ञात हो गई — ~ सी ३१८६ ।
कलऊ समस्त कलाओं के निधान सूरदास क्यौं वूडत ~ ९/१२३ ।
कलत्र पत्नी पुत्र-~ मोह सव त्याग ६/४ ।
कलप[1] दु ख : मेटि ~ तू होहि कलपतरु २८१७ ।
कलप[2] कल्प के पलक ~ सम जान २३४६ ।
कलपत दु:खी होते है • ~ दोउ कर जोर ४७७ ।
कलपतर कल्पवृक्ष : द्वारैं आइ भयौ जु ~ ४२३७ ।
कलपतरु कल्पवृक्ष : मेटि कलप तू होहि ~ २८१७ ।
कलप-तरुवर-मूल कल्पवृक्ष के नीचे . ~ सुभग जमुना कूल ९८० ।
कलप-तरोवर-विरवा कल्प वृक्ष का विरवा मानहुं ~ अवनि रच्यौ सुरभूप १२१६ ।
कलपति तडप रही है : 'सूरदास' ये ~ वनिता ४०३९ ।
कलपवर महाकल्प के समान पल अतर चलि जात ~ १६६५ ।
कलपै दुखी होता है, चिंता करता है नो ~ सो कापो १/३२ ।
कल वल[1] कल वल शब्द . ~ वचन तोतरे वोलै ११७ । ~ **करि** चपलतापूर्वक • ~ — वोलनि ९१ ।
कल-वल[2] १ युक्ति . काम ~ छोर सा० ल० ६० । २ युक्ति और वल से ~ छल करि मारि तुरत हीं १३९६ ।
कलमलाति वेचैन रहती हैं निसि दिन ~ सुनि सजनी ३२३८ ।
कलमलैं कलप रहे हैं • दरस विनु ~ २४५३ ।
कलमष मैल, पाप : तौ कत कलि ~ लूटन कौं १/२११ ।
कलरव ध्वनि, (मधुर) शब्द : कनक किंकिनि नूपुर ~ १०५५ ।
कल रासि कला की राशि हैं : चतुरई रासि, छलरासि, ~ १८०३ ।
कलस कलश : हृदय उमँगि कुच ~ प्रगट भए १८८० ।
कलस-आभूषन मगल कलश एव आभूषण . सुवरन लक ~ ९/१२४ ।
कलसा पर ससि भान उरोजों पर सूर्य सदृश तेजस्वी ललाट और चद्रमा सदृश मुख है . ~ २७४२ ।
कलहस १ सुदर हस, राजहस क्रीडत जुग ~ १२०४ । २ सुन्दर हस की तवहि ~ गनि गे री २४५३ ।
कलहसनि सुन्दर हसों, राज हसों ~ के जोरा ३०४३ ।
कलह १ खलभली : गहि पिय के मुर्जनि मैं ~ मोहन मची ११९१ । २ झगडा : आज कछू वर ~ मयौ री २४२९ । ३ पीडा, दर्द . प्रगट व्रह्म नित वसत द्वारका ~ भूमि को काढयो सारा० ८३८ । ~ **नाथ्यौ** झगडा मचा रखा है . काहे कों ~ — ३७२ । ~ **मच्यौ** द्वन्द्व छिड गया काम-कटक फिर ~ — ११३९ ।
कलहनी पति पिता पुत्री कर्कशा (कलहनी) के पति (शनि) के पिता (सूर्य) की पुत्री, यमुना ~ तकत वनत न आज सा० ३६ ।
कलहा कलह करने वाला, झगडालू . ~ कुही मूप रोगी १/१८६ ।
कलही पति पितु सुता कर्कशा के पति (शनि) के पिता (सूर्य) की पुत्री, यमुना : ~ और रग सा० ल० १०१ ।
कलहुँ चैन भी : ~ न परत तन परि० १/१९६ ।
कला १ करनी का, लीला का ~ वरनि न जाइ १/५६ । २ कलाएँ रवि-ससि कोटि ~ ४८७ । ३ कलाओं से पूरन ~ उदित मनु उडपति ६१८ । ४ कला मे दृष्टि न दई रोम रोमनि प्रति इतनिहिं ~ नसानी १७८४ । ५ ढग, युक्ति . रहेउ पुष्ट पचि हार दुसासन कछू न ~ चलाई सारा० ७६९ । ~ **पूरि** कलाओं से पूर्ण होकर . पून्यौ ज्यौं ~ — १०७६ ।
कला निधान कलाओं के भण्डार ~ सकल गुन सागर १/७ ।
कला निधि चद्रमा मनो निकसे निकलक ~ ७३२ ।
कलाप मोर के पखों की . उत सुर-चाप ~ चद्र इत ९८३ ।
कलापति चन्द्रमा : पूरन ~ सकलक ३५३ ।
कलिद वह पर्वत जिससे जमुना जी निकली हैं उर ~ तैं धँसि जल धारा ६३७ ।
कलिद दुलारी यमुना : वलिहारी कुल सैल सरित जिहिं कहत ~ ४०५४ ।
कलिद सुता यमुना • नवल निकुंज ~ २८०५ ।
कलिदी यमुना : धनि ~ मधुपुरी ४९२ ।
कलिदीहि यमुना को : ~ थिराऊँ २१४० ।
कलि[1] कलियाँ : कठिन कठिन ~ वीनि करनि न्यारी २६१६ ।

कलि[2] १ कलियुग : ~ मैं नामा प्रगट ताकि १/४ । २. कलियुग का · भयौ विप्र धर कर ~ ग्रास ४३०६ । ३. कलियुग की . ~ मरजाद जाइ नहिं कही १/२३० । ४. कलियुग मे : सूर भजन ~ केवल कीजै २/२ ।

कलिकाल १. कलियुग : जानि कठिन ~ कुटिल नृप ९/११ । २ कलिकाल से : इहिं ब्याकुल ~ १/१२१ ।

कलिकाल ब्याल कलिकाल रूपी अजगर या सर्प : इहिं ~ मुख ग्रसित १/११७ ।

कलिजुग कलियुग मे ~ एक बडौ उपकार १२/३ ।

कलित सलोना, सुन्दर · ~ कमल कर कठ गहौ (हो) ९/३२ ।

कलिनि कलियाँ · बन-बेली प्रफुलित ~ कहर के ३० ।

कलिमल १. कलियुग का दोष या पाप : हृदय कुचील काम भू तृष्ना जल ~ है १/२१६ । २ कालिमा : तिनके ~ डारे धोइ १/९५ ।

कलिमलहि कलियुग के दोषों से यह भव जल ~ गहे है १/२०९ ।

कलीन कलियाँ · सुनहु पाइ ~ परि० १/१६७ ।

कलुष पापों से : बहुरि करिहै ~ भूमि भारी ४२१३ ।

कलुषी दोषी, पापी · ~ अरु मन मलिन बहुत मैं सेत-मेत न बिकाऊँ १/१२८ ।

कलेऊ सुबह का जलपान, कलेवा · करी मुखारी और ~ सारा० ९०३ ।

कलेवर शरीर : चपक कनक ~ की दुति ११९७ ।

कलेवा सुबह का नाश्ता, कलेवा . कमल नैन हरि करौ ~ २१२ ।

कलेस कष्ट · कैकई जीव ~ महौ (हो) ९/३३ ।

कलै उपाय से, युक्ति से, कला से · सूर मान गाढौ तिय कीन्हौ, कहै बात कोउ कोटि ~ २७६१ ।

कलोलैं, -लै क्रीडाएँ : क्यों नहिं करति ~ ३६४५ ।

कल्की विष्णु के दसवें अवतार का नाम जो स.ल (मुरादाबाद) मे एक कुमारी कन्या के गर्भ मे होगा . सोई ~ होइहै २/३६ ।

कल्प काल का एक विभाग जिसे ब्रह्मा का एक दिन कहते हैं और जिसमे १४ मन्वन्तर या ४ अरब ३२ करोड वर्ष होते हैं हरि सग कृपा बिमुख का ~ जिये २५८२ ।

कल्पतरु कल्पवृक्ष के : सघन ~ तर मनमोहन २२१९ ।

कल्पद्रुम कल्पवृक्ष : मनहुं सूर ~ की सिधि तै ६८६ ।

कल्पन कल्पनाओं को · ~ मेटि प्रेम रस माँचै ७/११ ।

कल्प-वृक्षनि कल्प वृक्षों . ~ सौं छायौ ११७५ ।

कल्प रैनि रात एक कल्प के समान ~ रस-हेत उपायौ ११७९ ।

कल्पलता कल्पलता, देव-असुर द्वारा समुद्र मन्थन करने पर प्राप्त उपहार : ~ रस पुंज सारा० १०४५ ।

कल्पसार सत सौ कल्प तक जीने वाले . ~ ब्रह्मा जब सब सृष्टि उपावै ११७५ ।

कल्पित अलापी हुई . सुनि बेनु ~ गीति ६२३ ।

कल्यान[1] श्री राग का पुत्र माना जाने वाला एक राग आवत राग ~ बजावत १३६९ ।

कल्यान[2] कल्याण ताकौ होइ तुरत ~ ४२९८ ।

कवन वि० कौन सी : तोहिं ~ मति रावन आई ९/११७ । **सर्व०** कौन . जदुपति लौं लै जाइ ~ ४२६१ ।

कवर कौर, ग्रास कबहूँ ~ खात मिरचन की सारा० ९०८ ।

कवरी चोटी, वेणी गति मराल अरु बिंब अधर छबि, अहि अनूप ~ ९/६३ ।

कवार यशोगान · सुर नर मुनि नहिं करत ~ ३१४० ।

कवि कुल कवि समाज ~ करिहै हास री १३९ ।

कविनि कवियों ने . ~ बखाने २६०१ ।

कस कैसे . सागर की लहरि छाँडि, छीलर ~ न्हाऊँ १/१६६ ।

कसकत कसकता है : नाहीं ~ मन निरखि कोमल तन ३७२ ।

कसकी सी-सी . ~ नहीं नैकहूँ काटत १३३७ ।

कसक्यौ कसक/पीडा की · ~ नाँहि नैकु मन तेरो ३७४ ।

कसत परीक्षा ले रहे हैं इद्र कौ हरि ~ ८६४ ।

कसति परीक्षण कर रही हो . सूर सक तैं ~ २४१८ ।

कसनि कसी हुई है : ~ कचुकी बद २४५० ।

कसब करतूत, कर्म कोटिक ~ करैगौ १/७५ ।

कसमीरी काश्मीरी तिन स्रवननि ~ मुद्रा ३८१५ ।

कसरि कमी अब कछू हरि ~ नाहीं १/१९९ ।

कसाय कसैला रस नखछत छार ~ कुच ग्रह २८२८ ।

कसि १ कस तरनी कटि ~ दीन्हीं २६२६ । २ कस कर ~ कचुकि, तिलक लिलार, सोभित हार हिये २४ । ३ कसकर (परखकर) कनक सौ लेहु ~ कहा बैठी २४२० ।

कसियैं परखें बहुरि अपुनपौ ~ ४१५० ।

कसी १. तनी हुई हैं · भौंह कलक कमान ~ री २४४७ । २ परखा है कत गुन करि ~ २४११ । ३. परीक्षा ली · मैं तुम बहुत ~ ब्रतधारी ११८२ ।

कसे १ कसने लगे · सकल सभा जिय जानि ~ साजे हथियारा ४१८८ । २. बाँधे हुए हैं तडित से पट, काछनी ~ कटि ३०५६ ।

कसौटिया कसौटी (कृष्ण की कमर) मनौ कनक ~ पर, लीक सी लपटाति १८४ ।

कस्तुरी मृग की नाभि में पाया जाने वाला एक सुगन्धित पदार्थ . उज्ज्वल पान कपूर ~, आरोगत मुख की छबि रूरी ३९६ ।

कस्तूरि कस्तूरी को ज्यौं मृगा ~ भूलै १/७० ।

कस्यप कश्यप, एक ऋषि जिनकी पत्नियों से सुर-असुर-मनुष्य

और अन्य प्राणियों की उत्पत्ति हुई · पुनि मरीचि ~ उपजायौ ९/२।

कस्यप सुतहि अरुण को . ~ मनावै ३२७३।

कस्यौ १ कस लिया है प्रभुहिं विमुख तृनदत ~ ३८५०। २ बाँध लिया कटि-तट ~ निषग ९/१५८।

कहँ १ कहाँ अवला ~ जाहि ३८९९ । ~ **आवइ** कहा पर आवे · कहहु नाथ ~ — ४१८८ । ~ **एती छवि** इतनी शोभा कहाँ है : कमल मीन कौ ~ — १७९७। ~ **कहँ** कहाँ कहाँ · तुम हमकों ~ — न उबार्यौ ५०२। ~ **जुरे अपारा** कहाँ इतनी अधिक सख्या मे एकत्र हुए ब्रज वासी ~ — ९०१। ~ **नाहिन प्रगट दिखायौ** प्रकट करके क्या नही दिखाया या नहीं समझाया हम ~ — १५८२। ~ **लगि कहियै** कहाँ तक कहे : ~ — जे कौतुक करैं ४०५० । ~ **लौं कहियै** कहाँ तक कहा जाये तौ सुख ~ — २/१८।

कहँत कहने लगे, बोले व्याकुल वचन ~ मोहि वर दियौ सकल देवनि मिलि, नाम धर्यौ हनुमत ९/८३ ।

कह १ क्या (थीं) · हम माँगति हीं ~ विधिना पै २९१६। २. क्या है : कहा जानिए ~ तैं देख्यौ २५७। ३. कैसी बातनि मैं ~ ध्वनि उपजावति २४१० । ४ कोई दूध दधि कौ ~ लेखौ ८४१। ५ कैसे जो सब पूरन इनि लह्यौ ~ जाने और २४०८। ६. कौन भी : ~ पाडव कैं घर ठकुराई १/१९ । ७. क्या मन कौ दै रह नैन ~ जानैं ३८४६, हम अबुधि ~ जोग जानैं ३९२३, विहँसि कहति ~ देति हौ गारी ८९०। ~ **अचरज** इसमे क्या आश्चर्य है ~ — भूपाल १००८। ~ **करिहैं** क्या करेंगे सूर समुद्र को बुन्द भ इ यह कवि वर्णन ~ — सारा० ३१५। ~ **करिहौं** क्या करूँगी . देखौं धौं ~ — वाकौ १९७७। ~ **करौं** क्या करूँ . ~ — अनुमान १८२४। ~ **कहौं** क्या वर्णन करूँ अग-अग छवि ~ — १११८। ~ **जाने** क्या जाने ~ — दादुर जल कौ ब्रत ४०१४। ~ **ताकत** क्या देख रहे हो डारि देहु ब्रज पर ~ — ९४०। ~ **भयौ** क्या हुए कह्यौ गोपाल देवता ~ — २६३। ~ **माँगौं** क्या माँगूँ . नद कह्यौ ~ — स्वामी ९१५। ~ **राखत** क्या रखे हुए हो महा प्रलय कौ जल ~ — ९४० । ~ **लेई** क्या लेता है नैन पुट ~ — १८३१। ~ **लैहौ आइ** आकर क्या लोगे · प्रान गयें ~ — ४१७०।

कहत १. कहता जो मैं ~ रह्यौ भयौ सोई ८४० । २ कहता हूँ हौं जु ~, लै चलौ जानकी ३८७७। ३ कहता है अगत ~ मजराज ३८७७ । ४. कहती हुई ~ ताहि लजाउँ २२११। ५. कहती हूँ मैं तोहिं ~ ६७१ । ६ कहती हैं सीता ~ सहेलिन सों सारा० २१९ । ७ कहते सखा ~ हैं स्याम खिसाने २१४। ८ कहते ही . ~ प्रहलाद के धारि नरसिंह वपु ७/६ । ९ कहते हैं मोसों ~ मोल कौं लीन्हौं २१५। १० कह रहे हो · जासौ ~ कत तुम मेरी ८०७। ११ कहलाती थी तब जो ~ असुर की दासी ३६३९ । १२ कही जाती · जसुमति धाइ ~ है इनकी १६१९ । ~ **आइ** आकर कहने लगा . ~ — भिच्छा दै माई ९/५९। ~ **कछुक** कुछ कह रहे हैं तिनक तरुन ससि ~ — हँसि १७७६। ~ **न आवइ** वर्णन नहीं करते बनता . सोभा ~ — ११८०। ~ **न आवत** कहते नहीं बनता है : कह कहौं ~ — २०६४। ~ **पुकार** उच्च स्वर मे कहते हे स्रवन वचन तें पावन पतिनी सारग ~ — सा० ल० १०३। ~ **बात** इसी बात की चर्चा छेटे हुए थे · घर-घर ~ — नर-नारी ९२२। ~ **भई** कहने लगीं यह सुनि कै ब्रज वाम ~ — १०११। ~ **रहत** कहते रहते हैं नित प्रति ज्ञान कथा हसन सौं ~ — मुनिराज मा०० १०४। ~ **सुने** कहते हुए सुना गया है ऐसी विधि नँदलाल ~ — माई १८२६ ।

कहतहि १ कहते हुए, कहते ही यह ~ लोचन भरि आए २४२४। २ कहना तो ~ सुगम सबै कोउ जानत ३८६२।

कहति १ कहती थी कोऊ ~ नाग काली सुनि ४१३२ । २ कहती हैं ब्रज बनिता यह ~ स्याम सौं १६१० । ३ कहती हो . सत्य ~ तुम देव-कहानी ८८६ । ४ कह रही थी सूर परस्पर ~ गोपिका २४०९।

कहति १ कह रही · बतियाँ ~ हैं ब्रज नारि ८५९ । २ कहकर जुवतिनि ~ चुनावति २६१८। ३ कहती अचरज कथा ~ हौ सजनी २३३६। ४ कहती हुई ~ जसोदा खीझत ४३४। ५ कहती हू ~ लीक मैं खाँची १८९७। ६ कहती है : नद महर सौं ~ जसोदा ८११। ७ कह रही हो : तैं मेरैं हित ~ सही १६६९। ८ कहने मे · सकुचति हौं इक बात ~ १७३६।

कहतीं कहती हैं तौ ~ गहि बाँह दुहुनि की १९५२, तौ हम ~ भइ सयानी १७२३।

कहती १ कही होती यह ~ औरै जो कोई १७०१। २ कहती, बताती सूर तबहि हम सौं जौ ~ १७३२ । ३ वर्णन करतीं जो मेरी अखियनि रमना होती ~ रूप बनाइ री १३९।

कहन १ कहते हुए · ऐसे ख्याल करे इन बहुविधि ~ जु आवे लाज सारा० ७४२। २ कहना : ~ चहौं मुख कह्यौ न जाइ २५३०। ३. कहने काह ~ मोकौं तुम आईं १९५४। ~ **जौ पारौ** जो कहना चाहते हो ऊधौ कहौ ~ — ३५१९। △ ~ **सुनन को** सुनने कहने भर को, नाम मात्र को : ~ — दोइ नाहीं परि० १/६ ।

कहनावति १ कहावत चलती है • ~ ब्रज ऐसी २२६२। २ सुनी सुनाई, औरों की कही हुई • कहति तुमहु ~ री २०१३।

कहनि स्त्री० कथनी सुनहु वह करनि ~ यह ५९८। **क्रि० स०** कहते रहने से . बार बार ~ पगनि-पग आल की २०३०।

कहब कहने पर भी : ~ डरति जिय बादहिं २४२२।

कहर के अपार : बन-बेली प्रफुलित कलिनि ~ ३०।

कहवाए कहलाये : राजा उग्रसेन ~ ३१०९।

कहवायौ कहलाया . धनि धनि तुम तैं ~ ९२१।

कहवावत १ कहलाते : ~ हौ बड़े चतुर पै ४१२४। २ कहलाते हैं : बाहर हेत हितू ~ ४००८। ३. कहे जाते हैं : चरन कमल ~ २५२३।

कहवावैं १ कहलाती हैं . तौ ऐसी ~ १९२१। २ कहलाते हैं • सो प्रभु दधि दानी ~ १६०७।

कहवावै कहलाता है : भक्त-बछल ~ ४८२।

कहवैहौ कहलाना, कराना : ब्रज-घर-घर ऐसैं जनि ~ १९२३।

कहहि कहती हैं : ~ अरु पछितहिं १७६९।

कहहिं कहो : ~ जहाँ कछु पावहि ३४९८।

कहहु कहो ~ कहा हम तैं बिगरी ३७७७।

कहा १. क्या : तेरी कोऊ ~ करैगी १४१७। २ कहाँ जैहौ ~ सखनि कौं टेरत ४४४। ३ कहाँ तक सूर ~ कहि गावै १/१०४। ४. कैसा : देखौ री यह ~ जजाल १५३२। ५ कैसी . ~ लगनि उन जी की २३४४। ~ **उपमा कहौं** उसकी क्या उपमा दूँ मुकुट कौ छवि निरखि ~ — १०४०। ~ **करत** क्या कर रहे हैं • ~ — गिरिधर चतुराई १११९। ~ **डराति** डरती क्यों हो . देहि आवन ~ — नारी ९/१२७। ~ **तौ** कहाँ था . तब तू कहि धौ ~ — ३७०६। ~ **दीजै** किस प्रकार दी जाय : काम-पटतर ~ —, रमा जिनकी दासि १८१९। ~ **दुराऐं पावैगी** छिपा कर क्या करेगी उनकी सौं तोकौं ~ — २७२६। ~ **पढौ हौ** क्या पढे हो, क्या पढते हो • कहो पुत्र तुम ~ — सारा० ११५। ~ **यह काम** कौन-सा बड़ा काम कर लिया गिरिवर धर्यौ ~ — ९७१। ~ **वाहि कर बीस** क्या उसके बीस हाथ हैं ना तरु सूर देखती मुरली ~ — १३०७। ~ **है होत** क्या होता है बारक मिलत ~ — ३९९३। ~ **ह्वै रहे** कहाँ रह गये . सूर प्रभु निठुर करिया ~ — १०१९।

कहाइ १ कहलाकर . साधु साधु ~ १/४५। २ कहलाता था : त्रिपुर नाम सो कोट ~ ७/७। ३ कहलाता हूँ हौं ~ तेरौ १/१६६। ४. कहे जाते हैं • त्रिभुवन नाथ ~ ३०४१।

कहाइं १ कहलाकर : गाउँ दसक सरदार ~ ८८५। २ कही हुई कै तुम कहत ~ ३९३८।

कहाऊँ १ कहलाऊँ : तौ हनुमत ~ ९/१०९। २. कहलाता हूँ : इँहि बल भरत ~ ९/१५५। ३. मानूँगा • सो दिन सुदिन ~ २१०६।

कहाए १. कहलाते हो : निरगुन कहा ~ ३७८२। २. कहे गये, कहलाये : मातु पिता सुत हेतु ~ २९२२।

कहायौ १. कहा जाता है • पावन नाम ~ १/१२५। २. कहलाया : राधा वर निज नाम ~ ११७९।

कहारनि कहारों ने कह्यौ ~, हमैं न खोरि ५/४।

कहावत १. कहलाता : इंद्रि-जित हौ ~ हुतौ ८/१०। २. कहलाते . ~ हौ तुम ५५९। ३ कहलाते हैं . बडे गुनज्ञ ~ दोऊ २१६१। ४ कहलाते हो तुमहूँ रसिक ~ मधुकर ३६९८।

कहावति १. कहलाती हैं, समझती हैं : मोहूँ तैं ये चतुर ~ १७७१। २ समझती थी, बन रही थी . आपु ~ बड़ी सयानी १६४८।

कहावे = कहावै दे०

कहावैं १. कहलाएँगे जिन याँचे ब्रजपति उदार अति जाचक फिर न ~ सारा० ४१२। २ कहलाते हैं . ये सब बनिज ~ १५२८।

कहावै १. कहलाता है : कहि मारै सो सूर ~ ३८५३। २. कहलाती है , द्वारावति पुरी ~ री ४७५४। ३ कहलाते हैं, मानते है : आपुहिं धन्य ~ १४३८। ४. कहा जायेगा, माना जायेगा : खार पनार ~ ५६१।

कहाहि १ कहलाता है बीतत तासौं कल्प ~ १२/४। २. कहलाते हैं : माता, तिनसौं साधु ~ ३/१३। ३. कहलायेंगे : और के न ~ ३४३५।

कहाहु कहे टाल रही हो : जाको हमहिं ~ १४६१।

कहि १. कह : साँझ समय आवन ~ आए २४७८। २. कहकर : कठ भुज गहि रही यह ~ ११०२। ३. कहने (भर) से • नारायन ~ उधर्यौ जथा ६/३। ४. कही : करो बेग कछु बिलब न कीजै नारद ~ यह बात सारा० ६२६। ५ कहो, बताओ : ऊधौ ~ मधुबन की रीति ३७८३। ~ **आवत** १. मुँह से निकल आता है : कछुवै कहत कछुक ~ — ३६११। २. कही जाती है . कत ~ — ऊधौ बात ३६८९। ~ **आवति** कहते बनती है • क्यौं ~ — तोह ३५३९। ~ **आवति** १. कहते बनता है . तिनसौं ऐसी क्यौं ~ — ३७८७। २. कहते बनती : बात नहीं मुख तैं ~ — १७७३। ~ **आवै** १ कहते बनता है इनकौ गुन कैसैं ~ — २३०१। २. कहते बनती नैन छवि नहि ~ — ७७८९। ~ **उठे** बोल पडे . यह ~ — नद कुमार १५९२। ~ **कहा बखाने** वर्णन करके क्या करें : सूरदास ~ — १०२५। ~ **गई** कह/बता गई कुँवरि सौं ~ — स्याम ल्यावें १११९। ~ **जाइ** १. कहा जाये • मो जग क्यौं मिथ्या ~ — ४३०१। २ कह पा रहे थे : गदगद कठ न

कछु ~ — ९/५१ । ~ जात कहा जाता : कहै नहीं ~ — ३७३९ । ~ जानत कहना जानते हो . तुम अलि बात नहीं ~ — ४०१४। ~ जानैं कहना जानते हैं • हम तो प्रगट ~ — ४१३३ । ~ डरवाइ कहकर डरवाया • खीझत गुरुजन ~ — १०११ । ~ देति उघारि प्रकट कर देती है : मुखबानी ~ — १५८१ । ~ धौं १. कहो तो, बताओ तो . ~ — कुद कदव बकुल बर १०९१ । २ पता नहीं : ~ — कौन अग अवलनि सों ३५४६ । ~ न परति हैं कहते नहीं बनती है, कही नहीं जा रही हैं • ब्रज की ~ — बातें ४१२० । ~ भाखत वचन कहता था : बारबार यहै ~ — ९०७ । ~ लेत कहता है, कह लेता है : भक्त पावन कोउ कहत न कबहूँ पतित पावन ~ — १/२१५ । ~ सति भाइ सत्य भाव से कहो . ऊधौ ~ — न्याइ, तुम्हरैं मुख साँचै ४०९५ ।

कहिअहु कहना, बताना . बिजै अधोमुख लेन सूर प्रभु ~ बिपति हमारी ।

कहिए १ कहना चाहिए : तैसियै तासौं ~ ३८१० । २. कहा जाय : ~ कहा बुद्धि उन केरी ३५२८ । ३ कहिए भक्तउर ग्यानी ~ सोइ ४२९८ । ४ कहिए, कहे : ऊधौ कही सु फेरि न ~ ३६०७ । ५. कहो : ~ तासौ होइ बिवेकी ३८९८ । ६ वर्णन करें • 'सूरदास' सुख कहँ लौं ~ ३८७४ ।

कहिबी कहना : नीकैं करि ~ यह परि० १/१८० ।

कहिबे पुं० कथन, वचन : धिक तुम, धिक या ~ ऊपर १/२८४ । क्रि० स० कहने • मेरौ मन ~ ही कौं है २०९६ ।

कहिबैं कहने में : ~ जिय न कछू सक राखौ ३५४० । ~ जोग होइ तौ कहे कहने योग्य हो तो कहे . ~ — ४३०९ ।

कहिबें कहने : होइ जु ~ लायक ३८७९ ।

कहिबौ कहना . हरि सौं सब ~ ४०५६ ।

कहिय कही : ताकी कथा कहाँ कह तुमसे मोपै ~ न जाय सारा० ७२५ । ~ न जाई वर्णित नहीं की जा सकती लीला ~ — सारा० ४४३ ।

कहियत १ कहा जाता है : निरगुन कहौ कहा ~ है ३९०० । २ कहती है • ~ बात बिचारि ३९२५ । ३. कहते ~ हौ अति चतुर १९३३ । ४. कहते हैं : लोग कुटुंब जग के जो ~ १९४३ । ५ कहलाते हो • तुम जु दयाल दयानिधि ~ ३७१८ । ६ कह रही हू : अपनै हे तातैं यह ~ २३२७ । ७ कहलाता है . ~ सुत दासी कौ १/२४३ । ८. कहलाते, कहे जाते . अतिहिं सुदर ~ हे १७३६ । ९ कही जाती है • ऐसी बात प्रगट कहुँ ~ १५५६ । ~ बाने कहे जाते हैं : त्रिभुवन पति जे ~ — १३१० ।

कहियतु १ कहती है तातैं तुमसौं ~ ३९११ । २ कहते : हानि लाभ काको ~ हें २३९९ । ३ कहा जाता : शत्रुघ्नहि अनिरुध ~ है सारा० १५९ ।

कहियाँ क्रि० वि० सर्वत्र, सब कहीं : आनँद है सब ~ ९७० । पुं० १. सदेश, बात : जाइ कह्यो यह प्यारी ~ २७९३ । २ किन्हीं (लोगों) को : आनँद निधि मव ~ ९/१९ ।

कहिये बताइए : अब ~ द्वापर युग सुन नृप वासुदेव मम रूप सारा० ६१० ।

कहियैं कहिए, कहो • तिहि ~ व्यभिचारी ३९२९ ।

कहियै १ कहा जाये सुनहु 'सूर' अब प्रगटहिं ~ २२२७ । २ कहा है जौ ~ घर दूरि तुम्हारौ ६७४ । ३ कह दीजिए . मोसौं बात सकुच तजि ~ १/१३६ । ४ कहना तिनसौं यह तू ~ २७१३ । ५ कहिये, कहो सूर स्याम ऐसी जनि ~ १६१६ ।

कहियौ १. कह देना, कहना • उनहीं सौ फिरि ~ ३८१० । २. कहो, बताओ सुनि ~ अब न्हान चलौगी १७५० ।

कहिहैं १. कहे, कहा करें : जब जोइ ये ~ ८४३ । २. कहेंगे . ~ स्याम सत्त इन छाँड्यौ ४२३८ ।

कहिहै कहेगा • यह ~ नहिं राखौं भूपर ९१६ ।

कहिहौं १. कहता हूँ ~ कथा सो करि बिस्तार ९/२ । २ कहूगा . जसुमति आगैं ~ जाइ ५३९ । ३ कहूँगी : तिन सन्मुख ~ कहा २०४४ .

कहिहौ कहोगे : जो कुछ भली बुरी तुम ~ ३५४३ ।

कही = कही दे०

कही स्त्री० १ कहना अब तुम ~ हमारी मानौ १०१४ । २ बात मेरी ~ बिलग जनि मानौ २४८३ । क्रि० स० १ कहते सोभा कहत ~ नहि आवै ४७८ । २ कह दी . ~ जितक कहि आई ३६२४ । ३. कहा • सूर स्याम यह ~ मबनि सौं ४४६ । ४ कही कलि मरजाद जाइ नहिं ~ १/२३० । ५ बोली : स्याम भुजा गहि दूतिका ~ २४४० । ६ समझाया • कोटि भाँतिनि हौं ~ २८१० । ~ न जाइ कहा नहीं जाता . ऊधौ अब कछु ~ — ३९९९ । ~ सुनाइ कह सुनाया : नद महर को ~ — ८८७ ।

कहीजै कहना कि : ऊधौ हरि सौं जाइ ~ ३६०१ ।

कहीन्यौ कहते हैं, वर्णन किया है : बेद पुरान ~ ८/१५ ।

कहुँ १. कहीं ना ~ गयौ न आयौ ४/१३. इक दिन मृगछौना ~ गयौ ५/३ । २ कहीं भी . (देवकी) ऐसी ~ देखी न दई ८ । ३ किसी • यह आई ~ और गाँव तैं २१५७ । ४ को लरिकाइ ~ नैंकु न छाँडत २४६ । ~ कहुँ कहीं कहीं का • लेखौ मैं ~ — जानत हौं १५९४ । ~ खोजन कोई

किसी को ढूँढने कोउ आए, कोउ नहिं, ~ — ९०४। ~ **ठौर न पावै** कहीं जगह नहीं पाता, आश्रय नहीं मिलता : एक फिरत ~ — ९०५। ~ **पाई** कहीं दिखाई पड जाय : चरन चिह्न ~ — ११८२।

कहुँवै कहीं भी ग्यान विना ~ सुख नाहीं ३६०६।

कहु १ कहीं . कुज खोह ~ करत तपी परि० ७/१७ । २ कहो : ~ षट्पद कैसे खैयतु है ३६०४। ३. बताओ . ~ किहि विधि बिलखाइ ९/८३। ४ बता दो ~ री सुमति कहा तोहिं पलटी ९/३८।

कहूँ १. कभी भी ~ न आवै हारि ७/३। २ कहीं ऐसौ देव ~ नहीं देख्यौ ८४०, ऐसी ~ लखी नहिं अब लौं २४१२। ३. कहीं भी ~ न सेत सिद्धताई ३७६१। ४. कहीं से . जुवतिनि जोग ~ धौं ३८९०। ५. किसी को · मारग मैं न ~ दरसायौ १६००। ६ किसी पर . और न ~ पत्यान्यौ ११७३। ~ **कहूँ** कहीं कहीं सरद जलद करत ~ — जलधार ११३६। ~ **वार न पार** कहीं ओर छोर नहीं दीख पडता ~ — १८२०। △ ~ **की कहूँ** कहीं की कहीं, प्रसग से दूर अर्थ निकालना : कहा करौं तुम बात ~ — लगावति १४९१।

कहे १ कहने . नैन तौ ~ मैं नही मेरे २२४९। २. कहने से : कहा ~ भयौ तेरैं १६५३। ३ कहे : सूरदास सोई ~ १/२२५। ४. कहा था कहन जो तुम ~ सो मत ४१४०। ५. कहता है : कान्ह ~ सोइ कीजियै भैया ८२५। ६ गिनाए . कपि ~ कछुक, हैं बहुत लच्छ ९/१६६। ७. पूछे कुसल प्रस्नहिं ~ ३०५१। ८ बताने पर . आजु मैं लखे सोउ ~ पै तेरैं २०६३। ९ बहाये ~ महर आँसू गदगद करि ३१३२।

कहेउ कहा : तब उन ~ चलौ मेरे गृह सारा० ७९९, तब हरि ~ भक्त तू मेरो तोसौं करि सग्राम सारा० ६४८।

कहेच = कहेउ दे०

कहै पुं० कहना . नैन ~ न मानत मेरै २३५२। **क्रि० स० १** कहती है वार वार ~ कुवरि राधिका १९६९। २ कहते हैं . लोग ~ यह भई है बौरी १७९४। ३. कहने पर तेरे ~ कहति हौं बानी १९१७। ४ कहने से . सदन जाहु मेरे ~ २१९३। ५. कहा जाय ~ का मति भोइ मा० ल० ७७। ६ कहे · कासौं ~ पुकारी ३६८७। ७ कहे : विना ~ ब्रज लोग कहा काहू पतियैहैं १६१८। ८ बोले अरस परस सब ग्वाल ~ ३१११। ~ **बनैं** कहते ही बनेगा . ~ — छांडौ चतुराई १८६०।

कहैगी कहेगी . चोर ~ मोकौं २०४६।

कहैगे कहेंगे . नद सुनि मोहिं कहा ~ ३८७।

कहैं १ कहता हो . पति जो ~ सो करै चित लाइ ४२७४। २ कहता है यह जस ~ सुनै मुख स्रवननि ११७८। ३. कहती, बोलती ~ न पिय कौ नाउँ ११११। ४. कहती है . कहा ~ वृषभानु जई २४२६। ५ कहना ऐसी मोहिं ~ जनि कबहू १७०४। ६ कहने मे मुख ~ बात डराइ १५०२। ७ कहा जाता है · तिनकौ राजा राय ~ १/५३। ८ कहे को ~ हरि सौं बात हमारी ३९८४। ~ **देहु** कहे देती हू . छाँडौ छाँडौ ~ — २७९१। ~ **बनैगो** बताना ही पड़ेगा : सूरदास प्रभु ~ — १५७८। ~ **बरनि** वर्णन कर सकता है · और बेष को ~ — सब ३५६०।

कहैगी कहेगी, बतायगी . काहि ~ २७२६।

कहैगौ कहेगा : कब हँसि बात ~ मोसौं ७६।

कहैं-सुनैं १ कहने-सुनने से ~ सो नर तरि जाइ ६/४। २ कहे और सुने ~ सो रहै सुख पाइ ४१६७।

कहैहै कहलायेंगे नद हुते ये बडे ~ ३१९।

कहैहौं कहलाऊँगा अब नहिं दीन दयालु ~ ७/५।

कहो कहूँ ताकी कथा ~ कह तुमसे मोपै कहिय न जाय सारा० ७२५।

कहो कहा : मुख ऊपर कह ~ लायके सारा० ८९०।

कहौं १ कहता हू · ~ सो कथा, सुनौ चित लाइ ७/१। २ कहती हूँ · गुप्त मते की बात ~ ३८२२। ३ कहना : कछु चाहौ ~ १/११०। ४ कहने की . मुख की बात कहा ~ ठानी २५१४। ५ कहूँ : कौन भाँति गुन ~ तिहारे ३८६३। ६ कहूँगी . मैं बिधना सौं ~ कछू नहिं १८७९। ७ बताइए, बताओ तब हरि रीझ कहेव नारद सौं ~ कहाँ वे आये सारा० ६६०। ८ बताता हूँ ~ तुम सौं ग्यान ३/१३। ९ वर्णन करूँ : ~ कह उज्ज्वलताई ८४१। ~ **कहाँ लगि** कहा तक वर्णन करूँ . ऐसे ~ — १/११२। ~ **कहाँ लौं** कहाँ तक कहूँ · 'सूरदास' प्रभु ~ — ३९२७। ~ **बखानि** वर्णन करती हू : कीरति ~ — ९/७७।

कहौंगी कहूगी : ऐसे बचन ~ इन सौं १७७१।

कहौंगौ कहूगा जबहीं यह ~ याहि ३४२१।

कहौ १ कहती हो · तुमहिं उलटी ~ १७४९। २ कहते हो · जाकी बात ~ तुम हमकौं ३५४०। ३ कह दो, समझा दो . अबहीं ~ सुनाई ८१२। ४ कहा · रिषि ~, रानी पुत्री चही ९/२। ५. कहा जाय : जो हित ~ सो थोरी ३८४८। ६ कहिये : ~ तो परबत चाँपि चरन तर ९/१०७। ७ कहे : हमैं ~ केतौ किन कोइ ९/२। ८ कहो : ऐसी बात ~ जनि बारे ४११। ~ **बुझाइ** समझाकर कहो : सो मोसौं तुम ~ — ८९६।

कहौगे कहोगे : मोसौं कहा ~ २५३।

कह्यउ कहा · नृपति ~ मेरे गृह चलिये मारा० ८०० ।
कह्यो = कह्यौ दे०
कह्यौ क्रि० १ कहा : कहा ~ मोहिं बहुरि सुनाउ १७०१ । २ कहनी हूँ · ज्यों ज्यौं ~ त्यौं त्यौं बरु उतकौं सरकि रही २७८७ । ३ कहना : इनकौ ~ करत तुम रहियौ ८४३ । ४ कहने पर भी : पर कुबुद्धि ~ नहिं समुझति ९/३१ । ५ कहने लगे : भील राव निज लोगनि ~ ५/३ । ६ कहो : रैनि रीझ की बात ~ २५१६ । ७ पूछा · जौ मैं ~ २७१४ । ८ बता दिया : सूर प्रभु कौ नाम मोहिं तुमही ~ १७४९ । ६ बोले : पुनि हँसि ~ निठुरता धरि कै १०३२ । १० वर्णन किया है : निगमन नेति ~ निर्गुन २४५५ । ११ समझाया जद्यपि कोटि ~ २३१४ । १२. सुनाया सूर ~ सो गाइ ११७५ । पुं० कहना, कथन, वचन : मेरौ ~ नाहिं यह टरिहै ८/३ । ~ **करि** कहना मानो हा हा रे हठीले हरि जननी कौ ~ — ९५२ । ~ **नहिं जाई** कहा नहीं जा सकता, अवर्णनीय है ~ : प्रेम ~ — २०६९ । ~ **न परै** वर्णन करते नहीं बनता रग रह्यौ न ~ — ११८० । ~ **बनाइ** बनाकर कहा : नृपति रुक्म सौं ~ — ४१६७ ।
काँकर ककड़ : ज्यौं दिवाल गीली पर ~ २२२३ । ~ **डारि** ककड़ी फेंककर : ~ — चले सखि भोर १८७१ ।
काँ काँ कौए की बोली, काँव-काँव जैसें काग काग के मूएँ ~ करि उडि जाहीं १/३१९ ।
काँख बगल मे : चाँपे ~ फिरत निरगुन गुन ३५४२ ।
काँच काँच, शीशे कहा ~ के सग्रह कीन्हें १४५८ । △ ~ गर बधाऊँ काँच गले मे पहनूँ, निम्न कोटि की वस्तु क्यों ग्रहण करूँ : कचन-मनि डारि ~ — १/१६६ ।
काँचहि काँच को ~ सेंतत १/१७७ ।
काँची १ अपरिपक्व, कच्चा : सूर एकहू अग न ~ ४१२८ । २ कच्ची त्यौं नाहीं हम ~ ३६८६ । ३ झूठी, बनावटी . बात नहीं यह ~ १८६० ।
काँचुरी केंचुली : ज्यौं ~ भुअगम तनहीं २२९२ ।
काँचुली केंचुली : अहि ~ उतारी ३९०१ ।
काँचे कच्चे वै गुन करत होत अब ~ २५६५ ।
काँचै काँच (को) · सम करि गनै महामनि ~ २/११ ।
काँचौ कच्चा ~ दूध पियावत पचि पचि १७५ ।
काँट काँटा (सी) भौहैं ~ कॅटीलियाँ १४५७ ।
काँटौ काँटा . ~ लाग्यौ प्रेम कौ ११११ ।
काँती १ कैंची · लागति है प्रेम ~ १३६७ । २ छुरी . कठिन बिरह की ~ ३४९० ।
काँदौ कीचड जियहिं क्यौं कमलिनि ~ हीन ३३६४ ।
काँध कन्धे पर : ~ कामरि, कर लकुटी धारि २००५ ।
काँधि दृढतापूर्वक, पूरी कौन करनी धाटि मोसौं मौ करौ फिरि ~ १/१९९ ।
काँधी मानी, स्वीकार की, पूरी की सु धौं कहो को ~ ३५४० ।
काँधे १ कन्धे : दीजै कान्ह ~ कौ कबर १९९१ । २ कन्धे पर · कान्ह ~ कमरिया कारी ४५२ ।
काँधैं १ कन्धे पर : ~ कामरि हाथ लकुटिया १५४३ । २ कन्धों पर . अहिरनि ~ जोरि ५८३ ।
काँप काँप कर : सग बलभद्र चमू सब सग लै चले असुरदल ~ सारा० ६७७ ।
काँपत १. काँपते हुए : ~ हृदय वचन नहिं आवत ४२३३ । २ काँपते हैं ~ उघरत सिन्धु धराधर ~ ६४ । ३ काँप रहा है माधौ जू ~ डरनि हियौ ८६७ ।
काँपति काँपती है : ~ सीत तनहिं अति ब्यापत ७९२ ।
काँपति काँपती है, काँप रही है : ~ रिसनि पीठि दै बैठी २८२६ ।
काँपन काँपने . ~ लागी धरा पाप तैं १/२०७ ।
काँपहिंगे काँपने लगेंगे सवन ~ थर थर २४५५ ।
काँपा[1] काँपे, थरथराये · ~ अलक तरग २२७२ ।
काँपा[2] बाँस या किसी अन्य लकडी की पतली तीलियाँ जिसमे चिपचिपा पदार्थ लगाकर चिड़ियाँ फँसाइ जाती हैं : मुरली अधर चेप ~ करि ३१८५ :
काँपि काप रहा था रिसनि कालो ~ ५५२ ।
काँपी काँपने लगी : ~ भूमि कहा अब हैहै ९/१५८ ।
काँपै १ काँपता है · तीनि लोक डर जाकैं ~ ९/१०५ । २. काँप रहा था ग्वालनि देखि मनहिं रिस ~ ५८५ ।
काँपौं काँपता था, थर्राता था : हौं डरपौं ~ अरु रोवौं ४८१ ।
काँप्यौ १ काँप उठा . दारुण तप जब कियौ राजसुत तब ~ सुरलोक सारा० ७६ । २ काँपने लगा : तब मैं थरथराइ रिस ~ ९४४ । ३ काँपने लगे . देवशत्रु सब ~ सारा० ३४४ । ४ काँपा ~ रिसनि हियौ री २५३२ । ५ हिल उठा सहस फन सेस कौ सीस ~ ९/१०६ ।
काँवर बँहगी, बाँस का एक मोटा डडा जिसके दोनों किनारों पर सामान लादने के लिए छीके बने रहते हैं : हलधर सग छाक भरि ~ करत कुलाहल शोर सारा० ४७१ ।
काँवरि बहगी, काँवर : और बहुत ~ दधि-माखन ५८३ ।
काँहे क्यो ~ कौं मोहिं डाहन आए २५४३ ।
का १ क्या इहाँ आनि ~ कहते ३५५० । २ क्या क्या ~ न कियौ जनहित जदुराई १/६ । ३ क्यों काल किन देखि, इतरात ~ रे ३०५४ ।
काइ क्यो : जीवति बिछुरी ~ ९/७७ ।
काई[1] कोई, कुछ . कहा तिहारौ ~ परि० १/१७ ।
काई[2] कालिमा माजत सोइ कलक तनु ~ १९६९ ।

काउ कभी अब न करिहौं ~ २०८५ ।

काऊ कभी · तजि फिरि मिले न ~ ३६७० ।

काकपच्छ बालो के पट्टे ~ धरे सीस ९/२० ।

काकी १ किसकी · काके पिता, मातु हैं ~ १०२१, ~ सरन रहैंगे आई ९२३ । २ किससे ~ तिनकौं उपमा दीजै ९/४५ ।

काके १ किस किस के ब्रज बसि ~ बोल सहौं १६८६ । २. किसके कहाँ रहत ~ हैं ढोटा १६९९ । ३ किसी के · बटाऊ होहिं न ~ मीत ३६७१ ।

काकैं १ किसका इतनौ हित है ~ २७५३ । २ किसके ~ गर हम फाँस लगाई १५८४ । ३ किसके यहाँ (कस) ~ सत्रु जन्म लीन्यौ है ४ :

काकैं किसके ~ द्वार सिर नाऊँ १/१६४ ।

काको किसका . ~ ध्यान करत उर अतर सारा० १४८ ।

काकौं किनको बाँह पकरि तू ल्याई ~ ३१४ ।

काकौ १ किसका ~ बदन प्रातही देख्यौ १४८७ । २ किसकी ~ 'सूर' सरन तकिए ३६७० । ३ किसको . कहौ कहाँ, ~ सुख दीन्हौ २५३६ ।

काखि=काखी दे०

काखी आकांक्षा, साध · सूरदास ब्रजनारि संग हरि बाकी रह्यौ न कोऊ ~ ११७२ ।

काख्यौ इच्छा/चाह की : पट भूषन नहि ~ २९१७ ।

काग कागासुर · ~ मरत उठि भाज्यौ ३०४४ ।

कागर[1] १ कागज पर, दस्तावेज पर व्याध गीध गनिका जिहि ~ १/१९३ । २ पत्र · फिरि लै जैवै ~ ३८५९ । △ **चढावै** ~ कागज पर लिख ले, टाँक ले . मारि न सकै विघन नहि ग्रासै जम न — ~ १/९१ । **नाव** ~ **की** कागज की नाव, शीघ्र नष्ट हो जाने वाली वस्तु दीरघ नदी — ~ — को देख्यौ चढि जात ३८९३ ।

कागर[2] पख · जम के ~ दागे ३०९७ ।

कागा कौआ · ~ रह्यौ खसाइ परि० १/१५१ ।

कागासुर एक राक्षस जिसका वध श्री कृष्ण ने किया था · ~ आवत नहि जान्यौ ३९ ।

काचरी चावल या साबूदाने के तले हुए टुकड़े कूर वरी ~ पिठौरी ३९६ ।

काची कच्ची हौं मति कुसल नाहिं नै ~ १६५८ ।

काछ कछनी (घुटनों तक चढी हुई धोती) · ~ बनी किंकिनी-रट १४५७ ।

काछत वेष धरते हैं, रूप धरते हैं . सूर स्याम जितने रंग ~ १५८० ।

काछनि कछनी मुरली कटि ~ आभूषन १५१४ ।

काछनी कछौटा, कछनी . तडित से पीत पट, ~ कसे कटि ३०५८ ।

काछि १ धारण करके सकल गुन ~ दिखायौ १/१७४ २ बन-सँवर कर : कोटिक कला ~ दिखराई १/१५३ । ३ खेल कर ये चतुरई ~ कै आए २१६१ ।

काछे[1] कछौटा नागर कटि ~ खौरि केसरि की किए ४६० ।

काछे[2] १ धारण किये हुए . धन्य कान्ह नटवर बपु ~ १६०५ । २ बना लेते हैं · सूरदास प्रभु नटवर ~ १८२६ । ३. बनाये हुए हैं · नँदनंदन हिय छबि तनु ~ २१२५ । ४ सजाए हुए . मोर मुकुट पीतांबर ~ १५०२ ।

काछैं धारण किया : तेई हरि नटवर-बपु ~ १६०७ ।

काछै[1] वेष पर : रीझै नटवर ~ री २२३६ ।

काछै[2] सजाए रहते हैं : नट सवाँग सो ~ २३४१ ।

काछौ धारण किया, सजाया : एक सखी हलधर बपु ~ २८७८ ।

काज १ काम (के) अन्न-वस्त्र किहि ~ ३६ । २ काम मे : तैसे लागे अपनै अपनै ~ ११७० । ३. कार्य के लिए : कौरव ~ चले १/१३ । ४ कारण : बहुत फिरी तुम ~ कन्हाई ४६२ । ५ के लिए · असन ~ प्रभु बन फल करे २/२० । ६ मतलब · हमै तौ इतनै ही सौं ~ ३८३५ । ७ मतलब से . आपु ~ कौ उनहिं चले मिलि २३२० । ~ **बिगार्यौ** काम बिगाड़ दिया, चौपट कर दिया . मैं यौं अपनौं ~ — ४/१२ । ~ **सँवार्यौ** कार्य बनाया कुंडिन पुर कौ ~ — ४१८८ । ~ **सर्यौ री** काम बन सका कछुव न ~ — १८७३ ।

काजन[1] कार्यों मे : आए संकट ~ ३३०७ ।

काजन[2] कारण वा कुबिजा के ~ ३७७१ ।

काजनि कार्यों से हित रहे अपने ~ ३१५८ ।

काजर[1] कजरी गाय धौरी धूमर ~ कारी सा० ल० ७९ ।

काजर[2] **पुं०** काजल कर कंकन, ~ नकबेसरि २१८३ । **वि०** काले : लिख्यौ ~ नाग द्वारैं ४९८ । ~ **अवरेखे** काजल की लीक के समान खिंचे हुए . अति कारे ~ — ९३० । △ ~ **मुख लाऊँ** काजल मुँह पर लगाऊँ कुम कुम की लेप मेटि, ~ — १/१६६ ।

काजरी-धौरी कजरी और धौरी (गायों के नाम) · बाँह उठाइ ~ १७७ ।

काजहि १ कारण के दई बिनु ~ गारी १४६१ । २ कार्य (के लिए) : ये तौ चले अपने ~ २१६१ । ३ कार्य मे : राज ~ रहो डोलत ८१४ ।

काजहिं काम पुत्र के ~ आयो १४६१ ।

काजहीं मतलब से : फिरत अपने ~ २३८० ।

काजहु काज मे भी जानी कृपा राज ~ हम ४२८८ ।

काजा कार्य कछू भयौ नहिं ~ ५२१ ।

काजी[1] न्यायाधीश ताकौ कहा करै ~ ३१४७ ।

काजी[2] स्वार्थी ये हैं अपने ~ २२५७ ।

काजु १ कार्य, काम . याकौ है कह ~ ५१९ । २ कार्य के लिए दौरि गए तिहिं ~ ४६१ ।

काजैं १ कारण · एक बार माखन के ~ ३१७० । २ (कार्य) के लिए · *नाम गिरिधर पर्यौ भक्त ~ ८७० ।*

काजैं कारण, लिए : नाचत त्रैलोक नाथ माखन के ~ १४६ ।

काट १ काटकर · हाथ-पाइँ बहुतनि के ~ ४/५ । २ काटें : ~ किनारे नखियाँ ३२४० ।

काटत १ काटता है, काट-काट कर खा रहा है : मीन इंद्री तनहिं ~ १/९९ । २ काटने समय कसकी नहीं नैकहूँ ~ १३३७ । ३ काटने हैं : फिरन सृगाल मज्यो सब ~ ९/१५८ । ४ काट रहा हू · स्वकर ~ सीस १/१०६ । ५ काटने, दूर करते हो : जन के उपजत दुख किन ~ १/२०७ ।

काटन १ काटने . ~ दै दसमीस वीम भुज ९/९५ । २ काटने *के लिए : जनम मरन ~ कौं १/९० । ३ नाश करने के* लिए : तिहिं ~ कौ समरथ हरि कौं तीछन नाम कुठार १/६८ ।

काटहु काटो : ~ अब बबूर लगावहु ३९०९ ।

काटि १ काट . ~ खाइ रे हाऊ ४८१ । २ काटकर . ~ प्रेम को बाग ३६५२, ~ दु ख समूह फदनि ४१०९ । ~ **करवार लियौ** तलवार से काट लिया . ~ — मारि नाकौ तुरत ४१८९ ।

काटिबौ काटना (है) : मनौ ~ घाम ३०५९ ।

काटी १ काट डाली : निठुर ~ पोइ ३८०० । २ काट दिया · लच्छ अतरिच्छ ~ ९/९६ ।

काटैं १. काट दिये . पस ~ गिर्यो ९/६० । २. काटने से : नागिनि के ~ विष होइ ९/२ ।

काटै १ काटता है . कर्म फद सब ~ ३४६ । २ काटती रही है विकट बाउ ~ ३४८ । ३ काटे . मुरे न अग कोउ जो ~ ९/८३ ।

काटौ काटो : ~ न फद मो *अघ के १/१८० ।*

काट्यौ १ काट दिया है तुम दरसन दै ~ ९/८७ । २ दूर किया : सब काम द्वन्द-दुख ~ ११८२ । ~ **बंधन** मुक्ति दी . ~ — ताकौ १/११३ ।

काढ़त १ निकालता है : ~ बेर दुराभी ४१४७ । २ निकलते : रहे ~ प्रान सा० ल० ५६ । ३ निकालते है : सकुच अति लागत ~ नाहिन हाथ सारा० ८१४ ।

काढत-गुहत काढते-गूँथते . ~ न्हवावत जैहै नागिन सी मुई लोटी १७५ ।

काढति खींच रही है : ~ रेख मही २६०२ ।

काढन निकालने के लिए : ~ कौं कर नायौ २७९ ।

काढि १. किनालकर : लच्छा गृह तैं ~ १/४ । २ निकाल : सरन गएँ प्रभु ~ देत नहि १/२३२ । ३ निकाल लो : हाथ धरि ~ १/२१४ । ~ **कूबरी लीन्हौ** कुबडी ने निकाल लिया है : माखन ~ — ४१०५ । ~ **डारी है** निकाल कर *छोड दी है : मानहु सर ~ — वारि मध्य तैं मीन ४०७० ।*

काढी १. रेखित हों, कढाई कर दी गई हों : मानौ चित्र की सी लिखि ~ ६४७ । २. बनाई, खींची : एक लीक बसुधा पर ~ २६०० । ३ निकाल ली . लई ऊपर-ऊपर ~ १८३ । ४. निकाली गई हो . मनहु काम साँचे भरि ~ ३०० ।

काढे १ निकाले . बिधि चन्द्रमा मनौ मथि ~ १४१ । २ निकालने से नाहिन कढत और के ~ २५९९ । ३ बनाये (काढे) गये हो · मनहु चित्र लिखि ~ २८२६ । ४ बनाये हों : मनौ चितेरे लिखि सब ~ ३११५ ।

काढैं निकालते हो : पारधि मारि भाल क्यों ~ ४०२५ ।

काढौ १. उद्धार कर दो : तिनहीं में लिखि ~ १/१३७ । २ *निकाला . सिंधु मथत काढे बिधु ~ ३३५९ । ३ निकालो,* हटाओ . घर के कहत सवारे ~ १/८६ । ४ फैला दिया : सहसौ फन ~ ५८९ । ५ ला ढुकाओ : ~ घी के मौन ४० ।

काढ्यौ १ निकाला कटक मौं कटक लै ~ ३८२२ । २. दूर किया कलह भूमि को ~ सारा० ८३८ ।

कातर १ भीरु : हम ~ डरपति अपने सिर ३५२९ । २ व्याकुल, अधीर : डरपि ~ होहु जनि कहुँ ३६९१ ।

काते किससे, क्यों · अब सकात धौं ~ २६८४ ।

कातैं १ किससे · कहौ घटै कौ ~ ३६७९ । २ किस कारण से, क्यों : जानत हौ कछु ~ ३९६१ ।

काथरी गुदडी . प्रीति ~ भई पुरानी ३७१८ ।

कादर १ कातर, व्याकुल : भगत बिरह कौं अतिहीं ~ १/३१ २ पुरुषार्थहीन, कायर कहत भए सब ~ ८७९ ।

कादौ कीचड · महर के दधि ~ ३१ ।

कान[1] कान्ह, श्रीकृष्ण रस बस करिवौ ~ सा० ल० ६७ ।

कान[2], **करी न ~** ध्यान नहीं दिया : जब तोसौं मसुकाइ कही नृप तब तै — ~ १/२६९ । ~ **कटाइ,** बेइज्जती, अपमान (अपने या भक्त की) : इहि बिधि ~ — १/१८५ । ~ **दै** ध्यान देकर, ध्यानपूर्वक · सुनहु कथा यह ~ — ८०५ । ~ **परी** कान मे पडने पर . ~ — सुनियै नाहीं तब २९०७ । ~ **लगि कह्यौ** चुपके से कहा : ~ — जननि जसोद वा घर मे बलराम २४० ।

कान[3] मर्यादा . मोरि प्रतिज्ञा तुम राखी है मेटि बेद की ~ सारा० ७८५ ।

कानन[1] कानो से : ~ लगि लगि गावै ३४५५ ।

कानन[2] १ वन, जगल : तृष्ना ~ माहिं ४०३७, कथा चलत ~ की ३८७८ । २ वन मे : ऊधौ कोकिल कूजत ~ ३९४६ ।

काननि[1] मर्यादा से : बहुत बचत ब्रजराज की ~ १४८८ ।

काननि[२] जगलो • माइ निगोडी ~ मैं लियैं रहै १९१६ ।

काननि[३] १ कानों . ~ की लटैं अति राजति ३६११ । २ कानो मे • ~ मुद्रा पहिरि मेषला ३८१७ । ३ कानो से • ~ सुन्यौ न देख्यौ ३५१८ ।

कान-बीरी कानों का एक गहना : सीम सेली केस मुद्रा ~ बीर ३६९४ ।

कानहिं कान/ध्यान से : विनय सुनौ प्रभु ~ ४१६९ ।

कानि[१] १. प्रतिष्ठा : ताकी पितु मातु घटाई ~ ९/७७ । २ मर्यादा, लोक लज्जा : कैसी लाज ~ है कैसी १६५१, मन मैं डरी, ~ जिनि तोरै ९/७९ । ३ मर्यादा से • अग्रज ~ चले अतुराए २८७८ । ४ सकोच, लज्जा : नैकु न कीन्ही ~ ३८५७ । △ ~ **करति हौ** मर्यादा का पालन करती हूँ : अपने कुल की ~ — ४००४ । ~ **करी** मर्यादा रखी : अब लौं ~ — मैं सजनी २२४६ । ~ **न तोरी** मर्यादा नहीं तोडी : तव मैं ~ — २८६ ।

कानि[२] कान से : मैं सुनि ~ मद विधि बानी ४ ।

कानी[१] कष्ट, दुःख : कैसैं घटति कठिन यह ~ ३२६२ ।

कानी[२] १ मर्यादा • दुरि सब लाज गई कुल ~ ९८९ । २ सकोच : करैं नद की ~ ३११ ।

कानी[३] कान । △ **न कीन्हौ** ~ कान न किया, सुना नहीं : तिन तौ कह्यौ — ~ ८०० ।

कानैं १. कान, ध्यान : ऐसी करत न ~ ३९९८ । २ कान मे : सब अनाहद ~ ३५३० ।

कानैं कानो से : घैर सुनत नहिं ~ ३९६० ।

कानौ १ काना, एक आँख वाला : स्वान कुब्ज कुपगु ~, स्रवन पुच्छ बिहीन १/३२१ । २ कमी है, दोष है, कानापन है : सूरदास की एक आँखि है, ताहू मैं कछु ~ १/४७ ।

कान्यौ[१] काना, एक आँख वाला . ज्यौं अँधरनि मैं ~ राजा परि० १/१७४ ।

कान्यौ[२] मर्यादा भी बिसरि गई कुल की ~ १४५५ ।

कान्ह, कान्हर कृष्ण इक हम दीन हुती ~ बिनु ३३०६ ।

कान्हरो श्री कृष्ण करत ~ गान सारा० १०१३ ।

कान्हरौ कान्हरा राग ~ हिंडोल कौतुक, तान बहु विधि लाग २८३१ ।

कान्हहि १. कृष्ण को (पर) ~ अव न पत्याऊँ ३४५ । २ कृष्ण से ~ कहति इहाँ जनि आवै ८९३ ।

कान्हहु कृष्ण से भी जसोदा ~ तैं दधि प्यारौ ३७८ ।

कान्हा कृष्ण : ~ धेनु चराए आवत ४८० ।

कान्हैं श्री कृष्ण को • ~ लै जसुमति कोरा तैं रुचि करि कठ लगाए ५३ ।

कान्हे श्रीकृष्ण • या कन्या सौं ~ ३२५ ।

कापर[१] कपडा • अव ~ पहिराए हौ ३५०० ।

कापर[२] किस पर ~ रिस करि मौन गही री २०५४ । △ ~ **रिस पाई** किस पर क्रुद्ध है सकुचि कह्यौ ~ — ९२७ ।

कापरा वस्त्र, कपडा • काढो कोरे ~ ४० ।

कापैं = कापै दे०

कापै १ किसके द्वारा, किससे . ~ बरनी जाई ३९९९, हम ~ अब कथा सुनैंगे सारा० ८३० । २ किसके पास • ~ हम अब जाहिं १०२० । ३ किस प्रकार : रग ~ होत न्यारौ १४५९ । **बरनि ~ जाइ** कौन वर्णन कर सकता है • परस कौ सुख — ~ — १०८१ ।

कापौं काँपू, थरथराऊँ . ~ अरु रोवौं ४८१ ।

काफी काफी (एक राग) . ~ राग मुख गावै २८८७ ।

काम[१] इच्छा, मनोकामना : आनदित मनु पूरन ~ १५७, पूरन ~ करी २४ ।

काम[२] १ काम (वासना) अर्थ धर्म अरु — मोच्छ १/३९ । २ काम (के वशीभूत होकर) • हृदय भरि बाम सुखधाम मन मोहन ~ २२०४ । ३ कामदेव : देखत लज्जित ~ ११४४ । ४ कामदेव ने ~ बैर लीन्हौ सर भारी ११०५ । △ ~ **गयौ तनु मारि** उनके शरीर मे काम का सचार हो गया . ~ — १००१ । ~ **जक्यौ** काम का सचार हुआ . वैसै बहुरो ~ — ११३२ ।

काम[३] १ कार्य • ~ पर्यौ हो वाकौं १/११३ । २ मतलब है : बलदाऊ कौ आवन दैहौ श्रीदामा सौं ~ २४० । △ ~ **न आई** उपयोगी न हुई, व्यवहार मे न आई काया हरि के ~ — १/२९५ । ~ **न आवैं** सहायक नहीं होते . धन-सुत-दारा ~ — १/८० । ~ **पर्यौ** पाला पडना, वास्ता होना • ~ — सारग वासी सौं १/३३ । ~ **बनावै** स्वार्थ पूरा करता है • मूक, निंद, निगोडा, भोडा, कायर ~ — १/१८६ । ~ **सरै** मतलब निकलता है . और भजे तैं ~ — नाहिं १/६८ ।

काम अंध काम मे अधा, कामान्ध ~ कछु रहि न सँभारि ६/७ ।

काम अगिनि कामाग्नि : मानहुँ ~ निरज्वल भइ १७०० ।

काम-कटक १ काम की सेना : ~ लै कुज भडा तर २४५५ । २ काम के समूह मे • ~ फिर कलह मच्यौ ११३९ ।

काम-कुँवरि काम कुमारी (राधा) . खाई है ~ ७५२ ।

काम कोदंड कामदेव का धनुष (बना हुआ है) : स्रवन कुंडल कोटि रवि-छवि भ्रकुटि ~ १७५५ ।

काम-कौतुक-हार कामक्रीडा करने वाले : सूर प्रभु उरा दियौ निसि रमि ~ ११३४ ।

काम-ग्रंथ-अरि-गुन-रिपु-सुत (काम ग्रथ) कोकशास्त्र अर्थात कोक, चकवा के शत्रु (रात्रि) के गुण (अधकार) के शत्रु (दीपक) से उत्पन्न, काजल, अजन अर्थान्तर से अजन नामक दिग्गज,

हाथी ~ सा० ल० १०२।

काम-तनु-आतुरताई शरीर में काम का आतुरता है • स्याम ~, स्यामा वस्य भए री १०९९।

काम-तनु दुंदरी काम के शरीर में उत्पात/पाप • ~ करन हारी १७५१।

कामदउ काम पीड़ा : मेरौ ~ दुख औ बिरह हरौ १९४४।

काम-दव काम की अग्नि • सुनत ~ दारुन ४०२०।

काम-द्रुम कल्पवृक्ष • सुभग मानौ ~ की ११६१।

काम-द्वंद काम का द्वन्द्व, काम-पीड़ा ~ तनु त्यागी १९९७।

काम-धाम[1] काम-काज • मन ~ बिसरौ १०००।

काम-धाम[2] काम के धाम को ~ मरनौ २१८४।

काम-धुज काम-ध्वज, मीन : लाभ थान पचमौ ~ सा० ल० ८१।

कामना धेनु कामधेनु ~ पुनि सप्तरिषि कौं दए ८/८।

काम-नृपति कामराज, कामदेव : जाकैं बल है ~ कौं १५९३।

काम पिता वाहन भख को तन कामदेव के पिता (विष्णु) के वाहन (गरुड़) के भक्षण (सर्प) का तन, द्रुतगति ~ क्यों न धरत निज गात सारा० ९३७।

काम पिता माता गुरु ता बपु कामदेव के पिता (विष्णु) की माता (अदिति) के गुरु (बृहस्पति) का शरीर (पीत), पीनी ~ जुवति कोट दरसार सारा० ९५२।

काम-फल मन-चाहा • करत मन ~ पुरुष नारी २६२१।

काम-बट-बरुह काम रूप वटवृक्ष की जटाएँ मनहुँ ~ रहे गहि झूलन बाल मयूर परि० २/६८।

काम-बस्य काम के वशीभूत होकर स्यामहिं गावन ~ ११८०।

काम-बिथा काम की पीड़ा ~ तनु दाहौ री १८७५।

काम-बिबस काम के वशीभूत ~ व्याकुल-उर-अन्तर ९/५६।

काम बेलि काम रूपी लता ~ अधिकाइ ६६१।

काम-ब्यथा काम पीड़ा ~ नाच्यौ सुकुमारी २४९६।

काम-भंडार कामरूपी निधि को • ~ लूटि नीकै करि १७२२।

काम-मोहन काम को मोहित करने वाले ' सूर प्रभु अति ~ १००१।

काम रस काम का रस, सभोग सुख, सुरति सुख प्रेम ~ लूट सारा० ९७५।

कामरि कमली • हाथ लकुट ~ काधे पर ३६५१।

काम रिपु काम रूपी शत्रु को दगाबाज कुतवाल ~ सरबस लूटि लयौ १/६४।

कामरिया कमली कान्ह काँधे ~ कारी ४५२।

कामरिस-बस कामावेश में ~ बाम निदरि यार्‌यौ २४९७।

कामरी कमली लै कारी ~ उढाई १९९०।

काम-सर कामदेव के बाण से गइ ~ मारी ३४६८।

काम-सर-घात काम के बाण का प्रहार मंदर स्याम नाद बसी के बँधी ~ ४०२५।

काम-सरनी कामदेवों की पक्ति कोउ कहति यह ~, कोउ कहति नहिं जोग ६३६।

कामसिरोमनि काम विद्या में सिरमौर • सूरदास प्रभु ~ २४५७।

कामहि[1] कामदेव क्यों जू बसै रिपु ~ २१३०।

कामहि[2] १ कार्य में आपु लगीं गृह ~ ५१५। २. कार्य में • लुब्ध आपनै ~ ३१८७।

कामा[1] अभिलाषा तबहिं असीम दई परमन है, सफल होहु तुम ~ ५३६।

कामा[2] हेतु, लिए तनक बात कै ~ ५३६।

कामा[3] एक गोपी, राधा की एक सखी स्यामा, ~, चतुरा २००८।

कामातुर काम की इच्छा से व्याकुल भज्यो मोहिं ~ नारी ७९९।

कामादिक काम आदि ~ पाचौ प्रतिहार ४/१२।

कामि कामुक, कामी मानो ~ जन देखि युवति जन सारा० १०४०।

कामिनि १ कामिनी ~ आजुहिं आनि रहैगी २४५५। २ स्त्री अपनी पुरुष छाँड़ि जो ~ ११८१। ३ कामिनियों को काम बिमोह्यौ ~ १०४८।

कामिनी १ कामिनी ने • मकर को चित हर्‌यौ ~ १/४३। २ सुन्दरी कनक ~ सौं मन बाँध्यो १/७४।

कामी लोभी अलि ज्यों रस के ~ ३६२९।

काय शरीर • बिछुर्‌यौ हस ~ घटहूँ तैं ३२२९।

कायफर एक प्रकार का वृक्ष या फल कूट ~ सोंठ चिरइता १५२८।

कायाग्राम शरीर रूपी ग्राम की ~ मसाहत करिकै १/१४२।

कार कार्य से चल्यो ब्रज इहिं ~ ५२४।

कारज १ कार्य यह ~ क्यौं होइ ५८९। २ कार्य के लिए गए रहे आए इहिं ~ २३०२। ३ कार्य में नँदरानी गृह ~ लागी नाहिन लई सँभार सारा० ४३३। △ ~ सरी इच्छायें पूरी हो गइ सूर प्रभु के सत बिलसत सकल ~ — ३०२। ~ सरै उद्देश्य सिद्ध होगा • कियैं नर की स्तुती कौ ~ — ४/११। ~ सार्‌यौ काम बनाया अदिति सुतनि कौ ~ — १०/२।

कारन १ के कारण ये भू-भार उतारन ~ प्रगटे स्याम सरीर ९/१६। २ कारण से कौन ~ नाथ छाँडी ४०५५। ३ के लिए • त्याए जोग बँचिबे ~ ३९६४। ४ प्रयोजन में किहिं ~ ह्याँ आए ९/६८।

कारन अंत अंतले घट कर कारण का अत (कार्य, काज) काजल के अंतिम वर्ण को घटाने से, काज ~ आदि घटत पै जोई

सा० ल० ५ ।

कारन करन उपादान कारण और सृष्टि का करने वाला निमित्त कारण प्रभु तुम अनत तुम तुमहिं ~ ४१८३ ।

कारनकरनहार कार्य और कारण को करने वाले हैं ~ भगवान १२/५ ।

कारने के लिए, के कारण • ससि सुख देखन ~ २८६६ ।

कारनैं के कारण तुमसौं अब दधि ~ १६१८ ।

कारिख कालिख, कालिमा जो ~ तन मेट्यौ चाहत ४०२४ ।

कारी[1] १ कालिमा • अपजस की ऊधौ पै ~ ३७४६ । २ काली • धौरी धूमरि ~ काजर मैन मजीठी सारा० ५५१ । △ **होत पीरी** ~ काली पीली (क्रुद्ध हो) रही है • कौन पै — ~ २५९५ ।

कारी[2] काम का पुरुष, कै नारि, नहिं भेद ~ २०१७ ।

कारे पुं० १. काले (सर्प) • मानहुँ विवर गए चलि ~ २२९३ । २. काले (लोग) ~ कृतहिं न मानैं ४०४२ । **वि०** काले • अति दुर्बल तन ~ ४१०० । △ ~ **कोसनि** काले कोसो, बहुत दूर मथुरा हूँ तैं गए सखी री, अब हरि ~ — ४२५८ ।

कारेन कालों (कुटिल जनों) : ऐसी ही ~ की रीति ३७५६ ।

कारेहु काले मे भी . स्याम सखी ~ मैं कारे ३७५४ ।

कारैं पुं० १ काल ने : ताकी माता खाई ~ ७/८ । २ काले का . 'सूर' सुभाव मिटै क्यौं ~ ३९९६ । **वि०** काले • प्यारी भुअग डस्यौ ~ परि० १/४१ ।

कारो काला . सुलगि सुलगि भए ~ ३८३४ ।

कारौ १ काला (कृष्णमय) : तन मन ह्वै गयौ ~ १३५ । २ काला : ~ कहि-कहि मोहि खिझावत २१६ । ३ काला (दुष्ट) 'सूर' स्वभाव तजै नहिं ~ ३९९९ ।

काल[1] १ यमराज • पर्‌यौ ~ सों काम १/५७ । २ यमराज से : ~ लरो छणमार सारा० ८५० ।

काल[2] कल : तातैं जैहै ~ अकेली सा० ल० ८५ ।

काल[3] १ मृत्यु : जाकी चितवनि ~ डराई १२९, जब लगि ~ न पहुँचै आइ ७/२ । २ मृत्यु के ~ कर तैं राखि लीन्ही ३८०० । ~ **आयौ** मौत आ गई अब दसकध को ~ — ९/१३५ ।

काल[4] १ समय : ~ बितायौ करत स्नान ९/५ । २ समय मे अत ~ तुम्हरै सुमिरन गति १/२६४ ।

काल अगिनि कालाग्नि जातैं ~ त बाँचौ १/९१ ।

काल-अवधि अन्तिम अवस्था, मृत्यु का समय . ~ जब पहुँचै आइ ७/२ ।

काल जवन काल यवन को . तब रिस्याइ कै ~ अपनें सँग ल्यायौ ४१६३ ।

कालनेमि एक राक्षस जो सुरों को पराजित कर, अपने शरीर को चार भागो मे बाँट कर, स्वर्ग पर राज्य करता था । अत मे यह विष्णु के हाथ से मारा गया और दूसरे जन्म मे कस हुआ ~ रिपु ताकौ रिपु अरु ता बनिता को काहु न पाऊँ परि० १/७० ।

कालपुर यमपुर महा ~ तुरत पधारे हरि भूमा के पास सारा० ८५६ ।

काल बली बलवान काल . ~ तैं सब जग कपत १/५२ ।

काल-बस मृत्यु के वशीभूत पिता सो तासु ~ भयौ ५/३ ।

काल-ब्याल काल रूपी सर्प . ~ रज तम विष ज्वाला १/५५ ।

काल यवन हरिवंश के अनुसार यवनों का एक राजा, जिसे गार्ग्य ऋषि ने गोपाली नाम की अप्सरा से उत्पन्न किया था । इसने जरासध के साथ मथुरा पर चढ़ाई की थी । श्री कृष्ण की छल नीति से मुचुकुद की कोपदृष्टि से भस्म हो गया ~ के आगे भाज्यो जाय गुफा गहि लीन्ही सारा० ७५३ ।

कालहि[1] समय (को) . नहिं जानति तिहि ~ १६३८ ।

कालहि[2] १ मृत्यु का ताहि कहा डर है जम ~ ८०८ । २ मृत्यु के कहौ तौ ~ खड-खड करि, टूक टूक करि काटौं ९/१४८ ।

कालहु मृत्यु भी ~ तैं नहि डरतौ १/१२३ ।

काला[1] काल, मृत्यु निसचय भयौ कस कौ ~ २९४५ ।

काला[2] समय जीवत तिहिं ~ ३४६४ ।

कालिंदी[1] यमुना देखियत ~ अति कारी ३१९१ ।

कालिंदी[2] श्री कृष्ण की एक स्त्री • तहँ ~ वन मे व्याही अति सुन्दरि सुकुमारि सारा० ६५४ ।

कालिंदी-तट यमुना के तट पर ~ स्याम बैठे १५०४ ।

कालिंदी पति नैन तासु सुत यमुना और उसके पति (भर्ता) और अखियों के मध्य वर्णों के मिलाने से, मु र खि अर्थात् मूर्ख के पुत्र, नासमझ . ~ लागत है सब लोग सारा० ९६४ ।

कालि[1] पिछला दिवस, कल ब्रज तजि गए माधव ~ ३१६७ ।

कालि[2] काली नाग का ~ उद्धरन ३०८१ ।

कालिका अधकार . मिटि जो गई निसि ~ ८०९ ।

कालिमा कलक, पाप कलिमल हरन, ~ टारन १/५८ ।

कालियादह यमुना का वह कुड जो वृन्दावन के किनारे था और जिसमे काली नामक नाग रहता था : काहु लै मोहिं डारि दीन्हौ, ~ नीर ५८० ।

कालिहि १ कल : ~ तैं रीतौ गर तेरो १९६९ । २ कल तो : ~ और बरन तोहिं देखी २०८० ।

कालिहीं कल ही : कोउ कोउ कहति ~ हमकौं लूट लई १५०२ ।

कालिही कल ही : बहुरि मिलैगी ~ चित समुझि सयानी

२६९८।

काली[1] काली नाग . पैठि पताल नाथि ~ को १०५०।

काली[2] एक देवी, काली मैं ~ सों यह प्रन गह्यौ ५/३।

काली उरग काली नाग ह्यों हरि ~ निकास्यो ४०५०।

काली-दवन काली नाग का दमन करने वाले हो ~ कैमि कर पालक ९८१।

कालीदह वृन्दावन मे यमुना का एक कुड जिसमे काली नामक नाग रहता था जिसे श्रीकृष्ण ने नाथा था · ~ अँचयौ जल जाइ ५०१।

काल्हि १. कल (आगामी दिवस) · अब जु ~ तें अनत सिधारौ २७३३। २. कल (जो बीत गया) बाँह उचाइ ~ की नाईं १७९।

काल्हिहि १ कल (ही) · ~ कै ढग पुनि आई हैं १५६७। २ कल तक · ~ घर-घर डोलते १४६१। ~ **पूज्यौ** कल ही पूजा की . ~ — फल्यौ बिहाने ९३३।

काल्हिहीं कल ही . सुनि री मैया ~ १९७०।

काषि चाह, कसर . अहिरनि कैं मन यहै ~ है ९२४।

काष्यौ अभिलाषायें रह्यौ न मन जुवतिन के ~ २९३२।

कासी १ काशी पौंड्रक अरु ~ के राइ ४२०६ । २ काशी मे · मानौ तप कियौ ~ ४०४३।

कासु किसी · ~ कौं अंकम भरि लावत १४३४।

कासो=कासौं दे०

कासौं=किससे · ~ टेइ धराई १४२४।

कासौ कासौं दे०

काह क्या : ~ दुराव करत मनमोहन २५०४।

काहि किसको : अरु हौं ~ पुकारौं ४।

काहि[1] १ किस : कौन ~ कौं कहै सँभारै ९०२ । २ किसके : कहाँ रहौं, हम ~ रई १५९१ । ३ किसको, किसे : ~ सग लै फेरौं ९/१४६ ।

काहि[2] १ क्या है : ग्यान ध्यान कौ ~ ३८४२ । २ क्यों : अब वह ~ पत्यात २२३४।

काहुँ[1] १ किसी के : ~ न प्रान हरे ३७६७ । २ किसी को भी : मैं ~ न पहिचानी २५५९।

काहुँ[2] कहीं भी : जहाँ जहाँ कौ लोग पठाए, ~ खोज नहि पायौ ४१९०।

काहुँहि किसी को भी : डगर चलन न देत ~ १४२१।

काहु १ किसी : मारैगी ~ की गैया १५५ । २ किसी के : ~ चित चानन की ३८७८ । ३ किसी को . ~ न जानि परे ४८३ । ४ किसी ने सूर स्याम गति ~ न जानी ६२५। ~ **के जात** किसी के घर जाते हो : कत हो कान्ह ~ — ३०८।

काहुहि १ किसी के : ऐसे बस्य न ~ कोऊ २२८२ । २ किसी को भी : बदत न ~ ४३३।

काहुहि किसी को भी भेंट न ~ दीन्ही १७४२।

काहूँ १ कितना ही : ~ जतन बनाइ ३९९९ । २ किसी · कब हुँक ~ भाँति चतुर चित ३२०१ । ३ किसी का : सुनि री सखी दोष नहिं ~ ३१८९ । ४ किसी के · रहत न ~ हटके २३२२ । ५ किसी से · जाकैं बल ~ न टरै १६३६; ६ किसी ने · क्रम क्रम गए कह्यौ नहिं ~ २२२३, ७ किसी पर : इतनी कृपा करी नहिं ~ ५६७। ~ **देख्यौ** किसी को देखते ही . ~ — टारत मारि १५८१।

काहू १ किसी . रुचि नाहीं ~ पर मेरी २४१ । २ किसी के जो कहौ न ~ आगैं ३८२२ । ३ किसी से अब ~ नहिं डरिहौं १९४३ । ४ किसी ने . ~ इनहिं दियौ बहकाई ९२३ । ५ कोई भी · छुवन न ~ पाए ३७८१ । ~ **यतन** किसी भी यत्न से . तोरन धनुष देव त्र्यम्बक को ~ — न पाये सारा० २०६।

काहे क्यो, किसलिए : ~ निरगुन ग्यान आपनौ ३७०२।

काहे १. किस : कहि ~ की प्रीति ३८३८ । २. किसलिए, क्यों ~ को तुम रारि बढ़ावत ५३६ । ~ **की पहिचानि** किस बात की पहचान है · स्याम सौं ~ — १८५२ । ~ **कौं** किसलिए, क्यों : ~ — कलह नाध्यौ ३७२।

काहैं १. किसलिए, क्यों तुम मोकौं ~ बिसरायौ ९/२ । २. कैसे हौं कुटुंब ~ प्रतिपारौं ९/४० । ३ क्या कह्यौ तुम्हारौ लागत ~ ३६१२ । ~ **तजी** क्यों छोड दिया . सूर स्याम~ — ११०६ । ~ **न गनायौ** क्यों गिना नहीं (शामिल किया) : महतारी ~ — १५८२ । ~ **न ठियौ री** स्थापित क्यों नहीं किया . जुवतिनि प्रति ~ — १८२८ । ~ **रूसी** क्यों रूठी है : ~ — री है बेकाज २७५३।

काहैं क्यों . तो ~ तप कीन्हौ १५३३।

किकनी करधनी . कटि ~ बनाइ १३३।

किंकर[1] १. अनुचर, दास : ~ कर मन चेरो सा० ल० ३३ । २. दूत : थके ~ जूथ जम के १/१०६ ।

किंकर[2] एक राक्षस, जो विश्वामित्र की आज्ञा से राजा कल्मापपाद के शरीर मे प्रविष्ट हुआ था · ~ कर पकरि बान तीनि खड कीन्यौ ९/९६।

किंकिनि किंकिणी, करधनी : कटि ~, पग नूपुर भ्राजत २२१९।

किंकिनि घटा-घोष किंकिणी का रुनझुन ही एक घंटे का स्वर है (जिसे) : ~ माधौ भए मय बेहाल २४४९।

किंकिनी करधनी ~ धुनि स्रवन सुनि हरि २६१४।

किंकिनी-रट करधनी की ध्वनि · काछ बनी ~ १४५२।

किंकिरिनि दासियाँ : ~ की लाज धरि ४१३५।

किंच कुछ कुछ : ~ चकक हेम मंटित परि० २/४०।

किंचित कुछ, थोडा सा . स्रम जल ~ निरखि बदन पर ३४३।

किंजल्क कमल के फूल का पराग जहँ ~ भक्ति नव लच्छन

१/३३९।

किधो = किधौं दे०।

कि १ की विरद ~ लाज धरे १/९८ । २. या : ओढयत है ~ विछैयत है ३९६६।

किएँ की . अहिकुल वदन सो पूजा ~ २६१७।

किए १ करके : ~ प्रन हौं पर्यौ द्वारैं १/१०६। २. किया, कर दिया : ~ निडर जदुवस ३५३६ । ३ करने : सुरसरिता जल होम ~ तैं ३७४४। ४. किये हुए · छाता लौं छाँह ~ १/२३। ५. वना दिया है : जल वँधे निज थल ~ ३८६५। ६. लगाए हुए खौरि चदन ~ मुख सुहाए ३०५९।

किऐ १ करके : अति रिस ~ तव औगुन गानति २५७२। २. करने से · यह सब ~ होइ फल जाइ ४२९८ । ३ किये आए सूरति ~, टटकौ रस २५५५। ४ निर्माण किया . इक चित ह्वै भागवत ~ १/८९।

कित १. कहाँ : सूरदास प्रभु ~ रजनी विहाइ २६३५। २. कितने ~ दुख निमिष निवारी ३५९२। ३ किधर निरालव ~ धावै १/२। ४. किधर से . नँद के गृह जाउँ ~ है १६७२। ५ किस · ~ आधार छँडावहु ३६१०। ६. कैसे वृच्छ बिना ~ (फर) सरई ४। ७ क्या ~ अहीर वेचारे ३८३३। ~ **भरत** क्यो भर रही है · ~ — अजुलि नीर ११६१। ~ **ह्वै गये** क्या हो गये, किधर चले गये ना जानौ ~ — मोहन ११११।

कितक १. कितने : चार हार धौं ~ हजारा ७९९। २. कितने ही : ऐसे और ~ है नामी ५९२२। ३ क्या · ~ वात यह धनुष रुद्र को सकल विश्व कर लैहौ सारा० २२४।

कितनहु कितना ही : कोउ ~ समझावै १६३०।

कितनैं कितने अजहुँ नाहिं डरात मोहन बचे ~ गाँस ४२७।

कितनौ कितना (ही) · दूध दही तुम ~ लैहौ ८२१।

कितव कपटी, धूर्त : रे रे मधुप ~ के बन्धू चरण दास जिन करिहौ सारा० ५६६।

कितहि १. कहाँ · ~ तज्यौ लघु भ्रात ५८९ । २ किधर : सेवाहूँ करत ~ दीन्ही है पीठी ३७८०।

कितहूँ कहीं (भी) ~ जाइ जनम डहकावै १/२३३।

कितिक १. कितना (बहुत अधिक) : काल वितीत ~ जव भयौ ९/१७३। २ कितना (बहुत थोडा) · ~ मथुरा ब्रजहिं अन्तर ३१२१। ३. कितनी कहौ वात अपने गोकुल ~ प्रीति ब्रज वारहिं ४२७०। ४. कितने : ~ ब्रज के लोग ८५३। ५. कितनी (कोई गणना नहीं है) : ~ निसाचर जूथ ९/१४७। ६ कुछ भी तऊ न मानति ~ निहोरी २३०६। ७ कौन सी : सुनहु सूर प्रभु ~ वात यह २४२५। ८ क्या (चीज़) है : ~ वापुरौ कस १६१८।

किती १ कितना मन, तोसौं ? कही समुझाइ १/३२७। २ कितनी (सख्यावाचक) : ~ बार मोहिं दूध पियत भई १७५।

किते १ कितना, अनेक प्रकार से ~ सहत अपमान १/१०३। २ कितने (सख्यावाचक) . ~ दिन हरि सुमिरन बिनु खोए १/५२।

कितै कहा : पहिली प्रीति ~ गई सजनी ३९३४।

कितौ १ कितना : सूर ~ सुख पावत लोचन १३८। २ कितना भी . कोउ ~ गुन होऊ ३९७९। ३. कैसा . ~ यह काम ९/२२।

कितौऊ कितना भी : नाहिन फिरत ~ फेरे २३३८।

किधौं या, या तो, अथवा ~ देवमाया मति मोह्यो ~ अनत ही आयौ ४२३६।

किन १ किसके · माई हौं ~ सग गई ३१६९। २. किसने : ~ लिखि लेख दयौ ३८५९। ३ किससे . अव ~ करत धरो ३६६३। ४. क्यो न : कोटि उपाइ करौ ~ कोइ १२/४। ·~ **आवहु** क्यो नहीं आओगे . 'सूर' स्याम अब ब्रज ~ — ४०३२।

किनकैं किसके : ~ हेत लई कर मुरली ३९८२।

किनहुँ, किनहु किसी ने : ~ सग कोउ वेनु १६१८।

किनहूँ किसी . ~ कै घर माखन चोरत ४०५३।

किनि किसने : ऐसै गुन ~ तुमहिं सिखाए २६२६।

किन्नर[1] एक प्रकार के देवता जो पुलस्त्य ऋषि के वशज माने जाते हैं . ~ कोटि रिझाऊँ परि० १/८०।

किन्नर[2] तँवूरा या सारगी एक बीना, एक ~, एक मुरली।

किन्नरि सारगी : वाजत ताल मृदग और ~ की जोरी २८७०।

किन्नरी[1] किन्नर जाति की स्त्रियाँ : चोदह सहस ~ जेती ९/७९।

किन्नरी[2] तँवूरा या सारगी : वाजत वीन रवाव ~ सारा० १०७३।

किन्हि किन्हीं सूरदास ऐसी कुनारि ~ परि० २/३।

किन्ही करना ज्यौं त्यौ ~ चाहैं भोग १२/३।

किमपि कुछ भी : ~ नाहि न वची ११९१।

किमि कैसे सूर पार ~ पावै सारा० ३४५।

किय किया · निर्भय ~ लकेश विभीषण सारा० २९५।

किये करने से, करके · हमसौं वैर ~ कह पैहै १७७५।

किये १ करके : मधुकर प्रीति ~ पछितानी ३९८७ । २. किये . जदपि जतन ~ जोगवति ही २३९५। ३ वना दी : तनु की गति पगु ~ २२३७। ४. वनाये, लगाये : माथैं तिलक ~ २४। ५. धारण किये · तिन हित जो जो ~ अवतार ३/९। ~ जात करती जा रही है : ~ — उँजियारे २७४०।

कियैं करने पर/से : लाज ~ अतर कछु हैहै १६५० ।
कियैं कर देने से : प्रगट ~ कछु नफा वढै है १६५० ।
कियो=कियौ दे०
कियौ १ किया : जदुवमी कुल उदित ~ ३११० । २ कर दिये : फारि ~ द्वै फाँकौ १/११३ । ३ करना : अब धौं ~ कहा चाहत है ३५८८ । ४ करने मे : ~ सुरति नहिं हारो २७२९ । ५ किये : जित ~ कछू नहिं होइ ९/१७३ । ६ किये हुए का : अपनौ ~ तुरत फल पायौ २३११ । ७ पूरा किया : ~ मनकाम नहिं रही बाकी २४९० । ८ पैठा कर रखा है • वानर वन विघन ~ ९/९६ । ९ वनाया, वना दिया : कामै स्याम तनु चटप ~ २४२३ । १० मचाए हुए हैं : वरषत प्रलय ~ घर अवर ८६७ । ११ रखती हो : भेट हमसों ~ १७३० । १२. लगाई : तव सुरनि पुकार ~ १६०४ । १३ लगाया : यह अनुमान ~ हम मन मैं १५८० । ~ **गवन** चला गया सुनत यह सकुचि ~ — निज भवन कों ९/१३५ । ~ **गेहु** घर वनाया जाइ समुद्र ~ — ४२६० । ~ **जनाव** अवगत कराया : चलत न काहुँहि ~ — ११८० । ~ **सहैया** सहायता की थी ग्वालनि ~ — ९६५ । ~ **सैन** नींद ले रहा है . मनहुँ जल ~ — ९९१ ।
किरच काँच आदि का छोटा नुकीला टुकडा, किरची . काँच की ~ गही १/३०४ ।
किरचक थोडा सा : ~ चदन दै विरमाए ३६४० ।
किरच किरच, मनके (दाने) : लोक-लज्जा काँच ~ १४५९ ।
किरन किरण : नहिं वढत ~ मन लाज २७३४ ।
किरनि १. किरण ~ कटाच्छ वान वर साधे २४४७ । २ किरणें : वरन वहु कुसुम प्रफुलित ससि की ~ जगमग २१७२ । ३ किरणों मे : कुडल ~ छयौ रवि १७५६ । ४ किरणों को : रवि की ~ उलूक न मानत १/११४ ।
किरनिगन किरणों से (युक्त) : परम रुचिर मनि कठ ~ १/६९ ।
किरनि-प्रकासु किरणों के प्रकाश (के समान) निरखि नँद किसोर सखि री कोटि ~ री १७९४ ।
किरनि-समाज किरण समूह : मनहुँ निसाकर ~ ११८० ।
किरनी किरणों : तरनि की ~ तैं चद भयौ मद १२१० ।
किरपा कृपा . जव सुष्टिन पर ~ कीन्ही सारा० ६३ ।
किरषि कृषि धर विघसि नल करत ~ हल, वारि वीज विथरै १/११७ ।
किरिकौ ककड परवत माहिं आहि सो ~ ९२५ ।
किरिया कर्त्तव्य-पूर्ति अथवा शपथ : ~ करिकै भई ठाढ़ी १३४७ ।
किरि किरि=फिरिफिरि, घूम घूमकर : परति जु ~ धरनी ३९५२ ।
किरिन किरणों से : सूर ~ कुम्हिलात ९/४३ ।
किरीत एक प्रकार का शिरोभूषण कुंडल लसत ~ महा ध्वनि वपु वासदेव निहारो सारा० ३६५ ।
किल निश्चय ही : मनौं काम ~ फद वनाए २८७१ ।
किलक किलकारी : गरज ~ अघात उठत ९/१२४ ।
किलकत किलकारी मार रहे हैं . ~ कान्ह देखि यह कौतुक ६१० ।
किलकनि किलकारी, हर्ष-ध्वनि : सूर प्रभु की उरवसी ~ ललित लरखरानि १०९ ।
किलकात किलकते हैं, हर्ष-ध्वनि करते हैं : चलत मग, पग वजति पैजनि, परस्पर ~ १८४ ।
किलकाति किलकारी मार रही है : अदभुत चरित देखि माधो के हँसत सकल ~ मारा० ४६९ ।
किलकार स्त्री० किलकारी : चक्रित सकल परमपर वानर वीच परी ~ ९/७४ । **क्रि० अ०** हर्ष-ध्वनि करके . दाँव देत ~ मारा० ९०१ ।
किलकारत किलकारी मारते हैं : गावत हाँक देत ~ २५३ ।
किलकारि किलकारी : रीछ लगूर ~ लागे करन ९/१३८ ।
किलकि किलकारी मारकर : ~ हँसत वाल सोभा लसत ६२ । ~ **उठी** प्रसन्नता से किलक पटी . ~ — तव सखी स्याम की १०७३ । ~ **किलकि** किलक किलक कर • ~ — कुल सहित आपनैं ४१४१ ।
किलकिलात किलकारियाँ मारता हुआ : गहगहात ~ अधकार छायौ ९/१३९ ।
किलकिहि प्रसन्न होंगे, किलकेंगे . कापी ध्वजा वैठि कपि ~ १/२९ ।
किलकिला किलकिला पक्षी का : जैसें मीन ~ दरसत १/१०७ ।
किलकी हर्ष-ध्वनि की • सुपनैं हरि आए हौ ~ ३०६१ ।
किलकै किलकता है . कवहुँक हिलकै ~ जननी १३० ।
किवार कपाट . उघरत नैन ~ २/३१ । **लाई** ~ द्वार वन्द करके, किवाड लगाकर : सूर पाप कौ गढ दृढ कीन्हौ, मुहकम — ~ १/१४४ ।
किवारा पट, कपाट • चहूँ दिसि ब्रज लागे ~ ९/७६ ।
किवारि किवाट, दरवाजा . खोलि ~ पैठि मदिर मे ३३१ ।
किसल किसलय, पल्लव : तेइ सुनि सूर ~ गिरिवर भए ३३८९ ।
किसल दल किसलय दलों : कदली जूथ अनूप ~ . लें मडल छावहु ४१८५ ।
किसलय कोपलें, नवीन पल्लव • ~ कुसुम कुत सम सायक २११६ ।
किसोर किशोर (११ से १५ वर्ष तक की अवस्था) : राघव-बयस ~ ९/२३ ।
किसोरिका किशोरियाँ, नवेलियाँ : जे ब्रज हुती ~ २८६६ ।

किसोरी १ किशोरियाँ, बालायें : तन व्याकुल भई विवस ~ ९८९। २. किशोरी : नवल कुवरि, वृषभानु ~ ६८५।
किहिं सर्व० १ किस : ~ विधि नद महोत्सव कीन्हौ ३८६४। २ किसकी : ~ सरन जाऊँ १/१६०। ३. किसके · ~ भय दुरजन डरिहैं १/२९।४ किसको, किसे · ~ देख्यौ चढि जात ३८९३। ५. किसने · ~ गयद बांध्यौ सुनि मधुकर ३९१६। ६ किससे : तोसों धरौं दुराइ, कहौ ~ १६७०। ७ कौन . ~ उपदेसै सोग ४२७१। क्रि० वि० क्यों कुल कलक तैं ~ मिलि दयौ ९/३। ~ भाइ १. किस प्रकार : गऊ वच्छ मुरली सुनि उमडत अब जु रहत ~ — ४०९५। २ किस भाव से : पायौ तिनि ~ — १००८। ~ मार्‍यौ किसे मारा : वान कमान कहा ~ — १५८४।
किहि १ किस · ~ राकसिनि जावक उर लाए परि० १/८८। २ किसके : कहौ जोग ~ जोग ३६८० । ~ रूप किस रूप का है · कौन अग ~ — १८३१।
किहुँ १ किसी : ~ विधि, की उपजावै ३२१५। २ किसी ने कै वह ठौर छुडाइ लियौ ~ ४२३७।
किहूँ किसी भी : समाधान नहि होत ~ विधि ३५४८।
की १. को : वासुदेव ~ बडी बडाई १/३, कौन देव ~ जात ८४१। २ अथवा : ~ गोकुल तैं गमन कियौ तुम १०११। ३ या तो : ~ सूर सरद ससि वदन दिखाऐ १/२१३। ४ क्या : ~ तुम ब्रज मारगहिं भुलाई १०११।
कीए किये हुए हैं : वन की धातु चित्रित तन ~ ४०९४।
कीऐ किये : कहा जोग ~ ३७००।
कीकै कूकते : गिरिधर भागि चले है ~ २८७।
कीच १ कीचड रति रन ~ मची २४४८। २ कीचड मे : धोयौ चाहत ~ भरौ पट १/१९४।
कीजत १ किया जाता है . सुत हित जो जग्य व्रत ~ ३७५३। २ करते : ~ है जिहि लोभा ४१६४। ३ करते हैं · जो कुछ करन कहत सोइ ~ १/१६३। ४ किया जाय : ~ कह सन्यास ३५८३।
कीजति १ की जाती है : ~ कहा प्रतीति संदेसनि ३८४४। २ करने लग गई (है) . एती रिस कब तें ~ री २८०१।
कीजतु १ किया जाता ऊधौ जोग कहा है ~ ३९६६। २ करते : गुन औगुननि दोष नहि ~ ४०६६।
कीजिए कीजिए · अब मोहिं कृपा ~ सोइ ४/५।
कीजिऐ कीजिए : कृपा अब ~ १/१२८।
कीजियै १ कर दीजिये . ताहि ~ त्याग १६१६ ।। २ करनी चाहिए · सुनौ सखी अति नहिं ~ २०५०। ३ करे · बिनु सुने कह ~ ४१८७।
कीजै १ करती हैं : निमिष चैन नहिं ~ ३९१७। २ करते हें : कहा न ~ अपने कार्जे ३८८३। ३ करते हो : विनती क्यों नहिं ~ ९/१२६। ४ कर दीजिये : रघुपति, बेगि जतन अब ~ ९/११०। ५ करना . पाछैं जो भावै सोइ ~ ८०५। ६ करना चाहिए विमुख जननि कौ मग न ~ १९२७। ७ करना है : ~ कहा कृपन की सपति २३३१। ८ कर लें : हम सब बैठि कलेऊ ~ ४३८। ९ करें : ~ कहा नहीं बस काहू ३५५४। १० किया जाय . तिनकौ क्यों मन विस्मय ~ ३७५३। ११ की जाये कौन कौन सों विनती ~ ३६२४। १२ कीजिये : करन कहे सोइ ~ ३६६५। १३ कीजियेगा · सुरदास कहा लै ~ ३६१६। १४ धारण करें . नैकु आप तन ~ ३६८२।
कीजैगी करेगी : कह ~ देह ८०१।
कीजो कीजिये · ताको पूजि बहुरि शिर नइयो अरु ~ परनाम सारा० ५५३।
कीजौ करना छमा ~ मोहि हौ प्रभु ८१४१।
कीट १. कीडा ब्रह्मा ~ आदि के स्वामी १४६०, विष कौ ~ विषहि रुचि मानै १९२४। २ कीडे के : ~ सम न लेखौ ९/९७।
कीटक कीडा . ~ भृगी ध्यान लगावै १११४।
कीटहु कीडो के भी . ~ सम नाहीं ५५९।
कीटि छोटा कीडा · किन्नर ~ रिझाऊँ परि० १/८०।
कीडत क्रीडा करते, खेलते : ~ नाहि कपोत कुलाहल ४१२१।
कीडी चींटी। △ ~ **तनु ज्यौं पाँख उपाई** जैसे चींटी के शरीर मे पख जम आये हों, इस तरह इतराना या गर्व करना कि बाद मे मरना ही पडे : सूरदास सुरपति रिस पाई, ~ — ४०४१।
कीति कीर्ति, प्रशसा सुंदर स्याम सुनी यह ~ ३७७५।
कीतं किधर : मरतिं विरह गोपी जित ~ ३४६०।
कीधौं अथवा : ~ कौन कार्य को आये सारा० ८१३, ~ पथ भुलान्यौ १८९३।
कीन १ कर लिया . ~ है स तोष सब मिलि सा० ल० ५५। २. किया . नृप व्रत पूरन ~ ९/२६। ३ किया है : हमसौं उनसौं ~ सगाई ३७९९। ४. बनाया है : चौवीस धातु चित्र केहि ~ ३८६७।
कीनी १ कर दी . लक जराइ छार जब ~ २२१। २ कर रहे हो : कस कहा लरिकाई ~ ४। ३. किया पुनि प्रनाम हरि कौ नित ~ ११/३ ४. बनाई : गुरु बसिष्ठ नारद मुनि ज्ञानी जन्म पत्रिका ~ सारा० १६२।
कीने १ कर दिया है : ~ मोह अचेत १/२०। २. कर लिये हैं : मिले सलिल गुन ~ २३७८। ३ किया · भोजन ~, स्वाद बखानि ९/६७। ४ किये : देखि महाबन भूमि हरे तृन-द्रुम कृत ~ ४३१। ५ किये हैं : कामरी के आसननि

~ ४६७।

कीनो किया : शतकोटी रामायण ~ सारा० १५५।

कीनो १ किया : जनम पाइ कह ~ १/६५। २ पूर्ण किया. कुबिजा के घर आपु पधारे सबै मनोरथ ~ सारा० ५४४।

कीनौ १ करके : नीरहू तैं न्यारौ ~ ८/५। २ करती हैं : करहीं वदन ~ ३८०९। ३ कर दिया : लखि ~ हैं माफ १/१४३। ४ करो : ता मेती तुम ~ जाग ९/२। ५ किया : राव जनक हरि सुमिरन ~ ४३०५। ६ बना लिया : बरहहिं ~ बान ९/८३। △ ~ पावै करनी का फल पाया • मो अपनौ ~ — १८३।

कीन्यौ १ कर दिये • तीनि खट ~ ९/९६। २ किया, किया है कौन मयानप ~ ८/१५, नृप ताहू सौं ~ भोग ९/१७४।

कीन्ह किया सुफल मनोरथ ~ २५२७। ~ **उछाह** उत्सव मनाया : हरि ~ — २०७४।

कीन्हीं १ किया • यों कहि गर्जन ~ सारा० १२२। २ की, की है : ~ प्रीति हमारे ब्रज मौं ३७०७। ३. निभाई • ~ पैज प्रमान ९/१३४। ४ बनाया, बना टाला. हमकौं विधि ब्रज-वधू न ~ १०४६।

कीन्ही १ कर लिना. प्यारी बस ~ २४८९। २ किया था जो सुख स्याम पिया सग ~ २४७३। ३ की है : मैं पूजा ~ इहिं कारन ४१८। ४ की : मुँहाचुही जुवतिनि तव ~ १७२८। ५ (प्रयत्न) किया : अपना मी मैं बहुते ~ १६५२। ६. बना दी • तबहिं कृपा करि सुंदरि ~ ३१०५। ७ बनाया : वाम वाम निज सजनी ~ सा० ल० ५८। ८ बनाया था • अरु ~ अरधग ३६६५। ९ बनाया है • किहिं कागद की तरनी ~ ३९६८। **कानि** ~ ध्यान दिया. हमकौ — न ~ ३६२४। ~ **अधिकारी** १ ढिठाई/ज्यादती की • तिन मौं हम ~ — ९४५। २ ज्यादती हो गई अन-जानत ~ — ९४७। ~ **छाँह** छाया की : सात चौम ~ — ९५२।

कीन्हे १ कर दिये : मुक्त नृप ~ १/२७।

कीन्हे १ करते हैं : ~ नद दुलार ३०४४। २ बना दिये हैं : एकै प्रान, देह द्वै ~ १८८२। ३ करने सूरदास गोवर्धन पूजा ~ कौ ८६०। ४ कर दिये : एकहि सुर सब मोहित ~ ११६०। ५ किया, किया है : अग सिंगार स्यामहित ~ २०२८। ६ किया हो • ज्यौं कृपि ~ पाहीं ३६०६। ७ किये : रहत चतुरई ~ १९३५। ८ करते हुए : लई उन बहुत मन हर्ष ~ ८/८। ९. किये हुए है तैतिस कोटि देव बस ~ ९/१०५। १०. बना लिया है : तनु त्रिभंग ~ मृदु जोहन। ११ लगाये हुए • मलय चदन लेप ~ बरन यह जानौ री १८३८। ~ **गेह** घर बनाया है. रुचि रुचि ~ — ४०१७। ~ **घर** निवास स्थान बना लिया है : कमल कुल हमनि ~ — १७५८।

कीन्हैं १ करने : तप ~ सो दैहे आग ९/२। २ करने पर : निकम्मत नाहिं अधिक बल ~ २२७९। ३ किये पाप मारग जिते सबै ~ १/११०। ४ किये हुए : बिनु उद्यम ~ १/१०५। ~ करने को. यह आयौ ~ कछु ध्यान ९४८।

कीन्हो किया : वेणु बजाय राम वन ~ सारा० ५७३।

कीन्हो १ किया. धनुष यज्ञ ~ नृप जू ने सारा० ४९४। २ की है जिते मान सेवा तुम ~ ३१२४। ३ ले रखा है : तुम हित नाथ कठिन ब्रत ~ ९/८३।

कीन्हौं १ कर दिया. देह बिकल तव ~ सारा० ४१६। २ किया, कर लिया रावण हरन सिया कौ ~ १९८। ३ बनाया गोकुल ~ थानौ १/११। ४ लगाये हू • बहुरि मिलन कौं आगम ~ ९/८२। ~ **भवनिस्तार** भव से निस्तार (पार) कर दिया दीन्हो आप ज्ञान माता को ~ — सारा० २०।

कीन्हौ १ कर दिखाया • जो कछु कह्यौ सो ~ ८४७। २ कर दिया. तन, जोबन, धन अर्पन ~ १६१९। ३ करना. ग्रीवा रध्र मत ~ ३५६३। ४ करना (चाहने] हो : (हरि) जो चाहत सुख ~ ४। ५ करने पर : बरजत ~ गैन २३३९। ६ कर बैठी : बाहँ गहत ~ धनि मान २४९६। ७ कर डाला था : विह्वल ~ काम २४३८। ८ किया • भोरहि मेरे ~ है आवन २६४४। ९ किया था तौ काहै तप ~ १५६२। १० किया हुआ : अपनौ ~ पैहौ ३६०९। ११ किया है : जब ही तैं हरि दरसन ~ २०९६। १२ तैयार करके • तबही तैं मैं भोजन ~ ४५६। १३ दूर कर दिया : भ्रमि-भ्रमि स्रम ~ तनु गारी १६७८। १४ धारण किया : मत्स्य कौ रूप किहिं काज ~ ८/१६। १५ बनाया : सूरज प्रभु ~ तव उग्रसेन राजा ३०८४। १६ बनाया हैं : बिनुहीं भीत चित्र किन ~ ३५५३। १७ बना लिया. सखी सखा करि ~ १६०५। १८ (व्रत) किया था : एकादसी काल्हि मैं ~ ९८४। १९ लगाये हुए हैं • हर रिपु ~ घात ३९७६। ~ **गवन** चले : सूर प्रभु मुनि स्रवन तहाँ ~ — १७५१। ~ **बुद्धि प्रकास** बुद्धि का प्रकाश कर दिया. राधा-आधा-तन ~ — १७६८।

कीन्ह्यौ १ कर दिया : तव कृष्न जू लै सुदरसन सु द्वै टूक ~ ८/८। २ किया है : कह्यौ सब सुर-असुर मथन ~ जलधि ८/८। ३ की थी • सूर एक पल गहरु न ~ १/४९।

कीवैं करने की : सूर स्याम कृत ~ इच्छा २९२३।

कीवैं कर देंगे : सब अपराध छमा ~ ३४७४।

कीय किया : मेरैं पग धारे भली ~ २५५५।

कीये किये : आठों लोकपाल तव ~ अपन अपन अधिकार सारा० २०।

कीयो किया : दधि जु चुराय खाय वृन्दावन चरित विषम बहु ~ सारा० ७३९।

कीर १ कीडा : कियौ निमिष मैं ~ ९/१५८। २ तोता : लरन ~ छुराइ ३५२। ३ तोता (नासिका) : दधि पर ~, ~ पर पकज १७२। ४ तोता (शुकदेव के रूप मे) : ता ऊपर गए परीच्छत ~ १/३३।

कीरत यश का, कीर्ति का नद नदन की ~ 'सूरज' सा० ल० ६२।

कीरतन कीर्तन : स्रवन ~ सुमिरन करे ९/५।

कीरति[1] १ कीर्ति, यश : ~ कहौं बखानि ९/७७। ~ होइ कीर्ति (यश) फैले : जग मैं ~ — रावरी ४०८०।

कीरति[2] कीर्ति महरि (राधा की माँ) · इतनी सुनि ~ मुसुकानी परि० १/४१।

कीरति-सुता राधा : महरि देखि ~ ७१४।

कीरतिहि यश का . थक्यौ निगम ~ बखानी।

कीरी चीटी के : ~ तनु ज्यौं पख उपाई ९२३।

कीलैं कीले : बज्र ~ लगी सुठि २८४१।

कीस वानर : रीछ ~ वस्य करौं ९/११८।

कीहौ क्या : बहुरि ब्रज बसिवौ ~ ५८९।

कुंअर कुमार, पुत्र : लाल ~ मेरे कछू न जानै ३१०।

कुअरि कुंवरि : ~ ससि सोडष कला स गार करि ल्याई अली ४१८६।

कुंकुम केसर : ~ हृदय भुजनि छवि वदन २६४६।

कुकुमा १. कुकुम : कोउ सित कोऊ कमल ~ ७४९। २ कुकुम से . अति स्रम मलय ~ सींचत ४१४२।

कुंचत घुंघराले : ~ केस सुदेस कमल पर ६१६।

कुंचित १ घुंघराली : ~ अलक, तिलक गोरोचन १०३। २ घुंघराले : ~ केस सुदेस बदन पर १३७७। ३ समेटी हुई : उन विपदनि ~ जौ करते ३८५२।

कुज लता का मडप : सीतल ~ कदम की छहियाँ ४४५।

कुंज कानन बैन कुज मे किये जाने वाले वशी-नाद (को कानों से) : सुनि कै ~ ९९१।

कुंज-कुटी लता मण्डप · तुम लछिमन या ~ मैं ९/६५।

कुंज-द्रुमनि-तर कुज के वृक्षों के नीचे : देखे जाइ 'सूर' के स्वामी ~ बास २७५८।

कुज धाम कुजों मे बना भवन . कवहूँ जात बन ~ कौं २०२१।

कुंजन कुजों मे . लाज नजि ~ गई ३८६५।

कुंजनि १ कुजों : फिरत ~ मैं फूल्यौ ४०९५। २. कुजों की : भ्राजति ~ गलियाँ २६२०। ३ कुंजों मे : विहरत ~ कुंज-विहारी ११८७।

कुंज-पुंज कुजों के समूह : प्रफुलित ~ ३४।

कुंज-बन-घन-धाम घने कुजों वाले भवन मे · बोले स्याम, ~ १९४८।

कुंज-बिलासी कुज मे विलास (आनद) करने वाले (कृष्ण) बिहरै ~ ४०४३।

कुंज-बिहार कुज के क्रीडा-स्थल हैं : येई ~ ४९७।

कुंज-बिहारी कुंज मे विहार करने वाले, (कृष्ण) . जब तै बिछुरे ~ ३२५७।

कुंज-मग कुज-गली . ~ मे आज सा० ल० ४२।

कुजर हाथी · ~ क्यौंऽव रहत बिनु तोरे ३८५४।

कुंजै लताएँ बिनु गोपाल बैरनि भई ~ ४०६८।

कुंड हवन कुड, अग्निहोत्र आदि करने का गढा · निकसि ~ तैं दरसन दए ४/५।

कुंडलनि कुंडलों को : ~ धारी ३०८१।

कुंडल-रवि सूर्य के समान चमक वाले कुण्डलों : वलि ~ की ६६४।

कुडल लट (श्याम के) कुण्डल से (राधा की) केश लट : अरुझी ~ बेसरि सौं पीत-पट ११४९।

कुंडल लोल लटकते कुडल · चलत करज अरु ~ १७९३।

कुडिनपुर विदर्भ मे रुक्म की राजधानी ~ कौ काज सँवार्‌यौ ४१८८।

कुंडी थाल : आनी भरि ~ जो कनक की ९/२५।

कुंत १. बरछी, भाला : किसलय कुसुम ~ सम सायक २११६। २. बरछा, भाला, भाला से भाल, ललाट : ~ अग्र सैं बदन रेख सा० ल० ९५।

कुंत-असि-बान भाला, तलवार और वाण करत ~ ९/७५।

कुंतल १. केश, बाल : ~ कुटिल भँवर भामिनि वर ३९१८। २. घुघराले : मुरलि अधर पुट ~ केस ३८१९।

कुंति, कुंती शूरसेन यादव और मारिषा की पुत्री तथा वसुदेव की बहिन जिसका नाम पृथा था, उसे कुंतिभोज ने गोद लिया था इस लिए कुंती नाम पडा। कुन्ती पाण्डु की पहली पत्नी थी · ~ उठि धाइ १/२९।

कुंती-पति पाण्डु : ~ पितु तासु नारि धर ३२८३।

कुंती-पति पितु कुंती के पति पाण्डु के पिता शान्तनु . ~ तासु नारि-धर ३२८३।

कुंती-पति-पितु-तासु नारि धर कुंती के पति पाण्डु के पिता शान्तनु की नारी गगा को धारण करने वाले, महादेव : ~ ३२८३। (देखिये ऊपर के शब्द) शकर के रिपु कामदेव थे।

कुंती-सुत-पितु कुंती के पुत्र (कर्ण) के पिता, सूर्य : ~ सनमुख घर कर सा० ल० ८२।

कुंती-सुत-सुभाव कुन्ती के सुत (कर्ण) का स्वभाव (दानी), फारसी मे सखी, सहेली : ~ चित समुभन सा० ल० ४।

कुंद १. कुन्द (एक सफेद फूलो वाला वृक्ष जिसकी कलियों से दाँतों की तुलना की जाती है) • कूजा मरुआ ~ सौं १०९५।

कुंद कुसुम कुंद पुष्प, कुंदकली सदृश दाँत : ~ ललचात सारा० ९४८।

कुंद दसन कुंद पुष्प के समान दाँत : तडित वमन ~ देखि हौ भुलानी १८८७।

कुंदन शुद्ध स्वर्ण की : ज्यौं ~ अरुनाई ९/१६२।

कुंभ[१] १. घडे • ~ धरि बहुरि पुनि माट राख्यौं ८/१६। २ घड़े की : पीयूष ~ भकोर २१३३।

कुंभ[२] हाथी के सिर के दोनों ओर का उभडा हुआ भाग, कुम्भ-स्थल : वज्र सम थाप वाल ~ दीन्हौ ३०५४।

कुंभक प्राणायाम के अतर्गत श्वासावरोध की क्रिया पूरक रेचक ~ कारन परि० १/१८१।

कुंभकरन पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा और सुमाली की पुत्री कैकसी का दूसरा पुत्र, रावण का भाई, जो छः माह सोता तथा एक दिन जागता और भोजन करता था • रावन ~ सोइ भए ९/१५।

कुंभज कुंभ अगस्त्य का घडा : ~ समान ग्यान पथ ४०१८।

कुंभनि कुंभस्थलों : मानहुँ मत्त गयद ~ पर १२०६।

कुंभरस जल-कुंड मे : वहै छवि ~ माभ पेख्यौ ३०१५।

कुंभस्थल हाथी के शीर्षस्थल : ~ छवि पावत १६२९।

कुंभिलाइ कुम्हला : कुमुद गए ~ २६७६।

कुंभिलानी १. कुम्हलाई हुई : भ्रमर लता त्यागत ~ ३७१४। २ कुम्हला गई कुमुदिनी ~ १२१२।

कुंभी[१] घडा : अनँग राज सींचत ~ ले परि० २/६३।

कुंभी[२] जलगुम्भी घास मोर्तें गए ~ के जर लौं २३७१।

कुंवर १ कुमार, किशोर : ~ जल लोचन भरि भरि लेत ३४९। २. पुत्र : अँजनि-~ राम कौ पायक ९/८३। ३. पुत्र को . उत्तम ~ गोद बैठायो ४/९।

कवरि १ कुमारी : सखियन के सग ~ राधिका २६२०। २ राधा . यह सुनि बात ~ मुसुकानी १७१६। ३ पुत्री • तुम ~ वृषभानु की २८००।

कुंवरिया कुमारी : नँदकुवर वृषभानु ~ ६८८।

कुंवरिहि कुमारी (राधा) को . ~ कान्ह दिखाइ न दीन्हे परि० १/४१।

कुकपि दुष्ट बंदर : सुनि ~ कायर कृपन ९/१२९।

कुगंधि दुर्गंध : ज्यौं चदन सग ~ ३४१८।

कुच १ स्तनों : लिए लगाइ कठिन ~ के विच १/२१५। २ उरोजों को : परसि तिय ~ ४९८। ३. स्तनों का : जातु-धानि ~ गर मर्यत १/२१५। ४. स्तनों मे : ~ विष बाटि लगाइ ५०।

कुच कलस कुच रूपी घड़े • चँवर अचल ~ वर पानि पद्म चढाइ ४१४४।

कुच-कलस-कंचन सुन्दर स्तन रूपी स्वर्ण कलश मे केतकी ~ २८४४।

कुच कलसनि कलश के समान उरोजों ने : ~ घट मोह्यौ २७७७।

कुच-कुंकुम-अवलेप उरोजो पर कुकुम का लेप • ~ तरुनि किये २७३४।

कुच कोरी स्तन की कोर (चूचक) पर : राखे कनक कमल ~ १२०१।

कुच ग्रह स्तन पकडना • नख छत छार कमाय ~ २८२२।

कुच जुग, १. युगल (दो) स्तन : ~ चक्रवाक करना मिटि ११३६। २ युगल स्तनों के • ~ वीच २६१९।

कुच थभन उरोजो का थामना ही • ~ अवलव है ११८०।

कुचनि १. उरोजों कहूँ दरकी ~ पर अँगिया नवेलि २०१०। २ उरोजों को . पीन ~ टक टोहन २१७४। ३ उरोजों से : चाँपि ~ कठोर २४७७। ४ स्तनों पर : परी दृष्टि उँच ~ पिया की १०५३।

कुचनि विच कच राधा के उरोजो के मध्य मे केशों की . ~ परम सोभा १०८३।

कुच-तटी उरोजाग्र बिलुलित वर ~ उघारो ११९४।

कुच पट कुच का वस्त्र, आँचल . सम्हार न ~ २८९३।

कुचल ऊबढ़ खाबड (चलने मे बुरा) ~ कुतैंडो ३९२५।

कुचाली अत्याचारी एते पर यह समुभत नाहीं कपटी कस ~ ३०३०।

कुचिल मैला . ~ वस्त्र अलकें अति रूखी ३२६७।

कुचील[१] मैले : वसन ~ चिहुर लपिटाने ९/७३।

कुचील[२] कुचाली • कामी कृपन ~ कुदरसन १/१०१, कै हौं कुटिल, ~, कुलच्छनि ९/९१।

कुचीलनि मलिन (लोगों) • औवड असन ~ सो मिलि १/२०३।

कुचैन बेचेनी : उपज्यौ कठिन ~ १३७७।

कुचैल १ गदा, गदे कपडों वाला • दुर्वल विप्र ~ सुदामा सारा० ८१८। २ मैले-कुचैले : पट ~ दीन द्विज १/७।

कुज मगल (माणिक्य, लाल) को : मानौ गुरु सनि ~ आगें करि १०४।

कुजस अपयश : समरारी कौ सुजस ~ की २६४८।

कुजाति नीच जाति : बाँस-वंस ~ १२९८।

कुटज कुरैया पौधा • ~ कुंद कदव कोविद कर निकार सुकज ३३१४।

कीय किया : मेरैं पग धारे भली ~ २५५५ ।

कीयें किये · आठों लोकपाल तब ~ अपन अपन अधिकार सारा० २० ।

कीयो किया : दधि जु चुराय खाय बृन्दावन चरित विषम बहु ~ सारा० ७३९ ।

कीर १. कीडा : कियौ निमिष मैं ~ ९/१५८ । २. तोता : लरत ~ छुराइ ३५२ । ३ तोता (नासिका) : दधि पर ~, ~ पर पकज १७२ । ४ तोता (शुकदेव के रूप मे) : ता ऊपर गए परीच्छत ~ १/२३ ।

कीरत यश का, कीर्ति का : नद नदन की ~ 'सूरज' सा० ल० ६२ ।

कीरतन कीर्तन : स्रवन ~ सुमिरन करे ९/५ ।

कीरति[1] १ कीर्ति, यश : ~ कहौं बखानि ९/७७ । ~ **होइ** कीर्ति (यश) फैले : जग मैं ~ — रावरी ४०८० ।

कीरति[2] कीर्ति महरि (राधा की माँ) : इतनी सुनि ~ मुसुकानी परि० १/४१ ।

कीरति-सुता राधा : महरि देखि ~ ७१४ ।

कीरतिहि यश का . धक्यौ निगम ~ बखानी ।

कीरी चीटी के : ~ तनु ज्यौं पख उपाई ९२३ ।

कीलैं कीले : बज्र ~ लगी सुठि २८४१ ।

कीस वानर : रीछ ~ बस्य करौं ९/११८ ।

कीहौ क्या : बहुरि ब्रज बसिवौ ~ ५८९ ।

कुंअर कुमार, पुत्र : लाल ~ मेरे कछू न जानै ३१० ।

कुअरि कुंवरि : ~ ससि सोडष कला स गार करि ल्याई' अली ४१८६ ।

कुंकुम केसर · ~ हृदय सुजनि छवि वदन २६४६ ।

कुकुमा १. कुकुम : कोउ सित कोक कमल ~ ७४९ । २ कुकुम से . अति स्रम मलय ~ सींचत ४१४२ ।

कुंचत घुंघराले : ~ केस सुदेस कमल पर ६१६ ।

कुंचित १ घुंघराली : ~ अलक, तिलक गोरोचन १०३ । २ घुंघराले : ~ केस सुदेस वदन पर १३७७ । ३ समेटी हुई : उन विपदनि ~ जौ करते ३८५२ ।

कुज लता का मडप : सीतल ~ कदम की छहियाँ ४४५ ।

कुंज कानन बैन कुज मे किये जाने वाले वशी-नाद (को कानों से) : सुनि कै ~ ९९१ ।

कुंज-कुटी लता मण्डप · तुम लछिमन या ~ मैं ९/६५ ।

कुंज-द्रमनि-तर कुज के वृक्षों के नीचे : देखे जाइ 'सूर' के स्वामी ~ बास २७५८ ।

कुज धाम कुंजों मे बना भवन · कबहूँ जात बन ~ कौं २०२१ ।

कुंजन कुजों मे : लाज तजि ~ गई ३८६५ ।

कुंजनि १. कुजों : फिरत ~ मैं फूल्यौ ४०९५ । २ कुंजों की : आजति ~ गलियाँ २६२० । ३ कुंजों मे · विहरत ~ कुंज-बिहारी ११८७ ।

कुंज-पुंज कुजो के समूह प्रफुलित ~ ३४ ।

कुंज-बन-घन-धाम घने कुजो वाले भवन मे बोले स्याम, ~ १९४८ ।

कुंज-बिलासी कुज मे विलास (आनद) करने वाले (कृष्ण) बिछुरै ~ ४०४३ ।

कुज-बिहार कुज के क्रीडा स्थल हैं . येई ~ ४९७ ।

कुंज-बिहारी कुंज मे विहार करने वाले, (कृष्ण) : जब तै बिछुरे ~ ३२५७ ।

कुंज-मग कुज गली . ~ मे आज सा० ल० ४२ ।

कुंजर हाथी ~ क्यौंऽब रहत बिनु तोरे ३८५४ ।

कुंजै लताएँ बिनु गोपाल बैरनि भई ~ ४०६८ ।

कुंड हवन कुड, अग्निहोत्र आदि करने का गढा निकसि ~ तैं दरसन दए ४/५ ।

कुंडलनि कुंडलो को : ~ धारी ३०८१ ।

कुंडल-रबि सूर्य के समान चमक वाले कुण्डलों : बलि ~ की ६६४ ।

कुडल लट (श्याम के) कुण्डल से (राधा की) केश लट : अरुझी ~ बेसरि सौं पीत-पट ११४९ ।

कुंडल लोल लटकते कुडल : चलत करज अरु ~ १७९३ ।

कुंडिनपुर विदर्भ मे रुक्म की राजधानी : ~ कौ काज सँवार्यौ ४१८८ ।

कुंडी थाल : आनी भरि ~ जो कनक की ९/२५ ।

कुंत १. बरछी, भाला : किसलय कुसुम ~ सम सायक २११६ । २. बरछा, भाला, भाला से भाल, ललाट · ~ अग्र सैं बदन रेख सा० ल० ९५ ।

कुंत-असि-बान भाला, तलवार और वाण . करत ~ ९/७५ ।

कुंतल १. केश, बाल : ~ कुटिल भँवर भामिनि वर ३९१८ । २. घुघराले : मुरलि अधर पुट ~ केस ३८१९ ।

कुंति, कुंती शूरसेन यादव और मारिषा की पुत्री तथा वसुदेव की बहिन जिसका नाम पृथा था, उसे कुतिभोज ने गोद लिया था इस लिए कुती नाम पडा । कुन्ती पाण्डु की पहली पत्नी थी : ~ उठि धाइ १/२९ ।

कुंती-पति पाण्डु : ~ पितु तासु नारि धर ३२८३ ।

कुंती-पति-पितु कुती के पति पाण्डु के पिता शान्तनु · ~ तासु नारि-धर ३२८३ ।

कुंती-पति-पितु-तासु नारि धर कुती के पति पाण्डु के पिता शान्तनु की नारी गंगा को धारण करने वाले, महादेव · ~ ३२८३ । (देखिये ऊपर के शब्द) शकर के रिपु कामदेव थे ।

कुंती-सुत-पितु कुती के पुत्र (कर्ण) के पिता, सूर्य : ~ सनमुख घर कर सा० ल० ८२।
कुंती-सुत-सुभाव कुन्ती के सुत (कर्ण) का स्वभाव (दानी), फारसी मे सखी, सहेली : ~ चित समुझत सा० ल० ४।
कुंद १. कुन्द (एक सफेद फूलों वाला वृक्ष जिसकी कलियों से दाँतों की तुलना की जाती है) · कूजा मरुआ ~ सौं १०९५।
कुंद कुसुम कुद पुष्प, कुदकली सदृश दाँत . ~ ललचात सारा० ९४८।
कुंद दसन कुद पुष्प के समान दाँत : तडित वसन ~ देखि हौ भुलानी १८८७।
कुंदन शुद्ध स्वर्ण की : ज्यौं ~ अरुनाई ९/१६२।
कुंभ[1] १. घटे : ~ धरि बहुरि पुनि माट राख्यौ ८/१६। २ घडे की : पीयूष ~ झकोर २१३३।
कुंभ[2] हाथी के सिर के दोनों ओर का उभडा हुआ भाग, कुम्भ-स्थल : वज्र सम थाप वाल ~ दीन्हौ ३०५४।
कुंभक प्राणायाम के अतर्गत श्वासावरोध की क्रिया पूरक रेचक ~ कारन परि० १/१८१।
कुंभकरन पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा और सुमाली की पुत्री कैकसी का दूसरा पुत्र, रावण का भाई, जो छ माह सोता तथा एक दिन जागता और भोजन करता था · रावन ~ सोइ भए ९/१५।
कुंभज कुंभ अगस्त्य का घडा : ~ समान ग्यान पथ ४०१८।
कुंभनि कुभस्थलों : मानहुं मत्त गयद ~ पर १२०६।
कुंभरस जल-कुड मे : वहै छवि ~ माझ पेल्यौ ३०१५।
कुंभस्थल हाथी के शीर्षस्थल : ~ छवि पावत १६२९।
कुंभिलाइ कुम्हला : कुमुद गए ~ २६७६।
कुंभिलानी १. कुम्हलाई हुई · भ्रमर लता त्यागत ~ ३७१४। २ कुम्हला गई . कुमुदिनी ~ १२१२।
कुंभी[1] घडा · अनँग राज सींचत ~ लै परि० २/६३।
कुंभी[2] जलगुम्भी घास मोतैं गए ~ के जर लौं २३७१।
कुंवर १ कुमार, किशोर : ~ जल लोचन भरि भरि लेत ३४९। २. पुत्र : अँजनि-~ राम कौ पायक ९/८३। ३. पुत्र को . उत्तम ~ गोद बैठायौ ४/९।
कवरि १ कुमारी . सखियन के सग ~ राधिका २६२०। २ राधा . यह सुनि बात ~ मुसुकानी १७१६। ३ पुत्री : तुम ~ वृषभानु की २८००।
कुंवरिया कुमारी : नँदकुवर वृषभानु ~ ६८८।
कुंवरिहि कुमारी (राधा) को . ~ कान्ह दिखाइ न दीन्हे परि० १/४१।
कुकपि दुष्ट बदर : सुनि ~ कायर कृपन ९/१२९।
कुगंधि दुर्गंध ज्यौं चदन सग ~ ३४१८।
कुच १ स्तनों : लिए लगाइ कठिन ~ के बिच १/२१५। २. उरोजों को : परसि तिय ~ ४९८। ३. स्तनों का : जातुधानि ~ गर मर्यंत १/२१५। ४. स्तनों मे ~ विष बाटि लगाइ ५०।
कुच कलस कुच रूपी घडे : चँवर अचल ~ वर पानि पद्म चढ़ाइ ४१४४।
कुच-कलस-कंचन सुन्दर स्तन रूपी स्वर्ण कलश से : केतकी ~ २८४४।
कुच कलसनि कलश के समान उरोजों ने : ~ घट मोह्यौ २७७७।
कुच-कुंकुम-अवलेप उरोजों पर कुकुम का लेप : ~ तरुनि किये २७३४।
कुच कोरी स्तन की कोर (चूचक) पर : राखे कनक कमल ~ १२०१।
कुच ग्रह स्तन पकडना : नख छत छार कसाय ~ २८२२।
कुच जुग १. युगल (दो) स्तन : ~ चक्रवाक करुना मिटि ११३६। २ युगल स्तनों के : ~ बीच २६१९।
कुच थंभन उरोजों का थामना ही · ~ अवलब है ११८०।
कुचनि १. उरोजों : कहूँ दरकी ~ पर अँगिया नवेलि २०१०। २ उरोजों को . पीन ~ टक टोहन २१७४। ३ उरोजों से : चाँपि ~ कठोर २४७७। ४ स्तनो पर : परी दृष्टि उँच ~ पिया की १०५३।
कुचनि बिच कच राधा के उरोजों के मध्य में केशों की . ~ परम सोभा १०८३।
कुच-तटी उरोजाग्र : विलुलित बर ~ उघारो ११९४।
कुच पट कुच का वस्त्र, आँचल सम्हार न ~ २८९३।
कुचल ऊबढ खाबड (चलने मे बुरा) : ~ कुतैंडौ ३९२५।
कुचाली अत्याचारी . एते पर यह समुझत नाहीं कपटी कम ~ ३०३०।
कुचिल मैला . ~ वस्त्र अलकें अति रूखी ३२६७।
कुचील[1] मैले : वसन ~ चिहुर लपिटाने ९/७३।
कुचील[2] कुचाली . कामी कृपन ~ कुदरसन १/१०१, कै हौं कुटिल, ~, कुलच्छनि ९/९१।
कुचीलनि मलिन (लोगों) · औघड असन ~ सौं मिलि १/२०३।
कुचैन बेचैनी : उपज्यौ कठिन ~ १३७७।
कुचैल १ गदा, गदे कपडों वाला · दुर्बल विप्र ~ सुदामा सारा० ८१८। २ मैले-कुचैले : पट ~ दीन द्विज १/७।
कुज मगल (माणिक्य, लाल) को मानौ गुरु सनि ~ आगैं करि १०४।
कुजस अपयश समरारी कौ सुजस ~ की २६४८।
कुजाति नीच जाति · बाँस-बस ~ १२९८।
कुटज कुरैया पौधा ~ कुद कदब कोविद कर निकार सुकल ३३१४।

कुटिल १ खोटा, कुटिल : कामी ~ सरन आयौ १/५ । २ टेढ़े, वक्र ~ कटाच्छ वक्र करि भ्रकुटी २०३१ । ३ घुंघराली अलक भीतर अरुझानो १८९९ । ४. घुंघराले · ~ केस अति सुदेस १८८७ । ५ दुष्ट जानि कठिन कलिकाल ~ नृप ९/११ ।

कुटिलई कुटिलता . ~ करी हरो मोसौं २७११ ।

कुटिल-सिरोमनि-राई कुटिलो मे सर्वोपरि है : मैं पहिचानि रही हौं नीकैं ~ २७१३ ।

कुटी कुटिया : (हरि) सो बन-बीथिन ~ सॅवारै ३ । ~ **सॅवारी** कुटी बनाई : निज कर ~ — ११८८ ।

कुटीर गृह मे : विहरत कुज ~ १९८६ ।

कुटीरे कुटीर मे · बिलसत कुज ~ परि० १/५९ ।

कुटुंबऽनुरक्ति परिवार मे अनुराग धन ~ ३/१३ ।

कुटुंबऽवगाहै परिवार की खोज करता है रजोगुनी धन ~ ३/१३ ।

कुटुंब-धन परिवार और धन : काम-अध है सब ~ ९/१२३ ।

कुटुब परिवार : बूडत ~ समेत २/१५ ।

कुटुम परिवार · तच्छक ~ समेत जरावहु १२/५ ।

कुटेव बुरी लत नैननि यह ~ पकरी २३२५ ।

कुठाँव बुरी जगह, बुराई : अपुन करि कर ~ पकरैगौ १/७५ ।

कुठार कुल्हाडी कर ~ लै तरुहिं गिरावै ९५० ।

कुठारन कुठारों का भयौ ~ ठाट ३७३३ ।

कुतवारी कोतवाली पवन बुहारत द्वार सदा सकर ~ ११२८ ।

कुतवाल कोतवाल : दगाबाज ~ काम रिपु १/६४ ।

कुतूहल क्रीडा, आमोद-प्रमोद करत ~ बार २७ ।

कुत्सित घृणित : ~ कटु बायक सायक से ३१६९ ।

कुदरसन दुराचारी · कामी कृपन कुचील ~ १/१०१, यद्यपि कूर, कुरूप ~ ३६५६ ।

कुदार कुदाली, जमीन खोदने का एक औजार : ससि किरनि ~ गहे २८९८ ।

कुदावत कुदाते थे : जलहीं हरि लै गोइ ~ ४१६६ ।

कुनरु कुदरू ~ और ककोरा कौरे १२१३ ।

कुनाम बदनामी, बुराई काहे अपनौ कियौ ~ २७३० ।

कुनित १. बजता हुआ, झनकार करता हुआ . किंकिनि ~ पीत पट तनियाँ १०६ । २. बजने लगती है चलन गति कटि ~ किंकिनि १०५६ ।

कुपंगु बुरी तरह अपाहिज : स्वान, कुब्ज ~ कानौ १/३२१ ।

कुपच्छि कुपची : कहि ~ कर तारि बजावति ४१४६ ।

कुपथ खराब रास्ते : यह को सुनै ~ की बतियाँ ३७०५ ।

कुपथी बुरे मार्ग पर चलने वाला . ~ करत नई ३३९८ ·

कुपैंडे कुपथ पर · कैसैं चलहिं ~ ३३१५ ।

कुपैंडो कुमार्ग · ऊजर कुचल ~ ३९२५ ।

कुबजहि कुबजा मे . हमहिं छाँडि ~ मन दीन्हौ ४०३२ ।

कुबलया कस का कुवलयापीड हाथी एक ~ त्रिभुवनगामी २१२२ ।

कुबलवा-दंत कुवलया हाथी के दाँत . प्रबल ~ उपारौं १६१९ ।

कुबलयापीर कुवलयापोड हाथी दत ~ के २०६३ ।

कुबिजहि कुब्जा को यह उपदेस देहु लै ~ ३५२० ।

कुबिजा कंस की एक दासी जो श्री कृष्ण से प्रेम करती थी मधुबन देस कान्ह ~ सग ३६२७, ~ चरनन आई ३०९८ ।

कुबिजानाथ कुब्जापति : अब भए ~ ३१५२ ।

कुबुद्धि दुर्बुद्धि, मूर्ख . अति ~ मन हॉकनहारे १/१८५ ।

कुबुधि दुबुद्धि की · ~ कमान चढाइ १/६४ ।

कुबेर एक देवता जो उत्तर दिशा के अधिष्ठाता और धन के स्वामी माने जाते हैं : बहुरि ~ तहाँ चलि आयौ ९/३ ।

कुबेर कौ बित्त कुबेर का वित्त (धन), धन से धनु=धनुष · ~ तुरत समुझाई सा० ल० ८७ ।

कुबेरहू कुबेर भी पुनि ~ तहाँ सिधाए ६।५ '

कुबेरिया कुवेला, कुसमय : यह बडी ~ २४६ ।

कुब्ज १. कुबडा : स्वान ~ कुपगु, कानौ १/३२१ । २. कूबड : वाकौ डार्‌यौ ~ मिटारि ३१०६ ।

कुमंत्र बुरा विचार, बुरी सलाह के अनुसार अनुचित कार्य · तैं कैकेई ~ कियौ ९/४८ ।

कुमकुम केसर : ~ कौ लेप मेटि १/१६६ ।

कुमकुम-आड कुमकुम का टीका : ~ स्रवन स्रम जल १७०३ ।

नमकुमा कुमकुम : मृगमद मलय कपूर ~ ३९३७ ।

कुमग कुमार्ग : प्रकासित महा ~ अनयास १/९० ।

कुमत कुमति, दुर्बुद्धि असत ~ रथ सत १/१४१ ।

कुमति[1] १. कुमति · आसा ~ कुनारी १/७३ । २ दुर्बुद्धि, कुबुद्धि : कहा पन धारे सा० ल० ६४ । ३. बुरी सलाह : काम ~ दीबै कौ १/१४४ ।

कुमति[2] पुरजन नामक राजा की रानी का नाम : ~ तासु रानी कौ ४/१२ ।

कुमया निष्ठुरता : यह ~ जौ तबहीं करते ३७०८ ।

कुमार[1] दुष्ट कामदेव . ब्रज मे आजु एक ~ सा० ल० शेष २ ।

कुमार[2] पुत्र : सब तजि भजिए नद ~ १/६८ ।

कुमारि १. कुमारियाँ : और घोष ~ २६ । २. पुत्री : जनक-नरेस ~ ९/६५ ।

कुमारिकनि कुमारियों ने : कियौ प्रथम ~ व्रत १०७१ ।

कुमारिका कुमारी (बालिका), बारह वर्ष तक अवस्था की बालिका : तू ~ बहुरौ होइ १/२२९ ।

कुमुद कुमुद पुष्प, : इदु ~ ज्यौं फूली २४०१ ।

कुमुद-जननी-ससि कुमुदिनी को खिलाने वाले चन्द्रमा : जै ~, प्रजा-प्रान ९/१६६ ।

कुमुदनी कमलिनी, कुई पुष्प, नीच कुल मे उत्पन्न अथवा बुरी बातों मे आनन्द लेने वाली : ~ सग जाइ करके केसरी कौ गात सा० ल० ७० ।

कुमुद बदन कमलवत् मुख : ~ कुम्हिलात सबनि के ३९५२ ।

कुमुद-बन वृन्दावन के समीप का स्थान : कान्ह ~ जैऐ ४४५ ।

कुमुदा राधा की एक सखी कुमुदा के · सूर स्याम ~ भवन मुधि करि पगु धारे २७०९ ।

कुमुदिनी १ कुई, जो रात मे खिलती तथा दिन मे मुरझा जाती है कहि धौं री ~ कदली १०९१ । २ कुमुदनियाँ ~ सकुची बारिज फूले २३३ ।

कुमैत स्याही लिए रग का घोडा । इस प्रकार का घोडा बहुत मजबूत और तेज होता है, ऐसे जोडे का रग . नीले सुरँग ~ स्याम तेहि ४१६६ ।

कमोदिनि १ कुमुदिनियाँ · सरवर घोष ~ ब्रजजन ३१३६ । २ कुमुदिनी हँसत ~ बिहँसत पद्मिमनि ३२७३ ।

कुम्हाँडे कुम्हडा धनिया धान ~ ३६०४

कुम्हिलाइ कुम्हला मनो ~ रहे २४९७ ।

कुम्हिलात कुम्हला जाती हैं सूर-किरिनि ~ ९/४३ ।

कुम्हिलाती कुम्हलाई बिथुरे कच ~ माल १६४१ ।

कुम्हिलानि मुरझा गये (पुहुप) एक वै ~ ३९८३ ।

कुम्हिलानी १. कुम्हला गया अधर बदन ~ २९७३ । २. कुम्हला गई : ऊधौ जिन जानी मन ~ कुम्न सँदेस पठाए ४०९३ ।

कुम्हिलाने १ कुम्हला गये . ~ मुख सरोज परि० १/१८०, अरु ~ फूल ३९४४ । २ कुम्हलाया हुआ · छूटे चिकुर बदन ~ ४०७३ ।

कुम्हिलानौ क्रि०अ० कुम्हला गया है · देखि छुधा तें मुख ~ ३६१, छूटे चिहुर बदन ~ २५७० । वि० कुम्हलाये हुए · ~ मुख पद्म-परस करि देखत छबिहिं बिमेम ४०७८ ।

कुम्हिलायौ मुरझा गया : कान्ह बदन अतिहीं ~ ३९१ ।

कुम्हिलाहि कुम्हला जाता . बिनु जलहीं ~ ३२३० ।

कुम्हिलहैं कुम्हला जायेगा : ग्रीषम कमल-बदन ~ ९/३४ ।

कुम्हैडो कुम्हडा · छेरी बदन ~ ३९२५ ।

कुरंग १. मृग, हिरण . सुनत ~ प्रेम नहिं त्यागत ३८३१ । २ मृग की . ज्यौं ~ नाभी ४/१३ । ३ मृगों को . खजन वारौं, कोटि ~ २१३६ ।

कुरवारति कुरेदती है, खरोंचती है : धरनी नख चरननि ~ १७७२ ।

कुरवारहीं कुरेदती है, सहलाती है : आपनैं कर नखनि अलक ~ १९८८ ।

कुराज बुरे राजा के · कठिन ~ राज को रीति २७७५ ।

कुरुख कठोर दृष्टि से, कुपित होकर· निरखि ~ उन बालनि की दिसि ३४७ ।

कुरुखेत कुरुक्षेत्र, एक बहुत प्राचीन तीर्थ जो सरस्वती नदी के बायें किनारे पर अम्बाला और दिल्ली के बीच स्थित है। महाभारत के इस पौराणिक युद्ध के अलावा भी इस स्थान पर और भी अनेक युद्ध हुए। ग्रहण और कुम्भ पर्व पर अब भी यहाँ मेले लगते हैं · चलौ सकल ~ ४२७५ ।

कुरुच्छेत्र कुरुक्षेत्र : बहुरौ ~ मैं आयौ ९/२ ।

कुरुपति दुर्योधन : ~ चीर हरै १/३७ ।

कुरुराज कुरुराज, दुर्योधन की · पारथ-तिय ~सभा मे बोलि करन चहै नगी १/२१ ।

कुरुष नाराज होकर . ~ कटाच्छ करति मुरि थोरी परि० १/५७ ।

कुल १ कुटुम्ब, परिवार द्विज ~ पतित अजामिल १/१०४ । २ वश . जाति गोत ~ १/११ ।

कुल-इष्ट कुल-गुरु : ये बसिष्ठ ~ हमारे ९/१६७ ।

कुल-कमल-भान कुल रूपी कमल को विकसित करने वाले सूर्य : जै-जै दसरथ — ~ ९/१६६ ।

कुल कलंक कुल मे लगे हुए कलक को · ~ क्रिन टारौ ९/११५ ।

कुल कान कुल की मर्यादा कौ जानै ~ कहा है सा० ल० ४१ ।

कुलकानि कुल की प्रतिष्ठा : मेटि ~ मरजाद बिधि-बेद ११३५ ।

कुल-कानिहि कुल की मर्यादा को ही : मातु पिता ~ मानत १७१२ ।

कुलकानी कुल मर्यादा खल भई लोकलाज ~ २३६५ ।

कुल-खोवन कुल-नाशक . सूरदास रावन ~ ९/८८ ।

कुलचन्द कुल के चन्द्र · दसरथ ~ अगिनि बन ९/११५ ।

कुलच्छनि बुरे लक्षणों वाली . के हौं कुटिल, कुचील ~ ९/९१ ।

कुलज¹ निर्लज्ज, • निर्धिन, नीच ~, दुर्बुद्धि १/१८६।

कुलज² कुल में उत्पन्न • निर्धिन नीच ~ दुर्बुद्धि १/१८६।

कुलट अनाचारी, व्यभिचारी • अहैं ~ कुलटा ये दोऊ १३०९।

कुलटा अनाचारिणी, अनेक पुरुषो से प्रेम करने वाली स्त्री : अहैं कुलट ~ ये दोऊ १३०९।

कुलटी कुलटा, अनेक पुरुषो से रति सम्बन्ध रखने वाली : अब लौं तुम ~ करि जानति १९६१।

कुल दाहनहारी कुल को जलाने वाली है • यह मुरली ~ १३०९।

कुल-दीपक कुल का दीपक, सन्तान • ~ मनि धाम ३६७।

कुलदेवनि कुलदेवताओं ने सूर स्याम ~ तुमकौं करि लियौ सहाई ५३०।

कुल-नाथा कुल के स्वामी निसिचर ~ ९/९६।

कुलबंस कुल और वश के : ये तुम्हारे ~ हैं ९/२३८।

कुल-बधू कुलागना, कुलीन वश की वधू ज्यौं ~ बाहिरी परि कै २३१६।

कुल-लज्जा-संपदा कुल की लज्जा रूपी सम्पत्ति ~ हमारी २२९०।

कुल-सत्रु कुल के शत्रु जो ~ न मार्यौ ९/१३४।

कुल सैल सरित पहाडो और नदियों के कुल की बलिहारी ~ जिहिं कहत कलिंद दुलारी ४०५४।

कुलह टोपी • काहू ~ कबाइ परि० १/७।

कुलहि १ कुल को : काहैं ~ लजावति १९४१। २ कुल मे : मिले ~ जब भए सयाने ३७५१। ३ कुल को : असुर ~ सँहारि धरनि को भार उतारौं ४३१।

कुलही गोल टोपी • ~ लसित सिर स्याम सुंदर कै १०८।

कुलहू कुल से भी जाति पाँति ~ तैं न्यारौ १/२४४।

कुलाल¹ जगली मुर्गा • जैसे स्वान ~ के पाछे २/९।

कुलाल² कुंभकार : विधि ~ कीन्हे काँचे घट ३७८१।

कुलाहर कोलाहल आपम मे सब करत ~ ४०७।

कुलाहल कोलाहल, शोर . सबहि घोष मैं भयौ ~ ७०।

कुलिस १ पत्थर, वज्र : ऊपर मृदु भीतर जु ~ ३५९५, हृदय कठोर ~ तैं मेरौ ७/५। २ हीरा : लसत ~ कठोर २१३३।

कुलिसहु पत्थर से भी : ~ तैं कठिन छतिया चितै री तेरी ३६२।

कुलुफ ताला : कज्जल ~ मेलि मदिर मैं २३२१।

कुल्ल समस्त, पूरा, सब : मुजमिल जोरै ध्यान ~ कौ १/१४२।

कुल्हारौ कुल्हाडा। △ पाउँ ~ मारौ अपने आप अपनी हानि की जल औंडे मैं चहुँ दिसि पैर्यौ — ~ — १/१५२।

कुवँरि बाला (बालिका) : ~ अन्त:पुर गई लै २७२१।

कुवलय नील कमल . ~ दल कुसुमन शय्या रचि सारा० ९२६।

कुबेनी ठीक से न गुथी हुई चोटी काम ~ कलित बनाई परि० १/६८।

कुश सात द्वीपो में से एक जो चारो ओर घृत-समुद्र से घिरा है जबु, प्लक्ष, क्रौंच, शाक, शाल्मलि, ~ पुष्कर भरभूर सारा० ३४।

कुषमांड कुम्हडा जोग अलि ~ जैसी ३००२।

कुस कुशा : न्हात भजे ~ डारी १/१२२।

कुसगुन अपशकुन : ~ आजु बहुत भए ५८९।

कुसल छेम कुशलक्षेम • ~ बसुदेव कुसल देवै बलदाऊ ४०९५, ~ घर आवै ९/१५२।

कुसलाई कल्याण, कुशलता : जौ चाहौ ब्रज की ~ तौ गोवर्धन मानौ ८२१।

कुसलात क्रि० चैन पाता नाहि तन ~ ३९०२। स्त्री० कुशलता : भली स्याम ~ सुनाई ३८६८।

कुसलाती कुशलता : मिलि पूछी इत उत ~ ४२४०।

कुसलातैं कुशल से है कहि कहि ऊधौ हरि ~ ४०९३।

कुसुंभ कुसुभी, केसर अति ~ रग जैसैं २८२६।

कुसुंभि कुसुभी, लाल : साँवरैं तनु ~ सारि २१६५।

कुसुंभी अंबर कुसुमी (लाल)वस्त्र भीजत ~ १९९१।

कुस-साथरी कुशा की चटाई पर ~ बैठि इक आसन ९/१२१।

कुसुभी गुलाबी ~ सारी अलक झलक मनौ २६१७।

कुसुम¹ कुसुमी, लाल गुलाबी : ~ रग गुरुजन पितु माता १९१२।

कुसुम² १ पुष्प, फूल कमल ~ फूले २०२। २ पुष्पों की उर पर पदिक ~ बनमाला ४५१।

कुसुमनि १ पुष्पो . गए नव कुज, ~ के पुज ३८६७। २. पुष्पो की : बीनति ~ कलियाँ २६२०।

कुसुमनि-सेज पुष्प शय्या से ~ भोर उठि आवत २१७६।

कुसुम-पाग कुसुभी रग की पगडी . अति सुदेस ~ ६६२।

कुसुम बिमान पुष्पक विमान पर : ~ बैठी बैदेही ९/८३।

कुसुम-बिसिष कामदेव के बाणो : नख सिख ~ की सेना २४४८।

कुसुम सज्जा फूलो की शय्या : कुज-गृह रुचि ~ १६७९।

कुसुमाँजलि पुष्पाजलि • ~ बरसत सुर ऊपर ६२६।

कुहू अमावस्या की . सरद ~ निसि जानि ८४१ ।

कृत[1] उपकार, अहसान : जौ मेरौ ~ मानौ २११४, पर कौ सूरदास मेटि ~ १३५६ ।

कृत[2] १ करती हूँ : जोइ जोइ कहत सोई ~ १६५६ । २. कर दी : करि बोली यह कमला लोक लाज ~ भग सारा० ६३० । ३ कर दी गई हो : ज्यौं ~ राई रेत ३९१९ । ४ किये गये : मन ~ दोष अथाह १/६७ । ५ बनाया हुआ, रचित : तू ~ मम जस जो गावैगो सारा० ११०४ । ६ बने : देखि महाबन भूमि तृन द्रुम ~ कीने ४३१ ।

कृत[3] १. उपक्रम : नव ~ फेरि बनाये ४३६ । २. करनी को : अपनौ ~ ये जो जानहिं ९/९५ । ३ कर्म से : रूप बचन ~ कारे ३७६१ । ४. कार्य · गृह ~ कछु न सुहाइ ८५७ । ५. कार्य को : भूल्यौ भोजन भाव सकल ~ ३६१४ ।

कृतघन कृतघ्न : सूर महा ~ कौं १/९ ।

कृतघ्नी कृतघ्न, अकृतज्ञ बडौ ~ और निकम्मा १/१८६ ।

कृतग्य एहसानमंद, उपकार मानने वाला : मधुबन सब ~ धरमीले ३५९४ ।

कृतदंड यमराज : गोपन सखा भाव करि देखे दुष्ट नृपति ~ सारा० ५१६ ।

कृतयुग सतयुग : मैं मचुकुन्द नृपति ~ को सारा० ६१३ ।

कृतहारी कर्म नष्ट करने वाले हैं : प्रेम परस्पर — ~ १७१ ।

कृतहि कृतज्ञता को, किये हुए उपकार को · ताहू ~ न मानै ४२६९ ।

कृतहि कृतज्ञता को : कारे ~ न मानैं ४०४२ ।

कृतारथ कृतार्थ : या विधि नृपति ~ भयौ १७४ ।

कृति करनी, करतूत : निज ~ दोष बिचारि १/२९८ ।

कृत्य करतब : सूर स्याम के ~ जसोमति, ग्वाल बाल कहि प्रगट सुनावत ४८० ।

कृत्या तंत्र के अनुसार एक राक्षसी, जिसे तान्त्रिक लोग अपने तान्त्रिक अनुष्ठान से उत्पन्न करते हैं . तब शिव ने उन ~ दीन्ही बाढो क्रोध अपार सारा० ७०७ ।

कृपन १ कृपण, कजूस · प्रेम ~ थोरे बिन बपुरौ ३९७९ । २ २ दीन : केतिक राम ~ ९/७७ । ~ **कौ गथ भयौ तुमकौ बैन** तुम्हारा वचन कृपण की पूँजी के समान हो गया है . ~ — १०३० ।

कृपनहि कजूस से : जैसैं ~ दान माँगनौ ३९२० ।

कृपाकरन कृपालु : भक्त-बछल ~ असरन सरन पतित उद्धरन कहैं वेद गाई ८/९ ।

कृपा चितवनि कृपा दृष्टि से : ~ भुज उठावहु १०३० ।

कृपानिधान दया के सागर, भगवान् : नमो नमो हे ~ २/३३; ~ नाम हित धाए ९/६५ ।

कृपानिधानहि कृपानिधान को : लै जु आइहौं ~ ९/९५ ।

कृपानिधि कृपानिधान, कृपासागर · विनय बचननि सुनि ~ २१८ ।

कृपा-प्रसाद अनुकंपा के परिणाम स्वरूप : सतगुरू ~ कछुक तातैं कहि आवै ४९२ ।

कृपा मारग शरण देने वाला : ~ बहुरि मिलैं कैसैं २०७९ ।

कृपा-रस कृपा के रस (आनन्द) से . ~ भरे सारंग पानी १०३५ ।

कृपाल कृपालु, दयालु : ऐसे प्रभु ~ करुनामय ८४६ ।

कृपावंत कृपालु : ~ रिषि तापर भये ९/३ । ~ **ह्वै** कृपाशील होकर : सूरदास प्रभु ~ — लै भक्तनि मैं डारौ १/१७८ ।

कृपा-सिन्धु कृपा सागर : वे हैं ~ करुनाकर ९४६ ।

कृपाहु कृपा भी : बहुरि ~ कहा कृपाल १/१५९ ।

कृपिन कजूस, कृपण . कहा ~ की माया गनियै १/७४ ।

कृपी कृपाचार्य की बहन तथा द्रोणाचार्य की पत्नी · कुन्ती नकुल और गधारी ~ बिदुर सारा० ७१२ ।

कृमि कीडा : तन ~ कै विष्टा कै १/८६ ।

कृश पतली : कटि ~ कोमल गात १९४६ ।

कृष्णागर काला अगरु · नील जलधर के ऊपर ~ लपटायौ सारा० १०५६ ।

कृस्न पच्छ कृष्ण पक्ष : ~ रोहिनी, अर्द्धनिमि ८६ ।

कृस्न-बधू राधा : ~ पावन जस गाइ ११८० ।

कृस्न-रजधानी कृष्ण का राजसी ठाठ बरनि न जाइ ~ १३९८ ।

कृस्नहि कृष्ण को : मिलि दस पाँच अली ~ २८६० ।

कृस्ना[1] राधा की सखी : दुर्वा, रभा ~ २००८ ।

कृस्ना[2] कृष्ण का . अब ~ अवतार १६०४ ।

कृस्नाकृति कृष्णमय रूप : देखि सुरूप सकल ~ ८/१४ ।

कृस १. दुबली · बकत भई हौं ~ २९५ । २. पतली ~ कटि पृथु नितंब २१८४ ।

कृसगात क्षीण शरीर, दुर्बल शरीर वाली : अति ~ भई ये तुम बिनु ४०७० ।

कृसानु-सुत अग्नि का पुत्र धुआ या धूम · सुत ~ प्रबल भए मिलि सा० ल० ११ ।

कृसोदरी पतली कमर वाली : राजहंस गति चलति ~ २६१० ।

कृस्न कृष्ण : ~ सदा गोकुल कीन्हौ थानौ १/११ ।

केंचुरि केंचुल : ज्यौं अहिपति ~ कौ ११५८ ।

केंचुरी केंचुली को . उरग ~ फिरि न निहार्यौ २२१६ ।

के १ कर · गोपी ग्वाल ठहर ठहर ~ ३४ । २. के . मन ~ मनोज फूले ३४ । ३. मे : तरवर आनँद लहर ~ ३४ । ४.

से कब ~ करत हैं मनुहारि २७५४।
केकइ-सुत भरत : आनँद-मग्न पगनि ~ ९/१६८।
केकि मोर के . ~ कच सुर-चाप की छबि ६३५।
केकी मोर : ~ कोक कपोत और खग २८५३।
केत केतु, पुराणानुसार एक राक्षस का कबंध : चद्र गहैं ज्यौं ~ १/२९६।
केतकि केतकी, केवडा : ~, करना, बेल, चमेली २१०६।
केतकी[1] एक रागिनी का नाम : रामकली, ~ सुर सुघराई गायौ सारा० १०१७।
केतकी[2] केतकी पुष्प जो सफेद तथा सुगन्धित होता है · ज्यौं मधुकर बस परे ~ २३०७।
केतकी के अंग काँटे : ~ सगी सा० ल० ७०।
केति कितना : सूर स्याम जसुमति मैया सौं हा हा करि कहै ~ ४२४।
केतिक १ कितना · ~ दह्यौ लुटायौ ३५६ । २ कितनी : ~ दूर द्वारिका नगरी ४२०५। ३ कितना ही : ~ लक उघारि बाम कर ६/७४। ४. कितने : हैं ~ ये तिमिर निसाचर ९/९५। ५ कितनों के : ~ बीच बिरह परमारथ ३६२१। ६ कौन सी : ~ यह बाता १/१२३। ~ **आसा** कितनी क्षमता है . मोहिं गरीब की ~ — ९५०।
केतिक-संख कितने ही अरबों-खरबों ~ जुगै जुग बीते ९/१३२।
केती १ कितना : ~ कही नैंकु नहिं बोली १७४५। २. कितनी : ~ भस्म कराऊँ ३५३८।
केतु एक राक्षस का कबंध, जो नव ग्रहों मे से एक माना जाता है। यह राक्षस समुद्र मथन के समय देवताओ मे मिलकर अमृतपान कर गया था। इसीलिए विष्णु ने इसका सिर काट डाला था : राहु ~ दोउ जोरि एक करि ३३५१।
केते १ कितना · कहौ कहाँ लगि ~ १/४४ । २ कितने ही ~ करवर टरे कन्हाइ ५३०।
केतौ १ कितना . मोहन हमारौ भैया ~ दधि पियतो ३७३। २ कितना ही . ~ भोग करौ किन कोइ ९/८।
केदार[1] एक राग जो मेघ राग का चौथा पुत्र माना जाता है : टोडी भैरव सोरठी ~ २८३१।
केदार[2] केदारनाथ, तीर्थ स्थान का नाम : गया बनारस अरु ~ २/३।
केदार[3] राम की सेना का एक वानर . सुग्रीव बिभीषन जामवत अगद सुषेन ~ सत ९/१६६।
केदारो रात्रि के दूसरे पहर मे गाया जाने वाला एक राग . करत बिहाग मधुर ~ सकल सुरन सुख दीन सारा० १०१४।
केदारौ केदारा-राग : मधुरै सुर गावत ~ २४२।
केसुक कैसे, कौन : ~ बिरह बयारि मैन की ३७४०।
केयुर बाँह मे पहनने का एक आभूषण, भुजबन्द : कर ~ कचन नग-जाला ६२५।
केयूर भुजबद : लै ~ भुज स्याम निहारति ५१२।
केरा केला : ~ आम ऊख रस सीरा २११।
केरि[1] केले का वृक्ष : आँगनि रोपे ~ ४०।
केरि[2] कहाँ से : (तुम) ~ बालक जुवा खेल्यौ ५७७।
केरी १ की : तुम प्यारी हरि ~ १८८१। २ जैसी · उपजी रीति ग्राह गज ~ ४१७२। ~ **सी** की सी · बाँस बँसुरिया ~ — १३३८।
केरे १ की . चेरी हैं कहु ~ १४७२। २ के : गोरस ~ माते डोलत २८९६।
केरै १ का : चितै बदन प्रभु ~ ४३० । २ के . कहँ पायौ किहिं ~ २५६१।
केरौ का · जानै को सूरदास चरित कान्ह ~ २७६।
केलि १ क्रीडा, खेल : हम तौ कान्ह ~ की भूखी ३६८२ ।२. क्रीडा (करके) : भींजी है फुलेलनि सौं आली हरि सग ~ २०१० । ३ ~ **बिहारी** क्रीडा करने वाले · नित नव ~ — ४२७४।
केलि-रस क्रीडा (लीला) के आनन्द रस से . निसि-दिन रहत ~ ओद ११९।
केवरा केवडा, सफेद केतकी का पौधा · तहाँ कमल ~ फूले २९१७।
केस[1] केश, बाल : (कस) रथ तैं उतरि ~ गहि राजा ४, जब धरि ~ पछारौं १५१३ । △ ~ **नहि टारि सकै कोउ** कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता : सूर ~ — १/२३४।
केस[2] बार, द्वार, दरवाजा : ~ ओर निहार फिरि फिरि सा० ल० ३०।
केसन बालों को ~ आपु सँवारे सारा० १०११।
केसनि १ केशों . गिरत कुसुम कबरी ~ तें ११३६। २ बालों ने . कान लागि ~ कह्यौ जाई ४/१२ । ३ बालों मे तिन ~ क्यौं भस्म चढावत ३८१५।
केसपास केश-समूह बरना भख कर मे अवलोकत ~ कृत बद सारा० ९८९।
केसरि[1] केसर कोउ ~ कौ तिलक बनावति २५। ~ **चय** केसर का लेप : रही ~ — ११६१।
केसरि[2] हनुमान के पिता का नाम : अजनि कौ सुत ~ कैं कुल ९/६९।
केसरि-खंड पराग समूह : राजति जलद ~ ६३३।
केसरि-पुत्र हनुमान : या दल मध्य प्रगट ~ ९/७४।
केसरि-बिन्दु केसर का बिन्दु : ~ सोभाकारि १६९।

केसरि-सुत केशरी-पुत्र, हनुमान • अहो पुनीत मीत ~ ९/१४७।
केसरी[1] राम की सेना का एक बन्दर : नल-नील द्विविद ~ गवच्छ ९/१६६।
केसरी[2] पुष्प रज से युक्त, केलि चिह्नों से अंकित ~ कौ गात सा० ल० ७०।
केसव केशव, कृष्ण . तुम कृतज्ञ, करुनामय ~ १/१७७।
केसवराई श्री कृष्ण : जानत ~ ५२।
केस-सीस सिर के बाल : मुडित ~ विह्वल दोउ ९/५२।
केसि कस का दरवारी एक राक्षस केशी जिसका हनन श्रीकृष्ण ने किया था . कस ~ कौ वह गति दीनी ४८७
केसि-कर-पातन केशी के हाथ का विच्छेदन करने वाले हो काली-दवन ~ ९८१।
केसि तृना केशी और तृणावर्त . तवही हमहिं भरोसौ आयौ ~ जब मारौ ४०३०।
केसी केशी, कस का दरबारी एक राक्षस जो श्रीकृष्ण के हाथो मारा गया था : बकी बका सकटा तृना ~ वृषभ ३८६७।
केसे के समान हस ~ जोट दोऊ ३०८८।
केसौं कृष्ण, केशव . तेज प्रताप राइ ~ कौ ३०९६।
केसौ[1] १. *किस प्रकार की ठकुराइत ~ गिरिधर की ३००९।* २ कैसा तिनसौं ~ रोस परि० १/८५।
केसौ[2] १ केशव . दूरि नहीं कृपाल ~ ४०३५। २ केशव-केशव आजु विरहिनी विरह तुम्हरैं ~ रटति रही ४१४२।
केहरि १ सिंह, शेर ज्यौं ~ प्रतिबिंब देखिकै २/२६ । २ सिंह की आवाज : सूर स्याम ~ सुनिकै ज्यौं १६२९। ३ सिंह ने भी : कटि निरखत ~ डर मान्यौ १७५७ । ४. सिंह (कटि) इक ~, इक हस गुप्त रहैं २११२। ५ (सिंह) पराक्रमी : 'सूर' स्याम ~ करुनामय ४०३७ । **ज्यौं मृग ~ कोर** जैसे सिंह के पास मृग मोकति — ~ — परि० १/९४।
केहरि-नख बघ-नखा कठुला कठ वज्र ~ ८४ :
केहरी सिंह . नाद किंकिनि ~ सुनि २१३१।
केहि १. किस ~ मारग मैं जाउँ सखी री ११११ । २ किसे : ~ अवलंबै तात ३१७१।
केहिकै किसके • ~ रूप आनि उर अंतर ३८३३।
केहि १. किस • ~ विधि स्याम मिलाई सारा० ८७४। २ किसने : चौबीस धातु चित्र ~ कीन ३८६७। **मैं बपुरा ~ माही** मैं बेचारा किस गिनती मे हूँ . ब्रह्मा सिव अस्तुति न सकैं करि — ~ ४३०२।
केहौं या तो : ~ पतित रहौं १/१७९।
कैं के : ब्रज बालक सब जाइ तुरतही महर-महरि ~ पाइ परे ४३०। २ के यहा घर के ठाकुर ~ सुत जायौ ३२। ३. पर . सूरदास बलि गयौ राम ~ ९/५५।
कैंती तरफ से • मेरी ~ बिनती करनी ९/१०१।
कै[1] कितनी : सुनि सुनि गे ~ बार १/८४।
कै[2] १ अथवा, या तो ~ रघुनाथ तज्यौ प्रन अपनौ ९/९१। २ या : ~ जसुमति ~ नद १५४१।
कै[3] १. कर • मोहन छाक बाँटि ~ लेत ४१६। २ कर भी • निरखि ~ न पत्याउ ५। ३ के • इक ठाढे मदिर ~ तीर २५ । ४ के यहाँ : स्याम बिदुर ~ आए १/१३। ५. डालकर : राखौ रोकि पाइ बधन ~ ८०८।
कैऽव (कै+अव) करके अब • जदुपति कौ सदेस सखी री कैसैं ~ हौं ४०५९।
कैक कई एक, अनेकों ~ बार झटकी १६६०।
कैकई कैकेयी जो राजा दशरथ की तीन रनियों मे से एक थी यह सुनि बोली नारि ~ ९/३०।
कैकयि कैकेयी • सौमित्रा ~ सुख पावत सारा० १९५।
कैटभ मधु का भाई जो भगवान् विष्णु के कान के मैल से पैदा हुआ था। मधु ~ मथन मुर भौम केसी दलन ४२१३।
कैटभारे विष्णु का एक नाम जो कैटभ दैत्य के मारने से पडा था : बिरद बदत जै जै जै जैति ~ २०५।
कैतव १ कपट : ~ वचन छाँडि अलि हम सौं ३७२८। २ कपटी • परमारथी परम ~ चित ३५८८। ३ छल, धोखा एक प्रकृति एकै ~ गति ३९८४।
कैद वश मे मन महतो करि ~ अपन मैं, ग्यान जहतिया लावै १/१४२।
कैधौं अथवा, या तो . ~ मन हरि लीन्हौ १६१३ : ~ तुम पावन प्रभु नाही १/१३६, कहत अबहीं याहि मारैं ~ ३०५६।
कैन किसको नही दुमची मचै रुचि ~ २८४१।
कैनैंहु किसी भी यह नृप नीति रहौ ~ जुग ३७७१।
कैबौ करना, ठानना हारहु, बैर समुझि ~ १४८५।
कैयौ कई एक दट द्वादसी ~ पल ९८४, ~ भाँति केरा कर लीने २३२१।
कैरे के लिए सहस वर्ष लौं ध्यान करत हौं राम कृष्ण सुख ~ सारा० १४९।
कैलास १ स्वर्ग को • इक दिन सो ~ सिधायौ ६/५। २. कैलास है : यह ~ जहाँ सुनियत हर ४२३७।
कैवाँ कितनी बार : कहा जानै ~ मुवो, (रे) ऐसें कुमति, कुमीच

१/३२५ ।
कैसहुँ किसी प्रकार भी : अब क जौ ~ मिलौ ११११ ।
कैसहूँ किसी प्रकार भी · इती बडाई कबहुँ ~ ५७० ।
कैसिहु किसी भी प्रकार · जौ कोउ कोटि करै ~ ३६१८ ।
कैसे कैसे प्रान जिवन ~ बन जात ९/३८ ।
कैसैंहुँ किसी प्रकार भी . ~ फिरन न फेरं २३६५ ।
कैसेक किस तरह : ~ भुज पकरा परि० १/२१ ।
कैसेके किस प्रकार . ~ पठवत वे आवत ३९७४ ।
कैसेके किस प्रकार से . हम अलि ~ पतियाहि ३९७८ ।
कैसेहुँ किसी प्रकार, किसी भी प्रकार . ~ मोहिं दिखावहु उनको २७३६ ।
कैसेहूँ किसी प्रकार भी कोऊ प्रीति करै ~ ३७५० ।
कैसैं १ किस प्रकार, कैसे · वडे दैत्य ~ के मारे ९/१०५ । २ किस प्रकार से · थार्तें ~ होत उबारौ २१६६ । ~ **चपैं** कैसे खायेगा (भक्षण करेगा) . करनि सिंह तुम्हरी धरौ ~ — सृगाल ४१८८ ।
कैसैंहु १ किसी प्रकार, : ~ खूँट छुडावति १४२७ । २ किसी भी प्रकार से : प्रेम जीव निसरत नहिं ~ २२९१ । △ ~ **करि** किसी प्रकार से, बडे भाग्य से . ढोटा एक भयौ ~ — ३६८ ।
कैसैंहूँ किसी प्रकार से : इक इक दिन बिहात ~ १९२६ ।
कैसैंहू किस प्रकार से . ~ पति रहैं विधाता २०८६ ।
कैसैं कैसे : सो ~ बिसरै २/३७ ।
कैसैंहुँ १ किसी प्रकार से · ~ जाहिं आपनें भौन १५९३ । २ किसी भी प्रकार . ~ दुरत नहीं जदुराइ १९१४ ।
कैसौ १ किस प्रकार · देखौ ~ कियौ सहाइ ८७२ । २ कैसा : ~ बदन, सिंगार कौन विधि २०४९ । ३ कैसे : प्रभु विरद भुलावत ~ १/१२९ ।
कैसोहू कैसा ही : ~ पापी किन होइ ६/४ ।
कैहे कहेगा : त्राम अक्रूर जिय कहा ~ २९२९ ।
कैहै १ कहेगी लै आवौ हम कछु न ~ ३९६७ । २ कहेंगे : घर घर मे ~ सब जाइ १५६२ ।
कैहै १ करेगा तू नारायन सुमिरन ~ ८/२ । २ कहती हो . भली बुरी कैसी धौं ~ १६५० । ३ कहेंगे : यह सब बात कोऊ ~ ३८२५ । ४ कहेगी · घर धौं जाइ कहा अब ~ १७२२ । ५ बता देंगे : जाइ ~, रहौ मष्ट धरे ३०८९ । ६ बतायेगी : अपनी भेद तुम्हैं नहिं ~ १७२४ । ७ बोलेगा : कछु ~ के मौनहि रैहै १६५० ।
कैहौं १ करूँगा . जब मैं भक्ति स्याम की ~ ४/९ । २ कहूँगा, बताऊँगा : ~ कहा जाइ जसुमति सो ३११६ । ३ कहूँगी : यहै बात ~ उन आगैं १९५० ।
कैहौ १ कहोगी : की ~ वे जैसे हैं १७७० । २ कहोगे : तुम ~ मैं सैहौं १४०५ ।
कोंवरी कोमल प्रात समय रवि किरनि ~ ७३ ।
को १ किसे हरि तुव माया ~ न बिगोयौ १/४३ । २. को : तिय ~ किनि कर्‍यौ ११८२ । ३ कोई : मेरे सग आवै जनि ~ री १९७७ । ४ कौन . ~ तरि सिन्धु सिया-सुधि ल्यावे ९/७४ । ~ **को** किस किस को . सूरस्याम ~ — न किये बस ११४२ । ~ **लागत** ~ **दूरी** कौन पास है और कौन दूर है : ~ — ~ — ४०२७ । ~ **सकै सम्हारि** कौन सह सकता है सूरदास ~ ~ १५८५ ।
कोइ १ कोई यह जानत सब ~ ४२६०, मोकों मारि मर्कै नहि ~ ७/२ । २ कौन है · देह धरे धों ~ ९/४५ ।
कोइल-सुत कोयल के पुत्र को : ज्यों ~ काग जियावे ३५९२ ।
कोइलाहू कोयला भी : ~ त धूरि ३८४३ ।
कोउ १ कुछ ~ एक गए पराए ९/५७ । २ किसी ने · खेलत में ~ दीठि लगाई २०० . ३ कोई ~ काहू कौ भेद न जानति १५२७ । ~ **करत नए री** कोइ नवीन बना सके · जो ~ — १८१२ । ~ **कोटि कल** कोई लाख कला/तरह से · कहै बात ~ — २७६१ । ~ **पावत** कोई समझ सकता है यह महिमा कैसैं ~ — ९०९ ।
कोऊ १ कोई : सब ~ ऐसो सुख सुनि कै २३ । २ कोई भी चलत न ~ सग चलै २/२९ ।
कोक[1] चकवा निरख ~ जनु कोकी मा० ल० शेष ८ ।
कोक[2] कामकला · सूर प्रभु ~ गुन मे निपुन २६२१ ।
कोक-कला १ कामकला, रति विद्या · हाव-भाव कटाच्छ लोचन ~ सुभाइ ६०० । २ काम कला मे · ~ परिपूरन दोऊ २६२७ ।
कोक-कला-गुन कामकला के गुण . ~ प्रगटे भारी १६७८ ।
कोक-कला-गुन आगरि कामकला के गुणों की निधि ~ नागरि १९८२ ।
कोक-कलानि कामकलायें . सूरदास स्वामी-स्वामिनि मिलि, ~ अनेक २०३२ । ~ **जीति** कामशास्त्र की सभी कलाओं को जीत लिया है : धन्य दोउ तुम नवल जोरी ~ — १८४२ ।
कोक-कला-व्युतपन्न कामकला मे चतुर : ~ परस्पर, देखत

लज्जित बाम ११४४।

कोक-कला-सुजान काम काला मे चतुर : भवन गई वृषभान तनया ~ २४७५।

कोक गुन रतिक्रिया : ~ करि कुसल स्यामा १९८९।

कोकनद लाल कमल : ~ पर तरनि ताडब २१३२।

कोक परबीन काम कला मे चतुर : ~ घटि नहि कोऊ २४९०।

कोक प्रबीन कामशास्त्र मे प्रवाण : तीजैं ~ २२०७।

कोक-बिलास काम शास्त्र के अनुसार रति-क्रीडा : कबहुँ ~ १०६२।

कोक मद काम की मस्ती : जानति हौ अति किये ~ २६८०।

कोक रभस काम का वेग : ~ रस सिन्धु झकोरी १२०१

कोक-बिद्या-निपुन काम शास्त्र मे चतुर : ~ सकल गुन मैं सँपन २५००।

कोकिल कोयल : ~ सब्द रसाल ३७३६।

कोकिलन कोयलो : कोटि ~ वारौ सा० ल० १०२।

कोकिल-पुंज कोयलो का समूह : जहँ तहँ कूजत —११८१।

कोकिल बरन कोयल के रग की, काली : पथ जोहत तन ~ भई।

कोकिला कोयल : खग कपोत ~ कीर १५४६।

कोकिला-गन कोयलें : उत ~ करैं कुलाहल १०७२।

कोकी चकवी : निरख कोक जनु ~ सा० ल० ८।

कोख कुक्षि, उदर . धन ~ जिहिं तोकौं राख्यौ ७०३। △ ~ **भाग सुहाग भरी** पति-पुत्र का सुख देखने वाली, भाग्यवती कोख : धनि महरि की ~ — २४।

कोखि १ कोख : तिनमें प्रथम लियो कश्यप गृह दिति की ~ मँझार सारा० ४४। २ गर्भ से : (आकास वाणी) याकी ~ अवतरै जो सुत ४। △ ~ **जरी** जिसकी सतान जीवित न रहे, अथवा जिसे सतान का सुख न मिले : मैं दुखिया दुख ~ — ८०।

कोट[1] करोडो : खरचत ~ काम कल थाती सा० ल० ४८।~ करौ करोडो (उपाय) करो : सूर स्याम बिनु ~ जौ ११११४।

कोट[2] १. किला, दुर्ग : मय माया-मय ~ सँवारौ ७/७। २. दुर्ग के : द्वार कपाट-~ भट रोके ११। ३. दुर्ग को : लक सु ~ देखि जनि गरवहि ९/११७। ४. महल, राजप्रासाद : हाटक ~ कगूरा राजत ३०९७।

कोट[3] छोर : पट कौ ~ बढ़यौ १/१६, बढे दुकूल ~ अबर लौं १/२७।

कोट[4] समूह : उदित होत हैं दावानल के ~ ३९७१।

कोटि १. सुदर कोटि की : अग अग प्रति ~ माधुरी १८२६। २. करोडों : ~ काम लजाइ ३५२। ३. कितना भी : ~ कहौ नहिं मानैं १०२१।

कोटिक १. करोडों : ~ रवि प्रकास तहँ भयौ ४३०९; जौ तुम करौ भलाई ~ २२५५। २. करोडों को : रावन से गहि ~ मारौं ९/१०८।

कोटि-चंद्र-छबि करोडो चन्द्रमाओं की शोभा : सूर स्याम मुख ~ २१४६।

कोटिन १. करोड . छप्पन ~ मध्य राजहीं जादवराई ४१८८। २. करोडों : करत ~ ख्याल सा० ल० ३०।

कोटिनि करोडों : ~ बसन पुजाए १/१५८।

कोटि-मदन-भय-भोर करोडों कामदेव भौचक्के से हो गये हैं · ~ १२०३।

कोटिशत सैकडों, करोडों : वर्णत चरित बिस्तार ~ तऊ पार नहिं पायौ सारा० ३१४।

कोटी[1] कोरों पर : धरी दसन की ~ १६४।

कोटी[2] करोडों . उपमा को दीजै ~ झोंटा परि० १/११६।

कोटे बने बैठे (हो) : तुम बहुनायक ~ हौ २६०९।

कोठी बडा पक्का मकान। △ ~ **खोलि** भण्डार को खोल करके, बडा कारबार शुरू करके त्रिभुवन निठुर ~ — १०३०।

कोड पैंतरे, दाँव पेच ~ भूले, गोड थरथराने ३०६०।

कोतैं ओर से · सूरदास प्रभु हमरे ~ ४२६५।

कोतौं ओर से श्री दामाऽदि सकल ग्वालनि कौ मेरी ~ भेंट्यौ ३४४९।

कोदंड धनुष रजक मारि ~ बिभज्यौ ३०८०।

कोदंड-आभा धनुष की काति को · कोटि-सुर-~ १२१९।

कोद १. ओर : फिरि चितवत ब्रज जन ~ ११९। २ पक्ष : ~ कौ हेत ३९१९।

कोदन ओर, तरफ : पकवान धरे चहुँ ~ ९०८।

कोदा ओर : अष्ट सिद्धि नव निधि चहुँ ~ ९००।

कोधा क्रोधित होकर चितयै मल्ल नद सुत ~ ३०७०।

कोन १. कोने नैन ~ की अजन रेखा २६४८। २. कोने मे सूप के ~ पर्यौ है १२८।

कोनैं कोने मे : अपने मदिर के ~ २८०।

कोप १ क्रोध . पृथी पर ~ कियौ ४/११। २. क्रोध करती हुई · सींच्यौ अमृत बैन ~ १६१८। ३. क्रोधित : भृगु तब ~ होइ यौं कह्यौ ४/५।

कोप-दृष्टि कुपित आख से · ~ करि तिन्है जरायौ ९/९।

कोपर थाल, परात · दधि-मधु नीर कनक के ~ ९/१२१।

कोपि क्रोधित होकर : ~ कै प्रभु बान लीन्हौ ९/६०।

कोपी क्रुद्ध, अप्रसन्न · तदपि न तजे भजे निसि-बासर नैकहू नहिं ~ ४१४८।

कोपे १. क्रोधित : आजु अति ~ हैं रन राम ९/१५८। २. क्रोधित हुए : ऐसौ कौन जाहि प्रभु ~ ९२७।

कोपै क्रोध करता है : ~ तात प्रहलाद भगत कौ १/८२।

कोपौ कुपित हुआ, क्रोधित हुआ : आज रन ~ भीम कुमार सा० ल० ७४।

कोप्यौ क्रोध किया : जौ सुरपति ~ १/३०।

कोविद¹ ज्ञानी . परम कुसल ~ लीला नट १५४।

कोविद² कचनार . कुटज, कुज, कदब ~ करनिकार सुकज ३३१४।

कोविदा सुभूपन चतुर शिरोमणि, अथवा प्रौढा नायिकाओं मे शिरोमणि : सूर स्याम ~ सा० ल० ५।

कोमल १ कोमल (अल्प वयस्क, छोटे) : यह अति प्रबल स्याम अति ~ ८७३। २. मुलायम : ~ कर गोवर्धन धार्यौ १/२५। ३ मृदु बालक ~ बात २५७।

कोर¹ द्वेष, वैर : मोसौं मानत ~ २३८१।

कोर¹ गोद मे : मनो घन दामिनी ~ लीन्हे २२०८।

कोर³ १ कोना · अरुन चपल लोचन की ~ ३५७। २ कोने मे . चितई चपल नैन की ~ २७३९। ३ कोर पर अति कोमल नग्र हीं ~ ९६३।

कोर-लोचन आँखों की कोर से : सूर प्रभु बस भई प्यारी, ~ चाहि ८३७।

कोरा गोद मे : नद उठाइ लियौ ~ ५१८।

कोरि¹ करोड · तुरतहीं टोरि गनि ~ मकटनि जोरि ५८४।

कोरि² खोखला करके मधुप करत घर ~ काठ मे ४०२१।

कोरिया कोरी, हिन्दुओं में अछूत जाति के लोग : कोऊ न बनायौ, स्वप्न ~ लों १/१५१।

कोरी¹ करोडों : बिन देखें ताके मन तरसे, छिन बीतै जुग ~ ४२८२।

कोरी² आलिंगन : कमल देत नहिं ~ ३८४८।

कोरी³ कोर : प्रगटे हैं कुच ~ २६५६।

कोरी⁴ १ अन चुपडी, सादी : इक ~ इक घीव चभोरी ३०६। २ नयी, कोडी (बीस) काल्हि मोल लै राखे ~ ६६९। ३. कौडी भर : यह सब मेरे ~ ७१२।

कोरे¹ नये : काढौ ~ कापरा ४०।

कोरे² १. व्यर्थ ही . मदर भार सहत कहि ~ ३८५४। २ को (कोन) रे (रे) = कोन : मदर भार सहत कहि ~ ३८५४।

कोरे³ सूखे : इक ~ इक भिजे गुरवरा ३९६।

कोविद प्रवीण, चतुर · सूर स्याम हित जानिकै नव काम ~ निजकर कुटी सँवारी २२९६।

कोवे कोई : गुप्त न जानत ~ सारा० ४८५।

कोवै कौन है सूर कहै यह ~ २४७।

कोप कोश : हरि मुख कमल ~ तैं बिछुरे ३५७२।

कोपि कुक्षि, कोख· धन्य ~ वह महरि जसोमति ७६१।

कोस¹ कोस, दो मील की नाप : ब्रज चौरासी ~ ८४१।

कोस² १. कोष . चित मधुकर, रस कमल ~ कौ २०१९। २. कोष मे : ~ क्रीडत मीन मानौ नाल नारन भोर २१३३।

कोस चौरासी चौरासी कोस के विस्तार मे · टेरा परे ~ ९०५।

कोसत कोशगत करता है · ~ कोस नैन बिबि पकन परि० १/८६।

कोसनि कोसों। △ **कारे** ~ काले कोसों, बहुत दूर . मथुरा हूँतें गए सखा री अब हरि — ~ ४२५८।

कोसलपति कौसलपति राम : करुना करत सूर ~ परि० १/३।

कोसलपुर अयोध्या गदगद कठ सुर ~ नोर सुनत दुख पाए ९/३१।

कोसलभूप अयोध्या के राजा दशरथ . रामचन्द्र प्रकटे गृह मे हरषे ~ सारा० १५९।

कोसिबे कोसे जाने, बुरा भला कहने करि मनुहार ~ के डर ३३०।

कोसौं १ कोसती हूँ : नितप्रति निसि कौं ~ १८२९। २ कोसूँ, (बुरा बताऊँ) कहा तिहारे ~ ३१५। ३ कोसूँगी : मैं वाही कौ ~ १३१५।

कोह क्रोध मनहिं कीन्हौ ~ २१३, चित मैं आवै ~ ०/८३।

कोहन क्रोधित सुनि मोहन ~ भयौ परि० २/३७।

कोही क्रोधी असुर अति ~ ३/९।

कोहु क्रोध, कोप कियौ बृहस्पति मो पर ~ ६/५।

कौं १ का नर वपु धारि नाहिं जे हरि ~ १/८६। २ की ओर : नद-मदन-नागर ~ धावैं ३०। ३ के · सूरदास नहँ स्याम सबनि ~ लखियत हैं सिरताज ८२८। ४ के ऊपर · स्याम सखा ~ गैंद चलाई ५३५। ५ के लिए : ताके ढूँढन ~ उठि धायो ५/३। ६ को . जैसैं सुत नृप ~ समुझायौ २। ७ मे : सरिता चली मिलन सागर ~ ३९६०।

कौंकिर हीरे या काँच की कनी, रेत : ~ लै भरि पोटौं ३२४९।

कौंड टेकडी . हाँक सुनत मद ~ सुनायौ ३०७०।

कौंध ओर : एक ~ ब्रज सुंदरी २००९।

कौंधति १ कौंधती बीच बीच दामिनि ~ रै ३३८८। २ कौंधती है · की दामिनि ~ चहुँ दिसि २०५८।

कौंधा चमक : दामिनि ~ लायौ ८६८।

कौंध कौंध रही थी : घन दामिनि धरनी लौं ~ ४।

कौ १ का · प्रगट भयौ पूरब तप ~ फल १४, सुत सुरपति ~ मान हर्यौ ८६६। २ की ओर : घर ~ जात बरोरी मोहन ८६८। ३ के : तीनि लोक ~ ठाकुर सँगहि ८२७।

४. को : बढौ तुम्हार बरामद हूँ ~ लिखि कीनौ है साफ १/१४३ । ५ पर : अचभौ इन लोगनि ~ आवै २/१३ । ६ मे : बालापन ~ लगत न पाप ३/५ ।

कोई कोई अब तौ नाथ न मेरौ ~ १/२४८ ।

कौउ कोई : सब ~ जात मधुपुरी बेचन १४६४ ।

कौडी एक समुद्री कीडे का अस्थिकोष, कौडी, पैसे : द्वै ~ के कागद मसि कौ ३२५४ । △ ~**कौडी करी** एक एक कौडी, कुछ भी न छोडना दान लेहु ~ — वैर आपनौ लहौ १५४५ । ~ **कौडी जोरै** बहुत बचाकर थोडा थोडा धन जोडता है : ~ — १/१८६ । ~ **भर न बिकात** बहुत कम मूल्य पर भी नही बिकता ~ — ३००१ । ~ **लगि मग की रज छानत** कौडी कौडी के लिए मारे मारे फिरता है : परम् कुबुद्धि तुच्छ रस लोभी ~ — १/११४ ।

कौतिक कौतुक, विचित्र बात . को जह ~ करै और सा० ल० ७८ ।

कौतुक १. आश्चर्य, अचरज : ~ कर दिखरावै ९/१५२ । २. कौतुक (चमत्कार) • सूरदास प्रभु गिरिधर कौ ~ लखि ९५२ । ३ तमाशा : आपुन बैठि देखियै ~ ८५४ ।

कौतूहल १ खेल : आनद भरे करत ~ (नर नारी) ४ । २. कौतूहल (मनोरजन से) सुर नर मुनि ~ फूले ८४ । ३. उत्सव जदुकुल भयौ परम ~ ३०९३ ।

कौन १ किस . ~ काज हम सबनि बुलाए ८१५ । २. किसके . तुम बिनु और ~ पै जाउँ ८६७ । ३. किसमे : ये दुख ~ समाहीं ३९२४ । ४ कैसा : राधे कियौ ~ सुभाव सा० ल० १ । ५ कौन • ~ काहि मारे ३०६४ । ६. कौन सा गीध व्याध गज गौतम की तिय उनकौ ~ निहोरौ १/१३२ । ~ **अंग लटकी** किस अग मे लटक गई ना जानियै ~ — १७६४ । ~ **कौन** किस किसको ~ अरगानौ १/११ । ~ **बडाई** क्या महत्त्व है इद्रहि पूजे ~ — ८९८ ।

कौनहीं किसके ये ~ करे हौ २५०२ ।

कौनहूँ किसी भी . चित दै भजै ~ भाउ १४६० ।

कौना किसे त्रिभुवन मैं बस कियौ न ~ २८८४ ।

कौनी किस . ~ प्रकृति हिलैं हो १४६६ ।

कौने किस भोजन ~ देवहि खायौ ८९८ ।

कौनैं १ किस • सुरपुर ~ काम १०७८ । २ किसको . ~ नहि भावै ३८९७ । ३ किसने • ~ कह्यौ कौन मुनि आई ४२५० । ४ किससे ~ दसा सुनाऊँ ४२५५ । ५. कौन सा इहिं ब्रज ~ जोग लिख्यौ है ३९९६ । ६. क्या मातु पिता ~ गिनती १६८९ ।

कौनै १. किस ~ न्याउ जोग लिखि पठए ३७७७ । २ किसने • उहिं ~ सिखराई परि० १/१७ ।

कौर कवल, ग्रास सूरदास प्रभु आपहूँ कर ~ जु लीन्हौ १९८० । ~ **कौर** टुकडे-टुकडे के, कौर-कौर के ~ — कारन कुबुद्धि सहत अपमान १/१०३ ।

कौरनि किनारों पर ~ मथिया चीतति नवनिधि ३२ ।

कौरव १. कुरु के वशज कौरव ने • कोपि ~ गहे केस जब सभा मैं १/५ । २ कौरवो के ~ काज चले रिषि सापन १/१३ ।

कौरवनि कौरवो ~ सौं सदा हित हमारै ४२०९ ।

कौरवपति कुलराज, दुर्योधन ~ कौ मन नहि ल्याए १/२३६ ।

कौरव सुत कौरव के पुत्र • माया•कपट-जुवा ~ १/१६५ ।

कौरी[1] कौली, आलिंगन: हरि पकरे भुजा भरि ~ की २८७२ ।

कौरी[2] करारी पूरी पूरि कचौरी ~ १२१३ ।

कौरे कोमल कुनरु और ककोरा ~ १२१३ ।

कौरैं द्वार का कोना । △ ~ **लग्यौ** द्वार से लगा . ~ — होइगौ कतहूँ २०९५ । ~ **लागी** पकडने की घात मे थी • बहुत दिवस मैं ~ — २८८ ।

कौरौ कौरव ~ दल नासि नासि १/२३ ।

कौलौं कब तक, किस समय तक जीवित रहिहौ ~ भूपर १/२८४ ।

कौसिला कौशल्या, राजा दशरथ की पत्नी तथा राम की माता कहति ~ माइ ९/४७ ।

कौसिल्यहि (माता) कौशल्या को ~ प्रनाम हमारो ०/३६ ।

कौसिल्या राजा दशरथ की पत्नी • गर्भ मुच्यौ ~ माता ९/१७ ।

कौसौं के समान कहा सुख ब्रज ~ ससार ३४१६ ।

कौस्तुभ समुद्र मथन मे प्राप्त विष्णु की मणि मनि ~ कठ लसत १८८७ ।

कौस्तुभ मनि-धर कौस्तुभ मणि को धारण करने वाले (श्रीकृष्ण) कबु कठ धर ~ ५७२ ।

कौस्तुभ-मनी कौस्तुभ मणि सख, ~, लई पुनि आप हरि ८/८ ।

क्यों कैसे ~ दुरि है ससि-वदन उज्यारी ११ । ~ **समुझावैं** कैसे समझाया जा सकता है सो मन ~ — ४०९३ ।

क्योंकरि कैसे दीन जन ~ जावै सरन १/४८ ।

क्यौं १ कैसे . इन पै दीरघ धनुष चढ़ै ~ ९/२३ । २. क्यों चलत न ~ तुम सूधें राह ५/४ । ~ **गाऊँ** वर्णन कैसे सभव है • इक रसना ~ — ११७८ । ~ **जात छियौ री** क्यो छोडा जाय पुन्य प्रगट ~ — १८२८ । ~ **जात सूर पै गायौ** भला उसका वर्णन सूर से कैसे हो सकता है . — ~ ११८२ । ~ **इनकौ राखत** इनको कैसे बचाता है • परवत तव ~ — ९०७ । ~ **राख्यौ** कैसे उठाये रहे धरनिधर ~ — दिन सात ९६९ ।

क्यौंऽब अब क्यों • कुजर ~ रहत बिनु तोरे ३८५४ ।

क्यौंही क्यों अनत कहुँ जात न ~ ४२१० ।

क्योंहूँ १ किसी प्रकार · ~ चित उनतैं न टरै १६६६। २ किसी प्रकार भी : ~ थाह न पाऊँ ४१२६। ३ किसी प्रकार से : ~ बालक बढ़े कुसल सौं ३६५९।
क्योंहू १ किसी : ज्यौं ~ पति जात बडे की ४०६८। २ किसी प्रकार से . ~ पार न लहियत ३९११।
क्रदन क्रन्दन, विलाप · आरतिवत सुन गज ~ १/१८८।
क्रम[1] १ कर्म : मन, ~, वच हरि सौं धरि पतिव्रत ३५३०, मन वच ~ अनुसाँचै १/८१। २ कर्म के · गुन पाँमे ~ अक चारि १/६०। ३. कर्म से मन वच ~ मोहिं छाँटि दियौ री १८८८। ४. कर्मों का हठि ~ भार भरत १/५५।
क्रम[2] क्रमश: : ~ सौं लीन्हे गोद ४० । ~ **क्रम** क्रमश:, क्रम-क्रम से ~ — लगे फूल फल आई ९/४९, पुनि ~ — भुज टेकि कै ११०।
क्रमै कर्म को . काम तृष्ना रस बेग न ~ गह्यौ १/४९।
क्रषी कृषि . ~ अन्न लैहे वरिआई १०/३।
क्रिया[1] कार्य, प्रयत्न, क्रिया विदग्धा नायिका · भूषन स्वल्प ~ तैं सुंदरि सा० ल० १०।
क्रिया[2] श्राद्ध आदि क्रिया-कर्म · तासु ~ करि सब गृह आए १/२८०।
क्रीट कीडे : ~ भृग गति है जु गई ४०९२।
क्रीडत १ क्रीडा करते हुए, खेलते हुए : तासौं ~ बहु सुख पावै ५/३। २ क्रीडा कर रहा है : जुगल कमल पर गजवर ~ २११०। ३ क्रीडा कर रहे हैं, खेल रहे हैं. 'सूर' सखी राधामाधव मिलि ~ १९८७। ४ खेलते जिनके सग सदा ~ है ४०५३। ५ खेलते थे : परम निसक समर सरिता तट ~ जादव वीर ४१६२। ~ **कुज-अटा** कुज का अटारी पर क्रीडा कर रही थी : ~ — रजनी मुख ११९३।
क्रीडति खेल रही है ~ रास विहारा १०४७।
क्रीडहीं खेल रहे हैं : सूरदास प्रभु ~ २८६२।
क्रीडा खेल · ~ करत आप वृ दावन धेनु समूह नचावत सारा० ४७२।
क्रीडावंत खेलने वाली . ~ सखिनि कछु राग्यौ परि० १/१५३।
क्रीडित क्रीडा करती हो : कोस ~ मीन नानौ २१३३।
क्रीडैं क्रीडा कर रहे हैं ~ सग ब्रज लोग २६।
क्रीति कीर्ति, यश : निगम कहत हैं ~ ४२४३, अरु सबहीं जग ~ ४१३८।
क्रीला क्रीडा : सूरदास प्रभु की यह लीला। सदा करत ब्रज मैं यह ~ ९११।
क्रुद्ध क्रोधी : इत उत दैत्य ~ मारन कौं ९/८९।
क्रूर बहुत निर्दयी : सूर नृप क्रूर अक्रूर ~ भए २९६७।
क्रोध अनल क्रोध की अग्नि . ~ उर धारौ ९/१४३।
क्रोध-दुसासन क्रोध रूपी दु शासन (दु शासन को क्रोध का प्रतीक माना गाया है) : ~ गहे लाज पट १/१६५।
क्रोध-बिकार क्रोध रूपी विकार : तवहूँ गयौ न ~ ७/२।
क्रोध मान साक्षात् क्रोध रूप (भगवान्) की ~ छवि बरनि न जाई ७/४।
क्रोधयुत क्रोधयुक्त, क्रोधित : यह सुनि लक्ष्मण भये ~ सारा० २२३।
क्रोधवंत[1] क्रोधपूर्वक, क्रोधित होकर : ~ यह वचन सुनायौ ३/५।
क्रोधवंत[2] क्रोधी (परशुराम) : ~ कछु सुन्यौ नहीं ९/२८।
क्रोधहि क्रोध को : हिरनकसिप ~ मन धार्‌यौ ७/२।
क्रोधा कोप, गुस्सा : को जीवै तिनके तनु ~ २९०२।
क्रोधित क्रोधपूर्वक · ~ वचन सुनाए ९/२८।
क्रोधी ईस शकर . ~ सीस बैठार्‌यौ ३३१६।
क्रौंच सात द्वीपों मे एक जबु प्लक्ष ~ शाक शाल्मलि कुश पुष्कर भरपूर सारा० ३४ ·
क्वनित वज रही थी : किंकनी कटि ~ १०४३।
क्वार कुमार : भयौ सुरुचि तैं उत्तम ~ ४/९।
क्वासि कहाँ हो . बिछुरत तोहिं ~ राधा कहि २५७९। ~ **क्वासि** कहाँ हो कहाँ हो . ~ वृषभानु-नदिनी २४५२।
क्षम क्षमा करो ~ अपराध देवकी मेरो सारा० ३८६।
क्षमाहीं क्षमा कराते हैं सूर स्याम जुवतिन सौं कहि कहि सब अपराध ~।

ख

खग तलवार हरि को देखि ~ कर लीन्हो सारा० ५२६।
खँगवारौ एक आभूषण रतन जटित ~ गर कौ परि० १/८।
खँच्यौ बनाई गयी हो मरकत मनि कचन सौं ~ ११८०।
खंज[1] खजन पक्षी भ्रकुटि धनुष, नैन ~ खीझै १३७४।
खंज[2] लँगडा बिवरन भए ~ ज्यौं दाधे ३०।
खंजन १ खजन पक्षी . जुग ~ जनु लटके १९९५। २ खजन रूपी नेत्र . ~ धनुष चन्द्रमा ऊपर २११०।
खंजनहूँ खजन भी ~ उडि जात छिनक मैं ३५७१।
खंजमीन खजन पक्षी और मछली ~ अजन दै सकुचे २८०५।
खंजरी डफली की तरह का एक छोटा बाजा . मधुर ~ पटह प्रणव मिलि सारा० १०७५।

खंजरीट खंजन पक्षी . ~ मृगमीन की गुरुता ११९०; ~ अति वृथा चपल भए १२०५।
खंडत १. काटकर . कबहुँक अधर दसन भरि ~ २४५७ । २ तोड़ते हैं ये तेहूँ पर धार न ~ ४११६।
खंडहु दूर कर दो : भुज दडनि ~ व्यथा ११८०।
खंडा खण्ड, पौराणिक द्वीपो के नौ-नौ या सात-सात भाग : इक-इक रोम कोटि ब्रह्म डा । रवि ससि धरनी धर नव ~ ९५१।
खंडि काटकर आलिगन दै अधर दसन ~ कर गहि चिबुक उठावत २४१२ ।
खंडित १. खड-खड · तनु ~ वै पूरन २१८२ । २ टूटी हुई, भग्नहृदया, खडिता नायिका करत ~ नास सा० ल० २७।
खंडे उल्लघन करे, खटन करे पिता बचन ~ सो पापी १/१०४।
खंडौं १ काटूँगी . ~ अधर भूलि रसगोरस १९३८ । २ खडित कर दूँ ~ एक अग कछु तुम्हरौ १९३७।
खंभ १. खभा : मनहू नील-मनि ~ काम करि ६३२ । २. खभों के : कनक ~ मरकत खचि डोरी १०३९ । ३ स्तम्भ मे : चितै रहै मनि ~ छॉह-तन २६५।
खंभहूँ खभे मे भी : सो-सब ठौर ~ होइ ७/२।
खँभारा चिंता : रामकृष्न बध इहै ~ २९२२।
खँभारि[१] खलबली : काल्हिहिं परै ~ ५८९।
खँभारि[२] गड़ाकर, अड़ाता हुआ : धरनी दत ~ ३०५८।
खँभारि[३] ठेस, शोक, चिंता : कबहुँक इत, कबहूँ उत डोलति लागी प्रीति ~ ६७९।
खंभारौ घबराहट . सुरनि मन पर्यौ ~ ३/११।
खइए खाइये · जूठा ~ मीठे कारन।
खइबौ खाने के लिए कहँ माखन कौ ~ ३७६६।
खई १. किरकिरी लगत पलक मनु करत ~ सी २११३ । २. तकरार, झगडा · माँगत हौ सब करति ~ १४८०।
खए क्षीण हो गये . फरकत नैन ~ ४२७७।
खग पक्षी ~ कपोत, कोकिला, कीर, खजन १५४९ मुक्ता मनो चुगत ~ खजन ३६६।
खगत अच्छा लगता है, . जाही सौं लगत नैन ताही सौं ~ बैन, नख तै सिख तैं है सब गातनि ग्रसति २४१८।
खगनि १. पक्षियो का जल थल ~ २८०६ । २ पक्षियो को : ग्वाल मण्डली ~ खिलावति ४१४६।
खगपति गरुड साप दियौ ~ कौ ५७३।
खगपति-अरि वासुकि नाग, शेषनाग ~ डर असुरनि सका १४३ ।
खगपति-पितु खगपति (गरुड) के पिता कश्यप, कछुआ ~ दृष्टि चुराऊँ परि० १/७०।
खगपति ब्यास गरुड को कथा सुनाने वाले, काक भुसुंडि, काक ~ वचन सम कोकिल सा० ल० ५१।
खग बसु आठ (खजन) पक्षी : चचल ~ अष्ट कज दल २४६५।
खग भूप पक्षिराज गरुड मुदित होत ~ १/१०२।
खग-राइ खगपति गरुड · डरपाइ ~ कौं ५५२।
खगे १ अनुरक्त हुए हो . पुष्कर पुडरीक पर मानहुँ खजन-जुगल ~ ११३६ । २ लगे हुए थे, अटके थे, उलझे थे तब तुव नैना कहाँ ~ १७८१।
खगौ पक्षी भी देखत सुनत मोहि जा सुर नर मुनि मृग और ~ री १३८३।
खग्यौ रुक गया है . सो अब जाइ ~ उर अतर ३८५३।
खचर[१] आकाश मे चलने वाले, मेघ : आज ~ की छोडैं सा० ल० ४१।
खचर[२] आकाश मे चलने वाल, खजन : बाचर ~ हारगे बनचर सा० ल० शेष ९।
खचर[३] आकाश मे उडनेवाली, (गुड्डी) पतग, देवता ~ खेलन हेत आवत सा० ल० ९४।
खचर खिलौना आकाश का खिलौना, चन्द्रमा (के समान) मुख ' ~ हित सिगार जगमन सरूप लै धारै सा० ल० शेष ८।
खचर खिलौना खीर आदि मिलि आकाश का खिलौना (पतंग) =चग, खीर=दधि, चग और दधि के आदि वर्णों को मिलाने से (चद) चन्द्रमा ~ मुख सम वदन सम्हारौ सा० ल० ३८।
खचाई १ बनाई गई थी . रनत जराइ ~ १०५५ । २. बनाया . नव मनि खचित ~ हो परि० १/१०८।
खचावनौ खचित है, जड़े हुए हे, पच्चीकारी की हुई है हीरा लाल ~ २८३२।
खचि जड़कर . ~ हीरा विच लाल-प्रवाल ८४, विद्रुम फटिक पची कचन ~ ४१६५ ~ **खचि** ठूँस ठूँस कर, भर भर कर : उर प्रति कमल कोस लौं ~ — ३४००।
खचित १ सुशोभित कनक भूमि रचि ~ द्वारका सारा० ८६२। २ चित्रित, खीचे हुए अरुन सेत खुभि वज्र ~ पदिक सोभा १८८७ । ३ जडा हुआ . कनक ~ मनिमय आभूषन ६२८ । ४ जडे हुए हैं : कचन खभ ~ मरकत मनि ११२१ ।
खची जड गई · रैतनि आनि ~ री ४२५६।
खचे खींचते हैं कैसैं कहौं सुनौं जस तेरे ओरै आनि ~ १/२०६।
खजूरी एक प्रकार की मिठाई · मधुरी अति सरस ~ १८३।
खटक चिंता, शका · ~ नृप के हियैं ३०७३।
खटकत खटकता है · बल मोहन ~ वाकैं मन ५२७।
खटकारि ललकार : दियौ ~ उन धारि अभिमान मन ३०५९।

खटकि विच्छू खलित • ~ रही लर गीली ११६० ।

खटकौरी मजाक : ~ दै गारि दिवावै परि० १/१८ ।

खटाई खट्टा पदार्थ, चटनी : भतरा भँटा ~ दीनी १०१३ ।

खटाति टिकती है, निर्वाह होता है छिन नहिं प्रीति ~ ३७५३ ।

खडग,खड्ग तलवार : ~ धरे आवै, तुव देखत १०, ~ राव के कर मैं दए ५/३ ।

खड्ग-प्रहार तलवार के प्रहार से . मार्यो ~ ९/१४ ।

खड्गहि तलवार . उठ्यौ दलकारि कर ढाल ~ लिए ३०७४ ।

खता अपराध से, गलती मे कौन ~ कृपा विसारी १/१६० ।

खतियावै लिख दे . अमल तहाँ ~ १/१४० ।

खद्योत जुगनू : रवि आगे ~ उज्यारी ९७४ ।

खन १ क्षण, समय . तेहिं ~ घोष सरोवर मानौ ३१०८ । २ क्षण भर मे, क्षण मे • ~ खोलत ~ ढाँकत २००५ । ३ तत्काल ~ गोपी के पाँइँ परैं धन मोई हैं नेम ३४४३ ।

खनहीं क्षण मे ही . ~ खन उघरत ०७३० ।

खनावत खुदवाते हुए : कर्या पाइयें ~ घूरे ३५७६ ।

खनावें खुदवाये : दुरमति कूप ~ १/१६८ ।

खनि खोदकर : को ~ कूप मरे बालू थल धाँडि ३७०१ ।

खनोवति कुरेदती है, खोदती है • नख सों भूमि ~ ११०७ ।

खप्पर खप्पर, तसले के आकार का मिट्टी का पात्र • सिंगी मुद्रा कर ~ लै ३०२६ ।

खबरि १ ध्यान रखा : अपने कुल की ~ करौ १६३० । २ सदेशा, समाचार . ग्यान बुझाइ ~ दै आवहु एक पथ द्वै काज ३४३० । ३ △ ~ करि ध्यान करके, समझ बूझ कर • अपनी बात ~ — देखहु १५६० ।

खभारे चिंता मे, घबराहट मे : पुनि पुनि सोचत परी ~ ५९५ ।

खये दे० खए : नैना पकज पक ~ परि० १/८४ ।

खर[१] १ गधा कामधेनु ~ लेइ ४१८८ । २ गधे . ~ कूकर की नाइँ मानि सुख विषय १/१२३ ।

खर[२] तृण . तनक उजारौ ~ कौ ३९८९ ।

खरई क्रोधपूर्ण हठ करता है सूरदास समुझावही त्यौं त्यौं जिय ~ ३३५८ ।

खरक १ खडक पात कौ ~ पिय हिय मैं खरकि रही ०७८७ । २ खडखडाहट : भच्छ विधि के ~ फरकत सा० ल० ३० ।

खरकति खटकती : ~ है वहै 'सूर' हिये मैं ३९१० ।

खरकि खडक • पात की खरक पिय हिय मैं ~ रही २७८७ ।

खरकौ खटके पर : मेरे पायनि कौ ~ १६१६ ।

खरग तलवार • दामिनि ~ बूँद सायक ८६७ ।

खरच[१] खर्च, दाम सूरदास कछु ~ न लागत, राम नाम मुख लेत १/२९६ ।

खरच[२] खर्च कर दिया : और ~ तदुल गाँठी कौ ४२३९ ।

खरचत खर्च कर रही है : ~ कोट काम कल थाती सा० ल० ४८ ।

खरचि खर्च करना : ~ नहिं जानै १/३९ ।

खरचियत खर्च करना . यामैं कछू ~ नाहीं ३४८० ।

खरचै खर्च करता है • ~ लाख, मिलै नहिं एक ४/१२ ।

खर-दूखण, खर-दूषन खर और दूषण नामक दो राक्षस जो रावण के भाई थे ~ यह सुनि उठि धाए ९/५७, ~ त्रिसिरासुर खडन ९८१ ।

खरनि गधों पर . ~ भए असवार ०९१४ ।

खरभर खलभली, हलचल . ~ परी, दियौ उन पेंडौ ९/१०४ ।

खरभर्यौ खलभलाने लगा : तव जलनिधि ~ त्रास गहि ९/१०१ ।

खरसान तीक्ष्ण सान पर कामवान ~ सँवारे २६८० ।

खराऊँ १ खडाऊँ : दौरत पहिरि ~ ४१२६ । २ खडाऊँ पर चढे ~ न्हात ३८२७ ।

खराद एक औजार जिसके द्वारा धातु या लकडी की वस्तुएँ सुन्दर, चिकनी और चमकीली बनाई जाती हैं धरि ~ रग लाउ ४१ ।

खरारि खर राक्षस के शत्रु, रामचन्द्र पूछत ताहि ~ ९/६५ ।

खरि[१] खडिया मिट्टी ~ कपूर कौ रेहु ३५७३ ।

खरि[२] १ खली • तै कैसैं ~ खात ०३५६ । २ खली मे : पाइ सुधा ~ सानै ३११५ ।

खरिक १ गोष्ठ, गोशाला, बाडा नव लख धेनु ~ घर तेरैं ३०९ । २ गोशाला मे : ~ मिले की गोरस बेंचत १८६० ।

खरिकनि बाडों • राँभति गो ~ मैं २०२ ।

खरिकहि १ गोष्ठ को जवहिं जाति ~ उत १५१९ । २ गोष्ठ मे, खरिक मे . नद गए ~ हरि लीन्हे ६८० ।

खरिकहि गोष्ठ मे सुरभी कान्ह जगाय ~ ८१० ।

खरिकहूँ गोष्ठ मे भी ~ नहि मिले १७३५ ।

खरिका दाँत खोदने का सीका भर्यौ चुरु ~ लै आई १२१३ ।

खरिकौ ब्रज सो सुख करत नद सव ~ १८१ ।

खरिहान खलिहान माँडि माँटि ~ क्रोध कौ १/१४२ ।

खरी[१] विशुद्ध देहि असीस ~ ०४ ।

खरी[२] साथे गई बैकुठ अवाज ~ १/२४९ ।

खरी[३] खडिया जैसैं ~ कपूर एक सम ३४१८ ।

खरी[४] १ अकेली मोकौं तजी ~ ०३५० । २ भारी है . गूढ गँभीर ~ १/१३० ।

खरी[५] १ खडा मोकौं राख्यौ द्वार ~ री ००९४ । २ खडी : जननि जसोदा पास ~ ४०४ । ३ खडी हुई नारि सग सव ~ ११६७ । ४ खडी रहती हैं कर जोरें मेरे द्वार ~ ३१०३ । ५ खडी ही (ऊधौ) ~ जरी हरि सूलनि की ३०१० । ६ खडी हुई ~ गुपाल खिलावै १३० । ७ खडी हुई है . चलि न सकत पद रेह पथ की चदन कीच ~

४११४। △ ~ निहारति एक टक देखती हैं . अखियाँ ~ — ४०६४। ~ परी उखड़ी (बिगड़ी) पड़ी है : तू मोहीं पै ~ — २४३४।

खरे[1] १ खड़ा होता रहता है : बैठत उठत ~ २२९९। २ खड़े . जम के दूत ~ हैं द्वार २/३। ३ खड़े हैं . दपति कुंजद्वार ~ २४७१।

खरे[2] खरा, सत्य ऐसौ अध, अधम अविवेकी खोटनि करत ~ १/१९८।

खरे[3] शुद्ध ~ करौ अलि जोग सवारौ ४०९४।

खरे[4] तीक्ष्ण, तेज खजन तेरे ~ कटाच्छनि न्याउ गोपाल बिकाई परि० १/९८।

खरो बहुत प्रिय बाल विनोद ~ जिय भावत १०२।

खरौं खड़ी हुई : नारि महलनि ~ सबै अति हीं डरी ३०५६।

खरौ[1] १. खड़ा भरत पथ पर देख्यौ ~ ५/४। २. खड़ा था नृपति द्वार ही पै ~ २९३९।

खरौ[2] सचमुच . जौ तेरौ सुत ~ अचगरौ ३४६।

खरौ[3] शुद्ध कचन करत ~ १/२२०।

खर्‍यौ खड़ा · स्यदन कियौ ~ ३०१३।

खल १. दुष्ट, खल : मो सम कौन कुटिल ~ कामी १/१४८। २ निर्लज्ज . ~ भई लोकलाज कुलकानी।

खलित हिल गया . दिग्गज चलित, ~ मुनि आसन ९/२६।

खवाइ १ खिला : ग्वालिनि दए ~ १४६१। २ खिलाकर दूध दही ~ कीन्हे बडे २९९१।

खवाई खिलाकर : खाहिं आप तब, ताहि ~ ५/३।

खवाव खिलाइये, · जहर न ~ रे ३६१६।

खवावत १ खिलाते खात ~ डोलत ३६८८ . २ खिलाते थे : अति हित साथ ~ ४१५६। ३ खिलाते हैं · आपु खात प्रतिबिंब ~ २६५।

खवावति खिला रही है मोहन खात ~ नारी १६१९।

खवावन १. खिलाना, भोजन कराना . लगी ~ रति सौ ३१२। २ खिलाने · अब तुम 'सूर' ~ आए ३६९७।

खवावहु खिलाओ : कनक खभ प्रतिबिंब सिसु इक लवनी ताहि ~ १७९।

खवावै १. खिलाता है : कृपन सूम नहिं खाइ ~ १/१८६। २ खिलायेगा : आपुन खैहै तोहि ~ १९१ । ३ खिलावे कोउ ~ तौ कछु खाहिं ५/२।

खवावौं खिलाऊँ . तब तमोल रचि तुमहिं ~ २१७।

खवास खिदमतगार, सेवक : मोदी लोभ ~ मोह १/१४१, कहि ~ कौ सैन दै २९३९।

खवासी नौकरी, सेवा : सकर करत ~ ३६४२।

खवास्यौ नौकर . सुनियत हुते ~ परि० १/१६३।

खवैया खाने वाले . 'सूर' ~ घी कौ ३८५८।

खसत १. खसक/गिर रहे हैं . फूल ~ सिर तैं घने ११८०। २. खिसककर . फूल ~ सिर तैं भए न्यारे १०५७। ३ बीत रहा : एक एक पल जुग ज्यौं ~ है १३६७।

खसति सरकती जाती हो. सुन री ब्रज की बाल उछग लेत कत धरनि ~ २४१८।

खसम पति · ~ अछत तन भसम लगावै परि० १/१६०।

खसावत घसीटते हुए केस गहि लै चले हरि ~ ३०७८।

खसि १. खिसककर जलद तैं तारा गिरत ~ २१३२ । २ स्खलित होकर . रुद्र कौ बीर्य ~ कै पर्‍यौ धरनि पर ८/१०।

खसी खिसक गई हो, छूट पड़ी हो मनु सैवल मजरी ~ री २४४७।

खसे गिरे, खिसके · भूषण ~ सुरत वस दोऊ सारा० १०११।

खसैं गिरे · न्हात ~ जनि बार ३६५९। △ केस ~ नहि केश खिसकते नही (अमगल नही होता) . ताकौ — ~ सिर तैं १/३७। बार न ~ बाल न झड़े, जरा भी अनिष्ट न हो न्हात — ~ इनकौ ३०२९।

खसौ खिसको, सरको। △ बार ~ अनिष्ट हो — ~ मत न्हातैं ३५४७।

खस्यौ हट गया, खिसक गया · खैंचत कान्ह ~ सिर चीर १६१।

खाँची १. खचित (मूर्ति) · (राधिका) रूप रासि रस ~ १८६०। २. अकित रहती है : तिनकी लीक चहूँ जुग ~ १/१८। ३. खींच दी (घोषणा कर दी) पुहुमि लीक ~ १९१०। △ कहति लीक मैं ~ मैं प्रतिज्ञापूर्वक कहती हू सूरस्याम तेरे बस राधा — ~ १८९७।

खाँचैं अन्तर मानता हर्ष सोक नहिं ~ १/८१।

खाँड शक्कर : गुर तैं ~ न होइ १/६३, लै सरस रस बोरे १८३।

खाँडे तलवारें . एक म्यान दो ~ ३६०४।

खाइ १. खा रहा है : ढोटा भोजन ~ ८४१। २ खा . ~ न सकै १/३९। ३ खाकर . जूठनि ~ जियै १/१७१, परो धरनि पर ~ पछारि ६/५ । ४ खाता था . जैसौ देहिं सो तैसौ ~ ५/३। ५ खाता है : कृपन सूम नहिं ~ खवावै १/१८६। ६ खाती है निगम द्रुम दलि ~ १/५६ ।७ खाने लगे : सब देखत बलि ~ ८४१। ८ खाये · अब को ~ नदनदन बिनु ३१३२। ९. खायेगा · कत स्वान सिंह-बलि ~ ९/४७। १०. खा ले तो · बिन जानैं कोउ औषध ~ ६/४। ११ ग्रहण करते : नहिं जल-भोजन ~ ९/८३। १२ डसे जाने से : बिषहर ~ मरै जो कोऊ ७५६।

खाइगी खा लेगी : परुसि धरिहौं आई ~ री १९६७।

खाइगौ खायेगा : तुम देखत बलि ~ ८४१।

खाइयै खाओ : मीठौ होइ सो ~ परि० १/१३४।

खाइहैं खायेंगी : सूरज प्रभु बिष मूरि ~ ३३४८।

खाई[1] किले अथवा महल आदि के चारों ओर खोदी गई नहर : कचन कोट गोमती ~ ४२६२ ।

खाई[2] १. खा रहे हैं । सहम मुजा धरि भोजन ~ ९११ । २ खा गया हूँ हर्ठानि ठगौरी ~ १/१८७ । ३ खाता था भच्छ-अभच्छ सबै सो ~ ६/४ । ४. खाती . सावधान है ~ ३८५३ । ५. खाई · मैया मैं माटी नहि ~ २५३ । ६ खा लो है : सूर कहूँ ठगभूरी ~ २३५९ । ७ डस लिया हो, काट लिया हो . मनौ भुवगम ~ ५२ । **हा हा ~** दुहाई देकर खन खन — ~ २८२६ ।

खाउँ खाऊँगी · इहिं ब्रज अन्न न ~ ३२५३ । △ **~ खाउँ करें** खाने के लिए रिरियाता है : ~ — भूखा १/१८६ ।

खाऊँ खा जाऊँ, भक्षण कर लूँ कहाँ तौ गन समेत ग्रसि ~ ९/१४८ ।

खाए १ खाई हैं काहे भूठो मोहिं ~ २४८८ । २. खा गया काहू वौं जलचर धरि ~ ९८४ । ३ खाते थे : दुर्वा तृन नित ~ ३८९४ । ४ खाये · कदली छिकुला ~ १/१३ ।

खाएँ १ खाने से भूख मिटी वन के फल ~ १३९४ । २. खाये · मानौ फिरति धतूरा ~ ४०८० ।

खाक धूल, खाक तीननि में तन कृमि कै बिष्ठा कै है ~ उडैहै १/८६ ।

खाग खिचा पड रहा था नासा तिल प्रसून पदवी पर चिबुक चारु चित ~ १७७७ ।

खागी १ चुभ रही थी . रति अतर ~ १९६५ । २ व्याप्त हो गई है : अग अग रति ~, १९०९ ।

खागैं खा गई है . जानि बूझि ज्यौं ~ री १२८९ ।

खाजी ग्रास, खाद्य पदार्थ सब जग जात काल की ~ ३१३३ ।

खाभा एक प्रकार की मिठाई खुरमा ~ गूँजा मठरी ८१० ।

खाटी खट्टी ~ कढी विचित्र बनाई १२१३, जैसे ~ आमी ३६२९ ।

खाटौ खट्टा मीठौ लगत किधौं यह ~ १८८। **गनत न ~ खारौ** अन्याय/बुराई की कुछ चिंता ही नहीं करता : करत उपाव न पूछत काहू — ~ — १/२५२ ।

खाड गड्ढे · पुनि धर्यौ ~ तालाब मैं पुनि धर्यो ८/१६ ।

खाडौंगी काट लूँगी . अधर दसन ~ १९३६ ।

खाढ गड्ढा कै धौं खोदत ~ ३६४२ ।

खात[1] १ खा रहे हे देखहु री हरि भोजन ~ ८३८ । २ खाता है . कोउ अमृत तजि विष ~ ३६०२, विषकीरा विष ~ ४०२१ । ३ खाते काहे ~ हो माटी २५९ । ४ खाते थे लै कुजनि मैं ~ ३८२७ । ५ खायेगा ते कैसैं खारि ~ २३५६ । ६ खायेंगे . ते क्यौं कटु फल ~ ३९२२ । ७ खा रहा हूँ विषय विष हठि ~ १/१०६ । ८ खा रहा हो महम मुजा धरि ~ मिठाई ८४० । ९ भोजन करते हैं : तिन कह्यौ तुव पितु भिच्छा ~ ९/१७४ । △ **धाइ धाइ ~** दौड दौड कर या धाँय-धाँय खाता है · अव ए भवन सुनो— ~ ३२५१ ।

खात[2] गड्ढे उमडि भरे नद ~ ३४९९ ।

खातहि १ खाते खेलत ~ दिवस बिहाए ५८८ । २ खाते ही . जो ~ मुख-दुख दूरी १८३ ।

खाता खानेवाले तदुल के ~ १/१२३ ।

खाति खाती है ज्यौं जननी जनि ~ ३७५३ ।

खातौ १ खाता है, भोजन करता है · साँच-भूठ करि माया जोरी, आपुन रूखौ ~ १/३०२ । २ खा डालना आजु सवनि धरिकै यह ~ १३८८ ।

खाद भक्ष्य, खाने योग्य . ~ अखाद न छाँटै १/१८६ ।

खादर कछार, खादर धोइ करहु गिरि ~ ८५८ ।

खाध्यौ खादन किया, खाया नैन नासिका मुखन चोरि दधि कोन ~ ४०९५ ।

खान[1] १ खाना माखन ~ सिखाए ३६५७ । २ खाने · प्रथम जब ~ लगे यदुनाथ सारा० ८१५, गोपालहिं माखन ~ दै २७३ । ३ खाने को बार-बार मागत कुछ ~ ४३५ । **~ पान** खान पान कै कहुँ ~ — रमनादिक १/२९३ । △ **ते लागत अब ~** वह अब खाने को दौडता है या काटे खाता है · जिनि धरनी वह सुख विलोक्यो — ~ ३२१६ ।

खान[2] खजाना (समूह) : तहँ ते गये जु चित्रकूट को जहाँ मुनिन की ~ सारा० २४४ ।

खाना जाद (घर में पैदा, पाला पोसा हुआ) नौकर · ये सब कहा कौन हे मेरे ~ विचारे २२२६ ।

खानि[1] खदान, खान, खजाना, भडार सूर एक तें एकआगरे वा मथुरा की ~ ३५८९, भषक भष विष ~ २०८६, सुख सुदरता को ~ २३८९ ।

खानि[2] घर कीन्हौ है निज ~ ४०३८ ।

खानी राशि, खजाना सकल सोभा की ~ ४४१ ।

खानें निधि· छुवत प्रेम की ~ ३९२८ ।

खाय जाकर माटी ~ वदन दिखरायौ चचल नयन विशाल सारा० ४४५ ।

खायो खाया माखन चोर चोर गोपिन को दूध जू दधि लै ~ सारा० ७४४ ।

खायौ १ काट लिया हो मनहुं भुअगिनि २८२६ । २ खा गया · धुरही तैं खाटौ ~ है ३९६५ । ३ खा गइ देखत ही इन ~ २/३२ । ४ खाया दधि ~ मोतिनि लर तोरी १५७४ । ५ खाया था · बिदुर नातू साग ~ ४१८० ६ खाया है कब माखन चोरी करि ~ १५२० । ७ भोग किया तिया भूमि धन ~ २/३० ।

खार पुं० कूड़ा करकट : खोरनि ~ भर्यौ ३६४६ । वि० २. क्षार, अशुद्ध · ~ पनार कहावै ५६१ ।
खारिक छुहारा, खजूर ~ दाख खोपरा खीरा २११ ।
खारी खारे : सेव समुद्र जल ~ ४२६६ ।
खारे कड़वे, कसैले : मीठे तजि फल ~ ३५२७ ।
खारौ १ खारा . मधु छीलर, सरितापति ~ ९/३६ । २ खारे : छाँडि जोग जल ~ ३७४२ । ३. खारे, फीके : औ रस लागत ~ री १३५ । △गनत न खाटौ~,अन्याय/बुराई की चिंता नही करता . करत उपाव न पूछत काहू — ~ १/१५२ ।
खाल गड्ढा सूर ~ किन पाटत १/१०७ ।
खालहि मृत शरीर को . रोकि कहा करिहै खल ~ ८०२ ।
खाली व्यर्थ, निष्फल . अरु जब उद्यम ~ परै ३/१३ ।
खासी भली प्रकार : प्रगट न परखी ~ ३३७५ ।
खाहि १ खाते थे · कोउ खवावै तौ कछु ~ ५/२ । २ खाते हैं इनकी जूठनि लै-लै ~ ४६९ ।
खाहि खाओ मदन मुख जनि ~ ३३३९ '
खाही खाते हो धाम भर्यौ चोरी करि ~ ३९१ । २ खा रहे हैं : बोधत उत भोजन ~ ९११ ।
खाहु १. खाओ बीच बसेरे ~ ३८८० । २ खाओगी : कत तृन-तलप, बिपिन-फल ~ ९/३४ । ३ खाते हो · कत तुम अनतहिं ~ ३८९ ।
खिझ खीझ अबर लेत भई ~ बालहिं २६२३ ।
खिझत १ खीझने लगते हैं, चिढने लगते हैं : तबहि~ बल भैया २१७ । २. खीझता है, हठ करता है : ~ कछु अनखाइ ४९८ ।
खिझति खीझती हो सुत वैसौ तुम तौ ~ १४९१ ।
खिझति खीझती है मन मन ~ मानिनी २७८३ ।
खिझयौ खिझाया मैं जाननि इनकौं हरि ~ १४१९ ।
खिझवै खिझाता है : को ~ सारगपानी १८३ ।
खिझहिं खीझती हैं : हम तौ ~ 'सूर' सुनि षटपद ३९६३ ।
खिझाइ खिझाकर, क्रोधित करके हमहिं ~ आपु पति खोवत ३८७१ ।
खिझाई खिझाया, चिढाया : कहा करौं हरि बहुत ~ ३७७ ।
खिझायौ चिढाया, खिझाया . मैया मोहि दाऊ बहुत ~ २१५ ।
खिझावत १. खिझा रहे हो : भले भले जू मोंहि ~ १४१९ । २. चिढाता है : कारौ कहि कहि मोंहि ~ २१६ । ३ चिढाते हैं . और ग्वाल सँग कबहुँ न जैहौं वै सब मोंहि ~ ८२४ ।
खिझावति खिझाती थीं हँसि हँसि कहति ~ तुमको १६१२ ।
खिझावन खिझाने के लिए : हम जरति ~ आए ३८०१ ।
खिझावै १ खिझाती है : याते बारहिं बार ~ १६१९ । २ खिझाते हैं : आपुन खीझैं उनहिं ~ १६०७ ।
खिझावै १. चिढा रहा है : ताकौ स्याम ~ २४९ । २. तग करता है, खिझाता है रैनि-दिवस तू मोहिं ~ ३९१ ।
खिझि खीझकर, चिढकर, झुँझलाकर : सूरदास ~ कहत ग्वालिनी ७९ ।
खिझैं खीझने से : गुरुजन ~ कतहिं रिस पावति १६८५ ।
खिदरबन बारह वनों मे एक नन्दगाम सकेत ~ सारा० १०८९ ।
खिन क्षण, पल . ~ मुँदरी, खिनहीं हनुमत सौं कहति ९/८३ ।
खिनही क्षण ही मे, एक क्षण मे : खिन मुंदरी ~ हनुमत सौं ९/८३ ।
खिरक गायों का बाडा, गोष्ठ ~ ठाढौ देख अद्भुत सा० ल० १४ ।
खिरनि कडो (पर) : धरि निरधूम ~ पै तायौ १६०० ।
खिर-लाडू खीर और लड्डू : ~ लवगनि नाए ते करि बहु जतन बनाए १८३ ।
खिरियाँ खीर : खात दूध की ~ ४७० ।
खिलाई[१] १ खेला . नगर रही ~ ३१८५ । २. खेलने मे लगाये रहना कान्हहिं लेइ ~ ६८० । ३. खिलाकर · गोद ~ पिवाइ देह पय ३५३५ ।
खिलाई[२] खिलाकर जुवा जुवति ~ कुल व्यवहार सकल कराइयौ ४१८६ ।
खिलाई[३] खिलाया · हमैं ~ फाग ३१५५ ।
खिलाए १ खिलवाया : धर्मपुत्र कौं जुआ ~ १/२४६ । २ खिलाया है . लै-लै गोद ~ १५०८ । ३ खिला सकी गोद ~ नाहि ३०९० । ४ खिलाया था : कत रस रास ~ ३६०३ ।
खिलायो खिलाया : रास केलि करि क्रीडा कीन्ही होरी खेल ~ सारा० ७२६ ।
खिलायौ खिलाया जसुमति गोद ~ १२०९ ।
खिलार खेलने वाले होरी के ~ भावते यों ही जान न दैहौं परि० १/१२४ ।
खिलारी खिलाडी : खेलतैं फागु डार्यौ ~ ३०५९ ।
खिलावत १. खिलाते हैं · कहुँ बालकन ~ माधव सारा० ६६४ । २ खिला रहा है : इक ~ गाइ २६ ।
खिलावति[१] खिलाती हैं, खेल मे लगाती हैं · ताहि ~ ग्वालिनियाँ १३२ ।
खिलावति[२] चुगाती है · ग्वाल मण्डली खगनि ~ ४१४६ ।
खिलावन खिलाने : पाऊँ कहाँ ~ कौ सुख ८० ।
खिलावैं खिलावें : गाइ ~ परि० १/४५ ।
खिलावै १ खिलाती है : ताहि जसोदा गोद ~ ३ । २. खिला रही है : अपनौ लाल ~ सा० ल० ७९ ।
खिलौना खिलोना सीस ~ दीनौ १/२९ ।
खिसाइ १ क्रुद्ध : कागा रह्यौ ~ परि० १/१५१ । २ नाराज :

अतिहि रहै ~ ३८८२।
खिसात लजाता, लज्जित होता अजहूँ नहीं ~ १६१८।
खिसानी खिसियाकर : फिरि तब हमहिं ~ १७४५।
खिसाने खिसिया गये, लज्जित हो गये सखा कहत हैं स्याम ~ २१४।
खिसाय खिसिया कछु नहिं चलत ~ गए सब मारा० २१८।
खिसावैं खिसिया जाती हैं, लज्जित हो जाती हैं. थोरिहि बात ~ १५७३।
खिसिआइ खिसियाकर, लजाकर तब सब असुर रहे ~ ७/२।
खिसिआई खिसियाकर, खीझकर : काटी नाक गई ~ ९/५६।
खिसिआनौ चिढ़ गया : निपट निलज ~ १/१९६।
खिसियाइ खिसियाकर • यह सुनि दत चले ~ ६/४।
खिसियानौ नाराज, खिसिया • है जु रहे ~ ३६६७।
खिसैया खिसियाकर, लजाकर : तब उठि चल्यो ~ २१७।
खिस्याइ १ खीझकर : तब ~ कै कालजवन अपन सँग ल्यायौ ४१६३ **२.** नाराज हो, क्रोधित हो : गए ~ दोउ मन माहिं ९/३। **३.** लज्जित हो गया : अस्वत्थामा बहुरि ~ १/२८९।
खिस्याई खिसियाकर • उठ्यौ तब आप रावन ~ ९/१३५।
खिस्याहीं खीझते हैं : बरषत घन गिरि टेकि ~ ९४०।
खींचि खींच . लीन्हे ~ प्राण विष पय युत सारा० ४१६।
खीचरी खिचड़ी : खीर खाड ~ सँवारी १२१३।
खीजै झुंझलाता है : सुसुकि सुसुकि मन ~ १९०।
खीझत १ क्रोधित होते, खीझते : ~ ही भरि नैन लेत है १५५९। **२** खीझता : ~ है फिरि टेरत ७७८। **३.** खीझती है . कहति जसोदा ~ ४३४। **४** खीझते हुए . सूर हरि ~ सखा सौं मानहि कीन्हौ कोह २१३। **५** खीझने पर, डाँटने पर : जननी कैं ~ हरि रोए ३१९। **६.** झुंझलाते हुए • ~ गुरुजन कहि डरवाई १०११।
खीझति १ खीझ उठती हैं : कोउ रीझति कोउ ~ २४७५। **२** खीझ रही है : सुनि जसुमति मैया कत ~ १३९२। **३** नाराज होती हैं, खीझने लगती हैं • ~ भगिनी माई १५६४।
खीझन खीझने, झुंझलाने : ~ लागे मोकौं ३४३४।
खीझि खीझ कर, झल्लाकर : अबहीं मोकौं ~ पठैहै १९६८। **~ पठायौ** डाँट कर भेज दिया : देखहु स्यामहिं ~— ८९४।
खीझिहै खीझेंगे महर ~ हमकौं ६८१।
खीझी झुंझलाई : तब ~ रिस झर तैं ७४४।
खीझे १ क्रुद्ध हुए हैं : बार बार तिनसौं हरि ~ २४३४। **२** क्रुद्ध हुए हो . की मनहीं मन ~ १५७१। **३** खीझ गए : उन नहिं मान्यो तब चतुरानन ~ क्रोध उपाय मारा० ६४। **४** झुंझलाये : नैन खंज ~ १३७४।

खीझैं खीझते हैं . आपुन ~ उनहिं खिझावैं १६०७।
खीझै झुंझलाती है, रुष्ट होती है टाउहिं कबहुँ न ~ २१५।
खीझौ झुंझलाओ कोउ ~ कोउ कितनो बरजो १४३२।
खीन क्षीण उन्नत कच कटि ~ विपद भुज ३३४६।
खीनी समाप्त कर दी : अरु मरजाद-बचन-मिति ~ २२४५।
खीनौ खिन्न आपु कौं समुझि मन माहिं है रह्यौ ~ ८/१०।
खीरा एक फल जो ककड़ी की जाति का होता है ~ राम तरोई तामें १२१३।
खीस नष्ट। △ **डारत** ~ नष्ट करता है. जित कित — ~ ३७०२।
खुंटिला खुटिले, कर्णफूल : ~ सुभग जराइ के २६१३।
खुभि कान का एक आभूषण जो कील जैसा होता है, लौंग : अरुन सेत ~ १८८७।
खुटक खटका, सन्देह : अपने जिय की ~ मिटाऊँ २९२२।
खुटलाऊ कान मे पहनने का एक गहना भी औ करनफूल ~ ३८१५।
खुटिला कर्णफूल, कान मे पहनने का एक गहना : ~ खुभी जरायज री।
खुठिला कर्णफूल : नकबेसरि ~ तरिवनि को गल हुमेल कुच जुग उतग कौ १४७५।
खुनखुना खिलखिला : ~ कर हँसत हरि १७०।
खुनसनि क्रोध की : इन ~ गोपाल दुहाई ४२०३।
खुनुस क्रोध, रिस, : न्याइ के नहिं ~ कीजै १/१९९।
खुबानी जरदालू, खूबानी : सफरी, चिउरा अरुन ~ २११।
खुभि कर्णफूल का (लौंग का) . अरु पाँइनि ~ चूरौ २८२६।
खुभिनि कान का एक आभूषण जो कील जैसा होता है : ~ जराव फूल दुति यौं २१८४।
खुभी १ कान मे पहनने का एक गहना, लौंग जिन स्रवननि ताटक ~ और करनफूल ३८१५। **२** लौंगें : ~ टत झलकावै १४३९।
खुमारि मद, नशा • अतिहि भई ~ १६२४।
खुरतार खुर या सुम की ठोकर से, खुर के तल्ले से • चोरनि की ~ ३३१३।
खुरनि खुरों मे : भुवन चौदह ~ खूँदति १/५६।
खुरमा एक प्रकार की मिठाई पिस्ता दाख बदाम, छुहारा ~ खाझा गूँझा मटरी ८१०।
खुलाई खुलवाया . भोर ~ आगर २६७७।
खुलायौ खुलवा दिया अरु भंडार ~ परि० १/८।
खुलि खुल ~ गये कपट कपाट मारा० ३७३। ~ **रह्यो** प्रकाशमान हो रहा है : नखनि महावर ~ — २२८०।
खूँट १ छोर, कोना ~ धरत है धारकै २३६४। २ पन्ना,

पीछा : कैसेँहू ~ छुडावति १४२७ ।
खूदति रौंदती है, खोदती है . भुवन चौदह खुरनि ~ १/५६।
खूआ खोआ, पकवान • दोना मेलि धरे हैं ~ ३९६ ।
खूझौ गुच्छो मे : ~ मरुवौ मोगरौ २९०३ ।
खूटति समाप्त होती : पतियाँ पठवति मसि नहिं ~ ३४०३ ।
खूटा नीरस : हौं भूठौ, खोटौ, ~ १/१८६ ।
खूटी १ मिट गई, नष्ट हो गई : अत्र अवधि मिति ~ ३२२१ । २ समाप्त हो गई कागद मेघ गरे मसि ~ ३३०० ।
खूटै १ कमी आती अग सोभा की सकल बडाई, इन तै कछू न ~ २/१९ । २ छेडता है ~ आवत जात १४४३ । ३ समाप्त हो गया, चुक गया : चारि मास बरषै जल ~ ४११६ ।
खूली खोली, थैली : उज्ज्वल भस्मी ~ ३८१५ ।
खेंच खींचकर : दधि सुत वेद ~ अपनौ कर सा० ल० ६ ।
खेइ खेना : उनहि बिनु और को ~ जानै १०१९ ।
खेई नाव चलाई . मैं ~ ही पार कौं, तुम उलटि मँगाई ९/४२ ।
खेड गाँव, समूह . छाँडि ~ सब दौरि जात हैं ६१२ ।
खेत[1] खेती (कृषि) : होत सँदेसनि ~ ३७०८ । △ **उबरतेरौ** ~ तेरा उद्धार हो जाय, खूब फूले फले : हरि-भजन की बारि करि ले — ~ १/३११ ।
खेत[2] राज्य : मैं भूँजब क्यौं यह ~ ९/३९ ।
खेत[3] १ मैदान : रहौ जीति करि ~ सबै फर २४५५ । २ युद्ध-क्षेत्र मे : विरह ~ धनु पुहुप भृग गुन ३३२६ । △ ~ **लर्यौ** रणक्षेत्र मे आ खडा हुआ, आ डटा : सनमुख ~ — ९/१४४ ।
खेतिहर खेती करने वाला, किसान . ~ निरखि उपाटत १/१०७ ।
खेदि खदेड । ~ **देहि** खदेड दे छाँ तै ~ — वै हम तन २२२८ ।
खेदित खिन्न . सोच सम्हारि प्रभू ~ है परि० २/५१ ।
खेप बोझ : ~ लादि गुन ग्यान जोग की ३९६५ ।
खेरे गाँव मे (व्रज मे) रार परी इहिं ~ ३१३१ । △ ~ **की दूब** दुर्बल, तुच्छ : ज्यौं ~ — ३९८९ । ~ **की पुतरी** निर्जन स्थान के देवी देवता ज्यौं ऊजर ~ — को पूजै को मानै ४०४४ ।
खेरौ १ गाँव निरखौ घोष जनम कौ ~ २९९० । २ गाँव को : एकहि साँस उसास त्रास उडि चलते तजि निज ~ ४२९५ ।
खेल क्रीडा, लीला । ~ **पसार्यौ** खेल शुरू किया जमुना के तट ~ — १३९९ ।
खेलत १ खेलता हुआ . ~ आवै आँगन ३५ । २ खेलते : हँसि मिलि ~ खात ४२८९ । ३. खेलते थे • ह्याँ हरि ~ आँख मिचाई ४०५० । ४ खेलते हुए : ~ कान्ह चले ग्वालनि सँग ४१४ । ५. खेलते हैं : ~ यहि विधि हरि होरी हो होरी सारा० १ । ६ खेलने : ~ मैं चूकि जात १६६० । ७ खेलने मे : ~ अति सुख पैहौं ४१२ । ८ खेल रही थीं मद्ध ससि के मीन ~ सा० ल० १४ । ९. खेल रही हो मनहुँ तामरस कै सग ~ १८२१ । १०. खेल रहे हैं : कछु खेल ~ नयौ ११८५ । △ ~ **खात रहे** खेलते-खाते रहे, आनद मनाते रहे . ~ — व्रज भीतर १२४ ।
खेलतहि खेलते ही : मैं तौ तुम्हें हँसत ~ छाँडि गई २७९० ।
खेलतहीं खेलते ही बालापन ~ खोयौ १/५७ ।
खेलति खेलती हैं . कबहूँ फिरि आपुस मैं ~ २८९२ ।
खेलति खेलती : ~ रहहिं आपनौं पौरी ६७३ ।
खेलतीं खेलती हैं : सूरज प्रभु सग ~ परि० १/१२९ ।
खेलतैं खेलते समय ~ फागु डार्यौ खिलारी ३०५९ ।
खेलन पुं० खेलना : अबहीं नैकु ~ सीखे हैं, यह जानत सब लोग ७७४ । **क्रि० वि०** खेलने : ~ अब मेरी जाइ बलैया २१७ ।
खेलहि १ खेल ही : ~ के अब रग रए री २४७ । २. खेलते हैं : हम तुम मिलि ~ सब जानतिं २८९२ ।
खेलहि खेल रहा है देखौ बृ दावन ~ गोपाल २८४९ ।
खेलहु खेलो • ~ जाइ घोष के भीतर दूरि कहूं जनि जैयहु बारे ४२३ ।
खेलाई खेलाया था : मिलि रस रास ~ ३७६४ ।
खेलरि खिलाडी . हो सनाक ~ होरी की २८७२ ।
खेलावत खेलाती है • बल मोहन को हँसत ~ सारा० १०५९ ।
खेलावहु खेलाओ • फाग ~ सग कत २८५० ।
खेलि खेलकर : ~ फाग मुख माँडति रोरी ४०७७ ।
खेलिबौ खेलेगी : बेनु बजाइ ~ रास परि० १/२०० ।
खेलिये खेलिए , रासक्रीडा की जाय : आवहु हिल मिल ~ ११२० ।
खेलियै १ खेलते हैं बालगन बच्छ ज्यौं पूँछ धरि ~ ३०६० । २ खेलिए : आजु परब हँसि ~ २८६४ ।
खेलिहै खेलेंगे : ~ सग दै हाँक ठाढे भए ३०५६ ।
खेलिहौं खेलूँगी : गाँव घर ~ कहति का री ६९९ ।
खेलिहौ खेलना : पुनि ~ सकारे २२६ ।
खेली १ क्रीडा की • तैसैं संग लै ~ नारि ११८० । २ खेला है : जिनकी भुजा कठ धरि ~ ३७२४ । △ **प्रान जात हैं** ~ प्राणों पर आ बनी है : — ~ ९/९४ ।
खेलै १ खेलता है : तो मैं कृष्ण हेलुवा ~ ५६१ । २ खेलने पर • गोपिन सग रास रस ~ सारा० ८२५ ।

खेलैं १. खेलते हैं, क्रीड़ा करते हैं : जिनकें सँग ~ अविनासी ३ । २ खेलें : हममौं कही खेल कछु ~ ३०४९ ।
खेलैं खेलता है : विषयी ~ सार १/३२५ ।
खेलौंगी खेलूँगी : हौं तौ आज नँदलाल सौं ~ सखि होरी परि० १/११९ ।
खेलौ खेलो : अँखियनि आगै ~ २९७३, सूर स्याम सँग हिलि मिलि ~ १८९८ ।
खेलौगे खेलोगे : ~ किहि ठाहर २४३ ।
खेल्यो खेला है : केरि बालक जुवा ~ ५७७ ।
खेल्यौ १ खेलना : इत-उत ~ चाहै ३/१३ । २ खेला हो : बालक ज्यौं ~ ३०४० । ~ **करि ऐंडि** होड लगाकर क्रीडा की : निकसि कुंवरि ~ — ११८० ।
खेल्यौइ खेलना ही : सूरदास प्रभु ~ चाहत २४५ ।
खेवट मल्लाह की, केवट की, निषाद की : दई न जाति ~ उतराई १/१०८ ।
खेवनहार खेने वाला . ~ न खेवट मेरैं १/१८४ ।
खेवा बार, दफा, पारी · सूरदास प्रभु पछिले ~ ४८८ ।
खेह १ धूल : सिर अजहुँ डारत ~ २८३१ । २ मिट्टी : भई देह जो ~ करम-वस ९/१७० । ३ मिट्टी को : लेहि सम्हारि सु ~ देह की ८०२ । ४ राख : तन ह्वै है जरि ~ १६८३ । **बैरिन के मुख** ~ स्त्रियों की एक गाली, दुश्मनों के मुख मे कालिख लग जाय : सूर स्याम अब होइ सयाने — ~ ९८७ ।
खेहा राख : होइ कीट जरि ~ ३२०९ ।
खेहु धूल, भस्म, राख : विरह कियौ तन ~ ३७८५ ।
खेहौं खाऊँगा : फल अपने कर मैं ~ ४११ ।
खैंचत १ खींचता है : ~ स्वाद स्वान वानर ज्यौं १/९८ । २ खींचते है . कबहुँ झुकि कै अलख ~ १०० । ३ खींचने से · ~ कान्ह खस्यौ सिर चीर १६१ ।
खैंचति खींचती हूँ : ज्यौं ज्यौं ~ मगन होत त्यौं १९१३ ।
खैंचि १ खींचकर : ~ कै गदा ता सीस मारी ४०२१, पैज ~ मेटन आए हौ ३९८९ । २ मत्र आदि का प्रभाव लौटा ले, प्रभाव दूर कर दे : कहा दियौ पढि सीस स्याम के ~ आपनो सो लै २२७५ । ~ **कहत हौं लीकौं** लीक खींच कर कहता हूँ, दृढ़ता से कहता हूँ : कोउ न समरथ अघ करिबे कौं ~ — १/१३८ ।
खैंचो खींचा : सारगधर मन ~ सा० ल० ४६ ।
खैंच्यो खींचा : कचगहि आप वहुत वह ~ सारा० ५२८ ।
खैंच्यौ खींचा : मेल्यौ जाल काल जब ~ १/६७ ।
खै खाकर · काँकिर ~ मरि जैहौं ३२४९ ।
खैंए खाइए : छाक छहूँ रस ~ ४४५ ।
खैब खाने : ~ कौं कछु मामी दीन्हौ ४२४५ ।
खैबे-पीबे खिलाने पिलाने · ताहू के ~ कौं ३२५ ।
खैबेहूँ खाने को भी ~ कौं ३/१३ ।
खैबँ खाना है : तुमकौं कछु १२१२ ।
खैबे खाने दधि माखन ~ कौं चाहत १५०५ ।
खैयत खाता · किधौं ~ है किधौं पीजत ३९६६ ।
खैयतु खाता · कछु षट्पद कैसैं ~ है ३६०४ ।
खैये खाता है · जूठौ ~ मीठैं कारन २३४१ ।
खैयै खाना : वाहिर जनि कवहूँ कछु ~ ९८७ ।
खरी कत्थई रग की गाय : मौरी, गैरी, ~ कजरी जेती ४४५ ।
खैहैं खायेंगे . भोजन सब ~ मुह माँगे ८९९ ।
खैहै १ करेंगे, खायेंगे . सहस भुजा धरि भोजन ~ ९०९ । २ खा जायगा : इतनौ भोजन सव वह ~ ८८९ । ३ खायेगा : कब धौं तनक तनक कछु ~ ७६ । ४ खायेगी : सबकी सौहैं ~ १७२४ ।
खैहौं खाऊँगा : मैया मै अपनैं कर ~ ३१२ ।
खैहौ खाओगे : कब तुम छाक छीनि कै ~ १२१६ ।
खोंच खरोंच : लावत हृदय ~ पूरत पट परि० १/१४६ ।
खोचन लगी · देत रहत मोहि ~ १९४२ ।
खोंसत अटकाते है, खोंस लेते हैं · कटि कबहूँ ~ जोरि ६५७ ।
खोइ १ खो, गँवा · हरि सौं हीरा ~ कै हम ४०१९ । २ खोकर : कचन ~ कॉच लै आए २५११ । ३ नष्ट करके : इद्र गर्व सु ~ ३८०० । ४ नष्ट किया : पाडव हित कौरव दल ~ १/९५ । ५ मिट जाता है : रति पति मान जात सब ~ २१० ।
खोई[1] छोई, खोई (गन्ने का रस निकाला हुआ छिलका) : डारि देत है ~ १/६३ ।
खोई[2] १ खो दी : त्यौं ~ अपनी रजधानी ९/१६० । २ दूर किया : उर समे सब ~ ९/१२१ । ~ **देवति** नष्ट किये हैं : ~ देही ३९८९ ।
खोऊँ गँवाऊँ, विताऊँ : कछु दिन जैसें-तैसैं ~ ७३८ ।
खोऊ हरने वाले · चित चिंतामनि ~ ३९७५ ।
खोए नष्ट कर दिए, खो दिए : हरि सुमिरन बिनु ~ १/५२ ।
खोएँ खोकर : मनौ महानिधि पाइ कै ~ पछितानी १०१८ ।
खोज १. चिह्न, निशान, पता : अस्व ~ कतहुँ नहिं पाये ९/९ । △ ~ **परी** पीछे पडी हैं : ये सब मेरैंहि ~ — २०४७ । **पर्यो है** ~ **हमारे** हमारी खोज मे है, हमारे पीछे पडा है : कोउ अगिनि जरावत दई — ~ — ५९५ ।
खोजत १ खोजते हुए : मोहि ~ षटमास मोति गये सारा० ५८१ । २ ढूँढते हे : ~ नँद चकित चहुँ दिसि तैं २६२ ।
खोजति खोज रही है : और सखी ~ सव कुजनि २८९२ ।
खोजहीं खोज मे : ~ परे अब तुम हमारे ३०६९ ।

खोजि १ खोज, ढूँढ़ : ~ हृदै मैं लेहु ४००६ । २ खोज-कर : देखौ ~ बही १/१३७ ।
खोजे खोजा, ढूँढा : ~ वन बारवारा ११८२ ।
खोजौं खोज डालूँ, पता लगाऊँ · ~ दीपै सात ३९७७ ।
खोट वि० बुरा : रह्यौ न कोऊ ~ १/१३२ । स्त्री० दोष, ऐब, बुराई : मिटति लौह की ~ १/२३२ ।
खोटत बुराई, खोटापन : रही नही मन मैं कछु ~ ९५० ।
खोटनि बुरो को भी, असत्यो को भी . ~ करत खरे १/१९८ ।
खोटैं खोटे . सकुच नहि ~ कबि १७५६ ।
खोटौ १ खोटा, दुष्ट : जो कौ नाम स्याम सोइ ~ ३०३७, झूठौं ~ खूटा १/१८६ । २. नीच (दुष्ट) है : यह अक्रूरहु तें अति ~ ३८७५ । △ ~ **खायौ है** बेईमानी से कमा-कर खाया है · धुरही तैं ~ — ३९६५ ।
खोदत खोदते होगे · कैधौं ~ खाढ ३६४७ ।
खोदि खोदकर : ~ पतालहि पाटौं ९/१४८ ।
खोदैं खोदने से : तिनके ~ सागर भए ९/९ ।
खोपरा गरी का गोला, गरी : खारिक दाख, ~ खीरा २११ ।
खोपरी खोपडी । △ ~ **बाँस दै सीस फोरि बिखरैहै** खोपड़ी पर बास मार कर सिर फोड बिखरा देंगे, कपाल क्रिया करेंगे : तेई लै ~ — १/८६ ।
खोयौ १ खो गया : ग्यान बुद्धि बल ~ १/४३ । २ खोया हुआ : तेरी माइ सकल जग ~ ४१८७ । ३. खो दिया · चोरी करी, राजहूँ ~ ९/१६० । ४ नष्ट कर दिया : बालापन खेलत ही ~ १/११८ । △ **दई कौ** ~ प्रारब्ध का मारा, (एक प्रकार की गाली) : निपट — ~ ३५४० ।
खोर[१] खोल, गिलाफ काहूँ दीनी ~ परि० १/७ ।
खोर[२] १. गली · जहाँ साँकरा ~ सारा० ८९४ । २ गली मे : क्रीडत एकहि ~ परि० १/६० ।
खोर[३] खोट : धनुष-बान सिरान कैधौं, गरुड बाहन ~ १/२५३ ।
खोर[४] छोर, किनारा : अति उत्तर को ~ सारा० ८९० ।
खोरन नहाने के लिए चली जमुन जल ~ २७१९ ।
खोरनि गलियों मे : ~ खार झर्‌यौ ३६४६ ।
खोरि[१] गलियो मे · नाचत फिरत साँकरी ~ ३२७ ।
खोरि[२] १ दोष : झूठहि सुतहि लगावति ~ १४२९ । २. पाजी-पन मोहन बालगुविंदा माई, मेरौ कह जानै ~ १४३० ।
खोरि[३] लौटकर : भुजा धरि कर कह्यौ चलहि न आवैं अवहीं ~ १४४२ ।
खोरि[४] खोल, चादर : ~ उतारि धरहु १२१० ।
खोरिनि गलियों मे . होरी खेलत ब्रज ~ मैं २८७१ ।
खोरिया गली साँकरि ~ बिरज की परि० १/१३० ।
खोरिहि गलियो मे : ब्रज की ~ ठाढो साँवरौ १९१८ ।
खोरिही गली मे इहि अतर तिहिं ~ नँदनँदन आए २२१७ ।
खोरी[१] १ ओर, तरफ : चले सामुहीं ~ ३०४९ । २. गलियों मे जाको हेत निरतर लीन्हे, डोलत ब्रज की ~ ४२८५ । ३ गली मे चलि सखि देखन जाहिं पिया अपने की ~ २८७० । ४ तग गली से . ज्यौं सरिता परवत की ~ २८९३ ।
खोरी[२] दोष · ब्रज कहा ~ ३३८८ ।
खोरे नहाए जा रही हैं . हम कारन जल ~ ७६८ ।
खोरैं स्नान करती है · त्रिविध काल जल ~ ७८२ ।
खोरै स्नान करती है स्याम जल, सुजल ब्रजनारि ~ १९११ ।
खोलत २ खोलता है : ~ नहीं कपट के फँदहि ८०३ । २. खोलती है खन ~ खन ढाँकत नागरि २२०५ ।
खोलति १ खोलती काहैं नैन न ~ हैं ११०८ । २. खोलती है : जौ कबहू पलकों नहि ~ ३२४२ ।
खोलनि खोलना : बद कपाट हृदय की ~ परि० १/३० ।
खोलि खोलकर . आखि कौं ~ जब नृपति देख्यौ बहुरि ८/१६ । △ ~ **परद** स्पष्ट रूप से, बिना किसी परदे के तातैं कहति है ~ — ४०६२ । **मुख तौ** ~ जरा बोलो तो . — ~ सुनी तेरी बानी १६५० ।
खोली खोल दी है मानौ भाग दसा बिधि ~ ४२७६ ।
खोले खोल दिये बल करि हरि जू ~ ४२४५ ।
खोलैं १ खोलते है : घर घर कँरे फरके ~ २८९६ । २ खोले हुए . मुख मूँदैं हिय ~ २८५७ । ३ प्रगट किया . स्नम अपनौ प्रभु आगै ~ ९४७ ।
खोलै १ खोलती है सो न ~ र १९७४ । २ खोलता है : अतर ग्रन्थ न ~ ३६४५ ।
खोलौ १ खोलते हो जागे हौ जु रावरे ये नैना क्यौं न ~ २५०७ । २ खोलो . गाठि हृदय की ~ जू २५०९ ।
खोवत १ खाते हो, नष्ट करते हो . तन-धन, जोवन ता हित ~ २/२४ । २ खो रही हूँ : कहा साँच मैं ~ कर तैं २५१५ ।
खोवति १ खोती है . बृथा जनम सुख ~ ३४०३ । २ नष्ट करती हैं, बिताती है : ऐसेंहि दिन ~ ७१८ । ३. भुला देती हो : कबहू बातनि हीं घर ~ १४७३ ।
खोवन खोने वाला, नाश करने वाला : सूरदास रावन कुल ~ ९/८८ ।

खोवनहारी नाश करने वाली, मिटाने वाली सुता वृषभानु की कुल ~ १७०३ ।

खोवहु गॅवाओ . वृथा जनम जग मैं जिनि ~ ७६५ ।

खोवा मय खोये वाली, मावे से वनी ~ मधुर मिठाई १८३ ।

खोवे विताई : ऐसे निसि ~ २९३७ ।

खोवैं छूट गये • हम तैं गए उनहु तैं ~ २२२८ ।

खोवै खोता है . अपनौ मूल या विधि सौं ~ ८/११ ।

खोह गुफा : हमैं वतावत ~ ३५३९ ।

खोहनि गुफा से क्यौं रति मानत ~ परि० १/९० ।

खोही खोही (वर्षा से वचने के लिए सिर ढकने का लवा कोनेदार पटका) • कनक-दुलरि कठ पीतावर ~ १४०० ।

खोटी खोटी ~ व्रज की नारी २५५९ ।

खौर लेप (लगा है) . ॲग ॲग केसरि ~ ३५६० ।

खौरि १ चदन का आडा तिलक . प्रभु के ~ वनाऊॅ २१०६ । २ तिलक लगा हुआ है : कटि कछनी चॅदन ~ १०५१ । ३ लेप : ~ केसर अति विराजत ४१८६ ।

खौरी आडा या धनुषाकर तिलक • सुभग कलेवर कुकुम ~ ३९७१ ।

खौहनि अच्छौहिणी सेना प्रात आइ मन पोपन लागे आए घालन ~ परि० १/९० ।

खौहैं खान : कुविजा मिली कपट की ~ ४०७५ ।

ख्याल[1] १ अनुसार करि पाए हरि ~ १३२६ । २ चिंता : हरि के नाएँ ~ १३९२ । ३ ध्यान, याद करे कैसे ~ ५०५ । ४ विचार : करत कोटिन ~ सा० ल० ३० । ५ विचार हैं हरि के ये ~ ८२३ । △ ~ **परी है** पीछे पड गई हैं : ये सव मेरैं ~ — १७७१ । ~ **परे** पीछे पड गये हैं निपट हमारै ~ — हरि १५६८ । ~ **परैं** पीछे पड गए . ~ — ये सखा सवै मिलि ३३४ ।

ख्याल[2] १ तमाशा, लीला : देखौ हरि के ~ ३४५ । २ क्रीडाएँ, लीलाएँ ऐसे प्रभु के ~ ५९२ ।

ख्यालनि खेलने के लिए : सखा लिए सग ~ ५३४ ।

ख्यालहि ध्यान मे, विचार मे जीव पर्‌यौ हरि ~ सौं १६३८ ।

ख्याला १ करनी, करतूत : छॉडि देह तुम ऐसे ~ १४६७ । २ क्रीडा हरि करत ~ ८५५ ।

ख्याली खिलाडी, कौतुकी : अनत विरमि कतहूँ रहे वहु नायक ~ २७२७ ।

ख्वाय खिलाकर : ~ विष, गृह लाय दीन्हौ १/२०२ ।

ख्वारी वरवादी, विनाश कुटुव सहित भइ ~ १/३४ ।

ग

गग गगा (नदी) परम ~ कौ छॉडि पियासौ १/१६८ ।

गग-प्रवाह गगा की धारा मे • ~ माहिं जो न्हाइ ९/९ ।

गगा गगा । △ ~ **कैसौ पानी** वहुत पवित्र और निर्मल, शुद्ध आचरण वाला है कन्हैया ~ — ३११ ।

गंगाधारी गगा को धारण करने वाले, शकर जमुना प्रिय, ~ १७१ ।

गंगा सागर एक तीर्थ जहां गगा समुद्र मे गिरती है : यह तन त्यागि मिलन यौं वनिहै ~ सग ३३९८ ।

गगा सुत गगा का पुत्र, भीष्म पितामह ~ न कहाऊ सारा० ७८० ।

गंगासुतरिपु भीष्म के शत्रु, अर्जुन ~रिपु सिख मेरी सारा० ९५६ ।

गंगा सुत रिपु रिपु भीष्म के शत्रु (अर्जुन) के शत्रु (कर्ण), कान ~ मिख मेरी सारा० ९५६ ।

गगाहू गगा जी भी • ~ चलि आवै तहाँ १/२२४ ।

गजन १ सहार वृषभ ~ मथन केसी हने पूॅछ फिराइ ४९८ । २ मात कर देने वाली अलि ~ अजन रेखा दै १०५५ ।

गॅठि गाॅठ लालन की ~ जुराइ ९५ ।

गड १ कपोल, गाल स्वेद सीकर ~ मडित २१३३ । २ कपोलों पर ~ तिलक कछु थोर ११९९ ।

गंडकि एक नदी जो हिमालय से निकल कर गगा मे मिलती है एक दिवस ~ तट जाइ ५/३ ।

गडनि कनपटी से गरजि घुमरात मद भार ~ स्रवत ३०५५ ।

गंड-मंडल गडस्थल पर . लोल कुडल ~ ११४८ ।

गंडमंडलनि कपोल मडल पर . स्वेद कन ~ २४६२ ।

गंडूष चुल्लू भरि ~ छिरकि दै नैननि २८७ ।

गंडूषनि चुल्लू मे भरकर मनहु चदगन सुधा ~ १७५३ ।

गंध वास दुगन्ध ~ दस जोजन छावै ५/२ ।

गंध वाहन सुत सुवांधव तासु पतिनी भाइ (गध वाहन) पवन के पुत्र (भीमसेन) के भाई (अर्जुन) की पत्नी (सुभद्रा) का भाई, श्रीकृष्ण : ~ सा० ल० २१ ।

गॅधरव गंधर्वों का कहुँ निर्तत सव देख वार वधु कहु ~ गुण गान मारा० ६६८ ।

गंधर्व गन्धर्व सुर, रिषि, सव ~ तहँ आए ६/५ ।

गंधर्व-देह गधर्व का शरीर मरि ~ तिन धरी ६/५ ।

गंधर्वनि गधर्वों ~ कैं हित तप करौ ९/२ ।

गंधर्व बिबाह विवाह के आठ प्रकारों में से एक प्रकार का विवाह जिसमे वर-कन्या माता-पिता की आज्ञा लिये बिना ही विवाह कर लेते हैं : है ~ चित दै १०७१।

गंधर्ब्व गधर्व : विद्याधर ~ अप्सरा गान करत सब ठाढे सारा० २८।

गंधात दुर्गन्ध करता है, गँधाता है · उदर गध ~ ७/२४।

गंधिनि गधिन या इत्र बेचने वाली : ~ है जाउँ निरखि १०७५।

गंध्रप गधर्व : जाकौ जस गुन ~ गावत परि० २/६।

गध्रब १ गधर्व गावत ~ ५७५। २ गधर्व ने ~ ब्रह्मा सभा मँझारि ७/८।

गंध्रब-देह गधर्व-शरीर · तुरत छाँड्कि ~ ७/८।

गंध्रब-पुर गधर्वपुर, कल्पित नगर . जज्ञ कियैं ~ जैहौ ९/२।

गंध्रब-ब्याह गधर्व-विवाह : तासौं ~ करायौ ९/२।

गंध्रब गधर्व : सुर नर मुनि जन गन ~ ये ४२०४।

गँभीर १ अगाध, अथाह नीर अति ~ १/९९। २ गहरा . जोग ~ कूप आँधे सौ ३७३०। ३ बढ़ती गई, लम्बी होती गई सारँग भयौ ~ १/३३। ४ शान्ति परत नाहिं ~ सा० ल० ४२।

गँवाइ १. खोकर : सूरज सुगथ ~ गाँठि कौ १९९९। २. छोड . आए कहाँ ~ २४२३। **जैहै जनम** ~ जन्म लेना व्यर्थ हो जायेगा : सूरदास भगवत भजन बिनु — ~ १/३१७।

गँवाई १. खो आए · पीत ओढनी कहा ~ ६९२। २. गँवाकर, खोकर · लोक लाज की कानि ~ १८९४। ३. गँवा दी है : तबहीं तैं तन सुरति ~ १८६२। ४. खोई है : भली करी हरि गेंद ~ ५३५। ५ नष्ट कर दी है . बुधि विवेक कुल कानि ~ २३०४। ६. बिताई है . तहँइ जाहु जहँ रैनि ~ २५०५। ७. भुला दिया मुकुर छाँह निरखि देह की दसा ~ २१९२।

गँवाए १. खो दिया : मूलहू माँझ कहूँ ~ ३७९१। २. बिताया · चारौं जाम ~ २५१८। ३. भुला दिया : दुख सबनि ~ ४४७। ४. हटा दिये धरनी सिर तैं भार ~ ३०९५।

गँवायौ १ खो गया भ्रम भयौ ~ ४१२। २. खो दिया, गँवा दिया : भ्राता बृथा ~ सारा ९४३। ३ दूर (परिहार) किया : काहूँ स्त्रम न ~ १/२२१। ४. व्यतीत किया . जनम ~ साथ ही १३१८, जब या विधि बहु काल ~ ९/२।

गँवारि १ गँवार, असभ्य, मूर्ख तऊ ~ अहीरी २५९६। २ गँवार ग्वालिनें : मुह फाटे जु ~ २९२।

गँवारिनि गँवारिनि : कत होति ~ १४७३।

गँवारी १ गँवार, मूर्ख . काम ~ सौं पर्यौ ३६४६। २. मूर्खता की . सखी कहति तू बात ~ १९०२।

गँवावत खोते हैं . अपनौ महत ~ ३५२४।

गँवावति खो रही हो · कहा ~ बोले २८२६।

गँवावहु गँवा दोगे : मौन रहौ तौ कछू ~ २५६०।

गँवावैं गँवाते हैं, नष्ट करते हैं : कहि कै मान ~ २२५६।

गँवावै १ खो देता है सो जनम ~ २/९। २ नष्ट करता है · मदन के मदहिं ~ री परि० १/५०। ३ बिता रही है, व्यर्थ खो रही है : उठि राधे कत रैनि ~ २७९६।

गँवैहै नष्ट कर देगा : बृथा सु जनम ~ १/८६।

गँवैहौं गँवा पाऊँगा, खो पाऊँगा : यह कलंक हौं कहाँ ~ ७/५।

गँवैहौ नष्ट करोगे, व्यर्थ खोवेगे : सूरदास भगवत भजन बिनु मिथ्या जनम ~ १/३३१।

गंस १ दाँव, खोटे करतब : अब सीखे ये ~ १५११। २. द्वेष, वैर : कर्यौ यह ~, तोकौं पठायौ ५५१। ३ चोट करने वाले गीतो को : हँसत परसपर गावत ~ ११८०।

गइयनि गायों ने : ~ छाँडि चरनि ३५५२।

गइयाँ १ गाये : मोहन अपनी घेरि लै ~ परि० १/२०१। २ गायों को : ~ सुखद चरावैं सारा० ४६३।

गइया गाये : ~ हरि चारैं २९५१।

गइ गई : लाज तजि कुजन ~ ३८६५। ~ **डराइ** डर गई ऐसौ ~ — २१५०।

गई १ पहुँची : ~ नैंकु न भारि ८८२। २ बीत गई खेलत तुम निसि अधिक ~ २४२। ~ **इन आगैं** समक्ष हो गई : मेरी बात ~ — १७६७। ~ **जनाइ** विश्वास हो गया महर महरि-मन ~ — ५४३। ~ **दुरमति** दुर्बुद्धि नष्ट हो गई . नाम सुमिरत ~ — ११७६। ~ **मति कौ** मारी गई बुद्धि पर . हँसत दूत ब्रज जन ~ — कौ ९२२।

गउ गाय से : ~ चटाइ, मम त्वचा उपारौ ६/५।

गऊ गाय . बल सग ~ चरावैं ३८४७।

गएँ जाने पर : सरन ~ प्रभु काढि देत नहिं १/२३२।

गए १ खो जाने से : प्रभु की परतीति ~ ३८९७। २ गये का : ~ सोच आए नहि आनद २/१८। ३ गये ही : आगन ~ नाहि वह जैसैं ९८९। ४. चले जाने पर : कै तन ~ भलौ मानौ ३८२४। ५ जाने से : तुमहि ~ कछु धीरज लैहै ३११५। ६ निकल जाने पर · अवसर ~ बहुरि सुनि सूरज ८०१। ७ बीत गये : दिन दस ~ देवकी अपनौ ४। ८ हट जाने पर . पुहुप ~ बहुरौ बल्लिन के नैंकु निकट नहिं जात ३९८१।

गगन-तरैया आकाश के तारे : तुम चाहति हौ ~ ७७३।

गगन-पति चन्द्र, सूर्य, इन्द्र · धरनिपति, ~, अगम बानी १९४७।

गगन बानी आकाश-वाणी : इतनी कहत ~ भई ९/११।

गगरि गगरी, घड़ा : लै ~ सिर मारग डगरी १४५२ ।
गगरिया गगरी : लिए ~ पानी परि० १/१५१ ।
गज¹ १. हाथी . है ~ चल्यौ स्नान की चालहिं १/७४ । २ हाथी (ऐरावत) : लटपटात पग धरत धरनि ~ ९४८ । ३. हाथी (गजराज) : ग्रस्यौ ~ ग्राह लै १/५ ।
गज² सिन्दूर तथा अजन : कुत अग्र ~ औ नीकन मे सा० ल० ९७ ।
गज कौ पुत्र गज मुक्ता, मोती : ~ समैहै सा० ल० ९७ ।
गजगति हाथी की चाल के समान . तैं री ~ गामिनी २००९ ।
गजदंती हाथी दाँत का : कर ककन चूरा ~ २९०१ ।
गजदर्प हाथी का मद : वन ~ नवावत १६२९ ।
गजपति गजराज के · ग्राह गहे ~ मुकरायौ १/१० ।
गजपाल महावत, पीलवान, हाथी का पालन करने वाला : 'सूर' ~ सौं कहि सुनावैं ३०५१ ।
गजबर हाथी : महामत्त ~ ज्यौं धावै २८९२ ।
गजवर गति गजराज की गति से : ~ आवत मग १०७४ ।
गज बिंदु सिन्दूर की बिंदी : दै ~ विलच्छन सा० ल० ९८ ।
गजमनियाँ गजमुक्ता : कठ मजु ~ १०६ ।
गजमुक्ता एक प्रकार का मोती : ~ चहुं धार ४२ ।
गज-मोचन १ गज को सकट से छुडाने की क्रिया : एहि घर वनी क्रीड़ा ~ और अनत कथा स्रु ति गाई १/६ । २ विष्णु का वह रूप जो उन्होंने गज को छुडाने के लिए धारण किया था . ~ ज्यौं भयौ अवतार ८/२ ।
गजमोतिन गजमुक्ताओं : ~ के चौंक पुराये ८०९ ।
गजर प्रात काल सूचक घटे का शब्द, भोर का घटा : बोलें तमचुर, चार्‌यौ जाम कौ ~ मार्‌यौ ३०३८ ।
गजरथ हाथियों का रथ : कहुँ ~ कहुँ बाजि रथन सजि टोलत हैं सारा० ६७४ ।
गजरा हाथ मे पहनने का एक आभूषण : रत्न जटित ~ बाजू बंद २६१० ।
गजराज गजराज के : धाए ~ काज १/१२३ ।
गज रिपु पतली कमर, जिसकी उपमा हाथी के शत्रु (सिंह) की पतली कमर से दी जाती है · एक कमल पर धारे ~ एक कमल पर ससि-रिपु परि० १/१९२ ।
गजल गज=करि=करी+ल=करील, बबूल · पग रिपु ता महँ परत ~ के सा० ल० ८/५ ।
गज-सत्रु गज के शत्रु (मगर) को : हति ~ सूर के स्वामी ८/६ ।
गज-सरदार गजराज ~ सूर कौं स्वामी १४३९ ।
गज सुंड हाथी के सूँड के समान है : वनमाला बाहुदड ~ १७७५ ।
गज-स्वेत श्वेत हाथी, ऐरावत : अप्सरा, पारिजातक, धनुष, अस्व ~ ८/८ ।
गजिनी हथिनी के सजनी ~ मग २०११ ।
गजी हाथी की सवारी (महानता) : सूरदास की भली बनी है, ~ गई अरु पौं (न वह मिला न यह) १/१५१ ।
गजेंद्र गजराज, : जब ~ कौ पग तू गैहै ८/२ ।
गटकि हड़पकर, दबाकर : ~ मिल सौं रह्यौ मोच जागी ३०७३ ।
गटो १ गाँठ छूटति नहिं अतर की ~ २५५४ । २ समूह : अपनी रुचि जित-ही-जित ऐंचति इंद्रिय कर्म ~ १/९८ ।
गठ गाँठ : ~ जोरो गहि भोर सारा० १०६६ ।
गठजोरी गठजोड़ी, घनिष्ठता : चहुँ दिसि ते गहि के ~ कीन्हों सारा० १०८४ ।
गठरिया गठरी · लिए रूप गुन ग्यान ~ परि० १/१८३ ।
गठौना घालमेल, गड्डमड्ड : बासन फोरि ~ कीनौ परि० १/१९ ।
गडाए धँसाये हुए . मन मे मूड़ ~ १/३२० ।
गडावौं गड्वा दूँगा : पाडव सुत अरु द्रौपदी कौं मारि ~ १/२३८ ।
गड़ि गड : ~ गए, कुच जु कठोर २५१३ । ~ **जू रही** निमग्न हो रही · ~ — वा रूप जलधि मैं २४०० ।
गडिबेहि गडने से : प्यारी के चरन कोमल जानि सकुच अति ~ डराति १०६८ ।
गडिबेहि गडने से : प्यारी पग ~ डरात २६१६ ।
गडे १ गड जाता है . डारत ही जू ~ रे २२२३ । २. रमे हुए हैं . इहिं उर माखन चोर ~ ३७३१ । ~ **कौ सोनौ** गड़ा हुआ सोना है : ज्यौं कुरखेत ~ — त्यौं प्रभु तुम्हरी प्रीति ४१३८ ।
गडै गड (रम) सके · जौ न ~ उर अतर ऊधौ ३९०५ ।
गढ¹ दुर्ग मनौ मदन ~ लैन कौ २४५० ।
गढ² बना . पहरक मैं ~ लेत ४२६७ ।
गढनहार गढ़ने या बनाने वाले : अब ~ हिंटोरना कौ ताहि लेहु बुलाइ २८३० ।
गढवै भयभीत हो गये हैं, ऊब गये हैं ~ भयौ नरकपति मोमौं १/१४१ ।
गढाइ बनवा कहौ ~ दिये ते आपुन २५४१ ।
गढाऊँ गढ़वाऊँ . जो और ~ ९/४२ ।
गढाए बनवाया : कचन कलस ~ कब हम १५५० ।
गढायौ गढाया : गहनौ अगढ ~ परि० १/८ ।
गढ़ि १ गढकर, बनाकर : अति सुदर ~ ४१ । २ गढ गढ कर : हरि आगैं ~ बात बनावत २३२० । ~ **छोलि** गढ ना बना छील्कर : मिलवत हौं ~ — ३६८६ । △ ~ **गढ़ि बातैं बानति** झूठमूठ की बातें कहना, नमक मिर्च लगा कर

कोई वात कहना ~ — १४२८।
गढी रची, सुघटित की मानौ फेरि वनाइ ~ ९/१७०।
गढे ढले हुए : मनो दोउ ~ एकहि साँचे ३५८९।
गढै सोचता है, कल्पना करता है, तर्क वितर्क करता है : जिय जिय ~ करै बिस्वासहि ९/७५।
गढैया गढने वाला, वनाने वाला धन्य रे ~ ४१।
गत[1] गति, वह कर आनन जल पमेव ~ चलि यौं २६३८।
गत[2] १. अस्त होने पर, जाने पर : जनु रवि ~ संकुचित कमल जुग निसि अलि उडन न पावै ६५ । २ वीत गये . सकल निसि दिन ~ १/५५ । ३ व्यतीत हो जाने पर वासर ~ रजनी मुख आवत २६२६ । ~ **भई** वीती जा रही है · अजहुँ न मानत ~ — रैनि २७९८।
गत-आगत जाते आते . ~ न थकात ४०५२।
गतजीव मृत । ~ **करायौ** मार डाला . देहु गिराय याहि पर्वत ते छण ~ — सारा० ११९ ।
गत पतंग सूर्यास्त हो जाने पर : ~ राका ससि विय सग २७३४।
गति[1] १. गति, चाल : इनकी ~ नहिं जानी २२८३ । २. (गोटों की) गति से : अक चारि ~ सारि न कबहू जीते १/६० । ३ गतिसे : बाजत ताल मृदग जत्र ~ १९ । ४ चाल को · चलति सु मोहति ~ गज हस ११८० । ५. वेग से : अति ~ पवन चलायौ ८६८ । ~ **तजि** गतिहीन होकर : वैसैंहि ~ — पवन थक्यौ ११३२ । ~ **भूले** गतिहीन हो गये . तृन-द्रुम सलिल पवन ~ — १०६९।
गति[2] १ दशा, अवस्था · (देवकी) देखौ हो अति बिचित्र ~ ७, रिषि की यह ~ देखी ९/१४ । २ दशाएँ, गतियाँ . हाव भाव नाना ~ न्यारी १०८४ । ३ दशा हो रही है : सूरदास प्रभु तिनकी यह ~ ८६३ । △ ~ **कीनी** दुर्दशा की, बुरी दशा को पहुँचा दिया · नैंकु चूक तैं यह ~ — पुनि वैकुंठ निवास १/१३२।
गति[3] १. उद्धार : तवही उन सवकी ~ होइ ९/९ । २ उपचार करै कछु ~ आइ ४०७२ । ३ कार्य, चेष्टा जेतिक अधम उधारे प्रभु तुम तिन की ~ मैं नापी १/१४० । ४. पहुँच सूर पतित कौं नहिं कहू ~ १/१८७ । ५ प्रसग, वात जोग की ~ सुनत मेरैं अग आगि वई ३७०३ । ६ भेद इनकी ~ मैं पाइ १८१७ । ७ दशा, लीला · अविगत ~ कछु कहत न आवै १/२ । ८ सद्‌गति अगतिनि कौं ~ दीनी ९/११ । ९ सुध बुध · स्रवननि सुनत देह ~ भूली १४४६।
गति पति गति के नियता, गति और लाज : मेरी तौ ~ तुम १/१६६।
गति मति क्रिया शक्ति और विचार शक्ति, चेतना, बुद्धि : ~ जाति भुलाई १८१७।
गति-संगीत-पद सगीतात्मक पदों के मेल के साथ . नृत्यति उघ रति, ~ २०७९।
गतिहिं गति की शोभा को : नैननि ~ न पावत ६६५।
गथ १ पूजी, धन सपत्ति मधुप आए जोग ~ लै ३८६५, प्रान सहित ~ लीन्हौ ३८३२ । २ माल सूरदास ~ खोटो २३४०।
गथन जोडना : नाना कर न ~ परि० १/९५।
गथहि माल को · जाके जाके ~ हरी २४३४।
गथौ पूँजी, जमा · काच पोत गिरि जाइ नद घर ~ न पूजै १६१८।
गद १ रोगों से नाना ~ दै जीवदान ३३२६ । २ विष फुरै न मत्र-जत्र ~ नाही ७४७।
गदगद १ गद्‌गद, प्रसन्न ~ मुख वानी परकासति १९०० । २ गद्‌गद होकर : रोम रोम ~ सब फूले ९१७ । ३ रुद्ध ~ — कठ सूर कोसलपुर सोर सुनत दुख पाए ९/३१, ~ कठ वोल नहि आवै १३।
गद्‌गद अधिक हर्ष, हर्ष आदि के आवेग के कारण रुका या अस्पष्ट ~ सुर पुलक रोम १/७२।
गन[1] गण के, समूह के : अरि ~ गर्व प्रहार्‌यौ १/३१।
गन[2] गणना : कहौ कहाँ लगि गुन ~ लिखत १/११२।
गन[3] दूत, सेवक . जिनकै वस अनमिष अनेक ~ ४३०७।
गनक ज्योतिषी . सुनि आनदे सव लोग, गोकुल ~ गुनी २४।
गनत १. गणना करते हुए · दासी दास ~ नहिं पार ९/८ । २ गिनता है : निदरि मोहिं न ~ २२८७ । ३ गिनते हुए · अवधि ~ इकटक मग जोवत ३५५७ । ४ गिनते हैं और ~ वे नाहिं २३५६ । ५ मानते हैं : ऊँच नीच हरि ~ न दोइ १/२३६ । ~ **गई** गिनते हुए व्यतीत हो गई . वासर निसि मोहिं ~ — ४०६० । △ ~ **न खाटौ खारौ** अनुचित बुरे का कुछ ध्यान ही नहीं करता है ~ — १/१५२ । ~ **न खाल पनार** नाली या पनाले को परवाह नहीं करता : जैसैं अधौ अध कूप मैं ~ — १/८४ । ~ **न राजा-राइ** राजा राय कुछ नहीं समझते : सूरदास सब प्रेम मगन भए, ~ — २० । **न** ~ काहूँ किसी को कुछ नहीं समझते : एक एक — ~ — २६ । **रंक** ~ **नहि राइ** अमीर गरीब कुछ नहीं समझते, अमीर गरीब का विचार नहीं करते सूरदास प्रभु सदा भक्त बस — ~ — ३१०२।
गनत सुनत गिनते और सुनते · ~ न सुधि लहौं ४१८७।
गनतहि गिनते ही : ~ आनि अचानक कोकिल ३२५९ । ~ **गनत** गिनते ही गिनते . ~ — गई सुनि सजनी ३७७९।
गनति १. गणना करती है कबहुँक ~ गगन के तारे २४७१।

गिनती · ~ नहीं अपने बल काहुहिं १३०८। ३ गिनती हूँ नहिं ~ निज मैं री २४५३। △ कौनें ~ किस हिसाब मे, नगण्य. तुम हरता तुम करता प्रभू जू मातु पिता — ~ १६८९।

गनन समूह जा सुत गुन गुन ~ उतारें सा० ल० ५।

गननि १ गणों के . ~ समेत सनी तहँ गई ४/५। २ गणों ने · ~ कह्यौ, इन नाम उचार्यौ ६/४।

गनहु गिन लो, समझ लो : ~ द्वैज दिन सोधि के २९१४।

गनाइ गिना . लई ते ~ कै ३०९२।

गनायौ गिनती मे है मो मत एक ~ सा० ल० ९६।

गनावन गणना (कराने के लिए) · सु लगन ~ रे २८।

गनावै बना रही है : अनमिल उक्ति ~ सा० ल० १५।

गनि[1] १ गणना करके, गिनकर . गुन ~ न सिराइ ३११७। २ गिना : न ~ जाहि ४/११। ३ समझकर . सूरदास उद्धार सहज ~ १/२०७।

गनि[2] १ समूह : तेइ गुन ~ गावत २४३९। २ समूह मे : जाके गुन ~ ग्रथित माला ४२८६।

गनिका १ एक वेश्या जिसका उद्धार तोते को 'राम' नाम सिखाते हो गया था . सुवा पढावत ~ तारी १/८९। २ वेश्या : परमत ~ गात २८५३।

गनिकादिक गणिकादि : तिनमैं अजामील ~ उनमें मैं सिरमौर १/१४५।

गनिकै गिनकर, गणना करके : लगन सोधि सब जोतिष ~ ८६।

गनियत गिनते है, गणना करते है : तदपि विमुख पाँनी सो ~ भक्ति हृदय नहिं आई १/९३।

गनिया लोकपति, स्वामी . सब लोकनि कै ~ १०५५।

गनियै गिनिये, गणना करिए कहा कृपिन की माया ~ १/३९।

गनिहैं गिनेगी . बहुरि कहा यह ~ १२३५।

गनी १ गणना की, गिनी सुदरि एक ~ २१८४, फल चारि पदारथ देत ~ १/३९। २ गिनी जायेगी : तदपि 'सूर' मेरी यह जडता मगल माहि ~ ४२९३। △ कहा ~ क्या गिनती है, तुच्छ है : नर वपुरे की — ~ १/३९। ~ नहि जाय वर्णन करते नहीं बनती व्याह केलि विधि रची सकल सुख सौंज ~ — सारा० ६३९। ~ न जाहि गणना नहीं की जाती है, अगणित है · तहँ गैयाँ ~ — २४।

गनै गिनती हो, करती हो : कर्मांहि को गनती ~ १४६१।

गनेस गणेश जी, हिन्दुओं के एक प्रसिद्ध देवता जो शिव-पार्वती के पुत्र माने जाते हैं : लिखे ~ जनम भरि मम कृत १/१२५।

गनेस्वर गणों के नायक गणेश जो शकर-पार्वती के पुत्र कहे जाते हैं को : गौरी ~ बीनऊँ (हो) ४०।

गनै १ गणना करे : पति, सुत, गृह की कौन ~ ३८०३। २ गिनता है : ~ पिता न मात ४१७३। ३ गिनती है : ~ न आपु लराई ४। ४ गिन सकता है : को गति ~ १०४८। ५ तुलना करे · कवि सो काह ~ २८०५। ६ गिनती करता है · भूमि रेनु कोउ ~ ९/३६। ७ समझे, माने : समकरि ~ महामनि काँचै ९/११।

गनैगो गिनेगा, समझेगा . जे निरगुन गुन ही ~ ३८९३।

गनौं गिन लूँ, अनुमानूँ जिह्वा रोम रोम प्रति नाहीं, पौरुष ~ तुम्हार ९/१४७।

गनौ जानो : मोहि विधि, विष्णु, सिव, इन्द्र, रवि-ससि ~ ४/११।

गन्यौ गिना, समझा · ~ नहीं, दिन राती ४०६३।

गभुआरे गर्भ के, अकुरित अवस्था के · ~ सिर केस है १३४।

गम १ पहुँच, . तिहू भुवन भरि ~ है मेरो १३९६। २ पहुँच है, प्रवेश है . स्वर्ग पताल माहिं ~ ताकौ ९/७४। ३ ज्ञात · प्रभु की लीला ~ नही ४९२। ~ है जाकौ जिसकी पहुँच है . तिहू भुवन भरि ~ — १५७९।

गमन १ गमन, प्रस्थान तुरतहिं ~ कियौ सागर तैं ९/१०३। २ चले गये है · दूरि ~ ब्रजनाथ नरेस ३८१९।

गमन पतिका पति का गमन, गच्छतपतिका नायिका : 'सूर' समुझै ~ सा० ल० ३६।

गमायौ खो दिया : सो तो वृथा ~ सारा० ९४०।

गम्य प्राप्य, मान्य, समझने योग्य : ध्यान ~ नहिं तातैं ३६७९।

गयंद हाथी, गज मानो परे ~ पक महिं २२७९। ~ सुडि धारौ हाँथियों की सूँड जैसी मोटी धारा मे · गरजि ~ — ९६८।

गयंदहि गजराज को : दुखित ~ जानि कै १/४।

गय १ हाथी · हय-~ खोलि भडार दिए सब ३६। २ हाथी को, गजराज को : ~ वर मेटि चढावत रासभ १६८९।

गयऊ गया तातैं ~ डराइ ५८०।

गया बिहार या मगध देश का एक विशेष पवित्र स्थान। यह तीर्थ श्राद्ध और पिंडदान के लिए बहुत प्रसिद्ध है : ~ बनारस अरु केदार ९/३।

गयो १ गया : तब ~ विधि लोक अपने ४८५। २ दूर हो गया : जब हा गर्व ~ चतुरानन अद्भुत चरितहिं देख सारा० ४६८।

गयौ १ गया : असुर देह तजि हरि-पुर ~ ७/२। २ गया था : आजु ~ मेरौ गाइ चरावन ८१८। ३ गया हुआ : ~ राज अपनौ तिन पायौ ६/५। ४ गया है : मिटि जु ~

संताप जनम को १५। ५ गये . सरिता तट इक दिन मो ~ ९/१३। ६ घटता गया, चला गया तैसें हीं यह तन ~ ३८६५। ७ चल पटे ~ मो दै रेख १/६०। ८ चला गया, बीत गया जनम साहिबी करत ~ १/६४। ९ चले गये, बीत गये खोजत नाल कितौ युग ~ ७/३७। १० च्युत हो गये हैं . अपनी जाति ~ ३६७३। ११ नष्ट हो गया है . ~ गुन ग्यान सँभार ३८०८। १२ दूर हो गया रैनि विरह तनु कौ ~ २७२३। १३ ले गया • ह्याँ तै ब्रह्मा बच्छ ~ हरि ४०५०। ~ गिरि कौ जर पर्वत समूल बह गया . बरषत कहत ~ — ९३९। ~ तजि छूट गया : ~ — विरह डर, प्रेम पागे २१५१। ~ नहि जाई नही जाया जायेगा हम पै घोष ~ — १०२२।

गर १ गला जातुधानि कुच ~ मर्षत १/२१५। २ गले उतारति ~ तें ५११। ३. गले के ~ हार सँवारति २६५३। ४ गले मे . विरह फाँस ~ डारी २२९०। ५ गले से मिले अति हेत लाइ ~ ४३७।

गरज[1] प्रयोजन से, मतलब से अपनी ~ तुम एक पाय नाँचे २५४९।

गरज[2] १ गर्जना गिरा गभीर ~ मानौ १८७०। २ शब्द को मुरली ~ तात मुकता तनु ३५६२।

गरजत १ गरज कर . हाँक देत ~ ज्यो ऐंठे १/२३। २ गरजता है, गम्भीर तुमुल शब्द करता है ~ क्रोध लोभ कौ नारो १/२०९। ३. गरजते हुए . ~ गुहा सिंह समुझावति ४१४६। ४ गर्जना करते हैं ~ धुनि प्रलय काल ८५७।

गरजति गरजती, बिगडती ऊपर काहे ~ है ३२१।

गरजन गर्जना . मद ~ नहीं चरन नूपुर सबद २०६१।

गरजनि गर्जना अरु पावस की ~ ३१९८।

गरजहि गरज रही है ता महँ मोर घटा घन ~ ३६६१।

गरजाई गरजता है मेघवा मधुर ~ हो परि० १/१०८।

गरजि गर्जना कर रिच्छ कपि ~ कै धुनि सुनायौ ९/१०६। २ गर्जना करता हुआ ~ चढ्यौ, रन-भूमिहि आयौ ९/१४१।

गरजी[1] गर्जना की, जोर से बोली ~ बदन पसारि ९/१०४।

गरजी[2] ग्राहक अब जु भए मेरे जियहु के ~ ३४०१।

गरत गल रहा है ~ गात जेसैं ओरे ३३०३।

गरति गल कर तेही ~ गर्‌यौ १९१३।

गरतौ घटता है, नष्ट होता है तुम्हें हमैं प्रतिवादे भए तें गौरव काकौ ~ १/१२३।

गरद धूल भरी : गई बीति ग्रीषम ~ रितु २८३०। △ ~ समोयौ धूल मे मिला दिया पल मैं ~ — १/४३।

गरधारी गले मे धारण करने वाले जुही माल ~ परि० १/११८।

गरब गर्व, घमड सागर ~ धर्‌यौ उर भीतर ९/१२१, ~ कियौ सुरराज ८२२। ~ गयौ गर्व चला गया, नष्ट हो गया लोटत धर पर ग्यान ~ — ४०५०। ~ गिले गर्व मन मे दबाये हुए जात हे मारग ~ — ९८२। ~ नसार्‌यौ गर्व को दूर किया . उनके मन कौ ~ — ४१९५। ~ भर्‌यौ गर्व से भरा हरषवत उर ~ — ५९।

गरबत अभिमान करता है तन छन भगुर के कारन ~ कहा गँवार १/८४।

गरबहि गर्व • गयौ सिर नाइ मन ~ बढाइ कै ६२।

गरबहि गर्व करे लक सौ कोट देखि जनि ~ ९/११७।

गरबाइ गर्वित हो रूप जोवन सकल मिथ्या देखि जनि ~ १/३१५।

गरबाऊ गर्वित होकर : मन मैं अति ~ २२१।

गरबाए गर्व किया, घमड मे आये कछु जिय मैं ~ १/१०९।

गरबानी इतरा गई थोडी कृपा बहुत ~ ११२७।

गरबाने गर्वित हो कै ~ राजस वाने ४०९३।

गरबानौ १ अभिमान करता हुआ बालापन खेलत ही खोयौ तरुनाई ~ १/३२९। २ गर्वित यह सुनि हर्ष भयौ ~ २९३२।

गरबित गर्वयुक्त . काली तब ~ भयौ ५८९।

गरबीली गर्वीली, गर्व करने वाली : दधि लै मथति ग्वालि ~ २९९।

गरबीले गर्वीले : त्यौं ये नैन भए ~ २२३५।

गरब्यौ गर्व किया पुनि साहस जिय जिय करि ~ २९२४।

गरभ गर्भ मे ~ वास दस मास अधोमुख १/५७।

गरभक अडे को . जैसैं ~ सेइ बिरानौ परि० १/१५१।

गररात गरजता हुआ घहरात ~ दररात ८५३।

गररी एक चिडिया, किलँकटी, सिरोही ~ करति लराई ५४१।

गरल विष कैसैं ~ पिऐ ३५७५।

गरल-असन विष पीने वाले ~ अहि भूषन धारी ७९९।

गरवानौ गर्व से भरा हुआ • हँसे स्याम मुख हेरि कै बोवत ~ ३०३८।

गरासी ग्रसित, पकडा या जकडा हुआ : जद्यपि विधु भयौ राहु ~ ३९२८।

गरि १ गल जाती है ज्यौं जल मैं काँची गागरि ~ १२०। २ गल जाय • पापी जाउ जीभ ~ तेरी ९/२९। गए ~ नष्ट हो गये, दूर हो गये गज-गीध-गनिका व्याध के अघ — ~ गरि गरि १/३०६।

गरियै नष्ट हुई नातरु हम ~ मी ३३७६।

गरीबनि गरीबों के स्याम ~ हू के गाहक १/१९।

गरीब-निवाज दीन का दुख हरण करने वाले . तुम हौ सदा ~ १/१०८।

गरुअ भारी • ~ आनन गोर २१३३ ।
गरुआई बड़ाई . हमकौं कहा इती ~ २५३९ ।
गरुड़गामी गरुड पर चलने वाले, श्रीकृष्ण : सकल अघ हरन हरि ~ १/२१४ ।
गरुड़वाहन गरुड वाहन से ~ कृष्न आवहु ४१७३ ।
गरुड़हि गरुड को • ~ छाँडि छुडायौ १/३० ।
गरुड़हु गरुड भी • ~ कौं छुटकायौ ८/३ ।
गरुड़ासन वाहन गरुड को : ~ तजि धावै १२८ ।
गरुडियौ गारुडी : औषद वैद ~ हरि नहिं ३३०७ ।
गरू भारी ~ भए महि मैं वैठाये ७८ ।
गरूर भारी लरकि जाइ जिनि विसद-नितव ~ २६६८ ।
गरें गले का • दीन्हौ हार ~ कर कंकन १७ ।
गरे[1] गल गये . कागद ~ मेघ मसि खूटी ३३०० ।
गरे[2] १ गले चौरस हार अमोल ~ कौ १९६९ । २ गले मे राजत री वनमाल ~ १३७५ । △ ~ **परी** जबरदस्ती गले (पल्ले) पड गयी : देखियत ~ — ३६६३ ।
गरैं[1] गले मे • कान्ह ~ सोहति मनि-माला ९४, वाँधति ~ बघनियाँ ८३ ।
गरै[2] गल जाय किनि राख्यौ उहि जीभ ~ २५६९ ।
गरै गलता है, नष्ट होता है : गर्वहिं गर्व ~ १/३५ ।
गरैगौ गल जायेगा, नष्ट हो जायेगा . निरखत ही तेरौ ग्यान ~ ३६१९ ।
गर्ग गर्गाचार्य, (यादवों के पुरोहित) : जाकौ जस रिषि ~ वखान्यौ १३९५ ।
गर्गराज गर्ग ऋषि ~ मुनिराज महाऋषि मारा० ४३० ।
गर्जत गरजता हूं . ताकै बल ~ ९/८३ ।
गर्ज गर्जना या तुमुल शब्द : मनहुं सिंह की ~ सुनत गोवच्छ दुखित तन डोलत ३४२ ।
गर्जत १ गरजते हुए : ~ घन अतिहिं घहरावत ९३४ । २ गरज रहा (है) • सभा-माँझ बैठ्यौ ~ है १३९३ ।
गर्जहि गरजेगा या रथ बैठि बधु की गरजहिं पुरवै को कुरु-खेत १/२९ ।
गर्जि गरज कर । ~ **गर्जि** गरज गरज कर : ~ — घहरातहिं आए ९२६ ।
गर्दभ गधे मे, गदहे मे : हय-गयद उतरि कहा ~ चढि धाऊँ १/१६६ ।
गर्व गर्व, घमड छुद्र मति ब्रज लोग ~ कीन्हौ ८५३ । △ ~ **प्रहार्‌यौ** गर्व चूर कर दिया प्रकट इद्र को ~ — १/१४ । ~ **गहीली** घमडी हो गई राधा हरि कै ~ — १७७२ । ~ **बढायौ** गर्व किया . तव सनकादिक ~ — ११/४ ।
गर्व-खुमारी गर्व का मद : उतरि गई तव ~ ९४७ ।
गर्वगत गर्वोन्मत्त, गर्व से युक्त : भूभृत सीस नमित जो ~ ९/२६ ।
गर्व-प्रहारन गर्व-मर्दन ~ उनकौ नाऊँ २०८४ ।
गर्व प्रहारी गर्व का नाश करने वाले, गर्वनाशक ऐसेहैं प्रभु ~ ९५१ ।
गर्बवत गर्व या ऐंठ के साथ : ~ सुरपति चढि आयौ ९५१ ।
गर्वहि गर्व को . स्याम-धाम मैं ~ राखति २०७७ । ~ **गर्व** गर्व ही गर्व मे . ~ — गरै १/३५ ।
गर्वि गर्वित होकर • मनहुँ ~ सुरसरि बहि आई १२१६ ।
गर्वित १ क्रोधित सूरदास सुरपति ~ भयौ ८३४ । २ गर्व-युक्त : मन ~ कुमारि रास रग वढयौ ११८२ ।
गर्भ गर्भ मे ~ परीच्छित रच्छा कीन्ही १/११० । ~ **उवार्‌यौ** गर्भ को बचाया : ब्रह्म बाण तें ~ — १/१६ ।
गर्‌यौ गल गया तेहीं गरति ~ १९१३ ।
गर्व पुं० गर्व, घमड : मोसौं ~ कियौ लघु प्रानी ८५१ । वि० गर्वीली हम सब ~ गँवारि जानि जड ३९१५ । ~ **बढायौ** गर्व किया तव नागरि जिय ~ — ११०० ।
गर्व-गंजन गर्व-मर्दन : ~ नाम है विधाता १९७१ ।
गर्व-गहेली गर्व से भरी धरनीधर व्याकुल खरे री ~ २६९८ ।
गर्व-प्रहारी गर्व का नाश करने वाला, गर्वनाशक • सरन राखि लै ~ ३९१ ।
गर्व-बचन गर्वोक्ति ~ सुनि हृदय जरौ १५२० ।
गर्व-हर घमड दूर करने वाले हैं : सूरदास प्रभु कान्ह ~ ९३९ ।
गर्वहि घमड (गर्व) को जव ~ कीन्हौ २०७४ ।
गर्वित गर्व करता है, प्रसन्न होता हैं : हस्ती देखि बहुत मन ~ ता मूरख की मति है थोरी १/३०३ ।
गल[1] गलाकर मास खाई, ~ हाड ३६४० ।
गल[2] गले से वेगि मोचन करहु सुरभी ~ फद १२१० । △ ~ **गाजि** १ क्रोध से गरज कर : खभ फारि, ~ — मत्त बल ७/४ । २ हर्षित होकर, चिल्लाकर : धाई सब ~ — कै ४०९५ । ~ **गाजै** जोर से गरजते ह ध्वजा बैठि हनुमत ~ — १/२७५ ।
गलनि गलियों मे : ~ त्रिरकावन रे २८ ।
गलबल कुहराम, शोरगुल : ब्रज मैं भयौ ~ ८५७ ।
गलारत गले तक फैली • ग्रीवा वाहु ~ राजत ४२०० ।
गलि लज्जित हो रहे है, गले जा रहे है विद्यमान कल हस जात ~ २७४६ ।
गलित[1] १ क्लात, शिथिल सुधि न रही अति ~ गात भयौ ३१३५ । २ झड गिरे . अरुन नैन मुख नरद निसाकर कुसुम ~ कवरी २६५७ ।
गलित[2] रहित : आनन अमी ~ जैसैं मेत ३०२२ ।
गलिन गलियों मे : कोउ धाई पुर ~ है ३०२५ ।
गलिनि १ गलियों के : जहाँ तहाँ ~ बीच २८९१ । २ गलियो

मे : (हरि) सो रम गोकुल ~ वहावै ३।

गवइँ गाव मे : अव हरि क्यौं वसैं, गोकुल ~ ३९१५।

गवच्छ गवाक्ष, एक वन्दर का नाम जो रामचद्र की सेना का सेनापति था नल-नील-द्विविद-केसरी ~ ९/१६६।

गवन¹ १ गमन, प्रस्थान • नैन मूँदि रहैं करत न ~ २८०३। २ गति • पवन के ~ तैं अधिक १/५। ३ जाने के लिए कुंज वन ~ दपति विचारै २१५४।

गवन² वधू का पहिली वार पति के घर जाना जैसै ~ नई २३७५।

गवनी चली . गृह गृह तैं गोपी ~ जव ३२।

गवने गये, गमन किया : ग्वाल वाल सँग करत कुतूहल ~ पुरी मझार ३०३५।

गवरी गाये जा रहा है मुरली सुर ~ ३०२६।

गवहि मतलब, प्रयोजन या घात से : जैसैं वधिक ~ तैं खेलत ३९९८।

गवाँइ खोकर : चली कहा ~ १४०७।

गवाँए खो दिये. खो वैठे : सूरदास तिहिं वनिज कौन गुन, मूलहू माँझ ~ ३७९१।

गवाँवत नष्ट करते हो : सवके प्रान ~ ३७११।

गवाइ गवाकर, गाकर . सखियनि मगल ~ वहु विधि वाजे वजाइ ४१।

गवाई गँवा दी, नष्ट कर दी • उनकैं हित कुल लाज ~ ४२००।

गवाए खो दिया, धुल गया • सवै कलक ~ ६६१।

गवाच्छ खिडकी का 'सूर' स्याम निरखत ~ मग २२००।

गवाच्छ-पंथ खिडकी के रास्ते • देखौ स्याम ~ है २७०।

गवाय गवाकर : गावत हँसत ~ हँसावत ८०९।

गवाये गाया जाने लगा : भयो अनद द्वारका मैं सव घर घर गीत ~ सारा० ६२१।

गवायौ गवाया : मगलगीत ~ सारा० ४२६।

गहकानै ग्राहक वन जाता है . फिरि प्राननि ~ ३९८०।

गहगहात १ उमग से भरा हुआ, प्रफुल्लित होकर वायस ~ सुनि सुदर वानी विमल पूर्व दिसि वोली ४२७६। २ खूव घिरता हुआ, वडी धूमधाम और नोरशोर के साथ : ~ किलकिलात अधकार आयौ ९/१३९।

गहगहे जोरशोर से वाजन वाजैं ~ ४०।

गहगहौ प्रफुल्लित • अचल उडि मन होत ~ ४२७७।

गहत १ ग्रहण करता है मरजादा न ~ है ३७८९। २ लगा रहे हैं पाप कौं हैं ~ १७३५। ३ पकडता था ~ सोइ जु समात अँकौरी ३९७१। ४ पकडता है ~ पानि विपान ४०३५। ५. पकडते • सूरदास प्रभु तुम्हरे ~ ही १४३। ६ पकडते ही : वाँह ~ कीन्हौ धनि मान २४९६। ७ पकडा रिपु कच ~ द्रुपद तनया जव १/२७। ८ थामी/ पकडी जाती है कैसे ~ दोहनी घुटुवनि ४०१। ९. रखता है, रक्षा करता है प्रथम लाज ~ १/७७। १०. लग रहा था • ध्यान न तनक ~ ६२०।

गहति ग्रहण करती है . तृन ठ्तहू नहि ~ ६२३।

गहति १ धारण किये रही धीर काहैं न ~ १६४७। २. पकडने लगी ~ दीन ह्वै पाइ ९/८३। ३ पकड लेती है : कर पल्लव ~ जु मैया १३१। ४ करती है • तू रिस कहा ~ री १७४९। कंठ ~ गले से लगकर — ~ कहति कत भूलन की साधा २८२९।

गहन¹ पकडने भुजा ~ पिय लागे २४१५।

गहन² टेक। ~ गही टेक पकडी . एकै ~ — उन हठ करि ४१३८।

गहनि¹ जिद्द, हठ। ~ गहौ हठ पकडो, जिद्द करो . प्रीतम जनि यह ~ — २९१८।

गहनि² १. ग्रस लेता है राहु ~ लौं मोहि गहत ३३५४। २ पकडना : दौरि ~ मुख-मृदु मुसुकावनि २२७२। ३. पकडी, पहुँची जाइ ~ व्रज की खोरी २८७२।

गहने गहने, आभूषण : याहीं ~ हरत याहीं मे लै धरत ओट कोटि वाम की १५१६।

गहनौ गहना, आभूषण ~ अगढ गढायौ परि० १/८।

गहवर गहन, घना • ~ वन दुख-सिन्धु अथाहु ९/३४।

गहर देर, विलव : जमुना-तट अति ~ लगाई १४५१।

गहरानी ऐंठ गइ, नाराज हुई मनहीं मन ~ २४१४।

गहरि ऐंठ जाति हम सौं ~ १४२१।

गहरु देर, विलम्व अव मारौ नहिं ~ लगाऊँ २९२२।

गहवर घने, दुर्गम . ~ वन दुख-सिंधु अथाहु ९/३४।

गहहु सम्हालो आवहु तात ~ गोवरधन ८७५।

गहाइ पकडाकर कहौं तौ ताकौं तृन ~ कै ९/१०८।

गहाऊँ ग्रहण करवाऊँ, उठवाऊँ जो तुम्हरे कर शर न ~ सारा० ७८०।

गहायौ १. पकडाई देना, पकडाना जिनि कोऊ होइ ~ २९१६। २ पकडाया व्यापक अगह ~ ३५१२।

गहावत १ धारण कराते हो तुम निरगुनहिं ~ ३८८८। २. पकडा देते हैं अरवराइ कर पानि ~ ११५।

गहावति पकडाती है • मोसौं वाह ~ २६९४।

गहावन पकडाने . मोसौं वाँह ~ आई २८२८।

गहि १ पकड, अपना . चतुराई नीकैं ~ राखी १७४०। २ ग्रहण कर, धारण कर . यह कहि वहुरि मान ~ वैठी २८१८। ३ पकडकर . जव ~ राज सभा मैं आनी १/२५०। ४ पकडी अगह ~ नहि जाइ १/५६। ५ लगाकर, जोडकर ~ हरिपद सौं अनुराग ३/१३। ~ आने पकडकर मँगवा लिया जुवति जूथ ~ — १०७०। ~ कठ रही तिय नवेली गले से जा लिपटी सूर स्याम ~ — ११००। ~ डारे १.

धारण करके छोड दिये : प्रेम भजन ~ — ३८७५ । २ ग्रहण कर लिया : जोग जुगुति ~ — ३८३३ । ~ **डार्यौ** खींच गिराया . अचल ~ — २७२८ । ~ **रही** लिपट रही कठ भुजा ~ — यह कहि ११०२ । ~ **राखे** लगा रखा है : कवरी केस सुमन ~ — ३६५६ । ~ **लई** मान लिया है • जिन ~ — क्रूर के सिखए ३७७१ ।

गहिए पकड लीजिए : अब मारग निज ~ ३९०० ।

गहिबौ पकडना अब तो है मारुन को ~ ३६०९ । △ **चित** ~ ध्यान मे लाना, विचार मे रखना • घोष वसत की चूक हमारी कछू न — ~ ४०५८ ।

गहियत १ पकडना है : बूडत ज्यौं तृन ~ ३९११ । २ पकड लेती है . धाइ पीत पट ~ ३२३१ ।

गहियै १ ग्रहण करे : कहौ कहा ~ अनुभव कौं ३९९० । २ ग्रहण कीजिए, पकडिए • आपुहीं चलि वाह ~ २५७६ । ३ धारण कर लिया, अपना लिया • नाते मौन ~ १७३४ । ४. पकडा जाय निर्गुन क्यौं करि ~ ३५०१ ।

गहियौ अपनाया : व है राह मन ~ ३८३ ।

गहिरी गहरी : गुरुजन ~ धार १६४० ।

गहिरे गहरे ~ नीर अन्हाऊँ ४१७५ ।

गहिरैं गहरे मे : हौं हूँ बूडि चल्यो वा ~ ४०९७ ।

गहिरौ गहरा, गम्भीर आगैं जाउँ जमुन-जल ~ ४ ।

गहिहैं पकडेगे : कन वे अचल उर कर ~ ३६६० ।

गही १ अपना ली बरबन ही इन ~ चपलता २३०८ । २ ग्रहण की : मरजादा न ~ २३५१ । ३ पकडकर . रहति न अक ~ ४१४२ । ४ पकडी, पकड ली दुस्मासन जब ~ द्रौपदी १/३२ । ५ समझ लिया है : ना जानौं तुम कहा ~ री १९५८ । △ ~ **मूढता** मूखता ग्रहण की है, मूर्खता करते हे बरवस ही इन ~ — २३०८ । **रस** ~ क्रोधित हुए • अति — ~ भुवाल ९/१०४ ।

गहीली (गर्व) भरी, करने वाली, अभिमानिनी : हमतें चूक कहा परी, तिय गर्व - ~ २१४५ ।

गहूँ पकडूँ सरन ~ मैं का की १/१८३ ।

गहें ग्रहण करें अब निरगुनहिं ~ जुवती जन ३५९४ ।

गहे १ ग्रहण किये हुए, धारण किये हुए, उठाकर चक्र ~ कर धाए ८/६ । २ पकडकर : केस ~ पुहुमी विसटायौ ३०९५ । ३ पकडती है • पुनि पुनि चरन ~ २१४६ । ४ पकडने वाह ~ की लाज १/२१९ । ५ पकडे दृढ करि चरन ~ रे १/१७० । ६ पकड से • छूट्यौ नही ग्राह के ~ ८/२ । ७ ग्रस लिया हो मानहुँ रवि ससि राहु ~ री ३००६ । ८ ग्रस्त, युक्त . यह भव जल कलमलहि ~ ई १/२०९ । ~ **लावत है** पकडकर ला रहे हैं : कमलहिं कमल ~ — ११९५ । △ ~ **रिस** क्रोध किये हुए निदरे रहत ~ — मोसौ २२४६ । **मौन** ~ मौन रहकर, चुप्पी साधकर तिहिं मुख — ~ क्यों जीजै ३८१५ ।

गहेली भरी हुई है ग्वालिनि जोबन-गर्व- ~ २९०१ ।

गहैं १ ग्रसता है . चद ~ जनु राह ३२७९ । २ पकडकर . जीवत अवधि ~ ३७८७ । ३ पकडी : ~ दुष्ट द्रुपदी कौ मारेंग १/३३ । ४ पकडे रहते हैं लीन मुरली ~ मुर-अरि १२२५ । ५ करते रिस न ~ पल आध ९/११५ ।

गहै १ ग्रहण करते थे . और कछू विचा नहिं ~ ५/३ । २ पकडता प्रभु गुन विचारि नहि चरन ~ १/५३ । पकडे ४ मेरे हुतें चरन ~ ३८४९ ।

गहौं १ पकडता हू, ग्रहण करता हू . तुमरे चरन ~ १/१६१ । २ ग्रहण करूँगा, होगा . हरष न सोक ~ १६८६ । पकडूँ केस ~ अरि कस पछारौं १६१९ /

गहौंगौ पकडूँगा : बाहर क्यौंकि ~ १९४ ।

गहौ ग्रहण करो, पकडो ~ बिरद की लाज १/१०२ । ~ **कर** हाथ पकडो, सहारा दो . मन ही मन मे कहत ~ — ४२२९ । △ **कठ** ~ आलिंगन करो : कलित कमलकर — ~ (हो) ९/३३ । **जोग** ~ योग साधना करो : दृढ करि — ~ ३८२९ । **पंथ** ~ रास्ता पकडो, जाओ : रहौ आजु पुनि — ~ (हो) ९/३३ । **मौन** ~ चुप रहो, मौन ग्रहण करो पालागौ मुख — ~ अव ३९४० । **विचार** ~ विचार करो ऊधौ यहै — ~ ३८२४ ।

गहौगे पकडोगे पुनि पुनि चरन ~ ३४४० ।

गह्यौ १ थामा, धारण किया, उठा लिया . ~ गिरि पानि १/५ । २ ग्रस लिया हो : गात ~ ज्यौं केत ९/३९ । ३ ग्रहण कर लिया, रख लिया . सुख आनन्द काँवे पर ~ ५/८ । ४ धारण कर लिया है . करि बहु प्रेम ~ अविवेकहिं ३५५४ । ५ पकडना . मेरे जान ~ चाहत हौ ३७०६ । ६ पकड लिया, पकडा : अंचल चचल स्याम ~ १०३८ । ७ पा लिया है : ~ सब सुकृतनि कौ फल १/२०४ । ८ पकडे रहता है • नलिनी सुवा ~ २३१४ । △ **प्रन** ~ प्रण किया है . मै काली सौं यह — ~ ५/३ । **बिस्वास** ~ विश्वास किया है . मन — ~ ३७२९ । **मान** ~ मान करती है अब क्यौं — ~ २८०७ ।

गह्वर घने जगल, घने वन . सूर गमन ~ कौ कीन्हौ ९/३९ ।

गाँउ गाँव, ग्राम • अपनौ ~ लेउ नँदरानी ३२२ ।

गाँउ-बास ग्राम वास यहै बडौ दुख ~ कौ १५०६ ।

गांगेय गगा के गर्भ से उत्पन्न शान्तनु के पुत्र, भीष्म • इत पारथ ~ बली मारा० ७८१ ।

गाँठि १ गाँठ : ~ दुहुँनि की जोरि २८६६ । २ गाँठ से (पास

से) मूल ~ नहिं टरतौ १/२९७ । ३ गाँठ (वास की) : मन कठोर तन ~ प्रगट ही ६६१ । ~ जुराई गाँठ जोडी : हँसि हँसि ~ — हो २८७९ । ~ दै गाँठ देकर, सुरक्षित करके : वचन बाँह लै चलौ ~ — १/१४६ । △ कहा ~ कौ लागत पास का क्या खर्च होता है . इतनौ — ~ — २५७० । ~ कौ अपने पास की सूरज सुगथ गँवाइ ~ — रही बौरई मानि १९९९ । ~ परी गाँठ पड गई, और जकड गई . जल रजु मिलि ~ — १६६० ।

गाँठि कटा जेब काटने वाला, गिरहकट • चोर, उचक्का, ~ लठवाँसी १/१८६ ।

गाँठी गाँठ मेरौ जिव ~ बँध्यौ १४४३ । △ ~ दै राखति छिपाकर या बंद करके रखती है . दधि माखन ~ — ३२४ ।

गांडिवधनु गाडीव धनुष : मैं अर्जुन ~ जाकौ सारा० ८५० ।

गांडे गन्ने हाथिनि कैं सँग ~ ३६०४ ।

गांधारी धृतराष्ट्र की पत्नी या दुर्योधन की माता का नाम, जो गाधार देश के राजा सुबल की पुत्री थी : ~ दुर्योधन आदिक भीष्म कर्ण सब भेंटे सारा० ५९२ ।

गाँरुड गरुड सम्बन्धी, सर्प का विष नष्ट करने वाला मत्र सूर सुदेस होत नहिं ~ ३५९२ ।

गाँवन गाँव आदि : बहुत रतन देउँ ~ ८/१३ ।

गाँवरौ गाँव मे . कहत रहत ब्रज ~ २८८५ ।

गाँस[१] १ गाँठ (बनावट) • चतुराई कौ ~ १५५२ । २ गाँस (चाल) तरुनि पढावति ~ ६९४ । ३ भेद : इनके ~ कहा री जानौ १६१९ । ४ भेदभाव मल्ल करत ~ नास ३०६४ । △ ~ करि राखी छिपा रखी है • तुम वह बात ~ — १७४८ । ~ दियौ डारि सारा भेद/सदेह मिटा दिया ~ — १७१९ ।

गाँस[२] आपत्तियों से अजहुँ नाहि डरात मोहन बचे कितने ~ ४२७ ।

गाँस[३] बैर, द्वेष : ~ धरे हरि ऊपर आयौ ३०७० ।

गाँसा गाँठ, रहस्य . सूर स्याम जानत ये ~ ९३४ ।

गाँसी[१] तीर का फल • जा उर लागै ~ ३७०७ ।

गाँसी[२] कपट जो रे करैगौ ~ ३६३१ ।

गाइ[१] १ गा : एक उठति कछु ~ २८३५ । २ गाकर सूर तरौ हरि के गुन ~ ७/१ । ३ गाती हैं वारक बहुरौ ~ ३६१७ । ४. गाते हैं . निगम सदा गुन ~ सारा० ९५१ । ५ गान करने के लिए . आई मगलनि ~ कै ३०९२ । ६ गाया है रे अलि जनम करम गुन ~ ३८६४ । ७ गुण-गान कर . नीकै ~ गुपालहिं मन रे १/६६ । ~ उठीं गाने लगीं : ~ — सुर-नारि बधाई ९५० । ~ गए गा चुके (हैं) • भक्त बछल नाम निगम ~ — हैं १/२३ ।

गाइ[२] १ गाय : गोप ~ गोसुत जल त्रासन १/१५८, ~ गोप गोपीजन १/१२१ । २ गाय को इक खिलावत ~ २६ । ३ गायें : बरषै मेघ ~ सुख पैहैं ८२४ ।

गाइ[३] गाँव । ~ गाउँ गाव गाँव • ~ — के बत्मला मेरे आदि सहाई १/२३८ ।

गाइनि १ गायों ~ की अवमेरि मिटावहु ४१२३ । २ गायों की . ~ टहल करैं ४५३ । ३ गायों को राति रहे कहुँ ~ घेरत २६३२ ।

गाइयतु गाते हैं • तिहिं सुदरि मधि जोग ~ ३७१३ ।

गाइयै १ गाता है : सुजस सब जग ~ ४१८७ । २ गान कीजिए : ब्रजराज लडैतौ ~ २९०० ।

गाइयौ १ गाओ • सब सखिनि मंगल ~ परि० १/४१ । २ गाया . हरषि मगल ~ ४१८६ ।

गाई १ गाया . स्रवन मूँदि गुन कर्म तुम्हारे प्रेम मगन मन ~ ४०९९ । २ गुण गान कर रही थीं : राजरवनि ~ व्याकुल है १/११२ ।

गाई[१] १ गाकर : कहँ लगि बरनैं लीला ~ ४०५० । २ गान किया, गायी : कवि मिलि कीरति ~ सारा० ६९८ । ३ गायें कह लीला मुख ~ ३९३९ । ४ गुणगान कर लेता हूँ : जब तब कीरति ~ १/९३ । गति नहि ~ गति का अथवा लीला का वर्णन नहीं किया जा सकता है : तिनकी — ~ ३८५३ ।

गाई[२] १ गाय बाल गोप बिहाल ~ सा० ल० शेष २ । २. गायें : ते ~ अब ग्वाल न घेरत ४०९९ ।

गाउँ[१] १ गाँव कौन ~ तैं आई २१६९ । २. गाँव मे • की इहिं ~ बसत १७२१ । ३ जमीन, जायदाद : घाऊँ तोहिं राज-धन ~ ४/० ।

गाउँ[२] गाऊँ . रस करि नाचौं ~ बजाउँ २१०६ ।

गाउ गा रहे हैं • हरषि हरषित ~ २०८५ ।

गाऊँ १ गान करता हूँ : लीला नित ~ ९/८५ । २ गान करूँ : अनुपम लीला ~ २१४० । ३ गाया करूँ चिंता रहित सकल दिन ~ परि० १/७० । ४. गुणगान करता हूँ या कर रहा हूँ . स्याम बलराम कौं सदा ~ १/१६७, द्वार पर्‌यौ ~ १/१६६ ।

गाऊ गाते हैं : निगम नेति नित ~ २२१ ।

गाए १ उच्चरित की, कही जय धुनि सब्द देव नभ ~ ९१७, यह बानी सुर लोकनि ~ ३०९५ । २ गाकर जा ~ निर्भय पद पाए अपराधी अनगन रे १/६६ । ३ गान किया • सूर सुजस जग ~ ३०८७ ।

गाएं १ (गुण) गाने से • जो सुख होत गुपालहिं ~ २/६ । २ गायें : ऊधौ किहि विधि नाचैं ~ ४०४० ।

गागरि गगरी, घडा ज्यौं जल माहँ तेल की ~ ३९५८ ।

गाज गर्जन, गर्जना सुनि असुरनि जिय ~ ४१८८ ।
गाजत १ गरजना है रावन तव लौं ही रन ~ ९/१३० । २ प्रसन्नता मे बोलती है ग्रीवा बाहु गलारत ~ ४२०२ । ३ (प्रसन्न होकर) हुँकारते या गरजते हुए तिहिं जल ~ महावीर सव ९/१२३ ।
गाजति गरजती है सवहिनि कें मिर ~ परि० २/१९ । ~ बाजति गरजती हुई बज रही है ~ — चढी दुहू कर ६५४ ।
गाजन गर्जन, हुंकार, ध्वनि : अरु मोरनि कियो ~ ६२२.
गाजि गर्जना कर के खभ फारि, गल ~ मत्त बल ७/४ ।
गाजी हर्षित हुई । △ **सिर सकल सुहागिनि** ~ सब सुहागिनों को चुनौती देकर किलकारी भरी जग के प्रभु बस किये सूर, — ~ ३६४८ ।
गाजु गरजा करो, चिल्लाया करो तू घर बैठो ~ ८०८ ।
गाजैं गरज रहे हैं : अर्जुन रन मे ~ १/३६ ।
गाजै १ गरज रही है · अधर मिर छत्र धरे वह ~ १३०८ । २ चिंघाड रहा हो : उनमत गज ~ ९/९६ । ३ चुनौती देता है : तीन लोक पर ~ ३०९६ ।
गाडि १ गाडकर : सूर जोग-धन राख मधुपुरी कुबिजा के घर ~ ३५१८ । २ गाड . ~ धूरि तिहिं देत २/१५ ।
गाडिऐ गाडे ये पांडव क्यों ~ १/२३८ ।
गाडी जबरदस्ती रोक कर रखी गई : फेरि-फेरि ब्रज ~ ३१६९ ।
गाडू मंत्र, टोना : सिर पर ~ डारि ७५९ ।
गाडे **पुं०** गड्ढे मे : क्यों न प रै ~ १/१२४ । **क्रि० स०** सँजो लिया है दु ख-समूह उर ~ ९/१५४ ।
गाढ[1] दृढ : गहि-नाहि आसन ~ ३६४२ ।
गाढ[2] आपत्ति, सकट : जहँ तहँ ~ परै तहँ आवे ९५१ ।
गाढी **स्त्री०** घोर (विपत्ति) तब त अब ~ परी ५८९ । **वि०** १ गहन, गाढी · पीक पलक अधर झलक वाम प्रीति ~ २५०१ । २ गहरी, बहुत बढी हुई मोहनि मुख अतिही छवि ~ ७३६ । ३ मजबूत पौरि ~ करौ द्वार बीरनि कहे ३०७६ ।
गाढे **वि०** १ कठिन, विकट सूर उपँग सुत बोलत नाहीं अति हिरदै है ~ ३४७९ । २ भरपूर हुते जो बहु गुन ~ २८२६ । **क्रि० वि०** दृढतापूर्वक, कसकर · द्वार कपाट दियौ ~ करि २५२६ । △ ~ दिन के मीत विपत्ति में साथ देने वाले · गोविंद ~ — १/३१ ।
गाढ १ मुश्किल के दिनों मे आवत ~ काम हरि २/२९ । २ जोर से ~ बोलि न पावत कोऊ ५१५ । ३ कसकर हार सहित अँचरा गहि ~ १६७० । ~ **धरी** दृढतापूर्वक या कसकर पकड लिया भुज भुज जोरि ~ — ११६७ ।
गाढै कसकर जब रजु सौं कर ~ बाँधे ३७५ ।
गाढो गहरा, खूब बढा हुआ जुरो युद्ध अति ~ सारा० ७८१ ।
गाढौ **पुं०** कठिन कार्य आनि पर्‌यौ है ~ १/१७९ । **वि०** कठोर, दृढ़ मान ~ तिन कीन्हौ २७६१ ।
गात[1] १ शरीर सुभग सांवरे ~ की ४५१ । २ शरीर के कोटि ब्रह्माण्ड रोम प्रति ~ ८४५ ।
गात[2] गान करते सूर स्याम गुन ~ २/२४ ।
गातनि १ शरीर के चचल चित साँवरे ~ ३७६० । २ शरीर मे . अदर लपटे ~ परि० १/११३ ।
गात-रति शरीर मे प्रेम (करना) मधुर मूर्ति रघुनाथ ~ ९/८२ ।
गाता १ शरीर, अग गगन मेघ घहरात थहरात ~ ८७० । २ शरीर मे निलज भए रहति नहि लाज ~ १९७१ । ३ शरीर मे . अति दुखित भए सब ~ ९८४ ।
गाती[1] शरीर . बसन कुचील छीन अति ~ ४२४० ।
गाती[2] पीठ पर ओढे हुए कपड़े की गाँठ पाटबर ~ सब हिये २८९२ ।
गातैं १ शरीर से बिलख बदन कृस ~ ४१२० । २ शरीर पर . सहित विरह दुख ~ ३३५६ ।
गात्र शरीर पोष्यौ अपनौ ~ १/२१६ ।
गाथ[1] १ गाथा : कहति सुनाइ प्रीति की ~ ३२०३ । २ गाथा, घटना डारे मुलै सबै जे ~ ९८६ । ३ बात सिय सौं पूछी ~ ९/४४ । ४ यश, प्रशसा · देखौं धौं गावत ~ परि० २/४१ ।
गाथ[2] सुर, जोडी सूर स्याम नागर, उत नागरि राधा, दोउ मिलि ~ ६७४ ।
गाथा (वही) गाथा/बात उठे प्रात ~ मुख भाषत ११७० ।
गाधि लपककर गोसुत भयौ सु ~ गह्यौ वर ६७५ ।
गानत गाते रहते है : वेद गुन गनि ~ २३१३ ।
गानति १ गाती . गुन गुनि गुनि ~ हौं २८१८ । २ गाती हैं . बार बार गुन ~ २२९१ । ३ प्रशसा करती है . भइ सयानी ~ २८०२ ।
गानन गाने . तुम्हरे गुन ~ को ३८७८ ।
गानि[1] १ गान (वर्णन) किया है नेति निगमहु ~ २८६२ । २ बखान करके, प्रशसा करके · सूर क्यों कहै ~ ।
गानि[2] गई सब बात पाछिलि वै सब ~ परि० १/१३९ ।
गानी १ गायी : कस अस्तुत मुख ~ ५८९ । २ गायी जाने लगी अस्तुति मुख-मुख ~ १३२८ ।
गानै गाती, कह सुनाती · क्यों न रैनि जस ~ (हो) २६५२ ।
गानैं कहते थे, पूछते ये · बार बार स्याम अङ्गहिं ~ ३०१८ ।
गानै १ गाती है सदा स्याम हा के गुन ~ १९२० । २ गाते है · चतुरानन जाको जस ~ ९५१ ।
गान्यो गाया तब रसना कहि ~ ११७३ ।

गामिनि चलने वाली : मद ~ नारी १०५७।

गामी चलने वाले (हैं) : जे हैं गरुड के ~ ३६२९।

गायन गैयों : ~ घर घर घेर चरावत लोभ नचावत हारे।

गायो=गायौ दे०। बताया था नारायण प्रकटे सबजाने जोइ गर्ग मुनि ~ सारा० ४७८।

गायौ[1] १ गान किया, गाया : सिव नारद सारद यह ~ ११७९। २. गुणगान किया : ~ गीध अजामिल गनिका १/६६।

गायौ[2] गाय का ही : ~ घृत भरि धरी कटोरी ३९६।

गारि[1] १ घिसकर, चोवा बनाकर · कुंकुम चदन ~, ग्वालि मदमाती हो २८६२। २ नष्टकर, गलाकर : ससि गन ~ रच्यौ विधि आनन १५८। △ **तनु** ~ शरीर को कष्ट देकर या गलाकर : नीकैं तप कियौ — ~ ७८३।

गारि[2] १ गाली (अपशब्द) : सकुच न देत ~ झगरत हूँ २९५। २ गाली (विवाह आदि मे गाये जाने वाले लोक गीत सजन प्रीतम नाम लै लै देत परस्पर ~ २६। ३ निंदा, गालियाँ . सिर पर सही जगत की ~ २३८८।

गारिनि गालियाँ . कबहुं उठति दै ~ १४७३।

गारियाँ विवाह आदि उत्सवो मे गायी जाने वाली गालियाँ देति आनँद ~ १०७२।

गारी[1] १ गाली (गदगी) मेटहु अब कुल ~ १/४४। २ गाली, अपशब्द तबतैं हमै देत हौ ~ १५३६। २. गाली (एक गीत जो उत्सवों मे स्त्रियाँ गाती हैं) . देत महरि कौं ~ ४। △ **आवैं कुल** ~ कुल मे कलक लगता है या कुल की निंदा फैलती है बरजत-मात पिता पति बांधव अरु — ~ २३७४।

गारी[2] जलाया, गलाया। △ **तन** ~ शरीर को गला दिया क्यौं विरहिन — ~ ३६४०। **तनु** ~ शरीर गलाकर : षटरितु तप कीन्हौ — ~ १४६०।

गारी[3] ठीक बना दिया कूबरी ~ १/१७६।

गारुडि, गारुडी गारुडी, सर्प का विष उतारने वाला, सँपेरा सूर ~ गुनि करि थाके ७४।

गारे गालियां दे कौन याहि अब ~ ३८७५।

गारें[1] गलाये · कब लगि यह मन दुख मैं ~ ४०६१।

गारें[2] छोड़तीं अपने छिद्र न जानत ~ १२२९।

गारै गलाता या घुलाता है। △ **तन** ~ शरीर गलाता या क्षीण करता है · नैनन तैं विछुरे जु भ्रमत हैं सीस अजहू तन ~ ३७७८।

गारौं गला दूँ : (नीरखार मैं ~ ९/२०७।

गारौ[1] १. गर्व, अभियान : जाकौ है मोहूँ कौ ~ ३७३, अब न करौ जिय ~ १/१३१। २. गुरुता को : छाँडि गर्व या गुन की ~ ४२०३। ३ प्रतिष्ठा · ताकौ ब्रज नाहिन ~ १८३। ४ दम, हिम्मत : हम मैं कहा रह्यौ अब ~ ९४२।

गारौ[2] कीचड, गारा रह्यौ रुधिर कौ ~ ९/१५९।

गारौ[3] १. गलाओ : जप तप करि तनु अब जनि ~ ७९७। २ गला दिया : षट रितु सीत तपनि तन ~ १३३८।

गार्यौ गला दिया, नष्ट कर दिया आछौ गात अकारथ ~ १/१०१।

गाल गाल, कपोल। △ ~ **बजैहै** बढ बढ कर बातें बनाती है, डींग मारती है . देखहु जाइ चरित तुम वाके जैसैं ~ — १७२४। **करि करि** ~ बहुत बढ बढ कर बातें करके, खूब डींग हाँक कर वह मघवा बलि लेत है नित — ~ ८२३।

गाल मसूरी मीठी खस्ता गुझिया गोझा गूझे ~ १२१३।

गाव १. गाते हैं, गायन किया है अघट उपमा ~ सा० ल० १।

गावत १ गाता · सूरदास द्वारें ~ है २१६। २. गाता है : सतजुग सुनत प्रगट गुन ~ ३८५५। ३ गाती हैं : ~ नारि गारि सब दै दै ९/२५। ४ गाती है . नाचत ~ गुन की खानि ११८०। ६. गाते उनही के गुन ~ हैं २२५४। ७ गाते हुए ~ गुन गोपाल, फिरत कुजनि मैं फूल्यौ ४०९५। ८. गाते हो . तुम सँगीत ~ जेइ जेई २१४०। ९ गाते हैं मुरली लै कर ~ ३८०५। १०. गाने से · कमल नैन की लीला ~ २/२। ११ गुणगान करते हैं : सेस सहस मुख ~ १'१९८। ~ **गंस** मन को चोट करने वाले गीत गाती हुई · हँसत परस्पर ~ — ११८०।

गावति १. गाती हुई . चली ~ कृष्ण के गुन १४९९। २ गाती हैं : जहँ तहँ ~ नारि ३०९३।

गावत्ति १ गाती हुई · वेगि चलौ मिलि ~ ७३। २. गाती (रहती) है भई उदासिनि ~ १२९९।

गावते गाते थे अति ऊँचे सुर ~ ३२०१।

गावतौ गाता, प्रशसा करता, · कहा निगम कहि ~ १६१८।

गावन स्त्री० गान : करि करि दीन दुखित जन ~ ९/१३१। क्रि० स० १ गान कर रहे है क्रीडा मगल ~ ३६६१। २ गान कर रही थीं . अमर नगर अप्सरा ~ २७८। ३. गाने लग्यौ उनहिं मिलि ~ ४१४९।

गावनि गाना सुभग ~, मृदु बजावनि वेनु २२९५।

गावनौ गाया, गाने लगा हरि जस लीला ~ २८३२।

गावहि गाती हैं . गोपी ~ मगलाचार २७।

गावहिं १ गाते हो, बखान करते हो : मधुप कहा ह्याँ निरगुन ~ ३४९८। २ गाते हैं, गुणगान करते हैं : जो ~ ताकी गति होइ २/५।

गावहीं गाती हैं : तारी दै-दै ~ १३४। २. गाते हैं गधर्व किन्नर ~ ४१८६।

गावही गाता है : तजै अभिमान जु ~ १६१८।

गावहु १. गाओ . आवहु री मिलि मगल ~ ४१८५। २ गाते

हो . तिन आगैं तुम काहे ~ ३८७१ ।

गावे १ गाई जायेगी ' कीरति लोकनि ~ ९/१५२ । २ गाते हैं : प्रेम भक्त मेरो जस ~ नारा० ८८९ ।

गावैं १. गाती है . ~ मखी परमपर मगल ९/१७ । २ गाते हैं, बखानते हैं . नारदादि गुन ~ ३०९७, तेरे गुन ~ स्याम कुंज भवन २८०३ ।

गावै १ गाता है . भँवर गीत जो दिन दिन ~ ४०४९ । २ गाती है : अधर सुधा मधुर-मधुर मुरली कल ~ १८८७ । ३ गाते हैं, गान करते है ' विरद वेद ~ १/११० । ४ गाते हो ' निरगुन क्यौं ~ ३७०० । ६ गाये . मधुकर अनरुचि कैसे ~ ३९६४ । ७ वर्णन/गान करते ह सुर सगुन पद ~ १/२ । ८ वर्णन करे : सूर कहा कहि ~ १/१०४ ।

गावैगो गायेगा . तू कृत मम जस जो ~ मारा० ११०४ ।

गावौं १ गाऊँ : ~ हरि कौ मोहिलौ ४० । २ वर्णन कर सकती हूँ . तौ सभावन ~ सा० ल० ६२ ।

गास ग्रसे हुए ह : सिंधु-सुत-वर सुदित सुत गुन गहक गोपी ~ ।

गाह गाथा : करी पाछिली ~ ३३६६ ।

गाहक १ ग्राहक : 'सूरदास' ~ नहिं कोऊ ३६६३ । २ चाहने वाले है : स्याम गरीबनि हू के ~ १/१९ ।

गाहत झाडता है, (अनाज जैसे) गाहता है : बहुरि पयारहिं ~ ३६०९ ।

गाहि थाह लेकर ' गयो अपबल ~ परि० १/४७ ।

गाहीं पाँच वस्तुओं का समूह, राई-रत्ती : सब जानत तुम ~ १५२९ ।

गाहैं झाडने से, गाहने से : ज्यौं पयार के ~ ३६१२ ।

गाह्यौ पकड लिया : ~ दृढ मान वृषभानु वारी २८५४ ।

गिडुरी गेडुरी, विडई . नीके देहु न मेरी ~ १४१६ ।

गिदौरी गिदौरी (गलाकर बडे पेडे के आकार मे बनाई हुई चीनी) गोंदपाक, तिनगरी, ~ ३९६ ।

गिधए लुब्ध हुए ह, रीझ गये ह : साँरग रिपु के रहत न रोके हरि स्वरूप ~ री २३७९ ।

गिधे रीझ गये हैं अब हरि कौन के रस ~ ३८३६ ।

गिनत १ गिनते, मानते, महत्त्व देते राव रक हरि ~ न कोइ ४३०५ । २ गिनते हुए उडुगन ~ जाम चारो निमि ३६१४ ।

गिनतहि गिनते ही निसि मव वीतति ~ उडुगन परि० १/१७६ ।

गिनती गणना । △ किहि ~ मैं आऊँ मैं किस गिनती मे आऊ, किस काम या महत्त्व का समझा जाऊँ कहो कृपा-मे ? : तुम हरता तुम करता प्रभु जू, मातु पिता — ~ १६८९ ।

गिनि गिनकर फिरि फिरि ~ आनै १/६० ।

गिनै कहे, गणना करे दध दह्यौ की को ~ १६१८ ।

गियानी ज्ञानी चल मति अलप ~ ३९४० ।

गिर पर्वत, गोवर्धन . ~ पूज्यौ तिनहीं विसराई ९२८ ।

गिरगिरार एक बाजा जो चिकारे की तरह का होता है : बजावं ~ मेरी २९१७ ।

गिरजा पति पतिनी पति जा सुत गुन पार्वती के पति (महादेव) की पत्नी (गंगा) के पति (समुद्र) से उत्पन्न (सीप) से उत्पन्न (मोती) का गुण (शीतल होना), मोती की शीतलता : ~ गुन गनन उतारं सा० ल० ५ ।

गिरजापति पितु पितु पार्वती के पति (शकर) के पिता (ब्रह्मा) के पिता, कमल ' ~ से दोऊ सा० ल० १०२ ।

गिरजा पति पितु पितु पितु पार्वती के पति (शकर) के पिता (ब्रह्मा) के पिता (कमल) का पिता समुद्र : ~ हू ते सा० ल० १५ ,

गिरजापति भख पार्वती के पति (महादेव) का भक्षण, विष ~ बीच कौन मौ सा० ल० ६२ ।

गिरजापति भूषन पार्वती के पति (शिव) का भूषण, चन्द्रमा ~ जिन देखे सा० ल० शेष ७ ।

गिरत १ गिर पडता है . ~ अक भरि लेत उठाई १९ । २ गिर पड रहा था . एक ~ इक लें जु उठावत ९०२ । ३ गिरते ' ~ ज्यौं बेग करि बज्र मारे ४१८३ । ४ गिरती हुई : कर तैं साँटि ~ नहिं जानी ७५५ । ५ गिर रहा हू जरत ज्वाला ~ गिरि त १/१०६ । ६ गिर रहे ह . ~ को न तन धारै सा० ल० ७३ । ७ झर रहे थे ~ कुसुम कबरी केसनि ते ११३६ ।

गिरति गिरती है : गिरि प्रजक तं ~ ३१९१ ।

गिरधर, गिरधारि, गिरवरधर गिरि को धारण करने वाले, श्रीकृष्ण सुनियें है ~ १०२८ ।

गिरह बाज कबूतर को पकड़ने वाला बाज . तमकि लीन्हों ~ जैसे ३०७९ ।

गिरा वाणी सहज ~ बोलत न बनत २५८४ ।

गिराइ स्त्री० गिरा . काहू दियौ ~ ५१७ । क्रि० स० गिरा दिया बदन चीरि फल माहि ~ ४३० ।

गिरा गति वाणी की गति भइ ~ पग ६४० ।

गिरात गिरते थे कुजर कुल ~ यथा रथ ४२६२ ।

गिरायो गिरा दिया, गिराया ' को जानै कित नाहि ~ ३९१ ।

गिरा रहित बोलने मे असमर्थ (गूँगा) ' ~ मूक प्रमित अजा लौं १/१०१ ।

गामिनि चलने वाली : मद ~ नारी १०५७ ।
गामी चलने वाले (हैं) : जे हैं गरुड के ~ ३६२९ ।
गायन गैयाँ : ~ घर घर घेर चरावत लोभ नचावत हारे ।
गायो=गायौ दे० । बताया था . नारायण प्रकटे सबजाने जोइ गर्भ मुनि ~ सारा० ४७८ ।
गायौ¹ १ गान किया, गाया : सिव नारद सारद यह ~ ११७९ । २ गुणगान किया · ~ गीध अजामिल गनिका १/६६ ।
गायौ² गाय का ही : ~ घृत भरि धरी कटोरी ३९६ ।
गारि¹ १ घिसकर, चोवा बनाकर · कुंकुम चदन ~, ग्वालि मदमाती हो २८६२ । २. नष्टकर, गलाकर : ससि गन ~ रच्यौ विधि आनन १५८ । △ **तनु** ~ शरीर को कष्ट देकर या गलाकर : नीकैं तप कियौ — ~ ७८३ ।
गारि² १. गाली (अपशब्द) : सकुच न देत ~ झगरत हूँ २९५ । २ गाली (विवाह आदि मे गाये जाने वाले लोक गीत सजन प्रीतम नाम लै लै देत परस्पर ~ २६ । ३ निंदा, गालियॉ . सिर पर सही जगत की ~ २३८८ ।
गारिनि गालियॉ . कबहुँ उठति दै ~ १४७३ ।
गारियॉ विवाह आदि उत्सवो मे गायी जाने वाली गालियॉ देति आनँद ~ १०७२ ।
गारी¹ १ गाली (गदगी) मेटहु अब कुल ~ १/४४ । २ गाली, अपशब्द : तबतैं हमै देत हौ ~ १५३६ । २. गाली (एक गीत जो उत्सवों मे स्त्रियॉ गाती हैं) देत महरि कौं ~ ४ । △ **आवै कुल** ~ कुल मे कलक लगता है या कुल की निंदा फैलती है बरजत मात पिता पति बांधव अरु — ~ २३७४ ।
गारी² जलाया, गलाया। △ **तन** ~ शरीर को गला दिया . क्यों विरहिन — ~ ३६४० । **तनु** ~ शरीर गलाकर · षटरितु तप कीन्हौ — ~ १४६० ।
गारी³ ठीक बना दिया कूबरी ~ १/१७६ ।
गारुडि, गारुडी गारुडी, सर्प का विष उतारने वाला, सँपेरा · सूर ~ गुनि करि थाके ७४ ।
गारे गालिया दे . कौन याहि अब ~ ३८७५ ।
गारैं¹ गलाये · कब लगि यह मन दुख मैं ~ ४०६१ ।
गारैं² छोडतीं अपने छिद्र न जानत ~ १२२९ ।
गारै गलाता या घुलाता है । △ **तन** ~ शरीर गलाता या चीण करता है : नैनन तैं बिछुरे जु भ्रमत हैं सीस अजहूँ तन ~ ३७७८ ।
गारौं गला दूँ : (पीर खार मैं ~ ९/१०७ ।
गारौ¹ १ गर्व, अभियान जाकौ है मोहूँ कौ ~ ३७३; अब न करौ जिय ~ १/१३१ । २. गुरुता को : छाँडि गर्व या गुन की ~ ४२०३ । ३. प्रतिष्ठा · ताकौ ब्रज नाहिंन ~ १८३ । ४ दम, हिम्मत · हम मैं कहा रह्यौ अब ~ ९४२ ।
गारौ² कीचड, गारा . रह्यौ रुधिर को ~ ९/१५९ ।
गारौ³ १. गलाओ · जप तप करि तनु अब जनि ~ ७९७ । २. गला दिया . षट रितु सीत तपनि तन ~ १३३८ ।
गार्‌यौ गला दिया, नष्ट कर दिया आछौ गात अकारथ ~ १/१०१ ।
गाल गाल, कपोल । △ ~ **बजैहै** बढ बढ कर बाते बनाती है, डींग मारती है देखहु जाइ चरित तुम बाके जैसैं ~ — १७२४ । **करि करि** ~ बहुत बढ बढ कर बाते करके, खूब डींग हाँक कर . वह मघवा बलि लेत है नित — ~ ८२३ ।
गाल मसूरी मीठी खस्ता गुझिया गोझा गूथे ~ १२१३ ।
गाव १ गाते हैं, गायन किया है . अघट उपमा ~ सा० ल० १ ।
गावत १ गाता सूरदास द्वारें ~ है २१६ । २ गाता है : सतजुग सुनत प्रगट गुन ~ ३८५५ । ३ गाती हैं · ~ नारि गारि सब दै दै ९/२५ । ४ गाती है . नाचत ~ गुन की खानि ११८० । ६. गाते उनही के गुन ~ हैं ३२५४ । ७ गाते हुए : ~ गुन गोपाल, फिरत कुजनि मैं फूल्यौ ४०९५ । ८. गाते हो . तुम सँगीत ~ जेइ जेई २१४० । ९ गाते है · मुरली लै कर ~ ३८०५ । १० गाने से : कमल नैन की लीला ~ २/२ । ११ गुणगान करते हैं · सेस सहस मुख ~ १५९८ । ~ **गस** मन को चोट करने वाले गीत गाती हुई : हँसत परस्पर ~ — ११८० ।
गावति १. गाती हुई · चली ~ कृष्ण के गुन १४९९ । २. गाती हैं · जहँ तहँ ~ नारि ३०९३ ।
गावत्ति १. गाती हुई : बेगि चलौ मिलि ~ २३ । २ गाती (रहती) है . भई उदासिनि ~ १२९९ ।
गावते गाते थे . अति ऊँचे सुर ~ ३२०१ ।
गावतौ गाता, प्रशसा करता, कहा निगम कहि ~ १६१८ ।
गावन स्त्री० गान करि करि दीन दुखित जन ~ ९/१३१ । क्रि० स० १ गान कर रहे है क्रीडा मगल ~ ३६६१ । २ गान कर रही थीं · अमर नगर अप्सरा ~ २२८ । ३ गाने लग्यौ उनहिं मिलि ~ ४१४९ ।
गावनि गाना · सुभग ~, मृदु बजावनि बेनु २२९५ ।
गावनौ गाया, गाने लगा हरि जस लीला ~ २८३२ ।
गावहि गाती हैं गोपी ~ मगलाचार २७ ।
गावहि १ गाते हो, बखान करते हो मधुप कहा ह्याँ निरगुन ~ ३४९८ । २ गाते हैं, गुणगान करते हैं जो ~ ताकी गति होइ २/५ ।
गावहीं गाती हैं . तारी दै-दै ~ १३४ । २. गाते हैं गधर्व किन्नर ~ ४१८६ ।
गावही गाता है : तजै अभिमान जु ~ १६१८ ।
गावहु १. गाओ . आवहु री मिलि मगल ~ ४१८५ । २ गाते

हो तिन आगैं तुम काहे ~ ३८७१।

गावे १ गाई जायेगी कीरति लोकनि ~ ९/१५२। २ गाते हैं प्रेम भक्त मेरो जस ~ सारा० ८८९।

गावैं १ गाती हैं ~ सखी परसपर मगल ९/१७। २ गाते हैं, बखानते हैं नारदादि गुन ~ ३०९७, तेरे गुन ~ स्याम कुंज भवन २८०३।

गावै १ गाता है . भँवर गीत जो दिन दिन ~ ४०४९। २ गाती है . अधर सुधा मधुर-मधुर मुरली कल ~ १८८७। ३ गाते हैं, गान करते हैं . बिरद बेद ~ १/११०। ४ गाते हो • निरगुन क्यों ~ ३७००। ६ गाये मधुकर अनरुचि कैसे ~ ३९६४। ७ वर्णन/गान करते हैं सूर सगुन पद ~ १/२। ८ वर्णन करे : सूर कहा कहि ~ १/१०४।

गावैगो गायेगा तू कृत मम जस जो ~ सारा० ११०४।

गावौं १ गाऊँ ~ हरि कौ सोहिलौ ४०। २ वर्णन कर सकती हूँ • तौ सभावन ~ सा० ल० ६२।

गास ग्रसे हुए हैं : सिंधु-सुत-धर सुहित सुत गुन गहक गोपी ~ ।

गाह गाथा करी पाछिली ~ ३३६६।

गाहक १ ग्राहक • 'सूरदास' ~ नहिं कोऊ ३६६३। २ चाहने वाले हैं : स्याम गरीबनि हूँ के ~ १/१९।

गाहत झाड़ता है, (अनाज जैसे) गाहता है : बहुरि पयारहिं ~ ३६०९।

गाहि थाह लेकर गयौ अपबल ~ परि० १/४७।

गाहीं पाँच वस्तुओं का समूह, राई रत्ती • सब जानत तुम ~ १५२९।

गाहैं झाड़ने से, गाहने से : ज्यौं पयार के ~ ३६१२।

गाह्यौ पकड़ लिया : ~ दृढ मान वृषभानु वारी २८५४।

गिडुरी गेंडुरी, बिड़ई : नीकें देहु न मेरी ~ १४१६।

गिदौरी गिंदौरी (गलाकर बड़े पेड़े के आकार में बनाई हुई चीनी) गोंदपाक, तिनगरी, ~ ३९६।

गिधए लुब्ध हुए हैं, रीझ गये हैं सॉरग रिपु के रहत न रोके हरि स्वरूप ~ री २३७९।

गिधे रीझ गये हैं अब हरि कौन के रस ~ ३८३६।

गिनत १ गिनते, मानते, महत्त्व देते : राव रक हरि ~ न कोइ ४३०५। २ गिनते हुए उड़ुगन ~ जाम चारो निमि ३६१४।

गिनतहि गिनते ही निमि सब बीतति ~ उड़ुगन परि० १/१७६।

गिनती गणना। △ **किहि ~ मैं आऊँ** मैं किस गिनती में आऊँ, किस काम या महत्त्व का समझा जाऊँ कहौ कृपानिधि रघुपति, — ~ — ९/१७२। **कौनैं ~** किस गिनती में ? • तुम हरता तुम करता प्रभु जू, मातु पिता — ~ १६८९।

गिनि गिनकर फिरि फिरि ~ आनै १/६०।

गिनैं कहे, गणना करे दृष उह्यौ की को ~ १६१८।

गियानी ज्ञानी चल मति अलप ~ ३९४०।

गिर पर्वत, गोवर्धन ~ पूज्यौ तिनहीं बिसराई ९२८।

गिरगिरार एक बाजा जो चिकारे की तरह का होता है . बजावैं ~ मेरी २९१७।

गिरजा पति पतिनी पति जा सुत गुन पार्वती के पति (महादेव) की पत्नी (गगा) के पति (समुद्र) से उत्पन्न (सीप) से उत्पन्न (मोती) का गुण (शीतल होना), मोती की शीतलता ~ गुन गनन उतारैं सा० ल० ५।

गिरजापति पितु पितु पार्वती के पति (शकर) के पिता (ब्रह्मा) के पिता, कमल : ~ से दोऊ सा० ल० १०२।

गिरजा पति पितु पितु पितु पार्वती के पति (शकर) के पिता (ब्रह्मा) के पिता (कमल) का पिता समुद्र : ~ हूँ ते सा० ल० १५,

गिरजापति भख पार्वती के पति (महादेव) का भक्षण, विष ~ बीच कौन सौ सा० ल० ६२।

गिरजापति भूषन पार्वती के पति (शिव) का भूषण, चन्द्रमा : ~ जिन देखे सा० ल० शेष ७।

गिरत १ गिर पड़ता है . ~ अक भरि लेत उठाई १९। २ गिर पड़ रहा था : एक ~ इक लै जु उठावत ९०२। ३ गिरते • ~ ज्यौं बेगकरि बज्र मारे ४१८३। ४ गिरती हुई • कर तैं सॉटि ~ नहिं जानी २५५। ५ गिर रहा हूँ जरत ज्वाला ~ गिरि तैं १/१०६। ६ गिर रहे हैं : ~ को न तन धारै सा० ल० ७३। ७ झर रहे थे ~ कुसुम कबरी केसनि तैं ११३६।

गिरति गिरती है गिरि प्रजक तैं ~ ३१९१।

गिरधर, गिरधारि, गिरवरधर गिरि को धारण करने वाले, श्रीकृष्ण सुनियै हे ~ १०२८।

गिरह बाज कबूतर को पकड़ने वाला बाज . तमकि लीन्हौ ~ जैसे ३०७९।

गिरा वाणी सहज ~ बोलत न बनत २५८४।

गिराइ स्त्री० गिरा काहू दियौ ~ ५१७। **क्रि० स०** गिरा दिया बदन चीरि पल मॉहि ~ ४३०।

गिरा गति वाणी की गति • भई ~ पग ६४०।

गिरात गिरते थे कुजर कूल ~ रथी रथ ४१६२।

गिरायौ गिरा दिया, गिराया • को जानै किहिं ताहि ~ ३९१।

गिरा रहित बोलने में असमर्थ (गूँगा) ~ बृक ग्रसित अजा लौं १/२०१।

गिरावत गिराते हैं • कछुक खात कछु धरनि ~ २३८।

गामिनि चलने वाली : मद ~ नारी १०५७।
गामी चलने वाले (है) : जे हैं गरुड के ~ ३६२९।
गायन गैयाँ : ~ घर घर घेर चरावत लोभ नचावत हारे।
गायो=गायौ दे०। बताया था ' नारायण प्रकटे सवजाने जोइ गर्भ मुनि ~ सारा० ४७८।
गायौ[1] १ गान किया, गाया : सिव नारद सारद यह ~ ११७९। २ गुणगान किया : ~ गीध अजामिल गनिका १/६६।
गायौ[2] गाय का ही . ~ घृत भरि धरी कटोरी ३९६।
गारि[1] १ घिसकर, चोवा बनाकर कुंकुम चदन ~, ग्वालि मदमाती हो २८६२। २ नष्टकर, गलाकर : ससि गन ~ रच्यौ विधि आनन १५८। △ तनु ~ शरीर को कष्ट देकर या गलाकर : नीकैं तप कियौ — ~ ७८३।
गारि[2] १. गाली (अपशब्द) : सकुच न देत ~ भगरत हूँ २९५। २. गाली (विवाह आदि मे गाये जाने वाले लोक गीत : सजन प्रीतम नाम लै लै देत परस्पर ~ २६। ३ निंदा, गालियाँ . सिर पर सही जगत की ~ २३८८।
गारिनि गालियाँ ' कबहुँ उठति दै ~ १४७३।
गारियाँ विवाह आदि उत्सवो मे गायी जाने वाली गालियाँ देति आनँद ~ १०७२।
गारी[1] १ गाली (गदगी) मेटहु अब कुल ~ १/४४। २ गाली, अपशब्द तबतैं हमै देत हौ ~ १५३६। २. गाली (एक गीत जो उत्सवो मे स्त्रियाँ गाती हैं) देत महरि कौं ~ ४। △ आवै कुल ~ कुल मे कलक लगता है या कुल को निंदा फैलती है वरजत मात पिता पति बाँधव अरु — ~ २३७४।
गारी[2] जलाया, गलाया। △ तन ~ शरीर को गला दिया क्यौं विरहिन — ~ ३६४०। तनु ~ शरीर गलाकर : षटरितु तप कीन्हौ — ~ १४६०।
गारी[3] ठीक बना दिया कूबरी ~ १/१७६।
गारुडि, गारुडी गारुडी, सर्प का विष उतारने वाला, सँपेरा सूर ~ गुनि करि थाके ७४।
गारे गालिया दे ' कौन याहि अब ~ ३८७५।
गारैं[1] गलाये ' कब लगि यह मन दुख मैं ~ ४०६१।
गारैं[2] छोडतीं अपने छिद्र न जानत ~ १२२९।
गारै गलाता या घुलाता है। △ तन ~ शरीर गलाता या क्षीण करता है : नैनन तैं बिछुरे जु भ्रमत हैं सीस अजहूँ तन ~ ३७७८।
गारौं गला दूँ : नीर खार मैं ~ ९/१०७।
गारौ[1] १ गर्व, अभिमान . जाकौ है मोहूँ कौ ~ ३७३; अब न करौ जिय ~ १/१३१। २. गुरुता को : छाँडि गर्व या गुन की ~ ४२०३। ३. प्रतिष्ठा : ताकौ ब्रज नाहिंन ~ १८३।
४ दम, हिम्मत : हम मैं कहा रह्यौ अब ~ ९४२।
गारौ[2] कीचड, गारा रह्यौ रुधिर कौ ~ ९/१५९।
गारौ[4] १. गलाओ . जप तप करि तनु अब जनि ~ ७९७। २. गला दिया . षट रितु सीत तपनि तन ~ १३३८।
गार्यौ गला दिया, नष्ट कर दिया . आछौ गात अकारथ ~ १/१०१।
गाल गाल, कपोल। △ ~ बजैहै बढ बढ कर बातें बनाती है, डींग मारती है देखहु जाइ चरित तुम वाके जैसैं ~ — १७२४। करि करि ~ बहुत बढ बढ कर बातें करके, खूब डींग हाँक कर : वह मघवा बलि लेत है नित — ~ ८२३।
गाल मसूरी मीठी खस्ता गुझिया गोभा गूधे ~ १२१३।
गाव १ गाते हैं, गायन किया है . अघट उपमा ~ सा० ल० १।
गावत १ गाता सूरदास द्वारैं ~ है २१६। २ गाता है : सतजुग सुनत प्रगट गुन ~ ३८५५। ३ गाती हैं ' ~ नारि गारि सब दै दै ९/२५। ५ गाती है : नाचत ~ गुन की खानि ११८०। ६ गाते उनही के गुन ~ ई २२५४। ७ गाते हुए : ~ गुन गोपाल, फिरत कुजनि में फूल्यौ ४०९५। ८. गाते हो : तुम सँगीत ~ जेइ जेई २१४०। ९ गाते है : मुरली लै कर ~ ३८०५। १० गाने से कमल नैन की लीला ~ २/२। ११ गुणगान करते हैं : सेस सहस मुख ~ १५१८। ~ गंस मन को चोट करने वाले गीत गाती हुई : हँसत परस्पर ~ — ११८०।
गावति १. गाती हुई चली ~ कृष्ण के गुन १४९९। २ गाती हैं ' जहँ तहँ ~ नारि ३०९३।
गावति १. गाती हुई ' वेगि चलौ मिलि ~ ७३। २. गाती (रहती) है . भई उदासिनि ~ १२९९।
गावते गाते थे अति ऊँचे सुर ~ ३२०१।
गावतौ गाता, प्रशसा करता, ' कहा निगम कहि ~ १६१८।
गावन स्त्री० गान करि करि दीन-दुखित जन ~ ९/१३१।
क्रि० स० १ गान कर रहे है क्रीडा मगल ~ ३६६१। २ गान कर रही थीं : अमर नगर अप्सरा ~ २०२८। ३. गाने लग्यो उनहिं मिलि ~ ४१४९।
गावनि गाना सुभग ~, मृदु बजावनि वेनु २२९५।
गावनौ गाया, गाने लगा हरि जस लीला ~ २८३२।
गावहि गाती हैं गोपी ~ मगलाचार ७७।
गावहि १ गाते हो, बखान करते हो . मधुप कहा ह्याँ निरगुन ~ ३४९८। २. गाते हैं, गुणगान करते हैं : जो ~ ताकी गति होइ ७/५।
गावहीं गाती हैं . तारी दै दै ~ १३४। २. गाते हैं ' गधर्व किन्नर ~ ४१८६।
गावही गाता है : तजै अभिमान जु ~ १६१८।
गावहु १. गाओ . आवहु री मिलि मगल ~ ४१८५। २ गाते

हो · तिन आगैं तुम काहे ~ ३८७१।

गावे १ गाई जायेगी . कीरति लोकनि ~ ९/१५२। २ गाते हैं प्रेम भक्त मेरो जस ~ मारा० ८८९।

गावैं १ गाती हैं . ~ सखी परसपर मगल ९/१७। २ गाते हैं, बखानते है · नारदादि गुन ~ ३०९७, तेरे गुन ~ स्याम कुंज भवन २८०३।

गावै १ गाता है . भँवर गीत जो दिन दिन ~ ४०४९। २ गाती है : अधर सुधा मधुर-मधुर मुरली कल ~ १८८७। ३ गाते है, गान करते है . विरद बेद ~ १/११०। ४ गाते हो : निरगुन क्यौं ~ ३७००। ६ गायें . मधुकर अनरुचि कैसे ~ ३९६४। ७ वर्णन/गान करते है सर सगुन पद ~ १/२। ८ वर्णन करे : सूर कहा कहि ~ १/१०४।

गावैगो गायेगा · तू कृत मम जस जो ~ मारा० ११०४।

गावौं १ गाऊँ . ~ हरि कौ सोहिलौ ४०। २ वर्णन कर सकती हू तौ सभावन ~ सा० ल० ६२।

गास ग्रसे हुए है . सिंधु-सुत-धर ग्रहित सुत गुन गहक गोपी ~।

गाह गाथा करी पाछिली ~ ३३६६।

गाहक १ ग्राहक : 'सूरदास' ~ नहिं कोऊ ३६६३। २ चाहने वाले है : स्याम गरीबनि हूँ के ~ १/१९।

गाहत झाटता है, (अनाज जैसे) गाहता है : बहुरि पयारहिं ~ ३६०९।

गाहि थाह लेकर . गयौ अपवल ~ परि० १/४७।

गाहीं पाँच वस्तुओं का समूह, राई-रत्ती · सब जानत तुम ~ १५२९।

गाहैं काढने से, गाहने से . ज्यौं पयार के ~ ३६१२।

गाह्यौ पकड लिया : ~ दृढ मान वृषभानु वारी २८५४।

गिडुरी गेंडुरी, विंडई : नीके देहु न मेरी ~ १४१६।

गिदौरी गिंदौरी (गलाकर वडे पेडे के आकार मे बनाई हुई चीनी) गोंदपाक, तिनगरी, ~ ३९६।

गिधए लुब्ध हुए है, रीझ गये है . साँरग रिपु के रहन न रोके हरि स्वरूप ~ री २३७९।

गिधे रीझ गये हैं अब हरि कौन के रस ~ ३८३६।

गिनत १ गिनते, मानते, महत्त्व देते · राव रक हरि ~ न कोइ ४३०५। २ गिनते हुए उडुगन ~ जाम चारो निमि ३६१४।

गिनतहि गिनते ही . निसि सब बीतति ~ उडुगन परि० १/१७६।

गिनती गणना। △ किहि ~ मैं आऊँ मे किस गिनती मे आऊँ, किस काम या महत्त्व का समझा जाऊ कहौ कृपा-निधि रघुपति, — ~ — ९/१७२। कौनैं ~ किस गिनती मे ? : तुम हरता तुम करता प्रभु जू, मातु पिता — ~ १६८९।

गिनि गिनकर फिरि फिरि ~ आनै १/६०।

गिनै कहे, गणना करे दूध दह्यौ की को ~ १६१८।

गियानी ज्ञानी . चल मति अलप ~ ३९४०।

गिर पर्वत, गोवर्धन · ~ पूज्यौ तिनहीं बिसराई ९२८।

गिरगिरार एक बाजा जो त्रिकारे की तरह का होता है · बजावें ~ भेरी २११७।

गिरजा पति पतिनी पति जा सुत गुन पार्वती के पति (महादेव) की पत्नी (गगा) के पति (समुद्र) से उत्पन्न (सीप) से उत्पन्न (मोती) का गुण (शीतल होना), मोती की शीतलता . ~ गुन गनन उतारें सा० ल० ५।

गिरजापति पितु पितु पार्वती के पति (शकर) के पिता (ब्रह्मा) के पिता, कमल : ~ से ढोऊ सा० ल० १०२।

गिरजा पति पितु पितु पितु पार्वती के पति (शकर) के पिता (ब्रह्मा) के पिता (कमल) का पिता समुद्र : ~ हूँ ते सा० ल० १५,

गिरजापति भख पार्वती के पति (महादेव) का भक्षण, विष · ~ बीच कौन सौ सा० ल० ६२।

गिरजापति भूपन पार्वती के पति (शिव) का भूषण, चन्द्रमा · ~ जिन देखे सा० ल० शेष ७।

गिरत १ गिर पडता है . ~ अक भरि लेत उठाई १९। २ गिर पड रहा था . एक ~ इक लै जु उठावत ९०२। ३ गिरते · ~ ज्यौं बेगकरि वज्र मारे ४१८३। ४. गिरती हुई · कर तै सौटि ~ नहिं जानी २५५। ५ गिर रहा हू जरत ज्वाला ~ गिरि तें १/१०६। ६. गिर रहे हैं : ~ को न तन धारै सा० ल० ७३। ७ झर रहे थे · ~ कुसुम कबरी केसनि तै ११३६।

गिरति गिरती है गिरि प्रजक तें ~ ३१९१।

गिरधर, गिरधारि, गिरवरधर गिरि को धारण करने वाले, श्रीकृष्ण . सुनियै हे ~ १०२८।

गिरह बाज कबूतर को पकडने वाला बाज तमकि लीन्हौ ~ जैसे ३०७९।

गिरा वाणी सहज ~ बोलत न बनत २५८४।

गिराइ स्त्री० गिरा काहू दियौ ~ ५१७। क्रि० स० गिरा दिया · बदन चीरि पल माहि ~ ४३०।

गिरा गति वाणी की गति भई ~ पग ६४०।

गिरात गिरते थे कुंजर कूल ~ रथी रथ ४१६२।

गिरायौ गिरा दिया, गिराया को जानै किहिं ताहि ~ ३९१।

गिरा रहित बोलने मे असमर्थ (गूँगा) · ~ मूक ग्रसित अजा लौं १/१२१।

गिरावत गिराते है कछुक खात कछु धरनि ~ २३८।

गामिनि चलने वाली : मद ~ नारी १०५७।

गामी चलने वाले (है) : जे हैं गरुड के ~ ३६२९।

गायन गैयाँ : ~ घर घर घेर चरावत लोभ नचावत हारे।

गायो=गायौ दे०। बताया था नारायण प्रकटे सबजाने जोइ गर्भ मुनि ~ सारा० ४७८।

गायौ[1] १ गान किया, गाया : सिव नारद सारद यह ~ ११७९। २ गुणगान किया : ~ गीध अजामिल गनिका १/६६।

गायौ[2] गाय का ही : ~ घृत भरि धरी कटोरी ३९६।

गारि[1] १ घिसकर, चोवा बनाकर . कुंकुम चदन ~, ग्वालि मदमाती हो २८६२। २ नष्टकर, गलाकर : ससि गन ~ रच्यौ विधि आनन १५८। △ **तनु** ~ शरीर को कष्ट देकर या गलाकर : नीकैं तप कियौ — ~ ७८३।

गारि[2] १ गाली (अपशब्द) : सकुच न देत ~ भगरत हूँ ७९५। २ गाली (विवाह आदि मे गाये जाने वाले लोक गीत सजन प्रीतम नाम लै लै देत परस्पर ~ २६। ३ निंदा, गालियाँ • सिर पर सही जगत की ~ २३८८।

गारिनि गालियाँ : कबहुँ उठति दै ~ १४७३।

गारियाँ विवाह आदि उत्सवों मे गायी जाने वाली गालियाँ देति आनंद ~ १०७२।

गारी[1] १ गाली (गदगी) • मेटहु अब कुल ~ १/४४। २. गाली, अपशब्द • तबतैं हमै देत हौ ~ १५३६। २. गाली (एक गीत जो उत्सवों मे स्त्रियाँ गाती हैं) देत महरि कौं ~ ४। △ **आवै कुल** ~ कुल मे कलक लगता है या कुल को निंदा फैलती है बरजत-मात पिता पति बांधव अरु — ~ २३७४।

गारी[2] जलाया, गलाया। △ **तन** ~ शरीर को गला दिया क्यौं विरहिन — ~ ३६४०। **तनु** ~ शरीर गलाकर : षटरितु तप कीन्हौ — ~ १४६०।

गारी[3] ठीक बना दिया . कूबरी ~ १/१७६।

गारुडि, गारुडी गारुडी, सर्प का विष उतारने वाला, सँपेरा सूर ~ गुनि करि थाके ७४।

गारे गालिया दे • कौन याहि अब ~ ३८७५।

गारैं[1] गलाये • कब लगि यह मन दुख मैं ~ ४०६१।

गारैं[2] छोडतीं अपने छिद्र न जानत ~ १२२९।

गारै गलाता या घुलाता है। △ **तन** ~ शरीर गलाता या क्षीण करता है . नैनन तैं बिछुरे जु भ्रमत हैं सीस अजहू तन ~ ३७७८।

गारौं गला दूँ : नीर खार मैं ~ ९/२०७।

गारौ[1] १ गर्व, अभियान जाकौ है मोहूँ कौ ~ ३७३; अब न करौ जिय ~ १/१३१। २. गुरुता को : छाँडि गर्व या गुन की ~ ४२०३। ३. प्रतिष्ठा • ताकौ ब्रज नाहिंन ~ १८३। ४ दम, हिम्मत • हम मैं कहा रह्यौ अब ~ ९४२।

गारौ[2] कीचड, गारा : रह्यौ रुधिर कौ ~ ९/१५९।

गारौ[5] १. गलाओ : जप तप करि तनु अब जनि ~ ७९७। २ गला दिया . षट रितु सीत तपनि तन ~ १३३८।

गार्‍यौ गला दिया, नष्ट कर दिया आछौ गात अकारथ ~ १/२०१।

गाल गाल, कपोल। △ ~ **बजैहै** बढ़ बढ कर बातें बनाती है, डींग मारती है देखहु जाइ चरित तुम बाके जैसे ~ — १७२४। **करि करि** ~ बहुत बढ बढ कर बातें करके, खूब डींग हाँक कर वह मघवा बलि लेत है नित — ~ ८२३।

गाल मसूरी मीठी खस्ता गुझिया : गोभा गूँधे ~ १२१३।

गाव १ गाते हैं, गायन किया है अघट उपमा ~ सा० ल० १।

गावत १ गाता • सूरदास द्वारैं ~ है २१६। २ गाता है . सतजुग सुनत प्रगट गुन ~ ३८५५। ३ गाती हैं ~ नारि गारि सब दै दै ९/७५। ५ गाती है • नाचत ~ गुन की खानि ११८०। ६ गाते उनही के गुन ~ हैं २२५४। ७ गाते हुए • ~ गुन गोपाल, फिरत कुजनि मैं फूल्यौ ४०९५। ८. गाते हो : तुम सँगीत ~ जेइ जेई २१४०। ९. गाते हैं . मुरली लै कर ~ ३८०५। १० गाने से • कमल नैन की लीला ~ २/२। ११ गुणगान करते हैं . सेस सहस मुख ~ १५९८। ~ **गारु** मन को चोट करने वाले गीत गाती हुई : हँसत परस्पर ~ — ११८०।

गावति १. गाती हुई . चली ~ कृष्ण के गुन १४९९। २ गाती हैं • जहँ तहँ ~ नारि ३०९३।

गावति १. गाती हुई : बेगि चलौ मिलि ~ २३। २. गाती (रहती) है भई उदासिनि ~ १२९९।

गावते गाते थे अति ऊँचे सुर ~ ३२०१।

गावतौ गाता, प्रशसा करता, • कहा निगम कहि ~ १६१८।

गावन स्त्री० गान . करि करि दीन दुखित जन ~ ९/१३१। क्रि० स० १ गान कर रहे है क्रीडा मगल ~ ३६६१। २. गान कर रही थीं • अमर नगर अप्सरा ~ रे २८। ३ गाने लग्यौ उनहिं मिलि ~ ४१४९।

गावनि गाना • सुभग ~, मृदु बजावनि बेनु २२९५।

गावनौ गाया, गाने लगा • हरि जस लीला ~ २८३२।

गावहि गाती हैं . गोपी ~ मगलाचार २७।

गावहि १ गाते हो, बखान करते हो मधुप कहा ह्याँ निरगुन ~ ३४९८। २ गाते हैं, गुणगान करते हैं जो ~ ताकी गति होइ २/५।

गावही गाती हैं • तारी दै दै ~ १३४। २. गाते हैं . गधर्व किन्नर ~ ४१८६।

गावही गाता है : तजै अभिमान जु ~ १६१८।

गावहु १. गाओ आवहु री मिलि मगल ~ ४१८५। २. गाते

हो तिन आगैं तुम काहे ~ ३८७१ ।
गावै १ गाई जायेगी कीरति लोकनि ~ ९/१५२ । २ गाते है प्रेम भक्त मेरो जस ~ सारा० ८८९ ।
गावैं १ गाती हैं ~ सखी परस्पर मगल ९/१७ । २ गाते है, बखानते है . नारदादि गुन ~ ३०९७, तेरे गुन ~ स्याम कुंज भवन २८०३ ।
गावै १ गाता है . भँवर गीत जो दिन दिन ~ ४०४९ । २ गाती है . अधर सुधा मधुर-मधुर मुरली कल ~ १८८७ । ३ गाते ह, गान करते है विरद वेद ~ १/११० । ४ गाते हो : निरगुन क्यौं ~ ३७०० । ६ गाये मधुकर अनरुचि कैसे ~ ३९६४ । ७ वर्णन/गान करते हे सर सगुन पद ~ १/२ । ८ वर्णन करे : सूर कहा कहि ~ १/१०४ ।
गावैगो गायेगा तू कृत मम जस जो ~ सारा० ११०४ ।
गावौं १ गाऊँ ~ हरि कौ सोहिलौ ४० । २ वर्णन कर सकती हू तौ सभावन ~ सा० ल० ६२ ।
गास ग्रसे हुए हे : सिंधु-सुत-धर सुहित सुत गुन गहक गोपी ~ ।
गाह गाथा करी पाछिली ~ ३३६६ ।
गाहक १ ग्राहक · 'सूरदास' ~ नहिं कोऊ ३६६३ । २ चाहने वाले हे : स्याम गरीबनि हू के ~ १/१९ ।
गाहत झाडता है, (अनाज जैंमे) गाहता है : बहुरि पयारहिं ~ ३६०९ ।
गाहि थाह लेकर गयौ अपबल ~ परि० १/४७ ।
गाहीं पाँच वस्तुओं का समूह, राइ-रत्ती · सब जानत तुम ~ १५२९ ।
गाहैं झाडने से, गाहने से : ज्यौं पयार के ~ ३६१२ ।
गाह्यौ पकड लिया : ~ दृढ मान वृषभानु वारी २८५४ ।
गिडुरी गेंडुरी, विंडई : नीके देहु न मेरी ~ १४१६ ।
गिटौरी गिंटौरी (गलाकर वडे पेडे के आकार मे बनाई हुई चीनी) गोंदपाक, तिनगरी, ~ ३९६ ।
गिधए लुब्ध हुए हे, रीझ गये हैं साँरग रिपु के रहत न रोके हरि स्वरूप ~ री २३७९ ।
गिधे रीझ गये हैं अब हरि कौन के रस ~ ३८३६ ।
गिनत १ गिनते, मानते, महत्त्व देते राव रक हरि ~ न कोइ ४३०५ । २ गिनते हुए उडुगन ~ जाम चारो निमि ३६१४ ।
गिनतहि गिनते ही निमि सब वीतति ~ उडुगन परि० १/१७६ ।
गिनती गणना । △ किहि ~ मैं आऊँ म किस गिनती मे आऊँ, किस काम या महत्त्व का समझा जाऊँ कहौ कृपा-निधि रघुपति, — ~ —९/१७२ । कौनैं ~ किस गिनती मे ? तुम हरना तुम करता प्रभु जू, मातु पिता — ~ १६८९ ।
गिनि गिनकर फिरि फिरि ~ आनै १/६० ।
गिनैं कहे, गणना करे दध दह्यौ की को ~ १६१८ ।
गियानी ज्ञानी चल मति अलप ~ ३९४० ।
गिर पर्वत, गोवर्धन . ~ पूज्यौ तिनही बिसराई ९२८ ।
गिरगिरार एक बाजा जो चिकारे की तरह का होता है . बजावै ~ भेरी २९१७ ।
गिरजा पति पतिनी पति जा सुत गुन पार्वती के पति (महादेव) की पत्नी (गगा) के पति (समुद्र) से उत्पन्न (सीप) मे उत्पन्न (मोती) का गुण (शीतल होना), मोती की शीतलता : ~ गुन गनन उतारैं सा० ल० ५ ।
गिरजापति पितु पितु पार्वती के पति (शकर) के पिता (ब्रह्मा) के पिता, कमल ~ से दोऊ सा० ल० १०२ ।
गिरजा पति पितु पितु पितु पार्वती के पति (शकर) के पिता (ब्रह्मा) के पिता (कमल) का पिता समुद्र : ~ हू ते सा० ल० १५ ,
गिरजापति भख पार्वती के पति (महादेव) का भक्षण, विष · ~ बीच कौन सौ सा० ल० ६२ ।
गिरजापति भूषन पार्वती के पति (शिव) का भूषण, चन्द्रमा : ~ जिन देखे सा० ल० शेष ७ ।
गिरत १ गिर पडता है . ~ अक भरि लेत उठाई १९ । २ गिर पड रहा था . एक ~ इक लै जु उठावत ९०२ । ३ गिरते · ~ ज्यौं वेगकरि वज्र मारे ४१८३ । ४ गिरती हुई · कर ते सौंटि ~ नहिं जानी २५५ । ५ गिर रहा हू जरत ज्वाला ~ गिरि त १/१०६ । ६ गिर रहे ह : ~ को न तन धारै सा० ल० ७३ । ७ झर रहे ये ~ कुसुम कबरी केसनि न ११३६ ।
गिरति गिरती है · गिरि प्रजक त ~ ३१९१ ।
गिरधर, गिरधारि, गिरवरधर गिरि को धारण करने वाले, श्रीकृष्ण सुनियैं हे ~ १०२८ ।
गिरह वाज कबूतर को पकडने वाला बाज . तमकि लीन्हो ~ जैसे ३०७९ ।
गिरा वाणी महज ~ बोलत न बनत २५८४ ।
गिराइ स्त्री० गिरा जाहू दियौ ~ ५१७ । क्रि० स० गिरा दिया · वदन चीरि पल माहि ~ ४३० ।
गिरा गति वाणी की गति भइ ~ पर ६४० ।
गिरात गिरते ये . कुजर कूल ~ रथी रथ ४१६२ ।
गिरायौ गिरा दिया, गिराया को जाने किहिं ताहि ~ ३९१ ।
गिरा रहित बोलने मे असमर्थ (गूँगा) ~ मूक ग्रसिन अजा लौं १/१२१ ।
गिरावत गिनते ह कहुक ग्यान कछु वरनि ~ २३८ ।

गिरावही गिराते हे · खेलत खात झगरत दोउ भाई ~ १६२।

गिराहि गिरते हे, पतित होते हैं पुन्य-छीन तिहिं ठौर ~ १/२९०।

गिरि¹ गिर ~ परे मुरझाइ ५०४, लात कै लगत सिर तैं गयौ मुकुट ~ ३०७८।

गिरि² १. पर्वत : इहिं ~ पर कपिपति सुनियत है ९/६९। २. पर्वत (गोवर्धन) को . सात दिवस ~ लीन्ही १/१७।

गिरिए गिर जायें : कै ~ गिरि चढि सुनि सजनी ३३६२।

गिरिजा पार्वती तब नारद ~ पै गए १/२२६।

गिरजापति भूषन पार्वती के पति (महादेव) का भूषण, चन्द्रमा : ~ पै मानहुँ सा० ल० १३।

गिरजा-पति-रिपु पार्वती के पति (शिव) का रिपु, कामदेव ~ नए सिख ब्यापत ३२८२।

गिरि-तन पर्वत पर · ~ सोभा स्याम बिराजै ९१३।

गिरि-तनया-पति-भूषन पर्वत हिमाचल की कन्या (पार्वती) के पति (शिव) के भूषण, चन्द्रमा . ~ जैसैं, बिरह जरी दिन रातें ४१२०।

गिरि देव गिरि देव (गोवर्धन) : सत्य बचन ~ कहत हैं ८७१।

गिरिधर, गिरिधरन गोवर्धन गिरि को धारण करने या उठाने वाले, श्री कृष्ण . सूर स्याम ~ गुन नागर २७३२।

गिरिधारि, गिरिधारी गोवर्धन गिरि को धारण करने वाले, श्री कृष्ण : राखौ पति गिरिवर ~ १/२४८।

गिरिधरैं गिरिधर को : नागरि, ~ जिति लैन २८४१।

गिरि पति पर्वतराज हिमालय की · जौ ~ मसि घोरि उदधि मैं १/१११।

गिरि प्रजंक गिरि रूपी पलँग ~ तैं गिरति ३१९१।

गिरि मसि पर्वत की मसि (चूर्ण) के रूप मे . ~ कौ लै डारैं १/१८३।

गिरिराइ गिरिराज का · धरि स्वरूप ~ ८२५।

गिरिराज पर्वतराज : पूजत गोवर्धन ~ ८३४।

गिरिराजनि गिरिराजो · धन्य धन्य ~ के मनि ८४७।

गिरिवर १ गोवर्धन पर्वत . ~ तरुवर पुलकित गात ११८०। २ पर्वत, पहाड (वक्ष स्थल) हरि पर सरवर, सर पर ~ २११०। **धर्‍यौ ~ धरनि** पर्वत को पृथ्वी पर उतार धरा · कर तैं — ~ — ९५९।

गिरिवर धर पर्वत को धारण करने वाले (श्री कृष्ण) · ~ पति होहिं हमारैं ९५१।

गिरवरधारि, गिरवरधारी गिरधारी, गिरि को धारण करने वाले, श्री कृष्ण (को, ने) रिझवति ~ १०५७।

गिरिवरिहि पर्वत की . तुमहिं निंदि ~ बडाई ९२२।

गिरि-सिखर पर्वत के शिखर पर . चढि ~ सब्द इक उचर्‍यौ ९/७४।

गिरि-सीस पर्वत के शिखर पर रचि राखी ~ ९/७५।

गिरि-सुत तिन पति गिरि का सुत (वृक्ष), उनका पति कल्पवृक्ष, अर्थात सब कामनाओं को पूर्ण करने वाले श्रीकृष्ण को ~ बिबस करन कौ १२०२।

गिरि-सुता-पति-तिलक गिरि सुता (पार्वती) के पति (शिव) का तिलक, चन्द्रमा : ~ करकस २०८६।

गिरिहि पर्वत को . प्रथमहिं देउँ ~ बहाइ ८५२।

गिरैं गिर पडे . गिरि जनि ~ स्याम के कर तैं ८७३।

गिर्‍यौ १ (जा) गिरा . दह ~ कन्हाई ५४८। २ गिर पडा : ~ धरनि पर अति आकुल है १३१६।

गिलिहै निगल जायगी, छिपाये रहेगी · कीधौं बाति उघारि कहैगी की मनहीं मन ~ १७२६।

गिले¹ निगल गये · पन्नग रूप ~ सिसु गोसुत ४३३।

गिले² शिकायतें : करन दै तेहिं ~ तू दिननि थोरी १७३५।

गीति १ गीत · सुनि बेनु कल्पित ~ ६२३। २ गीत (गाये जाते हैं) : जहाँ ब्याह तहँ ~ ३७८३।

गीध¹ १ गिद्ध बग बगुली अरु ~-गीधिनी २/१४। २ गिद्ध-राज जटायु उत्तर क्रिया ~ की करी ९८१।

गीध² रीझे, ललचाये . अब हरि कौन के रस ~ ३८३६।

गीधि रीझ, चसका ल नित प्रति ~ रहे हौ छीकैं २८७।

गीधिनी मादा गीध · बग-बगुली अरु गिद्ध ~ २/१४।

गीधे १ अनुरक्त हो गये . ~ स्यामल गात २३२९। २ रीझे हुए हैं . हरि सारँग सौं सारग ~ २३०७।

गीध्यौ ललच गया, रीझ गया : ~ दुष्ट हेम तस्कर ज्यौं १/२०२।

गीन्हौ रीझा, लुट गया है . ऐसे पर मन ~ १२८२।

गीवाँ ग्रीवा . मैं देखि बिमोहित ~ परि० १/६३।

गंग गूँगा . बोलै ~, पगु गिरि लघै १/९५।

गुज गुजार . गए गृह कुंज, अलि ~ २१७०। **पपिहा** ~ पपीहा पिउ-पिउ कर उठा . — ~ कोकिल बन कूजत ६२२।

गुजत गुजार करते हे . कुसुमित दाम मधुप कुल ~ १३७६।

गुजनि¹ गुजार कल धुनि की ~ ३२१३।

गुंजनि² गुजा की, घुंघची की : कर मुरली उर ~ माला ३७९५।

गुंजरत गुजार करता है भँवर ~ कमल मों बँदहिं १०७।

गुंजा घुघची जौ ~ सम तुलत सुमेरहिं १३५। △ **कपि ~ की नाइँ** बदर घुघचियो को इकट्ठा कर शीत मिटाने के लिए भ्रमवश उन्हे पास रख कर बैठ जाता है . जनम जनम तें हौं भ्रमि आयौ — ~ — १/१४७।

गुजाइस गुजाइश, स्थान, अटने की जगह . काया नगर बडी ~ १/६४।

गुंजा-फल घुघची (बीज) . ~ अवतस १३७०।

गुंजामणि घुंघची · वरहापीड दाम ~ अद्भुत भेष बनावत सारा० ४७५ ।
गुंजारन गुंजार करने · मधुप ~ लागे २८४८ ।
गुंजारी गुंजार कर · तिनके सब्द रहे ~ परि० १/६६ ।
गुंजावलि घुंघचियों की माला · भूषन अंग लसत ~ सारा० ९६६ ।
गुंजे गुंजार करते हैं · वृथा कमल फूलनि अलि ~ ४०६८ ।
गुंड मलार राग का एक भेद · रागरागिनी मेलि गावैं सुघर ~ मलार २८३१ ।
गुंदहि गूँथ रही हैं · अरक-थान सुत माला ~ १०७ ।
गुजरान निर्वाह करने वाला · सूर आयु ~ मुहासिब १/१४२ ।
गुजरिनि गुजरियों के · जानत रन ~ को सौ है १६०० ।
गुडरारौ पैदल . महिष, मगर, मेढा, (नारद) ~ ९७६ ।
गुडाकेस अर्जुन · ~ जननी-पति वाहन, ता सुत के अंग सजे सिंगार परि० २/५२ ।
गुडाकेस-जननी-पति-वाहन ता सुत गुडाकेश (अर्जुन) की माता (कुंती) के पति (इंद्र) का वाहन (हाथी) उसका पुत्र, गज मुक्ता : ~ के अंग सजे सिंगार परि० २/५२ ।
गुडी पतंग · परवस भई ~ ज्यों डोलति २३४७ । ~ **डोर ज्यौं तोरी** पतंग की डोरी के समान तोड दिया : सूरदास करि काज आपनौ ~ — ३३६१ ।
गुथे उलझे रहे · काम कुटिल कुच बिच गुथे ~ २५०४ ।
गुदरारौ=गुडरारौ दे०
गुदरि दए हाजिरी दे रहे हैं · मनौ नवग्रह ~ परि० १/९६ ।
गुदरी गुदडी · अब कथा एकै अति ~ ३८१५ ।
गुद्दी गरदन · ~ चाँपि लै जीभ मरोरी ५७ ।
गुन[1] १ करनी, करतूत : लरकाई तैं करत अचगरी मैं जाने ~ तबहीं ८०६ । २ कला, विद्या : चले गुनी ~ डारे ७४० । ३ विशेषता जो उससे अलग न हो सके . वेद धरत न सुन्न ~ के नखत टार न फेर सा० ल० ५९ । ४ गुण : ~ गावत सब लोइ २/५ । ५ गुणों को : पानि पल्लव रेख ~ गनि ३५६१ । ६ स्वभाव : ओछौ ~ क्यों जाइ १६१८ । **बीते जुग ~ के जोर** जोडा गुणों (राजस और तामस) का वेग कम हुआ · जब — ~ — ९६३ । ~ **भारी** बडे़ बडे गुण भरे पड़े हैं · रास रस रसिक ~ — ११८२ ।
गुन[2] १ धागे (की) · बिनु ~ माल मिलि कहँ तुमकौ २५१७ । २ डोरी, प्रत्यचा · टूटि गए ~ तानत २३९८ । ~ **एँचति** डोरी (प्रत्यचा) को खींचती हो · भौंह धनुष अंजन ~ — १५८५ ।
गुन[3] एक प्रत्यय जो संख्यावाची शब्दों के अन्त मे जुडकर उतने ही गुणा होना सूचित करता है, गुना या गुनी : गिरजा पति, पितु पितु पितु हू तैं सौ ~ सी दरसावै सा० ल० १५ ।
गुन[4] मनन कर, सोच-विचार कर · जा सुत ~ गुन गनन उतारै सा० ल० ५ ।
गुन अकास कौ आकाश का गुण, शब्द · ~ सिद्ध साधना सा० ल० १०३ ।
गुन अतीत गुणातीत : जो गुणों से परे है · हरि ~, अविगत न जनावै ३ ।
गुन आगरि गुणराशि · है री ~ नागरी २८०१ ।
गुनकली एक रागिनी . रामकली ~ केतकी सुर सुघराई सारा० १०१७ ।
गुनकारी गुणकारी, लाभदायक · जाके चरन-कमल ~ सा० ल० १०२ ।
गुन-गन १ गुण समूह · ~ अगम निगम नहिं पावै ३ । २. गुणों को : ~ लिखत अंत नहिं लहिये १/११२ ।
गुन-गन-ऐन गुण के समूह का भंडार, परम गुणवती : मिली ~ सा० ल० ६५ ।
गुनग्य गुणों को समझने वाले . बडे ~ कहावत ढोऊ २१६१ ।
गुनज्ञा पारखी · लायक, गुननि ~ १०५८ ।
गुन-ग्रंथि (अपने) गुण की गाँठ · 'सूर' सहज ~ हमारैं ३५४४ ।
गुन-ग्राम गुण समूह की · निसि बासर ~ रढी ९/१७० ।
गुन-ग्रामिनि गुण समूह से भरी हुई · मुदित भइ ~ १०४८ ।
गुनत १ विचार करते हे · ~ गुन तिहारे २०५ । २ विचार करते रहते हे · पियहि के गुन ~ उर मैं २३४८ ।
गुनति विचार कर रही है . कहा धौं मन ~ ७१९ ।
गुननि १ गुणों : ~ माँहि आगरौ ३३६ । २ गुणों की लीला ~ अगाध ३०४३ । ३ गुणों के (सत, रज, तम) ता पाछैं इन ~ गए तैं २/३८ । ६ गुणों से : जानति हौं जिहि ~ भरे हौ २६३७ ।
गुननिधान गुणों के खजाना : 'सूरज' प्रभु ~ ३७०० ।
गुननिधि गुणों की निधि : त्रिभुवन की सोभा सब ~ २१६८ । ~ **पुहुप मई** गुणों का समूह ही फूल हैं : ~ — १७६२ ।
गुन बारौ गुणी · कीनौ बिधि ~ सा० ल० ३८ ।
गुननि मए गुणमय, गुणी · हैं जु ~ २३६३ ।
गुनमनि गुणियों मे श्रेष्ठ · ग्यानिनि मनि, विद्या मनि, ~ २७१९ ।
गुनमय गुण युक्त, सगुण : ~ ध्यान कीन्ह निरगुन पद १००८ ।
गुनरासी गुणों की राशि को · माँगि मुक्ति छाँडि ~ ३९२८ ।
गुन लवन लवण का गुण खारापन, खारा : सिंधु जा ~ कीन्हो अंत ते पहिचान ।
गुन लायक गुण सम्पन्न : सूरदास प्रभु सब ~ ११३१ ।
गुन सागर गुण-निधान : सूर स्याम ~ नागर ९१९ ।

गुनहारे गुण वाले . लै कर लकुट फिरत ~ ३१७७ ।
गुनहि[1] डोरे के हृदय हार बिनु ~ अलकृत २६३९ ।
गुनहि[2] गुणो को · तब नागरि के ~ बिचार २४३९ ।
गुन हीन गुण रहित, निस्तेज : मीन ~, मृग लजित २४५० ।
गुनाधि गुण के समुद्र (कृष्ण) का सो कह ~ बरनिहै, सूर, नर २४५५ ।
गुनाह दोष के कारण : कौन ~ जोग लिखि पठयो ३६५६ ।
गुनि[1] १. विचार कर : यहै सोच जिय ~ कै ९/१४६ । २. समझो बडौ भाग ~, अगम दसानन ९/७७ । ३. स्मरण करके गुन ~ अभिलाष करत २०९१ । ~ - गुनि १. सोच सोचकर, विचार कर करके ~ — हृदय कहे २९२६ । २. स्मरण करके : यह ~ — पछितानी १९५९ ।
गुनि[2] १. गुण, रूप : देखत ही सकि गए, काल ~ विहाल भए ३०६४ । २ गिन जाते हे तृन तोर्‌यौ ~ जात जिते गुन २६०२ ।
गुनि-गन गुणी लोगो को देहि दान वदी जन ~ १४ ।
गुनिनि गुणियों यह तुम जाइ ~ कौं बूझौ ७५३ ।
गुनियत सोचता विचारता यह मन ~ है १८३४ ।
गुनियँ सोच रहे है या कह रहे हें देखौ धौं यह ~ १५५० ।
गुनी[1] १. गुणवाला है, सगुण है · गुन बिना ~ सरूप रूप बिन १/११५ । २ कलाकुशल, गुणी · गोकुल गनक ~ २४ । २ गुणी (झाड फूँक या जन्त्र-मन्त्र जानने वाला) स्याम भुजग डस्यौ हम देखत, ल्यावहु ~ बुलाई ७४३ ।
गुनी[2] गुनकर, जान बूझकर : जैसी करी नँद के नदन अद्‌भुत बात ~ सा० ल० १०३ ।
गुनीजन गुणी लोग, बुद्धिमान् जस ~ सदा जो जगत सिंधु तैं पार तारै ४/११ ।
गुने समझा . बहुरौ निन निज मन मैं ~ १/२२८ ।
गुनैं १. विचार करे : 'सूर' धरम धरि लाल ~ ३८२८ । २. गुनती है तातै सुनि मन मैं ~ ३७४० ।
गुनौ विचार कर रहे हो प्रभु कहा ~ ८५३ ।
गुन्यौ समझा : तिन पुनि भली भाँति करि ~ १/२२७ ।
गुपत १ गुप्त, अप्रकट या गुप्ता नायिका 'सूर' छेक तें ~ बात हू सा० ल० १० ।
गुपालहि १. गोपाल (श्रीकृष्ण) ही के : ~ गाऐ २/६ । २. गोपाल ही को . मैं मन मोल ~ दीन्हौ ३५३१ ।
गुपाला गोपाल · जिनके सरवस मदन ~ ४०९४ ।
गुपुत गुप्त ~ प्रीति रस भारी १९९६ ।
गुप्तहि गुप्त रूप से : सूरदास प्रभु अतरजामी ~ जोबन दान लियौ १५९१ ।
गुप्तहिचारी गुप्तचरी . ऊधौ तुम जानत ~ ३७४६ ।
गुबर्धन गोवर्धन पर्वत को और ~ भारी परि० १/२८ ।
गुबिद गोविंद, श्रीकृष्ण बिनती करत ~ गुसाई ४३०४ ।
गुबिदहि श्रीकृष्ण को . आजु ~ देखि देखि हौ १७८४ ।
गुमकि गूँज ~ हिरदै रह्यौ ३०७९ ।
गुमान घमण्ड, गर्व : मोहि ~ दिखावत ९/१३३ ।
गुमानी घमडी : लगर ढीठ ~ टूँडक १/१८६ ।
गुर[1] गुड . रस लै लै औटाइ करत ~ १/६३ ।
गुर[2] १. गुरु, अध्यापक, आचार्य · ~ गारुडी सुनायौ २/३२ । २ गरुजनो का भवन डर ~ ली १२६८ ।
गुर[3] मूलमत्र, सार, तत्व की बात : ~ बताये देत १/३११ ।
गुर[4] चतुराई, कला . बृथा फिरत नट के ~ देखत २३०८ ।
गुरबरा उडद की पीठी के बडे जो गुडके रस या उसकी चटनी मे भिगोये गये हो इक कोरे इक भिजे ~ ३९६ ।
गुरु[1] भारी, मोटे . अति मद गलित ताल फल ते ~ १४६५ ।
गुरु[2] १. गुरु ~ सुत आनि दियौ १/१२१ । २ गुरू ने : ~ धौं कहा पढाए १/७ ।
गुरु[3] बृहस्पति · ~, भृगुसुत बिच भौम हो २६१३ ।
गुरु[4] दक्ष कला कला मगीत ~ ११८० ।
गुरु-असुर दैत्यो के गुरु, शुक्राचार्य : सनि~ देव गुरु मिलि १०८ ।
गुरु-आस्रम गुरु के आश्रम पुनि निज ~ चलि गयौ ६/५ ।
गुरु-गोबिद गुरु और गोविंद को . ~ नहि चीनौ १/६५ ।
गुरु चौबीस (अवधूतो के) पृथ्वी, वायु, उदक, अग्नि, चन्द्रमा, सूर्यादि चौबीस गुरु . कही कथा दत्तात्रय मुनि की ~ करायो सारा० ८४३ ।
गुरुजन १ गुरुजन कृपा करा जो ~ पठए १/२०८ । २. बडे लोग ~ करत लराई २०९९ । ३ बडों की ~ सका दूरि करौ ७९० ।
गुरुजननि गुरुजन . मातु पितु ~ जान्यौ १६४७ ।
गुरुजन-बागरि गुरुजनों की या बडो की मर्यादा का पति गृह त्यागे ~ क्यौ ११८२ ।
गुरुजन- सुधि गुरुजनो को याद घर ~ आवति १६२९ ।
गुरुजनहि गुरुजनों को मातु पिता ~ भुलानी १६४८ ।
गुरुजनहूँ गुरुजनों (से) भी . ~ सौं जग २२८४ ।
गुरुता महत्ता · खजरीट मृग मीन की ~ नैननि सबै निवारी ११९७।
गुरु पतनी गुरु की पत्नी ~ कह्यौ पुत्र हमारे ३४११ ।
गुरु-प्रसाद गुरु की कृपा को जो ~ पहिचानै १/४० ।
गुरु-बाँधव गुरु भाई ~ हित मिलै सुदामहिं १/३१ ।
गुरु-भगिनी गुरु-बहिन कच कह्यौ तू ~ आहि ९/१७३ ।
गुरु मुख गुरु द्वारा दीक्षित · ~ नहीं बडे अभिमानी १/२३९ ।
गुरु-लाज बडो के प्रति लज्जा गृह ~ सुत सौं तोर्‌यौ ९९६ ।
गुरुसुत गुरु का बेटा ~ मृतक काज निजु आए २८१५ ।
गुरुहू गुरु मम ~ बिद्या पढि आवै ९/१७३ ।
गुरू गुरु के : बिन ~ मोहि गह्यौ १/४६ ।

गुलचा फूले हुए गालों पर विनोद मे या सप्रेम हलका घूँसा मारना : मारौं ~ गाल तबै बाबा की जाई परि० १/३८ ।
गुलामी सेवा, नौकरी, दासता निसि दिन करत ~ १/१४८ ।
गुलाल एक प्रकार की लाल बुकनी या चूर्ण अबिर ~ अरगजा सोधी सारा० १०२७ ।
गुलालनि गुलाल मे : करत ~ मारु २८८० ।
गुल्म बिना तने का पौधा : ~ लता रस भाँने मारा० ८६८ ।
गुवार ग्वाल : नाचत सकल ~ २९०४ ।
गुवारि ग्वालिने ब्रज की ढीठी ~ २९५ ।
गुवारिनी ग्वालिने . गावति सकल ~ २९०४ ।
गुवाल ग्वाल, अहीर : सब आनँद-मगन ~ २४ ।
गुवाला ग्वाल : विहँसत हरि-संग चले ~ ४९९ ।
गुवालिनी ग्वालिने गोकुल सकल ~ घर घर खेलत फाग २८६४ ।
गुवाले ग्वाले • ऐसे ढीठ ~ १६१८ ।
गुसाइ गोस्वामी यह कहि कै बलदेव ~ हल मूसल लियो हाथ सारा० ८३३ ।
गुसा क्रोध : ग्रह के ग्रसे ~ परगास्यो ३८८० ।
गुसाई १ उपदेशक (व्यग्य) • होहु विदा घर जाहु ~ ३१२४ । २ गोस्वामी (इन्द्रियों के स्वामी) . रीझत नहिं नाथ ~ १/१७४ ।
गुसैयाँ मालिक, स्वामी . खेलत मैं को काकौ ~ २४५ ।
गुहत गूँथते काढन ~ न्हावावत जैहै नागिन-सी भुइँ लोटी १७५ ।
गुहन गूँथने को : कहिह न चरनन देन जावक ~ वेनी फूल ३२२८ ।
गुहराई पुकारा : कृष्न कृष्न ~ १२०८ ।
गुहरायौ पुकारा : भोरहिं आनि तिनहिं ~ ३६९ ।
गुहरावत पुकारता है . बार बार हरि हरि ~ २००१ ।
गुहरावहु पुकारो जाइ सबै कसहि ~ १५१३ ।
गुहरावैं पुकार लगायें, फरियाद करें . अब हम कहाँ जाइ ~ १५११ ।
गुहा १ गुफा, कदरा इत धरहि उत व्योम कै बिच ~ कैं आकार ४२७ । २ गुफाओं को • किए अवरोध अति क्रोध गहि गिरि ~ ४२१३ । ~ रह्यौ गुफा मे रह रही हैं (अधकार मे रह रही हैं) • और अगार नहीं कछु सूझत भ्रम गहि ~ — ४०३७ ।
गुहाए गुथाये या पिरोये हुए : देखी सुमन ~ मग ३८१७ ।
गुहार दुहाई, रक्षा के लिए पुकार . मोर पुकार ~ कोकिला ३१९८ । **लगौ** ~ दुहाई करो, पुकार लगाओ • शत्रु-सेन सुधाम घेर्यौ सूर — ~ ३३२२ ।
गुहारि स्त्री० १ दुहाई, रक्षा के लिए की गई करुण पुकार : हौं तिहिं लग्यौ ~ ९/६५ । २ पुकारने . नदहिं करत ~ ६०५ । ३ शोरगुल, हो-हल्ला . नितप्रति कहा ~ ६०४ ।
गुहारी पुकार, शोरगुल : नद-द्वार कछु होत ~ ३९१ ।
गुहि गूँथकर . ब्रज-वनिता पहिरे ~ हार १७३ ।
गुही १ गूँथी वेनी सुभग ~ अपने कर ३६०१ । २ गूँथा है • मखियन ~ सिंगारि २११८ ।
गुहे गूँथे हुए सुमन ~ सुकेस ३०९७ ।
गुहैहौं गुथवाऊँगा . वेनी सिर न ~ १९३ ।
गूँग गूँगा • ~ पुनि बोले १/१ ।
गूँगे गूँगा । △ ज्यौं ~ गुर खायो आस्वाद का अनुभव तो कर ल लेकिन कह न पाये . ~ — ४/१३ ।
गूँगौ गूँगा : कह जानै ~ बात मिठास ३९५९ । △ ~ गुर खाइ ऐसी बात जिसका अनुभव तो हो लेकिन वर्णन न हो सके : ज्यौं ~ — २/१० ।
गूँझा बडी पिराक, जो आटे या मैदे का अर्द्ध चन्द्राकार बनती है खुरमा, खाझा, ~, मठरी ८२० ।
गूँथत गूँथ रहे है . वेनी ललित ललित कर ~ २६२८ ।
गूँथति गूँथ रही है . एक परस्पर वेना ~ २६२० ।
गूँथि गूथ कर वेनी ~ सँवारत हे २१३७ ।
गूँथी गूँथी, सित अरु पीत जूथिका वेनी ~ विविध बनाय मारा० ९२७ ।
गूँदि गूँथकर : किहिं कच ~ माँग सिर पारी ७०८ ।
गूँदे गूँथा है : जिहिं सिर केस कुसुम भरि ~ ३६९२ ।
गूँदें बालों की लडी बनाती हे कहूँ पर सिर ~ परि० १/४२ ।
गूँधी गूँथा है : जे ये लट हरि सुमननि ~ ३६१९ ।
गूँधे गूँथे हुए • गोभा ~ गाल मसरी १२१३ ।
गूजरीनि गूजरियों . घेरि ~ मौं कह्यो परि० २/२७ ।
गूझा आटे या मैदे का बना पकवान, गुझिया ~ बहु पूरन पूरे १८३ ।
गूझे छिपाये . तनु विरह व्यथा हिय ~ ११८२ ।
गूढ १ गूढ, कठिन, पक्की : ग्रथि गुननि गहि ~ गाठि दै २८२३ । २ रहस्यात्मक बात . सूरदास कहै, सुनहु ~, हरि १८०१ । ३ रहस्यात्मक : ~ जोग कौ ग्यान ३८९२ ।
गूढोत्तर छिपा हुआ उत्तर, गूढोत्तर अलकार ~ अस कहत ग्वालिनी सा० ल० ८० ।
गूथन गूँथने के लिए : वेनी ~ फूल सुगन्ध भरे २६१७ ।
गूदरि फटा पुराना कपडा, गुदडी पाटबर-अबर तजि ~ पहिराऊँ १/१६६ ।
गूलर एक बडा वृक्ष जिसके फल में बहुत से छोटे छोटे कीडे (भुनगे) रहते है ज्यौं ~ फल जीव ४९२ ।
गृध्र गिद्ध ने • जब तनु तज्यो ~ रघुपति तब बहुत कर्म विधि कीनी सारा० २७० ।

गृह-आस्रम गृहस्थाश्रम ~ है अति सुखदाई ९/८।
गृह-काज १. घरेलू कार्य . आप चली ~ कौं ६६। २ घरेलू कार्यों मे : मैं ~ रह्यौ लपटानी ८८४।
गृह-काम घर के कार्यो मे लागि रह्यो ~ ३६१।
गृह-कारज गृह कार्य मे ~ जननी अटकाई ३८३।
गृह-जन घर वालो : सकुच्यौं नहिं त्यागत ~ कौं २२१६।
गृह-तन घर की ओर : अपनै ~ जात २७१४।
गृह-तातन-संती घर-बच्चों वाली : हम हैं ~ परि० १/६३।
गृह पूजन घर की पूजा • ~ सब कियो वेद विधि सारा० ४०४।
गृह-प्रानी घर के प्राणियो को • स्वजन कुटुंब ~ १६८५।
गृह बार घर द्वार : जाहु रह्यौ भावै ~ ३/१३।
गृह बासी घर मे रहने वाले • वै कुबिजा ~ ३८७३।
गृह-सपति घर की सपत्ति : ~ है तनक दुटौना ५१९।
गृह-स्वामी घर वाला, (पति) अरु नाहीं ~ १/२४१।
गृही गृहस्थ • सुनि भागवत ~ गुन गावैं ४२९८।
गेंदुक गेद : प्रभु हँसिकै ~ दई चलाइ २८५६।
गेंदुकि गेद . कर राजति ~ नौसाली २४४१।
गेंदुहि गेद को इक रोकत ~ ५३३।
गे गये सुनि सुनि ~ कै बार १/८४।
गेरत मूँदते हैं, वद कर लेते हैं . लोचन खोलि पलक पुनि ~ ~ ४०५।
गेह १ घर सुरति नहीं रही देह ~ की ३१०२। २ घर की : ~ देहरी पग तब दीजौ २५४८। ३ घर को • बहुरि नृपति निज ~ सिधायौ ९/१७४। ४ घर मे . हैं पचास पुत्री मम ~ ९/८।
गेह द्रग औ रंग भख सुन रीत ताही नेग गेह=घर; द्रग= नयन, रग=श्याम रग, भख/मछली, रीन ताही नेग=उसी प्रकार से। अब घर, नयन, श्याम, मछली शब्दो के आदि अक्षरो के मिलाने से, घनश्याम : ~ सा० ल० ९०।
गेहनि घर • गेह ~ गई तरुनी २४७४।
गेहनी गृहिणी, घरवाली, पत्नी • तुम रानी वसुदेव ~ हौं गवारि ब्रजबासी ३१७९।
गेह नेह घर का प्रेम या स्नेह ~ सुधि-देह बिसारे १६३८।
गेह-नेह-बंधन-पग घर के स्नेह रूपी पैर का बधन • ~ तोर्यौ १६२९।
गेहरा घर तुम बिनु सूनो वाकौ ~ २५४७।
गेहु १. घर बन समान भयौ ~ ४००६। २ घर की : बिनु बल मति गुन ~ ३७८५।
गै गये हुए • लटकन सीस, कठ मनि भ्राजत, मनमथ कोटि बारनैं ~ री ५५।
गैन १ गमन, प्रस्थान, चलने की : सुनि धुनि कीन्हौ ~ १००२। २ पग, कदम, डगर : चलि न सकत इक ~ १०३।
गैनी नाटी : पियरी मौरी गोरी ~ ४४५।
गैयनि १. गायां : जात चल्यौ ~ के पाछैं ४१३। २ गायो के . ~ भीतर आइ समान्यौ १३९०। ३ गायों को : ~ घेरि सखा सब ल्याए ४४६।
गैयाँ गायें . नद किसोर चरावत ~ ४९१।
गैया १ गाय : जैसें ~ बच्छ कै सुमिरत १/४, मारैगी काहु की ~ १५५। २ गायों को • ~ हाँकी चलाई ब्रज कौं ४७२।
गैल रास्ता ~ न छाँडै साँवरौ १४४३।
गैसी १ गई-गुजरी (बुरी) : जो पै होती ~ १३५४। २. मलिन, कपटी • बडी पेट की ~ हो १९६१।
गैहैं गये हैं आदर बहु कीन्हो राजा ने पढन विप्र गृह ~ सारा० १०९।
गैहै पकडेगा . जब गजेंद्र कौ पग तू ~ ८/२।
गैहौ[1] पकडूगा • आज्ञा पाय देव रघुपति की छिनक माँफ ~ सारा० २२४।
गैहौं[2] गाऊँगा . गीत, सुमगल ~ १९३।
गैहौ गाओगे, वर्णन करोगे • तब कैसैं गुन ~ १/३३१।
गोंद पाक चीनी मे पका हुआ गोंद, गोद की पपडी या कतली ~ तिलगरी गिंदौरी ३९६।
गो[1] दुराव, छिपाव जहँ गोरस कौं ~ री २६७।
गो[2] १ गाय . ल्याए ग्वाल ~, गोसुत ४७१। २ गाय पर : मनहुँ सिंह ~ आइ तुलानौ २९४१। ३. गायें • राभति ~ खरिकनि मैं २०२।
गो[3] किरण . ससि ~ मडित जमुना कूल ११८०।
गोइ[1] १. छिप ऐसी भाँति रहै दोउ ~ ११/४। २. छिपाने पर : ~ गात चिन्हहु कहे देत माई २६५८। **लेत मन** ~ मन चुरा या हर लेते हैं : मारग जात — ~ २१०।
गोइ[2] गेंद . जलहीं हरि लै ~ कुदावत ४१६६।
गोइहै छिपाये रखती है : पिय सनेह जो ~ २८२८।
गोई १ छिपकर . बादि अभिमान जनि करौ ~ ८/१०। २ छिपाकर : प्रीति पुरातन राखहु ~ १६९१। ३ छिपाया है जिनि आगैं रस ~ २०४२। **लै गयौ मन** ~ मन चुरा लिया, मन मुग्ध कर लिया करि प्रीति, कपटी — ~ ३८००।
गोऊ चुराने वाले जुवती जन-मन के ~ हैं १५८०।
गोए छिपा दिया चतुरानन बछरा लै ~ ४३८।
गोकुल वर्तमान मथुरा के पूर्व दक्षिण की ओर लगभग ६ मील दूर जमुना के दूसरे किनारे पर स्थित था। वर्तमान गोकुल नवीन और उससे भिन्न स्थान पर है। सो रस ~ गलिनि बहावै ३।
गोकुल चंद श्री कृष्ण : हिंडौरनौ (माई) भूलत ~ २८३३।

गोकुलनाथ, गोकुलपति, गोकुलराइ गोकुल के स्वामी श्री-कृष्ण हम अलि ~ अराध्यौ ३५२० ।
गोकुलहि गोकुल मे मथुरा जनमि ~ ऐहौं १६१९ ।
गो गोहन गायों के साथ जाना तातोइ जैइ जाहु ~ १२१३ ।
गो ग्रह अंत गायों का घर (वथान) और अत = (मरण) शब्दों के बीच के अक्षरों के मिलाने से (थार) = थाल नगर नीक औ काम वीच तें ~ भरे सा० ल० ८० ।
गोचर प्रदेश मे . जो अटके ~ घूँघट पट २३४० ।
गोचारन १ गायों को चराते हुए नहि भावत ~ शृगार सारा० ९१९ । २ गायों को चराने के ~ मिस जात मधन वन ३६३३ । ३ गायों को चराने के लिए अबहि सिधारे वन ~ ४०५१ ।
गोभा गुझिया नामक पकवान ~ गूँधे गाल मसूरी १२१३ ।
गोठ गोठ, गोशाला गैया गोप ~ गृह अँटके परि० २/२० ।
गोड १ पैर • कोड भूले, ~ थरथराने ३०६० । २ पैर मे तुम जनि चोट लागै ~ २१३ ।
गोडियाँ पैर छोटी छोटी ~ १५१ ।
गोत १ कुल, गोत्र . बिसर्या गोकुल ~ ३९९३ । २ गोत्र मे, समूह मे मिले अपनैं ~ २८११ ।
गोतम रिषि रामायण, महाभारत और पुराणों के अनुसार एक ऋषि, जिन्होंने अपनी स्त्री अहल्या को इन्द्र के साथ अनु-चित व्यवहार के कारण शाप द्वारा पत्थर बना दिया था ~ की वाम ९/२२ ।
गोता डुवकी । △ ~ खात डुवकिया खा रहा हूँ . नहीं अधार नाम अवलोकत जित तित ~ — १/१७५ ।
गोती सगोत्री . जानि अपने ~ री १३९ ।
गोदहि गोद मे धन्य ग्वाल गोपी जु खिलाए ~ सारँग पानी ४०९२ ।
गोदा गोद मे लेकर धनि धनि तुम्हे खिलावति ~ ९८४ ।
गोदावरी दक्षिण भारत की एक बहुत बडी नदी जो नासिक के पास मे निकलकर बगाल की खाटी मे गिरती है : ~ बिलव न लावै १/२२४ ।
गो-दोहन गाय दुहने : ~ की जून टरी ४०४ ।
गोधन १ गायें रूपी धन . बच्छ चारत अरु~१६१८ । २ गायों सूर स्याम मोंहि ~ की सौं २१५ । ३ गायों के : जे ~ सग धाए ५७१ । ४. गायो के समूह ~ दियौ चलाइ ५०५ ।
गोधन-धन गायो के धनों ~ तैं दूध चुचात ११८० ।
गोधननि गायों : पठवैं ~ के साथ ३०२८ ।
गोन खुरजी, गोनी वैल ~ व्यापारी १५२८ ।
गोपंगना गोपों की स्त्रियाँ • विमल जस गावतिं ~ ११३ ।
गोप¹ छिपाना । ~ करो छिपाओ कहो नहीं साँची मो हमसौं जिनि ~ — ३०१८ । ~ कर्यौ छिपाया हमसों ~ — १७२० ।
गोप² गोप, ग्वाल . स्याम हलधर मग मग बहु ~ वालक भेनु ४२७ ।
गोपक गोप, अहीर नाम गुपाल जाति कुल ~ ३९२७ ।
गोपकुमारि गोपी राधा गृह तें चली ~ सा० ल० १४ ।
गोप-खरिक गौ-बाडे • औरनि के हे ~ बहु १५ ।
गोप-धनी गोपाङ्गनायें . निज गृह ~ २४ ।
गोपजा गोप जाति की कन्या, गोप वाला (ललिता) अनग वल दृरि कै ~ की २४९० ।
गोपति नद जी हमरे तो ~ सुत अधिपति वनिता न औरन तेई ३८४२ ।
गोपति-सुत नद जी के पुत्र, श्रीकृष्ण हमरे तो ~ अधिपति वनिता न औरन तेई ३८४२ ।
गो-पद-रज गाय के खुर से उठी धूल : ~ लपटाए ४१७ ।
गोपन १ गोपों तब नृप कह्यौ सकल ~ मो मारा० ५०९ । २ गोपों की • दावानल को पान कियो ।मुख ~ रच्छा की सारा० ४७४ ।
गोपनारी ग्वालों की स्त्रियाँ राधिका सग मिलि ~ १७५१ ।
गोपनि १ गोपों • ~ मन व्यापि गई ३११२ । २ गोपों को : ~ पहिराए ३०४२ । ३ गोपो ने ~ सत्य मानि लीन्ही यह ८८८ ।
गोप विहारी स्याम, श्री कृष्ण हरि लियौ हँसि ~ ४०९ ।
गोपवनितन गोप और उनकी पत्नियों : कह्यो वृत्तान्त ।~ को विरह न जात कहायो सारा० ५८० ।
गोप-सखनि १ ग्वाल मडली, गोप सखाओं ~ कै सग ३६२६ । २ ग्वाल सखाओं ने ~ मिलि हार २७ ।
गोपाल १. इन्द्रियों के स्वामी (श्रीकृष्ण) • ऐसी कब करिहौ ~ १/१८९ । २ गोपालक (श्रीकृष्ण) बछरा चारन चले ~ ४१० ।
गोपालनि ग्वालों मे . मिसबहु मोहिं कहत ~ ४०० ।
गोपाल राइ गोपाल राज, श्रीकृष्ण ~ दधि माँगत अरु रोटी १६३ ।
गोपालहि १. कृष्ण को . ~ वारे ही की टेव ३६७८ । २ कृष्ण के व्याकुल भई ~ बिछुरैं ३८०८ । ३ गोपाल को जसु-मति बूझति फिरति ~ ६०५ । ४ गोपाल को ही ~ पठै देहु, हम देखैं ४०८६ ।
गोपाला गोपाल, कृष्ण • कहा कहत ~ १५५० । २ गोपाल/ कृष्ण हे ऐसे ~ ३०४० ।
गोप सभाहीं गोप सभा मे . बैठन ~ २८२६ ।
गोपि (गोपी) गोपियाँ प्रातकाल अस्नान करन को यमुना ~ सिधारी सारा० ४७६ ।

गोपिकन, गोपिकनि १ गोपियो : सोधि मै षटमास देख्यौ ~ कौ नेम ४१४४। २ गोपियो से आरज पथ छिडाय ~ अपने स्वारथ भोरी ३३६१।

गोपिन १ गोपियों : 'सूर' देखि दृढता ~ की ३६८२। २ गोपियो का दिन हीदिन ~ तन छीन परि० १/१६७। ३ गोपियों की सूरदास ~ परनिंशा ३९८५। ४ गोपियो के सूरदास ~ हित कारन ४७७।

गोपिनि १ गोपियाँ · सूर ~ ऊधौ आगे ३८००। २ गोपियो पूरन प्रेम देखि ~ कौं ३८८४। ३ गोपियो को ~ व्यापत रोम ३५५४। ४ गोपियो से · ~ मिलि सुख भोग २६८।

गोपी १. गोपियाँ, ग्वालिनें ~ गावहि मगलाचार २९।

गोपीजन गोपियो के . गाइ गोप ~ कारन १/१२१।

गोपीनाथ गोपियों के स्वामी, श्री कृष्ण ~ राधिका वल्लभ ३८५९।

गोपीबृंद गोपियों का समूह . ~ मध्य जग जीवन ११२४।

गोपी रमन गोपियो मे रमण करने वाले श्रीकृष्ण · प्रीति के वस्य ~ नाम प्रिय २०१८।

गोपुर १ नगर का द्वार : मणिमय महल फटिक ~ लखि मारा० ८२०। २ गोपुर (हृदय रूपी गढ का मुख्य द्वार) . कारि प्रतिहार तज्यौ सुर ~ २७०२।

गो बच्छ गाय और बछडे · मनहु सिंह की गरज सुनत ~ दुखित तन डालत ४०६७।

गोबरधन, गोबर्धन गोवर्द्धन पर्वत ~ की धरन ४०१२, मैं ~ तैं आयौ ३५।

गोबरहारी गोबर उठाने वाली नद घर ~ परि० १/३८।

गोबर्धन-धरन गोवर्द्धन को धारण करने वाले . बिलोकि ~ ६२४।

गोबर्धन-मुख गोवर्द्धन पर्वत के मुख से स्याम कहत गिरि ~ ९१७।

गोबर्धन-राने गोवर्द्धन क राणा श्री कृष्ण ने सब चाखे ~ ३९६।

गोबिद श्रीकृष्ण : जब ~ गए दूरि ४९२। २ भगवान ~ प्रति सबन की मानत १/१३। ३ भगवान के गावत गुन ~ ९/१४।

गोबिदहि १. गोविंद से कहा कहैं ~ ३२७१। २ भगवान को गरब ~ भावत नाही ७/२३। ३ श्याम को ~ गहि ल्याई ३१५।

गोभा लहर, छटा · देखि सखी कछु औरै ~ ३२।

गोमती उत्तर प्रदेश की एक प्रसिद्ध नदी : मन यह करत विचार ~ तीर गये ३४७।

गोमायु सियार, शृगाल चल्यो भाज ~ जतु ज्यों लैकै हरि को भाग सारा० २६७।

गो-मुख[१] गाय का मुख · ~ असुचि तबहि तैं भयौ ६/५।

गो-मुख[२] नरासघा नामक एक बाजा इक पटह, इक ~, इक आउम २८८८।

गो-रंभ गायो का रँभाना : मुरली-धुनि ~ चलत ४३७।

गो-रभन गायो का रँभाना : ~ गोला गर्जन ३२२१।

गोर गोरा : बदन तुव ~ २७६६।

गोरखहि गोरख नाथ को। △ ~ जगाऊँ योग साधना करूँ हरि कारन ~ — ३२२६।

गोरज गाय के खुर की धूलि से ~ मडित केस ४७८।

गोरस १ दूध, दधि, मक्खन ~ लेत अँजोरी १८९४। २ दूध दही से . ~ कीच मचाई २१।

गोरि गोरी जाति ऐंठाति गात ~ बहियानि मेलि २०१०

गोरी स्त्री० १ गोरी (राधा) : बूझत स्याम कौन तू ~ ६७३। २ गोरी (गाय) : मौरी ~ गैनी ४४५। वि० गौरवर्णी सग है श्री राधा ~ १०७७।

गोरे गोरे · सोभा तनु ~ २८३९।

गोरोचन एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य . कुडल मुकुट भाल ~ २२२१।

गोल[२] गडबड, हलचल। △ **पार्यो** ~ भीड लग गई घर घर — ~ ३८७०।

गोलक आँख का डेला, नेत्र . त्रास तैं अति चपल ~ ३५८।

गोलनि गोलों : चल्यौ अतिहिं ~ कौ जूट्यौ २७०२।

गोवत छिपाते है कबहुँ बदन पुनि ~ २५४२।

गोविद श्रीकृष्ण धरे गिरिवर ~ ८७७।

गोवैं छिपाता है : लाजनि अँखियनि ~ ३४७।

गोसनि धनुष कोटि, नोक ज्यौं कमान बिन ~ ४२५८।

गोसमायल मुक्तामाल, पगडी पर लगी मोतियों की लडी · पाग ऊपर ~ १३७२।

गो-सुत[१] १ बछडे बाढै ~ गाइ ८४१। २ बछडों को राजनीति जानौ नहीं ~ चरवारे १/२३८। ३ बछडों के निताहिं आवत सुरभि लान्हे ग्वाल ~ सग ४२७।

गो-सुत[२] पृथ्वी पुत्र, मगल . ~ भयौ जो गाधि गह्यौ बर ६७५।

गोसौं क्रि० स० छिपाकर स्रवननि लागि कहौं कछु ~ २९२२। पु० विचार . चित्त चिता भरी सुदरि करति मन ~ २७११।

गोहन १. सगिनी (राधा) सूरदास प्रभु मोहन ~ की छवि ११५०। २ सहेलियो को . कत आई तज ~ १४४९। ३ पास टरत नहीं ता ~ तैं २२८१। ४ साथ/सग मे रहने वाले : सग सखा बहु ~ २८८८।

गोहनि साथ · टरति नही कहुँ ~ सौं २४९१।

गोहनौ लगे/गुथे हुए हैं बिच बिच फदा ~ २८३२।

गोहारि पुकार, दुहाई △ ~ **लगो** दुहाई लगाते हो धावहु नद ~ — किन ७७।

गोहारी दुहाई, पुकार परसुराम, तुम आइ लगत क्यों नहीं ~

~ ९/१४।

गौं[1] १ अवसर : पाप पुन्य कौ फल दुख सुख है, भोग करौ जोई ~ १/१५१। २ मतलब (स्वार्थ) · अपनी ~ के टेकी ३८९८।

गौं[2] ढब, चाल, ढंग : सूर काटि जौ माथौ दीजै चलै आपनी ~ हिं ३५९५, येइ चतुरनि की ~ है री २१६२।

गौंवै गायें : कान्ह बिना ~ सब व्याकुल ३१३७।

गौंहि मतलब से : चलै आपनी ~ ३५९५।

गौंहैं दाँव से · हम बावरी त्यौं न चलि जान्यौ, ज्यौं गज चलत आपनी ~ ४०७५।

गौकुल गोकुल कहि धौं कौन हेत हरि ~ ३९८२।

गौंडी एक रागिनी · ~ नट नारायन गौरी सुरहिं सुनावत १२२०।

गौतम रामायण, महाभारत और पुराणों आदि के अनुसार एक ऋषि जिन्होंने अपनी पत्नी अहल्या को इन्द्र के साथ अनुचित कार्य के कारण पत्थर बना दिया था · ~ लख्यौ, प्रात है भयौ ६/८।

गौतम घरनि गौतम ऋषि की स्त्री, अहल्या : ~ तरी परि० १/३२।

गौतम-तिय, गौतम तिया गौतम ऋषि की पत्नी, अहल्या . जे पद रज ~ तारी ९८१।

गौतम नारि, गौतम नारी गौतम की पत्नी, अहल्या : सुरपति ~ निहारि ६/८।

गौतम-रूप गौतम के रूप मे : ~ बिना जौ जैयै ६/८।

गौन गमन, प्रस्थान : मोहन ~ कियौ ३९९३।

गौना गमन : मो देखत अबहीं कियौ ~ २८८४।

गौने गये : सूरदास प्रभु मधुवन ~ ३३५२।

गौप गोप-गोपियों को . गए ~ बिसराई ३७९९।

गौपनि गोपों . इन ~ सौं कहत जिवावहु ८३९।

गौपिनि गोपिकाओं : ते सँदेस श्री मुख ~ कौ ३८६६।

गौर[1] गौर वर्ण के . ~ स्याम कपोल सुललित १०८२।

गौर[2] १ ध्यान · कहति करौ यह ~ ३२३। २. सावधानी मे : राखे हैं करि ~ २३८१।

गौर[3] एक राग सोरठ ~ मलार सोहावन सारा० १०१५।

गौर-गाल-दुति गौर शरीर की काँति : ~ विमल वारि-विधि २४५४।

गौरस गोरस (दूध, दही-मक्खन) · ~ लेहु री कोउ आइ १६२५।

गौर-स्याम गौर और श्याम वर्ण की : ~ जोरी बनी बलराम कन्हैया ११६।

गौरि[1] एक रागिनी जो श्रीराग की स्त्री मानी जाती है · ललित सु ~ २२९५।

गौरि[2] पार्वती · ~ गनेस्वर बीनऊँ ४०। २ पार्वती के : मनौ गगा ~ टर १७०। ३ पार्वती को : पूजत ~ भयौ छीनौ १३०६।

गौरि-कंत शकर जी की . ~ पूजत जहँ नूतन जल आनि ९/९६।

गौरि-पूत पार्वती के पुत्र, कार्तिकेय ~ रिपु ता सुत आयुध ३३७२।

गौरि-पूत-रिपु पार्वती के पुत्र (कार्तिकेय) का शत्रु तारक = तारा · ~ ता सुत आयुध ३३७२।

गौरि-पूत-रिपु ता सुत पार्वती के पुत्र (कार्तिकेय) का शत्रु (तारा) का पुत्र (बुध) ~ आयुध प्रीतम ताहि निनारे ३३७२।

गौरी[1] एक रागिनी जो श्री राग की पत्नी मानी जाती है · . मुरली बजावै ~ १३८५।

गौरी[2] श्वेत वर्ण की गाय का सकेत, गोरा . पीरी धौरी धूमरि ~ १३७६।

गौरी[3] पार्वती · रमा ~, उर्वसी रती इंद्र वधू समेत ७०६।

गौरी पति शकर जी · जाकौ ध्यान धरत ~ ३७९७।

गौरी-सुत पार्वती के पुत्र गणेश · ~ दोउ सँग मारद ९५०।

गौरे गोरे · आछी नीकी कुसुभी सारी ~ तन २७९३।

गौवनि १ गायों करत ~ कौ लेखौ १४९१। २ गायों के · ~ अधर दसन तृन रहि गयौ परि० २/८।

गौहन दे० गोहन : मिलि बैठे दोउ ~ २१७४।

ग्यान ज्ञान : श्री मुख ~ पथ जौ उचर्यौ ४१५१।

ग्यारहौ ग्यारहों : ~ रुद्र जैसें १७३९।

ग्रथ[1] पुस्तक · अब गुरु ~ पढाए ३९९१।

ग्रंथ[2] ग्रंथि को, गाँठ को · अतर ~ न खोलै ३६४५।

ग्रथति गूँथती है : एक सुमन लै ~ माला २८९२।

ग्रथि बँटकर : गुननि गहि गूढ गाँठि दै २८२३।

ग्रथित १ गूँथा हुआ . ~ सत धरत तिहिं ग्रीवा ३९५६। २ गूँथ : तुम्हरेइ गुन ~ करि माला २५८७। ३ गूँथी हुई जाके गुन गनि ~ माला ४२८६।

ग्रसी पकड लपेटा हो · लता मालती ~ २११५।

ग्रथित १ गूँथा हुआ मनिनि ~ ज्यौं सूत २/३८। २ गूँथी हुई : कबरि ~ अहिपति न सहस फन २११७।

ग्रसए काटे जाने के . बिह कपोल दसन ~ २६४२।

ग्रसत वि० ग्रसित नाह ~ गजराज छुडायौ ५६७। क्रि० स० १. ग्रसता है असुर अबोध दुष्ट अजहूँ ~ परि० २/४१। २ पकडती है · ~ बाँम अनियारे ३८३२। ~ भए त्रस रहा है, चोंच मार रहा है . जानि ~ — कीर ११२६।

ग्रसति समाई बैठी है नख सिख लौं है सब गातनि ~ २४१८।

ग्रसि ग्रसित कर : मिंहिका सुत हर-भूषन ~ ज्यौं ३२२२।

ग्रसित १. ग्रसा हुआ · तापर उरग ~ तब सोमित पूरन अंस

ससी ११९६। २ ग्रस्त : काम-क्रोध मद लोभ ~ है १/१११।

ग्रसिहै ग्रस लेगा, पकड़ लेगा : काल ~ आइ १/३१५।

ग्रसी ग्रस लिया है विरह सर गभीर ग्राह, ~ काम अधीर ४१०९।

ग्रसे ग्रस लेने पर : ग्रह के ~ गुसा परगास्यौ ३८८०।

ग्रस्यौ ग्रस लिया, पकड़ लिया . ~ गज ग्राह लै चल्यौ पताल कौं १/५।

ग्रह[1] नव (९) : ~ निधि ग्रह मे आई सा० ल० ८१।

ग्रह[2] घर : ग्रह निधि ~ मे आई सा० ल० ८१।

ग्रह[3] ग्रह (ज्योतिष का) : ~ लगन-नषत पल सोधि २४।

ग्रह-अष्टम सूर्य से आठवा ग्रह (राहु), राह, मार्ग ~ मे मिलौ नदसुत सा० ल० ८२।

ग्रहन[1] पहने · चारु स्रवननि ~ कीन्हे १८१५।

ग्रहन[2] ग्रहण : बडौ परब रवि ~, कहा कहौं तासु बडाई ४२७५।

ग्रह नछत्रअरु बेद अरध कर, ग्रह नछत्र अरु बेद अधर करि ग्रह+नछत्र+बेद= ९+२७+४=४० का आधा (२०) बीस, विष . ~ सा० ल० २२।

ग्रह नछत्र है बेद ग्रह नछत्र वेद ९+२७+४=(४०) चालीस सेर मन, मनि, मणि : ~ जासु घर सा० ल० शेष ७।

ग्रहपति-सुत हित अनुचर कौ सुत सूर्य के पुत्र (सुग्रीव) के हितू (राम) के सेवक (हनूमान) के पुत्र (मकरध्वज), कामदेव : ~ सा० ल० २६।

ग्रह-बसु आठवॉ ग्रह (राहु) राह, मार्ग . ~ मिलत सभु की सेना सा० ल० १०।

ग्रह-मुनि द्रुति मुनि (सात) सातवॉ ग्रह (शनि)=मद, मद द्युति, फीकी आभा : ~ हित के हित कर तैं सा० ल० ६।

ग्रह-मुनि-पिता पुत्रिका मुनि (सातवॉ) ग्रह (शनि) के पिता (सूर्य) की पुत्री, यमुना · ~ सा० ल० ११।

ग्राम १. ग्राम/गॉव की : काया ~ मसाहत करिकै १/१४२। २. समूह : कबहुँक गान करत गुन ~ २७८१।

ग्रामिनि समूह · मुदित भई गुन ~ १०४८।

ग्रामी गॉव के भरि भरि द्रोह बिसै कौं धावत जैसे सूकर ~ १/१४८।

ग्रासत खाते हैं, ग्रास ग्रहण करते हैं स्वाद लेत सुदर हरि ~ ३९६।

ग्रासित ग्रसा हुआ, जकड़ा या फँसा हुआ · इहिं कलिकाल ब्याल-मुख ~ सूर सरन उबरै १/११७।

ग्रासै ग्रस सकता है · मारि न सकै, बिघन नहिं ~ १/९१।

ग्रास्यौ ग्रस लिया है : हा जदुनाथ जरा तनु ~ १/२९८।

ग्राह[1] १ मगर, घडियाल देवल कह्यौ, ~ तू होहि ८/२। २. मगर ने जब गज चरन ~ गहि राख्यौ १/१०९।

ग्राह[2] राहु से · ~ ग्रसित रवि सम रग लीन्हे १२१३।

ग्राह अनंग कामदेव रूपी ग्राह गहे ~ १/९९।

ग्रीव १. कण्ठ . उर अरु ~ बहुरि हिय धारै ३/१३। २. गला, गर्दन . चापि ~ हरि प्रान हरे ७८। ३. गर्दन पर · भुज ताटक ~ सिर बदन २६४२। ४. गले मे/गर्दन मे : ~ रभ मत कीन्हौ ३५६३। ~ **कपोत बिसारी** गर्दन के सामने तो कबूतर की गर्दन भी तुच्छ है : हेम खभ ~ — ११९७।

ग्रीव दर गले मे : बर हार ~ १०४।

ग्रीव-प्रजंत गर्दन तक : ~ नीर मैं ठाढी १७५३।

ग्रीवा १. गरदन, गले ~ रभ नैन चातक जल ३३०२। २. गले मे . मुडमाल सिव ~ कैसी १/२२६।

ग्रीषम १ गर्मी, ग्रीष्म . ~ तेज सहति क्यौं बेली ३८७७। २ गर्मी मे : ~ कमल-बदन कुम्हिलैहै ९/३४।

ग्रीषम पवन गरम वायु=लपट=लिपटना : ~ लेत हरि सा० ल० ४८।

ग्रीषम रिपुन ग्रीष्म ऋतु के शत्रु (मेघ) पयोधर=कुच · ~ मद्धे साप सा० ल० २।

ग्रेह घर=गृह।

ग्लानि अनुचित कार्यों के विचार से उत्पन्न खेद या खिन्नता · ताकैं मन उपजी तब ~ ४/१२।

ग्वार ग्वाल : पूछत हैं गोपी अरु ~ ३१४०।

ग्वारन ग्वालों के : इक दिन हरि हलधर-सग ~ ८००।

ग्वारनि पु० १. ग्वाल-बालों की . भई ~ भीर २६। २ ग्वालों : ~ के पनवारे चुनि चुनि ४९०। ३. ग्वालों मे . ~ कहौ ऐसी जाइ ३१४१। स्त्री० गोपियो को नँदरानी ~ बुलाइ ९५।

ग्वारि १ ग्वालिन, गोपी : अरी ~ मयमत, बचन बोलति १६१८। २ ग्वालिनें : बरजति ~ जसोदा कौं ५४६। ३ ग्वालिनों को : मथन हारि सब ~ बुलाई ५२०। ~ **गँवारि भई** ग्वालिन गँवारिन बनकर : निपटहिं ~ — १५७७।

ग्वारिनि १ गोपी, ग्वालिन : ~ मोहिं बहुरि बाँधैगी ४०३४। २ ग्वालिनें : ~ रहति सदा बिततानी ८८६। ३ ग्वालिनों को, गोपियो को ~ जोग सिखावै ३५५०।

ग्वारिनि-जियहिं ग्वालिन के मन मे : ~ परस्पर भावै परि० १/१८।

ग्वारिनिनि गोपियो को, ग्वालिनों को : सूरदास प्रभु प्रगट ~ परि० १/६६।

ग्वारिनी ग्वालिन, अहीरिन · ढूँढत फिरत ~ हरि कौं ४५९।

ग्वालनि १ ग्वालों, गोपों : ~ की टेरनि २०५८। २ ग्वालों की : नँद नँदन कहै हम ~ जुठि हारे १/२४२। ३ ग्वालों के : सूरदास ~ सग मिलि हरि ४१०। ४ ग्वालों को : ~ मैन दई तब स्याम १५०३। ५ ग्वालों मे : सूर स्याम पूछत सब ~ २४३।

ग्वालनि बर सुन्दर गोप बालकों से : पुनि लै खात लेत ~ २८२।

ग्वालि १ गोपिकायें : यह सुनि ~ सब मुसक्यानी १५२०। २ ग्वालिन : ~ इक छींको ५४०।

ग्वालिनि १ गोपी ~ विकल देखि हरि प्रगटे १४०९। २ गोपी के · ~ सग तहँ तहँ आपुन धायौ ४१५। ३ (गोपी) ग्वालिनें : ~ जोवन-गर्व गहेली २९०१।

ग्वालिनी गोपिका को . कहि समुझायौ ~ ४७५।

ग्वैंडे सीमा पर : निकसि गाउँ के ~ आए ९०१।

ग्वैया साथी . रहे बैठि जहँ तहँ सब ~ २४५।

घ

घट घटे के : राखे गज के ~ तरी ४१५९।

घट[1] १. घडा · जैसैं ~ पूरन न डोलै १८४३। २ घडे : बारबार रहँट के ~ ज्यौं २८०४। ३ घडों का : अप्ट दम ~ नीर अँचवति १/५६।

घट[2] घाट : चलनहार वे औघट ~ के परि० २/४८।

घट[3] १ अन्तस्, हृदय · सत्य पुरुष ~ बैठे ही मैं १/२४४। २. हृदयों मे सव ~ अतरजामी १/१९०। ३ शरीर · तजि न गयौ ~ तातैं ३६७९। ४ शरीर मे एते ऊपर प्रान रहत ~ ३६५४। ~ **घट** प्रत्येक प्राणी/जीव/शरीर/कण मे ~ — व्यापि रह्यौ है जोइ ७/२। ~ **घटहि** घटघट मे . सूर प्रभु ~ — व्यापी १४९९।

घट अंतर अन्तर्मन से जो ~ हरि सुमिरै १/८२।

घट-कनक स्वर्ण-कलश कुच ~ सुभाऊँ १५५३।

घटकनि पात्र से पान करना · रूप सुधा लोचन पुट ~ ६१८।

घटगौ कम हो गया : स्याम कौ ~ विरह प्रसग सा० ल० ८६।

घटत १ घटता है, गिरता है . अजुली जल ~ जैसैं ३८६५। २ कम होता है : ~ न एक घरी ३७९०। ३ कम, घटकर . नाहिंन ~ सुधा तैं थोरी १२१३। ४. घटते हुए : सरद रितु जल ~ न जानति २८०२।

घटताई कमी : इनहुँ मैं ~ कीन्ही १८५८।

घटति १. कम या क्षीण होती है · आयु ~ ज्यौं अजुलि पानी १/१५९। २ कम होगी कैसैं ~ कठिन यह कानी ३२६२।

घटती हानि · ~ होई जाहि तैं अपनी १६१६।

घटनि[1] घटायें : आजु ब्रज महा ~ घन घेरो ८६९।

घटनि[2] घडे . सूर स्याम मनु अमृत ~ कौं देखत हैं कर लाइ १४४८।

घटवाई घाट का कर लेने वाला : तुम मग मैं ~ १५६४।

घटवारौ घाट पर कर वसूल करने वाला . नहिं जानत मोकौं ~ १५२४।

घट-सुत घडे से उत्पन्न अगस्त्य ऋषि ~ रिपु तनया पति सजनी ३२८३।

घट-सुत-असन घट सुत (अगस्त्य) का भोजन, समुद्र : ~ समय सुत आनन ३२२२।

घट-सुत-असन-समय-सुत घट सुत (अगस्त्य) का भोजन (समुद्र) का पुत्र, चन्द्रमा : ~ आनन ३२२२।

घट-सुत-रिपु घट सुत (अगस्त्य) का शत्रु, समुद्रः ~ तनया पति सजनी ३२८३।

घट-सुत-रिपु-तनया घट सुत (अगस्त्य) का शत्रु (समुद्र) की पुत्री, लक्ष्मी · ~ — पति सजनी ३२८३।

घट-सुत-रिपु-तनया-पति घट सुत (अगस्त्य) का शत्रु (समुद्र) की पुत्री (लक्ष्मी) के पति विष्णु = कृष्ण : ~ सजनी उर अति कपट गहे ३२८३।

घटहि घट मे . सूर प्रभु घट ~ व्यापी १४९९।

घटहूँ शरीर मे विछुर्यौ हस काम ~ तैं ३२२९।

घटहू शरीर (मे) भी ~ मैं इन्द्री वस वाकै २१०१।

घटा[1] घटा, मेघ माला : अजन ~ घनी २/२८।

घटा[2] समूह धनुष चहुँ पास रिपु ~ घोटा ३०४८।

घटाई घट रही है : ससि थक्यौ निसि न ~ ९९०। २ घटा दी है, कम कर दी है वह कहि मेरी भक्ति ~ ९६१।

घटा-घन बादलों का समूह : ~ घोर घहरात ८५५।

घटाघोटा मेघ समूह के समान · चितै डरपे असुर ~ ३०५५।

घटानौ घट गई है · मोहूँ सुन्यौ (भक्ति) ~ १/१९६।

घटावत १ घटाता है : कोउ न ~ कानि परि० १/६५। २ घटा रहे है, कम कर रहे हैं अब देखौं मरजाद ~ २३२०।

घटावति घटाती है कबहुँ मरजाद ~ १५५५।

घटावै कम करे · इहिं विधि महत ~ १/१९२।

घटि[1] १ कम, घटकर : कछु दिन ~ घट मास गए ८८। २ कमी, नीचता हम ~ कहा करी ३६५४। ३ छोटी, तुच्छ, नीच : बरनहीन ~ जाति ३८१६। ~ **गई** ढल चली है·

स्यामा प्यारी ! बोलन लागे तमचुर ~ — रजनी २८००।
घटि² घड़ी को : पल घटिका, ~ जाम, जाम दिन २३०५।
घटिका घड़ी : पल ~, घटि जाम, जाम दिन २३०५।
घटि बढ़ि कम ज्यादा : मैं इनकौ ~ नहिं जानति १९०३।
घटी कम हुई हृदय की कबहुँ न जरनि ~ १/९८।
घटे कम हो गये · ~ अहार विहार हरष हित ३६७४।
घटै १ कम है कहौ ~ को का तै ३६७९। २ कम होती, नष्ट होती . जग-प्रिय ~ देखि निज नैनन सा० ल० ६४। ३. कम हो सकता है : कैसें पर-ताप ~ ९/९७। ४. घट रही है : ~ पल पल (देह) १/८८।
घटैगौ घटेगा इहिं विधि कहा ~ तेरौ १/२६६।
घट्यौ कम/नष्ट हो गया : तारिका दुरानी, तम ~, तमचुर बोले २०३९।
घन¹ १ बादल . बीच ~ नदी गरजत बरषत १२। २ बादलों की ~ घटा लजानी ४७५। ३ मेघ सी . कमलनयन ~ साँवरौ ८२३।
घन² कुच, पयोधर ~ ऊपर जलजा सुत सोभा सा० ल० ९७।
घन³ १. घने, सघन : गए बन ~ ओर ६८४। २. घनी : सुंदर नैन बिसाल भौंह ~ २००४।
घन-घोर मेघ के सदृश गंभीर शब्द, ध्वनि : मुरलि-सुर ~ १३८९।
घन-चहुँ पासा बादल के चारों ओर : दामिनि ~ २०६७।
घनसार कपूर · पवन, पान ~ सजीवन ४०६८।
घनस्याम¹ काले मेघ के · तड़ित बसन ~ सदृश १/६९।
घनस्याम² श्री कृष्ण : अंत के दिन कौं है ~ १/७६।
घनि बादलो . ~ मैं बिज्जु छटाई १०८।
घनी १ बहुत अधिक, अपार . जाकी मौज ~ १/३९। २ मोटी . बाती सैंल ~ २/२८।
घने पन गंभीरता से : मोहि ~ घेरौ सा० ल० ३३।
घनेरे १ घनिष्ठ, बहुतेरे . भैया बंधु कुटुंब ~ १/७१। २ बड़े : संकर्षन पाए जतन ~ १३९५। ३ बहुत अधिक करत उपहास ~ १६१८।
घनेरैं बहुत : जानहु जतन ~ २८२६।
घनेरौ वि० १ अधिक, बड़ा . जननि जनक निज कुटुंब ~ ३९९४। २ बहुत : नंद जतन करि रहे ~ २९९०। क्रि० वि० बहुत अधिक : तुम कीन्हौ नेह ~ ४०७९।
घनौ बहुत अधिक : कपट ~ उर बरतौ १/१२६।
घबराने घबरा गये : सबही ~ ५२६।
घमकि १. 'घम-घम' की ध्वनि से ~ मथनियाँ घूमैं १४७। २ जोर से ~ मार्‌यौ घाव ३०७९।
घमर घमघमाहट की आवाज, गंभीर ध्वनि : मेघ-सब्द दधि माट ~ कौ ३३३।
घयौ घी : मथि मथि पियौ ~ ३६२८।
घर¹ चौपड़ या शतरंज का खाना, घरों में : ~ फिरि फिरि गिनि आने १/६०।
घर² अयन, आइना, दर्पण : कुंती सुत पितु सनमुख ~ कर सा० ल० ८२।
घर³ १. घर, मकान ~ **समुहाई** घर को सिधारे एक जात फिरि ~ — ९०२। ~ **घरनि** घर घर में चली ब्रज ~ — यह बात २७३। △ ~ **कियौ** घर बना लिया हो अर्थात टिक गये हो : मनु सीपज ~ — बारिज पर ९३। ~ **की** अपनी, निजी . मिसरी सूर न भावत ~ — चोरी को गुड़ मीठो । ~ **की ठकुराई** घर के स्वामी ठहरे : नंद महर ~ — ९००। ~ **ही के बाढ़े** घर में या शत्रु-पीछे डींग हाँकने वाला, सामने कुछ न कर सकने वाला तुम कुँवर ~ — अब कछू जिय जानिहौ २८१०। ~ **खोना** घर को गँवाने की : यह बिधि है ~ — १४७०। ~ **बैठे** बिना परिश्रम के · ~ — निधि पाई ३६३।
घर-घहरि घरघराहट : धुनि रही ~ ६७।
घर चेरे घर का सेवक : निडर भए ~ १/१७०।
घरणी घरवाली, स्त्री . मुनि गौतम ~ जानत हैं सारा० ६८६।
घरन १ घर . मदन मोहन आए तेरे ~ परि० २/४४। २ घरों में . लै चलौ गोकुल ~ ३१२२।
घरनाउ बाँस में घड़े बाँधकर बनाई गई नौका . सेज भई ~ ३२७५।
घरनि¹ गृहणी, पत्नी : नंद-~ तब कहति सखिन सौं ८१२।
घरनि² १ घर · फैलि गई यह बात ~ घर ८२०। २ घर में मथुरा घर ~ यह बात ३०८८। ३ घरों : गाइ लई सब घेरि ~ तैं ४२६। ४ घरों का दुर्‌यौ अनंद ~ ३३४४। ५ घरों की · ब्रह्मा सुनी यह बात अमर घर-~ कहानी ४३१। ६ घरों में कान्ह करत ब्रज ~ अचगरी ३१९।
घरनी १ पत्नी, स्त्री · सूरदास धनि नँद की ~ ३३। २ पत्नी ने सोर ~ कियौ १/५। ३ पत्नी हो कहो बचन काकी तुम ~ २१९९।
घर-बार घर द्वार, गृहस्थी . लिये फिरैं ~ १/४१।
घरहि १ घर . ~ तैं हम प्रात आईं १६२७। २ घर में : आए नंद ~ ५४१। ~ **घर** घर-घर में · — ~ लागे सुख देनु ४३८।
घरहीं घर में ही . ~ बैठे दोऊ दास ४३०६। △ ~ **के बाढ़े** शत्रु या विपक्षी की पीठ पीछे डींग हाँकने वाले, सामने कुछ न कर सकने वाले . पर्‌यौ न काम नारि नागर सौं, ई ~ — २८२६।
घरही घर ही : नंद महर ~ के ८२६।

घरहु घर (में) भी : 'सूर' बन बसै, ~ मैं बसै १९१९।

घरहू १ घर . ता पाछे ~ के लरिकनि २९१। २ घर भी · ~ आवन नाहिं २९७८।

घरि १. घड़ी : आए ई सुभ ~ में १५३५। २ घड़ी भर का समय : देत बिलम्ब न ~ की १८१।

घरिक घड़ी भर, कुछ देर . ~ मोहिं लगिहै खरिका मैं ६७९। ~ देखि एक घटी इन्तजार करके · ~ — मनहीं सुख दीन्हौ ९३८।

घरियार घड़ियाल (घड़ी घड़ी में बजने वाला घंटा) : सुनत सब्द ~ को ३०२१।

घरी १ क्षण, घड़ी . रहत न एक ~ २३४३। २ क्षणभर भी कछ न बिलम्ब ~। ३ तत्काल : 'सूर' प्रभु देखि नृप क्रोध पूर्यौ ~ कस्यौ कटि पीत पट ३०७६। ~ **घरी** घड़ी घड़ी या घड़ी प्रति घड़ी : पल पल ~ — १/१८४।

घरीक घड़ी भर, क्षण भर, कुछ देर · तौ लगिहै ~ लाड़िला २७९२।

घरी-पहर घड़ी प्रहर : तुम ही एकछत्र ~ के ६०७।

घरी-पहरन घड़ी पहरों . अब तौ दान ~ की ३३८३।

घरु घर · प्रीतम पठै दियौ बैरिन ~ २८१७।

घरे घर में . ~ जगाए परी री २३००।

घरैं घर : मोहन गाइन लै आवत ग्वालिन सग ~ ३५८१। ~ घर घर-घर में . ब्रज बीथिन पुर-गलिनि ~ — ३४०।

घस्यलाय घिसकर लगाया . अति सुगन्ध ~ अरगजा सारा० १०८२।

घसि १ घिसकर : कुंकुम चंदन ~ तन लावति ३९२२।

घसिकै घिसकर : ~ गरल लगाय उरोजन सारा० ४१५।

घसेहो घिस चुके हो . मानिनि पग पर सीस ~ हौ २५०३।

घहनाई घहना उठे : मत्त-सब्द ~ १४९५।

घहराइ घहराकर : गगन ~ जुरी घटा कारी ६८४।

घहरात १ घरघराते : ~ घररात, दररात, हररात ८५३। २ घरघराते हैं, घोर शब्द करते हैं : गगन मेघ ~ थहरात गात ८७०।

घहरातहि घरघराते हुए : गजि गजि ~ आए ९२६।

घहरानि गंभीर ध्वनि, घहराने की आवाज . सुनत ~ ब्रज लोग चकित भए ६२।

घहरै घहरा रही है · मेरी ~ अपार २९१७।

घहरैं ध्वनित हुआ गरजत गगन सहित ~ ७६।

घाँ[1] कुलों : दुख मेट्यौ दुहुँ ~ की १/११३।

घाँ[2] १ पक्ष से, ओर से : तेरी ~ ह्वै महूँ लरी २४३४। २ पास : जितनी है तो ~ रौं १९५५।

घाँ[3] दिशा : किहि ~ के तुम बीर बटाऊ ९/४४।

घाँगरी घाँघरा : तनी छंद रहित ~ परि० २।१२०।

घाँते ओर निकले . फोंक बाहिरी ~ २६८४।

घाइ १ घाव हैं जिते बिरह के ~ ३५३७। २ प्रहार : पर भहराइ भभकत रिपु ~ सौं ९/१२९।

घाइँ पक्ष में, ओर उलटि भई सब हरि की ~ २८२८।

घाई हत्या, दुर्दशा : सूरदास प्रभु मिलहु कृपा करि, होनि हमारो ~ ३३०६।

घाउँ घावँ की . दाउँ ~ तुमहिं सब जानति। १७४८।

घाउ १ आघात, घाव ~ करौं प्रान लगि ~ ४१८८। २ आघात या चोट से मरिहैं असुर ताहि के ~ ६/५।

घाट घाट मुक्ता दल तट सुभग ~ घट ६३७। ~ **बाट** सर्वत्र या स्थलों पर ~ — सब मोर मचायो ३४०।

घाटनि घाटों पर · बाटनि ~ लेत हैं टोना २८८४।

घाटि *वि० कम (की है) · कोन करनी ~ मोसौं १/१९९।* **स्त्री०** १ नीच कर्म : कहियौ जाइ देवकी सौं तुम कौन ~ हम कीन्ही ४०८६। २ शेष, जितना रह गया हो ~ देहु तिहि माहि १४६१।

घात[1] १ आघात, प्रहार . प्रान हमारे ~ होत हैं ३६०७। २ प्रहार से कैसे बच्यौ जाउँ बलि तेरी तृनावर्त के ~ ८१। ~ किए बलि दी है · कबहूँ किए बहु पसु ~ १/२०६।

घात[2] १ , अत्याचार, विश्वास-घात · जौ करैं अबला ~ ३८८५। २ दाव : आपु अपनी ~ निरखत २४४। ~ **अघातैं** घात लगा लगाकर छिनु-छिनु ~ — २२६१। ~ **लगाई** मोका ढूँढ रखा है रासी ~ — ९/१४।

घातक घात करने वाला, क्रूरकर्मा . ~ कुटिल चबाई कपटी १/१४०।

घातनि १ आघात से बज्र ~ करौं चुरकुट ८५२। २ घात थी . लुब्धक की सी ~ ३५४९। ३ घातों में दुहू मैं नाहिन कोउ घटि ~ ३७६०।

घातहि १ दाँव घात · इक परसत ~ को २८८८। २ घात (बैरे) में . जबहिं आनि ~ परी १४६१।

घाता सहार किया, समाप्त किया दुष्ट मारि मुष्टिक कियो ~ १/१२३।

घातिनी नाश करने वाली बाल ~ परम सुहाई ५०।

घाती १ घातक, घात करने वाला ~ कुटिल ढीठ अति क्रोधी १/१८६। २ घात लगाकर : त्यों ही आप आपनी ~ सा० ल० ४८। ३ वध या नाश करने वाला : कठिन मदन-सर ~ ३४९०।

घातैं · घातैं, सूर स्याम नागर नागरि सौं करत प्रेम की ~ ६८१। △ **मिलई** ~ चतुराई की बातैं छाँटने लगी है : मोसो कहत स्याम ह कैसे ऐसी — ~ १७२१।

घामहि धूप में : रेंगत ~ माँझ ४११।

घामैं धूप मे : ~ राखी डारि १३३७।
घायनि घावों से : ~ फरहिं परे २४६०।
घायल आहत, जख्मी : मानौ रन छूटे ~ कौं २५१९।
घालक १. दूर करने वाले : ब्रज-जन के दुख ~ १३८८। २. सहारक : कैसे होहि पूतना ~ १६०७।
घालत १. नाश करते हैं, बिगाड़ते हैं : औरनि के घर ~ २२३१। २ (मारकर) डाल देंगे कंस अबहिं बधि ~ ३०३७।
घालति घायल किए चलती हो : ~ छुरी प्रेम की बानी १५८५।
घालन मारने : आए ~ खौहनि परि० १/९०।
घालि १ डालकर : नवल नागर उरहिं ~ सानी २७३०। २ गड़ाकर, मारकर : चोंच ~ पछितायौ १/५८। ३. रख कर विचार कर : कहा रही मन ~ २८१०।
घाली १ चाल चली है : सूरदास स्वामी यह ~ ३७९३। २. मचाई : बरहिन ~ धाह ३३१३। ३ डाल : यह मुरली दै ~ ४०९८। ४ डाल दी है : री हौं स्याम मोहनी ~ १४०८। ५ भेजी थी (भेजा था) : कमल नयन पाती दै ~ ४२४७। ६ दूर, खो : जैहैं भटकी ~ ५०३। ७ मार डाला : पय पिवत पूतना ~ ३०३०।
घाले दूर किये, मिटाये, नष्ट किये मातु पितु सकट ~ १६१८।
घालौं नष्ट कर दूँ, मिटा दूँ : इनकी बुद्धि इनहीं अब ~ ९२४।
घाल्यो डाला है : किन नख ~ भोरी ३५५३।
घाल्यौ अनिष्ट किया, बिगाड़ा . मैं नहिं काहू को कछु ~ १३९२।
घास तृण, चारा। △ **काटिबौ** ~ घास काटना अर्थात् लापरवाही से काम करना, निरर्थक प्रयत्न करना : तुम सौं प्रेम-कथा कौ कहिबौ मनौ — ~ ३९५९।
घासहू घास को भी : हरी ~ सो नहिं चरै ५/३।
घाहु जख्म, आघात : सहि न सकत यहु ~ ३२२४।
घिनैहै घृणा करेंगे तेइ देखि ~ १/८६।
घियतौ घी : दूध, दही ~ ३७३।
घिरत घी : ~ सुवास कचारी नायौ १२१३। **घिरत-चभोरे** घी मे सराबोर : घेवर अति ~ — १८३।
घिरति घिरती हैं, रुकती हैं . ~ न कैसेहुं घेरें २९६०।
घिरावत घिरवाते हैं, हँकवाते है : सिगरे ग्वाल ~ मोसौं ५१०।
घिरावति धिक्कारी जा रही थी : यह कहि सुतहिं ~ १४२७।
घिरि उमड़ : माघौ महा मेघ ~ आयौ ८६८।
घिरे घिर गए . ~ साँकरी खोरि २९०७।
घिसटाऊँ घसीटूँ : केस गहौं भुव मैं ~ २९२२।
घिसटायौ रगड़ते हुए घसीटा : केस गहे पुहुमी ~ ३०९५।
घिसि घिसकर : कुब्जा ~ चदन लै आई सारा० ५०२।
घिसियाइ १ घसीटने लगे : एक हाथ मुख भीतर नायौ पकरि केस ~ १३९६। २ घसीट-घसीट कर . केस धरे धरनी ~ ५३१।
घींच गरदन, ग्रीवा : ~ मरोरि दियौ कागासुर ६०।
घीव घी मे : इक कोरी इक ~ चभोरी ३९६।
घीसि घसीटकर : ~ बहाऊँ बैरी १७६।
घुंघचिनि घुंघचियों : गर ~ कौ हार ४२८९।
घुंघरारे घुघराले, घुघराली मृगमद मलय अलक ~ ४०१४।
घुंघुची गुना, घुघची : तदपि सूर वै छिन न तजत हैं वा ~ की मालहिं ३१६४।
घुटुरुन घुटनों से . ~ चलत कनक आँगन मे सारा० १६६।
घुटुरुवनि घुटनों के बल : कब मेरौ लाल ~ रेंगे ७६।
घुटुवनि घुटनो से : कैसे गहत दोहनी ~ ४०१।
घुनि घुन गया, घुन लग गया . काठ ज्यौं गयौ ~ ५९०।
घुनौ घुना हुआ, छीजा हुआ : ~ बाँस जुत बुनौ खटोला ४०३९।
घुमडि घुमड कर : जहाँ तहाँ तैं उमडि ~ घन १९९०।
घुमरात घुमड़ता हुआ गरजि ~ मद भार गडनि स्रवत ३०५५।
घुमरि घोर शब्द करके, गूँजकर : धन्य धन्य धुनि ~ रह्यौ ३०८०। ~ **घुमरि** घुमड-घुमड कर : ~ — बरषत जल छाँडत ३२३४।
घुमरे १. गूँज उठता था : पटकत धरनि स्रवन नृप ~ ३१०१। २ घुमड़े, घुमड कर आ गये : बहुरि फेरि ~ परि० १/४६।
घुमाइ घुमाकर : घुघरू घट ~ ग्वालि २८६२।
घुरकी घुड़की, फटकार : दियौ तुरत नौआ कौ ~ १८०।
घुरत बजता है, शब्द करता है : ~ निसान, मृदग सख धुनि ९/२९।
घुराइ घुमाकर, लपेटे देकर : सब मिलि दीन्ही गाँठि ~ १०७३।
घुरि घुलकर : फेनी ~ मिसि-मिली दूध सग १२१३।
घुरे[1] बजाया : ~ निसान सुदेस ४२१४।
घुरे[2] कूड़े-करकट : रहत ~ पर डारी ३४४४।
घूँघट स्त्री की साड़ी या धोती का वह भाग जिससे उसका मुह ढका रहता है, घूँघट की नीलाबर सारी ~ ओट निहारै २१५२। △ ~ **पट दै** घूँघट काढकर, मुंह ढककर : ~ — ओट नील ६३२।
घूँघट-ओट-भवन घूँघट के ओट रूपी भवन : रहत न ~ मैं २२९८।
घूँघट-ओट-महल घूँघट के ओट रूपी महल : ~ मैं राखति २२८९।
घूँघट-पट घूँघट के पट से : ~ बदन ढाँकि २१६५।
घूँघट पट कगार घूँघट रूपी किनारा : ~ ढही १७६३।
घूँघट पट कोट घूँघट पट रूपी किला : ~ टूटे ६५०।
घूँघटवारी घूँघट वाली : कोउ न रहति घर ~ २८७१।

घूँघटहि घूँघट मे ही . इक टक ~ चितै रही सोऊ २७९१ ।
घूँघरनि लटों को . घूम दै ~ वै लखत उभय बधु तन ३०७१ ।
घूँघरवारी घुघरारी . लघु-लघु लट सिर ~ ९३ ।
घूँघरवाले घूँघराले . सोहत ~ बार २१८० ।
घूँघरे घुघराले : कुटिल अलक ~ छवि २३२३ ।
घूँटत घूँटती, पीती हुई : ~ ऊरध स्वास ३८१५ ।
घूँटै पीता है, पान करता है : बार बार विष ~ १/६३ ।
घूँटन पीने के लिए : कहत तिनसौं घूम ~ ३६९१ ।
घूटुरुनि घुटनों के बल : ~ डोलै १०१ ।
घूटै पीने से : उर्ध्व धूम की ~ २/१९ ।
घूम घूमना । ~ दै नाचकर, घूमकर : ~ — घूँवरनि वै उभय बधु जन ३०७१ ।
घूमत १ घूमते . ~ हो मनु प्रिया उरगिनी २५०३ । २ घूमते हैं ~ ज्यौं मतवारे २७४३ ।
घूमति घूम रही है : ~ आँखि तिहारी २४८६ ।
घूमैं घूम रह है, चक्कर खाती है : घमकि मथनियाँ ~ १४७।
घूर १ कूटा-करकट फेंकने का स्थान, घूरा : घर तजि ~ बुझावै २/१३ । २. घूरे पर : घर लागी अरु ~ कहौ मन कहाँ लगावै ४०९५ ।
घूमि घुमड कर . घन ~ दुदभिनि रोकी ३२२१ ।
घूर्मित चक्कर खाया हुआ, घूमा हुआ वारुनि तें ~ लोचन बल ४२०१ ।
घृत घी : चदन अगर सुगध और ~ ९/५० ।
घृत-मधु घी और शहद : तापर ~ नाइ ८९ ।
घृतहीं घी का : स्वाद कहा जानै ~ री १९२४ ।
घेरत १ घेरते . राति रहे कहुँ गाइनि ~ २६३२ । २ घेरते हैं : ए सब मिलि ब्रज ~ ३७४५ । ३ घेरते हो सखा लिए तुम ~ पुनि-पुनि १०५४ ।
घेरन घेरने गए ग्वाल गाइ वन ~ ५०० ।
घेरनि १. घेरे मे, चक्कर मे . वन गैयन की ~ ३८८९ ।२ घेरा डालना : जोग दुखनि की ~ ३८८९ ।
घेरनौ घेर लाना वसी-वट-तट ~ २८३२ ।
घेरहि घेर लें : चलौ मठ ~ जाई ४१८८ ।
घेरा =घैर, चर्चा : ~ यहै चलावत घर घर १६८२ ।
घेरि १ एकत्र, घेर . गाइ लई सब ~ घरनि तैं ४२६ । २ घेरकर : राखो ~ सकल युवतिन को मारा० ८७८ । ३ मथकर : मानहु सुधापयोधि ~ घन १७७७ । ~ **घेरि** घेर-घेरकर : जद्यपि ~ — मैं राखति २२९४ । ~ **रहै** रोक लेता है : ~ — डगरो ३३६ ।
घेरी १ घेर, लपेट : लेउँ याकौ मैं ~ ५८९ । २. घेर लिया है . सुनियत है कुबिजा उन ~ ३५२८ । ३ घेरा डाल दिया . लछन आजु लक ~ ९/१३९ । ४ रोक रहे हो : हरिहिं मिलत काहे कौं ~ ८०७ ।
घेरे १ घिरे होने पर : वै न चरैं तृन ~ ३१३१ । २ घेरने से : ~ घिरति न तुम बिन माधौ ६१२ । ३ घेर लिया है . येउ इद्रिनि मिलि ~ २२२३ । ४ घेरे . रहत चहू दिसि ~ १/७९ । ५ घेरे हुए थी : चारौं ओर निसिचरी ~ ९/७५। ६ रोक रखने से कहा भयो जौ घूँघट ~ २३३८ ।
घेरेहि घेरे : ~ रहति दुराऊँ कब लौं २०४६ ।
घेरैं १. घेरते इ सखा जहाँ तहँ ~ १३८७ । २ घेर लेंगे : लका गढ ~ ९/११८ । ३ घिर जाने पर : स्यामल सोभा ~ २३९५ । ४ रोकने से : विरति न कैसेहुँ ~ २९६० ।
घेरैं १. घेरते : लकुट लिए कर ~ हो ४५२ । २ छेकता या ग्रसता है : मोह-माया लोभ लागे, काल ~ आइ १/२३६ ।
घेरौ[1] पु० १ घेरे को . छाँडति नाहीं ~ ३८७९ । २ स्थान, विस्तार, फैलाव : कियौ बहुत घर ~ १/२३६ । क्रि० स० घेर लिया है : आजु ब्रज महा घरनि घन ~ ।
घेरौ[2] (जल का) अहाता, सरोवर . बार हीन तन ~ सा० ल० ८० ।
घेरौ[3] (निंदामय) चर्चा . ब्रज घर-घर है ~ १७३२ । ~ **करत** चर्चा कर रहे ह : ~ — जहाँ तहँ ठाढे ९७६ ।
घेर्यौ १ घेर लिया, पकड लिया : ग्राह जब गजराज ~ १/१७६ । २ घिर गया . ~ आइ कुटुम लसकर मैं १/६४ । ३ घेर लिया हो . मनौ चदहिं अवल जान्यौ राहु ~ जाल १८१९ ।
घेवर घेवर (एक पकवान, एक प्रकार की मिठाई) : ~ अति घिरत चभोरे १८३ ।
घैया १ थन से छूटती दूध की धार नँसुक ~ पिएउ मबेरे ४६३ । २ दूध पर से मक्खन इकठ्ठा करना तब लौं करि विधि ~ ७२५ ।
घैर निंदामय चर्चा, निंदा गायन घर घर ~ चलावन २३८४।
घैरा बदनामी . सुधि न रही इत ~ घर कौ १९१६ ।
घैरी घिर बैठने से . अपनी जानि पनि पैंढ कौ ~ २४५३ ।
घैरु निंदामय चर्चा . ब्रज घर घर यह ~ चलाई ७६१ ।
घोटा समूह : धनुष चढ़ै पाम रिपु घटा ~ ३०४८ ।
घोटे मजे हुए : आपु गुननि करि ~ हौ २६०९ ।
घोर[1] घोलकर . मसि ~ उदधि मैं १/१११ ।
घोर[2] १. कठोर : ध्रुव कर लकुट निरखि सखि ~ ३५७ । २ भयकर, विकराल घटा घन ~ घहरात ८५५ ।
घोर[3] शब्द, गर्जन, ध्वनि : सरस मधुर मुरली की ~ १८७१ ।
घोरत घिर कर गर्जना कर रही है : ~ मेघ घटा गभीर ८७४ ।
घोरनि गर्जना : अवर घन की ~ ३३३० ।
घोरनौ गरज रहा ह : मधुर-मधुर धुनि ~ २८३२ ।
घोरा घोडा ~ सगर राइ कौं दियौ ९/९ ।

घोरि घोलकर : नव केसरि अरगजा ~ २८४९ ।

घोरी १. मिलाया केसरि मिलै-मिलै मथि ~ २८६८ । २ मिलाकर • कुंकुम चदन अरगजा ~ २४४४ ।

घोरे[१] घोडे दीन्हे धेनु धौरहर ~ परि० १/८ ।

घोरे[२] घोर, विकराल : देखियत चहुँ दिसि तैं घन ~ ३३०३ ।

घोरैं आवाज, तानें : सुनि मुरली की ~ २८३९ ।

घोरै[१] घोलता है जल सायर मसि ~ १/१२५ ।

घोरै[२] घोडे । △ **मनु आई चढि** ~ मानो घोडे पर चढी चली आ रही है : ता ऊपर काहैं गरजति है — ~ ३२१ ।

घोरौं घोल दूँ . जल समस्त मैं ~ ९/१४८ ।

घोष[१] १ गाँव (वस्ती) जौ लौं रहे ~ मैं २७६६ । २. गाँव (व्रज) को : नद विदा होइ ~ सिधारौ ३११९ । ३ गाँव से खेलत बनै ~ निकास २४४ । ४ व्रज की : थकित रही ~ नारि १०१ ।

घोष[२] अहीरों की ~ बात जनि चालहिं ४०७७ ।

घोष[३] आवाज : किंकिनि घटा ~ २२८० ।

घोष उज्जागरी बस्ती को प्रकाशित करने वाली ~ स्याम प्यारी १७५१ ।

घोष कुमार व्रजकुमार : पहिरत ~ सारा० १०६९ ।

घोष-कुमारि व्रज की गोपियों को . हँसि बस कीन्ही ~ ७६४ ।

घोष-कुमारी १ व्रज बाला • ठाढी रही वह ~ ११०१ । २ व्रज बालायें •, देखि रहीं सब ~ ९५१ । ३ राधा : 'सूर' स्याम रग ~ १९१२ ।

घोष नारी व्रज नारी (राधा) : धन्य हौ धन्य ~ २०६३ ।

घोष पति व्रजनाथ कृष्ण : भरि भादौं वै छाइ ~ ३६६१ ।

घोष पुरी अहीरों की बस्ती, गोकुल धनि यह ~ ६९ ।

घोष बासी व्रज वासी मेरैं मन सबै ये ~ १९५१ ।

घोष-सहर व्रज नगरी • कहा भयौ इहिं ~ कौं ९३२ ।

च

चग[१] डफ के आकार का एक बाजा महुवरि बाँसुरी ~ लाल रग हो हो होरी २८६६ ।

चंग[२] पतग : ज्यौं बस डोर फिरत सँग ~ २१३६ ।

चगी स्वस्थ, सुन्दर : स्याम कौं मिली री बनी ~ २७२४ ।

चचपुटी चोंच : चक्रवाक खग ~ तैं २४४७ ।

चंचरि चाँचरि (नृत्य) ~ चुहि किंकिनि भनकार ११८० ।

चंचरीक भ्रमर : चले प्रपुज ~ २०५ ।

चंचल वि० चचल ~ चपल चवाइ चौपटा १/१८६ । पं० चचल (कृष्ण) : प्रीति जाइ ~ सौं जोरी २३० । ~ अंचल कतहि दुरावति तू चपला अन्चल मे क्यों छिपाती है ~ — मानहुँ मीन महाउर धोए २६६३ ।

चंचलता चपलता : तब लगि तरुनि तरल-~ बुधि बल सकुचि रहै ६४६ ।

चंचलताई चचलता 'सूर' के स्वामी की मिटि गई ~ २५५३ ।

चचु चोंच लरत ~ पुट तोरी २६५६ ।

चड प्रचण्ड . 'सूर' तुमकौं सुने भुजनि वल ~ अति ३०४८ ।

चँडाइ १. जल्दवाजी, उतावली तुम अति करी ~ ४४४ । २ शीघ्रता से . अजहूँ जाउ ~ १०१७ ।

चँडाई शीघ्रता हमहू सौं तुम करत ~ ६६८ । **करै** ~ झट तैयार कर रखे • बलि सामग्री — ~ ८१२ ।

चंद १ चन्द्रमा . मानहु पयनिधि मथत फेन फटि ~ उजार्यौ ४३१ । २ चद (राजा) हौं बृन्दावन ~ १६१८ ।

चंदक सिर पर पहनने का एक गहना . ~ मनहुँ महाउत मुख पर १४३९ ।

चंदकिरनि चन्द्रमा की किरणें चदन ~ पावक सम ३९११ ।

चंदगन अनेक चन्द्रमा • मनहु ~ सुधा गँडूषनि १७५३ ।

चंद चितामनि चन्द्रमा के समान चिंतामणि के रूप मे • रघुकुल कुमुद-~ ९/१९ ।

चंदचौथ चन्द्रमा का चौथा गृह (बृहस्पति) जीव, प्राण ~ निक सत सो मोकौं सा०ल० ६६ ।

चंदन १. चदन ~, अगर, कपूर, अरगजा २१०६ । २ चदन से : (नदरानी) ~ भवन लिपायौ ४ ।

चंदन-चित्र चदन के प्रलेप से बने चित्र • ~ तरग जु सुदर १७५२ ।

चंदन रेख चन्दन की रेखा : नीकी लागी ~ २७२४ ।

चंद-बदनि, चंद-बदनी चद्रमुखी • ~ तन अति सुकुमारी १४६०, बनिता वृन्द ~ ९९७ ।

चंद बृन्दाबन वृन्दावन के चद्र (कृष्ण) : आनँद कद ~ २७६५ ।

चंद भाग मन • ~ पठाइ दीनौ सा० ल० ५९ ।

चंद मुख चन्द्रमा के समान मुख (कालिमायुक्त मुख) . लखि व्रजन्द ~ राधे सा० ल० ६ ।

चँदवा मोर पख की चद्रिका मोर के ~ धरनि तैं ४१५८ ।

चँदहि १ चन्द्रमा • ~ देखि करी अति आरति २०० । २. चन्द्रमा रूपी • चाहति 'सूर' स्याम मुख ~ ३५५३ । ३ चन्द्रमा ही सूर स्याम हठि ~ मागै १९० ।

चंदा चन्द्रमा : ज्यौं चकोर ~ कौं निरखत २१०४ ।

चंदा साँझ चन्द्रमा (राधा), सध्या (कृष्ण) : मनहुँ विराजत ~ ११८० ।

चंद्र १. चन्द्रमा : सूर ~ नक्षत्र पावक २/२० । २ चन्द्रमाओं की : कोटि ~ छबि पाइ ३३ ।

चंद्रक १ चन्द्रमा : ~ चकोर-स्वाति कौं बूँद चातक परी री

६९१। २ चन्द्रमा की : ~ झलक कठ मनि मोती ४०९४।

चंद्रचूड़ मस्तक पर चन्द्रमा धारण करने वाले (शंकर जी) · ~ सिखि-चद्र सरोरुह १७१।

चंद्र बदन चन्द्रमा के समान मुख ~ दरमन सम्पति दै ३६।

चद्र-बदनि १. चन्द्रमा के समान मुखवाली, चद्रवदनी . ~ तन राजति गोरी ४०७७।

चंद्र भाग चन्द्रभाग नाम के व्यक्ति चद्रावली गोप की कन्या ~ गृह जाई ८७४।

चंद्रभागा पजाब की चनाब नाम की नदी जो हिमालय के चद्र-भाग नामक खड से निकलती है : ~ गगा व्याम न्हवाये सारा० ८२८।

चद्रमनि चन्द्रमणि : कोटि किंकिनी ~ मजुत ६२५।

चंद्र मयूख चन्द्र किरण के समान : लागत ~ सुतिय तनु १९८७।

चद्रहिं चन्द्रमा को : ~ बिसरी नभ की गैल ११८०।

चंद्राननि चद्रमुखी : ~ सुनि मोर चद्रिका २५७९।

चंद्रायन चद्रायण व्रत : ~ कीजै सौ वार ७/३।

चंद्रावलि चन्द्रावली, कृष्ण की प्रेमिका, चद्रभानु की पुत्री · ~ राधहिं कहि दीन्हौ ९१८।

चद्रिका चँदोवा मोर ~ सिर पर सोहै ११८१।

चप चपा : जिहिं सिर डारि फुलेल ~ जल परि० १/१८८।

चंपक चपा : ~ लता चौथ दिन जान्यौ सारा० १०५६।

चंपक-तनु चपक के समान (श्वेत) शरीर : अति सुकुमारि सुभग ~ २४७२।

चंपकली चपा की कली : ~ कुटिल अलक बीच बीच राखी १३८४।

चंपा राधा की एक सखी : सुमना, बहुला ~ २००८।

चंपे चम्पा : तुहिं ~ कौ फूल ३७२८।

चंपै दबाता है · घर बैठे ही दसन अधर धरि ~ २९२५।

चउवन (५४) चौवन · लाँबे ~ कोस ८४१।

चक चकई नाम का एक खिलौना : दै मैया भौरा ~ डोरि ६७०।

चकई चकवी . ~ री, चलि चरन सरोवर १/३३७।

चकचौंधति चकाचौंध कर देती है . चमकि चमकि ~ गात २२१८।

चकचौंधनि चकाचौंध करने वाली : चपला ~ २३२३।

चकचौंधि चकाचौंध : तरुनि गईं ~ कै २२१७।

चकचौंधी १ चकाचौंध : ~ सी होति २८७४। २ तिलमिला गई : कौंध चकित भई दसन चमक पर ~ अकुलानी ६४४।

चकडोर, चकडोरि, चकडोरी चकडोरी (चकई नामक खिलौने की डोरी) : ऊधौ हरिगुन हम ~ ३५४४।

चकडोरी चकई और डोरी : इत आवत दै जात दिखाई ज्यौं भौंरा ~ २३८१।

चकरी[1] घेरा : ~ जोजन बीस ९/७५।

चकरी[2] भ्रमित, अस्थिर, घूमने वाला : तह तौ सूर नितहिं लै सौंपौ जिनके मन ~ ३९८८।

चकवाक चकवा, चक्रवाक · कुच ~ बिलोकि बदन बिधु १०४९।

चकाचौंधी चकाचौंध : चमकि गए बीर सन ~ लगी ३०५५।

चकित १ आश्चर्य चकित : देवकी मन मन ~ भई ७। २ चकित होकर : चित्त ~ अनुमान न पावति ७। ३ स्तम्भित, विस्मित, स्तब्ध : ~ भई कछु कहत न आवै २०८२।

चकितवंत चकित · अब अति ~ मन मेरौ ४०७९।

चकृत १. आश्चर्य चकित : राधा ~ भई मन माहीं २०७५। २ भौंचक्के · नैननि निरखि ~ ह्व गए ४३०९। ३ व्याकुल : ~ भई सो यह प्रतच्छ सुपनाए ०/३१। ~ भईं चौकन्नी होकर · ~ — सब सुनि रहीं १०१८।

चकोर एक पक्षी का नाम, चकोर . निमिष ~ न लावत २१०।

चकोरनि १ चकोरों को . नाहिन तृप्ति ~ ३३३०। २ चकोरों के लिए : लोचन ~ चंद ६२७।

चकोरहि चकोर के : ज्यौं ~ सग चकोरी परि० १/१९९।

चकोरहि चकोर को : चद ~ जारै ३९५०।

चकोरैं, चकोरे चकोर : दृग भए रहैं ~ हो २७९४, हरि के नैन ~ २८२६।

चक्कवै चक्रवाल पक्षी, चकवे : चारु ~ उरज उतगा २४५४।

चक्र[1] पहिया : थकित होत रथ ~ हीन ज्यौं १/१२१।

चक्र[2] बवण्डर · वात ~ बासना १/१६२।

चक्र[3] चक्र सुदर्शन : सख ~ गदा पदम बिराजत (हरि) ४।

चक्र की सुभाँति पहिये के समान : उलटि चल्यौ है राहु ~ १०७६।

चक्र गगन ब्रह्माण्ड चक्र · फिरि फिरि ~ मैं अमी बतावत ३८६७।

चक्रवाक चकवा, कोक, कोकशास्त्र . ~ पढि आई सा० ल० ८४।

चक्रवाक चकवा : ~ बस भान २०६९।

चक्रवाकि चकवी : किधौं ~ निरखि ६४२।

चक्रवात ववडर, वातचक्र : ~ है सकल घोष मैं रज धुधर ह्वै छायौ सारा० ४२८।

चक्र सुदरसन चक्र सुदर्शन : जारत है मोहिं ~ ९/७।

चक्रा चक्कर, घेरा : चहूँ ओर ~ धरे ८४१।

चक्रित १ आश्चर्य चकित : चौंकि ~ भई मन मैं २२०२। २ चकित, विस्मित, स्तम्भित • नृप सुनत वचन, ~ प्रथम है रह्यौ ८/१६। ३ चकित हूँ : ~ मानौ महासिंह धुनि ४१७६। ४ परेशान : ता दिन 'सूर' सहर सब ~ ९/३८। ५ भयभीत . देखि असुर ~ है गयौ ७/२।

चख[1] चखकर : ~ जल सरिता सागर ३६१०।

चख[2] १ आँख, नेत्र : उनै उनै घन बरसत ~ ३२९७। २. नेत्र तो : ~ चितवनि पर चेरे २५८१। ३. नेत्रमे : भाल तिलक, काजर, ~ ३८१५। ~ **लाई** आँख लगाकर : देखि रहो ~ — २५२८।

चख ऐन आखें ही आँखें : नख सिख लौं ~ १८०४।

चखाए चखाकर : पीवत प्रियहिं ~ ४२०१।

चखायौ चखा दिया है : सूर स्याम धौ कहा ~ २३५८।

चखावति चखाती हो पीन उरज मुख नैन ~ १५८५।

चखावहु चखा दो . हमहूँ तनक ~ १४६९।

चखिया चखा है : कल कहें परत रूप जिन ~ परि० २/४९।

चखी स्वाद लिया : मजरी अनूप ~ री १३८४।

चखैहौं चखाऊँगा : इहिं कृति कौ फल तुरत ~ ७/५।

चखौडा दिठौना : भ्रु व चारु — कीन्हौं १८३।

चचरि चँचरीक, भौंरा • कमल चकोर ~ ज्यौं २२०५।

चचोरत चूसते हैं, खाते है : 'सूरदास' प्रभु आग ~ ३७३३।

चचोरैं चूस रहे थे : कर गहे चरन अगुठा ~ ६२।

चच्छु नेत्र • कीधौं ये ~ चारु प्यारी मुख रूप सारु १९७८।

चच्छुस्रवा साँप : ~ उपहार ग्रसी ज्यौं ३२२२।

चच्छुहि नेत्रों मे . सो अंजन कर लै सुत ~ ४८७।

चच्छुवादिक चक्षु आदि, आँख आदि : ~ इन्द्री बिस्तरी ३/१३।

चटक १. उज्ज्वल, पवित्र अटकि प्राननि पर्‍यौ ~ करनी ३०७३। २ चमक : कुडल ~ आछी १४०१। ३ भडकीला नैकु ~ पुनि सेत ३९१९।

चटकत उछलते (नाचते-कूदते) : ~ चलत मद मुसुकात २२१८।

चटकारी चटकीली . तैसी जरद केसरि ~ २८७७।

चटकारे चचलतापूर्वक खेलत खजरीट ~ २६२८।

चटकि १ चटक कर . आजुहिं ~ तू भई न्यारी १७३०। २. चौधिया : चमकनि ~ परे २३६७।

चटकी टूटी हुई : चित चचल बिरहा की ~ १७६४।

चटकीली चटकीली : ~ छवि देखि लपटात स्याम घन ११४९।

चटकीलौ चटकीला : ~ पट लपटानौ १४०१।

चटचटकि चटचटाकर • फूल फल ~ फटत लट लटकि द्रुम द्रुम नवायौ ५९६।

चटचटात चटचटाकर : ~ अँग फटत है ५८९।

चटप व्याकुल • कामै स्याम तनु ~ कियौ २४२३।

चटपटाइ हडबडाकर : ~ बैठे अतुराने १९७।

चटपटी[1] आकुलता : देखे बिना ~ लागति २३४७। ~ **लागी** १ चटपटी (आकुलता) आ गई है : नैन ~ — तब तैं १०९३। २. छटपटा उठे, व्याकुल हो उठे • अब तन मन नैन लखि ~ — २५५४।

चटसार[1] १ पाठशाला : तिनकै सँग ~ पठायौ ७/२। २ पाठ शाला मे : पढे एक ~ ४२३०। ३. पाठशाला है, मरमार है : कपटिन की ~ ३७४९।

चटाइ चटाकर : गउ ~ मम त्वचा उपारौ ६/५।

चटावै चटाती है . मिस्री सानि ~ नँदलाल ८४।

चटिया चेले, दास : अजामील, गनिकाऽरु ब्याध नृग ये सब मेरे ~ १/१९२।

चटुल चचल ~ चरित रतिनाथ केहरि २९१५।

चढई चढ़ी : सुंदरी एक नाउ ~ ३२९६।

चढत १ चढ़ता : आयौ ~ उतरतौ १/१२३। २ चढते : मूँढ ~ हैं भारी १५१८। ३ चढकर . कबहूँ कदम ~ मग देखत २०२१। ~ **अकास** आकाश की ओर उडता है • चित लै ~ — १/३२५। ~ **रंग** रग खिलता है • जो पै ~ — ता ऊपर ३३९०।

चढति चढती है • मूल तै जमी ज्यौं बेलि ~ तमाल २९४६।

चढन १ चढना : सुफलक सुत ~ चहत २९८५। २. चढने का ढग : रबकि ~ बलबीर की ३९१४।

चढहु चढो : कृपा करहु उठि बेगि ~ रथ ४२७१।

चढाइ १ चढाकर • भौहैं धनुष ~ परस्पर १९८६। २ चढा : लेहु कध ~ यह कहि ११०२। ३ चढाया : तबहिं धनुष ~ ९/६०। ४ लगाकर : अग सुगध ~ किसोरी २९०१। ~ **चढी** चढाकर चढ गई है . एते मान ~ — अति

गया . लेन उड्यो आकास ~ ७७। चढा दी पाँडे रुचिकरि खीर ~ २४८। ५. चढा लिया, रख लिया : तब बसुदेव लियौ कर पलना अपने शीश ~ मारा० ३७४। ६ लगाया : चदन अगर कुमकुमा केसर परिमल अग ~ ४०३२। ७ △ मूंड ~ सिर पर चढ़ा लिया, ढीठ कर दिया . तोंही उनकों — ~ २०८८।

चढावत १. चढ़ाते हैं • तिन केमनि क्यों भस्म ~ ३८१५। २ चढ़ाते हो, लगाते हो . तुमहुँ न भस्म ~ ३८१२।

चढ़ावन १. चढाने के लिए : भसम ~ अग ३६६५। २ चढा-ऊँगा : सकर-उर दससीस ~ ९/१३१।

चढावहु चढाओ • जीते हैं उठि अरघ ~ ४१८५।

चढ़ावैं चढ़ाएँ, लगायें . क्यों ~ खेहु ३९२३।

चढ़ावैंगे लगावेंगे : स्नम तैं अग ~ २७०८।

चढावै चढ़ाएगा : जम न ~ कागर २/६२।

चढाहु चढ़ाओ मोहि कध ~।

चढि १ चढकर : जब स्यदन ~ गमन कियौ हरि ३८९६। २ आसीन होकर : कमलनि ~ आए मानौ ससि ३२। ३ चढ : वरषत ब्रज आए ~ ८५७। ४ चढी हुई • कीधौं तरुन तमाल वेलि ~ १८३२। ५ चढी है : आजु महा ~ बाजी बाकी १३०८। ~ **आयौ** चढ़ आये हैं, चढाई कर दी है : गामचक्र ~ — ९/११९। ~ **धावहि** चढ़ाई कर दी : मैन साजि ब्रज पर ~ — ८५६। △ ~ **रह्यो** चढ गया है पहिल ही ~ — स्याम रग ३७२८।

चढिहै १ चढ़ाई करेगा : इद्र आइ ~ ब्रज ऊपर ९१६। २ चढेगा, लगेगा : यह कलक तुमही कौं ~ ३४९२।

चढ़ीं चढा/बढ़ा हुआ था : दूनै दूध ~ २४।

चढी १ चढ गई : देखन कौं मदिर आनि ~ ९/१७०। २ सवार होकर : मूढ ~ नाचनि है १/९८। △ **मान** ~ उतराई हुई : लीने जाति निमेष कूल दोउ एते — ~ ३४५४।

चढ़े १ चढ़कर : ~ सराऊँ न्हात ३८२७। २ चढ गए लैकै चीर ~ हरि बिनवत हैं ब्रजनारी मारा० ४७६। ३ बैठे हुए : पहुप विमान ~ पहर पहर के ३०।

चढ़ै[1] १ चढने लगीं : बिनु प्रतीति क्यों मीन ~ थल ३८६०। २ चढैं . हम रमकि हिंडोरैं ~ २८३०।

चढ़ै[2] १ चढती है : एकनि लै मदिर ~ १/४४। २ चढेगा • नाम जहाज ~ जो कोऊ ४३०२। ३ चढा है : आजु ~ ब्रज ऊपर काल ५२८। **धनुष** ~ क्यों धनुष कैसे चढ़ेगा या टूटेगा : इन पै दीरघ — ~ — ९/२३। △ **अब न ~ रग आन** अब दूसरा रग नहीं चढेगा, दूसरे का प्रभाव नहीं पड सकता • — ~ — ३९८५।

चढ़ैती सिर चढी हुई है : वह अनिहि ~ १२५२।

चढ़ैयै लगाया जाए • जिहि सिर केस कुसुम भरि गूँदे तेहि कैसे भस्म ~ ३६०२।

चढ़ैहैं अर्पित करेंगे : ईसहि लै दस सीस ~ ९/८१।

चढ़ैहौं चढाऊँगा . सिर माला सिव-सीस ~ ९/१५७।

चढौं चढूँगा : जब रथ साजि ~ रन सन्मुख ९/१३४।

चढौंगी चढूँगी : यहै कह्यौ पिय कथ ~ ११९०।

चढौ १ चढता हू • कबहुँक ~ तुरग १/१६१। २ चढना : पाछैं ~ बिमान मनोहर २९९० ३ चढिये, चढना . मेरी नौका जनि ~ त्रिभुवनपति राई ९/४२। ४ चढ जाओ . मँगनी ~ चही कौ ३६४९।

चढ्यौ १ चढा हुआ . गन अहँकार ~ दिग विजयी १/१४४। २ चढ आया है : मार मारन ~ बिरहिन २०८५। ३ चढ गया है . को लै बसन ~ तरु साखा ३६३०। ४ चढ गये . विप्र भवन रथ ~ ४१८८। ५ चढना : चाहत ~ जहाज १/१०८। ६ चढाई कर दी है : इद्रजित ~ निज सैन सब साजि के ९/१३६। △ **रवि चढ्यु** ~ सूर्य उदय होकर क्षितिज पर आ गया है . — ~, रैनि सब निवटी ८०८।

चतुरग[1] चतुरगिणी : मनो चलत ~ चमू ३३०७।

चतुरग[2] १ चार-चार हाथ वाली : चहूँ ओर ~ लच्छमी १३९। २ चार अग वाले : चौबिस ~ छद २१७१।

चतुरई चतुराई, चालाकी : बुद्धि ~ बानी २१६०। ~ **काछे** चतुराई लेकर बैठी आइ ~ — २७८३। ~ **ठानी** चतुरता ठान ली . चतुर ~ — २७८४। ~ **परी मोहीं पर** चतुरता मुझ पर ही आ पटी • यह ~ — २७६७।

चतुरगुन चौगुना विस्तार . कियौ ~ गात ९/७४।

चतुरजुगौ चारों युग ~ बीतें इकहत्तर १२/४।

चतुरदस चौदह : ये दस हरि अवतार कहे पुनि और ~ २/३६।

चतुरनि चतुरों की • नव तें ~ भई सिन्हारि २३८८।

चतुरनिमनि चतुरों में श्रेष्ठ ~ चतुराइ २७१९।

चतुरभुज १ चतुर्भुज, चार भुजाओं वाले • रूप ~ स्याम सुजान ३/१३। २ चार भुजाओं वाला रूप : ~ भावन रे २८। ३ भगवान् विष्णु : पुन्य ~ रमैं सिनाऱी ६/८।

चतुरमास चार मास, वरसात के चार महीने, चौमासा : ~ तुज प्रभु निद्रि ठौर सिनायौ ०/७१।

चतुरमुख ब्रह्मा : ~ विविध अस्तुति सुनाइ ८/१२।

चतुर रासी चतुरता की राशि, अत्यन्त चतुर नारि सिर नह जनि ~ १०५१।

चतुर सिरोमनि चतुर लोगों के सिरमौर (कृष्ण) : ~ देत हुँकारी १९८ ।
चतुरहि चतुरो के भी . ग्यान ध्यान कौ मरम न जानै, ~ चतुर कहावै ४०१६ ।
चतुरा राधा की एक सखी का नाम, चतुरा · स्यामा, कामा, ~ २००८ ।
चतुराइ चतुरता : हम जानी तुम्हरी ~ ४१९४ ।
चतुराई १ चतुरता, चालाकी . दूरि करौ पिय यह ~ १०२७ । २ युक्ति : मनहीं मन इक रची ~ २४२६ ।
चतुरानन १ ब्रह्मा : सो देखत ~ आए सारा० ४६५ । २ ब्रह्मा को . चौली ~ ठग्यौ १/४४ । ३. ब्रह्मा ने . तुम्हरी चरन कमल रज कारण तप कीन्हो ~ सारा० ५७७ ।
चतुरानन तनया ब्रह्मा की पुत्री, सरस्वती, वाणी : भृग जूथ ~ सारा० ९३९ ।
चतुरानन-बल ब्रह्मा जी का बल . ~ सभारि ९/९६ ।
चतुरानन सुत ता सुत पतिनी ता सुत को जो दास ता सुत बाहन ब्रह्मा के पुत्र (पुलस्त्य) उनके पुत्र (रावण) की पत्नी (मंदोदरी) के पुत्र(मेघनाद) के दास (पवन) के पुत्र (हनुमान) का वाहन वृक्ष (चन्दन) : ~ पुत्र अग धरि जल सुत करो प्रकास सारा० ९५० ।
चतुरानन सुत ता सुत वा सुत ब्रह्मा के पुत्र (मरीचि) के पुत्र (कश्यप) के पुत्र, सूर्य : ~ उदित होन अब आयौ सारा० ९४० ।
चतुरायौ चतुरता ही : ~ मेलत हैं हमसौं १६१९ ।
चतुरावै चतुर बनती है : जुवती ~ २०४४ ।
चतुर्दस १ चौदह : भुवन ~ राज ४१८८ । २ चौदहो . लोक ~ नीरस लागत २४४८ ।
चतुर्दसि चतुर्दशी तिथि : भोग रहित निसि जागि ~ ७८२ ।
चतुर्बिधि चारो प्रकार से : मेरी भक्ति ~ करै ३/१३ ।
चतुर्भुज चार भुजा वाला : रूप ~ मोहि दिखावहु ७/२ ।
चतुर्भुज-धारी चार भुजा धारण करने वाले विष्णु . परगट रूप ~ ३९१ ।
चतुर्मुख चार मुख वाले, ब्रह्मा · ~ त्रिदसपति बिनय हरि सौं करी ८/८ ।
चतुर्विधि चार प्रकार से : प्रलय ~ होइ १२/४ ।
चतुष्पदनि, चतुस्पद चौपाये : चौबीस ~ ससि सौ बीस मधुकर ३८६७ ।
चनक चना : बेसन दारि ~ करि बान्यौ ८९२ ।
चनदारी चने की दाल : मूँग मसूर उरद ~ ३९६ ।
चनूर देखिए चानूर : रग भूमि मुस्टिक ~ हति ३०८७ ।
चपरि वेग से, तेजी से : बरबस चपल ~ मे चेरे २३३८ ।
चपल १. चचल . ये अति ~ चल्यौ चाहत हैं ९/९२ । २ अस्थिरचित्त : ~ चपल चबाइ चौपटा १/१८६ । ३. चंचल है : अतिहि ~ बरज्यौ नहि मानत २३६२ ।
चपलता चचलता : बरबस ही इन गही ~ २३०६ ।
चपला बिजली · ~ अति चमचमाति ८५७ ।
चपलाई चपलता, चचलता : मजुल तारनि की ~ १३७ ।
चपला औ बराह रस आखर आदि चपला, बराह (कोल) और रस के आदि वर्णों के योग से बना, (चकोर) : ~ देख झप टानौ सा० ल० ७२ ।
चपि दबकर, कुचलकर चालत ही ~ जात ३१९३ । ~ जात बैठ जाता है : सुनत हिय ~ — ३९०२ ।
चप्यौ १. दब गया : ~ तरु की डार ३८७ । २. दबा · दसननि दाबि नाहिन ~ परि० २/६६ ।
चबाइ निन्दक · चचल चपल ~ चौपटा १/१८६ ।
चबाइनि चुगलखोरी का : करत ~ काम १/१४१ ।
चबाई चुगलखोर, दुष्ट : घातक कुटिल ~ कपटी १/१४० ।
चबाउ निन्दा की चर्चा : ब्रज घर यहै करत ~ लोग २०३९ । ~ **चलावत** चर्चा करते है : घर घर यहै ~ — हम सौं भेंट न माई २२६२ । ~ **भरे** निंदा मे पड़ा हुआ : चौक ~ — दुबिधा छकि १/६० ।
चबात चबाते हुए । △ **दाँत** ~ क्रोध प्रदर्शित करते हुए — ~ चले जयपुर तैं १/१५१ ।
चबेना भुना हुआ अन्न . एक झगरि ~ लेत ४६७ ।
चभोरी चुपडी हुई, भीगी हुई . इक कोरी इक घीव ~ ३९६ ।
चभोरे डुबाये हुए, भीगे हुए : ताते तुरत ~ घी के ३९६ ।
चमक १. चमक रही हो : सांग की झलक चहुँ दिसा चपला ~ ४१८३ । २. तेजी से : देखि नृप तमकि हरि ~ तहँई गए ३०७९ ।
चकमत १ चमकता है : दसन अति ~ ६३९ । २ उद्विग्न, चलायमान : ~ चित न चितैहौं सा० ल० १० । ३. चमकती है ~ चपला ढग ४१६६ । ४. चमकते हुए · रिषि-दृग ~ देखत भई ९/३ ।
चमकताई काति, आभा, चमक . हँसत दसननि ~ बज्र-कन रची पाँति १८१९ ।
चमकति १ चमकती हुई · ~ चलै बदन मटकावै २०५१ । २. चमक रही है : बीजु ~ तरजि डरत गाता ८६४ । ३. कौंध जाती है . दसन दमक दामिनि सी ~ १२०५ ।
चमक दमक आभा, तडक-भडक मिटि गइ ~ अग अग की १/३०५ ।
चमकनि १ चमक पर : मैं बलि जाउँ दसन ~ की ६६४ । २. चमक को भाल लोचन चद ~ कठिन कठहिं सेब ४०५५ ।

३. चमक से : ~ चटकि परे २३६७।
चमकहीं चमक रहे हैं : असन अधर दुज ~ २३२३।
चमकाति दमक जाती है : छीन छवि ~ १८४।
चमकारि चमचमा रहे हैं : दसन बिराजत दुति दामिनि ~ २११८।
चमकावैं चमकाते हैं : तरपि तरपि चपला ~ ९३१।
चमकि १. चमककर . दामिनि ~ डरावत ३६२३ । २. चमकदार : हृदय चौकी ~ बैठी १०४३ । ~ **चमकि** चमक चमक कर : ~ — चकचौंधति गात २२१८। △ ~ **गए** भाग गये : सखा साथ के ~ — सब ३१४।
चमकै चमक रही है : (देवकी) निमि अँधेरी बीजु ~ ५।
चमक्यौ मटकने लगा : यह कहि ~ ग्वाल २८७७।
चमचमाति चमक रही है : चपला अति ~ ८५७।
चमर चँवर : ~ अपनैं कर ढारीं १६१८।
चमू सेना : सत्रह बार फेर फिर आयो हरि सत्र ~ सँहारी सारा० ५९८।
चमोटी चाबुक, कोडा · नोई नेत की करीं ~ घँघट मे डरवायौ।
चयौ चयन किया : हरि कौ न ~ १/७८।
चर[1] दूत : मलयानिल ~ पठयौ बिचारि २८४५।
चर[2] १. चचल : दामिनि घिर घन घटा ~ २१३२। २. चलायमान : थिर ~, ~ थिर, पवन थकित रहै ६२०।
चरचन लेप करने : कुबिजा ~ आई ३०९८।
चरचा चर्चा, जिक्र : जो कहुँ सुनत हमारी ~ ३१९३।
चरचि १. लगाकर · प्रभु प्रेम चदन ~ ३१०१। २. जोडने मे : गुन लघु ~ सम जितनौ ३४३ । ३. चर्चा करके : सूर सुपति सौं ~ चतुराई ३३६३ । ~ **लई** बात पक्की कर ली : ~ — हरि आइ ३१२। ~ **लियौ** अनुमान कर लिया : देखत ही उन ~ — २०७६। ~ **लीन्हौ** भाँप लिया : ~ — मोहि करति ठोली १७२९।
चरचित १ लिपा है : ~ चदन नील कलेवर ८/१३। २ प्रलेपित है : भुज बिसाल चदन सौं ~ १२०४।
चरची अनुमान लगा लिया · अंग अँग अनुमति तिहि ~ १६७५।
चरच्यौ लेप किया . चदन अँग सखनि कैं ~ ३९६।
चरणन १ चरणों · प्रगट गग पावन ~ ते ताहि रहत गिर धारी सारा० ६८५। २. चरणों को : अब मोको आज्ञा कछु दीजै जैसे ~ पाऊँ सारा० ६१४।
चरत १. चरता है · सिंह भख तजि ~ न तिनुका २७०३। २ हेरि ४३०।
चरति चरतीं : धेनु बिकल अति ~ नहीं तृन ४०७१।
चरन[1] चरने · ~ लगीं जित तित सब गइयाँ १३८६।
चरन[2] पैर, चरण। ~ **गति थाकी** चरणों की चाल रुक गइ स्रवनन सुनत ~ — नैन भए जल धारी १/११८। △~ **टेकि** घुटने टेक कर ~ — दोउ हाथ जोरि कै ९/१२६। ~ **धरी** चरण पकड़कर : नींद छुडाई ~ — ४०४ । ~ **बंदि** चरण-वन्दना करके : जनक सुना ~ — ९/९६।
चरन कमल १ कमलवत् चरण . (हरि) ~ नित रमा पलोवै ३। २ चरण कमलों को : जा दिन ~ रघुपति के लगिहै ९/८१। ३ चरण कमलों में : यातें होत अधिक सुख भगतनि, ~ चित लाइ ४३०२।
चरन-चिह्न १ पैरों की छाप : ~ प्रगटाए ५७३। २ पद चिह्नों से : ~ दडक-भुव-मडन ९८१।
चरन-जल चरणोदक सुर सहित आमोद ~ ९/१७१।
चरन-जुहारी चरण स्पर्श : कीनी ~ ८/१४।
चरनन चरणों मे कियौ विविध विधि पूजा करि कै ऋषि ~ सिर नाय सारा० २४६।
चरननि १ चरणों : 'सूरदास' बलि बलि ~ की ४०५३। २ चरणों के : सूर करौ सेवा ~ तर ८१७। ३ चरणों को : सीस धरति ~ लै पुनि पुनि २१४७। ४ चरणों में, चरणों पर : उन प्यारी ~ सिर धारी २४९६। ५. चरणों मे, पैरों से : चलि ~ न सकात २९४।
चरन-व्रत चरणों का व्रत : श्री रघुनाथ ~ उर धारी ९/१३४।
चरन-सरोज चरण कमल के . जाके ~ परमत सिला छुनियत तरी ३०२।
चरनारबिंद चरण कमलों को, कमलवत् चरणों को हरि ~ उर धरौ ४२२४।
चरनि चरना : गइयनि छाँटी ~ ३९५२।
चरनोदक १ चरणोदक, चरणामृत : चरन पखारि लियो ~ ३०५०। २ चरणों के जल को : जाकौ ~ सिव सिर धरि १/१५।
चरपर तीक्ष्ण, तीता : मीठे ~ उज्ज्वल कौरा ३९६।
चरवारे चराने वाले : राजनीति जानी नहीं गोसुत ~ १/२३८।
चरहि चरा करती थीं . जे ~ जमुन के तीर २४।
चराइ १ चराकर : आवत कान्ह ~ ४१४। २ चरा · लै आइ ~ १/१५१।
चराइबौ चराना · गोकुल की गायनि ~ है ... १४७७।
चराइहौं चराऊँगा · 'सूर' गाय ~ मैं २४३१।
चराए १ चराकर · बन ते आवत धेनु ~ ४१३ · २ ...

चराचर चर और अचर, जड और चेतन : सलिल ~ जाकौ ऐन ९/१२।

चरायौ चराया है : धनि गो सुत, धनि गाइ ये, कृष्ण ~ आपु ४९२।

चरावत १ चराते हुए : यच्छ ~ वेणु बजावत गोप सखन के सग सारा० ४६५। २. चराते थे . कोउ कहै इहाँ ~ गाइ ४२००। ३ चराते हैं : बन धेनु ~ १११३।

चरावन १ चराने : आजु मैं गाइ ~ जैहौं ४११।

चरावहु चराओ : हटकि ~ (टाली) ५०३।

चरावैं १. चरा रहे हैं · गइया सुखद ~ सारा० ४६३। २. चराते थे : बल सग गऊ ~ ३८४७।

चरि[1] चरकर . इते ~ न अघाइ १/५६। ~ **चरि** चर-चर कर : मृगा ~ — जाइ ९/६०।

चरि[2] चार। ~ **चरि** चार चार . डारनि ~ — चुरी बिराजति १४४७।

चरित १ कौतुक, चरित्र : महल महल नारि ~ देखहि यह भारी ३०५७। २ क्रिया कलाप, करतब देखहु जाइ ~ तुम वाके १७२४। ३ गुण, चाल-चलन : हरि के ~ सबै उहिं सीखे १७४५। ४ लीला : सूर प्रभु के ~ अगनित नेति निगमनि गाए ४२७। ~ **देखत** चरित (रोना धोना) देखते रहे : सूर प्रभु दुरि ~ — ११०२।

चरितहि चरित्र को : जबहीं गर्व गयौ चतुरानन अद्भुत ~ देख सारा० ४६८।

चरिबौ चरना : इनि गाइनि ~ छाँड्यो है, जौ नहिं लाल चरैं — हैं ४०८७।

चरैं १. चरता है : बरु मरि जाइ ~ नहिं तिनुका ३६१६। २ चरती हैं : सदा ~ सुख गाइ ८२५। ३ चरते थे वे न ~ तृन बेरे ३१३१। ४ चरने : ~ चली गाइ, द्विज पैंती कर कौ दई २०३८। ५ चरें : कहन लगे सब आपुन मैं सुरभी ~ अघाई ४३१।

चरै १. चरता है : हरि घासहू सो नहिं ~ ५/३। २. चुगता है : जौ लगि ताहि ~ (मराल) ३९२१।

चरैए चरायेंगे : जमुना तट तृन बहुत सुरभि-गन तहाँ ~ ४३१।

चरैया चराने वाले, चरवाहे . सुनहू सूर हरि गाइ ~ ३१५२।

चरैहै चरायेंगे : और ग्वाल सब गाइ ~ मैं घर बैठो रैहौं ४२०।

चरैहौं चराऊँगा : मैं अपनी सब गाय ~ ४२०।

चरैहौ चराओगे : टेरि न धेनु ~ ३११६।

चर्चा चर्चा, जिक्र : ~ परी बहुत द्वारावनि कृष्ण चद्र की बात सारा० ६४६।

चर्चित १ प्रलेपित : आलिगन चदन कुच ~ २६४२। २ लगे हुए : ~ चारु कमलदल २४७२।

चर्म चमडा : नहि गज ~ सु असित कचुकी २११७।

चर्यौ १ चरता रहा : कहा करौं यह ~ बहुत दिन १/२०६। २. चर लिया हो : जनु लुब्धक कर मीन ~ १४५४।

चल १. चचल : भामिनि की भौहैं ~ बक २७४४। २. चलायमान : सूर प्रभु बरु अचल होइ ~ २८२४।

चलत १. चलता है : ~ ज्यौं पतग दीपक निहारे ४१८३। २ जाते हो : निपट निलज्ज अजहूँ न ~ ३९४०। ३ चलती हैं . चमक नैनों ~ चहुँ दिस सा० ल० ३९। ४ चलती है : जद्यपि उमँगि ~ पल पानी २३६५। ५ चलती ~ बार कोउ सग न जाइ ७/२। ६ चलते-चलते : अति थकित भई ~ मोहन ११०२। ७ चल देता हूँ : उठि ~ कपट लगि बाँधे नैनपटी १/९८। ८. चलते रहते हैं : ~ तारे सकल मडल १/२३५। ९ चल रहे हैं : परसत चरन ~ सब घर कौं ९१९। १० चलते समय : ~ कह्यौ आवन षट याम ४१०२। ११ चली आ रही थी : ~ घहरात करि अध काला ८५५। १२ चलने लगते थे . ~ तब हरि मटकि १०४१। १३ चलने से : ~ चुवत करभा मकरद। १४. चेतन : अचला चलै ~ पुनि थाके ९/७८। ~ **करज** उँगलिया चलने लगती थीं : ~ — अरु कुंडल लोल १७९३। ~ **गति** वेग से चलती हुई : नूपुर कटि किंकनी ~ — ११८१। ~ **न डग आडी** अड़े पैरों नहीं चला जाता है · अब ~ — दरस बिनु ११०३। ~ **पल पानी** क्षण भर मे पानी बहने लगता है · उमँगि ~ — १७८४।

चलतहुँ चलते हुए : ~ फेरि न चितये लाल २९९५।

चलति १ चलती है जहाँ तहाँ यह ~ कहानी ८८६। २ चलती हो : न्हान ~ की बहुरि लरौंगी १७५०। ~ **बडाई** प्रशसा होती हैं : तिहुं भुवन भरि ~ — ९२३।

चलतौ चलता . परदा सूर बहुत दिन ~ ३१७४।

चलन क्रि० अ० १. चलना : नँद ~ सिखावत १२२। २ चलते हुए · चितवत ~ ३/१३। ३ चलने : ~ न देति ४१०२। ४ चलने के लिए 'सूर' स्याम सँग ~ कह्यौ १८९३। पु० चाल : चल्यौ जु ~ नगर नारिनि मैं ३६४९। ~ **चलन** चलने के लिए, चलने चलने को ~ — स्याम कहत २९५९।

चलनि १ चलने को . रथ तैं उतरि ~ आतुर हे १/२७९। २. चाल मे, चलन मे . ~ चोर के भाई ३८५३। ३ चाल मे : वह चितवनि, वह ~ मनोहर, सत समाधि टरै ३६०२।

चलहि चलें कैसैं ~ कुपैंडे ३६१५।

चलहिंगे चलेंगे कबहिं घुटुरुवनि ~ ७४।

चलहि १ चलते हैं ~ व्रज ज्यौं तीर ४१८८। २ चलने को भुजा धरि कर कह्यौ ~ १४४२।

चलहीं चलते हैं : सूरदास प्रभु पथिक न ~ ३३१०।

चलहु १ चलकर : तुरत ~ ब्रज आँगन डोलौ ३११५ । २ चलो ~ ब्रज कौं स्याम ३११८ । ३. चलोगे : जौ न इते पर ~ कृपानिधि २११६ ।

चलाइ १ चलाया, दौड़ाया : मन उतहिं ~ ३१२६ । २ आरम्भ की : बचन परगट करन कारन प्रेम-कथा ~ ३४२३ । ३ चला दी है · उलटी चाल ~ २३७७ । ४ बताकर, मटकाकर : चलत अंग त्रिभंग कटिकै भौंह भाव ~ १८२० । ५ भेजा : महर दियौ इक ग्वाल ~ ८८७ । दए ~ भगा दिए : ग्वाल — ~ २८९ ।

चलाइहौं चलाऊँगा : वाके मन की डरनि देखि पुनि भावति बात ~ २७६० ।

चलाईं चला दीं वायु अति वेग सौं पुनि अबहिं ~ ४२२१ ।

चलाई १ आरंभ की है, चलाई है नई रीति इन अबहिं~९२३ । २ चलाया, फेंका, मारा : स्याम सखा कौं गेंद ~५३५ । ३ चलाई थी · मैं हाँसी की बात ~४१९५ । ४ पकड़ बैठती है, निभाती है · सदा अपनी टेक ~ १७१८ । कछु न ~ कुछ वश न चला : दुर्वासा शापन को आये तिनको — ~ सारा० ७७२ ।

चलाऊँ १. प्रचलित करूँ . यह मारग चौगुनो ~ १/१४६ । २ प्रहार करूँ, चलाऊँ : सूरजदास दोउ दिसि कापर चक्र ~ १/२७४ ।

चलाए १ चलाया : किहिं यह चाल ~ २५१८ । २ चलता कर दिया : घर घर तैं पकवान ~ ९०१ । ३ भिजवाये : कोटि ब्याल मम मदन ~ ५८५ । ४ फैला दी गई : घरनि घरनि यह बात ~ ८८९ । ५ हँकवाये, भेज दिये : महस सकट भरि कमल ~ ५८३ ।

चलायौ १ चला दिया, बात चला दी . कहूँ भई कै तुमहिं ~ १६३७ । २ हँकाये · रथ के तुरगनि बेगि ~ ४३०३ । ३ भेजा . दूत ~ तुरतहीं ५८९ ।

चलावत १ करते हैं, चलाते हैं . घर घर यहै चवाउ ~ २२६२ । २ चलाता है : दधिसुत रथ न ~ ३६२३ । ३ चलाते हो सूर सु कत हठि नाव ~ ३५५७ । ४. चलाने लगे : जन्म-भूमि की कथा ~ १६७ । ५ बात चलाये रहते है, कहते हैं . नर नारी सब यहै ~ १६८३ । ६ बढ़ा रहे हैं · हरि जू चरन ~ ८/४ । ७ ले जाते हैं मोहू बरबस उतहिं ~ २३५२ । ८ हाँकते थे : कोउ टेरत कोउ हाँकि सुरभि-गन जोरि ~ ४३१ ।

चलावति १ चलाती है सुख की ये बात ~ १५२७ । २ चलाती हो लरिकाई की बात ~ १५६० । ३ चलने को प्रेरित करती है मन हरि सौं तनु धरहिं ~ १६२९ ।

चलावन १ चलाने औरै बात ~ लागी १७२० । २ चलाने के निमित्त लंकापुर रघु-आन ~ ९/१३१ ।

चलावहि चलाते हो . और प्रसंग ~ ३४९८ ।

चलावहु बुला लाओ . हलधरहुँ ~ १९८० ।

चलावैं १ चलाती हैं, कहती हैं निस दिन कथा ~ ४१२९ । २ बढ़ाती हैं . उतहीं चरन ~ १६३० ।

चलावै १ चलाता है अँखियाँ मींचे बदन ~ २३१ । २ चलाती है : चाम के दाम ~ ३६३९ । ३ बात चलावे : जाति-पाँति की कौन ~ १३०४ । ४ चलावेगा . हमहिं ~ कौन २३३९ ।

चलावौ चलाओ मुरली की जनि बात ~ १३४६ ।

चलि १ चलकर चरननि ~ वृन्दावन जावै २/७ । २ चल · ~ नाहिं सकत गरुड मन डरपत ८/४ । ३ चला जुग जुग विरद यहै ~ आयौ ४८८ । ४ चली यह तौ परपरा ~ आई ३१२५ । ५. चले : चीन्हे हौं ~ जाहु कुंज गृह २१६८ । ~ आई आ गई राच्छसि एक तहाँ ~ — ९/५६ । ~ ~ आए पहुँचे तहाँ परासर रिसि ~ — १/२२९ । ~ जात लग जाता है पल अंतर ~ — १६६५ । ~ जान्यौ चलना सीखा हम बावरी त्यौं न ~ — ४०७५ ।

चलित १ हिलते डुलते ~ कुंडल गंड-मंडल ६२७ । २ हिलने लगे, डगमग हो गये : दिग्गज ~, खलित मुनि-आसन ९/२६ ।

चलिबे चलने निज पुर ~ कौ कियौ साज १/२८१ ।

चलिबैं चलने . धीरज पहिल करी ~ की ३१८१ ।

चलिबौ चलना · जौ हौ जानत हरि कौं ~ ३३८१ ।

चलियै १ चलिये · घर ~ नँदलाल ४१२३ । २ चलकर : आपुन ही ~ उद्धरियैं २११५ । ३ चलो : बेगि ~ अनखि है २८१० । ४ व्यवहार कीजिए . जो जैसो तासौं त्यो ~ २३२० । ~ तो चलियै चलना हो तो चलो : पैंड पैंड ~ — ३५४४ ।

चलियौ चलना · जब ~ तब ही कहियौ २९१८ ।

चलिहै चलेंगे · ~ ब्रज अति हरष हियैं ३११० ।

चलिहौं चलूँगा बन बिपदा-संग ~ ९/३५ ।

चलिहौ चलोगे : तनक-तनक पग ~ कैम ४११ ।

चलीं १ चल दीं, चल पड़ीं : लै ~ घोष कुमारी १६२१ । २ चलीं · हँसति नारि सब घरहिं ~ १९६२ । उलटि ~ लौट पड़ीं — ~ सब सखी तहाँ १६१८ ।

चली १ आरंभ हुई, छिड़ी ~ पाडवनि की जब कथा १/२८४ । २ चली जा रही हो समर जीति लै मरन ~ री १७०३ । ३ चल दी · पिंजरा तोरि ~ २४ । ४ चली आ रही हो : सूरदास मनु ~ सुरसरी २४५४ । ५ बह रही हो : ~ मिलि त्रय धार १७५५ । ६ पड़ता जा रहा हो · मधु पीवत

छबि छींट ~ री १७०३।
चलीजै चले चलो : आपुहिं ~ जो पै तुमहू आइ लियौ २५७३।
चलु चलो : आजु सखी ~ भवन हमारैं ९/४४।
चले १. गये : कब मधुबन ~ कब मार्यौ रिपु ३६५७। २ चलते हैं : अतिहिं ~ इतराई २२४२। ३. चल दिये • अब तुम ~ स्यान विष ब्रज दै ३७६१। ४ चलने : अपनैं देखि ~ कौ यह सुख ९/८७। ५ चलायमान हो गये : अचल ~, चल थकित भए ११४०। ६ चले गए : जा दिन तैं गोपाल ~ ३६७४। ७ चलेगी : जाकी जग मैं ~ कहानी १/२२६। ~ **ढहराइ** बह चले : नैन ~ — ११८२। ~ **धाई** दौड़ा चला आ रहा था : इक आवत घर तैं ~ — ९०२। ~ **पराइ** भाग जाते हैं उठि ~ — २३८७। ~ **पराए** भागना पड़ा : व्याकुल ~ — १/३१।
चलैं १. चलते आये हैं : मातु पितु जैसैं ~ १६१८। २. चलना : वैसैं ~ जो निहारैं १०४१। ३. चलने पर : ~ चलत सुधि नाहीं २१३८। ४ चलने से : कहा बैठैं ~ बनिहैं २८१०। ५. चल रहे हैं, चलते हैं : बिलब करत यह क्यौं न ~ ३११३। ६ चलती हैं : ~ सग तुम हमहूँ १५७०।
चलै १ चलता है : चलत न कोउ सग ~ २/२९। २ चल जाती है • मुक्ति ~ पग चूरि ४०४८। ३ चलते • जहाँ तहाँ पुर रहै ~ ३१०५। ४ चलते थे : भरत ~ पथ जीव निहार ५/४। ५ चल सकता है : कब लौ ~ कपट कौ नातौ ३८६२। ६ चलायमान हो जाते हैं : अचला ~ चलत पुनि थाके ९/७८। ७. चलो : ~ तुरत जनि झेर लगावहु २४३०।
चलैगी चलेगी • अब धौं ~ कब २७९७।
चलैगौ चलेगा, जायेगा : सिर पर धरि न ~ कोऊ १/३०३।
चलैया चले गये • ते सब स्वर्ग ~ १३९३।
चलौं १ चलूँगा : रावन हति लै ~ साथ ही ९/८७। २ जाऊँ, चलूँ : सग ताकौ ~ सजनी ४२५०।
चलौ १. चलकर : कर तासौं माँगियै ~ १०४६। २. चलती : ~ किन मानिनि कुंज कुटीर २४५२। ३ चलिए, चलो, प्रस्थान करो • ब्रजहिं ~ नहिं और उपाई ९४६। ४. चलो, व्यवहार करो : सूर स्याम वैसेहि ~ ज्यौं चलत तुम्हारौ बाप १५०७।
चलौगी चलोगी : तुम ~ की नाहिं १७६९।
चल्यौ १ चलकर, जाकर : ~ द्विज द्वारिका द्वार ठाढौ १/५। २. चलता है : 'सूर' स्याम उपहास ~ ब्रज ३६४५। ३. चलना : मानहुँ उमँगि ~ चाहत हैं २१२५। ४ चलने को : ~ न परत मग १३८५। ५ चल दिया : हारि मानि उठि ~ दीन है ४१३०। ६ चल देता हूँ : तव उठि ~ खिसैया २१७। ७ चल देता है :~ पछिताई नयन जल ढारौ १/८०। ८ चल रही है • ~ हरि दिस बाउ २०८५। ९ चला जात ~ गैयनि के पाछैं ४१२। १०. चला गया • ~ सुत कैं हित १/१५८। ११ चली है • ~ जु चलन नगर नारिनि मैं ३६४९। १२ हिल उठा, डोल गया ध्यान नारद टर्यौ सेस-आसन ~ १०६३। १३ बह चला, बहने लगा • दृग-रकत-प्रवाह ~ अधिकानी ७८। १४ भाग चला फेरि ~ बारक जो दिखाई ९/५९।
चवाई धूर्त : तुम चित चोर ~ परि० १/१२६।
चवाउ निंदा गोपी यहै करति ~ १७४४।
चवाव निंदा भरी बातें • करत ~ सकल गोपीजन १६८१।
चषक मधु पीने का पात्र, प्याला • प्रान-मन-रसिक, ललितादि, लोचन-~ पिवति मकरद, सुख रासि अतर सची ११९१।
चहत १ चाहता है • देख्यौइ रूप ~ ३५७४। २ चाहती • ता पर पौढ ~ है आपन भल सा० ल० ६४। ३ चाहती है : ~ लेन लुकाइ २८३६। ४. चाहते हैं स्याम चलन ~ २९८५। ५. मागते हो • दान ~ किहिं णहि १६१८।
चहति चाहती हैं : बरष-गाँठि ~ बरष बरषनि ९६।
चहति चाहती है कह्यौ ~ कहत न बनै २६५१।
चहर जोरशोर से गावत मगलाचार ~ कै ६०७।
चहरि १. नटखटपन, उपद्रव करत हैं अति ~ १४२१। २ शोरगुल, कोलाहल : भावै नहिं ~ ७५०। ३ मुदित होकर • जहँ तहँ गइ ~ ६७।
चहिबौ चाहता है • फिरि फिरि क्यौं ~ ४०५६।
चहियत १ चाहता है : मनौ दूसरौ ~ ३३५२। २ चाहती है • और नहीं कछु ~ ३९११।
चहियतु चाहते हैं : हमरे नद नँदन जो ~ ३९६६।
चहिये, चहियैं १ चाहिए • रसिकहिं सब गुन ~ जू २५६०। २ चाहते हो • गोप कुसल जौ ~ ८४१।
चही १ चाहती थी रिषि कह्यौ, रानी पुत्री ~ ९/२। २ चाहने वाली • मँगनी चढौ ~ कौ ३६४९। ३ देखने लगी पुनि विधुबदन ~ २६०२। ४. दिखाई दे रहे थे • सोभा एक ~ २६२७।
चहुँ चारों • सर पजर रोप्यौ ~ दिसि तैं सारा० ८५१।
चहुँकत चौंकती है उठत ~ हेर सा० ल० २९।
चहुँकोदन चारों ओर • अरु पकवान धरे ~ ९०८।
चहुँकोदा चारों ओर • अष्ट सिद्धि नव निधि ~ ९००।
चहुँघा १. चारों ओर बिरह बिबस ~ भरमति है १६७७। २. चारों ओर से : ~ चहत जरायौ ५९२।
चहुँधार चारों तरफ • गज मुक्ता ~ ४२।
चहुँपास १ चारों ओर : देखि लेइ ~ १५५०। २ चारों ओर से : ~ ब्रजनाम आयौ ५९७।
चहुँ-फल-भवन चारों फलों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष)

के भवन (भटार) कृष्ण ने • ~ गह्यौ १६७१।
चहुँफेरे चारों ओर : भोजन करें ग्वाल ~ ४६३।
चहूँ १ चारों : ~ जुग चलति बड़ाई ३०१०। २ चारों ओर : और द्रुम पास ~ है ४३७।
चहूँधा चारों ओर : ब्रज जुवती मंडली ~ निरखत विथकित काम २८३४।
चहे देखा : हम तन फिरि न ~ परि० २/३०।
चहैं १ चाहते है : जोइ जोइ करन ~ सूरज प्रभु २९७७। २ चाहते हैं, प्यार करते हैं • तोहूँ कौं सखि स्याम ~ १९०६।
चहैंगे चाहेंगे • हमारे जानति और ~ २६६४।
चहै १ देखती है, चाह बनी रहती है • पति ब्रत, कुलहिं ~ ६४६। २ चाहता है कहन ~ कछु कहि नहिं आवै १६१३।
चहौं १ चाहता हूँ : जो चहै मोहिं मैं ताहि नाहीं ~ ८/८। २ चाहती हूँ : कहन ~ मुख कह्यौ न जाइ २५३०।
चहौ ताकते हो, देखते हो • सन्मुख क्यौं न ~ २५१६।
चह्यौ १ चाहा : प्रात होत चलिवे कौं ~ ९/२। २ किया : बढ़ुरौ क्रोधवत जुध ~ ९/१३। ३ चाहता हूँ सुख सरनि ~ १/१६२। ४ चाहती हो जो तुम मोकौं चित करि ~ ४१९५। ५ चाहते हैं • सो इन हरन ~ १/२४७। ६ देखा तक : फिरि मो तन न ~ २३१४।
चाँचरि[1] चाँचरी, फाग : सूरदास सब ~ खेलैं २८५७।
चाँचरि[2] नाचती डोलती हो • धींगरि धिग ~ करें १४९१।
चाँड प्रबल इच्छाएँ : भौन ~ सब रहौ धरी ८०। △ ~ सरी इच्छा पूरी हुई : सूरदास सुनि आरज पथ तैं कछू न ~ — ६५१। ~ सरै काम होने पर • ~ — पहिचानत नाहीं ३५०७।
चाँडिले सब कुछ चाहने वाले • नदसुत लाडिले प्रेम के ~ २४९०।
चाँडे १ अवरोध माया लोभ मोह हैं ~ १/८४। २ उग्रता पूर्वक, हड़बड़ाकर : आपु चले अति ~ १९८२।
चाँदनि चाँदनी (फैली है) : चहुँ दिसि ~ २७८५।
चाँपति चाँपकर • भुज ~ चूमति वलि जाई ९५२।
चाँपि १ दबाकर • उर उर ~ बाँधि भुज बंधन २८२३। २ चिपका, दबा • लै राखौं कुच बीच ~ करि १९२९।
चाँपी १ कुचली हुई • ~ पूँछ लुकावत अपनी ५५५। २ चाँपी, दबाई : सारँगधर धरति तब चरन ~ २६७२।
चाँपे दबाये : ~ काँख फिरत निरगुन गुन ३५४२।
चापौं दाबूँगी : ~ कठिन कुलिस कुच अंतर १९३८।
चाँवर, चाँवरी चावल : तिल ~, बतासे, मेवा, दियौ कुवरि की गोद ७०४।
चाइ[1] चाहती है दीपक-ब्रत ~ सा० ल० १८।
चाइ[2] १ उत्साह बढ्यौ चौगुनौ ~ २०। २ उत्साह से : अपनैं अपनें ~ ८०५। ३ चाह है, लालसा है • अधिक मसि मुख ~ मा० ल० २१। ४ चाव से : चलत लाल जनि के ~ १३३। ~ सौं प्रेम पूर्वक रस बिस्वास बढाइ ~ सौं ३८३२।
चाइ चाहना करेगी • सूर सुतन कह ~ मा० ल० ४७।
चाउ १ इच्छा है, लालसा है : सखी मोहिं हरि दरसन कौ ~ १४५६। २ चाह, कामना करौ न नीता ~ ९/७८।
चाक चाक सदा रहत चित ~ चढ्यौ सो ३२००। △ ~ चढ्यौ चाक पर चढ़ा (भ्रात), रहता है • सदा रहैं मन ~ — १८६५।
चाखत १ आस्वादन करते हैं, चखते हैं • ~ सुधा मिठाई २४५७। २ चखता, खाता : अँगुरी करि कबहूँ नाहिं ~ २९३। ३ पान करते हुए देखत भँवर कज रस ~ मा० ल० २४। ४ पान करने लगे • अंतरिच्छ श्रीबन्धु एक कौ ~ मा० ल० ७।
चाखते चखते थे • गोप सखा दधि भात खात बन, ~ अरु चखाइ ४०९५।
चाखन १ चखने के : बिंब-फल ~ कारन चोंच चलाई ६१६। २ चखने के लिए : ~ दूध दह्यौ ३१३७।
चाखनहारौ चखने वाला सोइ जानत ~ री ३३५।
चाखि १ चखकर, खाकर : मीठे ~ गोद भरि ल्याई १/१३। २ चाख सकीं न सकुचनि ~ १२२३।
चाखी पान किया • अधर सुधा रस ~ ११७२।
चाखे १ चखे सब ~ गोवर्धन राने ३९६। २ चख रहे हैं : सबै रस लै लै ~ ४९२।
चाख्यौ १ चखा है, खाया है सुनु मधुकर जिनि सरबस ~ ३८९५। २ चख कर ज्यौं मधुकर अमुज-रस ~ ३५९१।
चाटत १ चाटता है फिरि फिरि ~ सुभग सुचँदहिं १०७। २ चाटती है जैसे धेनु बच्छ कौ ~ तैसे मैं अनुरागैं सारा० १३३।
चाटति चाटती है ब्यानी गाइ बछरुवा ~ ३३५।
चाटे चाटे, पोंछ पाछ कर चट कर गये दूध दही के भाजन ~ नैंकहु लाज न आई सारा० ७४९।
चाटौ चाटो, खाओ • सहद लाइ कै ~ ३९२६।
चाढ[1] चाव, चाह • कीजै कहा ~ अपनी कत २८२६। ~ सरायौ काम निकालना है अपनौ ~ — २०८८। △ ~ सरी इच्छा पूर्ण हुई कछू न ~ — ६५१। ~ सरै इच्छा पूर्ण होती : कछु न ~ — ३२५८। ~ सारि काम बना लिया अपनौ ~ — उन लीन्हौ २०९०।
चाढ[2] आवश्यकताएँ हाँ अपने गोपाल लड़ैहीं भौन ~ सब रहौ धरी ८०।
चाढिले चाव से : श्री वृषभानु सुता सौं हरि ~ ११८२।
चाढ कामना : गिरधर अपनी ~ ३६४२। △ ~ सरी इच्छा

पूरी हुई . तातैं कहि कह ~ — ८०६ ।
चाढी प्रेमी, आसक्त : देखत ही जु स्याम भए ~ ३०० ।
चाढे १ चाहने वाले, प्रेमी हम हैं तुव ~ २१४७ । २ प्रेम मे व्याकुल हैं : फेर क्यौं करति, धनि कत ~ २४४३ । ३ मुग्ध है : चाय अति ~ परि० १/११० ।
चाढौ तड़प, लाग : इन बातनि कौ ~ २८२६ ।
चाणूर कंस का एक मल्ल जिसे श्रीकृष्ण ने हनन किया था . कह्यौ ~ मुष्टि सब मिलकै सारा० ५२० ।
चाती चाह होनी है : माला दीपक की चित ~ सा० ल० ४८ ।
चातुर चतुर : त्यौ नागरि बस गिरिधर ~ २१८७ ।
चातुरताई चतुरता : तिनहिं न ~ २८२६ ।
चातुरी १ चतुरता, चतुराई : चतुर ~ चूरि ३८४३ । २ चतुर, चालाक : नद-घरनि अब भई ~ ३९१ ।
चानन ठानना : किहि चित ~ की ३८७८ ।
चानूर चाणूर, कंस का मल्ल जो कृष्ण के हाथों मारा गया था . गज मुष्टिक ~ निहार्‌यौ २९४३ ।
चाप धनुष • चारु ~ कर परस सरस सिर ९/१६७ । ~ **डर** डरि धनुष (भौंहो) के भय से भयभीत होकर मनौ खजन ~ — १८२३ ।
चाप चक्र-सिरत्रान चाप, चक्र और शिरस्त्राण : ~ ९/१५८ ।
चापत १ दबाते ही ~ चरन सेस चलि आयौ २६२३ । २ दबाते हुए : ~ चरण जननि अप अपनी कछुक मधुर स्वर गाये सारा० १९६ ।
चापति १ दाबे जा रही है : जननि जसोदा कर लै ~ ८७५ । २ चाँपकर • ~ कर भुज दंड रेख गुन ११९६ । ३ चाँपती या दबाती हुई : कोमल कर ~ महतारी ९६७ ।
चापि चाँप, दबा : ~ कठिन कुच लीन्ही २६२२ ।
चाब चाभो को, जबड़ो को : असुर तब ~ सकोर्‌यौ ४३१ ।
चाबत चबाने • 'सूर' सुमति तदुल ~ ही कर पकर्‌यौ कमला भई धीर ४२२८ ।
चाबति चबाती : नाग बेलि ~ फिरै २८६२ ।
चाम १ चमड़ा : तौ लौं कोमल ~ १/७६ । २ चमड़े ~ के दाम चलावत तुम तौ ४०३६ ।
चामर चँवर • भँवर जु एक चक्रत ~ कर २११६ ।
चाय इच्छा : चित्त मे अनुरक्त विचारत हरि दरसन की ~ सारा० ८४८ ।
चायौ इच्छा रहती है . ये ही चित ही ~ ३५३५ ।
चार[१] चारा (साधन) : करौ छठी का ~ ४० ।
चार[२] चारु, सुन्दर : सुनो सुत धरम आदि चित ~ सा०ल० ७४ ।
चार[३] कृत्य, व्यवहार : प्रथम व्याह विधि होइ रह्यौ हो ककन ~ बिचारि १०७३ ।
चारत १ चराता है . दुहत कौन की गैया ~ १५२० । २. चराते थे अबहि रहे सँग ~ धेनु ५०१ । ३ चराते हुए बन-बन फिरत ~ धेनु ४२७ । ४ चराते हैं . प्रीति कैं हेतु बन धेनु ~ कान्ह २०१७ ।
चारन १ चराना . धन्य गाइ, धनि द्रुम बन ~ ३९१ । २ चराने, चराने के लिए : प्रात चले गोधन बन ~ १३८६ ।
चारपद पति के सुभूषन चार पद (पशु) के पति (महादेव) के सुभूषन, चन्द्रमा, शशाक : ~ तें निकासी सक सा० ल० १२ ।
चारहूँ चारो • ~ जुग करी कृपा परकार जेहि ८/९ ।
चारा मछलियों के फँसाने का आटा या अन्य वस्तु, चारा • मानौ कर्नफूल ~ कौ रवटत बारंबार २६१० । ~ **कपट** कपट का चारा देकर ~ — पछि ज्यौं फदत ९२४ ।
चारि[१] १ चार ~ पुत्र दसरथ कैं उपजे ९/१७ । २ चारों • ~ वेद लै गयौ सखासुर २२१ । △ **दिवस** ~ थोडे दिन के लिए : सब वे — ~ मन रजन १/७५ । ~ **बानी मेटि** चार बातें करना बद करके . एक द्वै तीन तजि, ~ — १७३९ ।
चारि[२] सुन्दर . बरन बिराजति ~ २११८, मारनि चितवनि ~ २२८० ।
चारि आयुध चार अस्त्र (सख, चक्र, गदा, पद्म) ~ बहू हाथ लीन्हे ३०७८ ।
चारिक १ चार एक . अच्छर ~ आनि सुनावहु ३७१७ । २. चार ही . दिन ~ तुमसौं तूठे ३८९१ ।
चारि कीर चार सुग्गो (दोनो की एक एक नाक और उनकी परछाइयाँ) : ~ पर पारस बिद्रुम आनि अलीगन खात २४६५ ।
चारि पदारथ चार पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) . ~ हू कौ दाता १/१७७ ।
चारिहुँ चारो : अनायास ~ फल पावै १/२३३ ।
चारी १ चार ताकै प्रगट भए सुत ~ १९८ । २ चार प्रकार की : मुक्ति लही हम ~ ३९०० ।
चारी १ चराने वाला गिरिवर धारी गोधन ~ ३९२७ । २ चराई दिन प्रति गैया ~ ४०५४ ।
चारु १ मनोहर, सुन्दर : ~ कपोल बिराजत ४७३ । २ उत्तम • घसि चदन ~ मँगाइ २४ ।
चारु चकोनी सुन्दर चौकोर : दसनावलि छवि ~ १११८ ।
चारु-चुवन सुन्दर चुवन • ~ हेत १८४ ।
चारु देसनहूँ चारों देशो के . तहाँ ~ साजि दल बल सकल ४२२१ ।
चारे १ चराकर • मोहन आवत ~ धेनु १३७७ । २. चराने : आवहु, जाहिं धेनु बन ~ ४२३ ।
चारैं चरा रहे हैं : गइया हरि ~ २९५१ ।

चारै[1] चराता है : गाइ सो काहैं ~ २६१८। २ बाँधे ले रही हैं · कमलनि रचि रचि ग्रथित ~ २७०७।

चारै[2] चार (कृष्ण) प्रगट भए धरि कैं भुज ~ १०।

चारो[1] चार : भुरै लेहु दिन ~ ४०३६।

चारो[2] चराता है : सो ब्रज गैयनि ~ ३७८।

चारौ[1] १ चारों : ~ बेद पढत मुख आगर ८/१३। २ चारों नेत्र · फूटि न गई तुम्हारी ~ ३१३४।

चारौ[2] १ चरने लगीं · अतिहिं सघन बन ~ ६११। २ चारा, भोजन . कियौ गीय कौ ~ ९/१५९।

चार्यौ[1] १ चारों : ~ जाम रजनी बिहानी भयौ प्रात २०३४। २ चारों आँखें (अन्तर् दृष्टि एवं बाह्य दृष्टि) : फूटि न गई तब ~ १/१०१।

चार्यौ[2] चराए . सकल भूमि तृन ~ ४३३।

चाल १ गति से ब्रज कौं आवत सुन्दर ~ ४७३१। २ रीति है, चाल है : मन की दिन दिन उलटी ~ १/१२६। **उलटी ~ चलाइ** उलटा जादू चला दिया : सूर स्याम ऐसे हैं माइ, — ~ — २३७७। **बेद की ~** वेद विहित आचरण : चलत — ~ १/१५९।

चालत १. चलते : ~ हीं चपि जात ३१९३। २ चलाते हैं : ~ नाहिंन बातौ ३९३४।

चालन चलाना (चाहते हो) · नाहिं ~ प्रीति ३६९१।

चालहि १ आचरण, चाल बरजति देखहु इनकी ~ १६३९। २ चलना : प्रान उहैं चाहत चित ~ ८०२। ३ चलाओ : घोष बात जनि ~ ४२७०।

चालहि चलाओ : जनि ~ अलि बात पराई ३५९९।

चालि चलाकर : क्रूर गयौ रथ ~ ३१६७।

चालिबी चलाना . समय पाइ ब्रज बात ~ ४०६३।

चालिहैं चलेंगे : चौथि चहूँ दिसि ~ २९१४।

चाली १ चल पड़ीं तृन दंतनि धरि ~ ६१३। २ चलाई · ऊधौ कत ये बातैं ~ ३८२३।

चाली[1] चलाई बहुरौ हो ब्रज वात न ~ ४२४७।

चाली[2] नटखट। ~ **चाली** नटखट पन के साथ : डोलति ~ — परि० १/२९।

चालीस चालीस सूर्य (दोनों हाथों के २० नखों पर कुडल और कर्णफूल की दमक मिलाकर चालीस) · ता ऊपर ~ विराजत २४६९।

चालै १ चलता है ज्वारी ज्यौं हाथ भारि ~ छुटकाई १/३३०। २. चलाये, चर्चा करे · अपनी को ~ सुनि 'सूरज' पिता जननि बिसराई ३५३७।

चाव चाह : हँसत बढाये ~ सा० ल० ६७।

चावन[1] अच्छी लगने वाली है वह मूरति चित ~ ३६६१।

चावन[2] चराने गाइ ~ कौं सो ग्यौ।

चावै चाहे · साँझ समै चित ~ सा० ल० ७९।

चाषी चखा : साँझ न ~ धैया ३४३९।

चाह[1] इच्छा ताके देखन की मोहिं ~ ९/२।

चाह[2] देखा (वृतान्त) : चकित भयौ ब्रज ~ सुनाई ९४३।

चाहक १ चाहने वाला : काम ग्राहक प्रान ~ २५७५। २ चाहने वाले, गाहक : सत्य प्रीति के ~ १/१९।

चाहत १ चाहता : तापर छपद कियौ ~ है ३८४३। २ चाहता हूँ : चरन-रेनु गोपिनि की ~ ११७५। ३ चाहता है . चकित मनमथ सरन ~ २२२०। ४ चाहती है : हरष हरष करषन चित ~ सा० ल० ५७। ५ चाहते ये अति-चपल, चल्यो ~ हैं ९/९२। ६ चाहते हैं : 'सूर' स्याम तुमकौं अति ~ १८८१। ७ चाहते हो · जो तुम हमैं निवायौ ~ ३६०७। **~ पार गयौ** पार जाना चाहा तुम्हरी मीख सुनाव बैठि कै ~ — ४०९७। **स्याम कहा ~ से डोलत** स्याम ! किस प्रयोजन से घूम रहे हो — ~ — २७९।

चाहतिं चाहती हैं . देख्यौ ~ कमल नैन कौं ३३५८।

चाहति १ चाहती जो हम तुम्हैं कह्यौ ~ हौं १५१७। २ चाहती थी ~ दियौ पठाई ४५६। ३ चाहती हूँ · ~ हरि कौ काम २०६७। ४ चाहती है, कामना रखती है ~ नैंकु नैन भरि जोवैं ३।

चाहतीं चाहती हैं · ~ हरि दरस भिच्छा ३६९४।

चाहन देखना : ~ चाहति मूरति मैन ३२४२।

चाहन गंध गंध को चाहने वाला, भ्रमर : ~ बैरी बीर सा० ल० २७।

चाहि[1] १ इच्छा : ~ रही नहि पायौ री १३७। २ देखकर : जीजतु है मुख ~ ३६२६। ३ उमँग, उत्साह · सब, फीकौ लागत ~ ३३४५। ४ चाह : रहे बन बन ~ २३४। ५ चाहते हो अबलनि तन धौं ~ ३७२५। ६ प्रेम : तुम कौं ~ अधिक करि माद ३८३७। ७ प्रेम करके नो कारिख तन मेट्यौ चाहत, कमल-बदन तन ~ ४०२४। ८ प्रेम से · लई आनि तिहि ~ ३१०४।

चाहि[2] १ देखकर · हँननि ता मुख ~ २७२४। २ देखती, ताकती रही ग्वालि हरि मुख कौ ~ ३१६। ३ देखने हुए सूर प्रभु-बस भई प्यारी कोर लोचन ~ ८३७। ४ देखो : हरि के बदन धौं ~ ३५०।

चाहियत चाहती हैं : 'सूरज' प्रभु तें किया ~ है सा० ल० ४४।

चाहियै चाहिए अपन सुख कौं कहा ~ २२४१।

चाही सभु भूपन भाइ शिव के भूषण (चन्द्रमा) को चाहने वाला चकोर चमक चहुँदिम चलत ~ सा० ल० १८।

चाहैं १ चाहती हैं हमहुं ~ मदन मूरति ३९२३। २ चाहते हैं लियें दियो ~ नव कोऊ १/१९५। ३ चाहने पर भी.

बहुरि न पैहैं ~ ३६२५ । ४ चाहेगे : नृपति जे तो धन ~ ५८९ । ५ देख करके : जीजत है मुख ~ ३६१२ ।

चाहै १ चाहता है : चद उदय चकोर ~ ३९२३ । २ चाहती है . प्रीति परगट कियौ ~ १२४५ । ३. चाह पूर्वक . हौं ~ तासों सब सीखव सा० ल० ६७ । ४ चाहेगा : पुनि हरि ~ करिहै सोइ ७/२ । ५ चाहे तो : ~ फेरि भरै १/१०५ ।

चाहौं १ चाहता : तीनि पैड बसुधा हौं ~ ८/१३ । २. चाहता हूँ कान्ह मन वच तुम्है ~ परि० १/५१ । ३ देखती हूँ : फिरि ~ तौ प्राननाथ उत ४०५२ । ४ चाहूँगी : जो ~ सोई सब लैहौं ~ १९३७ । ~ **पूजा** पूजा पाना चाहता हूँ • उनके आगैं ~ — ९७४ ।

चाहौ १ चाहते हो • जौ ~ ब्रज की रजधानी ८९९ । २ आवश्ययता समझो : जो ~ सो लेहु मँगाई ८१६ । ३ प्रेम करती हो : नीकै किन ~ १३४३ ।

चाह्यौ इच्छा की, कामना की : पुनि जल ही कौ ~ ३७२९ ।

चिचींडा चिचिडा (सब्जी) • कचरी चारु ~ सौरे १२१३ ।

चिंत चिन्ता : असन-वसन की ~ न करै २/२० ।

चिंतत १ चिन्तन करते : ~ ही चित्त मैं चितामनि ८/३ । २ चिन्तन करते है . चित ~ अँग अँग अभिराम २७८१ ।

चिंतन स्मरण, ध्यान : चित्त ~ करत जग-अघ हरत १/३०८ ।

चिंता चिता । **मन ~ डाढे** मन मे चिता समाई थी : सबहिनि कैं — ~ — ९४४ ।

चिंतामनि १ चिन्तामणि (भगवद् नाम) : विषम गुजा गहि ~ बिसरै १/१९८ । २ चिन्ता मणि (देवो और असुरों द्वारा समुद्र मन्थन करने पर प्राप्त रत्न . कामधेनु, ~ दीन्हौ १/६४ ।

चिंति चितन करो, ध्यान करो : ~ चरन मृदु चारु चद नख १/६९ ।

चिकट गदे, बहुत मैला सीस मँजन बिनु चिकुर ~ परि० १/१८५ ।

चिकनियाँ छैल-छबीले : अब हरि भए ~ ३३७७ ।

चिकार चीत्कार : मरत असुर ~ पार्‌यौ ४२७ ।

चिकुर १ अलक . राजति अति चँवर ~ ६५३ । २ केश, बाल : चिकने ~ छुटे बेनी तैं २८५७ ।

चिकुरनि केशो की : स्रवन ताटक सोहै ~ की काँति १०७६ ।

चिक्कन चिकने . पुष्प कपोल चारु अति ~ परि० २/६४ ।

चिघार चिंघाडने लगे : हय, गय, हींस ~ ४१६२ ।

चिचिंडी एक बेल जिसके फलो की तरकारी बनती है • बनकौरा पिडीक ~ सीप पिंडारु कोमल भिटी ३९६ ।

चिठि पत्र पर हौ तिहि ~ न चढायौ १/१९३ ।

चित १ चित्त मे, मन मे . काहै न ~ कछु आनद २८०० । २ चित्त से प्रान तहीं चाहत ~ चालहिं ८०२ । ३ हृदय क्रूर कुटिल कपटी ~ अतर ३८८८ । ४ हृदय मे ~ वाकैं इहै स्याम पति मिलैं मोहिं ३०५१ । △ ~ **आवै** मन को अच्छा लगे सो कैसैं ~ — ३६५६ । ~ **कीन्हो** इच्छा हुई द्वादस बन अवलोक मधुपुरी तीरथ कौ ~ — सारा० ८२७ । ~ **चोरै** चित्त चुराता है, मोहित करता है हाव-भाव ~ — सारा० ३१० । ~ **धार** ध्यान देकर सुनौ ~ — ३५ । ~ **धार्‌यौ** चित्त मे रखना बिरह व्यथा बाढे जब जब तनु मैं तब त्वहिं ~ — सारा० ५४९ . ~ नहि **डोलत** चित्त नहीं हट रहा है नद सुवन तैं ~ — ९०३। △ ~ **न धरो** मन मे न लाओ हमारै प्रभु औगुन ~ — १/२२० । ~ **न रहै** मन नहीं लगता है, जो घबराता है तबहीं तैं व्याकुल भई डोलति ~ — कितनो समझाऊँ २०८४ । ~ **मे आई** इच्छा हुई खेलत खेलत ~ — सृष्टि करन बिस्तार सारा० ५ । ~ **बाढे** मन मे उत्पन्न हुआ प्रेम भाव सबके ~ — ९१७ । ~ **राख्यौ** मन लगाया अनत नही ~ १/१११ ।

चितई १ देख करके ~ हँसि नैकु बदन-तन १६८१ । २ देखती थी, बार बार मैं हरि ~ १७६७ । ३. देखा, ताका, निहारा फिरि ~ हरि दृष्टि गए परि ३०१ । ४ देखी वह चितवनि न जात ~ परि० १/५२ ।

चितए १ देखकर जीजत मुख ~ ३७२१ । २ देखा हरि ~ जमलार्जुन के तन ३८२ । ३ देखा है सब तैं गए फेरि नहिं ~ २२५२ । ४ देखे मेरैं तन वै फेरि न ~ २२५० ।

चितऐ देखने पर हँसैं हँसति ~ चितवति तुम २१९९ ।

चितकै ताक लगाता है यह नभ पर भू पर क्यों ~ ३३५६ ।

चितचोर मन को चुराने वाले दपति हैं ~ १७६१ ।

चितडोर हृदय के प्रेम मे तुव प्रसिद्ध लीला सँग बिहरति, सब ~ तिहारैं ४१३३ ।

चितत चिन्ताकुल हैं ~ चित्त सूर सीतापति ९/६२ ।

चितबनि चितवन वह ~ वह चाल मनोहर ४०४६ ।

चित-बित चित्त रूपी धन नदसुत ~ चुरायौ ११८२ ।

चित-बित-धन चित्त रूपी धन सम्पदा माखन त ~ को १९३० ।

चितबितहि चित्त रूपी धन भी मनहिं चोर ~ चुरायौ १२९३ ।

चित-भंग चित अलग सूरदास ~ होत क्यौं जौ जिहिं रूप समानौ १६६७ ।

चित भोर चित्त मुग्ध हो जाता है चारु लोचन हँसि बिलोकनि देखि कै ~ १७९९ ।

चितये १ देखा ~ कुवर कन्हाइ २९९२ । २ होश मे आ गये तिया नाम स्रवननि सुन्यौ ~ अकुलाई २४४० ।

चितयै देखने लगे ~ मल्ल नद सुत कोधा ३०७० ।
चितयौं देखता हूँ फिरि ~ तो तैसैं १/८ ।
चितयौ देखा में ~ कर जोरि ९/१०४ ।
चितलाइ चित्त लगाकर, मन लगाकर, ध्यान लगाकर पति जो कहै सो करै ~ ४२७४ ।
चितलाई ध्यान से, ध्यान लगाकर सुनत स्याम ~ ७४२ ।
चितलाए ध्यान पूर्वक सुर सुनौ ~ १/२३७ ।
चितलाय मन लगाकर जपै मंत्र ~ सारा० ७४ ।
चितलावे ध्यान मे लाते ह चरण युगल ~ सारा० ११०७ ।
चितवत १. देखता है, देख रहा है सिर पर मीच, नीच नहिं ~ १/१४९ । २ देखती ~ रहत चकित चारौं दिसि ९/७३ । ३ देखती है ~ ससि और चकोरी १/१६९ । ४ देखते कृपानिधि हैहै पेंडो ~ ९/८७ । ५ देखते ही ललिता मुख ~ मुसकाने २१०९ । ६ देखते हैं सूर स्याम सन्मुख नाह ~ २४८३ । ७ देख लेते है इत ~ उतही फिरि लागत २३८९ । ८ देखने/दृष्टिपात मात्र से ~ मंदिर भए अवासा ३१०९ ।
चितवतहि देखते ही जोधा ~ मरे ३०७४ ।
चितवतहीं देखते ही ~ सब गए झुराई ९२७ ।
चितवति १ देखती है, देख रही ह पलक न परत चहुँ दिसि ~ ३६२५ । २ देखती रहती हैं तिन ~ दिन तीस ३७०२ ।
चितवति १ देखती हुई ~ डरपति नाहीं २४१६ । २ देखती हूँ हौं तब तें ~ ओही री १९१७ । ३ देखता है अधमुख रहति अनत नहिं ~ ४०७३ ।
चितवन १ देखने नाहिं ~ देत १/९९ । २ दृष्टि ~ रोके हू न रहो १२७० । △ ~ **लगीं** प्रतीक्षा करने लगीं ~ — तिहि समय ११७५ ।
चितवनि १ चितवन, नजर स्याम आपनी ~ बरजौ १९९९ । २ चितवन की ~ कृपा राम अवलोकत सारा० २०८ । ३ दृष्टि ही, चितवन ही ~ लकुट, लाम-लटकनि पिय २२७२ ।
चितवनियाँ चितवन से चोरति चितहिं चारु ~ १०६ ।
चितवनी चितवन · दसन दामिनी लसति वसननि, ~ झकझोर १३८१ ।
चितवहि देखती हैं चलन जानि ~ ब्रज जुवती २९६० ।
चितवहु देखो ~ मो तन कुमारि २१६५ ।
चितवैं १ देखती थी त्योरी भौंहनि मो तन ~ १७२२ । २ देख रही हैं ठाढी ~ छाँह कदम की २९६१ ।
चितवै १, देखती है नैकु दृष्टि भरि ~ बिरहिनि २१०७ । २ देख रहा है ~ कहा पानि-पल्लव पुट ९/१३२ । ३ देखे जो ~ करि क्रोध, अरे ५८९ ।
चितवौं १ अनुरक्त रहता हू काम क्रोध्ऽरु लोभ ~ १/१२६ । २ देखूँ, देखकर मुख ~, फिरि धरनि निहारौं २१०३ ।
चितवौ देखो नैन मूँदि ~ मन माहीं ४७९४ ।
चितहरन मन को हरने वाली अरुन अधर ~ चिबुक अति २१९९ ।
चितहि १ चित्त को, मन को चोरति ~ चारु चितवनिया १०६ । २. चित्त मे, मन मे ~ धरे पुनि करी बडाइ ४३८३ । ~ **न एक समाति** एक भी उपमा चित्त मे नहीं जँचता ~ १८११ ।
चितहि चित्त को नैन मैन दै ~ चुराइ २९८ ।
चितहीं चित्त मे ~ रहे समाइ २६७० ।
चिताइयै चेतावनी दीजिए बिमुखनि जाइ ~ परि० १/१३४ ।
चिती चित्त, वह कौडी जिसका पृष्ठ भाग चिपटा होता है, जो फेंकने पर स्वभावत चित्त पडती है सोचन पटकि ~ ११/१ ।
चिते देखकर असुर-दिसि ~ मुसक्याइ मोहे सकल ८/८ ।
चितेरे चितेरे ने, चित्रकार ने मनौ ~ लिखि-लिखि काढी ३९१ ।
चितेरे चित्रकार ने हरि मनु लिखे ~ ७१८ ।
चितेर चित्रकार ने मानहुँ लिखी ~ २९६० ।
चितैहौं देखूँगा इत उत न ~ परि० १/२० ।
चितैहौं देखूँगी चमकत चित न ~ सा० ल० १० ।
चितै १ देख इक टक ~ रही प्रतिबिम्बहि २४१४ । २ देख कर नदनदन हँसे नागरी मुख ~ २१७० । ३ देखते ~ रहत हे उनकी ओर २३७६ । ४ देखे ~ न जात धूम के भोरे ३८५४ । ५ निहार कर, दृष्टि डालकर चारौं दिसा ~ किन देखहु ८६८ । ६ स्मरण करके तब मकर तप को निकसे ~ कमल दल नैन सारा० ६६ । ~ **चितै** देख-देख कर ~ — पछितातिं ३१४ । ~ **लोचन कोर** उस पर कृपा दृष्टि डालकर दियौ तिहिं निर्वान पद हरि ~ — १००७ ।
चितैबो देखना ~ छाडि दै री राधा ७२१ ।
चितैहौं देखूँगी भूलि न और ~ ३२४९ ।
चितौनि चितवन चारु ~ सु चचल डोल १७९३ ।
चित्त १ चित्त, मन (देवकी) ~ चकित अनुमान न पावति ७ । २ मन मे तन रिपु काम, ~ रिपु लीला ३६७९ । △ ~ **चुराई** मन मुग्ध करके, चित्त को चुराकर लै चलति ~ — १/५८ । ~ **दै** ध्यान देकर बिनती सुनौ दीन की ~ — १/४२ । ~ **धारिहौ** ध्यान देंगे सोइ ~ — १/१२४ । ~ **धारी** मन लगाकर ताहि सुनै यह कथा जो ~ —

४१९८। ~ मोदै चित्त प्रसन्न हो उठता है बेनु-धुनि सुनि सखनि ~ — ९८०।

चित्तहू चित्त को भी इंद्रिनि सहित ~ ले गयौ २०९६।

चित्र १. चित्र। २ विचित्र थीं . ~ चौबीस धातु केहि कीन ३८६७। ~ अवरेखी चित्र मे अंकित हो · मनो ~ ९/६४। ~ की अनुहारि चित्र के समान स्थिर · मौन साध्यौ ~ — १०६८। △ ~ लिखी चित्र के समान स्तब्ध, विस्मित ~ — तिहिं काल १६१८। ~ तुम करति रेखो तुम चित्र की रेखाएँ करती/बनाती हो, चित्र अंकित करती हो भीति बिनु ~ — १७०७। ~ लिखाने चित्र लिखे से रहे जु ~ ३६७५।

चित्रकारि चित्रकारी। △ बिना भीति ~ बिना भीति (निराधार) चित्र के समान, बे सिर पैर की ऐसे कहैं नर नारि, — ~ १७३४।

चित्रकेतु चित्रकेतु, मथुरा के निकट शूरसेन नामक राज्य के राजा। दूसरे मत के अनुसार वसुदेव के भाई देव भाग और कस की बहन कसवती का एक पुत्र · ~ पृथ्वी पति राउ ६/५।

चित्र गुप्त चित्र गुप्त, यम के दरबार के लेखक जो सब मनुष्यो के पाप पुन्य का लेखा करते है . ~ सु होत मुस्तौफी, सरन गहूँ मैं काकी १४३।

चित्र-पतूरी चित्र मे बनी पुतली : चकित भइ ज्यौं ~ २०७८।

चित्रपूतरि चित्र मे बनी पुतली : त्राटक भई ~ ज्यौं जीवन की नहीं आस २६००।

चित्ररेखा चित्र रेखा या चित्रलेखा, बाणासुर के मन्त्री की कन्या जो ऊषा की एक सखी थी : पुनि अनिरुद्ध भेद नारद के ~ हरि लीन्हो सारा ७००।

चित्रलिखि चित्रलिखित से : रोम रोम भरि गयौ बचन सुनि मनहुँ ~ कीन्हौ ३१२५।

चित्रलिखी चित्राकित-सी : ~ तिहिं काल १६१८।

चित्रित १ चित्राकित ~ बाहु पहुँचिया पहुँचे ४५१। २. चित्रा हुआ (बेल बूटों से सजा हुआ) : बन की धातु ~ तन मोर चंद सोहै १८८७।

चित्रे चित्रित हैं : महलनि ~ उर्ग ३०२३।

चिनगि चिनगारी : परिहै क्रोध ~ भाँवरि मैं २८२६।

चिनगी चिनगारी : उठत अग अनग ~ ३९५१।

चिह्ननि १. चिह्नो को : चरन ~ चली देखति १०९२। २ चिह्नों से : निसि के ~ चीन्हे २५४९।

चिह्नहु चिह्न ही : गोइ गात ~ कहे देत माई २६५८।

चिन्हाई परिचित करा दिया/कराया : कृपा जानि हरि ताहि ~ ९१८।

चिन्हारा पहचानने वाला : कै कोउ और, मोहिं नहिं ~ ९/७६।

चिन्हारि १ पहचान, परख : तब तैं चतुरनि भई ~ २३८८। २ पहचान, परिचय : प्रथमहिं प्रथम ~ १८१६।

चिन्हित चिह्नों से युक्त : अकुस कुलिस कमल धुज ~ २९४८।

चिन्हौरी चिह्न या पहचान के अनुसार पहिचानी : बोल बोलाइ ~ ४४५।

चिबुक १. ठोडी, ठुड्डी : नागरी नैन सौं ~ मोरी ६९१। २ ठुड्डी पर या मे : बीरी मुख भरि ~ डिठौना २६२८। ~ चारु चित खाग सुन्दर ठोडी मे चित्त लगा हुआ है : ~ — १७७७। △ ~ चर बित चुरावत सुन्दर ठोडी धन मन चुरा लेती है : ~ — १८१९। ~ है चित चोर ठोडी चित्त को चुरा लेती है : ~ — १८२३।

चिरंजीव बहुत दिन तक जीने वाला, चिरजीवी : करि ~ तौलौं दुरजोधन १/२७५।

चिरंजीवि दे० चिरजीव : ~ सो सरई ९/७८।

चिरंजीविन चिरजीवी, उपदेवता गधर्वादि : ~ कौ देखि कह्यौ निडर ये ८/८।

चिर अधिक समय तक : ~ जीवौ रामचद्र रनधीर ९/१८।

चिरई चिड़ियाँ : ~ चुहचुहानी, चद की ज्योति परानी २०३९।

चिरजियौ चिरजीव बनो, बहुत दिनो तक जीवित रहो : ~ कान्ह हमारौ ३८१५।

चिरजीवहु १ चिरजीव रहे : ~ जसुमति सुत तेरो। २ दीर्घ काल तक जियो : ~ मेरौ कुवर कन्हैया।

चिरजीवौ चिरजीवी हो, चिरंजीव रहो : ~ नद-लाल ३९७।

चिरारी चिरौंजी : खरिक दाख अरु गरी ~ ३९६।

चिरियाँ चिड़ियाँ : जब ~ चुचुहानी २५१४।

चिरिया चिड़िया। △ ~ कहा समुद्र उलीचै चिड़िया कहां समुद्र उलच सकती है : ~ — पवन कहा परबत टरै १/२३४।

चिरियानौ कृष्ण का एक छद्म नाम जिसे गोपियों ने रखा था : सब ब्रज बनिता हू ढि कै धर्यौ ~ नावँ ३१५५।

चिरैयाँ चिड़ियों को : गगन ~ उडत दिखावत १८८।

चिरैया चिड़िया : किहि सोने की उडत ~ ३९६८।

चिहुर केश : बसन कुचील ~ लपिटाने ९/७३।

चिहुर-बिहुर बिखरे बाल : ~ नाना कर न गथन परि० १/९५।

चीठी चट्ठी : लिखि लिखि पठवत ~ ३६७२।

चीत चित्त, मन (लगाया) : मैं अपनौ अभिमान जानिकै, चद चकोरी ~ ४०४१। △ हरत अचानक ~ अचानक मन को मोह लेता है : सग रहत सिर मेलि गठौरी — ~ ३६७१।

चीततिं चित्रित कर रहा है : कौरनि मन्दिर ~ ननिनि ३० ।
चीता ढोंग-श्याम • चढ़े मेघ माहीं नृपति भिम्नी ज्यौं पीता ~ कौ ४००९ ।
चीते¹ समझा, जान लिया : प्रभु अन्तर्यामी मन ~ ७०० ।
चीते² चाहे • मन मदनि के मन के ~ ३२ ।
चीतो चाहा • मन ~ पायौ हरि नाह ११८० ।
चीन्यो १ निश्चय किया निनि नागर नन्द मन ~ २८४ । २ जानकारी, पहचान का छगनी ~ नारी पुन्हाई ३७ । ३ मनचाहा • मैंनी ~ ज्यौं नैनानी २६ ।
चीनौं क्रि० अ० १ लेता है, पहचानता है : नन्द नाह कहुँ ~ ११२५ । २ पहिचान सका . गुर गोविन्द नाहि ~ १/६५ । पुं० पहचान : निगम न पावा ~ ३५६२ ।
चीन्ह चिह्न, पहिचान नील नाम नेत इन्दि ~ स्देश ी २०८२ ।
चीन्हनि पहचानता है • ~ बारबार बार ई ७०० । ~ परनि पहचानते हैं : ~ — कुनकूनू न वानी ८२८४ ।
चीन्हि पहिचान . रवगौं मोरी ~ २७८० ।
चीन्ही १ पहिचान गई, पहिचान लिया कुर्इ भनी मैं ~ २९७ । २ पहिचानी कुरत मोर मन नाहि गात ~ ३०२१ । ३ समझी • हम लिनि मैंत जुगत निर ~ सा० न० ५८ ।
चीन्है १ पहिचान लिया • निनि के निगननि ~ २५८० । २ पहिचाना, जाना . नहार न नैन ~ १५५१ । ३ पहिचाने • ~ पर ना जात नहीं, २०३१ ।
चीन्हैं १ पहिचान • ~ कोउ न सकत १५०६ । २ पहिचाने. बिनु ~ जननी मन डाँडी ४२०० ।
चीन्है पहिचानता है • ~ नयन न जात ~ २/७० ।
चीन्हौं पहिचान • आवत कैं नाहि पावत ~ २/५० ।
चीन्हौ १ चिह्न, निशान पायनि अँग अँग ~ २६३३ । २ पहिचान कर . (हरि) नहीं बानि करि ~ ४ । ३ दिखाई दे गए थे पवन ने बेग निहि समय ~ ३०५५ । ४ पहिचाना • कोउ कहि हरि नाहीं रस ~ ४२०० । ५ परिचित • बदी देर मन किन सौ ~ ८८० । परत ~ धार लग रहा थी • दुखनि बन अन्त नाहि — ~ २१२८ ।
चीन्ह्यौ पहचाना : कबहुँ न ~ ८/१२ ।
चीर १ चिथड़े • पन अरु सूत ~ पाटवर ९/९८ । २. दुपट्टा : पीत-वसन कटि ~ ५७५ । ३ वस्त्र . एकन कौ पहिरावन ~ २५ । ४ साड़ी एकै ~ दुनौ मेरे पर १/२४७ ।
चीर दच्छिनी दक्षिणा पहिरावा . सोभित ~ निहि अग परि० २/१८८ ।
चीरि चीर कर, फाड़कर : बदन ~ पल माँहि गिराइ ४३० ।
चीरे वस्त्र बागे ~ बनाइ, भूषन पहिरावौ ९५ ।
चीरौं फाड़ डालूँगा • गहि तन हिरनकसिप कौ ~ ७/५ ।
चीर्यौ फाड़ डाला ~ उदर पुत्र नव निकर्यौ मारा० ६९४ ।
चुंबक आकर्षण-केन्द्र • हरि ~ जह मिलहि सुर प्रभु मोंं लै जाहु नहीं ३००२ ।
चुंबत चुंबन करते हुए मुख ~ जननी चमकावत माग० १६७ ।
चुंबनि चूमनी है • ~ भुना गंभीर १/२० ।
चुंबन चुम्बा : चतुर्भुज मुख मोरि ~ देत १९८८ ।
चुइ गिरता । ~ चुइ परत चूना पटन लगता है ~ — उनँगि रस गाग २७७३ ।
चुइ चू पड़ा, टपकी कछु यैं कहति यह कहि आवत प्रेम पुलकि स्रम स्वेद १८५५ ।
चुकै हो सकता है दूर स्याम बिनु स्याउ ~ क्यौं २४३४ ।
चुगत चुगता है . पावक ~ न मानि ३२८९ ।
चुगन चुगने के लिए : ~ चकोर चले हैं सनमुख ११९२ ।
चुगलनि निन्दा करने वाले ~ की प्रतवार ३०००।
चुगाइ चुगाकर • नेम बधिक ~ कपट कन ३१८५ ।
चुगुल चुगुलखोर . ~ ज्वारि निर्दन अपराधी ८/८८६ ।
चुगैं चुगाता है ना तनि रस ~ मुकता हल ३०३० ।
चुचकारि पुचकार कर, प्यार के साथ नद कह्यौ ~ के ८४१ ।
चुचकारे पुचकारता है करत नाद दाहन ~ १७९७ ।
चुचकारैं पुचकारती है : नत नदघरनि ~ १८३ ।
चुचात १ टपकने लगते हैं अति अनुराग ~ ३२०२ । २ टपक/चू रहा है, स्रवित हो रहा है : गोधन थन तैं दूध ~ ११८० ।
चुचान टपकने लगे बाल भाव निज मे सुधि आइ अस्तन चले ~ सारा० ७१७ ।
चुचुहानि चहकने लगीं • जब चिरया ~ २५१४ ।
चुटक चाबुक, कोड़ा : पवन ताजी नहि ~ दिखायो ३३२८ ।
चुटकनि १ चुटकियाँ : सूरदास प्रभु सखी सयाना ~ देत न उठि लागि पाई २६६५ । २ चुटकियों से • सूर स्याम ~ फल, धाइ कठ लावे परि० २/१९० ।
चुटकि चुटकी • ~ लेति रहीं हमहि निहारो २१६६ । △ ~ दै चुटकी बजाकर • ~ — जु नचाइ ३६३ । ~ दै दै चुटकी बजा बजाकर • ~ — ग्वाल नचावत २१५ ।
चुटुकि चुटकी . ~ बनावति नचावति जसोदा रानी १५१ ।
चुनति चुनकर : आपुनि ~ गोद लै धारत २६१८ ।
चुनावति चुनवा रहा थी . जुवतिनि कहति ~ २६१८ ।
चुनि चुन करके . सेज कली ~ डारत २४४२ । ~ चुनि चुन चुन कर • कलियाँ ~ — डारि २६१५ ।
चुनिहै चुनेगा, चुगेगा हम ज्वारि क्यौं ~ ३५०९ ।
चुनी चुन्नी . मारी सुरग ~ २४ ।
चुने चुना है • पटपट रग ~ २६६ ।
चुनैं पसन्द करेगी : भूलि अँगारनि को न ~ ३७४० ।

चुनौती चुनौती : पठवत चरित ~ दैन १७७६ ।
चुपकरि चुपचाप : जिय मे समुझ अपने सन्मुख मुख ते ~ रहिये सारा० ७५४ ।
चुपकहि चुपके से : ~ आनि कान्ह मुख मेल्यौ २६२ ।
चुपकैं शान्तिपूर्वक : बैठि रहौ अपनैं घर ~ १७४२ ।
चुपरी चिकनी चुपडी : तौ लगि सब पानी की ~ ३५३९ ।
चुपरे चुपडे . मॉडि मॉडि दुनेरे ~ १२१३ ।
चुपर्यौ चुपड दिया : करि मनुहार कलेउ दीन्हौ, मुख ~ अरु चोटी १६३ ।
चुपाई चुप : पछी रहे ~ परि० १/३५ ।
चुभि गड गई : जसुमति सुत चित ~ रही २८६४ ।
चुभी गड गई है : टरति न टारैं छवि मन जु ~ १८७० ।
चुभे चुभता गया . ~ जाइ हरि-रूप-रोम मै २३७५ ।
चुरई पकाया ~ भले पटे परि० १/१६१ ।
चुरकुट १ चूर-चूर : ब्रज घातनि करौं ~ ८५२ । २ टुकडे-टुकडे : राम हल मारि सो वृच्छ ~ कियौ ४२०८ ।
चुराइ १. चुराकर : छबि धरतिं ~ २४०७ । २ चुरा . साँवरे तै चित लियौ ~ १३७२ ।
चुराई १. चुराकर : गोरस घर-घर खात ~ ३९१ । २ चुरा लिया है : धौं उनहिं ~ १९७० । ३ चुरा लिया हो : दाडिम दसन ~ ६२६ ।
चुराए चुराकर । △ **नैन-~** ऑख चुराकर (कनखियो से) : निरखति — ~ २१५५ ।
चुरायौ चुराया : हमहिं कहत दधि दूध ~ १५६१ ।
चुरावत १ चुराते है : गोपिनि चित्त ~ ४१५२ । २ चुरा रहा हो : मनौ सुधा ससि राहु ~ १४४८ । ३ चुरा ले रहे (हैं) : आपुहि सबै ~ हैं २३२७ ।
चुरावति १ चुराती है : अमृत रस ब्यालि ~ १४९ । २ चुरा लेती है · अति चतुर चितवन चित ~ ४१८७ ।
चुरावन चुराने के लिए : 'सूर' गए हरि रूप ~ २२७० ।
चुरावनहारौ चुराने वाला : सूर सुगध ~ १६९५ ।
चुरावैंगे चुरायेगे : मेरे मनहिं ~ २७०८ ।
चुरावै १ चुराता है : कृष्ण घर-घर गोरस ~ ३ । २ चुराती है जानि अनोखी मनहिं ~ ३१४४ । ३ चुराये ले रहे थे : चतुरई बचन कहि म्न ~ २४९० । ४ चुराये ले रही है बिहँसनि चितहिं ~ ४५१ । ५ चुरा लेते हें नैन-सैन दै चितहि ~ १४३३ ।
चुरि चूडियो चाँचरि ~ किंकिनि भनकार ११८० ।
चुरी १ चूडियाँ : डारनि चरि-चरि ~ विराजति १४४७ । २ चूडियों की : कर ~ भनकार १०४३ ।
चुरु चल्लू : हँसि जननी तब ~ भराए १८३ ।
चुरुवनि चुल्लू मे मुख धोयौ ~ लै पानी १३९२ ।
चुरू चुल्लू मे भर्यौ ~ खरिका लै आई १२१३ ।
चुरैहौं चुराऊँगा सो कह तोहिं ~ १७०४ ।
चुवत १ चूते हुए देखी मैं लोचन ~ अचेत ४११५ । २. टपकता है, चूता है . बिधु परसि ढत विध्वत अमृत ~ २०३३ । ३. बहता है 'सूरदास' क्यौ नीर ~ है ४२४३ ।
चुवतहि चूते ही ~ चुवत सुधा रस मानौ २६१० ।
चुवावत चुआ रही है थन दूध ~ ४८० ।
चुवावै चू रहा हो : मानौ मदहिं ~ १४३९ ।
चुवै चू रहा था सुगध पुटे स्रवननि ~ २८६२ ।
चुहचुहानी चहचहाने लगीं : चिरई ~ चंद की ज्योति परानी २०३९ ।
चुहि चुहि भडकीली ~ चूनरी बहुरग २८३० ।
चूँच चोंच मे : करक बीज गहि ~ २४४५ ।
चूक भूल, गलती : ~ समझे बिना भौंह ऐंठी २४२० । ~ कहा **पछिताहि** भूल के लिए क्या पछताना ~ — १०२० । **~ मानि लीन्ही** अपराध स्वीकार कर लिया : ~ — हम अपनी १०८६ ।
चूकि चूक खेल मे ~ जाति १६६० ।
चूकियै चूकना चाहिए घर आए आदर न ~ २८२६ ।
चूकैं बीत जाने पर सूरदास अवसर के ~ १/२४८ ।
चून चूने : हरदि ~ रग, पय पानी ज्यौं १९०९ ।
चूनरि चुनरी ज्यौं ज्यौं बूँद परति ~ पर १०१२ ।
चूनरी चुनरी नयौ पीताम्बर नई ~ ६८५ ।
चूनी रत्न कण, चुन्नी हरित ~ जटित नग सब २८३१ ।
चूनें चूने से : ~ मिलि रग जैसें होत है हरद कौ ११५० ।
चूनै चकनाचूर : बासन फोरि किए सब ~ ३१७ ।
चूनौ चूना : रग कापे होत न्यारो हरद ~ सानि १४५९ । △ **जरे पर** ~ विपत्ति पर विपत्ति : क्यौं सहि जाइ — ~ ३७३८ ।
चूमत चूमते हुए : सूर नद मुख ~ हरि कौ ८४२ ।
चूमति चूमती हुई : भुज चाँपति ~ बलि जाई ९५१ । २. चूमती है : कठ लगाइ लिए मुख ~ ३८८ ।
चूमि चूमकर : मुख ~ हरषि लै आए १८३ ।
चूमै चूमती है : जननि कमल मुख ~ १४७ ।
चूम्यौ चूम लिया . मुख ~ दियौ धरहिं पठाइ ७६१ ।
चूर चूर्ण : तट बारु उपचार ~ ३१९१ । △ ~ चूर कर डाल नष्ट कर दिया, चूर चूर कर डाला : योजन ढेढ विटप वेली सब ~ — ४१७ ।
चूरन चूर्ण . मिस्री करत पाग कौं ~ ८९२ ।
चूरनि कच अस्त व्यस्त केश : बिथुरि रहे ~ १६९४ ।
चूरा चूडा, कडा नामक आभूषण जिसे बच्ची के हाथ पैर मे प्र-

नाना जाता है • नन अँगुला सिर लाल नातनी, ~ दुहुँ कर पाई ८° ।

चूरि १ तोड़कर : चतुर चातुरी ~ ३८४३ । २ नष्ट हो गया, चूर हो गया • अष्टकुल नाग गर्व भयौ ~ २/२६ ।

चूरे १ चूर्ण • कैसे जात कुलिस कर ~ ३५७६ । २ चूर्णों से भरि-भरि कपूर रस ~ : १८३ । ३ शिथिल होने हो कटु सदेस कथन कत ~ ३५७६ ।

चूरो चूर्ण, चूरा अरु पाननि सुभि ~ २८२६ ।

चूल्हें चूल्हे में । △ ~ डारि चूल्ह में कोन सो माना धूलो ~ — ११८० ।

चेटक टोटका, जादू : रही ठगी ~ सौं मानी २८१ ।

चेटकी जादूगर • चतुर ~ मथुरानाथ सौं ३६९३ ।

चेटुअनि शिष्याओं को नद ~ मन प्रेमी आई ७/२ ।

चेत १ चेतना • न न मन मांह ~ ३०६२ । २ ज्ञान धनि चावन तुन ~ १०२४ । ३ सावधान हो जाओ नैना कत ~ रे नवन ९/११४ । ४ मन ठिकाने आनु मोहि और नैं ~ नाहीं २०३० ।

चेतत सावधान ~ क्यों नहिं मूढ़ ९/११८ ।

चेतनि सावधान होनी, चेतनी : ~ नहीं चित्र की पुतरी ४११५ ।

चेतन चैतन्ययुक्त ~ भाव, सदा थिर मानी ५/४ ।

चेतनता चेतना नम्मन ~ लहै नोट ३/१३ ।

चेतहि चेतना के बिनु ~ चतुराई ३०३१ ।

चेति १ स्मरण कर, विचार कर सो देखहु चित ~ ३८६१ । होश कर, ज्ञान में आ अजहूँ ~ भजन करि हरि को १/८० ।

चेत्यो १ चेत/सावधान हो ~ नाहिं गयौ हरि औसर २०३ । २ विचारा था मिले निहि नाव जो जान ~ चित्त २९५३ ।

चेप लासा मुरली मधुर ~ काँपा करि ३८८५ ।

चेराटे चेरानी मनु इनकी मैं करी ~ १४१८ ।

चेरि दासी ~ की अति ज्ञान दीजे ५७७ ।

चेरिन दासी, दासिया • ~ सौ अति नेहु ३१५५ ।

चेरी १. दासी • सूरदास हरि ~ कीन्ही २६५३ । २ दासी है वह कस की ~ ३५२८ । △ बिनु दामन की ~ बिना मोल का दासा • बहुरि न दूर पाऊँ हम सौं, — ~ ३१८८ ।

चेरे दास, सेवक • सकल प्रभु जोति मैं किए ~ ९/१२९ ।

चेरै दास • मन मनसिज के ~ २६५३ ।

चेरौ अनुचर, सेवक, दास ~ नद महरि के धन की ३९६ ।

चैन १ आराम, चैन • निमिष ~ नहिं कीजै ३९१२ । २ सुख • पुहुप गन बरषहीं ~ जान्यौ ३०८२ । ३ सुख पाते हैं महिमा निगम पटत गुनि ~ ९/१२ । ४ सुख-शान्ति • तनहिं तै ब्रज ~ गहिहै ८५० ।

चैनु १ आनन्द खेलत है करि ~ ४४८ । २. शान्ति अति सुख पावत ~ ४९१ ।

चैहै चाहेगा जद ~ तब माँगि लेहिंगे १६१० ।

चैहौ चाहेंगे (प्यारे) दीन्हों ज्वाब दई कौ ~ १५३२ ।

चोख तेज ~ परे नर नारी परि० १/१२९ ।

चोज चमत्कारपूर्ण उक्तियाँ में • बात सबनि कौ ~ ३९७४ ।

चोटन-पोटत चुमकारती-पुचकारता है तेल उबटनो आग धरि, लालहिं ~ री १८६ ।

चोटा चोट सुरदास जाने वहै जिहिं प्रेम की ~ परि० १/७१ ।

चोटी चोटी । △ आउ करौं तेरी ~ आ तेरे चोटी गूथ दू मरि कुवरि सौं यहि कहि भापनि, — ~ ७०३ ।

चोटी-पोटी चिकनी चुपड़ी बात कहै मुख ~ १९०७ ।

चोप १ चाव नूतन ~ बढ़ाऊँ २८०९ । २ इच्छा से • अपनी ~ आप उठि बैठत ३६२९ ।

चोर चोर । △ ~ सबनि चोर करि जाने सुरा सबको बुरा दी समझता है • ~ — त्यानी मन सब जानी १७४८ । **ग्रीम तिरिया ~ की तो कबहुँ मिलिहैं साहु** चुरा आदमी कर दीन या भले सफलता पा जावे लेकिन कभी तो शाह के फंदे में पड़ेगा ही — ~ — सूर सब दिन चोर की कहु होत है निबाहु १७४१ ।

चोरटि चोरटिया सदा साहु ~ भई, आजु परी फँद मोर १४६१ ।

चोरटी चोट्टी, चोरी करने वाली हमहि कहत हो ~ १४६१ ।

चोरत १ चुराता है निन ~ बटपारे ३७५८ । २ चुराते • चितु चार चित ~ ई १८३४ । चुराते थे : बालक सग मिलि दधि ~ ३६८८ । ४ चुराते हुए दधि ~ नवनीत २०३४ । ५ चुराते हैं किनहूँ क घर माखन ~ ४०५३ । ६ चुराते हो, चुराते हो • अब ~ मन मोर ७७६ ।

चोरति १ चुराती काके मन को ~ हो २१९९ । २ चुरा लेता है ~ चितहि चारु चितवनियाँ १०६ ।

चोरन १ चुराना • 'सूरदास' प्रभु ~ सीखे १९३० । २ चुराने ~ गए स्याम-अग सोभा २३७७ ।

चोरनि चोरों : 'सूर' स्याम ~ के राजा १९३७ ।

चोराइ १ चुराकर : माखन ~ बैठ्यौ २८४ । २ चुरा विधि लै गयौ ~ ४३७ ।

चोराई १ चुराकर • माखन खात ~ ३२५ । २ चुरा मन लियो ~ १२९१ ।

चोरावें चुराते • जो प्रभु ब्रज माखन न ~ १६०७ ।

चोरि[१] (चेरि) दासी • ~ मौति भई आइ ६५६ ।

चोरि[२] १ चुराकर, चोरी करके ~ माखन खाहु सब मिलि २६९ । २ चुरा सदन पैठि मन ~ लियौ उन २५३३ । ~ **गयौ**

चुरा ले गये हैं : तबहीं तैं मन ~ — १८७९। ~ **चोरि** चुरा चुरा कर : को अब ~ — दधि खैहैं ४०८५।
चोरी स्त्री० चोरी : उदर अर्थ ~ हिंसा करि १/१२३। क्रि० वि० चोरी करके · ~ खाते छाँछ १६१८।
चोरे १. चुराये : कहाँ जात ~ मन कौं १९३०। २. चुराया था · को दधि माखन ~ ३६३०। △ **चित** ~ मन चुरा लिया : रमकत, झमकत जनकसुता सग हाव भाव — ~ सारा० ३१०।
चोरं चुरा लेते हैं काहू के चित चितवन ~ १३९९। △ **चित** ~ मन मोहते है · सूरदास प्रभु — ~ २८३९। **प्रिया रूप** ~ प्यारी का रूप चुराये ले रहे थे : नैन भरि-भरि — ~ २१९६।
चोरै १ चुराता है : मेरो माई कौन को दधि ~ ३२१। २ चुराती है : चित चितवन मैं सो ~ ४१८७। △ **चित** ~ चित्त चुरा/मोह लिया है काकौ नहीं — ~ १/२२२।
चोर्‌यौ चुराया : दूध दही काहै कौ ~ ४०८४। **चित्त** ~ मन को चुरा/मोह लिया है : माई, मुरली है — ~ १३२७। **मन** ~ **किहि काम** मन क्यों चुरा लिया है . मेरौ — ~ — १९३४।
चोलना वस्त्र : काम-क्रोध कौ पहिरि ~ १/१५३।
चोली-बंद चोली का बधन : हार ~ तोर्‌यौ १४६१।
चोली-बंद-डोरि चोली के बन्द की डोरी अब तोरति ~ ३२७।
चोवा एक प्रकार का सुगधित द्रव पदार्थ, चोवा : ~ चदन अगर कुमकुमा ३०९८।
चौंक चौंककर : ~ चितवत धाइ ४१५८।
चौंछोली चोचले छाँडि सबै ~ री २५८८।
चौंधि चौंधियाता . मुख छवि निरखि, ~ निसि खग ज्यौं १८८९।
चौंधी चमकी : सूर के प्रभु जाइ देखौ चित्त ~ जौन २५७४।
चौंर चमर, चँवर चिकुर ~ अचल धुजा २९१४।
चौंक माँगलिक, अवसरो पर पूजा के लिए आटे, अबीर, मोतियों आदि से बनाया गया चौकोर क्षेत्र, चौक गज मोतिन के ~ पुराय ८०९। △ ~ **देइ** चौक पूर कर ~ — बैठकी वनायौ ९८४।
चौक चरननि चरणो (पैरो) की चौकडी खोले मृगनि ~ के ४१४१।
चौकरी[1] चित्रकारी . विविध ~ वनाउ ४१।
चौकरी[2] चौकडी/छलाँग मारना। △ ~ **भूली** छलाग मारना भूल गई : तब तैं मृगनि ~ — २७४१।
चौकस सतर्क : रे भैया तुम ~ रहियौ २९१६।
चौका[1] सामने के चार दाँतों की पक्ति पान भरे मुख चमकत ~ २८७२।
चौका[2] छलाँग मारना, दौडना। △ ~ **भूलो** चौकडी मारना भूल गये हों : ज्यौं मृग ~ — २१२५।
चौकी[1] वह स्थान जहाँ रक्षा करने वाले व्यक्ति रहते हैं : मनौ अपनी अपनी ~ ३२२१।
चौकी[2] गले का गहना : ~ चमकति उर लगी ११८०।
चौक पूजा के समय जमीन पर आटे, अबीर, मोतियो आदि से बनाया गया चौकोर क्षेत्र, चौक मुतियनि ~ पुराइ, उमँगि आगनि आनँद सौं ९५।
चौखानि अडज, पिंडज, स्वेदज, उद्‌भिज आदि चार प्रकार के जीव पच तत्त्व ~ सो बालक है भूलत पलना ४८७।
चौगान १. लकडी का बल्ला : लै ~ बटा अपनैं कर २४३। २ चौगान का खेल : मन मोहन खेलत ~ ४१६६।
चौतनियाँ बच्चो की चौकोर टोपी : सोभित सीस लाल ~ १०६।
चौतनी १ चार बद वाली बच्चो की टोपी : तन झँगुली सिर लाल ~ ८९। २ टोपियाँ बरन बरन सिर पाग ~ २८७२।
चौथ[1] चौथे : : चम्पक लता ~ दिन जान्यौ सारा० १०५६।
चौथ[2] चतुर्थ राशि (कर्क) करके : ~ सिंगार पच कर करि बुध सा० ल० ७१।
चौथि चतुर्थी के (दिन) · ~ चहूँ दिसि चलिहैं २९१४।
चौथैं चतुर्थी : ~ चद जात गोपिनि कौ ३९१२।
चौदस चतुर्दशी . तेरसि ~ दिवस द्वै हरि होरी हो २९१४।
चौदसि चतुर्दशी को ~ चहूँ दिसा सों मिलिके सारा० १०६६।
चौपटा चौपट करने वाला, सत्यानासी चचल चपल चवाइ ~ १/१८६।
चौपद चार पैर वाला, चौपाया : ~ होइ ताहि समुझैयें ३९६४।
चौपर चौपड नामक खेल जो बिसात और गोटियो द्वारा खेला जाता है . कहुँ ~ खेलत युवतिन सग सारा० ६६५।
चौपरि चौपड को . ~ जगत मँडे जुग बीते १/६०।
चौमास्यौ चारों महीने · नहिं बुझति परे ~ परि० १/१६३।
चौर चौपट कर दिया कीन्हौ मधुवन ~ चहू दिसि ९/१०३।
चौराई चौलाई साग चना मरुसा ~ १२१३।
चौरासी चौरासी लाख योनियो, आवागमन बहुरौ ~ मैं आवै ३/१३।
चौरी वेदी : रची ~ आपु ब्रह्मा जरित खभ लगाइ के ४१८६।
चौरी डोरी बालों की डोरी ~ विगलित केस ११८०
चौसट्ठि चौंसठ : कला ~ मगीत सिंगार रस २४५३।
चौसर चार लडियों का (हार) : ~ हार अमोल गरे को १९६१।
चौहटैं चौरास्ते पर : निकसि ~ आए २८५४।
च्यवन एक ऋषि जिनके विषय मे यह कहा जाता है कि अश्विनी

कुमारों ने इन्हे बूढे से जवान बना दिया था जिसके बदले मे इन्होंने उनको सोम पान कराया था ~ रिषीस्वर बहु तप कियौ ९/३।

च्यौनो रसायनो की घरिया : आँच लगैं ~ सोनो सौं ३४०४।

च्वे चूते हैं, टपकते हैं • प्रेम जल लोचन दुहुँ ~ ५८९।

च्वै वह . मोहन ~ चले दोऊ नैन ७४९।

छ

छँडाइ १ छीनकर सो ~ सुफलक सुत ले गये ३१६०। २ छीन : राधे-मटकी लई ~ १५३०।

छँडायौ छीन लिया : सुरपति गर्व ~ २०७८।

छँडावत छीन लेते ह • ग्वालन कर तें कौर ~ १०८४।

छँडावहु छोडने के लिए कहते हो कित आधार ~ ३६१०।

छँडावे छुटाया था कन मज विपति ~ ३६५५।

छँडे छोडे, अलग किये • कैसें जात ~ ३७३१।

छंद[1] १. छल : ~ कपट कछु जानति नाहिन १७७८। २. षड्-यत्र, जाल • ऐसे ~ रचत पिय २७२२। △ ~ **लाइ** जाल फैलाकर मोहि छदी ~ — २७२८।

छंद[2] १ काव्य : गुननि कौं देखि के छकित भयौ ~ १२१०। २ ऋचाएँ • गावत नेति-नेति स्तुति ~ २०४।

छंद[3] धातु चौबीस चतुरग ~ २१७१।

छंद धुवनि ध्रुवा छदों के ~ के भेद अपार ११८०।

छंदन ऋचाएँ नेति नेति स्तुति ~ ४७६।

छंदनि छल छदों इन ~ मैं मानति हो २८१८।

छंद फंदनि चालबाजियों से : इन ~ छदे पैये २८२६।

छद-बद छल-छद ~ कुबिजा मिराए ३३६९।

छंद-भेद छलपूर्ण भेद . वाके ~ को जानै १७४५।

छदी छली, कपटा : मोहि ~ छद लाइ २७२८।

छदैं कपट ही : इन छद फदनि ~ पैयें २८२६।

छ छह छठि ~ राग रस रागिनी २९१४।

छई छा गई, फैल गई : सब तन परसि ~ ३२४६।

छए १ छा गये हो : विषयनि विवर ~ ३५०६। २ डेरा डाल दिया हो, बसेरा किया हो मानहुँ लोभी उहँइ ~ री २६६२। ३. बस गये . मधुबन जाइ ~ परि० १/१७०। ४ रम गए, मोहित हो गये : ना जानौं किहि अग ~ री २२९२। ५ विद्यमान थे : एक बार हरि निज पुर ~ ४२००।

छकइयै तृप्त कीजिए भाजी साक ~ १/२३९।

छकि १ तृप्त पडी थी • इक ऐसैहिं ~ रही स्याम-रम १४१३। २ मतवाली : ~ रही ब्रज नारि १६३४। ३ हैरान होकर चौक चबाउ भरे दुविधा ~ १/६०।

छकित सामर्थ्यहीन : गुननि कौं देखि के ~ भयौ छद १२१०।

छकि पथ छक्का-पंजा करके : ~ एकादस ठानै १/६०।

छके विभोर, डूबे जे जे प्रेम ~ मैं देखे २८२६।

छकौंही छकाने के लिए • याही तैं पठवन अलि कर बातैं प्रेम ~ ३४९५।

छगन मगन छगन मगन (कृष्ण-बलराम) कहा काज मेरे ~ कौं २९७३।

छगना-मगना छगन मगन (कृष्ण बलराम) खेलत हैं दोउ ~ ११३।

छछूँदरि छछूँदर . भई रीति हठि उरग ~ ३७३९।

छज्जनि १ छज्जों • ~ महलनि देखिकै ३०२१। २ छत के से बाहर निकले हुए भाग मे . ~ त छूटति पिचकारी २९०२।

छटकि छटक कर (अलग होकर) : लटकि कै ~ छवि बिचारैं १०४१।

छटा सौन्दर्य • अग इक ~ मे रही लुभाइ २०६३।

छटाई छिटक गई हो, प्रकट हुई हो मनु घन मे बिज्जु ~ १०८।

छट्ठि छठी : भादौं देव ~ को सुभ दिन प्रगट भये बलभाई सारा० ४२२।

छठ छठे : ~ आठैं मोहिं कान्ह कंवर सौं १७१७।

छठएं छठे ~ सुक्र तुला के सनि जुत ८६।

छठि षष्ठी को ~ छ राग रस रागिनी २९१४।

छठी बच्चे के जन्म के छठे दिन की रस्म करौ ~ को चार ४०।

छठैं छठे : ~ माम इद्री प्रगटावै ३/१३।

छडाइ १ छीन . लेत दह्यौ ~ १६२५। २ छीन ली : गहि अचाल मेरी लाज ~ ३७६९।

छडाए छुडाये : अपने काम न मिलत हरी जो विरहा लेत ~ ६७५।

छडावन छुडाने के लिए पवन सधावन भवन ~ ३५१३।

छत[1] चिह्न, निशान उर नख ~ छवि भारी २७२९।

छत[2] क्षत, क्षति (अलाभ). ~ अरु अछत एक रस अतर ३३८८।

छतियाँ छाती मे पल पल ~ लग्यौ रहै धरकौ १९१६। △ ~ **लिखि राखी** स्मरण कर रखा है, छाती मे लिख रखा है . वे बतियाँ ~ — ३३९५।

छतिया १ छाती : यह ~ मेरै कान्ह कुवर बिनु ३१३४। २ वक्ष स्थल • निसि बासर ~ लै आऊं ३१६६। ३ वक्ष-स्थल मे : लिए लगाइ ~ महतारी १९६। ४ हृदय मे ~ छोभ रही क्यौं साजी ३१३३।

छतीसौ पौन छत्तीस भूत प्रेत अथवा नेग पाने वाले • समदि ~ ४०।

छत्तीसौं छत्तीसो : छहौ राग ~ रागिनि १२३७।

छत्र राज-छत्र • भरत ~ सिर धारौ ९/३०। △ ~ **दए** छत्र धारण कर दिया है रघुपति ~ — ९८३। ~ **न दैहौं** अभय प्रदान न करा दूँगा : जब लगि तब सिर ~ — ७/५।

छत्रनि छत्रों की . ऊँचा अटनि पर ~ की छबि ३०२२।

छत्रपन राजत्व (गौरव) जातैं रहै ~ मेरौ १/२६९।

छत्रियन क्षत्रियों को • बहुरि राज दियौ ~ ९/१४।

छत्री क्षत्रिय : मारे ~ इकइस बार ९/१३।

छत्री-धर्म राज धर्म ~ न होइ ९/१२१।

छद छाजन रेसम ~ घन ऊपर आज सा० ल० ९५।

छदस सोलह का ~ अक फिरि डारै १/६०।

छन १ क्षण . घर न रहत ~ एक ३७७। २ समय • तिहि ~ कस आनि भयौ ठाढौ ४।

छनइक एक क्षण मे, क्षण मात्र मे • वदन पसारि बिस्व दिखरायौ ~ मुरछा जागी सारा० ४२८।

छनक छण मात्र मे दु ख मिलत ~ मै मेटे सारा० ८२४।

छनकहि क्षण मात्र (मे) . ~ मे जरि भस्म होइगौ ५५०।

छनकि छनछनाकर। ~ **तवा ज्यौं पानी** . तवा पर पडे पानी के समान नष्ट होगे . अब नहिं बचै क्रोध नृप कीन्हौ जैहै ~ — २९३२।

छन भंगुर क्षण मे ही नष्ट होने वाला : सपन तुल्य ~ सोइ ७/२।

छनहि क्षणभर मे : कोटि ब्रह्म ड ~ मै नासै ४८२। ~ **छन** क्षण प्रति क्षण : ~ — छबि छोर ३६४।

छनहि क्षण मात्र : जब मेरे जन कौ दुख दैहै ~ मे टारौ मार सारा० १०८।

छनही क्षणमात्र मे ~ माझ दुष्ट सहारौ भुव को भार उतार सारा० ७९३।~ **छन** क्षण प्रति क्षण मे . तृषना तड़ित चमकि ~ — १/२०९।

छनही क्षणभर ~ मै उपजावै ब्रह्मण्ड ४८२।

छनहूँ क्षणमात्र भी : अब न परत मोकूँ कल ~ सारा० ८७४।

छनेक एक क्षण भी तजत नही काहू ~ २८५२।

छपत छिपाने ~ न छपे छपावत हौ कित परि० १/७५।

छपद छ पैर वाला, चचरीक, भ्रमर : तापर ~ कियौ चाहत है क्वेलाहू तै धूरि ३८४३।

छपा रात्रि : ~ न छीन होति सुन सजनी भूमि डसन रिपु कहाँ दुरौनी ४२६३।

छपाइ १ छिपाकर तहँ सुख चलति ~ २३६०। २ छिप गई ~ छपाकर की छबि ३४०४। ३ छिप गया . अरुन गगन ~ २३४।

छपाई १ छिपाकर : सुत सौं धरति ~ ३२५। २ छिप : आपुन रहे ~ १४०३। ३ छिपा लिया रबि ससि दोऊ जोति ~ ६३९।

छपाए ढक रखा हो . तजि सुभाव मनु तड़ित ~ १०४।

छपाकर चन्द्रमा : गई छपाइ ~ की छबि ३४०४।

छपानी छिपी : बैठै जाइ मथनियाँ के ढिग तब मैं रहौं ~ २६४।

छपाने छिप गये : सखा सहित बलराम ~ २४०।

छपान्यौ १. छिप गया . इहिं घर आइ ~ २७०। २. छिपा ऊखल तर में रह्यौ ~ ३९१।

छपायौ १ छिप गया : जो जहँ रह्यौ सो तहीं ~ ७७। २ छिपाया है : सो सब उनहिं ~ २५११। ३. छिपा लिया नाग सुता पति पितु अरि आधौ नाम सु वदन ~ सा० ल० २८।

छपावत १ छिपाते छपत न छपे ~ हौ कित परि० १/७५। २. छिपाये डाल रही थीं . गोरज छबि कछु चद ~ ५०६।

छपावहु आच्छादित कर दो, ढक दो घटा घोर करि गगन ~ ९३०।

छपावै छिपाता है सारँग बदन ~ ३२७३।

छपी उपमा उपमाएँ लुप्त है जिसमे, लुप्तोपमा अलकार ~ साज सा० ल० २।

छपे छिपाए . छपत न ~ छपावत हौ कित परि० १/७५।

छपे पति गोप पति, गोपाल ~ कत जात खेलन सा० ल० ९३।

छपै छिपता है . चादा ज्यौं न ~ २८०५।

छपौ क्षपा, रात्रि भी . ~ न छीन होत सुनि सजनी ३३५४।

छप्यौ छिप गई . ~ सो कमल-नाल मैं जाइ ६/८।

छबि १ कान्ति,शोभा . कोटि चन्द्र ~ पाइ ३३। २. शोभा है • नमित सुधाकर वदन अमित ~ २१४३। ३. सुन्दरता पर : अति आतुर आरुढ अधिक ~ ८०२। ~ **धारौं कैसे** यह शोभा कैसे धारण करूँ : नैन द्वै ~ १८२७। ~ **बिराजै** शोभा शोभित हो रही थी स्याम, राधिका बाम, अति, ~ — १०३५। ~ **भई** शोभा उत्पन्न हुई अचल उडन अधिक ~ — ११८०। ~ **सौं** शोभा सहित . कौशिक मुनि तहँ ~ — पधारे सारा० २१६।

छबि-छोर शोभा की सीमा छनहिं छन ~ ३६४।

छबि-धाम शोभा का घर है सुन्दर भाल तिलक ~ १८२५।

छबि बंदन सिंदूर की शोभा . कुकुम हृदय, भुजनि ~ २६४६।

छबि-बाननि छबि की मुद्रा मन भावति ~ १३६६।

छबि भारी अत्यधिक शोभा : उर नख छत ~ २७२९।

छबि रासि शोभा की राशि, अत्यधिक सुन्दर • सूर प्रभु ~ नागर १८२०।

छबिवान शोभायुक्त हैं : अरुन अधर ~ २४४६।

छबि-सेप सजावट के लगे हुए चिह्न . अग बाम ~ देखि कै

छाँक १ छाछ (माठ) : ~ खाय जूठन ग्वालिन कौं कछु मन मैं नहिं मान्यो सारा० ७५० । २ छाक (चरवाहो आदि का दोपहर का भोजन) . घर तैं ~ मँगाइ ४४४ ।
छाँछ मट्ठा • मही ~ लै खाहु १४६१ ।
छाँछहि मट्ठा, गोरस • ~ बेचनहारी १५१८ ।
छाँछि मट्ठा हमसौं माँगत ~ परि० १/३८ ।
छाँडत १ छोडता, छोडना है : चातक स्वाति बूँद नहिं ~ ३८३१ । २. खोलता है : ज्या मरकट मूठी नहिं ~ २३१४ । ३. छोडती है : जल भरि कबहूँ न ~ ३५७२ । ४ छोडते : लरिकाई कँहु नैंकु न ~ २४६ ।
छाँडति १. छोडती है :~ नाहीं घेरौ ३८७९ ।
छाँडति १ छोडती हो एते पर हठ ~ नाही २७५२ ।
छाँडनहार छोडने वाले ~ जु हरि भए ३७८६ ।
छाँडनि छोडना : यह ~ वह पोषनि ४२५८ ।
छाँड़हि १. छोडेंगी ~ तुमहिं नँगाइ २९०७ । २. छोडती : नातरु कहा जोग हम ~ ३७१९ ।
छाँडहु छोड दो ~ 'सूर' स्याम यह तुम्हरी आवनि जानि न जाइ २७२८ । ~ **सकल सयान** सारी चतुरता दूर करो • सखी री ~ — १०७३ ।
छाँडहू छोडो भी . बल भैया कौं ~ २९१५ ।
छाँडि १. छोडकर . उमा को ~ अरु डारि मृग चर्म कौं ८/१० । २ छोड • ~ देहु हमकौं जनि रोकहु १५०७ । ३. छोड दे : रे मर्न ~ विषय कौं रँचिवौ १/५९ । ४ छोड दो ~ कुवर हमसौं चतुराई २६३२ । ५ त्यागकर . देह ~ प्राननि भइ प्रापत ८०३ ।
छाँडियै छोड दीजिए • बचन चतुरई ~ २५१२ ।
छाँडिहु छोड ~ दए परत नहि डगरौ १४६४ ।
छाँडिहौं छोडूँगा . ~ नहिं विन मारे ३/११ ।
छाँडी १ छोडकर . तौ कत आवति ~ ३१६९ । २. छोड दिया है • गइयनि ~ चरनि ३९५२ ।
छाँडे १ छोडकर : तू मोकौं ~ कत जाइ ९/२ । २. छोडते . ~ बनै न खात ३७३९ । ३ छोड दिया पुहुप बिमान दूरिहीं ~ ९/१६८ । ४ छोड दिया हो ~ मानहुँ मदन दड दै ~ २७१४ । ५ छोडा खाद अखाद न ~ अब लौं १/१८६ ।
छाँडै १ छोड दे . कैसै सूर स्याम हम ~ ३८३१ । २ छोडे . कीरति न ~ गोपाल न्यारे ४०८१ । ३ हटती हैं : निमिष न ~ पास ३८७९ ।
छाँडै छोडता : कारौ अपनौ रग न ~ १/६३ ।
छाँडौं १ छोड दू : मारे विना आजु जौ ~ ३४१ । २ छोडूँगा . मैं कहू नहिं सग ~ ६१० । ३ तोड या भग करो : की गुरु कही की मौन ~ १७३० ।
छाँडौ १. छोड दो मानिनि अजहू ~ मान सा० ल० २० । २. छोडूगा : तब ~ मैं तुमको १५०८ । ३ छोडूँगी : हौं सपथ करौं ~ न तोहिं २८५६ । ४. छोडो • यहै कही हमकौं जनि ~ २२७६ ।
छाँडौगे छोडोगे : अजहूँ ~ लँगराई ३७० ।
छाँड्यौ १. छोड दिया : कैसेहूँ आजु जसोदा ~ ४१५ । २. छोड दिया है, छोडा है • नद नदन कारन जिन ~ ३७०१ ।
छाँव छाया मे . रम ~ न आयौ १/५८ ।
छाँह, छाँह १ छाया . देखि ~ तरु मूलनि की ३९१० । २. छाया मे . वा कमरी की ~ १६१८ । ३ परछाई . निरखि हरि आपु ~ कौ ११० । ४ छाया तले या परबत की ~ ८६७ । △ **छाता लौं** ~ छाता के समान छाया किये हुए : — ~ सोभित हरि-छाती १/२३ ।
छाँह तन तन की छाया/परछाई : चितै रहे मनि-खभ ~ २६५ ।
छाँहनि छाया मे रहतिं बासर रैनि इकटक धाम ~ खरी २४०४ ।
छाँहि १. छाया . ज्यौं सँग लागी ~ २१०४ । २ छाया मे . सीतल द्रुम की ~ ४२७३ ।
छाँही छाया अरु कुजनि की ~ ४१५७ ।
छाइ १ छवाकर : उनत मडप ~ ४१७३ । २ छा : नैन रहे जल ~ ४२९४ । ३. छाया है . तिहू भुवन जस ~ २९४७ । ४. छाये हुए : चढि बिमान सुर देखहीं गगन रहे भरि ~ ४३१ । ५. छाये रहे • भरि भादौं वै ~ घोष पति ३६६१ । ६ बिछाकर • द्रुम पखाननि ~ ९/११० । ~ **जु छौनी** डेरा डाल कर कहाँ रहे हरि ~ — ४२६३ । **रह्यौ आप पर** ~ आप पर रम रहा है : तऊ मेरौ मन न मानत — ~ १/१९९ । **रह्यौ क्रोध अति** ~ क्रोध अत्यधिक छा गया था रावन कह्यौ सो कह्यौ न जाइ — ~ ९/१०४ ।
छाइयौ छाना : कुज मडप ~ परि० १/४१ ।
छाई छाया को छुवन न पावै ~ २८२६ ।
छाई[१] छाया : जैसे तनु सग ~ १/४४ ।
छाई[२] १. छा गई • चित्र विचित्र सुभग चौतनिया इन्द्र धनुप छबि ~ सारा० १७२ । २ ढक गई • रतन भूमि सब ~ २१ । ३ छाई हुई, निमग्न . अधिक सुख ~ १८०२ । ४. व्याप्त हो गई धुनि ~ है जै-जै कार ८४ । ५ सजी हुई, छवियुक्त : दिव्य रतननि सौं ~ ८४१ ।
छाउँ छाया, छाँह . दीन्हौ कल्प वृच्छ तर ~ १/१६४ ।
छाऊँ छा दूँगा . मथुरा जहाँ तहाँ बल ~ २९२७ ।
छाए १ उठाया था • कब गिरिवर कर ~ ३८९४ । २ छा गया : तिनके हृदय गरब सौ ~ ४१०५ । ३ छा गया था विषै रस नैननि ~ १/७ । ४ छा गए कौतुक अबर ~ ३०८७ । ५. छा जाने से बिवस होइ तिहिं के मद ~

१/२२९। ६ छाये रहते हैं : हस सारस तहँ ~ ११७५। ७ छाये हैं : जहाँ माँवरे ~ ३३८२। ८ जमा ये बहुत दिननि तें ~ ३५। ९ भरे हुए थे : गदगद गिरा नैन जल ~ १६८। १० रह/रम रहे हैं : आपुन जाइ मधुपुरी ~ ३८२१। ११ रहते थे : ब्राह्मन-गृह हरि के जन ~ ७/८। १२ लगे हुए थे जहँ जड भरत कृपी मैं ~ ५/३।

छाक १ दोपहर का भोजन मोहन ~ बाँटि कै लेन ४१६। २ भोजन जूठी ~ छिनाइ १६१८।

छाकति छक उठती थी सूर स्याम कैं रस पुनि ~ १६२३।

छाकहिं छाक ही ~ मैं तुम रहे भुलाई ४७१।

छाकी छककर तपति मिटि गई प्रेम ~ १४१०।

छाके छक गये . धाइ धाइ द्रुम भेटई, जथौ ~ प्रेम ४०९५।

छाकैं १ दोपहर का भोजन : ~ खात खवावत ग्वालन सुन्दर जमुना तीर सारा० ४६६। २ भोजन करेगा . ते क्यौं निरसे ~ २३५६।

छाक्यौ १ छका हुआ अति उन्मत्त मोह मद ~ फिरत केम बगराए १/३२०। २ छकी रहत प्रेम मद ~ ३००७।

छागर छागल चमडे की मशक . हा ब्रज रीती ~ परि० १/१५६।

छाछ मट्ठा खारी ~ पियाइ १६१८।

छाज छज्जो ऊँचे अटनि ~ की सोभा ३०२३।

छाजत शोभा देता है : जुद्ध कौं करत ~ नहीं है तुम्है ४१९५।

छाजति शोभा देती है, शोभा दे रही है ~ रदन रदन की छवि परि० १/६८।

छाजी शोभा दे सकी, अच्छी लगी यह मति नद तोहिं क्यों ~ ३१३३।

छाजे छज्जे : ऊँचे भवन मनोहर ~ ४२३६।

छाजैं सुन्दर लगते हैं : वृन्दावन जमुना सघन कुज अति ~ सारा० ४६२।

तौ ~ किए ३८६५। △ ~ जरत कष्ट मिलता है काम पावक ~ — लौन लायौ आनि ३९८३। △ जारहु ~ कष्ट दो न — ~ ३६६५। △ देखि जरति है ~ देख कर छाती जलती है, अत्यधिक दुख होता है . वह पापिनी दाहि कुल आई, — ~ १३१५। वज्र की ~ कठोर हृदय . नित रति नाहिं — ~ ४०८५। लावति ल ~ कलेजे से लगाती है : निरखति अग स्याम सुन्दर के वार वार — ~ ३४८७।

छानत छानता फिरता है . कौडी लगि मन की रज ~ १/११४।

छानि स्त्री० १ छप्पर ताकि ~ छवावै १/४। २ छप्पर में टूटी ~ मेघ जल वरसै १/२३९। क्रि० स० १ छानकर धौरी धेनु दुहाइ ~ पय १६००। २ छककर : राख्यौ माखन ~ २८०।

छानी छिपी . क्यौं अब रहैगी ~ १६५७।

छाने-छाने छिपे छिपे, चुपके से जौ हम सौं कहौ ~ १५५६।

छानैं १ परिष्कार कर देगी : जमुन कौ नाम लीजै जु ~ १/२२३। २. वेधो लो मधुप प्रान जनि ~ ३७१५।

छान्यौ छान लिया मैटा उज्ज्वल करिकै ~ ।

छाप १ चिह्न . लिखि आई ब्रजनाथ की ~ ३४८९। २ छाप (मुहर, प्रमाण) आजुहिं दान पहिरि छाँ आए कहाँ दिखा-वहु ~ १५०७। ३ मार्ग . भजन ~ नहिं पाई १/९३।

छापि छाप लगाकर : दमन वमन पर ~ दृगनि अति २६३०।

छावन छाने के लिए . परन कुटी कौं ~ ८/१३।

छामिनी पतली : विलसित त्रिवली उदर ~ २६६६।

छाय छाकर : आये नाथ द्वारका नीकैं रच्यौ माटयौ ~ नाग० ६३९।

छाया विस्तार करके . जलचर, अनिल, अनल, नभ ~ ३। ~ **रूप बनाई** छाया रूप में बना खडी की . जनक तनया धरी अगिनि मैं ~ — ९/६०।

छार १. खारे . ~ समुद्र छाडि किन आवत ४२६५ । २. क्षार, तुच्छ वस्तु ~ मोतिसरि की मोहिं रिसाही री १९७४ । ३ राख, बेकार . ताकी जननी ~ ३८१६ । ४ लवण : नख छत ~ कसाय कुच ग्रह । △ **अवधि लगाई** ~ अवधि रूपी राख पोत दी अक्रूर बधिक मुख — ~ ३८४६ । △ **परी छटी मैं** ~ जन्म से दुख मेरे हिस्से मे पडा (अवधि निर्धारित करने से सुख का द्वार बंद कर दिया) — ~ सूर प्रभु परि० १/१७४ ।

छारै खारा सिन्धु भए जल ~ ३७७८ ।

छावत १ छाते है . उडि नहि अवर ~ ३३०३ । २ फैल रही है व्योम विमान महा छवि ~ ९/१६७ । ३ रहा करे कै वनहीं फिन ~ १२८७ ।

छावन १ छाने के लिए, बनाने के लिए . तीनि पैंड वसुधा हौं चाहौं, परन कुटी कौ ~ ८/१३ । २ रमने के लिए · मधुपुरी ~ ३६६० । ३. रहने और सुनी उत ~ की परि० १/१७७ ।

छावहु छाओ, बनाओ सुरँग सुमन लै मडल ~ ४१८५ ।

छावैं छाये रहते है कौतुक अवर ~ ४५ ।

छावै १ छाते हैं, बनाते हैं · राजा रक न तृन ~ री ४२५४ । २ देता है, छाता है . यह काटै वह छाया ~ ९५० । ३ फैलती है गध वास दस जोजन ~ ५/२ । △ **छवि** ~ शोभा छायी रहती है . कोटि काम — ~ १४०० ।

छाह छाया निरखत जहाँ ~ प्यारी की १४४० ।

छाहि १ छाया, परछाई देह सग ज्यौं ~ २०८६ । २ छाया के तल . सूर स्याम ग्वालनि लए चले बसीवट ~ ४३१ । ३. छाया है वेइ कदम वेइ ~ ११०४ ।

छाही १ छाया सघन कुज की ~ ४१५६ । २ छाया को पचत पखारत ~ २/२५ । ३ छाया मे लै मेली पग ~ २६०० । ४ रग गई चून-हरदी रग देह ~ १६४६ । △ **जलद की** ~ शीघ्र नष्ट हो जाने वाली वस्तु · जोवन रूप राजधन धरती जानि — ~ ०/२३ । **बदरी की** ~ बदरी की छाँह की तरह शीघ्र नष्ट हो जाने वाली ज्यौं — ~ २७४५ ।

छाहै छाया (हो) कोटि धनी धन ~ ३०७९ ।

छिछ फव्वारे, धार स्रोनित ~ उछरि आकासहि ९/१५८ ।

छिडाइ छुडा (लिया) पीतावर मुरली लई ~ २८५६ ।

छिडाय छुडाकर मान ~ हुलास बढायौ २५०७ ।

छिडावहु छुडाओ : नद ~ स्याम कौ २९१५ ।

छिए छूता, प्रवेश करता सवन न सब्द ~ ४११८ ।

छिकुला छिलका कदली ~ खाए १/१३ ।

छिजई क्षीण हो गई : निसि बासर रटि रसना ~ ३९१८ ।

छिटकाए १ अस्त व्यस्त/डाँवाडोल कर दिया . तेई ठग मोदक भए धीरज ~ ३३९७ । २ छोडा, बिखेरा . फगुआ ले लालन ~ २९०१ ।

छिटकाति बिखेरी है : ललित लट ~ मुख पर, देहि सोभा दून १८४ ।

छिटकि १ छिटक कर ~ बूँद दधि परत अघात १५१ । २ फैल, छिटक · ~ रहो चहुँ दिसि जु लहुरियाँ १०५ । ३ झलक · ~ रही स्रम बूँद बदन पर २८२६ । ४. पड, फैल . ~ रही दधि बूँद हृदय पर २८२ ।

छिटके फैल गये, बिखरे · केस सिर बिन बपन के चहुँ दिसा ~ झारि १६९ ।

छिडाइ छीन : लयौ ~ मिलि ग्वालनि खायौ १६०० ।

छिडाई १ छुडाकर आरज पथ ~ गोपिकनि, अपने स्वारथ भोरी ३३६१ । २ छीन मुरलिया लई ~ २८८१ ।

छिडाय छीन (लो) मटुकी लेहु ~ सारा० ८९३ ।

छितभित छिन्न भिन्न, छितर बितर · अरु नलद बृन्द ~ समीर २९१२ ।

छिति १ पृथ्वी ~ मिति त्रिपद करी करुनामय ४८७ । २ पृथ्वी को इक इस बार निछत्र करी ~ २२१ । ३ पृथ्वी पर ~ छिन इक म प्रलय कर्‌यौ ८६६ ।

छिदत छेदता ~ न मनसिज बान ३२१४ ।

छिदि चीर कर . जात पलक ~ २३७२ । ~ **छिदि जाति** चुभ चुभ जाती हे ~ — करेजैं ३८४७ ।

छिद्र छेद ~ बिसाल बनाए ६६१ ।

छिन १ एक क्षण, पलभर ~ मैं लै उधरै ६/६ । २ क्षण ~ इक माँहि लक गढ तोरौ ९/११३ । ३ समय ताहीं ~ हरि जू छुडायौ १/३२ । ~ **छिन** १ एक एक क्षण सर स्याम ~ — जुग सम २१०४ । २ क्षण क्षण ~ — मीठे बचन कहो री ९/१३ । ३ प्रत्येक क्षण ~ — बिपदा महीं ३६०५ । ४ क्षण क्षण मे फिर फिर जात निरखि मुख ~ — २०७ । ~ **छिनहिं** क्षण प्रति क्षण पुज बढत रस रग ~ — औरै १०४० ।

छिनक १ एक क्षण सो रावन रघुनाथ ~ में ९/१५९ । २ क्षण भर मे रविहूँ ~ छँडाइ लिए ३६२० ।

छिनकहि १ एक क्षण ही ~ माँहि सँहारी ६० । २ थोडी देर मे की आवति अबहीं की ~ २०४६ ।

छिनकहि क्षण भर ~ मै मो धरनि पर्‌यौ ३१११ ।

छिनहि क्षण मे ~ और छिन और २३९१ । ~ छिन क्षण क्षण मे ~ निंदर्ति नैन निमेष ~ — ४०३७ ।

छिनहीं १ क्षण भर ही ~ मैं बिसराइ २००९ । २. क्षण भर का भी . अतर करौ नहीं ~ २१०५ । — **छिनु** क्षण ही क्षण मे ते तौ ओट करत ~ — १८५० ।

छिनहीं क्षण मात्र ही ~ मे हरि तुरत सँहारे सारा० ५०० ।

छिनहूँ क्षण भर हो ~ की पहिचानि मानियै २२९४।
छिना क्षण . झुरि झुरि कै है रही ~ १९१५।
छिनाइ १ छीन कर • खात हैं जूठी छाक ~ १६१८। २ छीन लिया . इन्द्र हाथ तें वज्र ~ ६/५। ३ छीन लियौ सुरनि सौं अमृत ~ ७/७।
छिनाई छीन : असुर सब अमृत लै गए ~ ८/८।
छिनाए छिनवाए द्रौपदी के तुम वस्त्र ~ १/२८४।
छिनायौ छीन लिया • असुर तब अमृत करि बल ~ ८/८।
छिनारि व्यभिचारिणी, कुलटा • वह तौ बड़ी ~ ७०३।
छिनारौ दुश्चरित्र चोर रहौ, ~ अब भयो ७७३।
छिनु १ क्षण ~ बिनु जनम गँवायौ २३६६। २ क्षण भर भी • ते तुम ~ न बिसारौ १३५०। ~ छिनु १ क्षण-क्षण ~ — घटति बढत नहिं रजनी २५९८। २ क्षण क्षण मे ~ — अनिहीं छबि जु धरत २२२१। ३ एक एक क्षण, बार बार • ~ — बिलँब करति हे सुदरि २७६५।
छिनुक एक क्षण सूरदास तनु त्यागि ~ म ८०८।
छिपाइ १ छिपाकर : द्रुम मे देह ~ ९/८३। २ छिपा वामी ताकौ लियौ ~ ९/३।
छिपाए ढके हुए, छिपाये हुए मकुन्वत फिरत जो वदन ~ १/२३९।
छिपायौ छिपाये हो • तुम निज रूप इहिं भाँति ~ ८२९८।
छिपावति छिपानी है राधे हरि रिपु क्यों न ~ २७४७।
छिपि छिप कर . वसन उठाय रहे ~ आपन पूरण परमानद सारा० ६०५।
छिपी छिपी है : तुम सौं कहाँ ~ करुनामय १/२४८।
छिप्यौ छिप गये, (जा) छिपे ~ सो कमल नाल मैं जाइ ६/५।
छियतौ स्पर्श करते : जो आँगुरिनि ~ ३७३।
छिया घृणित • ~ मान छाँटि मेरे कहैं २७५३। △ ~ छरद करि घृणित समझ कर जो ~ — सकल मतन तजी १/११०।
छिये छूकर : सौंह करति हौं मीस ~ २५८२।
छियौ छू लिया हँसि नँदनदन अग ~ १९४०।
छिरकत १ छिडकती हुई • सोभित सलिल परस्पर ~ ११५८। २ छिडकते : नाचत गोप परसपर सब मिलि ~ हैं नवनीत सारा० ४०१। ३ छिडकते ये ~ सुगध धरि ललित भेस २८४९।
छिरकति १ छिडक रही हैं : एक ~ नीर १७५२। २ छिडक रही थीं . ~ नागर कहँ नव किसोरि २८४९।
छिरकहि छिडक रही थीं चहुँ दिसि तें मिलि जल ~ २८६२।
छिरकहीं छिडके जा रही हैं चोवा चदन ~ २९००।
छिरकहु छिडको हरद दूब केसर सग ~ ४१८५।
छिरकि छिडककर, भिगोकर : ~ लरिकनि मही सौं भरि २८९। ~ दै छींटा देकर, भिगोकर : भरि गण्डूष ~ — नैननि २८७।

छिरका छिडका . ता पाछे गोपिन ने ~ सारा० १०३२।
छिरकावन छिडकाव करवाना . गलिन ~ रे २८।
छिरकैं छिडक रहे हैं : ~ परसपर छल-बल धारकै ३१।
छिरकौ छिडको पिचकारी सोकौं जनि ~ २८८३।
छिरक्यौ छिडका . नहिं ~ काहू ५९८।
छींक छींक। ~ परी छींक पडी, अपशकुन हुआ • भीतर चली रसोई कारन ~ — नव आँगन सा० ५४२।
छींकतहु छींकते समय घर ते हम ~ न आए १४८२।
छींकी छींक दिया : ग्वालि इक ~ ५४०।
छींकि छींके को, शिकहर को लिए ~ उतारि २८९।
छींकौं छींक मे चलत मेष अरु ~ ३८२८।
छींट[1] छींट चोली चारु ~ की छाजति परि० २/६४।
छींट[2] पानी की छींटे राधे छिरकति ~ छबीली ११६०।
छींटि छींटें . छीर ~ छल छोरे ७३२।
छींटैं बूँदें, छींटें आनन रही ललित पय ~ ७३२।
छींकै शिकहर पर जतन राखि ~ ममुदायो १६००।
छीजैं दुबले हो रहे हैं दीन मलीन दिनहिं दिन ~ ३१९०।
छीजत क्षीण होता रहता है अँजलि के जल ज्यों तन ~ १/७४।
छीजै १ क्षीण/कमजोर होता है अति रिसहौं न तनु ~ १८३। २ रिस कर गिरता है छिनु छिनु ज्यों कर कोजल ~ २८२८। ३ क्षीण • मज बरं नहिं ~ परि० १/१९०। ४ क्षीण होती है, सूखने लगती है दिन दिन देही ~ २००७। ५ घटती चलती है ज्यों-ज्यों कला चन्द्र की ~ २५०८। ६ नष्ट होते हैं, मर मिटते हैं . बडो बडाई ~ २८२६। ७ नुकसान . यामें कछू न ~ ९/१२६। ८ बचा न रह जाय ज्यों न कोउ एक ~ ९/१२१। ९ बुझती है . जल बिनु तृषा न ~ ४०६४।
छीजौ टूटा • देह सुधारि मोहिं पुनि ~ २५४८।
छीट छींटे • बेट पाठी हगन मोहि गीन के बहु ~ सा० २० ७७।
छीति बुराई जो कछ सूर जेहिं भाँति रहै पति जनि बल बाँधि बढावहु ~।
छीन १ क्षीण : हरि के बिरह ~ भई ऊधौ ३६५०। २ क्षीण हो गए हैं : तन तैं ~ सरीर सुबाहु ४०८०। ३ दुबला-पतला बुधि, बिवेक, बलहीन ~ तन ममहा हाथ पगन १/३००। ४ शिथिल . मथन श्रम ~ नव बधुनि अगुरि करी ८/८। ५ पतला . ~ लक पर बारों वारि १६०२।
छीनत छीनने, छीन लेते काह कौ ~ ही हेतु १४१५।
छीननि छीनती हो . केसरि ~ हो देखत नहिं १९५६।
छीनि १ छीन : मेरौ ~ दूध दधि माखन १५०८। २ काट-कर : मार ~ नद सुत स्याम की १८।

छीनी १ छीन ली हो : मानौ अहि मनि ~ ४१०४। २ छीन · सारग कहा कहति लियौ ~ १६८०।
छीने १ छीन लिये : गोरस लियौ, अभूषन ~ २१९४। २ छीन कर : छाक लेत कर ~ ४६७।
छीनौं काटूंगी : हरि कौ नार न ~ माई १८।
छीनौ[1] १ छीन लिया : इन चितवन चितवत पल ~ ३५३१। २ विदीर्ण कर दिया चक्र नक्र-सीस ~ ८/५।
छीनौ[2] १ क्षीण हो गया . पूजत गौरि भयौ तन ~ १३०६। २ क्षीण (क्षरित) होता जाता है ज्यौं अँजलि जल ~ १/६५।
छीन्यौ छीन लिया · कौन दोष तुम माखन ~ १४६६।
छीन्हि छीन · बेसरि लीजौ ~ १७४०।
छीप सीपी मे : जैसे ~ अमोल रतन भरि ३१०४।
छीर १ दूध बहुरि रुधिर तै ~ बनावत २/२०। २ दूध के · माता अछत ~ बिनु सुत मरै २००।
छीरधि छीर सागर : मनि ~ नीरधि नीर के ३०६३।
छीर समुद्र छीर सागर : ~ सयन सतत जिहि ३९२।
छीरोदक १ रेशमी वस्त्र : नूतन ~ जुवती पै ४२३९। २. रेशमी वस्त्र का : ~ घूँघट हातौ करि २११८।
छीलर तलैया, छोटा तालाब : ~ कस न्हाऊँ १/१६६।
छुजै धंधली : मग जोवत अखियाँ भइ ~ ४०६८।
छुडायौ छुडा लिया : हिलग ~ गृह-व्यवहार ११८०।
छुअत १ छूकर : 'सूर' हृदय तै टरत न गोकुल अग ~ हौं तेरौ ४२९५। २. छूते ही . हाथ ~ उठि आयौ ९/२८।
छुइ छूकर : कबहुँक कर परसति कपोल ~ २१६६।
छुई १ छू ली : तुम बेदो उन पाग ~ १८८२। २ स्पर्श की · जरति न जात ~ २४३३।
छुए छू लिये : 'सूरदास' प्रभु चरन ~ कहौं २५५०।
छुऐ स्पर्श करती है : ऊधो जोगहि ना ~ ३५२२।
छुटकाइ छुडाकर : चले बाहँ ~ १९३३।
छुटकायौ १ छुडाया लागि पुकार तुरत ~ काट्यौ बँधन ताकौ १/११३। २ छोड दिया · गरुडहु कौं ~ ८/३।
छुटकि छूट : गए कर तैं ~ मोहन २८७६।
छुटत १ छूट जाता है . मदा रहत ~ छिनु भीतर २८२६। २ छूटता है : धोएँ ~ नहीं यह कैसैहु २२५१। ३ छूटते ही · ज्यौं व्याध फद तै ~ खग उडि चलत २२४९। ४ छूटने से · परमित ~ डराऊँ १६९२। ५ हटता है . चित नहि ~ वदन बिनु देखै ३५८५। △ देह ~ प्राण निकलते ही : मेरी — ~ जान पठए दूत १/१५१।
छुटति छूटती : छोरे तैं नाहिं ~ १६६०।
छुटनि छूटना है : ~ मानौ कटाच्छनि निहारैं २१२९।
छुटाई छुडाने से : प्रीति-पिय प्यारी छूटत नहीं ~ २८२६।
छुटायौ छुडाया . कव मै दान ~ १५४८।
छुटि १ छूट . बिरह-बिथा तन गई लाज ~ ९/५६। २. छूट सका, बचा · तव तै ~ औगुन इक नाम न कहि आयौ १/१२४।
छुटी १ खुल गई : ~ अलक भुवगिनि कुच तट २४७२। २ छूट गई : ~ छुद्रावलि चरन अरुझी ४१०७। ३ छूटी ~ न भुज ४१०४।
छुटे छूट गये ~ केस मज्जन समय २६१३।
छुटै १ छूटे · ~ न कबहूँ स्रम जल भीजै २८२३। २ छूटेगी, खुलेगी · तव कर टोरि ~ रघुपति जू ९/२५।
छुटैहै छुडावेगे : हरि जू ताकौ आनि ~ ८/२।
छुट्यौ छूट गया, दूर हो गया . ~ देह अभिमान २/३३।
छडाइ १. छुडाकर . भुजा ~ तोरि तृन ज्यौं हित ९/४६। २ छीन · कै वह ठौर ~ लियौ ४२३७। ३ छीन छीनकर स्याम सबनि मिलि खात हैं, लै लै कौर ~ ४३७। ४ छुडाओ . हा हा कृष्न ~ ११८४।
छुडाई १ छुडाकर : सो चली आपु कौं तब ~ ८/१०। २. छुडा : असुर वदि तैं दिए ~ १/२४। ३. छुडा दिया, मुक्त किया : हरष देव बसुदेव देवकी जिनकी वदि ~ ३०९८।
छुडाऊँ १ समाप्त कर दूँगा कै तुम विरद ~ १/१७९। २. बचाऊँ, रक्षा करूँ तहँ तहँ जाइ ~ १/२७२।
छुडाए १ छुडाकर · जात कहाँ बलि बाहँ ~ १९३१। २ छुटा दिया : पल माँहि ~ २७२७। ३ छुटा दिया है जे ओर अनीति ~ ३९९१। ४. छुडाया था : तुमकौ हमहिं ~ १५२१। ५ छुडा लिया : बल करि भूप ~ १/१०९। ६. मुक्त किया · मातु पिता बदि तैं ~ ३१०९।
छुडाय १. छुडाकर . चले ~ छिनक मे तबहीं सारा० २८६। २ छुडा : मटुकि ~ लियो दधि बरसत तउ कछु मन नहिं आयो सारा० ७२६।
छुडायैं १ छुडाने से · छूटत नही ~ २८२६।
छुडायौ छुडा ली · इहिं विधि भुजा ~ ३४२।
छुडावत १ छुडाते हैं, उद्धार करते हैं · इहिं विधि नाथ ~ ८/४। २ छीन लेते हे . ग्वालनि कर तैं कौर ~ ४६६। ३ छुडाते हो : अक्र ~ धोयैं ४१४३।
छुडावति छुडाती है . स्तन पान ~ २२२।
छुडावन छुडाने : भवन ~, रवन रसाल ३५१३।
छुडावहु १. छुडाओ, अलग करो · तहाँ तहाँ जनि चरन ~ ४५०। २ छुडाती हो . काहैं न लाज ~ २१६४।
छुडावै १ छुडाता है, खींचता हैं . दुस्सासन कटि बसन ~ १/२४६। २ छुडा देता है ससियनि प्रान ~ ४०५१। ३. छुडा लाये : गजपतिहिं छन माहिं ~ १/४।

दुमिल समझ कै सा० ल० ८९।

छेत्र स्थान, प्रदेश वन वारानसि मुक्ति - ~ है १/३४०।

छेदन १ काटने जसुदा, नार न ~ दैहौं १५। २ काटने वाले : रावन-कुंभकरन सिर ~ ९८१।

छेदनि छेदन : कहाँ कहा ~ आतुर की १८०।

छेदि काटकर : दस मुख ~ सुपक्व नव फल ज्यौं ९/१३१।

छेदे १. काटे : रावन के दस मस्तक ~ १/१३५। २ नाथे काली ~ नाक लिए ५८९।

छेम कल्याण, मंगल : ~ कुशल अरु दीनता १/२३८।

छेरी बकरी : ~ वदन कुम्हैडौ ३९७५।

छेव छल कपट के दाँव, भेद : जानति नहो कहाँ ते सीखे चोरी के छल ~ ३६७८।

छै नाश : सकल जादव ~ भए १/२८६।

छै ते हीन त्रितिया अक्षय तृतीया . नदनदन मास, ~ सा०ल० १०८।

छैयाँ बचाव का स्थान, शरण। △ **नाही बसत तुम्हारी ~** न ही तुम्हारे अधीन हैं : जाति-पाति हम तैं बड नाही, — ~ २४५।

छैया वत्स, वच्चा : मनि गन लगे अपार, काज महर ~ ४१।

छैल १. छैले ने, मोहन ने : हरषित बेनु बजायौ ~ ११८०। २ रंगीले सजीले : ~ छबीलौ मोहना घूँघर वारे केस २८८०। **~ भए** छैला वने, रसिक वने . ~ — तुम डोलत १५८६।

छैलनि छैलों (युवकों) : ~ कै संग यों फिरै १/४४।

छैहै छावेगी . सब बिधि सोभा ~ सा० ल० ९७।

छोट बड न्यूनाधिक, कम-ज्यादा, ज्येष्ठा-कनिष्ठा नायिका : भूषन हित परनाम ~ सा० ल० ७।

छोटि छोटी सी . यह विनती इक ~ ५८९।

छोटियै छोटी ही . छोटी वदन ~ भिगुली १३३।

छोटे छोटे। △ **~ मुंह बडी बात** छोटे मुंह बडी बात (कहते हो) : ~ — कहौ किन आपु सम्हारे १४६१।

छोटौ १ छोटा : ~ बदन छोटियै भिंगुली १३३।

छोड छोड। **~ छोड** छोड दो, छोड दो ~ — कहि परी धरनि पर सारा० ४१७।

छोडि छोडकर . ~ गरुड सुखधाम साँवरो सारा० ३३४।

छोडिके छोड करके : जो ज्यहि लोक ~ आयो सारा० ८४२।

छोडै छोडता है · संग सिसुपाल न ~ ४१८८।

छोभ जोभ, दुःख/क्रोध जनित चित्त की विचलता . ~ करायौ कन्हैया ३७१।

छोभित व्याकुल हो उठा, क्षुब्ध . ~ सिंधु, सेष सिर कंपित ९/१५८।

छोर[1] १. छोड : चार हाथ दिये ~ सारा० ७०१। २ छुडा कर . बंधन ~ पिता मातु को सारा० ५२९।

छोर[2] १ किनारा, कोना . सजल सोभित ~ ३५८। २ छोर से : मेरौ जिय गाँठि बँध्यौ पीतांवर कौ ~ १४४३।

छोरत १ खोलता है : बधिक न ~ फाँसी ३५४६। २ छोडता (है) : लघु-लघु ~ है अग बदन ११५८। ३ छोडते/खोलते हुए : बेनी ~ हँसत सखा सँग २८७७। ४ मुक्त करते हैं · आपु बँधावत भक्तनि ~ ३४३।

छोरति खोलती है जा कारन तू ~ नाही ३५४।

छोरन खोलने के लिए अब आई बंधन ~ वर ३४५।

छोरनहार छुडाने वाला ~ न कोई सा० ल० १०४।

छोरहु १ खोलो . ~ बेगि कि आनहु अपनी जसुमति माइ बुलाई १०७३। २ छोड दो : ~ स्याम करहु मन लाहो ३९१।

छोरि १ खोलकर · धरत न कबहू ~ ६५७। २ खोल बडे होहु तौ ~ लेहु १०७३। ३ छीन : जो भावत सो लेत ~ ३२७। ४ छुडाकर · तुरत बदि तैं ~ ३०११। ५ छोडकर : रतन ~ दियौ माटी ३५९५। ६ खुलवाओ · दुलहिनि ~ दुलह कौ कंकन बोलि बबा वृषभानु १०७३।

छोरियै छोडिये : कहति कंकन ~ परि० १/४१।

छोरी १ खोल दिया . ~ बदि बिदा किए राजा १/११३। २ बचा छोडी है . अधर दसन छत कछु छबि ~ २६५४। ३ खोल : बाँधौ तोहि सकै को ~ ३९१। ४ मात कर दिया : दसन-दमक दामिनि छबि ~ ६७२। ५ छोड दिया है : मधुरिपु कुल मरजादा ~ ३६७३। ६ ढीला किया . कछु खायौ कछु फेटैं ~ ३९६। ७. हटायी, दूर की . जाके गुन गनि ग्रथित माला, कबहुँ न उर तैं ~ ४२८६। **~ भुजा** भुज बंधन छुडाकर . ~ — कहाँ तैं आए।

छोरे १ खोल दिया/दिये . ~ और सकल सुर सागर ९/१५९। २. खोलने : ~ तें नाहिं छुटति १६६०। ३ छुडाया, मुक्त किया . राजा सबै बंदि तें ~ ४२१८। ४ छोडे टाल रहे थे : छीर छोटि छल ~ ७३२। ५ खोले हुए करै अस्तुति लट ~ ४८८।

छोरैं १ खोलते हैं : चोली ~ हार उतारें ७९९। २ खोलें, खोल-खोलकर उतार धरे . अंग अंग आभूषन ~ ७९९।

छोरै १ खोले, मुक्त करे : को बाँधे को ~ इनकौ ३८०। २ छीनते हैं : गोरस ढारै मटुकी ~ माट दही के फोरै परि० १/६२। ३ छुडाये . भूप अनेक बदि तैं ~ १/१७२।

छोरौ १ खोलो : अब ~ तुम आनि ३६५। २ छुडाने से . ~ न छूटै कंकना परि० १/४१।

छोर्यौ १ खोल दिया नाच कछ्यौ तब घूँघट ~ १६६१।

२. छोला : फकन ~ द्वारिका वाज्यौ अनँद निसान ४१८८।

छोलत १. छीलते हो, बनाते हो : गढि गढि ~ कहा रावरे सारा० ८८६। २ छीलते, करते . कहाँ चतुरई ~ हो २५५६।

छोलि छील-छाल कर : टेटि ढेँढ्स ~ कियौ पुनि १२१३। ~ **तन डार्‍यौ** तन छील टाला, अत्यधिक कष्ट दिया : तिन अब वोलि ~ — ३६२४।

छोलै छीले : सूर स्याम बिन रटत बिरहिनी बिरह टाग जनि ~ ३८६९।

छोह १ दया : ~ लागत तोहि देखि ५८९। २ ममता . कन्हैया मेरी ~ बिमारी २९७९।

छोहन लालसा मे : मरियत है अति ~ ३१३७।

छोहनि कुढने : रिस मनही मन ~ मों २४९१।

छोह-मोह माया मोह : ता दिन तै मत्र ~ गयौ ३६९६।

छोहरनि छोकडे, बालक : तनक तनक मे ग्वाल ~ ३०३७।

छोहरा छोकडा : भले रे नठ के ~ टर नही ३०७६। △ **मो आगे कौ** ~ मेरे सामने का लडका : — ~, जीत्यौ चाहै मोहिं १६१८।

छोहि भूल गया • इन्द्र गयौ द्रप ~ २९७७।

छोहिनी अक्षौहिणी : ~ दोइ दस हुतौ हरि सग कटक ४१९८।

छोहु दया, ममता . कियौ कौन पर ~ ४१८८।

छोहै मोहित हो जाता है : कोटि मदन मन ~ १५८।

छौंकि छौंककर, बघारकर, : सेम मोगरी ~ फोरई १२१३।

छौंकै १ छौंका है : फूले फूल सहजिना ~ १२१३। २ बघार दिया : हीग हरद मिर्च ~ तेलै ३९६।

छौना १ छौना (बच्चा) • सिंहिनि कौ ~ भलो ५८९। २ छौना (नन्हा सा या) • तबहि रह्यौ अति ~ ६०१। ३ लाल : माँगि लेहु मेरे ~ १९२।

छ्वै १ छूकर : उतहिं वे पूँछ गहि जात ये मुटि ~ ३०५६। २ छू • काहू मुख ~ आवत जाइ २४७५।

छ्वैहै छुएँगे • ~ अपनें कर २५९४।

ज

जंग मुँहजोरी (लडाई) • गुरुजनहूँ सौं ~ २२८४।

जंगम चेतन थावर-~, सुर-असुर, रचै सबै मैं आइ २/३६।

जंगमनि चलने वाले, चरण . ~ तें सुर सुनावत मा० ल० ३७।

जंघ १ जघा : (वसुदेव) जानु, ~, कटि, ग्रीव, नासिका ४। २ जाघों (पैरों) के : चोर चोरी करै आपनें ~ बल २०५३। ~ **जुगल रभा री** (उसकी) युगल जघाएँ मानो कदली स्तम्भ हैं : मृग नृप खीन सुभग कटि राजति ~ — ११९७।

जंघनि १ जघाओं निज ~ पर ताहि पछार्‍यो ७/२। २ जघाएँ . जुगल ~ खभ रभा २३४। ३ जघाओं की : अनि नितव ~ प्रति सोभा १२०४। ४ जघाओं मे . बिनु निज ~ चलहि लला रे २८२८।

जँच्यौ माँगा, याचना की . जौं रीझत नहि नाथ गुसाइ, तौ कत जात ~ १/१७४।

जंजार जजाल : मिटै न भव ~ १/६८।

जजाल १ झझट : दुख ~ जटी १/९८। २ दुख हो रहा है : यहै देखि मोकौं ~ २४८५। ३. माया जाल (बन्धनों) को : भव ~ तोरि तरु वन क २२४५।

जजालहि १ जजालों रहित भट ~ सों १६३८। २ जजाल भी : को राखै इतने ~ ८०२। ३ झझट से . मैं डरपति ~ ६०५। ४ सासारिक बधनों को छाँडि देहु तुम सब ~ १/७४।

जंजाला जजाल, उत्पात तन करत मदन ~ ११८२। △ **परिहौ बहुरि** ~ जजाल/झझट मे पड जाओगे . बार बार मैं तुमहिं कहत हो — ~ १४७१।

जजीरनि जजीरों म पग ज हरि ~ जकर्‍यो १४३९।

जंतु जीव (जलचर) ~ उठे अकुलाइ ९/१२१।

जंतु-धुनि जीव की आवाज आनि ~ सुनि कत डरपत १७९।

जंत्र यन्त्र : फुरै न मत्र-~ गद नाहीं ७४७।

जंत्री बजाने वाले क : बिनु ~ ज्यों बान ३३६४।

जंबु जबु द्वीप ~ प्लक्ष, क्रौंच, साक, सालमलि, कुस, पुष्कर भरपूर सारा० ३४।

जंबुक श्रृगाल • लेबे कौ ~ अकुलात ४१७१।

जंबू जामुन • ~ वृच्छ कहाँ क्यों-लपट ३९२१।

जंबूक श्रृगाल, सियार : सिंह कै मरन ~ की त्रास कह १९४७।

जँभाइ जभाकर, जम्हाते हुए भुजनि ~ जोरै २६५८।

जँभात १ जम्हाता है : बार बार ~ २००। २ जम्हाई लेते ह : सखि मुख मिथिल ~।

जँभाति जभाई ले रही है : आतुर अलम ~ पुलकित अनि पान खाति १६९४।

जँभावत जम्हाई लेती हुइ . डगमगात ऐंटात ~ आइ रग-पगी रग भरि कै २०११।

जँभुआने जम्हाई ली : अग मोरि तब हरि ~ १९७।

जँमुहाई जम्हाई : दोउ कर जोरि लेति ~ २६६५।

जँमुहानी जम्हाई ली बाँह उचाइ जोरि ~ २६६६।

जँम्हात जम्हाते हो : अनि अलसात ~ प्रिय २५५४।

जइयै १ जाइए : इहिं दुख सखी निकसि तहँ ~ ३३६७। २. चलें : ऊधौ चलौ बिदुर क ~ १/२३९।

जइहौं जाऊँगा : मैं सँग लै ~ २९७६ ।

जई[1] १ अकुर : लागी प्रेम ~ ३२४६ । २ उत्पन्न हो गया . अग अनग ~ रि २५२७ । ३ उत्पन्न हो गई कनक वेलि आसद ~ ११२९ । ४ (वृषभानु की) उत्पन्न की हुई राधा . कहा कहै वृषभानु ~ २४२६ ।

जई[2] जय की हुई : प्रगट भई जु काम ~ री परि० १/५२ ।

जउ, जऊ १ जो चाहे : अत अवधि ही लौं नातौ ~ कोटिक लहर उठावै २८२६ । २ यदि . इननी ~ जानत मन मूरख १/७६ । ३ यद्यपि ~ मैं कोटि जतन करि राखे २३६२ ।

जए १ उत्पन्न हो चला • मदन तिन तन ~ ६८४ । २ पैदा किया • सग ~ कुबिजा सी ३७०७ ।

जक १ जक (हानि का डर) • ज्यों त्रिदोष उपजैं ~ लागत ३५२९ । २ धुन/रट लगाये रहती है . जागत सोवत स्वप्न दिवस निसि कान्ह कान्ह ~ री ३९८८ । ३ हठ : अधम समूह उधारन कारन जिय ~ पकरी १/१३० ।

जकरि १ जकड कर, कसकर • अब मै याहि ~ बाँधौगी ३३० । २ जकड . ज्यौं राखिए गज मत्त ~ कै ३१८ ।

जकर्‌यौ जकडी हुई, पडी हुई पग जेहरि जजीरनि ~ १४३९ ।

जकि १. चकित मैं ~ रहा सौंह मोहिं तेरी १७३१ । २. चकित होकर . चितवति उहिं ~ २४१८ ।

जक्यौ दग रह गया . देखत मदन ~ ११८२ ।

जक्षपति यक्षराज मृत्यु कुबेर ~ कहियत जहँ सकर कौ धाम सारा० २१ ।

जग[1] ससार । ~ **जस पावै** ससार मे कीर्ति पाएगा . सूर जियैं तौ ~ — ९/१५१ ।

जग[2] यज्ञ • असुरनि सौं ~ होत न पावत ९/२१ ।

जग-करतार ससार के कर्ता, विधाता . हम तीनौ हैं ~ ४/३ ।

जग-जननी जगन्माता • श्री रघुनाथ रमनि, ~ ९/६५ ।

जग-जीवन १ ससार के जीवन स्वरूप, कृष्ण ने : ते ते राखि लिये ~ १/२२ । २ जगत मे जीने (की) : छाँडौ ~ की आसा २९८३ ।

जगत विश्व, ससार । △ ~ **मैं नाचे** ससार मे आकर कर्म करे . बहुरि न उलटि ~ — २/११ ।

जगत गुरु जगद्‌गुरु , परमेश्वर : जानत नहिं ~ माधौ २५८।

जगत जननि सीता : जद्यपि ~ कौ हरता १/२१५ ।

जगत जननी १ जगन्माता ~ करी बारी ९/६० । २ जानकी : मोहिं असीस ~ की ०/१०७ ।

जगतपति ससार का स्वामी : ~ नगत हित देह धार्‌यौ ४/११ ।

जगत पिता परमेश्वर : ~ सौं करी ढिठाई ९७५ ।

जगत बंधु जगत बधु का, ईश्वर का • ~ करि वदन ३५३० ।

जगत-भोग सासारिक सुख भोग : करि ~ ४/१० ।

जगत मनि ससार मे सबमे श्रेष्ठ, परमेश्वर . जहाँ बसत जदुनाथ ~ ३३४१ ।

जगत सुख सासारिक सुख : और ~ चह न कोई ३/१३ ।

जगतात जगत पिता : अस्तुति करन लग्यौ सहसौ मुख, धन्य धन्य ~ ५३७ ।

जगदीस ईश्वर, जगदीश बिहँसि ~ कह्यौ रुद्र जो तुहि भजै तहाँ मैं जाउँ ४१९८ ।

जगनाथ ससार के स्वामी, ईश्वर : ज्योति रूप ~ जगत गुरु ४८७ ।

जगपति जगत्‌स्वामी ~ नाम सुन्यौ हरि तेरौ १/२१० ।

जगपाल ससार के पालन कर्ता तुम ~ चतुर चिंतामनि १/१६५ ।

जग-पावन ससार को पवित्र करने वाले मुनि देवता बडे ~ ५६ ।

जग-पुरुष यज्ञ पुरुष, विष्णु ~ दरसन दियौ ४/६ ।

जग-प्रभुत्व ससार की प्रभुता ~ प्रभु देख्यौ जोइ ७/२ ।

जग प्रसंग यज्ञ का वृतान्त ~ कहिकै गृह ल्यायौ ९/३ ।

जगप्रिय लोकप्रियता ~ घटै देखि निज नैनन सा०ल० ६४।

जग बंद जगद्वन्द्य, श्रीकृष्ण सखी सहित सोभित ~ २१७१ ।

जग बंदन विश्व के प्राणियों द्वारा वन्दनीय, कृष्ण • सग सखा ठाढे ~ २३३ ।

जग-बेदी यज्ञ-वेदी चलियै विप्र जहाँ ~ ८/१४ ।

जगमग जगमगा रही हैं : वरन बहु कुसुम ~ प्रफुलित ससि की किरनि ~ २१७२ ।

जगमगति जगमगाती है • नख-ज्योति ~ १०६ ।

जगमगाइ जगमगा झीन जराइ जु ~ रहि ४१६६ ।

जगमगात चमक रहे हैं ~ अगनि प्रति गहनौ ९०३ ।

जगमगि जगमगा सजे सिंगार नव-सात ~ रहे १०५२ ।

जगमगैं जगमगाएँ कचन कलस ~ नग के ३२ ।

जग-माया सासारिक माया को • ~ धिक देखै ११७८ ।

जग-मोह ससार के मोह, मायाजाल ~ बधन तोर १००७ ।

जग सुख सासारिक सुख : ~ मिथ्या ४/१२ ।

जग-स्वामी ससार के स्वामी, विष्णु, कृष्ण ~ माधौ देह हमारी ८/१४ ।

जगहि ससार को : स्वामी धर्म सब ~ सिखाए ९/१६८ ।

जग-हित ससार के हित के लिए • ~ जनक सुता मन-रजन ९८१ ।

जगाइ १ जगा कर • देख्यौ जाइ ~ ४९२ । २ जगा बहुरौ लियौ ~ मनोहर २८२६ ।

जगाइयौ जगाना • सोवत जाइ ~ २९३९ ।

जगाई १ जगाया ललिता गहि बाँह ~ ११८२ । २ जगा अब देहि ~ ५५० ।

जगाए १ जगाया : ग्वालनि मिलि श्रीकृष्ण ~ ११८४ । २ जगा भी रखा (है) : रति रग रैनि ~ २५५७ ।

जगात जकात (कर) . उगाहत अपनौ दान ~ १५०६ ।
जगाती कर वसूलने वाले सूर स्याम अव भए ~ १५०८ ।
जगाय जगाकर • सुरभी कान्ह ~ खरिकहि ८१० ।
जगायौ जगाया बाँह पकरि तव मखिन ~ २७५९ । २ कमा लिया है त्रिभुवन मैं अति नाम ~ २२४१ । ३ जगाया, तीव्र किया प्रेम उमँगि कोकिला वाली विरहिनि विरह ~ । ४ सचेत किया • हरि के अग्रज वधु तुरतहीं पिता ~ ५८९ । △ सोवत सिंह ~ सोते हुए सिंह को जगाया अर्थात अपने से अधिक शक्तिशाली को छेड़ दिया • 'सूरदास' रावन कुल खोवन — ~ ९/८८ ।
जगावत १ जगाता है, उत्तेजित करता है अधर-सुधा-रस मदन ~ ६४८ । २ जगाती है जसुमति मात ~ भोरहिं सारा० ९०२ । ३ जगाते : काहू विरह ~ हैं २५३४ ।
जगावति जगाती है वदन उघारि ~ जननी २०४ ।
जगावते जगाते थे • मुरछे मदन ~ ३२०१ ।
जगावन जगाने . दासी कुवर ~ आयी ६/५ ।
जगावै जगाती है तहाँ सु जाइ ~ १/४४ ।
जगी १ जागती रही • इहि विधि निसा ~ ३२६५ । २ जाग पड़ी भूमि अति डगमगी, जोगिनी सुनि ~ ९/१०६ ।
जगैं जागने के कारण . **नैन** ~ पल लगे जात है २४८६ ।
जग्य यज्ञ • ~ आरभन कीन्हौ ८४१ ।
जग्यारभ यज्ञ का आरभ : ~ तहाँ करवाए ९०६ ।
जग्युपवीत यज्ञोपवीत, जनेऊ ~ विचित्र सग सुनि १७५८ ।
जग्योपवीत यज्ञोपवीत : ~ विधोक्त कियौ विधि सब सुर सिद्धा दीन्हीं सारा० ३३२ ।
जग्यौ जागे • इहाँ लोग सब सोवत ~ १/२८९ ।
जघन १ जघों पर, पेडुओं पर : सूघन ~ बाँधि नारा-वँद १०५४ । २ जघाएँ ~ सघन कदली २६१९ ।
जच्छ यक्ष ~, मृतु, वासुकी, नाग, मुनि, गधरव सकल वसु जीति मैं किये चेरे ९/१२९ ।
जजाति ययाति, चन्द्र वश के एक राजा, नहुष के पुत्र . नृपति ~ अचानक आयौ ९/१७४ ।
जजातिहूँ ययाति भी : पाछे त ~ आयौ ९/१७४ ।
जज्ञ १ यज्ञ : हरि कह्यौ ~ करत तहँ वाम्हन ८०० । २ यज्ञ के • अवमेस ~ प्रभु १/१६ । ३ यज्ञों का कोटि ~ फल होइ पिता उन दरसन पाए ४१८८ ।
जज्ञ-पति यजमान, विष्णु : येइ प्रभु ~ उद्धरन ३०८१ ।
जज्ञ पतिनी यज्ञ की पत्नी, दक्षिणा : ~ उधारी ३०८१ ।
जज्ञ-पुरुष विष्णु : ~ अवतार ४/४ ।
जज्ञहि यज्ञ को • यह सुनि असुरनि ~ त्यागि १२/२ ।
जज्ञहु यज्ञ भी : अस्वमेध ~ जो कीजै २/३ ।
जट जटा . अग भस्म ~ जूटे २/१९ ।
जटत जड सके : जौ कोउ ~ नए १८६७ ।
जटा जटा । ~ **धरें** जटा धारण करें है विरक्त, सिर, ~ — ९/३८ । ~ **धारे केस** केश मे जटा धारण कर ली है, वैरागी हो गये हे • उहा जाइ मँदेस कहियौ, ~ — ४०५५ ।
जटा-जूटलि जटा जूट धूरि धूसर, ~ १७० ।
जटाहूँ जटा को भी . ~ करि केस ४२५९ ।
जटि जड़ा हुआ किंकिनी कलित कटि, हाटक रतन ~ १५१ ।
जटित १ जड़ा हुआ मुकुट कुडल ~ हीरा लाल सोभा अति वनी ४१८६ । २ जडी हुइ कनक रतन मनि ~ रचित कटि १०६ । ४ जडे हुए रतन ~ कचन कल नूपुर ६२५ ।
जटित जराव जडे हुए जड़ाऊ (मुकुट) • ~ मकर कुडल छवि ११८३ ।
जटी भरा हुइ . दिन दिन हीन छीन भइ काया दुख-जजाल ~ १/९८ ।
जटे जड गए : झूठें हू नहि उमकत मकत तव व छंद ~ परि० १/१६१ ।
जठर १ उदर मे जननी ~ न आठें ३०९७ । २ गर्भ मे : जैसे जननि ~ अतरगत १/११७ । ~ **कुहू** तें गर्भ रूपी अमावस्या की रात्रि मे ~ — विहरि वारुनी १७९५ । △ ~ **जरैं** पेट की अग्नि मे जले, गर्भ के कष्टों को सहे • 'सूरदास' भगवत भजन विनु फिरि फिरि ~ — १/३५ ।
जठर-अग्नि जठराग्नि . ~ कौ व्यापै तत्व ३/१३ ।
जठरातुर क्षुधा से व्याकुल होने पर • जनु खँजरीट जुगल ~ लेत सुभग अकुलाने २६०१ ।
जड मूर्ख तें ~ नारिकेल कपि कर ज्यौं पायौ १/७८ । ~ **ह्वै रहे** जडवत हो गये निरखत सुन भवन ~ — ९/६२ ।
जडता अज्ञानता : हियैं कपाट जोरि ~ के २८२६, तदपि सूर मेरी ~ प्रभु मगल मोक्ष गनी १८८० ।
जडताई १ जडता हिय जु वसति ~ १/१८७ । २ आलस्य अपनी ही ~ ३२७९ ।
जडनि मूर्खों को जारि ~ जम-पथ पठैहौं ९/१५७ ।
जडभरत ऋषभ देव के पुत्र तथा पहिले मन्वन्तर के एक विष्णु भक्त राजा : सुनि ~ हृदय महँ राखी ५/४ ।
जडमति जड बुद्धि वालो, मूर्खा जनि डरपौ ~ काहू सौं, भक्ति करौ इकसारि ७/३ ।
जड-स्वरूप जड (मूर्ख) के समान : ~ सौं जहँ तहँ फिरै ५/३ ।
जडाई जटा (गई), शीत खा (गई) नीर माँहि हम गई ~ ७९९ ।
जडित जडे हुए : कुडल स्रवन कनक मन भूषित ~ लाल अति लोल मीन तन २५७३ ।

जढ्यौ कसकर बधे हुए हैं · नख-सिख ज्यौं मीन-जाल, ~ अग अगा ९/९७ ।
जतन १ उपाय, यत्न · रघुपति, वेगि ~ अब कीजै ९/११० । २ यत्नपूर्वक : ~ राखि छीकै समुझायौ १६०० । ~ **जतन** प्रयत्नो से क्यों हूँ ~ — करि पाए १८३ । ~ **जुगै** यत्नपूर्वक आनि राख्यौ जल पुट ~ — १९५ ।
जतननि १. उपाय, यत्न टूटी जुरै बहुत ~ करि ३९५७ । २. उपायों से : निज जन जानि मानि ~ तुम कीन्हौ नेह घनेरौ ४०७९ । ३. सभालकर . राखे रहति ओट पट ~ २३०६ । ४ यत्नो की अगम सिधु ~ सजि नौका १/५५ ।
जतनहि यत्नों : ~ तैं सँधि जोरी ४२१६ ।
जतायो जताया, वताया : नृप सुकदेव ~ सारा० १०९३ ।
जतावत वतलाता है · 'सूर' असगत ~ सा० ल० ३७ ।
जतावै बतावेगा : मोसो कौन ~ सा० ल० ८४ ।
जति यति (विराम या ताल) : गावति सुकठ सुराग नागरि गिरि-धरैं ~ लैन २८४१ ।
जती सन्यासी · ~, सती, तापस आराधैं १/२६३ । ~ **जोग बिसारि** यती लोग अपनी योग साधना भूल वैठे . धरनि उमँगि न माति उर मैं, ~ — १०६८ ।
जत्ति जाति है यह तौ याकी ~ १२५६ ।
जथा जैसे नारायन कहि उधर्यौ ~ (अजामिल) ६/३ ।
जथा जोग यथोचित रूप से · ~ भेंटे पुरवासी ९/१६८ ।
जथा ब्योहार यथोचित, जैसा चाहिए : भेंटे सबनि ~ ४२०० ।
जथा मति मतानुसार, बुद्धि के अनुसार · कछु ~ अपनी कहि सुनाए ४/११ ।
जथा संख यथासख्य, यथाक्रम अलकार . 'सूरज' आलस ~ कर मा० ल० ५० ।
जदपि यद्यपि । **उपमा ~ लजाइ** यद्यपि उपमा लज्जित होती है, यद्यपि उपमा हीन है · हँसत दसन इक सोभा उपजत, — ~ — १८३२ ।
जदु महराज ययाति और देवयानी के ज्येष्ठ पुत्र । इनके सत्राजित, क्रोष्टा, नल और रिपु नामक चार पुत्र हुए । इन्ही मे यदुवश चला । श्री कृष्ण इन्हीं के वशज थे बडे पुत्र ~ सौं कह्यौ आइ ९/१७४ ।
जदु कुल १ यदुकुल, यदुवश : ~ कुमुद सुखद चारु चदर ११७ । २ यदुकुल को · ~ लाजनि मरे १/२४२ ।
जदु-कुल-पति श्रीकृष्ण ने : जब ~ कसहि मार्यौ ३०९५ ।
जदुकुलहि यदुकुल को यह आनद ~ सुनावहु ४१८५ ।
जदुतात कृष्ण का जिनसौं हित ~ ४१५६ ।
जदुनंदन कृष्ण मथुरा क्यौं न रहे ~ ४०८४ ।
जदुनाथ यदुनाथ, श्रीकृष्ण : जादौ पति, ~ छाँडि खगपति-साथ ८/५ ।
जदुपति १. यदुपति, श्रीकृष्ण . जबहीं कृपा हुती ~ की ३८७३ । २ यदुपति ने ~ कह्यौ घेरि हौ आनौ ४३८ ।
जदुपतिराई यदुपति श्रीकृष्ण : वृन्दावन बन मे ~ ११८२ ।
जदुबंस यदुवश मे, नद के वश मे भयौ ~ अति रहस ४१८९ ।
जदुबीर यदुवीर, श्रीकृष्ण . कित हम कित ~ ३९४५ ।
जदुराइ १ यादवराज श्रीकृष्ण . कुँवरि जोग बर श्री ~ ४१६७ । २ श्रीकृष्ण के जोग नहीं ~ ३६७८ । ३ श्री कृष्ण को तातैं अबहिं भजौ ~ ७/२ ।
जदुराई १ यदुपति, भगवान् श्रीकृष्ण को होइ असग भजौं ~ ५/३ । २ यदुराय, श्रीकृष्ण ज्यौं जानै ब्रज मैं ~ १२२ । ३ यादवों के राजा है वै जदुपति ~ ३७९९ ।
जन १ गण देव मुनी ~ साखी १/१० । २ भक्त श्री रघु नाथ जानि ~ अपनौ ९/६६ । ३ भक्तो . सूर स्याम ~ के सुखदाई ९१० । ४ मनुष्य, व्यक्ति 'सूरदास' सोई ~ जानै ३९०५ । ५ लोगों को धिक ~ ऐसे जगत मे २३१८ । ६ व्यक्तियों की ज्यौं ~ सगति होति नाव मैं १/८४ । ७ सेवक जीवत ~ जस गाए ४१७ । ~ **जन** व्यक्ति व्यक्ति से ~ — जाँचत होत भिखारी १/२१२ । ~ **मुकरावन** भक्त को मुक्त करने का : गज हित धावन ~ — ८/४ ।
जनक[1] पिता को हैं ~ कौन हैं जननी ३६३१ ।
जनक[2] दे० जनकराइ ~ तनया धरी अगिनि मैं ९/६० ।
जनक-तनया जनक की पुत्री सीता को ~ धरी अगिनि मैं ९/६० ।
जनक-मन्दिर जनक जी के भवन · वैठे जाइ ~ महँ ९/२४ ।
जनकराइ मिथिला के राजवश मे उत्पन्न सीरध्वज नामक राजा, जो सीता के पिता थे · ~ बहु दाइज दै करि ९/२७ ।
जनक-राज-भोजन-सुख जनक राज के भोजन का सुख · तजि वह ~ ९/३४ ।
जनकराय राजा जनक . ~ सुख दीन्हो सारा० ८०२ ।
जनक-सुता जानकी ~ ताकी बर नारी १९८ ।
जनन लोगो ने विदुष ~ विराट प्रभु रीखे सारा० ५१७ ।
जननि[1] १ माता . प्रातकाल उठि ~ जगावत सारा० १७० । २ माँ के जैसे ~ जठर अतरगत सुत अपराध करै १/११७ । ३ माता को ~ भ्रम भारी १९८ ।
जननि[2] १ जनो का वीत राग सुजान जोगिनि, भक्त ~ निवास ४०३५ । २ लोगों . विमुख ~ कौ सग न कीजै १९२७ । ३ लोगों को ब्रज-~ बन सहित जारि आऊँ ५९० ।
जननी १ माता (देवकी) . ~ निरखि भई तन ब्याकुल ४ । २ माता ने : आसा करि करि ~ जायौ २/३० । △

मारी ~ भार (अपने) भार से माँ को ही मार डाला : करी कबहूँ न भक्ति हरि की, — ~ — १/२९४।
जननी-गति माता का पद . सूरज है ~ ताकौ ५०।
जन-बंदन लोगों द्वारा वन्द्य है : अति सोभा त्रिभुवन ~ ११६४।
जनम १ जन्म। २ जन्म-फल : कहिये ~ गुसाईं ९/१७। ३ जन्म (जीवन) . ~ तौ ऐसेहि बीति गयौ,१/७८। ४ जीवन की . मेरी ~ कल्पना ऐसी ३०५०। ~ **जनम** १ जन्म जन्मान्तर . ~ — की चेरी ३५६८। २ प्रत्येक जन्म मे ~ — जब जब, जिहिं जुग २/१०।
जनमत १ जन्म लेते ही . ~ जननी तजी १६१८। २. जन्म लेते हुए . कब ~ हमकौं तुम देख्यौ १५२०। ३ जन्म से (ही) : हौं तौ ~ (पतित) ही कौं १/१३८।
जनमनि जन्म मे : सुजन बेष रचवा प्रति ~।
जनम मरन १. जन्म-मरण ~ तैं रहि गयौ ३०४०। २. आवा-गमन ~ तिहिं ठौर न आवै १०/४।
जनमहि जन्म से ही : ~ तैं करवर टरी ५८९।
जनमि जन्म लेकर · मथुरा ~ गोकुलहिं आए ०९२२।
जनमें अवतार लिया है · सूरदास प्रभु ~ २८।
जनमे १ जन्म लिया है · तुम ~ भू भार उतारन ०९०२। २ पैदा हुए : ~ सग, सग प्रतिपाले २२०७।
जनमेजय राजा परीक्षित के पुत्र जिसने उनके सर्प दश से मरने के बाद, सर्पो के नाश के लिए सर्प यज्ञ किया था : ~ जब पायो राज ५।
जनमैं जन्म लेता है तुम अनभव वह ~ मरइ ४१९५।
जनमै जन्म लेता है : ~ मरै न सोइ ०/३६।
जनम्यौ १ जन्म दिया : पुनि पुनि कहत धन्य नँद जसुमति जिनि इनकौ ~ सो वनि हरि ४०९। २ जन्मे हो आपुन कपट कुल ~ ३५९६। ३. पैदा हुआ यह कोउ भलो नहीं ब्रज ~ १३९६।
जन-सका लोगा की ही शका (की) सुत पति नेह, भवन-~ १०००।
जनहि भक्त को · तातैं कहौ ~ सौं जाइ ९/५।
जनही लोगों को : लाज नहीं ऐसे ~ २०४१।
जनहूँ भक्त सूर ~ तिहीं भाँति गाइ ८/११।
जनाइ १ जताकर : फल-~ बालक सग खेलत ९५४। २ बता परमुख स्वमुख ~ न दीन्हौ ४१९३। ३ (खटका) उत्पन्न हो गया . महर-महरि मन गई ~ ५४३। △ अंतर गयौ ~ (दोनों) का हृदय जान गया है . — ~ ०१५०।
जनाइयौ जताना, प्रगट करना प्रीति रीति ~ परि० १/४१।
जनाई १ अवगत करा दिया · भली करी यह बात ~ ०४१३। २ ज्ञात कराकर : लोगनि कह्यौ ~ ४१९१। ३ ज्ञात हो गया · मातु जिय गयौ ~ ४८९। ४ प्रगट करते हैं (ज्ञात हो रहा है) : बार बिथुरे रति देत ~ ०६५८। ५ बताया : काहूँ नहीं ~ ००४०। ६ जान पड़ता था · इक बटौ पुरुष अवतार ~ ८१९।
जनाऊँ अवगत करा दूँ, बतला दूँ : कछुक ~ अपुनपौ अब लौं रह्यौ सुभाउ ४३१।
जनाउ प्रकट : 'सूर' सु बिरह ~ करत कत ४०८०।
जनाऊँ १ प्रतीति करा दूँ याकौ आपन रूप ~ ५५३। २ बताऊँ, बता दूँ माधौ ऐसी प्रीति ~ २१४१।
जनाए १ जनाते थे · बचन अचभ ~ ३६५७। २ प्रकट किये : लच्छन स्वच्छ ~ ३३४३। ३ समझाकर · पत्र दियो लिखि हाथ, कह्यौ, बहु भाँति ~ ५८९।
जनाये प्रदर्शित किया, जनाया : पूजा करी बहुत नाना बिधि नृपति ~ नेह सारा० ६००।
जनायौ १ अवगत कराया, बनाया . काल कौ रूप सुभटनि ~ ३०५९। २ ज्ञान हो गया : तब मन तिया ~ १६८७। ३ बताया है . तुम सब हितहिं ~ ३७४४। ४ (दया) प्रकट की · तहँ तहँ आपु ~ १/००। ५ दिखलाया, प्रकट किया हरि हित अधिक ~ ४०९६। ६ प्रतीत होने लगा (गर्भ) डर-देवकी ~ ४। ७ लगा · छत्र की छाँह निरभय ~ ९/१०९।
जनावत १ जताते हो अनि अधिकार ~ यात ०४५। २ प्रकट करते हो, बतलाते हो : मुख कहि कहा ~ ४०००। ३ बतलाता है : काहूँ कछु न ~ ८/४। ४ जान पड़ता है, लगता है वैसेंहि मोहिं ~ १३५८।
जनावति १ अवगत करा रही हूँ : सो कहि बात ~ ०४४१। २ प्रकट करती है · अपनी बिपति ~ १९४१। ३ बताने में · इतनी बात ~ तुमसौं, सकुचति हौं हनुमत ९/९२।
जनावन बताने (चली है) 'सूरदास' प्रभु कहा ~ ०७५०।
जनावहु बतलाओ . हमरी दसा ~ ३७७६।
जनावहुगे बताते फिरोगे अतर बिरह ~ ०५०५।
जनावै बताता है : आगे सिंह हुँकारत आवत निर्भय बाट ~ सारा० ३७५।
जनावैं १ बताएँ तिनको भेद ~ ००५६। २ दनाते हैं : अति मकेन ~ ३७०९।
जनावै १ प्रकट कर देती मो दिन क्यों न ~ ५६१। २ जो जाना जा सके (हरि) गुन अतीत, अबिगत, न ~ ३। ३ ज्ञात कराता है पावस अगम ~ ३३१०। ४ समझाते ये नागरि जियहिं ~ १४४०। ५ बताएँ · हम कहि कहा ~ ४०७१।
जनावैगी जतायेगी : जासों प्रेम ~ ०७०६।
जनि क्रि० वि० १. मत, न . तुम ~ डरपौ मेरी माता ०/८८। ~ **लावहु** मन करो · बेगि गहरु ~ — ३९६५। ~ **सुनें**

नहीं सुनता (मानता) . मन ~ — बात यह माई २०९५ ।
क्रि० स० पैदा कर, उत्पन्न कर के . ज्यौं जननी ~ खाति ३७५३, लछिमन ~ हौं भई सपूती ९/१५२ ।
जनियत १. जानती : ~ है अपराध हमारौ १०८८ । २ जान पडता ~ है मुख पाडु रोग भयौ ३९६९ ।
जनियाँ[1] मातायें (यशोदा और रोहिणी) : गहि गहि दोउ ~ १३२ ।
जनियाँ[2] गण : जाकौ ध्यान धरै सबै, सुर-नर-मुनि ~ १४५ ।
जनी स्त्री . सुधि न रही कोउ एक ~ (री) ९९७ ।
जनु १ जैसे : विषम बूँद लागत ~ सायक ८६२ । २. मानो : पावस तैं ~ निकसि दामिनी २११३ ।
जने लोग : तीनि ~ सोभा त्रिलोक की ९/४४ ।
जनेऊ यज्ञोपवीत, ब्रह्म सूत्र : लाज ~ जारे ३५६६ ।
जनै १. पैदा करने की जातक ~ न पीर है कैसी ३९४९ । २ पैदा करने मे समर्थ हो जाय . बॉझ सुत ~ २८२४ ।
जनैया जानकार, जानने वाले ' तुम बड़े ~ आहु ४००१ ।
जनैहै जताने/दिखाने लगेंगे : नाना भाव ~ १७३८ ।
जनैहै अवगत हो जायेंगे, जान लेंगे . यह लीला उनि सबै ~ १६५० ।
जनैहौं बतलाऊँगी : बलदेवहिं न ~ १९३ ।
जन्मत जन्म लेते ही : ~ ही गोकुल सुख दीन्हौ ३०३१ ।
जन्म-थान जन्मस्थान, जन्मभूमि : ~ जिय जानि कै ३०२१ ।
जन्महि जन्म ही ' ~ तैं तामस आराध्यौ ९/१३२ ।
जन्मि जन्म लेकर : चौरासी लख जोनि ~ जग १/७५ ।
जन्मैं जन्म लेते हैं : ~ मरैं सदाई लोई १२/४ ।
जन्य जन्मा : कौन ऐसौ बली सुभट जननी ~ ९/१२९ ।
जन्यौ उत्पन्न किया, जन्म दिया : ऐसौ पूत ~ जग तुमही ४३० ।
जप स्मरण जोग-जग्य ~-तप व्रत दुर्लभ ४८७ ।
जपत १ जप करता है, जपता है हरि हर हरिहिं जु आजु ~ जप परि० १/९२ । २. जप करते हैं, जपते हैं : ~ सुर नाग नर, सहस बानी १९४७ । ३ जपते हुए . उलटो नाम ~ अघ बीत्यौ सारा० १५३ । ४ जाप करती होंगी : ~ नाउँ रघुराइ ९/७५ । ~ **फिरौं** जपती फिरती हूँ कुज कुज ~ — १११७ ।
जपति जपती हैं सुमिरि-सुमरि गुन ~ स्याम के परि० १/१६९ ।
जपति १ (मन) जपता है : स्याम स्याम कै ~ २०८९ । २ जपती : हम ~ हैं निसि दिन ४०१९ । ३ जपती हैं : सूर ~ निसि दिन तुव नाम ४१६७ ।
जपनी जाप, पूजा : तबहिं करैंगे वै ~ २०९२ ।
जपा अड्हुल (का फूल) : ~ कुसुम दल मनहुँ कमल पर तडि जुत कोष कोकिला गाई परि० १/६८ ।
जपाली जपते रहो : अजपा जाप ~ ३८६६ ।
जपिहै जपेंगे कहत हैं, आगैं ~ राम १/५७ ।
जपिहौं जाप करती रहूँगी : सदा नाम तव ~ ९/१६४ ।
जपैं जप करते हैं . जाकौ दरसन काज ~ मुख चारि ३६२ ।
जबरै विशाल : भौंहैं हैं ~ री २८८६ ।
जबहि १ जब : नद-नदन दरस ~ पैहौ १७३९ । २. जब भी . ~ सुरति आवति वा सुख की ४१५७ ।
जबहि १ जब : ~ देत तबहीं फिरि देखत ३६ । २. जब भी . सकुच ~ आवै उर १९१० ।
जबही जब ही : ~ तै हरि ह्याँ हैं निकसे १८९३ ।
जबै १ जब : ~ साप रिषि सौं नृप पायौ ६/७ । २. जब भी : ~ मिलैं गोपाल ४०९५ ।
जबोदं जबरदस्त उर्ठाव की डोरी कैसे बाँधौ ~ भव बद तोरै परि० १/६२ ।
जम[1] धर्मराज । इनका रग हरा कहा गया है और ये लाल वस्त्र धारण करते है । इनका वाहन भैंसा है । इनके दरबार का मुशी चित्रगुप्त है । इनकी नगरी को 'यमपुरी' तथा सिंहासन को 'विचार भू' कहते हैं : ~ के दूत खरे हैं द्वार २/३ ।
जम[2] धर्म-कर्म मे चित्त लगाने का साधन, यम, जो 'योग' के आठ अगो मे पहला है ~ नियमासन, प्रानायाम, करि अभ्यास होइ निष्काम २/२१ ।
जम आलय यम के धाम, यमपुरी : पठवौं कुटुंब सहित ~ ९/१३१ ।
जमई जमा दिया . जामन दै दै उर छबि ~ री परि० १/९९ ।
जमके डटकर, अधिक कापर क्रोध करत प्रभु ~ ९२८ ।
जमजेठी यमराज से बडा है : ~ जग की महतारी ४२०५ ।
जमत १. जमा रहता है : सूनी सेज तुषार ~ चिर ३३४३ । २ उगता है ' बीज अकुर तवै ~ सारो ४/११ ।
जमदागिनि-आस्रम जमदग्नि के आश्रम मे : सहसबाहु तिहिं समय ~ आए ९/१४ ।
जमदागिन जमदग्नि के . परसुराम ~ गेह लीनौ अवतारा ९/१४ ।
जमदागिनिहि जमदग्नि को, एक वैदिक ऋषि जो सप्तर्षियों मे गिने जाते है और परशुराम के पिता माने जाते हैं ' तासु सुतनि ~ मार्‌यौ ९/१३ ।
जमदाग्न्यास्रम जमदग्नि के आश्रम पर . फिरि नृप ~ आयौ ९/१३ ।
जमदूतनि १ जमदूतों : ~ तैं तिहि हरि राख्यौ १२/३ । २ जमदूतों को : ~ हरि-गननि निवार्‌यौ ६/४ ।
जमन[1] यवन ~, कपालिक जैनी ९/११ ।
जमन[2] यमुना . सब सुन्दरी जुरी ~ तट आइ १६१८ ।

जमनि यमगण : काल ~ सौं आनि बनी है, देखि देखि मुख रोइसि १/३३३ ।
जम-पंथ यमपुर के रास्ते, यमपुरी • जारि जडनि ~ पठैहौं ९/१५७ ।
जमपुर यमलोक, यमपुरी • ~ बाँधि पठावै १/९६ ।
जमराजा यमराज : रबि, ससि, बरुन, अनल, ~ ९५० ।
जमल अर्जुन यमलार्जुन : ~ तोरि तारे ४९८ ।
जमलतरु यमल वृक्ष : मुनि सराप तैं भए ~ १/७ ।
जमलद्रुम यमल वृक्ष : जन दुख जानि, ~ भजन १/२७ ।
जमला यमल : ~ मोच्छ कौन विधि पावै १६०७ ।
जमलार्जुन, जमला-अर्जुन गोकुल के दो पौराणिक यमल और अर्जुन वृक्ष, जो कुबेर के पुत्र नलकूबर और मणिग्रीव थे ~ दोउ सुत कुबेर के ८७३ ।
जमला-उधारन यमलार्जुन के उद्धारक इक मटे ~ ११२१ ।
जमलोक यमलोक भय-उदधि ~ दरसै १/८८ ।
जम-सैनी यम की सेना . जा परमैं जीतै ~ ९/११ ।
जम-हाथ यमराज के हाथ मे, मार (डालूँ) : असुर करौं ~ १६१८ ।
जमहि यमराज को भ्रमि भ्रमि ~ हँमावै २/१३ ।
जमहु यमराज . ~ कुबेर इन्द्र है जानत ९/१३० ।
जमा पूँजी • ~ बाँधि ठहरावै १/१४२ ।
जमाइ जमाकर : उत्तम दूध ~ ४५५ ।
जमाई जम गई हो मनौ कमल पर विज्जु ~ ८२ ।
जमाऊँ जमा दूँगी तुम हित औरि ~ परि० २/३२ ।
जमाए जमाया अरु आछौ करि ढ्यौ ~ ३०९ ।
जमानत किसी व्यक्ति के प्रति ली गई जिम्मेदारी, जमानत • धर्म ~ मिल्यौ न चाहै १/१८५ ।
जमानति जमानत मे देह ~ लीन्ही १/१९६ ।
जमायौ १ जमाया • दधि तुरत ~ ६०९ । २ जमाया था : कोरी मटुकी दह्यो ~ ३४६ । ३ जमाया हुआ है माखन रोटी लेहु सद्य दधि रैनि ~ ४३१ ।
जमी उत्पन्न हुई : मूल तें ~ ज्यौं वेलि चढ़ति तमाल २९४६ ।
जमुन यमुना . मारग रोकत रहे ~ कौ १५३३ ।
जमुन-कच्छ यमुना की तराई पर : ग्वाल वाल लियैं ~ वच्छ चरावे १२१८ ।
जमुन भोरें यमुना का भ्रम (उत्पन्न करती है) . धार रोमावली ~ १९११ ।
जमुना राधा की एक सखी का नाम सुखमा, सीला, अवधा, नदा, वृन्दा, ~ मारि १५८० ।
जमुवंत जाम्ववान, सुग्रीव का मन्त्री जिसके विषय मे यह किंवदती रही है कि वह कृष्ण के समय तक जीवित रहा : हँसि बोल्यौ ~ ९/७४ ।
जमुहात जम्हाई ले रहे हैं बार-बार ~ सूर प्रभु २२८ ।
जमूह यम के दूत भी . ताहि ~ रहत हाथ जौरे १/२२२ ।

जम्यौ १ जम गया : 'सूर' स्याम रति जाम प्रेम पय बहुरौ ~ कह्यौ ४१०५ । २ जमा हुआ माखन रोटी सद्य ~ दधि २१२ ।
जम्हाइ जम्हाई लेकर : मुख ~ त्रिभुवन दिखरायौ ३९१ ।
जम्हाई स्त्री० १ जम्हाई : लागत पलक ~ २५५१ । क्रि० अ० जम्हाई ली जब देखैं उठि जाग ~ ५५० । २ जम्हाई लेती है : उलटि पलटि तन तोरि ~ ७४८ ।
जम्हात १. जम्हाई लेते हैं : कबहुँ ~ कबहुँ अग मोरत २६३० । २ जम्हाई ले रहे थे : डगमगात मग धरत पग, आलसवत ~ २७१४ ।
जम्हाति जम्हा रही है • कर सौं कर जोरि के ~ २६६० ।
जम्हावरि जम्हाई की तैसोई मारुत मद ~ मिलित २६८५ ।
जम्हुआनी जम्हाई ली : ~ अरसाइ मोरि तनु परि० १/७७ ।
जयंती ऋषभ देव की पत्नी तथा काशी की पुत्री : कियो ~ सौं व्याह ५/२ ।
जय[1] विष्णु के एक पार्षद का नाम जिसके भाई का नाम विजय था : ~ अरु विजय पारषद दोइ ९/१५ ।
जय[2] जीत तउ अपनी ~ जानत २३९८ । ~ **करौ** जीतो, विजय करो : तामैं बैठि सुरनि ~ — ७/७ । ~ **पाइ** विजय प्राप्त की . गढ कैं बल असुरनि ~ — ७/७ ।
जयकार जय की ध्वनि : (देवता) जय - ~ करत, मानत रति ६ ।
जयति १. जय जय कार : सारदा नारद सुजस उच्चार ~ सुनावहीं ४१८६ । २ जय हो : ~ नदलाल जय-जयति गोपाल ९८० ।
जय-धुनि जय जयकार की ध्वनि : सिद्ध-गधर्व ~ उचारी ७/६ ।
जय-विजय जय और विजय, विष्णु के दो द्वारपाल/पार्षद • ~ हुते ३/११ ।
जये उत्पन्न हुए • दि मनु ~ ३/८ ।
जयौ[1] उत्पन्न हुई : सुभ जवारि ~ ३९१७ ।
जयौ[2] जीता : रावन अजित ~ २८१५ ।
जयौ[3] जिलाया हो : मानौं उनही पोषि ~ री १८८८ ।
जर[1] जल : जब अति ~ जैहै तनु ३३५३ ।
जर[2] वृद्ध : वाल किसोर ~ जुग मो २/६० ।
जर[3] मूल, जड • ~ सहित अरराइ कै (गिरे) ३८७ ।
जरई जल सकती है सो क्यों पावक ~ ९/९९ ।
जरत १ जलता है : विरह अगिनि तन ~ निसिदिन ३६१९ । २ जलती हुई : दुरि ~ हम देखे ९/१०५ । ३ जलती है : काम पावक ~ छाती ३९८३ । ४ जलते : ~ रहत पते पर २३६६ । ५ जल उठने पर : मानो दव द्रुम ~ आन भइ २८२६ । ६ जलने से : मोकौं ~ राखि प्रभु लीजे

९/५। ७ जलने लगती है : पितु दलपति लखि उदित ~ जनु सा० ल० २५। ८. जल रहा हूँ : ~ ज्वाला गिरत गिरि तैं १/१०६। △ ~ **माँझ घृत नायौ** जलते मे घी डाला और अधिक प्रज्वलित किया • मै अजान अकुलाइ अधिक लै ~ — १/१५४।

जरति जल रही हैं : इक हम ~ बिरह की जारी ३९३०। ~ **बिरह** विरह से जल रही है ~ — सब बाम १०२४।

जरति १ जलती हुई : रे सुनि मूढ ~ अवलनि कौ ३८०१। २ जलने लगती है : कबहुँक बिरह ~ अति व्याकुल २४९८। ३. जल रही : तुम इहाँ वह उहाँ ~ है २८१०। ४ जल रही हूँ : इक रिस ~ मनहिं मन अपनै २७५६। ~ **महाँ तैं** अत्यधिक जलती है बैन न बदति और ~ — २७८८।

जरतौ जलता रहता • बिषय-अगिनि मैं ~ १/२०३।

जरद[1] पीली : तैसी ~ केसरि चटकारी २८७१।

जरद[2] एक पुष्प का नाम, सोन जुही : ज्यौं तमाल ढिग तरु सुभ सुमन है ~ कौ ११५०।

जरन जलने . ~ नहिं दीन्हौ १/११६।

जरनि १ जलन • गोबिंद बिनु कौन हरै नैननि की ~ ३३४४। २. व्यथा, पीडा : हृदय की कबहुँ ~ घटी १/९८। ~ **ठई** जलन के रहते : सूर प्रभु गए तीर जमुना, काम ~— २७५७।

जरनी १ आग सी बात कैं कहत तोहिं लगति ~ ६९८। २ विरहाग्नि • उपजी बिरह तन ~ ९/७३।

जरहु जल जाये कोमल नयन ~ जिनि डॉटी २५९।

जरा[1] वृद्धावस्था ने : हा जदुनाथ ~ तनु ग्रास्यौ १/२९८।

जरा[2] एक राक्षसी, पौराणिक कथा के अनुसार जरासंध अपनी माँ के पेट से दो भागो मे विभक्त उत्पन्न हुआ, जरा ने उसके दोनो टुकडो को जोड दिया था देति असीस ~ देवी कौ ३३५९।

जराइ[1] १ जडाकर : (चौकी) रतन ~ खचाई १०५५। २ जडी हुई पहुँची रतन ~ १३३। ~ **कौ टीकौ** जडाऊ टीका : मोतिनि माल ~ — १५४०।

जराइ[2] जलाकर . लक ~ छार जब कीनी २२१।

जराई जला दी • पल मैं लक ~ १४०।

जराउ जडाऊ : उदित ~ पच तिय रबि ससि २४६५।

जराऊँ जलाऊँ . केती भस्म ~ ३५३८।

जराऊ जडाऊ : बहु नग जरे ~ अँगिया १४७५।

जराय जलाकर . कासी जाय ~ छिनक मे गये द्वारका फेर सारा० ७०९।

जरायो जलाया • कामदेव प्रगटे हरि के गृह पहिले रुद्र ~ सारा० ६८९।

जरायौ १ जला डाला : कोप-दृष्टि करि तिन्है ~ ९/९। २ जलाना • चहुँधा चहत ~ ५९२। ३. दाह सस्कार किया : अपनै कर करि ताहि ~ ९/६६। ४ तप्त रहा . इहिं झुर-जरनि ~ १/१५४।

जराल जडाऊ : सुन्दर कुण्डल हेम ~ ४७३।

जराव जडाऊ : जीन जरित ~ पाखरि लगी ४१८६।

जरावत १ जलाता है कोउ अगिनि ~ ५९५। २ जलाता है, पीडित करता है : हमकौं निसि दिन मदन ~ १३४७।

जरावन १. जलाने छतियाँ बिरह ~ की परि० १/१७७। २ जलाने के लिए : तोहिं असुर-कुल सहित ~ ९/१३१।

जराव-फूल-दुति कर्ण-फूल के जडाऊ फूलो की चमक खुभिनि ~ यौं २१८४।

जरावहु जलाओ तच्छक कुट्टम समेत ~ १२/५।

जरावै जलाता है, पीडित करता है . अब मोकौं नित बिरह ~ २१०७।

जरासंध बृहद्रथ का पुत्र और कस का श्वसुर, जो अपनी माँ के पेट से दो भागों मे विभक्त जन्मा था, जरा नामक राक्षसी ने (इसके) दोनों टुकडो को जोडा था इसीलिए इसे जरासध कहा जाता है : ~ पै जाय पुकारी सारा० ५९६।

जरासंधहू जरासन्ध भी : ~ हाँ तैं पुनि निज देस सिधार्‌यौ ४१६३।

जरि[1] १ जलकर : क्यौं न होइ ~ छार ९/८३। २ जल अब न देह ~ जाइ ४०५६।

जरि[2] जड (कर) . बहु बिधि ~ करि जराउ ,ल्याउ रे जरैया ४१।

जरित जड़े हुए : थार कटोरा ~ रतन के १२१३।

जरि-बरि जल भुनकर ~ भई अँगीठी ३६७२।

जरिया जडा गया हो ज्यौं, मरकत मनि कचन मैं ~ ६८८।

जरियै जलेगी 'सूरदास' प्रभु मिलत बहुत सुख, बिरह स्वास कत ~ ४०९३।

जरियौ जल गये उलटि पवन जब भावर ~ १/२२१।

जरिहै भस्म हो जायेगा ~ लक कनकपुर तेरौ ९/७९।

जरिहौ जल जाओगी : परसत ही ~ १३४२।

जरी जली हुई है इक हम ~, जरे पर जारत ३९०४।

जरी[1] १ जल गई सुनत अतिहिं ~ ३९३२। २ जल गई • लका सकल ~ ९/९८। ३. जल रही हू मदन अगिनि भरी बिरह की ज्वाल ~ १३६७। ४ जल रही हैं अब इहि बिरह ~ ३७९२। ५ जली हुई : 'सूरदास' प्रभु बिरह ~ है ३९३८।

जरी[2] जडी-बूटी . सूरदास मनु ~ सजीवनि ९/८०।

जरी[3] जडी हुई : खुभी जराइ ~ है २०५५।

जरुवानी जीरा मे भूनी सूरठि मीठी मठ ~ परि० १/१५३।

जरे १ जल गये • ठाढे क्यौं न ~ ३२१०। २ जल गये हैं • कहति कहा ये घरनि ~ १६३६। ३. जडे रह गये : दधि सुत-काज ~ २३०७। ४ जलेगा हा : उनकैं क्रोध ~ लका

पति ९/७७ । △ ~ ऊपर लौन लावहि दुखी को और दुःख पहुँचाते हैं : ~ — कौन तिनतैं बावरे ३८६५ ।

जरे² जड़े हुए : मनि कचन के चक्र ~ ई १५४९ ।

जरैं १. जल रहे हैं इन्द्री जीव ~ ३८२४ । ~ **बरैं** जल-बल जायें : दीठि लगावति कान्ह कौ ~ — वे आँखि १४६१ ।

जरै¹ १. जल जाये : ऐसी उलटी रीति ~ १३१७ । २ जलकर : ~ देह जु राख ३८३८ । ३ जलता था नामहिं लेत ~ १/८२ । ४ जलता ही रहता है : फिरि फिरि जठर ~ १/३५ । ५ जलता है . सुनि सुनि हृदै ~ ३९२१ । ६ जल रही हो : तू काहे कौं रिसनि ~ २५६९ । ७ प्रज्वलित कर दे : जल मैं अगिनि ~ १/१०५ । △ ~ **मरै** जलता मरता है जोगी ~ — करि सीमी ३६८९ ।

जरै² ईर्ष्या करे जो कोउ कहै ~ कछु अपनैं ३५३३ ।

जरैगौ जल जायेगा करहि छुवत तुव जोग ~ ३६१९ ।

जरैया नग जडने का काम करने वाला, कुन्दनसाज . बहुविधि जरि करि जराउ, ल्याउ रे ~ ४१ ।

जरौं १. जलता हूँ गर्व-वचन सुनि हृदय ~ १५२२ । २. जलती रहती हूँ : कलप वर विरहा अनल ~ १६६५ । ३. जल जाऊँ . वरु ताकी ज्वाला ~ २८२८ । ४. जले यह दुख कौन ~ ३५५१ ।

जरौंगी जलूँगी, भस्म हो जाऊँगी हौं तव सग ~ ०/३० ।

जरौ १. जलते हुए देखन चहौ ~ ९/९८ । २ जल रही है . बिरहिन योंहि ~ ३७३५ ।

जर्यौ¹ १. जल गया · नृप सुटच्छिन ~ ४०७८ । २ जले जा रहे हैं तेरैं हठ जात ~ २८१४ । ३. तिलमिला उठा रावन क्रोध ~ ९/१४४ ।

जर्यौ² जडा हुआ : ससि फूल अति लसत नग ~ २१८९ ।

जल १. पानी, जल । २. वारि, वार, द्वार वार वार झाँकन ~ अपनौ सा० ल० ७६ । ~ **की ढरनि ढरी** जल के प्रवाह के समान चल पडी ~ — १००० । ~ **पर्यौ हुतासा** जैसे प्यासे को जल मिल जाय छमा भए ~ — ९५० । ~ **भरि-भरि** आँसू भर भर कर : लागे लै नैनन ~ — २८६ । △ **तरंग** ~ **न न्यारौ** जल और लहर का सम्बन्ध घनिष्ठ होता है सूर बन बसै, घरहु मैं बसै, सग ज्यौं — ~ — १९१९ ।

जल-कन-काँति जल विन्दुओं की काति . झलकत ~ १८३० ।

जल-कारी श्याम जल वाली : वीच वढी जमुना ~ ११ ।

जलकुंभ जल मे भरा घडा दिन दस लौं ~ साजि सुचि ९/५० ।

जल के सुत कमल · 'सूरदास' प्रभु ~ ज्यौं ३६४० ।

जलचर मीन ~ जल सुत करि बिंव फल है सा० ल० ५० ।

जलचर जा सुत सुत मत्स्योदरी के पुत्र (व्यास) के पुत्र (शुकदेव) शुक, तोता . ~ सी नासा सा० ल० ३१ ।

जलचरी मछली · हम तैं भली ~ बपुरी ३७२९ ।

जलचारि जलचर (मगर-मच्छ) सूम स्वास सरोज लोचन डुलनि जनु ~ २५७५ ।

जलज कमल बिलसत सुधा ~ आनन पर ४१७ ।

जलज-जीत कमल को जीतने वाले, अत्यधिक सुन्दर · नैना तेरे ~ है ७१८ ।

जलजनि कमलों मे घट दामिनि, ~ हँसि दीन ३८६७ ।

जलज-नीत कमल नयन श्री कृष्ण ~ हौं आज निहारे सा० ल० ९१ ।

जलज-सुत के सुत कमल के पुत्र (ब्रह्मा) उनके पुत्र = नारद . ~ की रुचि हरैं भई हित की हानि २०८६ ।

जल-जाए जल से उत्पन्न, कमल लोचन मनहु जुगल ~ १०४ ।

जलजात कमल रवि बिनुही ~ ३९२२ ।

जल जातक कमल अचरज सुभग वेद ~ २४६५ ।

जल जातनि कमलों मे एउ बसत निसि नव ~ ३७६० ।

जलजा-सुत सीपी का पुत्र, मुक्ता, मोती ठाढी ~ कर लीनें सा० ल० ७२ ।

जल-झारी जल-पात्र, सुराही ~ भरि लाइ ६०९ ।

जल-थल जल और थल, सर्वत्र · जहाँ तहा ~ अवतारा ९५१ ।

जलद बादल मनौ ~ पर दामिनी की कला २०३३ ।

जलधर मेघ, बादल : नव ~ पर इद्र चाप १३६९ ।

जलधार १ जल की धारा मे : ज्यौं ~ फिरै तृन नाहीं २२१६ । २. जलधारा बनाने लगी . सुख मक्ति ~ ४१६२ । ३ हल्की वर्षा : सरद जलद अति मद, करत मनु कहू-कहू ~ ११३६ ।

जल-धारा अश्रु-धारा · मोह-मगन लोचन ~ ५/९२ ।

जलधारी जल को धारण करने वाले, बादल नैन भए ~ १/११८ ।

जलधि १. समुद्र यह सुनि स्याम राम दोउ मिलि गए ~ के बीच सारा० ५४० । २ समुद्र मे ~ जान देति ६५३ । ~ **मध्य बिहार** समुद्र के बीच में क्रीडा कर रहे हैं : बाहु दड भुजग मानौ ~ — १८२० ।

जलधि तात समुद्र का पुत्र, विष ~ तिहि नाम कठ के तिनकै पख मुकुट सिर भ्राजत १८०१ ।

जलधि बूँद समुद्र की बूँद ~ ज्यौं जलधि समाई ८८५ ।

जलधि सुत समुद्र के पुत्र, चन्द्रमा : ~ के सुत की रुचि करि २०८६ ।

जलनिधि समुद्र : उठैं लहर ~ की १/२१३ ।

जलपति भूपन जल = गो = नदी (यहाँ गगानदी) के पति

९/५ । ७ जलने लगती है : पितु दलपति लखि उदित ~ जनु सा० ल० २५ । ८. जल रहा हूँ · ~ ज्वाला गिरत गिरि तैं १/१०६ । △ ~ **साँझ घृत नायौ** जलते मे घी डाला और अधिक प्रज्वलित किया : मै अजान अकुलाइ अधिक लै ~ — १/१५४ ।

जरति जल रही हैं इक हम ~ बिरह की जारी ३९३० । ~ **बिरह** विरह से जल रही हे ~ — सब बाम १०२४ ।

जरति १ जलती हुई : रे सुनि मूढ ~ अवलनि कौं ३८०१ । २ जलने लगती है : कबहुँक विरह ~ अति व्याकुल २४९८ । ३ जल रही : तुम इहाँ वह उहाँ ~ है २८१० । ४ जल रही हूँ : इक रिस ~ मनहिं मन अपनै २७५६ । ~ **महाँ तैं** अत्यधिक जलती है बैन न बदति और ~ — २७८८ ।

जरतौ जलता रहता : बिषय-अगिनि मैं ~ १/२०३ ।

जरद[1] पीली : तैसी ~ केसरि चटकारी २८७१ ।

जरद[2] एक पुष्प का नाम, सोन जुही : ज्यौं तमाल ढिग तरु सुभ सुमन है ~ कौ ११५० ।

जरन जलने . ~ नहिं दीन्हौ १/११६ ।

जरनि १ जलन · गोबिंद बिनु कौन हरै नैननि की ~ ३३४४ । २. व्यथा, पीडा : हृदय की कबहुँ ~ घटी १/९८ । ~ **ठई** जलन के रहते : सूर प्रभु गए तीर जमुना, काम ~— २७५७ ।

जरनी १ आग सी बात कैं कहत तोहिं लगति ~ ६९८ । २ विरहाग्नि उपजी बिरह तन ~ ९/७३ ।

जरहु जल जाये . कोमल नयन ~ जिनि डाँटी २५९ ।

जरा[1] वृद्धावस्था ने : हा जदुनाथ ~ तनु ग्रास्यौ १/२९८ ।

जरा[2] एक राक्षसी, पौराणिक कथा के अनुसार जरासध अपनी माँ के पेट से दो भागो मे विभक्त उत्पन्न हुआ, जरा ने उसके दोनो टुकडों को जोड दिया था : देति असीस ~ देवी कौ ३३५९ ।

जराइ[1] १ जडाकर . (चौकी) रतन ~ खचाई १०५५ । २ जडी हुई पहुँची रतन ~ १३३ । ~ **कौ टीकौ** जडाऊ टीका : मोतिनि माल ~ — १५४० ।

जराइ[2] जलाकर : लक ~ छार जब कीनी २२१ ।

जराई जला दी पल मैं लक ~ १४० ।

जराउ जडाऊ : उदित ~ पच्च तिय रबि ससि २४६५ ।

जराऊँ जलाऊँ : केती भस्म ~ ३५३८ ।

जराऊ जडाऊ : बहु नग जरे ~ अँगिया १४७५ ।

जराय जलाकर : काशी जाय ~ छिनक मे गये द्वारका फेर सारा० ७०९ ।

जरायो जलाया · कामदेव प्रगटे हरि के गृह पहिले रुद्र ~ सारा० ६८९ ।

जरायौ १ जला डाला : कोप-दृष्टि करि तिन्है ~ ९/९ । २ जलाना · चहुँधा चहत ~ ५९२ । ३. दाह सस्कार किया : अपनैं कर करि ताहि ~ ९/६६ । ४ तप्त रहा . इंहिं जुर-जरनि ~ १/१५४ ।

जराल जडाऊ . सुन्दर कुण्डल हेम ~ ४७३ ।

जराव जडाऊ : जीन जरित ~ पाखरि लगी ४१८६ ।

जरावत १ जलाता है कोउ अगिनि ~ ५९५ । २ जलाता है, पीडित करता है : हमकौं निसि दिन मदन ~ १३४७ ।

जरावन १. जलाने छतियाँ बिरह ~ की परि० १/१७७ । २ जलाने के लिए : तोहिं असुर-कुल सहित ~ ९/१३१ ।

जराव-फूल-दुति कर्ण-फूल के जडाऊ फूलों की चमक . खुभिनि ~ यौं २१८४ ।

जरावहु जलाओ . तच्छक कुटुम समेत ~ १२/५ ।

जरावै जलाता है, पीडित करता है . अब मोकौं नित बिरह ~ २१०७ ।

जरासंध बृहद्रथ का पुत्र और कस का श्वसुर, जो अपनी माँ के पेट से दो भागों मे विभक्त जन्मा था, जरा नामक राक्षसी ने (इसके) दोनों टुकडो को जोडा था इसीलिए इसे जरासध कहा जाता है : ~ **पै** जाय पुकारी सारा० ५९६ ।

जरासंधहू जरासन्ध भी : ~ हाँ तैं पुनि निज देस सिधार्यौ ४१६३ ।

जरि[1] १ जलकर : क्यौ न होइ ~ छार ९/८३ । २ जल अब न देह ~ जाइ ४०५६ ।

जरि[2] जड (कर) . बहु विधि ~ करि जराउ ,ल्याउ रे जरैया ४१ ।

जरित जडे हुए . थार कटोरा ~ रतन के १२१३ ।

जरि-बरि जल भुनकर ~ भई अँगीठी ३६७२ ।

जरिया जडा गया हो ज्यौं, मरकत मनि कचन मैं ~ ६८८ ।

जरियै जलेगी . 'सूरदास' प्रभु मिलत बहुत सुख, बिरह स्वास कत ~ ४०९३ ।

जरियौ जल गये · उलटि पवन जब बावर ~ १/२२१ ।

जरिहै भस्म हो जायेगा ~ लक कनकपुर तेरौ ९/७९ ।

जरिहौ जल जाओगी . परसत ही ~ १३४२ ।

जरी जली हुई है . इक हम ~, जरे पर जारत ३९०४ ।

जरी[1] १ जल गई · सुनत अतिहिं ~ ३९३२ । २ जल गई लका सकल ~ ९/९८ । ३. जल रही हू मदन अगिनि भरी बिरह की ज्वाल ~ १३६७ । ४ जल रही है अब इहिं बिरह ~ ३७९२ । ५ जली हुई · 'सूरदास' प्रभु बिरह ~ है ३९३८ ।

जरी[2] जडी-बूटी सूरदास मनु ~ सजीवनि ९/८० ।

जरी[3] जडी हुई . खुभी जराइ ~ है १०५५ ।

जरुवानी जीरा मे भूनी सूरठि मीठी मठ ~ परि० १/१५३ ।

जरे १ जल गये . ठाढे क्यौं न ~ ३२१० । २ जल गये हैं कहति कहा ये घरनि ~ १६३६ । ३ जडे रह गये दधि सुत-काज ~ २३०७ । ४ जलेगा हो · उनकैं क्रोध ~ लका

पति ९/७७। △ ~ **ऊपर लौन लावहि** दुखी को और दु:ख पहुँचाते हैं : ~ — कौन तिनतैं बावरे ३८६५।

जरे[2] जड़े हुए : मनि कचन के चक्र ~ हैं १५४९।

जरैं १. जल रहे हैं इन्द्री जीव ~ ३८७४। ~ **बरैं** जल-बल जायें : दीठि लगावति कान्ह कौ ~ — वे आँखि १४६१।

जरै[1] १ जल जाये : ऐसी उलटी रीति ~ १३१७। २ जलकर : ~ देह जु राख ३८३८। ३ जलता था नामहिं लेत ~ १/८७। ४ जलता ही रहता है : फिरि फिरि जठर ~ १/३५। ५ जलता है . सुनि सुनि हृदै ~ ३९७१। ६ जल रही हो • तू काहे कौ रिसनि ~ २५६९। ७ प्रज्वलित कर दे : जल मैं अगिनि ~ १/१०५। △ ~ **मरै** जलता मरता है . जोगी ~ — करि सीसी ३६८९।

जरै[2] ईर्ष्या करे जो कोउ कहै ~ कछु अपनैं ३५३३।

जरैगौ जल जायेगा करहि छुवत तुव जोग ~ ३६१९।

जरैया नग जड़ने का काम करने वाला, कुन्दनसाज : बहुविधि जरि करि जराउ, ल्याउ रे ~ ४१।

जरौं १. जलता हूँ • गर्व-वचन सुनि हृदय ~ १५२०। २. जलती रहती हूँ : कलप वर विरहा अनल ~ १६६५। ३. जल जाऊँ . वरु ताकी ज्वाला ~ २८२८। ४. जले यह दुख कौन ~ ३५५१।

जरौंगी जलूँगी, भस्म हो जाऊँगी हौं तव सग ~ २/३०।

जरौ १. जलते हुए : देखन चहौ ~ ९/९८। २. जल रही हैं • विरहिन यौंहि ~ ३७३५।

जर्यौ[1] १. जल गया . नृप सुदच्छिन ~ ४२०८। २ जले जा रहे हैं तेरैं हठ जात ~ २८१४। ३. तिलमिला उठा रावन क्रोध ~ ९/१४४।

जर्यौ[2] जड़ा हुआ : ससि फूल अति लसत नग ~ २१८९।

जल १. पानी, जल। २. वारि, वार, द्वार : वार वार झाँकन ~ अपनौ सा० ल० ७६। ~ **की ढरनि ढरीं** जल के प्रवाह के समान चल पड़ीं ~ — १०००। ~ **पर्‌यौ हुतासा** जैसे प्यासे को जल मिल जाय . छमा भए ~ — ९५०। ~ **भरि-भरि** आँसू भर भर कर लागे लै नैनन ~ — २८६। △ **तरंग ~ न न्यारौ** जल और लहर का सम्बन्ध घनिष्ठ होता है • सूर वन वसै, घरहु मैं वसै, सग ज्यौं — ~ — १९१९।

जल-कन-काँति जल विन्दुओं की काति झलकत ~ १८३२।

जल-कारी श्याम जल वाली • बीच बढी जमुना ~ ११।

जलकुंभ जल से भरा घड़ा • दिन दस लौं ~ साजि सुचि ९/५०।

जल के सुत कमल 'सूरदाम' प्रभु ~ ज्यौं ३६४०।

जलचर मीन : ~ जल सुत करि विंव फल है सा० ल० ५०।

जलचर जा सुत सुत मत्स्योदरी के पुत्र (व्याम) के पुत्र (शुकदेव) शुक, तोता ~ सी नासा सा० ल० ३१।

जलचरी मछली : हम तैं भली ~ बपुरी ३७२९।

जलचारि जलचर (मगर-मच्छ) सूम स्वास सरोज लोचन डुलनि जनु ~ २५७५।

जलज कमल विलसत सुधा ~ आनन पर ४१७।

जलज-जीत कमल को जीतने वाले, अत्यधिक सुन्दर • नैना तेरे ~ हे ७१८।

जलजनि कमलों मे . घट दामिनि, ~ हँसि दीन ३८६७।

जलज-नीत कमल नयन श्री कृष्ण • ~ हौं आज निहारे सा० ल० ९१।

जलज-सुत के सुत कमल के पुत्र (ब्रह्मा) उनके पुत्र = नारद : ~ की रुचि हरैं भई हित की हानि २०८६।

जल-जाए जल से उत्पन्न, कमल लोचन मनहु जुगल ~ १०४।

जलजात कमल रवि विनुही ~ ३९२२।

जल जातक कमल अचरज सुभग बेद ~ २४६५।

जल जातनि कमलों मे • एउ वसत निसि नव ~ ३७६०।

जलजा-सुत सीपों का पुत्र, मुक्ता, मोती . ठाढी ~ कर लीनैं सा० ल० ७२।

जल-झारी जल-पात्र, सुराही ~ भरि लाइ ६०९।

जल-थल जल और थल, सर्वत्र जहाँ तहा ~ अवतारा ९५१।

जलद बादल मनौ ~ पर दामिनी की कला २०३३।

जलधर मेघ, बादल नव ~ पर इंद्र चाप १३६९।

जलधार १ जल की धारा मे : ज्यौं ~ फिरै तृन नाहीं २२१६। २. जलधारा बनाने लगी सूल मक्ति ~ ४१६२। ३ हल्की वर्षा . सरद जलद अति मद, करत मनु कहू-कहू ~ ११३६।

जल-धारा अश्रु धारा . मोह-मगन लोचन ~ ५/९२।

जलधारी जल को धारण करने वाले, बादल नैन भए ~ १/११८।

जलधि १. समुद्र यह सुनि स्याम राम दोउ मिलि गए ~ के बीच सारा० ५४०। २ समुद्र मे ~ जान देति ६५३। ~ **मध्य विहार** समुद्र के बीच में क्रीडा कर रहे हैं : बाहु दड भुजग मानौ ~ — १८२०।

जलधि तात समुद्र का पुत्र, विष • ~ तिहि नाम कठ के तिनक पग्स मुकुट सिर भ्राजत १८०१।

जलधि बूँद समुद्र की बूँद • ~ ज्यौं जलधि समाई ८८५।

जलधि सुत समुद्र के पुत्र, चन्द्रमा . ~ के सुत की रुचि करि २०८६।

जलनिधि समुद्र : उठै लहर ~ की १/२१३।

जलपति भूपन जल = गो = नदी (यहाँ गगानदी) के पति

(शकर) का भूषण, चद्रमा . ~ उदित होत ही सा०ल० २६ ।
जलपाई बोले : अलप अलप ~ १०८ ।
जलपान जल ग्रहण । ~ **बिबर्जित** निर्जल रहकर · निराहार ~ — ९८४ ।
जलपानै जलपान के दुखित बिना ~ ३७५० ।
जल-पुट जल से भरा वर्तन : ~ आनि धर्‍यौ ऑगन मैं १९० ।
जलपै बोले, कहे : को ~ काके पल लागैं ३१२५ ।
जल-प्रवाह जलधारा को : (मेरे) मोहन ~ क्यौं टार्‍यौ ९६४ ।
जलमति जल समझना जल मे थलमति थल मे ~ भई नृपति को जान सारा० ७६० ।
जल मैं जल (प्रलय) मे . नारायन ~ रहे सोइ ९/२ ।
जल मोचत ऑसू बहाये जा रहे हैं : अब काहैं ~ सोचत २९९६ ।
जल-रास जल-राशि : भरी भाव ~ री १३९ ।
जल-रासि जल की राशि हैं (सुन्दरता की) 'सूर' प्रभु स्याम ~ ब्रजबासिनी करति अनुमान नहि पार पावैं १९११ ।
जल-रासी बादलों को : देख्यौ यौं आए ~ ९४२ ।
जल-रिपु नाम आग के नाम वाली, कान्ति : ~ जान अब लागी ३२८३ ।
जलरुह १ कमल : ज्यौं ~ ससि रस्मि पाइकै ३५४ । २ कमल से : ~ हस मिले मसु नाचत ११९४ ।
जलवर्त्तक जलवर्त (प्रलय कालीन बादल का एक नाम) मेघ वर्त्त ~ सैन साजि ८५८ ।
जलसाई जल मे शयन करने वाला (विष्णु) · अच्युत रहत सदा ~ २८१६ ।
जलसारा सारा का सारा पानी, जल समूह : कहा भयौ ~ ८८१ ।
जल-सुत १ कमल · ~ हृदय लगावै सारा० ९६२ । २ मोती · राधे ~ कर जु धरे ११९२ । ३ समुद्र से उत्पन्न, चन्द्रमा : जलचर ~ कीर बिबफल है सा० ल० ५० ।
जल-सुत-गति जल के पुत्र मोती की गति (आभा) को : ~ तजि सिंधु-सुता पति भवन न भावै २७९६ ।
जलसुत प्रीतम-सुत-रिपु बाँधव आयुध जल से उत्पन्न (कमल) का प्रियतम (सूर्य) का सुत (कर्ण) का शत्रु (अर्जुन) का भाई भीम, भीम का हथियार गदा, गद, रोग : ~ आपुन बिलख भयौ री २७७९ ।
जलसुत बाहन १. चन्द्रमा का वाहन (हरिण) कुरग, बदरग : ~ देख बदन तुव सारा० ९५७ । २ जोंक का वाहन, देह : ~ सो जन धारत सारा० ९३९ ।
जलसुत बिंब जलसुत कमल (मुख) की परछाईं : ~ मनहुँ जल राजत २७७० ।
जल-सुत सुत ताकौ सुत बाहन ते तिरिया जलसुत (पक) का पुत्र (पकज) का पुत्र (ब्रह्मा) का वाहन, हस = जीव = बृहस्पिति उसकी स्त्री तारा = सितारे : ~ मिलि सीस दिए परि० १/९६ ।
जल-सुद्ध शुद्ध पानी (या जल और चमक) को : जा ~ निरखि सन्मुख है ९/११ ।
जलहि १ जल के : ~ निकट की बारु २७६० । २ जल मे . जमुना ~ अन्हात ४०६८ । ३ जल मे ही : जलज ~ धाइ रहै १०१ ।
जलहीं जल मे ही ~ हरि लै गोद कुदावत ४१६६ ।
जलहू जल (से) भी तुम निर्मल गगा ~ तैं १९६० ।
जलाजल (हथिनी की) झूल · मोतिनिहार ~ मानौ खुसी दंत झलकावै १४३९ ।
जलार्नव जल सागर ~ तज्यौ बिस्राम ९७१ ।
जलेब जलेबी को डुबाने का सीरा या बडी बडी जलेबियाँ बहुत ~ जलेबी बोरी २१३ ।
जवन यवन . नारद जाइ ~ सो भाष्यो सारा० ६०० ।
जवनिका यवनिका, नाटक का पर्दा भरम ~ फाटी २५४ ।
जवाब उत्तर लै ~ पहुँचावै १/१४२ ।
जवारि छोटे अकुर : प्रेम-पय सीच्यौ अहर निसि, सुभ ~ जयौ ३९१७ ।
जवास्यौ जवासा फिर फिर चरत ~ परि० १/१६३ ।
जस[१] कीर्ति, यश सूरदास प्रभु कौ ~ प्रगटयौ ९/१४० ।
जस[२] जैसा . ~ राजा तस प्रजा २७७५ ।
जस-छंद यशोगान, प्रशस्तिगान : सूर तीनौ लोक परस्यौ सुरसरी ~ ९/१० ।
जस-माता राधा की माता, माता कीर्ति ~ सुच सील जान कै सा० ल० ८४ ।
जसहि यश को : बार बार वा ~ बखानै १९२५ ।
जसी १. यश देकर (मानकर) सब तियनि मैं ~ २४११ । २ यशस्वी, प्रसिद्ध रूप गुन करि ~, प्रेमरासी २४४३ ।
जसुदाहू यशोदा भी सब ब्रज दुखी नद ~ ४२६२ ।
जसुमति-तन यशोदा की ओर रोहिनि चितै रही ~ ३९५ ।
जसुमति-पय-पान यशोदा के दूध का पान प्रीति कैं हेतु ~ कियौ २०१७ ।
जसूस जासूस, गुप्तचर : ऊधौ मधुप ~ देखि गयौ ४२६७ ।
जसोइ यशोदा बलि गइ जननि ~ १४८ ।
जसोदानदन यशोदानदन, कृष्ण जिहि उर बसत ~ ३५४५ ।
जसोमति, जसोमती यशोदा कहत ~ माइ ४५५ ।
जसोव, जसोवै यशोदा बधन छोरि ~ ३४६ ।
जहँ जहाँ : गयौ तहाँ ~ नृप कौ मदिर ९/८ ।
जहँई जहाँ नद गोप सब राखे ~ ३१०९ । ~ **कौ तहाँ** ज्यों जहाँ था वहीं रह गया · नैन अमीन, अधर्मिनि कैं बस

~ — १/६४। ~ जहँ जहाँ-जहाँ ~ — जाउँ तहाँ डर लागत ११०४।

जहँ-तहँ १ इधर-उधर जहाँ-तहाँ : रहै बैठे ~ सब गैंया २४५। २. सर्वत्र ~ व्यापक पूरन सम हौ ९१५।

जह यह : को ~ कौतिक करै और सा० ल० ७८।

जहतिया भूमिकर या लगान वसूलने वाला, अमीन : मन, महतो करि कैद अपनै मैं, ग्यान ~ लावै १/१४२।

जहर, जहरि जहर, विष · माती भई ~ ७५०।

जहरमई विषैली (वाणी) : वोलत ~ सा० ल० ५१।

जहाँ तहँ इधर-उधर, जहाँ-तहाँ : संतत फिरत ~ वासन ८६२।

जहाज पोत। △ ~ **को पंछी** असहाय जीव . जैसे उडि ~ — फिरि जहाज पर आवै १/१६८। **ताके भरे** ~ (वस्त्रों का) ढेर लगा दिया : पूरे चीर भीरु तन-कृष्ना, — ~ १/२५५।

जहाजनि जहाज की : फिरि फिरि सरन ~ ३१५८।

जहीं जहाँ भी : जामिनि होति ~ ३५७१। ~ **तहीं** जहाँ-तहाँ . खेलत डोलति ~ — १७०९।

जावनि जघाओं के : बिना जोर अपनी ~ के २८१२।

जाँचक भिक्षुक। △ ~ पै **जाचक कह जाँचै** भिक्षुक से भिक्षुक क्या माँगे ~ — जौ जाँचै तौ रसना हारी १/३४।

जाँचत १. माँगता है · ~ कन कन निर्धन । २. माँगते : और सुमन सौं मधु ~ हौ ४०१४ । ३ माँगते हैं . तदुल पुनि पुनि ~ १/३१। ४ याचना करता सूर ~ है १/१७।

जाँचति याचना करती : हौं हरि-विरह जरी ~ हौं ८०५।

जाँचन याचना करने, माँगने : नद पौरि जे ~ आए ३२।

जाँचि माँगकर : सु तौ ~ जन आयौ १/२१।

जाँचे १ माँगता है : चातक उदक और जौ ~ ३७५९। २ माँगा . मृतक सुत ~ १/७। ३. याचना की ~ सिव-विरंचि सुरपति सब ९/६।

जाँचै माँगता है . जो ~ तौ रसना हारी १/३४।

जाँच्यौ माँगा जिन जौ ~ सोइ दीन २४।

जांबवती जाम्बवती, जाबवान (सुग्रीव के मन्त्री) की कन्या जिसका विवाह कृष्ण के साथ हुआ था · ~ अरपी कन्या भरि मणि रासी समुहाय सारा० ६४९।

जांबवान सुग्रीव का एक मन्त्री ~ महाबली उजागर सिंह मारि मणि लीन्ही सारा० ६४५।

जाँहि १. जाँय ~ घर झख मारि १५५५। २ जाते हैं : दच्छ ग्रेह हम ~ ४/५।

जा[1] १. जिस : ~ कारन तू छोरति नाहीं ३५४। २ जिसके : ~ लायक जो वात होइ सो ३८१०।

जा[2] जाओ . हँसत कह्यौ घर ~ री १७०५।

जाइ चले जाएँ : बरु ये प्रान ~ ऐसैं ही ३५६३।

जाइ १ जाकर : ~ मिलौ कोसल नरेस सौं ९/११५। २ जाता है : चलत बार कोउ सग न ~ ७/२ । ३. चली जायेगी छूटे देह ~ सरिता तजि ९/४१ । ४ जाती है : कछु इक विषय भोग मैं ~ ७/२। ५ जाते थे, जाया करते थे : जो न देहि भूखो रहि ~ ५/३। ६ जाते हैं : मीठी लगे सराहत ~ ४७०। ७ जाना : छाडि जनि कहुँ ~ ९/६०। ८. जाये : आजु बन कोउ वै जनि ~ २०। ९ जायेगी तवै तौ वनि ~ १/१२६। १० जा सकता . सो हित कह्यौ न ~ ३१००। ११. किया जा सकता है : कार्य बरन्यो ~ ८३२। १२ जा सकता है : कैसे रोकौ ~ ३६७६। १३ बीत जाती है : आधी तौ सोवत ही ~ ७/२। १४ बीत रहा है : निसि बासर सम ~ ९/८३। १५ भग हो जाती है : ज्यौं मरजादा ~ सुपत की २३१६। ~ **परी न कछु कही** कुछ कहा नहीं जा सकता : ~ — १७९४ । ~ **फेरी** ध्वनि गुजा दी आन रघुनाथ की ~ — ९/१३८। ~ **बसावै** . निवास पायेगा . सुरपुर ~ — ९/१५२।

जाइगी जायेगी . अवहिं तैं कहाँ तू ~ री १९६७।

जाइगौ जायेगा . कैसे तप निरफल हि ~ १३४८।

जाइयै चला जाय : चलहु सखी चलि तहा ~ २८६१।

जाइयौ जाओ : बारक ~ मिलि माधौ ३२३२।

जाइहि हो जायेगा : भीजि विनसि ~ छिनु भीतर २५८८।

जाइहौ जाओगे : ~ अब कहाँ ४२२१।

जाई[1] १. जाकर : गेंद परी काली दह ~ ५३५। २ गया, छोडा : पै कैकई-हठ नहिं ~ ९/३०। ३ चला जाता है : ज्यौं उडि मधुप वेलि तजि ~ ३९२०। ४ चली जा : नारि राच्छसी ह्याँ तैं ~ ९/५६। ५. जाता : इती दूरि नर कोउ न ~ ४२६२। ६ जा सकना है (बनता है) · मुख कह्यौ न ~ २७२७। ७ जाती है : हँसि चितए छवि कही न ~ १८७६। ८ जा बसो · त्रिभुवन छाँडि अनत कहु ~ ७/४। ९ जा सकता है . (कस) लिख्यौ न मेट्यौ ~ ४। १० पहुँच सकती मनसा तहाँ न ~ ३९३१। ११ वर्णन किया है : सर सजोगता ~ सा० ल० १६ । १२ बीता करते हैं · बासर निसि ~ २३५३ । १३ जाते हैं, होते हैं सूरज बलि ~ ९/१६२।

जाई[2] १ उत्पन्न किया, जन्म दिया तोसी ~ बारि २०६५। २ उत्पन्न की हुई है, जाया है कैधौं यह मेरी ही ~ १७१३। ३ उत्पन्न हुई है इला सुता ताकें गृह ~ ९/२।

जाउँ १. जाऊँ दीजै विदा ~ घर अपनें १६। २ जाऊँगी : वै जहँ रहै तहाँ नहिं ~ २२५९। ३ जाती हूँ · जहँ जहँ ~ तहाँ डर लागत ११०४। ४ जा रहा हूँ : तुम कहँ ब्रज ~ ३१२१। ५ होती हूँ : लव उलटौ दौ ~ निहारी सा० ल० ८।

(शकर) का भूषण, चद्रमा ~ उदित होत ही सा०ल० २६।

जलपाई बोले . अलप अलप ~ १०८।

जलपान जल ग्रहण। ~ **बिबर्जित** निर्जल रहकर : निराहार ~ — ९८४।

जलपानै जलपान के . दुखित बिना ~ ३७५०।

जल-पुट जल से भरा वर्तन . ~ आनि धर्यौ ऑगन मैं १९०।

जलपै बोले, कहे : को ~ काके पल लागैं ३१२५।

जल-प्रवाह जलधारा को : (मेरे) मोहन ~ क्यौं टार्यौ ९६४।

जलमति जल समझना जल मे थलमति थल मे ~ भई नृपति को जान सारा० ७६०।

जल मैं जल (प्रलय) मे : नारायन ~ रहे सोइ ९/२।

जल मोचत ऑसू बहाये जा रहे हैं : अब काहैं ~ सोचत २९१६।

जल-रास जल राशि : भरी भाव ~ री १३९।

जल-रासि जल की राशि हैं (सुन्दरता की) 'सूर' प्रभु स्याम ~ ब्रजबासिनी करति अनुमान नहि पार पावैं १९११।

जल-रासी बादलो को : देख्यौ यौं आए ~ ९४२।

जल-रिपु नाम आग के नाम वाली, कान्ति : ~ जान अब लागी ३२८३।

जलरुह १ कमल : ज्यौं ~ ससि रस्मि पाइकै ३५४। २ कमल से : ~ हस मिले मनु नाचत ११९४।

जलवर्त्तक जलवर्त (प्रलय कालीन बादल का एक नाम) • मेघ वर्त्त ~ सैन साजि ८५८।

जलसाई जल मे शयन करने वाला (विष्णु) • अच्युत रहत सदा ~ २८१६।

जलसारा सारा का सारा पानी, जल समूह : कहा भयौ ~ ८८१।

जल-सुत १ कमल • ~ हृदय लगावै सारा० ९६२। २. मोती : राधे ~ कर जु धरे ११९२। ३ समुद्र से उत्पन्न, चन्द्रमा जलचर ~ कीर विवफल है सा० ल० ५०।

जल-सुत-गति जल के पुत्र मोती की गति (आभा) को . ~ तजि सिंधु-सुता पति भवन न भावै २७९६।

जलसुत प्रीतम-सुत-रिपु बाँधव आयुध जल से उत्पन्न (कमल) का प्रियतम (सूर्य) का सुत (कर्ण) का शत्रु (अर्जुन) का भाई भीम, भीम का हथियार गदा, गद, रोग : ~ आपुन विलख भयौ री २७७९।

जलसुत बाहन १. चन्द्रमा का वाहन (हरिण) कुरग, बदरग : ~ देख बदन तुव सारा० ९५७। २ जोंक का वाहन, देह : ~ सो जन धारत सारा० ९३९।

जलसुत बिब जलसुत कमल (मुख) की परछाईं : ~ मनहुँ जल राजत २७७०।

जल-सुत सुत ताकौ सुत बाहन ते तिरिया जलसुत (पक) का पुत्र (पकज) का पुत्र (ब्रह्मा) का वाहन, हस = जीव = बृहस्पिति उसकी स्त्री तारा = सितारे : ~ मिलि सीस दिए परि० १/९६।

जल-सुद्ध शुद्ध पानी (या जल और चमक) को : जा ~ निरखि सन्मुख है ९/११।

जलहिं १ जल के : ~ निकट की बार २७६०। २ जल मे : जमुना ~ अन्हात ४०६८। ३ जल मे ही : जलज ~ धाइ रहै १०१।

जलहीं जल मे ही . ~ हरि लै गोद कुदावत ४१६६।

जलहू जल (से) भी : तुम निर्मल गगा ~ तैं १९६०।

जलाजल (हथिनी की) भूल : मोतिनिहार ~ मानौ खुभी दत झलकावै १४३९।

जलार्नव जल सागर • ~ तज्यौ विस्राम ९७१।

जलेब जलेबी को डुबाने का सीरा या बडी बडी जलेबियाँ . बहुत ~ जलेबी बोरी २१३।

जवन यवन : नारद जाइ ~ सो भाष्यो सारा० ६००।

जवनिका यवनिका, नाटक का पर्दा भरम ~ फाटी २५४।

जवाब उत्तर . लै ~ पहुँचावै १/१४२।

जवारि छोटे अकुर : प्रेम-पय सींच्यौ अहर-निसि, सुभ ~ जयौ ३९१७।

जवास्यौ जवासा • फिर फिर चरत ~ परि० १/१६३।

जस[1] कीर्ति, यश सूरदास प्रभु कौ ~ प्रगट्यौ ९/१४०।

जस[2] जैसा • ~ राजा तस प्रजा २७७५।

जस-छंद यशोगान, प्रशस्तिगान : सूर तीनौ लोक परस्यौ सुरसरी ~ ९/१०।

जस-माता राधा की माता, माता कीर्ति . ~ सुच सील जान कै सा० ल० ८४।

जसहि यश को . बार बार वा ~ बखानै १९२५।

जसी १. यश देकर (मानकर) सब तियनि मैं ~ २४११। २. यशस्वी, प्रसिद्ध रूप गुन करि ~, प्रेमरासी २४४३।

जसुदाहू यशोदा भी सब ब्रज दुखी नद ~ ४२६२।

जसुमति-तन यशोदा की ओर रोहिनि चितै रही ~ ३९५।

जसुमति-पय-पान यशोदा के दूध का पान : प्रीति कैं हेतु ~ कियौ २०१७।

जसूस जासूस, गुप्तचर : ऊधौ मधुप ~ देखि गयौ ४२६७।

जसोइ यशोदा बलि गइ जननि ~ १४८।

जसोदानंदन यशोदानदन, कृष्ण . जिहि उर बसत ~ ३५४५।

जसोमति, जसोमती यशोदा • कहत ~ माइ ४५५।

जसोव, जसोवै यशोदा बधन छोरि ~ ३४६।

जहँ जहाँ : गयौ तहाँ ~ नृप कौ मदिर ९/८।

जहँई जहाँ नद गोप सब राखे ~ ३१०९। ~ **कौ तहाँ छयौ** जहाँ था वहीं रह गया • नैन अमीन, अधर्मिनि कैं बस

~ — १/६४। ~ जहँ जहाँ-जहाँ ~ — जाउँ तहाँ डर लागत ११०४।

जहँ-तहँ १ इधर-उधर जहाँ-तहाँ : रहै बैठे ~ सब गवैया २४५। २. सर्वत्र . ~ व्यापक पूरन सम हौ ९१५।

जह यह : को ~ कौतिक करै और सा० ल० ७८।

जहतिया भूमिकर या लगान वसूलने वाला, अमीन : मन, महतो करि कैद अपने मैं, ग्यान ~ लवै १/१४२।

जहर, जहरि जहर, विष : माती भई ~ ७५०।

जहरमई विषैली (वाणी) : बोलत ~ सा० ल० ५१।

जहाँ तहँ इधर-उधर, जहाँ-तहाँ : मैंतत फिरत ~ वासन ८६२।

जहाज पोत। △ ~ कौ पंछी असहाय जीव . जैसे उडि ~ — फिरि जहाज पर आवै १/१६८। ताके भरे ~ (वस्त्रों का) ढेर लगा दिया : पूरे चीर भीरु तन-कृष्ना, — ~ १/२५५।

जहाजनि जहाज की : फिरि फिरि सरन ~ ३१५८।

जहीं जहाँ भी : जामिनि होति ~ ३५७१। ~ तहीं जहाँ-तहाँ . खेलत डोलति ~ — १७०९।

जाघनि जघाओं के . बिना जोर अपनी ~ के २८१२।

जाँचक भिक्षुक। △ ~ पै जाचक कह_जाँचै भिक्षुक से भिक्षुक क्या माँगे ~ — जौ जाँचै तौ रसना हारी १/३४।

जाँचत १. माँगता है : ~ कन कन निर्धन । २. माँगते : और सुमन सौं मधु ~ हौ ४०१४ । ३ माँगते हैं तदुल पुनि पुनि ~ १/३१ । ४. याचना करता सूर ~ है १/१७।

जाँचति याचना करती : हौं हरि बिरह जरी ~ हौं ८०५।

जाँचन याचना करने, माँगने : नद पौरि जे ~ आए ३२।

जाँचि माँगकर : सु तौ ~ जन आयौ १/२१।

जाँचे १ माँगता है · चातक उदक और जौ ~ ३७५९। २ माँगा . मृतक सुत ~ १/७। ३. याचना की ~ सिव-बिरचि-सुरपति सब ९/६।

जाँचै माँगता है . जो ~ तौ रसना हारी १/३४।

जाँच्यौ माँगा . जिन जौ ~ सोइ दीन २४।

जाबवती जाम्बवती, जाबवान (सुग्रीव के मन्त्री) की कन्या जिनका विवाह कृष्ण के साथ हुआ था : ~ अरपी कन्या भरि मणि रासी समुदाय सारा० ६४९।

जांबवान सुग्रीव का एक मन्त्री ~ महाबली उजागर सिंह मारि मणि लीन्ही सारा० ६४५।

जाँहि १. जाँय ~ घर मख मारि १५५५। २ जाते हे · दच्छ ग्रेह हम ~ ४/५।

जा[1] १. जिस · ~ कारन तू छोरति नाहीं ३५४। २ जिसके : ~ लायक जो बात होइ सो ३८१०।

जा[2] जाओ · हँसत कह्यौ घर ~ री १७०५।

जाइ चले जाएँ . बरु ये प्रान ~ ऐसैं ही ३५६३।

जाइ १ जाकर : ~ मिलौ कोसल नरेस सौं ९/११५। २ जाता है : चलत बार कोउ सग न ~ ७/२ । ३. चली जायेगी छूटे देह ~ सरिता तजि ९/४१ । ४ जाती है : कछु इक विषय भोग मैं ~ ७/२। ५. जाते थे, जाया करते थे : जौ न देहि भूखो रहि ~ ५/३। ६ जाते हैं मीठौ लगे सराहत ~ ४७०। ७ जाना : छाँडि जनि कहुँ ~ ९/६०। ८. जाये : आजु वन कोउ वै जनि ~ २०। ९ जायेगी तवै तौ वनि ~ १/१२६। १० जा सकता : सो हित कह्यौ न ~ ३१००। ११. किया जा सकता है : कापै बरन्यौ ~ ८३२ । १२ जा सकता है : कैसैं रोकौ ~ ३६७६। १३ बीत जाती है · आधी तौ सोवत ही ~ ७/२। १४ बीत रहा है : निसि वासर सम ~ ९/८३ । १५ भग हो जाती है : ज्यौं मरजादा ~ सुपत की २३१६। ~ परी न कछु कही कुछ कहा नहीं जा सकता : ~ — १७९४ । ~ फेरी ध्वनि गुंजा दी आन रघुनाथ की ~ — ९/१३८। ~ वसादे . निवास पायेगा . सुरपुर ~ — ९/१५२।

जाइगी जायेगी . अवहिं ते कहाँ तू ~ री १९६७।

जाइगौ जायेगा : कैसे तप निरफल हि ~ १३४८।

जाइयै चला जाय : चलहु सखी चलि तहाँ ~ २८६१।

जाइयौ जाओ : बारक ~ मिलि माधौ ३२३२।

जाइहि हो जायेगा : भीजि विनसि ~ छिनु भीतर २५८८।

जाइहौ जाओगे : ~ अब कहाँ ४२२१।

जाई[1] १. जाकर : गेंद परी काली दह ~ ५३५। २ गया, छोड़ा : पै कैकई-हठ नहिं ~ ९/३०। ३ चला जाता है ज्यौं उडि मधुप बेलि तजि ~ ३९२०। ४ चली जा : नारि राच्छसी ह्याँ तैं ~ ९/५६। ५. जाता : इती दूरि नर कोउ न ~ ४२६२। ६. जा सकता है (बनता है) · मुख कह्यौ न ~ २७२७। ७ जाती है : हँसि चितए छबि कही न ~ १८७६। ८ जा बसो · त्रिभुवन छाँडि अनत कहुँ ~ ७/४। ९ जा सकता है . (कस) लिख्यौ न मेट्यौ ~ ४। १० पहुँच सकती मनसा तहाँ न ~ ३९३१। ११ वर्णन किया है : सर सजोगता ~ सा० ल० १६ । १२ बीता करते हैं · वासर निमि ~ २३५३ । १३ जाते हे, होते हे . सूरज बलि ~ ९/१६२।

जाई[2] १ उत्पन्न किया, जन्म दिया : तोसी ~ वारि २०६५। २. उत्पन्न की हुई है, जाया है · कैधौं यह मेरी ही ~ १७१३। ३ उत्पन्न हुई है इला सुता ताकैं गृह ~ ९/२।

जाउँ १. जाऊँ दीजै विदा ~ घर अपनें १६। २ जाऊँगी · वै जहँ रहै तहाँ नहिं ~ २२५९। ३ जाती हूँ · जहँ जहँ ~ तहाँ डर लागत ११०४ । ४ जा रहा हू : तुम कहँ व्रज ~ ३१२१। ५ होती हूँ : लव उलटौ दौ ~ तिहारी सा० ल० ८।

जाउ १ जाऊँ . ~ अबकैं मैं धावत ४२१०। २ जाओ . कह्यो याहि लै ~ उठाइ ७/२ । ३ जाता रहूँगा · मन लैहौं मे ~ १६१६। ४ जाये : लाज रहौ कि ~ १४५६। ५. अपूर्ण रह जाय, नष्ट हो जाय : वरु मेरी परतिज्ञा ~ १/२७४।

जाऊँ १ जाऊँ · कह्यौ ~ क्यों माता त्याग ७/८। २ जाता हूँ कृपा अब कीजिए बलि ~ १/१२८। ३ जाती हूँ : हौं बलि ~ छबीले लाल की १०५।

जाऊ १. जाऊँगा तिहिं सुनि कै घर ~ ३५। २ चला जाये : प्रान रहौ कै ~ ३६७०।

जाए १ उत्पन्न किये, पैदा किया सुक्र सुता पुनि द्वै सुत ~ ९/१७४। २ उत्पन्न हुए हैं : उनि कह्यौ, रिषि किरपा तैं ९/१७४।

जाकी जिसकी ~ नारि सदा नव जोवन ९/११७।

जाके जिसके तीनि लोक डर ~ काँपै ९/१०५।

जाके जिसके ~ दीन्हैं बाढहीं ८२३ । ~ **जाके** जिन जिनकी : ~ — गर्वाहिं हरी २४३४। ~ **तुम हो** जिसकी तुम प्रजा हो · कौन नृपति ~ — १५७८।

जा केरौ जिसका सीतल सिंधु जनम ~ ३३५४।

जाकैं १ जिसके ~ बिरह जतन ए कीन्हौ ४००९। २. जिसका ~ अस्त्र तिनहि तेहिं मार्‍यौ ३०४९। ३ जिसकी जैसी ~ कल्पना ३०४२। ४ जिसके यहाँ ~ रचि सौ भोजन कीन्हौ १/२४२। ५ जिसको · सूर सुख दुख नहीं ~ ३६८५। ६. जिसमे भाव-भगति है ~ ११७८। ~ **हाथ पेड फल ताजौ** जिसके हाथ मे पेड का ताजा फल हो ~ — सो फल लेहु कुमारि १०३३।

जाकै जाकर ~ जुगत प्रकासौ सा० ल० १०४।

जाको जिसका वेद पुराण रटत यश ~ तऊन पायत पार सारा० ६१३।

जाकौं १ जिसका अमिष है भोजन हित ~ ३८२६। २ जिसको निगम नेति नित गावत ~ २१८७।

जाकौ १. जिसके · ~ चरनोदक सिव सिर धरि १/१५ । २ जिसका ~ जस सब जग विस्तर्‍यो ६/४ । ३ जिसको, जिसे ~ मोच विचारत बरनत ३८६१। ~ **मन मानत है जासौं सो तहँई सुख मानै** जिसका मन जिमे मानता है वह वहीं सुख भी मानता है ~ — १३०४।

जाख यक्ष (कुल देवता भी) ~ न पूजन पायौ ३४६।

जाग[१] यज्ञ ता सेती तुम कीनौ ~ ९/२।

जाग[२] जागरण (ज्ञान) : अब समुझे भई ~ १६१६।

जाग[३] जागरण (जागने का भाव) : रूप ~ प्रकास २२६९।

जागत १ जागता आजु न सोवौं नद-दुहाइ रैनि रहौंगो ~ ४२०। २ जागती है धरतिं यहै निसि ~ ३५३०। ३ जागते ~ सोवत सपन स्याम घन ४०३१। ४ जागते हुए . चारि जाम ~ मोहिं बीते २६७६। ~ **परे अकुलाने** व्याकुल होकर जाग उठे जब वह रोवन लागी तब सब ~ — सारा० ७७८।

जागतहि जागते ही · रैनि मोहि ~ बिहानी २०८९।

जागर १ जागने से : सकल निसा के ~ २६७७। २ जागरण नागरि-~ राग रसे हौ २५०३।

जागरन जागना : निसि ~ करन मन चीत्यौ ९८४।

जागहु जागो ~ हो ब्रजराज हरी ४०४।

जागि १. जागकर . रैनि ~ प्रीतम कैं सग १६९४। २. जाग · ~ परैं कछु हाथ न आयौ १४७। ३. सचेत होकर : पूछति यह तब ~ ११०९।

जागियै जागो ~ प्रानपति रैनि बीती २०४०।

जागिहै जागने ही वाले हैं स्वामी मेरौ ~ ५७७।

जागी १. जग कर · ~ महरि, पुत्र मुख देख्यौ ४। २. जग गई हो सोवत तैं मनु ~ १९०९। ३ जागी, जागरण किया · सब रैनि ~ २७१५। ४ जाग उठी : सोवत तैं उठि ~ (देवकी) ४। **मीच** ~ मृत्यु जाग गई, मृत्यु आ गई · गटकि सित सौं रह्यौ — ~ ३०७३।

जागु जाग ~ जसोदा, तेरै बालक उपज्यो १४।

जागे १ जगा हुआ · निसि ~ जाने २४८९। २ जागते रहे : बाम सग स्याम त्रय जाम ~ २५००। ३ जाग उठे : और अग-छबि लोग ~ २२७१। ४ जागने के कारण · अरुण भये जु नैन सबहीं निसि ~ २१७७। ५. जागने पर · ~ तै अति दाइ ३६७६। ६. जागे . सकल निसि ~ के से नैन २६८०। ७. सचेत होकर · दान दियौ नहिं ~ १/६१।

जागैं जागते हैं . ~ वहै रीति पुनि ठानैं ४/१२।

जागै १ जागते हैं जब ~ तब मिथ्या जानै ११/४। २. जागे : प्रात भएँ जब ब्रह्मा ~ १२/४।

जागौं जागूँ · जौ ~ तौ कह उठि देखौं ३२५९।

जागौ जग जाओ, जागो ~ प्रान प्यारे जू सवारे की समै भई २०३८।

जाग्यौ १ जागा . अलि सावक सोइ न ~ री १३९। २ टल गया, टूट गया . सारदा, स्वामि, सिव ध्यान ~ १०६३। ३. सावधान हुआ · देखि महातम ~ ४।

जाचक याचक, भिक्षुक : बहुरौ फिरि ~ न कहाए ३२।

जाचक-गन याचक वृन्द आनदित विप्र सूत मागध ~ ३०।

जाचकनि याचकों को : बिप्र ~ दीन्हौ दान ६/५।

जाचत मागते हैं . ~ सूर स्याम अजन कौं २३६५।

जाचे मागने पर, याचना करने पर . यज्ञ करत बिप्रन मथुरा मे भीख न दीन्ही ~ सारा० ७४३।

जाच्यौ माँगा · जो ~ सोई तिन पायौ ३८।

जाजरि जर्जर : ~ नाव कुसग सन्हेरौ ३९९३ ।

जाट जाट (ठस बुद्धि वाले) को : ऐसे कुमति ~ सूरज कौ प्रभु १/२१६ ।

जाडनि जाडे से, ठढक से : पाप होत हैं ~ मारैं ७९९ ।

जात[1] १. जाता : न ~ मिटायौ ४/९ । २. बहा जाता हुआ : माखन ~ जानि नदरानी १८२ । ३. जाता है : इक आवत इक ~ बिदा ह्वै २५ । ४ जाती, बनती : सहि ~ न प्रभु सौं ५५६ । ५. जाती है, छूटती है तउ टेव नहिं ~ २३४६ । ६. जाते थे : यहै कहत तव ~ ३६५९ । ७ जाते हुए : धरौ ~ मेरे प्रानहिं ४१६९ । ८ जाते हुए ,का बह्यो ~ गहि हाथ १/२०८ । ९ जाते हैं फिरि फिरि ~ निरखि मुख छिन छिन २०७ । १० जाते हो : खेलन दूरि कत ~ २१० । ११ जा रहा हू दुख ~ मर्यौ १/१५६ । १२. जा रही है : दामिनि कौंधति ~ १२ । १३ नष्ट हो जाता है : गुन मेटे फल ~ ३८२७ । १४ नष्ट हो जाते हैं . अब ~ ताके सकल १/२२२ । १५ विता रहे हैं . वलि त्रास कैसें दिन ~ ९/६९ । १६. बीत जाना है . कहत कहत दिन ~ ३७१२ । १७ बीत जाती है : रजनी ~ गनत ही तारे ३९११ । १८ व्यतीत होता है : पलक कलप सम ~ २३४६ ।

जात[2] पैदा हुआ : रावन सौ नृप ~ न जान्यौ १/१८ ।

जातक बच्चा ~ जनै न पीर है कैसी ३९४९ ।

जातकर्म एक धार्मिक संस्कार जो हिन्दुओं मे वालक जन्म के अवसर पर होता है . ~ करि पूजि पितर सुर पूजन विप्र करायौ सारा० ३९२ ।

जातना १ कष्ट, पीडा तहाँ ~ बहु विधि पावै ३/१३ । २ कष्ट को : सुनि ~ कराल १/८९ ।

जातवेद स्वर्ण (के आभूषणों) ने : ~ सु मोहि मारी सा० ल० । २३ ।

जातरा यात्रा : वारक आवत कुटुंब ~ ३६९३ ।

जातहि पहुँचते ही : हम ~ वह उघरि परैगी १७२३ ।

जातहीं जाते ही : ~ उन लूटि पाई २३२९ ।

जातही जाते ही : ~ उन तुरत पकरे २२७१ ।

जाति १ जाती हैं . ~ माट मटुकी सिर धरिकै १४६० । २ जाती है : वही ~ मागत उतराई ३५९९ । ३ जा रही हैं : धाई ~ सबनि के आगे ६१२ ।

जाति[1] १. जा : ~ रही सखियनि सग दधि लै १७१७ । २ जाती है, बनता है . तुम्हारी सौं कछु कहि न ~ २६३९ । ३. जाती मथुरा ~ हौ बेचन दहियौ ३१३ । ४ जाती थीं, जा रही थीं : जब हम ~ चली जमुना कौ २०५० । ५ जाती है, जा रही है : चली जमुना ~ मारग १९२८ । ६. जाती हो, जा रही हो : छाँडि अकेलौ ~ ७९ । ७. जाते : ~ आवति हौं थकी २८१० । ८. जा रही हैं : हम अपने घर ~ ८१३ । ९ जा सकता : अब कैसें निरवारि ~ है १६५८ । १० जा सकती है : विथा या तन की कैसें ~ कटी १/९८ । ११ वीत रही है : जुग ज्यौं ~ घरी ९/६३ । निसि सब ~ टर्यौ सम्पूर्ण रात्रि वीत जाती है : — ~ — २७५० । ~ नाभि हृद झुंड फुंड झुड बाँधकर नाभि रूपी ताल की ओर उडी चली जा रही हो ~ — १७७५ ।

जाति[2] १. जाति : ~ महति पति जाइ न मेरी १६६३ । २ जाति को : धिक तिनकी है ~ २३१८ । ३ जातियाँ . सप्त सुरनि की ~ अनेक ११८० । ~ **अरु पाँति** जाति-पाँति कौन ~ — विदुर की १/१२ । ~ **जनावत** जातिगत विशेषताएँ प्रकट करती हो ~ — दै दै गारी १५८१ । ~ **दिखाई** जाति का स्वभाव दिखाया : मोकौं अपनौ ~ — ९२३ ।

जाति-बुद्धि जातिगत बुद्धि ~ इनकैं मन आई ।

जाती जाति है चातक की ~ ३६८१ ।

जातुधानि राक्षसी (पूतना) : ~ कुच-मर्दत तव १/२१५ ।

जातैं इससे : तरु भामिन वन ~ जानौ सा० ल० १०४ ।

जाते १ जाते थे : गाइ चरावन ~ १५४३ । २ जाते हुए : मधुवन मारग ~ ३१५३ । ३ व्यतीत होता था : छिनु ममान दिन ~ ४०३१ ।

जाते[1] १ जिससे : ~ दसरन पाऊँ २१०६ । २ जो : ~ अधिक तुम्हारै नैयाँ २४५ ।

जाते[2] चला जा रहा था . लीन्हौं भोग बहुत दिन ~ ८९५ ।

जातौ १ जाता : जम को त्रास सबै मिट ~ १/२९७ । २. जाता है : जो आयौ सो ~ १/३०२ ।

जात्र यात्रा . करी न ब्रज वन ~ १/२१६ ।

जादव यादव, अहीर . मूरख ~ जाति है ४०९५ ।

जादव कुल यदु परिवार : नए सखा जोरे ~ ३९७३ ।

जादवनि यादवों मे : ~ लै सु हरि दियौ लुटाइ ४१८३ ।

जादवपति यादवपति (श्रीकृष्ण) : सुनि मथुरा प्रकटे ~ ६ ।

जादवराइ, जादवराई यादवराज (श्रीकृष्ण) . ब्रज मैं ~ ४ ।

जादवराउ यादवराज (कृष्ण) : बाजे सखहि जानिहो, आए ~ ४१८८ ।

जादौ १ यादव : चले साजि बरात ~ कोटि छप्पन अति बली ४१८६ । २ यादवों ने : सब ~ मिलि हरि सौं यह कह्यौ ४१९१ ।

जादौ कुल यादव कुल, यदु परिवार . कुसल भाषि सब ~ की ४१६० ।

जादौ पति १ यादवपति (श्रीकृष्ण) : ऐसे भए उहाँ ~ ३७९९ । २ कृष्ण को . अब अदया देखति ~ की ३७६४ ।

जादौराइ श्रीकृष्ण चन्द्र : सबके ठाकुर ~ ४१७० ।

जान[1] १ जाने : औरनि जानि ~ मैं दीन्हौ ३१४ । २. जाने के

जाउ १ जाऊँ : ~ अबकै मैं धावत ४२१० । २ जाओ . कह्यौ याहि लै ~ उठाइ ७/२ । ३ जाता रहूँगा : मन लैहौं मै ~ १६१६ । ४ जाये : लाज रहौ कि ~ १४५६ । ५. अपूर्ण रह जाय, नष्ट हो जाय : बरू मेरी परतिज्ञा ~ १/२७४ ।

जाऊँ १. जाऊँ : कह्यौ ~ क्यौं माता त्याग ७/८ । २ जाता हूँ कृपा अब कीजिए बलि ~ १/१२८ । ३ जाती हूँ : हौं बलि ~ छबीले लाल की १०५ ।

जाऊ १. जाऊँगा तिहिं सुनि कै घर ~ ३५ । २ चला जाये : प्रान रहौ कै ~ ३६७० ।

जाए १. उत्पन्न किये, पैदा किया . सुक्र सुता पुनि द्वै सुत ~ ९/१७४ । २ उत्पन्न हुए हैं : उनि कह्यौ, रिषि किरपा तैं ९/१७४ ।

जाकी जिसकी : ~ नारि सदा नव जोबन ९/११७ ।

जाके जिसके . तीनि लोक डर ~ काँपै ९/१०५ ।

जाके जिसके ~ दीन्हैं बाढहीं ८२३ । ~ **जाके** जिन जिनकी : ~ — गर्थाहिं हरी २४३४ । ~ **तुम हो** जिसकी तुम प्रजा हो : कौन नृपति ~ — १५७८ ।

जा केरौ जिसका सीतल सिंधु जनम ~ ३३५४ ।

जाकैं १ जिसके . ~ बिरह जतन ए कीन्हौ ४००९ । २. जिसका ~ अस्त्र तिनहिं तेहिं मार्‌यौ ३०४९ । ३ जिसकी : जैसी ~ कलपना ३०४२ । ४ जिसके यहाँ ~ रुचि सौ भोजन कीन्हौ १/२४२ । ५ जिसको . सूर सुख दुख नहीं ~ ३६८५ । ६. जिसमे भाव-भगति है ~ ११७८ । ~ **हाथ पेड फल ताजौ** जिसके हाथ मे पेड का ताजा फल हो · ~ — सो फल लेहु कुमारि १०३३ ।

जाकै जाकर ~ जुगत प्रकासौ सा० ल० १०४ ।

जाको जिसका बेद पुराण रटत यश ~ तऊन पायत पार सारा० ६१३ ।

जाकौं १ जिसका अमिष है भोजन हित ~ ३८२६ । २ जिसको . निगम नेति नित गावत ~ २१८७ ।

जाकौ १. जिसके : ~ चरनोदक सिव सिर धरि १/१५ । २. जिसका · ~ जस सब जग बिस्तर्‌यौ ६/४ । ३. जिसको, जिसे ~ मोच्छ बिचारत बरनत ३८६१ । ~ **मन मानत है जासौं सो तहँई सुख मानै** जिसका मन जिसे मानता है वह वहीं सुख भी मानता है ~ — १३०४ ।

जाख यच्छ (कुल देवता भी) ~ न पूजन पायौ ३४६ ।

जाग[1] यज्ञ ता सेती तुम कीनौ ~ ९/२ ।

जाग[2] जागरण (ज्ञान) : अब समुझे भई ~ १६१६ ।

जाग[3] जागरण (जागने का भाव) : रूप ~ प्रकास २२६९ ।

जागत १ जागता आजु न सोवौं नद-दुहाइ रैनि रहौंगो ~ जागते : ~ सोवत सपन स्याम धन ४०३१ । ४ जागते हुए : चारि जाम ~ मोहिं बीते २६७६ । ~ **परे अकुलाने** व्याकुल होकर जाग उठे : जब वह रोवन लागी तब सब ~ — सारा० २७८ ।

जागतहिं जागते ही : रैनि मोहि ~ बिहानी २०८९ ।

जागर १. जागने से : सकल निसा के ~ २६७७ । २. जागरण नागरि-~ राग रसे हौ २५०३ ।

जागरन जागना : निसि ~ करन मन चील्यौ ९८४ ।

जागहु जागो : ~ हो ब्रजराज हरी ४०४ ।

जागि १. जागकर : रैनि ~ प्रीतम कै सग १६९४ । २. जाग · ~ परैं कछु हाथ न आयौ १४७ । ३. सचेत होकर : पूछति यह तब ~ ११०९ ।

जागियै जागो : ~ प्रानपति रैनि बीती २०४० ।

जागिहै जागने ही वाले हैं . स्वामी मेरौ ~ ५७७ ।

जागी १. जग कर : ~ महरि, पुत्र मुख देख्यौ ४ । २. जग गई हो सोवत तैं मनु ~ १९०९ । ३ जागी, जागरण किया · सब रैनि ~ २७१५ । ४ जाग उठी · सोवत तैं उठि ~ (देवकी) ४ । **मीच** ~ मृत्यु जाग गई, मृत्यु आ गई · गटकि सित सौं रह्यौ — ~ ३०७३ ।

जागु जाग · ~ जसोदा, तेरैं बालक उपज्यौ १४ ।

जागे १. जगा हुआ : निसि ~ जाने २४८९ । २. जागते रहे : बाम सग स्याम त्रय जाम ~ २५०० । ३ जाग उठे : और अग-छबि-लोग ~ २२७१ । ४ जागने के कारण : अरुण भये जु नैन सबहीं निसि ~ २१७७ । ५. जागने पर · ~ तै अति दाह ३६७६ । ६ जागे . सकल निसि ~ के से नैन २६८० । ७ सचेत होकर : दान दियौ नहिं ~ १/६१ ।

जागैं जागते हैं . ~ वहै रीति पुनि ठानैं ४/१२ ।

जागै १ जागते है जब ~ तब मिथ्या जानै ११/४ । २. जागे : प्रात भये जब ब्रह्मा ~ १२/४ ।

जागौं जागूँ · जौ ~ तौ कह उठि देखौं ३२५९ ।

जागौ जग जाओ, जागो · ~ प्रान प्यारे जू सबारे की समै भई २०३८ ।

जाग्यौ १ जागा · अलि सावक सोइ न ~ री १३९ । २ टल गया, टूट गया . सारदा, स्वामि, सिव ध्यान ~ १०६३ । ३. सावधान हुआ . देखि महातम ~ ४ ।

जाचक याचक, भिक्षुक : बहुरौ फिरि ~ न कहाए ३२ ।

जाचक-गन याचक वृन्द आनदित बिप्र सूत मागध ~ ३० ।

जाचकनि याचकों को : बिप्र ~ दीन्हौ दान ६/५ ।

जाचत मागते हैं : ~ सूर स्याम अजन कौं २३६५ ।

जाचे मागने पर, याचना करने पर : यज्ञ करत बिप्रन मथुरा मे भीख न दीन्ही ~ सारा० ७४३ ।

जाजरि जर्जर . ~ नाव कुसग सन्हेरौ ३९९३ ।
जाट जाट (ठस बुद्धि वाले) को • ऐसे कुमति - ~ सूरज कौ प्रभु १/२१६ ।
जाडनि जाडे से, ठढक से : पाप होत है ~ मारे ७९९ ।
जात[1] १. जाता : न ~ मिटायौ ४/९ । २ बहा जाता हुआ • माखन ~ जानि नदरानी १८२ । ३ जाता है • इक आवत इक ~ विदा ह्वै २५ । ४ जाती, बनती : सहि ~ न प्रभु सौं ५५६ । ५. जाती है, छूटती है . तउ टेव नहिं ~ २३४६ । ६ जाते थे : यहै कहत तव ~ ३६५१ । ७ जाते हुए : धरौ ~ मेरे प्रानहिं ४१६९ । ८ जाते हुए का . बहो ~ गहि हाथ १/२०८ । ९ जाते है फिरि फिरि ~ निरखि मुख छिन छिन २०७ । १० -जाते हो : खेलन दूरि कत ~ २१० । ११ जा रहा हू दुख ~ मर्यौ १/१५६ । १२. जा रही है : दामिनि कौंधति ~ १२ । १३ नष्ट हो जाता है : गुन मेटे फल ~ ३८२७ । १४ नष्ट हो जाते हे . अव ~ ताके सकल १/२२२ । १५ विता रहे हैं . बलि त्रास कैसें दिन ~ ९/६९ । १६. वीत जाना है : कहत कहत दिन ~ ३७१२ । १७ वीत जानी है • रजनी ~ गनत ही तारे ३९११ । १८ व्यतीत होता है : पलक कलप सम ~ २३४६ ।
जात[2] पैदा हुआ : रावन सौ नृप ~ न जान्यौ १/१८ ।
जातक बच्चा : ~ जनै न पीर है कैमी ३९४९ ।
जातकर्म एक धार्मिक सस्कार जो हिन्दुओं मे बालक जन्म के अवसर पर होता है : ~ करि पूजि पितर सुर पूजन विप्र करायौ सारा० ३९२ ।
जातना १ कष्ट, पीडा तहाँ ~ बहु विधि पावै ३/१३ । २ कष्ट को . सुनि ~ कराल १/८९ ।
जातवेद स्वर्ण (के आभूषणों) ने : ~ सु मोहिं मारी सा० ल० । २३ ।
जातरा यात्रा : बारक आवत कुटुंब ~ ३६९३ ।
जातहि पहुँचते ही : हम ~ वह उघरि परैगी १७२३ ।
जातहीं जाते ही : ~ उन लूटि पाई २३०९ ।
जातही जाते ही : ~ उन तुरत पकरे २७७१ ।
जाति १ जाती है : ~ माट मटुकी सिर धरिकै १४६० । २ जाती है : वही ~ मागत उतराई ३५९९ । ३ जा रही हैं . धाई ~ सवनि के आगे ६१२ ।
जाति[1] १. जा : ~ रही सखियनि सग दधि लै १७१७ । २ जाता है, बनता है : तुम्हारी सौं कछु कहि न ~ २६३९ । ३. जाती मथुरा ~ ही वेचन दहियौ ३१३ । ४. जाती थीं, जा रही थीं : जब हम ~ चली जमुना कौ २०५० । ५ जाती है, जा रही है : चली जमुना ~ मारग १९२८ । ६. जाती हो, जा रही हो : छाँडि अकेलौ ~ ७९ । ७ जाते : ~ आवति हौं थकी २८१० । ८. जा रही हैं : हम अपने घर ~ ८१३ । ९ जा सकता : अव - कैसैं निरवारि ~ है १६५८ । १० जा सकती है : विथा या तन की कैसैं ~ कटी १/९८ । ११ बीत रही है : जुग ज्यौं ~ घरी ९/६३ । **निसि सब ~ टर्यौ** सम्पूर्ण रात्रि वीत जाती है : — ~ — २७५० । **~ नाभि हृद झुंड** झुंड बाँधकर नाभि रूपी ताल की ओर उडी चली जा रही हो . ~ — १७७५ ।
जाति[2] १. जाति • ~ महति पति जाइ न मेरी १६६३ । २ जाति को • धिक तिनकी है ~ २३१८ । ३ जातियाँ सप्त सुरनि की ~ अनेक ११८० । **~ अरु पाँति** जाति-पाँति कौन ~ — विदुर की १/१२ । **~ जनावत** जातिगत विशेषताएँ प्रकट करती हो ~ — दै दै गारी १५८१ । **~ दिखाई** जाति का स्वभाव दिखाया : मोकौं अपनौ ~ — ९२३ ।
जाति-बुद्धि जातिगत बुद्धि ~ इनकैं मन आई ।
जाती जाति है चातक की ~ ३६८१ ।
जातुधानि राक्षसी (पूतना) : ~ कुच-मर्षत तव १/२१५ ।
जातैं इससे : तरु भामिन वन ~ जानौ सा० ल० १०४ ।
जाते १ जाते थे • गाइ चरावन ~ १५४३ । २ जाते हुए : मधुवन मारग ~ ३१५३ । ३ व्यतीत होता था : छिनु समान दिन ~ ४०३१ ।
जाते[1] १ जिससे : ~ दसरन पाऊँ २१०६ । २ जो : ~ अधिक तुम्हारे नैयाँ २४५ ।
जाते[2] चला जा रहा था : लीन्हीं भोग बहुत दिन ~ ८९५ ।
जातौ १ जाता . जम को त्रास सबै मिट ~ १/२९७ । २. जाता है : जो आयौ सो ~ १/३०२ ।
जात्र यात्रा • करी न ब्रज वन ~ १/२१६ ।
जादव यादव, अहीर • मूरख ~ जाति है ४०९५ ।
जादव कुल यदु परिवार . नए सखा जोरे ~ ३९७३ ।
जादवनि यादवों मे : ~ लें सु हरि दियौ लुटाइ ४१८३ ।
जादवपति यादवपति (श्रीकृष्ण) • सुनि मथुरा प्रकटे ~ ६ ।
जादवराइ, जादवराई यादवराज (श्रीकृष्ण) : ब्रज मैं ~ ४ ।
जादवराउ यादवराज (कृष्ण) • बाजै सर्जहिं जानिहौ, आए ~ ४१८८ ।
जादौ १ यादव : चले साजि बरात ~ कोटि छप्पन अति बली ४१८६ । २ यादवों ने : सब ~ मिलि हरि सौं यह कह्यौ ४१९१ ।
जादौ कुल यादव कुल, यदु परिवार • कुसल भाषि सब ~ की ४१६० ।
जादौ पति १ यादवपति (श्रीकृष्ण) : ऐसे भए उहाँ ~ ३७९९ । २ कृष्ण को : अब अदया देखति ~ की ३७६४ ।
जादौराइ श्रीकृष्ण चन्द्र : सबके ठाकुर ~ ४१७० ।
जान[1] १ जाने : औरनि जानि ~ मैं दीन्हौ ३१४ । २. जाने के

लिए : मधुबन-धेनु-चरावन ~ १२११ । ~ लगे व्यतीत होने लगे : हरि बिनु ~ — दिन ही दिन ४०२८ । लाग्यौ ~ जाने लगा, व्यर्थ ही कटने लगा : जनम ऐसैं — ~ ३२१२ ।

जान[2] १ जानकर, समझ कर . ~ साँवरी मूरत सा० ल० ३ । २. जान गए : सनकादिक नारद-मुनि-सिव बिरंचि ~ १०७४ । ३. जानता : मरन निज न ~ ९/९७ । ४ जानते हैं : जाकौ अत न ब्रह्मा ~ ४५ । ५. जानने वालो मे ~ सिरोमनिराइ १/८ । ६ जान पडी, समझ पडी . जल मे थलमति थल मे जलमति भई नृपति को ~ सारा० ७६० । ७ जान पाये आए अगस्त्य, नहीं तिन ~ ८/२ । ८ जाना, समझा : क्यौं हूँ होत न ~ ३२४८ । ९. जानो, समझो • तच्छक डसनहार मत ~ १२/५ । १० समझ मे . मेरे ~ गह्यौ चाहत हौ ३७०६ । ~ है जानकार है : तुम तैं को अति ~ — १८०० । △ ~ अजान जाने या बिना जाने बूझे ~ — नाम जो लेइ ६/४ ।

जानइ जानें • हम अहीर कह ~ ४०९५ ।

जानई १ जानता है . जाहि लगै सो ~ १३७२ । २ जानती है • कछु कुल धर्म न ~ १/४४ ।

जानकी विदेह की पुत्री और श्री रामचन्द्र जी की धर्मपत्नी, सीता : ~ मन मदेह न कीजै परि० १/२ ।

जानकी नाथ जानकी जी के पूज्य पति राम को . सब तजि भजो ~ ७/२ ।

जानकै समझकर : जस माता सुच सील ~ सा० ल० ८४ ।

जानत १ जानता . लेखौ कहुँ कहुँ ~ हौं १५९४ । २. जानता था : कोउ न ~ और २४७७ । ३ जानता हूँ तब कह्यौ मैं दौरि ~ २१३ । ४ जानता है : जाहि सबै जग ~ ४०२६ । ५ जानती : पच्छी एक सुहृद ~ हौं ९/८३ । ६ जानती है • ~ नानी नानन ३९४६ । ७ जानते तुम परबीन सबै ~ हौ ३५३७ । ८ जानते थे . अब लौं तुमही कौ ~ ६/४ । ९. जानते हुए भी . ~ पिता अचेत ९/३९ । १०. जानते हैं • निसि बासर नहि ~ री २२३६ । ११. विचार करते : ~ जाति न काहू की प्रभु ९/६७ । १२. समझते हो : तुम ~ पीर पराई ११८१ ।

जानति १ जानतीं • जो हम हाय आवते ~ ३८११ । २ जानती थीं . हम ~ बलि बौना ६०१ । ३ जानती है . हम तौ भोग जनम नहिं ~ ४००० । ४ जानती हो : जदपि टेव तुम ~ उनकी ३१७५ । ५. जानते हुए : ~ लोचन भरि नहिं देखे ३५५९ ।

जानति १ जानती स्याम चतुरई ~ हौं २८१८ । २. जानती थी मैं ~ कबहू बिसरौगी १७५० । ३. जानती हूँ : मैं उनकै गुन नीकैं ~ २१९४ । ४. जानती है तू मोहीं कौं मारन ~ १४२८ । अपनी सी बुधि मेरी ~ तू मेरी बुद्धि को अपनी बुद्धि जैसी समझती है : — ~, मैं उतनी कहँ पायी १८९९ ।

जानतौ जानता, समझ पाता • बिन जननी ~ सोऊ ३७३ ।

जानन[1] छोड, जाने : जोग दीजिए ~ ३९४६ ।

जानन[2] जानने जाकौ ~ वारी परि० १/२८ । ~ हुती ज्ञान नहीं था • ~ — थाह वा जल की ४०९७ ।

जानबि समझ पाओगे : मोहिं तोहि ~ नँदनदन १४८५ ।

जानबी जान पाएँगी हमैं तुम्है ~ नव जुवती दल पेलौ (जू) परि० १/१२९ ।

जानमनि ज्ञानियो मे श्रेष्ठ, ज्ञान मणि : अतिही चतुर सुजान ~ १९१५, उठौ प्राननाथ ! महा ~ जानकी २०३९ ।

जानराइ प्राणनाथ • ~ जिय जानि मानि सुख २९१८ ।

जान-सिरोमनि ज्ञानियो मे श्रेष्ठ, बुद्धिमान् • अति गभीर उदार उदधि हरि ~ राइ १/८ ।

जानहि १. जानेंगे . मोहिं दीन करि ~ ४१६९ । २ जानती है : धरि ~ कहि कौन ३६९० । ३. जान लें : अपनौ कृत येऊ जो ~ ९/९५ ।

जानहि जानती है : तू ~ सब चित की मेरी १६७० ।

जानही १ समझते है . द्रुम नव घर करि ~ १६२१ । २. समझे : ब्रजबासी कह ~ १६१८ ।

जानही जान सकते हैं : अनुभवी ~ बिना अनुभव कहा २/२२७ ।

जानहु समझो, जान लो : प्रकृति पुरुष एकहि करि ~ १६८७ ।

जानहुगी जानोगी • ~ तब मानहुगी मन २८२६ ।

जानहू १. जानती हो : कछु नेह प्रीति न ~ २८०० । २. जानो, समझो मोहिं ग्वार जिनि ~ १६१८ ।

जाना जाना, समझा . अजहूँ तैं न ~ ९/२३९ ।

जानि[1] जाने लगी : सँदेसनि बिरह बिथा क्यों ~ ३७७२ ।

जानि[2] १. जानकर : सती ~ अपनौ अपमान ४/५ । २ जान : ~ लई वृषभानु-सुता १७४७ । ३ जान गया है : ठगी सब जग ~ १६५६ । ४. जान बूझ कर : ~ यह मैं नहीं कीन्हौ ४८५ । ५ जानो, समझो . हरि गुरु एक रूप नृप ~ ६/५ । ६ समझ मे : अब परी यह ~ २३३० । ~ चीन्ह पहिचानि परिचित जान करके : ~ — मन, फूले अग न मात ४१८८ । ~ जानिराइ भाव समझने वाली का स्वामी (समझना चाहिए) ~ — सूर प्रभु छबि रामि नागर १८२० । ~ जानि समझ समझकर : ~ — सब मँगन भई हैं ३६९० । △ ~ बूझि जान बूझकर, सब कुछ समझते हुए ~ — मैं यह कृत कीन्हौ २०९८ ।

जानिबी जानूँगी, समझूँगी : जौ न इते पर मिलहु 'सूर' प्रभु तौ ~ जिए बिजिए ४११८ ।

जानिबौ १ जानना, समझना : सूर बिन मिलै प्रलै ~ ३२३५ । २ जानिए : यह मत सुक मुख ~ ११८० ।

जानिय जाने : ~ कहाँ कौन अपराधिनि २८२६ ।

जानियत १ जानता - कौन सहाइ, ~ नाहीं १/२६९ । २ प्रतीत होता है - चलत निमेष बिसेष ~ ६४० ।

जानियै जानना चाहिए - जे कर सूर जिनकौ नहीं ~ ४२२१ ।

जानियै १ (न) जाने - ना ~ बहुरि कब है है १२१६ । २ जानती हूँ : जाति गोत न ~ ४१८७ । ३ जानती हो, समझती हो : अब मोहिं ~ मो कीजै २८२३ । ४ जान लीजिए यह दृढ बात ~ प्रभु जु ९/१३७ ।

जानिहैं जानेंगे - मातु पितु बंधु, गुरुजन अबहीं ~ २०४० ।

जानिहै १ जानता होगा : निठुर और सुहृद मो मनहि मन ~ २६२१ । २ जानेगा : ~ पै सोइ ३९५१ ।

जानिहौं १ जान गया हूँ ~ बाने की बात १/१७९ । २ जान जाऊँगी : बाजें सखहि ~, आए जादवराइ ४१८८ ।

जानिहौ १ जानोगे, : समझोगे : ~ पर पीर ३८८५ । २ जानोगी : ~ ब्रजनाथ जी की, कियौ सो जो तुम बतायौ ४१८० ।

जानी १ जानकर, समझकर ~ बिकल बहुत जननी को हरि पुकराई दीनी सारा ४५० । २ जान गया है अब तौ प्रगट भई जग ~ १६५७ । ३ जान गई : आज सबनि इनि ~ ~ २०४२ । ४ जान गई, समझ गई : वाकी बुद्धि मैं ~ १७२३ । ५ जान गई हूँ : ~ यह चतुरई २७२४ । ६ जाना : गोकुल लीन्हौ जन्म कौन मैं यह नहिं ~ ४३१ । ७ जानती - उमा कही मैं तौ नहिं ~ १/२२६ । ८ जान पड़ता है यह निर्मल अति ~ १७८७ । ९ जान लिया है, समझ लिया है मिलन कठिन जिय ~ ४१३७ । १० जान सके - सिव बिरंचि तिनहूँ नहिं ~ १६१८ । ११ जान ली, देख ली - मोतैं कहा चूक उन ~ २२९४ । १२ समझती थीं - हम ~ ऐसैहिं निबहैगी ३९८७ । १३ समझा है, जाना है : अब हम तोकौं ~ १९०७ । १४ समझे - इनकी गति नहिं ~ २२८३ ।

जानु[1] १ घुटनों : (वसुदेव) ~, जंघ, कटि, ग्रीव नासिका ४ । २ घुटने - सुजवन ~ करभ कर आकृति १/६९ । ३ घुटनों से : ~ करभा की सबै छवि निदरि २३४ । ~ सौं जानुनी घुटनों से घुटनों को : बाहु सौं बाहु उर ~ — ३०७१ ।

जानु[2] जानो - भादौं सुक्ल अष्टमी ~ परि० २/४ ।

जानुपद पिंडलियाँ - सुदर जंघ ~ सुन्दर १८२५ ।

जानूँ समझूँ - और बात नहिं ~ सारा० ११७ ।

जाने १ जानकर - बालक आय देवकी ~ अस्तन पान कराये सारा० ७९० । २ जान गई, पहचान गई - दृरिहु तैं देखत ही ~ १९३० । ३ जान गये - नारायन प्रकटे सब ~ सारा० ४७८ । ४ जान चुकी थी : मैं नीके करि ~ २३४२ । ५ जानना है : को या पीरहिं ~ ३६७५ । ६ जानती थी, समझती थी : ऐसे मैं नहिं ~ तुमकौं २४८८ । ७ जानती हैं राजकुमार भले हम ~ ३६६८ । ८ जान पाई, : ब्रजहिं मैं रहत तैं नहीं ~ १७३९ । ९ जानते हुए ~ जगत सुनावत ३८८८ । १० जान लिया है, समझ लिया है : तदपि कपटी ~ ४००८ । ११ जान सकीं हम न स्याम गुन ~ ३७५२ । १२ जाना, समझा बर अरु बधू आप जब ~ रुक्मिणी करत बधाई सारा० ६९८ । १३ समझ पाये हैं सूर स्याम जैसें इन ~ २२८६ । १४ को ~ को बूझै कौन जानता बूझता है : — ~ — ३७३१ । ~ मैं जानकारी में : कौन्हैं स्वाग जिते ~ — १/१७४ ।

जानै १ जानता है - जोग जुगति हम कछू न ~ ३६०८ । २ जानते हैं - गोबिंद की बातें सब ~ ४०९३ । ३ जाने, समझे परतिय रमें, धर्म कहा ~ ९/७९ । ४ जाने, समझे - बिन ~ कोउ औषध खाइ ६/४ । ५ समझ सकते हैं यह लीला ~ पै वै ३१०७ ।

जानै १ जानता और बेचि नाह ~ १६७६ । २ जानता था - यह न कोऊ भेद ~ ९/६० । ३ जानता है जाकौ जस जग ~ ४२६९ । ४ जानती है - हमहू उतहिं न ~ १७०५ । ५ जानता है - रसना ~ न नैन दरसहि ३५३४ । ६ जानती हो - तू ~, जानें सब कोऊ १८५० । ७ जान सकता है : रसिक होइ सो ~ ३९६० । ८ जान पाता (भौंरा) - दिनकर अस्त न ~ ३९८० । ९ समझ सकते हैं ये महिमा येइ पै ~ १६०८ । १० जाने, समझे - कह ~ जो क्रूर ३१०४ ।

जानो जानता है नंद गोप वृषभानु यशोदा सबहि गोपकुल ~ सारा० ४८७ ।

जानौं १ जानता हूँ ~ हौं बल तेरो रावन ९/१३१ । २ जानती हूँ ता दिन कह्यौ नहीं मैं ~ १७४८ । ३ जानूँगी : तौ ~ जौ अब एकौ छन सकौ हृदय तें जाइ १९३३ । ४ जाना, समझा : ~ साँच मिले मनमोहन ३२६३ ।

जानौ १ जानती हो वाके घात न ~ १७४२ । २ जानती हूँ तुम बिनु स्याम और नहिं ~ १६८६ । ३ समझते हो - जौ ~ यह सूर पतित नहिं १/१५६ । ४ समझकर पुनि टीजो जब ~ कालि १५९४ । ५ जानूँ चतुरता प्रवीनता बिधाता का ~ १८३६ । ६ जान लूँ जौ ~ औरै कोउ करता १६९२ । ७ जाना, समझा - निसि दिन कछु चित चेत न ~ ३७०१ । ८ जाने - ना ~ किहिं घाट तरैं री २२९३ । ९ जानो, समझो - जहाँ जाहु तौ ~ ४१२७ । १० जानता (मानता) आन देव सपनैहुँ न ~ ११७४ । ~ **जानौ** जानती हूँ, जानती हूँ - ~ — अहि मनि छीनी परि०

१/१४९। **धान कौ गाँव पयार तैं** ~ धान पैदा करने वाले गाव को पयाल से ही जान लिया जाता है • — ~ ३६००।

जानौगी जानोगी सुनहू 'सूर' अब ~ तब देखो राधा-सजोग १९२२।

जानौगे जानोगे, समझोगे अब जु काल्हि तै अनन सिधारौ तव ~ ~ तुमहिं हरी २७३३।

जानौगौ जानोगे : बीतैगी तवहीं ~ ३६१३।

जान्यौं जाना, समझ सका . हौ मति हीन मरम नहिं ~ १/४६।

जान्यौ १ अनुभव किया : ~ राजकुमार ९/१२४। २ आता जानकर : कॉप्यौ तब असुर सैन साखामृग ~ ९/९६। ३ जानकर, समझकर (देवकी) अविनासी कौ आगम ~ ४। ४ जान गई हू, समझ गई हूँ : मनही जानि लेहि मैं ~ २०१२। ५ जानता है निरगुन जो नहि ~ ३६९६। ६ जानते हैं • पर वेदन नहिं ~ १८३९। ७ जान लिया, समझ लिया : सखियनि कौ आगम जब ~ २०४९। ८ जान सका . नाहिं मैं ~ १/१११। ९. जान सकी : हम न~ जनम ऐसौ रैनि कौ सुपनौ भयौ ३८६५। १० जाना, समझा : निकसि गए स्याम ब्रजनारि ~ २०४०। ११ जाना कि, समझा कि • ~ जब गज ग्राह लिए जात जल मैं ८/५। १२. जानती हैं • हम निरगुन तवही तै ~ ३९६३। **जात न** ~ पैदा हुआ जाना नहीं गया : रावन सौ नृप — ~ १/१८।

जाप जाप, जप . विषय ~ कौ जापी १/१४०।

जापनि जाप करके भी • जोगि जन बन तपनि ~ ९७९।

जापर जिस पर • धन्य पिता ~ परफुल्लित ९/१३४।

जापी जाप करने वाला हूँ . बिषय जाप कौ ~ १/१४०।

जापु मत्र के द्वारा, जप से : जाको सिव पावत नहिं ~ २४७५।

जाम १ पहर : तीनि ~ अरु बासर बीते ९/१२२। २ एक पहर : ~ रहत जामिनि कै बीतै ९/१७२। ३ रात • रातों अटकि द्यौस अरु ~ १९३४। ४. रात को • आइहैं हम ~ २४७७।

जामवंत एक रीछ का नाम जो प्रजापति ब्रह्मा का पुत्र तथा सुग्रीव का मत्री था, जिसने त्रेता युग मे राम-रावण युद्ध मे श्री राम की सहायता की थी ~ सुग्रीव बालिसुत आए सकल नरेस परि० १/१।

जामहि[१] आठो याम • अह निसि ध्यावत ~ ५१५।

जामहि[२] जिसमे : होइ प्रकृति जो ~ ३१८७।

जामा याम, पहर भीजैं चारौं ~ ४२३३।

जामातनि जामाताओ : तनया ~ कौं समदत ९/२७।

जामिनि १ रात्रि : ~ होति जहीं ३५७१। २ रात्रि मे • सरद ~ इदु सोभा ३८६५। ~ **गई** रात्रि बीत गई दूसरी ~ — २७८२।

जामिनी रात्रि . बीती ~ जुग चार सा० ल० २३।

जामिनी नौका,बिचारौ काम रजनी तरणी अतनु (काम) शब्दों के बीच के अक्षर मिलाने से (जरत), जलते हैं : ~ सग तन प्रान सा० ल० ९१।

जामे जमे, उग आये . दधि सुत ~ दुवार १७३।

जामैं जिसमे : ~ राजकाज की बात ३९०७, ~ प्रिय प्रान नाथ ३५९७।

जामैं उत्पन्न होता है अरुचिनि रुचि अकुर जिय ~ १२१३।

जाय १. जाकर • अत ~ कहुँ बास करैगे सारा० ४६०। २. जाता : तुम बितु रहेउ न ~ सारा० ९१८। ३ जाती है : सुनो रुक्मिणी कथा घोष की मोपै कही न ~ सारा० ७२२। ४. जाते है : करि हरि ध्यान गये हरि पुर को जहाँ योगेश्वर ~ सारा० ६४९।

जाया भार्या, स्त्री : (हरि के) मातु पिता, सुत, बधु न ~ ३।

जायें जाऊँ फल सूचक का कहिकै ~ सा० ल० ६२।

जाये १ पैदा किया नद नाहिं ~ तुम २८८९। २ पैदा हुए : तिनके ध्रुव बालक जो ~ औ उत्तम गभीर सारा० ७१।

जायौ १ उत्पन्न किया, पैदा किया, जन्म दिया . ब्रह्मा स्वायभुव मनु ~ ५/२। २ उत्पन्न किया है, पैदा किया है, जन्म दिया है : तैं ही पूत अनोखौ ~ ३३१। ३ उत्पन्न हुआ : मो नही लोक तिहुँ माहिं ~ ८/१०। ४. जन्म लिया : चोरी ~ मातु-गोद १६१८।

जार[१] यार/उपपति हैं • स्याम तुम्हारे ~ १६१८।

जार[२] जाल . मीन को ज्यौ ~ २/४।

जार[३] जला डाला बीर भूषन ~ सा० ल० २३।

जारत १ जलाता है • ज्योति पतग देखि बपु ~ ३८३१। २ जलाती है : अतरगति बिरहानल ~ ३७९२। ३. जलाते है ~ तन के चीर ३१५६। △ **जरे पर** ~ कष्ट पर कष्ट देते हो या और अधिक दुखित करते हो . इक हम जरीं, — ~ ३९०४।

जारति १. जलाती इनकी प्रीति पतग लौं ~ है सब देह ४०९५। २ जलाती है • मनसिज बिथा अरनि लौं ~ ३३९०।

जारन क्रि०स० जलाने, भस्म करने गर्भ परीच्छित ~ गयौ १/२८९। वि० भस्म करने वाला एक नाम अघ ~ २५१।

जारनहार जलाने वाले हैं . अतर ~ ३७४९।

जारहि जला दे : ~ जोग सगाई ३६६९।

जारहु जलाओ जाहु न ~ छाती ३६६५।

जारि १ जलाकर, राख करके . ब्रज-जननि बन-सहित ~ आऊँ ५९०। २ जलाया जा सकता है : हरत मरत न ~ १६०३। ~ **जारि** जला जलाकर ~ — फिरि फूँकि

प्रजारत ३७८४।

जारिहै जला देगी - जनति अनल त्रिय ~ २११६

जारी क्रि० स० १ जला दिया : मानौ माँगत सुधा आनि विष ज्वाला ~ ४०९५। २ जलाया है - देखो माई इहिं कुबिजा हम ~ ३६४०। ४ जलाये चंद चकोरहि ~ ३९५०। वि० जली हुई, सतायी हुई : भई विरह जुर ~ ३१९१।

जारे १. जलाती है विरह दवा अति ~ ३८३४। २ जला दिया : लाज जनेऊ ~ ३५६६। ३ जलाये : डारत है तनु ~ ७४७। △ ~ **ऊपर दागैं** कष्ट पर कष्ट देता है हम विरहिनि विरहा की जारी, ~ — परि० १/१६८।

जारैं जलाने से : ~ जरैं न १२७२।

जारै जलाता है - धूम मरुत तन ~ ३५४८। २ जला देता है, नष्ट कर देता है - मो मन अपने पापनि ~ ६/४।

जारौं १ जला दूँ : अनल सकल पुर ~ ९/१०८। २ जलाता हूँ - सूरदास मुनि भक्त विरोधी, चक्र सुदरसन ~ १/२७२।

जारौ १ जलाओ नृप कह्यौ इंद्र सहित तिहिं ~ १२/५। २ जलाती हो : अह निसि यह तन ~ १/२०९।

जार्‌यौ १ जला दिया : कठिन हृदय करि मन कुल ~ ४२१७। २ जलाना - तच्छक कुल समेत ~ १२/५।

जाल१ १. जंजाल को असरन सरन हरन जग ~। २. जाल मेल्यौ ~ काल जब खच्यौ १/६७। ~ **बाम्हि** जाल में बँधा : ~ — अफनात १२०६।

जाल२ समूह : मनु संग लिपटीं वनिता ~ १०५०।

जालनि जालों, जालियों ससि सका निसि ~ कै मग वमन बनाइ मिए ४११८।

जालरंध्र झरोखा : ~ ह्वै सहचरि देखत सारा० १०२०।

जालरंध्रनि झरोखे पर - ~ रहे ठाढे २२११।

जाल-रंध्र-मग खिड़की के छेद में से ~ नैन लगायौ २१८७।

जाल जड़ा हुआ - कर केयूर कंचन नग ~ ६२५।

जालावलि अनेक जाल : ~ रहे घेरि परि० १/८६।

जाली क्रि०स० जलाई : वन बेली दव ~ परि० १/२९। वि० जलायी हुई - जीवहि विरह की ~ ३८२३।

जाव जाइये - तब हरि कहेउ ~ घर घर मारा० ६६२।

जावक महावर : चरननि ~ दीन्हौ ३६०१।

जावत जा रहे हैं - हय-गय वसह-हंस-मृग ~ ९७६।

जावदेक जितने भी - घर बाहर ते बोलि लेहु सब ~ ब्रजबाल ३८८४।

जावन दही जमाने का जामन दै कपूर-पुट ~ नायौ १६००। ~ **पय फेरैं** जामन के लिए दूध डाल रही है : कोउ दधि मैं ~ — ९८९।

जावै१ पैदा करे धनि जननी जौ सुभटहिं ~ ९/१५२।

जावै२ १ जाता है - यह तन क्यौं हूँ दियौ न ~ ६/५। २ जायें : वृन्दावन ~ २/७। ३ जाये को ~ अब गोरे ३७६३। ४ जायेगा : भँवर मग उड ~ मा० ल० ७४। **मिटि** ~ नष्ट हो जाती है - बहुरौ ताहि बुढापा आवै, इंद्री-सक्ति सकल — ~ ३/१३।

जावो जाओ : जननी सुत पितु जा ढिग ~ सा० ल० ९।

जास जिसका - सख्य और आतम निवेदन प्रेम लच्छणा ~ मारा० ११६।

जासु १ जिसकी : तन अभिमान ~ नसि जाइ ३/१३। २ जिस : वसन ये नृपति के ~ की प्रजा तुम ३०४७। ३ जिसका ~ आलाप सुनि द्रुम सोउ पल्लवै २४५३।

जासौं जिससे : ~ उपजी प्रीति रीति अलि ३६२५।

जासौ जिसक - ब्रजवासी वस ~ परि० १/२४।

जाहि१ १ जाता - न गनि ~ ४/११। २ जाती है नितप्रति आवहि ~ १६१८। ३ जाते थे - बैठे हा रहि ~ ५/२। ४ जाते है मातु पिता बलि ~ ३०९०। ५ जाते है, बीत जाते हैं : दिन सौ तीन साठि जब ~ १२/४। ६ जाने वाली है - तुम पावत हम घोष न ~ १०२१। ७ जाये - तुमहि छाँडि कहैं ~ ५८३। ८ जायेगी - भवन नहीं अब ~ कन्हाइ १०२४।

जाहि२ १ जहाँ रुकमिनि चलीं जन्म भूमि ~ ४२७३। २ जिसका - काम भच्छ हित ~ ४०७। ३ जिसके - बलि हौं गुपाल मिलि ~ सगहि संग ४०८१। ४ जिसको : गए ~ जुग बीति ४२४३। ५ जिससे : सोइ कहौ तुम ~ डरे हौ २६३७।

जाहिगे जायेंगे - मन ही मन जीति ~ २१६१।

जाहि१ १ जिसका 'सूर' स्याम सुखद धाम, राधा है ~ नाम १९७८। २ जिस कह्यौ ~ परकार ३/६। ३ जिसको : ~ ग्यान सिखवन तुम आए ३९२५। ४ जिसपर - ऐसौ कौन ~ प्रभु कोपे ९२७। ~ **लगि** जिसके लिए - जोगी भ्रमत ~ — भूले ३९२४।

जाहि२ १ चला जा : ~ मति-मूढ, कायर, डरानौ ९/१११। २ चली जा - जसुमति कहति इहाँ ते ~ ३१६। ३ जाता है कोउ घर तैं भोजन लै ~ ८२७। ४ जाती है : तह गैया गनी न ~ २४। ५ जायें कहो घर हम ~ कैसे १६२५।

जाहीं१ १ जायँ : कह्यौ दे बसन पहिरि ~ ३०४७। २ जाता है हमतैं सुनी न ~ ३९२४। ३ जाते हैं - इत उत कहू न ~ २२३५। ४ जायेंगी : यहै कहै बलि ~ २२५८। ५ जायेंगे - कैसें बल मोहन ब्रज ~ ३१०९। ६ जा रहा हैं मिलनें समुद्रहिं ~ २७४५। ७ जा रही हैं कोउ बन घन ~ १०९६। ८ जा रहा था : एक घर कौं फिरि ~ ८४१। ९ जा सकता है - इनकी दसा सखी बरनी नहिं ~

२३७० । १०. प्राप्त होते हैं बिमुख अगति कौं ~ २/२३ ।

जाहीं[२] जहाँ : यह मथुरा कचन की नगरी मनि मुक्ताहल ~ ४१५७ ।

जाही[१] चमेली की जाति का एक सुगंधित फूल : ~ जूही सेवती करना १०९५ ।

जाही[२] जिस . ~ सौं लगत नैन २४१८ ।

जाहु १. चली जाओ, जाओ : अजहुं फिरि अपनैं घर ~ ११८० । २ जाओगे : तुम कहँ ~ पराइ ३१४ । ३. जाना : तुम जनि ~ डराइ ८४३ । ~ **जाहु** जाओ जाओ . ~ — आगे तै ऊधौ ३५२८ । ~ **तौ जानौं** जाओ तो जानूँ : उहाँ ~ — ४१२७ ।

जाहुगे जाओगे बाहँ मरोरि ~ कैसें १९३२ ।

जाहू जाओ : अबहीं ब्रज ~ २९३९ ।

जिवाइ भोजन करा के : आहुति अगिनि ~ सँतोषी ९/१४१ ।

जिवावति खिला रही है षटरस की ज्यौनार ~ ५१४ ।

जिवावहु खिलाओ . इत गोपिन सौं कहत ~ ८३९ ।

जिवावै खिलाता है . वह अपनै ठाकुरहिं ~ २४९ ।

जिअत जीवित रहती · नाहिन मान ~ नल बाहर ३७२७ ।

जिअन जीना : तुम कैसैं कैं ~ विचारत १/२८४ ।

जिए १. जीता है, जीवित है : देखि पर नारी ~ ४/१२ । २. जीवित हो गये हे : (ऊधौ) हरि बिनु ब्रज रिपु बहुरि ~ ३६२० । ~ **भाए** मन मे इच्छा हुई . कृष्न मिलन ~ — ४८८७ ।

जिऐ १. जीने से · फल कहा तिनके ~ ३८६५ । २. जीवित रहे · कैसै ~ सूर के प्रभु बिनु ३५८८ । ३ जीवित रहेगे : ~ तौ राजसुख भोग पावैं जगत ४२२२ । ४ जीवित रहेगी : महिमा ~ निकेत ३९६९ ।

जिठेरो (दुलारा) पुत्र . छल सौं कछु करत फिरत महरि कौ ~ २७६ ।

जित[१] १ जीतने वाला इद्रि ~ हौं कहावत हुतौ ८/१० । २. जीत लेता है · बदन बिधु ~ लरनि १०९ ।

जित[२] जिधर . ~ देखति तित कोऊ नाहीं १/२५० । ~ **कित** इधर-उधर, यहाँ वहाँ . ~ — लागे भागन ४२६८ । ~ **जित** जिधर-जिधर : ~ — मन अर्जुन कौ १/२३ । ~ **तित** इधर उधर, जहाँ-तहाँ : ता दिन तें मारग घर ~ — १६८१ । ~ **तितको** जिधर-तिधर को यादव जात भाज ~ — अनत जाय सुख कीन्हों सारा० ७४४ । ~ **ही जित** जिस जिस ओर : ~ — ऐंचति १/९८ ।

जितए जीत लिया है अग अग ~ २२९८ ।

जितक १. जितना . कही ~ कहि आई ३६२४ । २. जितने . मेरी देह छुटत जम पठए ~ दूत घर मौ १/१५१ ।

जितनक जितना ही : ग्वाल बाल ~ फिरि फेरत परि० १/२०१ ।

जितनौ जितना . ~ (गहना) पहिरि आजु हम आई १५४१ ।

जितहि जिधर : चाहति हुती गुहारि ~ तैं ३९७० । ~ **जितहि** जिधर-जिधर · ~ — रूख करैं लडैती २८२६ ।

जितहीं जिधर ही : ~ वै चलत तितहीं आपु जात ३२३८ ।

जिताए जिता दिया : रनहि ~ है जदुराई १/२४ ।

जितावै जिता दे . जौ श्रीपति तोहिं ~ १/२७५ ।

जितिक जितनी बार ~ बोल बोल्यौ तुम आगैं ९/१०७ ।

जिती[१] जीती, जीत गई हारे रघुपति ~ जनक की ९/२५ ।

जिती[२] जितनी · ~ हुती हरि के अवगुन की (बातैं) ४१४८ ।

जिते १. जितना : ~ मान सेवा तुम कीन्ही ३१२४ । २. जितने भी · ~ करे उपचार मनहु २८२६ ।

जितेत जीतने वाले हैं : हमरे मनहिं ~ ३३६९ ।

जितै[१] जिधर : चलो रथ लै ~ आवत सा० ल० ७५ । ~ **तितै** जहाँ-तहाँ : ~ — नर नारि मीन खग ४१६५ ।

जितै[२] जीतता है : हरि कृपा कै जिहिं, ~ सोई ८/१० ।

जितौ जितना . सुनि राधिके ~ स्रम मोकौं २८१५ ।

जित्यौ जीत गए . रुक्म ~ कहन लगे सारे ४१९६ ।

जिन[१] मत · तब हरि कह्यौ कोऊ ~ डरपो सारा० ७७ ।

जिन[२] १ जिनके : ~ लगि हुती बहुत उर आसा ३५९५ । २. जिनको · महानिधि ~ बैकुंठ पठायो सारा० ८२३ । ३ जिन्होंने · अतकाल हरि हरि ~ कह्यौ ६/३ । ४. जिन : ~ जिनहीं केसव उर गायौ १/१९३ । ५ जिसने · ~ यह दुख उपजायौ ९/५० । ६ जिनने : ~ मिलि लाड लडाए २६३१ ।

जिनकैं १. जिनके : ~ क्रोध पहुमि-नभ पलटै ९/११६ । २. जिनके लिए . ~ सुगम अनीति ३८८६ ।

जिनकै जिनके : ~ है मति थोरी ३९७४ ।

जिनकौं १ जिनका : ~ पाप करत दिन जाइ ६/२ । २ जिनसे : मोहिं लगावति हौ तुम ~ १६९९ । ३ जिन्हे, जिनको : ~ नहीं अग तै टारत २४०६ ।

जिनको १. जिनका : पुर पैठत ~ जस गावत ९/१६७ । २ जिन्हे, जिनको : ~ इक अनन्य ब्रत सूझै ३७१५ ।

जिनहि १ जिनको, जिन्हे · ~ छाँडि मथुरा तुम आए ३७७५ । २ जिन : गई ~ मैं बाति ३९०५ । ३ जिनके : ~ बचन दरसन न तिर्साह ३५३४ । ४. जिन्होंने बूझौ जाइ ~ तुम पठए ३९५० ।

जिनहीं १ जिनके · प्रेम प्रतीति प्रीति ~ मन ३६१० । २ जिनसे : ~ निकसी गग २४६६ । ३ जिसने जिन ~ केसव उर गायौ १/१९३ ।

जिनसौं १ जिनसे . ~ मिलि सयानी ३६३६ । २ जिन पर : ~ कृपा करी नदनदन ३६४५ ।

जिना जिनका · बहु नायक है नाउँ ~ १९१५ ।

जिनि[1] १ जिन : ~ बातनि तें बद्यो फिरत हौं १/२०६ । २ जिनके : ~ बिनु स्याम रहत नहिं २४०६ । ३ जिन पर : ~ रीझे स्याम २४०७ । ४ जिन्हे, जिनको . ~ जोवत लजत अनग २९०३ । ५ जिन्होंने, जिसने : ~ तुमसौं कमल मँगायौ ५६९ । ~ **जिनि** जिन जिन लोगों ने ~ — जाए स्याम कै आगें २४३४ ।

जिनि[2] न, मत : कानि ~ तोरै ९/७९ । ~ **कछु मन आनौ** मन मे कुछ दूसरा मत लाओ : तुम ~ — १५८७ ।

जिनकौ जिनका : भक्त बछल बानौ ~ २९५० ।

जिन्हैं जिन्हे, जिनको ~ तुम रोकन आए १६१८ ।

जिमि १ जैसे, समान चद ~ झलकै ११७ । २ समान है : पापी नर लोहे ~ प्रभु जू ४३०२ ।

जिमाए भोजन कराया ढोउनि एकैं थार ~ २८२८ ।

जिम्मैं जिम्मे/उत्तरदायित्व मे ~ उनकै १/१४३ ।

जिय १ जीवन तोष्यौ पोष्यौ ~ दयो १/७७ । २ जीव · ~ करि कर्म जन्म बहु पावै ५/४ । ३ मन, हृदय . आँखिनि मैं बसैं, ~ मैं बसैं १९१९ । ४ मन मे, हृदय मे · (देवकी) कस-काल ~ जानि गर्भ मैं ४ । ५ प्राण तलफि तलफि ~ निकसन लाग्यौ ३६०१ । ~ **आनैं** हृदय मे लाएँ . अपने तैं हैहैं न पराए यह प्रतीति ~ — ४०८६ ~ **ओर** मन की घात : समुझ भइ ~ — ७७६ । ~ **गुनौ** मन मे सोच रही हो : कहा तुम ~ — १०१६ । ~ **गहियै** मन मे रखिए . लाज कछू ~ — २७१३ । ~ **दीन्ह** ध्यान लगाया प्रभू-पूजा ~ — २६० △ ~ **लै भाग्यौ** प्राण लेकर भागे . तब रिषि आपन ~ — ९/५ ।

जियत १ जीते . तौ इनपै कत ~ आजु लौं ३२०८ । २ जीते जी ~ न जैहै सूल तुम्हारौ ९/३६ । ३ जीवित : ~ अब जाहुगे ३०७५ । ४ जी रही है हम तिय मृतक ~ ससि सासी ३८४६ । ५ जीवित है ~ जाकौ रौन ३९९७ ।

जियत्ति १ जी रहो है · ~ ऐसी रीति ३६०१ । २ जीवित : ~ न मेरें जान ९/७५ ।

जियतौ १ जीवित रहता . कैसे देखि ~ ३७३ । २ हृदय मे · यह छबि सदा थिर रहौ मेरैं ~ ३७३ ।

जियन जीवन, जीने : छाँडि ~ की आस ३८१३ ।

जियनि प्राणों : करत ~ की घात ४०६९ ।

जियरा मन मे . छिनु ~ न रहाइ २८६१ ।

जियहि पु० मन मे . मैं अपने ढिग तें नहि टारों ~ प्रतीति न आनति ४२५ । क्रि० स० १ जीवित रह सकते हैं ~ क्यौं कमलिनि कौंदी हीन ३३६४ । २ जीवित रहेगी क्यौं अब ~ जोग सुनि 'सूरज' ३७९० । ~ **परयौ री** हृदय मे पड गया है . कहा सोच सो ~ — ११७३ ।

जियायौ जीवित किया हत कपि कटक ~ सारा० २९४ ।

जियावत जिलाते है मारि ~ नट ज्यौं ३९३६ ।

जियावन जिलाने वाली . कृष्ण सुमत्र ~ मूरी २/३२ ।

जियावहि जिलाते हैं : सो पुनि आनि ~ ३३८७ ।

जियावहि जीवित कर लेगा · आइ जाइ तौ तुरत ~ ७४६ ।

जियावहु[1] जिलाते हो · अपनै कर लै क्यौं न ~ ८३५ ।

जियावहु[2] बचा लो सारँग मरत ~ २०९७ ।

जियावै जिलाता है ज्यौं कोइल-सुत काग ~ ३५९१ ।

जियावौं जीवित रखती हू : जल बिनु मीन ~ ३८६३ ।

जिये[1] मन मे : गिरिधर नहीं धीरज ~ २६१४ ।

जिये[2] जीवित · निग्चर किये मुक्त सब माधव ताते ~ रहे न कोय सारा० २९५ ।

जियैं १ जीवित रह सकते है कैसे ~ तरनि दरसावहु ३८७१ । २ जीवित रहे : कैसैं ~ सूरजदास ३८३६ ।

जियै १ जीवित रहे . सूर ~ तौ जग जस पावै ९/१५१ । २ जीवित रहेगी . बहुत ~ दिन सात ४०२१ । ३ जीवित रहता है · दादुर जल बिनु ~ पवन भीख ३९८५ ।

जियो जी मे ~ मनौ रक निधि पाए ११८२ ।

जियौं जीवित रहूँगी · तिहिं बिछुरत जो ~ कर्म बस २९७३ ।

जियो पु० १ जीवन . धन्य धन्य पल सुफल ~ १६८ । २ प्राण तुम पै प्यारी बसत ~ १९४० । ३ जी, हृदय : नेकु न धीरज धरत ~ २०७६ । ४ हृदय मे : धारत कौन ~ री सा० ल० शेष १ । क्रि० स० १ उत्पन्न हो गया, जाग उठा · पुनि फिरि मदन ~ री २५३२ । २ जी गये मिरतक कच ऐसी बिधि ~ ९/१७३ । ३ जीता रह सकता है इहिं पावक परि कौ ~ ९/४८ । ४ जीवित रहना नाहिंन चहत ~ ९/४६ । ५ जीने मे · इहिं सुख कहा ~ २/१६ । ६ जीवित रहा जाय कारन कौन ~ ३१५९ । ७ जीवित रहो देति असीस ~ जसुदा सुत ३३ । ८ जी रहे हो · गोकुल आनि ~ ३१६५ । ९ जी रहे हैं · ब्रज मैं गाइ ~ ४८६ ।

जिव १ जीव · बिसरि रह्यौ ~ तुमकौं स्वामी ४३०० । २ प्राण है राधा ~, सब देही ११२३ ।

जिवन जीवन, प्राणाधार प्रान ~ सब केरे ३१३१ ।

जिवाइ जिला तुमहिं डियौ ~ ५०४ ।

जिवाई जिलाया है . सूरदास प्रभु काहैं ~ ३२०६ ।

जिवाऊँ जिलाऊँगा . मरैं नहि देखता, यौं ~ ८/८ ।

जिवाए[1] १ जिला लिया, जिला दिया . हम सब मरत ~ ५०८ । २ बचाया था · बिष जल तें सब सखा ~ ४०८४ ।

जिवाए[2] जिलाया : दाहक गरल ~ ३३४३ ।

जिवाये जिलाया काली नाग हरि लाये सुरभी ग्वाल ~ सारा० ४७३ ।

जिवायौ १ जिलाना जौ तुम हमैं ~ चाहत ३६०७ । २

जिलाया है: जिन जन मरत ~ २/३२। ३ जिलाया, जीवित किया: सुक्र ताहि पढ़ि मंत्र ~ ९/१७३। ४ जीवित किया हो: ज्यौं मृतक मधु दै ~ ४१८०। ५ जीवित रखा जाय· जिहिं जिय जाइ ~ ३७४४।

जिवावत जिलाता है: को करि जतन ~ ३८८८।

जिवावति भोजन करा रही है: प्रेम सहित दोउ सुतनि ~ २२८।

जिवावहु जिलाओ या बिधा करि मोहिं ~ ९/१७३।

जिवावैं जिलाने से · कुंवरि ~ अतिहिं भलाइ ७५७।

जिवावै[1] जिमाते हैं, भोग लगाते हैं · वह अपने ठाकुरहिं ~ ७४९।

जिवावै[2] जिला देगा एकहिं मत्र ~ ७४७।

जिवावौ जिलाओ · मृतक सुरनि कौं तुमहूँ ~ ९/१७३।

जिह जी मे, मन मे · पर्‍यौ सँदेह ~ गाढौ ३४८१।

जिहि १. जिन · ~ नैननि कमल नैन ३५९०। २ जिन्हे: नर ~ देखि डराहिं ९/७५। ३. जिन्होने: ~ जार्‍यौ जग काम सु माधौ २८१४। ४ जिसका . राधिका ~ नाम २४७४। ५ जिसकी फूलि फूलि ~ पूजा कीन्हौ ९२५। ६ जिसके · ~ बस रहत अनत अनग २१३६। ७. जिसने : ~ जो अग अवलोकन कीन्हौ १३६९। ८. जिस पर: ~ बीतै सो जानै २२९७। ९ जिससे: सोइ करै ~ गात पसीजै २८२३। ~ **जिहि** जिस जिस: ~ — भाँति ग्वाल सब बोलत ४९३।

जिहिं १ जिस: ~ सरूप मोहे ब्रह्मादिक १३१। २ जिन: जानति हौं ~ गुननि भरे हौ २६३७। ३ जिसका (हरि) सिव समाधि ~ अन्त न पावै ३। ४ जिसने: मन्वतर लगि कियौ ~ राज १२/३। ५. जिसमे: एसौ पूत जन्यौ जग तुमहीं धन्य कोखि ~ स्याम धरे ४३०। ६ जिससे: सोइ करहु ~ चरन सेवै १/१२६।

जी १ प्राणो: मोहन जीवन ~ कौ ३०६६। २ मन: सो नहि ~ तैं जाई ३११७। ३. हृदय: मुरत नहिं नैंकु अति सबल ~ के २१२९। △ ~ के पैंड पर्‍यौ है जी के पीछे पडा है, बहुत सताता है ॲखियन के पड़े पैठि ~ — १४३५।

जीऐ हृदय मे, मन मे बसौ मेरे ~ ३७००।

जीजत १ जीती हैं. ~ मुख चितएँ ३७२१। २ जीवित. माधव या लगि हैं जग ~ ४२८४।

जीजतु जीवित, जी रही: ~ हैं मुख चाहि ३६२६।

जीजियतु जी रही. कैसैं ~ माई है परि० १/१४०।

जीजें १ जिऐं: देखि देखि मुख ~ ४०६४। २ जिया जाए · देहु मोहिं ग्यान जिहि सदा ~ ८/१६। ३ जीती हूँ: मन मोहन मुख निरखत ~ २११। ४ जीने की इच्छा है: सूरदास ऐसो सुख निरखत जग ~ बहु काल ११४। ५. जीने को: ऐसी जियनि दसौ दिन ~ २५९८। ६ जीवित रहती हैं: सुनि सुनि नित ~ ३८८७। ७. जीवित रह सकती हैं: हरि बिनु ऐसी विधि ब्रज ~ ३९१२। ८ जीवित रहेगी: तिनहिं आस करि ~ ३७१७। ९ जीवित है, जीती हैं: निरखि निरखि सो ~ ४००७।

जीजौ जियो, जीवित रहो: देहिं असीस बहुत जुग ~ ४२६५।

जीत जीतकर: अरप्यौ लोक लाज कुल ~ ४०४१।

जीतत १ जीतता हुआ सखा ~ स्याम जाने २४४। २. जीतते हैं: जीतैं ~ भक्त आपनैं ४२२०।

जीतन जीतने मनहुँ सकल जुवती ~ कौं २६८२।

जीतहिगे जीतेंगे: ~ रिपु आजु रंग रन ३०३६।

जीतहु जीतो: जग ~ बल अपनैं २९१४।

जीति स्त्री० जीत. हार ~ नहिं जानौ १६६७। क्रि० स० १ जीतकर अब आवैं रघुवीर ~ दल ९/१०९। २ प्राप्त कर · यह जस ~ परम पद पावौं ९/१२१।

जीतिहौ जीतोगे · ~ तव असुर महा बलवत कौ ८/८।

जीती १ जीतकर: गए ता धाम रस काम ~ २५००। २ जीत ली. ~ पहिलो रारि ९/१०४। ~ **जीती है रन** समर मे विजय भी पाई है. ~ — बसी १०७०।

जीते १ जीतकर: रिपु ~ साधे देव काज ९/१६६। २. जीत गए: ~ 'सूर' स्याम गुन कारन २१८४। ३ जीत लिया: पाछे लोकपाल सब ~ सारा० १०६। ४ जीतेगा: जुद्ध ~ सो मोहिं बरै आइ ८/११। ५ विजेता हो: डोलत ग्वाल मनौ रन ~ ३२।

जीतैं १ जीतता जाता है · जा परसैं ~ जम-सैनी ९/११। २. जीतते हैं: ~ जीतत भक्त आपनै ४२२०। ३. जीतैं, जीता जाय · कह्यौ सुरनि ~ किहिं भाइ १२/२।

जीतै जीत सकता है. बुधि बल करि को ~ ताहि ३१६।

जीतो जीता: चारो भ्रात चारि दिसि ~ भारत कही बखान सारा० ७३४।

जीतौं जीतूँ क्यौं करि ~ जादवराइ ४२०६।

जीतौ[1] जीवित होता (पुनर्जन्म होता): पुनि ~ पुनि मरतौ १/१२३।

जीतौ[2] जीतोगी. सूर स्याम जिहिं ढरि मिले नहि ~ हरिहौ १३४२।

जीत्यो जीता: करि रिपु हानि समर सब ~ राम कृष्ण घर आये सारा० ६२१।

जीत्यौ १ जीतकर: ~ जरासध रिपु मार्‍यौ १/१०९। २. जीत गया. ~ है सुत मोर २४०। ३ जीत गए: रग भूमि मैं हरि ~ नृप हारौ ४०३०। ४ जीतना: ~ चाहै मोहिं १६१८। ५. जीत लिया: गिरिवर धरि ~ सुरराई

९६१ ।

जीवे जीने • देखियत नाहिं जतन ~ कौ ३८९३ ।

जीवैं जियें, जीवित रहें . दोउ ~ सो करौ उपाइ ९/१७३ ।

जीभ जिह्वा । △ ~ **करै किन थोरी** बकवाद कम क्यों नहीं करती : हाथ नचावन आवति ग्वारिनि ~ — २९३ । ~ **लडावति** वे समझे-बूझे बातें करती हुई सुवा पढावति ~ — ताहि विमान पठायौ १/१८८ ।

जीभि जिह्वा △ ~ **पिरावत** बकने की इच्छा होती है . काहें ~ — ३६३० ।

जीय १ जीव : तन कैं बस ज्यौं ~ २०६९ । २ प्राण • सूर स्याम सुत ~ मातु के ५४६ । △ ~ **धरै** जी से ध्यान देते • प्रभु नाहिं ~ — १/११७ ।

जीयति जीवित, जीती ~ न मेरे जान ९/७५ ।

जीयन जीवन, जीना, जीवित रहना : धृग तव जन्म ~ धृग तेरौ ९/४९ ।

जीयो जिया • गोकुल नद अहीर गोप गृह पय पिय के यह ~ सारा० ७३९ ।

जीयौ जियो . ब्रज तौ नीकी जीवन ~ परि० १/१६४ ।

जीरन १ जीर्ण : ज्यौं तरु ~ पात ३९२२ । २ फटे हुए . ~ पट कुपीन तन धरि १/३४१ ।

जीर्न जीर्ण (फटे हुए) . छीन अग ~ वसन ४२४४ ।

जीव १ जीव हैं ~ जल थल जिते, वेष धरि तिते १/१२० । २ जान, प्राण जरासध ~ लै भज्यौ रन खेत तैं ४१८३ । ३ जीव . ~ न तजै स्वभाव जीव कौ १/२०७ । ४. जी/मन मे • मेरे ~ ऐसो आवत भइ २७६२ । ~ **कै पाछैं** प्राणान्त के बाद • सौ तौ टरै ~ — २३६१ ।

जीवक छोटे जीव : जल ~, दादुर रटत मोर ९/१६६ ।

जीव-कवि शुक्राचार्य : मनहु वामव वलि पठाए ~ कछु कहत १८४ ।

जीव-घट शरीर मे जैसे जीव . ज्यों जल मसक ~ अतर मम माया इमि जानि २/३८ ।

जीवत १ जीता है, जी रहा है भजन विनु ~ जैसै प्रेत २/१५ । २. जीते जी ~ मुरछि मरे २३०७ । ३ जीते ही : मैं अपराधिनि ~ विछुरी ३२२९ । ४ जीवित, जीते . ~ हैं आनद रूप रस ३८६० । ५ जीते हें मुख अरविंद देखि हग ~ ९/४९ । ६ जीवित रह सकता है : कहि चकोर विधुमुख विनु ~ ३५७२ । ७ जीवित रह सकती है ~ मीन मही ३५७१ ।

जीवति जीते जी . ~ विछुरी काह (मीता) ९/७७ ।

जीवतै जीवित ही गह्यौ भगवान सिसुपाल कौ ~ ४१८३ ।

जीव-दान जीवन दान • (देव) ~ इहिं दीजै ४ ।

जीवन जीवन । ~ **राखै धिक** प्राण रखने को धिक्कार है तुम विछुरत ~ — १०२४ ।

जीवन-धन जीवन के धन, सबसे प्रिय वस्तु या व्यक्ति : मेरे प्रान ~ कान्हा ३७० ।

जीवन-मूरि १ जीवन दाता . ~ जइ सा० ल० ५१ । २ प्राण प्रिय (कृष्ण) भागनि पाई ~ ११८० ।

जीवन हारि जीवन देने वाले को है ~ ५८९ ।

जीवनाम प्राणि मात्र ~ सब तुम्हरेहिं रोपे ९२७ ।

जीवनाधिक जीवन से भी बढकर • ताहि विमुख ~ रघुपति ९/१५३ ।

जीवनि १ जीवन • कीन्हौ ~ क निस्तार २ । २ जीवों • तौ सब ~ कौं उद्धरौ ७/२ । ३ जीवों को • सब ~ लै उदर मॉक ४८९ ।

जीवहि १ जीना ही . देहऽभिमानी ~ जानै ५/४ । २ जीवित रहे • ~ कोटि वरीस ३७२६ । ३ जीवित रहेगी, जीवेंगी : सूरदास हम तौ पै ~ ३३२७ ।

जीवहीं जियेंगी . हम न दरस विनु ~ २८६४ ।

जीवहु जीवित रहो जुग जुग ~ कान्ह २८ ।

जीवावहु जिला लेना या विधा करि मोहि ~ ९/१७३ ।

जीवावै जीवित कर ले . मृतक सुरनि कौ फेरि ~ ९/१७३ ।

जीवावौ जिला लो मृत सुरनि कौं तुमहू ~ ९/१७३ ।

जीविका १ जीवन-यापन ~ करिहौ ४/५ । २ भरण पोषण करने का साधन, रोजी : मेरी सकल ~ यामैं रघुपति मुक्त न कीजै ९/४१ ।

जीवे जीने देखति नहीं ब्यौंत ~ कौ ३९३७ ।

जीवैं १ जीवित रहेगी • 'सूरदास' अवला क्यौं ~ ४२५० । २ जीवित रहेंगे क्यौं ~ इहिं भाँति सूर प्रभु ३८३४ । ३ जीवित हो जायें . फेरिकै ~ ये सब ९/१४ ।

जीवै १ जिये, जीवित रहे . वहुत दिन मोहन ~ १४९१ । २ जीवित रहेगा . को ~ तिनके तन क्रोधा २९२२ । ३ जी सकती है : सो कैसें ~ महतारी ११ ।

जीवौं १ जीवित रहूँ, जीऊँ • वासर वदन विलोकत ~ २९७३ । २ जीवित रहूँगी • जव लौं हौं ~ जीवन भर ९/१६४ ।

जीवौ जीवित रहो वहुत दिन ~ पपिहा प्यारौ ३३३७ ।

जीहैं जीवित रहेगी . अव क्यौं ~ रस रीति परि० १/१९४ ।

जीहौ जीवित रहोगे और कितने दिन ~ ५८९ ।

जु सर्व० १ जो ऐसौ को ~ न सरन गहै ते तार्‍यौ १/१५ । २ जिससे • सोई करौ ~ वसते रहिये १/१८५ । **क्रि० वि०** जव : देख्यौ निकट ~ आयौ ५६४ । २ यदि . अव ~ काल्हि तैं अनत सिधारौ २७३३ । ३ तो स्रवननि की ~ यहै अधिकाइ २/७ । ~ **भई सु भई** जो कुछ हुआ सो हुआ : सूर स्याम ~ — २७३३ ।

जुआर जुआरी : मानौ हार्‍यौ हेम ~ ३१४० ।

जुक्त युक्ति : तन मन ~ बनाई सा० ल० ८३ ।

जुक्त अलकृत अलकृति युक्ति, सुन्दर उपमा, युक्ति अलकार : ~ माहीं सा० ल० ८७ ।

जुक्ता उचित होता तोहि है यह ~ ११७५ ।

जुक्ति युक्ति, उपाय . जोग न ~ ध्यान नहिं पूजा २/२२ ।

जुग¹ १ दो · ~ खजन जनु लटके १९९५ । २ दोनों : ~ भुज लै-लै भरि-भरि १२० । ३ युगल, जोडी . ~ देखत ही बनि आवै सा० ल० ४ ।

जुग² युग . ~ समान निसि होत एक छिनु ४०२३ । ~ **जुग** १ युग-युग का · ~ — जनम, मरन अरु बिछुरन १/१०० । २ युग-युग तक, युगों तक : प्रन ~ — प्रति-पारत ४२२० । ३ युग-युग से · ~ — बिरद यहै चलि आयौ १/११ ।

जुगए जुडे हुए : रबि रथ रोकि रहे सुरपुर मैं बाजि बाग ~ परि० २/२० ।

जुग-गुन दो गुणो (रजोगुण एव तमोगुण) ~ धोइ सेष-गुन जान्यौ ९७७ । ~ **बीति** दो गुण चले गए . ~ — त्रिगुन बुधि व्यापी ९७५ ।

जुगत युक्ति नगन तिय देखिबौ ~ नाहीं कह्यौ ४१९८ ।

जुगताटंक (कान मे) दो काटे (गहने) ~ चिबुक दसनावलि सारा० ९७७ ।

जुगति युक्ति, तर्क · जोग ~ हम कछू न जानैं ३६०८ ।

जुगनि युगो, बहुत दिनो : बडौ माट घर धर्‌यौ ~ कौ ३१८ ।

जुगयौ सचित किया : जतननि जल ~ २७७२ ।

जुगल १ जुडवाँ · ठाढे ~ हस मति धीर ९/२६ । २ दो . अनि भए तरु ~ सुहाए ३८६ । ३ दोनो . ~ जघनि खभ रभा २३४ । ४ दोनो की : जोरी ~ बनी बनवारी २१८६ । ५. युगल (माँ, बाप) : बप ~ काकौ नाँव लीजै ४१८७ ।

जुगवति सुरक्षित रखती हैं . सुनहु स्याम वे सखी राधिकहिं ~ जतन किए ४११८ ।

जुगवति बचाती : जद्यपि जतन किए ~ ही परि० २/२७ ।

जुगवौ रक्षा करो कोटि जतन ~ बन बेली ४०१८ ।

जुगुति १. युक्ति बिप्रनि गो दीन्ही बहुत ~ करि ४१८६ । २ युक्ति का : जो ~ बिस्तार बडौ है ३८०३ । ३ युक्ति से : ~ न जात परी ३६१० ।

जुगुल युगल . सुख की रासि ~ मुख ऊपर सूरदास बलि जात २४६५ ।

जुगै¹ युग . हरि की भक्ति ~ जुग बिरथै २/२ ।

जुगै² युक्तिपूर्वक : नभ तैं निकट आनि राख्यौ है जलपुट जतन ~ १९५ ।

जुटली लबी लटो वाली : भूरि भूसर जटा ~ १७० ।

जुठनिया जूठन : मागत सूर ~ २३८ ।

जुठरावत जूठा करते हैं । △ **मुख** ~ थोडा सा खिलाते हैं · नद लै लै हरि — ~ ८९ ।

जुठायौ जूठा कर दिया मिद्ध-पाक इहिं आइ ~ २४८ ।

जुठिहारे जूठा खाने वाला हूँ : हम ग्वालनि ~ १/२४० ।

जुठौंही जूठी डारि दई पतरी ज्यौंहिं ~ ३४९५ ।

जुडाइँ सरदी खा गयीं, जडा गयी ब्रज ललना कह्यौ नीर ~ ७९९ ।

जुडाई क्रि० अ० १ ठड लगी तनु भीज्यौ मो भई ~ ३३८४ । २ शीतल होंगे, आनन्दित होंगे तुम जेंवहु मेरे नैन ~ ५४६ । वि० जडायी हुई . अधिक ~ नीर की ३९१४ ।

जुडात ठडा होता है, आनन्दित होता है अधिक ~ हियौ ३६३८ ।

जुडाने शीतल (सुखी) हुए अँचवत तब नैन ~ १८३ ।

जुडावत शीतल कर लेती हू : रोवत कत बलि जाउँ तुम्हारी, देखौ धौं भरि नैन ~ १८८ ।

जुत¹ १. युक्त, सहित : बाल के हाथ तैं कमल दल नाल ~ ४१९४ । २ युक्त है किंकिनि ~ कदली खभ-जघनी ।

जुत² साथ ही · घुनौ बास ~ बुनौ खटोला ४२३९ ।

जुते जो थे : मिटे चिह्न नहिं अग ~ २५०४ ।

जुद्ध युद्ध . सुनि नृप सौं कियौ ~ बनाइ ९/१७४ ।

जुद्धहि युद्ध ही . माँग्यौ ~ जरासिंधु पै ४२१४ ।

जुध युद्ध : बहुरौ क्रोधवत ~ चह्यौ ९/१३ ।

जुधिष्ठिर युधिष्ठिर भीष्म द्रोण अरु कर्ण ~ सारा० ७१२ ।

जुन्हाई चाँदनी . सनमुख रहत ~ ४१४७ ।

जुन्हैया (चन्द्रमा) चाँदनी जौ कहु जामिनि उवति ~ ३२७२ ।

जु पाप कीने होत पाप करने से जो होता है, नरक · सुन्त एक ~ सा० ल० शेष १० ।

जुबति युवती · पाछैं ~ रही तिन टेरति १५०१ ।

जुबति गन युवतियाँ . ~ सब जूथ तित ११६१ ।

जुबती युवतियाँ, नवेलियाँ : इहिं अन्तर ~ सब आई १५०१ ।

जुबा युवावस्था मे . ~ बिषय रस मातैं १/११८ ।

जुर¹ ज्वर से : भई बिरह ~ जारी ३१९१ ।

जुर² एकत्रित होकर . ~ सहचरि बड भाग सारा० १००५ ।

जुरत १ एकत्रित होती है . इहि बिधि अनुदिन ~ जतन करि ३५८५ । २ मिलते है : प्यारो नैन ~ नहिं सन्मुख १९९४ । ३ मिलते ही ~ सुरति सग्राम मच्यौ २४५५ ।

जुरति जोडी हो . ससि दिनकर ~ सगाई २२०५ ।

जुरतैं इकट्ठी होने पर : जाम रैनि रज ~ ३२०४ ।

जुराइ जुडवाकर लालन की गाँठि ~ ९५ ।

जुराई १ इकट्ठा होकर · बैठे सभा ~ ३७०४ । २ जोड दी : राधा मोहन गाँठि ~ २९१० ।

जुरावन शान्त हो रहे थे : मगध सूत भाँट धन लेत ~ रे २८।
जुरावहु इकट्ठा करो, जुटा रखो • क्रूर भार ~ २९७६।
जुरावौ जुड़वाती है वरष गाँठि ~ ९५।
जुरि १ एकत्र हो सकल सखा ~ आये सारा० १०३५। २ जुटा कर : पुनि ~ दौ दीनी ४/१२। ३. पहुँच कर सुरत संग्राम ~ नहिं भागे २५००। ४ मिलकर : इतहुँ की उतहुँ की सबै, ~ एकठौं १९५१। ~ **जुरि** जोट मिलाकर • और सखा सब ~ — ठाढे ६०४।
जुरी १ एकत्र हुई भुज-भुज जोरि ~ ब्रज बाला ११३२। २ जुड गई हों • मानौ इन्द्र-बधू ~ पाँतिनि वहर के ३०।
जरी १ एकत्र हुई सूरज ग्रहण नृपन बहु जान्यो आय ~ सब भीर सारा० ७११। २ एकत्रित हुई : गृह गृह तें सब सुदरी ~ १६१८। ३ जुटी हुई • धनि गोपिनि की ~ मडली १०८७। ४ इकट्ठे हुए हैं ~ एक सँजोग ६३६।
जुरे १ इकट्ठे हो गए हैं : ऊर्ध उसास समीर नैन धन, सब जल जोग ~ ४११७। २ एकत्रित हुए • गोपी ग्वाल ~ बहु ठठरी ८१०। ३ जुटे हों ~ रन बीर ज्यौं २१२८। ४ जुड गये उर उरनि भिरे दोउ ~ मन तें २१२९।
जुरैं जुड जाती है : टूटी ~ बहुत जतननि करि ३९५७।
जुरो जुट गया ~ युद्ध अति गाढो सारा० ७८१।
जुर्‌यो १ इकट्ठी हो गई : कटक अगिनित ~ ९/१०६। २ जुड गया है • ~ सनेह नदनदन सौं ३८०६।
जुलाई चुगली करने वाला • क्रोधी कपटी कुमति ~ १/१८६।
जुवति १ युवती • मुनि मन हरति ~ जन कौतिक २१०। २ युवतियाँ • हम ~ कह जोग जानें ३९९७। ३ युवतियाँ हैं : चौदह सहस ~ अत पुर ९/७५। ४ युवतियों के : बह लखि ~ वृन्द म ढाढी ४२८६।
जुवति-जन युवतियाँ • भाँति भाति वनि चली ~ २२।
जवतिन १ युवतियों के • कहुँ चौपर खेलन ~ सग सारा० ६६५। २ युवतियों ने • ब्रज ~ व्रत ठान्यौ ३६९६।
जवतिनि १ युवतियों • ~ सौं कहि कथा जोग की ४१२६। २ युवतियों का : स्याम गए ~ सग त्यागि ११०५। ३ युवतियों के जो सुख स्याम करत ~ सग ११६३। ४ युवतियों को ब्रज ~ सबहिन मैं जानति २००८। ५ युवतियों ने ~ मगल-गाथा गाद ९ /१६९। ६ स्त्रियों (नागिनों) : ~ कौं नहिं सकत दिखाइ ५५५।
जुवतिनी युवतियों तब ~ कों दीजे ३६८२।
जवतिन्ह युवतियों के ~ पास पठाऊँ ३४२०।
जवति-वृन्द युवतियों के समूह के ~ बिच चतुर नागरी २०२३।
जुवतिहि १ स्त्री को भी : ~ जुवति दुरावहु २१६४। २ युवती को, नवेली को ~ उर लाए २४४०।
जवती १ युवती, तरुणी मोहि रहीं ब्रज की ~ सब १३०। २ युवतियाँ : आवति ह ~ इतरात ५०९। ३ स्त्री • पतिव्रता जालधर ~ १/२०४।
जुवती-रवन रमणियों मे रमण करने वाले, कृष्ण : राधिका-रवन, ~, मन रवन २१७०।
जुवा[1] जुवा (बैलों के कधों पर रखी जाने वाली लकडी) ~ बनावत चन्द्रमा।
जुवा[2] युवा ~ जुवति खिचाइ कुल ब्योहार ४१८६।
जुवार जुवारी • चोर ~ सग बरु कीजिए १७७९।
जवारि[1] ज्वार सूर हस स्वाती सुत-धोखें कबहुँक खात ~ २६९६।
जुवारि[2] जुवारी • ज्यौं ~ रस बाँधि हरि गथ।
जुहरानी विनती कर रही थी : प्रेम सहित ~ २०३१।
जुहार, जुहारि, जुहारी प्रणाम : तुम ~ उनकौं जब कीन्हौ १८८२।
जुहारे प्रणाम किया है : ये गुरुजन बिप्रहुं न ~ २९६८।
जुहिला राधा की एक सखी का नाम ~ झाना, भाना, भाऊ २००८।
जुही जूही • भरति मानहि ~ २८४४।
जूँठन खाने से बचा हुआ शेष अन्न : छाँक खाय ~ ग्वालिन कौं सारा० ७५०।
जूँठे जूठे, उच्छिष्ट • ~ भए सो सहज सुहाई ९/६७।
जूँथी गूँथी हुई • द्वैज दाम कुसुमन की ~ सारा० १०६९।
जू[1] जी : राम ~ कहाँ गए री माता ९/४९।
जू[2] जो • उडत मनोहर ~ प्रेम पराग २/१२।
जूआ जुआ (बैलों के कधों मे रखकर हल जोतने के काम मे लायी जाने वाली लकडी) अति कुबुद्धि मन हाँकन हारे, माया ~ दीन्हौ १/१८५।
जूझ युद्ध टूटी पनच सत ~ जई री २६६४।
जूझत १ जूझ रहे हैं • ~ सुभट जरत ज्यौं दव-द्रुम ९/१५८। २ युद्ध करते हुए ~ देत न पीठ २३७२। ३ युद्ध करने मे ~ लगी न बार ९/१०४।
जूझि लडना। △ ~ **परै** लड मरता है : सेवक ~ रन भीतर ९/१५४।
जूझे जूझते या लडते रहे सहस वर्ष लौं जल मे ~ कियो दनुज सहार सारा० ४६।
जूटे जूट • अग भस्म जट ~ २/१९।
जूटयौ समूह • चल्यौ अतिहिं गोलनि कौ ~ २७०२।
जूठ जूठन • भटकत फिरत स्वान की नाई नेंकु ~ कें चाइ १/१५५।

जूठन-भोग भुक्तावशिष्ट बाँटत ~ ८४४।
जूठनि जूठन, उच्छिष्टाश ~ खाइ जिये १/१७१। २ जूठे ~ की कछु सक न मानी १/१३।
जूठौ जूठा · ~ लेत सबनि के मुख कौ ४६८। △ ~ **खैये मीठैं कारन** लाभ की आशा से अनुचित काम करना : ~ — २३४१।
जूडी शीत ज्वर हो गया · कुबिजा कौ नाम सुनत विरह अनल ~ ३१४३।
जूथ समूह . ज्यौं गज ~ नैंकु नहिं बिछुरत ३९३३। ~ **असमान** समूह के समान (बाल) . मधुप ~ — २७४२। ~ **जूथनि** समूह के समूह .~ — नारि ९९२।
जूथनि समूह मे : चलैं मनौ ~ जुर दामिनि १४६०।
जूथपति सेनापति : प्रबल ~ भारी ९/११५।
जुधिष्ठिर कुती के गर्भ से उत्पन्न धर्म के पुत्र जो पॉच पांडवो मे सबसे बडे थे। ये बडे ही सत्यवादी और धर्म परायण थे · जे पद-कमल ~ पूजे ५७१।
जून बेला, समय . गो दोहन की ~ टरी ४०४।
जूप[1] जुआ खेलत ~ सकल जुवतिनि मैं ९/७५। २. जुए का . जानि जग ~ भय भूप तद्रूपता ४२१३।
जूप[2] यूप, पीपल वृक्ष, वासुदेव, श्रीकृष्ण : ~ मोहि बहु पाद मिलावो सा० ल० ९।
जूर जुडे हों, आ डटे हो . जनु रन तम सम ~ २६६८।
जूरौ जूडा गहे पानि पिय ~ २८२६।
जूवा जुवा · ~ सुरभि नहौ ३८२९।
जूवैं जुएँ मे : बिप्र जन्म इन ~ हार्यौ ६/४।
जूहि जूही चपक ~ गुलाब बकुल प्रति १०९३।
जूही फूल का एक पौधा जाही ~ सेवती करना १०९५।
जेइ खाकर . ~ उठे अँचवन लियौ ४३७।
जेइयै (खाना) खा लीजिए दाऊ जू चलि ~ १९८०।
जेवत १ खाते हुए · जिहि ~ रुचि नहि थोरी १८३। २ खाते हैं लै लै अधर परस करि ~ १६८। ३ खा रहे सहस भुजा धरि उत ~ हे ८३८।
जेवन १ खाने के लिए ~ सहस भुजा धरि आवै ९३३।
जेवनहारी खाने वाले हैं सूरदास प्रभु ~ ९१२।
जेवनार भोजन : इक ~ करत ही छाँडी ११८१।
जेवरि रस्सी : लै आई ~ अब बाँधौ ३४२।
जेवरिनि रस्सी से बाँध्यौ कर ~ ३७३।
जेवहिं भोजन करें : ~ कहौ बुझाइ ८३२।
जेवहु खाओ . सोइ ~ जो लगै पियारी २२७।
जेवहू खाओ · कान्ह जाइ तुम ~ १९८०।
जेवावत खिलाती है · मधु मेवा पकवान मिठाई अपने हाथ ~ सारा० १९५।
जेंवौ खाओ : लै आवौ ~ मेरे प्यारे ३९६।
जे १ जिनको . मम सुतहू ~ कस सँहारे ४४९९। २ जिन : ~ पद कमल रमा उर राखति ५६८। ३. जिस : ~ मुख सदा सुधा अँचवत हैं ३८०४। ४ जो : नद पौरि ~ जाँचत आए ३२। ~ **जे** जो जो . ~ — सखा प्रकृति के जाने १४९३। △ ~ **नहि जानैं पीर पराई** जो दूसरे के कष्ट को नही जानते ~ — हैं सरवग्य जनावत ३८८८।
जेइ जो ~ कमल सनकादिक दुरलभ २४६६। ~ **जेइ** जो-जो . अहो नाथ ~ — सरन आए २५१।
जेठी बडी : जम - ~ जग की महतारी।
जेत जितना : तिन दुख दीन्हौ ~ २३०२।
जेतक जितने : ~ सस्त्र सो किए प्रहार ६/५।
जेतिक जितने ~ अधम उधारे प्रभु तुम १/१४०।
जेती १ जितना : ~ सही सरीर ३८४५। २ जितनी . सेवा तुम ~ करी ३०८४। ३ जितनी भी . चौदह सहस किन्नरी ~ ९/७९। △ ~ **की तेती** जैसी की तैसी : ~ — १/१८५।
जेते जितने · परमारथी जहाँ लौं ~ ३६६९।
जेतौ १ जितना . हमैं तुम्हैं अतर है ~ जानत हैं बनवारि परि० १/१५९। २ जितना भी : नृपति ~ धन चाहैं ५८९।
जेर अधीन : मनौ मदन जग जीति, ~ करि २११४।
जेरहि जार मे, परपुरुष मे · तजि भर्ता रहि ~ लीन ११८०।
जेरी ग्वालो या चरवाहों के साथ रहने वाली लाठी उतहिं सखा कर ~ लीन्हे गारी देहि सकुच थोरी की २८७७।
जेरे दबे हुए · लोक लज्जा के ~ १६१८।
जेवन भोजन : देखहु जाइ कहा ~ कियो ५११।
जेवनार भोजन · तुरत करहु ~ ३९५।
जेवहुँ खाओ . सग ~ बलराम के रुचि उपजावहु मोहि ४३१।
जेवहु भोजन करो, खाओ . ~ कहि कहि प्रेम ३४२२।
जेहरि पायल, पायजेब पग ~ बिछियनि की झमकनि २१५६।
जेहि जिमे सूर नद-नदन ~ बिसर्यौ १/७८।
जेहि १ जिस . दाया करि मोको यह कहिये अमर होहुँ ~ भाँति मारा० १५१। २ जिसकी · (हरि) ~ माया बिरचि सिव मोहे ४। ३ जिसे · ~ हृदय बतावति २४१७।
जैंवत खाते समय ~ परसि लियौ नहि हमकौं ४४४।
जै[1] १ जय-जयकार की : ~ धुनि करि सुमननि बरसाई ८३९। २ जय हो ~ गोबिद माधव मुकुद हरि ९८१। ~ **जै** जय जय ~ — धुनि नभ देवनि कीन्हौ ९७०।
जै[2] जीतकर . मथुरा राखौ ~ री १७६। २ जीत लो : रतिराज रन ~ री २४५३।
जैऐ १ जाओ : कह्यौ ताहि बृन्दावन ~ ४५७। २ जाना

चाहिए : सूर स्याम पर वलि-वलि ~ ३७८। ३. जायें : चलौ सखी हमहूँ मिलि ~ ७२। ४ चला जाय कान्ह, कुमुद वन ~ ४४५।
जै जयौ जय जयकार है : तिहुं भुवन ~ ३०८२।
जै जंकार जय-जयकार : ~ दसौं दिसि भयौ ७/२। २ जय-जयकार की . ~ धुनि छाई है ८४।
जै जैवन्ती एक रागिनी · ~ जगत मोहनी सुर सों बीन बजायें सारा० १०२७।
जैत श्री एक रागिनी . ~ अरु पूर्वी टोटी सारा० १०१६।
जैति जय हो : विरद वदन जे जै जै ~ कैटभारे २०५।
जैनी जैन मतावलवियों को : जमन, कापालिक ~ ९/११।
जै बिजै विष्णु के दो पार्षदों (जय एव विजय) मे से एक : ~ उद्धरन ३०८१।
जैबे जायेंगे · चलहु ~ विपिन बृन्दा ६८३।
जैबें जायेंगे : वृन्दावन ~ १२१२।
जैबो जायें · कहौ कौन विधि ~ ७७९।
जैबौ १. जाओगे, पहुंचोगे जब बन तें गोकुल ~ १४८५। २ जाना : अब गोकुल को ~ छाँडौ १७०८। ३. जाना है . होति अबार दूरि घर ~ १४६३।
जैयतु जाओगे . अब कैसें ~ अपने घर २८७।
जैयहु जाना : दूरि कहूं जनि ~ बारे ४२३।
जैया क्रि० स० पैदा किया . जसुमति जिनि ~ ४२८। क्रि० अ० जाता । दिन ~ दिन जाते या बीतते हैं : हरषत ही — ~ १५६०। वलि ~ न्योछावर होता हूँ . चरननि की — ~ १५५।
जैये १ चला जाय : चलहु सखी राधा घर ~ १७२६। २ जाऊँगा गौतम रूप विना जौ ~ ६/८। ३ जाओ, जाइये : अब तुम साखि वदौ तहँ ~ ४००१। ४ जाना चाहिए · विनु वोलेहु ~ ४/५।
जैवहु खाओ, जीमो तुम ~ निहचिंत भए ४३८।
जैस जिस प्रकार । △ ~ तैसें जिस किसी प्रकार से, बडी कठिनता से · कोउ पहुंचे ~ — गृह ८६०।
जैसिहि जिस : ~ भाँति सदा चलि आई ८८९।
जैसी जैसी। △ ~ बयारि तैसी दीजे पीठि माहौल के अनुसार कार्य कीजिएगा सूरदास प्रभु आपुहिं जैयै, ~ — २५७१। ~ वह तैसी सब जानै वह अपने अनुसार सब को समझती है : ~ — कुटिल कुटिल पहिचानै १३०२। ~ सगति बुधि तैसीयै जैसी सगति है वैसी बुद्धि भी : ~ — है गयी सुवासई १३६२।
जैसीयै जैसी . जाकैं मन ~ वरतै १५८१।
जैसे जैसे। ~ घट पूरन न डोलै अधभरौ डगडौर ज्ञानी पुरुष इतराते नहीं हे परन्तु नीच व्यक्ति थोडी सी महत्ता पा जाने पर इतरा उठते हैं : ~ — १८४३। ~ सुभट खेत चढि धावै, जैसें सती बहुरि नहि आवै जिस प्रकार से वार व्यक्ति लडते से नहीं टरता और सती फिर वापस नहीं लौटती . ~ — २२१६। ~ स्वान काँच मदिर मैं भ्रमि भ्रमि भूँकि परयौ जिस प्रकार से काँच के घर मे कुत्ता अपना ही प्रतिरूप देखकर भ्रम मे भूँक पडता है : ~ — २/२६।
जैसेइ जैसे : ~ हरि तैसेइ सब बालक ६६९।
जैसेहीं जैसे ही · ~ उनि मुह लगाई २४०४।
जैसैं १. जिस : ~ परकार ५/२। २ जिस तरह से भी हो . ~ कालिंद्रि कमल ह्याँ पहुँचे ५२५। ३ जिस प्रकार, जैसे · ~ अनल ब्याल मुख राखे ८६७। △ ~ उडि जहाज कौ पंछी फिरि जहाज पर आवै जैसे (समुद्र) मे चलते हुए जहाज पर का पछी उडकर पुन उसी जहाज पर शरण लेता है : ~ — १/१६८। ~ चोर चोर सौं रातैं ठग एकै जानि जैसे ठग ठग (मडली) एक समझकर चोर से चोर जा मिलता है · ~ — १२७९। ~ चोर तजै नहि चोरी वरजैं वहै करी री जैसे चोर को चाहे जितना मना करो पर वह चोरी करना नहीं छोडता : ~ — २३६१। ~ बधिक पींजरा तैं खग छूटि भजत है, तैसे जसे बहेलिये के चगुल से छूटकर पक्षी उड भागता है, वैसे ही : ~ — मो ते नैन गए री २३९२।
जैसोइ जैसा ही : ~ तन तैसि मोंकि २७६। △ ~ बोइयै तैसोइ लुनियै जैसा उचित अनुचित कर्म करोगे वैसा ही उचित अनुचित फल मिलेगा · ~ — क्रमन भोग अभागे १/६१।
जैसौ १ जैसा। △ ~ करै सो तैसौ लहै जो जैसा करता है वैसा ही पाता है ~ ५/४। ~ देहि सो तैसो खाइ ईश्वराधीन हैं, वह जो कुछ भी देता है उसे स्वीकार कर लेते हे . ~ — ५/३। ~ बैयै तौसोइ लुनियै जसा कर्म करोगे वैसा ही फल पाओगे : ~ — ३९५३। जो ~ तासौं त्यौं चलियै जो जैसा हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार कीजिए — ~ — २३२०।
जैहे जायेगा ~ काहि समीप घर नर १/२१०।
जैहै १ जायेंगे · घर ~ होत विहान १०१७। २ जायेंगा . पकरि जसोदा पै लै ~ ४०३४।
जैंहे १ जायेगा हमसौ कहत विरह-स्रम ~ ३६००। २. चली जायेगी · मदन जाहु मरजादा ~ २१९४। ३ जाऊँगी · अब न ~ फेर सा० ल० २०७। ४ जायेगी ~ निकसि कहू हिरदय तें २४१९। ५ दूर होगी : मेरी हृदय कालिमा

~ ९/८१। ६ नष्ट हो जायेगा : सब कुटुम धन ~ एकै बार ९/१२१। △ उठि ~ झोल परदा उठ जायगा, पोल खुल जायेगी : — ~ — ३८७०। जब तन ~ छूटी जब प्राण निकल जायेंगे : पाछैं आइ तुम कहा करौगे — ~ — ४२४८।

जैहौं १. जाऊँगा जौ मरिहौं तौ सुरपुर ~ ६/५। २. जाऊँगी : सूर स्याम कै सग न ~ १७१६।

जैहौ १ चली भी जाओगी जान कहै तुमकौ तुम ~ १५७५। २ जाओगे दोउ भुजपकरि कह्यौ कहँ ~ २९७। ३ जाना, जाया करना अब जनि ~ गाइ चरावन ५१८। ४ जाने पाओगी . तव ~ नद दुहाई १५०३।

जो सर्व० १ जिससे • ~ पावैं नदलाल ३८८४। २ जो . ~ घट अतर हरि सुमिरै १/८२। **अव्य०** यदि ऊधौ ~ मन होत वियौ ३७२७। ~ **इतनी यह देह चलावत** जो इस शरीर मात्र को भेजना चाहते हैं • ~ — १०२३। ~ **कोउ काज करै बिनु बूझैं** जो बिना समझे कार्य करते हैं . ~ — पेलनि लहत हरी री २३००। ~ **जो** जिस जिसने ~ — धरनि धरी २३६१।

जोइ[1] पत्नी, भार्या मूरष रोगी तजै न ~ ११८०।

जोइ[2] **अव्य०** जब . कह्यौ, जुधिष्ठिर देखे ~ ६/७। **सर्व०** १ जो : भक्तनि कौ दुख दै सकै ~ ५/३। २. जो कुछ : कहियौ जाइ ~ मैं बरनी ९/१०१। ३. जो भी : इहिं ब्रज आवै ~ ५६। **क्रि०स०** १ ढूँढ ढाँढ कर, निरीक्षण करके : विचार करके . सर्व शास्त्र हम देख्यौ ~ ४२९८। २ देखते हुए . ~ नैन मग हारे ४७५२। ३ देखते हैं • ज्यौं सपने मैं सुख दुख ~ ११/४। ~ **सोइ** अनाथ सनाप ~ — सखनि सिखवत १५५९।

जोइतौ देखता। △ **मग** ~ प्रतीक्षा करते हुए : नैन थके, — ~ ४२५७।

जोई[1] १ देखकर हरषी मुख ~ २७२०। २ विचार करके . कहत हम मन रही ~ ३४२३।

जोई[2] १ जितना करौ तहो लौं निबहै ~ १५०९। २ जो ~ भलौ सोइ ब्रज पैहौ ३६८९। ३ जो कुछ जब ~ ये कहिहैं ८४३। ४ जो भी • अब ~ पद देहिं कृपा करि सो हम करैं सही ४००३। ~ **सोई** कोई विरला ही मानै ~ — २०५५।

जोऊ जो भी ह्वै हुतौ वह ~ ३९७५।

जोए देखे झलमलाति मोतिनि छवि ~ २६६३। △ **मुख** ~ मुँह ताकते रहे, लिप्त रहे . विषयिनि के — ~ १/५२।

जोग पुं० १ योग : लिखि लिखि ~ पठाए ३५३७। योग का : हरषीं सखी सहेलरी हो, आनन्द भयौ सुभ ~ ४०। **वि०** १ जोड का तासौं कहत सखा हम ~ ८२७। २. योग्य अँखियाँ उपमा ~ नहीं ३५७१। ३. योग्य है रसिक साँवरै ~ १६१८। ४ योग्य हो : तुम नागरि हरि ~ १६१८। ५. समान . कौन देव कह्यौ परबत ~ ८६१। ~ **जोग हम नाहीं** हम योग के योग्य नहीं हैं : उधौ ~ — ३९२४।

जोगऽभ्यास योग अभ्यास : ~ समाधि लगाइ ११/३।

जोग जुगत योग की व्यवस्था, योग क्रिया . हम हित ~ चित चीन्ही सा० ल० ५८।

जोगु-जुगति योग की क्रिया, योग विधान ~ बिसरी सबै, काम क्रोध-मद जागे (हो) १/४४।

जोगपंथ योग मार्ग • ~ क्रम क्रम अनुसरहौ ४०४९।

जोगबर लायक वर, योग्य वर : कुवरि ~ श्री जदुराइ ४१६७।

जोग बल योग-बल से : कह्यौ ~ रिषि सब कीनौ ९/३।

जोगमाया योगमाया (यशोदा की कन्या) देखी परी ~, बसुदेव गोद करि लीनी ४।

जोगवति रक्षा करती जद्यपि जतन किये ~ ही २३९५।

जोगहि पु० योग को : ~ राखहु गोई ३५४२। **वि०** योग्य को ही • ऊधौ जोग ~ देहु ३९२३।

जोगि योगी ~ जुग सिरायौ ३७००।

जोगिनि १ योगिनी • धरिए ~ बैस ३२२४। २ योगियों को ~ जाइ जोग उपदेसहु ३७०२। ३ योगियों बीतराग सुजान ~ भक्त जनन निवास ४०३५। ४ योगियों की : ~ दसा गही ९/९१।

जोगिनी योगिनियाँ : भूमि अति डगमगी, ~ सुनि जगी ९/१०६।

जोगिप्रिय योगी की प्रिय वस्तु, समाधि, मौन, समाधि अलंकार : ~ भूषन सँभारत सा० ल० ५६।

जोगिहि योगियों को : जोग पद लै देहु ~ ४०७२।

जोगी योगी जाकौं ध्यान धरैं ~ ९८४।

जोगेस्वर योगेस्वर, योग का अधिकारी : नव ~ ब्रह्म-बिचारी ५/२।

जोगै जोग के ही : तउ ~ गुन गावै ३८४६।

जोजन योजन, दूरी का माप विशेष (जैनी दस हजार कोस का योजन मानते हैं) • सौ ~ मरजाद सिंधु की १/४२।

जोजनगंधा व्यास जी की माता और शातनु की पत्नी सरस्वती • ~ काया करी १/२२९।

जोट १ जोडा : हम के से ~ दोऊ ३०८८। २. जोडी : राजत ~ कालिंद इन्दु दोउ परि० १/११२।

जोटनि जोडे अबुज स्रवत सीप-सुत ~ १८७।

जोटा १. जोडा : कल हसनि के ~ ३०४३। २ जोडी, सम वयस्क • हम तुम इक ~ ५८९।

जोटी जोडी . हरि हलधर की ~ १७५।

जोटे जोडा • बने परस्पर ~ हो २६०९।

जोत¹ ज्योति, कान्ति : रग बदलत ~ मा० ल० ७० ।
जोत² जोतकर : सुरभि कव वृष ~ ३९९३ ।
जोतत १ जोतते : लादत, ~ लकुट बाजिहैं १/३३० । २ जोतते हो ~ धेनु दुहत पय वृष की ३८७६ ।
जोति १ ज्योति जाकी ~ जल थलहि समानी २५८ । २ ज्योति से अपनी ~ कियौ उजियार ४३०० । ३ ज्योति को भी : सूरज ~ बिमारी ८/१४ । ~ **जोति** ज्योति ज्योति : ~ — करि बावन ३६९७ ।
जोतिक ज्योतिषी वार वार ~ सौं निसि घरी बुझावै २९३७ ।
जोतिष १. ज्यौतिष • ~ निगम पुरान बडे ठग ३८२८ । २. नक्षत्र : धनि धनि ~ जाग ४० ।
जोतिषी ज्योतिषी, भविष्यवक्ता आदि ~ तुम्हरे घर कौ ८६ ।
जोतिस चक्र नक्षत्र समूह ~ गगन सौं डोलत ११५० ।
जोतिहि ज्योति को . रूप लोभ ~ दरसत ही ३८३२ ।
जोती ज्योति (रोशनी) को : दूरि करत उडुपति की ~ ४०९४ ।
जोते जोता : बजर भूमि गाडँ हर ~ १/१८५ ।
जोधनि योद्धाओं . मानहु भीर परी ~ की २६८४ ।
जोधा योद्धा • सूरदास प्रभु ब्रज ~ ये परि० १/६५ । २ योद्धाओं को सूर ~ सबै मारे ३०८८ ।
जोनि योनि, प्राणि विभाग • चौरासी लख ~ स्वाग धरि २/१३ ।
जोनिन योनियों : जय अरु विजय असुर ~ को भये तीन अवतार सारा० ४४ ।
जोन्ह जुन्हाई (चाँदनी) : भामिनी अग ~ मानौ १०८३ ।
जोपै यदि ~ तुमहीं बिरद बिसारौ १५७ ।
जोबत देखते हुए ही निमि दिन पथ ~ जाइ मा० ल० २१ ।
जोबन १ यौवन . उन्मद ~ आनि ठाठि कै ३६७६ । २ युवक : ~ भए मुरारी १५२८ । △ ~ **खसौ** युवावस्था समाप्त हो गई : तन-मन-धन ~ — (रे) तऊ न मानै हार १/३०५ । ~ **धन है दिवस चारि कौ** युवावस्था क्षणिक है • ~ — २७४५ । ~ **रूप दिवस दस ही कौ** यौवनावस्था थोडे ही दिन की होता है . ~ — २५९२ ।
जोबन-गुन-गर्बित यौवन गुण गर्वित, रूप-गुणगर्विता (नायिका) ~ सुनि सजनी परि० १/२०४ ।
जोबन-जोर यौवन के मद मे : दोष लगावति ग्वालिनि ~ ३२० ।
जोबन-जोरि यौवन के मद मे भरी आपुन ~ १४३० ।
जोबन-दान यौवन का दान . आपुन ~ लेत हैं १५५९ ।
जोबन नई नवयुवती : एक ही सग भई सबै ~ १७२९ ।
जोबन-भोरी यौवन मे भूली (मदमाती) . नवल राधिका ~ ६८५ ।
जोबन भारी अत्यत यौवनोन्मत . तुम नहिं जानति ~ ८९० ।
जोबन-मतवारी यौवन मे मतवाली हुई स्याम सग फिरति है ~ १७०६ ।
जोबन-मद यौवन मद, यौवन की मस्ती • ~ रस-अमृत भरे हैं १५५३ । ~ **मद मतवारि** यौवन मद मे मतवाली सूर स्याम मेरे आगैं खेलत ~ — ३१४ ।
जोबनहि यौवन : सकुचि रूप-~ दियौ १५८० ।
जोबना यौवना, युवती • उत स्यामा नव ~ २८६७ ।
जोबनियाँ युवतियाँ • भावति नव ~ ३३७७ ।
जोयैं देखती रहती है इकटक लौं मग ~ ४१४३ ।
जोयौ १. देखा (गया) : कठ लगाए ~ १/४३ । २ देखने लगे सवनि पुहुमि तन ~ ९/१५१ ।
जोर वि० १ गति वाले लोचन मृग सुभग ~ राग रूप भए भोर १९७८ । २. जोरों से, धुआँधार बरसत है अति ~ ८६५ । ३. झोंके से जिमि तरन तमाल पवन कें ~ २७३९ । ४ तेज : सुत ज्वाला अति ~ १/४६ । ५ आग्रह मे : वदन बिधु की ~ २१३३ । ६ उद्धत • जादू भए हौं ~ २३८१ । ७ जुटे एक साथ देख सखि चारि चद्र, इक ~ २४६७ । ८ जुडे हैं : साठि कमल इक ~ १२०३ । पु० १. शरीर के जोड जरा सिन्धु कौ ~ उघार्यौ १/११३ । २ जोडा : सुभग ~ चकोर १०३१ । ३ बल, शक्ति अब तौ ~ कटक कौ पायौ ३८४१ । क्रि० स० १. एकत्रित कर तब हरि जाय सग हलधर लै सब यादव दल ~ सारा० ७०१ । २ जोडकर • कलपत दोउ कर ~ ४७७ । △ ~ **कियौ** सता रहा है : ~ — तनु काम २४२४ । ~ **कोटिक दिखावौ** कोई करोडो तरह से समझावे और जो ~ — १००४ । **बिना ~ अपनी जाँघनि** विना अपनी शक्ति लगाए — ~ — २८१८ । **दोष लगावति** ~ जबरदस्त दोष लगा रहो है . ग्वालिनि — ~ ३१० ।
जोर उतपल आदि जोर (बल) उतपल (कमल) के आदि वर्णो के मिलाने से (बक), बकासुर ~ उर तें मा० ल० ७७ ।
जोर-चकोर युगल चकोर . निडर बैठे सुभग ~ १०३१ ।
जोरत १ जुटा रहे हैं, एकत्रित करते हैं ~ बल मैननि १९६३ । २ जोडती, जोड रही सोइ किन आइ मोसौं अब है ~ १९४२ । ३ जोडते अरस-परस ~ ईं नात १२१५ । ४ जोडते ही • नैननि ~ गई लजाई १४२५ । ५ जोडते हुए कर ~ कुल देव मनावत ८७४ । ६ मिला रहे हो : काहे सकुचत दृष्टि न ~ २४८६ । ७ सग्रह करते हुए जोबन ~ दाम १/५७ ।

जोरति

जोरति १ जोड-जोड कर ~ सब विधि न्यारी न्यारी ८९२। २ जोड रहो • मोसौं लोचन ~ हौ २१९९। ३ जुटाने लगी • आपु नृपति बल ~ २०२६। ४ जोड कर : कर ~ अपराध छमावति ८९३। ५ मिला पाती है सनमुख नैन न ~ प्यारी २६२५। ~ नात उनसे (लौकिक) सम्बन्ध जोड़ती है जननी ~ — ८६९।

जोरनि जबरदस्ती से. क्यौं जीवैं इन ~ ३३३०।

जोरहि जोड दे : राहु केतु किन ~ ३३५९।

जोरहु जोड लो : सूर स्याम देवनि कर ~ २६१।

जोरावरी जबरदस्ती, बलपूर्वक नेह न होत ~ ३९५३।

जोरि १ इकट्ठाकर, एकत्र कर कहा भयौ राम कपि ~ ल्यायौ ९/१३५। २ गढकर, बनाकर : आवति कौठि बतियॉ ~ १४३०। ३. जोडकर. नैन मूँदि कर ~ ध्यान करि २४९। ४. जोड की, समान स्याम छवि गिरि ~ ८३७। ५ बद कर हियैं कपाट ~ जडता के २८२६। ६. बॉध कर, जोड जोड कर : बछरा दॉवरि ~ १६१८। ७. मिलाकर उर उर ~ धरे २४६०। ८ लगाए : एकहि टक रहे ~ २३७०। ९ लादकर और बहुत कावरि दधि माखन अहिरिनि कॉधे ~ ५८३। १० जुडी (मतवाली). आपुन जोवन ~ १४३०। ~ जोरि जोड जोड कर • ~ — लावति हौ कैसी १६९९।

जोरी क्रि० स० १ इकट्ठा की. जमा हुती जो ~ १/१४३। २ गढ ली, जोड ली . बात जतन की ~ १९०४। ३. जोड दिया : जतनहिं तैं मधि ~ ४२१६। ४ जोड ली है दासी सौं रति ~ ३६७३। ५ लपेटे हुए : सारँग अग सुभग भुज ~ २१७३। स्त्री० १. जोडी सूरदास ~ अति राजति ४७३। २ प्रतिपक्षी, जोडी • मेरी ~ है श्री दामा २१३। वि० मतवाली • सूर कहाँ मेरो तनक कन्हाई आपुन जोबन ~ ८५८। △ ~ मारि हाथ मार कर, चुनौती देकर ~ — भजत उतहीं कौ ५३४।

जोरे १ एकत्रित किये : ~ सूर अपार २०२६। २ जोडकर कर ~ विनती करी दुरवल सुखदाई १/२३८। ३. जोडती है. वह तो नित नूतन रति ~ ४१८७। ४ जोड लिए महरि विनय करि दुहुँ कर ~ २४८। ५. जोडा : ते नहिं जात तरनि सौं ~ ३८५४। ६. जोडा है : कोटि कुटिल लै ~ ३७६३। ७ जोडे कब कसहिं धौं हम कर ~ १५७७। ८. जोडे हुए आगै ठाढी कर ~ १/४०।

जोरैं जोडते हैं। △ कर ~ हाथ जोडे हुए, बहुत नम्रतापूर्वक ~ ~ मेरे द्वार खरी ३१२३।

जोरै १. जोड़ता है कौडी कौडी ~ १/८६। २ जोडती है : कत पलकनि पल ~ २८२६। ३ जोडे : ताहि जमहू रहत हाथ ~ १/२२२। ४ बाँधने लगी : भुज गहि रज्जु ऊखल सौं ~ ३५४। ५ जोड ले : भुजमिल ~ ध्यान कुल्ल कौ १/१४२। △ नैन ~ नैन मिलाती है : 'सूर' परछाहिं कौं — ~ २१९०।

जोरौ जोडते हो, करते हो : हँसत हरि कह्यौ यह बैर ~ ३०४८।

जोर्‌यो जुटे हों : अधकार इमि भयौ मनौ निसि बादर ~ ४३१।

जोर्‌यौ १. जोड रखा है सुत पति-नेह जगत यह ~ २२१६। २ जोडे हुए • जरा जरासघ कौं सधि ~ हुतौ ४२१५। △ चित ~ मन जोडकर, ध्यान लगाकर सूरदास प्रभु सौं — ~ १६६१। मन हरि सौं ~ मन ईश्वर से जोड लिया है मैं अपनौ — ~ १६६१।

जोलत हॉफते जा रहे (हो) धकधकात उर ~ हौ २५५६।

जोलौ १ भेद, अतर मति भूलहु यह ~ ३८६९। २ भेदभाव से वृथा अरति यह ~ ३६४५।।

जोलौं जब तक : तोलौ बँधे देव दामोदर ~ यह कृतनीकी सारा० ४५२।

जोव देख रहा है • जसुदा तेरौ मुख हरि ~ ३४६।

जोवत १ देखता है, प्रतीक्षा करता है • ~ हैं फल लागे १/६१। २ देखती थी • अवधि गनत, इकटक मग ~ ३५५७। ३. देखती रहती है बासर मग ~ उर ३६०५। ४ देखते हैं. ऊधौ मुख ~ कुबिजा कौ ३९१५। ५ देखती रह गई : सूर स्याम नागरि मुख ~ २४८२। ६ देखती है चकित होति मुख ~ २१४६। ७. देखते हुए. ससि ~ जुग बीते ३८३१। ८ देख पा रहे थे : स्याम तिया सन्मुख नहि ~ २५४२। मग ~ मार्ग देख रहे हैं, प्रतीक्षा कर रहे हैं : परस्यौ थार धर्‌यौ — ~ २२३। मारग ~ मार्ग देख रही है, प्रतीक्षा कर रही है राधा — ~ सारा० १०४६।

जोवति देखती रहता हैं. इकटक मग ~ अरु रोवति ३५७७।

जोवति देखती है, देख रही है कबहुँक आइ गली मग ~ २४७९।

जोवन यौवन ~ जल वर्षा कौ सरि २८२६।

जोवहु देखो सकल जग ~ हो ३०९०।

जोवैं १ देखती हैं हरि पथ ~ छिन छिन रोवैं ४०९४। २ देख रहे हैं : 'सूरदास' प्रभु तुव मग ~ २७९८।

जोवै १ देखता है. फिरि जब चित्त विषय तन ~ ११/४। २ देखती है फिरि फिरि मेरे मुख तन ~ परि० १/४१। ३ देख रही था • ठाढी तिया जु मारग ~ ४२३५। ४ देख रहे हैं : सकल लोग ब्रज ~ ३४७।

जोह देख. प्यारी रही मुख तन ~ ७०७।

जोहत १. इतजार करते ~ हैं वे ४/१२। २ आगमन, आना : ~ रहति गोपाल की औनी ४२६३। ३ देख रहे थे : अग अग प्रति ~ २४६३। ४. मँडरा रहे हों : कज

पाम अलि ~ १४९८ ।

जोहन स्त्री० १. चितवन, देखना · प्रेमी विधि ~ ७२ । २ देखकर वश मे करना : मोहन ~ मत्र जत्र टोना १५८६ । ३ देखने : नद सुवन मुख ~ कौं २९८२ । **क्रि० स० १** देखते जा रहे थे : हरषि परस्पर ~ २१७४ । २ देखने मे तनु त्रिभग कीन्हे मृदु ~ २२१९ । ३ प्रतीक्षा करने : बैठि एकात ~ लगे पथ सिव ८/१० ।

जोहि सर्व० १ जिसका . ध्यान धरत मन ~ ५२२ । २ जिसने : कैसा कौ वल देख्यौ ~ २९७७ । **क्रि० स०** देखकर : रहति वह छवि ~ २१३९ ।

जोही १ देखती ही रही : तब तें मैं इकटक ~ री १९१७ । २ देखी : नैंकहूँ न ~ १४०० ।

जोहैं १ देख रही थीं भ्रमि भ्रमि इत उन ~ १०५८ । २ जोह रहे थे : नँदनँदन वार वार खनि पथ ~ री १९७८ । ३ देखें कहौ न, हम तन ~ री २१६२ ।

जोहै १ देखता है : बाँके नैननि ~ १५८ । २ दिखाई देता रहा हो : निकसत ससि ज्यौं ~ २१८८ । ३. देखने पर : तरुनी मन धीरज कौं ~ ६२५ ।

जोह्यौ देखा मो तन नहिं ~ २९७५ ।

जौं जब : ~ गुरु प्रसाद पहिचानै १/४० ।

जौ अव्य० १ चाहे ~ तुम कोटि जतन करि सिखवहु ३९९० । २ जो, यदि ~ कुछ कपट किये जाँचति हौ ८०५ । **क्रि० वि०** जब तौ जानौं ~ मोहिं तारिहौ १/१३२ । **सर्व०** जो ~ कोउ उनसौं सुधि कहै ३३४४ । ~ **गुंजा सम तुलत सुमेरहि** जैसे गुंजा (घुघची) की तुलना में सुमेरु है ~ — ताहू तैं अति भारौ री १३५ । △ ~ **सुनियै सोई पुनि लुनियै** जैसा कर्म करिए वैसा फल भोगिए · ~ — और नहीं त्रिभुवन भट मेरै १७८५ ।

जौगी योगी विनु उपदेस सहजहीं ~ ३७९७ ।

जौन सर्व० जिसे, जो : ~ दियैं मैं छूटौं १/१८५ । **वि० १** जिस . मिले ~ सनेह २२११ । २ जो खायौ ~ दान आजुहिं कौं १६१० । **क्रि० स०** जानकर ~ वसत वहुत द्रुम फूले सारा० ३०९ । **जाके हिरदय** ~ जिसके हृदय मे जो रहता है : — ~ १७४९ । ~ **जौन** जो-जो . न्हाति रही तब ~ — ही १९७६ ।

जौना १ देखती रहति बननि बन ~ १२४१ । २ देखते कालिंद रहे जमुना तट ~ २८८४ ।

जौपै यदि : ~ राम भक्ति नहिं जानी १/८९ ।

जौवन यौवन : ~ रूप-राज-धन-धरती २/२३ ।

जौलौं जब तक : आमिष-रुधिर-अस्थि अग ~ १/७६ ।

जौवे देख लेते . (हरि) चाहति नैंकु नैन भरि ~ ३ ।

जौहर सकट के समय राजपूत वीरागनाओं का धर्म रक्षा के लिए दहकती आग मे कूदकर प्राण देने की प्रथा, जौहर मरन कौ तुरत ~ विचार्यौ ३०८३ ।

ज्ञाता १ जानने वाला है कौन विवेक कहौं को ~ १८४९ । २ जानने वाले : तुम ~ सब धर्म के ४९२ । ३ ज्ञानी था · व्याध, गीध, गनिका, गज इनमैं को ~ १/१२३ ।

ज्ञाति १ जाति अपनी ~ प्रकट करि दीन्ही ९०७ । २ सबन्धियों को लै आए सब ~ ८९ ।

ज्ञान १ ज्ञान । २ विचार : करत मन मह ~ ८१४ । ~ **करि करि** उपाय सोचकर, प्रयत्न करके : पचि रहीं मन ~ — १८२० । ~ **कियौ** है विचार किया है जिन अपनें जब ~ — १७१३ । ~ **बतावै** ज्ञान का बखान करता है निरगुन ~ — १०१६ ।

ज्ञाननि चेतना को हरत नवेलिनि-~ १३६६ ।

ज्ञान-विराग ज्ञान और वैराग्य ~ तुरत तिहि होइ ६/४ ।

ज्ञान-रूप ज्ञान स्वरूप (हरि) ~ हिरदै मैं बोलै ३ ।

ज्ञानहि ज्ञान को त्यौं अज्ञानी ~ पावत ४३०२ ।

ज्ञाना[1] राधा की एक सखी का नाम सुहिला, ~, भाना, भाउ २००८ ।

ज्ञाना[2] **१** ज्ञान यह सुनि नृप भए निरास रह्यौ नहिं ~ ३०७४ । २ ज्ञानी लोग ~ ताहि विराट कहाहिं ३/१३ ।

ज्ञानिनि ज्ञानियों में ~ मनि २७१९ ।

ज्ञानियनि ज्ञानियों : ~ मैं न आचार पेखौं ८/८ ।

ज्ञानी १ ज्ञानवान् हैहै पुत्र भक्त अति ~ १/२२६ । २ ज्ञानियों की, विद्वानों की ~ सगति उपजै ज्ञान ५/२ ।

ज्ञानेन्द्री ज्ञानेन्द्रियाँ इक मन अरु ~ पाँच ५/४ ।

ज्ञानैं ज्ञान को तौहू धरै न मन मैं ~ ४/१२ ।

ज्यहि जिस जो ~ लोक छाँडिके आये सारा० ८४२ ।

ज्याइ जिला · सूर प्रभु तोहिं ~ लीन्ही ७६० ।

ज्याइयै जिलाइये ~ परवीन पारि० १/१६७ ।

ज्याए १ जिलाने से जीवत जाके ~ १/३२० । २ जिलाया . राखि कै दच्छ ~ ४/६ ।

ज्याएँ जिलाने से : तेरे ~ जीजै २८२६ ।

ज्यान हानि जहाँ ~ ह्वै जी कौ ३८५८ ।

ज्यानि हानि · आनि दिखावत ~ ३३७ ।

ज्यायौ १. जीवित रखना, जिलाना जो सूरज प्रभु ~ चाहत ७४८ । २ जिलाया, जीवित किया · काम रहि ~ १३२२ ।

ज्यावहु जिलाओ . राधा ~ जाई ७५६ ।

ज्यावौ जिलाओ · सूर अवलनि मरत ~ परि० १/१९२ ।

ज्यौं जैसे । △ ~ **त्यौं** किसी भी उपाय से : ~ — कीन्हो चाहै भोग ११/३ ।

ज्योति १ प्रकाश से . रवि ससि ~ जगत परि पूरन २/२८ ।

२ सुन्दरता : तुम तन ~ सुभाव रूप उपमा को पावै १६१८ ।
ज्योति रूप ज्योति के समान . ~ जगनाथ ४८७ ।
ज्योती ज्योति, प्रकाश : स्रवननि कुंडल रवि सम ~ २९०१ ।
ज्योनार रसोई . कोउ ~ करति ८९ ।
ज्यौं १ जैसे : माटी मैं ~ कंचन परै ७/२ । २ जिससे • सोइ करौं ~ मिटै हृदै कौ दाहु ३९२५ । ३ समान : जुग ~ जाति धरी ९/६३ । ~ **कुल बधू बाहिरी परि कै, कुल मैं फिरि न समाइ** जिस प्रकार लज्जा का एक बार त्याग करने से कुल वधू का पुन. परिवार मे प्रवेश नहीं हो सकता : ~ — २३१६ । ~ **कौ त्यौं** जैसे को तैसा ~ — ४/१३ । **हरि ~ चाहैं त्यौं ही होइ** हरि जैसा चाहते हैं वैसा ही होता है, सब कुछ ईश्वराधीन है : — ~ — १२/५ । ~ **ज्यौं** जैसे जैसे . ~ — स्याम कहत मृदुबानी १५२७ । ~ **ज्यौं कहत बखाने** जो जो कहा जाता है वही कहता है • ज्यौं सुक पिंजर माहिं उचारत ~ — ४००८ । ~ **त्यौं** जैसे तैसे, किसी प्रकार : ~ — मानि लियौ २२२४ । ~ **बकति बावरी** जैसे पगली बकती हो : रटति फिरति ~ — ४०८० । ~ **भयौ चाहैं सु त्यौं** जैसा होना चाहते थे, वैसे ही : 'सूर' प्रभु ठटी ~ — ४१९७ । ~ **मनि दीप प्रकास** जैसे मणि के सामने दीपक का प्रकाश ~ — ९७४ । ~ **सावन की बेलि फैलिके फूलति है दिन चारी** सावन की बेलि के समान थोड़े दिन के लिए : ~ — २९७९ । ~ **सुक सेमर सेव आस लगि** जैसे तोता आशा लगाकर सेमर की सेवा करता है : ~ — निसि बासर हठि चित्त लगायौ ।
ज्यौंऽब जैसे अब ~ गुडी बस डोरि २३५७ ।
ज्यौंहि[1] खाकर पतरी ~ जुठौंही ३४९५ ।
ज्यौंहि[2] जैसे ही । ~ **ज्यौं** जैसे जैसे प्रभु रुचि ~ — होइ मो त्यौंहि त्यौं ४२२३ ।
ज्यौ क्रि० वि० १ जब : कहौं ~ एक करि, देखती नैन भरि, २०५६ । २ जैसे . सुनी कहत ~ लेइ परान्यौ ३९१ । **पु०** मन, जी . मेरौ ~ जानै माई, स्याम स्याम के जपति २०८९ ।
ज्यौनार जेवनार, रसोई : षटरस का ~ ८२६ ।
ज्वानी तरुणाई, युवावस्था : बालपनौ गए ~ आवै ७/२ ।
ज्वाब उत्तर, जवाब : सखि ~ बनावैं २०४४ । △ ~ **न आवै** उत्तर नहीं देती है बूझे तैं तोहि ~ — १९६९ ।
ज्वारि[1] जुआरी • चुगुल ~ निर्दय अपराधी १/१८६ ।
जोरं १ आग्र हँस चुनत है ~ २५९१ ।
कत पलकनि घेरी ~ ठहर ठहर के ३४ ।
हाथ ~ ३/२२२ । ५ विषम ~ की पजे ४०६८ ।
सौं ~ ३४४ । ५ जोड ले . ..

ज्वाल-माला अग्नि की लपटों की श्रृंखला . ~ प्रबल घेरि ५९७ ।
ज्वाला १ ज्वाला : सो कृत्या भइ ~ भारी ९/५ । २ त्रिविध ताप से जरत ~ गिरत गिरि तें १/१०६ । ३ ज्वाला से • जिनकी ~ जरि गिरि जाइ ७/२ । ~ **प्रकट करी** आग लगा दी बधन तोरि मोरि मुख असुरनि ~ — ९/१८ ।
ज्वैहौं देखूँगी, प्रतीक्षा करूँगी • दिन दस मारग ~ ३०११ ।

झ

झखत खीझ रहे हैं . ~ जसोदा जननी तीर १६१ ।
झँखति १. खीझती है : हलधर को नहि लखत ~ कहति तो होते सग दौउ ३०५६ । **२.** दुखित हैं : हम तौ ~ स्याम की करनी ३७१९ ।
झँगापगा ढीला ढाला कुरता ~ अरु पाग पिछौरी ढाढिन को पहिरायो सारा० ४०८ ।
झँगुलिया झवला, बच्चो का ढीला-ढाला कुरता नील नलिन तनु पीत ~ सारा० १६६ ।
झँगुली कुरती : तन ~ सिर लाल चौतनी ८९ ।
झँडूले बढ़े हुए, कुचिन : कठ कठुला ~ बार १५१ ।
झँपत वेग से चलने लगता है . जबहिं ~ तबहि कपति २९२१ ।
झंपाई झपकी ले रहे हैं सुत नैननि नींद ~ २४२ ।
झँवारि झक झक, झाँव-झाँव करत बृथा ~ १५५५ ।
झकझूर झकझोर कर : रूप-झपा ~ २६६८ ।
झकझूरि सूखी, कृश, दुबली-पतली रहीं बिरह ~ ३८४३ ।
झकझोर पु० हिलने-डुलने या चंचल होने की क्रिया या भाव • सूरदास बलि बलि या छबि की अलकनि की ~ १२०३ । **क्रि० अ०** झकझोर रहा है पवन अति ~ १/९९ ।
झकझोरत १ हिलते हुए इत उत अग मुरत ~ ३०० । **२.** हिलाने पर : यह तौ झलमलात ~ १९४ । **३** झकझोरे डाल रहे हो काहे को ~ नोखे ६८२ ।
झकझोरति १ झकझोर कर . ~ उर अक भरे ८८ । **२.** झकझोरती थीं . इक ऐसैंहि ~ मोकौं पायौ नीकौ दाँउ २०४३ ।
झकझोरा झोरी झटका-झटकी, धक्का मुक्की • करति आन ~ १५३४ ।
झकझोरि झकझोर कर • गहि अंचल ~ १६१८ ।
झकझोरी झकझोर कर . दै दै गारि नारि ~ १५४५ ।
झकझोरी हिलती हुई बेनी पीठि रुलति ~ ६७२ ।
झकझोरै झकझोरता है : कारी घटा पौन ~ ३२९८ ।

झकझोर्यौ झकझोरा • बाँह गहि कै ~ १४६१ ।
झकझोल झकझोर के साथ : झूलत हैं ~ २९१९ ।
झकझोलैं झकझोरता है • चंद्र किरन ~ १/२५६ ।
झकि झकि झुँझलाकर, जोश मे आकर • दाम खोटे लौं ~ डारि दयौ १/६४ ।
झकोर झकोरें • अधिक ~ जबै मेघनि की १९९२ ।
झकझोरत झकझोर रहा है • चहुं दिसि पवन ~ ८७४ ।
झकोरी १ झकझोर दिया है, आन्दोलित कर दिया है • बरषि सुधा-रस सिंधु ~ २३०६ । २ झकझोर दिया हो • कनक लता मनु पवन ~ २६५४ ।
झकोरैं लहर, झटका • छबि की उठति ~ हो २७९४ ।
झकोर्यौ झकझोरा, हिलोर पैदा कर दी • सागर जाइ ~ १३२७ ।
झकोल झोकों से लहरा रही हो • पीत-अरुन सित नेत ध्वजा चल मीत समीर ~ ११३६ ।
झकौर झकोर • सौंधे की उठति ~ २८९७ ।
झख१ खीझने का भाव । △ ~ मारि लाचार होकर : गई घर ~ — १७४१ ।
झख२ मछली • ~ सर करत कलोल १३७२ ।
झखत १ दुखी हो रहे हैं : बाबा नंद ~ किहि कारन ७३१ । २ पछताती, दुखी : ~ रहत दिन राती ३६८१ ।
झखति खीझकर : ~ कहति होते तौ संग वीर दोऊ ३४६४ ।
झखति खीझती • अब काहे हौ कौ ~ १२५२ ।
झखियाँ मछलियाँ : लरति जुग ~ १३८५ ।
झगरत १ झगड़ती • यहै दोष दै दै ~ हैं ३५८५ । २ झगड़ते हैं • नैना ~ आइ कै २३६४ । ३ झगड़ा करने मे सकुच न देत गारि ~ हूं २९५ । ४ झगड़ा करता है • आपुन हारि सखनि सौं ~ २१४ । ५ झगड़ा करने की • ~ नेति रइ ३१२८ । ६ झगड़ते • ~ निरखि लजाने २२९७ ।
झगरति झगड़ती, लड़ती • बनिज करति हमसा ~ हौ १५३६ ।
झगरन झगड़ने : संग खेलत दोउ ~ लागे ७०५ ।
झगरनि १ झगड़ालू (औरत) ने • ~ झगरौ कीनौ १५ । २ झगड़ों • सूरदास सुनि इनि ~ तें ३५८५ ।
झगरा झगड़ा • ~ ठान्यौ दान कौ १६१८ ।
झगरि झगड़ा करके • एक ~ चबेना लेत ४६७ ।
झगरिनि १ झगड़ने वाली, झगड़िन • तेरौ भलौ मनैहौ ~ १७ । २ झगड़ालू (दाई) ~ तैं हौ बहुत खिझाई १६ ।
झगरिहै झगड़ा करेगा • पेट पै लोटि ~ परि० १/१३ ।
झगरी स्त्री० झगड़ा • हमसों करै ~ १४२० । **क्रि० स०** झगड़ा किया है • चलि री मैया तोहिं बताऊँ जो मोसौ ~ परि० १/२१ ।
झगरू झगड़ालू, लोभी, लौंद, मुकरवा, ~, बड़ो पढ़ैलो लूटा १/१८६ ।

झगरे झगड़ने लगे : ढोक मिलि ~ ११९२ ।
झगरैं झगड़ने • ~ झगरोइ रहै १३४३ ।
झगरै झगड़ा करे • जोइ-सोइ कहि मोसौं ~ ७६ ।
झगरोई झगड़ा ही • झगरैं ~ रहै १३४२ ।
झगरौं झगड़ा करूँ • कहौ तौ जाइ उहाँ हौं ~ ३८२७ ।
झगरौ पु० झगड़ा • दान देति कि ~ करिहौ १५४४ । **क्रि० अ०** झगड़ा करते हो • सूर स्याम काहे कौ ~ १४६३ ।
झगा कुरता : लाल की बधाई पाऊँ लाल कौ ~ ३९ ।
झगुलि कुरती • कीनियै ~ तामैं कंचन-तगा ३९ ।
झझक झिझक । ~ रहे खरे झिझक कर खड़े हो जाते हैं • चकोर जुगल चले हैं सन्मुख ~ — ११९२ ।
झझकत झिझकता है • सोवत ~ फेर सा० ल० ७६ ।
झझकनि उमट पड़ना • वह रस की ~ वह महिमा २०३० ।
झझकाने झझक उठे • महराज क्यों आजहीं सपने ~ २९३४ ।
झझकार धधक (उठी) • नख मन चंद्र-बान सजि कै ~ उठ्यौ आग्यौ २५१९ ।
झझकि १ झिझक कर, बिदक कर • ~ भई तब न्यारी २४१२ । २ झिझक • सुनत नद जिय ~ रहे ३११२ ।
झझकीं झिझकीं : सूरदास ~ कहा १३४३ ।
झझके झिझक उठे • महाराज ~ कहा २९३३ ।
झझक्यौ झिझक गया • देखि अग अनग ~ १७० ।
झटकत झटकने से • कर ~ चक-डोरि हलत ६७१ ।
झटकति झटकती थी • रिस करि खीझि-खीझि लट ~ १४५० ।
झटकनि झटककर, हटाकर : तिहिं छन विरह-तिमिर की ~ ६१८ ।
झटकाई झटका, खींचा • हार तोरि चोली ~ १५५४ ।
झटकि १ झटककर • स्याम ~ पूँछ लेत ३०५७ । २ चला-चलाकर • बरनि पग पटकि, कर ~ १०४१ । ३ छुड़ा : ~ लीन्हौ तुरत पटकि धरनी ३०७३ । ४ झटककर, दूर फेंककर • ~ हाटक मुकुट ९/१२९ । ~ लई झटक उतारी • ~ — कर मुद्रिका १६१८ ।
झटकी झटका दिया • कैक बार ~ १६६० ।
झटकैं झटकाने से : लाज डुटै सब मन गयद कै ~ २३२१ ।
झटक्यौ झटक लिया, खींचा • इक पट पीतांबर गहि ~ २८७२ ।
झटी झड़ी • सदा पावस ब्रज लागी रहत ~ ४११४ ।
झनकार झन झन की ध्वनि : किंकिनी कटि कनित कंकन कर चुरी ~ १०४३ ।
झनकारनौ झनकार रहे थे : मनिमय नूपुर कनित किंकिनी कल कंकन ~ २८३२ ।
झनकारा झंकृत करती हुई • भइ अनाहत बानी कम कान ~ ४ ।

झनकैं आहट, झनक : सुनत रही स्रवननि ~ २३९९ ।
झनतकार झनकार करता हुआ सुर मडल ~ २९१७ ।
झपकानौ झपकी तुरत जाइ पलिका परयौ पलकनि ~ २९३३ ।
झपकि झपझना भी कबहु पुनि पलक ~ मन भावत २६६० ।
झपटत झपटती थी झपटि ~ लपट ५९६ ।
झपटति झपटती हुई ~ लपट करारी ५९८ ।
झपटानौ आक्रमण करने के लिए शीघ्रता से आगे बढा आदि रेख ~ सा० ल० ७२ ।
झपटि झपट कर ~ कै लँगूर ९/९६ ।
झपटै झपट्टा मारता हो दपट ~ मोर २८३१ ।
झपति झपकी लेती है झाँकति ~ झरोखा बैठी ३२४० ।
झपा पिटारी रूप-~-झकझूर २६६८ ।
झपि झटपट, तुरत ~ जमुना जल लीनौ ५७६ ।
झब गुच्छी, झब्बो सोभित झक ~ झालिका ८०९ ।
झबरे घुघराले : कुतक कुटिल छवि राजत ~ री २८८६ ।
झबा झब्बे फुँदनि ~ निहारत २६२८ ।
झमकत १ (गहनो की) झमझम छमछम के साथ रमकत ~ जनकसुता सग सारा० ३१० । २. झमकते थे ~ भूषन अग १०६० ।
झमकनि झमाझम पग जेहरि बिछियनि की ~ २१५६ ।
झमकाई १ झमक कर घट भरि चली ~ १४४७ । २ झमकाया कटि किंकिनि ~ हो परि० १/१०८ ।
झमकि १ झमककर ~ चली सब भीतर ढुरकी १८० । २ झपकी नैननि नीद ~ रही भारी २२८ ।
झमकोर झकोरे लेता थी अध ऊरध झमकि ~ इत उत २८४१ ।
झमत झूमकर ~ लरत अलि सैन कज पर परि० १/१० ।
झमी झूमी, टली श्री मुख नैकु नाहिं ~ १२२८ ।
झर[1] १ झडी बार बार ~ लावै सा० ल० २४ । २. झडी लगाए है बरषि बरषि ~ इद्र ९७७ । ~ **झरि लाई** झडी लगाकर वै ~ — दिना द्वै उघरत ३०३५ । ~ **लाई** झडी लगाए हुए था बरषत इद्र महा ~ — ९३९ । ~ **लाए** झडी लगाकर राति दिना बरषत ~ — ४११६ ।
झर[2] १ अग्नि उठत मनौ ~ जागि ०/१५८ । २ ज्वाला ग्यान अगिनि-~ फूटै २/१९ ।
झरझराति झर झर करती ~, झहराति लपट अति ५९३ । १ झड रहे हो मुक्ता मनहु ~ २५८४ । २ झरते झरना न ~ पषान ६२३ । ३ झरते रहते (हैं) ये झरना सी ~ सदा है ३५७१ । ४ झरने लगा थके चर, जल ~ पाहन १०६८ । ५ झर रहे हैं ~ धार कन नीक सा० ल० ४३ । ६ झर/बह रहा है नहिं नभ बृष्टि ~ झरना जल ४१४६ । **झरना ~ सुभाइ** झरना स्वाभाविक रूप से झरता रहता है — ~ — ११७५ ।
झरतैं झडी लगाकर : क्रोध सहित फिर बरसत ~ ८७६ ।
झरना पर्वतो से गिरने वाला जल प्रवाह ~ न झरत पषान ६२३ ।
झरनि झडी : अँखियनि लागी ~ ३९५२ ।
झरपत १ झकझोरते हुए बरसत गिरि ~ ब्रज ऊपर ९३६ । २ गडगडाते हुए • झरहरात ~ झर लावत ९३६ । ३ झगडते हुए . ~ लरत घनेरे २३५२ ।
झरहरात झर झर करते हुए : ~ झरपत झरलावत ९३६ ।
झरहरि झर-झर शब्द करके चहुँ दिसि तें उपजी काल अगिनि झर ~ १/३१० ।
झरहरी झल्लाकर . ओट है ~ मान कीन्हौ २४२० । २ जल-भुन गई, झल्ला उठी मनहिं मन ~ २७१५ ।
झरारी झरहरी पाथर सहै ~ परि० २/५ ।
झरि[1] लपटे, ज्वाला बुझि गई अगिनि ~ ५९७ ।
झरि[2] झड जैहे री गरल ~ ७५२ । २ झडी भादौ ~ लायौ १/२३ । ~ **झरि** झड झड कर, गिर गिरकर ~ — परत अगार २२७५ । ~ **लाई** झडी लगाए हुए है इद्र ढीठ ~ — ९५३ ।
झरिबौ झरना, बहना रहत न नैन नीर कौ ~ ३३५७ ।
झरी[1] ज्वाला हरि बिनु फूल ~ सी लागत ।
झरी[2] १ झडी कबहुँ न मिटत सदा पावस ब्रज, लागी रहत ~ ३४४५ । २ झड रहा था प्रेम आनद ~ ११६७ । ३ झडी लगी हुई थी : लोचन धारा आँसु ~ ११११६ ।
झरे रीता करके निमिष निषग ~ २१२५ ।
झरै १ झडती है वहै सुधा सब ताहि ~ ३११७ । २. निकलेगा कब तोतरैं मुख बचन ~ ७६ ।
झरोखन झरोखों से पुर कुल बधू ~ झाकत सारा० ४९९ ।
झरोखा झरोखे से जहँ तहँ उझकि ~ झाँकत सारा० २०८ ।
झरोखैं १ खिडकी पर चितवति हुती ~ ठाढी ८०८ । २ खिडकी से आए उझकि ~ झाँक्यौ २१८७ ।
झर्यो १ झड गया खोरनि खार ~ ३६४६ । २ बहने लगे नैननि नीर ~ ९/२४४ ।
झलक[1] १ चमक मुकुट की लटक ~ कुडल की ११४३ । २ झलक ~ रोमावली सोभा १७५५ ।
झलक[2] १ झलकती थी, झलक रही थी ~ कज्जल कोर २१३३ । २ झलक रहे थे कुसभी सारी अलक ~ मनौ २६१७ ।
झलकत १ चमकता है कुडल झलमलात ~ अति २१७८ । २ चमकती है • ~ चहुँ दिसि झालरी १४० । ३ झलक

रहे हैं. ~ कल बिबि कान २४४६।
झलकनि झलक सलिल ~ रूप आभा १८२०।
झलकाइ प्रतिबिम्बित हो रही है आभा चन्द्रिका ~ १८१८।
झलकाई चमक रहा था कर-कंकन ~ १४४७।
झलकाऊँ झलक रहा है, चमकाये टाल रहा है. जोवन-मद रस अमृत भरे ह रूप रग ~ १५५३।
झलकावत चमकाते हैं वे नौ अति ~ रा २०६४।
झलकावें झलक मार जाते हैं तबही वे ~ १८३०।
झलकावै झलक रही हो. मोतिनि हार जला जल मानौ, खुमी दत ~ १४३९।
झलकै झलकती है ललित कपोलनि मुजल ~ परि० १/६९।
झलमल १ झिलमला रहे थे मकर कुटल गड ~ निरखि लज्जित काम १८२३। २ झिलमिलाते हुए. ~ दीप ममीप सौंज भरि ८०९।
झलमलात झिलमलाते हुए कुटल ~ झलकन अति २१७८।
झलमलाति झिलमलाता हुआ : ~ छबि होत १२०४।
झलमलौ झिलमिलाते हैं : ललित कपोलनि ~ २२१७।
झवारि झगडा • अजहूँ तजौ ~ ५८९।
झप मीन, मछली पै ~ कनक रुद्र रंगी तत्रा सुन्न आड भर भोग।
झहनावैं घनघनाहट है • मनहु पट ~ १४३९।
झहराइ १ झुंझलाकर, झल्लाकर. मवै चलीं ~ कै १४६१। २ झल्ला, तडप : प्यारी प्रेम उठी ~ २४९६।
झहराई १ हिलने (लगे) • परसत पात उठे ~ ३८३। २ झिडक कर, झटककर : दूरि करौ ~ १३१३।
झहरात झाडकर ठूँठ कर डालता है. बेलि द्रुमनि ~ २३२९। ~ **झहरात** लपटें फेंकता/हरहराता हुआ ~ — डावानल आयौ ५९६।
झहरानी १ खाम्फ उठी, झल्ला उठी एते पर ~ २०७५। २ झल्लाई हुई हो, रूठी हो मान निवारौ क्यों ~ २७९९।
झहरि १ झिझक कर गिरे जाते ~ ६७। २ झल्ला रिसनि नारि ~ उठीं ३१४३। ३ झिड़ककर रिसनि जुवती ~ १४२२।
झहरी झुंझला उठी जाहु जाहु करि तिय ~ २५४१।
झहरैं १ झल्लाती रहती है सासु ननद तिन पर ~ १९२०। २ झल्लाते हैं : विग्रह-दही गुरुजन ~ २१०१।
झाँइ छाया, परछाई. अवलोकत मम ~ २६७३।
झाँकत १ झाँकता है बार बार ~ जल अपनौ सा० ल० ७६। २ झाँकती हैं. जहँ तहँ उझकि, झरोषा ~ जनक नगर की नार सारा० २०८। ३ झाँकती है, देखती है पुर कुल बधू झरोखन ~ सारा० ४९९।
झाँकति झाँकती है ~ झपति झरोखा बैठी ३२४०।
झाँके झाँका है, देखा है अवही स्याम द्वार है ~ २०७५।
झाँकै झाकते है ~ बार बार अकुलाइ ३४४१।
झाँकौ १ झाँकते थे • मजनी फिर फिर ~ सा० ल० ९१। २ झाँकने, देखने : न दीन्हौ ~ १/११३।
झाँक्यौ झाँका, देखा उझकि झरोखा ~ ३००७।
झाँखि झँख-झँखकर सूरदास जे मग रहे तेऊ मरे ~ २४०७।
झाँखौं छोड दू सोइ बन ~ ९/८५।
झाँची झल्ला उठती थी बार बार ~ १९१०।
झाँझ झाँझ नामक एक वाद्य यत्र ताल मृदग ~ इद्रिनि मिलि १/२०५।
झाँप झलक। △ ~ दे तपकर हाटक अगिनि ~ — आवत ६६५।
झाँपति ढकती. नित रहत मन मन मदहि छाकी निलज कुच ~ नही ४१८७। ~ **अचल झारि** आँचल या पल्लो से ढक रही थी. ~ — १८१६।
झाँप्यौ १ ढका है तैं जू बदन ~ मुकि अचल २७६८। २. ढका था : तापर सुदर अचल ~ ११९६।
झाँवरी धुंधली, शिथिल : जोवत मग भई दृष्टि ~ ४१०३।
झाईं १ छवि की अरुन अधरनि दसन ~ कहौं उपमा थोरि २२५। २ परछाई • ~ न मिटन पाई ८/५। ३ बिम्ब • मनु दरपन मैं ~ री १३७।
झाऊ झाऊ, कल्पित डरावना झाड जहा सघन बन ~ ४८१।
झाक झकाझक सोभित ~ झव झालिका ८०९।
झाम गुच्छा सुन्दर कनक मेखला ~ ।
झार[1] १ झाडियों मे ढूँढैं गिरि बन- ~ ९/८३। २ झाडियों मे : रही ~ लपटाती १३२८।
झार[2] १ ईर्ष्या कम करत तुमसौं कछु ~ १५३०। २ ज्वाला, लपटें नभ लौं पहुँची ~ ५९३।
झार[3] सम्पूर्ण जनु जाते जग ~ २९१४।
झारत १ झाटता है 'सूर' पयारहि ~ २३०१। २ झाडते हुए ~ रज लागें मेरी अँखियनि १३८।
झारति १ झाडती है जसुमति रज ~ १११। २ झाडे डालती हू चतुराइ इनकों में ~ १७७१।
झारि[1] १ झाडकर, पोंछकर मुख की रेनु ~ ३२८१। २ झाड (भूत प्रेत की बाधा दूर करने के लिए मन्त्र पढना) विष अपनौ लियौ ~ ७५९। ३ फेक/डाल. दियौ धनुष कर ~ ९/६५। ४ हिलाकर. ~ तरवारि तव सिर सँहारौ ९/१२९। △ ~ **झूरि** झाड बटोर कर : ~ — मत कन तौ लै गए ३६०९।
झारि[2] समूह : चित्रगुप्त मम द्वार लिखत है मेरे पातक ~ १/१९७।
झारि[3] जलधारा : गइ नैंकु न ~ ८८२।

झारी[1] जलपात्र, सुराही · आपुन ~ माँगि विप्र के चरन पखारे ४१८८ ।
झारी[2] १ झाड कर · स्वान चल्यौ सिर ~ १/१२१ । २. झाड दिया : कछु पढि कै तुरतहिं उहिं ~ ६९७ ।
झारे झाडा, साफ किया पीत पट सु ~ ४२४४ ।
झार्‌यौ झाडकर (अधमरा करके) सकल बल ~ ५७४ ।
झालर शोभा के लिए लगाई जाने वाली सुन्दर चौटी गोट : ~ की झकार सारा० १०७२ ।
झालरि[1] झालर मोतिनि ~ नाना भाँति ८४ ।
झालरि[2] एक बाजा . बाजत ताल, पखाउज, ~ १०७७ ।
झालरी[1] अलकें · झलकत चहुँ दिसि ~ १४० ।
झालरी[2] एक वाद्य यत्र : झाँझ ~ किन्नरी २८६७ ।
झालरौनि झालरियाँ · झाँझ ~ पुज २९१७ ।
झाला बकवाद . काहे कौं ~ लै मिलवत ३६०४ ।
झालिका झालरों से सोभित झाक झब ~ ८०९ ।
झिगुली ढीली-ढाली कुरती : छोटौ बदन छोटियै ~ १३३ ।
झिगरति झगडा करती · मुख ~ आनद उर १४६१ ।
झिझकारि भला बुरा कह (उठीं) . उठीं सबै ~ १४८३ ।
झिमझिमी झिमझिम की ध्वनि : बिच बिच भेरी ~ २९०५ ।
झिरकनहारी झिडकने वाली · स्यामहि तुम भई ~ १५३६ ।
झिरकि १ झिडक कर : ~ बाहिरै कीन्हे १/४० । २ झिडक . ~ कै नारि दै गारि ५५२ ।
झिरकी झटका, खींचा · सूए स्याम अचल गहि ~ १५४४ ।
झिली[1] झिल्ली, एक वाद्य यत्र . झाँझ ~ निर्झर निसान २८५३ ।
झिली[2] झिलमिला रही है : आस पास जमुना ~ ११८० ।
झीखि खीझ ~ रही अपमाननि मारि ३२७० ।
झीन घोडे की जीन : ~ जराइ जु जगमगाइ रहि ४१६६ ।
झीनि झीनी, पतली . कचुकि ~ झीनि पट सारी ३८१५ ।
झीनी १ क्षीण=पतली=कम : कवन आप तव समझ न ~ सा० ल० ५८ । २ पतली, महीन पिपरा पिछौरी ~ २५१ । ३ फटी-पुरानी . ~ कामरि काज कान्ह ऐसे नहि हूजै १६१८ ।
झीनीयै झीनी · ~ झगुलि तामैं कचन ताग ३९ ।
झील झील । △ ~ **परे** झीलैं आ बनी हों अँग अँग ~ — २४७० ।
झुझायौ झुझलाहट : नित प्रति लगत ~ २८८ ।
झुड समूह मे . आवहु री ! सब मिलि इक ~ री १४१६ । ~ **जुरि** समूह मे इकट्ठी होकर अति आतुर है चलीं ~ — सिर सुमनन बरसावैं सारा० ३९९ ।
झुडनि १ झुंड · ~ जोरि रही चद्रावलि २८९४ । २ झुंड मे · झुडनि-~ गोपिका मिलि परि० १/४५ ।
झुंडल घुँघराली . मोर मुकुट सिर अलक सु ~ ९१३ ।
झुकत झुझलाते सूरदास-प्रभु ~ कहा हौ १४७२ ।
झुकति झुझलाती हैं हम पर काहैं ~ ब्रजनारी ३४४४ ।
झुकति १. झुकती है · याहि तैं ~ यहै मग चितवति ३६७१ । २ खीझती है · लोगनि कहत ~ तू बौरी ३२४ ।
झुकाइ झुका लेगा इहिं विधि लखत ~ रहै जम १/१८९ ।
झुकि १ क्रोध मे भरकर : तैं जू बदन झाँप्यौ ~ अचल २७६८ । २ झुक कर : सूर स्वरूप मगन ~ व्याकुल २३८३ । ~ **परे** लडखडाकर गिर पडे रुड भट रुड ~ — धरनि पर ४१८३ ।
झुकी मान गई . ~ महरि दै दै मुख गारि ३०४ ।
झुके झुकने . ~ तैं झुकति २४१८ ।
झुगिया झोंपडी ताके ~ मैं तुम बैठे १/२४४ ।
झुठई झूठे ही ~ आनि बनाई परि० १/१६ ।
झुठयौ झूठा किया माया सुख ~ ३४५७ ।
झुठवत झुठला देते थे लरिकन कौं तुम सब दिन ~ २५३ ।
झुठाई १ झूठ कर दी अवधि ~ कान्ह सुनु री सखि ३४०५ । २ झूठ . जानि परत नहिं साँच ~ ५१३ ।
झुनक रुनझुन की आवाज ~ स्याम की पैजनियाँ १३२ । **रुनक** ~ रुनझुन ध्वनि या शब्द (के साथ) : — ~ ककन बाजै २९९ ।
झुनक-झुनक झुन-झुन की : ~ बोलै पैजनी मृदु मुखर १५१ ।
झुमका झब्बा, गुच्छा . मोतिनि झालरि ~ राजत २८३२ ।
झुरत मुरझाकर दुख सुख ब्याकुल ~ सिहात २२१८ ।
झुरन सूखने लगी . तुम्हरी बाल दसा ब्रजनायक सुमिरि सुमिरि ~ अति ४०१२ ।
झुराइ सूख बदन ~ गयौ ५४२ ।
झुराई सूख . चितवतहीं सब गए ~ ९२७ ।
झुराए १ सूखा हुआ है काहैं बदन ~ २१०९ । २ सूखे हुए . कोटि करै मुख नैन ~ २६६१ ।
झुरात सुखाने लगे · फूँकि फूँकि ~ २४५९ ।
झुरानी सूख गई (व्याकुल हो उठी) · यह बानी सुनि ग्वारि ~ १६१९ ।
झुरावत सुखा रहे थे फूँकि ~ अग ११४६ ।
झुरावै खपाये : तुमसौं मूढ ~ ३८९८ ।
झुरि सूखकर । ~ **झरि** १ सूख-सूख कर : ~ — सब मरति ३४६० । २ झुझला-झुझलाकर · अबहीं मैं देख्यौ नँद-नदन चरित भयौ सोचति ~ — २७८ ।
झुरे सूखे ~ द्रुम अकुरित पल्लव १०६८ ।
झुरै मुरझाया जा रहा है · उनकै गुन गुनि गुनि ~ २४०७ ।
झुरैया सूख गये हैं, थक गये हैं · चारत धेनु ~ ५१३ ।
झुलवहि झुला रही थीं : ~ जूथ मिलै ब्रज सुदरि २९१९ ।

झुलाइ झुला : पिय कौ देत ~ २८३०।
झुलाई झुलाते हैं • सूरदास प्रभु मोहन नागर आपुन झूलि ~ २८३७।
झुलाऊ झुलाते हो, . मुद्रा लै लै चित्र ~ ३८१५।
झुलावति झुलाती है पलना स्याम ~ जननी ४४।
झुलावहीं झुलाती हैं : झूलें सखी ~ ४७।
झुलावें झुलाते हैं . पालन गुपाल ~ ४५।
झुलावै झुलाती है जसोदा हरि पालनै ~ ४३।
झुलै झूल रही है ललना ~ हिंडोरैं २८३९।
झुलैया झूलने वाले (कृष्ण) . झूलौ हो ~ ४१।
झूकै गिरता, डूबता . भव सागर मैं कबहुं न ~ १/३६।
झूखीं दुखी हुई : तब इतनौ नहिं ~ ३५५७।
झूठनि झूठों • अरु ~ के बदन निहारत। ~ के झूठनि झूठो के झूठे, महा झूठे : सुनि सुनि मुख ~ — ३८७४।
झूठहि झूठे ही ~ भरत हुंकारी १६७।
झूठहु झूठ भी . अब ये ~ बोलन लोग २९२।
झूठि झूठी ठहरी मैं ~ तू साँच भई १७७१।
झूठेहि झूठमूठ ही, झूठे हीं ~ नाम लेति ललिता कौ १०८१।
झूठें १. झूठ ~ ही मन आनि गही १९६२। २ झूठ ही ~ कहत स्याम अग सुदर २३१०।
झूठेंहीं झूठ ही . ~ इत उत फिरि आवति परि० १/६७।
झूठौ १. झूठ : कहँ लौं ~ कैहे ४०८७। २ झूठा, मिथ्या अब ~ अभिमान करनि हौ ९/७७। ३ झूठा है ~ माया मोहु ३६१३।
झूम झूमकर। ~ **झूम** झूम-झूमकर . ~ — झूमक सब गावतिं २८५४।
झूमक[1] १. (झूमक) नाच रही हैं झुडनि मिलि गावति चलीं, ~ नद दुवार २८६४। २ झूम रहे हे • ऋतु बसत के आगमहिं मिलि ~ हो २९०३।
झूमक[2] लचक : हँसति पिय सग लेति ~ २८३५।
झूमका (मोतियों के) गुच्छे ~ बहु रग २८३३।
झूमत झूम रहे हैं : ~ नैन, जम्हात बारही २६९०। ~ **झूमत** झूमते झूमते, मस्ती के साथ झूमते हुए ~ — सेज निकट नव तन चढे ११९०।
झूमै झूम रहे हो : सुत-प्यावन-हित ~ १४७।
झूरि स्त्री० ईर्ष्या मे, जलन मे • गोपी कुवरी कै ~ ३१५१। क्रि० स० सखकर . अब तौ मरिहे ~ ४२५०। ~ **झूरि** सूख सूखकर : ~ — पियरी परी २१०८।
झूरे सूखा . चातक चित लागत सब ~ ३५७६।
झूरैं (मन) मसोस कर रह जायँ : तोहिं निरखि मन ~ २४४४।
झूरै जलती हुई बाँधि पची डोरी नहिं पूरै। बार बार खीझै, रिस ~ ३९१।
झूलत १. झूलते हुए : ~ देखत नद कुमार ८०। २ झूलते ह : ~ सुरँग हिंडोरे सारा० ३१०। ३. झूल रहे थे • द्वादस व्याल अधोमुख ~ ३८६७।
झूलन झूलने हिंडोरनै हरि सग ~ आई २८३७।
झूलनि झूलों . बाहे गहि गहि ~ की ३९१०।
झूलहि झूलें : सब मिलि ~ सग तुम्हारे २८२८।
झूलियौ झूलो . हिंडोर हरि सग ~ २८३०।
झूली झूला (नष्ट हो गया) : हुती जो गरब हिंडोरे ~ २७४१।
झूले १ गुजार रहे ह : गुजत फिरत अलीगन ~ २३३। २ झूले पड रहे हैं, मुग्ध हुए हैं देखति लोचन ~ २८२६।
झूलैं झूल रहे ह . मोहन ~ टोल २९१५।
झूलौ झूलो • पलना ~ मेरे लाल पियारे १६०।
झेर[1] देर, विलम्ब काहे कौं तुम ~ लगावत १५६६।
झेर[2] झगड़ा स्याम कहा कियौ ~ १६७७।
झेरनि झगड़ों या झगडों मे : मुकुति परौ किन ~ ३८८९।
झेरि विलव, देर गढ़त लगी न ~ परि० १/१०६।
झेरैं देर . वृथा करत काहे कौं ~ १०८६।
झेरै देर निरखि कहँ भयौ ~ २४४३।
झेरौ विलम्ब . इहाँ करति कत ~ ७५३। २ झमेला : दिन-दिन कौ ~ २७६।
झेल उठाकर रस झेलत अनि सुख ~ सारा० ९८१।
झेलत उमड पडा • बट बाढ़्यौ सागर जल ~ ६३। २. झेलते थे . पुहुप गहे कर ~ ३२२३।
झेलि १ खींच . ~ तब हरि लियौ ३०७०। २ उठा उठाकर जाति ऐंडाति गान गोरि बहिंयनि ~ २०१०। ३. भोग (रहे हैं) दपति सु आनद ~ परि० १/३९।
झेलैं सहते हे • देखि पुर नारि-नर मष्ट ~ ३०७१।
झोटा झटका, पैंग ललिता, बिसाखा देहिं ~ २८३३।
झोर झगडा : उलटि करत हे ~ २३७३।
झोरई झोल या रसेदार : सेम सींगरी छौंकि ~ १२१३।
झोरा झोरी झपटा झपटी, दनादन • मार मची ~ की २८७२।
झोरि हिलाकर, झटका देकर : नयौ कहार चलत पग ~ ५/४।
झोरी[1] पेट . ढीली नीवी गोरी ~ २६६४।
झोरी[2] १ झोली • बटुआ ~ दड, अधारी ३८९५। २ झोली मे . किन नभ घाल्यौ ~ ३५५३।
झोरी[3] एक तरह की रोटी रोटी बाटी पोरी ~ ३९६।
झोल[1] आँचल से पोंछत पट ~ ९४।
झोल[2] राख, भस्म बरु उठि जैसे ~ ३८७०।
झोलौ ढीलापन, कमी कैधौं तुम पावन प्रभु नाहीं कै कछु मो

मैं ~ १/१३६ ।
झौर झगडा · आपु लगावति ~ ३२३ ।

ट

टॅकोरत टकोरते ही, छूते ही : जाकैं धनुष ~ हाथा, आसन टारि भजै सुरनाथा ३०९५ ।
टक एकटक जिहि ~ परे स्याम सुन्दर मौं परि० २/२६ ।
टकटोइ टटोलेगी · अँधरै ज्यौं ~ ३७९४ ।
टकटोरत टटोलने लगे · पुनि पीवत ही कच ~ १७४ ।
टकटोरि टटोलकर, जाँचकर मैं देखी ~ ४१२८ ।
टकटोहन मर्दन करते हुए स्याम स्यामा मन रीझत पीन कुचनि ~ २२७४ ।
टकटोहै भटक रहे हे सुकवि कहा ~ १५८ ।
टकटौरे टटोलते हैं . मिरिच दसन ~ २२४ ।
टक स्थिर दृष्टि टरत न ~ तैं टारे ३५६६ ।
टकमु टकमु का उलटा (मुकट) मुकुट ~ लटकन देख सजनी सा० ल० ३९ ।
टकसार टकसाल . सदन रचत ~ ३९८२ ।
टका मुद्रा लाख ~ की हानि करी तैं १९७५ ।
टकोर हल्की चोट करके : लागी हसन ~ सारा० ९०८ ।
टटकी १ (पक्की) ताजी : छाप परी ~ । २ तुरत की, हाल ही मे लागी ~ नजरि ७५२ ।
टटके १ ताजा मार्यौ जाइ जमुना जल ~ परि० २/४८ । २ ताजे : ~ चिह्न पाछिले न्यारे २५५६ । ३. शीघ्र ही · जाहु तहीं ~ ३६६७ ।
टपकत १ टपक चली : अति जल भीजि चीरवर ~ १९९० ।
टपकन चूने, बहने ~ लागे नैन ३३६० ।
टप-टपकि टप टप : परत स्रम बूँद ~ आनन बाल २०३३ ।
टरई १ टल सकता, डिग सकता · सीता सत नहिं ~ ९/७८ । २ टलती, मिटती : कालिमा न ~ ३३५८ । ३. दूर होता है · तातैं सोच न ~ ४ ।
टरत १ टलता, हटता · नैंकु न मन तैं ~ कन्हाई १४१३ । २ हटते : ~ न इकटक टारत २३८३ । ३ हटते हैं, टलते हैं · नैन थके इत उत न ~ २२२१ । △ ~ न टारी हटाने पर भी नहीं हटती मुंदर हृदय रहत मोहन कैं कबहुँ ~ — ४०५४ । ~ न टारैं हटाने से भी नहीं हटते हैं : सूरदास प्रभु ~ — १८६१ ।
टरति हटती हैं ~ घरी छिन नैंकु न अँखियाँ ४१४८ ।
टरति टलती, हटती : सो छबि लखि सानुराग, ~ न मन तैं १३७५ ।
टरते १ दूर कर पाते, टालते · कम सोक कैसैं उर ~ १६०७ । २ हटते · बरुन इन्द्र क्यौं ~ ३२०८ ।
टरतौ दूर रहता, वंचित होता · ग्यान बिन सब साधन तैं ~ १/१२३ ।
टराऊँ अलग करते हुए · हियौ भरत कहि इनहिं ~ २२६४ ।
टरावै हटा सकता है ऐसौ कौन ~ री १२३८ ।
टराहि टलते हैं, दूर होते हैं सुरभी ग्वाल नंद अरु जसुमति मम चित तैं न ~ ४२७३ ।
टरि १. सरककर . माँग तैं मुकुतावलि ~ १६९४ । २ हट गया अंचल ~ मुख उघरि पर्यौ है १७१३ । ३. टाल रहे ये रहे कच स्रम जल सो कर कजनि सौ ~ १८८५ ।
टरिहैं १ टलेगा · मेरौ कह्यौ नाहिं यह ~ ८/२ । २ टालेंगे : सीकैं बामन ~ परि० १/१३ ।
टरिहौं १ (निपटाकर) हटूँगा आजु हौं एक एक करि ~ १/१३४ । २. हटूँगी . हौं अपनै पति ब्रतहिं न ~ १६५८ ।
टरी १ टली, भंग हुई, टूटी . जिहिं समाधि नहिं ध्यान ~ १/२४९ । २ टलती है, सो चित तैं न ~ २३८६ । ३ टल गई : अवधि अधार हुती सो ~ ३७७७ । ४. टल गई, दूर हो गई ताकी सकल आपदा ~ ४२२४ । ५. अलग हुई छाँह ज्यौं नहिं ~ २४०४ ।
टरे १ टलते गये . केते करबर ~ कन्हाई ५३० । २ टला, हटा : कोउ नहिं ~ उहा सौं आवन कहा ३०७६ । ३ टले, दूर हो · जातैं याकौ फिरिबौ ~ ५/४ । ४. हटाते निरखत मुख मुख तैं न ~ १४१ । ५ हटे : इक पग पल न ~ २०३५ । ६ चलायमान हो गये : चल थके अचलहु ~ ६२३ । ७. छूटती है सो तौ ~ जीव के पाछैं २३६१ । ८ छोड़ते हैं . लोचन लालच तैं न ~ २३०७ ।
टरैं १ टलता · न चित तैं ~ ३/१३ । २ टलती हैं : आयसु तैं न ~ ३८६३ । ३ त्याग देते हैं सत समाधि ~ ३६०२ । ४ हटा पाती थी : इक टक नैन ~ नहीं २२०१ ।
टरै १ सरक पडे · देखे रहौ ~ जनि नख तैं ८७५ । २ टल जाय . सु को जु न ब्रत तैं ~ ४१८७ । ३ टलते : चित तैं न ~ री २८८६ । ४ हट (भंग हो) जाएगी . प्रभु मरजाद ~ १४२ । ५ हटता है : क्यौं हूँ चित उनतैं न ~ १६६६ । ६ हटती है, हिलती है : वह कतहूँ चितवै न ~ २५६७ । ७ हिला सकता है, डिगा सकता है : पवन कहा परबत ~ ।
टरैगौ १ टलेगा, हटेगा · हित चित तैं हमरैं न ~ ३६१९ । २. दूर होगा, मिटेगा · कैसैं सूल ~ ३३६८ ।
टरौं १ टलता . जहाँ भाव तहँ ते न ~ १५२२ । २ हट सकती, टल सकती : पतिब्रत तैं न ~ ३५५१ । ३ हटा पाती :

निरखत एकटक तें न ~ री १८५४।

टरौं टलता हुआ, भग हुआ : कै प्रन जात ~ १/२२०।

टर्‌यौ १ छूट गया, हट गया : ध्यान नारद ~ नेस आनन चल्यौ १०६३। २ टल गया, दूर हो गया : हिमकर गरव ~ ३३९२। ३ टल गया, भग हुआ · राजा, वचन तुम्हारौ ~ ९/२। ४ भग हुआ हो, टूट गया हो : को व्रत तें न ~ २८१४।

टहल १ सेवा के दासी तृष्ना भ्रमत ~ हित १/१४१। २ सेवा (काम-काज) . सो करै ~ लकुटिया कै टर ३९२।

टहल जोग सेवा (गृहस्थी) के योग्य : ~ यह कुवरि सुभद्रा ४३०४।

टहलनि कार्य के लिए : डोलत महल महल गहिं ~ २५५५।

टाँडे (बनजारों के बैलों आदि का) समूह : ज्या बनजारे ~ ३६०४।

टाँडौ समूह (पाप का समूह) . सूर पतित कौ ~ १/१४६।

टाटक ताजा : आए सुरति किये ~ रस २५५५।

टाटी १· छोटा टट्टर, मोर मुकुट ~ मानो २२७२। २ झोपडी : मानत रक त्रास ~ कौ ४२३९।

टाड भुजबंद : ~ भुज गहि लीन ४१०७।

टामनि टोना, टोटका · टोना ~ जन्त्र मन्त्र करि ध्यायौ १३५।

टार टाल · आपु दीन्ह्यौ ~ ५२४। △ ~ दै गए टाल गये, झाँसा/भुलावा दे गये : ~ — हरी २७१५।

टारत १ टालती हैं : दृष्टि टारि, ध्यानहुँ तैं ~ ३९७४। २ टालते, हटाते : एकौ निमिष न ~ १८०६। ३ तोडते हैं : राज मान मद ~ १/१२। ४ भूलते थे : चित तैं काढ न ~ २१८२। ५ हटाने से भी : टरत न इकटक ~ २३८३। ~ हूँ न टरी निकालने पर भी नहीं निकलती : ~ — १८७४। ~ न टरत हटाने से भी नहीं टलते मोह मेर दुख ~ — ९/६२।

टारति १ टालती हैं, हटाती हैं · उर तें नैकु न ~ ६४। २ टालती है, हटाती है : तब प्यारौ कर गहि मुख ~ २४५७।

टारन हटाने वाले, मिटाने वाले : कलि मल हरन कालिमा ~ १/५८।

टारहीं हटाते हैं : अग तें नैंकु न ~ २४०७।

टारहु १ दूर करो . जोबन-दान देइ रिस ~ १६१९। २ हटाओ : सूर स्याम उर तें कर ~ १४७१।

टारि १ टाल, खींच . आपुहिं ल्याए ~ ५८९। २ टाल कर, हटा कर दृष्टि ~ ध्यानहुँ तें टारत ३९७४। ३ दूर करके भुवन दुख ~ सुख दियो भारी १९४८।

टारी १ टाला, अलग किया कबहुँ न उर तें ~ २०१६। २ निकालकर : उर तें रिस ~ १९५७। ३ हटा · लेत नहिं इहाँ तें गज ~ ३०५२। ४ हटा दिया, विमुख कर दिया · पतिमत तैं ~ १/२०४। ५ हटाई . जहँ जहँ विपति परी तहँ ~ १/२२।

टारे १ टालते हैं अवधि नहीं दिन ~ ३७५८। २ टाले, हटाये उर ते नहिं ~ १/९४। ३ दूर किया, निवारण किया : बन विपदा दुख ~ ९/१६७। ४ दूर किये . कौन-कौन कमवर है ~ ३९१। **टरत न** ~ टाले नहीं टल रहा है . नव नैं — ~ २२२६।

टारैं १ टालने से · टरनि नहीं कहुं ~ ३११८। २ टाल (रहे थे) · स्याम रहे हिन ~ ३९४२। ३ फेरते रहते हैं . माला रचना कर माँ ~ २५८७। ~ **टरत न** टाले नहीं टलता ~ — इक पल मधुकर २२९७।

टारै १ टालने से, हटाने से · टरै न कबहूँ ~ १/१४२। २ टाला करता · विघ्न भज कौ को ~ १६१८। ३ टल जाते हैं, दूर हो जाते हैं . कोटि भ्रम ~ १२९। ४ हटने देती है · जे पद रमा हृदय नहिं ~ ९८१। ५ वारा न्यारा कर देता है : (हरि) चौदह भुवन पलक मे ~ ३।

टारौं १ उल्लघन कर दूँगा, भूठा कर दूँगा · सिव बचननि कौं ~ ९/१०८। २ हटाऊँ, दूर करूँ · (मूरत) बसी कौन विधि ~ सा० ल० ६६। ३ हटाऊँगा, टालूँगा : मन तै तुमहिं कहूं नहिं ~ ४५०।

टारौ १ टाल सकते हो : बोल बचन तिनहूं नहिं ~ ४२०३। २ दूर कर देते हो : कुल कलक किन ~ ९/११५। ३ दूर कीजिए, निवारण करो . सकल आपदा ~ १/२१८। ४ हटाओ . नैननि तें जनि ~ १३५०। ५ हटा दे, निकाल डाल : राधिका हृदय तैं धोख ~ २०६१।

टार्‌यौ १ दूर किया, मिटा दिया, निवारण कर दिया · वाकौ दुख ~ १/१४। २ हटा दिया, टाल दिया : सिंधु जहाँ तैं ~ ५७४।

टाली[1] बछियाँ। पाई कुज-पुज मैं ~ ५०३।

टाली[2] भग कर दी . इंद्र प्रतिज्ञा ~ ३०३०।

टिकाइ ठहराकर, रोककर ब्योम विमान ~ ९/१६२।

टिके रुक गये, टिके रह गये ग्वाल ~ पग एक न छाड़े २९०१।

टीका १ टाका, तिलक : ~ भाल दियौ २०२७। २ सिर का आभूषण (टीका) . ~ धर्‌यौ जराउ १४९८।

टीके टीका राजकाज करि ~ परि० ९/१८५।

टीकौ १ टीका · लै अपजस कौ ~ ३८२८, आयौ जस को ~ ३६४९। २ भेंट, उपहार · लोक लोक कौ आयौ ~ ३०९४। ३ सिर का एक आभूषण, टीका मोतिन माल जराउ को ~ ११२०। ४ श्रेष्ठ, शिरोमणि . प्रभु हौं सब पतितनि कौ ~ १/१३८। ५ श्रेष्ठ है, शिरोमणि है · कान्ह सबनि कौ ~ ३५५६।

टुटैं टूट गइ निगम नेति कुल लाज ~ मद २३२१।

टुनहाई टोना करने वाली : यह तौ ~ १२५१ ।
टूँडक नीच प्रकृति का : लगर ढीठ गुमानी ~ १/१८६ ।
टूक टुकडे . फटि न भई द्वै ~ ३१३४ । ~ **टूक** टुकड़े-टुकडे : ~ ~ करि डारौं ९/१४३ । ~ **टूक करि काटौं** धज्जी-धज्जी उडा दूँ : कहौ तौ कालहि खड खड करि ~ — ९/१४८ ।
टूटत १ टूटते : अपनै मन नहि ~ २३७३ । २ पडने लगी : सलिल अखड धार धर ~ ८५८ । ३. टूट रहे हे : इभ ~ अरु अरुन पगु मे २७७६ । ४ टूटते ही, भग होते ही : ~ धनु नृप लुके जहाँ तहँ ९/२३ । ५ टूटने लगे : उडत जु धुजा पताक छत्र रथ, तरुवर ~ तीर ४१६२ । ६ टूट रहा . ~ है उर हार २९०७ ।
टूटतैं टूटते ही : ~ धनुष के सब्द आकास गयौ ४२२१ ।
टूटहिगी टूट जायेगी · ~ मोतिन लर मेरी १६७० ।
टूटि[1] टूटी, हानि : राधा कहति सँदेस स्याम सौं भई प्रीति की ~ ४२४८ ।
टूटि[2] १ टूट : ~ गए गुन तानत २३९८ । २. टूटकर · 'सूर' प्रभु छुवत धनु ~ धरनी पर्‍यौ ३०४७ । ३ टूटी : कचुकि तैं कुच कलस प्रगट है ~ न तरकि तनी ४२९३ । △ ~ **परी** टूट पडी : ऐसैं ~ — उन ऊपर २०८७ ।
टूटी १ टूट गई : ~ तरकि तनी १८८० । २ टूट कर गिरी थी प्रेम-प्रवाह चली मनु सरिता ~ माल गरे २४७० । ३ टूटी, भग्न हुई ~ छानि मेघ जल बरसैं १/२३९ ।
टूटे १ टूट गया : मोतिन-हार ~ सुख लूटे १६७८ । २ टट गया हो ज्यौं तरु ~ पात ३८२७ । ३ टूट गये, टुकडे-टुकडे हो गये . बधन सब ~ ९/९७ । ४ ढह गये : घूँघट पट कोट ~ ६५० ।
टूटैं टूट जाने से माला गिरति ~ डोर ३५८ ।
टूटै १ टूट जायेगी ~ मोतिनि माला १४७१ । २ झपटता है मन दसहूँ दिसि ~ ७।१९ । ३ पड रही है . मुसलधार ~ चहुँ दिसि तैं ~ ८६९ । △ ~ **बात** बात टूटी-फूटी निकलती है, रसना ~ — १/३१३ ।
टूटौ टूटा हुआ : ~ पलँग बिछइयै १/२३९ ।
टूट्यौ टूटा, टूट गया · अकुस ग्यानहु ~ ४०३७ ।
टेटा करील के फल गोप छाँडि को चूसै ~ खारे ३५७९ ।
टेव आदत अजहुँ न ~ गई १/२९९ ।
टेक १ जिद्, हठ · करिहैं आपनी ~ २१९४ । २ टक टकी · सुत सुत बाँधैं ~ सा० ल० ४३ । ३ पकड कर जब दधि मथनो ~ अरै १४२ । ४ सहारा है, आश्रय है . एकै ~ हरी १/२५४ ।
टेकत १ टेकते हुए लकुट लिए कर ~ जाई ९३९ । २ टेकते हैं, सहारे के लिए थामते हैं . सूर प्रभु कर सेज ~ ६७ । ~ **पिय पानि** प्यारे श्याम उमे हाथ का सहारा देते हैं . स्रमित भए ~ — ११८० ।
टेकति टेकती थी हा हा करति चरन कर ~ २६२५ ।
टेकही टिके हुए थे सुधि अवलबन ~ १९६३ ।
टेकहु थामो, सहारा दो ~ गिरि गोवर्धन राई ९३९ ।
टेकि १ आश्रित करके, टिकाकर वाम करज गिरि ~ दिखायौ ९५१ । २ उठा : कृपा करि मोहि ~ लेह २९४९ । ३ टेका, उठा लिया : बाम भुज ~ लघु जात-कर सौं ९५७ । ४ टेक कर . सचिव सिर ~ तब कह्यौ निज नृपति सौं ४१९४ ।
टेकी जिद्दी अपनी गौं के ~ ३८९८ ।
टेके सहारा लिये, टेके · ~ कर द्रुम डाल १४०१ ।
टेकौ सम्हालो, टेक लगाओ तुमहूँ मिलि ~ गिरि आइ ८७२ ।
टेक्यौ १ आश्रित कर लिया, उठा धरा · बाम कर तें ~ गिरिराज ८७२ । २ सहारा दिया, टेक लगाई : जहाँ-तहा सबहिनि गिरि ~ ८७५ ।
टेटी टींट सबजी : ~ ढेढस छोलि कियौ १२१३ ।
टेढि टेढ़ी : ~ टेकि चलत पग धरनी ३१४८ ।
टेढी १ अशिष्ट . कुटिल कुचील जन्म की ~ ३६३६ । २ वक्र, तिरछी अरुन लोचन भौंह ~ १०० ।
टेढ़ै-टेढ़ै इतराता हुआ . ~ जात २/२२ ।
टेढौ-टेढौ टेढे-टेढे, इतराकर तू जौ ~ चलत ५/४ ।
टेर स्त्री० आवाज, पुकार : सब ~ लगाई २०९ । २ ध्वनि : हृदय निगी ~ मुरली ३६९४ । **क्रि० अ०** पुकार कर · ग्वालिनि ~ सुनायौ ८६८ । ~ **देत** बुलाते थे, पुकार लगाते थे : ~ — श्रीदामा द्रुम चढि ३९५६ ।
टेरत १ पुकार लगा रहा था इक ~ इक दौरे आवत ९०२ । २ पुकारती हुई : स्याम स्याम ~ भई भोरी १६४३ । ३ पुकार रही थी ~ जरी जरी १/१६ । ४ पुकारते हुए : 'सूर' स्याम गए ग्वालनि ~ १९५८ । ५ पुकारते है, बुलाते हैं खेलन जाहु वाल सब ~ ७४३ । ६ बुलाती . भई साझ जननी ~ है सारा० १९२ । ७ ललकारता है : खीझत है फिरि ~ ८७८ ।
टेरति १ पुकारती हुई ~ जसुमति धाई ४१३ । २ पुकारती हैं, बुलाती हे . पाछैं जुवति रहीं तिन ~ १५०१ । ३ पुकार रही हूँ कब की ~ कुवर कन्हाई ६०९ ।
टेरनि १ पुकार की ग्वालनि की ~ २०५८ । २ ध्वनि : वा मुरली की ~ ३८८९ ।
टेरनौ पुकारने लगे, पुकारा धौरी कजरी ~ २८३२ ।
टेरही बुलाते है, पुकारते हैं : ग्वाल बाल सब ~ ४३९ ।
टेरा बताया भाषा कहि कहि ~ १/१८६ ।
टेरि १ पुकार कृष्न कृष्न करि ~ उठति है १११६ । २

पुकारकर . ~ कह्यौ मेरैं घर जैहौ २०२४ । ~ टेरि बुला बुला कर, पुकार पुकार कर : ~ — जब टेति नवनि कौं ८१०। ~ बजायौ जोर मे बजा दिया मुरली ~ — १०१४ । लीजौ ~ पुकार लेना मोहिं लीजौ तुम ~ ४०० ।

टेरी १ पुकार कर : सूर दरवान कह्यौ जाइ ~ ९/१३८ । २ बुलाकर : और कहौ कछु ~ १८८१ । ३ पुकारा, बुलाया इत उत देखि द्रौपदी ~ १/२५१ ।

टेरे १ आवाज लगाते हैं : गिरि पर चढि गिरिवर धर ~ ४६३ । २ पुकार कर कहत निगम नित ~ १३९५ । ३ पुकार लिया . रूप विधि ~ रि २३३० । ४ पुकारे : बीच करि नाग इत उतहिं ~ ३०५४ । ५ पुकारे जाने पर · निकट सुनत नहिं ~ २३५१ ।

टेरैं १ दुहाइ देते हैं : निपट निगम के ~ १६५३ । २ पुकार रही हैं : मोहन-मोहन कहि-कहि ~ १०८६ ।

टेरैंगे बुलायेंगे . अरधरात कौं उठि सब बालक, मोहिं ~ आइ ४०३४ ।

टेरै पुकारता, बुलाता धौरी धूमरि ~ हो ४५२ ।

टेरो बोला है : राधा सौं कहति नारि काग सगुन ~ ३०४९ ।

टेरौ पुकारते/बुलाते हो . काहे न ~ कान्हा, गैयाँ दूरि गई ६१२ ।

टेर्‌यौ १ पुकार की, पुकारा : हा करुनामय, कुजर ~ १/११३ ।

टेव आदत, बान : ऐसी ~ परी इन गोपिन ३०८ ।

टेवा अभ्यास, स्वभाव : सूर कृपा करि आए ऊधौ, तापर ~ टारन ४०२२ ।

टेसू पलाश के ~ कुसुम निचोइ कै २८६७ ।

टोए समझने पर : सब सुधि परी बचन कन ~ ३७११ ।

टोकैं टोकते हैं मारग चलत जहाँ तहँ ~ १४६० ।

टोक्यौ टोका है, रोका है : जब जब अधम करी अधमाई तब तब ~ नाथ १/१९६ ।

टोट कमी नहिंन रूप की ~ १८६९ ।

टोटौ १ कम ~ होत रतन तेरह तौ ३३५६ । २ कमी (रही), अभाव (रहा) · विषया गाँव अमल कौ ~ १/६४ ।

टोडी एक रागिनी सुही सारँग ~ भैरव २८३१ ।

टोना तत्र-मत्र, जादू . ~ डारि ळेत सिर ऊपर १५९३ । ~ **टामनि** टोना-टोटका ~ — जत्र मत्र करि ध्यायौ देव दुआरो री १३५ ।

टोरि सँभाल कर : तुरतहीं ~ गिन कोरि ५८८ ।

टोरैं काटें : हम दिन क्यौं करि ~ ३५४८ ।

टोल १ टोली मे, मटली मे : बधू आई सबैं अपने अपनें ~ २९०५ । २ टोले में, मुहल्ले मे : मगल-धुनि महराने ~ ९४ ।

टोले मुहल्ले मे . आप आपने ~ ३६४५ ।

टोलैं टोलियों मे : अपने अपने ~ २८५७ ।

टोलैं मुहल्ले-मुहल्ले : विरह भरी फिरै ~ री १६४२ ।

टोवा टर्र टर्र शब्द : दादुर निकट करत जो ~ ४२६७ ।

टोहै ढूँढे, टटोले जो ~ इक सीत ३८५५ ।

टोहौ पता लगाते हो : सूर सुर बैद बेगि ~ किन ३६१२ ।

टौना टोना, जादू यह जानत कछु ~ ६०१ ।

ठ

ठई १ स्थापित की, बनाई इन्द्र लोक-रचना रिपि ~ ९/३ । २ ठान लिया है · इन सबहिनि मिलि कठिन ~ री ३२६४ । ३ बन गई, हो गई : नृप पुत्री दासी करि ~ ९/१७४ । ४ स्थित है . तापर सिंह ~ २७७८ ।

ठए[१] १ ठगा, धोखा दिया . यहै कहि नैननि बहुत ~ १८६७ । २ ठान ली है तिन मिलि बेर ~ ३२३७ । ३ पहुँचे आइ सुर मधुपुरी ~ ८ । ४ बनाये हैं ललित वेष ~ २३६३ । ५ बनी हुई है, स्थित है · मसि रेखा अधरनि जु ~ २६४२ । ६ किये यज्ञ तिन ~ ४/१२ ।

ठए[२] ये : पुलिन पुनीत निकुजनि ~ ११८० ।

ठकुराइ स्वामित्व . यह मेरी दीन्ही ~ ९७८ ।

ठकुराइत स्वामित्व : ~ केसौ गिरिधर की ३००९ ।

ठकुराइति स्वामित्व कहियौ ~ हम जानी ३६३७ ।

ठकुराइनि स्वामिनी, मालकिन . नहिं दासी ~ कोई ४०९४ ।

ठकुराई १ प्रभुता : यह पाडव कैं घर ~ १/१९ । २ प्रभुत्व है · तुम्हरी एक बडी ~ १/९३ । ३ ठकुराई, महत्त्व . उन सम नहि हमरी ~ ४१९५ ।

ठकुरानी स्वामिनी जहँ दोऊ ~ ४२९१ ।

ठकुरायत प्रभुता, स्वामित्व . ~ गिरिधर की साँची १/१८ ।

ठगत १ ठगते · ऐसें ~ फिरत हरि घर घर १८८६ । २ ठगे जाने से ~ न कोउ बाँच्यौ १/४४ ।

ठगति ठगती ~ फिरति ठगिनी तुम नारी १५८१ ।

ठगनि ठगों : करत ~ के छद १५४१ ।

ठग-मति ठगने वाली बुद्धि · नहि दानव ~ कौ ९/८४ ।

ठगमूरी वशीकरण की जडी, बेहोश कर देने वाली एक जडी · सूर कहू ~ खाइ । △ ~ खाई ठगों की जडी खा ली हो . स्याम रहे मुरझाइ कै, ~ — २७३५ ।

ठगमोदक नशीले पदार्थो मे बनाया गया लड्डू जिसे खिलाकर ठग पथिकों को बेहोश कर देते थे और उनका सारा माल लूट लेते थे : तेर ~ मद ३३९७ ।

ठगवारी वह वस्तु जिसके द्वारा लोगों को ठगा जाय बाँधे मूड फिरत ~ ३७४६ ।
ठगाइ ठगपना उनकैं चित्त ~ ३१८६ ।
ठगाने ठगे गए ते मुरली कै नाद ~ १३१० ।
ठगायौ १ ठगा गया • रे मन जग पै जानि ~ १/५८ । २ ठगा है : कहौ नाम धरि कहा ~ १४१४ ।
ठगारे ठगी मालूम पड़ती हो : अतरगत जु ~ ३७६१ ।
ठगि ठगी सी मैं चकित ह्वै ~ रहीं २३६४ । ~ **रही** मुग्ध रह गई सूरदास ~ — ग्वालिनी २७० ।
ठगिहौ ठगोगे और कह ~ १४१४ ।
ठगीं ठगा, ठग लिया, मैं इहि ग्यान ~ ब्रज बनिता ३/२ ।
ठगी १ ठग लिया ढोल बजाइ ~ ३२६५ । २ ठगी हुई : कहा ~ सी ठाढी २४१५ ।
ठगे १ ठग लिया : की ठग ~ कछू से हौ २५१० । २ विमुग्ध हो गए, दग रह गए : रहे ~ मव कौतुक हार १७३ । △ ~ **से** ठगे हुए के समान, स्तब्ध • बिना गोपाल ~ — ठाढे ४१०० ।
ठगै धोखा देती है, ठगती है एकनि कौं दरसन ~ एकनि के सग सोवै १/४४ ।
ठगौर जादू : सिर परी ~ २४०८ ।
ठगौरि मोहिनी : बचन मत्र ~ २२९५ ।
ठगौरी १ जादू : सहज सुभाइ ~ डारी २२२२ । २ माया • जोग ~ ब्रज न बिकैहै ३६६४ । ~ **लाई** जादू चला दिया है काहू तोहि ~ — १४११ । △ ~ **खाई** ठग लिया गया : हठनि ~ — १/१८७ ।
ठगौसौ ठगा सा, स्तब्ध 'सूर' बचन सुनि रह्यौ ~ ३६८६ ।
ठग्यौ ठग लिया चोली चतुरानन ~ १/४४ ।
ठटनी सजावट पुलिन तुलिन ~ २१८४ ।
ठटी १ एकचित्त . चातक रटत ~ १/९८ । २ निश्चित किया . 'सूर' प्रभु ~ ज्यौं भयौ चाहै सु त्यौं ४१९७ ।
ठटै निश्चित करता है, स्थिर करता है होत सो जो रघुनाथ ~ १/२६३ ।
ठठ समूह, भीड गोपी ग्वाल जुरै बहु ~ री ८१० ।
ठठकत ठिठक ठिठककर, रुक रुक कर . सुनहु 'सूर' ~ सकुचत गए २६२९ ।
ठठकति ठिठकती हुई ~ चलै मटकि मुँह मोरै १४३९ ।
ठठकनि ठिठकना, झिझकना • ~ कहत प्रेम सकुचानि २०३० ।
ठठकि ठिठक कर • ~ रही द्वारे पर ठाढी ५४० । ~ **रहै ठाढी** ठिठक कर खडी हो जाती है पग द्वै चलति ~ — १७७२ ।
ठठा ठठा मडली, गिरोह • ~ एकै जानि १२७९ ।
ठठुकति ठिठकती हुई जल भरि ~ चली १४०९ ।
ठठुकि ठिठक • मन मैं कछु कहन चहै, देखत ही ~ रहै २१९२ ।
ठयौ १ ठान लिया है • यह कछु मान ~ री २४२९ । २. ठान दिया, करने लगा झगरौ फेरि ~ १६७१ । ३ किया : नृप कह्यौ पुत्र हेत जग ~ ९/२ । ४ बनाया . नारी-सग हेत तिन ~ ९/२ ।
ठहराइ १. रोके तब तुम इत ~ रहौगे ४०७८ । २ ठहर, स्थिर सकैं नहि ~ ११४५ । ३ रोक कर, स्थिर करके . पुनि लोचन ~ निहारति १८५१ । ४ स्थिर रह पाता है : वहाँ न मन ~ १८१३ ।
ठहराई १ निश्चय की, पक्की की . मन मैं यहै बात ~ ५/३ । २ टिकाई . भ्रकुटि पर नैन ~ १८०२ ।
ठहरात १ ठहर/टिक पाती है : दृष्टि नहीं ~ २३०९ । २ ठहरता है कहूँ नही ~ २३२९ । ३ ठहरते हैं, टिक पाते हे • लोचन नहि ~ स्याम के २१३६ । ४ ठहरने लगा : निरगुन क्यौं ~ ३६८९ । ५ रुक जाता है बद कर देता है : वह तौ पुनि ~ २१२१ । ६ स्थिर रहता • ठाले कत ~ ३५७२ ।
ठहरान ठहरने, स्थिर होने कुबुद्धि ~ न देइ ४/१२ ।
ठहरानी स्थिर रही • हिऐ नहीं ~ परि० १/१९४ ।
ठहराने १ रुकता है . प्रीनि न पल ~ ४००८ । २ टिकते हैं • निमिष बिसरि ~ २२४८ ।
ठहरायो, ठहरायौ १ निश्चित कर लिया, सोच धरा ज्वाब मनहि ~ २०४८ । २ ठहराया, दृढ किया . तब उन मन मैं जुध ~ ४२०६ । ३ ठान लिया है . नैननि भलौ मतौ ~ २३६६ ।
ठहरावत टिके रह जाते हैं . बरन बरन मदिर बने लोचन ~ ३०२१ ।
ठहरावति स्थिर रखती है क्यौ नैननि ~ री २०६४ ।
ठहरावैं सत्य सिद्ध होता : बेद बचन कैसै ~ १६०७ ।
ठहरावै निश्चित कर ले जमा बाँधि ~ १/१४२ ।
ठही रक्षा की, बचाई, रख ली हरि जू लाज ~ १/२५८ ।
ठह्यौ जानकर, अच्छी तरह खेलत रग ~ परि० १/१३१ ।
ठाँ ठाँव, स्थान, जगह तिहि ~ आयौ १५६ ।
ठाँउँ स्थान चरन-कमल बिन ~ १/१२८ ।
ठाँव स्थान चित न रहत कहुँ ~ रौ २८८५ ।
ठाइ स्थान पर राखे हैं इहि ~ १४६१ ।
ठाई १ स्थान पर जब सब गाइ भई इक ~ ६१४ ।
ठाई २ धारण कर लिये, पहने उलटे अग अभूषन ~ ९८९ ।
ठाईं स्थान मे • रास रच्यौ बन ~ हौ परि० १/५५ ।
ठाउँ १ पास . मो है तुम्हरे ~ ३६ । २. स्थान, जगह • ताहू ~ परिहरै सोइ ३/१३ । ३ स्थान पर, जगह पर . कौन

रहै इहिं ~ १५११।

ठाऊँ स्थान पर : गुन प्रगट्यौ इहिं ~ ५३८।

ठाकुर १. गाँव का मालिक, जमींदार . तातैं ~ लूटौ १/१८५। २ स्वामी . धनि वै ~ धनि तुम सेवक ३९०९। ३ स्वामी ने . सूरदास प्रभु पूरन ~ कह्यौ ७/४।

ठाकुरहिं ठाकुर को : वह अपने ~ जिवावै २४९।

ठाट ठाट (बाना) : ठाटि ठगन को ~ १४६१।

ठाटि ठाट : कहि कौनें ~ रचायौ ४३६।

ठाटिवोहि बनाना ही, ठाट करना ही : जौ यह ठाट ~ कर राख्यौ १२८६।

ठाटी साध ली है : कपट चतुराई ~ २५४।

ठाटौ रचा, ठाट किया . नहिं वनि आयौ जो हम ~ ३७३३।

ठाठि बनाकर ~ ठगनि कौ ठाट १४६१। ~ कै सज्जित करके : उन्मद जोबन आनि ~ — ३६७६।

ठाढी १ खडी . चितवनि हुती झरोखैं ~ ८०८। २ खडी हुई ह ~ सारँग भारि २१११।

ठाढे खडे : सिव-बिरचि देखत सव ~ ८/३।

ठाडौ खडा हुआ . सिरक ~ हेर आई सा० ल० ३९।

ठाढीं खडी हुई हैं : जब जान्यौ वन मैं हम ~ १५९१।

ठाढी १. खडी हुई . ~ मथति जननि दधि आतुर १६७। २ खडा थी · गुरुजन विच मैं आँगन ~ १८८५। ३. खडी रहती है : तारापति-अरि के सिर ~ ३९१२। ४ खडी हो : कहा ठगी सी ~ २४१५। ५. खडी हो गई/गई : आगे ~ आइ कै ३०९२।

ठाढे १. खडा है : इक ~ मदिर कै तीर २५। २. खडे : पाछैं नद सुनत हैं ~ २१७। ३. खडे हुए : सूर वीर अवलोकत ~ ३०४९।

ठाढैं खडे . आइ पाछैं भए ~ २०११।

ठाढौ १. खडा · हँसत स्याम जब देख्यौ ~ ३०७०। २ खडे . आपु रहत ~ ह्वै मौन १५९३। ३ खडे हुए · ~ गावै मीठी तान १४००।

ठाटर लडाई, झगडा : करन इद्र सौं ~ ८५८।

ठान १ निश्चय, सकल्प : जनु कीन्ही विधि ~ २४४६। २ हठ सुनत उनकी ~ सा० ल० ६९।

ठानत १ करता है तातैं हमरी अस्तुति ~ ८२९८। २ करते हैं . त्यौ ही ये अतिहिं हठ ~ २३५८।

ठानति १ करती है कत हरि सौं हठ ~ २८०२। २ ठान ली है . अब ऐसी बुधि ~ १४२८। ३ भिड जाऊँगी : अब मैं या सौं ~ हौं १२५५।

ठानहु तैयारी करो गोवरधन की पूजा ~ ८९९।

ठानी १ आरभ किया, शुरू किया : ताही दिन ते पाडु पुत्र सौं वैर विषम गति ~ सारा० ७६१। २ निकाल ली थी : कैसी बुद्धि मौन की ~ १७४५। ३. कर ली : मूढमति प्रीति ~ १/११०। ४ ठान बैठे/दी : मोहू सौं निठुराई ~ हो मोहन प्यारे २५४९। ५ ठान ली : कुल कलक ऐसी मति ~ ९/१६०। ६. निश्चित करते : और कछु वनै नहिं बुद्धि ~ १९४९। ७. पहनाकर, सजाकर · अपने भूषन ~ २१६०। ८ बनाई थी, रची थी अर्ध निसा ब्रजनारि सग लै, वन वन लीला ~ ४०३९। **चतुराई** ~ चालाकी की कोक-कला-गुन आगरि नागरि, सूर — ~ १९८१। **बातनि** ~ बातें बना-बनाकर, चालाकी कर के हमहिं दुराबति — ~ १७२३।

ठानैं करते हैं · कछू कहैं कछु ~ ३९९८।

ठानै १ करता है : उद्यम ~ ३/१३। २ निश्चित/स्थिर करता है : वहै रीति पुनि ~ ४/१२। ३. ठानता है वह अपनौ गुन ~ ३७५०। ४ ठानती हो : वरवस झगरौ ~ १४७६। ५ ठानते/भेजते हैं : हम निर्गुन लिखि ~ ३७१५।

ठानौं ठान कर पुनि देखौं फिरि कै हठ ~ १८५१।

ठान्यौ १. ठान लिया है, ठान बैठी हूँ . वैर सवनि सौं ~ १६६२। २ ठाना, आरम्भ किया, शुरू कर दिया · दधि कौ दान मेटि यह ~ १५२०। ३ निश्चय किया : सुफलक सुत मिलि ठग ~ है ३९७७। ४ निश्चय किया है, ठाना है तातैं उन ऐसौ वलि ~ ५/३।

ठाम स्थान (पर) . द्रुम लागै तिहिं ~ ३८०७।

ठाली वेकार, खाली . ऐसी को ~ बैठी है ३८९८।

ठाले निकम्मे · हरि मुख कमल कोष तें बिछुरे ~ कत ठहरात ३५७२।

ठावहि स्थान प्रगटति रस रुचि रुचि ~ ठाउँ ६६३। ~ **ठाँव/ठाउँ** स्थान-स्थान पर : प्रगटति रस रुचि ~ — ६६३।

ठाहर स्थान (पर/मे) : तातैं खरी मरति इहि ~ ३९८९।

ठाहीं स्थान पर . फिरि न लगै उहि ~ ३२२९।

ठिक ठहराइ स्थिर कर पाया . पचि हारे सव कोटि कला करि चढ न ~ २७७३।

ठिकाइ ठीक कर ली हाँकि ~ तेती ४४५।

ठिकानैं ठिकाने। △ ~ **आवै** स्थान पर पहुचे धीरज धरि मो ~ — ३/१३।

ठिकानौ आश्रय, स्थान . विसर्यौ परम ~ १/४७।

ठिठुकि ठिठक चितै चलि ~ रहत २५८५।

ठिले दुराग्रहपूर्वक बढाये . बोलत बोल ~ हा २४६६।

ठगवारी वह वस्तु जिसके द्वारा लोगों को ठगा जाय वाधे मूड फिरत ~ ३७४६।

ठगाइ ठगपना : उनकैं चित्त ~ ३१८६।

ठगाने ठगे गए : ते मुरली कै नाद ~ १३१०।

ठगायौ १ ठगा गया : रे मन जग पै जानि ~ १/५८। २ ठगा है : कह्यौ नाम धरि कहा ~ १४१४।

ठगारे ठगी मालूम पड़ती हो : अतरगत जु ~ ३७६१।

ठगि ठगी सी : मैं चकित ह्वै ~ रहीं २३६४। ~ **रही** मुग्ध रह गई : सूरदास ~ — ग्वालिनी २७०।

ठगिहौ ठगोगे . और कह ~ १४१४।

ठगीं ठगा, ठग लिया, मैं इहि ग्यान ~ ब्रज बनिता ३/२।

ठगी १ ठग लिया ढोल बजाइ ~ ३२६५। २ ठगी हुई . कहा ~ सी ठाढी २४१५।

ठगे १ ठग लिया : की ठग ~ कछू से हौ २५१०। २ विमुग्ध हो गए, दग रह गए: रहे ~ सब कौतुक हार १७३। △ ~ **से** ठगे हुए के समान, स्तब्ध : विना गोपाल ~ — ठाढे ४१००।

ठगै धोखा देती है, ठगती है • एकनि कौं दरमन ~ एकनि के सग सोवै १/४४।

ठगौर जादू • सिर परी ~ २४०८।

ठगौरि मोहिनी • बचन मत्र ~ २२९५।

ठगौरी १ जादू • सहज सुभाइ ~ डारी २२२२। २ माया • जोग ~ ब्रज न बिकैहै ३६६४। ~ **लाई** जादू चला दिया है : काहू तोहिं ~ — १४११। △ ~ **खाई** ठग लिया गया : हठनि ~ — १/१८७।

ठगौसौ ठगा सा, स्तब्ध 'सूर' बचन सुनि रह्यौ ~ ३६८६।

ठग्यौ ठग लिया : चोली चतुरानन ~ १/४४।

ठटनी सजावट पुलिन तुलिन ~ २१८४।

ठटी १ एकचित्त : चातक रटत ~ १/९८। २ निश्चित किया . 'सूर' प्रभु ~ ज्यौ भयौ चाहै सु त्यों ४१९७।

ठटै निश्चित करता है, स्थिर करता है होत मो जो रघुनाथ ~ १/२६३।

ठठ समूह, भीड गोपी ग्वाल जुरै वहु ~ री ८१०।

ठठकत ठिठक ठिठककर, रुक रुक कर . सुनहु 'सूर' ~ मकुचत गए २६२९।

ठठकति ठिठकती हुई ~ चलै मटकि मुँह मोरै १४३९।

ठठकनि ठिठकना, झिझकना : ~ कहत प्रेम सकुचानि २०३०।

ठठकि ठिठक कर • ~ रही द्वारे पर ठाढी ५४०। ~ **रहै ठाढी** ठिठक कर खडी हो जाती है पग द्वै चलति ~ — १७७२।

ठठा ठठा मडली, गिरोह • ~ एकै जानि १२७९।

ठठुकति ठिठकती हुई जल भरि ~ चली १४०९।

ठठुकि ठिठक • मन मैं कछु कहन चहै, देखत ही ~ रहै २१९२।

ठयौ १ ठान लिया है यह कछु मान ~ री २४२९। २. ठान दिया, करने लगा झगरौ फेरि ~ १६७१। ३. किया : नृप कह्यौ पुत्र हेत जग ~ ९/२। ४. बनाया : नारी-सग ह्वैन तिन ~ ९/२।

ठहराइ १. रोके तब तुम इत ~ रहौगे ४०७८। २ ठहर, स्थिर • सकैं नहि ~ ११४५। ३ रोक कर, स्थिर करके . पुनि लोचन ~ निहारति १८५१। ४ स्थिर रह पाता है : वहाँ न मन ~ १८१३।

ठहराई १ निश्चय की, पक्की की : मन मैं यहै बात ~ ५/३। २ टिकाई . भ्रकुटि पर नैन ~ १८०२।

ठहरात १ ठहर/टिक पाती है . दृष्टि नहीं ~ २३०९। २ ठहरता है कहू नही ~ २३२९। ३ ठहरते हैं, टिक पाते है लोचन नहि ~ स्याम के २१३६। ४ ठहरने लगा : निरगुन क्यौं ~ ३६८९। ५ रुक जाता है बद कर देता है वह तौ पुनि ~ २१२१। ६ स्थिर रहता ठाले कत ~ ३५७२।

ठहरान ठहरने, स्थिर होने कुबुद्धि ~ न देइ ४/१२।

ठहरानी स्थिर रही • हिऐ नहीं ~ परि० १/१९४।

ठहराने १ रुकता है . प्रीनि न पल ~ ४००८। २. टिकते हैं • निमिष बिसरि ~ २२४८।

ठहरायो, ठहरायौ १ निश्चित कर लिया, सोच धरा : ज्वाब मनहि ~ २०४८। २ ठहराया, दृढ किया . तव उन मन मैं जुध ~ ४२०६। ३ ठान लिया है नैननि भलौ मतौ ~ २३६६।

ठहरावत टिके रह जाते हैं . बरन बरन मदिर बने लोचन ~ ३०२१।

ठहरावति स्थिर रखती है क्यौं नैननि ~ री २०६४।

ठहरावै सत्य सिद्ध होता • बेद-बचन कैसें ~ १६०७।

ठहरावैं निश्चित कर ले जमा बाँधि ~ १/१४२।

ठही रक्षा की, बचाई, रख ली हरि जू लाज ~ १/२५८।

ठह्यौ जानकर, अच्छी तरह खेलत रग ~ परि० १/१३१।

ठाँ ठाँव, स्थान, जगह तिहि ~ आयौ १५६।

ठाँउ स्थान चरन-कमल विन ~ १/१२८।

ठाँव स्थान चित न रहत कहुँ ~ रौ २८८५।

ठाइ स्थान पर राखे हैं इहि ~ १४६१।

ठाई[1] स्थान पर जब सब गाइ भई इक ~ ६१४।

ठाई[2] धारण कर लिये, पहने उलटे अग अभूषन ~ ९८९।

ठाईं स्थान मे : रास रच्यौ बन ~ हो परि० १/५५।

ठाउँ १ पास : मो है तुम्हरे ~ ३६। २ स्थान, जगह : ताहू ~ परिहरै सोइ ३/१३। ३ स्थान पर, जगह पर : कौन

रहै इहिं ~ १५११ ।

ठाऊँ स्थान पर : पुन प्रगट्यौ इहिं ~ ५३८ ।

ठाकुर १. गाँव का मालिक, जमींदार : तातैं ~ लूटौ १/१८५ । २ स्वामी . धनि वै ~ धनि तुम सेवक ३९०९ । ३ स्वामी ने सूरदास प्रभु पूरन ~ कह्यौ ७/४ ।

ठाकुरहि ठाकुर को . वह अपने ~ जिवावै २४९ ।

ठाट ठाट (बाना) : ठाटि ठगन को ~ १४६१ ।

ठाटि ठाट . कहि कौने ~ रच्यौ ४३६ ।

ठाटिबोहि बनाना ही, ठाट करना ही . जौ यह ठाट ~ कर राख्यौ १२८६ ।

ठाटी साध ली है कपट चतुराइ ~ २५४ ।

ठाटौ रचा, ठाट किया नहिं बनि आयौ जो हम ~ ३७३३ ।

ठाठि बनाकर ~ ठगनि कौ ठाट १४६१ । ~ कै सज्जित करके . उन्मद जोवन आनि ~ — ३६७६ ।

ठाढी १ खडी चितवनि हुती करोरी ~ ८०८ । २ खडी हुई है ~ सारँग भारि २१११ ।

ठाढे खडे . सिव-बिरंचि देखत सब ~ ८/३ ।

ठाढ़ौ खडा हुआ . खिरक ~ हेर आइ सा० ल० ३९ ।

ठाढीं खडी हुई हैं . जब जान्यौ बन मैं हम ~ १५९१ ।

ठाढी १ खडी हुई ~ मथति जननि दधि आतुर १६७ । २ खडा थी गुरुजन बिच मैं आँगन ~ १८८५ । ३ खडी रहती है : तारापति-अरि के सिर ~ ३९१२ । ४ खडी हो कहा ठगी सी ~ २४१५ । ५ खडी हो गई /गइ . आगे ~ आइ कै ३०९२ ।

ठाढे १ खडा है : इक ~ मंदिर कै तीर २५ । २ खडे : पाछैं नंद सुनत है ~ २१७ । ३ खडे हुए . सूर बीर अवलोकत ~ ३०४९ ।

ठाढैं खडे आइ पाछैं भए ~ २२११ ।

ठाढौ १ खडा : हँसत स्याम जब देख्यौ ~ ३०७० । २ खडे आपु रहत ~ ह्वै मौन १५९३ । ३ खडे हुए : ~ गावै माठी तान १४०० ।

ठादर लडाई, झगडा : करन इद्र सौं ~ ८५८ ।

ठान १ निश्चय, संकल्प : जनु कीन्ही बिधि ~ २४४६ । २ हठ सुनत उनकी ~ सा० ल० ६९ ।

ठानत १ करता है नार्नैं हमरी अस्तुति ~ ८२०८ । २ करते हैं त्यौं ही ये अतिहिं हठ ~ २३५८ ।

ठानति १ करती है कत हरि सौं हठ ~ २८०२ । २ ठान ली है अब ऐसी बुधि ~ १४२८ । ३ भिड आऊँगी अब मैं या सौं ~ हौं १२५५ ।

ठानहु तैयारी करो गोवरधन की पूजा ~ ८९९ ।

ठानि १ ठानकर, लगाकर राग रागिनी ~ ३८५७ । २ निश्चय किया सूर स्याम जिय ~ ३६५ । ३ रचकर . ब्रज बनिता नए सिंगार लौं मन ~ २८६१ ।

ठानी १ आरभ किया, शुरू किया : ताही छिन नै पांडु पुत्र सौं वैर बिषम गनि ~ मारा० ७६१ । २ निकाल ली थी . कैसी बुद्धि मौन की ~ १७४५ । ३ कर ली . मूढ-मति प्रीति ~ १/१२० । ४ ठान बैठे/ठी . मोहू सौं निठुराई ~ हो मोहन प्यारे २५४९ । ५ ठान ली . कुल कलंक ऐसी मति ~ ९/१६० । ६ निश्चित करते और कछु बनै नहिं बुद्धि ~ १९४९ । ७ पहनाकर, सजाकर अपने भूषन ~ २१६० । ८ बनाइ था, रची थी अर्ध निसा ब्रजनारि संग लै, बन बस लीला ~ ४०३९ । चतुराई ~ चालाकी का कोक-कला-गुन आगरि नागरि, सूर — ~ १९८१ । बातनि ~ बातें बना-बनाकर, चालाकी कर के हमहिं दुरावनि — ~ १७२३ ।

ठानैं करते हैं कछू कहै कछु ~ ३९९८ ।

ठानै १ करता है . उद्यम ~ ३/१३ । २ निश्चित/स्थिर करता है : वहै रीति पुनि ~ ४/१२ । ३ ठानता है वह अपनो गुन ~ ३७५० । ४ ठानती हो . बरबस झगरौ ~ १४७६ । ५ ठानते/भेजते हैं : हम निगुन लिखि ~ ३७१५ ।

ठानौं ठान कर . पुनि देखौं फिरि कै हठ ~ १८५१ ।

ठान्यौ १ ठान लिया है, ठान बैठी हूँ बैर सबनि सौं ~ १६६२ । २ ठाना, आरम्भ किया, शुरू कर दिया : दधि कौ दान मेटि यह ~ १५३० । ३ निश्चय किया : सुफलक सुत मिलि ठग ~ है ३९७७ । ४ निश्चय किया है, ठाना है तातें उन ऐसौ बलि ~ ५/३ ।

ठाम स्थान (पर) . द्रुम लागै तिहिं ~ ३८०७ ।

ठाली बेकार, खाली ऐसी को ~ बैठी है ३८९८ ।

ठाले निकम्मे . हरि मुख कमल कोष तें बिछुरे ~ कत ठहरात ३५७२ ।

ठावहिं स्थान प्रगटति रस रुचि रुचि ~ ठाउँ ६६३ । ~ **ठाँव/ठाउँ** स्थान-स्थान पर . प्रगटति रस रुचि ~ — ६६३ ।

ठाहर स्थान (पर/में) . तातें खरी सगति ईहि ~ ३९८९ ।

ठाहीं स्थान पर फिरि न लग उहिं ~ ३२२९ ।

ठिक ठहराइ स्थिर कर पाया पचि हारे सब कोटि कला करि चढ न ~ २७७३ ।

ठिकाई ठीक कर ली हाकि ~ तेती ४४५ ।

ठिकानैं ठिकाने । △ ~ **आवै** स्थान पर पहुचे धीरज धरि मो ~ — ३/१३ ।

ठिकानौ आश्रय, स्थान बिसरयौ परम ~ १/४७ ।

ठिठुकि ठिठक चितै चलि ~ रहत २५८५ ।

ठिले दुराग्रहपूर्वक बढाये बोलत बोल ~ हो १४६६ ।

ठीले जबरदस्ती भेजने से, ठेलने से गयौ तुम्हारे ~ ४१२७ ।

ठुमकि ठुमक कर ~ ठुमकि पग धरनी रेंगत १२६ ।

ठेरी ठेल : एकहिं बेर दई सब ~ ३१८८ ।

ठेलत १ ठेल रही हैं इक कौ आनि ~ पॉच १/१९६ । २ ठेल रहा है : समुझे सूर सकट पग ~ ६३ ।
ठेलि ठेल ~ हलधर दियौ ३०७९ ।
ठेली ठेल देती हैं : बृन्दावन चरननि सौं ~ ३७२४ ।
ठेलै बढाता है आगे कौं रथ नैंकु न ~ २१४३ ।
ठेलौं रचाऊँगा रास सरद-निसि ~ री ७८७ ।
ठैन १. किनारे, तट पर बमी बट जमुना कै ~ २६३८ । २ ठॉव पर, स्थान पर सुनत ही सब हाँकि ल्याए गाइ करि इक ~ ४२७ ।
ठोकि ठोंककर, थपथपाकर • कर सौं ~ सुतहि दुलरावनि १९७ । △ ~ **बजाइ** ठोंक बजा कर, जाँच कर नद ब्रज लाजै ~ — ३१६८ ।
ठोकि ठोंक कर : पीठि ~ मुकरायौ ३६२४ ।
ठोकी ठोक दी ले देहा घर बाहर जारी सिर ~ लकरी १/७१ ।
ठोट जड, मूर्ख : सूर कूर कवि ~ १/१३२ ।
ठोर ठोर (चोंच) • गहत नाहिंन ~ २८३१ ।
ठोली ठिठोली : चरचि लीन्ही मोहिं करनि ~ १७२९ ।
ठोसनि डाह से अरु कुबिजा के ~ ४२५८ ।
ठौर १ ठिकाने • सूरदास चित ~ नहीं कहुँ १६३८ । २ ठिकाना • सूर पतित कौ ~ कहूँ नहिं १/१४७ । ३ स्थान पर : काल बहुत ता ~ बितायौ ६/८ । ~ **जनाइ** निशान तक मालूम पडे : नाउँ रहै नाहिं ~ — ९३५ । **ऐसैं ~ रही हौं आनी** ऐसे स्थान पर आ बमी हूँ, ऐसे लोगों से पाला पडा है • नाउँ तुम्हारौ लेत सकुचत हैं, — ~ — १७१२ । **करि दीनी** ~ ले जा बसाया • जिनकौं हरि अग अग मै — ~ २४०८ । **लगावत** ~ घात लगाये है • ताहि — ~ २३०२ ।
ठौरहि स्थान ही पर : किये आनि ठाढे इक ~ २९१६ ।
ठौरहि स्थान ही : जहँ-तहँ ~ ठौर सारा० ४८६ ।
ठौरही स्थान पर : सुर असुर बहुत ता ~ मरि गए ८/८ ।
ठौरी स्थान पर रूप निरखि दृग लागे ~ ३९७१ ।

ड

डॅड बाहुदड • कुस कटि मवल ~ १९९७ ।
डॅडिया धारियों के रूप मे टॅके हुए गोटे वाली साडी • तनु ~ कुसुभा बोरी की २८७२ ।
डॅसी डस लिया हो • मदन भुवंगम ~ २११५ ।
डई तपी हुई हो : जैसैं तृषा ~ १२४० ।
डग कदम ~ न परत ब्रजनाथ साथ बिनु ७३९ । ~ **डग पग धरै** क्रम क्रम कर के या एक।एक डग आगे बढता है : ~ — ३/१३ ।
डगडग्यौ डगमगाया देवी काली-मन ~ ५/३ ।
डगडौर डगमगाता है, छलकता है • अध भरी ~ १८४३ ।
डगति डगमगाती है कवहुँ चरन गति ~ लगति छवि २१७९ ।
डगमगत डगमगाते हुए उदित मुदित उठि चलत ~ ४२०१ ।
डगमगाइ डगमगाकर • ~ धरनी धरे पैया ११५ ।
डगमगात १ डगमगाते हुए, लडखडाते हुए, थरथराते हुए : ~ पग धरत सिथिल गति ११९९ । २. डगमगा रहे हैं ~ पग अग अग ढीले २६४६ ।
डगमगी १ डगमगाई, लडखडाती हुई है : चरन सिथिल अरु चाल ~ २६४२ । २. डगमगाने लगी भूमि अति ~, जोगिनि सुनि जगी ९/१०६ ।
डगमगे डगमगाने लगे निरखि ~ गोड १८२१ ।
डगमड डगमगाते हुए ~ चलि पग परत न सूधे परि० १/८९ ।
डगर रास्ता, मार्ग जाति कित है ~ छाँडे १४१० । ~ **कै** रास्ते पर रिस करि चली ~ — १६२६ ।
डगरी १ रास्ता रोकि रहत लरिकिनि लै ~ १४१५ । २ रास्ते पर आवति ही जमुना-जल लीन्हे, सखी ! सहज ~ २३४३ ।
डगरौ रास्ता कलह करत गहि ~ १४६४ ।
डगौ डग, कदम । △ **मारि** ~ लम्बे लम्बे कदम बढाकर • — ~ जब फिरि चली २८९५ ।
डटि डटकर • गुरुजन मैं ~ बैठी स्यामा परि० ~ २/५८ ।
डढी जल गई विरहा अनल ~ ३२६९ ।
डढै जल जाने से रोवत जीभि ~ १७४ ।
डफताल एक वाद्य यत्र, डफ रुज मुरज ~ बॉसुरी सारा० १०७२ ।
डफहि डफ को कर लिए ~ बजावै २८७२ ।
डबडबाइ डबडबा कर तब तब ~ दोउ लोचन २५८४ ।
डरई डरता है • अपजसहिं न ~ ३३५८ ।
डरडरात टर के मारे, डर डर करके : ~ भजि जाते १५५९ ।
डरडराति डरते-डरते • राधा ~ घर आई २०१५ ।
डरडरे डरे-डरे हैं स्याम रसवस भरे, मदन जिय ~ १९४९ ।
डरत १ डर जाता है, थर्रा उठता है : ~ गाता ८६४ । २ डरता : नाहीं ~ करत अनीति १/१०६ । ३ डरता हूँ • विनती करत ~ १/१६२ । ४ डरती है : नैंकु न ~ री २७८६ । ५ डरते हुए : हरि सीता लै चल्यौ ~ जिय ९/५९ । ६. डरते हैं • ~ लाल हिंडोल भूलत ४९८ ।

डरति १ डरता हूँ : बहुत कै जिय ~ ३१३८; कहनि तोसौं ~ १७१५ । २ डरती · ऐसैं ~ रहति हौं वाकौं २०९५ । ३ डरती है कबहूँ जिय ~ वचन सुनिबे की लोभा २१४९ । ४ डरती हो : दान देते ~ १५०४ ।

डरतौ डरता है : काजहू तैं नहिं ~ १/१२३ ।

डरनि १ डर से : निहिं ~ अजहु नहिं सज्न आइ २०१४ । २ डरता है नहिं रुचि पथ पयादि ~ उकि १/६० ।

डरपत १ डरता : ~ है मन मेरौ ३७५७ । २ डरता हैं · सुनौ स्याम, तुमकौं ससि ~ १९६ । ३ डरते : तुम्हरे डर हम ~ नाहिंन सारा० ८९२ । ४ डरते है : धनुष देखि खजन बिबि ~ १३८८ । ५ डरते हो आन जतु धुनि सुनि कन ~ १७९ । ६ डरने लगे हो · अन ~ सुनि-सुनि ये बातें २२१ ।

डरपति डरती हू वैं ~ तुमकौ यौं काह १९३८ ।

डरपति १ डरती : चितवति ~ नाहीं २४१६ । २ डरती रहती हू . मैं ~ जजालहिं ६०५ । ३ डरती हो वृन्दावन तुम आवत ~ १५९४ ।

डरपहि डरते है . डरपावहु तिनकौ जे ~ १५३९ ।

डरपही डरती : काहू की नहिं ~ २१९५ ।

डरपहु डरो : तुम जनि जिय ~ रे बालक ४२११ ।

डरपाइ डराकर : छाँडि देहु ~ १९३० ।

डरपाई १. डराकर, डराते हुए · कहति कहा ~ ८१२ । २ डर रहे थे . अति जल देखि सखा ~ ९३९ । ३ डराया था : यह कहि ~ २१९३ ।

डरपाउँ डरती हू : दोउ सुत कौ ~ ५२८ ।

डरपाए डर गए : सब मिलि कह्यौ बहुत ~ ८८८ ।

डरपाय डरते हुए दसरथ राय बिनय बहु कीन्ही जिय मे अति ~ सारा० २३६ ।

डरपावत डराते हैं · बन भीतर ~ १५०३ ।

डरपावन १ डराने वाला : कस ~ रे २८ । २ डरवाने मोहिं ~ लागे ५८९ ।

डरपावहु १. डराओ, भयभीत करो ~ तिनकौं जे डरपहि १५३९ । २ डरानी हो कहा हमकौं ~ १४६२ ।

डरपावैं डराते है वै मोहिं ~ ४३७ ।

डरपाहि डरते हैं : चलत नहीं ~ ३२८ ।

डरपाहीं डरता है : प्रजा जानि मन मन ~ ३१०९ ।

डरपि डर कर · तव मैं ~ कियौ छोटौ तन ९/१०४ ।

डरपी डरी मन हीं मन ~ उन ओरी २०२३ ।

डरपे १ डर कर थररात ब्रज लोग ~ ८५५ । २ डर गए . ब्रज के लोग देखि ~ मन ९७६ । ३ डरने लगे · जिय ~ माहिं देखि कै २७२३ ।

डरपो डरो तब हरि कह्यौ कोऊ जिन ~ सारा० ७७ ।

डरपौं डरता हू . हौं ~ कांपौ अरु रोवौं ४८१ ।

डरपौ डरो : तुम जनि ~ मेरो माता ९/८८ ।

डरप्यौ डरा चरन की छवि देखि ~ २३४ ।

डरवाई डराया, भयभीत किया गुरुजन कहि ~ १६९७ ।

डरवाए डरा दिया महर कह्यौ हम तुम ~ ८८८ ।

डरहि डर को : 'सूर' गुरुजनों ~ मानत २२७१ ।

डरहीं डरते है : राच्छस दसकंधर ~ ९/९१ ।

डरहु डरो ~ जिनि कान्ह दुहाइ १४६१ ।

डराइ १ डर तब सुर मुनि सब गए ~ ७/२ । २. डरकर : स्याम गए तुम भाजि ~ ५३९ । ३ डर गया यह सुनि नद ~ ५८९ । ४ डर रहे थे, सकित थे कम काज जिय माँझ ~ ८८७ । ५ डरो · जनि हो लाल ~ ५१७ ।

डराई १ डर . अपने जिय सब गए ~ ८१६ । २ डर गई · देखि ~ ताको ४००९ । ३ डरना है त्रिभुवन जाहि ~ ३६३ । ४ डरी हुई राधा हँसति ~ १९६९ । ५ डरे-डरे · स्याम रहे आँगनहिं ~ ८९३ । ६ भयभीत होकर कोउ बरजन सुरपतिहिं ~ ८२० ।

डराउँ डरता हूँ : ताकौं बहुत ~ ९/७५ ।

डराऊँ १ डरता हू मन मे अधिक ~ १/१६४ । २ डरती हू : लोगनि कहा ~ ३२५३ । ३. डरूँगा कहा अब राम नर सौं ~ ९/१२९ ।

डराए १ डरे हुए · बस परे ~ २६१५ । २ डर गये, भयभीत हो गये . गज गरज सुनत दिग्गज ~ ४१८३ ।

डरात १ डरकर डर ~ उठि भाजा ४१९१ । २ डरता है नेकु न नऊ ~ ४३४ । ३ डरते है : अजहुँ नाहिं ~ मोहन ४२७ । ४ डर लग रहा है धिक मेरी बुधि, कहत ~ ५५९ । ५ डर रहे थे . ब्रज जन सब अति ~ ८०७ ।

डराति डरती है ग्वालिनी ~ जियहिं २८४ ।

डरानी १ डर गई . आली तोहिं ~ २८२६ । २ डरी . अपजस तें न ~ ११२७ ।

डराने डर गये : देखि तरु सब अति ~ ३८७ ।

डरानो क्रि० अ० डर गया डर मोच सुत देखि ~ २९२८ । वि० डरपोक जाहि मति-मूढ, कायर ~ ९/१११ ।

डरान्यौ डर गया था . कहत स्याम मैं अतिहिं ~ ३९१ ।

डरायौ १ डर गया दानव देखि ~ १२०८ । २ डराता है कहा तैं राम सौं मोहिं ~ ९/१२८ ।

डरावत डरा रही है · दामिनि चमकि ~ ३६२३ ।

डरावति डराती हो . घर के लोगनि कहा ~ १५४५ ।

डरावन डरावने लगत सुनि मोहिं ~ ५८० ।

डरावैं १ डरवाती है ऐसी कहति ~ १९२१ । २ डरा रहे है दुमद भए भार अतिहीं ~ २०७० ।

डरावै डराता है लरिकनि को यह देव ~ ८९३ ।

डरावौं टराओ जिनि ~ बलि हौं न डेरैहौ परि० १/२० ।
डराहि १ डर जाएँ • नर जिहिं देखि ~ ९/७५ । २ टरी रहती है . तातैं अतिहि ~ १८४० ।
डराहीं डरती हैं : कहैं नहीं कछू हरषत ~ २१९६ ।
डराहु १ डरते हो : कत अधिकैऽब ~ ३२३३ । २. डरो : अब जनि बाँधिबेहि ~ ४१३५ ।
डरि १ डर कर, भयभीत होकर सूरदास स्वामी लीला ~ २६७३ । २ डर देखि यह सुभट ~ गए सारे ४२२१ ।
डरियाँ डालियाँ, डालें . दच्छिन कर द्रुम ~ ४७० ।
डरिया डाल पर : बैठ्यौ द्रुम ~ १/९७ ।
डरियै डरना चाहिए ~ बधु पिता महतारी १६९० ।
डरिहैं डरेंगे किहि भय दुरजन ~ १/२९ ।
डरिहौं १. डरूँगा : जात कतहूँ नहिं ~ ३०९० । २ डरूँगी . अब काहू नहिं ~ १९४३ ।
डरी १ डर गई देखत तिनकौ अतिहि ~ २४३४ । २ डरता है मारगहू न ~ २३१५ । ३ भयभीत हो गई • उदयाचलहिं ~ २६२३ ।
डर डर . ताकैं धौ कौन कौ ~ परि० २/४१ ।
डरे १ डर गये देखि असुर यह अचरज ~ ७/२ । २. डरता है : मृग ज्यौं नहीं ~ २३०७ । ३ डरते • एकहु डर न ~ २३४० ।
डरैं डरते हे : रवि ससि जाहि ~ ४५२ ।
डरैंगे डरेंगे यह सुनि कै ब्रज लोग ~ ५२२ ।
डरै १ डरता है • लै निकस्यौ मोहिं कौन ~ २००१ । २ टरती थी • यह अनुमानि ~ २८२५ । ३ डरना तू मति मनहिं ~ १७ । ४ डरा था प्रह्लाद न नैंकु ~ १/३७ ।
डरैगौ डरेगा को इन बातनि 'सूर' ~ ३६१९ ।
डरैये डरते रहना चाहिए इनके बिषहिं ~ २८२६ ।
डरे है डर रहे होंगे . इत मेरे घरहिं ~ २०२८ ।
डरैहौं १ डरूँगा . जस अपजस काहूँ न ~ १६६८ । २ डरूँगी तुम सौ नहीं ~ १४०५ ।
डरौं डरता हूँ . और न काहू नैंकु ~ १५२२ ।
डरौ डरो तुम जनि ~ उखल तौ तोर्‌यौ ३६३७ ।
डर्‌यौ १ डर गया, भयभीत हो गया कटि के भय मृगराज ~ ७७७ । २ डर गये : सुदामा मदिर देखि ~ ४२३५ । ३ डर रहा हूँ • ईहिं डर अधिक ~ १/१५६ ।
डलिया डलियाँ, डोलचियाँ सुन्दर स्याम लाल के सोहत करनि रगीली ~ २६२० ।
डसत १ काटने से : ज्यौं अहि ~ उदर नहि पूरत ३५२६ । २ डसती : मनौ व्याल है ~ है १३६७ । ३ डसते (अपनाते) ताहि ~ जाकौ हियौ उजारौ ७६२ ।
डसनहार डसने वाला : तच्छक ~ मत जान १२/५ ।
डसाइ बिछा कमग्या ग्वालनि दई ~ १२१६ ।
डसाए बिछाए, बिछा दिये : पाटबर पाँवडे ~ ३१०९ ।
डसायौ डसवाया • काल व्याल पै आपु ~ १/३२६ ।
डसावैं (बिस्तर) लगाएँ फल भोजन जु ~ पात ९/३८ ।
डसि काटकर . सहजहि ~ भजि जात ३७५६ । ~ **गयौ अह्यो** सर्प ने काट खाया हो • मनु ~ — ३१३५ ।
डसियत बिछाते : ओढियत हैं की ~ हैं १४४१ ।
डसी काट लिया, डस लिया • ~ री स्याम भुअगम कारे ७४७ ।
डसे[1] बिछाये नव-विलास-श्रम-सेज ~ २५०३ ।
डसे[2] काटने : फनिकहिं काज ~ सौ ३९९६ ।
डसै काट ले ~ जिनि यह काहु ६३६ ।
डस्यौ काट लिया, डस लिया • सुमिरत ही अहि ~ १/९७ ।
डहकत डहकते, मारे मारे • ~ फिरत आपने स्वारथ ३५०७ ।
डहकाइ धोखे मे डालकर, बहकाकर . आपुनही ~ आपुनपौ १९९९ ।
डहकात १ भटकते हैं • ते ऐसेइ ~ ३६१४ । २ धोखे मे टालते हैं, बहकाते हैं . ते उनकौ ~ ४७५७ ।
डहकानौ बहकता रहा . सुपनैं ज्यौं ~ १/२२९ ।
डहकायौ ठगा गया : धोखैं ही धोखैं ~ १/३२६ ।
डहकावैं बहकाते हैं : हम सबहिन ~ ३७०९ ।
डहकावै १ भटकाता है, नष्ट करता है • कितहूँ जाइ जनम ~ १/२३३ । २. बहकाता हे : इनकौ कहे कौन ~ ३९६५ ।
डहकि १ बहका कर : ~ आपु मुख नाइ ४३७ । २ बिलख कर : ~ दीन्हौ रोइ ३८०० ।
डहके ठग लिया . इहि बिधि इन ~ सबै १/४४ ।
डहक्यौ बहकाया है, ठग लिया है सूरदास जिहिं सब जग ~ ४०५२ ।
डहडह १ झिलमिलाता हुआ : इदु ~ डोल ६२७ । २ लहक-कर, आनद से : हरष ~ मुसुकि फूले २११९ ।
डहडहत लहलहा रहे हों : जलज जुग ~ १८४ ।
डहडहौ चमकीला अति ~ नयौ जू २५०८ ।
डहरि[1] रास्ते पर यह कहि चली ~ ७५० ।
डहरि[2] मटकी मे : डारि दै दधि ~ ६७ ।
डहे जलता है : चातक रैनि ~ ३८४९ ।
डाँटि १ डटकर देहुँ पटतर ~ परि० १/१०९ । २. डाँटती हुई . घर मैं ~ देति सिख जननी १७०८ ।
डाँटी १ डाँटा ऐसैं करि हरि ~ ३७५ । २. डाँटा है, धमकाया है : कोमल नयन जरहु जिन ~ २५९ ।
डाँटै डाँटती है • जननी साँटि लै ~ ३४६ ।
डाँट्यौ डपटा, धमकाया . छाँडि देस मम यह कहि ~ १/२६० ।
डाँडि डाँडियाँ, डडियाँ : ~ हेम चारु गोल २९१७ ।
डाँडी डाँडी (रस्सी) बनी ~ चारि २८३० ।
डाँडे सीमा के, हद तक : कौन चोर तुम ~ ३६०४ ।

डाँडौगी दण्डित करूँगी . रम लै लै ~ १६३६ ।
डाकौ पार करोगे : जौ ~ तौ कत विनु बूड़े ३६३० ।
डाटत डाँटने, भयभीत करते रहौ प्रभु ~ १/२०७ ।
डाटे डटकर, भरपेट : भोजन करि ~ ९/९६ ।
डाडी (हिंडोले की) लकड़ियाँ, डंडे कंचन खंभ मयारि ~ ८४ ।
डाढी जलाई हुई, जली हुई ज्यौं जलहीन दीन कुमुदिनि बन, रवि-प्रकाश की ~ ४१३७ ।
डाढे जले . ~ ऊपर लोन लगावत परि० १/१३८ ।
डाढै जलेगा · सूर अनल कर जो गहै ~ पुनि सोई २२४३ ।
डाढौ जलता हुआ . विरह अनल को ~ २८२६ ।
डार स्त्री० १ डाल या शाखा फिरि न लागे ~ १/८८ । २ डाल पर : सूरदास प्रभु संग कल्पतरु उलटि न बैठी ~ ३१८५ । क्रि० स० १ डाल दीन्यौ ताहि कूप मैं ~ ९/१७४ । २ डाल कर, छोड़कर ~ सस्त्र मरमय्या मोपै सारा० ७८६ । ३. डाले प्रथम ~ उपमान कहा मुख मा० ल० १९ ।
डारक गिराते तृना अकास मिला पर ~ १६०७ ।
डारत १ डाली · ~ लाज निवारत २२३१ । २ गिरा देते हैं, गिराते हैं . कहत जननी दूध ~ ४९८ । ३ डालते हो, गिराते हो : अति मीठौ कत ~ २६५ । ४ डालता है : बनचर लै लै ~ ९/१२६ । ५ गिराते थे : लै ~ द्रुम बेली पात २६१६ । ६ डालते हुए · ~ खात लेत अपनै कर २३८ । ७ डालते हैं : नागरि पर ~ तृन तोरी २१३४ । ८ बिखेर रहे ह . ~ अलि आनदन ११५८ । ~ खीस नष्टकर डालते हो . जित कित ~ — ३७०२ । △ ~ है तृन तोरी न्योछावर करता है . ~ — २०७० । ~ हैं तृन तोरे न्योछावर करती हैं . पीवत देखि रोहिणी यसुमति ~ — सारा० ४४२ ।
डारति उछालती हुई : अँजुरिनि तें लै लै जब ~ १७५३ । △ ~ वारि न्योछावर किये डाल रही हैं : तन मन नारि ~ — १८२० ।
डारति १ करती थी, छोड़ रही थी : कर तें मुकुर दूरि नहिं ~ २१९१ । २ डालती है कबहुँ केस पाछे लै ~ २१८८ । ३ छोड़ती है : लकुट न ~ कर तें ३५४ । ४ फेंकती हैं, डालती हैं . मुख पर नीर परसपर ~ १७५३ । ५ फेंक रहे : ~ हैं आनद भरे नव ११५३ । △ ~ तन-मनवारी तन-मन न्योछावर कर देती है : छवि पर ~ — २२८ ।
डारन गिराने, डालने तव असुर अगिनि जल बान ~ लग्यौ ४१९४ ।
डारनि[1] डालियों मे : दूरि ~ अँटकायौ १६१८ । ~ डारनि डाल डाल पर, प्रत्येक डाल पर : ~ — ग्वाल १५०३ ।
डारनि[2] कलाइयों मे ~ चरि चरि चुरी बिराजति १४४७ ।
डारहु डालो · ~ हमहिं मराई ५३८ ।
डारा डाल मे · सबै समाने तरुवर ~ ७९९ ।
डारि[1] १ डालकर, छोड कर उमा कौं छाँडि अरु ~ मृगचर्म कौं ८/१० । २ डाल : तिन उदधि माहिं तिहिं ~ दान्हौ ४१८८ । ३ डाल दिया है : पीतांबर कहँ ~ २५०६ । ४ त्याग · लाज दीन्ही ~ १६४९ । ५ त्याग करके : हँसि बोले प्रभुता ~ १७१९ । ६ बिछा कर, लगाकर बैठ्यौ हुतो सिंहासन ~ ६/५ । ७ हटा : दियौ अचल ~ २७२१ । ८ बहा, ढुलका . दूध दीन्हौ ~ २८९ । △ ~ देत हैं खोई खोई डाल देते हैं ~ — १/६३ ।
डारि[2] डाली छाँडि-छाँडि द्रुम ~ कूदि धरती पर आए १६१८ ।
डारिहै डालेगा : कंस ~ मारि ३०५८ ।
डारिहौं भेज दूँगा, फेंक दूँगा : वाम कर गहि मुट ~ अमरपुर ३०५४ ।
डारिहौ निकलवा दोगे : सूरत बहू द्वार न छाँडै ~ कढ़िराइ १/१०६ ।
डारी[1] १ डालकर, छोड़कर : न्हात भजे कुम ~ १/१२२ । २ छोड़ दी श्री राधा सँग तै ~ ११८२ । ३ डाल दी . विरह फॉस गर ~ २२९० । ४ डाली · तोरि हारा-वलि ~ १६१८ । ५ भुलाकर : घर की सुधि ~ १६२१ ।
डारीं[2] डालियाँ हैं · नव नव साखा ~ ११८१ ।
डारे १ गिरा दिया देखे आनि वृच्छ दोउ ~ ३९१ । २ छोड़ रहे हैं, उपेक्षित कर रहे हैं · ~ हौं कत देत १/१५६ । ३. डाल दिया . सुख तोर तोर तृन ~ सारा७ ८९१ । ४ डाल रखे गये हैं लोभ पींजरा ~ २२७२ । ५ डाली असुर सैन सँहारि ~ ३१०८ । △ वारि ~ न्योछावर कर दिया : वदन ऊपर कोटि — ~ २०५ ।
डारैं[1] १ डालते हैं, फेंकते ह ताकौ गहि अथाह जल ~ ११६४ । २ डाल दिया विचार कैं तुरत भूमि पै ~ सा० ल० ५ । ३ डाल दिया जाय गिरि मनि कौ लैं ~ १/१८३ । ४ डालेंगे ~ सब भुज भानि ९/७९ ।
डारैं[2] शाखाओं में, डालों से वग ज्यु उडत तरु ~ ३३०५ ।
डारै १ गिरा देता है माखन खाइ मह्यौ सब ~ ३२१ । २ डालता है छ दस जक फिरि ~ १/६० । ३ डाल दे · जो लै मीन दूध मैं ~ २/१० । ४ डाल दिया है, खो दिया है : सो जनि कतहू ~ १९६८ । ४ डाले : त्रास होत जनि ~ मारि ३१०६ ।
डारौं १ डालूँ, डाल दूँ · काटि छिनक मैं ~ ९/१०८ । २ डालूँगा : गज समेत तोहि ~ मारी ३०५२ । ~ वारि न्योछावर कर दूँ : मुख पर चन्द्र ~ — १८३७ । पर्वत

सहित धोइ ब्रज ~ पर्वत सहित ब्रज को बहा दूँगा . — ~ ८२२ ।

डारौ १. छोड़ दो : डर ~ २७३२ । २ टाल दो याको पावक भीतर ~ ७/२ । ३ डाला, डाल दिया . दीन्हो डारि शैल ते भू पर पुनि जल भीतर ~ सारा० १२० । ~ **मिटाई** समाप्त कर दो • कृपा करि रारि ~ — ८/९ ।

डार्यौ १ टाली गई हो रज्वा सम ~ ५७४ । २ गिरा दिया, बहा दिया गोरस खाइ बच्यौ सो ~ १५४५ । ३. छोड़ दिया • ~ तन फेरी २७५ । ४ टाला, दिया जद्यपि ब्रज अनाथ करि ~ ४०६६ । ५ निकाल फेंका : टर ~ जु नहावत १६२९ । ६ दूर कर दिया : दुख ~ सुख अग भार धरि १६९५ । ७ डालना, देना : ~ जनि बिसराइ ३११७ । ~ **जनम बिताइ** जीवन समाप्त कर दिया या बिधि ~ — ५/३ ।

डाल डाला योजन डेढ विटप बेला सब जूर चूर कर ~ सारा० ४१७ ।

डालनि टालियों, टोकरियों ~ भरि अरु कलस नए भरि ८२६ ।

डासन बिछौना ~ काँस २८२६ ।

डासि बिछा कर ~ कै तृन भूमि सोवत ९/६० ।

डासी[1] बिछी सुमन सुगध सेज है ~ २६५० ।

डासी[2] डसी हुई • मनौ भुवगम ~ ४०९१ ।

डाह १ ईर्ष्या मे . परे हमारे ~ ३३६६ । २ ईर्ष्या से, जलन से • ~ मरत हैं जैसे २३०२ ।

डाहनि डाह से, ईर्ष्या से . सूर ~ मरति गोपी ३२५१ ।

डाहीं १ झुलस गई थी जेती बेलि ग्रीष्म ऋतु ~ २७४५ । २. जल उठीं मुरछ्यौ मदन तरुनि सब ~ ९८९ ।

डिभ बच्चों के गहि मनि खभ ~ डग टोलैं ११७ ।

डिठौना काजल का टीका जो बच्चो के मस्तक पर नजर बचाने के लिए स्त्रियाँ लगाती है, डीठ का टीका : चिबुक ~ भ्राजत १४९८ ।

डिढायौ दृढतापूर्वक लिया भू सुत सत्र नाथ हित पितु तिय प्रिय हिय बचन ~ सा० ल० ७८ ।

डिमडिम डिमडिमी, डुगडुगी . ~ पटह ढोल डफ बीना २९०६ ।

डीट दृष्टि मोको परे नाँही ~ सा० ल० ७७ ।

डीठ दृष्टि भी : वक्र विहल ~ २७३० ।

डीठि दृष्टि मे, आखो क . सूर स्याम जब तैं आगे परे री । मेरी ~ १८०६ । ~ **लगैगी काहु की** किसी की नजर लग जायेगी • ~ — ९८७ ।

डुगरनि पहाडो की, टीलों की ~ ओट सुमेर ४५८ ।

डुलत १ डगडगाती हुई चलि न सकति मग ~ धरत पग ४०८१ । २. डोलती, हिलती ~ नहिं द्रुम पत्र बेली ६५८ । ३ डोल रही है : ~ ग्रीव लटकति नक बेसरि १४३८ ।

डुलति १ घूम रही है . जाइ ~ बन बन मैं तैसैं ८९९ । २ डोलती है, हिलती है • ~ इत उत नाहि २५६६ ।

डुलनि हिलना ही . सूस स्वास सरोज लोचन-~ जनु जलचारि २५७५ ।

डुलाई घुमाया तिहि बन बन ~ ३८३६ ।

डुलाऊँ डुलाऊँगी • मैं अँचरा बायु ~ २१०६ ।

डुलाए हिला दिए . जम सुनि सीस ~ १/१२५ ।

डुलाय घुमाकर . मार्यौ ~ धरनी डार्यौ २६१० ।

डुलायौ घुमाया था . बछरुन साथ ~ ३६५१ ।

डुलावत १ डुलाते हैं, हिलाते हैं : ~ श्री ब्रजराज ३०८५ । २ हिला रहा हो . करभा कर बारबार ~ ६६२ ।

डुलावति हिलाने लगती है धर पै सीस ~ ६५५ ।

डुलावन चलाने, घुमाने दोउ कर पकरि ~ लागी १५६ ।

डुलावैं डोलने दे चित्त न कहूँ ~ ३७९६ ।

डुलावै १ झल रही है, डुला रही है . असुर सुता तिहिं व्यजन ~ ९/१७४ । २ फिराता है, लगाता है : चित नहिं अनत ~ २/१० । ३. हिलाता है फनपति सिर न ~ १/२६३ । ४ डोला करती (हो) ज्यौं सँग छाह ~ (हो) २०२० ।

डुलावौंगी हवा करूँगी तैसैं मैं हुँ ~ ।

डुली हिली : एक पग ~ नहिं धन्य मन की दृढाई १३६४ ।

डुलै १ डोल जाए . ~ सुमेरु सेष-सिर कपै ९/८० । २ डोलता, हिलता बिनु हरि आग्या ~ न पाति १२/५ ।

डूँगर टीला, भीटा : जल ~ जरि जाइ ५८९ । ~ **कौ बल** टीले की शक्ति मे ~ — उनहिं बताऊँ ९२५ ।

डेढ लल डेढ बार दो ल=तीन ल=तिल (भर) . ~ कल लेत नाहीं सा० ल० २० ।

डेरा टेरा, पडाव . फेर गोपनि के ~ ८४१ । △ ~ **दियौ** ठहर गए, छावनी डाल दी लकपुर आइ रघुराइ ~ — ९/१४७ ।

डेराई १ डरकर : चलिये महर ~ परि० १/४८ । २ डर : देखि यह लोग सब गए ~ ४१९४ ।

डेरात डर रहे है • तन मे बहुत ~ सारा० ९८८ ।

डेराने डरे से . एते पर मन रहत ~ १३१० ।

डेरानौ डरा सूर सोच सुख देखि ~ २९२८ ।

डेरै हटा (छोड) लाज-सकुच दिए ~ २२९५ ।

डेरौ टेरा . निसि बासर निरखत नहि ~ १८९२ ।

डोंगर टीला नदी, ~ बनहि पात पाता १९७१ ।

डोंगरनि पहाडियो के बन ~ मँझारि २००५ ।

डोंढी ढिंढोरा सूर ~ देत सिर पर सा० ल० ८८ ।

डोर[1] १ डोरी के . ज्यों बस ~ फिरत सँग चँग २१३६ । २ डोरी मे · अलक फँदनि ~ २१३३ । ३ डोरे के, सूत के : सोभित हार हियें बिन ~ २६८१ ।

डोर[2] डालकर मोहन वहरावत हैं ~ २७६६ ।

डोरनि डोरे मे अलक ~ बाँधि राखे २२६९ ।

डोरा डोरा (मगल सूत्र) . वरस गाँठि कौ ~ ढोल ९४ ।

डोरि १ डोरी, रस्सी : तव तक ~ लगाइ चोरि मन ३१८८ । २ डोरी से . सव व्रज बाँध्यो प्रेम की ~ ३२७ ।

डोरी-डोरी डोरी की डोरी (डोरी मे बँधी हुई-सी) फिरति सु मोहन ~ १८९१ ।

डोल[1] १ घूमते · नृतत फन प्रति ~ ५६३ । २ घूम फिर कर : सुभ दिन ~ बुलायौ साराo १०८६ । ३ डोल/हिल रहा हो : इन्दु इह टह ~ ८२७ । ४ चल पा रहे थे . हाथ पाँव नहिं ~ १४६१ । ५ हिल डुल रहा था : सीस पै मुकुट ~ १३७४ । ६ हिलना-डुलना . ललित लटकनि ~ मानौ २२३१ ।

डोल[2] १, झूला : मधन कुज मे ~ बनायौ साराo १०८१ । २ झूले में : मोहन झूल ~ २९१५ ।

डोल[3] नेत्र : सजल सोभित ~ ३५० ।

डोलत १ घूमता : राज काजहिं रहौं ~ ८१४ । २ घूमता हू भूलो-भूलो ~ १/१७७ । ३ घूमता है, फिरता है : मलिन मद मनि ~ घर घर २/१५ । ४ घूमते फिरते हो . अपनो घर तुम छाँडे ~ २३०८ । ५ घूमते थे : खात खवावत ~ ३६८८ । ६ घूमते हे · ~ मानुष खात ९/७९ । ७ डोलने लगा . ~ महि, अधीर भनौ फनिपति ९/२६ । ८ घूमते . पाडु सुत ~ हुतौ ~ १/११३ । ९ फिर रहे ह, फिरते हे मन मारे नाचत भग ~ १०७२ । १० झूल रहा था : सिपी की भाँति मिर पीड ~ सुभग २०६२ । ११ फिर रही है . मधु सैन से मारी ~ सा० ल० ३५ । १२ विचरण कर रही थी · ~ वाकी कुज गली २६१९ । १३ विचलित हो रहे हे . पाडुकुमार पवन से ~ १/२४८ । १४ हिलता हुआ · ~ मुकुट सीस पर हरि के ५६६ ।

डोलति घूमती ह, फिरती ह . अब बिलख बदन कस ~ ३८५० ।

डोलति १ घूमती · तन लीन्हैं ~ फिरैं १६३५ । २ घूमती हूँ नवहीं तें व्याकुल भई ~ २०८४ । ३ घूमती है, फिरती है दर दर लोभ लागि लिए ~ १/४२ । ४ झूलती चल रही थी . बेनी सुमन नितवनि ~ १०५४ । ५ डुलाती तन डोलैं तन ~ हौ २१९९ ।

डोलतु डोलता है, घूमता है सोऊ तौ घर ही घर ~ ३२५।

डोलते घूमते थे काल्हिहिं घर-घर ~ १४६१

डोलन डोलना हँसि बोलन ~ वन विहरन परि० १/५२ ।

डोलना छोटे बच्चों का पालना . लै आयौ गढि ~ (हो) ४० ।

डोलनि १ डोलना, घूमना सध्या समय घोष की ~ ३२८१ । २ घूमना-फिरना . वाल विनोद आँगन की ~ १२१ । ~ **स्रम टारौं** डोलने/घूमने के श्रम को दूर करूँ . गृह-गृह ~ — १९२९ ।

डोलहु घूमो . है है न्यारो न्यारी ~ २८९२ ।

डोलाइ हिला डुलाकर, चलाकर धरनी पर ~ ४७ ।

डोलिहौं घूमूँगी . व्याकुल भई ~ ऐसेंहि २२५९ ।

डोली १ घूमती रही व्रज घर घर वन वन ~ तू २००७ । २ गिरी, मुग्ध : बचन स्याम की ~ री २५८८ । ३ हिल रही है . विनहिं वात अचल ध्वज ~ ४२७६ ।

डोले १. चलती हुई . फिरिहौं कुंजनि ~ २८२६ । २ फिरती है . वदन माला बाँधत ~ ३२ ।

डोलैं १ घूमते हैं आँगन भौन विकल ~ ८५५ । २ घूमती हैं सुनहु सूर सब व्याकुल ~ २२५५ । ३ डोलता है पवन वस मेघ ज्यौं अग ~ २०६२ । ४ डोलने पर . तन ~ तन डोलनि हौ २१९९ ।

डोलै १ घूमता है भवन विपिन सँग ही सँग ~ २०८८ । २ डोलती है, घूमती है : कव की मह्यौ लिए सिर ~ १६७६ । ३. घूमे : काहे न ऐडी ~ ३८४५ । ४ डोल जाय ~ गगन महित सुरपति ९/७८ । ५ डोलता है, हिलता है : जैसें घट पूरन न ~ १८४३ । ६ डोल रहे हैं : तरनि कौ प्रकास मिलन विना चपल ~ री १९७८ ।

डोलौं १ घूमती रहती हूँ . वन वन ~ रैन दिना १९१५ । २ घूमूँगी सग मग ~ १८८७ । ३ फिरता हूँ · गोप सखन सग खेलत ~ साराo ५८६ ।

डोलौ १ डोलते हो, घूम फिर रहे हो 'सूर' जोग लै घर घर ~ ३८१७ । २ विचरण करो तुरत चलहु व्रन आगन ~ ३११५ ।

डौंडी दुदुभी सूर साजौं सबै देहुँ ~ अबै ९/१२९ । △ ~ **जग बाजी** दुहाई फिर गई लौंटी की ~ — ३६५२ ।

डौर उपाय . नारि करनि मन ~ ३०६१ ।

ढ

ढँकि ढका हुआ आधौ मुख नीलांवर सौं ~ २१८८ ।

ढंग १ आदत वे ~ कब तें छाँड़े १५१९ । २ ढग (ताड मे) .

प्रातहिं तैं लागे याही ~ ४१४। ३ ढग, चाल कहैंगे मोहिं, ये ~ तेरे २०१४। ४ तरह : चमकत चपला ~ ४१६६। ५ ढग, मस्ती मन अपने ~ ही मैं २०९८। ~ आवैं रास्ते पर आ जायें : नैना जौ ~ — ३७९६। ~ लायौ ढग मे ही लग गए . बहुरि स्याम अपनै ~ — ३४०।

ढँढोरी ढँढकर ढूँढि ~ आपही आयौ ३३१।

ढई गिराया हो सिथिल भई मति मैन ~ री २६६४।

ढकनियाँ ढकनी से : सुभग ~ ढाँकि बाँधि १६००।

ढकि ढककर, छिपाकर : चुप करि रहौ स्यान ~ राखौ ३७११।

ढकेलि ढकेल कर, गिराकर मौ कौ देखि ~ चलति है परि० १/२१।

ढरकाइ १ ढुलकाते हुए, लुढकाकर : लै चले ~ ७४४। २ वहाकर : नैन नीर ~ परि० १/७५।

ढरकाइहौं ढुलका दूगा : पहुमि माट ~ १६१८।

ढरकाए १ ढुलका दिये, गिरा दिये • दधि के माट भूमि ~ १५१२। २ बहाने लगी : नैन नीर ~ ९/३१।

ढरकाने रीझे हैं : कौन अग ~ २३४२।

ढरकायौ १ गिरा दिया, ढलका दिया . कछु खायौ कछु भुइं ~ १५३०। २. लुढकाया है कोउ कोउ कहैं स्याम ~ १६२६।

ढरकावत ढुलकाते है : जल भुइँ ~ १४३१।

ढरकावति ढुलका देती है . जहाँ तहाँ ~ १३०८।

ढरकावें लुढका देते है . काहू की गगरी ~ १३९९।

ढरकि १. ढल : रवि माथैं तैं ~ गयौ अब ९०८। २ ढलक, बह भरि आए नैन ~ गयौ कजरा ३३०७।

ढरके रीझे : वे उन पर हैं ~ री २२४४।

ढरकौ[1] ढुलक गया : दधि माखन मेरैं जहँ तहँ ~ ३३३।

ढरकौ[2] प्रसन्न होती : सासु सपनेहु नहिं ~ १९१६।

ढरत १ ढुलकता हुआ : ज्यौं जल ~ फिरत नहिं पाछैं २३१६। २ ढुलकाते हुए : नैन ~ नहिं भरत हियौ ३११३। ३ वहाते थे . आनँद-आँसु ~ लोचन भरि ४२९।

ढरतु ढाले चले जा रहे हे : भरि भरि लोचन ~ २८०४।

ढरन[1] द्रवीभूत हो जाने वाले, दयालु : लच्छ सौं बहु दीन्हौ दान अवढर ~ १/१२२।

ढरन[2] ढालकर छल कियौ पाडवनि कौरव कपट पासा ~ १/१२२।

ढरनि १. गतिविधि, रुझान : वाके मन की ~ देखि २७६०। २ ढलने की रीति/तरह • जल ~ बहे २२३०। ३ बहना • प्रेम पुलक वार वार अँसुवनि की ~ ३३४४।

ढरहरति हिलती है : ~ ढरति हिंडोर डाँडी २८४१।

ढरहरि ढुलक कर : आवत ढिग ~ १/३१२।

ढरहरी पकौडी • मूँग ~ हींग लगाई १२१३।

ढराइ १. गिराकर : सिर तैं नीर ~ कै १४२०। २ ढलका, बहा : जब देहौं ~ सब गोरस १५१०।

ढराने डबडवा आए, बहने लगे : यहै कहत दोउ नैन ~ ५२९।

ढरायौ १ ढुलक गया, लुढक गया : सुनि मैया दधि माट ~ १६३७। २ बहाया : भर्यौ भराइ ~ ३१९५।

ढरावनौ ढाले गये हैं : सुदर सुढर ~ २८३२।

ढरावै बहाते हैं काहू सिर तैं नीर ~ १४३३।

ढरि १ अनुकूल होकर, ढलकर सूर मिलि ~ नदनदन कौं २४०२। २. अनुरूप चली भवन भामिनि, गज गति ~ १६९२। ३ रीझकर : नैन मिले हरि कौं ~ भारी २२८६। ~ ढरि १ टपक टपक • कछुक ~ — जात ३६०। २. ढुलक ढुलक कर, बह बह कर : अँसुवा ~ — परत कटोरनि १८७।

ढरिकै १ ढुलक कर सिर तैं गई दोहनी ~ ७४३। २ लटकी हुई : रही नितबनि ~ १४३७।

ढरिबौ डोलना • नाहिंन होत चद्र कौ ~ ३३५७।

ढरियै ढुलक गई, अपनी हो गई . प्रेम करत ~ सी है १९६१।

ढरिहौं ढल जाऊँगा : उनकै रग मैं हूँ ~ २३१९।

ढरीं १. रीझ गई : तैसे हीं ये ~ २४०४। २. बहीं : जल की ढरनि ~ ३३९।

ढरी १ अनुकूल रहती है, ढल गई है ताकें रग ~ २३१५। २ बहने लगी : रुधिर धार रिषि आँखिनि ~ ९/३।

ढरे १ गिरने लगे : प्रेम-रस आनँद आँसु ~ ९/१७१। २. अनुकूल हो चुके हो : सोइ कहो तुम जाहि ~ हौ २६३७। ३ द्रवित हुए . अस नँदराइ ~ २४।

ढरैं १ अपना लेती हैं • वैसैंही ढग बहुरि ~ १६२३। २ प्रेम दिखावैं : अब ताहीं पै जाइ ~ ७५६२।

ढरै १ ढुलक जाता है • जहा स्याम तहँ चित्र ~ १९२०। २. बहता है : नैननि नीर ~ १४२। ३ बहती : सरिता नहि ~ ६५२। ४. प्रसन्न हों : जापर दीना नाथ ~ १/३५।

ढरैगौ बहेगा : जल सावन कौ नैन ~ ३६१९।

ढरोल खरादे हुए • मरुवा मयारी ~ २९१७।

ढरौ ढलना, ध्यान देना : अब कबहुँ जनि उनहिं ~ २५६७।

ढर्यौ रीझ गया है : तासौ मन जु ~ ३६४६।

ढहरि देहली सूर प्रभु कर सेज टेकत कबहु टेकत ~ ६७।

ढहायौ ढहा दिया, विनष्ट कर दिया : कचनकोट ~ ९/११९।

ढहावत ध्वस्त किए दे रही है, ढहाये डाल रही है : महाप्रलय-जल गिरिहिं ~ ९३६।

ढहावहु गिरा दो : पहिलैं परवत खोदि ~ ९२८।

ढहावै ढहा रही है : आपुन आदि ~ सा० ल० १५।

ढहीं ढह गई : कुल मरजाद ~ ४००३।

ढही १ गिर पड़ी मुरछिन धरनि ~ ३३९५। २ मिट गई : कुल मरजाद ~ २६६८।

ढहै ढह जाता है • जब लगि वह धुनि सुनि नाहिंन धीर ~ ६४६।

ढहैहौं ढा दूँगा . कचन कोट ~ ९/११३।

ढह्यौ ढह गया, नष्ट हो गया : माधौ जू जोग को बोझ ~ ४१३१।

ढाँकत मूँद लेती है • खन खोलत खन ~ २२०५।

ढाँकति छिपाती है ~ कहा प्रेम हित मुदरि २७७१।

ढाँकि ढँक कर घूँघट पट बदन ~ २१६५।

ढाँक्यौ ढँक लिया : मैं गँवारि सुख ~ ३००७।

ढाँप छिपाकर, ढक कर : राखौ ~ सँवारो ३७९७।

ढाँप्यौ ढँक लिया, छिपा लिया . स्रवन मूँदि, मुख आचर ~ ९/८३।

ढाए गिरा . चहु ओर सों दियौ ~ ४१६४।

ढाकहि पलास : सेमर ~ काटि कै ९/४२।

ढाढ़ एक बाद्य हौं हू ~ बजाऊँ ३७।

ढाढ़िन, ढाढ़िनि ढाढी का स्त्री : ~ मेरी नाचे गावै ३७।

ढाढी जन्मोत्सव का गीत घूम घूम कर गाने वाला एक नीची जाति, ढाढी . हों तो तेरे घर को ~ ३५।

ढार १ लगाकर : चमर-छत्र सिर ~ २९०६। २ बनाया हुआ : अगरु चँदन कौ पालनौ (रँगि) ईंगुर ~ सुढार ४०।

ढारत १ (आँसू) गिराते हैं : मुकुर मुख दोउ नैन ~ ३६४। २ गिराये टाल रहे हैं : तिनकौं हिय भरि ~ २३०१।

ढारति गिराती, बहाती : भरि नैन नीर ~ ई ४१२२।

ढारि १ गिराकर • मुरछि नैन जल ~ १०८८। २ बहा, लुढ़का लोचन भरि भरि ~ दिये २५६५। ३ स्नान करा कर सुरसरी जल ~ ८३६।

ढारियं लुढका दें : औंजत गागरि ~ २९०४।

ढारी ढली हुई : विधु-बदना अरु हाटक ~ १६७४। २. बहाती हूँ : नार जु नैननि ~ २०९३। ३. ढालते हैं सुपक सारि ढिग ~ १/६०। ४ ढलकर मिले जाइ 'सूरज' प्रभु ~ २२३७। ५. बहा, गिरा : नन भरि लेत, जल देत ~ २४२१। ६. लुटाल . गह नृपति कटि ~ सा० ल० १०२।

ढारे १ गिराते हैं . लें उसास नैननि जल ~ ४१९५। २ धारण किये, हिलाये : चँवर अपने कर ~ ३०८४।

ढारैं गिराते हैं, बहाते हैं . बरषि आँसु जल ~ ३९४२।

ढारै १ खाली कर दे, गिरा दे . रीतै भरै, भरैं ~ पुनि १/१०५। २ बहाने लगे : (कृष्ण) नैन नीर भरि भरि दोउ ~ ५०।

ढारौं धारण करूँगा, हिलाऊँगा चमर अपनै कर ~ १६१८।

ढारो बहाओ : नैन नीर जनि ~ ३११९।

ढार्‌यौ बहा दिया, बहाया ब्याकुल नैन दोउ ~ २९४३।

ढाहन गिराने बृच्छ बन काटि महलात ~ लग्यो ४२२१।

ढाहैगो गिर जायेगा : ~ सब 'धाम' मर जो ३९४८।

ढिग १ समीप, पास • जननी सुत पितु जा ~ जाबो सा० ल० ९। २. सान्निध्य ~ न तजनि ब्रजबाल की १०५।

ढिग १ समीप, पास (बसुदेव) महरि ~ उन जाइ राखे ५।

ढिगनि ढिग, किनारे (साडी का किनारा) लाल ~ की सारी ६९४।

ढिगही पास ही जाइ ता ~ रह्यौ २८१०।

ढिठाइ धृष्टता मोसौं करी ~ ५५५।

ढिठाई धृष्टता ग्वालनि मोसौं करी ~ ९२३।

ढिठान ढिठाई . छांडौ सबै ~ ९/१३४।

ढीठ १ ढीठ, धृष्ट . घाती कुटिल ~ अति क्रोधी १/१८६।

ढीठि ढाठ, दुलारी सुनि री ललिता तू भइ ~ २८५६।

ढीठी वि० ढोठ, धृष्ट : ब्रज की ~ गुवारि २९५। स्त्री० धृष्टता सूरदास प्रभु सौं यह कहियौ तुम ~ ३७८०।

ढीठौ १ धृष्टता, ढिठाई तुमसौं ~ कीन्हौ ७०३। २ ढीठ को • देखो ~ दूरि तें ४१८८।

ढील शिथिलता बेर मेरी क्यौं ~ कीन्ही १/१७६।

ढीलत छोड देते हैं, खोल देते हैं : ता पर सूर बछुरुवनि ~ २९१।

ढीली वि० हल्के-हल्के, धीरे धीरे : बाँह डुलावत ~ २९९। क्रि० स० खोल दी, छोड दी : ग्वालनि ~ गाइ २६७६।

ढीले शिथिल : डगमगात पग अँग अँग ~ २६४६।

ढुढ उचक्का : चोर ~ बटपार कहावत २२८५।

ढुकाइ लगा • बहुरी दीन्हे नाग ~ ७/२।

ढुकि-ढुकि घेर घेरकर : ~ करत लरैया ३७१।

ढुक्यो तैयार (लगा) है . ऊपर ~ सचान १/९७।

ढुटौना पुत्र, बालक, बेटा अति सुन्दर नँद महर ~ ६०१।

ढुरकी चल दी . झमकि चली सब भीतर ~ १८०।

ढुरति हिलती हुइ • बेनि ~ कटि लौ ३००।

ढुरावत १ ढुलकाते हैं, गिराते हैं : बारबार ~ पानी ३५६७। २ हिलाते हैं . चमर ~ श्री ब्रजराज।

ढुलै ढह पडे : ~ बरु स्वर्ग सुरपति सहित २८२४।

ढूँढत १. खोजता, ढूँढता ~ फिरत भुलायौ ४/१३। २ खोजती, ढूँढती : ~ फिरति ग्वारिनी ४५९। ३ खोजते हुए, ढूँढते हुए कोउ ~ गृह नहिं पहिचाने ८६०। ४ खोजते हो, ढूँढते हो : घर घर ~ भाँडे १५१९। ५ खोज रहे हैं, ढूँढते हैं : सीता की सुधि लेन चले कपि ~ विपिन मँझारी सारा० २७६। ~ ढूँढत खोजते खोजते : ~ — बहु स्रम पायौ ५/३।

तकियो देखना, आश्रय लेना : ठकुराई ~ गिरिधर की सूरदास जन जानी।
तकै देखने लगे : नभ धरनि तन ~ १०६३।
तकैं दिखाई देते : फिरि न ~ जु गए सु गए री २९९२।
तकै देखता है : ~ गोपाल अब सरन तेरी १/११०।
तकौं देखूँ : कृपा बिनु काको सरन ~ १/१५१।
तक्यौ देखा : तब तैं फिरि ~ नहिं मो तन १८३९।
तक्र मट्ठा, छाछ . छलकत ~ उफनि अँग आवत १६३८।
तक्षक दस वायुओं मे एक, नागवायु : ~ धनंजय पुनि देवदत्त अरु पौंड्रक सख घुमान सारा० ९।
तगा तागा, डोरा, सूत, धागा . बाटि ~ नीं बाध्यौ १२८।
तगीरी तबदीली (मृत्यु) : सुनी ~ बिसरि गई सुधि १/१४३।
तचकि जल कर : त्वचा ~ तनु पिलकी ३२६१।
तचाए जलाया : सब तन ताप ~ सा० ल० ४४।
तचावै जलाता है . दीसन ताप ~ सा० ल० ७४।
तचि-तचि जल-जल कर : दुमह दाह जु उठत तन ~ ३४००।
तचिबौ जलेगा : नतरुक ज्वाला ~ १/१९।
तची जली हुई . उठी न तेज ~ री ४२५६।
तचै तपाने वाले है . ये सब सत्य ~ रे ३१८९।
तच्छक तच्छक नाग : नृप सरीर कौं ~ डस्यौ १२/४।
तच्छन तत्क्षण, उसी समय : ~ भीम धनंजय माधौ ४२१४।
तच्यौ व्याकुल हो उठा : उलटि अनग अनग ~ ११३९।
तज छोड कर : ब्रज ~ अत न जैहौ सारा० ५८६।
तजत १ छोड्ता है, छोड देता है : ~ चक्र न वक्र चरन बिनु ४०७२। २ छोडती है : निमिष ~ न मात १००। ३ छोडते हैं . नैंकु ~ नहिं ब्रज नर-नारि ९५१। ४ छोडते थे, छोड रहे थे . प्रान ~ अकुलाइ ५७८। ५ छोडने पर भी : ~ नाहिं डराहि २३४८।
तजति छोडती हैं ~ कुमुद निवास ३८३६।
तजति १. छोडती है . अजहू मान ~ नहिं प्यारी २७८४। २ छोडते है : ~ न पानि कपोलै २८२६।
तजतौ छोडता : अजहुँ सूर पतित पद ~ १/१२३।
तजन १ छोडने . कौन ~ कौ बैस ३२२४। २ छोडने के लिए . ~ कह्यौ सो ठौर ३२३।
तजनि छोडने वाली . ढिग न ~ ब्रजबाल की १०५।
तजहीं छोडते है . ज्यौं काचुरी भुअगम ~ २२९२।
तजहु छोड दो, त्याग दो ~ सोच मिलिह नँदनंदन २८३०।
तजहुगी तजोगी, छोडोगी . तौं जौ मान ~ भामिनि २७३८।
तजि १ छोडकर . सब ~ भजौ चरन रघुराइ ७/२। २. छोड, त्याग : दाहक ~ सकत न पावक १/१६३। ३ छोड दिया, छोड दिया है . आसा ~ परतान ३६७१। ४ छोड दो :
तजिए छोड दीजिए : ~ ग्यान सुनत तावत तन ३९०३।
तजिकै छोडकर . इनहु सूर अपनौ सुख ~ २३३९।
तजियत १ छोड देते हैं ~ यह अनुहारे ३७५८। २ छोड दिया जाता है बरत भवन जैसे ~ २३३७। ३ छोडते हुए : सागर सकुचित ~ तरग २९१२।
तजियै १ छोड दीजिए : अब ~ ताहि १३४५। २ छोडा जाय . कौन लीजै कौन ~ १४५९।
तजिहि छोड देंगी ~ (प्राण) जानकी सुनिकै ९/१४६।
तजिहैं १: छोड देंगी : ~ प्रान सबै मिलि ४३८। २ छोड देंगे : राधा को ~ मनमोहन ३१४६।
तजिहै छोड देगी अब वियोग बिरहिन तन ~ कहि सूरदास ३६०५।
तजिहौं छोडूँगी, छोड दूगा : सूरज स्याम प्रन अब ~ ४०१२।
तजीं छोड दीं : तौ ब्रजनाथ ~ ३७२९।
तजी १ छोड दी, छोड दी है : लोक-लज्जा ~ लाज देखत लजी १६४६। २ छोड कर . ज्यौं मोहि ~ सरी २३००।
तजे १ खो बैठे . तबहिं तनु सुधि ~ १०६३। २ छोड दिया, छोड दिया है . मम गृह ~ मुरारे १/२४२। ३ छोड दिए, त्याग दिए . ~ न प्रान सूर ३१३५। ४. छोड दे . जोग ग्यान मुनि नगर ~ बरु ३७०९। ५ छोडते हैं सुख-संपति न ~ २४।
तजै १ छोड देता है : केंचुल ~ भुजग १६४०। २. छोड देते हैं : मम हित भक्त सकल सुख ~ ९/५। ३ छोडे . कहा लेहि, कह ~ बिबस भए २३००। ४ छोडने पर, त्यागने पर . सिंह सावक ज्यौं ~ गृह १/१०६।
तजै १. छोडता है : जैसे चोर ~ नहिं चोरी २८२४। २ छोडती है, छोड देती है मीन ~ हँसि प्रान ३९८५। ३. छोडते हैं : निसि बासर नहिं संग ~ २३२३। ४ छोड दे ~ सिंधु मरजाद कौ २८२४। ५ छोडे . अनख प्रिया जु ~ २८०५। ६ छूटने पर, छूटने से . कपट ~ छूटै ससार ११८०।
तजौं १. छोडती हू . कबहुँक कहै ~ मरजादा १७६०। २ छोड दूँगा . जोग धारना करि इहि ~ ६/५।
तजौंगी छोडूँगी, छोड दूँगी : प्रान ~ आपनौ देखि असुर सिर-मौर ४१८८।
तजौ १ छोडो, छोड दो ~ मन, हरि विमुखन को संग १/३३२। २ छोडा : मानिन ~ नाहीं मान सा० ल० ५६
तज्यौ १. छोडा, छोड दिया, छोड दिया है : तात-बचन लगि राज ~ तिनि १९८। २ छोड दिए, त्याग दिए . कै उहिं ~ परान ९/७५। ३ छोड कर, त्याग कर : ~ कोप मर-

ढूँढति १. खोजती : ~ फिरति सकल ब्रज-जुवती ११२५ । २ ढूँढती है, खोजती है ~ घर फिरि, फेरि २७१ ।
ढूँढ़न खोजने : ताकै ~ कौ उठि धायौ ५/३ ।
ढूँढि १ ढूँढ कर, खोजकर · इक बन ~ सकल बन ढूँढे ४०४५ । २ ढूँढती हुई : ~ फिरी नहिं पावन हरि कौं २३५ । ~, ढूँढि खोज खोज कर : ~ — गोरस घर कौ २९० । ~ ढँढोरि खोजते-खोजते ~ — आपुही आयौ ३३१ । ~ फिरी ढूँढ डाला · ~ — बन बाग ११२६ ।
ढूँढी खोजी, तलाश की लका पौरि पौरि मैं ~ ९/१०४ ।
ढूँढे १ खोजे : इक बन ढूँढि सकल बन ~ ४०४५ । २ ढूँढने पर आँखि मूँदि कह पावै ~ ३७९४ ।
ढूँढेहू ढूँढने पर · ~ नहिं पावत ३७११ ।
ढूँढै पता लगा रहे हैं . ~ गिरि-बन-झार ९/८३ ।
ढूँढै ढूँढता है : भ्रमत हीं वह दौरि ~ १/७० ।
ढूँढौ खोजो, ढूँढ़ो · वेद पुरानि सुमृति सब ~ ३८९० ।
ढूँढ्यो ढूँढ डाला : ढूँढ़त ढूँढत सब ब्रज ~ २६३२ ।
ढूँढौंगी खोजलूँगी : ~ घर घर ब्रज खोरी १९७७ ।
ढूँड्यौ ढूँढ डाला, खोजा वृन्दा आदि सकल वन ~ ४५८ ।
ढेंढस ढेंढस, टाण्डा (सबनी) टेंटी ~ छोलि कियौ पुनि १२१३ ।
ढेरनि ढेर . दही दूध के ~ जित तित ३०९७ ।
ढेरि, ढेरि राशि, समूह : रूप रस की ~ २३६९, सेत बिकाई सुजस की ~ ३३४१ ।
ढेल ठेलते हुए : उन लियौ ~ न मोहन प्राए २९०१ ।
ढोटहि बालक को : नहिं परवाह नद के ~ परि० १/४६ ।
ढोटा १ कुमार, पुत्र . अतिहिं अल्प के नद ~ ३०८२ । २ बालक या ब्रज कौ जीवन यह ~ ५१९ । ३ लडके ने कछु पढि दियौ सखी उहिं ~ २३२१ ।
ढोटाहू पुत्र भी · ~ न अघात ३२६ ।
ढोरि १ (आसू) बहाते हुए : कहति लोचन ~ १४४२ । २ रट · रसिक सिरोमनि ~ लगावत २४५१ ।
ढोरी[१] १ ढुलकने की क्रिया या भाव . डारि दियौ हरि पर ~ की २८७२ । २ ढाल दी गई हो : कनक खभ मरकत खचि ~ १०३९ ।
ढोरी[२] झुंड ग्वाल सखा सँग ~ २८९१ ।
ढोरी[३] १ मनचाही कैसी लगावति ~ १२५३ । २. धुन मे : निरतर परी रहति हो ~ ३३७१ ।
ढोरे गिराये, बहाये · रीते भरि, भरि ~ ३७६३ ।
ढोर बहा रहो हैं · बिलसति यह कहति सबै लोचन जल ~ २०६८ । **सीस** ~ झूम रही हैं : सुन मुरली घोरैं सुर बधू — ~ २८३९ ।
ढोरैं बहाने लगे, ढुलकाये . निरखि बदन लोचन जल ~ ३४४ ।
ढोर्‌यौ ढुलका दिया . यह सुनि कौसिल्या सिर ~ ९/५१ ।
ढोल एक चमडा मढा बाजा । △ ~ **बजाइ** खुल्लमखुला, सबको जताकर · जनु हीरा हरि लियौ हाथ तैं ~ ३२६५ ।

त

तक आतक, भय, डर : जीय न आनो ~ ९/१३४ ।
तंत्र-मन्त्र जादू-टोना . यह कछु ~ जानत है ५५४ ।
तंदुल चावल : छाँडौ सकुच बाँधि पट ~ ४२२५ ।
तंबा गाय : कीर कपोत मधुप पिक ~ रिपु सत रेख बनी री परि० १/७३ । ~ **रिपु** कौआ १/७३ ।
तंबोर ताम्बूल, पान : दियौ ~ नद हरष आगे २९५६ ।
तबोल ताम्बूल, पान . कहुँ जावक कहुँ बने ~ रँग २५१९ ।
तंबोलहि पान का बीडा : कह्यौ ~ लेहु ९/७४ ।
तई तपी, जलती हुई : त्रिबिध ताप ~ ३७०३ ।
तउ १ फिर भी : तृषा ~ न बुझाइ १/५६ । २. तो · ~ कृपाल करुनामय केशव प्रभु नहिं जीय धरे १/११७ ।
तऊ १ फिर भी, तब भी : ~ सुभाव न सीतल छाँडै १/११७ ।
तए पुं० (तप्त) तवे पर सूर स्याम कै रूप समाने, मानौ बूँद ~ २३२८ । क्रि० अ० तप्त/दुखी हुए : अतिसय दुख ~ ४/५ ।
तक चितवन : नैन की ~ देखि गिरधर २४४९ ।
तकत १ देखता तहाँ फिरि ~ नहिं त्रास माने २२४९ । २. देखती, देख रही · ~ है वृषभान नदिनि सा० ल० २९ । ३. देखती है ~ उरज कठोर सा० ल० ३० । ४ देखते हैं, देख रहे हैं हरि ~ आनन तोर ३६४ ।
तकति देखती है · नहिं ~ धरनी ६९८ ।
तकि क्रि० स० १ देखकर : जे रघुनाथ सरन ~ आए १/३४ । २ देखती (रह गई) रहीं ~ अँखियाँ १३८५ । ३ देखते ही · अजन त्रान तजत तमकत ~ २३७२ । ४ ताक कर, निशाने से : एकहीं बान ~ बालि मारे ९/१२९ । ~ **आई** आशा लगा कर आई हैं : चरन सरन ~ — ११८१ । ~ **तकि** ताक-ताक कर अपनैं मन ~ — तनु तोलति २१६८ । **स्त्री०** ताड : माई हौं ~ लागि, रही २८१ ।
तकिए ताकिए, देखिए, इच्छा कीजिए . काको 'सूर' सरन ~ ३६२० ।

तकियो देखना, आश्रय लेना : ठकुराई ~ गिरिधर की सूरदास जन जानी ।
तकै देखने लगे . नभ बरनि तन ~ १०६३ ।
तकैं दिखाई देते फिरि न ~ जु गए सु गए री २२९० ।
तकै देखता है . ~ गोपाल अब सरन तेरी १/११० ।
तकौं देखूं : कृपा बिनु काकी सरन ~ १/१५१ ।
तक्यो देखा तब ते फिरि ~ नहिं सो तन १८३९ ।
तक्र मट्ठा, छाछ : छलकत ~ उफनि अँग आवत १६३८।
तक्षक दस वायुओं मे एक, नागवायु . ~ धनजय पुनि देवदत्त अरु पौंड्रक सख घुमान सारा० ९ ।
तगा तागा, डोरा, सूत, धागा बाटि ~ मौं बाध्यो १२८ ।
तगीरी तबदीली (मृत्यु) • सुनी ~ बिसरि गई सुधि १/१४३ ।
तचकि जल कर त्वचा ~ तनु पिनकी ३२६१ ।
तचाए जलाना • सब तन ताप ~ सा० ल० ४४ ।
तचावे जलाता है . बीमन ताप ~ सा० ल० २४ ।
तचि-तचि जल-जल कर • दुमह दाह जु उठत तन ~ ३४०० ।
तचिवो जलेगा . नतरुक ज्वाला ~ १/१९ ।
तची जली हुई : उठी न तेज ~ री ४२५६ ।
तचे तपाने वाले ह ये सब सत्य ~ रे ३१८९ ।
तच्छक तक्षक नाग नृप सरीर कौं ~ डस्यो १२/४ ।
तच्छन तत्क्षण, उसी समय . ~ भीम धनजय मार्यौ ४२१४ ।
तच्यौ व्याकुल हो उठा उलटि अनग अनग ~ ११३९ ।
तज छोड कर : ब्रज ~ अत न जैहों सारा० ७८६ ।
तजत १. छोडता है, छोड देता है ~ चक्र न वक्र चख बिनु ४०७२ । २ छोडती हैं . निमिष ~ न सात १०० । ३ छोडते हैं नेंकु ~ नहिं ब्रज नर-नारि ९५१ । ४ छोडते थे, छोड रहे थे . प्रान ~ अकुलाइ ५७८ । ५ छोडने पर भी ~ नाहिं डराहिं २३४८ ।
तजति छोडती है ~ कुमुद निवास ३८३३ ।
तजति १ छोडती है . अजहू मान ~ नहिं प्यारी २७८४ । २ छोडते हे ~ न पानि कपोलै २८२६ ।
तजतौ छोडता अजहुँ सूर पतित पद ~ १/१२३ ।
तजन १ छोडने • कौन ~ कौ बैस ३२२४ । २ छोडने के लिए ~ कह्यौ सो ठौर ३०३ ।
तजनि छोडने वाली : ढिग न ~ ब्रजबाल की १०५ ।
तजहीं छोडते हे ज्यौं कांचुरी भुअगम ~ २२९२ ।
तजहु छोड दो, त्याग दो : ~ सोच मिलिहि नँदनदन २८३० ।
तजहुगी तजोगी, छोडोगी • तौ जौ मान ~ भामिनि २७३८ ।
तजि १ छोडकर • सब ~ भजौ चरन रघुराइ ७/२ । २. छोड, त्याग दाहक ~ सकत न पावक १/१६३ । ३ छोड दिया, छोड दिया है . आसा ~ परतीन ३६७१ । ४ छोड दो ~ मान हठीली २१४५ ।
तजिए छोड दीजिए • ~ ग्यान सुनत तावत तन ३९०३ ।
तजिकै छोडकर इनहु सूर अपनौ सुख ~ २३३९ ।
तजियत १ छोड देते हैं ~ यह अनुहारे ३७५८ । २ छोड दिया जाता है • बरत भवन जैसे ~ २३३७ । ३ छोडते हुए . सागर सकुचित ~ तरग २९१२ ।
तजियै १ छोड दीजिए . अब ~ ताहि १३८५ । २ छोडा जाय . कौन लाजै कौन ~ १४५९ ।
तजिहि छोड देंगी ~ (प्राण) जानकी सुनिकैं ६/१४६ ।
तजिहैं १: छोड देंगी ~ प्रान सबै मिलि ८३८ । २ छोड देंगे . राधा कौ ~ मनमोहन ३१४६ ।
तजिहैं छोड देगी अब वियोग बिरहिन तन ~ कहि सूरदास ३६०५ ।
तजिहौं छोडूंगी, छोड दूंगा . सूरज स्याम प्रन अब ~ ४०१२ ।
तजी छोड दीं • तौ ब्रजनाथ ~ ३७२९ ।
तजी १ छोड दी, छोड दी है लोक-लज्जा ~ लाज देखत लजी १६४६ । २ छोड कर : ज्यौं मोहि ~ खरी २३०० ।
तजे १ सो बैठे . तबहिं तनु सुधि ~ १०६३ । २ छोड दिया, छोड दिया है . सम गृह ~ मुरारे १/२४२ । ३ छोड दिए, त्याग दिए ~ न प्रान सूर ३१३५ । ४. छोड दे • जोग ग्यान मुनि नगर ~ बरु ३७०९ । ५ छोडते हैं सुख-सपत्ति न ~ २४ ।
तजैं १ छोड देता है • केंचुल ~ भुजग १६४० । २. छोड देते हैं सम हित भक्त सकल सुख ~ ९/५ । ३ छोडे कहा लेहि, कह ~ बिबस भए २३०० । ४ छोडने पर, त्यागने पर सिह सावक ज्यौं ~ गृह १/१०६ ।
तजै १ छोडता है : जैसे चोर ~ नहिं चोरी २८२४ । २ छोडती है, छोड देती है • मीन ~ हँसि प्रान ३९८५ । ३ छोडते हे : निसि बासर नहिं सग ~ २३०३ । ४ छोड दे ~ सिंधु मरजाद कौ २८२४। ५ छोडे : अनख प्रिया जु ~ २८०५ । ६ छूटने पर, छूटने से कपट ~ छूटै ससार ११८० ।
तजौं १ छोडती हू कबहुँक कहै ~ मरजादा १७६० । २ छोड दूँगा : जोग धारना करि इहिं ~ ६/५ ।
तजौंगी छोडूंगी, छोड दूँगी • प्रान ~ आपनौ देखि असुर सिर-मौर ४१८८ ।
तजौ १ छोडो, छोड दो : ~ मन, हरि बिमुखन कौ सग १/३३२ । २ छोडा मानिन ~ नाहीं मान सा० ल० ५६
तज्यौ १ छोडा, छोड दिया, छोड दिया है : तात-वचन लगि राज ~ तिनि १९८ । २ छोड दिए, त्याग दिए • कै इहिं ~ परान ९/७५ । ३ छोड कर, त्याग कर : ~ कोप मर-जादा राखी ९/१०४ ।

तटके तुरत, शीघ्र : लीजो जोग सँभारि आपुनो जाहु तही ~ ३१०७ ।

तटनी नदी रोमराजि ~ २१८८ ।

तटी नदी : सूर सुजल सींचिये कृपानिधि, निज जन चरन ~ १/९८ ।

तडपन तडपना : गरजन अरु ~ मनु गोला ४२६७ ।

तडाग १ सरोवर, तालाव • नैन ~ स्रवन मूरति मठ ३२२१ । २. तालाव मे : न्हावन - काज ~ सिधाई ९/१७४ ।

तडि विद्युत ~ जुत कोष कोकिला गाई परि० १/६८ ।

तडित विद्युत : तृष्ना ~ चमकि छिनहीं छिन १/२०९ ।

तडित-भामिनी विद्युत रूप राधिका : मध्य स्याम घन ~ १०३८ ।

तडितनि बिजलियाँ वारौं ~ सावन ६६४ ।

ततकाल तत्काल, तुरत, उसी समय : ख्याल ~ कीन्हौ ४९७ ।

ततकालहिं तत्काल ही, उसी समय : ~ तब प्रगट भए हरि १/१०९; ~ तिन हरि-पद लह्यौ ६/३ ।

ततकाला तत्काल • मुरली मैं सुनि-सुनि ~ १००५ ।

ततच्छन तुरत : धूप सुवास ~ बस करि २८२२ ।

ततछन तत्क्षण, उसी समय, तुरत : ~ रुदन करत मनमोहन ६८२ ।

ततछनही तत्काल ही . तामैं तै ~ काढ्यौ २/३० ।

ततिहर चूल्हे पर : ~ तुरत चढाऊँ १८५ ।

तच्छन तत्क्षण, तुरत : ~ तजत विहार ३९८२ ।

तत्व १ ज्ञान : ~ भजे वैसी है जैहो ३५३९ । २ पचभूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) : पच ~ चौखानि ४८७ । ३ जगत् के मूल कारण जो २५ माने गए हैं — पुरुष, प्रकृति, महतत्व या बुद्धि, अहकार, चक्षु, कर्ण, नासिका, जिह्वा, त्वक्, वाक्, पाणि, वायु, पाद, उपस्थ, मन, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गध, पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश । सूरदास ने इनमे सत, रज और तम तीन गुणों को सम्मिलित करके २८ तत्व लिखे हैं कीन्हे ~ प्रकट तेही छन सवै अष्ट अरु वीस सारा० ७ ।

तत्वज्ञान ब्रह्म, जीव और आत्मा का ज्ञान जिसमे मनुष्य की मुक्ति हो जाय : कहि उधव सौं ~ ३/४ ।

तथा उसी प्रकार, उसी तरह . करौ तुम ~ ४/१२ ।

तदगुन उसके गुण • ~ देख सवै मिल सजनी सा० ल० ७२ ।

तदपि फिर भी, तथापि : ~ विमुख पाँती सो गनियत १/९३ ।

तदरूप उसके अनुरूप : दरस परस ~ आजु निज २६०२ ।

तद्यपि तथापि . ~ भवन भाव नहिं ब्रज विनु ३९७७ ।

तद्रूपता सादृश्य, समानता : जानि जुग जूप मैं भूप ~ ४२१३ ।

तन पुं० १ शरीर वरषि छवि नव वारि धरि ~ २१८ । २ शरीर पर : ~ पहिरे नूतन चीर २४ । ~ **कीन्हे** शरीर धारण किये हुए, शरीर वाले . धरा धन रिपु ~ — सा० ल० ८ । **क्रि० वि० १** ओर एक चले आवत ब्रज ~ कौ ८२८ । २ ओर से ~ मन जुक्त बनाई सा० ल० ८३ । ३ पास : तुम ~ आवत पावतिं २३३४ । ~ **पय नीत आदि सुत सुत की जननी** अग, जल और नीत के प्रथम वर्णो के मिलाने से 'अजनी' के पुत्र (हनुमान) के पुत्र (मकरध्वज) की माता, मछली : ~ — प्रीतम माहीं सा० ल० ४१ । ~ **तोरि** शरीर को ऐंठती है : उलटि पलटि ~ — जम्हाई ७४८ ।

तनक वि० १ थोडा । ~ लाल नवनीत लिए १३३ । ~ **तनक** थोड़ा-थोडा • ~ — धरि कचन थारो २४१ । २ छोटा . (माधव) ~ सो वदन १५० । ~ **मुख** छोटा मुँह ~ — की तनक बतियाँ १६६ । **क्रि० वि० १** तनिक भी . ध्यान न — गहत ६२० । २. थोडे समय के लिए सूर ~ गिरिधर-बिनु देखैं २३४६ ।

तनकहिं १ थोडा सा, थोडी सी : ~ माखन खात ३५५ । २. थोडे मे ही, जरा-सी बात पर : ~ गए रिसाई २०९९ ।

तनकहुँ तनिक भी : तन की ~ सुधि नहीं ११०६ ।

तनकि खीझ, रूठ : तनक सी बात कहै, तनक ~ रहै १५० ।

तनगि खीझ कर, झुँझला कर ~ गये तो पास २५६३ ।

तन-चीर साडी • वढ्यौ ~ नहिं अत पायौ १/५ ।

तनत १. तानती है : भौंह मो पर ~ २२८७ । २ फैलता है . ~ उर भेरि परि० १/८६ ।

तन धन वस्त्र मुकुलित कल ~ की ओट है ११०७ ।

तनमय तन्मय : तुम ~ मैं कहुँ न नेरैं १७८५ ।

तनय पुत्र : चित दै चितै ~ मुख ओर ३५७ ।

तनया १ पुत्री : सुमिरत नाम द्रुपद ~ कौ १/१७ । २ पुत्री का • ~ कस वलि दीन्ही ४०८६ । ३ पुत्रियो • ~ जामातनि कौ समदत ९/२७ ।

तनसुख एक प्रकार का वस्त्र : तन ~ की सारी १४९८ ।

तन-सुत-कन तन से उत्पन्न (पसीने) के कण, पसीने की बूँदें • ~ से घन विचार कें सा० ल० ५ ।

तनहि १ शरीर ~ पर है मनहि राजा १६१५ । २ की ओर बार बार गिरि ~ बतावत ९३५ । ३ शरीर मे ~ देत दव लाई ३१९८ ।

तनही[1] १ ओर : वहुरि न आए मो ~ २२४१ । २ शरीर का, रूप का . मैं ही गर्व कियौ ~ २१०५ ।

तनही[2] तनिक सा : मैं ही गर्व कियौ ~ २१०५ ।

तनायौ १ तना हुआ है : सिर पर छत्र ~ ९/१२५ । २ ताना हो : मनु सुहाग कौ छत्र ~ २६११ ।

तनिकौ जरा भी : सुख दुख ~ तिहिं न सँतापै ३/१३ ।

तनियाँ कछनी, तनीदार कुरता : पहिरन सीखे पर पीतावर ~

३३७७।

तनी १ चोली की डोरी . टूटि तरकि ~ १८८० । २ (डोरी) बंधन दुख संताप की काटि ~ १/३९।

तनु पुं० १ शरीर बारबार निरखि कोमल ~ ३९० । २. शरीर की . कोटि करौ ~ प्रकृति न जाइ ३१४८ । ३ शरीर के जर्से ~ मँग छाँडे १/४४ । ४ शरीर पर/मे . नील नलिन ~ पीत अँगुलिया सारा० १६६ । ५ प्राण, जान . ज्यों पतग ~ दीन्हौ १/४६ । ~ दसा गँवायौ विदेह हो गई . जुवति सुनत ~ — ११७९ । **क्रि० वि०** ओर कोउ जेवत पतिहिं ~ हैरैं ९८९ ।

तनु अनुगामी तन का अनुसरण करने वाली, छाया : ~ मनिमय भय के भीतर सा० ल० ३ ।

तनु-गढ़ शरीर रूपी किला ~ आनि लए ३०३७ ।

तनु गारी शरीर गला डाला . भ्रमि भ्रमि स्रम कीन्हौ ~ १६७८ ।

तनुता तन की शक्ति · ~ सफल हुई ३४०४ ।

तनुया पुत्री सत्राजित अपनी ~ को दीन्हे त्रिभुवन राय सारा० ६५० ।

तनुहि शरीर : जाहि अबहीं ~ लै घर १६१५ ।

तन्मय तल्लीन, तद्रूप . ~ भई नँद-लाल सौं ८०४ ।

तन्मात्रा तन्मात्राएँ (शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध) तमगुन तैं ~ सारी ३/१३ ।

तप १ चित्त-शुद्धि अथवा मानसिक निग्रह के उद्देश्य से किये गये व्रत अथवा नियम, तपस्या : जप ~ नहिं कीन्हौ १/१११ । **~ बली** तप ही बल है · ~ —, तापस बली ९/१२९ ।

तपत १ गरम-गरम . जे तुरत ~ करि आने १८३ । २ तपस्या करते हे . चक्र सुदर्सन ~ महामुनि ३८९४ । ३ जलते · सुमिरि सुमिरि गुन अधिक ~ हैं ३५६९ । ४ जलता, कष्ट सहता सूर स्याम बिनु ~ रैनि दिन ३४२७ । ५ तप रहे हो, दग्ध हो रहे हो . मनौ ~ विष विषम पियौ ९/४८ ।

तपति जल रहा है हम जु ~ उर अधिक प्रीति के ३५८९ ।

तपति पुं० तपन प्रभु बिनु ऊधौ को तन ~ हरै ३५८१ । **क्रि० अ०** १ दहक रहा है, तपती है : अतिहीं ~ छाती ४३६७ । २ तपता है, जलता है · ~ तरनि ज्यों चद ४०६७ । ३ तडपती है : जैसें मीन ~ बिनु पानी ३०६२ ।

तपन रिपु चल तासु पति हित अंत हीन बिचार सची पति सुत सत्रु पितु ।मल सुता तपन रिपु (हिम) मे चल मिलाने से 'हिमाचल' के पति (महादेव) के हितु (वृषभ) के अंतिम वर्ण से हीन करने पर 'वृष' मे इन्द्र के पुत्र (अर्जुन) के शत्रु (कर्ण) के पिता (भानु) के मिलाने से 'वृषभानु' की पुत्री, राधा ~ बिरह विचार सा० ल० शेष २ ।

तपनि[1] १ जलन . बिरह ~ मो तन तैं बुझावै २१०७ । २ प्यास, तृष्णा . नैननि ~ बुझान दै २७४ । ३. गर्मी पट रितु सीत ~ तन गारौ १३३८ ।

तपनि[2] तप, तपस्या . जोगिजन बन ~-जापनि ९७९ ।

तपनी आकुलता : छाँडि देहि री अति ~ २०९२ ।

तपरूप तप रूपी बैद रूप ~ महामुनि कृपन विप्र यह नाम सारा० ८४७ ।

तप सँजमी तप सयमी, योगी जहाँ सुनहिं ~ २९१४ ।

तपस्वियनि तपस्वियों ने ~ देखि कह्यौ, क्रोध इनमैं बहुत ८/८ ।

तपसी तपस्वी छाँडि राम ~ के मोहै ९/७९ ।

तपे १. जलते है · नैन ~ माई १८८९ । २. जलती है : ~ अति छाती २४९९ ।

तप्त तप्त, गर्म जनु सीतल सौं ~ सलिल दै ९/१७१ ।

तप्यौ जल उठा कहत सूर उर ~ भोर भयौ २४८६ ।

तब=तब **वि०** तुम्हारे · हौं ~ सग जरौंगी २/३० । **क्रि० वि०** १ तब, उस समय : ~ तैं मूढ मरम नहिं जान्यौ ९/११९ । **~ तकि जकि ह्वै रही चित्र सी** तभी से स्तभित हो चित्र सी हो रही हूँ : ~ — १८०४ ।

तबहि तब, तभी · ~ दान तुम पावहु १५५१ । २. तब तो : ~ हिलि मिलि रास कीन्हौ ११८० ।

तबहीं तभी . ~ तब बहरायौ २३६६ । २ तत्काल · जबहि देत ~ फिरि देखत ३६ । ~ **तब** तब ही तब · ~ — छुवै आवै २४९ ।

तबहुँ तब भी · सूर ~ न द्वार छाँडै १/१०६ ।

तबहूँ १ तब भी, फिर भी ~ गयौ न क्रोध विकार ७/२ । २ इसके बाद भी · ~ और रह्यौ सरिता पति ९/१०४ ।

तबै १ तब, तभी मन मैं बिहँसि ~ नँदरानी १५ । २ तभी तो, इसीलिए तो ~ आज अनमन।बत्यानी २४२९ ।

तम[1] **पुं०** अंधकार : दुसह दारुन ~ १/७७, सूरदास तबहीं नासै २/१९ । **वि०** अंधे . पग पग परत कर्म ~-कूपहिं १/४८ ।

तम[2] तमोगुण रज ~ विष ज्वाला १/५५ ।

तमकत तमककर : अजन ज्ञान तजत ~ तकि २३७२ ।

तमकि १ तमककर, क्रोधित होकर . देखि नृप ~ हरि चमक तहँई गए ३०७९ । २ तमक . ~ उठे यह बात सुनतहीं २०७६ । **~ तमकि** तमक तमक कर, आवेश मे आ-आ कर : ~ — तरकत मृगपति ज्यौं २३८३ ।

तम-कुल-दनुज अंधकार स्वरूप असुर कुल को सकर्षण ~ निकद १७९५ ।

तमके चमक उठे सूरदास यह सुनि घन ~ ९२८ ।

तमचुर मुर्गा, मुर्गे ~ जहँ तहँ सब्द पुकारे २४७९ ।

तमचुरनि मुर्गों अरुन गगन ~ पुकार्यौ २३३ ।

तमचूर मुर्गा : ~ खग रोर १२१० ।

तमतट अधकार प्रान्त पर • रेंग्यौ जनु ~ तारागन २४४५।
तमता अधकार, अधियारी • पौन भयौ सीतल, तमि तै ~ गई २०३८।
तमधार स्याम वर्ण की धारा, काली धारा मेरुनि अध ~ धँसी री २४४७।
तम मोचनहारी अधकार को दूर करने वाले, (श्रीकृष्ण) . निसि नायक ~ ११४९।
तम हर सुत गुन आदि अंत अधकार को दूर करने वाले 'दीपक' से उत्पन्न 'काजल' के आदि वर्ण 'का' मे रस्सी (दाम) के अतिम वर्ण 'म' को मिलाने से — काम • ~ — सा० ल० ३८।
तमारे ताम्बूल, पान . मुख ~ नैननि अंजन ३२६७।
तमाल एक वृक्ष • लटकत ताल ~ ६१५।
तमालहि १ तमाल के वृक्षों मे : कचन बेल ~ लपटी सारा० ९८५। २ तमाल के समान : नहि पावत घनस्याम ~ २३६।
तमासे तमाशे मे देव तैंतिसौं कोटि जु जग्य ~ आए ४१८८।
तमासौ तमाशा, अद्भुत बात . बन बडौ ~ ४८१।
तमास्यौ तमाशा करते . देखत नहीं ~ परि० १/१६३।
तमि रात्रि : पौन भयौ सीतल, ~ तैं तमता गई २०३८।
तमिता तमोगुणी, क्रोध का ~ तेज हई ३३४२।
तमीत्तम रात्रि मे, अधेरे के मनहुँ कमल कै कोष ~ २६८७।
तमोगुना तामस प्रकृति वाला . ~ रिपु मरिबौ चाहै ३/१३।
तमोर ताम्बूल, पान . दियौ ~ हाथ अपनैं करि २८२६।
तमोल ताम्बूल, पान तब ~ रचि तुमहि खवावौ २११।
तमोलिनि तँबोली की स्त्री, पान वाले की स्त्री ~ है जाऊँ निरखि १०७५।
तयौ सतप्त हुआ, दुखी हुआ : और तियनि कौ मन अति ~ ६/५।
तरग १ लहर प्रेम ~ बूडित ब्रजबासी ३८५१। २ उत्साह, मौज . वैसहि नृत्य ~ बढायौ ११३२।
तरगनि १ लहरे • उठति राग रागिनी ~ २१४३। २ लहरो को : मन अभिलाष ~ करि करि १/४२। ३ तरगो मे तान ~ गायौ १/२०५।
तरंगा लहरें कटितट त्रिबली तरल ~ २४५४।
तरगिनि नदी (यमुना) : बहुरि ~ तीर ३८४५।
तरगिनी[1] १. तरगे, लहरें कोटिनि कोटि ~ उपजति २४६९। २. तरगों को, लहरों को . दोष अथाह ~ तरि नहिं सक्यौ सभायौ १/६७।
तरंगिनी[2] नदी . लज्जा तरल ~ गुरुजन गहिरी धार १६४०।
तर तले, नीचे आपु गए जमलार्जुन तर ~ ३८३।
तरक वि० १ तर्क ~ कह्यौ तुम कीन्हौ १७४७। २. तर्कपूर्ण . ~ बाते बहुतै कही २१०८। पुं० १ भूल . आपु कछू जिय ~ गहत हौ २५०९। २ चमत्कार, तर्क पूर्ण उक्ति, चतुरता की बात : तुव ~ जिनि कहै २१५५।
तरकत तडकते/गरजते हुए . तमकि तमकि ~ मृगपति ज्यौ २३८३।
तरकति तडकती है, फटती है . भुज फरकत अँगिया ~ ३४५४।
तरकि स्त्री० चतुराई पूर्ण बात, तर्क वितर्क : ~ जनि करौ, हम समुझि डारी २७०५। क्रि० अ० १ फट . छुटि गई तनी चोली ~ गई २०३४। २ चटकने से, तडकने से धरनी ~ तराकि सुनाई ५९४। ~ **तरकि** क्रोध करके, चिढ-चिढकर अब तौ ~ — ऐठति है २४०५। ~ **ताके** बिदक गये रबि मग तज्यौ, ~ — हय ०/२६।
तरके क्रोध से बिगडे : जौ हम पर वै ~ री २२४४।
तरकैं तर्क वितर्क खेलन चले करत अति ~ २८९५।
तरग तरगें : नव नव भाव ~ महोदधि ४१३१।
तरजत डाटती है . ~ भौंह चढाए ४२०१।
तरजनि डाँट, फटकार • प्रिय रस बस की ~ ३१९८।
तरजनी फटकार तेरे बोल ~ बाढति।
तरजि तडक कर, आवाज करती हुई बीजु चमकति ~ डरत गाता ८६४।
तरत १ तैरती हैं, पार होती हैं : ~ स्याम सौ इहाँ री। २ तैरते हैं : जल पर ~ पखानौ ९/१२१। ३ पार करने मे ~ न लागी बार १६४०। ४ तर जाते : ~ हैं इक नाम ३०४५
तरति तैर रही है ~ तहँ डर डारि २५७५।
तरतौ तैरता माया जल मैं ~ १/२०३।
तरन तारने वाला . नाम नोका ~ १/२०२।
तरनि १ सूर्य . प्रगट्यौ ~ किरनि महि छाई ४०६। २ सूर्य, कर्णफूल द्वादस ~ सोमित २४६८।
तरनिजा सूर्य का पुत्री, यमुना : ताकत नही ~ के तट सा० ल० २५।
तरनि तनया सूर्य की पुत्री, यमुना : पहुँची जाइ ~ तट २७१९।
तरनि- तात-बनिता-सुत सूर्य के पुत्र (कश्यप) की स्त्री (कद्रू) का पुत्र सर्प, केश . ~ ता छवि २७०७।
तरनि-नाथ सूर्य भगवान् . ~ मति भोरी २८५८।
तरनि सुता सूर्य की पुत्री, यमुना . जे तप ब्रत किए ~ ६२६।
तरनी नाव, नौका किहिं कागद की ~ कीन्ही ३९६८।
तरपत १ गरजता है . ~ नभ डरपत ब्रज लोग ८६१। २ तडप रही है : तहँ गगन गरजत बीजु ~ २८४२। ३ तडपते हैं : ~ नैन २७८१।
तरपि तडपकर। ~ **तरपि** तडप-तडपकर • ~ — चपला चमकावै ९३१।
तरपित तडपता बपु ~ तच्छन लई तलाग री परि० १/१२०।

तरफ तड़पन . तरग ~ तन भारी ३१९१ ।

तरफत १ तड़पता था : ममकत, ~ स्रोनित मैं ९/१५९ । २ तड़पते हुए ~ छाँड़ि गए मधुवन कौं ३१८५ । ३ तड़पती है ज्यौं जल हीन मीन ~ ३१९४ ।

तरफरात तड़फड़ाते हैं, तड़पते हैं · (नैन) स्याम सिंधु से विछुरि परे ~ ज्यौं मीन २७६७ ।

तरफि तड़प कर ~ कै उन प्रान दीन्हौ ३०८६ ।

तरबूजा एक फल, तरबूज सफरी, मेव, छुहारे, पिस्ता, जे ~ नाम २१० ।

तरमात विगड़/कल्ला रही है · विधना पर ~ १८४६ ।

तरगत ऐंठते हुए : ~ फहरात माथ नाए ८५३ ।

तरल १ सुदर : ~ तिलक ताटक गड पर २४४६ । २ तरल लज्जा ~ तरगिनी १६४० । ३ लहराती हुई ~ लट तृन तोर २१३३ । ४ तेज दौड़ने वाले : चले नगर के लोग, साजि रथ ~ तुरगा ४२७५ ।

तरवर १ वृक्ष · फूल फरे ~ ३४ । २ वृक्षों से · ते ~ लपटाहीं २७४५ ।

तरवा पदतल, पैर का तलुआ · (कृष्ण) ~ नीर तियागे ४ ।

तरवारि तलवार : ढाल ~ आगें धरी रहि गई ३०७८ ।

तरस दया, रहम · सो कहि धौं तोहिं कौ न ~ २६५९ ।

तरसत १ तरसता है : सूरदास ~ मन निसि दिन ४२६१ । २. तरसते हैं · ~ ब्रज के लोग दरस कौं ३९९५ । ३ तरसते : ~ रहे वसुदेव देवकी ३८५६ ।

तरसति तरसती हैं हरि दरसन कौ ~ अखियाँ ३२४० ।

तरसनि लालायित हैं : मिलिवै कौं ~ ९६ ।

तरसाएँ तरसाकर : जौ पै देत वहुत ~ ४०४० ।

तरसायौ तरसाया, मार दिया मानौ कमलहिं हिम ~ ३९१ ।

तरसावति तरसाती है . वालमुकुन्दहिं कत ~ ३६५ ।

तरसावन तरसाने वानि खरी ~ की परि० १/१७७ ।

तरसे १ तरसता है · मन ~ हरि कार्जे ३७६५ । २ तरसता था : विन देखें ताकै मन ~ ४२८५ । ३ डर गये : देखत सुतप्त जल ~ ।

तरहरि त्याग कर, छोड़कर और सकल सुख या दुख ~ १/३१२ ।

तरहि पार कर सकती है, तैर सकती है : दुस्तर ~ 'सूर' क्यौं अवला ३६१० ।

तराकि तड़-तड़ की आवाज · धरती तरकि ~ सुनाइ ५९४ ।

तराटक त्राटक, हठयोग में किसी बिन्दु पर दृष्टि जमाने की क्रिया : त्रिकुटि सग भ्रू भग ~ ३५३० ।

तरासी तराशी/काटी/विंधी (गयी हू) : इक चदन अरु चद ~ ३३३१ ।

तरि[1] तर कहै-सुनै सो तर ~ जाइ ६/४ । ~ **तरि** तर-तर कर , आपुन ~ — औरनि तारत ९/१२३ ।

तरि[2] तैरकर को ~ सिंधु सिया सुधि ल्यावै ९/७४ । ~ **सकी न सोभा** शोभा के (सागर को) तैर कर पार नहीं कर पाई . तदपि सूर ~ — ६२८ ।

तरि[3] तलकर . ~ करि लीन्हौ अवहीं तातौ १०१३ ।

तरिकौ कान का एक गहना, कर्णफूल : गयौ कान कौ ~ १४८७ ।

तरिवे तैरने के लिए . औ ~ कौ धीर ४०९७ ।

तरिवै पार होने को सोक सिंधु ~ कौं नौका ३९४८ ।

तरिवन तरकी नामक कान का एक गहना, तरौना, कर्णफूल ~ स्रवन नैन दोउ अजन २६२८ । ~ **स्रवन फाँसि** तरौना रूपी फाँस ही · ~ — गर डारनि १५८५ ।

तरिवनि तरकी गहना नकवेसरि खुठिला ~ कौ १४७५ ।

तरिवर वृक्ष तन ~ उर स्याम पवन मैं ३८३४ ।

तरिहैं तरेंगे ~ गाइ गाइ गुन एह ७/२ ।

तरिहै तरेगा, तर जाएगा निहचै भव जल ~ मोइ १०/३ ।

तरिहौ तरोगी, तर जाओगी इहिं प्रकार भव दुस्तर ~ ४०९४ ।

तरी[1] नौका : पिय मुख सुधा विलास विलासनि गीत समुद्र ~ १०२७ ।

तरी[2] १ तैरी, उतरानी : सिला ~ जल माँहि १/३४ । २ तर गई गनिका ~ आपनी करनी १/१३० ।

तरु[1] तो · ना ~ सूर देखती मुरली १३०७ ।

तरु[2] १ वृक्ष ~ मैं वीज कि वीज माँह ~ १३५ । २ वृक्ष के . अकुरित ~ पात ३० ।

तरुन पुं० १ युवा, युवक · नाचत वृद्ध ~ अरु वालक २१ । २ युवक का : ~ रूप धरि गोपिन के हित सारा० ८७२ । वि० १. तरुण, नये : फूले ~ तमाल आजे २०६ । २ वड़ा सा मनि कुंडल मकराकृत ~ तिलक १८८७ । ~ **धन-रासि** यौवन के धन पुज तुम ~ — १०३० ।

तरुनाई जवानी, यौवन : ~ तन आवन दीजै १४७१ ।

तरुनायौ तरुणाई, जवानी अपनी ~ तोहिं देइ ९/१७४ ।

तरुनि १ युवती . तू है ~ किसोर ३१० । २ युवतियों · मुख-मुरा हेरि ~ मुसक्यानी १५२५ । ३ तरुणियों को मुरछ्यौ मदन ~ सब टाहीं ९८९ ।

तरुनिनि १ तरुणियों ~ की यह प्रकृति अनैसी १५७३ । २. युवतियों ने : ब्रज ~ तिनुका सौं तोर्‌यौ २२१६ । ३ तरुणियों के, युवतियों के ~ मन भाए ३०४२ ।

तरुनी १ तरुणी, नवयौवना : भयौ वह ~ १/१७३ । २ तरुणियाँ, सुन्दरियाँ . आइ निकसि वसन विनु ~ १५१६ । ३ युवती का ~ वदन देख्यौ री २१६५ ।

तरुवर सुन्दर पौधों की वारवार सराहत ~ ९/५९ ।

तरुभामिन वन मद्ध बरन सागोन, कोपिनी, कानन के मध्य वर्णो के योग मे बने गोपिन, गोपियों ~ जातें जानी मद्ध वरन विसराए सा० ल० १०४ ।

तरु रिपु पति सुत वृक्ष की शत्रु (यमुना) के पति (श्रीकृष्ण) के

पुत्र, प्रद्युम्न, कामदेव : ~ की सुचि साँची सा० ल० ३ ।
तरुवर १. वृक्ष : सुर ~ की साख लेखिनी १/१८३ । २. वृक्ष के · ~ मूल अकेली ठाढी ९/७३ । ३. वृक्ष समूह गिरिवर ~ पुलकित गात ११८० ।
तरुहि वृक्ष को : परस करौं तन ~ गिराऊँ ३८२ ।
तरे[1] १. तर गया . मो देखत पाहन ~ ९/४२ । २ तर गये ते छिन माहि ~ १/१९८ । ३ तर जाएगा : कहै सुनै सो ~ भव पार ४३०१ । ४. उद्धार हो जाए ना जानो किहिं घाट ~ री २२९३ ।
तरे[2] नीचे · तरु तमाल ~ ६२४ ।
तरे[3] तैर रही हो मानहु मीन ~ चहुँ दिसि ११३६ ।
तरें १. नीचे, तले : महल के ~ धरनी गिरायौ ३०७९ । २ नीचे ही नासा अति परम लोनि बिंबाधर सु ~ री २८८६ ।
तरैयाँ तारे, नक्षत्र तुम चाहति हौ गगन-~ १/८२ ।
तरै[1] क्रि० अ० १ तर जाता है : सूर ~ सोऊ गुन गाइ ६/३ । २ तर जायँ, तर सकते हैं : दुस्तर पार ~ १/८२ । ३ तरे हैं : जहाँ ~ तुम्हरे गुन गाइ ४३०१ ।
तरै[2] १ तैरती हुई . नाद प्रवाह ~ (मुरली) १३५२ । २ पार करे · को स्तुति सिंधु ~ ३६०२ । ३ तैरता है, उतराता है जल ~ पाषान १/२३५ । ४ तैरने लगे . पाहन ~ सोलह जो बूडे ३८७६ ।
तरै[3] नीचे : कठुला कठ चिबुक ~ १३४ ।
तरैगौ तरेगा · ऐसे निरगुन कौन ~ ३६१९ ।
तरैया तारों को किहिं अकास तैं तोरि ~ ३९६८ ।
तरोवर वृक्ष के कल्प ~ तर बसीबट राधा रतिगृह धाम १०३८ ।
तरौं तरूँ, सद्गति प्राप्त करूँ . काकैं बल हौ ~ गुसाई १/१५१ ।
तरौंधी नीची (करके) तृन अतर दै दृष्टि ~ ९/७९ ।
तरौ १. पार करो, मुक्त होओ, तर जाओ · वह उपाइ करि बिरह ~ तुम ३४०२ । २ तर गया सूर ~ सो भवनिधि पार परि० १/४ ।
तरौन झुमके . सुभ स्रवननि तरल ~ २४ ।
तर्क आक्षेप, ताना · रिच्छप ~ बोलि है मोसौ ९/७५ ।
तर्पण पितरों को पानी देने की कर्मकाड की रीति ~ करि बहु भाँति सारा० ६७३ ।
तर्यौ[1] तर गया · हरि-हरि कहत अजामिल ~ ६/४ ।
तर्यौ[2] १ तैरने लगे, उतराने लगे छुवत पषाण ~ ९/१२२ । २. पार कर गया · कौन ~ सर जाई ३९६८ ।
तर्यौना तरकी, कर्णफूल . कर कपोल बिच सुभग ~ २२०५ ।
तल सतह : आए भुव ~ मैं ८/५ ।
तलप शय्या . कत तृन ~ बिपिन फल खाहु ९/३४ ।
तलफ स्त्री० छटपटाहट, बेचैनी, पीडा : तरग ~ नित भारी २७२८ । क्रि० अ० तडफडा कर, छटपटा कर : भू सुत तृनिय ~ सफरी भौ सा० ल० ४० ।
तलफत क्रि० अ० १ तडपते है, तडप रहे हैं · हरि दरसन को ~ नैन ४०२९ । २ तडपता है, तडप रहा है मृगमद मलय परसि तन ~ ४११८ । ३ तडपती ~ फिरै २८२६ । ४ तडपती है ब्याकुल भई मीन सी ~ सा० ल० २६ । ५ तडपने लगता था निमिष-वियोग होत तन ~ ३६३३ । वि० तडपता हुआ ~ छाँडि गये मधुबन को बहुरि न कीनी सार ३१८५ ।
तलफति तडपती हैं · ~ मीन ज्यौं बिनु नीर ४१४० ।
तलफति तडपती है . ज्यौं जल हीन मीन तनु ~ २८०० ।
तलफि तडप कर । ~ **तलफि** तडप तडप कर ~ — जिय निकसन लाग्यौ ३६०१ ।
तलबेली आतुरता, उत्कंठा, बेचैनी . कान्ह उठे अति प्रातहीं, ~ लागी १९६५ ।
तलाग तलाक़ तच्छन लई ~ री परि० १/१२० ।
तलातल पाताल के सात लोकों मे से एक : अतल बितल अरु सुतल ~ सारा० ३१ ।
तलि (घी तेल मे) तल कर लोन लगाइ तुरत ~ लीने २३२१ ।
तली तलुआ चरन ~ ललिता री ११९७ ।
तलै नीचे · फरद ~ लै डारै १/१४२ ।
तल्प पलग पर, सेज पर · पौढहु ~ हमारी २४८६ ।
तव १ तुम्हारा, तुम्हारे स्याम ~ दरसन कारन २७४२ । २ तुम्हारी · मुडमाल कैसी ~ ग्रीवा १/२२६ ।
तष्टी हाथ धुलाने का ऊँची बाट का चौडा थाल · धरि ~ झारी जल ल्याई १२१३ ।
तस वि० तैसी जस राजा ~ प्रजा बसीति २७७५ । क्रि० वि० वैसे ~ न कहूँ सुन पेहै सा० ल० ८४ । २ वैसा ही . कीन्हौ पावै ~ १६३५ ।
तसकर, तस्कर चोर, लुटेरा ओछी पूँजी हरै जु ~ ३७९३ ।
तहँ १ तहाँ कस एक ~ असुर पठायौ ३०४९ । २ वहाँ . ~ ये रहे लुभाइ कै २३२३ । ३ वहाँ से जनु कोउ डर ~ आनै ३९९८ । **जहँ** ~ जहा तहाँ — ~ पसु पाल ८२३ । ~ **तहँ** वहाँ वहाँ ~ — आपुन धायौ ४१५ ।
तहँइ वहीं, वहाँ ही ~ जाहु जहँ रैनि बसे हौ २५०२ ।
तहँई वहा ही, वही हरि चमक ~ गए ३०७९ ।
तहँउँ, तहँउ वहा ही ~ जानि तनु तजत १२०५ ।
तहँहि वही, वहाँ ही सूरदास प्रभु ~ सिधारौ २६४० ।
तहँही वहाँ ही ~ अन्न देहिं पहुँचाइ ५/३ ।
तहई वही मन इद्री ~ गए २२५३ ।
तहाँ १ वहाँ . आए स्याम ~ अतुराई ८१८ । २ वहीं लै मैं

धरयौ ~ है २४३। ~ तहाँ वहाँ-वहाँ · ~ — हरि चरन-कमल-रति २/१२।
तहाँई वहाँ, वहाँ ही · बैननि ~ जाहु १०८५।
तहाँहू वहाँ भी · करि बरियाइ ~ पैसें २८९६।
तहि तहाँ · तोहिं कछु दोष नहिं, भ्रमति तू जहाँ-~ १९७१।
तहीं १ वहीं : जाउँ ~ जहँ रहे स्यामघन १८५४। २ वहीं पर : कर ले ~ धरे २२९९। ~ तहिं वहीं-वहीं · जहँ-जहँ जात ~ — भ्रमत १/१०३। ~ **तहीं** वहीं वही · कौतुक ~ — २४।
तहूँ वहाँ भी · दूध दही घृत अरु माखन ~ २९५।
तहैं वहीं · ~ जाइ दुख जी कौ ३८७०।
तांडव तांडव नृत्य · कोकनद पर तरनि ~ २१३२।
ताँत बाजे का तार : बाजी ~ राग पहिचान्यौ ३८४१।
ताँति बाजे का तार, ताँत · बाजी ~ राग हम बूझौ ३६५०।
ताँतौ ताँत · लै बारिज कौ ~ ३७०६।
ताँवरी मूर्छा, चक्कर · आवति बैठत ~ ४०८०।
ताँवरौ मूर्छा, चक्कर : उड़ि गयौ तूल, ~ आयौ १/३२६।
ता **सर्व०** १ उसका (मान का) · ~ रिपु ममे मग मिसु लीन्हे ३८४२। २ उसमें · ~ सेती समि करत विनोद **वि०** १. उस · निसरि गई सुधि ~ दिन की १४०६। २ उसी · ~ धोखे मे आयौ २७९। ३ उसके · गए ~ गृह नद कुमार २६२९। ४ उसकी · ~ संगति नव सुत तिन पाये ४/१२। ५ इसी : ~ कारन लछिमन सिर लाग्यौ ९/१५१। **क्रि० वि०** तभी · ~ लगि दुप यह महियन ३९१२। षष्ठी विभक्ति के · सुभग नव मेघ ~ बीच चपला चमक १०४०।
ताइ **सर्व०** उसके · अर्जुन गये गृह ~ सारा० ८५१। **क्रि० अ०** १ तप्त हो : तबहिं उठति तन ~ ३३११। २ तोप कर, छिपाकर · ककन दैहौं ~ ३९४३।
ताइयै तप्त करतो है · अति उदाम तन ~ २५७०।
ताईं १ तक · बहुत पच्यौ अब ~ १/१४७। २ लिए · दूरि गयौ दरमन के ~ १/११५।
ताऊ तिस, उस · ~ पर आनद इदु जनु २६३४।
ताक **स्त्री०** टकटकी · सुदामा मधुमंगल इक ~ ४६४। **सर्व०** उसके : असुर-सुता ~ सँग दई ९/१७४। **वि०** समान, अनुपम · मदै (ताक) बनाई है इक ~ ४६६।
ताकत १ ताकता है, ताक रहा है · सम्मुख ~ तीर सा० ल० ५२। २ देखती है, ताकती है · ~ नदी तरनिजा के तट मा० ल० २५। ३ देखते ही · नासिका मृग तिलक ~ १३७।
ताकि **क्रि० अ०** ताक कर, देख कर · जैसें मृगिनी ~ बधिक दृग ३७१५। **वि०** जिनका · ~ ग्लानि उबावै १/४।
ताकी १ उनका · ~ सरि क्यों कीजै ९/१२६। २ उसकी · जासौं हित ~ गति ऐसी ३९३५।
ताके १ उसके : एक ही मुद्रिका प्रान ~ गए ३०४७। २ उसको · ~ देखन की मोहिं चाह ९/२।
ताकैं १ उसकी · कौन ~ हानि ३९८३। २ उसके · आतुर हरि ~ घर आए ३१०९। ३ उनके : एक बार ~ मन आई ९/१७४।
ताकौं **सर्व०** १ उसे, उसको · कहौ तौ ~ तृन गहाइ कै ९/१०८। २ उस पर · ~ आप कृपा हरि कीन्ही सारा० २३। ३ उनको · वाकें बदले ~ धरो ७/४। ४ जिसको · ~ जानि मगन ह्वै रहिए ३/१३। ५ उसका · सुर ससि दियौ ~ बताई ८/९। ६ उसके · काट्यौ बधन ~ १/११३। ७. उसी की · सेवहु ~ भोग चढ़ाई ८१९। ८ उन्हीं के, उनके · ~ लिये नद की रानी १२६। ९ उसका : ~ हरन कियौ उसकावर ९/६५। **क्रि० स०** देखें : ज्या करि क्रोध · जाहि तन ~ १३९६।
ताकौ **सर्व०** १ उसको · मनिहिं तब ~ सब गोपी ३८०४। २. उसके लिए · ~ ब्रज नाहिन गारौ १८३। ३ उसने · ~ मिले भरत की नाई १/३। ४ उसका · ~ नदरानी मुख चूमे १४५। ५ उसके · तहैं ~ अनुमार ३९८२। ६ उसी की, उसकी · ~ लाल छीनि ब्रज जुवती १२८। **क्रि० स०** देखो · ~ सारग नैन सा० ल० ८।
ताक्यौ १ देखा · करत सिंगार सुदरिहिं ~ २१८७। २ ताका : तकि ~ भृकुटी कमान सौं १९६४। ३ निश्चय किया, घात मे लगा · कान्हहिं मारन ~ २३७३।
ताख ताक, ताखा · सूरदास ऊधो की बतियाँ सब उड़ि बैठीं ~ ३९३७।
ताग जनेऊ · नहीं मिखा नहिं ~ १२४७।
ताज मुकुट, राजमुकुट · कौरव पति जौ पार्यौ ~ १/२४५।
ताजन १ कोडा · विरह लयो कर ~ ३३७०। २ कोडे के : तुरी ताजी बिना ~ चपल चपला श्री हरी ४१८६।
ताजी घोडा, घोडे · नव बादर बानैत, पवन ~ चढ़ि ३३२८।
ताटक १ कर्णफूल, कुडल, तरकी · अरु ~ कमठ घूँघट उर १२०६। २ कर्णफूल का · भुज ~ ग्रीव सिर बदन २६४२। ३ कर्णफूल की · ~ छवि कहि न जाई १२०८। ~ गड कपोल प्रदेश · तरल तिलक ~ — पर २४४६।
ताटकनि १ कर्ण फूलों ने · ~ रवि चित जु हर्यौ २७७७। २. कर्णफूलों को · मनि ~ मोरी २६५६।
ताडका एक राक्षसी जो सुकेतु नामक यक्ष की कन्या थी। इसमे हजार हाथियों का बल था। यह सुंद को ब्याही थी। अगस्त्य के शाप से यह राक्षसी हो गई थी। विश्वामित्र की आज्ञा से इसे श्री रामचन्द्र ने मार दिया था · मारि ~ यज्ञ करायौ ९/२१।

ताड़का-तारक ताड़का का उद्धार करने वाले, राम • रिषि-मष त्रान ~ ९८१।

ताडि ताड कर, समझ कर : रही ~ खिझि लाज लकुट ले २३४०।

ताडित उत्पीडित ~ लखि जदुराई १/२०७।

ताडे प्रहार किया दानव-दल ~ दिसि चारी ९/९६।

तात[1] १ पिता, प्रतिपालक, ईश्वर : येई है सबही कै ~ ९८६। २ पिता के • कबहुँक किलकि ~ मुख हेरत ९८। ३ पुत्र : तुम किहि के ~ ९/६९।

तात[2] पुं० आँच . याकै तन लागत नहि ~ ५५४। **क्रि०** अ० तप्त हो गये हैं, गर्म हो गये हैं दृगनि दीपक ~ ४१४०।

तातकाल तत्काल ~ बैकुंठ सिधायौ ६/४।

तात तात नंद नंदन, श्री कृष्ण . ~ पै जात अकेली सा० ल० ३५।

तातर स्त्री० लडिया : दुलरी अरु तिलरी बँद ~ १४९८। **क्रि०वि०** उसके नीचे • ~ रोमावली लसी री २४४७।

ताता १ पिता . जगत मैं सुता तू महर ~ १९७१। २. दयानाथ ईश्वर : कहौ कृपा ~ १/१२३। ३. पुत्र, लाल, कुमार • सरन अब राखि कै नंद ~ ८६४।

तातार्थेई नृत्य का एक बोल, नृत्य मे पैर के गिरने का अनुकरण शब्द : ~ उचटत हैं हरषि मन १७८१।

ताती १ गरम : कछु सीरी कछु ~ बानी २८२६। २ गरम, कठिन, भयकर लागन नहि देत कहूँ समर-आँच ~ १/२३। ~ **ताती** गरम गरम . माखन-रोटी ~ — लेहु कन्हैया बारे ४१९।

ताते गरम ~ तुरत चभोरे घी के ३९६।

तातैं क्रि० वि० १ इसलिए, इससे : ~ मौन भलौ सबही तैं २२५६। २ इसीलिए : प्रिया हरी ~ अकुलात ९/६९। ३ इससे तो ~ यहै सोच जिय मोरैं ११। ४ उससे : ~ और कौन हितु मेरैं २८७५। **सर्व०** १ उनके सिवा : ~ द्वितिया और न कोइ ७/२। २ उसी के . ~ बिबस भयौं करुनामय १/४९।

तातै इसलिए, अत , इससे : सूर प्रभु आकरषि ~ ३०४५। २ तो . ~ अधिक रिसायौ १५६।

तातोइ गरम ही ~ जेइँ जाहु गो-गोहन १२१३।

तातौ वि० १ गरम : ~ जल है धाम कौ ४३७। २ गरम (कष्ट दायक) . विषयासक्त रहत निसि बासर सुख सियरौ दुख ~ १/३०२। **क्रि० अ०** १ गरम है : यह उपदेस अगिनि तैं ~ ३८२५। २ गरम लगता है तब अलि ससि सीरौ अब ~ ३७३७।

ताधा नृत्य मे एक बोल, नाचने मे पैर के गिरने का अनुकरण शब्द . काम नचावति ~ १६९६।

तान[1] ध्वनि, तान • मुरली ~ परी है स्रवननि १९१४। ~ **तरंगनि** सुर का खींचना, लय का विस्तार . ~ — गायौ १/२०५। ~ **गावति** तान छेड़ी है : ~ — कोकिला मनु १०८३। ~ **अलापत** तान अलापने लगते हैं • ~ — जब गिरधारी ११८७। ~ **बँधान** स्वरों का आरोह-अवरोह • उघटत ~ — १२२७। ~ **तरंग** स्वर लहरी . उपजत ~ सारा० १०७४।

तान[2] उस पर गध्रब मोहे ~ ११८३।

तानत १ तानता है, चढ़ाता है • कोपि धनुष नहिं ~ ४०२६। २ फैलाते हैं : ~ दरसन दीठ २३७२। ३ तानते हैं . हम पर भौहैं ~ ~ २३१०। ३ तानते समय : टूटि गए गुन ~ २३९८।

तानति चढा लेती है, चढाती है : ~ है भौंह बान २७८७।

तानन तानों से : वा मुरली के ~ ३९४६।

ताना तान, टेर . स्रवन मधुर मुरली की ~ १११७।

तानि १. तान कर : हनत विषम सर ~ ३८५७। २ फैला कर • सोवत हैं पीतांबर ~ १२११। ३ खींच कर : तृन तोलौ कर ~ २६०३।

तानी तान दिया है, लगाया है . सोभित मनहुँ छत्र सिर ~ २८४६।

तानैं सर्व० उसने . ~ निज पतिनी मेरे मन करि सा० ल० ४६। **क्रि० स०** ताने हुए हैं • खजन भृकुटी ~ ४०४७।

तानै १ तानती है . कर कोदड गहि ~ ३७१५। २ ताने हुए जैसे बधिक गवहि तै खेलत, अत धनुहियाँ ~ ३९९८।

तान्यौ १ फैलाए हुए है . दिव्यबान निसिचर कर ~ ९/९६। २ छाया है • दभ छत्र सिर ~ १/१४१। ३ चढाया : अगिनि-बान गहि ~ ९/१२१।

ताप १ सताप, कष्ट : 'सूरदास' प्रभु ~ निवारन ३०३६। २. ताप, ज्वाला . रिपु तन ~ हरै १/११७। ३ ताप से : बिछुरन-~-तयौ ९/४६।

तापर उस पर . ~ राई लोन उतारैं १२९।

तापस[1] तप करने वाला, तपस्वी जती सती ~ अवराधैं १/२६३।

तापस[2] क्रोध : करि करि ~ तेहु १३३०।

तापसी तपस्वी : भेस ~ कौ तिन गह्यौ ४३०३।

तापहि ताप ही : ~ तै तन प्रान हमारे ३६२०।

तापु (रात्रि का वियोग-जन्य) ताप : सुंदर बदन दिखाई कै हरौ नैन कौ ~ ४३१।

तापै १ उससे ~ नद को नारि जसोदा, घर की टहल करावै ३९३। २ उस पर • सत्य नृपति तप किय पचानन ~ सारा० ७८९। ३ उस पर, उसके अलावा . ~ एक सुनौ

री अजगुत ३६५८। ४. उनके पास फिरि ~ पठयौ १/३८।
ताम १ क्रोध : हम जब कहैं करै तव ~ २५६८। २ भय : दावानल अँचवत नहिं ~ ४९७। ३. अंधकार . जानत जित रजनि ~ १२१२। ४ उद्वेग, झकझोर, निढाल . मदन कियौ तन ~ ९९३। ५ रोष • हम पर राखति ~ १२८५।
तामरस¹ कमल • मनहुँ ~ कै संग खेलत १८२१।
तामरस² सोना मनौ ~ पारस खेलन मारा० १०४९।
तामरस³ लाल-लाल . ~ लोचननि हाव भाव बिनु करे २७८९।
तामस पुं० १ तमोगुण रज ~ सब कीन्हौ १/१८५। २. क्रोध . बिनहीं सिसिर तमकि ~ तें २८२६। **वि०** कोधी स्वभाव की अति ~ तोहिं ग्वारिनी १६१८।
तामसी तमोगुण वाली • तिन बहु सृष्ठि ~ करी ३/७।
तामहि १ क्रोध को • दूरि करौ मन ~ १११३। २ क्रोध से • कौन भलाई ~ ३१८७। ३ क्रोधपूर्वक : कहति महरि मन ~ ७२२।
तामैं १ उसमे ~ देखि स्यामता-कोर ५/३। २ उन्हीं मे : ~ लटकि परे २३६७।
ताय सर्व० १ उसको . माया लगत न ~ सारा० १६९। २ उसका, उसके : दरसन भयो न ~ सारा० ८५२। **क्रि० स०** छिपा, ढँक : इक उर्वशी हृदय उपजाई दई राक्ष को ~ सारा० ७०।
तायौ १ ताये हुए . सद माखन तुलसी दै ~ १२१३। २ तपा कर (थोडा गरम करके) : धरि चिरधूम खिरनि पै ~ १६००।
तार पुं० वीणा जत्र पखावज ~ २८९५। २ ताल दै दै तारी ~ १/१७५। ३ ताड : वर ध्वज पताक तरु ~ केरि २८४७। ४ ताली . करतल ~ बजावत १३७६। ५ गहना (कर्णफूल) • स्रवननि पहिरे उलटे ~ ११८०। **क्रि० स०** १ तार कर, पार लगा कर . पाडव कुल को ~ मारा० ६५४। २ तल पर, पर . बैठ्यौ मन्मथ आसन ~ २६१०।
तारक मोक्षदायक ~ मत्र लिख्यौ स्तुति द्वार २/३।
तारका तारे, नक्षत्र . ~ गन लजे १०६३।
तारत १ उद्धार करते ही, तारते ही : साँचे बिरद सूर के ~ १/९६। २ घात लगाता है . इक मारत इक ~ २८८८। ३ तारते हैं व्याध अजामिल ~ १/१२। ४ तैरा रही थीं, पार कर रही थीं आपुन तरि तरि औरनि ~ ९/१२३।
तारन पुं० तारने वाला, उद्धार करने वाला . महा पतित कुल ~ २५१। **क्रि० स०** १, उद्धार करने, तारने . पावहु मोहिं कहा ~ का १/१३०। २ उद्धार करने के लिए, तारने के लिए इहिं अवतार कह्यौ इन ~ ३९१। ~ **तरन** पार उतारने वाले : ~ — अनगिनत गुन निगम नेति भावै १२१८।
तारनि आँख की पुतलियों • मञ्जुल ~ की चपलाई १३७।
तारा¹ राधा की एक सखी कमला, ~, विमला २००८।
तारा² तारा, नक्षत्र। ~ **गन** १ ताराओं का समूह ~ — सब जगत ५२०। २ तारा गणों का : जनु दामिनि घन रवि ~, प्रगट एक ही काल ४१६४। ~ **गननि** तारा गण : मनौ ~ — वेष्ठित २३४।
तारापति चन्द्रमा ~ अरि के सिर ठाढी ३९१२।
तारा पति के रिपु चन्द्रमा के शत्रु (राहु) राह, मार्ग ~ — पर ठाडे सारा० ९५५।
तारि¹ तार (वीणा) • कहि कुपच्छि कर ~ बजावति ४१४६।
तारि² तार कर, उद्धार करके, मुक्त करके छुद्र पतित तुम ~ रमापति १/१३१।
तारिका तारे, नक्षत्र, तारिकायें ~ दुरानी, तम बढ्यौ, तमचुर बोले २०३९।
तारिबे तारने (को), उद्धार करने (को) और को है ~ को १/१२३।
तारिहै रक्षा करेगा : निरखि विमुख को ~ २११६।
तारिहौ उद्धार कर दोगे • तौ जानौं जौ मोंहि ~ १/१३२।
तारी¹ ताली हँसत परस्पर दै दै ~ २६१८।
तारी² समाधि, ध्यान • छूट गई संकर की ~ ६४९।
तारी³ तार दिया, मुक्त कर दिया . दुस्सासन ~ १/१७६।
तारी⁴ तारों को . अचल आसन, पलक ~ २५७४।
तारु तालु : रसना ~ सौं नहिं लावत २३३२।
तारू तालु मे ~ जीभ न लावत ३३३४।
तारे¹ १ आँखों के तारक, पुतली . कहाँ रहे नैना जौ बिकसि जाहिं ~ ३५८२। २ नक्षत्र कबहुँक गनति गगन के ~ २४०९। ३ नेत्र बार बार इहै कहति भरि-भरि दोउ ~ ३०६५। ४ पुतलियाँ तलफत हैं नैननि के ~ २९६। **गनत गयी** ~ तारे गिनते बीत गई, दु ख या प्रतीक्षा मे रात कटो : सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु — ~ २७८१।
तारे² तार दिया : व्याध पतित बहु ~ १/९४।
तारैं १ मुक्त कर दें, तार दें • तारि सकें तौ ~ १/१८३। २ तारने से, उद्धार करने से : कहा भयौ गज गनिका ~ १/१२९।
तारैं¹ तारे, नक्षत्र रजनी जात गनत ही ~ ३९११।
तारैं² १ तैरावे, उतरावे : बारि पर कौन पाषान ~ ९/१२९। २ तार सकना है कौन क्रोध करि ~ ९/७८। ३ मुक्त करे, त्राण दिलाये . को धौं दुख तैं ~ ३५४५।
तारौं तैरा दूँ, पानी पर उतरा दूँ . उदधि पखाननि ~ ९/१०८
तारौ¹ ताला दै पलकनि कौ ~ १३५।
तारौ² १ तार दीजिए, उद्धार कर दीजिए तौ ~ निज हेत १/१५६। २. तार दिया, उद्धार किया अजामिल ~

१/१५७।

तार्‌यौ तारा, उद्धार किया कृपा करि ~ १/१०१।

ताल[१] १. ताल वृक्ष • लै गए जहँ घन ~ परि० १/२६। २ तालाव : तामैं मान सरोवर ~ ११८०। ३. ताड का • ~ वन इन बच्छ मार्‌यौ ३०४५।

ताल[२] १ करताल, मजीरे : बाजत ~ मृदग जंत्र गति १९। २. ताली . ककन करतल ~ ११३६।

ताल[३] शर, बाण : नदिन के उर ~ भारत स० ल० १०७।

ताल नव की ओर चितवत ताल का उलटा (लता) और नव का उलटा (वन) यानी वन मे लताओं की ओर देख कर : ~ लेत है मन मोल सा० ल० ३९।

तालबन वृन्दावन के समीप एक वन : चलौ ~ ४९९।

तालरस ताल के पेड का मद्य, ताडी : ~ बलराम चाख्यौ परि० १/२६।

ताला ताला, कुलफ, जदरा . ~ कुजी टूटि ३०९०।

ताव[१] ताप, आँच : जठर अग्नि कौ व्यापै ~ ३/१३।

ताव[२] अहकार युक्त रोष का आवेश । **मूँछनि ~ दिखायौ** गर्व या घमड से मूँछो पर हाथ फेरा : कबहुँक फूलि सभा मैं बैठ्यौ — ~ — १/३०१।

तावत १ जलाती है, भस्म करती है . जदपि जोति तनु ~ १/१२०। २ जलने लगता है : तजिए ग्यान सुनत ~ तन ३९०३।

तावन जलाने लगा है : ससि सीरौ तन ~ ३६६०।

तावरो ताव, लू, धूप मो कौ लागो ~ २४३२।

तास एक तरह का कपडा, तास : सीस जटा ढिग अबर ~ ४३०६।

तासु १ उस : पिता मो ~ काल बस भयौ ५/३। २ उसको ~ मारि करि चूर पहरुआ सारा० ५११। ३ उसी : ~ तै मूढ मति प्रीति ठानी १/११०। ४ उसका इक दिन ~ अनुप लै सो मनि ४१९०। ५ उसके : ~ तेज निज मुख मे धार्‌यौ ४२०६। ६ उन्हीं के : ~ बस लियौ कृष्न ऽवतार ९/२। **तुहीन चल मिलत सुता पति बाहन मात ~ रस** हिमाचल की सुता 'पार्वती' के पति 'महादेव' के वाहन 'बैल' की माता 'गाय', उसका रस, गोरस, दूध दही : बाहन मात ~ रस सा० ल० ९९।

तासौं सर्व० १ उन्हे, उनको ~ पुनि यौं कह्यौ बुझाई ९/१७३। २ इसको ~ कहत सखा हम-जोग ८२७। ३ उससे, उसके : ~ सुत जिन्यानबै भए ५/२। ४. उसी मे ~ मन उरझानौ ३६०८। क्रि० वि० इसी से, इसीलिए • ~ कहौ सबै एकै बुधि ४१३४। ~ **कौन बडाई** उससे क्या बडप्पन दिखावे • ~ — ९५३।

ताह सर्व० उसका, उसके : अजुन गये गृह ~ सारा० ८५१। **क्रि० वि०** उसी तरह काठ उतारन पार लो ज्यों, नाम तुम्हारौ ~ ४३०२।

ताहि १ उसे, उसको ~ नही पहिरावत ३८१२। २ उस काटत है परजक ~ दिन ३६४२।

ताहि १ उसका • ~ भाग तुम काहैं दयौ ९/३। २ उसे, उसको रोवत देख्यो ~ २२०। ३ उसे भी तैसैं राखी ~ ३१०४। ४ उसे ही, उसी को जो तन दियौ ~ बिसरायौ २/१४८। ५. उससे पूछत ~ खरारि ९/६५। ६ उसके लिए • ~ कछु बहुत नाही ३१०८। ७. उसके सामने ~ प्रगटि तुरतहि तेहि मार्‌यौ ३१०९। ~ **ताहि** बार बार . ~ — सम करि-करि प्यारी सा० ल० ३।

ताही १ उसे • कठ लगाइ लेत पुनि ~ ११६४। २ उसी नाम लेत ~ छिन हरि जू १/३२। ३ उसी के . आनद करत सबै ~ तर ९३९।

ताही सर्व० १ उस ~ वस्तु कौ मोल हने ३८०३। २ उसी . ~ दिन ते पाडु पुत्र सो वैर विषम गति ठानी सारा० ७६१। ३ उसी के सूर कहै ~ अनुसार ५/२। **अव्य०** वही : जहाँ भाव ~ पै रैहौ ९१४। ~ **पर** इतने पर भी, इसके बावजूद भी ~ — रिस करती १७३२।

ताहु फिर भी, बावजूद ~ न अग जरे ३७६७। ~ **पर** उस पर भी, फिर भी . ~ — मूढ नाही सम्हारै ४१९६।

ताहूँ सर्व० १ वह भी . ~ नाद बस्य ज्यौं दीन्हौ २३६१। २ उसको ~ तजौ सुरति नहिं आवत ३७११। **क्रि० वि०** उस पर भी (होकर भी) • ~ सकुच मरन आए की १/१८१।

ताहू १. उसका : ~ क्रुति न मानै ४२६९। २ उस (से) • पूरब प्रीति अधिक ~ तैं ४३८।

तिक्त तीखे : उचित केलि कटु ~ त्यागि २८७२।

तित १ वहाँ, तहाँ। २ उधर, उस ओर : जित देखति ~ कोऊ नाही १/२५०। ~ **तित** वहाँ वहाँ ~ — मेरे नैननि आगे निरतत नंद दुलारौ री १३५।

तितकौं जरा : ~ सो नहि सकै निवारी ३/१३।

तितनी उतनी/उस मात्रा की ~ नाहिं बधू ही जिनकी १/२५२।

तितने उतने ही जितनी नारि भेष भए ~ ११७१।

तितनै उतने ही ~ मुख मुख पावौं सा० ल० ६१।

तितनौ उतना हीं सो ~ अनुमानति १५१४।

तितहि उधर ही . बहुरंगी जित जाइ ~ सुख ३७१४।

तितही उधर ही, उसी ओर . हौ ~ उठि चलत १/९८। ~ **तित** वहाँ ही वहाँ ~ — मेरे नैननि आगैं निरतत नंद दुलारो री १३५।

तितहूँ वहाँ भी ~ तैसौ कपट परि० १/१९६।

तिते उतने . जीव जल थल जिते, वेष धरि-धरि १/१२०।

तिथि चंद्रकला के घटने-बढने के अनुसार गिने जाने वाले महीने के दिन, मिति, तारीख : व्रज प्राची राका ~ जनु-मनि सरद सरस रितु मद १३३२।

तिथि नछत्र पन्द्रहवाँ नक्षत्र, स्वाति . ~ के मेत सदा ही नहा विपत नन ओढै सा० ल० ४१।

तिन १ उसने . ~ डटि अपनौ आपु बचायौ १/२२६। २. वही, वे ही : ~ मन गृह पग धारे ४१६०। ३ उसे, उनको : ~ तजि पूजे अनतै सोट १२/३। ४ उन ~ स्रवननि अब सुननि मधुपुरी ४०२६। ५ उन्हे, उनको : पाछें जुवति रही ~ हेरनि १५०१। ६ उन्होंने : सुनत ~ अमिय भडार खोलि ९/२६३। ७ उसके : सुक सुता ~ पुत्रनि देखि ९/१७४। ८. उनका : ~ बाढ्यो सुजस अपार सारा० ८४०। ९ उनके मदन ~ तन जए ६८४। १० उनकी : ~ गति कौन दयाल १६१८।

तिनकहि रचमात्र : ओछी ~ मैं मरदाना १३०५।

तिनका तृण के ~ सो अपने जन कौ गुन मानत मेरु समान १/८।

तिनकि कडे होकर, तिनककर ~ पीठि पग धरिऐ परि० १/१३६।

तिनकी[1] उनकी तू ~ पटरानी १८९८।

तिनकी[2] तृण। △ ~ **तोर** सवध तोड कर . ~ — करहु निनि हम सा एक वीस की लाजनि बहिवौ ३४१९।

तिनकें १. उनके ~ सग अनेक निसाचर ९/५७। २ उन्हे लाज कहा है है ~ २३९९।

तिनकै उनके श्री हरि ~ वेष ४८७।

तिनकौ १ उनका, उसका . तहाँ प्रगटि ~ उद्धार्यौ १४६०। २ उनको, उन्हें . मोल लियौ कछु दै करि ~ २१७। ३ उन्हीं को . ~ मानत स्याम २२२७।

तिनकौ १ उनका : ~ दान लेत है हम सौं १५५०। २. उनको · ~ कहा आन सौं नातौ ३५४६। ३, उनका ही · ~ ध्यान धरं निसि वासर ३७०२।

तिनगरी एक प्रकार का पकवान : गोंदपाक, ~, गिंदौरी ३९६।

तिनते उनसे : ~ बटौ जु और १/१४५।

तिनतें उनसे कौन ~ बावरे ३८६५।

तिनमैं १ उनमे ~ मुख्य राम जो कहियत १९८। २. उनमे से : ~ नव नवखड-अधिकारी ५/२। ३ उनके बीच · ~ मूँड उघार्यौ री १३५।

तिनसौं १ उनने · ~ यह तू कहियै २७१३। २ उन्हीं से . कहत ~ भूम घूटन ३६९१।

तिनहि १ उन्ह, उनको यह व्रत ~ सुनावत ३७१२। २ उन्ही : ~ के पेट मर्महै ३६६४। ३ उन्हें ही . जाके अन्त्र ~ तोहि मार्यौ ३०४९। ४ उन्हीं के लिए : कहाँ गए ~ पठितिाति है री १९५१। ५ उनपर कैसें ~ पत्याने २३४२। ६ उनमे तू मोहि ~ मिलावति २६९४। ७ उनकी · कोकिला कल हल बाल रसाल ~ न पूजई ४१८६। ~ **हम क्यौं गहे** हम उनका आश्रय क्यों ग्रहण करे . विमुख तुम तें रह ~ — १०२७।

तिनहीं १ उसी ने : ~ हौ मोही, मोही री १९१७। २. उन्हे ही : ~ यह मत मोहे ३८२५। ३. उनके आपु बढे रहत ~ नाहीं २२४०।

तिनहुँ १ उनसे · महा जे खल ~ ते अति ३०४५। २ उनका ~ पन न लह्यौ २८०७। ३ उन्होंने भी ~ न आनि छुडाया २/३०।

तिनहुन उन सबने ~ स्रवन सुनायौ १/१९३।

तिनहूँ १ वे भी · ~ कोप जनायौ ३६२४। २ उन्हे भी : ~ कियौ वियौ २२२४। ३ उनने भी : ~ सौं अति भारे १/१२५। ४ उनका भी ~ कौ कहिवो सिर धार्यौ ३५६४।

तिनि १ उसने सुक पास ~ जाइ सुनायो ९/१७३। २. उसे : सोट सोइ पायौ ~ ३१। ३ उन्होंने तब ~ कह्यौ सुक सौं जाइ ९/१७४। ४ उन . तब ~ दिननि कुमार कान्ह तुम १९३१। ५ उनको (चरणों को) · ~ बरिहौं धर धाइ २९४८। ६ जिन्हे · ~ देखते पुरषहु लजै ११८०।

तिनु उन, तिन . कहियो 'सूर' सँदेस स्याम ~ ४०२३।

तिनुका तिनका, तृण, घास सिंह भयउ तजि चरत ~ ३७०३। ~ **तोरि** सवध विच्छेद करके, नाता तोडकर . कापर नैन चढाए डोलनि, व्रज मैं ~ — ३१०। ~ **सौं** तिनके के समान, सहज ही मे व्रज तननिनि ~ — तोर्यौ २२१६।

तिन्ह १ उन्हे सूरदास मीना ~ निरखत ९/६१। २ उनने : ~ उरवसी कह्यौ या भाइ ९/२। ३. उनके : ~ हित आपु बँधाए १/७। ~ **लगि** उनके लिए ~ — आपु बँधावै १/१२२।

तिन्हें १ उन्हे, उनको . ~ दियौ जसुदा बहुराई ३९१। २ जिन्हे · ~ विगोवति मारी १/१७३। ३. उनसे . ~ न मिल्यौ हियौ २/१६।

तिन्है १ उन्हे : ~ और न भावई ३८६५। २. उन्हीं को ~ मिलावति मोहि अब २८२८।

तिपाइ तिपाई (धारीदार) दच्छिन चीर ~ की लँहगा २९०१।

तिपीपी ३ × २ (=६) पी, गोपी, राधा . छुत छुत लसति ~ गोपी सा० ल० ४३।

१/१५७।

तार्‌यौ तारा उद्धार किया कृपा करि ~ १/१०१।

ताल¹ १. ताल वृक्ष . लै गए जहँ घन ~ परि० १/२६। २. तालाब : तामैं मान सरोवर ~ ११८०। ३. ताड का ~ वन इन बच्छ मार्‌यौ ३०४५।

ताल² १ करताल, मजीरे . बाजत ~ मृदग जंत्र गति १९। २ ताली · ककन करतल ~ ११३६।

ताल³ शर, बाण . नदिन के उर ~ मारत स० ल० १०७।

ताल नव की ओर चितवत ताल का उलटा (लता) और नव का उलटा (वन) यानी बन मे लताओं की ओर देख कर . ~ लेत है मन मोल सा० ल० ३९।

तालबन वृन्दावन के समीप एक वन . चलौ ~ ४९९।

तालरस ताल के पेड का मद्य, ताडी ~ बलराम चाख्यौ परि० १/२६।

ताला ताला, कुलफ, जदरा ~ कुजी टूटि ३०९०।

ताव¹ ताप, आँच जठर अग्नि कौ व्यापै ~ ३/१३।

ताव² अहकार युक्त रोष का आवेश । **मूँछनि ~ दिखायौ** गर्व या घमड से मूँछों पर हाथ फेरा · कबहुक फूलि सभा मैं बैठ्यौ — ~ — १/३०१।

तावत १ जलाती है, भस्म करती है जदपि जोति तनु ~ १/१२०। २ जलने लगता है : तजिए ग्यान सुनत ~ तन ३९०३।

तावन जलाने लगा है . समि सीरौ तन ~ ३६६०।

तावनो ताव, लू, धूप मो कौ लागो ~ २४३२।

तास एक तरह का कपडा, तास · सीस जटा ढिग अबर ~ ४३०६।

तासु १ उस पिता सो ~ काल वस भयौ ५/३। २ उसको ~ मारि करि चूर पहरुआ सारा० ५११ । ३ उसी . ~ तैं मूढ मति प्रीति ठानी १/११०। ४ उसका इक दिन ~ अनुप लै सो मनि ४१९०। ५ उसके . ~ तेज निज मुख मे धार्‌यौ ४२०६। ६ उन्ही के · ~ वस लियौ कृष्ण अवतार ९/२। **तुहीन चल मिलत सुता पति बाहन मात ~ रस** हिमाचल की सुता 'पार्वती' के पति 'महादेव' के वाहन 'बैल' की माता 'गाय', उसका रस, गोरस, दूध दही वाहन मात ~ रस सा० ल० ९९।

तासौं सर्व० १ उन्हे, उनको ~ पुनि यौं कह्यौ बुझाइ ९/१७३। २ इसको ~ कहत सखा हम-लोग ८२७। ३ उससे, उसके . ~ सुत जिन्यानवै भए ५/२ । ४. उसी मे ~ मन उरझानौ ३६०८। क्रि० वि० इसी से, इसीलिए ~ कहौ सबै एकै बुधि ४१३४ । ~ **कौन बड़ाई** उससे क्या बड़प्पन दिखावे . ~ — ९५३।

ताह सर्व० उनका, उसके अजुन गये गृह ~ सारा० ८५१। क्रि० वि० उसी तरह काठ उतारन पार लो ज्यो, नाम तुम्हारौ ~ ४३०२।

ताहि १ उसे, उसको ~ नहो पहिरावत ३८१२ । २ उस काटत हे परजक ~ दिन ३६४२।

ताहि १. उसका · ~ भाग तुम काई दयौ ९/३। २ उसे, उसको रोवत देख्यौ ~ २२० । ३ उसे भी . तैसै राखी ~ ३१०४। ४ उसे ही, उसी को जो तन दियौ ~ बिसरायौ २/१४८। ५ उससे पूछत ~ खरारि ९/६५। ६ उसके लिए ~ कछु बहुत नाही ३१०८। ७ उसके सामने ~ प्रगटि तुरतहिं तेहि मार्‌यौ ३१०९। ~ **ताहि** बार बार ~ — सम करि-करि प्यारी सा० ल० ३।

ताही १ उसे · कठ लगाइ लेत पुनि ~ ११६४ । २ उसी . नाम लेत ~ छिन हरि जू १/३२। ३ उसी के आनद करत सबै ~ तर ९३९।

ताही सर्व० १ उस ~ वस्तु कौ मोल हने ३८०३। २ उसी ~ दिन ते पाडु पुत्र सौं वैर विषम गति ठानी सारा० ७६१। ३ उसी के सूर कहै ~ अनुसार ५/२। अव्य० वही : जहाँ भाव ~ पै रैहा ९१४ । ~ **पर** इतने पर भी, इसके बावजूद भी ~ — रिस करती १७३२।

ताहु फिर भी, बावजूद ~ न अग जरे ३७६७। ~ **पर** उस पर भी, फिर भी · ~ — मूढ नाही सम्हारै ४१९६।

ताहू सर्व० १ वह भी ~ नाद वस्य ज्यौं दीन्हौ २३६१। २ उसको ~ तजौ सुरति नहिं आवत ३७११। क्रि० वि० उस पर भी (होकर भी) ~ सकुच मरन आए की १/१८१।

ताहू १. उसका . ~ कृति न मानै ४२६९ । २ उस (से) · पूरब प्रीति अधिक ~ तैं ४३८।

तिक्त तीखे उचित केलि कटु ~ त्यागि २८२२।

तित १ वहा, तहाँ । २ उधर, उस ओर : जित देखति ~ कोऊ नाही १/२५०। ~ **तित** वहाँ वहाँ ~ — मेरे नैननि आगे निरतत नंद दुलारौ री १३५।

तितकौं जरा : ~ सो नहि सकै निवारी ३/१३।

तितनी उतनी/उस मात्रा की . ~ नाहिं वधू हौ जिनकी १/२५२।

तितने उतने ही जितनी नारि भेष भए ~ ११७१।

तितनै उतने ही ~ मुख सुख पावौं सा० ल० ६२।

तितनौ उतना ही सो ~ अनुमानति १५१४।

तितहि उधर ही . बहुरगी जित जाइ ~ सुख ३७१४।

तितही उधर ही, उसी ओर . हौ ~ उठि चलत १/९८। ~ **तित** वहाँ ही वहाँ ~ — मेरे नैननि आगैं निरतत नद दुलारो री १३५।

तितहुँ वहाँ भी ~ तैसौ कपट परि० १/१९६।

तिते उतने : जीव जल थल जिते, वेष धरि-धरि १/१२०।

तिथि चंद्रकला के घटने-बढ़ने के अनुसार गिने जाने वाले महीने के दिन, मिति, तारीख : ब्रज प्राची राका ~ अनुमति सरद नरम रितु मद १३३२ ।

तिथि नछत्र पन्द्रहवाँ नक्षत्र, स्वाति : ~ के सेत सदा हो महा बिपत तन ओढ़ें सा० ल० ४१ ।

तिन १ उनने ~ उठि अपनो आपु बचायौ १/२२६ । २ वही, वे ही . ~ मम गृह पग धारे ४१६० । ३ उन्हें, उसको : ~ तजि पूजे अनंत मोर १२/३ । ४ उन ~ स्रवननि अब सुननि मधुपुरा ४०२६ । ५ उन्हें, उनको . पाछें जुवति रही ~ हेरनि १५०१ । ६ उन्होंने : सुनत ~ अमित भटार खोले ९/१६३ । ७ उनके : सुक-सुता ~ पुत्रनि देखि ९/१७४ । ८ उनका : ~ बाढ़ यो इजस अपार सारा० ८४० । ९ उनके . मदन ~ तन जा ६८४ । १० उनकी : ~ गति कौन दयाल १६१८ ।

तिनकहि रंचमात्र ओढ़ी ~ मैं मन्हानी १३०५ ।

तिनका तृण के ~ लौं अपने जन को गुन मानत मेरु समान १/८ ।

तिनकि कढे होकर, तिनककर : ~ पीठि पग धरिऐ परि० १/१३६ ।

तनकी[1] उनकी तू ~ पटरानी १८९८ ।

तिनकी[2] तृण । △ ~ तोर सबध तोड कर : ~— करहु जिनि हम सा एक बीस की लाजनि बहिबो ३८१९ ।

तिनकैं १ उनके ~ सग अनेक निसाचर ९/५७ । २ उन्हे लाज कहा हैं हैं ~ २३९९ ।

तिनके उनके : श्री हरि ~ बेष ४८७ ।

तिनकौ १ उनका, उनका तहाँ प्रगटि ~ उद्धारयौ १४६० । २ उनको, उन्हें मोल लियौ कछु दै करि ~ २१७ । ३ उन्हीं को . ~ मानत स्याम २२२७ ।

तिनकौ १ उनका . ~ दान लेन है हम सौं १५५० । २ उनको : ~ कहा आन सौं नातो ३५४६ । ३, उनका ही ~ ध्यान धर निसि वासर ३७०२ ।

तिनगरी एक प्रकार का पकवान : गोंदपाक, ~, गिंदोरी ३९६ ।

तिनतें उनसे : ~ बडौ जु ओर १/१४५ ।

तिनतैं उनसे कौन ~ बावरे ३८६५ ।

तिनमैं १ उनमे ~ मुख्य राम जो कहियत १९८ । २ उनमे से . ~ नव नवखड-अधिकारी ५/२ । ३ उनके बीच ~ मूँड उतारयौ री १३५ ।

तिनसौं १ उनसे ~ यह तू कहियै २७१३ । २ उन्हीं से . कहत ~ भूम घूटन ३६९१ ।

तिनसौ उनसे : ~ कहा देत फिरि उत्तर ३७४१ ।

तिनहि १ उन्हे, उनको : यह ब्रत ~ सुनावत ३७१२ । २ उन्हीं . ~ के पेट समहै ३६६४ । ३ उन्हे ही : जाके अस्त्र ~ तेहि मारयौ ३०४९ । ४ उन्हीं के लिए कहाँ गए ~ पछिनाति है री १९५१ । ५ उनपर कैसें ~ पत्याने २३४२ । ६ उनने तू मोहिं ~ मिलावति २६९४ । ७ उनकी : कोकिला कल हंस बाल रसाल ~ न पूजई ४१८६ । ~ हम क्यौं गहैं हम उनका आश्रय क्यों ग्रहण करें . बिमुख तुम तैं रह ~ — १०२७ ।

तिनहीं १ उसी ने ~ हौ मोही, मोही री १९१७ । २ उन्हे ही : ~ यह मत मोहैं ३८२५ । ३ उनके आपु बैठे रहत ~ माहीं २२४० ।

तिनहुँ १ उनसे महा जे खल ~ ते अति ३०४५ । २ उसका ~ अन न लह्यौ २८०७ । ३ उन्होंने भी ~ न आनि छुडायौ २/३० ।

तिनहुन उन सबने ~ स्रवन सुनायौ १/१९३ ।

तिनहूँ १ वे भी . ~ कोप जनायौ ३६२४ । २ उन्हे भी ~ कियौ बियौ २२२४ । ३ उनमे भी : ~ सौं अति भारे १/१२५ । ४ उनका भी ~ कौ कहिबौ सिर धारयौ ३५६४ ।

तिनि १ उसने सुक पास ~ जाइ सुनायौ ९/१७३ । २ उसे : सोट-सोइ पायौ ~ ३१ । ३ उन्होंने तब ~ कह्यौ सुक सा जाइ ९/१७४ । ४ उन तब ~ दिननि कुमार कान्ह तुम १९३१ । ५ उनको (चरणों को) ~ बरिहौं धर धाइ २९४८ । ६ जिन्हे : ~ देखते पुरपहु लजै ११८० ।

तिनु उन, तिन कहियौ 'सूर' संदेस स्याम ~ ४०२३ ।

तिनुका तिनका, तृण, घास : सिंह भख तजि चरत ~ ३७०३ । ~ तोरि सबध विच्छेद करके, नाता तोडकर कापर नैन चढाए डोलति, ब्रज मैं ~ — ३१० । ~ सौं तिनके के समान, सहज ही मे : ब्रज तरुनिनि ~ —तोरयौ २२१६ ।

तिन्ह १ उन्हे सूरदास सीता ~ निरखत ९/६१ । २ उनसे : ~ दसरथी कह्यौ या भाइ ९/२ । ३ उनके : ~ हित आपु बँधाए १/७ । ~ लगि उनके लिए ~ — आपु बँधावै १/१२२ ।

तिन्हैं १ उन्हे, उनको . ~ दियौ जसुदा बहुराई ३९१ । २ जिन्हे : ~ बिगोवति भारी १/१७३ । ३ उनसे ~ न मिल्यौ हियौ २/१६ ।

तिन्हें १ उन्हे . ~ और न भावई ३८६५ । २ उन्हीं को ~ मिलावति मोहिं अब २८२८ ।

तिपाड तिपाई (धारीदार) : दच्छिन चीर ~ कौ लँहगा २९०१ ।

तिपीपी ३ × २ (=६) पी, गोपी, राधा सुत सुत लसति ~ गोपी सा० ल० ४३ ।

तिमिर १ अधकार : कुल कौ ~ नसायौ ८७ । २ अज्ञाना-

न्यकोर्‌ परयौ ~ कै कूप ९/१३४।

तिय १ स्त्री • नाहिं चितवन देत सुत ~ १/९९। २. स्त्रिया हम ~ मृतक जियत ३८४६। ३ स्त्री ने ~ तज्यौ १/११८। ४ स्त्रियो की . ~ बिनती करुना उपजी ५७४। ५ स्त्रियो के . परसि ~ कुच ४९८। ६ नारी कहा तू कहति ~ ९/१२७। ७ पत्नी ज्यों पति सों ~ रति करै ११८०। ८ राधा की हरषि स्याम ~ बाँह गही २६२७। ~ **छबि** स्त्री का वेष (सौन्दर्य) नदनदन ~ — तनु काछे २१५५।

तियनि १ रानियो और ~ कौ मन अति तयौ ६/५। २ स्त्रियों ने . ~ पिय हेत सुख मानि लीन्हौ ११३५। ३ स्त्रियों • ~ को नेम लियौ २७३३। ४ स्त्रियो के : ~ पास तुम माँगहु जाई ८००। ५ गोपियों सब ~ में जसी २४११।

तिया १ स्त्री के, नवेली के . चतुर ~ ढिग ही २७१६। २ स्त्री को ऐमी ~ हरत क्यौं आई ९/७८। ३ स्त्रियाँ मोसी उनकै कोटि ~ २०७६। ४ रानी देखि ~ कैमो बल करि तोहि दिखराऊँ ९/११८। ५ स्त्रियो, रानियों • चौदह सहस ~ मैं तोकौं ०/७९। ६ (विदुर) पत्नी ने ~ कहै प्रभु अइयै १/२३९। ~ **फँग** स्त्री के बधन मे परी ~ — कठिन ताम के २७१७।

तियागे उतर गया : तरवा नीर ~ ४।

तिरछनि ओट मे द्रुम ~ बिरमावत १९९२।

तिरछी तिरछी, आडे, बाधा . तब कुलकानि आनि भई ~ १९३८।

तिरछे टेढे, तिरछे अब कैसे निकसत सुन ऊधो ~ है जो अडे ३१५१।

तिरछै १ तिरछे हो कर, टेढे-मेढे हो कर पौढि रहे धरनी पर ~ बिलखि बदन मुरझायौ ३५६। २ तिरछे (रास्ता काटते हुए) उत तैं आइ गए हरि ~ १९५८।

तिरछौंही तिरछी ज्यों ज्यों बूँद लगत ~ परि० १/११२।

तिरछौ तिरछे (बुरे) ~ करम भयौ पूरब को ८०७।

तिरनी १ नीवी (लहगे के नाडे) रोमावली सँड ~ लौं १४३९। २ नाडे मे ~ कमि करि दीन्हीं २६२६।

तिरप नृत्य की वह गति जिसमे झटके के साथ झुककर घूम जाया जाता है ~ लेत चपला सी चमकति १०६०।

तिरबकी तिरछी . कुटिल कुरूप भव्य ~ परि० १/१७२।

तिरसकार भासा (भासा) प्रकाश का तिरस्कार करने वाली, रात्रि . ~ मे जाते सा० ल० ८५।

तिरसूल त्रिशूल कठिन ~ सो गहि चलायौ ४१९४।

तिरिनी नीवी के . ~ पर छबि भारी १०५४।

तिरिया स्त्री ~ रैनि घटे सनु पावै ३२७३।

तिरीछौ आडे आयेगा, मौके पर बाधा उत्पन्न करेगा तिहि औसर आनि ~ होई १/१०।

तिरोवन खुफिया, छलिया जन्म जन्म के दृत ~ ३५१०।

तिल पु० एक अनाज जो दो प्रकार का होता है — काला और सफेद ~ चाँवरी, बतासे मेवा, दियौ कुवरि की गोद ७०४। क्रि० वि० तिल भर, रचमात्र तब तें ~ न रहति चित चैन ७४४२। ~ **की** क्षण भर की • सहि न सकी रति ~ — ३२६१। ~ **तिल** सारे का सारा, कुछ भी न छोडकर इनकौ गुन अवगुन हरि आगै, ~ — भेद जनावै २२५७। ~ **तेल सवादी** तिल के तेल का स्वाद जानने वाला सूरदास ~ —।

तिल अजलि तिलाजलि • निज कर करि ~ दई ९/६७।

तिलक १ टीका पीत बसन चदन ~ ४६०। २ श्रेष्ठ सूर समुझि, रघुवस-~ दोउ उतरे सागर तीर ९/११५। ~ **रथ टारे** तिलक रूपी रथ को पटक कर भजत ~ — २७४०।

तिलन तिलों पर्वत सात ~ को कीन्हों सारा० ३९३।

तिलरी तीन लटों की माला कठसिरी दुलरी ~ तर १५४०।

तिलहू तिल भर भी, रचमात्र भी : ~ न कछु भटकी री २०९७।

तिली तिल . सुमन ~ कौ वार्‌यौ परि० १/१६३।

तिलोत्तमा एक परम रूपवती अप्सरा जिसकी रचना ब्रह्मा ने ससार के समस्त उत्तम पदार्थों का एक एक तिल अश लेकर की थी उरबसि सौं ~ कह्यौ ९/२।

तिष्ठिति बैठती है ~ जाइ बार बारनि पै २८०६।

तिसहि उन्हे जिनहिं बचन दरसन न ~ ३५३४।

तिहारी तुम्हारो, आपकी चाल ~ लटपटी लागति २६१३।

तिहारेहि तुम्हारे ही मारान धरयौ ~ कारन ५४६।

तिहारैं तुम्हारे, आपके प्रान हमारे सग ~ ४२८१।

तिहारै तुम्हारे अनगिनत गुन हरि नाम ~ १/१५७।

तिहारौ १ तुम्हारा अजामील तौ बिप्र ~ १/१३२। २ तुम्हारा ही ऊधौ कह्यौ ~ कीन्हौ ३८११। ३ तुम्हारी : सुन्यौ सयान ~ ३९००।

तिहि १ वे पहिले पुत्र भूलि ~ गए ६/४। २ उस ~ उपकार मृतक सुत जाँचे १/७। ३ उसने • ~ सुख सकल उडाइ दिए ३६२०। ४ उसे हौ ~ लग्यौ गुहारि ९/६५। ५ उसी अजहूँ कबध फिरत ~ लालच २७७३। ६ उन्हे मिलति परस्पर बिबस देखि ~ १६२२। ७. उन लोगो से तब करि क्रोध सती ~ कही ४/५। ८ उन्होंने • कपिल-स्तुति ~ बहुविधि कीन्ही ९/९। ९ उसका ~ मर्दन करि गध लेत पुनि ३९८२। १० उस पर • पै नारी ~ मन नहि ल्यावै ९/२। ११ उससे • बाह गही ~ बूझन लागी २०८०। १२. उसी से : बरै तुम्हैं ~ करौ बिवाइ

९/८। १३ उनके : अंग अंग अनुमति ~ चरची १६७५। जिहि ~ किसी भी प्रकार से, जैसे कैसे : — ~ विधि वैराग्य उपाऊँ १/२८४।

तिही उसी : नर जनहूँ ~ भाँति गाइ ८/११।

तिहुँ तीनों . सब जग जीत्यो ~ लोकन सारा० ८४०।

तिहुँपुर तीनों लोकों में . तौ ~ नस पावहु ३७७६। ~ **नाहीं** तीनों लोकों में किसी को प्राप्त नहीं है · सो सुख ~ — ११६३।

तिहूँ तीनों सो नहिं ~ भुवनिया २३८।

ती स्त्री० तिया, स्त्री भूधर समर आदि ~ मोई सा० ल० ८९। **क्रि० अ० १** थी हरि समीप रुकमिनी जहाँ ~ ४२४०। **२** था · मानो थोर हीं दिन ~ १६८९।

तीखे नुकीले, तेज : ~ सर उर पोहैं ३८३२।

तीच्छन १. तीक्ष्ण (गर्म) : कछुक ~ नीर २१३२। २ तीक्ष्ण, प्रचड . ~ तेज तपस्या यामैं ३९२८।

तीछन तीक्ष्ण, तेज · हरि कौ ~ नाम कुठार १/६८।

तीज[१] प्रत्येक पच्छ की तीसरी तिथि ~ तरणि मिलि पकरे मोहन सारा० १०५५।

तीज[२] तृतीया को होने वाला एक व्रत, हरतालिका व्रत . सावन ~ खेलाई हो परि० १/१०८।

तीजे तीसरे ~ जनम विरोध करि ३/११।

तीजैं तीसरे · ~ कोक प्रवीन २२०७।

तीन दो और चार के बीच की संख्या। ~ **कीकी** ३ × २ (छ) छकी, तृप्त, निश्चिंत ~ — रूप रति पति सा० ल० २०। ~ **दस कर एक** तीन और दस को एक करने से (१३) १३वा नक्षत्र, हस्ति, हस्त, हाथ · ~ — ठोक सा० ल० शेष ४। ~ **ढोइ दग** ३+२ (५) पाँचवाँ नक्षत्र (मृगशिरा) मृगनैन, मृगनैना ~ पाँच सात इक गति सा० ल० १९। ~ **विधि** तीन दो, ३ × २ (छ) म बि मिलाने से, छवि : ~ — दधि सुत उतारत सा० ल० २०। ~ **लल** ३ × २ (छ) ल, छल ~ — बल करै तो सग सा० ल० २०। ~ **सुन्न इक** तीन शून्य के साथ एक, १०००, एक सहस्र . ~ — करी होइ कै सा० ल० ६२।

तीननि तीनों · ~ में तन कृमि कै विष्ठा १/८६।

तीनहूँ तीनों ही के . ~ सीस डारै प्रहारी ४१९४।

तीनि तीन। ~ **व्याल विसेप** तीन वेणी रूप सर्पिणी ~ — २४६८।

तीनौंपन तीनों अवस्थाएँ (बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था) ~ टेमैंहीं जाइ ७/२।

तीन्यौ तीनों . ~ पन मैं ओर निबाहै १/१३६।

तीयनि स्त्रियाँ ग्वाल-बाल ~ पै आए ८००।

तीर पु० १ किनारा, तट · ~ नहिं निबरै १/२७५। **२** किनारे, किनारे पर जात जमनु कैं ~ ५३४। **३** साथ, सामीप्य अनहित होत छाँड़त ~ सा० ल० २७। **४** बाण (बान), बनाव, सामान सकल सोभा ~ सा० ल० २। **लगि** ~ सपन्न होने तक · आपु काज — ~ ३६५९। **क्रि० वि०** समीप रामचद्र कै ~ ९/८६।

तीरथ तीर्थ जोग, जग्य, जप, तप ~ व्रत ४१६४।

तीरथनि तीर्थों में दृरि ~ श्रम करि जाहिं १०/३।

तीरहि किनारे को, किनारे पर · व्याकुल जमुना ~ धाई ५४८।

तीर्थ तीर्थ, पुण्य स्थान · सर्व ~ कौ बासा तहाँ १/२२४।

तीस तीस। ~ **भानु** राधा और कृष्ण के नख-शिख के ३० सूर्य — राधा के १६ सूर्य, २ चरणों की गति के, १० नूपुरों के हंस, १ आरसी का सूर्य, २ कर्णफूल के सूर्य, १ शीश फूल का सूर्य, कृष्ण के १४ सूर्य, २ चरणों की गति के, १० नूपुरों के, २ कानों के कुंडलों के, कुल १६+१४=३० सूर्य, नख शिख · ~ — द्वै मास सकल रितु सारा० ९६६।

तुग उन्नत, ऊँची · नील घन सीत तनु ~ छाती ३०७१।

तुंबर एक गधर्व अत न पावैं ~ १९९१।

तुंबा लौकी, कद्दू ~ तहाँ सुवावै ३८४१।

तुंबुर[१] एक गंधर्व जो चैत के महीने में सूर्य के रथ पर रहते हैं। ये विष्णु के प्रिय पार्श्वचर और संगीत विद्या में अति निपुण माने जाते हैं। नारद ~ नाऊँ ९/१७२।

तुंबर[२] एक वाद्य यंत्र इक ~ इक रबाब २८८२।

तुकारि तू-तू करके, क्षुद्रता या अशिष्टता सूचक ढग से वारौं रसना सो जिहिं बोल्यौ है ~ ३६२।

तुचा त्वचा . कान मुद्रा भस्म कथा मृग ~ आसन उहै २४६०।

तुच्छ खोखला, क्षुद्र, निःसार : परम कुबुद्धि, ~ रस-लोभी १/११४।

तुतराइ तुतला कर, अस्पष्ट स्वर से बोलत है ~ १६६।

तुतरात तुतला कर, अस्पष्ट जब बोलत ~ री १३६। ~ **बानी** अस्फुट वाणी : काजर रेख, नैन तमोर, ~ — २७३०।

तुतरानी तुतला कर बोलती है अबै जीभ ~ ३११।

तुतरौंही तोतली, अस्पष्ट स्वर वाली बोलत हैं बतियाँ ~ २९४।

तुनकि नाराज हो तनक ~ रहै १५०।

तुनीर तूणीर, निषग, तरकश : कटि-तट कसे ~ ९/२६।

तुमरे तुम्हारे ~ कुल कौ बेर न लागै ९/७७।

तुमरो तुम्हारा . ~ रूप देखि गोकुल मे सारा० ५८२।

तुमरौ तुम्हारा मैं ~ सुत देखन आई ५१।

तुमसी तुम जैसी : ~ होइ सो तुमसौ बोलै ३९०४।

तुमसें तुम जैसे जिनके ~ सदा सहायक ८६३।

तुमसे तुम्हारे जैसे ~ होइ वजीर ३८४१।

तुम-सौ तुम्हारे सदृश, तुम्हारे समान ~ प्रभु तजि मो सी दासी ९/३५।

तुमहि १ तुमसे ही. बूझति ~ दान यह लीन्हौ १६१३। २ तुम ही, तुम्हीं. प्रभु तुम अनत तुम ~ कारन करन ४१८३। ३ तुम्ही ने कहू भई कै ~ चलायौ १६३७। ४ तुमको ~ दूरि जानत नर बाहर ४३००। ५ तुममे तिनकौं ~ लगायौ १५८८। ६ तुमसे ~ मिले मैं अति सुख पायौ ४१८। ७ तुम्हीं तक ~ हमारैं गति सदा। ८ तुम्हे भी ~ लाज अरु हमहूं १०१४। ९ तुम्हारी ~ निंदि गिरिबरहि बडाई ९२२। १०. तुम्हारे : मेरे मोहन ~ बिना नहिं जैहौं ३१२०। ११ तुम्हारा ~ दोष नहि लाडिले १६१८।

तुमहि तुम्हे, तुमको नाथ ~ बिसार १/१२५।

तुमहीं १ तुम्हीं, तुम ही धन्य पितु भ्रात अरु मातु ~ १७००। २ तुमने ही कहत नद तब ~ दीन्हौ ८४०। ३ तुम्हारे ~ काज कस अकुलात ५३०।

तुमही तुम्हीं ~ जानौ गुप्त दुराई १८८२।

तुमहुँ १ तुम भी निरगुन ~ सुनावहु ३६१०। २ तुम लोग भी ~ सग मोहिं दीजौ ८१३। ३ तुमको ~ राखतिं गरब मोलि देखौ २०५३।

तुमहु तुम भी कहति ~ कहनावति री २०१३।

तुमहूँ १ तुम ही• कै हम जानैं कै हरि ~ ३८२२। २ तुम भी . ~ चतुर कहावत अतिहिं ३९२१। ३ तुमने भी भली भई नृप मान्यौ ~ १५७०। ४ तुम लोग भी ~ मिलि टेकौ गिरि आइ ८७२। ५ तुमको भी• ~ बिसरि गयौ ४१४९। ~ तैं तुमसे अधिक ~ — ब्रज हित न कोऊ १०२१।

तुमारी तुम्हारी, आप की सब कोउ कहत ~ १/४४।

तुम्ह तुमसे ~ कहि आवत ऊधौ बात ३६८९।

तुम्हरेइ तुम्हारे ही. ~ गुन ग्रथित करि माला २५८७।

तुम्हरेई तुम्हारे ही : है ~ ठौर ३८०९।

तुम्हरेहि तुम्हारे ही नद मावन ~ मुत लाएक १५९५।

तुम्हरोइ तुम्हारा ही• नारि जाम निसि ~ सुमिरन ४१४२।

तुम्हरोई तुम्हारा ही कृपा-सिंधु ~ कीन्हौ ९१५।

तुम्हरौई तुम्हारा ही मनसा बाचा मैं ध्यान ~ धरौं १९४४।

तुम्हारोइ तुम्हारा ही ~ चित्र बनाउ कियौ परि० १/२०३।

तुम्हारौ तुम्हारा। ~ **मान्यौ** तुम्हारी मानते हैं, तुममे सहमत हैं. हम नहिं बिलग ~ — १५८७।

तुरग १ घोडा स्याम-घन ~ छलक ४६०। २ घोडे. अनुपम ~ साज धूत जोह्यो २९४१।

तुरगनि घोडो को : रथ के ~ बेगि चलायौ ४३०३।

तुरग १ घोडा कहाँ ~, कहा गज केहरि १५५०। २ घोडे ~ गज उडि चले लगि बयारी ४१९४।

तुरत तुरत, शीघ्र, तत्क्षण ~ भई बिहाल ११००।

तुरतहीं तुरत ही दूत ~ धायौ ५२५।

तुरसी तुलसी की पत्ती। △ **मुख मैं मेले** ~ शपथ खाते हुए या खाकर साँची बात सबै बोलत हौं ~ — ३७८८।

तुराइ तुडा कर साँकर बेद ~ ग्वालि मदमाती हो २८६२।

तुराई तेजी से, झोंक से चल पडे दसरथ राज बाजि गज लैकै सबहीं सौज ~ मारा० २२१।

तुरी १ घोडी ~ ताजो बिना ताजन चपल चपला श्री हरी ४१८६। २. तुरीयावस्था. सुपन ~ जागत पुनि वेई ३५७९।

तुरे तोडकर धपि धाइ धरत मनु ~ गात २८४७।

तुल तुल्य, जैसी चारु चपल ~ री ३०२६। ~ **के रवि सुत** तुला राशि के शनि सास्त्र सुक्र ~ — ते सा० ल० ८१।

तुलत तुलना करता है. जौ गुंजा सम ~ सुमेरहि १३५।

तुलसी एक छोटा पौधा जिसे वैष्णव अत्यत पवित्र मानते हैं. सरवस प्रभु रीझि देत ~ कैं पाता १/१२३। △ ~ **मुख मेलैं** मुख मे तुलसी डाल कर, पवित्रता और सत्यता की कसम खा कर बात कहत ~ — १७६४।

तुलसीदल तुलसी (पौधे) की पत्तिया स्रवननि ~ १/१७१।

तुलसीमाल तुलसी की माला. लसति ~ ६२७।

तुला ज्योतिष की बारह राशियों मे से सातवीं राशि जिसमे चित्रा नक्षत्र के शेष ३० दड तथा स्वाती और विशाखा के आद्य ४५-४५ दड होते हैं छठएँ सुक्र ~ के सनि सुत सत्रु रहन नहि पैहैं ८६।

तुलानी १ समाप्त होने को आ गई है कस की आयु ~ ३०९०। २ निकट है, समीप है. इनकी मीच ~ २९३१। ३ तुल गई है, पूरी हो गई है : अल्प मृत्यु तुव आइ ~ ९/११६। ४ पास आ गया निसि जाम ~ २७०९। ५ आ पहुँची कैसैंहु रैनि ~ २४९४।

तुलाने पहुँचे निकट स्वपँग सुत आइ ~ ३४७०।

तुलानौ सवार हो रहा हो• मनहुँ सिह गो आइ ~ २९४१।

तुलावै प्राप्त करती है. सब सुख सान ~ सा० ल० ७९।

तुलि तुलना कर : 'सूर' प्रभु राम बल अतुल को ~ सकै ४२०९।

तुलिन समान हो पुलिन ~-ठटनी २१८४।

तुल्य १ बराबर, समान• बूँद ~ भगवान १/८। २. तुलनीय, तुलना मे. ताहि सम ~ नहिं रूप चीन्हौ ४१८८।

तुव १ तुम : छिन नहिं दूर स्याम ~ उनसौं सारा० ५८२। २ तुमसे• धिक माता, धिक पिता बिमुख ~ १६८६। ३ तुम्हारा : सूर जपति निसि दिन ~ नाम ४१६७।

४ तुम्हारे · ~ सुन कौ पठाइ हम हारे ७/२ । ५ तुम्हारी : सो ~ धेनु चरावं परि० १/२७ । ~ बानो तुम्हारा तो स्वभाव रहा है अमरन मरन सदा ~ — ९५० ।

तुषार जाड़ा, पाला, सरदी . वृथा महति ~ ७८६ ।

तुस अन्न का छिलका, भूसी . विनु कन ~ कौं कूटै २/१० ।

तुसकन भूसी के कण . तुस बिनु ~ कहुँ न कछू लल १/२०४ ।

तुसतो भूसी की तरह : चाम के दाम चलावत ~ ४०३६ ।

तुसी अन्न का छिलका, भूसी · झूठौ ग्यान ~ सी बिन कन ३८९८ ।

तुहि तुम्हें : ~ चँप कौ फूल ३७२८ ।

तुहीं १. तहीं . ~ अनोखा दाई १६ । २. तूने ही . ग्यान का इक ~ जान्या १८४३ । ३ तेरी ही ~ तुहीं रट लागी २८०१ ।

तुही तू ही . देखि ~ नीक पर भाजन ३३४ ।

तुहीन बर्फ, हिम । ~ **चल सुता पति वाहन** हिमाचल की पुत्री (पार्वती) के पति (महादेव) का वाहन, बैल : ~ चल सिनत सुता पति मानौ वाहन मान तासु रस सा० ल० ९९ ।

तुहूँ तुम भी मोसो कहत ~ नहिं आवै २२५२ ।

तूँ मध्यम पुरुष एकवचन, तू : कत ~ सुवा होत सेमर का १/५९ ।

तू १ तुम । २ तुमने · जो ~ रच्यौ सच्यो या दिन कौं १४ । ३ तुम्हें · ~ जनुमनि कब नायौं २१५ ।

तूखे तृषित सर सूखे ~ पराग रस परि० १/२६१ ।

तूठे १. सन्तुष्ट होते पूजन नैंकु न ~ १/१७७ । २ खुश हो गए : दिन चारिक तुमसौं ~ ३८९१ ।

तून तरकश, तूणीर कटि तट ~ , हाथ नायक-धनु ९/३९ ।

तूनीर तरकश, तूणीर धारे धनु ~ ९/४४ ।

तूर¹ तुरही, एक प्रकार का वाद्ययन्त्र आँगन बाजै ~ ४० ।

तूर² तोड़ कर : बारनि मसि तृन ~ २६६८ ।

तूरा तुरही, एक प्रकार का बाजा चरन रुनित नूपुर रन-~ २४५५ ।

तूल¹ १ कपास या सेमर के डोडे के भीतर का धुआ/रूई परसत चोंच ~ उबरत १/१०२ । २. रुई की बत्ती जो दीपक में जलता है : जैसे दीपक तेल ~ बल ३८३२ । ३. माला . बैजयन्ती सम ~ १०४९ ।

तूल² समान · कहे बचन विष ~ ११/२ ।

तूलन रूई : बन बन फिरै अर्क ~ ज्यौं नाग० ७७८ ।

तूले समता कर सकता है, बराबर है : कहत कौन हम ~ २३७१ ।

तूलै समता कर रहा है : स्रुति कुंडल छबि रबि नहिं ~ ७९९ ।

तृतिय तीसरा ~ पहर जब रैन गँवाई ९८४ ।

तृती तृतीय राशि, मिथुन अथवा मैथुन ~ हित चाहत तोहि गुवाल सा० ल० ७१ ।

तृन १ तृण, घास, तिनका · ज्यौं जलधार फिरै ~ नाहीं २२१६ । ~ **ज्यौं** तिनके के समान : भुजा छुड़ाइ, तोरि ~ — हित ९/४६ । ~ **गहाइ के** (दाँतों में) तिनका दबवाकर, गिड़गिड़ा कर कहाँ तो ताका ~ —, जावन पाइनि पारी ९/१०८ । ~ **तजिकै** घास खाना छोड़ दिया . मृग-मृग थके फलनि ~ — ११८३ । △ ~ **दै** तृण दे कर, शपथ देकर · 'सूर' सीस ~ — बूझनि हो २०८३ । ~ **तोर** तिनका उठा/तोड़ (जिससे उन्हें कुदृष्टि न लग जाय) : सूर अंग त्रिभंग सुंदर छबि निरखि ~ — १७९९ । ~ **तोरे** न्योछावर हो जाते . छबि ~ — ७३२ । **बूड़त ज्यौं ~ गहियत** डूबते को तिनके का सहारा होता है, बड़ी मुसीबत में पड़े व्यक्ति के लिए थोड़ी सहायता या सान्त्वना बहुत महत्त्व की होती है फिरि फिरि वहै अवधि है अवलंबन — ~ — ३९११ । ~ **दंत गहि** दाँत में तिनका दबा कर, नम्र हो कर, अधीन होने की कामना लेकर : जाइ मिलि अब दसकंध, ~ — ९/१२९ ।

तृन-कन दाना-घास, भोजन : पसु-पछी ~ त्याग्यौ ९/८६ ।

तृनहि तृण को . वातचक्र ज्यों ~ उड़त लै २२८६ ।

तृनहू तिनके भी : ~ तैं घटि मानै १०३२ ।

तृना १ तृणावर्त, एक राक्षस जो कंस की आज्ञा से बवंडर रूप में गोकुल आया था और श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया था ~ नदिन चमकि ढनहीं छन १/२०९ । २. तृणासुर को . ~ अकास मिला पर टारक १६०७ ।

तृनावर्त तृणावर्त राक्षस, तृणासुर . प्रलंब अरु ~ महारे १/२७ ।

तृनावर्त तृणावर्त राक्षस · ~ पूतना पठाए तब अति रहे कन्हैया ४२८ ।

तृनावर्त्त तृणावर्त राक्षस : ~ लै गयौ उड़ाइ ३९१ ।

तृपति तृप्ति, तोष : मन इन ~ न पावै परि० १/३६ ।

तृपिता तृप्ति, तोष मनु नहिं ~ पावै ।

तृपितात १. तृप्ति पाती है नैंकु नहीं ~ २१२१ । २ तृप्त होते हैं . तऊ कहुँ ~ नाहीं २३६९ । ३. तृप्त हो सकते हैं : हमसौं क्यों ~ २३५६ ।

तृपिताति तृप्त होती है तऊ नहिं ~ १२९८ ।

तृपितावै तृप्त होता है · मन नाहीं ~ १३८२ ।

तृप्त तुष्ट . ~ नाहीं होत २३८० ।

तृप्ति तुष्टि, सन्तोष ~ न पावत प्रान १/२०३ । ~ **न मानै** सन्तुष्ट नहीं होते लोचन ~ — २१२६ ।

तृषा १ प्यास, तृष्णा · ~ तउ न बुझाइ १/२६ । २ प्यास से ~ ज्यौं नीर दव अँचै लीन्हौं ५९७ ।

तृषातुर तृषित, प्यासा भूल्यौ भ्रम्यौ ~ मृग लौं १/१२१ ।

तृषारत तृषित . परम ~ सजल स्याम ३५६९ ।

तृषावत १ तृषित, प्यासा जैसैं ~ जल अँचवत २१२१ । २ प्यासे ~ सुरभी बालकगन । ५०१ ।

तृषित १ प्यासे, अभिलषित, इच्छुक ~ हैं सब दरस कारन २१८ । २ प्यासी : अखियाँ ~ चकोरी ३५५३ ।

तृष्ना तृष्णा . काम क्रोध समेत ~ १/९९, काम ~ रस बेग न क्रमै गह्यौ १/४९ ।

ते से • गुर ~ खाँड न होई १/६३ ।

ते सर्व० १ वह ~ बेली कैसे डहियत हैं १/२०० । २ उसने सूरदास प्रभु की शरणागत बारम्बार नयो ~ पाई सारा० १ । ३ उसे ~ लखै न कोई २७२० । ४ वे ~ पहिरे कचन मनि भूषन ३५ । ५. उन ~ सब पतित पाय-तर डारौं १/१४६ । ६ उन्होंने ~ दीनी वधुनि बुलाई २४ । ७ उन्ही ~ भुज क्यों न सँभारत फेरी ९/९३ । ८ उन्हे, उनको . कहौ गढाइ दिये ~ आपुन १५४१ । **परसर्ग** से जसुमति कहति इहाँ ~ जाइ ३१६ । ~ **ते** उन उनको ~ — राखि लिए जन-जीवन १/२२ । ~ **तौ** तब तो वे ~ — परें नरक मे जाइ ६/२ ।

तेइ १ वे ही ~ अतरजामी ये बनवारि १७९१ । २ उन के मातु न मानै ~ १/२०० । ~ **तेइ १** वे वे, सभी : ~ — भए पावन २५१ । २ वही-वही ~ — अधिक अनल उर दाहत ३७२२ । ३ उन्ही उन्हीं को ~ — लीन्हे साथ १४६१ ।

तेई सर्व० १ वही निकट बैठारि सब बात ~ कही २९२९ । २ उन्हीं ~ मूँदन नैन कहत हौ ३९२४ । ३ वे ही : सूरदास ~ पद पकन दुख-हरन हमारै १/९४ । **वि०** उतनी ही जो छोटी ~ है खोटी २०५१ ।

तेउ १ वे भी . ~ अवलोकि प्रीति उपजावत ४१६५ । २ उन्हे भी देखि लीन्हौ ~ ३६९१ ।

तेऊ १ वे भी ~ अब पछितात ३७४८ । २ उन्हे भी अतिहि मानिनी जे जे ~ मैं मनाइ दई २७८२ ।

तेज १ धूप • ग्रीषम ~ सहति क्यौ बेली ३८७७ । २ तेज, दीप्ति, प्रकाश तन ~ पुज तम कौं त्रासै १/६९ । ~ **तप** तेज और तपस्या बिनसि जात ~ — सकलौ ६/५ । ~ — **प्रताप** तेज के प्रताप से • तिनकै ~ — देवतनि बहु दुख पाए ३/११ ।

तेज-पुज दीप्ति-निधि, काति निधि ~ तम कौ त्रासै १/६९ ।

तेतिक उसकी सेसनाग के ऊपर पौढत ~ नाहिं बडाई १/२१५

तेती सर्व० उनकी हाँकि ठिकाई ~ ४४५ । **वि० १** उतना ही दैहौं पुनि ~ ३०८४ । २ तैसी . अरु जेती की ~ १/१८५ ।

तेते सर्व० उनसे . अवगुन भए ~ ३७८६ । **वि०** उतने, उसी प्रमाण के . कहौ कहाँ लगि ~ १/४४ ।

तेर तेरा, तेरे जो पै पतिव्रता व्रत ~ ९/७७ ।

तेर्‌यौ तुम्हारा • कौन ग्यान ~ ३५९७ ।

तेरस[1] पक्ष की तेरहवीं तिथि . ~ तरुणी सब मिलिके यह कीनौ सारा० १०६५ ।

तेरस[2] उस रस को • ~ भामिनी पियो अधर रस सारा० १०८४ ।

तेरसि १ त्रयोदशी के : ~ तन्मय तिय भई २९१५ । २ त्रयोदशी : ~ चौदस दिवस द्वै हरि होरी २९१४ ।

तेरह तेरह । ~ **रतन कनक रुचि द्वादस अटन जरा जग बाँधे** रत्न की रुचि तेरह और स्वर्ण की रुचि के बारह अक हैं, इनके फेर मे बुढापे तक ससार से बँधा बारहों महीने भ्रमण करता है . ~ — १/६० ।

तेरहौं रतन तेरहों रत्नों (हीरा, पन्ना, मोती, माणिक, नीलम, वैदूर्य, मूगा, मोती, गोमेद, सोना, चाँदी, चन्द्रकात, स्फटिक) ~ मुख छबि न तैसें १७३९ ।

तेरेहि तेरे ही, तुम्हारे ही मनमोहन ~ हाथ बिकाने १८४४ ।

तेरेहिं तेरे ही, तुम्हारे ही हौ इहाँ ~ कारन आयौ ४२७८ ।

तेरैं १ तेरे मोहन ~ अधीन भए री २८०१ । २ तेरा क्यौ करि ~ भोजन करौं ९/५ । ३ तुम्हारे ही . कहत अलि ~ मुख बातौ ३९३३ । ४ तुम्हारी मो सी और कौन प्रिय ~ २७२६ । ५ तुम्हे सुधि रह गई न्हात की ~ ५१८ ।

तेरे १ तेरे ~ सब भटारनि ४/१२ । २ तेरा राजत ~ बदन सखी री २४४७ ।

तेरोइ तेरा ही, तुम्हारा ही ~ गुन मैं निसि दिन गाऊँ २८२८ ।

तेरौ १ तुम्हारा, तेरा को है ~ तात २१५ । २ तेरे, तुम्हारे ~ रूप कहाँ लौं बरनौं २७४४ ।

तेरौई तेरा ही, तुम्हारा ही . मुरली ~ बड भाग परि० २/६ ।

तेली एक जाति जो प्राय तेल पेरने का काम करती है, तेली । ~ **का वृष** तेली का बेल, हर समय काम मे जुटा रहने वाला . ~ — लो नित भरमत १/१०२ ।

तेह क्रोध नैननि ~ भरा परि० १/२१ ।

तेहि सर्व० उसे, उसको : अधकूप तैं काढि बहुरि ~ ४१९९ । **वि०** उसी परसुराम ~ औसर आए ९/२८ ।

तेहि सर्व० १ उस . ~ घट मेरो बास सारा० ८८९ । २ उसे लखि न सकत ~ कोई सारा० ३८४ । ३ उनको : ~ पहिराउ सुभाये सा० ल० ४६ । ४ उस पर नीले सुरँग कुमैत स्याम ~ ४१६६ । ५ उसका सतभामा जु नाम ~ कहियत सारा० ६५२ । **वि०** उसी ~ क्षण ऐंचत पार न पायो सारा० ७६८ । ~ **सुभाऊ** उसी स्वभाव से मिलत ताहि प्रभु ~ —९०३ ।

तेहीं वैस ही ~ गरनि गर्यौ १९१३।
तेही उमी : कीन्हें तत्त्व प्रगट ~ चण मारा० ७।
तेहु क्रोध : करि-करि तापम ~ १३३०।
तेहूँ तिन पर भी, उतने पर भा : ये ~ पर वार न खटत ४११६।
त सर्व० १ तू, तुम : निन प ~ ले आए ऊधा ३६६४। २ तू ने, तुम ने : सब जनम ~ भ्रमत खोया १/७०। **परसर्ग** १ कारण कमरिहि ~ सब जोग १५१७। २ ने, द्वारा : तुम्हरी कृपा ~ पाए सुख जु घनेरे १/१७०। ३ मे अधिक हम ~ धन्य सदा वे तृन-द्रुम ४८९। ४ का ओर मे · नद-सुवन ~ चित नहिं टोनत ९०३।
तैंहीं तूने ही : ~ उनकौं मूड चढायो २०८८।
तैंही तूने ही : ~ लाड लड़ाया ४२७८।
तै मे . विधि ~ प्रथम भयो ३९१७।
तैयैं सतप्त होंगे, पाडित होंगे : ताकि माप अग्नि सा ~ ६/८।
तैरैं तेरे, तुम्हारे : स्याम भए वस पहिले ~ २८९८।
तैरौ तेरा हरि ~ मन अबहिं चुरायो २८९७।
तैस्नि तैसी · जैसोइ नन ~ साँझ २७६।
तैसिय वैसी ही ~ दसा हमारी २३४५।
तैसीयैं उसी प्रकार का अरु ~ गाल मसूरी १८३।
तैसियै १ वैसी ही ~ सरद-चाँदना निर्मल १०१०। २ वैसे ही . ~ लट बगरि उर पर ११६६। ३. उमी की . ~ किंकिनि धुनि पग नूपुर १४८।
तैसी १ वैमा ही : कहत हौं कहा तौं करो ~ ३०६९। २ वैमी · ~ मैं पहिचाना २०५२। ३ वैमी ही जैसी स्याम नारि यह ~ १९०३। ४ वैसे हा मोसौं बरनि सुनावौ ~ १/२२६।
तैसीयें १ वैमी ही : जैमी मगति बुधि ~ १३६२। २ वैसे हा · ~ मुख बात कही री १९२४।
तैसें वैसे ही ~ ये मिले जाइ २२३७।
तैसेंइ वैमे हा · ~ तुम वलि छोटे हो २६०९।
तैसे वैसे ही, उसी प्रकार . ~ औरनि जाने ३९९८।
तैसेइ वैमे ही . जैमे तुम ~ वै ठाकुर ३०८०।
तैसेईं वैसे ही सुनहु सूर वै येऊ ~ २३३८। ~ तैसे जैमे को तैमे ही टोउ मिले ~ — ३५२८।
तैसेहि वैसे ही, उमी प्रकार : ~ गए फेरि नहिं हेरो २२५०।
तैसेहीं वैमे ही . ~ ये ढरीं २४०४।
तैसेही वैमे ही' ~ लछमणा विवाही, पूरण परमानंद सारा० ६५७।
तैसैं १ वैमे : ~ ही यह तन गयौ ३८६५। २ वैमे ही : जैसैं राखहु ~ रहौं १/१३१। ३ वैमा ही बने ~ भेष ४२५९।
तैसैंइ उसी भाव मे तिहि ~ मानै २६१५।
तैसैंहि वैमे ही, उमी प्रकार ~ ये बस भए स्याम के २२८१।
तैसैंहीं वैमे ही ~ गहि जैहै २५८०।
तैसोइ, तैसोइ वैसा ही · ~ पुलिन पवित्र जमुन कौ २१७५।
तैसोई उसी प्रकार, वैसा ही ~ तुम पावहु ४०१४।
तैसौ १ उसा भाति, उमी तरह आइ जनम लियो ~ २/१४। २ वैसा ही, वैसे हा · जैसा करै सो ~ लहै ५/४।
तैहीं तू ही, तू ने ही रीनि यह नइ ~ चलाई १७३०।
तो १ तुझ . अतिहिं कठिन हठ देख्यौ री ~ ती को २७८२। २ तुम्हारे, तेरे : ~ आगे कहि प्रगट सुनाऊँ २०८४।
तोक तोक नामक कृष्ण के एक सखा : ~ सुबल मधु मगल लीन्यो सारा० १०६५।
तोकि चकित होकर अजित देख्यौ ~ ७०६।
तोकौं सर्व० १ तुझे, तुझको ~ लाज न आवनि १९४१। २ तुझ पर . सुनि राधे रीझे हरि ~ २२१२। ३ तुम्हारी, तेरी . ~ नहीं भलाइ १९७२।
तोतर तुतले, अस्पष्ट : कबहु ~ बोल बोलत १००।
तोतरि तोतली . गिरा सु तौ मदजहिं ~ परि० १/२८।
तोतरी तोतली, अस्पष्ट · मन-मोहना ~ बोलनि १०६।
तोतरैं तोतले कर ~ मुख बचन भरैं ७६।
तोतैं तुससे : कहत न डरती ~ ३३२१।
तोपर तुझ पर ~ कृपा भई मोहन की २५८८।
तोमरी लौकी फलनि मांझ ज्यौं करुइ ~ ३४४४।
तोमैं तुझ मे · ~ कृष्ण हेलुया खेलै ५६१।
तोर सर्व० १ तुझमे सत्य कहत हो ~ सारा० ५८३। २ तेरा, तुम्हारा · पथ निहारत ~ सारा० ९२६। **क्रि० स०** १ तोड · वैसी प्रीतिहिं ~ १३४८। २ तोड दो वाच्य अतर आदि जप कर 'सूर' भूषण ~ सा०ल० ६०। △ तिनका ~ सम्बन्ध तोड · — ~ करहु जनि हम सौं ४०६६।
तोरई तोरी (नेनुआ) सूरन करि तरि मरस ~ १२१३।
तोरत १ तोडते हो हाँ या माया ही लागी तुम कत ~ १९४५। २ तोडते है : अब ~ चोली बद-डोरि ३२७। ३. तोडते थे . ~ हमरे बदलैं लकरी ४२३१।
तोरति तोडती है . तरगनि तेज तिलक तरु ~ ४११३।
तोरन पु० तोरण, बन्दनवार प्रति-प्रति-गृह ~ ध्वजा धूप ९/१६६। **क्रि० स०** १ तोडने के लिए · ~ धनुष सारा० २०६। २ तोडने . दिन दिन ~ लागे नातौ ३९३४।
तोरना तोरण मालिनि बाँधै ~ ४०।
तोरहीं तोडते हैं 'सूर' स्याम तृन ~ २२०१।
तोरहु तोडो : आस जनि ~ स्याम हमारी १०२९।
तोरि १ तोड कर : औरनि देत सिकहरैं ~ ३२७। २ तोड पलक नाहीं सकत ~ २३७०।
तोरी[१] १ तोडा अतर प्राति जाति नहिं ~ ३०५। २ तोड दी सूर स्याम मोतिनि लर ~ १५३३। ३ तोड कर

नागरि पर डारत तृन ~ २१३४ । ४ भग की थी गोरस कारन कानि न ~ १९३१ । ५ तोड ते तुम सबै अब रहे ~ ३३८८ ।

तोरी[२] तेरी दूध पियहु बलि ~ ७१२ ।

तोरे **क्रि० स० १** तोडे कुंजर क्यौंऽव रहत बिन ~ ३८५४ । २ तोड दी, तोड दिये ~ तबहि कठ तैं दाम १५७ । ३ तोडता है • अचल चीरि अभूषन ~ ७७१ । ४ तोडे थे जमला अर्जुन ~ ३६३० । **वि०** तोडे हुए एक डार के ~ ३५९५ ।

तोरेउ तोडे, तोडा तब मुनि कह्यो धनुष क्यो ~ सारा० २३७ ।

तोरेव तोड कर . ~ धनुष टूक करि टारे सारा० ५५१ ।

तोरैं १ तोडना बनै धनुष ~ अब तुमकौं ३०४९ । २ तोडे तिनि सौं कहौ न ~ ३०४९ । ३ तोडेंगे ते धौं ~ कैसैं २३९२ । ४ ध्वस्त करके छोडेंगे • सूरदास प्रभु लका ~ ९/११७ ।

तोरै १ तोडने लगी, तोडती है मारन कौ सॉटी कर ~ ३४४ । २ तोडते हैं . जवोदै भव वध ~ परि० १/६२ । ३ तोड दे मन मैं डरी, कानि जिनि ~ ९/७९ । ४ तोड दिये अग बिभूषन सब ~ १८३ ।

तोरौं तोड दूँगा छिन इक माहिं लक गढ ~ ९/११३ ।

तोरौ **वि०** तुम्हारा नाम भयौ प्रभु ~ १/१३२ । **क्रि० स०** तोडो : बोलि सब उठे हरि धनुष ~ ३०४८ ।

तोर्‍यौ १ तोडा सूरदास प्रेम फद ~ नहिं जाई ३७८५ । २ तोड दिया चोली फारि हार गहि ~ ३०३ । ३ तोड दिया था ~ निमिष माही ९/९१ ।

तोल तौलने की वस्तु निपटहि ओछौ ~ ३८७० ।

तोलत १ तौलते ह, अदाज लगाते है • अपने अपने भुज बल ~ सारा० २१८ । २ तौल रहे . कहा चतुराई ~ हौ २५५६ ।

तोलति तौलती है . अपनैं मन तकि-तकि तनु ~ २१६८ ।

तोलनि तुलना धन्य नद जीवन जग ~ १२१ ।

तोले तौले, अदाज लगाये • नेह कसौटी ~ ३६४५ ।

तोलैं १ तौलते है *ताहि सबै कचन सम ~ १/६३* । २ तौलने लगते थे तुला बिच लोकेस ~, गरुअ आनन गोर २१३३ ।

तोलै १ तौलता है, वजन करता है कचन कॉच कपूर कटु खरी, एकहि सॅग क्यौ ~ ३८६९ । २ अनुमान करता है ज्यौं नय अहि अत न ~ सा० ल० ४१ ।

तोल्यौ मापा जा सकता है सो काहू पै जाहि न ~ २९४१ ।

तोवति जपती है : यह कहि कहि गुन ~ २४९८ ।

तोशल कस का एक मल्ल जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था . और मल्ल मारे शल ~ सारा० ५२३ ।

तोष[१] १ सतोष, तुष्टि भयौ ~ दसरथ के सुत कौं ९/१४१ । २ आनद . अमित ~ उपजावै १/२ ।

तोष[२] कृष्ण का एक सखा • वोनहीं सुबल ~ श्रीदामा २९०५ ।

तोषि सतुष्ट करके ~ तिन्है पुनि तिजपुर चले ४३०५ ।

तोष्यौ सतुष्ट/तृप्त या प्रसन्न किया . ~, पोऱ्यो, जिय दयौ १/७७ ।

तोसी तुम्हारे समान, तुम्हारे सदृश ~ नारि स्याम से नायक २४४८ ।

तोसो तेरी/तुम्हारी जैसी ~ जाई बारी २०६५ ।

तोसौं १. तुमको : ~ गारी कहा कहि दीजै ४१८७ । २ तुमसे, तुझसे कहा कहो हरि के गुन ~ ३०६ । ३. तुझसा, तुझ जैसा : ~ भक्त कहू नहि पैहैं ७/५ ।

तोह तुझसे, तुमसे : क्यो कहि आवति ~ ३५३९ ।

तोहि १. तुम . अति तामस ~ ग्वारिनी १६१८ । २ तुझमे . ~ अन्हाइ जाइ स्रम भारौ ४२०३ । ३ तुम्हे, तुझे : ~ देखि मेरौ जिय टरपत ९/८६ । ४ तुझसे . मैं ~ सत्य कहौ १/२४४ ।

तोहिं १ तुझे, तुमको ~ दया नहि आवत १७१४ । २ तुम्ही पर निर्भर है ब्रज की लाज बडाई ~ ११८० । ३ तुमसे : देवी सारद ~ ४० ।

तोही १ तुझी . ~ कौं वै भावत २७५६ । २ तुझसे : कहा करौ बूझौ ~ री १९१७ ।

तोहूँ तुझ . ~ कौ स ख स्याम चहैं १९०६ ।

तोहू तुझे भी, तुझको भी . ~ इनको ध्यान करत ही बीतत है सब याम सारा० ७७७ ।

तौं तो सो ~ मैं तुमसौ उच्चारे २ ।

तौ **क्रि० वि० १.** तब ~ तुम मानहु मोहि ८२१ । २ तभी तो ~ वै पूछत नाहीं ३६८७ । ३ तब भी कोटि देहु ~ रुचि नहि मानौं ३५ । **परसर्ग** से : आयौ जोग जहाँ ~ ३७०६ । ~ **भलैं** १ भले ही तूने ~ — मृत्यु मुख तैं उबारै ९/१२९ । २ तब भला नहिं आवहु ~ — लाला १८३ ।

तौऊ **सर्व०** उसे ही *कोटि जतन कर खीचत ~ सारा० ९५४* । **क्रि० वि०** तो भी ~ नदनदन तजि मधुकर और न मन मैं आवै ३८०७ ।

तौकी हँसुली : एते पर है ~ १५४० ।

तौकौ तेरा : ~ नाम धरै नहि कोइ १/२२९ ।

तौन वह, वही . कान्ह नाम जाकौ है ~ १५९३ ।

तौना उन्हीं को : देख्यौ खौरि सॉकरी ~ २८८४ ।

तौलि तौल लो जा दिन तैं तुम प्रीति करी ही घटति न बढति ~ लेहु नरजी ३४०१ ।

तौलैं १ तौलते हैं, वजन करते हैं . तुला बिच लोकेस ~

२१३३। २ तुलना करते हैं : ताहि सबै कचन सम ~ १/६३।
तौलौं १ तब वहाँ मदन रिस के आदि ~ सा० ल० ६५। २. तब तक : ~ सतत सेवा कीन्हो ३७६६। ३ तब तक भी . साची जो तनक होइ, ~ सब नहियै १७३४।
तौंहि तुझे : कहा मति मद ~ मत्य मारों ९/१२९।
तौंहुँ तो भी : मुनि त्रिजटी, ~ नहिं छाटौं ९/८२।
तौंहूँ तो भी, इतने पर भी ~ पूरब तन नहिं पायो ६/८।
तौंहू तो भी : ~ मैं कछु मरम न लयो २/३७।
त्यहिं १. उस : धीर समार वहत ~ कानन सारा० ९९८। २ उसी : कस सवन को दवन दानो है ~ काल सारा० ४८८।
त्यागत १ छोडता है, छोड देता है भ्रमर लता ~ कुंभिलानी ३७१४। २. छोटती है : जैसे मीन नीर नहि ~ २१८२। ३ छोडने, छोटते हैं . अतर तं मो नकु न ~ २१८५। ४ छोडती हुई . सकुचौं नहिं ~ गृहजन को २२१६।
त्यागति त्यागती है, छोडती है : ~ प्रान निरखि मावक १/२९।
त्यागि १ छोट श्री सकर बहु रतन ~ कै १/२००। २. त्याग कर, छोड कर : तातें ~ गए आपुहि सब २०७७।
त्यागी वि० त्यागी : कहावत ऐसे ~ दानि १/१३५। कि० स० १. त्यागे : क्यों ~ हम जी तें ३६९५। २ छोट दिया, त्याग दिया : यहै जानि सब सुर-मुनि ~ ९/१७३। ३. छोट कर, त्याग कर : गए मोहिं ~ २०८१।
त्यागूँ त्यागूँगी, छोडूँगी : तोकौं कबहुँ न ~ सारा० १३३।
त्यागे १ त्यागता, गिराता : इक टक पलक न ~ २३५८। २ छोडना : तन ~ नीकौ लागत पै ३५७५। ३ छोड दिया, त्याग दिया . असन-बसन की सुरतिहिं ~ ५/२। ४ छोड दिये : आस्रम अपने सबहिनि ~ ६/५। ५ छोड दे, त्याग दे : सूर जौ द्वै रग ~ १/७०। ६ छोड कर : मिलन आए ~ सर १७५८।
त्यागैं १ त्याग देंगी : यहाँ बरु हम प्रान ~ ११८२। २ छोड देने मे : पति रहिहै ब्रज ~ ३१७।
त्यागै १. त्यागे, छोड दे धिक सो पति जो ~ जोइ १०१५। २ त्यागता है, छोडता है : (सत्यपुरुष) अभिमानी कौ ~ १/२४४।
त्यागौं छोट दूँगी : ब्रजजुवतिनि की सगति ~ २०१३।
त्यागो त्याग दो, छोड दो . ऐसो जानि मोह को ~ ७/२।
त्यागयौं छोड सकती, गिरा सकती : पलक न ~ माथ ११११।
त्यागयौ त्याग दिया, छोट दिया : यह सुनि भूप तुरत तनु ~ ९/४६।
त्याज त्याग कर, छोड कर : दुखिया द्रौपदी जानि जगतपति आए सगपति ~।
त्यार तैयार रहती है : मन बिछुरत ~ सा० ल० २३।
त्यारि तैयार कर . राधिका करि ~ ८२९।

त्यों १. उसी प्रकार, वैसे . निकसैं ~ अकुलाइ २३३७। २ उसी रूप मे मिलें हरि ताहि ~ १००९। ३ वैसा ~ काहू नहि जाने २२८६। ४ इसी से ~ खोई अपनी रजधानी ९/१६०।
त्योंहीं वैसे ही : ~ आतम तन सचरै ७/२।
त्योंहीं १. वैसे ही, उसी प्रकार सूरदास ~ कहि गायौ ९/१५।
त्योरी त्योरी चढी : ~ भौंहनि मो तन चितवै १७२२।
त्रइ तीन। ~ सूरत सुत रिपु पितु वाहन गेह नृपति त्रिमूर्ति (सूर्य) के पुत्र (कर्ण) के शत्रु (अर्जुन) के पिता (इन्द्र) के वाहन (हाथी) के घर (वन) का राजा, सिंह ~ कटि धारी सा० ल० १०२।
त्रदसपति इंद्र : ~ मान कौ रतन कुडल दिए ४१९४।
त्रन तृण रक तहाँ नहि ~ छाव री ४२५४।
त्रय १ तीन : वाम सँग स्याम ~ जाग जागे २५००। २. तीनों . ताप ~ हरन १/४८।
त्रयताप (दैहिक, दैविक, और भौतिक) तीन प्रकार के कष्ट : निरखि वदन ~ बिसारति २००।
त्रस दुख भय ~ तैं राखि लीजै १/२०।
त्रसत १ भयभीत होकर मन मन हँसत ~ तनु परगट २५४२। २ त्रास देता है : मधु हरि ~ परि० १/१०३। ३ त्रास देते (ह) : माता पिता वधु अतिहीं ~ हैं १३६७।
त्रसति डर रही ह : ~ अति नारि सब ३०६७।
त्रसति डर रही है मोसों सनमुख नाहि देखत ~ २४१८।
त्रसायो डराया, धमकाया, भय दिखाया : माता उर तनु अतिहिं ~ ३६९।
त्रसावत त्रस्त कर रहा है : तनहिं ~ मार ७६६।
त्रसावै लालायित करता है : नैन चकोर ~ (हो) २०२०।
त्रसित भीत, दुखित . त्रासा तें तन ~ भए ३६४।
त्रसै पीडित कर रहा है, त्रास उत्पन्न कर रहा है . मदन ~ तुव आगे २४१५।
त्राटक योग का एक साधन जिसमे एकटक किसी बिंदु पर दृष्टि जमायी जाती है . ~ भई चित्र पूतरि ज्यों २६००।
त्राता दुख दूर करने वाला, त्राण देने वाला, रक्षक को अस ~ १/७५।
त्रान कवच : अजन ~ तजत तमकत तकि २३७२।
त्रास १ भय, डर : मातु पिता के ~ धर्यौ २४८०। २ डर से, भय से . तेरैं ~ निकट नहिं आवत ३६१। ३ वेदना, दु.ख, पीडा : कहा करौं इहि ~ कृपानिधि ९/६। ~ करैं भय खाते ह, डरते हैं गुरु गुरुजन अति ~ — १९२०।
त्रासत १. डराता है जहँ जहँ जात तहीं तहिं ~ १/१०३। २ डराते हैं, धमकाते ह, कष्ट देते हैं : घर गुरुजन बहुते विधि ~ १६३४। ३. त्रस्त करते हो, पीटते हो : लकुट

लिए काहैं तन ~ ८०२। ४ त्रस्त थे गोप गाइ गोसुत जल ~ १/१५८।५ डरते हुए : जे पद पदुम तात रिस ~ १/९४।

त्रासति १ डराता है : ~ कान्ह जु मोर ३२०। २ त्रास देती हू जब मोहि रिस लागति तव ~ ३९९। ३ त्रास देती, डॉटती : अहो जसोदा कत ~ हौ ३५६।

त्रासनि भय से, डर के कारण : आधी रात कम कै ~ ३६५१।

त्रासी क्रि० अ० १. भयभीत किया, डराया : लाज लकुट दिखाइ ~ २३६३। २ त्रास दिया, कष्ट दिया जा कारन मोहि ~ २०१५। ३. त्रस्त हुए : सुनि चातक पिक ~ ३२००। वि० दुखी, पीडित, त्रस्त . स्याम विरह की ~ ४०९२।

त्रासैं दुख दे : 'सूर' स्याम जौ कबहू ~ २२६८।

त्रासै १ नाश करता है तन तेज पुज तम कौं ~ १/६९। २ दुखित कर रही हो बिनु अपराध दास कौ ~ २८२६।

त्रासौ त्रस्त किया दह्यौ चुरावत ~ परि० १/२४।

त्रास्यौ १ त्रस्त किया काहे कौं हरि इतनौ ~ ३७५। २ त्रस्त हुए तीनि भुवन भ्रमि ~ १/१५।

त्राहि चिल्ला चिल्ला कर दुखी दुरे फल ~ बिरहिनी २८०६। ~ **त्राहि** १. बचाओ-बचाओ ~ — नाथा ३०८४। २ त्राहि-त्राहि करके : ~ — द्रौपदी पुकारी १/२४९। ~ **करी** चिल्ला उठे तिनहूँ ~ — सुनि औगुन १/१९७।

त्रिकुटि दोनों भौहों के बीच के कुछ ऊपर त्रिकूट चक्र का स्थान : ~ सग भ्रूभग तराटक ३५३०।

त्रिकुटी दोनो भौहो के बीच के कुछ ऊपर त्रिकूट चक्र का स्थान ~ सगम ब्रह्म द्वार भिरि ३८६६।

त्रिकूट एक पर्वत। सूरदास के अनुसार अगस्त्य के शाप से राजा इद्रद्युम्न इस पर्वत के रूप मे हो गये थे। कालातर मे वे गज हुए और ग्राह से युद्ध होने पर नारायण ने उनका उद्धार किया . भयौ ~ पर्वत गज मोइ ८/२।

त्रिगुन पु० तीनो गुणो (सत, रज, तम) का तुमही करत ~ बिस्तार ७/२। वि० तीनो गुणो से युक्त . ~ है समुहाइ १/५६। २ तिगुना सोक ~ सिर रावन कै ३३१६।

त्रिगुनात्मक त्रिगुणात्मक, सत, रज और तम तीनो गुणो से युक्त : माया कौ ~ जानौ ३/१३।

त्रिजगत तीनो लोको मे : ऐसौ देव कहा ~ है ९१४।

त्रिजटो विभीषण की वहन जो सीता जी के पास अशोक वाटिका मे रहती थी : ~ सीता पै चलि आई ९/८०।

त्रितिय तीसरा। ~ **रिच्छ** तीसरा नक्षत्र, कृत्तिका नक्षत्र : ~ — सुकर्म जोग सा० ल० १०८।

त्रिदस पुं० देवता, सुर निरखत बरखत कुसुम ~ जन २९११। वि० तीन दस, तीस . ~ कोटि देवनि के राई ९२२।

त्रिदस नृपति देवराज इद्र : ~, रिषि व्योम विमाननि देखत रह्यौ न धीर ९/१६।

त्रिदसपति १ तीस करोड देवों के स्वामी, इद्र : चतुर्मुख ~ विनय हरि सौं करी ८/८। २ देवपति कृष्ण : ~ दै तारि ७१।

त्रिदोष वात, पित्त और कफ जनित रोग, सन्निपात ज्यौं ~ उपजै जक लागत ३५२९।

त्रिन तृण, घास : ~ न चरत गो ३७९८।

त्रिननहूँ घासों से, तृणो से : बाट ~ छाई ३३०६।

त्रिनहु तृण की भी, घास की भी . ~ की छाँह गई निधि मॉगत ४०३६।

त्रिना तृणासुर : ~ सकट छिन मैं सघार्यौ ९९२६।

त्रिपद तीन कदम या पग : धरि तन सगुन ~ पूरन प्रभु परि० १/२९।

त्रिपद ब्याज तीन पग (पृथ्वी) के बहाने : ~ तिहुँ पुर फिरि आई १/६।

त्रिपुर तीन नगर जो तारकासुर के तीन पुत्रों ~ तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली के लिए मय दानव ने बनाये थे। इनमे पहला सोने का स्वर्ग मे था, दूसरा चाँदी का अतरिक्ष मे और तीसरा लोहे का मर्त्यलोक मे था। शिव जी ने एक ही वाण से इन तीनों को नष्ट कर दिया था : ~ नाम सो कोट कहाई ७/७।

त्रिपुर-सदन त्रिलोक मे निवास करने वाले, शिव : ~, त्रिपुरारि त्रिलोचन ७९९।

त्रिपुरार शिव : कतहू अर्घ्य देत सूरज को कहुँ पूजत ~ सारा० ६७८।

त्रिपुरारि महादेव, शिव : सिसु-रूप कियौ ~ १६०।

त्रिबलि पेट पर पडने वाले तीन बल जिनकी गणना स्त्री के सौंदर्य मे होती है घट ~ श्री फल घट २४६८।

त्रिबलि-निकेत (राधा के) पेट पर के तीन बलो का स्थान : (अलक) पैठी ~ २४७२।

त्रिबली त्रिवलि : रोमावलि ~ उर परसति १७०३।

त्रिबिक्रम विष्णु जनु ता लगि तरवरि ~ ९/११।

त्रिबिध १ तीन रग के . नैन ~ बनें १०५१। २ तीन प्रकार के : ~ करमनि गनत १/१२०।

त्रिबिध-गुन तीनो प्रकार के गुण — सत, तम, रज . बॉधी मोट पसारि ~ १/१५२।

त्रिबिध ताप तीनो प्रकार के ताप — दैविक, दैहिक, भौतिक : ~ तन जात ९/४३।

त्रिबेनी तीन नदियो — गगा, यमुना और सरस्वती का सगम : लोचन मिले ~ है कै २२३०।

त्रिभंग तीन जगह से टेढा या बलदार : ललित ~ स्याम सुदर

२७६५।

त्रिभंगी त्रिभंग, बाएँ पैर पर दाहिना पैर मोड कर रखना और गर्दन तथा कमर को टेढा करना ~ कान्ह कुवर ठाढे हैं। ६२४।

त्रिभुवन १ तीनों लोकों (स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल) को : ~ भूख हरी १/१६। २. तीनों लोक • देखत ~ मोहे ४५१। ३. तीनों लोकों मे अब और कौन समान ~ १०७२। ४ तीनों लोकों के : सहज बडे ~ ई तात २३२६।

त्रिभुवन-जन-मन तीनों लोकों के जन-मन (कृष्ण) को ~ मोहै री २१६२।

त्रिमिल तीनों मिले हुए, त्रिदोष ~ भाविक कियौ भूपन मा० ल० ९२।

त्रिय स्त्री, औरत • धनि ~ तुमजौं जौ सुखदानी २५१४।

त्रियनि १ स्त्रियाँ • सबै ~ कौ यह सुभाव री २५९७। २ स्त्रियों के लिए : ब्रह्म पूरन मुनिनि, परम सुदर ~ ३०५९।

त्रिया १ स्त्री : कपट रूप की ~ निपाती ६०१। २ स्त्री के ~ स्वाँग अनूप २८१३। ३ स्त्री मे लाल ही कौन ~ बिरमाए २६३१। ४ स्त्रियाँ : महरिं ~ अधीर ३७६८। ५ पत्नी यहैं कहत बसुदेव ~ जनि रोवहु ३०९०।

त्रियै १ स्त्री भी : बेक नवल ~ २५०६। २ नवेली (राधा) • देखि रीझी ~ २६१४।

त्रियौ स्त्रियाँ भी : या लागौं मदिर पग धारो सुनि टुखियान ~ ३३९६।

त्रिलोक स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक तीनि जने सोभा ~ की ९/४४।

त्रिलोकी तीनों लोको मे : नहीं ~ ऐसौ कोइ ५/३।

त्रिवली-तरंग-गति तीन रेखाएँ लहरों की गति के समान नाभि भँवर ~ २१८४।

त्रिविध १ तीन प्रकार के ~ मेरै हे जोइ ३/१३। २ तीन प्रकार का — सीतल, मद, सुगधित : ~ पवन जहँ वहत ४४८।

त्रिपित प्यासे नवल मृगदृग ~ आतुर २१३१।

त्रिसंगम त्रिवेणी की : सोभित अग तरग ~ ९/११।

त्रिसिरासुर खंडन तीन सिर वाले दैत्य के सहारक • खर दूषन • ~ ९८१।

त्रेता चार युगों में से दूसरा जो १२९६००० वर्ष का माना जाता है • ~ दस सहस्र कहि गाइ १/२३०।

त्रै त्रय, तीन • सूर ~ सौं एक कीन्हे १२२५।

त्रैमूरत त्रिमूर्ति (धरणी, आकाश और पाताल) तीनों को प्रभावित करने वाला, सूर्य • केहरि बेद रास ~ सा० ल० ८१।

त्रैलोक्य तीनों लोकों को : हास्य ईषद जु ~ मोहै ९८०।

त्रोटिय टुकडे करके : ~ पेलव दरत परम उर २११६।

त्र्यम्बक शिव तोरन धनुष देव ~ को सारा० २०६।

त्वच त्वचा, चमडी : तन तें ~ भई न्यारी १/११८।

त्वचा चमडी • जौ या तन की ~ काटि कै ३८०७।

त्वचास्रृग मृगचर्म सृगी, मुद्रा, भस्म, ~ ३६९०।

त्वष्टा वृत्रासुर के पिता जिन्होंने विश्वरूप नामक पुत्र के मारे जाने पर क्रुद्ध हो कर एक जटा से वृत्रासुर को उत्पन्न किया था • ~ विस्वरूप को बाप ६/५।

थ

थभनकारी रोकने वाली • दसेंद्रिय प्रेरक ~ ३८६६।

थकत थकना है • नेंकुहु न ~ पानि निरदई अहीरी ३४८।

थकाइ मोहित होकर (थके रह गये) ब्योम बिमान ~ ६२६।

थकाऊँ थका दूँ, क्लात कर दू • सूरज सुता प्रवाह ~ परि० १/८०।

थकाने थके नकहुं नही ~ २३०५।

थकायो थका दिया मत्र ~ मेहो मारा० ८१२।

थकायौ स्तब्ध/मोहित हो गया • सुनि धुनि चचल पवन ~ ११७६।

थकावै थकाते है • उडुपति अतिहिं ~ री परि० १/५०।

थकि १ थक • ऐरावत ~ रह्यौ निरखि गति २७७७। २ थक कर : रहे पथिक जु जहाँ सु तहाँ ~ ४११३। ३ रुक सुनि ~ रह्यौ पवन २०६३। ~ रए थक कर रह गए मन बानी टोक ~ — ४३०९। ~ रहें १ मुग्ध हो गये : जलहु थल कै जीव ~ — ११३३। २ स्थगित हो गये ~ — ब्योम बिमान १०७२।

थकित वि० १ स्थिर : अचल चले, चल ~ भए ११४०। २ मुग्ध • मोहन वदन बिलोकि ~ भए २३३८। ३ शिथिल ~ भयौ सब गात सा० ल० ७६। ४ खिन्न, उदास • ज्यों दाम हारे ~ जुवारी ४०७३। ५ थके हुए, अघाये हुए • सूरदास प्रभु रीझि ~ ये १०६०। ६ थकी हुई ~ बिलोकि बिसालिका ८०९। ७ स्तभित, स्तब्ध • सब देखि ~ भई १२२। क्रि० अ० १ रुक गया पवन ~ सुनि बेनु १०६७। २ रुक गई ~ जमुना भई हहिं विधि ९९१। ३ ठगे से रह गये • सूर प्रभु के चरित देखि सुरगन ~ १५९६।

थकी थक गई • जाति आवति हौ ~ २८१०।

थकीली थक गई • जमुना-तरग ~ ११६०।

थके १ विमुग्ध हो गये • स्रवन ~ सुनि बचन सुहाई १६३४।

२ थक गये : ~ करत उपाइ १/५६। ३ रुके • स्तभित हो गये : ~ चर-जल झहरत पाहन १०६८। ४ टूट चली मिद्ध समाधि ~ ११८३। ~ पल पथ पलक रूपी पथिक थक गये . ~ — नाव धारज १७६३।

थकै (थक कर) अचल हो जाय • अचल होइ चल, चल ~ २८२४।

थक्यौ क्रि० अ० १. थक गया • केवट ~ ९/१४६। २ थक गये . सेम सहस फन ~ १६१८। ३ रुक गया जल थल पवन ~ ११८२। ४ मुग्ध हो गया हो • 'सूरदास' प्रभु रूप ~ मनु १९१३। वि० थका हुआ : 'सूर' स्याम ह्वौ रह्यौ ~ मौं ४१०५।

थन १ स्तन • कैसैं बछरा ~ लै लावहु ४०१। २ स्तन मे . प्रेम उमँगि ~ दूध चुवावत ४८०।

थननि स्तनो मे भरि भरि पय ~ भार ६१९।

थनु स्तनो से • आनद मगन धेनु सबै ~ पय-फेनु ३०।

थपि स्थापित करके • सूर प्रभु मारि दमकध, ~ बधु तिहि ९/१३६।

थपियै स्थापित करिए तिहिं अपनैं कर ~ गुपाल २८४७।

थपिहौं स्थान दूगी अरु भाइनि मैं ~ ९/१६४।

थर १ स्थान पर एहि ~ वर्नी क्रोडा गज मोचन १/६। २ सही (स्थल) जगह मत्र न लागत ~ तैं ७४४। ३ स्थल मे सूर स्याम कैं ~ ज्यौं २३४७। ४ (वात के) आधार के विनु ~ कहा लौजै २७८८। ~ थर करै थर-थर कॉपने लगता है मँटप देखि उर ~ — ४१७६।

थरथराइ थरथरा कर, थर थर कर तब मै ~ रिस कॉप्यौ ९४४।

थरथरात थरथराता है, कॉपता है . ~ रिम गात ३४१।

थरथराने (डर से) कापने लगे : तब गोड पर ~ २५९९।

थरसत थर-थर कॉप रहे है ~ ब्रज लोग डरपै ८५५।

थरसि स्तम्भित हो कर • ~ गयौ नहि भागि सकौं ४८१।

थरहरत (लपटों मे) थर्रा रहे थे ~ कुस कॉस ५९६।

थल १ स्थल, पृथ्वी सकल जीव जल-~ कै स्वामी २७८। २ स्थान के नासिका ~ बीच १८१५। ३ गतव्य स्थान नद उपनद सँग सखा इक ~ राही ३०४८।

थलमति थलमय जल मे ~ थल मे जलमति भई नृपति को जान सारा० ७६०।

थली स्थली तकि गिरि की सधि ~ २६१९।

थहरात थर-थर कॉप उठता है : गगन मेघ घहरात ~ गाता ८७०।

थहाइ थाह ले कर • को आवै सिंधु ~ २३११।

थहियाँ थाह • औंधि आस पर ~ परि० १/२०१।

थही मिलने को है, कतहुँ न थाह ~ २३६८।

थह्यौ थाह ली • रमनिहि रुप ~ परि० १/१३१।

थाकी १ जड हो गई, हार गई बुधि बल छल-उपाइ करि ~ २३८९। २ शिथिल हो गई, थक गई ऊरध स्वाँम चरन गति ~ ३११६।

थाके १ थके, थक गये . गारुडी ~ सबै परि० १/४१। २ थके हो रैनि कहूँ वौं ~ २६३०। ३ थक गये हैं ~ चरन तुम्हारै ऊधौ ३७११। ४ अचल हो गये, रुक गये • चर ~ अचल टरे ६२३। ५ ठहर गया हो, थक गया हो ~ सूर पथिक मग मानौ १८६७। ६ (मुग्ध होकर) खडे रह गये नभ मडल सुर ~ १०६९।

थाकैं रुक जाने पर : ज्यौं जल ~ मीन कहा करै ३८५१।

थाकै थक जाय, जड हो जाय अचला चलै चलत पुनि ~ ९/७८।

थाकौ १ थक गया रह्यौ नहीं बल ~ १/११३। २ थक गये करत कोटि उपाइ ~ सा० ल० ५६।

थाक्यौ १ रुक गया : नभ मडल ससि रथ ~ ११८१। २ थक गया चलत पथ कोउ ~ होइ ३/१३। ३ मुग्ध हो गया : निरखि नैन मन ~ ३००७।

थात एक वाण (वाँकी चितवन) . एक जलज पर ~ २११२।

थाती १ पूँजी, धरोहर . (मायामोह, तृष्णा) ये दोऊ दुख ~ १/११८।

थान स्थान, डेरा जब हम वै इक ~ ९/८३।

थानक एक स्थान पर बसे नद गृह गोकुल ~ २९२३।

थानौ डेरा, स्थान कृष्ण सदा ही गोकुल कीन्हौं ~ १/११।

थाप स्त्री० थप्पड • वज्र सम ~ वल कुंभ दीन्हौ ३०५४। क्रि० स० १ लगा दी दई धौं किहि ~ सा० ल० ३२। २ स्थापना की, स्थापित किया दीयौ राजभूमण्डल की सव विधि थिर करि ~ सारा० ७९।

थापत स्थापित करते हे . ~ अपनौ नेम ३४२२।

थापन स्थापन, स्थापना . नाना वाक्य धर्म ~ को तिमिर हरण भुव भार सारा० ३१८।

थापि स्थापित कर, प्रतिष्ठित कर याकौं ग्यान ~ ब्रज पठवौं ३४१८।

थापी १ स्थापित की ~ थिर-चर नीति १०४७। २ स्थित किया पाछे आप भूमिको ~ कियो यज्ञ विस्तार सारा० ४६। ३ युक्त हूँ लोभ लालसा ~ १/१४०।

थापे १ स्थापित (प्रतिष्ठित) किये हुए हैं • को बसुदेव कौन कै ~ ३७५२। २ स्थापित किया परशुराम ह्वैकै द्विज ~ सारा० १३९।

थापे हाथ से लगाए चावल या चूर्ण के निशान घर-घर ~ दीजियै ८४१।

थापैंगे स्थापित करेंगे . पुनि वलि राजहि स्वर्ग लोक मे ~ हरि राय सारा० ३४६।

थापै उत्पन्न हो गया पुनि मन मैं भय अकुर ~ ५८५।

थाप्यौ १ स्थापित किया : मारि मलेच्छ धर्म्म फिर ~ सारा०

३२० । २ थाप दिया है, निश्चित कर दिया है . लगन सोधि विवाह ~ ४१७३ ।
थाम आधार सुबल जु स्याम ~ मैं बैठो ३५१३ ।
थार १ थाल, थाली . परस्यौ ~ धार्यो मग जोवत २२३ । २ थालीमे मूँदि लोचन भोग अरप्या प्रेम मा रचि ~ ८३६ ।
थारी थाली रतन जटित कचन की ~ २२८ ।
थालिका थाली : लेकर कचन ~ ८०९ ।
थावर स्थावर, जड . ~ जगम जँह लगि भए ४३०० ।
थाही थाह है : रजनि प्रीति नहिं ~ ३८४८ ।
थाहैं थाह लेनी रहेगी अवधि आस जल ~ ३६०५ ।
थाह्यौ थाह ली थी . मीन-रूप जल ~ १२७ ।
थिति १ स्थिति मे सुस्थल ~ मन राख्यौ ३५३० । २ पालन, रक्षा . उतपति, ~ , पुनि करत सँहार ७/२ ।
थिर स्थिर, स्थायी छनभगुर ~ रहै न मोह ७/२ । ~ **राज** स्थिर राज्य करी कृपा दीन्हा करुणानिधि अटल भक्ति ~ ~ सारा० १३५ ।
थिर चर जड और चेतन को एकहिं बार थकित ~ कियौ ११३९ ।
थिराऊँ स्थिर कर दूँगा कलिंदीहिं ~ २१८० ।
थिराही स्थिर रह सके नहिं नैन ~ २२१७ ।
थुनी थूनी, खभा रापी सुथिर ~ २८ ।
थूल स्थूल, मोटा . ~ सरीर, रहित सब दूदर ५/३ ।
थेइ थेइ ताल, नृत्य का एक बोल बेनु मधुर धुनि बोलत ~ ३६५७ ।
थोटिहा तोंद लचकति ~ हालइ परि० १/७ ।
थोर १ थोडा, कम . दारुन चिंता बढी न ~ २१८० । २ छोटा, फीका बरन बदनहि ~ ३६४ ।
थोरनौ कम मोर सुरव नहिं ~ २८३२ ।
थोरि थोडी ही है : अरुन अधरन दसन भाई कहाँ उपमा ~ २२५ ।
थोरिहि थोडी ही, थोडी थोडी . ~ बात खिमावै १५७३ ।
थोरी १ थोडी, कम, लघु जंभ करै किन ~ २९३ । २ थोडी भी जिनकी है मनि ~ ३९७४ । ३ थोडे चतुर दिननि की ~ १९६० । ४ छोटी सी यह उपमा कछु ~ १०४७ । ५ बुरी, खराब, तुच्छ यही बात है ~ २६७ । ६ थोडा है (अधिक हो सकता है) जा कछु कहा सो ~ ४२१६ । ७ फीकी पड जाती है दामिनि दुति ~ १११८ । ८ क्या कम है : यह ~ जो जियत रही हैं ३७६४ ।
थोरे १ थोडा . कहत समुझियत ~ ३६०० । २ थोडे ~ जल उतरानी ३३७ । ३ थोडे ही, नहीं चपक बन लागन चित ~ ३८५४ ।
थोरेक थोडा-सा ~ ही बल सौं छिन भीतर दीनौ ताहि गिराइ ४१० ।
थोरैं १ थोडे . सबै ~ ही दिन ना २६८९ । २ थोडे मे सुन बाँधनि माखन दधि ~ ३४४ । ~ **थोरैं** थोडा थोडा भूल ~ — २८३९ । ~ **मैं थोरौ** थोडे मे थोडा . जानि लियौ ~ — ४१२८ ।
थोरैंही थोडे मे हा ~ गरबानी २८२६ ।
थोरैं थोडे : ~ दिन अनि भए सयाने २५५६ ।
थोरैहि थोडे मे ही . ~ जल इतरानी २५०२ ।
थोरो, थोरौ १ थोडा . तेरें गोरस बहुत भया रा मेरै ~ १४९१ । २ थोडे ही कह्यौ सर मैं ~ १/१८९ । ~ **थोरौ** थोडा-थोडा हमहू कृपा तिहारी त कछु ~ — सम्मत ४०२२ ।

द

दके दग हुए, डरे बन मोहन आए नहिं ~ ३२०९ ।
दंड १ दण्ड . कनक ~ आपुन कर धरिहि २६१९ । २ दण्डों : चापति कर भुज ~ रेख गुन ११९६ । ~ **पर्‍यौ** दड पड गया (लज्जित हो गया) मदन तन ~ — ६३३ ।
दंड एक एक दण्ड (६० पल = २४ मिनट) ~ बरषे मन लाइ ९४३ ।
दडक वन विध्याचल के दक्षिण मे एक प्राचीन वन जहाँ वनवास काल मे राम ने निवास किया था ~ आए छल करिकै ९/५७ ।
दडकावन दण्डकारण्य को तहँ ते चले ~ को सारा० २५४ ।
दडत दड देते हुए . मोहिं ~ धरम दूत हारे १/१२० ।
दडवत दण्डवत, (साष्टाग) प्रणाम करि ~ विनय उच्चारी ७/२ ।
दडी दडीधारी सन्यासी . अर्जुन धरि ~ को रूप सारा० ८०८ ।
दडौं दड दूगी ~ कामदड घर पर को १९८३ ।
दडौत दण्डवत, प्रणाम . तातैं तुमकौं करत ~ ५/४ ।
दत दाँत . लै छिति ~ अगाऊ २२१ । **अंगुरीनि ~ दै रह्यौ** दातों तले उगली दबाए . ये करे हैं को मैं आन — ~ — ४८३ । △ ~ **तृन धरिकैं** गिडगिडाकर ~ — सौ परिवार सिधारो ९/११५ ।
दंतनि दातों मे तृन ~ धरि चालीं ६१३ ।
दँतली दँतुलियाँ, दूध के दाँत . दुधुँधा है ~ भई १२२ ।

२ थक गये : ~ करत उपाइ १/५६। ३ रुके स्तभित हो गये ~ चर-जल झहरत पाहन १०६८ । ४ टूट चली • सिद्ध समाधि ~ ११८३ । ~ **पल पथ** पलक रूपी पथिक थक गये : ~ — नाव धोरज१७६३ ।

थकै (थक कर) अचल हो जाय अचल होइ चल, चल ~ २८७४।

थक्यौ क्रि० अ० १. थक गया • केवट ~ ९/१४६ । २ थक गये . सेस-सहस फन ~ १६१८। ३ रुक गया जल थल पवन ~ ११८२ । ४ मुग्ध हो गया हो : 'सूरदास' प्रभु रूप ~ मनु १९१३। **वि०** थका हुआ • 'सूर' स्याम हौ रह्यौ ~ सौ ४१७५।

थन १ स्तन • कैसे बछरा ~ लै लावहु ४०१ । २ स्तन से . प्रेम उमँगि ~ दूध चुवावत ४८० ।

थननि स्तनो मे • भरि भरि पय ~ मार ६१९ ।

थनु स्तनो से आनद-मगन धेनु सबै ~ पय फेनु ३० ।

थपि स्थापित करके : सूर प्रभु मारि दसकध, ~ बधु तिहि ९/१३६ ।

थपिय स्थापित करिए तिहिं अपनें कर ~ गुपाल २८४७।

थपिहौं स्थान दूँगी अरु भाइनि मैं ~ ९/१६४ ।

थर १ स्थान पर . एहि ~ बनी क्रीडा गज मोचन १/६ । २ सही (स्थल) जगह • मत्र न लागत ~ तैं ७४४। ३ स्थल मे सूर स्याम कैं ~ ज्यौं २३४७ । ४ (बात के) आधार के बिनु ~ कहा लौजै २७८८। ~ **थर करै** थर-थर कॉपने लगता है • मँडप देखि उर ~ — ४१७६ ।

थरथराइ थरथरा कर, थर-थर कर तब मैं ~ रिस कॉप्यौ ९४४।

थरथरात थरथराता है, कॉपता है ~ रिस गात ३४१ ।

थरथराने (डर से) कापने लगे : तब गोड पर ~ २५९५।

थररात थर-थर कॉप रहे हे ~ ब्रज लोग टरपै ८५५ ।

थरसि स्तम्भित हो कर ~ गयौ नहि भागि सकौं ४८१ ।

थरहरत (लपटों मे) थर्रा रहे थे ~ कुस कॉस ५९६ ।

थल १. स्थल, पृथ्वी सकल जीव जल-~ कै स्वामी ७७८। २ स्थान के नासिका ~ बीच १८१५ । ३ गतव्य स्थान नद उपनद सँग सखा इक ~ राही ३०४८ ।

थलमति थलमय जल मे ~ थल मे जलमति भई नृपति को जान सारा० ७६० ।

थली स्थली . तकि गिरि की सधि ~ २६१९ ।

थहरात थर-थर कॉप उठता है : गगन मेघ घहरात ~ गाता ८७० ।

थहाइ थाह ले कर • को आवै सिधु ~ २३११ ।

थहियॉ थाह औधि आम पर ~ परि० १/२०१।

थही मिलने को है • कतहुँ न थाह ~ २३६८ ।

थह्यौ थाह ली • रमनिहि रूप ~ परि० १/१३१।

थाकी १ जड हो गइ, हार गई बुधि बल छल-उपाइ करि ~ २३८९ । २ शिथिल हो गइ, थक गई ऊरध स्वॉस चरन गति ~ ३११६ ।

थाके १ थके, थक गये गारुटी ~ सबै परि० १/४१ । २. थके हो • रैनि कहूँ धौं ~ २६३० । ३ थक गये हैं ~ चरन तुम्हारे ऊधौ ३७११ । ४ अचल हो गये, रुक गये • चर ~ अचल टरे ६२३ । ५ ठहर गया हो, थक गया हो ~ सूर पथिक मग मानौ १८६७ । ६ (मुग्ध होकर) खडे रह गये नभ मडल सुर ~ १०६९ ।

थाकैं रुक जाने पर • ज्यौं जल ~ मीन कहा करै ३८५१ ।

थाकै थक जाय, जड हो जाय अचला चलै चलत पुनि ~ ९/७८ ।

थाकौ १ थक गया रह्यौ नहीं बल ~ १/११३ । २ थक गये करत कोटि उपाइ ~ सा० ल० ५६ ।

थाक्यौ १ रुक गया : नभ मडल ससि रथ ~ ११८१ । २ थक गया : चलत पथ कोउ ~ होइ ३/१३ । ३ मुग्ध हो गया : निरखि नैन मन ~ ३००७ ।

थात एक बाण (बॉकी चितवन) . एक जलज पर ~ २११७ ।

थाती १ पूँजी, धरोहर . (मायामोह, तृष्णा) ये दोऊ दुख ~ १/११८ ।

थान स्थान, डेरा जब हम वै इक ~ ९/८३ ।

थानक एक स्थान पर . बसे नद गृह गोकुल ~ २९७३ ।

थानौ डेरा, स्थान कृष्ण सदा ही गोकुल कीन्हौं ~ १/११ ।

थाप स्त्री० थप्पड • वज्र सम ~ बल कुंभ दीन्हौ ३०५४ । **क्रि० स० १** लगा दी . दई धौं किहि ~ सा० ल० ३२ । २ स्थापना की, स्थापित किया दीयौ राजभूमण्डल की सब बिधि थिर करि ~ सारा० ७९ ।

थापत स्थापित करते हे ~ अपनौ नेम ३४७२ ।

थापन स्थापन, स्थापना नाना वाक्य धर्म ~ को तिमिर हरण भुव भार सारा० ३१८ ।

थापि स्थापित कर, प्रतिष्ठित कर याकौं ग्यान ~ ब्रज पठवौं ३४१८ ।

थापी १ स्थापित की ~ थिर-चर नीति १२४७। २ स्थित किया पाछे आप भूमिको ~ कियो यज्ञ विस्तार सारा० ४६ । ३ युक्त हूँ लोभ लालसा ~ १/१४० ।

थापे १ स्थापित (प्रतिष्ठित) किये हुए हैं को बसुदेव कौन कै ~ ३७५२ । २ स्थापित किया परशुराम हैकै द्विज ~ सारा० १३९ ।

थापे हाथ से लगाए चावल या चूर्ण के निशान • घर-घर ~ दीजियै ८४१ ।

थापेंगे स्थापित करेंगे पुनि बलि राजहि स्वर्ग लोक मे ~ हरि राय सारा० ३४६ ।

थापै उत्पन्न हो गया पुनि मन मैं भय अकुर ~ ५८५ ।

थाप्यौ १ स्थापित किया : मारि मलेच्छ धर्म्म फिर ~ सारा०

३२०। २ थाप दिया है, निश्चित कर दिया है : लगन सोधि विवाह ~ ४१७३।
थाम आधार : सुवल जु स्याम ~ मैं बैठौ ३५१३।
थार १ थाल, थाली : परन्यो ~ वार्‌यौ मग जोवत २२३। २ थाली में : मूँदि लोचन भोग अरप्यौ प्रेम मा रचि ~ ८३६।
थारी थाली : रतन जटित कचन की ~ २२८।
थालिका थाली : लेकर कचन ~ ८०९।
थावर स्थावर, जड : ~ जगम जँह लगि भए ४३००।
थाही थाह है : रजनि प्रीति नहिं ~ ३८४८।
थाहै थाह लेनी रहेगी : अवधि आस जल ~ ३६२५।
थाह्यौ थाह ली थी : मीन-रूप जल ~ १२७।
थिति १ स्थिति मे : सुन्थल ~ मन राग्यौ ३५३०। २ पालन, रक्षा : उतपति, ~ , पुनि करत मँहार ७/२।
थिर स्थिर, स्थायी : छनभुर ~ रहै न मोट ७/२। ~ **राज** स्थिर राज्य : करी कृपा दीन्हो करुणानिधि अटल भक्ति ~ ~ मारा० १३५।
थिर चर जड और चेतन को : एकहिं वार थकित ~ कियो ११३९।
थिराऊँ स्थिर कर दूँगी : कालिंदीहिं ~ २१८०।
थिराहीं स्थिर रह सके : नहिं नैन ~ २२१७।
थुनी थूनी, खभा : रापी सुथिर ~ २८।
थूल स्थूल, मोटा : ~ सरीर, रहित मव दुदर ५/३।
थेइ थेइ ताल, नृत्य का एक बोल : वेनु मधुर धुनि वोलत ~ ३६५७।
थोदिहा तोंद : लचकति ~ हालइ परि० १/७।
थोर १ थोडा, कम : दारुन चिंता वढी न ~ ११८०। २ छोटा, फीका : वरन वदनहिं ~ ३६४।
थोरनौ कम : मोर सुरव नहि ~ २८३२।
थोरि थोडा ही है : अरुन अधरन दसन झाँई कहा उपमा ~ २२५।
थोरिहि थोडी हो, थोटी थोडी : ~ वात खिझावै १७७३।
थोरी १ थोडी, कम, लघु : जीभ करै किन ~ २९३। २ थोडी सा : जिनकै है मति ~ ३९७४। ३ थोड़े : चतुर दिननि की ~ १९६०। ४ छोटी सी : यह उपमा कछु ~ १०४७। ५ बुरी, खराब, तुच्छ : यही वात है ~ २६७। ६ थोडा है (अधिक हो सकता है) : जो कछु कहौ सो ~ ४२१६। ७ फीकी पड जाती है : दामिनि दुति ~ १११८। ८ क्या कम है : यह ~ जो जियत रही हे ३७६४।
थोरे १ थोडा : कहत समुझियत ~ ३६००। २ थोड़े ~ जल उतरानी ३३७। ३ थोडे ही, नही : चपक वन लागत चित ~ ३८५४।
थोरेक थोडा-सा : ~ ही वल सौं छिन भीतर दीनौ ताहि गिराइ ४१०।
थोरैं १ थोडे : मनै ~ हा दिन ना १६८९। २ थोडे से : सुत वाँधति माखन दवि ~ ३४४। ~ **थोरैं** थोडा-थोडा : भूलें ~ — २८३९। ~ **मैं थोरौ** थोड़े मे थोडा : जानि लियो ~ — ४१२८।
थोरैंही थोड़े मे ही : ~ गरवानी २८२६।
थोरैं थोडे : ~ दिन अति भए सयाने १५५६।
थोरैहि थोडे मे ही : ~ जल उतरानी २५९२।
थोरो, थोरौ १ थोडा : तेरे गोरस वहुत भयो रा मेरै ~ १४९१। २ थोडे ही : कह्यौ सूर मैं ~ १/१८६। ~ **थोरौ** थोडा-थोडा : हमहुँ कृपा तिहारी तै कछु ~ — भरमत ४०२२।

द

दके दग हुए, टरे : वन मोहन आए नहि ~ ३१०९।
दड १ दण्ट : कनक ~ आपुन कर धरिहें १६१९। २ दण्डों : चापनि कर भुज ~ रेख गुन ११९६। ~ **पर्‌यौ** दड पड गया (लज्जित हो गया) : मदन तन ~ — ६३३।
दंड एक एक दण्ट (६० पल = २४ मिनट) : ~ वरषें मन लाई ९४३।
दडक वन विध्याचल के दक्षिण मे एक प्राचीन वन जहाँ वनवास काल मे राम ने निवास किया था : ~ आए छल करिकै ९/५७।
दडकावन दण्टकारण्य को : तहँ ते चले ~ को सारा० २५४।
दडत दड देते हुए : मोहिं ~ धरम दूत हारे १/१२०।
दंडवत दण्टवत, (साष्टाग) प्रणाम : करि ~ विनय उच्चारी ७/२।
दंडी दटीधारी सन्यासी : अर्जुन धरि ~ को रूप मारा० ८०४।
दंडौं दट दूँगी : ~ कामदट घर पर कौ १९८३।
दँडौत दण्टवत, प्रणाम : तातैं तुमकौं करत ~ ५/४।
दंत दाँत : लै छिति ~ अगाऊ २२१। **अंगुरीनि** ~ **दै रह्यौ** दाँतों तले उगली दवाए : ये करे ई कौ मैं आन — ~ — ४८३। △ ~ तृन धरिकै गिडगिडाकर : ~ — यौं परिवार सिधारौ ९/११५।
दतनि दाँतों से : तृन ~ धरि चालौ ६१३।
दँतली दँतुलियाँ, दूध के दाँत : दुहुँधा है ~ भई १२२।

दंतबक्र शिशुपाल का भाई ~ सिसुपाल जौ भए ७।
दंतहु दाँतों से तृन ~ दहि गहति ६२३।
दँतियाँ दँतुलियाँ, छोटे दाँत बिहँसत उघरि गई ~ २८८।
दँतुलि (बच्चों का) छोटा दात . कबहि ~ द्वै दूध की ७४।
दँतुवन दातून • उठि बैठे ~ लै आई मारा० १७०।
दँतुवनि दातून . झारी जल, ~ दियौ १९६५।
दंद द्वंद्व, पीडा • जोग जुगुति दुख ~ ३११३।
दंदना झंझट . तुमसौं कहति बातैं मैं ही कियौ ~ ११९५।
दंदहि द्वंद्व, पीडा करन सकल तेरै दुख ~ ८०३।
ददा दे० = दद।
दपति १ पति-पत्नी ~ होड करत आपस मैं ९८। २ प्रिया और प्रियतम ~ कुजद्वार खरे २४७१।
दंभोलि वज्र मत्त मातग बल अग ~ दल ३०७१।
दइ दी : गगन गरजि घन ~ दामिनी दिखाई ३३१७।
दइस दया जननी ~ करन हरि आए परि० १/१५३।
दई दी है जे वृषभानु ~ ६१२।
दई पुं० १ दैव, ईश्वर • क्यौं सहै ~ ५३। २ ईश्वर की जुवती हे सब ~ सँवारी २०४७। ३ हे विधाता ~, फिरै क्यों राघवराई ९/५१। ४ दैव वश . यहै बहुत कछु भई ~ २४२६। ५ हे दैया • (देवकी) ऐसी कहुँ देखी न ~ ८। ~ **पर्‌यौ** दैव पीछे पड गया है, किस्मत ही खराब है • ~ — है खोज हमारै ५९५। ~ **का घाला** दई का मारा, अभागा जननी कहति ~ — १००३। ~ **कौ खोयौ** गया बीता निपट ~ — ३५४०। **क्रि० स०** १ देता हूँ • भग सहस्र मैं तोकौ ~ ६/८। २ दे दी तब तैं कन्या रिषि कौ ~ ९/३। ३ प्रदान कर दिया है : कस ~ यह लोक बडाई ८८५। ४ दी थी माल ~ मोहिं फूलनि की ३९१०। ५ दी हुई बिपत दबार ~ सा० ल० ५१। ६ दिया जान न ~ स्याम सुन्दर पै ८०६। ७ सौंप रहा हूँ अब आजु तै आप आगैं ~ १/५१। ८ (निशान लगा) दिया है ~ वृषभानु सुता रे २६३९। ९ डाल दी है आँखिनी धूरि ~ १/५०। १० पटी जा छिन तैं तू ~ दिखाई परि० १/९९। ११ डाली, दी दृष्टि न, रोम ~ रोमन प्रति १७८४।
दए १ दिया हमकौं बिछुरि बहुत दुख ~ ४२००। २ दिये रहने पर . पलक कपाट ~ २२९८। ३. दिये हुए माथै छत्र ~ ३७२१। ४ देने से छाँडिहु ~ परत नाहिं डगरौ १४६४। ५ छेद दिया . खेतल सूल ~ तिन माहिं ९/३। ६ चुभो गडाये • स्यामा नख सायक जु ~ २६४२।
दकार दु ख सखि मेटि सकार ~ दयौ री ३३१९।
दक्ष प्रजापति की तनया पति ता सुत नार दक्ष प्रजापति कीपुत्री (सती)के पति (महादेव) के पुत्र (गणेश) की नारी, सिद्धि ~ — गई सारा० ९५८।
दगरो देर, विलब • अब होत है ~ १४६४।
दगा धोखा, छल कपट। △ ~ **खात** धोखा खाता है। सोवत कहा चेत रे रावन, अब क्या — ~ ९/११४।
दगाइ धोखा, छल कपट दै निजु गए ~ ३१८६।
दगाई धोखा, छल-कपट . आई उघरि कनक कलई भी दै निज गए ~ २७१८।
दग्ध दुखित, पीडित, अभिशप्त साप ~ है सुत कुबेर कै ३८६।
दच्छ दक्ष प्रजापति जिनसे देवता उत्पन्न हुए थे : मनहुँ ~ रिषि -साप निवारन परि० १/९२।
दच्छहि दक्ष से : ~ पूछ्यौ जाई ४/५।
दच्छिन पुं० १ दक्षिण दिशा। २ दक्षिण मे : ~ राज करन सो पठाए ९/२। **वि०** १. दक्षिणी • ~ चीर तिपाइ कौ लहँगा २९०१। २ दाहिना ~ कर द्रुम टरियाँ ४७०। ३ दाहिनी, दायी . वाम भुज रवनि, ~ भुजा सखी पर २१७०।
दच्यौ गिरा, गिर पडा आनि धरनि पर आप ~ री ६०६।
दक्ष दक्ष, एक प्रजापति जिनसे देवताओ की उत्पत्ति हुई थी। सती इन्ही की पुत्री थी। इनको शिवजी के गणो ने मारा था : ~ सिर काटि ४/५।
दछिन दाहिनी, दायी : भुज ~ कीन्ही मथन ४/११।
दछिना दक्षिणा • ~ कछौ सो देउँ मँगाई ३४११।
दढी दग्ध, जली • जनु तट गगा अनल ~ ९/१७०।
दढ्यौ जला दिया है पुर पथहुँ अनल ~ ४००२।
दतवनि दातून • ~ लै दोउ करी मुखारी ४०७।
दतुवनि दातून ~ करि जु गए दोउ भाइ ५४७।
दतौनी दातून : माता दुहुँनि ~ कर दै ६०९।
दत्त दत्तात्रेय . ताकैं भयौ ~ अवतार ४/२।
दत्तात्रय दत्तात्रेय . कही कथा ~ मुनि की सारा० ८४३।
ददा दादा, बडा भाइ देखत यह बिनोद धरनी धर, मात पिता बलभद्र ~ रे १६०।
दधि १ दही तुमको माखन दूध ~ २०९। २ मक्खन देखो माई दधि-सुत मैं ~ जात १७२। ३ समुद्र • दे० दधितिया, दधिसुत।
दधि कौ सुत सुत तासु आसन (उदधि) समुद्र के पुत्र (कमल) के पुत्र (ब्रह्मा) का आसन (हस) जीव, प्राण • ~ — सा० ल० २१।
दधि काँदौ १ जन्माष्टमी के समय का एक उत्सव जिसमे लोग परस्पर हल्दी मिला हुआ दही छिडकते है • अरु ~ सूत ४०। २ दही का कीचड भवन मच्यौ ~ ३२८।
दधि तिया समुद्र की पुत्री, गगा दधि सुत मैं ~ दिपत सी सा० ल० ६१।

दधि दानी दही का कर लेने वाला सूर स्याम ~ कहि कहि १६०६।

दधि-रिपु मथानी · जब ~ हरि हाथ लियो १४३।

दधि-सुत १ मक्खन, नवनीत . उर पर है ~ कैं बिंदु २८३। २ उदधि सुत, मोती . ~ जामें नद दुवार १७३। ३ उदधि सुत, कमल · ~ दीपन तज मुरझानौ सा० ल० ९५। ४ उदधि सुत, चन्द्रमा · तीन विधि ~ उतारत सा०ल० २०। ५ (चन्द्रमा) मुखड़ा · राधे ~ क्या न दुरावति १७१४।

दधि सुत अरि भख सुत सुभाव चन्द्रमा के शत्रु (राहु) के भक्षण (सूर्य) के पुत्र(कर्ण) का स्वभाव (दानी), सखी, सहेली ~ चल तहाँ उताइल आई सा० ल० ८७।

दधि-सुत-गृह (उदधि) समुद्र के पुत्र (अमृत) का घर, ओठ विम्ब विचित्र रेख ~ रेसम छद घन ऊपर आज सा० ल० ९५।

दधिसुत दृष्टि दधि सुत (मोतियों) आँसुओं भरी दृष्टि ~ मेलि दधि सुत मैं २७४६।

दधि सुत धरन रिपु (उदधि) समुद्र के पुत्र (चद्रमा) को धारण करने वाले (शिव) का शत्रु, काम ~ दिन चाव सा० ल० १।

दधि सुत धर रिपु चद्रमा को धारण करने वाले (महादेव) के शत्रु, कामदेव ~ सहे मिलीमुख सा० ल० ४४।

दधि सुत पति दधि सुत=कमल=कमला=लक्ष्मी के पति, विष्णु (श्याम) ~ सौं क्यों न विचारी २७४६।

दधि सुत बदनी चद्रमुखी ~ दधिहि निवारो २७४६।

दधि सुत वाहन १ कमल वाहन है जिसका, ब्रह्मा, ज्ञानी, शुकदेव, तोता : ~ सुभग नासिका सारा० ९४७। २ समुद्र के पुत्र (जालधर) का वाहन, क्रोध, कोप · ~ वचन सुनत तुव सारा० ९४७। ३ समुद्र से उत्पन्न (जल) का वाहन, शख जैसी ग्रीवा . ~ ~ देख्यो सारा० ९४७।

दधि सुत बेद उदधि से उत्पन्न (चद्रमा) से चौथा ग्रह (बृहस्पति) जिसे जीव भी कहते है, जीव ~ सेच अपनो कर सा० ल० ६।

दधि सुत रिपु पिता चद्रमा को धारण करने वाले (महादेव) के शत्रु (कामदेव) प्रद्युम्न के पिता, श्रीकृष्ण : ~ जानि मन सा० ल० १००।

दधि सुत रिपु भख सुत स्वभाव चद्रमा के शत्रु राहु के भक्षण (सूर्य) के पुत्र (कर्ण) का स्वभाव (दानी), सखी . ~ पै इत उन मोहिं बुलाई सा० ल० ६२।

दधि सुत सुत कमल के पुत्र, ब्रह्मा कीनौ ~ तैं सजनी सा० ल० ७८।

दधि सुत सुत पतिनी (उदधि) समुद्र के पुत्र (कमल) के पुत्र (ब्रह्मा) की पत्नी (सरस्वती) वाणी, बोली, बात · ~ न निकसत सा० ल० ६।

दधि सुत सुत वाहन समुद्र के पुत्र (कमल) के पुत्र (ब्रह्मा) का वाहन, हस : ~ हित सजनी सा० ल० ७२।

दधि सुत सुत सुत के हितकारी उदधि के पुत्र (कमल) के पुत्र (ब्रह्मा) के पुत्र (वशिष्ठ) के हितकारी (अग्निदेव) आग ~ सा० ल ६४।

दधि सुत सुत सुत सुत अरि भख उदधि के पुत्र (कमल) के पुत्र (ब्रह्मा) के पुत्र (कश्यप ऋषि) के पुत्र (सूर्य) के शत्रु (राहु) का भक्षण, चन्द्रमा ~ मुख सा० ल० ३१।

दधि-सुता-सुत-अवलि समुद्र की पुत्री (सीपी) के पुत्र (मोती) की माला : ~ उर पै २०८६।

दधिहि दधि (जल, आँसू) दधि सुत-बदनी ~ निवारौ २७४६।

दधीचि एक वैदिक ऋषि। इनके पिता का नाम किसी ने अथर्व लिखा है और किसी ने शुक्राचार्य। इन्होंने देवताओं की रक्षा के लिए वज्र बनाने के उद्देश्य से अपनी हड्डिया दान मे दे दी थीं दिया ~ हाड लै आन ६/५।

दनुकुल दैत्यकुल . सरज प्रभु ~ दहन ३०९०।

दनुज १ दक्ष की कन्या दनु से उत्पन्न असुर, राक्षस : आप ~ संग जोरी ६०४। २ राक्षसों के रिस लगा ~ उर सालहिं ४१८२। ३ दानवों का सहस वर्ष लौं जल मैं जूझे कियो ~ सहार सारा० ४६। ४ हिरण्यकशिपु को . नर केहरि ~ दह्यौ १/६।

दनुज-कुल-दहन राक्षसों के कुल को नष्ट करने वाले, कृष्ण . ~ ता तन निहारे ३०७५।

दनुज-दवन राक्षसों का दमन करने वाले . ~ विरुदावली १६१८।

दनुजपति को अनुज प्यारी राक्षसों के स्वामी (रावण) के भाई (कुंभकर्ण) की प्रिया, निद्रा ~ गई निपट बिसार सा० ल० २३।

दनुज-सुता १ दानव का पुत्री, शर्मिष्ठा ~ निहिं तै न निहारी ९/१७४। २ दानव की पुत्री, पूतना को . ~ पहिलैं सधारी २९२६।

दनुजेन्द्र इष्ट सहाइ रावण के इष्ट (महादेव) के सहायक, नदी ~ सा० ल० शेष १०।

दनु नारि राक्षसी का, पूतना का पय पीवत ~ ९५४।

दपट लपक कर ~ झपटे मोर २८३१।

दव अग्नि . कुटिल वचन ~ दाहन १/२१०।

दबकि दबक कर, डर कर : लपक लीन्हौ धाद, ~ उर रहे ढोउ ३०५६।

दवार दावाग्नि : दिपत ~ दई सा० ल० ५१।

दवि १ दवकर ~ मरतीं तिहि काल ३७३८। २ छिप, दब जलमीन रहे ~ १२०५।

दवै दबे यह गरल दरबै क्यों ~ परि० १/४१।

दम (साम) दाम : सम ~ उनही सग पधारे १/२९० ।

दमक चमक, चमचमाहट · दसन ~ मोतिनि लर ग्रीवा ४५१ ।

दमकत १ चमकती है अरुण अधर ~ दशनावलि सारा० १७८ । २ चमकते हैं ~ दसन अरुन अधरनि पर १४९८ ।

दमकति १ चमकती है ~ दूध दँतुलिया बिहँमति ९३ । २ चमक रही हो जनु घन ~ दामिनि १०५५ ।

दमकि क्रि० अ० चमक कर नैंकु ~ दुरि ओट लई सी २११३ । क्रि० स० झपाटे मे पकड ~ लोन्हौ गिरह बाज जैसै ३०७९ ।

दमत १ दमित करते हुए, दवाते हुए नाथ जिय ~ उद्वेग पावै ४२१३ । २ ग्रसा हो राहु वदन बिधु ~ २९११ ।

दमन दवाने, नष्ट करने की क्रिया पर-धन-रमन ~ दावागिनि २८२६ ।

दमरी दमडी, पैसे का आठवाँ हिस्सा । ~ **पूत कौ** दमडी का पुत्र, बुरी तरह धनासक्त . लपट धूत ~ — १/१४० ।

दमरो दमडा, पैसा · लपट धूत पूत ~ को १/१८६ ।

दमाल बीडा : पान ~ दूसरौ माँग्यौ परि० १/१५३ ।

दमि दमन कर के, नष्ट करके इमि ~ दुष्ट देव-द्विज मोचन ९/१५७ ।

दमी दमन कर दिया, नष्ट कर दिया : नाग सु नाद ~ १२२८ ।

दमोदर विष्णु, श्रीकृष्ण : जाइ ~ सोइ ८४१ ।

दयन देने वाला . त्रिविध पवन मन हरष ~ २३८७ ।

दयानी दयालु : नैकु न दया ~ २८२६ ।

दयारत दया मे रत हो कर, दया पूर्वक : प्रथम कह्यौ जो बचन ~ १/६ ।

दयाल दयावान्, दयालु : दीनानाथ, ~ मुरारि ७/२ ।

दयालुहि दयालु को : दै ~ बाँह २४४९ ।

दयासील दयाशील, दयालु, कृपालु ~ सब सोहित मानै ३/१३ ।

दये दिया . सारथी पाइ रुख — सटकारि हय ४२२१ ।

दयौं दिया हाँक तिनका ~ ३०७५ ।

दयौ १ दिया : हरि जू तिहि यह उत्तर ~ ४२०६ । २ दिया गया है वसन अचल ड्योढो सघन कोटहि ~ २५७३ । ३ डाल दिया तहाँ जाइ कै डेरा ~ ९/३ । ४ छेद दिया · रिषि के दृगनि सूल हौ ~ ९/३ । ५ चढा दिया था : ताहि सूल पर सली ~ ३/५ । भेजा है, पठाया है · उन यह मतो ~ ३६२८ ।

दर १ जगह, स्थान यच्छ्वादिक इद्री ~ जानौ ४/१२ । २ द्वार, दरवाजा . को जैहैं इन कै ~ ६७७ । ~ **दर** १ जगह जगह जसुमति परस गई सब ~ — ७९९ । २ द्वार-द्वार ~ — लोग लागि लिए डोलति १/४० । ३ स्थान स्थान से . काम काज तैं आवत ~ — २०७३ ।

दरकानी फट गई, मसक गई · पुलकित अग अगिया ~ १४४१ ।

दरकि १ दरक, फट : ~ न गई वज्र की छाती ३१३५ । २ दरक गई, मसक गई : ~ कचुकि तरकि माला ११४५ । ३ फैल कर, बिखर कर ~ चले लहुरे बडे परि० १/४५ ।

दरकी दरक गई, फट गई, मसक गई . कहूँ ~ कुचनि पर अँगिया नवेलि २०१० ।

दरक्यौ फट गया · सूरदास बिछुरत नहि ~ ३५६५ ।

दरजिनि दर्जिन ~ ह्वै जाउँ निरखि १०७५ ।

दरद १ दर्द, पीडा । २ तरस, दया · माई नैंकुहू न ~ करति ३४८ ।

दरदरात दडदडाहट की आवाज करते हुए ~, घहरात प्रबल अति ९३१ ।

दरन दलनेवाले, नष्ट करने वाले : जन सताप ~ १/१८२ ।

दरनि दलने वाली, नष्ट करने वाली . दारौ ~ अरुन अति सोभा परि० १/१३१ ।

दरप दर्प, अभिमान · मव दुख ~ दुरानौ सा० ल० १०० ।

दरपन दर्पण, आईना ~ लै कजराहि सँवारत २१८९ ।

दरपनहि दर्पण मे पिय सँग कै अग चिह्न जे ~ निहारै २६५१ ।

दरबान द्वारपाल, दरवान : बलि द्वारै ~ भयौ १/२६ ।

दरबार १ राजसभा, दरवार : देखि ~ ५८४ । २ दरबार मे श्रीपति कै ~ १/२३१ । ३ द्वार पर, दरवाजे पर : सकल ग्वाल ठाढे ~ ४०३ ।

दरबारी सभासद : दास ध्रुव कौ अटल पद दियौ, राम ~ १/१७६ ।

दर भूषन द्वार का भूषण (किवाड) पट, वस्त्र : ~ खन खन उढाइ कै मा० ल० ३ ।

दररात फटने की आवाज कर रहे हैं : घहरात, गररात, ~ हररात ८५३ ।

दरवान द्वारपाल : पौरि तै दौरि ~ ९/१२९ ।

दरवाना दरबान, द्वारपाल : भागे ~ ९/१३९ ।

दरश=दरस दे० ।

दरशायो, दरशायौ दिखलाइ देने लगा : तापिन तैं सगरै या ब्रज मे रमा रूप ~ सारा० ४०६ ।

दरशावैं दिखला रहा हो मानो रीझ मधुप धरणी को रस पराग ~ सारा० ३९९ ।

दरस पु० १ दर्शन सूरदास प्रभु तुम्हरै ~ कौं १५५ । २ दर्शन से : सुरसरि ~ कटत अघ भारे १/९४ । ३ दृश्य नैन ~ देखन कौ ४/१२ । क्रि० स० १. दिखलाई पडा . बहुरि सोच पर्यौ ~ दच्छिन मृगमाला २९४४ । २ देखने मे : ~ मलीन दीन दुरबल १/१२१ । ~ **दिखायौ** दर्शन दिया . सूर स्याम गोपिनि लायक ~ — ११४० ।

~ लहनौ देखि लिया, जान लिया : मनके भाव ~ — हरि ९०३।

दरसत १ दिखाई पडता है : बाहर देखि मनोहर ~ ३७६१। २ दिखलाई देनी, दीखनी : जैसैं जलहीन मीन तट ~ है १३६७। ३ दिखाई देते, दीखते · सपने नहिं ~ ४६८। ४. देखते हो : ~ ताहिं मिटै दुदर दये ३/१३। ५ देख कर . जैसें मीन किलकिला ~ १/१०७।

दरसति देखती है · गोपीजन मिलि ~ १८०६।

दरस-दंपति युगल रूप के दर्शन : ~, भजन-सार गाऊँ १००६।

दरसन १ दर्शन : ~ देहु मुरारी १/१०९। २ दर्शन के : स्याम तव ~ कारन व्याकुल परे २७४२। ३ दर्शन से ~ सुखी दुखी अति सोचति ७। ४ दर्शन के लिए . तानन ~ दीठ २३७२।

दरस-परस देखा-देखी, संग-साथ, भेंट-समागम दीन बचन, सतनि-सँग ~ कीजै १/७२।

दरसहि दिखाई देते हैं देखत सु ~ फूल परि० १/५६।

दरसाइ १ दिखलाई देती है : जुवति कोट ~ सारा० ९५२। २. दिखाई पडने लगता है : अबै कौं सब कुछ ~ १/१। ३. दिखाते हैं, प्रत्यक्ष करते हैं · आतुर दुरि ~ २२०५।

दरसाई १. दिखलाई देता है : मुकुर माहिं ज्यौं रूप, आपनै सम ~ ४२९४। २ दिखलाई देने लगता है अँधरै को सब कुछ ~ सारा० १। ३. दिखाया रस स्रवत सुधा मे कामधेनु ~ सारा० ८६४।

दरसाउ देखा : सपनेहुँ नहिं जास्यौं ~ १७०१।

दरसाऊ दर्शन : आपुन द्वार दियो ~ २०८४।

दरसाए १ दिखाई पडे · ठाढे इक ~ ६३१।

दरसाने दिखाई पड़े : तीनहुँ लोक वदन ~ परि० २/१०।

दरसायौ १ दिखाया : पूरन नेह प्रगट ~ १६७८। २. देखी गई तिनकौं रजस्वला ~ ६/५। ३ दिखाई दिया : पै मृगछौना नाहिं ~ ५/३। ४ दिखलाई दे रहे हो ऐंडात गात ~ २५११।

दरसावत दिखाई दे रहा है · सोभा सुख ~ सा० ल० १३।

दरसावति दिखाती हो : विष - लाडू ~ लै पुनि १५८३।

दरसावहु दिखलाने से कैसैं जियै तरनि ~ ३८७१।

दरसावै १ दिखाई दे रही है : सो गुन सी ~ सा० ल० १५। २ दिखाई देता है आतम तव घट-घट ~ ३/१३।

दरसाहि दिखाई पडता है, दृष्टिगोचर होता है उनकौं सकल लोक ~ ९/२।

दरसि दर्शन करके ~ चरन परसाऊ २२१।

दरसीं देखा निठुर रूप ~ २९८५।

दरसी दार्शनिक, वादी यह अद्वैत ~ रंग ३४१४।

दरसै दिखाई पडे तव कोमल ~ जदुराई ३१०९।

दरसैं १ दिखाई पड रहा है भय उपजि जमलोक ~ १/८८। २ दिखाई पडे इनकौ वदन प्रान ~ जिनि १६३३।

दरसैहौं दिखाऊँगी सूर कही राधा के आगैं कैसैं मुख ~ १७२१।

दरसौं दर्शन देता हूँ : जोगी कौ जोगी है ~ १५६३।

दरस्यौ १ देखा, दर्शन किया जब ते कमल वदन उन ~ २३२८। २ दिखलाई पडा मनहुँ निकट केहरि ~ ३८५०। ३. दिखलाई पडने लगे आतम रूप सकल घट ~ २/३३।

दरार फटने या दरकन के बाद दो दलों के बीच पडा हुआ अंतराल कंचन कुंभ ~ लई री २६६४।

दरि १ फटकारती निदरि ~ हौं रही सबका २०४५। २ फाड कर, दल कर उर ~ सुरसाई १/६।

दरी खोह मे पाप पहार ~ १/१३०।

दरे मारने जम जस इन्हैं ~ तैं परि० १/१७३।

दर्पन दर्पण, आईना : देखत ~ माहीं २/२५। ~ **मैं झाईं** दर्पण की छाया : कुंडल लोल कपोलनि झलकत ज्यौं ~ — १३७।

दर्वा = दुर्वा दे०।

दर्स दर्शन दीजै सूरदास ~ भक्तनि बुलाइ कै ३१।

दल १ पखुडी, पत्ते . नैन कमल ~ विसाल २०५। २ सेना . कौरव ~ नासि नासि १/२३।

दलकार ललकारता है गरजत गगन गयन्द गुंजरत, दल दादुर ~ ३३०५।

दलकारि ललकार (कर) · उठ्यौ ~ ३०२४।

दलकि भयभीत करके, डरा कर सूरजदास सिंह बलि अपनौ, ~ सृगालहिं ४१८२।

दलन दलन करने वाले . मधु कैटभ मथन मुर भौम केसी ~ ४२१३।

दलना संहार करने वाले कृष्ण को . अखिल असुर के ~ ५४।

दलनि १ पखुडी को नलिनी ~ दूरि करि उर तें ३२९२। २. दलों से, पखुडियों मे : कुंज कोमल कमल - ~ सेज्या रची ११९१। ३ दलों, पत्तों मोती मानौ कमल ~ पर १५१।

दलमलहि रगड दो ~ री बरन बैरी २४५३।

दलि क्रि० स० १ तोड-ताड कर निगम द्रुम ~ साह १/५६। २ संहार करके दुष्ट ~ सुख दियौ सतनि ३०९१। क्रि० अ० १ कुचल (जाती है) · जैसें दमन जीभ ~ जाई ९५०। २ कुचल जाने पर : रसना द्विज ~ दुखित होति १/११७।

दलि-मलि नाश करके, मार कर भीर परै रिपु कौं ~ ९/१५२।

दलिय दल कदलि ~ जुग जघा परि० १/६३।
दली १ दलित किया मदन नृपति की चमू ~ परि० १/७९। २ रादी • चरन ममकि वरनी ~ ५८९।
दलौ नाश करो दनुज अब ~ २०५३।
दव १ अग्नि बिनु पावक ~ लाई ३९३८। **२** दावाग्नि, जो वन मे पडो की रगड से सहसा लग जाती है द्रुम मनहु वेलि ~ टाढी २५३५। ~ **लाइ** आग लगा कर मरन भलौ ~ ९/४७। ~ **लावत** आग लगती है उर सुलगि-सुलगि ~ — ४०००।
दवन दमन करने वाले मन रवन दुस के ~ जानि लीन्हौ २०६१।
दवरितु ग्रीष्म ऋतु या ब्रज तैं ~ न गई परि० १/१५२।
दवा १ आग गोकुल ~ लगाइ ५८९। **२** दावाग्नि से ~ उद्धरन ३०८१। **३** आग की लपट या तपन : जोग अगिनि की ~ देखियत ३०१८।
दवानल दावानल, दावाग्नि : देव ~ कौ अँचयौ १/२६।
दवारि दावाग्नि, दावानल (दे० दव) : दारुन दुख ~ ज्यो तृन-वन ९/५२।
दशकधर = दसकंधर दे०।
दशन दाँत : ज्यो गजराज काज कै औसर औरे ~ देखावत २९९३।
दस दस। ~ **अरु आठ** अठारह ~ — पदम वनचर लै ९/२३३।
दसएँ दसवाँ, दसवें • ~ मास भयौ पूत २८।
दसकंध रावण जो विश्वश्रवा और कैकसी का पुत्र था : जहाँ वसै ~ ९/७५।
दसकंधर रावण ने . ~ मारीच निसाचर ९/५७।
दसक दस एक, लगभग दस • वर्ष व्यतीत ~ जब होइ ३/१३।
दस चारि चौदह ~ पठै मर सॉधै १/६०।
दसजु दस : बालक ~ भये बाके सारा० ८४८।
दस दोइ बिद्रुम बारह अधर रूपी मूगे ~ दामिनी घट २४६८।
दस द्वै बारह यह द्वादस वहऊ ~ कौ।
दसन १ दाँत : धरी ~ की कोटी १६४। **२** दाँतो से नैन अरुन, बिकराल ~ अति ७/४। **३** दाँतों की • तडित ~ छबि हेरि १७५७। ~ **कुद अनुहारी** दाँत कुन्द पुष्प के समान हैं • ~ — ११९७।
दसन गौरी नद कौ (गौरी नद) पार्वती के पुत्र (गणेश) का दाँत (जो सख्या मे एक है) १ ~ लिखि सुबल सबत पेख सा० ल० १०८।
दसनन दाँतो को निज कृत समुझि वेनु ~ हति ३७४२।
दसननहि दाँतों की अधर बिद्रुम छवि ~ दामिनी १०४२।
दसननि १ दाँतों से • ~ जाइ अर्यौ ७/२६। **२** दाँतो मे : हा हा करि ~ तृन धरि धरि २१०३। **३** दाँतो की अरुन अधर ~ दुति निरखत १७५६। **४** दाँतो से : भौंह चढाइ अधर ~ दँमि २८२३।
दसन-बसन दाँतो का आवरण, होंठ . ~ खडित मुख मडित ११९९।
दस-बीसक लगभग दस-बीस बेसन कै ~ दोना ३९६।
दसन राज द्विजराज, द्रोणाचार्य ~ जो महारथी सा० ल० ७४।
दसना दाँत • अलप-अलप ~ ९७।
दसनावलि १ दाँतो की पक्तियाँ : अरुण अधर दमकत ~ मारा० १७८। **२** दतावली की अरुन अधर ~ छबि १११८।
दसनावली दाँतो की पक्ति . अधर बिद्रुम बज्रकग दाडिम किधौं ~ ४१८६।
दसम दसवाँ, दसवें ~ मास पुनि बाहर आवै ३/१३।
दसमुख दस मुख वाले रावण के : ~ बध-विस्तार १/२१५।
दसरथ अयोध्या के सूर्यवंशी राजा अज के पुत्र, दशरथ ~ नृपति अयोध्या राव ९/१५, ~ नृपति हुतौ रघुवसी १९८।
दसरथ-तनय दशरथ-पुत्र, राम : परम गभीर, रनधीर ~ ९/१२९।
दसरथ-तात-सत्रु दशरथ के पुत्र का शत्रु, रावण . ~ कौ भ्राता परि० १/७०।
दसरथ-तात-सत्रु कौ भ्राता कुभकर्ण : ~ प्रिय सुता सु कैसै पाऊँ परि० १/७०।
दस सिर दस सिर (वाला, रावण) . ~ बीस भुजाज २२१।
दससीस रावण के पौरि त दौरि दरवान, ~ सौ जाइ सिर नाइ ९/१२९।
दसहि वि० दस . बहुत होहुगे ~ बरस कै १५६२। **स्त्री०** दशा/स्थिति को रसना जानै न नैन ~ ३५३४।
दसहुँ दसों : हय-गय सरिस समीर ~ दिसि ८६७।
दसहु दसो • ~ दिसा-तन दृष्टि पसारी ११०५।
दसहूँ दसो : ~ दिसा भयौ परिपूरन २८६०।
दसहू दसों सीस आकास अरु स्रवन ~ दिसा ४१९८।
दसा १ दशा, हालत, स्थिति यह अक्रूर ~ जौ सुमिरै ४१६०। **२** (बुरा) हालत, दुर्दशा नैननि ~ करी यह मेरी ३३१। **३.** सुधि • प्रेम मगन तन ~ बिसारे १/२४०।
दसेंद्रिय दसो इन्द्रियाँ • ~ प्रेरक शमनकारी ३८६६।
दसै दशमी . ~ दसौं दिसि सोधि कै २९१५।
दसौं दसो ~ दिसि, बन द्रुमनि देखति १०९७। ~ **दिसि** दसो ओर से, सब प्रकार से सूर सु जीवन सफल ~ — २८२३।

दसौंधी राजाओं की वंशावली या विरुदावली का गान करने वाली एक जाति, भाट : को कहि सकै ~ उनको मारा० ४०५ ।

दसौ १ दस : ऐसी नियनि ~ दिन जीजै ७५९८ । २ दसों कहा नों ~ सीस, बीसौ भुज काटि ९/१०८ ।

दस्तक कर, टैक्स, वसूली : ~ कीजै माफ १/१४३ ।

दस्तार पगड़ी के साथ बांधे जाने वाला कपड़ा . मिथिल पाग ~ २५१२ ।

दह १ कुंड में, नदी के उस भाग में जहाँ पानी बहुत गहरा हो : कूदि पर्यो जमुना ~ ५१७ । २. तट-जल में : लै वसुदेव धँसे ~ सूबे ४ । ~ दह कुण्ड-कुण्ड में : ~ — अमृत मकर क्रीडत मनु १८२६ ।

दहत क्रि० स० १. जलाना, सताता : उमापती रिपु अविक ~ है ४२६३ । २. जलाता है, दग्ध करता है : काम तनु ~ सब घोष नारी ११११९ । ३ जलाती : अतर प्रान ~ हैं ३७८९ । ४ जलाती है : ज्यौं घट अनल ~ तन अपनो ३९८६ । क्रि० अ० १. जलता है, जल रहा है : हृदय ~ जमुना बिनु देखे ३८५० । २ जलाये जा रही है : कछु न सुहाइ ~ दरसन दव २३६५ । ३ जल कर : आपुन ~ अचेत भए क्यौं २८१२ ।

दहति जलाती है, सतप्त करती है : रिसनि मोहिं ~ ६९८ ।

दहन पुं० सहारक : सूरज प्रभु दनुकुल ~ ३०९० । क्रि० स० १ जला : तब दावानल ~ न पायौ ३७९० । २. जलाने के लिए : आए हो ~ कत २६३५ । ~ कियौ है जला दिया है . अग्निबाण कर ~ — एक समुद्र पठाए मारा० २०५ । ~ दह्यो जलाने लगे तुम कत ~ — ३९३० ।

दहपट ध्वस्त, नष्ट भ्रष्ट, चौपट : ~ होइ लका ९/११४ ।

दहपट्टे सर्वनाश/नष्ट-भ्रष्ट कर दिया . तब बिलब नहिं कियो, नबै दानव ~ १/१८० ।

दहरि (यमुना) दह में : फटकि गेंडुरि ~ १४२२ ।

दहि[1]=देहि, देकर तृन दतहू ~ गहहिं ६२८ ।

दहि[2] जल . सुर त्यौं, मदन-अगिनि ~ जेई २५८० ।

दहिए जलिए, भस्म होइए : कै ~ दारुन दावानल जाइ जमुन धँसि लीजै २८६४ ।

दहिनावर्त दक्षिणावर्त, दाहिनी ओर से चारों ओर घूमने की क्रिया या भाव ~ देहि मनु ध्रुव कौं २६१० ।

दहिनैं १ दाहिनी ओर, दाहिने ~ धाह सुनावत ५४१ । २. दायें : तक्यौ न ~ डेरे २२८३ ।

दहिबे जलाने जोग अगिनि ~ को वायो ३५१३ ।

दहिबौ जलना या तन कौ ~ ४०५६ ।

दहियत क्रि० स० १ जलाता है कित बसत रितु ~ ३२३१ । २ जलाते : ते बेला कैसे ~ है १/३०० । ३ जलाये डाल रहा है ~ मदन मदन नायक है २८२६ । क्रि० अ० जलता है, जल रहा है : जरासंध पै पुकारी महा क्रोध मन ~ सारा० ५९६ ।

दहियतु जलाती हैं : इन मिलि कै तन ~ ३१११ ।

दहियै १ जलती है : उर अतर ~ ३२९३ । २. जलता है, जल उठता है यह सुनि सुनि हिरदय ~ १७३४ । ३ जलाइए . अब ऐसी जनि ~ जू २५६० ।

दहियौ दधि, दही मथुरा जानि हा बेचन ~ ३१३ ।

दहिरौ दही का गुरगुरा : दधि-दूध बरा ~ री १८३ ।

दहीं जली हुई है, जलाइ हुई है . कैसें मीनल होइँ पवन जल, पियँ, वियोग ~ ४००३ ।

दही क्रि० अ० १ जली हुई कहि न सकन कछु काम ~ ३००४ । २ जल-भुन रही हो हम को दाहनि आपु ~ १५३६ । ३ जलती रहूँ मिलौं नहीं वह काम ~ २६९२ । क्रि० स० जला दी बिनु काजै रिस देह ~ गी ४१९३ ।

दहीवरा दहीवडा, उडद और दही से बना एक व्यजन : ~ बहुतै परुसाए ९०८ ।

दहुँ दसों पछी तरु तजि ~ दिसि धाव २३३ ।

दहे जलाते रहे, दग्ध करते रहे : बृथा जुवतिनि ~, मेटि प्रनकौं १०२७ ।

दहै क्रि०स० १ जलाना ताहि नहिं ~ ३/१३ । २ जलाता है, जला रहा है : कामिनि मदन ~ २८०५ । ३ जलाती है, जलाये डाल रही है तनहिं कन ~ १७३५ । ४ जलाएगा : अपनी तरप जब ~ मैन २५२४ । ५. जलाते हैं : नरा भस्म तन ~ १६१८ । क्रि०अ० १. जले अगिनि ~ जाकै भय नाहि ३/१३ । २ जलता है : स्रवन सुनि-सुनि ~ १८५७ ।

दहैगो जलाएगा . तब तनु काम ~ २८२६ ।

दहेनी दहेड़ी, दही की हाँडी . माठ मुरकुनी दही ~ परि० १/२५३ ।

दहौं १ जलता हूँ : बिरह बिपाक ~ ३/२ । २ जलती हूँ : इहिं दुख अधिक ~ ३२४७ । ३ जलते है, सतप्त होने लगते हैं : तनु मन जीव ~ १६८६ ।

दहौंगो नष्ट कर दूंगा, मिटा दूँगा . ससि-तन-ताप ~ १९४ ।

दहो नष्ट करो, दूर करो, : हित करि दुखहिं ~ ३८३० ।

दह्यौ[1] दहा, : भोर भयौ उठि मयौ ~ ५२० ।

दह्यौ[2] क्रि०अ० जल गया : रिस तैं तनु ~ ४/५ । क्रि०स० १. जलाना : चाहत हृदय ~ ३७२० । २ दूर किया, मुक्त किया : दुख दुरि ~ २/८ । ३ जला दिया, नाश कर दिया . असनिहिं आगि ~ कुल अपनो १२६३ । ४ दुख दिया : ~ दहिं मारग त्याई १६१८ ।

दाँउ दाँव, मौका, अवसर, चालाकी : ~परयौ जहि नान कै ७८९ । पढ़ए ~ दाँव पढाया, छल-कपट का व्यवहार किया है अब

करति चतुराई जानै स्याम — ~ १७४४ ।

दाँत दाँत । △ ~ **चबात** क्रोध से दाँत पीसते हुए ~ — चले जमपुर है धाम हमारै कौ १/१५१ ।

दाँवरि १ रस्सी . दारुन ~ बाँध्यौ ३७२ । २ रस्सी से, रस्सो मे : बछरा ~ जोरि १६१८ ।

दाँवरिहू दावरी भी, रस्सी भी ~ अब भई पुरानी ३६३७ ।

दाँवरी १ रस्सी भक्त-हेत ~ बँधाई ३९१ । २ रस्सी से : नद की ~ बँधावै १/८ ।

दाइ[1] दाई, वह स्त्री जो स्त्रियो को बच्चा जनने मे सहायता देता है, धाय • लाख टका अरु भूमका सारी ~ कौ नेग ४० ।

दाइ[2] जलन होती है • जागै तै अति ~ ३६७६ ।

दाइ[3] देने वाले . हमरै तुमही चिंतामनि, सब विधि ~ उपाइ ८६७ ।

दाइक देने वाले सब सुख ~ जोई सा० ल० १०४ ।

दाइज दहेज • ~ बहु प्रकार तिन दीन्हौ ४१९२ ।

दाइजौ दहेज : कहुँ सुत-ब्याह कहूँ कन्या कौ देत ~ रोई ।

दाई दाई, वह स्त्री जो बच्चा जनने मे सहायता देती है, धाय : कचन-हार दिऐं नहि मानति, तुहीं अनोखी ~ १६ । ~ **आगैं पेट दुरावति** दाई से पेट छिपाती है : ~-वाकी बुद्धि आज मैं जानी १७२३ ।

दाउँ १ दाँव, मौका हरि हौं बहुत ~ दै हार्यौ ४१२८ । २ दाव, बारी, जीत की कौडी या पाँसा ~ बलराम कौ देखि उन छल कियौ ४१९६ । ३ कुश्ती जीतने का पेच या वद तब हरि मिले मल्ल क्रीडा करि बहु विधि ~ दिखाये सारा० ५२१ । ~ **मारिबौं** दाँव लगाऊँगी : एक ~ — पै मारिबौ ३३७० ।

दाउँ-घात दाँव-पेंच, जीत के उपाय, युक्ति ~ बहुतैं कियौ ५८९ ।

दाउ पुं० १ दाँव : पायौ नीकौ ~ २०४३ । २ दाँव, बदला • लेत आपनौ ~ ५३३ । अव्य० छल करके • झूठैं कहति फिरति हौ ~ १७०१ ।

दाउहि दाऊ, बडे भाई (बलराम) को : ~ कबहुँ न खीझै २१५ ।

दाऊँ दाव (लगेगा) अनत कहौं नहिं ~ १/१६४ ।

दाऊ दादा, बडा भाई, बलराम . मैया मोहिं ~ बहुत खिझायौ २१५ ।

दाख १ मुनक्का, किशमिश : ~ छुहारा छाँडि अमृत फल ४०२१ । २ द्राक्षा, अगूर लौंग नारियर ~ सुपारी १५२८ ।

दाखी अगूर का जिन चाखी रस ~ परि० १/१६२ ।

दाग १ धब्बे . तन के पहिले ~ ६५६ । २ जलन, जलने की वेदना मिलिहैं हृदय सिराइ स्रवन सुनि मेटि विरह कै ~ ।

दागर गैर, दूसरी सब तजि हम भई ~ परि० १/१५६ ।

दागि दाग कर (दिखाकर) : प्रगट भृगी चिह्न ~ २४५३ ।

दागी दाग लगता है ता रस देह न ~ ३९५८ ।

दागे १ दाग लगाये, चिह्न अकित किये जम के कागर ~ ३०९७ । २ जलाये जे पहिले दव ~ २८४८ ।

दागैं दागते हैं, जलाते है जारे ऊपर ~ परि० १/१६८ ।

दाग्यौ १ दागकर अपनाया मोसौं पतित न ~ १/७३ । २ दाग (लगा) दिया • कहुँ अँग सेंदुर ~ २५१९ ।

दाडिम अनार ~ वज्र पक्ति पकज दल २४३६ । ~ **बिगसि हँसी** हँसी खिले हुए अनार के सदृश है जनु ~ ११९६ ।

दाढी जलाई बिरह ~ देह ३८८५ ।

दाढे जले हुए पर ~ लोन लगावै ३६३९ ।

दात १ दान मे देत कनक नग ~ १२ । २ दाता, देने वाला जाकै सखा स्याम सुदर से श्रीपति सकल सुखन कै ~ ४२२५ ।

दाता देने वाला/वाले, दानी . तुम मुक्ता तुमहीं पुनि ~ ९१८ ।

दातार देने वाले, दाता : कहियत इतनै दुख ~ १/२९० ।

दात्र हँसिया : कृषि जु करी लै ~ १/२१६ ।

दादर[1] मेढक • जल जीवक, ~ रटत मोर ९/१६६ ।

दादर[2] उत्पात मेघनि कीन्हौ ~ ८५८ ।

दादि दाद, इसाफ, न्याय : सदा सर्वदा राज राम कौ, सूर ~ नहँ पाई ९/१७ ।

दादुर मेढक : चातक ~ मोर प्रकट ब्रज ३९४२ ।

दादुर रिपु-रिपु-पतिहि दादुर रिपु (सर्प) के रिपु (गरुड) के पति, कृष्ण • ~ पठाई परि० २/५१ ।

दादुल मेढक : ~ जल बिनु जियै पवन भख मौन तजै हठि प्रान ३३५७ ।

दाधा जलन, दाह, ताप, आग : सोच भयौ तन ~ ७०५ ।

दाधे जलाने पर . विवरन भए खज ज्यौं ~ ३२४१ ।

दाधौ क्रि० स० जला दिया : लाज महावन ~ ३१९९ । वि० दग्ध, जो जला हुआ हो हरि मुख रग-सग विथे ~ फिरे जरै २७७० ।

दान १ दान । २ दानपत्र (दान के अधिकार का पट्टा) • तुरत ~ पट्टियायौ १५८८ । ३ दान (कर, चुगी) . तिनकौं ~ लेत हैं हमसो १५५० । △ **दीपक ~ कर्यौ** दीया जलाया दीपकगृह ~ — २७५ । ~ **भराए** दान वसूली के रूप मे भरवा लिया कछु इक ~ — १५२९ ।

दानवदव दानव को अग्नि को . निरखि ~ बुझायौ ४१८० ।

दानवप्रिया सेर-चालीसो कुंभकर्ण की प्यारी (नींद) और चालीस सेर का (मन) के आदि अक्षरों को मिलाने से, नींद ~ सा० ल० ८९।

दानवनि दानवों ने • दियो ~ रिपिहिं पियाह ९/१७३।

दानहि दान : बरपि देहु लिन ~ ४१६९।

दानि १ दान (चुंगी) लेनेवाला • ~ जदुपति सुखदाइ १८६१। २ दानी, दान देने वाला : सकल सुखनि कै ~ १/७८।

दानी १ दानी (कर संग्रह करने वाले) : सूर स्याम जो ऐसैं ~ १५५०। २ दान देने वाले सूर प्रभु अति रूप ~ २३६९।

दाने दान के : तजत नहीं बिनु ~ २६०१।

दानौ दानव : जद्यपि कुल कौ ~ १/११।

दाप १ ताप, जलन, दुख . को जीवै इहिं ~ ३४८९। २ दर्प, गर्व, घमंड : विरह ताप वर ~ हरन कौं २८२६। ३ क्रोध : उनहूँ मोहि दियो करि ~ ९/१७४।

दापक दर्पक, दबाने वाला : जो हैं कस दर्प कै ~ ९८४।

दाबि दाब कर, दबा कर : दसननि ~ नाहिंन चर्यौ परि० २/६६।

दाबे दबाये • बगलनि मैं ~ पिचकारी २९०२।

दाबैं दबाने से • यह गरल ~ क्यों दबै परि० १/४१।

दाम १ माला . मत्र जपत दुरि ~ २७८१। २ रस्सी से • ऊखल बाँधे ~ कठोर ३५७। ३ सिक्का : चाम कै ~ चलावै ३६३९। ४ सिक्कों के . हरि कौं नाम, ~ खोटे ला १/६४। ५ धन, रुपया पैसा : कोउ कहै देहैं ~ ७८९। ६ मूल्य, कीमत, मोल • हमसों लीजै दान के ~ सबै परखाई १०१७।

दामन १ पैसे, कीमत . बिनु ~ की चेरी ३१८८। २ मूल्य के : बिन ~ मो हाथ बिकानी १७१९।

दामनगीर पल्ला पकड़ने या पीछे पड़ जाने वाला, दामन के साथी • इन पापनि ते क्यों उबरौगे ~ तुम्हारैं १/३३४।

दामनि १ एक दमड़ी का तीसरा भाग : इक इक नग सत-सत ~ कौ १९७२। २ मूल्य के, द्रव्य के बिनु ~ मो हाथ बिकानी १०३४।

दामहि रस्सी पर • लटकि मिली ज्यौं ~ २१३०।

दामा राधा की एक सखी . प्रेमा, ~, रूपा २००८।

दामिनि विद्युत, बिजली . घन ~ बरनी लौं काधै ४। ~ **कौंधा लायौ** बिजली कौंध उठी है, चमक उठी है : चारा दिसा चिर्ति किन देखौ ~ — ८६८।

दामिनि पट दर बिजलियाँ (दोनों की हँसी और उनके दुहरे प्रतिबिंब) दस दोउ विद्रुम ~ २४६८।

दामिनिहिं विद्युत को भी, बिजली को भी . पीन बसन ~ लजाए १३८८।

दामिनिहूँ बिजली (से) भी दसन चमक ~ तैं २८८०।

दामोदर जिसके उदर में रस्सी बँधी हो, स्याम (कृष्ण एक बार रस्सी से बाँधे गये थे) • प्रभु यह ~ नाम ३६१।

दाय दावानल का जलन में : निकसी अग्नि नैन तैं तासों भस्म भयो तेहि ~ मारा० ६०६।

दायक देने वाले, दाता : रिधि सिधि मुक्ति अभय पद ~ ८३०६।

दायज दहेज : और बहुत ~ दीन्हे उन ४१९०

दायजो दहेज . कन्या को देत ~ राट मारा० ६७६।

दाया दया, कृपा • ~ करि मोका यह कहियै सारा० १५१।

दायो[१] दूतों को : दूरि करै जम ~ १/६७।

दायौ[२] दया • करति सौति का ~ परि० २/१७४।

दार स्त्री, पत्नी, भार्या नाम सुनाति बदी निर्हि ~ ४/९।

दारा स्त्री, पत्नी : धन सुत ~ काम न आवै १/८०

दारि दाल : चढी चूल्है ~ ९९५।

दारिद दारिद्र्य, निर्धनता : ~ दुख निवारथो ४२४५।

दारिद्र पु० दरिद्रता : ~ नसायौ १/२०। वि० दरिद्र . अति ~ दुखित जब जाने मारा० ८०७।

दारिम दाडिम, अनार . दसन ~ कन २७५१। ~ **नहीं सरि** अनार के दाने उनकी तुलना में नहीं ठहरते • दामिनी ~ — १८१९।

दारु १ लकड़ी, काठ : ~ काटि अलि मदन सचरे ३९६४। २ लकड़ी में : घट घट व्यापक ~ अगिनि ज्यों ३६०६।

दारुक दारुक, कृष्ण के सारथी जो उनके परम भक्त थे : तुम ~ आगैं है देखौ १/२४०।

दारुजात भौंरे के : ~ कैसैं गुन उनमैं ३५८९।

दारुण भीषण, कठिन • ~ तप जब कियो राजसुत सारा० ७६।

दारुन १ कठोर, दुखद . ~ दाँवरि बाँध्यौ ३७२। २ भयकर, दुःसह ~ नाम निसाचर केरी ९/९३। ३ भीषण : ~ कीस सुभट बर मन्मुख ९/१३१। ४ विकट, घोर तब यह दुद बढ़ै अति ~ ४०५१। ५ प्रचंड : उत गिरि दुर्गम इत दव ~ ३७८४।

दारू मदिरा, शराब जलद कमान बारि ~ भरि ४२६७।

दारौं अनार का दाना : ~ दरनि अरुन अति सोभा परि० १/१३१।

दालव एक स्थावर विष • ~ करी न हानि ३८०७।

दालि नष्ट करके, दमन करके अति घायल धीरज दुवाहियाँ नेजहुँ दुरजन ~ ३३१३।

दाव दाँव (बहाने) से लूटन ई टहिं ~ २२०३।

दावन नाश या दमन करने वाले दुष्ट के ~ रे २८।

दावरि रस्सी डोरि ~ देहिं नहिं ३२२८।

दावागि दावाग्नि व्याल जीति ~ पिए ३२०५।

दावागिनि दावाग्नि • पर-धन-मन दस ~ २८२६।

दावानल १ दावाग्नि मनसिज बिथा दहति ~ २९६६। २ दावाग्नि का · ~ दुख टार्यो १/१७।

दावानलहि १ दावाग्नि को ~ पियो १/१२१। २. दावाग्नि से ~ उबारा ३६४०।

दासन दासो . पै हो इनके ~ माहीं ४३०६।

दासनि १ दासा, सेवको . सहाइ करी ~ की १/१६०। २ दासो के, सेवका के : सूरदास ~ हितकर की २६४८। ३ दासो को, भक्तो को ~ सुख उपजाए १/२७।

दासपन दासत्व, सेवा कर्म दोष ~ को मिटि गयो १/२३०।

दासपनौ दासत्व, दास-भाव बदन ~ सो करै ९/५।

दासि १ दासी : इहाँ कौ ~ १६१८। २ दासी के ~ दुख दिन ही बहायो ४१८०।

दासिका दासी जो अनंग बपु, असुर ~ ३९७७।

दासिनि १ दासियो हम ~ की इतनी सहियौ ४०६६। २ दासियो को : निज ~ जनि करहु अनाथ ११८०।

दासी १ दासियाँ अष्ट महासिधि ~ ३९२७। २ कुब्जा, जो कस की सेविका थी और जिसे कृष्ण ने (प्रसिद्धि के अनुसार) अपनाया था . 'सूरज' स्याम सुद्ध ~ को करी सा० ल० १०३। ३ दासी, नौकरानी, सेविका मैं तुम्हरे चरननि की ~ १/२२६। ४ दासी का : बिदुर ~ सुत १/११।

दाह ताप, जलन · अंतर ~ जु मिट्यो १/८९।

दाहक १ जलाना, जलाने की शक्ति · ~ तजि सकत न पावक १/१६३। २ जलाने वाले ई आरत कै दुख ~ १/१९।

दाहत १ जला रहे हो उत मानिनि मन काहैं ~ २८१२। २ जलाता है · बिरह अनग अनल तन ~ ३६७५। ३ जलाती है सुन्न सरीरहिं ~ ३८०९ ४. जलाते हैं . ~ देह चद चदन सुख ३७१६।

दाहति १ जलाती हो, दुखाती हो . हमको ~ आपु दही १५३६। २ जलाती है, सतप्त करती है तनु ~ बिन काज आपनौ २४२२।

दाहन जलाने काहै कौ ~ हौ आए २५०२।

दाहि जला हुई : बिरह अनल कै ~ ३७२१।

दाहिन क्रि० स० जला दिया . पीपर कौ बन ~ १४८८। क्रि० वि० दाएँ, दाहिनी ओर ~ ह्वै बैठे १/२३।

दाहिनी दायी पुहुमि ~ देहि गुफा बसि १६१८।

दाहिने दाये . गए मग बिसरि ~ डरै २३३८।

दाहिनैं दाहिना ओर ~ देखियत मृगमाल २९४६। ~**खर-स्वर** दाहिना ओर गधे का (अमगल) स्वर बाएँ काग, ~ — ब्याकुल घर फिरि आइ ५४०।

दाहिनो अनुकुल बडी बैस बिधि भयो ~ २४८।

दाही जली हुई, दग्ध बिरह अनल अति ~ ३९२४।

दाहु क्रि० स० जलाता है : हेम सुरुचि रिपु ~ ३२३३। पु० जलन, दाह मिटिहै मन कौ ~ ३८८०।

दाहै क्रि० वि० जलने पर मनहुं मृगी दव ~ ३२७९। वि० जले हुए : बिरहानल के ~ ३६२५।

दाहे १ जलाता है ~ हेम जहाँ पानी सर ४२३७। २ जलाती है रैनि दिन मनहु मृगी दौ ~ २८०१। ३ जलाये डाल रहा है . मोकौं रिस ~ २४८७।

दाहौं जला दूँगा तौ तन अपनौ पावक ~ ४३०९।

दिएँ देकर प्रिया कनखियनि ~ २६१७।

दिए क्रि० स० १ देना क्रिया के भूतकालिक रूप 'दिया' का बहुवचन, दिये : अश्वासन करि हेत ~ (दए) ८५२। २ दिया · गुरु सुत आनि ~ जमपुर तैं १/१८। वि० लगाया हुआ गोरोचन तिलक ~ ९९।

दिऐ देने पर/से : ~ लेत नहिं २/६।

दिखराइ १ दिखला सौति ~ मोहि सूर दीन्हौ २४२०। २ दिखा कर मोकौं मुख ~ कै २३२।

दिखराइहौं दिखलाऊँगा हँसि कह्यौ तुम्हैं ~ रूप वह ८/१०।

दिखराई १ दिखला : एक बेर ब्रज जाहु, देहु गोपिनि ~ ४०९५। २ दिखाया . ~ मुख माँहि २५५।

दिखराउँ १. दिखाऊँ · लै ~ ताहि ९/७५। २ दिखाऊँगा . कैसै नाथहि मुख ~ ९/७५। ३ दिखाता हूँ ध्रुव सारग ~ १५५३।

दिखराए दिखाये मुख मैं तीनि लोक ~ १०८३।

दिखरायौ दिखाया माटी कैं मिस मुख ~ २५५।

दिखरावत १ दिखला रहे हैं, बता रहे हैं सूर भजन महिमा ~ ९/५८। २ दिखला रहा है कहा कस ~ इनकौं ५५०। ३ दिखला रहो है हरिहिं लिए चदा ~ १८८। ४ दिखलाते हुए . सूर स्याम मोकौ ~ उर ल्याए धरि प्यारी २४१२।

दिखरावति १ दिखलाती है · लाल लिए कनियाँ ~ ९५। २ दिखाती हो हा हा लकुट त्रास ~ ३५६। ३ दिखा रहे हैं कसौटी कसि ~ १४९।

दिखरावन दिखलाने की क्रिया, दिखलाने के लिए · पूजा बिधि कौतुक ~ ९/२३२।

दिखरावहु दिखाओ, कराओ बारक हमैं दरस ~ ३९१३।

दिखरावहू दिखाती हो मही दहा ~ १४६१।

दिखरावैं दिखावें . टेढे चलि ~ परि० १/१७५।

दिखरावै १ दिखाए · कौतुक करि ~ ९/१५२। २ दिखा सकता है को अब है पौरुष ~ ९/१४७। ३ दिखाने पर भी ज्यों बहु कला काछि ~ लोभ न छूटत नट कै १/२९२।

दिखरावौं दिखाऊँ · ~ मुख बाइ २५५।

दिखरावौ दिखाओ इहै मोहि लाहौ नैननि ~ ९५।

दिखराहीं दिखाता . वरुन लोक ~ परि० १/४८ ।

दिखहार देखने वाला : कार्मो दोसे को ~ १२/४ ।

दिखाइ १ दिखा कर लोक लोम ~ ३७३२ । २ दिखा सुंदर वदन ~ कै हरी नैन कौं तापु ४३१ । ३ देकर मेटौ दरस ~ ९/११० । ४ दिखलाई : तासों रिपि नाहिं देइ ~ ९/३ ।

दिखाई १ दिखा दो : वारक दरस ~ ३६८३ । २ दिखा दी : प्रगट ~ मोहिं २४१३ । ३ दिखा रूप मो मोहिं दीजै ~ ८/१० । ४ दिखाई प्रगट खम तैं दए ~ १/११ । ५ दिखाता हुआ . फेरि चल्यो वारक जौ ~ ९/५९ ।

दिखाउ दिखाओ . हरि मुख आनि ~ ३६१८ ।

दिखाऊँ १ दिखाऊँ, दिखाता हूँ इक इक करि सब तोहिं ~ २४३३ । २ दिखाती (चखाती) हूँ चोरी के फल तुमहिं ~ १९३७ ।

दिखाएँ दिखलाएँ : सूर मरद समि वदन ~ १/२१३ ।

दिखाए १ दिखाने, दिये : बहुरि न दरस ~ ३७९२ । २ दिखाने हैं, प्रदर्शित किये हैं : जे गुन करि तुम प्रगट ~ २४८८ ।

दिखाय दिखा कर अर्जुन को महिमा प्रकट ~ मारा० ८५९ ।

दिखायौ १ दिखाया प्रगट सो रूप ~ ८/३ । २ दिया : बहुरी दरस ~ ४२९६ ।

दिखरायौ दिखलाया : अचल ओट पुहुप ~ २६०३ ।

दिखाव दिखाना है औरै दसन ~ री ३९५३ ।

दिखावत १. दिखाती है, दिखला रही है . अग ~ मरस सुगध ११८० । २. दिखलाता है, दिखा रहा है . मुख न ~ लाजन ४२६८ । ३ दिखाते हैं, दिखा रहे हैं : मातु पिता अति त्रास ~ १९४० । ४ दिखाता . लोक ~ फिरतौ । ५ दिखाते हो काहे कौं अब रोष ~ ३५२८ । ६ दिखाते हुए . गति सुधग मा भाव ~ १०५८ ।

दिखावति १ दिखाती हो . कहा कपट करि मोहिं ~ ११२१ । २ दिखाती हुई : कुम्हिलानी मुख चद ~ देखौ धौं नँदरानी ३६५ ।

दिखावन दिखाने, दिखाने के लिए . 'सूर' स्याम रतिचिह ~ २५४१ ।

दिखावनौ दिखाने के लिए सुरलभ सिलप ~ २८३२ ।

दिखावहि दिखाते हैं . सो फल उनको तुरत ~ ८५६ ।

दिखावहु १ दिखलाओ अपनौ ब्रह्म ~ ऊधो ३८०४ । २ दिखाती हो : पीतांबर न ~ १९५४ । ३ दिखा दो : सारँग तिनिहिं ~ २०९७ । ४ दर्शन दो . वेगि ~ चरन ४०२२ ।

दिखावहू दिखाओ, दो मोहन दरस ~ २८६४ ।

दिखावैं दिखावैं . तोहिं स्याम हम कहा ~ २०६६ ।

दिखावै क्रि० स० १ दिखाती है . लैं पर पुरुष ~ १/४२ । २ दिखाती है मातु ननद घर त्रास ~ १९२१ । ३ दिखाते हैं . उडुगन पर्वहिं ~ ३२१३ । ४ दिखाते हो नैननि भरि न ~ १०१६ । ५ दिखलाना . नैननि क्यौं न ~ ३६५५ । ६ दिखलाना . जैमें गुनी ~ कला ११८० । क्रि० अ० दिखलाई पड़ना है . हरि रथ रतन जर्‌यौ सु अनूप ~ ४०९३ ।

दिखावौ दिखाइए . अब तुम कम नृपति को ~ मारा० ५२० ।

दिखाहीं दिखलाते हैं : कैसे चरित ~ परि० १/४८ ।

दिखिअत दिखाई देना है, जान पड़ना है . सूरदास गाहक नहिं कोऊ ~ गरे परी ३१०४ ।

दिखियत १ दिखाई देना है, दिखलाई पड़ता है निधना फेर कियौ अब ~ ३७१२ । २ दिखाई देना, दिखलाई पड़ना : ~ है तन छीना ३२६७ । ३ दिखलाई पड़ रहा है धुनि ~ नहि नीकी ३६११ । ४ लगता है आपुन फेरि कियौ ~ है ३७०५ ।

दिखैहै १ दिखाई पड़ेगे . सुनि गथे तोहिं स्याम ~ १७३८ । २ दिखाई पड़ेगी, दीखेगी : ललित त्रिभगी छबिहिं ~ ३४०७ ।

दिखैहै क्रि० स० दिखा दो . मैया री मोहिं देव ~ ८९३ । क्रि० अ० दीख पड़ेगा, दिखाई देगा : कहँ रग रूप ~ १/८६ ।

दिखैहौ दिखाओगे कम ~ पाइ मा० ल० २२ ।

दिखैहौं दिखाऊँगा : मोइ पद्धति परतच्छ ~ ९/१५७ ।

दिगंबर दिशाओं का वस्त्र धारण करने वाला, नगा, शिव : ना दिन तैं ये भए ~ ३५६६ ।

दिगंबरपुर वह नगर या स्थान जहाँ दिगंबर बसते हों : सूरदास ~ ते रजक कहा च्यौसाइ ३३३४ ।

दिग दिशा, ओर, तरफ . गज अहकार चढ्‌यौ ~ विजयी १/१४४ ।

दिग अंबर दिगंबर मीस जटा ~ तासु ४३०६ ।

दिगपति दसों दिशाओं के पालक देवता — पूर्व के इन्द्र, अग्निकोण के वह्नि, दक्षिण के यम, नैर्ऋतकोण के नैर्ऋत, पश्चिम के वरुण, वायुकोण के मरुत, उत्तर के कुबेर, ईशानकोण के ईश, ऊर्ध्व दिशा के ब्रह्मा और अधोदिशा के अनन्त । एक अन्य मत के अनुसार आठ हाथी जो आठों दिशाओं की रक्षा के लिए स्थापित हैं — पूर्व में ऐरावत, पूर्व दक्षिण में पुंडरीक, दक्षिण में वामन, दक्षिण पश्चिम में कुमुद, पश्चिम में अजन, पश्चिम उत्तर में पुष्पदंत, उत्तर में सार्वभौम, उत्तर-पूर्व में सुप्रतीक : ~ दिग दर्तानि सकेलन ६३ ।

दिगविजय अपना महत्त्व स्थापित करने के उद्देश्य से राजाओं का देश-देशातरों मे ससैन्य जाकर विजय प्राप्त करने की प्राचीन प्रथा : ~ कौं जुवति मडल भूप परिहैं पाइ ३२२७।

दिगबिजयी दिग्विजयी, सभी दिशाओ के राजाओं को जीतने वाला • गज-अहँकार चढ्यौ ~ १/१४४।

दिग्गज १ दिगपति दे० : ~ चलित खलित मुनि-आसन ९/२६। **२.** दिशाओं के हाथी, उनका काला रग, कालिमा, काजल • ~ सहित अनूप राधिका सा० ल० ८३।

दिझानी जली इक रगी दुख देह ~ ३७१४।

दिति कश्यप ऋषि की स्त्री जो दक्ष प्रजापति की कन्या और दैत्यों की माता थी • कस्यप की ~ नारि ३/११।

दिन १ दिन। **२** समय, काल, वक्त • गोविंद गाढे ~ कै मीत १/३१। **४** वार, वारि, जल • पथ रिपु ~ परस सब ~ सा० ल० शेष ५। **५** वार, वाल, केश : ~ दिन, दुआर के बैरी सा० ल० ७३। **चारि चारि** ~ बहुत थोडा समय : — ~ सबै सुहागिनी री १७६२। ~ **दिन १** दिन पर दिन मैं ~ — उनमानी महा प्रलय की नीति ३४५७। **२** दिन दिन गिन कर : ~ — काल गँवायौं ९/५०। **३** प्रतिदिन : ~ — इनकी करौं बडाई ३०४१। ~ **धराइ** मुहूर्त्त निकलवाकर नीकौ सो ~ — सखिन मगल गवाइ ४१। ~ **दिनन** वार, द्वारद्वार पर ~ — मे लगे मानिक सा० ल० ९४। ~ **दूनौ होइ** दिन प्रति दिन बढा : यह सुख सूरदास कै नैन ~ — ५६।

दिन अंत दिन का अत, रात्रि : भौंह ते ~ सा० ल० ३७।

दिनक एक दिन भी : बिछुरे कैसैं रहत ~ २९६२।

दिनकर सूर्य : चौथे सिह रासि कै ~ ८६।

दिनकरहि सूर्य के • ज्यौ ~ उलूकन मानस १/१००।

दिनचर सुत सुत वार, वारिचर (मछली) के पुत्र (व्यास) के पुत्र (शुक), तोता • ~ सरस नासिका सा० ल० १०२।

दिन-थोरी अल्पवयस्क • ~ अति छवि तन-गोरी ६७२।

दिनन दिनो : जैसैं बहुत ~ की बिछुरी ४२९१।

दिननि १ दिनो • बहुत ~ की आसा लागी १५। **२** दिना मे पावस ~ कोऊ ऐसौ है करत २७८६। **३** अवस्था मे : ~ हमहुँ तुम सरवरी २१९३। ~ **की थोरी** अल्पवयस्क • कौन ~ — २०५१।

दिननि थोरी अल्पवयस्क है तू ~ करन दै गिले १७३५।

दिनपति १ सूर्य (मित्र), सखा : ~ चलै धौ कहा जात सा० ल० ८। **२** सूर्य, शूर वीर ~ ही कौ वास सा० ल० ९६।

दिनपति सुत सूर्य के पुत्र कर्ण, कान : ~ है भूषन होन सा० ल० ९५।

दिनपति सुत अरि पिता पुत्र सुत सूर्य के पुत्र (कर्ण) के शत्रु (अर्जुन) के पिता (इद्र) के पुत्र (बाली) का पुत्र (अगद), बाजूबद • ~ सा० ल० १३।

दिनपति सुत पतिनी प्रिय सूर्य के पुत्र (शनि) की पत्नी (कर्कशा) का प्रिय, कटु वचन : ~ बाधे सा० ल० ६।

दिनपति सुत भ्राता पितु पितु जा पति सुत सुतप्रिय पितु हितकारी सत्रु प्रिया दिनपति (सूर्य) के पुत्र (कर्ण) के भाई (युधिष्ठिर) के पिता (यमराज) के पिता (सूर्य) की पुत्री (यमुना) के पति (श्रीकृष्ण) के पुत्र (प्रद्युम्न) के पुत्र (अनिरुद्ध) की प्रिया (उषा) के पिता (बाणासुर) के हितकारी (महादेव) के शत्रु (कामदेव) की प्रिया, रति, सभोग ~ करि महा थकित हो सा० ल० ४९।

दिन मधि दोपहर को उठत सभा ~ ९/१७२।

दिनमनि सूर्य ~ उदित भए द्विघरी ४०४।

दिनहि दिन ही। ~ **दिन** दिन ही दिन, दिन पर दिन • करत फिरत ~ — ढिठाइ २३०३।

दिनहीं दिन को ही ~ जुग बर जाने २३०५।

दिना दिन : जा ~ तें जनम पायौ १/१०६। **रैनि** ~ दिन-रात • अपनी दसा कहौं कासौं मैं वन बन डोलौं — ~ १९१५। ~ **चारि** चार दिन, थोडे समय ~ — मैं सब मिटि जैहैं १९१२।

दिनाई विषैली वस्तु मधुकर दीन्ही प्रीति ~ ३८५३।

दिनी बडी, वूढी : ज्यौं-ज्यौं ~ भई त्यौं निपजी ३९१।

दिनु दिन : सोचत गनत जाइ इहिं विधि ~ ४०२३।

दिनेश सूर्य शिव विरंचि सनकादि महामुनि शेष सुरेश ~ सारा० ६८४।

दिप दीपो की • निकट दिपति ~ पाति परि० २/६४।

दिपत चमकती दधि सुत मे दधि तिया ~ सी सा० ल० ६१।

दिपति १ चमक रही थी • हृदय पदिक की पॉति ~ दुति २२१९। **२** दीप्त होती है, चमकती है : निकट ~ दिय-पॉति परि० २/६४।

दिपाई प्रकाशित हो रहे थे कुडल काटि ~ १८६८।

दिबस वार, वारि, ऑसू नीकनन तें ~ डारत सा० ल० ५९।

दिव्य प्रकाशमयी : आजु दीपति ~ दीपमालिका ८०९।

दिया बाति (सॉझ को) दिया जलाने का काम ~ जनु मिलकी ३२६१।

दियें १ दिया, प्रदान किया। **२** देने से • जाके ~ अघाऊँ १/१६४। **३** देकर पलक कपाट ~ २२८९। **४** लगाए हुए : काजर नैन ~ २४।

दियैं १ देने पर/से छॉडिहु ~ उडात नहिं १६३५। **२** चुकाये : विना ~ दुख देत दयानिधि १/१९६।

दियौं प्रदान किया • उग्रसेन कौं ~ हरि राज ३०८५।

दियौ १ दिया दुष्टनि बधि सतनि कौ सुख ~ १६०७। **२** दिया हुआ मम पितु ~ राज नृप करत ९/१७४। **३**

देकर : दरस ~ मोहिं कियौ सनाथ ८४५ । ४. दूँ : चाहति ~ पठाइ ४५६ । ५ लगा लिया है आजु अजन ~ राधिका २४५० । ६ रखा पीठि तापर ~ ३०५१ । ७ अर्पित कर दिया सकुचि रूप-जोवनहिं ~ १५८९ । ८ दिया हुआ, लगाया हुआ : तिलक मृगमद कौ ~ ४१८६ । ९. (पहना) दिया : विहँसि कै, ~ कठ तें हार ९/१२१ । १०. बद कर दिया : द्वार कपाट ~ गाढे करि २५२५ । ११ दिलवाया, धारण करवाया मृग-हित ~ हथियार ९/८३ । १२. देना . लियें ~ चाहें मन कोऊ १/१९५ । **अंचल ~** घूघट डाल लिया : हम मनु चितै सकुचि — ~ २११३ ।

दिलीप इक्ष्वाकुवशी एक राजा, 'रघुवश' के अनुसार जिनकी पत्नी सुदक्षिणा के गर्भ से राजा रघु जन्मे थे याही विधि ~ तप कीन्हौ ९/९ ।

दिव १ देवों ने . सूर, ग्वाल मिलि हरि गृह आए, ~ दुदुभी बजाई १३९७ । २ स्वर्ग : नीलावती चाँवर ~ दुरलभ ३९६ ।

दिवबास स्वर्गवासी पक्षी गरुड . हरि वाहन ~ सहोदर ३२८२ ।

दिवबास सहोदर स्वर्ग वासी पक्षी गरुड का भाई अरुण : हरि वाहन ~ तिहिं पति उदित मुरछि महि जाइ ३२८२ ।

दिवराज स्वर्ग का राजा इन्द्र : सरन चलौ ~ ९७३ ।

दिवस दिन । △ ~ **चारिके** चार दिन के, थोडे समय के : और पति सब ~ — १/१३८ ।

दिवसपति सुत मात सूर्य के पुत्र (कर्ण) की माता कुती, कुत, वर्छा, भाला : ~ अवधि विचार प्रथम मिलाप सा० ल० ३२ ।

दिवस पति सुत मातु बौध विचार प्रथम मिलाइ दिवसपति (सूर्य) के पुत्र (कर्ण) की माता (कुंती) के 'कु' तथा इसमे बौध मिलाने से (कुबौध) जैन, अब कुती के 'कु' तथा जैन के 'जै' मिलाने से, कुजे, कुजों ~ सा० ल० शेष ३ ।

दिवाइ दिला, दिलाकर : मोहूँ कौं ~ कै ३०९२ ।

दिवाई १ देती हूँ : तेरी सौंह ~ ३६३ । २ दिलाई थी : जो भाई सौं सौंह ~ २८२६ । ३ दिलाई : यह मोकों सुधि भली ~ १६६९ । ४ दिलाकर कहि सौंह ~ २१९३ ।

दिवाऊँ १. दिलाऊँ : गारी देहुँ ~ परि० २/१३३ । २ दिलाऊँगी • ताकौं सौंह ~ १९३७ ।

दिवाए दिलाई : कोटिक सौंह ~ २५१७ ।

दिवानी पगली, मतवाली, बावली : अब तौ प्रगटहि भई ~ १६४८ ।

दिवाने दीवाने . उहिं ऐसे कर लिये ~ १३१७ ।

दिवाये दिलवाये : बहु उपहार ~ सारा० ५०९ ।

दिवायौ दिलाया, दिलवाया : ब्रह्म सराप ~ १/१०४ ।

दिवावति दिलाती है, दिलवाती है : ऐसी बातनि सौंह ~ १५७२ । **हाथ ~** भूत-प्रेत की बाधा रोकने के लिए सिर पर हाथ फिरवाती : घर-घर — ~ डोलति २५८ ।

दिवावन दिलाने जब हम सौंह ~ लागीं १५७६ ।

दिवावैं १ दिलावेंगे . हम नहिं सौंह ~ १५७३ । २. दिलाते हैं फिरि फिरि सुरति ~ ३८४७ ।

दिवावै १. दिलावे : को कहि गारि ~ २८२६ । २ दिलाती है अपनी सौंह ~ २६७१ ।

दिवाहीं दिला कर पूछैं माह ~ ४०९३ ।

दिवि १. स्वर्ग : जै ~ भूतल सोभा समान ९/१६६ । २ स्वर्ग मे : देव ~ दुंदुभि बजावत ५६३ । ३. स्वर्ग मे : देवनि ~ दुदुभि बजाइ ६ । ४. देव • पाटवर ~ मदिर छायौ ९८४ ।

दिविराइ स्वर्ग के राजा, इद्र : यह तब कहन लगे ~ ८९८ ।

दिवै जलता है : मदिर में दीपक ~ बाहिर लखै न कोई १६४० ।

दिवैहैं दिलाएँगे : कब मेरो मोहिं गारि ~ परि० १/१३ ।

दिसनि दिसि सभी दिशाओं मे . चितवति चकित ~ हेरति ११२५ ।

दिसानि दिशाओं चारि ~ पसार १/६० ।

दिसि १ ओर, तरफ • निरखि कुरख उन बालनि की ~ ३४७ । २ दिशा : उत्तर ~ हम नगर अजोध्या ९/४४ । ३. दिशाओं : आवहु वेगि सकल दुहुँ ~ तै ५०३ । **~ दिसि** चारों दिशाओं मे मनु ~ — निर्धूम अग्नि कै २११४ ।

दिसि बासर चारों ओर दिन भर परिहस-सूल प्रबल ~ १/१८१ ।

दिसि-बिदिसि दिशा विदिशा, इधर-उधर : चकित भए ~ निहारत ९/६२ ।

दिसि बिदिसि दिशाओं और विदिशाओं मे . ~ कोउ नहिं जात हेरी ९/१३८ ।

दिसे दिखाई देने लगे मनहुँ गगन ससि उदित ~ हौं २५०३ ।

दीख १. देखने : जदुपति ~ सुदामा आवत ४२२९ । २ देखा है रूप ~ हम इनकौ नयौ ११/३ ।

दीखति दिखाई देता है, जान पडता है . ~ है कछु होवन-हारी ४/५ ।

दीखे दिखाई पडे . मल्लन मचन मल्ल मे ~ सारा० ५१५ ।

दीखै दिखाई देता है . कार्को ~ को दिखदार १२/४ ।

दीच्छा दीक्षा, मत्रोपदेश ~ लेन गए २६३४ ।

दीजत देती है : निरखि ~ दान ३५६१ ।

दीजतौ दिया होता जौ तब माखि ~ काहू ४०६३ ।

दीजहु दीजिएगा : पाती ~ जाइ ४१७३ ।

दीजियै १ जाने दीजिए : सुफलक सुत के सँग न ~ २९८९ । २. दिए जाने लगे, लगाए जाने लगे : घर-घर थापै

~८४१।

दीजियौ १ देना, प्रदान करना, गले लगाना सूर सुमित्रा अक ~ ९/३६। २ दीजिए याकौ जननी ~, करत सखिनि सौं नेह ४१८८।

दीजै १ दीजिए • जौ चाहे मो ~ १६१९। २ दिया जाय हरि को दोष कहा कहि ~ १८८९। ३ दी जाय काकी तिनकौ उपमा ~ ९/४५। ४ देती • तौ तुम्हरे निरगुन कौ ~ ३७२७। ५ देने से मन ~ मरजादा जैहै १९३५। ६ दूँगी ~ जाइ उत्तर मै २७८७। ७. कर दीजिए : करिकै काढि अनतही ~ ९। ~ डारि छोडा जाय : गेह-नेह क्यौ ~ — १६९०।

दीजौ १ देना • पाती ~ स्याम सुजानहि ४१६०। २ देना, रखना गेह देहरी पग तव ~ २५४८। ३ दे दीजिए, त्यागिए जान मति ~ कही परि० १/४१।

दीठ नजर, दृष्टि मति कोउ लावै ~ ३८८१।

दीठत दिखाई देती है • कबहुँ बिलुठत पीठि ~ परि० ७/४०।

दीठि स्त्री० १ दृष्टि परी तिलक पर ~ १/२७४। २. कुदृष्टि, नजर • माई मेरिहि ~ न लागै ९७। ~ लगाई नजर लगा दी खेलत मैं कोउ ~ — २००। क्रि० स० देखा : बाल न नैंकहुँ ~ २५७१।

दीठी देखा है : जौ नैननि तुम ~ ३४९२।

दीन पु० १ दीन : अब लाग्यौ पछितान पाइ दुख ~, दई कौ मार्यौ १/२०१। २ दीनता = ताप : 'सूर' बहुर पर-जाइ ~ हर सा० ल० ५१। ३ दीन, दास, भक्त निज भय ~ डरै १/११७। वि० १ खराब, हीन • क्यौ होवै गति ~ १/४६। २ दु.खपूर्ण • सुनि-सुनि ~ बचन जननी कै ११। ३ निरुपाय देखे ~ दुखित नदादिक ८६६। ४ दीन (सकट मे पडा हुआ) . ~ आजु हम तैं कोउ नाही १०२९। ५ कातर : तब बसुदेव ~ ह्वै भाष्यौ ४। क्रि० स० १ दिया, प्रदान किया जनकसुता सुख ~ ९/२६। २ दिया, लगाया तिलक ललाट न ~ ३२६७।

दीनता १ कातरता, आर्त्तभाव उनकी मोसौं ~ कोउ कहि न सुनावौ १/२३७। २ अधीनता का भाव, विनीत भाव कोमल बचन ~ सब सौं ७/१८।

दीनदयाल दीनो पर दया करनेवाले . ~ कृपानिधि नरहरि ७/४।

दीनद्याल दीनो पर दया करने वाले, दीनदयाल, ईश्वर मैं ज़ु दुख पावति हों ~ १९४४।

दीननि १ गरीबो, दीनों . जौ हरि कृपा करौ ~ पै ३७०८। २ दीनो पर, गरीबों पर • जब-जब ~ कठिन परी १/१६।

दीनहि दीन-दरिद्र पर . कह दाता जो द्रवै न ~ १/१५९।

दीनी १. दी • बिभीषन कौं लक ~ १/१७६। २ दी हो : सत-फन मानौ केंचुलि तजि ~ ११९४। ३ दी है, प्रदान की है भली सिच्छा तुम ~ ३/११। ४ लगा या मार दी : सॉटी ~ सरसर ३७३। ५ दी गई हो, लगा डाली गई हो • मनु ससि पर मोतिनि लर ~ १९९३।

दीनै दे दिया : नव सरवस ~ २५१७।

दीने १ दिया नैननि प्रान चोरि लै ~ २३७८। २ (दान कर) दिये : परवत सात रतन कै ~ ३२। ३ ला दिया सदीपन सुत तुम प्रभु ~ १/१३३। ४ मिलाये हुए, रखे हुए आलस जुत अंसनि भुज ~ २१७६।

दीनैं दिया • जिनकौं हरि अँग अँग मैं, करि ~ ठौर २४०८।

दीनौ १ दिया . मोहि सुख सकल भाँति कौ ~ ९/३। २ देती है, दे दिया . सो हम तुमकौ ~ ३८०९। ३. लगाए रखा, दत्तचित्त रहा : मन विषया मैं ~ १/६५। ४ देना पुनि ~ जब जानौ कालि १५९४।

दीन्यौ १ दिया सरवस अपनौ ~ ८/१५। २ देता हूँ तातैं साप तोहि मैं ~ ९/१७४। ३ बन्द कर दिया है जम ~ हठि तारौ १/१३१। ४ लगा दिया . ऊपर गुलचा ~ २९१६।

दीन्ह दिया रथ हाँकत गोबिंद अर्जुन को ~ सस्त्र सब डारी सारा० ७७९।

दीन्हा दे दी है . बहुतै आयसु ~ ८५४।

दीन्ही दी तब कर काढि अगूठी ~ ९/८६।

दीन्ही १. दिया : भेद काहुहि ~ १७४२। २ दी, दी थी कुल सरनागत ~ ३६२४। ३. लगाई तब मडप भ्रमि भाँवरि ~ १०७२। ४ देने से जाकी ~ भई बडाई ८११। ५ डाली, झोक दी : आँखि धूरि सी ~ ६९४। ६ दी हुई है इद्रहिं की ~ रजधानी ८८६। ७ दी हुई मेरी ~ है ठकुराई ९१६।

दीन्हे १ दिया . नगर कै द्वार ~ गिराई ४२२१। २ दिये . जाइ बन माहि ~ दिखाई ८/१०।

दीन्हे १ दिया, दे दिया : सोउ ~ करुना महि २१३०। लगाए हैं . रुचिर केसर तिलक ~ १८२३। ३ धारण किये हैं . कुडल स्रुति ~ २३२३। ४ रखे हुए हैं : दच्छिन चरन चरन पर ~ २२१८। ५ किये हुए, गडाये हुए • इकटक लोचन ~ २१२७। ६ बद किये ~ रहत किवार १/१४१। ७ बद रहे होगे : प्रगट कपाट विकट ~ है ९/१०५।

दीन्है १ देने से ~ अधिकैहै २२६७। २ दिये बिनु ~ ही देत १/३। ~ डारी छोड दिये हैं : और रग सब ~ १९१२।

दीन्हौं १ दिया माखन ~ हाथ ४३७। २ दे दिया था सूर स्याम कौ सरबस ~ ३६७०। ३ लगा रखा है : मैं तौ राम चरन चित ~ ९/८२।

दीन्हौ १ दी, प्रदान की : आयुसहि ~ ८५३। दिया • उग्रसेन कौ राजस ~ ३०९५। ३ देता है : पथिकनि कौं

सुख ~ ३८३२ । ४ दे देती है : ताहूँ नाद बस्य ज्यौं ~ २३६१ । ५ दिये हुए थे, लगे हुए थे : वज्र सम थाप बल कुंभ ~ ३०५४ । ६ देकर सूरदास बलि मरवम ~ ८/१४ । ७. लगाया था : चरननि जावक ~ ३६०१ । ८ दे दिया, लगा दिया : ~ तिलक लिलार २१८३ । ९ दे आये थे : तहाँ नहिं गए जहँ बचन ~ २४९५ । १० दे डाला है : ज्यौं ~ मोहिं डेरे २३५२ । ११ किया : बारबार अलिंगन ~ २१५० । १२. रखा हुआ है : माया जूआ ~ १/१८५ । तनु ~ जान दे देता है, मर जाता है : ज्यों पतग — ~ १/४६ । ~ बंधान रचना की : यह विधि ~ — २४४६ । △ पीठि ~ विमुख हुए तुमही पीठि भावते ~ ३२२९ ।

दीन्ह्यौ १. दिया सुनि सुन्दरि उठि उत्तर ~ १/२४० । २ दिया था आपु ~ टार ५२४ । ३ ला दिया मृतक विप्र सुत ~ १/१७ ।

दीप १ दीप, दीपक । २. नाग-द्वीप : काली पठवै ~ ५८९ । △ ~ **की बतियाँ** झूठ कहत बनाई ~ — कैसैं धौं तम नासत २/२५ । ~ **कौ कीरा** पतगा : हम विलोकि बावरी बदन-छवि मई ~ — परि० १/१०१ ।

दीपक जात दीपक का जाया, काजल : लग्यो ~ २६७९ ।

दीपकावृत दीपक बुझाना, आवृत्ति दीपक अलंकार : ~ चाइ मा० ल० १८ ।

दीपत स्त्री० १ काति, दीप्ति, आभा . ~ तन मे जोऊ सा० ल० १०२ । २ छटा, शोभा : काहु ~ द्वार दई मा० ल० ५१ । वि० दीप्तिमान : तन सरस ~ आव सा० ल० १ । क्रि० अ० शोभा हो रही है : नीकन अधिक अधिक ~ दुत सा० ल० ४९ ।

दीपति १ दीप्त होता है, चमकता है : अति ~ परकामै ३८३२ । २. दीप्त होती है, सुशोभित हो रही है आजु ~ दिव्य दीपमालिका ८०९ ।

दीपदान एक क्रिया जिसमे मरणासन्न के अथवा मृत व्यक्ति के हाथ से आटे के जलते हुए दीप का सकल्प कराया जाता है : ~ करवायौ ९/५० ।

दीपमालिका दीपावली : आज दीपति दिव्य ~ ८०९ ।

दीपिका छोटा दीप : दोउ रुख लिये ~ मानौ किये जान उँजियारे २७४० ।

दीपैं द्वीपों मे : खोजौं ~ सात ३९७७ ।

दीपै द्वीपों में . खोजौं ~ सात ३३५१ ।

दीवे देने : टरत दाँव ~ कौं २८८८ ।

दीवैं १ देंगे : एक बेर दरसन ~ ३४७४ । २ देता है : काम कुमति ~ १/१४४ ।

दीय दिया गया है, बँधा हुआ है : लटपट पेंच अटपटे ~ २५५५ ।

दीयौ १ दिया । २ डाली, छोड़ी : रिपिनि तब पूरनाहुती ~ ४/११ ।

दीरघ १ दीर्घ : कबहुँ लघु कबहुँ ~ सु होई ४२२१ । २ तेज : ~ बचन उचारा ४ । ३. बड़े : चपल नैन ~ अति सुंदर २२०३ । ४ विशाल . इन पै ~ धनुष चढ़ै क्यौं ९/२३ । ५ बड़ी : ~ नदी नाव कागर की ३८९३ । ६. भारी, बहुत . ~ मोल कह्यो ब्योपरी १७३ । ७ सुविस्तृत . ~ लता करनि निरवावत २६१६ । ८ गुरु या दीर्घ मात्रा वाला; पाछिले कर पहिल ~ बहुरि लघुता ओर सा० ल० १०६ ।

दीरघता बड़ापन, अधिकता तप अरु लघु ~ सेवा ९/१६८ ।

दीवला दीपक, दीया : बरत ~ घी के परि० १/१८५ ।

दीवान मुसाहिब, मन्त्री . भक्त ध्रुव का अटल पदवी, राम के ~ १/२३५ ।

दीस[1] दिशा, ओर, तरफ : छत्र-भुजा चहुँ ~ ९/७५ ।

दीस[2] लगाया . कियौ भूषन पुत्र सारग मग सारग ~ मा० ल० ५५ ।

दीसत १. देखते : जहाँ तहाँ ~ कपि करत राम-आन ९/९६ । २ दिखाई पड़ता है . नाहिं ~ कतहूँ ५२८ ।

दीसति १ दिखाई देती है ~ विमल ध्वजा ९/११४ । २ दीख पड़ती है, मालूम होती है : सिद्धि होत कछु ~ नाहिं १/३४१ ।

दीसैं दिखाई पड़ता था : ~ सबनि मैं कारि ८४१ ।

दुंद १ द्विविधा, तनाव, द्वंद्व : दुविधा ~ रहै निसि बासर १/१४१ । २ उपद्रव, ऊधम . फिरत जहा तहँ ~ मचावत ३७७ । ३ युद्ध : आइ उन ~ जब किया हरि पुरी मैं ४२०५ ।

दंदुर उलझन, झंझट, जंजाल थूल सरीर रहित सब ~ ५/३ ।

दुदुभि नगाड़ा, धौंसा . देव दिवि ~ बजावत, सुमन-गन बरषाइ ५६३ ।

दुंदुभी नगाड़ा, धौंसा : सूर भयौ आनद नृपनि मन, दिवि ~ बजाए ९/२४ ।

दु खदलन दु ख के नाशक : ~, असरन सरन, कृपन सरनदाई ३०७७ ।

दु खदाई दु ख देने वाला : सूर-ससि कौं सदा ~ ८/८ ।

दुअन दोनों आए मारन ~ बान कसि परि० १/८७ ।

दुआदस बारह : मिलि ~ बानी ३६२७ ।

दुआर के बैरी दरवाजा के शत्रु (किवाड़) पट, वस्त्र : छूटे दिन, ~ मा० ल० २३ ।

दुआरैं द्वार पर . ध्यायौ देव ~ रीं १३५ ।

दुई दोनों : तुमहीं जानौ गुप्त ~ १८८२ ।

दुइजदिनिया (को) : ~ समाज समेत करत द्विज तिलक २९०८ ।

दुकार 'दु' (द्व का द) : मेटि ~ बनायौ ३६२४ ।

दुकूल रेशमी वस्त्र : स्याम देह ~ दुति मिलि ६७७।
दुकूल कोट वस्त्र का ढेर : बढे ~ अबर लौ १/२७।
दुकूले रेशमी तनु स्यामल पट पीत ~ १०७२।
दुख दुःख, कष्ट। ~ **मोले** दु ख मोल लिया धीर बचन दै लै ~ — ९३७। ~ **भाज्यौ** दु.ख दूर हुआ . अचल गाँठि दई, ~ — ९/१६४।
दुख-चूरन दु ख को चूर चूर करने वाले द्विज-नारी-दरसन ~ ९८१।
दुख-ढेर दु खो का पुंज दूरि कियौ ~ १६७७।
दुख-दंदा दु ख-द्वंद्व : दूरि करन ~ १९२।
दुख दवन ताप नाशक त्रिबिध पवन ~ है ११८०।
दुखदाई दु ख देने वाले दुष्टनि कै ~ २२।
दुखदात दु.ख देने को • परदारा ~ २/२४।
दुखनि १ दु खों . कौन ~ सौ छायौ ४२३८। २ दु.खो से सोइ-सोइ ~ भरी १/७१। ३ दु खो के . जोग ~ घेरनि ३८८९।
दुखहि १ दु ख : हर्ष अनल करि ~ दह्यौ। २ दु ख को चलत न ~ मिली ११/१।
दुखात दुखता है, दु खी होता है सुनि सुनि हृदय ~ ३८२७।
दुखारि दु.खी : अजहुँ द्रवति जो न देखति ~ ३६२।
दुखारी दु खित, दुःखी कत तुम होत ~ ३९०१।
दुखारे दु खियारे, दुःखी : ब्रज के बिरही लोग ~ ४१००।
दुखि दु खित होकर : (देवकी) दरसन-सुखी, ~ अति सोचति ७।
दुखित-दुख दुःखी का दु ख • आनँद सदा ~ नासै ३९१।
दुखिन दु खियों : ~ कै दुख जान ४०३५।
दुखिया दु खिनी, पीड़ित, दु खी : मैं ~ दुख कोखि जरी ८०।
दुखियान दु खी : पा लागों मदिर पग धारो सुनि ~ त्रियौ ३३९६।
दुखीन दु खी मलिन दिन ही दिन ~ ३८६७।
दुज दाँत अरुन अधर ~ चमकहीं २३२३। ~ **कोटि बज्र दुति** करोडो हीरो की प्रभा वाले दाँत है अरुन अधर ~ — १७९८।
दुति १ काति, ज्योति, चमक • नैकु रही छवि ~ हिरदै मैं २३०२। २ काति से : चक्रवाक ~ मनि दिनकर कै ३५६९। ३ शोभा अरुन प्रकास पलक ~ दामिनि।
दुतिय दूसरा, द्वितीय : ता सम और न ~ स्वरूप ४३०९।
दुतिय रास दूसरी राशि (वृष) गो राम, गो स्थान, गोलोक, गोष्ठ ~ मे मिलत सप्तमी सारा० ९५३।
दुतिया स्त्री० प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि, दूज, द्वितीया • ~ कै ससि लौं बाढै सिसु ५६। वि० दूसरा • तुम बिन ~ और न हेरै परि० १/५१।
दुतीय सुर मिलि सुता द्वितीय राशि (वृष) सूर, सूर्य (भानु) मे 'सुता' मिलाने से, वृषभानु सुता, राधा ~ सा० ल० ७१।
दुती रासि दिनपति पुर द्वितीय राशि (वृष) दिनपति सूर्य (भानु) दोनो के मिलाने से, वृषभानु+पुर, वृषभानुपुर : ~ नाहीं सा० ल० ९६।
दुती लगन द्वितीय लग्न, वृष : ~ मैं है सिव भूषन सा० ल० ८१।
दुधा दो टुकडे : मानहुँ किरनि पतग तें भयौ ~ तम हारि २६१३।
दुनेरे दुनेरे, सुहाल पकवान . माडे माँडि ~ चुपरे १२१३।
दुपटि दुपट्टा, चादर : काहूँ कौ दीनी ~ हो परि० १/७।
दुपद दो पैरो वाला, मनुष्य . अपद - ~ - पसु भाषा बूझत ८/१४।
दुबराई क्षीणता . कह बूझत तन की ~ ३७६४।
दुबरे दुबले (हो गये हैं) मृग ~ तुम्हरे दरसन बिनु ४१२३।
दुबाहियाँ दो भुजाओ वाला अति थापत धीरज ~ ३३१३।
दुबिधा १ द्विविधा, भ्रम, सशय ~ हृदय कहूँ नहि राख्यौ २४७३। २ भेद सो ~ पारस नहिं जानत १/२२०।
दुभास दुभाषिया • बीच बसीठ ~ ३५८३।
दुमची पैरो से बल देकर झूले को झोक से ऊपर ले जाने की क्रिया। ~ **मचै** दुमची लेते हुए • झमकि झूमक लेति दै ~ — रुचि कैन २८४१।
दुमनवायौ वायु से हिलते हुए (वृक्ष) फटत लट लटकि द्रुम ~ ५९६।
दुमालो दुपट्टा पीत ~ बन्यौ ८४१।
दुमिल कूट : छेक उक्त जहाँ ~ समझ कै सा० ल० ८९।
दुरग दुरगी चाल वाले आए माई ~ स्याम कै सगी ३५११।
दुर १ मोती : ~ दमकत सुभग स्रवननि १८४। २ छोटी बाली जो कान मे पहनी जाती है . कँचन कै द्वै ~ मँगाइ लिए १८०।
दुरइयै छिपाया जाय . तुम तैं कहा ~ १/२३९।
दुरगम जहाँ जाना या पहुँचना कठिन हो : जीव जल-थल जिते, बेष धर-धर तिते अटत ~ अगम अचल भारे १/१२०।
दुरजन दुष्ट, खल, नीच किहि भय ~ डरिहै १/२९।
दुरजोधन धृतराष्ट्र का बडा पुत्र दुर्योधन जिसे युधिष्ठिर 'सुयोधन' कहा करते थे . ~ कौ मेट्यौ गारौ १/१७२।
दुरजोधनादिक दुर्योधन आदि करन ~ लियौ घेरि तिहिं ४२०९।
दुरत १ छिपता • ~ फिरत मनोज १३७२। २ छिप रहे (हो) . क्योऽब ~ हैं प्रगट भए २६४२। ३. छिपता है, छिप जाता है • जाइ बन द्रुमनि मैं ~ त्योंही गए २२४९। ४

छिपती है : ~ नहिं नेह अस सुगध चोरी १७३५। ५ छिपते हुए : प्रगटत ~ देखियत रवि सम ४१६२।

दुरति क्रि० अ० १ छिपती है : माधो नाहिनै ~ जो ह्वै वमनि २४१८। २ छिपते हैं : किलकि हँसति ~ प्रगटति १०८। ३ छिपती . ~ नहीं वह चोरी १९६०। ४. हिलती-डुलती है · वेनि ~ कटि लौं छवि वाढी ३००। क्रि०स० छिपा रही कैसैं बातैं ~ है १६१८।

दुरतैं छिपने के लिए : सैन दई कर ~ ३२०४।

दुरद हाथी, कुजर · क्रोध ~ व्याकुल अति ३०५७।

दुरद मूल के आदि (द्विरद) हाथी, कुजर और जल के आदि वर्ण (कु) और (ज) को मिलाने से कुज ~ राधिका मा० ल० ३१।

दुरदाम कठिन, कष्टसाध्य . राधा रटन जपत मत्र ~ सारा० ९२९।

दुरवासा दुर्वासा ऋषि जिनका क्रोध सर्वप्रसिद्ध था ~ कौं चक्र सँभारौ १७२।

दुरबुद्धि दुष्ट मति, मूर्खता फिरि ऐसी ~ न होइ ४/५।

दुरमति १ दुर्बुद्धि, कम-अक्ल : ~ कूप खनावै १/१६८। २ खल, दुष्ट : पूरे चीर, अत नहिं पायौ, ~ हारि लही १/१५८।

दुरली छिपी हुई . रैनि-वासर टरत नाहीं रहति जहँ ~ १२६८।

दुरहु छिपो : ~ तौ नँद की आन २८६४।

दुरा छिपाने : दुरी ~ कौ खेल न कोऊ ३९९५।

दुराइ १ छिपा . मह्ल लोक ~ आयो ४८५। २ छिपा कर : राखी छवि ~ हिरदै मैं २३०१।

दुराइयाँ छिपाने मे, गुप्त रखने मे : (तुम) केरि दुरत ~ ५७७।

दुराई स्त्री० १ दुराव . छाँडौ दुसह ~ ३६८३। २ छल : कीन्हीं कपट ~ सारा० ५२४। क्रि० स० १ छिपा : ताकौं राखी हृदय ~ २४२८। २ छिपाया, छिपाया था : राम जनम सीता जु ~ ४०९४। ३ छिपा दी है ते कत नाव ~ ९/४०। ४ छिपा कर · यसुमति भवन ~ सारा० १०२८। ५. चुरा ली है : दामिनि घन दुति रदन ~ २४३६। ६ दूर कर दिया, समाप्त कर दिया : मोहिनी रूप हरि लियौ ~ ८/१०। नाहिन परति ~ छिपाई नहीं जाती : — ~ ८०१।

दुराउ छिपाव, भेद-भाव : कैसैं करत ~ २८६४।

दुराऊँ १ छिपाऊँ, छिपा लूँ तौ हिरदै माँझ ~ २१०६। २ छिपा लूँगी : बूझत बदन ~ ४२५५।

दुराए १ छिपाए . फन तर रहत ~ ६७५। २ छिपाया · जद्यपि घूघट ओट ~ २३९०। ३ छिपाने से कैसे दुरत ~ १५२९।

दुराएँ छिपाने से : कैसैं दुरति ~ १३०५।

दुराचारिनि दुराचारिणी, बुरे आचरण वाली स्याम कौं इक तुहीं जान्यौ ~ और १८४३।

दुराचारिनी दुराचारिणी, बुरे आचरण वाली ~ जानी २०७७।

दुराज बुरे राज्य मे : दुसह ~ नृपति बडे दोऊ ३८९२।

दुराजैं १ दुर्व्यवस्था को, बुरे शासन को मेट्यो नवै ~ १/३६। २ बुरे राज्य मे : मरियत है इहिं दुसह ~ ३८८३।

दुराजैं द्विविधा : सजन विन्न सुक आनि कै मनु परयौ ~ १३४।

दुरात १ छिप जाता है : किरन नहाँ सु ~ २४६५। २. दूर हो जाते हैं, भाग जाते हे : दानव दुष्ट ~ ३९७७।

दुरानी छिप गई : तारिका ~, तम घट्यौ, तमचुर बोले २०३९।

दुराने छिप गए मार तैं सोउ कायर ~ ४१९४।

दुरानौ दूर हो गया : सब दुख-दरप ~ मा० ल० १००।

दुरायौ १. गुप्त रखा, प्रकट न किया, छिपाया : दोना पीठि ~ ३३४। २ छिपाना चाहति गर्भ ~ ४। ३ आड मे कर दिया, अलक्षित किया : कुबिजा कूबर माँहि ~ ४०९४। ४ छिपाने से : कैसें दुरत ~ १६९५।

दुराव छिपाव, भेद-भाव · काहैं ~ करत मनमोहन २६३७।

दुरावत १ छिपाते हो : पूछे तैं तुम बदन ~ २७९। २ छिपाते हैं सिसुता माँहि ~ १०२। ३ छिपाती तुमसौं कछू ~ नाहीं १४९६। ४. छिपा रहा था : बदन ~ लाज ५८९।

दुरावति छिपा रही थी, बसाये ले रही थीं . स्याम रूप उर माँहि ~ ९५८।

दुरावति १. छिपाती है : मोसौं कहा ~ राधा १६९४। २ वचित करती है : 'सूर' स्याम सुख हमहिं ~ २०५०। ३. छिपाती हैं : उर मैं आनि ~ २१२३। ४ फल/डुला रही हैं : चँवर ~ नारि ४२१०।

दुरावन छिपाने : कहा ~ लागे चीर ४२२८।

दुरावहु १ दूर करो, हटाओ महाराज, यह रूप ~ ७/२। २. छिपाए डाल रही हो जुवतिहि जुवति ~ २१६४।

दुरावै १ छिपाये : राधा अब जनि कछू ~ २६७२। २. छिपाती हो : अब कहा ~ १९५३।

दुरावैगी छिपाएगी, गुप्त रखेगी अव तू कहा ~ २०७७।

दुरासा ऐसी आशा जो पूरी न हो सके, व्यर्थ की आशा : दिन-दिन अधिक ~ लाग्यौ १/१५४।

दुरि छिपे बोल्यौ नहीं, रह्यौ ~ बानर ९/८३।

दुरि १ छिपे, छिप : मारगरिपु का ओट रहे ~ सुदर सारग चारि २७७१। २ छिप कर 'सूर' स्याम ~ देखत दरपन

२१८९ । ३ छिप गई है • उपमा अपर ~ डरनि १०९ । ~ दूरि : १ छिप-छिप कर : बैठि रह्यौ ~ — सब १५०० । २ धीरे-धीरे : ~ — बूँद परत कञ्चुकि पै ३२३४ ।

दुरित पुं० पाप, दुःख मातु पितु ~ उद्धरन ३०८१ । वि० छिपा हुआ, अप्रकट : सूर ~ दुख भागे ४१६ ।

दुरित-नासन पाप को नष्ट करने मन-वच-कर्म ~ को २६४७ ।

दुरितहि विपत्ति, कष्ट मातु पिता ~ क्यौं हरते १६०७ ।

दुरिहि दूर (से) ही . ~ तैं दुतिया कै ससि ज्यौं १६७ ।

दुरिहु दूर (से) ही ~ देखत ही जाने १९३० ।

दुरिहै छिपेगी, प्रकट न होगी, दिखाई न देगी • क्यौं ~ ससि-बदन उज्यारी ११ ।

दुरी छिप गई . भाग ~ सु बिचारी १/१७३ । ~ **दुरा** लुकाछिपी • ~ — कौ खेल न कोऊ ३९९५ । ~**दुरावति** छिपी हुई को छिपाती है दुरति न ~ — १८५३ ।

दुरे १ छिपे . गोपाल ~ है माखन खात २८३ । २ छिप गए 'सूर' ~ दुख भाल २६१२ ।

दुरेफ भ्रमर, भौंरा मुरलि मुख-छवि पत्र-साखा द्रुग ~ चढ्यौ ३९१७ ।

दुरैं छिपे कैसैं ~ दुरावति १५४९ ।

दुरैयत छिपती ऐसी प्रीति क्यौं ~ है २६९७ ।

दुरैहौं छिपाऊँगी • कैसैं इन्हैं ~ २१५६ ।

दुरैहौ दूर करोगे, छिपाओगे, बचाओगे . तब कह मूँड ~ १/३३२ ।

दुरौनी छिप गई है . भूमि दसन-रिपु कहा ~ ४२६३ ।

दुर्ग कठिन . ~ प्रहार कृष्न पर कीन्हौ ३०७० ।

दुर्गति दुर्दशा, बुरी गति, विपत्ति : अबरीष की ~ टारी १/२८ ।

दुर्गा देवि आदि शक्ति जिन्होने दुर्ग नामक राक्षस को मार कर दुर्गा नाम धारण किया था कहुँ यक ~ देवि जानिकै जोरी विप्र निज धाम सारा० ६७९ ।

दुर्जन दुष्ट जन, खोटा आदमी • ~ बचन सुनत दुख जैसौ ४/५ ।

दुर्जोधनहिं दुर्योधन को ~ सुभद्रा देइ ४३०३ ।

दुर्धर रावण का एक सैनिक जो अशोक वाटिका उजाडते हुए हनुमान को पकडने आया था, परतु रामदूत द्वारा स्वय मारा गया था • ~ परहस्त सग आइ सैन भारी ९/९६ ।

दुर्बचन दुर्वाक्य, कटु वचन . लोभ लिए ~ सहै १/५३ ।

दुर्बासा दुर्वासा, एक क्रोधी मुनि जो अत्रि के पुत्र थे । इनकी पत्नी कदली थी . ~ रिषि कौं पग मारि ६/७ ।

दुर्बासैं दुर्वासा को, दुर्वासा पर उलटी गाढ़ परीं ~ १/११३ ।

दुर्बुद्धी मूर्ख, मदबुद्धि . निर्धिन, नीच, कुलज, ~ १/१८६ ।

दुर्भर अत्यत • तब सुमिरन छल ~ कै हित १/२०७ ।

दुर्मति दुर्बुद्धि, कुबुद्धि : ~ अभिमान ग्यान बिन १/१२३ ।

दुर्योधन कुरुवशीय राजा धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र जो चचेरे भाई पाडवों को अपना शत्रु समझता था और जिसे युधिष्ठिर 'सुयोधन' कहा करते थे गदायुद्ध ~ सिखयो सारा० ८३७ ।

दुर्योधना हे दुर्योधन ! : सुनि राजा ~ १/२३८ ।

दुर्यौ छिप गये • हस दूरि सर ~ सरोरुह २७७६ ।

दुर्लभ १ जो कठिनाई से मिल सके, दुष्प्राप्य ~ फिरि ससार १/६८ । २. अनोखा, बहुत बढिया ~ रूप देखिबै लायक २४४४ ।

दुर्वा[1] राधा की एक सखी : ~, रभा, कृष्ना २००८ ।

दुर्वा[2] दूर्वा, एक घास ~ तृन नित खाए ३८९४ ।

दुर्वासा दुर्वासा दे० अति तप पुंज विप्र ~ ३८९४ ।

दुलराइ दुलार कर . हलरावै ~ मल्हावै ४३ ।

दुलराई दुलार करके, पुचकार करके • बोलि लई हँसि कै ~ १७१८ ।

दुलरावति दुलार-प्यार करती है, लाड-प्यार दिखाती है ~ सुत कुवर कन्हाई ५० ।

दुलरावन दुलार-प्यार का व्यवहार करने : अब लागीं मोकौं ~ १९६१ ।

दुलरी स्त्री० दुलडी, दो लड की माला . कठ श्री ~ बिराजति १०४३ । वि० दो लड की : ~ ग्रीव माल मोतिन की लै केयूर भुज स्याम निहारति ५१२ ।

दुलह वर, दूल्हा : श्री बलदेव कह्यौ दुर्योधन नीको ~ बिचारो सारा० ८०३ ।

दुलहिनि वधू, दुल्हिन • ~ कहति दौरि दीजौ द्विज ४१८२ ।

दुलहिनी वधू, दुल्हिन दूलह वर ~ दुलारी ४२०२ ।

दुलहिया वधू, दुल्हिन . नई ~ दैहौं १९३ ।

दुलही श्रीकृष्ण का किसी गाय-विशेष के लिए दुलार का सबोधन ~, फुलही, भौरी, भूरी ४४५ ।

दुलार लाड-प्यार • कीन्है नद ~ ३०४४ ।

दुलारी स्त्री० लाडली बेटी, प्रिय कन्या . हँसि-हँसि बूझत बात ~ ७०८ । वि० प्यारी, लाडली कहौ वृषभानु ~ १९५७ । २. कर्णप्रिय, सुखद बाजत राग ~ ३४४४ ।

दुलारे लाडला (बेटा) : जब हुते नद - ~ १/२५ ।

दुलारौ लाडला (बेटा), प्रिय (पुत्र) : देख्यौ नद-~ १५ ।

दुवार द्वार, दरवाजा, बाहर निकलने का पथ दधि सुत जामे नद ~ १७५ ।

दुवारि द्वार पर ठाढी देखी नद ~ परि० २/६७ ।

दुवारे द्वार पर : हरि ठाढे रथ चढे ~ १/२४० ।

दुवारैं द्वार पर, दरवाजे पर : देखि फिरे हरि ग्वाल ~ २७७ ।

दुषनि कष्ट से . मैं इन दुहुँनि ~ सौं पारे २९६८ ।

दुसरौ दूसरा ब्रज जानौ ~ ३७३५ ।

दुसह १. असह्य, बहुत कष्टदायक : सुनि यह दसा ~ गोकुल की

३८३७। २ कठोर, दृढ, मजबूत · यह अति ~ पिनाक पिता प्रन ९/२३।

दुसासन दुःशासन, धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक जो भीम द्वारा मारा गया था : ~ अवर आनि गह्यौ १/२४७।

दुस्तर दुर्लंघ्य जिसे पार करना कठिन हो . ~ अति गभीर वारि-निधि ९/८९।

दुस्सह कठोर, विकट, कठिन हिरनकसिप ~ तप कियौ ७/२।

दुस्सासन दे० दुसासन : सभा मँझार दुष्ट ~ द्रौपदि आनि धरी १/२६।

दुहन पुं० दुहना : मैं दुहिहौं मोहिं ~ सिखावहु ४०१। क्रि० स० दुहने : गाइ न ~ देइ री परि० १/९०।

दुहनियाँ वह पात्र जिसमे दूध दुहा जाता है द्वियौ भरी ~ ७४१।

दुहगर्नी दूना हो गया बाढ़ी बिथा दुख ~ ३२६२।

दुहहु दुहो · ~ लाल की नाटी २५९।

दुहाइ स्त्री० विजय घोषणा : फिरी रघुबीर ~ ९/८३। क्रि० स० दुहा करके . धेनु ~ दूध लै आइ २८८।

दुहाई[1] १. प्रताप का डका, जय जयकार देत मदन मारुत मिलि, दसौं दिसि ~ ६५०। २ पुकार सुरपुर परी है मदन ~ २४३६। ३. शपथ, कसम, सौगंध तुमहिं मधुप गोपाल ~ ३६८३। ४. (राजा के सिंहासनासीन होने की) घोषणा : बैठे राम राज-सिंहासन जग फिरी ~ सारा ३०२। ~ **प्रातहि** प्रात काल ही शपथ · झूठहिं करत ~ — ६६८।

दुहाई[2] गो-दोहन · सूर स्याम गृह-द्वारहीं गो करत ~ ७१३।

दुहाऊँ दोहन कराऊँ · कामधेनु छाँडि कहा अजा लै ~ १/१६६।

दुहावत दुहाते ही : एक ~ तैं उठि चली ११८०।

दुहावति दुहा रही है · हरि सौं धेनु ~ प्यारी ७३३।

दुहावन दुहाने के लिए, दुहने के लिए · खरिक ~ जाहीं ४१५७।

दुहावै १ दुहाने लगती है हरि कौ मन मोहति, जब तू देखि ~ ७२१। २ दोहन करेगा सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन ~ १/१६८।

दुहि १ दुह कर ~ पय पिवन पटूखी ३५५७। २ दुह : मोहिं ~ दई धेनु बसीवन १६८१। ~ **काढे** दुह लिया, निकाल लिया · पाछे पृथु को रूप हरि लीन्हौं नाना रस ~ — मारा० २४।

दुहिनि दोनों के हरषति है ~ हियो ३०८६।

दुहियत १ दुह रही थीं . चहुँ ओर चतुरग लक्ष्मी कोटिक ~ धेनु री १३९। २ दुही जी रही हैं जहँ-तह ~ गाइ ४९२।

दुहिहौं दुहूँगा, दूध निकालूँगा . मैं ~ मोहिं दुहन सिखावहु ४०१।

दुही दुह ली गई है · ~ सबै अब गाइ ४००।

दुही १ दुही है आजु सबारें धेनु ~ मैं ४९५। २ दोहन किया गर स्याम सुरभी ~ ४०९।

दुहुँ १ दोनों · महरि बिनय करि ~ कर जोरे २४८। २ दोनों में ही . ~ मन तृषा बुझाऊँगी २४९३। ~ **दुहुँ बिच** दोनों के बीच : ~ अग अग स्याम स्याम घने १०५१।

दुहुँधाँ दोनों ओर से, मुख में ऊपर और नीचे · ~ मैं दँतली भई १२२।

दुहुँनि १ दोनों, दोनो ही ने · ~ दीन्हौ रोइ २८९। २ दोनों को · अबहीं प्रगट ~ हम देखे १९५५। ३ दोनों का : ~ बल अधिकार २१२२। ४ दोनों के तुम ~ हेत अवतार लीन्हौ ८/१६।

दुहुन दोनों को · लीने ~ बुलाय मारा० ९०६।

दुहुनि १ दोनो ~ मनहि मन जाने २१०९। २ दोनों का : ~ सकोच सह्यो १८२।

दुहूँ दोनों : हम तौ ~ भाँति फल पायौ ३८१६।

दुहूँधा १ दोनों : मोतिनि माल ~ मानौ ६३७। २ दोनों तरफ 'सूर' प्रभु स्याम बलराम दोउ ~ ३०५४।

दुहूँनि दोनों : की मारि डारौं ~ कौं ३०६६।

दुहैगे दुहेगे स्याम कह्यौ काल्हि ~ ६६।

दुहैया[1] शपथ, कसम, सौगंध बहुरि न करिहौ नद ~ ७३५।

दुहैया[2] दुहने वाला : अति रस काम की प्रीति जानि कै आवत खरिक ~ ७३३।

दुहौंगौ दुहूगा जब लौं एक दुहौंगौ तब लौं चारि ~ ६६८।

दूँदै द्वंद्व, दुःख प्रभु मोहि बिरह की ~ परि० १/४२।

दू जो सरबस मैं पहिलै ही वार्‍यौ नान्हीं नान्हीं दँतुली ~ पर ९२।

दूखीं दुःखी हैं : अति अकुलानी ~ ३५५७।

दूखी दुःखी हुई इते मान रहि जोग सँदेसनि सुनि अकुलानी ~ ३०२९।

दूजैं १ दूसरे . एक सुदर ~ अति नागर २२०७। २ दूसरे के · अब कैसें ~ हाथ बिकाऊँ १६९२।

दूजैं दूसरे इक दुख ~ हाँसी ४०४३।

दूजौ १. दूसरा : तुमहिं समान और नहिं ~ १/१११। २ दूसरे को · क्या ~ उर आनै ३७१५।

दूतनि १ दूतों ने . धाइ ~ कह्यौ ३०७३। २ दूतो द्वारा · सूर सुनत ~ रिस पाए ९२२। ३ दूतो (में) : निज ~ सौं कह्यौ बखान ६/४।

दूतत्व दूत का काम पांडव कौ ~ कियौ १/२६।

दूतहि दूत से : ~ प्रगट कही ५२५ ।
दूतिका दूती चतुर ~ जानि लई जिय २५६९ । ~ **भाइ** दूती भाव पढी ~ — माई ६५६ ।
दूतैं दूत से : पठै सँदेस स्याम कै ~ ३९१६ ।
दूध दुग्ध, दूध । △ ~ **दूध पानी सौं पानी** दूध का दूध, पानी का पानी, निष्पक्ष न्याय हम जातहिं वह उघरि परैगी ~ — १/२६२ । **काढि डार्यौ ज्यौं ~ माँझ तैं माखी** दूध की मक्खी की तरह बेकार समझ कर अलग कर दिया : 'सूर' — ~ — ३४८९ । ~ **के दाँत** दँतियाँ, दँतुलियाँ, छोटी अवस्था के दाँत कव द्वै दाँत ~ कै देखौं ७६ ।
दूधचढी जिनका दूध पहले से अधिक बढ़ गया हो : ते चरहिं जमुन के तीर दूनै ~ ७४ ।
दूधहि दूध से गोबर्धन ~ अन्हवाए ९०६ ।
दूधौ दूध भी : जानै छाँछ न ~ ३८९० ।
दूनैं दुगुना : ~ दूध चढीं २४ ।
दूब एक प्रकार की प्रसिद्ध घास जिसे हिंदू मगल द्रव्य मानते हैं और जिसका व्यवहार वे पूजन मे करते हैं : अच्छत ~ लिये रिषि ठाढे १९ ।
दूबरी दुबली पतली ऊधौ हम ~ वियोग ३७६५ ।
दूमैं दमकती हैं, चमकती हैं हँसि हँसि दतियाँ ~ १४७ ।
दूरि १ दूर निकट रहत पुनि ~ बतावत ३८९१ । २ छूट (गया है) : वदन मजन तै अजन भयौ है ~ १०७६ । ३ दूर है कितिक ~ गोकुल ३८२१ । ४. दूर दूर तक · ~ गयौ दरसन के ताईं १/११५ । ५ दूर से, दूर ही से : तस्कर जानि ~ परिहरै ५/४ । ६. छिप कर . ~ देखति जसुमति यह लीला १७७ । ~ **दूरि** दूर-दूर . ~ — तै आए ३५ ।
दूरिहि, दूरिहि दूर से ही : ~ तै चितवति उनहीं तन २१५७ ।
दूरिहीं दूर ही · पुहुप बिमान ~ छाँडे ०/१६८ ।
दूरी दूर हो जाता है . जो खातहिं मुख दु ख ~ १८३ ।
दूलरी दो लडियो वाली माला कठसिरी ~ तिलरी तर १५४० ।
दूषन दोष तुमहीं ~ दैह ३८७५ । △ ~ **आयौ** दोष लगता है हमहीं ~ — १०१४ ।
दूसरें वि० दूसरे : ~ कर बान न लेहौं ९/१५७ । **क्रि० वि०** दूसरी बार, पुन कढी कृपालु ~ माँगी ३९६ ।
दूसे दूषित हुए · कीधौं कहुँ तुम ~ हौ २६९१ ।
दूहुनि दोनों : ~ फवती लूटि ३१७४ ।
दूहूँ दोनो सुदर रूप ~ जन पाये ३/१३ ।
दूहे दुहे जाने : मधु ~ की माखी ३२०९ ।
दृग १ आँख, नेत्र : रोषहिं रोष भरे ~ तेरै ३४३ । २ आँखों मे : अजन दोउ ~ भरि दीन्हौ १८३ । ३ आँखों से : ~ रकत प्रवाह चल्यौ अधिकानी ७८ । △ ~ **दीने** नेत्र लगाए : सखिनि सहित ललिता ~ — २१७६ । △ ~ **भगि** कटाक्ष करके : करि गर्व ~ — भामिनि लची ११९१ ।
दृगनि १. नेत्र, आँखें मनु द्वै ढग चले हैं ~ २११३ । २ आँखो मे : रिषि कै ~ सूल हौ दियौ ९/३ । २ आँखों की . दसन वसन पर छापि ~ छवि २६३९ । ४ नेत्रों मे ~ सींचौं रोइ ३९५१ ।
दृगहि आँखों से : चपल ~ चकोर २१३३ ।
दृढ वि० १ मजबूत . उभय भुजा ~ डोरि १९३८ । २ पक्की : यह ~ वात जानिये प्रभु जू ९/१३७ । ३ कठोर : ग्यान ~ तप ध्यान पूजा ३८६५ । ४ निश्चल, अचल : ध्रुव कौं ~ देखि ४/९ । ५ दृढ निश्चय वाला · ~ न इनतैं आन १०२६ । ~ **करि** दृढतापूर्वक धरे ध्यान कौ जौ ~ —, ~ — चरन गहे रे १/१७० । **क्रि० वि०** १ दृढ · मेलि भौंह ~ फँसी २११५ । ~ **करि** कसकर · सूरदास प्रभु ~ — बाँधे ३६४३ ।
दृढता दृढ व्रत, पक्कापन : सूर देखि ~ गोपिन की ३६८२ ।
दृढताई दृढता : मन वच कर्म ~ जाकै २३२६ ।
दृढाइ पक्का करके : बैठी मान ~ अगाधा २८२८ ।
दृढाई दृढता धन्य मन की ~ १३६४ । △ ~ **लेत** पक्का कर लेते हैं : यह कहि प्रेम ~ — ३०२२ ।
दृढाओ पक्का कर दो : ताको ग्यान ~ सारा० ९७२ ।
दृढान्यौ दृढ /पक्का हुआ अव यह जोग ~ ३६०१ ।
दृढाय दृढ करके . ग्यान जननी को दीन्हो कपिल ~ सारा० ५५ ।
दृढायौ पक्का/दृढ किया : मुरली हमसौं वैर ~ १२६६ ।
दृढावत पक्का कराते हैं कहुँ उपदेस कहूँ ~ ज्ञान सारा० ६६९ ।
दृढावै पक्का करता है औरै ग्यान ~ ३९६४ ।
दृष्टात दृष्टि के अत से, दूर ही से (दृष्टात अलकार) सूरदास ~ पाँइ परि सा० ल० १९ ।
दृष्ट प्रत्यक्ष · देखत सबै ~ कै नासा ९३४ ।
दृष्टि निगाह, नजर कीजै कृपा ~ की वरषा १/१८५ । △ ~ **परे** दिखलाई दिये : जब तै ~ — नदनदन २२९६ । ~ **पसारी** दृष्टि फैलाई : दसहुँ दिसा तन ~ — ११०५ । ~ **भरि लखि** जी भरकर देख . सूर श्री गोपाल की छवि ~ — लेहि । ~ **लगाई** दृष्टि लगा रखी थी : उनके मन की कह कहौ ज्यौं ~ — ७१५ ।
दृस्यमान दृश्यमान, जो दिखाई दे रहा है ~ विनास सव होइ ५/२ ।
दे १ दी . आयो देव और मुनिजन सव ~ असीस सुख भारी सारा० १६४ । २ देकर ~ चुवन आकर्षति प्रान

११८० ।

देइ १. देता है . आपुन कौं को न आदर ~ १/२०० । २ देते हैं : हरि बैकुंठ बाम तिहिं ~ ६/४। ३ देती हैं : बाहिर जान न ~ ५२८ । ४ देकर . जोवन दान ~ रिन टारहु १६१९ । ५ दे : कोऊ ~ बताइ ३६७६ ।

देइगौ देगा . दई ~ टारि २९२ ।

देउँ १ दूँ, प्रदान करूँ : जो चाहौ सो ~ तुरत हौं ८४३ । २ देता हूँ, देती हू . ~ बिचा तुम्हें मैं बताइ ४१८९ । ३ दूँगा, दूँगी : वर माँगौ ~ कुमार ९/१४, अब न जान गृह ~ पिया रे २७३४ । ४. डाल दूँगी के तन ~ मध्य पावक कै ९/१७ ।

देऊँ दूँ · कमल पठाइ ~ ५५३ ।

देउ दो : सबनि कह्यौ ~ हमैं मिखाइ ७/२ ।

देख १. देखो काजर पीक आरसी ~ २७२५ । २ देख : खिरक ठाढौ ~ अद्भुत, एक अनुपम मार सा० ल० १४ । ३ देख कर ताको ~ कहत उद्धव सों हरि गोकुल बिसरायो सारा० ५६५ । ~ **परत** दिखाई देती है : अब रथ ~ — न धूरि सा० ल० ३६ ।

देखई देखता है : तहँ चढि तीय जौ ~ १/३२५ ।

देखउँ देखती हूँ : घर तोहि नैंकु न ~ १७०६ ।

देखत क्रि० स० १ देखती हूँ : सूरदास प्रभु जब-जब ~ २३४१ । २ देखते हो : क्यौं मोहन दर्पन नहिं ~ २४८४। ३ देखते हैं, देख रहे हैं: ~ स्याम, सखा सब देखत १६२० । ४ देखेंगे : ते कैसें दुख ~ २२३५ । ५ देखती है ~ नंद कुमार ३८७४ । ६ देखते रहे · सिव बिरंचि नारद मुनि ~ ७/४ । ७ देखते : वृथा फिरत नट कै गुर ~ २३०८ । ८ देख कर भी · पट कुचैल दीन द्विज ~ १/७ । ९ देखते-देखते . हम ~ पल एक मैं मार्‍यौ दनुज प्रचारि ४३१ । ४३१ । १० देखते ही · मो ~ पाहन तरे ९/४२ । ११ देखने मे : ~ भले, काज कै औसर ३९३६ । १२ देख रहे ये कोतुक ~ ब्रज-लोगन कै ९३४ । १३ देखने मे, दर्शन से : मुख ~ सुख पावत नैन ११८० । ~ **फिरिहौं** निगरानी करती फिरूँगी · अब उनकी ~ — १७४३ । ~ **सुनत** जानकारी प्राप्त कर देख-सुन कर · ~ — सबै जानन हौं १/२०८ । ~ **ही रैहौ** सिर्फ देखते या ताकते रह जाओगे, कुछ कर न पाओगे लैहों छीनि दूध दधि मारवन ~ — १५०८ । ~ **भयौ** देखा गया · तहाँ मच्छ एक ~ — ९/८ । वि० दर्शनीय : ~ बन उपबन सरिता- सर ९/१६५ ।

देखतहि देखते ही : हम ~ पठायौ १९५२ ।

देखनि देख रही हैं : ~ इक टक रूप-कन्हाई ९०३ ।

देखति १ देखती : ~ हौं कछु और दसा २७८३ । २ देख रही हूँ : कैसी दसा आजु मैं ~ २४२३ । ३ देखती है, देख रही है . ब्रजवनिता ~ नंदनंदन १८०० । ४ देख लेती हो . 'सूर' स्याम कैसें तुम ~ २०६४ । ५ दिखाई पड़ती है : ~ नहीं ध्यान जीवै कौ ३९३७ । ६ देखती, निगरानी करती : नव ला ~ रहियौ ३१३ ।

देखतैं १ देखते ही . साल्व करवार लै स्याम कैं ~ ४२२१ । २ देखते हुए · ~ सबनि कैं ताहि बैठारि रथ ४२०९ ।

देखत्यौं (मैं) देखना : ~ तेरी यौं अर ३७२ ।

देखन १ देखने : ~ तौ नहिं पावत २३४१ । २ देखने को : बेद बिधि चहत, तुम प्रलय ~ कहत ८/१६, परम प्रिया पथ ~ पठए ३९३९ ।

देखनहुँ देखने भी, देख भी · नींकैं करि ~ न पाए १८८३ ।

देखनि देख कर : क्या जीवै निसि दामिनि ~ ३४०५ ।

देखरावत दिखाते हैं, दिखलाते हैं · सूरदास प्रभु काम सिरोमनि कोक-कला ~ १९०८ ।

देखहि १ देखें · चलहु कान्ह बन ~ ४१५ । २ देखेंगी : ~ मुख उद्योत ३९९३ । ३. देखते ह ~ दौरि द्वारिका बासी ४१८४।

देखहिंगे देखेंगे : ~ तुम्हरी अधिकाई ६६८ ।

देखहीं क्रि० स० १ देखते हैं, देख रहे हैं . चढ़ि विमान सुर ~ गगन रहे भरि छाइ ४३१ । २ देखती है : ~ अति बिकल राधा ११२१ । क्रि० अ० दिखाई दे रहे हैं : बार बधि बीर चहुँधा ~ ३०५४ ।

देखहु १ देखो . अपनी बात खबरि करि ~ १५६० । २ देखते : चारा दिसा चितै किन ~ ८६८ । ३ दर्शन कर लो, देख लो ~ दरस नैन भरि नीकैं १७६६ ।

देखाय दिखाना जो लौं बडो होय तौं लौं यह अमुरन मतिहि ~ सारा० ६९५ ।

देखाये दिखाया बहु बिधि दाँव ~ सारा० ५२१ ।

देखायो दिखाई पडा यह कौतुक देखन के कारण मैं आयो जो ~ सारा० ६६१ ।

देखायौ दिखाया पुनि निज बिम्ब रूप जो अपनो सो हरि जाय ~ सारा० २५३ ।

देखि १ देखकर · नट नटन ग्रहि ~ कै १६१८ । २ देख, देखो अद्भुत कोतुक ~ सखी री ११८९, एक अचम्भो ~ सखी री १७२ । ३ देखती चलो . ~ निया कैसौ बल करि तोहिं दिखराऊँ ९/११८ । ४ देख कर, समझ कर · बाल ~ गहन भुज लाग्यौ ३०४९ । ५ देखे . मो पै ~ न परैं अकेले २८०८ । ६ पाकर · दरस ~ सिहाहिं २३४८ । ७ देखने को . अपनैं ~ चलै कौ यह सुख ९/२७ । ८. देखने से . बाहर ~ मनोहर दरसन ३७६१ । ९ देगा है : काल किन ~, इतरात का रे ३०५४ । १० देखते : ~

रहत नहि कछु सुहात २०२१। ~ **करै अँधेरा** दूसरो को भी अँधेरे मे रखने वाला है महा मत्त बुधि बल कौ हीनो, ~ १/१८६।

देखिबे देखने बैनाने ~ की ठौर २९९५।

देखिबैं १ देखना अति चटपटी ~ चाहत ३२४८। २ देखने दुर्लभ रूप ~ लायक २९०२।

देखिबो देखना, देखने की क्रिया या भाव बहु रथ ~ वह भाँति २६४५।

देखिबौ १ देखने के लिए नगन तिय ~ जुगत नाही कर्‌यौ ४१९८। २ देखते ही : अजहु सूर ~ करिहौ १/१७५।

देखियत १. दिखाई देता, दिखाई पडता कैसौ तन, कैसौ रग ~ है १८३४। २ दिखाई दे रहा है ~ कमल वदन कुम्हिलानौ ३६७। ३ दिखाई दे रहे है : ~ चिह्न तुम्हारे २६३९। ४ देखी जाती है, दिखाई पडती है . ज्यौं डोरे वस गुडी ~ २३७८। ५ देखते है रमा शेष पुनि किनहुँ न पायो सो ~ वृन्दावन सारा० ५७७। ६ दिखाई दे रहे हो . ~ लाल उनींदे भए २६३४। ७ देखते भुव द्रव ~ नाहीं सारा० ३९। ८ देखते हुए सागर भरे ~ पानी ३७७४। ९ दिखलाई पडती हो इन्दीवर पर मनो ~ रवि की किरण प्रचड सारा० १७७। १० दिखाइ पड रही थी : जोग-अगिनि की दवा ~ ३५८८। ११ देखते ही देखते : ~ परी तिहारै माथैं ३८११।

देखियति दिखाई दे रही है, दिखाई देती है कारी घटा सुधूम ~ ८६८।

देखियैं १ देखने के लिए काल्हि चलौ नृप ~ २९५४। २ देख रहे थे चहुँधा ~ नद ढोटा ३०५५।

देखियै १. देखो, देख लीजिए,. सूरदास प्रभु समुझि ~ १/१९१। २ देखते हैं और जु अतिमय प्रीति ~ ४२२६। ३ दिखाई पडता है : जित देखौ तित ~ रसिया नद कुमार १४४३। ४ देखा चलहु ~ जाइ ८४१।

देखिहू देखा ~ सुनिहू नहिं ताहि १/२०३।

देखिहै १ देखेगी हम जो करत ~ कुबिजहि ३७१०। २ देखेगे . 'सूर' स्याम जौ ~ २१९३।

देखिहे देखेगा हमरै कहा ~ रे तू ३८७३।

देखिहौं १ देखूँगा आजु वे चरन ~ जाइ २९४७। २ देखूँगी जौ पै रिस ~ ७७९२। ३ देख लूँ, दर्शन हो जाय ऐसी विधि ~ जानकी ९/७५।

देखी १ देखी है ~ कै अनुमानति है १८३४। २ देखा है . ~ राघव पास ९/८३। ३. दिखाई : (वसुदेव) ~ परी जोग माया ४। ४. दिखाई पडी : जव माया मीता नहि ~ जिय मे भये उदास सारा० २६८। ५. देखो . सवनि ~ प्रगट मूरति ८३६। ६ देख लिया • उन ~ वह वाम २६२९। **~ सुनी न** न कभी देखी है और न कभी सुनी है अनहोनी कहुँ भई कन्हैया ~ — वात १८९।

देखे १ देखेंगे : कह्यो जुधिष्ठिर ~ जोई ६/७। २ देखे, दर्शन किये विनु ~ नाहि जैहो ३५। ३ देखा, देखा है : ~ नद चले घर आवत ५४१। ४ देख लिया है : अव तौ हरि परगट ही ~ २०४३। ५ देख कर . तोहिं ~, मया मोहि अतिही भई ५५१। ६ देख रही थीं • युवतिन सबै कामवपु ~ सारा० ५१५। ७ देखते हुए हमहिं न ~ भावत ३७५६। △ **~ ही बनि आवै** देखते ही बनता है वह विनोद वह लीला रचना, ~ — ४१५०। **~ बनै** देखते बनती है . ~ — चकडोरि महूरी ३८४७।

देखेहुँ देखने पर भी • ~ अनदेखे से लागत २१२४।

देखैं १ देखे, देखे हुए विन ~ ताकै मन तरसे ४२८५। २ देख कर, देखने से/पर • 'सूर' उनकौ प्रेम ~, फीकौ लागत ग्यान ४१४४। ३ देख ले ~ कहूँ नैन भरि याकौं २१९१। ४ देखती हैं • पुनि उठत जागि ~ मुकुर २१९६। ५ देख रहे हैं मेघ दल प्रवल व्रज लोग ~ ८५५। ६ देखेंगे • कमल नयन मुख ~ ४०२७। △ **~ बनै** देखते ही बनता है • ~ — कहत रसना सौं ३५६०। **~ बनि आवै** देखते ही बनती है ~ — अग छवि १११८।

देखै १ देखता है जो ~ ताकौ मन मोहै ३/१३। २ देखा : फिरि इत उत जसुमति जो ~ ४१३। ३ देखती है : ~ आइ द्वार है नागरि २०४२। ४ देखते हैं . जोइ ~ सोइ सोइ निरमोले २२९९। ५ देख ले : वहुरि जिनि आपनी छाँह ~ २४६२। देखने लगी : ~ ताहि पुरुष की नाई ~ ९/१७३। ७ देख/पा सकता है ~ जो नैन, रोम रोम प्रति सुहाई १८३६।

देखो देखा • उद्धव तुम नयनन नहि ~ ताते भेद न पावै सारा० ५७५।

देखौं १ देखूँ • बैन सुनों विहरत वन ~ ८०५। २ देख लूँ, दर्शन कर लूँ : जिहिं विधि ~ रघुपति पाइ ९/८७। ३. देखती हूँ, देख रही हू ~ नहीं मुतिसरी माला १९६८। ४ देख लेती हू जव नैननि भरि ~ ९/३५। ५ देखता हू ~ धौं कित कै सुख पैहैं ९०९। ६ देखूँगा • मुख नहिं ~ माइ ९/४७। ७ देखूँगी • नहिं मुख ~ तोर ९/८३।

देखौ १ देखो . दर्पन लैं मुख ~ २५४४। २. विचारो • हृदय ~ जोइ ३१०८। ३ देखे कमल-नयन सो चैन न ~ ४०५७। ४ देख लिया, आजमा लिया • लाख जतन करि ~ १/६३। ५ देखते हो . नैननि मूँदि मूँदि कह ~ ३८५८। ६ देखूँगी . जव ~ राधा सजोग १९२२। ७. देखती हो : मुख तन कह ~ १९५३। **~ नीकैं** भली

भाँति देखो नद-नदन-मुख ~ — १८२६।

देखौंगे देखोगे . ~ सब देस ४०७८।

देख्यौ १ देखना : ~ चाहति कमलनैन कौं ३५५८। २ देखा : आजुहीं प्रात इक चरित ~ नहीं २०५६। ३ देखा है, सुना है : कबहूँ साह करत ~ मोहिं १५७७। ४. देख लिया, देख लिया है : ~ ध्यान तुम्हारौ ३८१५। ५ देखा गया : हरि नाँ मीन न ~ कोई १/१०। ६ देखते ही : ~ नद दुलारौ १५। ७ देखने : दौरि नद गए, सुत मुख ~ १३। ८ देखो . नैननि ~ आइ २०। △ ~ भावत देखना अच्छा लगना है . वह सुख देखि जु नैन हमारे, ब्रह्म न ~ — ४१५२। ~ सुन्यौ न न देखा है और न सुना है : ~ — मन धावै री ४२५४।

देख्यौइ देखना : बार-बार छवि ~ चाहत १८५०।

देत १ देता : इत उत जान न ~ २४७२। २ देते : नैंकु न ~ दिखाई ३८८४। ३ देती है · मनहिं मन ~ अति ताहि गारी २४२१। देती हुई : धाँपै ~ घरनि कै द्वारैं ८१८। ५ देते हुए : सुरपति पूजा ~ जानि। ६ लेने देते . नैन चैन न ~ ३५७८। ७ देने मे : ~ न नक करै २४। ८ देते थे, दे रहे थे नद मिलि ~ अनीस २७। ९ देते समय : तब ~ साँवरि कुज-मडप १०७२। १० देता रहा छिन छिन ~ त्रास अधिकाई ७/८। ११ देने पर : और ~ कछु मन नाहिं आवै ६/५। △ ~ अचगरी छेड़छाड करते हैं 'सूरदास' प्रभु ~ — २०७३। ~ जरे पर लोन जले पर नमक छिड़कते हो ऊधौ जौ जिय जानि कै ~ — ३५२२। ~ हुँकारी हुँकारी देते हैं, हूँ-हूँ करते हैं : चतुर सिरोमनि ~ — १९८।

देति १ देती हैं, रही हैं हम दिन ~ असीस प्रात उठि ३५४७, ~ असीस सकल ब्रज भामिनि ८१०। २ दे/लगा रही है . घर-घर ~ जुवति-जन छाया ८९५। ३ देती थीं : चलन न ~ ४१०२।

देति १ देती है · उलटि चुनन ~ गमिकिनि २४५९। २ देती हो : गहि दिवि काहैं ~ ३८६१। ३ देती हूँ · मैं अन्तवाण ~ दहुँनि कौं ५११। ४. बनाती है . कटि तट सुभटहिं ~ रसन पट २१८३। ५ थमाया : बीरा बिहँसि ~ अधरनि कौं २१८३। ६. देने मे : तुमहिं ~ मैं अनि सुख पायौ २६५। ७ देती हुई ते निकसी ~ असीस २४। ८ देती है, डाल लेती है : सूर सुभ पट ~ काहैं न बरष द्वादस मारि १७१५।

देते १ देते, बताते . कछुवै गुन ~ ३७८६। २ धारण कराते, बधाते . बिरहिनि ~ धीर ३९९५।

देतैं देने मे : दान ~ डरनि १५०४।

देतौ देना : ~ सबनि बहाइ ९५४।

देत्यौ देता, प्रदान करता · सूर रोम प्रति लोचन ~ ६४३।

देन १ देने : आए हौ सुख ~ कौं २६८८। २ देने के लिए : दान ~ कह कहौं महर के ६०७।

देनी देने वाली : अगतिनि कौं गति ~ ९/११।

देनु १ देने : घरहीं घर लागे सुख ~ ४३८। २ पिलाने : बोलि ल्यावहु सुरभि-गन, सब चलौ जमुन जल ~ ४२७।

देव पुं० १ देवता। २ (गोवर्धन) देव ने : ~ कह्यौ यह प्रगट सुनाइ ८७१। ३. सुमन, फूल : पाप हरन मे ~ अनुपम सा० ल० ९७। क्रि० स० देकर : दरसन ~ सकल दुख मेटौ सारा० ९१८।

देव क (क) जल का पुष्प, कमल ~ कौ छत्र छावत सा० ल० १०५।

देवकि देवकी, कंस की चचेरी बहन जो वसुदेव को ब्याही थी, कृष्ण की माता : ~ माता जानौ ४२७८।

देवकिहि देवकी को बारह बरस वसुदेव ~ कस महा दुख दीन्हौ १/१५।

देवकी दे० देवकि : उग्रसेन वसुदेव ~ ३५३३।

देव-गति मोच : लागत बान ~ पाई ९/५९।

देवगिरि देवगिरी, एक रागिनी जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं : भूमक नाचति ~ गावति परि० १/१०८।

देवतनि देवताओं ने . ~ बहु दुख पाये ३/११।

देवधामी तीर्थयात्रा : ~ करत ६९९।

देवन १ देवताओं को : दीन्हे मारि असुर हरि ने तब ~ दीन्हौ राज सारा० २७। २ देवताओं को भी . दरस तुम्हारे ~ दुरलभ ४२९८।

देवनाथा देवाधिदेव : तुरत मार्‌यौ कस ~ ३०८३।

देवनि १. देवों ने : मोहिं बर दियौ सकल ~ मिलि ९/८३। २ देवों, देवताओं : कीधौं ध्यान करति ~ कौ २०५४। ३ देवों को : सूर स्याम ~ कर जोरौ २६१। ४ देवों मे मैं ~ सिरताज ८३४।

देवमनि सभी देवताओं मे श्रेष्ठ, श्रीकृष्ण : और मत्र जो करौं ~ ९/१२१।

देवयानी शुक्राचार्य की कन्या जो राजा ययाति को ब्याही थी : शुक्रसुता ~ नाम ९/१७३।

देवराज १ देवताओं के राजा पर्वत ने : ~ सत्र जानी ८४२। २. देवताओं के राजा इन्द्र ने : ~ मघ भग जानि १/१२२।

देवराजैं देवताओं के राजा अर्थात् श्रीकृष्ण : कान्यौ कटि पीत पट ~ ३०७६।

देवराय देवराज कृष्ण ने : कस मार्‌यौ निदरि ~ ३०७१।

देवल रिषि एक ऋषि जिन्होंने जल में पैर पकड़ने पर एक गधर्व को ग्राह हो जाने का शाप दिया था : ~ रिषि कौं पकर्‌यौ पाइ ८/२।

देवहि देव को . प्रेम सहित ~ सु चढावहु ९०० ।

देवहू देवगण . दसरथ कह्यौ ~ भाष्यौ ९/१६२ ।

देवागन देवताओं की स्त्रिया जय जयकार करत ~सारा० ७९४।

देवा सुर, देवता . सकल सुर नर मुनि ~ ४१८८ ।

देवानी पागल, उन्मत्त, दीवानी हमहू कौं अपराध लगावहिं ऐऊ भई ~ ३२४ ।

देवाये दिलाया, दिलवाया विप्र वहुजन को वहुतहि दान ~ सारा० ८३६ ।

देवायो दिलाया, देने को प्रेरित किया : वहुतहि दान ~ सारा० ८२२ ।

देवै कृष्ण की माता, देवकी . सुरदेवी ~ धनि मैया ३०९५ ।

देवैया देने वाले, दाता मधुकर भए ~ जी के परि० १/१८५ ।

देसाक एक राग · देवगिरी ~ देव गौरी श्री सुखरास पुनि सारा० १०१६ ।

देस देश । ~ **देस** १ देश देशातर मे : ~ — भयौ रहस 'सूर' प्रभु ४१८८ । २ देश देश (से) ~ — तैं टीकौ आयौ ९/१८ ।

देसनि देशो मे, क्षेत्रो मे · किधौ घन गरजत नहि उन ~ ३३१० ।

देसी देश (समाज) के · बोलन लागे ~ परि० १/१४१ ।

देह **स्त्री०** १ शरीर । २ शरीर का कोई अंग लिग ~ नृप कौं निज गेह ४/१२ । ~ **धरी** शरीर को प्राप्त किया है . सुदर ~ — १/७१ । ~ **बिसरायौ** विदेह हुई मन यह कहति ~ — १५९० । **क्रि०स०** दो : एक बेर इहिं दरसन ~ ९/२ ।

देह-कृत शारीरिक क्रिया कर्म वाहिर जाइ ~ कीन्हौ ९८४ ।

देह-गति शारीरिक चेतना जहँ तहँ ~ विसराइ ३८७ ।

देहरा शरीर मे, देह मे उर नख लागे अति छवि भई ~२५७७ ।

देहरि देहली, देहलीज ~ लौं चलि जात १२६ ।

देहा शरीर भई साँवरी ~ ३२२९ ।

देहि १ दे अव जोई पट ~ कृपा करि ४००३ । २ देंगी · ~ न नख भरि तोहिं १६१८ । ३ देता है अरु हरि भजन करन नहि ~ ५/४ । ४ दे रहा है, लगा रहा है : एक हेरी ~ गावहि २६ । ५ देते है ~ पीठि सु अभागे १/८ । ६ देता आनि ~ जौ मोहिं तुहीं १६५५ । ७ देती जायँ, देती हैं मटुकनि तैं हम ~ खाहु तुम १६१० । ८ देते ये : जैसौ ~ सो तैसौ खाइ ५/३ । ९ दे सकते हैं · जे लोभी ते ~ कहा री २२६८ । १० दे दे/वजा वजा कर : चुटकी ~ नचावहीं ११६ ।

देहिगी देगी वहै फल ~ हो २८७७ ।

देहिगे देगे · सूर अस जौ नाहिं ~ २३१९ ।

देहि **क्रि०स०** १ दे छाँडि ~ री अति तपनी २०९२ । २ देते हैं हरि जू ~ ताहि निज-धाम ६/४ । ३ दो ~दान वदी जन गुनि-गन १४ । ४ देगे · राज ~ सत्त जुग वैठाइ १२/३ । ५ दे रही है · और कोऊ वियौ कह ~ गारी १७३० । ६ देकर . पुहुमि दाहिनी ~ गुफा वसि १६१८ । ~ **धौं** तो दे नेकु ~ — मोका आवन ९/१३१ । **स्त्री०** शरीर · द्रुम मैं ~ छिपाइ ९/८३ ।

देही देह पर ~ लाइ तिलक केसरि कौ २९४ ।

देही १ देह, शरीर एक जीव ~ द्वै राची २०६६ । २ शरीर, शव लै ~ घर बाहर जारी १/७१ । ३ शरीर को . खोई ~ देवति ३९८९ । ४ शरीर मे पच त्रय गुन सकल ~ ३६८५ । ~ **धरि** शरीर/अवतार धारण करके का कारन ~ — आए १६१९ ।

देहुँ १ दूँ, देता हूँ . ~ तोहिं वृत्तात सुनाइ ६/५ । २ वजवाता हूँ सूर साजा सवै, ~ डौंडी अवै ९/१२९ । ३ दूँगा जो माँगौ सो ~ तुरतहीं ८/१४ । ४. दूँगी · ~ प्रेम की गारि १९३२ ।

देहु[1] १ शरीर भी सूर-प्रभु ~ हौं यहै पाऊँ १/१६७ । २ शरीर मे, देह मे सूर-प्रभु कृपामय कियौ उन वाम रचि निज ~ २२७४ ।

देहु[2] १ दे दे/ दे दो · कोटि ~ तौ रुचि नहि मानौ ३५ । २ दे, दीजिए मोधौ जू नैंकु दिखाई ~ ३७८५ । ३ देती हो . काहे कौ सखि अपनौ सरवस, हाथ पराएँ ~ ४२६० । ४ लगाओ . ऊधौ इन नैननि अजन ~ ३५७३ । ५ दे रहा हूँ ~ फल हौ तुरत लेहु १०३५ । ६. देते हो सपति ~ लेहुँ नहि एकौ ३६ । ७ देने के लिए · हठत तोरि पलास पल्लव ~ देत दिखाइ ४९८ । ८ देता हूँ · जमुन-जल-सौहँ ~ जु नहैहौ ४१२ । ९ दे दो : ~ न तौ मन तुमहीं २०९६ । १० देते . कान्ह वहोरि न ~ दही १६१८ । ~ **डारी** छोड दो हरष चित करहु दुख ~ — १०३५ । ~ **नसाइ** इसे दूर कीजिए मुनिवर ~ — १००८ । △ ~ **बाँहँ** बाँह दो, सहारा दो ~ कृपा करि — १/५१ ।

देहुगी दोगी, प्रदान करोगी . तौ तुम कहा ~ हमकौ ७९९ ।

देहुगे दोगे . कहा ~ मोहिं २८७७ ।

देहो दो ~ दधि को दान नागरी सारा० ८७९ ।

देहौं १ दूँगा हम गज हेम रतन पाटम्बर ~ प्रगट प्रमान सारा० ३३७ । २ दूँगी तिहि ~ देस निकारौ १८३ ।

देहौ **पुं०** शरीर ~ त्यागि राखिहौं यह व्रत १६६८ । **क्रि० स०** दो, देना वेग जाव व्रज मो आग्या ते व्रजवासिन सुख ~ सारा० ५४८ ।

दै दे . ~ गए हँसनि अँकोर ३७३४ ।

दै[1] दैत्य . हिरनकसिपु हिरनाच्छ आदि ~ १/५४ ।

दै[2] १ देकर : आलिगन ~ अधर दसन खँडि २४१३ । २.

करके . आगैं ~ पुनि ल्यावन घर कौं तू मोहिं जान न देति ४२४ । ३ मिला कर · जनु सीतल मों तप्त मलिल ~ ९/१११ । ४. खिला कर : कम सौंह ~ पूछियैं १६१८ । ५ लगा कर · तू सुनि कान ~ री मुरली धुनि २८०३ । ६ दे . देखन ~ पिय मदन गुपालहिं ८०२ । ७ दो, दे दो तीन पैग वसुधा ~ मोकौं ८/१४ । ८ देते हो सुनि उत्तर किन ~ रे मधुकर ३८७७ । ~ आगैं आगे करके ~ — वृषभानु दुलारी २८९३ । ~ कान कान लगा कर, ध्यान देकर सुनु मोहन विनती ~ — ११८० । ~ दै दे-देकर · मिलन परस्पर अकम ~ — ८२६ । ~ बाहँ आश्रय देकर : अभय किये ~ — ८६७ । ~ दुहाई दुहाइ दो : ~ रावै वृषभानु — ११८८ । ~ दृग नेत्र लगाए हुए है : जित-तित रहीं स्रवन ~ — ९९७ । ~ पान पान करा करके . अधर रस ~ — १०२६ ।

दैखति देखती है · ~ जननि जसोदा यह छवि ६६९ ।

दैखौं देखना हू . मैं इहाँ जो आइ ~ ५०४ ।

दैत दैत्य, दानव : भेद ही भेद सब ~ वार्तो कहीं २९५३ ।

दैतारि दैत्यों के शत्रु अनर भए ~ ११८२ ।

दैतारी दैत्यों के शत्रु धन्य लियौ अवतार, कोख धनि, जहँ ~ ४०३१ ।

दैत्य १ कश्यप की दिति नामक पत्नी से उत्पन्न पुत्र, दैत्य, असुर : बलि ~ सुखहीं भजन १/११९ । २. दैत्यों को : बडे ~ कैमैं के मारे ९/१०५ ।

दैत्यारि दैत्यों के शत्रु, कृष्ण बीच मिलै तार्कौं ~ ३१०६, लह्यौ मुत ~ २०९१ ।

दैत्यारी दैत्यों के शत्रु · त्राहि-त्राहि श्रीपति ~ २१५९ ।

दैन १ देने : ~ बधाइ आए ३१३४ । २ देने वाली है · मागी रवहिं भव्य वर ~ ९/१२ । △ **लैन न** ~ लेने मे न देने मे, किमी तरह के मवध मे नहीं . ए गीधे नहिं टरत वहाँ तै मोसौं — ~ ।

दैनी देने वाली, प्रदान करने वाली अधक रिपु ता रिपु-सुख-~ २७९८ ।

दैनु देने के लिए · प्रगट भए सुख ~ ५०२ । △ **लैनु न** ~ लेना न देना, व्यर्थ ही . चलन कहा मन ओर पुरी तन जहाँ कछु — ~ ४९१ ।

दैबे देने : तिनका अति आदर ~ का २४५८ ।

दैवैं देने के लिए : पटतर ~ कहन कवहुँ कवि १२०५ ।

दैवौ देना · दधि मटुकी गारी ~ १४८० ।

दैयत¹ देते हैं : दूजे करज दूरि करि ~ १/४२ ।

दैयत² दैत्य, राक्षस : रघुवर हतिहैं कुल ~ की ९/८८ ।

दैया १ दयिता, प्यारी गुपुत प्रीति तासों करि मोहन, जो है तेरी ~ ७३४ । △ ~ **दैया** रक्षा के लिए ईश्वर की पुकार, हे देव ! हे देव ! · भाजि चर्न्यौ कहि ~ — ३३५ ।

दैव देने : ~ का वडौ महर देन न लाव गहर ३९ ।

दैवे देवकी : मातु पितु वसुदेव ~ ३१४१ ।

दैहै १ देंगे . तब कीन्हैं मो ~ आग ०/२ । २ देंगी . कौन न्याव हम ~ १५३३ । ३ देगी · मुजरा तवहीं ~ १७०० । ४ दूंगी · अवहीं जाइ प्रगट करि ~ १७०३ ।

दैहे १ देगा . को मुक्ताहल ~ ३६६४ । २ देगी · ताकौं न्याव कछु मोहि ~ १६५० ।

दैहौं १. दूँगा · ~ बहुत बडाइ ६०४ । २ दूगी, दे दूँगी : जो कहे प्रान तिहिं ~ १६६८ । ३ तब दूँगा जब लगि नव सिर छत्र न ~ ७/२ । ४ लगाऊँगी ता दिन मैं कनरा ~ ३०४९ ।

दैहौ १ दोगी : ~ वेसरि क्या नहीं २९५३ । २ दे देना आइ कछु पास मोहिं मैन ~ १९४८ । ३ दूंगी . ककन ~ नाइ ३९४३ । ४ दोगे · ऊधौ हमहि सीख कह ~ ३६१६ । ५ देंगो · लीला कार्को ~ ३७०५ । ६ देना . ~ जिनि गारी १९७७ ।

दोचिके दबाव मे डाल कर नदुल माग ~ लाई मारा० ८०९ ।

दो वन की आग, दावानल घर वन कछु न सुहाइ रैनि-दिन मनहुँ मृगी ~ दाहै २८०१ ।

दोइ १ दो . मन एकै तन ~ १४५७ । २ भिन्न, अलग · हरि कैं सत्रु मित्र नहिं ~ ४२०६ । ३ दोनों . महज मिले सुर ~ १४८ । ~ **एक करि अंत हीन** दो+एक=तीन, तीसरा नक्षत्र कृतिका को अतहीन करने से कृति, दोनों का मिलाने से कृति-कृति अर्थात कृतकृत्य · ~ — मुहि सा० ल० १० । ~ **दस कर** उत्तर : ~ — दियौ ममुकन सा० ल० शेष ४ ।

दोइ जनम कौ राजा दो जन्म वाला (द्विज) का राजा (द्विजराज), चंद्रमा : ~ वैरी सा० ल० ८८ ।

दोई १ दो मैं तुम एक नाहिं है ~ १६९२ । २ दोनों : म नैना ~ २३४० ।

दोउ १ दोनों . सुंदर तन सुकुमार ~ जन ०/४३ । २ दोनों ही : रूप गुननि ~ नीके हौ २२१२ ।

दोउनि १ दोनों तिन ~ कौ देखि कै ३/११ । २ दोनों को · ~ एकै थार जिमाए २८२८ । ३ दोनों के · मारान लै कर ~ कर दीन्हो ४०७ ।

दोऊ १ दोनों · यह सुनतहिं ~ उठि धाए ४४३ । २ दोनों मे . तारी एक बजन कैं ~ १००८ । ३ दोना तरह से : यह हाँनी दुख ~ ३८११ ।

दोच द्विविधा, असमजन दूरि करिहौं ~ २४०३ ।

दोचन द्विविधा, असमजन : करत कहा जिय ~ २०४२ ।

दोचि दुविधा . मेटि डारौ ~ १५९२ ।

दो ढो पति धर तिया पुत्र २+२ (४) चौथा नक्षत्र (रोहिणी) के पति (चंद्र) मे धर मिलाने से (चंद्रधर) महादेव की पत्नी (पार्वती) के पुत्र, गणेश ~ कहि सा० ल० १८ ।

दोन दोनों . देत ~ विलास सहचर २१३१ ।

दोनियाँ छोटा दोना रुचि मानत दधि ~ २३८ ।

दोनौं दोना दधि ओदन भरि ~ दैहौं अरु अचल की पाग २९४८ ।

दोबल दोष मोकौं ~ देति कहा हौ २०९६ ।

दोय १ दो प्रकट धरे वपु ~ सारा० ८०० । २ दोनों निर्भय किय लकेश विभीषण राम लषण नृप ~ सारा० २९५ ।

दोलौ डोलते हुए, भूलते हुए भोर भए उठे 'सूर' किए आए ~ २५०७ ।

दोष दोष, पाप, अपराध . मम कृत ~ लिखै बसुधा भरि १/१११ ।

दोषनि दोषों से : ~ देह भरी १/१३० ।

दोषौ दोष • नैन देत मोहिं ~ १६८२ ।

दो हकार दो ह के मिलाने से ह ह, हा हा ~ उचार थाकौ सा० ल० ५६ ।

दोहन क्रि० स० दुहाने गाइ फिरति पै ~ कौं २९८२ । २ दोहन (किया) सुर रिषिन नृपति पुनि पृथी ~ करी ४/११ । पु० दुहने का पात्र, दोहनी को ल्यावै भरि ~ ३१३७ ।

दोहनि दूध दुहने का बरतन : एक ~ दूध जावन कौं ९९५ ।

दोहनी दूध दुहने का पात्र कैसे गहत ~ बुद्धवनि ४०१ ।

दोहाई १. घोषणा, सूचना किसलै कुसुम नव नूत दसहुँ दिसि मधुकर मदन ~ २७८४ । २ रक्षा, बचाव या सहायता के लिए पुकार ग्वाल करत सब नंद ~ ९६१ । ३. शपथ, कसम आपु गई जसुमतिहि सुनावन दै गई स्यामहि नद ~ ७५७ । △ **फिरत** ~ घोषणा फिर रही है बोलत बग निकेत गरजै अति मानौ — ~ २८३६ ।

दोहि सार निकालकर : सत्य वचन करि ~ ८२१ ।

दोहिनी दूध दुहने का पात्र सूरदास नद लेहु ~ २५९ ।

दोही निकाल, चुरा मन जब तें लीन्हौ ~ री १९१७ ।

दोहु द्वैतभाव जौ लगि अस्थिन ~ ३५३९ ।

दोहुन दोनों . पग रिपु अग अग ~ के सा० ल० ४३ ।

दौंहै आग, दाह : जित तित लगी मदन की ~ ४०७५ ।

दौ दव, आग कानन देह विरह ~ लागी ३८२४ ।

दौउ दोनों, कुछ दिन भये सग ~ बालक बल मोहन ~ भाई सारा० ४४३ ।

दौन दमन करने वाले : स्याम दुख कै ~ ३९९७ ।

दौना दोना । **खात रह्यौ** ~ दोना चाटता रहा • दधि लै छीनि — ~ २८८४ ।

दौनागिरि एक पर्वत, जहाँ हनुमान लक्ष्मण जी के शक्ति लगने पर सजीवनी जडी लाने गये थे : ~ पर आहि सँजीवनि ९/१४९ ।

दौर १ दौडने की क्रिया या भाव : हमहूँ तैं अति ~ ३३९१ । २ विचार, उधेड बुन यहै करत मन ~ २९२६ । **पर्यौ अधिक करि** ~ प्राप्ति के लिए दौड पडा, दौड कर, उसे पा लिया या उसमे जा पडा • मे मतिहीन मरम नहि जान्यौ, — ~ १/४६ ।

दौरत १ दौडते ~ कहा चोट लगि जैहै २२६ । २ दौडती है ~ पहिरि खराऊँ ४१२६ ।

दौरति दौडती हैं निरगुन छाँडि सगुन कौं ~ ३६०६ ।

दौराइ दौडा कर . मन देख्यौ ~ ३८११ ।

दौरादौरी भाग-दौड अरस परस ~ की २८७२ ।

दौरि १ दौडकर ~ जाइ उर लाइ सूर प्रभु २१९ । २ दौड : ~ गए नँदलाल ४१३ । ३ दौडना तब कह्यौ मैं ~ जानत २१३ । ~ **दौरि** दौड-दौड कर ~ — बालक सब आवत २४० ।

दौरिबे दौडने . यह सुनत रिस भर्यौ. ~ कौं पर्यौ ३०५६ ।

दौरी १ दौडी, दौड पडी : जो जैसैं सो तैसैं ~ ९८९ । २ दौडी, दौडती हुई, दौडकर . आई दूतिका ~ २४३९ । ३ दौडती सुत पति छाँडि फिरति वन ~ १७९४ । ~ **दौरी** दौडी दौडी अवहि फिरौगी ~ — १५३४ ।

दौरे दौड पडे, धाये महासिह निज भाग लेत ज्यों पाछे ~ स्वान सारा० ६३७ ।

दौरै १. दौडे, दौड पडे : उठि ~ दोउ भैया ४५६ ।

दौर्यौ दौडा हुआ, भागा • जान्यो जात ग्वाल सँग ~ ४१३ ।

द्याइ देकर, दिलाकर उग्रसेन छत्र ~ २९१७ ।

द्याउँ दिलाऊँ, देने के लिए प्रवृत्त करूँ : ~ तोहि राज-धन गाऊँ ४/९ ।

द्याल दयावान्, दयालु दीन के ~ गोपाल ४/१० ।

द्यावत १ दिलाते हो मात पिता सों ~ गारी १५५७ । २ देते हैं मोहि दरस नहिं ~ री २७६४ ।

द्युति प्रकाश . ~ तैसोई वहै त्रिविधि पवन २१७२ ।

द्युमान द्युतिमान, कांतियुक्त, प्रकाश युक्त • तक्षक धनजय देवदत्त अरु पौण्ड्रक शख ~ सारा० ९ ।

द्यौं दूँ, प्रदान करूँ कह पटतर ~ चंद्र कलकी परि० १/९८ ।

द्यौ दो, प्रदान करो : चीर हमहि ~ डारी ७८८ ।

द्यौत प्रकाश ~ दरसी ग्राम ३०४५ ।

द्यौमान द्युतिमान, कांतियुक्त : साल्व परधान ~ मारो गदा ४२२१ ।

द्यौस १ दिन ~ अनेक सिधारे ३६८४ ।

द्यौसनि दिनों मे • इनहीं ~ मॉझ ३२३५ ।

द्रप दर्प, गर्व, अभिमान : इंद्र गयौ ~ छोडि २९७७।

द्रयौ द्रवित हुआ हो : को जग जो न ~ २८१५।

द्रवति पसीजती है, द्रवित होता है : कुलिसहु त कठिन छतिया चितै री तेरी अजहुँ ~ जो न देखति दुआरि ३९२।

द्रवि द्रवित होकर, पसीन कर · स्वेद चलें ~ जैसें पानी १२१९।

द्रवित १ पसीज, पिघल : माखन तैं ~ होत पाषान ७६५। २ पुलकित, जो प्रेम से पसीज गया हो : प्रेम ~ चित स्रवत पयोधर १२४।

द्रवे द्रवित हुए ~ परम कृपाल १०३०।

द्रवै द्रवित हुए, पसीजे : कह दाता जो ~ न दीनहिं देखि दुखित तत्काल १/१७९।

द्रष्ट दृश्य : द्रष्टहि ~ मोइ द्रष्टार १२/४।

द्रष्टहि दृष्टि · ~ द्रष्ट मोइ द्रष्टार १२/४।

द्रष्टार द्रष्टा, देखने वाला द्रष्टहि द्रष्ट मोइ ~ १२/४।

द्रिगजा पति पतनी पति सुत लोचन, लोचन, मैना की पुत्री (पार्वती) के पति (महादेव) की पत्नी (गंगा) के पति (समुद्र) के पुत्र, चद्रमा · ~ के देखत हू मुस्कानी सा० ल० ५४।

द्रपद एक चंद्रवंशी राजा। द्रुपद की पुत्री द्रौपदी जो पाँडवों को ब्याही थी : यहै बचन सुनि ~ सुता सुरा ५५६।

द्रपद तनया द्रुपद की कन्या, द्रौपदी बसन बढाई ~ को १/११२।

द्रपद-सुता राजा द्रुपद की पुत्री, द्रौपदी : ~ तब बान चलाई ४२९७।

द्रुपदी राजा द्रुपद की पुत्री, द्रोपदी : गहे दुष्ट ~ को मारग १/३३।

द्रवल दुर्बलों का · बुधजन करत ~ घातक विधि ४२३७।

द्रुम १ वृक्ष, पेड · धन्य गाइ धनि ~ बन चारन ३९१। २ पेड पर : द्रुम जाइ चढौ ~ १५००। ३ वृक्षों से · फिरत प्रभु पूछत बन-~ बेली ९/६४। ~ **द्रुम** पेड-पेड, हर वृक्ष की : ~ — डार हलायौ १५०३।

द्रुम-चर्म वल्कल · ~, भस्म सब गात ९/३८।

द्रुमनि १ वृक्षों पर : बेलि ~ भहरान २३२९। २ वृक्षों कूदि-कूदि सब परहु ~ तें १५०३।

द्रोण महाभारत के प्रसिद्ध योद्धा द्रोणाचार्य भीष्म ~ अरु कर्ण युधिष्ठिर सारा० ७१२।

द्रोन द्रोणाचार्य : भीषम ~ करन सुनै १/२३८।

द्रोह वैर, द्वेष, शत्रुता : मित्र ~ न भलाइ ३८५३। ~ **विचारौ** क्रोध उत्पन्न किया तिनि जिय ~ — ९६८।

द्रोही द्वेषी, द्रोह करने वाला : परधन ~ पर सतापनि बौरौ १/१८६।

द्रौपदी द्रौपदी, राजा द्रुपद की कन्या · लाज क साज मैं हुती ज्यौं ~ १/५।

द्वंद १ कष्ट, दुःख, पीडा · बिरह ~ मेटि हरष हृदय मैं बसाइ २१४९। २. पीडा में : बिरह निसा कैं ~ २०३। ३ सघर्ष, द्वद्व त्यागे भ्रम फद ~ २०५।

द्वादस १ बारह : साठि पुत्र अरु ~ कन्या १/४३। २ बारहवीं राशि (मीन) मछली : ~ मा तलफत पिय प्यारो सा० ल० ७१। ३ बारह कलाओं से युक्त ~ कान्ह, द्वादसी आपुन २०३०।

द्वादस अच्छर विष्णु का एक मंत्र—ओंम् नमो भगवते वासुदेवाय · ~ मंत्र सुनायो ४/९।

द्वादस पतंग बारह कर्णफूल रूपी सूर्य पट इदु ~ मनु मधुप सुनि ३८६७।

द्वादस मीन बारह नेत्र रूपी मछलियाँ : देखि री प्रगट ~ २४६८।

द्वादसि द्वादशी को ~ मची दुहु दिसि होरी सारा० १०६४।

द्वादसि द्वादशी, किसी पक्ष की बारहवी तिथि ~ पोपै ले आहार ९/५।

द्वादसी स्त्री० द्वादशी घटिका दोइ ~ जान ९/५। वि० बारह कलाओं से युक्त · द्वादस कान्ह ~ आपुन २०३०।

द्वादस बारह · ~ मृनाल द्वादस कदली खभ ३८६७।

द्वापर चार युगों में से तीसरा युग जो ८६४००० वर्ष का माना जाता है ~ पूजा चारि ७/२।

द्वार[1] १ द्वार पर, दरवाजे पर द्विज द्वारिका ~ ठाढौ १/५। २ द्वार, दरवाजा : सखा ~ परभात सा २०९। ३ द्वारों के : ~ कपाट-कोट भट रोके ११। ~ **द्वारनि** द्वार-द्वार पर : भटके सब ~ — २२२८। ~ **ह्वै** द्वार से होकर : जब तें स्याम ~ — निकसे १८६७।

द्वार[2] वार, वारि, पानी, आँसू : ~ वार नोतन तें ढारत सा० ल० ७६।

द्वारकानाथ द्वारिका के स्वामी, श्रीकृष्ण दुष्ट नृपति को मान मथन करि चले ~ सारा० ६३६।

द्वारपाल द्वार के रक्षक मोदी लाभ सवाम मोह के ~ अहँकार १/१४१।

द्वारबीरनि द्वारपालों से : पौरि गाढो करौ ~ कहे ३०७६।

द्वारवती द्वारिका : भद्रा ब्याहि आप जब आये ~ आनद सारा० ६५७।

द्वारहि द्वार से ही ~ माँझ बात यह बूझति १६४५।

द्वारही द्वार पर ही · सुखमा महल ~ ठाढी २६२९।

द्वारा १ द्वार गृह ~ कहुँ है कै नाहीं १६४४। २ द्वार पर (जा कर) : (बेनु) सिव-बिरचि कै ~ ४।

द्वारावति द्वारिकापुरी, जो काठियावाडके गुजरात प्रान्त मे स्थित है और जिसकी गणना चार धामों और सात पुरियों मे की जाती है प्रकट ब्रह्म राजत ~ सारा० ८६०।

द्वारावती १ द्वारिका · ~ बिराजत नित प्रति आनद करत

विलास सारा० ६५३ । २ द्वारिका के : ~ कोट कचन मैं ४१६६ ।
द्वारि द्वार (काम) हठ तें सरै न एकौ ~ २५९१ ।
द्वारिका दे० द्वारावति चरयौ द्विज ~ द्वार ठाढौ १/५ ।
द्वारे १ दरवाजे ठठकि रहा ~ पर ठाढी ५४० । २ दरवाजे को : जाइ सुरलोक ~ उधारे ४१८३ । ३ द्वार पर . फूले वदी जन ~ ३४ ।
द्वारेही द्वार पर ही ~ तैं निरखि देख्यौ १४२६ ।
द्वारेही द्वार पर ही ~ ठाढी १६४५ ।
द्वारैं द्वार पर : आजु नद कै ~ भीर २५ ।
द्वारै द्वार पर : ~ आइ स्याम घन सजनी १८८८ ।
द्वारौ दरवाजा (था) : गृह कौ ~ राख्यौ जहाँ ४३०९ ।
द्विघरी दो घडी • दिनमनि उदित भए ~ ४०४ ।
द्विज[1] १ ब्राह्मण : तुम तौ ~, कुल पूज्य हमारे ९/२८ । २ ब्राह्मण, सुदामा : ~ द्वारका द्वार ठाढौ १/५ ।
द्विज[2] १ दाँतो को सूर स्याम किलकत ~ देख्यौ ८२ । २ दाँतों से . रसना ~ दलि दुखित होति १/११७ ।
द्विज[3] पक्षी निकट विटप मनु ~ कुल कूजत ११३६ ।
द्विजन १ ब्राह्मणो की . पुनि पूजे ~ अपार सारा० ३०७ । २ ब्राह्मणो तहाँ बुलाये सकल ~ को सारा० २१५ ।
द्विजनि १ ब्राह्मण ने . ~ कह्यो चरनोदक लीजै ९/५ । २ ब्राह्मणों : ~ कौं गाइ दीनी ३१ । ३ ब्राह्मणो ने दोष तिनकौ ~ मिलि छमायो ४२०९ । ४ ब्राह्मणों को : दीन्ही ~ अनेक २४ ।
द्विजहि ब्राह्मण को दियो ~ मघवा कौ वैभव सारा० ८१६ ।
द्वितिय दूसरा : प्रथम स्थान, द्वितियानक ~ मत २/३८ ।
द्वितिया द्वितीया, दूसरा • जहा नहीं ~ कोउ और १/२२६ ।
द्वितीया द्वितीया तिथि का • मनु ~ चद उगाए २५१८ ।
द्विधा दो टुकडे भयौ ~ तम हारि २११८ ।
द्विप हाथी : ~ दत कर कलित ३०७७ ।
द्विरद दो दातो वाला, हाथी . कहा जानि छँडाइ लीन्हौ, ~ दीन दयाल ४१०९ ।
द्विरेफ भ्रमर, भौंरा दृग ~ चढयौ ३९१७ ।
द्विविद १ एक बन्दर जो रामचन्द्र की सेना का सेनापति था नल-नील ~, केसरि, गवच्छ ९/१६६ । २ एक बन्दर जो नरकासुर का मित्र था और बलदेव जी द्वारा मारा गया था • राम दल मारि सो वृक्ष चुरकुट कियौ ~ सिर फूटि गयौ लगत ताके ४२०८ ।
द्वीप पुराणानुसार पृथ्वी के सात वडे विभाग : सातौ ~ राज ध्रुव कियौ ४/९ ।
द्वेष शत्रुता, वैर • राग ~ तैं न्यारे १/२४२ ।
द्वै दो : ~ खग खजन बँधे ४७६ । ~ **रग** दुरगी : जो ~ — त्यागे १/७० । ~ **बोल** दो बातें . लिखि नहिं पावत हैं ~ — ३२५४ । ~ **मास** चैत्र और वैशाख, बसत तीस भानु ~ — सकल रितु सारा० ९६६ ।
द्वैक दो एक, बहुत कम (सख्यावाचक) • कव धरनी पग ~ धरैं ७६ ।
द्वैज द्वितीया का गनहु ~ दिन सोधि कै २९१४ ।
द्वैपला दोनो पल्लों मे कचन सपुट ~ मानहु भरे सिंदूर २६१३ ।
द्वैहै दुहेगा गाइनि कौ को ~ ३१७४ ।

ध

धँसति हटती है • नैंकहुँ इत उत न ~ २४१८ ।
धँसायौ प्रवेश किया (डूब गये) श्याम जाइ जल माँझि ~ ५८९ ।
धँसावत चला आ रहा है उतरि गगन तैं धरनि ~ ९७६ ।
धँसि १ धँसकर, तेजी से आकर गिरि प्रजक तैं गिरति धरनि ~ ३१११ । २ गिरी उर कलिद तैं ~ जल धारा ६३७ । ~ **लीजै** डूब मरिए कै दहिए दारुन दावानल जाइ जमुन ~ — ३३६२ । △ ~ **लैहौं** डूब जाऊँगी • जाइ जमुन ~ ३०११ ।
धँसी १ आ गिरी हो, पडी हो . ~ धरनि जनु गग ३५६० । २ अकित हो गई, चुभ गई • मन मँह ~ मनोरम मूरति ।
धँसे १ प्रवेश किया • तव पहिचानि ~ मदिर मैं ४२३६ । २. धस गये ~ गिरिवर सवै तासु भारा ९/७६ ।
धँस्यौ प्रवेश किया इत-उत चितै ~ मदिर मैं ४२२७ ।
धई जल गई है यौं तनु धातु ~ ३४०४ ।
धकधकात धकधक करता है, धडकता है • ~ हिय बहुत ३१२४ ।
धकधकी धडकन . उर ~ टक-टकी लागी १४१२ ।
धगरी कुलटा, कुलच्छणा . भूठहु मोहि लगावति ~ ३१९ ।
धगा धागे मे . एकहि ~ पिरोयौ १/४३ ।
धनजय अर्जुन . पथ गमन ~ कीन्हौ १/२९ ।
धन[1] द्रव्य, धन, सपत्ति . कहा सुदामा कै ~ हौ १/१९ ।
धन[2] प्रियतमा : तुमहिं ~ रहति, मन, नैननि मैं तुम बसति २४२० ।
धनकत प्रियतम • ~ ठाढे भोर क्यौं करत २४४३ ।
धन धन धन्य धन्य सदा विलास करत गोकुल मैं ~ जसुमति मात ।
धनपति कुबेर के • ~ धाम कौ नाम सँवारै २७०७ ।

धनहर-हित-रिपु-सुत धनहर (चोर) के हितु (अंधकार) के शत्रु (दीपक) में उत्पन्न, काजल : ~ सुख पूरत ७९।

धनहि धन्या (युवती) को : उनि ~ उनि कत अबल कीन्हे २४६२।

धनि¹ स्त्री : पर पुरुष नहिं ~ लहै १७८८।

धनि² १. धन्य हैं : सूरदास स्वामी ~ तप किऐ १०७। २. धन्य है : धन्य माता धन्य पिता ~ भगति तुव १७८८। ~ **धनि** धन्य हो : ऐसे छंद रचत पिय ~ — २७७२। ~ **धन्य** धन्य-धन्य : देखि यह फुरति ~ — सबहिनि कियौ ४२०९।

धनि जोइ जो जवान होती है : यह सोइ जानै ~ १७७८।

धनियाँ¹ वधुएँ : सबै भूलीं गोप ~ १४५।

धनियाँ² धन, सम्पत्ति : मो निधनी कै ~ ८१।

धनी पुं० १. स्वामी, रक्षक : कहा कमी जाकै राम ~ १/३९। २ प्रीतम : दुहुँ दुहुँ बीच स्याम घन ~ ११८०। **स्त्री०** वधू (स्त्री) : हरि जैसैं पति आगम सजति सिंगार ~ २४६१।

धनु धनुष : भौंह पर ~ वारि १८३७।

धनु उपमेय धनुष का उपमेय अर्थात् भौंह : ~ उमैठी सा० ल० शेष ८।

धनुभंजन जज्ञ धनुष भंग यज्ञ : ~ हेत बोले इन्हें २९६७।

धनुष १. इन्द्र धनुष : ~ धुजा बहु रंग ८६७। २. धनुष : मानहु मदन ~ सर लीन्हे १७७७।

धनुहियाँ (छोटा) धनुष : करतल सोभित बान ~ ९/१९।

धन्य-धनि धन्य-धन्य, जय-जयकार : ~ कह्यौ पुनि लक्ष्मी सौं सवनि ८/८।

धन्वंत्रि धन्वंतरि, देव-वैद्य जो चौदह रत्नों के साथ समुद्र से निकले थे : बहुरि ~ आयौ समुद्र सौं ८।८।

धपि झपट कर, लपक कर, तेजी से : तेहिं गहे कृष्ण ~ धाइ २९०९।

धपि-धूप दौड़-धूप कर : लै जु गए ~ ३७७०।

धमारि धमार राग : इक गावत है ~ २९८१।

धम्मिल धवल, उजला : ~ नीर अगाध २४४५।

धर¹ १. भूमि, पृथ्वी : बरषत प्रलय कियौ ~ अंबर ८६७। २ पृथ्वी पर : खिन्न लोटत ~ बपु न सँभारत ९६२। △ ~ **काँप्यौ** भूतल काँप उठा : सुनि धरनि उमँगि ~ — ११८१।

धर² धारण करने वाले : गिरि ~, वज्र ~ मुरली ~ धरनी~ माधौ पीतांबर ~ ५७२। ~ **निसान** निशान रख कर : ~ — देखावत सारा० १९०।

धर³ धड़ : राहु सिर केतु ~ कौ भयौ तबहीं तैं ८/८।

धरइ धारण करना है : गर्वहिं जिय ~ ३३५८।

धरकि धड़क : छतिया ~ रही २७८७।

धरकी धड़कने लगा : कछु रिस कछु नागरि जिय ~ २२००।

धरकै धड़कता है : धर-धर उर ~ २९३३।

धरकै थर्राता है, टरता है : मथुरापति ~ २१९५।

धरकौ धड़का, डर : बाँधत तोहिं नैंकु नहिं ~ ३९१।

धरखी मात कर दिया, नीचा दिखा दिया : दामिनी ~ री १३८४।

धरत १ धरता है, धारण करता है : नैंकु न धीरज ~ जियौ २०७६। २ पकड़ता है : दोहनी कर ~ ४९८। **अवतार** ~ अवतार लेते हैं : जहाँ-जहाँ — ~ हरि १६०५। ~ **लैं** माथा छूकर माथे से लगाता है : फिरि-फिरि चरन ~ — ९५०।

धरति पकड़ती हैं : भरि अकवारि ~ मुख पोंछति ११२२।

धरति¹ रखती, लेती : झूठहिं नाम ~ हैं तेरौ ३९९।

धरति² पृथ्वी : घन दामिनि ~ लौं कोंधै ४।

धरतु धरता है, धारण करता है : नाहिंन धीरज ~ २८०४।

धरते धारण करते : जौ प्रभु नर देही नहिं ~ १६०७।

धरतौ रखता : सुद्ध पंथ पग ~ १/२०३।

धरधर धक-धक, धड़धड़ाहट : समर सोच उनकै जिय ~ २४५५।

धरन क्रि० स० धरना, रखना : मुरली अधर ~ सीखत है ५०७। वि० धारण करने वाला : भक्त हेत तदेह ~ २५१।

धरनाई पृथ्वी पर : आनि धरे ~ ३९६८।

धरनि¹ १. पृथ्वी : गिरत ~ पर प्रान निकसि गए ४१०। २ पृथ्वी में/पर : रहे ~ सिर नाई २४८३, ~ पत्ता गिरि परे तें १/८८। ३ मिट्टी में : देहूँ ~ मिलाइ ८५२।

धरनि² हठ, आग्रह : अँखियानि ऐसी ~ धरी २४०३। ~ **धरी** टेक पकड़ी : ज्यों अहि रमत उदर नहिं पूरत, ऐसी ~ — ३५२६।

धरनि³ धारण करना : सिन्धु ~ यह जुगुति न तेरी ४२९०।

धरनि-धर पर्वत : ~ क्यों राख्यौ दिन सात ९६९।

धरनि-पति पृथ्वी के स्वामी : ~ गगन पति, अगम बानी १९४७।

धरनी¹ १. भूमि : सागर ~ फेर २५३। २. भूमि पर : ~ धरत बनै नहीं ११०१। ~ **भार उतारौं** पृथ्वी का पाप भार दूर करूँ : तन धरि ~ — ९५०।

धरनी² रख देना : मनि रघुनाथ हाथ लै ~ ९/१०१।

धरनी धर १ पृथ्वी को धारण करने वाले, श्रीकृष्ण : देखत यह विनोद ~ १६०। २ पृथ्वी को धारण करने वाले, शेषनाग

: ~ डोलै १/२३८ ।
धरनी धरि धरती को धारण करने वाले, कच्छप ~ बिधि बेद उधार्‌यौ २८१५ ।
धरनी धरु श्रीकृष्ण सो तेरौ ध्यान धरै ~ २८१७ ।
धरनीखारी कछौटी ~ पीत बसन फहरात परि० १/११६ ।
धरम १ धर्म यह बडौ ~ नँद धरनि तुम पाइहौ ७५१ । **२.** कर्त्तव्य : तज्यौ सुत पति ~ १००९ ।
धरमदूत यमराज के दूत मोहि दडत ~ १/१२० ।
धरमसुत युधिष्ठिर ने . जब तैं ~ धरनी हारी १/२४८ ।
धरमीले धर्मनिष्ठ : मधुवन सब कृतज्ञ ~ ३५९४ ।
धर्‌यौ १ धारण कर लिया, धारण किया मान ~ नागरि जिय गाढौ २४२३ । २ धारण किए हुए देखत प्रगट ~ गोबरधन ८७५ । **३** रखा, धरा, प्रस्तुत किया, रख दिया आगैं ~ दूध दधि माखन १६१९ । ४ रखा है . मन ~ तुम गोइ १६१५ । **५** रखे हुए, धरे हुए जहाँ तहाँ दधि ~ कहौ कह उज्ज्वलताई ८४१ । **त्रास** ~ डर के कारण • सूर स्याम यातैं नहि आए मातु-पिता कौ — ~ २४८० ।
धरवायौ धराया, धारण करवाया : दुहुँनि धीरज ~ ५८९ ।
धर-सुत (पृथ्वी का पुत्र =मगल=) मागलिक अथवा (धर सुत= सर्प) सर्प के समान केश . ~ सहज बनाउ किए परि० १/९६ ।
धरहरि बचाव, रक्षा केम गहत ~ न करी १/२४९ ।
धरहि[1] १. धारण करे 'सूरदास' अब धीर ~ क्यौ ३९७० । २ रख रही हैं आठौ सिद्धि ~ अति चातुर ८९२ ।
धरहि[2] १ हठ . ~ छाडि कै २७४६ । २ निश्चय ~ पकरि लै २७४६ ।
धरहि रखती है ककन ~ उतारी ३२५७ ।
धरहु[1] धर दो, रख दो खोरि उतारि ~ १२१० ।
धरहु[2] पकड लो (वश मे कर लो) ~ तला घनश्याम सँवारौ २७४६ ।
धरा १ पृथ्वी कापन लागी ~ पाप तै १/२०७ । २ पृथ्वी मे • सारग-रिपु बाजि ~ अथयौ १६७१ ।
धराइ १ रख कर, धारण कर रक चलै सिर छत्र ~ १/१ । २ रखा कर : सिर पर पानि ~ 'सूर' १९३८ ।
धराई १ रख कर, धारण कर रक चलै सिर छत्र ~ सारा० ४ । **२** पकडाइ कासो देइ ~ १४२४ । **३** पकडवा कर . माँगौं उनहिं ~ ५२६ । **मेटि** ~ समाप्त कर दी सुरपति पूजा — ~ ९०० ।
धराऊँ लगाने के लिए कहूँ कैसें ध्यान ~ ३५३८ ।
धराउ देने वाला, धारण कराने वाला : कोउ नहिं धीर ~ ४८१ ।
धराए १ रखवाये दधि लवनी मधु-माट ~ ९०८ । २ पकडवा दिया • सगी सखनि ~ २२७० ।
धराधर[1] पृथ्वी धारण करने वाले (शेषावतार) ~ हलधर ३७३ ।
धराधर[2] पर्वत उछरत सिधु ~ काँपत ६४ ।
धराधरन-धर-रिपु पृथ्वी को धारण करने वाले (शेषनाग) को धारण करने वाले (शिव) का शत्रु, कामदेव : ~ तन लीन्हे सा० ल० ८ ।
धराधरि धरने उठाने : लेवा देइ ~ मैं है कौन ३७७० ।
धराये रखवाये मगल कलश ~ द्वारे सारा० २९९ ।
धरायौ १ रखा, निर्धारित किया • नाम पुरुरवा ताहि ~ ९/२ । २ रखवाया • अपनै सीस ~ ५७३ ।
धरावत रखवाते है वाही कैं मुख नाम ~ १३५७ ।
धरावन (शरीर) धारण करने के लिए सुखनि जसुमति कै कारन देह ~ २५१ ।
धरावहु रखो, रखवाओ कनक कलस भरि नीर ~ ४१८५ ।
धरावैं रखवाते हैं, पकडवाते हैं । **चित बात** ~ मन मे विचार करते हे/सोचते हें . आयौ दुष्ट बकासुर जान्यौ हरि — ~ ४६३ ।
धरावै बँधा सकता है कौन ~ धीर ९/१४५ ।
धरावौं १ धारण करूँ/करवाऊँ : कस मारि सिर छत्र ~ १५४७ । **२** धारण कराती हूँ : चित कौ धीर ~ ३८६३ ।
धराहि १ धरे, रखे . पग द्वै धरनि ~ ७५ । २ धारण करें • क्यौं करि धीर ~ ३९७८ ।
धराही धारण करे कैसैं ध्यान ~ ३९२४ ।
धरि[1] क्रि० स० १ रखकर . जैसैं आपु अधर ~ फूँकत २१४१ । २ रख • मदाकिनि मानौ सिर ~ कै २७६३ । ३. धारण करके . नर सिंह रूप ~ १/१०९ । ४ पकडकर सूर स्याम ~ अँचरा ठाढे १४९ । **५** धर कर, पटक कर : भूतल ~ पानें ९/९७ । ६ सधान कर, रखकर : अगिनि पुज सित बान धनुष ~ ९/१३१ । ७ धारण करो, प्राप्त करो : अब असुर देह ~ जाइ ६/५ । ८ रख लो, निश्चय जानो . यह चित ~ री सखी २७४५ । ९ धारण किया . जाकौ चरनोदक सिव सिर ~ १/१५ । **१०** रख लिया जाय : तेल तूल पावक पुट भरि ~ बनै न बिना प्रकासत २/२५ । **११** धारण करना • ~ जानहि कहि कौन ३६९० । **१२** धारण कर ली हो ~ करि कोप उपैनी ९/११ । **१३** रखी, धरी ~ आरती सँजोइ २६ । ~ **न आवै** धारण करते नहीं बनेगा ~ — मौन ३९९७ । ~ **धरि** रख रखकर : हा हा करि दसननि तृन ~ — २१०३ । ~ **माथ** शिरोधार्य कर • पिता बचन ~ — ९/३७ ।
धरि[2] धैर्य . अब मोकौं ~ रही न कोऊ १/२५४ ।
धरिए धारण कीजिए या रखिए • प्रभु लाज ~ १/११० ।

धरिनी पृथ्वी पर : ~ परे अचेत नहीं सुधि २७५९ ।

धरिबौ धरना, धारण करना : दूर करहि बीना कर ~ ३३५७ ।

धरिया रखी हैं · स्याम-भुजा अपनैं उर ~ ६८८ ।

धरियै रखिए : मोहन इतौ मोह चित ~ २९७५ ।

धरिहैं १. अपनाएगे : कहा कम दामी ~ ३१४६ । २ धारण करेंगे · माँग्यो चन्द्र और जब कीन्हीं उन दानन चित ~ सारा० ५७१ । ३. पकड़ लेंगी · उर अबहिं बाननि करि ~ १९५० । ४. पकड़ेंगे : कनक-दंट आपुन कर ~ १६१९ ।

धरिहै १ धारण करोगी : जौ मम वचन हृदय नहिं ~ ४/५ । २. धारण करेगा . भएँ अस्पर्स देव-तन ~ ८/२ ।

धरिहौं १ काढ दूँगी, रख दूँगी : ~ लाड उतारि १६१८ । २ धारण करूँगी : अपनैं उर ~ १८८७ । ३ पकड़ूँगी फेर पारि देखौं मैं ~ १७४३ । ४ रख लूँगी : अपनैं बाँटे की ~ री २३१९ । ५. पकड़ूँगा : तिनि ~ वर वाइ २९४८ । ६ रखूँगा : ~ कहा जाइ तिय आगैं ४२३४ । ७ धारण कर लूँगा : ~ नख की कोर ८६५ । तनु ~ अवतरित होऊँगा . गर्भ देवकी क — ~ १६०४ ।

धरिहौ १. कीजिए, धारण कीजिए : दमा देख्यौ चहति कृपा ~ ८/१० । २. धारण करोगे : कब पुनि गोप-वेष ब्रज ~ १२१६ । **चित्त** ~ ध्यान दोगे : सो कहा जु मैं न कियौ सोइ — ~ १/१२४ ।

धरी १ रखी : मुँदरी दूत ~ लै आगैं ९/८७ । २ टिकाई : हेरि मथानी ~ माट तें २७० । ३ लिया है, बसा लिया है : लै उर माँक ~ २३४३ । ४ धारण कर लिया है, निश्चय कर लिया है : तातैं मैं मन मैं यह ~ ६/५ । ५ धारण किया : जो उर ~ सोइ प्रतिपारी १/१६० । ६. धारण की है · ~ धार अति पैनी ९/११ । ७. रखा, अटल रहा : अपनी धरनि ~ १/१३० । ८. रखते हैं . जिय ~ लाजें १/५ । ९ (रखी) की : तब रिषि कृपा नाहि पर ~ ९/३ । १० कामना की थी, सोचा था : फबी जे-जे करी मनहिं सब जे ~ ११३५ । ११. पकड़ी हूँ, आई हूँ : ता कारन मैं सरन ~ १/२४९ । १२ मान ली है : कहा करौं मैं हारि ~ निय २३६६ । १३ ठानी है · कहा तुम जिय यह ~ ११८२ । १४. चढा रक्खा/लिया है : भली नहीं उन करी, सीस तोकों ~ १९७१ । १५. स्थापित की · तामैं सक्ति आपनी ~ ३/१३ । १६ रखी हुई है : कृष्न सिंह बलि ~ तुम्हारी ४१७१ । १७ रच बैठी हैं : नव नव ऐसी धरनि ~ री २०५४ । १८ धारण करते हैं : गिरि अचल न ~ ३७९० । १९ पकडी युवती ~ जान दुष्ट ने जब द्रौपदी बुलाई सारा० ७६३ । ~ लगन मुहूर्त निश्चय किया : ~ — जु मरद निमि की १०७१ ।

धरें १ रखते थे : ~ सदा हरि-पद अनुराग ९/५ । २ धारण कर लें · देहु उपदेस, हमहूँ ~ मौन सद १७०९ ।

धरेंगे धारण करेंगे · सार्वभौम अवतार ~ श्री वामन सुखदाय सारा० ३४६ ।

धरे १. रखे हुए थे : अरु पकवान ~ चहुँ कोदन ९०८, भाँति-भाँति भोजन ~ ४३७ । २ रखा, रखा है . सद्‌खनि मरि ~ १९७४ । ३. धारण किया : चरन जल लै करि सीस ~ ९/२७१ । ४ लिया है, धारण किया है भक्त हेत अवतार ~ सब असुरनि मारि बहाइ २२१ । ५ रखे गये हों : मानिक-मोती ~ जनु पोट २१० । ६ पकड़े हुए : ~ बाँह हरि ल्यावति ३४१ । ७. धारण किए हुए . देह ~ आवें ३९४ । ८ धारण करके, लेकर यह व्रत ~ लोक मैं विचरैं २/११ । ९ ले रही थीं . ~ न धीर निमेष मौं रुदन वल २३४० । १० देते जा रहे हैं . ताल ~ रह पार्छ २३८५ । ११. रख लीजिए : विरद की लाज ~ १/१९८ । १२ लगाये रहना है : मन धन-धाम ~ १/१९८ । १३. धारण किये, साधे : तब तक मैं मौन ~ हौं २३२० । १४ धारण करने : देह ~ कौ यह फल प्यारी १६९० । १५ रखे गये : ~ निसान अजिर गृह मंगल ९/२५ । १६. पकड़ कर : केस ~ धरनी विसिपाई ५३१ । १७ दिया तिनकौ सब मिलि मेटि ~ ८६२ । १८ रखे (रहो) : राखि मैंदिस ~ ३५८६ । ~ दृढ़ावति धारण कर दृढ़ करती है : सो तें ~ — २७४७ ।

धरेउ १ धारण किया : मुष्टिक साथ लरे बलभाई ~ वृहद वपु दोउ सारा० ५२२ । २ पकड कर : ~ हाथ सिर दीन्हीं विदा सारा० ८३१ ।

धरैं १ धारण करने, धारण किया होता · जो प्रभु भेष ~ नहिं बालक १६०७ । २. धारण करते हैं · तिनहिं हित वपु ~ ४७३ । ३ धारण करता है : अरु ससार मनोरथ ~ ११/३ । ४ धारण करें, धरें : बिरहिनि क्यौं धीरज मन ~ ३६०२ । ५ धारण करती थीं : दासी भाव हृदय मैं ~ ९/२७४ । ६ रखें : ~ कहाँ सुखरासि २३१२ । ७ रखते है . फूलें फूले धर ~ २६१५ । ८ रखते, मानते . 'सूरज' प्रभु नहिं अनत ~ ४३०५ । ९ धारण करने मे कहा भीम के गदा ~ कर १/२५९ । **चित** ~ मन लगाते हैं : हरि चरननि नितहीं — ~ ९/८ । **ज्ञान** ~ ज्ञान धारण करती हैं, समझ लेती हैं : यह समुझे जिय — ~ १९२० ।

धरै १ धारण करना, रखता : प्रीतम नहिं धीरज ~ २४५३ । २ लगाते हैं, धारण करते हैं : जाको ध्यान ~ सद १४५ । ३ धारण करेंगे : नृप कहयौ, सकर तुमकौं ~ ०/९ । ४ धारण करते . जौ प्रभु न देह ~ १६१८ । ५. करता अनत नहिं ~ ४/१२ । ६ रखेगा : तोकौं नाम ~ नहिं कोइ १/२२९ । ७ रखे, रख दे : लै सिर दन ~ ६/६ । ८.

पकडे, पकड ले . दीपक हाथ ~ ६/६ । ६ रखे हुए अति उत्साह हृदय मै ~ ९/८ । १० रखेगा कद धरनी पग द्वैक ~ ७६ । ११. लगाएगा ताकौ काल रुठि का करिहै जो चित चरन ~ १/८२ । १२ रखते थे . राज काज कछु मन नहि ~ ९/५ । १३ रखती है . जहाँ जहाँ तू पग ~ तहा तहाँ मन साथ २६१३ । जीय ~ ध्यान देते प्रभु नाहि — ~ १/११७ ।

धरैगौ धारण करेगा मीन जटा अब कौन ~ ३६१९ ।

धरैया रखने वाला धरनी चरन ~ १३१ ।

धरैहौ धारण करोगे/कराओगे, रखना/रखाना । △ **कुल जनि नाउँ** ~ कुल का नाम मत डुबा देना तुम हौ वडे महर की वेटा — ~ १९२३ ।

धरौं १ टिकाता हूँ, रखता हूँ कोपि अगढ कह्यौ, ~ धर चरन मैं ९/१३५ । २ रख दूँ . पलटि ~ नव खड पुहुमि तल ९/१३२ । ३ धारण करूँ · कैसे धीर ~ १६६५ । ४ पहनूँ बेसरि कहाँ ~ ३५५१ । ५ रख देता लका ~ अपूठी ९/८७ । ६ धरता, करता होइ मनमुख मिरौं, सक नहिं मन ~ ५/१२० । ७ धारण करती हू, रखती हू मनसा वाचा मैं ध्यान तुम्हरौई ~ १९४४ । ८ धारण करता हू, लेता हूँ भक्त हेतु अवतार ~ १५२२ । ९ धारण करूँगा ~ तहाँ मै गोप वेष ११७५, हरि चरनारबिंद उर ~ ५/३ । १० लगाऊँ, रखूँ काकौ नाउँ ~ तो आगैं १९७६ । ~ **दुराइ** छिपा कर रखूँगी, छिपाऊँगी . तोसौ ~ — कहौं किहि १६७० । △ △ ~ **पानि मैं माथ** हाथ जोडती : हूँ रोइ रुकमिनी यौं कह्यौ ~ — ४१८८ ।

धरौ १ धारण करो हरि चरनारविंद उर ~ २/१ । २ स्मरण करना चाहती हूँ, लेना चाहती हूँ · 'सूर' स्याम कौ नाम ~ पुनि धरि न जाइ १२१४ । ३ रखा करो बाँचत वेगि आइयौ माधौ ~, जात मेरे प्रानहि ४१६० । ४ रखते हो · जौ तुम मेरी इच्छा ~ ९/२ । ५ पालन करो अव ते सवकौ नेम ~ २७३३ । ६ रख दीजिए, रखो मो पर ~ चरन रघुबीर ९/१०७ । ७ धारण कर लिया . रामचद्र पितु आज्ञा मानी जिय मे वचन ~ सारा० २४२ । ८ धारण करती ही औरनि सीख ~ ३६९९ ।

धर्म १ चार पुरुषार्थो मे से एक अर्थ ~ अरु काम मोच्छ १/३९ । २ ईश्वर, परलोक आदि के सबध मे विशेष रूप का विश्वास और आराधना की प्रणाली विशेष, मत, सप्रदाय, पथ ~ कर्म अधिकारिनि सौ कछु नाहिंन तुम्हरौ काज १/२१५ । ३ उचित, न्याय देहु बाँटि जौ ~ होई ८/८ । ४ धर्मशास्त्र · ~ कहै, सरसयन गग सुन तेतिक नाहिं सँतोष १/२१५ ।

धर्म-अँकुर धर्म रूपी अँखुआ या कल्ला : ~ कै पावन द्वै दल १/९० ।

धर्म-पुत्र १ धर्मराज ~ कौ जुआ खिलाए १/२४६ । २ युधिष्ठिर ने ~ जव जग्य उपायौ १/२० ।

धर्मराइ धर्मराज के विदुर सु ~ अवतार ३/२ ।

धर्मराज १ धर्मराज ~ करि हरि कौ ध्यान ६/४ । २ यमराज ~, वनराज, अनल दिव ९७६ ।

धर्म-सुत १ धर्मपुत्र युधिष्ठिर ~ कै अरि सुभावहिं २०८६ । २ धर्मपुत्र के ~ देस कौं पुनि सिधार्‍यौ ४२१५ ।

धर्म-सुधन धर्म रूपी सुन्दर सपत्ति या निधि · पाप उजीर कह्यौ सोइ मान्यौ, ~ लुट्यौ १/६४ ।

धर्म-सुवन धर्मराज के पुत्र, युधिष्ठिर चले हरि ~ के देस ४२१४ ।

धर्म-सुवल-रिपु ता अवतारहि धर्मपुत्र (युधिष्ठिर) के शत्रु (दुर्योधन) उसका अवतार=अभिमान=मान से . ~ सलिल वहावै २७७९ ।

धर्म-सेतु सेतु की तरह धर्म को धारण करने वाला ~ है धर्म वढायौ भुवि को धारण कीन्हो सारा० ३४९ ।

धर्महि धर्म मे · घर मैं जुवती ~ फबै ११८० ।

धर्महिपाल धर्मरक्षक बडे सुधर्मा ~ १५३२ ।

धर्मा धर्म है कौन कृपानिधि ~ १/१०४ ।

धर्म्म धर्म को · मारि मलेच्छ ~ फिर थाप्यो सारा० ३२० ।

धर्‍यौ १ किया, रखा . 'सूर' के प्रभू सौं बैर जिन मन ~ आपुनौ कियौ तिन आपु पायौ ४२०७ । २ धारण कर लिया · मैं जिय गर्व ~ २०९८ । ३ धारण किया है, बना लिया है . सहज अपनौ रूप ~ मन भावती २१५४ । ४ लिया है जब तैं ब्रज अवतार ~ इन ४२८ । ५ ठान ला है अँखियनि जब तै बैर ~ २४०५ । ६ रखे हुए हैं भोग ~ सब गिरिहि जेंवावहु ९०८ । ७ रख दिया तब दधि आगैं ~ १६१८ । ८ रख दिया हो जनु जड भाँड ~ ३६४६ । ९ ले कर बल मोहन कौ नाम ~ कहि पकरि मँगवान ५८९ । १० रखा हुआ है माखन ~ तिहारेहि कारन ५४६ । ११ रोका है घाट ~ तुम यहै जानि कै १५४१ । १२ भर लिया, लगा लिया अरस परस दोऊ अकम ~ है मेलि २०१० । १३ रखा हुआ था · बडौ माट घर ~ जुगनि कौ ३१८ । १४ धारण किया, लगाया : सिर ~ ढिग चद ९/१० । १५ पकड लिया ~ स्याम हँकारि २१३ ।

धवल सफेद, उज्ज्वल . ~ वसन मिल रहे अग मे सा० ल० ७६ ।

धवाए दौडा दिया तिनके काज अहीर पठाए विलम करौ जनि तुरत ~ ९०४ ।

धसाऊ धसता गया : मथि समुद्र सुर असुरनि कैं हित मदर जलधि ~ २२१ ।

धहियौ धमाका : कूदि परे दै ~ ३१३ ।
धाँधे झुक गये या देखने लगे : चरन कमल पर ~ सा० ल० ६ ।
धाँस दुर्गंध : बरत बन बाँस, थरहरत कुस काँस जरि उड़त है ~ ५९६ ।
धाइ[1] १ दौड़ कर . पै सिव जाकौं मारें ~ ७/७ । २ दौड़ : पार्षद ~ परे १/८२ । ३ प्रवाहित हो, बह : जलज जलहिं ~ रहै १०१ । ४ आ कर : ~ बमाद गए सुफलक सुत ४०२२ । ५ दौड़ती (करती) हुई . लीला ~ फिरीं ३०४८ । ~ **धाइ** दौड़-दौड़ कर, जा-जा कर : ~ — द्रुम भेटत ऊधौं छाके प्रेम ४०९५ ।
धाइ[2] धाय, (पोषण करने वाली) दाई, नौकरानी : इक ~ नद पै जाइ २४ ।
धाइक धारण करने वाला : हरि-वाहन-वाहन-पति ~ ना सुत आनि बचावै परि० २/२२ ।
धाई[1] १ दौड़ी, दौड़ कर, दौड़नी हुई : यहाँ तें तुम आइ ~ १४२८ । २ दौड़ीं, पहुँचीं : सजि आरती कलस लें ~ ४१८४ । ३ दौड़ पड़ीं : सुनि ~ सब ब्रजनारि २४ । ४ दौड़ी चली आई हो : काहैं ऐसें ~ १९५४ । ५ दौड़ी थी, टूट पड़ी थी तुम मेरी बेसरि कौं ~ १९५९ ।
धाई[1] १ दौड़ी : टेरति जसुमति ~ ४१३ । २ दौड़ कर, दौड़ते हुए सुग्रिव आयौ ~ ९/१०२ । ३ दौड़ रहा है : बछरा हित ~ २०२ । ४ दौड़ी थीं : किहिं बिधि गोपी ~ ३८६४ । ५. छा गई : कारी घटा चहूँ दिसि ~ १९९० ।
धाई[2] दासी, धाय : मिलि जाहु सूर प्रभु ~ हूँ कैं नात ३१६१ ।
धाउ जल्दी से, दौड़ कर : बिबिध चौकरी बनाउ ~ रे बनैया ४१ ।
धाऊँ १ धावा बोल दूँगा, चढ़ाई कर दूँगा : ब्रज ऊपर ~ ५५३ । २ दौड़ पड़ता हू : तिहिं औसर उठि ~ १७२ । ३ दौड़ूँ, भागूँ . सखि कत हौं ~ परि० १/७० ।
धाए १ दौड़ पड़े : मातु पिता व्याकुल ह्वै ~ ४२९० । २. दौड़ते हैं, दौड़ रहे हैं : बानर चार चहूँ दिसि ~ ९/८३ । ३. दौड़े थे सिव बिरंचि मारन कौं ~ २/३ । ४ दौड़ना हुआ, दौड़ा . फिरत दसौं दिसि ~ १/१०० ।
धाक दबदबा, शोर, प्रसिद्धि : ब्रह्म लोक यह ~ ४६४ ।
धागैं धागे में : बिना पिरोये ~ ३९७८ ।
धात[1] धातुएँ : चारि बिबिध रँग ~ २११२ ।
धात[2] धाता, रचना करने वाले : आपु ब्रह्म जगत ~ २९८५ ।
धाता[1] धारण करने वाले, पिता : तुम माता तुमहीं जग ~ ९७७ ।
धाता[2] विधाता है, ब्रह्मा है . ऐसे घात करै सो ~ १८४९ ।
धातु गेरू, खड़िया आदि पदार्थ, उपरस बनमाला तुमकौं पहिरावहिं ~ चित्र तनु रेखहि ४२६ ।
धातु देस बिचार कर विपरीत पहिलैं जोर धातु (नामा) और देस (मालवा) का क्रम उलट कर, अर्थात् मालवा और नामा, के पहले अक्षरों को जोड़ने से, माता . ~ सा० ल० १०६ ।
धातुमय धातु (गेरू) का बना हुआ : गिरि गोवर्धन ~ ११७० ।
धान १ धान, धन धूनि ~ खायौ २/३० । २ धान, अन्न : कुरुपति कह्यौ ~ मम खाइ १/२८४ ।
धानुषि धनुष धारण करने वाला, धनुर्धर भौंह कोदंड, सर नैन, ~ कान २११९ ।
धापी[1] निश्चय किया भच्छि अभच्छ, अपान पान करि कबहुँ न मनसा ~ १/१४० ।
धापी[2] तृप्त हुए : इन तौ पाप किये हे ~ ६/४ ।
धाम १ घर, गृह . नंद ~ खेलत हरि डोलत १११ । २. घर के बरनि सकति ~ बामन ८५९ । ३ घर में : गजति अपनें ~ २०२६ । ४ ठिकाना, ठौर, स्थान दुखित भयौ निज खोवत ~ ९७१ । ५ देवस्थान, पुण्यस्थान, लीलाभूमि : इनकी जउ जानत मन मूरख, मानत याहीं ~ १/७६ ।
धामनि घरों पर . ~ धुजा बिराजत ३०२२ ।
धाम-बन बन गृह में : लै गए ~ स्याम प्यारी २६२२ ।
धामहि १ धाम, घर नंद नंदन कै ~ ४१६८ । २ घर में : सो सोवत नँद ~ ५१५ ।
धामहीं (मैं) घर में ही . सूर प्रभु स्याम छवि ~ रहै २२७३ ।
धामा घर आए सत्वर ~ ४२३३ ।
धाय दौड़ कर : सन्मुख आयो ~ सारा० ५२६ ।
धाया दौड़ा : तुरतहिं उठि ~ ८९९ ।
धाये दौड़ पड़े . नारद ब्रह्म लोक ते ~ सारा० ६५९ ।
धायौ १ दौड़ पड़ता है : बिछुरि बच्छ ज्यौं ~ ४२७८ । २ दौड़ते हैं . फिरि फिरि उतहीं ~ २३६६ । ३ दौड़ा गया है : यह अपनें बल ~ १८८९ । ४ दौड़ा, दौड़ पड़ा : आपुन ही मुगदर लै ~ १०४ । ५. दौड़ना रहा, दौड़ धूप की : ~ सब दिन रात १/२१६ । ६ दौड़ पड़े (थे) : पवन के गवन तैं अधिक ~ १/५ । ७ भगा ले गये : कामधेनु बल करिकै ~ ९/१३ ।
धार[1] १ धारा : बहि चलि सुरसरि ~ २२२० । २ धारा में . ~ अखंडित नीर ८७४ ।
धार[2] ओर, तरफ . छींक बाई ~ ५२४ ।
धार[3] धार, तलवार चाकू आदि की बाढ़ : निकट आयुध बधिक धारे, करत तीच्छन ~ १/३२१ ।
धार[4] १ रख कर : आयसु माथ ~ ४१६० । २ लगा कर : कहाँ, सुनो सो अब चित ~ १/२३० । ३ धारण करके : दत्तात्रेयऽरु प्रथु बहुरि, जग्य पुरुष वपु ~ २/३६ ।
धार[5] सीमा, निधि, राशि : दरसन को तरसत हरि लोचन तृ सोभा की ~ ।

धारकन अश्रु कण • झरत ~ नीक सा० ल० ४३ ।

धारत १ धारण करते हैं, पहनते हैं . कचुकि भुजनि पहिरि उर ~ २१३७ । २ धारण करती है • जल सुत वाहन सो जन ~ सारा० ९३९ । **पग** ~ पैर रखते हैं, जाते है : ताही कै — ~ १/१२ । **ध्यान** ~ ध्यान लगाते हैं . सनक — ~ निगम आगम बरन १/३०८ ।

धारति १ धरती थीं, रख देती थी • कबहुँ धरनि फिरि ~ १६२० । २. लगाए ले रही थी . लालन भुज अपनै उर ~ २९०१ ।

धारति १ रखती है, टेकती है . सिर चरननि ~ २१४५ । २ रखती जाती थी : आपुन चुनति गोद लै ~ २६१८ । ३. धारण करती है, बसाती है : यह आतुर छबि लै उर ~ २१२१ ।

धारन धारण करने वाला . सभु-पतनी-पिता ~ बक विदारन वीर सा० ल० ९३ ।

धारना १ धारण करने की क्रिया, ग्रहण, अपने ऊपर लेना • मोकौं कौन ~ करै ९/९ । २ धारणा, योग के आठ अगा मे से एक, मन की वह स्थिति जिसमे केवल ब्रह्म का चितन रहता है : जोग ~ करि तन त्याग्यौ ४/५ ।

धारही धारण करने लगी • अग-सुधि नही, उलटे बसन ~ ९९८ ।

धारा १ लकीर, रेखा नील घन मनु धूम ~ ६३५ । २. अखड प्रवाह, धार • उर-कलिंद तें धँसि जल ~ ६३८ ।

धाराधर बादल बरषत सुड दड ~ ८६६ ।

धारि[1] १ धारण कर गौतम-रूप ~ तहँ आयौ ६/८ । २ धारण करो श्रीभगवान-चरन उर ~ ६/५ । ३ कस कर, पकड कर • भुजनि अकम ~ २७२१ । ४ लेकर • काँध कमरि, कर लकुटी ~ २००५ । ५ ध्यान किया • पाँव अबार सु ~ रमापति १/१८८ । ६ ध्यान देना • मम दोष जनि ~ चित १/२१४ ।

धारि[2] धारियो से बदन बिंदु ~ मिलि सोभित २४४५ ।

धारियै १ पकडा जाय बैठहुगे की पाँउ ~ २५२१ । २ रखिए उलटि तही पग ~ २५१२ ।

धारी क्रि०स० १ धारण किया है प्रीति बस करज गिरिराज ~ २०१८ । २ अवतार लिया . भक्तनि हित तुम ~ ७/२ । ३ धारण करके • गए पाताल तन-मत्स्य ~ ८/१७ । ४ धारण किया, सकल्प किया महाराज दसरथ मन ~ ९/३० । ५ रख दिया : उन प्यारी चरननि सिर ~ २४९६ । ६ पकड बैठे हैं, अपनाया है कठिन प्रवृत्ति हठि ~ २३७५ । ७ लगाए हुए, टिकाए हुए . रहे प्रतिबिंब पर नैन ~ २१९७ । वि० धारण करने वाले : (हरि) अगम, अगोचर, लीला ~ ३ ।

धारे क्रि०स० १ धारण कर लिया, पहना और भूषन तुरत अग ~ २१५४ । २ धारण किया, अवतार लिया ते हरि प्रगट देह ब्रज ~ ३८५ । ३ धारण करैं : और काहि उर ~ ३५२७ । ४ धारण किए हुए, लिये हुए ~ धनु-तूनीर ९/४४ । ५ रखे हुए हैं एक चरन धर ~ ६३२ । ६. रखा • प्रगट फन-फननि प्रति चरन ~ ६०२ । ७ धारण किये हुए • रह्यौ मष्ट ~ ३०८९ । ८ धरे, रखे कृपा करि तहाँ हरि चरन ~ ३०४७ । ९ उमड आए • प्रेम सहित ~ अँसुपात ९/३८ । १० स्थापित किया गया हो . मानहु कज रिच्छ गहि तीजौ कचन भू पर ~ सा० ल० १३ । ११ बैठाया सिघासन पै उग्रसेन ~ ३०८४ । **वि०** धारण करने वाले मारो दैत्य दुष्ट इक क्षण मे जय नृसिंह वपु ~ सारा० १२५ ।

धारेउ धारण किया • यह कहि बृहत रूप हरि ~ सारा० ९३ ।

धारैं[1] १ धारण किए हुए हैं : नदनदन मुरली मुख ~ ३६९६ । २ धारण करते थे विद्या और न मन मैं ~ ७/२ । ३ रखता है नैंकु नही मन धीरज ~ ४२०० । ४ रखती हू : माया मोह न मन मैं ~ ९/२ । ५ बँधाती हैं नारि नारि मन धीरज ~ १६१९ । ६ लगाती हैं : चित हरि सौं ~ १४६० । ७ रखते तौ इहाँ लगि पग ~ ३७०८ । ८. धरे, रखे : पग ~ उतहीं २७१६ । ९ सँभाल पा रही है • चली बेहाल अचल न ~ ९९८ ।

धारैं[2] १ (दूध की) धार : ~ बदन निचोवै ३४७ । २ धार को : 'सूर' बिरह कै ~ ३९४२ । ३ धारा मे ब्रज बसत निरतर ~ ३९४२ । ४ धारा के समान : बरषत नैन महा जल ~ ३६२२ । ५ धार से ललित लाल लोचन जल ~ २८२२ ।

धारै १ धारण कर रही है गिरत कौं न तन ~ सा० ल० ७३ । २ धारण की जा रही थी • काम तनु दहत नहिं धीर ~ २४२१ । ३ पकडती है • एक कर चिबुक इक सीस ~ १०६१ । ४. धारण किए हुए थी, ओढे हुए थी पीताबर उर ~ २१५२ । ५ धारण करे . नद नदन बिनु को गिरि ~ ०३९ । ६ ले लेती हैं, लिपट जाती हैं सूर स्याम कौं अकम ~ ११६५ । ७ धारण करता • अवरन बरन सुरति नहिं ~ ३ । ८ करता है सो (हरि) ग्वालनि सग लीला ~ ३ ।

धारौं १ धारण करूँ मधुर मुरति सोभा उर ~ ६६२ । २ धारण करूँगी . हस्त बलय पट नील न ~ २८२८ । ३ रख दूँ, धर दूँ जाइ परौं चरननि सिर ~ ९४७ ।

धारौ १ धारण कर लो अगनित गुन हरि नाम तिहारे अजौ अपुनपौ ~ १/१५७ । २ करो, धारण करो नीकैं स्याम मान तुम ~ २१५३ । ३ धारण किए रहे, उठाए रहे : सात दिवस गिरि ~ ९६८ । ४ धारण किया : हृदय नहिं ~ ३/६ । ५ रखो : फूँकि-फूँकि धरनी पग ~ १९२२ । **पगु** ~ जाओ : कहाँ रहे कासौं बन्यौ तहँई — ~ २४८७ ।

पाँव ~ चले जाओ : वेगि सवारौ — ~ २५४७।

धारयउ धारण किया, बनाया : अति सुन्दर वपु ~ सारा० ४१५।

धारयौ १. धारण किया : सूरज-प्रभु कूरम-तनु ~ ८/७; सप्त दिवस कर पर गिरि ~ ८७३। २. पकड़ा : राम हल मुसल सँभारि ~ बहुरि ४१८३; काम रिस वस वाम निदरि ~ २४९७। ३ साधा : लख्यौ तव वान जो रुद्र ~ ४१९८। ४. रखा : पग फन फन प्रति ~ ५६७, रत्न खचित सिंहासन ~ ९८४। ५. धारण किये हुए : बान अभिमान मन माहिं ~ हुती ४१९८। ६. लाया था, धारण किया था तेज तासु निज मुख मैं ~ ४२१९।

धावत क्रि०अ० १. दौड़ते हे, दौड़ पड़ते हैं : तुरत उठि ~ १/९। २ दौड़ता : सग-सग ~ डोलत है २१९। ३ दौड़ता है : देखि मृगनि कुरग ~ २३८०। ४. दौड़े : यह सुनि ~ धरनि चरन की प्रतिमा पथ मैं पाई ९/६४। ५. दौड़ता हुआ : आयौ हरि दिमि ~ १३९६। ६ (काटने) दौड़ते हैं : सो भुजग है ~ ३६२३। ७ दौड़ने से : वार-वार के ~ ३७११। ८. दौड़ते हुए : जाइ अवकैं मैं ~ ४२१०। वि० बहता हुआ : ज्यौं ~ जल नीचैं मारग कहूँ नाहिं ठहरात २१००।

धावति १. दौड़ती है : फिरि उतहीं कौं ~ २३७५। २. दौड़ती हूँ : तोकौं यातैं रिस करि ~ १७११। ३. दौड़ती हो : क्यौं नाहिन उठि ~ २३।

धावन[1] १. दूत : धन ~ वग-पाँति पटोसिर ३३२४। २. दूत ने : धाइ ~ जबै यह सुनायौ ४२२१।

धावन[2] दौड़ने का, दौड़ पड़ने का : गज-हित ~, जन-मुकरावन ८/४।

धावनि दौड़ना : कर धरि चक्र, चरन की ~ १/२७९।

धावहि १. दौड़ते हैं : सब पहिलैं उठि ~ ३३८७। २ आक्रमण करते हैं, धावा बोलते हे : सैन साजि ब्रज पर चढ़ि ~ ८५६।

धावहिगे दौड़ पड़ेंगे : अब कै चलते जानि सूर प्रभु सब पहिलै उठि ~ २७८९।

धावहु १. चढ़ाई कर दो : कहयौ सवनि ब्रज ऊपर ~ ९३०। २ दौड़ो : सव मिलि एक सग जनि ~ २८९२। ~ धावहु दौड़ो-दौड़ो . अस्व देखि कहयौ, ~ — ९/९।

धावैं १. दौड़ते है . चलि घुटुरुनि ~ ११२। २. दौड़ पड़ते हैं : किकर कोटिक ~ १/१९७ ३. दौड़ पड़े चहुँ दिसि सूर सोक करि ~ ९/१०४। ४. दौड़ती जा रही थीं : नद सदन-सागर कौं ~ ३२।

धावै १. दौड़ता है : सोई नद कै आँगन ~ ३। २. दौड़ पाता है, पहुँच पाता है : देख्यौ सुन्यौ न मन ~ री ४२५४। ३. दौड़ती है जैसें नदी सिंधु का ~ १६३१। ४ दौड़ पड़ती है : जानि कैं आपुन उठि ~ १/४। ५ जाती है : 'सूरदास' ज्या मन तैं मनमा, अनत कहूँ नहिं ~ ४०५१। ६ दौड़े, भागे : पाछैं लगि ~ २/९। ७ दौड़ेगे : करिहैं लक पक छिन भीतर वज्र-मिला लै ~ ९/११५। ८. दौड़ता है, धावा बोलता हे : जैसे सुभट खेत चढ़ि ~ २२१६।

धाह जोर से चिल्लाकर रोना, धाड़, क्रदन : बरहिन घाली ~ ३३१३।

धिंगाई शरारत, दुष्टता, ढिठाई : जानि बूझि इन करी ~ ९२३।

धिक १ धिक, लानत, धिक्कार : वदि जीवन ~ ३०८९। २. धिक्कार है : ~ वे ~ हम नारि २०२४। ३ व्यर्थ, तुच्छ जग माया ~ देखै ११७८। ~ करि माने धिक्कारा : जलद अपुन का ~ — ९४१। ~ धिक धिक्कार है : सूरदास ~ — तिनकौ २३४५। ~ धिक कहति धिक्कारती हैं : तिनकौं ~ — मनहिं मन १६३३।

धिग धिक्कार है : धनि भगति तुव, ~ हमहिं, नहीं सम दामि तेरी १७८८। ~ धिग धिक्कार है. ~ — मेरी बुद्धि ४९२।

धियावहु धारण कीजिए : यहै रूप धरि ध्यान ~ ८३५।

धिरयौ धिक्कारा, डाँटा : सूर नद बलरामहिं ~ २१७।

धिरवति धमकाती, धमकी देती : ~ हैं घर जाहु १४६१।

धिरवति धमकाती, धमकी देती : ~ हैं कहि भली बनाई २८७८।

धिरवै धमकी देता है, धमकाता है भ्राता मोहिं मारन कौं ~ १९४१।

धींग ढीठ, उपद्रवी, धृष्ट ~ तुम्हारौ पूत १४९१।

धींगरि धींगरी (उपद्रवी), दुष्टा : ~ धिग चाँचरि करैं १४९१।

धींगरी दुष्टा, धृष्टता करने वाली : धींग तुम्हरौ पूत ~ हमकौ कीनी १४९१।

धी धीआ, पुत्री, बेटी : तिन पूछ्यौ तू काकी ~ है ४/१२।

धीर पुं० धैर्य : धरति न इक दिन ~ १/२१। स्त्री० धैर्यवती, धीरा नायिका सूरज प्रभु लख ~ रूप कर सा० ल० ६। वि० १ चतुर, बुद्धिमान : तुमसौं प्रीति कराहैं जो ~ ११८०। २ धैर्यवान् इत भगदत्त, द्रोन, भूरिश्रव, तुम सेनापति ~ १/२६९। क्रि० स० धीरन रगिए : स्याम कहत मन ~ ८७४। ~ धीर धैर्य धारण करो : ~ — कहि कान्ह असुर यह कादर नाहीं ४३१। ~ वचन दै ढाढ़स के वचन देकर : ~ — लै दुख मोले ९३७। ~ धीर सब सौं कहि भाख्यौ सबको धीरज बँधाया : ~ — ९३८।

धीरक धीरज, ढाढस देइ सुतन को ~ १/११२ ।

धीरज धैर्य, ढाढस, सात्वना इतनेहि ~ दियौ सवन कौं अवधि गए दै आस २५३४ । ~ **आनी** धैर्य धारण किया : मेघनि मन तव ~ — ९७८ । ~ **विसरावत** अधीर हो उठे • गगन देखि ~ ~ ९३१ । △ ~ **कौं जोहै** मन के धैर्य की खोज करती तरुनी मन ~ — ६२५ । ~ **सम्हारै** धैर्य धारण कर पाती है : निरखि रूप न हि ~ — ११६५ ।

धीवर मल्लाह, मछुआ, केवट ~ नहिं मानै ९/४२ ।

धुंकार गूँज, गढगडाहट • गरजि ~ अमृत वानी १३५२ ।

धुगारी छौक कर : छाँछ छवीली धरी ~ १२१३ ।

धुध धुधलका, धूल के उडने से होने वाला अँधेरा अध ~ दिसि-विदिस भुलाने ८६० ।

धुंधर धूल के उडने से होने वाला अँधेरा, धुध ~ है छायौ सारा० ४२८ ।

धुंधार धुंए से भरा हुआ, धूममय भभार ~ करि ५९६ ।

धुंधि धुध, हलका अधकार धुरवा ~ वढी दसहूँ दिसि २८१९ ।

धुआवति धुलाती है : हरि स्रम जल अतर तनु भीजे ता लालच न ~ सारी ४०७३ ।

धुई धूनी : मनहूँ ~ निर्धूम अग्नि पर तप वैठे त्रिपुरारि २११८ ।

धुकत[१] धधकते हैं कुलिस तैं कठिन ~ दोउ तारैं ३६२२ ।

धुकत[२] झुकी हो • ~ नलिनि नमि नाल ११४ ।

धुकति झुक जाती है, जा पडती है कबहुँक ~ धरनि स्रम ~ जलभरि २६०० ।

धुकधुकि धुकधुकी, धडकन उर ~ अति कीन्ही ४१०४ ।

धुकधुकी धडकन, कपन जसुमति की ~ सु उर की १८० ।

धुकि १ गिर (पडा) . चरननि ~ पर्यौ आइ ३०८४ । २ झुक कर, लुढक कर • ~ सो परै धरि धरनी ९/७३ । ~ **धरनि परे** भहरा कर पृथ्वी पर गिर पडे . अति ब्याकुल ~ — २७३९ ।

धुज १ ध्वजा, पताका जेते वडे धरम ~ मानी ३९७७ । २ ध्वजाएँ : कोटि धूम ~ मानौ ४१४७ । ~ **हुतासन जात** अग्नि की ध्वजा अर्थात् धुए से उत्पन्न वादल ~ — उन्नत, चल्यौ हरि-दिसि वाउ २०८५ ।

धुजा १. ध्वजा, पताका नील ~ फहरात १२०६ । २ ध्वजाएँ. छत्र-~ चहुँ दीस ९/७५ ।

धुजिनी सेना/फौज का • मानहु न्हात मदन-~-नाज २९११ ।

धुताई धूर्तता, चालवाजी : तोसौं कहा ~ करिहौ ५३७ ।

धुनत धुनते हुए, पीटते हुए वार-वार सिर ~ जात मग ९७५ ।

धुनति धुनती हे : कर मीडति, सिर ~ नारि सब २२३३ ।

धुनि[१] १ ध्वनि, आवाज गुजत कहा कोमल ~ २०५ । ~ **वाजत** ध्वनि हो रही है मुख समीप मुरली ~ — १८०१ ।

धुनि[२] पीट कर, धुन कर . पटकि पूँछ मायौ ~ लोटै ९/७५ ।

धुनि[३] दशा दुसह ~ भइ गात ४०७४ ।

धुनियत धुनता है, पीटती है . यह गुनि गुनि सिर ~ २७९१ ।

धुनी ध्वनि, शब्द ग्रह लगन-नषत-पल सोधि, कीन्ही वेद ~ २४ ।

धुनै १ धुनता है, पीटता है • सीस ~ १/२५७ । २ धुनते हैं, पीटते हैं सीस ~ दोऊ कर मींडैं ४२३५ ।

धुन्यौ धुना, पीटा वार वार तिय सीस ~ २४८० ।

धुर पुं० मूल, आरभ सोचि कहति हौं ~ तैं ३२०४ । अव्य० वहुत दूर, एकदम छोर या सीमा पर : उडत धूरि धुरवा ~ दीसत सल सकल जलधार ३४९५ ।

धुरपद ध्रुपद, एक प्रकार का गीत . ध्रुवा छद ~ जस हरि कौ हरि ही गाय सुनावत १०७२ ।

धुरवा मेघ, वादल उडत धूरि ~ दसहूँ दिसि ४१६२ ।

धुरुव ध्रुव • ~ समान आए री जु कहूँ सप्तरिषि २७९७ ।

धुरे वजाए • पहुँचे जाइ राजगिरि द्वारे ~ निसान सुदेस ।

धुवाए धुलाए . कनक थार मैं हाथ ~ ३९६ ।

धुवायौ धुलाया, साफ करवाया : रोवत मुँह न ~ ३५३५ ।

धुवावति धुलाती है तिहिं लालच न ~ सारी ४०७३ ।

धूँधरे धुधले : ~ भए मेरे नैन ३२५५ ।

धूँधि धुध, आच्छादन, फैलाव धूम ~ वाढी धर अवर ६१५ ।

धूँधुर धुंधले . जल विनु भए सवै धन ~ ९४२ ।

धूत १ धूर्त, काइयाँ लपट ~ पूत दमरी कौ १/४० । २ मायावी, छली, कपटी • गए जहाँ कौरवपति ~ १/२३७ ।

धूति धूर्तता करके, धोखा देकर . ~ धन खायौ ७/३० ।

धूति-धर्म हठ योग मे शरीर शुद्धि की एक क्रिया को धूति कहा जाता है उसी आधार पर निर्मित शब्द धूति धर्म : सूरदास प्रभु ~ ढिग दुख कै वीज वए ३५०७ ।

धूतिनि धूर्त • वह लपट ~ ढुनहाई १२८९ ।

धूती धूर्त छल वल करि जू राधिका ~ परि० २/५९ ।

धूतैं धूर्तता पर • क्यौं पतियाहि तुम्हारैं ~ ३९१६ ।

धूत्यौ धूर्तता, वचकता ~ नहिं देख्यौ ५८९ ।

धूप धूप दान, सुगधित पदार्थो का धुआँ • प्रति-प्रति गृह तोरन ध्वजा ~ ९/१६६ ।

धूम धुआ । △ ~ **के हाथी** तुरत नष्ट हो जाने या किसी उपयोग मे न आने वाली वस्तु : देखत भले काज को जैसे

होन ~ — ३३२० △ ~ कौ मंदिर धुएँ के घर के समान क्षणिक . तृन की अगिनि ~ — ज्यौं तुषार कन पानी २५९२ ।
धूमर धूमैल . गौरी ~ काजर कारी सा० ल० ७९ ।
धूमरि धूमैल, लालिमा युक्त काले रंग की (गाय) धौरी ~ गंगा रौंछी ४४५ ।
धूमरे धूमैले : कारे, धौरे, ~ ८५७ ।
धूरि १ धूल, रज, गर्द : चलत पग ~ उड़ावत ४३७ । २ जमीन में, धूल में गाड़ि ~ तिहि देत २/१५ । ~ धूसर धूल-धूसरित ~ — जटा-जूटलि १७० । ~ धौत धूल में सना होने के कारण उज्ज्वल वर्ण का : ~ — तन ११४ । △ **ऑखिन ~ दई** आँख म धूल झोंककर, धोखा देकर • — ~ — १/५० । △ ~ **बटोरत** व्यर्थ का काम करते हुए . कबहू मग-मग ~ —, भोजन को बिललात २/२० ।
धूरे धूल को : क्यों पाटयें सनावत ~ ३५७६ ।
धूसर सने हुए, भरे हुए ~ धूरि अग अग लीन्हें ३०१० ।
धूसरि सने हुए ~ धूरि दुहुँ तन मंडित ११३ ।
धृक धिक्कार : तुमहिं बिना मन ~ अरु ~ घर । ~ **धृक** धिक्कार है तुमहिं बिना ~ — मातापितु ~ — कुल की कान लाज डर ।
धृग धिक्कार, लानत • ~ तव जनम, जियन ~ तेरौ ९/४९ ।
धृत स्थित, खड़े हुए : अनुपम तुरग साज ~ जोद्धा २९४१ ।
धृतराष्ट्रहि धृतराष्ट्र के पास : दुर्योधन सब भ्रात सग लै ~ लै आयो सारा० ७१३ ।
धेनुक धेनुकासुर, एक राक्षस जिसे बलदेव ने मारा था अघ अरिष्ट ~ अनुघातन ९८१ ।
धेनुनि गायों इन ~ कै छीर ३१५६ ।
धेनुपति साँड . गनो समाइ ~ है कै १३८७ ।
धेन धेनु, गाय • कोटिक दुहियत ~ री १३९ ।
धेनु धेनु, गाय सबहिं रहे सँग चारत ~ ५०१ ।
धेबो दौड़ना : बिसरति नाहिं रिस करि ~ १४८५ ।
धैया दाई, दूध पिलाने वाली धनि जसुमति त्रिभुवनपति ~ ३००५ ।
धैहौं धाऊँगा, दौड़ूँगा : उठि रावन सन्मुख ह्वै ~ ९/१५७ ।
धोइ १ धोकर : मुखहिं ~ सुंदर बलिहारी २०६ । २ बहा कर . गिरिहिं ~ ब्रज ऊपर आवत ९३६ । ~ **डारौं** धो डालूँ, बहा दूँ बरसि जल ब्रज ~ — ८५२ । ~ **बहावहु** बिलकुल बहा दो, नष्ट कर दो, : ब्रज के लोगनि ~ — ८७० ।
धोइए धो डालो लाल उठो मुख ~, लागी बदन उघारन ४३९ ।
धोई धो पियरो रग लेत है ~ १/६३ ।
धोए १ धोया, साफ किया ~ चरन नहाइ ४२१० । २ धोये, साफ किये . बिन ~ क्या छूटै १/६३ । ३ धो दिया हो : मानहुँ मीन महाउर ~ २६६३ ।
धोएँ धोने पर . ~ छुटत नहीं यह कैसेंहु २२५१ ।
धोख धोखा, भ्रम : राधिका हृदय तें ~ टारौ २०६१ । ~ ही **धोखें** धोखे ही धोखे में ~ — ठगा है ३१६७ ।
धोखें १ (धोखा) धोखे याही कै जु ~ हौ मोसौं माहिं लरौ १९४४ । २ धोखे में . भले जू भले मैं सखा ~ —ही २२०६ । ३ धोखे में ही : ~ कीन्हा प्यारो १३१५ । ४ धोखे में : ~ मारी लात ६/१०४ । ~ गयौ धोखा हो गया है मोहिं ~ —, दरस तुमको भयौ २०६३ । ~ **धोखें** धोखे ही धोखे में, भ्रम में • ~ — रहे सबै हम १५०० ।
धोखे धोखे में सुत ~ तब बुद्धि हिराइ ४२८३ ।
धोखौ धोखा, भ्रम : अब वह ~ मेटि कै १४६१ ।
धोय धोकर, पखार कर : चरण ~ चरणोदक लीन्हो सारा० ५४१ ।
धोयैं धो रहे हैं : अक छुड़ावन ~ ४१४३ ।
धोयो धोना ~ चाहत कोच भरो पट १/१९४ ।
धोयौ धोया मुख ~ कुल्लनि लै पानी १३९८ ।
धोर पास, समीप : रूप अनुज ~ २१३३ ।
धोवत १ धोते हैं, धोते रहे . उठि प्रक्षालि मुख ~ ९/३१ । २ धो रहा था नृपति रजक अबर नृप ~ ३०३७ । ३ धो रहा हो मानहुँ चद कलकहि ~ ७३३ ।
धोवति १ धोती है तातैं जल ससोइ पग ~ २००३ । २ धो देती है, मिटा देती है : लिखि लिखि मानहु ~ ३४०३ ।
धोवहु १ धो लो : कहत मुख ~ री ३०९० । २ बहा दो : कहत मेघ ~ ब्रज गिरिवर ९३९ ।
धोवैं धोयें, साफ करें कैसे उनको ~ २२२८ ।
धोव धो रहा है ढरनि ऑसुवनि ~ ३४७ ।
धौं १ सशयात्मक प्रश्नों के साथ प्राय. प्रयुक्त एक अव्यय, न जाने, कौन जाने, पता नहीं पठए ~ कौन काज ३०६८ । २ तो सो ~ मोहिं बताउ १/१४५ । ३ जरा देखा ~ भरि नैन जुड़ावन १८८ । ४ चाहे तो • समुझि देखि ~ हाय २०६९ । ५ पर सुनहु सुर मेरे मारग ~ ८५१ । ६ अथवा, या . कहयौ स्यामसनहू ~ ३८९० ।
धौंस झाँसापट्टी (देने के लिए), धाम (जमाने के लिए) - तुमकौं हम पर ~ पठायौ १५८० ।
धौत भरे हुए, लगाये हुए : धूरि ~ तन अजन नैननि ११४ ।
धौर सफेद ससिनि सरवा ~ २८३५ ।
धौंरहर धरहरा, बुर्ज, मीनार, महल • ढीने धेनु ~ धौरे परि० १/८ ।
धौंराहर धरहरा, बुर्ज, मीनार, महल . बादर-छाह, धूम ~, जैसे थिर न रहाहीं १/३१९ ।

धौरी **स्त्री०** सफेद गाय • घर नहि पियत दूध ~ कौ २९० । **वि०** सफेद, धवल : ~ धेनु बुलावन कारण सारा० ८६६ ।
धौरे उजले, सफेद कारे ~ धूमरे ८५७ ।
धौल पक्का, पक्के • धूत ~ लपट जैसे हरि ३९९८ ।
धौलागिरि धवलगिरि नामक हिमालय पर्वत की चोटी : ~ मनु धातु चलीं बहि २९०१ ।
ध्याइ ध्यान करके, स्मरण करके : सुर तालऽरु नृत्य ~ ११५१ ।
ध्याई ध्यान लगा कर, स्मरण करके . उत्तर दिसा गए हरि ~ १/२८८ ।
ध्याऊँ १ ध्यान करता हूँ . यहै मम प्रेम फल यह ~ १/१६७ । २ ध्यान करूँ, स्मरण करूँ जनम जनम यह ~ ११७४ ।
ध्याए ध्यान किया, स्मरण किया • तव हरि नाम ~ १/७ ।
ध्यान **पुं०** याद, स्मरण मृग कौ ~ हृदय रहि गयौ ५/३ । ~ **धरै** स्मरण किया छिन इक ~ — १/८२ । ~ **पूरन काम** उनका ध्यान कामना पूर्ण करने वाला है . यह कमल नख-इदु सोभा ~ — १७५५ । **क्रि० वि०** ध्यान करके, ध्यान लगा कर • कर जोरि सुरपति ~ ८१४ ।
ध्यानन ध्यान . गोपी मन ~ की ३८७८ ।
ध्यानहुँ ध्यान (से) भी . दृष्टि टारि, ~ तैं टारत ३९७४ ।
ध्याना राधा की एक सखी का नाम : ~ मैना नैना रूपा २००८ ।
ध्यायौ **क्रि० स०** १ ध्यान किया कामातुर गोपी हरि ~ १४६० । २ स्मरण किया, याद किया . रमाकात जा सुख कौ ~ ११७९ । **पु०** ध्यान करत ब्रह्मा सिव सेस सुक सनक ~ १/११९ ।
ध्यावत १ ध्यान करता है वह मूरति मन ~ ३८८८ । २ ध्यान लगाते है : जाकौं ~ सिव मुनि जोगी ११६४ ।
ध्यावति ध्यान करती है . ~ रूप दरस तजि हीरा को ४०६२ ।
ध्यावति ध्यान करती है : तातैं हरि हरि ~ २०७४ ।
ध्यावन ध्यान करने के लिए . कह्यौ तुमकौ ब्रह्म ~ ३४८५ ।
ध्यावही ध्यान करते हैं जोग जुगुति तप ~ १६१८ ।
ध्यावहु ध्यान करो . कह्यो पूरन ब्रह्म ~ ३६८५ ।
ध्यावैं १ स्मरण करती हैं : हमहुँ स्याम को ~ २२५५ । २ ध्यान करते हैं . दुख सुख मैं जो हरि कौं ~ १४६० । ३ ध्यान करें . एक ध्यान हरि ~ ३७९६ ।
ध्याव १ ध्यान लगाता है, ध्यान करता है : बहु बिधान करि ~ २४९ । २ ध्यान करे : और देव कौं ~ १/१६८ ।
ध्यावो ध्यान करो, स्मरण करो कहा उहि कथा को सुरति ~ २६२१ ।
ध्याहि ध्यान करते ह कर्मना करि ~ २३४८ ।
ध्रमसारी धर्मशाला . तहाँ रचौ ~ ८/१४ ।
ध्रुब **दे०** ध्रुव • ~ उत्तान पाद सुत भयौ ४/८ ।
ध्रुव ध्रुव, राजा उत्तानपाद का सुनीति के गर्भ से उत्पन्न पुत्र . जिहिं गोबिंद अचल ~ राख्यौ १/३४ ।
ध्रुवगति ध्रुव की गति, अचल मनु द्वै ~ रजनी २१८४ ।
ध्रुवहि ध्रुव को ~ अभै पद दियौ १/२८ ।
ध्वज ध्वजा अकुस कुलिस बज्र - ~ परगट ६३१ ।
ध्वजा १ ध्वजा मे : काकी ~ बैठि कपि १/२९ । २ पताकाएँ प्रति-प्रति गृह तोरन ~ धूप ९/१६६ ।
ध्वनि (मुरली की) ध्वनि . स्वर्ग पताल दसौं दिसि पूरन ~ आच्छादित कीन्हौ १०६६ ।
ध्वनी ध्वनि गाये जु गीत पुनीत बहु बिधि बेद रबि सुदर ~ १७०३ ।
ध्वाई दुहाई (देकर) ~ नद अहीर की ३९१४ ।

न

नँगाइ नगा करके : छाँडहिं तुमहिं ~ २९०७ ।
नँगाइहै नगा करेंगी : अब हम तुमहिं ~ २९०३ ।
नँगी नग्न, वस्त्रहीन : करन चहै ~ १/२१ ।
नंद[1] गोकुल मे बसने वाले गोपों के नायक जिनके यहाँ श्रीकृष्ण का बाल्यकाल बीता था . सोइ ~ कैं आँगन धावै ३ ।
नद[2] पुत्र, लाल नद के ~ दोउ गज खिलावैं ३०५६ ।
नद किसोर नदकिशोर, कृष्ण . सिर धरि ~ ४७७ ।
नद किसोरनि नदकिशोर से . मिलिहैं ~ ३३३० ।
नंद कुंवर कृष्ण : सूर सुन्दर ~ पर १६६ ।
नदगाँव वृन्दावन के निकट एक गाँव जहाँ नद आदि गोप रहते थे : हिलिमिलि चले सकल ब्रजवासी ~ फिरि आयो सारा० ५३३ ।
नंद-घरनि नद की घरवाली, यशोदा ने : बात कही ~ ३९५२ ।
नंद घरनी नद की पत्नी, यशोदा . मगन होति ~ ४४ ।
नंदजए नद के पुत्र, कृष्ण जाइ लुबधे निरखि वा छवि सूर ~ २३६३ ।
नंदतनै नद के पुत्र, कृष्ण को : जिहि लोचन अवलोके नख सिख सुदर ~ ३६६६ ।
नँदतात नदलाल, कृष्ण नैन सैन देवै ~ २२१८ ।
नद नद नद के पुत्र, कृष्ण • गोप बालक मध्य श्री ~ ६१० ।
नद-नदन १ नद के पुत्र, कृष्ण : बृन्दाबन देख्यौ ~ ४१५ । २ कृष्ण को : ग्वारिनि जब देखे ~ १५०२ ।
नंद नंदन मास वैशाख महीना . ~ छै तैं हीन त्रितिया सा०

लo १०८ ।

नंदनहू नंद कुमार भी हैं . इहिं ब्रज हम तुम ~ १७०० ।

-नंदहि नंद के पुत्र श्रीकृष्ण को : गोद लिए जसुदा ~ १०७ ।

न पुत्र : मैं देख्यौ जसुदा कौ ~ १३५ ।

नहि पुत्र को : रोहिनी ~ देखत परि० १/२८ ।

नाँहि पूत ना, पूतना : ~ निकट कारन मा० लo ९३ ।

नायक गोपपति नंद को : साँचेहिं सुत भयौ ~ कैं हौं नाहीं चौरावति २३ ।

-नारि नंद-पत्नी, यशोदा : जे वनए ~ ८३१ ।

-नारी नंद की पत्नी, यशोदा : बिसरि गई ~ १६७ ।

-निकेत १ नंद का घर : इहिं ब्रज ~ ३४९ । २. नंद के भवन मे : कबहुँ द्वारे दौरि आवत, कबहुँ ~ १८४ ।

नी कन्या, पुत्री : मित्रविंदा यक नृपति ~ ताकौ माधव व्याये सारा० ६५५ ।

-रनियाँ नंदरानी, यशोदा : छवि निरखति ~ २३८ ।

राइ १ नंदराज : ~ कैं नवनिधि आई १९ । २ नंदराज के : ~ सुत लाडिले, सब ब्रज जीवन-प्रान ४३१ ।

राई नंदराज को : बोलि लए ~ १६ ।

राज नंदराज, ब्रजराज : मो लैहौं ~ ३६ ।

रानी नंद की रानी, यशोदा : कान्हहिं बरजति किन ~ ३११ ।

रायजू नंदराज : तबहीं ~ आए सारा० ४१९ ।

रैया नंदराज : चकित भए ~ ८७५ ।

लाडिले नंद के लाडले कृष्ण के : महरि कह्यौ ~ सँग सखा बुलावहु १९८० ।

लालहिं नंदलाल से : अबहीं मूड़ मिलति ~ ८०२, मेरौ मन रसिक लग्यौ ~ ३६८१ ।

लालहि कृष्ण से : चित लाग्यौ ~ १६३९ ।

वारो नंद का बालक, कृष्ण : रसना ह्वै मैं बसै ~ १९१९ ।

दहि १ नंद को : ~ तात-तात बोलत २१९ । २. नंद के : ~ सँग धाए ५४४ । ३ नंद से बार-बार हरि बूझत ~ ८१८ ।

दहिं नंद को : कब ~ बाबा कहि बोलै ७६ ।

दा[1] ब्रज की एक गोपी अथवा राधा की एक सखी का नाम . ~ वृन्दा जमुना सारि २००८ ।

दा[2] पुत्र, बेटा . आँगन खेलैं नंद कै ~ ११७ ।

दादिक नंद आदि को : देखे दीन दुखित ~ ८६६ ।

दी शिव के एक प्रकार के गण । इनके तीन वर्ग हैं—कनकनंदी, गिरिनंदी और शिवनंदी ~ हृदय भयौ सुनि ताप ४/५ ।

न, नहीं । ~ आयौ बाज बाज नहीं आया, आदत नहीं छोड़ी : तऊ ~ — २/९६ । ~ एकौ एक भी नहीं, दूसरा : और ~ — सो सौ सा० लo ९९ । ~ करी इनकार करती है बूझे हूँ ~ — १९०० । ~ कह्यौ पर्‌यौ वर्णन करने में असमर्थ सिद्ध होते हैं ~ — ११४१ ।

नइ नई . ~ पहिचानि भई ३९१५ ।

नइयो नवाया, झुकाया . ताको पूजि बहुरि सिर ~ सारा० ५५३ ।

नई[1] वि० १ नयी, नवीन : ~ रीति यह अबहिं चलाई ९२३ । २ नयी (कल की छोकरी) है . सुनि री राधा अबहिं ~ २०१२ । ३ नित्य नवीन, ताजी : उपजत लता ~ १/१८५ । स्त्री० नवीन बात . ~ न करन कहत प्रभु १/१०८ ।

नई[2] झुक/टूट गई है : लोक लाज कुलकानि ~ री १८९६ ।

नए[1] १ नवीन : भूषन सजत ~ २१८२ । २ नये/निराले रूप में : आजु सखि देखे स्याम ~ १८१२ ।

नए[2] १ झुके, झुक गये नैकहुँ न ~ री २३६३ । २ लौटे, झुके . देखि बदन तन फेरि ~ री २३६२ ।

नकटी वह जिसकी नाक कटी हो . ~ पहिरै बेसरि ३५५० ।

नकबानी नाक में दम, परेशान, व्याकुल : आपु आयौ ~ ४८४ ।

नकबेसर दे० नकबेसरि : सीसफूल बेनी ~ सारा० ९७६ ।

नकबेसरि नकबेसर, नाक में पहनने की बेसर या छोटी नथ . ~ बसी कै सभ्रम १२०६ ।

नकीब दरबारी चारण जो किसी को उपाधि या पद मिलने या किसी के आने की घोषणा करते हैं : अपजस अति ~ कहि टेर्‌यौ १/१४१ ।

नकुल राजा पांडु के चौथे पुत्र जो उनकी पत्नी माद्री के गर्भ से अश्विनी कुमारों द्वारा उत्पन्न हुए थे : कुन्ती ~ और गान्धारी सारा० ७१२ ।

नक्र १ ग्राह, हू हू नामक एक गंधर्व जो देवल ऋषि के शाप से ग्राह हो गया था : ~ चक्र करि मार्‌यौ १/१०९ । २ ग्राह का : चक्र ~ सीस छीनौ ८/५ ।

नख १ नाखून : ~ गंगा जु बहैया १३१ । २ नाखून से : उदर ~ फारी १/२२ । ~ लिखि नाखून से खींचकर : ~ — कह्यौ जाहु तँहइ उठि २८२६ ।

नखछत नख के चिह्न : ता बिच ~ रसाल २५०१ । ~ स्रेनि नखों के घावों की पंक्ति में . ~ — प्रस्वेद गात तैं २४६१ ।

नखत[1] नक्षत्र ग्रह ~ तजत न रास ६२३ ।

नखत[2] तारे, आँखों की पुतलियाँ : ~ टार न फेर सा० लo ७९ ।

नखत वेद ग्रह जोरि अर्ध करि . — नक्षत्र=२७+वेद=४+ग्रह=९ का योग=४० उसका आधा २०=विष, जहर : ~ सोई बनन अब खात ३९७६ ।

नखनि १ नखों, नाखूनों . ~ सौं उदर डार्‌यौ बिदारी ७/६ ।

२ नाखूनो से धरनी ~ करोवत २१४६ । ३ नाखूनो मे ~ महावरि सुलि रह्यौ ११८० । ~ छत-घात नखो की चोट • ~ नजा सम्हारैं २१२९ ।

नख-मनि मणिमय नख सुदर हैं ~ ४७३ ।

नखसिख नख से शिखा तक : ~ राधे सुखनि फलो १७०३ । △ ~ तैं रोयौ नख मे शिखा तक रोया, रोम रोम से रोया, बुरी तरह मे रोया तब ~ — १/४३ ।

नखहि नाखून पर ~ गिरिवर धरन १/१२२ ।

नखही नाखून ही अति कोमल ~ की कोर ९६३ ।

नखा जातिक नखो से उत्पन्न, नखक्षत मेवन मद्ध ~ प्रिय सा० ल० ४९ ।

नखियाँ[1] नाखून काट किनारे ~ ३२४० ।

नखियाँ[2] **क्रि० अ०** निरर्थक नष्ट हो जाती है • जेती तेती ~ १३८५ । **क्रि० स०** लाँघ कर . गुरुजन-लाज कोट-गढ ~ परि० २/४९ ।

नखी १ लाघ/पार कर गया है सोभा-सीव ~ री १३८४ । २ लाँघ गई : रस सागर की सीवा ~ ११८० ।

नखोटै नखों मे नोचता है माता कौ चीर ~ १८३ ।

नग[1] **१.** पत्थर, नगीना ताहि कैं हाथ निरमोल ~ ढाजियै १/२२३ । २ नगो का : देत कनक ~ दात १२ । ३ हीरा • हरि ~ बदलि विषय विष आनत १/११४ । ~ **जाला** नगों से जडा . कर केयुर कचन ~ — ६२५ ।

नग[2] **१.** पर्वत : सुंदर आखर ~ पै नगपति मा० ल० ६१ । २ पर्वत पर चढि ~ टेर सुनाई ३३०६ ।

नग अग रत्न जैसे अगो का : सूर तहाँ ~ परम रम २४०० ।

नगधर पर्वत को धारण करने वाले, कृष्ण बारेहि तै ~ कहवायौ १२८३ ।

नगन[1] १ नग्न, नगे ~ गात मुसुकात तात ढिग १६४ । २ नगी • बिन रतिकाल ~ नहि होनहु ९/२ ।

नगन[2] नगो से, नगीनो से रत्न जटित ककण बाजूबद ~ मुद्रिका सोहै सारा० १८० ।

नगनि नगो से ~ जरित टोड कूल ११७५ । ~ खँचि मणियो/नगो मे जडे हुए किधौं बज्र कन लाल ~ — १८३२ ।

नगपति १ पर्वतराज हिमालय मानो ~ छायो ९/९६ • २ कैलाश के स्वामी शिवजी . सुदर आखर नग पै ~ सा० ल० ६१ ।

नगर नीक और काम बीच शहर, सरस और मदन के बीच के अक्षरो के मिलाने से, हरद, हल्दी . ~ ते सा० ल० ८० ।

नगरहि नगर को . सुक्र क्रोध करि ~ त्याग्यो ९/१७४ ।

नगराई चतुराई, चालाकी नागरि देखि गई ~ ७२० ।

नगाइ नगा (कर) भूषन लेत ~ कै २१९५ ।

नगेस पर्वत अचल चलत ~ १२०५ ।

नग्र नगर को बहुरि करि कोप हल अग्र पै ~ धरि ४२०९ ।

नघावत लाघने मे, आर पार जाने मे . अति स्रम होत ~ १२५ ।

नचत १ नाचते हे ~ डमरू बजाइ १७० । २. नाचता हे ~ काली नाग ४९८ ।

नचवत नचा रहा हे ससि ~ मृग मात १८०५ ।

नचायौ १ नचाया मुनिनि नाच जो ~ १२१८ । नचाया है : बहुत ~ नाच १/१९६ । ३ नचाया गया हो को जगत जो न कपि ज्यौ ~ ८/१० । ४ नचाया था कपि ज्यौं नाच ~ ३६५१ ।

नचावई नचाती है जसुमति सुतहि ~ १३४ ।

नचावत १ नचाते है चुटकी दै दै ग्वाल ~ २१५ । २ नचाता है नाचत नैन ~ लोभ २३८५ । ३ नचाते हुए • हाथ ~ आवत ग्वारिनि २९३ ।

नचावति १ नचाता है मुरली हरि कौं नाच ~ १३२५, काम ~ ताधा १६९६ ।

नचावहीं नचाती हे, नचा रही हे आगन स्याम ~ १३४, चुटकी देहि ~ ११६ ।

नचावहु नचाओगे . जैसैं नाच ~ २५२५ ।

नचावैं १ नचाती हे सोइ नाच ~ ४०९३ । २ नचाया जाता है कपी ज्यो ~ ३९४ ।

नचावै १ नचाती हे कोटिक नाच ~ १/४२ । २ नचा रहा हो बानक अतिहि बन्यौ मन मोहन मन्मथ पकरि ~ ११८१ ।

नचावौ नचाते हो कहा ~ हाथ परि० १/३८ ।

नचिबौ नाचता रहेगा . जोगी कपि ज्यौं ~ १/५९ ।

नची १ नाचती रही जब लगि मन मिलयौ नही ~ चोप कैं नाच १४४३ । २ नाचती फिरती है, चकरा उठती है . कविअनि बुद्धि ~ २४४८ । ३ नाच उठी है सोइ मुख निरखि ~ ४२५६ ।

नच्यौ १ नाचा . को जानै को कबहि ~ ११३९ । २ नाचा हू तिहारे आग बहुत ~ १/१७४ । △ **उघरि ~ चाहत** नग नाचना चाहता हू, निर्लज्जता का व्यवहार करना चाहता हू अब हौ — ~ — १/१३४ ।

नछत्र नक्षत्र सूर, चद्र, ~ पावक २/२७ ।

नछत्रन नक्षत्रो, हस्त नक्षत्र, हाथो मे रामदूत दुति दिपत ~ सा० ल० ९८ ।

नछत्रहू नक्षत्र भी ग्रह ~ सबही फिरै ४/९ ।

नछत्रिन नक्षत्रो मे ~ गनि समुझावे २/३६ ।

नजरि नजर, दृष्टि सूरदास प्रभु की सु ~ उदित अग २६५८ ।

नजीक निकट वालो को भी पेखत नाँहि ~ सा० ल० ४३ ।

नट[1] नाटक : मन मेरे ~ के नायक ज्यौं १/२०७ ।

नट[2] मुकर, अर्थान्तर से मुकुर, आइना, दर्पण : ~ देखत वृष-भानु दुलारी सा० ल० ९८ ।

नटकनि नट-कला पर, नृत्य पर सूरदास बलि नागर ~ ६१८ ।

नटनागर पट श्री कृष्ण का वस्त्र, पीताम्बर ~ पै तबहीं तैं, लटक रह्यौ मन मेरौ सा० ल० ४० ।

नट नारायन नटनारायण एक राग : ~ गौरी सुरहि टनावत १२२० ।

नटवत नट के समान ~ करत कला सकल २/३८ ।

नटवर[1] नटवर, नाट्य कला मे दक्ष : ब्रज आवत ~ गोपाल ४७२ । २ श्रेष्ठ नट का : ~ वेष धरे मनमोहन ३०६२ ।

नटवर[2] कृष्ण ~ रूप अनूप छबीले १३७० ।

नटवा नट : जैसे ~ लोभ कारन करन स्वाँग बनाइ १/४७ ।

नटसल किसी किसी समय उठने वाली टीस, कसक, पीडा . जैसे ~ टरत न उर ते ३८५७ ।

नटिनि नटनी, नट की स्त्री माया ~ लकुटि कर लीन्हे १/४२ ।

नटी नाचने वाली, नर्तकी (नारियाँ) . नाचनि ~ सुलप गति उमँगत १०७७ ।

नतरु नहीं तो, अन्यथा ~ जगत जस छायौ ३८१६ ।

नतरुक नहीं तो, अन्यथा : ~ ज्वाला तचिबौ १/५९ ।

नतु नहीं तो : बेगि सवारी पॉव धारी, 'सूर' स्वामी ~ भीजैगो पियरौ पट आवत है मेहरा २५४७ ।

नथ-मुकुता नथ के मोती : नासा ~ के भारहिं २४९८ ।

नथि नाथ कर : काली ~ दावानलहिं पियौ १/१२१ ।

नद नदी (नदियाँ) व्योम धर ~ सैल कानन १/५६ ।

नदान अनाडी=अनारी=अनार=दाडिम निपट ~ बीच से दमनन सा० ल० १०२ ।

नदि नदी यह जोबन बरषा की ~ ज्यौं ३५९१ । ~ बढी गँभीर नदी (अश्रुधारा) तेजी से बढ चली . रुदन करत ~ — ११८० ।

नदिन नदि+न, नय+न, नयन . ~ के उर ताल मारत महा मार प्रयोग सा० ल० १०७ ।

ननसाल ननिहाल : तुव ~ माहिं हम आहिं ६/७ ।

नन्हाई हेठी, बदनामी नट महर की करत ~ ३९१ ।

नन्हैया बचपन मुख री कहति ~ की २००३ ।

नन्हैया वि० नन्हे, नन्हे : बन फल तोरि ~ ४१८ । पु० नन्हे कन्हाई को जनि स्रम होत ~ ८७५ ।

नफेरी एक वाद्य यंत्र निकट ~ श्रवनन सुनि सुनि सारा०१०७६ ।

नफा मुनाफा, लाभ : तहीं दीने मूल पूरै ~ तुम कछु खाहु ३७१७ ।

नब नव का उल्टा, बन ताल ~ ओर चितवन सा० ल० ३९ ।

नबीने नवीन, नये : अति उतकंठ ~ २३७८ ।

नबीनो नया, नवीन . गोकुल मैं बाढ्यो रूप ~ सारा० ७८२ ।

नबेलि नवेला को बिहँसि लई उर लाइ ~ परि० २/३० ।

नबेली नवेली (नारी) नूतन मेघ, ~ दामिनि १०९७ ।

नभ आकाश । ~ की गैल आकाश मार्ग चढ़हि बिमान ~ — ११८० ।

नभहीं आकाश मे ही . नरनि सदा पूरन ~ री १००४ ।

नम मुलायम : फूल कमल फली पाकर ~ १०१३ ।

नमन अभिवादन पर्वत बहुत ~ करि पूजा यह बिनती करवायें ६१७ ।

नमाइ झुका कर, नम्रता प्रदर्शित करके हरष अक्रूर हिरदै ~ २५५६ ।

नमि झुक कर, लटक कर झुकत नलिनि ~ नाल ११८ ।

नमित झुका हुआ, झुके हुए : ~ सुधाकर बदन अमित छवि २१४३ ।

नमित-मुख लज्जित बार-बार निहारि तुव तन ~ छवि चोर ३७८ ।

नमी कृपा, नम्रता : करत नाहिं ~ १०२८ ।

नमो नमो (बार-बार) नमस्कार है .~ हे कृपानिधान २/३३ ।

नय नया : नित ~ रूप सहां ३३९८ ।

नय अहि अंत नदी और साँप दोनों के अंतिम वर्ण के मिलाने मे (दीप), दीपक : रमा पति सुत सत्रु पिता ज्यौं ~ न तोलें सा० ल० ४१ ।

नय उर के रस नदी के हृदय का रस, कीचड सुच्छ बसन ~ मैं सा० ल० ८३ ।

नयन नेत्र । △ ~**भरि** आँख भरकर, भली भांति : सो देखत जानकी ~ — ९/१२१ ।

नयनन १ नेत्रों इन ~ को मूरि ४२५१ । २ नेत्रों को/से : उद्धव तुम ~ नहिं देखो सारा० ५७७ ।

नये हीं छंदन नये ही प्रकार का . सुरपति-धनुष ~ १७८० ।

नयौ[1] नया, नूतन, नवीन : ~ नेह, ~ गेह ६८७ । △ **लिखन** ~ पुराना हिसाब साफ या बंद करके नया चालू करना बरस दिवस करि होत पुरातन फिरि फिरि — ~ १/२९८ ।

नयौ[2] क्रि० स० नीचा किया, झुका दिया, मर्दित कर दिया ब्रह्म इन्द्र को मान ~ १/२८ । क्रि० अ० झुक गया : जिहिं सिर महत ~ २८१५ ।

नर-अवतार मनुष्य-जन्म, मनुष्य योनि पुरबलो धौं पुन्य प्रगट्यो लह्यौ ~ १/८८ ।

नरक-पति यमराज गटबे भया ~ सोसी १/१४१ ।

नरकहि नरक मे ही हरि न भजे सो ~ जाइ ७/२ । ~ **परै** नरक को पाता है : जस बिहीन ~ — ११८० ।

नरकासुर एक दैत्य जो वाराह भगवान् के पृथ्वी के साथ गमन करने पर जन्मा था . ~ को मारि स्यामघन सोरह सहस त्रिय लाये सारा० ६५८।

नरकेहरि नृसिंह भगवान् ने ~ दनुज दह्यौ १/६।

नर-जन्म मनुष्य योनि के : बिनु ~ मुक्ति नहिं होइ ७/२।

नरजी तौल करने वाला घटति न वढति तौलि लेहु ~ ३४०१।

नरदादिक नारद आदि : ~ हरि भक्ता ११७५।

नर-नारी स्त्री पुरुष। ~ **सरिता सब आगर** स्त्री-पुरुष ही जलवती नदियाँ हैं . ~ — ९२०।

नरनि मनुष्यों . बिन तुम्हारी कृपा गति नही ~ की ८/१६।

नरपति राजा, नृपति, भूप . ~ एक पुरुरवा भयौ ९/२।

नरम १ कोमल, मुलायम। २ स्निग्ध दृष्टि से : सकुच सहित हरि ~ निहारे २६८३।

नरमे कोमल, मुलायम बोलि लीन्हौ निकट वचन ~ २९२९।

नरवाई नरई, गेहूँ जौ आदि की बाल का डठल . अब ~ को लुनै ३७४०।

नरसिंह नृसिंह का : इक ~ रूप सहार्यौ ९/१५।

नरहरि नृसिंह भगवान् : ~ ताहि अभय पद दीन्हौ १/१०४।

नरहरि-रूप विष्णु का चौथा अवतार जिसमे आधा शरीर मनुष्य का और आधा सिंह का था : ~ धर्यौ जिहिं भाइ ७/२।

नरहू मनुष्यों : अरु सब ~ कौ परिनौत ५/४।

नरेशा राजा ने : दीन्हों दान बहुत विप्रन को राजा मिथिल ~ सारा० २३४।

नरेस राजा, नरपति, नरेन्द्र : हैहौ भुवन ~ ४०७८।

नर्तत नाच रहे है तहँ बर्हि ~ बचन मुखरित २८४२।

नलकूबर कुबेर का पुत्र, जिसे नारद ने उस समय अर्जुन वृक्ष हो जाने का शाप दिया था जब वह मदमाता हो कर गगा मे स्त्रियो के साथ बिहार कर रहा था ~ कौ साप रावनहिं ९/८०।

नलबर्त्त अग्नि बरसाने वाले बादल जो प्रलय काल मे उमड़ते हैं अनिल बर्त्त, ~, बज्रव्रत ९२६।

नलिन कमल मानहुँ ~ नए २६३४।

नलिनि कमलिनी : सूर स्याम मुख सुचद जुवति ~ मोही ३८९९।

नलिनी कमलिनी सरद रैनि ~ दल सीतल ३२५७। △ ~ **के सुक ज्यौं** नलिनी के तोते के समान : बिवस भयौं ~ — १/४६। △ ~ **कौ सुवटा** नलिनी का सुवा सूरदास ~ — २/२६।

नव[1] १ नवीन, नवोदित : ~ ससि उजियारी १३४। २ नया : चीर उतारि वस्त्र ~ पहिरौ २५४८। ३ नयी, नवेली : रस पागे ~ तिय-सग २६३५। ~ **नव** नयी-नयी : दिन दिन ~ — प्रीति ४१४५।

नव[2] नौ (९) : षट खग, ~ जलजात ११११२।

नवका नाव . चरन कमल दरसन नव ~ ३११९०।

नवकिसोर वि० नवीन अवस्था के ~ मोहन मृदु मूरति ३६०८। पुं० नवकिशोर, कृष्ण ~ बिनु खेह ४०१८।

नवखंड नौ खडो को, भूमि के नौ विभागों भरत, इलावृत, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रम्य और कुश को . पलटि धरौ ~ पुहुमि तल ९/१३२।

नवग्रह फलित ज्योतिष मे सूर्य, चद्र, मगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु ग्रह · ~ परे रहैं पाटी तर ९/१५९।

नवजोबन नवयौवना, नवयुवती जाकी नारि सदा ~ ९/११७।

नवजोबनि नवयुवती पुहुप-प्रजक परी ~ ९/७५।

नवजोबनियाँ नवयुवती : अब हरि गोकुल काहे कौं आवत भावति ~ ३३७७।

नवत झुकता : ~ न वज्र सरीर ९/१०७।

नवतन नये शरीर वाले, युवा शरीर वाले कृष्ण : भूमत भूमत सेज निकट ~ चढे ११९०।

नव-तन-चन्द्र नवोदित चन्द्रमा की . ~ देख-मधि राजत ९३।

नवदल नवीन पत्तो की बिपिन सेना साजि ~ ३७६८।

नवधा नवधा (श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, बदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन) भक्ति : प्रेम सहित ~ विस्तारै ९/५।

नव नागर-कुल मूल सभी छैलों के सरदार : ~ सॉवरौ १२०१।

नव-नागरी नवीन नागर बालाएँ : साजि सिंगार चलीं ~ १६१८।

नवनिधि १ नवों निधियाँ, कुबेर के नौ प्रकार के रत्न— पद्म, महापद्म, शख, मकर, कच्छप, मुकुद, कुद, नील और खर्व . अष्ट सिद्धि ~ कर जोरैं ६९ । २ नयी निधि (पुत्र) . नदराइ कैं ~ आई १९।

नवनिधिहिं नवनिधियो को : मनौ अति रक ~ पाई १९८४।

नवनीत मक्खन : कर ~ परस आनन सो १२१।

नवनीता नवनीत, मक्खन . लोभी ~ कौ ४००९।

नवमो नवम राशि (धन), पत्नी, स्त्री . ~ छोड अवर नहि ताकत सा० ल० ७१।

नवरंगी १. रँगीली, हँसमुख : गोपिनि नाउँ धर्यौ ~ ३१४४। २ नये-नये रग सुदर वर त्रिभगी ~ सुखदाई १४४४।

नवरतन नवरत्न — मोती, पन्ना, माणिक, गोमेद, हीरा, मूँगा, लहसुनिया, पद्मराग या पुखराज और नीलम : रेसम बनाइ ~ पालनौ ८४।

नवल वि० १. युवा, जवान : ~ नारि-मन मोहत १५४३। २ नयी अवस्था वाले, युवक : नागर ~ कुवर वर सुंदर २१०। ३ नया, नवीन ~ निकुज कलिंद सुता २८०५। पु० १ (नवेले) कृष्ण नवला ~ रीझै मन हरि कै २०११।

२. नवेले (कृष्ण) के : ~ मृगदृग त्रिषित आतुर २१३१।
नवल किसोर नव युवक : जानि निमा सिसु-रूप विलोकत ~ भयौ १६७१।
नवल किसोरी नवयुवती (राधा) : बन बन डोलति ~ १८९२।
नवल-नवला कृष्ण और राधा की ~ नव जोरी २१३४।
नवलनि तरुणों, युवकों : ~ मग डोलैं १८७७।
नवल बाल नवयुवतियों, नवेलियों : सकल कला गुन प्रवीन ~ भाई ११५१।
नवला[1] १ तरुणी, युवती : नित ~ नवसत साजि कै अरु वह मावक राखी। २ (नवेली) राधा ~ नवल रीझे मन हरि कै २०११।
नवला[2] राधा की एक सखी का नाम : ~ प्रमदा सुभद्रा नारि २००८।
नवलाल नवल किशोर श्री कृष्ण : उत राधा ~ १०६४।
नवसत नौ और सात, सोलह, सोलहों (शृंगार) : ~ साजि सिंगार जुवति सब १५००।
नवससि दूज के चाँद को भाँति दसन की दुति तडित ~ १८२२।
नवसात नौ और सात, सोलह, सोलहों (शृंगार) : ~ सजि नइ नागरी २८३०।
नवसैं नम्रता से : ~ नदी चलति मरजादा सुधियै सिंधु समानी २३६३।
नवहु नवों खण्डों—भारत, इलावृत, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रम्य और कुश को ~ दस दिसा भुलिहौ १७३९।
नवाइ १ झुका : असीस देत मस्तक ~ कै ३१। २ झुका कर करी विनय बहु सीस ~ ६/५।
नवाई[1] १ नयी : आजु सुनी यह बात ~ ७९९। नया : डरों देखि यह रूप ~ ७/२।
नवाई[2] नमन : क्यौहुँ न जात ~ २/२०५।
नवाए १ झुकाया : द्वारैं माम ~ २७२९। २ झुका लिया यह सुनतहिं सिर सबनि ~ ८८८।
नवायौ १ नवाया, झुकाया : आइ विभीषन सोस ~ ९/११२।
नवावत १ कम कर देते बन-गाज दर्प ~ १६२९। २ झुकाते हैं देखति ग्रीव ~ १३२५।
नवावति झुका लेती है गिरिधर नार ~ ६५५।
नवावैं नष्ट कर दिया, मिटा दिया : ताकौ गर्व ~ ४८२।
नवेलि नवेली की, युवती की : कहूँ दरकी कुचनि पर अँगिया ~ २०१०।
नवेलिनि युवतियों के हरत ~ ग्याननि १३६६।
नवेली स्त्री० नवयुवती : नवल आपुन बनी ~ नगर रही खेलाइ २६७६। वि० नवेली, तरुणी नवल गुपाल ~ राधा ६८६।
नवैं नवमी को ~ नवल नव नागरी २९१५।
नवै[1] नवीन : भुजनि ~ आभूषन माल ११८०।
नवै[2] झुकाती है : औरहिं ~ न माम ३७०२।
नवौ[1] नवों : ताकी कृपा ~ निधि आई ८११।
नवौ[2] नवीन : मुख आनत कथौ तन चितवत, ~ विचार वह ४०५९।
नसायो नष्ट कर दिया, ले लिया दंतवक्र महिपाल महाबल विदुरथ प्रान ~ मारा० ७९५।
नप नख, नाखून : ~ त गिरैं कौन गिरि राखै ९३९।
नपत नक्षत्र ग्रह लगन ~ पल सोधि २८।
नस नाश किया है जरु रावन कै सीस सकल ~ ४२१८।
नसनि नसों : फेलि जाइ अग जैसें ~ कै निकारै ३५८२।
नसाइ क्रि० स० नष्ट कर दिया त्रिविध ताप ~ २११९। क्रि० अ० १ नष्ट होंगे : दया, सत्य, सतोष ~ १०/३। २ नष्ट हो जाती है अही-सक्ति ~ ३/१३। ३ नष्ट हो जाता है अरु परलोक ~ १६६३।
नसाइ क्रि० अ० १ नष्ट होकर, क्षीण होकर : सूर सुनत न गयौ तबहीं खड खड ~ ३/३। २ नष्ट होती है : इन बातनि मरजाद ~ १५५४। ३ नष्ट हो गया, दूर हो गया : पाप जो भयौ सो सब ~ ४२२३। क्रि० स० १ नष्ट कर अग याकौ मैं देउँ ~ ५७। २ नष्ट किया : धरनी की आपदा ~ ३८३। नष्ट कर दो, मिटा डालो : त्रिविध ताप तन ~ ६१९। ४ नष्ट-भ्रष्ट कर दिया, अपवित्र कर दिया मुख कत मेलि देवता राख्यौ घालै सबै ~ २६२।
नसाऊँ नष्ट कर दूँगा, दूर कर दूँगा तेरौ सब संताप ~ ४३०९।
नसाए क्रि० स० १ नष्ट किया, नष्ट कर दिया दुख सब अग ~ सा० ल० ४४। २ नष्ट किये, दूर कर दिये दुख त्रै ताप ~ ३७८२। क्रि० अ० नष्ट हो जाते हैं तम लैं होइ जात उडुगन ~ ४१८३।
नसानी नष्ट/दूर हो गई : इहिं आए आपदा ~ २५८।
नसाये नष्ट किये, दूर किये नृपबलि को तनु के ताप ~ सारा० ७९६।
नसायौ क्रि० स० १ नष्ट कर दिया, मिटा दिया तान कुल धर्म ~ १६१८। २ दूर किया, हरा : तनु की ताप ~ ४/१३। क्रि० अ० १ नष्ट हुआ, दूर हुआ : कुल की तिमिर ~ ८७। २ नष्ट/खराब हो रहा है लछिमन-काज ~ ९/१५५।
नसावत क्रि० स० १ नष्ट करते हो, खोते हो कत अपनी

परतीति ~ १/१३४। २ नष्ट करते है वासर-विरह ~ ४७९। क्रि० अ० नष्ट हो जाते हैं भव दुख दूरि ~ २/१७।

नसावते नष्ट करते थे वासर अत ~ ३२०१।

नसावन दूर या नाश करने वाले दुसह बियोग ~ ३६६०।

नसावहु दूर करो, नष्ट कर दो . त्रय ताप ~ २३२।

नसावैं नष्ट करते हैं, दूर करते हैं विरहिनि ताप ~ १३७०।

नसाव क्रि० स० १ नष्ट करते हैं, हरते है गौतम तिया साप ~ १/४। २ नष्ट कर सकते है, दूर कर सकते हैं : ताहि क्यौं तिमिर ~ ४९२। क्रि० अ० विनष्ट हो, दूर हो क्यौ करि तिमिर ~ १/४८।

नसाहि नष्ट होते है, नसाते हैं लेत पाप ~ १/३३८।

नसि क्रि०अ० दूर/नष्ट हो ताकौ रोग सकल ~ जाइ ६/४। क्रि० स० नाश करके, नष्ट करके : दुख ~ सुख देउँ जाइ २९१७।

नसे नष्ट हो गया : सकल विष देखन ~ परि० १/४१।

नसै नष्ट हो जाय : ~ धर्म मन वचन काम करि ९/७८। २ नष्ट हो ~ नहि कोइ ३/१३।

नहँ नख, नाखून विच बघ ~ छवि पावै री १३०।

नहसुत नख की रेखा, निशान या चिह्न ~ कील कपाट सुलच्छन २७६९।

नहाँ नहँ, नख, नाखून : उर बघ ~ कठ कठुला १५१।

नहाही नहाती हैं : प्रातहि तैं इक जाय ~ ७९९।

नहि १ नही। २ न तो, न ही बिडरे ~ भाजै ९/९६। ~ **आनौं** नही लाऊँगा, स्वीकार नहीं करूँगा . और मत्र अव उर ~ — ९/१२१। ~ **जानौं** नही जान पाती हूँ, नही रख पाती हूँ : पलक ओट ताकौं ~ — १८५१। ~ **बनि आवै** (काम) बनता नही दिखाई देता . बैठि रहे तैं ~ — ९४७।

नहिन नहीं : ~ छूटत मग ११।

नहि नहीं मरम ~ जान्यौं १/८६।

नहियत जोड कर बैठा रहता है, नाधे रहता है · अपकारी रथ ~ ३३५२।

नहीं नहीं। ~ **उपमा पार** जिसकी उपमा कहीं नहीं है, अनुपमेय है : ~ — सीस मुकुट भ्राजत १८२३। ~ **सोभा पार** शोभा का पार नहीं है, अत नहीं है हरि के ~ — १०८०।

नहुप अयोध्या का इक्ष्वाकुवशी एक राजा जो अवरीष का पुत्र और ययाति का पिता था ~ नृपनि पै रिषि सव आइ ६/७।

नहे नहाए, पगे, सिक्त हो काके नेह ~ ३२८३।

नहैहौं नहाऊँगा, स्नान करूँगा . सौंह देहु जु ~ ४१२, फारि उदर तिहि रुधिर ~ ७/५।

नहौं नाधते (बाँधते) हो : जूवा सुरभि ~ ३८२९।

नह्यौ मजन करके, स्नान करके · गोपी ग्वाल मिमिटि सब सुंदर सज्यौ सिंगार ~ परि० १/१३१।

नाँई तरह, समान . ते भुव कमल कुसुम की ~ चले मनहुं गज राज सारा० ४२।

नाँगी नगी, नग्न . ~ आवहु नारी ७८८।

नाँगे नगे : काछे किए ~ पाइनि ४५३।

नाँगौ नगे ही : अर्द्ध-निसा नृप ~ धायौ ९/२।

नाँघि लाँघ, पार कर, कूद गए ~ पिछवारैं २७७।

नाँचै भटकता है : बहुरि न उलटि जगत मैं ~ २/११।

नाँचा नाचते फिरो · तौ आनद करि कै ~ १८३।

नाँदी मुख एक श्राद्ध (वृद्धि श्राद्ध) जो पुत्रजन्म, विवाह आदि मगल अवसरो पर किया जाता है · ~ पितर पुजाइ अतर मोच हरे २४।

नाँनै नाँनै का उल्टा, नैना, नेत्र : चमक ~ चलत चहुँदिस सा० ल० ३९।

नाँवरो नाम हैं नँदनदन जिहि ~ २८८५।

नाँही मुकर (नकार), मुकुर, दर्पण देखत आजु ~ ढोइ सा० ल० शेष ६।

ना न, नही : ~ नानियै आहि धौं को वह ६०४।

नाइ[1] १ नवा कर, झुकाकर सुकदेव हरि चरननि सिर ~ २/१। २ लिटाकर : गहि असुर धाइ, पुनि ~ निज जघ पर, नखनि सो उदर डार्‍यौ विदारी ७/६। ३ डाल कर : कनक थार भरि खीर धरी लै, तापर घृत-मधु ~ ८९। ४ डाल : सब ~ मुखही दियौ ५९६।

नाइ[2] नाम : अति जपत ~ रघुराइ ९/७५।

नाइका नायिका : चली ~ कंज सदन मैं २८९२।

नाइनि नाइ की पत्नी ~ बोलहु नवरगी ४०।

नाइयो नवाया : ताको पूजि बहुरि सिर ~ सारा० ५५३।

नाइहौ झुकाओगे . मोहिकौ मायौ ~ ३४४९।

नाई[1] वि० भाँति तरह, समान ताको मिले भरत की ~ १/२०३।

नाई[2] १ झुकाये पडा है सूर दिन प्रभु प्रगट विरद सुनि अजहुं दयाल पतित सिर ~ १/६। २ टाल दिया विषलपट्यो अस्तन मुख ~ ५१। ३ टाल दी है तिहिं नोठमिरिच रुचि ~ १८३। ४ डाली हुई : ज्यों जल ~ मीमी परि० १/१८९। ५. टालकर, गिरा कर हलधर कौं पाइनि तर ~ ८४६।

नाई[3] नौका, नाव : मेरी काठ की ~ ९/४२।

नाउँ[1] १ नाम है : तुम कृपालु, करुनानिधि, केसव, अधम उधारन ~ १/१२८। २ चिह्न, नाम निशान . इन्हिं पेलि

करी गिरि पूजा मलिल बरषि ब्रज ~ मिटावहि ८५६ ।
नाउँ[2] नवाता हूँ, झुकाता हूँ दंपति कौं सिर ~ ११७४ ।
नाउ[1] नाम, मज्ञा : पतित उधारन है हरि ~ ६/३ ।
नाउ[2] नाव, नौका : जैमैं बिनु मल्लाह सुंदरी एक ~ चढ़ई ३२९६ ।
नाऊँ[1] नवाता हूँ, झुकाता हूँ : हरि, हरि-भक्तनि कौं सिर ~ १/२९० ।
नाऊँ[2] १. नाम : गर्व-प्रहारन उनकौ ~ १६५४ । २ नाम पर : अब झूठौ अभिमान करति हौ झुकति जो उनकैं ~ ९/७७ ।
नाए झुकाये, नत हुए : उग्रसेन सिर ~ ३०८७ । △ **मुख** ~ मुँह में डाले, खाये : साक-पत्र — ~ १/१३१ ।
नाएँ डालने पर : ज्यौं घृत ~ अगनी ४१२५ ।
नाओ नाम : उन जान्यो मम ~ सारा० ६९४ ।
नाक स्वर्ग : ~ निरै सुख दुख सूर नहिं २/१२ ।
नाकबुद्धि तुच्छ बुद्धि की, ओछी समझ की : ~ तिय सबै कहैं री २०९० ।
नाकी देवताओं के : ~ नायक-वाहन की गति १८६८ ।
नाख्यौ टल गया : मैं नहिं काहू कौं कछु घाल्यौ पुन्यनि करबर ~ १३९२ ।
नाखति समाप्त करती, नष्ट करती : बैर नहीं तुम ~ १४८१ ।
नाखि १ नष्ट कर . सगुन डारैं ~ ३५८४ । २ लाँघ कर : सवहिनि कैं सिर ~ १२२३ ।
नाखी[1] नष्ट करने दिया : दियौ क्यौं न गिरि ~ ३२०९ ।
नाखी[2] लाँघी . रेख क्यौं न ~ ९/९७ ।
नाखै १ नष्ट कर देता है : आनन्द सदा दुखित-दुख ~ ३९१ । २ नष्ट करेगी, छोड़ेगी : नहिं मान ~ २८२४ । ३ डालता है, निकालता है आठ सात दस ~ १/६० ।
नाख्यौ १ (दूर कर) दिया/रखा, हटा दिया · अपनौ कह्यौ दूरि करि ~ १/२७७ । २ नहीं उतरता, अच्छा नहीं लगता : नव-सुख-फूल रसहिं इनि ~ २२७८ । ३ लाँघा, पार किया : दुख सुख भ्रम ~ ३५३० ।
नाग[1] १ हाथी : बीच करि ~ इत उतहिं टेरै ३०५८ । २ कंस का कुवलया पीड हाथी जिसे बलराम और श्रीकृष्ण ने मारा था : सूरदास प्रभु ~ ३०५८ ।
नाग[2] सर्प : खंजन धनुष चन्द्रमा ऊपर ता ऊपर इक इक मनिधर ~ २११० ।
नागजा पति पिता पुर नाग की पुत्री (सुलोचना) के पति (मेघनाद) के पिता (रावण) का पुर, लंका : ~ कौं जाहु सा० ल० ९० ।
नागपति हिमालय पर : मानौ घन पावस मैं ~ है छायौ ९/९६ ।
नाग-फाँस वरुण का अस्त्रभूत पाश, ढाई फेरे का फंदा, साँपों का फँदा : ~ तैं सेन छुडायौ ।
नागवेलि नाग लता : ~ रँग निपट लसे हौं २५०३ ।
नागर वि० चतुर : सूर स्याम तुम हौ अति ~ २७९ । पुं० कृष्ण का : अब तुम नाग गहौ मन ~ १/९१ ।
नागरता चतुरता . ~ की रासि किसोरी १२०१ ।
नागरताई नागरता, चतुरता : नव नागर तबहीं पहिचानी नागरि ~ २८२६ ।
नागर नट नटनागर, कृष्ण : जमुना कैं तट राजत ~ १४०१ ।
नागरस नागवल्ली का रस, पान का रस : जावक भाल ~ लोचन २६४२ ।
नागरि वि० चतुर : सूर स्याम नागर, उत ~ राधा ६७४ । स्त्री० १ नागरी, गोपी, स्त्री · ~ आनै है गई २७२० । २ नागरी (राधा) ने · सूर प्रभु बस किये ~ १०८१ ।
नागरिनि वि० चतुर नारि ~ काहूँ लख्यौ २०२५ । **स्त्री०** बालाओं के · चतुर वर चतुर ~ के २४९० ।
नाग रिपु भख हाथी के शत्रु (सिंह) का भक्षण (मास=) मास, पल, पलक : ~ लगत नाहीं सा० ल० २३ ।
नागरिया राधा भी · नवल किसोर नवल ~ ६८८ ।
नागरिहिं नागरी राधा को : सूर स्याम ~ सुनावत १६९१ ।
नागरी वि० चतुर और शिष्ट : सँग ~ ब्रज-बाल ६२३ । स्त्री० १ युवती, व्रजाङ्गना : नैननि झुकी सु मन मैं हँसी ~ ३०७ । २ राधा · उरज परसत स्याम सुंदर ~ सरमाइ १२६६ ।
नाग समर नाग=सर्प=अहि तथा समर=रण को मिलाने से अहिरण, अहीरिन, गोपियाँ : रटन सारंग तें निकासी ~ मिलाइ सा० ल० ५२ ।
नागसुता पति पितु अरि आधौ नाम नाग सुता (सुलोचना) के पति (मेघनाद) के पिता (रावण) के शत्रु (रामचंद्र) का आधा नाम, चंद्र : ~ सु बदन छपायौ सा० ल० २८ ।
नागिनि १ नागिन (के समान) : पिय बिनु ~ कारी रात ३२७२ । २ हे नागिन : नाहिं ~ जुवा खेल्यौ नाहिं दुरत दुराइयाँ ५७७ ।
नाच नृत्य, नाच । **नचायो** ~ नाच नचाया, परेशान किया : बहुत — ~ १/१९६ । ~ **नचावै** नृत्य कराती है, मनचाहा काम करने को विवश करती है : कोटिक ~ — २/४२ । **नचावैं** ~ मनचाहा आचरण या व्यवहार करने पर विवश करे · नर कौं सदा — ~ ५/४ । ~ **कछ्यौ** नाचने को तैयार हुई, नाचने निकली ~ — तब घूँघट छोर्‍यौ १६६१ ।
नाचत १ नाचता है . कीधौं मोर मुदित ~ २०५८ । २ नाचता है : ~ गावत गुन की खानि ११८० । ३ नाचते : ~ फिरत महारस मोयौ १/५४ । ४ नाचते हैं · ~ वृद्ध तरुन अरु बालक २१ । ५ नाच रहे हों : जलरुह हस मिलै मनु ~ ११९४ ।
नाचति १ नाचती . मूढ चढ़ा ~ है १/९८ । २ नाच रही

है : ~ कुवरि मिले झपतार ११८० । ३ नाच रही हूं ~ सब सुर नारि रसिक अति ६ ।

नाचन नाचने ~ कूदन मृगिनी लागी १/२२१ ।

नाचहि नाच ही : ~ पर मन मान्यौ २३८५ ।

नाचहु नाचो पकरि जसोदा पै लै जैहे, ~ गावहु गीत ४०३४ ।

नाचहू नाचो उठि किन बाबा ~ परि० १/७ ।

नाचि नाच कर नदहि ~ दिखावहु १७९ ।

नाची नाचती है · आगैं माया ~ ३६३० । △ **सीस पर** ~ ग्रस लिया, आक्रात कर लिया, प्रभावित किया · माया विषम — ~ १/१८ ।

नाचे नाचने लगे ह्वै परगट ~ री २३८४ । ~ **गाए** आमोद-प्रमोद से, नाचने गाने से ना जानौं अब भलो मानिहै ऊधौ ~ — ।

नाचैं १ नाच रहे हैं : ~ कर दै दै ताल ३१ । २ नाचेंगे . जो फिरि गोकुल ~ ३९९२ ।

नाचै १ नाचते हैं जब हरि रुनझुन ~ ११८१ । २ नाचेगा, भ्रमित होगा बहुरी जगत नहि ~ १/८१ ।

नाचौं नाचूँ, नाचूँगी : गाइ बजाइ प्रेम भरि ~ २२१३ ।

नाच्यौ नाचा, नाच चुका . अब मैं ~ बहुत गुपाल १/१५३ । ~ **नाच** भटकता रहा ~ — लच्छ चौरासी १/२०५ ।

नाज अनाज, अन्न . अरु रोकौ जल ~ ८०८ ।

नाट नाटक, स्वाँग : कपट ~ छल ठानत ३१७१ ।

नाटसल काँटा, गाँसी वे बोल ह्वै रहे ~ परि० १/१५७ ।

नाटी छोटी (गाय), छोटे कद वाली (गाय) दुहहु लाल की ~ २५९ ।

नात नाता, सबध नँद जसुदा कौ ~ न छूटत ३७८२ ।

नातरु नही तो, अन्यथा ~ जन्म अकारथ जात ४२९७ ।

नाता १ सबध, रिश्ता कहा अजोध्या ~ ९/४९ । २ सबध है बिकल ह्वैकै कही तुमहिं ~ ८६४ ।

नाती लडकी का लडका या लडके का लडका : सुत के सुत ~ पतिनी की महिमा कहिय न जाई ८३९ ।

नाते सम्बन्ध या रिश्ते झूठे ~ जगत के २/२९ ।

नातैं १ सबध से लोग कहत कुल ~ ३९६१ । २ सबध का . कछुक सकुच है ~ ३५४७ । ३ कारण, कारण से . सब जल तजे प्रेम कै ~ ३८३१ ।

नातौ[1] नाता, सबध टूट्यौ ~ या गोकुल कौ ३६३९ ।

नातौ[2] नही तो, अन्यथा . वीर धरैं मरजाद है ~ लघु ह्वैहौ १३४३ ।

नाथ १ प्रभु, स्वामी . अखिल भुवन निज ~ १/१०३ । २ स्वामी ने . बुधि बल ~ उबारे १/१० । ३ मालिक, ईश्वर, कृष्ण : अतरजामी ~ ४३७ । ४ पति : कौन तिहारौ ~ ९/४४ ।

नाथ गुसैयाँ स्वामी या सरदार : नहि तुम हमरे ~ ७३५ ।

नाथत नाक छेद कर वश मे करते हुए, नाथते हुए ~ व्याल बिलब न कीन्हौ ५५७ ।

नाथन नाथने . सात बैल ~ के कारण आप अयोध्या आये सारा० ६५५ ।

नाथहि स्वामी को कैसै ~ मुख दिखराऊँ ९/७५ ।

नाथा १ हे नाथ, हे स्वामी त्राहि-त्राहि ~ ३०८४ । २ अधिपति, स्वामी . यह सुनि हँसे सुरनि कै ~ २९२२ ।

नाथि नाथ कर सेस सहस फन ~ ज्यो सुरपति करे निरस १६१८ ।

नथियाँ नाथ लिया जाइ काली ~ ५७७ ।

नाथे नाथे हुए, वश मे किये हुए · आवत उरग ~ स्याम ५६३ ।

नाथै[1] नाथ लेगा : सात बैल ये ~ जोई ४१९२ ।

नाथै[2] नाथ, स्वामी : कहि कुसलातैं मॉची बातैं आवन कह्यौ ~ ३४४१ ।

नाथ्यौ नाथा जल कब गिरयौ उरग कब ~ नहि जानत ब्रज लोगा ६०३ ।

नाद १ स्वर, ध्वनि, आवाज मुरली ~ मृदग मृदगी २३८४ । ~ **सुनायौ** तान छेडकर, टेर लगा कर एकहिं सुर सब मोहित कीन्हे मुरली ~ — ११४० ।

नाद-रस ध्वनि के आनद मे : जैसैं मगन ~ सारग १/१६९ ।

नादहि स्वर, ताल : पिक गावत अलि ~ देत ११८० ।

नाधे १ ठान लिया है · कुमति कहा पन ~ सा० ल० ६४ । २ बनाये रखा अपनौ कर सुरुचि सुभाव सु ~ सा० ल० ६ ।

नाध्यौ[1] लाघ गई . ~ धनुष-प्रकार ९/८३ ।

नाध्यौ[2] १ ठाना है · काहे कौं कलह ~ ३७२ । २ ठान दी, लगा दी (है) . नैननि ~ है झरि ३२३८ ।

नाना १ बहुत, अधिक . द्रौपदी चीर ~ बढायौ १/११९ । २. विविध, अनेक . करिहै ~ रग २४०३ । ३ अनेक प्रकार के · ~ स्वाँग बनावै १/४२ । ~ **रग** अनेक प्रकार से . ~ — स्याम गुनकारी १९१२ ।

नान्ह लघु, छोटे नद के सुत ~ ६१० ।

नान्हरिया नन्हे से, छोटे से · ~ गोपाल लाल ७५ ।

नान्हहि नन्हे की, कृष्ण का अपने ~ केरि दुहाई परि० १/१९ ।

नान्हा क्रि० स० हे नन्हे, छोटे से कृष्ण तुम नहि जानत ~ २२० । वि० नन्हे, छोटे अब लाहु कुवर कछु ~ १८३ ।

नान्हि नन्ही, छोटी · ठाढे हरि हँसत ~ दँतियन छबि छाजै १४६ ।

नान्हीं स्त्री० छोटी बच्ची : सुनहुँ सुर ऐसी ~ कौं काहे लाड़ लड़ाई १३२० । वि० नन्ही, छोटी : ~ एड़ियनि अरुनता फल-बिंब न पूजै १३४ ।

नान्ही छोटी, नन्ही : ~ नान्ही बूँदनि बरषन लाग्यो १९९१ ।

नान्हे छोटे, नन्हे : हौं वारी ~ पाइनि की २२३ । ~ **नन्हे** छोटे-मोटे, बहुत साधारण : अब लौं ~ — नारे १/९६ । ~ **लोग** क्षुद्र प्राणी, नीच लोग : ~ — तनक धन ईतर ९२४ ।

नान्हीं छोटा, कमजोर : बैरी नहिं ~ २९३८ ।

नान्हो १, नन्हा-सा, छोटा-सा : सूर स्याम ~ तेरौ भैया ३४३४ । २, छोटा-सा है : सूरदास प्रभु मेरौ ~ तुम तरुनी डोलति अठिलानी १४९० ।

नापी १ नाप ली : एक पैर मे वसुधा ~ सारा० ३४० । २ थाह ले ली है, अनुमान कर लिया है : तिनकी गति मैं ~ १/१४० ।

नापो नाप लो : ~ देह हमारी द्विजवर सारा० ३४१ ।

नाभि[१] नाभि, तुदी, जरायुज जतुओं के पेट के बीचों बीच भँवरी की तरह का गड्ढा : हृद विध ~ उदर त्रिबली वर १/६९ ।

नाभि[२] अग्नीध्र राजा का पुत्र, जिसकी पत्नी मेरुदेवी के गर्भ से ऋषभदेव का जन्म हुआ था, जो विष्णु के चौबीस अवतारों मे मे माने जाते हैं : ~ जन्म ताही तैं लयौ ५/२ ।

नाभि-कमल १ प्रलयोपरांत वट-शायी बाल-रूप नारायण की नाभि से उत्पन्न कमल जिससे ब्रह्मा की उत्पत्ति मानी जाती है : ~ तें ब्रह्मा भयौ ९/२ । २ नाभि-कमल से : ~ ब्रह्मा प्रगटायौ ९७२ । ३ नाभि-कमल मे : ज्यौं मृग ~ निज अनुदिन निकट रहत नहिं जानत १/४९ ।

नाभी नाभि, ढोंढी : ज्यों कुरंग ~ कस्तूरी ढूँढ़त फिरत हिरायौ ४/१३, ~ हृद अवगाह ६३७ ।

नाम १ वह शब्द जिससे किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि का बोध हो, सज्ञा । २. सुनाम, यश, कीर्ति, प्रशसा : सुनत रहत सदा ~ ३०६४ । ३ ईश्वर या इष्ट देव का नाम : मुख ~ आयौ १/५ । ~ **लीजै** ईश्वर का स्मरण या जाप कीजिए : निरखि हरि रूप मुख ~ — ४/११ । ~ **जगायौ** नाम पैदा कर लिया, ऐसा काम किया कि चर्चा होने लगी : त्रिभुवन मैं अति ~ — फिरत स्याम सग ही । ~ **धरति हैं** दोष लगाती है, बदनाम करती हैं : झूठहिं ~ — तेरौ ३९९ । ~ **धरायौ** निंदा या बदनामी कराई : गोपराइ कै गेह पुत्र ह्वै — ~ ११३५ । ~ **धरावत** नामकरण कराते हैं, नाम रखाते हैं : जो पै कृष्ण कूबरिहिं रीझे तौ सोई किन ~ — ३०९३ । ~ **धरै** निंदा या बदनामी करेगा : तोका ~ — नहिं कोई १/२२९ । ~ **धरैहौ** निंदा या बदनामी कराना : तुम हौ बडे महर की बेटी कुल जनि ~ — १४१८ । ~ **धर्यौ** १ नामकरण किया, नाम रखा : पतित-पावन हरि बिरद तुम्हारौ, कौनैं ~ — १/१३३ । २ नाम लगाया, दोषारोपण किया, दोषी ठहराया : बल मोहन को ~ —, कह्यौ पकरि मँगावन ५८९ । **बडौ** ~ नाम बहुत प्रसिद्ध या विख्यात : — ~ है नद महर कौ ३३३ । ~ **भयौ** नाम हुआ, श्रेय मिला : गनिका तरी आपनी करनी ~ — प्रभु तेरौ १/१३२ ।

नाम-कीर्त्तन हरि नाम का कीर्त्तन, ईश्वर का जप-भजन : ~ करै सो गाइ ६/४ ।

नामदेव कृष्णोपासक नामदेव जी के नानी, जिनकी कथा भक्तमाल मे है : ~ घर छायौ १/२० ।

नामहि १ नाम लेने से ही, नाम से ही : सूर स्याम के ~ जीवन २७०७ । २ नाम, प्रतिष्ठा : गई जाति कुल ~ ३१८७ । ३ नाम का प्रतिष्ठा की : लाज करौ किन ~ ४१६८ ।

नामा[१] १. नाम : सकुचत कबि लिये ~ २१८१ । २ नाम पडा : प्रीति कैं हेतु नँद सुवन ~ २०१७ ।

नामा[२] एक कृष्णोपासक भक्त, नामदेव : कलि मैं ~ प्रगट ताकि छानि छवावै १/४ ।

नामिनी नामवाली, नाम्नी : हरि रस जीते राधिका ~ २६६६ ।

नामी १: यशस्वी, विख्यात : ऐसे और कितक हैं ~ २९२२ । २ कुख्यात : सब पतितनि मैं ~ १/१४८ ।

नायक १. सरदार, नेता, अगुआ : हरि, हौं सब पतितनि कौ ~ १/१४६ । २ नाटक का प्रमुख पात्र : मन मेरै नट कै ~ ज्यौं १/२०५ । ३ स्वामी, अधिपति : अखिल लोक कै ~ १/१७७ ।

नाये नवाये, झुकाये : सीस महर के ~ सारा० १०२९ ।

नायौ क्रि० स० १ झुकाया, नवाया : रघुपति निरखि गीध सिर ~ ९/६८ । २ डाला, डाल दिया : जरत माँझ घृत ~ १/१५४ । ३ रख दिया : उलटि अक गिरिधर पर ~ १९८५ । ४ पडा हुआ, डाला हुआ : देख्यौ सप पिता-गर ~ १/२९० । क्रि० अ० झुक गया : नेति करि अचल कौं सिंधु ~ ८/८ ।

नार[१] १. स्त्री : हारी बहुरि द्रौपदी ~ १/२४६, देखत ~ नरं ३१२८ ।

नार[२] गर्दन : गिरिवर ~ नवावति ६५० ।

नार[३] उल्व नाल, नाल, नारा : बगहिं ~ छेदि बालक कौ १६ ।

नार[४] नाला : इक नदिया इक ~ कहावत १/२२० ।

नारद एक देवर्षि, जो ब्रह्मा के पुत्र कहे जाते हैं। नाना लोकों मे विचरना और एक का संवाद दूसरे तक पहुँचाना, इनका कार्य बताया गया है . रिषि ~ अँगिरा तहँ आए ६/५।

नारदादि नारद आदि ~ सनकादि महामुनि ४१६५।

नाराच १ वाण, लोहे का तीर जिसमे पाँच पख होते है और जिसका चलाना कठिन होता है नख ~ नए २६३४। २ वाण का : नख ~ मरम तकि दीजै २८३२।

नाराबद इजारबद मूसन जघन बाधि ~ १०५४।

नारायन अजामिल के पुत्र का नाम, नारायण सुत हित नाम लियौ ~, सो बैकुंठ पठायौ १/१०४।

नारायन-बानी 'नारायण' नाम का उच्चारण सुत सुमिरत ~ १/८२।

नारायन सुत ता सुत ता सुत नारायण सुत (कमल नाल) से उत्पन्न (कमल) का पुत्र, पराग . ~ लगत विषम विष ताह सारा० ९५६।

नारि १ स्त्री, नारी घर की ~ बहुत हित जासौं १/७९। २ स्त्रियाँ गावत ~ गारि सब दै दै ९/२५। ३ पत्नी जाकी ~ सदा नवजोबन ९/११७। ४ युवतियाँ • ~ दुहुँपास, गिरिधर बने दुहुँनि बिच १०४०।

नारिकेल नारियल ~ कपि कर ज्यौं पायौ १/७८।

नारिन स्त्रियो ने : ~ राखी मान बानि २८५१।

नारिनि १ स्त्रियो . और सकल नागरि ~ कौ दासी दाउँ लियौ ३६३८। २ स्त्रियो ने एक अस सब ~ पायौ ६/५। ३ नारियो के, स्त्रियों के . ~ दुख बिसरावन ३६६१। ४ स्त्रियो से रिषि ~ मिलि बहु सुख पाए ९/८।

नारियनि स्त्रियो : ~ कौं जोग लाए ३९४१।

नारियर नारियल • लौंग ~ दाख सुपारी १५२८।

नारिहुँ स्त्री ने भी . तासु ~ यह व्रत लियौ ३/१३।

नारी[1] मृगी, आत्मा : कहै मिरग सौं ~ १/२२१।

नारी[2] १ नाडी, योग रत नाडी अर्थात् ध्यान महादेव की ~ छूटी ११८३। २. हठयोग मे ज्ञान, शक्ति और श्वास-प्रश्वास वाहिनी नाड़ियाँ इगला पिंगला सुषुमना ~ ३३०८।

नारी[3] नाला नीर ~ नीचैहीं को १२७१।

नारे नाले रुकि गए बाटनि ~ पैंडे २९०२।

नारैं नाले मे . यह मुरली बहि गई न ~ १३१८।

नारौ नारा : गरजत क्रोध लोभ कौ ~ १/२०९।

नाल मृणाल, कमल की लबी डडी ज्यौं नाभी सर एक ~ नव २४४७।

नाव नौका, किश्ती। ~ **धीरज** धीरज की नाव . ~ — परति नहिंन गही १७६३। ~ **रस भाव** प्रेम-भाव रूपी नाव ~ — हरि नाहिं आनै १०१९।

नावक केवट, मल्लाह, नाविक मारग मे अहल्या उद्धारी ~ निज पद छीने सारा० २०२।

नावत १ करते हो, झुकाते हो 'सूर' सीस नीचौ कत ~ ३६८८। २ डालता है • टोना सौ पढ़ि ~ सिर पर ३२७। ३ डालते है तनक बदन मैं ~ १७७।

नावति झुकाती थीं . नार ~ नीच ४१३५।

नावति झुकाती है, नवाती है . हा हा करि चरननि सिर ~ २६७१।

नावैं १ झुकाते है . धर्म मोच्छ सिर ~ १/४०। २ डालते हैं • पय धौरी कौ ~ परि० १/४५।

नावै १ नवाता है, झुकाता है : आपहु सिर ~ १/४। २. डालता है सारा जल ~ २/९।

नास[1] नाश, विध्वस कस बस कौ ~ करत है ४।

नास[2] नाक . कीर ~ भय बन पकर्यौ २७७७।

नास[3] अगन्यास . ठोकि हाथ गहि ~ ३५८३।

नासत १ नष्ट होता, नाश करता . सो ऊधौ काहे ~ है परि० १/१७३। २. नष्ट करता है • ~ तिमिर २७६७। ३. नष्ट हो जाती ~ चिता ब्रज बनितनि की ३९९५। ४. नष्ट करते है • असुर गर्व बल ~ १/३१।

नासहि नष्ट होते हैं निहि देखें त्रिताप तन ~ परि० १/१०८।

नासा[1] १ नाक, नासिका : ~ कर गहि ध्यान सिखावत ३५५१। २ नासिका की . ~ मुक्ता गोल १६१८। ३ नासिका मे ~ बेसरि धारत हैं २१३७। ~ **तिल प्रसून पदवी पर** नाक तिल की पदवी पर अर्थात् तिल के फूल के समान . ~ — चिबुक चारु चित खाग १७७७। ~ **द्विज मदगारी** नासिका पक्षी (तोते) के मद को गलाने वाली है . भाल बिसाल, कपोल अधिक छबि ~ — ११९७।

नासा[2] क्षीण होता है मनि आगें ज्यौं दीपक ~ ९५०।

नासानि नासिका • स्वेद कन गट-मडलनि ~ तट, पिय निरखि २४६२।

नासापुट नथुने से भृकुटी-कुटिल नैन ~, हम पर कोपि कुपावति ६५५।

नासि नष्ट करके, मार कर के रिपु कौं ~ सहित सतानहिं ९/९५। ~ **नासि** नष्ट-भ्रष्ट करके कौरौ दल ~ — १/२३।

नासिका नाक, नासा जानु जघ, कटि, ग्रीव ~ ४, ~ लौं नीर बाढ्यौ ५।

नासी क्रि० स० नष्ट कर दिया इहाँ आइ सब ~ १/१९२। क्रि० अ० नष्ट हो गई भूख नींद सब ~ परि० १/१९७।

नासै क्रि० स० १. नष्ट करता है, नष्ट कर देता है : सूरदास

तबहीं तम ~ २/१९ । २. नाश करते हैं : छनहिं मैं ~ ४८० । क्रि० अ० नष्ट होता है : तिहिं देखैं त्रिताप तिन ~ २८३२ ।

नास्यौ १ नष्ट कर दिया, नष्ट किया : अधकार तम ~ परि० १/१६३ । २ खराब कर दिया, बरबाद किया . किननौ गोरस ~ ३७५ ।

नाह¹ १ स्वामी, नाथ : चतुर सिरोमनि ~ ४०३० । २. पति त्रिभुवननाथ ~ जो पावै ९/८३ । ३ नाथ/प्रिय ने रद मुद्रावलि ~ दई री २६६४ ।

नाह² नहीं है तुमसों नृप जग मैं अब ~ ९/४ ।

नाहक व्यर्थ, निष्प्रयोजन : ~ जन्म गँवायौ १/७९ ।

नाहि नहीं, न । ~ **नाही करत** नहीं-नहीं करने से : ~ — दुरत कैसें २७२४ । ~ **बसायौ** वश की बात नहीं है : हम जन ~ — ४१५१ । ~ **सकत निरवारि** छुटकारा नहीं पा सकता . कैसेहुँ ~ — १५८५ ।

नाहिनें नहीं नैना ~ ये रहत ३५७४ ।

नाहिनें नहीं : मन बस होत ~ मेरै १/२०६, हौ मति कुसल ~ काची १६५८ ।

नाहिनैं १. नहीं : ~ जगाइ सकति ३०१ । २ नहीं हैं जो सखि ~ ब्रज स्याम ३२११ ।

नाहिनैं नहीं है : ~ रुचि आन १/१०३ ।

नाहु १ सरक्षक (माता पिता, पति आदि) · नहीं तुम्हरे ~ १०१२ । २ प्रियतम का : लेत सुबास पुलक तनु ~ ११८० ।

नाहीं नहीं है . तुमकौं ~ दोष ३५५० ।

निंद¹ नींद, निद्रा, . सोवत आई ~ २३० ।

निंद² निंदक, निंदा करने वाला . मूकृ, ~, निगोडा १/१८६ ।

निंदक निंदा करने वाला · साधु, ~, स्वाद-लँपट, कपटी, गुरु-द्रोही १/१२४ ।

निंदत १ निंदा करते हे : ~ मूढ मलय चदन कौं २/१३ । २ निंदा करते हुए, निंदा करके : ~ मोहिं करी गिरि-पूजा ९२५ ।

निंदति निंदा करती हैं : ~ नैन निमेष छिनहिं छिन ४१३७ ।

निंदति १ निंदा करती . बात कहति कछु ~ नाहीं १३४९ । २ निंदा करती है, कोसती है : निरखति ~ निमेष ९० ।

निंदरिया नींद, निद्रा : बस करि लीन्हे आई ~ २४६ ।

निंदा दोष-कथन, बुराई . पर ~ रसना के रस १/५२ ।

निंदि निंदा करके : ~ बदियै सो पुनि वह ताकौ निंदरै ११५९ ।

निंदिहै निंदा करेगा . ~ अरु मोहिं ३४१२ ।

निःकिंचन निर्धन, दरिद्र ~ जन मैं मम बास ४१९५ ।

निःसोक शोकरहित · ताको दरसन देखि भयो अज सब बातन ~ सारा० १३ ।

निअरे निकट, समीप वै तो भूषन परसन लागीं नव लगि ~ आए ३४४१ ।

निकद नष्ट करने वाले, सहारक तम-कुल दनुज ~ १७२५ । ~ **कारन** सहारक, मारने वाले नद नाहि ~ — सा० ल० ९३ ।

निकंदन नष्ट करने वाले, सहारक हैं हरि असुर ~ ४७३ ।

निकट बाम परवत दाडिम जुत निकट बाम=(पडोस) परोस, (पर्वत) अचल, (दाडिम) अनार—शब्दों के बीच के अक्षरा के मिलाने से रोचना=रोली, कुमकुम . ~ मोई रीन वरे सा० ल० ८० ।

निकटहि निकट ही, पास हा : ~ आनि बसावहु २१६४ ।

निकटहीं समीप ही, नजदीक ही ~ काजर बिंदुका लाग्यो री १३९ ।

निकम्मा अकर्मण्य, बेकाम : बटी कृतघ्ना, और ~ १/१८६ ।

निकर¹ समूह निरखत नारि ~ बिथकित भई २२१८ ।

निकर² निकल कर : दादुर ~ करत जो टोवा ४२६७ ।

निकरई १. निकलता . उर तैं न ~ ३३५८ । २ निकलती है : किरनि सकनि भुज भरि हनै उर तैं न ~ ३३५८ ।

निकरति निकल रही है . इक ~ इक भई बिहाला १००५ ।

निकरि निकल कर . ~ क्यों न गोपाल बोलत ४०३५ ।

निकरीं १ निकलीं : सूर ग्वालि दधि बेचन ~ १४९८ । २ निकली हैं इक मारग, इक घर तैं ~ १००५ ।

निकरे १. निकल पाता : नहिं ह्याँ तैं ~ २३०७ । २ निकलती हैं बहुत करौ ~ न निकार्यौ ३५६४ । ३ निकल आए हो : बदरनि मैं ~ २४७० ।

निकरै १. गये अरजुन के हरि हुते सारथी, सोऊ बन ~ १/२६४ । २ निकलेगी : अब को ~ माभ सवारौ ७६२ ।

निकरौं निकलती हूँ हा दधि लै ~ १६६५ ।

निकलंक निष्कलक, निर्दोष : मनो निकसे ~ कलानिधि ७३२ ।

निकस निकल कर : ~ सारग तैं सु मारग सा० ल० ३२ ।

निकसत १ निकल रहा . देह तैं मनहुँ प्रान अब ~ है १३६७ । २ निकलता हे · कछुवै कहत कछू मुख ~ ३६८७ । ३ निकल पडती है बान भीर सुजान ~ सा० ल० १८ । ४. निकलते हो आपु जबै द्वारें है ~ १६८३ । ५ निकलेंगे : अब कैसें ~ सुनि ऊधौ ३७३१ । ६ निकलते समय : ~ सगुन भले नहि पाए ३७० । ७ निकलते ही स्वच्छ सेज तैं मुख ~ गयौ तिमिर मिटि मद २०३ । ८ (उधार) निकलता है, बाकी है लेखौ करत लाख हा ~ १/१९६ ।

निकसति निकलती : कैसेंहू ~ नहीं २५७५ ।

निकसन १. निकलने, बचने कैसैं ~ पाई ११८१ ।

निकसवी निकलती, निकलूँ : ~ हम कौन मग हो सा० ल०

१७।

निकसि १. निकल कर, प्रकट हो कर देवी ~ राव कौं मार्‍यो ५/३। २ निकल, प्रकट हो ~ आए तुरत खम फारी ७/६। ३ निकलते हैं गो मृग ~ नवाई नैन मुख ४१२१।

निकसिहै निकलेंगे, पहुँचेंगे औरो आइ ~ १/१९१।

निकसी निकलीं, निकल पडीं ~ चद-कला सी १०९०।

निकसी १ निकली है, उद्गम हुआ है : जिनहीं ~ गग २४६६। २ निकली, बाहर आई . ~ नँदरानी ५४०। ३ निकल पडी हो ~ नभसि कला अनियारी ११९४। ~ **नातौ तोरि** • सबध तोड कर निकली/चली गई ~ — १००३।

निकसे १. निकली है : ~ फूटि हियैं उहि ओर २७३९। २ प्रकट हुए, अवतरित हुए . ~ हरि नरहरि वपु-धारि ७/२। ३ निकले . बाहाँजोरी प्रात कुज तैं ~ २१७८। ४ निकल कर • ~ देत असीस एक मुख ४२१६। ५ निकल गए, चले गए, प्रस्थान किया ~ त्यौं अकुलाइ २३३७।

निकसैं १ निकलती थीं : गोरस लै ~ ब्रजबाला १४६०। २ निकलती हैं : कुल की नारि न ~ साँझ ११८०। ३ निकल कर . ~ प्रान परैं जिहि माटी ३८०७। ४ पैदा होने पर ~ अक भरै १/११७।

निकसै १ निकल सकता है . कूप रतन घट कहि क्यौं ~ ३९६३। २ निकलेगी : उर की सूल तबै भल ~ ३७१७। २ निकलेंगे : मधुर उतग सप्त सुर ~ ३८०७।

निकस्यौ १ निकल गया ~ मान गुमान सहित वह २२२२। २ निकले : जब घर तैं माखन लै ~ २८१। ३ निकला हो, बाहर आया हो : सिंह सैल तैं ~ १/२७९। ४ प्रकट हुआ . ~ रथ बहु रतन बनायौ ९/२४१।

निकाई सुन्दरता, सौंदर्य . सुन्दर स्याम ~ कौ सुख ७३०।

निकाज निकम्मा, बेकाम, अकर्मण्य : ताहूँ सकुच सरन आए की होत जु निपट ~ १/१८१। △ ~ **भयौ** हार मान बैठे हैं . नद ~ — १४६१।

निकाम निकम्मो • अब हम भई ~ २३१८।

निकामी निकम्मे : आखिर बडे ~ २७५२।

निकार धार, सान . मनो अनीक ~ सा० ल० ३१।

निकारि १ निकाल कर सूर आपुन आनियै गहि बाँह नारि ~ २५७५। २ निकाल • हाथ पकरि कै लियौ ~ ९/१७४।

निकारी निष्कासन, निकाला . हमकौ देस-~ ९/६४।

निकारे निकाले : तब नहिं जात ~ ३८३२।

निकारौ निकालो तहाँ तैं अमृत कौ पुनि ~ ८/८।

निकार्‍यौ १ निकाला . पकरि ~ ४/१२।

निकास[1] निकाल • इनकौ ह्याँ तै देहु ~ ४/५।

निकास[2] बाहर, खुले स्थान मे, मैदान मे . खेलत बनै घोष - ~ २४४।

निकासत निकाली : दधि सुत सुन पतिनी न ~ सा० ल० ६।

निकासनहार निकालने वाला अब कौन ~ १६४०।

निकासि निकाल लै ~ गहि बहियाँ परि० १/२०१।

निकासी १ निकाल दी गई हो : यौं जल मीन ~ परि० १/१९७। २ निकाल कर लै गए प्रान ~ १०९०।

निकास्यौ १ निकाला था . ह्याँ हरि काली उरग ~ ४०५०। २ निकालने से : बहुत करी निकरै न ~ ३५६४।

निकुंज लतागृह मे, लता-मडप मे • नवेली ! सुनि, नवल पिय ~ है री २४५३।

निकुंजनि निकुंजों/लतागृहो/लतामडपो मे : पुलिन पुनीत ~ ठए ११८०।

निकुंज बिहारी निकुंजों मे विहार करने वाले (श्रीकृष्ण) • तुम अबिगत, अनाथ के स्वामी, दीन दयाल ~ १/१६०।

निकेत १ घर, मकान, स्थान : धन्य धनि कह्यौ नद नदन जाहु सबै ~ ७९६। २ घर मे महिमा जिऐ ~ ३९६९।

निकेतन घरो को, कुटीरो को . नवल ~, रुचिर बनाए १९८७।

निखोटै नोचता-खसोटता है, खीचता है : माता कौ चीर ~ १८३।

निगड हथकडी, बेडी या बधन ~ तोरि मिलि मातु पिता कौ ३११०। ~ **तैं आने** बधन से मुक्त किया : उग्रसेन बसुदेव देवकी किहिऊब ~ — ३६१७।

निगम १ वेदों का : लियौ ~ हति असुर परान १२७। २ वेद भी • ~ न पावत पार ३१००। ३ वेद की : महिमा ~ पढत गुनि चैन ९/१२। **अगम ~ कृपा बिनु** वेद-शास्त्रों की कृपा के अभाव मे : ~ — नहीं या रसहिं पावै १००६। ~ **नेति** वैदिक मर्यादा की रस्सी ~ — कुल लाज टूटै सब २३२१। ~ **नेति नित गावै** वेद 'नेति नेति' नित्य गाता है • जिहि ~ — ११८२।

निगम ऐन वेद का बताया हुआ धर्म-पथ, वेद-वर्णित धर्म-मार्ग, निर्वाण : ~ क्यों पावै १/४८।

निगम-द्रुम वेद रूपी वृक्षों को ~ दलि खाइ १/५६।

निगमन वेदों का : आपनो ~ तत्व बतायो सारा० ८४३।

निगमनि १ वेदो ~ हूँ तैं न्यारी २०१६। २. वेदों ने : ~ भेद बतायौ १/१८८। ३ वेदो ने भी • ~ यह गायौ ११०१। ४ वेदो मे • ~ हूँ मन-बचन-अगोचर ८/३। ~ **धन** वेदो की सपत्ति : ~ — सनकादिक सरबस ५५। ~ **नेति कह्यौ** वेदों ने 'नेति-नेति' कहा है • ~ — निर्गुन २४५५।

निगमहु वेदों को/ से भी • ~ परत न जानि ३५४१।

निगम-ग्यान-प्रतिहार महाबल वेद शास्त्रों का ज्ञान रूपी महा बली द्वारपाल : ~ लाज लकुट कर करत निवारि २३८८ ।
निगमागम निगम और आगम की, वेद और शास्त्र की कहि ~ बानी १५३ ।
निगुन सत्त्व, तम और रज तीनों गुणों से परे है, निर्गुण है तुम जु कहत हरि ~ निरतर ३९६६ ।
निगोडा नीच, कमीना मूक निद ~ भोंटा १/१८६ ।
निगोडी वि० नीच, कमीनी माइ ~ काननि मैं लिये रहै १०१६ । **स्त्री०** बिना पैर की : कुबिजा तजें ~ परि० १/१७० ।
निग्रहौं पकड कर पछाड डालूँगा कस केसि ~ १६१८ ।
निग्रह्यौ पकड पछाडा तब न कस ~ १६१८ ।
निघटत घटता है, कम होता है . भरे रहत अति नीर न ~ ३२४० ।
निघटति घटने लगे हैं, घटते हैं : सदेसनि क्यो ~ दिन राति ३७७३ ।
निघटी घटी, समाप्त हुई, बीत गई . रवि बहु चढ्यौ रैनि सब ~ ४०८ ।
निघटैं घट जाने पर · ~ निपट 'सूर' ज्यौं जल बिनु ३०२१ ।
निघसई निर्लज्जता : अब ये रहत ~ कीन्हे २३१३ ।
निचटि निचुड कर : बूँद-बूँद ह्वैं ~ द्रए री २२९० ।
निचोइ निचोड कर : टेसू कुसुम ~ कै २८६७ ।
निचोई निचोडा है · मध्य मेलि निबुआनि ~ ३०६ ।
निचोयैं निचोडने से · सूरदास क्यों नीर चुवत है नीरस वसन ~ ४१४३ ।
निचोरत १ निचोड रही है कदली ओट ~ अचल ११०५ । २ निचोडते हुए . फट्यौ ~ अचल छोर २७३९ ।
निचोरि निचोड · सुछबि ~ लई ३४०४ ।
निचोरी निचोडा स्रम स्वेद ~ परि० १/५७ ।
निचोरौं निचोड दूँ : लछिमन मुरझानि ~ ९/१४८ ।
निचोल[1] १ धोती पहिरे लाल ~ १४५७ । २ उपरना : पुरइनि कपिस ~ २०४९ ।
निचोल[2] ढीली कुर्ती आँखि आँजि पहराइ ~ ९४ ।
निचोवै निचोडती है . धारैं बदन ~ ३४७ ।
निचोहि निचोड कर : अस्तन बिष जु ~ परि० १/३१ ।
निछत्र क्षत्रिय विहीन · इकइस बार ~ करी छिति २२१ ।
निछनियाँ बिलकुल, एकदम . आजु गयौ मेरौ गाइ चरावन हौं बलि जाउँ ~ ४१८ ।
निछावरि न्यौछावर अब कहा करौ ~ ९० ।
निज १ अपना : ~ प्रतिबिम्ब निरखि रिस मानत १५६ । २ अपनी . ~ आग्या तप कियौ विधाता ३८९४ । ३ मेरे ~ कृत दोष छमौ करुनामय ४८८ । ४ निजी राम भक्तवत्सल ~ बानौ १/११ । ५ आत्मा का . राम नाम ~ सार १/२३१ । ~ **कर सारिहै** अपने हाथ से अपने को मार कर लेगी, आत्मघात कर लेगी · तौ वह ~ — २११६ । ~ **जन** १. भक्त, शरणागत, अपने लोग . वे है मेरे ~ — ३८० । २ भक्तों की : ~ — जरनि मिटी १/९८ । ~ **धाम** अपने धाम, विष्णु लोक कृपा करो ~ — पाठड ५० ।
निज पतिनी कामदेव की स्त्री, रति, प्रेम तानैं ~ मेरे मन करि सा० ल० ४६ ।
निज-पद अपना-पद, परम पद तदपि हरि तिहिं ~ देइ ६/४ ।
निजु १ अपने तुम मधुकर निरगुन ~ नीके ३७६३ । २ अपनी : तुम्हरे दरस भक्ति ~ पाट ४०९४ । ३ आपका · अटल अस्थान ~ निगम गायौ १/११९ ।
निझराने निर्जल हो गए महाप्रलय के सब ~ ९४१ ।
निझरि छान/निचुड (गये), खाली हो (गये) जल रहित हो (गये) ~ गए सब मेह ८८० ।
निझर्यौ समाप्त हो गया · अखंड धारा सलिल ~ ८८० ।
निटोल टोला, मुहल्ला : किकरिनि की लाज धरि ब्रज सुबस करहु ~ ४१३५ ।
निठुर कठोर, निष्ठुर : ~ वचन नहिं भाषे ३८५२ । ~ **भई** अचल हो गई : निठुर वचन सुनि ग्वालनि ~ — ११८० ।
निठुरइ निष्ठुरता, निर्दयता भाँति अनेक करत मन ~ ३७३० ।
निठुरई निष्ठुरता, निर्दयता कहा ~ कीन्ही १९२६ ।
निठुरताई निष्ठुरता, निर्दयता . कहा तब लहति ही ~ १३६३ ।
निठुराई निष्ठुरता, निर्दयता नाथ, तजौ ~ ९/५३ ।
निठुराऊ निष्ठुरता, निर्दयता इनमैं यह ~ २३५५ ।
निठोर बुरी दशा में : जिनके पिय परदेस सिधारे सो तिय परीं ~ ३३०५ ।
निठोलि ठिठोली, मजाक करत वचन ~ ३४२१ ।
निडर ढीठ, निर्भय । ~ **अवलोकति** नि सकोच देखती हुई श्री राधा ~ — अतिहिं हृदय हरषात ११३१ ।
निडरि निडर हो कर ~ चले गोपाल आगं ४०७ ।
नितबनि नितबों (चूतडों) पर बेनी की छबि कहत न आवै रही ~ ढरि कै १४३७ ।
नितबिनि नितबों वाली सुन्दर स्त्री (भारतीय नायिका भेद परम्परा मे बड़े नितबों का होना स्त्री के लिए सुंदरता का विषय माना गया है) निरखति बैठि ~ पिय सग २४६७ ।
नित १ रोज, प्रतिदिन भिच्छा वृत्ति उदर ~ भरे ४२२४ । २ सदैव, हमेशा · नरहरि पद ~ हिरदय धरौ ७/२ । ~ **नितही** दिन प्रतिदिन · सूर स्याम कै बाल-चरित ~ —

देखत भावत १७७। ~ प्रति प्रतिदिन ~ — जाति दूध दधि बेंचन १५०३।

नितहि नित्य ही, रोज ही • बन में ~ खिझावत १५६८।

नितहि नित्य ही • छुटत न असु सु ~ कृपन कैं ११/१।

नितही सदैव : पाँच बरष के ~ राहै ३/६। ~ **प्रति** नित्य-प्रति, रोज हम तुम्हरैं ~ — आवति २२१०।

नितही १ नित्य ही, प्रतिदिन • ~ नित उठि आवति भोर ३२०। २ हमेशा : हरि-चरननि ~ चित धरैं ९/८। ~ **नित** दिन-प्रतिदिन : ~ — बूझति ये मोसौं २०४३।

नित्त प्रतिदिन, नित्य . मुख कटु वचन, ~ पर-निंदा २/१५।

नित्य जो सदा बना रहे, अविनाशी : इहिं ब्रज यह रस ~ है ४९२।

नित्यहि नित्य ही, सदा ही माया ~ अध ४०९५।

निदरत निरादर या अपमान करते हैं निगम गुरुजन लोग ~ ४११०।

निदरसन दर्शन न करने से, निदर्शना अलकार : ~ मुख हान सा० ल० २०।

निदराऊँ झेंप मे डाले देती हूँ : जानि बूझि ~ २१६१।

निदरि १ नीचा दिखाकर किहिं हति चाप ~ गज निज बल ३६१७। २. निरादर करके, अपमानित करके . सूरदास प्रभु हमहिं ~ ३६३९। ३ झल्लाकर, उपेक्षा करके : ज्वाब ~ करि दीन्हौ २४३२। ४ त्याग करके, छोड़ कर : लोक लज्जा ~, भवन तजि १००९। ५. तिरस्कृत कर, उपेक्षित कर • हमकौं ~ रही है राधा १७४३। ६ निडर होकर • ~ लई छड़ाइ २३४।

निदरिहैं निरादर करेंगी • हमकौं कहा ~ १७२५।

निदरिहौं १ नीचा दिखाऊँगी : नीकैं ताहि ~ १७४३। २ सुनी अनसुनी कर दूँगी पेला सबहिं ~ १९४३।

निदरिहौ निरादृत करना, बुरा भला कहना . तब तुम हमहि ~ १५४४।

निदरी १ तिरस्कृत किया है : इहिं हमकौ ~ १९००। २ उल्लघन कर दिया • बेद की मरजादा ~ २३८६।

निदरे १ उपेक्षित किया : त्यौं हमकौं ~ २३४०। २ नीचा दिखा कर, अपमानित करके, निरादर करके हरषित रहन सबनि कौं ~ २३१३। ३ परेशान कर डाला है . ~ ब्रज की नारि १९३२। ४ उपेक्षा किये • ~ रहत रहे रिस मोसौं २२४६। ~ **से** गये गुजरे निरादृत-से/के समान . कहत कहा ~ — हौ तुम १५४४। ~ **देख्यौ चाहत** नीचा दिखाना चाहती है • प्यारी स्याम अग की सोभा ~ — २१२७।

निदरै छोड़कर, उपेक्षा करके, त्याग कर • घर घर लोक लाज ~ १६३६।

निदरौगे निरादर करोगे . सूर स्याम मोहूँ ~ १९३२।

निदर्यौ १ तिरस्कृत किया है . जैसै मोहिं ~ २२२५। २ नीचा दिखा दिया, अपमानित कर डाला • ब्रजवासिनि नीकैं अब ~ ९४२।

निदान पु० अन्तिम बात, निदान ग्वारिनी सुनौ ~ कहत नँद लाडिलौ १६१८। **अव्य०** १ अत मे, आखिर : दोनौं ताकौं छाँडि ~ ९/१३। २ एकदम, पूर्ण रूपेण, बडी • निठुर भई ~ १७४१।

निदानी अन्त तक : सग न रह्यौ ~ २०७७।

निदाने[१] अततोगत्वा : कृपा करहु जौ लेहु ~ १/२१७।

निदाने[२] निदान, उपाय, बूझति बात ~ ३५२१।

निदानै निदान, उपाय • एकौ हू न ~ परि० १/१४७।

निद्रा नींद। **नैन ~ ढरे** उनींदे, तद्रिल : अग आलस भरे। — ~ — २५००।

निधन निर्धनों, गरीबों : कोटि कुबेर ~ कौ १/९।

निधनियाँ निर्धन, गरीब, कगाल (स्त्री) . बलि-बलि जाउँ हौं ~ १४५।

निधनी धनहीन, निर्धन (स्त्री) : मो ~ के धनियाँ ८१।

निधरक वि० १. निडर, निःशंक : इन तैं ~ और न कोई २१६०। २ आश्वस्त . ~ रहौ सूर के स्वामी १/५१। **क्रि० वि०** बेखटके, निश्चित होकर : बेंचहु जाइ दूध दधि ~ १६१०। ~ **सौं** नि शक होकर ये धाए ~ — २३७७।

निधरके नि-शक, निश्चित . ऐसे रहत ~ री २२४४।

निधान १ आधार, भडार : सूरदास करुना ~ प्रभु १/१३। २. पुंज लागत अनल ~ ३८९२।

निधानी भडार हैं सखा हँसत मनही मन कहि कहि, ऐसे गुननि ~ १९८३।

निधि १ खजाना : ओछैं घर ~ आई २२४२। २. सम्पत्ति : बिप्र सुदामा को ~ दीन्ही १/३६। ३. अमूल्य वस्तु : घर बैठे ~ पाइ ३६३। ४ निधियाँ (पद्म, महापद्म, शख, मकर, कच्छप आदि) . अष्ट सिद्धि नव ~ सूरज प्रभु, पहुँचे जो कछु चहियै २/१८।

निधिहि धन/सम्पत्ति को : ~ पाइ इतरात नीच ज्यौं २३४०।

निनरे अलग, न्यारे, दूर • तजि केंचुरी भए ~ री २२९३।

निनारी १ अलग, पृथक् : हम तन करी ~ ३६४०। २ अनोखी, विलक्षण . साझे भाग नहीं काहू कौ हरि की कृपा ~ २९३५। ३ विशेष, विशिष्ट : जैसी मोपै स्याम करत हैं तैसी तुम करौ कृपा ~ ४२०५।

निनारे वि० अलग : निमिष न होत ~ ३६८४। **क्रि०स०** (अपने से) अलग किया, त्याग दिया प्रीतम ताहि ~ ३३७२।

निन्दति निंदा करती हो : सो कमरी तुम ~ गोपी ३५२५ ।
निन्यारें न्यारे, अनोखे : प्रेम-मधुर-रस परुसि ~ २८२२ ।
निन्यारौ निराला है, विचित्र है : उनकौ प्रेम ~ ४१२९ ।
निपजी पुष्ट हुई, परिपक्व हुई : ज्यों-ज्यों दिनी हुई त्यौं ~ ३९१ ।
निपट १. नितान्त, बिल्कुल : ~ निसक विवादति समुख ३२६ । २ बडी : नैना ~ विकट छवि अटके २३२२ । ३. निर्भय होकर · सो जन ~ नींद भर सोयो १/५४ । ४ घोर . ~ ही अँधियार १/८८ ।
निपटहि १ बिलकुल ही, एकदम . अब हम ~ भई अनाथ ३१६० । २ अत्यत : ~ निकट कहत ३५७४ । ३ सरा-सर : ~ ओछौ तोल ३८७० ।
निपात पु० १ नाश, विनाश : ताकों करों ~ ३७५ । क्रि० स० काट कर, नष्ट कर : नाक ~ बहोरी ३३६१ ।
निपातहु मारो, वध करो : सूरदास प्रभु कस ~ ३०१९ ।
निपाता नाश, विनाश तैसो याकौ होट ~ १८४९ ।
निपातौ १ मारी : पय पीवत पूतना ~ ५०८ । २ मारा है, वध किया है · कैसी, अब, पूतना ~ ३०४३ । ३ काट ली . सूपनखा नासिका ~ ३८३९ ।
निपाल्यो १. पटक दिया · गुदी चाँपि कै ताहि ~ १३९७ । २. मारा, वध किया · वच्छासुर कौं इहाँ ~ ४०५० ।
निपुन निपुण, चतुर, कुशल : प्यारि पिय ~ दोउ २४६२ ।
निफल निष्फल, बेकार . कैसें ~ करौं वा बानहि ९/९५ ।
निबंधनि कौशलों (काम चेष्टाओं) की बाँधे बिबिध ~ टोरी १२०१ ।
निबंस वशहीन · कस ~ होइ हत्यारा २९४३ ।
निबरत निकलना, अलग होना ~ नहीं निबेरे परि० २/२७ ।
निबरते दूर करता, निवारण करता ब्यौम, प्रलय, ब्याल, दावा नल हरि बिनु कौन ~ ३२०८ ।
निबरहि अलग नहीं होतीं · ~ नहीं निबेरें २९६० ।
निबरी १ निर्वाह हो जाएगा, निवृत्ति मिल जाएगी . अपनौ बिरद सम्हारहुगे तौ यामैं सब ~ १/१३० । २ छूटी, निवारण हो गया, खतम हुई मोउ बात ~ ३५९५ । ३ अलग हो गई - मरवम लै ~ परि० २/१६ ।
निबरैं मुक्त हों तब लौं रहौं पूजि ~ ये ८३३ ।
निबह निर्वाह दोउ तजि ~ अनेत परि० १/१४४ ।
निबहत १. निभ सकता है : कैसें वे ~ अबलनि पै ३८३५ । २. निबट रहा है, दुख दे रहा है · नजि सुभाव सो मोहिं ~ ३३५४ ।
निबहति १ निकल पा सकती है · रोकत घाट बाट गृह-बनहूँ ~ नहिं कोउ नारि २८८३ । २ काम चलेगा, निर्वाह होगा : फेरि कियैं कैसे ~ हो १५५३ ।
निबहन निकलने . सखियनि मां ~ पुनि पैहा २०४२ ।
निबहियौ निबाहा, निर्वाह किया . भली भई जो दूत पठायौ इतनौ बोल ~ ४०६५ ।
निबही क्रि० अ० १ मुक्ति पा गइ, निपट गइ सरबस दै ~ २८१ । २ निर्वाह हो गया, निभ गई . हरि के सँग ~ ३२१८ । क्रि० स० निभाया, निर्वाह किया : नाहिं ~ ओर ४०१९ ।
निबहे १ चले गये, निकल गये : करि निरध ~ दै माई ३१६० । २. निर्वाह हो अब ~ धौं कैसी परि० १/१४१ ।
निबहैं १ निर्वाह हो, निभे तिहिं बिनु कहि कैसें ~ १६२८ । २ निबट सकेंगे, सामना कर सकेंगे जब मार्‍यौ हरि रजक आवतहिं, मन जान्यौ हम नहि ~ ३१११ ।
निबहै १ निर्भर है सूर तुम्हारी आसा ~ १/११२ । २. निर्वाह हो, निभेगी : 'सूरदास' ऐसी क्यौं ~ ३१०९ । ३ निर्वाह हो सके करौ तहाँ लौ ~ जाई १५०० ।
निबहैगी निभ जाएगा, निर्वाह हो जाएगा : हम जानी ऐसैंहि ~ ३९८७ ।
निबहौं १ निर्वाह करूँ बिनती करि ~ ४०५९ । २ निभे, निर्वाह हो कहौ सु क्यौं ~ १/१५१ । ३ निर्वाह करूँगा क्यौं करि लै ~ ३/२ ।
निबहौ निर्वाह करो : प्राननि लै ~ २९१८ ।
निबहौगे मुक्ति पाओगी मैया मैं माटी नहिं खाई मुख देखें ~ २५३ ।
निबह्यौ १ निकल गया, चला गया · दूत दूरि ~ ३००० । २ निवाह हो गया : यह तन ऐसैं ही ~ ३७२० । ३ निर्वाह किया जो हरि कौ ब्रत लै ~ २/८ । ४ निर्वाह हो रहा है : बालक वृद्ध तरुन अबलनि कौ, एक प्रेम ~ ४१३९ ।
निबारी निवारण कर, दूर कर राखि लेहु, त्राम ~ १/१६० ।
निबारे दूर किये हैं : नाना त्रास ~ १/१० ।
निबार्‍यौ दूर किया, समाप्त किया · यह कहि उनकौ गर्व ~ ११/४ ।
निबाह निर्वाह कीन्हे नेह ~ जीव जड १/२१० ।
निबाहक निर्वाह करने वाले साँचे प्रीति ~ १/१९ ।
निबाहत निर्वाह करती है . वैसियै प्रकृति ~ ४०२६ ।
निबाहि १ निबाह/सँभाल (लौटा) लो गाइनि लेहु ~ ५०५ । २ निबाहना, निर्वाह करना . प्रेम ~ कहा वै जानैं ३१८६ ।
निबाहीं निर्वाह किया था, निबाहा था जसुदा नद ~ ४१५७ ।
निबाही निर्वाह किया तुम भली ~ प्रीति कमल नयन मन मोहन ३१५५ ।
निबाहु निर्वाह, बचाव या रास्ता सूर नाहिं ~ ६३६ ।
निबाहे बिता दिए : तीन्यौ पन मैं ओर ~ १/१३६ ।

निबाहे निर्वाह करने से : तासौं बनै ~ ३६२५ ।
निबाहौं निर्वाह करूँ, निबाहूँ • यह परतिग्या जौ न ~४३०९ ।
निबाहौ निर्वाह करो, निभाओ ~ बाँह गहे की लाज १/२२५ ।
निबाह्यौ निर्वाह किया : अपनौ नेह ~ ३७२९ ।
निबिड घना, घनघोर, सघन : ~ हम देख चक्र धरि सारा० ८५५ ।
निबुआनि नीबुओं को, नीबू का रस मध्य मेलि ~ निचोई ३९६ ।
निबृत्त रहित, समाप्त • दुखित जानि दोउ सुत कुबेर के नारद-साप ~ कियौ १/२६
निबेर निपटारा, हिसाब . दान न करौ ~ १६७७ ।
निबेरत वसूल करते हैं, चुकाते हैं • ब्याज ~ ऊधौ ३८९० ।
निबेरहु १. माफ करो 'सूरदास' व्यौहार ~ ४००१ । २ निर्णय करो सूरदास वह न्याउ ~ हम तुम दोऊ साहु ३३६८ ।
निबेरि क्रि० स० १ निपटा (तोड) कर . सूरदास सब नातौ ब्रज कौ आए नद ~ ३३७३ । २. उबार, उद्धार कर : लीजै बेगि ~ १/१४६ । ३ अलग करके : अपनी धेनु ~ ४०० । वि० अकेली, अद्वितीय . ब्रज मैं चतुर ~ २०८२ । **क्यौं जात** ~ कैसे अलग किया जाय . अब — ~ सखी री मिल्यौ एक पय पान्यौ १६६२ ।
निबेरी पहचान कर, अलग कर देह गेह एक रूप, को सकै ~ २७५ ।
निबेरे अलग करने से, निवारण करने से निबरत नहीं ~ परि० २/२७ ।
निबेरें अलग करने से : निबरहिं नहीं ~ २९६० ।
निबेरौ क्रि० स० छाँट लो, बिलगा लो : न्यारौ गाइ ~ २१६ । क्रि० वि० अलग, पृथक • पय पानी को करै ~ २२५० ।
निबौरी निमकौडी, नीम का फल या बीज . दाख छाँडि कै कटुक ~ ३६६४ ।
निभाउँ (कैसे) निर्वाह करूँ . हौं कामी कुटिल ~ १/१२८ ।
निमि[1] निमि नामक एक राजा जो इक्ष्वाकु वश के हैं तथा जो विदेह वश के आदि पुरुष हैं। ऐसा प्रचलित है कि इनका निवास पलकों पर है नित प्रति ~ कौं कोसौं १८२९ । ~ **निवारि पल द्वन्द** दोनो पलकों पर से निमि को हटाकर, अर्थात् एकटक देखते हुए • गोपी जन-चकोर चित बाँध्यौ ~ — १७९५ ।
निमि[2] पलकें ~ मृनाल सुमृति पत्रावलि २७७४ ।
निमित के लिए, हेतु, कारण अस्व ~ उत्तर दिसि कैं पथ गमन धनजय कीन्हो १/२९ ।
निमिष[1] १ पलक • ~ नही लागत एकटकहीं २२३६ । २ पलके : ~ नहीं मिलवत पल एकौ २३१५ ।
निमिष[2] १ पल भर मे, क्षण भर मे • नोर्यौ ~ महीं ९/९१। २ क्षण भर भी कृष्न वियोगी ~ न सोवैं ४०९४ । ३ क्षण के लिए एक ~ ब्रजगामिनि कौ सुख १६०६ । ~ **निमिष** क्षण क्षण ~ — मैं धोवनि, आँजति २२७५ ।
निमेषहुँ क्षण मात्र के लिए भी . स्वाद परे ~ नहिं त्यागत २३०५ ।
निमिषहु क्षण मात्र के लिए भी नहिं सुख ~ रैन कौ ३५५९ ।
निमिषहूँ क्षण भर भी : बिमुख भए अकृपा न ~ १/८ ।
निमिषारन नैमिषारण्य, एक प्राचीन वन जो आजकल हिन्दुओं का एक तीर्थ स्थान माना जाता है । यह आजकल नीमसार कहलाता है ~ आये बल जू सारा० ८२९ ।
निमूल्यौ मूल रहित, जड विहीन (पूर्णतया विनष्ट) सूर क्यौंहू होइ वह ~ ३०८९ ।
निमेष[1] १ पलक ~ न लागत ३५३० । २ पलको ~ के मटकै २३२१ । ३ पलके गुन सधान ~ घटत नहि १९८६ । ४ पलकों पर मेचक अधर ~ पीक रुचि २६३९ । ५ पलक गिराना हरि मुख निरखि ~ बिसारे ३५६६ ।
निमेष[2] १. एक क्षण के लिए, एक पल भी धरे न धीर ~ रुदन बल २३४० । २. पलक लीने जात ~ कूल दोउ ४११३ ।
निमेषैं पलके निरखत मुख क्यौं लगी ~ ३५८५ ।
निमेषै पलक झपकना भी, पलक गिरना तक अब इहिं बिरह अगर जो करी हम बिसरी नैन ~ ३१९० ।
निमोननि दे० निमोना सरस ~ स्वाद सँगर्यौ १२१३ ।
निमोना चने या मटर के पिसे हुए हरे दानों को हल्दी मसाले के घी मे भून कर बनाया हुआ रसदार व्यजन : बहुत मिरिचि दै किए ~ ३०६ ।
निम्न नीचे ~ नाभि सुभ गारी ११९७ ।
नियम योग के आठ नियमो मे से एक, शौच, सतोष, तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान — इनका निर्वाह या पालन 'नियम' कहा जाता है यम अरु ~ प्रान प्रत्याहार धारन ध्यान समाधि सारा० ६० ।
नियमासन नियम और आसन यम ~ प्रानायाम २/२० ।
नियराइ निकट . ब्रज आए ~ ३१२६ ।
नियराई अव्यय० (सदा-सर्वदा) निकट ही • कह्यौ सकल मैं हूँ ~ ७/४ । क्रि० अ० नजदीक आई मरन अवस्था जब ~ ४/१२ ।
नियराए पास-पास हो गये निकटहिं आइ लोग ~ ९७० ।
नियरात पास आ रहा है हस के अस काग ~ ४१७१ ।
नियरानी निकट आ गई, पास आ पहुँची बैरनि रितु ~ ३२९८ ।
नियरान्यौ निकट आ गए मधुबन ते चल्यौ तबहिं गोकुल ~ ३४५७ ।

नियरे १ पास, निकट • तेऊ तो ~ नदग्राम ४१०२ । २ न्यारे, पृथक् भी हैं • और सबहिं तैं ~ ३७८८ ।
नियरैं पास, समीप मोहिं ~ तुम रैहौ ६८० ।
नियरै पास, समीप : तीर नहिं ~ १/१७५ ।
नियार दे० निनारी ।
नियारे अलग, दूर ज्यौं पल जनि होहु ~ २९६ ।
निरकुस जिस पर किसी का अकुश/प्रतिबंध या दबाव न हो, स्वेच्छाचारी निसि बासर अति रहत ~ ३९४८ ।
निरंजन निर्लिप्त, परमात्मा, ईश्वर आदि ~ निराकार २/३६ ।
निरतर १ लगातार, अनवरत तुम निरगुन कहत ~ ३९०७ । २ सदैव की • भई ~ प्रीति ३७८३ । ३ सदैव, हमेशा दूरि ~ तुमहिं ११७५ ।
निरघ अर्घी • करि ~ निबहैं दै माई ३१६० ।
निरस जिसे अपना प्राप्य भाग न मिला हो : सुरपति करे ~ १६१८ ।
निरअतर लगातार, सदा उरझ्यौ विषम कर्म ~ स्रमि सुख-सरनि चह्यौ १/१६२ ।
निरउत्तर जो उत्तर न दे सके, मौन, चुप ~ भई ग्वालि बहुरि कह कछू न आयौ १४९१ ।
निरए बनाये हैं, रचे है • दोऊ ~ विधना आनि १९९९ ।
निरख देख कर • ~ परम सुख पाओ सारा० ८७५ । ~ **निरख** देख-देख कर • ~ — मुसुक्यात सारा० ४९९ ।
निरखत १ देखती • 'सूरदास' प्रभु छवि ~ रही २००९ । २ देखती हू : तब हा अग अग छवि ~ २३८६ । ३ देखता, देखता है निसि बासर ~ नहिं टेरौ १८९२ । ४ देखती है • भोर भए ~ हरि कौ मुख २०४ । ५ देखती हैं • दोउ माता ~ आलस मुख २२८ । ६ देखते हैं, देख रहे हैं ~ पिय प्यारी अग अग बिरह सोभा २१४९ । ७ देखते रहते हैं जब लगि मुख ~ तब लगि २३४९ । ८ देखते ~ ही आनद ३१३७ । ९ देखते ही : ~ तनमन वारि २११४ । १० देख कर मनमोहन मुख ~ जीजै २११ । ११ देखने मे : ~ अति सुखदाई १८१४ ।
निरखतहीं देखते ही सूरदास प्रभु मुख ~ ६१७ ।
निरखति देख रही है, देखती ह छवि ~ सब घोष-कुमारी ९१३ ।
निरखति १ देखती थी, देख रही थी प्रिया ~ पथ, मिले कब हरि कत १९८४ । २ देख रही है • कोउ ~ मुख ~ अग २६४१ । ३. देखकर सूर सखी ~ अतर भई २४६० ।
निरखन देखने रथ ही तन सब ~ लागे ३४६१ ।
निरखनि १ देखने की क्रिया या भाव सारग सुन दृग ~ पैनी २७९८ । २ चितवन • धन्य सिंगार, धनि धन्य ~ स्याम २१९७ । ३ दर्शन चुननि ~ तुरत आपुहीं उडि मिले २२७३ ।
निरखहु देखो सूर सखी मोहन मुख ~ २८०७ ।
निरखि क्रि० स० १ देखकर • ~ सुन्दर हृदय पर ६३५ । २ देखो, निहारो ~ नदकिसोर ससि री १७०८ । ३ देख • ब्रज-ब्योहार ~ कै ४८६ । ~ **निरखि** १ देख देख कर : ~ — ब्रज नारि कहति सब ६०१ । क्रि० वि० ध्यानपूर्वक : ~ देखहु अग अग अब १५५२ ।
निरखियौ देखा ~ रूप जिन, भयो सोई मगन ३०५९ ।
निरखे १ देखे ह • जब तैं ~ चारु कपोल १७९२ । २ देखे हुए (देखने मे) • हरि मुख कमल बिना ~ तैं ३५७५ ।
निरखैं १ निरखते हैं, देखते ह • तेरौ चित्र लिख अरु ~ २५७९ । २. देख रहे थे स्याम ~ ताहि ८३७ । ३ देखती हैं सूर प्रभु की ~ सोभा १८३८ ।
निरखौ १ देखो, निहारो निकट ह्वै कै तुम ~ १४० । २ निरीक्षण करो/किया जाय • याकौ कहा परेखो ~ ०/३६ ।
निरख्यौ १ देखकर : तन ~ मन सकुच गई १५९१ । २ देखा • इहिं अतर प्यारी उर ~ २४१२ ।
निरगुन वि० जो सत्त्व, रज और तम इन तीनों गुणों से परे हो • ~ कथा बनाइ कहत ८०१४ । पु० निर्गुणिया मतों द्वारा गाया जाने वाला पद मधुप कहा ह्या ~ गावहि ३४९८ ।
निरगुनहि निर्गुण को • तुम ~ गहावत ३८८२ ।
निरजीव जीवरहित, प्राणहीन, मृतक करि ~ जमुन जल बोरौ १/५४ । ~ **करायौ** मार डाला छण ~ — मारा० ४२९ ।
निरज्वल ज्वालारहित • मानहु काम-अगिनि ~ भई २२०० ।
निरतत १ नाचता है, नाच रहा है • कोउ ~ ४८८ । २ नाचते हैं, नाच रहे हे ~ लाल ललित मोहन १४७ । ३ नृत्य करते हुए : ~ सुख सुविलास सारा० ९८३ । ४ नृत्य करती हुई : कबहुँक ~ देव नटी लखि रीझत हैं सुख भारी सारा० ३१३ । ५ नाचते समय ~ अग अभूषन बाजै १०५८ ।
निरतति नाच रही थीं • उघटत स्याम ~ नारि १०५९ ।
निरतन नाचते हुए ~ उलटि गए अग भूषन ११५२ ।
निरदई १ निर्दयी, निष्ठुर नैकु हूँ न थकत पानि ~ अहीरी ३४८ । २ निर्दयी हैं • वै ~ मोह मेरैं जिय २३१७ ।
निरदय १ निर्दय, निष्ठुर, क्रूर • ~ यह कस इनहिं चाहत है मारे ३०६५ । २. कठोर • ~ बचन कपट के भाखे १०३४ ।
निरदै निर्दय, निष्ठुर • कठिन ~ नद कैं सुत ३८८५ ।
निरधन धनहीन, दरिद्र सोइ ~ सोइ कृपन दीन है १/२४२ ।
निरधार १ पृथक् कै इनकौ ~ कीजियै १/२२० । २ निराधार जान्यौ ~ ३/१३ ।

निरधारि१ निर्धारित करो, समझो : वासुदेव मैं ही ~ ४२०६। २ निश्चय ही : कह्यौ आइहैं हरि ~ ४२००।
निरधूम निर्धूम, धुआरहित : धरि ~ खिरनि पै तायौ १६००।
निरपद बाधा रहित, लगातार . सुषमन ~ मारी परि० १/१८१।
निरफलहि निष्फल . कैसैं तप ~ जाइगौ १३४८।
निरबंस वशहीन, समूल नष्ट : दनुज बस ~ कराए ३०९५।
निरबल निर्बल, कमजोर : मैं ~ वित-बल नहीं ९/४२।
निरबहिऐ निर्वाह कीजिए, बचाइए मम लज्जा ~ १/११२।
निरबहियत निर्वाह होता है • रजनी जाति गनतही तारे, जतन नहीं ~ ३९११।
निरबहियै निर्वाह किया जाय, निबाहा जाय अब कैसैं ~ ३५०१।
निरबार गुजारा, निर्वाह कहूं नहीं ~ ५८९।
निरबारौ निर्णय द्वै मैं एक करौ ~ १/१७९।
निरबाहत १. निर्वाह करते थे : दुख सुख सब ~ ४०२०। २ निर्वाह करता है : क्रम क्रम करि ~ ३२४५।
निरबाहु निर्वाह, पालन, गुजारा : होत है ~ १७४१।
निरबाहे निर्वाह करना . कठिन होत ~ ३८६२।
निरबेरो निवारण किया, ठीक किया : निज कर स्रम ~ सा० ल० ४०।
निरबैहै निर्वाह करेगा : को निरगुन ~ ३६६४।
निरभै निर्भय, निडर . सदा रहौ ~ री १७६।
निरमल स्वच्छ, निर्मल : पूगी-फल-जुत जल ~ धरि ९/२५।
निरमान१ निर्माण, बनाव : कटि रचि कीन्हौं ~ ६४३।
निरमान२ निर्वाण, मोक्ष : ताहि होन ~ सारा० ८८८।
निरमायल देवार्पित वस्तु जो विसर्जन के पूर्व 'नैवेद्य' और पश्चात् 'निर्माल्य' कहलाती है। शिव जी के अतिरिक्त सब देवताओ के निर्माल्य-पुष्प और मिष्ठान्न ग्रहण किये जाते हैं : ये दससीस ईस-~ ९/१३०।
निरमायल-दाम निर्माल्य माला, देवता को चढाई हुई माला की भाँति व्यर्थ : मनहु कुसुम ~ २९८८।
निरमूले जड के बिना, मूल रहित • ऐसे वे ~ २३७१।
निरमोल अनमोल, अमूल्य : यह ~ मोल नहि याकौ १३६१।
निरमोलक अमूल्य, अनमोल उर मडत ~ हार १/४१।
निरमोली अमूल्य तातैं तू ~ री २५८८।
निरमोलै अमूल्य है . जोइ देरै मोइ सोइ ~ २२९९।
निरमोहि निर्मोही, निर्दय प्रीति करि ~ हरि सौं ३८००।
निरमोही निर्मोही, निर्दय : कपटी, कुटिल, निठुर ~ ३७५८।
निरलज्ज लज्जाहीन, बेशर्म अति निसक, ~ अभागिनि १/१७३।
निरवत सुना देता है : चोर भोर ~ निसि चोर १२८६८।
निरवति सुनाई देती है : वन वननि कोकिल कठ ~ २८३०।
निरवधि असीम, नि सीम . दम्पति के ~ रमन अपारा सारा० ९९१।
निरवान निर्वाण, मोक्ष हरि-प्रसाद पायौ ~ ९/२।
निरवारत निवारण करते हैं, रोकते या हटाते हैं . दीरघ लता करनि ~ २६१६।
निरवानन निर्वाण जोग होइ ~ ३९४६।
निरवार१ उद्धार . कह कहो करौ ~ २५२।
निरवार२ अलग, निर्णय . सॉच झूठ ह्वै है ~ ४२०६।
निरवार३ पु० निवारण, रोक, निकास . अब नहीं ~ २२७१। **क्रि० वि०** बेबाक, नि शेष • सकुचति दान पाछिले कौं तुम, मैं करिहौ ~ १६२०।
निरवारि १ छुडा, खोल कोउ कहति मैं बाँधि राखौं को सकै ~ ७७३। २ निपटा . तुरतही ~ डारहु १५५२। ३ दूर कर सकत नहिं ~ ऊधौ ३८३६। ४ निरूपण कर, समझा को सकै ~ १८३७। **~ न जाई** छुडाए नहीं जाते दोउ अरुझे ~ — ७२०।
निरवारिहौं उद्धार करूँगा कस कौं मारिहौं धरनि~ ५५१।
निरवारैं दूर करे, निवारण करें अति दुख दारुन क्यौं ~ ४०६१। २ सुलझाते हैं, गाँठ आदि छुडाते हैं : कर सौं सिथिल केस ~ ७९९।
निरवारौं खोलूँ, निवारण करूँ • यह बधन ~ ३८२।
निरवारौ क्रि०स० दूर करो : कहि ~ सोऊ ३९७५। **पु०** निपटारा : करौ न तुम ~ २७५१।
निरवार्‌यौ निवारण किया : निज ~ दान परि० १/१७८।
निरवाहु निर्वाह • करिहौ तात-वचन-~ ९/३४।
निरविकार निर्विकार, अविकृत, शुद्ध ~ यह सूर पद्धति सा० ल० ११।
निरवेद निर्वेद (वैराग्य) नामक सचारी भाव • चहियत है ~ बिसेषी सा० ल० ४४।
निरषि देखकर : अग-प्रति-छवि ~ रमा दासी २४४३।
निरस रसहीन, नीरस : जानी ~ भई ३९१८।
निरसे नीरस, बेस्वाद : ते क्यों ~ छाकै २३५६।
निरहार पुं० निराहार व्रत, उपवास : एक दासी करे ~ ९/५। २ निराकार ब्रह्म या ईश्वर जो आकार रहित है : आदि निरजन, ~ २/३६। **वि०** आधार रहित : अक्षर अच्युत अविकार है, ~ है ११७५।
निरादर पुं० १ अपमान, बेइज्जती • सुरपति कियैं ~ ८५८। २ मात करते हैं . अधर बिंब-बधूक ~ ११९७। **वि०** निरादृत, अपमानित ब्रज तैं भए ~ ८८०।
निरालंब निराधार, बेसहारा . ~ कित धावै १/२।

निरासी १ निराश . तब तैं भई ~ २२७५ । २ जहाँ या जिसमे चित्त को आनन्द न मिले, बेरौनक . सूर स्याम बिनु यह बन सूनो ससि बिनु रैनि ~ ।

निराहार जो बिना भोजन किए हो, आहार रहित ~ जलपान बिवर्जित ९८४ ।

निरुक्त निरुक्ति, निश्चित कथन, निरुक्ति अलकार • जहँ ~ की अवध बाम तू मा० ल० ९५ ।

निरुवारति सुलझाती है, अलग करती है बढे बार सीमत के, प्रेम सहित ~ ७०४ ।

निरुवारि १ छुडा, हटा : प्रकृति नहिं ~ २५७५ । २ सुलझाई • अब ~ न जाई ११९९ । ३ निवारण कर दिया हो, समाप्त कर दिया हो, बाँधी हो रूप सींव ~ २११८ । ४ उतार कर • ~ गर तैं परि० १/७० । ५ अलग किये जा सकते हैं कौन पै जात ~ माई २२७४ ।

निरुवारी अलग कर : कौन सकै ~ २२८६ ।

निरुवारे सुलझाये : बेदहिं को ~ ३७७८ ।

निरूप बिना रूप के हैं . ता बिनु उहाँ ~ ३७७० ।

निरूपन १ निरूपण • को ऊधौ को जोग ~ ४०१८ । २ मिटाये डाल रही थी हरषि दुखहिं ~ २०२९ । ३ निवारण करती हूँ : अवहीं बातनि लै ~ १७७१ ।

निरै नरक . नाक ~ सुख दुख नहिं २/१२ ।

निरोधन रोक, बधन, अवरोध कठिन ~ प्रान ३८९२ ।

निर्खन देखने लटकि ~ लग्यो २६०९ ।

निर्गुन १ निराकार ~ सगुण धरै बपु सोई ३ । २ गुणातीत : ~ मुक्तिहूँ कौं ३/१३ ।

निर्घिन जिसे गदी वस्तुओं और बुरे कामों मे घृणा न हो, निर्दय : ~ नीच कुलज १/१८६ ।

निर्तत १ नाचता है, नृत्य करता है मनहु ~ मैन १/३०७ । २ नाचते हुए : ~ मद मद सुर गावन १३६८ ।

निर्तनि नर्तन, नृत्य चचलता ~ कटाच्छ रस २३८४ ।

निर्त्तत १ नाचते हैं . कहुँ ~ सब देस बारबधु कहुँ गँधरब गुणगान सारा० ६६८ । २ नाचते हुए ~ भेद दिखावै री परि० १/५० ।

निर्दय निष्ठुर चुगुल ज्वारि ~ अपराधी १/१८६ ।

निर्दयाराति निर्दयी शत्रुओं : ~ दनु कुल प्रहारी १८०३ ।

निर्धूम बिना धुएँ की मनु दिमि दिमि ~ अग्नि कै २११४ ।

निर्बान निर्वाण, मोक्ष • को पावै ~ १६१८ ।

निर्बाह निर्वाह तो भी नहिं ह्वैहै ~ ४/९ ।

निर्बिष विष रहित . ~ कियौ सकल बल भार्यौ ५७४ ।

निर्बीर वीर्यहीन, निस्तेज होत बीर ~ १/२६९ ।

निर्बेद दे० निरवेद ।

निर्भ्रम बेखटके, नि सकोच जमुना-जल ~ करत बिहार ११५९ ।

निर्मल १ स्वच्छ • ~ जल जमुना को पीजै ४३८ । २ दोष-रहित, खरे . हरि नग ~ लेहि १/३१० ।

निर्मान निर्माण : शकर प्रगट भये भ्रु कुटी ते करो सृष्टि ~ सारा० ६५ ।

निर्मायौ उत्पन्न किया, बनाया ब्रह्मा रिषि मरीचि ~ ३/९ ।

निर्मूल्यो निर्मूल, नष्ट . होइ ~ २६२५ ।

निर्मोहिया निर्मोही हरि ~ सौं प्रीति कीन्ही २४०९ ।

निर्मोही निर्दयी ~ नव नेह कुमुदिनी ३९१८ ।

निर्वंस निर्वंश, जिसके वश मे कोइ न हो इनको कपट करै मथुरापति तौ ह्वैहै ~ २५९७ ।

निर्वान निर्वाण, मोक्ष, मुक्ति दियौ तिहिं ~ पद हरि १००७ ।

निर्वानी निर्वाण स्वरूप . पुरुष पुरातन सो ~ ३ ।

निर्विष विषरहित : ~ कियौ ५७४ ।

निलज निर्लज्ज, लज्जाहीन, बेशर्म : ~ भई कुलकानि गँवाई १८९९ ।

निलज्ज निर्लज्ज, लज्जाहीन, बेशर्म रघुपति कह्यौ, ~ निपट तू ९/५६ ।

निलाबर नील वस्त्र . राधा मुख-चद ~ माँझ २९०७ ।

निलै निलय, घर . नील ~ मिलि घटा बिबिधि सा० ल० ३८ ।

निवछुरौ खाली, एकात अबहिं ~ समय सुचित है १/१९१ ।

निवसे नवेले ~ नागर स्यामल गात २०२१ ।

निवाज अनुग्रह करने वाले, कृपालु, पालक तुम हौ सदा गरीब ~ १/१०८ ।

निवाजी वि० कृपापात्र, निवाजी हुइ : कहियत कुबिजा कृष्ण ~ ३६४८ । **क्रि० स०** कृपा की (सुदर रूप दिया) : करुना करि हरि जाहि ~ ३१०७ ।

निवाजैं दया करते हैं, कृपा करे . जाको दीनानाथ ~ १/३६ ।

निवाज्यौ कृपा की काली इनहिं ~ ३०४४ ।

निवार निवारण, निपटारा • तरुन बृद्ध कौ करै ~ ४९७ ।

निवारत १ निवारण करता है : सिखर-बधु अरि क्यौं न ~ ३२२२ । २ दूर करते हैं . मिलि काहें न तन ताप ~ ३७९२ । ३ हटाते जा रहे थे : अपने हाथ ~ पात २४४२ । **भँवहि** ~ मिटाते घूमते हैं बुधि बल-कुल-अभिमान, रोष रस, जोवत — ~ २३८३ ।

निवारति दूर करती है : कछु पढि पढि तन-रोष ~ २०० ।

निवारन **क्रि० स०** निवारण करने के लिए, दूर करने के लिए छींक कौ दोष ~ ५८९ । **वि०** दूर करने वाले हैं तीनि लोक के ताप ~ १/३० । **करौ** ~ दूर करो . इनके दुख अब — ~ ३९१ ।

निवारहु दूर कीजिए : सावधान है सोक ~ ९/८३ ।

निवारि १ मिटाकर, उल्लघन कर, दूर कर . कुल की कानि ~

१४४३। २ उपेक्षा करके सीत तपत ~ ७८३। ३ दूर करो · अपनी रिस ~ प्रभु, पितु मम अपराधी ७/४ । ४ छोड़ सकत नहीं ~ १०८२ । ५ छोड़ दे तू मन की रिस ~ २७५४। ६ रोका . लाज लकुट कर करत ~ २३८८। ७ मत करो, रोको इतौ कोह ~ ३५३। ८ (झगडा) निपटाओ : दान देहु ~ १५५५।

निवारिनि रोकने वाली यहै ~ मेघ-बूँद, छाँह घाम की १५१६।

निवारी[1] **१.** निवारण कर चलि दै बिथा ~ २५८३। २ निवारण कर दिया, दूर कर दिया कित दुख निमिष ~ ३५९२। ३ छोड दी, हटा दी, (नींद से जग गये) सुनि नदनदन नींद ~ १९८। ४ बद कर दी सूर सु मघवा दृष्टि ~ ११। ५ रोक दो, मत दो सुक्र कह्यौ सुनि हो बलि राजा भूमि कौ दान ~ ८/१४।

निवारी[2] नेवारी नामक लता के · डारत प्यारी पै हरषि हरषि फूले फूल चपक अरु बेलाऔ ~ २४५६।

निवारे १. निवारण किया वदन कर शर भग महामुनि अपने दोष ~ सारा० २५५ । २ रोके गये चले भगवान हलधर ~ ४२०९ । ३ दूर किये : बान सौ बान तिनके ~ ४१८३ । ४ दूर करेंगी · नैननि साध ~ ३७५८।

निवारैं १ निवारण करे . जौ लौ दुरति ~ ३५४८। २ मना करे, रोके माता-पिता ~ जबहीं ३/१३।

निवारै १ दूर कर सकता है तुम बिनु कौन ~ २१५३। २ दूर करते हैं नैकु न कोप ~ २८२६ । ३ बद किया है बहिबौ नहीं ~ ३७७८। ४ रोक सकता है, रोके कौन ~ बारि १६४०।

निवारौं १ निवारण कर दूँ, दूर कर दूँ : सूर सकोच ~ १३२। २ समाप्त किए देता हूँ, समाप्त कर दूँगा एकहिं बान ~ ९/१४३। ३ दूर करूँगा कस कौ दोष ~ ५८९।

निवारौ १ निवारण किया, दूर किया अबरीष कौ साप ~ १/१७२। २ दूर करो, दूर कीजिए, छुटकारा दिलाइए स्वामी जन के दुःख ~ २०९। ३ पोछ डाल . दधि-सुत बदनी दधिहिं ~ २७४६। ४ दूर करती · कोह न नैंकु ~ ३७८। ५. बद करो : जप तप ~ ४/११।

निवार्‌यौ १ दूर किया, निवारण किया . देवकी, वसुदेव कौ सताप ~ ३०७७। २ बचाया, रक्षा की · मेघ बारि तैं हमे ~ ३४०९। ३. निकाल दिया है . अब जी कौ सब सोच ~ ३५६४। ४ मना कर दिया, रोक दिया : जम दूतनि हरि-गननि ~ ६/४। ५ वापस कर दिया : पुरुष चतुरभुज हमैं ~ ६/४। ६ रोका काहूँ पुरुष ~ आइ ८००।

निवासा निवास . सरिता कियौ ~ परि० २।

निवाहि चुकता कर · पहिलौ देहु ~ आजु सब १५९४।

निवाह्यौ व्यतीत कर दिया . तीनौ पन भरि ओर ~ १/९६।

निवृत्ति मुक्ति : नारद साप ~ कियौ १/२६।

निशि रात्रि मिटि जो गई ~ कालिका ८०९।

निश्चै निश्चय। ~ **आयौ** निश्चय हो गया नृप कैं मन यह ~ — ५।

निषग तरकस कटि तट कस्यौ ~ ९/१५८।

निष्काम कामना रहित करि अभ्यास होइ ~ २/२१।

निष्कामी निष्काम, कामना-रहित ~ बैकुठ सिधावै ३/१३।

निसक निर्भय, निडर : जबहिं ~ होति गुरुजन तै १९२९।

निसग नि शंक/निडर होकर : पिवत नीर ~ २१३१।

निसंस नि सशय अलकनि फम ~ चली डिग परि० २/५६।

निसपति निशिपति, चद्रमा : लखि ~ मुरझायो सा० ल० ९।

निसरत निकलता है : प्रेम जीव ~ नहिं कैसैंहु २२९१।

निसरौगी निकलोगी, बाहर आओगी : कैसैंहूँ घर तै ~ १७५०।

निसा १ निशा, रात्रि सात दिवस जल बरषि ~ ८७७। २ रात मे . ~ करत बिहार ११३३। ~ **कृत-काज** : रात्रि के काम मे मिलित ~ — २७३४।

निसा अत पति सुत सुभाव रात्रि के अत (दिन) के पति (सूर्य) के पुत्र (कर्ण) का स्वभाव (दानी) सखी, सहेली ~ सुन सा० ल० १६।

निसाकर चद्रमा मनहुँ ~ किरनि-समाज ११८०।

निसाचर निशाचर, राक्षस कौन बिभीषन रक ~ १/३५।

निसाचर रिपु राक्षसों के शत्रु = (ऋच्छ) = नक्षत्र, तारागण ~ हीन है है सा० ल० ८८।

निसाचरि १ निशाचरी ने, राक्षसी ने धर-अबर लौं रूप ~ ९/१०४। २ राक्षसियाँ, राक्षसियो को रखवारी कौं बहुत ~ दीन्हीं तुरत पठाइ ९/६१।

निसादिन रातदिन पवन जहँ बहत ~ ४४८।

निसान[1] १ मगल वाद्य आजु हो ~ बाजै ३०। २. दुन्दुभि, नगाडा यह ~ नित बाजा १/१४४। ~ **बजाइ** डके की चोट पर, दावे के साथ : मिले ~ — २३३७।

निसान[2] चिह्न धरे ~ अजिर गृह मगल ९/२५।

निसानी निशानी, चिह्न सब अगनि उलटी सकल ~ २५१४।

निसाने नगाडे अभय ~ बाजे १/३६।

निसानै नगाडे बाजत ढोल मृदग ~ ८९१।

निसा-पति चद्रमा होत ~ फीकौ १७०२।

निसा-पान सम रात्रि की मदिरा के समान ~ दुति रतनारी ११९४।

निसास अचेत, बेदम . भू पर परत ~ १/३२५।

निसि १ रात्रि : गगन ~ रह्यौ छाइ २३४। २. रात्रि के चारि पहर सुख सेज परे ~ ४। ३. रात को, रात मे :

छल करि मैंडनि ~ लै जाव ९/२ । ~ **निसि ही** रातों रात : ~ — रिषि लिए सहस दस १/१०९ ।
निसिकर चन्द्रमा : ~ करत दाह दिनकर लों ३७८३ ।
निसिखग उल्लू : मुख छवि निरखि, चौंधि ~ ज्यौं १८८९ ।
निसिचर राक्षस : ~ कुल नाथा ९/९६ ।
निसिचरी निशाचरी, राक्षसी · तहँ इक अदभुत देखि ~ ९/७४ ।
निसि-नायक निशापति, चन्द्रमा ~ तम मोचन हारी ११९४ ।
निसि-पति निशापति, चद्रमा : निरखि ~ बदन-शोभा ३५२ ।
निसि-बासर-जाम रातदिन आठों पहर : यहै करत ~ ९६२ ।
निसि-रस रात के रस, काम-केलि-सुख : ~ सुधि आए नैन नैननि लजात २०३४ । ~ **रंगहि में** रात के आनन्द के रग मे : ~ पगी तनु-सुधि बिसरावै २०४४ ।
निसिहूँ दिन रातदिन . ~ ये करत अचगरी २२४६ ।
निसहू रात को भी : प्रथम प्रेम ~ न तजत अब ३५४९ ।
निसनो सीढ़ी, ज़ीना : मानहु स्वर्ग ~ २६४७ ।
निसेस नि.शेष : बिहारी चारू गवने ~ परि० २/३९ ।
निसात शुद्ध, निग विरहिनि विरह ~ ३९९४ ।
निस्चय पुं० पूर्ण विश्वास, निश्चय : तब लगि सेवा करि ~ र्सी १/३२२ । ~ **करि** अवश्य ही . ~ — मो तरै पै तरै ६/४ । **क्रि० वि०** निश्चय ही, निश्चयपूर्वक सूर ~ भजी मोकौं १०२६ ।
निस्चै निश्चय, अटल विश्वास जो जो जन ~ करि सेवै १/२५७ ।
निस्तरता निस्तार कर देता : जौ औरहू ~ १/१२३ ।
निस्तरियत उद्धार हो सकता है . बिनु गोपाल कैसें ~ ३७९२ ।
निस्तरिहैं १ उद्धार पा जायेंगे तब ये जीव सकल ~ ७/२ । २ निस्तार पाते रहेंगे, पार होते रहेंगे सूरदास ~ यह जस करि ९/१३१ ।
निस्तरिहौं निस्तार पाऊँगा, मोक्ष प्राप्त करूँगा पतितै है ~ १/१३४ ।
निस्तरै पार हो जाता है : सनै सनै तैं सब ~ ३/१३ ।
निस्तार मोक्ष, उद्धार : नाहिं ~ ४/१२ ।
निस्तारत पार कर देते हो, उद्धार कर देते हो · काहे न ~ १/१८२ ।
निस्तारन उद्धार करने वाले : बरुन-निषाद-नद ~ ९८१ ।
निस्तारा उद्धार किया : दरसन दै ~ ४१९८ ।
निस्तारौ पुं० उद्धार · कियौ सुरनि ~ १५९ । **क्रि० स०** उद्धार करो, कल्याण करो : भक्ति सुनाइ जगत ~ ४०९४ ।
निस्फल निष्फल, विफल · कीन्यौ जग्य होत है ~ ४ ।
निस्सरै निकलता है, बाहर आता है . होट ~ ४/१२ ।
निहकलंक निष्कलक, कलंक रहित · ~ रघुराई ९/१६२ ।
निहकाम निष्काम कर्म के . वचत कहत ~ ३५८९ ।
निहकामी निष्काम प्रभु हैं निर्लोभी ~ १४६० ।
निहचय निश्चय . कम मर्‌यो ~ भई ५८९ ।
निहचल स्थिर, अचल, निश्चल : कियौ ~ वाम १८४५ ।
निहचित निश्चित : तुम जेंवहु ~ भए ८३८ ।
निहचीत निश्चित (हो गए) सुमिरत ही ~ १/३१ ।
निहचीते निश्चित, चितारहित : तुम ~ नागर हौ २६९४ ।
निहचै पुं० निश्चय यह ~ करि पत्री लिखी ४१६७ । **क्रि० वि०** निश्चय, निश्चित रूप से : ~ मृत्यु आपनी मान्यौ ३०७० ।
निहार १. देखा : महदेव हू फिर ~ ७/२ । २. निहार कर, देख कर : केस ओर ~ फिरि फिरि सा० ल० ३० । ३ देखते हुए, देख देख कर · भरत चलै पथ जीव ~ ५/४ ।
निहारत १ देख रहे हो, निहार रहे हो · धरनी कहा ~ २५४५ । २ देखता है फिरि नहिं ताहि ~ २२३१ । ३ देखती है : पिय कौ रूप ~ २१४७ । ४ देखते है, देख रहे हैं : नद गोप सब सखा ~ ३११२ । ५ देखते हुए : वासर गए ~ मारग ३८४९ । ६. देखती हुई : इत उत चली ~ १५०१ । ७ देखने के लिए (कहते हो) पवन धरि रवि तन ~ ३३४१ ।
निहारति देख रही हैं : गोपी जन हरि बदन ~ १८०९ ।
निहारति १. देखती . सूधैं काहू तन न ~ १७७१ । २ देखता है, देख रही है : कर दर्पन प्रतिबिंब ~ २२०० । ३ देखती हूँ : मैं अपने कौं पथ ~ २३६ ।
निहारती देखती हैं, देखने लगीं : दै असीस ~ ४१८६ ।
निहारन देखने का, देखने के लिए · मिलीमुख सारग ~ सा० ल० १८ ।
निहार्‌यौ देखा : नैन कोर-पिय हृदय ~ २४७३ ।
निहारहि देखती हैं : बार बार रथ ओर ~ ३४६८ ।
निहारहि देखती है : एक रूप माधुरी ~ २८९२ ।
निहारहु देखो . नखसिख लौं अग-अग ~ १५४० ।
निहारि १ देखा : दासी बालक मृतक ~ ६/५ । २ देख · नैन उघारि ~ रही ११०८ । ३ देख रहा हो : मनौ रह्यौ पन्नग-पीवन कौ ससिमुख सुधा ~ २११४ । ४ देखकर : अपनी छाया ~ काहै कौ करति आरि २४१८ । ~ **निहारि** एक टक देखती, देखती ही : रही ~ — १०४५ ।
निहारी १. देखी : दनुज-सुता तिहिं तें न ~ ९/१७४ । २ देखती हुई . प्रतिबिंब ~ २२०१ । ३ देखकर सुरनि स्यौं दुलै कचन मेरू इहिं ~ २८२४ ।
निहारे क्रि० स० १ देखे, दृष्टि डाली : आई निकट श्रीनाथ ~ १/२७४ । २ देख कर . चलत ज्यौं पतँग दीपक ~ ४१८३ । **क्रि० अ०** दिखाई पड़ते हो · सकुच महित हरि

नरम ~ २६८३।

निहारैं १ निहारते हैं, देखते हैं : पग निरखि ~ २६१५। २ देख रही हैं · साँझहिं तैं हरि पथ ~ २४७९। ३ देखने से छुटनि मानौ कटाच्छनि ~ २१२९।

निहार १ देख रही थी पिय सँग के अँग चिन्ह जे दरपनहिं ~ २६५१। २ देखता है . फिरि पाछैं न ~ ३७५४। ३ देखती है : जननी पुनि पुनि ग्रीव ~ १९६८। ४ देखने लगती है निरखि मुख नैन इक टक ~ १०६१। ५ देखा, झाँक रहे थे . नीलाबर सारी-घूँघट ओट ~ २१५२।

निहारौं १ देख रही हूँ : तुव पथ ~ ५४७। २ देखती हू : मुख चितवौं, फिरि धरनि ~ २१०३। ३ देखा करूँ : स्याम सुरूप ~ ३७।

निहारो १ देखा था . सूर उनमीलत ~ सा० ल० ७७। २ देखा है · जब तैं हौं हरि रूप ~ सा० ल० ३८। ३ देखो याकौ सुदर रूप ~ ७/७। ४ देखती हो : ब्रज बनिता मिलि क्यौं न ~ २६४५। **पथ** ~ राह देखो, प्रतीक्षा करो . धरौं तहाँ मैं गोप-बेष सो — ~ ११७५। **परत** ~ दिखाई पडता था तन नहिं — ~ ९/१५९।

निहार्यउ देखा : कपट न कोऊ ~ सारा० ४१५।

निहार्यौ १ देखा : पाछैं फिरि न ~ २२४५। २ ध्यान दिया फेर न काहु ~ ११८१। ३ देखती रही सुक्र सुता दिन पथ ~ ९/१७३।

निहाल १ खुश ताहि ~ कराऊँ २१०६। २ कृतार्थ, माला-माल भए ~ सूर जब जाचक ९/१६।

निहाला कृतार्थ, पूर्ण सतुष्ट और प्रसन्न ता दरसन तैं होउँ ~ २९४५।

निहोर पु० प्रार्थना, विनती . करति निपट ~ ३६४। क्रि० वि० प्रार्थना करके : लाई बहुत ~ सारा० ९०८।

निहोरा प्रार्थना, अनुनय, एहसान : पठा दियौ घर मानि ~ ९६३।

निहोरि मिन्नत करके कछुक कहहिं ~ १४४२।

निहोरी पु० १ प्रार्थना बार-बार हरि करत ~ ६६९। २ एहमान तऊ न मानति किंतिक ~ २३०६। क्रि० स० १ झुकाए . राखति ग्रीव ~ १३५३। २ विनती करने लगे, प्रार्थना करने लगे तब गहि चरन ~ २८६।

निहोरे अनुनय, प्रार्थनाएँ ज्यौं ज्यौं मैं ~ करौं २५९५।

निहोरौ १ प्रार्थना · अधिक ~ कीजै ७३१। २ निहोरा है : तुमहिं ~ एहु ३७८५। ३ एहसान इतनी सील करैं पालागें यहै ~ मानैं ४०८६। ~ **लाइ कै** प्रार्थना करके मोहिं ~ — फिरि चितवै मुसुकाइ १४४३। △ ~ **लीजै** एहसान उठाइए स्याम ~ — ५७६।

निहोर्यौ अनुरोध, प्रार्थना : कहि कहि कासौं करति ~ १६६१।

नींदौ नीद भी : अब सखि ~ तौ जु गई ३२६६।

नीक[1] १ अच्छा . तिहि तैं का प्रति ~ सा० ल० ५७। २ अच्छे घायल सबै ~ ह्वै गए ४/५।

नीक[2] अच्छा, अच्छ, अन्न, अच्छि, आख, नेत्र झरत धार कन ~ सा० ल० ४३।

नीकन नेत्र, नयन . सारग सुत ~ ते बिछुरत सा० ल० १६।

नीकनन नेत्रों . ~ तैं दिवस डारत परत धन पै हेर सा० ल० ५९।

नीकी स्त्री० अच्छा (बर्ताव) : सुनहु सखी हरि करत न ~ १८९५। वि० १ अच्छी, सुन्दर : ~ लागी चदन रेख २७२५। २ अच्छी है . यह ही बात जगत मे ~ सारा० ११३। ~ **बिधि** भली भाँति : सुधा पान करिकै ~ — १६८०। ~ **भाँति** भली भाति, अच्छी तरह से . सुत हित जोग जग्य ब्रत कीजत बहुबिधि ~ — ३७५३।

नीके १ अच्छे · तुम ~ ढग सीखे वन मैं १५६४। २ अच्छे हो तुम मधुकर निरगुन निजु ~ ३७६३। ३ सुन्दर : कध धरि चले दोउ बीर ~ बने ३०६०। ४ बिलकुल, एकदम : आपु स्वारथो ~ २३३४।

नीकैं वि० १ अच्छी ~ जाति उघारि आपनी १५१७। २ सकुशल ~ गोप बडै गोबर्धन ८८१। ३ अच्छे, शुभ ~ सगुन आज ह्याँ आई १७६६। क्रि० वि० १ अच्छी तरह से, भली प्रकार · नैना खग स्याम ~ पढाए २७७४। २ सीधे, बिना कुछ कहे सुने ~ देहु न मेरी गिडुरी १४१६। ३ अच्छा हुआ : सूर स्याम कह्यौ ~ आई ४६१। ~ **देखे** भली भाँति देख पाये : सूर स्याम तुम ~ — १७७०।

नीकै वि० अच्छा हरि की भक्ति करो सुख ~ जो चाहो सुख पायो सारा० ७३। क्रि० वि० १ भली प्रकार ~ किन चाहौ १३४३। २ मनोहर ढग मे, सुरीला · सरगम सुर ~ साधि ११५१।

नीकौ स्त्री० अच्छाई (है) · ए अलि कहा जोग मैं ~ ३६९७। वि० १ अच्छा · बैद मिल्यौ कुबिजा को ~ ३६४९। २ अच्छे (है) मोहन ~ री २७८२। ३ अनुकूल, उत्तम . पायो ~ दाउँ १६१३। ४ अच्छा है, अधिक है · मरियत लाज सूर पतितनि मे मोहूँ तैं को ~ १/१३८। क्रि० वि० १ भली प्रकार, अच्छी तरह राधे तेरौ बदन बिराजत ~ १७०२। २ तेज हू . दोप देन का ~ १/१८६। ३ अच्छा है जौ गोपाल मिलैं तौ ~ ३८१६। ४ अच्छा था : गरल दान देते बरु ~ ३८५३।

नीच नीचे . नार नावति ~ ४१३५।

नीचैं नीचे, नीचे की ओर · ज्यौं धावत जल ~ मारग २२२१।

नीचै नीचे, नीचे की ओर सुन रही ~ हेर सा० ल० ५५।
नीचौ नीचे, नीचे की ओर . 'सूर' सीस ~ कत नावत ३६८८।
नीठ कठिनाई से, ज्यों त्यों करके . अनुरागनि नमि ~ २३७२।
नीठौं व्यर्थ का समुझावत ~ सा० ल० ८९।
नीड घोंसला रचे ~ दै बाँह बसाए १०४।
नीत नीति हम जु तजी किहि ~ ४०४१।
नीतन नीत + न = (नय + न) नयन, नेत्र ~ तें मन मोई सा० ल० ५।
नीतन हीन पुत्र रिपु जननी सुत पितु जा नेत्रों से हीन (धृतराष्ट्र) के पुत्र (दुर्योधन) के शत्रु (पाडव) की माता (कुती) के पुत्र (कर्ण) के पिता (सूर्य) की पुत्री, यमुना ~ सा० ल० ९।
नीत विन (नीत = नय, विन = विना = न, दोनों के मिलाने से, (नयन) = नेत्र, अथवा विना नीति के ~ मीखत सा० ल० ६०।
नीप कदंब अति विस्तार ~ तरु तामैं ७८४।
नीवी कटि-बन्ध, नाडा या नाडे की गाँठ : ~ ललित गही जदुराइ ६८२।
नीवी-बंध नीवी-बध, नाडा या नाडे की गाँठ सुदर ~ रहति पिय पानि गहि ११९१।
नीमपार नैमिषारण्य, अवध के सीतापुर जिले मे स्थित एक प्राचीन वन जो हिंदुओं का एक तीर्थस्थान माना जाता है सो पुनि ~ मैं आयौ १/२२८।
नीर पानी, कानि, चमक कहँ वह ~ कहाँ वह सोभा १/८६।
नीर-खार समुद्र ~ मैं गारौं ९/१०७।
नीरज सुत-सुत-वाहन कौ भख खार समुद्र से उत्पन्न (ब्रह्मा) के पुत्र (शकर) के पुत्र (स्वामिकार्तिकेय) के वाहन (मोर) का भक्ष्य = (सर्प) चोटी ~ स्याम अरुन रँग कौन विचार १२०२।
नीर देव वो कोप सहित कर नीर = वा, देव = सुर, वो = तथा कोप = रिस, = रीस — इन सब के प्रथम वर्ण मिलाने से, वासुरी, बाँसुरी ~ पूरव रीति दमेरौ सा० ल० ४०।
नीरधि समुद्र, सागर : मनि छारधि ~ नीर के ३०६३।
नीरपति जल के स्वामी, वरुण ~, पवनपति, बेद वानी १९४७।
नीर मई जलमय, जलमग्न कागर ह्वै गयौ ~ ४०६०।
नीरहू जल भी : ~ तैं न्यारौ कीनौ ८/५।
नीराजन आरती जय जय करत वार ~ सारा० ९००।
नीरे पास, समीप तुम इक कहत सकल घट व्यापक अरु सबही नेरे ~।
नील[1] १ नीला या गहरे आसमानी रग का स्याम तनु घन ~ मानौ १९८९। २ नीले ~ खुर अरु अरुन लोचन १/१६। △ ~ कौ खेत कलक का घर : भवन ~ - २/१५।
नील[2] नीलम : मुक्ता, विद्रुम ~ पातमनि १४०।
नील[3] राम की सेना का एक बदर जामवँत, ~, नल सबै आए ९/१०६।
नील[4] एक सख्या जो सौ खरब की होती है १०००००००००००० : ~ पदुम हूँ सों कहै थोरी १/३०३।
नील कलेवर १ श्यामल शरीर मे चरचित चदन ~ ८/१३। २ श्यामल शरीर वाले विष्णु जी नीलकठ वर ~ १७१।
नील गिरि दक्षिण का एक पर्वत · मनहुँ ~ तै सुरसरि १२०४।
नीलजलद नीले मेघ · ~ पर तडित सुछदन १७८०।
नील-नलिन नीलकमल की . ~ सुगध ज्यौं २२२०।
नील-नीरज नीलकमल ~ दल मनौ अलि ३५०।
नीलमनि नीलम, नीलमणि . कनक ~ जनु अभिराम ११८०। ~ **मय पुट** नीलमणिमय दोने मे . मुक्ता मनौ ~ — ४७६।
नीलांबर पु० १ नीला वस्त्र ~ पीतांबर लीन्हे ५११। २ नीली साडी · इत नागरि ~ पहिरे २१५५। ३ नीले वस्त्र के (समान) ~ स्यामल तनु की छवि २०६७। वि० नीली ~ सारी घूँघट ओट निहारै २१५२।
नीलांबरहि नीली साडी को पीतांबर कहँ डारि कौन कौ ~ लिये २५०६।
नीलांबुज नील कमल ~, तन नील, बमन, मनि ३८५४।
नीला राधा की एक सखी का नाम अमला अवला कजा मुकुता हीरा ~ प्यारी १५८०।
नीलावती एक प्रकार का चावल : ~ चाँवर दिव दुर्लभ ३९६।
नील नीली मे नील ~ मिलि घटा दामिनि मनौ ३८६७।
नीसान डका, नगाडा, वाद्य · नीच पावै ऊँच पदवी बाजते ~ १/२३५।
नूत १ नया, नवीन, ताजा अरुन ~ पल्लव धरे २८६७। २ अनोखा, अनूठा किसलै कुसुम नव ~ दसहु दिसि मधुकर बदन दोहाई २७८४।
नूतन १ ताजा . दधि, फल ~ डार २७। २ नया, नवीन : ~ नेह कियौ कुबिजा सन ३८४४। ३ नये-नये . तन पहिरे ~ चीर २४। ४ नयी लीला करत स्याम ~ यह ८३४।
नूपुर पैंजनी, पायजेब, घुघुरू : किंकिनि ~ पाट पटबर १/४१।
नूपुरनि नूपुरों से गज गति चाल ~ बाजै ४०९४।
नृग एक दानी राजा जिसे एक ब्राह्मण के शाप से गिरगिट का शरीर धारण करना पडा था ~, कपि, विप्र, गीध, गनिका, गज, कस, कैमि खल तारे १/२७।
नृतकारी नृत्य कला, नृत्य कौशल . रंभा को मान मिट्यौ भूली ~ ६४९।
नृतत नाच रहे हैं ~ फन अति डोल ५६३।

नृत्तकार उत्तम (नृत्तकार=नृत्यकार) नट, (उत्तम) = वर को मिलाने से, नटवर . ~ वनाउ, वानिक सँग चद न आवै सा० ल० ९१ ।

नृत्यकारी नृत्य करने वाला (हो), नाचने वाला (हो) • लिए करनि लकुट लाल, मनौ ~ ३०५७ ।

नृत्यत १ नाचता है, नाच रहा है . ~ मदन फूले ३४ । २ नाच रहे हैं : ~ स्याम हरी परि० १/३२ । ३ नाचते हुए : ~ निरखि मोर हरष मानै १०४० । ४ नाचती हुई : रैनि ~ रिझै पिय मन २४११ ।

नृत्यति नाचती है . इक उघटति इक ~ २८९१ ।

नृत्य-भेद नृत्य का भेद (ताल) = तालाब : ~ विचार बा बिनु सा० ल० २७ ।

नृप-अपराध राजा की मृत्यु का पाप : हठ करि ~ लियो ९/४८ ।

नृपजू राजा जी धनुष यज्ञ कीन्हो ~ ने सारा० ४९३ ।

नृप-तनया राजा की पुत्री, (सुकन्या) : इहि अतर ~ आई ९/३ ।

नृपति १ राजा सुक सौं ~ परीछित सुन्यौ १/२२७ । २ राजा (कस) ने ~ दूत पठाइ दीन्ह्यौ ५२४ । ३ राजा के . कियौ बिभीषन ~ समान १२७ ।

नृपतिनि राजाओं को : ~ बदि छुडाए ५६९ ।

नृपन राजाओं ने : सूरज ग्रहण ~ बहु जान्यो आय जुरी सब भीर सारा० ७११ ।

नृपनि राजाओ : एक इक बान भेज्यौ सकल ~ पै ४२०९ ।

नृप-भूपन कपि पितु गज पहिलौ राजा के भूषण (चँवर) चामर, हनुमान के पिता (रुद्र) त्रिमूर्त्ति, गज = करि के आदि वर्णों के मिलाने से (चात्रिक) चातक • ~ आज खचर की छोडै सा० ल० ४१ ।

नृपयान राजा की सवारी, शाही सवारी . सग खेलत तुम पायो ~ सारा० ८८० ।

नृपराजहि राजा (कस) के पास : कमल पठाइ देउँ ~ ५५३ ।

नृपराव नृपराज दियौ सिरपाव ~ नै महर कौं ५८७ ।

नृपहि राजा को • ज्वाव ~ कह दैहौं १५६९ ।

नृसिह भगवान विष्णु का चौथा अवतार जिसका आधा शरीर मनुष्य का और आधा सिंह का था । हिरण्यकशिपु को मारने के लिए यह अवतार धारण किया था : श्री ~ वपु धर्यौ १/१७ ।

नेक जरा भी, रचमात्र भी : टरत टारै न ~ १/१०६ ।

नेग[1] वह धन, वस्तु आदि जो शुभ अवसरों पर सबधियो, आश्रितो आदि को दिया जाता है, बँधा हुआ पुरस्कार • लाख टका अरु भूनका (देहु) सारी दाइ कौं ~ ४० ।

नेग[2] रीति से : राखौ आजु के दिन ~ सा० ल० ३० ।

नेज । १ भालो की, बरछों की • नख ~ आकृति उर लागैं नैंकु न मानत पीर १९८६ । २. भाले हैं, बरछे हैं : बलय ताटक चक्र नख ~ २४५५ ।

नेत[1] निश्चय था, सकल्प था : बहुत दिननि कौ ~ १४६८ ।

नेत[2] एक गहना . कहूँ टाड कहुँ ~ ४११५ ।

नेति[1] न इति, अत नहीं है — यह वाक्य ब्रह्म की अनतता सूचित करने के लिए लिखा जाता है . निगम ~ नित गाऊ २२१ । ~ **नेति** अत नहीं, अत नहीं : जाकौ ~ — स्तुति गावत ३६ ।

नेति[2] वह रस्सी जिसे मथानी मे लपेट कर दूध-दही मथा जाता है : ~ करि अचल कौ सिंधु नायौ ८/८ ।

नेती नेति, न इति, अत नहीं सजत रति सेज जे निगम ~ २६०४ ।

नेम १ प्रेम, निष्ठा रघुपति सौं अब ~ हमारौ ९/२३ । २ नियम : जोग, जग्य, तप, ~, दान, ब्रत ३६५९ । ३ नित्य क्रिया भूख लगी भोजन हम करिहैं ~ सारि तुम लेहु ३०१४ । ~ **धर्म** नेम धरम, पूजा-पाठ, व्रत उपवास आदि . ~ — सौं रहति क्रिया जुत ७६६ ।

नेमहि नियम ही . ~ मैं हरि आई रहैगे १३४५ ।

नेरैं पास, समीप, निकट, नजदीक : आनँद आवत ~ २२१४ ।

नेरें पास, समीप • तुम आए हौ लालन ~ २५१४ ।

नेरौ पास, निकट : बूँद न आयौ ~ ८६९ ।

नेव १ सहायक . ~ अक्रूर, बदत बदी तुम ३६२७ । २ मत्री, नायब काम नृप ससि ~ अवलनि दुर्ग ३७६८ ।

नेवज नैवेद्य, देवता को अर्पित करने की वस्तु, भोग घर घर ~ करौ चँडाई ८१६ । ~ **करि** नैवेद्य बना कर • ~ — धरि साँझ बिहानैं ८९१ ।

नेवति न्योत कर, निमन्त्रण देकर सुर गधर्व जे ~ बुलाये ४/५ ।

नेवते नेवता मे, निमत्रण मे • गोपी जन सब ~ आई १०७२ ।

नेह १ स्नेह, प्रेम • तासौं ~ लगायौ १/७९ । २ प्रेम है पर बस देह, ~ अतरगत ८०४ । ३ प्रेम को : ~ कसौटी तोले ३६४५ । ४ प्रेम मे बहुत दुखित है तेरैं ~ ९/२ ।

नेहनि स्नेह मे, प्रेम मे . गोवर्धनधारी तिनकै ~ ओपी २८६१ ।

नेहरा नेह, प्रेम तहीं सिधारिए जहाँ लाग्यौ नयौ ~ २५४७ ।

नेहा नेह, प्रेम . कैसैं निबहे एक ओर कौ ~ ३२२९ ।

नेहु स्नेह, प्रेम : ग्वालिन प्रगट्यो पूरन ~ १६४० ।

नैंकहुँ १ थोडा भी, तनिक भी : जिनि बिनु स्याम रहत नहि ~ २८०६ । २ कुछ भी • गारा देत सुनति नहिं ~ १६३० ।

नैंकहु जरा भी, थोडी भी . भाव भगति नहिं ~ जानी १/१४९ ।

नैंकु वि० १ थोडा भी, तनिक भो ~ न धीरज धरत जियौ २०७३ । २ थोडी भो . इनकै ~ दया नहीं २२४३ । क्रि०

वि० तनिक, तनिक भी : ~ चितै मुसक्याइ १/४४।
नैंकुहि थोड़ी ही देर : ~ मैं रवि गगन छपायौ ९३०।
नैंकुहुँ थोड़ा भी बाकी नहीं रही ~ अब १८९८।
नैंकुहु तनिक भी, जरा भी काहू कौं ~ न पत्यानी १७४५।
नैंकुहूँ जरा भी, थोड़ा भी, तनिक भी : ~ लाज न आई ३२९।
नैंसुक १ थोड़ा सा . ~ पैया पिएउ सवेरे ४६३ । २ थोड़ी सी . ~ प्रभा प्रगट दिनकर की ३९८० । ३ छोटी मदन-मुरलिका ~ सी जग मोह्यौ ६५६।
नै क्रि० अ० झुक जाता है · फल भार भरि ~ री २४५३। परसर्ग 'ने' · दियो सिरपाव नृपराव ~ महर कौं ५८७।
नैकहि थोड़े ही : ~ मैं अकुलाहिं १८४०।
नैकहुँ तनिक भी, थोड़ा भी : ~ जौ पहिचानत २३५५।
नैंकहुँ तनिक भी, थोड़ा भी . ~ न रहत बिरमि २३५३।
नकुं तनिक भी ~ न तऊ डरात ४३४ । ~ डोलें ईषत स्फुटित हो रहे हैं, थोड़ा हिल रहे हैं : मुरि अधर दुहुँनि के ~ — ११९० ।
नैंकुंहुँ तनिक भी . मोहिं नहीं जिय कौ टर ~ ५२८।
नैंकु वि० १ तनिक से, कुछ · ~ मान कै मोत ३८४२ । २. थोड़ा भी, तनिक भी : धरत न मन मैं ~ डरे १४१ । ३. थोड़ी सी : ~ चूक तें १/१३२ । क्रि० वि० १ थोड़ा भी, तनिक भी · 'सूर' स्याम निसि ~ न सोए २०४१। २ थोड़ी भी . ~ न कीन्ही कानि ३८५७।
नैंकुहुँ थोड़ा भी · ~ करत न चैन २२५१।
नैंकुहु थोड़ा भी पै यह चित ~ न धरै २१०१।
नैंकुहूँ तनिक भी, कुछ भी सुनि सब मेरी बात ~ न मटकी २७९७।
नेकौ जरा भी, तनिक भी बचत नहीं कहुं ~ ८८०।
नैन १ नयन, नेत्र, आँखें ~ अलसात अति ४४० । २ नेत्रों मे : ~ नीर भरि-भरि ढोउ ढारै १० । ३ नेत्रों मे : देखत ~ सबै सुख उपजत १/३० । ~ अकास चढायौ नेत्रों को आकाश मे चढा लेता है, घमण्डी हो जाता है ज्यों निधनी धन पाइ अचानक ~ — १२६६ । ~ न जात उघारे लज्जा या संकोच के कारण आँख खोल कर सामना नहीं किया जाता . सूरदास स्वामी करुनामय ~ — ९/५२ । ~ चढाए अनख या क्रोध से : कापर ~ — टोलत ब्रज मैं तिनुका तोर ३१० । ~ चलावै आँख चमका कर या मटका कर संकेत करती है . सखियनि बीच भर्‌यौ घट सिर पर तापर ~ — ८७५ । ~ चलावति अनख या क्रोध मे देखती हुई कापर ~ — आवति जाति न तिनका तोर ३२० । ~ जुड़ाने नेत्र शीतल हुए, तृप्ति हुई अँचवत तव ~ — १८३ । ~ भरि आए नेत्रों मे आँसू आ गए : देखत गमन ~ — गात कँप्यौ ज्यों केत ९/३९ । ~ रहे लगाइ टकटकी बाँध कर देखते रह गये देखत छवि ~ — २९८ । ~ सिराए आँखें ठंडी हुई, बहुत सुख मिला मिथिला राम लछमन मुख निरखत सरदास कै ~ — ९/१६८ । ~ भए अधिकारी जाइ नेत्र ही वहाँ जाकर अधिकारी हो गये/बने हैं : ~ — २२६३ । ~ भए दोउ सावन दोनों नेत्र सावन हो गये हैं अर्थात् नेत्रों मे सावनकी वर्षा के समान झड़ी लगी रहती है सूर स्याम अनतहिं कहूँ लुबधे ~ — २७१२ । ~ भए जलधारी नेत्र बादल हो गये है अर्थात् नेत्रों से अश्रुधारा बहती रहती है ~ — १/११८ । △ ~ धरी ध्यान किया, नेत्रों मे धारण की सो मूरति नहिं ~ — १/११५।
नैनन नेत्रों . राधा हरि कै ~ मैं १९६३।
नैननि १ नेत्र तो, आँखें तो . ~ न बिचारि परत देखत रुचि बाढी २०१ । २ नेत्रों : यह ~ की टेव परी २३१५ । ३ नेत्रों मे : ~ ध्यान कुमार १८२३ । ४ नेत्रों ने जिन ~ मुख चद बिलोक्यौ ३८५४ । ५ नेत्रों से नीर जु ~ ढारी २०९३ । ६ नेत्रों को · ~ काज समुझावै री २३०८ । ७. नेत्रों के · ~ आगे तैं ५०९ । ~ भरि आख भर कर, खूब अच्छी तरह : जब ~ — देखौं ९/३५ । ~ कौं भाँति नेत्रइस भाँति, आभा मनोहर है ~ — १८११ । ~ सबै निवारी नेत्रों ने सभी का गौरव नष्ट कर दिया/निवारण कर दिया . ~ — ११९७ । ~ हूँ की हानि आँखें ही नहीं हैं : सूरदास सो कहा निहोरौ ~ — १/१३५।
नैन निमेष पलक झपकाना सुर निरखि नारायन इकटक, भूले ~ ।
नैननिहि नेत्रों से . तुरत आइ ~ अर्‌यौ ५९।
नैननिहीं नेत्रों का ही मेरे ~ सब खोरि २३५७।
नैन-बान नेत्र बाण, कटाक्ष मन मृग बेध्यौ ~ सौं १९६४।
नैन-सैन १ नेत्रों का इशारा ~ दै दै सब मटकौं १५२५ । २ नेत्रों के इशारे से ~ समाधन कीन्हौ ७००।
नैना[1] नेत्र . ~ तेरे जलज-जीत हैं ७१८।
नैना[2] राधा की एक सखी का नाम : मैना ~ रूपा २००८।
नैनी नेत्रों वाली, नयनों वाली . जा जल-शुद्ध निरखि सन्मुख है सुन्दर सरसिज ~ ९/११।
नैमिसारण्य नैमिषारण्य, सीतापुर जिले मे स्थित एक तीर्थ स्थान . ~ पुनि जाइ न्हाए ४२२२।
नैरी नगरी, पड़ोस : और बसैहै ~ ३२४।
नैवेद नैवेद्य, देव-अर्पित भोग . धूप दीप ~ साजि कै ३०५०।
नैसनि शत्रुओं, दुष्टों : हित कौ हित ~ कौं नैसें २९२२ ।
नैसी १ अनिष्ट : ऊधौ बात सुनौ इक ~ ३९४९ । २ बुरी,

खोटी : मोकौं री सब ~ हो १९६१ ।

नैसे **वि०** खराब, बुरे . की सुंदर की ~ हैं १७७० । **क्रि०स०** नष्ट करते हैं, सहार करते हैं : प्रेम बस्य दुष्टनि कौं ~ ३९१ । △ **गुन** ~ खराब गुण (काम) (करते हैं) : भूषन लेत गनाइकै औरौ — ~ २१९५ ।

नैसें १ बुरी तरह से खोज परे हैं ~ २३५९ । २ नाश करने वाले : हित कौ हित नैसनि कौं ~ २९२२ ।

नैहौं डालूँगी, पहनाऊँगी तेरैं कठ न ~ १९७५ ।

नोइ (गाय) के पैर मे रस्सी बाँध (कर) जा दिन सबनि पछारि ~ करि मोहि दुहि दई धेनु बसीबन १६८१ ।

नोई गायों को दुहते समय पैर बाँधने की रस्सी . कैसै लै ~ पग बाँधत ४०१ ।

नोखी अनोखी, अनूठी, विचित्र. कैसी बुद्धि रची है ~ २१६० ।

नोखे अनोखे, विचित्र . ~ करि निधि पाई २२४२ ।

नोखैं १ अनोखी : स्याम-रूप-निधि ~ पाई २३०० । २ अद्‌भुत सपत्ति : प्रथमहिं इन यह ~ पाई २३२५ ।

नोन-हरामी नमकहराम, कृतघ्न जो तन दियौ ताहि बिसरायौ ऐसौ ~ १/१४८ ।

नोवत बाँधने लगे, बाँधते हुए ~ वृषभ निकसि गैया गई ७२० ।

नोवै छादती हैं, पैर बाधती हैं : सुकर सुरभि नित ~ ३४७ ।

नौतन नया, नवीन ~ प्रीति जहाँ उपजाई २६४० ।

नौबत वैभव, उत्सव या मगल-सूचक वाद्य (शहनाई और नगाडे) जो पहर-पहर भर बजते हैं, समय-समय पर बजने वाले नगाड़े : ~ द्वार बजावत १/१४१ ।

नौमी नौमी, नवमी । ~ **दसा** बिरह की दस अवस्थाओं मे से नौवीं = (जडता) . नारि ~ — पहुँची २७५७ ।

नौलासी कोमल, मुलायम • धरत भरत भाजत ~ राजत गेंदुक मार २९०७ ।

नौसत सोलह (शृगार) नवमी ~ साजि राधिका सारा० १०६१ ।

नौसरि नौ लडी की (माला) तै कत तोर्‌यौ हरि ~ कौ १४८७ ।

न्याइ[1] **पुं०** १ न्याय, उचित या नियमानुकूल बात . ~ तुम्हरैं मुख साँचैं ४०९५ । २ न्याय से . हम तौ ~ इनौ दुख पावैं ३७३६ । ३ उचित ही, ठीक ही ~ कहत कबि मोहन नाउँ ६६३ । **क्रि० वि०** ठीक ही . हम पै ~ रिसाई १९५९ ।

न्याइ[2] डाल दिया जाय : फदा ~ मराल ३९५६ ।

न्याइहि ठीक ही है ~ नागरि नारि बिरह बस जरति दिया ज्यों बाती २९६३ ।

~ जोग लिखि पठए ३७७७ ।

न्याऊ न्याय (ही है) : कुबरी कौ ~ री जासौ गोबिंद बोलैं ३६४५ ।

न्याति[1] रीति, प्रणाली, ढग : देखत पूजा ~ २६० ।

न्याति[2] जाति . मधुकर कह कारे की ~ ३७५३ ।

न्यान **वि०** नासमझ मानिये मन ~ परि० १/१९९ । **पुं०** अज्ञान, नासमझी : तू करत अब ~ ३६९१ ।

न्यार पृथक्, अलग रहे न तासौं पल भर ~ ९/१७४ ।

न्यारी १ निराली, अनोखी : सबही तैं ~ ३९४ । २. अनोखी है कुंडल मुकुट प्रभा ~ १/६९ । ३ अनोखी होती है, विचित्र होती है प्रीति की कछु रीति ~ ३८८५ । ४ अलग/पृथक् है : ताहू तै यह ~ २१२० । ५ दूर है (पहुँच नहीं है) . निगमनि हूँ तैं ~ २०१६ । ६ अलग हैं . ऊधौ हम कत हरि तैं ~ ४०३६ । ७ अलग हो नैंकु नहीं मोतैं ~ १६९० । ~ **न्यारी** अलग अलग . जोरति सब विधि ~ — ८९२ ।

न्यारीयै विचित्र ही, निराली ही . करै केलि ~ कह न्यारी २४५६ ।

न्यारे **क्रि० वि०** १ अलग, दूर : 'सूर' स्याम ~ ह्वै प्रिय छबि २१९८ । २ अलग-अलग : इक इक ~ बिहरत २८८८ । ३ अलग ही . षट् रस व्यजन ~ ४९४ । ४ अलग हैं . पदुमपत्र जल ~ ३७५४ । ५ पृथक् (होकर) : 'सूर' स्याम हम तै कहुँ ~ ३८६८ । ६ अलग हो पाते • ये कहुँ नैंकु न ~ १६०५ । **वि०** १ विचित्र है • यह तौ औरै ~ ३८७५ । २ विचित्र हैं • 'सूर' स्याम गुन ~ ३७६२ । ३. नाना प्रकार के, अनेक या नये-नये : करत कौतूहल ~ १६१८ ।

न्यारैं *अलग* । ~ **हूजौ** *ओट/अलग हो रहो नैननि तै अब* ~ — २५४१ ।

न्यारो **क्रि० वि०** अलग, दूर : ~ करि गयद तू अजहूँ । **वि०** अनोखा, निराला • कमल नैन काधे पर ~ पीत बसन फहरात ।

न्यारौ १ अलग : ~ जूथ हाँकि लै अपनौ ११६ । २. दूर है : वह सुख मोतैं ~ १०६५ । ३ अलग हो गये सूर बधन तैं ~ ९/९७ ।

न्याव न्याय : कौन ~ तुम कहत जो इनकौं २९७० ।

न्यास अर्पण मुद्रा ~ अग आभूषण ३५५१ ।

न्यौछावरि **स्त्री०** न्यौछावर . लेत बलाइ करत ~ ४१४८ । **क्रि० अ०** न्यौछावर होकर . ~ अचल फहरानि १८८० ।

न्यौछावरी न्यौछावर रूप मे : मुक्ति मुक्ति ~ पाई 'सूर' सुजान ४१८८ ।

आपनेहि आन्यौ १६६२।

न्यौत्यौ निमन्त्रित किया, न्योता दिया : इच्छा करि मैं वाम्हन ~ २४९।

न्हवाइ नहला कर, स्नान करा कर जननी उबटि ~ (सिसु) क्रम सौं लीन्हे गोद ४२।

न्हवाये नहलाया, स्नान कराया . गगा व्यास ~ सारा० ८२८।

न्हवायौ नहलाया, स्नान कराया . जग्य कराइ प्रयाग ~ ६/८।

न्हवावत नहाते, स्नान करते : काढत गुहत ~ जेहि नागिन सी भुइ लोटी १७५।

न्हवावैं स्नान कराते थे · मलि मलि आपु ~ परि० १/१८८।

न्हाइ १ स्नान करता है, नहाता है गग प्रवाह माहिं जो ~ ८/९। २ लथपथ होंगे दस सिर स्रोनित ~ ९/७७। ३ नहा कर, स्नान कर तब ~ नद भए ठाढे २७।

न्हाइयैं स्नान करें : आवहु रे मिलि ~ परि० १/१३४।

न्हाई स्नान किया नेम सहित जुवती सब ~ ७९९।

न्हाई नहा कर, स्नान कर · ~ चली अतुराई २७१९।

न्हाउ नहाओगी, स्नान करोगी तजि सर निकट दूरि कित ~ ९/३४।

न्हाए स्नान किया . नैमिसारण्य पुनि जाइ ~ ४२८८।

न्हाएँ स्नान करने से : कोटिक तीरथ ~ २/६।

न्हात पुं० स्नान : सुधि रह गई ~ की तेरैं ५१८। क्रि० अ० १ नहाती थी, स्नान करती थीं ~ जमुन कैं तीर १५६०। २ नहाने लगे, स्नान करने लगे : रिपु कैं स्रोनित ~ ९/१४७। ३ स्नान करता है प्रात जो ~ १/२२२। ४ स्नान करते हैं : चढे खराऊँ ~ ३८२७। ५ स्नान करते हुए ~ भजे कुस टारी १/१२२। ~ **सुख करत** सुख-पूर्वक स्नान करते हुए ~ — अति बढी प्रीति ११५७।

न्हातहु नहाते समय भी, नहाते हुए भी। ~ **बार** नहाने समय : जनि ~ — खसै ३१७०।

न्हाति स्नान कर रही हैं . जब जान्यो ये ~ सबै १७६०।

न्हाति स्नान कर : ~ रही तब जौन जौन ही १९७६।

न्हाते स्नान करते : क्रम क्रम करि कै ~ ३१७५।

न्हातैं नहाते समय बार खसी मत ~ ३५४७।

न्हान पुं० १ स्नान, नहान · ~ जान की सुरति विसारा २८२८। २ स्नान के ~ काज सो सरिता गयौ ६/८। क्रि० अ० स्नान करने कब की गई ~ तुम जमुना १९२१।

न्हाहि स्नान करेंगे . जहाँ रहै तहँ कबहु न ~ १२/३।

न्हाय स्नान कर, नहा कर : दसरथ राय ~ भोजन को बैठे सारा० १८४।

न्हाये स्नान किया, नहाया · प्रयाग त्रिबेनी ~ सारा० ८२२।

न्हायौ स्नान किया है . कलिमल हरे जू इहिं जल ~ २९१३।

न्हावै स्नान करता है . काग सरोवर ~ २/१३।

न्हाहु १ स्नान कर लो : मेरे कहैं ~ २६५०। २ स्नान करोगी : तजि सर निकट दूरि कित ~ ९/३४।

न्हैयै स्नान किया · चलौ सकल कुरुखेत, तहाँ मिलि ~ जाई ४२७५।

प

पक कीच, कीचड आँगन ~ राग तन सोभित ११९।

पकज कमल (नेत्र) : दधि पर कीर, कीर पर ~ १७२।

पंकज-कोस कमल कोष को : बात बस सुमृनाल जैसें प्रात ~ ३५०।

पकज-रस-बस कमल के रस के वस मे एक समय ~ है ३९८०।

पंकरुह कमल : मुख, लोचन, पद, पानि ~ गुर गति मनहुँ मराल विहगा २४५४।

पंकति पक्ति रेखा ~ भँवर विसेखे परि० १/५९।

पख पर, डैने, पख हस उज्ज्वल ~ निर्मल अग मलि मलि न्हाहि १/३३८। ~ **उपाई** पख जम आये · कीरा तनु ज्यों ~ — ९२३।

पखा पख (पखा) के सूर स्याम तेरैं बस ऐसैं ज्यों ~-बस पान २०६८।

पखि पछी . रे पापी तू ~ पपीहा ३३३८।

पँखियाँ पाँखें, पलकें लगति नहीं पल ~ ३२४०।

पखी पछी ~ प्रान हरै ३२८७।

पँखुरी पखुडी . अँखियाँ हुतीं कमल ~ सी ३४०४।

पग १ पगु, लँगडा : तातैं विरमि रहे रघुनन्दन करि मनसा-गति ~ ९/८३। २ स्तब्ध, बेकाम : गति ~ ३६२६।

पगु १ लगडा जाकी कृपा ~ गिरि लघै १/१। २ विवश हम ~ कीन्हौ ३०८९। ~ **भई** क्षीण या हीन हो गई : मन गति ~ — ब्रज जुवती ११८२।

पच[1] पचम राशि (सिंह) जो कटि का उपमान है, कटि . चौथ निगार, ~ कर करि बुध सा० ल० ७१।

पच[2] पाच : ~ तत्व प्रकृति परे ३८९९।

पच[3] १ पाँचों इन्द्रियों . है आधीन ~ तैं न्यारे २३७९। २ पाँचों ज्ञानेन्द्रियों को . आपुन गयौ ~ सग लीन्हे २२२५। ~ **की भीख** सर्व साधारण के आशीर्वाद पर, जनता की कृपा पर : ~ — सूर बलमोहन ४५५। ~ **सुहातौ** जो पचों (सब) को अच्छा लगे सं मेरी कबहूँ नहिं कीजै,

कीजे ~ — १/३०२।

पच कौ उपमेय पाँचवा नक्षत्र (मृगशिरा) मृग का उपमेय, नेत्र, आँख : ~ लीनौ दाव आपुन तौर सा० ल० शेष ४।

पच ग्रह सूर्य से पाँचवाँ ग्रह = बृहस्पति अर्थात् जीव : ~ राखनि बिचारौ वहै सारग एक सा० ल० ५९।

पचजन एक असुर का नाम . पर ~ शख तहँ लीन्हो मारि असुर अति नीच सारा० ५४०।

पचतत्व पाँच तत्त्व (जल, पृथ्वी, वायु, अग्नि, आकाश) : ~ तें जग उपजाया ३।

पंचतिय पाँच + तीन = आठ : उदित जराउ ~ रवि ससि किरन सु तहा दुरात २४६५।

पंचनि[1] पचों ~ मैं मरजादा जाई १७७९।

पचनि[2] पचविकार (काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह) : ~ के हेत कारन यह मन १/७३।

पच भूत पचभूत (आकाश, जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु) : ~ सुन्दर प्रगटाये २/३६।

पचम पचम सुर मे ~ पच सब्द करि साजे सारा० १०७२।

पंचमौ पाँचवों वार, बृहस्पति लाभ थान ~ कामधुज सा० ल० ८१।

पच संधान कामदेव के पाच वाण हौं प्रथम ~ ३२६३।

पंच-सब्द-धुनि पाँच प्रकार के शब्दों की ध्वनि (वेद ध्वनि, वन्दी ध्वनि, जय ध्वनि, शख ध्वनि और निशान ध्वनि) : ~ वाजत ६०७।

पँच-सर-सायक कामदेव के वाण : जावक चरन ~ १७०३।

पंचानन जिसके पाँच मुख हो, शिव चतुरानन ~ सहसानन ध्यावैं १२१८।

पछि पक्षी : चारा कपट ~ ज्यौं फदत ९२४।

पछिनहूँ पक्षियों के भी ~ मन भाए ३३०८।

पंछिनिपति पक्षियों का राजा : नर नारी पति, ~ ४५३।

पंजर घेरा . सर ~ रोप्यो चहुँ दिशि तें जहाँ पवन नहि जाइ सारा० ८५१।

पंजा पजे का (कपट) : ~ पथ प्रपच नारि पर भजत सारि फिरि मारी १/६०।

पंडु पाडव : ~ कुल-उद्धरन द्रौपदी-उद्धरन।

पडु सुत पित तात पाडु के पुत्र (कर्ण) के पिता (सूर्य) के पुत्र यम . ~ हो कै मा० ल० ५३।

पथ मार्ग, रास्ता, राह। △ **एक ~ द्वै काज** एक कार्य करने से दोहरा लाभ : ग्यान बुझाइ खवरि दै आवहु — ~ — ३४३२। ~ **गहो** चले जाना · रहौ आजु पुनि ~ — ९/३३।

पंथ-अकास आकाश-मार्ग : ~ सायकानि छायौ ९/१४१।

पंथ पिता पथ नाम वेद उसका पिता ब्रह्मा . ~ आसन सुत सोभित १२०२।

पथ पिता आसन पथ नाम वेद उसका पिता ब्रह्मा का आसन हस = सूर्य · ~ सुत सोभित १२०२।

पंथ पिता आसन सुत वेद के पिता ब्रह्मा का आसन हस = सूर्य का पुत्र सुग्रीव = सुन्दर ग्रीवा : ~ सोभित १२०२।

पंथ-वन वन पथ . अति मृदु चरग ~ विहरत ९/४३।

पथ-रिपु मार्ग की शत्रु (नदी) यमुना ~ दिन परस सब दिन सा० ल० शेष ५।

पंथ सत्रु पति सुत मार्ग की शत्रु नदी (यमुना) के पति (श्रीकृष्ण) के पुत्र प्रद्युम्न, कामदेव : ~ सुधार सर सा० ल० ५१।

पथहू रास्ते मे भी, रास्तों मे भी : बहुत ~ आयौ नाहिं ५/४।

पथान रास्ता, मार्ग अधर मधु लोभ ~ चितवत चकित २४५३।

पथी पथिक, राही · ~ इतनी कहियौ बात ३१७१।

पद्रह तिथि पूर्णिमा : ~ भरि वरनिहौं २९१४।

पँवारे हटाये, दूर किये, फेंके हुए बिंव ~ लाजहीं, हरषत, वरखत फूल २६१३।

पंषि पक्षी : मन तौ रह्यौ ~ सूरज प्रभु ३२८०।

पँसारिनि पसारिन की : ताकैं बुद्धि ~ १४७३।

पइयां पैरों सवै परति हैं ~ परि० १/२०१। ~ **लागौं** पैर लगती हू/पड़ती हूँ . ~ — करौं निहोर २७६४।

पइये १ पायेंगे सूर स्याम देखैं सच्च ~ ३५८६। **२** मिलता, प्राप्त होता · जहँ आदर भाव न ~ १/२३९।

पई पाया, प्राप्त किया, मिला : हम दुख सब भाँति ~ परि० १/१३५।

पईठ प्रवेश करते हैं, पैठते हैं : वदन-पयोधि ~ २३७२।

पक[1] पकवान, पाक : कटुवा करत मिठाइ घृत ~ ८९२।

पक[2] पके हुए . है ~ बिंव, वतीस वज्रकन २११२।

पकर पकड कर , लै चलि ~ बाँह राधा पै सारा० ९१०।

पकरत पकड़ते अवलनि रवकि रवकि ~ हौ १४६८।

पकरति पकड़ती हैं . गोपी सव मिलि ~ तुमकौं १४५३।

पकरन १ पकड़ना : कर सौं ~ चाहत ११०। **२** पकड़ने, पकड़ने के लिए · मैं जब चली सामुहैं ~ ३२२।

पकराइ पकड़वा कर : अपनें वल ~ २३९३।

पकराई पकड़ाई, पकड मे (आ गये) : जानी विकल बहुत जननी को हरि ~ दीनी सारा० ४५०।

पकराए पकड़ाया · हलधर ~ तिन्ह जाइ २९०६।

पकरावै पकड मँगाया . दुष्ट दुरजोधन सभा माहिं ~ १/१२२।

पकरि १ पकड कर : करहु पार लै ~ पियहिं कर २४५५। **२.** पकड · हाथ ~ कै लियौ निकारि ९/१७४।

पकरिबे पकड़ने (के लिए) मुख प्रतिबिम्ब ~ कारन १०२।

पकरिवै पकडने को या के लिए . बिम्ब ~ थावत ११० ।
पकरिहौं पकड़ूँगी · चोरी करत ~१७४३ ।
पकरी १ पकड लिया है : यह दृढ करि ~ ३९८८ । २. पकडा : उडति भँभीरी ~ जाइ ३/५ । ३ पकडा है . सगुन टेक ~ ३६६३ ।
पकरे १ पकड लिया : जात ही उन तुरत ~ २२७१ । २ पकड लिये हैं दृढ करि ~ १/१७७ । ३ पकडे गये · लोभ जाग ~ २२९९ ।
पकरेउ पकड लिया . ~ पूँछ फिराय मारा० ५१२ ।
पकरै पकडे हुए जद्यपि मलय वृच्छ जड काटै कर कुठार ~ ~ १/११७ ।
पकरैगो थामेगा · अपनु करि करि कुठाँव ~ १/७५ ।
पकरौंगी पकड़ूँगी : अस वाहु धरि कर ~ २१४२ ।
पकरौ पकडते हो · ~ साह चोर कौ छाँडौ ३९०९ ।
पकर्यो पकडा एक हाथ पीताम्बर ~ मारा० १०६३ ।
पकर्यौ पकड लिया हरि जू ताकौं ~ धाइ ७/२ ।
पकवानैं पकवान वहु-वहु भाँति करति ~ ८९१ ।
पकाए पका दिये . ते तुम आनि ~ ३७८१ ।
पकौरा घी या तेल से तल कर बनायी गई वेसन, उर्द या मूग की पीठी की बडी मूग ~ पनौ पतवरा ३९६ ।
पकौरी पकौडी पानौरा राइता ~ १२१३ ।
पख पास मे, कनपटी पर : भाल तिलक ~ स्याम चखोडा जननी लेत बलाइ १३३ ।
पखराइ धुलाकर · चरन ~ कै सुभग आसन दियो २९५६ ।
पखराए धुलाया · तब कछु कछु सुख ~ १८३ ।
पखरायो, पखरायौ धुलवाया उठहु लाल कहि मुख ~ २३०, उत्तम विधि माँ मुख ~ ६०९ ।
पखाउज पखावज नामक एक वाद्य यत्र बीना झाँझ-~ आउज ९/७५ ।
पखान १ पत्थर की · देखे बनै ~ महूरी ३८४७ । २ पाषाण मे . जैमैं मधु ~ लपटान्यौ १२९७ ।
पखानन पत्थरों पर · टेरत चढे ~ ३९४६ ।
पखाननि पत्थरों को : उदधि ~ तारीं ९/१०८ ।
पखानौ पत्थर भी जल पर तरत ~ ९/१२१ ।
पखारत धोते-धोते पचत ~ छाहीं २/२५ ।
पखारन धोने हौं पावन प्रभु-पाइँ ~ ९/१७१ ।
पखारि धोकर निज कर चरन ~ ९/१७१ ।
पखारी १ धोकर अरु अँचयौ जल वदन ~ २४१ । २ धोये निज कर चरन ~ १/१५ ।
पखारे धोया . सुर स्याम भोजन करिकै सुचि जल सौं वदन ~ ४१९ ।
पखारैं पखारने से, धोने मे मुख पैहै पद हरषि ~ २८२२ ।
पखारौ धोओ : झारी कै जल वदन ~ २०८ ।
पखार्यौ धोया : माता लै जल वदन ~ ४०७ ।
पखावज एक वाद्य यत्र, मृदग : ताल - ~ चले बजावत १/१५१ ।
पखियाँ पख · जाकैं सीस मोर ~ १३८५ ।
पखी पख : मोर कि पीड ~ री २०५७ ।
पखेरू १ पछी . लोचन भए ~ माई २२७२ । २ पछी को वाधिहैं क्यों मन ~ ३९९७ ।
पखौवा पख मुख मुरली सिर मोर ~ ४२८९ ।
पग पैर, पद : दुर्वासा रिषि कौ ~ मारि ६/७ । △ ~ **धारत** (घर) पधारे कौन जाति अरु पाँति बिदुर की ताही कै ~ — १/१२ । ~ **धारी** पदार्पण किया : व्रत-पूरन ~ ७७८ । ~ **धारे** १ चल पडे : गज कारन ~ — १/२५ । २ पदार्पण किया अब ऊधौ ~ — ३५९४ । ~ **धार्यौ** १ आए दुरवासा ~ — १/१०९ । २ चल दिये . बन परसुराम ~ — ९/२८ । ~ **पग पर** जरा-जरा सी दूरी पर ~ — परत कर्म-तम कूपहि, को करि कृपा बचावै १/४८ । **फूँकि-फूँकि धरती ~ धारौ** बहुत समझ बूझ और सतर्कता से जाओ — ~ — १४९७ ।
पग चतुराई पैरों की चतुरता मुख हेरि कै करि ~ ६६ ।
पग-छाहीं पग चिह्न, पैरों की छाप जहँ-तहँ ~ १०९६ ।
पगडोरी पैर का बधन जनु उडि चले विहगम के गन कटे कठिन ~ ४२१६ ।
पगन पैरों नगन ~ ता पाछैं गयौ ९/२ ।
पगनखनि पैर के नाखून से क्यों धरती ~ करोवत २४८४ ।
पगनि १ पैरों (तले) वार-वार कहनि ~ पग आन की २०३९ । २ पैरों मे ~ जेहरि लाल लहँगा १०४३ । ३ पैरों मे डगनि डगमग ~ डोलत १८४ ।
पग-नूपुर पैरों के घुँघरू छुद्र घटिका ~ जेहरि १५४० ।
पगरा सवेरा, सुबह निमि जागत मोर्को भयौ ~ ३३०७ ।
पग-रिपु पैरों का शत्रु, काँटा ~ लगत सघन घन ऊपर मा० ल० १० ।
पग-रेख पद-चिह्न कह्यो पृथी धनि जहँ ~ ५/३ ।
पगरेनु चरण धूलि जब ~ छुवाई ९/४० ।
पगरो पग, कदम कोनैं दियौ अवै धो ~ १४६४ ।
पगा पगहा (रस्सी) कठनि मेलि ~ ९/११४ ।
पगाए युक्त हैं, भरे हैं रँग-रँग नैन ~ हो २५५७ ।
पगाने रीझ उठते हैं, पग जाते हैं . वह गावति ये सुनत ~ १३१० ।
पगि १ अनुरक्त हुआ, मग्न हुआ विषय भोग ही मैं ~ ४/१२ । ~ **रहे** व्याकुल हुई जहँ-तहँ गई, विरह सब

~ — १११९ । ~ रहे पड़े हुए थे . इहीं सोच सब ~ — कहूँ नहीं निरवार ५८९ ।
पगिया पगडी सिर ~ बीरा मुख सोहैं २८७५ ।
पगी आसक्त हो गई ~ रस कृष्ण बिनु कछु न भावै ९९४ ।
पगी (प्रेम मे) पगी है, डूबी है, भीगी हुई है • अग-अगहि ~ १९२८ ।
पगु पैर । △ ~ **धारे** १ आए, पैर रखा तव निज धाम स्याम ~ — २५२७ । २ जा पहुँचे • यह कहि कै अनत हि ~ - २४७८ । ~ **धारैं** आये क्यौ हरि इत ~ — ३५४८ ।
पगे अनुरक्त हुए अग-अग अवलोकन कीन्हौ कौन अग पर रहे ~ १७८१ ।
पगौ रमा है, पग गया है मन उन हाथ ~ री १३८३ ।
पघिलाइहौं पिघलाऊँगी ऐसी कठिन त्रिया की प्रकृतिहि करहीं कर ~ २७६० ।
पघिलि पिघलकर • मिले ~ है मेन २२५१ ।
पचए पानवे • ~ बुध कन्या कौ जौ है ८६ ।
पचत थक जाता है ~ पखारत छाहीं २/२५ ।
पचासक पचासो, अनेको कोऊ कहौ बनाइ ~ २८९२ ।
पचास तिति पचास पचास 'ति ति' सौति, सौत : लगी फिरत ~ सा० ल० २० ।
पचावनौ जड़ाऊ : वहु मनि पचित ~ २८३२ ।
पचि थककर, हैरान होकर मैं ~ जोग बह्यौ ४१५२ । ~
पचि ज्यौं त्यौं काचौ दूध पियावत ~ — १७५ । △ ~ **मुए** थक गए ब्रह्मा हू ~ — ध्यान करि ३६६६ । ~ **रहीं** हार गई • ~ — मन ग्यान करि १८२० । **रचि** ~ बनाते थक गया — ~ भवन बनायौ २/३० । ~ **हारि** १ थक हारी • कहि ~ — रही निसि बासर २३५४ । २ थक कर हार (गई) . रहीं प्रेम ~ — ६२८ । ३ प्रयत्न करके हार (गये) रहे ~ — नहि कोउ टारि सक्या ९/१३५ । ४ तग आ गई सुनहु महरि तेरे या सुत सौं हम ~ — रहीं २९१ । ~ **हारी** १ प्रयत्न करके थक गई ~ - कैसेहुँ नहिं छूटत १०७३ । २ बस हार गई : मैं बरजति बरजति ~ — २२५० । ~ **हारे** १ थक गया, हार गया . सूर स्याम कहि कह ~ — २४२२ । २ हार गये ~ — सब कोटि कला कर २७७३ ।
पचित जडित, जडे हुए : वहु मनि ~ पचावनौ २८३२ ।
पचिबौ हार, हताशा • हाथ रहैगौ ~ १/५९ ।
पचिहार थककर हार गये कछु नहिं चलत खिसाय गये सव रहे वहुत ~ सारा० २१८ ।
पचिहे पचगी यह सपदा कहौ क्यों ~ २३२७ ।
पचिहौ हैरान होंगे, माथा पच्ची करनी पडेगी : मोकौ मुक्ति बिचारत हो प्रभु ~ पहर घरी १/१३० ।
पची हार गई, थकीं : छहों रितु तप करि ~ हम १२९८ ।
पची[1] जड़ाव, पच्ची • बिद्रुम फटिक ~ कचनि खचि ४१६५ ।
पची[2] १ थक गई, हैरान हो गई बाँधि ~ डोरी नहिं पूरै ३९१ । २ परीश्रम किये डाल रहे हैं बिधि बेकाज ~ २४४८ ।
पचीस पच्चीस (दोष) पाँच-~ साथ अगवानी १/१४३ ।
पचे हार गये : सब नृप ~ धनुष नहिं टूट्यो सारा० २८८ ।
पचै परिश्रम करेगा, थक मरेगा : बिधि पुनि पुनि न ~ री २८२१ ।
पचैयै पचा लेती हू कहियै कहा कहत नहि आवै, सोचनि हृदय ~ ४०३३ ।
पच्छ[1] १. पख • केकी-~ मुकुट सिर ५०६ । २. पखों को . ~ पुच्छ सिर धारि सिखनि के ३६२४ ।
पच्छ[2] पक्ष, पखवारा . आठें कृष्ण ~ भादों ३१ ।
पच्यौ १ प्रयत्न किया, हैरान हुआ : वहुत ~ अब ताई १/१४७ । २ हार गया • ~ करि उपदेस ४१४० । △ **मरत** ~ मारकर थकाते हो • इतनी कहौ, सूर पूरौ दै, काहे — ~ १/१७४ ।
पछ पख . सिर मुकुट सीखड ~ तडित नहिं पीत पट छबि रमाला २०६१ ।
पछतान पछताने नैन अब लागे ~ ३२४८ ।
पछानौं पहिचानूँ : मैं कौन भाँति तुमकौ ~ ४१८३ ।
पछमनौ पीछे धरि न सकत पग ~ १/३२५ ।
पछार पछाड । △ **खाइ** ~ पछाड खाकर, बेसुध होकर : पर्यौ धरनि पर — ~ १/२८६ ।
पछारि पछाड कर मार्यो नाग ~ ३०५८ । △ **खाइ** ~ बेसुध होकर परी धरनि पर — ~ ६/५ ।
पछारी[1] पछाड दिया, मार दिया . सूर स्याम पूतना ~ ५१ ।
पछारी[2] सूप आदि से फटक कर साफ की हुई, फटकी हुई कनक-फटक धरि फटिक ~ ३९६ ।
पछारे पछाडे, मारे . कसराइ के मल्ल ~ ३०९८ ।
पछारैं पछाडेगा, मार डालेगा कस गहि केस ~ ५८९ ।
पछारो पटक दिया : धरणी माँझ ~ सारा० ५२७ ।
पछारौं १ पछाड दूँ, मार डालूँ एकहिं एक ~ ९/१०८ । २. पछाडूँगा जब धरि केस ~ १५१३ ।
पछार्यौ पछाड दिया भूतल माहिं ~ १३८७ ।
पछाहे पक्ष, पख . बाँधे मोर ~ परि० १/१७२ ।
पछिताइ १ पछताकर, पश्चात्ताप कर . मन मन सोच करत ~ ८८७ । २ पछताती है, पश्चात्ताप करती है कर मीजति ~ ९/८३ । ३ पछताते हैं . स्याम यह बार बार कहि मनही मन ~ ४०९६ ।

पछिताई १ पछताती रही : यहै कहति पुनि पुनि ~ २०४१। २. पछताते हैं कहि कहि नद महर ~ ३१६२।

पछिताउँ १. पछताऊँ · मैं काहैं उनका ~ २२५९। २. पछताती हू : सूर आज बहुतै दुख पाए मन कारन ~ १९३५। ३ पश्चात्ताप होगा, पछताऊँगा : तऊ न मन ~ १६९२।

पछिताउ पश्चात्ताप है, पछतावा है : तातैं मोहिं ~ १३१६।

पछिताए क्रि० अ० पछताकर, पश्चात्ताप करके : फिरि ~ मरिऐ परि० १/१३६। पुं० पछताना, पश्चात्ताप करना : हमहिं भए ~ ३६०३।

पछिताएँ पश्चात्ताप करने से : होत कहा अब के ~ १/२९९।

पछितात १ पछताता है सुमिरि सुमिरि ~ मढा वह ४१८२। २. पछताती हैं, पश्चात्ताप करती है : बार बार ~ यहै कहि ३५३४। ३ पछताते हुए · चले नद ~ ३१२४। ४ पछताते हैं जोग कहि ~ मन मन ३८८२। ५ पछताते हो. कहत नहीं ~ ३९२२। ६ पश्चात्ताप करती हू मैं ~ जबहिं सुधि आवति २३५२।

पछितातिं पछताती हैं नैन लै गए ~ मन कौं २२४९।

पछिताति १. पछताती : कहाँ गए तिनहिं ~ है री १९५१। २ पछताती हू · अति दुख में ~ यहै १८६७। ३. पछताती हैं नारि सब ~ २८७६। ४ पछताती है, पश्चात्ताप करती है : कर मीडत ~ विचारति ३२६५। ५ पछताती हो. अब काहें ~ राधिका १८८१। ६ पछता रही थीं, पश्चात्ताप कर रही थीं : सूर सीय ~ यहै कहि ९/५९।

पछितातो पछताती हो : तौ अब कत ~ ४०६३।

पछितान पछताना, पश्चात्ताप करना। **लागे** ~ पश्चात्ताप करने लगे अब — ~ २३१२।

पछितानीं पछताती हूँ . यह सुनि सुनि ~ २४०२।

पछितानी १ दुखी हुई यह कहि कहि नागरि ~ १७१२। २ पछताती है, पश्चात्ताप करती हैं · मधुकर प्रीति किये ~ ३९८७। ३ पछताती है तुमही मौं कहि कहि ~ ३९४२। ४ पछताती हो काहै का ~ १६८५। ५. पछताने लगीं : यह कहि सब ~ ११०६। ६. पछताने लगी · साँटी देखि ग्वालि ~ ३४८। ७ पश्चात्ताप करती · जात बहुत ~ री १८७५।

पछिताने पछताने से, पश्चात्ताप करने से · होत कहा अबकें ~ ३७५१।

पछितानैं पश्चात्ताप करने से, पछताने से · होत कहा अब कै ~ १/२९०।

पछितानैं पछताती हैं . हाथ मीजि ~ ३०८०।

नगर मैं तब मन मैं ~ ४१९१। ३ पछता रहे थे, पछतावा ही हाथ लगा : पाछे के लोगनि ~ ९१९। ४ पछता रहे हैं : लियौ न नाम कहूँ धोखै हूँ सूरदास ~ २/३०। पु० पछतावा, पश्चात्ताप . मन मन ~ रहि जैहै २५८०।

पछितावति पछताती है मुख चूमति यह कहि ~ ३९०।

पछितावन पछतावा। **लागी** ~ पछताने लगी · अब — ~ ३६६०।

पछितावैं १. पछताती हैं : यह कहि कहि ~ २३२४। २ पश्चात्ताप करें . कह नैननि ~ १८३०।

पछितावै १ पछताता है, पश्चात्ताप करता है : वृद्ध भए मूरख ~ ७/२। २ पछता रहे हैं . पदमासन उतरि नाल ~ ६५।

पछितावौ पछतावा, पश्चात्ताप . अब मोहिं आवत यह ~ ३७४७।

पछिताहि १ पछताती हैं . यहै कहि ~ २२७१। २ पछता-पछता कर : मरहिं जौ ~ २३४८।

पछिताहीं १ पछताती हैं · ब्रज तरुनी ~ १११३। २ पछताते रहे, पश्चात्ताप करते रहे . यह कहि कहि ~ ४१५७। ३ पछताने लगे : राधा जिय यह जानि कै आपुन ~ २०७४।

पछिताही पछताती है वृथा तरुनि ~ २२९६।

पछिताहु १. पछताओगी : नातरु वन बसिके ~ ९/३४। २. पछताओगे : फिरि पाछें ~ ३८०९। ३ व्याकुल हो रहे हो : जिय कहा ~ ३१२१।

पछिताहुगे पछताओगे . 'सूर' प्रभु ~ तुम, अतहूँ गए गात ४०७४।

पछितैया पश्चात्ताप करें · 'सूरदास' प्रभु की यह लीला हम कत जिय ~ ४२८।

पछितैयै पछताता है सोचि हृदै ~ ३९०८।

पछितैहै पछतायेगा : सठ हठ करि तू ही ~ ८०४।

पछितैहौ १ पछताओगी तब मन-मन तुमही ~ १३३२। २. पछताओगे : फिरि ~ देखि उघारी १/२४८।

पछियावत पीछा करता है : तबहिं ~ परि० १/२०।

पछोरी पछोरी, साफ की : जिन हठि मुसी ~ ३५५३।

पछोरे पछोरे, साफ किये। △ **फटकि** ~ अच्छी तरह परीक्षा की . तुम मधुकर निर्गुन निज नीकें देखे — ~ ३७६३।

पछोर्‌यौ पछोरा, साफ किया . △ **फटकि** ~ फटक कर पछोड दिया, हवा मे उडा दिया, त्याग दिया · लोक लाज सब — ~ १६६१।

पजरत जलता है, दहकता है, सुलग रहा है . ~ धुजा, पताक,

~ — १११९। ~ रहे पड़े हुए थे इहीं सोच सव ~ — कहूँ नहीं निरवार ५८९।

पगिया पगडी सिर ~ बीरा मुख सोहैं २८७५।

पगी आसक्त हो गई ~ रस कृष्न बिनु कछु न भावै ९९४।

पगी (प्रेम मे) पगी है, डूबी है, भीगी हुई है · अग अगाहि ~ १९२८।

पगु पैर। △ ~ धारे १ आए, पैर रखा तव निज धाम स्याम ~ — २५२७। २ जा पहुँचे यह कहि कै अनत हि ~ - २४७८। ~ धारैं आये क्या हरि इत ~ — ३५४८।

पगे अनुरक्त हुए अग-अग अवलोकन कीन्हौ कौन अग पर रहे ~ १७८१।

पगौ रमा है, पग गया है मन उन हाथ ~ री १३८३।

पघिलाइहौं पिघलाऊँगी ऐसी कठिन त्रिया की प्रकृतिहि करहीं कर ~ २७६०।

पघिलि पिघलकर · मिले ~ है मैन २२५१।

पचएे पाचवे : ~ बुध कन्या कौ जौ है ८६।

पचत थक जाता है ~ पखारत छाहीं २/२५।

पचासक पचासों, अनेकों कोऊ कहौ वनाइ ~ २८९२।

पचास तिति पचास पचास 'ति ति' सौति, सौत लगी फिरत ~ सा० ल० २०।

पचावनौ जड़ाऊ बहु मनि पचित ~ २८३२।

पचि थककर, हैरान होकर मैं ~ जोग बह्यौ ४१५२। ~ पचि ज्यों त्यौं काचौ दूध पियावत ~ — १७५। △ ~ मुए थक गए ब्रह्मा हू ~ — ध्यान करि ३६६६। ~ रहीं हार गई · ~ — मन ग्यान करि १८२०। रचि ~ बनाते थक गया — ~ भवन बनायौ २/३०। ~ हारि १ थक हारी : कहि ~ — रही निसि वासर २३५४। २ थक कर हार (गई) · रहीं प्रेम ~ — ६२८। ३ प्रयत्न करके हार (गये) रहे ~ — नहि कोउ टारि सक्या ९/१३५। ४ तग आ गई सुनहु महरि तेरे या सुत सो हम ~ — रहीं २९१। ~ हारी १ प्रयत्न करके थक गई · ~ - कैसेहुँ नहिं छूटत १०७३। २ बस हार गई मैं बरजति बरजति ~ — २२५०। ~ हारे १. थक गया, हार गया · सूर स्याम कहि-कह ~ — २४२२। २ हार गये · ~ — सब कोटि कला कर २७७३।

पचित जडित, जडे हुए बहु मनि ~ पचावनौ २८३२।

पचिबौ हार, हताशा हाथ रहैगौ ~ १/५९।

पचिहार थककर हार गये कछु नहिं चलत खिसाय गये सव रहे बहुत ~ सारा० २१८।

पचिहे पचेंगी यह सपदा कहौ क्यों ~ २३२७।

पचिहौं हैरान होंगे, माथा पच्ची करनी पडेगी मोकौ मुक्ति बिचारत हौ प्रभु ~ पहर घरी १/१३०।

पची हार गई, थकीं : छहा रितु तप करि ~ हम १२९८।

पची[1] जडाव, पच्ची बिद्रुम फटिक ~ कचनि खचि ४१६५।

पची[2] १ थक गई, हैरान हो गई बाँधि ~ डोरी नहिं पूरै ३९१। २ परीश्रम किये डाल रहे हैं बिधि बेकाज ~ २४४८।

पचीस पच्चीस (दोष) पाँच-~ साथ अगवानी १/१४३।

पचे हार गये · सव नृप ~ धनुष नहिं टूट्यो सारा० २८८।

पचै परिश्रम करेगा, थक मरेगा : बिधि पुनि पुनि न ~ री ७८२१।

पचैयै पचा लेती हूँ · कहियै कहा कहत नहि आवै, सोचनि हृदय ~ ४०३३।

पच्छ[1] १ पख : केकी-~ मुकुट सिर ५०६। २ पखो को ~ पुच्छ सिर धारि सिखनि के ३६२४।

पच्छ[2] पक्ष, पखवारा · आठैं कृष्न ~ भादौं ३१।

पच्यौ १ प्रयत्न किया, हैरान हुआ : बहुत ~ अब ताई १/१४७। २ हार गया ~ करि उपदेस ४१४०। △ मरत ~ मारकर थकाते हो · इतनी कहौ, सूर पूरौ दै, काहैं — ~ १/१७४।

पछ पख · सिर मुकुट सीखड ~ तडित नहिं पीत पट छबि रमाला २०६१।

पछतात पछताते नैन अब लागे ~ ३२४८।

पछानौं पहिचानूँ : मैं कौन भाँति तुमकौ ~ ४१८३।

पछमनौ पीछे धरि न सकत पग ~ १/३२५।

पछार पछाड। △ खाइ ~ पछाड खाकर, बेसुध होकर · पर्‌यौ धरनि पर — ~ १/२८६।

पछारि पछाड कर मार्‌यो नाग ~ ३०५८। △ खाइ ~ बेसुध होकर परी धरनि पर — ~ ६/५।

पछारी[1] पछाड दिया, मार दिया · सूर स्याम पूतना ~ ५१।

पछारी[2] सूप आदि से फटक कर साफ की हुई, फटकी हुई : कनक-फटक धरि फटिक ~ ३९६।

पछारे पछाडे, मारे कसराइ के मल्ल ~ ३०९८।

पछारैं पछाडेगा, मार डालेगा · कस गहि केस ~ ५८९।

पछारो पटक दिया धरणी माँझ ~ सारा० ५२७।

पछारौं १ पछाड दूँ, मार डालूँ एकहिं एक ~ ९/१०८। २ पछाडूँगा जब धरि केस ~ १५१३।

पछार्‌यौ पछाड दिया भूतल माहिं ~ १३८७।

पछाहे पच्छ, पख बाँधे मोर ~ परि० १/१७२।

पछिताइ १ पछताकर, पश्चात्ताप कर : मन मन सोच करत ~ ८८७। २ पछताती है, पश्चात्ताप करती है · कर मीजति ~ ९/८३। ३ पछताते हैं स्याम यह बार वार कहि मनही मन ~ ४०९६।

पछिताई १ पछताती रही : यहै कहति पुनि पुनि ~ २०४१। २. पछताते हैं : कहि कहि नंद महर ~ ३१६२।

पछिताउँ १. पछताऊँ मैं काहे उनकों ~ २२५९। २. पछताती हूँ : सूर आज बहुतै दुख पाए मन कारन ~ १९३५। ३. पश्चात्ताप होगा, पछताऊँगा : तऊ न मन ~ १६९२।

पछिताउ पश्चात्ताप है, पछतावा है : तातैं मोहिं ~ १३१६।

पछिताए क्रि० अ० पछताकर, पश्चात्ताप करके : फिरि ~ मरिऐ परि० १/१३६। पुं० पछताना, पश्चात्ताप करना : हमहिं भए ~ ३६०३।

पछिताएँ पश्चात्ताप करने से . होत कहा अब के ~ १/२९९।

पछितात १ पछताता है : सुमिरि सुमिरि ~ सदा वह ४१८२। २. पछताती है, पश्चात्ताप करती है . बार बार ~ यहै कहि ३५३४। ३. पछताते हुए : चले नंद ~ ३१२४। ४ पछताते हैं . जोग कहि ~ मन मन ३८८२। ५ पछताते हो : कहत नहीं ~ ३९२२। ६ पश्चात्ताप करती हूँ : मैं ~ जबहिं सुधि आवति २३५२।

पछितातिं पछताती हैं : नैन लै गए ~ मन कों २२४९।

पछिताति १. पछताती . कहाँ गए तिनहिं ~ है री १९५१। २ पछताती हूँ : अति दुख में ~ यहै १८६७। ३. पछताती हैं : नारि सब ~ २८७६। ४ पछताती है, पश्चात्ताप करती है : कर मीड़त ~ विचारति ३२६५। ५ पछताती हो . अब काहे ~ राधिका १८८१। ६ पछता रही थीं, पश्चात्ताप कर रही थीं . सूर सीय ~ यहै कहि ९/५९।

पछितातौ पछताती हो : तौ अब कत ~ ४०६३।

पछितान पछताना, पश्चात्ताप करना। लागे ~ पश्चात्ताप करने लगे : अब — ~ २३१२।

पछितानीं पछताती हूँ : यह सुनि सुनि ~ २४०२।

पछितानी १ दुःखी हुई : यह कहि-कहि नागरि ~ १७१२। २ पछताती हैं, पश्चात्ताप करती हैं : मधुकर प्रीति किये ~ ३९८७। ३ पछताती है तुमही मों कहि कहि ~ ३९४२। ४ पछताती हो काहे कों ~ १६८५। ५. पछताने लगीं : यह कहि सब ~ ११०६। ६ पछताने लगी : साँटी देखि ग्वालि ~ ३४८। ७ पश्चात्ताप करती : जात बहुत ~ री १८७५।

पछितानें पछताने से, पश्चात्ताप करने से : होत कहा अबकें ~ ३७५१।

पछितानैं पश्चात्ताप करने मे, पछताने मे : होत कहा अब कै ~ १/२९०।

पछितानै पछताती हैं . हाथ मींजि ~ ३९८०।

पछितान्यौ पश्चात्ताप किया सिर धुनि धुनि ~ ६०।

पछितायौ क्रि० अ० १. पछताने लगे : नृप मन हीं मन बहु ~ ९/३। २ पछताया, पश्चात्ताप किया : फैलि गई यह बात नगर मैं तब मन मैं ~ ४१९१। ३ पछता रहे थे, पछतावा ही हाथ लगा : पाछे के लोगनि ~ ९१९। ४ पछता रहे हैं : लियौ न नाम कहूँ धोखै हूँ सूरदास ~ २/३०। पुं० पछतावा, पश्चात्ताप . मन मन ~ रहि जैहै २५८०।

पछितावति पछताती है : मुख चूमति यह कहि ~ ३९०।

पछितावन पछतावा। लागी ~ पछताने लगी : अब — ~ ३६६०।

पछितावैं १. पछताती हैं : यह कहि कहि ~ २३२४। २ पश्चात्ताप करें . कह नैननि ~ १८३०।

पछितावै १ पछताता है, पश्चात्ताप करता है : वृद्ध भए मूरख ~ ७/२। २ पछता रहे हैं पदमासन उतरि नाल ~ ६५।

पछितावौ पछतावा, पश्चात्ताप अब मोहिं आवत यह ~ ३७४७।

पछिताहिं १ पछताती हैं यहै कहि ~ २२७१। २ पछता-पछता कर मरहिं जौ ~ २३४८।

पछिताहीं १ पछताती हैं ब्रज तरुनी ~ १११३। २ पछताते रहे, पश्चात्ताप करते रहे . यह कहि कहि ~ ४१५७। ३ पछताने लगे : राधा जिय यह जानि कै आपुन ~ २०७४।

पछिताही पछताती है . वृथा तरुनि ~ २२९६।

पछिताहु १. पछताओगी : नातरु बन बसिके ~ ९/३४। २. पछताओगे : फिरि पाछैं ~ ३८०९। ३ व्याकुल हो रहे हो . जिय कहा ~ ३१२१।

पछिताहुगे पछताओगे . 'सूर' प्रभु ~ तुम, अतहूँ गए गात ४०७४।

पछितैया पश्चात्ताप करें 'सूरदास' प्रभु की यह लीला हम कत जिय ~ ४२८।

पछितैयै पछताता है : सोचि हृदै ~ ३९०८।

पछितैहै पछतायेगा सठ हठ करि तू ही ~ ८०४।

पछितैहौ १ पछताओगी : तब मन-मन तुमही ~ १३३२। २. पछताओगे : फिरि ~ देखि उघारी १/२४८।

पछियावत पीछा करता है : तबहिं ~ परि० १/२०।

पछोरी पछोरी, साफ की : जिन हठि भुसी ~ ३५५३।

पछोरे पछोरे, साफ किये। △ **फटकि** ~ अच्छी तरह परीक्षा की : तुम मधुकर निर्गुन निज नीके देखे — ~ ३७६३।

पछोर्यौ पछोरा, साफ किया . △ **फटकि** ~ फटक कर पछोड़ दिया, हवा मे उड़ा दिया, त्याग दिया : लोक लाज सब — ~ १६६१।

पजरत जलता है, दहकता है, सुलग रहा है : ~ धुजा, पताक, छत्र, रथ, मनिमय कनक अवास ९/६३।

पजरे जले, दहके, सुलगे। △ ~ **पर लौन** जले पर नमक, असहनीय, अत्यधिक कष्टकर वचन दुमह लागत अलि तेरे ज्यों ~ — ३६९०।

पजार जला . मानो होरी दई ~ सारा० ११०० ।
पजारे जला डाला बिन आग्या मैं भवन ~ ९/९९ ।
पटंबर रेशमी वस्त्र किंकिनि नूपुर पाट ~ १/४१ ।
पट[1] १ वस्त्र धोयो चाहत कीच भरौ ~ १/१९४ । २ वस्त्र को सजल करनि अति कचुकि के ~ ४१२२ । ३ साडी : ~ कौ कोट बढ़्यौ १/१६ । ४ कपडे का : ~ अन्तर दे भोग लगायौ २६१ ।
पट[2] औंधा • तू चित तैं ~ होति न राधे परि० २/६२ ।
पटकत पटक रहे हैं • ~ फन-फन-प्रति ५७४ । **क्रि० वि०** पटकते ही ~ मिला-गई आकासहिं ४ ।
पटकन पटकने को कहतु भुजा गहि ~ नद सुवन हरषै ३०६८ ।
पटकि पटककर, फेंककर सोचत ~ चिती ११/१ । ~ **पटकि** पटक पटककर ~ — कर तालिका ८०९ ।
पटकी धता बताकर, छोड़ दी • मैं तो यह सबै सही, लोक-लाज ~ १६६० ।
पटके पटक-पटक कर मारे कम सौंह दै पूछिये जिनि ~ हैं मात १६१८ ।
पटक्यौ १ पटक दिया • ~ सिला खरिक कै आगैं ४२९ । २ पटक दिये • गहि ~ तन नैकु न टारी ३१०९ ।
पट-चीर कपडे, चिथडे ज्यौं ज्वाला ~ ९/१५८ ।
पटतर[1] पुं० उपमा, तुलना ताकी ~ कौ जग को है ३/१३ । **वि०** समान • नाद कुरग कहा ~ इन २२८२, ब्रज वासी ~ कोउ नाहिं ४६९ ।
पटतरहि उपमा, समता, बराबरी उरवसी रूप ~ दीन्ही ३०५१ ।
पटतारा सभाला केस गहि राजा, कियौ खडग ~ ४ ।
पटपटात पटपटाते हुए ~ टूटत अग जान्यौ ५५६ ।
पटपर मैदान, नदी के आस-पास की वह भूमि जो बरसात के दिनों मे प्राय डूबी रहती है : कित ~ गोता मारत हौ ३५०६ ।
पट पियरौ पीतावर कटि तट ~ नटवर बपु सा० ल०१०० ।
पटपीत पीतावर • तडित किधौं ~ २०५७ ।
पटबास कपडा, पीताम्बर . हसत देखि ~ २८७७ ।
पट-भूषन वस्त्राभूषण : ~ पहिराइ ८९ ।
पटरानि पटरानियाँ कृष्णचद को बेगि बुलाओ सग सकल ~ सारा० ७३२ ।
पटरानी श्रेष्ठ रानी, मुख्य रानी जो सिंहासन पर बैठने की अधिकारिणी होती है ~ कौं सो नृप दियौ ६/५ ।
पटल पखुडी (मे) मिलत सनमुख ~ पाटल भरति मानहि जुही २८४४ ।
पटह नगाडा : डिमडिम ~ ढोल डफ बीना २००५ ।
पटह-निसान ढोल और नगाडे • ~ बजे २४ ।
पटहि वस्त्र को . घूघट ~ विदारत २३८३ ।
पटहीन वस्त्रहीन पाँडु बधू ~ सभा मैं १/१५८ ।
पटा पट्टा । △ ~ **बधाऊँ** (तुम्हारे नाम इनका) पट्टा ब दूगा चौदह सहस तिया में तोकौं ~ — आजु ९/७९ ।
पटारी पिटारी, छोटा सदूक • भवन भुजग ~ पाल्यौ ३७५६ ।
पटिया माँग : मुडली ~ पारौ चाहै ३५५० । ~ **पारैं** म निकालते हैं वै मेरे सिर ~ — ४१२६ ।
पटी[1] पट्टी कपट लगि बाँधे नैन ~ १/९८ ।
पटी[2] लिखने की पाटी या तख्ती वाके प्रेम की गढ़ी पढे तुम ~ २५५४ ।
पटुका वस्त्र काहू कौं ~ दियौ हा परि० १/७ ।
पटुली पाटी मे . ~ लगे नग बहु रग २८३० ।
पटूखी पत्ते मे, छोटे दोने मे : दुहि पय पिवत ~ ३५५७ ।
पटे पटाये, बनाये सूर कहा कहियत वाको गति चुरई २ ~ परि० १/१६१ ।
पटो पट्टा धन धावन बग पाँति ~ सिर ३३२४ ।
पटोरी रेशमी किनारे की धोती अँग मरगजी ~ दे २७२९ ।
पटोलनि वस्त्रों को • इक लै पोंछति ललित ~ २९०१ ।
पटोलै वस्त्र ही ढकि लइ पा ~ १/२५६ ।
पठए १ भेजा . अबही कान्ह टारि करि ~ १९५५ । २. भे था कस कमल मँगाइ ~ ५८० । ३ भेजा है . परम प्रि पथ देखन ~ ३९३९ । ४ भेजे, भेज दिया : मेरी देह छु जम ~ १/१५१ ।
पठऐ भेजने से पुहुप बेगि ~ बने ५८९ ।
पठये १ भेजा . तुरत बिप्रनि बोलि ~ ३०९१ । २ भेजा थ ~ गुरू की भामा ४२३३ । ३ भेजा है . लै ~ अ ३६६६ ।
पठयो भेजा : हौं ~ कत ही बेकाजे ४१३० ।
पठयौं भेजा था . मैं उधौ ~ गोपिनि पै ४२७१ ।
पठयौ १ भेजा ग्वाल सा कहि तुरत ~ ८१४ । २ भेजा कहि ~ मधुपुरी सखी री ३८४९ । ~ **मैं आयौ** भे गया मैं आया हू . तिनहिं कौ ~ — १५७९ ।
पठवत १ भेजता है : को ~ कहँ आवत ३९७४ । २ भेज सो वै अब कहि कहि ~ हैं ३६६५ । ३ भेजते हैं वि अपराध जोग लिखि ~ २९२८ । ४ भेज रहे हो . कहाँ जाहिं काकैं ११८२ ।
पठवति भेजती हूँ ~ हौं मन तिनहिं मनावन १८१६ ।
पठवन भेजने के लिए कहन ~ बदरिका मोहिं ३/३ ।
पठवहु भेज दीजिए, भेजो : काटि कै अघ फाँस ~ १/१९९ ।
पठवहि भेजे कहियौ जाइ बेगि ~ गृह ३१७४ ।

पठवैंगे भेजेंगे · मातु पिता मोकौं ~ ४०३४।

पठवै भेजेगा, पठावेगा : कसहिं कमल पठाइहै काली ~ दीप ५८९।

पठवौं भेजूँ : काकौं भज ~ ४८।

पठवौं १ भेज दूँ तौ ~ मुख मोरि १४३०। २ भेज दूँगा . ~ कुटुंब-सहित जम-आलय ९/१३१। ३ भेजूँगी : सूर स्याम घन हौं नहिं ~ २९७१।

पठवौ १ भेजते हो जु पै जोग लिखि ~ हमको ३८१२। २ भेजो ~ दूत भरत कौं ल्यावन ९/४७।

पठाइ भेज : यह कहि दियौ ~ २१४।

पठाइयै भेजिए थैली माँगि ~ १४६१।

पठाइहै भेजेगा : कंस कमल ~ ५८९।

पठाई भेज दीं . विहँसि सब घर-घर ~ ११६९।

पठाई १ भेज अनुमान कौ दियौ ~ ९/९। २ भेज दीं वैकुंठ ~ १/३। ३ भेजी गई हू दीनबंधु हा लेन ~ २४३६।

पठाऊँ भेजूँ जासों कहि सँदेस ~ ४२५४।

पठाए १ भेजते हैं लिखि लिखि जोग ~ ३५३७। २ भेज दिया कैतिक स्वर्ग ~ १/७। ३. भेजने पर स्याम ~ हू नहिं आवै २२६१। ४ भेजा है मानौ मिलै ~ ३८०१। ५. भेजे गये तौ तुम कस ~ हौ ह्याँ १५७०।

पठाय भेज अपने धाम ~ दिने तब पुरवासी सब लोग सारा० ३१६।

पठाये १ भेजे जनकराज तब विप्र ~ सारा० २२९। २ भेजा था अष्ट सुर इनकौं ~ सा० ल० ३६।

पठायौ १ भेजते हैं लिखि लिखि जोग ~ ३६५१। २ भेज दिया, भेजा हम देखतहिं ~ १९५२, तिनकैं संग चटसार ~ ७/३। ३ भेजा गया है कहन कौं मत्र इहँ नृपि ~ ९/१२९। ४. भेजा था जतु जु एक ~ ९/१२५। ५. भेजा है तुमको कहन ~ ३६०७।

पठावत १ भेजता हूँ सूरज सुत के लोक ~ सा० ल० ७४। २ भेजते हैं ता ऊपर लिखि जोग ~ ३९३७। ३ भेजते हो लिखि लिखि कहा ~ ३८१२।

पठावति भेजती है सूर स्याम का छाक ~ ४५६।

पठावन भेजने 'सूर' ~ ही की ओरी ४१२७।

पठावनौ उपहार पठइ जू दियौ ~ २८३२।

पठावहि पहुँचा दें गोकुल बोरि पताल ~ ८५६।

पठावहु १ भेज दो कालीदह के कमल ~ ५२५। २ भेजो जो न ~ पुहुप ५८९।

पठावै १ भेजते हैं लिखि लिखि जोग ~ ३६३९। २ भेज दिया है जमपुर बाँधि ~ १/१९६।

पठावौं भेजूँ हित नहीं कोउ काहि ~ ३१६७।

पठै भेजना/चलाना है चारि ~ मर माँधे १/६०।

पठै भेज प्रीतम ~ दियौ वैरनि घर २८१७।

पठैहौं भेज दूँगी · एक बार मुख देखि ~ ४०८६।

पठै १ भेज . ~ दियौ है अनुमति मात ८६५। २ भेजकर पठ्यो एक ~ १९५।

पठैहैं भेजेंगे : कबहु न दूती लेन ~ ३४०७।

पठैह भेजेग। . अबही मोको सौंपि ~ १९३८।

पठैहौं भेजूँगा चारि जउनि जम-पथ ~ ९/१५७।

पढ़ए सिखा दिया है · स्याम ~ दाउ ९७४४।

पढ़त १ पढ़ कर, विचार कर . महिमा निगम ~ गुनि चैन ९/१२। २ पढ़ता हू · कहो प्रह्लाद ~ मैं सार ७/२। ३ पढ़ता है · माया मंत्र ~ मन निमि दिन १/४९। ४ पढ़ते ये . लरिका और ~ शाला मे सारा० २११। ५ पढ़ता · श्रुति गातगाथ कै ~ है नाना छंद सारा० १५। ६ उच्चारण कर रहे हैं . चारो वेद ~ मुख आगर ८/१४।

पढ़न पुं० १ पढ़ना वेद ~ भूलि गए ६४९। **क्रि० वि०** पढ़ने के लिए · प्रेमहिं ~ पठायौ ३६८२।

पढ़ये पढ़ाया। ~ **पाठ** पाठ पढ़ाया : सूरदास-प्रभु नई चतुरई, मुरली ~ — १२८८।

पढ़ाइ १ पढ़ाकर तुव सुत को ~ हम हारे ७/२। २ पढ़ा, सिखा . दैहौ विद्या तोहि ~ ९/१७३।

पढ़ाई पढ़ाया नित प्रति वेद ~ सारा० ८७०।

पढ़ाऊँ सिखाता हूँ, शिक्षा देता हूँ हौं बारहखरी ~ ४१२६।

पढ़ाए १ पढ़ा दिया नैन खग स्याम नीकें ~ २२७४। २ पढ़ा दिया है अब गुरु ग्रंथ ~ ३९९१।

पढ़ायौ पढ़ाया है : जैसे सुक कौं ब्याम ~ १/२२६।

पढ़ावत १ पढ़ाती हुई कीर ~ गनिका तारी १/६७। २ पढ़ाते हे : ऐसे ढंग आपुनहिं ~ १४३१। ३ पढ़ाते हो कहा ~ और जजार ७/२।

पढ़ावति १ पढ़ा रही हो, सिखा रही हो : पूतहिं भली ~ बानी ३२२। २ सिखा रही हैं · तरुनि ~ गाँस ६९४।

पढ़ावैं पढ़ाते · पढ़ै ~ सुनै सुनावै २९२७।

पढ़ावै १ पढ़ाता था जब वह विप्र ~ कुछ कुछ सुनके चित धरि राखै सारा० ११०। २ पढ़ाती थी · सुक हित नाम ~ १/१०२। ३ पढ़ाती है . सुक ज्यौ बैठि ~ ३६३९। ४ पढ़ाता है पिता ~ सो नहिं पढ़ै ५/३।

पढ़ि १ पढ़कर . कुबिजा नौं ~ तुमहिं पठाए ४००३। २ मन्त्रादि उच्चारण कर, फूँक कुछ ~ दियौ सखी जहिं ढोटा २३२१। ~ **जाइ** पढ़ लेगा तो जो यह सजीवनि ~ — ९/१७३। ~ **पढ़ि** पढ़-पढ़कर, मन्त्रादि उच्चारण कर, फूँककर कछु ~ — नन दोष निवारति २००१। ~ **परति**

नहि नैंकु थोडा सा भी पढा नहीं जाता · ~ — रहे निष्ठुर करि छाती ४०९५। △ ~ मंत्र दियौ मत्र पढकर मारा : काकैं सिर ~ — १५८४।

पढ़िबै पढने, पढ़ाई : ~ मैं धौं कहा रह्यौ २/८।

पढ़ीं उच्चरित कीं : (द्विजनि अनेक) हरषि असीस ~ २४।

पढ़ी १ पढी हुई है · बड़े गुरु की बुद्धि ~ वह १७२४। २ सीखी, समझी · जिहि गोपाल मेरैं बस होते, सो विद्या न ~ ३२६९।

पढ़े १ पढे थे सदीपन कैं हमऽरु सुदामा ~ एक चटसार ४२३०। २ पढे हो तुम हरि ~ चातुरी बिद्या ३९०९।

पढ़ैं पढते ~ पढावै सुनै सुनावैं २९१७।

पढ़ै १ पढ़ता · आपु ~ नहिं, और बिगारै ७/२। २ पढते हैं/थे : पिता पढावै सो नहि ~ ५/३। ३ पढे : सीखै सुनै ~ मन राखे मारा० ११०७।

पढ़ैयै पढाइये : तिनकौ जोग ~ परि० १/१८८।

पढ़ैलौ पढाकू . बडौ ~, लूटा १/१८६।

पढ़्यौ पढा : राम नाम मैं ~ बिचार ७/२।

पतग[1] १. पतिंगा, कीडा ज्यौं ~ उडि परै ज्योति तकि १२७८। २ पतिंगो के प्रति . निठुर रहत दीपक ~ ज्यौं ३५३४।

पतग[2] सूर्य (कर्ण फूल) द्वै ~, ससि बीस, एक फनि २११२।

पत[1] प्रतिष्ठा, इज्जत ह्वाऊ ~ नहि पैहै ४०८७।

पत[2] पत्ता : तरुवर फूलै, फरै, ~ झरै अपनै कालहिं पाइ १/२६५।

पतत पडा है अजहू दयाल ~ सिर नाई १/६।

पतबरा पतला बडा, पतले पतले बडे . मूग-पकौरा पनौ ~ ३९६।

पताक, पताका पताका, झडा : धुज ~ बहु बान १३९६, पवन न भई ~ अबर, भई न रथ के अग २९९९।

पतार पाताल . बलि छबि दियौ ~ ४८७।

पतारी पाताल लोक का पायौ राज ~ ८/१४।

पताल पृथ्वी के नीचे के सात तलो मे से सबसे अतिम या निचला तल, पाताल गोकुल बोरि ~ पठावहिं ८५६। ~ पठाऊँ पाताल भेजा दूँगा, नीचे धँसा दूँगा : बज्रनि मारि ~ — ९२५।

पतालहि १ पाताल को · खोदि ~ पाटौ ९/१४८। २ पाताल : बरुन हमहि लै गयो ~ परि० १/४८।

पति[1] १. पतिदेव जिनकौ मिलन गए ~ तेरे १/२४०। २ प्रियतम : त्रासत ~ बिनु-मति बिरहिनि बेहालहि ८०२। ३. स्वामी : 'सूरदास' प्रभु त्रिभुवन के ~ २२८२। ४ हे स्वामी : देखौ हो अति ~ बिचित्र गति (देवकी) ७।

पति[2] १ इज्जत, मर्यादा सभा माँझ ~ राखी १/११२। २ प्रतिष्ठा, बडाई · लोभ किएँ ~ जाई ४१९१।

पति[3] विश्वास · याकी ~ कह राखत ३५७३।

पतिआइ १ विश्वास करना बलदाऊ कौं जनि ~ ७१०। २ विश्वास करे काकौ मन ~ ३९०४।

पति आधीन स्वाधीन पतिका (नायिका) कियौ ~ सूरज सा० ल० ३२।

पतिआरौ विश्वास · कह परदेसी कौ ~ ३१९४।

पतिजन पतियो · अपनैं अपनैं घर ~ सो ११८१।

पतित १ पापी, पतित · मोसौं ~ न दाग्यौ १/७३। २ पापियों को जमुना ~ पावन कर्‌यौ ११७६।

पतितन पतितों, पापियों प्रभु, हो सब ~ कौ टीकौ १/१३८।

पतितनि पतितों, पापियो ~ मैं बिख्यात पतित हौ १/१३१।

पतितेस बडा पतित, पतितों मे सबसे श्रेष्ठ या बढकर : हरि हौ सब पतितनि ~ १/१४१।

पतितै पतित ही ~ है निस्तरिहौ १/१३४।

पतिनी ले सारंगधर (सारगधर) श्रीकृष्ण की पत्नी (बाँसुरी) को लेकर . ~ सजनी सा० ल० ४६।

पतिनी सारंग समुद्र की पत्नी, गगा स्रवन बचन ते पावन ~ सा० ल० १०३।

पति-परिजन पति तथा पारिवारिक जनों को ~ पहिचानि १६५६।

पति-पाताल लगन तन धारन पाताल के स्वामी (शेष) के तन धारन, कुडली मारना, घेरा डालना, प्रेमालिंगन : ~ सारा० ९६०।

पतिबर्ता पतिव्रता · आठ ~ नारी ४२१०।

पतिब्रत पतिव्रत-धर्म, पति के प्रति एकान्त प्रेम . सूर सत्य जो ~ राखो ९/३४।

पतिब्रतहि पतिव्रत-धर्म को . आन पुरुष कौ नाम लै, ~ लजावै २/९।

पतिब्रता पतिव्रता, पति मे अनन्य श्रद्धा और अनुराग रखने वाली स्त्री : ~ जालधर-जुवती १/१०४।

पति माता औमीन आदि दै पति की माता (मास) मीन (झख) शब्दो के आदि अक्षरो को मिलाने से साझ (साझ) = सध्या · ~ सा० ल० ८६।

पतियाँ पत्र, चिट्ठियाँ : ~ लिखि पठवत जु बनाइ ३५९१।

पतिया पत्री, चिट्ठी ~ लिखी स्याम सुदर कौ ३९४३।

पतियाइ १ विश्वास करे · मधुबन लोगनि को ~ ३५९१। २ विश्वास करो इतननि जनि ~ सखी री ३७५५। ३ विश्वास किया नद मनहि ~ ५८९।

पतियाई १ विश्वास करता है झूठे कौ नहि कोउ ~

१७७९ । २ विश्वास करेगा . ताकौं नहि कोऊ ~ ९०३ । ३ विश्वास किया यह बानी वृषभानु-घरनि कही तब जसुमति ~ ७५६ ।
पतियात विश्वास करे बातनि को ~ ३९८१ ।
पतियाति विश्वास करती हैं : अनत नहीं ~ २४०२ ।
पतियाति १. विश्वास करती हूँ अब कैसें ~ हौं प्रीतम २६४४ । २ विश्वास करती है कबहुँ नहि ~ ३१४ ।
पतियानी विश्वास किया : कौन भाँति हरि कौ ~ ४२०० ।
पतियाहि विश्वास करें : क्यौं ~ तुम्हारे धूतै ३९१६ ।
पतियाहि विश्वास करें . हम अलि कैसे कै ~ ३९७८ ।
पतियाहु विश्वास करो : तुम अलि स्यामहि जनि ~ ३५९० ।
पतियाहू विश्वसनीय : गयो मिटि ~ व्यौहार ४००५ ।
पतियैहैं विश्वास करेंगी . कहा काहूँ ~ १६१८ ।
पतियौ चिट्ठी कागद लिखि ~ नहिं पठावत ३३७० ।
पतिराइ स्वामी ऐसो हैं त्रिभुवन ~ ४१९० ।
पतिवर्त पतिव्रत धर्म का सूर प्रभु ~ राखौ मेटिकै कुल कानि १४५९ ।
पतिसुर सुरपनि, इन्द्र : त्रास भयौ ~ तैं ३२०४ ।
पतिहि पति को • (देवकी) कर मलि-मलि निज ~ जगावति ७ ।
पति-हित-साध पति बनाने की लालसा ~ पुराइ ११७१ ।
पतीजै १ विश्वास करता : तेरौ मन न ~ ९/१२६ । २ विश्वास करना चाहिए • निनहिं न ~ रीजे कृतहिं न मानै ३७५१ । ३ विश्वास करे तुम्हरे बोलनि कौन ~ ३७४३ ।
पतीजौ विश्वास करो ऐहीं साँच ~ ८१३ ।
पतीनी विश्वास किया राइ न बात ~ ४ ।
पतीनौ विश्वास था आवत नहिं इत उतहिं ~ १४५० ।
पतुखिनि दोनों मे, पत्तों मे • ~ मुख मेलत रग १५९७ ।
पतूखिनि दोना हाँ पय पियन ~ लैया ३३५ ।
पतूखी दोने मे : दूध ~ राहु ४०८९ ।
पतौंपी दोना : मागत दूध ~ दै भरि ३९० ।
पत्त चिट्ठी, पत्र इहाँ ~ नहिं पैहैं ।
पत्ता पत्ता, पत्र, पत्रक, पर्ण जरनि ~ गिरि परै तै फिरि न लागे डार १/८८ ।
पत्नीहू पत्नी ने भी . सुत ~ बल करि रहे ८/० ।
पत्याइ विश्वास करेगी जननि नहि ~ १४६१ ।
पत्याउँ विश्वास करूँगी नैननि को अब नहिं ~ २२५९ ।
पत्याउ विश्वास करते हो (हरि) निरखि कै न ~ ५ ।
पत्याऊँ विश्वास करूँगी कान्हहिं अब न ~ ३४५ ।
पत्यात १ विश्वास करता है औरहि नहीं ~ २०६५ । २ विश्वास करेगा अब वह काहि ~ २०३४ । ३ विश्वास रखती याहू न ~ २४०७ ।
पत्याति विश्वास करती है नहिं ~ वे सइयाँ परि० १/२०१ ।
पत्याति विश्वास करती हूँ कहा कहति री मैं ~ नहिं ३५०३ ।
पत्यानी विश्वास किया तुम देखे मैं नहीं ~ १७८० ।
पत्याने विश्वास कर लिया, विश्वास कर बैठे तिनकौं स्याम ~ सुनियत २०९१ ।
पत्यानौ विश्वास किया : और न काहू ~ ११७३ ।
पत्यारौ विश्वास कुअरि ~ तब कर्‌यौ अब रथ देख्यौ नैन ४१८८ ।
पत्याहि विश्वास करते नैना मोकौं नहीं ~ २३५६ ।
पत्याहि विश्वास करती कपटी कान्ह ~ न राधे २८०६ ।
पत्याहीं विश्वास करेंगे नैन नहीं जू ~ २३३१ ।
पत्याहु १ विश्वास करते . राधिकाहिं परसत जौ न ~ ३०३३ । २ विश्वास करो . जो तुम मोहिं न ~ सूर प्रभु २०७ ।
पत्यैयै विश्वास कीजिए भूलि न कबहुं ~ २८२६ ।
पत्यैहैं विश्वास करेंगी तब हम तोहिं ~ १७३८ ।
पत्यैहै १ विश्वास करेगा • इन बातनि कौ कौन ~ ३८६९ । २ विश्वास करेगी काहू कौ न ~ १७२४ ।
पत्यैहौं विश्वास करूँगी . सुनि राधा अब तोहि ~ १९७५ ।
पत्र[1] १ पत्ता, पत्ती . साग ~ मोहिं अति प्रिय १/२४१ । २ पत्ते : किनहुँ बन ~ बजाए १६१८ । ३ घास पात . कर करि ~ डसाए ३६३० ।
पत्र[2] कागज पहुमि ~ करि सिंधु मसानी १/१८३ ।
पत्र भंग टूटते पत्तों की खडखडाहट : ~ सुनि सक स्याम घन ३२०४ ।
पत्रावलि पत्तों की बनी पत्तल मे : अपनी ~ सब देखत ४६४ ।
पत्री चिट्ठी • स्याम कर ~ लिखी बनाइ ३४३६ ।
पथ रास्ता, मार्ग • सुन्दर ~ सुन्दर गति आवन ४७५ ।
पथ-अपथ पथ-कुपथ . कौन टरै ~ १६४० ।
पथन रास्तों को चकित बिलोकत सकल ~ परि० १/९५ ।
पथहि १ मार्ग, रास्ता : उडुगन ~ दिखावै ३२७३ । २ मार्ग मे, पथ मे मम तन रज ~ लगी ४२४४ ।
पथिकनि पथिकों : ~ कौं सुख दीन्हौ ३८३२ ।
पद[1] १ पद, स्थान अभय ~ दीन्हौ १/१०४ । २ परमपद, मोक्ष • तजि पषान ~ पावौ १/१८८ ।
पद[2] १ पदों को . सगुन ~ गावै १/२ । २ पदों मे सूरदास सोइ कहै ~ भाषा करि गाइ १/२२५ ।
पद[3] १ चरण, पैर • धर्‌यौ पीठि ~ पावन ८/१३ । २ चरणों को ~ परसति हौं भाल सौं ८०४ । ३ चरणों मे हरि के ~ पहुँचाये सारा० ७९७ ।
पद-कूल चरण रूपी किनारा . तजि ~ रह्यौ १/१०१ ।
पदचर पद यात्री . रथ सैल सिला ~ चकोर २८४७ ।
पद दायक पद को देने वाले . सुनि मठ नीति सुरभि ~

३७४२ ।

पदत्रान १ जूता अस्म लकुट ~ १/१०३ । २ जूतों के बिन ~ चलैं दोउ भ्रात ९/३८ ।

पद नख चरण नखो के ~ प्रकाश विनु १/४८ ।

पद-पानि हाथ पैर बिनु ~ करै परगासा ३ ।

पद बन्द पदबद्ध, पदों म बद्ध . ता दिन हरि लाला गाई एक लच्छ ~ सारा० ११०३ ।

पद मकरद (श्याम क) चरण पराग के . आपुन ~ सुधारस ३६०० ।

पदमा पितु लक्ष्मी के पिता (सागर) समुद्र . अति गभीर बनौ ~ सा० ल० १९ ।

पदमासन[1] ब्रह्मा नाभि सरोज प्रगट ~ उतरि नाल पछितावै ६५ ।

पदमासन[2] (योग का) पद्मासन . ~ इक चित मन ल्यावौ ४०४९ ।

पद-रज चरण-रज की, पैरों की धूलि की गोपा ~ महिमा विधि भृगु सो कही ११७५ ।

पद-रिपु पैर के शत्रु, काँटे ~ पट अटक्यौ ६५९ ।

पदवी उपाधि, पद, ओहदा अब यह ~ पाई ३७९९ ।

पद-सेवन चरण-सेवा ~ अरचन उर धरै ९/५ ।

पदहि चरणो मे कमला पति कैं ~ विचारै । ~ **समाइ** चरणों मे समा जाता है सो हरि ~ — ११७५ ।

पदारथ १ धनधान्य, मूल्यवान वस्तु जैसे रक ~ पाए १/७८ । २ पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) : फल चारि ~ देत गनी १/२९ ।

पदिक पदिक (रत्नो का चौका/चौकी, गले का आभूषण) हृदय ~ पाँति दिपति दुति २२१९ ।

पदिमनि कमलिनी हँसत कुमोदिनि बिहँसत ~ ३२७३ ।

पदुम[1] कमल . जे पद ~ सदा सिव के धन १/९४ ।

पदुम[2] सौ नील की सख्या =१००००००००००००००० राज पाट सिहासन बैठो, नील ~ हू सौं कह थोरी १/३०३ ।

पदुम कोटि एक करोड पद्म =१०००००००००००००००००००००० ~ जिहि सैना सुनियत ९/१२५ ।

पद्धति १ कार्य-प्रणाली, विधि चकटक रहैं पलक नाहि लागै ~ नई चलाऊँ १४८५ । २ रीति, परिपाटी सोइ ~ परतच्छ दिखैहौं ९/१५७ ।

पद्म पद्म, कमल, विष्णु का एक आयुध सख चक्र गदा ~ विराजत (हरि) ४ ।

पद्मिनि[1] कमलिनी के नील अचल पत्र ~ २५७५ ।

पद्मिनि[2] पद्मिनी नायिका ~ सारँग एक मकारि २१११ ।

पधराय बैठाकर पूजा करि ~ सदन मैं सारा० ४९३ ।

पधराये पधारे प्रस्थान किया अपने रथ बैठाय प्रीति सौ उद्धव ब्रज ~ सारा० ५५५ ।

पधारे १ आये, पदार्पण किया : जुग जाम लो मदरहिं ~ २९३३ । २ आये थे 'सूर' स्याम मो भवन ~ २२१० । ३ गये बहुरि ~ पुरी द्वारका सारा० ८०२ ।

पन[1] १ प्रण, निश्चय ~ गहि पीठि न दीन्ही ६५६ । २. प्रण (है) हरि परिपालन ~ रे १/६६ । ~ **धारौ** प्रतिज्ञाएँ की थीं डरपत बरुन कुबेर इद्र जम महा सुभट ~ — ९/१५९ ।

पन[2] अवस्था (बालपन, युवापन, वृद्धापन) तीन्यौ ~ मैं ओर निबाहे १/१३६ ।

पनच प्रत्यचा, धनुष की डोरी उतरी ~ अब काम के कमान की २०३९ ।

पनव ढोल बाजत ~ निसान पचविध २२ ।

पनवारे पत्तों की बनी हुई पत्तल ~ परसाये ८९ ।

पनवारैं पत्तल पर कर कौ कौर डारि ~ १९८२ ।

पनवारौ[1] पत्तल पहिलै ~ परसायौ १२१३ ।

पनवारौ[2] पान खिलाई, पत्तल भर भोजन सूरदास ~ पावौं २११ ।

पनहारी पानी भरने वाली जमुन-तट तहाँ हुतीं ~ ६९३ ।

पनहियाँ जूतियाँ पहिरे लाल ~ ९/१९ ।

पनार १ पनाल का पानी खार ~ कहावै ५६१ । २ पनाले की गनत न खाल ~ १/८४ ।

पनारी धार, धारा जल पूर प्रस्वेद ~ ३१०१ ।

पनारे पनाले उर बिच बहत ~ ३२३६ ।

पनिघट पनघट हो जल भरति अकेली ~ १४५० ।

पनौ पना, आम या इमली आदि से बना पेय पदार्थ . मूँग पकौरा ~ पतवरा ३९६ ।

पन्नग १ सर्प की बेनी, सो ~ अँग कारी २७५१ । २ साँप जैसैं बसन तजत है ~ ४०७५ ।

पन्नग-नृप हे सर्पराज अहो विहग ~ ९/६४ ।

पन्नग-पति शेषनाग सूरदास मानौ ~ ६५ ।

पन्नग सत्रु पुत्र रिपु पितु सुत हित पति नाग = नग = (पर्वत) के शत्रु (इन्द्र) के पुत्र (अर्जुन) के शत्रु (कर्ण) के पिता (सूर्य) के पुत्र (सुग्रीव) के हितू (जामवत) रिच्छ, (नक्षत्रों) क स्वामी = चन्द्रमा ~ सा० ल० २४ ।

पन्नगि नागिन मुकता माँग तिलक ~ सिर १७०३ ।

पन्नगिनि नागिने मनहुँ ~ उतरि गगन तै १८०९ ।

पन्नगी सर्पिणी मनौ ~ निकसि बीच रही २२०३ ।

पपिहा पपीहा जनि बोले ~ १२२२ ।

पय दूध . कजरा कौ ~ पियहु लाल १७४ ।

पय झख कनक रुद्र रग तत्र। सुन्न आदि अमृत, मीन, हाटक लाल, वीणा, आकास=ख के आदि वर्णो के मिलाने से अमी, हाला, बीख = अमृत, मदिरा, और विष ~ भर भोग सा० ल० शेष ९ ।

पयनिधि क्षीर सागर मानहुँ ~ मथत फेन फटि चद उजार्यौ ४३१ ।

पय-पान दुग्ध-पान यक पूतना ~ करावन मारा० ७४६ ।

पय सुर तिया जल (वा), सुरतिया (सुरी) दोनों को मिलाने से (वासुरी), बाँसुरी ~ बीन रुचकारे मा० ल० ९१ ।

पयादि पैदल जाने मे : नहिं रचि पंथ ~ १/६० ।

पयान प्रस्थान आग्या लै करि कियौ ~ १०/४ ।

पयाना प्रस्थान . कियौ अब दूरि ~ ४०४९ ।

पयानो प्रस्थान । ~ देत प्रस्थान कर रहे हैं . आसु रघुनाथ ~ — ९/३९ ।

पयार पुवाल धान आदि के ऐसे सूखे डठल जिनके दाने निकाल लिये गये हों । △ ~ **के गाहैं** व्यर्थ का परिश्रम करना यह भ्रम तो अबहीं भजि जैहै, ज्यौं ~ — ३६१० ।

पयारहि पुवाल । △ ~ **गाहत** व्यर्थ का परिश्रम करते हो : भारि भूरि मन कन तो लै गए बहुरि ~ — ३६०९ । ~ **भारत** पुवाल भाडते है, व्यर्थ का परिश्रम करते ह इनकी गुन कैसैं कहि आवैं, सर ~ — २३०१ ।

पयोधर १ स्तन विमद नितव ~ भारी ११९४ । २ स्तनों से प्रेम द्रवित चिन स्रवन ~ १०४ ।

पयोधि समुद्र मे वदन ~ पद्ठ २३७२ ।

पयोनिधि समुद्र के परत फिराइ ~ भीतर ९/१०८ ।

पयोव्रत केवल दूध पीकर रहने का व्रत तब कश्यप मुनि कहेउ ~ विधि सौं करो वनाय सारा० ३३० ।

पयौ दूध अरु बालक पियो न ~ ९/४६ ।

पर[१] पडकर **पार्यन** ~ **पड** पैर पड पड कर, दीन होकर — ~ — बहुत विनय कर सारा० ९२० ।

पर[२] पख . मखी ~ होई तौ उडि जाउँ ४१७५ ।

पर[३] १ दूसरे ~ को सूरदास मेटि कृत १३५६ । २ दूसरे की . ऐसो को ~ बेदन जानै २२५६ । ३ दूसरे के ~हाथ कहाँ बिकाऊँ १/१६४ । ४ दूसरों की निन्त ~ निंदा २/१५ ।

पर आनद दुखित दूसरे के आनद से दुखी होने वाली अथवा अन्यसभोगदुखिता नायिका . 'सरज' ~ कर, सर सुजो गता जाइ सा० ल० १६ ।

परई १ पडे पुहुमि पलटि गन ~ ९/७८ । २ गिर सकता है . पुहुमी रोम न ~ ९/९९ । ३ पडती है निसि नींद न ~ ३३५८ ।

परकप प्रकम्पित हो गया, काँप गया चिति ~ कनक कदली कहँ, मानो पवन, विहान २९९८ ।

परकर परिकर, सेवक, गोपियाँ 'सरदास' प्रभु ~ अकुर, दीजै जीवन दान मा० ल० २६ ।

परकर अकु॰ परिकर रूपी अकुर अथवा परिकराकुर अलकार . सूरदास प्रभु ~ दीजै जीवन दान मा० ल० २६ ।

परकार प्रकार करै सो अस्तुति या ~ ४३००/

परकारी रीति, ढग बूझत है पूजा ~ ९०४ ।

परकास[१] उजागर करने के लिए, भटकाने के लिए 'सूर' प्रभु यह करी लीला, इद्र रिस ~ ८५० ।

परकास[२] १ प्रकाश . करनि सकल जग मे ~ ४३०० । २. प्रकाश है यह ताकौ ~ ४१९० ।

परकासत प्रगट करने लगते है औरै दसा होति पलकहिं मै अगम प्रीति ~ १३०४ ।

परकासति प्रकट करती है गदगद मुख बानी ~ १९०० ।

परकासित प्रकाशित, चमचमाता हुआ कोटि किरनि मनि मुख ~ ४७९ ।

परकासी फैल गई यह बानी जहँ तहँ ~, मोल लए कौ नाम २२३९ ।

परकासै प्रकाश करती हैं अति दीपति ~ ३८३० ।

परकृत प्रकृत, स्वाभाविक ~ एक नाम है दोऊ २७७१ ।

परखत देखना है इक ~ घातहिं कौं २८८८ ।

परखति इन्तजार करती मैं बैठी ~ ह्याँ रैहौ १९८१ ।

परखाइ जाँच करा कर, परखाकर हम मा लीजै दान के दाम सबै ~ १४६१ ।

परखि[१] परीक्षण कर, परखकर जोइ नीकें ~ ताहि जानै १/२२३ ।

परखि[२] इन्तजार, प्रतीक्षा इन कारन ह्याँ ~ रही री १९५८ ।

परखिहै परखेंगे, प्रतीक्षा करेंगे अब क्यो कृष्ण ~ हमको परि० १/१७४ ।

परखी देखी-परखी प्रगट न ~ स्वामी ३३७५ ।

परखे देखा तन ~ अग निहारे ३७६१ ।

परखें इन्तजार करती हे ध्यान करि करि वे ~ ३०८८ ।

परग पग, कदम तीनि ~ वसुधाऊ २२१ ।

परगट १ अकित, प्रकट हुए (देखकर) अकुस कुलिस बज्र ध्वज ~ तरनी मन भरमाए ६३१ । २ प्रकट रति रस रीति प्रीति ~ करि ८२०२ । ३ प्रत्यक्ष ~ भाषि सुनाऊँ ९/१०१ ।

परगन कई गाँवों का भू भाग, परगने के ब्रज ~ सिकदार महर तू ताकी करत नन्हाई ३२९ ।

परगास्या १ प्रकाश, प्रकाशित बिनु पद-पानि करै ~ ३ । २ प्रकट किया सूरज चद धरनि ~ ३१०९ ।

परगासी १ प्रकट की सिधु मध्य बानी ~ २९२२ । २ प्रका शित किया . सुरवधु कमल ~ परि० १/१८१ ।

परगासै चमक उठता है बानर मित्र बेद सुन बातैं सुनत रग ~ सा० ल० ७३ ।

परगास्यौ प्रगट हो गया . प्रद के प्रसे गुना ~ ३८८० ।

परचण्ड प्रचड, कठिन तप कीन्हौं ~ मारा० १०१ ।

परचौ परिचय · काहू लियौ प्रेम कौ ~ २८२६ ।
परच्यौ परिचय . जसुमति के सुख कौ नहिं ~ ३९६ ।
परछाँहि प्रतिच्छाया, परछाईं : सूर' ~ कौ नैन जोरैं २१९० ।
परछाया छाया मे, परछाँई मे मदिर की ~ बैठ्यौ ९/७५ ।
परछाहियाँ प्रतिबिम्ब मुकुट की ~ १०७२ ।
परछाहीं छाया, प्रतिच्छाया ज्यौं तनु ते ~ ३६०६ ।
परजक १ पर्यङ्क, पलग . काटत हैं ~ ताहि छिन ३६४२ । **२.** पलग पर पौढे हैं ~ परम रुचि ४२२८ ।
परजंत तक ब्रह्म लोक ~ फिर्‌यौ १/१० ।
परजत जल रहे थे : ~ धुजा पताक, छत्र रथ ९/८३ ।
परजर्‌यौ तिलमिला उठा, क्रुद्ध हुआ यह सुनत ~ बचन नहिं मन धर्‌यौ ९/१२८ ।
परजा प्रजा . ~ सुख पायौ ५/२ ।
परजाइ[1] जल जाय, नष्ट हो जाय 'सूर' रोस ~ उक्त कत कठ न स्याम लगायौ सा० ल० २८ ।
परजाइ[2] प्रजा अथवा पर्याय 'अलकार · सूर बहुर ~ दीन हर सा० ल० ५१ ।
परजाइ उक्त पर्यायोक्ति अलकार 'सूर' रोस ~ कत कठ न स्याम लगायो सा० ल० २८ ।
परजापति प्रजापति : जग को प्रकट करन ~ प्रकटे कला निधान सारा० ३५६ ।
परज्यौ जलाया है, जादू टाल दिया है कछू मूँड पढि ~ २३४७ ।
परण प्रण, प्रतिज्ञा ताको पिता ~ यह कीन्हो ।
परणाम प्रणाम ताको पूजि बहुरि शिर नइयो अरु कीजो ~ सारा० ५५३ ।
परतंगी प्रत्येक अग वाले पावन पद ~ १/२१ ।
परत १ गिरता जीवत नरक ~ है सोइ ६/८ । **२** गिरते हुए · धर मुरछि ~ नहि जानी ११८१ । **३** गिरते हैं अँसुवा ढुर ढुर ~ करोटनि १८७ । **४** जाता था तन नाहीं ~ निहारौ ९/१५९ । **५** जाता बिनती करत टरत करुना-निधि नाहिंन ~ रह्यौ १/१६२ । **६** पडता है : जग्य करत यह जान ~ सारा० ८३२ । **७** पडती है · जब-जब गाढ ~ ब्रज लोगनि ८७५ । **८** पडते ही ~ विपै है जाइ ३५५७ । **६** पडते जा रहे हो ~ पय निधि माहिं २१३२ । **१०** पडते हैं ~ सबै हरि चरननि धाइ ८७२ । **११** पडती जा रही है · ~ ब्रज के तीर ८७४ । **१२** बनता कछु कहि न ~ तब जबहिं फिरि हेरि कै ३०६० । **१३** बिछाए गये बरन बरन पट ~ पाँवडे ९/१६९ । ~ **अघाइ** तृप्त नहीं होता है . प्रेम न ~ — ९६६ । ~ **उठत** गिरता उठता है इक ~ – अनेक अरुमत ४१८७ । ~ **न लखी** नहीं लखित हो पाती · राधा की गति ~ — ११८० । ~ **रह्यौ** रहा जाता है हरि बिनु नाहिंन ~ — ३७८४ । ~ **सँभारी** सँभाला जाता है नाहीं ~ — ३९०१ ।
परतच्छ प्रत्यक्ष : कनक-तनु ~ देखहु १५५२ ।
परतर उसके बाद, तक . जन्म-जन्म ~ कौं ६४७ ।
परताप १ पौरुष, वीरता · यह अपनौ ~ नठ जसुदा न दिखैहौं १६१८ । **२** प्रताप, माहात्म्य भजन कौ ~ ऐसौ १/२३५ । **३** प्रताप की सपथ राम ~ तिहारैं ९/१३७ ।
परतापु प्रताप, तेज दुरत नहिं ~ १९२८ ।
परति पडती हैं ज्यौं ज्यौं बूंद ~ चूनरि पर १९९२ । ~ **पछार खाइ** पछाड खाकर गिरती हैं ~ — छिन ही छिन ४०७० ।
परति १ गिर पडती है ~ जु फिरि फिरि धरनी ३९५२ । **२** पडती . सूरदास जहँ दृष्टि ~ है ४७८ । **३** पडती है. जहँ तहँ दृष्टि ~ तहँ अरुभति ११९७ । **४** पडता हो पाइँ अब किहिं ~ ३१३८ । **चीन्हि** ~ जान पडती है मालूम होती है : — ~ कुल बधू न दासी ४१८४ । ~ **धार** धारा प्रवाह गिर रहा है · स्रवत जल कुच ~ ~ ११६६ ।
परतिग्या प्रतिज्ञा सूरदास गोपिन ~ मिलहु पहिल के नातैं ४१२० ।
परतिय १ दूसरे की स्त्री काहे कौ ~ हरि आनी ९/११६ । **२** पर स्त्री पर . मूरख ते ~ मन लायो ६/८ । **३** पर स्त्री से · ~ सग लपटात २/२४ ।
परतीति स्त्री० विश्वास . बातनि को ~ करैं ३८०५ । क्रि० अ० विश्वास होगा . हरि मुख देखैं ही ~ ३८०२ । ~ **बढाए** विश्वास किया . तब सब मन ~ — ९३६ ।
परतु पडते हैं मेरं पाइँनि ~ २८०४ ।
परते पटते हा हा करते पाइनि ~ २८७७ ।
परतौ १ पडता या होता भक्त नाम तेरौ ~ १/२९७ । **२** पड रहा है अधम अग पद ~ ।
परदच्छिना प्रदक्षिणा, परिक्रमा पृथी ~ कौं सिधाए ४२२३ ।
परदनि पर्दों पर . बिद्रुम फटिक रचित ~ पर ३०२२ ।
परदरसात अन्य का देखना हरि दरियाई कठ लगाई ~ उठाया सारा० ४०८ ।
परदा ओट, छिपाव . सुनहु सूर हमसा कहा ~ १७२८ । △ **राखति ~ तेरो** तेरी प्रतिष्ठा बनाये रखना चाहती हैं पीत बमन तन स्याम लाज करि — ~ — ३८७९ ।
परदारा दूसरे की स्त्री ~ दुख दात ७/२४ ।
परदेस दूसरा देश, विदेश जिनकौ पिय ~ ३२२४ ।
परदेसिन अन्य देशवासिनी मैं ~ नारि अकेली ९/९४ ।

परदेसी परदेशी, विदेशी उबरि आयौ ~ कौ नेहु ४२६० ।
पर-धन दूसरे का धन : वेष धरि-धरि हर्‌यौ ~ साधु साधु कहाइ १/४५ ।
पर-धनि-रमन पर-स्त्री से रमण करने वाला : ~ रमन दावा-गिनि २८२६ ।
परधान प्रधान • जिनके तुम ~ परि० १/१७८ ।
परधान्यौ प्रधान समझा, प्रधानता दी . यहै मंत्र सबहीं ~ ९/१२१ ।
परन[1] प्रण, प्रतिज्ञा : ताके पिता ~ यह कीन्हौ ४१९२ ।
परन[2] पढने के लिए आए पायनि ~ ३१२२ ।
परनकुटी पर्ण कुटी : मानौ ~ सिव कीन्ही ३०३४ ।
परनाम[1] प्रणाम बहुरि बलराम ~ करि रिपिन कौं ४२२३ ।
परनाम[2] फल अथवा परिणाम अलकार भूषन हित ~ छोट बड मा० ल० ७ ।
परनारी पराई स्त्री को मूढ देखि ~ जिए ४/१२ ।
परनिंदक दूसरे की निंदा करने वाले : ~ व्यभिचारी ३६८७ ।
परनिंदा दूसरे की बुराइ . ~ उच्चरी ४/१२ ।
परनि[1] पड़ना : पाइनि की ~ ३३४८ ।
परनि[2] १ आदत, बान • का धौं ~ परी २३८५ । २ हठ एकहिं ~ परे खग ज्यौं २३८९ । ~ **परी** टेक पकड़े हुए है : कहति यहै मन हरि हरि ले गये, याही ~ — १९०० ।
परनि[3] प्रण, प्रतिज्ञा . मनो प्रेम को ~ परेवा, याही तै पढि लीनो ४१०४ ।
परनौत प्रणाम अरु सब नरहूँ कौ ~ ५/४ ।
परपच छल-कपट • करि ~ हरी तें सीता ९/११९ ।
परपची प्रपची, काइँयाँ ~ है कान्ह ४१८८ ।
परपतिनी परनारी अथवा परकीया नायिका हो ~ हेरें मा० ल० ८ ।
पर-पीर दूसरे की पीडा को नहिं जानत ~ ३६२७ ।
पर-पीरक दूसरे की पीडा को समझने और दूर करने वाले कहियत हुते स्याम ~ ३३०२ ।
पर पुरुष अन्य पुरुष, उप पति ज्यौं दूती वरवधू भोरि कै लै ~ दिखावै १/४२ ।
परफुल्लित प्रफुल्लित, फडक उठी धन्य पिता जापर ~ राघव-भुजा अनूप ९/१३४ ।
परव पर्व, उत्सव • आजु ~ हँसि खेलियै २८६४ ।
परवतहि पर्वत को . सो सब लै ~ चढायौ ८५१ ।
परवती पार्वती ~ उर लाई री परि० २/७ ।
परव दिवरी दीवाली का पर्व वरष वरष प्रति ~ परि० २/४३ ।
पर-बधू दूसरे की वधू, परकीया . ज्यौं दूती ~ भोरिकै १/४२ ।
परवरसनगिरि प्रवर्षण पर्वत तहँ ते चले स्याम अरु हलधर ~ आए सारा० २१७ ।
परवस परवश, पराधीन, दूसरे के वस मे या अधीन नैन परे ~ री माई २२३६ ।
परवहि पर्व (पूर्णिमा) के : बिनु ~ उपराग आजु हरि २९८६ ।
परवाह प्रवाह : कालिंदी ~ थकित भयौ परि० १/३५ ।
परवीन प्रवीण, चतुर तुम ~ सबै जानत हौ ३५३७ ।
परवीने प्रवीण उभय अंग ~ २८२६ ।
परवेदन दूसरे की वेदना . ~ नहिं जान्यौ १८३९ ।
परवै देखिए परवहि ।
परवोध प्रबोध (सतोष) हो : होइ ज्यौं ~ उनकौं २०४५ ।
परवोधत १ समझाते हैं मातु-पिता गुरुजन ~ १६६३ । २ समझाते हो मोहिं ~ ५६० ।
परवोधहु समझाओ • प्रेम मिटाइ ग्यान ~ तुम हो पूरन ग्यानी ३४२५ ।
परवोधि समझाकर • माता कौ ~ ५८९ ।
परवोधौ ज्ञान का उपदेश दो, समझाओ • जो तुम कोटि भाँति ~ जोग ग्यान की रीति — ३२११ ।
परवोध्यौ समझा दिया सूर स्याम यह कहि ~ ९६५ ।
परवौ पडने की क्रिया या भाव, पडना कठिन प्रेम पास को ~ ३३५७ ।
परभाउ प्रभाव, असर . यह सब कलियुग को ~ १/२९० ।
परभात प्रभात, प्रात काल . निकस्यौ अलि सिसु कज ते मनहुँ जानि ~ २६१३ ।
परम १ अत्यत ~ गभीर रनधीर दसरथ-तनय ९/१११ । २ उत्कृष्ट, श्रेष्ठ • ~ गग को छाडि पियासौ दुरमति कूप खनावै १/१६८ । ३ महान् : ~ गुरु रतिनाथ हाथ सिर ३६९३ । ४ बडे ~ भाग सुकिन कै फल १/७१ ।
परमऽस्थान परमपद को . पावै सेरो ~ ११/४ ।
परमअभिराम अति सुन्दर : ~ रघुनाथ के नाम पर ९/१२९ ।
परमइष्ट परम इष्ट, पूज्य तब सिव कहेउ राम और गोविंद ~ इक मेरे सारा० १४९ ।
परमकत श्रेष्ठतम पति गोपिनि ~ हरि जान्यौ १००८ ।
परमगति मोक्ष व्याध ~ पाई १/२७ ।
परम पद श्रेष्ठ पद, मुक्ति : वहाँ ~ पायो सारा० ७८६ ।
परमभावती अत्यधिक प्रिय लगने वाली सूर स्याम कै ~ पलक न होत बिछेद २४०३ ।
परममोद हर्षातिरेक • तासु मारि करि चूर पहरुआ ~ रससीने सारा० ५११ ।
परमसुख परमानन्द . होइ ~, कबहुँ न नाइ ७/२ ।
परमहित अत्यन्त प्रेमपूर्वक सुर समूह पयधार ~ सा०

ल० ९।

परमात (मेरा मन) फूला नहीं समाता, अत्यधिक प्रसन्न होता है : यह सुनि कै ~ १८४६।

परमातम[1] परमात्मा (ईश्वर) ~ कौ ये नहिं दोइ ५/४।

परमातम[2] परम आत्मीय, अत्यधिक घनिष्ठ : नृप ता कौ ~ मित्र ४/१२।

परमानंद १. परमानदमय ~ परम सुखदाई ३। २. परम आनद स्वरूप हो तुम अनादि अविगत अनत गुन पूरन ~ १/१६३।

परमान पु० १ प्रमाण : है हरि भजन कौ ~ १/२३५। २ हद या सीमा थी, फैलाव था : द्वादश कोस रास ~ ११८०। **वि०** १. विश्वसनीय : रिषि कौ बचन कियौ ~ १/२२९। सदृश, समान : जुग ~ कियौ ब्योहार ४३००।

परमाने १ जितना (बराबर) है · छिनु छिनु जुग ~ २२९७। २. सत्य सिद्ध हुआ : गर्ग बचन ~ ३११६।

परमान्यौ अगीकार किया · अमृत बचन ~ सारा० १०९१।

परमारथ परमार्थ जे हैं बस ~ के २२८३।

परमारथी १ परम स्वार्थी · ~ पुराननि लादे ३६०४। २. परमार्थी हैं · ~ जहाँ लौं जेते ३६६९।

परमिति[1] मर्यादा ~ गए लाज तुमही कौ ४१७०।

परमिति[2] पूर्ण ब्रह्म अर्थात् कृष्ण : जौ परतीति होइ या जग की ~ छुटत डराऊँ १६९२।

परमिति[3] १ सीमित · ~ करि राख्यौ चाहति हैं ६४०। २ अन्त · नहिं ~ मुख इदु सुधानिधि २२९८। ३ सीमा, परिधि, ओर-छोर दुहूँ कूल ~ नहीं तरनि न लागी वार १६४०।

परमेश्वर सगुण ब्रह्म, भगवान्, ईश्वर : पूजहु ~ की नाईं १०१४।

परमोधत १ धीरज देता है, प्रबोधता है : पुनि यह कहति मोहिं ~, धरनि गिरी मुरछैया ५६०। २ समझा रहे थे . सूर स्याम यह कहि ~ सेवा करहु जाहु घर नाहु १०१५।

परमोधति समझाती हूँ : कोटि जतन करि करि ~ २३५९।

परमाधन १. समझाने के लिए : गोपिनि के ~ कारन ३४१९।

परमोधि आश्वासन देकर, समझा कर : सूर नद ~ पठाए ३१२०।

परमोधी समझती हुई, समझाने पर . तासौ कही सवै एकैं बुधि ~ नहिं मानति ४१३४।

परमोधौ समझाते हो जौ तुम कोटि भाँति ~ ३८०२।

परमौ परम, बडा : त्रोटिय पेलव दरत ~ उर निरखि विमुख को तारिहै २११६।

परलय प्रलय . जारि करौ ~ ५९१।

परली दूसरी · तुव प्रताप ~ दिसि पहुँच्यौ ९/१०४।

परलै प्रलय : ब्रज बोरौं ~ कै पानी ९०७।

परलोक दूसरा लोक। ~ सँवारौ परलोक सुधारो (अत्येष्टि करो) : राजा कौ ~ — ९/५०।

परवर परवल : पोई ~ फाँग फरी चुनि १२१३।

परवर्तं प्रवर्तित, आरब्ध, प्रचारित . विष्नु की भक्ति ~ जग मैं करी ४/११।

परवान भली भाँति जैसे ही जू रावरे हम जानति ~ १४६१।

परवाने फतिंगे · जागत सोवत सपन रैन दिन, उड़ै रूप ~ ३८४०।

परवेस प्रवेश होत नगर ~ ४२१४।

पर सख शत्रु की शका, परि सख्या अलकार : करत है ~ काहे सा० ल० ५२।

परसग प्रसग, विषय : तिहिं यह सुन्यौ सकल ~ १/२२६।

परसंसा प्रशसा, बड़ाई सूर करत ~ अपनी ३५२४।

परस १ स्पर्श : कर लै लै मुरा ~ करावत १५९८। २ स्पर्श करके, छूकर दरस ~ हम भए सभागे ४२२८। ३ स्पर्श करती हुई, छूती हुई : नाभि ~ रोमावलि राजति २६१९। ४ स्पर्श करने : ~ की साधि अति करति भारी १००९। ५ स्पर्श कराते हैं, छुवाते हैं : नव नीत ~ आनन मों १२१। ~ भएँ बँध गये : छिन इक ~ — ऊखल सौं ३७६६।

परसत १ छूता है · ~ चरन चलत सब कौं ९१९। २. छूती है, स्पर्श करती है ~ कोमल गात ३६६। ३. छूते ही, स्पर्श करते ही · ~ पात उठे झहराई ३८३। ४. छूते हैं, स्पर्श करते है : बडे-बडे बार जु ऍडिनि ~ २६१७। ५ स्पर्श से अति सुपक्क मुरली कै ~ २७७२। ~ ह्वैहै स्पर्श करता होगा : ऐसी विधि गिरि ~ — ९०९।

परसतहीं छूते ही : सूरदास अति हरि ~ ६७५।

परसति[1] परोसती : प्रेम मुदित ~ है मैया १२१३।

परसति[2] १ स्पर्श करती · पद ~ हौं भाल सौं ८०४। २ स्पर्श करती है : बेद कमल मुख ~ जननी १५७।

परसन[1] प्रसन्न : आवहु कत देव ~ भए १३। ~ सौं प्रसन्न होकर : गिरि देवता देत ~ — ९१४।

परसन[2] परोसने ~ आय उठी महतारी परि० १/१५३।

परसन[3] १ स्पर्श करने, छूने सुत अग ~ लागे २९३६। २. स्पर्श को : सहत न ~ पानि ३५७५। ३ स्पर्श होने से : पग ~ पाहन तरै १/२३४। △ **मुँह ~ आए** लल्लो-चप्पो या मुँह चुपडी बातें करने आये · काहे कौं — ~ — २५०५।

परसनि स्पर्श चितवनि, मद हँसनि गति ~ ४०४८।

परसपर आपस मे, एक दूसरे को परिरभन हँसि देत ~ ९/१६ ।

परसपरहि परस्पर, एक दूसर को : ~ चितवत हरि राम १५७ ।

परसहि स्पर्श करते : 'सूर' जोग न वचन ~ ३९१७ ।

परसहु परोसो : ~ बेगि बेर कत लावति ३९५ ।

परसाइ[1] परोसवा कर : हँसत दधि ~ ४१५८ ।

परसाइ[2] १ सटाकर, लगाकर : उरज उर ~ भुज-भुज जोरि ११६७ । २ स्पर्श करके · होइ पवित्र ताहि ~ ७/२ । ३ लगना : मुख ~ हँसनि माधुरता २२९० ।

परसाई परोसा धरा है : साग चना मरुसा चौराई मोवा अरु सरसों ~ १२१३ ।

परसाऊँ स्पर्श कराऊँ . मैं अधरनि ~ २१४१ ।

परसाऊँगी स्पर्श कराऊँगी : उर सौं कुच ~ २४९३ ।

परसाऊ स्पर्श कराया : राख्यौ दरसि चरन ~ २२१ ।

परसाए[1] परोसवाये · भाँति भाँति व्यजन ~ ८३२ ।

परसाए[2] १ स्पर्श कराये : अति हित बेनी उर ~ २२०३ । २ स्पर्श प्राप्त कराया सिव मुनि मन दुर्लभ, चरनांबुज जनहिं प्रगट ~ ४२८७ ।

परसात स्पर्श कराते हैं . मुख ऊपर ~ ३७१२ ।

परसाद प्रसाद : दियो तव ~ सबको भयो सबन हुलास ।

परसायो[1] परोसवाया : पहिले पनवारौ ~ १२ ।

परसायो[2] स्पर्श कराया : लै कर कमल अधर ~ १८७९ ।

परसावत स्पर्श कराते हैं, छुवाते हैं : नासा सौं नासा लै जोरत नैन नैन ~ २४१२ ।

परसावति छुवाती है . दल पर फन ~ १८०९ ।

परसावै स्पर्श करावे . उनकौ अपनौ जल ~ ९/९ ।

परसि[1] परोसकर · भोजन ~ धरै सब आग ८३५ ।

परसि[2] १ स्पर्श करके : तेरौ तन ~ जो आवत पवन २८०३ । २ छू, स्पर्श कर : चतुरानन पग ~ कै ४९२ । ३ स्पर्श से . चरन ~ पाषान उड़त है ९/४१ । ४. लगाकर . तेल ~ अन्हवाइ २२६ ।

परसिहौं स्पर्श करूँगा सूर स्याम पद कमल ~ २९४७ ।

परसीं स्पर्श किया/कराया : सुरति नीर ~ २९८५ ।

परसी समाये हुए · रहति सबनि मैं वै ~ ३११३ ।

परसु फरसा ~ सम्हार शिष्य सग लै कै छिनही मैं तहँ आयो मारा० २२७ ।

परसुराम जमदग्नि ऋषि के पुत्र जिन्होंने २१ बार क्षत्रियों का नाश किया । ये ईश्वर के छठे अवतार माने जाते हैं । इनका 'परशु' मुख्य अस्त्र था, इसीलिए इनका नाम 'परशुराम' पड़ा : बामन बहुरौ ~ पुनि राम रूप करि २/३६ ।

परसे स्पर्श किया · तरुन ह्वै कर उरज ~ २७२१, कहियै कौन विधि ~ ४२४० ।

परसेन (महर) प्रसेन के स्याम कुवर ~ महर-सुत अरु श्रीदामा ४३७ ।

परसैं १ सपर्क होने पर : ज्यौं जन भगति होति नाव मे रहति न ~ पार १/८४ । २ स्पर्श करने से, स्पर्श मे जा ~ जानै जम-सैनी ९/११ । ३. स्पर्श किया : कपट हेत ~ बकी जननी-गति पावै १/४ ।

परसै १ छूता है, स्पर्श करता है : जसुदा के पादनि ~ १८३ । २ छू रहा था, प्रभाव पड रहा था : नीर जरि जात, नहिं गात ~ ५५२ ।

परसोस स्पर्श . मानत नहीं नैन ये मेरे इन पायौ ~ परि०१/८५ ।

परसौं १ लेप करूँ : चँदन ~ अग ३०५० । २. स्पर्श करूँगा, छुऊँगा तेई चरन प्रगट करि ~ २९४८ ।

परसौ छुओ सहस वार जो वेनी ~ चन्द्रायन कीजै सौ वार २/३ ।

परस्पर आपस मे, एक दूसरे से · 'सूर' ~ रहो प्रेम बस २७६७ ।

परस्यौ[1] स्पर्श किया : धाइ ~ चरन १/१२२ ।

परस्यौ[2] १ परोसी हुई ~ थाल धर्‌यौ मग जोवत २२३ । २ परोसा : नाना विधि जैंवन करि ~ ९९९ ।

परहस्त प्रहस्त नामक एक राक्षस दुर्धर ~ सग आइ सेन भारी ९/०६ ।

परहार १ प्रहार, आघात, वार . हिरनकसिपु - ~ थक्यौ १/३७ । २ प्रहार से · अस्त्र शस्त्र - ~ न डरौं ७/२ ।

परहारि प्रहार करो, मारने के लिए चलाओ . लें करि वज्र मोहि ~ ६/५ ।

परहारे प्रहार किया . जदुपति के लोगनि ~ ४२०६ ।

परहु पडो : कूदि कूदि सब ~ द्रुमनि तैं १५०३ ।

पराइ १. भागकर · तुम कहँ जाहु ~ ३१४ । २ भाग कस डरनि जे गए ~ ३०८५ ।

पराईं पड़वाई : पुनि-पुनि पाइ ~ हो २८७९ ।

पराई[1] १ दूसरे की नारि ~ देखि कै २१९५ । २ दूसरों की : बन भीतर सब नारि ~ १५५४ ।

पराई[2] १ भागकर लैहै वैर पिता तेरे कौ, जैहै कहाँ ~ ४१९१। २ भाग जहाँ तहँ गए सबही ~ ८/८ ।

पराऊँ भाग जाऊँ · इनहीं काज ~ ५२८ ।

पराएँ दूसरों के : पैठ ~ सग २९७० ।

पराए[1] १ दूसरे का : मारग रोकत फिरत ~ १५१२ । २ दूसरे के : प्रीतम भए ~ ३५५४ ।

पराए[2] १ भाग : कोउ एक गये ~ ९/५७ । २ भाग गये साल्व दँतवक्र या विधि ~ ४१८४ ।

पराएँ२ १ दूसरे के . इकटक रहत ~ बस भए २३११ ।

२. दूसरे के यहाँ : घर तजि कै कोउ रहत ~ १८९० ।
पराकरम पराक्रम . देखि ~ कस, तव जिय बिलखाने ३०७७ ।
पराकृत सामान्य (बालक) : सूरदास प्रभु होहु ~ ७ ।
पराक्रम सामर्थ्य, बल : बिनु ~ न अस्तुति करौ ४/११ ।
पराग पुष्प-रज . मनोहर उडत जू प्रेम ~ २/१२ ।
पराग-रुचि रंजित पराग मे अच्छी तरह रँगे . सोभित मनु अबुज ~ मधुप सुदेस ४७८ ।
परागी अनुरक्त हुई प्रीति नदी महँ पॉव न बोर्‍यौ दृष्टि न रूप ~ ३९५८ ।
पराजै पराजित किया कोटिक काम ~ परि० २/१३ ।
परात भागते हुए, भागकर . भीतर चल्यौ ~ १३९६ ।
पराधीन दूसरे के अधीन (होकर), परबस (होकर) ~ पर बदन निहारत १/१९५ ।
परान[1] भागने लागे लोग ~ २९१४ ।
परान[2] प्राण . लियौ निगम रति असुर ~ १२७ ।
परानी १ छिप गई, लुप्त हो गई · चिरई चुहचुहानी, चद की ज्योति ~ २०३९ । २ समाप्त हो गई : तौ कत बिरह बिथा न ~ ३९४० । **जाति** ~ भागी जाती हूँ : करत कहा पिय अति उताइली मैं कहुँ — ~ २०३१ ।
पराने १ भाग गये : हरि सब भाजन फोरि ~ ३२८ । २ भागते · लरत, न कबहुँ ~ २२८८ । ३ भागे-भागे . धाए आवत ब्रजहि ~ ८६० ।
परान्यौ १ भागा सुनी कहत ज्यौ लेइ ~ ३९१ । २ भाग गये रूप रग रस रासि ~ ३३३६ ।
पराय भगा . फाल्गुन चले ~ सारा० ८०५ ।
परायन चसके मे, निरत . बहुतक जनम पुरीष ~ सूकर स्वान भयौ १/७८ ।
परायौ दूसरे का . कह्यौ न करत ~ ३६०८ ।
परारध गणित की सबसे बडी सख्या, महाशख वर्ष पचास ~ कहिए १२/४ ।
परारी परायी, दूसरे की : जिनहि न पीर ~ २३४५ ।
परालब्ध प्रारब्ध, भाग्य अरु जो ~ सौ आवै ३/१३ ।
परावन भागना तिनहि पर्‍यो बन माफ ~ ०३२ ।
परासर पराशर । एक गोत्रकार ऋषि जो पुराणानुसार वशिष्ठ के पौत्र और शक्ति तथा अदृश्यन्ती के पुत्र थे । सत्यवती पर मुग्ध होकर उसका कौमार्य भग किया था, जिससे व्यास कृष्ण द्वैपायन का जन्म हुआ : तहा ~ रिषि चलि आए १/२२९ ।
पराहि भाग जाते हैं : नाम सुनत त्यौ पाप ~ ६/४ ।
परि १ गिर, लेट, पड . मारग रोकि रह्यौ द्वारै ~ ४८७ । २ पड़े-पडे : सूर अधम की कहौ कौन गति, उदर भरे, ~ सोए १/५२ । ३. पड . नैकु दृष्टि जहँ ~ गई १/४४ । ४ पडकर इहिं पावक ~ कौन जियौ ९/४८ । ५ पड गया, गिर पडा : ~ कबध महराई रयनि तैं ९/१५८ । ६ पडेगी कम निपात करोगे तुमहीं हम जानी यह बात सही ~ ४२९ । ७. **मन** ~ स्वेच्छापूर्वक · — ~ तट न लह्यौ १/१६२ । ~ **परि** १ गिर-गिर कर उडि ~ — मरि जाहीं २३४५ । २ पड-पड कर . ~ — बुद उचटि इत आवति ४१४६ ।
परिऐ पाया जा सकता है : पार न क्यौहूँ ~ परि० १/१३६ ।
परिकरमा परिक्रमा, प्रदक्षिणा कंचन कलस भराइ और ~ दीन्यौ ४०९५ ।
परिकर्मा परिक्रमा, प्रदक्षिणा : ब्रज ~ करहु ४९२ ।
परिजन परिवार के लोगों को मातु पिता ~ सुख लाहु ९/३४ ।
परितेजी परित्याग किया है, छोडा है : जैसैं इन मोकौ ~ २२५४ ।
परितोष सन्तुष्टि, सुख मधुरिपु कौ ~ २३५४ ।
परितोषी सतोषी : मानऽपमान परम ~ ३५३० ।
परित्यागी छोड दिया 'सूर' स्याम मोकौ ~ २०८३ ।
परित्यागैं छोडने मे ही . इनहि बनै ~ २२५८ ।
परित्यागौं छोड दूँ कबहुँक कहौं सबनि ~ १६८२ ।
परित्याग्यौ छोड दिया . बिना दोष हमकौं ~ २२८३ ।
परिधान वस्त्र (आदि) : खान पान ~ मे (रे) जोबन गयौ सब बीति १/३२५ ।
परिनाम परिणाम . कह्यौ यह काम ~ तेरौ पुरुष ४१८९ ।
परिनौत प्रणाम, झुककर नमस्कार करना : अरु सब नरहूँ कौ ~ ५/४ ।
परिपाटी रीति, पद्धति नाटक की ~ २५४ ।
परिपालन रक्षा करना, बचाना : हरि ~ पन रे १/६६ ।
परिपूरन १ परिपूर्ण धरनि अकास भयौ ~ ५९१ । २. परिपूर्ण है · रवि ससि-ज्योति जगत ~ २/२८ । ३. पारगत थे, परिपूर्ण थे : कोक कला ~ ठौरु २६२७ ।
परिबौ पडना · कठिन सु प्रेम पास कौ ~ ३३५७ ।
परिमल सुवास, सुगन्ध : सुख ~ सजोग ९/७५ ।
परिमिति[1] सीमा तजि ~ कुलकानि ३८०६ । ~ **जानी** मर्यादा समझ मे आ गई : ~ — 'सूर' रावरी ४००० ।
परिमिति[2] मर्यादा · जो मोहि भजै भजौं मैं ताकौ यह ~ मेरे पाइँ परी ४१५९ ।
परिरभण, परिरंभन आलिगन करना : ~ सुख रास हास सारा० ९७९ ।
परिवा पक्ष की पहली तिथि को ~ पिय चलियै नहीं २९१४ ।
परिहंस परिहास, अपमान : इद्र आपने ~ कारन ४०६९ ।
परिहरि छोड कर, त्यागकर . मलिन मति मन-मधुप ~ विषय

नीरस मद ९/१० ।
परिहरिऐ छोड दीजिए : ये सवहीं ~ परि० १/१४३ ।
परिहरी त्याग दिया : विषय-वासना सब ~ ९/२ ।
परिहरे परित्याग करता, छोड़ता : अरु अजहूँ न कर्म ~ ५/४।
परिहरैं १ छोडने पर : अपनौ घर ~ कहौ को घूर बुझावै ४०९५ । २ छोड दें/देतीं : हम तिनकों छिन में ~ ९/२ ।
परिहरै १ छोड दे, त्याग दे : लोभहिं ~ ३/१३ । २ छोड देता है, त्याग देता है . तन कुटुंब सौं हित ~ ५/४ । ३ छोड देती है, त्याग देती है : नारी ताहि तुरत ~ ९/२ ।
परिहरौं १ छोड दूँगा वचन-भग भए तै ~९/२ । २ दूर करूँगा : अरु तेरौ यह दुख ~ ४३०९ ।
परिहरौ १. छोड दो, त्याग दो यह जिय जानि विषय ~ ७/२ ।
परिहर्यौ छोड दी हूँ : तातै मैं तुमकौ ~ ९/२ ।
परिहस[1] १ परिहास, हँसी, दिल्लगी : सो ~ हम सारिहं २९०३ । २ परिहास की ~ सूल प्रवल दिसि वासर १/१८१ ।
परिहस[2] अपमान से : हृदय ~ भीन ४१०७ ।
परिहारा अपहरण, नाश : या की कोखि औतरैजो सुत करै प्रान ~ ४ ।
परिहारि छोडकर, दूरकर जाति पाँति ~ कै ४० ।
परिहास हँसी, दिल्लगी : करति हौ ~ हम सौं १०१२ ।
परिहैं पडेंगे . भूप ~ पाइ ३२२७ ।
परिहै १ पड जायगी . ~ बहुरि खँभारि १५०७ । २ पडेगा, चलेगा . जानि ~ भिरत सग हमारैं ३०७२ । ३ पड़ेगी : टेक ~ जानि ५५१ । △ **फग जौं** ~ यदि हाथ आयेगा या फदे मे फँसेगा . दूरि करौ लँगराइ वाकी मेरैं – ~ १७२५ । **सिर** ~ सिर पर पड़ेगी या वीतेगी . नृपति काकै — ~ २९३७ ।
परिहौ पडोगे : ~ बहुरि जँजाला १४७१ । △ **फग** ~ फदे म पडोगी, चगुल मे फँसोगी : कवहू तौ काहू — ~ १७४० ।
परीं[1] पाला पड गया है : मोहि ~ पसु-पाल सौं ८०४ ।
परीं[2] १ पड गई है : ~ फद वियोग सनै ३८३६ । २ पडीं, गिरीं : सब सिसु-पाइ ~ २४ । ३ पडी, उठीं : चाकि ~ मब गोकुल नारी ८१३ । △ **कठिन** ~ मुसीवत मे पड गड हैं ऊधौ हम दोउ — ~ ३९४८ ।
परी १ आ गई . हमकौं नाकै समुभि ~ ३५९५ । २ आया सा स्वामी समुभी न ~ १/११५ । ३ गइ . नैननि सिख-वत हारि ~ २३८६ । ४ गिर पडी · छोड़-छोड कहि ~ धरणि पर सारा० ४१७ । ५ पकड/ठान ली है में हूँ अव इहिं टेक ~ २३९४ । ६ पड़ जाती है . कवहुँ आनँ हैं वदन हेरि ~ विरह ज्वाला २१४९ । ७ पडती है . विपति ~ तब सब सग छाँडै १/७९ । ८ पडी : तब वह दृष्टि नृपति कैं ~ ९/२ । ९ पडी हुई ज्यौं पावै निधि रक ~ ८० । १० पडेगी : देखियत ~ तिहारे माथै ३८११ । ११ मच गई है . रोर ~ इहि खेरे ३१३१ । १२ लग गई है : मोंहि प्रभु तुम सौं होड ~ १/१३० । १३ हो गई . मिलहु स्याम मोहिं चूक ~ ११२६ । ~ **खँभारै** खलभली मची है : जिय की सवकौं ~ — ९३० । △ **खरी** ~ उखडी जा रही है, नाराज होती है तू ~ — २४३४ । ~ **ठगोरि** ठगोरी पड गई, जादू सा चल गया : अरुनाई देखत ~ — ६७० । **सिर** ~ पीछे पड गई निरखि सुदर वदन मोहिनी — ~ २२७३ ।
परीच्छित, परीक्षित अर्जुन का पौत्र और अभिमन्यु का पुत्र । इन्हीं के राज्य काल मे द्वापर का अन्त और कलियुग का आरम्भ माना जाता है । ये पाडु कुल के प्रसिद्ध राजा थे । शृगी ऋषि के द्वारा शाप दिये जाने पर तक्षक-डस से इनकी मृत्यु हुई : सुक सौं नृपति ~ सुन्यौ १/२२७
परीजौ पडना : नँदनदन के पाइँ ~ ४२६५ ।
परुष क्रूर . पति विमुख पिक ~ पसु लौं ३३३९ ।
परुसत १ परोसते मब आगे धरि ~ जात ४६५ । २ परोस रही हैं : हम ~ जैंवत गिरिधारी १६०२ । ३ परोसे जा रहे हैं ~ भोजन प्रातहिं तै सब ९०८ ।
परुसति १, परोसता मटकिनि तै लै लै ~ है १५९७ । २ परोस रही है . ~ ग्वारि ग्वाल सब जैंवत १६०६ ।
परुसन परोसने के लिए : दूध भात बहु ~ आनी परि० १/१५३ ।
परुसाए परोसवाये : दही वरा बहुत ~ ९०८ ।
परुसावैं परोसवाते हैं · जुवतिनि सौं कहि-कहि ~ १६०७ ।
परुसि परोसकर . देति दधि ~ ब्रजनारि १५९६ ।
परे १ गये हैं : स्याम छवि लोचन भटकि ~ २३११ । २ गिर पडे : ~ धर मुरझाइ ४०७२ । ३ पडकर स्वाद ~ निमिषहुँ नहिं त्यागत २३०५ । ४ पडे रहे . रुदन-वल सौं हठ करनि ~ २३४० । ५ पड गया हो : मानौ ~ गयंद पक महिं २०७९ । ६ पड जाती हैं : जाकी दृष्टि ~ नदनदन १८९० । ७ पडने भोर के ~ तै १८७५ । ८ पडे . ~ रहत द्वारै सोभा के २३१३ । १०. पटे-पडे · (कस) चारि पहर सुख सेज ~ निसि ४ । ११ पडे हैं, पडे हुए हैं : वस आलस सेज ~ २०३५ । १२ पडे हो, पड़े हुए हो : नाहिंन मीत वियोग वस ~ ३६१६ । १३ हो गये हैं : अग-अग चपल ~ ३५८६ । १४ गिरती है . नैंकु न पलक ~ ३७६७ । **परनि** ~ आदत पकडे हुए हैं : एकहिं — ~ खग ज्यौं २३८९ ।
परेउ गिरा, पडा : तब पग ~ वहुत अस्तुति करि जानि राम-पद सग सारा० ६४७

परेखौ १ परीक्षा : यहै ~ लेत ३२७८। २. विश्वास : ताकौ कहा ~ कीजै ३८९०। ३ पछतावा है . सूरदास हम यहै ~ ३६५१।

परेख्यौ प्रेक्षण कर रहा है, घूर रहा है : जानत आन ~ १५६।

परेवा कबूतर • मनौ प्रेम की परनि ~ याही तैं पढि लीनी ४१०४।

परें १. पडता है . पुनि-पुनि पाइ ~ २४। २ पडती हैं : ऊधौ ~ पाईं सूरज प्रभु मिलाई ३८६७। ३. पडती है • सन्मुख दृष्टि ~ मनमोहन २११८। ४ पडते हैं • निकसैं प्रान ~ जिहिं माटी द्रुम लागैं तिहिं ठाम ३८०७। ५ पडने पर . अवसर ~ जाहिं पहिचाने ३७५१। ६ पडें . मुरली बूँद ~ ३८२४। **फंग** ~ चगुल मे फँसे कैसैं वह — ~ तुम्हारैं १०४२।

परैंगे पडेंगे थोरे ही मैं उघरि ~ २३४२।

परै १. जा सकता . कैसे रह्यौ ~ री सजनी १६६४। २. आता है, पडता है . इतौ न समुझि ~ ३९२१। ३ आती है, पडती है : नैन नींद न ~ निसि दिन ३८८५। ४ गिर पडते हे कबहुँ मुर्च्छित ह्वै नृप ~ ६/५। ५ पडा है : सोइ सुधाकर देखि कन्हैया भाजन माहिं ~ १९५। ६ पडे : मेरे इनके कोउ बीच ~ जिनि १९३६। ७ पडेगा, गिरेगा : अध अध टेकि चलै क्यों न ~ गाडे १/१२४। △ **फंग** ~ चगुल मे फँस गये : रैनि कहूँ — ~ कन्हाई २६४१। **बर** ~ शत्रुता कर ले, बैरी हो जाय • ताकौ केस खसै नहिं सिर तें जौ जग — ~ १/३७। **रहि न** ~ रहा नहीं जाता : मुरली धुनि स्रवन सुनत भवन — ~ ६५२।

परैगी १ पड़ेगी . फेरि ~ भीर १/१९१। २ पडेगी, मचा देगी : हम जातहिं वह उघरि ~ १७२३।

परैगौ पड़ेगा कहि अलि काके गरैं ~ ३६१९।

परैये भागना है • इन सौ कहा ~ १५०२।

परोसि परोसकर कहा ~ धर्‍यौ है ४१४।

परोसिनि पडोसिन . मेरी ~ आप काज कौ परि० २/३२।

परोस्यौ परोसा . भात ~ माता सुरलभ ३०६।

परौं १ (नीचे) आऊँगी, गिरूँगी . पै मैं जब अकास तैं ~ ९/९। २. आ जाऊँगा : ह्याँ ते जब मै बाहर ~ ३/१३। ३ पड़ूँगी : पावक ~ सिंधु महँ बूडौ ९/८३। ४ पडता हूँ • बधू पाइँ ~ ९/९८। ५ पडती हूँ ऊधौ पाइँ ~ ३५५१। ~ **पार** पार हो जाऊँ : जजाल तै ~ — २५२।

परौ १ नष्ट हो जाय • भावै ~ आजु ही यह तन २/३३। २ आ पडी हो : स्वाति कौ बूँद चातक ~ री ६९१। ३ पडा : बाँसुरी तैं जान मोको ~ ना सुत सोइ सा० ल० ७७। ४. पडा रहता है : इक घर बधिक ~ १/२२०। ५ पडा हुआ : ~ सारग रिपु न मानत सा० ल० ३२। ६. पडा हुआ है • भूपत कस ~ धरनी तल सा० ल० ७६। ७ पडी हुई है तिहिं कै लेखे ~ ३७३५। ८. पडी हूँ • ~ विकलप आन मा० ल० ५३। ९ पडेगी : मुकुति ~ किन फेरनि ३८८९। १० पडो, गिरो : ~ ब्रज पर धाइ ८५२। ११ बना हुआ है : माथे ~ जोग पथ जाकैं ३९६९।

पर्बतनि पर्वतों ने . ~ जहाँ तहा रोकि लियौ ४/११।

पर्बतहि पर्वत को : मोकौ निंदि ~ बदत ९२४।

पर्यंक १ पलग : ~ पर ह्याँ आई २४५८। २ पलंग मे : रत्न जटित ~ द्वारका पौढत हैं सुखधाम सारा० ७२७।

पर्य्यंक पलग, शय्या : सुख ~ अक भ्रुव देखियत सारा० १००३।

परयउ पडा • ~ धरणि भहराय सारा० ४२५।

पर्‍यौं १. पड गया : ~ अधिक करि दोर १/४६। २ पड़ा हुआ हूँ . किए प्रन हौं ~ द्वारैं १/१०६।

पर्‍यौ १ आ पडा है : पूरब पाप ~ २८१४। २. गिर पड़ा : रुद्र कौ बीर्य खसि कै ~ धरनि पर ८/१०। ३. गिर पडे मानौ भूतल बधु ~ ९/१४४। ४ पड़कर मैन मनसा बस ~ मिटि २१३१। ५ पड गया है • मनहुँ खजन चपल चद फदा ~ १९६७। ६ पडी हुई . परबस भई गुडी ज्यौं डोलति ~ पराऐ कर ज्यौं २३४७। ७ पडा अब तो ~ रहैगो दिन दिन १/१९१। ८ पडा हुआ : पायो ~ काहूँ कहुँ तैं री २६६। ९. पडा हुआ है, पडा है ~ हमारैं खोज ३९७४। १० पड़ा हूँ किए प्रन हा ~ द्वारें १/१०६। ११ गिर पड़े ~ पाइनि धाइ ४८५। १२ पडी होगी : जाकैं हाथ ~ सो दैहै १९७२। १३ पड़े हैं : सो मम पिता मृतक ह्वै ~ ७/२। १४ मच गई : कटक अगिनित जुर्‍यौ लक खरभर ~ ९/१०६। १५ मचा है लका मैं सोर ~ ९/१३९। ~ **लै** पड या छू लिया उमरा पति तब चरन ~ — ९६३। **रति** ~ सो रत बिलास क्रीडा में मग्न है ~ — मति अध ९/७५।

पर्लंग पलग पहुनाई ब्रज कौ दधि माखन बडौ ~ अरु तातो पानी ३६३७।

पल[1] १ पलक ~ बिनु टक लाए २२१७। २ पलकों के : ~ सन्दूक पट अटकै २३२१। ३ पलकों से . जद्यपि उमँगि चलत ~ पाना २३६५। △ ~ **लागैं** पलक लगे, नींद आये को जलपै काके ~ — ३१२५।

पल[2] १ पल, क्षण . नहीं बहुत तौ अत एक ~ १/१०४। २ क्षण भी निमिष नहीं मिलवत ~ एकौ २३१५। ३ क्षण भर : ~ मैं राम बिलोयौ १/४३। ~ **आध** आधे पल भी, जरा भी : रिस न गहै ~ — ९/११५। ~ **जाति** पल बीतता है : जुग समान ~ — १८११। ~ **पल** क्षण-क्षण, क्षण प्रति क्षण ~ — घरी घरी १/१८४। ~ **भीतर**

पल भर मे, क्षण भर में : बादिहिं मरि जैहै ~ — ३०५३।

पलक[1] १. एक एक पल : ~ कलप सम जात २३४६। २ क्षण भर, एक पल : हरि उर ~ धारो धीर मा० ल० २। ३ क्षण भर भी ~ ओट नहिं होत कन्हाई १६३४।

पलक[2] आँख की पुतलियों के ऊपर का चमडे का परदा। ~ **न पारे** पलक नहीं झपकाया, सोये नहीं : करत केलि पिय ~ — २६८२। ~ **लगे भोर** प्रात-काल नींद आ रही थी उमँगि ~ — ११९९। ~ **प्रति** प्रत्येक बार पलक उठाते समय : अरुन स्वेत सित झलक ~ — १८१३।

पलकनि १ पलकों · दै ~ कौ तारौ १३५। २ पलकों को : लाड़िली ~ नीचहिं धीरत १२००। ३ पलकों ने : ~ सूल सलाक सही है २५९३। ४ पलकों पर · ~ पीक मुकुर लै देख्यौ २५०२। ५ पलकों मे : कत ~ पल जोरै २८२६। ~ **देत अकोर** पलकों की घूस (भेंट) देता है ~ — १७६१।

पलकनिहूँ पलकों ने भी ~ हठि लगा दई २९९६।

पलकहि क्षण भर : ~ माँझ सबनि के देखत १३८८।

पलकहुँ १ क्षण भर भी ~ भरि दुख न देहैं ४१३५। २ क्षण भी : आधे ~ जनि बिसरौ ६/१।

पलकैं पलकों . देखन दै पिय बैरिनि ~ परि० १/६९।

पलकौं पलक भी : जो कबहूँ ~ नहिं खोलति ३२४२।

पलको पलक भी मग जोवत ~ नहिं लावति ३५७०।

पलखियाँ पलकें : लागत नहीं ~ ३२४०।

पलट १. बदल · लीन्ही ~ कछू सो २८२६। २ विपरीत . ~ भयौ ब्यौहार देखियत ३५४८।

पलट छब छव को उलटा करने से बछ, बछडे सारग पलट ~ दोई सा० ल० ७८।

पलटत बान (बान)=सर=ताल का उलटा, लता ~ भानु जा तट मैं सा० ल० ३३।

पलटाइ १ दबाकर रहे लपटाइ दोउ भुजनि ~ कै २६२१। २ बदलकर आए पट ~ २६७८।

पलटि १ उलट कर · बजन पीक ~ मुख लागे २१७९। २ उलटे . अवर गहत द्रौपदी राखी ~ अध सुत लाजै १/३६। ३ पलट-कर सम जल बसन ~ तनु लीने २१७६। ४ बदल : पलकहिं माँझ ~ से लीजत १३०३। ५ वापस प्रान ~ तन आए ३८८४। ~ **धायौ** पलटकर (घूमकर) जाने लगा आपने देस कौं ~ — ४२०९। ~ **लियौ** खींच लिया मेरौ मन ~ — री १८६६।

पलटि बरन वृषभान नंदिनी जा पति हित रिपु (वृषभान नदनी) राधा, वर्ण पलटने से (धारा) से उत्पन्न (लक्ष्मी) के पति (विष्णु) के हितू (शकर) के शत्रु, कामदेव ~ सा० ल० २५।

पलटी बदल गई : कहु री सुमति कहा तोहिं ~ ९/३८।

पलटै १. उलट जाय : धरनि ~ तजै सिंधु मरजाद २८२४। २ पलट सकते हैं : जिनकै क्रोध पहुमि नभ ~ ९/११६।

पलट्यौ वापस आया : ~ नहिं जो सिधायौ १८८९।

पलनाइ तैयार कराकर . तुरतहिं रथ ~ कै २९३९।

पलनावत तैयार कराते हैं सुफलक सुत स्यदन ~ २८८२।

पलपात पलकों का गिरना : चकित भई ~ ३००१।

पलपिंजरा पलक रूपी पिंजडे मे : अतिसय चारु बिमल चचल ये ~ न समाते २६६७।

पलहिं क्षण भर मे · भस्म करि ब्रज ~ ५९०।

पला पल भर चैन · बिनु देखे नहिं परत ~ परि० २/२८।

पलात भाग जाते हैं : मृग सम क्यौं न ~ ३५७१।

पलानी आ धमकी है : मदन-सुभट नृप फौज ~ २७८५।

पलानो भागो, चले जाओ : ब्रज कौ तुरत ~ ३४२६।

पलान्यौ भाग गये, चले गये . जा दिन तै सुफलक सुत कै सँग रथ ब्रजनाथ ~ ३६९६।

पलायमान भाग (गया) : भयौ ~ दानवकुल ९/८३।

पलायो भगाया जरासध इन बहुत बार ही करि सग्राम ~ सारा० ७५२।

पलास १ ढाक, पलास कर ~ कै पात १६१८। २ ढाक के : तोर पात ~ ४३७।

पलिका १ पलगडी : सोइ रहौ मेरी ~ पर ८१९। २. पलग पर . स्याम कौ ~ पौढ़ाए ६६।

पलित पक गये हैं : ~ केस, कफ कठ बिरुध्यौ १/११८।

पलीता बररोह (बरोह) को कूटकर बनाई गई बत्ती जिससे बदूक या तोप के रजक मे आग लगाई जाती है जलद कमान बारि दारु भरि तडित ~ देत ४२६७।

पलुटावति दबवाती है . पोढ़ति अधर, चलित कर पल्लव रम-चरन ~ १३२५।

पलंडे भगाने से भी : टरत न 'सूर' ~ ३६१५।

पलोटति दबाती है जननि ~ पाई २४२।

पलोटिहौं दबाऊँगी . पलिका पौढी ~ पाइ २६४९।

पलोटौं दबाऊँ तुम पौढो मैं चरन ~ २६५०।

पलोवै दबाती है (हरि) चरन-कमल नित रमा ~ ३।

पल्लव १ पत्ते अँुरे द्रुम अकुरित ~ १०६८। पत्तों को · छठत तोरि पलास ~ ४९८।

पल्लवै पल्लवित हो जाय . उकठौ काठ ~ २८२४।

पल्ले परले, उस ओर, दूसरे किनारे पर . सूर हरि कौ भजन करि करि उतरि ~ पार १/८८।

पल्लैं गाँठ मे, पल्ले मे : चूक ~ बाँधि १/१९९

पवते पाते राजकुमारि नारि जौ ~ ३१५३।

पवन १ हवा, वायु। ~ **बस ज्यौं पात** जैसे पवन के वस पत्ता · कहा कहौं ऐसी आतुरता ~ — २३२१। ~ **मिस**

झारति हवा के झोंके से (बहाने) झाड रही हों • अमृत बूँद ~ — १७५३। △ ~ कौ भुस जैसे हवा मे भूसा उड जाता है, अनसुना तेरो कहो ~ — भयौ ३५४०।
पवन गवन पवन की गति से ~ उपजायौ गात ९/६९।
पवन-पति पवन के स्वामी : नीरपति ~ बेद बानी १९४७।
पवन-पुत्र हनूमान : त्रास मानि तिहिं ~ कौ ९/६८।
पवन वर्त्तक चक्रवातो नामक प्रलय कालीन (बादल) . अधाधुध ~ घन करत फिरत उतपात ८७७।
पवनहुँ पवन (से) भी . धायौ ~ तै अति आतुर ३०५८।
पशु-पालक चरवाहे या ग्वाल बाल जात हरि खेलत सग मिले ~ ६११।
पश्चाताप प्रायश्चित, पश्चात्ताप मन करत ~ ४८५।
पषान पत्थर : तहाँ ~ रूप पग परसे ९/२०। २ पाषाण रूप का • तजि ~ पद पायो १/१८८।
पषानौ प्रस्थान भी सुन्यो न एक ~ ४०२७।
पसरि फैलकर सब तन ~ छई ३२४६।
पसरीं फैली हो • ~ किरन प्रचड १८७१।
पसरी फैल गई है ~ तिमिर बिदारि २११४।
पसरैं फैलने पर ~ किरनि कोटि ससि भ्राजै २८९२।
पसर्‍यौ १ फैल गये उमगि तहँउँ ~ ३६४६। २. फैला है ~ भू मडल केतकि जुत परि० १/१४४। ३ फैल गया तिहूँ भुवन भरि सोर ~ ३०९५।
पसाईं मॉड निकाला गया : राइ भोग लियौ भात ~ १२१३।
पसान्यौ फैलाया (पसारा) • बहुरौ हाथ ~ ४२४५।
पसार पु० प्रसार, फैलाव, विस्तार : पथ न पैंड ~ ३९८२। क्रि० स० १ फैलाकर सुरभी दुहत दोहनी माँगी बाह ~ देवाये सारा० ५३८। २ फैली हुई (गोटी) चारि ~ दिसानि १/६०।
पसारत १ प्रसार करते हुए प्रेम ~ बेलि ७। २ फैलाते हैं उमँगि-उमँगि प्रभु भुजा ~ ४४।
पसारन फैलाने (बढाने) लागे देह ~ सारा० ३३९।
पसारहि फैलाओ देखि ~ लात ३८९३।
पसारि १ खोल • सकत न नैन ~ ११३१। २. फैला सकत न पख ~ १८१६। ३ फैलाकर टेरत ,बॉह ~ अनाथ करो जिनि २०८८।
पसारी फैलाकर ताकी बलि दई भुजा ~ ९१२। २ फैलाया • सिव ब्रह्मादिक गोद ~ परि० १/४३। ३ फैलाई तापर तुम यह बात ~ १५५७। ४ मचाई • बन सोर ~ १६२१।
पसारे फैलाये रहता हूँ तृना हाथ ~ निमिदिन १/१८६।
पसारौं फैलाऊँगा • कहुँ कर न ~ ३७।
पसारौ[1] कलह, झझट उहिं यह कियौ ~ ३९५।
पसारौ[2] पुं० झझट : बहुरि कारौ कहुँ करै ~ ७६२। क्रि० स० १ फैलाती हूँ, दौडाती हूँ जहँ लौं दृष्टि ~ १३५। २ फैलाकर, पसार कर भँवर तरग प्रवाह ~ ४२०३।
पसार्‍यौ १ फैलाया • जब अघ बदन ~ ४३३। २ फैलाया है, छोड रखा है : प्रात तै झगरौ ~ १५५५।
पसित पाशबद्ध ~ भए सब नाथ नथन परि० १/९५।
पसीजै १ द्रवित हो जाय सोइ करै जिहिं गात ~ २८२३। २ पसीज गया, पसीना पसीना हो गया . सुठि कोमल अग ~ १८३।
पसीज्यौ पसीज गया, पानी-पानी हो गया • तन पुलकि ~ ७४९।
पसुपति[1] गोचारक परबस ~ की बहराई ९/१६९।
पसुपति[2] शिव जी करिहौ नाम अचल ~ कौ ९/१३१।
पसु-पाल पशु-पालक मोहि परीं ~ सों ८०४।
पसु-पालक पशु पालक (ग्वाले) यह सोभा देखत ~ १७२।
पसुहि पशु को क्यौं समुझावें छपद ~ ३५३४।
पसू पशु परबस भयौ ~ ज्यों रजु बस १/४७।
पस्यात पश्चात जो सग रहै दिन ~ मा० ल० ७०।
पहँ पास सिव ~ आये ४/५।
पहचानौं पहचानूँ कैसैं मैं उनको ~ १८५०।
पहर[1] समय के, जन्मो के पुन्य फूले पाछिले ~ के ३४।
पहर[2] तीन घटे का समय, दिन का चतुर्थांश . (कम) चारि चारि ~ सुख सेज परे निसि ४। ~ **घरी** १ बहुत देर तक प्रभु पचिहौ ~ —१/१३०। २ हर समय, सदा निसि दिन ~ — २३२५। ~ **पहर** के कइ पहर तक पहुप बिमान चढे ~ — ३०।
पहरक एक पहर : ~ मै गढ लेत ४२६७।
पहरावैनी पहने हुए हैं . सूर परस्पर करत कुलाहल गर-स्रग ~ ९/११।
पहरुआ १ पहरा देने वाला, पहरेदार लोक बेद प्रतिहार ~ १८७२। २ पहरेदारों को तासु मारि करि चूर ~ सारा० ५११।
पहरू पहरेदारों को (हरि) छोरे निगड, सोआए ~ ८।
पहरैं पहनने से . जाके ~ हूजिए, सॉचौ ताकौ नेम ४०९५।
पहरौ पहरा, रखवाली • देति रहों अपने प्रान कौ ~ कम्र लगि ९/९२।
पहलैंहैं पहल/तह की ऐसे खोज परे ~ २३०१।
पहार पर्वत पाप ~ दगी १/१३०।
पहारं पहाड पर लग्यो ज्यौं लगै अबुज ~ ४२२२।
पहिचानत १ पहचानता है सो पाएउँ नाहीं ~ १/११४। २ पहचानते • अतर हित ~ हैं २२१२। ३ पहचानते हैं नहिं अपबल ~ २२९८। ४ पहचानते हो नैकु रूप ~ २३१०।

पहिचानति १ पहचानती : कछु मैं हू ~ तुमकौं २१६६ । २. पहचानती है : राधा आली मोहि ~ २८९२ ।

पहिचानतु पहचानती नकहु ~ ताहि न १४८८ ।

पहिचानि स्त्री० १ पहचान : अब कीजे ~ ३५८१ । २ पहचान है : तब ही की ~ हमारी २१६३ । क्रि० स० १ पहचान कर . सूर हँसी राधा ~ २५३५ । २ पहचान, समझ, जान रे मन आपु को ~ १/७० ।

पहिचानी स्त्री० पहचान : मोहिं नाहीं तोसौं ~ १४१२ । क्रि० स० १ पहचान कर उछंग लई वह मुख ~ २०३० । २ पहचान गई, समझ गई मैं वाकौं ~ १०२० । ३ पहचान सकी सूर स्याम कौं नहिं ~ १७८२ । ४ पहचाना है : तैसी मैं ~ २०५२ । ~ आइ पहचान सकूँगा, पहचान मे आयेगी/आयेगी[क्यों — ~ ९/७५ ।

पहिचाने १ जानते हैं, समझते ह राम सिया ~ ३२२९ । २ पहचान पाये : कोउ ढूँढत गृह नहिं ~ ८६० । ३ पहचान लिये हैं मैं ~ नैना बाँके २६३० ।

पहिचानै १ पहचानना है . सु पुनि कौन ~ ३८४० । २ पहचानते हैं, समझते हैं ताकौं कुलटा करि ~ १९२५ । ३ पहचान ले : जौ गुरु प्रसाद ~ २/४० । ४ पहचान सकता है : रमैं और कौन ~ ४२४१ । ५. पहचान लिया, पहचाना वदन देखि ~ ३१५ ।

पहिचानौं १ पहचानती हूँ याकौं नहिं ~ २१५७ । २ पहचान लेती हूँ : निकट जाइ ~ २१५९ । ३ पहचानूँ स्यामहिं का कैसैं ~ १८५१ ।

पहिचान्यौ १ पहचान पाये . अतहु नहिं ~ ३६९६ । २ पहचान लिया है : अब तै भली भाँति ~ ९/५ ।

पहियाँ पास, समीप : चलि हरि पिय ~ २७९३ ।

पहिरत पहनते हैं . प्रिया भूषन स्याम ~ २१४४ ।

पहिरति पहन रही है . कोउ ~ कचुकी सरीर २५ ।

पहिरन पहनना . ~ सीखे पट पीतावर तनिया ३३७७ ।

पहिराइ स्त्री० प्रसन्न हो कर छोटों को दिये जाने वाले वस्त्रादि, पहिनावा . नद कौ सिरपाव दानौ गोप सब ~ ५८६ । क्रि० स० १ (पहरावे) पहनाकर द्विज गुरुजन कौं ~ २४ । २ पहना दिया/दिये त्रिजटी सब ~ ९/१६१ ।

पहिराई १ पहनाकर : ब्रजरानी ढाढिन ~ मन वाछित फल पायो सारा० ४११ । २ पहना दी हो मनु मधुपनि माला ~ ६१६ । ३ पहनाई . आगैं मिल्यौ सुदामा माली फूल माल ~ सारा० ५०१ । ४ पहनाया था जुवती जन ~ ३८६४ ।

पहिराउ पहनाओ तेहि ~ सुभाये सा० ल० ४६ ।

पहिराऊँ धारण करूँ पाटवर-अंबर तजि, गूदरि ~ १/१६६ ।

पहिराए १ पहने हुए, धारण किये हुए . राजत उर ~ ४१७ । २ पहना दिया . रग रग बहु भाँति के, गोपनि ~ ३०४२ । ३ पहनाए . करन फूल ~ ३६०१ ।

पहिरायौ पहनाई : कचन माला ~ ४९२ ।

पहिरावत १ पहना रहे हैं, पहनाते हैं : वनमाला ~ स्यामहिं ४२९ । २ पहनाते समय नद उदार भए ~ ३८ ।

पहिरावनि पहनावा . नीलावर ~ पाई २५१६ ।

पहिरावने पहनावे . आपु ~ सब दिखाए ५८७ ।

पहिरावहि पहनावेंगे वनमाला तुमकौं ~ ४२६ ।

पहिरावौ पहनाओ भूषन ~ ९/९५ ।

पहिरि पहनकर : ~ सब आभरन ४/११ ।

पहिरि पहनी उन उनकी ~ मोतिमाला २०३६ ।

पहिरे १ पहन लिये, धारण कर लिये स्रवननि ~ उलटे तार ११८० । २ पहने ये : ~ अपने अग ३६१७ । ३ पहने हुए मर्द ठाढी और ~ चीर ११६८ । ४ पहने हुए हैं छुद्रावलि ~ नदलाले १७९१ ।

पहिरें पहन रही हैं ~ आभूषण चीर २६ ।

पहिरैं पहने, धारण किये नकटी ~ बेसरि ३०२६ ।

पहिरौं पहनूँ, धारण कर लूँ तुम्हरे आभूषन मैं ~ २१४१ ।

पहिरौ पहनो, धारण करो : चोर उतारि वस्त्र नव ~ २५४८ ।

पहिर्यौ पहन लिया उन ~ उन नौसहि हार २०३६ । ~ हे तुम दान दान ना कर वसूलने वाले बन बैठे हो : अबलौं हम जानी पर हौ मैं ~ — १५७० ।

पहिल पहल । ~ **करी** पहल की, जल्दी का धीरज ~ — चलिवैं की ३१८१ ।

पहिलेहि पहले ही, सर्वप्रथम परसत ~ खोदि बहाऊँ ९२५ ।

पहिलैं १ पहले ~ कौरव पति सौं भैंटे ४०६० । २ पहले ही : स्याम भए बस ~ तेरें १८९८ । ३ पहले से इक ~ ही आसा लागे ३५ ।

पहिलैंइ पहले ही . ~ गमन गयौ लैं हरि कौं ३४७८ ।

पहिलैं १ पहले : वकी पठाइ दई ~ हीं ५२१ । २ पहले तो . ~ सुख दारुन भए हमको ३७५५ ।

पहिलो पहला, प्रथम . ~ पुत्र रुक्मिणी जायौ सारा० ६८९ ।

पहिलौ पहले स्वामी ~ प्रेम सँभारौ ४०५७ ।

पहुँ पर . मनहु कमल ~ कोकिल कूजन १८०५ ।

पहुँचत पहुँचते-पहुँचते वन ~ सुरभी लइ जाइ ४४४ ।

पहुँचन पहुँचने गोपी नैन-नीर सरिता तैं पार न ~ पायौ ४०९७ ।

पहुँचनि पहुँचियों (कलाइयों) मे ~ पहुची भ्राजति १०५३ ।

पहुँचा पहुँचा, कलाई ~ कर सौं गहि रहे ३०४० ।

पहुँचाइ पहुँचा तहँ हीं अन्न देहिं ~ ७/३ ।

पहुँचाई पहुँचाया : ताहि बाँह गहि घर ~ १४०९ ।

पहुँचाऊँ १ पहुँचा दूँ लै लका ~ ९/१०९ । २ पहुँचा दूँगा :

नीकै ~ ९/४२। ३. पहुँचाये देता हूँ : हौं प्रभु पै ~ ९/१५५।

पहुँचाए पहुंचा दिया : ब्रह्म लोक ~ ४३६।

पहुँचायौ पहुँचाई है : मेरी बलि मोहिं नहिं ~ ८५१।

पहुँचावत पहुँचाते हैं मातु उदर मैं रस ~ २/२०।

पहुँचावहु पहुँचा दो . (कृष्ण) तुरत मोहि गोकुल ~ ८।

पहुँचावै १ पहुँचाता है ले जवाब ~ १/१४२। २ पहुँचा दे कोउ लै ~ १/४ । ३. पहुँचाये : को हरि पिय पै ~ री ४२५४।

पहुँचिया बाँह मे पहनने का एक गहना, पहुँची : पकज पानि ~ राजै ११७।

पहुँची पहुँची, बाँह का एक आभूषण : कर मरोरि ~ गहि तोरी परि० १/१२३।

पहुँची बंध पहुँची-बंध · कटि लहँगा ~ अँगिया परि० १/१२२।

पहुँचैं पहुँचे, पहुँचने लगें क्यौं करि ~ लोइ तौ ४२५७।

पहुँचे[1] पहुँचे मे, कलाई मे : चित्रित बाँह पहुँचिया ~ ४५१।

पहुँचे[2] १ पहुँचता एक जाइ ~ नहीं २९३७ । २ पहुँचे · कमल ह्यौं ~ ५२५। ३ पहुँचेगा या पहुँचता है, प्राप्त करता है : ध्रुव पद ~ सोइ ४३०२। ४. प्राप्त हो सकता है : ~ जो कछु चहियै २/१८।

पहुँचौ पहुंचा, कलाई : अँगुरी गहत गह्यौ जिहिं ~ १३०५।

पहुँच्यौं पहुंच गया : ध्रुव प्रताप परली दिसि ~ ९/१०४।

पहुँच्यौ १ पहुँचा, पहुँच गया . उडत उडत सुक ~ तहाँ १/२२६। २ पहुँचा हुआ है, पहुँच गया है : मन तौ पिय पहिले ही ~ ८०२।

पहुँनाई आतिथ्य सत्कार . मन लैहो ~ करिहौं १९३४।

पहुच्यौ पहुँचा। ~ **जाइ** जा पहुँचा, जा धमका, पहुँच गया . हिरन्याच्छ लै कर गदा, तुरतहिं ~ — ३/११।

पहुनाई आतिथ्य सत्कार, मेहमानी : करति सबै रुचि की ~ २९१०। △ **करौं** ~ मेहमानी करूँगी, खबर लूँगी, अच्छी तरह पीटूँगी साटिनि मारि — ~ चितवत कान्ह डरायौ ३३०। ~ **बिधि ठानी** विधिपूर्वक आतिथ्य-सत्कार किया . निज मदिर लै गई रुकमिनि ~ — ४२९१।

पहुने अतिथि, मेहमान · करत सबै मिलि ~ की पहुनाई १७४४।

पहुनेहुँ अतिथि बनकर ही : ~ नद बबा के आवहु ३२३२।

पहु-फाटी पौ फट गई, ऊषा की लाली-फूट आई · ~ कुमुदिनी कुम्हिलानी २७९९।

पहूँचे पहुचे : जौ लगि आन न आनि ~ १/१९१।

पहूँच्यौ पहुँचा : दनुज एक तहँ आई ~ ४१०।

पहूनति छिपी हुई, अपह्नुति अलकार निरविकार यह सूर ~ सा० ल० ११।

पाँइ पैर, चरण। △ ~ **की बेरी** पाँव की बेडी, बाधक · प्रीतम भयौ ~ — ८०७।

पाँइन पाँवों मे : सूरदास सुजान ~ सा० ल० २०।

पाँइनि पैरों . सौंह करति तेरैं ~ की २५९८।

पाँउ पैर . चलो कत यह सब हरि किरपा, ~ धरिए धाम ४२३६।

पाँखनि पखों . जिनि ~ कौ मुकुट बनायौ ४७७।

पाँखि पख मढौ चौंच अरु ~ ९/१६४।

पाँखुरी पखुडी : प्रेम पराग ~ पल दल २६८५।

पाँखैं पख : मुरली अधर मोर की ~ ३८१०।

पाँच[1] पचेन्द्रियाँ (आँख, नाक, कान, जिह्वा, त्वचा) . इक कौं आनि ठेलत ~ १/१९६।

पाँच[2] पाँच। △ ~ **की सात लगायौ** अनेक बातें गढकर दोषी बताया, षड्यत्र तैयार किया · ~ — झूँठी झूँठी कै बनायौ १७३४। ~ **छह निदरि** पचा छक्का (कूटनीति) त्याग करके ~ — मातै भुलैहौ १७३९। ~ **न आवै सात** कुछ भी समझ मे नहीं आ रहा था . चकृत भए नारि-नर ठाढे ~ — २९५७। **भूल्यौ** ~ **और सात** चालाकी भूल गई, छलछद करना भूल गया : अब मोहिं — ~ — २१७८।

पाँचनि[1] पचों का सुनहु सूर ~ मन एकै २०९४।

पाँचनि[2] पाँचों (पचेन्द्रियों) . सो मैं बाँटि दई ~ कौ १/१९६।

पाँचलोक समाज के पचो ने ~ मिलि कह्यौ तुम्हारै १/२०७।

पाँचसात इक गति ५ + ७ + १ = १३ तेरहवाँ नक्षत्र (हस्त) हस्ति गति, गजगामिनी तीन दोइ इग ~ मा० ल० १९।

पाँचै[1] पाँच : ~ प्रमदा परम प्रीति सौं मारा० १०५६।

पाँचै[2] (किसी पक्ष की) पचमी तिथि ~ परिमिति परिहरैं २९१४।

पाँछिलो पिछला, पिछले (जन्म) का धन्य सुकृत ~ धन्य धनि नन्द १६०२।

पाँडल पाडर, कुद का फूल, दौना बहु ~ बिपुल गँभीर २९०३।

पाडव कुन्ती और माद्री के गर्भ से उत्पन्न राजा पाँडु के पाँचों पुत्रों (युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल तथा सहदेव) को · ~ जरत बचाए ५५६।

पांडव सुत पाडु के पुत्र, पाँच पाडव . ~ जीवत मिले १/२३८।

पांडवनि पाडवो को लाखा ग्रह ~ उबारे १/३१।

पांडु पाडव वश के आदि पुरुष जो पराशर ऋषि से उत्पन्न व्यास और अबालिका से उत्पन्न हुए थे ~ की बधू जस नैकु गायो १/५।

पांडु-कुमार पाडु-पुत्र, पाडव ~ से डोलत १/२४८।

पांडु-बधू द्रौपदी : ~ पटहीन सभा में १/१५८।

पांडुरोग एक प्रकार का रोग, पीलिया : जनियत है मुख ~ भयौ ३९६९।

पांडु-सुत पाडु-पुत्र (युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल तथा सहदेव) : जरत ~ बुधि बल नाथ उबारे १/१०।

पॉडे[1] पाण्डेय (ब्राह्मण) : ~ रुचि करि खीर चढायौ २४८।

पॉडे[2] उद्धव : आए जोग सिखावन ~ ३६०४।

पॉडे[3] अध्यापक : जब ~ इत-उत कहुँ गए ७/२।

पॉत पंक्ति : मुखरित मधुकर ~ मारा० १०४०।

पॉति[1] बिरादरी, परिवार-समूह : जाति ~ कोउ पूछत नाहीं १/२३१।

पॉति[2] १ पंक्ति, कतार, अवली, : की बग ~ २०५८। २ पंक्ति में : बैठे हैं इक ~ १८१९। ~ **करि** पंक्तिवद्ध बैठाकर : सुर असुर ~ — सुरा असुरनि दइ सुरनि कौं अमृत दीन्हो पियाइ ८/९।

पॉतिनि पंक्तियाँ, कतारें : इन्द्र-बधू जुरीं ~ बहरके ३०।

पॉती समूह, समान : तदपि बिमुख ~ सो गनियत १/९३।

पॉवड़े वस्त्र, जो मार्ग में किसी के आने पर आदर के लिए बिछाया जाता है : सुभग ~ टारति २०२९। ~ **डसाए** पॉवड़े बिछाये गये : पाटबर ~ — ९८४।

पॉवर पामर, ओछी, क्षुद्र : अब तो सहाय करो तुम मेरौ हा ~ मति हीनी सारा० ७६६।

पॉवरि पादुका, खड़ाऊँ - 'सूर' स्वामी की ~ सिर धरि ९/५३।

पॉवरी खड़ाऊँ, पादुका : रतन जटित पग सुभग ~ १७९१।

पॉसे चौसर खेलने के हाथी दाँत या हड्डी के बने हुए चौपहलू टुकड़े : गुन ~ क्रम अंक चारि गनि सारि १/६०।

पा पैर। ~ **लागति** हौं पैर छूती हू : पथिक तिहारे ~ — ४२४७। ~ **लागैं** प्रणाम करती हैं : ऊधौ उठौ सबै ~ — ३८१५। ~ **लागौं** प्रणाम करती हूँ, पैर छूती हूँ : ~ — मदिर पग धारौ ३३९६।

पाइँनि १ पैरों पर : मेरे ~ परतु २८०४। २ पैरों में : ~ आनि लगावै २०५५।

पाइ[1] १ पैर, चरण, पाँव : देवल रिसि कौं पकर्यौ ~ ८/२। २ पैरों : राखौ रोकि ~ बंधन कै ८०८। ३ पैरों को : बंदौं तिहि ~ १/१। ४. पैरों के : दै दरपन मनि धर्यौ ~ तर २८२६। ५ पैरों में : कठिन लागत ~ ४९८। ~ **धारियै** पैर रखिये, पधारिये : सूरदास प्रभु ~ — २६३६। △ ~ **की बेरी** पैर की बेड़ी, बाधक : प्रीतम भयौ ~ — ८०७।

पाइ[2] १. पाकर : समय ~ कहिबौ ४०५८। २. पाई है : लंक बिभीषन ~ ९/८३। ३ मिला, प्राप्त हुआ : दुर्लभ जन्म सुलभ ही ~ ७/२। ~ **कै** पाकर : मान कियौ रिस ~ २७२७। ~ **पाइ** पा पाकर : ~ — मो मरै ३/१३।

पाइतरी पैताना, पलँग के पैर की ओर का भाग : कमल नैन पौढ़े सुख-सज्या बैठे पारथ ~ १/२८८।

पाइनि १ पैर : पहिले करि प्रनाम, ~ परि ९/१०१। २ पैरों : हौं वारी नान्हे ~ की २२३। ३ पैरों पर : पर्यौ ~ धाइ ४८५। ४ पैरों में : ~ नूपुर बाजई १३४। ५ पैरों में : अपने ~ कबहिं लौं मोहिं देखन धावै ११२।

पाइ पियादे नंगे पैर, पैदल : ~ धाइ ग्राह सौं लीन्हौं राखि १/१६।

पाइय पायेंगे : पुनि कह्यौ, मत्स्य हरि अब कहाँ ~ ८/१६।

पाइयत पाती, प्राप्त करतीं : दरस परस दिन राति ~ ३८५८।

पाइयतु मिलती, प्राप्त होती : प्राननि के बदलें न ~ ३३४१।

पाइये पाया जाता है : मरैं रन सुजस परलोक सुख ~ ४२२१।

पाइयें १ पाओगी : ~ सखि मोड़ री १८३१। २ पायेंगी : भाग लिखौ सु ~ ३८६५। ३ पायेंगे : ज्यौं ~ सु खनावत घरे ३५७६। ४ मिलता है, प्राप्त होता है : भाग बिना कछु नहिं ~ २३२६। **जौ बातनि सुख ~** यदि बातों से ही काम बन जाये तो : अपनौ कहा गाँठि कौ लागत — ~ २५७०

पाइयौ पाया : राधिका बर ~ परि० १/४१।

पाइहैं १ पायेंगी : जौ काहू कौं पकरि ~ २९१६। २ पायेंगे : कहूँ कम सुनि ~ १६१८।

पाइहौं १ पाऊँगा : गो चारत बन जाइ ~ २९४८। २ पाऊँगी : हौं जदुपति बर ~ ४१८८।

पाइहौ १ पाओगे : ऐसे सेवक कहाँ ~ २२५८। २ पाओगी : अब कैसैं बर जानि ~ १५०४।

पाई पैर : रहे सबै गहि ~ ४०९५।

पाई[1] पैर : जननि पलोटति ~ २४२।

पाई[2] १ पा गई : घर बैठे निधि ~ १९७२। २ परिचित हो गई है, समझ गई हैं : ~ जाति तुम्हारे नृप की १५८०। ३ पा गये : मन बाछित फल ~ सारा० ५०२। ४ पाते हुए : पुरजन बसैं सदा सुख ~ ५/३। ५ प्राप्त है, पा गये हैं : निरगुन जोति कहाँ उन ~ ३८०८। ६ पाये, सके : बली बालि सों न छूटि ~ ९/११८। ७ पा सकती है : ललिता चन्द्रावलि कहँ इतनी छवि ~ २१९२। ८ पाई, पा सकते हैं : यह सुन्दरता उन कहँ ~ १८१०। ९ पूरी कर ली है : हौं सखि, नई चाह इक ~ २२। १० प्राप्त कर ली, प्राप्त की : लागत बान देव-गति ~ ९/५९। ११ मिल गई : आग्या जब ~ ९/९६। १२ मिली है : यह सुधि एक पथिक पै ~ ४२६२। १३ समझी : अब इनकी लँगराई ~ २२८९।

पाउँ[1] पाता हूं · मदन मोहन छबि सोभा की उपमा नहिं ~ ६६३।

पाउँ[2] पैर : प्रीति नदी ~ न बोर्‌यौ ३९५८। ~ **कहाँ तै धारे** कहाँ से आ रहे हैं : तन अति हीन मलीन देखियत, ~ — ४२३०। ~ **धारत** हौ पैर रखते हो · ऊधौ ज्यौं करि कृपा ~ — ४०५०। ~ **धारियै** पदार्पण कीजिए : ~ — बाम धाम जहँ २५१८। △ ~ **कुल्हारौ मारौ** (अपने) पैर पर कुल्हाडी मार ली, अपनी हानि कर ली · जल औंडे मैं चहुँ दिसि पैर्‌यौ, ~ — १/१५२।

पाउ पाता हूँ : बाँचि समुझि सब ~ ४१३३।

पाऊ[1] पैर भवन जाहु अपने अपने सब, लागति हौं मैं ~ ३४५।

पाऊँ[2] १. पाऊँगा : ताहि कहाँ पुनि ~ ९/४१। २ पाउँगी · बहुरि कहाँ मैं ~ १९३७। ३ पा जाऊँ अब कैं जौ पिय कौ ~ २१०६। ४ पाती हू रहन न ~ बैसैं २३५९। ५ पाता, मिलता, प्राप्त होता समय न कबहू ~ ९/१७२। ६ मिले, प्राप्त करूँ कृपा वास ब्रज ~ ११७४। ७ होता है सुनत अचंभौ ~ २२५२।

पाऊँगौ पाऊँगा : तऊ आइ सुख ~ २४९३।

पाएँ पा जाने पर . ज्यौ सिवछत दरसन रबि ~ १९१३।

पाए १ पाकर, प्राप्त कर लेने पर : जैसैं रक पदारथ ~ १/७८। २ पा जाय . जियौं मनौ रक निधि ~ ११८२। ३ पाया · ब्रज जुवतिनि उपवन मैं ~ ७८। ४ पाया है · जोग सौ कौनै हरि ~ ३८९४। ५ पा गये हों : जनु बिधि राजन अजन ~ २३९०। ६ पा जाने से, प्राप्त करने से : गए तन ताप तुव दरस ~ ८४८। ७ प्राप्त होता है : यह सुख तीनि लोक में नाहीं जो ~ प्रभु पहियाँ ९/१९। ८ मिल गये, प्राप्त हो गये : समाचार सब ~ ९/९०। ९ पाई (हू) जानि जु ~ हौ हरि नांकै २८७।

पाएहुँ पाकर भी सो ~ नाहीं पहिचानत १/११४।

पाएँ १ पाकर सुनहु सूर हरि कौ मुह ~ १२३१। २ पाने से अह ऊँचे पद ~ ऐनु ४८९। ३ पाये, प्राप्त किए : सूर स्याम दरसन बिनु ~ १६८२।

पाओ पाइये निरख परम सुख ~ ८७५।

पाक १ पकवान, व्यजन : मिलि बैठे सब जेंवन लागे, बहुत बने कहि ~ ४६४। २ रसोई, तैयार भोजन सिद्ध ~ इहि आइ जुठायौ २४८।

पाकर एक वृक्ष, पाकड फूल करील कलो ~ नम १२१३।

पाकशाला रसोई घर तब उन कह्यौ ~ मे अबही यह पहुँचाओ सारा० ६९४।

पाके पके हुए ~ फल वै देखि मनोहर ३८७२।

पाखँड ढोंग, ढकोसला : दूर कियौ ~ बाद हरि भक्तन को अनुकूल सारा० ३१९।

पाख पक्ष एक ~ त्रय-मास कौ ६८।

पाखाननि पत्थरों से · तब लौ तुरत एक तौ बाँधौ, द्रुम ~ छाई ९/११०।

पाग[1] पगडी : लटपटी ~ उनींदे लोचन २६३२।

पाग[2] चाशनी घृत मिष्ठान सबै परि पूरन मिस्री करत ~ कौं चूरन ८९२।

पाग[3] पगे हुए : हरि मे प्रीतम ~ सारा० १००९।

पागत निमग्न हो जाते हैं : नख-सिख तै रस ~ १३२३।

पागि पग गई (है) : अब यामैं मधु हीं ~ गई १३६२।

पागी १ पग डूब गई . भली भई हरिकैं रस ~ २२१२। २ मग्न, पगी हुई, सनी हुई नित्य निरखत रहति प्रेम ~ ३०६०। ३ रँगी हुई है लटपटी पाग महाउर ~ २६४५।

पागे १ अनुरक्त हुए, मग्न हुए : नये प्रेम रस ~ ६८६। २ अनुरक्त हो · रैनि जागे रति रस ~ २६३५। ३. पगे/ फँसे पडे हैं लग लागे ~ उर अतर २७८०। ४. सराबोर हो गये सूर स्याम बामा रँग ~ २५५७।

पाग्यौ १ तन्मय हो गया हो . पियत सुमन रस ~ ११८१। २ बहुत अधिक लिप्त हुआ, ओतप्रोत हो गया : महा अघनि बपु ~ १/७३।

पाचि पच्चीकारी : डाँटी खची ~ मरकतमय २८४१।

पाछिल पहले की, पिछली, पहली समुझावत सब ~ बातै सा० ल० ७३।

पाछिलि पिछली (बातो की) : लागी ~ सुरत दिवावन २७५५।

पाछिली पिछली : आवन कह्यौ बहुत दिन लाए, करी ~ गाह ४०३२।

पाछिले १ पिछले, पहले उन तौ करी ~ की गति १/१७५। २ पहले के · टटके चिन्ह ~ न्यारे २५५६।

पाछिले कर पहिल दीरघ बहुरि लघुता श्रोर पिछले अर्थात अक्षर 'ता' को पहले दीर्घ करने से (ता), फिर लघु करने से (त), दोनो को मिलाने से तात, पिता ~ सा०ल० १०६।

पाछिलौ पिछला · रासि ~ नेह १६१८।

पाछैं १ पिछवाडे : घर ~ मुरली धुनि ऐसैं ९८९। २ पीछे ~ फिरि न निहार्‌यौ २२४५। ३ पीछे हैं इद्री सबै मनहि के ~ १०२३। ४ बाद मे : ~ मोकौं दीजौ गारी १९०२।

पाछे १ पीछे . ~ चितै फेरि फेरि १०१। २ बाद मे : ~ सोच न कीन्हौ १/१७५।

पाछैन पीछे आने वालो . परखि लिए ~ कौं ३०३८।

पाज[1] पजे : उत जसुदा इत आपु परसपर आढि रहै कर ~ परि० १/१२।

पाज[2] बाँध : सागर कौ ~ बाँधि पार उतारि आवैं ९/११८।

पाटंबर १ रेशमी वस्त्र साजि सिंगार अग ~ सोहैं १६१८। २ रेशमी वस्त्र की : ~ दिवि मदिर छायौ ९८४।

पाटंबर अंबर रेशमी वस्त्र ~ तजि, गूदरि पहिराऊँ १/१६६।

पाट¹ किवाड़ : ~ गए टूटि, परी लूटि सब नगर में ९/१३८ ।
पाट² १ रेशम : पहिरि अबर ~ के ३९९७ । २ वस्त्र . नील ~ पिरोइ मनि गन १७७ ।
पाट³ राजसिंहासन : ~ विरध ममता है मेरें माया को अधिकार १/१४१ ।
पाट-छिद्र नख-क्षत, नखों की चोट : ~ इमि खाए सा० ल० १३ ।
पाटत भर देते हैं, सही कर देते हैं : सूर खाल किन ~ १/१०७ ।
पाट-पवित्रा सन के रेशे की पवित्र डोरी : पंचरग वर ~ २८३२ ।
पाटवंध रेशमी साड़ियाँ : हर कर ~ न्यौछावरि ३०९४ ।
पाट बिरध पटरानी : ~ ममता है मेरें १/१४१ ।
पाटरानी पटरानी, प्रधान रानी जो राजा के साथ सिंहासन पर बाँयीं ओर बैठती है : अब कहावति ~ ३१५० ।
पाटल गुलाब की मिलत सनमुख पटल ~ भरति मानहि जुही २८४४ ।
पाटि बालों की पाटी, माँग की पट्टियाँ : जुगल ~ घन-घटा बीच मनु २६६८ ।
पाटी¹ बालों की पट्टी · सीस फूल धरि ~ पोंछत २६२८ ।
पाटी² १ पलग की लम्बी वाली लकड़ियाँ : बुनो बाँस जुत बुनौ खटोला काहु को पलग कनक ~ को ४२३९ । २.पलग (पाटी) के : नवग्रह परे रहें ~ तर कूपहिं काल उसारौ ९/१५९ ।
पाटैं भर दें, डुबा दे छिन में बरषि प्रलय-जल ~ खोज रहै नहिं चीन्हौ ८५४ ।
पाटौं पाट दूँ, दबाकर गाड दूँ खोदि पतालहिं ~ ९/१४८ ।
पाटौ¹ पट्टा, अधिकार पत्र : सो ~ लिखि पाऊँ १/१४६ ।
पाटौ² भर दो : मूसलधार बरषि जल ~ ८७८ ।
पाठ अध्ययन · विद्या ~ कर्‍यौ १/१३३ ।
पातंजलि एक प्रसिद्ध मुनि जिन्होंने पाणिनीय सूत्रों और कात्यायन कृत उनके वार्तिक पर वृहद् महाभाष्य का निर्माण किया था। योगशास्त्र के प्रसिद्ध प्रणेता और आचार्य : ~ से मुनि पद सेवक करत सदा अज ध्यान सारा० ६२ ।
पात¹ पतन करने वाला : मानी सग प्रेम पथ ~ ३९७७ ।
पात² १ पत्र, पत्ता : कपित तन कदलि ~ ३६०५ । २ पत्ते : सूखे ~ और तृन खाइ ५/३ । ३ पत्ते मे · रुचि मानत तुलसी के ~ ४२२५ । ४ पत्तों का पान करत किन ~ ३५४५ । ५ पत्तों के बर्नाहिं के ~ दोना लगाए १५९६ ।
पातक १ पाप सुनत ~ नासु री १७९४ । २ पापों को . चित्रगुप्त जम द्वार लिखत है मेरे ~ झारि १/१९० । ~ खोए पाप धो दिए : जनम जनम के ~ — ९८४ ।
पातकी पापी · निलज, निर्दयी, निसक ~ २२८५ ।
पातनि १ पत्तों : सूरी के ~ बदले को मुक्ताफल देइ ३६६४ । २ पत्तों को : देखि पुराने ~ ३५४९ । ३. पखुड़ियों पर · इनकी गुंज सुमन मधु ~ ३७६० ।
पात पाता पत्तों-पत्तों में . तोहिं कछु दोष नहिं भ्रमति तू जहा तहिं नदी डोंगर, बनहिं ~ १९७१ ।
पातर पत्तल के : किंचित स्वाद स्वान ~ ज्यों १/९८ ।
पातरै बात का पतला (कच्चा) : मचला, अकलै-मूल ~ खाउँ खाउँ कर भूखा १/१८६ ।
पाता पत्ते पर : सरबस प्रभु रीझि देत तुलसी कें ~ १/१०३ ।
पाताल पृथ्वी के नीचे सात लोकों मे सबसे निचला लोक · लै चल्यौ ~ १/१५ ।
पाति पत्ती/पत्ता : बिनु हरि आग्या डुलै न ~ १०/५ ।
पातिव्रतहि पतिव्रत (धर्म) को . ~ धर्म जब जान्यौ बहुरो रुद्र बहाई सारा० ४९ ।
पातिहु पत्र भी ~ लिखि न पठावै ३४१० ।
पाती¹ चिट्ठी/पत्र : जो ~ तुम आनि दई है ३६७७ ।
पाती² इज्जत, मर्यादा : सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु सब ~ उघरी ३९७० ।
पातीहू पत्र भी, चिट्ठी भी कबहूँ ~ न पठाई ४२०० ।
पाते वृक्ष के पत्ते मारे कस सुरन सुख दीनो असुर जरे पिर ~ ३३३८ ।
पातैं पत्ते : तन पीरो जनु ~ ४१२० ।
पात्र¹ पात्र, वह व्यक्ति जो किसी वस्तु या विषय का अधिकारी हो : हरि जू हौं यातैं दुख ~ १/२१६ ।
पात्र² पात्र, बर्तन : तृष्णा जल कलिमल है ~ १/२१६ ।
पाथ मार्ग, राह देखि देखि भ्रम-~ १/२०८ ।
पाथर १. पत्थर : ~ सहै झरारी परि० २/५ । २ पत्थर के भयौ हाथ ~ तर कौ १९१६ ।
पान¹ हाथ . ~ तें सिर धरे मटुकी १६७३ ।
पान² १ पान, एक प्रसिद्ध लता के पत्ते जिसे सुपाड़ी कत्थे आदि के साथ खाया जाता है : ~ खाति मदमाती १६९४ । २ पान (का बीड़ा) : आदर सहित ~ कर दीन्हौ ९२९ । △ दै ~ काम करने का जिम्मा देकर, बीड़ा देकर : कस — ~ पठाई ५० । लै ~ काम करने का जिम्मा लेकर, बीड़ा लेकर . नृपति कौ — ~ ५९० ।
पान³ पीने : मानौ सुधा ~ कै कारन ३५९ ।
पानि¹ १. हाथ धर्‍यौ सीस पर ~ २६०३ । २ हाथ से : अपने ~ पकरि मोहन के कर २००५ । ३ हाथों के चितवै कहा ~ पल्लव-पुट ९/१३२ । ४ हाथों में हौं नदनंदन के ~ १८८३ । ~ परसत हाथों से स्पर्श कर रहे हैं सुभग

श्रीफल उरज ~ — ११९१। ~ **पानि** हाथ से हाथ, एक दूसरे का हाथ • ~ — सौं जोरि जुवति ११८१।

पानि² जल, पानी : भरन देहु अब ~ २८८३।

पानि ग्रहण, पानि ग्रहन विवाह सस्कार • ता परि ~ बिधि कीन्ही १०७२।

पानिप मर्यादा, इज्जत . सभा माँझ द्रौपदी पति राखि पति ~ कुल ताकौ १/११३।

पानि-पदुम कर-कमलो मे ~ आयुध राजैं १/६९।

पानि-पल्लव पल्लव के समान हाथों को राखे रहति ~ गहि १३२१।

पानि-पल्लव-पुट पल्लव के समान हाथ (हथेलियों) के पुट से : चितवै कहा ~ प्रान प्रहारौं तेरौ ९/१३२।

पानिहि पानी के भई मीन बिनु ~ ४१६९।

पानी¹ जल, पानी। **भरत है** ~ जल भर रहे हैं, आँसू से भरे है . मेरैं मैन — ~ ३११५। △ **दूध दूध ~ कौ** ~ सच और झूठ का प्रकट हो जाना — ~ — ~ १८६२। **पितर दै** ~ पितरो के नाम तर्पण कर के • ताकौं मारि — ~ ३६८।

पानी² मान। △ **हरि लियौ कमलनि कौ** ~ कमलो की सुन्दरता या प्रतिष्ठा को नष्ट कर दिया : सुदर नैननि — ~ ४७५।

पानी³ पाणि, हाथ मे आए सारग ~ ९/११५।

पानी-सर पानी के तालाव मैं • दाहै हेम जहाँ ~ ४२३७।

पानै हाथ पर रघुपति यह पैज करी, भूतल धरि ~ ९/९७।

पानै पानी, जल दुखित होत बिनु ~ ४०४२।

पानौ पानी • राजसूय मैं चरन पखारे स्याम लिए कर ~ १/११।

पानौरा पान के पत्ते की पकौडी, पनौर : ~ राइता पकौरी १२१३।

पान्यौ¹ १ पानी : तब भावै भोजन ~ १४५५। २ (बादलों के) पानी से उनयौ अबर ~ (आस भइ) २८२६।

पाप अपराध, कसूर। △ **लावत** ~ दोष लगाता है लरिकनि — ~ २१४।

पापनि १ पापों ~ कौ फल चाहै नाहीं १२/३। २ पापो को : सो सब ~ जारै ६/४। ३ पापो से . ~ रहित धर्म-फल अर्जित ९४८। ~ **हर्यौ** पापों को दूर कर दिया • सकल ~ — ११७६।

पाप-फल-प्रेरित पाप के फल से प्रेरित . दैत्य प्रहारि ~ ९/१५७।

पापर पापड ~ बरी मिथौरी फुलौरी ३९६।

पाप हरन पाप को हरने वाली (त्रिबेणी) = वेणी : ~ मे देव अनूपम सा० ल० ९७।

पापहि पाप ही ~ पाप धरा भई भारी १६०४।

पापिन पापिनी . कौन पाप मैं ~ कीन्हौ ९/८३।

पापिनि पापिनी • वे ~ सब नारि १४७९।

पापिनी पाप करने वाली वह ~ दाहि कुल आई १३१५।

पापी पापी, पातकी • पिता बचन खडै सो ~ १/२०४।

पापु पाप : दरसन नासै ~ ४९२।

पामरी दुपट्टा, उपरना ओढे पीरी ~ १४५७।

पायँ पैर कमलाहू नित ~ पै लोटत हम तो हैं आभीर सारा० ५६८।

पायँन पैरों : ~ परि परि बहुत बिनय कर सारा० ९२०।

पाय¹ पैर ते सब पतित ~ तर डारो १/१४६।

पाय² पाकर . जननी आग्या ~ चले बन पाँच वर्ष सुकुमार सारा० २३।

पायक १ अनुचर, दास, सेवक, दूत : उमडत चले इन्द्र के ~ ८५४। २ पैदल चलने वाला सिपाही ~ मन बानैत अधीरज, सदा दुष्ट मति दूत १/१४१।

पायनि १ पैरों मेरे ~ कौं खरको १९१६। २. पैरों मे : बिवस बिब के ~ परती २१९८।

पायौं पाया : याते टहल करन नहिं ~ सारा० ५३०।

पायौ¹ अदाज किया भुज भुज जोरि अग बल ~ ३०७०।

पायौ² १ पा गया . अब घर जाहु दान मैं ~ १६१४। २ पा गया हो : ज्यौं निधनी धन ~ २२४६। ३ पा गई हैं . ~ नीको दाउ २०४३। ४ पा गई . सो सुख ~ नीकैं १५९७। ५ पा गई हो कहा बिभव तुम ~ २२१०। ६ पा गये अपनौ कियो तुरत फल ~ २३११। ७ पा गये है अब तौ जोर कटक कौ ~ ३८४१। ८. पाती है कहा अगिनि सचु ~ ३७४४। ९ पाना, प्राप्त करना . हरि की भक्ति करो सुख नीके जो चाहो सुख ~ सारा० ७३। १० पाया : नाल कौं अत न ~ २/३६। ११ पाया जा सकता है . भगवन्त भजन बिनु कछु कैसे सुख ~ १/५८। १२ पाया था तब सोना बियोग दुख ~ ४०९४। १३ पाया है, प्राप्त किया है . उन प्रताप त्रिभुवन कौ ~ ९/७४। १४ मिली है रामाग्या नहि ~ ९/८८। △ ~ **दाव** मौका मिल गया है . पिय यह ~ — ११११। ~ **मर्म** रहस्य मिला है . ताकौं कछु न ~ — ११८०। ~ **बिरह सहाइ** विरह की सहायता भी मिल गई . यह कहतहि लोचन भरि आए ~ — २४२४।

पारंगत पार जानेवाला . सब दल उतरि होइ ~ ९/१२१।

पार¹ झील या नदी आदि के दूसरी ओर का किनारा : भव समुद्र हरि पद नौका बिनु कोउ न उतारै ~ १/६८। △ ~ **लाजै उतारि** उद्धार कर लीजिए • लीजै ~ — सूर कौं महाराज ब्रजराज १/१०८। ~ **न पावै** पार नहीं पाती, वर्णन करने मे

असमर्थ है : (हरि) जस अपार, स्तुति ~ — ३ ।

पार[२] १ छोर, अन्त : लहि न सकत ~ कोउ ४१६० । २ सीमा : येउ सोभा नहिं ~ २२३० । △ **जाको वार न ~** जिसका कोई सीमा नहीं है . — ~ १७७४ ।

पारखि परीक्षक को, पारखी का ~ दोष धरे २३४० ।

पारगामी पार जाने वाला : नर कौ नाम ~ हो १/७८ ।

पारत १ गिराता है : पेखि पलक नहिं ~ २३८३ । २. देता है ~ कठिन कलेस सा० ल० २६ । ३ पारते हैं, निकालते हैं बेंदी भाल, माँग सिर ~ २१३७ । ४ बोलते हैं ~ वचन कमल दल लोचन २३२२ । ५. पूरा करते हे : भक्त बछल प्रन ~ १/१२ । ६ टालते हैं, स्पर्श कराते हैं : गिरि पाटनि लै हरि कौं ~ ८४६ ।

पारथ अर्जुन : ~ के सारथि हरि आप भए हैं १/२३ ।

पारथ-तिय पार्थ की स्त्री, द्रोपदी : ~ कुरुराज सभा मैं १/२१ ।

पारथ धन अर्जुन की पत्नी, द्रौपदी : गायौ गीध अजामिल गनिका गायौ ~ रे १/६६ ।

पारधि शिकारी, वधिक : ~ मारि भाल क्यों काढै ४०२५ ।

पारधी शिकारी के, बहेलिया के ~ कर छूट्यौ सधान १/९७ ।

पारन व्रत के दूसरे दिन का पूजन और भोजन : ~ की विधि करौ सवारैं ९८४ ।

पारबती, पारवती हिमालय की कन्या तथा शिव जी की अर्द्धांगिनी, पार्वती सकर ~ उपदेशत २/३ ।

पारबती पितु पार्वती के पिता हिमाचल, यहाँ पर तात्पर्य पर्वत ~ अरु तेरौ तन सा० ल० शेष १ ।

पारषद पार्षद, द्वारपाल . जय अरु विजय ~ ठौर ९/१५ ।

पारस[१] १ एक पत्थर जिसे छूते ही लोहा सोना बन जाता है : सो दुबिधा ~ नहिं जानत १/२२० । २ स्पर्श (पारस) मणियों के : मानौ ससि ~ बिच भ्राजै १९७३ ।

पारस[२] समीप, पास, निकट, कुट मे : मनो तामरस ~ खेलत सारा० १०४९ ।

पारहि[१] पारे को : ~ आग दई ३२९६ ।

पारहि[२] पार . ~ कहाँ भटै । ~ **जइयै** पार जाया जाता है, उद्धार होता है : प्रेम तै ~ — ४०९५ ।

पारहि[३] पड़ेंगे : ~ उनहिं के लेखैं ३७७९ ।

पारहु हुई रहो, बनी रहो दिवस चारिक भोर ~ १७४४ ।

पारा दूसरे तट पर, दूसरी ओर गयौ कूदि हनुमत जब सिंधु ~ ९/७६ । **पावहि नहि** ~ पार नहीं पाते हैं : नारद से — ~ ३ ।

पारावत कबूतर : सुक मारिका हस ~ ४१६५ ।

पारावार ओर-छोर, सीमा, अन्त जाकौ नाहीं ~ ४/९ ।

पारि[१] सीमा, हद : रूप सुधा की ~ २१९४ ।

पारि[२] १ उत्थान या शोर करके : कह्यौ पुकारि ~ पचि हारी ३१६५ । २ डालकर भाँवरि सी ~ फिरे २३०३ । ३. होकर, धारण कर : मौन ~ अपार रचि २५७५ । ४ पालकर, निभाकर . प्रीति पुरातन ~ जिनहिं सौं ३६४५ । ५ सँवारकर, बिछाकर बदन सुधा कौ सरवर कुटिल अलक ~ १८२४ ।

पारिजातक १ पाँच देव-वृक्षों मे से एक, पारिजात नामक देव वृक्ष, कल्पवृक्ष . अप्सरा, ~, धनुष, अस्व ८/८ । २ देव-वृक्ष की : डाँडि वनई ~ परि० १/१०९ ।

पारिहौं सिद्ध कर दूँगा : सूर-स्याम अब साँच ~ १६८० ।

पारी[१] निभा दी, पूर्ण कर दी : जन प्रहलाद प्रतिग्या ~ १/२८ ।

पारी[२] (माँग) सँवारी या निकाली किहि कच गूँदि माँग सिर ~ ७०८ ।

पारे[१] पाला है . मैं इन बहुत दुधनि सौं ~ २९६८ ।

पारे[२] गिराये करत केलि पिय पलक न ~ ।

पारेउ गिराया, खोया : ~ सिर कौ ताज १/२५५ ।

पारैं सँवारते थे, सँवार चुके हैं वै मेरे सिर पटिया ~ कथा काहि उद्धाऊँ ४१२६ ।

पारौं[१] १ ला पटकूँ, डालूँ, गिराऊँ : कहौ तौ ताकौं तृन गहाइ कै जीवत पाइनि ~ ९/१०८ ।

पारौं[२] पूरी करूँ जौ न प्रतिग्या ~ ९/१३७ ।

पारौ[१] निश्चित कर दो : अब इहि तें हद ~ १/१९२ ।

पारौ[२] सँवारना मुडली पटिया ~ चाहै ३५५० ।

पार्‍यौ १ गिराया, नष्ट किया : कौरवपति को ~ ताज १/२४५ । २ डाल दिया . लै रस ~ कान २६०० । ३ टाल दिया है घर घर ~ गोल ३८७० । ४ मारकर . कूक ~ लपकि धींच गज डार्‍यौ मद ३०१४ ।

पार्थ अर्जुन को : भुज गहि ~ उठए १/२९ ।

पार्थ मित्रहि अर्जुन के मित्र को, श्री कृष्ण को : मिलवहु ~ आनि २०८६ ।

पार्षद अनुचर, सेवक : ~ धाइ परै १/८२ ।

पाल पालनकर्ता, पालक : मन बिहँसत गोपाल, भक्त - ~, दुष्ट-साल, जानै को सूरदास चरित कान्ह केरो २७६ ।

पालक पालन/निर्वाह करने वाले : तुम हौ बड़े जोग के ~ ३७०७ ।

पाल-छिति दोनों किनारों को धरती मेरु मूठि, वर-वारि ~ ९/११ । ~

पालत १ पालन करता है : ~ सृजत, सँहारत, सैंतत अट अनेक अवधि पल आधे ९/७८ । २ पालते हैं : ~ अरु पुनि करत सहार ६/४ ।

पालन हारे पालन करने वाले हो तुम प्रति ~ ३४४३ ।

पालन हारैं पालने वाले : सूर स्वान के ~ १/१५० ।

पालनैं पालने में, हिंडोले मे : प्रभु पौढ़े ~ अकेले ६३ ।

पालनै पालने में • पुनि ~ झुलायौ ३५३५।
पालनौ पालना रेसम बनाइ नवरतन ~ ८४।
पालागन चरण वदना, प्रणाम . लछिमन ~ कहि पठयौ ९/८७।
पालागि प्रणाम . दूरि मिले ~ अहो हरि होरी है २९१४।
पालागौ प्रणाम करके, पाँव छूकर/लगकर • पूछति ~ सब बिरहिनि परि० १/१८५।
पालि[1] कगार, किनारा : सागर ~ ढही २९६५।
पालि[2] गाँव मे • जौ रे बसौ ब्रज ~ ५८९।
पालि[3] पालन करके • कोइल काक ~ कह कीन्हौ ३७५१।
पालि पोषि पालन पोषण करके : ~ मैं किए सयाने।
पालीं पाली हुई • नंद-कुंवर की ~ ६१३।
पाली पालन किया प्रीति पुरातन ~ तबकी १४६०।
पाले पाला है • 'सूरजदास' प्रीति करि ~ ३७४८।
पालै १ पालन करता है • ~ प्रजा सुतनि की नाई ५/३। २ पालन करे . दया धर्म ~ जो कोई १०/०।
पाल्यौ पालन किया : वचन तिहारौ ~ ४१७८।
पावँ १ पैर। २ पैरो का, चरणों का • ~ अवार सु घाति रमापति १/१८८। △ ~ **धारौ** चले जाओ : बेगि सवारौ ~ — 'सूर' स्वामी २५४७।
पाव[1] पैर . अरु ऊँचै ~ ३/१३।
पाव[2] १ पाता न निकसन ~ मा० ल० १। २ पाते हैं सूर प्रभु महिमा अगोचर निगम अत न ~ ११५५।
पावक १. अग्नि • दाहक गुन तजि सकत न ~ १/१६३। २ अग्नि के . चदन चद किरनि ~ सम ३९११। ३ अग्नि मे इहि ~ परि कौन जियौ ९/४८।
पावक जठर जठराग्नि ~ जरन नहिं दीन्हौ १/११६।
पावकहि अग्निको ज्यों ~ पियौ ९/४६।
पावकहु अग्नि से भी ~ न डरत १/५५।
पावटौ पैर का एक आभूषण, पायल, नूपुर : अबुज चरन ~ फुदौ इहिं उपमा कौ ठौर परि० २/६४।
पावत १. पाता : ~ नहीं अधीर ५३४। २ पाता हूँ प्रभु, मैं देखि तुम्हैं सुख ~ ७/२। ३ पाता है जाकौ कृपा करत सोइ ~ ४२२९। ४ पाती थी : तब तौ पलक लगत दुख ~ ४०४३। ५ पाती हैं • सौमित्रा कैकयि सुख ~ सारा० १९५। ६ पाती है मुख अति छबि ~ १/१२२। ७ पाते करि सिंगार सुख ~ है २१३७। ८ पाते ही हरषि चले घन आदर ~ ९२९। ९ पाते हैं . सूर कितौ सुख ~ लोचन १३८। १० पाते हो : इन बातनि कछु ~ १५६८। ११ पाने के लिए • कबहूँ पाप करैं ~ धन २/१५। १२ पाने से : फल जैसौ दरसन ~ ७/१७। १३ प्राप्त किया है सकल सूर इनहीं तैं ~ ९/१६७। १४ मिलती है . सूरदास सोभा क्यौं ~ ३८२५।
पावतहूँ पाने पर भी • निसि दिन दुखित मनोरथ करि करि ~ तृष्णा न बुझानी १/१४९।
पावति पाती है . त्यौं त्यौं अति सुख ~ २५२७।
पावति १ पाती • मैं जु दुख ~ हौं दीनदयाल १९४४। २ पाती हूं : एक कहति मारग नहिं ~ ९३३। ३ पाती है • सो बिरहिनी इतनौ दुख ~ ४१४६। ४ पाती हो तुम कैसैं दरसन ~ री २०६४। ५ कर रही हो . काहै कों इतनौ रिस ~ २४१५। ~ **न बियौ री** अन्य कुछ नहीं पाती है : उपमा कौ ~ — १८६६। ~ **भौ** भयभीत होती है यह सुनि कै अति ~ — १५७८।
पावती पाती। **छबि** ~ झलक पाती रहती है . स्याम छबीली भावती, गौर स्याम — ~ २६१३।
पावते पाते निरखि निरखि सुख ~ ३९९५।
पावतौ पाता, सकता . कैसैं जाइ ~ जौ आँगुरिन छियतौ ३७३।
पावन[1] पाने • यह रसना ~ के कारण मेटन भव जजाल सारा० १५७।
पावन[2] **वि०** १ पवित्र महा पतित मैं तुम ~ प्रभु ८४५। २ पवित्र करने वाले तुम ~ नाम कहाए १/७। **स्त्री०** साफ . पैन ~ करै द्वार मेरे ९/१२९।
पावन-पतित पापियों को पवित्र करने वाले ~ कहावत बाने ३८०।
पावनौ पवित्र जै जै धुनि नभ ~ २८३२।
पावस १ वर्षा ऋतु • मानौ घन ~ मैं नगपति है छायौ ९/९६। २ वर्षा ऋतु मे (बादल से) जनु ~ तें निकसि दामिनी २११३।
पावसहि १. पावस की . बिरहिनी ब्रज बास क्यौं करै ~ परतीति ३३७४। २ वर्षा अकुर धरनि जिमि ~ काल २९४६।
पावहि १ पाते हैं नारद से ~ नहिं पारा ३। २ पायें क्यों करि ~ बिरहिनि पारहि ३२७१। ३ पावे यह भूतल कहुँ रहन न ~ ८५६। ४ पा सकते हैं कृष्ण चरन ते ~ स्यामा १०५५। ५ पायेंगे, प्राप्त करेंगे नैन बहुत सुख ~ ३३८७।
पावहि प्राप्त करोगे/कर सकते हो, पाओगे यह प्रिय कथा नगर नारिनि सौ कहहिं जहाँ कछु ~ ३४९८।
पावही पाते हैं एक न पैंटौ ~ ८४१।
पावही पायेंगे नृपति जानि जो ~ १४६१।
पावहु १ पाते हो या मैं कहा तुम ~ ३८७१। २ पा सकते हो . तो तुम मेरौ दरसन ~ ६/७। ३ प्राप्त करो :

ताकौं सेइ परम गति ~ ५/२। ४. पाओगे . ~ मोहिं कहाँ तारन को १/१३०। ५. पा गये • मुँह माँगे फल जौ तुम ~ तौ तुम मानहु मोहीं ८२१।

पावहुगे पाओगे • ~ पुनि कियौ आपनौ १५३३।

पावैं पाते हैं भ्रुव गलो मगन नहि पार ~ २०७९।

पावैं १ पाऊँ . नृप कह्यौ अब कहाँ नाव ~ ८/१६। २ पाते हैं . रोवत डोलैं घरहिं न ~ ९३२। ३ पाये तहाँ कोउ जान न ~ १६१८। ४ पायें : अबकै जो हम दरस ~ ४०१९। ५ पायेंगी • आँखि मूँदि कह ~ ढूँढै ३७९४। ६ पायेंगे राखो अटकि जान नहि ~ ७३९४। ७ प्राप्त करते नंद जसोदा क्यौं सुख ~ १६०७।

पावैंगी पायेंगी। △ रिस ~ क्रोधित होगी, गुस्सा करेंगी : वै सुनिकै — ~ २५३८।

पावैंगे पायेंगे : ते सुख बहुत बहुत ~ ३९४७।

पावै १ पा सकता है : रूप उपमा को ~ १६१८। २ प्राप्त करे, पाये, पा जाय : ताकौ फल ~ गिरिराई ९३५। ३ पाता है • जो जस करै सो ~ तैसी ८/१५। ४ पाती है रट लागी नहिं ~ २३३१। ५ पाते हैं • जाकौ ब्रह्मा अत न ~ ३९३। ६ पायेंगी : सुनहु सूर रानी सुन ~ ३१०६। ७ पा रहा है : थिर चित चतुर न ~ सा० ल० ५। ८. पायेगा : 'सूर' सो प्रेम भक्ति कौ ~ ४१९५। ९. पाओगी : ग्वालि पै जान न ~ १६१८। १०. पाया जा सकता है : अगम-कृपा बिनु नहीं या रसहिं ~ १००६। ११ प्राप्त हुई : जननी गति ~ १/४। १२. प्राप्त हुआ, पा गया : ग्राह प्रथम गति ~ १/१२२। ~ **पीर** कष्ट को जानता : तुम बिनु और न कोउ कृपा निधि ~ — पराई १/१९५।

पावैगौ पायेगा : ~ पुनि कियौ आपनौ ३६३१।

पावौं १ पाऊँ : हौं ~ प्रभु पाइ पखारन ९/१७१। २ पाऊँगा, लाभ करूगा : यह जस जीति परम पद ~ ९/१२१। ३ पा रही हू बूडत स्याम थाह नहिं ~ १/२४९। ४ प्राप्त करूँ, होऊँ : तितनै सुख सुख ~ सा० ल० ६२।

पाषंड धोखा, छल : ~ प्रीति करी नदनदन ३७७७, ~ अग्र दए ३५०७।

पाषान १ पत्थर एक ही बान ~ कौ कोट सब दियौ ढाए ४१९४। २ पत्थर का : जनम तौ ~ माँगौ २८१९। ३ पत्थरो को : बारि पर कौन ~ तारे ९/१२९।

पासंगहु पसगे के बराबर भी। △ ~ **नाहीं** बहुत ही तुच्छ है, कुछ भी नहीं है, नगण्य है : बडे पतित ~ — अजमिल कौन बिचारौ १/१३१।

पास[1] १ पाश, बधन : बरुन- ~ तैं ब्रजपतिहिं छन माहि छुडावै १/७०। २ पाश मे, बधन मे : निज नृप ~ बाँधि लै आए ५/३।

पास[2] ओर : चल्यौ बहि चहुँ ~ तैं ८३६।

पास[3] १. निकट, समीप : कान्ह हमारैं ~ ४३१। २. पास है, निकट है . ज्यौ मृगा कस्तूरि भूलै सु तौ ताके ~ १/७० ३ सामीप्य, सान्निध्य : नैंकु न छाडौं ~ १६६४।

पासन आस-पास : लीन्है फिरत घरहि के ~ ९३४।

पासनी अन्नप्राशन सस्कार कान्ह कुवर की करहु ~ ८७।

पासहि पास : मन कै 'सूर' जाउँ प्रभु ~ ४२५४।

पासा[1] १ पास : आतुर गए कुवलया ~ ३१०९। २ पास, अधिकार या कब्जे मे : कोटि दनुज मो सरि मो ~ २९२२।

पासा[2] १ पाँसा, चौसर खेलने के छहपहलू टुकडे जिन्हे खिलाडी बार-बार फेंकते हैं कौरव ~ कपट बनाए १/२४६। २. चौकोर टुकडे : महल-महल लागे मनि ~ ३१०९।

पासी पाश, फदा : सूरदास-प्रभु दृढ करि बाँधे प्रेम पुञ्ज की ~ ३६४३।

पाहन १ पत्थर ~ हृदय हमार ३८०८। २. पत्थर के : ~ सरिस कठोर ९/८३। ३. पत्थर भी पग परसँन ~ तरै १/२३४। △ ~ **जलज बिकास्यौ** पत्थर पर कमल खिल उठे . थावर चर कीन्हे ~ — १०६६।

पाहन-पूतरी पत्थर की पुतली, जडवत् : ~ भई २७८८।

पाहन-सुत दर्पण : लै ~ कर सन्मुख दै २४६५।

पाहि (किस) से दान चहत किहि ~ १६१८।

पाही[1] १ पास . नहि मिले ढूँढति द्रुम ~ १०९६। २ पास हैं हम निरगुन सब गुन उन ~ ४१९५।

पाही[2] पाही, वह खेती जिसका मालिक दूसरे गाँव मे रहता है : ज्यो कृषि कीन्हे ~ ३६०६।

पाही[3] प्राप्त करती हैं सुधो कहौ किहि ~ ३६०६।

पाहुनी स्त्री अतिथि, अभ्यागत स्त्री मैं जानी कोउ घोष.' १/१५१।

पाहुने अतिथि : जा दिन सत ~ आवत २/१७।

पाहुनैं अतिथि के समान एक बार मिलि जाहु

पाहे (किसके) प्रति, से : दुख कहिए कहिं ~ २८०९

पिंगला[1] हठयोग की तीन प्रधान नाडियों मे से एक • गगा जमुना परि० १/१८१।

पिंगला[2] एक प्राचीन वेश्या जो अपनी धर्म निष्ठा के लिए थी : सूरदास बरु भली ~ आसा तजि परतीत ३६७१।

पिंजर[1] १ पिंजडा : अर्जुन तब मर ~ कियौ ४३०९। पिंजडे ज्यो सुक ~ माहिं उचारत ४००८।

पिंजर[2] ककाल : सुनि भयभीत बज्र के ~ २४५२।

पिंजरनि पिंजडो मानौ मरकत मनि ~ मैं २२०५।

पिंजरी छोटा पिंजडा ब्रज ~ रुधि मानो राखे निकसन को अकुलात ३१७१।

पिंजरैं पिंजडे मे से . कीर ~ गहत अँगुरी ४९८।

पालनौ पालना • रेसम बनाइ नवरतन ~ ८४।
पालागन चरण वदना, प्रणाम . लछिमन ~ कहि पठयौ ९/८७।
पालागि प्रणाम • दूरि मिले ~ अहो हरि होरी है २९१४।
पालागौ प्रणाम करके, पाँव छूकर/लगकर : **पूछति** ~ सब बिरहिनि परि० १/१८५।
पालि[1] कगार, किनारा : सागर ~ ढही २९६५।
पालि[2] गाँव मे : जौ रे बसौ ब्रज ~ ५८९।
पालि[3] पालन करके : कोइल काक ~ कह कीन्हौ ३७५१।
पालि पोषि पालन-पोषण करके : ~ मैं किए सयाने।
पाली पाली हुई • नंद-कुंवर की ~ ६१३।
पाली पालन किया प्रीति पुरातन ~ तबकी १४६०।
पाले पाला है • 'सूरजदास' प्रीति करि ~ ३७४८।
पालै १ पालन करता है : ~ प्रजा सुतनि की नाई ५/३। २ पालन करे : दया धर्म ~ जो कोई १२/२।
पाल्यौ पालन किया : वचन तिहारौ ~ ४१२८।
पाँव १ पैर। २ पैरों का, चरणों का ~ अबार सु घाति रमापति १/१८८। △ ~ **धारौ** चले जाओ : बेगि सवारौ ~ — 'सूर' स्वामी २५४७।
पाव[1] पैर : अरु ऊँचे ~ ३/१३।
पाव[2] १ पाता • न निकसन ~ सा० ल० १। २ पाते हैं सूर प्रभु महिमा अगोचर निगम अत न ~ ११५५।
पावक १. अग्नि : दाहक गुन तजि सकत न ~ १/१६३। २. अग्नि के . चदन चद किरनि ~ सम ३९११। ३ अग्नि मे • इहिं ~ परि कौन जियौ ९/४८।
पावक जठर जठराग्नि ~ जरन नहिं दीन्हौ १/११६।
पावकहि अग्नि को • ज्यौं ~ पियौ ९/४६।
पावकहू अग्नि से भी ~ न डरत १/५५।
पावटौ पैर का एक आभूषण, पायल, नूपुर . अबुज चरन ~ फुदौ इहिं उपमा कौ ठौर परि० २/६४।
पावत १. पाता : ~ नहीं अधीर ५३४। २ पाता हू • प्रभु, मैं देखि तुम्हैं सुख ~ ७/२। ३ पाता है • जाकी कृपा करत सोइ ~ ४२२९। ४ पाती थी • तब तौ पलक लगत दुख ~ ४०४३। ५ पाती हैं : सौमित्रा कैकयि सुख ~ सारा० १२५। ६ पाती है : मुख अति छवि ~ १/१२२। ७ पाते . करि सिंगार सुख ~ है २१३७। ८ पाते हो . हरषि चले घन आदर ~ ९२९। ९ पाते हैं : सूर कितौ सुख ~ लोचन १३८। १० पाते हो : इन वातनि कछु ~ १५६८। ११. पाने के लिए कबहूँ पाप करैं ~ धन २/१५। १२ पाने से : फल जैसौ दरसन ~ २/१७। १३ प्राप्त किया है . सकत सोभा क्यौं ~ ३८२५।
पावतहूँ पाने पर भी • निसि दिन दुखित मनोरथ करि-करि ~ तृष्ना न बुझानी १/१४९।
पावतिं पाती हैं : त्यौं त्यौं अति सुख ~ २५२७।
पावति १ पाती • मैं जु दुख ~ हौं दीनदयाल १९४४। २ पाती हूं : एक कहति मारग नहिं ~ ९३३। ३. पाती है : सो बिरहिनी इतनौ दुख ~ ४१४६। ४ पाती हो • तुम कैसैं दरसन ~ री २०६४। ५ कर रही हो : काहै कौ इतनौ रिस ~ २४१५। ~ **न बियौ री** अन्य कुछ नहीं पाती है . उपमा कौ ~ — १८६६। ~ **भौ** भयभीत होती है : यह सुनि कै अति ~ — १५७८।
पावती पाती। **छबि** ~ झलक पाती रहती है . स्याम छबीली भावती, गौर स्याम — ~ २६१३।
पावते पाते निरखि निरखि सुख ~ ३९९५।
पावतौ पाता, सकता : कैसैं जाइ ~ जौ आँगुरिन छियतौ ३७३।
पावन[1] पाने • यह रसना ~ के कारण मेटन भव जजाल सारा० १५७।
पावन[2] **वि०** १ पवित्र महा पतित मैं तुम ~ प्रभु ८४५। २ पवित्र करने वाले तुम ~ नाम कहाए १/७। **स्त्री०** स.फ. पौन ~ करै द्वार मेरे ९/१२९।
पावन-पतित पापियो को पवित्र करने वाले ~ कहावत बाने ३८०।
पावनौ पवित्र जै जै धुनि नभ ~ २८३२।
पावस १ वर्षा ऋतु मानौ घन ~ मैं नगपति है छायो ९/९६। २. वर्षा ऋतु मे (बादल से) : जनु ~ तैं निकसि दामिनी २११३।
पावसहि १. पावस की . विरहिनी ब्रज बास क्यौं करैं ~ परतीति ३३७४। २ वर्षा : अकुर धरनि जिमि ~ काल २९४६।
पावहि १ पाते हैं . नारद से ~ नहि पारा ३। २. पायें क्यौं करि ~ विरहिनि पारहिं ३२७१। ३ पावे यह भूतल कहुँ रहन न ~ ८५६। ४. पा सकते हैं कृष्ण चरन ते ~ स्यामा १०५५। ५ पायेंगे, प्राप्त करेंगे : नैन बहुत सुख ~ ३३८७।
पावहि प्राप्त करोगे/कर सकते हो, पाओगे . यह प्रिय कथा नगर नारिनि सौं कहहिं जहाँ कछु ~ ३४९८।
पावहीं पाते हैं एक न पैंठौ ~ ८४१।
पावही पायेंगे • नृपति जानि जो ~ १४६१।
पावहु १ पाते हो . या मैं कहा तुम ~ ३८७१। २ पा सकते हो : तो तुम मेरौ दरसन ~ ६/७। ३ प्राप्त करो :

ताकौं भेड परम गति ~ ५/२ । ४ पाओगे ~ मोहिं कहा तारन का १/१३० । ५ पा गये • मुँह माँगे फल जो तुम ~ तौ तुम मानहु मोहीं ८२१ ।

पावहुगे पाओगे ~ पुनि कियौ आपनौ १५३३ ।

पावै पाते हैं • ध्रुव गली मगन नहि पार ~ २०७९ ।

पावैं १ पाऊँ नृप कह्यौ अब कहाँ नाव ~ ८/१६ । २ पाते हे • रोवत टोलैं घरहिं न ~ ९३२ । ३ पाये तहाँ कोउ जान न ~ १६१८ । ४ पायें • अबकैं जो हम दरस ~ ४०१९ । ५ पायेंगी आँखि मूँदि कह ~ ढूँढै ३७९४ । ६ पायेंगे रासो अटकि जान नहिं ~ २३९४ । ७ प्राप्त करते . नंद जसोदा क्यों सुख ~ १६०७ ।

पावैंगी पायेंगी । △ रिस ~ क्रोधित होंगी, गुस्सा करेंगी वै सुनिकै — ~ २५३८ ।

पावैंगे पायेंगे : ते सुख बहुत बहुत ~ ३९४७ ।

पावै १ पा सकता है रूप उपमा को ~ १६१८ । २ प्राप्त करे, पाये, पा जाय • ताकौ फल ~ गिरिराई ९३५ । ३ पाता है . जो जस करै सो ~ तैसी ८/१५ । ४ पाती है रट लागी नहिं ~ २३३१ । ५ पाते हैं जाकौ ब्रह्मा अंत न ~ ३०३ । ६ पायेंगी : सुनहु सूर रानी सुन ~ ३१०६ । ७ पा रहा है : थिर चित चतुर न ~ मा० ल० ५ । ८ पायेगा 'सूर' सो प्रेम भक्ति की ~ ४१९५ । ९ पाओगा : ग्वालि पै जान न ~ १६१८ । १० पाया जा सकता है : अगम-कृपा बिनु नहीं या रसहिं ~ १००६ । ११ प्राप्त हुई जननी गति ~ १/४ । १२. प्राप्त हुआ, पा गया ग्राह प्रथम गति ~ १/१२२ । ~ पीर कष्ट को जानता . तुम बिनु ओर न कोउ कृपा निधि ~ — पराई १/१९५ ।

पावैगौ पायेगा . ~ पुनि कियौ आपनौ ३६३१ ।

पावौं १ पाऊँ : हौं ~ प्रभु पाइ पखारन ९/१७१ । २ पाऊँगा, लाभ करूँगा . यह जस जीति परम पद ~ ९/१२१ । ३ पा रही हूँ बूडत स्याम थाह नहिं ~ १/२४९ । ४ प्राप्त करूँ, होऊँ . तितनैं सुख सुख ~ सा० ल० ६२ ।

पाषंड धोखा, छल ~ प्रीति करी नदनंदन ३७७७, ~ अन्न दए ३५०७ ।

पाषान १ पत्थर एक ही बान ~ कौ कोट सब दियौ ढाए ४१९४ । २ पत्थर का • जनम तौ ~ माँगौ २८१९ । ३ पत्थरो को • बारि पर कौन ~ तारै ९/१२९ ।

पासगहु पसगे के बराबर भी । △ ~ नाहीं बहुत ही तुच्छ है, कुछ भी नहीं है, नगण्य है • बडे पतित ~ — अजमिल कौन बिचारौ १/१३१ ।

पास[१] १ पाश, बधन बरुन ~ तैं ब्रजपतिहिं छन माहिं छुडावै १/७० । २ पाश मे, बधन में निज नृप ~ बाँधि लै आए ५/३ ।

पास[२] ओर . चल्यौ बहि चहुँ ~ ते ८३६ ।

पास[३] १. निकट, समीप कान्ह हमारें ~ ४३१ । २ पास है, निकट है ज्यों मृगा कस्तूरि भूलै सु तौ ताके ~ १/७० ३ सामीप्य, सान्निध्य . नैंकु न छाडौं ~ १६६४ ।

पासन आस-पास • लीन्हे फिरत घरहिं के ~ ९३४ ।

पासनी अन्नप्राशन संस्कार कान्ह कुवर की करहु ~ ८७ ।

पासहिं पास त्रम कै 'सूर' जाउँ प्रभु ~ ४२५४ ।

पासा[१] १ पास आतुर गए कुवलया ~ ३१०९ । २ पास, अधिकार या कब्जे मे : कोटि दनुज मो सरि मो ~ २९२२ ।

पासा[२] १ पासा, चौसर खेलने के छहपहलू टुकडे जिन्हे खिलाडी बार बार फेंकते हैं कौरव ~ कपट बनाए १/२४६ । २ चौकोर टुकडे . महल-महल लागे मनि ~ ३१०९ ।

पासी पाश, फंदा : सूरदास-प्रभु दृढ करि बाँधे प्रेम पुंज की ~ ३६४३ ।

पाहन १ पत्थर ~ हृदय हमार ३८०८ । २. पत्थर के : ~ सरिस कठोर ९/८३ । ३ पत्थर भी पग परसन ~ तरैं १/२३४ । △ ~ जलज बिकास्यौ पत्थर पर कमल खिल उठे थावर चर कीन्हे ~ — १०६६ ।

पाहन-पूतरी पत्थर की पुतली, जडवत् . ~ भई २७८८ ।

पाहन-सुत दर्पण लै ~ कर सन्मुख दै २४६५ ।

पाहि (किस) से दान चहत किहि ~ १६१८ ।

पाहीं[१] १ पास नहि मिले ढूँढति द्रुम ~ १०१६ । २ पास हैं हम निरगुन सब गुन उन ~ ४१९५ ।

पाही[२] पाही, वह खेती जिसका मालिक दूसरे गाँव मे रहता है . ज्यां कृषि कीन्हे ~ ३६०६ ।

पाहीं[३] प्राप्त करती हैं सु धौं कहौं किहि ~ ३६०६ ।

पाहुनी स्त्री अतिथि, अभ्यागत स्त्री मैं जानी कोउ घोष ~ परि० १/१५१ ।

पाहुने अतिथि : जा दिन मन ~ आवत २/१७ ।

पाहुनैं अतिथि के समान एक बार मिलि जाहु ~ ४०८६ ।

पाहें (किससे) प्रति, से . दुख कहिए केहिं ~ २८०१ ।

पिंगला[१] हठयोग की तीन प्रधान नाडियों मे से एक : इडा ~ गंगा जमुना परि० १/१८१ ।

पिंगला[२] एक प्राचीन वेश्या जो अपनी धर्म-निष्ठा के लिए प्रसिद्ध थी सूरदास वरु भली ~ आसा तजि परतीत ३६७१ ।

पिंजर[१] १ पिंजडा . अर्जुन तब सर ~ कियौ ४३०९ । २ पिंजडे ज्यों सुक ~ माहिं उचारत ४००८ ।

पिंजर[२] कंकाल : सुनि भयभीत बज्र के ~ २४५२ ।

पिंजरनि पिंजरों मानौ सरकत मनि ~ मैं २२०५ ।

पिंजरी छोटा पिंजडा ब्रज ~ रुधि मानो रासे निकसन कौ अकुलात ३१७१ ।

पिंजरैं पिंजडे मे से कोर ~ गहत अँगुरी ४९८ ।

पिंड[1] १ समूह, ढेर : दुहूं करनि असुर हयौ, भयौ मास ~ ९/९६। २. लोंदा, लुगदा : माखन ~ बिभागि दुहुँ कर १७८।
पिंड[2] शरीर, देह : अपनौ ~ पोषिबे कारन १/३३४।
पिंड[3] पिंडदान : प्राण लै गये ~ देन को सारा० ५६२।
पिंड प्रधान भूमिपति सुत गुरु भाषित पिंडोदक के लिए प्रसिद्ध भूमि (गया) के पति (विष्णु)=राम के पुत्र (लव-कुश) के गुरु (वाल्मीकि) द्वारा कथित रचना, रामायण=रामकथा · ~ सरस सुनावै सा० ल० ७९।
पिंडुरिया पिंडुलियाँ : पीन ~ स्याम लसी री चरनाबुज नख लाल १२०४।
पिआवै पान करावे, पिलावे तेहिं क्यौ बिषहिं ~ ३०९८।
पिउ[1] प्रियतम : ए री मोही ~ भावैं २२०७।
पिउ[2] पान कर · ~ पद कमल कौ मकरद ९/१०।
पिए पिया हो : जनु बिष बिषम ~ ४११८।
पिएउ खा/पी लिया था · नैंसुक धैया ~ सबेरे ४६३।
पिऐ पिये · कैसैं गरल ~ ३५७५।
पिक कोयल . बचननि सुनि ~ हारी ११९७।
पिकनि कोयलों को . ~ रिझावति सुंदर सुपद ११८०।
पिचकारि पिचकारी अगनित तब ~ गढाई २८९२।
पिछलौ पिछला, पहले का . ~ दुख बिसरायौ २२१०।
पिछवारे पीछे की ओर, पिछवाडे। ~ **डोलत** पिछवाडे घूमते हैं : नद गोप ~ — ४०८९।
पिछवारैं पीछे की ओर, पिछवाडे : गए नाधि ~ २७७।
पिछानि पहचान (ले), चीन्ह (ले) : आगै है लै ~ २७६।
पिछानी पहचानी गृह रचना ज्यौं चलत ~ ३७१४।
पिछानै पहचानेगा : बरन धर्म न ~ सोइ १२/३।
पिछान्यौ पहचाना : मैं तुमकौं न ~ ४१९०।
पिछोरि दुपट्टा : मोर-मुकुट, स्रवननि मनि कुंडल उर बनमाल ~ ६७०।
पिछोरी पिछौरी, चद्दर : झगा पगा अरु पाग ~ ढाढिन को पहिरायो सारा० ४०८।
पिछोर्‍या फटक कर साफ की। △ **फटकि** ~ फटक कर पछोरी, त्याग दी . लोक लाज सब — ~ १६६१।
पिछौंडे पीछै : पग न ~ डारै परि० १/१२९।
पिछोरि पिछौरी, दुपट्टा यहै पीत ~ ८३७।
पिछोरी १ पिछौरी, दुपट्टा : गुजमाल उर पीत ~ ३९७१। २ वस्त्र, अबर कटि-पट पीत ~ बाँधे ९/२०।
पिछौरी पीत पीताम्बर बाँधि ~ ३६७१।
पिछोरे दुपट्टे मे काटे नाक ~ पोछत ३९७२।
पिटरा पिटारी, सदूक : निसि दिन मन ~ लै भरतौ १/२०३।
पिठौरी पीठी से बने भोज्य पदार्थ, जैसे बरी, मुगौरी : कूर बरी काचरी ~ ३९६।
पितंबर पीताबर : कबहुँ ~ डारि बदन पर ४०५।
पितजुर पित्तज्वर, पित्त बिगडने से होने वाला ज्वर : ~ ऊपर गुर सी ३७८८।
पितर पुरखे · ~ तुम्हारे भए जु खेहु ९/९।
पितरन पूर्वजो कतहूं श्राद्ध करत ~ को तर्पंग करि बहु भाँति सारा० ६७३।
पितामह ब्रह्मा : जे पदकमल ~ ध्यावन २९४७।
पितामह भीषम भीष्म पितामह ने : जे पद कमल ~ भारत देखन पाए ५७१।
पित्रकाज पितृ कार्य (तर्पण) : पद्रह ~ चोदह दस चरि पठे १/६०।
पिनाक १. धनुष : यह अति दुसह ~ ९/२३। २. धनुष को . रघुपति प्रबल ~ बिभजन ९८१।
पिनाकहु धनुष (के) भी · ~ के दड लौं तन चलत परत न पाइ ३/३।
पिनाकी सुत कार्तिकेय : ~ तासु बाहन २०८६।
पिनाकी-सुत तासु बाहन भष-क-भष शकर जी के पुत्र (कार्तिकेय) के वाहन (मोर) का भक्ष्य सर्प का भक्ष्य वायु : ~ बिष खानि २०८६।
पिन्हाऊँ पहनाऊँ : अपने (आभूषन) तुम्हैं ~ २१४१।
पिपीलिका चींटी : सब सौं बात कहत जमपुर की गज ~ लौं १/१५१।
पिय १. पतिदेव, प्रियतम . लेहु सम्हारि देह ~ अपनी ८०६। २. पतियों के . ~ पहिलैं पहुँ ी जाइ २४। ३ प्रियतम को : तब कत कस रोकि राख्यौ ~ ११
पियत १ पीता है : बदन-सुधा-रस ~ मधुप ज्यौं ४०४७। २ पीते . लोग ~ हैं औरै ३२१। ३ पीते हुए, पान करते हुए : किती बार मोहि दूध ~ भई १७५।
पियति पीती हैं : ~ सुधारस प्यारे ४२५२।
पियति पीती · स्रवननि सुधा ~ काहे नहि १३५७।
पियतौ पीता है : मोहन हमारौ भैया केतौ दधि ~ ३७३।
पिय निरजर रिसनी (पै) वारि, सुर, रीसनी के आदि वर्णों को मिलाने से, बाँसुरी ~ कौं कबहू सबद न सुंदर पेरौ सा० ल० ३३।
पियरी[1] एक गाय का नाम या पोले रग की गाय के लिए सबोधन : ~ मौरी, गोरी गैनी ४४५।
पियरी[2] स्त्री० पीलापन . प्राची ~ प्रवान की २०३९। वि० पीली ~ पिछौरी झीनी १५१। △ ~ **परी** पीली पड गई · भूरि भूरि ~ — २१०८।
पियरौ पीला : सेत हरौ रातौ अरु ~ १/६३।
पियहि[1] पीते हैं . ~ पानी आइ परि० १/१४८।
पियहिं[2] १ प्रियतम के : करहु पार लै पकरि ~ कर २४५५। २ प्रियतम (श्याम) को राखति ~ कुचनि बिच आनि ११८०।

पियहि हे प्रियतम : तुम बिन ~ कछू नहिं भावे सारा० ९२३ ।
पियहु पियो, पान करो कजरी कौ पय ~ लाल १७४ ।
पिया १. प्रियतम : नवल नेह नव ~ ६९१ । २. प्यारी (राधा) सुंदर स्याम ~ की जोरी १९०४।
पियाऽधर प्रियतम के अधरों मे : लैं लटकी दै दंत ~ २४५५ ।
पियाइ १ पिला : दियौ दानवनि रिपिहिं ~ ९/१७३ । २ पिलाकर अधर सुधा ~ बिछुरे ४०३५।
पियाई पिला . सुरनि कौं अमृत दीन्हौ ~ ८/९ ।
पियादे नगे (पैर), बिना जूता पहने पाइ ~ धाए ५६९ ।
पियायौ पिला दिया, पिलाया : हरि जब अमृत सुरनि ~ ८/१२ ।
पियार प्यार नहिं सभवत ~ ४२१० ।
पियारी १ अच्छी, रुचिकर . सोइ जेंवहु जो लगै ~ २२७ । २ प्यारी : तू है कत ~ २४४४ । ३ प्यारी है वारुनी बलराम ~ ४२०२ ।
पियारे १ प्रिय तब हरि उठि कै करी बियारी भक्तनि प्रान ~ ४१९ । २ प्यारे अजहुँ न आये स्याम ~ २४७९ ।
पियारैं प्यारे का . गरजनि नाम ~ ३९४२ ।
पियारौ १ प्यारा, प्रिय . बिदुर हमारौ प्रान ~ १/२४४ । २ प्यारे (स्याम) का : आजु बन्यौ नवरग ~ २६४५ ।
पियावत पान कराता है, पिलाता है आपुन पियत ~ दुहि दुहि ११० ।
पियावति पिलाती है : कॉचौ दूध ~ पचि-पचि १७५ ।
पियावन पिलाने के लिए बकी ~ इनहीं आई ३०२८ ।
पियावहु पान कराओ . सूरहिं सुधा ~ ११३६ ।
पियावै १ पिलाते हैं : तिहिं क्यों बिषहि ~ ३६५५ । २ पीने को प्रेरित करे, पिलावे : मो रस जाहि ~ (हो) ७/१० ।
पियास १ प्यास . वा मूरति की तऊ ~ ४३०६ । २ प्यास से बरषत मरत ~ ३८१३ ।
पियासे प्यासे, प्यास से . ब्रज जन चातक मरत ~ ३७७६ ।
पियासौ प्यासा, तृषित, पिपासायुक्त : परम गग कौ छाँडि ~ दुरमति कूप खनावै १/१६८ ।
पियुष, पियूष अमृत पाइ ~ नई १२७५, अति आनद ~ पिये २५८२ ।
पियूषन अमृतमय : पोषन तेरे बचन ~ २८२८ ।
पियूषनि अमृत से . प्रेम ~ पागी २८२६ ।
पियें १ पीकर . पर मद ~ मत्त न हूजियत ३६८७ । २ पिये हैं : ~ प्रेम बर बारुनी १६४० ।
पियें पीने से : कैसैं सीतल होइँ पवन जल ~ ४००३ ।
पियै पियेगा : तो तेहिं ~ सो नरकहिं जाइ ९/१७३ ।
पियैयै पिलाइये, पान कराइये : दरसन सुधा ~ ४०३३ ।
पियौ १ पिया : गरलादिक किमि जात ~ १४३ । २. पान कर, पीकर : मनौ तपत-विष विषम ~ ९/४८ । ३ पान कर लिया, पी लिया : जौ ~ तनक लै भोरै ३२१ । ४. पान कर लिया हो : ज्यों पावकहिं ~ ९/४६ । ५ पी लो, पान कर डालो : सूरदास प्रभु ~ सुधारस २११० । ६ पिया हुआ ~ कमल रस बमत २९११ । ७ पिया है जिहिं मुख अमृत ~ रसना भरि ३६५५ । ८ पीना चाहत वहै ~ ३५६२ ।
पिराई दर्द करते ह . मेरे पाइ ~ ५१० ।
पिराइ पीड़ा करती है, दुखती है दोहनी कर धर बाँह ~ ४९८ ।
पिराक एक पकवान, गुझिया, पेंडाक, पेंडकिया . रचि ~ लाडू दधि आनौ २११ ।
पिराति पीड़ा करती हैं, दर्द करती हैं : अतिहिं ~ सिराति न कबहूँ ३५७० ।
पिरानी दर्द की : स्याम कहत नहिं भुजा ~ ९६५ ।
पिराने १. दर्द करते हैं/किये . मूँदि लोचन रहे अति ~ २२०६ । २ दर्द करने लगे . बाँचत नैन ~ हो ३५२० ।
पिरानौ दर्द करने लगे मारत मारत सात के दोउ हाथ ~ ३०३८ ।
पिरायौ दुखने लगा, दर्द करने लगा उरहन दै-दै मूड ~ ३९१ ।
पिरावत दु ख देते हो काहैं जीभि ~ ३६३० ।
पिरोइ गूँथकर, पिरोकर नील पट ~ मनिगन १७० ।
पिरोजा एक प्रकार का नीला पत्थर, फीरोजा पन्ना ~ लगे बिच-बिच ४१८६ ।
पिरोये गूँथे हुए : बिना ~ धागैं ३९७८ ।
पिरोयौ गूँथा है, पिरोया है : एकहिं धगा ~ १/४३ ।
पिलकी पीली हो गई त्वचा तचकि तन ~ ३२६१ ।
पिलाइ पिलाकर : रास खिलाइ ~ अधर रस ३९५९ ।
पिवत १ पीती हैं ~ जल मुसुकाइ ४१५८ । २ पीते थे दुहि पय ~ पटूखी ३५५७ । ३ पीते हे ~ पियूष पराग १७७७ । ४ पान कर रहा : राका चद चकोर जानिकै ~ नैन कौ नीर ११२६ ।
पिवन पीने के लिए . अमृत अलि मनु ~ आए ३५२ ।
पिवाइ पिलाकर गोद खिलाइ ~ देह पय ३५३५ ।
पिवाई पीते थे, पी रहे थे . बच्छ न छीर ~ ३३४७ ।
पिवायो पियायौ दे० ।
पिवावहि पिला दो : (मधु) नैननि आनि ~ ३४९८ ।
पिवैं पीते हैं . बछ न ~ छीर परि० १/३७ ।
पिशाच क्रूर, नीच . दुष्ट सभा ~ दुरजोधन १/२५४ ।
पिसुन चुगुलखोर : ~ करत सब हाँसी ४१४७ ।
पिस्ता एक प्रकार का छोटा फल जो एक प्रसिद्ध मेवा है : ~दाख

बदाम छुहारा ८१० ।

पिहित छिपे हुए तथा पिहित नामक अलकार • ~ भाव बल मोछौ सा० ल० ८३ ।

पींजरी छोटा पिजरा • गुहा ~ तोरी ४२१६ ।

पींढ सिर या बालों का एक आभूषण, सिरपेंच ~ सीखड सिर बेष नटवर कछे २०६३ ।

पी[1] पीना । ~ **कै** पीकर : भाजन भाँजि दूध दधि ~— २८७।

पी[2] प्रियतम, पति : मान मनायौ नागर ~ कौ २७३८ ।

पिउ १ प्रियतम, प्रिय . 'सूर' बिपरीत रति ~ प्यारी २०३३। २ पिउ-पिउ . ~ सु रटत पपीहा बैरी परि० १/१४५ ।

पीक पान की पीक, चबाये हुए बीडे या गिलौरी का रस : ~ कपोल ललाट महाउर २६३४ ।

पीछुन पीछे की ओर ~ पीठ सँभारौ सा० ल० ८३ ।

पीछैं बाद मे : ~ ही पछिताइ मिलौगे ३१९५ ।

पीछौ पीछा (कर) । △ ~ **लियौ** पीछा कर लिया है . प्रभु मैं ~— तुम्हारौ १/२१८ ।

पीजत पिया जाता है . किधौं खैयत है किधौं ~ ३९६६ ।

पीजै १, पान कीजिए, पीजिए . निर्मल जल जमुना कौ ~ ८३८ । २ पीते है, पान करते हैं . हरि बिनु ब्रज बिष ~ ४०६४ ।

पीजौ पीजिए निर्मल जल जमुना कौ ~ ४२६५ ।

पीठि १ पीठ : बैठति कर ~ दीठि ६५३ । २ पीठ पर : मंदराचल लियौ ~ धारी ८/९ । ३ पीठ मे : 'सूरदास' प्रभु ~ वलय गडे २५०२ । △ ~ **दई** १ पीठ दिखा दी, भाग गया • ~ — जमराज १/९६ । २. विमुख हो गये ~ — हरि मोसौ ३२०९ । ~ **दिखाऊँ** पीठ फेरूँ, रण से हार कर या डर कर विमुख हो जाऊँ . सूरदास रन भूमि बिजय बिनु जियत न ~ — १/२७० । ~ **न दीजै** हार न माने : बैरिहि ~ — २८२६ । **दीन्ही** ~मुँह मोड लिया • सीतल भई चक्र की ज्वाला हरि हँसि — ~ १/२७४ । ~ **न दीन्ही** विमुख नही हुई • पन गहि ~ — ६५६ । ~ **दै** मुँह मोडकर काँपति रिसनि ~ — बैठी २८२६ । ~ **दै** १ पीठ फेर कर या घुमाकर • सुनि ब्रजराज ~ — बैठत ३२७८ । २ सहारा देकर ऊखल ऊपर आनि ~ — तापर सखा चढायौ २९२ ।

पीठी पीठ । △ **दीन्ही है** ~ विमुख हो गये है, मुँह मोड लिया है : सेवाहू करत कितहि — ~ ३७८० ।

पीड[1] सिर या बालों का एक आभूषण, मुकुट : मोर की ~ पखी री २०५७ ।

पीड[2] पीडा : बलमोहन दोउ ~ नयन की ३१३६ ।

पीढ़िनि पीढियो, पुश्तो हौ तौ पतित सात ~ कौ १/१३४ ।

पीतंबर पीताम्बर • ओढि सुभग ~ १९९१ ।

पीत १ पीला : मधुकर ~ बदन किहिं हेत ३९६९ । २ पीली • ~ धुजा उनकी मनरजन ३७४६ ।

पीतऽनुसार पीले के समान • अरुन असित सित ~ ४३०१ ।

पीतनि पीते हैं : अरु जमुना जल ~ ४९० ।

पीत निचोल पीताम्बर • प्रेम ~ हरि कौ ६९६ ।

पीत पट पीताम्बर स्याम सरीर सुदेस ~ ४१६४ ।

पीत पिछौरी पीताम्बर ~ स्याम तनु ११८० ।

पीतमनि पुखराज मुक्ता, बिद्रुम, नील ~ १४० ।

पीत सुबास पीताम्बर . फहरत ~ १८३२ ।

पीतांबर पीला वस्त्र ~ वह सिर तैं ओढत ३३८ ।

पीता चीता कौ किस पीने वाले ने चेता • ज्यौं ~ ४००९ ।

पीते पित्ता, जिगर . जरत हमारे ~ ३६९५ ।

पीन[1] पी रहे हो : खग चौवन माधुरि रस ~ ३८६७ ।

पीन[2] १ कठोर, पैने ~ कुचनि टकटोहन २१७४ । २ पुष्ट . ~ पिंडुरिया स्याम लसी री १२०४ । ३. स्थूल, मोटे-मोटे ~ अस सानुकूल १३८४ ।

पीपरि एक लता जिसकी कलियाँ प्रसिद्ध ओषधि है, पिप्पली • हींग मिरिच ~ अजवायनि १५२८ ।

पीवत पी रहा है मधुकर निकट आप ~ रस सारा० ९९५ ।

पीवै पीने । **खैबै** ~ **कौं** खाने-पीने को . ताहू के — ~ — कहा करति चतुराई ३२५ ।

पीय १. प्रियतम, प्रिय : जानति तुम बहु नायक ~ २५५५ । २ प्यारे (कृष्ण) : ~ के भुजनि मैं कलह मोहन मची ११९१ ।

पीयूष अमृत . ~ कुभ झकोर २१३३ ।

पीयौ पिया भोजन बीच नीर लै ~ ३९६ ।

पीर १ कष्ट, दुःख, पीडा हरै बलबीर बिना को ~ १/३३ ।

पीरक दमन करने वाले, पीडा देने वाले • मागध हति राजा सब छोरे, ऐसे प्रभु पर-~ १/११२ ।

पीरहि पीडा को को या ~ जाने ३६७५ ।

पीरहि पीडा को पर ~ तुम जानत ऊधौ ३९११ ।

पीरी[1] एक गाय का नाम या पीली गाय के लिए सबोधन : ~ धौरी धूमरि गौरी १३७६ ।

पीरी[2] पीली • ओढे ~ पामरी १४५७ । ~ **भई** पीली हो गई यहै ~ — सकुच नाहीं दई अतिहि भीती २०४० । △ **होति ~ कारी** काली पीली होती है, नाराज होती है, क्रोधित होती है मग धरि डग कौन पर — ~ — २५९५ ।

पीरे पीले : ~ पान-बिरी मुख नावति ५१४ ।

पीरौ पीला • ~ भयौ फेफरी अधरनि ३०२५ ।

पील हाथी • ~ कौ देखि हरि कह्यौ यौं बिहँसि ३०५९ ।

पीले पीले वर्ण के, पीले । △ **मुख** ~ निस्तेज होकर, कांतिहीन

होकर : लाली लै लालन गए आए — ~ २५१०।

पीव पपीहे का 'पी' शब्द · रसना तारु सौं नहिं लावत, पीवै ~ पुकारत २३३०। ~ **पीव पुकार** पिय पिय (पी पी) पुकारती है एकइ रट रटत भामिनि ~ — ४१०८।

पीवत १ पीती है भरि अपने कर कनक कटोरा, ~ प्रियहिं चराए ४२०१। २ पीते, पान करते ~ हौ रस परम सचैन २६३८। ३ पीते हुए : देखत पय ~ बलराम ४९७। ४. पीते हैं सूरज स्याम राम पय ~ २२९। △ ~ **मामी** इनकार करते हैं, ध्यान नहीं दे रहे हैं · ऊधौ ~ — ३६२९।

पीवतहू पीते हुए ~ न अघात इते जल ३८६०।

पीवति पीती हैं ~ सूर बारि सब पानी ७८।

पीवति पीती है . अधरनि रस ~ ६५६।

पीवन १ पीना चारन धेनु फेन मथि ~ २८२६। २ पीने : यह सुनि कै हरि ~ लागे १७४।

पीवं पीते हैं . बछरा न ~ छीर ६२३।

पीवै[१] पिये . अपनौ दूध छाँडि को ~ ३९६५।

पीवै[२] प्रिय ही। ~ **पीव पुकारत** पी पी रटता है : रसना तारू सौं नहिं लावत ~ — २३३०।

पीवौं १ पीऊँगा मैं तो पय ~ ४९५। २ पीऊँगी · उन कै पथ न ~ पानी २८२८।

पीवौ पियो, पान करो · ~ छाँछ अघाइ कै १/२३८।

पीसि पीसकर। △ **दाँत** ~ दाँत पीसकर, बहुत क्रोध करके — ~ जौ जगत मरै १/२३४।

पीहौं पान करूँगा · जसुमति कौ पय ~ १६०४।

पुंज १ राशि सुन्दरता कौ ~ प्रकट ही २४८६। २ समूह : कुंज - ~ मैं टाली ५०३। ३ समूह मे : गए नव कुंज, कुसुमनि के ~ ३८६७। ~ **बढायौ** समूह विस्तारित किया · सुख आनंद ~ — ११८२।

पुजनि समूह मे राधा हरि विहरत सुख ~ २८९२।

पुंजी पूँजी · यह तुम पै सब ~ अकेली ३७२४।

पुंजै समूह, ढेर : अब भई विषम ज्वाल की ~ ४०६८।

पुंडरीक[१] कमल ~ बिचार लागी सा० ल० शेष ६।

पुंडरीक सुत गज, उसका सुत (मुक्ता) = गजमुक्ता, मोना ~ घटिगे उर तें सा० ल० ९५।

पुस्चली व्यभिचारिणी, कुलटा · दुष्ट ~ अधम मो गनिका १/१०४।

पुकार स्त्री० आवाज, शब्द, रक्षा के लिए दी गई दुहाई सुनत ~ परम आतुर ह्वै, दौरि छुडायौ हाथी १/११२। क्रि० स० पुकार कर, चिल्ला कर मैं तुमसौं यह कहो ~ ६/४।

पुकारई पुकारता है : तमचुर टेरि ~ १९६३।

पुकारत १ पुकारता है . प्रगट ~ तातैं ३८३१ । २. पुकारती है . गोरख सब्द ~ आरत ३६९३। ३ पुकारते हुए : घर घर फिरत ~ त्यौ त्यौ ३८०३। ४. पुकारते हैं . कबहुँक बाबा नँद ~ १७७। ५ पुकार रहा हूँ : दुखित ~ तातैं १/११८। ६ बताते हैं, घोषणा करते हैं . दीन दयाल देवकी नदन बेद ~ चार्‍यौ ४२४५। ७ बुलाते हे सूर स्याम सब सखनि ~ ४६२।

पुकारति पुकारती थीं देखि देखि सब सखी ~ ३९१४।

पुकारति १ पुकारती हूँ : मैं तौ व्याकुल भई ~ २२४१। २ पुकार रही है : महरि ~ ५४६।

पुकारि १ पुकार कर, चिल्लाकर . मैं हूँ कहत ~ २/३१। २ पुकार ब्रज-बासी सब उठे ~ ५४९। **उठत** ~ **पुकारि** चिल्ला उठता है, बार-बार पुकारता है कोउ इक जीव नाम मम लै-लै — ~ ~ ९/६५।

पुकारिहैं पुकारेगो · तुम तजि काहि ~ २११६।

पुकारी १ दुहाई दी, पुकार की धेनु-रूप धारि पुहुमि ~ ४। २ पुकार कर, चिल्लाकर · कासौं कहै ~ ३६८७।

पुकारे १ पुकारा (कहा) सकल देव मिलि जाय ~ चतुरानन के पास सारा० १४२। २. पुकार कर तातैं कहति ~ ३८०१। ३ पुकार करने लगे . है अनाथ रघुनाथ '~ ९/१४७।

पुकारेउ पुकारा मार्‍यो धनुष बाण ले ताको लक्ष्मण नाम ~ सारा० २६५।

पुकारैं १ कहते हैं चारौं बेद ~ १/१८३। २ पुकारती ह घटरितु ब्रज पै आनि ~ ४०६५। ३ पुकार रहे ह, आवाज लगा रहे हैं जहाँ तहाँ सब लोग ~ ९०२।

पुकारै पुकारता है : पिय पिय करि जु ~ ३२९०।

पुकारौं १. गोहार लगाता रहा, आवाज देता रहा हूँ · हाय-हाय मैं पर्‍यौ ~ राम नाम न कह्यौ १/१५१। २ पुकारूँ (विकी) अरु हौं काहि ~ ४।

पुकारौ आवाज लगाई थी, पुकारा था · जबहीं सो हरि टेरि ~ १/१७२।

पुकार्‍यौ १ पुकार लगाई, दुहाई दी माली जाइ ~ ९/१०३। २ पुकारा अरुन गगन तमचुरनि ~ २३३।

पुच्छ पूँछ मानहुँ ~ हलावै १४३९।

पुछातौ पूछता है। △ **न बात** ~ बात तक नहीं पूछेगा, जरा भी ध्यान नहीं देगा मन बिछुरैं तन छार होइगौ कोउ — ~ १/३०२।

पुछारी पूछकर · सूरदास प्रभु हिरदय तेरे मानहु सार ~ २५८३।

पुछियौ पूछा : सनकादिक ~ चतुरानन ब्रह्म जीव को बीच सारा० ८३।

पुजई पूरी की। △ ~ **मन साध** सभी मनोकामनाएँ पूर्ण हो

गई : कुच परसत ~ — ११८० ।
पुजए पूर्ण हो 'सूरदास' प्रभु मिलौ कृपा करि, अवधि आस ~ ४२७७ ।
पुजाइ पुजवाकर : नाँदी मुख पितर ~ २४ ।
पुजाई १ पूजा . कौन देव की करत ~ ८१८ । २ पूजा के विधान को : हरि कह जानै देव ~ ८२० ।
पुजाए पूरा किया, पूर्ति की तासु मनोरथ सकल ~ ४१९२ ।
पुजावहु पूर्ण कीजिए मेरे मन की आस ~ ५/३ ।
पुजाये पूर्ण किये . पाडु वधू पटहीन सभा मैं कोटिनि बसन ~ १/१५८ ।
पुजाय्यौ १ पूजा करवाई . बडौ देवता कान्ह ~ ९२१ । २ पूरा किया, पूर्ण किया ईहि बिधि कर्म ~ ९/५० ।
पुजावत पूजा करवा रहे हैं • सूरदास प्रभु आपु ~ ९०९ ।
पुजावहु परिपूर्ण करो, पूरी करो, सफल करो : मेरे मन की आस ~ ५/३ ।
पुजेरी पुजारी है, पूजा करने वाले हैं आपुहि देवा आपु ~ ९१२ ।
पुजैं पूरा करने पर वै परिमान ~ हद मानत ३२३५ ।
पुट[1] कलफ, हलका मेल • ज्यौं बिनु ~ पट गहत न रग कौं ३९८६ ।
पुट[2] १ दोना, पात्र : ~ एकै इत मद उत अमृत १२४९ । २ सपुट/पुट (होठों) मे नील ~ बिच मोती धरे बंदन बोरि ७२५ । ~ **थोरौ** पीने के लिए पात्र कम है अर्थात् पुट (नेत्र) थोडे (दो) ही हैं सूरदास प्रभुरूप सुधा-निधि ~ -१८२८ ।
पुटी पुट मे . चोंच ~ न समात ३६६ ।
पुढे फाहो से सुगँध ~ स्रवननि चुवै २८६२ ।
पुतरी[1] पुतली हमैं-तुम्हैं ~ कैं भाइ ६/५ ।
पुतरी[2] आँख की पुतली मे चमक मेरी ~ न समात २१७८ ।
पुत्र पुत्र नद नदन, श्री कृष्ण : ~ के पास गई सा० ल० १६ ।
पुत्र-फल पुत्र रूपी फल : उनकी कृपा ~ पायौं ८९४ ।
पुत्र-सारंग दीपक, स्वर्ण, केश के पुत्र क्रमश. काजल, स्वार्णाभूषण, अलक . कियौ भूषन ~ सा०ल० ५५ ।
पुत्र-हेत पुत्र के रूप मे ~ जसुदा गृह आए ३९१ ।
पुत्रन पुत्रों ज्ञान उपदेश कियो ~ को सारा० ८७ ।
पुत्रनि १ पुत्रो : भरतहु दै ~ कौं राज ५/३ । २ पुत्रो को : सुक्र सुता तिन ~ देखि ९/१७४ । ३. पुत्रों ने : तासु ~ बहुरि जुद्ध हरि सौं कियौ ४१९४ । ४. पुत्रों से . पुनि ~ उन पूछ्यौ जाइ ९/१७४ ।
पुत्रनिहि पुत्रों को : जिन ~ बहुत प्रतिपाल्यौ १/८६ ।
पुत्रहु पुत्र भी • ~ तैं प्यारौ कोऊ है ३६७ ।
पुनि फिर, पुन., बाद मे : सहसबाहु के सुतनि ~ ९/१४ । ~ पुनि बार बार : ~ — कहत कौन हैं माता २१५ ।
पुनीत १. पवित्र • अतिहिं ~ विष्नु पादोदक ९/१२ । २ पुण्य वान् परम ~ पवित्र कृपानिधि १/१२५ ।
पुनीतनि पवित्र छाया परम ~ ४९० ।
पुन्न पुण्य . सब कथा ~ पुरान सा० ल० शेष ५ ।
पुन्न पक्ष कृष्ण पक्ष • ~ औ वेद नखत है सा० ल० ८१ ।
पुन्य १ पावन धन्य जसोदा ~ सरीर २५ । २. पुण्य . ~ पाप दोउ पैया ४/१२ ।
पुन्यथली पुण्य स्थली : ~ तिहिं जानि बिराजै १७८९ ।
पुन्यनि १ पुण्यों बृद्ध बयस पूरे ~ तें ३२५ । २ पुण्यों के (कारण) ~ करवर नाक्यौ १३९२ ।
पुन्यौ पूर्णिमा का अस्त आनि भयौ चद ~ २४८० ।
पुरजन[1] पुरजन नामक एक राजा . कथा ~ की ४/१२ ।
पुर १ गाँव कहौ कौन ~ पाई २१६८ । २ घर : चली आपने ~ को ७३८ । ३ धाम सुमृति बेद मारग हरि ~ कौ १/१८७ । ४ लोक : तीनों ~ छयो ४/८ । ५ नगर की • सूरदास ~ नारि फिरावत ३३२१ । ६ नगर मे • (बसुदेव) प्रगट सकल ~ कीनी ४ ।
पुरइन कमल का/के • ज्यौं जल ~ पात २९८१ ।
पुरइनि १ कमल के ~ पात रहत जल भीतर ३९५८ । २. कमल के पत्ते : ~ कपिस निचोल बिबिध अग १०४९ ।
पुरई १ पूर्ण की है, पूरा किया है : जिनि ~ मन की साधा १६९७ । २ पूर्ण की, पूरा किया : प्रहलाद प्रतिग्या ~ १/२६ ।
पुरगामी लोको मे विचरण करने वाला मल्ल मतग तिहूँ ~ ३१११ ।
पुरजन १ नगर के लोग, नगरवासी यहै कहत ब्रज, गोकुल ~ ९२२ ।
पुर-जलधि नगर रूपी समुद्र मे मनु ~ - तरग बढी ९/१७० ।
पुर-धाम नगर और धाम • तीन जने सोभा त्रिलोक की छाँडि सकल ~ ९/४४ ।
पुरबलौ पूर्व जन्म का • ~ धों पुन्य प्रगटयौ १/८८ ।
पुरबहि पूर्ण कर दो दरमन दै ~ पिय काम २७८१ ।
पुर-बास ग्राम-मे रहने को : मन फिरत ~ ९/४५ ।
पुर-बासिनि ग्राम निवासियों की • अति ~ भीर ९/१८ ।
पुर-बासी नगर-निवासियों से जथा जोग भेंटे ~ ९/१६८ ।
पुरवत पूरा करते हैं • मनहिं मन साध ~ अग भाव करि २६०५ ।
पुरवाई पूरवा, पूरब से आने वाली • सीतल बूँद पवन ~ १९९० ।
पुरवै पूरा करेगा, पार लगावेगा : ~ को कुरुखेता १/२९ ।

पुरवौं पूरा करूँगा : ~ सो तुम आस ११७५ ।
पुरवौ भरो, फूँक मारो तुम सुर ~ प्राननाथ प्रभु २१४२ ।
पुरहि १ नगर को · तुम लछिमन निज ~ सिधारौ ९/३६ । २ गाँव की : गई वृषभानु ~ समुहाई ७५७ ।
पुरा[1] पुरानी, पहले की · जो वै कथा ~ तैं ३६७९ ।
पुरा[2] गाँव, खेडा : वृषभानु ~, ये ब्रज मैं, कहाँ दुहावन आई ७२९
पुराइ १ पुरवाकर, भराकर . मुतियनि चौक ~ ९५ । २ पूरी करके . जन मन कामना ~ ३०९२ ।
पुराई पूरी को : पति-हित-साध ~ ११७१ ।
पुराई पूरी की : इन इनकी मन साध ~ २०४१ ।
पुराऊँ १ पूरा करूँ · काम का काम ~ २१०६ । २ पूरी करूँ, पूरी करूँगा · सरद-राम तुम आस ~ ७९७ । ३ भराऊँ मोतियन चौक ~ २१०६ । ४ भरूँ · भच्छ करि उदर ~ ४९२ ।
पुराए १ पूरे किये अति अलसात जम्हाति पियारो स्याम काम वनवाम ~ २६६१ । २ भराये, सजवाये मोतियन चौक ~ परि० २/६७ ।
पुरातन १ पुराना बहुत दिननि को हुतो ~ ९/२८ । २ पुरानी प्रीति ~ पाली तनकी १४६० । ३ पुराने : लोग ~ गावत ४०१३ । ४ पूर्व जन्म के धन्य नन्द को सुकृत ~ ८४९ ।
पुरानन पुराणों को कीन्हे प्रकट ~ मारा० ३१८ ।
पुराननि १ पुराण · वेद ~ सही परी ३१२३ । २ पुराणों ने जैसैं वेद ~ गायौ ४२९ । ३ पुराणों मे मोइ सुकदेव ~ गायौ ९/७५ । ४ पुराणों का : सर्व ~ सार ११७५ ।
पुरानि पुराण . वेद ~ सुमृति सब ढूँढौ ३८९० ।
पुरानो पुराण भी साखी वेद ~ १/११ ।
पुराय पुराकर, भराकर गजमोतिन के चौक ~ ८०९ ।
पुरायो पुराया, बनाया चौक मुक्ताहल ~ आइ हरि बैठे तहाँ ४१८६ ।
पुरावत पूरी कर रहे हैं तब लौं वै कामना ~ २३२० ।
पुरावति पूरा कर रही है मन के भाव ~ ३२०७ ।
पुरावहु १ पूरी करो : सूर स्याम मन काम ~ २५८७ । २ बनाओ आँगन चदन चौक ~ ४१८५ ।
पुरावहु पूरा कराओ अब यहै साध ~ २८३० ।
पुरावैंगे पूरी करैंगे वै मन काम ~ २७४८ ।
पुरावौ मगल चौक आदि भरो . ललिता, विसाखा, अँगना लिपावौ, चौक ~ रोरी परि० १/११९ ।
पुरि भर जाता है । ~ पुरि भर-भर जाता है छिदि छिदि जात विरह सर मारैं, ~ — आवन अवधि विचारैं ३६२२ ।
पुरिहै पूरा होगा . सकल मनोरथ तेरौ ~ ४/९ ।
पुरी[1] पूडी तुमकौं भावत ~ सँधानौ २११ ।
पुरी[2] नगरी : हरष नर नारि मथुरा ~ क ३०८२ ।
पुरी धनद कुबेर पुरी=अलका=अलक=घुंघराले बाल ~ रचि रचि तम हारी सा० ल० ९८ ।
पुरीष मल, विष्ठा . बहुतक जन्म ~ परायन १/७८ ।
पुरुरवा एक प्रसिद्ध सोमवशी राजा, जिसकी राजधानी प्रतिष्ठान पुर (प्रयाग मे) गंगा के किनारे स्थित थी । पुरुरवा इला के गर्भ से उत्पन्न बुध का पुत्र था । सोमवस ~ सौं भयौ ९/२ ।
पुरुष १ आदमी, पुरुष : (वसुदेव) ~ न तिय-बध करई ४ । २ पतियों को : ~ जिवावत त्याग्यौ ९९१ । ~ की नाई पति के रूप मे देखै ताहि ~ — ९/१७३ ।
पुरुष अनादि अनादि पुरुष (श्याम) ने . पूरन कियो ~ ११५५ ।
पुरुषन पुरुषों को : दैति ~ गारि ८५९ ।
पुरुषनि पुरखों को, पूर्वजों को : दोष सब लगै ~ हमारैं ४२०९ ।
पुरुष पुरान पुरातन पुरुष (विष्णु) ~ आनि, कियो चतुरानन ४८४ ।
पुरुषहि पुरुष को : जैसैं नारि भजै पर ~ २३१५ ।
पुरुषहुँ पुरुष भी तिनि देखत ~ लजै ११८० ।
पुरुषारथ पुं० उद्यम, पराक्रम, शक्ति जो अपनौ ~ मानत १/२६२ । वि० पुरुषार्थी अति सुकुमार परम ~ ९/२० ।
पुरुषोत्तम भगवान् विष्णु : (देव) सब मिलि गए जहाँ ~ ४ ।
पुरोहित कर्म काण्ड कराने वाला ब्राह्मण : कह्यौ ~ होत न भला ६/५ ।
पुलक १ हर्ष : ~ अग न समात उर मैं ८५० । २ पुलकित · अति आनद ~ तन कीन्हौ २०४८ । ३ पुलकित हो गया . रोम ~ गद गद तन तीछन ४२८३ । ४ पुलकित हो उठे : ~ स्याम-अनग १०८१ ।
पुलकत १. आनन्दित होता है, प्रसन्न होता है ~ मन प्रति-बिम्ब देखिकै १७८ । २ प्रसन्न होते हैं : ~ आनँदकद परि० १/१०५ ।
पुलक-रुह रोमाचित रोम : बाहु-बिथाहि न बदत ~ २१२५ ।
पुलकि १ पुलकित होकर · ~ अँग-अँग बढायौ ४३७ । २ पुलकित . चरण परसि ते ~ भये मारा० ४५४ ।
पुलकित १ आनन्दित/पुलकित ह अति ~ गद्गद् मुख वाना २५३ । २ गद् गद्, रोमाचयुक्त लोचन सजल प्रेम ~ तन १/१८९ ।
पुलस्त्य एक प्राचीन ऋषि जो ब्रह्मा के मानस-पुत्रों मे से एक थे तथा प्रजापतियों और सप्तर्षियों मे गिने जाते हैं । ये रावण के

पितामह थे : पुलह ~ अगस्त्य कश्यप सारा० ७१४।
पुलह एक प्राचीन ऋषि जिनकी गणना सप्तर्षियों मे की जाती है . ~ पुलस्त्य अगस्त्य कश्यप सारा० ७१४।
पुलिन १ किनारा, तट . तैसोइ ~ पवित्र जमुन कौ २१७५। २. किनारे . सारँग ~, रजनि रुचि सारँग २१७३ । ३ किनारे पर, तट पर : लै गए सुभग ~ जमुना के १०३८। ४ तट के : भुज-जुग ~ पास मिलि बैठे २४५४।
पुलिनहिं तट पर ही, किनारे पर ही : जमुना ~ रच्यौ मनोहर (हिंडोलनौ) २८३२।
पुष्कर¹ पानी के, जल के : बिना ~ मीन कैसैं ३८३६।
पुष्कर² कमल ~ माल उतार हृदय तैं दीनी सुन्दर स्याम सारा० ५५४।
पुष्कर³ सरोवर के · ~ पुडरीक पर मानहुँ १३३६।
पुष्कर-पुंडरीक सरोवर के कमल ~ पर मानहुँ १३३६।
पुष्पन फूलों की ~ वृष्टि करत सुर नर मुनि भये भक्त रखवारे सारा० १२५।
पुष्पन पति बाहन भख देवताओं के स्वामी (गणेश) के वाहन (चूहा) का भक्षण, सभी खाद्य पदार्थ ~ हम सग सा० ल० ५८।
पुहुकर कमल ~ पुडरीक पूरन मानो खजन केलि खगे।
पुहुप पुष्प, फूल, सुमन · तू तौ बहुत ~ कौ लपट ३८७३। ~ बरषहि फूल बरसाने लगे : ~ — हरषि सुर ४१८६।
पुहुपनि पुष्पों · कत भटकत डोलत ~ कौं ३५४५।
पुहुप-बाटिका पुष्प वाटिका मे, फुलवाडी मे सीता ~ लाई ९/५९।
पुहुप बिमान पुष्पक विमान मे ~ बैठी बैदेही ९/१६१।
पुहुप-माल-मंडली पुष्पमालाओं के समूह मे : ~ बिराजत ८९५।
पुहुपावलि पुष्पों की अवली (माला) : छार सुगध सेज ~ हार छुवैं के हिय हार जरैगौ ३३६८।
पुहुमि १ पृथ्वी, भूमि : उतरि गगन ~ पर आए ९४८। २ पृथ्वी को . ~ पत्र करि सिधु मसानी १/१८३। ३ पृथ्वी पर . ~ लोक खाँची १९१०।
पुहुमी १ पृथ्वी लोटत सूर स्याम ~ पर १५९। २. पृथ्वी का : कस मारि ~ उद्धारी ३११०। ३ पृथ्वी पर . चौंच इक ~ लगाई, इक अकास समाइ ४७७।
पूँगी-फल-जुत सुपारी सहित : ~ जल निरमल धरि ९/२५।
पूँछत पूछते ही कहो पुत्र तुम कहा पढे हौ ~ कहेउ निशक सारा० ११५।
पूँछन पूछने षण्डामर्क जो ~ लाग्यो तब यह उत्तर दीन सारा० ११२।
पूँछ्यो पूछा : ~ ज्ञान कह्यो सो सब हरि तत्त्व विधान सारा० ९७।
पूँजि पूँजी : आए बधाइ ~ लै सोंपी २३७८।
पूछत १ पूछता : जाति पाँति कोउ ~ नाहीं १/२३१। २ पूछते हुए फिरत प्रभु ~ बन-द्रुम बेली ९/६४। ३ पूछते हैं बारबार बिप्र कौ ~ ४१७७।
पूछति १ पूछती ~ है है भोरी १७४०। २ पूछती है माता ~ सुअन कौं १९६५।
पूछन पूछने बानी सुनी बलि ~ लागे ८/१३।
पूछहि १ पूछती हैं : सब गोपी ~ ऊधौ सौं ३९१९। २ पूछेंगे : मथुरा जाई 'सूर' प्रभु ~ ४०४८।
पूछहु पूछो : ~ जाइ चकोर चद हित ३६९८।
पूछि पूछकर : ~ कुसल गोपाल की ४०९५। ~ उठे पूछने लगे : ~ — ब्रज की कुसलाई ९२२।
पूछियै पूछिए : कस सौंह दै ~ १६१८।
पूछिहै पूछेंगे जब मोहिं अगद कुसल ~ ९/७५।
पूछे १ पूछने : ~ तैं तुम बदन दुरावत २७९। २ पूछने पर · ब्राह्मन ~ जान्यौ जाइ १२/३।
पूछैं १ पूछती हैं लज्जित होहि पुरबधू ~ ९/४३। २ पूछैं चलौ चलौ ~ कछु बातें ४०९३। ३ पूछे बिनु ~ नहि देहि बताइ १/२२६।
पूछै पूछता है : जोइ नोइ ~ यामैं हैं कह १६४७।
पूछौ १ पूछते हो जौ तुम देह देखि कै ~ ११/४। २ पूछो . 'सूर' स्याम सपथ दै ~ ऊधौ ३९००।
पूछ्यौ पूछा : ~ सूर कौन है कहि तू ९/१५०।
पूजई बराबरी कर सकते हैं, पा सकते हैं : कोकिला कलहस बाल रसाल तिनहिं न ~ ४१८६।
पूजत¹ बराबरी करता : (जलधर) ~ नाहि सुभग स्यामल तन ६६५।
पूजत² १ पूजते : ~ रहे बृथाहीं सुरपनि ९२२। २ पूजा करते समय : एक बार सुरदेवी ~ भयौ दरश सखि मोहि सारा० २२१। ३ पूजा करते हैं मोहि छाँडि ये परबत ~ ८२२। ४ पूजा करते हो ~ सुरपति तिनके आगे ८९९। ५ पूजा कर रही हो अच्छत लै ~ रिपु मार १२०२।
पूजति पूजा करती हैं : गौरीपति ~ ब्रजनारि ७६६।
पूजति पूरा (बराबरी) कर सकती (है) 'सूर' मुक्ति कैसैं ~ है ३९४६।
पूजन पूजा : ताको ~ नित प्रति करिहौं सारा० ५८८।
पूजहु पूजा करो : तात गोवर्धन ~ जाइ ८२५।
पूजा¹ पूजा अर्थात् ताडना, दड करन देहु इनकी मोहि ~, चोरी प्रगटत नाम ३७६।
पूजा² १ पूना। २ बलि . बरस दिन मोहि देत ~ ८५२।

पूजि¹ पूजा करके ~ उमापति वर पायौ हम १२२३ ।
पूजि² १ पूर्ति कर के ~ अनत कोटि दमननि हरि १/१९० । २ पूरी करो : ~ मन की आस १०७१ । ~ आए पूजा कर आये ~ — गिरि गोवर्धन ८५९ ।
पूजियै १ पूज लेने चाहिए : तुम्हरे ~ पिय ! पाइ २६७८ । २ पूजा करनी चाहिए गिरि गोवर्धन ~ जीवन गोपाल ८२३ ।
पूजियौ पूजा कर रहे हों । मगन मुनि जन भए रहिं विधि ~ पद रैन ९९१ ।
पूजिहैं पूजा करेंगे, पूजेंगे • पय-पकवान विहान ~ ८७४ ।
पूजिहौं पजूँगी, पूजा करूँगी : पद ~ ५६ ।
पूजी १ पूरी हो गई/गई : ~ मन की साधिका १०७२ । २ पूर्ण की • सवनि ~ आस ११६९ ।
पूजे १ पूजा करने से : इन्हहिं ~ कौन बडाई ८९८ । २ पूजा की : सब मिलि ~ जाइ ८४१ ।
पूजैं पूजा करते थे/हैं : ऐसी विधि हरि ~ सदा ९/५ ।
पूजै¹ १ पूजा करे • हरिजन कौं ~ हरि जान ताकौ होइ तुरत कल्यान ४२९८ । २ पूजा करता है • तिन तजि ~ अनतै मोह १२/३ ।
पूजै १ (समता) कर सकती है • सूर सुमेरु-कूट की सरवरि क्यों ~ घुँघुची २४४८ । २ (बराबरी) पा सकता है मकराकृत कुंडल छवि सूर कौन ~ ६६२ । ३ पार होगा राम नाम सरि तऊ न ~ जौ तनु गारौ जाइ हिवार २/३ ।
पूजौ¹ पूजा करो : ~ गिरिराइ परि० १/४४ ।
पूजौ² पूरी करो • सूर आस ~ या मन की १४५५ ।
पूज्य पूजनीय : तुम तौ द्विज, कुल ~ हमारे ९/२८ ।
पूज्यौ पूजा की : ~ गिरिवर जाइ ८५३ ।
पूत पुत्र . ~ भयौ जसुमति रानी कें १८ ।
पूतना एक दानवी जो कंस की आज्ञा से स्तनों पर विष लगाकर कृष्ण को मारने आई थी, परन्तु स्वयं श्रीकृष्ण द्वारा मारी गई था : पय प्यावत ~ सँहारी ३८३९ ।
पूतना-वैरी पूतना के शत्रु, श्रीकृष्ण : गोपिनि-प्रान ~ ५५ ।
पूतरि पुतली • त्राटक भई चित्र ~ ज्यौं २६०० ।
पूतरी पुतली . ऐपन का सी ~ (सब) सखियन कियो सिंगार ४० ।
पूतहिं पुत्र को • ~ भली पढावति बानी ३२२ ।
पूतैं पुत्र को . मैं हू अपनैं औरस ~ पायौ ३३९ ।
पूनों पूर्णिमा चैत्र मास ~ को शुभ दिन सारा० ६४१ ।
पूनो पूर्णिमा . यह गोकुल ~ कौ चदा ३८८० ।
पून्यो पूर्ण, पूरा • ~ सुख पायो ब्रजवासी सारा० १०८५ ।
पून्यौ १ पूर्णिमा मानौ ~ चद्र खेत चढि २६११ । २ पूर्णिमा को ~ प्रगट प्रताप तें २९१४ ।

पूय मवाद, पीव मृग मद-मंडित तन परिहरि ~ परै १/१९८ ।
पूरक प्राणायाम विधि के तीन भागों मे पहला ~ रेचक कुंभक कारन परि० १/१८१ ।
पूरण पूर्ण • ~ ब्रह्म प्रकट पुरुषोत्तम सारा० १ ।
पूरत १ पूर्ण करते हैं, भरते है • कृष्ण ~ नाद २१४४ । २ पूरा होता, भरता . ज्यौं अहि डसत उदर नहिं ~ ३५२६ । ३ भर रहा है, पूर्ण हो रहा है : मुख मृदु छबि मुरली रव ~ ४०७८ । ४ भर जाते हैं लेत उसाँस नैन जल ~ ४०९१ । ५ भरते हो या बजाते हो बेनु विषान मख क्यों ~ १५४६ । ६ भरा है जिहि मुख सुधा बेनु रस ~ ३७१२ । ७ बजाते थे, अलाप रहे थे . सूर स्याम बसी धुनि ~ १७९० । ~ भू पर भूमि पर भर रहा है सो जल जहँ तहँ ~ — ९३६ ।
पूरति पूरा करती है • पिय-अँग रुचि लोचन पथ ~ परि० १/७४ ।
पूरती पूरा होती ~ साध मेरे हृदय माँझ की १८५७ ।
पूरन¹ पूर्णिमा का, पूरा : मानो ~ चन्द्रमा ४३७ ।
पूरन² १ पूर्ण तासु मनोरथ ~ कियौ ०/३ । २ पूर्ण करके • राम काम ~ प्रतिपारी ४२०२ । ३ पूर्ण, पूरा-पूरा • कोक ~ रंग २८७१ । ४ पूर्ण या पूरा करने वाले हो . गुप्त गोप-कन्या व्रत ~ ९८१ । ५ पूर्ण हो गया, भर उठा सुख मिटि गयौ हियौ दुख ~ २२०५ । ६ भरा है . हाथ दधि ~ दोना २६१८ । ७ भरी है नगनि जटित मनि खभ बनाए ~ बास-सुगन्ध ९/७५ । ८ भरे हुए थे महा रस अग-अग ~ ~ १६२४ । ~ पूरे खूब भरकर बनाई गई हैं . गुफा बहु ~ — १८३ ।
पूरन-अस ससी पूर्ण कलाओं वाले चन्द्रमा को तापर उरग ग्रसित तब सोभित ~ ११९६ ।
पूरन-काम¹ निष्काम, कामना शून्य ~ नाहिं मैं भयौ ९/१७४ ।
पूरन-काम² पूर्णकाम, श्री कृष्ण तनु मनु वारत ~ २१३५ ।
पूरन कामी कामनाओं को पूर्ण करने वाले ब्रज जुवतिनि के ~ १६१९ ।
पूरन चंद पूर्ण चन्द्र (के समान) रघुपति ~ बिलोकत ९/१७० ।
पूरन ज्ञान पूर्ण ज्ञानी है ~ न बुधि की मोटी १९०१ ।
पूरनता पूर्णता सखी री ~ हम जानी ४०३९ ।
पूरनहारी पूर्ण करने वाली हैं • स्याम काम की ~ १९२५ ।
पूरनाहुति पूर्णाहुति ~ कियौ ८/११ ।
पूरब¹ पूरबा, पूर्व दिशा से आने/बहने वाला ~ पवन स्याम उर ऊरध ३९४२ ।
पूरब² १ पहले/पूर्व जन्म मे कुबरी ~ तप करि राख्यौ ३१०० । २. पहले (पूर्व) की ~ प्रीति जानि कै मोहन ४२३२ । ३ पहले के, पूर्व जन्म के ~ पुन्य सुकृत फल तेरौ २५९८ । ४

पूर्व जन्म . तिरछौ करम भयौ ~ कौ ८०७।
पूरब रीति पहले की तरह : ~ बसेरौ सा० ल० ४०।
पूरबली पूर्वजन्म की, पुरानी : लका दई बिभीषन जन कौं ~ पहिचानि १/१३५।
पूरबिलौ पूर्व जन्म का • जौ ~ प्रेम निरतर परि० १/१९३।
पूरबी 'पूर्वी' नामक रागिनी : सारँग नट ~ मिलै कै २१४१।
पूरि १ छा गये . घन आए हैं मनु ~ २८६०। २ परिपूर्ण हैं हैं सबहीं भरि ~ ३८४३। ३. पूर्ण करके सुरति रति ~ अति निबल कीन्ही १९८८। ४ भरी हुई : पूरी ~ कचौरी कौरी १२१३। ५ व्याप्त हो गया अष्ट दिसा नभ ~ ९/२६। ६ भर . पाती बाँचि न आवई रहे नैन जल ~ ४०९५। ७ भरकर : स्याम रस घट ~ उछलत १६७२। ~ **रही** समा रही है : ~ — हिय माहि ३७२५।
पूरित पूर्ण • दसमी दिसा भई ~ सारा० १०६२।
पूरी[1] पूड़ी/पूड़ियाँ ~ पूरि कचौरी कौरी १२१३।
पूरी[2] १ पूर्ण हुई : 'सूर' आस ~ स्यामा स्याम २०३४। २ पूरी हो गई है, पूरा हो गया है 'सूर' प्रभु देखि नृप क्रोध ~ धरी ३०७६। ~ **साध** इच्छा पूरी हो गई : ~ — मिली तुम उनकौं १७६६।
पूरे[1] क्रि० स० १ समाई हैं, भरी है : पूरनता इन नैननि ~ ३५७६। २ भर गये हैं . स्रवन सब्द हरि ~ १६३०। त्रि० १ पूर्ण हो . तुम ~ सब भाँति १६१८। २ पूर्ण, भरे हुए : गूफा बहु पूरन ~ १८३।
पूरे[2] सारे अति पूरन ~ पुन्य २४।
पूरैं[1] बराबरी/पूरा कर सकती हैं और त्रिया नख-सिख सिंगार सजि तेरैं सहज न ~ २४४४।
पूरैं[1] बजाते हैं कोउ मुरली कोउ बेनु सब्द शृंगी कोउ ~ ४३१।
पूरै पूरी होती है • बाँधि पची डोरी नहि ~ ३९१।
पूरो पूरा, पूर्ण, सर्वव्यापी सूरदास ~ दै षटपद ३५४२।
पूरौ[1] पूरा • कबहुँ न ~ पायौ १/२०५।
पूरौ[2] १ पूरा : तहीं परत है ~ १३९१। २ पूरा ब्रह्म : 'सूर' कहै अलि ~ दीजै ३८२९।
पूर्न पूर्ण : सुरनि करन ~ काम, नाम लेत साथी ३०५७।
पूर्नता पूर्णता : तब तहाँ ~ पाई १/२१५।
पूर्बी एक रागिनी जैती श्री ~ टोडी सारा० १०१६।
पूलि पूली (धारियाँ) : ~ रोचन लाइ २८४२।
पूषन सुत सहाइ सिब आनन पूषन (सूर्य) के पुत्र (सुग्रीव) के सहायक (जाम्बवत) रिच्छ, नच्छत्र, शिव आनन = पाँचवाँ नच्छत्र (मृगशिरा), मृग : ~ का लखि नयन बिचारौ सा० ल० ३८।
पूसे पोषित या भरे हुए : भए निठुरई ~ हौ २६९१।
पृथमहि पहले, सर्वप्रथम : ~ यह जंजाल मिटावहु १५४४।
पृथी १ पृथ्वी : पग कौ चिन्ह ~ पर देख ५/३। २ पृथ्वी की : ~ परदच्छिना कौ सिधाए ४२२३।
पृथु चौड़ा, मासल : क्रम करि, ~ नितब २१८४।
पृथ्वीपति राजा . उत्तानपाद ~ भयौ ४/९।
पृथ्वी मथी पिता सो लैकर पृथ्वी को मथने वाला पृथु, उसके पिता वेणु (वंशी) उसे लेकर ~ मुख समीप मुरली धुन बाजत १८०१।
पृथ्वौ पति राजा भी • पृथु से ~ जग भए १२/३।
पृश्नि श्रीकृष्ण की माता देवकी • कर्मवाद थापन को प्रकटे ~ गर्भ अवतार सारा० ३२१।
पृष्ठ पीठ का : आलबित जु ~ बल सुन्दर १५७।
पृष्ठभाग पीठ पर : ~ चढि जनक-नदिनी ९/८९।
पेच पगडी का फेरा : लटपट ~ अटपटे दीय २५५५।
पेठा पेठा • ~ बहुत प्रकारनि कीन्हे १२१३।
पेखत १ दिखलाई पड़नी है : नील नलिन तनु पीत भँगुलिया घन दामिनि द्युति ~ सारा० १६६। २. देखता है : मनौ कमल दल सावक ~ ९१। ३ देखते ही . ~ पूरब कथा चलाई ४२८३। ४ देखते हो क्यौं हम तन नहिं ~ २४८४। ५ देखते हैं : कबहुँ मात मुख ~ ९८। **देखन** ~ देखते-देखते : — ~ लोग नगर के परि० १/२५।
पेखन प्रेक्षण, दृश्य • क्रीड़ा राजद्वार को ~ सारा० ५०८।
पेखा देखा : दुहुँनि पुत्र-मुख ~ ४।
पेखि १. देखकर . बिस्मय मिटी समि ~ समीपहिं ११९३। २ देख : चद उदौ मुख – री दर्पन २०११।
पेखे देखा . तुम हनुमान न ~ ९/१०५।
पेखैं १ देखते है, देख रहे हैं . ग्वाल गोपाल डरि गगन ~ ८५५। २ देखने के लिए . लगी पलक जड जाके ~ ३५८७।
पेखौं १. देखती हूँ : ग्यानियन मैं न आचार ~ ८/८। २ देखूँ पितु मातहिं ~ ४९२।
पेखौ १ देख रहे हो : क्यौं हम तन नहिं ~ २५४४। २ देखोगी : जब कछु अचरज ~ १२५८। ३. देख रही हो नैन-मुख-ओर तुम नहिं ~ २०५३। ४ देखना, देखो . कहति रही तब राधिका जब हरि मँग ~ १९५३।
पेख्यौ देखा : और तिहुँ भुवन नहिं कहूँ ~ ८४८।
पेच पगडी का फेरा, पाश • लटपट ~ सँवारति प्यारी २०३६।
पेट १ उदर, पेट। २ हृदय : बड़ी ~ की गैमी हौ। १९६१। △ ~ **दियौ** भेद दिया, भेद बना दिया अपनौ ~ — तैं उनकौ २०९०। **भरि** ~ जी भरकर, बहुत अधिक होडा-होडी मनहिं भावते किए पाप — ~ १/१४६। **रहते** ~ **समाने** पेट मे समाए रहते हैं, बड़े चालाक है : अब पाई इनकी लगराई, — ~ — २२८९।
पेड़ि जड़, मूल • कहौ तौ सैल उपारि ~ तैं ९/१०७।

पेर पेलकर, हटाकर : विरह अस्तुत ~ सा० ल० २९ ।
पेरि झटककर : गए ~ तार्को नहिं मान्यौ २३५० ।
पेरी पीला : प्रान विना तन लागत ~ ४१७२ ।
पेरैं पार पा सकते थे/हैं : कृपा जहाज विना क्यों ~ १७८५ ।
पेरैं देता रहता है : सदा सूल सुख ~ सा० ल० २४ ।
पेरो[1] पढ़ा, सुना : कबहुँ सवद न सुंदर ~ सा० ल० ३३ ।
पेरो[2] पेरो (लोक लज्जा की दुहाई दी) : होद न स्वेत अरुन फिरि ~ १६५८ ।
पेल झगड़ा, तकरार . सखा जीतत स्याम जाने तब करी कछु ~ २४४ ।
पेलत दवाने लगा · सेष सकुचि सहसो फन ~ ६३ ।
पेलनि मार, ठेल-पेल . ~ लहत हरी री २३०० ।
पेला १. धाक्रया कर, उपेक्षा कर : ~ सर्वहिं निदरिहौं १९४३ । २ निर्मयतापूर्वक : हाँक देत पैठे दै ~, नेंकु न मनाहे हराने ३२८ ।
पेलि १. आक्रमण क लिए वढा (दिया) : दियो गज ~ आपुन हँकार्‍यो ३०५६ । २ उपेक्षा कर, अवज्ञा करके : इन्द्रहिं ~ करी गिरि पूजा ८५६ । २ घुसेड़कर : ~ कै रथ सुभट बहु सँहार ४१८३ । ३. जबरदस्ती : मा संग झगरो कान्हौ ~ ३४३४ । ४ उछाल-उछाल कर . सुड-दड-भुज ~ ग्वाल २८६२ ।
पेली अवज्ञा करके लाँघा : राम रेख पग ~ ९/९४ ।
पेलैं आपस मे ठेलते ह : चरन सों चरन धरि प्रगट ~ ३०७१ ।
पेलौ १. टालो, उल्लंघन करो मेरो कह्यौ कबहुँ जिनि ~ ३९९ । २ ठेलो, पीछे हटाओ : नव जुवती दल ~ (जू) परि० १/२२९ ।
पेषनि दिखाइ पड़ती ह : विधि नाचति नट ~ ३४०५ ।
पेषी देखा/देखी : मैं नीकैं करि ~ है ३१४७ ।
पैं १ पास : तब नारद गिरजा ~ गए १/२२६ । २. से . जाँचक ~ जाँचक कह जाँचै १/३४ ।
पैंच पेच । ~ दै पेच देकर/फिराकर : ~ — छबीली पगिया सँवारी ३०६० ।
पैंजनि पायजेब, घुंघरू . पग ~ बाजै ११७ ।
पैंठ बाजार, दुकान : सूरदास बैकुंठ ~ मैं १/२९७ ।
पैंड़[1] मार्ग . जाति पति ~ को वैरी २४५३ । ~ पैंड़ रास्ते-रास्ते : ~ चालयै तौ चलियै ३५४४ ।
पैंड़[2] १ पग : तीनि ~ वसुधा हौं चाहौं ८/१३ ।
पैंडे १. रास्ता : ~ चलन न पावै कोऊ १४१५ । २ पथ मे, रास्ते में : रुकि गए वाटनि नारे ~ २९०२ ।
पैंडे रास्ते से : आँखिनि कैं ~ पैठि १४३५ ।
पैंड़ो रास्ता : ~ नहिं पावत तहँ कोऊ ८२८ । Δ दियौ उन ~ उन्होंने जाने दिया, आगे वढने का मार्ग दिया . घरभर परी — ~ ९/१०४ । ~ देहु रास्ता छोटो, जाने दो : ~ — बहुत अब कीन्हौ १५६८ ।
पैंती कुश की पैंती, पवित्री : चरैं चलीं गाइ, द्विज ~ कर को दई ७०३८ ।
पैंहैं १ पायँगी : वरषैं मेव गाइ सुख ~ ८२४ । २ पायँगे : सत्रु सहन नहिं ~ ८६ ।
पैं[1] दूव : जैसें मिलत नीर अरु ~ २२८५ ।
पैं[2] १ अवश्य, जरूर · निश्चय करि सो तरै ~ तरै ६/४ । २ पर, परन्तु, लेकिन : ~ मधुवन नाम कहावत ४०१३ । ३ भी : तो ~ सूर पतिव्रत साँचौ ९/७७
पैं[3] पास, समीप पुनि सब सुर ब्रह्मा ~ जाइ ६/५ ।
पैं[4] १. पर, ऊपर : षोडस अगिनि मिलि प्रजब्ब ~ छन्दस अक फिरि डारै १/६० । २ से · कहति हैं नृपति ~ सुजस लीजै ३०६६ ।
पैंग पग . तीन ~ वसुधा दै मोको ८/१४ ।
पैंज १ प्रतिज्ञा : रही न ~ प्रबल पारथ की ७४८ । Δ ~ खैंचि प्रतिज्ञा करके : ~ मेटन आए हो ३९८९ ।
पैंजनियाँ पैजनी · रुन-झुन करति पाइँ ~ १०६ ।
पैठ प्रवेश । ~ करी रम गए हो, स्थान बना लिया है : ऊधौ तुम ब्रज मैं ~ — ३६६३ ।
पैंठत १ घुसता है, प्रवेश करता है . जैमैं चोर भरे घर ~ २१९९ । २ घुसते हैं : सखा भीर लै ~ घर में ३२२ । ३. प्रवेश करते ही . पुर ~ जिनकौं जस गावत ९/१६७ ।
पैंठन प्रवेश करने : तबहीं तौ घर ~ पैहौ १९७७ ।
पैंठहु प्रवेश करो : 'सूर' सपथ गोकुल जो ~ ४०८९ ।
पैंठार प्रवेशद्वार पर, फाटक पर : सूर प्रभु सहर ~ पहुँचे आइ ३०२४ ।
पैंठि प्रवेश करके, प्रविष्ट होकर : सकल सभा मैं ~ दुसासन अवर आनि गह्यौ १/२४७ ।
पैठी १ प्रवेश कर लिया, आ समाई : जिय ~ निठुराई २८२६ । २ आ पहुँची हैं, आ पैठी हैं . (अलक) ~ त्रिवलि निकेत २४७२ ।
पैठे प्रवेश किया, प्रविष्ट हुए, घुसे : ~ ससनि सहित घर सूने ७७० । २. बैठे, घुसे : सबै सखा ~ रहो ४९२ ।
पैंठो निवास किया : जो लगि गोकुल ~ ३१२५ ।
पैठ्यौ १ घुसा है : ~ बड़ौ भुजग ७४१० । २. प्रवेश किया, प्रविष्ट हुआ : ~ उदर मँझारि ९/१०४ ।
पैता श्री कृष्ण के एक सखा का नाम : रैता, ~, मना, मनसुखा, हलधर सगहि रैहौं ४१२ ।
पैदर पैदल : चातक मोर इतर ~ गन ३३०४ ।
पैनकी त्रिशूल (सी पैनी) केमुक विरह बयारि ~ ३७४० ।
पैनी तीक्ष्ण, तेज : धरी धार अति ~ ९/११ ।

पूर्व जन्म तिरछौ करम भयौ ~ कौ ८०७।

पूरब रीति पहले की तरह : ~ बसेरौ सा० ल० ४०।

पूरबली पूर्वजन्म की, पुरानी : लका दई विभीषन जन कौं ~ पहिचानि १/१३५।

पूरबिलौ पूर्व जन्म का : जौ ~ प्रेम निरतर परि० १/१९३।

पूरबी 'पूर्वी' नामक रागिनी : सारँग नट ~ मिलै कै २१४१।

पूरि १ छा गये : घन आए हैं मनु ~ २८६०। २ परिपूर्ण हैं : हैं सबहीं भरि ~ ३८४३। ३ पूर्ण करके सुरति रति ~ अति निबल कीन्ही १९८८। ४ भरी हुई : पूरी ~ कचौरी कौरी १२१३। ५ व्याप्त हो गया अष्ट दिसा नभ ~ ९/२६। ६ भर . पाती बाँचि न आवई रहे नैन जल ~ ४०९५। ७ भरकर : स्याम रस घट ~ उछलत १६७२। ~ **रही** समा रही है : ~ — हिय माहि ३७२५।

पूरित पूर्ण • दसमी दिसा भई ~ सारा० १०६२।

पूरी[1] पूडी/पूडियाँ . ~ पूरि कचौरी कौरी १२१३।

पूरी[2] १ पूर्ण हुई : 'सूर' आस ~ स्यामा स्याम २०३४। २ पूरी हो गई है, पूरा हो गया है 'सूर' प्रभु देखि नृप क्रोध ~ धरी ३०७६। ~ **साध** इच्छा पूरी हो गई : ~ — मिली तुम उनकौं १७६६।

पूरे[1] **क्रि० स० १** समाई हैं, भरी है : पूरनता इन नैननि ~ ३५७६। २ भर गये हैं स्रवन सब्द हरि ~ १६३०। **वि० १.** पूर्ण हो तुम ~ सब भाँति १६१८। **२.** पूर्ण, भरे हुए : गूफा बहु पूरन ~ १८३।

पूरे[2] सारे अति पूरन ~ पुन्य २४।

पूरैं[1] बराबरी/पूरा कर सकती हैं और त्रिया नख सिख सिंगार सजि तेरैं म्हज न ~ २४४४।

पूरैं[1] बजाते हैं . कोउ मुरली कोउ वेनु सब्द शृगी कोउ ~ ४३१।

पूरै पूरी होती है • बाँधि पची डोरी नहि ~ ३९१।

पूरो पूरा, पूर्ण, सर्वव्यापी • सूरदास ~ दै षटपद ३५४२।

पूरौ[1] पूरा कबहुँ न ~ पायौ १/२०५।

पूरौ[2] १ पूरा : तहीं परत है ~ १३९१। २ पूरा ब्रह्म : 'सूर' कहै अलि ~ दीजै ३८२९।

पूर्न पूर्ण : सुरनि करन ~ काम, नाम लेत साथी ३०५७।

पूर्नता पूर्णता तव तहाँ ~ पाई १/२१५।

पूर्बी एक रागिनी • जैती श्री ~ टोडी सारा० १०१६।

पूलि पूली (धारियाँ) . ~ रोचन लाइ २८४२।

पूषन सुत सहाइ सिव आनन पूषन (सूर्य) के पुत्र (सुग्रीव) के सहायक (जाम्बवत) रिछ, नक्षत्र, शिव आनन = पाँचवाँ नक्षत्र (मृगशिरा), मृग : ~ का लखि नयन बिचारौ सा० ल० ३८।

पूले पोपिन या भरे हुए : भए निठुरई ~ हौ २६९१।

पृथमहि पहले, सर्वप्रथम : ~ यह जजाल मिटावहु १५४४।

पृथी १ पृथ्वी : पग कौ चिन्ह ~ पर देख ५/३। **२.** पृथ्वी की • ~ परदच्छिना कौ सिधाए ४२२३।

पृथु चौडा, मासल : कुम करि, ~ नितब २१८४।

पृथ्वीपति राजा • उत्तानपाद ~ भयौ ४/९।

पृथ्वी मथी पिता सो लैकर पृथ्वी को मथने वाला पृथु, उसके पिता वेणु (बशी) उसे लेकर • ~ मुख समीप मुरली धुन बाजत १८०१।

पृथ्वौ पति राजा भी . पृथु से ~ जग भए १२/३।

पृश्नि श्रीकृष्ण की माता देवकी • कर्मवाद थापन को प्रकटे ~ गर्भ अवतार सारा० ३२१।

पृष्ठ पीठ का : आलबित जु ~ बल सुन्दर १५७।

पृष्ठभाग पीठ पर ~ चढि जनक-नदिनी ९/८९।

पेच पगडी का फेरा : लटपट ~ अटपटे दीय २५५५।

पेठा पेठा : ~ बहुत प्रकारनि कीन्हे १२१३।

पेखत १ दिखलाई पडती है : नील नलिन तनु पीत भँगुलिया घन दामिनि द्युति ~ सारा० १६६। २ देखता है : मनौ कमल दल सावक ~ ९१। ३ देखते ही . ~ पूरब कथा चलाई ४२८३। ४ देखते हो क्यौं हम तन नहिं ~ २४८४। ५ देखते हैं . कबहुँ मात मुख ~ ९८। **देखन** ~ देखते-देखते : — ~ लोग नगर के परि० १/२५।

पेखन प्रेक्षण, दृश्य : क्रोडा राजद्वार को ~ सारा० ५०८।

पेखा देखा : दुहुँनि पुत्र मुख ~ ४।

पेखि १. देखकर : बिस्मय मिटी समि ~ समीपहिं ११९३। २ देख : चद उदौ मुख – री दर्पन २०११।

पेखे देखा . तुम हनुमान न ~ ९/१०५।

पेखैं १. देखते है, देख रहे है ग्वाल गोपाल डरि गगन ~ ८५५। २ देखने के लिए लगी पलक जड जाके ~ ३५८९।

पेखौं १ देखती हूँ . ग्यानियन मैं न आचार ~ ८/८। २ देखूं पितु मातहिं ~ ४९२।

पेखौ १ देख रहे हो . क्यौं हम तन नहिं ~ २५४४। २ देखोगी : जब कछु अचरज ~ १२५८। **३.** देख रही हो नैन-मुख-ओर तुम नहिं ~ २०५३। ४ देखना, देखो कहति रही तब राधिका जब हरि मँग ~ १९५३।

पेख्यौ देखा : और तिहुँ भुवन नहिं कहू ~ ८४८।

पेच पगडी का फेरा, पाश लटपट ~ सँवारति प्यारी २०३६।

पेट १ उदर, पेट। २ हृदय . बडी ~ की गैसी हौ। १९६१। △ ~ **दियौ** भेद दिया, भेद बना दिया अपनौ ~ — तैं उनकौ २०९०। **भरि** ~ जी भरकर, बहुत अधिक होडा-होडी मनहिं भावते किए पाप — ~ १/१४६। **रहते ~ समाने** पेट मे समाए रहते हैं, बडे चालाक है : अब पाई इनकी लगराई, — ~ — २२८९।

पेढ़ि जड, मूल : कहौ तौ सैल उपारि ~ तें ९/१०७।

पेर पेलकर, हटाकर : विरह अस्तुत ~ सा० ल० २९ ।
पेरि झटककर . गए ~ ताकों नहिं मार्यो २३५० ।
पेरी पीला : प्रान बिना तन लागत ~ ४१७२ ।
पेरैं पार पा सकने थे/हैं : कृपा जहाज बिना क्यों ~ १७८५ ।
पेरें देता रहता है : सदा सूल सुख ~ सा० ल० २४ ।
पेरौ[1] पत्रा, सुना : कबहुँ सबद न सुदर ~ मा० ल० ३३ ।
पेरौ[2] पेरो (लोक लज्जा की दुहाई दो) : छोद न स्वेत अरुन फिरि ~ १६५८ ।
पेल झगड़ा, तकरार . सखा जीतत स्याम जानि तब करी कछु ~ २४४ ।
पेलत दबाने लगा : सेष सकुचि सहसो फन ~ ६३ ।
पेलनि मार, ठेल-पेल . ~ लहत हरी गो २३०० ।
पेला १. धक्किया कर, उपेक्षा कर . ~ सबहिं निदरिहौं १९४३ । २ निर्भयतापूर्वक : हाँक देत पैठे दै ~, नैकु न मनाह टराने ३२८ ।
पेलि १ आक्रमण के लिए बढा (दिया) : दियौ गज ~ आपुन हँकार्यो ३०५६ । २. उपेक्षा कर, अवज्ञा करके . इन्द्रहिं ~ करी गिरि पूजा ८५६ । २. घुसेड़कर : ~ कै रथ सुभट बहु सँहार ४१८३ । ३. जबरदस्ती : मो संग झगरो कान्हीं ~ ३४३४ । ४. उछाल उछाल कर . सुंड-दंड-भुज ~ ग्वालि २८६२ ।
पेली अवज्ञा करके लाया राम रेख पग ~ ९/९४ ।
पेलैं आपस में ठेलते हैं : चरन सों चरन धरि प्रगट ~ ३०७१ ।
पेलौ १ टालो, उल्लंघन करो : मेरौ कह्यौ कबहुँ जिनि ~ ३९९ । २. ठेलो, पीछे हटाओ : नव जुवती दल ~ (जू.) परि० १/१२९ ।
पेपनि दिखाई पड़ती हैं : बिधि नाचति नट ~ ३४०५ ।
पेषौ देखा/देखो मैं नीकें करि ~ है ३१४७ ।
पैं १ पास : तब नारद गिरजा ~ गए १/२२६ । २. से जाँचक ~ जाँचक कह जाँचै १/३४ ।
पैंच पेच । ~ दै पेच देकर/फिराकर : ~ — छबीली पगिया सँवारी ३०६० ।
पैंजनि पायजेब, घुँघरू : पग ~ बाजैं ११७ ।
पैंठ बाजार, दुकान : सूरदास बैकुंठ ~ मैं १/२९७ ।
पैंड़[1] मार्ग : जाति पति ~ को घैरी २४५३ । ~ पैंड़ रास्ते-रास्ते : ~ चालियै तौ चलियैं ३५४४ ।
पैंड़[2] १ पग . तीनि ~ बसुधा हौं चाहौं ८/१३ ।
पैंडे १. रास्ता : ~ चलन न पावै कोऊ १४१५ । २. पथ में, रास्ते में : रुकि गए बादनि नारे ~ २९०२ ।
पैंड़ै रास्ते से : आँखिनि कैं ~ पैठि १४३५ ।
पैंड़ो रास्ता : ~ नहिं पावत तहँ कोऊ ८२८ । △ दियौ उन ~ उन्होंने जाने दिया, आगे बढ़ने का मार्ग दिया खरभर परी — ~ ९/१०४ । ~ देहु रास्ता छोड़ो, जाने दो : ~ — बहुत अब कीन्ही १५६८ ।
पैंती कुश की पैंती, पवित्री : चरैं चलीं गाइ, द्विज ~ कर को दई २०३८ ।
पैंहैं १ पायेंगी : बरषैं मेघ गाइ सुख ~ ८२४ । २ पायेंगे : सत्रु सहन नहिं ~ ८६ ।
पै[1] दूध : जैसैं मिलत नीर अरु ~ २२८५ ।
पै[2] १ अवश्य, जरूर : निश्चय करि सो तरै ~ तरै ६/४ । २ पर, परन्तु, लेकिन : ~ मधुबन नाम कहावत ४०१३ । ३ भी : तो ~ सूर पतिव्रत साँचौ ९/७७
पै[3] पास, समीप . पुनि सब सुर ब्रह्मा ~ जाइ ६/५ ।
पै[4] १. पर, ऊपर : पोटस अगिनि मिलि प्रजक ~ छन्दस अक फिरि टारै १/६० । २ से : कहति हैं नृपति ~ सुजस लीजै ३०६६ ।
पैग पग . तीन ~ बसुधा दै मोकौं ८/१४ ।
पैंज १ प्रतिज्ञा : रही न ~ प्रबल पारथ की २४८ । △ ~ खैंचि प्रतिज्ञा करके : ~ मेटन आए हो ३९८९ ।
पैजनियाँ पैजनी रुन-झुन करति पाइ ~ १०६ ।
पैंठ प्रवेश । ~ करी रस गए हो, स्थान बना लिया है : ऊधौ तुम ब्रज मैं ~ — ३६६३ ।
पैठत १ घुसता है, प्रवेश करता है . जैसैं चोर भरे घर ~ २२९९ । २ घुसते हैं . सखा भीर लैं ~ घर मैं ३२२ । ३. प्रवेश करते ही : पुर ~ जिनकी जस गावत ९/१६७ ।
पैठन प्रवेश करने : तबहीं तौ घर ~ पैहौ १९७२ ।
पैठहु प्रवेश करो 'सूर' सपथ गोकुल जो ~ ४०८९ ।
पैंठार प्रवेशद्वार पर, फाटक पर : सूर प्रभु सहर ~ पहुँचे आइ ३०२४ ।
पैठि प्रवेश करके, प्रविष्ट होकर : सकल सभा मैं ~ दुसासन अंबर आनि गह्यो १/२४७ ।
पैठी १ प्रवेश कर लिया, आ समाई . जिय ~ निठुराई २८२६ । २ आ पहुँची हैं, आ पैठी हैं . (अलक) ~ त्रिबलि निकेत २४७२ ।
पैठे प्रवेश किया, प्रविष्ट हुए, घुसे : ~ सखनि सहित घर सूनें २७० । २. बैठे, घुसे : सबै सखा ~ रहौ ४९२ ।
पैठो निवास किया : जौं लगि गोकुल ~ ३१२५ ।
पैठ्यौ १ घुसा है : ~ बडौ भुजग २४१० । २. प्रवेश किया, प्रविष्ट हुआ : ~ उदर मँझारि ९/१०४ ।
पैता श्री कृष्ण के एक सखा का नाम . रैता, ~, मना, मनसुखा, हलधर सगहि रैहौं ४१२ ।
पैदर पैदल : चातक मोर इतर ~ गन ३३०४ ।
पैनकी त्रिशूल (सी पैनी) · केसुक बिरह बयारि ~ ३७४० ।
पैनी तीक्ष्ण, तेज : धरी धार अति ~ ९/११ ।

पूर्व जन्म तिरछौ करम भयौ ~ कौ ८०७।

पूरब रीति पहले की तरह : ~ बसेरौ सा० ल० ४०।

पूरबली पूर्वजन्म की, पुरानी : लका दई बिभीषन जन कौं ~ पहिचानि १/१३५।

पूरबिलौ पूर्व जन्म का : जौ ~ प्रेम निरतर परि० १/१९३।

पूरबी 'पूर्वी' नामक रागिनी : सारँग नट ~ मिलै कै २१४१।

पूरि १ छा गये . घन आए हैं मनु ~ २८६०। २ परिपूर्ण हैं हैं सबहीं भरि ~ ३८४३। ३. पूर्ण करके सुरति रति ~ अति निवल कीन्ही १९८८। ४ भरी हुई : पूरी ~ कचौरी कौरी १२१३। ५. व्याप्त हो गया • अष्ट दिसा नभ ~ ९/२६। ६ भर पाती बाँचि न आवई रहे नैन जल ~ ४०९५। ७ भरकर : स्याम रस घट ~ उछलत १६७२। ~ **रही** समा रही है : ~ — हिय माहि ३७२५।

पूरित पूर्ण • दसमी दिसा भई ~ सारा० १०६२।

पूरी[1] पूडी/पूडियाँ : ~ पूरि कचौरी कौरी १२१३।

पूरी[2] १ पूर्ण हुई : 'सूर' आस ~ स्यामा स्याम २०३४। २ पूरी हो गई है, पूरा हो गया है . 'सूर' प्रभु देखि नृप क्रोध ~ धरी ३०७६। ~ **साध** इच्छा पूरी हो गई : ~ — मिली तुम उनकौं १७६६।

पूरे[1] क्रि० स० १ समाई हैं, भरी है : पूरनता इन नैननि ~ ३५७६। २. भर गये हैं . स्रवन सब्द हरि ~ १६३०। वि० १. पूर्ण हो तुम ~ सब भाँति १६१८। २. पूर्ण, भरे हुए : गूफा बहु पूरन ~ १८३।

पूरे[2] सारे अति पूरन ~ पुन्य २४।

पूरैं[1] बराबरी/पूरा कर सकती हैं • और त्रिया नख-सिख सिंगार सजि तेरैं महज न ~ २४४४।

पूरैं[1] बजाते है . कोउ मुरली कोउ बेनु सब्द शृगी कोउ ~ ४३१।

पूरै पूरी होती है • बाँधि पची डोरी नहि ~ ३९१।

पूरो पूरा, पूर्ण, सर्वव्यापी सूरदास ~ दै षटपद ३५४२।

पूरौ[1] पूरा . कबहुँ न ~ पायौ १/२०५।

पूरौ[2] १. पूरा : तहीं परत है ~ १३९१। २ पूरा ब्रह्म : 'सूर' कहँ अलि ~ दीजै ३८२९।

पूर्न पूर्ण : सुरनि करन ~ काम, नाम लेत साथी ३०५७।

पूर्नता पूर्णता तब तहाँ ~ पाई १/२१५।

पूर्वी एक रागिनी जैती श्री ~ टोडी सारा० १०१६।

पूलि पूली (धारियाँ) : ~ रोचन लाइ २८४२।

पूषन सुत सहाइ सिव आनन पूषन (सूर्य) के पुत्र (सुग्रीव) के सहायक (जाम्ववत) रिक्ष, नक्षत्र, शिव आनन = पाँचवाँ नक्षत्र (मृगशिरा), मृग : ~ का लखि नयन विचारौ सा० ल० ३८।

पूसे पोषित या भरे हुए : भए निठुरई ~ हौ २६९१।

पृथमहि पहले, सर्वप्रथम : ~ यह जजाल मिटावहु १५४४।

पृथी १ पृथ्वी : पग कौ चिन्ह ~ पर देख ५/३। २ पृथ्वी की . ~ परदच्छिना कौ सिधाए ४२२३।

पृथु चौडा, मासल . क्रम करि, ~ नितव २१८४।

पृथ्वीपति राजा उत्तानपाद ~ भयौ ४/९।

पृथ्वी मथी पिता सो लैकर पृथ्वी को मथने वाला पृथु, उसके पिता वेणु (बशी) उसे लेकर • ~ मुख समीप मुरली धुन बाजत १८०१।

पृथ्वौ पति राजा भी : पृथु से ~ जग भए १२/३।

पृश्नि श्रीकृष्ण की माता देवकी : कर्मवाद थापन को प्रकटे ~ गर्भ अवतार सारा० ३२१।

पृष्ठ पीठ का : आलबित जु ~ बल सुन्दर १५७।

पृष्ठभाग पीठ पर : ~ चढि जनकनन्दिनी ९/८९।

पेंच पगडी का फेरा : लटपट ~ अटपटे दीय २५५५।

पेठा पेठा : ~ बहुत प्रकारनि कीन्हे १२१३।

पेखत १ दिखलाई पडनी है : नील नलिन तनु पीत भँगुलिया घन दामिनि द्युति ~ सारा० १६६। २. देखता है : मनौ कमल दल सावक ~ ९१। ३ देखते ही ~ पूरब कथा चलाई ४२८३। ४ देखते हो क्यौं हम तन नहिं ~ २४८४। ५ देखते हैं : कबहुँ मात मुख ~ ९८। **देखन** ~ देखते-देखते . — ~ लोग नगर के परि० १/२५।

पेखन प्रेक्षण, दृश्य : क्रीडा राजद्वार को ~ सारा० ५०८।

पेखा देखा : दुहुँनि पुत्र मुख ~ ४।

पेखि १. देखकर : बिस्मय मिटी समि ~ समीपहिं ११९३। २ देख : चद उदौ मुख ~ री दर्पन २०११।

पेखे देखा . तुम हनुमान न ~ ९/१०५।

पेखैं १. देखते हैं, देख रहे हैं . ग्वाल गोपाल डरि गगन ~ ८५५। २ देखने के लिए लगी पलक जड जाके ~ ३५८७।

पेखौं १ देखती हू : ग्यानियन मैं न आचार ~ ८/८। २ देखूं पितु मातहिं ~ ४९२।

पेखौ १ देख रहे हो : क्यौं हम तन नहिं ~ २५४४। २ देखोगी : जब कछु अचरज ~ १२५८। ३. देख रही हो नैन-मुख-ओर तुम नहिं ~ २०५३। ४. देखना, देखो कहति रही तब राधिका जब हरि सँग ~ १९५३।

पेख्यौ देखा : और तिहुँ भुवन नहिं कहूँ ~ ८४८।

पेच पगडी का फेरा, पाश लटपट ~ सँवारति प्यारी २०३६।

पेट १ उदर, पेट। २ हृदय • बडी ~ की गैमी हौ। १९६१। △ ~ **दियौ** भेद दिया, भेद बना दिया • अपनौ ~ — तैं उनकौ २०९०। **भरि** ~ जी भरकर, बहुत अधिक होडा होडी मनहिं भावते किए पाप — ~ १/१४६। **रहते ~ समाने** पेट मे समाए रहते हैं, बडे चालाक है . अब पाई इनकी लगराई, — ~ — २२८९।

पेड़ि जड, मूल : कहौ तौ सैल उपारि ~ तैं ९/१०७।

पेर पेलकर, हटाकर . विरह अस्तुत ~ सा० ल० २९ ।
पेरि झटककर . गए ~ ताकों नहिं मान्यौ २३५० ।
पेरी पीला . प्रान बिना तन लागन ~ ४१७२ ।
पेरैं पार पा सकते थे/हैं कृपा जहाज बिना क्यों ~ १७८५ ।
पेरै देता रहता है : सदा सूल सुख ~ सा० ल० ७४ ।
पेरों[1] पड़ा, सुना : कबहुँ सबद न सुदर ~ सा० ल० ३३ ।
पेरो[2] पेरो (लोक लज्जा का दुहाई दो) : होद न स्वेत अरुन फिरि ~ १६५८ ।
पेल झगड़ा, तकरार . सखा जीतत स्याम जाने तब करी कछु ~ २४४ ।
पेलत दबाने लगा सेष सकुचि सहसो फन ~ ६३ ।
पेलनि मार, ठेल-पेल ~ लहत हरी री २३०० ।
पेला १ धक्रिया कर, उपेक्षा कर : ~ सबहिं निदरिहौं १९४३ । २ निर्भयतापूर्वक : हाँक देत पैठे दै ~, नेंकु न मनहिं डराने ३२८ ।
पेलि १ आक्रमण के लिए बढ़ा (दिया) : दियो गज ~ आपुन हँकार्यो ३०५६ । २ उपेक्षा कर, अवज्ञा करके : इन्द्रहिं ~ करी गिरि पूजा ८५६ । २ घुसेड़कर : ~ कै रथ सुभट बहु सँहार ४१८३ । ३ जबरदस्ती : मो संग झगरो कान्हो ~ ३४३४ । ४ उछाल उछाल कर . सुड-दंड-भुज ~ ग्वाल २८६२ ।
पेली अवज्ञा करके लाघा : राम रेख पग ~ ९/९४ ।
पेलैं आपस मे ठेलते हैं : चरन सों चरन धरि प्रगट ~ ३०७१ ।
पेलौ १ टालो, उल्लंघन करो . मेरो कह्यो कबहुँ जिनि ~ ३९९ । २ ठेलो, पीछे हटाओ : नव जुवती दल ~ (जू.) परि० १/१२९ ।
पेपनि दिखाइ पड़ती है : विधि नाचति नट ~ ३४०५ ।
पेपी देखा/देखी . मैं नीकें करि ~ है ३१४७ ।
पैं १ पास · तब नारद गिरजा ~ गए १/२२६ । २ से जाँचक ~ जाँचक कह जाँचै १/३४ ।
पैंच पेच । ~ दै पेच देकर/फिराकर · ~ — छबीली पगिया सँवारी ३०६० ।
पैंजनि पायजेब, घुंघरू : पग ~ बाजै ११७ ।
पैंठ बाजार, दुकान : सूरदास बैकुंठ ~ मैं १/२९७ ।
पैंड[1] मार्ग जाति पति ~ की बैरी २४५३ । ~ **पैंड** रास्ते-रास्ते : ~ चलियै तौ चलियै ३५४४ ।
पैंड[2] १ पग तीनि ~ बसुधा हौं चाहौं ८/१३ ।
पैंडे १. रास्ता . ~ चलन न पावै कोऊ १४१५ । २ पथ मे, रास्ते में . रुकि गए बाटनि नारे ~ २९०२ ।
पैंड़ रास्ते से : आँखिनि कैं ~ पैठि १४३५ ।
पैंडो रास्ता . ~ नहिं पावत तहँ कोऊ ८२८ । △ **दियौ उन** ~ उन्होंने जाने दिया, आगे बढ़ने का मार्ग दिया : खरभर परी — ~ ९/१०४ । ~ **देहु** रास्ता छोड़ो, जाने दो . ~ — बहुत अब कीन्हौ १५६८ ।
पैंती कुश की पैंती, पवित्री चर्र चली गाइ, द्विज ~ कर कौं दई २०३८ ।
पैहैं १ पायेंगी बरषैं मेव गाइ सुख ~ ८२४ । २ पायेंगे . सत्रु सहन नहिं ~ ८६ ।
पै[1] दूध . जैसैं मिलत नीर अरु ~ २२८५ ।
पै[2] १ अवश्य, जरूर निश्चय करि सो तरै ~ तरै ६/४ । २ पर, परन्तु, लेकिन . ~ मधुबन नाम कहावत ४०१३ । ३ भी : तो ~ सूर पतिव्रत साँचौ ९/७७
पै[3] पास, समीप पुनि सब सुर ब्रह्मा ~ जाइ ६/५ ।
पै[4] १. पर, ऊपर · षोडस अगिनि मिलि प्रजक ~ छन्दस अक फिरि डारै १/६० । २ से : कहति हैं नृपति ~ सुजस लीजै ३०६६ ।
पैग पग तीन ~ बसुधा दै मोकौं ८/१४ ।
पैज १ प्रतिज्ञा रही न ~ प्रबल पारथ की २४८ । △ ~ खैंचि प्रतिज्ञा करके : ~ मेटन आए हो ३९८९ ।
पैंजनियाँ पैंजनी रुन-झुन करति पाइँ ~ १०६ ।
पैठ प्रवेश । ~ **करी** रम गए हो, स्थान बना लिया है ऊधौ तुम ब्रज मैं ~ — ३६६३ ।
पैठत १ घुसता है, प्रवेश करता है जैसैं चोर भरे घर ~ २२९९ । २ घुसते हैं . सखा भीर लै ~ घर मैं ३०२ । ३. प्रवेश करते ही पुर ~ जिनको जस गावत ९/१६७ ।
पैठन प्रवेश करने : तबहीं तौ घर ~ पैहौ १९७२ ।
पैठहु प्रवेश करो : 'सूर' सपथ गोकुल जौ ~ ४०८९ ।
पैठार प्रवेशद्वार पर, फाटक पर : सूर प्रभु सहर ~ पहुँचे आइ ३०२४ ।
पैठि प्रवेश करके, प्रविष्ट होकर सकल सभा मैं ~ दुसासन अबर आनि गह्यौ १/२४७ ।
पैठी १ प्रवेश कर लिया, आ समाई जिय ~ निठुराई २८२६ । २ आ पहुँची हैं, आ पैठी हैं (अलक) ~ त्रिवलि निकेत २४७२ ।
पैठे प्रवेश किया, प्रविष्ट हुए, घुसे : ~ सखनि सहित घर सूने २७० । २ बैठे, घुसे : सबै सखा ~ रहौ ,४९२ ।
पैठो निवास किया जो लगि गोकुल ~ ३१२५ ।
पैठ्यौ १ घुसा है . ~ बडौ भुजग २४१० । २ प्रवेश किया, प्रविष्ट हुआ : ~ उदर मँझारि ९/१०४ ।
पैता श्री कृष्ण के एक सखा का नाम रैता, ~, मना, मनसुखा, हलधर सगहि रैहौं ४१२ ।
पैदर पैदल चातक मोर इतर ~ गन ३३०४ ।
पैनकी त्रिशूल (सी पैनी) केसुक विरह बयारि ~ ३७४० ।
पैनी तीक्ष्ण, तेज . धरी धार अति ~ ९/११ ।

पैबौ पाओगे, सकोगे : सो कैसे करि ~ ७७९ ।

पैयत १. पाता . बहुत सुख ~ है इहि बात २९६६ । २. पाते तेरी आँखिनि मै ~ हैं २६९७ । ३ पाते हैं तौ लौं सूर कहाँ पिय ~ परि० ७/५ । ४ पाया जा सकता है, मिल सकता है · अब कैमैं ~ सुख मागे १/६१ ।

पैयाँ पाँव, पैर · ~ लगे डरति हैं भारी १४६२ ।

पैया[1] पैर : डगमगाइ धरनी धरे ~ ११५ ।

पैया[2] पहिया, चक्र रथ तन, पुन्य पाप दोउ ~ ४/१२ ।

पैया[3] पाया : सुर मुनि अन्त न ~ री १८६ ।

पैयै १ पाती : निकसन हू ~ नहिं १९१६ । २. पाते हैं ऊधौ लहनौ अपनौ ~ ३९०८ । ३ पाया है : बहुत जतन करि ~ २८२६ । ४ पाओगे : इन छँद फदनि छदै ~ २८२६ । ५. पायेंगी : 'सूर' स्याम अब कैसैं ~ ३६३६ । ६ मिलता है : जाकौ कहू थाह नहिं ~ ३८९५ ।

पैरि तैरकर : भवसागर मैं ~ न लीन्हौ १/१७५ ।

पैरिया तैरने वाले हैं . ये दोउ नीर गभीर ~ ३५८७ ।

पैर्यौ तैरता रहा जल औंडे मैं चहु दिसि ~ १/१५२ ।

पैले परले, दूसरे हौ इहि पार, स्याम ~ तट ३२५४ ।

पैलौ[1] दूसरा, परला . नासिका लौं नीर बाढ्यौ पार ~ दूरि ५ ।

पैलौ[2] बहाना : ~ करतिं, देति नहिं नीकै १४७३ ।

पैसी घुस बैठी . कैसै मन दै ~ है १२५९ ।

पैसैं १ प्रवेश करे · फिरि आवहि घर ही मैं ~ ९८९ । २. प्रवेश करते थे, जा घुसते थे : करि बरियाइ तहाँ हूँ ~ २८९६ ।

पैहराइ पहनाकर · बधू जननि ~ ९५ ।

पैहै १. पायेगी : हम अतिही दुख ~ ४०८७ । २ पायेंगे कैसे देखन ~ ९/१२१ । ३. पायेगी . दुख ~ सो सकल प्रजा अब १/२९० ।

पैहे १ पायेगा . सतनि मैं कछु ~ १/८६ । २ पायेगी, पाओगी · हम सौ वैर किये कह ~ १७२५ । ३ प्राप्त होती है सब सुख सोभा ~ सा० ल० ८४ । **रिस ~** क्रोधित होगी, बिगड जायेगी : अब बूझै — ~ १७२४ ।

पैहौं १ पाऊँगा काल्हि न आवन ~ ४१५ । २ पाऊँगी सखियनि सौ निबहन पुनि ~ ३०४३ ।

पैहौ १ पाओगी : दान दिये बिनु जान न ~ १५१० । २. पाओगे : मोकौं उचटाए कछु ~ १७०४ ।

पोछत १. पोंछते हैं, पोंछ रहे हैं . पीतांबर पट सों मुख ~ २१७४ । २ पोछते हो काटे नाक पिछौरै ~ ३९७२ ।

पोंछति पोंछती है · भरि अकवारि धरति मुख ~ ११११२ ।

पोछि १ पोंछकर : आँसू ~ निकट बैठारी ४१९५ । २ पोंछ : पीत पट ~ डार्यो २४६२ ।

पोछियौ पोंछ दिया, पोछा . बदन ~, जल जमुन सौं धोइ कै ४४० ।

पोंछे पोछती है, झाडती है : लै उठाइ अंचल गहि ~, धूरि भरी सब देह १११ ।

पोइ[1] १ पिरोकर : मानिक मोती धरे जनु ~ २१० । २. लगा दो, लगाकर . सूरदास स्वामी करुनामय स्याम चरन, मन ~ १/२६२ । ३ समा गई है . रही जु चित मैं ~ ३७९४ । **रह्यौ ~** पिरोया हुआ है : बिच बघनहँ — ~ १४८ ।

पोइ[2] अकुर, कल्ला निठुर काटी ~ ३८०० ।

पोइसि बिसटाकर . चले जाव भइ ~ १/३३३ ।

पोई[1] एक प्रकार का हरा साग : ~ परवर फाँग फरी चुनि १२१३ ।

पोई[2] पोई थी, बनाकर तैयार की थी : रुचि रोटी ~ १९८० ।

पोखि सींचकर, छिडककर . ~ अधर मधु सुधि भई जो लग परि० २/५६ ।

पोच वि० १. निकृष्ट, बुरा : को उत्तम को ~ १६४० । २ मिट्टी हो गया, बेकार/व्यर्थ हो गया : सकल मम कृत ~ ७०६ । ३ नष्ट भ्रष्ट : माधौ जू मन सबही बिधि ~ १/१०२ । स्त्री० क्षुद्रता, नीचता . ~ करी मति मद ३१३६ । **~ करी** भूल की है, गडबडी की है : यह सब मैं ही ~ — १८७४ । **~ कियौ** बुरा काम किया · बिधना अतिहि ~ — री १८२८ ।

पोच पिसुन नीच और चुगलखोर · ~ लस दसन सभासद २७७५ ।

पोचै त्रस्त कर रहा है : प्रबल मदन रिपु ~ ४०८० ।

पोढावति लिटाती है, पौढाती है . सेज्जा पर सग लै ~ ५१४ ।

पोत[1] काँच के दाने, माला की गुरिया : कठ न ~ बनाऊँ २७०० ।

पोत[2] जहाज . जलधि थकित जनु काग ~ कौ १३७ ।

पोता धान . माडि माडि खरिहान क्रोध कौ, ~ भजन भरावै १/१४२ ।

पोती पिरोई हुई . कौस्तुभ मनि राजति रुचि ~ ११८० ।

पोते[1] लगाए हुए, मले हुए · तब तू गयौ सून भवन, भस्म अग ~ ९/८७ ।

पोते[2] अवसर मदन मनावत ~ ३३२१ ।

पोथी पुस्तक बँधौ ग्यान ~ कौ ३८५८ ।

पोर रीढ, पीठ . निकसे सबै कुवर असवारी उच्चैःस्रवा के ~ ४१६६ ।

पोरि=पौरी । **~ पौरि** द्वार-द्वार : लका ~ —, मैं ढूँढी ९/१०४ ।

पोरी[1] द्वार पर . खेलत कान्ह नन्द की ~ ६६९ ।

पोरी[2] एक प्रकार की रोटी : रोटी, बाटी, ~, झोरी ३९६ ।

पोवति पिरो रही थी हो बैठी मोतिनि लर ~ १८७१ ।

पोष १ पोषण . कियौ ~ वहु लाड लडानी ३७१४ । २ पोषण करो काया अपनी ~ ३५५० ।

पोषत पोषण करना है . ताकों ~ अह-निसि सोई ७/२० ।

पोषन पोषण : ~ भरन विसभर साहव १/३२ ।

पोषनि पालन-पोषण : यह छाँडनि वह ~ ४२५८ ।

पोष-प्रतिपाल पालन पोषण, देखभाल · कीन्ही महरि ~ १०५० ।

पोषि पोषण करके : पालि ~ मैं किए मयाने ३१३२ ।

पोषिवे पालने (के लिए) अपनो पिंड ~ कारन १/३३४ ।

पोषी पोषण किया था दै ~ दिन रात ३८७७ ।

पोषे क्रि० स० पोषण किया ~ नहिं तुव दास प्रेम सौं १/२१६ । वि० पाले-पोसे हुए : स्रवन सुधा मुरली के ~ ३६१६ ।

पोषैं पोषण करते है ~ ताहि पुत्र की नाई ५/३ ।

पोषै १ पालन करती है, पालती-पोसती है तौऊ जतन करै अरु ~ १/११७ । २ पोषण करता है : वरषत ~ आनै ३७५० । ३ पोषण करते थे, खाते थे · द्वादसि ~ लै आहार ९/५ । ४ पाले हुए, पुष्ट : ये दोउ स्रवन सुधा रस ~ ३३४९ ।

पोष्यौ पोषण किया, पालन किया : तोष्यौ, ~, जिय दयौ १/७७ ।

पोहत १. पिरोते या गूँथते हुए : सूर आजु लौं सुनी न देखी पोत सुतरी ~ ३६९० । २ मिलाते हैं : स्रवन धुनि सुनि नाद ~ ।

पोहि १ गूँथ (रखी) है : सूर स्याम यह प्रान पियारी उर मैं राखी ~ २४१३ । २ लगाकर, पोत कर : आई स्तननि विष ~ २९७७ ।

पोहे १ अनुरक्त हो गये : इहिं रस विसाल मव ~ ११८२ । २ गूँथे हैं, पिरोये हैं : रँग रँग मनि मन ~ री १३९ ।

पोहै बेधना है तीखे मर उर ~ ३८३० ।

पोह्यौ डुबो दिया है, बेसुध कर दिया है : नाद स्वाद सव ~ ६५६ ।

पौं लाभ का दाँव सूरदास की भली वना है, गजी गई अर ~ १/१५१ ।

पौंढि लेटकर : आपुन ~ अधर मज्जा पर ६५५ ।

पौंढे लेट गये : पुनि ~ ढाऊ लपटाने २०३७ ।

पौ पाँसे की एक चाल या दाँव, पाँसा फेकने पर जव ताक दम, पच्चीस, तीस आते हैं तव पौ होती है सूर एक ~ नाम विना नर फिरि फिरि वाजी हारी १/६० ।

पौढि लेट (गये) · ~ गए हँमि देत हुँकारी १९१ ।

पौढ १ लेट (रहे) ~ रहे निज मैन सारा० ९०२ । २ शयन कर तापर ~ चहत है आपन भल सा० ल० ६४ ।

पौढ़त १ लेटते रत्न जटित पर्यंक द्वारका ~ हैं सुखधाम सारा० ७२७ । २ लेटते हैं : सेस नाग के ऊपर ~ १/२१५ ।

पौढ़ति लेटती है . ~ आपु अधर-सेज्या पर १३२१ ।

पौढहु लेट जाओ : ~ तल्प हमारी २४८६ ।

पौढाइ लिटाकर : पुनि राखौं ~ २२६ ।

पौढाऊँ पौढाऊँगी : उठहु लाल कहि मुख पखरायो तुमकौं लै ~ २३० ।

पौढ़ाए, पौढ़ाये लिटा दिया : स्याम कौं पलिका ~ ६६ ।

पौढ़ायौ लिटाया तापर नृप ~ ९/५० ।

पौढावति लिटाती है, पोढाती है जसुमति लै पलिका ~ १९७ ।

पौढि लेट (गई) : ~ गई हरुएँ करि आपुन १९७ ।

पौढ़िऐ लेटिए : ~ सेज विछाई २४२ ।

पौढी लेट गई, लेटी : लै ~ आँगन हीं सुत कौं २४६ ।

पौढे[1] १. लेट गए तापर ~ लाल ४३७ । २ लेटे . ~ जवहीं आनि कै देखे विलखाने २९३४ । ३ लेटे हुए ~ स्याम जननि गुन गावत ४२२ । ४ लेटे हुए थे एक दिना पलना हरि ~ नद महर के द्वार सारा० ४३३ ।

पौढे[2] लेटा हुआ ~ कहा समर सेज्या सुत उठि किन उत्तर देत १/२९ ।

पौढैं पौढते हैं, विश्राम करते हैं . ~ मेष मग श्री प्यारी ९/४५ ।

पौढौ लेट जाओ · पलिका ~ पलोटिहौं पाइ २६४९ ।

पौन १ पवन, वायु · सुनि चचल ~ थक्यौ ६२३ । २ पवन देव ~ पावन करै द्वार मेरे ९/१२९ ।

पौन वर्त्त चक्रवात, एक विशेष प्रकार के वादल : वल वर्त्त, वारि वर्त्त, ~ ८५३ ।

पौना पवन, वायु : थकित होत सुनि ~ १२४१ ।

पौर द्वार पर, दरवाजे पर कनक कलस प्रति ~ विराजत सारा० ३९५ ।

पौरि १ घर के प्रथम कक्ष मे पैठत ~ छींक भई वाएँ ५४१ । २ द्वार · ~ तै दौरि दरवान ९/१२९ । ३ द्वार पर, दरवाजे पर गए वृषभानु की ~ २८६६ । ४ भवन-द्वार ~ सव देखि सो असोक वन मैं गयौ ९/७६ । ~ **पौरि-प्रति** प्रत्येक द्वार पर, द्वार द्वार पर · ~ — फिरौ विलोकत ९/७४ ।

पौरि-पाट द्वारों के फाटक ~ टूटे परे ९/१३९ ।

पौरिया द्वारपाल, ड्योढीवान : विनय विवेक विचित्र ~ १/४० ।

पौरिहीं द्वार पर ही · ताहि सुख दै चले, ~ हैं खरे ३०५१ ।

पौरी द्वार पर · एक दिना व्रजपति की ~ खेलत हरि व्रजवाल सारा० ४४५ ।

पौरुष १. पौरुष · अति प्रचट ~ वल पाऐ १/१०५ । २ पुरुषार्थ पृष्ठ भाग चढि जनकनदिनी ~ देखि हमार ९/८९ । ३ वल : वई बुद्धि वहि प्रकृति, वई ~ तन सवके ४३७ ।

पौष्यौ पोषण किया ~ अपनौ गात्र १/२१६ ।

पौसी वैठी/घुसी हुई : हृदय स्याम कैं ~ १३५४।
पौहौमि देखिए पुहुमि ।
प्याइ पिला कर : अमृत ~ तिहिं लेहिं जिवाइ ७/७।
प्याई पिलाई है · अधर माधुरी ~ ३८५३।
प्याउ पिलाओ अधर-सुधा-रस ~ १२१६।
प्याऊँ पिलाऊँगा असुर कौं सुरा तुम्हैं अमृत ~ ८/८।
प्याए १ पिलाने से : ऐरावत अमृत कैं ~ ६/५। २ पिला रहे थे अधर सुधा रस ~ ३६०३।
प्यारि प्यारी . मुकुता, हीरा, लीला ~ २००८।
प्यारिहिं प्यारी को : हँसि ~ उर लीन्हौ ७०३।
प्यारी[1] १ प्यारी (पुत्री या सखी) : मैं बरजी कहँ जाति री ~ ७४४। २ प्यारी (राधिका) सूर प्रभु-बस भई ~ ८३७।
प्यारी[2] प्रिय है सकल लोक लोचन ~ १/६९।
प्यारी[3] महँगी (पजाबी मे) . जहाँ विकति है ~ ३९२९।
प्यारे[1] प्यारे (श्रीकृष्ण) कमल नयन ~ हितकारी १/२१२।
प्यारे[2] भले, अच्छे फेनी सेव अँदरसे ~ ३९६।
प्यारो[1] प्रेमी (मोहन) : बनावत रास-मडल ~ ११४३।
प्यारो[2] १ प्यारा, प्रिय . लागत अति ~ ४९४। २ प्यारे : द्वादस सौ तलफत पिय ~ सा० ल० ७१। ३ प्यारे लगते हैं, प्यारे हैं . सदा मोहि ~ ३/१३।
प्यावत १ पान कराता है . बधु-मधुपिनि ~ परम चैन २५२४। २ पिलाती हुई · पय ~ बालक धरि चली ११८०। ३ पिलाता है . अमृत बेलि बिरहिनी ~ ३३३४।
प्यावति पिलाती है : फूँकि-फूँकि जननी पय ~ २२९।
प्यावन पिलाने : सुत ~ हित भूमै १४७।
प्यावहि पिलावे, पिलाओ . ~ हरि बदन सुधारस ३७४२।
प्यावै १ पिलाती है : वहै दूध मोहिं ~ री ४९५। २ पिलाती हो : मैया मोहि और क्यों ~ ३९६।
प्यास प्यास, प्रबल कामना : देखि नैनन की मिटी ~ ८/५।
प्यासी लालायित, इच्छुक, अभिलाषी : अँखिया हरि दरसन की ~ ३५५८।
प्यासे वि० प्यासे, तृषित तव मुख दरस आस के ~ २८२६। **स्त्री०** प्यास से ~ प्रान जाइँ जौ जल बिनु पुनि कह कीजे सिन्धु अमी कौ २७३८।
प्यासौ प्यासा : जल बरषत रहौ ~ ३९३५।
प्यौसर सुस्वादु : अति ~ सरस बनाई १८३।
प्यौसार मायके (पीहर) · सिंधु पत्नी ~ पठाई ९/१२४।
प्योसारौ मायका, पीहर : पति गुरुजन ~ री १३५।
प्रकट १ उपस्थित ~ इन्द्र कौं गर्व प्रहार्यौ १/१४। २ प्रत्यक्ष, स्पष्ट : सूर-स्याम कहि ~ सबनि सौं ८३५। ~ **करी** उत्पन्न कर दी ज्वाला ~ — ९/९८।
प्रकटायो प्रकट किया : प्रेम प्रवाह प्रकट ~ सारा० ३०९।
प्रकटे १ उत्पन्न हुए : सुनि मथुरा ~ जादव पति ६। २ प्रकट हो गये आई छींक नाक ते ~ शूकर सारा० ४०।
प्रकटो १ उत्पन्न हुआ . अपना धाम जान ~ ध्रुव सारा० ४२३। २ प्रकट होओ, जन्म लो : आज्ञा दई जाय कपि कुल मे ~ सब सुर साथ सारा० १४३।
प्रकट्यो उत्पन्न हुआ ऐसौ सुत तेरे गृह ~ या ब्रज को शृंगार सारा० ४०२।
प्रकार घेरे को, परिधि को जान्यौ नहीं निसाचर कौ छल नाँध्यौ धनुष-~ ९/८३।
प्रकारनि प्रकार के · पैंठा बहुत ~ कीन्हे १२१३।
प्रकारौ प्रकार से, तरह से बोरत सहस ~ १/२०९।
प्रकास[1] १ प्रकाश नासत तिमिर ~ बदन तैं २७६७। २ प्रकाश (यश) दिन दिन होत ~ ६०। ३ यश को : गावहीं गदगद सुरहि ~ १६१८। ~ **नसाइ गयौ** प्रकाश दूर हो गया : कोटि ~ — री २७७९।
प्रकासत १ प्रकाशित किए बनै न बिना ~ २/१५। २ निकालते है · मुरली मैं तव नाम ~ २७६२। ३ प्रकाशित करते हैं, दिखाते चलते हैं · नूतन दिन दिन प्रीति ~ २१८५। ४ प्रकाशित होती हैं, विकासत होती है : जाकैं उदय अनेक ~ ।
प्रकास मिलन मिलन रूपो (सूर्य का) प्रकाश : तरनि कौ ~ बिना चपल डोलै री १९७८।
प्रकासा प्रकाश रवि आगैं खद्योत ~ ९५०।
प्रकासि प्रकाशमयी है वह छवि महा ~ २३१२।
प्रकासित १ चमकती हो · घन भीतर दामिनी ~ २०६७। २ प्रकाशित . बासर निसि दोउ करैं ~ १/९०। ३ विकसित या खिल उठा हो भानु उदै ज्यौं कमल ~ ६३९।
प्रकासी १ दिखाई पडी नैकु बूँद नहिं धरनि ~ ९४२। २ प्रकट की, प्रकाशित की हृदै कमल मैं ज्योति ~ ४०४९। ३. प्रकाशित हो गई है, निकल आई हैं . रवि किरनि ~ १९६६। ४ प्रकाशित हो रही हो : जनु घन मैं चद्रिका ~ ४१८४। ५ लग गया हो मुनि भख पक ~ सा० ल० १३। △ **चतुराई** ~ चतुराई प्रकाशित हुई अर्थात् चालाकी सूझी तबहीं तैं — ~ २२६४।
प्रकासैं प्रकाशित करती हैं, बोलती हैं मीठै बचन ~ १३०२।
प्रकासौं प्रकाशित कर लूँ सवननि-मग सुनि हृदय ~ २५३०।
प्रकासौ १ प्रकाश करो जाकै जुगति ~ सा० ल० १०४। २ प्रकाश किया : सारग ~ सा० ल० ४६।
प्रकास्यो प्रकाश किया बुद्ध रूप कलि धर्म ~ सारा० ३१९।
प्रकास्यौ १ प्रकट कर दिया : उलटि काम तनु काम ~ ११४१। २. प्रकाशित है : इहिं ब्रज सरगुन दीप ~ परि०

१/१६३ । २ प्रसारित हुआ, फैला : वैसेंहि मुरली नाद ~ ३१३२ ।

प्रकृत मूल, अमल (बात) : कहा स्याम की ~ सही २५६७ ।

प्रकृति १ प्रकृति मे पच तत्व ~ परे ३८९९ । २ स्वभाव, आदत : तजहु ~ कठोर ३६४ । ३ स्वभाव को तुव ~ कौने हरी १७३० । ~ **गँवाई** स्वभाव तज दिया है/छोड दिया है : नँद आपनी ~ — ९२३ ।

प्रकृतिहि स्वभाव या आदत को . ऐसी कठिन त्रिया की ~ कर ही कर पघिलाइहीं २७६० ।

प्रगट १ उत्पन्न, आविर्भूत खभ तें ~ है जन छुटायौ १/५ । २ प्रकट हुए : धनि यह ब्रज जहँ ~ हरी ८५ । ३ प्रत्यक्ष : रेख न रूप ~ दरसन दियो १६०७ । ४ स्पष्ट दूतहिं ~ कहीं ५२५ । ~ **करि गायौ** स्पष्ट रूप से वर्णन किया • सुक भागवत ~ — ११७२ । ~ **दिखायौ** प्रकट किया • राग-रागिनी ~ — ११४४ । ~ **भए** रोंगटे फरफरा उठे, खडे हो गये : पुलकित उर रोमाच ~ — १७१३ । ~ **होति** है मत्य होती जा रही है सोई ~ — जात ९८६ ।

प्रगटत १ प्रकट कर रही है ~ प्रेम अगाधा १६९६ । २ प्रकट होता है, निकलना है जैसे गगि ~ प्राची दिसि सारा० ३९० । ३ प्रकट होते ~ ही तुम मव हरी ३१२३ ।

प्रगटति १ प्रकट होती है ~ रस रुचि नवहिं ठाउँ ६६३ । २ प्रकट हो जाती है, निकल आती हैं . ~ हँसति, दँतुलि१३० ।

प्रगट प्रताप प्रत्यक्ष प्रभाव ~ चरन कौ देखौ ९/४१ ।

प्रगटवी प्रगट कर देना बेगि ~ तैंमी ३८५२ ।

प्रगटहि प्रत्यक्ष ही, स्पष्ट ही सुनहु सूर अब ~ कहियै २२२७ ।

प्रगटहि प्रत्यक्ष ही, सामने ही जद्यपि व्याध वधे मृग ~ २३६१ ।

प्रगटहीं भली प्रकार : प्यारी हृदय ~ जानति २०२१ ।

प्रगटही १ प्रत्यक्ष ही नैना भए ~ चेरे २२७६ । २ स्पष्ट ही सूर स्याम तब कही ~ १५२२ ।

प्रगटाई १ प्रकट की . त्यौं हरि जोनि अपनी ~ ४३०० । २ स्पष्ट दिखलाई पड रही है हिलनि मिलनि तुव प्रीति ~ २६५८ ।

प्रगटाऊँ प्रकट करूँ जोग कथा ~ ३४२० ।

प्रगटाए १ अकित कर दिये चरन चिन्ह ~ ५७३ । २ प्रकट कर दिया है 'सूर' स्याम गुन रासि हो नीकैं ~ २५१२ ।

प्रगटाने प्रत्यक्ष या स्पष्ट हो गये हैं सुनहु सूर लोचन बटमारी गुन जोइ सोइ ~ २२८९ ।

प्रगटान्यौ प्रगट हो गई, व्यक्त हुई : गुप्त प्रीति ~ ६७४ ।

प्रगटाये प्रकट किये : सब्दादिक तैं पचभूत सुन्दर ~ २/३६ ।

प्रगटायौ प्रकट, उत्पन्न किया : नाभि कमल तैं आदि पुरुष मोकौं ~ २/३६ ।

प्रगटावत प्रकट करता है ता गुन कौ ~ २५०३ ।

प्रगटावैं प्रकट होता/होते . पूरव तप कैसैं ~ १६०७ ।

प्रगटावै प्रगट करते हैं, अवतार लेते हैं देह धरत पुनि पुनि ~ ९५१ ।

प्रगटावैगी प्रकट करेगी, बतायेगी आखिर तो ~ २७२६ ।

प्रगटि १ अवतरित होकर • सोई सूर ~ ब्रज-मीतर १५०८ । २ खुल जाते हैं, दिखलाई पडते हैं : उडत अचल ~ कुच दोउ ११४५ । ३ प्रकट कर (हरि) माया ~ सकल जग मोहै ३ । ४ प्रकट होकर . ब्रह्म ~ दरस तिन्ह दीन्हो ७/७ । ५. प्रत्यक्ष रूप से . सो अब ~ दिखाऊँ २१६१ ।

प्रगटित १. अगुप्त अथवा प्रकट रूप मे गुप्त ~ बान ३८८५ । २ प्रकट कर दिखाई है : ~ काम कला रे २६३९ ।

प्रगटी १ प्रकाशित हो गई ब्रज घर-घर ~ यह बात २७२ । २ प्रकट हुई है, आ चढी है • अब ~ तरुनाई १४६१ ।

प्रगटे १ अवतरित हुए, उत्पन्न हुए गोकुल ~ है हरि नागर ९०१ । २ प्रकट किया : ~ रिषय सप्त अभिरामा ३/८ । ३ प्रकट हुए, प्रकट हो गये ग्वालिनि बिकल देखि हरि ~ १४०९ । ४ प्रकट हुए ये : तबहीं तुम ~ १/११२ । ५ प्रकट हुए हैं ये भू भार उतारन कारन ~ स्याम सरीर ९/१६ । ६. प्रकाशित हुआ सोरह कला चन्द्र जो ~ दीन्हो तिमिर बिदार सारा० ३६३ । ७ प्रकट होते हैं ~ नित नव कज मनोहर ३९८४ ।

प्रगटै १ प्रकट करता है, खोलता है, बताता है . धनी धन कबहूँ न ~ १८४३ । २ प्रकट होता है अतहुँ सूर सोइ पै ~ ३१८७ ।

प्रगटैहै प्रकट या जाहिर करेगा : सो कैसैं ~ रा ७११ ।

प्रगटौं अवतरित होऊँगा : गोकुल ~ आनी १६०४ ।

प्रगटौ प्रकट कर टालो (आकर मिल जाओ) ~ हृदय सनेही ११२३ ।

प्रगट्यौ १ उदित हुआ • ~ भानु मद भयौ उडपति २०५ । २०५ । २ छा गया : ~ आइ लक दल कपि कौ ९/८३ । ३ प्रकट किया, प्रकट कर टाला : ~ पूरन नेह २००१ । ४ प्रकट हुआ है सूरदास प्रभु कौ जस ~ ९/१४० । ५. प्रकट हुई • सुपनातर ~ अब आई ८४० । ६ प्रकट हुए : तिहिं छिन पवन पूत तहँ ~ ९/८३ । ७ बतलाना, कहना स्याम-सग सुख ~ चाहति २२०९ । ८ उत्पन्न हुआ ~ अग अनग बिकल भई ११८१ ।

प्रगासी प्रकाशित हो रही है . ललित तन ज्योति अतिहिं ~ ३०६० ।

प्रचंड १ प्रचड : अति ~ पौरुष बल पाएँ १/२०५। २ बलवान् था : हिरनकसिपु अति ~ ब्रह्मा बर पायौ ९/११८।

प्रचारि ललकार कर, चुनौती देकर · एक समय सुर-असुर ~ लरे भई असुरनि की हारि ७/७।

प्रचारी ललकार कर हरि कह्यौ गरुड इहिं हति ~ ४१९४।

प्रचार्यौ ललकारा . इन्द्र आइ तब असुर ~ ६/५।

प्रछालि प्रक्षालित करके, अच्छी तरह स्वच्छ करके : उठि ~ मुख धोवत ९/३१।

प्रजंक पलग : षोडस अगनि मिलि ~ पै छ दस अक फिरि टारै १/६०।

प्रजंत पर्यन्त, तक नाभि ~ नीर मैं ठाढी ७८५।

प्रजरनि जलन : फूँक उसास बिरह ~ सगं ३७८१।

प्रजरि जलकर (प्रज्वलित होकर) प्रेम न ~ पची री ४२५६। ~ **प्रजरि** जल-जलकर ~ — मनु निकसि धूम अति ३७८९।

प्रजा[1] रियाया, लोग कहति ~ अकुलानी १/२५०।

प्रजा[2] तत्त्व · पच ~ अति प्रबल बली १/१८५।

प्रजा-प्रान प्रजा के प्राण-धन · जै कुमुद जननि ससि ~ ९/१६६।

प्रजारत जलाते हैं जारि-जारि फिरि फूँकि ~ ३७८४।

प्रजारन जलाने बहुरि ~ लागे ६८६।

प्रजारी जला दिया : निसि हेमत ~ ३७१३।

प्रणव एक प्रकार का वाद्ययत्र . मधुर खंजरी पटह ~ मिलि सारा० १०७५।

प्रतच्छ १ प्रत्यक्ष, स्पष्ट : विह्वल तन-मन, चकृत भई सो यह ~ सुपनाए ९/३१। २ प्रत्यक्ष, प्रमाणालकार . सूर ~ निहारत भूषन सा० ल० १००।

प्रतषेद प्रतिषेध, रोक, निषेध, एक अलकार : यों ~ अलकृत जब हू सा०ल० ९६।

प्रताप १ तेज (हरि) अति ~ सिसु- भेषा ४/२। प्रकाश यह ~ दीपक सु निरतर २/२८। ३ प्रताप देखौ काम ~ अधिकाई १/२२९। ४ प्रभुता, महिमा तुव ~ जान्यौ नहिं ४८८। ५ ~ दियौ प्रताप-युक्त बना दिया ताके कोटि विघन हरि हरि कै, अभै ~ — १/३८।

प्रतापु प्रताप से रच्यौ रास ~ १०५६।

प्रति प्रत्येक, हर एक : अग अग ~ छवि तरग गति १/६९। ~**प्रति** १ अलग-अलग : जुवतिनि ~ — रूप बनायौ ११७९। २ प्रत्येक : ~ — ग्रह तोरन ध्वज धूप ९/१६६।

प्रति[2] पास · चपक जाहि गुलाब बकुल ~ १०९३।

प्रति[3] छाया, प्रतिबिम्ब जैसे केहरि उझकि कूप-जल, देखत अपनी जु ~ १/३००।

प्रतिग्रह वह दान जो विधिपूर्वक दिया जाय बहुत ~ लेत विप्र जो जाय परत भव कूप सारा० ३३८।

प्रतिछाँहि प्रतिच्छाया : लख्यौ तन ~ २२०२।

प्रति धारी प्रत्येक (फन पर) रखे जा चुके हैं : जे पद अहि-फन-फन ~ ९८१।

प्रतिनीक प्रत्यनीक अलकार : तिहिं ते का ~ सा० ल० ५७।

प्रतिपलिहौं पालन करूँगी : यह ब्रत हौं ~ ९/३५।

प्रतिपार १ प्रतिपालक, पालनकर्ता . येई हैं जन के ~ ४९७। २ प्रतिपालन · पुत्र हेत ~ कियौ ३१२४।

प्रतिपारत पालन करते हैं : 'सूरदास' प्रभु रीति सदा यह, प्रन जुग-जुग ~ ४२२०।

प्रतिपारन प्रतिपालन, पालन पोषण तुम कीन्हो ~ ३११४।

प्रतिपारि पाल पोस कर दही खवाइ कीन्हे बडे अति ~ २०९१।

प्रतिपारी प्रतिपालन किया · राम काम पूरन ~ ४२०२।

प्रतिपारे १ पालन पोषण किया . वारे तैं ~ २२५८। २. प्रतिपालन हो सका है, बचाव हो पाया है : तो एते ~ ३८३४। ३ पालन करना राजनीति अरु गुरु की सेवा, गाइ विप्र ~ ९/५४।

प्रतिपारैं पारणा कर टालें . बहुत पुन्य यह ब्रत ~ २८००।

प्रतपारौं पालन-पोषण करूँ हौं कुटुंब काहैं ~ ९/४०।

प्रतिपारो प्रतिपालन/निर्वाह करो प्रथम ओर ~ ३१७४।

प्रतिपार्यौ १ पालन किया · बचन रिषि कौ ~ ९/१४। २ पूरा किया · रघुपति अपनौ प्रन ~ ९/१५९।

प्रतिपाल प्रतिपालक, रक्षक : मया करिऐ कृपाल ~ २५२।

प्रतिपालक १ पालक हो · बन बास तात-बचन ~ ९८१। २ रक्षक, सरक्षक बालक ~ तुम दोऊ दसरथ लाड लडायौ ९/५५।

प्रतिपालत १ प्रतिपालन करती है कर जोरे आग्या ~ १३२०। २ प्रतिपालन करते हैं सगुन प्रीति ऐसी ~ ३९०६।

प्रतिपालन पालन-पोषण ~ करि बडे कराए २२७५।

प्रतिपालि पालन-पोषण करके . जिनकौं मैं ~ बडे किय २३९३।

प्रतिपाली १ निर्वाह किया था . प्रगट प्रीति दसरथ ~ ३८१३। २ पालन-पोषण किया था · अपनौ करि ~ ३८२३।

प्रतिपाले १ पालन पोषण किये, पालन किये निसि दिन सेवा करि ~ २३९७। २. पालित-पोषित नद जसोदा के ~ १५३५। ३ पालित-पोषित किये हुए हैं सुनहु सर मेरे ~ २३५०। ४ प्रतिपालन, पालन पोषण सुनहु 'सर' ~ कौ गुन २३०४।

प्रतिपालैं पालन पोषण करते हैं ~ बहुरौ सहरे ४/३।

प्रतिपालै १ प्रतिपालन करता है : बडौ बडाई कौ ~ २८२६।

२ पालन-पोषण करते हैं : मात-पिता सबहि ~ २२९४।
प्रतिपालौं प्रतिपालन करता हूँ : समै समै बरषा ~ ९२४।
प्रतिपाल्यौ पालन-पोषण किया है : जिन पुत्रनिहि बहुत ~ १/८६।
प्रतिफल बदला, स्वार्थ : ~ रहित सुप्रीति २/१२।
प्रतिवाद वाद-विवाद : तुम्हैं हमैं ~ भए तें १/१२३।
प्रतिबिंब, प्रतिबिम्ब १. प्रतिच्छाया, छाया : अजिर पद ~ राजत २१८। २ प्रतिच्छाया, परछाईं : बार बार ~ निहारति २१९१।
प्रतिबिंबहिं प्रतिच्छाया को : इकटक चितै रही ~ २४१४।
प्रतिबिंबित झलमला रही थी : कुसुम कलेवर बूँद ~ निरवार ११५९।
प्रतिमा चिह्न, छाप : चरन की ~ पथ मैं घार्ट ९/६४।
प्रतिहार द्वारपाल, दरबान : कामादिक पाँचौ ~ ४/१२।
प्रतिहारी द्वारपाल : हम लकेस-दूत ~ ९/१२०।
प्रतीची पश्चिम (दिशा) : प्राची ओर ~ उदीची सारा० ७७५।
प्रतीति १ विश्वास : रावेंहिं मिलेहुं ~ न आवति २१२३। २ विश्वास के : बिनु ~ क्या मीन चढै थल ३८६०। ३ विश्वास है : जाको जहाँ ~ २८२१।
प्रत्याहार पीछे हटाना, योग के आठों अंगों में से एक जिसमें इंद्रियों को अन्य विषयों से हटाकर चित्त का अनुसरण किया जाता है : यम अरु नियम प्राण ~ धारण ध्यान समाधि सारा० ६०।
प्रथम[1] १ पहला, पहले। २ सर्वश्रेष्ठ, सबसे उत्तम : ग्राह ~ गति पावै १/१२२।
प्रथम[2] प्रथम राशि (मेष) मेख, खूँटे के समान दृढ, अचल : भई है कहा ~ सी बाल सा० ल० ७१।
प्रथम उपमान प्रथम नक्षत्र (अश्विनी) का उपमान, घूँघट : प्रथम टार उपमान कहा मुख सा० ल० १९।
प्रथम मथत जलनिधि जो प्रगट्यौ (जलनिधि) समुद्र मथन से जो पहले प्रगट हुआ, विष : ~ सारा० ९६०।
प्रथम समाज पहले पहल मिलने के : बेलि ~ कारन मेदनी कच गूहि २८४४।
प्रथमहिं १ पहले : ~ कह्यौ व्यास अवतार १/२२८। २ पहले ही : ~ अरपि दियौ हम सरवस ३७३५।
प्रथमहीं पहले ही : अंग की छवि निरखि ~ बिवस है २१९६।
प्रथमारंभ प्रारम्भ : ~ जन्य की कीन्हौ ८३२।
प्रथमैं पहले, सर्वप्रथम, सबसे पहले : ~ चरन-कमल को ध्यावै ३/१३।
प्रथी पृथ्वी : ~ गहि पाद ४१९४।
प्रदच्छिन प्रदक्षिणा : देहिं ~ जहँ ममि भानु ४/८।
प्रदच्छिनकारी प्रदक्षिणा करने वाले : रवि ससि किए ~ १/३४।
प्रदच्छिना प्रदक्षिणा : करी ~ ताहु ३४७९।
प्रदेस अंग में, अवयव में, प्रदेश में, भाग में : कटि ~ किंकिनि राजै १/६९।
प्रद्युमन श्रीकृष्ण के सबसे बड़े पुत्र का नाम, जिनका जन्म रुक्मिणी के गर्भ से हुआ था : पहिलो पुत्र रुक्मिणी जायौ ~ नाम धरायौ सारा० ६८९।
प्रधान मुख्य : तहाँ अविद्या नारि ~ ४/१२।
प्रनतपाल शरणागत की रक्षा करने वाले हो : ~ केसव कमलापति ९८१।
प्रनालि तारतम्य : नाद ~ प्रवेस घोप मैं ३६३३।
प्रपंच १ आडंबर, छल : बहुत ~ किये माया के १/३२९। २ जंजाल : पंजा पंच ~ नारि पर १/६०। ३ जाल में : इहि माया झूठी ~ लगि रतन सौ जनम गँवायौ २/३०। ४ सांसारिक : पंच ~ विभूति २/३८।
प्रपिता पितामह : ~ तब ब्रह्मा तप कियौ ४/९।
प्रपुंज बड़ा समूह, भारी झुंड : चले ~ चंचरीक २०५।
प्रफुलित १ खिला हुआ है : ~ कमल, गुंजार करत अलि २७९९। २ खिली हुई है : कुमुदिनि ~ हौं जिय सकुची १६७१। ३ खिले हुए : ~ कमल सुहाए ११७५। ४ खिले हुए हैं : बरन बहु कुसुम ~ २१७२। ५ प्रफुल्लित, प्रसन्न, प्रमुदित : गद गद बचन कहत मन ~ बार बार समुझैहौं ३४३०। ~ **जाइ** विकसित है : सुखद कुमोदिनि ~ — ११८०।
प्रफुल्लित १ प्रसन्न : राजा निरखि ~ भयौ ९/२। २ विकसित, खिला हुआ : तेरो बदन ~ अंबुज २८०८।
प्रबल १ कठोर : रघुपति ~ पिनाक बिभंजन ९८१। २ प्रचण्ड, भयंकर : मेघ-दल ~ ब्रज लोग देखैं ८५५। ३ बलवान्, शक्तिशाली : ~ सत्रु आई यह मार १/२२९।
प्रबाल १ मूँगे : ससि संग ~ कुंद कलि २४३७। २ मूँगे के : सुमन सुरंग ~ १३८२।
प्रबालनि मूँगे को : बिंब ~ लाजहीं १११८।
प्रबालिका मूँगा, विद्रुम : बिच बिच लाल ~ ८०९।
प्रवाह १ प्रवाह को : दुरजोधन कौ मान भंग करि बसन ~ भरै १/३७। २ प्रवाह की : प्रेम सलिल ~ भँवरनि १७६३।
प्रबिसत प्रवेश करता है : हिरन पटन पति ~ ज्यों हैं परि० २/२२।
प्रबीन चतुर, कुशल : सुनि सखि परम ~ ४७८।
प्रबेस प्रवेश : बन तैं कियौ ~ ४०७८।
प्रबोधत धीरज देने लगे, समझाने लगे : जननी व्याकुल देखि ~ ५४८।
प्रबोधि समझाकर : सकल ग्यान ~ उनमौं ११/२।
प्रबोधै समझाए-बुझाए : कै वै स्याम सिखाइ ~ ३३००।

प्रभा १ छटा, कांति : कुंडल मुकुट ~ न्यारी १/६९ । २ बिम्ब : रवि ~ लखाइ ३/१३ ।

प्रभाउ प्रभाव, सामर्थ्य, शक्ति . हरि ~ राजा नहिं जान्यो १/२६८ ।

प्रभात सवेरा : जान ~ प्रभाती गायो सारा० १०१८ ।

प्रभाती प्रात काल मे गाया जाने वाला एक गीत विशेष जान प्रभात ~ गायो सारा० १०१८ ।

प्रभाव सामर्थ्य, शक्ति भक्ति ~ सूर लखि पायौ १/९३ ।

प्रभास चमक, कान्ति अंग अग भूषन बिराजत कनक मुकुट ~ १८२० ।

प्रभासु गुजरात मे स्थित एक तीर्थ स्थल . आय ~ विप्र बहुजन को बहुतहि दान देवाये सारा० ८३६ ।

प्रभु १ इन्द्र . अहिरनि करी अवग्या ~ की ८५६ । २. ईश्वर, भगवान् चारि पदारथ के ~ दाता २/१६ । ३ स्वामी . वे ~ बड़े सखा तुम उनकै ३८८६ ।

प्रभुजननि हरि भक्तों : ब्रजवासी ~ कौ सुखद काम तरु बेलि २८२८ ।

प्रभुता १. गौरव ~ मेटि करत हिनती १६८९ । २ बडाई, प्रभुता . प्रभु की ~ यहै जु दीन सरन पावै १/१२४ । ~ डारि प्रभुता का परित्याग कर : स्याम हँसि बोले ~ — १०३३ ।

प्रभुताइ प्रभुता मनहि मन सुनै कृष्न ~ २९२५ ।

प्रभुताई १ प्रभुता, प्रभुत्व . सूरदास के त्रास हरन कौ कृपानाथ ~ १/९५ । २ वैभव . यौं जग की ~ १/१४७ ।

प्रभुत्व अधिकार, वैभव, पद, मान ' जग ~प्रभु ! देख्यौ जोइ ७/२ ।

प्रभु-वाहन गरुड के ~ डर भाजि बच्यौ अहि ५७३ ।

प्रभुहि १ प्रभु को : प्रीति कैं हेतु सूरज ~ पाइयै २०१७ । २ स्वामी के . ~ बिमुख तृन दत कर्यौ ३८५० ।

प्रभुहि प्रभु ने हो आज्ञा पाय चले निज पुर को ~ गीत समझायो सारा० २५३ ।

प्रमत्त मस्त, मतवाली . तू कहाँ ढीठ, जोबन ~-सुन्दरी ३०७ ।

प्रमदा[1] राधा की एक सखी : ~ सुमदा नारि २००८ ।

प्रमदा[2] सुन्दरियाँ, युवतियाँ : पाँचे ~ परम प्रीति सों सारा० १०५७ ।

प्रमान १ प्रमाण (नाप) : बसुधा त्रैपद करी ~ १२७ । २ प्रमाण हैं : पाताल और रसातल मिलि कै सातों भुवन ~ सारा० ३१ । ३. प्रामाणिकता ' बढौ धरम ~ सा० ल० ७५ । ४. सीमा : पाप जे कीन्हे, तिनकौ नाँहि ~ १/१९७ ।

प्रमानु प्रमाण . ता दिन भयो अवतार ~ परि० १/४ ।

प्रमानो सत्य मानो, ठीक मानो . मेरे वचन ~ सारा० ४८७ ।

प्रमान्यो ठहराया, स्थिर या निश्चित किया . योगीश्वर वपु धरि हरि प्रकटे योग समाधि ~ सारा० ३५१ ।

प्रमुख मुख्य : अकुस ~ चिह्न बनि आये १०४ ।

प्रमुदित १ प्रसन्न, आनन्दित ' ~ जसुमति हरषित नँद २०४ । २ प्रसन्न होते हैं ' ~ जनक निरखि मुख अंबुज ९/२६ ।

प्रमोधि छेड़ दी, समझा दी ठानी कथा ~ बोलि सब घोष समोध्यौ ४०९५ ।

प्रमोध्यै समझा दिया : कै वै स्याम सिखाइ ~ ३३०० ।

प्रयंक पलग पर : जोरि अक ~ पौढे २१३१ ।

प्रलंब, प्रलम्ब प्रलम्बासुर, एक बार कृष्ण और बलराम गोपों के साथ खेल रहे थे, प्रलम्बासुर भी गोप वेष मे आकर उनके साथ खेलने लगा, अन्तत. बलराम के हाथ से मारा गया : धेनुक और ~ सँहारे सारा० ४७९ ।

प्रलय वि० १. प्रलयकारी . ~ मेघ बुलाइ ८५२ । २. प्रलयकालीन . ~ जल करत हौ सैनु ४८९ । पुं० प्रलय, सहार, विनाश : उतपति ~ करत हैं येई ३८० ।

प्रलै प्रलय : सूर विन मिले ~ जानिबौ ३२३५ ।

प्रवर्त एक तरह का मेघ अनिल वर्त, बज्रवर्त, ~ ९४० ।

प्रवान अगीकार प्राची पियरी ~ की २०३९ ।

प्रवाल १ मूँगे बिच बिच बज्र ~ ९७ । २. मूँगे के : चमकत दसन सुरग ~ १०५० । ३ मूँगे के समान लाल सुमन सुगन्ध ~ ४७८ ।

प्रवाह प्रवाह, धारा . जैसैं नीर ~ समुद्रहिं २३१४ ।

प्रवाहु प्रवाह : नैननि नीर ~ ४०८९ ।

प्रवीन प्रवीण, चतुर मधुकर कहा ~ सयाने ३८१५ ।

प्रवीने चतुर हैं सकल कला जु ~ २३७८ ।

प्रवेस १ प्रवेश कियौ न गेह ~ ४१७७ । २ प्रवेश करना, बढना . तदपि सूर कुमोदिनी ससि, बढै प्रीति ~ ४२६० ।

प्रवेसनि गति, पहुँच धरनि न बूँद ~ ३३१० ।

प्रवेसि प्रविष्ट होकर . बृंदावन ~ अघ मार्यौ ४३२ ।

प्रससी प्रशसा की सूरदास प्रभु मन सुख दाता लै भुज बीच ~ २११५ ।

प्रस्नहि प्रश्न, समाचार कुसल ~ कहे ३०५१ ।

प्रसंग १ उपयुक्त अवसर ' ~ विनु तहँ गयौ न जाई ९/३ । २ बात को, प्रसग को ' आन उपाय-~ छाँडि कै, मन-बच-क्रम अनु साँचै १/८१ ।

प्रसस प्रशसित : बिधि भौ प्रबल ~ १२४७ ।

प्रसंसत प्रशसा करते हैं मनहुँ ~ पिक बर बानी २८४६ ।

प्रसंसा बडाई ' ग्वाल परम सुख पाइ कोटि मुख करत ~ ४३१ ।

प्रसरि फैलकर किंकिनि कटि तट मध्य ~ भुज परि० १/१२ ।

प्रसाई प्रसार किया बैजती कमल ~ हो परि० १/१०८ ।

प्रसाद १ कृपा . गम ~ तैं सो वह पावै ३/१३ । २ कृपा से : ता ~ या दुख कों तरौ ६/५ । ३ देवता का जूठन जो

भक्तों या सेवकों मे बाटा जाता है भोग ~ लेहु कछु मेरौ ८४३।
प्रसावनौ फूल रही थी माथे मोर चन्द्रिका राजै, बैजती माल ~ २८३२।
प्रसूत पैदा (उत्पन्न) होने का · पुत्र ~ समय जब भयौ ४३०९।
प्रसून पुष्प, फूल : कितिक बात सुरतरु ~ की ४१९३।
प्रसेव प्रस्वेद, पसीना आनन जल ~ गति चलि यौं २६३८।
प्रस्न प्रश्न, क्षेम कुशल बूझत ~ २९५३।
प्रस्वेद पसीना : तन ~ छूटे ९/९७।
प्रस्वेदकन स्वेद कणों से, पसीने की बूँदों से मडित गट ~ ११८०।
प्रहर्षन प्रहर्षण, आनन्द, एक अलकार : सूरदास सदा ~ सुरुच सारग नैन सा० ल० ६५।
प्रहलाद हिरण्यकशिपु का पुत्र जो बचपन से ही बडा भगवद् भक्त था : ताकौ पुत्र भयौ ~ ७/२।
प्रहलादहि १. प्रह्लाद को अभयदान ~ दीन्हौ ७/२ । २ प्रह्लाद से : तब सब मिलि ~ कह्यौ ७/२।
प्रहसित हँसता हँसता : नवल विकसित वदन ~ २८४२।
प्रहार वार, आघात : जेतक सस्त्र सो किए ~ ६/५।
प्रहारन तोडने वाला : गर्व ~ उनकौ नाऊँ २०८४।
प्रहारि मारकर, सहार कर . दैत्य ~ पाप-फल प्रेरित ९/१५७।
प्रहारी नष्ट करने वाले, भजन करने वाले : गर्व ~ हैं त्रिभुवन-पति ४१६०।
प्रहारो प्रहार करो डारि-अग्नि मे शस्त्रनि मारो नाना भाँति ~ सारा० १२०।
प्रहारौं मारूँ। **प्रान ~** १ प्राण दे दूँ तब देवकी भई अति व्याकुल कैसैं — ~ ४। २ प्राण ले लूँगा — ~ तेरौ ९/१३२।
प्रहारौ आघात : ताकों तैं कीन्हौ ~ ३७३।
प्रहार्यौ १ नष्ट कर दिया, चूर कर दिया · अरिगन-गर्व ~ १/३१। २ मारने के लिए फेंका, चलाया : वृत्रासुर कौं वज्र ~ ६/५।
प्राकार परकोटा गिरि सरिता ~ ३९८२।
प्राकृत नैसर्गिक, सहज, स्वाभाविक : ~ रूप धर्यौ हरि छिन मैं सारा० ३७०।
प्राग प्रयाग तीर्थ : ~ त्रिवेनी न्हाये सारा० ८२८।
प्राचींद्र पूर्व दिशा से इन्द्र ने : प्रेम ~ इद्रधनु चढायौ परि० १/१००।
प्राची पूर्व दिशा : ~ और प्रतीची उदीची और अवाची मान सारा० ७७५।
प्राचीन पुराना . मेरौ गृह ~ ४२३६।
प्राचीनवर्हि एक प्राचीन राजा जो अग्निगोत्रीय थे और प्रजापति कहलाते थे · ~ भूप इक ४/१२।
प्रात प्रात·, सुबह ~ समय दधि मथति जसोदा १४९।
प्रातकाल प्रात काल, सवेरे : ~ तें बाँधे मोहन ३६५।
प्रात रवि प्रात कालीन रवि इंदु ~ काँति ७०४।
प्रातनि प्रात काल पढ़ै सकत नहिं ~ ३५४९।
प्रातहि प्रात काल ही, सवेरे ही . ~ तैं आई वेचन १६५०।
प्रातहि सवेरे ही रोकि रह्यौ ~ गहि मारग १६२८।
प्रातहीं प्रात काल ही फिरति ~ तैं हो आइ १६४४।
प्रातही प्रात ही · कनक कटोरा ~ दधि घृत सु मिठाई १६२।
प्राता सवेरा भयौ ~ ४४०।
प्रान अधारै प्राणाधार है भक्तनि ~ ११४३।
प्रान-जिवन परम प्रिय ~ कैसैं बन जात ९/३८।
प्रान-जीवन-धन प्राण और जीवन-धन हो · तुम ही मेरी ~ १९४६।
प्रान दुलारे प्राण प्यारे जसुमति ~ ९६८।
प्रान-धन जीवन रूपी धन। **~ वारे** जीवन रूपी धन न्यौछावर किया . उमँगि ~ — २७४०।
प्रान-धना प्राणधन : ब्रज कौं ~ ३००८।
प्रान-धनियाँ प्राण-धन : नेंकु रहौ माखन देउँ मेरे ~ १४५।
प्रानन प्राणों . कौन प्रिया ~ की ३८७८।
प्राननाथ प्राणनाथ . ~ प्रभु पायौ ४१६४।
प्राननि १ प्राणों : ~ सो प्रान नैन नैननि अटकि रहे ११४९। २ प्राणों की : देह छाँडि ~ भई प्रापत ८०३। ३ प्राणों से/पर . सूर आपने ~ खेलैं ३८९१।
प्रान प्रिय प्राणों के प्यारे, कृष्ण : 'सूर कह्यौ मुसकाइ ~ सा० ल० ९६।
प्रान प्रियहिं प्रान प्रिय का, कृष्ण का . ~ रुमनो कहि कैनौ २८२६।
प्रान प्रातम प्राणप्यारे, कृष्ण : वार अब की ~ २०८५।
प्रान बल्लभ प्राणप्यारे, कृष्ण : ~ नारि २००१।
प्रान बारी रच रचक प्राण वाला, लेशमात्र ही जीवन रह गया है जिसका ति पी पी उर डार दीनी ~ मा० ल० ५२।
प्रानहि प्राणों को · सूरदास प्रभु ~ राखौ ३८८१।
प्रानहुँ प्राणों से भी . तुम परम भावती ~ तें खरी २४९०।
प्रानहु प्राणों से भी : ~ तैं प्यारी तुम मेरें ११२८।
प्रानहूँ प्राणों से भी : ~ तैं प्यारे पति धीर न धरत २७८६।
प्रानिन प्राणों : तू ~ तैं प्यारी २६७०।
प्रानी १ प्राणी, मनुष्य : धनि धनि वह ~ २/८। २ प्राणियों ने . मोसौं गर्व कियौ लघु ~ ८५१।
प्रानेस्वर प्राणपति जान्यौ री सयन तेरौ ~ सौं परि० १/७८।
प्रापत प्राप्ति : हरि-पद ~ होइ ३/१२।

प्रापति प्राप्ति • हरि पद ~ होइ ३/१३ ।
प्राप्ती कस की पत्नी का नाम जो जरासध की पुत्री थी • अस्ती अरु ~ दोउ पत्नी कसराय की सारा० ५९६ ।
प्रावृट वर्षा ऋतु, बरसात : विकट ~ कटक निकट आयौ परि० १/१०० ।
प्रिय सुन्दर • मेघन मद्ध नखा जातिक ~ सा० ल० ४९ ।
प्रिय जन प्रेमी जन : ~ आगम इदु २८३ ।
प्रियतम १. पति । २. प्यारा : तो तैं ~ और कौन है १७०४ ।
प्रियतमहिं प्रियतम को : हरि ~ मनावति २०२४ ।
प्रिय-नाम प्रिया का नाम (लेकर) : रघुपति कहि ~ पुकारत ९/६२ ।
प्रियव्रत स्वायभुव मनु का पुत्र : ~ बस धरेउ हरि निज वपु ऋषभदेव यह नाम सारा० ८५ ।
प्रियहि प्रिय को : पीवत ~ चखाए ४२०१ ।
प्रिया १. पत्नी कहौ ~ अब काजै सोइ ४/१२ । २ प्रियतमा के • परस ~ कैं भीनौ १/६५ । ३ प्रियतमा (राधा) के . जो सुख स्याम ~ सग कीन्हीं २४७३ । ४ प्रेमिका • गोपी हरि की ~ मुक्ति लहैं १००८ ।
प्रियौ प्रिय, प्यारी, रुचिकर . माखन रोटी बहुत ~ १६८ ।
प्रीत प्रीति, प्रेम : अतरजामी ~ जानि कै ९/३७ ।
प्रीतम[1] मछली का प्रिय, जल : तन पय नीत आदि सुत की जननी ~ माँहीं सा० ल० ४१ ।
प्रीतम[2] पुं० १. प्रियतम . मैं इतनेहिं भलौ मान्यौ ~ २५५० । **२** प्रेमी • ~ जानि लेहु मन माहीं १/७९ । **वि०** प्यारा • तुम तैं ~ और को ११८० ।
प्रीति १ प्रेम, स्नेह साँची ~ जानि हरि आए १६७८ । २ प्रेम को : गोबिद ~ सबनि की मानत १/१३ । **~ करि** प्रेमपूर्वक . बारबार ~ — जोवै ३/१३ । **~ लगाई** अनुराग किया . इत राधा सो — ~ ८३९ ।
प्रीति-खँभारि प्रीति की खलभली . कबहूँ इत कबहू उत डोलति, लागी ~ — ६७९ ।
प्रीति-ग्रंथि प्रेम की गाँठ : ~ हियै परी १०७२ ।
प्रीति-रीति प्रेम-व्यवहार बढी परस्पर ~ तब ९/७० ।
प्रीतिहि प्रीति (से) ही • ~ तें अनुरागत १९०५ ।
प्रीती प्रेम, प्रीति कही सकल ब्रज ~ ३४४९ ।
प्रीते प्यारे : मानिहूँ तै ~ ३३९१ ।
प्रीत्यौ प्रीति ही : करी मधुप की ~ ३३८३ ।
प्रेत वह कल्पित शरीर जो अधम व्यक्तियों को मरने के बाद मिलता है : ~ प्रेत कहि भागी १/७९ ।
प्रेम वि०प्रिय, प्यारे : मेरे लाल के ~ खिलौना ७११ । पुं०प्रीति, प्रेम : ~ बिकल, अति आनँद उर धरि १/१३ । **~ बढ़ाये** प्रेम बढा कर, बडे प्रेम से • पूजन गिरि अति ~ — ९०७ ।
प्रेम-अंस प्रेम का भाव, प्रेम : ~ उरझि रह्यौ १८८७ ।
प्रेम-कोस प्रेम रूपी कोष, प्रेम के फदे : पर्यौ प्रभु उनकैं ~ मैं ४१४९ ।
प्रेम-घटा प्रेम की अधिकता से : ~ गज-गति लीन्ही १६९४ ।
प्रेम-जल प्रेमाश्रु : ~ लोचन दुहुं स्वए ५८९ ।
प्रेम-पूरन प्रेम से पूर्ण होकर . सूर प्रभु कैं ~ छकि रही ब्रजनारि ~ १६२४ ।
प्रेम बुड़कीहि प्रेम की डुबकी । ~ दै • प्रेम की डुबकी लगाकर करत अस्नान सब ~ — १९११ ।
प्रेमहि प्रेम से : ~ पढन पठायौ ३६८२ ।
प्रेमहीं प्रेम ही के . सूर के प्रभु ~ बस १८४२ ।
प्रेमाकुर प्रेम का अकुर : सुरदास प्रभु ~ उर ११२६ ।
प्रेमा राधा की एक सखी का नाम ~, दामा, रूपा २००८ ।
प्रेमातुर प्रेम के कारण व्याकुल, प्रेम-पीडित : गोपीजन ~ तिनकौ सुख दीन्हौ ३९४ ।
प्रेरक प्रेरणा देने वाली : दसेंद्रिय ~ थभनकारी ३८६६ ।
प्रेरै प्रेरित करता है . सोई लै-लै ~ १/२०६ ।
प्रेर्यौ प्रवृत्त किया, लगाया, बढ़ाया : पारथ जुद्ध-हेत रथ ~ १/२७६ ।
प्रौढ उक्ति बडी बात, एक साहित्यिक अलकार : सुनि सुनि ~ अस उनकी सा० ल० ६१ ।
प्लक्ष सात द्वीपो मे से एक द्वीप : जबू, ~, क्रौंच, शाक, शाल्मलि, कुश, पुष्कर भरपूर सारा० ३४ ।

फ

फंग १ फदा : आजु परी ~ मोर १०२३ । २. फन्दे मे : मेरै ~ जो परिहै १७२५ ।
फद १ फदा : त्यागे भ्रम ~ द्वद २०५ । २. फदे को, बधन को . जम के ~ काटि मुकराए १/१७१ । ३. फदे मे, जाल मे : सूरदास प्रभु भलैं परे ~ २८७ ।
फदत फँसते हैं • चारा कपट पछि ज्यौं ~ ९२४ ।
फंदन १ फदे, बधन ~ काटि छुडायौ १/१८८ । २ फदे मे, जाल मे : ज्यौं लुब्धक खग ~ ११५८ ।
फंदनि १ फदो की अलक ~ टोर २१३३ । २ फदों को काटि दुःख समूह ~ ४१०९ ।
फंदवारि फँसाने का फदा . मृगिनी रची तिनकौं ~ १८२४ ।
फंदहि फदो को खोलत नहीं कपट कैं ~ ८०३ ।
फंदा १ फदा . मधुबन नाम ~ करि राख्यौ ३८८१ । २. फंदे

मे : चारि चकोर परे मनु ~ ११३८। ~ गर डारति गले में फंदा टालनी हो : ता पाछैं ~ — १५८३।
फँदाइ १ फँस जाती है : जिह्वा-स्वाद मीन ज्यौं उरझ्यौ सकौ नाहिं ~ १/१४७। २ फंदे में फँसा (लिये हों) · लिए ~ विहगम मानौ २२९८।
फँदाते फंदा पड़ता है : सकि ताटक ~ २६६७।
फँदाही फाँस लिया है : नैननि ~ डोरी परि० १/११७।
फँदी फँस गई : ~ मीन ब्रजनारि २८७५।
फँदे १ फँदे मे . मेरैं ~ कबहुँ तौ परिहौ १७००। २ बँधे : सकुच फद मे ~ रहत हैं २३९२।
फँसरी फाँस, फंदा : परी काल ~ १/७१।
फँसिहारिनी फँसाने वाली : ब्रज वनिता ~ जौ सब १५८२।
फँसी फँस गई है · मेलि मौंह दृढ ~ २११५।
फँस्यौ फँसना : ~ चाहत है ४०६९।
फगुआ,फगुवा १ फगुआ, फाग का उपहार · ~ देहु हमारि २८६५। २ होली के उपहार (मे) : चन्द्रलोक दीन्हो शशि को तव ~ मे हरि आप सारा० २९।
फट फेंटा (दुपट्टा) बलकल बसन ~ दृढ बाँधे ९/५८।
फटक स्फटिक : कनक-~ धरि फटकि पछारी ३९६।
फटकत १ फड़फड़ा रहा था · ~ स्रवन स्वान द्वारे पर ५४१। २ (सूप से) फटकते हुए : ~ हाथ न आवै ३८९८।
फटकाई फेंकी, फेंक दी : तब दीन्ही गेंडुरी ~ १४१८।
फटकारत फेंक देता है काहू की इडुरी ~ १४३४।
फटकारि फेंक (दिया) . तार्को दियौ दूरि ~ १३९६।
फटकारी फेंक दी : मेरैं ढिग ~ ६०।
फटकावैं फेंक देते हैं : काहू की ईंडुरी ~ १३९९।
फटकि १. जाँच कर या परख कर : तुम मधुकर निज नीकैं देखे ~ पछोरे ३१६३। २. पटक कर : असुर गज रूढ ह्वै गदा मोर ~ ४१९४। △ ~ पछारी (सूप पर) फटक कर साफ की है . कनक-फटक धरि ~ — ३९६। ~ पछोर्‍यौ फटक पछोरी है अर्थात् उतार फेंकी है लोक लाज सब ~ — १६६१।
फटकिहौं फेंक दूगा, झटक दूँगा : बार नहिं करौं बाग्न महिन ~ ३०५४।
फटके १ फटककर लीन्हे झारि ~ ३६६७। २ दूर हुए, अलग हो गये : ललित त्रिभंगी छवि पर अटके ~ मोमौं तोरि २२४७।
फटकै फटके। △भुस ~ निरर्थक प्रयास करे सूर स्याम तजि को — ~ मधुप तुम्हारैं हेति ३८६१।
फटक्यौ फटका, झटका नैंकु ~ लात, सब्द भयौ आघात ६२।
फटत फटता है निठुर बचन सुनि ~ हियौ यह ३९१३।
फटि १ फटकर, चिरकर : ~ तब खभ भयौ द्वै फारि ७/२। २. फट जाने से : मनु पयनिधि सुर मथत फेन ~ दियौ दिखाई चद्र २०३। ३ फट : पीतांबर ~ जाइ १४६१।
फटिक एक प्रकार का पारदर्शी सफेद पत्थर, स्फटिक : ज्यौं गज ~ मध्य न्यारौ बसि २/३८।
फट्यौ १ फटा, टूक टूक हुआ : बिछुरत ~ न हियौ ३१५९। २ फट गया : ~ निचोरत अचल छोर २७३२, 'सूर' स्याम हित अरध ~, कहु कैसे जात सियौ री सा० ल० शेष १।
फन-घात फण का आघात : करत ~ ५५२।
फननि १ फणों पर : ~ प्रति चरन धारे ६०२। फणों . सहस ~ की झार ५५८। ३ फणों की : सेष सहसौ ~ मनिनि की ज्योति लै २६७२।
फन-पति फणपति (शेष नाग) : ~ सिर न डुलावै १/१६३।
फनहि फन में : धरत ~ न समात २२०३।
फनिग सर्प : ससि, मृग, ~ ध्वनिग है अंग-अंग २७७१।
फनि १ कालियानाग : सहसौ फन ~ फुकरैं, न तिन्हे बिकार ५८९। २ सर्प स्वाति बूँद ज्यौं परै ~ मुख ३९५७। ३ सर्प के : सूर मनौ ~ मनि मोभित ६४१।
फनिग नाग, सर्प . निरखति रहौं ~ की मनि ज्यौं २९६।
फनिगहिं सर्प · ~ काज डसे सौ ३९९६।
फनि-पति शेष नाग . डोलत महि अधीर भयौ ~ ९/२६।
फनी फन वाले · डाँडी सेस ~ २/२८।
फबति १ अच्छी लगती, शोभा देती सोइ आभा पुनि फेरि ~ है २६६०।
फबती क्रि०अ० अच्छी लगती सदा चतुरई ~ नाहीं १९५२। स्त्री० ताने दुहुनि ~ लूटि ३१७४।
फबायौ अच्छा रहा : बिढतौ भलौ ~ २५११।
फबावत अच्छा लगता है · भूठें कहा ~ २५१५।
फबि छवि, शोभा : आवै नहीं कहत कछुवै ~ १२०७।
फबै बनाकर, गढकर : कहति आन की आन ~ २५६९।
फबौ १ भली लगी · तब उलटी पलटी ~ जब मिसु रहे कन्हाई १४९१। २ अच्छा लग रहा था : ~ जे-जे करी ११३५।
फर पु० १. डोंडी · ~ फूटे ज्यौं आक रूई १८५५। २ फल : प्रेम बृच्छ पर चारि सदा ~ ३६१०। क्रि० अ० फलता निबुआ जहँ सदा ~ फूले २९१७।
फरक फटकने लगा : रावण क्रोध कियो अति भारी अधर ~ अति गात सारा० २६०।
फरकत १ पुलकित : ~ बदन उठाइ कै ७२। २ फटक उठती है मच्छ बिधि के खरक ~ सा० ल० ३०। ३. फटकते

. कुच भुज नैन अधर ~ हैं ४२७६ ।
फरकाइ फडकाकर : अग ~ अलप मुसुकाने ४६ ।
फरकावत फडकाते हैं नासा पुट ~ १३२५ ।
फरकावै फडकाता है कबहुँ अधर ~ ४३ ।
फरकि फडक (रही है) . अँखियाँ ~ रही २७८७ । ~ **करि** फडकाकर अधर ~ — भृकुटी तानति २५७२ ।
फरके[1] फडक उठे इतनौ कहत नैन उर ~ ९/८३ ।
फरके[2] पोल, भेद घर घर करे ~ खोलैं २८९६ ।
फरकौ भेद, छप्पर : चोरी करत उघारत ~ ३३३ ।
फरद सूची, तालिका बट्टा काटि कसूर भरम की, ~ तलै लै डारै १/१४२ ।
फरनि १ फलों . तौ सत ~ फरै ३१८६ । २ फलो से फर्यौ कदम ब्रत ~ तुम्हारै ७९९ । ३. फल . जिनि जायो ऐसौ सुत सब सुख ~ फरी २४ ।
फरफराने तडफडाने लगता है नव विहगम भरत ~ ३०६० ।
फरहरा झडा · मनु सहिया ~ फिरावत ३३०५ ।
फरहि फले हो . अधर दसन छत नख छत उर पर, घायनि ~ परे २४६० ।
फराए फलाये, फल उत्पन्न किये, फल लगाए . सूर स्याम जु तिनि ब्रत पूरन कौ सा फल डारनि कदम ~ ७८४ ।
फरिया लहँगा सारी चोरि नई ~ लै ७०४ ।
फरी क्रि० अ० फली, फलीभूत हुई सब सुख फरनि ~ २४ । स्त्री० फली पोइ परवर फाँग ~ चुनि १२१३ ।
फरे फले, फलित हुए फूले ~ तरवर ३४ ।
फरै १ फलता है . तरुवर, फूलै ~ पतझरै १/२६५ । २ फले आगै वृच्छु ~ जो विष फल ४ ।
फर्यौ १ (फल) लगे हो ~ अद्भुत फरनि १०९ । २ फला (है) : ~ है द्रुम डार ७८६ ।
फल[1] लाभ . ~ कहा तिनको जिऐं ३८६५ ।
फल[2] फल, परिणाम दियौ ~ यह गिरि गोवरधन ८५९ । △ ~ **तुरत चखैहौं** शीघ्र ही मजा चखा दूँगा, शीघ्र ही दड दूँगा . इहि कृति कौ ~ — ७/५ । ~ **तुर्त पैहै** शीघ्र दड पायेंगे, तुरन्त ही फल भोगेंगे . गिरि लियौ भोग ~ — ८५३ । ~ **देहिगी** मजा चखायेगी, दड देंगी लालन हमहिं करे बेहाल वहै ~ — हो २८७७ ।
फलकैं फडकते हैं मनौ अग अग सुरत ~ परि० १/५७ ।
फलनि १ फलों को प्रेम ~ लगाइ २११९ । २. फल . खग-मृग थके ~ तृन तजि कै ११८३ ।
फल सूचक शुभाशुभ फल की सूचना देने वाला · ~ का कहि कै जायँ सा० ल० ६२ ।
फलाँग छलाँग, कुदान मारि ~ चली सो भाज ५/३ ।
फलि फैलकर, बढकर यह तौ बात अब ~ भई बीज बट की १६६० ।
फलिहै फलेंगे . ~ तब फल अमय रसाल २९४६ ।
फलिहैं फलेगा, फल देगा . विष के बृच्छ विषहि फल ~ ९२४ ।
फली स्त्री० फली, ढाढी ~ अगस्त करी अमृत सम १२१३ । क्रि०अ० फल निकले हैं अब विष फलनि ~ ३१९७ ।
फले १ फलित हो उठे विफल बृच्छहु ~ १०६८ । २ फलीभूत हुए . सुकृत हमारे प्रगट ~ ९८२ ।
फलै १ फल युक्त हो जाय : विफल तरु ~ २८८४ । २ फलित होगे, फल उठेंगे . सुकृत फल ~ तिहि काल २९४६ ।
फलौ फलित होते, फल जाँय काके सब आचार ~ बरु ३७०१ ।
फल्यौ फला, फलीभूत हुआ । **कालिहहि पूज्यौ ~ बिहाने** कल ही पूजा की, प्रात होते ही उसका फल मिल गया (व्यग्य) — ~ — ९३३ ।
फस फाँस . अलकनि ~ निसस चली डिग परि० २/५६ ।
फहरत फहरा रहा है ~ पीत सुबास १८३२ ।
फहरनि फहराने की क्रिया या भाव : न्यौछावरि अचल की ~ १८८० ।
फहराइ फहराता है सिर पीताबर ~ १४४५ ।
फहरात १ फहरा रहा है पीताबर कटि पर ~ २२१८ । २ फहरा रही हो नील भुजा ~ १२०६ ।
फहरानि फहराने की क्रिया या भाव : पीत पट ~ २८४१ ।
फहरावत फहराते हुए पीताबर ~ ४९३ ।
फहरावै उडता है, फहराता है · पीताबर ~ १४०२ ।
फहरि फहरा : अचल रह्यौ ~ कै १४३७ ।
फहरी फहरान . दामिनि पट ~ १२८४ ।
फहरैहै लहरायेंगे, उडायेंगे पीताबर ~ १७३८ ।
फहरैहै फहरायेगी, उडेगी . विमल ध्वजा रथ पर ~ ९/८१ ।
फाँकौ टुकडे, फाँक . फारि कियौ द्वै ~ १/११३ ।
फाँग एक साग · पोइ परवर ~ फरी चुनि १२१३ ।
फाँदे बाँधे, फँसाये । ~ **फदनि** फदे या जाल मे फँसाकर : मनौ मनमथ ~ — १८२७ ।
फाँस १ फदा, बधन काटि कै अघ ~ पठवहु १/१९ । २. फदा या जाल (किसी को फँसाने या बाँधने का) ब्रह्मा ~ उन लई हाथ करि ९/१०४ । ३ फदे मे, पाश मे : बरुन-~ फँस्यौ चाहत है ४०६९ ।
फाँसत फँसाते हैं . ~ जे जिय ही कौ ३८२८ ।
फाँसि स्त्री० १. फदे मे पर्यौ मोह की ~ १/१११ । २. क्रि० स० फाँसकर, फँसाकर : स्याम ~ मन करष्यौ हमरौ १८१० । ~ **लै** फाँस कर . चहुँधा किरनि पसारि ~ — ४२६९ ।

फाँसी फदा : लिए मोह की ~ १/१८६ ।

फागु-चरित-रस होली की क्रीडा का आनद : ~ साध हमारें २८४३ ।

फागुन बदि फाल्गुन वदी/कृष्ण-पक्ष : ~ चौदश को शुभ दिन अरु रविवार सुहायो सारा० ५०५ ।

फागुन मेहु ओले वाली वर्षा, नाश सूरदास तन याऽव करोगी, ज्यों फिरि ~ ३१९६ ।

फाटक भूसी · ~ दै कै हाटक माँगत ३९६५ ।

फाटत फट रहा है : ~ तन दुहुँ दिसि ५७६ ।

फाटे १ फटकर : दूध ~ जैसे भयौ काजी कौन स्वाद करि खाइ ३३३४ । २ फट ~ न जात हिए ४०१४ ।

फाटी फट गई : भरम-जवनिका ~ ७५४ ।

फाट फटे-हुए : ~ चीर दिखावें गात ३३० ।

फाट्यौ फटा, छिन्न-भिन्न हुआ दोष कुहर का ~ ९/८७ ।

फाबं अच्छा लगता है सुनहु 'सूर' यह उनहीं ~ १९२० ।

फारात फाडती है : अचल ~ जननि जसोदा ४०६९ ।

फारि[1] फाड कर · उदर ~ तिहिं वाहर कियौ ९/१७३ । ~ **फारि** खड खड करके, धज्जिया उडाकर ~ — तोरि-तारि, गगन होत गाजें ९/१३९ ।

फारि[2] खड, टुकडे फटि तव खभ भयो द्वै ~ ७/२ ।

फारी १ फाडकर : निकसि आए तुरत खभ ~ ७/६ । २ फाड डाली : बकासुर की चोंच ~ ४९८ ।

फार फाडे, चीरे हिरनकसिपु उर ~ हो १२८ ।

फारें फाड डालता है हार तोरैं चीर ~, नैन चले चुराइ ७८० ।

फार। फाड डालूँ नभ कागद ज्यौं ~ ९/१३२ ।

फार्‌यौं फाड डाला · हिरनकसिपु उर ~ १२७ ।

फाल्गुन अर्जुन नयनन मिलत लई कर गहिकै ~ चले पराय सारा० ८०५ ।

फास फदे से . परकर ग्रीषम ~ सा० ल० २५ ।

फिर[1] दुवारा, पुन. ~ चितयौ गोपाल ३८९६ । ~ **फेरी** बार-बार तिनकी बात कहत ~ — १७३१ ।

फिर[2] घूम . हम तिहुँ लोक माँहि ~ आए ९/९ ।

फिरकान लौट रथ कौ देखि वहुत श्रम कीन्हो वौं आये ~ सारा० ५६१ ।

फिरत १ घुमाते ये · भाव सो भुज ~ जबहीं १०५६ । २ घूमता हुआ · गोपी ग्वाल ~ सग चारत ४८६ । ३ घूमता फिरता है, घूम रहा है ~ दसौं दिसि १/१०० । ४ घूम रहा हूँ, फिर रहा हूँ ~ वृथा भाजन अवलोकत १/१०३ । ५ घूमती है ज्या बन टोर ~ मग चग २२३६ । ६. घूमते गोसुत गाइ ~ हैं दहुँ दिसि ३१३१ । ७ घूमते हैं . ~ अपने काजहीं कौं २३८० । ८ घूमते हुए न हारी १/१७३ । ९ चलते हैं · फेरे ~ असुर दासी के ३६४६ । १० फिरता है, लौटता है ज्यौं जल ढरत ~ नहिं पाछैं २३१६ । ११ मँडरा रहा है · काल ~ सिर ऊपर भारी १/८० । ~ **न फेरे** मोडने मे नहीं मुडता है : स्याम सुदर कैं दरस परस तैं इत उत ~ — २२७१ । ~ **न फेरें, फेरे ~ न** लौटाने से नहीं लौटता है : कैसेहुँ ~ — २३९५ । ~ **– फिरत** १ घूमते-घूमते : ~ — द्वारावति आए ४३०३ । २ चलते चलते : ~ — वहुतै स्रम आवै ५/४ । △ **फूले** ~ फूले घूमते हैं, हर्षित हैं — ~ अयोध्या वासी ९/१६ ।

फिरति १ घूमती : सूरदास वा भाइ ~ हौं ३१६९ । २ घूमती हैं, घूम रही हैं : बिडरति ~ सकल वन महियाँ ६१२ ।

फिरति १ घूमती हूँ पर वस भई ~ सग निसि दिन १६५६ । २ फिरती है, घूमती है, घूम रही है . ग्वालिनि ~ विहाल हि साँ १६३८ । ३ घूमती (हो) : व्याकुल भई ~ हो अबहीं १६९० । ४ घूम रहे हैं ~ गहे अगुरी कर १२४ । ५ फिरती है, बदलती है ~ नहीं मति फेरैं ४०३१ । ~ **वही री** वहा-वही (अस्थिर हुइ) फिर रही हू मैं तवही तं ~ — १८९० ।

फिरते (इधर उधर) घूमते/चलते · ~ सग सग हा १/२८३ ।

फिरता घूमता । **दिखावत** ~ दिखाता फिरता धर्म धुना अन्तर कछु नाहीं लोक — ~ १/२०३ ।

फिराइ १ घुमाकर, मराड कर वृषभ गजन मथन केसी हन पूँछ ~ ४९८ । २ फिराकर, लौटाकर ल्यावहु गाइ ~ ~ ४४६ ।

फिराई १ घुमाकर, फेर कर अगिनि सिखा मुरा कह्यौ ~ ९/५६ । २ घुमाया पीतावर पट सहज ~ २०४१ । ३ लौटा आइ · मैं हौं सवका इतहि ~ १४८२ ।

फिराऊँ घुमाऊँगी तेसें मैं हु ~ २१४१ ।

फिराए घुमाया क्यो पीतावर सीस ~ १८७७ ।

फिरात घुमा रहे थे : लिये कर कमल ~ १३७३ ।

फिरान्या घूमा, वापस आया फिरि इत कौ न ~ २२२० ।

फिराय घुमाकर, ऐंठ या मरोड कर पकरेउ पूँछ ~ सारा० ५१२ ।

फिरायो घुमाया, चक्कर दिया कठ चापि वहु वार ~ ५९ ।

फिरावत घुमाता है सूरदास पुर नारि ~ २३२१ ।

फिरावति १ घुमाती थीं जब लिएँ ~ कनियाँ ३३७७ । २ घुमाती या नचाती हुई : चली पीठि दै दृष्टि ~ ७३९ ।

फिरावन वापस लाने के लिए मत्री गयो ~ रथ लै ९/४६ ।

फिरि[1] १ फिर, पुन , दोवारा . ~ देखत जल कहाँ ठराने

९४१। ~ फिरि १. फिर-फिर : ~ — बार-बार सोइ सिखवत ३५४७। २ बार-बार : ~ — नृपति चलावत बात ९/३८।

फिरि² १. घूम · तीनि लोक ~ आयो सारा० ८५३ ।२ मुड़कर, पलट कर : पाछैं ~ न निहार्‌यौ २२४५। ३ लौट . इहि अंतर अर्जुन ~ आयौ १/२८६। ४ वापस : ~ ले जैयै कागर ३८५९। ~ गई फिर गई, मच गई : लंका ~ — राम दुहाइ ९/१४०। ~ फिरि मुड़-मुड़कर : पाछैं आवति जननि देखी ~ — इत कौं हेरत ४१३। ~ · फिरि जात १ घूम-घूम कर लौट जाते हैं तृनावर्त, बक, बकी, अघासुर, धेनुक ~ — ४०६९। २ लौट लौट ~ —निरखि मुख छिन-छिन २०७। ~ - फिरि जाही घूम घूम कर लौट जाती हैं रिद्धि-सिद्धि निधि ~ — ४२१२। ~ फेरी बार बार घूम घूमकर . ढूँढति घर ~ — २७१।

फिरिए वापस जाइए बेगि ब्रज कौं ~ नँदराई ३११७।

फिरिकै पुनः, दोबारा · यह औसर कब ह्वै है ~ १८।

फिरिबौ आवागमन, आना-जाना जातैं याकौ ~ टरै ५/४।

फिरिहै फैलेगी . मेरैं जान कनकपुरि ~ रामचंद्र की आन ९/१२१।

फिरिहौं १. घूमूँगी ~ कुंजनि डोलें ?८२६। २ फिरता रहूँगा : कब लगि ~ दीन भयौ १/१६२। ३ फिरूँगी : अब उनकौ देखत ~ १७४३।

फिरिहौ घूमोगे, फिरोगे : ~ सुरभिनि साथ १२१६।

फिरी १ लौट गई . ~ सदन कौं नागरी २७३५। २ घूमी, भटकी, ढूँढ़ती रही : बहुत ~ तुम काज कन्हाई ४६२। ३. फैली, मच गई, घोषित हुई ~ रघुबीर दुहाई ९/८३। ४ लौट आई . ~ ब्रज तुरत लै जमुना पानी २०२५। ५ लौटी . घरहि ~ ब्रज बाल १५०२। ~ दुहाई प्रभुत्व की घोषणा हुई लंक बिभीषन ~ — १/२४।

फिरे १ भटके . ~ द्वार द्वारनि सब २२२८। २ भाग जाय भावरि सी पारि ~ २३०३। ३ वापस आए, लौटे : गए हमकौं त्यागि, बहुरि कबहुँ न ~ २२७४। ४ वापस आ गए सनकादिक भूलि ~ ३८९९। ५ वापस आती है : ~ नहीं तरुनाई २३१६।

फिरेउँ घूमा-फिरा : मैं सब ठौर ~ तुम देखन कतहूँ पार न पायो सारा० ६८२।

फिरैं १. घूमता रहता है . लिये ~ घर बार १/४१। २. घूमते हैं . अब वै भरुहाने ~ २२५३। ३ घूमे . कहो सखी क्यौं न ~ २५६२। ४ फिरती हैं, घूम रही हैं फूली ~ धेनु धाम ३४। ५ वापस आवेंगे दई, ~ क्यौं राववराइ ९/५१। △ फूले ~ हर्षित हो घूम रही है/रहे हैं . ~ — गोपी ग्वाल ३४।

फिरै १ आती है, लौटती है : उतहि तें ~ इत १६४६। २ घूमती है छैलनि संग या ~ १/४४। ३ घूमता है, फिरता है निसि दिन भ्रमत ~ १/३५। ४ घूमे . वृथा ~ को पाछैं २३८१। ५ वापस होता : ज्यौं जलधार ~ तृन नाहीं ?२१६।

फिरैगौ फिरेगा, घूमेगा . जल-थल भ्रमत ~ १/७५।

फिरौं १ घूमती हू, फिरती हूँ : स्यामहि संग ~ री २१०२, चकित सी डोलत ~ १७९४। २ फिरूँ · हरि-संग छाडि ~ भव फेरौ १६५८।

फिरौ १ फिरिए · ओगहिं लेत ~ इनकैं घर १५६९। २ फिरो, घूमो : पौरि पौरि प्रति ~ बिलोकत ९/७४।

फिरौगी घूमोगी : अबहिं ~ दौरी-दौरी १५३४।

फिर्‌यौ १ फिरा, गया : जिहिं जिहि जोनि ~ १/१११। २ घूम फिर कर : बन, उपवन, गम-अगम अगोचर मंदिर ~ निहारि ९/७५। ३ फिरता रहा भाज्यौ ~ लोक लोकनि मैं ९/६। ४ फिरता है : द्रुम तृन सुधि ~ २/२६। ५ वापस आया, लौटा : मेरौ मन तउ तैं न ~ री १८७३। भटकि ~ भटक कर फिरता रहा · — ~ बोहित के संग लौं ३७४४।

फीकी १. नीरस . अतिहिं लागति ~ २३४४। २. व्यर्थ, सारहीन, प्रभावरहित, निष्फल . तुम बिन दीनबन्धु, जादव पति, सब ~ ठकुराई १/१९५।

फीके नीरस, अरुचिकर : बिनु रघुनाथ मोहिं सब ~ ९/१६१।

फीकौ १ अरसिक · बड़ौ कृतघ्नी और निकम्मौ, बेमन, राकौ ~ १/१८६। २ नीरस : कौन सुनै मत ~ ३५३०। ३. फीका . बूँद पर रंग ह्वै है ~ ७३१। ४ फीका है . बिनु बूझै रस ~ ३८२८।

फुकरै फुकार मारता है . सहसौ फन फनि ~, नैंकु न तिन्है बिकार ५८९।

फुकर्‌यौ फुकार मारी : ~ लटकि करि ५५२।

फुंकार फूत्कार मे कस कोटि जरि जाहिंगे, बिष की एक ~ ५८९।

फुदना १. फुदे : करनि चुरि करिया ~ बनि १४९८। २ फुंदा : ~ बहु बिधि सोहै परि० २/६७।

फुदौ फुदा : अंबुज चरन पावटौ ~ परि० २/६४।

फुटत फूट रहे हैं : उचटत अति अंगार ~ फर ६१५।

फुरई प्रभाव करता है, अमर टालता है, लगता है : कछु मंत्र न ~ १/२९।

फुरत १ प्रभाव करती एक न ~ बिरह जुर तैं कछु ३१९७। २ प्रस्फुटित होता, उच्चरित होता · ~ न वचन कछू कहिबे कौं ३९२५।

फुरति¹ शीघ्रता, तेजी, स्फूर्ति। ~ करि शीघ्रता से, तेजी से, ~ — राम तन पटकि मार्‌यौ ४२०८।

फुरति[2] प्रस्फुटित होती : ~ नहीं मुख बानी ६४४ ।

फुरहुरी फडफडाहट : ~ लेत परिजन रेक परि० १/१८६ ।

फुरै १ प्रभाव किया ~ न तंत्र मंत्र नहिं लागै ७४७ । २ प्रस्फुटित हुए, निकले मोहिं न बचन ~ /२४२ । ३ फूटता है, निकलता है . ~ न बचन बरजित कारन २८३ ।

फुलवाइ पुष्पवाटिका : गिलि रमत फूली ~ ११/३ ।

फुलवाई पुष्पवाटिका : देखौं जाइ फूल ~ ९/१७४ ।

फुलही चितकबरी गाय या एक गाय का नाम दुलही ~, भौरी, भूरी ४४५ ।

फुलेल फूलों का तेल, इत्र भरि ~ रग-रग बोरी की २८७२ ।

फुलेलनि सुगन्धित तेलों भीजी ह ~ मां आली हरि संग केलि २०२० ।

फुलौरी पकौडी पापर, बरी मिथौरी ~ ३०६ ।

फुल्ल खिले ~ सरोज सरोवर सुन्दर ३३४२ ।

फुही फुहा, फुहार गिर बरषत सुमन सुदेस, मानों मेघ ~ २४ ।

फूँक (विषैली) फूत्कार एक ~ हौं मैं जरि जाउँ ५२० ।

फूँक-ज्वाला विष ज्वाला ~ हमहु लागी ७४५ ।

फूँकत फूँकते हैं . जैसे आपु अमर धरि ~ २१४१ ।

फूँकति फूकती है ~ बदन रोहनी ठाढ़ी २२४ ।

फूँकि १ प्रज्वलित कर, फूँक तुम दीन्हों ~ ३१३४ । २ फूँककर : जारि जारि ~ प्रजारन ३७८४ । ~ **फूँकि** १ फूँक-फूँक कर ~ — हिरदो सुलगावत ३५४५ । २ फूँक फूँक कर, ठंढा करके : ~ — जननी पय प्यावति २२९ । △ **फूँकि धरती पग धारौ** सँभाल सँभाल कर काम करो, बचाकर चलो : ~ — १९२२ ।

फूँदनि फुंदों के : सीस फूल धरि, पाटी पाछत, ~ फबा निहारत २६२८ ।

फूँदा १ फुंदा ~ करनि अनूप १०५७ । २ फुंदना, फब्बा : ~ सुभग फूल फूले २६१० ।

फूँदै फंदना : कनक-कलस कुच ~ परि० १/४२ ।

फूक फुफकार ज्यों भुवग कौ ~ ३२२० ।

फूटि फाडकर मर लगे कवच पट ~ २४६१ । ~ **गई तव चार्‍यौ** चारों आँखे (अन्तर्दृष्टि तथा बाह्यदृष्टि) फूट गई निसि दिन विषय विलासनि विलसत ~ — १/१०१ । ~ **हियैं** हृदय से फूटकर : निकसे ~ — इहिं ओर २७३९ ।

फूटी १ फूटी हुई एक आधरो हिय की ~ ४१२६ । २ टूटा हुई, भरन : ~ चूरी गोद भरि ल्यावै ३३२ ।

फूटे फूट से 'सूरदास' घर की ~ री २०९१ ।

फूटै फटती है ग्यान-अगिनि कर ~ २/१० ।

फूट्यौ फूट गया तन कचुकी फोट मन ~ २७०२ ।

फूरे फूले, खुशी से ~ फिरत अंक नहिं मावत १९८५ ।

फूल[1] दीपक की बत्ती का गुल या उससे निकलने वाली चिनगारी उडत ~ उडगन नभ अतर २/८८ ।

फूल[2] १ प्रसन्न हो रहे थे उर, सुमति मन ~ २९११ । २ हर्षित या फूल उठा ~ हिऐं ग्वालिनि कें १४५२ ।

फूलझरी फुलझड़ी हरि बिनु ~ सी लागति ३२७५ ।

फूलत १ खिलना है, फूलता है : ~ नाहिं न सरत ३५४ । २ खिल रहे हैं मार्ट फूले फूले ~ २९१७ । ~ **हीं** फूलती थीं, प्रसन्न होती थीं तब जु सबै मिलि कान्ह कान्ह करि ~ — ४२६० ।

फूलन फूलों से : ~ सेष सँवारत सारा० ४७२ ।

फूलनि[1] फूल रहे हैं वृथा कमल ~ अलि गुजै ४०६८ ।

फूलनि[2] १ फूलों माल दई मोहिं ~ की ३९१० । २ फूलों की : फूलनि को महल ~ सेज २४५६ । ३ फूलों को : फूले ~ जोरत २९१७ । ४ फूलों से ~ सेज बिछाऊँ २२०६ ।

फूलहिंगे फूलेंगे : जब कुआर ~ कास परि० १/२०० ।

फूलहु फूल (से) भी : ~ तैं अति सग करि मान्यौ ३०७० ।

फूलि फूली हुई है ~ लवँग लता बेलि २०१७ ।

फूलि १ गर्व से भरकर : कबहुँक ~ सभा मैं बैठ्यो १/३०१ । ~ **फूलि** प्रसन्न होकर : ~ — जिहिं पूना कीन्हों २२५ ।

फूलीं १. खिल उठती हैं : इदु कुमुद ज्यों ~ २४०१ । २ खिल गई , खिल उठीं पूरन मुख चद देखि नैन कोइ ~ ६४२ । ३ प्रसन्न हो गई : ~ ज्यों निधनी धन पाई २८९२ ।

फूली १ खिल उठी पुलक पाँखुरी ~ २७२८ । २ खिली है : ~ लता बेलि २४५६ । ३ प्रफुल्लित हुई सुत मुख देखि जसोदा ~ ८२ । ४ प्रमुदित : ~ है जसोदा रानी ३४ । ~ **आवति** प्रसन्न होती है कह ~ — री राधा १६९६ । ~ **फिरति** हर्षित घूम रही है : ~ — ग्वालि मन मैं री २६६ । ~ **फिरैं** प्रफुल्लित घूम रही हैं ~ — धेनु धाम ३४ ।

फूले १ फूले : ~ फिरत गनत नहिं काहू २३९७ । २ खिल उठे, फूले मन के मनोज ~ ३४ । ३ खिले हैं . विपिन-वृदा रमन, सुभग ~ सुमन ९८८ । ४. खिला हो : सकुचि अधोमुख ~ २८२६ । ५ प्रसन्न हुए . लखि ~ ब्रजराज सारा० ५२३ । ६ प्रसन्न हैं : ~ द्विज-सत-वेद ३४ । ७ फूले, भरे हुए फुकर्‍यौ लटकि करि क्रोध ~ ५५२ । △ ~ **अग न मात** आनद से फूले नहीं समाते ह . आनि चीन्ह पहिचानि मन ~ — ४१८८ । ~ **फिरत** आनदित घूम रहे हैं, हर्षित होकर घूम रहे हैं ~ — सुनावत सबका २२७६ । ~ **फूले** १ खिले खिले . ~ — घर घर २६१५ । २ फूल हो फूल हैं फूले बदीजन द्वारे ~ — बदनवारे ३४ ।

फूलैं प्रसन्न · ~ फिरैं जादौ कुल ३४।
फूलैं प्रफुल्लित होता है : देखि ब्रज की सपदा कौं, ~ सूरजदास ७६।
फूल्यौ खिल उठा : वृन्दावन ~ नदनंदन सारा० १०४०।
फूल्यौ १ आनदित होकर, प्रसन्न होकर : फिरत कुजनि मे ~ ४०९५। २ प्रफुल्लित : देखत ~ मात-हियौ १६८। ३. फूले हों हार चीर मान्यौ तरु ~ ७९९। △ ~ **अंग न मात** फूले नहीं समाते थे : ~ — ९/१४७। ~ **न समाइ** फूला नहीं समाया, अत्यन्त हर्षित हुआ : जनक-सुता चरन वदि, ~ — ९/९६।
फेंट १. कमर का घेरा, कटि मडल : ~ पीत पट, साँवरे कर पलास ज्यों पात १६१८। २ कमर बद, फेंटा . धाइ गही तव ~ स्याम की ५३५। **कसि** ~ कटि बद्ध होकर, सन्नद्ध होकर तजौ विरद कै मोहिं उधारौ, सूर कहै — ~ १/१४५।
फेंटा कमरबन्द, फेंटा . माया को कटि ~ वाँध्यौ १/१५३।
फेन झाग। △ **जल बूडत अवलब ~ कौ** जल मे बूडते हुए को फेन का सहारा, डूबते को तिनके का सहारा : — ~ — ३६७१।
फेनि एक लच्छेदार मिठाई जो मैदा से बनती है . जहँ-तहँ ~ पिराक ४६४।
फेनी मैदे से बनी एक मिठाई : ~ घुरि मिसि मिली १२१३।
फेनु झाग, फेन सग मथि पीवत ~ ६६०।
फेफरी पपडी पीरौ भयौ ~ अधरनि ३०२५।
फेर[1] पुन , फिर · अब अपने मन ~ पाइहैं ३९९१।
फेर[2] **पुं०** घेरा, चक्कर · मुख भीतर हीं सब सागर धरनी-~ २५३। **क्रि० स०** फेर लिया, मोड लिया : सारग सुमुख सुदर ~ मा० ल० ५५।
फेरत १ घुमाते हुए ~ कमल द्वार है निकसे १६६७। २ फेरते हैं, फेर रहे हैं : सूर स्याम पट ~ कर सौं २८७७। ~ **पलटत** उलटते पलटते · ~ — भोर भयौ १७८३। **कर** ~ स्पर्श करते हैं, छूते हैं . कृपा कटाच्छ कमल — ~ १५४। **बैर आपनौ** ~ अपना बदला लेते हैं, दुश्मनी भँजाते हैं — ~ ३७४५। **भृकुटी बकट** ~ कटाक्ष करते हैं . — ~ २६२६।
फेरति भेजने लगी : ब्रज ही कौ पिय ~ २२५८।
फेरनि १ घुमाना, लपेटना : पीताबर की ~ ३८८९। २ फहराना है : की सुभग पीत पट ~ २०५८। ३ फेरना, फेरने की क्रिया या भाव भौंह मोरनि, नैन ~ २१४५।
फेरनौ लौटाना, घुमाना : मैया है मैया ~ २८३२।
फेरि[1] पुन , फिर, फिर से : कब आवैंगे ~ ३८६३। △ ~ ~ फेरि वार-वार : पाछैं चितै ~ — १०१।
फेरि[2] १. चक्कर : प्रात -साँझ इक ~ ६७४। २ फेर, भ्रम, सन्देह · जनि मन जानौ ~ १/५१।
फेरि[3] २ घुमाकर, फेर कर चहुँधा ~ असुर गहि पटक्यौ १३९६। २ फेर लिया : लाज सहित मुख ~ २०८२। ३ लौटा, वापस कर रघुवर ~ दियौ ९/४६। ~ **कियैं** फिर आने का बहाना करने मे ~ — कैसैं निवहति हौं १५५३। ~ **कियौ** हेर-फेर करना आपुन ~ — दिखियत है तुम भूलौ ३७०५। ~ **फिरै** घूमकर चक्कर लगाता है · फिरि फिरि ~ — ३२४४।
फेरिकै फिर से, पुन : ~ जीवैं ये सब ९/१४।
फेरिहू उलट कर भी · मिली सूर सुभाव स्यामहिं ~ न चही १७६३।
फेरी[1] पुन , फिर मे . ते भुज क्यौं न सँभारत ~ ९/९३।
फिरि ~ बार-बार · तिनकी वात कहत — ~ १७३१।
फेरी[2] १ पलट दी, बदल दी : साधु साधु सबहिन मति ~ १/२५०। २ मिटाई है, मेट दी है, हटा दी है · जुग जुग भक्ति आपदा ~ १/२५०।
फेरी[3] १ चक्कर, फेरा . सग लगाए ~ ३१८८।
फेरे[1] ओर, दिशा · भोजन करैं ग्वाल चहुँ ~ ४६३।
फेरे[2] १ मोड लिये : कुवर सबै घोडे ~ ४१६६। २ लौटाने पर नाहिंन फिरत कितौऊ ~ २३३८। **फिरत न** ~ फेरने मे भी नहीं फिरते, मोडने से भी नहीं मुडते : इत उत — ~ २२७९। ~ **फिरत न** लौटाये नहीं लौट रहे हैं · ~ — घटके २३०२। △ **लोचन** ~ आँखें फेर लीं, रुख बदल लिया · हरि हित — ~ ३१८९।
फेरैं[1] फेरे, घुमाव एक गाँठि सौं ~ २८०६। २ फेर, चक्कर · जौ पै जानति ~ १६५३।
फेरैं[2] १ हटाने मे, घुमाने मे फिरत न लोचन ~ २९६०। २ फेरेंगे, घोषित करेंगे ~ राम दुहाई ९/११७। ३ बदलने मे : फिरत नहीं मति ~ ४०३१। **फिरत न** ~ लौटाने ने नहीं लौटते कैसेहुँ — ~ २३९५।
फेरैं लेपटे ले रहे हैं : पीतावर कर ~ हौ ४५२।
फेरौं १ घुमा दूँ कहौ तौ लकु लकुट ज्यों ~ ९/१०७। २ पराजित करूँ, खदेडूँ काहि सग लै ~ ९/१४६।
फेरौ[1] १ घुमाओ, मोड लो . मदन गुपाल लाल मुख ~ २९९०। २ फेरो, बदलो · रुख जनि अनतै ~ सा० ल० ८। ४ बदल दो, अन्यथा कर दो · चोर नाम कैसेहुँ सुत ~ ३०९। ५ घुमा लिया हारि मानि मुख ~ ८६९।
फेरौ[2] फेरा : बहुरि न कीन्हौ ~ ३७२३।
फेर्‌यौ १ मोड लिया, घुमा लिया . नागरि देखत हीं मुख ~ २०७२। २ घुमाया पाछें पकरि भुज सौं गहि ~

~ १३८७। △ मुख ~ साथ छोड दिया, विरत हो गई सब दिन सुख माथिनी आजु कैसै — ~ ४१८८।

फेँट कमर बंद, पटुका। △ ~ **पकरतौ** फेंटा पकडता, रोकना : कोउ न ~ — १/२९७।

फेँटै फेंटकर : कछु खायौ कछु ~ छोरी ३९६।

फेनु फेन : पियौ काली मुंह – ~ ५०२।

फैलि १ फैलकर। २ फैल • ~ गई यह बात नगर मैं ४१९१। ~ **परेउ** फैल पडा : फोरै भाड दही आगन में ~ — अति भारी सारा० ४४९।

फोक बाण के पीछे की ओर का सिरा : ~ बाहिरी घाँते २६८४।

फोटा फुलरा, फुंदना विच विच ~ गोहनौ २८३२।

फोकट व्यर्थ के अपनी ~ ग्यान ३६९३।

फोट उद्गार : निकसि मनि गन ~ ३५७८।

फोरत १. फोडते काहू की ~ हौ गगरी १४५५। २ फोडते हैं : ~ बाँस कटि दाँतनि सौं ३५९६।

फोरति फोडती है। △ **सिर** ~ सिर पटकती है — ~, गिरि जाति, अभूषन तोरति अग कौं ५८९।

फोरतौ फोड डालता . ~ बासन सब ३७२।

फोरि १ तोड कर : सरोवर उमँगि चली मिति ~ २८३०। २ फोड : मटुकी टारौं ~ १५४५। ३ फोडकर . ब्रह्म द्वार सिर ~ ४३१। ४ फोडने में : कूल-सर ~ टर नाहिं मानै ११३५। ~ – **फारि** तोड फोडकर, : ~ — तोरि तारि गगन होन गाजै ९/१३९।

फोरी १. तोड डाली, फोडी कब दधि मटुकी ~ २९३। २. भग कर दी, उल्लघन की कुल की परिमिति ~ २८५८।

फोरे १ फोड दिये . उर अवधि सरोवर ~ ३३०३। २ फोटने पर : गूलर कौ फल ~ ३६००।

फोरैं फोडते हैं काहू की गागरि धरि ~ १३९९।

फोरै १ फोटता है • बहुरो भाजन ~ ३२१। २ फोडती है गागरि ~ घाट मैं १२९१। ३ फोडने पर ~ भाट दही आँगन मैं फैल परेउ अति भारी सारा० ४४९।

फोर्यौ फोडा। ~ **नयन** आँख फोड दी, अधा कर दिया • ~ — काग नहिं छाँड्यौ ९/८३।

ब

बंक १ टेढी, तिरछी, बाँकी : मृदु मुसुकानि ~ अवलोकनि ३२८१। २ तिरछा, टेढा पाछैं ~ चिते, मधुरै हँसि १९६४।

बंकक तिरछे, टेढे : किच ~ हेम मढित परि० ७/४०।

बकट¹ १ टेढा, तिरछा • गज उरोज बर बाजि विलोचन ~ विसद विसाल मनोहर २४५५। २ तिरछी, टेढी . ~ भौंह चलावै १४३९।

बकट² बाँके : मनौ कियौ फिर मान मवासौ मन्मथ ~ कोट २७६९।

बंकित टेढी : ~ भौंह, चपल अति लोचन २६११।

बंगाली एक राग : मुरली मैं गावति ~ परि० १/१२१।

बंचक छलने वाला, ठग : त्यौं हीं जानि सूर मन ~ राधा माधो दोइ नहीं परि० १/६।

बँचति ठगती (हूँ) : सूरदास प्रभु बहुत ~ हौं सुदर मुख पहिचानि परि० १/२२।

बंजर-भूमि वह भूमि जिसमें कुछ भी पैदा न किया जा सके, ऊसर : ~ गाउँ हर जोते १/१८५।

बँटावन बँटाने वाले, भाग लेने वाले, भागीदार . बोलत नहीं मौन कहा साध्यौ विपति ~ बीर ९/१४५।

बंडुप बदूक (डक) भँवर जू एक चक्रन चामर कर भरि ~ खग डारिहै २११६।

बतिका अवतिका नगरी • कहो विप्र हम गये ~ गुरु के मदन विख्यात सारा० ८११।

बद¹ १ बधन : मातु पितु के ~ छोरे ३४८५। २ वह पतला सिला हुआ कपडे का फीता जिससे अँगरखे, चोली आदि के पल्ले बाँधे जाते हैं, बद चोली के ~ तोरि १५४५।

बंद² वदनीय, वद्य • सूरदास प्रभु अबकैं पठवहु सकल लोक मुनि ~ ३१३६।

बदत प्रणाम करते हैं, नमस्कार करते हैं, आराधना करते हैं जनक राज बहु दाइज दै करि, बार-बार पद ~ ९/२७।

बंदन¹ १ प्रणाम, स्तुति, वदना : सूरदास प्रभु नीप तरोवर तर ठाढे सुर नर मुनि ~ १७८०।

बंदन² १ सिंदूर, सेंदूर, ईंगुर : नील पुट विच मनो मोती धरे ~ बोरि २२५। २ रोली : अहिकुल ~ सौं पूजा किएँ २६१७। ~ **भुरके** सिंदूर छिडका हुआ है : उदधि सुता सुत पाँति कमल मैं ~ — मानौ १६६७।

बंदन धूरि अबीर या रोली का चूर्ण : छिरकति सखी कुमकुमा केसरि भुरति ~ २८६०।

बंदन माला बदनवार की झालर या माला • लछिमी सी जहँ मालिनि बोलै, ~ बाँधत डोलै ३२।

बंदनवार तोरन, फूल पत्ती दूब इत्यादि की बनी हुई माला जो मगल कार्यों के समय द्वार पर लटकाई जाती है : जहँ-तहँ ~ विराजित, घर घर बजति बधाई ३८।

बदवारे बदनवार में फूले बदी जन द्वारे, फूले फूले ~ ३४।

बंदना स्तुति, वंदना . सुर-नर-देव ~ आए सोवत तैं उठि जागी ४ ।

बंदहिं वंद हुआ : भँवर गुजरत कमल मों ~ १०७ ।

बंदि[1] १ कारागार, कैद, बंधन : मातु पिता ~ तैं छुड़ाए ३०९५ । २ बंधन से : सूरदास प्रभु कौ जस प्रगट्यौ देवनि ~ छुड़ाइ । ३ जेल मे मारै मोहिं ~ लै मेलै २९४३ ।

बंदि[2] **पु०** बंदी, कैदी ~ वैरी सबै छूटी ५ । क्रि० अ० वंदना करके · यह कह्यौ नंद, नृप ~ अहि इंद्र पै गयौ मेरौ नंद ३०९२ ।

बंदित वंदनीय, वंदना करने योग्य . कमल दल नैन मृदु बैन ~ वदन ३०७१ ।

बंदिनि चारणों, भाटो . सुनि भयौ भोर रोर ~ कौ २८४८ ।

बंदियै वंदना की जाय जाकौं निंदि ~ सो पुनि वह ताकौं बहुरौ निंदरै १५७६ ।

बंदी[1] चारण, भाट मागध ~ सूत अति करत कुतूहल बार २७ ।

बंदी[2] कैदी . जरासंध ~ कटैं नृप कुल जस गावै १/४ ।

बंदीजन चारण, भाट, प्राचीन काल की एक जाति विशेष जिसका काम था राजाओं की प्रशंसा करना · विप्र सुजन-चारन ~ सकल नंद गृह आए ८७ ।

बंदीजननि चारणो ने, गुण गायको ने : बहुरि ~ आइ अस्तुति करी ४/११ ।

बंदौं वंदना करता हू, स्तुति करता हू : चरण कमल ~ हरि-राइ १/१ ।

बंध[1] १ बंधन . मनौ लच्छि कौ ~ ९/७५ । २. बंधन से, कारागार से कोटि छ्यानवै नृप सेना सब जरासंध ~ छोरे १/३१ ।

बंध[2] रति के सोलह आसनों मे मे एक नाना ~ विविध रस क्रीडा सारा० ९८० ।

बँधत बँधता : ~ नही है कमल कैं बंधन ३८५४ ।

बंधन १ बंधन (डालकर) : राखौ रोकि पाइ ~ कैं, अरु रोकौ जलनाज ८०८ । २ बंधन मे राखौ रोकि बाँधि दृढ ~८०१ । ३ बाँधने : गो-सुत गोठ ~ सब लागे ४०४ । ४ पाश से, फंदे से · नंद बरुन ~ भय-मोचन १/२७ ।

बंधनमय बंधन से युक्त रेखा खैंचि, बारि ~ ९/५९ ।

बंधाइ बँधवा कर, बँधा कर · सूर स्याम ~ राखे अग-अग छवि घेरि २०६९ ।

बँधाइयै बँधायेगी, बंधन मे डलवा देंगी/दूँगी · अबहीं बोलि ~ लगर यह लरिकौ १४८६ ।

बँधाई १ बंधवाया प्रीति कैं, बस्य दाँवरि ~ २०१८ । २ बंधवा : जाइ कहौ भैया के आगैं, लेहु सबै मिलि मोहि ~ १४१८ । ३ बँधवाई है · इनहीं कैं हित भुजा ~ अब बिलब नहिं लाऊँ ३८२ ।

बँधाऊँ[1] बँधाऊँगी : कंचन-खभ, डोर कंचन की देखौ तुमहिं ~ १९३७ ।

बँधाऊँ[2] जोडकर लिखूँ दूँ चौदह सहस तिया मैं तोकौं पटा ~ आजु ९/७९ ।

बंधाए १ बँध गए, बँधा लिया . बाधन गए ~ आपुन८/१५ । २ बँधवाया था ऊखल भुजा ~ ३७८२ । ३ बाँध दिये : सन अरु सूत, चीर पाटम्बर, लै लँगूर ~ ९/९८ । ४ बँधवा लिया है बानासुर कुवर अनिरुध ~ ४१९८ ।

बँधान संगीत मे ताल का क्रम सुर स्रुति तान ~ अमित अति सप्त अतीत अनागत आवत ६४८ ।

बँधाने बाधने से . केहरि के सग धेनु ~ १/२१७ ।

बँधायौ १ बँधवाया, सजवाया, गुथवाया : मोतिनि ~ बार महल मैं जाइकै ३१ । २. बँधे, बँधन मे आये . गरब जानि न ~ ३४२ । ३ बँध गये, बँधन मे आ गये : बधु-समेत ~ ९/१४१ । ४ बँधवा लिया है . लीला- सिंधु ~ ९/१२५ ।

बँधावत बंधवाते हैं दस अरु आठ पदुम बनचर लै, लीला सिंधु ~ ९/१३३ ।

बँधावहु बँधवाते हो, बाधने के लिए कहते हो . स्रवन चीरि सिर जटा ~ ३९७४ ।

बँधावै १ बँधवाते हैं भुजा उलूखल नाहिं ~ १६०७ । २. बँधवाती है . सूरदास ग्वारिनि रस भीजी ससकत आपु ~ परि० १/६७ । ३ बँधवाता है : जटा भस्म तन दहै बृथा करि कर्म ~ १६१८ । ४ बँधा है, अपने को बंधन मे डाले हुए हैं · जाकी माया त्रिभुवन गावै, सो जसुमति कैं प्रेम ~ ५९९ ।

बँधि १ बाँधकर : सिला तरी जल माहिं सेतु ~ १/३४ । २. बंधकर, बद्ध होकर भीषम दई वचन ~ बैठी १/२५२ ।

बंधु भाई, सहायक, मित्र · दीन ~ हरि, भक्त कृपानिधि १/७ ।

बंधुक दुपहरिया का फूल : अधर दमन द्युत, अजन राजत ~ पर अलि मानौ २५३७ । ~ **अधरनि रहे लजाई** अधरों को देखकर बंधूक या दुपहरिया फूल लज्जित हो रहे हैं छाया पति तनु वदन बिराजत ~ — १८६८ ।

बंधु कुमुद पति पिता सुता कुमुदिनी के पति (चन्द्रमा) के बंधु (अमृत) के पिता (समुद्र) की पुत्री, लक्ष्मी : ~ जो सारा० ९६१ ।

बंधु कुसुम द्रुम ता रिपु कौ पति पुष्प वृक्षों का बंधु (वसंत) के शत्रु (तपन) के पति, ग्रीष्म : ~ सारंग रिपु कर भाखी सारा० ९५९।

बंधु-बात भाइयों का समाचार : जब कही पवन-सुत ~ ९/१६६।

बंधू १. भाई, भ्राता . बरजत मातु पिता ~ २३७४। २ सहायक, रक्षक, मित्र · होहु करुनानाथ ~ ४१४०।

बंधूक दुपहरिया का फूल . विद्रुम अरु ~ लनाहीं ७९९।

बंधे क्रि० अ० १ फँस गये, बंधन में पड गये : ~ आइ उडि फंदन ४७६। २ बँध गया, हो गया · कुबिजा प्रेम ~ हरि ही के ३१०९। ३ बाँधे गये थे : बंदनवार ~ महलनि पर ९८४। क्रि० वि० बाँध कर : जल ~ जिन थल किए ३८६५। वि० बँधा हुआ : उखल दाम ~ हरि जाने गोपी देखन धाइ सारा० ४५१।

बंधहौं बँधवाऊँगा . सागर सेतु ~ ९/११३।

बंधो बँधा हुआ, निबद्ध : नैननि मूँदि मूँदि कह देखौ ~ ग्यान पोथी कौ ३८५८।

बंध्या बाँझ, ऐसी स्त्री जिसे कोई संतान न हुई हो : ब्यावर व्यथा न ~ जानै ४०९४।

बंध्यौ १. बंधा हुआ है : अजहूँ नहिं सिंधु ~ लंका है तेरी ९/११८। २. बँधा है, बँधा हुआ है . प्रेम ~ संसार ४०९५। ३ बँध गया . अति प्रवीन वृषभानु नंदिनी निरखि ~ दृग पास परि० १/५८।

बंस[1] १. परिवार, कुल, वंश कंस ~ बधि १/३२१। २ वंश, घर, कुल के . काल नेमि ~ उग्रसेन सुनत धाए ३०८४। ३. (श्लिष्ट प्रयोग) वंश, बाँस : अंतर सून्य सदा लखियत है निज कुल ~ सुभाए ६६१।

बंस[2] बाँस (बाँसुरी) : भुज बिसाल चंदन सों चरचित, कर गहे मुख मृदु ~ १२०४।

बंसज वंशज, कुल में उत्पन्न होने वाले कह जानें रस सागर की गति षट्पद ~ ऐन कौ ३५५९।

बंस-दुख-भंजनि बाँस के दुख को दूर करने वाली : धन्य ~ गिरिधर कर धरि मोहिनि मानों परि० २/१७।

बंसा वंश, कुल : कहा बहुत जो भए सपूतौ एकै ~ ४३१।

बंसी[1] बाँसुरी, मुरली । ~ **टेरि सुनावत** बाँसुरी बजाकर सुनाते हैं : किनहू के संग जमुना के तट ~ — ४०५३।

बंसी[2] मछली पकड़ने के लिए लोहे की बनी नुकीली तिरछी कटिया मीन मानो बेधि ~ करत जल झकझोर ३५८। ~ **मीन हुई** बंसी की मछली हो गई : सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु मानौ ~ — ४०६०।

बसीन बैठे हों . कंज दल मौरीस ~ ३८६७।

सुख पैहौं ४१२।

बँसीबटा बंसीवट है : निकट कल्प तरु ~ श्री राधा-रति-कुंजनि अटा ११८०।

बई[1] १. बोई, बो दी . नैना बिरह की बेली ~ ३२४६। २. ला लगाई हो : जनु मोहिनि ~ २१४३। ३ बोया है, किया है : कौ अपराध ~ २८०६।

बई[2] १. जलने लगी, जलकर फैली : जोग की गति सुनत मेरे अँग आगि ~ ३७०३। २ उँडेलती है : जल थल दरनि ~ १२४०। ३. बिखेरती फिरती है : जल थल दरनि ~ १२४०। ४ डाल ली हो : बारिज मुख पर वारि ~ मी २११३।

बए १ बोये, बो दिये : दुख के बीज ~ ३५०७। २ बोये थे : जनु तनुना मैं सब अरुन दल काम के बीज ~ २६३४।

बक बकासुर नामक राक्षस जिसे कृष्ण ने मारा था : अघ-मर्दन ~ बदन-बिदारन ८६३।

बकत १. बोलते हैं . नाहिन मोर ~ पिक दादुर ४१४६। २ बकता : अब सोइ ~ जाहि जोइ भावै ३१८९। ३ बकती है, बकती झकती है : अब यह औरै सृष्टि बिरह की ~ बाउ बौरानी ३७४१। ४ बकते-बकते, . बकते-झकते हुए ~ भटे हा कुस २९५। ५ बकते हो, बोलते हो कतहिं ~ बेकाज ३७४२। ~ **बकत** कहते-कहते, डाँटते डपटते ~ — तोसौं पचि हारी नेंकहुँ लाज न आई ३२९। ~ **बकतहिं** समझाते बुझाते ही, समझा बुझा कर ही : बरुज्यो जाइ हानि पुनि पावत, — ~ मरी री २३६१।

बकति बकती हो, बक रही हो, बड़बड़ा रही हो : काहे बादिहिं ~ बावरी २३३८।

बकतीं बकती हो, व्यर्थ बकवास करती हो : ~ कहा बाँसुरा कहि कहि १३२०।

बकरति बकती/बड़बड़ाती है : दह्यौ मथति मुख तैं कछु ~ ३७९।

बकवाद विवाद, बकवास, व्यर्थ की बात : काहे कौं ~ बढ़ावति १३३६।

बकवादनि विवाद करने, बकवास करने : एते पर ~ लाग कैसें रिस मन सहियै जू २५६०।

बकस कृपापूर्वक प्रदान कर दो/दे दो : यह कन्या मोंहिं ~ बीर तू सारा० ३८०।

बकसन प्रदान करने . सूर अधर रस आहि हमारौ, ताकौ, ~ लागे १२६५।

बकसाऊँ क्षमा कराऊँ चूक परी मो तैं मैं जानी मिलि स्याम ~ री २१०३।

बकसि क्षमा कर दो सुनि नागरी ~ यह मोकौं, सनमाग आए

बंदना स्तुति, वंदना . सुर-नर-देव ~ आए सोवत तैं उठि जागी ४ ।

बंदहि वद हुआ : भँवर गुजरत कमल मों ~ १०७ ।

बंदि[1] १. कारागार, कैद, बंधन : मातु पिता ~ तैं छुडाए ३०९५ । २ बंधन से : सूरदास प्रभु कौ जस प्रगट्यो देवनि ~ छुडाइ । ३ जेल मे मारै मोहिं ~ लै मेलै २९४३ ।

बंदि[2] पुं० बंदी, कैदी ~ बेरी सबै छूटी ५ । क्रि० अ० वंदना करके . यह कह्यौ नंद, नृप ~ अहि इंद्र पैं गयौ मेरौ नंद ३०९२ ।

बंदित वंदनीय, वंदना करने योग्य कमल दल नैन मृदु बैन ~ बदन ३०७१ ।

बंदिनि चारणो, भाटो : सुनि भयौ भोर रोर ~ कौ २८४८ ।

बंदिये वंदना की जाय . जाकौं निठि ~ सो पुनि वह ताकौं बहुरौ निंदरै १५७६ ।

बंदी[1] चारण, भाट मागध ~ सूत अति करत कुतूहल बार २७ ।

बंदी[2] कैदी जरासंध ~ कटै नृप-कुल जस गावै १/४ ।

बंदीजन चारण, भाट, प्राचीन काल की एक जाति विशेष जिसका काम था राजाओं की प्रशसा करना : विप्र सुजन-चारन ~ सकल नंद गृह आए ८७ ।

बंदीजननि चारणो ने, गुण गायको ने बहुरि ~ आइ अस्तुति करी ४/११ ।

बंदौं वंदना करता हू, स्तुति करता हू : चरण कमल ~ हरि-राइ १/१ ।

बंध[1] १ बंधन . मनौ लच्छि कौ ~ ९/७५ । २ बंधन से, कारागार से . कोटि छ्यानवै नृप सेना सब जरासंध ~ छोरे १/३१ ।

बंध[2] रति के सोलह आसनों मे से एक नाना ~ विविध रस क्रीडा सारा० ९८० ।

बँधत बँधता ~ नही है कमल कैं बंधन ३८५४ ।

बंधन १ बंधन (डालकर) . राखौ रोकि पाइ ~ कै, अरु रोकौ जलनाज ८०८ । २ बंधन मे राखौ रोकि बाँधि दृढ ~८०१ । ३ बाँधने : गो सुत गोठ ~ सब लागे ४०४ । ४ पाश से, फदे से : नंद बरुन ~ भय-मोचन १/२७ ।

बंधनमय बंधन से युक्त रेखा खैंचि, बारि ~ ९/५९ ।

बंधाइ बँधवा कर, बँधा कर सूर स्याम ~ राखे अग-अग छबि घेरि २२६९ ।

बँधाइयै बँधायेंगी, बंधन मे डलवा देंगी/दूँगी : अबहीं बोलि ~ लगर यह लरिकौ १४८६ ।

बँधाई १ बँधवाया प्रीति कै बस्य दाँवरि ~ २०१८ । २ बंधवा . जाइ कहौ भैया के आगै, लेहु सबै मिलि मोहि ~ १४१८ । ३ बँधवाई है : इनहीं कैं हित भुजा ~ अब बिलब नहिं लाऊँ ३८२ ।

बँधाऊँ[1] बँधाऊँगी : कंचन-खंभ, डोर कंचन की देखौ तुमहिं ~ १९३७ ।

बँधाऊँ[2] जोडकर लिखूँ दूँ चौदह सहस तिया मैं तोकौं पटा ~ आजु ९/७९ ।

बँधाए १. बँध गए, बँधा लिया : बांधन गए ~ आपुन ८/१५ । २ बँधवाया था . ऊखल भुजा ~ ३७८२ । ३ बाँध दिये : सन अरु सूत, चीर पाटम्बर, लै लँगूर ~ ९/९८ । ४ बँधवा लिया है . बानासुर कुवर अनिरुध ~ ४१९८ ।

बँधान सगीत मे ताल का क्रम सुर स्तुति तान ~ अमित अति सप्त अतीत अनागत आवत ६४८ ।

बँधाने बाँधने से . केहरि के सग धेनु ~ १/२१७ ।

बँधायौ १ बँधवाया, सजवाया, गुथवाया : मोतिनि ~ बार महल मैं जाइकै ३१ । २. बँधे, बँधन मे आये : गरब जानि न ~ ३४२ । ३ बँध गये, बँधन मे आ गये : बंधु समेत ~ ९/१४१ । ४ बँधवा लिया है : लीला- सिंधु ~ ९/१२५ ।

बँधावत बंधवाते हैं दस अरु आठ पदुम बनचर लै, लीला सिंधु ~ ९/१३३ ।

बँधावहु बँधवाते हो, बाँधने के लिए कहते हो सवन चीरि सिर जटा ~ ३९७४ ।

बँधावै १ बँधवाते हैं भुजा उलूखल नाहिं ~ १६०७ । २. बँधवाती है . सूरदास ग्वारिनि रस भीजी ससकत आपु ~ परि० १/६७ । ३ बँधवाता है : जटा भस्म तन दहै वृथा करि कर्म ~ १६१८ । ४ बँधा है, अपने को बंधन मे डाले हुए हैं . जाकी माया त्रिभुवन गावै, सो जसुमति कैं प्रेम ~ ५९९ ।

बँधि १ बांधकर : सिला तरी जल माहिं सेतु ~ १/३४ । २ बंधकर, बद्ध होकर भीषम दई वचन ~ बंटी १/२५२ ।

बंधु भाई, सहायक, मित्र . दीन ~ हरि, भक्त कृपानिधि १/७ ।

बंधुक दुपहरिया का फूल : अधर दसन-छत, अजन राजत ~ पर अलि मानौ २५३७ । **~ अधरनि रहे लजाई** अधरों को देखकर बधूक या दुपहरिया फूल लज्जित हो रहे हैं . छाया पति-तनु बदन बिराजत ~ — १८६८ ।

बंधु कुमुद पति पिता सुता कुमुदिनी के पति (चन्द्रमा) के बंधु (अमृत) के पिता (समुद्र) की पुत्री, लक्ष्मी . ~ जो सारा० ९६१ ।

बधु कुसुम द्रुम ता रिपु कौ पति पुष्प वृक्षों का बधु (वसत) के शत्रु (तपन) के पति, ग्रीष्म : ~ सारग रिपु कर भाखी सारा० ९५९ ।

बंधु-बात भाइयों का समाचार : जब कही पवन-सुत ~ ९/१६६ ।

बंधू १. भाई, भ्राता . बरजत मातु पिता ~ २३७४ । २. सहायक, रक्षक, मित्र . होहु करुनानाथ ~ ४१८० ।

बंधूक दुपहरिया का फूल . विद्रुम अरु ~ लजाहीं ७९९ ।

बंधे क्रि० अ० १ फँस गये, बधन मे पड गये . ~ आइ उडि फदन ४७६ । २ बँध गया, हो गया कुबिजा प्रेम ~ हरि ही कैं ३१०९ । ३. बाँधे गये थे : वदनवार ~ महलनि वर ९८४ । क्रि० वि० बाँध कर : जल ~ जिन थल किए ३८६५ । वि० बँधा हुआ : ऊखल दाम ~ हरि जाने गोपी देखन धाई सारा० ४५१ ।

बंधहौं बँधवाऊँगा सागर सेतु ~ ९/११३ ।

बंधो बँधा हुआ, निबद्ध : नैननि मूँदि मूँदि कह देखौ ~ ग्यान पोथी कौ ३८५८ ।

बंध्या बाँझ, ऐसी स्त्री जिसे कोई सतान न हुई हो : ब्यावर व्यथा न ~ जानै ४०९४ ।

बंध्यौ १. बधा हुआ है : अजहू नहिं सिधु ~ लका है तेरी ९/११८ । २. बँधा है, बँधा हुआ है . प्रेम ~ ससार ४०९५ । ३ बँध गया : अति प्रवीन वृषभानु नदिनी निरखि ~ दृग पास परि० १/५८ ।

बंस[1] १. परिवार, कुल, वश : कस ~ बधि १/३२१ । २ वश, घर, कुल के काल नेमि ~ उग्रसेन सुनत धाए ३०८४ । ३. (श्लिष्ट प्रयोग)वश, बाँस : अतर सून्य सदा लखियत है निज कुल ~ सुभाए ६६१ ।

बंस[2] बाँस (बाँसुरी) : भुज विसाल चदन सौं चरचित, कर गहे मुख मृदु ~ १२०४ ।

बंसज वशज, कुल मे उत्पन्न होने वाले . कह जानै रस सागर की गति षट्पद ~ ऐन कौ ३५५९ ।

बंस-दुख-भंजनि बाँस के दुख को दूर करने वाली . धन्य ~ गिरिधर कर धरि मोहिनि मानी परि० २/१७ ।

बंसा वश, कुल : कहा बहुत जो भए सपूतौ एकै ~ ४३१ ।

बंसी[1] बाँसुरी, मुरली । ~ **टेरि सुनावत** बाँसुरी बजाकर सुनाते हैं : किनहू कं सँग जमुना के तट ~ — ४०५३ ।

बंसी[2] मछली पकड़ने के लिए लोहे की बनी नुकीली तिरछी कटिया : मीन मानौ बोधि ~ करत जल झकझोर ३५८ । ~ **मीन हुई** बसी की मछली हो गइ : सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु मानौ ~ — ४०६० ।

बंसीन बैठे हों कज दल सौबीस ~ ३८६७ ।

बंसीबट वृन्दावन मे एक बरगद का पेड जिसके नीचे श्री कृष्ण बाँसुरी बजाया करते थे . ~ तर ग्वालनि कैं सँग खेलत अति सुख पैहौ ४१२ ।

बँसीबटा बसीवट है : निकट कल्प तरु ~ श्री राधा रति-कुजनि अटा ११८० ।

बई[1] १. बोई, बो दी : नैना बिरह की बेली ~ ३२४६ । २. ला लगाई हो : जनु मोहिनि ~ २१४३ । ३ बोया है, किया है · को अपराध ~ २८०६ ।

बई[2] १. जलने लगी, जलकर फैली : जोग की गति सुनत मेरे अँग आगि ~ ३७०३ । २ उँडेलती है : जल थल बर्नानि ~ १२४० । ३. बिखेरती फिरती है : जल थल बर्नानि ~ १२४० । ४ डाल ली हो : वारिज मुख पर वारि ~ सी २११३ ।

बए १ बोये, बो दिये : दुख के बीज ~ ३५०७ । २ बोये थे : जनु तनुजा मैं सध अरुन दल काम के बीज ~ २६३४ ।

बक बकासुर नामक राक्षस जिसे कृष्ण ने मारा था : अघ मर्दन ~ बदन-बिदारन ८६३ ।

बकत १ बोलते हैं : नाहिन मोर ~ पिक दादुर ४१४६ । २. बकता . अब सोइ ~ जाहि जोइ भावै ३१८९ । ३ बकती है, बकती झकती है : अब यह औरै सृष्टि बिरह की ~ बाइ बौरानी ३७४१ । ४. बकते-बकते, बकते-झकते हुए . ~ भई हौं कृस २९५ । ५. बकते हो, बोलते हो कतहि ~ बेकाज ३७४२ । ~ **बकत** कहने-कहते, डाँटते डपटते . ~ — तोसौं पचि हारी नैंकहुँ लाज न आई ३२९ । ~ **बकतहि** समझाते बुझाते ही, समझा बुझा कर ही · बरज्यौ जाइ, हानि पुनि पावत, — ~ मरी री २३६१ ।

बकति बकती हो, बक रही हो, बडबडा रही हो : काहैं बादिहि ~ बावरी २३३८ ।

बकतीं बकती हो, व्यर्थ बकवास करती हो : ~ कहा बाँसुरी कहि कहि १३२० ।

बकरति बकती/बडबडाती हैं : दह्यौ मथति मुख तैं कछु ~ ३७९ ।

बकवाद विवाद, बकवास, व्यर्थ की बात : काहे कौं ~ बढावति १३३६ ।

बकवादनि विवाद करने, बकवास करने : एते पर ~ लागे केस रिस मन सहियै जू २५६० ।

बकस कृपापूर्वक प्रदान कर दो/दे दो . यह कन्या मोंहि ~ बीर तू सारा० ३८० ।

बकसन प्रदान करने : सूर अधर रस आहि हमारौ, ताकौं,~लागे १२६५ ।

बकसाऊँ क्षमा कराऊँ : चूक परी मो तैं मैं जानी मिलैं स्याम ~ री २१०३ ।

बकसि क्षमा कर दो · सुनि नागरी ~ यह मोकौं, सनमुख आए धाइ १९३९ ।

बकसियौ क्षमा करना, क्षमा कर देना : पालागौं यह दोष ~

३९६८।

बकसीस इनाम, पारितोषिक : सूर ~ पाइ ३९।

बकसौ क्षमा कर दो ' चूक परी हमकौ यह ~ २६९२।

बकस्यौ १ क्षमा किया, छोड़ा, कुछ नहीं कहा . सूर स्याम अब लौं तुहिं ~ ३२९। २ सौंपा : सूर-प्रभु सो याहि ~ कछु न कीन्हौ छोम १२९८।

बका बकासुर नामक दैत्य जो कृष्ण को मारने के लिए कंस के द्वारा भेजा गया था, परन्तु स्वयं कृष्ण के हाथों मारा गया था : अघा ~ सहारन ऐड़ ३०४४।

बकासुर बकासुर नामक दैत्य ~ रचि रूप माया, रह्यौ छल करि आइ ४२७।

बकि विवाद कर, बोल कर, प्रलाप कर को ~ मरै सखी री मेरैं २३४७।

बकिहै बकता रहे, बक-झक कर मना करे, डाँटे फटकारे . सूर आइ तू करति अचगरी, को ~ निसि जामहिं ७२२।

बकी बकासुर की बहन पूतना . ~ विनासन ब्रज सुखदायक ८६३।

बकुल मौलसिरी नामक वृक्ष : कहि धौ कुंद, कदंब, ~ बट, चंपक, ताल, तमाल १०९१।

बकै बकता है, व्यर्थ की बात करता है : कायर ~ लोह तैं भागै लरै सो सूर बखानै ३९६०।

बकोटनि बकोट रहे हैं : अचल गहत ~ १८७।

बक्ता स्रोता फल कहने और सुनने वाले को मिलने वाला फल . कहा कहौं ~ ११७८।

बक्यौ कहा, बका-झका अति ही क्रोध भयौ ब्राह्मण को बहुत ~ बिलखाय सारा० ८५२।

बक्र १ तिरछे, टेढ़े ' कोटि बारिज ~ नैन ३५६१। २ तिरछी , ~ बिलोकन भेद भेदिया २७७५।

बखरा घर, घर के : गोरस कौ न लिवैया जानति हों इहि ~ मॉझ परि० १/६७।

बखान पुं० १ वर्णन यह तुम मोसौं करौ ~ २/३५। २ प्रशंसा कियौ उत्सव, कहा करौं ~ ६/५। क्रि० स० १ वर्णन करके, समझा करके ब्रह्मा मोसौं कहे ~ १/२३०। २ प्रशंसा करके ' निज दूतनि सौं कह्यौ ~ ६/४। ३ वर्णन करूँ, वर्णन हो सकता है ' सूर के प्रभु निगम बानी कौन भाँति ~ १३७९।

बखानत १ वर्णन करता है, प्रशंसा करता है निगम ~ नीति ३९०७। २ वर्णन करते हैं, प्रशंसा करते है : बेद ~ चारौ हैं १/१५७।

बखाना बखान, वर्णन : व्यंजन बहु को करै ~ ९००।

बखानि १ वर्णन करके, व्याख्या करके ब्यास कह्यौ सुकदेव सौं श्री भागवत ~ १। २. प्रशंसा करके : भोजन कीने, स्वाद ~ ९/६७।

बखानियै वर्णन किया जाय, वर्णन करें : गुन रूप कछु अनुहारि औरै का बखान ~ ४१८६।

बखानी १ वर्णन किया है : श्री बाराह ~ ३०९७। २ वर्णन करता है . जिहिं सब दिन रस-विषय ~ १/१४९। ३. वर्णन (कर रही हूँ) : भूषन सुमिरन करत ~ सा० ल० ५४। कहा, बताया, चर्चा की . अरु सिवहूँ मोसौं न ~ १/२२६। ५ प्रशंसा करके बिदा भए इहि भाँति ~ ३९१। ६ वर्णन/प्रशंसा करते करते थक्यौ निगम कीरतहिं ~ १८१६।

बखाने १ वर्णन करते हैं, कहते हैं सेष सहस मुख सुजस ~ ३८०। २ वर्णन किया है नैन निकट ताटक गंड मंडल पर, कबिनि ~ २६०१।

बखानैं १ वर्णन करते हैं, गान करते हैं निगम जु नेति ~ ४०४७। २ प्रशंसा करते हैं ' मीठो कहि कहि आपु ~ १६०८। ३ बता सकती हूँ, बताऊँ जौ पूछौ सतिभाव आदि अरु अंत ~ १६१८।

बखानै १ वर्णन करता है, गुणगान करता है जोगी होइ सो जोग ~ ४०९४। २ गाया करती है : बार बार वा जमहिं ~ १९२५। ३ बता रहे हैं, शिक्षा दे रहे हैं पहिली प्रीति पियाइ सुधारस पाछैं जोग ~ ३९८०। ४ कहते हैं कायर बकै लोह तैं भागै लरै सो सूर ~ ३९६०। ५ वर्णन करे सूर सुजस कहि कहा ~ ३।

बखानौं १ वर्णन करता हूं, कहता हूं : सो अब तुमसौं सकल कथा ~ २। २ वर्णित कर सकता हूँ, वर्णन करूँ, प्रशंसा करूँ सूरदास स्वामी की महिमा कैसैं रसना एक ~ : १८५१।

बखानौ पुं० वर्णन, प्रशंसा, बखान रसना एक, अनेक स्याम गुन, कहँ लगि करौ ~ १/११। क्रि० स० १. बखान/प्रशंसा करता है जद्यपि सब ब्रज करत ~ सा० ल० ९९। २ बताती हूं, वर्णन करती हूँ : प्रगट ~ नित को ३९६३। ३ वर्णन करूँ और अंग कहि कहा ~ २५२३। ४ कही जाती है बेदी रिचत्र ~ सा० ल० १०२।

बखान्यौ वर्णन किया है सोइ रूप जोगी जिहिं भूले, जो तुम जोग ~ ३६९६।

बग[1] पंक्ति, कतार . मानौ ~ बगदाइ प्रथम दिसि आठ-सात दस नाखै १/६०।

बग[2] १ बकुला/बगुला ~ बगुली अरु गीध-गीधिनी २/१४। २ बगुलों की मुक्ता माल वाल ~ पगति १०४९।

बगछल बघछाला मनहुँ महेस मानि मनसिज-भय बैठ्यौ ~ ओट परि० २/६४।

बगदाइ बिगाड कर, हटाकर मानौ बग ~ प्रथम दिसि आठ-सात दस नाखै १/६०।

१/६० ।
बगनि बगुलों ने • किधौं उहिं देस ~ मग छांडे ३३१० ।
बगराइ १. पशुओं को चरने के लिए बिखेर दिये आप लागे तहाँ खेलन बच्छ दिए ~ परि० १/२६ । २ बिखेर दिये हों, विखर गये हों . मनौ नीलमनि-पुट, मुकुता-गन, वदन भरि ~ १८३२ ।
बगराई विखरी हुई, फली हुई कुटिल अलक राजति भ्रुव ऊपर, जहाँ तहाँ ~ १८१७ ।
बगराए फैलाए हुए, बिखेरे हुए, छिटकाए हुए अति उन्मत्त, मोह-मद छाक्यौ फिरत केस ~ १/३२० ।
बगराना विखर पटीं, छिटक गई : बेनी छूटि लटें ~ १०५७ ।
बगरि फैलकर : तैसियै लट ~ उर पर स्रवन नीर अनूप ११६६ ।
बगरी वखरी, घर, मकान गर स्याम तेहि गारी दीनो जो कोई आवै तुमरी ~ १४१५ ।
बगरोट घेरा : घूवट के ~ ओट रहि चोट सरासन भाह सायक दृग परि० २/५६ ।
बगरौ गाँव, स्थान, ठौर और कहूँ जाइ रहें छाड व्रज ~ १४८९ ।
बगलनि काँख, बाहुमूल के नीचे का गड्ढा, बगल ~ मैं दाबे पिचकारी २९०२ ।
बगा जामा, कुरता माथे के चढाइ लीनौ लाल कौ ~ ३९ ।
बगुली मादा वगुला नग ~ अरु गीव-गीधनी २/१४ ।
बघनई वाघ या सिंह का नाखून बघनखा विच ~ रह्यो पोइ १४८ ।
बघनहाँ बघनखा • कठुला कठ ~ नीके ११७ ।
बघना बघनखा रुचिर हार हिय सोहत ~ ११३ ।
बघनियाँ बघनखा वाँधति गरैं ~ ८३ ।
बघ बार बाघ की मूछ के बाल (जैसा विषैला) प्रेम वीच ~ सुधारस अधर माधुरी प्याई ३८५३ ।
बच वचन, वाणी कान्ह मन ~ तुम्हें चाहा परि० १/५१ ।
बचत १ बचाव, रक्षा नाहिं न ~ आजु के भाजें ३८८३ । २ बचना है, बचता आ रहा है अछै वृच्छ वट ~ निरंतर ८५४ ।
बचन १ वचन, वाणी, बात ~ न नैकु सुहात ३६१४ । २ २ वचनों को श्री नृसिंह वपु धर्यौ असुर हति, भक्त ~ प्रतिपार्यौ ७/१७ । △ ~ बधायौ वचनबद्ध कर दिया नंद-नमोदा ~ — २६१९ । △ ~ बधि वचन बद्ध होकर : भीषम दई ~ — हेटी १/२५२ । ~ लगि वचनों के लिए, वचनों की रक्षा के लिए • सूरदास प्रभु तुम्हरे ~ — ९/१०८ । ~ सुनाए बोले ~ — मोहन नागरि कौं ११८२ । ~ सुनायौ बोली, कहा कथ चढा यह ~ — ११०० ।
बचन-भंग वचन का उल्लघन . ~ भए तैं परिहरौं ९/२ ।
बचननि १ वचनों को, वाणी को ~ सुनि पिक हारी ११९७ । २ वचनों (को) भी • मिव ~ कौं टारा ९/१०८ । ३ वाणी से, बातों से इते पर इन कटुक ~ ३५६१ । ~ कौं बोलने को, बोलने की ~ — बहुत करति, मोचत जिय ठाढी २०१ ।
बचन-बिकार कटु वचन तजियै ~ १०२१ ।
बचन-रसाल मीठे वचन, मृदु वचन • सुनौ ~ २७२१ ।
बचननि-सर वचन रूपी वाणों से, वचनों के बाण से तनु वेधति ~ — २५९४ ।
बचनहि वचनों को ताते खरी मरति इहि ठाहर वाही ~ मेवति ३९८९ ।
बचसि वचनों से, वाणी से मन ~ विचारि देखौ १८२२ ।
बचाइ १ बचा लिया बडे दैत्य कैसें कै मारे अतर आप ~ ९/१०२ । २ बचाकर भृगु पद एक ~ ३४५१ । ३ बचा तुमकौं लेई वेइ ~ ९/५ ।
बचाई बीच बचाव कर दिया हो मनौ परस्पर करत लराई कीर ~ रारि २११८ ।
बचाउ बचाव, त्राण, रक्षा : अबकैं नाहि ~ ५८९ ।
बचाऊ बचाया, रक्षा की . विकट रूप अवतार धर्यो जब, सो प्रहलाद ~ २२१ ।
बचाए बचाया, रक्षा की, बचा लिया पाडव जरत ~ ५५६
बचानें बचा रह गया बूँद नहीं घन नैंकु ~ ९४१ ।
बचाय बचाकर मद गजराज द्वारपर ठाढो हरि कहेउ नेकु ~ सारा० ५१२ ।
बचायौ बचाया, बचा लिया, रक्षा की रिपि-मराय त ताहि ~ ९/५ ।
बचाव त्राण, रक्षा, बचने की आशा : घर पुनि मेरौ है ~ रा १६९८ ।
बचावत १ बचाता है, रक्षा करता है : तोका कौन ~ आइ ७/२ । २ बचाते, बचा रहे हैं अब क्यौं नाहि ~ आइ ५४६ ।
बचावैं बचाते हैं, रक्षा करते हैं शेष सहस फण ऊपर छाये घन की बूँद ~ सारा० ३७५ ।
बचावैं रक्षा करें, बचावें आउ हम नृपति तुमका ~ ८/१६ ।
बचावै १ बचाता है . तुरत आइ हरि कौन ~ ३९१ । २ बचावे, रक्षा करे : पग पग परत कर्म तम कूपहिं, को करि कृपा ~ १/४८ ।
बचि बची, बच (रही) तुम्हरेहिं तेज-प्रताप रही ~ ९/१०० । ~ बचि बच बच कर, अत्यन्त सावधानी से पठयौ नृपति तेउ गए ~ — ३४०० ।

बचिबौ बचेगा, कत तू सुवा होत सेमर कौ, अतहिं कपट न ~ १/५९ ।
बचिहै बचेगे, बच सकते हैं : तब लौं रहौ, पूजि निबरैं ये, ~ बैर हमारैं ८३३ ।
बचे बच गये स्याम ~ काली तैं ५८८ ।
बचें बच जाये, बचे रहे, विपत्ति मे न पड़े बरु हमकौं लै जाइ, स्याम बलराम ~ घर ५८९ ।
बचै बचे, रक्षित रहे, बच पाए अब बालक क्यौं ~ कन्हाई ५२ ।
बचो बचना करो उपाय ~ जो चाहो सारा० ४८७ ।
बचैगे बच सकोगे, रक्षित हो सकोगे · भागे कहा ~ मोहन ७९९ ।
बच्छ[1] पु० बछड़े अतिहिं उठे अकुलाई कै ग्वाल ~ सब गाइ ४३१ । ~ **गयौ हरि** बछड़ों को चुरा ले गये ह्याँ तै ब्रह्मा ~ — ४०५० । — **ज्यौं** बछड़े की तरह अति आतुर होकर जब जब सुरति होति उहिं हित की बिछुरि ~ — धायौ ४२७८ । **वि०** बछड़ों वाली · तहँ गैयाँ गनी न जाहि तरुनी ~ बढ़ी २४ ।
बच्छ[2] वत्स, बेटा, पुत्र, स्नेह सूचक सम्बोधन सुनो ~ धिक जीवन मेरो ९/८३ ।
बच्छ[3] वत्सासुर दैत्य : अघ, बक, ~ अरिष्ट केसि मथि, दावा-नल अँचयौ ७८१५ ।
बच्यौ १ बचा है, बचा रह सका, रक्षित रहा · अब लौं ~ पुन्य पित मात ५५४ । २ बच गया/गये . कैसें ~ जाउँ बलि तेरी तृनावर्त कैं घात ८१ । ३. शेष रहा, बाकी बचा रहा कीन्हे स्वाँग जिते जाने मैं एकौ तौ न ~ १/१७४ । ४ रह गया है : कछु इक सेष ~ 'सूरज' प्रभु ३६६२ ।
बछ १ बछडे : आगैं ~ पाछैं ब्रज-बालक ४३८ । २ बछड़ों को : बिधि ~ हरे ३२१४ ।
बछत चाहते हो · सो निज गोपी-चरन-रज ~ हो तुम देव ११७५ ।
बछरनि बछडो . हरि ~ कैं पाछैं डोलै ३ ।
बछरा बछडा : ~ पियत न छीर ११८३ ।
बछरु बछडे · ~ कतहूँ दूरि गए ४३८ ।
बछरुन बछडो के : हाथ लकुट कामरि काधे पर ~ साथ डुलायो ३६५१ ।
बछरूवा १. बछडे को : ब्यानी गाइ ~ चाटति ३३५ । बछडों को · ब्रह्मा बाल ~ हरि गयौ १/३० ।
बछल वत्सल, प्रेम या स्नेह करने वाले · भक्त ~ बसुदेव कुमार ४१६० ।
बछलता वत्सलता भक्त ~ प्रगट करी १/२६८ ।
बछुरवनि बछडों को तापर सूर ~ ढीलत २९१ ।
बजत १ बजती है · नित प्रति ~ बधाई सारा० ८७० । २ बज रहे हैं, बजते हैं . बाजे ~ विचित्र भाँति सौं सारा० ३९४ ।
बजति बजती है : घर घर ~ बधाई ३८ ।
बजाइ १. बजाकर . घट ~ देव अन्हवायौ ७६१ । २ बजाते हुए डफ-झाँझ-मृदंग ~ सब नद भवन गए २४ । ३ (डका) बजाकर, खुल्लम खुल्ला, खुले रूप मे नैना भए ~ गुलाम २२३९ ।
बजाई १ बजाया देवनि दुदुभी ~ ६ । २ (डका) बजाकर · भए ढीठ ~ २२५३ ।
बजाउ बजाओ . छबीले मुरली नैंकु ~ १२१६ ।
बजाऊँ (बाजा) बजाऊँगी रस करि नाचौं गाऊँ ~ चंदन भवन लिपाऊँ २२०६ ।
बजाए १ बजाते हुए, बजवाते हुए : सूरदास दसरथ आनंदित चले निसान ~ ९/२७ । २ बजाए, ठोंके . भुज बल ताल ~ ३०८७ । ३ बजाया जन-जन सग ~ ४३२ ।
बजाय बजाकर यह कहिकै मुनि लोक सिधारे बीन ~ रिझाय सारा० ६८८ ।
बजायौ बजाई . हरषित बेनु ~ छैल ११८० ।
बजावत १ बजाता है, बजा रहा है : कोउ गावत, कोउ मुरलि ~ कोउ बिषान कोउ बेनु ४४८ । २ बजाते है हठ, अन्याय, अधर्म सूर नित नौबत द्वार ~ १/१४१ । ३ बजाकर, बजाते हुए : बेनु ~ मोद बढावत सारा० ५८४ । ४ बजाते थे वह बेनु अधर धरि बारबार ~ ३२०१ ।
बजावति बजाती है दै करतालि ~ १३० ।
बजावन १ बजावेंगे बैसेइ कुंज गलिन मैं फिरि फिर बसेइ बेनु ~ ३४७७ । २ बजाने को . कहिहैं न मृदु मुरली ~ ३२२८ ।
बजावनहारे बजाने वाले मुरली नाद मृदग, मृदगी अधर ~ २३८४ ।
बजावनि बजाना सुभग गावनि, मृदु ~ बेनु २२९५ ।
बजावहि बजाते हे तैसीयै दमकति दामिनि अरु मुरलि मलार ~ ३३८७ ।
बजावही बजाते हे कर करताल ~ २८६४ ।
बजावहु बजाओ : मुरली मधुर ~ मुख तें सा० ल० ८ ।
बजावैं बजाते है बेनु रसाल ~ १३७० ।
बजावै बजाता है मधुरे बेनु ~ धौरी धेनु बुलावन कारण सारा० ८६६ ।
बजी १ बजने लगी राजा के घर ~ बधाइ ५/२ । २ बजी हुई है · ~ एक ही ताँति ३७५३ ।
बजीर मत्री : तुमसे होइँ ~ ३८४१ ।
बजीली बजा रहे थे . बरषत सुमन देवगन हरषत ददुभि सरस

~ ११६०।
बजैं बजते हैं, बजने लगे : मत्त भेरि निसान बाजे ~ विविध सुहावने ४१८६।
बजै बज रहा है : घर घर ~ निसान ७८।
बजैहैं बजायेंगे : मुरली मधुर ~ १७३८।
बज्र[1] हीरा विच-विच ~ प्रवाल ९७।
बज्र[2] वज्र : परै ~ या नृपति सभा पै १/२५०।
बज्रकन हीरे के कण या वज्र के कण (के समान मजबूत और चमकीले दांत) : द्वै पक बिंब, बतीस ~ २११२।
बज्र-कपाट वज्र के समान दृढ दरवाजे/द्वार : बद बेरी मदै छूटी खुले ~ ५।
बज्र-तनु मजबूत अंगों या शरीर वाले हैं . पवन-पुत्र बलवत ~ ९/७४।
बज्रनि वज्रों से . ~ मारि पताल पठाऊँ ९२५।
बज्रनाभ अनिरुद्ध का पुत्र जिसे युधिष्ठिर ने मथुरा का राजा बनाया था : ~ मथुरापति कीन्ह्यौ १/२८८।
बज्रवत विशेष प्रकार के बादल, बादलों का एक भेद वज्रावर्त अनिलवर्त्त, नलवर्त्त ~ ९२६।
बज्र-सरीर वज्रवत् शरीर, बलिष्ठ शरीर नवतन ~ ९/१०७।
बज्र-हियौ वज्र जैसा कठोर हृदय : गयौ नहिं ~ फट ४२४९।
बज्रहु वज्र (में) भी ~ तें कठिन हियौ ३४८।
बज्रांगी कठोर या दृढ अंग वाले काल रूप ~ जोधा ३०७०।
बज्रायुध वज्र के अस्त्र को धारण करने वाले (इन्द्र) ~ जल बरषि सिरान्यौ ९५१।
बझे बँध गई, बंधन में पड गई : मोह्यो मन नंदलाल, बालही ~ री २७५।
बझै फँसे, बंधन में पडे, बँधे : ~ जाइ खग-वृंद ज्यों १६३५।
बट १ बरगद का वृक्ष ~ लट मनहु मई ३४०४। २ अक्षय-वट, वह वट-वृक्ष जो प्रलयकाल में सुरक्षित रहता है ~ बाढ्यौ सागर जल भेलत ६३।
बटकी वट वृक्ष की . यह तौ अब बत फैलि, भई बीज ~ १६६०।
बटपार ठग, डाकू, लुटेरा . चोर ढूँढ ~ कहावत २२८५।
बटपारि लुटेरिन : ब्रज-तरुनी तुम सब ~ १५८१।
बटपारिनि ठगिनी, लुटेरिन . ब्रजनारी ~ हैं सब १५८२।
बटपारिनी ठगिनी, लुटेरिन : फँसिहारिनी ~ हम भईं, आपुन भए सुधर्मा भारि १५८१।
बटपारी राहजन, लुटेरा . ~, ठग, चोर, उचक्का, गाँठिकटा, लठबाँसी १/१८६।
बटपारे ठग, लुटेरा : राधे तेरे नैन किधौं ~ २७४३।
बटपारयौ बटमारी, चोरी : अपमारग ~ इन पटतर के नहिं कोऊ हैं १५८०।

बटा १. गेंद : ~ धरती डारि दीनौ लै चले ढरकाइ २४४। २ (लकडी के) गोले : भए ~ नट के २३८९।
बटाइ बाँटकर, विभक्त करके : टेहु पाडवनि राज ~ १/२८४।
बटाऊ राहगीर, पथिक : प्रीति ~ सौं कत करिऐ परि० १/१३६
बटु ब्रह्मचारी : धरि ~ रूप चले बामन जू अबुज नयन विशाला सारा० ३३३।
बटोरत समेटता है, इकट्ठा करता है : कबहूँ मग-मग धूरि ~ २/२२।
बटोरी इकट्ठा किया है : सूरदास प्रभु बहुत ~ ३०७३।
बटोरे एकत्र किए हुए, एकत्र करके जोग ~ लिए फिरत हो ३६६८।
बट्टा दलाली, दस्तूरी . ~ काटि कसूर भरम कौ, फरद तले लै टारे १/१४२।
बड १ बडा नंद महर कौ सुत ~ बीर ६००। २ बडा, बढकर जाति पाँति हमते ~ नाहीं २४५।
बडभाग १ बडे भाग्यशालियों, भाग्यशालिनी ब्रज की कुशल कहो ~ ११८०। २ बडे भाग्य हैं, सौभाग्य हैं मानो अधरनि के ~ २११०। ३ भाग्यवान्, भाग्यशालिनी हैं सूर प्रभु की निरखि सोभा, ब्रज तरुनि ~ १८१५। ४ परम भाग्य के कह्यौ भागवत सुक अनुराग, कैसे ममुफ बिनु ~ ११८०।
बडभागनि बडे भाग्यों से : लीन्हे कंठ लगाइ कै, ~ पाए २७३१।
बडभागरि अत्यन्त भाग्य शालिनी सूर स्याम बस-बाम भए हैं धन ऐसी ~ कौं २०१९।
बडभागि अत्यन्त भाग्यशालिनी : महरि हैं ~ ३८७।
बडभागिनि,-नी बडी भाग्यवान् है, भाग्यशालिनी है . धन्य ~ राधा १८४२।
बडभागी १ अत्यन्त भाग्यशाली ऊधौ तुम हौ अति ~ ३९५८। २ बडे भाग्यशाली हैं ~ वै सब ब्रजबामो ३। भाग्यशालिनी ऊधौ हम आजु भइ ~ ३५३२। ४ भाग्यवान् है, भाग्यशालिनी हैं सूरदास गोपी ~ ४०९४।
बडभागे १. बडी भाग्यशालिनी है, बडे भाग्य हैं : सूर स्याम जागे जहाँ, सोइ त्रिया ~ २६४३। २ अत्यन्त भाग्यवान् हैं . पावत कवि उपमा जे ते ~ २१७७।
बडाई (व्यंग्य में) अपयश, कुख्याति : जो यह सुनत कहत मोर धिक, तुरतहिं ऐसी भई ~ २३३६।
बढितार सब कुछ : मेरु लुट्यौ ~ २७६३।
बढ़ियाई बडाई, प्रशंसा पुरुष करत तिनि कौ ~ ८००।

बडी भारी, बहुत वासुदेव की ~ बडाई १/३। २ बहुत बडी : ~ है रामनाम की ओट १/२३२। ~ **बात भई** बडी अच्छी बात हुई, बडा अच्छा किया : ~ — नँदहिं ल्याए ९८८।

बडि भागिनी बडे भाग्य वाली धनि जसुमति ~ ११२।

बडीसभार्गा सुन्दर भाग्य वाली भोजन करति है ~ ८९२।

बडे वि० १ बहुत गुरुमुख नहीं ~ अभिमानी १/२३९। २ महान्, पूज्य इन्द्र ~ कुलदेव हमारे ८१८। ३ बडे घर की/कुल की ~ की तुम बहू बेटी २०१२।

बडेरी छाजन के बीचो बीच लम्बी पडी हुई लकडी, बँडेर : अरवाती कौ नीर ~ कैसैं फिरिहै धाइ २३३७।

बडेरे बडे . जे द्रुम सींचि सींचि अपने कर किए बढ़ाइ ~ ३१८९।

बडेरौ बडा है मेरौ सुत सरदार सबनि कौ बहुते कान्ह ~ २१६।

बडैं बडे, ज्येष्ठ . ~ पुत्र भाष्यौ यौं ताहि ९/१७४।

बडैया बडाई, सम्मान इतने बडे और नहिं कोऊ इहिं सब देत ~ १३०३।

बडोइ सयाना, अधिक अवस्था का . पद पूजिहौं, वेगि यह बालक करि दै मोहि ~ ५६।

बडौ बडे, श्रेष्ठ लोग ~ बडाई कौ प्रतिपालै २८२६।

बडौ १ बडा, बहुत, अत्यत, भारी यहै ~ दुख गॉउ वाम कौ १५०६। २ महान, श्रेष्ठ, पूज्य • इक ~ पुरुष अवतार जनाई ८१९। ३ बडा है, श्रेष्ठ है यह परमारथ बूझि कहौ किन नाम ~ की कासी ३६६९। ४ बडा भारी, भयकर . पैठ्यो ~ भुजग २४१०।

बढ बडी . तिनको ऊधौ कहा वात ~, हम हित जोग जुगत चित चीन्हो सा० ल० ५८।

बढइयै बढाना चाहते हे सूरदास प्रभु भक्तनि कैं बस भक्तनि प्रेम ~ १/२३९।

बढत १ बढता पुनि पाछैं अघ सिधु ~ है १/१०७। २ बढता है नागर वसत गुन ग्यान ~ ३७०५। ३ बढते हे, बढते जाते हे छिन छिन ~ खरे २१२५।

बढ्यौ १ बढा, विस्तार मे अधिक हुआ द्रौपदी को चीर ~ १/१७६। २ बढा है, (उत्पन्न) हो गया, छाया हुआ है अति आनद ~ गोकुल मैं ३३।

बढाइ १ बढाकर वैसोइ गिरि, वैसे ब्रजवासी दूनौ हरष ~ ८७७। २ बढा : यहै बचन सुनि द्रुपद-सुता मुख दीन्हौ वमन ~ ५५६। ३ बढा दी, लम्बी कर दी सूर प्रभु, रस के हित सुखद रैनि ~ १०६८।

बढाई १ बढावा दिया मोह्यो जाइ कनक कामिनि रस, ममता-मोह ~ १/१४७। २ बढाया . भई किशोर स्याम ने देखी, अद्भुत प्रीति ~ सारा० ८७४। **हरष** ~ प्रसन्न करके . उत हरषत हरि भवन सिधारे नागरि — ~ २२०८।

बढ़ाऊँ प्रबल किये रखूँगी . मन अभिलाष ~ २१४२। २ बढा दूँ दरसन दै मन हरष ~ ५५३। ३ बढा लूँ, विस्तृत कर लूँ सप्त समुद्र देउँ छाती तर, एतिक देह ~ ९/१०७।

बढाए १ बडा किया बारे तैं प्रतिपालि ~ बडे भए तब गये तजि कै २२८५। २ बढाकर हॅमत गई सखि भवन आपनै मन आनद ~ २७२९। ३ बढाया है, बढा दी है सूरदास करुना-निधान प्रभु जुग-जुग भक्त ~ १/१३।

बढ़ाने चुका डाले, समाप्त कर दिये . मेघ वरषि जल सबै ~ ८७७।

बढाय १ बढ़ाओ, बडा करो . नारद कह्यौ यही तव पति है याकूँ वेग ~ सारा० ६९५। २ बढ़कर, बढा चढा कर, अतिशयोक्तिपूर्ण . बृन्दावन निज धाम परम रुचि वर्णन कियो ~ ९९७।

बढायौ १ बढाया, वृद्धि की, किया • अनजाने मन गर्व ~ ११२३। २ बढाया है, क्रिया है काके बल बैर तैं जु राम तैं ~ ९/९७। ३ बढा दिया, उद्वेलित कर दिया थकित भयौ चन्द्रमा सहित मृग, सुधा-समुद्र ~ ११४०।

बढाव बढाती है सूरदास जसुमति ता सुत हित, मन अभिलाष ~ ७५।

बढावत[1] १. बढाता है, बढाने है अवलोकत आनद ~ ४१६५। २ बढाते हो, बढा रहे हो तुम अलि वातनि बेर ~ ३७५९।

बढावत[2] १ बढाते थे क्रम-क्रम बलहिं ~ ३२०१। २ पूर्ण करते हैं जाइ मिलौ कौसल नरेस कौं मन अभिलाष ~ ९/१३३।

बढावति १ बढाती हैं, लगाता हैं यह पुनीत हमहीं अपराधिनि तनु अपराध ~ २०५९। २ बढा रही हो, कर रही हो, करती हो वात कहौ कछु जानि कै बृथा ~ सोर १४६१।

बढावति १ बढाती है . बिनु देखें रिस भाव ~ २४९१। २ करती है . यह जिय गर्व ~ १०७९। ३ बढाती हो कतहि ~ रारि १६१८।

बढ़ावन १ बढाने के लिए हेतु जुवती सुख ~, कियौ पूरन रास ११५५। २ बढाने, वृद्धि करने लागे नेह ~ ३३६७।

बढावहु बढाओ . जनि वल बाधि ~ छीति २७७५।

बढावैं बढाते हैं, बढा रहे ह माँगि खात आनद ~ १६०७।

बढावै १ भरी हुई थी : कछु हरषै कछु दुख करै मन मौज ~ २०४४। २ बढाता है, परिमाण मे अधिक करता है सिन्धु न सलिल ~ १/१६३। ३ बढाना चाहिए, बढाये • क्रम-क्रम करि यह ध्यान ~ ३/१३। ४ विस्तार करे, बढाये

तुव प्रताप परली दिसि पहुँच्यौं कौन ~ बात ९/१०४।

बढ़ि बढ़कर : निसि वासर ~ प्रेम सवाई ३९२०। ~ **बढ़ि** बढ बढकर कहन लगीं अब ~ — बात ३५५।

बढ़िगो चला गया है, निकल गया है : अब रथ देखि परत न धूरि दूरि ~ स्याम-सुंदर सा० ल० ३६।

बढ़िहैं बढेंगे, मात्रा मे अधिक हो जायेंगे : अरपौ वलि मोकौं सवै ~ बच्छ गाइ परि० १/४४।

बढ़ी बढी हुई, अगणित : तहँ गैयाँ गनी न जाहिं, तरुनी वच्छ ~ २४।

बढ़ी १ बढ गई : सोभा अतिहिं अनूप ~ तव १७५३। २ वढने लगीं, उठने लगीं : रघुपति-पूरन चद विलोकति मनु पुर-जलधि तरग ~ ९/१७०।

बढ़े बढ गये, तीव्र गति से फैल गये : धर-अंवर, दिसि-विदिसि ~ अति सायक किरन-समान ९/१५८।

बढ़ैं सख्या मे अधिक होंगे : गो सुत ~ अनेक ८२१।

बढ़ै १ वढता है : अग्यानी सग ~ अग्यान ५/२। २. वडा हो, सयाना हो : क्या हू वालक ~ कुसल सों ३६५९। ३ बढे, लम्बी हो जाय : कजरी कौ पय पियहु लाल, जौ तेरी वेनि ~ १७४।

बढ़ैया[1] वडा किया है : मोल लियौ कछु दै करि तिनकौं, करि करि जतन ~ २१७।

बढ़ैया[2] बढ़ई या लोहार जो लकडी का काम करता है : पालनौ अति सुंदर गढि ल्याउ रे ~ ४१।

बढ़ैहैं वढायेंगे : वहु ऐश्वर्य ~ ८६।

बढ़ैहै वढायेगी . सुनहु सूर रस-छकी राधिका, वातनि वैर ~ १७२४।

बढ़ैहौ बढाओगी : मोसा वैर ~ १५३८।

बढ़ो १ वटी : पुनि वह वेलि ~ कै सूकौ ३८३९। २. वढ गया : राज सुहाग ~ सबै कहा निहोरो मोहि ४१८८।

बढ़्यो १. वढ गया : सुमिरत पट कौ कोट ~ १/१६। २ फैल गया . ~ जस ध्रुव अकास १४६। ३. वढ सका, उन्नति हो सकी : काया नगर वडी गुजाइस नाहिन कछु ~ १/६४।

बतचल वकवादी, वातूनी, व्यर्थ की वात चीत करने वाला जानी जात सूर हम इनकी ~ चचल लोल ३८७०।

बतराति वात करती हो/है : हम जानी अव वात तुम्हारी सूधे नहिं ~ १५०६।

बतरानी वात की : दीन होइ ~ १३४४।

बतरावत वात करते हुए/करने मे : का सतरात अली ~ सा० ल० ८४।

बतरावति बताओ, वतलाती हो मो पर रिस पावति ही पुनि पुनि, कछु काहुँहिं ~ री १३३४।

बतलाइ वतला, वता . सो ~ देउ ऊधौ हमैं ३७५२।

बताइ १ वताकर : मन आए गए मेज ~ २२६३। २ बताओ, वता दो कह्यौ कहाँ सो मोहि ~ ७/२। ३ वता कोउ देइ ~ ३६७६।

बताई १. वताया : मारग वह कहि सवनि ~ १०११। २ बताई है, निर्देश दिया है . यह पूजा मोहि कान्ह ~ ८४६। २. वता कर, समझा कर, निर्देश देकर : गदा युद्ध दुर्योधन सिखयो नाना भेद ~ मारा० ८३७। ३ वता : मोका देहु ~ १७३६।

बताउ वताओ : को करि सकै वरावरि मेरी, सो धौं मोहि ~ १/१४५, ताकौ नाउँ ~ २००८।

बताए १ वताया, वताते हैं : कर-अँगुरी रघुनाथ ~ ९/१६८। २. वताती थीं . सूरदास-प्रभु वूझत वतियाँ सखियनि सैन ~ ३६५७।

बतात वात करते हो, वोल रहे हो : टेढे कहा ~ कस का देहु कमल अव ५८९।

बताती वतलाती : जौ वह भली नकुहू होती तौ मिलि सवनि ~ १३१५।

बतानी १ वोली, आवाज दी : नद महर घर के पिछवारे राधा आइ ~ १९८१। २. वात दिखाई दे रही है : 'सूर' आजु यह नई ~ २१५७।

बताने वात करते हैं : वह गरजति ये हरें ~ १३१०।

बतायौ वताया है, वता दिया है : निगमनि भेद ~ १/१८८।

बतावत १ वताते हैं . अवधि ~ लामी ३६१९। २ वतलाती है, उत्तर देती है : मातु पिता गुरुजन पूछत कछु औरै और ~ १६३०। ३ वतलाते हो, उपदेश देते हो सुर पूजा अरु तीर्थ ~ ४२९८। ४. वतलाये दे रहा है : इहिं व्रज यह अवतार ~ ४५०। ५ वताता . जहँ-तहँ जाउँ डर लागत, डगर ~ नाहिं ११०४।

बतावति १ कहती या वताती है कवहुँ कहति वन गए, कवहुँ कहि घरहिं ~ ५८९। २ वताती हो, कहती हो . गुज गहि ताहि वतावहु जेहि हृदय ~ २४१७।

बतावन कह रहे हैं : वान सुधौ हम ~ आपु उठति पुकारि १५५५।

बतावहु १. वताओ, वता दो सूर सु जोप र हमैं ~ ३७८८। २. वतलाते हो : जो तुम हित की वात ~ ४०९४।

बतावैं वतलाते हैं : पूजा-विधि गिरिराज की नँदलाल ~ परि० १/४५।

बतावै १ वतलाता है . लागे धरम ~ अधरम, वाकी सवे रही १/१८५। २ वतावैं, वतलावैं, वतला सकती हैं अमृत कहा अमृत-गुन प्रगटै सो हम कहा ~ २०६६। ३. वतावे, निर्देश दे : मारग कौन ~ ३७३३।

बडी भारी, बहुत वासुदेव की ~ बडाई १/३। २ बहुत बडी : ~ है रामनाम की ओट १/२३२। ~ **बात भई** बडी अच्छी बात हुई, बडा अच्छा किया : ~ — नँदहिं स्याए ९८४।

बडि भागिनी बडे भाग्य वाली • धनि जसुमति ~ ११२।

बडिसभागी सुन्दर भाग्य वाली भोजन करति है ~ ८९२।

बडे वि० १ बहुत गुरुमुख नहीं ~ अभिमानी १/२३९। २ महान्, पूज्य इन्द्र ~ कुलदेव हमारे ८१८। ३ बडे घर की/कुल की ~ की तुम बहू बेटी १०१२।

बडेरी छाजन के बीचो बीच लम्बी पडी हुई लकडी, बँडेर अरवातो कौ नीर ~ कैसैं फिरिहैं धाइ २३३७।

बडेरे बडे . जे द्रुम सींचि सींचि अपने कर किए बढाइ ~ ३१८९।

बडेरो बडा है मेरौ सुत सरदार सबनि कौ बहुते कान्ह ~ २१६।

बडैं बडे, श्रेष्ठ . ~ पुत्र भाष्यो यौं ताहि ९/१७४।

बडैया बडाई, सम्मान इतने बडे और नहिं कोऊ ईहिं सब देत ~ १३९३।

बडोइ सयाना, अधिक अवस्था का : पद पूजिहौं, वेगि यह बालक करि दै मोहि ~ ५६।

बडौ बडे, श्रेष्ठ लोग ~ बडाई कौ प्रतिपालै २८२६।

बडौ १ बडा, बहुत, अत्यत, भारी यहै ~ दुख गॉउ वास कौ १५०६। २ महान्, श्रेष्ठ, पूज्य : इक ~ पुरुष अवतार जनार्द ८१९। ३ बडा है, श्रेष्ठ है यह परमारथ बूझि कहौ किन नाम ~ की कासी ३६६९। ४ बडा भारी, भयकर . पैठ्यौ ~ भुजग २४१०।

बढ बडी . तिनकों ऊधौ कहा बात ~, हम हित जोग जुगत चित चीन्हीं सा० ल० ५८।

बढइये बढाना चाहते हे सूरदास प्रभु भक्तनि कै बस भक्तनि प्रेम ~ १/२३९।

बढत १ बढता पुनि पाछैं अघ सिंधु ~ है १/१०७। २ बढता है नागर बसत गुन ग्यान ~ ३७०५। ३ बढते है, बढते जाते हैं . छिन छिन ~ खरे २१२५।

बढ्यौ १ बढा, विस्तार मे अधिक हुआ . द्रौपदी को चीर ~ १/१७६। २ बढा है, (उत्पन्न) हो गया, छाया हुआ है अति आनद ~ गोकुल में ३३।

बढाइ १ बढाकर . वैसोइ गिरि, वैसे ब्रजवासी दूनौ हरष ~ ८७७। २ बढा • यहै बचन सुनि द्रुपद-सुता मुख दीन्हौ वसन ~ ५५६। ३ बढा दी, लम्बी कर दी . सूर प्रभु, रस के हित सुखद रैनि ~ १०६८।

बढाई १ बढावा दिया मोह्यौ जाइ कनक कामिनि रस, ममता मोह ~ १/१४७। २ बढ़ाया . भई किशोर स्याम ने देखी, अद्भुत प्रीति ~ सारा० ८७४। **हरष** ~ प्रसन्न करके . उत हरषत हरि भवन सिधारे नागरि — ~ २२०८।

बढ़ाऊँ प्रबल किये रखूँगी मन अभिलाष ~ २१४२। २ बढा दूँ दरसन दै मन हरष ~ ५५३। ३ बढा लूँ, विस्तृत कर लूँ . सप्त समुद्र देउँ छाती तर, एतिक देह ~ ९/१०७।

बढाए १ बडा किया बारे तैं प्रतिपालि ~ बडे भए तब गये तजि कै २२८५। २ बढाकर हमत गइ सखि भवन आपनै मन आनंद ~ २७२९। ३. बढाया है, बढा दी है सूरदास करुना-निधान प्रभु जुग-जुग भक्त ~ १/१३।

बढाने चुका डाले, समाप्त कर दिये : मेघ बरषि जल सबै ~ ८७७।

बढ़ाय १ बढ़ाओ, बडा करो . नारद कह्यौ यही तव पति है याकूँ बेग ~ सारा० ६९५। २ बढ़कर, बढा चढा कर, अतिशयोक्तिपूर्ण . वृन्दावन निज धाम परम रुचि वर्णन कियो ~ ९९७।

बढायौ १ बढाया, वृद्धि की, किया • अनजाने मन गर्व ~ ११२३। २ बढाया है, किया है काके बल बैर तैं जु राम तैं ~ ९/९७। ३ बढा दिया, उद्वेलित कर दिया थकित भयौ चन्द्रमा सहित मृग, सुधा-समुद्र ~ ११४०।

बढाव बढाती है सूरदास जसुमति ता सुत-हित, मन अभिलाष ~ ७५।

बढावत[1] १ बढाता है, बढाते है • अवलोकत आनद ~ ४१६५। २ बढाते हो, बढा रहे हो . तुम अलि बातनि बैर ~ ३७५९।

बढावत[2] १ बढाते थे क्रम-क्रम बलहिं ~ ३२०१। २ पूर्ण करते हैं जाइ मिलौ कौसल नरेस कौं मन अभिलाष ~ ९/१३३।

बढावति १ बढाती हैं, लगाती हैं यह पुनीत हमहीं अपराधिनि तनु अपराध ~ २०५९। २ बढ़ा रही हो, कर रही हो, करती हो बात कहौ कछु जानि कै बृथा ~ सोर १४६१।

बढावति १ बढ़ाती है : बिनु देखें रिस भाव ~ २४९१। २ करती है : यह जिय गर्व ~ १०७९। ३ बढाती हो कतहिं ~ रारि १६१८।

बढावन १ बढ़ाने के लिए : हेतु जुवती सुख ~, कियौ पूरन रास ११५५। २ बढाने, वृद्धि करने : लागे नेह ~ ३३६७।

बढावहु बढाओ : जनि बल बाधि ~ छीति २७७१।

बढावैं बढाते हे, बढा रहे हैं मॉगि खात आनद ~ १६०७।

बढ़ावै १ भरी हुई थी : कछु हरषै कछु दुख करै मन मौज ~ २०४४। २ बढाता है, परिमाण मे अधिक करता है सिन्धु न सलिल ~ १/१६३। ३ बढाना चाहिए, बढाये • क्रम-क्रम करि यह ध्यान ~ ३/१३। ४ विस्तार करे, बढाये

तुव प्रताप परली दिसि पहुँच्यौं कौन ~ बात ९/१०४ ।

बढि बढकर : निमि दामर ~ प्रेम मवाई ३९२० । ~ बढि बढ बढकर कहन लगीं अब ~ — बान ३५५ ।

बढिगो चला गया है, निकल गया है अब रथ देगि परत न धूरि दूरि ~ स्याम-सुदर मा० ल० ३६ ।

बढिहैं बढेंगे, मात्रा में अधिक हो जायेंगे : अरपी बनि मोकों सबै ~ नछ गाइ परि० १/४४ ।

बढी बढी हुई, अगणित : तहँ गैयाँ गनी न जाहिं, तरुनी बच्छ ~ २४ ।

बढी १ बढ गई • सोभा अतिहिं अनूप ~ तव १७५३ । २ बढने लगीं, उठने लगीं • रघुपति-पूरन चद बिलोकति मनु पुर-जलधि-तरग ~ ९/१७० ।

बढ़े बढ गये, तीव्र गति से फैल गये : धर-अबर, दिसि-बिदिसि ~ अति सायक किरन-समान ९/१५८ ।

बढ़ें सख्या में अधिक होंगे : गो सुत ~ अनेक ८२१ ।

बढै १ बढता है • अग्यानी सग ~ अग्यान ५/२ । २ बडा हो, सयाना हो • क्या हू नालक ~ कुसल सों ३६५९ । ३ बढे, लम्बी हो जाय : कजरी की पय पियहु लाल, जो तेरी बेनि ~ १७४ ।

बढ़ैया[1] बडा किया है मोल लियो कछु दै करि तिनका, करि करि जतन ~ २१७ ।

बढ़ैया[2] बढई या लोहार जो लकडी का काम करता है पालनौ अति सुदर गढि ल्याउ रे ~ ४१ ।

बढ़ैहै बढायेंगे : बहु ऐश्वर्य ~ ८६ ।

बढैहै बढायेंगा सुनहु सूर रस-छकी राधिका, बातनि बैर ~ १७२४ ।

बढ़ैहौ बढाओगी • सोसौं बैर ~ १५३८ ।

बढ्यौ १ बढी : पुनि वह बेलि ~ कै सकौ ३८३९ । २. बढ गया राज सुहाग ~ सबै कहा निहोरो मोहि ४१८८ ।

बढ्यो १ बढ गया • सुमिरत पट कौ कोट ~ १/२६ । २ फैल गया ~ जस भुव अकास १४६ । ३ बढ सका, उन्नति हो सका काया नगर बडी गुंजाइस नाहिन कछु ~ १/६४ ।

बतचल बकवादी, बातूनी, व्यर्थ की बात चीत करने वाला जानी जात सूर हम इनकी ~ चचल लोल ३८७० ।

बतराति बात करती हो/है : हम जानी अब बात तुम्हारी सधे नहिं ~ १५०६ ।

बतरानी बात की • दीन होइ ~ १३४४ ।

बतरावत बात करते हुए/करने मे का सतरात अली ~ सा० ल० ८४ ।

बतरावति बताओ, बतलाता हो • मो पर रिस पावति हौ पुनि पुनि, कछु काहूँहि ~ री १३३४ ।

बतलाइ बतला, बता सो ~ देउ ऊधौ हमैं ३७७२ ।

बताइ १ बताकर मन आए गए भेउ ~ २२६३ । २ बताओ, बता दो कहौ कहाँ सो मोहि ~ ७/२ । ३ बता कोउ देइ ~ ३६७६ ।

बताई १ बताया : मारग वह कहि सबनि ~ १०११ । २ बताई है, निर्देश दिया है • यह पूजा मोहिं कान्ह ~ ८४६ । २. बता कर, समझा कर, निर्देश देकर : गदा युद्ध दुर्योधन सिखयो नाना भेद ~ सारा० ८३७ । ३ बता • मोकों देहु ~ १७३६ ।

बताउ बताओ • को करि सकै बराबरि मेरी, सो धौं मोहिं ~ १/१४५, ताको नाऊँ ~ २००८ ।

बताए १ बताया, बताते हैं कर-अँगुरी रघुनाथ ~ ९/१६८ । २ बताता थीं : सूरदास-प्रभु बूझत बतियाँ मखियनि सैन ~ ३६५७ ।

बतात बात करते हो, बोल रहे हो टेढे कहा ~ कम का टेढु कमल अब ५८९ ।

बताती बतलाती • जौ वह भली नकहूँ होती तो मिलि सबनि ~ १३१५ ।

बतानी १ बोली, आवाज दी नद-महर घर के पिछवारे राधा आइ ~ १९८१ । २ बात दिखाई दे रही है • 'सर' जाजु यह नइ ~ २१५७ ।

बताने बात करते हैं • वह गरजति ये हरैं ~ १३१० ।

बतायौ बताया है, बता दिया है • निगमनि भेद ~ १/१८८ ।

बतावत १ बताते हैं अवधि ~ लासी ३६२९ । २ बतलाती है, उत्तर देती है मातु पिता गुरुजन पूछत कछु औरै और ~ १६३० । ३ बतलाते हो, उपदेश देते हो सुर पूजा अरु तीर्थ ~ ४२९८ । ४ बतलाये दे रहा है • इहि ब्रज यह अवतार ~ ४५० । ५ बताता जहँ-तहँ जाउँ डर लागत, डगर ~ नाहिं ११०४ ।

बतावति १ कहती या बताती है कबहु कहति नन गए, कबहुँ कहि घरहिं ~ ५८९ । २ बताती हो, कहती हो सुज गहि ताहि बतावहु जेहि हृदय ~ २४१७ ।

बतावन कह रहे हैं बात सुधो हम ~ आपु उठति पुकारि १५५५ ।

बतावहु १. बताओ, बता दो सूर सु ओप र हमैं ~ ३७८८ । २ बतलाते हो : जो तुम हित की बात ~ ४०९४ ।

बतावैं बतलाते हैं पूजा-विधि गिरिराज की नँदलाल ~ परि० १/४५ ।

बतावै १ बतलाता है लागै धरम ~ अधरम, बाकी सबै रही १/१८५ । २ बतावैं, बतलावैं, बतला सकती हैं अमृत कहा अमृत गुन प्रगटै सो हम कहा ~ २०६६ । ३ बतावे, निर्देश दे मारग कौन ~ ३७३३ ।

बडी भारी, बहुत वासुदेव की ~ बडाई १/३। २ बहुत बडी : ~ है रामनाम की ओट १/२३२। ~ **बात भई** बडी अच्छी बात हुई, बडा अच्छा किया : ~ — नँदहि ल्याए ९८८।

बडि भागिनी बडे भाग्य वाली धनि जसुमति ~ ११२।

बडीसभागा सुन्दर भाग्य वाली भोजन करति है ~ ८९२।

बडे वि० १ बहुत गुरुमुख नही ~ अभिमानी १/२३९। २ महान्, पूज्य • इन्द्र ~ कुलदेव हमारे ८१८। ३ बडे घर की/कुल की . ~ की तुम बहू बेटी १०१२।

बडेरी छाजन के बीचो बीच लम्बी पडी हुई लकडी, बँडेर . अरवाता कौ नीर ~ कैसें फिरिहे धाइ २३३७।

बडेरे वडे . जे द्रुम सींचि सींचि अपने कर किए बढाइ ~ ३१८९।

बडेरो बडा है मेरौ सुत सरदार सवनि कौ बहुते कान्ह ~ ७१६।

बडै वडे, ज्येष्ठ : ~ पुत्र भाष्यौ यौं ताहि ९/१७४।

बडैया वडाई, सम्मान इतने वडे और नहि कोऊ इहिं सब देत ~ १३९३।

बडोइ सयाना, अधिक अवस्था का पद पूजिहौं, बेगि यह बालक करि दै मोहि ~ ५६।

बडौ वडे, श्रेष्ठ लोग ~ वडाई कौ प्रतिपालै २८२६।

बडौ १ वडा, वहुत, अत्यत, भारी यहै ~ दुख गाँउ वास कौ १५०६। २ महान, श्रेष्ठ, पूज्य : इक ~ पुरुष अवतार जनाई ८१९। ३ वडा है, श्रेष्ठ है . यह परमारथ बूझि कहौ किन नाम ~ की कासी ३६६९। ४ वडा भारी, भयकर . पैठ्यो ~ भुजग २४१०।

बढ वडी . तिनको ऊधौ कहा बात ~, हम हित जोग जुगत त्रित चीन्ही सा० ल० ५८।

बढइयै वढाना चाहते हे सूरदास प्रभु भक्तनि कैं बस भक्तनि प्रेम ~ १/२३९।

बढत १ वढता पुनि पाछैं अघ-सिंधु ~ है १/१०७। २ वढता है नागर वसत गुन ग्यान ~ ३७०५। ३ वढते है, वढते जाते हे छिन छिन ~ सरे २१२५।

बढ्यौ १ वढा, विस्तार मे अधिक हुआ द्रौपदी को चीर ~ १/१७६। २ वढा है, (उत्पन्न) हो गया, छाया हुआ है : अति आनद ~ गोकुल मैं ३३।

बढाइ १. वढाकर . वैसोइ गिरि, वैसे ब्रजवासी दूनौ हरष ~ ८७७। २ वढा • यहै बचन सुनि द्रुपद-सुता मुख दीन्हौ वमन ~ ५५६। ३ वढा दी, लम्बी कर दी सूर-प्रभु, रस के हित सुखद रैनि ~ १०६८।

बढाई १ बढ़ावा दिया मोह्यो जाइ कनक कामिनि रस, ममता-मोह ~ १/१४७। २ वढाया भई किशोर श्याम ने देखी, अद्भुत प्रीति ~ सारा० ८७४। **हरष** ~ प्रसन्न करके . उत हरषत हरि भवन सिधारे नागरि — ~ २२०८।

बढाऊँ प्रवल किये रखूँगी . मन अभिलाष ~ २१४०। २ वढा दूँ दरसन दै मन हरष ~ ५५३। ३ वढा लूँ, विस्तृत कर लूँ सप्त समुद्र देउँ छाती तर, एतिक देह ~ ९/१०७।

बढाए १ वडा किया बारे तैं प्रतिपालि ~ बडे भए तब गने तजि कै २२८५। २ वढाकर . हसत गइ मखि भवन आपनै मन आनंद ~ २७२९। ३. वढ़ाया है, वढा दी है सूरदास करुना-निधान प्रभु जुग-जुग भक्त ~ १/१३।

बढाने चुका डाले, समाप्त कर दिये : मेघ वरषि जल सवै ~ ८७७।

बढाय १ बढ़ाओ, बडा करो . नारद कह्यौ यही तव पति है याकूँ बेग ~ सारा० ६९५। २ बढ़ाकर, वढा चढा कर, अतिशयोक्तिपूर्ण . बृन्दावन निज धाम परम रुचि वर्णन कियो ~ ९९७।

बढायौ १ वढाया, वृद्धि की, किया : अनजाने मन गर्व ~ ११२३। २ वढाया है, किया है काके वल वैर तैं जु राम तैं ~ ९/९७। ३ वढा दिया, उद्वेलित कर दिया थकित भयौ चन्द्रमा सहित मृग, सुधा-समुद्र ~ ११४०।

बढाव वढ़ाती है सूरदास जसुमति ता सुत हित, मन अभिलाष ~ ७५।

बढावत[1] १ वढाता है, वढाने है • अवलोकत आनद ~ ४१६५। २ वढाते हो, वढा रहे हो : तुम अलि बातनि बैर ~ ३७५९।

बढावत[2] १ वढाते थे क्रम-क्रम बलहिं ~ ३२०१। २ पूर्ण करते हैं जाइ मिलौ कौसल नरेस कौं मन अभिलाष ~ ९/१३३।

बढावति १ वढाती हैं, लगाता हे यह पुनीत हमहीं अपराधिनि तनु अपराध ~ २०५९। २ वढा रही हो, कर रही हो, करती हो वात कहौ कछु जानि कै वृथा ~ सोर १४६१।

बढावति १. वढाती है . बिनु देखें रिस भाव ~ २४९१। २ करती है : यह जिय गर्व ~ १०७९। ३ वढाती हो कतहिं ~ रारि १६१८।

बढावन १ बढाने के लिए • हेतु जुवती सुख ~, कियौ पूरन रास ११५५। २ बढाने, वृद्धि करने • लागे नेह ~ ३३६७।

बढावहु वढाओ . जनि बल बाधि ~ छाति २७७५।

बढावैं वढाते हे, वढा रहे ह माँगि खात आनद ~ १६०७।

बढावै १ भरी हुई थी : कछु हरषै कछु दुख करै मन मौज ~ २०४४। २ वढाता है, परिमाण मे अधिक करता है सिन्धु न सलिल ~ १/१६३। ३ वढाना चाहिए, वढाये : क्रम-क्रम करि यह ध्यान ~ ३/१३। ४ विस्तार करे, वढाये

तुव प्रताप परली दिसि पर्हुच्यौं कौन ~ बात ९/१०४।

बढ़ि बढ़कर : निमि बासर ~ प्रेम सवाई ३९२०। ~ बढ़ि बढ़ बढ़कर : कहन लगीं अब ~ — बात ३५५।

बढ़िगो चला गया है, निकल गया है : अब रथ देखि परत न धूरि दूरि ~ स्याम-सुंदर मा० ल० ३६।

बढ़िहैं बढ़ेंगे, मात्रा में अधिक हो जायँगे : अरपौ बलि मोकौं सबै ~ बद्र गाइ परि० १/४४।

बढ़ीं बढ़ी हुई, अगणित : तहँ गैयाँ गनी न जाहिं, तरुनी बच्छ ~ २४।

बढ़ी १. बढ़ गई : सोभा अतिहिं अनूप ~ तब १७५३। २ बढ़ने लगीं, उठने लगीं : रघुपति-पूरन चंद विलोकति मनु पुर-जलधि तरंग ~ ९/१७०।

बढ़े बढ़ गये, तीव्र गति से फैल गये : धर-अंबर, दिसि बिदिसि ~ अति सायक किरन-समान ९/१५८।

बढ़ैं संख्या में अधिक होंगे : गो सुत ~ अनेक ८२१।

बढ़ १ बढ़ता है . अग्यानी संग ~ अग्यान ५/२। २ बड़ा हो, सयाना हो : क्या हूं बालक ~ कुसल सौं ३६५९। ३ बढ़े, लम्बी हो जाय : कजरी को पय पियहु लाल, जो तेरी बेनि ~ १७४।

बढ़ैया[1] बड़ा किया है : मोल लियो कछु दै करि तिनकौ, करि करि जतन ~ २१७।

बढ़ैया[2] बढ़ई या लोहार जो लकड़ी का काम करता है पालनौ अति सुंदर गढि ल्याउ रे ~ ४१।

बढ़ैहु बढ़ायेंगे : बहु ऐश्वर्य ~ ८६।

बढ़ैहैं बढ़ायेंगी सुनहु सूर रस-छकी राधिका, बातनि बैर ~ १७२४।

बढ़ैहौ बढ़ाओगी : मोसौ बैर ~ १५३८।

बढ़ौ १ बढ़ी . पुनि वह बेलि ~ कै सकौ ३८३९। २. बढ़ गया : राज सुहाग ~ सबै कहा निहोरो मोहि ४१८८।

बढ़्यौ १ बढ़ गया : सुमिरत पट कौ कोट ~ १/१६। २ फैल गया : ~ जस भुव अकाम १४६। ३. बढ़ सका, उन्नति हो सकी : काया नगर बड़ी गुंजाइस नाहिन कछु ~ १/६४।

बतचल बकवादी, बातूनी, व्यर्थ की बात चीत करने वाला . जानी जात सूर हम इनकी ~ चञ्चल लोल ३८७०।

बतराति बात करती हो/है : हम जानी अब बात तुम्हारी सूधे नहिं ~ १५०६।

बतरानी बात की : दीन होइ ~ १३४४।

बतरावत बात करेते हुए/करने में : का सतरात अली ~ सा० ल० ८४।

बतरावति बताओ, बतलाती हो : मो पर रिस पावति हौ पुनि पुनि, कछु काहुँहिं ~ री १३३४।

बतलाइ बतला, बता . मो ~ देउ ऊधौ हमैं ३७५२।

बताइ १ बताकर : मन आए गए भेद ~ २२६३। २ बताओ, बता दो कह्यौ कहाँ मो मोहि ~ ७/२। ३. बता . कोउ देइ ~ ३६७६।

बताई १ बताया मारग वह काहि मननि ~ १०११। २ बताई है, निर्देश दिया है : यह पूजा मोहि कान्ह ~ ८४६। २. बता कर, समझा कर, निर्देश देकर : गदा युद्ध दुर्योधन सिखयो नाना भेद ~ मारा० ८३७। ३ बता : मोका देहु ~ १७३६।

बताउ बताओ को करि सकै बराबरि मेरी, सो धौं मोहिं ~ १/१४५, ताको नाऊँ ~ २००८।

बताए १ बताया, बताते हैं कर-अँगुरी रघुनाथ ~ ९/१६८। २. बताती थीं : सूरदास-प्रभु बूझत बतियाँ सखियनि सैन ~ ३६५७।

बतात बात करते हो, बोल रहे हो टेढ़े कहा ~ कम का देहु कमल अब ५८९।

बताती बतलाती : जौ वह भली नकुहू होती तौ मिलि सखनि ~ १३१५।

बतानी १ बोली, आवाज दी : नद महर घर के पिछवारे राधा आइ ~ १९८१। २ बात दिखाई दे रही है . 'सूर' आजु यह नई ~ २१५७।

बताने बात करते हैं : वह गरजति ये हरें ~ १३१०।

बतायौ बताया है, बता दिया है : निगमनि भेद ~ १/१८८।

बतावत १ बताते हैं : अवधि ~ लामी ३६२९। २ बतलाती है, उत्तर देती है : मातु-पिता गुरुजन पूछन कछु औरै और ~ १६३०। ३ बतलाते हो, उपदेश देते हो सुर पूजा अरु तीर्थ ~ ४२९८। ४. बतलाये दे रहा है : इहिं ब्रज यह अवतार ~ ४५०। ५ बताता . जहँ-तहँ जाउँ टर लागत, टगर ~ नाहिं ११०४।

बतावति १ कहती या बताती है : कबहु कहति बन गए, कबहुँ कहि घरहिं ~ ५८९। २ बताती हो, कहती हो : भुज गहि ताहि बतावहु जेहि हृदय ~ २४१७।

बतावन कह रहे हैं बात सुनौ हम ~ आपु उठति पुकारि १५५५।

बतावहु १. बताओ, बता दो मर तु औषध हमैं ~ ३७८८। २ बतलाते हो : जो तुम हित की बात ~ ४०९४।

बतावैं बतलाते हैं : पूजा-विधि गिरिराज की नँदलाल ~ परि० १/४५।

बतावैं १ बतलाता है लागै धरम ~ अधरम, बाकी सबै रही १/१८५। २ बतावैं, बतलावें, बतला सकती हैं : अमृत कहा अमृत गुन प्रगटै सो हम कहा ~ २०६६। ३. बतावे, निर्देश दे : मारग कौन ~ ३७३३।

बडी भारी, बहुत वासुदेव की ~ बडाई १/३। २ बहुत बडी : ~ है रामनाम की ओट १/२३२। ~ **बात भई** बडी अच्छी बात हुई, बडा अच्छा किया : ~ — नंदहि ल्याए ९८८।
बडि भागिनी बडे भाग्य वाली • धनि जसुमति ~ ११२।
बडीसभार्गा सुन्दर भाग्य वाली भोजन करति है ~ ८९२।
बडे वि० १ बहुत • गुरुमुख नहीं ~ अभिमानी १/२३९। २ महान्, पूज्य इन्द्र ~ कुलदेव हमारे ८१८। ३ बड़े घर की/कुल की ~ की तुम बहू बेटी १०१२।
बडेरी छाजन के बीचो बीच लम्बी पडी हुई लकडी, बँडेर : अरवाता कौ नीर ~ कैसैं फिरिहै धाइ २३३७।
बडेरे बडे • जे द्रुम सींचि सींचि अपने कर किए बढ़ाइ ~ ३१८९।
बडेरा बडा है मेरौ सुत सरदार सबनि कौ बहुते कान्ह ~ २१६।
बडैं बडे, ज्येष्ठ : ~ पुत्र भाष्यो यौं ताहि ९/१७४।
बडैया बडाई, सम्मान इतने बडे और नहिं कोऊ ईहि सब देत ~ १३९३।
बडोइ सयाना, अधिक अवस्था का • पद पूजिहौं, बेगि यह बालक करि दै मोहि ~ ५६।
बडौ बडे, श्रेष्ठ लोग • ~ बडाई कौ प्रतिपालै २८२६।
बडौ १ बडा, बहुत, अत्यत, भारी • यहै ~ दुख गाउ बास कौ १५०६। २ महान, श्रेष्ठ, पूज्य • इक ~ पुरुष अवतार जनाई ८१९। ३ बडा है, श्रेष्ठ है यह परमारथ बूझि कहौ किन नाम ~ की कासी ३६६९। ४ बडा भारी, भयकर पैठ्यौ ~ भुजग २४१०।
बढ बडी • तिनको ऊधौ कहा बात ~, हम हित जोग जुगत चित चीन्ही सा० ल० ५८।
बढइयै बढाना चाहते हे सूरदास प्रभु भक्तनि कै बस भक्तनि प्रेम ~ १/२३९।
बढ़त १ बढता पुनि पाछैं अघ सिंधु ~ है १/१०७। २ बढता है नागर बसत गुन ग्यान ~ ३७०५। ३ बढते हे, बढते जाते हे छिन छिन ~ खरे २१२५।
बढयौ १ बढा, विस्तार मे अधिक हुआ द्रौपदी को चीर ~ १/१७६। २ बढा है, (उत्पन्न) हो गया, छाया हुआ है अति आनद ~ गोकुल मैं ३३।
बढ़ाइ १ बढाकर • वैसोइ गिरि, वैसे ब्रजवासी दूनौ हरष ~ ८७७। २ बढा यहै बचन सुनि द्रुपद-सुता मुख दीन्हौ बसन ~ ५५६। ३ बढा दी, लम्बी कर दी सूर प्रभु, रस के हित सुखद रैनि ~ १०६८।
बढाई १ बढावा दिया मोह्यौ जाइ कनक कामिनि रस, ममता मोह ~ १/१४७। २ बढाया • भई किशोर स्याम ने देखी, अद्भुत प्रीति ~ सारा० ८७४। **हरष** ~ प्रसन्न करके • उत हरषत हरि भवन सिधारे नागरि — ~ २२०८।
बढ़ाऊँ प्रबल किये रखूँगी मन अभिलाष ~ २१४२। २ बढा दूँ • दरसन दै मन हरष ~ ५५३। ३ बढा लूँ, विस्तृत कर लूँ • सप्त समुद्र देउँ छाती तर, एतिक देह ~ ९/१०७।
बढाए १ बडा किया बारे तैं प्रतिपालि ~ बडे भए तन गत्रे तजि कै २२८५। २ बढाकर • हँमत गई सखि भवन आपनै मन आनद ~ २७२९। ३• बढाया है, बढा दी है सूरदास करुना-निधान प्रभु जुग-जुग भक्त ~ १/१३।
बढाने चुका डाले, समाप्त कर दिये : मेघ बरषि जल सबै ~ ८७७।
बढाय १ बढ़ाओ, बडा करो : नारद कह्यौ यही तव पति है याकूँ बेग ~ सारा० ६९५। २ बढ़कर, बढा चढा कर, अतिशयोक्तिपूर्ण • बृन्दाबन निज धाम परम रुचि वर्णन कियो ~ ९९७।
बढायौ १ बढाया, वृद्धि की, किया • अनजाने मन गर्व ~ ११२३। २ बढाया है, किया है काके बल बैर तैं जु राम तैं ~ ९/९७। ३ बढा दिया, उद्वेलित कर दिया थकित भयौ चन्द्रमा सहित मृग, सुधा-समुद्र ~ ११४०।
बढाव बढाती है सूरदास जसुमति ता सुत-हित, मन अभिलाष ~ ७५।
बढावत[1] १. बढाता है, बढाने है • अवलोकत आनद ~ ४१६५। २ बढाते हो, बढा रहे हो • तुम अलि बातनि बैर ~ ३७५९।
बढावत[2] १ बढाते थे क्रम-क्रम बलहिं ~ ३२०१। २ पूर्ण करते हैं जाइ मिलौ कौसल नरेस कौं मन अभिलाष ~ ९/१३३।
बढावति १ बढाती हैं, लगाती हैं यह पुनीत हमहीं अपराधिनि तनु अपराध ~ २०५९। २ बढा रही हो, कर रही हो, करती हो बात कहौ कछु जानि कै बृथा ~ सोर १४६१।
बढावति १ बढाती है • बिनु देखें रिस भाव ~ २४९१। २ करती है यह जिय गर्व ~ १०७९। ३ बढाती हो कतहि ~ रारि १६१८।
बढावन १ बढाने के लिए • हेतु जुवती सुख ~, कियौ पूरन रास ११५५। २ बढाने, वृद्धि करने : लागे नेह ~ ३३६७।
बढावहु बढाओ • जनि बल बाधि ~ छीति २७७५।
बढ़ावैं बढाते हे, बढा रहे ह माँगि खात आनद ~ १६०७।
बढ़ावै १ भरी हुई थी : कछु हरषै कछु दुख करै मन मौज ~ २०४४। २ बढाता है, परिमाण मे अधिक करता है सिन्धु न सलिल ~ १/१६३। ३ बढाना चाहिए, बढाये : क्रम-क्रम करि यह ध्यान ~ ३/१३। ४ विस्तार करे, बढाये •

तुव प्रताप परली दिसि पहुँच्यौ कौन ~ बात ९/१०४ ।
बढ़ि बढकर . निसि वासर ~ प्रेम सवाई ३९७० । ~ बढ़ि बढ बढकर . कहन लगीं अब ~ — बात ३५५ ।
बढ़िगो चला गया है, निकल गया है • अब रथ देखि परत न धूरि दूरि ~ स्याम-सुंदर सा० ल० ३६ ।
बढ़िहैं बढेंगे, मात्रा मे अधिक हो जायेंगे : अरपौ बलि मोकौं सबै ~ बछ गाइ परि० १/४४ ।
बढ़ीं बढी हुई, अगणित : तहँ गैयाँ गनी न जाहिं, तरुनी बच्छ ~ २४ ।
बढ़ी १ बढ गई • सोभा अतिहिं अनूप ~ तब १७५३ । २ बढने लगीं, उठने लगीं • रघुपति-पूरन चद विलोकति मनु पुर-जलधि-तरग ~ ९/१७० ।
बढे बढ गये, तीव्र गति से फैल गये : धर-अबर, दिसि-विदिसि ~ अति सायक किरन-समान ९/१५८ ।
बढ़ें सख्या मे अधिक होंगे : गो सुत ~ अनेक ८२१ ।
बढ़ै १ बढता है अग्यानी सग ~ अग्यान ५/२ । २ बडा हो, सयाना हो : क्यों हू बालक ~ कुसल सों ३६५९ । ३ बढे, लम्बी हो जाय . कजरी कौ पय पियहु लाल, जौ तेरी बेनि ~ १७४ ।
बढ़ैया[1] बडा किया है मोल लियौ कछु दै करि तिनकौं, करि करि जतन ~ २१७ ।
बढैया[2] बढई या लोहार जो लकडी का काम करता है पालनौ अति सुदर गढि ल्याउ रे ~ ४१ ।
बढ़ैहे बढायेंगे . बहु ऐश्वर्य ~ ८६ ।
बढ़ैहे बढ़ायेगा सुनहु सूर रस-छकी राधिका, बातनि बैर ~ १७२४ ।
बढ़ैहौ बढाओगी • मोसौं बैर ~ १५३८ ।
बढ़ौ १ बढी • पुनि वह बेलि ~ कै सूकौ ३८३९ । २. बढ गया • राज सुहाग ~ सबै कहा निहोरो मोहि ४१८८ ।
बढ्यो १ बढ गया • सुमिरत पट कौ कोट ~ १/१६ । २ फैल गया • ~ जस भुव अकास १४६ । ३ बढ सका, उन्नति हो सकी काया नगर बडी गुंजाइस नाहिंन कछु ~ १/६४ ।
बतचल बकवादी, बातूनी, व्यर्थ की बात चीत करने वाला • जानी जात सूर हम इनकी ~ चचल लोल ३८७० ।
बतराति बात करती हो/है : हम जानी अब बात तुम्हारी सूधे नहिं ~ १५०६ ।
बतरानी बात की दीन होइ ~ १३४४ ।
बतरावत बात करेते हुए/करने मे . का मतरात अली ~ सा० ल० ८४ ।
बतरावति बताओ, बतलाती हो मो पर रिस पावति हौ पुनि पुनि, कछु काहुँहिं ~ री १३३४ ।
बतलाइ बतला, बता सो ~ देउ कधौ हमैं ३७५२ ।
बताइ १ बताकर मन आए गए भेद ~ ३२६३ । २ बताओ, बता दो कह्यौ कहाँ सो मोहि ~ ७/२ । ३ बता कोउ देइ ~ ३६७६ ।
बताई १ बताया मारग वह कहि सबनि ~ ८०११ । २ बताई है, निर्देश दिया है यह पूजा मोहि कान्ह ~ ८८६ । २ बता कर, समझा कर, निर्देश देकर : गदा युद्ध दुर्योधन सिखयो नाना भेद ~ मारा० ८३७ । ३ बता : मोको देहु ~ १७३६ ।
बताउ बताओ को करि सकै बराबरि मेरी, सो धौं मोहि ~ १/१४५, ताको नाऊँ ~ २००८ ।
बताए १ बताया, बताते हैं • कर-अँगुरी रघुनाथ ~ ९/१६८ । २. बताता यौं सूरदास-प्रभु बूझत बतियाँ सखियनि सैन ~ ३६५७ ।
बतात बात करते हो, बोल रहे हो : टेढे कहा ~ कम का देहु कमल अब ५८९ ।
बताती बतलाती • जौ वह भली नेकुहू होती तो मिलि सखनि ~ १३१५ ।
बतानी १ बोली, आवाज दी • नद महर घर के पिछवारे राधा आइ ~ १९८१ । २ बात दिखाई दे रही है . 'सूर' आजु यह नई ~ २१५७ ।
बताने बात करते हैं • वह गरजति ये हरें ~ १३१० ।
बतायौ बताया है, बता दिया है निगमनि भेद ~ १/१८८ ।
बतावत १ बताते हैं : अवधि ~ लामी ३६२९ । २ बतलाती है, उत्तर देती है • मातु-पिता गुरुजन पूछत कछु और और ~ १६३० । ३ बतलाते हो, उपदेश देते हो सुर पूजा अरु तीर्थ ~ ८२९८ । ४ बतलाये दे रहा है इहि ब्रज यह अवतार ~ ४५० । ५ बताता जहँ-जहँ जाउँ डर लागत, डगर ~ नाहिं ११०४ ।
बतावति १ कहती या बताती है कबहुँ कहति वन गए, कबहुँ कहि घरहिं ~ ५८९ । २ बताती हो, कहती हो : गुन नहिं ताहि बतावहु जेहि हृदय ~ २४१७ ।
बतावन कह रहे हैं बान सुधौ हम ~ आपु उठति पुकारि १५५५ ।
बतावहु १ बताओ, बता दो मग तु ओपर हमैं ~ ३७८८ । २ बतलाते हो : जो तुम हिन की बात ~ ४०९४ ।
बतावैं बतलाते हैं पूजा-विधि गिरिराज की नँदलाल ~ परि० १/४५ ।
बतावे १ बतलाता है लागै धरम ~ अधरम, बाकी मति रही १/१८५ । २ बतावें, बतलावें, बतला सकती है अमृत कहा अमृत गुन प्रगटै सो हम कहा ~ २०६६ । ३ बतावे, निर्देश दे मारग कौन ~ ३७३३ ।

बतावौं बताऊँगा फदा फासि ~ जौ १५८३।
बतावौ १. बतलाओ या की मोहि ~ सींवा १/२२६। २ बतलाते हमसौं क्यौं न ~ ताहि ६/४।
बतास-कला ववडर बनकर कोउ लै जात ~ रे ६०८।
बताही बताऊँ बेकाज कासौं ~ २२४०।
बतिअन बातों से, कोरा उपदेश देकर ~ मव कोऊ समुझावै ३३८१।
बतिआ बात, दीन वचन सूरदास ~ कहि दैहौं जासौं हा हा खाइ, परि० १/१९।
बतियनि बातो मे (ऊधौ) इन ~ कैसे मन दीजै ३७१७।
बतियाँ[1] बातें, वचन, वाक्य ऊधौ कमलनैन की ~ ३८४७।
बतियाँ[2] बत्ती कहत बनाइ दीप की ~ कैसें धौ तम नासत २/२५।
बतीस बत्तीस द्वै पकविंब ~ वज्रकन २११०।
बतैयै १ बतलाइए, समझाइए जिहिं उपदेस मिलें हरि हमकौ सो व्रत नेम ~ ३६९२। २ बताया जाता है, उपदेश दिया है. मोहन सौं वर कुविजा पायौ हमकौं जोग ~ ३९०८।
बतैहै बतायेंगे, उत्तर देंगे, अस्वीकार करेंगे खायौं खेल्यौ सग हमारैं, ताकौ कहा ~ ४०८७।
बतैहौ बताऊँगी. छाँडि सकुच सब चिन्ह ~ परि० १/२०।
बत्याइ बात करता है, बात कर रहा है सूर सखा सग सबै बुलावहु, हलधर तहीं ~ १९७९।
बत्यानी बात कर रही थीं. तबै आजु अनमनी ~ २४२९।
बत्यावई बातचीत करती हैं • मुख-मुख जोरि ~ मिसुताई ठानै ७२।
बत्स बछडे धरे ~ कौ रूप ४१०।
बत्सल स्नेह रखने वाले • भक्त ~ कृपानाथ असरन-सरन १/११९।
बत्सला प्यारे, स्नेह भाव रखने वाले. गाइ गाउँ के ~ मेरे आदि सहाई १/२३८।
बत्सासुर कस का अनुचर एक राक्षस जो श्री कृष्ण द्वारा मारा गया था : वृषभासुर ~ मार्यौ ५०८।
बदत १ कहते हैं, वर्णन करते हैं सूत मागध ~ बिरदनि ३१४१। २ कहता है. काम अवतार लियौ ~ यह बात जग ४१८९। ३. समझते, गिनती मे लाते, महत्त्व देते ~ हमकौं नैकु नाहीं २३४८। ४ समझता : राम कृष्न बल ~ न काहू ४०३०। ५ कहे जाते हैं : नेव अक्रूर ~ बदी तुम ३६२७। ६ बोलते, शब्द करते : मधुर सकल खग कहुक ~ हैं ३५४८। △ ~ **न काहुहि** किसी को को कुछ नहीं समझते अर्थात् सबको तुच्छ समझते हैं. याकैं बल हम ~ — ४३३। △ ~ **न काहूँ** किसी से नहीं डरता हूँ : तुम प्रताप बल ~ — १/१७०। ~ **परस्पर होड** एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करती हैं/कर रही हैं अरुन अधर-नासिका-निकाई ~ — १८२१।
बदति १ कहती है, समझती है : हमहिं मूरख ~ १७३०। २ कहती हैं : देखि रहिं मेष अति प्रेम नर नारि सब, ~ तजि भीर रनि-रीति-राती ३०७१। ३. बोलती हो, कहती हो • बृथा ~ सजनी बेकाजैं ३८८३। △ ~ **धन्य सुहाग** अपने सौभाग्य को धन्य समझती है, अपने को सौभाग्यशालिनी समझती है : नागरि ~ — १०८१।
बदन[1] १ मुख : ~ उघारि दिखायौ त्रिभुवन २५३। २. मुख से सो ब्रह्माड पुराण व्यास मुनि कियौ ~ उच्चार सारा० १५२। मुख मे : बरबस ही बैठारि गोद मैं धारैं ~ निचोवै ३४७। ~ **चहूँ मुख देखूँ** . इहिं मिस सूर स्याम ~ — २९५।
बदन[2] शरीर : बक कौ ~ बिदार्यो ३८६४।
बदन-इंदु मुख-चद्र, चद्रमा के समान मुख : ~ पय-पान करन कौं २९८।
बदन-बिधु मुख चद्र : मेटहु त्रास दिखाइ ~ २७५२।
बदन-सरोज मुख कमल को, कमल के समान मुख को जाकैं ~ निरखत आस सिगरी भरी ३०२।
बदनारबिंद मुख कमल • इहिं बिधि ~ जसुमति जिय भावै ३०१।
बदनि बदनी, मुख वाली कमल ~ कुम्हिलानी ४१३७।
बदनियाँ छोटा मुख, मुखडा : निरखति ब्रज-जुवती सब ठाडीं, नद सुवन छबि, चद ~ १०६।
बदरनि बादलों : स्रमजल बुद कहूँ-कहुँ उडगन, ~ मैं निकरे २४७०।
बदरा बादल, मेघ ब्रज पर ~ आये गाजन ३३०२।
बदरिका बदरिकाश्रम, हिमालय पर स्थित वैष्णवों का एक श्रेष्ठ तीर्थ कहत पठन ~ ३/३।
बदरिकासरम दे० बदरिका ~ दोउ मिलि आइ ३/५।
बदरिया बदली ~ बधन बिरहिनी आई ३३०६।
बदरी[1] बदली : ~ ज्यों ससि बिधे ३८३६।
बदरी[2] बेर : कहि ~ करबीर १०९१।
बदरीबन बदरिकाश्रम : जाउ ~ ३/२।
बदरीकास्रम बद्रीवन मे, बदरिकाश्रम मे : ~ रहे पुनि जाइ ११/३।
बदरौ बादल भी. बरु ए ~ बरषन आए ३३०८।
बदरौला वृषभानु की एक दासी का नाम : नारि ~ वृषभानु घर रखवारि ८३७।
बदलत बदलते है, फीका कर देते हैं : केतकी के अंग सगी, रग ~ जोत सा० ल० ७०।

बदलि विनिमय करके, बदल कर : हरि नग ~ विषय विष आनत १/११४।

बदले १ बदल गये हैं, परिवर्तित हो गये हैं ता दिन ते ऊधौ या ब्रज के सब स्वभाव ~ ३६७४। २ बदले में, स्थान पर, जगह पर ताकैं ~ ताकौं धरो ५/४।

बदलैं १ बदले में कुछ पाने की लालसा के बिन ~ उपकार करै को ८/३। २ बदले में, स्थान पर · ताकं ~ अज-सिर धर्यौ ४/५।

बदलौ १. बदला, प्रतिशोध . ताहि सूल पर सूली दयौ, ताकौ ~ तुमसौं लयौ ३/५। २ बदल लिया है, परिवर्तित कर लिया है : ~ नाम कन्हाई ३६६५।

बदावति समझाती है : लागत पाइ दसौं दिसि मेलति लिये रजनीकर अलिनि ~ परि० १/९२।

बदि निश्चय करके, देकर मदिर अरध अवधि ~ हमसा, हरि अहार चलि जात ३९७६।

बदियौ समझना : तो ~ हमकौं अबै, तुमकौं धरि मॉगै १४८६।

बदिहै मानेगा, मानेंगे : मेरौ प्रगट कह्यो नहिं ~ ब्रज ही देउँ पठाइ ३४१९।

बदिहौं मानूँगा, स्वीकार करूँगा मो सौं पतित उधारौ प्रभु जो, तो ~ निज तात १/१७९।

बदिहौ शर्त लगाओ : अगनि धरे छपाइ जहाँ जो, प्रगट करो सब ~ तौ १५८३।

बदी बदी (निश्चय किया) था · यह तौ नाहिं ~ हम उनसौं १६११। २. बदा है, लगाया है नैननि होड ~ बरसा सौं ४११६।

बदौं (सच्चा) जानूँ, समझूँ, स्वीकार करूँ, मान लूँ : इहँइ रहो तौ ~ कन्हाई १४१९।

बद्यौ १. समझा : जाके गर्व ~ नहिं सुरपति १३९५। २ बदा है, ठाना है, निश्चय किया की है काहे कौ रूसनौ ~ है २८२६।

बधत १ मार डालता है, मारता है जैसें मगन नाद-रस मारँग, ~ बधिक बिन बान १/२६९। २ मारते हुए . तिया ~ टर नाहीं ११११।

बधन क्रि० स० १ हत्या करने, मारने बदरिया ~ बिरहिनी आई ३३०६। पु० वध, हत्या, हनन : कस ~ येइ करिहै ८५।

बधाइ जन्म या मगल अवसर पर होने वाला गाना बजाना . आजु गृह नद महर कें ~ ३३।

बधाए बधाई घर घर होत अनद ~ ३६।

बधाये बधाई प्रथम बसत पञ्चमी शुभ दिन मगल चार ~ सारा १०२४।

बधायौ[1] बधाई, उत्सव, आजु ~ नदराइ कैं, गावहुँ मंगल चार २७।

बधायौ[1] मरवाया है, वध कराया है इनहिं ~ कस ३५८७।

बधावन बधावे, मगल-गीत, पुत्र जन्म या विवाहोत्सव पर गाये जाने वाले गीत . बनि ब्रज-सुदरि चलीं, सु गाइ ~ रे २८।

बधावा बधाई, मगल गीत, मगलाचार : हरषि ~ मन भयौ (हो) रानी जायौ पूत ४०।

बधावै वध जाते है, बध रहे हैं . धनि गोकुल, धनि धनि ब्रज बनिता, निरखत स्याम ~ ३९३।

बधि मार करके, सहार करके, विनष्ट करके : दुष्टनि ~ सतनि कौ सुख दियौ १६०७। ~ **घालत** वध या घात करना है तनक तनक से ग्वाल छोहरनि कस अबहिं ~ — ३०३७।

बधिक कसाई के, शिकारी के : इक लोहा पूजा मैं राखत इक घर ~ परौ १/२२०।

बधिकनि शिकारियों ने, बहेलियों ने चातक मोर कोकिला उहिं बन ~ बधे बिसेषनि ३३१०।

बधिकहि बहेलिये को : चातक क्यौं बन बसत बापुरो ~ कान बचे सौं ३९९६।

बधी मारी, हत्या की सात दिवस मैं ~ पूतना २९२४।

बधु पत्नी : बिपति काल पाटव ~ बन मैं राखी स्याम ढरी १/१६।

बधुअनि स्त्रिया ब्रज ~ मिलि साँट कटीली, कपि ज्यां नाच नचायौ ३६५१।

बधुनि १ स्त्रियों, नव परणीता दुलहिनों गोप ~ की भुजा कध धरि ४२७२। २ स्त्रियों को ते दीनी ~ बुलाइ ऊँसी जाहि बनी २४।

बधु-मधुपिनि स्त्री रूपी मधुकरियों को · निसि दै द्वार कपाट सदल ~ प्यावत परम चैन २५२४।

बधू १ बधूटियों की . मानो इन्द्र ~ जुरी पाँतनि ३०। २ (ब्रज की) स्त्रियाँ · ब्रज ~ सब बिसर अबर ९९१।

बधूनि बधुओं के : ब्रज ~ मन भावनी २८३२।

बधू सुत बधू और सुत (ऊषा और अनिरुद्ध) को . छिन मैं ल्याँनि ~ लैकै आय द्वारका नाथ मारा० ७०२।

बधे मारे, सहार किया . सूरदास प्रभु सबै ~ रन ३२०४।

बधै मारता है जदपि ब्याध ~ मृग २३६१।

बधैया १ बधाई (के अवसर पर), बधाई पर उपहार नाद नाद माँगत सोइ देत हैं ~ ४१। २ बधाई घर-घर बजति ~ १५५।

बधो मारो अवध सुदरी ~ जिन २११७।

बध्यौ मारा, वध किया ~ बालि अभिमानी ९/११५।

बनई बनाई छाँड़ि ~ पारिजातक परि० १/१००।

बनए बनाये थे को बरनै नाना बिधि ब्यजन जे ~ नँद-नारि ८११।

बनक वेश, बाना, श्रृङ्गार : रचि बिरचि तुव ~ बनाई २४३६।
बनकौरा लोनिया, एक घास जिसका साग बनाया जाता है। इसकी पत्तियां चीनी गुलाब की तरह होती हैं, जिनका स्वाद खट्टा होता है · ~ पिटीक चिचिंडी ३९६।
बन-गेही घर बनाने वाली, सदा रहने वाली · सहज माधुरी अंग-अंग प्रति, सहज सदा ~ १९०८।
बनचर जंगली जीव (वानर, भालू, मृग इत्यादि की) दीमति ~ भीर ९/११५।
बनचारी १ वानप्रस्थ . अवध पुरी कौ राज राम दै, लीजै ब्रत ~ ९/३०। २. वनवासी, वन मे घूमने वाले · अनुज घरनि मग भए ~ १९८।
बन-जाति जंगली वनस्पतियां दुहुँ दिसि फूलि रही ~ ११८०।
बनजारिनि वनजारा वर्ग की स्त्री लीन्हे फिरति रूप त्रिभुवन कौ, री नोखौ ~ १४७३।
बन जु बन की · राजति है उर ~ मला परि० २/२८।
बन-झारनि जंगल की झाड़ियों ~ की घर बैठाई १३१७।
बनत १. बनता है . नखत बेद ग्रह जोरि अर्ध करि सोइ ~ अब खात ३९७६। २ बनता : घर तैं निकसत ~ नाहीं लोक लाज लजाउं १४५३। ३ वन पडी ~ न एकौ वीर सा० ल० ८२। △ ~ **नहीं कछु** कुछ काम नहीं बनता/होता प्रगट करौं तौ ~ — २०४७। ~ **नाही परखि** समझ मे नहीं आ पाया · दृष्टि रोमावली पर रही ~ — ६३६।
बनति १ बनती, (कही नहीं) जाती : सोभा कहत ~ नहि मोपै २६६५ २ निभती, पटती, मेल खाती हमरे नौ गोपति-सुत अधिपति ~ न औरनि तैं ३८४२।
बनदाम वनमाला इंद्रधनु नहीं ~ वहु सुमन के २०६१।
बनधातु धातुराग, गेरु या वैसी ही अन्य रंगीन मिट्टी · गुहि गजा घसि ~ २४।
बन-धाम वन प्रदेश मे, कुंज भवन मे सुख करति ~ १०९८।
बन-धामहि वन प्रदेश या कुंज भवन की ओर आतुर चले नात ~ २१५५।
बननि वनो मे फूले ~ सुमन पलास २८५२।
बन-पंक्ति पाँते बनाकर स्याम घटा ~ अपार १२०२।
बन-पत्र एक वाद्य यंत्र किनहुँ सृंग कोउ वेनु किनहुँ ~ बजाये १६१८।
बन बास वनवास, जंगल मे निवास हारि सकल भंडार-भूमि आपुन ~ लह्यो १/२४७।
बनबासी वनवासी, जंगल मे निवास करने वाले आवत नहीं नंद मंदिर मैं भयौ फिरत ~ ४०९१।
बन बिथिन जंगल की गलियो मे बगरि गईं गैयाँ ~ ५००।
बन-बिलास वन के आनंद/सुख ~ ब्रजबास, रास सुख देखि देखि सुचि पावत ४०२६।
बन बिस्राम वनवास . राज छाँडि लियौ ~ ५/४।
बन-बिहारी १ वन मे विहार करने वाले अर्थात् श्याम होस जनि मनि करो ~ ३०४७। २. श्याम से · सुदरि मिलीं बन जाइ कै ~ १००९।
बन-वृष-चारी वन मे बैल चराने वाले : सुरभि रेनु तन, भस्म विभूषित, वृष-वाहन ~ १७१।
बन-बेली १ वन की लताएँ ~ प्रफुलित कलिनी कहर के ३०। २ वन की लताओं से बूझति ~ स्याम को न पावे ११००।
बनमाल दे० वनमाला · मुकुट सिर धरैं ~ कौस्तुभ गरे ४/१०।
बनमाला तुलसी, कुंद, मदार, पारिजात और कमल इन पाँच पौधौ की पत्तियों व फूलो से बनाई गई लम्बी माला सोहै ~ अद्भुत अति ७।
बनमाला धर वनमाला धारण करने वाले विष्णु, कृष्ण कबु-कंठ धर, कोस्तुभ-मनि धर, ~ मुक्त माल-धर ५७२।
बनमाली वनमाला धारण करने वाले कृष्ण, तातै तरकि कह्यौ ~ परि० १/२९।
बनराइ[1] जंगल का राजा ऊँचे बैठि बिहग सभा मैं सुक ~ कहायौ ४१४१।
बनराइ[2] तोता : जुगल खंजन लरत अनिनति बीच कियौ ~ २२५।
बनराई वृक्षो पर . तमचुर खग-रोर सुनहु, बोलत ~ २०२।
बनराज जंगल का राजा, सिंह, शेर . उर निरखि चकवाक बियके कटि निरखि ~ १७१५।
बन-रिपु-रिपु वन की शत्रु (दावाग्नि) उसका शत्रु, जल (कृष्ण के नीले शरीर) ~ मैं देत दिखाई १८६८।
बनवारि १ वनवारी, वनमाली, श्री कृष्ण : ह्यॉ नहीं ~ ११८। २ श्री कृष्ण से बिमुखनि तै मैं कब धौ छूटौं कब मिलिहो ~ १९२६।
बनवारी १ वनमाली, श्री कृष्ण भगन-हेत प्रगटे ~ ३९१। २ श्री कृष्ण की जे जन सरन भजे ~ १/२२।
बन विहग जंगली पक्षी ~ भये योगी सारा० ५७०।
बनहि १ वन को ~ सिधाये ३/१३। २ वन के नदी, डोंगर ~ पात पाता १९७१। ३ जंगल मे खेलत ~ लुकाने ४१३२।
बनही जंगल मे ही आवहु वेगि चलौ घर जैऐ ~ होत अँध्यारौ ५०५। ~ **बन** वन ही वन, वन के अंदर से ही इक तौ ~ — चले एक जमुना तट भीर ८४१।
बनहुँ वन (मे) भी : धरनि अकास ~ तैं आए २४३४।
बनहूँ वन (मे) भी अंग अंग उलटे आभूषन ~ मैं तुम पावत २६३३।

बनाइ क्रि० स० १. बना कर, रच कर, तैयार करके : मधु-मेवा पकवान मिठाई व्यंजन बहुत ~ ८२५। २. गढ़ गढ़ कर : सूर स्याम हँसि हँसि जुवतिन सों ऐसी कहति ~ १६१४। ३. लगाकर : तिलक ~ चले स्वामी हैं १/५२। ४. सोच-विचार कर : उपमा काहि देउँ को लायक देखी बहुत ~ २२०५। ५ बना : सुरत नैन तिन दिए ~ ९/३। ६ बनाये, करे : छूटत नहीं गुन औगुन जाको काहूँ जतन ~ ३९९९। ७ बनाई थी एक दिवस बेनी बृंदावन गथि पनि विबिर ~ ३६६५। ८ बनवा बनवाकर : तब व्रज लोगनि नंद जू धाने बसन ~ २७। क्रि० वि० १ भली-भाँति कसकर : द्वार कपाट दियौ गाढ़ें करि कर आपन ~ २५२६। २ अधिक देर तक : काहू क निसि बसत ~ २४७५।

बनाइयै श्रृंगार कीजिए, सजाइए छूटे चिहुर बदन कुम्हिलानो, सुहथ सँवारि ~ २५७०।

बनाई १. लगा लिये तन सुमिरन-छल दुर्मर के हित माला तिलक ~ १/२०७। २ बनाया : बृंदा बिपिन बिसद तट सुचि ज्यौनार ~ ४१६। ३ सजा ली : मरद कुहू निमि जानि दीप मालिका ~ ८४१। ४ सँवार लिए चंदन बहुरि आनि कुबिजा मिली स्याम अंग लेप कीन्हौं ~ ३०४७। ५ गढ़ कर, कल्पना कर, झूठी कहत नहिं बात ~ ३०९०। ६. बनाया है : रचि बिरंचि तुव बनक ~ २४३६। ७ बना तन मय दीन्हो कोट ~ ७/७।

बनाउ क्रि०स० बनाओ, बना लो : ताको तू निज बज्र ~ ६/५। पुं० बनाव, श्रृंगार धर सुत महज ~ किये परि० १/९६। वि० बनावटी नागरि नारि भले समके जी तेरो बचन ~ ३६१८।

बनाऊँ १ बना लूँ जो हरि कौ दरसन पाऊँ आभूषन अंग ~ २१०६। २ लगाऊँ, तैयार करूँ चंदन अगर कपूर अरगजा प्रभु क खोरि ~ २१०६। ३ धारण कर लूँ, सजाऊँ बेनी सीस फल पहिरो तुम में सिर मुकुट ~ २१४०। ४ बनाता हूँ : एक चरित ~ २१४५।

बनाए १ बनाया : कौरव पासा कपट ~ १/२४६। २ गढ़ लिया है : तिहिं मुख स्याम कहत ऐसे यह तो तुमहिं ~ ३८७२। ३ बनाये गये हैं : नगनि जटित मनि-सम ~ ०/७५। ४ बनाने से : कर लौं चले कपट की नातो 'सूर' सनेह ~ ३८६२। ६ रचाया था, किया था कन बनवास ~ ३५३७।

बनाय १ बनाकर : सांख्य योग अरु ज्ञान भक्ति दृढ़ बरनो विविध ~ सारा० ५५। २ बना (दिया) : ऐसो ~ नख-सिख प्रिया ~ सारा० ९७६।

बनायो १. बनाया : जिन यह ऐसो भवन ~ ०/३। २ बनाए : फेरि राम मढ़ली ~ १२७९। ३ गढ़ लिया, बना लिया सूर स्याम यह उत्तर ~ २८०। ४ बनाने से उत्तर न स्वाग ~ ३९७४। वि० सुसज्जित, बनाया हुआ निकस्यो रथ बहु रतन ~ ९/१४१।

बनाव युक्ति, उपाय : पूछ्यो ज्ञान कह्यौ सो सब हरि तत्त्व विधान ~ सारा० ९७।

बनावत १ बनाते हैं : आपु ~ आपुहिं भाजै १६०८। बनाते हो गढ़ते हो : काहे को हौ बात ~ २७१९।

बनावति १ बनाती है, लगाती है हरषि स्याम सिर तिलक ~ ९५८। २. श्रृंगार करती हैं जद्यपि भूषन अंग ~ ३६२३।

बनावति १ बनाती है, सजाता है हृदय बनमाला ~ २१३९। २ लगा रहा है : कोउ कसरि कौ तिलक ~ २५। ३ सोचती है : तब इक बुद्धि ~ १६३२। ४ बनाती हो, गढ़ती हो बात कहा ~ सोमा २०१२। △ ~ बात बात गढ़ती हो, सत्य बात को छिपा कर झूठ बात कहती हो ऐसो नाहि अचगरो मेरो कहा ~ — २९०।

बनावन पुं० १ रचना बैसेइ ग्वाल गोप गोपी सब जैसोइ भय ~ ३४७६। २ गढ़ने : आइ सो मन बात ~ २७५५। क्रि० वि० लगाने के लिए कनक थार रोचन-दधि तिलक ~ रे २८।

बनावनि बनावट है, बना हुइ है पँच रँग पाट कनक मिलि टोगी अतिही सुघर ~ २८३२।

बनावहि सजाती हैं नाक उरहि ~ हार १००२।

बनावहु बनाओ, सजाओ बल समेत तन कुसल सूर प्रभु, आए हैं आरती ~ ४१८७।

बनावै १ बनाता है कायर काम ~ १/८६। २ बनाता है दर दर लोभ लागि लिये डोलनि नाना स्वाँग ~ १/४२। ३ गढ़ती है : सखि ज्वाब ~ २०४४। ४. बनावे : (कभी) जो कोउ यह तन फेरि ~ ३८०७। ५ धारण करे कुबरी कंस सुमन गहि गारे सो क्यों ~ ३६५६।

बनि १ बन कर : तिनि को रूप बर्नौ ~ आवति ३६९०। २. बन ठन कर, सज सँवर कर : ~ ब्रज-सुंदरि चलीं सु गाए बधावन रे २८। ~ आइहै बन पटेगा : तब न कछु ~ — १६१८। △ ~ बनि सज-सँवर कर, बन ठन कर ~ — आवत है मेरे लालन २२१४। △ ~ आई बन पड़ती है, हो सकता है : जोग ध्यान को बात कहौ तुमहीं पै ~ —

बनक वेश, बाना, शृङ्गार : रचि बिरचि तुव ~ बनाई २४३६ ।
बनकौरा लोनिया, एक घास जिसका साग बनाया जाता है। इसकी पत्तिया चीनी गुलाब की तरह होती हैं, जिनका स्वाद खट्टा होता है ~ पिटीक चिचिडी ३९६ ।
बन-गेही घर बनाने वाली, सदा रहने वाली : सहज माधुरी अग-अग गति, सह सदा ~ १९०८ ।
बनचर जगली जीव (वानर, भालू, मृग इत्यादि की) दीसति ~ भीर ९/११५ ।
बनचारी १ वानप्रस्थ अवध पुरी को राज राम दै, लीजै ब्रत ~ ९/३० । २ वनवासी, वन मे घूमने वाले • अनुज घरनि सग भए ~ १९८ ।
बन-जाति जगली वनस्पतिया दुहुँ दिसि फूलि रही ~ ११८० ।
बनजारिनि वनजारा वर्ग की स्त्री लीन्हे फिरति रूप त्रिभुवन कौ, री नोखौ ~ १४७३ ।
बन जु बन की राजति है उर ~ मला परि० २/२८ ।
बन-झारनि जगल की झाडियों ~ की घर बैठाई १३१७ ।
बनत १ बनता है . नखत वेद ग्रह जोरि अर्ध करि सोइ ~ अब खात ३९७६ । २ बनता : घर तैं निकसत ~ नाहीं लोक लाज लजाउँ १४५३ । ३ वन पडी ~ न एकौ बीर सा० ल० ८२ । △ ~ **नहीं कछु** कुछ काम नहीं बनता/होता प्रगट करौ तौ ~ — २०४७ । ~ **नाहीं परखि** समझ मे नहीं आ पाया • दृष्टि रोमावली पर रही ~ — ६३६ ।
बनति १ बनती, (कही नही) जाती : सोभा कहत ~ नहिं मोपै २६६५ २ निभती, पटती, मेल खाती हमरे तौ गोपति-सुत अधिपति ~ न औरनि तैं ३८४२ ।
बनदाम वनमाला इद्रधनु नहीं ~ बहु सुमन के २०६१ ।
बनधातु धातुराग, गेरू या वैसी ही अन्य रगीन मिट्टी गुहि गुंजा घसि ~ २४ ।
बन-धाम वन प्रदेश मे, कुज भवन मे सुख करति ~ १०९८ ।
बन-धामहि वन प्रदेश या कुज भवन की ओर आतुर चले जात ~ २१५५ ।
बननि वनो मे . फूले ~ सुमन पलास २८५२ ।
बन-पंक्ति पाँते बनाकर स्याम घटा ~ अपार १२०२ ।
बन-पत्र एक वाद्य यत्र किनहुँ सृग कोउ वेनु किनहुँ ~ बजाये १६१८ ।
बन-बास वनवास, जगल मे निवास हारि मकल भडार-भूमि आपुन ~ लह्यो १/२४७ ।
बनबासी वनवासी, जगल मे निवास करने वाले आवत नहीं नद मदिर मैं भयौ फिरत ~ ४०९१ ।
बन बिथिन जगल की गलियों मे बगरि गई गैयाँ ~ ५०० ।
बन-बिलास वन के आनद/सुख • ~ ब्रजवास, रास सुख देखि देखि सुचि पावत ४०२६ ।
बन बिस्राम वनवास राज छाँडि लियौ ~ ५/४ ।
बन-बिहारी १ वन मे विहार करने वाले अर्थात् श्याम हौस जनि मनि करौ ~ ३०४७ । २ श्याम से सुदरि मिलीं बन जाइ कै ~ १००९ ।
बन बृष-चारी वन मे बैल चराने वाले : सुरभि रेनु तन, भस्म विभूषित, वृष-वाहन ~ १७१ ।
बन-बेली १ वन की लताएँ ~ प्रफुलित कलिनी कहर के ३० । २ वन की लताओं से बूझनि ~ स्याम कौ न पावे ११२० ।
बनमाल दे० वनमाला मुकुट सिर धरैं ~ कौस्तुभ गरै ४/१० ।
बनमाला तुलसी, कुद, मदार, पारिजात और कमल इन पाँच पौधों की पत्तियो व फूलो से बनाई गई लम्बी माला • सोहै ~ अद्भुत अति ७ ।
बनमाला धर वनमाला धारण करने वाले विष्णु, कृष्ण कबु-कठ धर, कौस्तुभ-मनि धर, ~ मुक्त माल-धर ५७२ ।
बनमाली वनमाला धारण करने वाले कृष्ण तातै तरकि कह्यौ ~ परि० १/२९ ।
बनराइ[1] जगल का राजा ऊँचे बैठि बिहग सभा मैं सुक ~ कहायौ ४१४१ ।
बनराइ[2] तोता : जुगल खजन लरत अविनति बीच कियौ ~ २२५ ।
बनराई वृक्षो पर तमचुर खग-रोर सुनहु, बोलत ~ २०२ ।
बनराज जगल का राजा, सिंह, शेर . उर निरखि चकवाक बिथके कटि निरखि ~ १७१५ ।
बन-रिपु-रिपु वन की शत्रु (दावाग्नि) उसका शत्रु, जल (कृष्ण के नीले शरीर) ~ मैं देत दिखाई १८६८ ।
बनवारि १ वनवारी, वनमाली, श्री कृष्ण . ह्याँ नहीं ~ ११८ । २ श्री कृष्ण मे बिमुखनि तें मैं कब धौ छूटौं कब मिलिहौं ~ १९२६ ।
बनवारी १ वनमाली, श्री कृष्ण भगन-हेत प्रगटे ~ ३९१ । २ श्री कृष्ण की जे जन सरन भजे ~ १/२२ ।
बन बिहग जगली पक्षी ~ भये योगी सारा० ५७० ।
बनहिं १ वन को ~ सिधाये ३/१३ । २ वन के • नदी, डोगर ~ पात पाता १९७१ । ३ जगल मे खेलत ~ लुकाने ४१३२ ।
बनही जगल मे ही आवहु बेगि चलौ घर जैऐ ~ होत अँध्यारौ ५०५ । ~ **बन** वन ही वन, वन के अदर से ही इक तौ ~ — चले एक जमुना तट भीर ८४१ ।
बनहुँ वन (से) भी धरनि अकास ~ तैं आए २४३४ ।
बनहूँ वन (मे) भी • अग अग उलटे आभूषन ~ मैं तुम पावत २६३३ ।

बनाइ क्रि० स० १ बना कर, रच कर, तैयार करके · मधु-मेवा-पकवान मिठाई व्यंजन बहुत ~ ८०५। २ गढ़ गढ़ कर . सूर स्याम हँसि हँसि जुवतिन सों ऐसी कहति ~ १६१४। ३ लगाकर . तिलक ~ चले स्वामी है १/५२। ४ सोच-विचार कर उपमा काहि देउँ को लायक देखी बहुत ~ २२०५। ५ बना . तुरत नत्र नित दिए ~ ९/३। ६ बनाये, करे छूटत नहीं गुन औगुन जाको काहूँ जतन ~ ३९९१। ७ बनाए वी एक दिवस वेनी वृदावन रचि पचि विविध ~ ३६६५। ८ बनवा बनवाकर . तब ब्रज लोगनि नंद जू दानें बसन ~ २७। क्रि० वि० १ भली भांति कसकर . द्वार कपाट दियौ गाढ़ करि कर आपन ~ २५२६। २ अधिक देर तक : काहू के निसि बसत ~ २४७५।

बनाइय शृंगार कीजिए, सजाइए छूटे चिहुर बदन कुम्हिलानो, सुहथ सँवारि ~ २५७०।

बनाई १. लगा लिये तब सुमिरन बल हृदय के हित माला तिलक ~ १/२०७। २ बनाया वृंदा बिपिन बिमद तट सुचि स्थानाग ~ ४१६। ३ सजा ली सरद कुहू निसि जानि दीप मालिका ~ ८४२। ४ मँगा लिए चंदन बहुरि आनि कुबिजा मिली स्याम अंग लेप कीन्हों ~ ३०४७। ५ गढ़ कर, कल्पना कर, झूठी कहत नहिं बात ~ ३०९०। ६. बनाया है : रवि विरंचि तुन बनक ~ २४३६। ७ बना तब मय कीन्हो कोट ~ ७/७।

बनाउ क्रि०स० बनाओ, बना लो ताको तू निज पत्र ~ ६/५। पु० बनाव, शृंगार धर सुत सहज ~ किये परि० २/९६। वि० बनावटी नागरि नारि भलें समक जी तेरो बचन ~ ३६१८।

बनाऊँ १ बना लूँ जो हरि को दरसन पाऊँ आभूषन अग ~ २१०६। २ लगाऊँ, तैयार करूँ चंदन अगर कपूर आपको प्रभु के सोरि ~ २१०६। ३ धारण कर लूँ, सजाऊँ नैना नीन फूल पहिरौ तुम में सिर मुकुट ~ २१४०। ४ बनाता हूँ एक चरित ~ २१४५।

बनाए १ बनाया कोन्ह पासा कपट ~ १/२३६। २ गढ़ लिया है तिहिं सुत स्याम कहगे ऐसे यह तो तुमहिं ~ ३८७२। ३ बनाये गये हैं नगनि जटित मनि खंभ ~ ०/७५। ४ बनाने से कन लों चले कपट को नातो 'सूर' सनेह ~ ३/६२। ६ रचाया था, किया था कत बनवास ~ ३५३७।

बनाय १ बनाकर साख्य योग अरु ज्ञान भक्ति दृढ़ बरनी बिबिध ~ सारा० ५५। २ बना (दिया) दियो ~ नगर गोपुर मे सारा० ७८०।

बनायो बना दिया, सँवार दिया रच्यौ शृंगार स्याम अपने कर नख-सिख प्रिया ~ सारा० ९७६।

बनायौ १ बनाया किन यह ऐसो भवन ~ ०/३। २ बनाए फेरि राम मढ़ली ~ ११७०। ३ गढ़ लिया, बना लिया सूर स्याम यह उत्तर ~ २८०। ४ बनाने से बनत न स्वांग ~ ३९७४। वि० सुसज्जित, बनाया हुआ · निकस्यौ रथ बहु रतन ~ ९/१४१।

बनाव युक्ति, उपाय पूछ्यो ज्ञान कह्यो सो सब हरि तत्त्व विधान ~ सारा० ९७।

बनावत १ बनाते हैं आपु ~ आपुहिं माने १६०८। बनाते हो गढ़ते हो काहे को हो बात ~ २४१०।

बनवति १ बनाती है, लगाती है . हरषि स्याम-सिर तिलक ~ ९५८। २. शृङ्गार करती हैं जद्यपि भूषन अग ~ ३६२३।

बनावति १ बनाती है, सजाती है हृदय बनमाला ~ २१३९। २ लगा रही है कोउ केसरि कौ तिलक ~ २५। ३ सोचती है · तब इक बुद्धि ~ १६३२। ४ बनाती हो, गढ़ती हो बात कहा ~ सोमा २०१२। △ ~ **बात** बात गढ़ती हो, सत्य बात को छिपा कर झूठ बात कहती हो ऐसो नाहिं अचगरी मेरी कहा ~ — २९०।

बनावन पु० १ रचना बिसेष ग्वाल गोप गोपी सब रैसोइ भेष ~ ३४७६। २ गढ़ने आइ सो मन बात ~ २७१५। क्रि० वि० लगाने के लिए कनक थार रोचन-दधि तिलक ~ २२८।

बनावनि बनावट है, बनी हुई है पँच रँग पाट कनक मिलि टोगी अतिही सुघर ~ २८३२।

बनावहिं सजाती है ताकी उरहिं ~ हार १२०२।

बनावहु बनाओ, सजाओ बल समेत नन कुसल सूर प्रभु, आए है आरती ~ ४१८०।

बनावै १ बनाता है कायर काम ~ १/८६। २ बनाता है दर दर लोभ लागि लिये टोलनि नाना स्वाँग ~ १/४२। ३ गढ़ती है · सखि ज्वाब ~ २०४४। ४ बनावे (ऊपर) जो कोउ यह तन फेरि ~ ३८०७। ५ धारण करे कुवरी कंस सुमन गहि राखे सो क्या जदा ~ ३६५६।

बनि १ बन कर निसि कौ रूप बकी ~ आवति ३६२०। २ बन ठन कर, सज सँवर कर · ~ ब्रज-सुंदरि चली सु गाइ बधावन रे २८। ~ आइहै बन पड़ेगा · तब न कछु ~ — १६१८। △ ~ **बनि** सज-सँवर कर, बन ठन कर ~ — आवत हैं मेरे लालन २२१४। △ ~ **आई** बन पड़ती है, हो सकती है . जोग ग्यान की बाते ऊधो तुमहीं पै ~ — ३७०४। ~ **आई** सोचा है, निश्चय कर लिया है अब तो जिय ऐसी ~ — १६५८। ~ **आया** हो सका नहिं

~ — जो हम ठाटौ ३७३३ । ~ आवत बन पड़ता है हरि हीं पै ऐसी ~ — ४००० । ~ आवै १ बनने लगा : बातनि क्यौं ~ — ४०३१ । २. बनती है : देखैं ~ — अग छबि ११११८ । ~ ऐहैं बनेगा, बन पड़ेगा : सखि बिनु मिले नाहिं ~ — २७७५ । ~ जाइ बनेगी : उचित अपनी कृपा करिहौ तबै तौ ~ — १/१२६ ।

बनिज वाणिज्य, व्यापार . सूरदास तिहिं ~ कौन गुन ३७९१ ।

बनिजति व्यापार करती (हो) : सायक, चाप, तुरग ~ हौ १५४९ ।

बनिजारिनि वनजारिन, घूम घूम कर क्रय-विक्रय करने वाली : हम भई ~ आपुन भए दानी कुवर कन्हाई १५६७ ।

बनिठनि बन ठन कर, सज सँवर कर : ~ बैठे राधा रवन २१७७ ।

बनितनि १ स्त्रियो • ब्रज ~ कों जोग सिखावत ३६८७ । २ स्त्रियों को सब ब्रज ~ ढूँढि कै ३१५५ । ३ स्त्रियों के • वे अब देखे ~ आगैं २९१६ ।

बनिता १. स्त्रियाँ : तुव बिनु कुँवर कोटि ~ तजि ४२५२ । २. स्त्री सुत सतान स्वजन ~ १/५० । ३ नारियों ने • ब्रज ~ उर लाइ गही री २९ । ४ स्त्री/नवेली से . आवत देखि आनि ~ रत २५३२ । ५ स्त्री/नवेली ने जिहिं ~ रस बस कीन्हे २७३४ ।

बनितानि स्त्रियों के, पत्नियों के सुर ~ सग सब आवत ४१६७ ।

बनियाँ बनता है . गुन गावत नाहिं ~ १४५ ।

बनिया बनता . सो छबि कहत न ~ २३८ ।

बनिहै बनेगा • सूर स्याम कछु करत न ~ १४७९ ।

बनी १ बनी है, मिली है, मिल गई है स्याम ~ अब जोरी नीका १५८० । २. सुशोभित है, सजी हुई है : ~ मोतिनि की माल मनोहर १७५८ । ३ सुशोभित थी नासिका ललित ~ बेसरि अधर तट १०४१ । ४ बनेगी, निभेगी : ~ तिहारी उनकी ऊधौ ३६४९ । ५ रची गई/हुई : एहि थर ~ क्रीडा गज मोचन १/६ । ~ चहुँपास चारो ओर सजी खडी थीं ~ • — सब गोप कन्या १०५२ ।

बने १ बनता है देखैं ~ कहत रसना सौ ३५६० । २ बने या सजे हैं : आजु ~ नवरग छबीले २६४६ । ३ बन गये, हो गये • ~ षट-दस सहस कृष्ण-सन्या १०५२ । ४ अच्छे हैं, स्वादिष्ट हैं मिलि बैठे सब जेवन लागे बहुत ~ कहि पाक ४६४ । ५ सुशोभित हैं ~ बिसाल कमल दल नैन १७७६ । ६ सजकर, सजे हुए, बन कर : कोउ ~ आवै बीर जोटा ३०४८ । ~ बनाए बन ठन कर, सज सँवर कर, तैयार हो कर सब ~ — ३०४२ ।

बनैं बनाकर • जैसैंही जो कहै कोऊ ~ तैसें भेष ४२५९ ।

बनै[1] १ बनता : छाँडे ~ न खात ३७३९ । २ बना कर : जिनि बिनु स्याम रहत नाहिं नैंकहुँ कीन्ही ~ सुहागिनि २४०६ । ३ बने, सम्भव हो : माई री कैसैं ~ हरि कौ ब्रज आवन ४२६१ । ४ बनता था : जात न ~ देखि सुर हरि कौ १०४५ । ५ बनेगा, पडेगा : ~ धनुष तोरैं अब तुमकौं ३०४९ । ६ बन सकती, सँवर सकती मन बिनु बात न कछू ~ ३८०३ ।

बनै[2] १ कल्याण है, भलाई है : पुहुप वेगि पठऐ ~ ५८९ । २ ठीक है, उचित है, सम्भव है जो तुम बूझहु व्यथा हमारो कहे ~ तुम आगैं ३७६५ । ~ नाचैं नाचते ही बनेगा • सूर प्रभु अब ~ — काछ्रु जैसी तुम कछ्यौ २८१० ।

बनैगी बनेगी, लगेगी : जोरी भली ~ हरि सौ १९६१ । कहै ~ बताना ही पड़ेगा अब तौ — ~ माइ २५३१ ।

बनैगौ बनेगा भलौ ~ दाउँ ३४१८ ।

बनैत बान चलाने वाला • बरन बरन बादर ~ अरु दामिनि कर करवार ४१६२ ।

बनैया बनाने वाला, गढने वाला : सीतल चदन कटाउ, धरि खराद रग लाउ, बिबिध चौकरी बनाउ धाउ रे ~ ४१ ।

बनैहै सुशोभित होगा • सारग रिपु सीस ~ सा० ल० ९७ ।

बनोवास वन मे निवास करने : ~ कौं चले सिया सँग सारा० २४३ ।

बन्यौ १ बना है, बन पडा है • सूरज स्याम ~ अति बानक २००४ । २ अच्छा लगता है : सबै सिंगार ~ जोबन पर २७६४ । ३ बना, हुआ : भलौ ~ सजोग ४३७ । ४ बना हुआ है हार बिनु-गुन ~ २७३० । ४ सयोग हुआ, मन मिल गया कहाँ रहे कासौं ~ तहँई पगु धारौ २४८७ ।

बप जुग पितृ युग्म, पिता और माता : ~ नावँ कौन कौ लीजै ४१८७ ।

बप जुगल पिता और माता, पितृयुग्म . ~ काकौ नावँ लीजै ४१८७ ।

बपन मुंडन : अलकैं बिनहिं ~ सुभाइ २२५ ।

बपु १. शरीर, देह नर ~ धरे ५०८ । २ रूप, आकृति . इक भई गोपाल कौ ~ ११२१ । ~ गहि शरीर धारण करके ऐसे ही राम अभिराम सुभग ~ — ।

बपु-धारी शरीर धारण करने वाल निडर ब्रज ~ ९/११५ ।

बपुरा बेचारा, अनाथ, निरीह . ~ मोको कहति तोहिं बपुरी करि टारौ ५८९ ।

बपुरी बेचारी, अनाथ हम तैं भली जलचरी ~ अपनौ नेम निबाह्यौ ३७२९ ।

बपुरे बेचारे नर ~ को कहा गनी १/३९ ।

बपुरैं बेचारे ने, मनसा करि सुमिरयौ गज ~ ग्राह प्रथम गति पावै १/१२२ ।

बपुरौ बेचारा : जोग सरो ~ ३७३५ ।

बबा बाबा तुमहिं माहँ वृषभान ~ की ६७४।
बबुर बबूल बोवत ~ दाख फल चाहत १/६१।
बबूर बबूल काटहु अब ~ लगावहु ३९०९।
बभ्रुवाहन बभ्रुवाहन, अर्जुन का एक पुत्र जिसकी माता चित्रा गदा थी, वह मणिपुर का नरेश था अस्व समेत ~ लै १/२९।
बमत वमन करता है, उगलता है : निरतत पद पटकत फन फन प्रति ~ रुधिर नहिं जात मन्हारयौ ५७४।
बमनहि वमन किये हुए पदार्थ को : ~ खाइ खाइ सो डारौ १/१८६।
बमि वमन होकर अब यह विरह अजीरन ह्वै कै ~ लाग्यौ दुख दैन ३२३९।
बय अवस्था, उम्र ~ किसोर कमनीय सुनख मैं १८७४।
बयक्रम आयु, अवस्था एक ~ एकहिं बानक रूप गुन की सींव २०७२।
बय-घातिन बाधा तथा व्याघात अलंकार : ~ ममक न भूलो सा० ल० ४५।
बय जान अवस्था (यौवनावस्था) जान कर तथा ज्ञात योवना नायिका . सूरदास ~ सुलोचनि सा० ल० ३।
बय प्रापत युवती, युवावस्था को प्राप्त : मम पुत्री ~ आहि ९/४।
बयरोचन सुत कौ सुभाव बयरोचन सुत (बलि) उसका स्वभाव (दानी), दानी को फारसी में 'सखी' कहते हैं, सखी, सहेली ~ सुन जब ही जान पठाई सा० ल० ४७।
बयस वय, उम्र . अलप ~ अबला अहीरि सठ ३५५०।
बयार हवा, वायु गिरि कैसे, बडी अचरज नैंकु नहीं ~ ३८७।
बयारि हवा, वायु कौन ~ वही ३२१८। △ जैसी ~ तैसी दीजै पीठि जैसी स्थिति हो वैसा ही काम कीजिए — ~ — २५७१।
बयारी वायु तत्त्व, पाच तत्त्वों (क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर) मे से एक सप्त पताल अध ऊरध पृथ्वी तल नभ बरुन ~ ३८६६।
बयौ बो दिया . बीज मन, माली मदन, उर आल बाल ~ ३९१७। △ ~ तैसौ लुनौ जैसा बीज बोया वैसा फसल काटो, जैसा किया वैसा भुगतो सूर सुरपति सुनौं ~ — ८५३।
बर[1] १ सुंदर, उत्तम . जनक सुता ताकी ~ नारी १९५। २ सुंदर/श्रेष्ठ है : जुवतिनि बदन कहौ काकैं ~ २०७३।
बर[2] १ भले ही : वृथा होइ ~ बचन हमारो ९/३३। २ समान, बराबर : जुग ~ रैनि बिहाति ३७७२।
बर[3] बडे (भाई) हलधर ~ के ३४।
बर[4] बल पर . लरिकनि कैं ~ यह करत २९१८। ~ तैं इच्छाशक्ति से, मन से : अतिहिं हठीली कह्यौ न मानति करति आपने ~ — ८७६।
बर[5] वरदान, वर . देउँ मैं तुमकौं यह ~ १२७५।
बर[6] दूल्हा मोहन सौं ~ कुबिजा पायौ ३९०८।
बरइं जलती हैं . सौइ परपच करै सखी अबला ज्या ~ ३३५८।
बरखावैं बरसाते हैं . बिबुध बिबिध कुसुमनि ~ परि० १/४१।
बरजत १ मना करते हैं, रोकते हैं, निषेध करते हैं ~ मातु पिता पति बधु २३७४। २ मना कर रहा है, रोक रहा है कोउ ~ सुरपतिहिं डराई ८२०। ३ रोकते-रोकते, मना करते . बार बार ~ मैं हारी २३४८। ४ रोकने पर . मो ~ कत रैनि सिधार्यौ ९८४। ५ रोकती रही ~ कियो सनेहु ३७८५। ~ बरजत लाख मना करने पर भी मो ~ — उठि धाए २३१२।
बरजतहीं रोकने पर भी . ~ उठि भागे २३५८। ~ बरजत रोकते-रोकते भी, लाख मना करने पर भी . ~ — उठि दौरे, भए स्याम के चेरे २३९६।
बरजतही रोकते ही : सुनहु सूर ~ बरजत चेरे भए नंदनंद २२७५।
बरजति १ रोकती है, मना कर रहा है ~ मधुबन जान अहो हरि होरी है २९१४। २ रोकती . ~ है माई १६२। ३ रोकती हू . मैं ~ सुन ताहु कहू जनि ३७६। ४ मना करती हुई तोहिं ~ मरी, अचानक गिर परी १९७२।
बरजहु रोको, मना करो तुम सुत का ~ नँदरानी ७००।
बरजि मना करके, रोक कर या लोक के उपहास कारन ~ ताहि मिटाइयै ४१८७। ~ बरजि बार बार मना करके ~ — पचि हारी २३३५।
बरजियैं रोकने या मना करने पुरै न बचन ~ कारन २८३।
बरजी १ मना किया, रोका . हम ~ रह्यौ नहिं मानत ३६९। २ रोक (गये हैं) : मग बिछोहि हमहि गए ~ ३६०१।
बरजे १ रोकने पर ~ रहत न मेरे ३१८९। २ मना करती रही मैं ~ तुम करत अचगरी ३९१।
बरजैं मना करने पर ~ वहै करी री २३६१।
बरजै १ मना करता है, रोकता है . अरु ~ सब घोष २३५४। २ मना करते हैं, रोकते हैं ~ हलधर स्याम २१३। ३ मना करेगा . को ~ मुहि खात सा० ल० २२। ४ रोक, मना कर . इहिं तू जनि ~ री १३५७।
बरजोरी बल पूर्वक, जबरदस्ती ~ मैं तोहिं हरि ल्यायो ४१९५।
बरजौं १ मना करती हूँ : जो ~ आपुन नाउ करै १०७२। २ रोकूँगी करत अन्याव न ~ कबहू अरु माखन का चारी ३१७६।

बरजौ १ मना करे, रोको • मोकौं जनि ~ ३४५ । २ मना किया, रोको या रोकती हो . सूरदास प्रभु नैंकु न ~ २९२।

बरज्यौ १ मना किया, रोका : तब ~ मोहिं सबहीं १४२३ । २ रोकने पर, मना करने पर ~ हौं न रहौंगी १९४।

बरत[1] क्रि०अ० १ जल रहा है ~ दिवाला घी के परि० १/१८५ । २. जल रहे हैं, जलते हैं : ~ बनपात ५९६ । ३ जल रहे हो . जनु मनमथ सिर ~ अँगारे परि० १/७५ । वि० जलता हुआ : जैसैं ~ भवन तजि भजियै २२५० । △ ~ **भवन खनि कूप** जलते हुए घर की आग को बुझाने के लिए कुआँ खोदना ~ — सूर त्यौं मदन अगिनि दहि जैहै २५८० ।

बरत[2] व्रत, उपवास . दृढ़ बिस्वास ~ कौ कीन्हौ ७९९ ।

बरतत बरताव करते है प्रभु ~ जाकी जैसी प्रीति हिऐं १/८९ ।

बरतावै व्यवहार करे, काम मे लाये ताही कौ सुख सौं ~ ३/१३ ।

बरति वरण करती हे : मरे तैं अप्सरा आइ ताकौ ~ ४१८३ ।

बरति जल रही है, जलती है ~ निरजन जोति परि० २/६४।

बरतौ जलता, धधकता कपट घनौ उर ~ १/२०३ ।

बरत्यौ जलता, प्रकाशित होता निठुर उर मैं ग्यान ~ मानि लीन्ही बात ३१२९ ।

बरन[1] १ रग, वर्ण रूप न रेख ~ बपु जाकै ३५३८ । २ रग की, समान आकृति की : एक ~ बपु नहिं बड छोट ४१७ । ३ रग मे, रूप मे कालिहिं और ~ तोहि देखी २०८० ।

बरन[2] श्रेष्ठ, सुन्दर . ~ बान बसत कर लै ३७६८ ।

बरन[3] वर्ण, जाति . कहा बिदुर की जाति ~ है १/२१ ।

बरन आसरम वर्णाश्रम ~ धरम चलावै ११७५ ।

बरन-कारो काले रग वाले कृष्ण : नील-नव-जलद छबि ~ १८०३ ।

बरनत वर्णन करते हैं कछु सक्षेप सूर अब ~ सारा० १५७ । ~ **क्यौं पावै** : वर्णन करते कैसे बने सुख ~ — परि० १/२५ ।

बरन-धरम १ वर्णाश्रम धर्म, वर्ण व्यवस्था ~ कौं तजै न सोइ ३/१३ । २ वर्ण/जाति को : ~ न पिछानै सोइ १२/३ ।

बरन बरन भाति-भाति के, नाना प्रकार के : ग्वाल बाल सब ~ के ५०७ ।

बरना वर्णन किया है • काहू कछु काहूँ कछु ~ १/३४१ ।

बरना भख पुष्प ~ कर मे अवलोकत केश पास कृत बन्द सारा० ९८९ ।

बरनावत वर्णन करते है : बदी जन ~ ३१९२ ।

बरनि[1] १ वणन करके, कहकर : मोसौं ~ सुनावौ तैसी १/२२६ । २. वर्णन कर, कह • अब तू ~ बधाई ३७ । ~ **आवै** वर्णन मे आती, वर्णित की जा सकती रास-रस रीति नहिं ~ — १००६ । ~ **को पार** वर्णन करके कौन पार पा सकता है, वर्णन कौन कर सकता है . कुंज गृह रचि कुसुम सज्जा, छबि ~ — १६७९ । ~ **गावै** वर्णन कर सके . सूर सो क्यौं ~ — २४६४ । ~ **न आवै** वर्णन मे नहीं आती, वर्णन करते नहीं बनती सूरदास कछु ~ — कठिन बिरह की रीति ३७४१ ।

बरनि[2] चमचमाते, रगारग के . मोर मुकुट बिसाल लोचन स्रवन कुडल ~ ९५९ ।

बरनि[3] जलन से, डाह से ~ बरै सिसुपाल ४१८८ ।

बरनिऐ वर्णन किया जाय . बहुत कहाँ लौं ~ १/४४ ।

बरनिहै वर्णन कर सकता है निगमन नेति कह्यौ निर्गुन, सो कह गुनाधि ~ सूर नर २४५५ ।

बरनिहौं वर्णन करूँगी • पद्रह तिथि भरि ~ २९१४ ।

बरनी वर्णन किया है, कहा है : तुम हनुमत पवित्र पवन सुत कहियौ जाइ जोइ मैं ~९/१०१ ।

बरने १ वर्णन कर दिया, गिना दिया : अगिनित कीन्हे स्वाद, दास ~ कछु थोरे ८४१ । २ वर्णन किया, कहा : सोई सूरदास ने ~ सारा० ३५३ ।

बरनै वर्णन करे • को ~ नाना बिधि ब्यजन ८३१ ।

बरनौं १ वर्णन करूँ, कहूँ सूर स्याम छबि कहँ लो ~ १८६९ । २ वर्णन करता हूँ : ~ बाल बेष मुरारि १६९ ।

बरनौ १ वर्णन करती हूँ • ~ श्री बृषभानु कुमारि २११४। २ वर्णन करो, कहो : ऊधौ ब्रज को प्रेम नेम ~ सब आई ४०९५ ।

बरन्यौ वर्णन किया, कहा ~ रिषभ देव अवतार ५/२ ।

बरबस १ जबरदस्ती, बलपूर्वक : ~ हीं लै जान कहत हैं २३०१ । २ व्यर्थ, फिजूल : ~ ही कत करत रिसैया २४५ । ~ **कियौ चितै** बरबस ही देख रहे हैं : ~ — मुख मोरी १२०१ ।

बर-बान श्रेष्ठ/उत्तम श्रृङ्गार तब पास कर ~ सा० ल० २० ।

बर बारि[1] सुन्दर बाड (बनकर) : ब्रज बनिता ~ कनकमय २७७२ ।

बर बारि[1] सुन्दर पानी (आब, चमक) है : मेरु मूठि ~ पाल छिति ९/११ ।

बरियाई ज्यादती अनजाने मैं करी बहुत तुमसौं ~ ४९२ ।

बरष साल, वर्ष । ~ **दिवस कौ** वर्ष भर का ~ — दिवस हमारौ ८१६ । ~ **बरषनि** प्रति वर्ष, बहुत वर्षो तक उमँगी ब्रजनारि सुभग, कान्ह बरषगाँठि उमँग, चहति ~ ९६ ।

बरषगाँठि वर्षगाँठ, जन्मदिन, साल गिरह • सूर स्याम ब्रज

जन-मोहन ~ कौ डोरा खोल ९४ ।
बरषत १ बरसता है, बरसा करता है • ज्यों जलधर परवत पर ~ २०९२ । २. बरस रहे हैं : उनै उनै ~ गिरि ऊपर ८७४ । ३ बरसने लगे . बहु विधि व्योम कुसुम सुर ~ ४ बरसते हुए : ~ ब्रज आए चढि ८५७ । ५ बरसती हुई, वर्षा करती हुई • ~ बूँद लगी जनु सायक ९३७ । ६ बरसाते रह गये • तुम ~ जल महा प्रलय कौ ८८३ । ~ **लोचन नीर** आँखों से आँसू गिराती हुई • इतनी सुनत कुति उठि धाई ~ — १/२९ ।
बरषति बरसती/बरसाती हैं : जल समूह ~ दोउ अँखियाँ ४०७० ।
बरषति बरस रही हों : सुधा वृष्टि ~ आनदन १७८० ।
बरषतु बरस रहा : मूसलाधार सलिल ~ है ८७७ ।
बरष-दिवस वर्षगाँठ का दिन • ~ कहि करति कलोल ९४ ।
बरषन बरसने, वर्षा करने • गिरि पर ~ लागे बादर ८५८ ।
बरसनि लागि वर्षा (अनुकम्पा, दया दृष्टि) के लिए ही ~ छिन कीन्यौ ११२७ ।
बरषहि बरसने लगे, बरसते हैं : ~ सुमन अकास महाधुनि ३०८७ ।
बरषहीं १ वर्षा कर रहे थे, बरसाये चले जा रहे थे सुर नभ पुहुप-अजलि ~ १०७२ । २ वर्षा की : अमर आनद भए पुहुप गन ~ ३०८२ ।
बरषा वर्षा : रुद्र तव कोप करि अग्नि ~ करी ४१९८ ।
बरषाइ वर्षा कर : देव दिवि दुदुभी बजावत, सुमन-गन ~ ५६३ ।
बरषाई वर्षा की : सुरनारि सुमन ~ ११८२ ।
बरषानल वर्षा और अग्नि : विष-जल, व्याल, वरुन, ~ अखिल असुभ हति राखे ३८५२ ।
बरषाने बरसने लगे हैं : नैननि तेज गयौ ता दिन तें, सावन ज्यौं ~ ३६७५ ।
बरषायौ बरसाया : समाधान सुरगण को करि कै अमृत मेघ ~ सारा० २९४ ।
बरषावत वर्षा करते हैं, बरसाते हैं : सुर सुमनन ~ गावत सारा० ३९४ ।
बरषावति बरसाती है • सीस सुमन ~ २३ ।
बरषावहु बरसाओ, वर्षा करो : स्वाति बूँद ~ ३७७६ ।
बरषाहि बरसते हैं, वर्षा करते हैं : धरनी दुखित देखि बादर अति बरषारितु ~ ३२३० ।
बरषि १ बरस कर : जल ~ अगिनि ज्वाला बुझाई ४१९४ । २ बरस रहा हो ~ जनु सावन रे २८ । △ ~ **बुढाने** वर्षा करके बूढे हो गये (थक गये) : सात दिवस जल ~ — ९४१ । ~ **बरषि** बरस-बरस कर, वर्षा करते-करते • ~ — घन हारे ३८३४ ।
बरषे वर्षा की हरषि सुमन सुर ~ ३६३० ।
बरषैं १ बरसते हैं : बल समेत ~ ब्रज ऊपर ९५५ । २ बरसने से ~ मेघ गाढ़ सुख पैहैं ८२४ ।
बरषै १ बरस रहा है/रहे हैं . (देवकी) सघन ~ मेह ५ । २ वर्षा कर रहे थे, बरस रहे थे : नवै एक रस ~ २८६१ ।
बरषो बरसी कीन्हो गर्व महा मघवा ने वर्षा ~ नाहि मारा० ८६ ।
बरषौं वर्षा करता हूँ . सबै सबै ~ प्रतिपाला ९२४ ।
बरषौ वर्षा (ऋतु) भी : अब यह ~ बीति गई ३३४२ ।
बरष्यौ बरसा देव राज मष-भग जानि कै ~ ब्रज पर आइ १/१०२ ।
बरस वर्ष, साल . सत जुग लाख ~ की आइ १/२३० ।
बरसत १ बरसता है, बरसते हैं तब मेघ ~ ४/११ । २ गिराते हुए : मटुकि छुड़ाय लियो दधि ~ सारा० ७२६ । △ ~ **नीर** आँसू बरसते हैं : नैननि ~ — १/३३ ।
बरसतु बरसती सात दिवस मूसल जल धारा ~ है निसिदिन अवर तैं ८७६ ।
बरसति बरसती है • सुधारस ~ ६४५ ।
बरसहि वर्षा करते हैं • बल समेत निसि बासर ~ ८५६ ।
बरसहु वर्षा करो . पर्वत पर ~ तुम जाई ९३५ ।
बरसा वर्षा : नैननि होड बदी ~ सौं ४११६ ।
बरसाइ बरसा कर . जय जय धुनि नभ करत हैं हरषि पुहुप ~ ४३१ ।
बरसाई वर्षा की : जै धुनि करि सुमननि ~ ८३९ ।
बरसाने बरसाने, ब्रज मण्डल मे एक गाव बरसाना, राधिका यहीं की थीं कियौ ~ तैं आवनौ ।
बरसानैं बरसाने मे ~ ब्याह ब्रज की सब रीति भई १०७४ ।
बरसानो बरसाने (गाँव) का : लै लै नाउँ गाउँ ~ २८९५ ।
बरसायौ बरसाया, वर्षा की न जल ~ ५/२ ।
बरसावैं बरसाती हैं . सिर सुमनन ~ मारा० ३९९ ।
बरसावै बरसाता है फूल अति गति ~ री ६२९ ।
बरसि १ बरस कर, वर्षा करके सलिल ~ ब्रज नार मिटावहि ८५६ । २ वर्षा की, बरसते रहे सात दिन भरि ~ ब्रज पर, गई नैंकु न झारि ८८२ ।
बरसै बरसती है, प्रवाहित होती है सुरसरी सिव सिर ~ ५८९ ।
बरसैं बरसने पर महाप्रलय हमरे जल ~ ८५४ ।
बरसे १ वर्षा करे इद्र आइ ~ जो ब्रज पर ८४३ । २ वर्षा कर रहा था अहिराज विष ज्वाल ~ ५५२ ।
बरस्यौ बरसा : अब घन ~ क्यौं न करै परि० १/११४ ।
बरह मोर बन पिक ~ सिलीमुख मधुमत ३२६४ ।

बरहनि मोरों ने ~ घाली धाह ३३१३ ।

बरहहि कुशा का · ~ कीनौ बान ९/८३ ।

बरहा मोर : ~ पिक चातक जय जय निसान बाजैं ३००१ ।

बरहापीड मोर पखों का मुकुट ~ गुजामणि अद्भुत भेष बनावत सारा० ४७५ ।

बरही १ मोर . बन ~ चातक रटे ११८८ । २ बरही=वहीं =मोर=) मोडकर . सखन ओर ~ मुख कर कर सा० ल० ९१ ।

बरा[1] बडा, दही बडा बरी ~ बेमन बहु भाँतिन २३८ ।

बरा[2] बडा, भारी ~ कौर मेलत मुख भीतर २२४ ।

बराइ चुनकर, छाटकर जादव बीर ~ बटाई हरि बल इक इक ओर ४१६६ ।

बराबरि स्त्री० बराबरी, स्पर्धा · छोटौ बडौ न जानत काहू, करत ~ आइ ५३६ । **वि०** समान, एक जैसी धरनि अकास ~ ज्वाला ५९८

बराबरी बराबर होता है, समान होता है . सूरदास प्रभु पारस परसे लोहौ कनक ~ ३९५३ ।

बरामद लेन देन · बढौ तुम्हार ~ हूँ कौ लिखि कीनौ है साफ १/१४३ ।

बरावत रोकते हैं, बाधा पहुँचाते हैं . बूँद ~ पातनि परि० १/११३ ।

बराह[1] वराह, सूअर हरिन ~ मोर चातक पिक ६१५ ।

बराह[2] वाराह अवतार, विष्णु का वह अवतार जिसको धारण करके उन्होने हिरण्याक्ष के द्वारा चुराई गई पृथ्वी का उद्धार किया था ~ रूप धरि मार्यौ ९/१५ ।

बरि १ जलाकर . खर ~ मूठि उठि खेलत बालक ४२१७ । २ बलकर हेती अबहि जगाई कै जरि ~ होत्यौ छार ५८९ । ~ **बरि** जल-जल उठती है उठत जो बिरह धूम पावक झर ~ — बायु बह्यो ३७८४ ।

बरिआई जबरदस्ती कृषी अन्न लेह ~ १२/३ ।

बरिबंड प्रचंड आगर इक लोह जटित, लीन्ही ~ ९/९६ ।

बरियाइ जबरदस्ती करि ~ तहाँहूँ बैसैं २८९६ ।

बरियाइन बलवान के, हठपूर्वक, बलात् बिरद मनौ ~ छाँडे १/१९४ ।

बरियाई स्त्री० ज्यादती, जबरदस्ती : देखौ माइ बदरनि की ~ ९५३ । **क्रि० वि०** जबरदस्ती, बलात् . कहा रस ~ की प्रीति ३९०५ ।

बरिल बडा जैसा एक पकवान, मुँगौरा · बरी ~ अरु बरा बहुत बिधि १२१३ ।

बरी[1] बडी, उर्द या मूँग की पीठी की सुखाई हुई छोटी पकौडियाँ : पापर ~ अँचार परम सुचि १२१३ ।

बरी[2] वरण किया, विवाही जद्यपि रानी ~ अनेक ६/५ ।

बरी[3] बडी, लबी : अकुस अलक कुटिल भइ आसा तातै अवधि ~ ३२८० ।

बरीस वर्ष, साल : नदराइ कौ लाडिलौ जीवै कोटि ~ २७ ।

बरु भले ही, यद्यपि, चाहे : ~ मरि जाइ चरै नहि तिनुका ३६१६ । ~ **नीकौ** तो अच्छा था गरल दान देते ~ — ३८५३ । ~ **उतकौं** और उधर को, और दूर को : ज्यौं ज्यौं कह्यौ त्यौं त्यौं ~ — सरकि रही २७८७ ।

बरुन वरुण, जल के देवता . इद्र ~ सबही भजि गए ७/२ ।

बरुना बरौनियाँ : कमल कुरग चलत ~ भख १६७४ ।

बरुनि वारुणी (पश्चिम दिशा) : सारग सदनहिं लै जू ~ गई २७९८ ।

बरूथ सैन्य, सेना इतनी बिपति भरत सुनि पावैं आवैं साजि ~ ९/१४७ ।

बरूह फुदे, जटाएँ : मनहु काम-बट ~ रहे गहि झूलत बाल मयूर परि० २/६४ ।

बरूहा फुन्दे बहुरग रेशम ~ लेत राग झकोर २८३१ ।

बरे वरण करे, पसद करे, विवाह के लिए चुने : बिरध पुरुष कौं ~ न नार ९/८ ।

बरैं १ वरण करें · अब किन कोटि ~ ब्रज नायक अनतहि राज कुमारी ३७६६ । २ वरण करेंगे त्रिगुन रहित प्रभु ~ न दासी ४०९४ ।

बरेंडे खपरैल या छाजन के बीच का उचला भाग या खपरैल की मुख्य आधार लकडा, बरेंडे पर यह उपदेश मेत नहिं भाए जो चढि कह्यौ ~ ३६१५ ।

बरै[1] वरण करे, (विवाह के लिए) चुने ~ तुम्हे तिहिं करौं बिवाहु ९/८ ।

बरै[2] १ जल जाय ~ जेंवरी जिहि तुम बाँधे, परै हाथ भह-राइ ३८९ । २ प्रज्वलित हो रही है/हो : मनहुँ मुकुर बाच रबि छबि ~ री २८८६ ।

बरैगौ प्रज्वलित होगा, जलेगा : बैरी बिरह कौ दवा ~ ३३६८ ।

बरौं वरण करूँ कन्या एक नृपति की ~ ९/७ ।

बरौ वरण करो, वधू के रूप मे स्वीकार करो या कन्या कौ प्रभु तुम ~ ९/३ ।

बर्ण वर्णन कर, कह : अबहूँ ~ न पाये सारा० ५२१ ।

बर्णत वर्णन करते हुए/है . ~ चरित विस्तार कोटि शत तऊ पार नहि पायो सारा० ३१४ ।

बर्णि वर्णन करते, कहा (नहीं जाता) · मो पै ~ न जाई सारा० ८१९ ।

बर्तनहार व्यवहार करने वाले धनि वै ठाकुर, धनि तुम सेवक धनि हम ~ ३९०९ ।

वरचौ १ वरण किया, ब्याहा : तब सिव आइ तहाँ तिहिं ~ ४/७। २ चुना, पसंद किया • सब कन्यनि सौभरि कौं ~ ९/८।

वर्षत बरसते, वर्षा करते/कर रहे . ~ ई जो अपार मारा० १०६१।

वर्षति बरसती है सहज माधुरी रोमनि ~ २४४८।

वर्षन वर्षों तक . कीन्हों राज तीस षट ~ सारा० ८०।

वर्षावै बरसाता है वह आय रुधिर ~ सारा० ८३२।

वर्षे वर्षा की कृपा बचन तिनसों हरि ~ २९२२।

बर्हीं मोर तहँ ~ निर्तत २८४२।

वल[1] १. शक्ति, सामर्थ्य, पराक्रम . माखन खाए ~ भयौ ६६६। २ भारीपन : पिनाकहु के दंड लौं तन, लहत ~ सनराइ ३/३। ३ सहारा, आश्रय, भरोसा . अजहूँ ~ जनि करि सकर कौ ९/११५। वि० सशक्त, बलिष्ठ : तव ~ भुना निहारयौ ३०४९। ~ कीन्हौ शक्ति भर तो किया : कटा कर अपनौ ~ —९४३। △ ~ तोलत बल तौलते (आजमाते) हैं . अपने अपने भुज ~ — तोरन धनुष पुरार सारा० २१८।

वल[2] बलराम ~ कौं हित करि गरैं लगाए ४२००।

वल-पुन बलपूर्वक . उठे हरि ~ ८७०।

वलकति अनाप शनाप बकती है . पियें प्रेम बर बारुनी ~ मुख न सम्हार १६४०।

वलकि आवेग/जोश मे आकर, अकड कर : आपहिं आप ~ भए ठाढे २१४।

वलदाऊ बलराम, देवकी के पुत्र जो रोहिणी के गर्भ मे उत्पन्न हुए थे ~ कहि टेरत ४१३।

वलवर्त्त बलवर्त, प्रलय कालीन बादलों में से एक : ~ बारिवर्त्त पौनवर्त्त ८५३।

वलवाँधि बल (हठ) पूर्वक : जनि ~ बढ़ावहु छीति २७७५।

वलविगत शक्तिहीन . करि ~ उबारि दुष्ट तैं १/२६।

वलवीर[1] बलराम, बलदेव : कहियन जो दुर्लभ ~ मारा० ५६८।

वलवीर[2] १ बलराम के भाई श्री कृष्ण सखनि मध्य ~ २६१८। २ =बलभाई : तब तब कृपा करी ~ १/१७। ३ कृष्ण को . बिनु देखें ~ ३७१६। ४ कृष्ण के हरे ~ बिना को पीर १/३३।

वलवीर[3] बलवान, बली : सुनौ भरत ~ ९/१५१।

वलभंग शक्तिहीन, पराक्रम रहित : दिन अट्ठाइस युद्ध कियौ जब ऋच्छ भयौ ~ सारा० ६४७।

वलभद्र बलराम, बलदेव : सुनहु कान्ह ~ चबाई जनमत ही को भूठ २१५।

वलभाई बलराम के भाई, श्री कृष्ण • भूलि गए ~ ३७९९।

वलभारी भारा बल वाले, शक्तिशाली कश्यौ पुरुष उपजैं ~ ४/५।

वलभैया भैया बलराम : जबहिं मोहिं देखन लरिकन सग तबहि खिभत ~ २१७।

वलभ्रात भाई बलराम : देखि हँसत ~ ९६९।

वलय वलय, कगन • ~ ताटक चक्र नख नेजा २४५५।

वलयनि कगनों ने • आँसु चलत मेरा ~ देखे ३१८१।

वलया वलय, कगनों या चूडियों की छाप ~ पीठि वचन अलसौंहैं २६४२।

वलयावलि चूडियाँ . छुटी न भुज, टूटी ~, फटी कचुकी भीनी ४१०४।

वलराम कृष्ण के बडे भाई जो रोहिणी से उत्पन्न हुए थे। इनका अस्त्र हल और मूसल था . कुसल रहौ ~ कन्हाइ ८११।

वलरामहि बलराम को • सूर नद ~ थिरयौ २१७।

वलरामैं बलराम ही : मेरे ~ बन माई २९७०।

वलवंत शक्तिशाली, बलवान् जीतिहौ तब असुर महा ~ को ८/८।

वल विष-हारी सबल विष धारण करने वाले अर्थात् शकर जो अहिमायी, अहि-अग विभूषन, अमित-दान ~ १७८।

वलवीर १ बलराम के भाई श्रीकृष्ण : तुव नाम पुनि पुनि कहत है ~ १८४२। २ कृष्ण ने : मुरली धुनि करी ~ १००७।

वलसार शक्तिशाली, बली कुंभकरन पुनि इन्द्रजीत मह महाबली ~ सारा० २९२।

वलहि १ बल का, शक्ति का बाके ~ न अन्त ९/७८। २ शक्ति को बुधि बल ~ बढावन ८/४। ३ बल मे भी, बल/प्रयत्न करने पर भी : कचनपुर पति को जो भ्राता, ता प्रिय ~ न आवत ३६२३।

वलहि बल का, समान बल वाला • त्रिभुवन मैं को ~ तुम्हारे २९२२।

वलहीनौ शक्तिहीन अत भयौ ~ १/६५।

वलहू बलराम (भी) ~ का बल जाको सोई री कन्हैया ३७२।

वलाइ विपत्ति, बला स्याम सौं वै कहन लागे आग एक ~ ४२७। △ लेति ~ दूसरे के कष्ट को अपने ऊपर लेना है : जसुमति — ~ भोर भयौ उठौ कन्हाई ४३१।

वलाक बक, बगुले • दामिनि छबि ~ घन धावत १३६०।

वलाहक मेघ, बादल . कहा कहौं वर्षा रवि तमचुर-कमल ~ कारे ३३५९।

वलि[1] १ बलिहारी, न्यौछावर सूरदास जैवै ~ वाकी २/७। २ बलिहारी है, बलिहारी जाता हूँ ~ वह चरन अहिल्या तारी १/३४। △ ~ गइ बलिहारी गई, बलैया ली ~ — बाल रूप मुरारि ११८। ~ गई बलिहारी जाती हूँ, बलैया लेती हूँ : जागहु ~ — आनंद कद २०४। ~

जाहि बलिहारी जाते हैं, बलैया लेते हैं : मातु-पिता ~ — ३०९० । ~ **बलि** बार बार बलिहारी जाता है : 'सूरदास' ~ — बिलास पर २४९ । ~ **बलि जाऊँ** बार बार बलिहारी जाता हूँ : ~ — जु खाहु लला रे ४२३ ।

बलि[2] प्रह्लाद का पौत्र और विरोचन का पुत्र जिसे छल कर वामन भगवान् ने पाताल भेजा था वामन रूप धरयौ ~ छलि कै २२१ ।

बलि[3] १ नैवैद्य, पूजन सामग्री मेरी ~ औरैंहि लै अरपत ८२२ । २ श्राद्ध पक्ष के भोजन का वह हिस्सा जो कौवे आदि के लिए छोडा जाता है : बायस ~ नहि खात ४११९ । ३ भक्ष्य, भोजन : आइ सृगाल सिंह ~ चाहत ९/९३ ।

बलि[4] बलपूर्वक, बल से : जात कहाँ ~ बाहँ छुडाए १९३१ ।

बलि[5] भला, जरा . तब तुम काकी सरन उबरिहौ, सो ~ मोहि बताउ ९/७८ ।

बलित बल खाये हुए, मुडे हुए, त्रिभगी · ~ नद किसोर सा० ल० २९ ।

बलि दैत्य बलि दैत्य (राजा बलि) ने अबल प्रह्लाद ~ सुखही भजत १/११९ ।

बलिनि रेखाओं मे, त्रिवली मे . प्रबल ~ अलेष ६३५ ।

बलिहार न्यौछावर है : तन-मन-धन ~ १६१८ ।

बलिहारि न्यौछावर होते हैं, बलिहारी जाते हैं . सूरदास ~ २११८ ।

बलिहारी न्यौछावर जाता हूँ : बार बार तातैं ~ १/३० ।

बलिहारौं न्यौछावर जाती हूँ . सूर निरखि तन मन ~ ६६४ ।

बली १ बलवान्, शक्तिशाली : काल ~ तैं सब जग काँप्यौ १/५२ । २. पराक्रमी था . जौ पै दसकध ~ रेख क्यौ न नाखी ९/९७ ।

बलेस बलिष्ठ, जोरदार, कडे . डरपि कातर होहु जनि कहुँ कहत बैन ~ ३६९१ ।

बलै बलराम के ~ अछन छल बल करि जीते ४१६६ ।

बलैया बला, आपत्ति, बलाय : खेलन अब मेरी जात ~ २१७ । **लेति** ~ बलैया लेती है, न्यौछावर जाती है : कबहुँक सुदर बदन बिलोकति उर आनँद भरि — ~ ११५ ।

बल्कल वल्कल वस्त्र, वृक्ष की छाल के वस्त्र जिन्हे तपस्वी धारण करते है : बसन-काज प्रभु ~ कीन्हे २/२० ।

बल्लभ १. पति, प्रियतम : कहँ वै श्री कमला के ~ ३८१६ । २ प्रिय है · कमल नैन कै तू अति ~ २७६२ ।

बल्लभिनि स्त्रियों, प्रियतमाओ मेटी ~ कौ दाहु ३४२७ ।

बल्लिन लताओं · पुहुप गयें बहुरै ~ के ३९८१ ।

बल्ली बेल, लता . नव ~ सुंदर नव तमाल २८४९ ।

बसत बसते हो, निवास करते हो : ब्रज बनितन कै नैन प्रान बिच तुमही स्याम ~ सारा० ५८१ ।

बस[1] **पुं०** १. वशीभूत, अधीन सूर प्रभु ~ भई प्यारी ८३७ । २ वश : गर्भ परिच्छित रच्छा कीनी, हुतौ नहीं ~ माँ कौ १/११३ । **क्रि० वि०** वशीभूत होकर अति उन्मत्त मोह-माया ~ नहि कछु बात बिचारो १/१५२ ।

बस[2] बैठ कर, बैठी हुई ~ परजक बिचार सा० ल० ३१ ।

बसई बस मे कर लिया है कहा मत्र करि हरि ~ १२६१ ।

बसत १ निवास करते हैं, रहते हैं : लका ~ दैत्य अरु दानव ९/८६ । २ रहता है, निवास करता है : कृष्न कियौ मन ध्यान असुर इक ~ ४३१ । ३ बसती हो, रहती हो ~ हमारैं गाउँ १५७७ । ४ स्थित है, बसा है : कालिंदी कैं कूल ~ इक मधुपुरि नगर रसाला ४ । ५ बसते थे, रहते थे . तहाँ ~ श्रुतिदेव महामुनि सारा० ७९९ । ६ रहते हुए : तहाँ ~ हरि लीनी रजनीचर १९९ । ७ रहने से, निवास करने से : नगर ~ गुन ग्यान बढत ३७०५ । △ ~ **उजारि** उजाड निवास करता है अर्थात् उजाड/नीरस लगता है : मेरे लेखैं मधुबन ~ — ४००४ ।

बसति बसती हैं, रहती हे : हम जु ~ इहिं गाउँ ३६०१ ।

बसति १ रहती है, निवास करती है : हिय जू ~ जडताई १/१८७ । २ रहते है : ~ इतनियै दूरि ३८४३ । ३ रहती हैं : ~ तुम्हारैं गाउँ १५११ । ४ बसतो हो · मन नैन मैं तुम ~ २४२० ।

बसतैं रहते हुए ऐसी प्रीति हमारी उनकी ~ गोकुल बास ३८२२ ।

बसतै रहते : सोई करौ जु ~ रहिये अपनौ धरियै नाउँ १/१८५ ।

बसन[1] १ वस्त्र, कपडा असन ~ की चित न करै २/२० । २ पीताम्बर . तडित ~ घन स्याम सदृस १/६९ । ३. वस्त्र, बिछौना यहे मेज को ~ १५१६ ।

बसन[2] केंचुल, निर्मोक जैसे ~ तजत है पन्नग ४०७५ ।

बसन[3] बसने, रहने · पिक चातक बन ~ न पावत ४११९ ।

बसननि १. वस्त्रो की · पूजि अनत कोटि ~ हरि अरि कौ गर्व गँवायौ १/१९० । २ वस्त्रो मे : दसन दामिनि लसत ~ १३८१ ।

बस-बास १ रहने का ठिकाना : अब ~ बनै नही १४२० । २ निवास-स्थान मथुरा मैं ~ तुम्हारौ २१६६ ।

बसवासिनि निवास करने वाली : सुनहु सूर बन की ~ ब्रज मैं भई रजाई १३८० ।

बसह वृषभ, बैल . हय गय ~ हस मृग जावक ९७६ ।

बसहि[1] रहते हैं, निवास करते हैं . सहज सुन्न मै ~ मुरारी

४०९८।

वसहि² पु० वश में, अधीन बहुत नीच की ~ नगरी २४७। **क्रि०वि०** वश में होकर : अलस ~ जम्हात २६७९।

वसहीं बसते हैं, निवास करते हैं • छाँडि नारि बिचारि पवन-सुत लंक बाग ~ ९/९१।

वसाइ वश, अधिकार (है) : विधि सौं कहा ~ २९७४। ~ **गए** वश में कर गये . थाइ ~ — सुफलक सुत ४०२२।

वसाइके बसा कर, निवास करके तुम में प्रजा ~ राखैहैं इहिं ठाइ १४६१।

वसाइहौं बसाऊँगा : मथुरा सुरनि ~ १६१८।

वसाइ¹ १ वश चलता है : कहा करौं नहिं कछु ~ २९४३। २ वश/जोर चले . तन वपुरे की कहा ~ २६३४। ३ चल पायेगा तो पर वल न ~ १/८०।

वसाइ² बसाइ पृथ्वी सम करि प्रजा सब ~ ८/११।

वसाऊँ निवास करा दूं, स्थापित कर दूं रावन सुनत ~ ९/१०९।

वसाए बसाने गये हों . नूपुर-कलरव मनु हंसनि सुत रचे नीड दै वाँह ~ १०४।

वसाने जोर चला . अनु न जोर ऊखल सौं बाँधनि जननी मा न ~ परि० ८/२८।

वसाय बसा कर निज वैकुंठ ~ रमापति किया रमा को हेत सारा० ३२६।

वसायौ¹ १ बसाया है, धारण किया है अब तुम सुनि हिय माहिं ~ १०/८। २ बसाया सो कहत नाथ सौं क्या ~ परि० १/०६।

वसायो² वश चला उनमें हमारौ कछु न ~ ६/४।

वसावहु बसाओ, बसा लीजिए • अबकै यह ब्रज फेरि ~ ४०९०।

वसाव¹ बसावे, आबाद करे : को ब्रज फेरि ~ ३३४९।

वसावे² जोर/अधिकार चलता है • नृप सौं ताकी कहा ~ ६/७।

वसाहि बसे रहते हैं . सूरदास प्रभु टरत न टार नैनन सदा ~ १८६१।

वसाहि बसना है, रहना है प्रगट न प्रीति करै परदेसी, सुख किहिं देस ~ ३२३०।

वसाहू रहना, निवास करना : सर काज करि आवहु जनि रैनि ~ २९३९।

वसि रहकर, निवास करके ब्रज ~ जाके बोल सहा १६८६। ~ न सकत नहीं रह सकता : मदन नृपति को देस महामद बुधि बल ~ — उर चैन २७७६।

वसिऐ बसा जाय : गोकुल होत उपद्रव दिन प्रति ~ वृन्दावन मैं जाई ८०२।

वसिगौ बस गया है मोहन मो मन ~ माट सा० ल० ४२।

वसिवे निवास करने निसि ~ को अवधि बदी २७१२।

वसिवौ निवास, रहना, बसना : या ब्रज को ~ हम छाँड्यौ३३७।

वसियै १ बसती हैं, रहती हैं • ~ एकहिं गाउँ कानि रासन हैं तातें १६१८। २ रहिए, रहना चाहिए • सूर कहि क्रूर त दूर ~ सदा १/२२३।

वसिष्ठ मुनि वसिष्ठ, राजा दशरथ के कुल-गुरु भृगु मरीचि अंगिरा ~ ३/८।

वसिहैं रहेंगे, निवास करेंगे : बरष चतुर्दस भवन न ~ ९/४४।

वसिहै निवास करेगा को ~ ब्रज ५४५।

वसिहौं बसूँगी, निवास करूँगी : जाइ ~ सिंहि केर १४६१।

वसिहो बसोगे नव ~ ब्रज लोग ५८९।

वसी¹ १ बस गई है स्यामा स्याम के उर ~ २४११। २ बसा है, रहता है • हम नहीं कहैं तुम मनहिं जो यह ~ ३०६९। ३ बसे हों, लगे हों • ज्यों नामी-सर एक नाल नव, कनक कमल बिबि रहे ~ री २४४७।

वसीकरन वश में करने वाला वशीकरण मंत्र मोहन मूर्छन ~ पढि ४९।

वसीजै बसना चाहिए, रहना चाहिए • धिक इहि घर धिक इन गुरुजन कौं इनमें नहीं ~ १९२७।

वसीठ १ दूत, संदेश वाहक • तुम सारिखे ~ पठाए ३५२८।

वसीठि १. दूती का काम बारू बूढ कहा करै ~ २५७१। २ दूती • इक निज सहचरि आइ ~ २८७६।

वसीठौ दूत कर्म, संदेश वाहक का काम नैननि निरखि ~ कीन्हौ २०००। ~ **तोरि** दूत कर्म को तोड़कर अपनी चाल जानि मनही मन चल्यौ ~ — ४१२८।

वसीति रहती है : जस राजा तस प्रजा ~ २७७७।

वसीनौ गुजर है, रहना है : इनहो त ब्रज बास ~ ८८०।

वसु १ वसुओं को (ये वैदिक देवता हैं जिनकी संख्या आठ है) मुनि गंधरब, सकल ~, निति मैं किए चेरे १/१०९। २ (वसु=८=आठवाँ ग्रह अर्थात्) राहु : मुनि ~ निज तन करै सा० ल० ८१।

वसु तिथि (वसु=८=)अष्टमी तिथि . मदन मास पाठ ~ है सा० ल० ८१।

वसुदेव वसुदेव जो श्री कृष्ण के पिता थे : ~ देवकी ३५३६।

वसुदेवहि वसुदेव को देवकी दई विवाहि कंस ~ ४।

वसुद्यौ वसुदेव : अब भए तात देवकी ~ ३१३२।

वसुद्यौसुत वसुदेव के पुत्र (के रूप में) श्री कृष्ण • अब तुम प्रगट भए ~ ३११६।

वसुद्यौ सभु वसुदेव रूपी शंकर . ~ सीस धरि आन्यौ १७९५।

वसुधा वसुधा, पृथ्वी, धरती • कंपत-कमठ-सेष ~ नभ १/७८।

वसुधाऊ पृथ्वी भी वामन रूप धरयौ वलि छलि कै, तीनि परग ~ २२१।

बसुधातल पृथ्वीतल पर, धरातल पर . ~ जु बाम गिरि राजत ४२०२ ।

बसुधारी धरती को धारण करने वाले : येई भक्त बछल ~ ११८२ ।

बसे १ निवास किया, रहे . वै निसि ~ महल सीला के २४८१ । २ बस गए, रह गए : ~ उहाँ मुसुकानि छाँह ले १८६४ ।

बसेरे निवास स्थान, पडाव . जोग वेचि कै तदुल लीजै, बीच ~ खाहु ३८८० ।

बसेरो १ बसेरा, आश्रय स्याम-धाम मैं करौं ~ १६५८ । २ निवास है, बसेरा है · स्यामहि मैं सब रग ~ १९१२ ।

बसैं १ रहते हे . काहू कैं न ~ कहुं जाम २५६८ । २ बसेंगे, रहे अव हरि क्या ~, गोकुल गवई ३९१५ । ३ रह कर, रहते हुए ब्रजहिं ~ आपुहिं विसरायौ १६८७ ।

बसैंगे रहेगे, निवास करेंगे : आजु ~ रैनि तिहारैं २४७८ ।

बसै १ रहे, निवास करे कौन ~ या कठिन गॉव री ४१०३ । २ रहता है कठिन कस मथुरा ~ १६१८ ।

बसैहै बसायेंगे, जन धन से पूर्ण करेंगे . फेरि ~ यह ब्रज नगरी ३१९ ।

बसैहै बसाओगी, बसायेगी जाति पाँति के लोग न देखति और ~ नेरी ३२४ ।

बसौं रहूं, निवास करूँ · अपने नाम की बैरख बाधौ, सुवस ~ इहि गाउँ १/१८५ ।

बसौ १ रहो, निवास करो : सिया सहित सुख ~ इहां तुम ०/१६० । २ बस गया यह सुख सबकैं मन ~ २८६६ । ३ रहना है, रहना चाहते हो · पुहुप बेगि पठएँ बनै जौ रे ~ ब्रजपालि ५८९ । ४ वसती हो, रहती हो तुमहिं धन तुमहि तन तुमहि मनही ~ २४९० ।

बस्तर कपडे ~ मलि मलि धोए १/५२ ।

बस्य १ वश मे, वशीभूत धन्य राधा ~ हैं मुरारी १५९६ । २ वशीभूत हे, वश मे हैं ऐसे स्याम ~ राधा के ११६५ । ३ वश . कहा ~ इन नैननि कैं २३९९ ।

बस्यौ निवास किया, रहा : नृप तन तजि हरि पद मैं ~ १२/४ ।

बहकाइ बहका, भुलावे मे डाल · किनि ~ दई है तुमको ७५३ ।

बहकाए वहकाया है, भ्रम मे डाल दिया है सूर स्याम इनहीं ~ १०९९ ।

बहकायैं वहकाने पर, भुलावा देने पर बेद विदित सुर काज विगारे ~ ब्रजरा न सारा० ७४२ ।

बहकायौ वहका दिया है सूर सपथ काहू ~ ३८५९ ।

बहकिहै वहकेगी हम न ~ वाहैं ३६१२ ।

बहत[1] १ वह रहा है : धीर समीर ~ त्यहि कानन सारा० ९९८ । २ प्रवाहित होती रहती है : सहज ~ लोचन जल सरिता ३६१४ । ३. बह/भटक रहा हूं . जद्यपि बुधि बल बिभव-बिहूनौ ~ कृपा करि ल.ज १/१८१ । ४ बहते हुए तृन जड मलिन ~ बपु राखै निज कर गहै जु जाइ १/१८१ ।

बहत[2] वहन करते हो, रखते हो सूर पतित कौं ठौर नहीं तौ ~ विरद कत भारौ १/१३१ ।

बहति १ बहती है, प्रवाहित होती है : बृथा ~ जमुना ४०६८ । २ बहक रही हो, भटक रही हो . सूर प्रभु कौ ध्यान चित धरि अतिहि काहे ~ १६४४ ।

बहते बह जाते : भली भई सुधि रही सूर, नतु मोह धार मैं ~ ३५५० ।

बहनियाँ गगरी, मटकी : मेरे सिर की नई ~ ३३७ ।

बहनी अग्नि तुम कहियत उडुराज अमृतमय तजि स्वभाव कत बरषत ~ ४२६३ ।

बहर बाहर : सूर भीतरे ~ के ३४ ।

बहरकौ प्रकार का : को कहि बरनै अतिहिं ~ ९०५ ।

बहराइ[1] १ भुलावा देकर, चकमा देकर हौं ~ इतहिं आई री २८२६ । २ बहला : मैं पठवत अपने लरिका कौं आवे मन ~ ५१० ।

बहराइ[2] बहाकर, प्रवाहित कर : फिर इत उत ~ नीर नैननि कौ सोध्यौ ४०९५ ।

बहराई बहलाई गई, बहकाई गई . जनु सुरभी बन बसति बच्छ बिनु परबस पसुपति की ~ ९/१६९ ।

बहरातौ बहलाने/फुसलाने से : पहलो प्रीति कितै गइ सजनी, मन न रहत ~ ३९३४ ।

बहरायौ बहका दिया : जबही मैं बरजति हरि-सगहिं, तवहीं तव ~ २३६६ ।

बहरावत[1] अलग/बाहर करते हो : वैद्य जानि हमकौं ~ ९/३ ।

बहरावत[2] बहलाना · तेरैं बिरह बृषभानु नदिनी मोहन ~ हैं डोर २७६६ ।

बहरावति भुलावे मे डालती है : बातैं बूझत यौं ~ ४१४६ ।

बहरि बाहर · जमुन-तट हरि देखि ठाढे, टरनि आवै ~ १४२१ ।

बहसि होड/हठ करके . नैन नीर भरि ~ वहे री ३००६ ।

बहाइ १ वहाती है या बहाकर अग पुलकित रोम गदगद, सुखद ऑसु ~ ५८० । २ बहा रही थी अति क्रम, दीन-छीन-तन-प्रभु बिन, नैननि नीर ~ ९/१६१ । ३ बहा देना . रिस-करि-गरजन नभ, बरषत चाहत ब्रजहिं ~ ८७८ । ४. वहा प्रथमहि देउँ गिरिहिं ~ ८५२ । ५ वह, प्रवाहित हो : ऐसैहिं चले ~ ३१२६ ।

बहाई बहा दी, प्रवाहित कर दी : परत फिराइ पयोनिधि भीतर सरिता उलटि ~ ९/१७४ ।

बहाई १ बहा दी : रुधिर करि नीर सरिता ~ ४१८३ । २ बहा दी हो : मनौ एक सँग गंग-जमुन नम तिरछी धार ~ १८१४ । ३ बहा देती ब्रजहिं ~ ९६७ ।

बहाऊ नष्ट कर दिया सब असुरनि मारि ~ ७२१ ।

बहानी १. बहती है ऐसैं हीं यह बायु ~ १७३७ । २ बहने लगी : जमुना उलटि ~ १३२८ ।

बहानौ बहाना . यह ~ करि लियौ १९६६ ।

बहायौ बहाया, बहा दिया : डारि जमुन के बीच ~ ३०९५ ।

बहावत १ बहा देते हैं, दूर कर देते हैं : बधन कर्म कठिन जे पहिले सोऊ काटि ~ २/१७ । २ बहाती हैं, गिराती है . नैनन नीर ~ ४२८१ । ३ बहा रहा था . सूर इन्द्र ब्रज जबहिं ~ १५१३ ।

बहावहि बहावें : प्रथम बहाइ देहिं गोरधन ता पाछें ब्रज खोदि ~ ८५६ ।

बहावहु बहा दो : गाइ गोप ब्रज सबैं ~ ९२८ ।

बहावैं १. बहा दें : छिनहीं मैं ब्रज धोइ ~ ९२९ । २ बहाते हैं सो रस गोकुल-नालिनि ~ ३ ।

बहावैं बहाना है : सूर स्याम मिलि धर्म-सुवन-रिपु ता अवतारहिं सलिल ~ २७७९ ।

बहियानि बाहों को, भुजाओं को : जाति ऐंडानि गान गोरि ~ मेलि २०१० ।

बहि प्रवाहित हो : मनु चली ~ सुधा धारा १८३७ । ~ **किन जात** नष्ट क्यों नहीं हो जाती : रति बिचारि जु मान कीन्हों मोउ ~ — २०८५ । △ ~ **गई** गिर गई, पतित हो गई प्रेमी ~ — को, स्याम सग फिरै जो १७०७ । △ ~ **जाइ** बह जाय, खो जाय : हार ~ — अति गई अकुलाइ कै २०१४ । ~ **न जाइ** चली न जाय, विनष्ट न हो जाय : ~ — कुलकानि १८८३ ।

बहिक्रम बाहरी व्यवहार एक ~ एकहिं बानक २६२० ।

बहिबौ १ बहना : जब तैं गंग परी हरि पग तं ~ नहीं निवारै ३७७८ । २ बहने से अब न देह जरि जाइ सूर इनि नैननि कौ ~ ४०५६ ।

बहियत बहती, प्रवाहित होती : बिनु पावस अति नैन उमँगि जल कित सरिता उर ~ ३२३१ ।

बहियाँ बाहें, भुजाओं को . कान्ह ~ गहि मेरी १६७० ।

बहियै बह/डूब जायें . कबहुंक जिय प्रेमी उपजति है जाइ जमुन ~ ३०९३ ।

बहिरी बहरी, बधिर : ~ पति मौं मतौ करै सो तैसोइ उत्तर पावै ३५५० ।

बहिरौ बहरा, बधिर : ~ तान स्वाद कह जानै ३९५९ ।

बहिहौं बह जाऊँगी अब हौं जाइ जमुन जल ~ ३१६९ ।

बही बहने लगी : अति स्रम मलय कुंकुमा सींचत सरिता सेज ~ ४१४२ ।

बही[1] १ बह गई है, समाप्त हो गई है ये झरना नी झरत सदा ही सोभा सकल ~ ३५७१ । २. बहने लगी हो : मनु बरषत भादौं मास, नदी घृत दूध ~ २४ । ३. प्रवाहित हो चली, बहने लगी : जमुना ~ उलटि अति ब्याकुल १२८३ । ४ बहती, बहती हुई . ब्रज की बीथिनि फिरति ~ री २९ ।

बही[2] खाता-बही, हिसाब किताब लिखने की पोथी . सूर पतित जौ झूठ कहत है देखौ खोजि ~ १/१३७ ।

बही[3] १ भटकी, भटकती रही : यह मोकौं सुधि भली दिवाई, तनु बिसरे मैं बहुत ~ १६६९ । २ भटकती हुई, मारी मारी : मैं तबही त फिरति ~ री १८९० । ३ मारी-मारी फिरता : कहा करति यह ग्वारि ~ १६७५ ।

बहु १ बहुत, अत्यधिक हरि हित उन मुनि ~ तप करयो ८/१२ । २ बहुत से, अनेक : जिय करि कर्म, जन्म ~ पावै ५/४ । ~ **भाँति-भाँति** अनेक प्रकार के अरु मेवा ~ — हैं २१२ ।

बहुऽनुराधा बहुत प्रेम (कर रहे हैं) कान्ह काज करत है ~ २०२५ ।

बहुआनन अनेक मुखों से सहमानन ~ गावत सारा० ९९४ ।

बहुगुनी अत्यत गुणवान . सूर स्याम ते ~ जे तुमहिं रिझाव २५५८ ।

बहुतक १. बहुत से, अनेक, बहुतेरे : ~ दिवस भए या जग में, भ्रमत फिरयौ मति हीन १/४६ । २ अत्यधिक, दीर्घ ~ काल बीति जब गयौ ९/१७३ ।

बहुतनि बहुतों, अनेकों . हाथ-पाइँ ~ के काट ४/५ ।

बहुतहि बहुत ही, अनेक बार : नाभिकमल मैं ~ भटक्यो तऊ न पायो पार सारा० ११ ।

बहुताइ अधिक : डगरि गई गैयाँ बन-बीथिनि, देखौं अति ~ ५०० ।

बहुताई १ बहुत है, पर्याप्त है गिरिवर धर्यौ यहै ~ ९५१ । २ बहुलता थी, अधिकता थी अन्य भोग अतिहिं ~ ९०८ ।

बहुतेरे बहुत से, अनेकों सुनि सुमिरत ~ २२७९ ।

बहुतेरौ १ बहुत-सा, अत्यधिक निरखत दुख ~ सा० ल० ३३ । २ बहुत है मेरे लेखे सुख इतनौ ~ ३९९४ ।

बहुतैं बहुत, अत्यधिक : तन मन न्यौछावर करं, आनँद ~ १३७५ । △ ~ **मूँड चढ़ायौ** बहुत ही सर पर चढा लिया था, अत्यधिक सम्मान दिया था अब लौं कानि करी मैं सजनी ~ २२४६ ।

बहुतै १ बहुत ही, अत्यधिक मात्रा मे : मैं तुम विन ~ दुख पायौ ९/२ । २ बहुत-सी, अनेकों : तुमहिं बूझ ~ बातनि की ४१३० ।

बहुनायक ननेक स्त्रियों से प्रेम रखने वाले, अनेक स्त्रियों के पति हैं नदनंदन गिरिधर ~ १८९८ ।

बहुनायकी बहुनायकत्व, अनेक स्त्रियों से प्रेम करने की बात . ~ आज मैं जानी २५५६ ।

बहुपाद अनेकों पाँवों (जडों) वाला अर्थात् वट वृक्ष=वर अर्थात् पति, वर . जूप मोहि ~ मिलावो सा० ल० ९ ।

बहुमोल बहुमूल्य : आभूषन ~ पटवर ९/१६१ ।

बहुरग विविध प्रकार से वृन्दावन मे हम सुनियत है क्रीडत हौ ~ सारा० ५१९ ।

बहुरंगी अनेक रूप धारण करने वाले हैं : जनहित हरि ~ १/२१ ।

बहुर पुन , फिर अब कैं तौ आपुन लै आयौं, बेर ~ की औरैं १/१४६ ।

बहु-रवन बहुतेरियों के साथ भोग करने वाले · वै ~ नगर की सोऊ ३१४४ ।

बहुरहु मुडकर : कछु जिय आस रहति विधि वस जौ ~ फिरि फिरि मिलते ३३७६ ।

बहुराई लौटा, वापस कर : तिन्है दियौ जसुदा ~ ३९१ ।

बहुरावहु लौटाओ, वापस बुलाओ : भई अबार, गाइ ~ उलटावहु दै हाक ४६४ ।

बहुरि[1] **क्रि०वि०** १ पुन , फिर से, दोबारा : ज्यौं बालापन ~ न आवै २३१६ । २. फिर भी, इतने पर भी : ~ कहति हम सौं यौं बात ९/२७४ । ३ इसके पश्चात् ही, इतने मे ही : ~ सध्या समय होन आयौ ७/६ । **अव्य०** और सनक सनदन सनतकुमार ~ सनातन नाम ये चार ३/६ । ~ **बहुरि** फिर-फिर, बार बार कह्यौ न काहू कौ करै ~ — अरै ४२१७ ।

बहुरि[2] लौटकर : और गोप जे ~ चले घर ४५० ।

बहुरियाँ वधुएँ तुम जोवन भरी नवल ~ ७९९ ।

बहुरिहुँ फिर से भी, पुन. भी, दोबारा भी : ऊधौ तिहारे पा लागति हौं ~ इहिं ब्रज करबि ~ ४०८० ।

बहुरी लौटीं · ~ सब अति आनद, निज गृह गोप-धनी २४ ।

बहुरी लौट आई : ~ दोष मिटाइ ५४० ।

बहुरे वापस आये : गए सु गए फेरि नहि ~ २३५० ।

बहुरौ पुन , फिर से : कहत सूर प्रभु ~ चलौ १०४१ । फिर, तत्पश्चात्, उसके बाद, इसके बाद : ~ रिषभ बड़े जब भये ५/२ । २. तथापि, फिर भी, : जद्यपि यह प्रेम हीन ~ समुझावै ३८८७ । ~ **फिरि** दोबारा, बार-बार : ~ — जानक न कहाए ३२ ।

बहुर्‌यौ लौटकर, फिर से, दोबारा : सो ~ भव जल नहि आवै ३/१३ । ~ **फेरि न आई** पुन वापस नहीं आती : ज्यौं मरजादा जाइ सुपत की ~ — २३१६ ।

बहुला राधा की एक सखी : सुमना ~ चपा २००८ ।

बहुलाबन वृ दावन के ८४ वनो मे से एक । इस बन मे बहुला नामक गाय का व्याघ्र के साथ सत्य वचन निर्वाह की कथा प्रसिद्ध है . कुमुदबन सुदर ~ अभिराम सारा० १००८ ।

बहुलि इलायची : बकुल ~ बट कदम पै ठाढीं ब्रजनारी १०९५ ।

बहूँटनि बहूटा या बहुँटा, बाँह का एक गहना : बहु नग जरे जराऊ अँगिया भुजा ~ बलय सग कौ १४७५ ।

बहू वधू, दुलहिन · बडे घर की ~ बेटी करति बृथा भँवारि १५५५ ।

बहे वह चले : नदिया नार ~ ३८४९, देखत दरस स्याम सुदर कौ जल की ढरनि ~ २२३० ।

बहेरा बहेडा, एक जगली वृक्ष जिसका फल त्रिफला इत्यादि मे पडता है : वाइबिडग ~ हरैं १५२८ ।

बहै १ बही जा रही हैं (ठौर ठिकाना नहीं है) : तूहू धन्य हम बृथा ~ १९०६ । २ बहता, भटकता · अब कहा स्वारथ फिरत ~ १/५३ ।

बहै १ वह निकलती : जब लगि नवल किसोर न मुरली बदन समीर ~ ६४६ । २ चल रहा था : श्रुति तैसोई ~ है तहाँ पै त्रिविधि पवन २१७२ । ३ प्रवाहित हो रही है · परम सुभग जमुना ~ ४९२ । ४ बही चली जा रही है (पागल हुई जा रही है) अपनी चाड सारि उन लीन्हौं तू काहैं अब बृथा ~ री २०९० ।

बहैया प्रवाहित की, बहाई · जिनि चरननि छलियौ बलिराजा नख गगा जु ~ १३१ ।

बहैहौं बहाऊँगा, नष्ट कर दूँगा रावन के दससीस तोरि कैं कुटुंब समेत ~ परि० १/२ ।

बहोरत लौटाते थे , हाँक लाते थे : कबहुँक रहसि देत आलिंगन कबहुँक दौरि ~ गाइ ३७६९ ।

बहोरि[1] १ वापस करके, लौटाकर : सुनि ग्वालनि गाइ ~ बालक बोलि लए २४ । २ वापस कर (दो), लौटा (दो) : कान्ह ~ न देहु दही काहे कौं माते १६१८ ।

बहोरि[2] पुनः, फिर : स्याम-बदन- छबि निरखि जु अटके बहुरे नाहिं ~ २३५७ ।

बहोरी[1] १ वापस आई, लौट आई . सूर स्याम पनि तुम तैं पायौ यह कहि घरहिं ~ ७९८ । २ लौटा दी, वापस भेज दी . सूपनखा बन ब्याहन आई नाक निपात ~ ३३६१ ।

बहोरी[2] पुन., फिर, फिर से : धोखे ही बिरवा लगाइ कै काटत नाहिं ~ ३९७४ ।

बहोरी लौटाओ, हाँक ले चलो घर को गाइ ~मोहन ८६८।
बहौं[1] वहन करता हूँ, ढोता हूँ : कबहुँक चढ़ौं तुरग महागज, कबहुँक भार ~ १/१६१।
बहौं[2] बह जाऊँ, डूब मरूँ : मेरे जिय मे ऐसी आवति जमुना जाइ ~ ३२४७।
बहौ[1] बहाओ, बहा दो : जप तप सजम नेम धरम को नदिया जाइ ~ ३९३०।
बहौ[2] १ भटको, चलो : भावे तहाँ ~ १६८६। २ बहती रहो, भटको सूर कहै अलि पूरौ दीजै वार्तनि ही न ~ ३८२९।
बह्नि अग्नि ज्यौं घृत होम ~ की महिमा सूर प्रगट या माहिं २१२१।
बह्नि रिपु अग्नि का शत्रु अर्थात् बादल ~ की उमड देखत सा० ल० ३०।
बह्यौ[1] **क्रि० अ०** १ बह गया, प्रवाहित हो गया : पानी है सु ~ ४१३१। २ बहने लगा : उलटि ~ जमुना को नीर ११८०। ३ बहने/चलने पर . उठति विरह धूम पावक कर बरि बरि बायु ~ ३७८४। ४ व । . मो रम जात ~ २८०७। **पुं०** बहना, प्रवाहित होना : जमुना तोहि ~ क्यौं भावै ५६१। ~ **सु बह्यौ** जो बह गया सो बह गया : जैसैं नीर प्रवाह समुद्रहिं माँझ ~ — २३१४।
बह्यौ[2] वहन किया, उठाया, ढोया : सुद्धासुद्ध बोझ बहु ~ सिर १/२१६।
बह्यौ[3] भ्रम में पड़ा रहा, भटकता फिरा/रहा धोखैं ही धोखैं बहुत ~ १/३२७। △ ~ **जात गह्यौ हाथ** भटक रहा था हाथ पकड़ लिया (उबार लिया) : कृपा करी जो गुरजन पठए ~ — १/२०८।
बाँकी १ टेढ़ी-मेढ़ी डोलत ~ कुंजगली २६१९। २ सुन्दर, कटीली ~ भौंह बक्र दृग राँचे ३७३०।
बाँके[1] १ बक्र, टेढ़े, तिरछे : मैं पहिचाने नैना ~ २६३०। २ सुदर, पुष्ट, अद्वितीय : चरन-कमल भुज ~ १२१६।
बाँके[2] वीर, साहसी : दुहूँ दिसि सुभट ~ विकट अति जुरे ४१६१।
बाँकौ अच्छा . नरहरि है हिरनाकुस मार्‌यौ काम पर्‌यौ हो ~ १/११३।
बाँगुर बधन, जाल, फदा : घूँघट पट ~ ज्यों विडरत २७४०।
बाँचत १ पढता है : तिन अकनि कोउ फिरि नहिं ~ १/२९८ २ पढते ही · पाती ~ नद डराने ५२६। ३ पढने पर · हम ~ यह भीजे ३७१७।
बाँचि[1] १ पढकर · ~ सुनावहु लिख्यौ कहा है ३७१७। २ पढने, पढने मे : पाति ~ न आवर्ड ४१८८।
बाँचि[2] १ बचकर, सुरक्षित होकर · उरग तैं ~ फिरि ब्रजहिं आयौ ५९०। २ रोकना : हम अबला रिस ~ न जानी ७५९।
बाँचिहैं बचेंगे, बच सकेंगे · तब गिरिवर कर धर्‌यौ कन्हैया अब न ~ भारत जारे ५९५।
बाँचिहै बचेगा, बच सकेगा : अब ब्रज न ~ ५९३।
बाँचिहौ बचोगी : दिये दान पै ~ १४६१।
बाँची[1] १ बची है : मातु-पिता लोक-भीति बाकी नहिं ~ १९१०। २ बच गई : सुमिरत नाम द्रौपदी ~ १/१८।
बाँची[2] पढ़ी, पाती ~, सुनी दूत मुख ५२७।
बाँचे[1] कहे, बोले : प्रीति के वचन ~ २५४०।
बाँचे[2] बच गये भली भई अब की हरि ~ ७९।
बाँचैं पढने, बाँचने · वै अक्रूर वेह हरि ऊधौ, आन्यौ जोगाह ~ ३९९२।
बाँचै[1] १ बच सके : और कौन जो तुमसौं ~ ५५८। २ बचती है · उपजी जब दम्पति बासना धाम ~ परि० १/२९०।
बाँचै[2] बोलती रहे इहिं विधि सकल लोक मैं ~ १/८१।
बाँचौ १ बचो, सुरक्षित रहो विषय-विषम-विष ~ १/८३। २ बचकर : जातैं काल-अगिनि तैं ~ १/९१।
बाँच्यौ १ बच सका बिनु देखैं, बिनु ही सुनैं, ठगत न कोऊ ~ १/४४। २ बचा है, शेष है मरवस दै अबर तन ~ १/२५१।
बाछा इच्छा, कामना . करत मन मन यहै ~।
बांछित मन चाहा, मनोवाछित : होहिं ~ काम ३६९१।
बाछ्यौ इच्छा की, चाहा · कुंवरि फल ~ सो पायौ ४१८०।
बाँट बाँट (साझा) . ~ कहा अब सबै हमारो १५४२।
बाँटत बाँटते हैं, देते हैं · अमन ~ खात बैठे ३२१६।
बाँटि[1] बाँटकर सबनि कौं ~ मेटी लराई ८/८। २ बाँटने . कह्यौ, तुम ~ पर हमैं विस्वास है ८/८।
बाँटि[2] पीसकर · उरजनि कौं विष ~ लगायौ १/१५८।
बाँटी बाँटकर : सिगरोइ दूध पियौ मेरे मोहन बलहिं न देहौं ~ २५९।
बाँटे बाँट, हिस्से : अपने ~ कौ धरिहौं री २३१९।
बाँटैं बाँट मे, हिस्से मे मेरैं ~ पर्‌यौ जजाल २३१७।
बाँटो क्रि० स० बाँट दिया : अनत नहीं सुख ~ ३९०३। पुं० बाँट, हिस्सा . ~ देत रोइ अब आवत २३२०।
बाँड्यौ बाँटा, वितरित कर चुके : सूर सगुन ~ गोकुल में अब निरगुन ओसरौ ३७३५।
बाँधत १ बाँधते हैं - ~ बदनवार सारा० ३९५। २ बाँधता है : टेढी ~ पाग ३२८। ३ बाँधते हुए . मदन-माला ~ डोलैं ३२। ४ बाँधने मे तोहिं ~ बिलम न लावै ~ ९/११५।
बाँधति बाँधती हैं/है : ~ गरैं बघनियाँ ८३।

बाँधन बाँधने के लिए : ~ कहत अकास १५०५।
बाँधव भाई, मित्र और सगे सम्बन्धी : मातु-पिता ~ अति त्रासत १००३।
बाँधहु बाँधा · ~ बदनवार मनोहर ४१८५।
बाँधि १ बाँधकर : डोरा ~ उडाई ३९६८। २ ~ बाँधि बाँध-बाँधकर नद घरनि ~ — ३९४।
बाँधिबे बाँधने : ताही कठ ~ कारन ३८२५।
बाँधिबेहि बँधे जाने से, बधन मे आने से अब जनि ~ डराहु ४१३५।
बाँधिहैं बाँधेगी, बधन मे डालेंगी : ~ क्यौं मन पखेरू साधिहैं क्यौ पौन ३९९७।
बाँधे १ बाँधा है, बाँध लिया है : सूरदास प्रभु दृढ करि ~ ३६४३। २ बाँधकर, बाँधे हुए : ~ मूड फिरत ठगवारी ३७४६। ३. लपेटे हुए हैं, बाँधे हुए हैं : सीस जटा सिव-सम सिर ~ ९/५८। ४ बाँधे गये . कबहुँ कहति हरि ऊखल ~ ४१०३।
बाँधैं बाधते हुए . कबहुँ ~ अतिहिं लगत लोभा १९८८।
बाँधैंगी बाँधेगी, बधन मे डालेगी : ग्वारिनि मोहि बहुरि ~ ४०३४।
बाँधैं १ बाँधे सूरदास मानिक परिहरि कै छार गाँठि को ~ ३८९५। २ बाँध टाले : ~ सिंधु सकल सैना मिलि ९/११०।
बाँधौं १. बाँधूंगी : मैं आज तुम्हें गहि ~ १८३। २ बाँध दूँ, गूँथ डालूँ : ~ बिथुरी अलक सँवारि ११५२।
बाँधौंगी बाँधूँगी, बाँध दूँगी · मैं तुमकौं अबहीं ~ १९३४।
बाँधौ १ बाँध दो, बाँधो अपने नाम की बैरख ~ १/१८५। २ लपेटो, धारण करो : जुवतिनि कहत जटा सिर ~ ३८६८। ३. बाँधूँ, गाँठ दूँ · उठावैं को डोरी कैसे ~ परि० १/६०। ४ बाँधते हो, धारण करते हो . हमरे गुनहिं गाँठि किन ~ ३५४३। ५ बँधा हुआ है, लगा हुआ है . जिय पद कमलनि ~ ३१९९। ६ बाँध देना ताहीं सौं नाव मम सग ~ ८/१६। ७ बँधा था जौ तौ कर पग नहीं कहौ ऊखल क्यौं ~ ४०९५।
बाँध्यौ १ बाँध रखा है, बाँधा है . दारुन दाँवरि ~ ३७२। २ बाँध दिया है चातक स्वाति बूँद चित ~ ३६९८। ३ बँध गया हूँ ~ हौं इहिं साज १/१०८। ४ बाधा/बँधा हुआ : ~ फिरथौ अनाथ १/२०८। ५ बाँधना, बधन मे डालना . चाहत बिरहिनि ~ ४२६९। △ ~ **बैर** शत्रुता ठान ली : ~ — ध्या भगिनी सौ १/१७३। △ ~ **प्रन भारी** बहुत बडा प्रण ठान या कर लिया है इन नैननि ~ — १७९४।
बाँबी बिल . ~ पर अहि करत लराई ३९१।
बाँभन ब्राह्मण : श्रीधर ~ परम कसाई ५७।
बाँसनि बाँसों से, बाँसों की ~ मार मची कर आडे २९०१।
बाँह बाह, बाहु। △ ~ **लै** सहारा/आश्रय लेकर : बचन ~ — चलौ गाँठि दै १/१४६।
बाँहनि बाँहे, भुजाओं को : बाँध्यों है गोपाल लाल ~ पसारि ३६०।
बाँहाजोरी गलबाही डाले हुए : ~ कुसुम चुनत दोउ।
बाँहि भुजाओं मे : बसौ हमारी ~ २९१४।
बा पानी, जल नृत्य भेद बिचार ~ बिनु सा० ल० २७।
बाइ[1] १. वायु, हवा · बारि मैं ज्यौं उठत बुद बुद लागि ~ बिलाइ १/३१६। २ वायु से : बिरह ~ बौराने ३८४०।
बाइ[2] खोलकर, फैलाकर मेरे कहैं नहीं तू मानति, दिखरावौं मुख ~ २५५।
बाइ[3] बावली · भाने मठ कूप ~ सरवर कौ पानी ९/९६।
बाइ[4] पगली, बावली : मोहिं करि गए ~ १६५४।
बाइ[5] १ वात व्याधि से (के कारण) . बकत ~ बौरानी ३७४१।
बाइ फैला कर, खोलकर : धायौ निज मुख ~ १३९६।
बाउ वायु, हवा बिकट ~ काटै ३४८।
बाकी[1] १ शेष सबै लेहु राखहु जनि ~ १६१०। २. अपूर्ण, अधूरा . कियौ मन-काम नहिं रही ~ २४९०।
बाकी[2] कर्ज, ऋण लागै धरम बतावै अधरम ~ सबै रही १/१८५।
बाखरि बखरी, घर : रँगि गई ~ महल अटारी २९०७।
बाखरी बखीर, खीर हाँ जु दूध ~ धेनु कौ तुम हित औटि जमाऊँ परि० ७/३२।
बागर ऊँची भूमि या मरुस्थल ~ तै सागर करि डारै १/१०५।
बागरि बधन, जाल : फिरि फिरि आवत ~ कौं २०१९।
बागरी[1] जाल मे : जैसै मृगिनी भूली ~ २८०१।
बागरी[2] टोले टोले से : घोष की ~ १६१८।
बागुर बधन, जाल, फाँस ज्यौं मृग-सावक-जूथ मध्य ~ चहुँ ओरी १४६१।
बागे अँगरखे अपने गोपाल के मैं ~ रचि लेउँ १०७५।
बाचर जलचर, पानी मे चलने वाली अर्थात् मछली . ~ नीतन तै सारग अति सा० ल० २४।
बाचा वाणी से · मनसा ~ और कर्मना ३९६९।
बाचि बाच बाचक वाच्य = निर्देशक और कथित अथवा शब्दार्थ · कहै ~ तैं सा० ल० ९३।
बाचिहैं बचेंगे, सुरक्षित रह सकेंगे · मेरैं बैर ~ भाई ९२३।
बाचै बचा रह सकता है तेरौ मुख देखत ससि लाजै और कहौ क्यौ ~ ७१८।
बाच्य अंतर आदि जप वाच्य=अर्थ, अतर, आदि जप=जप का आदि=न्यास। अब अर्थ, अन्तर और न्यास तीनों को

मिलाने से बना=) अर्थान्तरन्यास . ~ कर नूर भूषन तोर मा० ल० ६० ।

बाच्यौ बचा, सुरक्षित रहा . मनहिन लोकपाल उन जीते कोऊ ~ नाहिं सारा० १४१ ।

बाछे बेटे, बच्चे लेति बलाइ बोलि मुख ~ ५०७ ।

बाज[1] बाज, एक शिकारी पक्षी . धरि आनै ज्यौं ~ १३९६ ।

बाज[2] बिना : क्यौंव जिऐं उन ~ ३३४८ । △ न आयौं ~ हटता नहीं हूँ : देखत सुनत सबै जानन हौं तऊ — ~ १/१०८ ।

बाज[3] पु० बाजे : घर घर से मिष्टान्न चले बहु भाँतिन बाजत ~ ८२८ । क्रि० स० बजाती हुई नूपुर ध्वनि जिन ~ सारा० ९२५ ।

बाजई बजता है : पाइनि नूपुर ~ १३४ ।

बाजत १ बजते है, बज रहे हैं · ~ ढोल मृदंग निमानै ८९१ । २ बजती है मुरली कल मुख ~ ४०२६ । ३. बजती हुई : गोकुल ~ सुनी बधाई १२ । △ ~ सबद आवाज हो रही थी ~ — नीर कौ धर-धर ९३९ ।

बाजति बजती है, बज रही है ~ नद अवास बधाई ८१८ ।

बाजते बजाते हुए । △ ~ निसान डंके की चोट पर : नीच पावै ऊँच पदवी ~ — १/२३५ ।

बाजन १ वाद्य, बाजे . भक्ति मुक्ति के ~ बाजें ३०९७ । २ तान, वादन : सुनत बन मुरली धुनि की ~ ६२२ ।

बाजनि वाद्य, बाजा : बधिक कपट की ~ ३१५८ ।

बाजने वाद्य, बाजे : बाजत नगर ~ जहँ तहँ ३०२३ ।

बाज बोल हेरन घोड़े की बोली = हींस, हेरन = नजर अर्थात् घोडे की हींस और नजर . ~ तुहीन चल मिलत सुता पति मानौ सा० ल० ९९ ।

बाजा बजता रहता है . यह निसान नित ~ १/१४४ ।

बा जा पति अग्रज अंबा के भान थान सुत बा=जल अर्थात् समुद्र, उसकी जा = पुत्री अर्थात् लक्ष्मी, उनके पति = विष्णु अर्थात् कृष्ण, उनके अग्रज=बड़े भाई अर्थात् बलराम, उनकी अंबा=माँ अर्थात् रोहिणी=रोहिणी नक्षत्र, उसमे भानु-थान=बारहवाँ स्थान=स्वाति, उसका सुत=पुत्र= मोती : ~ हीन हियौ री मा० ल० शेष १ ।

बा जा पति वाहन की सैना बा=जल=समुद्र, उसकी जा= पुत्री=लक्ष्मी के पति=विष्णु के वाहन=गरुड़ की सेना= पक्षी · ~ सा० ल० ५१ ।

बाजि १ घोडे . गज उरोज वर ~ बिलोचन २४५५ । २ घोडे की बाएँ कर ~ बाग १/२३ ।

बाजिनि घोड़ों के : गज ~ सिर लागि सारा० ९/१५८ ।

बाजि रथन घोड़ों और रथों पर : कहुँ गजरथ ~ साजि सारा० ६७४ ।

बाजिहैं बजेंगे ((पड़ेंगे) . लादत जोतत लकुट ~ तन कहँ मूँड दुरैहौ १/३३१ ।

बाजित्र वाद्य, बाजे : ~ बहु बाजहीं परि० १/१९६ ।

बाजी[1] दाँव, पाँसा : फिरि फिरि ~ हारी १/६० ।

बाजी[2] बजी : ~ ताँत राग पहिचान्यौ ३८४१ ।

बाजी[3] बाजि, घोडे · गज, रथ, ~ गनाइ १०७४ ।

बाजीपति-अग्रज कार्तिकेय के बडे भाई गणेश अथवा इन्द्र के बड़े विष्णु, कृष्ण · ~ अवा तेहिं, अरक थान-सुत माला गुहहि १०७ ।

बाजु बिना, बगैर : सूरदास मन रहत कौन विधि बदन बिलोके ~ ३८३५ ।

बाजे १ बजते हैं · भवसागर मैं कबहुँ न भूकै अभय निमाने ~ १/३६ । २ बजने पर . ~ सबहि जानिहौं ४१८८ ।

बाजै १. बजता है, बज रहा है : रुनक झुनक कर कंकन ~ २९९ । २ बजती है, बज रही है · अरुन अधर मुरली कल ~ ४०९४ ।

बाज्यौ बजा, बजने लगा : द्वारिका ~ अनँद निसान ४१८८ ।

बाझि फँस जाने से : जाल ~ अकुलात १२०६ ।

बाट[1] १. मार्ग, रास्ता : मजारी गई काटि ~ ५८९ । २ रास्ते मे : घाट ~ टर नाहीं १६१० । ३. रास्ते पर या की ओर · सीस धरि श्री कृष्ण लीने चले गोकुल ~ ५ । △ ~ करि रास्ता बनाकर : जुगल कपाट बिदारि ~ — ४२१६ ।

बाट[2] प्रतीक्षा : बीति गए जुग ढूँढत बन बन, कठिन स्याम की ~ ३७३३ ।

बाट[3] बाँट, साझा . याहू मैं कछु ~ तिहारी १५४१ ।

बाट-घाट रास्तों एव घाटों पर ढूँढति ~ बन धन मैं १०८८ ।

बाटनि रास्ते, मार्ग . रुकि गये ~ नारे पेंडे २९०२ ।

बाटहि रास्ते को : देखि देखि मधुबन की ~ धुँधरे भए मेरे नैन ३२५५ ।

बाटी अगारा या उपलों पर सिकी मोटी छोटी रोटी . दूध, बरा उत्तम दधि ~ २२७ ।

बाढ बढा : ऊधौ यहै अचंभौ ~ ३६४२ ।

बाढई बढई : इक लख माँगे ~ ४७ ।

बाढत १ बढता है, सघन होता है . ~ प्रेम प्रतीति ३९०५ । २ बढती है : कहत सुनत ~ रस रीति ११८० ।

बाढ़हीं बढते हैं : जाके दीन्हैं ~ ८२३ ।

बाढि बढ : कहा भई जौ ~ तनक गई १७१० ।

बाढिहै बढेगी : याके दीन्हैं ~ गोधन सुख पाइ परि० १/४४ ।

बाढी १. बढी, बढ गई : जल धारा ~ तिहिं काल ४११२ । २ बढ गया · एक सुख करत अति नेह ~ ११५७ । △ घरही की ~ घर की अधिक · ग्वालिनि हैं — ~ ७७४ । बन की ~ बन मे बढी हुई · — ~ बापुरी घर यह ठकुराइ

१३११।

बाढ़े १ बढ़ गये यक्ष प्रबल ~ भुव मंडल सारा० ८१। २ बढ़ते तापर रचना रची बिधाता बहु बिधि रत्न न ~ सारा० २४। △ **घर ही के** ~ घर मे ही लम्बी चौड़ी हॉकने वाले तुम कुँवर — ~ २८१०।

बाढ़ै १. बढ़े बिरह व्यथा ~ जब तनु मे सारा० ५४९। २. बढ़ेगा, जाके पूजैं ~ गोधन ८९८। ३. बढ़ जाय, छा जाय दिसि-दिसि ~ ताम ९/१४८।

बाढ़ो बढ गया, बढ़ा : तब शिव ने उन कृत्या दीन्हीं ~ क्रोध अपारा सारा० ७०७।

बाढ़ौ १ बढ़ चला, बढ़ने लगा : सुनत यह बचन पिय बिरह ~ २४२१। २ बढ़े : ~ बस नद बाबा कौ २९१६।

बाढ़यउ बढ़ गया, बढ़ा : सुनि बलदेव क्रोध अति ~ सारा० ८०५।

बाढ़यौ बढ़ गया हो, ठन गया हो . ~ **बैर करन** अर्जुन ज्यौं २१२४। २ बढ़ा, उत्पन्न हुआ : तब मन ~ आनद ३०९०। ३ बढ़ आया, बढ़ गया : नासिका लौं नीर ~ ५। ४ बढ़े हुए : जन्म जन्म ~ जूठनि कौ ३९६। ~ **बहुत बखान** बहुत प्रशंसा मिली . दाड़िम, दामिनि, कुद कली मिलि ~ — २७६८। ~ **भाव** -प्रेम बढ़ गया हरि प्यारे सौं ~— ११८०।

बात[1] १. वचन, कथन, चर्चा, जिक्र। △ ~ **बनावन कौं** बातें गढ़ने मे, झूठ बोलने मे, डींग हॉकने मे : ~ — है नीकौ १/१८६। ~ **बनावन** बात बनाने, झूठ मूठ कहने . आई मो सन ~ — २७५५। ~ **रहै** इज्जत/मर्यादा रह जाय · सीता लै जाइ मिलौ ~ — तेरी ९/११८। ~ **सम्हार** काम सॅवार दिया . हीरा जनम दियौ प्रभु हमकौं, दीन्ही ~ — १/१९६। ~ **सुनाई** सदेश कहा मेघनि सौं यह ~ — ९२६। ~ **न ठानी** बात नहीं बन पायेगी · कालिह कही मैं इनसौं वैसै, अब तौ ~ — १७६७।

बात[2] वायु, हवा . बहै मलय ~ २८४७।

बात आदि औ जान अंत मिल रिपु पति पतिनी तासु पितु दलपति बात = पवन, इसका आदि अक्षर (प) और जान = यान = रथ, इसका अतिम अक्षर (थ), 'प' 'थ' को मिलाने से बना पथ, उसका शत्रु = नदी (यमुना) उसके पति (श्री कृष्ण) उनकी पत्नी (जाम्बवती) उसका पिता = (रीछ) = रिक्ष = नक्षत्र, नक्षत्र का दलपति = चंद्रमा : ~ लखि उदित जरत जनु सा० ल० २५।

बात चक्र चक्रवात, बवण्डर ~ ज्यौं तृनहिं उडत लै २२८६।

बातन बातों से : ~ गोकुल छरिए परि० १/१३६।

बातन चतुर बातो मे चतुर, वचन विदग्धा नायिका · ~ बताई सा० ल० ११।

बातनि १ बातो मे : ~ मोहिं भुलावै (री) २०७१ २ बातों से इन ~ मरजाद नसाई १५५४। ३ बातों को : क्यौं मन मानत है इन ~ ३५४९। ४ बातों के लिए : ऐसी ~ सौंह दिवावति १५७२। △ ~ **गह्यौ अकास** बातो से आकाश पकड़ती हो अर्थात् लम्बी चौड़ी बातें करती हो : ~ — १७३४। ~ **भोरी** बातों मे सीधी . चतुर राधिका ~ — १९७७। ~ ही बात की बात मे ही, क्षण मात्र मे . अजामील ~ — तार्‌यौ १/१३९। ~ **ही न बहौ** बातों मे ही मत खो जाओ . सूर कहै अलि पूरौ दीजै ~ — ३८२९। **सौ ~ की एकै बात** सारे वाद विवाद का सराश केवल इतना ही है : ~ — ७/२।

बात सुत भ्राता अप्रिय के बिन सुभावन हेर बात = पवन के पुत्र = (भीम) उनके अप्रिय भ्राता = (कर्ण) उसका स्वभाव = दानी = सखी, सखी के बिना नहीं देखूँगी : ~ सा० ल० १०७।

बात-हत अधड़ से उड़ाई हुई . मनहुँ प्रचड ~ पकज-धूरि २९०८।

बातहि बातों मे ~ कछू लेखा सर नाहीं १५६८। △ ~ **बात उघरिहै** बात की बात मे ही या क्षण मात्र मे रहस्य को खोल देगी · कैहै कहा चोरटी हमसौ ~ — १७२५।

बाता बात . मुख तैं कछु आवै नहिं ~ १९७३।

बाती बत्ती · जरति दिया ज्यौं ~ २९६३।

बातैं बाते सो तेरी ~ मानै ३८०१। △ ~ **कहा बनावति** बाते क्यो गढ़ती हो, झूठ क्यों बोलती हो : ~ — मो सौं, हमहूँ तैं तू चतुर भई २०१२। ~ **गढ़ि गढ़ि बानत** गढ़ गढ कर बातें बनाते हैं · झूठैं कहत स्याम अँग सुंदर ~ — २३१०।

बातैंइ बातें ही, चर्चाएँ ही : अब वै ~ ह्याँ रहीं ३००२।

बाद झगड़ा, प्रतिस्पर्धा या वाद-विवाद अब करैगो ~ १२३४।

बादत बात करता है : ~ बडे सूर की नाई ३०५३।

बादति[1] १ बहस करती, बकवास करती : ~ है बिनु काज हीं ५८९। २ झगडा करती है · दुहुँ कर बैठि गर्व सौं गरजति ~ सुनति न बात १३२६।

बादर[1] बादल, मेघ ~ जहँ तहँ दिए उडाई ६९२।

बादर[2] पयोधर = स्तन मद्ध ~ बीच मनि मे सा० ल० शेष ६।

बादर-बसन बादल रूपी (नीला) वस्त्र = घूँघट ~ उतारि बदन यौं, चंदा ज्यौं न छपै २८०५।

बादर स्याम काले बादल, तथा बादर=घन+स्याम=कृष्ण . ~ सेत नैननि मैं ३९४२।

वादि व्यर्थ ही : अब तू बकति ~ री माई २३३९। ~ **पच्यौ** व्यर्थ ही श्रम करके थके : हम इतने दिन ~ — ११३९।

वादित्र वाद्य, वाजे : साजे सजि ~ अपार सारा० १०७२।

वादिहि व्यर्थ ही, बेकार : ~ करत लराइ ३८०१।

वाधत पीड़ा देता है, कष्ट पहुँचाता है . सैल सुता धरि ता रिपु ~ सारा० ९५४।

वाधा स्त्री० विघ्न, अड़चन : करति काम को ~ ७२१। क्रि०वि० पीडित है, व्यथित है/होकर : काम विथा तनु ~ १६९७।

वाधे[1] बाँधा : जब जसुमति ने ऊखल ~ सारा० ८९०।

वाधे[2] बाधा उत्पन्न की, रोके : दिनपति सुत पतिनी-प्रिय ~ सा० ल० ६।

वाधौ बाधा, विघ्न : होत दरस कौ ~ ३२३२।

वान[1] वाण, तीर। ~ **दीपति चलायौ** दिन का वाण चलाया, दीप्त या प्रज्वलित वाण मारा . प्रद्युम्न ~ — ४२२१। ~ **वृष्टि करि** वाणों की वर्षा करके : ~ — सैन कँपायौ ९/१४१।

वान[2] आदत, स्वभाव स्याम सुंदर मदन मोहन ~ असरन सरन १/१२२।

वान[3] वानगी, प्रकार की, भाँति के : धुज पताक बहु ~ १३९६।

वान[4] वाण का एक पर्यायवाची शिलीमुख अर्थात् भँवरा, भ्रमर ~ भीर सुजान निक्रमत सा० ल० १८।

वान[5] (५) पाँचवें स्थान मे : ~ ससी सुत है पुत्री के सा० ल० ८१।

वान[6] वाणासुर, राजा वलि के सौ पुत्रों मे से सबसे बडा पुत्र, इसी की पुत्री उषा से अनिरुद्ध का विवाह हुआ था : ~ अभिमान मान माहिं धारयौ हुतौ ४१९८।

वान[7] बनावट, सजधज मुख सुन्दर अति ~ ६४३।

वानक १ वेश भूषा, सजधज . ~ देखन राखि रही हौं २१७९। २ शोभा, सुन्दरता : देखत अग अग प्रति ~ १५८।

वानत १ बनाते हैं वातें गढि गढि ~ २३१०। २ बनाता हूँ : दिन उठि विषय वासना ~ १/२१७।

वानति बनाती है : गढि गढि वातें ~ १४२८। △ **भली** ~ (रात) ठीक बन पड़ेगी : आपुहिं चलियैं तौ — ~ २५७२।

वानन वाणों मे, तीरों मे मदन हनत निज ~ ३१४६।

वाननि बान पर, मुद्रा पर . मन भावति छवि-~ १३६६।

मे से तीसरा . आपुहिं ~ ब्रह्मचारी ४०९४।

वानरपुत्र बानर = बालि, उसका पुत्र अगद अर्थात् बाजूबद नामक आभूषण : ~ सजे विन साज सा० ल० ९५।

वानर मित्र वेद सुत वानरमित्र = रीछ = नक्षत्र, वेद = चौथा अर्थात् चौथा नक्षत्र = रोहिणी, उसका पुत्र बलराम : ~ सुनत रग परगासै सा० ल० ७३।

वानर हित जा पति पतिनी-से वानर = हनुमान, उनका हितैषी = जाम्बवत, उनकी जा = पुत्री = जाम्बवती, उनके पति श्री कृष्ण, उनकी पत्नी = यमुना, से = समान अर्थात् यमुना के समान : ~ बाँधे बार अबार सा० ल० ३१।

वानहि वाण को : कैसे निफल करौ वा ~ ९/९५।

वाना भेस, पहनावा, वेश भूषा : माला तिलक मनोहर ~ लै सिर छत्र धरै ६/६।

वानासुर वाणासुर, दे० वान[6] : अनिरुद्ध ~ कुँवर : बँधाए ४१९८।

वानि[1] आदत, स्वभाव : जाकी ~ परी सखि जैसी २३१४।

वानि[2] वाणी, वचन, बात : अमिय समान कहति है ~ १३६२। △ ~ **भई भोरी** (सौंदर्य की प्रभविष्णुता के कारण) वाणी मुग्ध हो गई/आवाज बद हो गई सूरदास प्रभु-रसिक-सिरोमनि, देखत निगम ~ — १८९१।

वानि[3] चमक : सोहत लोह परसि पारस को ज्यों सुबरन बर ~ ३५४१।

वानिक सौन्दर्य, शोभा . नृत्तकार उत्तम बनाउ ~ मग चंद न आवै सा० ल० ९१।

वानि ठानि सजा-सँवार (कर) : सब विधि ~ करि राख्यौ ३५७३।

वानियौ प्रस्तुत कर दी : सो धरी विधि ~ १०७२।

वा निवास रिपु धर रिपु वा (पानी) मे निवास करने वाला (कमल) उसका शत्रु (चन्द्रमा) उसको धारण करने वाले (शकर) उनका शत्रु कामदेव ~ लै सर सा०ल० २८।

वानी[1] १. वाणी, शब्द : मधुकर मधु माधव की ~ ३८३२। २ वाणी में, बोलने में : यह राधा मैं हाथ विधाता बुधि चतुरई ~ २१६०। ३ कूक, आवाज की : मनहुँ प्रसमन पिक वर ~ २७८५। ४ रट थी, आवाज थी हरि मुख राधा राधा ~ २७५९। **अकास भई** ~ आकाशवाणी हुई वहँ — ~ १६०४।

वानी[2] आदत, स्वभाव : ताकैं सुत चोरी की ~ ३९२।

वानी[3] बनाई गई : घर घर ध्वजा पताका ~ २८०२।

बाने³ आन बान : प्रलय मेघ लै आए ~ ९४१ ।

बाने⁴ वाणी, ध्वनि : ब्रह्मादिक सिव सनक सनदन बोलत जै-जै ~ १०७० ।

बाने⁵ निशान, ध्वज : गति तेज बसन ~ उड़ात २८४७ ।

बानैं रूप, आकृति : औरै करत और धरि ~ ७९९ ।

बाने बान, आदत है : सूर स्याम जो हमसौं माँगत, और तियनि सो ~ १४७६ ।

बानैत योद्धा, बाण चलाने वाले : पायक मन ~ अधीरज सदा दुष्टमति दूत १/१४१ ।

बानौं स्वरूप, स्वभाव राम भक्त बत्सल निज ~ १/११ ।

बानौ¹ स्वीकृत धर्म, स्वभाव • भक्त बछल ~ है मेरौ ४ ।

बानौ² तैयार किया • तब मडल बिधि ~ १२८१ ।

बान्यौ बनाकर, पहनकर : घर-घर-बैर मृदंग-सब्द करि, निलज-काछनी ~ २३८५ ।

बापिका बावली . प्रीति ~ मराल २०५ ।

बापी बावली • सागर सूर विकार भर्यौ जल बधिक अजामिल ~ १/१४० ।

बापुरिहि बेचारी को : जोइ मैं कहौं करौ तुम सोई, सकुच ~ ~ कहा करौ ७९० ।

बापुरी बेचारी धन्य धन्य ब्रजनारि ~ ४१२५ ।

बापुरे १ बेचारे . देखौ प्रीति ~ पसु की ३३३५ । २ (आप) बेचारे ने • परम गुरू सिर मूँडि ~ कर मुख छार लगाई ३६८७ ।

बापुरौ बेचारा चातक क्यौं बन बसत ~ ३९९६ ।

बाबरी बावली, पगली : कहा डर करौ इन फनिग को ~ ५५१ ।

बाम¹ १ पत्नी : गौतम रिषि की ~ ९/२२ । २ ललना, नारी • मो कौं जानत वैसी ~ १९३४ । ३ स्त्रियाँ, नारियाँ • हरष उठीं सब ~ ५६४ । ४ नवेली (चन्द्रावली) • इत रिस करि रही ~ २५०१ ।

बाम² १. बायें : ~ कर सौ पकरि ८/८ । २. बायीं • ~ ~ भुजहिं सखा अस दीन्हे ४७० ।

बाम³ वि० कुटिल, टेढ़ा : निठुर हियौ ~ ताकौ लोभहीं पठाए ३०६८ । स्त्री० कुटिलता : जह निरुक्त की अवध ~ तू सा० ल० ९५ ।

बाम⁴ बाम = टेढ़ा आभूषण अर्थात् बेसर : ~ अकास प्रकासित न्यारी सा० ल० ९८ ।

बामन वामन, विष्णु का पाँचवाँ अवतार जो उन्होंने राजा बलि को छलने के लिए धारण किया था : ~ रूप धर्यौ बलि छलि कै २२१ ।

बाम बाम टेढ़ी स्त्री अर्थात् कुब्जा : ~ जिन सजनी कीन्ही सा० ल० ५८ ।

बामा नवेली के, बाला के सूर स्याम ~ रंग पागे २५५७ ।

बामी दीमकों के द्वारा स्वय के रहने के लिए बनाया गया मिट्टी का भीटा : ~ ताकौ लियौ छिपाइ, तासौ रिषि नहिं देइ दिखाइ ९/३ ।

बाम्हन १ ब्राह्मण : हरि कह्यौ जग्य करत तहँ ~ ८०० । २. ब्रह्मणों ने : सत पायौ ~ रे १/६६ ।

बाम्हनहि ब्राह्मण को बार बार ~ खिझायौ २४८ ।

बायक वचन कुत्सित कटु ~ सायक से ३९६९ ।

बायस १ कौवा, काग ~ बलि नहिं खात ४११९ । २ कौवे को कोकिल कपट कुटिल ~ छलि ३७५३ ।

बायस अजा सब्द की मिलवनि याही दुख बायस (कौवा) कौवे का शब्द 'का' अजा (बकरी) उसका शब्द 'मैं' इनके मिलाने से बना = कामैं = काम, याही दुख = इसी के दुख से अर्थात् काम-पीड़ा से : ~ तन छीजै ३९१२ ।

बायस सब्द अजा की मिलवन बायस (कौवा) उसका शब्द 'का', अजा (बकरी) उसका शब्द 'मैं', इनके मिलाने से बना कामैं अर्थात् काम ने या कामदेव ने • ~ कीनौ काम अनूप सा० ल० ६८ ।

बायसहि कौवों को : बाहँ थकी ~ उडावत ३२४३ ।

बायु हवा । ~ डुलाऊँ हवा करूँगी, पखा झलूँगी मैं अँचरा ~ — २१०६ ।

बायु-बहानी हवा उड़ा दी गई है ऐसैं ही यह ~ १७३७ ।

बायू हवा • पृथिवी आप तेज ~ नभ सारा० ८ ।

बायौ फैलाया, खोला • व्यास नारि तबहीं मुख ~ १/२२६ ।

बारंबारी बार-बार • कहत जो या बिधि ~ ४/५ ।

बारबारैं बार बार भाग बडे कहि ~ २१८७ ।

बार¹ १. देर, विलब . बहुत ~ भई, कुँअर न जाग्यौ ६/५ । २ काल, समय • अत ~ कछु लहियै १/६२ ।

बार² दफा, मर्तबा : अबकी ~ प्रान प्रीतम, बिजय-सखा मिलाउ २०८५ । ~ बारहि बार-बार ~ — गगन निरखत २८११ । ~ बारी बार-बार . ~ — कहा तू कहति तिय ९/१२७ । ~ बारौ बार बार बदत बलराम तोहिं ~ — ३०५४ । △ ~ सुरगुरु कहै तिथिवार की सूचना बृहस्पति देते हैं ~ — बेद ब्रह्मा पढ़े फेरि टेरै ९/१२९ ।

बार³ १ बाल, केश : सोहत घूघर बारे ~ २१८० । २ माया रूपी केश/जाल : सूरदास प्रभु के जो विमुख भए बाँधति कायर ~ २१८३ ।

बार⁴ पानी, जल ~ सुरपति भरै ९/१२९ ।

बार⁵ द्वार पर, दरवाजे पर मागध बदी-सूत अति करत कुतूहल ~ २७ ।

बार⁶ बाल, पुत्र : मुख चूमति जसुमति कहि ~ ४०७ ।

बारक एक बार/दफा : ~ वह मुख आनि दिखावहु ३५५७ ।

बार कर विपरीत बार = बारि (जल) उसका विपरीत = लज, लाज, लज्जा : ~ इनकी मोहिं नाहिं निहोर सा० ल० १०६।

बारत जलाता है : ~ अग उजेरौ सा० ल० ३३।

बार नंदनंदन जनम तें है बान नद नदन = कृष्ण के जनम दिन = बुधवार, बान = बाण (५) अर्थात् बुधवार से पाँचवाँ वार अर्थात् रविवार : ~ सुख आगार सा० ल० १०८।

बारन[1] १ द्वारों पर, दरवाजों पर : ~ तोरन बँधाइ, हरि कीन्ह उछाह १०७४। २ द्वार, दरवाजे : ~ छाँडि देत किन हमकों ३०५३।

बारन[2] हाथी : बार-बार सकरपन भापत ~ बनि करि न्यारौ ३०५३।

बारनि[1] वार, दफा : साँट-सकुच नहिं मानहीं बहु ~ मारि ७३८७।

बारनि[2] द्वारों पर : अच्छत दूब लिये रिपि ठाढे ~ बदन वार बँधाई १९।

बारनें[1] न्यौछावर : मनमथ कोटि ~ गे ५५।

बारनें[2] दरवाजे पर : कबहुँक ह्याति ~ ठाढ़ी २४०९।

बारवधू वेश्या • कई नित्तत सब देख ~ मारा० ६६८।

बार बसन द्वार का वस्त्र अर्थात् पर्दा या किवाड : मानिनि ~ उघार सा० ल० ९०।

बारहखरी बारह अखरी, प्रारंभिक अक्षर-ज्ञान : सूर मकल घट दरमन वै हीं ~ पढाऊँ ४१२६।

बारहबानी चोखे, चतुर : हरि के चरित सबैं उहि सीखे दोउ हैं ~ १७४५।

बारहबाने चोखे, चतुर सूरदास प्रभु हम सब खोटी तुम तौ ~ हौ ३५२०।

बारहमासी बारहों महीने चलने/होने वाला कुविजा कमल नैन मिलि खेलत ~ फाग ३६५२।

बारही बार बार : झूमत नैन जम्हात ~ २६९०।

बारा वार, दफा यहि ब्रज जन्म लियौ कै ~ ९५१।

बाराह वाराह अवतार, विष्णु का तीसरा अवतार जिसमे उन्होंने सुअर का रूप धारण कर पृथ्वी का उद्धार किया था : कबहुँ ~ नरसिंह कबहूँ भयौ ८/१६।

बारि[1] जल, पानी : ~ पर कौन पाषान तारै ९/१२९। ~ **बिलोचन छाए** आँखों मे आँसू छलछला आए गद गद कंठ सोक सौं रोवत ~ — ५१४।

बारि[2] जलाकर : दीपक ~ करै उजियार ४३००।

बारि[3] बारी, अवसर दीनानाथ अब ~ तुम्हारी १/११८।

बारि[4] नादान, भोली भाली, बच्ची : हठ करति बिरुझति सब जिय जननि जानति ~ ७७७।

बारि[5] खेती • काटहु अब बबूर लगावहु चदन की करि ~ ३९०९।

बारि[6] बाड, खेतीकी मेड • हरि भजन की ~ करि लै उबरै तेरौ खेत १/३११।

बारि[7] ड्योढी, बारजे पर • बैठि चढि द्वार ~ २५०१।

बारि[8] १. न्यौछावर कर दे : कोटि मन्मथ ~ छवि पर ३५६१। २. न्यौछावर कर : पीतांबर डारयौ सिर ~ १८१९। ३. अर्पित : देति निछावरि ~ ३०९३। ४. न्यौछावर कर रही थी : नारि तन मन ~ ९६०। ५ न्यौछावर हो जाता है • निरखत तन मन ~ २११४। ~ **बारि** न्यौछावर कर-कर के : ~ — जल पियति जसोदा ४०८।

बारिचर जलचर • चरत ~ खेत ३९६२।

बारिज कमल • कुमुदिनी सकुची ~ फूले २३३।

बारिज दल कमल की पखुड़ियाँ : अति विसाल ~ लोचन १३६।

बारिज-सुत-पति बारिज सुत (कमल) के पुत्र (ब्रह्मा) उनके स्वामी, कृष्ण ~ क्रोध कियौ सखि ३३१९।

बारिध जलधि, समुद्र ~ जोग अपार अगम कौं ३६१०।

बारिधर मेघ, बादल • मनौ बालक ~ नव चद दियौ दिखाइ २३४।

बारिधि समुद्र • वै उमड़ें ~ कैं जल ज्यों ४१२६।

बारि निधि समुद्र : दुस्तर अति गभीर ~ ९/८९।

बारि बिधि जल-जैसी गौर गात दुति बिमल ~ २४५४।

बारिब्रत दे० बारिवर्त्त • मेघवर्त्त-बलवर्त्त ~ ०२६।

बारिवर्त्त वारिवर्त्त, प्रलयकालीन बादलों मे से एक • बलवर्त्त ~ पौनवर्त्त ८५३।

बारि-बूँद (स्वाति नक्षत्र के) जल की बूँद : किधौं ~ सीप हृदय हरष पाए ६४२।

बारि-भव-सुत तासु भाव बारि पानी (समुद्र) उसमे पैदा होने वाला (विष), उसका पुत्र (अभिमान) मान, उसका भाव = विचार अर्थात् मान का भाव या विचार ~ री अब न करिहौं क्राउ २०८५।

बारी[1] बाड़ी, बगीचा, फुलवाड़ी : जगत जननी करी ~ मृगा चरि-चरि जाइ ९/६०। २ बाड़ी या खेती • रस की ऊँख उखारि सूर प्रभु बई बिरह की ~ ३८३२।

बारी[2] १ बच्ची, कन्या : डोलत-लाज न आवई अजहूँ है ~ १७०६। २ बाला (राधा) : जाम निसि गई, धौं कहाँ ~ २०३४। ३. पुत्री (राधा) ने : गह्यौ दृढ मान वृषभानु ~ २८३४।

बारी[3] १ बलिहारी जाती हूँ : हौं ~ नान्हे पाइनि की २२३। २. बलि दे रही है • ~ अवलि बलाक १८३५। ३. न्यौछावर कर : छबि पर तन मन डारति ~ २२८।

बारी[४] पानी : खार कूप कौ ~ ३९६५ ।

बारी[५] छोटी, बाली • कहो ~ दैस सा० ल० १७ ।

बारुनि मदिरा, शराब ~ तैं बल घूमित लोचन बल ४२०१ ।

बारुनी वृन्दावन के कदम्ब का रस जो वरुण की कृपा से बलराम को मिला था, मदिरा . कोटि कलस भरि ~ २९०९, ~ बलराम पियारी ४२०२ ।

बारुनीदिसि पश्चिमदिशा बिहरि ~ १७९५ ।

बारे[१] १ बालक, लडके : सूरदास प्रभु सग नद कें बैठे हैं दोउ ~ २३७ । २ बचपन . गोपालहिं ~ ही की टेव ३६७८ ।

बारे[२] १ न्यौछावर कर दिये : कज रध्र अवलोकि सहचरी अपनो तन मन ~ सारा० ८९९ । २ न्यौछावर कर देती है : छबि पर तन मन ~ २१५६ ।

बारे[३] १ छोटे हें, कम उम्र के हैं राम कृष्न दोउ जन ~ २९६८ । २ छोटे थे, कम उम्र के थे, बच्चे थे जब ~ तब आस बडे की ३६५९ ।

बारेहि बालक/बच्चे को : मेरे ~ दोष लगावति ३२० ।

बारैं न्यौछावर करते हैं : नारि नर सकल तन प्रान ~ ३०५९ ।

बारैंहि बचपन (से) ही . इनक गुन ~ तैं सजनी, मैं नीकैं करि जाने ०३४० ।

बारैं १ न्यौछावर करती है अपनी छवि पर अपनौ तन-मन धन ~ ०००१ । २ न्यौछावर करती हैं या न्यौछावर हैं : सूर स्याम कैं ऊपर ~ तन मन-धन ब्रज बाल री १४० ।

बारौं न्यौछावर कर दूँ जोग जुक्ति अरु मुक्ति परम निधि वा मुरली पर ~ ३६२१ । २ न्यौछावर करता हूँ • ~ कोटिक मैंन १०३ । ३ न्यौछावर करती हूँ : या छबि पर मैं तन-मन ~ २५०५ । ४ बलिहारो जाऊँ ~ लाज भई मोहिं बैरिनि मैं गँवारि मुख ढाँक्यौ ३००७ ।

बारौ[१] बालक, लडका त्रिभुवनपति जनि जानहि ~ ३०५३ ।

बारौ[२] १ अबोध, छोटा : पौढायौ महल जाइ ~ रे कन्हैया ४१ । २ नन्हा जसुमति को सुत ~ ६११ ।

बारौ[३] १ न्यौछावर करनी पडती हैं • बानी सुनत तुरत अपने मन कोटि कोकिलन ~ सा० ल० १०२ । २ न्यौछावर कर डालूँ : स्याम सुभग कें ऊपर ~ ६४० । ३ न्यौछावर कर डालो 'सूरदास' अपनौ तनु ~ २७४६ ।

बारचौ न्यौछावर कर दिया . गोपिनि ~ प्रान १६१८ ।

बाल[१] **पु०** १ बालक, लडके . खेलन जाहु ~ सब टेरत २४३ । २ पुत्र कौन पुन्य तप तैं मैं पायौ ऐसौ सुन्दर ~ ४२२ । ३ बाल (बचपन), बाल्यावस्था ~ किसोर, तरुन, जर जुग सो सुपक सारि ढिग ढारी १/६० । ४. बचपन के : सुनहु 'सूर' ये ~ सँघाती २२९४ । **स्त्री०** १ बाला/किशोरी को : सूर प्रभु न बिसारियै जू राधिका सी ~ ४१०९ । २ युवतियाँ . ढीठि भई हैं ~ १५३१ ।

बाल[२] छोटे-छोटे मुक्ता-माल ~ बग-पगति, करत कुलाहल कूल १०४९ ।

बाल अवस्था बाल्यावस्था, बचपन ~ मैं तुम धाइ ३/५ ।

बालकन १ लडकों : खात बैठे ~ की पाँति ३२१६ । २ लडकों को : कहुँ ~ खिलावत माधव सारा० ६६४ ।

बालकनि १ बालकों ने कूप माँह तिहिं देखि ~ हरि मां कह्यौ सुनाइ ४१९९ । २ बालकों को . ~ हरयौ बिधाता ४९२ ।

बाल केलि १ बाल क्रीडाएँ, बचपन के खेल • धनि धनि ~ जमुना तट ३८४ । २ बाल क्रीडाओं मे • देव लोक देखत सब कौतुक ~ अनुरागे ४१६ ।

बाल गुबदा बालगोबिंद का, कृष्ण का • ललित वदन बल ~ ११७ ।

बालगोबिद कृष्ण का बाल स्वरुप, बालकृष्ण खेलन चलौ ~ २१८ ।

बाल-घातिनी बच्चों की हत्या करने वाली स्त्री . ~ परम सुहाई ५० ।

बाल-दसा बाल्यावस्था, बचपन ~ के कौतुक भारे ४६ ।

बालन बालकों, बच्चों : बिप्र भोन ~ तुव देखियत सारा० ९६७ ।

बालनि पुं० बालकों के : कोऊ कहत ग्वाल ~ सग खेलत बनहिं लुकाने ४१३२ । **स्त्री०** बालाओं, स्त्रियों निरखि कुरुख उन ~ की दिसि लाजन अँखियन गोवैं ३४७ ।

बालपनौ बाल्यावस्था, बचपन : ~ गए जवानी आवै ७/२ ।

बाल-बिहार बाल क्रीडाएँ , बालको के खेल चोरि माखन खाहु सब मिलि, करहु ~ २६९ ।

बाल-बेष बचपन की सजधज, बाल छबि . बरनौं ~ मुरारि १६९ ।

बालभृ ग भ्रमरों के बच्चों (की) मनहुँ तामरस कैं सँग खेलत ~ की पाँति १८२१ ।

बालम प्रियतम `अब मेरे नैननि ही भरि लाई ~ कान्ह बिदेसी परि० १/१४१ ।

बालमराल हसों के बच्चे . बैठे ~ १७९१ ।

बाल मुकुद दे० बालगोबिंद सुभग ~ की छबि बरनि कापै जाइ २२५ ।

बाल-रबि-ररिमनि-सकित प्रातःकालीन सूर्य की किरणों से भयभीत : मनहुँ ~ तिमिर कूट है आध २४४५ ।

बाल रुप बालक के रुप मे, बालक के समान • ~ जसुमति मोहि जानै २६८ ।

बालसघाती बचपन के सगी-साथी . बिछुरे री मेरे ~ ३३८१ ।

बालससि द्वितीया का चद्रमा उदै ~ अस्त भयौ रबि २०२८ ।

बालहिं १. बालक या बालकों को । २ बलराम को • सिगरोइ दूध पियो मेरे मोहन ~ न दैहौं बाँटी २५९ ।

बाला १ कन्या का, बाला का : आदि ब्रह्म जननी सुर-देवी नाम देवकी ~ ४ । २ बाला (राधा) देखि ~ अतिहिं कोमल मुख निरखि मुसुकाइ ६९० । ३ बालाएँ, युवतियाँ • देखि थकित सब ब्रज की ~ ९१० ।

बाला-विरह पत्नी वियोग • ~ दुसह सबही कों ०/१२८ ।

बालि[1] सुग्रीव का बड़ा भाई तथा अंगद का पिता बलि अरु ~ सुपनखा बपुरी ३१९१ ।

बालि[2] गेहूँ, जौ या ज्वार, बाजरे आदि की बाली : ~ छाँडि के सूर हमारें अब नरबार्ड को लुनैं ३७४० ।

बालि-कुमार बालि के पुत्र अंगद को पठये ~ मारा० ७८९ ।

बालि-नंदन १ अंगद ~ बली, विकट बनचर महा ९/१२९ । २ अंगद ने • ~ आइ सीस नायौ ९/१३६ ।

बालि-विरोधि बालि के विरोधी अर्थात् राम • ~ कपट मृग-हारी ९८१

बालि-सुत अंगद • जामवत, सुग्रीव, ~ आए सकल परि० १/२ ।

बालि सुतहू अंगद भी ~ तहाँ ते सिधारौ ९/१३५ ।

बावन १. विष्णु का पाँचवाँ अवतार जो राजा बलि को छलने के लिए अदिति के गर्भ से हुआ था ~ देह पसारी ८/१४ । २ विष्णु के अवतार श्री कृष्ण जसुमति धनि यह कोखि जहाँ रहे ~ रे ७८ ।

बावर दे० भावर ।

बावरी १ बावली, पगली, मतवाली • नद के नदन आली मोहिं कीन्हीं ~ २८८७ । २ मूर्ख हैं, बुद्धिहीन हैं हमतो निपट अहीरि ~ ३९४६ ।

बावरे १ पागल या मूर्ख • पा लागौं तुम ही से वा पुर बसत ~ लोग ३६८२ । २. पागल है, मूर्ख है • कौन तिनतैं ~ ३८६५ ।

बावरो १ पागल, विक्षिप्त जानि बूझि कै कत हौं पठयौ, मठ ~ अयानौ ४१२७ । २. बुद्धिहीन सुनत मौन ह्वै रही ~ सूर सबै मति नासी ३६३१ ।

बास[1] पु० १ निवास, निवास स्थान • अन्याई कौ ~ नरक मैं ४१६० । २ निवास है निःकिंचन जन मैं मम ~ ४१९५ । क्रि० अ० निवास करूँगा, रहूँगा सूर कह्यौ हँसि बाम सौं तुम्हरैं निमि ~ २४९२ । ~ **निवास बास** निवास, रहना • बन के ~ — सकल ये भए भयानक बाने ३६७५ । △ ~ **बसत** है सगति में रहता है, जैसे ~ — कोऊ तैसौ होत सयानो ४०२७ । △ ~ **बसेरौ** घर का बसेरा जाके हाथ परयौ ताही कौ बिसरयौ ~ — ३७२३ ।

बास[2] गंध, महक • भ्रमत ही वह दौरि ढूँढ़ै, जबहिं पावै ~ १/७० ।

बास[3] डाल दी ला रखी : रूप प्रति-प्रति रूप कीन्हे, सुना अमनि ~ १०७१ ।

बासन बरतन, पात्र ~ मैं जल धरयौ जमोना १९२ ।

बासना १ इच्छा या इच्छाएँ • छाँडि ~ आन २/२१ । २ वासना, विकार • जन्म जन्म की विषय ~ १/१८७ ।

बासपतिनि के भ्रात बास = ग्रह, पतिनि = स्वामी, अर्थात् ग्रहपति चन्द्रमा उनके भाई, तारे खड खड ह्वै गिरे गगन तैं ~ ११९८ ।

बासर १ दिन बल समेत निसि ~ बरसहिं ८५६ । २ दिन को ~ कथा कठिन करि करि मन ४१८२ । ३. दिन में • निसि सुख ~ दीन्ह २५२७ ।

बासर-पति दिन का स्वामी, सूर्य पच्छिम उदै करै ~ ९/८२ ।

बासरहु दिन (से) भी • जाम ~ तें होत भारी २६०५ । ~ **जाम** दिन रात • मन यह कहत ~ — २१३५ ।

बासरहूँ दिन में भी ~ सुख देत जाम २८५२ ।

बासव इन्द्र ने : मनहुँ ~ बलि पठाए १८४ ।

बासव सुत अरि के सुभाव बासव सुत (इन्द्र) के पुत्र (अर्जुन) के अरि (कर्ण) का सुभाव = दानी अर्थात् सखी • ~ सब कहत सुनत गुन ताही मा० ल० शेष ८ ।

बासा १ बास, निवास : करहु मोहिं ब्रज रेनु देहु बृंदावन ~ ४९२ । २ निवास रहता है सब तीर्थ कौ ~ तहाँ १/२२४ । ३ निवास था, रह रहे थे आपुन गए नद जहँ ~ ३११० । ~ **लीन्हौ आइ** आकर बसेरा लिया है, निवास किया है : पथिक पथ कैं ~ — २३३७ ।

बासिन निवासियों : सूरदास ब्रज ~ कौ हित ४१२४ ।

बासिनि १ निवासिनियों को ब्रज ~ परिहरि १४ । २ निवासियों ने • ब्रज ~ मोकौं बिसरायौ ८५१ ।

बासि-बासिनिनि स्त्री पुरुषों को : सूर प्रभु कहत ब्रज ~ ८७० ।

बासिल वसूली ~ बाकी, स्याहा मुजमिल १/१४३ ।

बासी १ निवासी, रहने वाले • गोकुल औ मथुरा के ~ कहँ लौं भूठी कैहैं ४०८७ । २ रहते हैं, निवास करते हैं हरि सदा निरतर घट-घट - ~ ३ । ३ निवासी है, रहता है : निरगुन कौन देस कौ ~ ३६३१ । ४ रहने वाली हैं, रहती हैं मीन नीर लौं ~ ३५४६ । ५ निवासियों को • ह्याँ के ~ अवलोकत हौं ९/१६५ ।

बासु निवास (रहे/मिले) • सूर के प्रभु यहै बिनती सदा चरननि ~ री १७९४ ।

बासुकि वासुकि, आठ नाग राजाओं में से दूसरा जिसकी नेति बनाकर समुद्र मथन किया गया था • ~ नाग आय नह

तत्क्षण बाँधी हठ करि नाव सारा० १७।

बासुकी वासुकि नाग · ~ नेति अरु मदराचल रई ८/८।

बासुदेव वसुदेव के पुत्र वासुदेव (कृष्ण) : ~ सोइ भयौ २/३६।

बासै निवास करता है : मानौ अधर सरोवर ~ जसुदा-मी महतारी ४२७४।

बासौंधी सुगधित और लच्छेदार रबडी : ~ सिखरन अति सौंधी १२१३।

बास्यौ सुगन्धित हुआ : सुमन तिली कौ ~ परि० १/१६३।

बाहँ हाथ, बाहु, भुजा। △ ~ **गहे** भुजा पकडने, शरण देने : ~ — की लाज १/२१९। △ **दै** ~ सहायता दे कर बरषत मैं गोपाल बुलाए, अभय किये — ~ ८६७। ~ **बोल दै** भुजाओं का सहारा देकर : सहचरि चतुर तुरत लै आई ~ — करि कै बहु छर २४५५।

बाहक सारथी . अरजुन कैं रथ ~ १/१९।

बाहन सवारी सुत, ~, जन, भ्रात्र १/२१६।

बाहन हार भारवाही, भार ढोने वाले अर्थात् (घोडे) : करे ~ दोऊ सा० ल० १०५।

बाहर क्रिया दिखावा, आडबर, ढोंग ~ देखि मन मानै ५/२।

बाहाँ जोरी बाँह मे बाँह लिये हुए, भुजा मे भुजा डाले हुए · ~ प्रात कुज तै निकसे २२७८।

बाहिरी बाहर की। △ ~ **परि कै** बाहरी लोगों के साथ पडकर ज्यौं कुल बधू ~ — कुल मै फिरि न समाई २३१६।

बाहिरैं बाहर : झिरकि ~ कीन्हे १/४०।

बाहीं भुजाएँ, बाहे। △ **कहत पसारे** ~ हाथ उठा कर कहता हूँ अर्थात् दृढतापूर्वक कहता हूँ : अजहूँ चेति, कह्यौ करि मेरौ — ~ २६९।

बाहु बाँह, भुजा, हाथ। △ ~ **छुड़ावत** निराश्रय करते हो : उहिं अवसर कत ~ — १/१५६।

बाहु दंड भुज दडो को : देखत कपि ~ ९/९७।

बाहुवनि-बन बाहुओ के वन (बीच) ~ विबिध फूले, जलज जमुना-गग २१३१।

बाहे[1] बाँहे, भुजाएँ · इतनी कहि उकसारत ~ ३७४।

बाहैं[2] बाह (खेत की जुताई)। ~ **देत** बाह देता है, जुताई करता है जैसै करनि किसान बापुरौ नव नव ~ — ३९१९।

बिंडारचौ हाँका, लौटाया · आगैं है इत कौ ~ पूछ हाथ लगाइ परि० १/२६।

बिंद १ बिंदी : बदन ~ जराइ के बेंदी २६२८। २. तिल : चिबुक स्यामल ~ १०४३।

बिंदा[1] बडी बिंदी : किन मृगमद कौ ~ दीन्हौ परि० १/४१।

बिंदा[2] वृन्दा, राधा की एक सखी · इदा ~ राधिका, स्यामा कामा नारि १६१८।

बिंदु[1] बूँद या बूँदें : मुख दधि ~ परै १४२।

बिंदु[2] १ बिंदी, छोटा सा टीका : गोरैं भाल ~ ७०४। २. गोदना का काला चिह्न : रस ~ बिना अधिकात सा० ल० ५०।

बिंदुका टीका : काजर ~ लाग्यौ री १३९।

बिंदुगन-मकरंद-मध्य मकरद की बूँदों के बीच · मुदित मधुकर ~ २१३३।

बिंदुलि बिंदी मे . आधौ ~ अधौ इत रह्यौ,चैन के परि० १/७६।

बिंदुली बिंदी, टीका या टिकुली : बदन ~ भाल की भुज आप बनाए २६८९।

बिंधए बिंध गये छिनु के बिछुरैं कमल रति मानी केतिक कत ~ ३५०६।

बिंधे विद्ध, ढके . सकत नहिं निरवारि ऊधौ बदरी ज्यौं ससि ~ ३८३६।

बिंब[1] प्रतिबिंब, परछाई : मनिमय कनक नँद कैं आँगन ~ पकरिबैं धावत ११०।

बिंब[2] १. बिम्बाफल, कुंदरू : मनौ सुक फल ~ कारन २३४। २ बिम्बाफल/कुंदरू के समान : गति अरु ~ अधर-छबि ९/६३।

बिंबफल बिंबाफल, कुदरू : ~ चाखन कारन चोंच चलाई ६१६।

बिंबहिं बिम्बाफल को · ~ कौर भख्यौ री २७२९।

बिकच खिला हुआ, विकसित :~ कज अनारँगी पर लसि २१३२।

बिकचौहै खिली/खुली हुई : मचित करै पेट मैं राखै वै बातैं ~ परि० १/१८३।

बिकट[1] १. भयानक, विकराल : ~ रूप अवतार धरयौ जब सो प्रहलाद बचाऊ २२१। २. विचित्र : ~ बनावति बात ३२६।

बिकट[2] टेढी, तिरछी : भृकुटी ~ ललित नैननि पर ९३। ~ **भौंहे करि** भौंहों को तिरछा करके : मुरली अधर ~ — ३५६०।

बिकति बिकती जहाँ ~ हैं प्यारी ३९२९।

बिकराइ बिखेर कर, फैला कर : ऐसी कहि बैकुठ सिधारे कष्ट निसा ~ २९२३।

बिकरार[1] विकराल, भयानक : अगम तन ~ ४२७।

बिकरार[2] बेकरार, व्याकुल होकर : गोसुत, गाइ फिरत ~ ९३७।

बिकराल भयानक : ~ दसन अति ७/४।

बिकल १ व्याकुल, बेचैन : जसुमति ~ भई ५४। २ व्याकुल होकर : ~ पथ जोवति हम निसि दिन ३६३२।

बिकलता व्याकुलता, बेचैनी : देखि ग्वालिनि ~ तब कहि उठे बलराम ४२७।

बिकलप विकल्प, संदेह, एक साहित्यिक अलकार : ~ आन सा० ल० ५३ ।

बिकलाई व्याकुल हो गई : पपिहा पुकार सखि सुनतहिं ~ ३३२७ ।

बिकलानी व्याकुल हो गई · यह सुनि तरुनी ~ १६१९ ।

बिकलाने व्याकुल होकर : फिरि सब चले अतिहिं ~ ९४१ ।

बिकसत १ खिलते हैं, खिल उठते हैं दिनकर किरन कमल ज्यौं ~ २०४ । २. खिलते ही : ~ कमलावली चले प्रपुंज चचरीक २०५ । ३. खिले रहते हैं, प्रफुल्लित रहते हैं · ~ दिन अरु राति २८११ ।

बिकसति खिलती है, चमकती है : ~ ज्योति अधर-बिज मानौ ९१ ।

बिकसात विकसित, खिले हुए . हरि मुख-कमल देखि ~ ४२२५ ।

बिकसाने खिल गए हैं, खिल रहे हैं : रबि-छबि कैंधौं निहारि पकज ~ ६४२ ।

बिकसावै विकसित कर दे, खिला दे पाहन बीच कमल ~ १/१०५ ।

बिकसाहिं खिलते हैं : जिहिं सरोवर कमल कमला रवि बिना ~ १/३३८ ।

बिकसित १ खिलते हैं : निसि मुद्रित प्रातहिं वे ~ १८१३ । २ खिले/फूले रहते हैं : ये ~ दिन राति १८१३ ।

बिकसे खिले, फूले . बिन ~ कल-कमल-कोष तैं २०७ ।

बिकाइ १ विककर · मुक्ता आपु ~ कै उर मैं छिद्र कराइ २६१३ । २. विकती है : सँत ~ सुजस की ढेरी ३३४१ ।

बिकाउँ विक जाऊँ ता छबि पर बिनु मोल ~ ६६३ ।

बिकाऊँ १ विका हुआ हूँ · भक्तनि हाथ ~ १/२४४ । २ बिकूँ, विक जाऊँ : अब कैसैं दूजैं हाँथ ~ १६९२ ।

बिकात विकता है . सूरदास स्वामी के बिछुरे कौडी भरि न ~ ३००१ । △ **चित्त** ~ चित्त (उसके हाथ) विक जाता है, मन वशीभूत हो जाता है चितवत ~ — २११२ ।

बिकानि विका गोरस बेंचत हित न ~ ।

बिकानी १ विक गई हैं अँखियाँ हरि के हाथ ~ २४०२ । २ विक गई, विक गई हूँ · मैं तौ हरि कैं हाथ ~ २०८३ । ३ मुग्ध हो गइ/गई : कोउ निरखति कुंटल की आभा इतनेहि मॉभ ~ ६४४ ।

बिकाने १ विक गये हैं, वश मे हो गये हैं : ते गोपिन कैं हाँथ ~ १६०८ । २ विक गये हो, विके हो · नख लिखि कह्यौ जाहु तहँई उठि जाकैं हाथ ~ २८२६ ।

बिकानौ १. विक गया हूँ : तदपि सूर मैं भक्त बछल हौ, भक्तनि हाथ ~ १/२४३ । २ विका जो नहीं ब्रज मैं ~ १५१७ ।

बिकान्यौ १ विक गया है, वशीभूत हो गया है : मन तौ हरि हीं हाथ ~ २२२२।

बिकायौ २. विक गये हैं, वश मे हो गये हैं : सूरदास हम यहै परेखौ कुबरी हाथ ~ ३६५१ । २ विक गया था : द्विज कुल-पतित अजामिल विषयी, गनिका हाथ ~ १/१०४ ।

बिकार पुं० १ पाप, दोष : कमल नैन की लीला गावत कटत अनेक ~ २/२ । २ हानि, कुप्रभाव, कष्ट का अनुभव सहसौ फन फनि फुकरै, नैंकु न तिन्हैं ~ ५८९ । वि० दोषयुक्त : हौं पतित, अपराध पूरन भरयौ कर्म ~ १/१२६ ।

बिकारी पापी, दुष्ट . रे रे अध बीसहू लोचन, पर तिय-हरन ~ ९/१३२ ।

बिकारैं दोषों से ही, अवगुणों से ही . करि अपराध अनेक जन्म लौं, नख-सिख भरौ ~ १/१८३ ।

बिकावै विकता : ल्याये जोग बेंचिबे कारन ब्रज मैं नाहिं ~ ३९६४ ।

बिकास पुं० विकास, प्रफुल्लता वदन ~ अबाधा १६९६ । करै ~ खिलता है, फूलता है, विकसित होता है · बारिज — ~ ३५७५ । वि० खिला हुआ, प्रफुल्लित : मुख ~ सरोज मानहु १८१५ ।

बिकासी विकसित हुआ, विकास हुआ रबि दो धर रिपु प्रथम ~ सा० ल० ४६ ।

बिकैहै विकेगी : जोग ठगौरी ब्रज न ~ ३६६४ ।

बिक्रम पराक्रमी, शक्तिशाली : तुम अनत ~ बनवारी ७/२ ।

बिखराये फैला दिये, बिखेर दिये चोली चीर हार ~ ७९९ ।

बिखरैहैं बिखेर देंगे, तोड फोड देंगे : तेई लै खोपरी बाँस दै सीस फोरि ~ १/८६ ।

बिखारे विषैले, विष से बुझे हुए . लागे ई ~ बान परि० १/१४० ।

बिख्यात प्रसिद्ध पतितन मैं ~ पतित हौं १/१३१ ।

बिख्याता प्रसिद्ध है : रिष्यमूक परवत ~ ९/६८ ।

बिगत १ समाप्त हो गई, बीत गई . उगत अरुन ~ सर्वरी २०५ । २ रहित, विहीन : सग है चली ~ कलेस सा० ल० ५५ ।

बिगरत विगड रहा : लज्जा तैं ~ है सब काजु ८०८ ।

बिगरि विगड कर । जैहैं ~ खराब हो जायेंगे : — ~ दात ये आछे २२२ । ~ परे विगड गये हैं, मेरे होहिं अब नाहीं सखि हरि-छबि ~ — २३५५ । ~ परयौ विगड गया, वश से बाहर हो गया : जाकौ ~ — मन चचल परि० २/३५ ।

बिगरी बिगड गई है, अपराध हुआ है : कहहु कहा हम तैं ~ ३७७० । △ ~ **लेहु सँवारि** बिगडी हुई बात बना लो/टो. पतित उधारन बिरद जानि कै ~ — १/११८ ।

बिगरे बिगडो, कुचालियों . सगरे ~ के सिर ऊपर बल कौ वीर रखवारौ ४०३० ।

बिगरै बिगड जाय, भूल हो जाय : माधौ जू, जौ जन तैं ~ १/११७ ।

बिगरैंगो बिगड जायेगा, दुरवस्था को प्राप्त होगा : सब वे दिवस चारि मन-रजन, अत काल ~ १/७५ ।

बिगरौ बिगड गया है, दूषित हो गया है तन माया, ज्यौं ब्रह्म कहावत, सूर सु मिलि ~ १/२२० ।

बिगर्‌यौ १. बिगडा था : ह्याँ तौ उनकौ कछू न ~ ३८७३ । २ बहक गया ' मन ~ पेउ नैन बिगारे २२२६ ।

बिगलित अस्त व्यस्त, बिखरे हुए ~ बसन, मरगजी माला, पीठि वलय के चिह्न लसे हौ २५०३ । २ बिखरी हुई, शिथिल . कुच ~ माला गिरी ११८० ।

बिगसत खिलते हुए . सकुचत अरु ~ वा छबि पर अनुदिन जनम गँवावत ६६५ ।

बिगसति १ खिलती : हरि बिधु बिमुख नाहिंनै ~ मनसा कुमुद कली ३११६७ । २ चमकती है, प्रकाशित होती है . ईषद हास दत दुति ~ २१० ।

बिगसाऊँ प्रकाशित कर दूँ . सोरह कला कौ ससि ~ २८०९ ।

बिगसात खिलता है, विकसित होता है . कहुँ चद देखै कमल ~ परि० २/४५ ।

बिगसावहु विकसित करो, खिलाओ : हे दिनकर ~ ३७७६ ।

बिगसि खिलकर । △ ~ **न गयौ** फट नहीं गया, विदीर्ण नहीं हो गया : ~ — कुभ काँचे लौ बिछुरत नद किसोर ३७२९ ।

बिगसित खिली हुई, प्रसन्न : ~ गोपी मनौ कुमुद सर, रूप-सुधा लोचन पुट घटकनि ६१८ ।

बिगार अपराध, बिगाड : हम कह कियौ ~ ३५४३ ।

बिगारत बिगाडते हो . काहैं अगिलौ जनम ~ ३३३८ । △ **पंथ** ~ रास्ता खराब करते हैं, मर्यादा का उल्लघन करते हैं : सूर भले कौ भलौ होइगौ वै तौ — ~ २२५४ ।

बिगारी नष्ट कर दी . याकै बस मै बहु दुख पायौ सोभा सबै ~ १/१७३ ।

बिगारे बिगाड दिया, खराब/नष्ट कर दिया सब मिलि काज ~ १/१४३ ।

बिगारै बिगाडता है, बहकाता है, कुमार्ग पर ले जाता है : आपु पढै नहिं और ~ ७/२ ।

बिगारौ बिगाडो, बहकाओ तुम जनि कबहुँ ~ १३५० ।

बिगार्‌यौ बिगाड दिया, नष्ट कर दिया : मैं अपनौ सब काज ~ ४/१२ ।

बिगास विकास, खिलना . उर सरवर भयौ कमल ~ ४३०६ ।

बिगूचनि उलझन, बेइज्जती सूरदास अब होत ~ भजि लै सारँगपान १/३०४ ।

बिगूचै उलझन/झझट मे पडे . इक हम जरीं, जरे पर जारत बोलि ~ कौन ३९०४ ।

बिगोइ नष्ट कर दे पा लागौं बिधि ताहि बकी ज्यौं, तू तिहिं तुरत ~ ५६ ।

बिगोइसि नष्ट कर दिया, गँवा दिया : अहमिति जनम ~ १/३३३ ।

बिगोऊ नष्ट हो : सूर सनेह करै जो तुमसौं सो पुनि आप ~ ३९७९ ।

बिगोए नष्ट कर दिये, गँवा दिये पर-निंदा रसना के रस करि, केतिक जनम ~ १/५२ ।

बिगोयैं नष्ट करती हैं, काटती हैं कान्ह तुम्हारी बिकल बिरहिनी बिलपति बिरह ~ ४१४३ ।

बिगोयौ १ विचलित किया, भ्रम मे डाला, बहकाया : हरि तुव माया को न ~ १४३ । २. बिगडा, नष्ट हो गया : सूर लोभ कीन्हो सो ~ ४१९१ । ३. बिगाडा, नष्ट किया इहिं राजस को को न ~ १/५४ ।

बिगोवति १. खराब/नष्ट करती है सील-सतोष सखा दोउ मेरे, तिन्हैं ~ भारी १/१७३ । २ समाप्त करती है, काटती है . कबहुँ भवन कबहूँ आँगन है ऐसै रैनि ~ २४९८ ।

बिगोवे नष्ट करे : उनकी सुनै सो आप ~ ३७५८ ।

बिगोवैं नष्ट करें : जैसी दसा हमारी कीन्ही, तैसैं उनहि ~ २२२८ ।

बिगोवै नष्ट कर देती है . एकनि लै मदिर चढै, एकनि बिरचि ~ १/४४ ।

बिग्रह युद्ध निसि बासर कैं ~ आयौ ३३१३ ।

बिघन १ विघ्न, बाधा . ताकै बीच ~ करिबे कौं ३५६६ । २. विघ्नो को, बाधाओ को : सूर परी जहँ बिपति दीन पर तहँ ~ तुम टारे १/२५ ।

बिच १ बीच मे । २ मे, के अदर, के भीतर : रग गलिनि ~ भीर भई तब ३२ । ~ **बिच** बीच बीच मे ' ~ — बज्र प्रवाल ९७ ।

बिचरत विचरण करते हैं, भ्रमण करते हैं नारद रूप जगत उद्धारण ~ लोकन माय सारा० १३६ ।

बिचरति घूमती-फिरती . ~ है आन गृह गृह तरे २५३० ।

बिचरतौ घूमता, घूमता फिरता : इहिं बिधि उच्च-अनुच तन धरि धरि देस बिदेस ~ १/२०३ ।

बिचरन घूमने : ~ लागे सुख सचार ३/१३ ।

बिचरे घूमे, भ्रमण करे : पाछे करि मन्यास जगत मे ~ परम उदार सारा० ८७।

बिचरै[1] विचरण करे, घूमे : जो ~ तन क सॅग सोइ ५/४।

बिचरै[2] सूझती, समझ मे आती विपति परें कुमलात न बूझै बात नहीं ~ ४२४२।

बिचलै १ विचलित हो जाय, हट जाय : जौ सीता सत त ~ ९/७८। २. व्याकुल हो गये, विचलित हो गये आतुर है धाई उत नागरि इत ~ सब ग्वाल २८९८।

बिचवानी मध्यस्थता करने वाली हो : राधा आधा देह स्याम की तू उनकी ~ १९०७।

बिचसमै बीच के समय वाली, अर्थात् मध्या नायिका सूरदास ~ समझ करि सा० ल० ४।

बिचारो पुं० विचार, मत्रणा . रघुपति चित्त ~ करयो ९/२०२। **क्रि० अ० १** विचार किये, सोचे विचारे : क्या रोक्यो बिना ~ ३/११। २ विचार कर, के अनुसार कह्यो सुक श्री भागवत ~ १/२३१।

बिचार लाचार सुता विरह ~ सा० ल० शेष २।

बिचारत १. सोचता है, विचार करता है चितवत चित्त ~ मेरे ४२३८। २ विचारते, विचार करते : काहू क कुल तन न ~ १/१२। ३ विचार करने/कर रहे हैं . सूरदास प्रभु सखा लिए सग ठाडे यहै ~ १५०१। ४ विचार करती हैं, सोचती हैं राम-प्रताप ~ ९/१२३। ५ सोच रहे हो तुमहिं देखि मैं अति सुख पायो तुम जिय कहा ~ २६५। ६ सोचते हुए तब नागरि के गुनहि ~ तेइ गुन गनि गावत २४३९। **नहि परति** ~ सोची नहीं जाती अदभुत गति — ~ ९/६२।

बिचारति सोचती हैं, विचार करती हैं जेइ जेइ बात ~ अतर ३७२२।

बिचारति सोचती है कर मीडति पछिताति ~ ३२६५।

बिचारन १ विचारों को, सुझावों को . जिहिं भाँति सिखावन दीन्हौ, सोइ ~ लीन्हौ ३८११। २ विचार दुख सुख दोऊ फल करत ~ २०२२।

बिचारहि ध्यान मे रखते हैं सब विधि अगम ~ तातें सूर सगुन पद गावै १/२।

बिचारहु विचार करो, ध्यान दो जनि हमरे अपराध ~ ४१७७।

बिचारा विचार, मत्रणा सुक-सारद से करत ~ ३।

बिचारि[1] क्रि० वि० १ विचार कर, सोच समझ कर- बात ~ सुहाती कहिऐ ३८२९ २ विचारे, सोचे आतुर है गयौ बिना ~ ६/७। क्रि० स० विचार करो, सोचो : सूरदास खीझि कहति ग्वालिनी मन मैं महरि ~ ७९। पु० विचार, सोच, तर्क . सो मन मैं यह करति ~ २४७६। ~ **परत** विचार किया जाता है नैननि न ~ — देखत रुचि बाढी २०१। ~ **बिचारि** बार बार विचार करके : फुरै न बचन बर जिवें कारन, रहीं ~ — २८३। **समुझि** ~ **रही** सोच समझ कर रह गई, नहीं समझ पाई ऊधौ जौ तुम बात कही, ताकौ कछू न उत्तर आवै — ~ — ४००३। **ध्यान** ~ ध्यान करके : चलीं गावति कृष्ण के गुन हृदय — ~ १४९९।

बिचारिहै ध्यान मे आ रहा है : किसलय कुसुम कुत मम सायक, पायक पवन ~ २११६।

बिचारी[1] १ सोचा, निश्चय किया : सुर-पति, तब यह देखि ~ ६/५। २ सोच कर, निश्चय करके दुरबासा दुरजोधन पठयौ पाडव अहित ~ १/१२२। △ **बुद्धि** ~ उपाय सोचा . सूर-स्याम इक — ~ २७१७।

बिचारी[2] बेचारी, दीन : अबला कहा जोग की जानें व्रजवासिनि जु ~ ४२६६।

बिचारु विचार कर, सोच कर . सूरदास प्रभु रस भरि उमँगी, राधा कहति ~ २०५८।

बिचारे[1] १ सोचा जात स्याम बलराम ~ ३१०९। २ सोचे गये भले रे नद के छोहरा टर नहीं कहा जो मल्ल मारे ~ ३०७६। ३ सोचते, समझते . सरबस रीझि देत भक्तनि कौं रग नृपति काहू न ~ ४२२६। ४ सोचने पर कहियत कुलट ~ ३७५४। **कीन्हौ मंत्र** ~ उपाय सोचा : सतधन्वा अरु सुफलक सुत मिलि — ~ ४१९१। **कोन** ~ कौन गणना करे तिहिं देखि बन के मृग मोहे मानुस — ~ २७४३। **दाँव** ~ दाँव लगाये हुए . गयौ समाइ बेनुपति है कै मन मैं — ~ १३८७।

बिचारे[2] बेचारे गीध, ब्याध, गनिकाऽरु अजामिल, ये को आहिं ~ १/१७९।

बिचारेउ सोचा, विचार किया लक्ष्मण नाम सुनत तहँ आये अवसर दुष्ट ~ सारा० २६५।

बिचारैं १ सोचते हैं : अपनी अपनी दसा ~ २१८७। २ सोचती हैं, सोच रही हैं : आपु आपु यह बात ~ १६१९। ३ समझते हैं, मानते/जानते हैं हरि जू ताकौं सत्य ~ ६/४। ४ सोचोगे, ध्यान दोगे : जौ प्रभु मेरे दोष ~ १/१८३। **भाव** ~ प्रेम रखते हैं : हरिहू ऐसैं — ~ ६/४।

बिचारै १ सोचता है, विचार करता है . बुद्धिवत पुरुष यह सब ~ ४२०९। २ सोचती है प्रीति तौ मरिबौऊ न ~ ३२९०। ३ सोचता था, सोचा करता था . काय-निवेदन सदा ~ ९/५। **मन बुद्धि** ~ मन मे उपाय सोचता है अथवा मन और बुद्धि से सोचता है : नारि निकर — ~ ६२५।

बिचारो सोचा गया है . श्री बलदेव कह्यउ दुर्योधन नीको दुलह ~ सारा० ८०३।

बिचारौं १. सोचता हूँ, मानता हूँ जीतें जीत भक्त अपने के,

हारै हारि ~ १/२७२। २ सोचे : हौं अलि कितने जतन ~ सा० ल० ६६।

बिचारौ[1] १ विचार करो, सोचो · ऊधौ तुम ब्रज की दसा ~ ३६२१। २ समझो, ध्यान दो : मेघ माहिं स्याम तनु छवि ~ २०६१। ३ सोचा है, विचार किया है : बिप्रनि हूँ यह मतौ ~ ५। ४ सोचती, ध्यान करती : दधि-सुत-पति सौं क्यो न ~ २७४६।

बिचारौ[2] बेचारे . जानै कहा राज-गति लीला, अत अहीर ~ ३९६७।

बिचार्यौ १ सोचा, विचार किया : मत्रिनि नीकौ मत्र ~ ९/९८। २. ध्यान किया है : निसिदिन रूप ~ ४०२६। ३ सोचती है . भली पोच अपनौ न ~ ३५६४।

बिचित्र[1] विचित्र, अद्भुत : अति ~ रचना रचि राखी २/२८।

बिचित्र[2] १ भाति-भाँति के, अनेक रगों के बसन ~ दिये २४। २ अनेकों प्रकार की, तरह तरह की : साजत सौंज ~ बनाई ९/१६९।

बिछइयै बिछा है : टूटौ पलँग ~ १/२३९।

बिछाऊँ बिछाऊँगी · फूलनि सेज ~ २१०६।

बिछावत बिखेरते, बिछाते · आगैं पिय फूल ~ जात २६१६।

बिछावति बिछाती है, बिखेरती है · ता पर सुमन सुगध ~ ३०२९।

बिछावही बिखेरते हैं, बिछाते है : मारग सुमन ~ पग निरखि निहारैं २६१५।

बिछावैं बिछाएँ · जोग कथा ओढ़ैं कि ~ ४०९४।

बिछावै बिछाती है : सज सज सेज ~ सा० ल० ६४।

बिछियनि बिछुओं, पैर की उँगलियों मे पहनने के छल्लों : पग जेहरि ~ की झमकनि २१५६।

बिछिया बिछुआ की, पैर की उँगली के छल्ले की : कटि किंकिनि नूपुर ~ धुनि १४६०।

बिछुरत १ बिछुडते, अलग होते ~ लगै न बार १/८४। २ बिछुडते ही, अलग होते ही : जैसैं मीन मरत जल ~ ३५७३। ३ अलग होते हो : तौ ~ क्यो एक घरी २५३८। ४ बिछुड गया, हट गया : सारग सुत नीकन तैं ~ सा० ल० १६। ~ **की बेदनि** वियोग की पीडा, अलग होने का कष्ट : सूर नद ~ — मो पै कही न जाइ ३११६।

बिछुरति बिछुडती · नैकु नहीं पिय तैं कहुँ ~ १७७२।

बिछुरन वियोग, बिछुडने ~ कौ सताप हमारौ ९/८७। ~ **दुख** वियोग की पीडा जानैं रसिक मैन ~ — ३६९८। ~ **भेट** अलग होते समय का आलिगन : ~ — देहु ठाढे है २९९९।

बिछुरनि बिछुडना, वियोग कहँ वह प्रीति कहाँ यह ~ ३१८४। **मिलि** ~ मिलन व वियोग को अथवा मिलकर अलग होने को : सूरदास प्रभु की — ~ सुमिरि सुमिरि पछितात ३७३९।

बिछुरि बिछुड कर, अलग होकर · ~ करी बेहाल ३७३८।

बिछुरीं बिछुड गई हैं : सूरदास जे सब अँग ~ तिनहिं कौन उपचारैं ३७७८।

बिछुरी क्रि० अ० १. अलग हो गई : जौ पै पतिब्रता ब्रत तेरैं, जीवति ~ काइ ९/७७। २. बिछुड गई हो . ~ मनौ सग तैं हिरनी ९/७३। वि० बिछुडी हुई : जैसैं बहुत दिनन की ~ एक बाप की बेटी ४२९१।

बिछरे क्रि० अ० १. बिछुड गये, अलग हो गये अधर सुधा पियाइ ~ पठै दीन्हौ ग्यान ४०३५। २ बिछुडने से, अलग होने से मदन गुपाल लाल कैं ~ प्रान रहे मुरझाइ ३७४१। ३ बिछुडने पर, बिछुड कर · मधुप ~ बारि मीनहि अनत कहा सुहाइ ४०७२। वि० बिछुडे हुए : ~ प्रान नाथ ब्रज ऐहैं ३९४५।

बिछुरैं क्रि० अ० १ बिछुडने से, अलग होने से : सूरदास रघुपति कैं ~ मिथ्या जनम भयौ ९/४६। २ वियोग का, बिछुड़ने का : सूर स्याम ~ दुख बिरह काहि भावै २९५९। ३ बिछुड कर · इहिं घट प्रान रहत क्यौ ऊधौ ~ कुज बिलासी ४०४३। वि० बिछुडे हुए : ~ प्राननाथ ब्रज आव ३७१८।

बिछुरै बिछुड जाय · कहि, जाकौ ऐसौ सुत ~ सो कैसे जीवै महतारी ११।

बिछुरौ छूट गया है · नीतन ते ~ सारग सुत सा० ल० ९५।

बिछुर्यौ बिछुडा ~ होइ सो जानै ३२२९।

बिछेद अलग पलक न होत ~ २४०३।

बिछैयत बिछाया जाता ओढियत है कि ~ है ३९६६।

बिछोह वियोग मे : सुनौ बच्छ, धिक जीवन मेरौ लछिमन-राम ~ ९/८३।

बिछोहि छोड कर · सग ~ हमहिं गए बरजी ३४०१।

बिछोही बिछुड गई है किधौं ~ नारि ९/६५।

बिछोहे छोड़ दिया, भुला दिया निज अनुराग ~ परि० १/१८३।

बिछोह्यौ छोड दिया, खोल दिया : मुकुले कमल, बच्छ बधन ~ ग्वाल ३०३८।

बिछौन बिछौना, बिस्तरा . हरित भूमि पर जरद देखियत सबुज ~ बिछायो परि० १/१०७।

बिजई विजय, विजयी : आपु अँचै अँचवाइ सप्त सुर कीन्हे दिग ~ १२७५।

बिजच्छन विचक्षण, अनोखा दै गज बिदु ~ सा० ल० ९८।

बिजय विष्णु का एक पार्षद जो ब्रह्म शाप से असुर हो गया था : जय अरु ~ पारषद दोड़ ९/२५।

बिजयठे अंगद, बाजूबंद : कुच कंचुकी हार मोतिनि अरु भुजन ~ सोहत १०७९ ।
बिजय-सखा अर्जुन के मित्र कृष्ण से : प्रान प्रीतम ~ मिलाउ २०८५ ।
बिजुकानी भडक गई : यहै देखि मोकौं ~ भाजि चल्यौ कहि दैया दैया ३३५ ।
बिजुरी बिजली · घन ~ मन मोहै २१८८ ।
बिज बिजय . इबै ~ दोऊ आपस मैं १९९१ ।
बिज्जु बिजली · मनौ कमल पर ~ जमाई ८० ।
बिज्जुरता विद्युत् लता, बिजली : मनहु बिरह की ~ लगि ४१२२ ।
बिज्जुलता विद्युत्लता, बिजली . ~ सोहति मनु कँदहिं १०७ ।
बिज्ञानक विज्ञान का प्रथम ग्यान ~ द्वितीय मत २/३८ ।
बिझुकि भडक कर · गइया ~ चलीं जित नित कों १३८७ ।
बिट कामी, परस्त्रीगामी, वेश्यागामी : मानहुँ ~ सनहिनि अवलोकन २८५३ ।
बिटनारि १ छिनाल/लपट स्त्री ज्यौं ~ भवन नहिं भावत २३७५ ।
बिटप वृक्ष · सुनि राधिका कदँब ~ की सारा २७७२ ।
बिटि नेअनि लटकियों संग ~ कै मिलि खेलौ १७११ ।
बिटिनियाँ लटकी . एक ~ मँग मरे हा ६९७ ।
बिट्ठल विष्णु : ~ विपुल विनोद बिहारन, ब्रज को बसिबो छाजै ३०९६ ।
बिठाइ बैठा कर . निकट बुलाइ ~ निरखि मुख ९/८३ ।
बिठाई बैठाया, बेठा दिया : असुर सुर पानि करि तब ~ ८/८ ।
बिठावो बैठाओ, बैठाइये : इनको पुत्र होय जो बालक ताको बेग ~ सारा० ८३१ ।
बिडरत भडकता है घूँघट पट बाँगुर ज्यौं ~ २७४० । ~ बिझुकि डरकर बिदकते/भटकते ~ — जानि रथ ते मृग १७९७ ।
बिडरति भटक कर, तितर-बितर होकर ~ फिरनि सकल बन महियाँ ६१२ ।
बिडरि भटक कर . ~ चले घन प्रलय जानि कै ६३ ।
बिडरीं बिदक गई, तितर बितर हो गई : मुरभी ~ मुरली भली सम्हारी ६९३ ।
बिडरी बहक गई . सजनी आरज पथहुँ तें ~ ३००४ ।
बिडरे १ बिदक गये, भडक कर भाग गये : ~ गज जूथ ६५० । २ बिदकता है · वह निमक अनिहिं ढाठ ~ नहिं भाजै ९/९६ । ३ डरकर भाग गये जानत नहीं कौन गुन इहिं तन जाने सब ~ ३७६७ ।
बिडरे डर गये अजामील द्विज सौं अपराधी अंतकाल ~ १/८२ ।
बिडारो डरा, भगा धम-मत मेरे पितु माता, ते दोउ दिये ~ १/१७३ ।
बिडारे १. डराकर भगा दिये हैं कीर कपोत कोकिला चातक बधिक बियोग ~ ३८३४ । २ भगा · असुर मारि सब तुरत ~ दीन्हे रुद्र निकेत सारा० ३४८ ।
बिडारैं भडकाता है, बिदकाए देता है हरि तबहीं लखि लियौ दुष्ट कौं, डोलत धेनु ~ १३८७ ।
बिडाल बिलाव अरुन जु रुचिर जु ~ रसन-सम चरन-तली ललिता री ११९७ ।
बिडतौ लाभ । △ ~ भलौ फबायौ कमाई बडी अच्छी रही · कंचन खोइ काँच लै आऐ ~ — २५११ ।
बिढायौ बढाया, किया देखत तू कत मान ~ सा० ल० २८ ।
बित वित्त, धन . चित ~ लियौ चुराइ २८७५ ।
बितई १ बिताया, केना जस अपजस ~ ३२९६ । २ बिता दिया, व्यतीत कर दिया . होत कहा अबकैं पछिताऐ बहुत बेर ~ २९९ ।
बितत व्यतीत, समाप्त : भारत जुद्ध ~ जब भयो १/२८९ ।
बितताइ घबरा · खेलत मैं तुम बिरह बढायौ, गई कहा ~ २१५० ।
बितताए व्याकुल हो रहे थे : ब्रज जन ~ ९३८ ।
बितताल व्याकुल होकर : कहँ आए ~ ७५३ ।
बितताना क्रि०अ० १ व्याकुल है ऐसी तू काहैं ~ २०८३ । २ व्याकुल हो गई सीस धरे मटुकी ~ १६४८ । क्रि० वि० व्याकुल होकर, बौखलाई हुई चितवति जहाँ तहाँ ~ १४०९ ।
बितताने क्रि० अ० बिखर गये : झुरि झुरि सब बादर ~ ०४१ । वि० व्याकुल होकर, बौखलाए हुए ब्रज के लोग फिरत ~ ८६० ।
बितताही व्याकुल होकर भटक रही थीं : सूर स्याम रस भरी गोपिका बन मैं यों ~ १६७२ ।
बितपन्न चतुर · उनहिं मिले ~ भई १७०० ।
बितरेक पृथक् हुई अथवा व्यतिरेक अलकार सूर प्रभु ~ बिरहिन, कब दिखैहौ पाइ सा० ल० २१ ।
बितल पाताल के सात लोक मे से एक अतल ~ अरु सुतल तलातल सारा० ३१ ।
बितवत १ व्यतीत करते, बिताते कल्प समान एक छिन राघव, क्रम क्रम करि हैं ~ ९/८७ । २ व्यतीत हो रहा है . जुग समान पल ~ ७३० ।
बितवति बिताती है . एक छिन इक जाम ~ २७१० ।
बिताइ बिता कर · कह्यौ करौं मध्यान ~ ९/१३ । डारचौ जनम ~ जन्म बिना डाला · या विधि — ~ ५/३ ।
बिताई बिताया नृपति निज आयु इहिं विधि ~ ८/१६ ।
बिताए बिता दिये बासर तीनि ~ ९/१२१ ।

बितान वितान, चँदोवा, मडप : जग पूरत हरि-जस सुचि ~ २९१२।

बितायौ व्यतीत कर दिया : बहुत काल या भाँति ~ ९/८।

बिति समाप्त हो सुख सपति ~ गई सबनि की ३९५२।

बिती[1] समाप्त हो गई . ~ समाधि सती तब पूछ्यौ सारा० १४८

बिती[2] बीती, घटी . अतर्यामी यहौ न जानत जो मो उरहि ~।

बितीत व्यतीत/समाप्त हो जाते हैं · नैनहू मन मगन ऐसैं, काल गुननि ~ १२२५।

बितीति समाप्त, व्यतीत सूरदास गुपाल की सब अवधि गई ~ ३३७४।

बितीते व्यतीत होने पर · समुझि परी षट् मास ~ ४१४९।

बितीतै व्यतीत/समाप्त हो जाती है कछु बिरधापन माहिं ~ ७/२।

बितैहै वितायेगी, बिताओगी मेरौ कह्यौ मानिहै नाहीं ऐसहि भ्रमि-भ्रमि यौन ~ १६५०।

बित्त १ धन, सम्पत्ति बहुत ~ की लैनी ९/११। २ धन = धनु = धनुष ~ तनत कुबेर कौ सा० ल० ७५।

बिथक मोह से मगल भरे ~ सजोर सा० ल० ६०।

बिथक पुत्र भ्राता पितु पतिनी विथक (वायु) उसका पुत्र (भीम) उनके भाई (कर्ण) उनके पिता (सूर्य) उनकी पत्नी = सज्ञा अर्थात् होश-हवास . ~ करन सुनै को नाहीं सा० ल० शेष ८।

बिथकि १ मोहित/विमुग्ध होकर : ठाढी रही ~ मारग मैं १६४३। २ थक कर मनहुँ बारिज ~ बिभ्रम परे पर-बस परनि ३५१।

बिथकित १ थक गया . ऊधौ सुनत सुनत मन ~ ३६३३। २ (जहाँ की तहाँ) खडी/स्तब्ध रह गइ पसु मोहैं, सुरभी ~ तृन दतनि टेकि रहत ६२०। ३ थककर ~ उडुपति ब्योम बिराजत ११३६। ३ रोककर · ~ रथ चकित अवलोकत ११९३।~ **भई** बेहाल हो गई : निरखत न रि निकर ~ — २२१८। ~ **ह्वै** मुग्ध/स्तब्ध होकर . गोपी जन ~ — चितवति सब ठाढी ४४१।

बिथकी खडी रह गइ सूर अमर-ललना गन अबर ~ लोक बिसारी १०४७।

बिथकी १ स्तम्भित हो गई या चक्कर मे पड गई : ~ अँग निरखि २१९२।

बिथके[1] आश्चर्यचकित हो खडे रह गये देखत सुर ~ अबर महँ ९०६।

बिथके[2] मुग्ध होकर झूम रहे थे कहा करौं बारिज मुख ऊपर ~ पट पद जोल १७९०।

बिथक्यौ १ स्तब्ध हो गये · खग मृग तरु ~ ११८२। २ थक गया, हार गया सिख दै ~ गाउँ १६४०।

बिथराइ बिखेर : हार तोरि ~ दयौ १४८४।

बिथरायौ बिखेर दिया, फैला दिया . काहे उलटौ जस ~ ३५१३।

बिथरै बिखेरता है : धर बिधसि नल करत किरषि हल, बारि बीज ~ १/११७।

बिथर्यौ छिटकाया, बिखेरा : इहिं ढोटा लै ग्वाल भवन मैं कछु ~ कछु खायौ ३३९।

बिथा व्यथा, पीडा : रिषि सौं नृप जिय ~ सुनाई ६/५। △ ~ **भरत** दुःखी होकर . सर ~ भरत रिन २७७६।

बिथाहि व्यथा से बिकल बिरह ~ ३३३९।

बिथुर फैल . ~ गयौ सारग सुत सिगरौ सा० ल० १३।

बिथुराइ बिखेर (कर) इक इक करि ~ कै मोतिन लर तोरयौ १४८६।

बिथुराई बिखरी हुई सोभित चिकुर ललाट बदन पर कुचित कुटिल अलक ~ २६६५।

बिथुरि फैल, बिखर : ~ अलकैं रहीं मुख पर २०५।

बिथुरी अस्त व्यस्त हैं, बिखरी हुई हैं लटपटी पाग अलक जो ~ २६४०।

बिथुरी अस्त-व्यस्त, बिखरी हुई ~ अलक सुथरे आनन पर २०११।

बिथुरे बिखरे हुए, अस्त-व्यस्त : सूर स्याम ~ कच मुख पर २६३४।

बिदमान १ विद्यमान होने पर भी, रहते हुए भी . फोरयौ नयन, काग नहिं छाड्यौ सुरपति कैं ~ ९/८३। २ प्रत्यक्ष ही, विद्यमान होकर ही बिनु पावस पावस करि राखी देखत हौ ~ ३५७७। **देखत** ~ प्रत्यक्ष देखते रहने पर ही · ताको बध कीन्हौ इहि रघुपति, तुव — ~ ९/१३४।

बिदरत फटता . उर पाषान ~ न बिदारे ३६०२।

बिदरति फटती · ~ नाहिं बज्र की छाती ४०८५।

बिदरन विदीर्ण होना, फटना ~ चाहत हियौ ३१२०।

बिदरि फटकर ~ चले घन प्रलय जानि कै ६३। **किन** ~ **बिदरि जात** चूर चूर क्यो नहीं हो जाती मेरी बज्र की छाती — ~ — ३००३।

बिदली दलित कर दी, कम कर दी कीर-कपोत-मीन-पिक सारग-केहरि कदली-छबि ~ ७३९।

बिदा बिदा, प्रस्थान तबहिं ~ भल हैहौं ३५। **दीजै** ~ जाने की आज्ञा दीजिए — ~ जाऊँ घर अपनैं १६।

बिदार भेद कर उदित चद बादर ~ परि० १/१३२। **दीन्हो तिमिर** ~ अँधेरे को फाड/नष्ट कर दिया सोरह कला चन्द्र जो प्रगटे — ~ सारा० ३६३।

बिदारत १ कुरेदते हैं, खोदते है सूरदास प्रभु मान धर्यौ दृढ धरनी नखनि ~ २१४७। २ फाड़ देता है · तमकि

तमकि तरकत मृगपति ज्यौं घूँघट पटहिं ~ २३८३।
बिदारन विदीर्ण करने वाले वकी-दवन, बक-बदन ~ ९८१।
बिदारि १ विदीर्ण करके, नष्ट करके मनौ अरुन किरन दिनकर की पसरी तिमिर ~ २११४। २ फाड़कर, तोड़कर . निकसी कूल ~ १६४०। **डार्यौ** ~ फाट डाला . नखनि सौं उदर — ~ ७/६।
बिदारी १ फाड़ डाली . हिरनकसिपु की देह ~ १/२८। २ नष्ट कर दिया तिमिर ~ परि० १/४३।
बिदारे फाड़ने से उर पाषाण बिदरत न ~ ३०७५।
बिदारैं फाटने से उर पाषान बिदरत न ~ ३६२२।
बिदारैं विदीर्ण कर दे, नष्ट कर दे सूर एकही बान ~ १/२७५।
बिदारौं १ फाड़ डालूँ : कहौ तौ नखनि ~ ९/१०७। २ नष्ट कर दूँ कही तौ लंक ~ ९/१०८।
बिदार्यौ १ फाड़ डाला। २ फाड़ डालो।
बिदार्यौ १ फाड़ डाला, चीर डाला हिरनकसिपु वपु नखनि ~ २२१। २ मार डाला : कितिक बात यह बका ~ ४२८।
विदित ज्ञात, प्रसिद्ध . तिहू लोक है ~ बड़ाइ ९८४।
विदिमान प्रत्यक्ष ही · सहस भुजा धरि भोजन कीन्हौं तुम देखत ~ ८४४।
बिदिसि दिशाओं के कोने, विदिशाएँ . अध-धुध दिसि ~ भुलाने ८६०। ~ **दिसि पराने** इधर-उधर भाग गये : कोउ टरि टरि ~ — ४१९४।
बिदुखि दुखी होकर ~ सिंधु सकुचत १४३।
बिदुर विदुर, धृतराष्ट्र और पाडु के भाई जो व्यास द्वारा अविका की दासी के पुत्र थे ~ सातू साग खायौ ४१८०।
बिदुरथ विदूरथ, करूष के दुर्मद राजा दन्तवक्र का भाई। दन्तवक्र का वध सुनकर यह श्रीकृष्ण से बदला लेने गया था, परन्तु श्रीकृष्ण ने इसका भी वध कर दिया : दन्तवक्र महिपाल महाबल ~ प्राण नसायौ सारा० ७०५।
बिदुरहि विदुर से · यह तुम ~ कहियौ जाइ ३/४।
बिदुरित फैले हुए, बिखरे हुए लें उसास अजुरि भरि लीन्हीं ~ दधि जू अनूप आँगरी परि० १/१२०।
बिदुष पंडित, विद्वान् जनन ~ विराट प्रभु दीखे सारा० ५१७।
बिदूखी दे० विदूषी।
बिदूरथ दे० बिदुरथ अनुज ताकौ ~ लाग्यौ फिरन पुनि ४२२२।
बिदूषी क्रि० अ० कुम्हला गया · विनहीं सिसिर तमकि तामस तें तू मुख कमल ~ २८२६। वि० दुःखी, पीड़ित : कहा करै लै निर्गुन तुम्हरौ विरहिनि विरह ~ ३६८२।
बिदूसे कान्तिहीन, कुम्हिलाए हुए : वह मुख कमल विकास नहीं रति सायक-सिसिर ~ हौ २५१०।
बिदेह बेसुध, चेतनाहीन : भइ ~ १०१८।
बिदेही बेसुध : देह ~ ह्वै गई मिलि घूँघट ओटा परि० १/७१।
बिद्यमान १ वर्तमान रहकर, उपस्थित रहकर ~ सबही इनि देखत १९९। २ प्रत्यक्ष ही : जद्यपि ~ सब निरखत १/१००।
बिद्याधर उपदेवताओं की एक जाति जो खेचर, नभचर आदि नामों से पुकारे जाते हैं : ~ को रूप धरि कह्यौ ११८४।
बिद्यामनि विद्या में श्रेष्ठ ग्यानिनि मनि, ~, गुन-मनि २७१९।
बिद्या सार विद्या का तत्त्व : पढै कहा ~ ७/२।
बिद्रुम १ विद्रुम, मूँगा ~ अरु बधूक २७६८। २ मूँगे (के समान लाल होंठ हैं) : कमल बिच ~ ता पर कीर लई २७७८।
बिद्रुम अधर मूँगे के समान लाल होंठ ~ दसन दारिमकन २७५१।
बिधत-ग्रहन-डर ग्रहण के द्वारा बिंधने (ग्रसित किये जाने) के भय से मानो बिधु जु ~ आयौ तेरै सरन सखी री परि० १/९२।
बिधंसि विध्वंस करके, काटकर धर ~ नल करन किरपि हल, बारि, बीज बिथरै १/११७।
बिध भाँति, प्रकार तथा विधि अलकार यह ~ सिद्ध अलकृत सूरज सा० ल० ९७।
बिधए बिंध गये हों, छिद गये हों : थके चरन सुनि सूर मनो गुन मदन बान ~ री १८४२।
बिधनहि ब्रह्मा को : ना जानौं ~ का भायो ७७।
बिधना १ ब्रह्मा, विधाता . ऐसे दिन ~ कब करिहैं परि० १/१३। २ ब्रह्मा ने : ~ साथ छुड़ायौ २३६६। ३ ब्रह्मा से : ~ चूक परी मैं जानी १७८४।
बिधवत भेदता है, बेधता है . जैसैं बधिक अधिक मृग ~ ३८५७।
बिधाता १ ब्रह्मा, सृष्टि के रचयिता · गर्व गजन नाम है ~ १९७१। २ ब्रह्मा ने, सृष्टि कर्ता ने . कत हम सिरजीं चतुर ~ ३६४०।
बिधातैं ब्रह्मा ने · जोरी करी ~ ३१५३।
बिधात्र ब्रह्मा के : जान्यौ न कृत ~ १/२१६।
बिधान¹ विधान, नियम · जननी दोष देत कत मोकौं, बहु ~ करि ध्यावै २४९।
बिधान² अनुसार, अनुकूल . मन ~ जौ कीनौ १/१८५।
बिधि¹ १ ब्रह्मा जो ~ यहै कियौ चाहत हौ १८६७। २. ब्रह्मा ने नारद सौं कह्यौ ~ जिहिं भाइ २/३५। ~ **सजोग** विधाता के सयोग/कृपा से : तीनि पुत्र भए ~ — ९/१७४।

बिधि[२] १ प्रकार, भाँति : इहि ~ सबनि सहारौ ४। २ प्रकार से घर गुरु जन बहुते ~ त्रासत १६३४। ३ प्रकार के : बहु ~ व्योम कुसुम सुर बरषत ४।

बिधि[३] रीति, प्रणाली . वेद विहित ~ १/१०४। ~ **करत** विधान/रीति कर रहे हैं : पूजा की ~ — सबै मिलि ८८९। ~ **करि** शास्त्रीय विधान के अनुसार या विधिवत् ~ — चिता बनायौ ९/५०। ~ **सौं** विधान के अनुसार, शास्त्र-विहित ढग से : ~ — धेनु दई बहु विप्रनि ३०९३।

बिधि[४] दशा मे • ऐसी ~ देखिहौं जानकी ९/७५।

बिधि[५] १ के अनुसार सुमति तुरूप सँचै स्रद्धा ~ उर-अंबुज अनुराग २/१२। २ भली भाँति, विधिपूर्वक . बन भोजन ~ करत ४३७।

बिधि-क्रमठ (नित्यकर्म की) विधि मे निष्ठा रखने वाले लै धोती, झारी ~ ९८४।

बिधिना ब्रह्मा ने : यह ~ जोरी भली बनाद ७६१।

बिधिनस दैववश, सयोगवश ~ नाव बहुरि फिरि मिलती ३८५२।

बिविध-बाहन-भच्छन विधि वाहन = ब्रह्मा का वाहन अर्थात् हस, उसका भच्छन = भोजन अर्थात् मोती ~ की माला ४१७।

बिधिभाषी भगवान् ने कहा (वर्णन किया) कह आचार भक्त ~ सारा० ८४४।

बिधिहि १. ब्रह्मा को : कबहिं घुटुरुवनि चलहिंगे कहि ~ मनावै ७४।

बिधिहूँ विधाता को भी बैन तैं बिछुरि अविधि ~ भई ३७७८।

बिधुंतुद चद्रमा को कष्ट देने वाले राहु ने मनौ ~ ग्रस्यौ कलानिधि २६०१।

बिधु १ विधु, चद्रमा मनु घट ~ एकै रथ बैठे १२। २ चद्रमा को : कुमुद चकोर मुदित ~ निरखत ४०४२।

बिधु-पूरन मुखवास संचारैं पूर्णमुखचन्द्र की मुख बास (मुख की गध के रूप मे पान, सुपारी, लौंग इलायची इत्यादि) दे डाले अधर-सुधा-उपदस सींक सुचि ~ २८२२।

बिधु-बदनी चद्रमुखी . ~ अरु हाटक ढारी १६७४।

बिधु बिहुरे बिधु किये सिखंडी सिव मैं सिव-सुत जात चन्द्रमा के बिखर जाने पर चन्द्रमा को शिखडी (सिर का आभूषण बना लेने वाले शिव (स्तन, हृदय) मे शिव के पुत्र (बाणासुर) बाण धँसे चले जा रहे है ~ ११९८।

बिधुमुखी चद्रवदनी, चन्द्रमुखी . सुनु ~ बारि नैननि तैं, अब तू काहे मोवै ४२८०।

बिधुलच्छन चद्रमा के लक्षणों (गुणों) को . ~ जानत सुर नर सब ११९३।

बेधोक्त शास्त्र के कथनानुसार : यज्ञोपवीत ~ कियौ सारा० ३३२।

बिध्यौ १ भेद दिया, बेध दिया : हिलगहि नाद स्वाद मृग मोह्यौ ~ पारधी तानि ३२८९। २ बिंध गई . आपुन अंग अग ~ मोको बिसराई १८३३।

बिध्वंत चद्रमा के शत्रु राहु का • विधु परसि दत ~ अमृत चुवत २०३३।

बिध्वंसित तितर-बितर (हो गये हो) जनु ~ व्याल बालक २१३३।

बिनग बिना अगा के (छिपी हुई) : प्रतिबिंब झलमल झलक मनु सरसुती आनि ~ २८४१।

बिनति प्रार्थना, विनय ऊधौ ~ सुनौ इक मेरी ३८१४।

बिनती विनय, प्रार्थना । ~ **बिहँसि** विनम्रतापूर्वक हँसकर, विनम्र हँनी हँस कर ~ — सरस मुख सुदरि सिय सों पूछी गाथ ९/६४। ~ **कह बिनवै** कहाँ तक प्रार्थना करे/करूँ, कहाँ तक कहे/कहूँ : सूरदास ~ — दोषनि देह भरी १/१३०।

बिनन चुनने, तोडने फूल ~ नहि जाउँ सखी री हरि बिनु कैसे फूल ३२७५।

बिनय विनय, प्रार्थना • करति ~ कर जोरि ८१७।

बिनय-दृष्टि कृपा दृष्टि से : सूर पतित तुम पतित-उधारन ~ अब देखौ १/१९४।

बिनवत १ प्रार्थना करते हैं • यातैं हम ~ जगदीस ४३०१। २ प्रार्थना करती : लैके चीर कदम्ब चढे हरि ~ हैं ब्रज नारी सारा० ४७६।

बिनवति प्रार्थना करती है उडुपति सौं ~ मृगनयनी ४२६३।

बिनवै १ प्रार्थना करता है : ~ चतुरानन कर जोरे ४८८। २ प्रार्थना करती है : भामिनि एक सखी सौं ~ ३४५५। ३ प्रार्थना करने लगी (जब) कान्ह काली लै चले, तब नारि ~ देव हो ! ५७७। ४ (प्रार्थना) करे/करूँ सूरदास बिननी कह ~ दोषनि देह भरी १/१३०।

बिनसभवन असभव • ~ कौ काज सा० ल० ३६।

बिनसत नष्ट होता है, क्षय को प्राप्त होता है उपजत ~ बारबार ७/२।

बिनसाइ नष्ट/भग हो . आग्या-भग करैं हम क्यौं करि जौ पति ब्रत ~ ३७१०।

बिनसि नष्ट हो ~ जात तेज तप सकलौ ६/५।

बिनसै विनष्ट होता . अबिनासी ~ नहीं ४०९५।

बिनहि बिना, बगैर ~ बपन सुहाइ २२५। ~ **काज** अकारण ~ — अति रोष कियौ री २७७०।

बिनहीं १. बिना, बगैर मारयौ मुनि ~ अपराधहिं २२१। २ बिना ही . अब रैहो इनहीं ~ २१०५। ~ **काज** अकारण ही . ~ — सोंटि लै धावति २५७।

बिनही बिना : ~ कुँवर कन्हाई ३१९८ ।
बिनान गुँथावट, बुनाई : सिंदुर मीन, माँग मुक्तावलि कच कमनीय ~ २४४६ ।
बिनानी १ नासमझ : गोद लिए गोपाल ~ २५८ । २ चट. वै तौ चतुर ~ २२०० ।
बिनाने चट, चालक, बिना समझे बूझे : पठए स्याम ~ ३६७५ ।
बिनास विनाश तब कह्यो हरि चलहु सब मिलि मारि करहिं ~ ४२७ ।
बिनासन विनष्ट करने काहे कौं छल करि करि आवत धर्म ~ मोर ९/८३ । वि० नष्ट करने वाले : असुर कम अघवम ~ १० ।
बिनासा विनष्ट किया कोटि इन्द्र रचि कोटि ~ ९५० ।
बिनासि विनष्ट करके, संहार करके, : दैत्य ~ तुरत तहँ आए ३१०७ ।
बिनासी नष्ट की, दूर की रिपु हित काज सबै कत कीन्हौ कन आपदा ~ ३११६ ।
बिनासे फाट देना है . ज्यौं बरना दल खोदि ~ ९५० ।
बिनु १ बिना, बगैर : ~ पद-पानि करै परगामा ३ । २ छोड कर तुम ~ और कौन प जाउँ ८६७ । ~ जान अनजाने मे भयो पाप सो तैं ~ — ३/५ ।
बिनुहीं बिना ही . मैं रैहौं तुमहीं ~ १७०० ।
बिनै स्त्री० विनय, विनती : उन कर जोरि ~ उच्चारी ३ । **क्रि० स०** प्रार्थना कर रहा श्री महरि ~ कर जोरि इन्द्र सौं ८१६ ।
बिनोक्त बिना उक्ति के अर्थात् मूक, विनोक्ति अलकार सूर करत ~ भूचर चरन करत पुकार सा० ल० २३ ।
बिनोद १. मनोरंजन, कौतुक आनंदित ग्वाल बाल करत ~ ३० । २ मजाक, हसी प्रेमी कौन ~ किया १८३ । ~ हँसावत विनोद द्वारा हंसाते हैं . बालक वृन्द ~ — ६१८ ।
बिनोदमय आनन्द से पूर्ण जल विहार ~ सुख रुचिर ११६१ ।
बिनोदी आमोद-प्रमोद मे युक्त स्वभाव वाला छरीदार वैराग ~ १/४० ।
बिनोदै विहँस (विनोद कर) रही है नाना रंग जोरि कमरि मा कमी ~ वाम परि० २/६८ ।
बिपत कष्ट मे हौं रही इह ~ सा० ल० १८ ।
बिपति विपत्ति, कष्ट गोकुल की यह ~ कहा कहौं ४१२२ ।
बिपति-बियोग वियोग की पीड़ा/विपत्ति . रावन ~ ९/७५ ।
बिपदनि विपत्तियों को उन ~ कुचित जी करते तौ नहिं जीवित रहतीं ३८५२ ।
बिपदा विपत्ति सूर कौन जानै यह ~ ३२८४ ।
बिपरित स्त्री० विपरीत, उलटे · जघन सघन ~ कदली री १७०३ । **क्रि० अ०** उलट गये, उलटे हो गये : सप्त सुरनि गति जति उपजति अति ~ थावर पवन पानी १३५२ । ~ **भूषन** आभूषणों को परस्पर बदलकर . सूरदास प्रभु नागर नागरि ~ — करत सिंगार २०३६ ।
बिपरीत[1] १ विपरीत (अप्रत्याशित) गति मे · अति ~ तृनावर्त आया ७७ । २ उलटी . अति ~ रीति कछु औरै ९/३१ । ३. प्रतिकूलता, उलट पलट . भई जो ~ ताकौ समुझ सल सुभाइ सा० ल०५२ । ~ **भई** उलटी (बात) हो गई देखो यह ~ — ५३ । ~ **भाँति** अनोखे ढग से . ~ — सँवारे १७९१ ।
बिपरीत[2] विपरीत रति तथा प्रतीप अलकार . सूर स्याम कोविदा सुभूषन कर ~ बनावैं सा० ल० ५ । ~ **रचत हैं** विपरीत रति करते हे किधौं सदा ~ — गहि गहि आसन गाढ ३६४२ ।
बिपरीत कवजा कवजा का उलटा = जावक = जावक अर्थात् महावर . बिन दियै ~ सा० ल० ३२ ।
बिपरीत मालिका मालिका का उलटा = कालिमा अर्थात् कलक : बिन समुझैं ~ सा० ल० १० ।
बिपरीति वि० उलटी सोउ सठ जो कमल नयन की कहत बात ~ ३८५५ । **स्त्री० १** उलटी रीति या नीति तिनकी बडी ~ १/१४३ । २ उलटी बात . यह ~ न जाना ३११ । ३ विपरीत बुद्धि, उलटी भावना : दुविधा दुद रहै निमि बासर उपजावत ~ १/१४१ । ४ विपरीत स्थिति . यह ~ जानि तुम जन की १/२१७ । ~ **बढ़ावति** विरोध बढ़ा रही है : काहे कौं ~ — २७५८ ।
बिपलक पलक हटाये बिना . ~ लोचन हरि दरसन का ३७२३ ।
बिपाक व्यथा मे, जलन मे · विरह ~ दहौं ३/२ ।
बिपिन विपिन, जगल आसन मौन नेम मन सजम ~ मध्य बनि आवैं ३७०९ ।
बिपिन-फल जगली फल : ~ खाहु ९/३४ ।
बिपिन वृन्दा वृन्दावन : चलहु जैबे ~ ६८३ ।
बिपुल १ अत्यधिक . ~ पुलक कचुकी बद छूटे ११३६ । २ विशाल, लम्बी ~ बाहु, केहरि कल काँधे ०/५८ । ३ बहुत से, अनेक : ~ लै लै नाम २२०२ ।
बिप्र[1] १. ब्राह्मण अब मैं जनम ~ का पायो ५/४ । २ ब्राह्मण को . रुक्म चंदेरी ~ पठायौ ४१६७ । ३ ब्राह्मणों की ~ तियनि कौं अति सुख दीन्हे ८०५० ।
बिप्र[2] विप्र=ब्राह्मण, ब्राह्मण का एक पर्यायवाची द्विज=द्विज राज, चद्रमा : ~ लख सुख हान सा० ल० ८८ ।
बिप्र[3] विप्र = ब्राह्मण = द्विज = दाँत ~ विचित्र रेख दधि सुत ग्रह सा० ल० ९५ ।
बिप्रन ब्राह्मणों . दीन्हौ दान बहुत ~ कौं सारा० २३४ ।
बिप्रनि १ ब्राह्मणों ने : ~ सेत कुली तब जारयौ ५ । २

ब्राह्मणों को : दिये ~ बहु दान २९०६ ।
बिप्रहि ब्राह्मण को ~ गेह पठायौ ४१७८ ।
बिप्रहुँ ब्राह्मणो को भी : ये गुरुजन ~ न जुहारे २९६८ ।
बिप्रार्जुन ब्राह्मण ने अर्जुन (से) : ~ सौं आइ सुनायौ ४३०९ ।
बिप्रौ ब्राह्मणो को भी : गुरुजन ~ न जुहारे २५०४ ।
बिफल १ निष्फल, व्यर्थ या सपने कौ भाव सिया सुनि कबहुँ ~ नहिं जाइ ९/८३ । २. जिसमे फल नहीं लगते द्रवित है जल भरत पाहन ~ बृच्छ फले १०६८ ।
बिबर १ बिल . मनहुं ~ तैं उरग रिग्यौ २६१९ । २ बिल या गुफा मे . मानहुं ~ गए चलि कारे २२९३ ।
बिबरन विवर्ण, कातिहीन ~ भए खज ज्यौं दाधे बारिज ज्यौं जलहीन ३२४१ ।
बिबरनि बिलों मे भुजा देखि अहिराज लजाने ~ पैठे धाइ १७५७ ।
बिबर्जित विहीन, बिना : निराहार जलपान ~ ९८४ ।
बिबस वि० १ विवश, लाचार : ~ भयौ नलिनी के सुक ज्यौं १/४६ । **२** अधीन, वशीभूत : अब भए जाइ ~ दासी के ३९३६ । **क्रि० वि०** विवश होकर उरझ्यौ ~ कर्म निरअतर १/१६२ ।
बिबसानी व्याकुल है : हाँ तौ वै ~ २७५९ ।
बिबस्त्र वस्त्ररहित, नग्न करत ~ द्रुपद-तनया कौं १/१०० ।
बिबादहि झगडा करती हैं या वादविवाद करती हैं : निपट निसक ~ समुख सुनि सुनि नद रिसात ३२६ ।
बिबाय ब्याह, विवाह : राम लषन अरु भरत शत्रुहन चारों दिये ~ सारा० २३३ ।
बिबाहन शादी करने, ब्याहने . मानौ बिरह ~ आयौ ३६६१ ।
बिबाहि ब्याह (दी) दई ~ कस बसुदेवहि ४ । २ शादी कर लो . रिषि-तनया कह्यौ मोहिं ~ ९/१७३ ।
बिबाही क्रि० स० विवाह किया : तैसेही लक्ष्मणा ~ पूरण परमानद सारा० ६५७ । **वि०** विवाह करने वाले : सूरदास प्रभु असुर ~ ४१७५ ।
बिबाहु विवाह, शादी : बरै तुम्हैं तिहि करौं ~ ९/८ ।
बिबाहै विवाह/शादी कर लेती है सुदर नारी ताहिं ~ ३/१३ ।
बिबि दो, दोनो . ~ लोचन सबिसाल दुहुँनि के ६८९ ।
बिबिध १ विविध, अनेक प्रकार के । ~ **कल माधुरी** अनेक प्रकार की सुन्दर व माधुर्य पूर्ण क्रीडाएँ : ~ — किमपि नाहिंन बची ११९१ । ~ **नाना करि** नाना भाँति से करके . अस्तुति करै ~ — परम पुरुष आनन्द सारा० १५ ।
बिबिधार दो धाराएँ : जमुना धरे ~ २८४१ ।
बिबुध¹ देवता ~ बिबिध कुसुमनि बरषावैं परि० १/४१ ।
बिबुध² ज्ञानी, बुद्धिमान् : जद्यपि ~ बड़े जदुकुल के ३९३९ ।
बिबुधनि देवताओं का . ~ मन तर मान रमत ब्रज १२० ।
बिबेक १ विवेक, भले बुरे का ज्ञान या समझ भयौ ~ बिहान २/३३ । **२** ज्ञान, पाण्डित्य सुनि बिधि बिमल ~ २/३८ ।
बिबेकहुँ समझ को भी . सरबस मूसि देत माधव कौ सुधि-बुधि-बिमल ~ मोर २३७६ ।
बिब्र उक्त खुली हुई उक्ति अर्थात् स्पष्ट बात तथा विवृतोक्ति अलकार ~ सुन सूर स्याम कौ सा० ल० ८६ ।
बिभंजन १ तोडने वाले . रघुपति प्रबल पिनाक ~ ९८१ । **२** दूर/नष्ट करने वाले बाल सखा अरु बिपति ~ ४२२६ ।
बिभज्यौ तोडा, तोड डाला • रजक मारि कोदड ~ खेल करत गज प्रान लियौ ३०८० ।
बिभव वैभव, धन सम्पत्ति, ऐश्वर्य कह्यौ यह ~ कहाँ तैं आयौ ९/३ ।
बिभाग १ ।ग, अश : अरध ~ आजु तै हम तुम २६७ । **२** प्रत्येक भाग : राजत अग ~ २८६९ ।
बिभागि भागों मे बाँटकर, विभाजित करके माखन पिड ~ दुहूँ कर मेलत मुख मुसुकाइ १७८ ।
बिभावन¹ धारणा, विचार, विभावना अलकार : कै ~ ब्याज सा० ल० ३२ । ~ **पहिलौ** प्रथम निर्णय तथा प्रथम विभावना अलकार 'सूर' सुजान ~ — सा० ल० ३३ ।
बिभावन² रुचिकर, प्रिय लगने वाला भवत सरस ~ भादौं ८६ ।
बिभास चमक, काति बदन बिंदु निरखि हरि रीझे ससि पर बाल ~ १०५३ ।
बिभीषन १ विभीषण, रावण का भाई रावन अरि कौ अनुज ~ ताकौं मिले भरत की नाई १/३ । **२** विभीषण को/की : तिहिं जर जरत ~ राख्यौ परि० २/२ ।
बिभीषनै विभीषण से • सूर मिलि ~ दुहाइ राम फेरैं ९/११८ ।
बिभुत १ विभूति, ऐश्वर्य जहँ ~ अति भारी सारा० ३४३ । **२** सम्पदाएँ मनि मानिक पाटबर अबर लेत न बनत ~ ३६ ।
बिभूति¹ राख, भस्म रावन तुरत ~ लगाए, कहत आइ भिच्छा दै माई ९/५९ । ~ **बतावत** राख लपेटने को कहते हैं • चदन छाँडि ~ — यह दुख कौन जरौं ३५५१ ।
बिभूति² वैभव, ऐश्वर्य : ज्यौं गज फटिक मध्य न्यारौ बसि पच प्रपच ~ २/३८ ।
बिभूती विभूति . कही ~ सिद्धि साधनता आश्रम चार कहायो सारा० ८४४ ।
बिभूषन आभूषण/गहने हैं अहिसायी, अहि-अग ~ ।
बिभूषित अलकृत, सुशोभित . सुरभि रेनु-तन भस्म ~, बृष-

वाहन, वन-वृष चारी १७१।
बिमेसौ मेस : जानि न बधिक ~ मृग ज्यों, हनत बिमार्सी प्रान ३२२५।
बिभौ वैभव का : सुरतरु, दामी, दाम, अस्व, गज ~ बिनोद बनायौ ४२३८।
बिश्रम श्रांति से, श्रम से . कनक-कुंटल-स्रवन ~ कुमुद निसि सकुचाइ ३५१।
बिमल निर्मल, स्वच्छ . ~ मति भइ प्रभु रूप चीन्हे ३०७८। ~ **बिमल** अत्यंत निर्मल ~ — जस गाए ९/७०।
बिमला राधा की एक सखी कमला, तारा, ~, चंदा, चंद्रावलि सुकुमारि २००८।
बिमले निर्मल/शुद्ध (विचार वाले) मन चलि गयौ हुतो पहिलै ही चले सबै ~ ३१८१।
बिमात विमाता, सौतेली मा भ्रात ~ आपु मैं सत्रु ३/९।
बिमाता विमाता के, सौतेली माँ के ध्रुव ~ वचन सुनि रिसायो ४/१०।
बिमान[1] देवताओं का यान, विमान व्योम ~ थकाई ६२६। २ विमान पर भोलि गनिका चढे जात ~ १/२३५। ३ रथ आदि यान . पाछ्र चढो ~ मनोहर नहुरी ब्रज मैं होत अँधेरौं २९९०।
बिमान[2] मान रहित, गौरव विहीन : सजल सिंधु मथि कियौ ~ १२७।
बिमानन विमानों को सुर सुमनन बरषावन गावत व्योम ~ साज सारा० ३९४।
बिमाननि १ विमानों से अंबर ~ सुमन बरसत २८३०। २ विमानों की . व्योम ~ भीर ५७५। ३ विमानों पर, दिव्य यानों पर . ब्रह्मादिक आरूढ ~ ९/१५८।
बिमुख[1] १ प्रतिकूल, विरोधी मानी हार ~ दुरजोधन १/२४। २ उदासीन, जो अनुरक्त न हुआ हो ~ भयौ हरि चरन कमल तजि, मन संतोष न आयौ १/२७।
बिमुख[2] सपत्नियों को, सौतों को . करै ~ दुख भार मा० ल० ३१।
बिमुखन उदासीनों या विरोधियों श्री हरि-चरन छाँडि ~ की निसिदिन करन गुलामी १/१४८।
बिमुखनि विरोधियों, नास्तिकों कैसैं संग रहौं ~ कैं १७१२।
बिमोह वशीभूत, मोहित . नद नँदन बस भए वचन-सुनि तिनहिं ~ कियौ १२७६।
बिमोहन मोहित करने वाली चित्ताकर्षक . उर बनमाल विचित्र ~ १/६९।
बिमोहीं मोहित हो गई सुर ललना सुर सहित ~ ११४२।
बिमोह्यौ १ मोहित/आकर्षित कर लिया तब अनि रस करि कंन ~ ३२६६। २ बौरा उठा हो मनु निरधन निधि पाइ ~ २९४१।
बिय १. युगल, दो : सूरदास इंदीवर ~ मनु परि० १/७७। २ दूसरा मोहिं तजि अवर को ~ सहै ऐसे सूल ११/२। ~ **जन** दोनों जनों की, दोनों की : अपनें मन तकि तकि तनु तोलति ~ — सुंदरताई २१६८।
बिय सधि दो का मेल बदन चंद ~ जानि नहि बढत किरन मन लाज २७३४।
बियान एक वाद्य . महुअर वेनु ~ बजावत गावत ग्वाल सकल सँग ठाढे परि० १/२१०।
बियानी ब्याई, बछडे को जन्म दिया धौरी मेरी गाइ ~ १०८२।
बियारी सायकाल का भोजन, ब्यालू . सूर स्याम कछु करौ ~ २२६।
बियाहन विवाह करने, ब्याहने तेरी सौंह मेरी सुनि मैया अबहि ~ जैहौ १९३।
बियै १ दो चले आतुर धाइ आगैं संग सहचरि ~ २६१४। २ द्वैत के, दूसरे : भाल तिलक, स्रवननि तुलसी दल मेटे अंक ~ १/२७१।
बियोग वियोग, विरह . यह ~ बरन्यो नहि जाई ५४६।
बियोगिनि वियोगिनी बिकल ब्रजनाथ ~ नारि २०८८।
बियौ[1] १ दो एकै प्रान, देह द्वै कीन्हे, तुम वै एकै, नहीं ~ १८८२। २ दूसरा, अन्य ऊधौ जो मन होत ~ ३७२७। ३ दूसरे स्यंदन चढे स्याम सब भूषन जानि परै नँद सुवन ~ ३४५२। ४ दूसरे का नैन सदा चरननि तर गये मुख देखत न ~ ११७७।
बियौ[2] अलग, पृथक् . बुधि-बिबेक-कुलकानि गवाई इंद्रिनि कियौ ~ २३०४।
बिरचि १ ब्रह्मा, सृष्टि के रचयिता सिव ~ सुर नर मनुज मुनि ४२१२। २ ब्रह्मा ने जाहिं ~ सीस पर धारी १६७४। ३ ब्रह्मा को : ईस ~ भ्रमावै ६५।
बिरंचि चतुरानन चार मुख वाले ब्रह्मा सिव, ~, नारद ९५०।
बिरचै विरचित करता है, बनाता है . अब या को सुर नाहि ~ जाहिं बिरचि सीस पर धारी १६७४।
बिरक्त १ विरक्त, विरागी, ससार से उदासीन . को ~ अधिक नारद तैं १/३५। २ वैरागियों को . विषयी भजे ~ न सेए १/१९८।
बिरचत करता, बनाता। ~ **हठ** हठ करती हो, हठ का निर्माण करती हो . रस मैं रिस विष दै ~ — २०९१।
बिरचि रचकर, बनाकर बर श्रृंगार ~ राधा जू चली सकल ब्रज बालिका ८०९।
बिरचो बनाई है . विधि ~ किधौं मदन मर्दे सी २११३।

बिरचे १ बनाये हैं : पच ~ एकही ढिग परि० १/९ । २ बना दिए गये हों . मानहुँ ससि सहाय करिबे कौं रन ~ द्वै भान २४४६ ।

बिरचैं बनाये/पाले जाने पर भी राँचेहू ~ सुख नाहीं, भूलि न कबहुँ पत्यैयै २८२६ ।

बिरचै बनाई है, सजाई है . कमल गुल्लाल दल-तल्प ~ २४५३ ।

बिरच्यौ १ बनाया हुआ है, रचा हुआ है मैं बिरचि ~ जग मेरो ४३६ । २ बनाया, तैयार किया : यह तन राँचि-रौचि करि ~ कियौ आपनौ भायौ १/६७ ।

बिरछ वृक्ष, पेड़ · बैठि ~ की छाँह री परि० १/१५८ ।

बिरज ब्रज . साँकरि खोरिया ~ की परि० १/१३० ।

बिरत विरक्त, उदासीन इहि ससार अपार ~ हैं, जम की त्रास न सहियै १/६२ । ~ **चित** विरक्त चित्त वाली · जन्मन ही तैं भई ~ — १३३० ।

बिरति वैराग्य, उदासीनता मन मगन काम सौं ~ नहिं उपजाई १/१८७ ।

बिरथ बिना रथ के गौरि सकुच, ससि ~ कियौ रथ, मेरु लुट्यौ बटितार २७६३ ।

बिरथा व्यर्थ, निरर्थक, निष्फल करैं उपाइ सो ~ जाइ ७/२ ।

बिरद १ विरुद, यश, बड़ाई जुग जुग ~ यहै चलि आयौ ४८८ । २- बाना है भक्त बच्छल ~ तुम्हरो ४२६४ । ३ यश या बाने को तजौ ~ कै मोहि उधारौ १/१४५ । ~ **गह्यौ** बड़प्पन या बाने की रक्षा की सूर स्याम के हरि करुनामय कब नाहि ~ — ४०३७ ।

बिरदनि विरुदों को, अनेकों बार के यश को सूत मागध बदत ~ ३१४१ ।

बिरदहि विरुद को, यश को, बाने को ~ नाथ सम्हारौ १/२०९ ।

बिरध वृद्ध, बूढ़े ~ पुरुष को वरै न नारि ९/८ । ~ **समय की** वृद्धावस्था की, बुढ़ापे की : ~ — हरत लकुटिया पाप पुन्य डर नाहीं २९८० ।

बिरधापन बुढ़ापा, वृद्धावस्था कछु ~ माहिं बिनीतै ७/२ ।

बिरध बयस वृद्धावस्था (मे), बुढ़ापे (मे) ~ सुत भयौ कन्हाई ३९१ ।

बिरधै बढ़ती है, वृद्धि को प्राप्त होती है . हरि की भक्ति जुगै जुग ~ आन धर्म दिन चारि २/२ ।

बिरधौ वृद्ध, बूढ़ा . सिसु, किसोर, ~ तनु होइ ७/२ ।

बिरमत रुकता अपने क्रा तैं हौ नहिं ~ १/२०७ ।

बिरमहि रमण कर रहे हैं, विहार करते हैं हमहिं छाँडि ~ कुबिजा सग ३५९३ ।

बिरमाइ ठहर गये, रुक गये सूर स्याम तहँ बैठि बिचारत सखा कहाँ ~ ५०० ।

बिरमाई १ रुक गई · आजु बिधाता मति मेरी हरी भवन-काज ~ १९९७ । २ रोककर, बहलाकर . कहँ लो राखिय मन ~ ३२८२ ।

बिरमाऊँ रोक दूँ तुरग सहित रबि रथ ~ परि० १/८० ।

बिरमाए[1] १ रोक लिये हैं, मोहित कर लिये हैं . किरचक चदन दै ~ ३६४० । २. रोके गये थे लाल हो कौन तिया ~ २६२१ ।

बिरमाए[2] बिता दिये, व्यतीत कर दिये जल थल नित नूतन लीला करि केते जुग ~ ३६५७ ।

बिरमायौ लगाया, अवस्थित किया · नारायन हित ध्यान लगायौ और नहीं कहुँ मन ~ ९८४ । २ रोक रखा . सूर स्याम पहिले गुन सुमिरैं, प्रान जात ~ ३३२८ ।

बिरमावत[1] २ रोक देता है, अवस्थित कर देता है, लगा देता है निहिं जो अग अवलोकन कीन्हौ सो तन मन तहँ ~ १३६९ । २ रुक गये हैं अढ़ुँठ पेग बसुधा सब कीना, धाम अवधि ~ १२५ ।

बिरमावत[2] विहार करते हैं, रमण करते है सुर अनत ~ ३६४७ ।

बिरमावै १ लगाते है, विहार करने देते है, अनुरक्त होने देते हे . सूर स्याम हे कुनधाम मैं अनत न मन ~ २५८६ । २ रोक/उलझा रहे हैं रोकि रहे सब सखा और बातनि ~ १६१८ । २ रोक लेती हे . जद्यपि जतन अनेक सोचि पचि त्रिया मनहि ~ ३१८३ ।

बिरमाहि रुके, देर लगाएँ सूरदास स्वामी सा कहियौ अब ~ नहीं ९/९१ । २ विश्राम करते है, सुस्ताते हैं सघन गुजत बैठि उन पर भौरहू ~ १/३३८ ।

बिरमि[1] रमण कर, विहार कर अनत ~ कतहू रहे २७२७ ।

बिरमि[2] रुक नैकहू न रहन ~ जात तहा धाई २३५३ ।

बिरमे रुक गये, ठहर गए कहि गए निमि आइहै हरि अनत ~ जाइ २७७१ ।

बिरला कोइ कोई, एक आध . नटनत करत कला सकल बूझे ~ कोइ २/३६ ।

बिरवा पौधा . धोखें हा ~ लगाइ कै काटत नाहिं बहोरी ३९७४ ।

बिरस[1] क्रोध, नीरसता ~ में यह रस मै आनि दिखाऊँ २८०९ । ~ **कीन्हौ** आनन्द-विहीन कर दिया · गए सग बिसारि रस मैं ~ — बाल ११०० । ~ **जनायौ** रसहीनता की प्रतीति करवाई · रस मैं अतर ~ — ११७९ । ~ **मानै** बुरा लगेगा ही · कोउ कछु कहै सो ~ — १००४ ।

बिरस प्रतिकूल, विमुख अथवा जो इस समय अप्राप्य है . ~ रासिनि सुरति करि करि परि० १/१९२ ।

बिरह वियोग । ~ **गति** वियोगावस्था बिहँसि कह्यौ मोहिं स्याम पठायौ सुनत ~ — भूली ७७२८ । ~ **जरी** वियोग में जली हुई, विरह-संतप्ता : मरन सरन कहैं ~ — ११३६ । ~ **डही** विरह में जलती रही . निसि वस ~ — ७७१६ । ~ **दुहेली** वियोग में दुःखी या व्याकुल . काहे ~ — है ७७०८ । ~ **सलिल मैं भासी** विरह के जल में पड़ी/फँसी हुई को अपनें गुन दटनि करि गहियै ~ — १०२९ । ~ **स्रम जैहै** विरह का परिश्रम व्यर्थ ही चला जायेगा हममा कहत ~ —, गगन कूप खनि खोरै ३६०० ।

बिरहि-अहि-ग्रासित विरह के साँप से त्रस्त/काटे हुए बामर-स्याम ~ हूजन मृतक समान १३५६ ।

बिरह-दंद विरह के संघर्ष को अर्थात् विरह व्यथा को ~ निवारि टार्यौ १०२६ ।

बिरह-दरिद्र वियोग रूपी दरिद्रता को : ~ नासि सुख दान दाजे १०३० ।

बिरहन वियोग में, वियोग की पीड़ा में नद कुवर ~ राधा के सारा० ९१६ ।

बिरहन-बन वियोग रूपी वन स्याम ~ माँझ हिरानी २०७७ ।

बिरह-बिकल-मति वियोग से व्याकुल चित्त या बुद्धि में . ~ दृष्टि दहुँ दिसि २१२३ ।

बिरह-सयोग-सुख वियोग और सयोग के सुख से बिछुरन मिलन ~ नूतन दिन दिन प्रेम प्रकासत २२८५ ।

बिरहा १ विरह, वियोग · ~ कवम हरि परे, तिय कियौ अनुमान २८२० । २ वियोग में अपने काम न मिलन हरा जो ~ लेत उटाए ६७० । ~ **तन मारी** वियोग से पीड़ित शरीर वाली · कमल सरोवर बूझहीं ~ — ११२० ।

बिरहातुर वियोग में व्याकुल · उन्नत स्याम विरह ~ कमल वदनि कुम्हिलानी ४१३७ ।

बिरहानल वियोग रूपी अग्नि, विरहाग्नि पलक न परन चहूं दिसि चितवति ~ कैं दाहैं ३६२५ ।

बिरहानी वियोग से पीड़ित हो गई या व्याकुल हो गई राधा विरह देखि ~ ११०९ ।

बिरहाने विरह में व्याकुल हैं हरि-सुर भवन विना ~ ४१२० ।

बिरहि विरही, वियोगी · सूरदास प्रेम-पीर ~ मिलें जान री ३४०२ ।

बिरहिनि १, विरहिणी, वियोगिनी . ~ क्यौं धीरज मन धरै ३६०२ । २ विरहिणी को, वियोगिनी को ~ लेहु जिवाइ ११२१ । ३ वियोगिनियों को चाहत ~ बाँध्यौ ४२६० । ४ वियोगिनियों के : ~ ताप नसावै १३७० ।

बिरहिनी १ विरहिणी, वियोगिनियाँ 'सूर' स्याम बिनु रटत ~ ३८६० । २ वियोगिनियों के तुम ~ विरह दुख जानत कहियै गूढ़ कथा ३९५५ ।

बिरही वियोगी . ब्रज कें ~ लोग दुखारे ४१०० ।

बिरहौ विरह ही · ऊधौ ~ प्रेम करे ३९८६ ।

बिराज[१] क्रि० अ० सुशोभित है · त्रियनि मैं अधिकाई भाग सुहा। ~ २७५३ । क्रि० वि० सुशोभित होकर या सुशोभित करके . भीषम, द्रोन, करन, दुरजोधन, बैठे सभा ~ १/२५५ ।

बिराज[२] बैठे थे, बैठा था जनमेजय जब पायौ राज, एक बार निज सभा ~ १२/५ ।

बिराजई सुशोभित हो रहे हैं स्याम घन हरि परम सुदर तड़ित वसन ~ ४१८६ ।

बिराजई सुशोभित है कुंडल मुकुट ~ ११२८ ।

बिराजत १ सुशोभित है . घूँघट मुकुट ~ सीस ११८० । २ सुशोभित होकर · गोपिन मंडल मध्य ~ निसदिन करत विहार सारा० ४ । ३ सुशोभित हो रहे हैं ग्वाल मंडली मध्य ~ हरि हलधर दोउ बीर सारा० ४६४ । ४ विराजमान है, समाया हुआ है : मन मैं मोहन रूप ~ ३९२६ ।

बिराजति १ बनी हुई थी, सुशोभित थी तनु वन धातु विचित्र ~ २२१९ । २ सुशोभित हो रही है, शोभा दे रही है बिनु गुन माल ~ उर पर २६२० ।

बिराजन विराजने, सुशोभित होने : लागे स्याम ~ ४२६८ ।

बिराजा १ विराजमान हुआ, सिंहासनारूढ हुआ रविवंस भयौ रैवत राजा, ता सम जग दुनिया न ~ ९/४ । २ सुशोभित हुआ अरु हरि सम दुतिया न ~ ४३०० ।

बिराजित सुशोभित हो रहे हैं . जहँ तहँ बदनवार ~ ३८ ।

बिराजी सुशोभित हो रही है सूर स्याम छवि सबै ~ २४८५ ।

बिराजे बैठे . भोजन कर जबहीं जु ~ तब भाष्यो मुनिराय सारा० २०० । ~ **बालक** बालक के रूप में विद्यमान रहे द्वादश बरष ~ — फिर भू भार हरो सारा० २४१ ।

बिराजैं १ सुशोभित हैं, शोभा दे रहे हैं मोर के पंख माथैं ~ ३०७८ । २ सुशोभित थे आये ब्रह्म सभा में वामन सूरज तेज ~ सारा० ३३६ ।

बिराजै १ सुशोभित हो रहा है माथैं मुकुट ~ ४००७ । २ सुशोभित हो रहे हैं भामिनि बीच गिरिधर ~ २१७० । ३ शोभा पा रहा है मथुरा दिन दिन अधिक ~ ३०९६ ।

बिराज्यौ १ विराजमान है, खड़ा है ब्रज बनित-बर-बारि-वृंद मैं श्री ब्रजराज ~ १०४९ । २. सुशोभित होने पर या आने पर 'सूर' सबै रितुराज ~ मिलि निज कुल पहिचाने ३७०२ ।

बिराट पु० ब्रह्मा का वह विशाल रूप जिसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड विद्यमान है · चौदह लोक भए ता माहिं, ज्ञानी ताहि ~ कहाहिं सारा० ३/१३ । वि० विशाल, भारी इक इक रोम ~ किए तन कोटि कोटि ब्रह्मंड ४८७ ।

बिराटहि राजा विराट के यहाँ (मत्स्य देश के राजा, जो उत्तरा के पिता अतएव अभिमन्यु के श्वसुर थे) : वास ~ कीन्हो सारा० ७७८ ।

बिराध एक राक्षस जिसे दण्डकारण्य मे लक्ष्मण ने मारा था · अरु ~ रिपु मारे सारा० २५५ ।

बिरान बेगाने या पराये को अथवा शुष्क/नीरस को : सूरदास गोपिन परतिग्या छुवहिं न जोग ~ ३९८५ ।

बिरानी[1] उजाडपन, नीरसता : सखि रसाल हमकौं दई, तुम देहु ~ २५१२ ।

बिरानी[2] दूसरी, बेगानी, पराई : भई जु बात ~ १/३०५ ।

बिराने दूसरों के, बेगानों के : भक्ति बिनु बैल ~ ह्वैहौ १/३३१ ।

बिरानै पराये, जो अपने नहीं हैं, अन्य : बाप रिसाइ, माइ घर मारै, हँसैं ~ लोग १६६३ ।

बिरानौ पराये का, दूसरे का . जैसैं गरभक सेइ ~ कागा रह्यौ खिसाइ परि० १/१५१ ।

बिराम रुकना, विश्राम धेनु-कान नहिं ~, जसुदा जल ल्याई ६१९ ।

बिरिध वृद्ध, बूढा . ~ अरु बिन भागहूँ कौ १०१६ ।

बिरियाँ १ बेला, समय साँझ की ~ भई सखी री ६०५ । २. बार, अवसर पर : मेरी ~ बिरद कितै बिसरायौ १/१८८ ।

बिरी छोटा बीडा (पान का) पीरे-पान - ~ मुख नावति ५१४ ।

बिरुँध्यौ रुँध गया, अवरुद्ध हो गया : पलित केस, कफ-कठ ~ कल न परति दिन-राती १/११८ ।

बिरुचे चिढाकर - रोंचहि जाहि सनक अरु सकर ~ ताहि बिगोवै २८२६ ।

बिरुझति उलझती हैं, झगडती हैं . हठ करति ~ तब जिय जननि जानति बारि ७७७ ।

बिररुझाइ अप्रसन्न होकर यह सुनि बहुरि चली ~ ।

बिरुझानी १ अप्रसन्न हुई, रूठ गई : बार बार सुत सौं ~ ८९३ । २ नाराज/अप्रसन्न होकर जुवती चलीं घरनि ~ ३६८ ।

बिरुझाने १. मचल गये, रूठ गये : बरजत बरजत ~ १८३ । २ मचल कर, रूठ कर या झगड कर · सूर स्याम ~ सोए १९६ ।

बिरुझानौ मचल रहा था : साँझहि तैं अतिहीं ~ २०० ।

बिरुझावत मचल पडते हैं : लागी भूख, चद मैं खैहौं, देहि देहि रिस करि ~ १८८ ।

बिरुझैं झगडने लगेंगी, रूठेंगी तब न कछू बनि आइहै जब ~ सब नारि १६१८ ।

बिरुझै रूठता है जौ बालक जननी सौं ~ माता ताकौ लेइ मनाइ ९७७ ।

बिरुझैहै उलझ जायेगा, झगडा करने लगेगा : सूरदास तब कहति जसोदा बहुरि स्याम ~ री ७११ ।

बिरुदहि यश को, बडप्पन को · भक्तबछल बानौ है मेरौ ~ कहा लजाऊँ ४ ।

बिरुदावलि १ प्रशस्तियाँ, यश : साँची ~ तुम जग के पितु माता १/१२३ ।

बिरुदावली प्रशस्तियाँ, यशोगान, बडाई · दनुज दवन ~ साँचौ त्रिभुवन नाथ १६१८ ।

बिरुद्ध प्रतिकूल, विपरीत · बेद ~ सकल पाण्डव कुल सो तुम्हरै मन भायौ १/१०४ ।

बिरुध[1] शत्रु छुटे केस मज्जन समय देखि ~ अहि मोर २६१३ ।

बिरुध[2] वृक्ष या पौधा ~ बिबेक गोपरस परि करि ३३८८ ।

बिरूप कुरूप रे रे चपल ~ ढीठ तू बोलत बचन अनेरौ ९/१३२ ।

बिरैनि दूसरी-दूसरी, तरह-तरह की . सूरदास प्रभु सिसु लीला मैं नाना ~ जु बानै परि० १/१४७ ।

बिरोचन विरोचन, राजा बलि का पिता तथा प्रह्लाद का पुत्र ताकौ पुत्र ~ रयौ ८/७ ।

बिरोधे विरोध करके ग्यान-बिबेक ~ दोऊ हते बधु हितकारी १/१७३ ।

बिरोधैं विरोध से, विरोध के द्वारा, विरोध करके मुक्ति हेत जोगी स्रम साधैं असुर ~ पावैं १/१०४ ।

बिरोधै अवरुद्ध कर लिया है सीत बात कफ कंठ ~ रसना टूटै बात १/३१३ ।

बिलंब देर, देरी । ~ **न लावहु** देर न लगाओ, देर मत करो · बेगि चलौ कछु ~ — ९२६ ।

बिलंबि देर करके भृत्ति ~ पृष्ठ दै स्यामा, स्यामै स्याम बिनौ परि० १/२०३ ।

बिलख पुं० दु ख, विलाप मति हिय ~ करौ सिय, रघुबर हतिहैं कुल दैयत कौ ९/८४ । क्रि० अ० बिलख कर, दु खी होकर · ते अब ~ बदन कृस डोलतिं ३८५० ।

बिलखत बिलखते हैं, विलाप कर रहे हैं : ग्वालऽरु बाल बच्छ गो ~ ४०८८ ।

बिलखति व्याकुल होती हैं ~ यह कहहि सबै लोचन जल ढोरैं ३०६८ ।

बिलख-बदन विह्वल मुख वाले होकर ~ दुख भरे सिया के, हैं जलनिधि के तीर ९/१५२ ।

बिलखाइ क्रि० अ० १. व्याकुल हो रही हो कहु किहिं बिधि ~ ९/८३ । २. विलाप कर रही थी, रो रही थी . मदो दरि ~ ९/८३ । क्रि० वि० व्याकुल होकर, रोते हुए

वचन कह्यौ ~ ९/८७।

बिलखाई दुखी होकर, रोते हुए · भरन चले ~ ९/५३।

बिलखाउँ व्याकुल रहती हूँ, रोती रहती हूँ : ता बिनु दिन ~ परि० १/७०।

बिलखात क्रि० अ० १ व्याकुल होता है, रोता है : कबहूँ मग मग धूरि बटोरत भोजन कौं ~ ९/२२। २. रो रहे हैं : देखि री देखि हरि ~ ३६०। क्रि० वि० व्याकुल होकर ते खग बिपिन अधीर कीर पिक टोलत हैं ~ ३२०२।

बिलखानीं व्याकुल हो उठीं, विलाप करने लगीं सो सुनि कै जुवती ~ ३०७०।

बिलखानी रोने लगी, व्याकुल हो गई : प्रान प्रिया तुम क्यौं ~ ४१९५।

बिलखाने क्रि० अ० १. विलाप करने लगे, बिलख बिलख कर रोने लगे : भ्रात मुख निरखि राम ~ ९/५२। २ व्याकुल हुए, दुखी हो गये देखि पराक्रम कस तब जिय ~ ३०७७। क्रि० वि० व्याकुल : पौढ़े जबहीं आनि कै देखे ~ २९३४।

बिलखानौ दुखी हो उठे : मुख अक्रूर हरषित भयौ हरि हिय ~ २९३९।

बिलखान्यौ दुखी हो गया इन्द्र हँस्यौ, हर हिय ~ ९/१५८।

बिलखाय रो कर, दुखी हो कर : बहुत कह्यौ ~ सारा० ८५२।

बिलखाये व्याकुल हो गये, दुखी हुए 'पूछी बात कह्यो तब काहू मन बहु बिधि ~ सारा० २५०।

बिलखावै व्याकुल या दुखी होता है उग्रसेन की आपदा सुनि सुनि ~ १/८।

बिलखि १ बिलखते हुए, रोते हुए लगत सेष-उर ~ जगत गुरु ९/६२। २ दुखी होकर, दुख पूर्वक : निपट निलज बैन ~ सहूँ २९५।

बिलखे दुखी/व्याकुल हो गये : देखि अक्रूर नर नारि ~ २९६७।

बिलखैं रोने पर हमैं हँसत ~ बिलखत हैं १/१९५।

बिलग[1] १ अलग, अपने से भिन्न ~ हम मानैं ऊधौ काकी ३८५६। २ अन्य, कुछ और : मेरी कही ~ जनि मानौ २४८३। △ ~ जनि मानै बुरा मत मानना, अन्य मत सोचना/समझना मन मैं कछू ~ — मैं तोरी महतारी ७२४।

बिलगानी अलग हो गई, दूर हो गई अब ब्रज सनौ भयौ गिरिधर बिनु गोकुल मति ~ ३१६३।

बिलगि कुछ और, बुरा : कहै ~ जनि मानै १६७६।

बिलछ विलक्षण/आश्चर्यजनक (बात) सुनि री सखी ~ कहौं तोसौं २०६७।

बिलछि लक्षणहीन · पतित ~ करि छाँड़िये ११८०।

बिलपत क्रि० अ० १ रोते हैं, पुकार मचाई है ~ हरिहिं सुनाइ २४३५। २ रो रही है वृषभानु-नंदिनी ~ बिपिन अधीर २४५२। वि० रोते हुए, विलाप करते हुए ~ छाँड़ि सकल गोपी जन ३६५२।

बिलपति रोती रहती हैं कान्ह तुम्हारी बिकल बिरहिनी ~ बिरह बियोगैं ४१४३।

बिलपति रोती है, विलाप करती है · कबहुँ बिहँसति, कबहुँ ~ ६७८।

बिलम विलंब, देर ~ करौ जनि तुरत बनाए ९०४। ~ जनि लावहु देर मत लगाओ/करो : आवहु बेगि ~ — गैया दूरि गई ८४३।

बिलमाइ विलंब, देर : नैंकु करहु अब जनि ~ ८८७।

बिलमाई रुक गया . सूरदास रबि-बाजि चलत नहिं तातैं रथ ~ परि० १/३५।

बिलमावत रोक लेते हैं, रोक कर देर करा देते हैं · सूर स्याम हमकौं ~ खीझति भगिनी माई १५६४।

बिलमि रुक कर। ~ बिदेस रहे परदेश में रुके हुए हैं या रमे हुए हैं . माधव ~ ३२८६।

बिललाइ व्याकुल होकर, बिलख बिलख कर जहाँ जहाँ तृटि बन चराई मरति तहँ तहँ ~ ४०७२।

बिललाई बिलखता है, रोता है मैं अपराध किये सिसु मारे कर जोरे ~ सारा० ३८६।

बिललाउ व्याकुल होती हो, दुखी होती हो सूर स्याम हैं पलक धाम मैं लखि चित कत ~ ४१३३।

बिललात दुःखी होती है/हो . बिनही काज साटि लै धावति, ता पाछैं ~ २५७।

बिललाति व्याकुल होकर अथवा चिल्लाते हुए धेनु फिरति ~ बच्छ थन कोउ न लगावै ४८९।

बिललातैं दुखी होते हैं भवन तैं बिछुरैं मीन मकर ~ ४१२०।

बिललायो दुखी हुआ, व्याकुल हुआ तब नृप कस बहुत ~ सारा० ५२४।

बिलसत[1] क्रि० स० भोगते हैं, भोग रहे हैं : जो रस नंद जसोदा ~ सो नहिं तिहूँ भुवनिया २३८। क्रि०वि० भोगते हुए : सूर प्रभु के संग ~ सकल कारज सरा ३०२।

बिलसत[2] विलास कर रहे थे : ~ बिपिन बिलास बिबिध बर १९८७। २ रम गये हैं ~ सुधा जलज आनन पर ४१७। ३ क्रीड़ा करते हैं सूरदास स्वामी की लीला अति प्रताप ~ नँदरैया ११५। ~ रहत सुशोभित रहते हैं - हरि मुख कमल नैन ये मधुकर ~ — हमारे ३६८४।

बिलसति भोग करती हैं : सूर कहौं हमकौं वैसी सुख जो ~ ब्रज-बाम ३०६९।

बिलसन भोग करने, विलास करने : पूरब तप-फल ~ लागी मन के भाव पुरावति है ३१०७ ।

बिलसनहारे विलास करने वाले : समुभि परी सखि रति स्वरूप तुम रतिपति ज्यौं निसि ~ परि० १/७५ ।

बिलसहु विलास करो, भोग करो, काम-क्रीडा करो . सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि ~ स्याम सुजान २६०३ ।

बिलसि १ भोग करके, काम-क्रीडा करके कुज-भवन हरि सग ~ रस-मन कौं सुफल करायौ १६९५ । **२** विलास/भोग करो . अब रावन घर ~ सहज सुख ९/७७ ।

बिलसियो सुख या आनन्द भोगो · सग ~ वाम ।

बिलसी भोग की · कौनै रक सपदा ~ सोवत सपने पाई ३९६८ ।

बिलसे[1] सुशोभित हुए, क्रीडा/लीला की धनि यह पावन भूमि जहाँ ~ अविनासी ४०९५ ।

बिलसे[2] भोगे, लूटे : जीवै तो सुख ~ जग मैं ९/१५० ।

बिलसैं विलास करेंगे · कै तन देउँ मध्य पावक के, कै ~ रघुराई ९/७७ ।

बिलसैं विलास करे · सूर स्याम तिनहीं सुख दीजै, जो ~ सँग तुमकौं लै २५३९ ।

बिलसौं काम-क्रीडा करूँगी रैनि ~ काम, मन मनावै २७०६ ।

बिलसौ काम क्रीडा करो, सुख भोगो, आनद मनाओ रास रग रचौं मिलि सग ~ १०३५ ।

बिलाइ १ नष्ट/लुप्त हो जाते हैं वारि मैं ज्यों उठत बुद बुद लागि बाइ ~ १/३१६ । **२** विलान/लुप्त हो जायेगी दया, धर्म की रीति ~ १२/३ । विलीन हो/समा जाता है : त्यौ ही सब जग प्रगटत तुम मैं पुनि तुम माहिं ~ ४३०२ ।

बिलाई बिला/समा गई माया जहाँ की तहाँ ~ ८८५ ।

बिलान नष्ट हो गया, लुप्त हो गया · अब वह कोप कहाँ रघु-नदन दससिर-बेर ~ ९/८३ ।

बिलाप विलाप, रुदन करि ~ रुकमिनी सुनावत ४२२९ ।

बिलास १ क्रीडा, विनोद सूरदास ग्वारिनि सँग मिलि हरि लागे करन ~ ४१० । २. हर्ष, आनन्द . देत दोउ ~ सहचर २१३१ । ३. सुख : बीते सब भव ~ २०५ । ४ क्रीडाओं के द्वारा : बिलसत बिपिन ~ विविध वर १९८७ । ५ क्रीडा/विनोद (करते हैं) येइ बिस्वभर नायक ग्वाल-सग ~ १६०३ ।

बिलास बिलोचन विलासमयी दृष्टि, कामातुर नेत्र . सारग बदन ~ १६८० ।

बिलास-श्रम-सेज काम क्रीडा से उत्पन्न थकावट की सेज पर : नव ~ डसे हौ २५०३ ।

बिलासनि पुं० सुखों मे : निसि दिन विषय ~ बिलसत, फूटि गई तव चारयौ १/१०१ । **वि०** विलास-विहार या विनोद करने वाली बिहरत कुज ~ पद्मिनि सकुचनि सेत कई २८०६ ।

बिलासी १ सुख भोगने वाले, आनन्द लेने वाले : सो प्रभु घर घरघोष ~ ३९१ । **२** सुख/आनन्द देने वाले हैं : पूरन ब्रह्म अखडित मडित पडित मुनिनि ~ ३८६६ ।

बिलासै क्रीडा करता है : वृदाबन मैं रास ~ मुरली मधुर बजावै परि० १/५४ ।

बिलुठत लोटती है, भूमि पर उलटती पलटती है . कबहुँ ~ पीठि ढीठत कर कजल की ब्याल परि० २/४० ।

बिलुलित हिल रहे थे . अचल-चचल, फटी कचुकी ~ वर कुच-तटी उघारी ११९४ ।

बिलै विलीन, गायब : जात ~ है छिनक मात्र मैं २/३१ ।

बिलोइ बिलोकर, मथकर · दधिहिं ~ सद माखन राख्यौ ८४ ।

बिलोक देखकर निज प्रतिबिंब ~ मुकुर मे सारा० १८३ ।

बिलोकत क्रि० स० १ देखता है · कबु-कठ-विधि लोक ~ २१८४ । २ देखती हैं/है : जद्यपि नाथ-बिधु-बदन ~ २१२३ । **क्रि० वि० १** देखते हुए, खोजते हुए . पौरि-पौरि प्रति फिरौ ~ गिरि कदर बन गेहु ९/७४ । २. देखते ही · मोहन बदन ~ अँखियनि उपजत है अनुराग १७७७ । ~ और देखने मे कुछ और ही है देखैं बने, कहन रसना सों सूर ~ — ३५६० ।

बिलोकति १ देखती है : कबहुँक सुदर बदन ~ ११५ । २. देख रही थी · मैं बैठी प्रतिबिंब ~ अपनैं सहज सुभाइ २२०७ ।

बिलोकन अवलोकन (किया), देखा · तुम प्रति अग ~ कीन्हौ १७८५ ।

बिलोकनि १ चितवन : वा प्रताप की मधुर ~ पर वारौं सब भूप ९/१३४ । २ देखने की . इति आवति सुधि मुकुर ~ २२०८ ।

बिलोकि १ देखकर · काम रूप ~ मोह्यौ ४१८६ । **२** देख, देखो : नख सिख काति ~ सखी री २२१९ ।

बिलोकित देखा अद्भुत नगर बिदेह ~ सुख पायो सब अग सारा० ७१० ।

बिलोके देखे धरनि रहे मुरझाइ ~ २५७७ ।

बिलोकैं १ देखे सूर स्याम बिना ~ नैन चैन न देन ३५७८ । २ देखने मे . परसैं जरै ~ भीजै ३४९० ।

बिलोको देखो, दृष्टि डालो : ~ राधा नागरि प्यारी हो परि० २/६४ ।

बिलोक्यौ १ देखा . नीकैं करि हरि मुख न ~ २९९५ । २ देखा है जिन नैननि मुख चद ~ ते नहि जात तरनि सों जोरे ३८५४ ।

बिलोचन १ नेत्र, ऑख गज उरोज वर बाजि ~ २४५५ । २ नेत्रों मे : बारि ~ छाए ९/७० ।

बिलोनी लावण्य-विहीन, असुंदर, कुरूप · सर आजु यह नई बनाती एकौ अँग न ~ २१५७ ।

बिलोयै बिलोई/मथी जा रही हैं अबला कहा जोग मत जानैं मनमथ व्यथा ~ ४१४३ ।

बिलोयौ मथन कर दिया, मथ डाला : सौ जोजन मरजाद सिंधु की पल मैं राम ~ १/४३ ।

बिलोल चंचल बाल सुभाव ~ बिलोचन १०६ ।

बिलोवति मथ रही है : भरी गुमान ~ ठाढ़ी २९९ ।

बिलोवनहारि (दही) मथने वाली, (मट्ठा) बनाने वाली · बदरौला वृषभानु कैं रही ~ ८४१ ।

बिलोवनहारी (दही) मथने वाली इक वृषभानु ~ नाम नाहिं बदरौला नारी ९१२ ।

बिलोवनहारु मथने वाले, बिलोने वाले : रतन भई मन गोपिका कान्ह ~ ८४१ ।

बिलोवे मथती हैं, बिलोती हैं घर घर गोपी दह्यौ ~ ४०८ ।

बिलोवै बिलोती/मथती है मन माथा-तन, चित गोरस मैं इहिं बिधि महरि ~ ३४७ ।

बिलोवौं मथ लूँ, बिलो डालूँ आनि मथानी दही ~ जौ लगि लालन उठन न पावै २३१ ।

बिलौवहै मथ रही है · रीतौ माठ ~ चित जहाँ कन्हाई ७१५ ।

बिशेस्यो विशेष करके . ताको पूजन नित प्रति करिहौ सो तुम सुबुध ~ मारा० ५८८ ।

बिष विष, जहर । ~ अहि सम साँप के जहर के समान : आसन असन अनल ~ — ४०६७ । ~ घूँटै जहर पीता है : बार-बार ~ — १/६३ ।

बिषइ बिषै बिलासी और बिलास अथवा उपमान (विषयी) व उपमेय (विषय) अर्थात् उपमानोपमेय अलकार ~ मिन वै सा० ल० ४ ।

बिषका बाण अर्थात् कटाक्ष : दाहम धनुष दाहमैं ~ ३८६७ ।

बिषधर १ साप ने ~ फटकी पूँछ फटकि महसौ फन काढ़ौ ५८९ । २ साँप का . ~ विषय विषम विष बाची १/८३ ।

बिषम १ भयानक, भयकर माया ~ भुजगिना कौ विष २/३२ । २ कठोर, कटु : ~ वचन यौं बोलि २३३ ।

बिषमता अस्समता, अन्तर आपु ~ तजि दोऊ स्म बानक ललित त्रिभंग ३९४७ ।

बिषम बिचार विष = जल, म = मय, विचार = विचार अर्थात् जलमय विचार = मृगतृष्णा . 'सूरदास' अनुराग प्रथम तैं ~ बिचारौ सा० ल० ३८ ।

बिषय १. विषय (काम, क्रोध अहंकार आदि) ~ सा तृप्ति न होइ ९/८ । २ विषयों में, भोग विलासों मे ~ असक्त अमित-अघ- व्याकुल तबहूँ कछू न सँभारयौ १/१०२ । ३ इच्छाओं के, वासनाओं के · ~ अचेतक नृप मन राँच ४/१२ ।

बिषयनि भोग-विलासों के . ~ बिवस छए ३००६ ।

बिषय-बासना विषय और वासनाएँ · ~ सब परिहरी ९/२ ।

बिषय-बिकार विषयों के विकार छाँटौ ~ ८००५ ।

बिषय-बिलासनि विषयों के सुखों मे ~ बिलसत १/१०१ ।

बिषय-सवाद विषयों के स्वाद/सुख सुनि धुनि छूटे ~ ११८० ।

बिषया विषय, सासारिक सुखों के तू तौ ~ रंग रँग्यौ है १/६३ ।

बिषया-गाव विषय रूपी गाँव, विषय वासनाओं का गाँव . ~ अमल कौ टोटौ १/६४ ।

बिषयारत सासारिक सुखों मे लिप्त · इंद्री अजित बुद्धि ~ १/१२७ ।

बिषयासक्ति विषयों के प्रति लगाव : देख युवति जन ~ अपार सारा० १०४४ ।

बिषयिनि विषयों . ~ के सुख जोए १/५२ ।

बिषयी विषयी, कामी, ऐन्द्रिय या सासरिक सुखों में लिप्त द्विज-कुल पतित अजामिल ~ गनिका हाथ बिकायौ १/१०४ ।

बिषहर विषधर ने, सर्प ने · घायल ज्यौं घूमैं मनो ~ खाई है परि० १/१४० ~ बाँची सर्प से बचाया था खरिक मिले, की गोरस बेंचत की जब ~ — १८६० ।

बिषहिं १. विष को ही श्री मकर बहु रतन त्यागि कै ~ कठ धरि लेइ १/२०० । २ विष मे ही . विष कौ कीट ~ रुचि मानै १९०४ ।

बिषहि १ जहर जिहिं मुख अमृत पियो रसना भरि तिहिं क्यौं ~ पियावै ३६५५ । २ जहर का ही विष के वृच्छ ~ फल फलिहै ९२४ ।

बिषाद दु ख, खेद . जा चरनारबिंद क रस कौं सुर-मुनि करत ~ ६४ ।

बिषान १ सींग · इच्छु-दड अडारि हरि गुन गहत पानि ~ ४०३५ । २ पशुओं के सींग से बना हुआ बाजा, सिंगी कोउ गावत, कोउ मुरलि बजावत कोउ ~ कोउ बेनु ४४८ ।

बिषारी विष-बुझी, विष वाली पल्लव पट निसान, भँवरा भट, मजरि साल ~ २७८४ ।

बिषारौ विषैला . ज्यौं मृगनाद रीझि तन दान्हौ लाग्यौ बान ~ ३१९५ ।

बिषै[१] १ विषय, ऐन्द्रिय सुख ~ भोग सब तन मैं होइ ७/२ । २ विषयों का, कामादि वासनाओं का ~ रस नैननि छाए १/७ ।

बिषै[२] विष, जहर ही . स्वाति बूँद ज्यौं परै फनिक मुख परत ~ है जाइ ३९५७ ।

बिष्टा मल (अर्थात् सङ्कर मल की तरह) : तीननि मैं तन कृमि, कै ~ कै ह्वै खाक उडैहै १/८६ ।

बिष्ठा मल, पाखाना . कबहूँ ~ मैं रहि जाइ ३/१३ ।

बिष्नु त्रिदेवों मे एक देव विष्णु जो ससार के पालक माने जाते हैं । वैष्णव धर्म मे इन्हे परब्रह्म स्वीकार किया गया है । राम और कृष्ण इन्हीं के अवतार हैं ~ अस सौं दत्तऽवतरे ४/३ ।

बिष्नु पद वैकुठ धाम : सूर ~ पावै सोइ ६/४ ।

बिष्नु-पादोदक विष्णु का चरणामृत अतिहिं पुनीत ~ ९/१२ ।

बिसंभर विश्वभर, विश्व का भरण पोषण करने वाला अर्थात् ईश्वर : पोषन भरन ~ साहब जो कलपै मो कॉचौ १/३२ ।

बिसकरमा विश्वकर्मा, ब्रह्मा, सृष्टि के रचयिता सुनि विनय श्रीपति बिहँसि बोले ~ सुन धारि २८३० ।

बिसकर्मा विश्वकर्मा, लोहार : लै आयो गढि डोलना (हो) ~ सुतहार ४० ।

बिसतार विस्तार, फैलाव यह हरि मच्छ रूप जब लीन्हौं कियो चरित ~ सारा० ९९ ।

बिसद[1] विशद, विस्तृत : बृन्दा बिपिन ~ जमुना तट ४१६ ।

बिसद[2] स्वच्छ, साफ : भूषन बिबिध ~ अबर जुत ९/२६ ।

बिऽमय आश्चर्य या कौतूहल • यह ~ मन माहीं २६३ ।

बिसमरै विस्मृत कर दे, भुला दे सुत-तिय-धन की सुधि ~ ३/१३ ।

बिसमै विस्मय, आश्चर्य . सारग ~ मानै सा० ल० ४ ।

बिसय विषय, सासारिक सुखों मे : ~ बासना नाना रये ४/१२ ।

बिसरत १ भूलता (है) : ~ नहीं तुम्हारो नाम २७६२ । २ भूलती ता दिन की यह कथा तुम्हारी ~ नाहिंन मोहिं सारा० ८१३ । ३. भूलते मोहिं नैकु न ~ वै ब्रजबासी लोग ४१५५ । ४ भूलने लगा : क्यों ~ ब्रज बास ३९५९ । ५. भुलाया जा सकता सूरदास अब क्यौ ~ है मधु-रिपु कौ परितोष २३५४ ।

बिसरति भूल सकती हैं, भूलें कहि अलि क्यौं ~ वै बातैं सग जु करि ब्रजराज ३८३१ ।

बिसरति भूलतो : मोहन मूरति नैंकु न ~ १८९२ ।

बिसर्यौ १ भूल गया, सुध न रही : तन ~ कुल-कानि गँवाई २३५१ । २ भूल गये : नृत्य करत, उघटत नाना बिधि सुनि मुनि ~ ध्यान ११४२ ।

बिसराइ १ भुला : दुख डार्यौ सबहिन ~ ८७२ । २ भुला दिया, दूर कर दिया : प्रानहूँ तैं प्यारी तुम मेरैं यह कहि दुख ~ ११२८ । ३ भूल कर या भुलाकर : लिखी चित्र की सी सब ह्वै गई इक टक पल ~ २४०९ । **रहे** ~ भुला दिए, भूल गए कबहूँ सुरति करत माखन की किधौं — ~ ४०९६ ।

बिसराई १ भुलाया : उहै नेम चित सदा हमारैं नैंकु नहीं ~ २३३३ । २ भुला दी • जॉति पाँति तिन सब ~ ६/४ । ३ भुला/भूल करके, दूर करके, : कस कौ डर ~ ५८९ । **गई** ~ विस्मृत कर दी गईं वहई देखि कूबरी भूले हम सब — ~ ३१५४ ।

बिसराउँ भुलवा दूँगा : ब्रज-बासिनि कौ दुख ~ ५५३ ।

बिसराए १. भुलाया था : जानी कृपा राज काजहु हम निमिष नहीं ~ ४२८८ । २ भुला दिये . ऊधौ हम हरि कत ~ ३६३२ । ३ भूलकर, भुलाकर, सुध-बुध खोकर . मुरली सब्द सुनत बन गवनीं सुत पति गृह ~ ३६०३ । ४ भुलाने से • सूरदास प्रभु नैननि लागे भावत नहिं ~ री २२१५ ।

बिसरात भूलता/भुलाता है : साधुवाद स्तुतिसार जानि कोउ तन मन कित ~ ३७१२ ।

बिसरानी भूल गई . देव काज की सुधि ~ ८८४ ।

बिसराम विश्राम, आराम • सूरज प्रभु के यह सब ~ की १५१६ ।

बिसरामी विश्राम/सुख मिलता है . सुनि सतसग होत जिय आलस विसयनि सॅग ~ १/१४८ ।

बिसराया भुला दिया है, ध्यान मे नहीं रखा है मिथ्या है यह देह कहौ क्यौ हरि ~ ४९२ ।

बिसरायौ १ भुला दिया : अति सुख दै दुख कौं ~ २१५० । २ भुला दिया है या भूल गये हैं . 'सूरज' प्रभु अब ब्रज ~ ३६२८ । △ तन ~ बेसुध हो गई, शरीर की सुधि भूल गई सूर स्याम मुख बात सुनत यह जुवतिनि — ~ १५८८ ।

बिसरावत भुलाते हैं • वै मोकौं काहैं ~ २३२० ।

बिसरावन क्रि० स० भुला देने के लिए . भरि भादौ वै छाइ घोषपति नारिनि दुख ~ ३६६१ । **वि०** भुलाने वाले • हरि ब्रज-जन के दुख ~ ६०३ ।

बिसरावहि भुला देती है . इक कहिकै आपुहिं ~ १२१९ ।

बिसरावहु भुलाओ, ध्यान से उतारो : हमहिं स्याम तुम जनि ~ ४५० ।

बिसरावहुगे भुला दोगे, भूल जाओगे • सूर स्याम अति चतुर कहावत चतुराई ~ २५२४ ।

बिसरावैं १ भुला देते हैं, भूल जाते हैं बाल दसा अवलोकि सकल मुनि, जोग बिरति ~ ९७ । २ भुला देंगे : सो कृपाल मोहिं क्यौ ~ ९/८२ ।

बिसरावै १ भुला देता है, भूल जाता है . जो कोउ तुम्हरैं सरननि आवै, सुख ससार सकल ~ ११/३ । २ भुला सकता है, दूर कर सकता है • सूरदास प्रभु तुम्हरी कृपा बिनु, को मो दुख ~ १/४२ ३ भुला देंगे : ताकौं प्रभु क्यौं करि ~ २/२० ।

बिसरावो भुलाओ सुमिरन जनि ~ सा० ल० ९।

बिसरावौ भुला देती हो अर्थात् भूल जाती हो : वह बल करति आपने तप कौ तुम काहे ~ १३४६।

बिसराहिं भूलें, भुलाये जा सकें . हरि से प्रीतम क्यों ~ ३०३०।

बिसरि १ भूला दी . अति सनेह दुहुँ ~ देह बिसरि २४५५। २. भूलकर : इकटक रहे चकोर चंद ज्यौं निमिष ~ ठहराने २२४८। ३ भूल : ~ गई सुधि ता दिन की १४०५।

बिसरिहै भूलेगा, भूल सकेगा . वह गुन हमकौं कहा ~ बड़े किए पय प्याइ ३४३८।

बिसरीं भूल गई : वे बातैं क्यौं ~ ३६३३।

बिसरी १ भूली : गरभ बास अति त्रास अधोमुख तहाँ न मेरी सुधि ~ १/११६। सुधि ~ सुध बुध नहीं रही : तब तैं लोक लाज — ~ १७९२।

बिसरे १ भूले हैं . सूर स्याम हमकौं नहिं ~ तुम द्रुपति हो काहि १३५७। २ भूल गए : ~ रास बिलास कुंज सब ३९७३। ३ भूल जाने में अथवा ध्यान न देने में : यह मोकौं सुधि भली दिवाइ तनु ~ मैं बहुत बही १६६९। ४ भूले हुए, भूल कर : अह निसि रहत पलक सुधि ~ रूप सुधा न अघाने २३०५। ५ भूल सकता है : ते बोर्ल ले लै नाउँ हित कोउ ~ २४।

बिसरे भूले . ऊधौ कहौ हमैं क्यौं ~ श्री गुपाल सुखदाई ३६८०।

बिसरै १ भूलें ललना प्रान जिवन धन क्या ~ १६६६। २ भूल गया है . त्यौं मन मूढ विषय-गुंजा गहि चिंतामनि ~ १/१९८।

बिसरौं १. भूलती हूँ : सरहिं रहा, फिरौं निसि-बासर चित तैं नैंकु नहीं ~ री ३५५१। २ भूल जाती हूँ ऐसे तन मैं गर्व न राखा चिंतामनि ~ री २१०२। ३ भूलूँगी : सूरज दास यहै ब्रत मेरें हरि पल नहिं ~ ३५५१।

बिसरो भूल जाओ : दुख ~ अब सुख करौ ३०९०।

बिसर्जन समाप्त, भग : ध्यान ~ कियौ नट जब मूरति आगैं नाहीं २६३। ~ कीन्हे छोड़ दिये : चार पदारथ हूँ कौ दाता सु तौ ~ — १/१७७।

बिसर्यौ १ भुलाया जा सका जब हम अटकी हरि-दरसन कौं सो रिस नहि ~ २४०५। २ भूल गया, विस्मृत हो गया : अपने ही अग्यान तिमिर मैं ~ परम ठिकानो १/४७। ३ भूल गया है . मारग मोहि ~ ११११। ४ भुलाया . वृन्दावन राधा गोपी संग, यह नहिं ~ जाइ १६१४।

बिसवासिन विश्वास घातिनी : ~ पर काज न जानै १२५६।

बिसवासी विश्वासघाती नैना ऐसे हैं ~ २२७५।

बिसार क्रि० स० भुला दो, छोड़ दो : मिथ्या तन की मोह ~ १०/४। क्रि० वि० भुलाकर, भूलकर : काम क्रोध मद लोभ चितयौं, नाथ तुमहिं ~ १/१२६।

बिसारत १. भुलाते हैं . जे नख-चंद्र महा मुनि नारद पलक न कहूँ ~ १८०६। २ भुला देते हैं, विस्मृत कर देते हैं : जा कारन बैकुंठ ~ २१८५। ३ भुलाता है : हरि-पद कमल ~ नाहीं ३७३०। ४. भुलाकर : सूर स्याम निज धाम ~ आवत यह सुख लैनु ४४८।

बिसारति भुलाती हैं सूरदास प्रभु-प्रीति सबनि कैं नैकु न हृदय ~ १४१७।

बिसारति भुला देती है, भूल जाती है : निरखि बदन त्रय ताप ~ २००।

बिसारि १ भुला कर : चितै रहे सब स्याम वदन-तन गति मति सुरति ~ ८३४। २ भुला दो, भूल जाओ : तातैं मिथ्या-मोह ~ ६/५।

बिसारिय भुलाइए सूर प्रभु न ~ जू राधिका सी बाल ४१०९।

बिसारीं भूलकर, भुला दी . ये लुब्धीं हरि-अंग माधुरी तनु की दसा ~ २४०१।

बिसारी १ भुलाया है उनहूँ हम न ~ ४०३६। २ भुला दिया क्रोध गयौ उर आनँद उमग्यौ सुख तनु दसा ~ २५३३। ३ भुला दी है : पूरब प्रीति ~ गिरिधर ३६३४। ४. भुलाकर सूर अमर-ललना गन अवर बिथकीं लोक ~ १०४७। तनु रहे ~ शरीर की सुधि बिसारे डाल रहे हैं सूर स्याम मुख देखि चकित भई क्यौं — ~ २४२४।

बिसारे १. बिसारे हुए, भूलकर . नैना अटके रूप मैं पल रहत ~ २३०३। २ भूलते : जहाँ जहाँ अवतार धरत हरि ये नहिं नकु ~ १६०५। ३. भुला दिये गोपिन गृह व्यवहार ~ ४०९६। ४ भुला देते हैं . और जु अतिसय प्रीति देखियै निज तन मन की प्रीति ~ ४२२६।

बिसारैं १. भुला दें, भूल जायँ . हमकौ वै काहैं न ~ २२०६। २ भुलाती थीं : ब्रज-जुवती नहिं नेकु ~ १४६०। ३. भुला देते ह (क्षमा कर देते हैं) : सरन गए कोटि अवगुन ~ ९/१२९।

बिसारै १ भुलवा देता है : मुरली बजाइ ~ मौना २८८४। २. भुला देती है अंग छवि सुधि ~ १९११।

बिसारौं १ भुलाता हूँ, ध्यान से उतारता हूँ : जो जन ऊधौ मोहिं न बिसारत तिहिं न ~ एक घरी ४१५९। २ भुला दूँ, भुला सकता हूँ . क्यौं राधा ब्रज बसैं ~ सुमिरि पुरातन नेह १६१४। ३ भुला पाऊँगी सूर स्याम उन रावरे हिर-दय न ~ २४८७।

बिसारौ १ भुलाओ, भुला दो : ऐसी मग्नी मिली तोहिं राधा तो हमकौं काहैं न ~ २१६६। २. छोड़ दो . मानिनि अजहूँ मान ~ सा० ल० १९। ३ भुलाती है : क्यौं तू गोविंद

नाम ~ १/८० ।

बिसारचौ १ भुला दिया, ध्यान मे नहीं रखा : रे कपि, क्यौं पितु-बैर ~ ९/१३४ । २ भूल गया रह्यौ अधर दोउ चाँपि बुद्धि बल सुरति ~ ४३१ ।

बिसाल बडे बडे छाँडैं बान ~ ४१८८ ।

बिसालहि विशाल, बड़े-बडे · सुंदर नैन ~ ४२७० ।

बिसाला विशाल, बडे बडे दृग अरुन कमल दल से ~ ३०७८ ।

बिसालिका विशाल, बडी बडी (आँखों से) : थकित बिलोकि ~ ८०९ ।

बिसाषा विशाखा, राधा की एक सखी का नाम · ललिता ~ वृज-वधू झुलावै २८३२ ।

बिम्रास विश्वास से . पुनि वह ब्याध ~ बिवस करि, हनत बिपम सर तानि ३८३९ ।

बिसासी विश्वासघाती तुम कहुं देखे स्याम ~ १०९० ।

बिसाहतु खरीदता, खरीद लेती सुजस बिकात वचन के बदलैं क्यों न ~ आजु ३३४० ।

बिसाहि १ क्रय कर, खरीद जैसैं एक पदारथ पाए लोभ ~ लयौ १/७८ । २ खरीदेगा, मोल लेगा प्रभु बिनु कौन मोहि ~ ३३३९ ।

बिसाही खरीद ली है लाज बेचि कूबरी ~ सग न छाँडत एक घरी ३१४६ ।

बिसाहु खरीद लेंगी . जो नहीं ब्रज मैं बिकानौ नगर नारि ~ ३५१७ ।

बिसिप वाण, तीर बसो ~ माल ब्यालावलि २४५२ ।

बिसूरत (मूल अर्थ दु ख या चिंता करना, सोचना) वि=विकृत, सूरत=चेष्टाएँ अर्थात् विकृत चेष्टाएँ करती है · बैठी बाल ~ सा० ल० ३ ।

बिसूरति चिन्ता करती हैं, दु खपूर्वक सोचती हैं · बार बार सिर धुनति ~ ३०४० ।

बिसूरति चिन्ता करती है बैठि निसि बासर ~ ३१६७ ।

बिसूरि सोच करके बारबार ~ दुख जपत नाम रघुनाहु ९/७५ । ~ **बिसूरि** बार बार स्मरण करके, सोच सोचकर खिन मुँदरी, खिनही हनुमत सौं कहति ~ — ९/८३ ।

बिसूरे सोच करके ये ही दुख अति मरत ~ ३५७६ ।

बिसेखै विशेष रुप से कुमकुम अगरु सत सोचित रेखा पकित भँवर ~ परि० १/५९ ।

बिसेप विशेप . मुक्त माल नछत्र गन सम, अर्द्ध चद्र ~ ६३५ ।

बिसेप अलंकृत विशेष रूप से सुसज्जित, विशेषक अलकार सूरज करत ~ सब सुख सान तुलावै सा० ल० ७९ ।

बिसेषनि विशेष रूप से चातक, मोर, कोकिला उहि वन बधिकनि बधे ~ ३३१० ।

बिसेषि १ विशेष, अत्यधिक : मन मैं कीन्हौ हर्ष ~ ६/४ । २ विशेष रूप से · सिव सो बोली बचन ~ ४/५ ।

बिसेषी १ विशेष रूप/रीति से तुम अलि रबि हित कमल ~ हरे बिकल मधुमाखी ३८४६ । २ विशेष अर्थात् अधिक, विशेषक अलकार चहियत है निरवेद ~ सा० ल० ४४ ।

बिसेषोक्ति विशेष बात, विशेषोक्ति अलकार 'सूर' स्याम सग ~ कहि सा० ल० ३५ ।

बिसेष विशेष, महत्त्वपूर्ण बदत बिरंचि ~ सुकृत ब्रज बासिन के ४८७ ।

बिस्तरी १ विस्तार से कही, वर्णन की सोई कथा सकल ~ १/२८९ । २ फैली · कारनि सकल जगत ~ ४२९८ ।

बिस्तरैं विस्तार करें तृप्ति न होइ बहुरि ~ ४/१२ ।

बिस्तरें विस्तार करे (पालन करे) दममी कौं मजम ~ ९/५ ।

बिस्तरचौ १ फैला है जाकौ जस सब जग ~ ६/४ । २ आ फैलता है नाम सुमिरत गई दुरमति कृष्न रस ~ ११७६ ।

बिस्तार पु० विस्तार, फैलाव । वि० विस्तृत, फैले हुए, विशाल . देखि तरु सब अति टराने हे बडे ~ ३८७ । **क्रि० स०** विस्तार करके : जब सृष्टिनि पर किरपा कीन्हीं ज्ञान कला ~ सारा० ६३ । **भए** ~ विस्तृत हो गए, विशालकाय हो गए पैठि बदन बिदारि टार्‌यौ अति — ~ ४२७ ।

बिस्तारन विस्तार करने आयुर्वेद ~ का न सब ब्रह्माण्ड के नाथ सारा० १३८ ।

बिस्तारा विस्तार है, फैला हुआ है . ऐसौ नीप वृच्छ ~ चीर हार धौं कितिक हजारा ७९९ ।

बिस्तारि[1] १ फैलाकर सूर घन अरु दामिनी प्रकट सुख ~ १६७९ । २ रखकर ससि सनमुख दरपन ~ ३३५३ ।

बिस्तारी १ विस्तार किया है, फैलाया है कपट प्रीति ~ ३८३२ । २ विस्तार से वर्णन कर रहे हो का हे सुनत कहत हौ कासों कौन कथा ~ ३९०१ ।

बिस्तारे १ फैला दिया बीथिन छिरकि तहाँ ~ २८९२ । २ विस्तार से वर्णन किया या लिखा ब्यास रूप ह्वै बेद ~ कीन्हे प्रकट पुरानन सारा० ३१८ । ३ विस्तार कर/करवा रहे हैं हाँ दासी रति की कीरति कै टहाँ जोग ~ ३५९४ ।

बिस्तारै वर्णन किया करता था प्रेम-सहित नवधा ~ ९/५ ।

बिस्तारौ १ विस्तार करो, फैलाओ ब्रह्मा कह्यौ सृष्टि ~ ३/६ । २ विस्तार किया, फैलाया भूप अनेक बदि तैं छोरे राज रवनि जस अति ~ १/१७२ ।

बिस्तारचौ १ विस्तार किया, फैलाया गोकुल माँझ जोग ~ ३४९६ । २ बढा दिया पट अनेक ~ १/१८ । ३ विस्तार के साथ आरंभ किया विप्रनि यग्य बहुरि ~ ४/५ ।

बिस्नु-बाहन-सेन विष्णु के वाहन (गरुड) की सेना = पक्षी गण ~ दस दिस लगे बोलन सोर मा० ल० ८८।

बिस्मय आश्चर्य : ~ बहुत भयौ सुनि भूप ४३००।

बिस्मरौ भुलाओ आधे पलकहुँ जनि ~ ६/१।

बिस्मित आश्चर्य-चकित . नृप कौं देखि सो ~ भ० ०/२।

बिस्रात एक तीर्थ, इस नाम का एक घाट विशेष पग पग तीरथ कोटिक राजैं मधि ~ निराजैं ३०९६।

बिस्राम १ आराम, चैन, शान्ति नद लिए आवन हरि देखे तब पायौ ~ ६७९। २ विश्राम स्थल हो अथवा विश्राम देने वाले हो जीवन-पद, जन के ~ ४१०२। ३ विश्राम स्थल है परम निर्मल पुलिन जमुना कल्प तरु ~ ११३४।

बिस्रामा विश्राम, आराम बहुत करत स्रम नहिं ~ ९६२।

बिस्रामिनि विश्राम (सुख) दे रही थीं रूप निधान स्याम सुंदर तन आनँद मन ~ १०४८।

बिस्वंभर वि० विश्वम्भर, संसार का भरण-पोषण करने वाले . ~ जगदीस जगत गुरु ८० । पु० भगवान कृष्ण ~ निज नाम कहावत ३।

बिस्वकर्मा ब्रह्मा ने मना ~ कर अपुन रचि गयौ गिरि सीम ०/७५।

बिस्व पूरन-काम सब की मनोकामना पूरी करने वाले ~ लोचन खरे ९८०।

बिस्व-भरन सम्पूर्ण संसार का पालन करने वाले येट ~ नायक २६०३।

बिस्व रूप विश्वरूप/विष्णु को अब तुम ~ गुरु करौ ६/२।

बिस्वास विश्वास। ~ गह्यौ विश्वास कर लिया चलन कह्यौ हो मोहन आवन मैं ~ — ४०८३।

बिस्वासहि विश्वास ' जिय जिय गहैं करैं ~ ०/७५।

बिहंग विहग, पक्षी : पिक सुक ~ पवन थकि थिर रहे २२८७।

बिहंगम १ पक्षी, पक्षीगण बोलत मकत ~ मोर २७६४। ~ के गन पक्षियों के समूह जनु उडि चले ~ — ४२१६। △ ~ प्रीति पक्षियों की जैसी क्षणिक व स्वार्थ-पूर्ण प्रीति ऐसी ~ — न देखी ३३७५।

बिहगा पक्षी गुरु गति, मनहुँ मराल ~ २४५४।

बिहंगी स्त्री० पक्षी (तोता) हमरी उनकी सी मिलवत हौ तातैं भए ~ ३५११। वि० विहग (गरुड) पर चलने वाले ' धाइ चक्र लै ताहि उबार्‌यौ मार्‌यौ ग्राह ~ १/२१।

बिहँसत क्रि० अ० हँसते हैं मन-मन ~ गोपाल २७६। क्रि० वि० १ हँसते खेलते . ~ हरि सँग चले गुवाल ४०९। २ हँसने पर . ~ उघरि गईं दँतियाँ २८८।

बिहँसति हँसती है बार-बार ~ मुख मोरी ६६९।

बिहँसनि १ मंद मंद मुस्कान, स्मिति, हास ~ चितहिं चुरावै ४५१। २ हँसी, हास्य ~ मनहुँ प्रकास करे १४१।

बिहँसि हँसकर, मुस्कराकर सुनतहिं बचन ~ उठि बैठे ११८६।

बिहँसीं हँस पड़ीं हँसत नंद, गोपी सब ~ १८०।

बिहँसी मुस्कराई . तब ~ वृषभानु-नंदिनी ११९२।

बिहँसे हँस पड़े माता दुखित जानि हरि ~ ८१।

बिहँसै हँसती है, मुस्कराती है निरखि निरखि मुख ~ १७१७।

बिहद बेहद, अत्यधिक ~ जतन करि मानन परि० १/७४।

बिहबल विह्वल, व्याकुल प्रात खरिकहिं गई, आइ ~ भई ७५१।

बिहरत १ घूमते हैं ~ विविध बालक सग १८४। २ विहार करते हैं, काम-केलि करते हैं तहँ ~ प्रिय प्रीतम दोऊ मा० ग० २। ३ भटकता रहता है उडी जूथ सग लिए ~ तृना कानन माहि ४०३७। ४ घूमता है, विहार करता है जदपि सकल बेली बन ~ भ्रमत जाइ जलजात ३५४५। ५ घूमते हुए बोलो बेगि चलौ बन ~ ४२०३।

बिहरति विहार करती थी तब प्रसिद्ध लीला सँग ~ ४१३३।

बिहरति विहार या क्रीडा कर रही है ' गया जल ~ सखियन सँग १७०३।

बिहरतौ विचरण करता : सिमरि नाथ पद अपन रग ~ १/२०३।

बिहरन १ घूमने के लिए ' ग्वालनि सग बन ~ आयौ २९१३। २ विहार करना, काम क्रीडा करना . हमि बोलन, डोलन बन ~ परि० १/५२।

बिहरान फटकर दो खट हो गया श्री फल सकुचि रहे दुरि कानन सिखर हियौ ~ २४४६।

बिहराने बिखर जाय बिनु गुन गडि माला रही, नहिं कहुँ ~ २६८८।

बिहरि विहार करके सुमिरि सनेह ~ उर अतर ३१६१।

बिहरे काम - क्रीडा की धनि धनि सुर भाग ताके प्रभु जाके सँग ~ २८०७।

बिहरैं विचरण कर रहे हैं तेड बन-बन मैं ~ ४५३।

बिहरैं विहार करता है जमुना के तीर ग्वाल - सगहि ~ रा २८८६।

बिहाइ[1] १ बीतती है, व्यतीत होती है जुग सम रैनि ~ ३९४३। २ बीतता है निसि दिन रोवत हमैं ~ ४२००। ३ समाप्त हो जाती है कछु नृप-सेवा करत ~ ७/२। ४ बीते, कटे ' सूर स्याम बिनु छिन छिन जुग सम क्यों करि रैन ~ २१०४। ५ बिताकर सूरदास प्रभु कित रजनी ~ आए २६३५।

बिहाइ[2] छोडकर भरत गयौ बन राज ~ ६/२।

बिहाई[1] १ बिताए बनहि धाम सुख रैनि ~ २१७५। २ व्यतीत होती है ' पावस जरै सूर के प्रभु बिनु तरफत रैनि ~ ३१९८। ३ बीतता है, मोहिं पल सम कल्प ~ सारा०

८६१ ।
बिहाई[2] छोड़ · मिव मोच दीजै ~ ८/१० ।
बिहाई[3] व्याह लिया पातिव्रतहि धर्म जब जान्यो वहुरी रुद्र ~ सारा० ४९ ।
बिहाए[1] बिताये खेलत खातहि दिवस ~ ५८८ ।
बिहाए[2] भुला दिये : ब्रज के लोगनि तुमहि ~ ९३५ ।
बिहात[1] १ बीतता है सूरजदास वास बन बसि के कैसैं कल्प ~ ३८९३ । २ व्यतीत होती है कबहुं रैनि सब सग ~ २४७५ ।
बिहात[2] फाड़ कर निकल रहा हो छिति परकप, कनक कदली कहँ मानौ पवन ~ २९९८ ।
बिहाति बीतती है जुग वर रैनि ~ ३७७२ ।
बिहान पु० सवेरा · मोह-निसा कौ लेस रह्यौ नहिं भयौ विवेक ~ २/३३ । **क्रि०वि०** आने वाला कल पय पकवान ~ पुजिहै ८७४ ।
बिहानी १ व्यतीत हुई थी, बीती थी रैनि ~ कठिन सौं १९६६ । २ व्यतीत हो जाती है, बीत जाती है . सूनी सेज सुहाइ न हरि बिनु जागत रैनि ~ ३९८७ । ३. व्यतीत हो गई, बीत गई चारयौ जाम रजनी ~ भयौ प्रात २०३४ ।
बिहाने १ प्रात कालीन बेला मे, सवेरे · कुंडल मकर कपोलनि कैं ढिग जनु रवि रैनि ~ १७९८ । २ सवेरा होने पर सूर स्याम निमि कौ सुख लूट्यौ हमकों मया ~ २५०५ । **फल लेहु** ~ तुरत ही फल लो . सूरदास गोवर्धन पूजा कीन्है कौ — ~ ८६० । **काल्हि** · ~ कल-परसो सूरदास प्रभु जान देहु अब बहुरि कहोगे — ~ १५५६ ।
बिहानैं[1] आने वाले कल के लिए, सवेरे के लिए · नेवज करि धरि साँझ ~ ८९१ ।
बिहानैं[2] प्रात काल : सूरदास ऐसे लोगनि कौ नाउँ न लीजै होत ~ १९२५ ।
बिहाय व्यतीत होता है . ताके सग रहत हौं निसिदिन आनँद जन्म ~ सारा० ११०६ ।
बिहायौ विताया दिन दिन पीर होति अति गाढी पल-पल बरष ~ ३२०७ ।
बिहार विहार, खेल क्रीडत विविध ~ ८४ ।
बिहारन वि० क्रीडा करने वाले हैं विट्ठल विपुल विनोद ~ ३०९६ । **पु०** क्रीडाएँ धनि जमुना हरि करत ~ ३९१ ।
बिहारी पुं० १ विहार करने वाले, श्री कृष्ण : इकटक अग अग अवलोकति उन वस भए ~ २१२० । २ कृष्ण के उघरत सब्द ~ सग ११८० । **क्रि० स०** विहार करने लगे · सूर प्रभु स्याम स्यामा ~ ६८४ ।
बिहारीराइ विहार करने वालों मे सर्वश्रेष्ठ, कृष्ण · अगी कार करहु प्रभु मेरे सुनहु ~ ४१७४ ।
बिहारीलाल कृष्ण · ~ आवहु, आई छाक ४६४ ।
बिहारु विहार कर रहे हों मुख सुधा-सर मीन मानौ मकर सग ~ १८२७ ।
बिहारे विहार/विचरण किया तिन जुवती बन बननि ~ २९२२ ।
बिहारैं १ विहार करें . कैसैं हरि सँग हमहुँ ~ २९१० । २ विहार करती हैं : ध्रुव प्रसिद्ध लीला सँग बिहरति अब चित ढोर ~ ४१३३ ।
बिहारौ विहार करते हो तिनसौं क्यौ न ~ ४०५७ ।
बिहाल वि० बेहाल, बेचैन दीनदयालु ~ देखि कै ९/१२ । **क्रि० वि०** व्याकुल होकर जीवत जाँचत कन कन निर्धन दर-दर रटत ~ १/१५९ । **क्रि० अ०** कुम्हला गये मुकुलित भए कमल-जाल कुमुद-वृ द बन ~ ६१९ ।
बिहालहि बेहाल हुई, पागलो (की तरह) ग्वालिनि फिरत ~ सौं १६३८ ।
बिहाला बेहाल तरुनाई तनु आवन दीजै कत जिय होत ~ १४७१ ।
बिहावै बीतता है, व्यतीत हो रहा है : पल पल जुग सम मोहि ~ ९/२ ।
बिहित विधान-सम्मत, वर्णित जग्य करत बैरोचन कौ सुत बद ~ विधि-कर्मा १/१०४ ।
बिहीन विहीन, विना सूरदास सोभा क्यौं पावै, पिय ~ वनि मटकैं १/२९२ ।
बिहुरे बिखर जाने पर . विधु ~, विधु किए सिखडी सिव ११९८ ।
बिहूनौ विहीन हूँ जद्यपि बुधि-बल विभव ~ १/१८१ ।
बिह्वल विह्वल, व्याकुल जानि जन ~ छुडाइ लीन्हौ पल मैं ८/५ ।
बीधे मग्न/लिप्त होकर : रस ~ भोरहिं आए २६३१ ।
बीकी[1] विकी हू : ऐसैं मिली सूर के प्रभु कौं मनहूँ मोल लै ~ १८९५ । **रहे है** ~ बेचे डाल रहे हैं . अपनैं मन उन भली करी है मोहिं — ~ २३४४ ।
बीच[1] १ मध्य । २ अन्तर, भेद ~ कियौ कुल लज्जा आइ १९३९ ।
बीच[2] अवधि, समय : अरध ~ दै गये धाम कौ मा० ल० २२ ।
बीच निस कौ आदि बीच = मध्य, निस = जामिनि, 'मध्य' और 'जामिनी' के आदि वर्णों के सयोग से बना = मजा = मज्जा : ~ अगन लगौ लेप समान सा० ल० ७७ ।
बीचहि बीच ही मे ~ भेट भई जुवतिनि हरि १४२५ ।
बीचहीं बीच मे ही या बात काट कर बोलि उठी इक सखी ~ १७७९ ।
बीज बिजली · निसि अँधेरी ~ चमकै ५ ।
बीजै बीज है छार भूमि जोगी तन, निरगुन तहँ ~ परि० १/१९० ।

वीठल बल विट्ठल (कृष्ण) एव बलराम : वनमाली वामन ~ ९८१ ।
वीत वीत गया, बीता : सूरदास प्रभू तुम्हरे दरस कौं मग जोवत जुग ~ ४०६१ ।
वीतत १ व्यतीत होता है (हो रहा है) : जुग सम ~ जाम ३८६८ । २ व्यतीत हो रहा था : इक इक पल ~ इक जाम २४७८ । ३. व्यतीत होने पर : ~ तासौं कल्प कहाहिं १२/४ ।
वीतति बीतती है (हो रही है) : जोइ ~ सोइ कहति सयानी ३३९८ ।
वीतन व्यतीत होने : एते दिवस जात किन जाने ~ लागे माम परि० १/२०० ।
वीतराग जो राग (मोह) से परे हो, वासना रहित : ~ सुजान जोगिनि भक्त जननि निवास ४०३५ ।
वीता[1] समाप्त हो गया भारत युद्ध होइ जब ~ १/२६१ ।
वीता[2] बालिश्त, बित्ता, बारह अंगुल (यहाँ पर तात्पर्य है बहुत छोटा) : सिंधु कियौं ~ को ४००९ ।
वीति बीत जोजत जुग गये ~ २/३६ ।
वीतीं समाप्त हो गई : अवधि वदी हरि ते सब ~ ४०११ ।
वीती बीती । △ **सोइ जानै जाहि** ~ वही जान सकता है जिस पर बीती (हो) या जिसने झेला (हो) : हमरे मन की — ~ होइ ३८०० ।
वीते १ बीत गये : बहुत जुग ~ १/३१७ । २. बीत जाने पर, व्यतीत हो जाने पर : सँग के लोग अवधि के ~ कहौ नगर मैं जाइ ४१९० ।
वीतैं क्रि० अ० व्यतीत होते हैं : तारे गनत गगन के मजनी ~ चारौं जाम ३३०९ । क्रि० वि० व्यतीत होने पर . बरष सात ~ हो ऐहौ ९/२ ।
वीतै १ बीत रहा है . लाज किए कछु काज न सरिहै पल ~ जुग सात २९८९ । २ (जब) व्यतीत होंगे चतुर-जुगी ~ इकहत्तर १२/४ । ३. समाप्त हो जाती है : कछु बालापन ही मैं ~ ७/२ । △ **जिहि ~ सो जानै** जिस पर बीतती है वही जानता है : सूर स्याम के बस्य भए ये — ~ — २२९७ ।
वीतैगी बीतेगी, गुजरेगी : ~ तबहीं जानैगी ३६१३ ।
वीत्यौ १. बीत गया पूजा करत सकल दिन ~ ११८४ । २ दूर हो गया : करि विश्राम सकल स्रम ~ सारा० ५२८ ।
वीथिन १ वीथियों को, गलियों को : ~ विपिन विलोकि सारा० १०४६ । २ गलियों मे . नद नँदन आवत ब्रज ~ सा० ल० १२ । ~ **वीथिनि** गली-गली मे, प्रत्येक-गली में : सुबल श्रीदामा के सँग सब ब्रज ~ — धाए ३६५७ ।
वीथी गलियाँ के : ~ बृच्छ गोप के मंदिर उपमा कहीं कहा री ४२७४ ।
वीधे क्रि० वि० बस मे, अधीन, बधन मे ... ~ न रहत सखि तजी सबनि की कानि २३४९ । क्रि० अ० १ उलझ गये : नैना ~ टोक मेरे २२७९ । २ फँस गये हो . मनहुँ कमल सपुट महँ ~ २६८२ ।
वीनऊँ प्रार्थना करता/करती हूँ : गारि गनेन्द्र ~ १० ।
वीनति चुन रही है : ~ कुसुम कली २६१० ।
वीनती विनती, प्रार्थना : राधा सौं करि ~ २९१५ ।
वीनवैं प्रार्थना करता है 'सूर' कर जारि अचल छोरि ~ ३०६७ ।
वीना वीणा . ~ वेनु मृदग ४१६५ ।
वीनि चुन कर, चुन-चुन कर कठिन कठिन कलि ~ २६१६ ।
वीयौ अन्य, दूसरा : कुजननि सेज सजे एकाकी रमत न वा ~ सघन परि० २/९५ ।
वीर[1] वीर, बहादुर . तुम्ह पहिचानति नाहीं ~ ०/८८ । २ भाई, भ्राता बल को ~ रखवारो ४०३० । ~ दुहाई भाई (बलराम) की शपथ : बार बार कहा ~ — तुम मानत नहिं मोहन १४४९ ।
वीर[2] सखी : मोहन मिलौ मो कहँ ~ सा० ल० ४२ ।
वीरभद्र वीर भद्र, शिव का एक गण जिसकी उत्पत्ति दक्ष प्रजापति का यज्ञ नष्ट करने के लिए शिव के मुख से हुई थी । पुराणानुसार इसकी उत्पत्ति शिव जटा से हुई थी शिव के क्रोध इक जटा उपारी ~ उपज्यौ बल भारी ४/५ ।
वीरभूषन वीरों का आभूषण = चदन : ~ नार सा० ल० २३ ।
वीरा[1] बीड़ा । △ ~ **दीन्हा** बीड़ा दिया काय भार सौंपा तुरतहि ~ — ६१ । △ ~ **दै** बाद। देकर, कार्यभार सौंपकर, उत्तरदायित्व देकर जिहिं ~ — मोहिं पठायो १५५५ । △ ~ **लै आयौ** कार्य सपादन का भार लेकर आया, प्रतिज्ञा करके आया ~ — मन्मुख तें आदर करि नृप कस पठायौ ५९१ । △ **देहैं** ~ उद्धार का बीड़ा उठायेंगे : सूर पतित तबहीं उठिहैं प्रभु जब हँसि — ~ १/१३४ ।
वीरा[2] भाई बीरा खात होइ ~ जब १३९८ ।
वीरी[1] पान का छोटा बीड़ा ~ मुख भरी २६२८ ।
वीरी[2] कान का एक गहना सीस सेंदी केस मुद्रा कान ~ बीर ३६९४ ।
वीरुध पौधे, लताएँ : ~ तृन द्रुम सेल सरिनि तट १३०६ ।
वीरे बीड़े, कर्णफूल कनक जटित जराउ ~ २८३८ ।
वीसक बीस एक, लगभग बीस बेसन के ... ~ सोना ३९६ ।
वीसकमल बीस कमलवत् अग (कृष्ण, के दो कर कमल+दो चरण कमल=४, ऐसे ही राधा के दो कर कमल + दो चरण कमल=४, राधा व कृष्ण के दो दो नेत्र कमल=४, एक

एक मुख कमल=२, दोनों के दो हृदय कमल=२, दो नाभि कमल=२, तथा राधा के दो कुच कमल=२। कुल योग=२० कमल ~ परगट देखियत हैं, राधा नद किसोर १२०३।

बीसन विष के, जहर के परी महान विपत्ति सीस पर ~ ताप तचावै सा० ल० २४।

बीसरी भूल गई देह गेह सुधि ~ नदनंदन-अनुराग २८६४।

बीसरचौ भूलता हूँ : ~ नहि सूर कबहू नद जसुदा माइ ४१५८।

बीसहूँ बीसो यह तौ अध ~ लोचन छल बल करत आनि मुख हेरी ९/९३।

बीसहू बीसो सूझत नहीं ~ लोचन ९/१३४। △ ~ **बिसै तैं** सब प्रकार से ही . ~ — मुखहि पैहै १७३९।

बीसौ बीसो ~ भुज काटि छिनक में डारौं ९/१०८।

बुंद बूँद, बूँदें स्रम जल ~ बदन यों राजति १९९३।

बुंदा बड़ी बिंदी मसि ~ मुनि मनहर १५१।

बुझत बुझती हुई, बुझते ~ जानि मन्मथ-चिनगी फिरि २८२६।

बुझति बुझती नाहिन ~ बुझाई ९/५२।

बुझाइ[1] १ बुझती, शान्त होती तृषा तउ न ~ १/५६। २ बुझेगी, शान्त होगी सूरदास स्वामी के मिलिबै तन की तपति ~ ३६७६। ३ बुझाकर पूँछ ~ गए सागर तट ९/१००।

बुझाइ[2] १ समझाकर . बार बार ~ हारी २२८७। **करि रही** ~ समझा कर रह गई अर्थात् समझाते-समझाते हार गई घूँघट घर मैं नहि रहै — ~ २३८७।

बुझाई[1] १ बुझाई, शान्त की जल बरषि अगिनि ज्वाला ~ ४१९४। २ बुझे, शान्त हो या शान्त हो सकती है क्यौं जु ओस कन प्यास ~ ३९२०। ३ बुझाने पर नाहिन बुझति ~ ९/५२।

बुझाई[2] समझाकर तब ग्वालिनि सा कह्यौ ~ ८००।

बुझाऊँगौ शान्त करूँगा दुहुँ मन तृषा ~ २४९३।

बुझाए[1] समझाया हममों इन अति करी ढिठाई जो करि कोटि ~ २२७०।

बुझाए[2] बुझा दिया हो : बिरह अगिनि मनु जरत ~ ९/१६८।

बुझान बुझाने, शान्त करने या होने, बुझने नैननि तपति ~ दै २७४।

बुझानी १ बुझी, शान्त हुई . पावतहू तृष्ना न ~ १/१४९। २ बुझ गई, शान्त हो गई बिरह अग्नि झर तुरत ~ १०३४।

बुझानौ शान्त हुआ तुरत ही आइ द्वारैं ~ ९/१११।

बुझायौ[1] बुझाया, शान्त किया : निरखि दानव दव ~ ४१८०।

बुझायौ[2] समझा दिया था . मुख्य अजामिल मित्र हमारौ सो मैं चलत ~ १/१९३।

बुझावत समझा देते मेरौ लेखौ क्यौ न ~ २३२०।

बुझावै[1] समझा सकता है · सूरदास गूँगे कौ गुर ज्यौं बूझति कहा ~ २०६६।

बुझावै बुझा ले, शान्त कर ले . तन की तृषा ~ २९१६।

बुझावे १ बुझाता है, अग्नि शात करना है पग तर जरत न जानै मूरख घर तजि घूर ~ २/१३। २ शात करते हैं : बिरह तपनि मो तन तै ~ २१०७।

बुझावैं १ समझाए · अब धौं इनहि ~ को री २०२३। २ पुछवाते है · बार-बार जोतिक सौं निसि घरी ~ २९३७।

बुझि बुझ : ~ गई अगिनि झरि ५९७।

बुझिहै बुझेगी, शात होगी परिहै क्रोध चिनगि-भावरि मैं ~ नहीं बुझाई २८२६।

बुझै बुझेगी, बुझ सकती है ~ स्याम-घन प्रेम कमल मुख, मुरली बूँद परैं ३८२४।

बुझैहै बुझेगी बिरह दाह यह सुनत ~ मानौं अनलहिं पानो ३४३३।

बुडत डूबती सहज बहत लोचन जल सरिता सूर ~ उतरात ३६१४।

बुडाइ डुबा, डुबो गोकुल देउँ ~ ८२२।

बुडोई डुबो दी . बडौ दूत तू बडी ठौर कौ, बडी बुद्धि सु ~ ३५४२।

बुढ़ाई १ बुढ़ापा नद पुकारत रोइ ~ मैं मोहि छाड्यौ ५८९। २ वृद्धावस्था मे सूर स्याम दुख दियो ~ ५४४।

बुढ़ानी १. बूढ़ी हो गई अब मैं जानी देह ~ १/३०५। २ वृद्ध हो गई है . देह रावरैं सोच ~ ३६३७।

बुढ़ायौ वृद्ध हो गया देखि बिधि कौ कह्यौ यह ~ ८/८।

बुदबुद बुलबुले . बारि मैं ज्यौं उठत ~ १/३१६।

बुद्ध १ बुद्ध, बौद्ध धर्म के प्रवर्तक जिनका जन्म ईसा से लगभग ५५० वर्ष पूर्व हुआ था ~ भयौ पुनि सोइ २/३६। २ बुद्ध का या बिधि भयौ ~ अवतार १२/२।

बुद्धि १ समझ, विवेक। २ युक्ति, उपाय . भलो ~ मेरैं चित आई १९६८। ३ धारणा, समझ . वै जानति हरि सग तबहि तैं वहै ~ सब वहै दियौ ११३०। ४ बुद्धि (की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती) ~ न सकनि सेतु रचना रचि, राम प्रताप बिचारत ९/१२३। ~ **अयानी** मूर्ख बुद्धि वाली बनकर, भोली भाली बनी हुई जहँ तहँ डोलति ~ — १७१६। ~ **उपाई** बुद्धि उत्पन्न की अर्थात् उपाय सोचा : तबहिं स्याम इक ~ — ६९२। ~ **उपैया** उपाय सोचा पिता देखि व्याकुल मनमोहन तब इक ~ — ८७५। ~ **ठानी**

उपाय निश्चित किया/सोचा : चतुर वर नागरी ~ — १९५१। ~ पढी शिक्षा प्राप्त की है • बडे गुरु की ~ — वह काहू कौं न पत्यैहै १७२४। ~ **बनाई** बुद्धि से कल्पना करके : उपमा आनति ~ — १८१०। ~ **बनावति** बहाना बनाती है या उपाय सोचती है : तब इक ~ — १६३२। ~ **बिचारि** उपाय सोच कर • देखहीं अति बिकल राधा यहै ~ — ११०१। ~ **बिचारी** उपाय सोचा सुर स्याम इक ~ — २७१७। ~ **बितर्क बनावति** पहले विवेक शक्ति द्वारा निश्चित करके फिर सदेह करती है . सपनौ आहि कि सत्य ईस यह ~ — २१२३। ~ **रची** उपाय सोचा . तब इक ~ — मनहीं मन १७६८। ~ **मन मन सजे** मन ही मन विचार करने लगे : तारका गन लजे ~ — १०६३। ~ **सजी** १ युक्ति अथवा बहाने बनाने मे कुशल है : हार मानि बैठे, नहिं लागति बहुतै ~ — १६३१। २ बुद्धि से युक्त है, बुद्धिमान् है : बहुतै ~ १६३१।

द्धिवत बुद्धिमान्, समझदार : ~ पुरुष यह सब बिचारै ४२०९।

ध[1] भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार नौ ग्रहों मे से चौथा ग्रह जो पुराणानुसार देवताओं के गुरु बृहस्पति की स्त्री तारा के गर्भ और चद्रमा के वीर्य से उत्पन्न हुआ था पचए कन्या कौ जौ ~ है, पुत्रनि बहुत बढ़ैहैं ८६।

ध[2] बुद्धिमान् लोग : तातैं ~ तिय-सगनि तजैं ९/२।

धजन बुद्धिमान् लोग, विवेकी पुरुष : ~ कहत दुबल घातक विधि ४२३७।

बुधि बुद्धि ~ विवेक अनुमान आपनैं ४१३०। ~ **उपजाई** (अपनी) बुद्धि से सोचा : नद सुवन यह ~ — कौन देव कह्यौ परवत जोग ८६१। ~ **करयौ** विचार किया, सोचा . यह ~ — ज्यौं नास कीजै ३०६६।

बुधिहू बुद्धि मे भी : सुधि मैं बसे ~ मैं बसे १९१९।

बुनियै बोया जाता है : जो ~ सोई पुनि लुनियै १७८५।

बुनौ बुनकर तैयार किया, बनाया • घुनौ बाँस लुत ~ खटोला ४२३९।

बुन्यादि १ बुनियाद, मूल : आदि ~ सबै हम जानति काहे कौं सतरात १५४४। २ समूल, जड़ से : आदि ~ सब अहीर जारौं ५९०।

बुलाइ १. बुलाकर : निकट ~ बिठाइ निरखि मुख ९/८३। २ बुलाया : हरषित ह्वै नद ~ १३। ३. बुला : रोहिनी लई ~ ६१९।

बुलाई १ बुलाया है, बुला लिया है : क्यौं तुम बेनु बजाइ ~ १०२५। २ बुलाकर : पाँचक गोपिनि कह्यौ ~ ८१०। ३ बुलाने पर/से : बोलति नहीं ~ २८२६।

बुलाए बुलाये। **बिरद** ~ प्रण की रक्षा की : अब लागे प्रभु तुम — ~ भई न मोसौं भेंट १/१४५।

बुलाने (बोल-बोलकर) बुलाते हैं ता दिन तें पछौं भए बेरी, भाषत बैर ~ ३६७५।

बुलाय बुलाकर • फेर ~ ब्याह करि दीन्हो मारा० ८०६।

बुलाये दे० बुलाए।

बुलायौ १ बुलाया . हरि ताकौ दै मैन ~ १३९६। २ सबोधित किया : देखत ही रघुबीर धीर कहि लकापती ~ ९/११०।

बुलावत १ बुलाते हैं, बुला रहे हैं : यहै कह्यौ हम उनहिं ~ २३३४। २ बुलाती हैं, बुला रही हैं • गोरस लेन ~ कोऊ १६३६। ३ पुकारते हैं . रोइ रोइ सब कान्ह ~ ५४९। ४ बुलवाते हैं, बोलने को प्रेरित करते हैं बार-बार बकि स्याम सौं कछु बोल ~ १०२। ५ बुलाते/पुकारते थे : कबहुक लै लै नाम मनोहर धौरी धेनु ~ ३२०१। △ **बिरद** ~ विरुद की याद दिलाते हो - काहे कौं हरि — ~ बिन मसकत को तारयौ १/१३०।

बुलावति १. बुलाती है : बार बार बन मोहिं ~ २४३१। २ बुला रही हो/है : सुत कौ जन्म जसोदा के गृह ता लगि तुम्हैं ~ ७३।

बुलावन बुलाने : धौरी धेनु ~ कारन सारा० ८६६।

बुलावहु[1] १ बुला लो, बुलाओ : बडे चतुर तौ उनहिं ~ ३८७१। २ बुला लेती : इनकौ मजहीं क्यौं न ~ ७१६४।

बुलावैं १ बुलाते हैं : आपुन जाइ मिले रहे अब मोहिं ~ २३६४। २ बुला लेते • जोग बोझ तें चलि न सक तौ हमहीं क्यौं न ~ ३७०९। △ **बिरद** ~ यशोगान करते हैं : पतित उधारन — ~ चारौ बेद पुकारैं १/१८३।

बुलावै १ बुलाता है • नैन मूँदि कर जोरि नाम लै बारहिं बार ~ ७४९। २ बुलाती है : कहै चलौ नँदरानि ~ परि० १/१८। ३. बुलाते थे लै लै नाम ~ ३६५५। ४ बुला बेगा को अब चोरि चोरि दधि खैहै मैया कौन ~ ४०८५।

बुलैहैं १. बुलाएँगी : जबहीं हम उनकौं देखैंगी तबहीं ताहिं ~ १७३८। २ बुलायेंगे : कबहु न बेनु अधर धरि मोहन यह मति लै लै नाम ~ ३४०७।

बुलैहै बुलायेगी, बुलायेंगी : बधू-बधू कहि मोहिं ~ ९/८१।

बुवावैं बुवाए, वपन करावे : जोगी जहाँ होइ अगवानी, तुँबा तहाँ ~ ३८४१।

बुहारति झाड़ू लगाती है . द्वार ~ फिरति अष्ट निधि ३०।

बूँदनि १ बूँदें : नान्ही नान्ही ~ बरषन लाग्यौ १९०१। २ बूँदों से/में : नई-नई ~ भीजति गोरी ६८५। ~ **सावन** सावन की बूँदों के समान . चरचित चंदन नील

कलेवर, बरषत ~ — ८/१३।

बूँदै १ (पानी की) बूँदें : हरि सग नीकी लागति ~ परि० १/४२। २ बूँदे हैं : ममता-घटा, मोह की ~ सरिता मैन अपारौ १/२०९।

बूँदौ बूँद भी : सूर विवेक- हीन चातक मुख ~ तौ न स्रई ३९१८।

बूका बुक्का, पिसा हुआ अभ्रक जो चमकीला होता है · ~ बदन सानि २८६७।

बूची बूँची (किसी अग से विहीन होना, यहाँ पर) कान से रहित ~ खुभी, आँधरी काजर, नकटी पहिरै बेसरि ३५५०।

बूझत[1] १ पूछता है/पूछते हैं : बार बार हरि मातहि ~ कहि चौगान कहाँ है २४३। २ पूछती है, पूछ रही है . हँसि हँसि ~ बात सारा० ८११। ३ पूछते हो · (ऊधौ) कह ~ तन की दुबराई ३७६४। ४ पूछ रहे . कान्ह कहा ~ हैं तुम सौं १९५२। ५ पूछता हुआ फिरत सकल बन ~ २/२५। ६ पूछने पर बातैं ~ यो बहरावति ४१४६।

बूझत[2] १ समझता है अपद-दुपद-पसु भाषा ~ अबिगत अल्प-अहारी ८/१४। २ जानते हैं हरि अतरजामी सब ~ ३५७६।

बूझतही पूछते हो, पूछने पर · ~ कछु बुद्धि रचैगी १९५०।

बूझति पूछती हैं नित ही नित ~ ये मोसौं २०४३।

बूझति[1] १ पूछ रही हैं : तरुनी सब आपुस मैं ~ १५५०। २ पूछ रही है : ~ बार बार सो बानी २०८३। ३. पूछती · ~ नहीं जाइ अपननि कौ १९७६। ४ पूछती हो, पूछ रही हो . की ~ सति भाउ १७२१।

बूझति[2] समझती : ऊधौ ~ हैं अनुमान ३८९२। ~ **हौ** समझना/जानना चाहता हूँ ~ — गति तन की ९६६।

बूझन पूछने . सखी सग की ~ लागीं १४५१।

बूझनि पूछना : कहाँ लता तरु तरु प्रति ~ कुज कुज नव धाम ३४१६।

बूझहि १. पूछती हैं . सहज भाव ~ सब गोपी ४००४। २ पूछ लो · ग्वालिनि की सरि दुहत हौ ~ बल भैया ६६६।

बूझहु पूछो : ~ निगम बुलाइ कै ४०९५। २ समझो, समझते हो · जो तुम ~ व्यथा हमारी कहे बनै तुम आगैं ३७६५।

बूझि[1] पूछ कर कुसल ~ अति निकट बुलाई ५०।

बूझि[2] बुद्धि/समझ/ज्ञान है तुमहूँ ~ बहुत बातनि के, उहाँ जाहु तौ जानौ ४१२७। ~ **कौ** समझदारी का या समझदार का · जसुदा यह न ~ — काम ३६७। △ ~ **जैहौ तब धाम** समझ कर/निपट कर तब घर जाओगे . मैं तुमकौं अबहीं बाँधौंगी मोहिं ~ — १९३४। **जानि** ~ **कै** जान बूझकर, जानते हुए भी — ~ — कत हौं पठयौ ४१२७।

बूझिऐ बुद्धिमानी की बात करती : सुनहु महरि ऐसी न ~ ३४४।

बूझिबी समझ लेना चाहिए, समझ लो . याही मैं सब बात ~ चतुर सिरोमनि नाह ४०३२।

बूझियत समझाते हो : कहा ~ प्रान नाथ बिनु सोधि बचन स्रुति सार ३८७४।

बूझियै[1] १ पूछता · 'सूर' स्याम कौ यह न ~ १८९०। २ पूछिए सूर स्याम ऐसी न ~ इन बातनि मरजाद नसाई १५५४। ३. पूछते हैं, ध्यान देते हैं : तब उन भाँतिनि लाड लडाए अब ~ न यह उनै ३७४०। ४ पूछेगी, पूछती है : यह बिपरीति ~ तुमकौं जूवा सुरभि नहीं ३८२९। **कहन** ~ कहना पूछना चाहिए/है जो कछु हमकौं — ~ सो तुम कहि आगैं अतुराने १५५६। ~ **गारी** गाली की बात पूछना चाहती हो औरौ हमहिं ~ — ८९०।

बूझियै[1] १. बुद्धिमत्ता कीजिए . सुनहु सूर ऐसी न ~ १६४८। २ समझेंगे सुनि सूर सुजान इहि कुल अब न ऐसी ~ ४१८७। △ **तुम्हैं नहि** ~ तुम को शोभा नहीं देता · साव सौं चूक जौ भई बालक हुतौ — ~ जौ बँधायौ ४२०९।

बूझियौ पूछना ~ हरवाइ हरि सौं परि० १/१९९।

बूझिहै पूछेगी अबहीं मोकौं ~ २०४४।

बूझी[1] पूछी : तब ~ कुसलात ४१८८।

बूझी[2] समझ गई . तब वह सखी कहति मैं ~ १७२०।

बूझे[1] १ पूछती है चपकऽरु बकुल, बट ~ ११८२। २ पूछता है : को बसुदेव-देवकी नदन की जाने को ~ ३७३१।

बूझें[1] १ पूछते हो · (ऊधौ) जाहु कहा ~ कुसलात ३७४८। २ पूछने पर/से : ~ काहें न बोलत हौ २५५६। ३ पूछे, पूछ कर तो देखें . ~ बात कहा धौं कहै १७२६।

बूझें[2] १ समझे . जो कोउ काज करै बिनु ~ २३००। २ समझते : ऐसी बात कहौ तुम उनसौं जो नहिं जानै ~ ३८९८।

बूझेंहुँ पूछने पर भी सूर सखी ~ न बोलत २६५९।

बूझेंहूँ पूछने पर भी ~ न करी १९००।

बूझै[1] १ पूछता है स्याम कौं यह नहीं ~ ३८८२। २. पूछती है, पूछ रही है : नद कैं द्वार नद-गेह ~ १६४६।

बूझै[2] १. समझता है/समझ पाता है · बात कहैं सो कछु नहिं ~ ३/१३। २ जानते हैं . रस की रीति साँवरौ ~ ३९२६। ३ समझे बूझे : बिनु ~ रस फीकौ ३८२८। ४ सूझता है, समझ मे आता है घेरि राखे हमैं नहीं ~ तुम्हैं ३०६९।

बूझौं पूछती हूँ : कहा करौं ~ तोही री १९१७।
बूझौ[1] **१.** पूछो : ~ जाइ जिनहिं तुम पठयौ ३९५०। **२.** पूछा : समुझि न परी मोहिं मारग की कोउ ~ न बतायौ ४२३८।
बूझौ[2] **१.** विचार करो, सोचो : दासी लै पटरानी कीन्ही कौन न्याव यह ~ ३६५०। **२.** समझ लिया, पहचान गई' . बाजी ताँति राग हम ~ ३६५०।
बूझयौ[1] **पूछा** : विप्र बुलाई नाम लै ~ ८८।
बूझयौ[2] जान लिया : सूरदास अब कहति जसोदा ~ सबकौ ग्यान ३५५।
बूड़ई डूब गई : विरह सरोवर ~ १९६३।
बूड़त १. डूबता : जल नहिं ~ अगिनि न दाहत १/९२। **२** डूबते हैं : खन ~ खनहीं खन उछरत विरह सिंधु कैं परे झकोर ७७३९। **३.** डूब रहा है : आँसू सलिल ~ सब गोकुल ४११३। **४** डूब रहे हैं . प्रेम तरग ~ ब्रजवासी ३८५१। **५.** डूबता हुआ : ~ ज्यौं तृन गहियत ३९११। **६.** डूबते हुए : ~ मोहिं उतारयौ पार ४/१२। **७** डूबते हुए को जल ~ अवलंब फेन कौ ३६२१।
बूड़तहिं डूबते हुए : ~ ब्रज राखि लीन्हौ १/१२२।
बूड़न डूबने : नाम न ~ पावत ९/१०३।
बूड़ि डूबकर : ~ मुए कै कहुँ उठि गए १/२८४। ~ **चल्यौ** डूबने लगा ' हौं हूँ ~ — वा गहिरैं केतिक बुड़कौं खाइ ४०९७। ~ **न मुई** डूब कर मरी नहीं/मर नहीं गइ : ~ — नीर नैननि के ४२५६।
बूड़ीं डूब गई। △ ~ **बिनु पानी** बिना पानी के ही डूब गई . सूर विरह व्याकुल भई ~ — १०१८।
बूड़ी १. डूब गई/गई : सोक सिन्धु ~ नदरानी ५४७। **२** नष्ट/समाप्त हो गई पूरनता तौ तबहीं ~ ३९६३।
बूड़े १. डूबता है, डूब जाता है : कबहुँक तृन ~ पानी मैं १/१०५। **२** डूबे : जौ डाँकौ तौ कत बिनु ~, काहै जीभि पिरावत ३६३०।
बूड़ैं १. डूब जाय ' पाहन तरै सोलह जो ~ तौ हम मानै नीति ३८७६। **२** डूबे : ~ जनि कोउ १९६३।
बूड़ौं १. डूब जाऊँ : अब मैं मरौं सिंधु मैं ~ चित मैं आवै कोह ९/८३। **२** डूब मरूँगी : पावक परौं सिंधु महँ ~ नहिं मुख देखौं तोर ९/८३।
बूड़यौ डूब जाता है : सूरदास कहै सब जग ~ जुग जुग भक्त तरयौ १/२९१।
बूतैं बल से, शक्ति से : प्रेम न रुकत हमारे ~ ३९१६।
बृंद १ समूह, झुंड : कुमुद ~ सकुचित भए २०२। **२.** समूह को : बछरा ~ घेरि आगैं करि ४३२।
बृंदनि समूहों के (जनों के) ' कौतुक रूप ग्वाल ~ संग ४१५२।
बृंदा[1] वृन्दावन में : पहुँचे आइ बिपिन घन ~ ४४७।
बृंदा[2] वृन्दा नामक गोपी : स्याम गए उठि भोरहीं ~ कैं धाम २६७५।
बृंदावन वृन्दावन, वह जंगल जहाँ कृष्ण ग्वाला के साथ गाय चराने जाया करते थे : ~ देख्यौ नद नदन ४१५।
बृकदाल्भ्य वृकदालभ्य मुनि जो इद्र के वधु कहे जाते हैं और जिन्होंने परशुराम के क्रोध से राजा चन्द्रसेन की गर्भिणी स्त्री की रक्षा की थी : ~ महारिषि कबहूँ तृन छाया न कराए ३८९४।
बृच्छनि वृक्षों, पेडों : कोउ लै ओट ~ की ८६०।
बृच्छबट अक्षयवट ' बढ़यौ ~ सुर अकुलाने ६४।
बृच्छ भाग स्कध भाग पर, कधे पर : ~ धर फिरे मनन कौं सा० ल० ५८।
बृत्तांत वृत्तात, समाचार : सकल ~ सुनाइ ४/५।
बृत्रासुर एक राक्षस जो त्वष्टा का पुत्र था और जिसका वध इन्द्र ने किया था तब ~ कौं सुख भयौ ६/५।
बृथा १ व्यर्थ ही, व्यर्थ मे, व्यर्थ मे ही : तूहू धन्य हम ~ बहे १९०६। **२.** निष्फल : ~ होहु वर वचन हमारौ ९/३३। **३.** व्यर्थ रहीं/हो गई : गाइ गोप नंदादिक राख्यौ ~ बूँद सब नैंकु न धर तें ८७६।
बृथाई व्यर्थ ही : बिनु कृपा जाइ उद्यम ~ ८/८।
बृद्ध वृद्ध, बूढे नाचत ~ तरुन अरु बालक २१।
बृद्धपनौ बुढापा : ~ अपनो फिरि लीन्हौ ९/१७४।
बृध वृद्ध, बूढे नाचत तरुनि बाल ~ भोरी २८९४।
बृष[1] बैल : जोतत धेनु दुहत पय ~ को ३८७६। **तेली कैं ~ लौं** तेली के बैल के समान ' — ~ — भरमत १/२०२।
बृष[2] वृष राशि, बारह राशियों मे से दूसरी जिसमे कृत्तिका नक्षत्र के अतिम तीन पाद, पूरा रोहिणी नक्षत्र और मृगशिरा नक्षत्र के पहले दो पाद हैं ~ है लग्न, उच्च के निसिपति ८६।
बृषपर्वा वृषपर्वा नामक एक दैत्य जिसने शुक्राचार्य को अपना पुरोहित बनाया था, शर्मिष्ठा इसी की पुत्री थी : दानव ~ बलभारी ९/१७४।
बृषभ[1] बैल लैया नोइ ~ सौं, गैया बिसराई ७१५।
बृषभ[2] वृषभासुर नामक एक राक्षस . बकी बका सकटा तृना केसी ~ ३८६७।
बृषभान दे० वृषभानु . मोहिं आन ~ बबा की सा० ल० १०।
बृषभान दुलारी वृषभानु की पुत्री राधा ने : देखत ही ~ सा० ल० १२।
बृषभानु वृषभानु, श्री राधिका जी के पिता। ये पदमावती के गर्भ से उत्पन्न सुरभानु के पुत्र थे सुना सदर ~ की २७२३।

वृषभानु घरनी वृषभानु की पत्नी, कीर्ति कुमारी • सुता सौं कहति ~ १९६७ ।

वृषभानुपुरा १ वृषभानु की नगरी अर्थात् बरसाना : तब आवत ~ कौं २०७१ । २. बरसाने मे (रहती है) • यह ~ ये ब्रज मैं कहाँ दुहावन आई ७२९ ।

वृषभानु-बारी वृषभानु की पुत्री (राधा) ने . कियौ अति मान ~ २४२१ ।

वृषभानुहि वृषभानु के : बैठे नद-सहित ~ ८१८ ।

वृषभास वृषभासुर नामक एक राक्षस • बकी, बकासुर, सकट, तृनाव्रत, अघ, प्रलब ~ ४८७ ।

वृषभासुर वृषभासुर नामक एक राक्षस . इहि अतर ~ आयौ १३८७ ।

वृषली वृषली, शूद्र जाति की स्त्री . सो भयौ ~ कैं गृह बासी ६/४ ।

वृषली-सुत दासी पुत्र अर्थात् विदुर, यह पाडु और धृतराष्ट्र के भाई थे जो व्यास के द्वारा अविका की दासी के पुत्र थे : सुनियत दीन हीन ~ जाति पाँति तैं न्यारे १/२४२ ।

वृष्टि १, वृष्टि, वर्षा नहिं नभ ~ झरत झरना जल ४१४६ । २ वर्षा की मनु जलधर जलधार ~ लघु ७३६ ।

बेचत बेचती हुई, विक्रय करती हुई घर घर फिरति गुपालहि ~ १६४३ ।

बेचति १. विक्रय करती है/कर रही है गोरस ~ ग्वालि रसाल १६४३ । २ विक्रय करती हुई . दधि ~ ब्रज गलिनि फिरै १६३६ ।

बेंचन बेचने : हमकौं जान देहु दधि ~ १५०९ ।

बेचनहारि बेचने वाली गोरस ~ गूजरी अति इतराती १४९१ ।

बेचनहारी बेचने वाली सूर कहा ये हमकौं जानें छाछहिं ~ १५१८ ।

बेचहु बेचो ~ जाइ दूध दधि निधरक १६१० ।

बेंचि क्रि० स० बेच कर गोरस ~ मधुपुरी तें १५३७ । पु० बेचना तेरे घर मैं तुहीं सयानी और ~ नहिं जानै १६७६ । △ ~ खाई बेचकर खा लिया अर्थात् खो दिया, गँवा दिया . सूर प्रभु कौं कहा कहिऐ ~ — लाज ३१५० । लाज ~ लज्जा को बेचकर अर्थात् निर्लज्ज होकर . — ~ कूबरी बिसाही सग न छाँटत एक घरी ३१४६ ।

बेचिबे बेचने ल्याए जोग ~ कारन ३९६४ ।

बेंचौ बेचो, विक्रय करो • कै लै जाहु अनत ही ~ ३७२४ ।

बेच्यौ बेच दिया है मन ~ लै वस्तु हमारी २२३९ ।

बेदा बिन्दा, स्त्रियों के माथे का एक आभूषण • नाना विधि सिंगार बनाये ~ दीन्हौ भाल सारा० १०६० ।

बेंदी बिंदी, माथे का एक आभूषण बदन जराइ ~ २६९८ ।

बेई वे ही हैं : पूरन ब्रह्म सनातन ~ मैं भूल्यौ ससार ९७४ ।

बेऐं बोने से • बहुत जतन पायौ तुम ब्रज ~ नहिं छीजे परि० १/१९० ।

बेकाज १ व्यर्थ मे : कतहिं बकत ~ ३७४२ । २. व्यर्थ (मे ही) : जनम जनम यौं हीं भरमायौ अभिमानी ~ १/१५० ।

बेकाजहि व्यर्थ मे ही : बेसरि छीनति ही ~ १९५६ ।

बेकाजे व्यर्थ ही . हौं पठयौ कतहौं ~ ४१३० ।

बेकाजैं अकारण ही वृथा बदति सजनी ~ ३८८३ ।

बेकामहि व्यर्थ मे ही : बनि आवति ~ ७०० ।

बेग[1] क्रि० वि० शीघ्र : ~ जाव गोकुल तुम अबहीं सारा० ४१४ । पुं० १ गति, चाल • बायु ~ अतिसै नहिं करै ३/१३ । २ आवेश मे • काम तृष्ना रस ~ न क्रमै गह्यौ १/४९ ।

बेग[2] बल • कौन ~ ह्याँ आयौ २९० ।

बेगि शीघ्रतापूर्वक, शीघ्र ही लीजै ~ निवेरि तुरत ही पतित कौ टाँडौ १/१४६ ।

बेगिहि शीघ्र ही ऊधौ हरि ~ देउ पठाइ ४०७२ ।

बेचन बेचने • मथुरा जाति हौं ~ दहियौ ३१३ ।

बेचनहारि बेचने वाली हाट की ~ २९५ ।

बेचिकै बेच कर : जोग ~ तदुल लीजै ३८८० ।

बेचियै बेचो जोग लेहु सँभारि अपनौ ~ जहँ लाहु ३५१७ ।

बेचैं बेचती हैं हम अहीर माखन मथि ~ ३६६३ ।

बेचौ बेच दिया • तन प्रन करिके ~ सा० ल० ४६ ।

बेटिनि बेटियों • गारी देत बहू ~ कौं १४२७ ।

बेताल बैताल, शिव के एक प्रकार के गण . भूत प्रेत ~ रचौ बहु धाये बिधि को खान सारा० ६५ ।

बेद १ वेद । २. वेदों के कहत ही ब्रह्म के ~ उद्धरन हित ८/१७ । ३ वेद का पर्यायवाची श्रुति = श्रवण = कान ~ धरत न सुन्न गुन के सा० ल० ५९ । ४ वेद चार है अत व्यञ्जित अर्थ हुआ चार • अचरज सुभग ~ जल-जातक कनक नीलमनि गात २४६५ । **कह्यौ ~ उचारी** वेदोच्चार किया बिप्र बोलि आसन दियौ — ~ — ४०९ ।

बेद-अभिषेक वैदिक रीति मे अभिषेक या वेद मन्त्रों मे पूत जल मे अभिषेक . बिप्र ~ करायौ ९/२५ ।

बेद-धर्म सनातन वैदिक धर्म : विप्रनि ~ नहिं जान्यौ ५/३ ।

बेदन[1] वेदना, पीड़ा ऐसौ को पर ~ जानै २७५६ ।

बेदन[2] (वेदो मे =श्रुतियों मे=) कानों मे : ~ भानु जुगल अनु रूप उज्यारी सा० ल० ९८ ।

बेद-नखत (वेद=४, नक्षत्र, अर्थात् चौथा नक्षत्र=) रोहिणी पुन्न पच्छ औ ~ है सा० ल० ८१ ।

बेदनि[1] वेदना, पीड़ा . सूर नद बिछुरत की ~ ३११६ ।

बेदनि॰ वेदों ने ... निगम ... ~ ... ४७०६ ।

बेद पाठी ब्रगन सोहै रीति ... पाठी ... = ... ब्राह्मण, ... = ..., ... रीति = ... पहले ... मानना ... मीत = ... शूल ... ~ ... ७६ ।

बेद बसु (बेद = ४, बसु = ८, ...) ८४ = ... ८४ ... ~ ... ।

बेदन-विभूषित (बेदन = ... = ...) ... भूषण ... ।

बेदन-विभूषित सून्य गुन (...) ... ~ ... ।

बेद-मारग ... ~ ... ।

बेदहु ... ~ ... ।

बेदहू ... ~ वहै ... १६१८ ।

बेदाऽनि ... ~ ... ८/१६ ।

बेदी स्त्री॰ ... ~ ... ८/१६ ।

बेदोक्त ... ~ ... ।

बेधत ... ~ १/... ।

बेधनि ... ~ ... ।

बेधन[1] १ भेदन ... ~ ... २ ... ~ ... ३५११ ।

बेधन[2] बिना धन के, ... ~ नौकी पोली १/१८६ ।

बेधि बिधकर, ... मीन मानौ ~ ... ३५८ ।

बेधे बिध गये । ... ~ ... १/७७८ ।

बेधे छेद डाले ... अनरज कहा पार्थ जो ~ तीनि लोक ... बान १/७७८ ।

बेध्यो बेध दिया ... मन मृग ~ नैन बान सौं १९६४ ।

बेन बेणु, बंसी । ... ~ ३३५० ।

बेनि बेनी, चोटी ... ~ ... २७४ ।

बेनी[1] बेनी, चोटी । ~ पीठि हुलति इति ... २९८ ।

बेनी[2] त्रिवेणी, संगम ... माधव ~ ०/११ ।

बेनु बेणु, बंसी ... ~ २८४ ।

बेपीर निर्दयी, बेदर्द ... प्रभु दुखित जानि कै छाडि गये ~ ३१५६ ।

बेरम ... ~ किये ... ।

बेर[1] ... ~ ... ३७१८ ।

बेर ... ~ ... ।

बेर[2] ... ~ जानि २८२६ ।

बेरनि ... ~ ३८८९ ।

बेरस ... ~ कीजै नाहिं भामिनी ... ।

बेरा बेला, ... ~ ... ४/५ ।

बेरि ... ~ ३८६३ ।

बेरियाँ ... ~ २४६ ।

बेरिया ... ~ ... ४६७ ।

बेरी ... ~ ... △ भयौ पाइ की ~ ... ८०७ ।

बेरी[2] ... ~ ... ९/४१ ।

बेल ... और ... ऊपर ... बनाया जाता है ... ~ ४०७० ।

बेल बेला, ... फूल । ... ~ ... फूलनि ... २१०६ ।

बेला[1] ... उमगि ... सुधानिधि, मन ~ ... ७३२ ।

बेला[2] बेला, समय । ... ~ ... १६३८ ।

बेलि[1] १ बेल, लता ... काम ... ~ मौ कौन बिरमाए ... २ लता ... ~ द्रुमनि ... ३३२० ।

बेलि[2] बेला (फूल) । ~, मिला, मालती १०९५ ।

बेलिन लताओं का ... ~ परसत कर पल्लव ३३०२ ।

बेली १ लताएँ । रितु बसंत फली बन ~ ४७७७ । २ लताओं को । बिरह ताप तन अधिक जरावत जैसे दव द्रुम ~ ०/०४ । ३ लताओं में ... फिरत प्रभु पूछत बन द्रुम ~ ०/६८ ।

बेलीचारी लताओं में घूमने फिरने वाला ... मोहन मधुकर समान सखि अनाम ~ २००३ ।

बेष १ बेश, रूप ... ~ ... ८ । २ रूप को/से । गोप ~ ... ४१३८ ।

बेष्टित वेष्टित, लपटे/ढके हुए ... ~ ... २२०३ ।

बेष्ठित वेष्टित, युक्त ... मानो तारागननि ~ गगन निसि रह्यौ

छाइ २३४।

बेसरि नाक का एक गहना • दीरघ नैन नासिका ~ २४४६।

बेसहु पहनावा भी केस सिथिल ~ सिथिल २८६३।

बेस्या स्त्री० वेश्या, वारवधू सठ, पडित ~ बधू हरि होरी है २९१४।

बेह छिद्र ~ बनावत जारि १३३७।

बेहाई बेहयाई से, बेशमी से • आवत अब वे ह्यॉ ~ २२६०।

बेहाल १ व्याकुल, बेचैन। २ विभोर • तपति मिटि गई प्रेम छाकी भई रम ~ १४१०।

बेहालहि व्याकुल है पति बिनु मति बिरहिनि ~ ८०२।

बेहाला विह्वल, विकल . अति विकल भई ~ ११८२।

बेहु छिद्र विकट बनावत ~ १३३९।

बैंडे टेढे होकर हमकौं यहऊ बचत न ~ ३६१५।

बैकुंठ स्वर्ग, विष्णु लोक • गई ~ अवाज खरी १/७४९।

बैकुंठनाथ विष्णु ~ सकल सुखदाता १/९२।

बैकुंठबासी वैकुठ वासी विष्णु (कृष्ण) ने • एक दिन ~ रास वृन्दावन रच्यौ ३८६५।

बैकुंठहि विष्णु लोक को मुरली धुनि ~ गई ११८०।

बैजंती विजयमाल, विष्णु की माला . उर ~ सोभा अति बनी ४१८६।

बैठक बैठने का आसन : अति आदर सौं ~ दीन्हौ २२०९।

बैठकी आसन : बसुधा कमल ~ साजति ११०।

बैठत १ बैठता है दिनकर उदय अनत उडि ~ ३७५६। २ बैठते उठैं उठत बैठें ~ हैं २१३८। ३ बैठते हैं ~ सबै सभा हरि जू की १/२३२। △ ~ **उठत बार बार** बार बार उठते बैठते है अर्थात् अत्यत व्याकुल हैं : नहिं धीर धारै, कबहुँ ~ — २४२१। △ ~ **सोवत जागत** प्रत्येक समय, सर्वदा बिछुरत नहीं सग तैं दोऊ ~ — १००५।

बैठति बैठती है . ज्यौं अधरनि, ज्यौं कर पर ~ १३६०।

बैठन १ बैठने . लागी यह कर पल्लव ~ १२३५। २ बैठने के लिए . आवत पीढा ~ दीनौ ५०।

बैठनि बैठना • वह चितवनि वह रथ की ~ ३००४।

बैठहु बैठो ~ आइ सग दोउ भाई ५४७।

बैठाइ बैठाकर : हरि रथ पर अर्जुन ~ ४३०९।

बैठाई बैठाया : आदर करि ~ २२०८।

बैठाय बैठाकर . अपने रथ ~ प्रीति सों सारा० ५५५।

बैठायौ बैठाया विधि तिहिं आदर दै ~ ९/४।

बैठार बैठाया : बहुरौ गोद माहिं ~ ७/२।

बैठारत बैठाता है : एक मडली करि ~ छाक बाँटि इक देत ४१४५।

बैठारि बैठाकर . देखतैं सबनि कैं ~ रथ ४२०९।

बैठारिहौं बैठा लूँगा : तोहि ~ नाव मैं हाथ गहि ८/१६।

बैठारी बैठाया : प्रभु गहि बाँहँ पास ~ ३१०२।

बैठारे बैठाये अक माल दै मिले सुदामा अर्घासन ~ ४२३०।

बैठारौ बैठाओ बाहिर बाँधि सुतहि ~ ३९१।

बैठारयौ बैठाया • ~ ग्वालनि को द्रुम-तर १४०३।

बैठावन बैठा लिया पाइनि परि सब बधू महरि ~ रे २८।

बैठावहु बैठाइए अक्रम भरि ~ १०२९।

बैठावै बैठायेगा हाथहि पर तोहिं लीन्हे खेलै नैंकु नही धरनी ~ १९१।

बैठि १ बैठकर जेवत कान्ह ग्वाल-सग ~ १५३६। २. बैठो • तू निहचित ~ गृह जाइ ४३०९। △ ~ **उठि गिरि-गिरि परौं** अत्यत व्याकुल हो जाती हूँ और कछु न सुहाइ तन-मन ~ — १७९४।

बैठिबे बैठने गोद ~ कौं पुनि धाए ४/९।

बैठियै बैठिए पीतावर गहि कह्यौ ~ २४८४।

बैठिहै बैठिए कनक सिंहासन ~ हरि होरी है २९१४।

बैठी १ बैठ गई/गई। २. बैठी हुई हो ~ कहा १८२१। ३ बैठी हुई थी नारि व्यास की ~ जहा १/२२६। ~ **सभा** सभा लगी हुई है : ~ — सकल भूपति की १/७४८।

बैठे १ बैठ गये। २ बैठे हुए हैं ~ नद सभा मधि। ३ बैठे हों मानहुँ चरन-कमल-दल-लोभी ~ बाल मराल १७९१। ४ बैठे हुए दाहिन हैं ~ १/२३।

बैठैं १ बैठें : मेरे सग आइ दोउ ~ ७३५। २. बैठने पर . उठैं उठत ~ बैठत हैं २१३८।

बैठौ बैठा हुआ, बैठा . ~ है सिंहासन चढि कै १५८८।

बैठ्यौ बैठा हुआ हूँ : हौ अनाथ ~ द्रुम डरिया १/९७। २ बैठा है सिर पर कस मधुपुरी ~ १९२२। ३ बैठ गया ~ जाइ एक तरुवर पर ९/७५। ४ बैठे हुए हो • या आदर पर अजहू ~ ३६१५। ५ बैठा हुआ सभा माँझ ~ गर्जत है १३९६।

बैदेही विदेहराज जनक की पुत्री सीता • हा रघुनाथ, लछन ~ ९/३१।

बैन १ वचन, वाणी हरि हँसि बोले ~ ४३१। २ वचनो को सुनि ऊधौ के ~ रहीं नीचे करि नारी ४०९५। ~ **कहत** बोलते हैं : किलकि किलकि ~ — ९०।

बैनतेय विनता के पुत्र गरुड, ये विष्णु के वाहन भी हे ~ सपुट सनकादिक ३०१६।

बैननि वचनों को कबहिं कमल मुख बोलिहैं सुनिहौं उन ~ ७४।

बैनहू वाणी भी • नैन अरसात अरु ~ अटपटात २०१०।

बैना वचन . एक कहति वैसेई ~ २८९२।

बैनु वेणु, बंसी (की ध्वनि) . नहिं गो-रमन बालक ~ ५०१ ।
बैयै बोइए . जैसो ~ तैसोइ लुनियै ३०५३ ।
बैर शत्रुता मोसा ~ करै रति उनर्मा २०९४ । △ ~ **लीन्हौ** बैर (बदला) ले लिया . काम ~ — सर मारी ११०५ । △ ~ **लेहु** बैर (बदला) लो भ्राता ~ — तुम जाइ ७/२ ।
बैरइ शत्रुता ही : सुनहु सूर प्रतिपाले को गुन ~ मानि लियौ २३०४ ।
बैरख पताका, ध्वजा मनु ~ फहरात ग्वालि २८६२ ।
बैरा बेला=लहर (की माला) पूज्यौ कान्ह उजागर सागर ~ गर पहिरात २९११ ।
बैरागर खान, कोष . कान्ह तें बदल को देहै ~ ३४९३ ।
बैरागी विरक्त . कुंवर दोउ ~ बैराग परि० १/१४९ ।
बैरिन शत्रुओं : रन ~ की नारि ९/१४५ ।
बैरिनि १. शत्रु, दुश्मन यह ~ मोकौं भई २२०१, प्रीतम पठै दियो ~ घर २८१७ ।
बैरिहिं शत्रु को ~ पीठि न दीजै २८२६ ।
बैरी शत्रु : ता दिन त पछी भए ~ ३६७५ ।
बैरु बैर, शत्रुता ~ तबहिं त ठान्यो १८९३ ।
बैरोचन विरोचन, जो बलि का पिता था . जग्य करत ~ कौ सुत १/१०४ ।
बैलहिं बैल को : चलन ~ आर १/१९९ ।
बैवस्त वैवस्वत, सूर्य के एक पुत्र सग्ज क ~ भयो ९/२ ।
बैस १ वयस, उम्र : हो बालक वह बड़े ~ को परि० १/२१ । २ अवस्था में बडी ~ विधि भयौ दाहिनौ २४८ । ~ **उठान** उठती हुई उम्र की : गोरी सी भोरी थोरै दिननि की थोरी ~ — परि० २/३८ ।
बैसंधि वय संधि को ~ बरनत कविनि कठोर २६८१ ।
बैससधि वय सधि, बाल्य और तारुण्य के बीच की उम्र ~ सुख तज्यौ सूर हरि ३८४८ ।
बैसी बैठी : प्रगट सौंनि है ~ है १०५९ ।
बैसें १. बैठने : रहन न पाँऊ ~ २३५९ । २ बैठा रहा कै मोवत कै ~ १/२९३ ।
बैहर बयार, वायु मो-तन छ्वै ~ चले १४४३ ।
बैहानौं पागल हो चली हो . तरनी ~ १९५३ ।
बैहे वह जाओगे : गिरि मग ~ ८५३ ।
बैहौं बोऊँगी हरि-रति-बीज बहुरि कब ~ १६६८ ।
बोइ बोकर : गए ह हरि ~ ३९५१ ।
बोधत समझाते है पुनि पुनि ~ कृष्न ३०९० ।
बोधति समझाती है बार बार जसुमति सुत ~ १९१ ।
बोधि १. समझाकर : जुवति ~ सब घरहिं पठाई १४२५ । २ समझाया . रानिनि ~ महल नहिं भाए ३१०९ ।
बोधी समझाया सूर यह कहि जननि ~ ५८० ।
बोयौ[1] बोया हुआ अपनो ~ आप लुनौ तुम ३९०४ ।
बोयौ[2] बहा दिया, डुबो दिया करि निरजीव जमुन-जल ~ १/५४ ।
बोरत डुबोता है . ~ सहम प्रकारो १/२०९ ।
बोरति डुबोती है ~ कतहिं करारि २५९१ ।
बोरन डुबाने के लिए गर्व सहित आयौ ब्रज ~ ९६१ । ~ **लीन्हौ** बोरने का (व्रत) लिया था जब सुरपति ब्रज ~ — ३२०९ ।
बोरहि डुबोइए जनि ~ निग्गुन में ३६२५ ।
बोरि डुबोकर : ~ जोग को बेरी ४०७९ ।
बोरी क्रि० स० डुबो दो काहे क्रूर अपनी ~ १/३०३ । वि० डुबोई हुई . सुठि सरस जलेबी ~ १८३ ।
बोरे १ डुबोए : आपुन पद मकरंद-सुधा-रस हृदय रहत नित ~ ३६०० । २ डुबोए हुए हो . स्याम काम मैं ~ ३७६३ ३ तर किए हुए घेवर अति घिरत चभोरे लै खाँड सरस रस ~ १८३ ।
बोरें क्रि० स० डुबोने से, स्नान करने से . कहा भयौ देह ~ १/२२२ । वि० डुबोए पँचरँग-बरन कुसंभी सारी कंचुकि सोंधे ~ २८३८ ।
बोरौं डुबो दूँगा ब्रज ~ परलै क पानी ९०७ ।
बोरौ डुबोने वाला पर निंदक, परधन कौ द्रोही, परमतापनि ~ १/१८६ ।
बोरयौ १ डुबोया प्रीति नदी म पाउँ न ~ ३९५८ । २ डुबो दिया, कलंकित कर दिया तैं ~ पितु नाउँ ९/७५ ।
बोल पुं० १. वचन, वाणी । २ व्यग्य वचन, ताना : ब्रजबसि काके ~ सहौं १६८६ । क्रि०स० बोलो, उच्चारण करो . रसना जुगल-रसनिधि ~ २१३२ । △ ~ **दै** वचन देकर, प्रतिज्ञा करके : माँझ ~ — जात सूर प्रभु २४७६ । ~ न **बोलै** बोल (व्यग्य) मत बोल . रहि रहि अवला ~ — ९/१४० । ~ **सुनाए** पुकार कर कहा : नागरि आगैं है गई तब ~ — २०२० । ~ **हिरदै** हृदय की वाणी है अर्थात् सच्ची बात है : सूर प्रभु यह ~ — ४१३५ ।
बोलक बोल एक, एक बाव : ~ इनहूँ की सुनि लीजै ३४८२ ।
बोलत क्रि० अ० १ बोलता है : कबहुँक प्रगट पपीहा ~ ४१४६ । २ कहा जाता है महाबली रावन जिहिं ~ ९/१४३ । ३ बोलते हैं, वर्णन या प्रशसा करते हैं : ~ सुख तेरोई गुन ग्राम २४५१ । ४ बुलाते . ~ हैं तोहि नंद किसोर २७६४ । ५ बुलाती है : ~ तुमहिं सबै ब्रज-बाल २०६ । क्रि० वि० बोलते हुए : सुदर ~ आवत बैन १८०४ ।
बोलति कहती है सीस धुनि कर मींजि ~ २८७६ ।

बोलति १ बोलती है : ~ बचन रसालहिं १६३९ । २ पुकारती है द्वारे आइ नद कै ~ १६७५ ।
बोलन क्रि०अ० १ बोलने, कहने : असभाव ~ आई है २९० । २ बुलाने : नद सुवन जा गृह बसे तिहिं ~ आई २७३५ । पुं० बोलना : हँसि ~ परि० १/५२ ।
बोलनि १ बोलना कलयल करि ~ ९१ । २. वाणी, आवाज • मधुरी ~ बरनि न जाई ६१६ । ३ बोलने पर, बातों पर/मि • तुम्हरे ~ कौन पतीजे ३७८३ ।
बोलनौ बोलते . सुख पावत हँसि ~ २८३२ ।
बोलही पुकारते हे . सखा नाम लै ~ २९०५ ।
बोलहु बोलो ' निठुर बचन जनि ~ १०२० ।
बोलावन बुलाने के लिए गए ग्वाल तब ~ १००१ ।
बोलि क्रि०स० १ बुला ल्यावहु ~ कान्ह बलराम २३५ । २ बुला कर ~ करन चढ़े नगी १/२१ । ३ बोल कर, कह कर परसुराम का ~ रिपि दियौ बृतात सुनाइ ९/१४ । पुं० वचनो मे, वाणी से . सूरदास प्रभु ~ छले बलि ८/१३ । ~ **पठई** बुला भेजा है ~ — तोहि हरि २८०० । ~ **पठाए** बुलवा भेजा हमहिं सबनि तुम ~ — ८१६ । ~ **बोलि** बुला बुला कर : ~ — सुन स्वजन मित्र जन २/३० । ~ **भक्त कौ** भक्त को दिए हुए वचन का सूरदास हरि ~ — निरवाहत गहि बहिया ९/१९ ।
बोलिहै बोलेंगे कबहि कमल-मुख ~ ७४।
बोलीं बुला रहे हैं : मुरली मा ~ गिरिधारी ९८९।
बोली १ बुलाया ~ है ब्रजनाथ वेगि चलि २४३५ । २ बुलाया है ~ धा कोन का २१९२ । ३ बुला कर . बन ~ रस-रास खिलाइ ३०२० । ४ बोलने लगी/लगीं चढ़ मलीन चिरैया ~ २४९९ । ~ **बोडि** ढवी हुई भाषा . हँमि बोले हरि ~ — ११८० ।
बोले १ कहा : तुरत चलौ ~ सुरराई ९२६ । २. पुकारा, आर्त नाद किया • सरन-सरन जब ब्रज-जन ~ ९३७ । ३ बुलाया, बुला लिए गये : औरै दसा भई छिन भीतर ~ तुनी नगर तैं ७४४ । ४ बुलाया है तुरतही यह कहि सुनायो स्याम ~ तोहि २४२७ ।
बोलेहु बुलाये भी गुरु पितु गृह बिन ~ जैऐ ४/५।
बोलेहूँ बुलाने पर भी ~ नहिं आवन ४१४७ ।
बोलैं १ बोलते हे : कुवरी कौ न्याऊ री जानो गोविंद ~ ३६४५ । २ बोलने/पूछने पर ~ ज्वाब न दैहैं १५३७ । ३ बुलाने/पुकारने पर ~ सुनति न टेर १६७७ ।
बोलै[1] १ बुलाएँ • सब स्याम कौ क्यौं ~ ब्रज ४०६७ । २ बोलती है : खीझि खीझि ~ री १९७४ । ३ बोलते हो : मधुकर बाढ़ि बचन कत ~ ३८६९ । ४ बोलने लगता है बहिरौ सुनै गूँग पुनि ~ १/१ । ५ बुलाता/पुकारता है . एक पुरुष कौं ~ कोइ ६/४ । ६ बोली जाती है, कहलाती हैं : लछिमी-सी जहँ मालिनि ~ ३२ । ७. बोले : तुम सी होइ सो तुम सौं ~ ३९०४ ।
बोलौं बोलूँगी मोहन सँग ~ १८८७ । ~ **साखी** साखी देकर कहूँ/बतलाऊँ . तौ हा ~ — १/१२२ ।
बोलौ १ बोलो कृपा करौ मुख ~ जू २५०९ । २ कह दो बचन एक जौ ~ १/१३६ । ३ बोलना : अब ये बोल कबहु जनि ~ ३११५ ।
बोल्यो, बोल्यौ १ बोला, कहा • भोजन करत सखा इक ~ बछरू कनहू दूरि गये ४३८ । ३ बोले, कहे जितिक बोल ~ तुम आग ९/१०७ । ४ बुलाया • बैठी सकुचि निकट पति ~ दुहुँनि पुत्र मुख पेखा ४ ।
बोवत बोता है ~ बबुर दाख फल चाहत १/६१ ।
बोस डुबकी, चुप्पी सूरदास प्रभु कैं बस कीन्ही आपु रहे गहि ~ परि० १/८५ ।
बोहनि बोहना मोही तें करि ~ परि० १/९० ।
बोहित १ बोहित्य, जहाज : भव सागर ~ बपु मेरो १/२१३ । △ ~ **के काग** जहाज का कौवा जो थल न मिलने पर पुन जहाज पर ही लौट आता है . नैन भए ~ — उडि उडि जान पार नहिं पावत फिरि आवत तिहिं लाग २३१२ ।
बौंडर बवडर . ~ महा भयावन आयो ७८ ।
बौन बोने/वामन हैं वह कुबरी वे ~ ३२५५ ।
बौरई बावरी, पगली • सूरज सुगथ गँवाइ गाँठि कौ रही ~ मानि १९९९ ।
बौराए पागल कर दिया मूँड उचाटि मेलि ~ ३५०७ ।
बौराऐ बहकाने पर ~ न बहोगी १९४ ।
बौरानी १ पागल हो गई है देखौ री जसुमति ~ २५८ । २ पागल/बावली थी तब तौ बेद रिचा ~ ४०३६ ।
बौराने पगलाए हुए हम अपने ब्रज ऐसेहिं रहिहैं बिरह बाइ ~ ३८४० ।
बौरन्यो पागल/उन्मत्त हो गया • धन-दारा-सुत-बधु-कुटुँब-कुल निरखि निरखि ~ १/३१९ ।
बौरायौ भटकता रहा . ऐसैहिं जनम बहुत ~ १/२७ ।
बौरावत १ फुसलाते/बहकाते ह हम जानतिं परपच स्याम के बातनि ही ~ ३७११ । २ पागल बना रहे हो • हम बावरी आनि ~ ३९४९ ।
बौरावति भ्रमित कर रही हू • साँचहिं सुत भयौ नद कैं हौं नाहीं ~ २३ ।
बौरावहि फुसलाते/बहकाते हो गुर दिखाइ ~ ३४९८ ।
बौरावै उन्मत्त कर देती है सोवत सपने मैं ज्यौं सपति त्यौं दिखाइ ~ १/४२ ।
बौरि पागल/उन्मत्त हो गए : नट रूप निरखि लोचन ~ २२९५ ।
बौरी बावली, उन्मत्त . लोग कहैं यह भई है ~ १७९४ ।

बौरे पागल : तजि अभिमान राम कहि ~ १/५९ ।

बौरैया बावली आई सिरावन भवन पराएँ स्यानि ग्वालि ~ ३७१ ।

बौलै बोलता है : ग्यान रूप हिरदै मैं ~ ३ ।

व्यजन व्यजन, खाने . षटरस ~ को गनै १९८० ।

व्यजन व्यजन, पखा असुर-सुता तिहि ~ डुलावै ९/१७४ ।

व्यथा वेदना, पीडा : जो तुम बूझहु ~ हमारी ३७६५ ।

व्यथित व्यथित होकर : सूर ~ दिन सकुचि कुमुदिनी ३७१३ ।

व्यवसाउ व्यवसाय, उद्यम जौ कोउ कोटि करै कैसिहुँ विधि वल विद्या ~ ३६२८ ।

व्यवहार १ रीति-नीति, प्रसग : पार्वती-विवाह ~ सूर कह्यौ भागवतऽनुसार ४/७ । २ प्रकृति : हर्ष शोक तनु कौ ~ ५/४ ।

व्यष्टि व्यष्टि रूप मे (सगुण साकार रूप मे) . सूरदास सोई समष्टि करि ~ दृष्टि मन लाव २/३८ ।

व्याइ वच्चा जन/दे (रही है) : गाइ रही वन ~ १५५७ ।

व्याख्यान वर्णन व्यासदेव तव करि हरि ध्यान कियो भागवत को ~ १/२३० ।

व्याज[1] सूद : ~ निवेरत ऊधौ ३३७८ ।

व्याज[2] वहाने : त्रिपद ~ तिहुँपुर फिरि आई १/६ ।

व्याजउक्त छलपूर्ण वात, व्याजोक्ति अलकार . सूरदास तज ~ सब सा० ल० ८४ ।

व्याध १ बहेलिया, शिकारी : पुनि वह ~ विमास विवस करि ३८३९ । २ बहेलिए ने/के द्वारा याके सर पथिक मग मानो मदन ~ विधए १८६७ ।

व्याधि व्याधि, रोग . सु तौ ~ हमकौं लै आए देखी सुनी न करी ३९८८ ।

व्यान व्यान, शरीरस्थ पाच वायुओं मे से एक जो सारे शरीर मे व्याप्त रहती है : पान, अपान ~ उदान अरु कहियत प्रान समान सारा० ९ ।

व्यानी व्याई हुई . ~ गाय वछरवा चाटति ३३५ ।

व्यापक व्यापक (ईश्वर) : साच्छी ~ नसै न सोइ ५/२ ।

व्यापत १. व्याप्त है · गिरिजापति रिपु नख-सिख ~ ३२८० । २ व्याप्त हो रहा है . ~ हिम मम जमुना-नीर ७९२ ।

व्यापि व्याप्त होकर : व्याकुल विरह ~ दिन दिन हम नीर जू नैनन ढारी २०९३ ।

व्यापित व्याप्त : ~ मकरध्वज अति आतुर ११२५ ।

व्यापिहै १ व्याप्त होगा : अव न ~ मोहिं अग्यान ३/१३ । २. प्रभाव डालेगी हरि कह्यौ अव न ~ माया १/२२६ ।

व्यापी क्रि० अ० व्याप्त हो गया है : तोहूँ कौं ~ री माई कहा कहति है सो को २२३० । वि० व्याप्त रहने वाले है · सूर प्रभु घट घटहिं ~ १४९९ ।

व्यापैं प्रभावित करते हैं : ऐसी विधि हम उनकौं ~ ३ ।

व्यापै १. व्याप्त है कठिन पीर सरीर ~ ३९५१ । २ व्याप्त कर/प्रम लेगा : जरा अवहिं तोहि ~ आइ ९/१७४ । ३ ग्रमता है · जाकौ काम क्रोध नित ~ ३/१३ । ४ व्याप्त होगा माया काल कवहु नाहिं ~ सारा० ३४० ।

व्याप्यौ व्याप्त है, समाया है : ऐसी कै ~ है मनमथ २०८९ ।

व्यामोह मुग्ध · असुरन को ~ कियो हरि सारा० ३०० ।

व्याये विवाह किया ताको माधव ~ सारा० ६५५ ।

व्यारू व्यालू, रात का भोजन : उपवन आय कियो हरि ~ सारा० ५०५ ।

व्याल १. साप, नाग . जनु विश्वसित ~ बालक २१३३ । २ (कालिया) नाग को : नाथत ~ विलव न कीन्हौ ५५७ ।

व्यालावलि सर्पा की पक्ति वमी विसिप माल ~ २८५० ।

व्यालि नागिनें : मनहुँ अमृत रस ~ चुरावति १४९ ।

व्यावर वच्चा जनने वाली का : जानै कहा बाझ ~ दुख ३९४९ ।

व्यास कृष्ण द्वैपायन व्यास, ये सत्यवती के गर्भ और पराशर के वीर्य से उत्पन्न हुए थे । ये भागवत के रचयिता थे ब्रह्मा नारद सौं कहे नारद ~ सुनाइ १/२२५ ।

व्यास खगपति के खगपति = गरुड, उनके व्यास = कथा वाचक = कथा कहकर सुनाने वाले = काग भुशुडि = काग, कौवे · चारौं ओर ~ झुड-झुड बहु आये सा० ल० १०१ ।

व्यास देव दे० व्यास . नारद ~ सौं कह्यौ ७/८ ।

व्याहत विवाह करा देने मे बानवृष्टि, स्रोनित करि सरिता ~ लगी न वार ९/१०८ ।

व्याहन विवाह करने के लिए · सूपनखा वन ~ आई ३३६१ ।

व्याहि विवाह करके . प्रद्युम्न ~ निज पुर सिधारे ४१९६ ।

व्याहु विवाह · तजे किए ते ~ ३५९० ।

व्याहौ विवाह करो · ~ वीस धरौ दस कुबिजा ३९६७ ।

व्युत्पन्न व्युत्पन्न, निपुण : सर्व कला ~, सुघर अति १३५३ ।

व्यूह-समूह व्यूह के समूह (मोर्चाबन्दी) का निदरे ~ स्याम-अँग, पेषि पलक नहिं पारत २३८३ ।

व्योम[1] १ आकाश इत धरनि उत ~ कें विच गुहा कें आकार ४०७ । २ आकाश से : बहु विधि ~ कुसुम सुर वरषत ४ । ३ आकाश मे : ~ विमान महा छवि छावत ९/१६७ ।

व्योम[2] दे० व्योमासुर . ~ प्रलब, कस, केसी इत, करत जिअनि की घात ४०६९ ।

व्योमासुर कस का एक सेवक जो मयासुर का पुत्र था । यह कस की आज्ञा से श्री कृष्ण को मारने गोकुल गया था, परन्तु श्री कृष्ण द्वारा स्वय ही मारा गया : सिसु है ~ तहँ आयौ १३९७ ।

ब्यौंकि निकाल फेंक . बाहर ~ गहोंगौ १९४।

ब्यौंत¹ कपडे की काट · तन भयौ ~ विरह भयौ दरजी ३४०१ ।

ब्यौंत² उपाय, साधन : देखति नहीं ~ जीवे कौ ३९३७।

ब्यौंतत काटे जाते हुए · ~ वसन जिमि ४२१७।

ब्यौंम आकाश मे . ~ विमाननि भीर ९/२६ ।

ब्यौरो ब्योरा, विवरण · सूर ~ काहि सुनायौ २००६ ।

ब्यौरैं¹ ब्योरा अरु ताकौ ~ समुझाऊँ ३/१३ ।

ब्यौरो² भेद : ऊँच नीच ~ न रहाइ १/२३० ।

ब्यौसाइ व्यवसाय सूरजदास दिगंबर पुर तें रजक कहा ~ ३९५७ ।

ब्योहार १ व्यवहार, वर्ताव । २ काम काज, काम-धधा · गृह ~ तजे आरज-पथ, चलत न सक करी ६५९ । ३ रीति, परपरा वसुद्यो कुल ~ विचारि ३०९३ ।

ब्योहारत व्यवहार करते है : ओछनि हू ~ १/१२ ।

ब्यौहारें व्यवहार को कहिऐ काहि सुनै कत कोऊ या ब्रज के ~ ३९४२ ।

ब्रजचद कृष्ण का लखि ~ चद मुख राधे सा० ल० ६ ।

ब्रज-नागर कृष्ण को : ल्याई तुरत जाइ ~ २२१५ ।

ब्रज-नागरि ब्रज की चतुर स्त्रियाँ · मिलि ~ मगल गावति ३३ ।

ब्रजपतिहि ब्रजपति नद को वरुन-पास तै ~ छन माहिं छुडावै १/४ ।

ब्रज-पालि ब्रज गाँव मे पुहुप वेगि पठऐ बनै जो रे वसौ ~ ५८९ ।

ब्रजबास ब्रज गाँव मे धरनि आकास लौं ज्वाल माला प्रवल घेरि चहुँ पास ~ आयौ ५९७।

ब्रजबासहि ब्रज के निवासियों से सूर स्याम हमरे ~ मानत नात लनात परि० १/१७१ ।

ब्रजबासि १ ब्रज मे निवास करने वाले सग वाल ~ २९०७ । २ ब्रजवासियो का आजु ~ वसेरा ८४१ ।

ब्रज-बासिन पुं० ब्रज के निवासियो के/का ~ इतनोइ हियो है ३८०३ । **२ स्त्री०** ब्रज की निवासिनी स्त्रियों में ~ की वलिहारी ४०५३ ।

ब्रज बासिनि १ ब्रज वासिनी स्त्रियों को ते अब दु.ख देत ~ ४०१३ । २ ब्रज के निवासियों : ~ कौ दुख बिसराऊँ ५५३ ।

ब्रज-बासिनी १ ब्रज निवासिनी युवतियाँ · ~ करतिं अनुमान नहिं पार पावैं १९११ । २ ब्रज मे रहने वाली जोग समाधि कहा हम जानैं ~ अहीर ३८४५ ।

ब्रजबासियाँ ब्रज मे रहने वाले लोग अपनैं अपनैं टोल कहत ~ ८४१ ।

ब्रज-राज १ ब्रजेश श्री कृष्ण : जागहु हो ~ हरी ४०४ । २ ब्रज के राजा, नद . तुम ~ वडे के ढोटा १९३१ ।

ब्रजहि १. ब्रज को ही : वरषत चाहत ~ वहाइ ८७८ । २ ब्रज मे . ~ पूतना आई ५२ । ३. ब्रज मे ही : ~ बसत सब जनम सिरानौ ५२९ । ४ ब्रज को · ~ चलौ आई अब साँझ ४७२ ।

ब्रजहीं ब्रज मे ही : इनकौं ~ क्यों न बुलावहु २१६४ ।

ब्रजही ब्रज की ही आगे आवत ~ तन कौं ९३२ ।

ब्रत १ ब्रत, उपवास । २ पूजा को सुरपति कौ ~ भग (कियौ) ८६७ । △ ~ **लीन्हौ** सकल्प या प्रतिज्ञा की है ~ — दृढ गिरिवरधारी १९०२ ।

ब्रतधारी १ ब्रतधारी, दृढप्रतिज्ञ : भीषम, द्रोन करन ~ १/२४८ । २ दृढ व्रतियों के लिए : यह तौ वेद उपनिषद मत है महापुरुष ~ ३९०१ । ३ ब्रत धारण करने वाली हैं/कर लिया है हमतौ सीस जोग ~ ३७४६ ।

ब्रत्तात वृत्तात, समाचार कह्यौ सकल ~ सुनाइ ११/३ ।

ब्रह्मंड ब्रह्माड इक-इक रोम बिराट किए तन, कोटि कोटि ~ ४८७ ।

ब्रह्म डा ब्रह्माड . इक इक रोम कोटि ~ ९५१ ।

ब्रह्म १. ब्रह्म । २ ब्रह्मा । ३ ब्राह्मण ~ वेष आयौ अति व्याकुल ९/१२२ ।

ब्रह्म अंसी ब्रह्म के अश कृष्ण ने काँधे गजदत धरे सूर ~ ३०७४ ।

ब्रह्मकीट दे० ब्रह्मा कीट ।

ब्रह्मचारी पिता माता मात ब्रह्मचारी (शुकदेव) उनके पिता (व्यासदेव) उनकी माता (मत्स्योदरी सरस्वती) उसकी माता =मछली . ~ नीतन जोर सा० ल० १०५ ।

ब्रह्मद्वार ब्रह्मरध्र ~ सिर फोरिकै निकसे गोकुल राइ ४३१ ।

ब्रह्मनाद सुर सग ब्रह्मनाद = ओऽम के 'अ' सुर के साथ = असुर=स्वर रहित अर्थात् मौन . भृग यूथ चतुरानन तनया ~ सारा० ९३९ ।

ब्रह्मन्य अनन्य ब्रह्म हो, परब्रह्म हो : विदित विरद ~ देव तुम करुनामय सुखदाई परि० १/१ ।

ब्रह्म पुत्र ब्रह्मा के पुत्र (नारद) : ~ तन तजि सो भयौ ७/८ ।

ब्रह्मबान ब्रह्मास्त्र की . ~ कानि करी वल करि नहिं बाँध्यौ ९/९७ ।

ब्रह्मलोकहि ब्रह्मलोक मे ही : ~ पहुँचाए ४३७ ।

ब्रह्म-सुख ब्रह्मानद सूरदास प्रभु की यह लीला मिथ्या ~ धोउ सा० ल० ६३ ।

ब्रह्म-सुता ब्रह्मा की पुत्री सरस्वती या वाणी : ~ अकुलानी

सारा० ९५७।

ब्रह्म-सुता सुत ब्रह्मा की पुत्री (सरस्वती) के पुत्र = राग = प्रेम पूर्वक : ~ पट रज परमत मारा० ९६१।

ब्रह्महि ब्रह्म के . धनि जसुमति ~ अवतारी ३९१।

ब्रह्मांडहु ब्रह्मांडों मे भी . नहिं बैकुंठ अखिल ~ ब्रज बिनु सब कृत क्लेस ४०७८।

ब्रह्माकीट ब्रह्मा से लेकर कीट (आदि के) ~ आदि के स्वामी ८९४।

ब्रह्मादिकहूँ ब्रह्मा इत्यादि देवता-गण भी काल बली तै सब जग कॉप्यौ ~ रोष १/५२।

ब्राता पतित, नीच अथवा ब्रात = बरात, समूह येई हैं सुरपति सुर ~ ९४८।

ब्राह्मन ब्राह्मण।

ब्राह्मननि ब्राह्मणों : दियौ ~ कौं तिन माष ४/५।

ब्रीडत लज्जित होते हो : कत ~ १/१३६।

भ

भँई हो गई सबहीं दिशा ~ अति आतुर सारा० २२७।

भंग क्रि० स० १ खंडित मष ~ जानि कै १/१००। २ तोड, विनाश . दुरजोधन कौ मान ~ करि १/३७। ३ अग-भग . कर्‍यो निमाचर ~ ९/८३। वि० टेढी चारु हास विलास भृकुटी ~ ६२७। पुं० १ बाधा, विघ्न परत भजन मैं ~ १/३३२। २ पृथक्, अलग होत न कबहूँ ~ २२८४।

भंगनि भगिमा . भँवरज बर भ्रुव ~ कौ १४६५।

भंगा भगिमा भँवर परत मानौ भ्रुव ~ २४५४।

भंजन क्रि० स० नष्ट करना . ~ चाहत प्रान मा० ल० २६। वि० नष्ट करने वाला संकट ~ ४९८।

भंजि गिराकर, तोडकर : विटप ~ जमलार्जुन तारे ३८६।

भंजे नष्ट किये : सुदामा दारिद्र ~ १/१७६।

भँटा बैंगन (भाँटा) . भरता ~ खटाई दीनी १०१३।

भँडाई भँडैती, उपद्रव काहू के घर करत ~ ३४०।

भडारनि भडारों को ~ भरौं ४/१०।

भँडारा भँडार/खजाने वाले : जो माँगहु सो देहु तुरतही हीरा-रतन ~ ८/१४।

भँवत चक्कर लगाता है . ~ भ्रमर भ्रम जाल री १४०।

भँभार भभक · ~ धुँधार करि ५९६।

भँमीरी एक कीडा . उडत ~ तुम पकरी जाइ ३/५।

भँवर[1] भौंरा (भ्रमर) · हम जानै तु ~ रस भोगी ३६८७।

भँवर[2] गड्ढा : नाभि ~ त्रिवली तरग गति २१८४।

भँवर[3] जल प्रवाह मे चक्करदार घुमाव अब भ्रम ~ पर्‍यौ ब्रजनायक १/२१३।

भँवर[4] शिलीमुख, बाण . ~ मग उड जावै मा० ल० ७४।

भँवरज भ्रमर के बच्चे ~ बर मुख भगनि कौ १४६५।

भँवरि रोमावलि ~ भाल भृकुटी पर कुमकुम १७७७।

भँवरी रोमावलियों का एक विशेष प्रकार का घुमाव · भृगु - ~ भ्रम का नामै १/६९।

भँवहि भौंहों द्वारा · जोबन ~ निवारन २३८३।

भँवै घूमता रहे भँवरा ~ भजि केलि भूल २८३०।

भईं हो गई हैं हरि के विरह छीन ~ कंधी ४०४४।

भइ १ हुई थी नदी ~ भरि पूरि ५। २ हुई राजा कह्यो, कहा ~ दई ९/३। ३ हो गई या हो गई है अब ~ कुबिजा मीत ३८१७। ४ होती जा रही है दिन दिन हीन छीन ~ काया १/९८। ५ होकर : तबहीं त व्याकुल ~ डोलति १८७६। ~ गिरा अकास आकाश वाणी हुई . तब — ~ अस्तुति करी ११७५। ~ भीनी भीग गई स्वेद सलिल ~ — ४१०८। ~ भीर भीड हुई (भीड हो गई) . दुहूँ ओर ~ — ४१८८। ~ लूली टूट गई भुजा ~ — २७४१।

भई[1] १ हुई · हम न ~ वृन्दावन-रेनु ६६०। २ बन गई थी बधिक की मृगिनी ~ ३८६५। ३ होकर आनदित ~ गोपी गावति चहर के ३०। ४ बन गई है, हो गई हैं ~ जाइ वे स्याम सुहागिनि २४०५।

भई[1] १ हुई · इनमैं एकौ तौ न ~ १/५०। २ हुआ . मोत कछु न ~ री माई १८७६। ३ हो गई टेरि टेरि मैं ~ बावरी ४६२। ४ होने पर अब मसुके ~ जाग १६१६। ५ होकर : तन त मौन ~ रहा २३८७। ६ हो गई है . ऐसी ~ सयानी १७००। ७ हो गई हूँ कहा करौं मैं ~ बिहाल २३१७। ८ आई, लगी अहो न लाज ~ तेरे मन ३१३९। ९ उत्पन्न हुई नन करुना हरि हृदय ~ ११२०। १० धारण किया इक ~ गोपाल की वपु ११११। ~ गई जो कुछ हुआ ~ — ये नैन न जानत २३१०। ~ हौं हो गई हूँ बकत ~ — क्रम २९५। ~ सु भई जो हुआ सो हुआ : ~ — १/८०।

भएँ होकर : काहे कौ व्याकुल ~ टोलत ८७१।

भए १ हो गए · तब हरि ~ अतरधान ११००। २ हुए मोहिं ~ कुमगुन घर पैठत ७४०। ३ होकर तुम जेंवहु निहचिंत ~ ४३८। ४ होने पर · वृद्ध ~ बुधि प्रगटी मोकौं १/११८। ५ हो गए हो · सुनहु स्याम अब तटे ~ तुम २२०। ६ हो गए हैं ये लोचन लालची ~ री २३५९। ७ पैदा हुए प्राचीनबर्हि भूप इक ~ ८/१२।

भए १ होने पर : गुरु आए ~ भोर ४२३१ । २ होने से : कहा अमर पुर वास ~ १०४६ । ३ हो गए हैं बड़े ~ यह देखौ ३६५९ ।

भकरुड जला हुआ सिर रुंड ~ झुकि परे धर धरनि पर ४१८३ ।

भक्तनि १ भक्तो को जनम जनम ~ सुखदायक ९१३ । २ भक्तों के · दीन बंधु ~ भय हारी ११ । ३ भक्तो : निज ~ की सहत ढिठाई १/३ ।

भक्तबच्छल भक्तों पर कृपा करने वाले · ~ कृपा-करन, असरन-सरन ८/९ ।

भक्त-बछल भक्त-वत्सल ~ बानौ है मेरौ ४ ।

भक्त-बछलता भक्तों से प्यार करने का गुण सूरदास प्रभु ~ प्रगट करी ११८१ ।

भक्तबत्सल भक्तो के प्यारे ~ नाम भक्त गावै ३०५१ ।

भक्तहि भक्तो को सत्य ~ तारिबै को १/१७६ ।

भक्ता भक्त : नारद आदि हरि ~ १८६१ ।

भक्तिहि भक्ति को कृपा भई जो ~ पावै १२९ ।

भक्ष भक्षण, खाना · एक मीन ने ~ कियो तब हरि रखवारी कीनी सारा० ६९३ ।

भख आहार, भोजन नीरज-सुत-बाहन कौ ~ १२०२ ।

भखत बोलती तजि सुभाइ सु ~ नाहीं परि० १/१९२ ।

भखि खाकर : दादुर जल बिनु जियै पवन ~ ३९८५ ।

भखियाँ खा/ग्रस ली गई हों बिरह ग्राह जनु ~ ३२४० ।

भख्यौ खा लिया . बिंबहिं कीर ~ २७२९ ।

भग स्त्री योनि इंद्र ~ की तोहि इच्छा भई ६/८ ।

भगतनि भक्तो को यातैं होत अधिक सुख ~ ४३०२ ।

भगति भक्ति भाव ~ नहि नेकहु जानी १/१४९ ।

भगदत्त नरकासुर का पुत्र, प्राग्ज्योतिषपुर का राजा जो कौरवों की ओर से लड़ा था इत ~ द्रोन भूरिस्रव १/२६९ ।

भगवत १ भगवान् : अज अनत ~ धरनि धर २९१३ । २ भगवान् को जब भगत ~ चीन्है १/७० । ३ भगवान् के : सूरदास ~ भजन बिनु २/३ ।

भगवती[1] गगा . त्रिभुवन-हार सिंगार ~ ९/१२ ।

भगवती[2] देवी ~ तिन्हे दीन्ही दिखाई ८/११ ।

भगाइ, भगाई भाग . जहँ तहँ गए ~ २४० । २ भगाकर कै बालकनि ~ ५८९ ।

भगात भागता है जैसे चोर ~ २२६५ ।

भगाने भाग गये तब हमकौं ये छाडि ~ २३९७ ।

भगायौ भगा दिया चक्र ताकौ ह्याँ तैं ~ ४२०७ ।

भगार कोयले की राख (के समान) मल्ल सुभट परे ~ करन के रिमाने ३०७७ ।

भगिनी बहन लरिहैं हम सौं ~ माई १४१७ ।

भगी भाग गई नींद जगाइ ~ ३२६५ ।

भगीरथ[1] अयोध्या के राजा दिलीप के पुत्र, जिनकी तपस्या से गगा पृथ्वी पर आई थीं . बहुरि ~ तप बहु कियौ ९/९ ।

भगीरथ[2] भागीरथी (गगा) का . गौतम सुता ~ धीवर,सबहिनि तैं सुंदर सुकुमारी ४२०२ ।

भगुए गेरुए रग से : सोभित चीर दच्छिनी जिहिं अग, ~ तिन्ह रँगावै परि० १/१८८ ।

भगे भाग गये : मैं जानति दुख दूर ~ १७८१ ।

भगौहै भगुए रग के चीर हम करिहै ~ ४०५५ ।

भग्न टूटा हुआ : ~ भाजन कठ १/३२१ । ~ **करत** तोड़ता है ~ — अग भट ज्यौं ३९३६ ।

भग्यौ भागा, दौड़ा अस्वत्थामा भय करि ~ १/२८९ ।

भच्छ १ भोजन : सिंह कौ ~ सृगाल न पावै ९/७९ । २ खा ~ करि उदर पुराऊँ ४९२ । ३ खाने, भक्षण करने काम ~ हित जाहिं ४०३७ ।

भच्छ-अभच्छ भक्ष्याभक्ष्य . ~ सबै सो खाई ६/४ ।

भच्छति खाती है, भक्षण करती है अभच्छ ~ १/५६ ।

भच्छ बिधि बिधि=ब्रह्मा=अज (बकरा) उसका भोजन, पत्ते या पत्तो ~ के खरक फरकत सा० ल० ३० ।

भच्छि खाकर ~ अभच्छ, अपान पान करि १/१४० ।

भच्छौ खाया, भक्षण किया राधा क्रोध बिष काहे ~ २८१० ।

भजत[1] भागते है, दौड़ते है . ~ सखनि समेत मोहन देखि ब्याई गाय ४९८ ।

भजत[2] अनुसरण करता है : पजा पथ प्रपच नारि पर ~ सारि फिरि मारी १/६० ।

भजत[3] भजते है, स्मरण करते हैं सूरदास भगवत ~ जे १/१८ । ~ **अवगाहीं** भजते हुए मग्न होते है . तिनकी भक्ति ~ — ४२१२ ।

भजनहु भजन से ही दास दासी स्याम ~ जिये ३१०१ ।

भजनी १ भजन करने योग्य यह प्रताप दीपक सू निरतर लोक सकल ~ २/२८ । २ भजन करने वाला (शरणागत) सबैं भई नागर ~ ९९७ ।

भजहु भजो . हरि तजि ~ अकास ३८१३ ।

भजाइ हटा लेता है · कीर पिंजरैं गहत अँगुरी ललन लेत ~ ४९८ ।

भजायौ भगाया इहि सब तुम्हरौ गाउँ ~ ३४० ।

भजि[1] १ भज कर, स्मरण कर · श्री गुपाल ~ प्रमुदित सूरदास २६६६ । २ भजो लोचन, मन, इंद्री हरि कौं ~ २२५६ । ~ **भजि** प्रशसा करके . जे ~ — ग्वालनि सग खाई १२१३ ।

भजि[2] १ भाग . तब ~ चले मुरारी २६५ । २. भाग कर .

सुनहु सूर जे ~ उबरे हैं २३३६ ।
भजिबौ भजना, भजन : जिहिं तन हरि ~ न कियौ २/१६ ।
भजियै[1] १ भजन कीजिए : ~ नाहिं सदा लव लाइ ७/२ । २. भजन करती है : तजि भरतार और जौ ~ सो कुलीन नहिं होई १०१७ ।
भजियै[2] भागा जाता है : जैसें बरत भवन तजि ~ २२५० ।
भजियौ स्मरण किया . ब्रज बनिता ~ मोहि नारद ४३०२ ।
भजिहैं भजेंगी : जोग उलटि लै जाहु ऊधो ~ नंदकिसोर ३५२२ ।
भजीं १ स्मरण किया : जानि लायक ~ तरुनी ९९४ । २ प्रेम किया • अखिया ऐसी ~ स्याम कौं २४०३ ।
भजी[1] १ भजन किया : नीकैं ~ नंदनंदन कौं १८५९ । २ प्रेम कर ही लिया है : अब तो सूर ~ नंदलालहिं १६५२ ।
भजी[2] दौड पडीं : जैसें नदी सिंधु कौं धावै, वैसेंहि स्याम ~ १६३१ ।
भजे[1] १ भजन किया, स्मरण किया : जे जन सरन ~ वनवारी १/२० । २ शरण ली, आश्रित हुए • विषयी ~ विरक्त न भेए १/१९८ । ३ भजने से : नस्त्व ~ वैसी ह्वै जैहौ ३५३९ ।
भजे[2] भागे : ~ कुंज की खोरी २६७ ।
भजैं[1] १. भजते हैं : श्री नारायण कौं नित ~ ९/२ । २ भजन करने से : ताके ~ सदा सुख होइ ७/२ ।
भजैं[2] भागें, दूर जायें . ते क्यौं ~ जे पाली ६१३ ।
भजै १ भजता है हरि न ~ सो नरकहिं जाइ ७/२ । २ भजे . चित दै ~ कौनहुँ भाउ १८६० । ३ प्रेम करके : जैसैं नारि ~ पर पुरुषहिं २३१५ । ४ भजती है, ग्रहण करती है : विरहिनि विरह ~ पा लागा ३९८५ ।
भजौं १ भजता हूँ . जो मोहिं भजे ~ मैं ताकौं ४१५९ । २ भजन करूँ, स्मरण करूँ : तुमहिं समान और नहिं ढ्जौ काहि ~ हौं दीन १/१११ ।
भजौ स्मरण/भजन करो दृढ विस्वास ~ नंदलालहिं १/७४ ।
भज्यौ[1] भजन किया : ~ न श्रीपति रानौ १/४७ ।
भज्यौ[2] १. भागा : जरासंध जीव लै ~ रन खेत तें ४१८३ । २ भाग आया : तातैं ~ अगाऊँ ४१२६ । ३ भाग जाता है • नरकौ ~ नाम सुनि मेरौ १/९६ ।
भट वीर. योद्धा : बहुरि उठे सम्हारि ~ ज्यौं २४५९ ।
भटकत १ मारा मारा घूमता है : ~ फिर्‍यौ स्वान की नाईं १/१५५ । २ भटकते हैं ~ उपमा देत परि० २/६४ ।
भटकि १ भटक कर, भूल कर • ~ फिरयौ बोहित के खग ज्यौं ३७४४ । २ भटक/भूल (गये) • स्याम छवि लोचन ~ परे २३११ ।

भटकी भूली : मुव नख लिखैं कछू तिलहू न ~ री २७९७ ।
भटके १ भटकते हुए : ~ फिरे द्वार द्वारनि सब २२२८ । २ भटक गये : ऊधौ भूलि भलैं ~ ३६६७ ।
भटकें भटकते : विन विवेक फिर्‍यौ ~ १/२९२ ।
भटकै मारा मारा फिरता है : ऐसौ प्रभू छाँडि क्यौं ~ अजहूँ चेति अचेत १/२९६ ।
भटक्यौ १ भटक गया : आवत जात बीचहीं ~ ९७१ । २ भटका : नाभि-कमल मे बहुतहिं ~ तऊ न पायो पार सारा० ११ ।
भटनि वीरों : असुर के ~ कौ गरुड लाग्यौ गिलन ४१९४ ।
भटभीर भिडंत मे : गहे सुभुज ~ १९८६ ।
भटे भटके बहुतै भरम ~ परि० १/१६१ ।
भद्र[1] दाढी और केशों का मुंडन, मुडाये : पूछत ~ भए क्यों भाइ ९/५१ ।
भद्र[2] कल्याण • ~ करि सीस शिव दान दीन्हौ ४१८३ ।
भद्र[3] सुन्दर ~ बृहद वन ग्राम सारा० १०८९ ।
भद्रा[1] श्री कृष्ण की एक पत्नी जो केकय राजा की पुत्री थी ~ व्याहि आप जब आये सारा० ६५७ ।
भद्रा[2] द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथियों का एक नाम : ~ भली, भरनि, भय हरनी ३८२८ ।
भद्रासन सात द्वीपों मे से एक द्वीप . हिरनमै रमयक ~ भरत खंड सुखपाल सारा० ३३ ।
भनक १ धीमी आवाज : स्रवन ~ परी ललित के तान की २०३९ । २. भनक : ~ सुनी कस कहि पठायौ २९५९ ।
भनकैं चर्चाएँ (निन्दा) : जिनकी घर घर हैं ~ २३९९ ।
भनित अर्थ कही हुई बात, उक्ति ~ भूषन उनही हित कीन सा० ल० ५८ ।
भने, भनें बोले : अमरनि नभ जै जै धुनि ~ १०५१ ।
भव्य सुन्दर, शुभ : भागीरथहिं ~ वर दैन ९/१२ ।
भभकंत प्रचंड • परैं भहराइ ~ रिपु धाइ सो ९/१२९ ।
भभकत फडकता था : ~ तरफत स्रोनित मैं ९/१५९ ।
भभकि उबलकर, फूटकर . ~ कै दंत तैं रुधिर धारा चली ३०९५ ।
भभरिकैं विस्मय में पडकर, घबरा • सबनि मटकिया रीती देखीं तरुनी गई ~ १६२६ ।
भय भीति, दीवार . तनु अनुगामी मनिमय ~ के सा० ल० ३ ।
भयउ १ सम्पन्न होगा : अब ~ अमर सुभ काज २६ । २ हुआ : जो नृप कैं मन ~ कुभाउ १/२९० ।
भयनि डर से : बहुत ~ सौं राखि लिए ३२०५ ।
भयभीता भयभीत, डरा हुआ • भयौ जुधिष्ठिर अति ~ १/२६१ ।
भयहारी भय को दूर करने वाले : दीनबंधु भक्तनि ~ ११ ।

भयहारे भय को दूर किया : गज-चानूर हते, दव नास्यौ, ब्याल मथ्यौ ~ १/२७ ।

भयहूँ भय से भी • ~ करि कोउ लेइ जो नाम ६/४।

भया हो गया : मग निरखि कहैं ~ भेरे २४४३ ।

भयान भयानक, डरावनी : सुनि कै सिंह ~ अवाज ५/३ ।

भयावन भयानक : बौडर महा ~ आयौ ७८।

भये होने पर : निसि ~ ४/१२ ।

भये[1] १ हो गये : जब हरि जू ~ अतर्धान ३/४। २ हुए, हुआ मगलाचार ~ घर-घर मे सारा० ५३४। ३ होने पर भोर ~ निज धाम चले सारा० ९०१ ।

भये[2] उत्पन्न हुए बालक दस जु ~ वाके सारा० ८४८।

भयो, भयौं हो गया हूँ : उनको ग्यान सुनत हौं सठ ~ ४१३८ ।

भयो, भयौ[1] १ हुआ : ~ परम सतोष मिले सौं ४१६० । २ हुआ है : आजु कछु घर कलह ~ री २४२९ । ३ प्राप्त हो गया • मोहिं ~ उपदेस ४०९५ । ४. हो गया हूँ : तव ऊपर प्रसन्न मैं ~ ९/३ । ५. हो जाता है : पतैहूँ पर नीर निठुर ~ ३९१९ । ~ स्रम मेहनत पडी मदराचल उपारत ~ — बहुत ८/८ ।

भयौ[2] वनकर . मन भेद ~, यह लयौ अँकोर २३७६ ।

भर भार, बोझ . भू ~ हरन प्रगट तुम भूतल १/२१५ ।

भरकात भडकाते हो . मति कोउ ठग ~ ३७१२ ।

भरत[1] १. भरते • ईहिं लालच अँकवारि ~ हो १५५४ । २ (पिंजरे मे) भरते हुए : नव बिहगम ~ फरफराने ३०६० । △ ~ हियौ : हृदय भर आता है, प्रसन्नता (या करुणा) से पूर्ण हो जाता है • नैन ढरत नहिं ~ — ३११३ । ~ हैं पानी • आँसुओं से भर जाते हैं, आँसू आ जाते हैं . मेरैं नैन ~ — ३११५ । दुख ~ कष्ट झेलते हैं . मेरे हित इतनौ — ~ १/२२६ । बिथा ~ दिन दिन रात दुःखी होता है : सर — ~ — बिनु सोइ नीर सुखाइ २७७६ ।

भरत[2] वहन करता है हठि क्रम भार ~ १/५५ ।

भरत[3] कैकेयी से उत्पन्न दशरथ के पुत्र : रावन अरि कौ अनुज बिभीपन ताकौं मिले ~ की नाईं १/३।

भरत[4] ऋषभदेव के पुत्र, जड़भरत : - ~ दया ता ऊपर आई ५/३ ।

भरत-खड पृथ्वी के नौ खंडों मे से एक : भरत सो ~ कौ राव ५/३ ।

भरतहिं भरत को : नृप यह सुनि ~ सिर नाइ ५/४ ।

भरतहुँ भरत (से) भी : ~ तैं हमकौं जिय भावत ९/१६७।

भरतहु भरत भी : ~ दै पुत्रनि कौं राज ५/३ ।

भरता भरण-पोषण करने वाले के जो कोउ ~ भाव हृदय धरि ११७५ ।

भरतार १ पति काम अति तनु दहत, दीजै सूर हरि ~ ७६७ । २ पति को . तजि ~ और जौ भजियैं १०१७ ।

भरति १ भरती है . कबहुँ भुज अक ~ २१४९ । २ भर जाता है, छा जाता है . मैं मन ~ अतक ६०५ । ३ भरती हुई, : पग-पग ~ उसाँसी १०९० ।

भरतु भरता, उठाता : नाहिन निज भुज ~ २८०४ ।

भरतौ भरता : मन पिटारि लै ~ १/२०३ ।

भरन[1] भरने • जमुना जल कोउ ~ न पावै १४०३ ।

भरन[2] पालन-पोषण करने वाले . बिस्व ~ ६२४ ।

भरनि[1] झलक : अनुहरत भूपन ~ १०९ ।

भरनि[2] भरणी नक्षत्र : भद्रा भली ~ भय हरनी ३८२८ ।

भरनी भर लेती है • हरषि जसोमति अकम ~ ४४ ।

भरम १ भ्रम, भ्रांति . जाकौ ~ करत हौ राजा ४ । २ भ्रम के : ~ हिंडौरैं भूले २३७१ । ३ भ्रम का : ~ जवनिका फाटी २५४ ।

भरमत १ चक्कर लगाते हैं . वहत पवन, ~ ससि दिनकर १/१६३ । २ भटकता : मन जहँ-तहँ ~ भाग्यौ १/७३ । ३ घूमता रहता है . तेली के बृष लौं नित ~ १/१०२ । ४ चकराती हो . एतै मैं कत ~ ४०२२ ।

भरमति १ भ्रमित हूँ जा कारन हौं ~ बिहलि ३१७७ । २ भटकती बिरह बिबस चहुँधा ~ हे १६७७ ।

भरमन घूमने : दृग ~ नहिं जात ३६८९ ।

भरमर भ्रमर, भँवरा • ~ की भ्रमरी २३१५ ।

भरमाइ[1] १ भ्रम मे डाल कर बहुरि आइ ~ ४१६३ । २ भ्रम मे पड गई • सुनत सखी ~ १७३६ । ३ भ्रम मे पड (गया था) . जिय गयो ~ १६२५ ।

भरमाइ[2] घूम रही है नद-गृह ~ १६७३ ।

भरमाई १ भ्रमित हो (रही है) जननी रही जिय मैं ~ १७१३ । २ भ्रमित हो गई /हुई : अग सिथिल छवि देखिकै जहँ तहँ ~ २६५१ । ३ भ्रमित की हरि मति तिनकी यों ~ ७/७ ।

भरमाऊँ घूम/भटक रहा हू सूर जगत ~ ११७७ ।

भरमाए १. भ्रम या आश्चर्य मे टाल दिया : तरुनी मन ~ ६३१ । २ भ्रम मे पड गये . वहु तप कियौ मारकडे द्विज आइ सिधु ~ ३८९४ ।

भरमात भ्रम मे पड जाती है . एक अग को पार न पावति चकित होइ ~ १८४६ ।

भरमान्यौ भटकता फिरा जन्म जन्म यौं हौं ~ अभिमानी बेकाज १/१५० ।

भरमाया भटकाया . जिन यह सकल लोक ~ १/२८४ ।

भरमायौ भ्रम पैदा किया : जुवतिनि क मन यह ~ १०१० ।

भरमाल भरमार, अत्यधिक . मनौ थल नव कमल अकुर विकस है ~ परि० २/८० ।

भरमावत १. भ्रम मे टालते हो · केहि कारन हमकौं ~ ४/९ । २ भ्रम मे टालते हैं : तहँ तहँ अति ~ री २०६४ ।

भरमावहु भ्रम मे पड़ते हो काहे कौं ~ १७९ ।

भरमावैं भटकाते हैं वृथा जीव ~ २२५६ ।

भरमावै भ्रम मे डालती है . तुम से कपट करावत प्रभु जू मेरी बुधि ~ १/४२ ।

भरमाही १ चकित हो गई · सूर स्याम छवि निरखि कै जुवती ~ २२१७ । २ भटकाते रहते है जे नख-चद्र सनक मुनि व्यावत, नहिं पावत ~ १८०६ ।

भरमि भटक (कर) लख चोरासी जोनि ~ कै १/६५ ।

भरमित चकित : ~ भयो देखि मारुत सुत ९/७५ ।

भरमे भ्रम म पड गये मोच मुख देखि अक्रूर ~ २९२९ ।

भरम्यो भटका : फिरि-फिरि जोनि अनतनि ~ १/१५६ ।

भरयौ भरा हुआ हो सुर मुख अमृत ~ २८१४ । △ **रोष** ~ मन्ला उठा है : लघुता जानि जु — ~ ८६६ ।

भरहु भरो (रग दो) ~ भरहु सखि स्यामाहीं, पीत पिछौरी पाग २८६४ ।

भरहू भर भी : छिन ~ अतर नहिं धरै ४/१२ ।

भराइ १ भराकर कचन कलम ~ ४०९५ । २ भरवा : मनु उभै अभोज-भाजन लेत सुधा ~ ६२७ ।

भराई¹ भरा हुआ · मोतिनि थार ~ १८ ।

भराई² पूरी हो गई · वदि जु गए अवध्यौऽर ~ ३२१७ ।

भराए १ भरवा लिया · सुमन लै हरि फैंट ~ २६१५ । २ पूरी करेंगे · सुनहु सूर कछु मोल लेहिंगे, कछु इक दान ~ १५२९ ।

भरायौ भरते हैं अपनोइ उदर ~ २३६६ ।

भरावन भर गया है ब्रह्मादिक, सनकादिक, गगन ~ रे २८ ।

भरावै भराता है पौना भजन ~ १/१४२ ।

भरि¹ १ भरकर : दधि-फल दृव कनक-कोपर ~ ९/१६९ । २. पूरा करके : मेरौ ~ काज, मीच आपु कौं बुलायौ २९४४ । ३. भर/लगा (लिया) · पुत्र-कबध अक ~ लीन्हौ १/२९ । ४ भर, पूर्ण हो नैन नीर ~ आये ९/२६ । ५. भरे हुए : जल ~ कबहुँ न छाँडत ३५७२ । ६ भरा रहता है : जैसे छीप अमोल रतन ~ ३१०४ । △ ~ आँखि नेत्र भरकर, भली भाँति : अब कैं जो परचो करि पावौं अरु देखौं ~ — ९/१६४ । ~ रहे घेर लिया, छा गए : सघन विमान गगन ~ — ११८० । △ ~ भाँडौ बरतन-भर कर, बहुत अधिक बहुत भरोसौ जानि तुम्हारौ अब कीन्हे ~ — १/१४६ । ~ भरि १ भर-भरकर : ~ — चले सकट गिरि सम्मुख ८२५ । २ पकड़-पकड़ कर जुवतिनि घेरि लियौ हरि कौं तब ~ — धरि अकवारि १५३१ । ३. बार-बार, लबी, गभीर : ~ — लेति उसास ९/४५ ।

भरि² हानि पूरी करके : सब दिन कौ ~ लेउँ आजुहीं तब छाँडौं मैं तुमकौं १५०८ ।

भरि³ खूब धारण करके : करि असनान अभूषन अग ~ २४३८ ।

भरि⁴ बराबर, समान : जुग ~ जात घरी ६५१ ।

भरि⁵ तक, भर : सात दिन ~ बरसि ब्रज पर ८८२ ।

भरित भरे हुए : जल ~ सरवर २८४२ ।

भरिपूर १. व्याप्त हैं : भक्त-बछल प्रभु पतित-उधारन, रहे सकल ~ ४८७ । २ परिपूर्ण : जैसे शशि प्रगटत प्राची दिगि सकल कला ~ सारा० ३९० ।

भरिपूरि १. भरपूर : सिंह आगैं, शेष पाछैं, नदी भइ ~ ५ । २ परिपूर्ण हैं : प्रभु सबहीं ~ ४०२७ ।

भरियत १. भोग रही हैं सूर कौन जानै यह विपदा जो ~ करि प्रीति ३२८४ । २ भरी जाती है : स्वाति बिना ऊसर सब ~ ग्रीव रंध्र मत कीन्हौं ३५६३ ।

भरियौं भर लिया : हरषित प्यारी अकम ~ २६२० ।

भरिया भरे हुए : क्रीड़ा करत तमाल-तरुन-तर स्यामा स्याम उमँगि रस ~ ६८८ ।

भरियै भरा जाय, दूर की जाय : अब यह बिथा कौन विधि ~ ३६७६ ।

भरिहैं व्यतीत होंगे : कैसे कै ~ री दिन सावन के ३६१६ ।

भरिहौं भरूँगा : सदा प्रेम रग ~ सारा० १०९८ ।

भरिहौ भरोगे, कहोगे : सखि सखा की ऐसी ~ १५३२ ।

भरीं १ पूर्ण, युक्त : पिय पहिलैं पहुँची जाइ अति आनन्द ~ २४ । २. भरी हुई हैं : हरि अनुराग ~ ब्रज नारी २२१६ ।

भरी १ भरी है । २. भर ली : आपु स्याम रिसि करि अकम ~१५३१ । ३. भर गई . यह सुनत रिस ~ २४२० । ४ भरते/लगाते थे : आव्रत राधा पंथ चरन-रज, हित सौं अक ~ ३६३३ ।

भरीजै भरिए, भरा जाये : उदर ~ सीथिनि ४९० ।

भरु¹ भार, बोझ : इहि ~ अधिक सह्यौ अपनैं सिर ५७० ।

भरु² भर में : बन वीथिनि ~ पुर गलिनि, उमँग्यौ रग अपार २९०९ ।

भरुहाई चढ़ा/घमडी कर दिया है : सूर स्याम ~ याकौं १२७२ ।

भरुहाए भरमाए हैं : तुमकौं नद महर ~ १५२१ ।

भरुहाएँ भ्रम में : मैं ~ लागत हौं १४८३ ।

भरुहानी बौखला/फूल उठी : ओछी तिनकहिं मैं ~ १३०५ ।

भरुहाने इठलाते हुए, गर्व या अभिमान से भरकर : अब वे ~

फिरैं २२५३।

भरुहावत घमडी किये/बढावा दे रहे हैं स्याम इन्है ~ हैं २३२७।

भरुही एक पक्षी . ज्यौं भारत ~ के अडा ४१५९।

भरे १. पूर्ण, युक्त : अति अनुराग ~ २४७२। २. भरे हुए हैं, युक्त हैं : मोहन मोहनी रस ~ ११४५। ३ भर जाने : पेट ~ पर सोउ १/१८६। ४ भर गये, डूब गये, युक्त हो गये : सुनि यह स्याम विरह ~ २८११। △ स्रवन ~ कान भर गये या ऊब गये मधुकर मोर कोकिला चातक सुनि सुनि — ~ ३७६७।

भरे को (धन-सपति से) भरे (घर) का . मनौ ~ चोर री १३९।

भरै १, भरते है : ताही कौ अक ~ २८०३। २ भरे हुए को, जो भरा है उसको : रीतै भरै ~ पुनि ढारै १/१०५।

भरै[1] भरता है अपने कर सो मुखहि ~ ७६। २. भरती है पुनि पय अमा ~ ३९८६। ४- भर रही हो : सूरदास सुनत स्रवन सुधा सिधु ~ ६५२। ५ भर लेता है अनायास विनु उद्यम कीन्हे अजगर उदर ~ १/१०५। ६ भर लेते हैं, ले लते हैं . कबहुँक सुत कौ अकम ~ ६/५। ७ भर जाती है : सुनि रिमि अतिहि ~ २८२५। ८ भरा : दीन्हौ हार गरै, कर ककन, मोतिन थार ~ १७।

भरै[2] पालता है, पालन पोषण करता है . बिस्वभर सब जग कौ ~ २/२०।

भरै[3] १ भोगता है, पाता है बार-बार दुख ~ ३/१३। २ भोगेगी, पावेगी दैहौं साप महा दुख ~ १/२९१।

भरै[4] सहना पडा : अधिक सुरूप कौन सीता तै, जनम बियोग ~ १/३५।

भरैगो सहन करेगा, सुन पायेगा ऐसी बातनि कौन ~ ३६१९।

भरोइ युक्त, सहित : हौं वारी तव इदु बदन पर, अति छबि अलग ~ ५६।

भरोसै भरोसे (बलबूते) पर, सहारे : कै हमहीं कै तुमहीं माधौ अपने ~ लरिहौं १/१३४।

भरोसौं भरोसा, विश्वास, अवलब ~ कान्ह कौ है मोहिं परि० १/३१।

भरोसौ १ भरोसा, विश्वास : ~ कान्ह कौ है मोहिं २९७७। २ भरोसा है, सहारा है : ~ नाम कौ भारी १/१७६। ३. भरोसा हो, विश्वास करना ही प्रभु तेरौ बचन ~ साँचो १/३२।

भरौ २. भरूँ, करूँ का करि जोग ~ ३५५१। २ भर जाती हूँ . आनँद उमँग ~ १६६५। ३ भर दूँगा · तेरे सब भडारनि ~ ४/१२। ४ भरूँगी, तृप्त करूगी · दरसन नैन ~ री २१०२।

भरौंगी भर जाऊँगी या यह भरने लगेगा · रति-सुख भत ~ आलस २७०८।

भरौ[1] १ भरा हुआ है नख सिख ~ बिकारैं १/१८३। २ भरा रहता है : मैलौ नीर ~ १/२२०।

भरौ[2] मलो, पोतो · काजर हाथ ~ जनि मोहन १६०।

भर्त्ता पतियों को : गोधन ~ करे निरास ११८०।

भर्यौ १ भरा है, भरा हुआ है · दु:ख सरीर ~ १/१००। २ परिपूर्ण हू, भरा हुआ हूँ ~ कर्म विकार १/१२६। ३ भरे हुए हैं : तिनहूँ भेद ~ २२२५। ४ भर गया, हो उठा : बात सुनत रिस ~ महावत ३०५३। ५ भरता चोरी ~ न पेट १४६१। ६ भरकर : बोलत रोष ~ १३१६। ७ भर लिया, लगा लिया तुम उनको कठ ~ १८८२। ८ भरा हुआ, परिपूर्ण सूर अवगुन ~ आइ द्वारै पर्यौ १/११०। ९ भरा था सखि आगन सब भवन ~ री १८७२।

भल १ भली भाँति, भली प्रकार से . तबहिं बिदा ~ है हौं ३५, देव पितर ~ मान्यौ ३७। २ भला, कल्याण · ता पर पौढ चहत है आपन ~ सा० ल० ६४। ३ अच्छा . जीवन-मरन उनहिं ~ जान १/२८८।

भलाई १ कल्याण भला, अच्छाई : इनि बातिनि है नाहिं ~ १०११। २. अच्छाई है, भला है : मित्र द्रोह न ~ ३८५३।

भली १ अच्छी . ~ बुद्धि तेरे जिय उपजी ३९१। २ भली भाति, अच्छी तरह से : पति सेवा कछु करी न ~ ११८०। ३ अच्छा हुआ कि ~ स्याम कुसलात सुनाई ३८६८। ४. भली/सच्ची बात : अब मैं कहत ~ हौं तुमसो १५९४।

भलुका भाला मोह कमान तिलक ~ करि २४५५।

भले[1] वि० अच्छे स्याम ~ अरु तुमहुँ भली १९५६। २ क्रि०वि० खूब . तैं ही स्याम ~ पहिचाने १८४४। ~ जू भले बडे अच्छे हैं ~ — ~ मैं सखी धौखैं रही २२०६।

भलेहि १ भले ही : ~ मिले बसुदेव देवकी ३९९४। २ अच्छा करते हैं, अच्छा है . ~ माखन खात ३६०।

भलैं १ अच्छे . ~ सु दिन भयौ पूत २८। २. अच्छा . ऊधौ भूलि ~ भटके ३६६७। ३ अच्छा/ठीक (किया) . स्याम सौं हित ~ कीन्हौ १६४९। ४ भली भाँति, अच्छी तरह से . मेरी प्रकृति ~ करि जानति १६९८। ५ अच्छा हुआ कि अब हरि ~ जाइ पढि आए ३९९२।

भलैंहि अच्छा हुआ कि · मधुकर ~ आए बीर ३८८५।

भलो, भलौ[1] १ अच्छा : या जीवन तै मरन ~ है ३६०७। २. अच्छे हैं हरि तैं ~ सुपति सीता कौ ४००९। ३. अच्छे : ~ काम तैं सुतहिं पठायौ ३९१। ४ अच्छा है :

मधुप हमारी सौं कहौ, जोग ~ कै प्रेम ४०९५ । △ ~ बुरौ कहै भला बुरा कहे, जो चाहे कुछ भी कहे मदन मूरति कैं बस भई (अब) ~ — कोइ १४५७ । ~ पढ़ायौ अच्छी शिक्षा दी : नंद-घरनि सुत ~ — ३४० ।

भलौ[२] २ कल्याण, भला : इनकौ ~ होइगौ कैसें २२८३ । २ कल्याणकारी, हितकर : यह कोउ ~ नहीं अवतार ५८५ ।

भव १. संसार सो ~ तरि बैकुंठहिं जाइ २ । २ संसार के, सांसारिक : ~ त्रास तैं राखि लीजै १/१२० । ~ तरौगी : संसार (सागर) को पार कर लोगी, या पार हो जाओगी कत मानहु ~ — १०१६ ।

भव के बासा विश्व-व्यापी कृष्ण ने : दीन बचन सुनि ~ ९५० ।

भवननि १. घरों, भवनों में : ~ रहि सकौं न परि० २/२० । २ घर : एक नारि ~ ते निकरीं १००५ ।

भवनहि भवन में : जसुमति ~ आनि ४८७ ।

भवनहीं १ मकान मे, घर मे : फिरि फिरि अजिरहिं ~ १९६६ । २ घर ही . कौ तोहिं मिलै ~ माँझ २५३० । ३. घर मे ही : तुम कुल-वधू ~ नीकी ११८१ ।

भष आहार, भोजन मानौ हंस मोर ~ लीन्हे १६५ । **भषक** ~ भोजन का भोजन : — ~ विष खानि २०८६ ।

भषम जलवा, भस्म करा : काल जवन मुचुकुंदहिं सौं, हरि ~ करायौ ४१६३ ।

भषि खाकर : काकौ भूख गई बयारि ~ ३६०४ ।

भसम भस्म, राख : मनु मोहि जारि ~ कियौ चाहत ३३५१ ।

भस्म १ राख । २ भभूत : कहा स्नान कियैं तीरथ के, अंग ~ जट-जूटै २/१९ । ~ भरैं भस्म लगाती हैं : ~ — अंजन करैं २९१४ ।

भस्मी भस्म, राख . उज्ज्वल ~ खूली ३८१५ ।

भहराइ १ भहराकर : परैं ~ भभकत रिपु धाइ सौं ९/१२९, तरु दोउ धरनि गिरे ~ ३८७ । २ गिरते पडते हुए, हड़बड़ा कर : सकल सूर ~ भाजें ३३०१ ।

भहराई भहरा कर, : ऊपर वृच्छ गिरे ~ ३९१ ।

भहरात १. भहरा पड़ता है,'भयकर गर्जन करते हुए तेजी से मूसलाधार बरसने लगता है : चपला चमकति, चमकि नभ ~ ८७० । २ भहराकर, भहराता हुआ : गिरयौ ~ सकटा सहारयौ ६२ ।

भहराति तीव्र गति से आगे बढती हुई : भरभरानि ~ लपट अति, देखियत नहीं उबार ५९३ ।

भहराय १. भहराकर : भुव परे वृच्छ ~ सारा० ४५४ । २ लडखड़ाते हुए . मारी लात आय जब नृप को तब जाग्यौ ~ सारा० ६०६ ।

भाँजि तोड़कर, फोड़कर या तोड़ फोड़कर : भाजन ~ दूध दधि पी कै २८७ ।

भाँट भाट, चारण : मागध, सूत, ~ धन लेत जुरावन रे २८ ।

भाँड बरतन, पात्र . फोरि ~ दधि माखन खायौ ३१८ ।

भाँडे/भाडे बरतन, दधि-पात्र . घर घर ढूँढत ~ १५१९ । △ लेहु ~ भरति पछता लै, रो ले · रिसनि आगे कहि जा आवत अब लेहु ~ — ३१३८ ।

भांत तरह, प्रकार सघन कुंज बहु ~ सारा० १०४० ।

भाँतिन प्रकार · हाँ भेषज नाना ~ के ३५२० ।

भाँतिनि १ प्रकार · पट भूषन नाना ~ के ३८६४ । २ अनेक प्रकार से · तब उन ~ लाड लडाये ३७४० ।

भाँती प्रकार के, तरह के · द्रुम फूले बन अनुपम ~ १०७२ ।

भाँने भीगे हुए, सिक्त . दीन्हौं बाम चरण रज गोपिन गुल्म-लता रस ~ सारा० ८६८ ।

भाँवरि विवाह के समय वर-वधू का अग्नि की परिक्रमा करना फिरत ~ करत भूषन १०७१ ।

भाइ[१] १ भ्राता, भाई : कुसल रहैं दोउ ~ ५८९ । २ हे भाई . पढौ ~ राम मुकुंद मुरारि ७/२ ।

भाइ[२] १ अच्छा लगने वाली, स्वेच्छानुकूल मागध मगन जन लेत मन ~ कै ३०९२ । २ अच्छी लगती : नीरस कथा न ~ ३८६४ । ३ अच्छा लगना है : भरम हा बलवत सब मैं ईसहू कै ~ १/७० ।

भाइ[३] १ भाव, प्रेम, प्रीति सूर स्याम प्यारी दोउ जानत अतर-गत कौ ~ ७५८ । २. भाव मे सूरदास वा ~ फिरति हौं ३१६९ ।

भाइ[४] १ भाति, प्रकार, तरह · सूरदास कह्यौ ताही ~ ५/४ । २ प्रकार से · करी बिनय तिनहू बहु ~ ७/२ ।

भाइ[५] (भाव) रूप नटवर वपु काछे रहे सब देखे वह ~ ५८९ ।

भाइ[६] आधार पर . सृष्टि करा सो रहै किहिं ~ ३/१० ।

भाइन भाइयों ने : दोउ ~ सिर नायो सारा० ५३५ ।

भाइनि भाइयों ने · कपि रच्छक ~ तब कीन्हौ ५/३ ।

भाई १ अच्छी लगी, प्रिय लगी : चित मेरैं अति ~ १३५९ । २ भा गई है, अच्छी लग गई है सबहिनि कैं मन मैं यह ~ ४०२ । ३ प्रिय लगने वाली . देति परस्पर अपनी ~ गारि २८६० । ४ लगी . भली न ~ ३/७ ।

भाउ १ भाव, विचार धन्य भक्ति, धनि ~ २०६५ । २ भाव से : जो कोउ भजै भजैं तिहिं ~ ४१९५ ।

भाएँ भाव से, के लिए : सुनि जसुमति मैया कत खीझति, हरि के ~ ख्याल १३९२ ।

भाए[१] १ इच्छानुसार सदा किए जसुमति के ~ ४०८४ । २ मनोवांछित कार्य, इच्छानुसार कार्य . सुर रिपि सबके ~ भए ४/५ ।

भाए[२] प्रकार : दै असीस बोले या ~ ४२०० ।

भाए[३] १ अच्छे लगते हैं . 'सूर' स्याम मन ~ ३८९४ । २ अच्छा लगता : यह उपदेस संत नहिं ~ ३६१५ । ३ भा गये, अच्छे लगे · देखत मन ~ २७२० । ४ अच्छा लगता है · जो जैसी तैसैं तिहिं ~ ३०९५ ।

भाऐं[१] दृष्टि मे, समक्ष मे, विचार मे मेरे ~ घास १६६४ ।

भाऐं[२] १ अच्छे लगते, रुचते, सुहाते तेरे ~ नैंकु न माइ ७१० । २ अच्छी लगती हैं तुम्हरे ~ हाँसी ३६०७ । ३ अच्छा लगे · तऊ न कछू कान्ह के ~ ४०४० ।

भाखति कहती हो · मुख मोसौ यह ~ २०७० ।

भाखि कहो, बोलो, जपो : भक्ति ग्यान के पथ सूर ये, प्रेम निरतर ~ १/९० ।

भाखी कहा है, वर्णन किया है . वेद पुराननि ~ ५६७ ।

भाखे १ कहे : निरदय वचन कपट के ~ १०३४ । २. कहते हैं, वर्णन करते हैं जे पद कमल रमा-उर भूषन वेद भागवत ~ ५७१ । ३ कहा था ता दिन तुहीं धौं किंतिक ~ री १९७४ ।

भाखैं १ कहता है बाल-बिनोद बचन हित-अनहित बार-बार मुख ~ १/६० । २ बोलते हैं, कह रहे हैं बार बार यह कहि कहि ~ ९३६ । ३ कहते थे : बार-बार रहि रहि यह ~ ९३९ । ४ कहता था : जब वह जाय तबहिं सबहिन सौं राम राम मुख ~ सारा० ११० ।

भाख्यो कहा : विविध वचन उन ~ ४८१ ।

भाख्यौ १ कहा : दुहुँनि मनोरथ अपनौ ~ १/२६८ । २ उच्चारण किया, पढा · वेद बिमल नहिं ~ १/१११ ।

भाग[१] १ भाग्य, तकदीर । २ भाग्य को : बदति आपने ~ २००२ । ३. भाग्य मे . दुख सुख कीरति ~ आपनैं आइ परै सो गहियै १/६२ । △ ~ फरे भाग्य बदला, भाग्य जगे : भूपति उदार फूले ~ — घर के ३४ ।

भाग[२] चले जाते हो, शीघ्र चले जाते हो अब न जान गृह देऊँ पियारे, जब आए तब ~ २७३४ ।

भागत १ भागता है : इक ~ करि नाना रंग ५३३ । २ भागते हुए ~ कुसुम-हार उर टूटे २८९६ । ३ भागते हो तुम छुडाइ कर ~ ४१५३ ।

भागनि १ भाग्य से : ~ पाई जीवन-मूरि ११८० । २ सौभाग्य वती : नैकु चितै इत तू अति ~ २८०१ ।

भागमानी भाग्यशाली : वड़े ~ यह जानी २२६६ ।

भागवत श्रीमद्भागवत, अठारह पुराणों मे से एक जिसे वैष्णव लोग महापुराण की संज्ञा देते हैं : इसमे १२ स्कध, ३१२ अध्याय और १८००० श्लोक हैं : वेद ~ भाखे ५७१ ।

भागि भाग कर, दौड कर ~ दुरी सु विचारी १/१७३ ।

भागिनि भाग्यवती, सौभाग्यशालिनी : तो सी को बड ~ राधा १८९८ ।

भागिनी भाग्यवती ~ अग वह बेष नटवर निरखि २१५४ ।

भागी[१] १ भागती है : जा छन हस तजी यह काया, प्रेत-प्रेत कहि ~ १/७९ । २ भाग गई है, दूर हो गई है : दुविधा दुहूँ की ~ १९०९ ।

भागी[२] भाग्यशाली, भाग्यवती · तब बोले बलराम मातु तुमतैं को ~ ३०९० ।

भागी[३] हिस्सेदार, अधिकारी : मधुकर ~ सोय सारा० १००० । सुहाग ~ सौभाग्य का भागी : कह्यौ मन मैं ~ — १८७८ ।

भागीरथहि राजा भगीरथ को : ~ भव्य वर दैन ९/१२ ।

भागे[१] १ दौट पडे, चल पड़े . (वसुदेव) लैं गोकुल कौं ~ ४ । २. भागते हुए . ध्रुव आये माता पै ~ ४/९ ।

भागे[२] वि० भाग्यवान् है, भाग्यशालिनी है सोइ त्रिया बड ~ २६४३ । पुं० भाग्य से बसति मन स्याम के बडे ~ २१५१ ।

भागै भागता है, दूर होता है · निकसि निकसि मन ~ ४२६९ ।

भाग्य भाग्य, किसमत । △ ~ के मोटे अच्छे भाग्य वाले, सौभाग्यशाली . बडे ~ — हौ २६०९ ।

भाग्य-भवन जन्म कुण्डली मे जन्म-लग्न से नौवॉ स्थान जहॉ मनुष्य के शुभाशुभ भाग्य का विचार किया जाता है · ~ मैं मकर-मही- सुत बहु ऐश्वर्य बढैहैं ८६ ।

भाग्यौ १. भाग गया, दूर हो गया : सोच तिमिर तन ~ ४ । २ भगा, भागा . मुरली लै ~ २८४ । ३. भागता रहा, पलायन करता रहा : मन जहँ तहँ भरमत ~ १/७३ । ४ भागे, भाग गये तब रिषि आपन जिय लै ~ ९/५ ।

भाज भाग (भागना, दौडना) : ~ चले तब गहे रोहिनी सारा० ९०८ ।

भाजत १ भागता है इक ~ इक गाजत २८८८ । २ भागते हैं . काहू कौं गारी दै ~ १४३४ । ३. भागते हुए, भागता हुआ : रघुपति रबि-प्रकास सौं देखौं, उडुगन ज्यौं तोहिं ~ ९/१३० ।

भाजन[१] १. बरतन · फिरत बृथा ~ अवलोकत १/१०३ । २ मटका : भरि ~ मनि खम्भ निकट धरि १७८ ।

भाजन[२] भागने कैसैं पावति ~ ३३०२ ।

भाजनि भागने से : सुफलक सुत सँग ~ ३१५८ ।

भाजा भागा, भाग गया डर डरात उठि ~ ४१९१ ।

भाजि १ भाग कर · ~ पताल गयौ अपहारी १९६ । २ भाग : स्याम गए तुम ~ डराइ ५३९ ।

भाजिबे भागने : पुरुष कौं ~ तैं मरन है भलो ४१८३ ।

भाजिहै भागेगी . ~ देखि अब गेह नारी ४१८३ ।

भाजी[१] तरकारी, सब्जी . ~ साक छकइयै १/२३९ ।

भाजी[2] १ भाग गई : सुफल भयौ पछिलौ तप कीन्हौ लखि सुरूप रति ~ ३६४८। २ भाग आये : जो गिरिधरन विमुख ह्वै ~ ३१३३।

भाजे भागता है : ~ नरक नाम सुनि मेरौ १/१३१।

भाजैं १ भागें : अलकनि रजु बाँधि धरे ~ जिनि कबहूँ २२३८। २ भागते हैं सूर सहराइ ~ ३३०१। ३ भागने से · नाहिन बनत आजु के ~ ३८८३।

भाजैं १ भाग जाता है : पकरत एक एक करि ~ २२०१। २ दूर हो जाता है : जनम मरन भय ~ ३०९६। ३ भागता है : विडरै नहिं ~ ९/९६। ४ भागनी है · कोउ ~ कोउ पाछैं धावैं ११६४।

भाज्यो भागा : कालयवन के आगे ~ जाय गुफा गहि लीन्हीं सारा० ७५३।

भाज्यौ[1] १ भागा · काग मरत उठि ~ ३०४४। २ भागते रहे : ~ फिरयौ लोक-लोकनि मैं ९/६। ३ भागना ताके डर मैं ~ चाहत १/९७।

भाज्यौ[2] भजा, स्मरण किया : अजामील सुत हित हरि ~ १२/३।

भाठी भट्ठी : भवन मोंहि ~ सो लागत १९४२।

भातहि भात, : आयौ ~ लैन ४१८८।

भाति शोभा, काति, चमक मनोहर है नैनन की ~ १८११।

भाथा तरकश, तीर रखने की चमडे की थैली जो पीठ पर या कमर मे बाँधी जाती है : हाथ धनुष लीन्हे कटि ~ ९/६२।

भादौं भादों या भाद्रपद नामक महीना : अँधियारी ~ की रात १२।

भान[1] भानु, सूर्य : ज्यों दिवस बिनु ~ ४१०१।

भान[2] भानु=सारग=भौंरा=शिलीमुख=वाण · पुन ~ वान समान सा० ल० ७५।

भान[3] वृषभानु की . महरि मुदित हसि यौं कह्यौ मयि ~ दुहाई ७१५।

भानति कहती है . बिहद जतन करि ~ परि० १/७४।

भान त्रय जननी सुहित की सहचरी गुन भानु से तीसरे वार (मगल) की माता (भूमि) के हितैषी (मेघ) की सहचरी (बिजली) का गुण, चचलता · ~ लेत सा० ल० २।

भान सुन सो जीव निसि गुन प्रथम जोर भान, (त्रिमूर्ति) सुन (शून्य=नाक), जीव (बृहस्पति), निसि गुन (तम), प्रथम-जोर (इन सबके प्रथम अच्छर जोडने से) त्रिनावृन=तृणावर्त . ~ बखान सा० ल० ३४।

भानहि सूर्य : उदित एक रघुकुल के ~ ९/९५।

भाना राधा की एक सखी का नाम सुमना बहुला चपा जुहिला ग्याना ~ भाउ २००८।

भानि १ तोडकर, फोडकर भाजत भाजन ~ २८०। २ तोड (डालेंगे), काट (डालेंगे) डारौं सब भुज ~ ९/७९।

भानी[1] काटकर, तोडकर, विच्छिन्न करके लैहौं लक बीस भुज ~ ९/११६।

भानी[2] दूर की, हटाई : ढोठा एक भयौ कैसेहुँ करि, कौन-कौन करवर विधि ~ ३६८।

भानु[1] सूर्य : ~ उदै ज्यों कमल प्रकासित ६३९।

भानु[2] भानु=तरन=तरयौना अर्थात् कर्ण फूल, . बेदन ~ जुगल अनुरूप उज्यारी सा० ल० ९८।

भानु[3] वृषभानु की : तातैं सुन तू ~ नदिनी सारा० ९६५।

भानुजा[1] सूर्य की पुत्री, यमुना · पलटत बान ~ तट मे सा० ल० ३३।

भानुजा[2] वृषभानु की पुत्री, राधा : खेलो ~ के भोन सा० ल० ९४।

भानु तपन किसान ग्रह के रच्छ पालक आद भानु तपन (सूर्य की तपन अर्थात घाम) किसान के घर की रक्षक (टट्टी), घाम और टट्टी के आदि वर्णों को मिलाने से बना घाट · ~ सा० ल० १०७।

भानुसुत[1] सूर्यपुत्र यमराज · भानु ~ सी सुभानु सम सा० ल० १६।

भानुसुत[2] सूर्यपुत्र कर्ण : दान-धम बहु कियौ ~ सो तुव विमुख कहायौ १/१०४।

भानु सुत हित सत्रु पितु सूर्य के पुत्र (कर्ण) के हितैषी (दुर्योधन) के शत्रु (भीमसेन) के पिता, पवन : ~ लगि सा० ल० २९।

भाने विचार किया मनहीं मन ~ २४८९।

भानैं तोड़ते है · आपुहि हरता आपुहि करता आपु बनावन आपुहि ~ १६०८।

भानै[1] १ काट देंगे, तोड देंगे : अजहूँ सिय सौंपि नतरु बीस भुजा ~ ९/९७। २ तोड फोड रहा है, नष्ट कर रहा है . ~ मठ, कूप, बाइ ९/९६। ३ नष्ट करती हुई सरिता चली मिलन सागर को कूल सबै द्रुम ~ ३९६०।

भानै[2] सूर्य को : चकोर मुदित विधु निरखत कहा करै लै ~ ४०४२।

भानै[3] कहते/करते है सुनि कै अक्रूर विमल अस्तुति मुख ~ ३०१८।

भाव-भगति भाव-भक्ति ~ नहिं नेकहुँ जाना २/१४९।

भाविक बीती हुई अथवा होने वाला बात, 'भाविक' अलकार . त्रिमिल ~ कियौ भूषन सा० ल० ९२।

भामा पत्नी ने : जब हम तुम वन गए लकरियन पठए गुरु की ~ ४२३३।

भामिन कोप करने वाली स्त्री (राधा) करि गर्व दृग भगि ~

लची ११९१ ।

भामिनि १ स्त्री, पत्नी . जो सुख सूर अमर-मुनि दुरलभ सो नद ~ पावै ४३ । २ भामिनी · चल ~ की भौहैं बक २७४४ । ३. भामिनी (राधा) पीत कचन-बरन ~ स्याम घन अनुहारि १६७९ ।

भामिनिनि स्त्रियों के : ~ बीच गिरिधर बिराजै २१७० ।

भामिनिहुँ प्रियतमा भी : ~ उत आपु कठ लागी १८७८ ।

भामिनी स्त्री, प्रियतमा, पत्नी . स्याम ~ परम उदार २४९६ ।

भाय[1] भाव से · जेहि-जेहि ~ करी जिन सेवा अतरगत की जानत १/१३ ।

भाय[2] १ अच्छे लगने वाले, भाने वाले । २ तरह : निरवधि रमन अपरमित अच्युत मनुज ~ बहु खेल सारा० ९८१ ।

भायक अच्छा लगने वाला सूरदास-प्रभु मोहन जोरी करौ कुंन मन ~ २७८० ।

भायो रुचा, अच्छा लगा : जो ~ सो लीन्हो सारा० ५०५ ।

भायौ १ मन चाहा, अच्छा लगने वाला, मनोनुकूल : भयौ तासु तनया कौ ~ ९/१७३ । २ सुशोभित हुए : आपु चढ्यौ ता ऊपर ~ ७७ । ३ अच्छा लगता है · वहै रूप मन ~ ३५५२ । ४ अच्छा लगा · सो तुम्हरे मन ~ १/१०४ ।

भार पुं० १ बोझ . बहु जोर्‌यौ अब कौ ~ १/६८ । २ गौरव जो कुल नेम धर्म की होती दिन-दिन होतौ ~ १३०५ । **क्रि० स०** भर दिया है करै बिमुख दुख ~ सा० ल० ३१ । **वि०** अत्यधिक, भारी : चले द्वारका यदुकुल सब मिलि भयो कुलाहल ~ सारा० ७३१ ।

भारजा पत्नियों से भृग मिले ~, बिछुरी जोरी कोक मिले २०३९ ।

भारत[1] महाभारत का ~ युद्ध होइ जब बीता १/२६१ ।

भारत[2] महाभारत ग्रथ ~ माहि कथा यह बिरतृत कहत होइ बिस्तार १/२६७ ।

भारत[3] घोर युद्ध, सग्राम : सोवत काली जाइ जगायौ, फिरि ~ हरि कीन्हौ ५७६ ।

भारत[4] अर्जुन जे पद कमल पितामह भीष्म ~ देखन पाए ५७१ ।

भारत[5] भारी · इहिं विधि उपलै तरत पात ज्यौं, जदपि मैल अति ~ ९/१२३ ।

भारति सरस्वती की मनु ~ कै भँवर मीन सिसु २६८७ ।

भारद्वाज एक ऋषि जो तीर्थराज प्रयाग मे रहते थे । प्रयाग मे इनके नाम पर आज भी एक आश्रम है . ~ मरीचि अगिरा अत्रैमुनी अनत सारा० ७१४।

भारन भार को · तिमिर हरण भव ~ सारा० ३१८ ।

भार-हरन भार को दूर करने वाले (पाप रूपी भार को नष्ट करने वाले) भक्त हेत देह धरन पुहुमी को ~ २५१ ।

भारहि भार से : नासा नथ-मुकुता के ~ १४९८ ।

भारि[1] १. भारी, बडे · आइ घर जो नद देखे, तरु गिरे दोउ ~ ३८७ । २ भारी, अत्यंत मनोहर लखति सोभा ~ ८२९ । ३ अत्यन्त, बडा भारी जौ पुरुष तिय अग देखै होत दूषन ~ ७८९ । ४ भार (सकट) · सूर मुख पट देति काहैं न, बरष द्वादस ~ १७१५ ।

भारि[2] बल पर, भार पर, सहारे खरी इक पग ~ १३४० ।

भारी[1] १ बडे लोचन लालची ~ २३७४ । २ अत्यन्त, अत्यधिक : लज्जित भई मन ~ २४३७ । ३ अधिक भार वाली, बोझिल पापहि पाप धरा भई ~ १६०४ ।

भारी[2] भयकर, भयानक : बन लाग्यौ कछु ~ १५०१ ।

भारी[3] जोर से, तीखी सरद-समय-ससि दरम समर-सर, लागै उन तन ~ २७५२ ।

भारे[1] १. अत्यधिक, अत्यत : देत दसा सुख ~ ४१६० । २ भारी, विशाल, बडा चानूर सैल सम सुनियत है अति ~ ३०६२ । ३ बडे-बडे . सुरसरि दरस कटत अघ ~ १/९४ । ४ कठिन जीवन मरन भए दोउ ~ ३६२२ ।

भारे[2] गर्वीला इहिं औरै करि डारे ~ हम कह दूर करी १२७७ ।

भारे[3] **वि०** १ भरे हुए, युक्त · कचन-कलस महारस ~ १४६९ । **क्रि०स०** १ धारण किए हैं . मोतिन की माला उर ~ ९१३ । २ धारण करती है, बनाती है . कबहुँ बदन बिंदु भाल ~ २१९० ।

भारौ[1] १ अत्यधिक, अत्यत इनमैं भरौ महारस ~ १५४२ । २ भारी, बडा : तौ बहत बिरद कत ~ १/१३१ । ३ भयानक, भयकर काल फिरत सिर ऊपर ~ १/८० ।

भारौ[2] बोझ, भार बोरे जीवन भयौ तन ~ १/१५२ ।

भार्‌यौ भारी, गाढा तुरत मथ्यौ मीठौ अति ~ ४०७ ।

भाल[1] १ ललाट, मस्तक, माथा तिलक बिराजत ललित ~ पर २००४ । २ ललाट, भाग्य सूर न मिटै ~ की रेखा ९/११६ । ३. मस्तक मे, भाग्य मे : इनमैं एकौ अक न ~ १/१२७ । ४ मस्तक पर मसि बिंदुका सु मृग मद ~ ८४ ।

भाल[2] तीर का फल या नोक पारधि मारि ~ क्यों काढै ४०२५ ।

भाल[3] भालो को, अस्त्र विशेष को इहिं विधि लखत झुकाइ रहै जम अपनै हीं भय ~ १/१८९ ।

भालि भाला से, बरछे से हवकत हाथ परै नाहीं गहि रहे नाटसल ~ ३३१३ ।

भाली[1] भाली, बरछी . लगी मरम की ~ १४०८ ।

भाली[2] नोक : लगति काम बान की ~ ४२४७ ।

भालु बसु पुन पच भालू = रिच्छ (नक्षत्र), वसु (८), पुनि पच (फिर ५) अतः ८ और ५ का योग १३ हुआ, १३वाँ नक्षत्र = हस्त अर्थात् कर=हाथ व किरण ~ दोउ करें अद्भुत रूप सा० ल० १७ ।

भाव[1] १ विचार . जसुमति सुत कौं ~ नहीं ३११२ । २ भाव, प्रेम जो तुम भक्ति ~ मों अरप्यौ ८४२ । ~ **करि** प्रेम-युक्त होकर, प्रेमपूर्वक : बहुत ~ — भोजन अरप्यौ ८४४ । ~ **जनायौ** भाव प्रकट कर दिया : देह धरै कौ ~ — ११०० । ~ **बाढ्यौ** अनुराग बढ गया स्याम सौं अति ~ — ९९२ ।

भाव[2] अभिनय, नृत्य · सुर अनेक देह धरि भूतल, नाना ~ दिखायौ १/२०५ ।

भाव[3] अर्थ, तात्पर्य या सपने कौ ~ सिया सुनि ९/८३ ।

भाव[4] भाव (अभिमान) : बारि-भव सुत तासु ~ री २०८५ ।

भाव[5] उपक्रम, सकेत : राधा ~ कियौ यह नीकौ १८८२ ।

भावई प्रिय लगता है, अच्छा लगता है सुधा रस जेहि स्वाद चाख्यौ तिन्है और न ~ ३८६५ ।

भावक भावपूर्ण, भावयुक्त नित्य नवला माजि नव मत, अरु स ~ राखि ३३७४ ।

२८२६ ।

भावती वि० अच्छी लगने वाली, चहेती, प्यारी भावते लाल मा ~ केलि करि २४५३; भले स्याम वह भली ~ भले भली मिलि भली करी २५३८ । **स्त्री०** प्रेमपात्री, प्रियतमा (राधा) : 'सूर' स्याम की ~ कहै कहौ कहा री १९५७ ।

भावते १ प्रिय, अच्छे लगने वाले · ये तौ भए ~ हरि के २०३३ । २ प्यारे · भोजन भयौ ~ मोहन १२१३, वै तो भँवर ~ वन के २८२६ ।

भावतेहि मनभावन की, प्यारे की लै चलि भवन ~ भुज गहि २८२६ ।

भावतौ प्यारा . मान कियौ जिहि भाव तै मो न ~ होइ २८२८ ।

भावन प्रिय लगने वाले, अच्छे लगने वाले · जुग जुग जीवहु कान्ह सबनि मन ~ रे २८ ।

भावनि १ भावना से : जो जिहिं ~ हरि भजे २६१५ । २. भावों से : सूर स्याम ऐसे ~ सौं १४४० ।

भावने अच्छे लगने वाले, प्रिय : बार बचन कहैं मन ~ ४१८३ ।

भावनौ १ अच्छा लगने वाला . तिहिं देखें त्रिताप तन नासै ब्रज-बधूनि मन ~ २८३२ । २ सुन्दर लगने वाले, अच्छे

लची ११९१।

भामिनि १ स्त्री, पत्नी . जो सुख सूर अमर-मुनि दुरलभ सो नद ~ पावै ४३। २ भामिनी ' चल ~ की भौहैं बक २७४४। ३ भामिनी (राधा) पीत कचन-वरन ~ स्याम घन अनुहारि १६७९।

भामिनिनि स्त्रियों के : ~ बीच गिरिधर विराजै २१७०।

भामिनिहुँ प्रियतमा भी : ~ उत आपु कठ लागी १८७८।

भामिनी स्त्री, प्रियतमा, पत्नी : स्याम ~ परम उदार २४९६।

भाय[1] भाव से : जेहि-जेहि ~ करी जिन सेवा अतरगत की जानत १/१३।

भाय[2] १ अच्छे लगने वाले, भाने वाले। २ तरह ' निरवधि रमन अपरमित अच्युत मनुज ~ बहु खेल सारा० ९८१।

भायक अच्छा लगने वाला सूरदास-प्रभु मोहन जोरी करौ कुंज मन ~ २७८०।

भायो रुचा, अच्छा लगा : जो ~ सो लीन्हो सारा० ५०५।

भायौ १ मन चाहा, अच्छा लगने वाला, मनोनुकूल भयौ तासु तनया कौ ~ ९/१७३। २ सुशोभित हुए ' आपु चढयौ ता ऊपर ~ ७७। ३ अच्छा लगता है वही रूप मन ~ ३५५२। ४ अच्छा लगा ' सो तुम्हरे मन ~ १/१०४।

भार पुं० १ बोझ : बहु जोर्‌यौ अघ कौ ~ १/६८। २ गौरव जो कुल नेम धर्म की होती दिन-दिन होतौ ~ १३०५। क्रि० स० भर दिया है करै विमुख दुख ~ सा० ल० ३१। वि० अत्यधिक, भारी ' चले द्वारका यदुकुल सब मिलि भयो कुलाहल ~ सारा० ७३१।

भारजा पत्नियों से भृग मिले ~, विछुरी जोरी कोक मिले २०३९।

भारत[1] महाभारत का ~ युद्ध होइ जब बीता १/२६१।

भारत[2] महाभारत ग्रथ ~ माहिं कथा यह विस्तृत कहत होइ विस्तार १/२६७।

भारत[3] घोर युद्ध, सग्राम : मोवत काली जाइ जगायौ, फिरि ~ हरि कीन्हौ ५७६।

भारत[4] अर्जुन जे पद कमल पितामह भीषम ~ देखन पाए ५७१।

भारत[5] भारी ' इहिं विधि उपलै तरत पात ज्यौं, जदपि सैल अति ~ ९/१२३।

भारति सरस्वती की मनु ~ के भँवर मीन सिसु २६८७।

भारद्वाज एक ऋषि जो तीर्थराज प्रयाग मे रहते थे। प्रयाग मे इनके नाम पर आज भी एक आश्रम है ~ मरीचि अगिरा अत्रेमुनी अनत सारा० ७१४।

भारन भार को ' तिमिर हरण भव ~ सारा० ३१८।

भार-हरन भार को दूर करने वाले (पाप रूपी भार को नष्ट करने वाले) . भक्त हेत देह धरन पुहुमी को ~ २५१।

भारहि भार से : नासा नथ-मुकुता के ~ १४९८।

भारि[1] १. भारी, बडे आइ घर जो नद देखे, तरु गिरे दोउ ~ ३८७। २ भारी, अत्यत मनोहर लखति सोभा ~ ८२९। ३ अत्यन्त, बडा भारी जौ पुरुष तिय अग देखै होत दूषन ~ ७८९। ४ भार (सकट) ' सूर मुख पट देति काहैं न, बरष द्वादस ~ १७१५।

भारि[2] बल पर, भार पर, सहारे खरी इक पग ~ १३४०।

भारी[1] १ वडे लोचन लालची ~ २३७४। २ अत्यन्त, अत्यधिक : लज्जित भई मन ~ २४३७। ३ अधिक भार वाली, बोझिल : पापहिं पाप धरा भई ~ १६०४।

भारी[2] भयकर, भयानक : बन लाग्यौ कछु ~ १५०१।

भारी[3] जोर मे, तीखी सरद समय-ससि दरस समर-सर, लागै उन तन ~ २७५२।

भारे[1] १. अत्यधिक, अत्यत : देत दसा सुख ~ ४१६०। २ भारी, विशाल, बडा चानूर सैल सम सुनियत है अति ~ ३०६२। ३ बडे-बडे . सुरसरि दरस कटत अघ ~ १/९४। ४ कठिन जीवन मरन भए दोउ ~ ३६२२।

भारे[2] गर्वीला . इहिं औरै करि डारे ~ हम कहू दूर करी १२७७।

भारे[3] वि० १ भरे हुए, युक्त ' कचन-कलस महारस ~ १४६९। क्रि०स० १ धारण किए हैं : मोतिन की माला उर ~ ९१३। २ धारण करती है, बनाती है : कबहुँ वदन बिंदु भाल ~ २१९०।

भारौ[1] १ अत्यधिक, अत्यत इनमैं भरौ महारस ~ १५४२। २ भारी, बडा : तौ वहत विरद कत ~ १/१३१। ३ भयानक, भयकर काल फिरत सिर ऊपर ~ १/८०।

भारौ[2] बोझ, भार थोरे जीवन भयौ तन ~ १/१५२।

भार्‌यौ भारी, गाढा तुरत मथ्यौ मीठौ अनि ~ ४०७।

भाल[1] १. ललाट, मस्तक, माथा तिलक विराजत ललित ~ पर २००४। २ ललाट, भाग्य मर न मिटै ~ की रेखा ९/११६। ३. मस्तक मे, भाग्य मे : इनमैं एको अक न ~ १/१२७। ४ मस्तक पर मसि बिंदुका सु मृग मद ~ ८४।

भाल[2] तीर का फल या नोक ' पारधि मारि ~ क्यों काढै ४०२५।

भाल[3] भालों को, अस्त्र विशेष को इहिं विधि लखत झुकाइ रहे जम अपनैं हीं भय ~ १/१८९।

भालि भाला से, बरछे से ' हवकत हाथ परै नाहीं गहि रहे नाटसल ~ ३३१३।

भाली[1] भाली, बरछी . लगी मरम की ~ १४०८ ।
भाली[2] नोक : लगति काम बान की ~ ४२४७ ।
भालु बसु पुन पंच भालू = रिच्छ (नक्षत्र), वसु (८), पुनि पंच (फिर ५) अत. ८ और ५ का योग १३ हुआ; १३वाँ नक्षत्र = हस्त अर्थात् कर=हाथ व किरण ~ दोउ करैं अद्भुत रूप सा० ल० १७ ।
भाव[1] १ विचार जसुमति सुत कौ ~ नहीं ३११२ । २ भाव, प्रेम जो तुम भक्ति ~ सौं अर्प्यौ ८४२ । ~ **करि** प्रेम-युक्त होकर, प्रेमपूर्वक : बहुत ~ — भोजन अर्प्यो ८४४ । ~ **जनायौ** भाव प्रकट कर दिया : देह धरैं कौ ~ — ११०० । ~ **बाढ्यौ** अनुराग बढ़ गया स्याम सौं अति ~ — ९९२ ।
भाव[2] अभिनय, नृत्य · सुर अनेक देह धरि भूतल, नाना ~ दिखायौ १/२०५ ।
भाव[3] अर्थ, तात्पर्य या सपने कौ ~ सिया सुनि ९/८३ ।
भाव[4] भाव (अभिमान) : वारि-भव सुत तासु ~ री २०८५ ।
भाव[5] उपक्रम, संकेत : राधा ~ कियौ यह नीकौ १८८२ ।
भावई प्रिय लगता है, अच्छा लगता है सुधा रस जेहि स्वाद चाख्यौ तिन्हैं और न ~ ३८६५ ।
भावक भावपूर्ण, भावयुक्त नित्य नवला मात्रि नव मत, अरु सु ~ राखि ३३७४ ।
भाव-जल-रास भावुकता का जल राशि से : भरी ~ री १३९ ।
भावत १ अच्छा लगता है, प्रिय लगता है, रुचता है वृन्दावन मोकौं अति ~ ८४९ । २ अच्छे लगते हैं, प्रिय लगते हैं अमृत-वचन स्रवननि कौं ~ १०२३ । ३ सुशोभित ह सारद, नारद सिव सुत ~ ९७६ । ४ अच्छी लगती है यह लीला हरि के मन ~ २४७६ । ५ लगना . जहाँ गयौ तहँ भली न ~ १/२०२ । ६ अच्छा लगता था, रीझ उठता था नखनि रंग जावक की सोभा, देखत पिय-मन ~ २०५४ । ७ पसंद करती है · मुख निरखति सकुचति सुकुमारी, मनहीं मन अति ~ २४५७ । ८ पसंद करते हैं, चाहते हैं : ये दृग मधुप सुमन सब परिहरि कमल-बदन रस ~ ३८८८ ।
भावति क्रि० अ० १ अच्छी लगती है, प्रिय है : मुरली तऊ गुपालहिं ~ ६५५ । २ अच्छी लगती हैं, लुभाती हैं . मन ~ रंगरलियाँ २६२७ । ३ अच्छा/प्रिय लगती : मोसौं तुम मुँह की मिलवत हौ ~ है वह प्यारो २४१३ । ४ अच्छी लगती हो, प्रिय लगती हो . तुहीं पिय ~ नाहिंन आन २५७८ । ५ अच्छे लगते हैं, प्रिय हैं : तुमहीं कौं ~ मन मोहन २५४४ । वि० अच्छी लगने वाली, रुचिकर, प्रिय मन जो हुती अति ~ २३ ।
भावतिहि चहेती/प्रियतमा को, प्रिया को . जाइ-जोइ बात ~ भावै २८२६ ।
भावती वि० अच्छी लगने वाली, चहेती, प्यारी भावते लाल सा ~ केलि करि २४५३, भले स्याम वह भली ~ भले भली मिलि भली करी २५३८ । **स्त्री०** प्रेमपात्री, प्रियतमा (राधा) . 'सूर' स्याम की ~ कहै कहौ कहा री १९५७ ।
भावते १ प्रिय, अच्छे लगने वाले ये तौ भए ~ हरि के २२३३ । २ प्यारे · भोजन भयौ ~ मोहन १०१३, है तो भँवर ~ बन के २८२६ ।
भावतेहि मनभावन की, प्यारे की : लै चलि भवन ~ भुज गहि २८२६ ।
भावतौ प्यारा . मान कियौ जिहिं भाव तैं सो न ~ होइ २८२८ ।
भावन प्रिय लगने वाले, अच्छे लगने वाले : जुग जुग जीवहु कान्ह सबनि मन ~ रे २८ ।
भावनि १ भावना से : जो जिहिं ~ हरि भजै २६१५ । २ भावों से : सूर स्याम ऐसे ~ सों १४४० ।
भावने अच्छे लगने वाले, प्रिय · वार बचन कहैं मन ~ ४१८३ ।
भावनौ १ *अच्छा लगने वाला . तिहिं देखे त्रिताप तन नासै* ब्रज-बधूनि मन ~ २८३२ । २ सुन्दर लगने वाले, अच्छे लगने वाले बिच नीलम बहु ~ २८३२ ।
भावर तलहटी का जंगल : उलटि पवन जब ~ जरियौ १/२२१ ।
भावरौ भाव के अनुसार, इच्छानुसार करत आपनौ ~ २८८५ ।
भावहि १ भाव को , विचार को : राधा हरि के ~ जान्यौ १९५० ।
भावहि १ भाव ही : गुरुजन मैं ~ की पूजा १८८१ । २. प्रेम भाव या भवितव्यता ही के सूरदास प्रभु ~ कें बस ३१०७ ।
भावहु १ अच्छा लगे : सूर स्याम मेरे उर तैं कहुँ टारे नैंकु न ~ १७९ । २ अच्छे लगो : बात कहौ अब ऐसी जासौं मन तुम ~ ४०१४ । ३. अच्छी लगती हो/लगोगी : येऊ नवल नवल तुमहूँ हौ मोहन कौ दोउ ~ २१६४ ।
भावहुगे अच्छे लगोगे · इन बातनि मन ~ २५२५ ।
भावियै होनहार ही, भवितव्यता ही : ~ कें वस सबहां १/२८४ ।
भावी भवितव्यता, होनी ~ नहीं मिटै काहू की १३९८ ।
भावे प्रिय है, अच्छा लगता है तो बिन पियहि कछू नहिं ~ सारा० ९२३ ।
भावैं १. अच्छे लगते हैं : सबहिनि कें मन ~ १३७० । २

अच्छी लगती हैं : तिनकी सरि कहि कैसैं कोई जे हरि कैं मन ~ २४०६। ३ शोभित हो रहे हैं, अच्छे लग रहे हैं . स्याम सखनि सग खेलत ~ ९०२। ४ अच्छे लगें • तुम बिनु कानन भवन न ~ ४०७२

भावै[1] १ अच्छा लगता • यह हमकौ नहिं ~ १५०९। २. अच्छा/प्रिय लगता है . मैया री मोहिं माखन — २६४। ३ अच्छी लगती . माखन रोटी ~ ३१७५। ४ अच्छी लगती, रुचती . यहै बात मोकौं नहिं ~ २३२७। ५. अच्छा लगे, रुचे, पसद हो : जो ~ सो भोजन कीजै २४८। ६ अच्छा लगेगा : तिहिं क्यौं निरगुन ~ ३९०४।

भावै[2] आनन्दित होती है, प्रसन्न होती है : सूर स्याम मो भवन पधारे यह कहि कहि मन ~ २२१०।

भावै[3] चाहे : असुर होइ ~ सुर होइ ७/२।

भापई बोलते हैं अमृत वचन मुख ~ १३७२।

भापत १ कहा जाता है,कहते हैं, बताते हैं : महादेव कौं ~ साधु ४/५। २. बोलते हैं : हरषत पुनि पुनि ~ ४९३। ३ कहता हूँ बात मैं साँची ~ १४६१। ४ वर्णन करते हैं : निगम नेति कहि कहि नित ~ २१८५। ५ बोलता है, कहता है गर्व वचन कहि कहि मुख ~ मोकौं नहिं जानत अहिराई ५५५।

भापति १ कहती है, बोलती है : द्रुपद सुता ~ नदनदन १/२२५। २ कहती, बोलती . रसना और नहीं कछु ~ १६३४। ३ कहती हो, बोलती हो तुम अतर-अतर कह ~ १६१४।

भापहु कहो . इतनेहि रहौ और जनि ~ २०५९।

भापा १ बोल चाल की बोली मे • सूरदास सोई कहे पद ~ करि गाइ १/२२५। २ बोली (व्यग्य) : ~ बैर बुलाने ३६७५।

भापि[1] १ कहकर, बोलकर . वचन सुभ ~ निज गृह पठाई ३०८७। २ कहो : निरगुन सगुन सूर प्रभु आगैं जाइ मधुपुरी ~ ३६८९।

भापि[2] समझो, जानो : पच त्रय गुन सकल देही जगत ऐसौ ~ ३६८५।

भापियै कहिए, कहो : बार बार न ~ ३९०२।

भापी १ कहा, बोली, कहने लगी • आइ स्याम सौं ~ ४१६०। २ वर्णन की, कही . (लीला) अति पुनीत मुनि ~ ४।

भापे १ कहते हैं, वर्णन करते हैं : बेद उपनिषद ~ १६१३। २ कहता है : तुम सो बात और अलि ~ ४०३८। ३ बोले, कहे निठुर वचन नहिं ~ ३८५२।

भापैं १ कहती है बार बार जुवती सबै, राधा सौं ~ २०५५। २ कहते है, बोलते हैं : सूरदास प्रभु दीन बचन यौं हनूमान सा ~ ९/१४६। ३ बोलते थे, बोल रहे थे • अमर नाग नर कहि कहि ~ ३१०९। ४ कहने पर • बान कियो अमर ~ तिहारे ४१९८।

भापै १ कहते हैं : सुत कलत्र दुर बचन जो ~ ५/४। २. कहती है : जसोदा बार बार यौं ~ २९७३। ३ कहे बीच जो परै सत्य सो ~ ३६८७। ४ कहने पर : वह दुलैं सब नखत यह होइ ~ २८२४।

भापौं कह रहा हू : मोई अब मैं तोमों ~ २/३७।

भापौ कहो, बताओ रिषि कृपाल ~ अब सोइ ६/७।

भाप्यौ १ कहा, बोले अति आनद वचन मुख ~ २४७३। २ बखान किया, वर्णन किया : निरगुन अविनासी मत, कहा आनि ~ ३५९७। ३ कहे, बोलने मे समर्थ हुआ मछ वचन किहि भाँति ~ ८/१६।

भास बोल, शब्द मुरली अमृत सम सरति ~ २८५२।

भासत[1] लगता है, जान पड़ता है, देख पडता है 'सूरज' प्रभु विरोध सौ ~ सा० ल० ३१।

भासत[2] डूबती हैं . यह मत दै गोपिन कौं आवहु बिरह नदा मैं ~ ३४२६।

भासति दे० भासत[2]।

भासी १ भासित हुई, आई, जान पडी • सो मन उपमा ~ सा० ल० २३। २ डूबी हुई, पडी हुई है • बिरह सलिल मैं ~ १०२९।

भासैं दिखाई देते हैं . अग अग बिरहानल सँग तैं, महास्याम सो ~ ल० ७३।

भिगई भिगो दिया, सिक्त कर दिया रनि रग सौं ~ २७२२।

भिच्छुक याचक, भिखारी बदी जन अरु ~ सुनि सुनि दूरि दूरि तैं आए ३५।

भिजे गीले, तर, भीगे हुए इक कोरे इक ~ गुरबरा ३९६।

भिदि भेदन करो त्रिकुटी सगम ब्रह्म द्वार ~ यौं मिलिहै बनमाली ३८६६। ~ गयौ : धँस गया, भेदन कर गया रोम रोमनि ~ — सब १९२८।

भिन भिन्न, अलग : सूर स्याम चरननि तें मोक्षा, राखत रहे कहा ~ ती १६८९।

भिनुसार सवेरा, प्रात काल उठौ नदलाल भयो ~ जगावति नद की रानी २०८।

भिरंग भृग (की तरह) : भृकुटि भग ~ राजति परि० १/१०२।

भिरत १ भिडना है, लडता है सन्मुख ~ मुरत नहिं पाछैं २२८८। २ भिडने पर, लडने पर जानि परिहै ~ सँग हमारैं ३०७२।

भिरहु भिटो, लडो . तासा ~ तुमहि जो लायक २८८३।

भिरि भिडकर : अति सनेह दुहुँ बिसरि देह ~ २४५५।

भिरे लड गए, जूझ गए : रुद्र भगवान अरु बान मात्यकि ~ ४१९८। २ भिड गए, लग गए, आलिंगित हो गए :

उर उरनि ~ दोउ जुरे मन तैं २१२९। ३ लड़े, डटे, एक टक देखते ऐसेहि ये लुब्धे हरि-छवि पर, जीवत रहत ~ २३०७।

भिरैं भिड़ने वाले हैं, लटने वाले हैं . काल सौं ~ हम कौन तुम बापुरे ३०७२।

भिरौं लडूँगा, सामना करूँगा, मोर्चा लूँगा होइ मनमुख ~ सक नहिं धरौं ९/१२९।

भिर्यौ १ भिड़ गया, लड़ गया सैनापति कोपि कै प्रद्युम्न सौं ~ ४१९८। २. भिड़ गये ~ चानूर सौं नंदसुत बांधि करि ३०७१।

भिल्लनि भीलों : तहँ ~ सौं भई लराई १/२८६।

भिल्लिनि भीलनी, शबरी नामक भील जाति की स्त्री जो राम की अनन्य भक्त थी ~ के फल खाए १/२५।

भींजत क्रि० अ० १ भीगता है . अति ही सीत भीत तन ~ ३७९०। २ भीग रहे हैं : ~ ग्वाल गाइ गोसुत सब ८६३। वि० भीगती हुई : ~ देखी राधा माधव १९९०।

भींजि भीग कर . अनि जल ~ चीर वर टपकत १९९०।

भींजी क्रि० अ० १ भीग गई . कँचुकि चीर चूनरी ~ परि० १/४२। भीगी . ~ हैं फुलेलनि सा अली हरि सग केलि २०१०। वि० भीगी हुई : सर राधा हँसत ठाढ़ी ~ छवि तनु चीर १७५२।

भींजे क्रि० अ० १. भीग गये . ~ राग रागिनी दोऊ १९९२। वि० भीगे हुए . ~ उर अँचल अति राजित ४११२।

भींजै १ भीग जाती है परसैं जरे विलोकें ~ ३४९०। २ भीग गया : निरखत नैन नीर भरि आए अरु कचुकि पट ~ ४०६४। ३ भीग गये थे : ~ चारौं जामा ४२३३।

भींजैगो भीग जायगा . नतु ~ पियरो पट २५४७।

भींजौ भीग जाओ, गीले या तर हो जाओ जौ लौं मेह न नख सिख ~ २५४८।

भींज्यौ भीग गया था हरि स्रम जल ~ उर अचल ४०७३।

भीजत १ भीगता है : ~ कुहुँ भी अवर १९९१। २ भीग रहा था . अग स्वेद जल ~ १०५७।

भीजति भीग रही थी नई-नई बूँदनि ~ गोरी ६८५।

भीजि भीग कर . ~ विनसि जाइहि छिनु भीतर २५८८।

भीजी भीग गई नैन सलिल ~ सब सारी ११०५।

भीजे भीगे हुए, आर्द्र : ग्वाल वाल सब आवैं रग ~ १३७४।

भीजैं भीग जाने पर ~ जल छवि पावत १९९२।

भीजैं क्रि० अ० १ भीगते हैं : पाहन तारे, सागर बाँध्यौ तापर चरन न ~ ९/१२६। २ भीग जायेगी . सुरँग चूनरी ~ ७३१। ३ भीग जाय, प्रेम मग्न हो जाय सूर सोइ सुहागि नारि जासौं मन ~ ३२७७। वि० भीग जाने पर : छुटै न कबहूँ स्रम जल ~ २८२३।

भीज्यौ भीग गया . प्रेम सलिल ~ पीरौ पट २७३९।

भीत[1] १. भय, डर : भीत ~ न करति सुदरि ७६७। २ डर मे : सकुचत सीत ~ जलरुह ज्यौं ३५७। ~ भए डर गये . इतने कटक देखि मन मोहन ~ — २७८८। ~ ह्वै डर : वै जू ~ — रहे बेठि घर २४५५।

भीत[2] दीवार, चित्रपट, आधार : बिनुहीं ~ चित्र जिन कीन्हो ३५५३।

भीतर बीच में : ग्वाल बाल गाइनि के ~ नकहुँ डर नहिं लागत ४२०।

भीतरु अदर : गई भवन ~ लिये २७३१।

भीतरे भीतर, अदर : सूर ~ बहर के ३४।

भीति[1] १ दीवार : नद नदन व्रत छाँडि कै को लिखि पूजै ~ ४०९५। २ दीवार पर/मे . ~ चित्र अवरेखी ३८१०। ३ चित्रपट, आधार : ~ जौ होइ ता चित्र अवरेखियै ३०७।

भीति[2] भय, डर : मातु पिता-लोक ~ बाकी नहिं बाची १९१०।

भीतिहि आधार के, चित्रपट के . जल बिनु तरँग चित्र बिनु ~ ३९३१।

भीती भय, डर यहै पीरी भई मकुच नाहीं दई अतिहिं ~ २०४०।

भील्यौ दीवार : ज्यों उदवस की ~ ३३८३।

भीन मग्न, निमग्न या लीन होकर . आवत सखी सहित रस ~ ३८६७।

भीनी[1] १ रगी हुई है : हम अँग अग स्याम रँग ~ ३६१९। २ रगी हुई, डूबी हुई, भीगी हुई : मानिनी है मान रग ~ २७८९। ३ लीन हुए, डूबे राधा सग सुरनि-रस ~ १९९३। ४. सुगंधित, सिक्त . अरगजें ~ माल २५८२। ५ भीगी (चिपकी हुई) : लसति कचुकी ~ २८२६।

भीने[1] १ डूबकर, मग्न होकर . अति आनद नद रस ~ ३२। २ लीन हो, रगे पडे हो सूर स्याम रति ~ ताही के सिधारो पिय २५४९। ३ भीगी हुई है, रगी हुई है : सिथिल पाग दस्तार की जावक रँग ~ २५१२। ४ रगे हुए दे करवँदा हरदि रँग ~ १२१३।

भीने[2] सुगंधित अद्भुत बिंद चंदन, नख सिख ला, साँधे ~ गात १३७३।

भीने[3] नथ जाती है : मीन ज्यों बसी ~ २३७८।

भीनौ[1] युक्त है, सिक्त है : अधर सुधा-रस ~ ११२५।

भीनौ[2] सुहावने . झूठी सुख अपनौ करि जान्यौ, परम प्रिया क ~ १/६५।

भीनौ[3] भीगे : अति रँग भीनी अति रँग ~ परि० १/४९।

भीन्यौ[1] भीगा हुआ . मोहन लाल बन्यौ रग ~ परि० १/४९।

भीन्यौ[२] भरा हुआ : मौन देखि परिहस नृप ~ २९४१ ।

भीन्यौ[३] लीन हो गया, मग्न हो गया सूरदास स्वामीपन तजि कै सेवकपन रस ~ ८/१५ ।

भीम पाच पाण्डवों मे से एक जो युधिष्ठिर से छोटे तथा अर्जुन से बडे थे : ~ गदा कर तैं महि डारी १/२४८ । △ ~ **के हाथी** भीम के द्वारा फेंके गए हाथी जो आज भी आकाश मे घूमते हुए माने जाते हैं अर्थात् वह वस्तु जो एक बार छूट कर फिर न मिले अब मन भयौ ~ — सुनियत अगम अपार ४२५३ ।

भीम कुमार घटोत्कच, पाण्डवों के गुप्त वनवास के समय हिडिम्बा नामक राक्षसी से उत्पन्न भीम का पुत्र • आज रन कोपौ ~ सा० ल० ७४ ।

भीमार्जुन भीम और अर्जुन • भीरम द्रोण अरु कर्ण युधिष्ठिर ~ सहदेव सारा० ७१२ ।

भीर १ सकट, विपत्ति जानि दान पर ~ १/३३ । २ पीडा सूर कहौं का कथा जु उनकी पर्‍यौ प्रेम की ~ ४०९७ । ३ चोट गिरि जनि परै, टरै नख तैं जनि, कौन सहैगौ ~ ८७४ । △ ~ **के परे** सकट के पडने पर . ~ — तै धीर सबहिन तजी १/५ । △ ~ **परत** संकट पडता है जहँ जहँ ~ — भक्तन को तहँ तहँ होत सहाय मारा० १३० । ~ **परी** विपत्ति पडी जब जब ~ — सतन कों चक्र सुदरसन तहा सँभार्‍यौ १/१४ । ~ **परैं** सकट पडने पर • ~ — रिपु को दल दलि-मलि ९/१५२ । ~ **परै** सकट पड़ता है, विपत्ति आती है जहँ-जहँ ~— भक्तनि कौं तहाँ-तहाँ उठि धाऊ १/२४४ ।

भीरुता कायरता : बदत नृप दृत अनुभूत उर ~ ४२१३ ।

भील-राव भीलो के राजा ने • ~ निज लोगनि कह्यौ ५/३ ।

भीलि शबरी नामक भील जाति की स्त्री जिसे भगवान् ने वैकुंठ धाम दिया था : अजामिल अरु ~ गनिका चढे जात बिमान १/२३५ ।

भीलिनि भीलनी, भील नामक आदि वासी जाति की स्त्री ता ~ के दस सुत भए ६/४ ।

भीषम भीष्म पितामह, गगा के गर्भ से उत्पन्न, राजा शातनु के पुत्र जिनका पहले देवव्रत नाम था : राखी पैज भक्त ~ की १/२६ ।

भीषमराइ राजा भीष्मक, रुक्मिणी के पिता कुंडिन पुर कौ ~ ४१६७ ।

भीषम सुता भीष्मक की पुत्री : ~ रुकमिना नाम ४१६७ ।

भीष्म राजा भीष्मक . एक ममय नारद मुनि आये नृपति ~ के गेह सारा० ६२२ ।

भीस्म भीष्म पितामह ~ द्रोण अरु कर्ण युधिष्ठिर सारा० ७१२ ।

भुँइ भूमि, पृथ्वी • गागरि धरि जल ~ ढरकावत १४३१ ।

भुँजै भूनती है, जलाती हैं • दधिसुत किरन भानु भई ~ ४०६८ ।

भुअग सर्प • लहरि ~ त्यागि सनमुख आवै री ६२९ ।

भुअँगम सर्प : ज्यौं कैंचुरी ~ त्यागत १००३ ।

भुअगिनि सापिन, नागिन . की पय पियति ~ २६४८ ।

भुइँ १ पृथ्वी नागिनि सी ~ लोटी १७५ । २. पृथ्वी पर . कछु खायौ कछु ~ ढरकायौ १५३० ।

भुक्ता उपभोग करने वाला, भोक्ता : दाता ~ हरता करता बिस्वभर जग जानि ४८७ ।

भुगतहु भोगें, भोगेंगे : आपन कियौ आपही ~ ३५४३ ।

भुगति[१] सुख-भोग भोग ~ भूलैं नहिं भावत ३६९३ ।

भुगति[२] खाने पीने योग्य वस्तुएँ : भोग ~ लै चलौ, इंद्र के आसियाँ ८४१ ।

भुगते भोगे, सहे, झेले : हम तो पाप कियौ ~ को १८२८ ।

भुगुते भोग किया, आनन्द लिया दसन दाग, नख-रेख बनी है, भामिनि भवन भलैं ~ २५०४ ।

भुजग सोप : कैंचुल तजै ~ १६४० ।

भुजंगिनि नागिन : माया बिषम ~ कौ बिष २/३२ ।

भुज १ भुजा : स्याम ~ गहि काढि लीजै १/९९ । २. भुजाएँ : प्रगट भए धरि कै ~ चारि १० । ३ भुजा से • जिहि ~ परसुराम बल करष्यौ ९/९३ । ४ भुजाओं मे . चारि ~ जिहिं चारि आयुध (हरि) ५ । ५ भुजाओं के : निज ~ स्रम सुख पायौ १/१५ । ६ भुजाओं को : ककना कर रहत नाहीं टाड ~ गहि लीन ४१०७ । △ ~ **कंठ लगावहु** गले लग जाओ, गले लगाओ . आन जन्तु धुनि सुनि कत डरपत मो ~ — १७९ । ~ **बीच गह्यौ** : भुजाओं के बीच मे पकड लिया/भर लिया, आलिंगन कर लिया सर स्याम सुनि सखा सयानौ लै ~ — ४१३१ । ~ **भरि** गले लगाकर, आलिंगन करके : ~ — धरि अँकवारि बाँह गहि कै भकझोर्‍यौ १४६१ । ~ **भुज भरि भरि** . भुजाओ मे भर भर कर, बार-बार आलिंगन करके : ~ — धरि अकम महर के ३० । ~ **भुज जोरि** भुजाओं से भुजाएं जोडकर . ~ — अग बल पायौ ३०७० ।

भुजगिनि साँपिन, नागिन • कनक-कलस मधु-पान मनौ करि ~ उलटि धँसी ११९६ ।

भुज दंड १ बाहुओं से : बलि ~ कितक अरि त्रासी ४१८४ । २. भुजाओं मे सो लीन्हौ अवछग जसोदा अपनैं भरि ~ ४८७ ।

भुज-दंडनि भुजदण्डों से, बाहों से • ~ खडहु ब्यथा ११८० ।

भुजन भुजाओं पर • (मेरे) साँवरे मैं बलि जाऊँ ~ की ९६६ ।

भुजनि १ भुजाओं मे, बाहु-युग्म मे · बहुत ~ बल होइ तुम्हारैं ९/८३। २ भुजाओं को · रहे लपटाइ, दोउ ~ पलटाइ कै कह्यौ पिय वचन २६२१। ३. भुजाओं : स्याम ~ की सुन्दरताई ६४१। ~ **अकम धारि** बाहों मे समेट कर, गले से लगा लिया, आलिंगन कर लिया सूर-प्रभु हँसि लई प्यारी ~ | २७२१। ~ **भरि** भुजाओं मे भर कर, आलिंगन करके इनहिं ~ — भैंटौंगो गोपाल २९४६।

भुज-बंदन भुजबंद सोभित सलिल परस्पर छिरकत मिथिल होत ~ ११५८।

भुजा भुजा, भुजाएँ। △ ~ **पसारि** बाँहों को फैलाकर · मोह-समुद्र सूर बूड़त है, लीजै ~ — १/१११।

भुजाहि भुजा को, बाँह को · बाम ~ सखा अस दीन्हें दच्छिन कर द्रुम डरियाँ ४७०।

भुव भूमि/पृथ्वी पर : दधि ~ ढरकि रह्यौ।

भुरंग भ्रमर रूप उद्धव : सूर वह रस कहाँ कामी मिल्यौ भसा ~ ३४१४।

भुरइ भुला लिया, बहका/फुसला लिया बातनि ~ राधिका भोरी ६७३।

भुरई भ्रम मे पड़ गया, चकरा गया प्रेमहूँ भुरयौ, ~ बैन-भुगार २८२६।

भुरए भुलावे में डाले हुए हैं : तुम ~ हो नट कहत ई तुम मौं ढोटा १६१८।

भुरकति भुरक रही है, छिटक रही है · ~ वदन धूरि २८६०।

भुरकि छिड़क कर, छिटकाव करके : मुक्ता मनौ नील मनिमय पुट, धरे ~ वर वदन ४७६।

भुरवति फुसलाती है, बहकाती हैं वर लै लै मेरी सुत ~ ये ऐसी सब दिन की जानी ६९५

भुराई भोलापन, सिधाई · आजु रही अब कहा ~ २०५१।

भुराए बहलाया, बहला लिया · अतिहि चतुर कहावति राधा बातनि ही हरि क्यों न ~ १८७७।

भुराहत भुलावे मे डालते हैं, बहकाते ई · हमसौं तुमसौं बैर कहा अलि स्याम अजान ~ ३६०९।

भुरै १ बहला/फुसला कर : सूर अवधि उपचार आजु लौं राखे प्रान ~ ३३४५। २ भूल जाता है, विभोर हो जाता है : कमल-कोस अलि ~ १६१८।

भुरयौ १ भूला रहता है : सदा सिकार करत मृग-मन कौ, रहत मगन ~ १/६४। २ भ्रम में पड़ गया : ~ काम प्रेम हू ~ २८२६।

भुलति भूलती है, विस्मृत होती है चुभि जु रही नवनीत चोर छबि, ~ न ध्यान कहे ३७८७।

भुलरी भूल गई, आत्मविस्मृत हो गई · बालक वृन्द मध्य राजत हैं, छबि निरखत ~ ३०२६।

भुलाइ १. भूल (विस्मरण हो जाने के अर्थ म) वह सुधि गइ ~ १९९२। २ भूली, भ्रमित (रह गई) वह उतपात होत गोकुल मैं मैया रही ~ ५७८।

भुलाइँ भूल गई की तुम ब्रज- मारगहिं ~ २०११।

भुलाई १ भूल गयन गई ~ १४१०। २ भुला (रही हो), भ्रमित कर (रही हो) : नद घरनि तव कहति सखिन सौं कत ही रही ~ ८१२। ३ भूली मैं तो रही ~ १८३३। ४ भूले · छाकहि मै तुम रहे ~ ४७१। ५ भुला दी, भूल गया · देह गेह की सुरति ~ ४२००। ६. भूल गये बन-मधन-सुधि ~ २२७४। ७ भूल गई देखि दसा प्रतिबिम्ब की यह बाम ~ २२०१।

भुलाऊ भुला दी, विस्मृत कर दी मग्न रसातल सेषासन रहे तब की सुरति ~ २२१।

भुलाए भूल गये, विस्मृत हो गये पार्थ अवसान तब सब ~ २७१।

भुलान १ भूल जाता है : चिबुक चित्त ~ १३७९। २ भूला हुआ है · स्वाद सब्द ~ ४०३५।

भुलानीं भूल गई : स्याम अँग जुवती निरखि ~ ६४४।

भुलानी १ भूल गई, भुला गई : स्याम वरन तनु निरखि ~ २०४१। २ भूल गई हूँ : तबहीं तै हरि हाथ बिकानी, देह गेह सुधि सबै ~ १८६३। ३ भूल गये हो, भूल बैठे हो ऐसे प्रभु की सुरति ~ ८८६। ४ भूली हुई : ब्रजहीं बस ~ १६८५।

भुलाने १ भूल गये, भटक गये : हरि मुख निरखत नैन ~ १६९८। २ भूल गये हो, भ्रमित हो मैं तबही की बकति हौं कछु आजु ~ २४८७। **पलक** ~ पलक मारना भूलकर, टकटकी लगाये · निरखत इकटक — ~ २२९६।

भुलानौ १ भटकता रहा : सुत वित-वनिता प्रीति लगाई, भूठे भरम ~ १/३२९। २ भूल गया, भूल बैठा · फेरत कमल द्वार है निकसे, करत सिंगार ~ १६६७।

भुलान्यौ १ भुला दिया, विस्मृत कर दिया : सिवहु समाधि ~ ११७३। २ भूल गया कीधौं पथ ~ १८९३।

भुलायौ क्रि० अ० १ भुला दिया, विस्मृत कर दिया मिथ्या तनु कौ मोह ~ ९/२। २ भुला दिया है : तबहीं तैं बनि हमहिं ~ २४०५। ३ भूल गये हो · सत्य आहि की सुपन ~ १९८५। वि० भूला हुआ, भ्रम मे पड़ा हुआ ज्यौं कुरंग नाभी कस्तूरी ढूँढत फिरत ~ ४/१३।

भुलावत १. भूल जाता है, विस्मृत हो जाता है : रमा सहित बैकुंठ ~ ४४९। २ भुला रहे हो · प्रभु बिरद ~ कैसौ १/१२९।

भुलावे भुलाता हैं, भूलता है · छिन नहिं मोहिं ~ सारा० ५८९।

भुलावैं भ्रमित करते हैं : अवलनि का जु ~ ३४९१।
भुलावै १ भ्रमित करती हो, भ्रम मे टालना चाहती हो बातनि मोहिं ~ (री) २०७१। २ भ्रम मे पड जाता है अग्यानी तेहिं देखि ~ ५/४। ३. भूल जाते हैं, भुला देते हैं : सूरदास प्रभु देखि देखि सुर नर मुनि बुद्धि ~ १२६।
भुलाहि १ भूल जायें, भटक जायें बहुत भीर हैं हरि न ~ ८२७। २ भूलते हैं. सूर प्रभु की प्रबल माया जानि बूझि ~ १/४७।
भुलाही १ भूल गई करत श्रृंगार जुवती ~ ९९८। २ भ्रमित हो जाते हैं, भ्रम मे पड जाते हैं : खग मोहैं, मृग यूथ ~ ६२०।
भुलाहु भटक/भूल जाओ : जाइ कहु न ~ ६१०।
भुलें भुला : तुमहीं ~ दियौ ससार ८४५।
भुवग साँप, सर्प : ज्यौं ~ सिर रहत मनी १/३९।
भुवगम साँप ने मना ~ खाई ५२। ~ **डासी** साँप की डसी हुई हो भूलि न उठत जसोदा जननी मनौं ~ — ४०९१।
भुवगिनि नागिन, सर्पिणी : छूटी अलक ~ कुच तट २४७२।
भुवगिनी नागिन . मनु बेनी ~ परसत २६१०।
भुव[1] १ भूमि, पृथ्वी ~ पर नहि राखौं उनकौ कुल ९२५। २ भूमि का मिट्यौ ~ भार ३०८२। ३ भूमि के . सुरसरि जव ~ ऊपर आवै ९/९। ४ भूमि पर ~ नख लिखैं २७९७।
भुव[2] भौंह, भ्रू . भँवरज बर ~ भगनि कौ १४६५।
भुवन[1] ससार, जगत अखिल ~ निज नाथ १/१०३।
भुवन[2] १ लोक, लोकों : जो प्रभु तिहू ~ कौ नायक २०२०। २ लोको मे तिनि ~ आनद २८।
भुवनाधिपति भुवनो/लोकों के स्वामी अखिल ब्रह्माडपति, तिहुँ ~ १९४७।
भुवनिया भुवनों मे, लोकों मे सो नहि तिहूँ ~ २३८।
भुवाल १ राजा ने अति रिस गही ~ ९/१०४। २ राजा को तब आवहुगे जीति ~ १५३२।
भुवाला राजा : कालनेमि अरु उग्रसेन-कुल उपज्यौ कस ~ ४।
भुवि पृथ्वी पर रैवत ब्याह कियौ ~ आइ ९/४।
भुस भूसा टूटे कधरु फूटी नाकनि, कौ लौं धौं ~ खैहौ १/३३१। △ ~ **पर की भीति** . अविश्वसनीय, अस्थायी तुम्हरी बोलनि कौन पतीजै ज्या ~ — ३७४३। ~ **फटके** : व्यर्थ के काम मे शक्ति नष्ट करे सूर स्याम तजि को ~ — मधुप तुम्हारे हेतु ३८६१।
भूँजब भोगूँगा, भोग करूँगा : रामचन्द्र से पुत्र बिना में ~ क्यों यह खेत ९/३९।
भूँड दे० भूड।
भू[1] १ पृथ्वी . बूँद न आवत ~ पर ८७७। २ पृथ्वी के : ~ भार हरन प्रगट तुम भूतल १/२०५। ३ पृथ्वी पर . सेज छाँडि ~ सोयौ १/४३।
भू[2] भौंह, भ्रू . ~ जुग जुवा जनु जोइ सा० ल० १०५।
भूकि 'भो भों' करता (हुआ) जैसें स्वान काँच मदिर में, भ्रमि भ्रमि ~ पर्यौ २/२६।
भूखौ १. भूखे . नाहिं तौ ~ ही रहि जाइ ५/३। २. भूखा : ~ भयौ आजु मेरौ बारौ ३९५।
भूचर चरन भूचर (पृथ्वी पर चलने वाले अर्थात् दीमक या छोटे मोटे कीडे) को चरन (चरने वाला, खाने वाला) अर्थात् मुर्गा . ~ करत पुकार सा० ल० ७३।
भूड लाल रग की बलुई भूमि . कित पट पर गोता मारत हो आप ~ के खेत ३५९६।
भू तनया रिपु पितु सैना की सगिन पृथ्वी की पुत्री (सीता) के शत्रु (जयत) के पिता (इन्द्र) की सेना (मेघ) की सहचरी अर्थात् विद्युत, बिजली . ~ मति गति ठानी सा० ल० ५४।
भूतल १ पृथ्वी : राखौं नाहिं इन्है ~ पर ८२२। २ पृथ्वी का . भार ~ हरन १/११९। ३. पृथ्वी पर . छिन ~ छिन लोक निज ४९२।
भूधर समर आदि भूधर (पर्वत) समर (रण) इनके प्रथम अक्षरों को जोडने से 'पर' पराई, अन्य . ~ ती सोई, सुनत करत तन पोडे सा० ल० ८९।
भूप १ राजा मानौ जात कहूँ के ~ ३५। २ राजा ने देत दान राख्यौ न ~ कछु ९/१६।
भूपति राजा . ~ उदार फूले भाग फरे घर के ३४।
भूपनि राजाओं : बैठी सभा सकल ~ की १/२४८।
भूपाल राजा जाइ तिन्हैं भाष्यौ ~ ९/९।
भूपाली एक प्रसिद्ध रागिनी जिसका स्वरग्राम इस प्रकार है- 'सा, ग, म, ध, नी, सा' . सुर सावत ~ ईमन करत कान्हरो गान सारा० १०१३।
भूभृत राजा ~ सीस नमित जो गर्व गत ९/२६।
भूमा ब्रह्म, विराट् पुरुष महाकाल पुर तुरत पधारे हरि के पास सारा० ८५६।
भूमि-घिसन-रिपु भूमि पर घिसने वाले (कीडे-मकोडे) का रिपु मुर्गा, कुक्कुट = चिनगारी = ऊषा, प्रभात कालीन बेला छपा न छीन होति सुनु सजनी, ~ कहा दुरौनी ४२६३।
भूमि धसन साँप . ~ किधौं कनक खभ चढि २७७०।
भूमि-भवन-रिपु भूमि मे जिनका भवन हो (कीडे-मकोडे) के शत्रु कुक्कुट = चिनगारी = ऊषा : छपौ न छीन होति सुनि सजनी ~ कहा रहत ३३५४।
भूमि-सुत मगल ~ भाग भवन मे भोग सा० ल० ८१।
भूमि सुत अरि मित्र रिपु पुर भूमि सुत (कैवान्च) उसका शत्रु

(वानर) उसका मित्र (राम) का शत्रु (रावण) उसका पुर लंका अथवा भूमि सुत (भौम नामक असुर) उसका शत्रु (कृष्ण) कृष्ण के सुहृद (बलराम=राम) उनके शत्रु (रावण) की नगरी लंका और लंका में लंक ग्रहण कर अर्थ हुआ कटि, कमर : ~ तें निकासत आप सा० ल० २।

भूमि सुत की देख करनी आदि ते कर हीन पृथ्वी के पुत्र= अकुर=अक्रूर के प्रथम अक्षर को निकाल देने से बना क्रूर अर्थात् अक्रूर का क्रूर कर्म देखो : ~ सा० ल० ३६।

भूमि सुत जो लियौ गुन १. पृथ्वी के पुत्र (वृक्ष) का गुण जड़ता। २ पृथ्वी के पुत्र (मंगल) का गुण लाल अर्थात् श्री कृष्ण : ~ मो, निदरनन मुख हान सा० ल० २०।

भूमिहि भूमि की : बलिहारी वृन्दावन ~ ४०५४।

भूरति मुरका हो, छिड़का गया हो : मनहु कनक ~ गगातट परि० २/६४।

भूरिश्रव भूरिश्रवा, बाह्लीक के चंद्रवंशी राजा सोमदत्त का पुत्र जो कौरवों के पक्ष से महाभारत में लड़ा था : इन भगदत्त द्रोन ~ तुम सेनापति धीर १/२६९।

भूरी भूरे रंग की गाय : दुलही, फुलही, भौंरी ~ हाँकि ठिकाई लेता ~ ४४५।

भूलत १ भूल जाता है : उनकी प्रीति देखि सब ~ ४१२९। २ भूलती है, भूल जाती है : ग्रीषम काम निमिष छाँडत नहिं देह दसा सब ~ ३३४५। ३ भूलते हो, इतराते हो, गर्व करते हो : काहे को अपन जिय ~ ३६१२।

भूलहु भूलो, भूल करो : अब अपनी सी हमहिं सिखावत मति ~ यह जोत ३८६९।

भूलहू भूला, रहो : या धोखे जिनि ~ हम समरथ की बान १६१८।

भूलि १ भूलकर : ~ अंगारनि को न चुनै ३७४०। २ भूल से : कुबिजा ~ कहन जौं कोऊ ३१०६। ~ रहति भूली रहती थीं, लट्टू हुई रहती थीं : ~ मन मोहन मा २४९१। ~ रही अनुराग प्रेम में बेसुध है : राधा ~ — ११२६। ~ रहे सुधि बुधि खो बैठे : लोचन ~ — तहँ जाई २३२४। ~ रह्यो भूल गया, आश्चर्य में पड़ गया . देखत ~ — द्विज दीन ४२३६।

भूलियौं भूल गई : हम ~ भव भोग परि० १/९९।

भूलिहुँ भूल में भी : ~ जनि आवहु इहिं गोकुल ४०६७।

भूलिहु भूल से भी : ~ चित चिंता नहिं आनहिं ९/९५।

भूलीं १. भूल गई थीं . [illegible] ~ /१३। २ ~ ९१२।

भूले[1] क्रि० स० १. भूल गया है : ~ भोजन नीर ३७१६। २ भूल जाते हैं : चाल देखि मराल ~ १७१५। ३ भूले हुए हैं : लोचन सपने कैं भ्रम ~ २३७१। ४ भूल सकता है : इन बातनि सोई पै ~ ३९६२। ५ भूल गये : सुर विमान सब कौतुक ~ सारा० २२८। ६. मुग्ध हो गये : हरि मुख देखि ~ नैन १०३६। ७. भौचक्के हो गये, आश्चर्यचकित रह गये : कौतुक देखत सुर-नर ~ ९१७। क्रि० वि० भूले हुए : जोगी भ्रमत जाहि लगि ~ ३९२४।

भूलेहुँ भूल कर भी : इकटक मग जोवति अरु रोवति ~ पलक न लागी ३५७७।

भूलैं क्रि० अ० भूलते हैं, भूल जाते हैं . मति भ्रम ~ लोट परि० १/५। क्रि० वि० भूल कर भी : (माई) नैना ~ अनत न जात १२०५।

भूलै भूल जाता है, विस्मृत कर देता है : ज्यौं मृगा कस्तूरि ~ सु तौ ताके पास १/७०।

भूलौ १ भूल गये . तुम ~ हम भूलति ३७०५। २ भूल गया हो : ज्यों मृग चौका ~ ४१२५। ३ आश्चर्यचकित रह गया . ~ द्विज देखन अपनो घर ४२३७। ~ भूलौ भूला ही भूला हुआ, भ्रम में पड़ा हुआ ही . तुम बिन ~ — डोलत १/१७७।

भूल्यौ १ भूल गया . तुम बिन स्यान सबै सुख ~ ३२६२। २. भूल गया हूँ . मैं ही चित ~ ४९२। ३ भूला हुआ : ~ फिरत सकल जल थल महँ १/४८। ४ भूले हुए हो, भ्रम में पड़े हुए हो : तुम ~ दससीस बीस भुज ९/१३३।

भूपन[1] १ आभूषण, गहना . सकल ~ मनिनि के बने सकल अंग ८/८। २. आभूषण/गहनों को : प्रिया ~ स्याम पहिरत २१४४।

भूपन[2] अलंकार, श्रेयस्कर : करत अनुग्रह ~ मोकों सा० ल० ६८।

भूपन आन न अन्य आभूषण नहीं है जिनके, अनन्वय अलंकार ~ मानै सा० ल० ३।

भूपनचित्र विचित्र शोभा, चित्रोत्तर अलंकार . सूरदास दाउ परे पाइ तर ~ समूरी सा० ल० ८१।

भूपननि अलंकारों की, गहनों की : अंग ~ छवि कहि न जाइ ८/१०।

भूपन पति अहार जा फल भूपन (अलंकार, यहाँ 'मुद्रा' अल

भुलावैं भ्रमित करते हैं : अवलनि को जु ~ ३४९१।

भुलावै १ भ्रमित करती हो, भ्रम मे डालना चाहती हो वातनि मोहिं ~ (री) २०७१। २ भ्रम मे पड जाता है : अग्यानी तेहिं देखि ~ ५/४। ३. भूल जाते हैं, भुला देते हैं : सूरदास प्रभु देखि देखि सुर-नर मुनि बुद्धि ~ १२६।

भुलाहि १ भूल जायँ, भटक जायँ · बहुत भीर हैं हरि न ~ ८२७। २ भूलते हैं सूर प्रभु की प्रबल-माया जानि वूझि ~ १/४७।

भुलाही १ भूल गई करत श्रृंगार जुवती ~ ९९८। २ भ्रमित हो जाते हे, भ्रम मे पड जाते हैं : खग मोहैं, मृग-यूथ ~ ६२०।

भुलाहु भटक/भूल जाओ : जाइ कहुँ न ~ ६१०।

भुलें भुला . तुमहीं ~ दियौ ससार ८४५।

भुवग साँप, सर्प : ज्यों ~ सिर रहत मनी १/३९।

भुवगम साँप ने . मना ~ खाई ५२। ~ **डासी** साँप की डसी हुई हों भूलि न उठत जसोदा जननी मनों ~ — ४०९१।

भुवंगिनि नागिन, सर्पिणी : छूटी अलक ~ कुच तट २४७२।

भुवगिनी नागिन : मनु वेनी ~ परसत २६१०।

भुव[1] १ भूमि, पृथ्वी ~ पर नहि राखौं उनकौ कुल ९२५। २ भूमि का · मिट्यौ ~ भार ३०८२। ३ भूमि के : सुरसरि जव ~ ऊपर आवै ९/९। ४ भूमि पर · ~ नख लिखैं २७९७।

भुव[2] भाह, भ्रू . भँवरज वर ~ भगनि कौ १४६५।

भुवन[1] ससार, जगत . अखिल ~ निज नाथ १/१०३।

भुवन[2] १ लोक, लोकों जो प्रभु तिहूँ ~ कौ नायक २०२०। २ लोकों मे तिनि ~ आनद २८।

भुवनाधिपति भुवनों/लोकों के स्वामी अखिल ब्रह्माडपति, तिहुँ ~ १९४७।

भुवनिया भुवनों मे, लोकों मे . सो नहि तिहूँ ~ २३८।

भुवाल १ राजा ने . अति रिस गही ~ ९/१०४। २ राजा को तब आवहुगे जीति ~ १५३२।

भुवाला राजा : कालनेमि अर उग्रसेन-कुल उपज्यौ कस ~ ४।

भुवि पृथ्वी पर रैवत व्याह कियौ ~ आइ ९/४।

भुस भूसा . टूटे कधऽरु फूटी नाकनि, कौलौं धौं ~ खैहौ १/३३१। △ ~ **पर की भीति** अविश्वसनीय, अस्थायी तुम्हरी वोलनि कौन पतीजै ज्यों ~ — ३७४३। ~ **फटके** . व्यर्थ के काम मे शक्ति नष्ट करे : सूर स्याम तजि को ~ — मधुप तुम्हारे हेतु ३८६१।

भुँजव भोगूँगा, भोग करूँगा : रामचन्द्र से पुत्र विना मैं ~ क्यौं यह खेत ९/३९।

भुँड दे० मड।

भू[1] १ पृथ्वी . बूँद न आवत ~ पर ८७७। २ पृथ्वी के : ~ भार हरन प्रगट तुम भूतल १/२२५। ३ पृथ्वी पर · सेज छाँडि ~ सोवौ १/४३।

भू[2] भौंह, भ्रू : ~ जुग जुवा जनु जोइ सा० ल० १०५।

भूकि 'भौं भौं' करता (हुआ) जैसैं स्वान काँच-मदिर मैं, भ्रमि भ्रमि ~ पर्यौ २/२६।

भूखौ १ भूखे . नाहिं तौ ~ ही रहि जाइ ५/३। २. भूखा · ~ भयौ आजु मेरो वारौ ३९५।

भूचर चरन भूचर (पृथ्वी पर चलने वाले अर्थात् दीमक या छोटे मोटे कीडे) को चरन (चरने वाला, खाने वाला) अर्थात् मुर्गा ~ करत पुकार सा० ल० २३।

भूड लाल रग की वलुई भूमि : कित पट पर गोता मारत हौ आप ~ के खेत ३५९६।

भू तनया रिपु पितु सैना की सगिन पृथ्वी की पुत्री (सीता) के शत्रु (जयत) के पिता (इन्द्र) की सेना (मेघ) की सहचरी अर्थात् विद्युत्, बिजली : ~ मति गति ठानी सा० ल० ५४।

भूतल १ पृथ्वी : राखौं नाहिं इन्हें ~ पर ८२२। २ पृथ्वी का : भार ~ हरन १/११९। ३ पृथ्वी पर छिन ~ छिन लोक निज ४९२।

भूधर समर आदि भूधर (पर्वत) समर (रण) इनके प्रथम अक्षरों को जोडने मे 'पर' पराई, अन्य . ~ ती सोई, सुनत करत तन पोडे सा० ल० ८९।

भूप १ राजा मानौ जात कहूँ के ~ ३५। २ राजा ने : देत दान राख्यौ न ~ कछु ९/१६।

भूपति राजा . ~ उदार फूले भाग फरे घर के ३४।

भूपनि राजाओं : वैठी सभा सकल ~ की १/२४८।

भूपाल राजा जाइ तिन्हें भाष्यौ ~ ९/९।

भूपाली एक प्रसिद्ध रागिनी जिसका स्वरग्राम इस प्रकार है- 'सा, ग, म, ध, नी, सा' सुर सावत ~ ईमन करत कान्हरो गान सारा० १०१३।

भूभृत राजा : ~ सीस नमित जो गर्व गत ९/२६।

भूमा ब्रह्म, विराट् पुरुष · महाकाल पुर तुरत पधारे हरि के पास सारा० ८५६।

भूमि-घिसन-रिपु भूमि पर घिसने वाले (कीड़े-मकोडे) का रिपु मुर्गा, कुक्कुट = चिनगारी = ऊषा, प्रभात कालीन वेला छपा न छीन होति सुनु सजनी, ~ कहा दुरौनी ४२६३।

भूमि धसन साँप : ~ किधौं कनक खभ चढ़ि २७७०।

भूमि-भवन-रिपु भूमि मे जिनका भवन हो (कीड़े-मकोडे) के शत्रु कुक्कुट = चिनगारी = ऊषा : छपौ न छीन होति सुनि सजनी ~ कहा रहत ३३५४।

भूमि-सुत मगल . ~ भाग भवन मे भोग सा० ल० ८१।

भूमि सुत अरि मित्र रिपु सुर भूमि सुत (कँवाच) उसका शत्रु

(वानर) उसका मित्र (राम) का शत्रु (रावण) उसका पुर लका अथवा भूमि सुत (भौम नामक असुर) उसका शत्रु (कृष्ण) कृष्ण के सुहृद (वलराम=राम) उनके शत्रु (रावण) की नगरी लंका और लका से लक ग्रहण कर अर्थ हुआ कटि, कमर : ~ तें निकासत आप सा० ल० २।

भूमि सुत की देख करनी आदि तें कर हीन पृथ्वी के पुत्र=अकुर=अक्रूर के प्रथम अक्षर को निकाल देने से वना क्रूर अर्थात् अक्रूर का क्रूर कर्म देखो : ~ सा० ल० ३६।

भूमि सुत जो लियौ गुन १ पृथ्वी के पुत्र (वृक्ष) का गुण जटता। २ पृथ्वी के पुत्र (मगल) का गुण लाल अर्थात् श्री कृष्ण : ~ सो, निदरसन मुख हान सा० ल० २०।

भूमिहि भूमि की : वलिहारी वृन्दावन ~ ४०५४।

भूरति मुरका हो, छिड़का गया हो : मनहुँ कनक ~ गगातट परि० २/६४।

भूरिश्रव भूरिश्रवा, वाह्लीक के चद्रवंशी राजा सोमदत्त का पुत्र जो कौरवों के पक्ष मे महाभारत मे लडा था : इत भगदत्त द्रोन ~ तुम सेनापति वीर १/२६९।

भूरी भूरे रग की गाय : दुलही, फुलही, भारी ~ हाँकि ठिकाई तेता ~ ४४५।

भूलत १ भूल जाता है : उनकी प्रीति देखि सव ~ ४१२९। २ भूलती है, भूल जाती है : ग्रीपम काम निमिष छाँडत नहिं देह दसा सव ~ ३३४५। ३ भूलते हो, इतराते हो, गर्व करते हो : काहे का अपने जिय ~ ३६१२।

भूलहु भूलो, भूल करो : अव अपनी सी हमहिं सिखावत मति ~ यह जोलैं ३८६९।

भूलहू भूलो, रहो . या धोखे जिनि ~ हम समरथ की वान १६१८।

भूलि १ भूलकर : ~ अंगारनि को न चुनै ३७४०। २ भूल से . कुविजा ~ कहत जौ कोऊ ३१०६। ~ **रहतिं** भूली रहती थीं, लट्टू हुई रहती थीं : ~ मन मोहन सो २४९१। ~ **रही अनुराग** प्रेम मे वेसुध है : राधा ~ — ११२६। ~ **रहे सुधि बुधि खो बैठे** . लोचन ~ — तहँ जाई २३२४। ~ **रह्यो** भूल गया, आश्चर्य मे पड गया : देखत ~ — द्विज दीन ४२३६।

भूलियौ भूल गई : हम ~ भव भोग परि० १/९९।

भूलिहुँ भूल से भी : ~ जनि आवहु इहिं गोकुल ४०६७।

भूलिहु भूल से भी : ~ चित चिंता नहिं आनहिं ९/९५।

भूलीं १ भूल गई थीं . भली कही सवही सुधि ~ ८१३। २ २. मुग्ध हो गई : अँखिया निरखि स्याम मुख ~ २४०१।

भूली १ भूल गई। २ भूली हो, भटकी हो . जैसें मृगिनी ~ वागरी २८०१। ३ भूली हुई थी मैं ~ इहिं लाज भरोसे २३९२। ४ वेसुध हो गई : वह छवि देखि राधिका ~ ९१२।

भूले[1] क्रि० स० १. भूल गया है : ~ भोजन नीर ३७१६। २ भूल जाते हैं . चाल देखि मराल ~ १७१५। ३ भूले हुए है : लोचन सपने कें भ्रम ~ २३७१। ४ भूल सकता है : इन वातनि सोई पै ~ ३९६२। ५. भूल गये : सुर विमान सव कौतुक ~ सारा० २२८। ६. मुग्ध हो गये : हरि मुख देखि ~ नैन १०३६। ७. भौचक्के हो गये, आश्चर्यचकित रह गये कौतुक देखत सुर नर ~ ९१७। क्रि० वि० भूले हुए : जोगी भ्रमत जाहि लगि ~ ३९२४।

भूलेहुँ भूल कर भी : इकटक मग जोवतिं अरु रोवतिं ~ पलक न लागी ३५७७।

भूलैं क्रि० अ० भूलते हैं, भूल जाते हैं : मनि भ्रम ~ लोइ परि० १/५। क्रि० वि० भूल कर भी . (मार्ग) नैना ~ अनत न जात १००५।

भूलै भूल जाता है, विस्मृत कर देता है . ज्यों मृगा कस्तूरि ~ सु तो ताके पास १/७०।

भूलौ १ भूल गये . तुम ~ हम भूलतिं ३७०५। २ भूल गया हो : ज्यों मृग चौका ~ ४१२५। ३ आश्चर्यचकित रह गया : ~ द्विज देखत अपनो घर ४२३७। ~ **भूलौ** भूला ही भूला हुआ, भ्रम मे पडा हुआ ही . तुम विन ~ — डोलत १/१७७।

भूल्यौ १ भूल गया तुम विन स्याम सवै सुख ~ ३०५२। २. भूल गया हूँ मैं ही चित ~ ४९२। ३ मूल हुआ : ~ फिरत सकल जल थल मई १/४८। ४ भूले हुए हो, गर्व मे पड़े हुए हो : तुम ~ दससीस वीस भुज ९/२३३।

भूपन[1] १ आभूषण, गहना : सकल ~ मनिनि के तन सकल अग ८/८। २. आभूपण/गहनों को प्रिया ~ स्याम पहिरत २१४४।

भूपन[2] अलकार, श्रेयस्कर . करन अनुजा ~ मोका सा० ल० ६८।

भूपन आन न अन्य आभूषण नहीं है जिनके, अनन्वय अलकार ~ मानैं सा० ल० ३।

भूपनचित्र विचित्र शोभा, चित्रोत्तर अलकार . मरदाम दाउ परे पाइ तर ~ समूरी सा० ल० ८१।

भूपननि अलकारों की, गहनों की : अग ~ छवि कहि न जाइ ८/१०।

भूपन पति अहार जा फल भूपन (अलकार, यहाँ 'मुद्रा' अलकार, मुद्रा अर्थान्तर से अगस्त्य मुनि की पत्नी लोपा मुद्रा) के पति (अगस्त्य) का आहार (समुद्र) की जा पुत्री अर्थात् लक्ष्मी=श्री+फल=श्रीफल, वेल ~ मैं सा० ल० १०२।

भूपन पति अहार सुत मुद्रा (लोपामुद्रा) के पति (अगस्त्य मुनि)

भुलावैं भ्रमित करते हैं : अबलनि को जु ~ ३४९१ ।
भुलावैं १ भ्रमित करती हो, भ्रम मे डालना चाहती हो बातनि मोहिं ~ (री) २०७१ । २ भ्रम मे पड जाता है . अग्यानी तेहि देखि ~ ५/४ । ३. भूल जाते हैं, भुला देते हैं : सूरदास प्रभु देखि देखि सुर नर मुनि बुद्धि ~ १२६ ।
भुलाहिं १ भूल जायँ, भटक जायँ बहुत भीर हैं हरि न ~ ८२७ । २ भूलते हैं : सूर प्रभु की प्रबल माया जानि बूझि ~ १/४७ ।
भुलाहीं १ भूल गईं करत शृंगार जुवती ~ ९९८ । २ भ्रमित हो जाते हैं, भ्रम मे पड जाते हैं • खग मोहैं, मृग यूथ ~ ६२० ।
भुलाहु भटक/भूल जाओ : जाइ कहुं न ~ ६१० ।
भुलें भुला . तुमही ~ दियौ ससार ८४५ ।
भुवंग साँप, सर्प ज्यों ~ सिर रहत मनी १/३९ ।
भुवंगम साँप ने मनो ~ खाई ५२ । ~ **डासी** साँप की डसी हुई हो भूलि न उठत जसोदा जननी मनौं ~ — ४०९१ ।
भुवंगिनि नागिन, सर्पिणी : छूटी अलक ~ कुच तट २४७२ ।
भुवगिनी नागिन : मनु बेनी ~ परसत २६१० ।
भुव[1] १ भूमि, पृथ्वी ~ पर नहिं राखौ उनकौ कुल ९२५ । २ भूमि का मिट्यौ ~ भार ३०८२ । ३ भूमि के . सुरसरि जब ~ ऊपर आवै ९/९ । ४ भूमि पर ~ नख लिखैं २७९७ ।
भुव[2] भौंह, भ्रू : भँवरज वर ~ भगनि कौ १४६५ ।
भुवन[1] ससार, जगत अखिल ~ निज नाथ १/१०३ ।
भुवन[2] १ लोक, लोको : जो प्रभु तिहू ~ कौ नायक २०२० । २ लोकों मे तिनि ~ आनद २८ ।
भुवनाधिपति भुवनो/लोकों के स्वामी अखिल ब्रह्माडपति, तिहुँ ~ १९४७ ।
भुवनिया भुवनों मे, लोको मे सो नहि तिहूँ ~ २३८ ।
भुवाल १ राजा ने . अति रिस गही ~ ९/१०४ । २ राजा को तब आवहुगे जीति ~ १५३२ ।
भुवाला राजा . कालनेमि अरु उग्रसेन-कुल उपज्यौ कस ~ ४ ।
भुवि पृथ्वी पर रैवत ब्याह कियौ ~ आइ ९/४ ।
भुस भूसा टूटे कधरु फूटी नाकनि, कौलौं धौं ~ खैहौ १/३३१ । △ ~ **पर की भीति** अविश्वसनीय, अस्थायी तुम्हरी बोलनि कौन पतीजै ज्यो ~ — ३७४३ । ~ **फटके** व्यर्थ के काम मे शक्ति नष्ट करे • सूर स्याम तजि को ~ — मधुप तुम्हारे हेतु ३८६१ ।
भूँजब भोगूँगा, भोग करूँगा . रामचन्द्र से पुत्र बिना मैं ~ क्यौं यह खेत ९/३९ ।
भूँड दे० भड ।
भू[1] १ पृथ्वी . बूँद न आवत ~ पर ८७७ । २ पृथ्वी के : ~ भार हरन प्रगट तुम भूतल १/२२५ । ३ पृथ्वी पर सेज छाँडि ~ सोयौ १/४३ ।
भू[2] भौंह, भ्रू • ~ जुग जुवा जनु जोइ सा० ल० १०५ ।
भूकि 'भो भों' करता (हुआ) • जैसैं स्वान काँच मदिर में, भ्रमि भ्रमि ~ पर्‌यौ २/२६ ।
भूखौ १ भूखे • नाहिं तौ ~ ही रहि जाइ ५/३ । २. भूखा : ~ भयौ आजु मेरो बारौ ३९५ ।
भूचर चरन भूचर (पृथ्वी पर चलने वाले अर्थात् दीमक या छोटे मोटे कीडे) को चरन (चरने वाला, खाने वाला) अर्थात् मुर्गा ~ करत पुकार सा० ल० ७३ ।
भूड लाल रग की बलुई भूमि . कित पट पर गोता मारत हौ आप ~ के खेत ३५९६ ।
भू तनया रिपु पितु सैना की सगिन पृथ्वी की पुत्री (सीता) के शत्रु (जयत) के पिता (इन्द्र) की सेना (मेघ) की सहचरी अर्थात् विद्युत, बिजली . ~ मति गति ठानी सा० ल० ५४ ।
भूतल १ पृथ्वी राखौं नाहिं इन्हैं ~ पर ८२२ । २ पृथ्वी का : भार ~ हरन १/११९ । ३ पृथ्वी पर . छिन ~ छिन लोक निज ४९२ ।
भूधर समर आदि भूधर (पर्वत) समर (रण) इनके प्रथम अक्षरों को जोडने से 'पर' पराई, अन्य ~ ती सोई, सुनत करत तन पोडे सा० ल० ८९ ।
भूप १ राजा मानौ जात कहूँ के ~ ३५ । २ राजा ने • देत दान राख्यौ न ~ कछु ९/२६ ।
भूपति राजा ~ उदार फूले भाग फरे घर के ३४ ।
भूपनि राजाओं : बैठी सभा सकल ~ की १/२४८ ।
भूपाल राजा जाइ तिन्है भाष्यौ ~ ९/९ ।
भूपाली एक प्रसिद्ध रागिनी जिसका स्वरग्राम इस प्रकार है- 'सा, ग, म, ध, नी, सा' सुर सावत ~ ईमन करत कान्ह-रो गान सारा० १०१३ ।
भूभृत राजा ~ सीस नमित जो गर्व गत ९/२६ ।
भूमा ब्रह्म, विराट् पुरुष महाकाल पुर तुरत पधारे हरि के पास सारा० ८५६ ।
भूमि-घिसन-रिपु भूमि पर घिसने वाले (कीड़े-मकोडे) का रिपु मुर्गा, कुक्कुट = चिनगारी = ऊषा, प्रभात कालीन बेला छपा न छीन होति सुनु सजनी, ~ कहा दुरौनी ४२६३ ।
भूमि धसन साँप • ~ किधौं कनक खभ चढि २७७० ।
भूमि-भवन-रिपु भूमि मे जिनका भवन हो (कीड़े-मकोडे) के शत्रु कुक्कुट = चिनगारी = ऊषा • छपो न छीन होति सुनि सजनी ~ कहा रहत ३३५४ ।
भूमि-सुत मगल ~ भाग भवन मे भोग सा० ल० ८१ ।
भूमि सुत अरि मित्र रिपु पुर भूमि सुत (कैंवाच) उसका शत्रु

(वानर) उसका मित्र (राम) का शत्रु (रावण) उसका पुर लंका अथवा भूमि सुत (भौम नामक असुर) उसका शत्रु (कृष्ण) कृष्ण के सुहृद (बलराम=राम) उनके शत्रु (रावण) की नगरी लंका और लंका से लंक ग्रहण कर अर्थ हुआ कटि, कमर : ~ तें निकासत आप सा० ल० २ ।

भूमि सुत की देख करनी आदि तें कर हीन पृथ्वी के पुत्र= अंकुर=अक्रूर के प्रथम अक्षर को निकाल देने से बना क्रूर अर्थात् अक्रूर का क्रूर कर्म देखो ~ सा० ल० ३६ ।

भूमि सुत जो लियौ गुन १ पृथ्वी के पुत्र (वृक्ष) का गुण जड़ता । २ पृथ्वी के पुत्र (मंगल) का गुण लाल अर्थात् श्री कृष्ण · ~ सो, निदरसन मुख हान सा० ल० २० ।

भूमिहि भूमि की · बलिहारी वृन्दावन ~ ४०५४ ।

भूरति मुरका हो, छिड़का गया हो मनहुँ कनक ~ गंगातट परि० २/६४ ।

भूरिश्रव भूरिश्रवा, वाह्लीक के चंद्रवंशी राजा सोमदत्त का पुत्र जो कौरवों के पक्ष से महाभारत में लड़ा था इन भगदत्त द्रोन ~ तुम सेनापति धीर १/२६९ ।

भूरी भूरे रंग की गाय · दुलही, फुलही, भौरी ~ हाँकि ठिकाई लेता ~ ४४५ ।

भूलत १ भूल जाता है उनकी प्रीति देखि सब ~ ४१२९ । २ भूलती है, भूल जाती है · ग्रीषम काम निमिष छाँडत नहिं देह दसा सब ~ ३३४५ । ३ भूलते हो, इतराते हो, गर्व करते हो · काहे कौं अपनैं जिय ~ ३६१२ ।

भूलहु भूलो, भूल करो : अब अपनी सी हमहिं सिखावत मति ~ यह जोलैं ३८६९ ।

भूलहू भूला, रहा : या धोख जिनि ~ हम समरथ की बान १६१८ ।

भूलि १ भूलकर : ~ अँगारनि को न चुनै ३७४० । २ भूल से कुबिजा ~ कहत जौ कोऊ ३१०६ । ~ **रहति** भूली रहती थीं, लटटू हुई रहती थीं · ~ मन मोहन सों २४९१ । ~ **रही अनुराग** प्रेम में बेसुध है · राधा ~ — ११२६ । ~ **रहे सुधि बुधि खो बैठे** . लोचन ~ — तहँ जाई २३२४ । ~ **रह्यो** भूल गया, आश्चर्य में पड़ गया देखत ~ — द्विज दीन ४२३६ ।

भूलियौ भूल गई हम ~ अब सोग परि० १/९९ ।

भूलिहुँ भूल से भी · ~ जनि आवहु इहिं गोकुल ४०६७ ।

भूलिहु भूल से भी . ~ चित चिंता नहिं आनहि ९/९५ ।

भूलीं १ भूल गई थीं . भली कही सबही सुधि ~ ८१३ । २ मुग्ध हो गईं : अँखिया निरखि स्याम मुख ~ २४०१ ।

भूली १ भूल गई । २ भली हो, भटकी हो . जैसें मृगिनी ~ बागरो २८०१ । ३ भूली हुई थी मैं ~ इहिं लाज भरोसे २३९२ । ४ बेसुध हो गई · यह छवि देखि राधिका ~ ९१२ ।

भूले[1] क्रि० स० १ भूल गया है · ~ भोजन नीर ३७१८ । २ भूल जाते हैं चाल देखि मराल ~ १७१५ । ३ भूले हुए हैं . लोचन सपने कैं भ्रम ~ २३७२ । ४ भूल सकता है · इन बातनि सोई पै ~ ३०६२ । ५ भूल गये : सुर विमान सब कौतुक ~ सारा० २२८ । ६ मुग्ध हो गये : हरि मुख देखि ~ नैन १०३८ । ७ भौचक्के हो गये, आश्चर्यचकित रह गये . कौतुक देखत सुर-नर ~ ९२७ । क्रि० वि० भूले हुए : जोगी भ्रमत जाहि लगि ~ ३९२४ ।

भूलेहुँ भूल कर भी · इकटक मग जोवति अरु रोवति ~ पलक न लागी ३५७७ ।

भूलैं क्रि० अ० भूलते हैं, भूल जाते हैं मनि भ्रम ~ लोइ परि० १/५ । क्रि० वि० भूल कर भी · (मारे) नैना ~ अनत न जात १२०५ ।

भूलै भूल जाता है, विस्मृत कर देता है ज्यौं मृगा कस्तूरि ~ सु तौ ताके पास २/७० ।

भूलौ १ भूल गये तुम ~ हम भूलनि ३७०५ । २ भूल गया हो ज्यौं मृग चौका ~ ४१२५ । ३ आश्चर्यचकित रह गया . ~ द्विज देखत अपनौ घर ४२३७ । ~ **भूलौ** भूला ही भूला हुआ, भ्रम में पड़ा हुआ ही तुम बिन ~ — डोलत १/१७७ ।

भूल्यौ १ भूल गया तुम बिन स्याम सबै सुख ~ ३२७२ । २ भूल गया हूँ मैं हौ चित ~ ४९२ । ३ भूला हुआ · ~ फिरत सकल जल थल महँ १/४८ । ४ भूले हुए हो, गर्व में पड़े हुए हो . तुम ~ इमसाम बीस सुत ०/२३३ ।

भूपन[1] १ आभूषण, गहना . सकल ~ मनिनि के बन सकल अंग ८/८ । २ आभूषण/गहनों को प्रिया ~ स्याम पहिरत २१४४ ।

भूपन[2] अलंकार, श्रेयस्कर . करत अनुग्रह ~ मोकों सा० ल० ६८ ।

भूपन आन न अन्य आभूषण नहीं है जिनके, अनन्वय अलंकार ~ मानी सा० ल० ३ ।

भूपनचित्र विचित्र शोभा, चित्रोत्तर अलंकार सुरदास डाउ परे पाइ तर ~ ससुरी सा० ल० ८१ ।

भूपननि अलंकारों की, गहनों की . अंग ~ छवि कहि न जाइ ८/१० ।

भूपन पति अहार जा फल भूपन (अलंकार, यहाँ 'मुद्रा' अलंकार, मुद्रा अर्थान्तर में अगस्त्य मुनि की पत्नी लोपा मुद्रा) के पति (अगस्त्य) का आहार (समुद्र) की जा पुत्री अर्थात् लक्ष्मी=श्री+फल=श्रीफल, बेल ~ में सा० ल० १०२ ।

भूपन पति अहार सुत मुद्रा (लोपामुद्रा) के पति (अगस्त्य मुनि)

का आहार (समुद्र) का पुत्र, चन्द्रमा : ~ बैरी सा० ल० ३३ ।

भूषन पति भख जा पति बाहन हित मुद्रा (लोपामुद्रा) के पति (अगस्त्य) का भक्ष्य (समुद्र) की पुत्री (कुमुदिनी) का पति (चद्रमा) का वाहन (मृग) के हितु, राग : ~ विचार चित गावे सा० ल० ७९ ।

भूषन पितु पितु सुत अरि पतिनी माता भूषन (आभूषण= अर्थान्तर से अगद) के पिता (बालि) के पिता (इन्द्र) के पुत्र (जयत), जयत के शत्रु (राम) की पत्नी (सीता) की माता, पृथ्वी : ~ ओर निहारै सा० ल० शेष ८ ।

भूषन बार आभूषण और बाल : ~ सुधार तासु रँग अँग अँग दीपत है हैं सा० ल० ९७ ।

भूषनसार शोभा का तत्त्व ~ 'सूर' स्रम सीकर सा० ल० ४९ ।

भूषित १ सुसज्जित, अलकृत, कहँ लगि कहों भूषननि ~ अग अग के रूप २४४५ । २ सुशोभित है/है : बिनु भूषन ~ ब्रज गोरी १२०१ ।

भू सुत पृथ्वी के पुत्र, अकुर = अर्थान्तर से अक्रूर ~ आइगौ इहि बेर सा० ल० ५३ ।

भू सुत तृतिय पृथ्वी के पुत्र (मगल) मगल से तीसरा ग्रह बृहस्पति=जीव ~ तलफ सफरी भौ सा० ल० ४० ।

भू सुत मेघ काल निसि इनके आदि बरन पृथ्वी के पुत्र = (मगल = कुन) मेघ काल (वर्षा) निसि (जामिनी) इनके प्रारम्भिक वर्णो के योग से हुआ = कुबजा = कुब्जा . ~ चित आए सा० ल० १०४ ।

भू सुत सत्रु गेह भू सुत (केवाच) के शत्रु (वानर) का गृह अर्थात् वृक्ष ~ गुन कामो सा० ल० १०१ ।

भू सुत सत्रु नाथ हित पितु त्रिय प्रिय पृथ्वी का पुत्र (केवॉच) के शत्रु (वानर = हनुमान) के स्वामी (राम) के हितू (भरत) के पिता (दशरथ) की पत्नी (केकई) का प्रिय = कलह : ~ हिय बचन डिढायौ सा० ल० २८ ।

भू सुत सत्रु थान पृथ्वी के पुत्र (केवॉच) के शत्रु (बन्दर) का स्थान अर्थात् वृक्ष ~ किन हेरत सा० ल० ६२ ।

भृंग[1] १ भ्रमर, भौरा मनौ अरुन अबुज पर बैठे मत्त ~ रस पाई २५५१ । २ भौरे, (दो) भ्रमर • मुख बिकास सरोज मानहु जुवति लोचन ~ १८१५ ।

भृंग[2] (भ्रमर = अर्थान्तर से पतिगा = पुन अर्थान्तर से पतग अर्थात् सूर्य) नायक समासोक्ति कर सूर ~ कौं बार बार वरु टेरै सा० ल० २४ ।

भृंग[3] अलि, सखियाँ ~ यूथ चतुरानन तनया सारा० ९३९ ।

भृंग जूथ (भ्रमर = अलि = सखी का समूह) सखियों का समूह • ~ चतुरानन तनया सारा० ९३९ ।

भृंगि भृगी कीड़ा जिसे बिलनी भी कहते हैं जो दूसरे कीडो को पकड कर 'भिन-भिन' शब्द करता हुआ उस कीड़े को भी अपने समान कर लेता है . रहत ~ कीट ज्यौं त्रास माने ४२१३ ।

भृंगी स्त्री० १ भृगी (बिलनी) नामक कीडा जो दूसरे कीडों को भी अपने जैसा बना लेता है : कीटक ~ ध्यान लगावै १११४ । २ भ्रमरी, भौरी : ~ री भजि स्याम-कमल पद, जहाँ न निसि कौ त्रास १/३३९ । **पुं०** भ्रमर, भँवरा : मैं मधु ज्यौं राखे सँचि मोहन, ते ~ की रीति ३२२५ ।

भृकुटि १ भौंह, भौंहे : ~ बिकट बिसाल नैन लखि १७६५ । २ भौंहों के : ललाट ~ बिच ६१६ ।

भृकुटी भौंह, भौंहे ~ कुटिल, अरुन अति लोचन ९/५६ ।

भृगु भृगु नामक ऋषि जिन्होंने विष्णु की सहनशीलता की परीक्षा लेने के लिए उनकी छाती पर लात मारा थी ~ कै दुर्वासा तुम होहु ५/४ ।

भृगुपति परशुराम जिन रघुनाथ फेरि ~ गति ९/९१ ।

भृगु रिषि महर्षि भृगु ~ आदि सुनत चकित भए १/१२५ ।

भृगु रेखा भृगु के पदाघात का चिह्न • तट भुज दड भौंर ~ १७५८ ।

भृगु लता भृगु मुनि के चरण का चिह्न जो विष्णु की छाती पर अब भी विद्यमान माना जाता है . तहँ ~ लच्छमी जान ३/१३ । ~ **बाँचे** भृगु के चरण चिह्न से रहित, भृगु के चरण चिह्न का अभाव है मनउ गढे दोउ एकहिं साँचे नख सिख कमल नैन की शोभा एक ~ — ३५८९ ।

भृगु सुत शुक्र नक्षत्र : गुरु ~ बिच भौम हौ २६१३ ।

भृत १ सेवक, दास . मन-तरग आग्याकारी ~ १५८८ । २. सेवकों धनि मेरे ~ नँदहिं ल्याये ९८४ । ~ **करौ** सेवक बना डालिए : ग्वाल गाइ को ~—मानि सत्य मत एहु ४९२ ।

भृत्ति भित्ति, दीवार • ~ बिलबि पृष्ठ दै स्यामा, स्यामै स्याम बियौ परि० १/२०३ ।

भृत्य १ नौकर, सेवक मत्री ~ सखा मो सेवक यातैं कहत सुजान सारा० ५४६ । २ सेवकों को . ~ बुलाए दै-दै गारी ९२६ ।

भेटइँ गले या छाती से लगाते हैं, आलिंगन करते हे : धाइ धाइ द्रुम ~ ऊधौ छाके प्रेम ४०९५ ।

भेटत क्रि० स० १ भेटते है, आलिगन करते हैं सूर स्याम कौं भुज भरि ~ ५७५ । २ मिलता है, लडता है : महाकरि सिह ~ ३०५९ । **क्रि० वि०** भेंटते समय, आलिंगन करते समय : ~ आँसू परे पीठि पर ९/१६८ ।

भेटति १ भेटती हो, आलिगन करती हो दै-दै दगा बुलाइ भवन मैं भुज भरि ~ उरज-कठोरी ३०५ । २.आलिङ्गन कर,

भेंट कर : ~ मेटति दुख सबै ११८० ।
भेटन मिलने के लिए, मुलाकात करने के लिए : भारतादि दुरजोधन, अर्जुन ~ गए द्वारिका पुरी १/२६८ ।
भेटहि मेंटते हैं, मिलते हैं • एक हेरी देहिं, गावहिं, एक ~ धाइ २६ ।
भेटहु मिलो : तात जाइ उनकौं तुम ~ ४१६० ।
भेंटि मिलकर, आलिङ्गन कर : जननि जसोदा ~ सखा सब ३११७ ।
भेंटिहैं १ मेंटूँगा, मिलूँगा . परिहौं पाइनि जाइ ~ अकम लाइ २९४६ । २ मेंटेंगे, मिलेंगे सूरदास प्रभु उभय भुजा धरि हँसि ~ उठाइ २९४८ ।
भेटी १ आलिंगन किया : किसोरी अँग-अँग ~ स्यामहिं २१३० । २ मिलीं • रुकमिनि राधा ऐसैं ~ ४२९१ ।
भेटे भेंट किये, मिले : ~ सबनि जथा ब्यौहार ४२०० ।
भेंटै लगाती हैं . बार-बार उर ~ ९/८७ ।
भेंटौं आलिङ्गन करती हूँ, आलिङ्गन करूँगी जौ लौं नहिं ~ भुज भरि हरि ३७७२ ।
भै[1], भै हुए, हो गए • नैना अब ~ सफल हमारे १०४५ ।
भै[2] भय, डर, चिंता : सुनत ये बचन हरि कह्यौ अब ~ न करि ४१९८ ।
भेइ सींची गई हैं, तर की गई हैं . ते बेली कैसैं दहियत हैं जे अपनैं रस ~ १/२०० ।
भेज्यौ भेजा . रिपि सिष्यहिं ~ समुझाइ १/२९० ।
भेटई भेटते हैं, लिपटते हैं, धाइ धाइ द्रुम ~ ऊधौ छाकें प्रेम ४०९५ ।
भेटत भेंट करते हैं, चढाते हैं, चढाया घट बजाइ देव अन्हवायौ, दल चदन लै ~ २६१ ।
भेटे भेंटते/मिलते हैं : काहू कौं अकम भरि ~ १४६० ।
भेटौंगो भेंटूँगा, मिलूँगा इनहिं भुजनि भरि ~ गोपाल २९४६ ।
भेड़ि झगड़ा अपनैं ही घर ~ करी इन २३५८ ।
भेद[1] साठ गाँठ आपुन जाइ ~ करि हरि सौं २२२४ ।
भेद[2] १. रहस्य । २ अन्तर । ३ अता पता, खोज : ढूँढत फिरत ग्वारिनी हरि कौ कितहूँ ~ न पावति ४५९ ।
भेदत छिन्न भिन्न करते हुए : कोटिक गिरि ~ नहिं लजै ११८० ।
भेद-बिवर्जित भेद-भाव से रहित अमल, अकल, अज ~ २/३८ ।
भेद-भेवा भेद अभेद : पुरुष औ नारि कौ ~ नहीं ३२०१ ।
भेदहि रहस्य को : ~ भेद कहति हैं बातैं २७३३ । △ ~ भेदहि छल करके : पुनि मन हरयौ ~ — १२८२ ।
भेदि विदीर्ण करके : मरै तौ मडल ~ भानु कौ ९/१५२ ।
भेदिया गुप्तचर, भेद जानने वाला, भेद लेने वाला किन ~ कह्यौ ३७२० ।
भेरनि भिड़त, टक्कर : तुम प्रबीन हौ हमहिं बतावत, आखि मैं दिमट ~ ३८८९ ।
भेरि दुन्दुभी, नगारा या बड़ा ढोल : बाजे मन्दिर ~ ४० ।
भेली (गुड़ की) पिंडी • हाथ सोहारी ~ गुर की १८० ।
भेव रहस्य, मर्म की बात, भेद : (देवकी) कोउ न जानत ~ ४ ।
भेवा रहस्य, भेद तुमहिं जानत सब ~ ११७५ ।
भेष १ वेश, रूप । △ ~ धरत वेश धारण करता है, स्वाँग रचाता है : इन लगि ~ — १/५५ । ~ लह्यौ शृगार किया : अग-अग ~ — १०३८ । △ ~ बनायौ शरीर धारण किया नर तन सिंह बदन वपु कीन्हौ जन लगि ~ — १/१९० ।
भेषज औषधि, दवा : ह्याँ ~ नाना भाँतिन के ३५२९ ।
भेषहि वेश को, रूप या बाने को तू क्यों नहीं धरति या ~ ४२९० ।
भेषता वेश-भूषा का भाव : गुन अनुरूप समान ~ ३६२७ ।
भेषा वेश, रूप अति प्रताप सिद्ध ~ ४ ।
भेषी वेश की : हम अधीन ब्याकुल भइ डोलैं बनी जोगिनी ~ परि० २/१४१ ।
भेषे वेश बना रखे (हैं) : कैसी बिधि करि ~ हैं १८३४ ।
भेषै (मान का) रूप धारण करे, या रूठ बैठे झलक प्रतिबिंब पर मान ~ २४६२ ।
भैंसो भैंसा . सूरदास भगवत-भजन बिनु, मनौ ऊँट-वृष ~ २/१४ ।
भै[1] हुआ, हुए : ब्रत पूरन सब ~ री ७८७ ।
भै[2] भय, डर : मेटि मनमत्थ कौ ~ री २४५३ ।
भैनी भगिनी, बहिन • कौन माता, कौन पिता, कौन ~ १८९६ ।
भैयहि भाई को, भैया को : सूर समुद्र स्याम के ~ निपट नहीं जानति मतवारौ ४२०३ ।
भैरव संगीत शास्त्र मे एक राग . ~ ललित बजायौ सारा० १०१५ ।
भैराइ दे० भहराइ ।
भैरौं भैरव को • करि कदन रुधिर ~ अघाऊँ ९/१२१ ।
भोइ आसक्त होकर : नारी चित बस नर रहे ~ ९/२ ।
भोए लीन, निमग्न • लालन सौं रति मानी जानी कहे देत नैना रग ~ २६६३ ।
भोग[1] फल, प्रारब्ध : जैसोइ बोइयै तैसोइ लुनियै, कर्मन ~ अभागे १/६१ ।
भोग[2] १ भोजन : तुमहूँ करौ ~ सामग्री ८१३ । २. भोजन के पहले देवताओं को समर्पित किया जाने वाला अन्न, नैवेद्य,

पाँडे नहिं ~ लगावन पावै २४९। △ ~ **लगावहु** भोजन करो : कह्यौ सबनि सौं ~ — ८३५।

भोग अन्न खाद्य सामग्री : ~ बहु भार सजायौ ९००।

भोगए भोगा, भोग लिया : मन के सब सुख ~ २९०९।

भोगता भोक्ता, भोगने वाले: तुम दाता अरु तुमहिं ~ ८४५।

भोगवति भोग रही हूँ, प्राप्त कर रही हूँ : मैं अपने तप कौ फल ~ १३३६।

भोगवै भोगती है, भोगे : वह अपनौ फल ~ तुम देखौ माई १३४३।

भोगि भोग कर ~ मनोरथ तब तू पावै ९/१७४।

भोगी सुख भोगा, आनद लिया षट सहस दस गोप कन्या रैनि ~ रास ११६९।

भोगी[1] १ विलासी : जाकौं सेवत सुरपति ~ ९८४। २ भोग विलास किया : सूर स्याम ब्रज जुवतिनि ~ ११६४।

भोगी[2] खाने वाला . सूरदास मुक्ताहल ~ हस ज्वारि क्यौं चुनिहै ३५२९।

भोगैं व्यजनों को . जसुदा ल्यावैं षटरस ~ ३९५।

भोज श्री कृष्ण का एक ग्वाल सखा अर्जुन ~ ऽरु सुबल सुदामा ४६४।

भोजी खाने वाले अतिहि ये बाल हैं ~ नवनीत के ३०१२।

भोयौ १ भीगे हुए, डूबे हुए, निमग्न ब्रह्मा महादेव-सुर-सुरपति नाचत फिरत महारस ~ १/५४। २ भीगा हुआ, डूबा हुआ . भ्रम ~ मन भयौ पखावज १/१५३।

भोर[1] १ सवेरा, प्रात काल : ~ भयौ उठि मथौ दही ५२०। २ प्रात काल (होता है) रजनि गए पुनि ~ १७६१।

भोर[2] विमुग्ध होकर . पियत मुख भरि भरि सुधारस गिरत तापर ~ १०३१।

भोर[3] १ विमुग्ध, विभोर . सूर प्रभु की निरखि सोभा भई तरुनी ~ १८१९। २ चकित, पागल : सात दिवस बरसत भयौ ~ ९६३।

भोर-कुहू-निसि अमावस की रात के सवेरे ही (अधेर-मुँह) : ~ मेरु तैं उतरि चले उहिं ओर २६१३।

भोर-सौ आत्म विभोर सा : भोरे भए ~ ह्वै गयौ २३००।

भोरहि १ सवेरे ही, प्रातःकाल मे ही ग्वारि उरहनौ ~ ल्याई ३९१।

भोरहीं प्रत काल ही . ~ आजु हरि गवन कीन्हौ २०६१।

भोरि[1] १ भुलावा देकर, भ्रम मे डालकर : राखे अग अग ~ ६५७। २ भ्रम मे पड़कर, भोला भाला बनकर · तज्यौ कोप मरजादा राखी बँध्यौ आपही ~ ९/१०४।

भोरि[2] भोली भाली · तब चित चोरि ~ ब्रजवासिनि ३७५४।

भोरी १ वि० भोली भाली : बातनि भुरइ राधिका ~ ६७३। क्रि० स० बहकाया, भ्रम मे डाला : आरज पथ छँड़ाइ गोपिकनि अपने स्वारथ ~ ३३६१। २ बावली, उन्मत्त, पागल : स्याम-स्याम टेरत भई ~ १६४३। ~ **भारी** भोली भाली सुनहु सूर हम ~ — १३१४।

भोरे वि० १. भोले भाले . सूर स्याम उनकौं भए ~ २३२५। २ भोले बच्चे, अपरिपक्व अवस्था के . वृद्ध, तरुन कीधौं हैं ~ १६९९। क्रि० वि० धोखे मे चूक परी निज ~ ४८८।

भोरैं[1] भोलेपन से, धोखे से मिली अचानक ~ १२८०।

भोरैं[2] लजाये जा रही हैं : नील पीत पट घन दामिनी कौं ~ २८३९। △ ~ **हि भाइ भई** खोई खोई-सी हो गई है . यह कछु ~ १७६२।

भोरे भोलेपन से · कहा भयौ तेरे भवन गए जो पियौ तनक लै ~ ३२१।

भोरौ भोला है, अनजान है : कान्ह मेरौ अति ~ १४९१।

भोल चक्कर मे · थक्यौ रति पति देखि यह छबि भयौ बहु भ्रम ~ २९२१।

भोलै व्याकुल हो जाती है . मीन सुजल बिनु ~ ३६४५।

भोवति छिड़कती है . कबहुँ मलय रज ~ २४९८।

भौंर[1] भ्रमर, भौंरा, भौंरे : भ्रमत मानौ ~ ३६४।

भौंर[2] भँवर · सुरति-सरित-भ्रम ~ लोल मैं, मन परि तट न लह्यो १/१६२।

भौंरा १ भौंरा, भ्रमर। २ लट्टू इत आवत दै जात दिखाई ज्यौं ~ चक डोर २३८१, दे मैया ~ चकडोरी ६६९।

भौंरी[1] घुमावदार रोओ वाली गाय दुलही, फुलही ~ भूरी हाँकि ठिकाई तेती ४४५।

भौंरी[2] भ्रमरी : अबुज-हरि-मुख चारु कौ, दोउ ~ जोर २४०८।

भौंह भौंह, भौंहे। △ ~ **चलावै** भोह मटकाकर सकेत करती है ठठकति चलै मटकि मुख मोरे, बकट ~ — १४३९। ~ **सकोरयौ** गुस्सा होते हो, क्रोध करते हो : बार बार तुम ~ — कहा आपु हँसि रीझे १५७१। △ ~ **मो पर तनत** मुझ पर क्रुद्ध होते हैं बार बार बुझाइ हारी ~ — २२८७।

भौंहन भौंहों को · कहति बक करि ~ १४४९।

भौंहनि १ भौंहे : मृग मद को ~ बक चितै २८०५। २ भौंहों : मुकुट लटक ~ की मटकनि २२७६। ३ भौंहों से, कनखियो से . त्योरी ~ मो तन चितवै १७२२। ४ भौंहो मे · वा तिय कौ अनुराग देखियत प्रगट तुम्हारी ~ परि० १/९०।

भौंहैं भौंहे, : ~ कौंट कँटीलियाँ १४५७। ~ बंक टेढी भौंहे : चल भामिनि की ~ — २७४४।

भौ हुआ : वह सुख बहुरि न ~ री ३३७१ ।
भौन १. घर, भवन : करिहैं सूनौ ~ २९७५ । २ घर मे/के : आँगन ~ बिकल डोले ८५५ ।
भौना भवन, घर : मुरलि बजाइ बिसारे ~ २८८४ ।
भौम[1] मंगल ग्रह : सनि, गुरु, असुर, देव गुरु मिलि मनु ~ सहित समुदाई १०८ ।
भौम[2] भौमासुर . ~ अरु केसी इहाँ पछार्‍यौ ४०५० ।
भौमवार मंगलवार : ~ नौमी तिथि नीकी ९/१७ ।
भ्रकुटि पूर बाँकी भौंहों से • छूटत कटाच्छ सर ~ २९१२ ।
भ्रकुटि-बिलास भ्रू-भंग, भौंहों का टेढ़ापन ~ चितवत चंचल ११८० ।
भ्रकुटी भृकुटी, भौंह • ~ कुटिल सुदेस सोभित अति ११९७ ।
भ्रमत १ घूमते फिरते हैं : जोगी ~ जाहि लगि भूले ३९२४ । २ घूमता है : ~ भ्रमर सुख और सुमन सँग ३८४४ । ३ भटकता फिर रहा है : तिन्हैं छाँड़ि यह सूर महासठ ~ भ्रमनि कैं साथ १०३ । ४ घूमते हुए, चक्कर काटते हुए सब जनम तैं ~ खोयौ १/७० । ~ भ्रमत १. घूमते-घूमते : ~ — नृप बहु दुख पायौ ९/२ । २. घूमती हुई : इत की भई न उत की सजनी ~ — मैं भई अनाथ २३१७ ।
भ्रमति घूमती फिरती है . ~ तू जहाँ तहिं १९७१ ।
भ्रमन भ्रमण करने के लिए : ब्रज तजि ~ बिदेस ४०७८ ।
भ्रमनि भ्रम मे पड़े हुए लोग, भ्रान्त व्यक्ति . भ्रमत ~ कैं साथ १/१०३ ।
भ्रम-पाथ भूले हुए पथ को : भ्रमित भयौ, जैसैं मृग चितवत देखि देखि ~ १/२०८ ।
भ्रमहि भूल से/मे जे कवि कहत कंज रति मानत, ते सब ~ रटे परि० १/१६१ ।
भ्रमाइ भ्रम मे पड़ जाती है, चकित हो जाती है . देखत दृष्टि ~ ४१६६ ।
भ्रमाई भ्रम मे डाला : तुम तौ तिहूँ लोक के ठाकुर हमकौं लोभ ~ परि० १/४८ ।
भ्रमायौ भटका दिया, भ्रमित कर दिया विधि कहं ब्रत ~ ४२३८ ।
भ्रमावैं धोखे मे पड़ जाते हैं देखि सयन-गति त्रिभुवन कंपै, ईस बिरंचि ~ ६५ ।
भ्रमि[1] घूम कर : तब मंडप ~ भाँवरि दीन्ही १०७२ ।
भ्रमि[2] भ्रम मे (भी), भूल कर (भी) ~ मैं तौ रिस करति न रस बस २०९१ । ~ **गई** भ्रम मे पड़ गई भ्रमत भ्रमत ~ — ग्वारिनी १६७६ । ~ **गए** भ्रम मे पड़ गये . कहा देखि कै तुम ~ — ११/४ ।
भ्रमि[3] मंडराकर सूर स्याम अँबुज कर चरननि, जहाँ तहाँ ~ बैठत २२७७ । ~ **भ्रमि** घूम फिर कर, भटक भटक कर ~ — जमहिं हँमावैं २/१३ ।
भ्रमित चकित : सूर निरखि नँदरानि ~ भई २५४ ।
भ्रमे आश्चर्यचकित हो गये : ताकौ देख ~ दुर्योधन भाग० ७५९ ।
भ्रमै घूमता फिरता है . भौंरा भोगी बन ~ (रे) १/३२५ ।
भ्रम्यौ[1] मारा मारा फिरा जिहिं जिहिं जोनि ~ मर्कट-ब्रम सोइ सोइ दुखनि भरी १/७१ ।
भ्रम्यौ[2] भ्रम में पड़ा : ~ बहुत लघु धाम बिलोकत १/८७ ।
भ्राज शोभा बरस रही है दुलहिनि वृषभानु-सुता अंग अंग ~ १०७४ ।
भ्राजई शोभा दे रही है : हाथ पहुँची हरि की नग जरित मुँदरी ~ ४१८६ ।
भ्राजत १ सुशोभित है : कटि किंकिनि, पग नूपुर ~ २२१९ । २. सुशोभित होते हैं • ~ सकल लोक सुखकारी ४२०२ । ३. शोभा दे रही है : कारी कामरि ~ १५१७ । ४ सुशोभित हो रही हैं, शोभा दे रही हैं : भुज ~ नँदलाल ११४ ।
भ्राजति शोभा दे रही है : उर ~ बनमाल १८०० ।
भ्राजा सुशोभित हुआ तौ बैठौ सिंहासन चढ़ि कै, चँवर, छत्र, सिर ~ १५४६ ।
भ्राजैं[1] सुशोभित हैं : बिच-बिच कान्ह तरुनि बिच ~ १०३९ ।
भ्राजैं[2] धारण करते हैं, धारण किये हुए हैं त्रिभुवन की सोभा ये ~ १०८४ ।
भ्राजै १ सुशोभित है : पल्लव हस्त मुद्रिका ~ ६२५ । २ फबती है : यह उपमा कछु ~ १२०७ ।
भ्रातन भाइयों को : चारों ~ श्रमित जानि कै जननी तब पौढ़ायौ सारा० १९६ ।
भ्रातनि १ भाई को : सकरषन के ~ ३५४९ । २ भाइयों मे • काहू भाँति भेद नहिं ~ ३७६० ।
भ्रात्र भाई सुत, बाहन, जन ~ १/२१६ ।
भ्रुकुटी भौंहों के बीच का स्थान : शंकर प्रगट भए ~ ते करी सृष्टि निर्मान सारा० ६५ ।
भ्रुव भौंहें : ~ सुंदर नैननि गति निरखत १७९८ ।
भ्रुवनि भौंहें : निरखि ~ सुनि बात ३६६ ।
भ्रू भौंह : तातैं मसि बिंदा दियौ ~ पर ९२ ।
भ्रू-बिलास भौंहों का संकोचन प्रसारण : ~ मंद हास, गोपिन जिय भावै १८८७ ।
भ्रू-भंग भौंहों का संकेत/टेढ़ापन : त्रिकुटि संग ~ तराटक ३५३० ।

म

मंग १ माँग : मुक्ता बर सिर सुभग ~ कौ १४७५ । २ माँग मे : सुमन गुहाए ~ ३८१७ ।

मँगइयै मँगाइए : सकुचत फिरत जो बदन छिपाए भोजन कहा ~ १/२३९ ।

मँगन[1] याचक, भिखारी मागध ~ जन लेत मन भाइ कै ३०९२ ।

मँगन[2] मग्न, लीन ~ भई नहिं सिंधु तरयौ १४५४ ।

मंगल १. कल्याण : ~ प्रथम करे ६८९ । २ मगलगान : मिलि गोपिनि ~ गायौ ४ । ३ शुभ या पूजन सबधी कार्य : धूप-दीप नैवेद्य साजि कै ~ करे बिचारि २०५० ।

मंगल-कलस जल से भरा हुआ वह घडा, जो विवाहादि शुभ अवसरो पर रखा जाता है . कुकुम कुचनि कचुकी अतर ~ अनग २६१२ ।

मगलचारा मगलाचार : हय गय रतन हेम पाटबर, आनँद ~ ४ ।

मंगलनि मगलगान : आई ~ गाइ कै ३०९२ ।

मंगल-मातु-तासु-पति-बाहन मगलमातु (पृथ्वी) के पति (राजा) का वाहन (माध्यम) अर्थात् दड ~ राजत सदृश भुलानी सारा० ९५७ ।

मंगल-साज मागलिक द्रव्य : कर-ककन, कचन थार ~ लिये २४ ।

मंगा सिर के बालो के बीच की माँग . मध्य धार मोतिनि मय ~ २४५४ ।

मँगाइ मँगवा ली . घर तै छाक ~ ४४४ ।

मँगाई १ मँगा : बबा सौं और लैहौं ~ री १९७४ । २ मँगवा लो तुम उलटि ~ ९/४२ ।

मँगायौ मँगवाया : द्रुम पषान प्रभु बेगि ~ ९/१२२ ।

मँगावत मँगाते हैं : तिन सौं कहि ब्रज छाक ~ ४५० ।

मँगावति मँगाती है : बार बार रोहिनि कौं कहि-कहि पलिका भजिर ~ है ७३ ।

मँगावन मँगाना : कह्यौ पकरि ~ ५८९ ।

मँगावहु मँगाओ नद कह्यौ सब भोग ~ ९०५ ।

मँगावै मँगाता है : लोचन अवहिं ~ २२३२ ।

मँगी माँग लिया आइ साग लियौ ~ १/२१ ।

मँगैया माँगने वाला : धन्य दान धनि कान्ह ~ १६०२ ।

मंच मंच, रंगभूमि : कस नर सूर हरि ~ ते दुष्ट डारयौ ३०७१ ।

मचल मचलकर : चचल ~ अँचल गहत बकोटनि १८७ ।

मंजन स्नान : अजन ~ तें गयौ है दुरि १०७६ ।

मंजरी एक सींक मे लगे हुए छोटे घने फूल : पुहुप ~ मुक्तन माला अँग अनुराग धरे ६८९ ।

मजार बिलार : खाइ जाइ ~ काज एकौ नहिं आवै १६१८ ।

मजारी बिल्ली : ~ आगे ह्वै आई ५४० ।

मजीर नूपुर, घुघुरू ढिग जरित ~ इत-उत चरन पकज रग २८४१ ।

मजु सुन्दर ~ मेचक मृदुल तनु अनुहरत भूषन भरनि १०९ ।

मजुल सुन्दर ~ तारनि की चपलाई चित चतुराइ करसैरी १३७ ।

मँझार १ मध्य मे, बीच मे चौपर खेलत भवन आपने हरि द्वारका ~ सारा० ७६७ । २ मे : मेरो राज बृन्दाबन ~ सारा० ८८१ ।

मँझारि बीच मे बन डोंगरनि ~ २००५ ।

मँझारी मध्य/बीच मे तहाँ बुलाये सकल द्विजन को जनक सभा ~ सारा० २१५ ।

मँझारे मध्य/बीच मे बैठे सभा ~ ४/५ ।

मंड १ मडित, शोभित : गोरज मुख मजु ~ १३७५ । २ भरा हुआ या व्याप्त है इनहि तैं यह ~ १६०३ ।

मडत सुशोभित होता है : उर ~ निरमोलक हार १/४१ ।

मंडन १ मडन (प्रमाणित) कर रहे हैं : प्रीति सुहाग भुजा सिर ~ १७०३ । २ सुशोभित किया है चरन-चिन्ह दडक भुव - ~ ९८१ ।

मंडप उत्सव आयोजनादि के लिए बनाया गया सुसज्जित स्थान लगन सोधि बिवाह थाप्यौ उनत ~ छाइ ४१७३ ।

मडपिका छोटा मडप . मनहु हेम ~ मुखरित सारा० १०४५ ।

मँडर मँडरा ब्रज पर ~ करत है करम ४२६७ ।

मँडराइ मँडरा रहा है : काग कत ~ ४१७३ ।

मँडरानी मँडराई . हरि पर सबहिं रहसि ~ १४९० ।

मंडल १ भूमिखड मथुरा ~ भरत खड निज धाम हमारौ ११७५ । २ समूह, समाज गोपिनि ~ मध्य बिराजत सारा० ४ । ३ किसी वस्तु या अग का गोल भाग, स्थल : चलित कुडल, गड ~ १/३०७ । ४ आकाश मंडल : चलत तारे सकल ~ १/२३५ ।

मंडलि मंडली, समूह जुवति बहु ~ जुरी ११८२ ।

मंडली १ समूह, समाज । २ गोलाकार : पुहुप माल ~ बनायौ ९८४ ।

मंडले मडली मे : झाँझ ताल सुर ~ २८६६ ।

मंडित विभूषित, अलंकृत : ज्यौ माखी मृग-मद ~, तन परिहर पूय परै १/१९८ ।

मंत्र १ मत्र। २. गुप्त-सलाह. मत्रिनि नीकौ ~ विचार्यौ ९/९८। ३ उपाय, उद्योग, प्रयत्न थकित भए कछु ~ न फुरई, कीन्हे मोह अचेत १/२९।

मंत्र-जंत्र जादू टोना साधन ~ उद्यम बल ये सब डारौ धोइ १/२६२।

मंत्रिनि मत्रियों ने. ~ नीकौ मत्र विचार्यौ ९/९८।

मथन चकमक : बुझत जानि ~ चिनगी २८२६।

मंथान मथना : राधा दधि ~ आपनैं गेह करति धरि हुकर पाग री परि० १/१२०।

मद १ धीमी, मन्द-मन्द. तैसोइ ~ सुगध २१७५। २ मूर्ख : मलिन-मति, मन मधुप, परिहरि, विषय नीरस — ९/१०।

मंद-गति-मुसुकनि ईषत् मुस्कान दाडिम दसन ~ १७७७।

मंदन धीमे से, धीरे-धीरे : जब गावत कल ~ ४७६।

मंदभागिनि अभागिन : ~ करमहीनी ३८६५।

मंदमति मूर्ख : बसन सुरसरी तीर ~ कूप खनावै २/९।

मंदर १ मन्दराचल, एक पर्वत जिससे समुद्र मथा गया था ~ टरत सिंधु पुनि कांपत १४२। २ मदराचल पर्वत को. उचकि ~ लियौ ८७०।

मदराचल एक पर्वत विशेष (दे० मदर) : बासुकी नेति अरु ~ रई ८/८।

मंदहि धीरे से, कोमलता के साथ नद-नारि आनन छुवै ~ २०७।

मदाकिनि गगा को. ~ मानौ सिर धरि कै २७६३।

मंदार मदार पुष्प का : उर पर ~ हार १३८४।

मंदिर १ घर : सुंदर नद, महर कैं ~ ३२। २. घर पर : एकनि लै ~ चढ़ै १/४४।

मंदिर-अरध घर का आधा = पक्ष = १५ दिन ~ अवधि बदि हमसौं ३९७६

मंदिरहि महल मे. करि विचार जुग जाम लौं ~ पधारे २९३३।

मदे सस्ते : मुक्ति आनि ~ मैं मेली ३७२४।

मंदो सस्ता : ~ पर्‌यौ सिधाइ अनत लै यहि निर्गुन मत तेरौ ३७२३।

मदोदरि मन्दोदरी, रावण की पटरानी जो मय नामक दानव की पुत्री थी : पुनि ~ अचल आपु दै अभयदान सब कीन्हीं सारा० २९३।

मंदौ मद : ~ पर्‌यौ सिधाइ अनत लै ३७२३।

मँह मे : अजिर ~ विहरत ९७।

मइया माता : फूली फिरत रोहिणी ~ सारा० ४०३।

मई मय, एक प्रत्यय जो तद्रूप, विकार, प्राचुर्य आदि के अर्थ मे शब्दांत मे जुड़ता है : कचुकि बँद छूटे अति आनँद ~ ११३६।

मईर मयूर, मोर : चँवर चारु ~ ३७६८।

मकरंद पुष्प-रस : उड़ि न सकत ~ लुभाने २६३६।

मकरंदहि पुष्प-रस को : जौ मुकुद ~ ध्यावै २/७।

मकर १ मगर मच्छ सुधा-सर जनु ~ क्रीडत ६२७। २ मगर की आकृति वाले : कुडल ~ कपोलनि कैं ढिग जनु रवि रैन बिहाने १७९८।

मकरध्वज कामदेव मनहुँ खेलत हैं परस्पर ~ ह्वै मोन ३५३।

मकराकृत मकर के आकार का मनि कुडल ~ १८८७।

मकूनी आटे मे बेसन मिलाकर या भरकर बनाई गई बाटी : एक ~ दै मोंहि माजी ३९६।

मकौं मुझको : ~ दरस नहीं सपनहूँ २३३२।

मख यज्ञ सगर राज ~ पूरन कियौ ९/९।

मखियाँ मक्खी, मक्खियाँ : कर मीडत ज्यौं ~ ३२४०।

मग १ मार्ग, रास्ता : वृन्दावन ~ जाति अकेली १९८१। २ मार्ग मे : सुख समेत ~ जात चले सब ९१९।

मगध एक प्रदेश विशेष मागध ~ देश ते आयो साजे फौज अपार सारा० ६०२।

मगन १ बहुत प्रसन्न : ~ भई अति उर आनद भरि २८२। २ लीन, तन्मय : ~ भयौ माया रम लपट १/९८। ३ लीन हो गये : ~ रस-ताम नहि तनु सम्हारैं १९८८। △ ~ **दीन्हौ** अति प्रसन्न कर दिया : दसन छत अधर पिय ~ — २०३३।

मगना तन्मय, प्रफुल्लित : गोद करि लीजै करि-करि मन ~ ३००८।

मगर मगरमच्छ. मेढ़ा महिष ~ गुदरारौ ९७६।

मघ-पंचक मघा नक्षत्र से पाँचवाँ नक्षत्र चित्रा=चित्त = मन. ~ लै गयौ साँवरौ ३९७६।

मघवा १ इन्द्र : ~ करी गोकुल आर ३३२२। २ बादल : नित-प्रति मो सिर ~ बरसत लागत शीत अपार सारा० ६१८।

मघवापति बादलों के पति इन्द्र : विनती सुनहु देव ~ ८५४।

मघवाप्रस्थ इन्द्रप्रस्थ नामक नगर : फिर आए हस्तिनपुर पारथ ~ बसायो सारा० ८०६।

मचकहि झटके से झूलते हैं, झूले से पैंग मारते हैं : ~ परस्पर कृष्ण सनमुख परि० १/१०९।

मचकि पैंग मारकर झूलना : कबहुँक रहसत ~ लै लै २८३०।

मचत झूलते हैं, झूले के पैंग भरते हैं : यह सुनि हँसत ~ अति गिरिधर २८३४।

मचति झूल रही है. कोउ सग ~, कहति कोउ मचिहौं २८३४।

मचलि हठ करके। △ ~ **जाइगी** जिद करने लगेगी : अबहीं

~ १७१८।
मचाई १ मचा दी : तरुन अरु बालक गोरस कीच ~ २९। २ मचाकर ब्रज घर जहँ-तहँ सोर ~ ५४४।
मचाय मचाकर : अद्भुत फागु ~ सारा० १०४७।
मचायौ मचाया : आजु कहा ब्रज सोर ~ ५४८।
मचावत मचाता है : आछी आर ~ सारा० ४५८।
मचि मची : दुइज दुहुँ दिसि ते होरी ~ सारा० १०५४।
मचिहै मच जाएगा · ~ गोरस कीच १६१८।
मचिहौं झूलूँगी . कहति कोउ ~ २८३४।
मची १ मच गई : रति रन कीच ~ २४४८। २ मचा दी · पीय के भुजनि मैं कलह मोहन ~११९१।
मचौ झुलाओ अब जिनि ~ पॉय लागति हौं २८३४।
मच्छ १ मछली ~ बास ताकी सब हरी १/२२९। २ मच्छ को : तहाँ ~ एक देखत भयौ ९/८। ३ मत्स्य अवतार : ~ कच्छ बाराह बहुरि नरसिंह रूप धरि २/३६।
मच्छरूप मत्स्यावतार . स्तुतिनि हित हरि ~ धार्यौ ८/१६।
मच्छोदरि शातनु की पत्नी, सत्यवती जो व्यास जी की माता थीं . सत्यवती ~ नारी १/२२९।
मच्यौ १ छा गया . ब्रज, घर घर सुख-सिंधु ~ री ६०६। २ मच गया : जुरत सुरति सग्राम ~ २४५५।
मछ मछली ने कह्यौ, ~ बचन किहिं भाँति भाष्यौ ८/१६।
मजी डूब गई थीं, रग गई थीं : हरि कैं रग ~ १६३१।
मजीठी मजीठ के रग वाली, अर्थात् लाल धौरी, धूमरि, कारी, काजर, मैन ~ गाय सारा० ५५१।
मज्जत डूबते हुए को . अब मोहिं ~ क्यौं न उबारौ १/२०९।
मज्जति स्नान करती है : सुमनासुत लै कमलनि ~ २७०७।
मझार मध्य मे . ज्ञान उपदेस कियो पुत्रन को ब्रह्मावर्त्त ~ सारा० ८७।
मझारि मध्य मे . पद्मिनि सारँग एक ~ २१११।
मझारी मध्य मे सब जादव सौं कह्यौ बैठि कै सभा ~ ४२७५।
मझारैं मध्य मे : बन-बन ढूँढ़त गाउँ ~ ९८४।
मटकत अग लचकाते या मटकाते (हीं) : ~ गिरी सिर तैं १४२८।
मटकति मटक रही है : भौह-छबि ~ ६४५।
मटकनि मटकने की क्रिया या भाव . मुकुट लटक, भौहनि की ~ २२७६।
मटकहीं मटकते हैं (देखते हैं) : नैंकु न अत ~ २२९६।
मटकावै नखरे के साथ अग मटकाती है . चमकति चलै बदन ~ ऐसी जोबन जोरी २०५१।
मटकि १ मटकाकर, फडकाकर : चमकत दसन ~ नासापुट १७९१। २ मटककर : ~ मुख मोरै १४३९।
मटकियौ हिली-डुली : पटकि गहि पुहुमि पर नैंकु नहिं ~ ३०६०।
मटकीं भृकुटी, नेत्र, हाथ आदि अग चमकाने लगीं : मुख मुख हेरि तरुनि मुसक्यानी नैन, सैन दै दै सब ~ ११२५।
मटके लौटे, हटे, फिरे : (नैना) नैंकु नहीं ~ २३८९।
मटकैं मटकने या नखरे दिखाने से · सूरदास सोभा क्यौं पावै पिय बिहीन धनि ~ १/२९२।
मटक्यौ १. लौटा, फिरा, हटा . लट्टु ह्वै लटक्यौ, फेरि न ~ १९१३। २. हिला-डुला, विचलित हुआ : पटक्यौ भूमि फेरि नहिं ~ ३०५८।
मटरी एक नमकीन पकवान, मठरी खुरमा, खाझा, गूँझा ~ ८१०।
मटुकि छोटा घडा, मटका ~ छुडाय लियो दधि बरसत तउ कछु मन नहिं आयो सारा० ७२६।
मटुकिनि मटकियो मे ~ लै गोरस १६३५।
मटुकियाँ मटकियाँ . सबनि ~ रीती देखी १६२६।
मटुकिया मटकी : एक कर गही ~ मेरी १६७०।
मटुकी मटकी फोरी सब ~ अरु गगरी १४१६।
मठ माठ, बडी मठरी . सुरठि मीठी ~ जिरवानी परि० १/१५३।
मठी मढी, बिरादरी सूर सु ~ उफानी ४१३०।
मडे १ मडित किये : चौपरि जगत ~ जुग बीते १/६०। २ आरभ हुए · झगडौ कठिन ~ परि० १/१५७।
मडैया झोपडी · इहाँ हुती मेरी तनक ~ को नृप आनि छँयौ ४२३५।
मढ़ाउ जड़ दो, टाँक दो : हीरा मोतिनि ~ बहु ४१।
मढ़ी मढी हुई थीं · सोनैं सींग ~ २४।
मढ़ी झोपडी : 'सूरदास' प्रभु हरि न मिलै तो घर तैं भली ~ ३२६९।
मढ़ौं मढा दूँ सूरदास सोने कैं पानी ~ चोंच अरु पाँखि ९/१६४।
मढ़्यौ मढ गया है, छा गया है दिसि दिसि तिमिर ~ ४००२।
मणियारे सुहावने, दर्शनीय : तिनहूँ माँझ अधिक छबि उपजत कमल नैन ~ ३१७५।
मतंग १ हाथी : लागी सग ~ मत्त ज्यौं २९६०। २ हाथी (के सिर) से : मधुप माल ~ २१३१।
मत १. सम्मति, राय : नैननि कौ ~ सुनहु सयानी २३६५। २. पथ, सिद्धान्त : ये अपनौ ~ समुझत नाहीं सा० ल० ६४। ३. भाव, आशय, तात्पर्य : बेद पुरान भागवत गीता सबकौ यह ~ सार १/६८।
मतवार मतवाला, उन्मत्त : जोबन गज ~ २६१०।

मतवारि मतवाली, उन्मत्त . तरुनी स्याम रस ~ १६२४ ।
मतवारे उन्मत्त, मतवाले रहु रे मधुकर मधु ~ ३५०४ ।
मतवारी उन्मत्त, मतवाला : तू जानत मतग ~ ३०५३ ।
मतारो महतारी, माँ : प्रगट जानिहैं स्याम ~ १५५७ ।
मति¹ १ बुद्धि । २ सम्मति, राय : पारथ भीषम माँ ~ पाइ १/२७६ । ३. विचार को स्तुति ~ बारबार हृदय अपने अवगाहन ११७५ । ~ ऐसी ठानी बुद्धि में ऐसा निश्चय किया : नद-नुवन ~ —.११७० । ~ बोरी बुद्धि विक्षिप्त हो गई : भई विकल ~ — १४४६ । ~ भई मरनी अक्ल मारी गई है, बुद्धि भ्रष्ट हो गई है : जाहि अब क्यों न ~ — ५५१ ।
मति² मत, नहीं ~ कोउ प्रानि कैं फद परै ३२८७ ।
मति-अध दुर्बुद्धि : परयौ सुरत ~ ०/७५ ।
मति-गति बुद्धि और चेतना • ~ बिसगवै ९० ।
मति-जोई बुद्धिमान् सिगरे जानत, सुनि ~ मा० ल० १०३ ।
मति-तिय बुद्धि रूपी पत्नी को ~ अब मारी १/१६५ ।
मति-धीर धीर बुद्धि (वाला) : जुगल पम ~ ०/२६ ।
मति-धूत धूर्त मति, कुटिलता . छाँडि देहु ~ ५८९ ।
मति-बंत बुद्धिमान् • कवि का ~ विचारी मा० ल० ३८ ।
मति-भग भ्रष्ट बुद्धि (वाली) . भूलि भइ ~ ६४० ।
मति-भंगा भ्रष्ट बुद्धि (वाले) बानर ~ ९/९७ ।
मति-भ्रम भ्रष्ट बुद्धि (वाला) सुनत होत ~ ३५८७ ।
मतिमंत बुद्धिमान् तिया-चरित ~ न समुझत ९/३१ ।
मतिमद १ मद/अल्प बुद्धि वाला भ्रम उपटत ~ ?/१२१ । २ दुष्ट बुद्धि . क्यों उपजी ~ ३८२५ ।
मति मंदहि मद मति, मूर्ख : कुल अभिमान छाँडि ~ ८०३ ।
मति-मुग्ध मूढमति अहो ढीठ ~ निसिचरी ९/७७ ।
मति-वत बुद्धिमान् : ~ बिचारी सा० ल० १९ ।
मतिहि बुद्धि • जौलौं बडो होय तौलौं यह असुरन ~ देखाय सारा० ६९५ ।
मति-हीनी बुद्धिहीन, मूर्ख भई अयान ~ ४२०४ ।
मति-हीनौ बुद्धिहीन हम सब अहिर जाति ~ ८८९ ।
मते मति, सलाह . मानत कौन ~ अब तेरे २३३८ ।
मतो सम्मति, सलाह सबहिन ~ सुनाय सारा० १०६५ । ~ सुनावै उपाय बताते हैं : देश-देश के दूत बुलाये सबहिन ~ — सारा० ३८७ ।
मतौ सम्मति, सलाह : बटौ ~ है जोग तिहारे ३७१७ । ~ बिचारौ विचार विमर्श किया बिप्रनिहूं यह ~ — १२/५ । ~ बिचार्यौ विचार-विमर्श किया • बैठि असुर सब सभा रुक्म सौं ~ ~ ४१८८ ।
मत्त-न्याय अंधा/मनमाना न्याय इत देखौं तौ आगे मधुकर ~ मतरात ४०५२ ।
मत्यौ बुद्धि से सबनि ~ मत एक २९१५ ।
मत्स्य १. मछली : मोर्ई ~ पकरि मोधुक ने जाय असुर को दीनी सारा० ६९३ । २ विष्णु का पहला अवतार : यह कहि भए अँतरधान तब ~ प्रभु ८/१६ ।
मथत मथते हुए : सकल स्तुनि दधि ~ पायौ २/४ ।
मथति १ विलोती है • आनद सौं दधि ~ १४७ । २. मथना हुई ~ ग्वाति हरि देखी जाइ २९८ । ३ उमड घुमड कर मथने लगती है : मन मैं बिथा ~ लाग यौं ३२९३ ।
मथन पु० १ मथन . मदर टरतु सिंधु पुनि कापन फिरि जनि ~ करै १४२ । २ मथने के लिए : ~ मथानी नेंनि गह्यौ ५२० । ३ मर्दन . दुष्ट नृपति को मान ~ करि चले द्वारकानाथ सारा० ६३६ । वि० मथने/मारने वाला . मधु-कैटभ ~, मुर भौम केसी-दलन ४२१३ ।
मथनहार मथने वाला ~ हरि रतन कुमारी ९२० ।
मथनहारि मथने वाली : ~ सब ग्वारि बुलाई ५२० ।
मथनियाँ मथानी : नद जू के बारे कान्ह छाँडि दै ~ १४५ ।
मथनी मथानी • दधि ~ के पाछैं देखी २४३ ।
मथबे मथने के लिए : अजित रूप है सील धरो हरि जलनिधि ~ सब काज सारा० ३२८ ।
मथि १ मथकर : बिधि चद्रमा मनौ ~ काढे १४१ । २ घिस-घिस कर : ~ मृगमद-मलय कपूर माथ तिलक किए २४ । ३ नष्ट करके धनुष तोरि, गज मारि, मल्ल ~ ३५३६ । ~ मथि मथ-मथ कर ~ पियौ घयौ ३६२८ ।
मथिऐ मथी जाती है : नित प्रति सहस मथानी ~ ३३३ ।
मथियत मथा जाता है स्याम सुंदर मन ~ काम रह री परि० २/६२ ।
मथियै मथी जाती हैं : तुम घर ~ सहस मथानी ८८६ ।
मथुरा नाथ मथुरा का राजा (श्रीकृष्ण) . चतुर चेटकी ~ सा जाइ करौ आदेस ३६९३ ।
मथुरापति मथुरा का राजा (कस) : ~ जिय अनिहिं डगन्यौ ६० ।
मथुरापतिहि मथुरा के राजा कस के द्वारा ~ सुनोगी तबहीं १५१३ ।
मथे मथन करने . प्रगट ~ तैं होइ ३७८८ ।
मथै मथती है अपनै घर यौंही ~ ७१६ ।
मथौ मथन करो उठि ~ दह्यौ ५२० ।
मथ्यौ १ मथन किया • सिंधु ~ सागर बल बाँध्यौ २८१६ । २ नष्ट किया ~ मान मल-दर्प, महीपति जुवति-जूथ गहि आने १०७० ।
मद १ उन्मत्तता • तहाँ परासर रिषि चलि आए, बिबस होइ

निहिं कैं ~ छाए १/२२९ । २ गर्व, अहकार . राजमान ~ टारत १/१२ । ३ मदिरा : आसा ~ जु पियौ २/१६ ।

मद्ऽलंकृत मद भरे, मस्ती मे विभूषित : सुदर स्याम गड ~ ३९३६ ।

मदति घमड करती है . पाइ अब ~ हठ कतहि मॉडौ १७३० ।

मदन कामदेव • कोटि ~ निरखत छवि लाजत ९०४ । △ ~ **सुभट के सर लगे** काम्देव रूपी वीर के कामेच्छा रूपी वाण लगे ~ — सुदेस मनु लगे कवच पर फूटि २४६१ ।

मदन-दूत काम-दूत (वसत) • ~ मोहिं बात सुनाई १५४२ ।

मदन-वल्ली काम-लता, एक प्रकार की बेल : मनहुँ ~ पर हिमकर १९८७ ।

मदन बिलास कामदेव/काम की चेष्टाएँ : भृकुटि ~ १८२२ ।

मदन-मोद काम-भावना का आनद : ~ मदमाती सा० ल० ५ ।

मदन रिस के आदि कामदेव (समर) और क्रोध (खीस) शब्दो के आदि वर्णो 'स' और 'खी' के मिलाने से सखी : ~ तौलों, मिली गुन गन ऐन सा० ल० ६५ ।

मदन-लजौना कामदेव की भी लज्जित करने वाले, श्रीकृष्ण . सूर नदसुत ~ २८८४ ।

मदनारि शिव : गरल-ग्रीव, कपाल उर, इहिं भाइ भए ~ १६९।

मदभार अत्यधिक मद गरजि घुमरात ~ गडनि स्रवत ३०५५ ।

मद-मात मतवाला : धन-जोबन के ~ २/२२ ।

मद माती मतवाली जोवन ~ इतराती ३०० ।

मदमातौ मतवाला, मदोन्मत्त ज्यौं गज-जूथ नैंकु नहिं बिछुरत 'सूर' मदन ~ ३९३३ ।

मदमान अहकार . तज्यौ है ~ २४४९ ।

मद-मोदक मतवाला कर देने वाला लड्डू : जैसे ठग खवाइ ~ ३८३२ ।

मदहि १. मद को • मदन के ~ गँवावै री परि० १/५० । २ मद मे : नित रहनि मन्मथ ~ छाकी ४१८७ ।

मद्धघटे पर नास जिसका मध्य अक्षर घटने से नाश या काल रह जाय अर्थात् काजल . ~ कियौ है सा० ल० ५ ।

मद्धे मध्य/बीच मे ग्रीषम रिपुन ~ साप सा० ल० २ ।

मधि १ मध्य/बीच मे : गड ~ रस्र भरबौ सुखान्यौ ३०५४ । २ मे बृन्दावन ~ रास रच्यौ हे ९९७ । ~ **आनि** मध्य मे आकर : तरनि चढयौ ~ — ३६५ ।

मधु[1] पुं० १ शहद : जैसे ~ तोरे की माखी २६९३ । २ मिसरी • माखन ~ मिष्ठान्न महर लै दियौ अक्रूरहिं हाथ २९९३ । ३ अमृत मन मोहत ~ पान करावत ६४८ । वि० मधुर ~ मेवा-पकवान-मिठाई ८२५ । △ ~ **तोरे की माखी** मधु का छत्ता तोडने के बाद बेचैन और क्रुद्ध मधुमक्खियाँ जैसे ~ — त्यौ हम बिनु ब्रजनाथ ३१६० ।

मधु[2] एक राक्षस, जिसे मारने के कारण विष्णु का नाम 'मधुसूदन' पडा एइ माधौ जिन ~ मारे री ३०३१ ।

मधु-कमल-कोस कमल कोष का शहद क्यौं मधुकर ~ तजि रुचि मानत है आकैं २३५६ ।

मधुकर १ भ्रमर : पिय ~ अबुज सुदरि मुख २०२२ । २ उद्धव : ~ कहिऐ काहि सुनाई ३५३७ ।

मधुकरि भ्रमरी : सुनि ~ भ्रम तजि कुमुदनि कौ राजिव बर की आस १/३३९ ।

मधुप १ भ्रमर मनहुँ ~ मधु माति गिरे री २२९३ । २ उद्धव ~ कहि जानत नाहीं बात ३५४५ ।

मधुप गोप मधु पीने वाले वृन्दावन के गोप • वेणु बजाय रास इन कीन्हीं ~ की नारी सारा० ७४८ ।

मधुपति के टोल भ्रमरों के समूह • उडि आए ~ १७९३ ।

मधुपनि भ्रमरों • ज्यों जल मीन कमल ~ की ३७५३ ।

मधुपरक दही, घी, जल, शहद और शक्कर का घोल जो देवता पर चढाया जाता है : अधर-मधु ~ करिकै १०७१ ।

मधुपुरि मधुपुरी, मथुरा : ता अलि की सगति बसि ~ ३९८४ ।

मधुपुरी मथुरा का एक प्राचीन नाम ~ की जुवति सब कहति अति रति भरी ३०६० ।

मधुबनहि मथुरा को . दरसन दै ~ सिधारौ ३९९४ ।

मधुबनहु मथुरा (से भी) चलन कहत ~ तैं सजनी ४२५१ ।

मधुबनियाँ मधुवन मे स्याम विनोदी रे ~ ३३७७ ।

मधुमगल श्रीकृष्ण का एक गोप सखा तब ~ कह्यो ग्वाल सों २८३२ ।

मधुमाखि मधुमक्खी रात ज्यौं अक्रूर दिन अलि मदन की ~ ३५८४ ।

मधुमाखी मधुमक्खी . ज्यों ~ सँचति निरतर बन का ओट लई १/५० ।

मधु-मूरति मधुर रूप . है ~ नैननि माँह समाऊँ ४९ ।

मधुराधुनी मधुर ध्वनि करने वाली . मुरलिका गान तुव नाम ~ २४५३ ।

मधुरि मधुर • ~ धुनि बाजै सुनि सजनी ९९७ ।

मधुरिपु 'मधु' नामक दैत्य को मारने वाले, विष्णु=कृष्ण ~ कुल मरजादा छोरी ३६७३ ।

मधुरिपुहि मधु दैत्य के शत्रु विष्णु = कृष्ण को लै ~ सिधारे ३५९४ ।

मधुरी मीठी : ~ अति सरस खजूरी १८३, ~ बोलनि बरनि न जाई ६१६ ।

मधुरे मीठे . ~ बचन बालि अमृत मुख ३९९५ । ~ **मधुरे** मधुर-मधुर स्वर मे ~ — बाजति १३३९ ।

मधुरैं मधुर (स्वर) मे : करत चले ~ सुर गान ४३८ ।

मधुरै मृदु, मीठो • पाछैं बंक चितै ~ हँसि १९६४ ।

मधुलंपट मधु का लोभी . कनि रस लुब्ध महा ~ २३४६ ।

मधुव्रत मधु ही व्रत जिनका, मधु पीने वाले · वन पिक, बरह, ~ बचननि हौं सिलीमुख, अकुलाइ लर्ट री ३०६४ ।

मधुहारि मधु का हरण करने वाले, कृष्ण : मनहुं अंग विभूति राजति मधु मौं ~ २६९ ।

मधुहारी मधु का हरण करने वाले, कृष्ण : ~ अक्रूर बधिक मुख, अवधि लगाई ठार ३८४६ ।

मधुहि शहद को : मधु मत्त मधुप गन मादक ~ पिये ९९ ।

मध्यहि मध्य में : ~ कुंवर कन्हाई ११३८ ।

मध्यान मध्याह्न : बहुरौ नृप करि कै ~ ९/१३ ।

मन १. मन । ~ **कौ फल पायौ** मनोवांछित फल प्राप्त किया : मिलि धाईं ~ — ११७९ । ~ **लाइ** मन लगा-कर · दउ एक वर्ष ~ — ९४३ । ~ **लायौ** मन लगाना : पाछे ऋषि तिन तप ~ — कीन्हौं प्रगट विमान सारा० ५३ । **करत ह्याँ कौ** ~ यहाँ आने की इच्छा करते हैं कबहुँक स्याम — ~ कैधौं प्रीति बिसराई ३६८३ । **कहा** ~ **आनी** यह क्या सूझी : कह्यौ, उठ यह — ~ — ५/२ । **चोरत** ~ मन मुग्ध करते हैं, मन चुराते हैं कछु दिन करि दधि-माखन चोरी, अब — ~ मोर ७७६ । **न ~ मैं धरं** ध्यान नहीं देना है · कोऊ धर्म — ~ — १/२९० । ~ **अटक्यौ** मन अटक/उलझ गया : ता दिन नैं, मधुकर ~ — बहुत करी निकरै न निकारयौ ३५६४ । ~ **जो ढरचौ** प्रेम हो गया, मन मुग्ध हो गया रूपहीन, कुलहीन कूबरी नारी ~ — ३३४६ । ~ **दीनौ** मन लगाया भाव-भक्ति कछु हृदय न उपजी ~ विमया मैं दीनौ १/६५ । ~ द चित्त लगाकर · देखो यकि भेद सखी री कैमें ~ — पैनी है १२५९ । ~ **न धरैं** चित्त नहीं लगाना है : सूरदास स्वामी मनमोहन तामैं ~ — ४८३ । ~ **बँध्यौ** मन लीन/आसक्त या मुग्ध हुआ सूरदास प्रभु कौ ~ मजनी बँध्यो राग की डोरि ६५७ । ~ **बसैं** मन में बसते हैं, अच्छे या रुचिकर लगते हैं सूरदास ~ — तोतरे बचन बर १५१ । ~ **बाँध्यौ** मन मुग्ध या आसक्त हुआ : कनक कामिनी सौं ~ — १/७४ । ~ **बिकानौ** मन प्रेम में फँस गया ~ तौ हरिहीं हाथ बिकानौ २२२० । ~ **मान्यौ** अनुराग हो गया : सखी री, स्याम सौं ~ — १६६२, नंदलाल सौं मेरो ~ — १६६३ । ~ **मारि** खिन्न या उदास होकर कहा रही ~ — भोरहीं २७१२ । ~ **मारे** खिन्न, उदास : आए नंद घरहिं ~ — ५४१ । ~ **मिलयौ** चित्त को लगाना . नैननि निरखि बसीठी कीन्हीं ~ — पल आनि २००० । ~ **मैं नहि मान्यौ** कुछ परवाह या चिंता नहीं की : ढाक खाय जूठन ग्वालन की कछु ~ — सारा० ७५० । ~ **मैं यह धरी** मन में यह निश्चय या संकल्प किया है मैं ~ — ६/५ । ~ **राखत** ध्यान में रखते हैं . सुनि बचननि ~ — ४९३ । ~ **राखे काम** इच्छा पूरी करना ही उचित है . उनहीं को ~ — २९९४ । ~ **लियौ चुराइ** मन मुग्ध कर लिया कब देखा वह मोहन मूरति जिन ~ — ६७९ । ~ **मन** मन ही मन : अनुमति ~ — यहै विचारति २०० ।

मन-आखर मनोनुकूल वाणी · ~ दै मोहिं ४० ।

मन-ओल जमानत के रूप में या बंधक बनाकर मन दै राखे ~ १७९२ ।

मन-काम मन कामना, मनोवांछा : कुसल प्रस्नहि कहे, तुरत ~ लहि ३०५१ ।

मन-कामना इच्छा, अभिलाषा · जौ लौं ~ न छूटै २/१९ ।

मन-कामनि मन-कामनाओं को . तुव ~ पूरन करिहौं ७९९ ।

मन चीत्यौ मन में चाहा/सोचा हुआ सूर स्याम दासी सुख सोवहु भयौ उभय ~ ३३८३ ।

मन-तरंग मन की मौज ~ आग्याकारी भृत १५८८ ।

मन-वांछित मनोवांछित : ~ सबहिनि फल पायौ ११७२ ।

मनवानछित मनोवांछित : ~ फल पाइये २८०० ।

मन-भायौ मन को रुचने वाला . कियौ स्याम सबका ~ ११७१ ।

मन-भावते मन को रुचने वाले, मनचाहे . माँगौं वर ~ ११७५ ।

मन-भावन १ मनचाहा, प्रिय लगने वाला : कह्यौ माँगु ~ ८/१३ । २ प्रिय, प्यारा : सूर स्याम जल-मध्य जुवति गन, जन-जन के ~ ११६२ ।

मन-भावना मन को रुचने वाला : भयौ ब्रज ~ ५७७ ।

मनमत्थ काम : मेटि ~ कौ मैं री २४५३ ।

मनमथ कामदेव · ~ सैनिक भए बराती १०७२ ।

मनमथ की डाटी काम-विदग्धा, कामातुर . भई व्याकुल ~ ७३६ ।

मन-मानि मनमानी, मस्त होकर तू वैरी ~ ३६५ ।

मन-मानी १ इच्छानुसार : लै सुवास ~ ३६३६ । २ मन ने स्वीकार कर लिया मथुरा ही ~ ३१६३ ।

मन-मानें स्वच्छंद : अब मिलि गए स्याम ~ ७३८१ ।

मन-मानें मन चाहे : ~ सोऊ कहि डारौ ३५१८ ।

मन मूढ मूढ मति भयो सेष ~ कहन को राधा-कृष्ण-विहार सारा० ९९१ ।

मन-मोहन मन को मोहने वाले, श्रीकृष्ण : ~ मोहिनि अँचई सी २११३ ।

मनमोहनहि मन को मोहने वाले, श्रीकृष्ण को : ~ ठगौ री २०५१ ।

मन-मोहनि मन को मोहने वाली ~ तू बस करे २६१३ ।

मन-मोहनौ मन को मोहने वाला, श्रीकृष्ण . स्यामा स्याम मिले ललितादिहि सुख पावत ~ २८३२ ।

मनरंजन मन को आनंदित करने वाली पीत धुजा उनकी ~ ३७४६ ।

मनरवन मन मे रमण करने वाले ~ दुख के दवन जानि लीन्हौं २०६१ ।

मनलाड़ मनमोदक, सुखद कल्पना · काकी भूख गई ~ सो देखहु चित चेति ३८६१ ।

मनवतर इकहत्तर चतुर्युगी का काल (ब्रह्मा के एक दिन का चौदहवाँ भाग) · करै राज तब लगि ~ १२/४ ।

मनसा १ मन मे · कबहुँ न ~ धापी १/१४० । २ मन की : सूर रुचि ~ जनाई २४४९ । ३ मन के : ~ नाथ मनोरथ दाता हौं प्रभु दीनदयाल १/१८० । ३. मन मे : ~ वाचा कर्मना, कछू कही राखि १/१८२ । ४ मन मे भी . ~ तहाँ न जाइ ३६१० । ५ इच्छा, कामना : 'सूर' के प्रभु दरस दीजै, नहीं ~ और ४०१९ । ६ ध्यान मे ही : ~ करि प्रभुहिं अर्पि भोजन करि टाटे ९/९६ । ७ बुद्धि सूर हरि की निरख सोभा, भई ~ पग ६२४ ।

मनसानाथ इच्छा पूरी करने वाला . ~ मनोरथ पूरन सुख निधान जाकी मौज घनी १/३९ ।

मनसि १. मन की · ~ मनोहर बालहि ४१८२ । २ मन से · ~ वचसि विचारि देखौ १८२२ ।

मनसिज कामदेव : ~ माधवै मानिनिहि मारिहै २११६ ।

मनसिज भूप कामदेव का राजा, श्रीकृष्ण · मोहि गहि लै गयौ कुजन, मजु ~ सा० ल० १७ ।

मनसुखा श्रीकृष्ण का एक गोप सखा रैता, पैता, मना, ~, हलधर संगहि रैहौं ४१२ ।

मनहर मन को हरने वाली विनय वचननि सुनि कृपानिधि चले ~ चाल २१८ ।

मनहरन मन को हरने वाले . 'सूरदास' ~ रसिक वर १९९३ ।

मनहरनि वि० स्त्री० मन हरने वाली मनमिज ~ हँसि १३८४ । स्त्री० मन हरण करने की क्रिया 'सूर' स्याम ~ कला बहु २५२६ ।

मन-हरनी मन हरने वाली : धुनि अतिही ~ १२३ ।

मनहि १ मन को मोहन हठ करि ~ हरन २२२१ । २ मन मे तद्यपि ~ बसत बसी बट, बन जमुना मजोग ४१५५ । ३ मन के : ~ बिना कह करौं सखी री १८९० । ~ **चोरै** मन चुराते हैं · परसपर नारी-पति ~ — १०४० । ~ **तोरैं** मन टुकड़े-टुकडे हो जाता है · सूर मव भेद सुनि ~ — १८५७ । △ ~ **न भावत** अच्छा नहीं लगना · जलनिधि ~ — ३६९८ । ~ **भ्रमाए** मन मे भ्रमित हो गये, चकित रह गए : चकित भए सब ~ — ९४८ । ~ **मनावैं** मन की साध पूरी किये डाल रहे हैं : या विधि सबके ~ — १३९९ । ~ **भावते** मनमाने, जितना मन मे आया, मन भर . ~ — किए पाप भरि पेट १/१४६ । ~ **मन** मन ही मन · अब उपजी अति लाज ~ — ४२९३ । ~ **मनहि** मन ही मन मे · तनक-तनक चरननि सों नाचत ~ — रिझावत १७७ ।

मनहिं १ मन · तिनहिं पर ~ राजा १६१५ । २ मन को : राधा ~ चुरावत १५९८ । ३ मन ने सजनी ~ अकाज कियौ २२२४ । ४ मन मे रैनि विपिन रति रस रह्यौ सो ~ विचारै २६५१ ।

मनहीं १ मन को · वै सँग लै जु गए ~ २२४१ । २ मन मे · सुता वृषभानु को हरष ~ री १९७४ । ~ **मन** मन ही मन · ~ — जु सिहानी २०८ ।

मनहुँ मानो, जैसे ~ मदन विनोद विहरत नागरी नव नात २८४४ ।

मनहु मानो : ~ नृत्यत नील घन मैं ३५६१ ।

मना[1] मन, चित्त · ~ (मन) रे, माधव मा करि प्रीति १/३२५ ।

मना[1] श्रीकृष्ण का एक गोप सखा . रैता, पैता ~ मनसुखा हलधर सगहिं रैहौं ४१२ ।

मनाइ मनाकर गोपालहिं लै आवहु ~ ३७१५ । **दान** ~ दान मनाकर, चुंगी लेने की क्रिया करके · जुवतिनि — ~ १६२० । ~ **दई** मना लिया . तेऊ मैं ~ — २७८२ ।

मनाइयै मानमोचन कीजिए · अति रिस क्रम है रही किसोरी करि मनुहारि ~ २५७० ।

मनाइहैं मनायेंगे . मानि न मानि री लाल ~ तेरी आँखिन मैं पैयत हैं २६९७ ।

मनाई १ मनाया : प्रिया ~ पद ललाट धसि परि० १/८७ । २ सेवा-पूजा करके यह औसर कब हैहै फिरि कै पायौ देव ~ १८ । ३ मनाई जा सकी, प्रसन्न हुई . तब वह निठुर ~ २४५८ ।

मनाए स्तुति और प्रार्थना की . कुल के देव ~ ९५२ ।

मनावति मनाती है · प्यारी हा हा करति ~ २१४६ ।

मनायेंहूँ मनाने से/पर भी प्यारी कोटि ~ नहिं मानति २५७२ ।

मनायौ मनाया : मानि ~ राधा प्यारी २८२६ ।

मनावत १ मनाना है सूर सबल अब तोहिं ~ २८१५ । २ मनाती हैं · ससि को देख आर हरि ठानी कर मनुहार ~ मारा० ४३९ ।

मनावति मनाती हैं, प्रार्थना/स्तुति करती हैं देव ~ वचन विनति सों ८९१ ।

मनावति मनाती है हरि प्रियतमहिं ~ २०२४ । △ **सगुन** ~ शुभ की कामना करती है निसि वासर हौं — ~

३६६१।

मनावन मनाने के लिए • स्याम ~ मोहिं पठाई २५६७।

मनावहि मनाते हैं हम नाहिन कमला सी भोरी करि चातुरी ~ ३४९८।

मनावहु मनाओ, स्तुति या प्रार्थना करो मारँग जाइ ~ २०९७।

मनावैं १ मनाएँ वें गहि चरन ~ ३७९५। २ मनाती/स्तुति करती हैं : ब्रज-जुवती हरि चरन ~ ६३१।

मनावैंगे मनाएँगे • वे गहि चरन ~ २७०८।

मनावैं १ मनाए : बहुनायक कौं कौन ~ २१०७। २ मनाना है : ऐसौ को ठाकुर जन-कारन दुख नहिं भलो ~ १/१२२। ३ मनाती है . सूरदास जसुमति इहि बिधि सौं सु ~ ११२। ४ मनाते हैं, प्रार्थना करते हैं बर-बर देव ~ १/३१।

मनावो मनाओ • सुत ही पति पितु प्रिया पाइ पर धर सिर आप ~ सा० ल० ९।

मनि¹ १ मणि, रत्न • ~ कुडल मकराकृत तरुन तिलक भ्राजै १८८७। २ मणि का • नव ~ मुकुट प्रभा अति उद्धित ७। ३ मणि के : ते पहिरे कचन ~ भूषन ३५। ४ मणि को . प्रमुदित ~ अवलोकि उरग ज्यों २३४०। ५ चूडामणि : ~ रघुनाथ हाथ लै धरनी ९/१०१। ६ श्रेष्ठ : गिरि गोवर्धन देवनि कौ ~ ८२९।

मनि² १ मन : स्यान ~ नैं परखि लीन्हौ १८४२। २ मन में हौंस जनि ~ करौ बन बिहारी १७२।

मनिआ मनका . हौं करि रही कठ मैं ~ निर्गुन कहा रसहि ते काज ३३५२।

मनिआरे दे० मनियारे।

मनिखभ १ मणि-स्तम्भ नगनि जटित ~ बनाए ९/७५। २ मणि-स्तम्भ के आजु सखी ~ निकट हरि २६७।

मनि-गन मणि-समूह . हेम-मध्य ~ बहु लाए १०४।

मनिधर पु० मणिधर (सर्प) ने . मानो ~ मनि ज्यों छाँडयौ ६७५। **वि०** मणि को धारण करने वाला ता ऊपर इक ~ नाग २११०।

मनिनि १ मणियों : सकल भूषन ~ के बने ८/८। २ मणियों को . ~ ग्रथित ज्यों सुत २/३८।

मनिबंध कलाई : चित्त सौं चित्त, ~ ~ सौं, दृष्टि सौं दृष्टि नहिं सूर डोले ३०७१।

मनि-भूषन मणि के आभूषण : सूरदास ~ ऊपर सख धरत है सेत ३९६२।

मनिमय मणियुक्त . ~ जटित मनोहर कुडल २२१९। ~ साने मणि-जटित भूषन ~ १७९८।

मनि-मानिक मणि-माणिक, मुक्ता ~ न्यौछावरि करिहौं २१०६।

मनिमुक्ताहल मणि मुक्ताफल यह मथुरा कचन की नगरी ~ जाहीं ४१५७।

मनियाँ १ माला में पिरोया जाने वाला दाना : अपनैं कर जसुमति पहिरावति, तनक काँच की ~ ३३७७। २ मोती : कठुला कठ मजु गज ~ १०६।

मनियारे देदीप्यमान, सुहावने . सबहिनि से ~ ३७६२।

मनिहि मणि को : कौस्तुभ ~ बिचारैं ३/१३।

मनिहै मानेगी ~ तब ताकौं सब गोपी ३८०४।

मनी १. मणि, रत्न कहा काँच सग्रह के कीन्हैं डारि अमोल ~ १४५८। २ (सर्प के सिर की) मणि खाइ न सकै खरचि नहिं जानै ज्यों भुवग-सिर रहत ~ १/३९।

मनु¹ ब्रह्मा के १४ पुत्र, जिनने सृष्टि का प्रारभ माना जाता है। चौदह मनुओं के नाम निम्न हैं — स्वायम्भुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्ष सावर्णि, ब्रह्म सावर्णि, धर्म सावर्णि, रुद्र सावर्णि, देवसावर्णि और इन्द्रसावर्णि . स्वायभुव सो आदि ~ जए ३/८।

मनु² मानो, जैसे ~ बधूक सुमन ऊपर बिच अलि सुत बैठे आई २७३४।

मनुज मनुष्य सबहिन कह्यो साधु यह बाणी सुर मुनि ~ सराई सारा० ७३८।

मनुरजन मनोरजन करने वाला : जग हित जनक-सुता ~ ९८२।

मनुष मनुष्य : हरि की कृपा ~ तन पावै ४/१२।

मनुहार १ खुशामद, विनय . अब तुम जाइ करौ ~ ७/२। २ आदर-सत्कार : बिदा करे निज लोक कौं इहि बिधि करि ~ ४९२।

मनुहारि १ खुशामद : किसोरी करि ~ मनाइयै २५७०। २ विनती : सुनु मेरी ~ सारा० ९६८।

मनुहारी १ खुशामद कबहुँ करति ~ २१४७। २ विनती . उन सबकी कीन्ही ~ ११/३।

मनू दे० मनु¹ कपिल ~ हयग्रीव पुनि कीन्हौ ध्रुव-अवतार २/३६।

मने मन में कान्हे क्रोध ~ जब कीन्हें दियो साप अति सोक सारा० ४३।

मनैं मानकर, समझकर : यह हित ~ कहत सूरज प्रभु ७/५।

मनैयै १ मनाने से . मानहिं नहीं ~ कैसें परि० १/२०२। २ मना लेना • सूर स्याम कह्यौ सहज ~ २८२५।

मनैहैं १ मनाकर • जिन पुत्रनिहिं बहुत प्रतिपाल्यौ देवी-देव ~ १/८६। २ मनायेंगे, विनती/प्रार्थना करेंगे . मेरें मारत काहि ~ ९०७।

मनैहैं मनायेगा . मानत नहिं तोहिं कौन ~ परि० १/१०१।

मनैहौं मनाऊँगी : तेरौ भलौ ~ कगारिनि १७।

मनोज कामदेव सकल सुख की सींव कोटि ~ सोभा हरनि १०९।

मनोजैं कामदेव के • बरषत बान ~ १०५५।

मनोरथ दाता इच्छा पूरी करने वाला मनसानाथ ~ हौ प्रभु दीनदयाल १/१८९।

मनोरा मनोहर : गोकुल सकल ग्वालिनी हो घर घर खेलत फाग ~ भूमक री २८६४।

मनोरा-भूमक मनोहर भूमक (एक दूसरे के कधे पर हाथ रख भूमकर नाचना) • गोकुल सकल ग्वालिनी हो घर-घर खेलत फाग ~ री २८६४।

मनौ मानो ~ कनक लता-अवलि-बिच, तरल विटप तमाल २२७०।

मन्मथ कामदेव : कोटि ~ वारि छवि पर ३५६१। △ ~ **पकरि नचावै** कामदेव ने वश मे कर रखा है ~ — ११२१।

मन्मथ मात-तात-सुत कामदेव की माता (लक्ष्मी) के पिता (समुद्र) का पुत्र, चद्रमा . ~ अथयौ सारा० ९४०।

मन्वतर इकहत्तर चतुर्युगी का काल, जो ब्रह्मा के एक दिन के चौदहवें भाग के बराबर होता है • करौ ~ लो तुम राज ७/२।

मम १ मेरा : ये ही पति नित होहिं हमारे जो पूरण ~ भाग सारा० ६३२। २ मेरी : कचन सौ ~ देह करी १/११६। ३ मेरे . ~ हित भक्त सकल सुख तजें ९/५।

ममत्व मोह-ममता का भाव : अरु तिनसौं ~ बहु ठानै ३/१३।

मयक चद्रमा • मुख ~ मधु पियत करनि कसि २४७२।

मयकहि चद्रमा को : मनु ~ अक लीन्हौ १८४।

मय पुराणासुर एक प्रसिद्ध दानव जो महान् शिल्पी भी था ~ मायामय कोट सँवारौ ७/७।

मयगल मतवाला हाथी . गरजत अति गभीर, गिरा मनु, ~ मत्त अपार ३३१३।

मयत्रेय मैत्रेय, एक ऋषि, जो पराशर के शिष्य थे और जिनसे विष्णु पुराण कहा गया था • कह्यौ ~ सौं समुझाइ ३/४।

मयमत अहकारपूर्ण : अरी ग्वारि ~ बचन बोलति १६१८।

मया १ माया, भ्रम-जाल देखौं अहि मन मोह ~ तजि ३१५३। २ दया ~ करत ही रहियौ ३१७५।

मया-मोह माया-मोह यह कहि ~ अरुभाइ ५३१।

मयारि वह डडा, जिस पर हिंडोले की रस्सी लटकायी जाती है, धरनियाँ : कचन खभ ~ मरुवा डाँडी, खचि हीरा बिच लाल-प्रवाल ८४।

मयारिहि धरनियों मे : भँवरा ~ नीलमनि, खँचे पाँति अपार २८३५।

मयूख किरण, रश्मि : लागत चद ~ सु तिय तनु २६०५।

मयौ महित, युक्त . सो लागत अँग अनल ~ री ३३१९।

मरई १ मरता है अग्र सोच क्यौं ~ ४। २ मर जायँ चिरजीवि सो ~ ९/७८।

मरकट १. बदर : ज्यौं ~ मूठी नहिं छाँडत २३१४। २ बदर के • ज्या ~ कर होत नारियर १३०७।

मरकत पन्ना, एक मणि . यौं लपटाइ रहे उर-उर ज्यो ~ मनि कचन मैं जरिया ६८८।

मरगजी ममली हुई . अरगज अग ~ माला २५०२, सौंधैं अरगजा अरु ~ मारी अग २०१०।

मरगजे १. मसला हुआ . ~ हार बार बिथुरे हैं २००९। २ मसले हुए सिथिल अग ~ अबर २४७१।

मरजाद १ प्रतिष्ठा, मर्यादा • यह ~ जाति प्रभु तेरी ९/९३। २ सीमा : सौ जोजन ~ सिंधु की १/४३। ~ **टरी** प्रतिष्ठा समाप्त हो गई • सब ~ ४११४। ~ **तजो** मर्यादा छोड दी माधौ मन ~ — ४०३७।

मरजादा १ प्रतिष्ठा, मर्यादा मन दीजै ~ जैहै १९३५। २ मर्यादा (सीमा) मे : नवसैं नदी चलति ~ २५९२। ~ **जात** प्रतिष्ठा समाप्त हो रही है नेम धरम ~ — ४१७१। △ ~ **न लही** सीमा तोड चुकी हैं . सूरदास अब धीर धरहिं क्यो, ~ — ३९७०। ~ **लैहैं** प्रतिष्ठा नष्ट कर देगी . ये मेरी ~ — १७६८।

मरत १ मरता है दास-भाव नहिं तजत पपीहा, बरषत ~ पियास ३८१३। २ मरती हुई • बिरही ~ जिवाए ३८८४। ३ मरती है : जैसैं मीन ~ जल बिछुरत ३५७३। ४ मरते हुए ~ तुम साथ ससै नहीं कछु हमैं ४२२२। ५. मरते हुए को लेहु ~ जिवाई ४१४०।

मरतहुँ मरते हुए भी : ~ प्रीति लहै जी ३६९८।

मरति १ मरा जाती हैं : अब वे लाज ~ मोहिं देखत २४०२। २ मरती हैं : तातैं खरी ~ इहिं ठाहर ३९८९।

मरति १. मरती है : ~ तहँ बिललाइ ४०७२। २ मर रही (हैं) जुवती डरनि ~ हैं सगरी १४१५। ३ मरी जा रही हो • अब बृथा करि ~ ३१३८।

मरतौ मृत्यु को प्राप्त होता : पुनि जीतौ पुनि ~ १/२०३।

मरदन मर्दन, मालिश : अति-सुगध, ~ अग-अगनि २०२६।

मरन १ मृत्यु : (हरि) जरा ~ तैं रहित अमाया ३। २ मृत्यु के जब तैं जनम ~ अतर हरि करत न अबहिं अघाइ १/१८७। △ **भाजिबै तैं ~ है भलौ** कायरता पूर्वक भागने से मृत्यु अच्छी है • पुरुष कौं — ~ — ४१८३।

मरनी मृत्यु। △ **मति भई ~** मरने की इच्छा हुई . सूर प्रभु के वचन सुनत, उरगिनि कह्यौ, जाहि अब क्यौं न, — ~ ५५१।

मरम १ मर्म, भेद : तब तैं मूढ ~ नहिं जान्यौ ९/११९।

२ मर्म-भेदी . कहा कहौं कछु कहत न आवै, लगी ~ की भाली १४०८ ।

मरमत मर्म (भेद की बात) समझती है : हमहूं कृष्ण निहारी तैं कछु थोरी थोरी ~ ४०२२ ।

मरवायौ मरवाया है : जदुराई ताहि ~ ४१९० ।

मरहाइ मरणासन्न, सूख गये नैन नीर ~ ३११६ ।

मरहि मरने लगते हैं : ~ जौ पछितांहि २३४८ ।

मरहिगी मर जाएँगी : 'सर' ~ विकल वियोगिनि ३८६४ ।

मरहु मरो : ना तरु ~ विसूरि ४२५० ।

मराई मरा, मरवा टारहु हमहिं ~ ५३८ ।

मरायौ मरवाया : आगें है की रजक ~ ३०४१ ।

मराल हंस : मधुप ~ जु पद-पकज के ३५६९ ।

मराल-छौना बाल-हंस मनौ मधुर ~ बोलि बनै निहात १८४ ।

मराल-सावक बाल-हंस : गति ~ ता पाछैं १६७४ ।

मरि मरकर : ~ गधर्व देह तिन धरी ६/५ । ~ जानै मर जाना चाहता है प्रेम-महित ~ — ३९३० ।

मरिऐ मरें, मरता हूँ इहिं लाजनि ~ स्दा, सब कोउ कहत तुम्हारी (हौ) १/४४ ।

मरिकै मरकर, मरने के बाद ~ नरक परत है मोट ३/१३ ।

मरिबे मरने, मृत्यु ~ कौं नहिं हिय भय धरत ५/८ ।

मरिबौ मरना, मृत्यु : एक 'ठाउँ मारिबौ पै ~ नदनदन के काजनि ३३७० ।

मरिबौऊ मरना भी : प्रीति तौ ~ न विचारै ३२९० ।

मरियत १ मरती : अहो मधुप निसि-दिन ~ हैं ३८८९ । २. मरती हैं : सूरदास इन पर हम ~ ४०७६ । ३ मरते हे ~ देखिबे की हाँसनि परि० १/१३९ । ४ मर रही हूँ तातें अति ~ अपसोसनि ४२९८ । ५ मरा जा रहा हूँ ~ लाज पाँच पतितनि मैं १/१३७ ।

मरियै मृत्यु को प्राप्त होइए : इहाँ मसूनिन ~ २८२६ । △ लाज ~ अत्यत ही लज्जित होइए : करियै कहा, — ~, जब अपनी जाँघ उघारी १/१७३ ।

मरिहैं मरेंगे : मो देखत लछिमन क्यौं ~ ९/१४८ ।

मरिहै १ मरेगा : ~ असुर ताहि कें घाउ ६/५ । २ मरेगी . भए अपमान जहा तू ~ ४/५ ।

मरिहौं १ मरूँगा : जो ~ तौ सुरपुर जैहौं ६/५ । २ मरूँगी : विमुख वचन सुनि ~ १९४३ ।

मरिहौ १ मरोगे ~ नबहिं विसरि ४०४८ । २ मरोगी वह काटन मुरकी नहीं, तुम तौ मव ~ १३४२ ।

मरी वि० मरी हुई कुवरि हमारी ~ जिवाई ७६१ । क्रि० अ० १ मर रही हूँ . लोक-सकुच, कुल-लाज ~ २०४७ । २. मर गई : बकर्नाहिं बकत ~ री २३६१ ।

मरीचि पुं० १ पुराणानुसार ब्रह्मा के एक मानस पुत्र जो एक प्रजापति और सप्तर्षियों में से एक थे : तिन मन तें ~ कौ ठयौ ९/२ । २ एक ऋषि, जो कश्यप ऋषि के पिता थे : रिषि ~ कश्यप उपजायौ ३/९ । स्त्री० मृग-मरीचिका मनौं ~ देखि तन भूल्यौ ३०४७ ।

मरुआ १ एक पौधा : कूजा, ~, कुद ना १०९५ । २ हिंडोला लटकाने की लकडी कचन खभ, मयारि, ~ डाँडी खचित हीरा बिच लाल प्रवाल ८४ ।

मरुत १ आठ लोकपालों में से एक : तेज, अग्नि, यम - ~ वरुण और सूर्य चन्द्र यह नाम सारा० २१ । २ पवन : धूम - ~ तन जारै ३५४८ । ३ हवा की : करत ~ लहरी ३६३३ ।

मरुव मरुआ रचि रजन ~ मयारि २८३० ।

मरुवे मरुआ ~ मौं मानिक चुनी लागी २८३३ ।

मरुवौ मरुआ . खूभौ ~ सोगरौ २९०३ ।

मरसा एक शाक, मरसे साग चना ~ चौराइ १२१३ ।

मरूँगौ मरूँगा : रामचन्द्र के हाथ ~ सारा० २६३ ।

मरूरी मथ बुझत जानि मन्मथ चिनगी फिर मानौ देन ~ २८२६ ।

मरे १ मर जाता है : जीवन मुरछि ~ २३०७ । २ मर जाय सूखे होत न स्वान पूँछ ज्यों पचि-पचि वैद ~ ३७३० ।

मरैं १ मृत्यु को प्राप्त हों ~ नहिं देवना ८/८ । २ मर रही हैं : भ्रमि भ्रमि वन मैं वृथा ~ १६२३ । ३ मरने से : ~ रन सुजस परलोक सुख पाइये ४२२१ ।

मरै १ मृत्यु को प्राप्त हो को खनि कूप ~ वालू-थल ३७०१ । २ मरे, दुख या कष्ट सहे याहि लागि को ~ हमारे ३७२४ । ३ मर जाय ~ वह कस ३०८९ । ४ मरता है रक ~ पछिताइ ३७९३ । ५ मरती है : विरही मीन ~ जल बिछुरैं ३८१३ । ६ मरना है, मर जाना है : सन सवत भए ब्रह्मा ~ १२/४ ।

मरैगौ मर/नष्ट हो जाएगा सब तेरौ मद स्यान ~ ३६१९ ।

मरोरत मरोड़ता है । △ भौंह ~ भौंह मरोड़ते हुए : बदन सकोरत, — ~, नैननि मैं कछु टौना १४७० ।

मरोरति मरोड़ती है । △ भौंह ~ भौंह चढ़ाती (हो) मो पर — ~ हौ २१९९ ।

मरोरि मरोड़कर . बाह ~ नाह्यौ कैस १०३२ ।

मरोरी मरोड़ दी गुदी चापि लै जीभ ~ ५७ । △ करत ~ खींचातानी करता है : नख-सिख लौ चित-चोर सकल अँग चीन्हे पर कत — ~ १९३१ ।

मरोरैं मरोड़ता है । △ भौंह ~ कलश माँगता है : — ~ मटकि कै री जमुना रोकत घाट २८७४ ।

मरोरचौ मरोड़ा, सिकोड़ा वह अचरज देखौ तुम इनकी, कब

हम वदन ~ १५७२। △ भौंह ~ भौंह चढाई : अधर कप रिसि — ~ २४१४।

मरौं १ मर जाऊँ मैं ~ तुम कुसल रहौ दोऊ ३८७। २ मरती हूँ सुनि-सुनि लाज ~ ३५५१।

मरौ १ मर जाय ~ वह कस ५५१। २ मरा हुआ . ना तरु मोकौं जानौ ~ ४३०९।

मर्कट वदर ~ मूठि छाँडि नहीं दीनी २/२६।

मर्दन १ नाश : अघ ~ विधि गर्व हत करत न लागी वार ४३७। २ मालिश, मलना : तेल लगाइ कियौ रुचि ~ १/५२।

मर्यौ नाश किया, मिटाया गिरि कर धारि, इन्द्र मद ~ १/२७।

मर्म भेद, रहस्य : प्रेम कै सिंधु कौ ~ जान्यौ नहीं १/२२२।

मर्यौ १ मर गया तबहीं क्यौ न ~ ३०१३। २ मरता हूँ : इहि दुख जात ~ १/१५६।

मर्य्यादा मर्यादा के : वेद रीति करि रघुपति सब विधि ~ अनु-सार सारा० २५१।

मर्पंत दवा दिया · जातुधानि-कुच गर ~ तव, तहाँ पूर्नता पाई १/२१५।

मल १ मल की सफल विधि विषय खल ~ खानि १/७७। २ विष्टा . रुधिर मेद ~ मूत्र कठिन कुच उदर-गध गधात २/२४। ३ पापों/दोषो को · कलि ~ हरन, कालिमा टारन रसना स्याम न गायौ १/५८।

मलगोलै खिलवाड कीर करत ~ २८५७।

मलय चंदन · मृगमद ~ कपूर कुमकुमा ३९३७।

मलयज चदन . ~ भाल, भृकुटि रेखा की १८१४।

मलयागिरि पश्चिमी घाट का वह पर्वत जहाँ चदन अधिक होता है ज्यौ ~ पाइ आपनी जरनि हृदय की मेटै ९/८७।

मलयानिल मलय पर्वत से आने वाली वायु : मद ~ विगलित सीस निचोल ११३६।

मला माला · राजति है उर वन जु ~ परि० २/२८।

मलार मल्लार, एक राग जो वर्षा ऋतु मे गाया जाता है · मुरली राग ~ वजावत १४३१।

मलारी मल्लारी, 'वसत' राग की एक रागिनी : गावत ~ सुराग रागिनी गिरिधरन लाल छवि सोहनो २८३०।

मलि रगड कर। ~ **मलि** रगड-रगडकर : तेल लगाइ कियौ रुचि मर्दन, वस्तर ~ — धोए १/५२। △ **कर ~ मलि** हाथ मल मल कर, पछताती हुई : — ~ — निज पतिहि जगावति ७।

मलिन १ पापी ~ मदमति डोलत घर-घर २/१५। २ खराब, बुरा : कलुषी अरु मन ~ बहुत मैं १/१२८।

मलियै मलिए केसर ~ साख ३९३७।

मलीन १ उदास : ज्यो ससि विना ~ कुमुदिनी ३०२२। २ कांतिहीन : विधु ~ रवि प्रकास गावत नर-नारी २०२।

मलेच्छ म्लेच्छ : हलधर हल मूसल कर लीने सभी ~ सँहारे मारा० ६०४।

मलै चंदन : मिली कुबिजा ~ लैकै सो भई अरधग २६७२।

मल्ल पहलवान · गए जहँ कुवलया ~ द्वारैं ३०५१।

मल्लक्रीडा कुश्ती . जब उन कह्यो ~ तुम करत गोप के सग सारा० ५१९।

मल्लन पहलवानो को ~ सवन मल्ल मे दीखे मारा० ५१५।

मल्लनि १ पहलवानों · ~ कौ वल कहा वखानो २९२२। २. पहलवानों को रगभूमि करि ~ मारौं १६१९। ३ पहल-वानों ने : ~ कह्यौ हमहिं तुम देखौ ३०७०।

मल्लिका चमेली या बेला फूल का एक प्रकार जमुना पुलिन ~ मनोहर सरद सुहाई जामिनी १७३४।

मल्लहरावति चुमकारती-पुचकारती : सूरदास प्रभु मोए कन्हैया हलरावति ~ है ७३।

मल्लावति चुमकारती पुचकारती है : बाल-केलि गावति ~ सुप्रेम भर १५१।

मल्हावै चुमकारती पुचकारती है · हलरावै दुलराइ ~ ४३, राग अनूप ~ १३०।

मवासी गढपति, प्रधान, अधिनायक : मन न धरत वृन्दावन कौं ~ १४७७।

मवासैं किले मे, गढ मे : मनहुँ ~ आगि अहो हरि होरी है २९१४।

मवासौ मवासा, गढ (अड्डा) : मनो कियौ फिरि मान ~ मन्मथ वकट कोट २७६९।

मष यज्ञ : देवराज ~ भग जानि कै वरष्यौ ब्रज पर आई १/१२२।

मषकृत यज्ञों का किया हुआ फल थके मुख कछु कहि न आवै सकल ~ भोल २९२१।

मष्ट उदासीन, मौन : देखि पुर नारि-नर ~ मेलैं ३०७१। △ **~ करु** चुप रह ~ — हँसैगे लोग ३०७। **~ करौ** चुप रहो कहँ अवला कहँ दसा दिगवर, ~ — पहिचाने ३५२१। **रहौ ~ धारे** चुप्पी साधे रहो कहा पिय कहत सुनिहै बात पौरिया, जाय कैहै — ~ — ३०८९।

मसक मशक, चमडे का वना थैला, जिसमे भिश्ती पानी ढोते हैं ज्यौ जल ~ जीव घट अतर २/३८।

मसकत परिश्रम काहे कौं प्रभु विरद-बुलावत विन ~ को तार्यौ १/१३०।

मसकि १ दवाकर चरन ~ धरनी दली, उरग गयौ अकुलाइ ५८९। २ जोर लगाकर : देत अकुस ~ कह सकान्यौ ३०५४।

मसान श्मशान भूमि ~ विदित यह गोकुल ३१६८। △

~ जगायौं श्मशान मे शव को सिद्धि की (करने लगे) : हम तो जरि-बरि भस्म भईं तुम आनि ~ — ३६०७ ।

मसानी मसिधानी, दवात : पुहुमि पत्र कर सिंधु ~ गिरि मसि का लै टारै १/१८३ ।

मसाहत नाप-जोख, पैमाइश : काया ग्राम ~ करिकै १/१४२ ।

मसि १ स्याही : द्वै कौडी के कागद ~ कौ लागत है बहु मोल ३२५४ । २ काजल . पीक कपोल, अधर ~ लागे २६४५ । ३ कालिमा मे अपनो मुख ~ मलीन मदमति देखत दर्पन माँहीं २/२५ ।

मसि विंदा काजल का टीका या डिठौना, जो नजर से बचाने के लिए बच्चों के माथे पर लगाया जाता है : मुनि-मन हरत मजु ~ ११७ ।

मसि-विंदु दे० मसि विंदा भृकुटि पर ~ सोहै २२५ ।

मसि विंदुका काजल का टीका या डिठौना ~ सु मृग मद भाल ८४ ।

मसी कालिमा • छूटत नैन ~ परि० १/९१ ।

मसूसनि (मन) मसोसे, कुढन मे इहाँ ~ मरियै २८२६ ।

मस्तक सिर रावन के दश ~ छेदे सर गहि सारँगपानि १/१३५ ।

महँ मे • ननु दिनकर प्रतिबिंब मुकुर ~ ढूँढत यह छवि पाई ३५६० ।

महंत १ मठ का मुखिया : याको करा ~ ३४१९ । २ प्रधान, मुखिया सखा प्रवीन हमारे तुम हौ तुमत नहीं ~ ३४२८ ।

महत[1] पु० महत्त्व, मान . मुरली ~ दियें इतरानी १३२२ । वि० महत्त्वयुक्त • कृष्ण ~ करि पठै दिनी ३४५२ । ~ गँवाई महत्ता खो दी : आजु कह्यौ जब ~ — ९४६ ।

महत[2] मथ रही थी • हाँ ही ~ दही ३३९५ ।

महतरिया माता : धाइ लए जसुमति ~ २४६ ।

महतारि माता ने • सिखए हैं ~ १५०५ ।

महतारी माता . मुख चूमति जसुमनि ~ ९५१, जाहु कान्ह ~ टेरति १४२५ ।

महति मान, महत्ता . जानि ~ पनि जाइ न मेरी १६६३ ।

महतो मुखिया को : मन-~ करि कैद अपने मैं ग्यान जहनिया लावै १/१४२ ।

महत्त महिमा, बडाई जो कोइ काज करै बिन बूझेपेलि ~ हरी री २३०० ।

महत्तत्व महद् तत्त्व, पच्चीस तत्त्वों में से तीसरा, जिसमें अहकार की उत्पत्ति होती है निगुन प्रकृति तें ~, ~ तें अहकार २/३६ ।

महभारथ महाभारत का युद्ध : ताकै सग सेन बँध कीन्हौ अरु जीत्यौ ~ १/२८७ ।

महर १ ब्रज मण्डल में प्रयुक्त होने वाला एक आदर-सूचक शब्द या सबोधन सुदर नद ~ के मदिर ३२ । २ राधा के पिता वृषभानु सूर यह बात जौ सुनै अबही ~ २०१४ ।

महर-ढौंटा महर (नद) के सुपुत्र, श्रीकृष्ण : मनिगन लागे अपार, कहत ~ ४१ ।

महर-सुत महर (नद) के पुत्र, श्रीकृष्ण ~ अरु श्रीदामा ४३७ ।

महरहिं १ महर (नद) को ~ लेहु बुलाइ २४ । २ महर (नद) मे बूझत महर बात नँद ~ ८१५ ।

महराइ महाराज कह्यौ, सुनो बिनती ~ १/२८६ ।

महराज महाराज : ~ अब बिलब न कीजै ४/५ ।

महरानी महारानी (यशोदा) • लई बुलाइ महरि ~ ८१२ ।

महराने महर (गोप सरदारों) के घर : बात परै जो कहुँ ~ १०५६ ।

महरि ब्रज मण्डल मे स्त्रियों के लिए प्रयोग होने वाला आदर-सूचक सबोधन : ~ जसोदा ढोटा जायो २१ ।

महरिहि महरी (यशोदा) को • देन ~ गारि ३८७ ।

महरेटी महर की पुत्री, राधा ब्रज-घर महरि लेहु ~ ३०३ ।

महलनि १ महलों को . छज्जनि ~ देखि कै ३०२१ । २ महलों मे : नारि ~ नहीं, सबै अति ही डरी ३०५६ ।

महलात महलों को : इन्द्र बन काटि ~ ढाहन लग्यौ ४२२१ ।

महलियाँ छोटे महल मे : एक परस्पर बेनी गूँथति आगन कुज ~ २६२० ।

महाँ महा, अत्यधिक नहिं करत प्रिय प्यारी आगे, अनँद बिरह ~ २५६१ ।

महा वि० बडा, बडे ~ पुन्य ब्रतधारी ३९०१ । २ बहुत अधिक माल-बेंदी बिंदु ~ छाजे २१४८ । क्रि० वि० अत्यन, बहुत : ~ विचित्र नीर बिनु नौका ३८६३ ।

महाउत महावत चढक मनहु ~ मुख पर १४३९ ।

महाउर १ महावर पीक कपोल, ललाट ~ २६३४ । २ महावर में : लटपटी पाग ~ पागी २६४५ ।

महाछवि अति सुदर कानि गनि पनि मारग ~ उमगि पलक लगे भोर ११९९ ।

महा-जान अत्यन्त चतुर : उठो प्रान नाथ ~ मनि जानकी २०३० ।

महाजाननिराइ चतुरों के राजा अर्थात् श्रीकृष्ण . 'सूर' प्रभु बस किये नागरि ~ १०८० ।

महातम माहात्म्य, महिमा कमल नैन कौ जानि ~ अपनी गति बडाई परि० २/६२ ।

महातृन पौधे हैं इन्द्रिय-मूल-किसान ~ . अग्रज दाज बर १/१८५ ।

महातल पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से पाँचवाँ अतल वितल अरु सुतल तलातल और ~ सात पाता० ३१ ।

महादेव शिव : ~ पुनि बिनय उचारी ७/२ ।

महाधन भगवान् तर कूरम वसत ~ धीर सारा० ३२।

महानग महामणि, पर्वत . मनु विवि मरकत मनि बीच ~ ९८३।

महानुभाव उदात्त भाव वाले ~ निकट नहि परसे जान्यौ न कृत विधात्र १/२१६।

महा-परलै दे० महा प्रलय : एक बार ~ भयौ ९/२।

महापास महापाश से : मोचन गोप गयद ~ ४२११।

महाप्रबल अतीव शक्तिशाली (गोपाल) तुम्हरी माया ~ १/४४।

महाप्रलय वह काल जब सारी सृष्टि का विनाश होकर केवल जल ही जल रह जाता है अरु पुनि ~ जब होइ ४/९।

महाप्रलै दे० महाप्रलय कहा होत जल ~ कौ ८८०।

महाबल वि० बहुत बली • ~ गरुड ज्यौं गहत धाई ३०५९। पु० अत्यधिक शक्ति • दिया ~ ईस ९/७५। **करत ~** भिडते, टकराते ऐसे बादर कजल करत अति ~, चलत कर अधकाला ८५५।

महाबलि महाबलि (प्राण) : तनु श्री खड मेघ उज्ज्वल अति घहरात ~ देखि साजति ६३८।

महाबीर अतीव पराक्रमी • ~ ये उत अग अग-बल रूप-सैन पर धावत २२८८।

महामद अत्यत घमड मे : असुर ~ माते १/४४।

महामनि महामणि • सम करि गनै ~ काँचै २/११।

महारथि महारथी (अर्जुन) का : स्यदन खडि ~ खडौं कपिध्वज सहित गिराऊँ १/२७०।

महारन भयकर युद्ध : सूरदास प्रभु रस बस कीन्ही परी ~ जोर ११९९।

महारस १ बहुत अधिक रस/आनद ~ अँग अँग पूरन १६२४। **२** प्रेम रस मे : स्याम ~ माती २१५८।

महावतहू हाथीवान के द्वारा भी : रुकत न पवन ~ पै ३३०३।

महावर लाख से बना लाल रग, जिससे सौभाग्यवती स्त्रियाँ पैर (एडियाँ) रगती हैं ल्याउ ~ बेगि ४०।

महा-वियोग मृत्यु : याही तें सबको उपजावत सुख मद ~ सा० ल० शेष ९।

महासिधि अणिमा, गरिमा आदि अलौकिक शक्तियाँ • अष्ट ~ दासी ३९२७।

महि मे राख्यौ हो जठर ~ स्रोनित मौ सानि १/७७।

महि १ पृथ्वी . ~ तैं पकरि उखेरौ ८६९। **२** पृथ्वी को : चरन चापि ~ प्रगट करी पिय २६०४। **३** पृथ्वी पर • भीम गदा कर तें ~ डारी १/२४८। ~ **फूली** पृथ्वी आनद के मारे फूल उठी ~ — भूल्यौ गति पौन ११८०।

महिआँ मे कहत सुनत समुभत मन ~ ऊधौ वचन तुम्हारे ३०३६।

महिमत महिमावान् : गुन ~ सदा श्रीपति के ३९३९।

महिमा-सागर प्रभुत्व-सम्पन्न . सूरदास प्रभु ~ ९०१।

महियाँ मे : बूडत छाडि विरह बन ~ मधुवन जाइ छए परि० १/१७०।

महिप भैंसा। मेढा, ~, मगर, गुदरारौ ९७६।

महि-सुत पृथ्वी (ग्रह) का पुत्र, मगल (ग्रह) • ~ गति तजि, जलसुत गति लै सिधु-सुता पति भवन न भावै २७९६।

मही मे जिन रघुनाथ पिनाक पिता-गृह तोर्‌यौ निमिष ~ ९/९१।

मही[1] १ पृथ्वी छल करि लई छीनि ~ ९/११८। २ पृथ्वी पर . रूप सरोवर के बिछुरे कहुँ, जीवत मीन ~ ३५७१।

मही[2] मट्ठा • छिरकि लरकनि ~ सौं भरि २८९।

महीपति १ राजा : मथ्यौ मान-बल दर्प ~ जुवति जूथ गहि आने १०७०। २. राजाओ को : मागधपति बहु जीति ~ कछु जिय मैं गरवाए १/१०९।

महीपती राजा . फागुन मदन ~ हरि होरी है २०१४।

मही-सुत पृथ्वीपुत्र, मगल ग्रह . भाग्य भवन मैं मकर ~ बहु ऐश्वर्य बढैहैं ८६।

महुअरि एक वाद्य (बीन) डफ बाँसुरी रुज अरु ~ बाजत ताल मृदग २८६०।

महूँ मैं भी तेरी घाँ है ~ लरी २४३४।

महूरत मुहुर्त्त, शुभ घडी : सोधि ~ चौरी विधि रची ४१८६।

महूरति मुहूर्त, शुभ (घडी) न्यारी होति न चित तैं कबहू, छिन पल, घरी ~ ३९२६।

महूरी मोहरा, हरे रग का एक प्रकार का पत्थर . देखे बनै पखान ~ मोरपखा मनि गुज ३८४७।

महेरी महेरा, मट्ठे मे नमक या मीठा डाल कर पकाया हुआ चावल : मधुर ~ गोपनि प्यारी १२१३।

महेस शिव सूर सोम सनकादि इद्र अज, सारद निगम ~ ४०७८।

महै मथती है : नाहिन मनहिं ~ ६४६।

महोच्छव बडा उत्सव : घर-घर मगल महा ~ ३०९७।

महोदधि सागर, समुद्र • नव-नव भाव तरग ~ ४१३१।

मह्यौ[1] मिट्टी मनि दै लेहु ~ ३७२०।

मह्यौ[2] **१** मट्ठा दधि ~ नवनीत माधव कौन के घर खात ३४७५। २ दही(मथ दे) पाहुनि करि दै तनक ~ १८२।

माँगत १ माँगता हूँ अगणित पाप महादुख मेरो ~ यही मुरार सारा० ६१८। **२** माँगता है : फाटक दै कै हाटक ~ ३९६५। **३** माँगती हुई . दरसन भिच्छा ~ डोलति

३६९३ । ४ माँगती है : बार-बार विधि सौं यह ~ १६३३ । ५. माँगते थे : ~ दान मही कौ ३५५६ । ६. माँगते हुए : त्रिनहु की छाँह गई निमि ~ ४२३६ । ७ माँगते हैं : अधिकौ-अधिक स्याम सुख ~ २१२४ । ८ माँगते हो : ~ ऐसौ दान कन्हाई १५७४ । ~ पेलि आग्रह/हठ पूर्वक माँगते हैं : जोइ-सोइ ~ — ११७७ ।

माँगति माँग रही थी : सूर-स्याम गिरिवर, वर ~ ९५६ ।

माँगतु माँगता (हूँ) : ~ हौं हरि की कुमलाई ८४० ।

माँगन माँगने के लिए : आपुन गई कमोरी ~ २७० ।

माँगनौ माँगना : जैसे कृपनहिं दान ~ लालच कीन्हे करत बड़ाई ३९२० ।

माँग-पाटी माँग-पट्टी : विविध बेनी रची ~ सुभग १०४२ ।

माँगहु माँगो : यह कह्यौ हरि दान ~ १५०४ ।

माँगि १ माँग (लिया) : मोहिनी सौं अमृत ~ लीन्हौ ८/८ । २ माँगकर : आपुन झारी ~ विप्र के चरन पखारे ८१८८ । ~ **पठाए** मँगवा भेजा है : कस नृपति कछु ~ — ८१५ ।

माँगियै १ माँगो : ऐसौ दान ~ नाहिं १४६२ । २ माँगा जाय : करता सौं ~ चलौ १०४६ ।

माँगु माँगो : कह्यौ ~ मन-भावन ८/१३ ।

माँगे १ माँगना हुआ : ज्यौं बालक जननी सौं अटकत, भोजन कौं कछु ~ २३५८ । २ माँगने से : अब कैसैं पैयत सुख ~ १/६१ । ३ माँगा हुआ : मुँह ~ फल जो तुम पावहु ८२१ । ४ माँगे : बालक मृतक देवकी ~ मारा० ७९६ ।

माँगैं १ माँगती हैं : बचे ये आज विधि यहै ~ ३०६७ । २ माँगते हैं : और जननि पै ~ ४४२ । ३ माँगने पर : पुनि न पाइहौ ~ १६१० । ४ माँगता है : दोऊ हाथ जोरि करि ~ ३९१४ । ५ माँगे ही : बिन ~ हम सो दै आए ८१५ । ६ माँगे हुए : हम ~ पति पावैं ७६६ ।

माँगै १ माँगता है : रोइ अजहूँ सु पान ~ ३०७ । २ माँग रही है : मोहन ~ देहु २८६५ ।

माँगौं १ माँगता हूँ : ~ चरन-सरन वृन्दावन ११७७ । २ माँगती हूँ : जनम तो पापान ~ २८१९ । ३ मँगवा लो : ~ उनहिं धराइ ५२६ ।

माँगौ १ माँगता हूँ : जुगल किसोर चरन-रज ~ २९०७ । २ माँगूँ : जो ~ सो दै री १७६ । ३ माँगो : और नद ~ कछु हमसा ८४३ । ४ माँगोगे : जो ~ सो देउँ लेहु माधौ मग आए ४२८८ ।

माँग्यौ १ माँगना : जो ~ चाहौ सो माँगौ ८४० । २ माँग लिया था : सूरदास पहिलै हो ~ १३ । ३ माँगा : बसी निज ~ मृदु बानि १२११ । ४ माँगा था : तै ~ हाँ दियौ कृपा करि ४ ।

माँचौ १ मग्न हो गई : ताही मैं ~ १०१० । २ मग्न है, रँगी पड़ी है : स्याम प्रेम रस ~ १८६० । ३ फैला दिया : कारनि तिहूँ लोक में ~ १/१८ ।

माँचैं मग्न रहे : निसि दिन नाम लेत ही रसना फिरि जु प्रेम-रस ~ १/८१ ।

माँजति मार्जन करती है, सँवारती है : जो छोटी तेड ह खोटी-माजति ~ जो रा २०५१ ।

माँजैं १ मार्जन करेंगी : क्यां विभूति वपु ~ ३८२५ ।

माँझ १ मे, भीतर : तब वह मनहीं ~ सिहात २०२१ । २ बीच मे, मध्य मे : सखिनि ~ कत लाजनि मारी १५५७ ।

माँट मटका : कचन ~ भराइ कै रँग होरी २८६६ ।

माँडति मलती/लगाती हैं : खेलि फाग, मुख ~ रोरी ४०७७ ।

माँडति १ ठानती हुई : सुनहु सूर हम सौं हठ ~ कौन नफा करि लैहौ १११८ । २ लगाती है : कोउ काजर कोउ बदन ~ २८९८ ।

माँडनि गोट, किनारी, ओढनी : नील कचुकी ~ लाल ११८० ।

माँडनी गोट, किनारी, ओढनी : अँगिया नील ~ रानी निरखत नैन चुराई १०५३ ।

माँडव माण्डव्य नाम के एक ऋषि, जिन्हे बचपन मे एक पतिंगे के शरीर मे काँटा चुभो देने के कारण यम ने सूली दी, पर सूली टूट गई : ~ ऋषि जब सूली दयौ ३/५ ।

माँडवौ १ मडप : आने नाथ द्वारका नीकैं रच्यौ ~ व्यास सारा० ६३९ ।

माँडहि मलती/लगाती है : एक मुख ~ कुमकुमा मिलि झूमक हो २४१० ।

माँडि[1] १ लगाकर : नव कुकुम मुख ~ कै २९०० । २ माँड-कर, गूँथकर : माँडे ~ दुनेरे चुपरे १२१३ ।

माँडि[2] माँडना, किसी अनाज की बाल से दाने झाडना । ~ **माँडि** झाड-झाड कर : ~ — खरिहान क्रोध को पोता भजन करावै १/१४२ ।

माँडी मचायी, ठानी । ~ **आरि** हठ ठान लिया : सुमति सुंदरी परम पिया रस लपट ~ — १८१६ ।

माँडे[1] १ माँडा, गूँथा : ~ माँडि दुनेरे चुपरे, बहु घृत पाइ आपहीं उपरे १२१३ । २ मलो, रंग दो : एक कहै प्रिय कौ मुख ~ २९०१ ।

माँडे[2] एक प्रकार की रोटी जो घी मे पकती है : काकी भूख गई बयारि भषि, बिना दूध घृत ~ ३६०८ ।

माँडौं मचाऊँगा : आजु बिकट रन ~ ९/१२२ ।

माँडौ ठानती है : पाइ अब मदति, हठ करहिं ~ २७३० ।

माँडौंगी मचाऊँगी : सुन री कुल की कानि ललन सौं मैं झगरौ ~ २९३६ ।

माँड्यौ १ ठाना, मचाया : धाइ अनिरुद्ध सौं जुद्ध ~ ४२०७ ।

२ घुसे जाइ जल भीतर ~ ५८९ । ३ धरा छोड आई हू एक कहति आँगन दधि ~ ९३३ । ४ मींज दिया एकै आँखि आँजि मुख ~ २९१६ ।

मांधाता एक सूर्य वंशी चक्रवर्ती राजा · कह्यौ ~ सों जाइ। पुत्री एक देहु मोहि राइ ९/८ ।

माँय मे : मारुत सुवस कियो छण ~ सारा० १०६ ।

माँह मे · नौननि ~ समार्ऊं ४९ ।

माँहि मे : वदन चीरि पल ~ गिराइ ४३० ।

माइ १ माता : आदि अंत जानौ नहीं कौन पिता को ~ ४०९५ । २ माता ने तेरी ~ सकल जग खोयौ ४१८७। ३ सखी छाँडी सुरति सबै ब्रजकुल की, निठुर लोग भए ~ ३१८६ ।

माई १ माता : लरिहैं हम सौं भगिनी, ~ १४१७। २ हे सखी . ~ मधुपनि की यह रीति ३५९३ ।

माखन-चोरि मक्खन चुराने वाले, श्रीकृष्ण · प्रीति के बस्य भए ~ २०१८ ।

माखन-प्यारे जिसे मक्खन प्यारा है, अर्थात् श्रीकृष्ण · धनि ऊखल धनि ~ ३८५ ।

माखनहि मक्खन के : ज्यौं विनु ~ मह्यौ २९८६ ।

माखी १ मक्खी ज्यौं ~ मृगमद-मंडित तन परिहरि पूय धरै १/१९८ । २ (शहद की) मक्खी : मधु छँडाई सुफलक-सुत लै गए, ज्यो ~ बिललात २९९८ ।

मागध[1] भाट, चारण : मोह मया बन्दी गुन गावत, ~ दोष अपार १/१४४ । ~ **मदन प्रससी** कामदेव रूपी चारण उसके (उसके सौंदर्य के) प्रशसक हैं . मधुकर सूत वदत बदी पिक ~ — १०७० ।

मागध[2] मगध देश का एक राजा, जरासंध · ~ हति राजा सब छोरे १/११२ ।

मागधपति जरासंध, जो मगध का राजा था · ~ बहु जीति महीपति कछु जिय मैं घबराए १/१०९ ।

मागैं १ माँगते हैं जो ~ तिहिं देउँ मैं ३/१३ । २ माँगे वैसेहिं दान जु ~ हम पै ३७९५ ।

मागौं माँगता हूँ ~ यहै प्रसाद ४९२ ।

माघ माघ मास ~ तुषार जुवति अकुलाहीं ७९९ ।

माच मचान, मच . तुरत ~ तैं धरनि गिरायो २६३१ ।

माचल जिद्दी, हठी महा ~ मारिवे की सकुच नाहिंन मोहिं १/१०६ ।

माच्यो व्याप्त हो गया : द्वादश दिवस दुहुँ दिश ~ फागु सकल ब्रज माँफ सारा० १०८६ ।

माजन १ मौज . पायौ जिय कौ ~ ३३७० । २ शोधन करने वाले दुख पाए जन ~ ३७७१ ।

माजैं लम-मल कर साफ करें ल्यावहु भस्म अगमुख ~ २८८३ ।

माट १ मटका : दधि के ~ भूमि ढरकाए १५१२ । २. मटके मे . कुंभ धरि पुनि ~ राखौं ८/१६ ।

माटी १ । मिट्टी । २ राख, भस्म · रतन छोरि दियौ ~ ३५९५ । ३ शरीर (जो कि मिट्टी रूप माना गया है) : मन तौ रह्यौ पषि सूरज-प्रभु ~ रही धरी ३२८० ।

माठ[1] मटका रीतो ~ बिलौवई ७१५ ।

माठ[2] मार्ग, पथ : लोह वन ~ बेलवन सुन्दर भद्र बृहद वन ग्राम सारा० १०८९ ।

माडिहौं (हाथ से) मलूँगी, मसलूँगी, मींजूँगी न्यारे है मुख ~ आँखियाँ अँजैहौं परि० १/१२४ ।

माडी ठानी, मचाई : राम कुभाड ~ लडाई ४११८ ।

माडैं ममलते/मींजते हैं मुख ~ छाँडैं नहीं २९१५ ।

माडौंगी मचाऊँगी ललन सौं मैं झगरौ ~ १९३६ ।

माढि ठीक कर सिंगार काढि ~ आई साज २७५३ ।

माढी मढी हुई, चिपकी . अँगिया बनी कुचनि मौ ~ ३०० ।

मात[1] १ माता । २ गौमाता, गाय वाहन ~ तासु रस, जद्यपि सब ब्रज करत बखानौ सा० ल० ९९ ।

मात[2] १ मस्त होकर, उन्मत्त होकर समि नचवत मृग ~ १८०५ । २ समाते हैं · कचन कलस न ~ १२०६ ।

मातनि १ माता से : अंत मिले पितु ~ ३५४९ । २ माताओं से : सनेह बढावत ~ ११९ ।

मातहि १ माता को . पितु ~ पेखौं ४९२ । २ माता से बार-बार हरि ~ पूँछत २४३ ।

माति १ मतवाला होकर मनहुँ मधुप मधु ~ गिरे री २२९३ । २ समाती है · आनँद भरी जसोदा, उमँगि अग न ~ ३० । **गई** ~ मतवाली हो गई : सूर मनसा — ~ ३००३ । ~ **उर मैं** हृदय मे (फूली) समाती · धरनि उमँगि न ~ — १०६८ ।

माती मतवाली, मदमस्त . स्याम महारस ~ २१५८ ।

मातु १ माता, जननी आयसु दीजै मोहिं ~ अब परि० १/२ । २ माता के · ~ मन मोद अति ही बढायौ ४१८९ । ३ माता ने तव उठि आए कान्ह ~ जल वदन पखारयो ४३१ ।

मातुल १ मामा । २. मामा का . सुनि सतकर्म कियौ ~ वधि परि० १/१६६ । ३ मामा को किंहि ~ हति कियौ जगत जस ३६१७ ।

माते मतवाले · अतिहिं ग्वाल दधि गोरस ~ २८९४ ।

मातैं १ मतवाला जुवा विषय रस ~ १/११८ । २ मतवाली . भूली जोवन ~ २८२६ ।

मातौ १ मतवाला ढीठ गुवाल दही कौ ~ १४८७ । २ मतवाली ~ मदन करी ३९४८ ।

मानहुगे मानोगे, ध्यान में लाओगे मेरे कहे बिलग ~ कोटि कुटिल लै जोरै ३१७६।

माना मान, रूठने की क्रिया . कियौ चहौं अरस परस करा नहि ~ ११२७।

मानि १ मानकर, समझ कर . मोहन बदन बिलोकि ~ रुचि, हँसि हँसि कठ लगाए ३७९१। २ मानता है हिलिमिलि कै मन ~ ३५४१। ३ मान, समझ परम सुभाग्य ~ तिन लयै ३/१३। ४ मानती, स्नेहपूर्ण व्यवहार करती मदा ~ तुमकौं हम आई १७४८। ५ मानकर, स्वीकार कर : बसत निसा रति ~ ३७५६। ६. स्वीकार कर रही है : चूक मन मन ~ २०८६। ७ मान लो, स्वीकार कर लो · हा, हा कत ~ बिनती यह ८०३। ~ **निहोर** निहोरा मानकर, उपकार मानकर · पठै दियौ घर ~ — ९६३। ~ **रुचि** मुग्ध होकर हरि प्रति अग बिलोकि ~ — १७९७।

मानिक १ मानिक = माणिक=रक्त वर्ण = लाल : ~ निपुन बना नीकन मे सा० ल० शेष ८। २ माणिक्य कटि किंकिनी चद्रिका ~ लटकन लटकत माल ९८।

मानिन मानवती . तुम ~ ह्वै मान करौ पुनि, मैं गहि चरण मनाऊँ २१४०।

मानिनि मानवती नायिका . सूरदास ~ रन जीत्यौ २५१९।

मानिनिहि मानवती नायिका को मनसिज माधवें ~ मारिहै २११६।

मानिनी मानवती नायिका . निसि बसि रहे ~ कैं गृह २५१३।

मानिबेहू मान जाने से ही · तेरैं ~ तैं री मान नीकौ लागत है २८०९।

मानिबौ मानना तौ ~ समोसो परि० १/१३९।

मानियैं मानिए छिनहूँ की पहिचानि ~, उनकौं हम प्रतिपालि प्रेम २२९४।

मानियौ मानो गुरु परिजन की कानि ~ १७१२।

मानिहैं १ मानेंगे : तुम्हरौ कहौ ~ मोहन ३३२३। २ मानेंगी · नारि ~ बात ३४३२।

मानिहैं मानेगी . एकौ बात ~ नाही १७२४।

मानिहौ मानते ह . आपहूँ नहि ~ २८१०।

मानी मान गई श्रीदामा लै आवत जाई ~ लै बहु भाँति पटोरी २९०८।

मानी वि० १. माना हुआ, श्रेष्ठ . मब अधमनि मे ~ १/१२९। क्रि० स० १ स्वीकार की याही सौं निसिदिन रति ~ १३५२। २ मान/स्वीकार कर ली · ~ हार विमुख दुरजोधन १/२४। ३ माना कछु सक न ~ १/१३। ४ मानकर, समझकर अमृत पियौ गुन ~ १/११२। ५ मानेगा कह कौन अब ~ ४०३९। ६ मानता है : मन यहै साँच ~ री १९७८। △ **रति** ~ कामेच्छा से उल्लसित हुई : अग — ~ २०७७। **रुचि** ~ १. मुग्ध हुए : सूरदास प्रभु जानि आपने सबहिनि सौं — ~ ४२८४। २ मुग्ध हुई : हरि समीप — ~ ४०२६।

मानु मान, रूठना : सूर स्याम मां ~ करै किन काहे वृथा मरै री १६५७।

मानुप मनुष्य . सत सबत ~ की आइ ७/२।

मानुपहूँ मनुष्य भी यह इतनौ ~ जानै ३९७४।

मानुषी मनुष्य का आपुनौ कल्यान करि लै ~ तन पाइ १/३१५।

मानुस मनुष्य तिहिं देखे बन के मृग मोहे, ~ कौन बिचारे २७४३।

माने १ समझे · पल पूरन जुग ~ ३७३७। २ स्वीकार किया : रास समय कालिंदी के तट तब तुव वचन न ~ ३७०५। ३ मान गये, दास बन गये सूरदास रिझये गिरधारी मन ~ उनही के २३८४। **रति** ~ आनद ले रही हो किधौं चक्रवाकि निरखि, पतिहीं — ~ ६४२।

मानैं १ मानते हैं · नैना कह्यौ न ~ मेरौ २२४५। २ मानती हैं, करती हैं अब हम पर रिस ~ २४०६। ३ मानेंगी : सूर, सुमनमा तब सुख ~ ४०२७। ४ मानेंगे कोटि करौ वै हमहि न ~ २०६८। ५ मान ले : सत्य करि कहौ हम अबहिं ~ १०२७।

मानैंगे मानेंगे, समझेंगे बाबा नद बुरौ ~ ४४५।

मानै १ मानता/समझता है ग्यानी तन अलिप्त करि ~ ५/४। २ मानती है मातु-पितु लोक की कानि ~ नहीं १९७१। ३ मानने लगा जोग सिखाए क्यों मन ~ ३९२०। ४ मानेगा जो कहौं कौन ~ १००६। ५ मानना चाहिए मातु-पिता के डर कौं ~ १६९१। ६ मानेंगी तव ~ सब हमहि बतावहु १५८४। ७ आदर या मम्मान का पात्र समझता है और न काहू को वह ~ कछु सकुचत बल भैया ८६२। △ **मन** ~ मन धैर्य रख सकता है · मधुकर कहि कैसे — ~ ३१३६। **रुचि** ~ पसद कर सकता है खाटी मही कहा — ~ सूर खवैया वी कौ ३२५१।

मानौं अव्य० मानो ~ मरकत मनि पिंजरनि मैं बिबि खजन अकुलाइ २२०५। क्रि० स० १. मानता हूँ · ताकौं तैसैंहि ~ १५६३। २ मानूँ, समझूँ ता दिन जनम सफल करि ~ ९/८१। ३ मानूँगी नहिं ~ गुरु त्रास १६६४।

मानौ अव्य० १ मानो ~ कुटुब सहित कालिन्दी, काली करत कलोलैं २८५७। क्रि० स० १ मानो, समझो · रूप करि मोकौ ~ १६१९। २ सम्मान का पात्र समझो : तौ गोवर्धन ~ ८२१। △ **मन** ~ प्रेम हो गया है मेरौ मन यामौं ~ परि० १/३८। △ **मोकौं** ~ मेरा विश्वास करो . जौ तुम — ~ ग्वालि १५९४।

मान्य आदरणीय, पूज्य : तुमते ~ वसुदेव देवकी जात दान हरि दीजै ४ ।

मान्यो १ माना, समझा कहि निरगन कहरि ट ~ १७५७ । २ तदनुकूल आचरण के लिए स्वीकार किया, मान लिया : पाप छर्लीर ल्यो मोट ~ १/६४ । ३. सम्मान विशेष की दृष्टि से देखा पुत्र भाव करि ~ ४२९० । ४ माने . मिले याह बाँच्यो नाहिं ~ २२८३ । ५ मानते हो : बेद-पुरान जानि ~ जस ३७५९ । ६ मानकर : कहा करौं तुमसन उर ~ १८८४ । ७ हो गई . मैं स्वनेहि मनो ~ प्रीतम २५५० । ८ पूजा या सम्मान किया है नद तुम गिरि गोवर्धन ~ ९१६ । △ **मन** ~ १ प्रेम हो गया है मेरी हरि नागर सौं — ~ १४५५ । २. मन रीझ गया है नाहिं पर — ~ २३८५ ।

मापत १ नाप लेते हैं . तीनि पैग भुव ~ १४४ । २ नापते हो जै-जै कार भयौ भुव ~ ८/१४ ।

मा पितु अरिहित पितु सुत बधू माँ (लक्ष्मी) के पिता (समुद्र) के शत्रु (अगस्त्य) के हित (राम) के पिता (दशरथ) के पुत्र (शत्रुघ्न) का भाई, लक्ष्मण = लखन = लखा · ~ धारन कौन न्यिरी री मा० ल० दोष ? ।

मापो नाप लो · का-स्वामी ~ देह हमारी ८/१८ ।

मामी अपना दोष न मानना । △ **पीवत** ~ अपने दोष या आरोप को नहीं मानता · ज्यौं — ~ ३६२९ । △ ~ पीवै दोष या आरोप पर ध्यान नहीं देती है अहो जसोदा महरि ! पूत की ~ — १४९१ ।

माय स्त्री० माता : परसत नखुमति ~ मारा० ९०७ । क्रि० अ० समाता है . सो सुख हुहूँ के उर न ~ २३२८ ।

माया १ मोह, विषय . मगन भयौ ~ रस-लपट १/९८ । २ माया, लीला तुम्हरी ~ महा-प्रबल जिहिं सब जग बस कीन्हौ हौ १/४८ । ३ माया (मृत्यु) ~ विषम माम पर नाचा १/१८ । ४. धन-सम्पत्ति कहा कृपिन को ~ १/३९ ।

मायागत माया से भरी हुई, माया से युक्त दीन्हो सभा बनाय पाडु की मय ~ अत मारा० ७-० ।

माया-वपु मायावी शरीर : ~ धरि, तोप पुत्र हैं, चल्यौ सु ब्रज समुहाइ ६०४ ।

मायौ माया का : सीता मिली बहुत सुख पायो धरे रूप निज ~ मारा० २९६ ।

मार[१] कामदेव : ~ म न्न चढ्यौ बिरहिनि २०८५ ।

मार[२] १ मार नर-बपु धारि नाहिं नन हरि को जस की ~ सी नैहै १/८६ । २ मार-पीट ~ परस्पर करत ५३३ ।

मार[३] माला, समूह दक्षिनावर्त देत मनो ध्रुव को मिलि नखत्र की ~ २६१० ।

मारकंडे मारकण्डेय, पुराणों के अनुसार एक ऋषि, जिनके पिता का नाम मृकण्ड था और जो अष्ट चिरजीवियों में से एक माने जाते हैं : बहु तप कियौ ~ द्विज ३८९४ ।

मारग १. मार्ग, रास्ता । २ मार्ग (रीति, नियम) काहे कौ रोकत ~ सखी ३८९ । △ ~ अनुसरि नियम-पालन में लग कर दया धर्म ~ — १०/२ । ~ जोवति प्रतीक्षा करती है नद जसोदा ~ — ४१०० । ~ होइ मार्ग बन जायेगा : अगर ~ — नखनि कौं, हरि विधि पार उतारौं ९/१२१ ।

मारगहू कुमार्ग में भी लोक वेद आरज पथ को सुवि, ~ न टरी २३१५ ।

मारत १ मारता है तदपि ब्याध सर ~ ३८३१ । २ मारते हैं नैना मारेहु पर ~ २३०१ । ३ मारते थे मल्लमल्ल ~ मनमोहन ४०३९ । ४ मार रहा था · मज ~ जननाथहिं आग ९५५ । ५ मारने पर सुनहु सर मेरे ~ धा ८५१ । ६ मारने से प्रेमहि ~ बिलग न लायो ३०९५ । ~ फिरत मारता फिरता है ~ — लहो १/९८ । ~ लातें लात मारता है अर्थात् ठुकराता है 'सूर' मकर वे स्याम उपासी मोकौं ~ — ४१२९ ।

मारति १ मारती है : ~ बाँस लिए उन्नत कर २८०३ । २ मारता ~ हौ तोहिं अबहिं कन्हैया २५५ ।

मारतौ मार रहा था . कमल-फ्रान ब्रज ~ ५८९ ।

मारन १ मारना तू मोहीं का ~ सीखी २१५ । २ मारने पै रिपि कौं ~ नहिं पाया ९/३ ।

मारनि (मार) मारने की क्रिया या भाव भाह कमान, नैन सर साधनि, ~ चितवनि चारि २२८० ।

मारहि मारती है एक कटाच्छ नैन सर ~ २८९० ।

मारहु मारो सूर स्याम बलरामहिं ~ ५०१ ।

मारि १ मारकर धनुष मारि, गज ~ मल्ल मथि, किए निडर जदुवस ३५३६ । २ मार मोका ~ सकै नहिं कोउ ७/२ । ३. मारा माट-मटुक नहिं मानहीं, बहु बारनि ~ २३८७ । ४ मारने को रजक धनुष गज मल्लनि कस ~ काजा ३०८४ । △ ~ फलाँग कूदकर, छलाँग लगाकर ~ — चला सो भाज ५/३ । ~ सँहारि मार कर, वध करके . कहौ तौ ~ — निसाचर रावन करौं अगति कौं ९/८८ ।

मारिच १ मारीच नामक एक राक्षस, जिसने रावण के आदेशानुसार सोने का हिरण बनकर राम को धोखा दिया था ~ और सुबाहु महासुर विघ्न करत द्विज-याग मारा० १९८ । २ मारीच ने . मुनि ~ डर मान्यो मारा० २६३ ।

मारिबे मारे जाने · महा मातल ~ की सकुच नाहिंन मोहिं १/१०६ ।

मारिबोई मार-पीट ही तब तू ~ करति ३१३८ ।

मारियै मारें, मारिए : काहु न ~ ५८९ ।

मारियौ मारना : मेरी सौं तुम याहि ~ जबहीं पावौ घात ३३० ।

मारिहै मारेगा • मनसिज माधवैं मानिनिहिं ~ २११६ ।

मारिहौं मारूँगा . सूर दुहुनि मैं ~, अति करत अचगरी ३०३९ ।

मारी २ मार : गज समेत तोहि डारौं ~ ३०५२ । २. मार डाली : छिन मे राम तुरत सो ~ २०४ । ३ मारा, प्रहार किया : खैंचि कै गदा ता सीस ~ ४२२१ । ४ उतरेगा : धरनी जननि बोझ कत ~ १/३४ ।

मारीच एक राक्षस, जो रावण का मामा था • दसकधर ~ निसाचर ९/५७ ।

मारु[1] कामदेव • यह लै देह ~ सिर अपनैं ८०७ ।

मारु[2] मार करत गुलालनि ~ २८८० ।

मारुत पवन : अब तौ है ~ कौ गहिबौ ३६०९ ।

मारुत-पुत्र हनुमान : कहाँ गयौ ~ कुमार ९/१४७ ।

मारुत-सुत हनुमान : भरमित भयौ देखि ~ ९/७५ ।

मारुत-सुत-पति-अरि-पुरबासी-पितु-बाहन पवन के पुत्र (हनुमान) के स्वामी (राम) के शत्रु (रावण) के पुरवासी (अगस्त्य) के पिता (कुभ) का वाहन=पानी : ~ भोजन न सुहाई २७७९ ।

मारुत-सुत पति-रिपु-पति-पतनी-ता सुत-नारि पवन के पुत्र (हनुमान) के स्वामी (राम) के शत्रु (रावण) के स्वामी (शिव) की पत्नी (पार्वती) के पुत्र (गणेश) की स्त्री, अर्थात् बुद्धि : ~ बिसारी परि० ७/५१ ।

मारुत-सुत-बंधु-पितु-प्रोहित पवन के पुत्र (भीम) के भाई (अर्जुन) के पिता (इन्द्र) का पुरोहित अर्थात् बृहस्पति, जीव : —, ता प्रतिपालन छाँडि गयौ री ३३१९ ।

मारुत-सुतहि पवन के पुत्र हनुमान को ~ सँदेस सुमित्रा ऐसे कहि समुझावै ९/१५४ ।

मारू एक राग जो युद्ध के समय गाया जाता है ~ मोर ररत चातक पिक ३३०६ ।

मारे क्रि० स० १ मार डाले कस असुर समेत ~ ३११८ । २ मार रहे हैं : मृतकहू तैं पुनि ~ ४२५२ । ३ हडपे, छिपाए : दान ~ जाति १५०४ । ४ मारता । ५ मारा, प्रहार किया करन ढिग आइ बहु बान ~ ४७०९ । ~ **कौं मारत है** मरे हुए को (अर्थात् बहुत ही निर्बल को) मारते हैं • ~ — वडे लोग माई २३०३ । **अव्य०** कारण से कहा करौ इहि रिसि के ~ खेलन हौं नहिं जात २१५ ।

मारेउ मारा, मार डाला ~ दुष्ट बहुत जो भू पर सारा० ५८७ ।

मारेहुँ मारने पर भी सूर स्याम को सिखवत हारी ~ लाज न आवत १४७७ ।

मारेहूँ मारी हुई को : नैना ~ पर मारत २३०१ ।

मारैं क्रि०स० १ मारा बिनु अपराध पुरुष हम ~ ९/२ । २. मारने से हरि-जन ~ हत्या होइ ५/३ । ३ मार सकते हैं : कोटि इद्र हम छिन मैं ~ ८९८ । ४ मारेंगे • तुम्है मारि अहिरावन ~ ९/१४० । ५ मारते पै सिव जाकौं ~ धाइ ७/७ । ६ काटने से . सो मरि गई साँप कें ~ ७/८ । **अव्य०** कारण से : इन बातनि के ~ मरियत ३७९२ ।

मारैंगे मारेंगे : कैसे कौ वाको ~ शोचत है पुर नारी सारा० ५०५ ।

मारै १ मारता है कहि ~ सो सूर कहावे ३८५३ । २ मार डाले कै ~ कै काज सरै पै ३८५३ । ३ मार सका हो • एकहीं बान तकि बालि ~ ९/१२९ । ४ मार दिया होता • छाडिबे तैं भलौ हुतौ ~ ४१८३ । ५ मारेगा : मो तै उबरै तब मोहिं ~ १० ।

मारैगौ मारेगा • वह देवता कस ~ ५३१ ।

मारौं १. मारूँ ~ आजु लक लकापति ९/७५ । २ मारूँगा : ~ स्याम राम दोउ भाई ३०४१ । ३ मार रही हू पिता जानि तोकौं नहिं ~ ४/५ ।

मारौ १ मारो • एकनि कह्यौ याहि मत ~ ७/७ । २ प्रहार किया तब लै खड्ग खम्भ मे ~ सारा० १२३ । ३ मारा, वध किया दुष्ट दसानन ~ ९/१५९ । △ **करम कौ** ~ अभागा, भाग्यहीन कहौ कहाँ जाइ करुनामय कृपिन — ~ १/१५७ ।

मरौगै मारोगे अहि ~ आपु तनक से, तनक सी बाहीं ५८९ ।

मारयौ १ मारा, वध किया : कनक मृग मारीच ~ ९/६० । २ मारा था, वध किया था सकट तृनावर्त्त ज्यों हरि ~ ४०५० । ३ प्रहार किया • जाइ खभ कौं मुष्टिक ~ ७/२ । ४ मरा हुआ . तेहि अपनैं जिय ~ नान्यौ ३०७० । △ **दई कौ** ~ भाग्य का मारा हुआ, भाग्यहीन • दु ख दीन — ~ १/१०१ ।

माल[1] माला बिथुरे कच कुम्हिलानी ~ १६४१ । ~ **धरि** माला धारण करके रुधिर पान करि, आँत ~ जय-जय शब्द उचारौ सारा० १७४ ।

माल[2] सामग्री तुम जानत मैंहूँ कछु जानत जो जो ~ तुम्हारे ११०६ ।

मालकोस एक राग पचम षट ~ रस भीने सारा० १०१२ ।

मालति मालती, सफेद फूलों की एक लता त्यागे फिरत सकल कुसुमावलि ~ भुरै लए ३५०६ ।

मालती सफेद फूलों की एक लता : मानहुँ नरुन तमाल स्याम तन, लता ~ ग्रसी २११५ ।

मालबन वनमाला : पीत हरित सित अरुन ~ १८०७ ।

मालव एक राग • सुर हिंडोल मेघ ~ पुनि सारा० १०१३ ।

मालवाई एक राग मालव . ~ राग गौरी अरु आसावरि राग २८३१ ।

मालहि माला को : तदपि सूर, वै छिन न तजत हे वा घुघुची की ~ ३१६४ ।

माला १ माला । २ समूह, झुंड · केस कुंचित सोह भृंग ~ ३०७८ । △ **जपति फिरौं तेरी गुन** ~ तेरे गुणों का स्मरण करती या उनको गाती फिरती हू . कुंज कुंज — ~ १११७ ।

माला दीपक दीप माला, दीप-समूह, एक अलकार ~ की चिन चाती सा० ल० ४८ ।

मालिका मालाएँ : सूरदास कुसुमनि सुर बरसत कर सपुट करि ~ ८०९ ।

मालिनि मालिन, माली जाति की स्त्री । ~ ह्वै मालिन बनकर माला लै ~ — जाउँ १०७५ ।

मालूर १ बिल्व (बेल) का कमल-पत्र , ~ पत्र, फल नाना सुमन सुवास ७६६ । २ बिल्व फल (कुच) : ह्वै मृणाल ~ उभै, ह्वै कदलि-खभ बिनु पात २११२ ।

मालूर-पत्र बेल पत्र : कमल पुहुप ~ फल ७६६ ।

मावत महावत . दियौ पठाय स्याम निज पुर को ~ सह गजरान सारा० ५१३ ।

मावति समाती है . पुलकि न ~ अग २१५३ ।

माष क्रोध · मन मैं ~ करत १५६ । **कहि ~** क्रोधित होकर, क्रोधपूर्वक अब बाँधा — ~ ३४१ ।

मासन पलकों ~ मे सिंगार रस शोभित सा० ल० ८३ ।

मास-भाग महीने का हिस्सा = पखवाडा = पच्छ = पख : ~ सिर लसत सुरन के सा० ल० ९१ ।

मासी माता की बहिन, मौसी कहा कहत ~ कैं आगे जानत नानी नानन ३९४६ ।

मास्यौ महीने · परिमल बारह ~ परि० १/१६३ ।

माहँ मे, बीच मे, भीतर · हरि मूरति मन ~ समानी ३५६७ ।

माहि १ मे, बीच मे, भीतर मदराचल समुद्र ~ बूडत लग्यौ ८/८ । २ अधिकरण कारकीय चिह्न मे, पर · तब मन ~ आनि बैराग ६/४ ।

माहिया मे, पर : और कौन स्याम त्रिभुवन मैं सकल गुन नेहि ~ ।

माहि मे, पर : मिला तरी जल ~ १/३४ ।

माहीं १ मे · नैन लगे लोचन पथ-~ ४१८८ । २ मे ही : समुझि चतुर मन ~ २७४५ ।

माहैं मे तुम जु कहत हिय ~ ३६२५ ।

मिटत १ मिटना है, दूर होता है : मोहन देखि ~ दुख जिय कौ १७९४ । २ छूटता है ~ न सहज सुभाइ ३९९९ ।

मिटति १ मिटती है, समाप्त होती है : बारहौ कला तें तपनि तन तैं ~ १७३९ । २ मिटेगी, मिटने लगी अब क्यों ~ हाथ की रेखैं ३७२८ ।

मिटन मिटने . काई न ~ पाई ८/५ ।

मिटाइ १ मिटाकर आइ अजर निकसी नँद-रानी बहुरी दोष ~ ५८० । २ मिटा दिया विधि मरजादा सबै ~ १६४४ । ३ मिटा (दूँ) . अब टारौं इहिं सकुचि ~ ५५५ ।

मिटाइये मिटाइए, दूर कीजिए बरजि ताहि ~ ४१८७ ।

मिटाई १ मिटा दी, समाप्त कर दी, दूर की : सुरपति पूजा तबहिं ~ ९०६ । २ मिटाकर लोक-लाज-मरजाद ~ १६३४ । ३ मिटा ताकौ कोउ न सकै ~ ९/१७४ ।

मिटाऊँ १ समाप्त कर दूँ, दूर कर दूँ अपने जिय की खुटक ~ २९२२ । २ मिटा दूँगी, समाप्त कर दूँगी चोरी नाउँ ~ १९३७ ।

मिटाए मिटा दिए, समाप्त कर दिए · दुख-सताप ~ ९/९० ।

मिटायौ मिटाया, समाप्त किया · सो सब असुर ~ सारा० ३५२ । △ **न जात ~** मिटाया नहीं जा सकता है, स्वीकार करना पडता है यह उपकार — ~ ४/९ ।

मिटारि मिटा, मिटाकर वाकौ टार्‌यौ कुब्ज ~ ३१०६ ।

मिटावति मिटाती है, नष्ट या दूर करती है बालक कौ यह दोष ~ ८९३ ।

मिटावन मिटाने तुम्हरे दुख मिटावन कारण, पूरण को अभिलाषे सारा० ४३१ ।

मिटावहि मिटा दें । △ **ब्रज नाउँ ~** ब्रज का नाम ही मिटाये डालते हैं इन्द्रहिं पेलि करी गिरि-पूजा, सलिल बरसि — ~ ८५६ ।

मिटावहु मिटाओ, समाप्त करो : प्रथमहिं यह जजाल ~ १५४४ ।

मिटावौ मिटाओ, समाप्त करो अबकैं मेरी बिपति ~ ९/६४ ।

मिटि १ मिट कर, समाप्त होकर · मैन मनसा बस पर्‌यौ ~ २१३१ । **~ जु गई** मिट जो गई, समाप्त हो गई : ~ — निसि कालिमा ८०९ । **~ जु गायौ** दूर जो हो गया ~ — सताप जनम कौ १५ ।

मिटिहै १. मिटेगा ~ मन कौ दाहु ३८८० । २ मिटेगी : देखैं चारु चद मुख मीनल बिन क्यों ~ जगनि ३९५२ ।

मिटी १ मिट गई, दूर हो गई तृन की छाँह ~ निधि माँगत ४२३८ । २ नहीं रही, पूर्ण हो गई ~ तनु-साध भई मगन भारी ११५७ । ३ मिटाने के लिए सूर सुजल सींचियै कृपानिधि निज-जन-जरनि ~ १/९८ । **नहि ~ लगारा** तार (क्रम) नहीं टूटा (लगातार वर्षा होती रही) · सति दिवस — ~ — ९४२ ।

मिटै १ मिट जाय, दूर या नष्ट हो जाय मोह करौ ज्यौं ~

हदै कौ दाहु ३९२५ । २ मिट जाएगा : ~ विरह दु.ख संग ९/८३ । ३ मिट जाएगी : ~ जुग भूत रीति ११/२ । ४ मिटता, मिट सकता . जाति सुभाउ ~ नहिं सजनी ३७१७ । ५ मिट सकती, मिटती . भावी नहीं ~ काहू की १३९८ । ६ मिटे, समाप्त हो : ~ सूल क्यौं जी कौ १/१३८ । ७ मिटने लगा 'सूर' सुभाव ~ क्यौं कारैं ३९९६ ।

मिटैगी मिटेगी, पूर्ण होगी . कैसैं धौं यह साध ~ २०४७ ।

मिटैहै मिटायेंगे कबहुँ न पग परि मान ~ ३४०७ ।

मिट्यौ मिट गया, समाप्त हो गया . द्रुपद सुता को ~ महादुख १/१७२ । २ मिटा ~ नहीं तन चदन ५६५ ।

मिताई मित्रता • हमसौं तुमसौं बाल ~ १/२९८ ।

मिति १ सीमा, हद • सरोवर उमँगि चली ~ फोरि २८३० । २ सीमा को छिति ~ त्रिपद करी करुनामय ४८७ । ३ काल की अवधि विषम-विरह निजु जानि मानि ~ ते या तनहि न दाहत ४०२६ । △ ~ **न कबहुँ लही** गहराई का अनुमान कभी नहीं मिला, थाह नहीं मिली • प्रेम-सलिल प्रवाहि भँवरनि, ~ — १७६३ । ~ **मानि** सीमा मानकर . कोउ न रहन ~ — १८५२ ।

मिती सीमा • रहत अवग्या होइ गुसाई चलत न दुखहि ~ ।

मित्त मित्र, सखा सग देख परत ना ~ सा० ल० ८६ ।

मित्तनि मित्रों अरु ~ को बहु सुख दिए ४२०० ।

मित्रइ १ मित्रता कौन ~ मानै ४२४१ । २ सूर्य : ~ बरुन के सापहिं पाई ९/२ ।

मित्र-बिदा मित्रविदा, श्रीकृष्ण की एक पत्नी : हरिहि ~ जब ध्यायौ ४१९२ ।

मित्र-मोचन मित्र (अर्थात् कमल) को छुडाने वाले ~ मनहुँ आए, तरल गति द्वै तरनि ३५१ ।

मित्र-विंदा श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम जिसके गर्भ से वह्नि नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था ~ यक नृपति नन्दिनी ताको माधव ब्याये सारा० ६५५ ।

मित्राइ मित्रता, दोस्ती . देखौ माधौ की ~ ३१८६ ।

मित्राई मित्रता, दोस्ती . हमसौं कछु न भई ~ १/२८९ ।

मिथिल मिथिला नगरी का : दीनो दान बहुत द्विजन कौं राजा ~ नरेस सारा० २३४ ।

मिथिला वर्तमान तिरहुत नामक स्थान का प्राचीन नाम । यहाँ प्राचीन काल मे राजा जनक का राज्य था . ~ चले जनक राजा पै दरश कृपा करि दीन्हे सारा० ७९८ ।

मिथुन सयोग, समागम • बलि-बलि सूर ~ कृत भारी ११९४ ।

मिथौरि मेथी से युक्त बरी पापर बरी ~ फुलौरी ३९६ ।

मिथ्या १ झूठ, असत्य सत ~, ~ सत लागत २/३८ । २ व्यर्थ ~ जनम भयौ ९/४६ । ३ सार हीन, अवास्तविक, जिसमे स्थायित्व न हो : ~ यह ससार ४९२ । ~ करत झूठा करता है . ~ — ब्रह्म सुख धोउ सा० ल० ६३ ।

मिथ्यावाद १ ससार को असत्य समझने का सिद्धांत . ~ उपाधि-रहित है बिमल-बिमल जस गावत २/१७ । २ अवास्तविक, अयथार्थ • ~ आप जम सुनि सुनि मूछहि पकरि अकरतौ १/२०३ ।

मिनजालिक काट कूट कर सांविक जमा हुती जो जोरी ~ तल ल्यायौ १/१४३ ।

मिरग मृग, हिरन • कहँ ~ सौं नारी १/२२१ ।

मिरतक मृतक, मरा हुआ ~ कच ऐसी विधि जियौ ९/१७३ ।

मिरदंग मृदग इक कर ~ ताल, गति-जति उपजावै २८८८ ।

मिरिच १ लाल मिर्च . बरा कौर मेलत मुख भीतर ~ दसन इक ठौरे २२४ । २ काली-मिर्च : हींग ~ पीपरि अजवाइनि ये सब बनिज कहावैं १५२८ ।

मिलई मिलाया । △ **ऐसी ~ घातैं** ऐसी चतुराई छाँटने लगी है : मोसौं कहति स्याम हैं कैसे — ~ — १७२१ ।

मिलऊँ मिलाऊँ, मिला दूँ बलि तोहिं जाउँ बेगि लै ~ २७६६ ।

मिलकी बढा दी गई . तन फिरि जरनि भई नख सिख तैं दिया बाति जनु ~ ३२६१ .

मिलकै मिलकर कह्यो चाणूर मुष्टि सब ~ जानत हौ सब जी के सारा० ५२० ।

मिलत १ मिलता है अजहु न आइ ~ इहिं अवसर ३६२९ २ मिलते हैं जैसैं ~ नीर अरु पै २२८५ । ३. मिलते ही ~ नैन भरि आए नीर ४२२८ । ४ मिलते हो : मनु सरोज द्वै ~ सुधानिधि २२०५ । ५ मिलने (को) : सूर स्याम ~ कौं आतुर ब्रज की बाल १३६७ । ६ मिलने पर . ~ आइ दै सौहनि सौं २४९१ । ७. मिलने जाते समय हरिहिं ~ काहे कौं बैरी ८०७ ।

मिलति १ मिलती हैं • ~ परस्पर बिवस देखि तिहिं १६२२ । २ मिल (घिर) रही हैं . ~ न बेगि दई ६१२ ।

मिलति १ मिलती है एक इक ~ हँसि, एक हरि मग रसि ११५७ । २ मिलती हूँ . अबहीं मूढ ~ नँदलालहिं ८०२ ।

मिलन १ मिलना बिछुरन ~ रच्यौ विधि ऐसौ ३११९ । २. मिलने की . मदनगुपाल ~ मन उमह्यौ ३८१९ । ३ मिलने के लिए सरिता चली ~ सागर कौं ३९६० । ४ मिलने से : ~ अति अहलाद २१३२ । △ ~ **कहियौ** मिलने की बात कहना : सहरि हमारी बात चलावति ~ हमारौ कहियौ ७२७ ।

मिलनहु मिलने भी . ~ पति न दई ३२९६ ।

मिलनि १ मिलने की क्रिया या भाव, मिलन, भेंट • सपने की सी ~ करति ई २४०१ । २ प्रेम-पूर्ण सबध या व्यवहार, मिलना-जुलना वह चितवनि वह ~ परस्पर २१२० ।

मिलनौ मिलन, मिलना . अब देखि लै री स्याम को ~ बटी दृरि २९६१ ।

मिलयौ १ मिलाया • जब लगि मन ~ नहीं १४४३ । २ मिला दिया • नैननि निरखि बसीठा कीन्हो, मन ~ पय पानि १६५६ ।

मिलवत १ मिलाना है ~ सुबर नदकुमार २०५० । २ मिलाते (गिराते) है निमिष नहीं ~ पल एकौ २३१५ । ३ मिश्रित या सम्मिलित करते है . ~ सब मन भाय माग० १०२७ । △ **मुँह ही की हम सों ~** मिलने-जुलने की केवल बातें ही करते हो, हृदय से वैसा नहीं चाहते हो, मन कहीं और है . — ~ जिय बसत जहां मन मोहनि परि० १/९० ।

मिलवति १ सम्मिलित करता है, मिलाती है . मैं जानति उनके ढग नीके बात ~ जोरि १४२९ । △ **बातैं ~** इधर-उधर (झूठी-मूठा) की बातें जोडना है मैं जानति उनक ढग नीके — ~ जोरि १४२९ ।

मिलवति १ मिलाती है, मिला रही है ~ मारँग-पानि १३५६ । २ मिला रही (हो) तुम ~ हो काहे एमी १६९९ । △ **बातैं ~** इधर उधर का जोडती है, असत्य बोलती है : कोऊ लें बनाइ — ~ तुम आगे १०४५ ।

मिलवन मिलाने के लिए • सूरदास ब्रज ~ आए ३५८५ ।

मिलवनि जोड मे, मिलाने मे • बायस अजा सब्द की ~ ३९१२ ।

मिलवहु मिला दो • अबकी बेर 'सूर' प्रभु ~ ९/८३ ।

मिलवैं मिलाते हैं . सूरदास जे झूठी ~, तिनकी गति जानै करतार १७७८ ।

मिलहि १ मिल जाएँ सोइ कीजै ज्यों ~ 'सूर' प्रभु ३८४५। २ मिलें : बेगि ~ अब आइ ३६७४ । ३ मिलती हैं जैसें नदी ~ सागर मॅह ९२० ।

मिलहीं मिलेगा : इतनी आरनि काहैं न ~ ३६२५ ।

मिलहु १ मिलो ~ स्याम मोहिं चूक परा २२८६ । २ मिलोगे • जौ न कृपा करि ~ मुरारि ३३३० । ३ मिलते हो : सूरदास प्रभु बेगि ~ किन ३७५५ ।

मिलहुगी मिलोगी . सूरदास प्रभु अत ~ २५९२ ।

मिलहू मिलते हो . 'सूर' स्याम अब बेगि न ~ ४२८६ ।

मिलाइ १, मिलाओ, मिला दो हमहिं जोग ~ ८०७२ । २ कर दे (मिला दे) . एक रग ~ १/७० । ३ मिलाया पुनि हति मदिरा माहिं ~ ९/१७३ । ४ मिलाकर . बारक स्याम ~ 'सूर' सुनि, क्या न सुजस जग लेहु ३५७३ । ५ मिला : ब्रजबातनि करा चुरकुट देउँ धरनि ~ ८५२ । △ **मुख की ~** मुँह-देखी, चिकनी चुपडी . — ~ तुम हमहिं बतावत २५५२ ।

मिलाइहौं मिलाऊँगा- जैस पानी रग ~ २७६० ।

मिलाई मिला दा भल राम को सीय ~ ९/७१ ।

मिलाउ मिला दो बेगि ~ 'सूर' के प्रभु कों २०८९ ।

मिलाप भेंट, मिलन . रानी सा ~ तहँ भयो ४/१२ ।

मिलायौ मिलाया . औट्यौ दूध कपूर ~ माग० ४४२ ।

मिलावत १ मिलाना है : दूध ~ पानी ३३७ । २ मिलाना है हमहिं ~ ताहि १३५७ । **दृष्टि ~** आँखें मिलाना है : पिय सकुचत नहिं — ~ १२३१ ।

मिलावन मिलाने के लिए, मिलाने आए ओल ~ ऊधो ३७२०, ले लागे अनमिलौ ~ २६४४ ।

मिलावहि मिलाओ, मिला दे प्रभु किहि बिधि आनि ~ ३४९८ ।

मिलावहु १ मिलाओ, मिला दो . सारँग सारँगधरहिं ~ २०९७ । २ मिलाते हो . मदन गुपालहिं क्यों न ~ ४०९४ ।

मिलावा मिलाप, मिलन आजु ~ होइ स्याम कौ ४२७६ ।

मिलावैंगी मिलायेंगी बहुरौ मन न ~ २५३८ ।

मिलावै १ मिला दे प्रेमी को जो आनि ~ २१०६ । २. मिलाते हैं कर जुग जोरि ~ २४४१ । ३ मिलाती है : मारग जाइ ~ सा० ल० ४ । ४ मिलाए, मिलावेगा : कासौं कहौं ~ को अब २०७६ । ५ प्राप्त करा देती है • बिषई बिषै ~ सा० ल३ ४ ।

मिलावो प्राप्त कराओ जूप मोहि बहुपाद ~ सा० ल० ९ ।

मिलावौ मिलाओ, मिला दो . सूरदास प्रभु बेगि ~ ९/९४ ।

मिलाहीं मिलते हैं, भेंटते या छाती से लगाते है : बरषत मेघ मेदिनी क हित प्रीतम हरषि ~ २७४५ ।

मिलि १ सम्मिलित होकर (मिलकर) सुफलक-सुत अरु तुम दोऊ ~ लीजै मुकुति हमारे हूतै ३९१६ । २ दर्शन देकर (मिलकर) ~ करहु न मोहिं निहाला ११८० । ३ भेंट करके (मिलकर) : गुरु बसिष्ठ अरु ~ सुमत सों ९/५४ । ४ साथ साथ (मिलकर) बदरिकास्रम दोउ ~ आइ ३/४ । ५ मिलाकर : नैन सो नैन ~, हृदय सा हृदय लगि, हरष कीन्हीं १९४८ । ६ मिलो . तृन इतननि तैं ~ दनकधर ९/१४४ । ७ मिलते हैं निरखि नवल इतराहिं जाहिं ~ २३९० । △ ~ **अतरगति** मन की गति (चाल) से मिले हो ये . सूरदास प्रभु ~ — दुहुँनि पढा एकै चतुराइ ११८६ । ~ **दयौ** लगा दिया कुल कलक तैं किहिं ~ — ९/३ । ~ **धाई** सम्मिलित रूप से दौडी ~ — मन को फल पायो ११७९ । ~ **मन दै** मन मिलाकर ~ — सुख आसन बैसे १०७२ । ~ **मिलि** मिल मिल कर . जब ~ — मधुपान करत हे ३७०८ ।

मिलिक जागीरदार : इह ब्रज भूमि सकल सुर-सपनि सो मदन ~ करि पाइ ३३२८ ।

मिलिकै मिलकर . न्हात रही कैमें सँग ~ १७६४ ।
मिलित मिलकर ~ निसा कृन काज २७३४ ।
मिलिबे मिलने • यह मति रची कृन ~ की २०१६ ।
मिलिबैं मिलने पर : 'सूरदास' स्वामी के ~ तन की तपति बुझाई ३६७६ ।
मिलिबै मिलने मोहिं ~ को चाव ११११ ।
मिलिबौ मिलना (ही चाहिए) • वल्लभ कौ वल्लभ कौं ~ तुमहिं कौन समुझावै २८२६ ।
मिलियौ १ मिलना, मिलिएगा • ~ कठ लगाइ ३११७ । २ मिलाया, मिला दिया • सूरदास प्रभु हित चित ~ ३३७६ ।
मिलहि मिलती कहा कहति तू ~ रही है २६९५ ।
मिलिहुँ मिल लेती, मिलती : ~ न आई सु त्यागि भवन ४२६१ ।
मिलिहै १ मिलेंगे • जुवतिनि कहत जटा सिर बाँधो तौ ~ अविनासी ३८६८ । २ मिलेंगी : धीर धरौ ~ दोउ जोरी २०२३ ।
मिलिहे १ मिलेगा : उदधि सुता-पति ~ आई ३२८२ । २ मिलेगी : कीधौं हमहि देखि भजि जैहै की उठि हमकौं ~ १७२६ ।
मिलिहौं १ मिलूँगा एक बेर ब्रज लोग कौं ~ सुनौ मोऊ ३११४ । २. मिलूँगी कब धौं ~ स्याम कौं १९६६ ।
मिलिहौ मिलोगे : वा देखत तुम हमकौं ~ २४१९ ।
मिली १ एक हो गई • नील नीलै ~ घटा-दामिनि ~ ३८६७ । २ भेंट हुई (मिली) • बीच ~ चद्रावली २४९२ । ३ मिली हू, मिल गई हूँ • ~ निसान बजाइ १६६३ ।
मिलै मिलते है, दर्शन देते हैं • जो सोऊँ तौ मोहिं हरि ~ ३६७६ ।
मिले १ मिले, मिल गए एकै अग ~ दोउ कारे ३९०४ । २ भेंट किए (मिले), भेंटे • हँसि-हँस दौरि ~ अकम भरि ३६ । ३ मिलता है . काज सरै उडि ~ आपु कुल ३६५९ । ४ मिलती है . आनि ~ इक ठौरैं ३९४२ । ५ मिलने पर . षोडष बरष ~ सुख करिहौं १६१९ । ६ मिलने से, मिल जाने से • तुमहि ~ मैं अति सुख पायौ मेरे कुवर कन्हैया ४१८ । ~ झपताल वाद्य यत्रों की झनझनाहट के साथ मिलकर, झपताल पर नाचति कुवरि ~ — ११८० ।
मिलेहुँ मिलने पर भी • राधेहिं ~ प्रतीति न आवति २१२३ ।
मिलैं १ मिल जाएँ : मिल सकें जिहिं उपदेस ~ हरि हमकौं, सो ब्रत नेम बतैयै ३६९२ । २ मिलेंगे : प्रिया निरखति पथ ~ कब हरि कत १९८४ । ३ मिलने पर, मिल जाने पर : ~ स्याम बकसाऊँ री २१०३ । ४ मिलने से (मिलने के परिणाम स्वरूप) : उनहिं ~ वितपन्न भई अब १७०० ।
मिलैंगे मिलेंगे आजुहीं रैनि दोउ सा ये ~ २०२५ ।
मिलैंही मिलने मे ही • ~ मैं विपरीत करी विधि ३२३२ ।
मिलैंहुँ मिलने पर भी ~ नहीं पतियानी २१२१ ।
मिलै १ मिलाकर, मिश्रित करके सरस कनिक बेसन ~ रुचि रोटी पोई १९८० । २ मिल जाय . नद कौ सुवन ~ तोपै कहा चाहियै १७३४ । ३ मिले, प्राप्त हो . कृपा मारग बहुरि ~ कैमे २०७९ । ४ मिलने के लिए : सखिनि ~ जमुना गई १९७० । ५ मिलता है • अत ~ अपनैं कुल जाइ ३५९१ । ६ मिलती है : जो अपने सहजहि ~ उनके गुन ऐसे २१९५ । ७ भेंट करे, मिले • विप्र-पुरुष तोहिं ~ न आइ ९/१७३ । ८ मिल गया है • सग ~ तिहिं सावन ३६६१ । ~ नहिं बाँछै मात्र इच्छा करने मे नहीं मिलता (उसको उपलब्ध करने के लिए कर्म करना पडता है) दियो अपनौ लहै सोई ~ — १८३१ । ~ सुर सुर मिलाकर, स्वरों को उनकी उपयुक्तता मे ठीक करके . गौरी राग ~ — गावत ५०६ ।
मिलैगी मिलेगी वा बिनु उनकौं कौन ~ नहिं कोउ फिरति वही २७१६ ।
मिलैगौ मिलेगा तोहि ~ आनि ३०९० ।
मिलैये मिलता जल मैं रहे ~ नाही परि० १/१५१ ।
मिलैहौं मिलाऊँगी सूरदास प्रभु तुमहिं ~ २७६० । △ नैन ~ आँख मिलाऊँगी जा दिन नदनदन के नैननि अपने — ~ ३२४९ ।
मिलौं १ मिलूँ क्यौं ~ नैन बिसाल सो ८०४ । २ मिल जाऊँ . अबकैं जौ कैसैहुँ ~ पलक न त्यागौं साथ ११११ । ३ मिलकर सूरदास प्रभु सग ~ बहुरि रास-रस लेउँ ११११ । ४ मिलूँगी ~ धाइ अकुलाइ, भुजनि भरि २१०३ ।
मिलौंगी मिलूँगी तन तजि जाइ ~ हरि सौं ८०१ ।
मिलो १ मेल कर लो, सधि कर लो • बेगि न ~ जानकी लै कै ९/११९ । २ भेंट करो • हँमत ~ इक साथ १६१८ । ३. प्राप्त होओ, मिलो आवहु बेगि ~ नंद-नदन १६७७ । ४ मिले : बीथिन ~ नदकुमार सा० ल० १७ ।
मिलौगे, मिलौगे मिलोगे सूरदास प्रभु कब धौं ~ ४००४ ।
मिल्यौ १ मिला : दूत ~ इक भार ३७३४ । २ मिला है बैद ~ कुबिजा को नीकौ ३६४० । ३ जा मिला : मोकों निदरि ~ है उनसौं २१०० । ४ मिल गया : इद्रिनि महित ~ मन तबही २२३१ । ५ मिल गया/गई हो . मीन ~ जनु पानी २४९४ । ६ मिल गया है ~ एक पय पान्यौ १६६२ । ७ मिले ~ सु आइ पाइ सुधि मग मैं ४१६० । ८ मिल रहो है • धर्म जमानत ~ न चाहै, तातैं ठाकुर लूटौ १/१८५ ।
मिष्ट मीठा, मधुर अगनित तरु-फल सुगध मृदुल ~ खाटी

९/९६ ।
मिष्टान्न मिठाई • षटरस के ~ हु जेंवहु जो रुचि आयो ४३१ ।
मिष्टान्न मिठाई लवनी-रुचि ~ जोरि कै ४६२ ।
मिस १ बहाना, हाला-हवाला कोउ आवनि जुवती ~ करि कै ६०८ । २ बहाने : माटी कं ~ मुख दिखरायो २५६ ।
मिसि¹ बहाने सुरनि ~ देव दुदुभि बजाई ८/८ ।
मिसि² मिश्री फेनी पुरि ~ मिली दूध मँग १२१३ ।
मिसिरी मिश्री • नापर मधुर ~ मानी १८३ ।
मिश्रित मिला हुआ, सम्मिलित रूप मे उपजत ~ ध्वनि माधुरी ११८० ।
मिस्री मिश्री । ~ करत मिश्री बना रहे हे • ~ — पाग कौं चूरन ८९२ ।
मिहिर तनया सूर्य की पुत्री, यमुना . ~ पुलिन वर-नग, विमल जल उच्छ्वास १०७१ ।
मींजत मलते/ममलते हुए ~ पीठि प्रीति अति वाढी ७९९ ।
मींजि मल या ममलकर । △ **हाथ** ~ हाथ मलकर, दुखी हो कर : — ~ पछिताने ३९८० । ~ **कर पछितांहि** हाथ मलकर पछताते ह यह सुनत जल नैन ढारत ~ — ३१४१ ।
मींजी मली, मसली काल्हि यौख कान्ह मेरी पीठि ~ आइ ७८० ।
मींजै मलता है । △ **कर** ~ हाथ मल मलकर (अत्यधिक) ~ पछितात ३९७६ ।
मींडत मलता-ममलता है हम अस्नान करति जल-भीतर ~ पीठि कन्हाइ ७७० ।
मींडहि मलती है . इक मुख ~ कुमकुमा २९०३ ।
मींडे मलते हैं नीम धुनै दोऊ कर ~ ४२३५ ।
मीच मौत, मृत्यु गटकि मिल मर्ा रह्यौ ~ जागी ३०७३ ।
मीचत मींजते/मलते हुए लोचन ~ तहँ हरि आए ६७५ ।
मीच्ऽति महा मृत्यु . ताके मूँड चढी नाचति है, ~ नीच नदी १/९८ ।
मीचि मूँद या बद कर कह्यौ, आँखि अब ~ तू ८/१६ ।
मीचु मौत, मृत्यु : ~ दरसन भयो ३०७६ ।
मीचे बद किए : अँखिया ~ वदन चलावै ३३१ ।
मीचैं बद करता है, मींचता है : आनि अचानक अँखिया ~ २८९५ ।
मीचैं बद करे मुरली वस मानस ह्यां, को मृग-नैन ~ परि० १/१९० ।
मीजत मींजता है, मलता-ममलता है ~ पीठि सवनि कै पाछ ७६८ । ~ **हाथ** हाथ मींजती हैं, पश्चात्ताप करती हैं व्याकुल भई मीन सी तलफत, छन-छन ~ — मा०ल० २६ ।
मीजैं मींजकर, मल मलकर . कर ~ पछितात ३९७६ ।
मीजे मींजकर कर ~ पछिताइ ९/७५ ।
मीठ १ मीठा । २ स्वादिष्ठ, मधुर मवहिन तैं ~ दधि है यह १५९९ । △ **नहिं जानत कछु** ~ बुरा और भला किसी को परखने की शक्ति नही रखते हैं सूर-स्याम सुदर-रस अटके — ~ २३७२ ।
मीठी मधुर । △ **कहति न ~ खाटी** अच्छा-बुरा कुछ नहीं कह रही है . सूर निरखि नदरानि भ्रमित भई — ~ — २५४ ।
मीठैं मीठे ~ तेल चना की भाजी ३२६ ।
मीठौ वि० मीठा . अति ~ दधि आजु जमायौ ४४२ । क्रि० स० मीठा लगता है • चोरी की गुड ~ सा० ल० ८९ । पु० *मिठाई : अति ~ कन ढारत २६५ ।*
मीडत मींजता है । ~ **हाथ** हाथ मल रहे थे, पछता रहे थे ~ — सकल गोकुल-जन, विरह-विकल बेहाल २९९५ ।
मीडति मींजती/मलती हैं । **कर** ~ हाथ मलती हैं, पछताती हैं — ~ सिर धुनति नारि सब २२३३ ।
मीडति मींजती है, मलती है । △ **कर** ~ हाथ मलती हुई, हाथ मल मलकर — ~ पछिताति मनहिं मन ३६५५ ।
मीडैं मलते ममलते हैं • ताहि कोऊ उपचार न लागत कर ~ सहचरि पछिताइ ७४८ ।
मीडौं मलती हूं . छिन आगन, छिन भवन मैं, छिन ~ हा हाथ ३०४४ ।
मीत १ मित्र, सखा, दोस्त • हरि विनु ~ नहीं कोउ तेरे १/८५ । **२** प्रेमी, प्रियतम . ~ हमारे परम मनोहर ३९२७ ।
मीता मित्र, प्रेमी . तिनको कहा परेखौ कीजै कुविजा के ~ कौ ४००९ ।
मीते सखा/दोस्त/मित्र से सूरदास प्रभु बहुरि कृपा करि मिलहु सुदामा ~ ३३९१ ।
मीन १ मछली : जल तें ~ धरि काढी ११०३ । २ मच्छ का ~ रूप धरि कैं जब मारयौ २२१ । ~ **हीन-जल** जल हीन मछली (जल बिना तडपती हुई मछली) . ~ — ज्यौं मुरझात ९/६९ । ~ **जाल मैं** जाल मे पडी हुइ मछली जैसें ~ — क्रीडत ४ । **बसी ~ हई** वसी मे फँसी हुई मछली मर गइ : सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस विनु मानौ — ~ — ४०६० । **मद्ध ससि के ~ खेलत** चद्रमा के बीच मे मछली खेल रही है : — ~ — रूप-कान्ति सजुक्त मा० ल० १४ ।
मीनकेत कामदेव, जिसकी ध्वजा पर मीन अकित कही गई है • ~ अबुज आनदित, ताते ता दिन लहियत ३३५२ ।
मीनता 'मीन' का गुण या मीन का स्वभाव 'सूरदास' ~ कछू इक जल भरि कबहूँ न छाँडत ३५७२ ।
मीन रूप मच्छ रूप मे (अवतार) . जिहिं बल ~ जल थाह्यौ १२७ ।

मीनहि १ मछली को मधुप बिछुरे वारि ~, अनत कहा सुहाइ ४०७२। २ मछलियों के लिए • निठुर रहत जैमैं जल ~ २३४५।

मीनौ मछली को भी • सींचति है वसुधा मृग ~ १३०६।

मीन्ही मछली, मीन : सूर स्याम के रगहिं रॉची, टरति नहीं जल तैं ज्यौं ~ १८५८।

मीन्हौ मछली ही : अब वैरनि बसी उपजाई, निपट भई हम ~ १२८२।

मुचत मुक्त करते हैं, छोडते हैं : ~ नैन होड बदि लेत ३२२२।

मुड सिर बाम कर गहि ~ डारिहौं अमरपुर ३०५४।

मुंडमाल मुडमाला, कटे हुए सिरो की माला (पुराणों के अनुसार ऐसी माला शिव और काली के गले मे रहती है) ~ सिव-ग्रीवा कैसी १/२२६।

मुडित मुंडाए हुए : ~ केस सीस विहल दोउ ९/५२।

मुदाइ बंद कराके नैन ~ कहा तिहिं कीन्हौं ६००।

मुंदाई वद करवाई : हरि तव अपनी ऑखि ~ २४०। **खेलन ऑखि** ~ ऑखमिचौनी खेलने के लिए हरषि स्याम सब सखा बुलाए — ~ २३९।

मुह मुख। ~ **मटकी** मुँह मटकाती थी : नैन-सैन दै दै ~ — १७६४। ~ **मिलवत हौ** मुँह देखी या चापलूसी की वातें करते हो : मोसौं तुम ~ —, भावति है वह प्यारी २४१३। ~ **न दीजियै** बहुत लाड-प्यार न कीजिए : कबहूँ बालक ~ —, ~ — नारि १५१८। **फिरत रहत** ~ **बाए** अधिकाधिक (धन की) प्राप्ति के चक्कर मे फिरता रहता है निसि दिन ~ — अहमिति जनम बिगोइसि १/३३३। ~ **न लगाई** आत्यतिक उपेक्षा की, जरा भी ध्यान नहीं दिया . रिषभदेव तैं ~ — ५/२। ~ **पाइ** लाड प्यार और सम्मान पाकर, अनुकूल समझ कर नेकु ही ~ — फूली अति गई इतराइ २६८०। ~ **पावति** (अपने) अनुकूल समझती है, सम्मान और प्रेम का व्यवहार पाती है ~ — तबही लौं आवति औरै लावति मोहि ७२३। ~ **फेरौ** ध्यान हटा लिया, पीछे हट गया सात दिवस जल बरसि सिराने हारि मानि ~ — ८६९। **पायौ है** ~ **माँग्यौ** मुँह-मॉगा अथवा मनचाहा पाया है : आजु हरि — ~ — २५१९। ~ **मॅह अँगुरी आनि** विस्मय के कारण उँगली मुँह मे लाकर (दाँतों मे दवाकर) ममि-तन चितै, नैन दोउ मूँदे ~ — २६०३। ~ **लगाई** मुँह लगा बैठे हैं (सिर चढा लिया है) : कहा कहौं हरि सौंऽव तोसी कौं ~ — २५९६। ~ **सम्हारि बोलत नाही** जो मुँह मे आता है, वही बोलता चला जाता है, मुँह सँभाल कर तो बोलता नहीं • ~ — तू बोलत नाहीं, कहत बराबरि बात ५३७। **छोटैं** ~ **बडी बात कहत** अपनी अवस्था को ध्यान मे न रखकर लम्बी-चौडी वातें करता है — ~ —, अबहीं मरि जैहै ५८९। **छोटैं** ~ **वडी बात कहौ** अपनी अवस्था का ध्यान न रखकर लवी-चौडी वातें करते हो • ~ -- किनि आपु सँभारे १०१६। ~ **फाटे** वे समझे बूझे जो भी मन मे आ जाय कह देने वाला इहिं मिस देखन आवति ग्वालिनि ~ — जु गॅवारि २९२। ~ **मॉग्यौ** इच्छित, मनचाहा, मनोनुकूल : तो तुम ~ — फल पावहु ८९९।

मुंहाचुही डींग-मारना, बढ चढ कर बातें करना। ~ **कीन्हीं** वढ चढ कर वातें कीं ~ जुवतिनि तव कीन्हीं १७२८।

मुईं मरीं, मर गई 'सूरदास' प्रभु तव न ~ हम ३८२३।

मुई मरी, मर गई . पुनि सो दच्छ जग्य मैं ~ ४/४।

मुए १ मर गए लरि ~ तुरत ही दोउ भाई ८/११। २ मरे, मर गये थे : जानैं नाहिंन ~, फेरिकै जीवैं ये सब ९/१४।

मुऐ मरने पर सती ~ यह मन मैं आई ४/५।

मुकुंदहि मुकुद (श्री कृष्ण) को . सूर सजीवन मूरि ~, लै आई ही ऑखि ३३३६।

मुकता मोती . ~ माँग तिलक पन्नगि सिर १७०३।

मुकताई मुक्त होने की पात्रता मे • पॉच लोक मिलि कह्यौ, तुम्हारैं नहिं अतर ~ १/२०७।

मुकताहल मोती : जल तजि हस चुगै ~ ३२३०।

मुकर[1] दर्पण : ग्रह मुनि दुति हिन के हित कर तैं, ~ उतारत काँधे सा० ल० ६।

मुकर[2] अस्वीकार करने की क्रिया या भाव। △ **जात** ~ **ह्वै** अस्वीकार कर देते हैं फल मॉगत फिरि — ~ — १७७।

मुकरवा झूठा वचन देने वाला, किसी वात के लिए कहकर मुकर या नट जाने वाला लोभी, लोंद, ~, झगरू १/१८६।

मुकराई मुक्त कराया • बरुन फॉस तैं मोहिं ~ ३१६२।

मुकराए मुक्त करवा दिये जम के फद काटि ~ १/१७१।

मुकरायौ[1] मुक्त कराया • बरुन पास ब्रजपति ~ १/१७।

मुकरायौ[2] मुकर गए हैं, विस्मृत कर दिए हैं अमर नाथ अपराध क्षमा करि, पीठि ठोकि ~ ३६२४।

मुकरावन मुक्त कराने वाले : गज हित धावन, जन-~ ८/४।

मुकरि मुकरने की क्रिया या भाव। ~ **गए** . अस्वीकार कर दिए, इन्कार कर दिए : ~ — मैं सुनी न देखी परि० १/१६। ~ **जाइ** अस्वीकार कर दे, इन्कार कर दे ~ — कै दीन वचन सुनि १/१९६।

मुकुंद मुक्तिदाता, विष्णु, कृष्ण जौ ~ मकरदहिं ध्यावै २/७।

मुकुटवारौ मुकुट (धारण करने) वाला = श्री कृष्ण • अग-अग बसै ~ १९१९।

मुकुता[1] मोती सूर स्याम-लोचन जल बरषत जनु ~ हिमकर

तें ३५४।

मुकुना² गया की एक नदी का नाम : अमला, अबला, कना, ~, रीरा, नीला प्यारि २००८।

मुकुनाली मुक्तावली, मोतियों की पंक्ति या लड़ी : मनिमय-भूषन कंठ ~ परि० १/१०८।

मुकुनावलि मुक्तावली, मोतियों की पंक्ति/लड़ी : तिलक ललाट, कंठ ~ १७९८।

मुकुताहल मुक्ताफल, मोती : केसरि रंग ~ छायौ २६११।

मुकुति १ मुक्ति, मोक्ष : जुगुति ~ किहिं काज हमार ३५४१। २ मुक्तियों को : कोटि ~ वारौ मुसुकनि पर ३७३५। ३ मुक्ति रूपी : ~ पराग रमहिं तनि चाख्यौ २२७८।

मुकुर १ दर्पण : ~ लै भावती छवि निहारैं २१५४। २ दर्पण के : मनहुँ ~ बीच रवि २८८६।

मुकुर-मुख दर्पण के समान चिकना मुख : ~ दोउ नैन ढारन ३६४।

मुकुल कली। ~ अवलोकनि देखना ही कलियाँ हैं : बचन सुपत्र ~ — १७६२।

मुकुलात खिलते हैं (प्रसन्न रहते हैं) : पख पसारि न होन चपल गति, हरि समीप ~ ३५७२।

मुकुलित १ खिले हों : ~ लहि अनुराग री २६६२। २ जिसमें कलियाँ (मुकुल) आई हों : ~ अम्ब कदम्ब सारा० १००१। ३ कुछ कुछ खुलता हुआ : ~ कुसुम नैन निद्रा तनि रूप सुधा सिराइ २८११। ४ बिखरे हुए : ~ कच न समान मुकुट मैं २४६१। ५ खिलती (बढ़ती) हुई : ~ बय नव किसोर २३६२।

मुकुले विकसित हुए, खिल गए : ~ कमल २०३८।

मुकेरैं विमुख रहा : अकुम बिना ~ १/२०६।

मुक्त¹ मोक्ष प्राप्त : ~ होइ नर ताकौं जान ३/१३। ~ भयौ मोक्ष पाया : ~ — सिसुपाल १००८।

मुक्त² मोतियों की : ~ माल बिसाल उर पर २३४।

मुक्तकारी बंधन से छुड़ाने वाले : दीन दुःख हरन गज ~ ४२१५।

मुक्तनि मोतियों : तिन तरहरि ~ की माल ४११२।

मुक्ता¹ मुक्ति या मोक्ष प्रदान करने वाला : दाता, ~, हरता, करता ४८७।

मुक्ता² मोती : ~ मनौ चुगत खग-खंजन ३६६।

मुक्ता-तात भवन मोतियोंका जनक (समुद्र) उसका घर, पानी : ~ तें बिछुरें मीन मकर बिललातैं ४१२०।

मुक्तावन मुक्ति प्रदान करने वाले : पुहुमी कौ भार हरन जनम जनम ~ २५१।

मुक्तावलि मोतियों की लड़ियाँ : सिंदुर सीस माँग ~ २४४६।

मुक्ताहल १ मोती : सूरी के पातन के बदले को ~ देहै ३६६४। २ मोतियों का : सूरदास ~ भोगी, हंस ज्वार क्यों चुनिहैं ३५२९।

मुक्ति १ जन्म मरण से छूटने का भाव, मोक्ष : धर्म-अँकुर के पावन द्वै दल ~ वधू ताटंक १/९०। २. मुक्ति, छुटकारा : इहिं सराप सौं ~ क्या होइ ६/७। ~ रहौ मुक्त होकर रहो (छुटकारा पाकर रहो) : ~ — घर बैठि आपने ३६९२।

मुक्तिक्षेत्र मुक्तिदायी क्षेत्र : बन बागनमि ~ है चल तोकौं दिखराऊँ १/३४०।

मुक्ति-वधू मुक्ति रूपी बहू के : धर्म अँकुर के पावन द्वै दल ~ नाटक १/९०।

मुक्तिहुँ मुक्ति/मोक्ष (को) भी : निर्गुन ~ कौ नहिं चहै ३/१३।

मुख मुँह। ~ की हँसी हँसते हुए : ~ कहत मृदु बैन ११८०। △ **अपने ही ~ बड़े कहावत** अपनी बड़ाई स्वयं ही करते हो, अपनी महिमा खुद ही गाते हो : — ~ — हमहुँ जानति तुमकौं २४९५। **अब न बनै ~ मोरैं** अब उपेक्षा नहीं कर सकते, अब उपेक्षा करने से भलाई नहीं हो सकती : सूरदास प्रभु पछिले खेवा, — ~ — ४८८। **काहूँ ~ न समाऊँ** किसी का मुख बंद नहीं कर सकती अर्थात् किसी को कुछ भी कह सकने से रोक नहीं सकती : सुनि न जात घर-घर कौ घैरा — ~ — १६८३। **विषियिनि के ~ जोए** सांसारिक विषय-भोग में लिप्त रहा : तिलक बनाइ चले स्वामी ह्वै — ~ — १/५२। ~ **जानिवौ** कहा हुआ समझिए : यह मत सुक ~ — ११८०। ~ **जोवै** मुँह ताकता है : ससुभि-ससुभि गृह आरति अपनी धर्मपुत्र ~ — १/२५९। ~ **नाम आयौ** मुख से नाम उच्चरित किया : काल कैं त्रास ~ — १/५। ~ **पोछौ** मुख पोंछ लो अथवा बुराई दूर करो : तुच्छ वमन नव उर के रस मे मिले लाल ~ — सा० ल० ८३। ~ **फेरि** विमुख होकर : सेव चले ~ — अमरपुर ९४२। ~ **फेरौ** विमुख हो गए : हारि मानि ~ — ८६९। ~ **फेरचौ** मुह मोड़ लिया : मेघनि हारि मानि ~ — ८८१। ~ **मोरि** उपेक्षा करके : गारी देत हँसन ~ — ३२७। ~ **मोरी** उपेक्षा करके : बार-बार बिहँसति ~ — ६६०। ~ **मोरैं** उपेक्षा कर रहे हैं : यह कहि-कहि ~ — ३०८९। ~ **मोरचौ** उपेक्षा करने से : कहा भयौ कोऊ ~ — १६६१। ~ **सँभारि बोलति नहि बात** परिस्थिति और वातावरण का ध्यान रख कर वचन नहीं बोलतीं, मर्यादा और शिष्टाचार का ध्यान रखकर बात नहीं करतीं : ये सब ढीठ गरब गोरस कैं ~ — ३०८। **मोरि** ~ उपेक्षा करके : चलत रही नित चोरि — ~ एक न पग पहुँचायौ २/३०। **मोरि रहै ~** सर्वथा (नितान्त) उपेक्षा करती है : चलत न कोऊ संग चलै — ~ नारि २/२९।

मुख चारि चार मुखों वाले, चतुरानन, ब्रह्मा जाकौ दरसन काज जपै ~ ३६२।

मुख तमोर मुख का पान (मुख के पान की लाली) सुरति समै के ~ मिलि, लोचन परसत लाग री २६६२।

मुखन मुख से नैन-नासिका ~ चोरि दधि कौनैं खाध्यौ ४०९५।

मुखनि मुख मे : लछिमन ~ निचोरौ ९/१४८।

मुख-द्वार मुख रूपी द्वार को . कहि धौं प्रान कहाँ लौं राखौं, रोकि देह ~ ९/९२।

मुख-पट अवगुठन, घूँघट तब हरि ~ दूरि कै, भक्तनि सुख-कारी २३२।

मुख-बानी १ मुख से निकलने वाली वाणी ~ कहि देति उचारि १५८१। २ वाणी का उद्‌गम अर्थात् कठ अति पुलकित गदगद ~ २५३।

मुख-बन वाणी के मुखो वाली अर्थात् बाँसुरी अधर धरे ~ १४५७।

मुखमाँगौ मनोवाछित, मुहमागा ~ पैहौ 'सूरज' प्रभु ३९६५।

मुखर चचलतापूर्वक बोलत खग-निकर ~ मधुर होइ प्रतीति २०५।

मुखरत ध्वनित करता है, ध्वनि उच्चरित करता है : मत्त मधुप बैठ्यौ अम्बुज पर ~ है सुर भीनो सारा० १०५५।

मुखरित १ शब्द करता हुआ, बोलता हुआ, कलरव करता हुआ सहज सुख ~ मधुर मराल ११३६। २ शब्द करती हुई, ध्वनि करती हुई कटि पट पीत मेखला ~ ४५१। ३ शब्द करते हुए, गुजार करते हुए : हरि प्रतीत मुकुलित द्रुम पल्लव ~ मधुकर पात सारा० १०४०।

मुखरिति ध्वनित मनहुँ हेम मडपिका ~ कल्पलता रस-पुज सारा० १०४५।

मुख-समूह-मानुस ताही विधि मुख (आनन), समूह (गण) और मानुस (नर) को 'ताही विधि' (अर्थात् पहली विधि की तरह) लेने पर अर्थात् इनके आदि वर्णो को मिलाने मे बना 'आँगन' . ~ करौ न कबहू फेरौ सा० ल० ३३।

मुखहि १ मुख को . अचल ~ लुकावत २२२। २ मुख मे . अपनै कर सौं ~ भरै ७६। ३ मुख से ~ बजावत बेनु ४९१। **आए ~ लजाने** लज्जित या उदास मुख लेकर आए भोरहिं — ~ — २६३६।

मुखही मुख से ही स्रम कन देखि पवन ~ कें ११४६।

मुखहु मुख से कोउ ~ न बोले १/२३८।

मुखहू मुख से भी ~ जो बोलें तौ लहिए २५७१।

मुखारविंद कमलवत् मुख • हौं बलि जाउँ ~ की ४०३।

मगध मोहित, आसक्त वय किसोर कमनीय ~ मैं लुबधन हू न डरी १८७४।

मुगुध मूढ, भ्रम मे पड़ा हुआ, मोह-ग्रस्त : सुनु री ग्वारि ~ गँवारि ११९१।

मुग्ध १ मूढ, भ्रम मे पडा हुआ, मोहग्रस्त मो से ~ महापापी कौं कौन क्रोध करि तारै ९/७८। २ मूर्ख का : कहाँ बसति हौ नागरी सो पुर ~ गँवार १६१८।

मुचुकुंद श्रीमद्‌भागवत पुराण के अनुसार राजा माधाता का एक पुत्र, जिसकी नीद भग करने के कारण कालयवन जलकर भस्म हो गया था चले भाज दोउ सभी उहाँ ते जहँ सोवत ~ सारा० ६०५।

मुचुकुंदहि (दे० मुचुकुद) : कालजवन ~ सौं हरि भसम करायौ ४१६३।

मुच्यौ छोडा गर्भ ~ कौसिल्या माता ९/१७।

मुछित मूर्च्छित : कबहुँ ~ ह्वै नृप परै ६/५।

मुजमिल सक्षिप्त रूप मे : ~ जोरै ध्यान कुल्ल कौ, हरि सौं तहँ लै राखै १/१४२।

मुजरा जुर्माना, हिसाब किताब या दण्ड, (सारा भेद) मेरै फट कबहु तौ परिहो ~ नवहीं दैहैं १७००।

मुजामिल खुलासा . वासिल बाकी स्याहा ~ सब अधर्म की बाकी १/१४३।

मुठी मुट्ठी . ~ भरि लियौ, सब नाइ मुख हीं दियौ ५९६।

मुडली जिस स्त्री के सिर पर बाल न हों, मुडी ~ पटिया पारौ चाहै, कोढी लावै केसरि ३५५०।

मुडिया वह सन्यासी, जिसका सिर मुडा हुआ हो, सन्यासियो की एक कोटि विशेष . यह निर्गुन लै ताहि सुनावहु, जे ~ बसैं कासी ३६६८।

मुतियनि मोतियों से : चदन आगन लिपाइ ~ चौकें पुराइ ९५।

मुतिसरी मोतियो की माला . ग्रीव ~ तोरिकै अँचरा सौं बाँध्यौ १९६६।

मुद हर्ष, प्रसन्नता . ससि सनमुख ~ सहित मिथाई २६६५।

मुदगर मुग्दर, मोगरा . मुसल ~ हनत १/१२०।

मुदरो छाप, चिह्न चारु चिबुक ~ पिउ मोहन लै दरपन मुख देख परि० २/३९।

मुदित[1] १ प्रसन्न, आनदित, पुलकित उदित वदन मन ~ सदन तें ९/१६९। २ प्रसन्न है, आनदित है सखी गाँठि दै ~ राधिका १९०४। ३ पुलकित होकर, आनदित होकर कुमुद चकोर ~ विधु निरखत ४०४२। ४ प्रसन्न चित्त, पुलकित मन ~ मगल सहित लीला करैं गोपी-ग्वाल २६। **~ह्वै-ह्वै** प्रसन्न हो-होकर (अत्यत प्रसन्न होकर) नव किसोरी ~ — गहति जसुदा पाइ २६।

मुदित[2] मुदिता नायिका : 'सूर' लखि भई ~ सुंदरि करत

आछी उक्त मा० ल० १४।

मुद्रा १ अँगूठी, मुद्रिका : कहा वे राम, कहा वे लछिमन क्यों करि ~ पायो ९/८८। २ काच अथवा स्फटिक द्वारा निर्मित एक आभूषण, जिसे गोरखपंथी साधु कान की लौ मे पहनते हैं सिंगी ~ कर खप्पर लै, करिहौ जोगिनि भेस ३७७६। ३ अंग-सचालन 'सूर' के प्रन करत ~, कौन विविध विचार मा० ल० ७०। ~ दीन्हीं आकृति बनाई रह्यौ नैन फिरि ~ — १६८०।

मुद्रा चक्र मुद्रा चक्र विष्णु के आयुधों के चिह्न जिन्हें वैष्णव लोग अपनी बाहुओं तथा अन्य अंगों पर खुदवाते हैं मूँड्यो मूँड़, कठ बन-माला ~ दिये १/१७१।

मुद्रा-पति-अँचवन तनया-सुत मुद्रा (लोपामुद्रा) के पति (अगस्त्य मुनि) का आचमन (समुद्र) की पुत्री सीपी का पुत्र मुक्ता या मोती . ~ ताके उरहि बनावहि हार १२०२।

मुद्रिका अँगूठी हाथ ~ प्रभु दई ९/७२।

मुद्रिकानि अँगूठी पर अधर मुरलि धरि ~ कर परि० २/३०।

मुद्रित मुँदा हुआ, बद : निमि ~ प्रातहिं वे विकसित, ये विकसित दिनराति १८१३।

मुनि १ मननशील महात्मा, तपस्वी, त्यागी। २. सात की संख्या ~ पुनि रसन के रस लेख मा० ल० १०८।

मुनिजनिया मुनिगण, अनेक मुनि सूर स्याम को अद्भुत लोला नाहिं जानत ~ ८३।

मुनिन मुनियों तहँ ते गए जु चित्रकूट को जहाँ ~ को थान सारा० २४४।

मुनिनि १ मुनिगण, मुनि लोग ~ मनहि उदास ११३३। २ मुनियों के लिए • मख पूरन ~ परम सुदर त्रिजनि काल को रूप सुभटनि जनायौ ३०५९। ३ मुनियों को ~ नाच जो नचायो १२१८।

मुनि-भख मुनि (अगस्त्य) का भक्ष्य = समुद्र ~ पक प्रकासी मा० ल० २३।

मुनि-रिपु-पुत्र-वधू मुनि रिपु (कामदेव) के पुत्र अनिरुद्ध की वधू अर्थात् उषा = प्रात काल • ~ किन बैरिन मोको दैन सवारै मा० ल० ६२।

मुनिहूँ मुनि भी • ~ रहत इक ठौर ३६४४।

मुनी मुनि : दैव ~ जन साखी १/१०।

मुनैयनि लाल (एक पत्नी विशेष) की मादाएँ, मुनिया सनु लाल ~ पाँति पिंजरा तोरि चलीं २४।

मुयौ मर गया • ~ असुर, सुर भए सुखारी ७/२।

मुर एक दैत्य, जिसका वध करने के कारण विष्णु मुरारि कहलाए मधु-कैटभ मथन ~ भौम केसी दलन कस कुल काल अरु सालहारी ४२१३।

मुर-अरि मुर नामक दैत्य के शत्रु = विष्णु = कृष्ण • खीन मुरली गह ~ १२२५।

मुरकी १ विचलित हुई, मुड़ी • अगिनि सुभाऊ देत नहिं ~ १३३७। २ सिकुड़ने लगीं : लोचन भरि भरि दोउ माता कनछेदन देखत जिय ~ १८०।

मुरकुनी मटकी : माठ ~ दही ढहैनी परि० २/१५३।

मुरछाइ मूर्छित होकर • तब परे ~ धरनी २८११।

मुरछात मूर्छित होते हुए . कागासुर आइ गिर्यो ~ २९२६।

मुरछायौ मूर्छित हुआ . लगत त्रिसूल टूट ~ ६/५।

मुरछि मूर्छित होकर स्याम बन ~ परे हैं २७२९, सुख नैन पर ससु ~ दोऊ २४९७।

मुरछे १ मूर्छित हो गए : सूरदास स्वामी बसी बस ~ १३२३। २ सोये हुए, मूर्छित ~ मदन जगावने ३२०१।

मुरछ्यौ मूर्छित कर दिया है . ~ मदन तननि सब टाही ०८९।

मुरज मृदग, पखावज मुरली ~ रबाब उपग ११८०।

मुरझनि उदासी, उदास होने की क्रिया या भाव • स्याम ~ देखि नन्द की २११९।

मुरझाइ १ मुरझाकर, मूर्छित होकर नैन मलत ~ गिरे धर २४५५। २ मुरझा गो-सुत ग्वाल रहे ~ ५०१।

मुरझाई १ मूर्छित होकर . धरनि परयो ~ १३९७। २ मूर्छित हो रहा है • कहि-कहि ~ नन्द-नमाल १११८। ३. मूर्छित . तुम ऐसैं कह रहे ~ २८१२। **पवन रह्यौ** ~ पवन शिथिल अथवा मद हो गया — ~ ९९०।

मुरझात १ १ मुरझा जाते हैं, मूर्छित हो जाते हैं जह खेलत के ठौर तुम्हारे, नद देखि ~ ४०८२। २ मुरझाती है, कुम्हलाती है सुनियत अति ~ ४०६९। ३ मुरझाती है, मूर्छित हो जाती हैं मीन, हीन-जल ज्यों ~ ०/६९। ४ मुरझाते हुए, कुम्हलाते हुए बन ~ 'सूर' को राखै ३९०३।

मुरझान मूर्छित हो गया : सूर मकनि जैसे लछिमन तन, विह्वल है ~ ३२६३।

मुरझानी १ मूर्छित हो गई, चेतना शून्य या सज्ञा हीन हो गई नरु तर बदन करनि ~ ११२६। २ कुम्हला गई, उदास हो गई • सब ~ गी चलिवे की सुनत भनक २९६२।

मुरझाने मूर्छित हो गए, मुरझा गए सेज परे, पुनि उठि ~ २०३७।

मुरझायौ १ मूर्छित हो गया, बेहोश हो गया लगत त्रिसूल टूट ~ ६/५। २ कुम्हला/मुरझा गया पौढि रहे धरनी पर तिरछे बिलखि बदन ~ ३५६।

मुरझावै मूर्छित हो जाना है आपन ते ~ मा० ल० २४।

मुरझावो मुग्ध हो जाओगी (मुरझा जाओगी) लखि निसपति ~ सा० ल० ९।

मुरझि बेहोश होकर, मूर्छित होकर · सूरदास प्रभु पठे मधुपुरी ~ परी ब्रजबाल २९९९।

मुरझी मूर्छित हुई द्रुम के तरे ~ सुकुमारी ११०६।

मुरझैया मूर्छित होकर, बेहोश होकर पुनि यह कहति मोहि परमोधत धरनि गिरी ~ ५६०।

मुरझ्यौ सोया हुआ, सुप्त : ~ मदन जगायौ १८८९।

मुरत १ मुड़ता या हिलता-डुलता है इत-उत अग ~ झक-झोरत ३००। २ मुड़ता है ~ न अकुस मोरे ३३०३। ३ फिरता या लौटता है : ~ कोउ नहीं, दोउ रूप भारी २१२८।

मुरति मूर्ति, प्रतिमा : नव किसोर मधुर ~ सोभा उर धारौं ६६२।

मुर-रिपु 'मुर' नामक राक्षस को मारने वाले अर्थात् श्रीकृष्ण : सूर ~ रग रगे, सखी सहित गुपाल २८४२।

मुरलि १ मुरली, बाँसुरी : मोहन ~ बजाइ रिझाई १९१७। २ मुरली के : नव किसोर मुख ~ बिना इन नैननि कहा दिखाऊँ ४२५५।

मुरलिका १ मुरली, बाँसुरी : स्याम, तुमरी मदन - ~ नैसुक सी जग मोह्यौ ६५६। २ मुरली (की ध्वनि) : स्याम अधर मृदु सुनत ~ चकित नारि भई ६२१। ३ मुरली के · सहज ~ गान २४०९।

मुरलिया मुरली, वशी . ~ मोकौं लागति प्यारी १३६१, हाथ ~ छाजै ४५१।

मुरलीधर बाँसुरी को धारण करने वाले अर्थात् श्रीकृष्ण : बीच मिली ~ कौं १९३०।

मुरलीधरहि बासुरी को धारण करने वाले, अर्थात् श्रीकृष्ण को · ~ आनि दिखरावहु ३६८६।

मुरलीधारी मुरली धारण किये हुए · बसन कटि पीत मुख ~ १८०३।

मुरवा दे० मोरवा।

मुरार श्रीकृष्ण . अगणित पात महादुख मेटो माँगन यही ~ सारा० ६१८।

मुरारि १ मुर नामक दैत्य के शत्रु (वध करने वाले) = विष्णु = कृष्ण जल भीतर कह करत ~ ५४९। २ कृष्ण के : जब लगि भजै न चरन ~ ५/४।

मुरारिपु मुरारि, श्रीकृष्ण : सूर ~ रग रँगे सखी सहित गोपाल २२९०।

मुरारी मुर नामक राक्षस के शत्रु = विष्णु = कृष्ण आए छलन ~ ८/१४।

मुरारे मुरारि, श्रीकृष्ण मम गृह तजे ~ १/२४२।

मुरि १ मुड़कर : ~ बैठी मन भयौ हुलामा परि० १/४१। २ मोड़कर : आनन ~ मुसुकानी २०३१। ३ मुड़े हुए : ~ अधर दुहुँनि के नैंकु डोल ११९०। ४ मुड़ दुरि ~ रही लसि अलक जु आगे की २६६०। ~ **मुरि चितवति** मुड-मुड़कर देखती है : ~ — नद गली ७३९। ~ **मुरि लहरैं खात** मुड-मुड कर बल खाती है सुर स्याम बिनु बिकल बिरहिनी ~ — ३२७२।

मुरी मुड़ी, घबराई कटतहू ~ नहिं १३६४।

मुरंज एक वाद्ययन्त्र · बजता ताल मृदग झाँझ डफ रुंज ~ बाँसुरी ध्वनि थोरी २४४५।

मुरे १ मुड़े नैंकुहुँ कोउ न ~ २०३५। २ मुड़ेंगे ~ न अग कोउ जो काटै ९/८३।

मुर्छन मूर्छित करने का मोहन ~ बसीकरन पढि अगमति देह बढाऊँ ४९।

मुर्‌यौ १ मुड़ा . अगिनि तुलाकत ~ न तन १३३०। २ मुड़ गए . तुम ~ गोपाल १६१८।

मुवौ मृत्यु को प्राप्त हुआ, मरा . कहा जानै कैवौं ~ (रे), ऐसैं कुमति, कुमीच १/३२५।

मुष्टि एक राक्षस, कस का एक सेनापति, जिसका वध श्रीकृष्ण ने किया था कह्यो चाणूर ~ सब मिलि कै जानत हौ सब जी के सारा० ५२७।

मुष्टिक[1] कस का एक सेनापति राक्षस . गज ~ चानूर निहार्‌यौ २९४३।

मुष्टिक[2] घूँसा, मुक्का : राम ~ लगै गिर्‌यौ सो धरनि पर ४२०८।

मुष्टिका १ घूँसो/मुक्कों का : ~ जुद्ध दोऊ प्रचारी ४२०८। २ घूँसे/मुक्के से . एक हीं ~ प्रान ताके गए ३०४७। ३ मुट्ठी, मुट्ठी भर वस्तु : द्वितीय ~ लेन लगे सारा० ८१६।

मुसकनियाँ मुस्कान . मुनि मन हरनि सु हँसि ~ १०६।

मुसकाइ मुस्कराकर . डारि साँटि ~ जसोदा ३३४।

मुसकाई मुस्कराई गोरी सुनि ~ ४१८१।

मुसकात १ मुस्कराता है हँसत सबै ~ २१५। २ मुस्कराते है · अग-अग ~ ९/४३।

मुसकानि मद हँसी को, मुस्कान को . उन नैननि ~ मोल लै कियौ परायौ चेरौ ३७०३।

मुसकानी १ मुस्कान पर बिकानी हरि मुख की ~ ११९७। २ मद-मद मुस्कराने लगी, होठों मे हँसने लगी · आवति सूर उरहने के मिस, देखि कुँवर ~ ३११।

मुसकाने १ मुस्कराने लगे, मद-मद हँसने लगे : ललिता मुख चितवत ~ २१०९। २ मुस्कराये थे · सूर-स्याम जब तुमहिं पठायौ, तब नकहुँ ~ ३५०१।

मुसकि मुस्कराकर : मोहन ~ गही दौरत मैं परि० १/१२० ।

मुसक्याइ मुस्करा कर, मद-मद हँसकर नेंकु चितै, ~ कै सबकौ मन हरि लीन्हौं १/४४ ।

मुसक्यात १ मुस्कराता है, मद-मद हँसता है नद महर ~ १७२ । २ मुस्कराते हैं · पट कमलनि ~ जु मद २१७१ ।

मुसक्यातीं मुस्कराती हैं : पट दै ओट सबै ~ ४२४०

मुसक्यान मुस्कान, मद हँसी : चारु चिबुक ~ सारा० १७८ ।

मुसक्यानी मुस्कराई · यह सुनि ग्वालि सबै ~ १५२० ।

मुसक्याने मुस्कराए . सूर-स्याम यह सुनि ~ २२२ ।

मुसल मूसल, धान कूटने का एक उपकरण ~ मुगदर हनत १/१२० ।

मुसलधार मूसल के समान मोटी धार मे, बहुत ही तेज बरषत ~ सैनापति सहा मेघ मघवा के पायक ८६३ ।

मुसायौ लुटवा दिया है, लुट गये हो मदन चोर सौं जानि ~ २५११ ।

मुसिकाइ मुस्करा रहे हैं . मन मनहि ~ कोउ न बोलैं ११९० ।

मुसुकत मुस्कराता है : तब मैं हँसति मद ~ जब, आनँद आवत नेरैं २२१४ ।

मुसुकनि १ मुस्कान कोटि मुकुति वारौं ~ पर ३७३५ । २ मुस्कान मे : ~ मन हरि लेत २४७२ । ३ मुस्कान पर . सूरदास ने जाइ लुभाने, मृदु ~ हरि पी की २३४४ ।

मुसुकाइ १ मुस्कराकर · मोहन मुख ~ चले २३७६ । २ मुस्कराने लगे नृप-दिसि देखि भरत ~ ५/४ । △ **मन** ~ मन ही मन प्रसन्न होती है : खन खोलत, खन ढाँकत, नागरि, मुख रिस — ~ २२०५ ।

मुसुकाई मुस्कराई परति चरन-कमलनि ब्रज-सुदरि, हरषि हरषि ~ ९६६ । **मन-मन** ~ मन ही मन हर्षित/प्रसन्न हुई सूर स्याम तृन तोरहीं, — ~ २२०१ । **मन मैं** ~ मन मे प्रसन्न/हर्षित होकर उरग-नारि की बानी सुनि कै, आपु हँसे — ~ ५५० ।

मुसुकाए मुस्कराए, मद-मद (होंठों मे ही) हँसे । **मन** ~ मन मे हर्षित/प्रसन्न हुए दोउ — ~ ३०६४ ।

मुसुकात १ मुस्कराते हैं · भौह मोरि ~ १५७० । २ मुस्कराने पर : देखि सखी सोभा जु बनी है मोहन कें ~ १८०५ । ३ मुस्कराने लगे : तौ सनमुख ~ २७१४ ।

मुसुकाति मुस्कराती हैं : यह कहि-कहि ~ परस्पर २०५४ ।

मुसुकाति १ मुस्कराती है . मकुचति नहिं ~ १७०८ । २ मुस्कराई . मैं सुनि कै ~ ३०६ ।

मुसुकान मुस्कराने, हँसने · मन लागी ~ १९६८ ।

मुसुकानि १ मुस्कान, मद-मद हँसी मृदु ~ जुवति मन मोहै ४०९४ । २ मुस्कान के लिए . मृदु ~ अरे ३७३० । ३. मुस्कान पर · मृदु ~ मोल इनि लीन्ही २४०२ । ~ **छाँह** लै मुस्कान रूपी छाया लेकर · बसे वहाँ ~ — १८६४ । ~ **दै** मुस्कराकर . ~ — मोल लिए २२३८ ।

मुसुकानी क्रि० अ० १ मुस्कराई : सकुचति नारि बदन ~ २६२७ । २ मुस्कराती है · यह कहि-कहि तरुनी ~ १६१९ । ३ मुस्करा रही थी गृह जन देखि-देखि ~ १७१२ । स्त्री० मुस्कान पर बिकानी हरि-मुख की ~ १६५६ ।

मुसुकाने मुस्कराने, मद-मद हँसे : निरखि स्याम हलधर ~ ३८० ।

मुसुकानौ मुस्करा दिए मो तन मुरि ~ १६६७ ।

मुसुकायौ १ मुस्कराये : मन ही मन ~ ४/१३ । २ मुस्कराउ · नकु बदन ~ १६९५ ।

मुसुकाहि मुस्कराती हैं . सुर सखी, सुजान राधा परस्पर ~ १८४३ ।

मुसुकाहीं १ मुस्कराते हैं सुनत स्याम ठाढे ~ ९१२ । २ मुस्कराती हैं समुझि मनहि ~ २१३८ ।

मुसुकि मद-मद हँसकर, मुस्कराकर : हरप टहडह ~ फूले २११९ ।

मुसुकौंही मुस्कराती हुई, मुस्कराकर . नरल भाह ~ ३४९५ ।

मुसुक्याइ मुस्कराकर, मद मद हँसकर . असुर दिसि चितै ~ मोहे ८/८ ।

मुसुक्यात १ मुस्कराते हैं, मद-मद हँसते हैं नद महर ~ १७२ । २ मुस्करा रही है · निरख-निरख ~ सारा० ४९९ ।

मुसुक्यानि मुसकान, मद-मद हँसना बिधु मुख मृदु ~ अमृत सम १/६९ ।

मुसुक्यानी मुस्कराने लगी, मुस्करा उठी राधिका स्याम निरखि ~ २७३० ।

मुसुक्याने मुस्कराने लगे या मुस्कराये मनमोहन मन मैं ~ ६०४ ।

मुस्काय मुस्कराकर कहनि ~ स्याममुदर पै २७४३ ।

मुस्तौफी आय-व्यय परीक्षक, वह पदाधिकारी जो अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के हिसाब की जाँच करे . चित्रगुप्त सु होत ~, सग्न गहूँ मैं काकी १/१४३ ।

मुँह मुख । ~ **सम्हारि** मुँह सँभालकर अर्थात् सोच-समझकर ~ — तू बोलत नाहीं, कह तोसौं मैं लरिहौं ५३७ ।

मुहँही मुँह (की) ही । ~ **की हम सौं मिलवत** केवल बातों मे ही हमसे प्यार करते हैं, झूठा प्यार दिखाते हैं . ~ — जिय बसत जहाँ मन मोहनि परि० १/९० ।

मुहक्म सुदृढ, मजबूत सूर पाप कौ गढ दृढ कीन्हो, ~ लाइ किवार १/१४४ ।

मुहचग एक वाद्य यत्र जो मुँह से बजाया जाता है आवझ बर ~ २८६७ ।

मुहवरि महुअर, तूँवी या तूँवडी नामक एक वाद्य यंत्र फूले ही वजावैं मृदग ~ डफ ताल चग २९१७।

मुहाँचुही एक दूसरे के मुँह की ओर देखकर : ~ तरुनी मुसुकानी ७९९।

मुहासिब हिसाव लेने वाला, जाँच-पडताल करने वाला : सूर आपु गुनरान ~ लै जवाव पहुँचावै १/१४२।

मुहिं[1] मुफ़ पर : पीतावर ~ वारि १४४३।

मुहूरत १ मुहूर्त्त (समय की एक माप)=दिन-रात का तीसवाँ भाग एक ~ मैं सुव आयौ, एक ~ हरि-गुन गायौ १/३४३। २ ज्योतिष की गणना से शुभकार्य के निकाला गया समय सुद्ध ~ लग्न धरायौ १३२।

मुहूरति मुहूर्त्त (समय की एक माप)=दिन रात का तीसवाँ भाग • दोइ ~ आयु वताई १/३४३।

मूँए मृत्यु को प्राप्त होने पर, मरने पर : जैसैं काग काग के ~ काँ काँ करि उडि जाहीं १/३१९।

मूँछनि मूँछ पर। ~ **ताव दिखायौ** मूँछों पर ताव दिखाया अर्थात् गर्व या घमड किया • कवहुँक फूलि सभा मैं वैठ्यौ ~ — १/३०१।

मूँठि मुट्ठी मर्कट ~ छाँडि नहीं दीनी २/२६।

मूँड सिर, मस्तक। △ ~ **उघारचौ** गुरुजनों के सामने सिर खोल कर फिरने की निर्लज्जता दिखाई जिनकी मकुच देहरी दुर्लभ, तिन मैं ~ — री १/३३१। ~ **करि लीन्हे** ठग लिया है : सवै ~ — ३४४७। ~ **चढत हैं** ढिठाई या धृष्टता करते हैं • जोइ उन करैं सोइ करि डारैं, ~ — भारी १५१८। ~ **चढाई** ढीठ या धृष्ट कर दिया है : मुरली स्यामहिं ~ — १७७०। ~ **चढायौ** ढीठ या धृष्ट कर दिया है अव लौं कानि करी मैं सजनी, वहुतैं ~ — २२४६। ~ **चढी** ढीठ या धृष्ट हो गई है : तार्कैं ~ — १/९८। ~ **चढी नाचति है** अत्यत ही ढिठाई या धृष्टता करती फिरती है • तार्कैं ~ — मीचऽति नीच नटी १/९८। ~ **पढि** सिर पर मत्र या टोना पढकर. कछू ~ — परज्यौ २३४७। ~ **पिरायौ** वकवास करके (शोर-गुल मचाकर) सिर मे दर्द कर दिया : तुमहीं मिलि रसवाद वढायो उरहन दै दै ~ — ३९१। **मूँडचौ** ~ सिर के वाल मुडाकर सन्यासी का वेष वना लिया : — ~ कठ वनमाला मुद्रा-चक्र दिये १/१७१। ~ **परैं** सिर पर पडती है अर्थात् व्यवहारिक रूप मे जिम्मेदारी आती है ~ — अपनैं हा २०५०।

मूँडि (सिर के वाल) साफ करा के • द्रौपदि सीन ~ मुकराए १/२८९।

मूँडचौ सिर के वाल साफ करा दिये • ~ मूँड कठ वनमाला १/१७१।

मूँढ मूर्ख • सूरदास प्रभु आक चचोरत छाँडि ऊख कौ ~ ३७३३।

मूँढनि मूर्खों मे : धन-मद ~, अभिमानिनि मिलि लोभ लिए दुर्वचन सहै १/५३।

मूँद-चनक भाड मे पडा हुआ चना। △ **ह्वै रह्यौ** ~ भाड मे पड़े हुए चने के समान सतप्त हो रहा है : गोकुल — ~ २९६२।

मूँदत मूँदते हैं, ढकते हैं भाँडे धरत, उघारत ~ दधि माखन के काज २७७।

मूँदन मूँदने के लिए, वद करने के लिए तेई ~ नैन कहत हौ ३९२४।

मूँदहु मूँद लो, वद कर लो : ~ नैन विसाल ३८८४।

मूँदि १ मूँदकर, वद करके नैन ~ सुख मौन रही धरि ३६९६। २. दवाकर • नाक - ~, जल सींचि जवहिं जननी कहि टेरचौ ५८९। ३. ढक (रही हो) : कहा रही मुख ~ भामिनी २४२२। ४ (दीप) वुझा दिया सारँग पानि ~ मृगनैनी, मनि मुख माँफ समानी २६२४। **नूपुर** ~ नूपुरों का वजना वद कर के • रोक्यौ भवन द्वार, ब्रज-सुदरि — ~ अचानक ही कै २८७। **मुख**~ **कै** चुप होकर • रही — ~ — वचन वोलैं नहीं २०५३। ~ **मूँदि** मूँद-मूँद कर नैननि ~ — कह देखौ ३८५८।

मूँदी वद मूँद लिया • हरि अँखियाँ ~ आइ २२०५।

मूँदे १ किये सवनि ~ नैन ५९७। २ वद करके, मूँद कर • आसन-ध्यान नैन ~ सखि ३५९०। ३ मूँद लिया, वद कर लिया नैन औचक आनि ~ २२११।

मूँदेहु मूँदे हुए ही, वद किये हुए ही ~ आवत नैन आलस वस २६८३।

मूँदैं मूँदे, वन्द करे • हलधर कह्यौ आँखि को ~ २३९।

मूँदो वद किया, मूँदा • आवत देखि सवनि मुख ~ १२८५।

मूँदौ १ वद करो : सूर कहै जसुमति मुख ~ २५५। २ वद करती हो, ढकती हो • कर सों कहा अग उर ~ ७९३।

मूँद्यौ १ मूँदा, वद किया : नैन उघारि वदन हरि ~ २५३। २ ढँक लिया • आवत देखि सवनि मुख ~ १७४६। ३ मूँदा हुआ है : चिवुक चारु ~ मधु मानौ २९०१।

मूई[1] मर रही है • अधर मधु कत ~ हम राखि १२२३।

मूई[2] मुरली • अधर-मधु कत ~ हम राखि १२१३।

मूक १ गूँगा मानहुँ ~ मिठाई के गुन, कहि न सकत मुख ६४८। २ मूक वना हुआ ज्यों विनु मनि अहि ~ फिरत है ३२८०।

मूकू गूँगा : ~ निंद निगोडा भोडा कायर काम वनावै १/१८६।

मूके गूँगा/गूँगे : ~ भये जय के पसु लौं २८८२।

मूछहि मूँछ को। ~ **पकरि अकरतौ** मूँछ पर हाथ फेर कर

अकड़ना है, गर्व या घमंड करता है : मिथ्यावाद आप जग सुनि-सुनि ~ — १/२०३ ।

मूठि[1] १. मूठ : मेरु ~, वर वारि पाल-छिति ९/११ । २ जादू टोना से : ~ मृतक अवलनि मर मारन ३३३८ ।

मूठि[2] १ मुट्ठी : इतर नृपति जिहि उचित निकट करि देत न ~ रिती ११/१ । २. मुट्ठी में : खर वरि ~ उठि खेलत बालक त्रुठि आनत दै धन दौरि दौरि दिसि चारयौ ४२१७ ।

मूठिक एक मुट्ठी : ~ तंदुल बाँधि कृष्न कौं ४२३२ ।

मूठी स्त्री० मुट्ठी : ज्यौं मरकट ~ नहिं छाँडत २३१४ । **वि०** मुट्ठी भर, जितना मुट्ठी मे आ सके : हैं ~ तंदुल मुख मेले ४२४५ ।

मूठे नष्ट हुए, मर मिटे : द्वै तरग द्वै नाव पाँव धरि ते कहि कौन न ~ ३८९१ ।

मूड सिर । ~ **चढाए** ढीठ या धृष्ट कर दिया : बारक आनि दिखाई दीन्हीं गारी ~ — परि० १/१५१ । ~ **चढायौ** ढीठ या धृष्ट कर दिया है तैं ही उनकौं ~ — २०८८ । ~ **झरावै** सिर खपावे, बेकार की चखचख सुने : ऐसी को ठाली बैठी हैं, तुमसौं ~ — ३८९८ ।

मूढ मूर्ख : तब तैं ~ मरम नहिं जान्यौ जब मैं कहि समुझायौ ९/११९ ।

मूढता मूर्खता वरवस हीं इन गही ~ २३०६ ।

मूढमति अज्ञानी, भ्रष्ट बुद्धि वाला, मति भ्रष्ट : मूरख, मुगध, अजान, ~ नाहीं कोऊ तेरौ १/३१९ ।

मूढहि मूर्ख को : वीना नाद-सँगीत सुधानिधि ~ कहा सुनैए ३८१० ।

मूर १ मूल, जड़ : जद्यपि अक्रूर ~ परम गति पठावै ३४०२ । २. उद्गम का कारण मोहित विकल जानि जिय सबहीं, महाप्रलय कौ ~ ९/२६ । ३ मूलधन . 'सूर' ~ अक्रूर गयौ लै ३८९० ।

मूरछा १ मूर्च्छा, अचेतनता, वेहोशी . सूर मिटै अग्यान ~ ग्यान-सुभेषज खाएँ २/३२ । २. मूर्च्छा मे : लगन-गाँठि बैठी नहिं छूटति, मगन ~ भारी २२९१ ।

मूरछाइ मूर्च्छित होकर : ध्वजा धर-धर परयौ ~ ४२२१ ।

मूरति १. मूर्ति, प्रतिमा . नैंकु रही हरि ~ हिरदै २३०२ । २ मूर्तियों को . देखि मनोहर तीनों ~ ९४३ । ३ रूप . वारी स्याम-सुदर ~ पर २००४ ।

मूरतिवंत मूर्तिमान (हे) : राग रागिनी ~ ११८० ।

मूरनि जड़ी-बूटियों . अनजानत ~ कौं जित-तित उठि दौरीं जिनि जहाँ बताई ७४८ ।

मूरप मूर्ख ~ रोगी तजै न जोइ ११८० ।

मूरा मूली : होंस होइ तो ल्याऊँ ~ ३९६ ।

मूरि १. मूल, जड़ : अब तौ जोग सिखावन आए तजि हरि जीवन ~ ४०४८ । २ जड़ी या मंत्र : सिख ~ मंत्र नहिं मानै २६०० । ३ जड़ी-बूटी : रूप-रासि सब गुन की परिमिति स्याम सजीवन ~ ३८४३ । ~ **बिनु होति मुरद** मूल (कृष्ण) के बिना मुर्दा के समान हो गई है . ध्यावनि रूप दरस तजि हरि कौं, सूर ~ — ४०६२ ।

मूरी १. जड़ी-बूटी : कृष्न सुमंत्र जियावन ~ जिन जन मरत जिवायौ २/३२ । २ मूली : ~ के पातनि के बदलैं को मुक्ताहल दैहै ३६६४ ।

मूर्छन वेहोश करने का मंत्र : मोहन ~ वसीकरन पढ़ि अग-मति देह बढाऊँ ४९ ।

मूर्छना संगीत में सात स्वरों का क्रम से आरोह अवरोह : तीनि ग्राम, इक्कईस ~, कोटि उनचास तान १३५३ ।

मूल[1] १. (पेड़ की) जड़ को . महामूढ सो ~ तजि, साखा जल नावै २/९ । २ आदि कारण, उत्पत्ति का हेतु, आधार : ~ भागवत क वेद चारि २/३७ । ३ मूलधन : और वनिज मैं नाहीं लाहा, होति ~ मैं हानि १/३१० ।

मूल[2] महत्त्व, सम्मान : अपनौ ~ या विधि सौं खोवै ८/११ ।

मूल[3] मुख्य, प्रधान : आँखि, नाक, मुख ~ दुवार ४/१२ ।

मूलनि वृक्षों : तब हा आनि अक भरि लीन्हौ, देखि छाँहँ नव ~ की ३९१० ।

मूलहु १. पूँजी या मूलधन को भी : सूरदास तेहि वनिज कवन गुन ~ माँझ गँवाए ३७९१ । २ मूल का ही : पैं ~ विसरयौ ग्यान ३७०५ ।

मूला मूल मे : तेरैं कुटिल अलक अलि : ~ परि० १/६३ ।

मूष-रोगी चूहे की वृत्ति वाला (अथवा) चोर और रोगी कलहा, कुही, ~ अरु काहू नकु न भावै १/१८६

मूसत चुराना है . निसा निमेष कपाट लगे बिनु, ससि ~ सन-सार ३३८६ ।

मूसलाधार बहुत मोटी धार : ~ टूटै चहुँ दिसि तैं ८६९ ।

मूसा चूहा : जैसैं घर बिलाव के ~ रहत विषय-बस वैसैं २/१४ ।

मूसि चुराकर : सरबस ~ देन माधव कौं २३७६ । ~ **मूसि** चुरा-चुरा कर : ~ — लै गए मन माखन जो मेरे धन ही री १९३८ ।

मूसी चुरा ली . मृग ~ नैननि की सोभा ९/६३ ।

मूसे १ चुरा ले गए, लूट ले गए . मेरेहु जान सूर प्रभु माँचे, मदन चोर मिलि ~ हौ २५१० । २ चुरा ली है ~ मन सपति सब मोरी १९३१ ।

मृग-अंक मृगांक (चद्रमा का धब्बा) : सुधा सिंधु तैं, निकसि, नयौ ससि, राजत मनु ~ १५४ ।

मृग-अकहि चन्द्रमा को : क्यों न चकोर छाँडि ~ वाको ध्यान धरै ३९२१ ।

मृग-अरि सिंह : राजति ~ की सी लक २७४४ ।

मुहवरि महुअर, तूँबी या तूँवडी नामक एक वाद्य यत्र : फूले ही बजावै मृदग ~ डफ ताल चग २९१७।

मुहाँचुही एक दूसरे के मुँह की ओर देखकर : ~ तरुनी मुसुकानी ७९९।

मुहासिव हिसाव लेने वाला, जाँच-पडताल करने वाला . सूर आपु गुजरान ~ लै जवाव पहुँचावै १/१४२।

मुहि[1] मुझ पर : पीतावर ~ वारि १४४३।

मुहूरत १ मुहूर्त्त (समय की एक माप)=दिन-रात का तीसवाँ भाग एक ~ मैं ध्रुव आयौ, एक ~ हरि-गुन गायौ १/३४३। २ ज्योतिष की गणना से शुभकार्य के निकाला गया समय सुद्ध ~ लग्न धरायौ १३२।

मुहूरति मुहूर्त्त (समय की एक माप)=दिन रात का तीसवाँ भाग : दोइ ~ आयु वताई १/३४३।

मूँए मृत्यु को प्राप्त होने पर, मरने पर : जैसैं काग काग के ~ काँ काँ करि उडि जाहीं १/३१९।

मूँछनि मूँछ पर। ~ **ताव दिखायौ** मूँछों पर ताव दिखाया अर्थात् गर्व या घमड किया : कवहुँक फूलि सभा मैं वैठ्यौ ~ — १/३०१।

मूँठि मुट्ठी मर्कट ~ छाँडि नहीं दीनी २/२६।

मूँड सिर, मस्तक। △ ~ **उघारयौ** गुरुजनों के सामने सिर खोल कर फिरने की निर्लज्जता दिखाई जिनकी सकुच देहरी दुर्लभ, तिन मैं ~ — री १/३३१। ~ **करि लीन्हे** ठग लिया है : सवै ~ — ३४४७। ~ **चढत है** ढिठाई या धृष्टता करते हैं जोइ उन करैं सोइ करि डारैं, ~ — भारी १५१८। ~ **चढाई** ढीठ या धृष्ट कर दिया है मुरली स्यामहिं ~ — १२७०। ~ **चढायौ** ढीठ या धृष्ट कर दिया है अव लौं कानि करी मैं सजनी, वहुतैं ~ — २२४६। ~ **चढी** ढीठ या धृष्ट हो गई है : तार्कैं ~ — १/९८। ~ **चढी नाचति है** अत्यत ही ढिठाई या धृष्टता करती फिरती है तार्कैं ~ — मीचऽति नीच नटी १/९८। ~ **पढि** सिर पर मत्र या टोना पढकर : कछू ~ — परज्यौ २३४७। ~ **पिरायौ** वकवास करके (शोर-गुल मचाकर) सिर मे दर्द कर दिया : तुमहीं मिलि रसवाढ वढायौ उरहन दै दै ~ — ३९१। **मूँडयौ** ~ सिर के वाल मुडाकर सन्यासी का वेप वना लिया : — ~ कठ वनमाला मुद्रा चक्र दिये १/१७१। ~ **परै** सिर पर पडती है अर्थात् व्यवहारिक रूप मे जिम्मेदारी आती है ~ — अपनैं हा २०५०।

मूँडि (सिर के वाल) साफ करा के • द्रौपदि सीस ~ मुकराए १/२८९।

मूँडयौ सिर के वाल साफ करा दिये • ~ मूँड कठ वनमाला १/१७१।

मूँढ मूर्ख : सूरदास प्रभु आक चचोरत छाँडि ऊख कौ ~ ३७३३।

मूँढनि मूर्खों से : धन-मद ~, अभिमानिनि मिलि लोभ लिए दुर्वचन सहै १/५३।

मूँद-चनक भाड मे पडा हुआ चना। △ **ह्वै रहयौ** ~ भाड मे पडे हुए चने के समान सतप्त हो रहा है • गोकुल — ~ २९६२।

मूँदत मूँदते हैं, ढकते हैं भाँडे धरत, उघारत ~ दधि माखन कै काज ७७७।

मूँदन मूँदने के लिए, वद करने के लिए : तेई ~ नैन कहत हौ ३९२४।

मूँदहु मूँद लो, वद कर लो : ~ नैन विसाल ३८८४।

मूँदि १ मूँदकर, वद करके नैन ~ सुख मौन रही धरि ३६९६। २ दवाकर • नाक - ~, जल सींचि जवहिं जननी कहि टेरयौ ५८९। ३. ढक (रही हो) : कहा रही मुख ~ भामिनी ७४२७। ४ (दीप) बुझा दिया सारँग पानि ~ मृगनैनी, मनि मुख माँझ समानी २६२४। **नूपुर** ~ नूपुरों का वजना वद कर के रोक्यौ भवन द्वार, व्रज-सुदरि — ~ अचानक ही कै ७८७। **मुख**~ **कै** चुप होकर रही — ~ — वचन वोलै नहीं २०५३। ~ **मूँदि मूँद-**मूँद कर : नैननि ~ — कह देखौ ३८५८।

मूँदी वद मूँद लिया • हरि अँखिया ~ आइ २२०५।

मूँदे १ किये सवनि ~ नैन ५९७। २ वद करके, मूँद कर . आसन-ध्यान नैन ~ सखि ३५९०। ३ मूँद लिया, वद कर लिया : नैन औचक आनि ~ २७११।

मूँदेइ मूँदे हुए ही, वद किये हुए ही • ~ आवत नैन आलस वस ७६८३।

मूँदैं मूँदे, वन्द करे . हलधर कहयौ आँखि को ~ ७३९।

मूँदो वद किया, मूँदा . आवत देखि सवनि मुख ~ १२८५।

मूँदौ १ वद करो : सूर कहै जसुमति मुख ~ २५५। २ वद करती हो, ढकती हो • कर सो कहा अग उर ~ ७९३।

मूँद्यौ १ मूँदा, वद किया . नैन उघारि वदन हरि ~ २५३। २ ढँक लिया : आवत देखि सवनि मुख ~ १७४६। ३ मूँदा हुआ है : चिवुक चारु ~ मधु मानौ ७९०१।

मूईं[1] मर रही हैं अधर मधु कत ~ हम राखि १२२३।

मूईं[2] मुरली • अधर-मधु कत ~ हम राखि १२१३।

मूक १. गूँगा मानहुँ ~ मिठाई के गुन, कहि न सकत मुख ६४८। २. मूक वना हुआ ज्यौं विनु मनि अहि ~ फिरत है ३७८०।

मूकू गूँगा : ~ निंद निगोडा भोडा कायर काम वनावै १/१८६।

मूके गूँगा/गूँगे . ~ भये जन्म के पसु लौं २८८२।

मूछहि मूँछ को। ~ **पकरि अकरतौ** मूँछ पर हाथ फेर कर

अकड़ना है, गर्व या घमंड करना है मिथ्यावाद आप जस सुनि-सुनि ~ — १/२०३।

मूठि¹ १ मूठ मेरु ~, वर-वारि पाल-छिति ९/११। २ जादू टोना से · ~ मृतक अवलनि सर मारन ३३३८।

मूठि² १ मुट्ठी · इतर नृपति जिहि उचित निकट करि देत न ~ रीती ११/१। २ मुट्ठी में खर वरि ~ उठि खेलत बालक झुठि आनत ईधन दौरि दौरि दिसि चारयौ ४२१७।

मूठिक एक मुट्ठी ~ तदुल बाँधि कृष्न कौं ४२३२।

मूठी स्त्री० मुट्ठी : ज्यौं मरकट ~ नहिं छाड़त २३१४। वि० मुट्ठी भर, जितना मुट्ठी में आ सके . द्वै ~ तदुल मुख मेले ४२४५।

मूठे नष्ट हुए, मर मिटे द्वै तरग द्वै नाव पाँव धरि ते कहि कौन न ~ ३८९१।

मूड सिर। ~ चढाए ढीठ या धृष्ट कर दिया : बारक आनि दिखाई दीन्हीं गारी ~ — परि० १/१५१। ~ चढायौ ढीठ या धृष्ट कर दिया है तैं ही उनकों ~ — २०८८। ~ **झरावै** सिर खपावे, बेकार की चखचख सुने : ऐसी को ठाली बैठी हैं, तुममौं ~ — ३८९८।

मूढ मूर्ख तब तैं ~ मरम नहिं जान्यौ जब मैं कहि समुझायौ ९/११९।

मूढता मूर्खता · बरवस ही इन गही ~ २३०६।

मूढमति अज्ञानी, भ्रष्टबुद्धि वाला, मति भ्रष्ट · मूरख, मुगध, अजान, ~ नाहीं कोऊ तेरौ ९/३१९।

मूढहि मूर्ख को बीना नाद-सँगीत सुधानिधि ~ कहा सुनैये ३८१०।

मूर १ मूल, जड़ · जद्यपि अक्रूर ~ परम गति पठावै ३४०२। २ उद्गम का कारण मोहित विकल जानि जिय सबहीं, सह प्रलय कौ ~ ९/२६। ३. मूलधन . 'सूर' ~ अक्रूर गयौ लै ३८९०।

मूरछा १ मूर्च्छा, अचेतनता, बेहोशी सूर मिटै अग्यान ~ ग्यान-सुभेषज खाऐं २/३२। २ मूर्च्छा में : लगन-गाँठि बैठी नहिं छूटति, सगन ~ भारी २२९१।

मूरछाइ मूर्च्छित होकर : ध्वजा धर-धर परयौ ~ ४२२१।

मूरति १ मूर्ति, प्रतिमा . नैंकु रही हरि ~ हिरदै २३०२। २ मूर्तियों को . देखि मनोहर तीनौं ~ ९४३। ३ रूप . वारी स्याम-सुदर ~ पर २००४।

मूरतिवंत मूर्तिमान (है) राग रागिनी ~ ११८०।

मूरनि जड़ी बूटियों अनजानत ~ कौं जित-नित उठि दौरीं जिनि जहाँ बताए ७४८।

मूरष मूर्ख . ~ रोगी तजै न जोइ ११८०।

मूरा मूली : हीँम होइ तौ ल्याऊँ ~ ३९६।

मूरि १. मूल, जड़ अब तौ जोग सिखावन आए तजि हरि जीवन ~ ४०४८। २ जड़ी या मंत्र सिख ~ मंत्र नहिं मानै २६००। ३ जड़ी-बूटी : रूप रासि सब गुन की परिमिति स्याम सजीवन ~ ३८४३। ~ **बिनु होति मुरड़** मूल (कृपा) के बिना मुर्दा के समान हो गई हैं . ध्यावनि रूप दरस तजि हरि कौ, सूर ~ — ४०६२।

मूरी १ जड़ी-बूटी कृपा सुमंत्र जियावन ~ जिन जन मरत जिवायौ २/३२। २ मूली · ~ के पातनि के बदल कौ मुक्ताहल दैहैं ३६६४।

मूर्छन बेहोश करने का मंत्र · मोहन ~ वसीकरन पढि अग-मनि देह बढाऊँ ४९।

मूर्छना सगीत मे सात स्वरों का क्रम से आरोह अवरोह : तीनि ग्राम, इकईस ~, कोटि उनचास तान १३५३।

मूल¹ १ (पेड़ की) जड़ को : महामूढ सो ~ तजि, साखा जल नावै २/९। २ आदि कारण, उत्पत्ति का हेतु, आधार : ~ भागवत के पेड़ चारि २/३७। ३ मूलधन : और बनिज मैं नाहीं लाहा, होति ~ मैं हानि १/३१०।

मूल² महत्त्व, सम्मान : अपनौ ~ या विधि सौं खोवै ८/१२।

मूल³ मुख्य, प्रधान . आँखि, नाक, मुख ~ दुवार ४/१२।

मूलनि वृक्षों तब हा आनि अक भरि लीन्ही, देखि उहैं सब ~ की ३९१०।

मूलहु १ पूँजी या मूलधन को भी . सूरदास तेहि बनिज कवन गुन ~ माँझ गँवाए ३७९१। २ मूल का ही : पै ~ बिसरयौ ग्यान ३७०५।

मूला मूल में तेरैं कुटिल अलक अलि - ~ परि० १/६३।

मूष-रोगी चूहे की वृत्ति वाला (अथवा) चोर और रोगी कलहा, कुही, ~ अरु काहू नकु न भावै १/१८८

मूसत चुराता है निसा निमेष कपाट लगे बिनु, ससि ~ सत-सार ३३८६।

मूसलाधार बहुत मोटी धार ~ टूटै चहुं दिसि तैं ८६९।

मूसा चूहा जैसें घर बिलाव के ~ रहत विषय-बस वैसौ २/१४।

मूसि चुराकर सरबस ~ देत माधव कौं २३७६। ~ **मूसि** चुरा-चुरा कर . ~ — लै गए मन माखन जो मेरे धन हो री १९३८।

मूसी चुरा ली मृग ~ नैननि की सोभा ९/६३।

मूसे १ चुरा ले गए, लूट ले गए मेरेहु जान सूर प्रभु साँचे, मदन चोर मिलि ~ हौ २५१०। २ चुरा ली है ~ मन सपति सब मोरी १९३१।

मृग-अंक मृगांक (चद्रमा का धब्बा) सुधा सिंधु त, निकसि, नयो ससि, राजत मनु ~ १५४।

मृग-अकहि चन्द्रमा को : क्यो न चकोर छाँडि ~ वाकौ ध्यान धरै ३९२१।

मृग-अरि सिंह राजति ~ की सी लक २७४४।

मृगछाल मृगछाला पर • लोचन मूँदि ध्यान चित चितवत, धरि आसन ~ ३७३८।
मृगछाला हिरन की खाल : ~ कहँ पाऊँ ३५३८।
मृगछौना हिरन का बच्चा इक दिन ~ कहुँ गयौ ५/३।
मृगज १. मृग का बच्चा, मृग शावक • मीन खजन ~ वारौ १८३७। २ मृगों के बच्चे, समस्त मृग शावक खजन मीन ~ लज्जित भए ६६५।
मृग-तृष्ना मृग-मरीचिका, जल की लहरों का वह मिथ्या-भ्रम जो रेगिस्तान मे बालू पर कडी धूप पडने पर होता है • ~ आचार-जगत जल ता सँग मन ललचावै २/१३।
मृगनि मृगों ने : मानौ ~ अमी भाजन भरि, पियत न बन्यो-ढहू ढरकायौ २६११।
मृगनिहू मृगों . सग ~ कौ नहिं करै ५/३।
मृग-नृप-खीन सुभग कटि मृगो के राजा (सिंह) के समान चीण (पतली) और सुन्दर कमर . ~ राजति ११९७।
मृगनैनी मृग के समान नेत्रों वाली, मृगाची : ~ हरि कौ मन मोहति ७२१।
मृगपति चद्रमा : कर-पल्लव उडुपति रथ खैंच्यौ ~ वैर करयौ ३३९२।
मृगवारे मृग-शावक • राधे तेरे नैन किधौं ~ २७४०।
मृगमद १ कस्तूरी : मसि-बिंदुका, सु ~ भाल ८४। २ कस्तूरी का कुडल लोल तिलक ~ रुचि ३८१९।
मृग माला मृगों का समूह, मृगों की पक्ति परयौ दरस दच्छिन ~ २९४४।
मृगया आखेट, शिकार एक दिवस ~ को निकस्यो कठ महा-मणि लाय सारा० ६४४।
मृगराज सिंह (कटि, कमर) : कमल ऊपर सरल कदली, कदलि पर ~ सा० ल० १४।
मृगा १ मृग, हिरन ज्यौं ~ कस्तूरि भूलै, सु तौ ताके पास १/७०। २ मृग (मारीच) . ~ चरि-चरि जाइ ९/६०।
मृगानी मृगाणी, मृगशिरा, नक्षत्र मण्डली डरि आइ जु ~ २७९९।
मृगिनी हिरनी, मृगी नाचन-कूदन ~ लागी १/२२१। ~ **रची** हिरनी बनाकर . ब्रज जुवती ~ — तिनकौं फँदवारि १८२४।
मृगी हिरनी : कहि धौं ~ मया करि हमसौं १०९१।
मृणाल कमल की नाल जैसी भुजाएँ : द्वै ~, मालूर उभै, द्वै कदलि-खभ बिनु पात २११२।
मृत मृत्यु का देवता, काल : जच्छ, ~, बासुकी नाग ९/१२९।
मृतक १ मरा हुआ (प्राणी) : लै-लै फिरे नगर मैं घर-घर जहाँ ~ हो हौं १/१५१। २ मरे हुए : देखे ~ वच्छ बालक सब ५७८। ३ मरे हुए के • हूजत ~ समान १३५६। ~ ह्वै मरकर . सो मम पिता ~ — परयौ ७/२। △ ~ **जियत** मरी हैं पर जी रही हैं हम तिय ~ -- ३८४६।
मृतकनि मरे हुओं . जे कारे ते सबै कुटिल हैं ~ कै जो हता ३९५५।
मृतकहुँ मरे हुए को। ~ **तैं पुनि मारे** जो स्वय ही मृतक समान थे उन्हे ही मारा अर्थात् जिन पर पहले से ही अपार सकट था, उन्हे और भी कष्ट मे डाल दिया. सूरदास हमकौ उलटी विधि ~ -- ४२५२।
मृत्तिका मिट्टी। ~ **लाइ** मिट्टी लगाकर कियौ स्नान ~ — १/३४१।
मृत्यु-मुख मौत का मुख अर्थात् मृत्यु से निकट होने की स्थिति तौ भलैं ~ तैं उबारैं ९/१२९।
मृत्युहि मृत्यु को या मृत्यु के देवता काल को . कहौ तौ ~ मारि डारि कै खोदि पतालहिं पाटौं ९/१४८।
मृदंग एक वाद्य-यंत्र बाजत ताल ~ जत्र गति १९।
मृदंगी मृदग बजाने वाला • मुरली नाद मृदग ~ २३८४।
मृदु १ मुलायम, कोमल अनि ~ चरन पथ बन विहरत ९/४३। २ मनोहर, मीठो • 'सूर' स्याम ~ मसुकनि ऊपर, लोचन लीन्हे मोल २२७६। ३ सुकुमार, सुन्दर नवकिसोर मोहन ~ मूरति ३६०८। ४ मधुर, कानों को भली लगने वाली . स्याम अधर ~ सुनत मुरलिका चकित नारि भई ६२१। ५ मृदुल (दृष्टि से) तनु त्रिभग कीन्हे ~ जोहन २२१९।
मृदुल १ कोमल, स्पर्श करने मे मुलायम • कमल-नाल तैं ~ ललित भुज ३५७। २ मधुर, सुनने मे कानो को भली लगने वाली • मदन मोहन बेनु मृदु, ~ बजावै री ६२९। ३ सुकुमार, सुन्दर मजु मेचक ~ तनु १०९। ४ कृपालु, दयालु सूर स्याम सरवग्य कृपानिधि करुना ~ हियौ १/१२१।
मृनाल कमल की नाल अर्थात् भुजाएँ द्वादसै ~ द्वादस कदली खभ ३८६७।
मृनाल-अरि ता अरि कमलनाल के शत्रु (हाथी) का शत्रु, ग्राह = ग्रहण करना पिक, ~ रूपहिं, तैं बपु आप धरयौ २७५०।
मृषनि भूठे जल (मृग-जल) को • देखि ~ कुरग धावत २३८०।
मेटि मिटाकर, दूर करके सूर-प्रभु कौं मिलि, ~ भली अनभली १६४६।
मेडवारी मेडवारियाँ (मेंड़ बँधी हुई क्यारियाँ) : भूषन विविध भाँति ~ २४७०।
मेखला किंकिणी, करधनी . कनक मनि ~ राजत ६३३।
मेघ १ बादल : सजल ~ घनस्याम सुभग वपु ४७८। २

बादलों की : मानौ ~ फुही २४। ३ मेघ, पयोधर, अर्थान्तर से कुच, स्तन : लगे हुलस्न ~ सा० ल० ६०।
मेघ-आडवर बादलों का जमघट, बादलों की घटा : अकुलाइ राधिका देखि ~ १९९१।
मेघध्वज एक राजा, जो विष्णु का भक्त था ~ नौं भनौ विवाह ४/१२।
मेघन मेघों के, पयोधरों के, अर्थान्तर से स्तनों के · ~ मद्ध, नखा-जातिक प्रिय सा० ल० ४९।
मेघ-नायक मेघों के राजा, इन्द्र : मनौ ~ रितु पावस, बान वृष्टि करि मैन कँपायौ ९/१४१।
मेघनि १ मेघों/बादलों का समूह ~ अंबर छायौ ४२४६। २ बादलों . सुनहु सुर ~ की करनी १२५६। ३ बादलों ने : ~ हारि मानि मुख फेर्‌यौ ८८१।
मेघवर्त्त प्रलयकालीन मेघों में से एक, इन्द्र का एक सेनापति : · सुनि ~ मजि मैन आए ८५३।
मेघवा इन्द्र (बादल) बारि बरषे ~ मधुर गरजाई हो परि० १/१०८।
मेचक पुं० १ नीला अंजन, सुरमा, काजल · ~ अधर निमेष पीक-रुचि २६३९। २ काला तिल · चिबुक मध्य ~ रुचि राजत २१८४। वि० काली, श्यामल · गड चखौटा ~ बिंदुली भए चिन्ह मनु चुवन करि-करि परि० १/१४।
मेटत १ नष्ट करना है · कहाँ-कहाँ नाहिं सकट ~ ९६१। २ (रीति) समाप्त करता है · सुरपति की पूजा कौं ~ ८२०। ३ मिटा रहे हैं, न रहने दे रहे हैं, पूर्ण कर रहे है: अरस-परस ~ मन साधहिं ११६४।
मेटति मिटा देती हैं, भूल जाती हैं ~ निरखि दुख मैन के दरद कौ ११५०।
मेटति मिटा देनी है, दूर कर देनी है : मैटति ~ दुख सबै ११८०।
मेटन मिटाने/दूर करने के लिए . यह रसना पावन कै कारन ~ सब जजाल सारा० १५७।
मेटनहार मिटाने वाला . सो अब सत्य होत इहिं औसर, को है ~ ९/१२१।
मेटनहारौ मिटाने वाला हो को जो याकौ ~ ९/३६।
मेटहि मिटायेंगे, दूर करेंगे . यह बिपदा कब ~ श्रीपति ४।
मेटहु मिटा दो, नष्ट कर दो · ~ त्राम दिखाइ बदन बिधु २७५२।
मेटि १ मिटाकर, समाप्त/नष्ट करके बिरह-द्वंद्व ~ ~ हरप हृदय मैं बसाई २१४९। २ दूर करके, रहने न देकर . मुनि-मद ~ दास ब्रत राख्यौ १/१७। ३ हटाकर, प्रचलित न रहने देकर : सुरपति पूजा ~ गोवर्धन पूजा कै सजोग ८३०। ४ मिटाई, भग की आग्या ~ न जाइ ०/१६१। △ ~ डारे मिटा डाला, समाप्त कर दिया हँसि ही हँसत सब ~ — २१५४। ~ धराई समाप्त कर दी . सुरपति पूजा ~ — ९००।
मेटिबे मिटाने के : ता कालिमा ~ कारन २/२८।
मेटिबैं मिटाने के लिए . अब अपनौ परिहास ~, इन्द्र रह्यौ करि ध्यान ३७४५।
मेटिहैं मिटा देंगी · आजु ~ तुम्हरी लगरी १४१६।
मेटिहौं मिटा दूँगी, पूर्ण करूँगी : ~ आजु मन सबै साधा २१२८।
मेटी १ मिटाई, नष्ट की . करम-रेख ~ नाहिं जाई ९/५९। २ दूर की, मिटा दी, नष्ट कर दी . ~ लोक-वेद कुल मेडि ११८०। ३ हटा दी, समाप्त कर दी तुम जो इन्द्र की ~ पूजा, बरसत है अति जोर ८६५।
मेटे १ मिटा दिये, माफ कर दिये · ~ अक बिपे १/२७२। २ नष्ट कर दिया ~ त्रय ताप ५२९। ३ मिटा देने से गुन ~ फल जान ३८२७।
मेटैं १ मिटाते हैं, दूर कर देते हैं · काम-बिथा तरुनिनि की ~ १४६०। २ मिटाने से : ~ क्यौंहूँ न मिटति १६६०।
मेटै दूर करे, रहने न दे : सूर स्याम ~ सताप १/२६१।
मेटो मिटा दो, दूर कर दो अगणित पाप महादुख ~ माँगत यही मुरार सारा० ६१८।
मेटौं १ मिटा लूँ, दूर कर लूँ . रिस ~ सब जी की १८९५। २ मिटाऊँगा, दूर करूँगा तुव ननु परसि त्रास-दु-ख ~ २४९३।
मेटौंगी दूर करूँगी, रहने न दूँगी · चरन चापि स्रम ~ ११४७।
मेटौ १ मिटाओ, समाप्त करो : सबनि कौ बाँटि ~ लराई ८/८। २. दूर करो, रहने न दो ~ बिपति हमारी १/१७३।
मेटयौ मिटा दिया, दूर कर दिया इन्द्र मान ~ गिरि कर धरि ३२०५। △ न ~ जाइ मिटाया नहीं जाता, (वचन भंग नहीं किया जाता) : तुम्हरौ वचन — ~ — ११/१। लिख्यौ न ~ जाइ भाग्य का लिखा हुआ मिटाया नहीं जा सकता · मैं अपराध किए मिहु मारे, — ~ — ४।
मेडि सीमा, मर्यादा · मेटी लोक-वेद कुल ~ ११८०।
मेढा नर भेड, दुबा : ~ महिष, सगर, गुडरारौ ९७६।
मेत मेद, चर्बी आनन अमी गलित जैसैं ~ ३२२२।
मेद चरबी · रुधिर ~ मल-मूत्र, कठिन कुच, उदर गध गधात २/२४।
मेदिनी पृथ्वी (पुराणों के अनुसार मधु-कैटभ के मेद से उत्पन्न होने के कारण पृथ्वी को मेदिनी कहा गया है) क्यों न

कॉपी ~ परि० १/१८० ।

मेमत मदमत्त, मस्त डारि देहु गज ~ तरैं ७/२ ।

मेर[1] १ मेल के जैसैं अपने ~ मते मैं २८६८ । २ घर की · लै चलि, अपनैं ~ उसारी २८९३ ।

मेर[2] मेरे ~ ही की हरि कठिन सकल उपाइ ११/१।

मेरनि मेड़ों (सीमा) पर अपनैं-अपनैं ~ मानौ होरी हरषि लगाई २८५३ ।

मेरियै मेरी ही यह सब ~ आइ कुमति १/३०० ।

मेरिहि मेरी ही माई ~ दीठि न लागै तातैं मसि-बिंदा दियौ भ्रू पर ९२ ।

मेरी मेरा। △ ~ **मेरी करि** मोह-माया लगा कर . अब ~ — बौरे, बहुरौ बीज बयौ १/७८ ।

मेरीयै मेरी ही निकट भएँ ~ छाया मोकौं दुख उपजावत १८५३ ।

मेरु (सु)मेरु पर्वत : कंचन ~ लजान २४४६ । △ ~ **समान** मेरु पर्वत के समान, विशाल ,तिनका सो अपने जन कौ गुन मानत ~ — १/८ । **अघ कौ** ~ पाप का पर्वत अर्थात् अत्यधिक पाप : — ~ बढाइ अधम तू अंत भयौ बल हीनौ १/६५ ।

मेरुनि मेरुओं (स्तनों) के : ~ अध तमधार धँसी री २४४७ ।

मेरु-सुता-पति ताके पति-सुत मेरु (हिमालय) की पुत्री (पार्वती) के पति (शंकर) के पति (कृष्ण) का पुत्र अर्थात् प्रद्युम्न = कामदेव : ~ ताकौं क्यों न मनावति २७४७ ।

मेरैं १ मेरा . ~ ध्यान चरन रघुराई ९/५६ । २ मेरे : नैन सुबस नाहीं अलि ~ ४०९४ । ३ मेरे (पास) : जाकी कृपा अन्न-धन ~ ८११ । ४ मेरे (मन मे), मुझमे . मैं मेरी अब रही न ~ २/३३ ।

मेरैंहि मेरे ही ये सब ~ खोज परीं २०४७ ।

मेरो १ मेरा . ~ कह्यौ न मिथ्या आइ ६/५ । २ मेरे : करो उपाय बचो जो चाहो ~ बचन प्रमानो सारा० ४८७ ।

मेरोइ मेरा ही : तातैं मन इतनौ दुख पावत, ~ कपट सनेहु ३१९६ ।

मेरौ १ मेरा · ~ मन रसिक लग्यौ नँदलालहि ३६८१ । २ मेरे : कै अपराध ओडि तू ~ ९/८३ । ३ मेरा (पुत्र) · आनु गयौ ~ गाइ चरावन ४१८ ।

मेरौई मेरा ही : ~ ज्यौं जानै माई, स्याम-स्याम कै जपति २०८९ ।

मेल संगति, अनुरूप, साथ : ते अपनैं अपनैं ~ निकसीं भाँति भली २४ ।

मेलत १ डालता है कर पग गहि अँगुठा मुख ~ ६३ । २ डालती हैं . जे कंच कनक कटोरा भरि-भरि ~ तेल-फुलल ३८१५ । ३ डालते हैं . पतुखिनि मुख ~ रग १५९७ । ४ डालते हो ते सब तजि हमरे मुख ~ उज्ज्वल भस्मी खूली ३८१५ । ५ डालते थे : जाकौं कान्ह लेत मुख ~ १५९७ । ६ डालते ही, मिलते ही · साखा पत्र भए जल ~ १७३ । ७ मिला रहे थे, थाह ले रहे थे . सिथिल रूप मन ~ वाकौं ३०७० । ८ मिला रहे · चतुरायौ ~ हैं हम सौं १६११ ।

मेलति डालती हैं . सकल सुगध परस्पर ~ २८९२ ।

मेलति डाल रही थी, पहन रही थी . उर हारावलि ~ कमलनि २७०७ ।

मेलि १ फेंक (विस्तार) . लाँबी ~ दई है तुमकौ ३५४० । २ डाल कर · सालिग्राम ~ मुख भीतर २६३ । ३ मिलाकर : दधि सुत दृष्टि ~ दविसुत मैं २७४६ । ४ डाले (रखे) काजर कुलुफ ~ मैं राखे २३७९ । ५ फेंककर काँकर ~ हने ३६६६ । ६ डालकर, मेलकर (दर्शन देकर) ~ भौंह दृढ़ फँसी २११५ । **धरचौ है** ~ लिपटाए रखा है : अरस-परस दोऊ अकम — ~ २०१० । △ ~ **मोहिनी** मोहिनी या ठगौरी डालकर · ना जानौं कछु ~ — राखे अँग-अँग भोरि ६५७ ।

मेलियै छोड दे, भगा दे . आवहु बछरा ~ २९०४ ।

मेली १ रखा, डाला, ठेला : ~ सजि मुख-अंबुज भीतर १६४ । २ डाली, फेंको अपनी भुजा ग्रीव पर ~ ३६९७ । ३ डाल दी, रख दी लै ~ पग छाहीं २६०० । ४ दी, उपस्थित की कत मैं भिच्छा ~ ९/९४ । ५. विक्रयार्थ रखी : मुक्ति आनि मदे मैं ~ ३७२४ ।

मेले १. डाले . लीन्हे छोरि चीर तैं चाउर, गहि मुख मैं ~ ४२४१ । २ डाले हुए साँची बात सबै बोलत हौ, मुख मैं ~ तुरसी ३७८८ । ३ रखे · बलि भुज सखा अंस पर ~ १३७१ । ४ मिश्रित किये : अदरख और आँवरे ~ ३९६ । △ **धरनि** ~ धरती पर पटक दिये · सुभट पद पानि धरि — ~ ३०७१ ।

मेलै १ लगाकर, मिलाकर ~ कंत आपनौ कै री २४५३ । २ डाले, पहनाये : उर ~ नदराइ कैं, गोप सखनि मिलि हार २७ । ३ डाल देगा मारै मोहिं बदि लै ~ २९४३ ।

मेलौ पहुँचाओ : गोसुत ~ खरिक सम्हार ४०३ । **बंदि लै** ~ बंदी गृह मे डाल दो बरु ए गो-धन हरौ कंस, सब मोहिं — ~ २५११ ।

मेल्यौ १ डालकर ~ जाल, काल जब खैंच्यौ १/६७ । २ डाल दिया : जिय संकट ~ ३०४० । ३ डाला, रखा : चुपकहि आनि कान्ह मुख ~ २६२ ।

मेष मेष राशि · चलत ~ अरु छींकौ ३८२८ ।

मेषला तीन लडों वाली मुंज मेखला काननि मुद्रा पहिरि ~ ३८१७ ।

मेषैं सोच-विचार। △ **करत** ~ मीन मेष निकालने लगे, टीका टिप्पणी करने लगे, चिन्ता करने लगे : मनहिं मन परस्पर — ~ २९५६।

मेह १ बादल . निकरि गए नब ~ ८८०। २ वर्षा से, वर्षा की झड़ी से : जौं लौं ~ न नख सिख भीजौं २५४८।

मेहमानी अतिथि-सत्कार। △ **करती** ~ दुर्दशा करती, मार-पीट कर अच्छा तरह गत बनाती : नट नहर की कानि करति हौं, न तु — ~ १४७९।

मेहरा वर्षा करता हुआ मेघ, बरसता हुआ बादल भीजैगो पियरो पट आवत है ~ २५४७।

मेहा मेघ, बादल • बूँदनि बरषत ~ ३२२९।

मेहु १ मेघ, बादल . नैननि बरषत ~ ४२८० २ बादल को : मोर चाहै ~ ३९२३। ३ वर्षा, वर्षा की झड़ी : ज्यौं फिरि फागुन ~ ३१९६।

मेहो बादलों को (भी) : मत्र थकायो ~ सारा० ८१२।

मैं सर्व० मैं। **पर०** १ मे जैसें मीन जाल ~ कोइन ४। २ दान मैं • मरियत लाज पाँच पतितनि ~ १/१३७।

मैंडे ढक कर • हृदै नाँफ सब ~ ३६१५।

मैडनि मेटे : छल करि ~ निमि लै जात ९/२।

मैंमत मदमत्त, मस्त : ~ द्वै गजराज अरे हैं १२०३।

मैं-मेरी १. स्वार्थ या लोभ का भाव : ~ कबहूँ नहिं कीजै १/३०२। २. मोह ममता की भावना : अब रही न मेरैं ~ २/३३। △ ~ **करि** स्वार्थ या लोभ का भाव ग्रहण करके ~ — जनम गँवावत ३०३।

मैंहु मैं भी . कुलपति कह्यौ ~ जानत हौं ४१६०।

मैंहू मैं भी उनकैं रंग ~ टरिहौं री २३१९, अब ~ टहि टेक परी २३९८।

मैं मद, मदिरा, सुरा • धिग मारग, मारग ~ मनसी सा० ल० ४५।

मैंगल हाथी अति उनमत्त निरंकुस ~ चिंता रहित असोच १/१०२।

मैत्रय पराशर के शिष्य एक ऋषि, • विदुर सो ~ सौं लह्यौ १/२२७।

मैन[1] काम, कामदेव : नेदति निरखि दुख ~ के दरद कौ ११५०। २ कामदेवों को • सूर बाल-लीला के ऊपर वारौं कोटिक ~ १०३। ३ काम-भावना • सुनत उपज्यौ ~, परत काहुँ न चैन ९८८।

मैन[2] मोम धोएँ छुटत नहीं यह कैसेंहु, मिलि पनिलि है ~ २२८१।

मैंन[3] मोमी रंग की धौरी धूमरि कारी काजर ~ मजीठी गाय सारा० ७८१।

मैननि कामदेवों के • कुल नवन रति जुद्ध कौं, जोरत बल ~ १०६३।

मैना राधा की एक सखी • दुर्वा, रंभा, कृष्णा, ध्याना ~ नैना रूप २००८।

मैंमत मदोन्मत्त, मस्त गति ~ नाग ज्यौं नागरि १७०२।

मैमता मदमत्त : दनुज-भार पुहुमी ~ २०२२।

मैमत मदोन्मत्त, मस्त : ~ भए जीव जल-थल के १०६६।

मैया माँ, माता . ~ हौं गाइ चरावन जैहौं ४१२।

मैर १ विष • जाको मोह ~ अति छूटै, सुजस गीत के गाएँ २/३२। २ लहर . मोहन मुख मुसुक्यानि मनहुँ विष जात ~ सौं मारे ७४७।

मैलौ अस्वच्छ, गंदा . इक नदिया इक नार कहावत ~ नीर भरौ १/२२०।

मो मुझे, मुझको : सूर प्रभु ~ लै जाहु तहीं ३००२।

मोइ मुझे • मति बिसारैं ~ ३९८१।

मोंहि १ मुझ : ~ गरीब की कैसिक आसा ९८०। २ मुझे, मुझको . जो तुम ~ न ल्याहु सूर प्रभु २०७।

मोहीं मुझे ही, मुझको ही तू ~ कों मारन सीखी २१-।

मो १ मेरा . हरि बिनु को पुरवै ~ स्वारथ १/२८७। २ मेरी गोकुलनाथ ~ पनि तुम्हरे हाथ सारा० ७६४। ३ मेरे : बिनु दामनि ~ हाथ बिकानी १०३४। ४ मुझ • ~ पापी तें कछु न सरी १/११६। ५ मुझे, मुझको ~ देखत कहि उठी राधिका, अक तिमिर कों दीन्ही ४१०४। ~ **देखत** मेरे देखते हुए अर्थात् मेरे रहते हुए : ~ — लछिमन क्यों मरिहै ९/१४८।

मोकति छोड़ती है . कपित स्वाम त्रास अति ~ परि० १/९४।

मोकहँ मुझको : सोऊ ~ देहु बनाइ ३/१३।

मोकूँ मुझे, मुझको अब न परत ~ कल छण हूँ सारा० ८७४।

मोकू मुझे, मुझको ~ लाड़ लड़ायो उन जो सारा० ५४७।

मोकैं मुझे, मुझको ~ सरन राखि प्रभु लीनैं ०/५।

मोको मुझे, मुझको . एक दिना बन मैं इन ~ अपनो सुधा पिवायो सारा० ७२३।

मोकौं १ मुझे, मुझको ~ देखि किनी अति घूँघट २१६४। २ मुझसे कहा दुरावति ~ १७००। ३ मुझ पर : जो बीनति ~ री सजनी, कहाँ जाहि या ही को २३४४। ४ मेरे . ~ वैरी भए कुटुंब सब ३१६९। ५ मेरे लिए यह वैरिनि ~ भई २२०१।

मोक्ष जन्म-मरण से मुक्ति . अर्थ, धर्म अरु काम ~ फल चारि पदारथ देत गनी १/३९।

मोगरे मोगरा नामक पुष्प, मेरे गले से कन ~ सौं लपटात सा० ल० ७०।

मोगरौ मोगरा, एक पुष्प विशेष : खूभौ मरुवौ, ~, मिलि झूमक हो २९०३ ।

मोच गिराती है, बहाती है सोच पक जु सनी सुदरि, ~ नैननि नीर ४१०९ । **डारौं** ~ त्याग दूँगी सूर प्रभु हिलि मिलि रहौंगी, लाज ~ — १४५३ ।

मोचत १ गिराता है, बहाता हैं : कमल-दल लोचन ~ नीर ९/१४५ । २ छोडते (हो) . जा सँग रैनि बिहात न जानी भोर भए तिहिं ~ हौ २६९० । ३ बह रहे हैं • लोचन ~ नीर ११८३ ।

मोचति गिराती है, बहाती है, चुवाती है उमँगि-उमँगि रस ~ २०५७ ।

मोचन १ मुक्त करने की क्रिया या भाव एहि थर बनी क्रीडा गज-~ १/६ । २ मुक्त करने के लिए मित्र ~ मनहुँ आए ३५१ । ३. दूर/मुक्त करने वाले . बधन भए ~ १/२७ ।

मोचहिंगे काटेंगे, दूर करेंगे : अब तिनके बधन ~ १६१९ ।

मोचि १ मुक्त करके . ~ बधन राज दीन्हौ ३११८ । २ मुक्त कर : ज्यौं दियौ गज ~ १/१९९ ।

मोचित खोली, खोल : पीतपट डारि, कचुकी ~ करन २१२९ ।

मोचै गिराती है, बहाती है सुनु बिधु-मुखी, बारि नैननि तैं, अब तू काहैं ~ ४२८० ।

मोच्छ मोक्ष, जन्म-मरण से मुक्ति : जमलार्जुन कौं ~ कराए ३९१ ।

मोच्यौ छोडा, त्याग किया : मानिनी नहि ~ मान २८११ ।

मोछौ मोचा किया, प्रकट किया . पिहित भाव बल ~ सा० ल० ८३ ।

मोट १ गठरी : जोग ~ सिर बोझ आनि तुम ३९२९ । २ मोट (पुर) राखि अधर मधु ~ २७६९ ।

मोटायौ स्थूल या मोटा हो गया है : तैं है बहुत ~ ५/४ ।

मोटी १ स्थूल, मोटी । २ बढिया, उत्तम • उपजी उपमा ~ १६४ । △ **कर्मन की** ~ अतीव भाग्यशालिनी : सूरदास मन मुदित जसोदा भाग बडे — ~ १६५ । **बुधि की** ~ कम बुद्धि वाली चतुराई अँग अँग भरी है, पूरन ग्यान न, — ~ १९०१ ।

मोटे स्थूल । △ **भाग्य के** ~ भाग्यशाली . बड़े — ~ हौ २६०९ ।

मोटौ मोटा, स्थूल शरीर वाला कह्यौ नृपति, ~ तू आहि ५/४ ।

मोतन मेरी ओर : ~ फिरि हँसि हेरयौ १७२० ।

मोति मोती . चिकुर अथ नव ~ मडल २१३३ ।

मोतिन १ मोतियों गज ~ के चौक पुराय ८०९ । २ मोतियो के : ~ चौक पुराए ९/२४ । ३ मोतियों से . ~ थार भरै १७ ।

मोतिनि १ मोतियों • माल ~ की ५१२ । २. मोतियों का : मजल ~ हार २२२० । ३ मोतियो की • सीस मुकुट, ~ उर माला २०४१ । ४ मोतियों से : कबहुँ रचि माँग ~ सँवारै २१९० ।

मोतियन मोतियों के एक समय ~ के धोखे हस चुनत है ज्वारि २०४२ ।

मोतियनि १ मोतियों की कबरी कुसुम माँग ~ मनि २९०१ । २ मोतियो से : ~ थार भरैया पगि० १/३३ ।

मोतीनि मोतियों की . चिबुक-तर कठ श्री माल ~ १०४१ ।

मोती लाड बूँदियों के लड्डू, मोतीचूर के लड्डू • सुठि ~ मीठे १८३ ।

मोतीसरी मोतियों की माला/कठी • तोरि ~ गुप्त करि धरी कहुँ १९६७ ।

मोते मुझसे • तुम सब कियौ सहाइ भयौ तव कारज ~ ४३१ ।

मोतैं १ मुझको ~ तजि उन्मत्त भए री २२९२ । २ मुझसे : ~ चूक परी मै जानी २०७५ । ३ मुझसे ही : ~ बहुरि रमावैगी २७२६ । ४ मेरे पास से : ~ गए कुभी के जर लौं २३७१ । ५. मेरे समान . सुरपति कौन बापुरौ, ~ और देव नहिं दूजा ८४३ ।

मोद आनद, प्रसन्नता, हर्ष मोद्यौ बाल बिनोद ~ अति १७८ । ~ **करि** हर्षित/आनदमग्न होकर पियौ पय ~ — घूँट साता ४४० ।

मोदक १ लड्डू . ~ माँझ कपूर ग्वालि मदमाती हो २८६२ । २ किसी नशीली चीज या औषध से युक्त लड्डू • पीन-उरोज मुख नैन चखावनि, इह बिष - ~ जात न झारि १५८५ ।

मोदति आनदित हो रही थी : मौन किए ~ मन लाए १९८७ ।

मोदनि आनन्द मे . लाल के ~ अटके २३२२ ।

मोदप्रद आनन्ददायिनी कनक बलय मुद्रिका ~ सदा सुभग सतनि काजैं १/६९ ।

मोदा पुं० आनद, हर्ष : कछु रिस, कछु मन मैं करि ~ ७९९ । वि० आनदित होकर : सुर स्याम लए जननि खेलावति हरष-सहित मन ~ २३९ ।

मोदित प्रसन्न, आनदित मन मुदित ~ मानिनी मुख माधुरी मुसुकानि २८४१ ।

मोदिहि प्रसन्नता/आनद मे • कब जननी कहि ~ रै ७६ ।

मोदी भडारी, महाजन ~ लोभ, खवास मोह के, द्वारपाल अहकार १/१४१ ।

मोधुक मछली पकडने वाला (मोदक-एक वर्ण सकर जाति) : सोई मत्स्य पकरि ~ ने जाय असुर को दीनी सारा० ६९३ ।

मोपर १ मुझ पर . भौंह ~ तनत २२८७ । २ मेरे प्रति :

पै भए रहत ये ~ जैम लोग वदाऊ २३५५।

मोपैं मुझसे : अवगुन ~ अजहुँ न छूटत १/१४७।

मोपै १ मुझसे कहा करौं ~ राखौ न जाइ छिन ३८/०। २ मेरे पास यातें प्रान तुम्हारी ~ १/१०६। ३ मेरे साथ . उनी ~ स्याम करत है ४२०५।

मोय मुझे : करो कृतारथ ~ सारा० ८००।

मोयौ लीन या मग्न किया काम-क्रोध-लोभ-मोह-तृस्ना मन ~ १/३३०।

मोर १ मेरा : चोरत हौ मन ~ २५१३। २ मेरे . आजु घरों फेंग ~ १४६१।

मोर-चंद मयूर-पंख की चंद्राकार बूटी • वन की धातु चित्रित तन ~ मोहि १८८७।

मोर-चंद्रिका मयूर-पंख की चंद्राकार बूटी धरे मुरली ~ ४१४०।

मोरज-रध्र मयूर-पंख : ~ रूप रचिकारी ३८४२।

मोरत १. मोड़ते हो . नन भिन करि ~ १४१४। २ मोड़ने पर धीरज क्यौं रहै रावरे मुख ~ २०४५। ३ घुमाता या टेढ़ा करता है सुभग भृकुटी, विधि ~ १८१४। △ न ~ अंग अंग विमुख नहीं करता है अर्थात् मिढ़ाए रहता है • सोभित सुभट प्रचारि पैज करि, भिरत — ~ — ८६७। अंग ~ अँगड़ाई लेता है कबहुँ जम्हात, कबहुँ — ~ २६३०। भौंह ~ भौंहों को सिकोड़ता है बदन सकोरि — ~ है १४१८।

मोरन मयूरों को . ~ वन बुलाइ ३३१७।

मोरन के सुर (मोरन=मारग, सुर=स्वर=राग), मारग-राग • ~ सरस सँभारत सा० ल० ९१।

मोरनि[१] १ मोरों (अनेक मोर) . हौं इन ~ की बलिहारी ४०५४। २ मोरों ने . बन ~ किधौं गाजत ६२२।

मोरनि[२] मरोड़ना, मटकाना, मोड़ने की क्रिया या भाव . सूरदास प्रभु-भाह की ~ फाँसी-नैन १६३५।

मोरवा मयूर, मोर हमारे माइ ~ वैर परे ३३०९।

मोरि[१] मेरी : ~ प्रतिज्ञा तुम राखी है सारा० ७८५।

मोरि[२] १ मोड़कर, मरोड़कर . ~ मुख, कंचुकि फारी १६१८। △ मुख ~ १ मुख मटकाकर : कबहुँ — ~ चरन देत दृग ह्वै १९८८। २ विमुख या पराजित करके तोरि धनुष — ~ नृपति की सीन स्वयंबर कीनो ९/१२५। ~ मुख १ मुख मोड़कर, सर्वथा उपेक्षा करके चलत सदा चित चोरि ~ — २/३०। २ विमुख या पराजित करके : बचन तोरि, ~ — अनुरनि ज्वाला प्रकट करी ९/९८। ~ रहे मुख मुख मोड़कर रह जाती है, साथ नहीं जाती चलत न कोऊ सँग चले ~ — नारि २/२०।

मोरियौ मोड़ना • मुख ~ जु आउ बाउ कहि १४८५।

मोरियै मोड़िए • स्याम हँसि मन ~ परि० १/४१।

मोरी[१] १. मोड़ी, घुमाई, फेरी नागरी नैन नों चिबुक ~ ६९१। २. मोड़कर रसिक हँसी मुख ~ १९०४। ३ मरोड़कर इक मुरली लई कर ~ की २८७२।

मोरी[२] मेरा अँहै कहाँ मोतिसरि ~ १९७६।

मोरे मोड़ते . मोहन सों मुख बनत न ~ ३८५४। △ मुख ~ मुख मोड़ने से, (अर्थात्) उदासीन होने से सूरदास प्रभु पछिले सेवा अब न बनै — ~ ४८८।

मोरैं[१] मोड़ता है, घुमाती फिराती है • मीत उन कहुँ अंग न ~ ७९९।

मोरैं[२] मेरे तातें यहै सोच जिय ~ ११।

मोरैं १ घुमा ले, मोड़ ले कोउ किन लै पाछे मुख ~ १६५८। २ घुमाने लगी, मोड़ने लगी विकल भई, जहँ तहँ मुख ~ ३४४। ३. मोड़ती हो • आलस तन ~ २६५८।

मोरयौ मोड़ लेता है : देखत अगनि ~ १३२७।

मोल १ मूल्य इक मुँदरी की होइगौ, कान्ह तिहारो ~ १६१८। २ मूल्य में दामनि ~ उपाधा २००७। ३ भाव में एकहिं ~ विकाने ३९८०। △ ~ लिये खरीद लिया है हमें नँदनदन ~ — १/१७१। ~ कौ लीनौ खरीद कर लिया हुआ : मोसा कहत ~ — ४८१। ~ लई बिनु दामन बिना दाम के खरीद लिया : भौह काँट कटीलियाँ (मोहि) ~ — १४५७। ~ लेहिंगे मोल ले लेंगे • सुनहु नृप कछु ~ — १५२९।

मोलनि मूल्य में पहिरि विविध पट ~ मँहगा २९०१।

मोलहिं मूल्य के बिनु ~ हठि भए पराए २३९०।

मोलें मिटा दिये धीर वचन है लै दुख ~ ९३७।

मोलैं मूल्य। △ बिकी बिनु ~ बिना दाम के ही बिक गई आपु — ~ री १६४२।

मोष मोक्ष, मुक्ति • कार्क सब आचार फलो वरु, को चाहत है ~ ३७०१।

मोसन १ मेरे लिए नह रजायसु होत ~ ११/२। २. मेरे सामने • आइ ~ बात बनावन २७५५। ३. मुझसे . महा ~ प्रीति ११/२।

मोसी मुझ सी, मेरे समान ~ ओर कौन प्रिय तेरें २७२६।

मोसे मेरे समान • ~ मुग्ध महापापी का कौन क्रोध करि तोरै ९/७८।

मोसौं १ मुझसे . ~ बैर, करै रति उनसौं २०९४। २. मुझ पर : रिच्छप तरकि बोलिहै ~ ९/७५। ३ मुझ जैसा, मेरे समान . ~ पतित न और गुसाँई १/१४७।

मोसौ मेरे समान . ~ पतित न और हरे १/१९८।

मोह १ भ्रम, अज्ञान : महा ~ में परयौ सूर प्रभु १/१६। २ ममत्व,ममता (सांसारिक माया को अपना समझने का

भ्रम) मे . उरझि ~ मिवार १/९९ । ३ प्रेम, प्रीति • मोह्यौ जाइ कनक कामिनि - रस ममता ~ बढाई १/१४७ । △ मया ~ अरुझाए सासारिक माया मोह मे उलझा दिए . यह कहि — ~ — ४ ।

मोहईं मोहित हो जाते है : कमल-नाभि क्रपोल-सुंदर, निरखि सुर मुनि ~ ४१८६ ।

मोह कौ यह गर्व सागर प्रेम के गर्व का समुद्र, प्रेम-गर्विता नायिका . ~ भरौ आइ अनैस सा० ल० १७ ।

मोहत १ मोहित या मुग्ध करता है/करते है वै मुरली धुनि जग मन ~ ३७६० । २ मोहित या मग्ध हो जाते हैं देखत ब्रज-जन ~ ५६५ ।

मोहति मोहती है, मुग्ध करती है : अतिहिं सुघर पिय कौ मन ~ ११४४ ।

मोहन पुं० श्रीकृष्ण । **वि०** मोहने वाला, मुग्ध करने वाला : ~ जमुना पानी ३३७८ । २ हरने वाले . द्वादस धनुष, द्वादसै इपुका ~ मन षट चिबुक चिह्न चित चोन ३८६७ ।

मोहन-कुंभ-मई मोहन (स्वर्ण) कलश के आकार वाले (उरोज) ता ऊपर द्वै हाटक वरनो ~ २७७८ ।

मोहन लाल श्री कृष्ण् : ~ छवीलौ गिरिधर ६१८ ।

मोहनहि १ कृष्ण को वल ~ सुनायो सारा० ५९५ । २ कृष्ण से सजनी जो ~ मिलावै ३२१५ ।

मोहना मोहन, कृष्ण • छैल छवीलौ ~ री २८८० ।

मोहनि स्त्री० १ राधा : अरस-परस ~ मोहन मिलि ११३१ । २ मोहनी मन्त्र, किसी को मुग्ध कर लेने वाला मन्त्र मोहन ~ डारी ७४० । **वि०** मोहनी, मोहने वाली, सुन्दर सूरदास प्रभु ~ मूरति २१० ।

मोहनै श्रीकृष्ण से/को : ऐसौ कोऊ नाहिनै सजनी जो ~ मिलावै २७४५ ।

मोहरिल मुहर्रिर, मुशी ~ पॉच साथ करि दीने तिनकी वडी विपरीती १/१४३ ।

मोहा राधा की एक सखी का नाम रत्ना, कुसुमा, ~, करुना ललना, लोभाऽनूप २००८ ।

मोंहि १. मुझे, मुझको ~ अलि दुहूँ भॉति फल होत ३८१७ । २ मुझे भी कै कोउ और ~ नहिं चिन्हारा ९/७६ । ३ मुझ पर जा कारन तू ~ रिसानी १७१६ । ४ मुझसे . विछुरे मदन गोपाल रसिक ~ ११०३ । ५ मेरा सूरदास ~ नाऊँ ३५ । ६ मेरी ओर समुझि अब निरखि जानकी ~ ९/७७ । ७ मेरे साथ भी : ऐसेहिं ~ करो करुनामय ९७७ ।

मोहि[1] मुझे, मुझको ~ देहु सिखाइ २१४४ ।

मोहि[2] १ मोहित करके, मुग्ध करके . मोहि फिरावत ~ ३२९१ । २ मोहित हो गई : ~ रही ब्रज की जुवती १३० । ~ **परी** मोहित हो गई, मुग्ध हो गई अर्थात् प्रेम करने लगीं • ~ — पसु-पाल सौं ८०४ ।

मोहित आसक्त, मुग्ध उमाहूँ देखि, पुनि ताहि ~ भई ८/१० ।

मोहिनि[1] १ राधा दूती एक गई ~ पै २७९३ । २ राधा के : मोहन ~ अग सिंगारत २६२८ ।

मोहिनि[2] मोहनी-मत्र, जादू की पुडिया, मोहनी विद्या : मनमोहन ~ ॲचई सी २११३ ।

मोहिनी वि० स्त्री० मोहित करने वाली • मन ~ तोतरी बोलनि १०६ । **स्त्री०** १ विष्णु का वह स्त्री-रूप, जो उन्होंने सागर मथन के पश्चात् अमृत बाटने के लिए धारण किया था ~ रूप धरि स्याम आए तहाँ ८/८ । २ विष्णु का वह स्त्री रूप, जो उक्त मोहनी-रूप का दर्शन शिव को कराने के लिए उन्होने धारण किया था रुद्र कौ वीर्य खसि कै परयौ धरनि पै ~ रूप हरि लियौ दुराई ८/१० ।

मोहिनी[2] मोहनी मत्र । ~ **डारति** मोहनी मन्त्र डालती है . प्रथमहि सीस ~ — १५८३ । △ **मेलि** ~ मोहनी माया डालकर ना जानौ कछु — ~, राखे ॲग-ॲग भोरि ६५७ । ~ **सी लाई** मोहनी सी मुवा दी • स्याम-सुदर मदन मोहन ~ — ६७८ । ~ **सी लागी** माया या जादू जैसा प्रभाव पडने से मुग्ध हो गई . मुख देखत ~ — स्वय न वरन्यौ जाई री १३९ ।

मोहियौ मोहित कर लिया है, मुग्ध कर लिया है : मन ~ इन सॉवरै हो १७९४ ।

मोही १ मुझ पर • जेते अपराध जगत लागत सब ~ १/१२४ । २ मुझे ~ कछु न सुहात ३९४४ । ३ मुझे ही, मुझ पर हो : ~ दोष लगावै २२४९ ।

मोही[1] मुझे, मुझको . ए री ~ तौ पिउ भावै २१०७ ।

मोही[2] १ मोहित/मुग्ध/आसक्त हो गई ~ सजनी साँवरै गृह, वन कछु न सुहाइ १४५७ । २ मोहित कर लिया, मुग्ध/आसक्त कर लिया तिनहीं हौं ~, मोही री १९१७ ।

मोहु[1] मोह, ममता . छॉडौ सवकौ ~ ३५३९ ।

मोहु[2] मुझसे : कपिल, कै दत्त, कहौ तुम ~ ५/४ ।

मोहूँ १ मुझे, मुझको 'सूर' स्याम ~ निदरौगे १९३२ । २ मुझको भी अत ~ न लखायौ ४९२ । ३ मैंने भी ~ सुन्यौ घटानौ १/१९६ ।

मोहू मुझ मुख की भलाई तुम ~ मौं करन आए २५४७ ।

मोहे १ मोहित कर लिया, मुग्ध/आसक्त कर लिया • मुरली ~ कुंवर कन्हाई ६५४ । २ मोहित हो गए धुनि-सुनि ~

सुर नर-नागर ११३७। ३ भ्रम में डाल दिया, भ्रमित कर दिया • मोहि माया तिरनि निर ~ ४।

मोहैं[1] १ मोहित/मुग्ध हो जाते हैं. देखत त्रिभुवन ~ ९/४५। २. मोहित/मुग्ध किये ले रहे हैं निसु भूषन सुत को मन ~ ११७। ३ मोहित किये ले रही हैं/है त्रिभुवन जन मन ~ रा २१६२। ४ मोहित हो जाती हैं • निरखि छवि स्याम मन तरुनि ~ १०४१।

मोहैं[2] मोह/प्रीति/प्रेम को छाँडि राम नयना के ~, उठि आभूषन मातु ९/७०।

मोहे १ मोहित करना है चितवत हो स्वकी मन ~ १७९४। २ मोहित करती है घन निठुरा मन ~ २१८८। ३ मोहित हो जाय, मुग्ध हो जाय : नारि के रूप कों देखि ~ न जी ८/१०। ४ मोहित/मुग्ध कर रहा हो . डार डार मनु मदन विटप तरु विकल देखि मन ~ मारा० १८०। ५ मोहित थे . देखत नहिं तिमिर भोर, मन ही मन ~ री २९५८।

मोह्यो १ मोह लिया, मुग्ध कर लिया अनन्त दै दिय कों मन ~ २७८३। २ मुग्ध हुआ या होकर . सारँग सुनत नाद-रस ~ ३२८७। ३ मुग्ध या आसक्त किया स्याम, तुम्हारा मदन-मुरलिका नैंदुक मो जग ~ ६५६। ४ भ्रमित कर दिया किधौ देवमाया मति ~ ४२३६।

मौं मैं कछु न भक्ति मो ~ १/१५१।

मौंरी कृष्ण की एक गाय पियरी, ~, गोरी, नीली, धौरी, कजरी जर्नी। ४४५।

मौज १ मन की उमंग : सुखनिधान ताकी ~ वना १/३०। २ आनंद नृप मन-मन ~ बढाय २०४०।

मौजनि आनंद मनहुँ पान करि ~ मों अति २९११।

मौड़ा लड़का, बालक स्प ~ निरखि आज ४८१।

मौन[1] चुप, चुप रहने की क्रिया या भाव। △ ~ **करयो** चुप्पी साध ली, चुप हो गया तैसेंहि मैं यह ~ —री १७७३। ~ **गही** चुप हो गए, चुप्पी साध ली सिर मटुकी मुख ~ — १६७५। ~ **गहे** चुप्पी साधकर, चुप होकर ~ — तुम बैठि रहौ ४०५१। ~ **धरि** चुप्पी साधे हुए, चुप होकर . जानी बात ~ — रहति १५८७। ~ **धरे** चुप्पी साध ली ~ — हरि कर रस लीला १७७२। ~ **धरयौ** चुप्पी साध ली, मौन धारण कर लिया • क्यौं राधा फिरि ~ — री १७७३। ~ **बने** चुप्पी साधे हुए, मौन बने हुए नहीं रही तुम ~ — ३८०३। ~ **साध्यौ** चुप्पी साध ली, मौन हो गए सुन खग मृग ~ — १०६८।

मौन[2] मोयन काढ़ौ घी के ~ ४०।

मौनऽपवाद निन्दा (सुनकर) मौन रह जाना . ~ पवन आराधन ३६३०।

मौनहिं मौन ही, चुप्पा हो मानो कछु कैहै कै ~ रैहै १६५०।

मौना मौन, चुप बोलत नहीं रहत वह ~ २८८४।

मौर[1] शिरोमणि, प्रधान लूटि-लूटि दधि खात सबन कौ नंद चोरन को ~ मारा० ८८२।

मौर[2] विवाह के अवसर पर सिर पर पहना जाने वाला एक विशेष शिरोभूषण, मुकुट ~ **बाँधि** मौर धारण करके ~ — बैठयो जनु दूलह २६१०।

मौरे बौरा गए हैं, मंजरियाँ आ गई हैं . ~ अँबुआ अरु द्रुम देखो २८५८।

म्यौं बिल्ली भी बोला। **करत म्यौं** ~ दीन बन कर या दब-कर बोलना है तिनके दामन दरस देखि कै पतित — ~ १/१५१।

म्वहि मुझे, इसको उद्धव कहत सदा ~ दासी चरण रेणु मन नारा मारा० ५७८।

य

[शब्द के आदि में तत्सम 'य' का 'ज' हो जाता है। अत 'सूर-सागर' के किन्हीं किन्हीं संस्करणों में आने वाले 'य' आदि शब्दों को इस कोश में 'ज' के अन्तर्गत देखना चाहिए। जो थोड़े से शब्द सूर-साहित्य में 'य' से आरंभ होते हैं, वे नीचे दिये जा रहे हैं।]

यक एक बन में मित्र हमारे ~ हैं मारा० ५५२।

यकताय एकदम तब उन सिंह मारि मणि लीन्हीं ऋच्छ मिल्यो ~ मारा० ६४४।

यह १ यह। २ इस ~ लै दह माल सिर अपन ८०७। ३ इसने ~ मरम न पायौ ११०१। ४ इसका कवि सौं कहा बरनि ~ जाई १००५। ५ ऐसी ~ महिमा देखा न कहूँ सुनि ८४९।

यहई यही मेर जिय ~ सोच परयौ २२२५।

यहऊ यहाँ : लीन बची ~ की बात परि० १/१३९।

यहऊ १ यह भी . ~ बचन न बढे ३३१५। २ इसकी भी : ~ करि कछु लाज ३७५७।

यहि यह ही ~ स्तुति, सेष, महेस प्रजापति ६१५१।

यहि इस . ~ विधि होरी खेलत खेलत सारा० ३०९।

यहँ १ यह ही, यही ~ जानि मन लीजै १०२७। २ यहीं है सोच लाग्यौ करन ~ भी जानकी ९/७६।

यहै १. यह • प्रभु तबहीं जान्यौ ~ ४३७ । २ यही ठाढे ~ विचारत १५०१ । ३ यही है कि : राजधरम तौ~ सूर ३९९१ । ४ इसी का पति कौ धर्म ~ प्रतिपालै १०१५ ।

यहौ यह भी काज होइ तौ ~ कीजियै २३४१ ।

या १ इस • हुती ~ ब्रजहिं अनीति ३८५५ । २ इसी, यही ~ विद्या करि मोहिं जिवावहु ९/१७३ । ३. इसके • मेरी कहा चलै ~ आगैं २१९१ । ४. इसकी : जे समुझैं ~ माहैं ३६१२ । ५ ऐसे, इस ~ जीवन तैं मरन भलौ है ९/७५ । ~ **भाइ** इस प्रकार : राजा सौ बोल्यौ ~ — ९/१ ।

याकी १. इसके ~ सरि सोउ नाहि २१२१ । २ इसकी ~ अस्तुति हम कह करिहैं २०६० ।

याकूँ इसका नारद कह्यौ तव पति है ~ वेग बढाय सारा० ६९५ ।

याकैं १ इसके : ~ गर्भ अवतरैं जे सुत ४ । २ इसके यहाँ हम आई ~ जिहिं कारन २०५९ । ३ इसको तातै अब ~ मति जारौ ९/५ ।

याके, याकै १ इसके • ~ बस मैं १/१७३ । २ इसको : ~ मारे हत्या होइ १/२८९ ।

याकौं इसको देखैं कहूँ नैन भरि ~ २१९१ ।

याको, याकौ १ इसका : ~ जाइ चौगुनी लैहौं २७४ । २ इसके • ~ मरम न जानत कछु वै ३७०४ । ३ इसको : ~ जो भावै सो होइ १२/४ । ४ इसके लिए : कहा समौ करत ~ ३१०८ ।

याते इसी से, इसलिए तुम हमको पठये गोकुल मे ~ लाड लडायो सारा० ५२९ ।

यातैं १ सर्व० इससे • इन जान्यौ ~ भयो हीनौ ३५३१ । २ इस पर फिरि न चढै रग ~ ३५४७ । अव्य० इसलिए, इसीलिए सूर स्याम ~ नहिं आए २४८० ।

यातै इससे घर है ~ दूनौ १५४१ ।

यान वाहन, सवारी • प्रभु हाँकैं रथ ~ १/२७५ ।

यामैं १ इसमे : कछु नफा है तुमकौ ~ २९८० । २ इसी से • मेरी सकल जीविका ~ ९/४१ ।

यासौं इससे • ~ मेरौ नही उवार ५८४ ।

याहि १ इसे लेहु सुदरसन ~ वचाइ ९/५ । २ इसी : ~ मिस सकुचि रही मुख न बोलै १९६७ । ३ इससे : ~ लागि को मरै हमारैं ३७२४ । ४ इसका हरि ~ सहारो ३/११ ।

याही १ इसी को • मानत ~ धाम १/७६ । २ इसी के : ~ मिम आतुर उठि धायौ १९८५ ।

याहीं १ यही • सूर कूर की ~ विनती १/२१८ । २ इसी ~ सोच मरी २०८९ । ३ इसी पर मो कुटंब ~ लग्यौ ९/४२ । ४. इसी की ~ ओट सहत सिसिर-सीत १५१६ ।

याहूँ इसका भी • ~ न पत्यात २४०७ ।

याहू १ इसे भी, इसको भी ~ सौंज सचि नहि राखी १/१३० । २ इस(मे) भी • ~ मैं कछु बाट तिहारौ १५४१ ।

यूप यज्ञ स्तम्भ देखि बन गृह ~ १२२४ ।

ये १ ये । २ इसमे भी परमातम कौं ~ नहिं दोइ ५/४ ।

येइ १ यह सुन्यौ विचार करत बल ~ ४३०३ । २ यह ही ~ चतुरनि की गौ हैं री २१६२ । ३ ये ही • मूल भागवत के ~ चारि २/३७ ।

येई ये ही कस बधन ~ करिहै ८५ । ~ **राखै** ये ही रक्षा करें : अव सब ब्रज कौ ~ — ९३६ ।

येउ १. ये भी : ~ भए हरि कैं चेरे २२२३ । २ इन : मन बिगर्यौ ~ नैन बिगारे २२२६ । ३ इनकी भी • वह अगाध कहुँ वार-पार नहिं, ~ सोभा उभरे २२३० ।

येऊ ये भी जैसी तुम तैसी हैं ~ २१६२ ।

येही १ यही ~ बात जगत मे नीकी सारा० ११३ । २ इसी : ~ दुख अति मरत बिसूरे ३५७६ ।

येहु १ ये भी करत पावक ~ ३९२३ । २ यह भी जानि मानि गुन ~ २८९८ ।

यों इस प्रकार, इस भाँति बार-बार ~ कहति जसोदा २४१ ।

यौं १ यह 'सूर' स्याम हम तौ ~ जानति २५१७ । २. इस प्रकार पिय तेरैं बस ~ री माई २०६९ । ३ इस प्रकार की • बहुरि कहति हमसौ ~ बात ९/१७४ । ४ ऐसी ~ जग की प्रभुताई १/१४७ । ~ **आए** व्यर्थ आए देख्यौ ~ — जल-रासी ९४२ । ~ **ही** यों ही, व्यर्थ ही मेरौ जिय ~ — डरै ९/४२ ।

यौंऽव यों अब • सूरदास तन ~ करौंगी ३१९६ ।

यौंही इसी प्रकार • ~ नित-प्रति ४/१२ ।

यौ इस प्रकार पील कौ देखि हरि कह्यौ ~ बिहँसि करि ३०५९ ।

र

रंक १ निर्धन, दरिद्र : ~ सुदामा कियौ अजाची १/१६४ । २ दरिद्र ने मानौ ~ महानिधि पाई ९/५९ । ३ दीन, वेचारा ~ रावन कहा आतक तेरौ इतौ ९/१२९ ।

रंकव निर्धन : ~ कौन सुदामा हूँ तें १/३५ ।

रंग[१] शोभा, छवि • वेनी माँग, भाल वेंदी-छवि नैननि अजन ~ ।

रग[२] १ आनद, क्रीडा : नोकौं व्याकुल छाँड़ि कै आपुन करें जु ~ २३१८ । २ लीला या लीलाएँ : प्रभु ~ नाना करत ३०४७ ।

रंग[३] १ प्रेम पूर्वक, अनेक प्रकार से : पातनि के दोना नद लै-लै पतुखिनि सुख मेलत ~ १५९७ । २ प्रेम मे : राधा स्याम स्याम राधा ~ २०२२ ।

रंग[४] १ शरारत, अभिनय युक्त शैतानी • इक भागन करि नाना ~ ५३३ । २ चाल, व्यवहार : तिनकी दान लेन है हमना, देखहु इनकी ~ १५५० । ३ ढग, स्वभाव • सूर अबहिं बातनि करि धरिहैं जाननि इनके ~ १९५० । ४ दगा है, बात है कबहुँ नहिं ईहिं भाँति देख्यो आजु कैसो ~ ४२७ । ५ धुन मे, मस्ती मे • खेलत स्याम अपने ~ २३४ । ६ ढोंग, अभिनय : नग प्रिय घटै देखि निज नैनन आपन ~ बनावै सा० ल० ६४ ।

रग[५] वेश मे, रूप या आकृति मे : वरन-बरन ~ ग्वाल बने ४ ।

रग[६] विचित्रता, आकर्षण सखी री सुन्दरता को ~ ६४० । अपने अपने ~ अपने-अपने मन की तरग मे . व्रीव-भ्रजन, नीर मैं ठाढी छिरकति जल — ~ १७५३ । △ ~ काछन चाल चलते हैं, ढग अपनाते हैं • सूर स्याम जितने ~ — जुवती जन-मन के गोऊ ई १५८० । △ ~ कीन्हे चाल चला, शरारत की सुनहु महरि अबहिं मेरे घर जे ~ — सो मैं ३०६ । △ ~ गए रगि प्रेम मे डूब गए ह • नदलाल के ~ — अब नाहिन बस मेरे २३९५ । △ ~ टरी रग में टलकर जैसे नारि भर्ता पर पुरुषहिं ताकै ~ — २३१५ । ~ फूले आनद मे डूबे हुए हैं : आजु ~ — कुवर कन्हाई २४५७ । ~ बनावत झूठा अभिनय करते हैं • मनहीं मन बलबीर कहत हैं ऐसे ~ — १२५ । ~ रग बहु भाँति के अनेक रगों तथा प्रकार वाले : ~ — गोपनि पहिराए ३०४२ । ~ भीनी काम क्रीडा मे लगी रही • रैनि जागि प्रीतम क सग ~ — १६९४ । ~ भीने १ काम-क्रीडा के सुख मे मग्न होकर नवल निकुज, नवल रस ढोऊ राजत हैं अनिमय ~ — २१७६ । २ (होली मे छोडे गए) रग से भीगे हुए . खेलत हे अति रमे ~ हा २८६३ । ~ भोए कामक्रीडा के आनन्द में डूबे हुए : लालन सौं रति मानी जानी, कहे देत नैना ~ — २६६३ ।

रँग धारी रगों से युक्त : सुर धनु की छवि रुचिर देखियन, बरन बरन ~ ११८८ ।

रँगना रँगना, धीरे धीरे घिसटना मनिमय आँगन नदराइ कौ बाल गोपाल करै तहँ ~ ११३ ।

रंगनौ रग की : पहिरे चीर सुरग सारी चूट चुह चूनरि बहु ~ २८३० ।

रगवद (बदरग, बद=कु+रग=कुरंग=हिरन) मृग : ~ के सदृश सब दिन करत नीकन जान सा० ल० ६९ ।

रग बिलास काम क्रीडा : मिलि करत ~ १०८२ ।

रगभूमि[१] रग भूमि मे, लीला क्षेत्र मे • नवल नद नदन ~ आए ३०६० ।

रगभूमि[२] युद्धस्थल, रण क्षेत्र . ~ मैं कस पछारो १७६ । ~ करि अखाडा करके, अखाडे मे चुनौती देकर : ~ — मल्लनि मार्यो १६१९ ।

रगमैगि रगा हुआ, रग-बिरगी • ~ सिर सुरँग पाग लटकि रही बाम भाग १३८४ ।

रगमैगे आनद विभोर ह . अति लोहित दृग ~ २८६३ ।

रगमगी रग भरिकै काम-क्रीडा के सुख मे निमग्न तथा समागम से पूर्ण सतुष्ट होकर : डगमगात, ऐंठात, जँभावत आई ~ २०११ ।

रंग रन युद्धोत्साह, रण का रग थाके ~ की छवि छाजत हार मान नहिं रहत निहोरा परि० १/५७ ।

रगरलियाँ आमोद-प्रमोद मे, हँसी मजाक मे : एक परस्पर बेनी गूँथनि मन भावति ~ २६२० ।

रग-रसार रग रगीला मनि लाल मानिक जटित भँवरा, सुरँग ~ २८४१ ।

रगराँची रग (प्रेम) मे रगी हुई है/हो • राधा त हरि क ~ १८९७ ।

रगराती १ अनुरक्त कुबिजा भई स्याम ~ तात सोभा पाई १/६३ । २ क्रीडा या आनद मे अनुरक्त हुई : राधे रात सुरत ~ सा० ल० ५ ।

रंगराते १ अनुरक्त हुए . भामिनि कुबिजा सौं ~ ३१५३ । २ अनुरक्त रहना है : हरि-पद-पकज पियै प्रेम रस ताही कै ~ १/४० ।

रग-रास रास-क्रीडा : सूर प्रभु प्यारी प्यारे सग करि ~ २०१० ।

रगरेजिनी कपडे रगने वाली जावक सौं कहँ पाग रँगाई ~ मिली कोउ बाल २४८५ ।

रग-सारौ (रगों का सार, उत्तम रग = लाल रग) लाल : नीतन सौं ~ सा० ल० ८३ ।

रंगहि रग (प्रेम) मे . राधा हरि के ~ राँची १७१३ ।

रगहि रग (प्रेम) मे सूर स्याम कै ~ राँची १८५८ ।

रग-हिडोल झूले की क्रीडा, झूले का खेल तैसियै जमुना सुभग जहँ रच्यौ ~ २८४० ।

रँगहीं छवि पर रीझै वा ~ २२३८ ।

रगा राधा की एक सखी हमा ~ हरषा जाउ २००८ ।

रगावैं रँगवाते ह . सोभित चीर दच्छिनी जिहिं अँग, भगुए तिन्हें ~ परि० १/१८८ ।

रंगि रग . ~ गए सिगरे अटा अटारी २८७१।

रंगी क्रि०अ० रग गई, अनुरक्त हो गई . हौं ~ अब स्याम मूरति १६५९ । वि० रँगी हुई है, अनुरक्त है · राधा स्याम रग ~ १९२८ ।

रँगीले प्रेमी, रसिक स्याम रँग रँगे ~ नैन २२५१ ।

रँगे क्रि० अ० १ रग गए हैं, अनुरक्त हो गए हैं स्याम रँग ~ रँगीले नैन २२५१ । २. रँगी हुई हैं : सूरदास जे ~ स्याम रग ३५४७ । क्रि० स० रग लिया है जे पहिलै मन ~ स्याम रँग ३९८५ ।

रँग्यौ रँग गया है तिहिं रग सूर ~ १६५८ ।

रंच १ लघु, कम ~ राजत आज सा० ल० २ । २ थोडा : ~ उघरत देख नीकन सा० ल० ३२ । ३ थोड़े से . ~ काँच-सुख लागि मूढ मति कचन-रासि गँवाई १/३२८ ।

रंचक १. थोडे से : ~ दधि के काज जसोदा बाँधे ३१६२ । २ थोडे मे ते क्यौं तृप्त होत अब ~ २३४३ । ३ थोडा सा ~ बिरह हुतौ इहि गोकुल ३७९३ । ~ ह्वै छोटे से बनकर, नन्हे से होकर . रहे छपाइ सकुचि ~ २८६ ।

रँचिबौ अनुरक्त होना रे मन छाँडि बिषय कौ ~ १/५९ ।

रजत प्रसन्न/अनुरक्त करते हैं : वे उठि प्रात अनत मन ~ ३७६० ।

रंजित रगा हुआ, युक्त · अति बिराजत बदन बिधु पर सुरभि ~ रेनु १/३०७ ।

रंजी रग/मिल गई थीं : ज्यौं चूनौ-हरदी रग ~ १६३१ ।

रध्र छिद्र : जैसे फिरति ~ मग अँगुरी २१४१ । ~ झरिबौ छिद्रों से (मद का) झरना · गड मधि ~ — सुखान्यौ ३०५४ ।

रंध्र-चरन छिद्र रूपी पैरो को : मुरली हरि कौं नाच नचावति, पौढति अधर, चलित कर-पल्लव, ~ पलुटावत १३०५ ।

रंध्रनि छिद्रो पर : अँगुरी ~ राजति १३३९ ।

रध्र-मग छिद्र मे जैसैं फिरति ~ अँगुरी २१४१ ।

रंभा[1] पुराणानुसार इन्द्र-सभा की एक अप्सरा का नाम, जिसको इन्द्र ने विश्वामित्र की तपस्या मे विघ्न डालने के लिए भेजा था ~ कौ मान मिट्यौ ६४९ ।

रंभा[2] राधा की एक सखी : दुर्वा, ~ कृष्ना, ध्याना, मैना, नैना रूप २००८ ।

रभा पति सुत सत्रु पिता रभा (एक अप्सरा) के पति (इद्र) के पुत्र (अर्जुन) के शत्रु (कर्ण) के पिता (सूर्य) पतग अर्थात शलभ, पतिगा ~ ज्यों नव अहि अत न तोलै सा० ल० ४१ ।

रई १. अनुरक्त हुई थी, रमी थी कहाँ रहीं हम काहि ~ १५९१। २ अनुरक्त होकर : मनमोहन के रूप ~ ७७१ ।

रई[1] मथानी · बासुकी नेति अरु मदराचल ~ ८/८ ।

रई[2] १ अनुरक्त रहती है ज्यौं बिट - नारि भवन नहिं भावत औरहिं पुरुष ~ २३७५ । २ अनुरक्त हुई, रग गई पिय कैं सँग रँग राग ~ री २६६४ ।

रई[3] खाक, राख, चूर्ण भई सकल तन बिरह ~ री ३२६४। ~ - रई कण कण जा रस कों ब्रत करि तनु गारयौ कीन्ही ~ — १२४० ।

रए १ अनुरक्त हो गए हैं . नैना नीकै उनहि ~ २२३३ । २ अनुरक्त हैं . बिरहिनि प्रेम ~ ३५८८ ।

रकत खून का चापि ग्रीव हरि प्रान हरे, दृग ~ प्रवाह चल्यौ अधिकानी ७८ ।

रखवानी रखवाली कहा कियौ करि करि ~ १३९८ ।

रखवार रखवाला है . यह ब्रज कौ ~ १३९२ ।

रखवारि रक्षा करने वाली . नारि बदरौला रही बृषभानु घर ~ ८३७ ।

रखवारी स्त्री० रखवाली . कहत सूर उर तप्यो भोर भयौ हम बैठी ~ २४८६ । क्रि० अ० १ रखवाली करता रहता है . धेनुक असुर तहाँ ~ ४९९ । २ रक्षा कर रही हैं : बदन-सुधा, सरसीरुह-लोचन भृकुटी दोउ ~ १८०९ । ३ रखाया गया है, नियत्रित किया गया है : मन ममता रुचि सौं ~ पहिलै लेहु निबेरि १/५१ ।

रखवारे रक्षक : सिर ऊपर बैठे ~ १० ।

रखवारैं रक्षा करने वाले (कृष्ण) को सो अपनाइ लियौ ~ १२२९ ।

रखवारो १ रखवाला दूरि गयौ ब्रज कौ ~ ३३२० । २. रखवाले है बल कौ बीर ~ ४०३० ।

रखवैया रक्षक, रखवाला जहाँ न कोऊ हो ~ ३३५ ।

रखाग्यौ रक्षा की, रख ली · तिहि कारन मै आइ कै तुव बोल ~ ७१६ ।

रघु-आन रघु की मर्यादा को, रघुवश की मर्यादा को देहौं राज बिभीषन जन कौ लक पुर ~ चलावन ९/१३१ ।

रघुकुल १ राजा रघु का वश, राजा रघु सूर्यवशी राजा दिलीप और सुदक्षिणा से उत्पन्न पुत्र थे, राजा दशरथ और राम इन्ही के वश मे उत्पन्न हुए ये इसीलिए इन्हे रघुवशी कहा जाता है कैतिक ये तिमिर निसाचर उदित एक ~ के भानुहिं ९/९५ । २ रघुवश मे . ~ प्रगटे हैं रघुबीर ९/१८ ।

रघुकुल-कुमुद-चद रघुवश रूपी कुमुद के लिए चद्रमा के समान ~ चिंतामनि, प्रगटे भूतल महियाँ ९/१९ ।

रघुकुल-भान रघुवश के सूर्य (राम) : जरिहै लक कनकपुर तेरौ उदवत ~ ९/७९ ।

रघुकुलहीं रघुवंश में ही : नृप भए ~ ९/९१ ।
रघुनंदन राम की : यह सीता जो जनक की कन्या, रमा आपु ~ रानी ९/११६ ।
रघुनाथ १ राम के : चितै ~ वदन की ओर ९/२३ । २ राम (ईश्वर) की : जे ~ सरन तकि आए १/३४ । ~ दुहाई राम की शपथ है : सूरदास मिथ्या हहिं भाषत, मोहिं ~ — ९/१४८ ।
रघुपति १ राम : ~ दसरथ कथा सुनी ही ३१६८ । २ राम का : ~ काज करौ ९/९८ । ३ श्रीराम के : जिहिं विधि देखौं ~ पाइ ९/८७ ।
रघुवंस रघुवंश के : ~ तिलक दोउ उतरे सागर तीर ९/११५ ।
रघुवर रामचन्द्र : जनकसुता-पति हे ~ से ९/१४० ।
रघुवीर १ श्री राम ने : कोप करयौ ~ वीर जव परि० १/३ । २ राम से : जे जाँचे ~ ०/१६ । ३ राम की : सब राच्छस ~ कृपा तैं ९/१४३ ।
रघुराइ राम के : सब तजि भजौ चरन ~ ७/२ ।
रचत १ बनाता है, निर्माण करता है : मदन ~ टकसार ३९८२ । २ बनाते हैं : कबहुँ कर आपने ~ सुमननि सेज २४४३ । ३ बनाती है, करती है : त्यौं हियैं छवि और औरै ~ चरित अपार २३०९ । ४ बनाते हो, गढते हो : ऐसे छन्द ~ पिय धनि-धनि कीन्ही करनि नई २७२० ।
रचति १ बनाती है, गूँथती है, सजाती है : कबहुँ बेनी ~ फूल सों मिलै कच २१९० । २ लगाती है : कबहुँ केसरि आड ~ दपन हेरि २१९० ।
रचते बनाते थे,तैयार करते थे, सजाते थे : ~ सेज सुमननि की नव पल्लव पुट तोरी ४२८० ।
रचन स्त्री० बनना, रचना : बात बनावन कौ है नीकौ वचन ~ समुकावै १/१८६ । वि० सुंदर, रचे हुए : हाव-भाव नैननि सैननि दै बचन ~ सुख भाषी ११७२ ।
रचना १ निर्माण, बनावट : बुधि न सकत सेतु ~ रचि राम प्रताप विचारत ९/१२३ । २ निर्माण-कौशल, रचना-चातुरी : बहुरी खेल कियौ सिसु कैसौ गृह ~ ज्या चलत पिछानी ३७१४ । ~ रची विधान बनाया है, प्रारब्ध रचा है : यह विधना ~ — ११८० ।
रचनी रची हुई/निर्मित रचना है : काल कर्म गुन-ओर अत नहिं प्रभु इच्छा ~ २/२८ ।
रचयौ १ बनाया : नीक औटि जमोटा ~ ३९६ । २ बनाया था, बना था : सीतल जल कपूर रस ~ सो मोहन अति रुचि करि अँचयौ १२१३ ।
रचाई रची हुई है, बनाई गई है : भुवन चतुर्दस की सुंदरता रावे मुसर्हि ~ १०५५ ।
रचाऊँ बनाऊँगी, निर्मित करूँगी : आनँद-कुटी ~ ११७४ ।
रचायौ १ आयोजन किया : वडौ जज्ञ राजसूय ~ जुरे विप्र बहु भारी सारा० ७३५ ।
रचायौ[1] १ आयोजन किया, विधान किया : इच्छ प्रजापति जग्य ~ ४/५ । २ सजाया है : कहि कौनैं ठाटि ~ ४३६ ।
रचि १ बनाकर, रचकर : बकासुर ~ रूप माया रह्यौ छल करि आइ ४२७ । २. सजा-सँवार कर : ~ विरचि तुव बनक बनाई २४३६ । ~ **कपट-चतुराई** कपट व चतुराई करके : सूर स्याम ~ — जुवतिनि कै मन यह भरमायौ १०१० । ~ ख्याल (नई) लीला करके : अनर्वान भए ~ — १०८९ । ~ पचि परिश्रम से तैयार कर : सेज ~ — सान्यौ भवन निकुंज २७८७ । ~ **विरचि** सजा-सँवार कर : ~ — मुख भौंह छवि लै चलति चित्त चुराइ १/५६ । ~ **रचि** १ बना बना कर, बड़ी लगन तथा प्रेम से : राधा ~ — सेज सँवारति २०२९ । २ अच्छी तरह से, पूर्ण रूप से : केसरि को उबटनौ बनाऊँ ~ — मैल छुड़ाऊँ १८५ । ~ **राखी** रच खड़ा किया हो : मनो विस्वकर्मा कर अपुनैं ~ — गिरि सीम ९/७५ ।
रचिकै रचकर, करके : यह अक्रूर क्रूर कृत ~ तुमहिं लेन है आयौ २९७५ ।
रचित रचा/बना हुआ : रचा ~ सहज-साज २४४५ ।
रचिनी बनी है : उडपति विंव धरे अति सोभा सुरवाला जो ~ री परि० १/७३ ।
रची[1] १ निर्माण किया : विश्वकर्मा को आज्ञा दीन्ही ~ द्वारका आय सारा० ६०३ । २ बनाया है : हठि पचि ~ जुवति यह न्यारी ११९७ । ३ सोचा : तब इक बुद्धि ~ अपन मन मन गए नाँगि पिछवारैं २७७ । ४ बना दिया : सहज सुख निमि ग्वाल सोवत सो ~ पटसाम ११५५ । ५ सजावट कररवाई : जब सुन्यौ भरत पुर निकट भूप तब ~ नगर-रचना अनूप ९/१६६ । ६ रच रखा है : सूरदास प्रभु ~ सु है है १/२६४ । ~ **रहि** रची थी, बनाया था : सुर अरु असुर ~ रचना सों जग प्रगटहि कीन्ही सारा० ३५८ ।
रची[2] आयोजित करके, बुलाकर : सभा ~ चौपर क्रीडा करि सारा० ७६२ ।
रची[3] अनुरक्त हो जाती है, रंग जाती है : चिंता न चित फीकौ भयौ ~ जु पिय कै रंग १/३२० ।
रचे[1] १ बनाया है : होरी खेलन की विधि नीकी रचना ~ अपार सारा० १६ । २ निर्मित कर दिया : बालक बच्छ बनाइ ~ वे ही उनहारी ४९२ ।
रचे[2] रंगे हुए हैं : अपन ही रँग ~ साँवरे ३६३० ।
रचे[3] धारण किया है, पहना है : जे अँग ~ वसन आभूषन ३६५६ ।

रचै निर्माण करता है, रचना करता है . लोक ~ राखै अरु मारै ३ ।

रचैगी सोच/बना लेगी बूझत ही कछु बुद्धि ~ बडी चतुर यह नारि १५२५ ।

रचो रचना कर दी भूत प्रेत वेताल ~ बहु दौरे विधि को खान सारा० ६५ ।

रचौं निर्माण करूँ : ~ सृष्टि विस्तार भई इच्छा इक औसर २/३६ । ~ बुद्धि उपाय सोचूँ/करूँ, वहाना बनाऊँ यह ~ — इक कहा ये कहै मोहि १९५१ ।

रचौ तैयार करो लछिमन ~ हुतासन भाई ९/१६२ ।

रच्यो बनाया : निसि दिन दीन दयाल, देव-मनि बहु विधि रूप ~ २५७३ ।

रच्यौ १ रचना की : ससि तन गारि ~ विधि आनन १५८ । २ रच दिया है . सोइ होइ जो ~ विधाता ३९०९ । ३. बनाए हुए, धारण कर • कोउ आयौ सिसु रूप ~ री ६०६ । ४ बनाया गया हूँ • सूर ~ उनहीं कौ सुरपति मैं भूल्यौ तिहिं आस ९७४ । ५ रचना की थी : सरद निसा मैं रास ~ इहँ ४०५० । ~ **सच्यौ** साज-सँभाल कर रखी है जो तू ~ — या दिन कौ १४ । **खेल** ~ खेल शुरू किया . — ~ ब्रज खोरी ६०४ ।

रज[1] १ धूल, धूल को . जसुमति ~ झारति १११ । २. धूल से/ने जे पद ~ गौतम तिय तारी ९८१ । △ ~ **छानत** खाक छानता है, व्यर्थ परिश्रम करता है : परम कुबुद्धि, तुच्छ रस लोभी कौडी लगि मग की ~ — १/११४ ।

रज[2] स्त्री रज, स्त्रियों तथा स्तनपायी मादा प्राणियों के योनि-मार्ग से प्रति मास निकलने वाला रक्त मिलि ~ वीर्य वेर सम होइ ३/१३ ।

रज[3] रजोगुण, जो चचल, दु:खजनक तथा काम क्रोध लोभ आदि को उत्पन्न करने वाला माना जाता है . काल व्याल ~ तम विप ज्वाला १/५५ ।

रजक १ धोवी : ~ भजे सब देखि कै ३०४० । २ कंस का धोवी जिसे कृष्ण ने मारा था ~ मल्ल चानूर-दवानल-दुख भजन सुखदाई १/१५८ ।

रजधानी राजधानी ~ ब्रज की सुधि कीजै ४०६५ ।

रज धुंधर धूल का ववडर . सकल घोप मैं ~ है छायौ सारा० ४०८ ।

रजनि १ रात्रि मे : मनहुँ राजत ~ ३५३ । २ रात का : जानत जित ~ ताम १०१० । ३ रात की ~ प्रीति नहि थाही ३८४८ । ~ **गए** रात के व्यतीत होने पर ~ — पुनि भोर १७६१ ।

रजनिचर गुन राक्षस का गुण (क्रोध) अर्थात् मान : ~ जानि दधि सुत धरन सा० ल० १ ।

रजनिचर हित भच्छ रजनीचर (चद्रमा या राक्षस) के हितैषी (शिव) का भक्ष्य (धतूरा=) कनक, स्वर्ण • ~ सौ सा० ल० १ ।

रजनी १ रात्रि चारयौ जाम ~ विहानी, भयौ प्रात २०३४ । २ रात मे • ~ अति प्रेम पीर ३६०५ ।

रजनीचर राक्षस ने सीता हरि लीनी ~ अभिमानी १९९ ।

रजनीत राजनीति : हमारे बडी राज ~ सारा० ८८३ ।

रजनी-मुख गोधूलि के समय, सन्ध्या के समय क्रीडत कुंज-अटा ~ ११९३ ।

रजनीस चद्रमा को . ईस जनु ~ राख्यौ भाल तै जु उनारि १६९ ।

रजपूत क्षत्रिय थे . ध्रुव ~ विदुर दासी सुत १/११ ।

रजस्वला वह स्त्री जिसका मासिक धर्म प्रारभ हो गया हो : तिनकौ ~ दरसायौ ६/५ ।

रजा राजा : वै लखि आए राम ~ ९/११४ ।

रजाइ राज्य, राजाज्ञा . सुनहु सूर वन की वसवामिनि ब्रज मैं भई ~ १३०८ ।

रजायसु राजाज्ञा, आदेश • मोकौ राम ~ नाहीं ९/१३० ।

रजि रिझाकर, रिझाती हुई कैसें वजि ~ चली सवनि को १३६० ।

रजु १ रज्जु, रस्सी : जब ~ सौं कर गाढै बाँधे ३७५ । २ रस्सी से अलकनि ~ बाँधि धरे २२३८ । ३ रस्सी को : भुज गहि ~ ऊखल सौं जोरै ३४४ । ४ रस्सी के : परवस भयौ पसू ज्यौं ~ वस १/४७ ।

रजोगुनी जिसके स्वभाव मे रजोगुण की प्रधानता हो ~ धन-कुटुव अवगाहै ३/१३ ।

रज्जुका रस्सी, वागडोर . लपट लट की ~ सा० ल० १०५ ।

रज्वा रस्सी के देखियत है ~ सम ५७४ ।

रट १ रटना, किसी शब्द या वाक्य को वार वार कहना : हा कृष्न कृष्न ~ लागी ११८० । २ झकार, तीव्र शब्द . समर मारू कीट को ~ ३७६८ ।

रटत १ वार वार पुकारता है : दर दर ~ विहाल १/१५९ । २ पुकारती है, वार वार कहती है : निसि दिन रसना ~ स्याम गुन ३५५१ । ३ वार वार कहता है अमी वचन रुचि ~ कपट हठ झगरौ फेरि ठयौ १६७१ । ४ रटते रहते हैं शेप सहस मुख ~ निरतर तऊ न पावत पार सारा० १४६ । ५ पुकारते हुए, पुकारते पुकारते तोहिं ~ भई साँझ १६७६ । ६ वार वार शब्द कर रहे हैं जल जीवक, दादुर ~ मोर ९/१६६ ।

रटति रटती हैं, पुकारती है . निमि दिन ~ नदनदन कौं ३७६७ ।

रटति १ रटती है, पुकारती रहती है दूमरी गनि और नाहीं ~ वारवार ४१०८ । २, वार वार शब्द कर रही है पाइ पैंजनि ~ रुनझुन ११८ । ~ **फिरति** चिल्लाती (ऐमी) हुई घूमती रहती हैं • ~ —ज्यौं वकति वावरी ४०८० ।

रटन रट, पुकार . ~ सारग तैं निकासी सा० ल० ५२ ।

रटि रटकर, वार वार पुकारकर • ~ रमना छिजई ३९१८ । ~ **रटि** पुकार पुकार कर . रहति रमना नाम ~ — ३५७८ ।

रटिवौ पुकारना, रटना । ~ **करै** रटता रहता है : राम-नाम नित ~ — ७/२ ।

रटैं १ वार वार कहते हैं . चारौं वेद ~ १/२६३ । २ शब्द करता रहता है • चातक ~ चकोर न मोवै २८२६ ।

रठी रट लगाए रहती थीं • निसि-वामर गुन ग्राम ~ ९/२७० ।

रठे रट लेते हुए . आतुर अक्रूर चटे रमना हरि नाम ~ २९८५ ।

रठै १ रटता रहता है . मन मैं राम-नाम नित ~ ५/३ । २ वकती है • पुनि पीवत हीं कच टकटोरत झूठहिं जननि ~ १७४ ।

रठ्यौ स्मरण किया था • जरि नहिं भई भस्म ताही छिन, जौ हरि नाम ~ ४००२ ।

रत अनुरक्त हूँ, लीन हूँ, डूवा हुआ हूँ परमारथ सौं विरत, विषय ~ माव-भगति नहिं नेंकहु जानी १/१४९ ।

रतन १ रत्न, मणि . ~ चौदह तहाँ तैं प्रगट होहिं तव ८/८ । २ रत्नों परवत सात ~ कैं दीने ३२ । ३ रत्नों से : ~ भूमि सव छाई २१ । ४ रत्न को, अमूल्य वस्तु को ~ छोरि दियौ माटी ३५९५ । ५ रत्न (नीलम) की . कनक भू पर ~ रेखा १६६ । ~ **सौ** रत्न के ममान, वहुमूल्य ~ — जनम गँवायौ २/३० ।

रतनारे रक्तिम, लाल . अव-मोचन लोचन ~ १२०८ ।

रतनावल रत्नों की अवली अर्थात् आभूषण तथा रत्नावली अल कार : 'सूर' स्याम ~ पहिरौ मा०ल० ७१ ।

रतान्यौ रत हो गया है, अनुरक्त है . कीधौं स्याम हटकि है राख्यौ कीधौं आप ~ १८९३ ।

रतालू रक्तालु, पिंडालू नामक एक कद जो तरकारी वनाने के काम आता है • सुन्दर रूप ~ रातौ १२१३ ।

रति[1] दक्ष प्रजापति के द्वारा उत्पन्न कामदेव की पत्नी जो सौंदर्य मे सर्वोपरि मानी गई है . फूली ~ अँग अँग ३४ ।

रति[2] १ काम-क्रीडा, मभोग पर तिय ~ अभिलाष मन-पिटरी लै मरतौ १/२०३ । २ प्रेम, प्रीति मोमौं वैर करै ~ उनसौं २०९४ । ३ मोह ममता • सुत-सतान-स्वजन-वनिता ~ घन समान उनई १/५० । ~ **कौ दान** रति-दान, काम-सुख ~ — देहु मोहिं राइ ९/१७४ । ~ **जोरत** प्रेम करता हूँ : विमुखनि सौं ~ — दिन-प्रति १/१४९ । ~ **पूरन** प्रेम को पूर्ण करने के लिए . ~ — मधुकर भाग १७७७ । ~ **वाढ़ी** प्रेम वढ गया, प्रेम गहरा हो गया . अव तौं स्यामहिं सौं ~ — १६६३ । ~ **विचारि** प्रेम के कारण : ~ — जु मान कीन्हो सोउ वहि किन जाउ २०८५ । ~ **पूरि** समोग पूर्ण/समाप्त करके : ~ — अति निवल कीन्ही १९८८ । ~ **विहारैं** काम-केलि किये जा रहे थे . अन नहिं लहत दोउ ~ — १९८८ । ~ **भरी** प्रेम युक्त होकर : मधुपुरी की जुवनि सव कहति अति ~ — ३०६० । ~ **मानी** १ काम-क्रीडा की ~ — सँग नदनँदन कैं २१८० । २ विश्वास/प्रेम करती है सूरज स्याम सगुन ~ — ३७१५ ।

रतिकाल काम-क्रीडा के समय वितु ~ नगन नहिं होवहु ९/२ ।

रतिखेत काम-क्रीडा के युद्ध क्षेत्र मे : रूपे सग्राम ~ नीके २१२९ ।

रतिजुद्ध रति-युद्ध . कुज भवन ~ कौं १९६३ ।

रतिनागर वि० काम-क्रीडा मे चतुर . सूर स्याम गिरिधर ~ २०३१ । १ रति प्रवीण कृष्ण ने • सूर सुदेम आहि ~ १६८० । २ कृष्ण की : चितै राधा ~ ओर १७६१ ।

रतिनाथ कामदेव : वह रति तुम ~ हौ २५५८ । २ काम क्रीडा के स्वामी (कृष्ण) परम गुरू ~ हाथ सिर ३६९३ ।

रतिपति १ कामदेव : मधुर मूरति सु ~ न पाई ३०६० । २ कामदेव, केलि . ~ मारँग अरुन महाछवि १/९९ । ~ **जोर** रति और कामदेव के जोडे के समान सूर-प्रभु वृपभानु तनया विलसि ~ — २१७१ । ~ **वीकैं** कामदेव भी विका हुआ : सूरदास प्रभु नटवर काछे, रहत है ~ — १८२६ ।

रतिपतिहि कामदेव को भी सूर सखी राधा-माधव मिलि क्रीडत रति ~ लजाए १९८७ ।

रतिपिय कामदेव (का) . ~ वेप करे २४७२ ।

रति-विलास काम-क्रीडा ~ करि मगन भए अति २१७४ ।

रति-विहार काम-क्रीडा ~ करि पिय अरु प्यारी २१७५ ।

रति-मोह काम-क्रीडा के प्रति आकर्षण (के कारण) . भइ वेहाल ~ भारी २०३३ ।

रतियाँ रात . रोवति छिन अरु ~ ४०२९ ।

रति-रंग रति-क्रीडा मे निसि ~ जगीं ११७१ । ~ **भरे** काम क्रीडा के रग (आनद) मे मग्न राजत दोउ ~ — २०३५ । ~ **राँचे** काम-क्रीडा के रग मे रगे हुए . सूर प्रभु ~ — देखि रीझी त्रियै २६१४ ।

रतिरन १ काम-क्रीडा का युद्ध . आए ~ जीति सयाने २६३६ । काम क्रीडा के युद्ध मे . ये अति ~ रोष न मानत २१२५ ।

रति-रस सम्भोग सुख : भूपन विविध भाँति मेडवारा ~ उमगि भरे २४७० ।

रति-रस-चिन्ह सम्भोग के चिह्न ~ नारि के जानि २५३५ ।

रतिराज कामदेव (कृष्ण) को • अग अनुकूल ~ रन जै री २४५३ ।

रति-राजी प्रेम मिलन मे प्रसन्न हो गई चद मलिन चकई ~ २३३ ।

रति-रीति-राती प्रेम की रीति (भाव) मे अनुरक्त हो गई देख रहिं भेष अति प्रेम नर नारि सब वदति तजि भीर ~ ३०७१ ।

रति-संग्राम काम-क्रीडा के युद्ध मे/को : अग अग बल अपने अस्त्रनि ~ लरे २०३५ ।

रति सेज काम-क्रीडा की शय्या • ~ रुचि उपरि ताम कीन्हे २१२९ ।

रतिहि प्रेम, प्रीति • हरि स्वरूप सौ ~ विचार १२/४ ।

रती कामदेव की पत्नी, रति रमा, गौरी, उर्वसी, ~, इन्द्रवधू समेत ७०६ ।

रते अनुरक्त हैं . ~ कुबिजा बामहिं ३१८७ ।

रत्नन १ रत्नों से : अद्‌भुत भवन विराजत ~ सूरज कोटि प्रकास सारा० २४० । २ रत्नों का . पर्वत सात तिलन की कीन्हौ ~ ओघ मिलायो सारा० ३९३ ।

रत्ना राधा की एक सखी ~ कुसुमा मोहा करुना २००८ ।

रथ खा तिय दुज बारौ खा=ख=आकाश=दिशा=दिश दिशि मे रथ मिलाने मे=दिशिरथ (दशरथ) उनकी दूसरी स्त्री (कैकई) वाला=कलक • लाग गयौ याही तैं इनकौ ~ सा० ल० ३८ ।

रथन रथों पर . कुटिल तम करी चढे हैं ~ परि० १/९५ ।

रथनि रथों परि कवध भहराइ ~ तैं ९/१५८ ।

रथबाहक सारथी • कह पाडव कैं घर ठकुराइ अर्जुन के ~ १/१९ ।

रथहि रथ को ही . पारथ लै सो ~ परायौ ४३०३ ।

रथहुँ रथ भी : तौ रवि ~ अरै ३९८६ ।

रथी रथ पर सवार होने वाला योद्धा कुंजर कूल ~ रथ स्रोनित सलिल गँभीर ४१६२ ।

रद दात : दामिनि से चमकत ~ असि वर २४५५ ।

रदछद दाँत के काटे (घाव) : नासा कौ मुकता ~ पर ९३ ।

रदन दाँतों ने दामिनि घन दुति ~ दुराई २४३६ ।

रदनी दाँत चिबुक मध्य मेचक रुचि राजति विदु कुद ~२१८४ ।

रदमुद्रावलि दाँतों की छाप . ~ नाह दई री २६६४ ।

रन १ रण, युद्ध, सग्राम डोलत ग्वाल मनौ ~ जीते ३२ । २ युद्ध मे . ज्यों ~ सूर सहै सर सन्मुख ३९८६ । ३ युद्ध की : रति ~ कीच मची २४४८ । ~ **भीतर** युद्ध मे, युद्ध-भूमि मे : सेवक जूझि परै ~ — ९/१५४ ।

रन-खेत रण क्षेत्र (के) अमृत की वृष्टि ~ ऊपर करौ ९/१६३ ।

रनजीत युद्ध जीतने वाले : महा सुभट ~ पवन सुत ९/११५ ।

रनतूरा रण तूर्य, युद्ध मे बजने वाला बाजा • चरन रुनित नूपुर ~ २४५५ ।

रनधीर भीषण युद्ध मे भी धैर्य को न छोडने वाले : परम गभीर ~ दसरथ-तनय ९/१११ ।

रनबीर युद्ध मे वीरता दिखाने वाले एक तैं एक ~ जोधा प्रवल २१२० ।

रनभूमि रण-क्षेत्र मे कह्यौ तिहि जाइ ~ दल साजि कै ९/१३५ ।

रनभूमिहि युद्धस्थल मे गरजि चढयौ ~ आयौ ९/१४१ ।

रन-सूरौ युद्ध मे वीरता पूर्वक लडने वाला योद्धा . तेरौ माई गोपाल ~ १३९१ ।

रनहि युद्ध मे ~ जिताए हैं जदुराई १/२४ ।

रनित रुनझुन करते हुए चरन ~ नूपुर धुनि मानौ विहरत बाल मराल ११४ ।

रनियाँ रानी, पत्नी . चकित भई नद ~ ८३ ।

रपटै फिसल जाता है, फिसल जायेगा : पैंड पैंड चलियै तौ चलियै ऊबट ~ पाइँ ३५४४ ।

रबके लपक/झपट कर : बहै नाउ, बहै भाउ बेनु बछरा मिलि ~ ४३७ ।

रबकत लपकता है मानौ कर्नफूल चारा को ~ बारबार २६१० ।

रबकि लपक/झपट कर . ~ चढन बलबीर की ३९१४ । ~ **रबकि** १ लपक लपक कर . अबलनि ~ — पकरत हौ १४६८ । २ उछल उछल कर • ~ — हरि बैठत गोद ११९ ।

रबाब एक वाद्य जो सारगी की तरह होता है बाजै ताल मृदग ~ घोर २८५६ ।

रबि रवि, सूर्य ज्यौं राजत ~ भोर २७६७ । ~ **माथै तैं** सूर्य मध्य आकाश से : ~ — ढरकि गयौ अब ९०८ ।

रबिगत सूर्यास्त होने पर • जनु ~ सकुचित कमल जुग ६५ ।

रबि-ग्रहन सूर्य ग्रहण का • बडौ परब ~ कहा कहौं तासु बडाई ४२७५ ।

रबि तनया सूर्य की पुत्री, यमुना ~ के तीर ३७१८ ।

रबि ते चौथौ बार रविवार से चौथा दिन अर्थात् बुधवार . ~ सा० ल० ८१ ।

रबि ते त्रय जननी सूर्य से तीसरे नक्षत्र (मगल) की माता, पृथ्वी . ~ सु सुद्ध सा० ल० १०३ ।

रवि दो धर रिपु सूर्य से दूसरा नक्षत्र (चंद्रमा) को धारण करने वाले (शंकर) का शत्रु कामदेव ~ प्रथम बिसार्यौ सा० ल० ४६।

रवि पंचम सूर्य से पाँचवा ग्रह वृहस्पति=जीव या प्राण ~ संग गये स्याम घन सा० ल० २२।

रविवंसी सूर्यवंशी · ~ भयो रवन राजा ९/४।

रवि सारथी-सहोदर ता पति सूर्य का सारथी (अरुण) का सहोदर (गरुड) उसका स्वामी (विष्णु) रूप (जो) · ~ अवर लेन लजानी २६२४।

रवि-सुत यमराज के : ~ दूत बारि नहिं सकते १/२०३।

रविहि सूर्य को ~ उलूक न मानत १/२२१।

रविहू सूर्य को भी · ~ छिनक छँडाइ लिए ३६२०।

रवी सूर्य · नहिं सोभा ससि ~ १०७२।

रभस वेग, उत्साह कोक ~ रस-सिंधु फकोरी २२०२।

रमए रमता है, रमते हैं · भटकत फिरत पात द्रुम बेलिनि कुसुमाकर ~ ३५०६।

रमकत झूलते : ~ कमकत जनक सुता सग हाव भाव चित चोरे सारा० ३१०।

रमकन झूलने, पेंग मारते ~ रहत हिंडोरना पिय पीत पट फहरात परि० १/८०६।

रमकि पेंग मारकर, उछल कर : हम ~ हिंडोरैं चढ़ैं २८३०।

रमत १ रमण करते हैं, विहार करते हैं, घूमते हैं जे पद पदुम ~ वृन्दावन १/९४। २. निवास करते हो निसि लों ~ अभ्यंतर ३८४८।

रमन¹ रमण करने वाले हैं : विपिन वृन्दा ~ सुभग फूले सुमन ९८८।

रमन² पति, प्रियतम तुम रमनी वह ~ तुम्हारे १३५८।

रमनक नव खण्डों मे एक खण्ड रम्यक हिरनमय ~ भद्रासन भरत खण्ड सुखपाल सारा० ३३।

रमनि १ पत्नी श्री रघुनाथ ~ जग जननी ९/६५। २ स्त्रियों मे सूर स्याम बहु ~ रमन २०९३।

रमनिहि रमणी का हसि मुसुकान सहज स्वारथ का ~ रूप कह्यो परि० १/१३२।

रमनी प्यारी, पत्नी · तुम ~ वह रमन तुम्हारे १३५८।

रमनीक रमणीक, मनोहर · तेसोइ परम ~ जमुना पुलिन ९८८।

रमनीरमन युवतियों के साथ रमण करने वाले हो तुम बहु ~ सो तो जानति हौं १९६४।

रमा १ लक्ष्मी · ~ सहित बैकुंठ सुलावन ४८०। २ लक्ष्मी के : सेस सैन जहँ ~ सग मिलि १६०४। ३ लक्ष्मी हैं यह सीता जो जनक की कन्या ~ आपु रघुनंदनरानी ९/११६।

रमाइ रचाकर, आयोजित कर घट-दस सहस गोपिका बिलसत वृन्दावन रस रास ~ ४९७।

रमाए रोके रही इनने तुम हम पे कहा जे रैनि ~ २६८८।

रमाकांत लक्ष्मी के पति विष्णु ~ जा सुख कौं ध्यायौ ११७१।

रमापति विष्णु छुद्र पतित तुम तारि ~ अब न करौ जिय गारौ १/१३१।

रमावति आनन्दित/अनुरक्त करती है किंकिनि धुनि सुनि स्रवन ~ १४९।

रमावै रचाता है, रमाता है जाकी महिमा कहत न आवै सो वृन्दावन राम ~ ३।

रमावैगी छिपावेगी · औरनि सी मोहू कौं जानति मोसैं बहुरि ~ २७२६।

रमि १ रमण कर, लीन होकर : सूर स्याम नव रस ~ ६८७। २ निवास करके सूर प्रभु सुख दियौ निसि ~ ११३४। ~ रही बसी हुई है मन ~ — मनोहर मूरति ३९२६। ~ रहे रमण कर रहे हैं इत तें उत हरि ~ — अब तौ कुबिजा भइ पियारी ३९९५।

रमी विहार करती है, आनंद मनाती है : मुरली अधर बिंब ~ १०२८।

रमैं रमण करते हैं पर तिय ~ धर्म कहा जानैं ९/७९।

रयनि रात अजहू ~ परी प्यारे २७९२।

रयवारे रजवाड़े हो, राजा बन गये हो पीवौ छाँछ अघाइ कै कब के ~ १/२३८।

रयौ हुआ था · ताको पुत्र विरोचन ~ ८/७।

ररत रटन/शब्द कर रहे हैं मारु मोर ~ चातक पिक ३३०६।

ररिहै गिरियाती रह जावेगी सूरदास मडकी सिर लीन्हे बहुरि वैसैंही ~ १७२५।

ररे शब्द कर रहे हैं · दादुर मोर ~ २४।

ररैं पुकार मचाये हुए हैं चौंकि परति कछु तन-सुधि आवति जहाँ तहाँ सखि-सुनति ~ १६२३।

ररैं १ पुकारेगा, बुलावेगा · कत जननि कहि मोहिं ~ ७६। २ चिल्ला रही है : प्रातहि तें सिर लिए ~ १६३६।

ररैगो चिल्लाते रहोगे कथा तुम्हारी सुनत न कोऊ ठाढ़े ही अब आप ~ ३६१९।

ररौ चिल्ला/बक रहे हो कत बेकाज ~ ३६११।

रलि मिल गये हैं, अनुरक्त हो गये हैं · स्याम रंग मैं नैन रहे ~ ३८६०।

रली क्रि० अ० सिक्त होकर, मग्न हुई चली पीठि दै दृष्टि फिरावति अँग अंग आनंद ~ ७३९। २ विहार कर रहा थीं सूर सु मोहनलाल रसिक सँग, बन घन माँझ ~

२६१९। स्त्री० आनन्द, प्रसन्नता : उग्रसेन वसुदेव हलधर करत मन मन अति ~ ४१८६।

रलै डूब/मग्न हो जाता है सूरदास-प्रभु वालक लीला मन आनद ~ रे परि० १/११।

रव १ शब्द, ध्वनि : कनक मपुट कोकिला ~ २१३२। २. ध्वनि करके मद मद ~ वाजत १२२६।

रवन १ रमण (कृष्ण) : कर जोरि विनती करै सुनहु न हो रुकमिनी ~ १/१८०। २. रमण (पति) : भवन ~ की सुधि न रही तनु २४०९। ३. विहार करने वाले हैं · नँद नँदन वहु रवनि ~ वै २०८८। ४ विहार करने वाले, रमने वाले : तरुनि मन ~ सव व्रज किसोरी १७५१।

रवनि १. रमणी (नारी) : मानौ रति पति सँवारि, वनी ~ जी की री २१६५। २. रमणियाँ (गोपियाँ) · नदनदन वार ~ पथ जोहैं री १९७८। ३ स्त्रियों ने राज ~ सुमिरे पति कारन १/२४। ४ स्त्रियों से/के साथ नदनदन वहु ~ रवन वै २०८८। ५ रमणी (राधा) के · वाम भुज ~ दच्छिन भुजा सखी पर २१७०।

रस[1] १ स्वाद (जो छह प्रकार के होते हैं – मधुर, अम्ल, लवण, कड़ु, तिक्त, कषाय — इसीलिए इन्हें षट्रस कहा जाता है) : ज्यौं गूगैं मीठे फल कौ ~ अतरगत ही भावै १/२। २. रसों की सख्या छह है अत ६ की सख्या मुनि पुनि रसन के ~ लेख सा० ल० १०८।

रस[2] १ रस (ईख का) · ~ लै लै औटाइ करत गुर १/६३। २ फूल का मकरद : अग अग ~ कज नवीन ३८६७।

रस[3] प्रेम-भाव, भाव में किहिं ~ रसिक ढरै १/३५। २ प्रेम : ऊधौ यह न होइ ~ की रीति ३८५५। ३ प्रेम से : सूर स्याम ~ भरी राधिका २०५७। छकी काम-क्रीडा के सुख से उन्मत्त/मदमाती : सुनहु सूर ~ — राधिका १७२४। ~ छाके प्रेम मे डूबे हुए, प्रेम विभोर होकर · करी मुखारी अतुरई नागरि ~ — १९६५।

रस[4] रस रूप ईश्वर : रजनी गत वासर मृग तृष्ना ~ हरि कौ न चयौ १/७८।

रस[5] १ आनन्द, सुख . विषै ~ नैननि छाए १/७। २ सुख मे : हिंसा मद, ममता ~ भूल्यौ १/४७। ३ सुख का : ~ लोभी १/११४। ४ उमग, मस्ती . कोउ गावत अपने ~ माँहि ८२७। ५. मधुर, मीठी : हँसि वोले गिरिधर ~ वानी १६८५। ~ की गारि रसीली गालियाँ देति ~ — १०९८। ~ करि १ आनन्द पूर्वक, सुख से : ~ — नाचौं गाउँ वजाउँ २१०६। २ स्वाद वनाकर . पर निंदा रसना के ~ — १/५२। ~ मैं अंतर सुखद अनुभूतियों के वाद : ~ ~ विरस जनायौ ११७९।

रस-कथा रसपूर्ण कथा, रोचक वात सूरदास प्रभु, रसिक-सिरोमनि यह ~ वखानी १९०७।

रसकनि रसिकों, सहृदयों स्याम रस सहज माधुरी ~ कौ अवलेह ४०१८।

रसखेत प्रेम के क्षेत्र मे को वोलत ~ ३९६९।

रसग्या रस को समझने वाली : राधा रास · ~ १०५८।

रस-झीली रस लेती हुई : प्रेम मुदित ~ ११६०।

रसटेर आनन्द में अति आनद परम सुख सों सव दिन वीतत ~ सारा० ७०९।

रसताम रसोद्वेग . मगन ~ नहिं तनु सम्हारैं १९८८।

रसति आनन्दित होती है, प्रसन्न होती है : सूर प्रभु नागरी हँसति मन मन ~ २१५१।

रसन[1] १. जिह्वा, जीभ · तोर ~ पिक रही लजाइ २७७६। २ जिह्वा पर/से लटपटी पाग, चाल गति उलटी ~ अटपटे वैन २६८०। ३ जिह्वा एक अक वाची है अतः अर्थ हुआ — १ : मुनि पुनि ~ के रस लेख सा० ल० १०८।

रसन[2] तगडी, करधनी : ~ वसन छूटत न सभारत २९०७।

रसना १ जीभ, जिह्वा ~ गुन कहि न सकै ६४९। २ जीभ से . ~ गाइ अनेक गए तरि ३९२।

रसना-कर जीभ रूपी हाथ · तुम्हरेइ गुन ग्रथित करि माला ~ सौ टारैं २५८७।

रस-नागर रसिक : स्याम भए ऐसे ~ १५४३।

रसनाहू जीभ (का) भी ~ कौ कारज सारयौ ४/१२।

रस-निधि १ प्रेम-भाडार : सूर स्याम ~ के सागर १७९८। २ रस निधान का/को रसना जुगल ~ वोल २१३२।

रसबाद १ मजाक, विनोद : तुम ~ करन अव लागे २८१८। २ मनोरजन के लिए किया गया कलह, छेड़छाड . तुम ही मिलि ~ वढायौ ३९१।

रस-बिरह विरह के रस (सरोवर) मे : दोऊ ~ मगन भए १९६३।

रस-बिलास आनन्द विलास मे, सुख भोग मे : अपनैं अपनैं ~ काहू नहिं चीन्हौ ३९४।

रसमन्त रसवन्त, रसिक : मनहुँ सकल मण्डल मे मधुकर विहरत हैं ~ १०४८।

रसमय रस से पूर्ण ~ जानि सुवा सेमर कौं चोंच घालि पछि-तायौ १/५८।

रसमसे रससिक्त, रस से भरे हुए : अटपटे वैन ~ नैन २६३५।

रसमाते रसमग्न हो गये हैं : खजन नैन सुरग ~ २६६७।

रस-रंग काम-क्रीडा का सुख पुज वढत ~ छिन छिनहिं औरै १०४०। ~ रगे सभोग सुख से रगे हुए हैं सुदर वदन विलोल विलोचन अनि ~ — ११३६।

रस-रंजित आनन्द मग्न हैं · सुरति स्रमित स्याम ~ ३६३३।
रस-रचना रस को रचना में, सुख-सुविधा में : चौर चवाव भरे दुविधा छकि ~ रुचि धारी १/६०।
रस-रास[1] रसपूर्ण रास की : सुनहु सूर ~ नायिका सुदरि राधा रानी १०३७।
रस-रास[2] रस की राशि, पुंजीभूत रस, सुख समूह : स्याम सुख-रासि ~ भारी १८०३।
रस-रासहि रास के रस का मैं कैसें ~ गाऊँ ११७४।
रस-रासि आनद का भण्डार : अनि ~ लुटावन लूटन ६८६।
रस-रासी प्रेम मे अनुरक्त रहती हैं : जदपि हरि हम तजी अनाथ करि तदपि रहति चरननि ~ ३९२८।
रस-रीति प्रेम की रीति। ~ ठई प्रेम व्यवहार को पुष्ट किया · सूरदास फल गिरिधर नागर मिलि ~ — १७६२।
रसरेल रसरलियों मे : चढ़ा चढी को खेल सखन में खेलत हैं ~ सारा० ९०४।
रसवत रस रूप तथा एक अलकार सूर ~ देखियै सा० ल० १०५।
रस सागर आनन्द सागर, सुख-निधान (कृष्ण) : कह जानै ~ की गति ३५५९।
रस स्याम-सुधा मैं स्याम रूपी अमृत रस मे नैन परे ~ २२३५।
रसहि रस को · अलि हा कैसें कहों हरि के रूप ~ ३५३४।
रसहीं रस मे विष कौ कीट विषहिं रुचि मानै कहा सुधा ~ री १९२४।
रसाइनी रसायन वनाने वाला, रसायनी : जैसें हाटक लै ~ पारहिं आग दई ३२९६।
रसातल पृथ्वी के नीचे के सात लोकों मे छठा जहाँ दैत्य, दानव आदि का निवास माना जाता है : सत ~ सेषासन रहे २२१।
रसाल १ मधुर, मीठे : मिव वोले तव वचन ~ १/२२६। २ मनोहर, सुंदर . वाल वैस ~ पर ३५८। ३. रसिक, रसीले हमरे ~ गुपालहिं दाजौ ४२६५।
रसालहि १ मधुर, मीठे . वोलति वचन ~ १६३९। २ रसमयी . जाइ सुनन दे वेनु ~ ८०२। ३ सुदर या मरस (मकरद रस से युक्त) . गूँथे सुमन ~ १०५५।
रसाला १ मधुर, मीठे . सुनि वचन ~ ६२५। २ सुदर मनोहर कालिंदी कै कूल वमत इक मधुपुरि नगर ~ ४।
रसालिका सुदरता, प्रसन्नता · नद द्वार आनद वढ्यौ अति देखियत परम ~ ८०९।
रसि लिपटी पड रही थी एक इक मिलति हँसि, एक हरि सग ~, एक जल मध्य, इक तीर ठाढी ११५७।
रसिक १. रसिया, आनदी : सूर ~ गिरिधर चिरजीवौ। २ सहृदय, प्रेमी-हृदय वाला : किहिं रस ~ ढरै १/३५।
रसिकई रसिकता रसिक ~ जानि परी २५४१।
रसिक मनि रसिक शिरोमणि, रसिकों में सर्वश्रेष्ठ · सूरदास गोपाल ~ अकरन करन कर्यौ ३६४६।
रसिक राइस रसिकराज (कृष्ण) : रच्यौ रास मिलि ~ सौं १०४८।
रसिकहि रसिक को . सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि ~ सव गुन चहियै जू २५६०।
रसिकहि रसिक (कृष्ण) को : ~ रस लीला पर प्रीति ११८०।
रसिकिनि रसिकिनी (राधा) · उलटि चुवनि देति ~ २४५९।
रसकिनी रसकिनी : सूर प्रभु रसिक प्रिय राधिका ~ २१२९।
रसिया रसिक ~ नद कुमार १४४३।
रसीं सिक्त हैं, पगी हुई हैं · जे रस ~ स्याम सुदर ३६९८।
रसी रससिक्त हुई : करत सदन सिंगार वैठी अग अग प्रति ~ २४११।
रसील मीठी, मधुर वोलि उठी ~ वानी २६०८।
रसीले १ रसिक, रस लेने वाले गोकुल गाउँ ~ पिय कौ १७९४। २ प्यारे, मधुर हैं : सूरदास प्रभु रसिक ~ १९१०।
रसे १ रससिक्त, पगे हुए हैं रस ~ साँवरे हरि के ३७९६। २ रससिक्त हो गए . सूर स्याम रस ~ रसीले २२५०। ~ **रतिरग** काम क्रीडा में मग्न : दोउ ~ — २६२१। ~ **हौ** काम-क्रीडा का सुख लिये हो . तिय सौं ~ — २७०४।
रसै परै चू पडता है, चूने लगता है . ज्यौं विनु पुट पट गहत न रग कौं रग न ~ ३९८६।
रसोई १ पाकशाला। २ वना हुआ भोजन . षट-रस व्यजन छाँडि ~ साग विदुर-घर खाए १/२४४। ~ **कारन** भोजन वनाने के लिए भीतर चली ~ — छींक परी तव आँगन आइ ५४२।
रस्यौ मग्न रहीं, डूवी रहीं : जिनके रँग रस ~ रैनि दिन तन मन सुख उपजायौ ३५५२।
रहँट रहट, कुएँ से पानी निकालने का एक यत्र : वारवार ~ के घट ज्यां भरि-भरि लोचन ढरतु २८०४।
रहँट व टिका रहट के डोल, रहट मे लगी हुई वाल्टियाँ : स्रवन-कूप की ~ राजत सुभग ममाज २४४५।
रहत १ रहता है एते ऊपर प्रान ~ घट ३६५४। २ रहते हैं · सग ~ त्रिभुवन के राइ ८३८। ३ रह जाते हैं, हो जाते हैं सुनत वन मृग होत व्याकुल ~ चकित आइ १०८०। ४ खडा हो जाता है, स्थित रहता है : कोउ लै ~ ओट वृच्छनि की ८६०। ५ रहते हो, निवास करते हो · तुम व्रज ~ कन्हाइ १५१९। ६ रहते हुए मनसुख ~ सहत दुख दारुन २३०७। ७ रह सकता है · सूरदास

मन ~ कौन विधि ३८३५ । ८ रहती है मिर ~ मनी १/३९ । ६ रहती हू . फँखत ~ दिन-राती ३६८१ । १० रहती हैं सुरभी वियकित तृन दतनि टेकि ~ ६२० । ११. रहती थी सतत सग ~ काहू मिस ३८५२ । १२ रहते थे, रहा करते थे · ~ एकहिं ठौर २८१३ । १३ रहोगी . चिबुक उठाइ कह्यौ अब देखौं अजहूँ ~ अबोले २४५८ । १४ रहते ही जाम ~ जामिनि के बीतैं तिहिं औमर उठि धाऊँ ९/१७२ ।

रहति १ रहती हैं तदपि ~ चरननि रम रासी ३९२८ । २ रह जाती हैं बातें ई पै ~ कहन कों ३१३३ । ३ रहती हूँ आवत जाति ~ याहो पथ १५३८ । ४. रहती थीं . तब वै धेनु ~ प्रमुदित चित्त ३८५० । ५. रहेंगी · कैसें ~ रूप रस राँची ३५५७ ।

रहति १ रहती है प्यारी ~ सदा हरि कैं सँग २०२२ । २ रहती हूँ ऐसें डरति ~ हौं वाकौं २०९५ । ३ रहती हो : सुनत कैसें ~ कैसें तोहिं भवन सुहाइ हो २८०० । ४ रह जाती है, हो जाती है · जब तब ~ लजाई २२०८ ।

रहती रह जाती थी : तब कछु दूध दह्यौ लै खाते करि ~ हम कानि ३६७८ ।

रहते रहते हैं : ~ पेट समाने २२८९ । ~ **जग ऊपर** मसार मे जीवन विताते · दिना चारि ~ — ९३५ ।

रहन रहने : पल भर ~ न पायौ २/३० ।

रहस १ आनद, प्रसन्नता देस देस भयौ ~ सूर प्रभु जरासध सिसुपाल की हाँसी ४१८४ । २ रास . लीला ~ गुपाल लाल की १०७३ ।

रहसत क्रीडा/किलोलें करते, आनन्द लेते इहिं विधि ~ बिल-सत दपति ७३२ ।

रहसि[1] किलोलें या अठखेलियाँ करतीं . चलीं हिलि मिलि सबै ~ बिहँसति तरुनि १७५१ ।

रहसि[2] **पु०** १ एकान्त . सुन बलमोहन बैठ ~ मैं कीनो कछू विचार सारा० ६०२ । २ एकान्त मे कबहुँक ~ देति आलिंगन ३७६९ । **क्रि० वि०** चुपके से, चुपचाप . ~ चली मुख मोरी २९३ ।

रहसे प्रसन्न हुए : ~ सबै गुवाल परि० १/७ ।

रहहु रहो, निवास करो . गोकुल ~ जाहु जनि मथुरा ३६१३ ।

रहाइ १ रहता है ऊँच नाच ब्यौरौ न ~ १/२३० । २ रहते है मगहिं मग ~ ८२२ । ३ चैन करता है · छिन जियरा न ~ २८६१ ।

रहाई १ रहता है महा कष्ट दस मास गर्भ बसि अधोमुख सीस ~ १/१३८ । २ रह गई है, शेष बची है : नैन सिथिल, सीतल नासा पुट, अँग तपनि कछु सुधि ~ ७४८ ।

रहात रहते हैं, हो जाते ह मूँदि मुख छिन सुसुकि रोवत छिनक मौन ~ ३६० ।

रहायो रह गया है, शेष बचा है . क्रोध वचन करि सबसे बोले छत्री कोउ न ~ सारा० २२२ ।

रहाहीं रहते हैं बादर-छाहैं धूम धौराहर जैसैं थिर न ~ १/३१९ ।

रहि रहीं, रह गई . लिखी चित्र सी सूर सु है ~ ६२१ ।

रहि १ रह, निवास कर हरि कह्यौ मम हृदय माहिं तू सदा ~ ८/८ । २ रहकर सात वर्ष ~ ३/११ । ३ रह जा, रुक जा, खड़ा रह · ~ रे अलि मतिमद ३९१३ । ~ **न सके** १ स्थिर न रह सके : ~ — अतिसय अकुलाने २०३ । २ सहन न कर सके, देखकर बरदाश्त न कर पाये : ~ — नरसिंह रूप धरि गहि कर असुर पछारयौ १/१०९ । ~ **सके** स्थित रह सके : नहि ~ — १९८४ । ~ **रहि** १ रह रहकर, रुक रुक कर बार बार ~ — यह भाखै ९३९ । २ बस करो, रहने दो : ~ — देख्यौ तेरौ ग्यान ३६९१ ।

रहिऐ १ रहो : सुनि री सखी मौन है ~ २७४ । २ रहे, रहा जाय · कौनें विधि ब्रज ~ ३१६६ । ३ रहेगी, होगी : प्रलय तीसरी या विधि ~ १२/४ । ४ रहिए, रहना चाहिए : लरिकहिं त्राम दिखावत ~ ३८१ ।

रहित १ विहीन, हीन, विना · पौरुष ~ अजित इद्रिनि बस १/१२१ । २. मुक्त : जरा मरन तैं ~ ३ ।

रहिबौ रहना . अपनै जिय सुरति किए ~ ४०५८ ।

रहियत रहती हूँ/हैं प्रीतम बिनु व्याकुल अति ~ ३२३ ।

रहियै १ रह, रहो रे मन गोविंद कै है ~ १/६२ । २ रहे, रहा जाय : अब नंदनदन विनु कहौ कौन विधि ~ ४०८५ । ३ रहेंगे हमहुँ मौन धरि ~ १७४२ ।

रहियौ १ रहना तब लौं देखति ~ ३१३ । २ रहिए, रहो माने ~ नात ३१२४ ।

रहिहै १ रह सकोगे/सकते हैं क्यौं ~ मेरे प्रान दरस बिनु ३११६ । २ रहेगी : हम अपनैं ब्रज ऐसहिं ~ ३८४० ।

रहिहै १ रहेगा, रह सकेगा इनहिं ते ब्रज चैन ~ ८५० । २ रह सकती है · सूरदास अब बसै कौन ह्यां पति ~ ब्रज त्याग ३१७ । ~ **छानी** छिपी रह जायगी क्यों अब ~ — १६५७ ।

रहिहौं १ रहूँगा . ता पाछे इन गुननि गए तें हौं ~ अवसेष २/३८ । २ रहूगी सरढाम मैं इनि बिनु ~ २२५९ ।

रहिहौ १ रहना सूर स्याम का देखे ~ ६८० । २ रहोगे, मानोगे : हम जानति तुम यों नहि रहौ ~ गारी खाइ १४६२ ।

रही १ रह गई इकटक ~ निहार कै ३०४२ । २ रह गई हो, खड़ी हो कहा ठगि सी ~ वाला परयो कौन विचार

१५९७। ३ हो गईं यह सुनि कै हँसि मौन ~ गी १९२४। ४ रही हैं · देखत स्याम, सखा सब देखत, चितै ~ ब्रज नारि १६२०। ५ रहीं, थीं जो भई सो भई हम कहँ ~ इतनी नारि १६२७। ~ छाइ फैली हुई हैं · वेलि सुभग ~ — ११७५। ~ बिस्वबर जीति विशाल नसार को जीत लिया है : गोप वेष भजि सूर स्याम वै ~ — ४१३८।

रही १ रह गई · मैं जकि ~ मोंह मोहिं तेरी १७३१। २ हार गईं, थक गई : नैननि हो समुझाइ ~ २३५१। ३ रही, शेष रही मैं मेरी अब ~ न मेरें छूट्यौ देह अभिमान २/३३। ४ रही है : दिन गनि बट ~ स्याम ३६०५। ५ रह जाती है . ~ विचारि विचारि २११८। ६ रही, गई कहि पचि हारि ~ निसि बासर २३५४। ७ रहेगी · अब कत माँस ~ ३५७१। ८ थी, शेष थी · अब लौं आस ~ आवन की २३२८। ~ न पलक सम्हारि पलकों की सुध खो बैठी अर्थात् अपलक देखती रही देखि सरूप स्याम सुन्दर कौ ~ — १८१६।

रहु रहो . दै सीना अवधेस पाट परि ~ लकेस कहावन ९/१३३। ~ रहु रुक जाओ, चुप हो जाओ ~ — राजा यौं नहिं कहियै दूषन लागै भारी ८/१४।

रहूगन एक राजा · नृपति ~ कै मन आइ ५/४।

रहे १ रह गये : आपु ~ बन ग्वाल पठाए ५२३। २ रहे हो, हुए हो तुम ऐसे कह ~ सुरकाई २८१२। ३ हुए हैं, बैठे हैं . नैन स्रवन विचार सुधि बुधि ~ मनहिं लुभाइ १६१५। ४ रहे हैं : चितै ~ सब स्याम बदन तन ८३४। ५ निवास किया : एक मातु-पितु भवन एक ~ मैं काहैं उनका डरिहो री २३१९। ६ किये रहे . ध्यान मौं धरि ~ द्रुम सब परि० २/६६। ७ स्थित हैं, अटल हैं · ~ एक जक री २३४३। ८ रहे अनत विरमि कहूँ ~ २७२७। ९ लिये, लिया रोकि ~ मग जाइ २६१८। १० हार गये : सुत पत्नी हू बल करि ~ ८/२। ~ अधर पर आइ होठों पर आ गये हैं अर्थात् निकलना ही चाहते हैं · प्रीतम प्यारे प्रान हमारे ~ — ३६०१। ~ घेरी बेरे रहते हैं काम के दल ~ — ३८१४। ~ पचि हार गया कुम करन समुझाइ ~ — ९/१६०। ~ ब्रज आइ ब्रज में आकर निवास करते हैं · पूरन ब्रह्म ~ — ९४६। ~ भरि छाइ (जल) से भर जायेगा : महा प्रलय हमरे जल बरसें गगन ~ — ८५४। ~ हुते रहने हुए भी, होते हुए भी सूरदास प्रभु तन दावानल ~ — फिरि जारे ३६८४।

रहेउँ रहा तासो लेन गयो गोवधन मोन ~ तेहि ठौर सारा० ९१२।

रहेउ रहा · तुम बिनु ~ न जाय सारा० ९१८।

रहै १ रहते हैं जाउँ तहीं जहँ ~ स्यामघन २८५४। २ रहती है आसा अवधि विचारि ~ तो ३९४८। ३ रह/बच सकते/सकता सूरज प्रभु बिनु प्रान ~ नाहिं ३७९४। ४. रहैं, बने रहें पाँच बरष के नितहीं ~ ३/६। ५ रहने पर, रहनी तो · सुख होतौ हरि सग ~ १०४६। ६ रहैं, निवास करें अजहूँ कहौ ~ हम अनतहि २६१६। ७ रहेगा, रह सकेगा : क्यो ~ तन प्रान ३५६१। ८ रहेंगे · वे जहँ ~ तहाँ नहिं जाउँ २२५९।

रहैगे रहेंगे, निवास करेंगे · अब वृन्दावन जाय ~ सारा० ४६१।

रहै १ रहती है · सदा आतमा न्यारौ ~ ५/४। २ रहे, रह पाए खोज ~ नहिं चीन्हौ ८५४। ३ रहते हैं . जाइ ~ नहिं तार्के २७५६। ४ रहता था : ~ सदा हरि - पद अनुरक्त ९/५। ५ रहती थी ~ नामौं पल भर न्यार ९/१७४। ६ रहते थे, रहा करते थे वैसी हरि - हरि सुमिरत ~ ५/३। ७ रहेगा सदा ~ मम साथ सारा० ११०४। ८ रहेगी कहाँ ~ यह बात छपानी १७८३। ~ परखि परख रही है बार बार ~ — ललिता चद्रावलि कहँ इतनी छवि पाई २१९२। ~ ललसाइ (देखने की) लालसा/इच्छा बनी रहती है : निस दिन इन नैननि कौ आली नदलाल की ~ — १९१४।

रहैगी रहेगी : कामिनि आजुहिं आनि ~ २४५५।

रहैगौ १ रहेगा, रहोगे अब तौ परयौ ~ दिन दिन तुमका ऐसौ काम १/१९१। २ शेष बचेगा/लगेगा अवर गहत कनक-कामिनि कों हाथ ~ पचिबौ १/५९।

रहो रहा है कृष्ण चद्र के चरन कमल मे सदा ~ अनुराग सारा० ६३१।

रहौं १ रहू, रहूगा · कैसें सग तैं ~ विमुखनि के १७१२। २ रहता हूँ नारि सग तें ~ उदास ४१९५। ३ रहती हूँ मैं गृह काज ~ लपटानी ८८४। ४ रहूँगी . सुरपुर छाँडि ~ सुव माहीं ९/२।

रहौंगी रहूँगी सूर प्रभु हिलमिलि ~ १४५३।

रहौंगौ १ रहूँगा रैनि ~ जागत ४२०। २ मानूँगा या रुकूँगा बरज्यौ हौं न ~ १९४।

रहौ १ रहो डेरो ~ टरं जनि नस न ८७२। २ रहे, बने · सूर स्याम कों सरबस दीन्हौ प्रान ~ कै काज ३६७०। ३ रुको, रुक जाओ नकु ~ मारवन चौं तुमका १६७। ४ रहते काहे कों सकुचत मनमोहन ठाडे क्यों न ~ २५१६।

रहौगे रहोगे तब तुम इत ठहराद ~ ४०७८।

रह्यउ रहा है : बाजे बजत विचित्र भाँति सौं ~ घोष सब

गाज सारा० ३९४।

रह्यौ १. रहती है : जाकी वानि परी सखि जैसी सो तिहिं टेक ~ २३१४। २ रहा है · जगमग ~ जराइ कौ टीकौ २७९४। ३. रहा, रह गया इद्री रस वस भयौ भ्रमत ~ १/१२९। ४ रह गई है : मुख ससि सेस ~ सित मानौं २११६। ५ रहा हो · मनौ ~ पन्नग पीवन कौं ससि-मुख सुधा निहारि २११४। ६. रहे हैं मधुपुरि वसि जु ~ ४०८३। ७ रह रहे हो, निवास कर रहे हो कत जु ~ करि डेरौ ३८७९। ८ वचा है, शेष रहा या रह गया : व्रज मैं एकै धरम ~ ४१३९। ९ था वालक, अवल, अजान ~ वह ७/४। १० पडा था · तवहूँ और ~ सरितापति आगैं जोजन सात ९/१०४। ११ गया है प्रेम अस उरझि ~ उर तैं नहि टारौ १८८७। १२ रहने लगे : ~ हरि चरननि सौं चित लाइ ९/१७४। १३ हो गई मौन ~ नहिं बोलती तिनसो १७२७। ~ **आपूरि** ढक लिया हो मानौ पूरन चद्रमा कुहर ~ — ४३७। ~ **उरचौ** हृदय मे ही धारण किये थी/रखे थी सुनहु सूर अपनाइ इनहुँ कौं अवलौं ~ — २२२५। ~ **धुनै** ध्वनि हो रही है तहाँ जाहु जहँ वैठे जोगी इहाँ काम-रस ~ — ३८०३। ~ है **अँधकाल** अँधेरा छा गया हो : कचन-गिरि विचनि मनु ~ — १०८३। ~ **हौ** रह गया, वच गया था . ~ — व्रज वह्यौ लकुट कर सौं ९५७।

राँकौ रक, निर्धन : राजा ह्वै गए ~ १/११३। ~ **फीकौ** गरीव और नीरस वडे कृतघ्नी और निकम्मा वेधन ~ — १/१८६।

राँग राँगा के, यह एक धातु है जो सफेद और नरम होती है . नारि आनंद भरी ~ सी है ढरी २७०५।

राँच १. रम गया, आकृष्ट हुआ विषय अखेटक नृप मन ~ ४/१२। २ रँग गई, अनुरक्त हो गई . रुक्मिनि पुत्री हरि रँग ~ ४१६७।

राँचत रीझा पडता है इक नाचत इक ~ २८८८।

राँचहि ललकते : ~ जाहि सनक अरु सकर २८२६।

राँचि अनुरक्त · ~ रह्यौ जो जातै ३६७९। ~ **रहे** मग्न हो, रँग पडे हो ~ — रस सुरति 'सुर' दोउ २१६८। ~ **राँचि** भली-भाँति, वहुत सँभाल करके . यह तन ~ — करि विरच्यौ १/६७।

राँचो १ रंग/अनुरक्त हो गई : सूर प्रभु के रँग ~ १६२५। २ रँगो/पगी हुई है : नागर के रँग ~ १९६८। ३ रँगा गए : रहे स्याम रँग ~ ४२८०।

राँचे १. रँग गए हैं, मग्न है : अव हरि ओरैं ही रँग ~ ४०७७। २ रँगे हुए हो, रग गए हो : जादे हरि ~ रँग २८१८। ३ रचना की, रचा · प्यारी कैं सग रस ~ सानद ११८३।

राँचेहू प्रसन्न होने पर भी : ~ विरचैं सुख नाहीं भूलि न कवहुँ पत्यैये २८२६।

राँचै १ अनुरक्त कर दे : जो अपनौ मन हरि सौं ~ १/८१। २ करता है . हानि-लाभ कछु सोच न ~ २/११।

राँचौ अनुरक्त हो जाओ : विरचि मन वहुरि ~ आइ ३९५७।

राँच्यौ अनुरक्त या आकृष्ट कर लिया है रूप सकल जग ~ हो २/४४।

राँडे राँड : हमरे गति पति कमल नयन की जोग सिखैं ते ~ ३६०४।

राँधि पकाकर। ~ **लियौ** पका लिया वथुआ ~ — जु उतालक ३९६।

राँध्यौ पकाया · वथुआ भली भाँति रचि ~ १२१३।

राँभति रभाती है ~ गो खरिकनि मैं २०२।

राइ[1] १ राजा, स्वामी . सुनौ त्रिभुवन के ~ २/३५। २. राजा ने . सुक सौ कह्यौ परीच्छित ~ ६/२। ३ स्वामी को सूर के प्रभु मह्य पूरन पाइ हरषे ~ ३०९१।

राइ[2] राई। △ ~ **लोन उतारि** राई और नमक उतार कर (नजर लगने पर अथवा नजर लगने की आशका से वच्चो पर राई और नमक के द्वारा किया गया टोटका-विशेष) कवहुँ अँग भूषन वनावति ~ — १८८।

राइता रायता : पानौरा ~ पकौरी १२१३।

राई[1] १ राजा, स्वामी मेरी नौका जनि चढौ त्रिभुवन पति ~ ९/४२। २. राजा हैं : त्रिदस कोटि देवनि के ~ ९२२। **देहि बिभीसन** ~ विभीषण को राजा वना देंगे : तुम्हैं मारि अहिरावन मारैं — ~ ९/१४०।

राई[2] राई। △ ~ **लोन उतारै** राई और नमक उतारती है (नजर न लग लग जाय इसलिए राई और नमक उतार कर आग मे डालती है) · जाकौ नाम कोटि भ्रम टारै तापर ~ — १२९।

राउ १. राजा · सुकदेव कह्यौ सुनौ हो ~ ६/३। २ राजा के ~ सूर सखी सुभाउ रहिहौ सँग सिरोमनि ~ २०८५। ३. राजा हूँ : हरि हौं सव पतितन कौ ~ १/१४५।

राउर[1] आपका, आप जैसा नाद, मुद्रा, भू ति, भारी करैं ~ भेष ४०५५

राउर[2] राय, राजा : व्रज घर घर वूझत नद ~ २४८।

राउर[3] राजमहल, अत पुर, रनिवास ~ माँझ भीर भइ भारी परि० १/४३।

राकस राक्षस यह ~ की जाति हमारी ९/७९।

राकसिनि राक्षसी : किहिं ~ जावक उर लाये परि० १/८८।

राका १. पूर्णिमा की रात : परम प्यारी सरद ~ रही गृह दुख छाइ ४०७२। २ पूर्णिमा की व्रज प्राची ~ तिथि जसुमति १७९५। ३ पूर्णिमा का ~ ससि विय मग २७३४।

राकापति चंद्रमा : ~ नहिं कियौ उदौ २७४९ ।

राख¹ भस्म, खाक : निंदत मूढ़ मलय चंदन कौं ~ अंग लपटावैं २/१३ ।

राख² बचा लो, रक्षा करो : ~ गिरधरलाल 'सूरज' नाथ बिन उद्धार सा०ल० शेष २ ।

राखत रखता है : सूर एक ~ जो नाता ३८७७ । २ रक्षा करता है, बचाता है : ~ नहिं कोउ करुनानिधि अति बल ग्राह गह्यौ ८/४ । ३ रखते हैं, धारण करते हैं : पिय प्यारी कौं हिरदैं ~ २०२२ । ४ रखती हूँ : वारहीं वार कहि हटकि ~ कितक २०४९ । ५ रखते हो, रखने को कहते हो : पवन धरि रबि तन निहारत मनहिं ~ मारि ३०४२ । ६ रक्षा करते हो : बै हैं काल तुम्हारे प्रगटे काहैं उनकौं ~ ५२२ । ७ रखने में : देत न बनै बनै नहिं ~ ४१९१ । ८ रोकता : कहि ~ नहिं कोर्ट २०७८ । △ ~ **मन कौं** मन रखते हैं, इच्छा पूरी करते हैं : जिहिं जिहिं विधि सेवक सुख पावै तिहिं विधि ~ — १/९ ।

राखति १. रखती हैं/हूँ या रक्षा करती हैं/हूँ : ~ जनन जसोदा-नंदन ३६१५ । २ रखती हो : तुमहुँ ~ गरब बोलि देखौ २०५३ ।

राखति १ रखती है : ~ एक पाइ ठाढ़ौ करि ६५५ । २ रखती हूँ : जउ मैं कोटि जतन करि ~ घूँघट ओट अगोरि २३५७ । ३ रखती थी : जदपि घेरि घेरि मैं ~ २२९४ ।

राखन हार १. रक्षक, रक्षा करने वाला : ~ अहै कोउ औरै ७/४ । २ रक्षा करने वाले हैं : गोकुल ग्वाल गाइ-गो सुत कै येट ~ ५०८ ।

राखनि विचारी रक्षा करना चाहती हो : पच ग्रह ~ सा० ल० ५९ ।

राखहि रखता, करता : इंद्रिय बस ~ किन पाँचौ १/८३ ।

राखहि रखो : अब जिय सकुच कछू मति ~ माँगि सूर अपनौ मन भायो २९१३ ।

राखहु १ रखो : मन ~ धरि धीर ३८४५ । २ रखोगे : जैसें ~ तैसें रहौं १/१६८ ।

राखि १ रख कर : ~ समीप सदा सुख दीन्हौं ३९३५ । २ रक्षा कर, बचा : ~ सकत न ईस १/१०६ । ३ रक्षा करके, बचा करके : मधुप ~ जस लीजै ३९१२ । ४ ठहरा कर, स्थित करके : नंद उपनंद सँग सखा इक थल ~ ३०४८ । ५ रख (छिपा) कर : मनसा वाचा कर्मना कछू कही ~ १/१८२ । ३ रख लो, बचा लो : ~ पाछिलौ नेहु १६१८ । ~ **राखि** १ रक्षा करो रक्षा करो : ~ — गोपाल ५५७ । २ रख रखकर, रोक रोक कर : ~ — प्रते ढिबमनि मोहिं ३१७० । ~ **राख्यौ** बचा रखा, बचा लिया : भलो नहिं करी तुम ~ — उनहिं ३०६६ ।

राखिए रखा जाता है : सूरदास प्रभु को या राखौ ~ गज मत्त जकरि कै ३२८ ।

राखिबै रक्षा करना : ~ होट नो आनि राखिबै ४२६७ ।

राखिबौ रखे रहना : भाव ही कह्यौ मन भाव दृढ ~ २६०४ ।

राखिय रखूँ, रखें : कहँ लौं ~ मन बिरमाइ ३२८२ ।

राखिय १ रख लीजिए, मान लीजिए : कर्यौ ~ यह दान ३००२ । २ रखें : क्यों ~ विवेक २९१४ । ३ रखना चाहिए : मूरछित सुभट नहिं ~ खेत मैं ४२२१ । ४ रक्षा कीजिए : राखिब होइ तौ आनि ~ ४२६७ ।

राखियो रखा : ताको बहुत ~ नीके मारा० ५५१ ।

राखियौ रखता हूँ, रखा है : मृत्यु कौ बाँधि मैं ~ कूप मैं ९/१२७ ।

राखिहै रक्षा करूँगी/करेंगी : ~ ज्यौं प्रान ४२३५ ।

राखिहै रक्षा करेगा : मेरैं भारत कौन ~ ९२४ ।

राखिहौं १ रखूँगा, पालन करूँगा : देहौं त्यागि ~ यह प्रन १६६८ । २. रक्षा करूँगा, देख-भाल करूँगा : बालक बछरनि ~ ४३१ ।

राखी १ रखी, रख ली : चोंच एक पुहुमी करि ~ ४३० । २ रक्षा की, बचा लीं : रानीं मंदै मगन त ~ ३०८६ । ३ रखा है : ~ छबि दुराइ हिरदैं मैं २३०१ । ४. रखा है : अति विचित्र रचना रचि ~ २/२८ । ५ रखे हो : तुम वह बात गाँस करि ~ १७४८ । ६ रखा हो : मनौ विस्व-कर्मा रचि ~ ९/७० । ७ रख, रोक : पुत्र हेतु सुर लोक गयौ द्विज सक्यौ न कोऊ ~ १/१२२ । ८ रखी थी : कहा तपस्या करि दहिं ~ ३१०५ । ९ रक्षा की थी, बचाया था : कत हम मखचूड़ तैं ~ ३६४० । १० बचाकर : अब [illegible] जाइ जमुन जल बहिहीं कहा करौं मोहिं ~ ३१६० । ११ उठा रखा था : हर स्याम ! तो तब कत ~ २९६६ । ~ **कंठ लगाइ** गले में लगा लिया : उभय भुजा भरि अंकम दीन्हा ~ — ११२८ ।

राखु रख लो, बचा लो : ~ सूरज टेक सा० ल० ५० । ~ **राखु** रक्षा करो रक्षा करो, बचाओ : चटचटात अँग अंग फटत हैं ~ — प्रभु मोहिं ५८० ।

राखे १ रखा, रखा है : जिनि ~ सरनाइ ५६७ । २ रक्षा की, बचाया : गोपी-गाइ-ग्वाल ब्रज ~ ०६३ । ३ रक्षा की थी, बचाया था : जनैं ~ अघा-बदन तब ९३६ । ४ [illegible] को ~ सूरज इहि अवसर ३८९२ । ५ रखते हैं, धारण करते हैं : सादर सिर ~ ३०८४ । ६ [illegible] दिये : सदरि ढिग उन जाइ ~ ५ । ७ रोका, रोक रखा : [illegible] पट गहि नहिं ~ ४०१० । ~ रहत धारण किये रहते हैं : ~ — हृदय पर जाकौ धन्य भाग हैं ताके २४१३ । ~ **रहति** छिपाए रहती हूँ : ~ — ओट पट नैननि २३०६ ।

राखैं १ रखते हैं, रख लेते हैं • निरखि गोद पर ~ ९/१४६। २. रखती हैं, करती हैं : तुम दुराव कत करति, हम तुमसौं नहिं ~ ७०५५। ३ रखता है, लगाता है • मन ~ तुम्हरे चरननि पै १/१९६। ४ रखें, बचाएँ कैसें कैं ~ प्रान कान्ह बिन ४०७८। ५ रखने पर भी वैर भाव मन ~ मुक्त भयौ सिसुपाल १००८। ६. रक्षा करते हैं : सदा आपने जन कौं ~ ३१०९। ७ रखती थीं, करती थीं जिनकी आस सदा हम ~ २३०२।

राखै १ रखता है : जो जासा अंतर नहिं ~ १६१३। २ रख सकता है : जन की और कौन पति ~ १/१५। ३. रखते हैं : जानि सत्य ~ चित लोइ ११/४। ४ रोक ले . चलत गुपालहिं ~ २९७३। ५. रक्षा/पालन करता है : लोक रचै ~ अरु मारै ३। ६ रक्षा करे बन मुरझात सूर को ~ ३९०३। ७ बचायेगा को ~ कहत नंद बेहाल ५२८। ८ रख लेता था, स्मरण कर लेता था जब वह विप्र पढावै कुछ कुछ सुन के चित धरि ~ सारा० ११०। ~ बडाई महत्त्व देते हैं : अधिक ~ — तोहिं २७५३।

राखैगो बचायेगा • अब को सात दिवस ~ ३३२०।

राखो १ रखो : ~ घेरि सकल युवतिन को सारा० ८७८। २. रखना है, पालन करना है • सूर सत्य जो पतिव्रत ~ चलौ संग जनि ९/३४।

राखौं १ रखूँ पुनि ~ पौढाइ ७२६। २ बचा लूँ, रक्षा करूँ गिरि कर धरि ~ नर नारी ९३७। ३ रखूँगी, पालूँगी • सूर प्रभु पतिवरत ~ १४५९। ४ रक्षा करूँगा • सूर स्याम कह्यौ तुम कौं ~ ८६५। ५ रखती हूँ : ~ हटकि इतहिं कौ धावत २०९४। ६ रहने दूँगा अब गोपनि भूतल नहिं ~ ८५१। ७ छोडूँगा . ~ नहिं काहूँ सब मारौं ९२५। ८ रखूँगा ~ सुख आनद भरी ४१५९। ~ **मेलि** रख छोडूँ ~ — भँडार सूर सीस ९/१३२।

राखौंगी रक्षा करूँगी ~ तन प्रान दै ८०५।

राखौ १ रखो अब इनकी जनि ~ कानि २८७८। २ बचाओ सूरदास प्रभु प्रानहिं ~ ३६८१। ३ रोक लो : रामहिं ~ कोऊ जाइ ९/४७। ४ रखना • सूर स्याम कौं नीकैं ~ ८४०।

राख्यौ १ रक्षा की, बचाया : वैसी आपदा तैं ~ १/७७। २ रखा . नाम रुद्र विधि ~ ३/७। ३ धारण किया गोवर्धन ~ कोमल पानि अधार ६५६। ४ रखा है : सब विधि वानि ठानि करि ~ ३५७३। ५ धारण कर लिया है/हो : इस जनु रजनीस ~ भाल तैं जु उतारि १६९। ६ लगाया है • हृस्थल थिति मन ~ ३५३०। ७ रखा था : कुँवरी पूरब तप करि ~ ३१००। ८ खडा कर रखा था • तहाँ कुवलया ~ द्वारैं ३१०९। ९ रोक दिया • ब्रज बाहिर साहनि कौं ९४९। ~ **न परचौ** रोके नहीं रुक पाया • लोक वेद, प्रतिहार, पहरुआ तिनहूँ पै ~ — १८७०। ~ **मेलि** जोड रखा है, उठा रखा है ~ — पीठि तैं परधन २७६३।

राग[1] प्रेम : बाँध्यौ ~ की डोरी ६५७।

राग[2] सुगन्धित लेप • ऑगन-पक - ~ तन सोभित ११९।

राग[3] आलाप, संगीत की ध्वनि • गौरी ~ मिलै सुर गावत ५०६।

रागनिधि प्रेम की खान (राधा) ने रची माँग सम भाग ~ काम धाम सरनी २१८४।

रागपचम पचम नामक राग। भारतीय संगीत शास्त्रज्ञों ने छह राग माने है। भरत व हनुमत के मत से भैरव, कौशिक (मालकोस), हिंडोल, दीपक, श्री और मेघ। सोमेश्वर व ब्रह्मा के मत से श्री, वसंत, पचम, भैरव, मेघ और नट नारायन . जान प्रभात ~ पट सारा० १०१२।

रागमूल (राग का मूल अर्थात्) स्वर ~ भौं सिव प्रिय देखत सा० ल० ४३।

राग-रस संगीत के आलाप के आनन्द के सुर नर मुनि बस किए ~ ६४८।

राग रागिनी १ राग और रागिनियाँ ~ प्रकट दिखायौ ११४४। २ राग रागिनी स्वरूप राधा-कृष्ण • भींजे ~ दोऊ १९९२।

रागरूप रूप के राग पर लोचन मृग सुभग जोर ~ भए भोर १९७८।

रागिनि रागिनी, संगीत शास्त्र मे किसी भी राग की पत्नी, हनुमत और भरत के मत से प्रत्येक राग की पाँच पाँच रागिनियाँ हैं और सोमेश्वर आदि के मत से छह छह रागिनियाँ हैं। परन्तु साधारणत लोक मे छह रागों की छत्तीस रागिनियाँ ही मानी जाती हैं। : ~ राग तरग जानि चित ३६६६।

रागी प्रेमी, अनुराग रखने वाला सूर सुजस ~ न डरत १/१८९।

रागे अनुरक्त हुए, पगे . नख सिख कुसुम बिसिष की मेना मनहुँ छुटे रन ~ परि० १/८२।

राग्यौ राग उत्पन्न हुआ क्रीडावत सखिनि कछु ~ परि० १/१५३।

राघव राम ने: रघुकुल ~ कृष्न सदा ही गोकुल कीन्हौं थानौ १/११।

राघव-प्यारी सीता जी • करि दडवत प्रेम पुलकित है, कह्यौ सुनि ~ ९/१००।

राघवराइ राजा राम • फिरैं क्यौं ~ ९/५१।

राची[1] रंग गई, अनुरक्त हो गई • सूर स्याम सँग अँग रंग ~

१७२२।

राचौ[2] रची है, बनाई है : एक जीव देही है ~ २०६६।

राचै सुशोभित होती थी : अँग अँग प्रति और और गति कोटि-मदन-छवि ~ ११८१।

राच्छसि राक्षसी : ~ एक तहाँ चलि आई ९/५६।

राच्यौ रचा, आयोजित किया : धनि धनि सूरदास के स्वामी अद्भुत ~ राम १०४४।

राज[1] १. राजा : सुनहु ~ हम जान न पाई ९४६। २ राज्य का : ~ सुहाग बढौ सबै ४१८८। ३. राजा के : ~ अस धन ८८७। ४. राज्य : ~ ध्रुव कियौ ४/९। ५. राज-सिंहासन पर : पुनि प्रह्लाद ~ बैठाए ७/२।

राज[2] सुशोभित है/हो : सुभग मानौ कमा-द्रुम को नयौ अंकुर ~ ११६१।

राजई १ सुशोभित है/हो रहा है : अंग भूषन सूर ससि पूरन कला मनु ~ ४१८६। २ सुशोभित हो रही : कटि तट काछनि ~ १३७२।

राज-काज राजकार्य में : ~ कछु मन नहिं धरै ९/५।

राजकुँवर राजकुमार : ~ कोउ भेष उदासी ४३०३।

राजकुमारि राजकुमारी : ~ सोचि जिय अपने ४१७४।

राजछत्र राज-सिंहासन का छत्र या मुकुट : ~ नाहीं सिर धार्यौ १/२६१।

राजत १ सुशोभित हो रहे हैं : ~ दोउ निकुंज खरे २४७३। २ सुशोभित हो रहा है : अजिर पद प्रतिबिम्ब ~ २१८। ३ सुशोभित होता है, सुंदर लगता है : ज्यों ~ रवि भोर २७६७। ४. सुन्दर लग रहे थे : ~ मुरली सुधुनि बजाई १८६८।

राजति सुंदर लगती हैं, सुशोभित हैं : चंद्र बदनि तन ~ गोरी ४०७७।

राजति सुशोभित हो रही है : नग ~ वृषभानु कुमारी २४६३। ~ **उदय किये** उदित होकर सुशोभित है, प्रकट होकर विराजमान है : अखिल भुवन की सोभा ~ — १८२१।

राजतिलक राज्याभिषेक : नृपति जुधिष्ठिर ~ दै मारि दुष्ट की भीर सारा० ७८७।

राजदुआर राजद्वार पर : दोनो भ्रात मग में लीन्हे आये ~ सारा० २१७।

राजधरम दे० राजधर्म : ~ तौ यहै सूर जौ प्रजा न जाहिं सताए ३९९१।

राजधर्म राजा का कर्तव्य : ~ तब भीषम गायौ १/२६१।

राजन[1] हे राजा : अबहूँ चेरी परिहरौ ~ स्वामी सीत ३१५५।

राजन[2] सुशोभित होने, विराजने : मथुरा लागे ~ ३३०२।

३१५८। २ राजाओं : बैठन सुभा बढे ~ की २९७०।

राज-पथ राजमार्ग, सड़क : सुनु ऊधो निर्गुन कंटक तें ~ क्यों रूँधौ ३८९०।

राजपद राजा का पद/स्थान : ~ अटल पायौ ४/१०।

राज भोग राजसी सुख-सुविधा (को) : ~ चित तें बिसराए ९/१६८।

राजमारग राजमार्ग, सड़क : छाँडि ~ यह लीला कैसें चलहिं कुपैंडे ३६१५।

राजरवनि राजा की रमणियाँ, रानियाँ : ~ गावतिं हरि को जस ४२११।

राज-रोग क्षय रोग : जाकौं ~ कफ व्यापत ३७२५।

राज लच्छमी राज्यश्री का : ~ मद नाहिं होइ ७/२।

राजस वि० राजसी, रजोगुण प्रधान : यह है ~ विचार ३०६४। पुं० रजोगुण ने : इहिं ~ को को न बिगोयौ १/५४। ~ दीन्हौं राजसी ठाट बाट दिया : उग्रसेन कौं ~ — ३०९५।

राज-सभा राज दरबार : जब गहि ~ मैं आनी १/२५०।

राज समाज १ राज दरबार अथवा राज कुटुम्ब : ~ माहिं सुख पायौ ९/२। २ राज्य और समाज, राज और परिवार : गए बन कौं तजि ~ ५/३।

राजसी वि० रजोगुण सम्पन्न : बीना, झाँझ, पखाउज, आउज और ~ भोग ९/७५। पुं० रजोगुण सम्पन्न व्यक्ति/राजा हो : दियौ उन पै कह्यौ तुम कोऊ ~ ४२१५।

राजसू दे० राजसूय : ~ जग्य को कियौ आरंभ मैं ४२१५।

राजसूय एक यज्ञ जो केवल वही राजा कर सकता था जिसने वाजपेय यज्ञ न किया हो। प्राचीन काल में जो राजा इस यज्ञ को करता था वह सम्राट पद को प्राप्त करता था : ~ मैं चरन पखारे स्याम लिए कर पानौ १/११।

राजहि राजा को : पुनि बलि ~ स्वर्ग लोक में थापैंगे हरि राय सारा० ३४६।

राजहीं १ सुशोभित हो रहे हैं : हरि-नख उर अति ~ ११६। २ सुशोभित थे : छप्पन कोटिन मध्य ~ जादवराइ ४१८८।

राजहु राजा भी : ~ भए तजत नहिं लोभहिं ३६७८।

राजहूँ राज्य भी : चोरी करौ ~ खोवौ ९/१६०।

राजा राजा। ~ करैं राजा बनाते हैं : कंस मारि ~ — आपहु सिर नावैं १/४।

राजित १ सुशोभित हुए, समजत हुए : ज्ञान कमनीय सुख-कमल ~ सुरनि ९८०। २ सुशोभित है : भीजि उर अचल अति ~ ४११२।

राखैं १ रखते हैं, रख लेते हैं निरखि गोद पर ~ ९/१४६। २. रखती हैं, करती हैं : तुम दुराव कत करति, हम तुमसौं नहिं ~ २०५५। ३ रखता है, लगाता है. मन ~ तुम्हरे चरननि पै १/१९६। ४ रखें, बचाएँ कैसैं कैं ~ प्रान कान्ह बिन ४०२८। ५ रखने पर भी : वैर भाव मन ~ मुक्त भयौ सिसुपाल १००८। ६. रक्षा करते हैं : सदा आपने जन कौं ~ ३१०९। ७ रखती थीं, करती थीं : जिनकी आस सदा हम ~ २३०२।

राखै १ रखता है : जो जासौं अतर नहिं ~ १६१३। २ रख सकता है. जन की और कौन पति ~ १/१५। ३ रखते हैं. जानि सत्य ~ चित लोइ ११/४। ४ रोक ले चलत गुपालहिं ~ २९७३। ५. रक्षा/पालन करता है : लोक रचै ~ अरु मारै ३। ६ रक्षा करे बन मुरझात सूर को ~ ३९०३। ७ बचायेगा को ~ कहत नंद बेहाल ५२८। ८ रख लेता था, स्मरण कर लेता था : जब वह विप्र पढावै कुछ कुछ सुन के चित धरि ~ सारा० ११०। ~ बडाई महत्त्व देते हैं : अधिक ~ — तोहिं २७५३।

राखैगो बचायेगा : अब को सात दिवस ~ ३३२०।

राखो १ रखो : ~ घेरि सकल युवतिन को सारा० ८७८। २ रखना है, पालन करना है • सूर सत्य जो पतिव्रत ~ चलौ सग जनि ९/३४।

राखौं १ रखूँ पुनि ~ पौढाइ ७२६। २ बचा लूँ, रक्षा करूँ गिरि कर धरि ~ नर नारी ९३७। ३ रखूँगी, पालूँगी सूर प्रभु पतिवरत ~ १४५९। ४ रक्षा करूँगा • सूर स्याम कह्यौ तुम कौं ~ ८६५। ५ रखती हूँ : ~ हटकि उतहिं कौ धावत २०९४। ६ रहने दूँगा अब गोपनि भूतल नहिं ~ ८५१। ७ छोडूँगा. ~ नहिं काहूँ सब मारौं ९२५। ८ रखूँगा ~ सुख आनद भरी ४१५९। ~ मेलि रख छोडूँ ~ — भँडार सूर सीस ९/१३२।

राखौंगी रक्षा करूँगी. ~ तन प्रान दै ८०५।

राखौ १ रखो अब इनकी जनि ~ कानि २८७८। २ बचाओ सूरदास प्रभु प्रानहिं ~ ३६८१। ३ रोक लो • रामहिं ~ कोऊ जाइ ९/४७। ४ रखना : सूर-स्याम कौं नीकैं ~ ८४०।

राख्यौ १ रक्षा की, बचाया : वैसी आपदा तैं ~ १/७७। २ रखा : नाम रुद्र विधि ~ ३/७। ३ धारण किया • गोवर्धन ~ कोमल पानि अवार ६५६। ४ रखा है : सब विधि बानि ठानि करि ~ ३५७३। ५ धारण कर लिया है/हो : ईस जनु रजनीस ~ भाल तैं जु उतारि १६९। ६ लगाया है सुस्थल थिति मन ~ ३५३०। ७ रखा था • कुवरी पूरब तप करि ~ ३१००। ८ खडा कर रखा था • तहाँ कुवलया ~ द्वारैं ३१०९। ९ रोक दिया ब्रज बाहिर साहनि कौं ९४९। ~ न परयौ रोके नहीं रुक पाया : लोक-बेद, प्रतिहार, पहरुआ तिनहूँ पै ~ — १८७२। ~ मेलि जोड रखा है, उठा रखा है ~ — पीठि तें परधन २७६३।

राग[1] प्रेम : बाँध्यौ ~ की डोरी ६५७।

राग[2] सुगन्धित लेप • आँगन-पक - ~ तन सोभित ११९।

राग[3] आलाप, सगीत की ध्वनि : गौरी ~ मिलै सुर गावत ५०६।

रागनिधि प्रेम की खान (राधा) ने रची माँग सम भाग ~ काम धाम सरनी २१८४।

रागपंचम पचम नामक राग। भारतीय सगीत शास्त्रज्ञों ने छह राग माने है। भरत व हनुमत के मत से भैरव, कौशिक (मालकोस), हिंडोल, दीपक, श्री और मेघ। सोमेश्वर व ब्रह्मा के मत से श्री, वसत, पचम, भैरव, मेघ और नट नारायन. जान प्रभात ~ षट सारा० १०१२।

रागमूल (राग का मूल अर्थात्) स्वर ~ भौं सिव प्रिय देखत सा० ल० ४३।

राग-रस सगीत के आलाप के आनन्द के सुर नर मुनि बस किए ~ ६४८।

राग रागिनी १ राग और रागिनियाँ ~ प्रकट दिखायौ ११४४। २ राग रागिनी स्वरूप राधा कृष्ण. भींजे ~ दोऊ १९९२।

रागरूप रूप के राग पर लोचन मृग सुभग जोर ~ भए भोर १९७८।

रागिनि रागिनी, सगीत शास्त्र मे किसी भी राग की पत्नी, हनुमत और भरत के मत से प्रत्येक राग की पाँच पाँच रागिनियाँ हैं और सोमेश्वर आदि के मत से छह छह रागिनियाँ हैं। परन्तु साधारणत लोक मे छह रागों की छत्तीस रागिनियाँ ही मानी जाती हैं। : ~ राग तरग जानि चित ३६६६।

रागी प्रेमी, अनुराग रखने वाला सूर सुजस ~ न डरत १/१८९।

रागे अनुरक्त हुए, पगे : नख सिख कुसुम बिसिष की सेना मनहुँ छुटे रन ~ परि० १/८२।

राग्यौ राग उत्पन्न हुआ क्रीडावत सखिनि कछु ~ परि० १/१५३।

राघव राम ने रघुकुल ~ कृष्न सदा ही गोकुल कीन्हौ थानौ १/११।

राघव-प्यारी सीता जी : करि दडवत प्रेम पुलकित है, कह्यौ सुनि ~ ९/१००।

राघवराइ राजा राम फिरैं क्यौं ~ ९/५१।

राची[1] रग गई, अनुरक्त हो गई • सूर स्याम सँग अँग रग ~

१७२२।

राची² रची है, बनाई है । एक जीव देही है ~ २०६६।

राचै सुशोभित होती थी • अँग अँग प्रति आर और गति कोटि-मदन छवि ~ ११८१।

राच्छसि राक्षसी ~ एक तहाँ चलि आई ९/५६।

राच्यौ रचा, आयोजित किया धनि धनि सुदामा के स्वामी अद्भुत ~ राम १०४४।

राज¹ १ राजा • सुनहु ~ हम जान न पाइ ९४६। २ राज्य का : ~ सुहाग बढ़ौ सबै ४१८८। ३ राजा के ~ अस धन ८८७। ४ राज्य • ~ ध्रुव किनौ ४/९। ५ राज-सिंहासन पर पुनि प्रह्लाद ~ बैठाए ७/२।

राज² सुशोभित है/हो सुभग मानौ कमा-द्रुम को नया अकुर ~ ११६१।

राजई १ सुशोभित है/हो रहा है अग भूषन सूर समि पूरन कला मनु ~ ४१८६। २ सुशोभित हो रही कटि तट काछनि ~ १३७२।

राज-काज राजकार्य मे ~ कछु मन नहिं धरै ९/५।

राजकुँवर राजकुमार ~ कोउ भेष उदासी ४३०३।

राजकुमारि राजकुमारी : ~ सोचि जिय अपने ४१७४।

राजछत्र राज-सिंहासन का छत्र या मुकुट . ~ नाहीं सिर धार्यौ १/२६१।

राजत १ सुशोभित हो रहे हैं ~ दोउ निकुंज खरे २४७३। २ सुशोभित हो रहा है : अजिर पद प्रतिबिम्ब ~ ७१८। ३ सुशोभित होता है, सुंदर लगता है ज्यों ~ रवि भोर २७६७। ४ सुन्दर लग रहे थे : ~ मुरली सुधुनि बजाइ १८६८।

राजति सुंदर लगती है, सुशोभित ह . चद्र वदनि तन ~ गोरी ४०७७।

राजति सुशोभित हो रही है सग ~ वृषभानु कुमारी २४६३। ~ **उदय किये** उदित होकर सुशोभित है, प्रकट होकर विराजमान है • अखिल भुवन का सोभा ~ — १८२१।

राजतिलक राज्याभिषेक नृपति जुधिष्ठिर ~ दै मारि दुष्ट की भीर सारा० ७८७।

राजदुआर राजद्वार पर : दोनो भ्रात सग मे लीन्हे आये ~ सारा० २१७।

राजधरम दे० राजधर्म : ~ सौ यहै सूर जो प्रजा न जाहि सताए ३९९१।

राजधर्म राजा का कर्तव्य ~ सब भीषम गायौ १/२६१।

राजन¹ हे राजा • अवहू बैरी परिहरौ ~ स्वामी सीन ३१५७।

राजन² सुशोभित होने, विराजने • मथुरा लागे ~ ३३०२।

राजनि १ राजन्, हे स्वामी अब वह सुरति होति कत ~ ३१५८। २ राजाओं बैठत सभा बडे ~ की २९७०।

राज-पथ राजमार्ग, सडक सुनु कर्यो निर्गुन कटक तें ~ क्यों रूँधौ ३८९०।

राजपद राजा का पद/स्थान : ~ अटल पायौ ४/१०।

राज भोग राजसी सुख-सुविधा (को) ~ तिन तें बिसराए ९/१६८।

राजमारग राजमार्ग, सडक आँटि ~ यह लीला कैसें चलहिं कुपैंडे ३६१५।

राजरवनि राजा की रमणियाँ, रानियाँ ~ गावतिं हरि को जस ४२११।

राज रोग क्षय रोग : जाकौं ~ कफ व्यापत ३७२५।

राज लच्छमी राज्यश्री का : ~ मद नहिं होइ ७/२।

राजस वि० राजसी, रजोगुण प्रधान : यह है ~ विचार ३०६४। पु० रजोगुण ने : इहिं ~ को को न बिगोयौ १/५४। ~ **दीन्हौ** राजसी ठाट बाट दिया : उग्रसेन को ~ — ३०९५।

राज-सभा राज दरबार जब गहि ~ मैं आनी १/२५०।

राज समाज १ राज दरबार अथवा राज कुटुम्ब : ~ माहिं दुख पायौ ०/२। २ राज्य और समाज, राज और परिवार . गए बन कौं तजि ~ ५/३।

राजसी वि० रजोगुण-सम्पन्न बीना, झाझ, पखाउज, आउज और ~ भोग ९/७२। पुं० रजोगुण सम्पन्न व्यक्ति/राजा हो • दियौ उन पै कह्यौ तुम कोऊ ~ ४२१५।

राजसू दे० राजसूय . ~ जग्य कौ कियौ आरभ मैं ४२१५।

राजसूय एक यज्ञ जो केवल वही राजा कर सकता था जिसने वाजपेय यज्ञ न किया हो। प्राचीन काल मे जो राजा इस यज्ञ को करता था वह सम्राट पद को प्राप्त करता था • ~ मैं चरन पखारे स्याम लिए कर पानौ १/११।

राजहि राजा को . पुनि बलि ~ स्वर्ग लोक मे थपैंगे हरि राय सारा० ३४६।

राजहीं १ सुशोभित हो रहे ह हरि-नख उर अति ~ ११६। २ सुशोभित थे • छप्पन कोटिन मध्य ~ जादवराई ४१८८।

राजहु राजा भी ~ भए तनत नहिं लोभहिं ३६७८।

राजहूँ राज्य भी • चोरी करी ~ खोयौ ९/१६०।

राजा राजा। ~ **करै** राजा बनाते हैं : कंस मारि ~ — आपहु सिर नावै १/४।

राजित १ सुशोभित हुए, चमकते हुए : कुन्द कमनीय सुख-कमल ~ सुरभि ९८०। २ सुशोभित है भींजे उर अचल अति ~ ४११२।

राजिव कमल • ~ रवि कौ दोष न मानत ३८१३।

राजिव-दल कमल दल : ~ इंदीवर सतदल, कमल कुसेसय जाति १८१३।

राजिव नैन १ नेत्र कमल ~ अनूप २४४५। २ कमलवत् नेत्र वाला कोमल गात कौन को ढोटा सुन्दर ~ सारा० ५०४। ३ कमलवत् नेत्रवाले (राम) ~ धनुष कर लीन्हे ९/४३।

राजिव लोचन कमलनयन (कृष्ण) ~ परम उदारी १९८।

राजी[1] सहमत, स्वीकार किया है : सुनियत ताहि मुदरी कीन्ही आपु भए ताकौं ~ ३१४७।

राजी[2] पंक्ति, अवली राजति रोम ~ रेष ६३५।

राजीव[1] कमल (नील कमल) · इंदीवर ~ कुसेसय १८१।

राजीव[2] श्वेत (वास्तव मे 'राजीव' नील कमल को कहते हैं, पर प्रसगानुसार 'श्वेत' अर्थ अभीष्ट है) इंदीवर ~ कमल पर जुग खजन जनु लटके १९९५।

राजु राज्य : तज्यौ कत कौ ~ ८०८।

राजै[1] सुशोभित हो रहे हैं, विराजमान हैं . चलिये विप्र यज्ञ-शाला में जहँ द्विजवर सब ~ सारा० ३३६, लंका राज विभीषन ~ १/३६।

राजैं[2] राजा (गोवर्धन) ने ही राखि तुम लियौ गिरिराज ~ ८७०।

राजै[1] १ सुशोभित होती है/हो रही है : नटवर-वपु-वेष ललित कटि किंकिनि ~ १८८७। २ सुशोभित हो रहे हैं, सुदर लग रहे हैं : धन्य सूर प्रभु ता धरि ~ १०५०।

राजै[2] विद्यमान रहे, वनी रहे . सूरदास सेवक उनहीं कौ कृपा सु गिरिधर ~ ३०९६।

राढ निकम्मी : आपु कहाँ ब्रजराज मनोहर कहाँ कूवरी ~ ३६४२।

रातनि रातों मे/को : सुनियत कथा काग कोकिल की कपट रंग की ~ ३५४९।

राता अनुरक्त है, लिप्त है . माँगत है सूर त्यागि जिहि तन-मन ~ १/१२३।

राति १ रात्रि, रात ~ दिवस मोहिं चैन नहीं १७४३। २ रात को . बेंचि आवति ~ १५०४। ३ रात मे . ~ रहे कहुँ गाइनि घेरत २६३३।

रातिहूँ रात को भी/मे भी : ~ सपन कछु ऐसे पाए ३०८९।

राती[1] १ रगी हुई हैं उनहीं कै रँग ~ २१५८। २ रग गई, मग्न हो गई कुबिजा भई स्याम रग ~ १/६३।

राती[2] रात : नहिं बिसरत दिन ~ ३४३७।

राती[3] लाल, लाल रग की पहिरे ~ चूनरी १/४४।

राते[1] मग्न रहते हैं : वै अपने सुख ही के ~ ३७५८।

राते[2] लाल, लाल रग के · सोभित पीत वसन दोउ ~ २६८१। ~ **राते** लाल लाल (रग के) · वै जौ देखत ~ — फूलन फूले डार ३२७५।

रातै[1] अनुरक्त होगा, प्रेम करेगा . जाहि जो भजै सो ताहि ~ १००४।

रातैं[2] रात : विरह जरी दिन ~ ४१२०।

रातै मिल जाता है, प्रेम कर लेता है जैसे चोर चोर सौं ~ १२७९।

रातौ[1] लाल सेत हरौ ~ अरु पियरौ रँग लेत है धोई १/६३।

रातौ[2] अनुरक्त हो जाओ : सुरभी रस जिन ~ सा० ल० १०।

राधन आराधना के, पूजा के कर्म, धर्म तीरथ विनु ~ है गए सकल अकाथ १/२०८।

राधहि राधा को सूर स्याम ~ कछु कारन जसुमति समुझि रही अरगाई ७५४।

राधा वृषभानु की पुत्री जो कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम रखती थी : ~ तैं हरि कैं रँग राची १८९७।

राधा-आधा-तन राधा के अर्द्धाङ्ग मे सूर स्याम ~ कीन्हौ बुद्धि प्रकास १७६८।

राधा-पति राधा के प्रियतम (कृष्ण) ने . ~ सर्वस अपनौ दै, पुनि ता हाथ बिकाने १०७०।

राधा-बर राधापति, राधिका के प्रियतम ~ निज नाम कहायौ ११७९।

राधा-रवन १ राधा के साथ रमण करने वाले (कृष्ण) बनि ठनि बैठे ~ २१७०। २ राधारमण (कृष्ण) ने ~ बजायौ बेनु ११८०।

राधिकहि राधा को . सुनहु स्याम वै सखी ~ जुगवति जतन किए ४११८।

राधिका दे० राधा : कबहुँ ~ मान करैगी २५२५।

राधिका रमन राध -रमण (श्री कृष्ण) ने : ~ वन-भुवन सुख देखि कै ९८८।

राधिका-रवन राधा-रमण (कृष्ण) : ~ जुवती रवन मन रवन २१७०।

राधीस राधा के ईश (श्री कृष्ण) : सोई श्री सुकदेव महामति प्रकट कही ~ सारा० १०९५।

राधे राधा का . ~ कियौ कौन सुभाव सा० ल० १।

राधेहि १ राधा ने भी : ~ स्याम देखी आइ ७७३६। २ राधा को . ~ मिलेहुँ प्रतीति न आवति २१२३।

रान जघा पटकि ~ उलटौ परयो मैं करौं बधाई ६८।

रानि रानी ने . बाँध्यौ जसुमति ~ ४८७।

रानिनि १. रानियों को ~ परबोधि स्याम आए ३०८४। २ रानियों के : ~ महित पर्यौ चरननि तर ९८४।

राने राजा सूर स्याम गोबरधन ~ ९४१।

रानैं राजा जाति गोत कुल नाम गनत नहिं रक होइ कै ~ १/११।

रानौ राजा जतन जतन करि माया जोरी, लै गयौ रक न ~

१/३०९।
रान्यौ राजा : होइ सो होइ यह कहत ~ ३०६६।
राम[1] राम। ~ **दुहाई १.** राम की विजयश्री का घोष : सूर-दास प्रभु लंका तोरैं फेरैं ~ — ९/११७। २ राम की शपथ : सुनि री सखी मोहिं ~ — ३३७५।
राम[2] बलराम : ~ स्याम सँग राजत ८०६।
रामकली एक रागिनी, भैरव राग की स्त्री . ~ गुनकली केनकी सुर सुघराई गाये सारा० १०७७।
रामतरोई तुरई, एक तरकारी जो बरसात मे होती है . खीरा ~ तार्मै ११०३।
रामदल (राम की सेना, अर्थान्तर से रिक्ष अर्थात् नक्षत्र)=तारा-गण : ~ जुत सान सा० ल० २०।
राम-दूत (राम के दूत अंगद=) बाजूबंद ~ दुति दिपत नछत्रन सा० ल० ९८।
राम पद-संग राम के चरणों का संग अर्थात् राम के ही चरण : तब पग परेउ बहुत अस्तुति करि जानि ~ सारा० ६४७।
राम-रेख राम की आज्ञा या मर्यादा को अति अग्यान मूढ मति मेरी, ~ पग पेली ९/९४।
रामहि[1] १ राम का तन तौ ~ नाम उचारे ७/२। २ राम को : तैं ~ बनवास दियौ ९/४८। ~ **राम** राम ही राम, राम राम ही : ~ — पढौ रे भाई ७/२।
रामहि[2] बलराम को . स्याम ~ कठ लाए ३०९१।
रामाग्या राम का आदेश ~ नहि पायौ ०/८८।
राय महाराज, राजा, सम्राट् . दशरथ ~ न्हाय भोजन को बैठे अपने धाम सारा० १८४।
रार झगडा, युद्ध कीन्ही मेघनाद सौं ~ ९/१०४।
रारि १ झगडा . कृपा करि ~ डारौ मिटाई ८/९। २ दुश्मनी, शत्रुता : बाढी सब लोगनि सौं ~ २३८८।
राव १ राजा, सम्राट् . भरत सो भरत राइ को ~ ५/३। २ हे राजन् . बरनि कह्यौ मैं तुमसौं ~ ०/३।
रावन रावण, लंका का राजा जिसके पिता का नाम विश्रवा तथा माता का नाम कैकसी था : अरु ~ कैं सीस सकल सम ४२११।
रावनहि रावण को नल कूबर को साप ~ ९/८०।
राव-रंक राजा-रंक, धनी निर्धन : ~ दजा नहि कोइ ४०९४।
रावरी १ आपकी . चकित भई सुनि कथा ~ १६९८। २ अपनी : ~ मैनहू साज कीजै ९/१३६।
रावरे १ आप हैं : सदा जिन के ~ ३८६५। २ आपके : धीरज क्यों रहै ~ मुख मोरत १०४५। ३ आप तो : घर ही के बाढे ~ ३६१६।
रावरेहि आप ही के : आतुर ह्वै उठि धाई ~ लीनी २७८९।
रावरैं १ आप : देत उरहनौं ~ १६१८। २ आपके : देह ~ सोच बुढानी ३६३७।
रावरौ आपका . मानहिंगी उपकार ~ ७९२।
राषौ रखो, बनाये रखो परम सुमति ~ रति राज ३८७८।
रास[1] एक मंडलाकार नृत्य जिसका आरंभ श्रीकृष्ण द्वारा शरद पूर्णिमा की रात्रि को गोपियों के साथ किया गया था सो गोपिन सँग ~ रमावै ३। ~ **उपायौ** रास लीला/क्रीडा/नृत्य का आयोजन किया जहाँ स्याम घन ~ — २०३९।
रास[2] राशि (बारह राशियाँ) केहरि बैठ ~ नै मूरत सा०ल०८१।
रास[3] समूह, ढेर : नहँ विधु-भानु समान एक रस सो बारिज सुख ~ १/३३०।
रासनि रास (नृत्य) में तिनना भैंट करी रस ~ परि०१/१८८।
रास-बिलास रास-क्रीडा ~ करत नँद नंदन सो हम न अति दूरि १०६४।
रासभ गधे पर : गय बर मेटि चढावत ~ १६८२।
रास मंडल मंडलाकार रास (नृत्य) मे ~ बने स्याम स्यामा १०४०।
रास रंग रास (नृत्य) का खेल तैसोइ ~ उपजायो १०१०।
रासि[1] राशि, समूह . प्रगट रूप की ~ मनोहर ३६६६।
रासि[2] आकाश पृथ्वी जिस मार्ग से होकर सूर्य की परिक्रमा करते हैं, वह क्रांतिवृत्त कहलाता है। इस क्रांतिवृत्त पर दोनों ओर प्राय ८० अंश तक अनेक तारा समूह फैले हुए हैं। इनमें से प्रत्येक तारा समूह में से होकर गुजरने में सूर्य को प्राय. एक मास लगता है, इसी विचार से समस्त क्रांतिवृत्त बारह बराबर भागों में बाँट दिया गया है जिन्हें राशि कहते हैं . चौथे सिंह ~ के दिनकर ८६।
रासिनि रास नृत्यों का बिरम ~ तुरनि करि करि नैन बहु जल तोर परि० १/१०२।
रासी[1] समूह, ढेर हम लूटी सुख ~ ३५५५। २ समूह हैं : मुरली धरन सकल अँग सुंदर रूप सिंधु की ~ ३३६८।
रासी[2] ढेर (पर) भ्रमत भ्रमत सुख और सुमन सँग मधुप एक इक ~ ३८४४।
राह १ रास्ते पर, मार्ग से चलत न तुम क्यों सूध ~ ५/८। २ प्रथा, रीति हमहिं छाँटि कुबिजहिं मन दीनो कौन बेद की ~ ३३६६। ~ **मन गहियो** निश्चित मार्ग पर ही चलने का निश्चय किया ये सब बचन सुनै मन मोहन गहै ~ — ३१३।
राहु १ नौ ग्रहों में से एक जिसके पिता का नाम विप्रचित्ति और माता का सिंहिका था। समुद्र मथन के समय जब वह लोग ने अमृतपान करने लगा तब चंद्रमा एव सूर्य के संकेत से विष्णु ने उसका सिर काट डाला परन्तु अमृत के प्रभाव से वह जीवित रहा। तभी से उसका सिर 'राहु' और धड 'केतु' नाम से जाना जाता है। लोक में यह अपवाद प्रचलित है

कि उसी शत्रुता-वश यह सूर्य और चद्रमा को ग्रसता है कहँ वह ~ कहा वे रवि ससि आनि सँजोग परै १/२६४। २ राहु ने चद तज्यौ जनि ~ ३८१८। ~ **लियौ री** राहु ने ग्रस लिया हो. मनहुँ सरद-ससि ~ २७७०।

राहु भख के बंधु राहु के भक्षण (सूर्य) का बधु=कमल ~ से तव हैं सा० ल० ६९।

राहै राहु ने, राहु के द्वारा विलपति अति पछितात मनहि मन चद गहे जनु ~ ३२७९।

रिगन लीला रेंगने की क्रीडा फिरि हरि आय यशोदा के गृह ~ करिहैं सारा० ५६१।

रिगाइ रिगाकर, घुमा फिराकर सूर स्याम मेरौ अति बालक मारत ताहि ~ ५१०।

रिंगावत चलवाते हैं, चलाते हैं. कबहुँ कान्ह कर छाड नद पग द्वैक ~ १२२।

रिगावै धीरे धीरे चलाती हैं • कबहुँक पल्लव पानि गहावै आगन मॉझ ~ १३०।

रिग्यौ चला हो, रेंग गया हो मनहु विवर तैं उरग ~ तकि गिरि की सधि-थली २६१९।

रिचा वेद मत्र • ~ स्तु ति की सब आही ११७५।

रिच्छ नक्षत्र, तारा: वेंदी ~ बखानौ सा० ल० १०२।

रिच्छ तीजौ (तीसरा नक्षत्र =) कृत्तिका: मानहु कज ~ गहि तीजो सा० ल० १३।

रिच्छप रीछ (वन्दर) आदि ~ तर्क बोलिहैं मोसौ ९/७५।

रिच्छपति ग्रहपति = चद्रमा ~ रुचि धार सा० ल० १७।

रिच्छ फरकत तेरहौं (तेरहवा नक्षत्र = हस्त =) हाथ फडकने लगे: ~ सा० ल० ७५।

रिच्छराज (भालुओ के स्वामी) जाववान ने ~ वह मनि तासौं लै जाम्ववती कौं दीन्ही ४१९०।

रिछराज जाम्ववान सिंह हत्यौ ~ ४१९०।

रिझई रिझा लिया: काम तनु ताम ~ मदन गुपाल २७०१।

रिझए प्रसन्न कर लिया: सूरदास ~ गिरिधारी २३८४।

रिझयौ प्रसन्न कर लिया है • सूर स्याम ऐसें मोहि ~ १६७०।

रिझवत १ प्रसन्न करते हो: विविध बचन सुदेस बानी इहाँ ~ काहि ३३३९। २ खुश करते है सूर स्याम स्यामा मन ~ २१७४। ३ प्रसन्न करते थे, रिझाते थे नाद-प्रनालि प्रवेस घोष मैं ~ तिय सिगरी ३६३३।

रिझवति मुग्ध/प्रसन्न करती है ~ पियहिं बारबार १०८०।

रिझहु प्रसन्न होओ: जिहिं जिहिं भाँति ~ नदनदन २१४२।

रिझाई मुग्ध कर लिया/लिया है • मोहन मुरलि बजाइ ~ १९१७।

रिझाउ खुश करो पालागौ ऐमी इन बातनि उनहीं जाइ ~ ३६१८।

रिझाऊँ १ खुश करूँ तिहिं तिहिं भाँति ~ २१४२। २. मोहित करूँ करनाटी गौरी मैं गाऊँ मुरलि बजाइ ~ २१४०।

रिझाए १ रिझाया था तुम रीझे की उनहि ~ २५१७। २. प्रसन्न किया • करि अस्तुति गोबिद ~ ३८६। ३ प्रसन्न/मोहित करते थे: जिहिं मुख मुरली धरि अद्भुत सुर गाइ बजाइ ~ ३८७२।

रिझाय प्रसन्न करके यह कहि कै मुनि लोक सिधारे बीन बजाय ~ सारा० ६८८।

रिझायौ प्रसन्न कर लिया सूर स्याम देखत सिहात हैं ताकौं गाइ ~ १२६५।

रिझावत १ प्रसन्न या मोहित करते है: सूर स्याम प्रभु तनु त्रिभग है जुवतिनि मनहिं ~ १०५४। २ मोहित करती है ललिता ललित बजाय ~ सारा० १०१२। ३ आनन्दित होते है, आनन्दित कर रहे हैं: तनक तनक चरननि सौं नाचत, मनहिं मनहिं ~ १७७।

रिझावति प्रसन्न करती है: स्याम स्यामा ~ भारी १०७९।

रिझावहु खुश/प्रसन्न करो: ऐसै हँसि हँसि ताहि ~ २५४५।

रिझावैं मोहित कर लेती हैं सूर स्याम ते बहुत बहुत गुनी जे तुमहि ~ २५५८।

रिझावै १ मोहित कर लेता है/लिते हैं • इहि बिधि कान्ह ~ १४०२। २ मोहित करती है/कर रही है नद सुवन कौ मन ~ १०६१। ३ प्रसन्न करे को कहि कहा ~ सा० ल० ६४।

रिझावौं प्रसन्न करूँ, अनुकूल बनाऊँ: कहा करौं किहि भाँति ~ १/१२७।

रिझै मोहित करके रैनि नृत्यत ~ पिय मन २४११।

रितयौ खाली कर दिया: कुबुधि कमान चढाइ कोप करि बुधि तरकस ~ १/६४।

रितवत खाली करती हो उर तौ ~ प्रेम कत २८२८।

रितवति खाली करती हिय तै बादि प्रेम ~ हौ २८२६।

रिती खाली: प्रीति न सूर ~ ११/१।

रितु १ ऋतु: सरद ~ जल घटत न जानति २८०२। २. ऋतुएँ • राका मास ~ जेती ३८४८।

रितु पावस वर्षा ऋतु के: मनौ मेघनायक ~ बान बृष्टि करि सेन कँपायौ ९/१४१।

रितु फाग बसत ऋतु मे: मकरद पिवत ~ १७७७।

रितुराज १ बसत ऋतु के: सूर समै ~ बिराज्यौ ३७५२। २. बसत ऋतु से • ज्यौं ~ बिमुख भृगो की, छिन छिन बानी छीन ३२४१।

रिधि-सिधि ऋद्धियाँ एव सिद्धियाँ • ~ मुक्ति अभय पद दायक ४३०६।
रिन-दास कर्ज देकर खरीदा हुआ दास, क्रीत दास जौं न अगीकृत करें वै होइहौं ~ ३४३१।
रिन-संबंध ऋण (लेन-देन) का सम्बन्ध : ~ मिलन जग माहीं ७/२।
रिनी कर्जदार, ऋणी : इनकौ बहुत ~ हौं १६०४।
रिनु ऋण, कर्ज . जनि राखौ प्रभु पोच बन ~ ४०२३।
रिपु १ शत्रु : ब्रज-भीतर उपज्यौ मेरौ ~ ६०। २ शत्रु को • जरासिंधु ~ मारयौ १/१०९। ३ शत्रुओं को अबहिं निवाद नाउँ सब ~ हनि ९/०७।
रिपुमार कामदेव के शत्रु अर्थात् शकर अच्छत लै पूजन ~ १२०२।
रिपु सु मारग मारग (काम) उसका शत्रु=मान : गहत मारग ~ दियौ मारग मीम सा० ल० ५५।
रिषभ दे० रिषभ देव : बहुरौ ~ बडे जब भए ५/२।
रिषभ देव १ ऋषभदेव जो विष्णु के एक अवतार थे • ~ जब बन कौं गए ५/३।
रिषभ-राज ऋषभदेव के राज्य ने : ~ परजा सुख पायौ ५/२।
रिषभहिं ऋषभ देव को ~ देखि ५/२।
रिषय ऋषि : प्रगटे ~ नम्र अभिराम ३/८।
रिषि १. ऋषि, महर्षि ~ अठासी सहस हुए स्रोता ४२२३। २ ऋषि ने : ~ नृप सौं जग विधि करवाइ ९/२। ३ ऋषि-गण • अच्छत दूब लिए ~ ठाढे १९।
रिषि-तनया महर्षि की पुत्री देवयानी : कच रिषि ~ सौं कह्यौ ९/१७३।
रिषिन ऋषियों ने : ~ कह्यौ हरि कथा सुनावौ १/२२८।
रिषिनि १ ऋषियों ने • ~ बहुरौ कियौ ४/६। २ ऋषियों को . भयौ ~ आनद ९/२४।
रिषिपति श्रेष्ठ ऋषियों के . जग्य भाग नहिं लियौ देन सौं ~ पतित विचारे १/२५।
रिषिपतिनी (गौतम) ऋषि की पत्नी अर्थात् अहल्या : जे पद पदुम परम ~ बलि, नृग, व्याध पतित बहु तारे १/९४।
रिषिराइ १ ऋषि शिरोमणि, ऋषीश्वर • मैं जान्यौ, तुम ही ~ ५/४। २ ऋषीश्वर ने . चरनोदक सिर धरि कह्यौ कृपा करी ~ ४२१०।
रिषि राई ऋषि शिरोमणि, ऋषिराज : ग्रे छूटे किहिं विधि ~ ६/२।
रिषि राज ऋषियों मे श्रेष्ठ ऋषि : . नद-भवन ~ गए ८५।
रिषिवर श्रेष्ठ ऋषि गण : महाराज ~ सुर नर मुनि देखत रहे लजाइ १/४०।
रिषिहि १ ऋषि को ~ देखि नृप कह्यौ या भाइ ९/५। २ ऋषियों को : कह्यौ तुरनि तुम ~ ननायौ ९/३। ३ ऋषि से पूछन ~ अजोध्या कौ पति ०/१७।
रिषहूँ ऋषि (को) भी : मुनि ~ कौं जारन लाग्यौ ९/५।
रिषीस्वर ऋषि शिरोमणि च्यवन ~ बहु तप कियौ ९/३।
रिस १ क्रोध, गुस्सा : जब मोहिं ~ लागति तब त्रासनि ३९९। २ गुस्से मे • ग्वालिनि देखि मनहिं ~ काँपे ५८५। ३. गुस्से मे • बार बार खीझै ~ झूरै ३९१। ४ क्रोध की • तब खीझी ~ - म्रर तें ७४४। ५ क्रोध का रस मैं ~ - विष दै विचरत हठ २०९१। **~ करि करि** क्रोधित हो होकर . ~ — गरजत नभ ८७८। **~ पाए** क्रुद्ध हो गए : सर सुनत दूतनि ~ — ९२२। **~ पायौ** नाराज हो गये : जुवती कहति कान्ह ~ — ८९४। **~ पावति** १ क्रुद्ध होती हो/हैं गुरुजन खिझ करहिं ~ — १६८५। २ क्रुद्ध करती है : मानत नहिं और ~ — १००३। **~ पावैं** १. क्रुद्ध होती हैं : यह कहि कहि ~ — १९२१। २ क्रुद्ध होते हैं : हम पर ~ — २२४३। **~ ही रिस** गुस्से ही गुस्से मे नहि न मकी ~ — भरि गई बहुनै ढीठ कन्हाई ३७७।
रिस ग्यान क्रोधपूर्ण विचार या क्रोध करने का विचार दूर करौ ~ १३५३।
रिसनि गुस्से से/में : बोल करति नहिं ~ १९२०। **~ आगें** गुस्से से, क्रोध के कारण ~ — कहि जु आवति ३१३८।
रिसयानी क्रोधित हुई, नाराज हुई कस बस को नाश करत है कहा मसुफ ~ सारा० ३८१।
रिसहाई[1] १ क्रुद्ध, कुपित, रुष्ट जननी अतिहिं भई ~ १९६९। २ क्रुद्ध (ई) : ये मोपर सब ई ~ १७२७। ३ नाराज, बिगडैल (बेटी) . पुनि पुनि कहि मेरी ~ १७१८।
रिसहाई[2] बदनामी कहा कहति है है ~ १६५१।
रिसाइ १ क्रुद्ध/रुष्ट होकर • बोली सिया ~ ९/७७। २ क्रोध करें, नाराज हों . लाख लोग ~ १६५९। ३ क्रोध करती है/हो . कहँ तू इनौ ~ २७६। ४ क्रुद्ध होते है, गुस्सा करते हैं बाप ~ माइ घर मार १६६३।
रिसाइ क्रि०वि० क्रोध करके, क्रुद्ध होकर • इक धनुष सायक लै छाँड्यौ ~ ३३१७। क्रि० अ० १ क्रुद्ध होते हे . यह नो बान लागति कछु साँची इन पर ग्याइ ~ १९५९। २ क्रुद्ध हुआ कस देखि निज काल आपनो बहुतहिं क्रोध ~ सारा० ५१८। स्त्री० क्रोध, गुस्सा तब कासौं सो करे ~ ९५०।
रिसाउ नाराज/रुष्ट हों • साँवरे सौं प्रीति बाढी लाख लोग ~ १४५६।
रिसाए क्रुद्ध हुए • सबनि कहनि मन रीस ~ ३३६३।
रिसात १ क्रुद्ध होता है • मोको देखि ~ १८८८।

२ गुस्सा करते हैं · सुनि सुनि नद ~ ३२६ । ३ गुस्सा करती है, क्रुद्ध होती है . हँसत ~ बुलावत बरजत ४२०१ ।

रिसाति १ नाराज/क्रुद्ध होती है हँसत ~ बुलावति १६३९ । २ नाराज होती हो . कतहिं ~ जसोदा इन मा ३५९ ।

रिसानी १ क्रुद्ध हो रही है स्याम लरत तबही तैं उनसौं तिन पर अतिहिं ~ २४३२ । २ क्रोध करती हो जा कारन तू मोहि ~ १७१६ । ३ क्रुद्ध हूँ तुम पर अतिहिं ~ १७३२ ।

रिसाने १ क्रुद्ध हुए · अब तुम कहा ~ २१४ । २ नाराज हो रहे थे आपुम ही मैं सबै ~ ९४१ । ३. नाराज/क्रुद्ध होने पर : क्रुग्न कै ~ ३०७७ ।

रिसान्यौ १ क्रुद्ध हुए, क्रोध किया मो पर बारबार ~ १८८४ । २ नाराज हो गये काहे तैं सुधि करी न मेरी मो पै कहा ~ १८९३ ।

रिसाय नाराज होकर चली ~ कुंज मृगनयनी सारा० ९१५ ।

रिसायौ क्रुद्ध हुए · तातैं अधिक ~ १५६ ।

रिसाहिं १ क्रोध करती है, नाराज होती है तनक दधि कारन जसोदा इतौ कहा ~ ३५० । २ क्रोध करता है · पति विमुख पिक परुष पसु लौं इतौ कहा ~ ३३३९ ।

रिसाही क्रोध करती है : छार मोनिसरि कौ मोहिं ~ री १९७४ ।

रिसियाई क्रुद्ध होकर, क्रोधित होता है · तब नृप कंस बहुत बिललायो बार बार ~ सारा० ५२४ ।

रिसैयाँ गुस्सा या झगड़ा : हरि हारे जीते श्रीदामा बरबस ही कत करत ~ २४५ ।

री स्त्रियो का सबोधन, अरी मोहन अति सुख पाइ गए ~ १८८१ ।

रीझ प्रसन्न होकर रे मूरख तू कहा पढायो कैसे देउँ तोहिं ~ सारा० ११८ । ~ **पै** प्रसन्नता पर तनक ~ — देत सकल तन १५२ ।

रीझत १ प्रसन्न होते हैं/हो रहे हैं यह कहि मन मन ~ ४३४ । २ मुग्ध हो जाता है . सुंदर झलकनि ~ काम १८२५ । ३ प्रसन्न होकर : ~ नारि कहत मथुरा की सारा० ५०४ ।

रीझति प्रसन्न होती है : कोउ ~ कोउ खीझति बाम २४७५ ।

रीझही प्रसन्न होते है कबहुँ कियै भक्ति हू के न ये ~ ८/८ ।

रीझि १ प्रसन्न होकर/हो जाने पर सरबस प्रभु ~ देत १/१२३ । ~ **रीझि** प्रसन्न हो हो कर ~ — कहै बात २१७८ ।

रीझी मोहित हो गई . एक-एक अँग अँग पर ~ अरुझीं मुरलीधर कौं ५४७ ।

रीझी १ मुग्ध हो गई सुनि ~ रस ताननि १३६६ । २ मुग्ध होकर, मुग्ध हुई : ~ आइ २७९० ।

रीझे १ प्रसन्न हो गए : एक दुष्ट ने बहुत कियो तप सो ~ त्रिपुरार सारा० ७०७ । २. मुग्ध हो गये/गये हैं . ~ जाइ कस दासी पर ३९६२ । ~ **मन-मन** मन ही मन प्रसन्न हुए : सिखर देखि सब ~ — ९०४ ।

रीझैं मोहित हो जाएँ · हम तौ कौन रूप गुन आगरि जिहि गुपाल जू ~ ४०६४ ।

रीझै १ प्रसन्न होती है · मोहन मुख रिस की ये बातैं जसुमति सुनि सुनि ~ २१५ । २ मोहित हो जाय/जायँ : सोइ अति रूप सुलच्छन नारी ~ जाहि भावतौ जी कौ २७३८ ।

रीझौं प्रसन्न होऊँगा : ऐसें नहि ~ मै तुम सौं, तटहीं बाहँ उठावहु ७९१ ।

रीझ्यौ मोहित हो गये है : नृप हति छाँडि सकल ब्रज बनिता कान्ह कूबरी ~ ३६५० ।

रीति १ ढग, व्यवहार : जा दिना तैं जन्म पायो यहै मेरी ~ १/१०६ । २ दशा, हालत भई ~ हठि उरग छछूँदरि ३७३९ । ३ मर्यादा, नियम कुल की ~ गँवाइ १०१७ । ~ **भई** मर्यादाओं/नियमो का पालन हुआ : ब्रज की सब ~ — १०७४ ।

रीति भव सासारिक-बंधन : उघटयौ सकल सँगीत ~ १/२०५ ।

रीती खाली, रिक्त : देखी जाइ मटुकिया ~ २७१ ।

रीते खाली, शून्य सूरज दास हमारे लोचन भए कान्ह बिनु ~ ३६९५ ।

रीतै रिक्त को, जो खाली है उसे ~ भरै, भरैं पुनि ढारै १/१०५ ।

रीतौ १ खाली · ~ घट नहिं लैहौं १४०४ । २ सूना-सूना है : कालिहिं तैं ~ गर तेरौ १९६९ ।

रीत्यौ नियम है, रीति ही है : हमहूँ समुझि परीनीकैं करि यही असितन की ~ ३३८३ ।

रीरा राधा की एक सखी : अमला, अबला, कजा, मुकुता, ~, नीला प्यारि २००८ ।

रीस[1] रिस, क्रोध, गुस्सा सबनि कहति मन ~ रिसाए ३३६३ ।

रीस[2] समता, बराबरी · हमसौं उनसौं कैसी ~ ४/७ ।

रीसही क्रोध (से) ही : अति ~ तैं तनु छीजै १८३ ।

रुंज एक वाद्य यंत्र ~ मुरज ढफताल बाँसुरी सारा० १०७२ ।

रुँदाइ पैरो से कुचलवा कर/रौंदवा कर · मारौं गज पै ~ मन यह अनुमान्यौ २९३८ ।

रुँदाऊँ पैरों से कुचलवा दूँगा रंग भूमि गज चरन ~ २९२२ ।

रुँधि फाँसकर, बंदकर ब्रज पिंजरी ~ मानौ राखे, निकसन कौं अकुलात ३१७१ ।

रुँधे अवरुद्ध किये (रही), लगाये (रही) इक टक रही नैन दोउ ~ १७८२ ।

रुकत रुकता है, ठहरता है . ~ न प्रेम समुद्र सूर प्रभु ३८३८ ।

रुकम रुक्म, रुक्मिणी का भाई तथा कृष्ण का साला : दीन्हे ~ पठाई ४१८८ ।

रुकमिनि रुक्मिणी, कृष्ण की पटरानियों में सबसे बड़ी और पहली जो विदर्भ देश के राजा भीष्मक की पुत्री थी · हरि सुमिरन जब ~ कर्‌यौ ४१६७ ।

रुकुमिनि-रवन रुक्मिणी-रमण (कृष्ण) · सुनहु न हो ~ १/१८० ।

रुक्का छोटा पत्र या पुरजा . पतित उधारन नाम सूर प्रभु यह ~ पहुँचाऊँ ९/१७२ ।

रुक्म रुक्म ने : ~ कह्यउ शिशुपालहिं देहौं नहीं कृष्ण सों काम सारा० ६२८ ।

रुक्मिनि रुक्मिणी ~ पुत्री हरि रँग राँच ४१६७ ।

रुक्मिनी रुक्मिणी को · लखि लखि ~ कह्यौ मुनि नारद यह कमला अवतार सारा० ६२३ ।

रुख इच्छा के अनुकूल : जाहु लिवाइ सूर के प्रभु कौं कहति वीर कैं ~ की ४२५ ।

रुखनि इच्छानुकूल : धन्य नंद धनि मातु जसुमति चलत जाकैं ~ ९७९ ।

रुखाई उदासीनता, रूखापन : औरनि कैं हाँसी-खेल, तिहारी ~ माई २८०९ ।

रुखौंही उदासीन, रुखी . हरि की ब्रज तन दीठि ~ ३४९५ ।

रुचकारे रुचिकर, मनोहर पय सुर लिया बीच ~ सा० ल० ९१ ।

रुचत अच्छा लगता है · कमल तजि तन ~ नाहीं ३९१७ ।

रुचि[1] १ इच्छा, प्रवृत्ति, झुकाव · अपनी ~ जित ही तित ऐंचति १/९८ । २ इच्छा से दरस पति ~ मुदित मनसिज २१३३ । ~ △ **मानहि** प्रवृत्त होंगी, झुकेंगी : आन प्रकार कहाँ ~ — जे गोपाल उपासी ३६६९ । ~ **मानैं** प्रवृत्त होंगे, प्रेम करेंगे · ते तुम सौं फिरि कैं ~ — २२६१ ।

रुचि[2] १ प्रीति, प्रेम · ताही पर ~ मानत री २२३६ । २ प्रेम से : तेल लगाइ कियौ ~ मर्दन १/५२ । ~ **उपजायौ** लगाव उत्पन्न किया · देखि सरद-निसि ~ — ११७९ । ~ **करि** प्रेमपूर्वक · पाडे ~ — खीर चढायौ २४८ । ~ **बढ़ाए** प्रेमपूर्वक · जेंवत कान्ह ग्वाल-सँग बैठि अति ~ — १५९६ । ~ **बाढे** प्रेमपूर्वक · भोजन करत अधिक ~ — ९१३ । ~ **भोइ** प्रेम में डूब-कर राधिका ~ — सा० ल० शेष ६ । △ ~ **मान्यौ** प्रेमकिया · उनहीं सौं ~ — २२२२ ।

रुचि[3] आनंद, सुख : उरहनौ देत ~ अधिक बाढी ३०७ ।

रुचि[4] स्वाद, आयका दाम मजूरी की ~ न्यारी २२७ ।

रुचि[5] शोभा, सुन्दरता : भृकुटि कोटि कोदंड ~ ३५६१ । △ ~ **आवै** रुचना, अच्छा लगना मोहिं नहीं ~ — २६४ । ~ **मानै** १ अच्छी लगती है · खाटी मही कहा ~ — ३८५८ । २ अच्छा लगता है · विष कौ कीट विषहिं ~ — १०२४ । ~ **लागी** अच्छी लगती है : दृष्टि परम ~ — ३५३२ । ~ **हृदय भई** हृदय में उत्सुकता जाग उठी : नारायन कमला सुनि दंपति अति ~ — १०६४ ।

रुचि[6] ब्रह्मा के पुत्र एक प्रजापति, तेरहवें मनु रौच्य के पिता, सूरदास के अनुसार अत्रि के पिता : ~ कैं अत्रि नाम सुत भयो ४/२ ।

रुचिकारि रुचिकर, मनोहर, अच्छा लगने वाला . कोउ निरखि कटि पीन काञ्चनी मेखला ~ ६३४ ।

रुचिकारी अच्छा लगने वाला है · मोरजरन्त्र रूप ~ ३८४२ ।

रुचिधारी रुचि रहती है : चौक चवाउ भरे दुविधा छकि रस रचना ~ १/६० ।

रुचिर सुन्दर, मनोहर · ~ कपोत बसत ता ऊपर २११० । ~ **रचि** १ सुंदर ढंग से बनाते हैं . कबहुँक कमलन पीठि ~ — कबहुँक गान करत गुन ग्राम २७८१ । २ सुंदर ढंग से बनाकर . अति बल जोबन धाइ ~ — बदन मिलि स्रम-नीर १९८६ ।

रुचै अच्छा लगे जाकौं जैसौ रूप मन ~ ३८६६ ।

रुठाइहौ नाराज करोगे : अब ~ जौ गिरधारी २८२८ ।

रुठावन नाराज करने को · परी ~ बानि इन २८२८ ।

रुदत रोती हुई, रोती हुई . सकल सुरभी जूथ दिन प्रति ~ पुर दिसि धाइ ४०७२ ।

रुदन रोना, विलाप ~ सुनत राजा तहँ आयौ ६/५ । ~ **बल** रोने के बल पर · धरे न धीर निमेष ~ — २३४० ।

रुदन-जल आँसू : ~ नदी-सम बहि चल्यौ १०१९ ।

रुद्र १ एक प्रकार के गण देवता जो क्रोध रूप माने जाते हैं और इनकी संख्या ११ है · ताकौं नाम ~ विधि राख्यौ ३/७ । २. शंकर, महादेव ~ विरंचि सेस सहसानन, २८०७ । ३ शंकर ने : कामदेव प्रगटे हरि के गृह पहिले ~ जरायो सारा० ६८९ ।

रुद्रदेव महादेव · ब्रह्मा ~ तहँ आये शुक नारद सनकादि सारा० ६४० ।

रुद्रनि रुद्रों ने, शंकर ने मदाकिनि मानौ सिर धरि कै ~ करी पुकार २७६३ ।

रुद्रपति महादेव ~, छुद्रपति, लोकपति, ओकपति १९४७ ।

रुद्रहि शिव को : ~ सेवहु मन-वच-क्रम अब ७९९ ।

रुद्रादिक रुद्र इत्यादि देवगण : ब्रह्मादिक ~ इक ठाऊँ

९/१७० ।

रुधि रोक कर : व्रज पिंजरी ~ मानौ राखे निकसन कौं अकुलात ३१७१ ।

रुधिर १ खून, रक्त . वमत ~ नहि जात सम्हार्‌यौ ५७४ । २ खून से/में : फारि उदर तिहि ~ नहैहौं ७/५ ।

रुधिरमय रक्तरंजित करौं ~ पंक ९/१३४ ।

रुनकझुनक रुनझुन शब्द (करते हुए) . ~ कर कंकन बाजै २९९ ।

रुनकझुनुक रुनझुन शब्द करते हुए ~ नूपुर पग बाजत धुनि अति ही मन-हरनी १२३ ।

रुनझुन नूपुर इत्यादि की झनकार · ~ करति पाइँ पैजनियाँ १०६ ।

रुनित रुनझुन शब्द करते हुए · चरन ~ नूपुर कटि किंकिनि करतल ताल रसाल ११३६ ।

रुपे छेड़ दिया, प्रारम्भ किया · ~ सग्राम रति खेत नीके २१२९ ।

रुराइ सुशोभित हो रही थी, लटक रही थी मुक्तामाल ~ ग्वालि मदमाती हो २८६२ ।

रुराई १ लटकती है · उर मुक्तनि की माल ~ परि० २/४७ । २ लटकती बनाई उर बहु दाम ~ ३३४६ ।

रुरै डोल रहा है केहरि नख उर पर ~ १३४ ।

रुलति लटक रही है · बेनी पीठि ~ झकझोरी ६७२ ।

रुलाई हिलती है, झूम रही है नील, सेत अरु पीत लालमनि लटकन भाल ~ १०८ ।

रुहठि रुठाव, नाराजगी, रोष . ~ करै तासौं को खेलै ७४५ ।

रूँठे नाराज हुए : सूर आपने प्राननि खेलैं ऊधौ खेलैं ~ ३८९१ ।

रूँधे बंद या अवरुद्ध कर दिये : सुरति के दस द्वार ~ जरा घेर्‌यौ आइ १/३१६ ।

रूँधौ रूँधते हो, अवरुद्ध करते हो · राजपथ क्यौं ~ ३८९० ।

रूख १ वृक्ष, पेड़ : किन ये दोऊ ~ हमारे यमलार्जुन तोरे ३६३० । २. पेड़ पर चढ़े कृपा करि ~ ३८२२ ।

रूखा नीरस, कठोर . लगर, ढीठ, गुमानी, टुंडक, महा मसखरा ~ १/१८६ ।

रूखी १ शुष्क, सूखी हुई षटरस भोजन त्यागि कहौ कौं ~ रोटी खात । २. नीरस, कठोर कैसैं रहति रूप रस राँची ये बतियाँ सुनि ~ ३५५७ ।

रूखे अप्रसन्न, क्रुद्ध यह सुनि कै वै है गए ~ ८०० ।

रूखौ सूखा-रूखा · साँच-झूठ करि माया जोरी आपुन ~ खातौ १/३०२ ।

रूठन रूठना, नाराज होना तोहिं किन ~ सिखई प्यारी २७५२ ।

रूठि अप्रसन्न होकर : मानौ कुमुद ~ उडुपति सौं २८२६ ।

रूठेहि रूठे हुए (व्यक्ति) को : ~ आदर देत सयाने २५७० ।

रूढ़ चढ़े हुए, सवार हुए बिनु रथ ~ दुसह दुख मारग बिन पद-त्रान चलै दोउ भ्रात ९/३८ ।

रूप १ स्वरूप, आकार ~ रेख गुन जाति-जुगुत बिनु निरालब कित धावै १/२ । २ स्वरूप को, देह की गठन को स्याम ~ निहारि ८२९ । ३ शरीर, देह · रहि न सकै नरसिंह ~ धरि गहि कर असुर पछार्‌यौ १/१०९ । ४. वेश . ~ मोहिनी धरि ब्रज आई ५० । ५ सौंदर्य उन तन चितै आपु तन चितवहु अहो ~ की रासी २८२६ ।

रूप रस आगरी रूप और प्रेम से भरी मध्य ब्रज नागरी, ~, घोष उज्जागरी, स्याम प्यारी १७५१ ।

रूपरेख रूपाकार को कहा करौं नीके करि हरि को ~ नहि पावति १८५३ ।

रूपहि १ स्वरूप को, देह को · बानर ~ धारि ९/८३ । २ सौंदर्य को, छवि को · देखत हरि कैं ~ २३९८ ।

रूपहि स्वरूप का प्रेम सहित मम ~ ध्यावहु ११/४ ।

रूपहूँ स्वरूप से भी कारे नाम ~ कारे मग सखा सब गात ३७४८ ।

रूपा[1] चाँदी . लोह तरैं मधि ~ लायौ, ताके ऊपर कनक लगायौ ७/७ ।

रूपा[2] राधा की एक सखी प्रेमा, दामा, ~ २००८ ।

रूपादिक सौंदर्य/रूप इत्यादि को : ~ सब बन सम मानौ ४/१२ ।

रूपा-सी स्वरूपा है, आकार या गुण वाली है : तुव बाँहँ बरुन की फाँसी, मो भुज मृनाल ~ परि० १/६३ ।

रूपे चाँदी से . ताँबे ~ सोने सजि राखीं वै बनाइ कै ३०९० ।

रूपैं चाँदी से खुर ताँबैं, ~ पीठि, सोन सींग मढ़ीं २४ ।

रूपै रूप निर्भय ~ लोभ छाडि कै १/१४२ ।

रूर सुंदर लग रहा है . सुंदर वर नासिका-देस पर बेसरि-मुक्ता ~ २६६८ ।

रूरी उत्तम, सुंदर : दूध दँतुरियाँ ~ ११७ ।

रूरे उत्तम, सुंदर · मीनल मजल स्वाद रुचि ~ ३५७६ ।

रूसत रूठने पर : तू जु झुकति ही औरनि ~ अब कहि कैसैं रूसी २८२६ ।

रूसति रूठती, अप्रसन्न होती : सो अब ~ है जब तबहीं २८२८ ।

रूसन रूठते हुए, नाराज होने मे तोहि ~ न आवै लाज २७५३ । ~ **कीज** रूठा कीजिए · तासौं न ~ — हित कै मनाइ लीजै २७८२ ।

रूसनौ रूठना · प्रान प्रियहि ~ कहि कैसौ २८२६ ।

रूसि रूठकर : कहाँ जाउँ मैं कहँ धा रही ~ कै २०१४।
रूसिबे रूठने : यह ऋतु ~ की नाहीं २७४५।
रूसी रूठी हुई हो/है • अब कहि कैसे ~ २८२६।
रूसे रूठे हुए, अप्रसन्न यह उपकार तुम्हारौ मजना ~ कान्ह मिलाए री २२१५।
रूसौं रूठूँगी • कहति हुती ~ नहिं कबहीं २८२८।
रेंगत १ चलते हैं, चल रहे हैं . ठुमुकि-ठुमुकि पग धरना ~ १२६। २ चल रहा है कोउ पहुँचे कोउ ~ मग मैं ८२७। ३ चलने से/पर : तुम्हरौ कमल-बदन कुम्हिलैहै ~ घामहिं माँझ ४११।
रेंगनि चलने की • धूमर धूरि घुटुरुवनि ~ बोलनि वचन रसाल की १०५।
रेंगनियाँ चलने की क्रिया पर : मैं बलिहारी ~ १३२।
रेंगैं चलेगा कब मेरौ लाल घुटुरुवनि ~ ७६।
रेंग्यौ चलकर, आकर ~ जनु तम तट तारागन, उगन घेर्‍यौ सूर २४४५।
रे १ यह एक सम्बोधन शब्द है, जिसका अर्थ प्रसंगानुसार है, अरे, हो इत्यादि होता . रहि ~ अलि मति मद ३९१३, रामहिं राम पढ़ौ ~ भाई ७/२। २ लोक गीतों मे (जैसे-सोहर) मात्रापूर्ति के लिए अथवा मधुरता लाने के लिए भी रे और हे का प्रयोग होता है। सूर ने भी इस अर्थ मे इसे अपनाया है : धनि धनि नंद-जसोमति, धनि जग पावन ~ २८।
रेंक छोटी जाति का व्यक्ति . लावत हृदय खोंच पूरत पट फुरहुरी लेन परिजन ~ परि० १/१४६।
रेख १ लकीर, रेखा • अति विमाल वारिज-दल लोचन राजति काजल ~ री १३६। २ पंक्ति, पतली लकीर रोमावली ~ अति राजति ६३७। ३ रेखाओं को : पानि पल्लव ~ गनि गुन ३५६१।
रेखनि रेखाएँ कपोल भुज धरि जंघा पर लेखति माई नखन की ~ ३४०५।
रेखहि चित्रित करेंगे वनमाला तुमकौं पहिरावहिं धातु-चित्र तनु ~ ४२६।
रेखा रेखा, लिखावट, भाग्य टर न मिटै भाल की ~ ९/११६।
रेखैं रेखाएँ • अब क्यों मिटति हाथ की ~ ३७२८।
रेखै चित्रित किया जाय, बनाया जाय • भीति बिनु कह चित्र ~ रही दूती हेरि २५६६।
रेचक प्राणायाम की तीसरी क्रिया जिसमे साँस को विधिपूर्वक बाहर निकालने का अभ्यास किया जाता है मब आसन ~ अरु पूरक कुंभक सीखे पाइ ३७१०।
रेत बालू सूरदास प्रभु जन तैं बिछुरे यौं कृत राई ~ ३९१९।
रेतनि बालू मे/को ह्याँ के वारिधि बडवानल मैं ~ आनि सची री ४२५६।
रेनु १ रेणु, धूल माधौ मोहिं करौ वृन्दावन ~ ४८०। २ धूलि के कण भूमि ~ कोउ गने २/३६। ३ धूल मे : ~ तनु मंडित मुख ९९।
रेनुक रेणुका, परशुराम की माता परशुराम ~ हँकार्‍यौ ९/१३।
रेल अधिकता, भरमार • सघन कुंज मे अमित केलि लख तनु सुगन्ध की ~ सारा० ९०५।
रेलि अधिकता मे फूली मधु मालति ~ २९१७।
रेवती राजा रेवत की कन्या जो बलराम की पत्नी थी वा गृह जन्म ~ लयौ ९/४।
रेवा नर्मदा नदी जिसके किनारे किसी समय हाथी बहुत पाये जाते थे . मनहुँ सेन ~ ह्रद ते उठि आवत है गजराज २१८५।
रेष रेखा : राजति रोमराजी ~ ६३५।
रेसम छुद नख क्षत ~ धन ऊपर आज सा० ल० ९५।
रेह धूल : चखि न सकत पद ~ पथ की चदन कीच खरी ४११४।
रैंता कृष्ण का एक गोप सखा : ~ पैता मना मनसुखा हलधर संगहिं रैहौं ४१२।
रैन[1] रेणु, धूल उठेगी खुर ~ ३२२७।
रैन[2] रात • डोलौं ~ दिना १९५।
रैनि १ रात कान्ह कह्यौ वन ~ न कीनै १९९६। २ रात मे/को/के समय :~ तुम्हारैं आऊँगी २४९३। ३ रात भर, सारी रात : आजु न सोवौं नद दुहाई ~ रहौंगी जागत ४२०। ~ अछत रात शेष रहने पर ही • ~ — मैं गयौ जमुन-जल ९८४। ~ गँवाई २ रात बिताई है • तहँइ जाहु जहँ ~ — २५०५। २ रात बीत गई/समाप्त हो गई तृतीय पहर सब ~ — ९८४।
रैनि रंग रात्रि मे किया गया विलास/समागम : ~ अंग अंग रह्यौ फबि २६४५।
रैनी रात्रि अजहूँ न मानति गत भए ~ २७९८।
रैनु रेणु, धूल अग चंदन ~ १७५५।
रैया राजा : जानि रिपु हानि, तजि कानि यदुराज की नदकि उठि फूलि वसुदेव ~।
रैवत सूर्यवंश के एक राजा, बलराम की पत्नी रेवती इन्हीं की पुत्री थी रविवंसी भयौ ~ राजा ९/४।
रैहैं रहेंगे ब्रज तैं जाइ मधुपुरी ~ १६१०।
रैहै १ रहेगा, निवास करेगा ऐसौ वास कौन ब्रज ~ परि० १/६५। २ रहेगी/रहोगी : कछु कैहै कै मौनहिं ~ १६५०। ३ रह जायेगा ऐसैं ही धर्‍यौ ~ ३६६४। ४ है : इतनौ सुख इनके कर ~ दुख है बहुत अगाध ८३३। ५. रहा जाएगा • दरप मोड़ए सनन्हौ न ~ १७३९।

रैहौं १ रहूँगा हलधर संगहिं ~ ४१०। २ रहूँगी : मैं ~ तुमहीं बिनुहीं १७०९।

रैहौ १ रहोगे, मानोगे . हम जानति तुम यौं नहिं ~ १४६२। २ रहोगी, रह जाओगी • देखति ही तुम ~ १५०८। ३ रहना तुम देखत ~ हम जैहैं १५३७।

रोक्यौ रोका, रोके रहे : कछु दिन पवन कियो अनुप्राशन ~ श्वास यह जानी सारा० ७५।

रोइ रोकर, रोते हुए . ~ रुकमिनी यों कह्यो ४१८८। **नैना आवत** ~ नेत्र (नेत्रों) को रोना आता है, नेत्र रो पडते हैं सुनि कै वचन तिहारे ऊधौ — ~ ३७९४। ~ **रोइ रो** रो कर : ~ — सब कृष्न बुलावत ५४९। ~ **रोइ तब दीन्हौं** तब रो रो पडे : व्याकुल ~ — ९४३। ~ **तौ** रोती थी • व्रज-बनिता कहि ~ — ४२५७।

रोऊ रोता फिरता हूँ, रोने वाला हूँ निर्धिन, नीच, कुलज, दुर्बुद्धी, भोंदू नित को ~ १/१८६।

रोए रोते हैं/रो दिये हैं . काल बली तैं सब जग कांप्यौ ब्रह्मादिकहूँ ~ १/५२।

रोकत १ रोकता है, रोक रहा है . इक मारत इक ~ गेंदहिं ५३३। २ रोकते/छेड़ते हो : वन मैं ~ नारि पराई १५६४। ३. रोकते हैं, अवरुद्ध करते हैं जल भरन जुवती न पावैं घाट ~ जाइ १४२६।

रोकति रोकती है : जाल मग ससि किरन ~ मलय मद समीर ४१११।

रोकन रोकने के लिए • जिन्हें तुम ~ धाए १६१८।

रोकनहार रोकने वाला है : ऐसौ कौन जो ~ १५९२।

रोकनहारौ रोकने वाला, छेड़-छाड़ करने वाला . ~ नद महर-सुत १५९३।

रोकहि रोको : पिय जनि ~ जान दै ८०५।

रोकहु रोको सूर स्याम मारग जिनि ~ १५६८।

रोकि १ रोक कर या वन मैं इतरात हौ ~ पराई नारि १६१८। २ बंद करके ~ देह मुख द्वार ९/५२।

रोकित लोकित, देखते हुए . अति उमँगी सुदरता ~ छवि तरग उपजावै रा परि० १/५०।

रोकीं रोक रखी हैं हँसत सखा करतारी दै दै, वन मैं ~ नारि १५४५।

रोकी रोका एक मातु पितु ~ आनि ११८०।

रोके रोके हुए हैं, अवरुद्ध किए हैं द्वार-कपाट-कोट भट ~ दस दिसि कत कस-भय भारी ११।

रोकैं रोकने पर भी : घूँघट ओट रहत नहिं ~ २३२६।

रोकैंगी रोकेंगी, रोक लेंगी सूने भवन आइ ~ ४०३४।

रोकै रोक सकता है : जानि लियौ थोरैं मैं थोरौ प्रेम न ~ वेद ४१२८।

रोकौ १ रोक लो • गोरस लै जबहीं सब आवैं मारग ~ जाइ १४९२। २. रोका उन्मद जोवन आनि ठाठि कै कैसैं ~ जाय ३६७६।

रोक्यौ १ रोका, रोक लिया हरि-दरस कौ जात क्यौं ~ बिना विचार ३/११। २ बंद कर लिया . ~ भवन द्वार ब्रज-सुंदरि २८७।

रोग बीमारी, व्याधि। **लीन्हे** ~ रोग दोष अपने ऊपर ले लिए • सूर स्याम गाइन सग आए मैया — ~ ४९३। ~ **बलाइ** रोग व विपत्ति, रोग-दोष : बाल गोपाल लागौं इन नैननि ~ — तुम्हारी ९१।

रोगिया रोगी, मरीज : यथा योग ज्यौं होत ~ कुपथी करत नई ३३९८।

रोचन[1] रोली : ~ भरि लै देत सींक सौं स्रवन निकट अति ही चातुर की १८०।

रोचन[2] लाल : मिलि रस रुचि लोचन भए ~ २६८१।

रोचना रोली एकनि माथैं दूब ~ २५।

रोदन रोना : होत समय तिन ~ ठयौ ३/७।

रोप आरम्भ (हुआ) वेद विधि करिकै होरी डाटी ~ सारा० १०५२।

रोपी १ स्थापित की : अति पूरन पूरे पुन्य, ~ सुथिर थुनी २४। २ स्थित हैं, लगी हुई हैं : टरति घरी छिन नेंकु न अँखियाँ स्याम रूप ~ ४१४८।

रोपे उत्पन्न किये गये हैं, जिलाये जी रहे हैं : जीव नाम सब तुम्हरेहिं ~ ९२७।

रोपैं रोपती (लगाती) हैं • मालिनि बाँधैं तोरना (रे) आँगन ~ केरि ४०।

रोप्यौ (दृढता से) लगा दिया सर पजर ~ चहुँ दिसि ते जहाँ पवन नहिं जाय सारा० ८५१।

रोम रोयाँ : इक इक ~ विराट किए तन ४८७। ~ **प्रति** प्रत्येक रोम मे ~ — अगनि ५६७। ~ **प्रति गात** शरीर के प्रत्येक रोएँ मे . कोटि ब्रह्माड ~ — ८४५। ~ **प्रति लोमनि** प्रत्येक रोम-रन्ध्रों मे • सत सत इद्र ~ — ८९५। ~ **रोम पर** प्रत्येक रोम पर डारौं तन स्याम ~ — वारि ३६२।

रोम कँटीले नाल रोमाचित नाल (भुजाओं) को अब कवि कुल साँचे से लागत ~ १०७३।

रोमनि १ रोमो से • सहज माधुरी ~ वर्षति २४४८। २ रोमों मे . रूप विराट कोटि प्रति ~ १२८।

रोम पुलक रोमाचित होकर ~ गदगद बानी कही १९३०।

रोमराजि लोम पक्ति, रोमावली . राजति ~ रेख ६३५।

रोम-वलि रोमावली पर नाभि पर हृद आपु बारत ~ अलि-माल १८३५।

रोमावली १ रोम पक्ति . धार ~ जमुन भोरै १९११।

२ लोम पंक्ति का ~ बरनि नहिं जाई ६२५।

रोयैं रोने पर : काजर मिलि लोचन बरषत अति दुरि मुख की छवि ~ ४१४३।

रोयौ रोई, रो पड़ी : मातु सुमित्रा ~ ९/१५१। △ नख सिख तैं ~ खूब पश्चात्ताप किया . चारु मोहिनी आइ आँध कियौ तब — ~ १/४३। △ बन कौ ~ अरण्यरोदन : कन स्रम करत सुनत को ह्याँ है होत जु — ~ ३५४०।

रोर शोर, कोलाहल : करति सबै करि ~ २६४१।

रोरी रोली : काजर ~ आनहू (मिलि) ४०।

रोल रोर, शब्द या शोर : आजु भोर तमचुर के ~ ९४।

रोवत क्रि० अ० १ रोता है/ रोते हैं : लीन्हैं गोद विभीषन ~ ९/१६०। २ रोती है : सुमिरि-सुमिरि गुन ~ ३४०३। क्रि० वि० रोते हुए : ~ बाहर दौरे २२४।

रोवति रोती है : ~ दिन अरु रतियाँ ४०२९।

रोवति १ रोती है, रो रही है : ~ द्रोपदि रानी १/२५०। २ रोती हुई, रोकर : ~ धरनि परीं अकुलानी ५४७।

रोवन रोने : जब वह ~ लागी तब सब जाग परे सारा० २७८।

रोवहु रोओ : त्रिया जनि ~ हो ३०९०।

रोवहुगी रोओगी . बात करति अबहीं ~ १४८०।

रोवैं १ रोते हैं : पुत्र कलत्र देखि सब ~ १/१४१। २ रोती हैं : हरि पथ जोवैं छिन छिन ~ ४०९४। ३ रोते हुए : भटके फिरे द्वार द्वारनि सब हम देख वै ~ २२२८।

रोवै १ रोता है, रोते हैं : कमल नैन हरि हिचिकिनि ~ ३४६। २ रोने लगे : दै री मोकौं लाइ बेनु, कहि, कर गहि ~ २८४। ३ रोओ, रोवे : जनि तू ~ जसुमति माई ५४८।

रोवौ रोता रहा, रोने लगा : हौं डरपौं, कांपौं अरु ~ कोउ नहिं धीर धराइ ४८१।

रोष क्रोध : ~ विषम कीन्हौ रघुनंदन सिय की बिपति बिचारि ९/१२४। ~ रस क्रोध के आवेश में : बुधि-बल, कुलअभिमान, ~ जोवत भँवहिं निवारत २३८३। ~ हुई क्रोध की मारी : स्याम व्याकुल धरनि मुरछे तिया ~ — २७५७।

रोषि क्रोध : ~ करि गर्व दृग भगि भामिनि लची ११९१।

रोस क्रोध, गुस्सा : ~ निवारि आपन सुत कौं परि० १/२३।

रोसहारी क्रोध करने वाली, रूठने वाली : बोलनि है अनोखी ~ २५९५।

रोहत धारण करवाते हो, धारण करने को कहते हो . तन तजि सूर स्यान उर ~ यह नारम किहिं भावन ३६९९।

रोहिनि रोहिणी : लै आइ ~ महनारी २२७।

रोहिनी[1] रोहिणी, यह वसुदेव की स्त्री और बलराम की माता थीं : फूकनि बदन ~ ठाढ़ी २२४।

रोहिनी[2] रोहिणी नक्षत्र, यह सत्ताइस नक्षत्रों में से चौथा है, जो पाँच तारों से मिलकर बना हुआ है। इसकी आकृति रथ के समान मानी गई है। पुराणों के अनुसार यह दक्ष की कन्याओं में से है और चंद्रमा की स्त्री है : कृष्न पच्छ ~ अर्द्धनिसि हर्षन जोग उदार ८६।

रौंछी चितकबरी गाय : धौरी, धूमरि, राती, ~ बोल बुलाइ चिन्हौरी ४४५।

रौंटि रोहँटी, बेईमानी : ~ करत तुम खेलत ही मैं परी कहा यह बानि ५३४।

रौन रमण करने वाले, प्रियतम : इन जुवति कह जोग जान जियत जाकौ ~ ३९९७।

रौम रोम : ~ रौम हनूमत लच्छ-लच्छ बान ९/९६।

रौर ध्वनि, आवाज : इहिं अंतर स्रवननि परी मुरली की ~ २४०८।

रौरी सुन्दर लग रही है : उर बनमाल काछनी काछे कटि किंकिनि छवि ~ १०५४।

ल

लंक[1] १ कमर : छीन ~ नीबी किंकिनि धुनि २६१०। २ कमर है : मृग अरि की सी ~ २७४४।

लंक[2] १ लंका द्वीप जहाँ रावण का राज्य था : विभीषन कौ ~ दीनी १७६। २ लंका को . लखन दल संग लै ~ घेरी ९/१३८। ३ लंका में : ~ विभीषन फिरी दुहाई १/२४।

लंकपति रावण ने : ~ अनुज सोवत जगायौ ९/१४२।

लंकपुर लंकापुर में : ~ आइ रघुराई डेरा दियौ ९/१३१।

लंका भारत के दक्षिण में वह द्वीप जहाँ रावण का राज्य था : ~ बसत दैत्य अरु दानव ९/८६।

लंकापति रावण . मार्यो आजु लंक ~ ९/७५।

लंकापती लंका का अधिपति, लंका का राजा : देखन हौं रघुवीर वीर कहि ~ बुलायौ ९/११२।

लंकृत अलंकृत/सुशोभित हो रहा हो : मानो इंदु नवल नलिना दल ~ अमी अलंकृत-नाल /११२।

लंकेस १ लंकापति : दै सीता अवधेस पाइँ परि, रहु ~ कहावत ९/१३३। २ रावण के : हम ~ दल प्रतिहारी ९/१२०।

लंकेस्वर रावण को : ~ बाँधि राम चरननि तर डारौं ९/८५।

लंगर[1] १ नटखट, ढीठ, शरारती : ~ यह लरिकौ

लखात १ दिखाई देती है : अधरन ठोडी ठीक ~ सा० ल० ५० । २ दिखलाया था : सूरदास सामान्य करन कों, ए ही बलित ~ सा० ल० ७८ ।

लखायौ १ दिखाई दिया, दीख पडा . मग मैं अद्भुत चरित ~ ४/१२ । २. दिखाया है, सुझाया है : सूर सुमनि प्रभु तुमहिं ~ मोटे हमर स्याम ३६९३ ।

लखावत १ दिखाते हुए : आतम ब्रह्म ~ टोलन ३५४५ । २ दिखलाई दिया : फेरत हाथ चढ पकरन को नाहिंन होत ~ सारा० ४४० ।

लखि[1] १. देखकर : भृकुटि विकट विसाल नैन ~ १७६५ । २ देखी : मैं ~ तोहिं तोसी न औरी १७३५ । ४ देख : ~ निसपनि मुरझावो सा० ल० ९ । ~ **लखि** देख-देख कर, बार-बार देखकर ~ — रुक्मिणी कह्यो मुनि नारद यह कमला अवतार सारा० ६२३ ।

लखि[2] सोच कर, समझ कर : चरन रहिं लागि बढ भाग ~ आपने ४११४ । ~ **न परति** समझ में नहीं आती . सूर स्याम गति ~ — कछु १९९१ । ~ **न परै** समझ नहीं पडती, समझ में नहीं आती : तेरी गति ~ — १/१०४ । ~ **पाई** समझ लिया, जान लिया : सूर परस्पर दंपति आतुर चतुर सखी ~ — २१६७ । ~ **पायौ** समझ लिया, देख लिया, जान लिया : भक्ति प्रभाव सूर ~ — १/९३ ।

लखियाँ देखा, देख पाना : गई धाई काहू नहिं ~ परि० २/४९ ।

लखियै देखा जा सकता है : नैन बिना ~ क्यों भेऊ १८५० ।

लखी १ देखा . चितै हरि बदन यार्कों हँसत मैं ~ २०२५ । २ देखी : आपुन कहा अचानक आए तुव गति ~ न जाइ२२०७ ।

लखे देखा, देख लिया : प्यारी आवत प्रिय ~ २७२३ । ~ **न जात** पहिचाने नहीं जाते : और कहा इनकों पहिचानै मोपै ~ — २१६० ।

लखैं देख लें : मातु पितु, बधु, गुरुजन अबहिं जानिहैं, ~ जानि कहूँ यह लाज भारी २०४० ।

लखै १ देखना है . जो मोको प्रेमी ~ ४२१० । २ दिखाई : आलिंगन सब देत स्याम को ~ न सुन्दर साँझ सारा० १०८३ । ३ देखता, जानता : तुम जानत ओहिं रूप कौं अरु ~ न कोट २७३१ ।

लखैं थे दिखलाई देता है : जानि जानि सब मगन भई ईं आपुन आपु ~ ३६९२ ।

लखो देखो : ~ अब नैन भरि ५०७ ।

लख्यौ[1] १. देखा, लक्ष्य किया : गौतम ~ प्रात है भयो ६/८ । २ ध्यान दिया, जाकर बैठा . जनमत ~ मन की सगति ९/२०८ ।

लख्यौ[2] समझा : त्रिगुन रहित निज रूप जो ~ न ताको भेव १८७५ ।

लग १ तक : महिमा सिंधु कहाँ ~ बरनै सूर जू कवि मति-मंद सारा० ६९९ । २ पास, ठाँव . ~ लागन नहिं पावत स्याम १४४१ ।

लगत लगना, लगता है : तुम बिनु सुरपुर ~ न भलो ९/२ । २ लगते हैं . हमैं न ~ बडे ३७३१ । ३ लगना है : सारग साल ~ सारग सी सा० ल० ४५ । ४ लगने ही ~ त्रिसूल इव सुरझायो ६/५ । △ ~ **नैन** नेत्र लग जाते हैं, प्रीति हो जाती है : जाही सौं ~ — २४१८ । △ ~ **पलक** पलक लगते/झपकते ही, नींद लगते ही : भोजन, भवन, कछू नहिं भावत ~ — मनु करत खई सा २२२३ ।

लगति १ लगती है : यह तौ बात ~ कछु साँची १९५० । २ लगतो थी : तब वै लता ~ तन सीतल ४०६८ । △ **पाइ ~ हौं** पैरों पडती हूँ, प्रार्थना करना है : हा हा हो पिय — ~ — जाइ सुनत दै बेनु-रसालहिं ८०२ । ~ **तापर पलक** उस पर पलकें आ लगती हैं/झपकती हैं : नैन हैं छबि बरी कैसैं ~ — १८२७ ।

लगतौ लगता था, मालूम पडता था : मथुरा बसत हुती जिन आसा औ ~ व्योहार ४२५३ ।

लगन[1] १ लग्न, शुभ मुहूर्त . ग्रह ~ नषत पल सोधि २४ । ~ **धरायौ** शुभ कार्य के लिए मुहूर्त निश्चित कर दिया : सोधि महूरत ~ — ४३०३ । ~ **लिखायौ** समय निश्चित कर लिया/लिखा लिया . चारि नाम को ~ — बदरनि अबर छायो परि० १/२०७ ।

लगन[2] प्रीति, प्रेम : ~ गाँठि बैठी नहिं छूटनि २२०२ ।

लगनि लगन, प्रीति : फिरति सदा हरि पाछैं-पाछैं कहा ~ उन जी की २३४४ ।

लगाइ १ लगाकर : तेल ~ कियो रुचि मर्दन १/५२ । २ पकड कर : कर सों कर लै ~ २७५ । ३ लगा लिया : रोकत मोहन कठ ~ ११८० । ४ लिया, ले गए : कमल नैन मधुपुरी सिधारे हमहिं न सग ~ ३६७६ । ५ लगा, आरोपित कर : निहिं बहु अवगुन देइ ~ ६/८ । ६ बढकर : हृदय कपाट ~ ननन करि १९२० । △ **ध्यान** ~ नाक/ध्यान लगाकर : सदनबाहु के सुनति पुनि नासी — ~ ९/१४ । △ **ठौर** ~ टौर देकर : सैदी निसि ठौरि आइ हमहिं — ~ १०१२ । ~ **मोहिनी** मोहनी डालकर या मोहित करके : माया रूप ~ — ०८६ ।

लगाइयै लगाएँ, लगाया जाय . टोप काहि ~ ३८६५ ।

लगाई १ लगाया : जैसैं ही उनि मुँह ~ २४०४ । २ लगाया है, लगा दिया है : कासैं गए हम फाँस ~ १५८४ । ३ लगा ली है, पोत ली है : कर सुम आग ~ ३६८७ । ४ लगाए हुए हैं, लगाए हैं : इन राधा सौं प्रीति ~ ८३० ।

१४८६। २ दुष्ट, अनाचारी : महर बडौ ~ सब दिन कौ ७०३।

लंगर[2] रास, बागडोर विडरन विझुकि जानि रथ तैं मृग जनु सर्मकि समि ~ डारे १७१७।

लगरई शरारत, ढिठाई लाल सुनौ हरि के गुन कालिहिहिं तैं ~ करत अति ४२५।

लंगराई धृष्टता, शरारत : दूरि करौं ~ वाकी १७२५।

लंगरि धृष्ट : वै जो भले बुरै तौ अपने, यह ~ ढुनहाई १३१३।

लँगरिनि धृष्टों/उद्दण्डों को लाज नहीं आवति इन ~ कैसैं धौ कहि आवति बानी १४९०।

लँगरी वि० १ धृष्ट, दुष्ट सबै जुवती हैं ~ ३१९। १ उद्दण्डता से भरी हुई . भरन देहु जमुना जल हमको, दूरि करौ वातैं ए ~ ८५३। **स्त्री०** धृष्टता, दुष्टता, शरारत . आजु मेटिहैं तुम्हारी ~ १४१६।

लँगरैयाँ शरारतें जा दिन तैं सँचरे गोपिनि मैं ताही दिन तैं करत ~ ७३५।

लंगी लँगडा गई, रुक गई ग्राह गह्यौ गज बल बिनु व्याकुल, विकल गात गति ~ १/२१।

लगूर १ बदर रीछ ~ किलकारि लागे करन ९/१३८। २ बदर की (पूँछ मे) : सन अरु सूत चीर पाटवर लै ~ बँधाए ९/९८।

लघै लाँघ जाता है जाकी कृपा पगु गिरि ~ १/१।

लंपट १. विषयी, व्यभिचारी : ~ धूत पूत दमरी कौ १/१८६। २ लोभी, लालची : रस ~ वै भए रहत हैं २२६१।

लइँ लीं : ~ भीतर भवन बुलाइ सब सिसु-पाइ परीं २४।

लइ ली, ले लिया : पीताबर मुरली ~ तवहीं २८९८।

लईं लिया : निर्तत रीझे भुज भरि स्याम ~ ११८२।

लई १ ली : याही तैं चतुर सुजान सूर-प्रभु ग्वाली सग न ~ ३९१५। २ ले लिया, ले ली : तू कहा आज यह मौन ~ १७२८। ३ ले लिया हो : जनु पावस तें निकसि दामिनी नैकु दमकि दुरि ओट ~ सी २११३। ४ लेने, ले आने : चतुर दूतिका सखियन लीन्हे, आतुरताई जाति ~ २४२६। ५ लाई हो और सग नहिं कोऊ ~ २१९३। ६ ले कर ज्यौं मधुमाखी सँचति निरतर वन की ओट ~ १/५०।

लए १ लिये : पलक कपाटनि मूँदि ~ री २३६२। २ लिए हुए, लेकर धनुही बान ~ कर डोलत ९/२०। ३ ले लिया है : मोल करि ~ अव स्याम उनकौं २०४९। ४ ले लिया, उठा लिया . धाइ ~ जसुमति महतग्यिा २४६। ५ ले गये . वचन फॉस बाँधे मृग माधौ उन रथ लाइ ~ ३५८८। ६ ले आए, लाए . सेज महित सब भवन ~ री २४७।

लऍ लिए, हेतु, कारण . उनके ~ लाज या तनु की सबै स्याम सौं हारी २३७४।

लकरियनि लकड़ियो के लिए . जब हम तुम बन गए ~ पठये गुरू की भामा ४०३३।

लकरी लकडी हमारैं हरि हारिल की ~ ३९८८।

लकुट १ लाठी, डडा लै लै ~ ग्वाल सब धाए ८७३। २ छडी, छोटा डडा : स्यामा कनक ~ कर लीन्हे २/५०। ३. लकडी . चितवनि ~ लास लटकनि पिय २२७२। △ ~ **अंध अधार** अधे को लकडी का सहारा है, विवश व्यक्ति के लिए एक मात्र साधन है सूर प्रभु कौ नाम उनकैं ~ — ४१०८। △ ~ **ज्यौं फेरौं** लाठी के समान घुमाऊँ/ भाँजूँ : कहौ तौ लक ~ — ९/१०७।

लकुटि लाठी, छडी माया नटिनि ~ कर लीन्हे कोटिक नाच नचावै १/४२।

लकुटियनि लाठियों से : सब मिलि ग्वाल ~ टेक्यौ ८७६।

लकुटिया लाठी या छडी . लए ~ द्वारै ठाढे ८/१५।

लकुटी लाठी, छडी : दौरि दाँवरि देहिं नहि ~ जसोदा पानि ३२२८।

लक्ष लाख : एक ~ पद वन्द सारा० ११०३।

लक्ष्मणा बृहत्सेन की पुत्री तथा श्री कृष्ण की आठ पटरानियों मे से एक का नाम। व्यानापेक्षित है कि दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मणा कोई और थी जिसका विवाह श्रीकृष्ण के पुत्र साब के साथ हुआ था : तैसेही ~ विवाह पूरण परमानन्द सारा० ६५७।

लख[1] लाख : द्वै ~ धेनु द्विजनि कौं दीनी ३०।

लख[2] देखकर : सूरज प्रभु ~ धीर रूप कर सा० ल० ६।

लखत १ देखता : जात व्रज खोरि नहिं ~ कोऊ २१५४। २ देखती है : ~ मोहि मन मारैं सा० ल० ६२। ३ देखकर इहिं विधि ~ झुकाइ रहे जम अपनैं हीं भय मार १/१८९।

लखति देख रही ह ~ पुर नारि प्रभु सूर दोउ मारिहैं ३०६६।

लखति १ देखती : नही तू करति नहिं ~ जैसैं २७२४। २ देखती हैं . सुत सुत ~ ति पीपी गोपी सा० ल० ४३। ३ दिखलाई पड रही है . मानौ इद्र-वधूनि पंगति ~ सोभा भारि ८२९।

लखन लक्ष्मण, राजा दशरथ के पुत्र जो सुमित्रा से उत्पन्न हुए थे : दल सग लै लक घेरी ९/१३८।

लखनि लक्षणों से : सुनि स्रवननि उनमान करति हौं निगम नेति यह ~ लखी री परि० १/९०।

लखाई १ सुझाई, बताई : यह औषधि इक सखी ~ ७४८। २. दीखती है, सूझता है जैसैं मीन जाल मैं क्रीडत गनै न आपु ~ ४।

लगि[2] पास/समीप से : जा ~ तू ब्रज आयौ ३७५७।

लगि[3] १ तक : कुल की कानि कहाँ ~ करिहो १९४३। २ युक्त होकर : कपट ~ बाँधे नैन पटी १/९८।

लगि[4] के लिए, वास्ते : गोकुलनाथ हमारें हित ~ ४२४८।

लगिहै लग जायेगी : दौरत कहा चोट ~ कहुँ २२६।

लगीं १ लग गई, हो लीं : सग ~ ब्रजबाल ३७४१। २ लगी हैं, सन्नद्ध हैं : अपने प्रान प्रेम पोषन ~ मीन नीर लौं बामी ३५४६।

लगी लगी हुई है, बँधी हुई है : अन्तर ~ सुरति की डोरी १६४३। ~ **जिय मन** को भा गई : सूर स्वाति की बूँद ~ — चातक चित लागत सब भूरे ३५७६।

लगे १. लगे हैं, जड़े हुए हैं : बिच बिच हीरा ~ (नँद) लाल-गरे को हार ४०। २ प्रतीत हुए, जान पड़े : तुमकौं कैसें स्याम ~ १७८१। ३. लग गये हो : मदन सुभट के सर सुदेस मनु ~ कवच-पट फूटि २४६१। △ **नैन** ~ नींद आई नाहिन — ~ रहिं डर २४५५। **पल** ~ **जात हैं** : पलकें बंद हुई जाती हैं : नैन जगे — ~ —२४८६।

लगैं लगने पर/से : राम मुद्रिका ~ गिर्‍यौ सो धरनि पर ४२०४।

लगैं लगाती है, आघात पहुँचाती है : बरषत बूँद ~ जनु सायक ९३७।

लगैगी लग जायेगी। △ **डीठि** ~ नजर लग जायेगी : बाहिर जनि कबहूँ कछु खैयै — ~ काहु ९८७।

लगैयै लगाइए, लगाओ : और न दोष ~ ३९०८।

लगैहै लगा लेंगे : हँसि कठ ~ २२०१।

लगैहैं लगा लेगी/लेंगी : जानकी हृदय ~ ९/८१।

लगैहौं लगाऊँगी : अग न आपु ~ सा० ल० १०।

लगौं लगता हूँ। △ ~ **बलैया** बलिहारी लेता हूँ : नद-सुवन की ~ — यह जूठनि कछु सूरज पावै २३१।

लगौंही लगाते थे : ना तरु कहा करे हमसौं तब मिलि मिलि बात ~ ३४९५।

लगौ १ लगता : मेरौ मन न ~ री १३८३। २ लग जाय : बाल गोपाल ~ इन नैननि रोग बलाइ तुम्हारी ९१। ३ लगा हुआ था : ~ लेप समान सा०ल० ७७। △ ~ **गुहार** रक्षा करो, पुकार सुनो : सत्रु सेन सुधाम घेर्‍यौ सूर ~ — ३३२२।

लग्यौ १ लग गया : कर नवनीत परम आनन सौं कछुक खात कछु ~ कपोलनि १२१। २ लगा हुआ है, लग गया है : मेरौ मन रसिक ~ नँदलालहिं ३६८१। ३ लगे : जब राजा तिहिं मारन ~ ५/३। ४. निर्भर है, आश्रित है : मो कुटुंब याही ~ ९/८२। ५ लगा, प्रवृत्त हुआ : अस्तुति करन ~ सहसौ मुख ५५७। ~ **गुहार** पुकार सुनी : तिहिं ~ — ९/६५।

लघु १ छोटे, कनिष्ठ : ~ सुत नृपति बुढापौ लयौ ९/१७४। २ आकार, विस्तार या परिमाण में छोटा : ~ अपराध देखि बहु सोचति ३५७। ३ तुच्छ, नीच : मोसौं गर्व कियौ ~ प्रानी ८५१। ~ **दीरघता** १. छोटा-बड़ा, छोटाई-बड़ाई : ~ — कछू न जानें ३०९। २. छोटे-बड़े का व्यवहार, औपचारिकता पूर्ण व्यवहार : तप अरु ~ — सेवा ९/१६८। ~ **लघु** १. थोड़ा-थोड़ा करके : ~ — छोरत है अग-बदन ११५८। २ छोटी-छोटी : ~ — लट सिर घूँघरवारी ९३। ३. छोटे-छोटे : ललित ~ — चरन कर २१८।

लघुता १ छोटाई : ~ जानि जु रोष भर्‍यौ ८६६। २. ओछापन, अपयश : अब तौ सूर भजी नँदलालहिं की ~ की होट बड़ाई १६५१।

लचकति लचकती हुई, बल खाती हुई : ~ थोंदिहा हालई हो परि० १/७।

लची झुक गई, परास्त हुई, मात खा गई : कमला आइ ~ २४४८।

लचे झुक गये : हरि पर हरषि ~ परि० १/८४।

लच्छ[1] लाखों की संख्या में, लाखों में : कपि कहे कछुक, हैं बहुत ~ ९/१६६। ~ **लच्छ** लाख-लाख : ~ — बान ९/९६।

लच्छ[2] निशाने पर या से, लक्ष्य से : सूर किंकर करि बान ~ ९/९६।

लच्छन लक्षण, गुण-स्वभाव : मुक्त नरनि के ~ कहौ ३/१३।

लच्छनन लक्षणों से : सूर सबे वे ~ जुत सा० ल० ९४।

लच्छमी लक्ष्मी : धनि-धनि कह्यौ पुनि ~ मौं ८/८।

लच्छागृह लाक्षागृह, लाख नामक धातु से बना वह भवन जहाँ पर दुर्योधन ने पाण्डवों को जला देने का उपक्रम किया था : ~ तें काढि कैं पाडव गृह ल्यावै १/४।

लच्छि लक्ष्मी, श्री : मनौ ~ कौ दध ९/७५।

लच्छित लक्षित कर तथा लक्षिता नायिका : संभावना भूषन कर ~ सा० ल० १३।

लछ लक्ष, लाख : नृप चौरासी ~ ४१२।

लछन लक्ष्मण : हा रघुनाथ ~ बैदेही ९/३१।

लछमना दे० लक्ष्मणा : ~ तहँ स्वयंबर रचायौ ४२०।

लछमी १ लक्ष्मी : ~ इनको सदा पलोवै ३/१३। २ लक्ष्मी ने : पुनि ~ यौं विनय सुनाई ७/२।

लछि लक्ष्मी : सूरदास ~ दई कृपा करि ४२४२।

लछिमन लक्ष्मण : ~ धनुष देहु १९९। २ लक्ष्मण का : ~ काज नमायौ ९/१५५।

लछिमी लक्ष्मी, श्री : ~ सी जहँ मालिनी डोलै ३२।

लजत १ लज्जित होता है/हो जाता है : जिनि जोवत ~

अनग २९०३। २ लज्जित होते हैं/हो जाते हैं : लखि ~ कोटिक काम परि० १/५३।

लजनी १. लज्जा, मर्यादा : भूलि गई कुल की ~ ९९७। २ लज्जा से : मुख न मुरयौ ~ २१८४।

लजाइ १ लज्जित हो जाता है · रति स्यौं काम ~ २२०५। २ लज्जित होते हैं नैंकहुँ नहीं ~ २२९०।

लजाई लज्जित हो गई तरुनी भलैं ~ १९५९।

लजाई १ लज्जित हो गये अग-अग छवि मनहुँ उये रवि ससि अरु समर ~ ६२६। २ लज्जित होकर : मुरि घर चली ~ सा० ल० १३।

लजाउँ १ लज्जित होता हूँ : सनमुख होत ~ १/१२८। २ लज्जित होती हूँ बात यह तुमसौं कहत ~ १६८३।

लजाऊँ १ लज्जित होऊँ भक्त वछल बानो है मेरौ बिरुदहिं कहा ~ ४। २ लज्जित करती हूँ : इनकौं लाज ~ २१६१।

लजाए १ लज्जित किये दे रहा है. पीत वमन दामिनिहिं ~ १३८९। २ लज्जित कर दिया है : सुरति सेज रति काम ~ २६६१।

लजाएं लज्जित करके याको अरथ नहीं कोउ जानत मारत सबनि ~ २५४४।

लजात १ लज्जित होते हैं प्रगट करत ~ २४५९। २ लज्जित होती है. तुमसौं कहति ~ २०६८। ३ लज्जित होती हूँ तेरी सौं कहा कहौं जसोदा उरहन देति ~ ३३८। ४ लज्जा करती हो · कहौं न कहा ~ १९४६। ५ लज्जित हो रहे थे निसि-रस-सुधि आए नैन नैननि ~ २०३४।

लजाति लज्जित होती हूँ · जोवन-रूप नही तुम लायक तुमको देति ~ १५९०।

लजाति १ लज्जित होती है. पुनि पुनि कहति ~ २०४३। २ लजाती हो : गुरु लोगनि न ~ २९४। ३ लज्जित हो रही हूँ : राधा-कान्ह, कान्ह-राधा ब्रज ह्वै रह्यौ अतिहिं ~ १७०८।

लजान लज्जित हो गया. कचन मेरु ~ २४४६।

लजानी १. लज्जित हो गई : अवर लेत ~ २६२४। २ लज्जित हुई · जग उपहास न सुनत ~ २३६५।

लजाने १ लज्जित हुए. वह अपमान करति न ~ १३१०। २ लज्जित कर दीं इद्री इनहिं ~ २२८६।

लजानौ लज्जित हुआ : कहा मैं कहि कहि ~ ३८८२।

लजान्यौ लज्जित हो गया · मनहु चंद्रहि अव ~ राहु घेरो जाल १३५५।

लजायौ लज्जित हुआ : रूप देखि मन काम ~ ११७९।

लजारे लज्जित हो रहे हैं खजन मीन ~ २७४३।

लजावत १ लज्जित कर रहे हैं उडुपति कोटि ~ ४७९। २ वदनाम करते हैं सूरदास जदुकुलहिं ~ ३६६८। ३ लज्जित करता है · सूरदास सारँग किहिं कारन सारँग-कुलहिं ~ १७१४।

लजावति लज्जित/वदनाम करती है/हो : काहें कुलहिं ~ १९४१।

लजावन १ लज्जित करने वाले वलि वलि जाउँ अरुन अधरनि की विद्रुम-बिंब ~ ६६४। २ लज्जित करने वाली कीर ~ नासिका २८८०।

लजावनौ १. लज्जित कर रहे थे. कोटि अनग ~ २८३२। २ लज्जित करने वाला है · सुदर डाँडि चुनी वहु लायौ कोटिक मदन ~ २८३२।

लजावैं लज्जित करते हैं : उडुपति वदन ~ १३७०।

लजावै १ लज्जित करती है/कर देती है. आन पुरुष कौ नाम लै पतिव्रतहिं ~ २/९। २ लज्जित करते हैं. औरौ सुभट ~ ९/१५२।

लजाहि लज्जित होता है ऊधौ जोगहिं ना छुऐं, छुऐं तो प्रेम ~ ३५२२।

लजाहीं १ लज्जित हो जाते हैं : विद्रुम अरु वधूक ~ ७९९। २ लज्जित होती हैं. नागरी पास आवत ~ २१९६।

लजित १ लज्जित हुए ~ रति अत तिय कत भारी २४९७। २ लज्जित हैं/हो गये हैं मौन-गुन-हीन, मृग ~ खजन चकित २४५०।

लजीं लज्जित हुई · काहुँ नहि ~ अति प्रेम धाई ९२४।

लजी लज्जित हुई नैंकु न डरी ~ १६३१।

लजे लज्जित हो गये वैसैंहि प्यारी निरखि ~ १/३२।

लजै लज्जित होती है : कोटिक गिरि भेढत नहिं ~ ११८०।

लजौना लज्जित कर दिया है नैंकु अधर तैं करत न न्यारी प्यारी तियनि ~ १२४१।

लजोहन लजीले. रति विलास करि मगन भए अति निरखत नैन ~ २१७४।

लजौहैं लजीले. चितवत दुरि दुरि नैन ~ १९९४।

लज्जा लाज, शर्म। △ ~ **निरवहिऐ** लज्जा का निर्वाह कोजिए अर्थात् लाज बचाइए : मम ~ — १/११२।

लज्जित १ लज्जित हो जाता है · निरखि ~ काम १८२३। २ लज्जित हो जाते हैं विहँसत ~ ललित कपोल ११८०। ३ लज्जित हो जाती है अग-प्रति-कोटि काम छवि ~ ११८१।

लज्जियै लज्जित होता है जिहिं लज्जा जग ~ (मो) लज्जा गई लजाइ १६४०।

लज्यौ लज्जित हुए. तारागन मन मैं ~ ११८०।

लट लटकते हुए लम्बे वाल, चोटी : हौं जल भरति अकेली पनघट गही स्याम मेरी ~ ८९०। △ **करै अस्तुति ~ छोरे** केश

कर (अत्यंत दीन भाव से) स्तुति करते हैं . तुव प्रताप जान्यौ नहिं प्रभु जु — ~ — ४८८ ।
लटक १. लचक, झुकाव मुकुट की ~ झलक कुंडल की ११४३ । २ झूमते हुए, लचकदार चाल में : नट नायक गति विकट ~ तव वन तैं कियौ प्रवेस ४०७८ ।
लटकत झुका हुआ ~ मुकुट, मटक मोहनि की २२१८ । २ लटक/झूम रही है लटकन ~ ललित भाल पर ९८ । ३. झूल/लटक रही हैं . चहुँ दिसि ~ मनी ४१८६ । ४ झूम रहा हो/है : ~ सिर सेहरो १०७४ ।
लटकति १ लटक रही है ~ सुभग नासिका बेसरि २१९९ । २ लटकती हुई . ~ लट चूमति ७४ । ३ झुककर : जसुमति ~ पाइ परै १७ ।
लटकन[1] झुकाव, लटक टकमु ~ देख सजनी मा०ल० ३९ ।
लटकन[2] कलगी आदि में लगा रत्नों का गुच्छा जो माथे पर हिलता डोलता रहता है . ~ लटकि रह्यौ माथे पर ९२ ।
लटकनि १ लटकना, झूमना . लट ~ मधुकर गति डोलनि १२० । २ झूमते हुए : भावति मद गयद की ~ ६१८ ।
लटकाइ लटका (कर) : कबहुँ राखति सीसफूल ~ कै २१९० ।
लटकाए टाँग दिए अति विस्तार नीप तरु तामें ले लै जहाँ-तहाँ ~ ७८४ ।
लटकानौ झूलने लगा . वेनी छुटि लई वगरानी मुकुट लटकि ~ १०५७ ।
लटकायौ लटकाया है, टाँग दिया है देखि तुहीं सींकें पर भाजन ऊँचे धरि ~ ६६४ ।
लटकावति झुलाती है : पग-पग पटकि भुजनि ~ १०५७ ।
लटकावै लटकाते/झुलाते हैं . उर सुचि गंध सुरंग माल पद पंकज लौं ~ री परि० १/५० ।
लटकि १. लटक कर : जे द्रुमलता ~ तनु लागनि २४४२ । २. झूमकर, झूमते हुए, झटके के साथ लकुट लपेटि ~ भए ठाढ़े ६३२ । ३ लटक रही हैं . चन्द्र वदन लट ~ छबीली १४९ । ४ झुके हुए ~ नैन मुख गावत १०९१ ।
लटकी १ लटक गई . लै ~ दै दत पियाऽधर २४५५ । २ लटक पड़ी है धरनी वै टेकि ~ री २७९७ । ३ झूमती हुई, उन्मत्त . फिरनि प्रेम ~ १६६० ।
लटके १ लटके हैं/हों . जुग खजन जनु ~ १९९८ । २ उलझे हैं हरि रूप-माँझ ~ २३८९ ।
लटकैं[1] लटक रहे हैं : नकवेसरि ~ गजमोता २९०१ । △ **रह्यौ बीच ही** ~ दुविधा में ही पड़ा रहा ना हरि-भक्ति, न साधु-समागम — ~ १/२९२ ।
लटकैं[2] लटों/बालों वाले ने कछु पढ़ि दियौ सखी उहिं ढोटा घूँघरवारी ~ २३२१ ।
लटकैं लटकती है, झूल रही है : उदत अचल ~ वेनी २८३१ ।
लटक्यौ १. लटका नाच रहा है : लटु है ~ फेरि न मटक्यौ १९१३ । २ लटकी रह गई . हरि तोरी मोतिनि की माला कछु गर कछु कर ~ १५३१ ।
लटपट अस्तव्यस्त, शिथिल ~ पेच सँवारति प्यारी २०६३ ।
लटपटाइ झपटती हुई, झपटकर . पुनि वह कहा चारु चुवक सो ~ लपटानि ३५४१ ।
लटपटात १ लड़खड़ाते/डगमगाते हुए ~ पग धरत धरनि गज ९४८ । २ लड़खड़ाती हुई : भोर भएँ भवन चली ~ १६९४ ।
लटपटाति लिपटी या उलझी हुई . ता पर ~ लट कारी ११९४ ।
लटपटि लथपथ, भीगी हुई . ~ पाग महावर कैं रँग २५०३ ।
लटपटी १ अस्तव्यस्त, ढीली-ढाली : ~ पाग उनींदे लोचन २६३२ । २ लड़खड़ाती हुई : चाल तिहारी ~ लागति २६३१ ।
लटि १ लटके हुए हैं . सूर प्रान ~ लाज न छाँड़त ३३८६ । २ लटककर, रीझकर ~ प्रेम न मान्यौ २५१२ ।
लटिहि लटका हुआ . ~ लकुट त्रिभगी एक पद २८७४ ।
लटी टाँग । △ **मारत फिरत** ~ गप्प हाँकता फिरता है : अरु झूठनि के वदन निहारत — ~ १/९८ ।
लटु लट्टू : ~ है लटक्यौ, फेरि न मटक्यौ १९१३ ।
लटुरियाँ अलकें, लुटरे (घुंघराले) केश छिटकि रहीं चहुँ दिसि जु ~ १०५ ।
लटू लट्टू, एक खिलौना △ ~ **भइ** लट्टू हो गई, मोहित हो गई . हम तौ रीझि ~ — लालन ३२९१ ।
लटूरी घुंघराले बाल, अलकें लटकति ललित ललाट ~ ११७ ।
लटैं लम्बे बाल ~ उघरारी रहीं छूटि छूटि आनन तें २०१० ।
लठबाँसी लट्ठबाज, लाठी चलाने वाला : बटपारी, ठग, चोर, उचक्का, गाँठि कटा ~ १/१८६ ।
लडइत लाडले/प्रिय ने : तव कित लाड लडाए ~ वेनी कुसुम गुहि गाढ़ी ११०३ ।
लडबौरी १ अत्यधिक लाड प्यार के द्वारा बावली . हार बिना ल्याएँ ~ १९७५ । २ अल्हड, नासमझ : सुनि री राधा अति ~ १९७६ ।
लडाइ दिखा कर, करके अरु कत लाड ~ राग रस हँसि-हँसि कठ लगाव ३६५८ ।
लडाए १ दिखाया है, किया है . जिन मिलि लाड ~ २६३१ । २ दिखाता था, किया था/करते थे हरि जू प्रथम नद-जसुमत गृह नाना लाड ~ ३६५७ ।
लडायौ क्रि० स० (प्रेम प्रकट) करते/दिखाते हैं भक्तनि लाड ~ ४०३८ । २ (प्रेम या लाड प्यार) दिया, किया . नद जसोदा लाड ~ ३८५६ । वि० १ दुलारा/लाडला है :

सुनि सुनि-री तैं महरी जसोदा तैं सुत बडौ ~ ३३१। २ दुलारे/लाडले हो वालक प्रतिपालक तुम दोऊ, दसरथ लाड ~ ९/५५।

लडावति १ लडाती/डुलाती है सुवा वढावत जीभ ~ १/८८। २ करती थीं : जनक सुता वहु लाड ~ सारा० ३०८।

लडावै लाड-प्यार दिखलाये जो कोऊ कोटि ~ ३१७९।

लडे उ लडे, युद्ध किया गज अरु ग्राह ~ जल भीतर सारा० ३२४।

लडैती लाडली, दुलारी वह भई ~ १२५२।

लडैते प्यारे, लाडले : वहु जतननि व्रजराज ~ तुम कारन राख्यौ वलभैया २२९।

लडैतैं लाडले/प्रिय से. कहत कही कछु वात ~ ३६६७।

लडैतौ दुलारे, प्यारे : व्रजराल ~ गाइयै २९००।

लडैहौं प्यार करूँगी • हौं अपने गोपाल ~ ८०।

लढै करोरे से : यह सुनि कै हरि पीवन लागे ज्यों त्यौं लयौ ~ १७४।

लतरैया लताड, आघात • कटि ~ रिपु समान ३३२६।

लता बेल, वल्ली : जन्म जन्म की विषम वासना उपजत ~ नई १/१८५।

लताई नाल की कबु कपोत कठ निसि वासर वाहु बली करि कज ~ २४३६।

लदाइ लदाकर, रख या रखवाकर : ल्यायौ तापर कमल ~ ६०२।

लदाए लदवाये, रखवाये ताही पर धरि कमल ~ ५८५।

लदायौ लदवा दिया • सूर स्याम हठ परे हमारे कहौ न कहा ~ १५४८।

लदूयौ लदा हुआ, दवा हुआ • सुत-धन-धाम त्रिया-हित औरै ~ वहुत विधि भारौ १/२१३।

लपकत तेजी से चलता है • कवहुँक दौरि घुटुरुवनि ~ गिरत उठत पुनि धावै री ९८।

लपकि झपटकर. मनौ गिरि चरन धरि ~ लीन्हौ ३०५४ ~ **लपकि हए** झपट झपट कर नष्ट किये, तीव्र गति से आक्रमण करके मारे ~ — उवरयौ नहि कोऊ ३०७४।

लपट[१] अग्नि की ज्वाला, लौ उचटत अति अगार, फुटत फार, झपटत ~ कराल ६१५। २ लपट, झकोरा • पट आवै सौंधे की ~ १४०१।

लपटाइ १ लिपटकर : पूतना के प्रान सोखे आपु उर ~ ४९८। २ लपेट • उरग लियौ हरि कौं ~ ५५५। ३ लिपटी खेह रही ~ २२६। ४ लिपट जाती है • गुनहीं सौ ~ ३५४४। ५ लिपटी हो. पन्नगी हाटक गिरि ~ २२०३।

लपटाई १ लिपटी (रही) : नागरि रही सकुचि ~ १६७८। २ लिपट • अति आनद सहित सुत पायौ हिरदै माझ रहे ~ ५१।

लपटाए १ लिपट गये हलधर दौरि चरन ~ ४२००। २ लपेटे हुए. नील वसन ~ ४२०१।

लपटात १ लिपटता है : दीपक सौं ~ ४०२१। २ लिपट जाते हैं • चलन न देत प्रेम आतुर उर कर चरननि ~ ४११९। ३ लिपटते हो • कत मोगरे सौं ~ सा०ल० ७०। ४ लिपटा लेते हैं कछुक खात ~ दोउ कर २२४। ५ लिपट जाते हैं, आलिंगन करते हैं : चटकीली छवि देखि ~ स्याम घन ११४९।

लपटाति खींच दी गई हो • मनौ कनक कसौटिया पर लीक सी ~ १८४।

लपटान १ लपेटने, लगाने सुन री सखी मौन ह्वै रहिये वदन दही ~ दे २७४। २ लिपटने तव मैं कह्यौ ठग्यौ कव तुमकौं हँसि लागी ~ ७०९।

लपटानि लिपट गये : लटकि ~ मानौ सुभट लरि परे खेत २१२९।

लपटानी १ लिपट गई, लिपटा लिया : स्याम कठ ~ २६२४। २ लिपटी हुई है • कुटिल केस अति सुदेस गोरज ~ १८८७। ३ व्यस्त हुई, लगी. मैं गृह काज रहीं ~ ८८४।

लपटाने क्रि० अ० लिपट गए : देखि दरस चरननि ~ ९/५१। २ लिपटी/लगी हुई है : नैन कपोल पीक ~ २६३६। वि० १ लिपटे हुए, लपेटे हुए सो मुख चूमति महरि जसोदा, दूध लार ~ (हो) १२८। २, सने हुए, निमग्न • रहत प्रेम ~ ३९४०। क्रि० वि० (परस्पर) लिपट कर : पुनि पौढे दोउ ~ २०३७। **नैन रहे ~** नेत्र लिपटाये रहे अपलक नेत्रों से देखते रहे ज्यों त्यों — ~ २२५५।

लपटानो लिपट गये : ताहि लगाय हृदय ~ प्राण जो लियो चुराई सारा० ७४६।

लपटानौ १ लिपटा है, लिपटा हुआ है चटकीलौ पट ~ कटि पर १४०१। २ लिपटा हुआ हूँ • आसा ही ~ १/४७। ३ लिपटा हुआ माखन कर दधि मुख ~ देखि रही नद-लाल २७०।

लपटान्यौ १ लगा हुआ है, लिपटा है माखन वदन कहाँ ~ ३९१। २ लपेटे हुए कहुँ आए व्रज वालक सग लै माखन मुख ~ २७०।। **रह्यौ चरन ~** पैरों मे लिपटा/अनुरक्त रहा • मन तौ — ~ १०२३।

लपटायौ क्रि० अ० लिपट गया : इतने माँझ मधुप यक देख्यौ आप चरण ~ सारा० ५६५। क्रि० स० लपेट/लगा दिया : सवै मिलि मेरे मुख ~ ३३४।

लपटावति लिपटा/लगा लेती हैं • गोपी हरषि हृदय ~ ३९० ।

लपटावति लिपटाती/लगाती है • हृदय ~ ११२१ ।

लपटावै लपेटता/लगाता है • निंदत मूढ मलय चंदन कौं खार अंग ~ २/१३ ।

लपटाहि लिपटे जा रहे हों • कनक घट ~ २१३२ ।

लपटाहीं १ लिपट रहे हे : अरसि परसि हँसि हँसि ~ ०२० । २ लिपट ती हैं : रीझि रीझि ~ ११६३ ३ लिपट गई हैं • लता तरुन ~ ३२९८ ।

लपटि लिपट कर • रही वह छवि अंग अंगनि ~ स्याम-तमाल ४१४० ।

लपटे लिपट गए • ~ लटकि पराग विलोकनि २२७७ ।

लपटेयत लगाते थे, लपेटते थे जिन अंगनि चंदन ~ परि० १/१८८ ।

लपट्यौ लिपट या चिपक गया है भीजि पट ~ सुभग ११८१ ।

लपिटानी लिपट/डूब गया • सूर मरम ~ १/८७ ।

लपिटाने उलझे हुए वदन कुचील, चिहुर ~ ९/७३ ।

लपेटत लपेटते/चिपकाते हो काँचे गुन करि तृनहिं ~ ३७०६ ।

लपेटि १ हाथ से लेकर शरीर में चिपका कर लकुट ~ लटकि भए ठाढे ६३२ । २ लपेट : लियौ ~ चरन तैं मिख लौं ५५५ ।

लपेटौं लपेट लूँ : कहौं तौ असुर लगुर ~ ९/१०७ ।

लपेट्यौ लपेट लिया हार ~ चरन सौं ११८० ।

लपोटि लिपटी/सनी हुई सूरज प्रभु की लहौ जु जूठनि लारनि ललित ~ १६४ ।

लब उलटी दो लब का उलटा = बल, इसको दो वार कहने से बल-बल = बलि-बलि = बलिहारी : ~ जाऊँ तिहारी सा० ल० ८ ।

लबार झूठ बोलने वाला, झूठा रिस पावति कहि वडे ~ २४७६ ।

लय १ विलीन • प्रकृति पुरुष ~ भई ११७५ । २ विनष्ट, लुप्त ग्यान छमादिक सब ~ भयौ १/२९० ।

लये लिये, लिया • नीव नव मेव छवि चीन्ह ~ रा २०६२ ।

लयैं लिये हुए, लेकर इंद्र महाइ उठे चारों दिसि ~ सहेली साथ सा० ल० ८६ ।

लयौ १ लिया है विरह ~ तन लूटी ४२४८ । २ लिया, धारण किया : अर्जुन धनुप वान तव ~ ४३०९ । ३ अंगीकार किया, स्वीकारा लघु सुत नृपति बुढापौ ~ ९/१७४ । ४ लेकर नृप आग्या ~ कुवर उठाइ ७/२ । ५ चुकाया : ताको बदलौ तुमसौं ~ ३/५ । ६. पीछा किया, (जा) पहुँचा • चक्र तहाँ हूँ जाइ ~ ९/६ । ७ ले आये : जसुमति गृह आनन्द ~ २५० । जाइ ~ लाया जा सके • आपुहिं चलीजै जौ पै तुमहूँ — ~ २५७३ ।

लर १ लड, लडी : टूटहिगी मोतिनि ~ मेरी १६७० । २ लडी की • मोतिनि ~ ग्रीवा सोभा कहत न आवै ४५१ ।

लरकत (धीरे से) गिर पडते हैं ~ परिंगिनाइ घुटुरुनि डोलै १०१ ।

लरकन लडकों के • ~ सग कन्हाई सा० ल० १०१ ।

लरकि लचक • हरि सरि कटि-तट ~ जाइ २६६८ ।

लरखत लडखडाता या झूमता है • इक हरषत इक ~ २८८८ ।

लरखर १ लडखडाने, डगमगाकर चलने सूर कहा न्यौछावर करिये अपने लाल ललित ~ पर ९३ । २ हिलता हुआ • उर पै मन्दार हार, मुक्ता ~ सुढार १३८४ ।

लरखरनि लडखडाहट भरी चालें सूर प्रभु की उर बसी किलकनि ललित ~ १०९ ।

लरखरात लडखडाते हुए ~ गिरि परत हैं ११२ ।

लरखरिहौ लडखडा जाओगी • अवहीं ~ १३४२ ।

लरखरे लडखडा गये • चरन जुगल ~ २७०४ ।

लरजि १ भयभीत होकर । २ भयभीत हो घटा आई गरजि जुवति गई मन ~ ८६४ ।

लरत १ लडते हैं • झरपत ~ घनेरे २३५२ । २ लटता है • फिरि-फरि ~ सुनत नहिं टेरौ १८९२ । ३ लड रहे हों : भुजा भुज धरत, मनु द्विरद सुडनि ~ २१२९ । ४ लडते हुए, लडते समय ~ न मानैं सक ९/१३४ । ~ भिरत लडते भिडते हैं • मोर्मी ~ — हरि सन्मुख महा सुभट ज्यों धावत २३७३ ।

लरति झगड रही हैं : मानौ रिस भरि कै ~ जुग झखियाँ १३८५ ।

लरति लडती हुई : ~ निकसीं सबै १००४ ।

लरती लडती, झगडा करती • सूर तबहीं हमसौं जौ कहती तेरी घाँ है ~ १७३२ ।

लरतौ लडता, लडाई-झगडा करता • उदर-अर्थ चोरी हिंसा करि मित्र-बन्धु सौं ~ १/२०३ ।

लरन लडने • ~ कौन सौं आई २८२६ ।

लरनि १ लडाइ, झगडा कुटिल कुतल मधुप मिलि मनु कियौ चाहत ~ ३५१ । २ लडाई/प्रतिस्पर्धा में भुज भुजग, सरोज नैननि, वदन विधु जित ~ १०९ ।

लराइ १ युद्ध नृप तुम हमसौं करौ ~ ९/१३ । २ झगडा, झंझट वादिहिं करत ~ ३८०१ ।

लराई लडाइ, झगडा हम तुम कौन ~ ९/२८ ।

लरि लडकर ~ मुए तुरत ही दोउ भाई ८/११ । △ ~ **मरि झगरि** लड-झगड और मरकर ~ — भूमि कछु

कछु पाई, जस अपजस वितई ३२९६। ~ **लरि** लड लड कर · आपु आपु मैं ~ — मरत १२/३।

लरिकई लडकपन वह ~ मातु पितु कौ हित १३४८।

लरिकन लडको के ब्रज ~ संग खेलत ६७०।

लरिकनि १ लडको. यह ~ पर घात ५८९। २ लडकों को : गोरस खाइ खवावै ~ २८०।

लरिक-सलोरी शैतानी, बाल लीलाएँ: सूरदास प्रभु देत दिनहिं दिन ऐसियै ~ २८६।

लरिकहि लडके को · काहू कै ~ हरि मार्‌यौ ३६९।

लरिका १ लडका : इक ~ अवही भजि आयौ ७२०। २. लडका (नादान) ~ मोकौं कहति १४६१।

लरिकाइ लडकपन, नादानी यह मेरी ~ १४६१।

लरिकाई १ लडकपन, बाल्यावस्था: ~ की बात चलावति १५६०। २ लडकपन, नादानी, · कस कहा ~ कीनी ४। ३ लडकपन, चचलता: ~ तवहीं लौ नीकी चारि बरस कै पाँच ७७०।

लरिकिनी लडकियाँ : और ~ घर घर खेलति १७०९।

लरिकौ लडका भी : लगर यह ~ १४८६।

लरिहै लडेंगी, झगडेगी · ~ हम सौ भगिनी माई १४१७।

लरिहौं १ लडूँगा: अब कै हौं कुछ ~ १९४३। २ झगडूँगी : कहूँ जात देखौ तव ~ २०७२।

लरिहौ लडना, झगडो तुम अनेक वह एक है वासौं जनि ~ १३४२।

लरीं लडीं, लडती हैं सूर जव हम हटकि हटकति, बहुत हम पर ~ २४०४।

लरी[1] १. लडी, लडाई की : मेरे गिरधर जू सौ कौन ~ परि० १/२१। २ लडी थी, · ता दिन बहुत ~ १७६८। ३ लडी /झगडी हूँ मन कै सग मैं बहुत ~ री २०९४। ४ लड गई, भिड गई सारँग सग ~ २६२३।

लरी[2] १ लडियाँ, लडे लगी सब मुक्ता ~ ४१८६। २ पंक्ति, कतार, अवली चपक-बरन चरन कर कमलनि दाडिम दसन ~ ९/६३।

लरु लडो, लडाई करो · उनहि जानि सखि मोहीं सौं ~ ~ २८१७।

लरे १ लडने पर · एक समय सुर असुर प्रचारि ~ भई असुरनि की हारि ७/७। २ लड गये, टकरा गये आलिगन दे अधर पान करि, खजन कज ~ ६८९। ३ लडने मे, लडने की इहि सुख, इहि उपमा पटतर को, रति सग्राम ~ २४६०।

लरैं लडते हैं सूर सुभट हठ छाँडत नाहीं काटे सीस ~ ३२६४।

लरै १ लडे, लडता है. ~ सो सूर बखानै ३९६०। २ लडते हैं : यसुमति जू सो ~ महर जू तुम क्यौ बाँध्यो दाम सारा० ४५६। ३ लटती है. अब बाँसुरी सौ तू ~ १२९०।

लरैगौ लडेगा. मोसौ आनि ~ २०९५।

लरैया लडाई, झगडा: दुकि दुकि करति ~ ३७१।

लरौं १ युद्ध करूँगा भीम सौं ~ यह कहि सुनाई ४२१५। २ झगडूँगी · ताकै सग ~ री २१०२।

लरौ १ युद्ध करो : करिकै जग्य सुरनि सौं ~ १२/२। २. झगडते हो याही के जु धोखैं हौ मोसौ काहैं ~ १९४४।

लरौगी झगडा करोगी : न्हान चलति की वहुरि ~ १७५०।

लर्‌यौ युद्ध किया, लडा : ~ सूर बनाइ ९/६०।

लल सार, तत्त्व · अष्ट सिद्धि, नवनिधि, सुर सपति तुम विन तुसकन कहुँ न कछू ~ १/२०४।

ललकत ललक रहे ये ~ स्याम, मन ललचात ११६९।

ललचाइ ललचाती है · लख ठाढो ~ परि० १/३८।

ललचाइ ललचा जाता है, ललच उठता है हियरा तकि ~ १४४३। २ ललचाकर, लालच के कारण. सो सुनि दै न सक्यौ ~ ४१९०।

ललचात १ ललचते है, ललचाये हैं ता पर पुनि ~ २३२४। १ ललचाकर · ललकत स्याम, मन ~ ११६९।

ललचाने १ ललचा/मोहित हो गये · जो बन रूप देखि ~ १४७१। २ ललचा रहे थे : अति ब्याकुल ~ २१२६।

ललचानैं ललचाये हुए. फोरत बाँस काटि दाँतनि सौ बार बार ~ ३५९६।

ललचाय ललचती है : युवतिन सबै काम बपु देखे भेंटन को ~ सारा० ५१५।

ललचायौ १ ललचाये हुए थी इहि सोभा पर मन ~ १०१०। २ ललचा गया उतौ राक ~ ४२३८।

ललचाव ललचाये पड रहे थे : श्री राधा रिस करति निरखि मुख तिहि छबि पर ~ २५४२।

ललचावनो ललचाने वाला है : स्यामा स्याम विहार वृन्दावन सुर-ललना ~ २८३२।

ललचावै १ ललचाया रहता है मृग तृष्णा आचार जगत जल ता सग मन ~ २/१३। २ ललचाता है, मोहित करता है नदलाल ललना ललचि ~ री ६२९। ३ ललचाते हैं, मुग्ध करते है नदलाल ललना कौं ललचि ~ री ६२९।

ललचि ललच कर, मुग्ध होकर · नदलाल ललना कौं ~ ललचावै री ६२९।

ललन १ बेटे के लिए प्यार-भरा सबोधन : ~ हौं या छवि ऊपर वारी ९१। २ प्रिय के लिए शरारत और प्यार भरा सबोधन ~ तुम ऐसे लाड लडाए ७९४।

ललना[1] १ स्त्रियाँ, नारियाँ ~ लै उछग अधिक लोभ लागैं ९०। २ प्रियतमा (राधा) ~ तउ न अघात २४७२। ३. प्रियतमाओ के अवर थके अमर ~ सग ५६५। ४. गोपियों

के : ~ प्रान जिवन-धन १६६६ ।

ललना[2] राधा की एक सखी · कलना ~ लोमाऽनूप २००८ ।

लला दे० ललन · दूरि खेलन जनि जाहु ~ मेरे २२१ ।

ललाई लाली, लालिमा . और मेटि आप लाल वदन की ~ २५५३ ।

ललाट मस्तक, भाल लोचन ललित ~ भृकुटि बिच तकि मृग-मद की रेख ६१६ ।

ललित १ सुन्दर, मनोहर : तिलक विराजत ~ भाल पर २००४ । २ कोमल सुभग ~ कपोल आभा गिये २२७१ । ३ मधुर . ~ वेनु बजाइ हो २८०० ।

ललिता राधा की आठ प्रधान सखियों में से एक छवि निरखत ~ री ७३३ ।

ललितादिक ललिता इत्यादि : राधा चन्द्रावलि ~ बहु तरुनी इक भाँति १४९२ ।

लवँग लौंग की फूलि ~ लता वेलि २९१७ ।

लवँगिनि लौंगों से खिर लाडु ~ नाए १८३ ।

लव उत्साह से, उत्साहपूर्वक जल तें निकसि तरुनि ~ आई ७९९ । △ ~ **लाइ** मन लगाकर, मनोयोग से/प्रेम पूर्वक : भजियै ताहि सदा ~ — ७/२ । ~ **लाई** ध्यान या चित्त लगाए है · इकटक स्याम रान ~ — ४२६२ । ~ **लाए** ध्यान लगाया, मग्न हुए : परम तत्व ~ — ३८९४ ।

लवन लवण/नमक का · अगम जु पथ दूरि दच्छिन दिसि तहँ सुनियत सखि सिंधु ~ ४२६१ ।

लवनी माखन, नवनीत : दही, मही ~ घृत वेंचौ १९२२ ।

लवन्य लावण्ययुक्त (सुंदर) · कोटि काम ~ मूरति परि० १/१०९ ।

लवलीन १ तन्मय, आनन्द-विभोर नर-नारी ~ ९/२६ । २ तन्मय/आनन्दित था · विष्नु भक्ति सौं अति ~ ४२२४ । ३ भरा हुआ है . जोग पौन हिरदै ~ ३८६७ ।

लवलेस रंचमात्र चीर हम कहिहैं भगौंह सीख सिख ~ ४०५५ ।

लवैया लाने वाले (चराने वाले) धौरी गाइ आपनी जानी उपजी प्रीति ~ की २००३ ।

लषन लक्ष्मण को . गुरु वसिष्ठ सब विधि समझाने राम ~ सँग दीन्हे सारा० २०२ ।

लस[1] लासा से (चिपचिपे गोंद से) बसै जाइ खग-बुंद ज्यौं प्रिय छवि लटकनि ~ १६३५ ।

लस[2] युक्त, सुशोभित : पोच पिसुन ~ दमन ममामद २७७५ ।

लस्कर लशकर, समूह, भीड़ भाड़ . घेरयौ आइ कुटुम ~ मैं १/६४ ।

लसत १. सुशोभित होता है/हो रहा है ~ कज्जल अंक ३५३ । २ सुशोभित हो/हो रहे हैं : ~ दाड़िम दसन २४५० ।

लसति सुशोभित होती है, शोभा देती है . हँसन ~ दसनावलि पगनि १८०८ ।

लसि बैठकर, स्थित होकर · विकच कंज अनारँगा पर ~ करन पय पान २१३२ । **रहे हाथनि** ~ हाथों में सुशोभित हो रहे थे सुवरन-थार — ~ ३२ ।

लसी सुशोभित है पीन पिंडुरिया स्याम ~ री १२०४ ।

लसे १ युक्त हुए, सुशोभित हो गये . परम सोभा ~ ३०८२ । २ युक्त, सुशोभित · पीठि वलय कैं चिह्न ~ हौ २५०३ ।

लसैं सुशोभित हो रही हैं : द्वै द्वै दँतुरिया ~ १५१ ।

लहत १. पाता है, प्राप्त करता है ~ न छिन बिस्राम १/१४१ । २ पा रहे हैं अन नहिं ~ दोउ रति बिहारैं १९८८ । ३ पाते ही, प्राप्त होते ही · दरस कैं ~ मन हरष सब कौं भयौ १००९ । ४ प्राप्त होना है, मिलता है कमल करनि कुच गहत ~ पुट २६२२ ।

लहति पाती है ~ नाहिन तीर १८२० ।

लहनी प्राप्ति, फल ~ करम कैं पाछैं १८३१ ।

लहनो लाभ, सौभाग्य ~ ताकौ लाकैं आवैं २२१५ ।

लहनौ[1] प्राप्त करना धन्य सुवस कुंज कौ ~ परि० २/६ ।

लहनौ[2] दिया हुआ ऋण, लाभ, भाग्य ऊधौ ~ अपनौ पनै ३९०८ ।

लहब लेना, मिलना दुरलभ जनम ~ वृन्दावन २२१६ ।

लहरनि लहरों · ~ का छवि आव परि० १/५४ ।

लहरि १ (पानी की) लहर . देखि ~ तरग हरषीं १७१२ । २ रह रह कर होने वाली पीड़ा उतरन काम ~ क १६२६ । ३ उमग में . लाभ ही की ~ ८१४ । ४ साँप काटने पर होने वाली पीड़ा जो उन्मत्त और बेहोश दोनों हा किया करती है और इसी कारण उसे 'लहर देना' कहते हैं ~ सुअग तजि सनमुख आवै री ६२९ ।

लहरें लहरें । △ ~ बात रह रह कर होने वाली पीड़ा से कष्ट पाती हैं सूर स्याम बिनु बिकल बिरहिनी मुरि-मुरि ~ — ३२७२ ।

लहि १ पाकर, प्राप्त करके सुत ~ दंपति अति सुख पायौ ६/५ । २ प्राप्त करो, प्राप्त कर ले · सूर पाइ यह समौ लाहु ~ १/६८ ।

लहिए कुछ पाया जा सकता था तुमहू जो बोलै तौ ~ २५७१ ।

लहिऐ मिलता, प्राप्त होता ऐसैं कहो कहाँ लगि गुन-गान लिखत अन नहीं ~ १/११२ ।

लहियत १ प्राप्त होता है, मिलता है कहूँ नहीं सुख ~ ३२३१ । २ प्राप्त करनी, पानी क्यौं हू पा न ~ ३९११ ।

लहियै १ प्राप्त होता है हरि-पुर बासा ~ ३/१३ । २ पाती

मॉमहि तैं ~ इहि बातहि ४२१। ~ **बेगि गुहार** शीघ्र ही पुकार को सुना : ~ — सूर प्रभु ४०६९।

लाज लज्जा, मर्यादा। ~ **गही** लज्जित हुई . यह कहि कहि जिय ~ — १६६९। ~ **गहौ** लज्जित होओ कछु जिय ~ — २५१६। ~ **करावत** शर्मिन्दा करते हैं, लाज दिलाते हैं ~ — लाज न आई १६३४। ~ **परे** लाज आ पड़ने पर ~ — ते जाइ बिकाने १/२१७। △ ~ **बड़ाई** इज्जत-प्रतिष्ठा तुम्हैं हमारी ~ -- १७०। ~ **लगाई** लज्जित कर दिया, कलंक लगा दिया : ग्वालनि कैं सँग भोजन कीन्हौं कुल कौं ~ — १/२४४। **कुल** ~ **लजाई** कुल की इज्जत को कलंकित कर दिया घर के मात-पिता सब त्रासत ईहिं — ~ — ३२००।

लाजत १ लज्जित हो जाते हैं . कोटि मदन निरखत छबि ~ ९०४। २ लज्जित हो जाती है सुनत कोकिला ~ २०७९।

लाजति १ लज्जित होती है : ~ वदन दुराइ २४७२। २ लज्जित हो रहा था · ता छबि पर मन ~ १०५३।

लाजन लज्जा से/के कारण : हौं कछु नाहीं बोलति ~ ३३७०।

लाजनि लज्जा से ~ अँखियनि गोवै ३४७। ~ **मारी** मारे लाज के : बोलि जात नहिं ~ — ३९१। ~ **लागे** लाज (रखने) के लिए : जननी ~ — ९/१५४।

लाजहीं लज्जित हो जाते हैं . बिंब प्रवालनि ~ ११९८।

लाजा १ लज्जा हमकौं आवति ~ १५४६। २. लज्जा से . वदन उठाइ सकत नहिं ~ ९४९।

लाजि लज्जित करके स्रवत जस-रस ~ २४५३।

लाजी लज्जित हुई · कपट-कठोर कछू नहिं ~ ३१३३।

लाजैं **क्रि०अ०** लज्जित हुए अबर गहत द्रौपदी राखी उलटि अध-सुत ~ १/२६। **स्त्री०** १ लज्जा जिय धरी ~ १/५। २ लज्जा को लीन्हे बसन तजी कुल ~ ३८८३।

लाजै १ लज्जित होता है/हो जाता है निरखि अग प्रति मनमथ ~ ७९९। २ लज्जित होती है : नागरि हँसि मन ~ २६६९। ३ लज्जित हो जाते हैं : निरखत ताहि काम सत ~ ३/१३। ४ लज्जित हो रहे थे निरखि ब्रज-नारि-छबि स्याम ~ १०४२।

लाजौं लज्जित करूँ : तौ ~ गंगा जननी कौं सांतनु सुत न कहाऊँ १/२७०।

लाज्यौ लज्जित हो गए स्यामा वदन देखि हरि ~ ११९३।

लाड दुलार, प्यार धरिहै ~ उतारि १६१८। ~ **लडाइ** प्रेम करके अरु कत ~ — राग, रस ३६५५। ~ **लडाई** दुलार किया, प्रेम किया एक तौ लालन ~ — २५९७। ~ **लडाए** १ प्यार किया . जिन मिलि ~ — २६३१। २ प्यारे हो गए हो, दुलरा गए हो . लालन तुम ऐसे ~ — ७९४। ~ **लडानी** प्यार से दुलराई हुई करके पहिलैं अधर सुधा रस सींचि, कियौ पोष बहु ~ — ३७१४। ~ **लडायौ** १ प्रेम किया कोटिक ~ — २/३०। २ प्रेम के द्वारा दुलारे हुए (लाडले) : दसरथ ~ — ९/५५। ~ **लडावत** प्रेम करती थी/थी जनकसुता बहु ~ — सारा० ३०८।

लाडिली १ प्यारी, दुलारी द्वितीय प्रेम की रासि ~ १२००। २ प्यारी/दुलारी हो : बडे गोप की ~ १६१८।

लाडिले १ दुलारे, प्यारे भोर भयौ मेरे ~ २३२। २ प्यारे/प्रिय हैं : सहज रूप गुन सहज ~ १९०८।

लाडिलौ प्यारा, दुलारा चिरजीवौ मेरौ ~ ६८।

लाडू लड्डू . रुचि पिराक ~ दधि आनौ २११।

लाड् लड्डू से : काकी भूख गई मन ~ ३८६१।

लाता पैरों को : गौतम की नारि तरी नैकु परसि ~ १/१२३।

लादत लादते ~ जोतत लकुट बाजिहै तब कहँ मँड दुरैहौ १/३३१।

लादि लादकर खेप ~ गुरु ग्यान जोग की ३९६५।

लादौं लादूँ, रखूँ याही पर ~ ५५३।

लादौ लदा हुआ है तुम्हरौ गथ ~ गयद पर १५२९।

लाधौ १ पाया, प्राप्त किया . सो सुख सिव सनकादि न पावत जो सुख गोपिनि ~ ३२३२। २ पा जाऊँ, प्राप्त कर लूँ · जो इहि जतननि ~ ३१९९।

लापसी लपसी : लुचुई ललित ~ सोहै १२१३।

लामी लम्बी अजहुँ न आइ मिले इहिं अवसर अवधि बतावत ~ ३६२९।

लाय[1] लगा कर : सुनो नृपति मन ~ सारा० ७३७। २ डालकर, पहन कर एक दिवस मृगया को निकस्यो कठ महामणि ~ सारा० ६४४।

लाय[2] जला (दिया) : स्वाय बिष गृह ~ दीन्हौ १/१०२।

लायक १ योग्य तुम ~ भोजन नहि गृह मैं १/२४१। २ योग्य है उपमा काहि देउँ को ~ २२०५।

लाये लगाया, केन्द्रित किया . हरि पद चित ~ ३/१३।

लायौ[1] १ लगाया, केन्द्रित किया जग्य छाडि हरि पद चित ~ १२/५। २ की, होने दी : हरि तहँ जात बिलब न ~ ४१९२। ३ लगा दी भादौं झरि ~ १/२३। ४. लगाये हुए है, लगा दी है : करि अभिमान इद्र झरि ~ ८६५। ५ लगाये रहता था राम नाम सौं तिन चित ~ ७/२।

लायौ[2] १ लाते हैं, करते हैं आलस नैंकु न ~ २२४६। २. लाये, ले आए सुरा अरु अमृत निज सग ~ ८/८।

लारनि लार से . सूरज प्रभु को लहै जु जूठनि ~ ललित लपोटी १६४।

लाल[1] १ पुत्र के लिए दुलार भरा संबोधन ~ हौं वारी तेरे

मुख पर ९३। २ प्रिय कृष्ण लाल। ~ गोवर्धन धारी १/३०। ३ (प्यारे या प्रियतम) लला (कृष्ण) के की बन-माल ~ उर राजति २०५८।

लाल² माणिक्य, एक कीमती पत्थर नैन देखत प्रगट मए कोउ कनक मुक्ता ~ २३०८।

लालचि मुग्ध हो चले थे • अति रस-रास लुटावत लूटत, ~ लाल सभागे ८८६।

लालन १ पुत्र के लिए दुलार भरा सबोधन • अतिहिं अबेर भई ~ का ४५५। २ पुत्र के . ~ वारी या मुख ऊपर ८०। ३ प्रियतम (कृष्ण): आजु ~ लटपटात भाई आए अनुरागे २६४३। ४ प्रियतम कृष्ण के ~ प्रगट भए गुन आजु २८८३।

लालमुनियाँ लालमुनी नामक एक पक्षी तहँ ~ मुट बैठे परि० १/१०९।

लालमुनंयनि लालमुनी पक्षियों की भाँति ~ पाँति पिंजरा तोरि चली २५।

लाल-ललिता छरु ललिता (सुंदरी) के रूप में लाल (कृष्ण) का छल तबहीं सूर निरखि नैननि भरि आयौ उबरि ~ २८१७।

लालसा १. अभिलाषा, इच्छा . यह ~ अधिक 'मेरे जिय ७५। २ अभिलाषा है : मेरे जिय अब यहै ~ २/३३।

लालसाई अभिलाषा निसि दिन इन नैननि कीं आली नँद-लाल की रहै ~ १९१४।

लालहि १. बेटे को, पुत्र को ~ जगाइ बलि गई माता ४४०। २ प्रियतम कृष्ण को ~ जौ लौं लै आऊँ २८०९।

लाली पाली पोसी या दुलारी हुई, लालित काहे न दूध देहिं ब्रज-पोषन हस्त-कमल की ~ ६१३।

लाल्हा चौराई की जाति का एक पौधा जिसे 'मरसा' भी कहते हैं और जिसका साग बनता है चौराइ ~ अरु पोइ ३९६।

लाव लाओ सूरदास मोह मर्मांष्टि करि व्यष्टि दृष्टि मन ~ २/३८।

लावत¹ १ लगाता है . हारि-जीत कछु नैंकु न समुझत लरिकनि ~ पाप २१४। २ लगाते हैं कर नहिं भुजा अग लै ~ ४२२९। ३ लगाते हो ' वृथा कत अपलोक ~ ३६९१। ४ लगाते हुए, डालते हुए इन है नए ठगौरी ~ २२५०। ५ लगाती है • भूलन भुलावत कठ ~ २८३०। ६ लगाते ही उनके चरन कमल चित ~ २/१७। **नैन नहि** ~ नेत्रों को नहीं लगाता, एकटक देखता रहता है : निमिष चकोर — ~ ३८३१। △ **पलक न** ~ पलकों को नहीं लगाते/बद करते इक टक — ~ २२८८।

लावत² १ ले आते हो : जोग सँदेसौ ब्रज मैं ~ ३७११। २ ले आती है, ला रही है : मधु मेवा पकवान मिठाई विविध खिलौना ~ मा० ४३९।

लावति¹ लगाती है • कुंकुम चंदन घसि तन ~ ३०२२। △ **पलको नहि** ~ पलक भी नहीं लगाती अर्थात् एकटक देखती रहती है नग जीवन — ~ ३५७०।

लावति² ले आती है • कृष्नहिं नहि ~ क्यकार २८६०।

लावति १. लगाती है : बार बार उर ~ ११४४। २ लगाती हो • उठि चलि देगि गहरु कत ~ २५८८। ३ लगाती हैं, बद करती हैं . नैन निमेष न ~ १८५३।

लावन सुंदर, मधुर • ~ लड़ लावन नीके २२१३।

लावन-रथ ता पति आभूषन लावन-रथ (शिव) उनका स्वामी (महादेव) का आभूषण=चद्रमा • ~ आनन-जोति दुरी २७५०।

लावनि १ लावण्यमय अर्थात् मधुर खार खाँड घृत ~ लाडू ३९६। २ लावण्य के • ~ निधि गुन-निधि ६६३।

लावन्य लावण्य, सलोनापन ~ कोटिक काम ६०३।

लावहि लगाते हैं उसके ऊपर लौन ~ ३८६०।

लावहु १ लगाओ, केन्द्रित करो . जोग समाधि ब्रह्म चित ~ ४०९४। २ करो : बिलम नहि ~ ४४३। △ **लोन** ~ नमक लगाओ, दुखी व्यक्ति को और दुखी बनाओ . जाहु, जनि अब — ~ ३९३२।

लावा भुना हुआ धान या ज्वार। △ ~ **मेलि दए हैं** जादू टोना कर दिया है ~ — तुमकौं बकत रहौ दिन आठौ ३५४०।

लावैं¹ १ लगा दें, केंद्रित कर दें तो निहचैं चित ~ ३७९६।

लावैं² १ ले आएँगे ~ सींचि नर की खोरि १०/३। २ ले आते हैं जे पादवर ~ परि० १/१८८।

लावैंगे लगा लेंगे अकम भरि उर ~ २७०८।

लावै १ लगाता है • अत समय हरि पद चित ~ १०/४। २. लगाता है : अन्य पुरुष मन ~ ११८२। ३ लगाये, करती . गोदावरी बिलब न ~ १/२०४। ४ लगावे, लेप करे . कोटि ~ केसरि ३५५०। ५ लगाये रहता है • ज्यौं चातक स्वा-तिहिं रट ~ २३१५। ६ लगाएगा, करेगा। तोहि बाँधत बिलम न ~ ०/११५। ७ लगावे • ध्यान उरनिया ~ १/१४२। △ ~ **डीठ दृष्टि** डाले, नजर लगाए नहि कोउ ~ — ३८८२।

लावो ले आओ • ~ देहि नाम लक्ष्मन सो मारा० १८४।

लावौ लगाओ, करो न ~ वार ४/५।

लास उल्लास था, गुना भी सुन, देव, द्विज नृप दयु ~ ४३०६।

लाह लाभ कहनि ~ मन ~ २८०८।

लाहक चाहने वाले हैं प्रेम प्रीति के ~ १/१०।

लाहा लाभ है • और बनिज मैं नाहीं ~ १/३२०।

लाहु[1] १ लाभ सूर पाइ यह समौ ~ १/६८। २ लाभ हो · बेचियै जहँ ~ ३५१७।
लाहु[2] लहाना, प्राप्त कराना, देना मातु पिता परिजन सुख ~ ९/३४।
लाहै इच्छाएँ · करि करि मन की ~ ३६१२।
लाहौ चाहा जानहुगे मन ~ २८९८।
लिग देह वह सूक्ष्म शरीर जो स्थूल के नष्ट होने पर भी कर्म-फल भोगने के लिए जीवात्मा के साथ रहता है : ~ नृप कौ निज गेह ४/१२।
लिए[1] के कारण, के लिए धन-मद-मूढनि अभिमानिनि मिलि लोभ ~ दुर्वचन सहै १/५३।
लिए[2] १ लिये। २ ले लिया है सुख सबै कुबिजा ~ ३८६५। ३ लेकर, लिए हुए सखा ~ तहँ गये ४३७।
लिऐ[1] के लिए, के कारण : प्रीतिहिं ~ प्रान बस कीन्हौ ३१९५।
लिऐ[2] १ लिए, स्मरण किए विना ~ हरि नाम १/५७। २ स्मरण करके : हरि नाम ~ १/८९। ३ लेकर, लिए हुए . करन फूल कर ~ सँवारति २१८९।
लिकट लीक : सगुन विचारति बँधी ~ परि० १/१५५।
लिखत १ लिखता है अहकार पटवारी कपटो झूठी ~ बहा १/१८५। २ लिखते हैं . सोइ सोइ ~ बनाइ ३९९९। ३ लिखते हुए : ~ सारदा हारैं १/१८३।
लिखति लिखता हैं सैन सूच, नख ~ किसलयनि ४११८।
लिखति बनाती हो भीत विना तुम चित्र ~ हो सो कैसैं निबहै री ७७३।
लिखन लिखने की क्रिया . सेवक सूर ~ कौ आँधौ ३३००।
लिखवाइ लिखवा कर उरज पत्र ~ २६७८।
लिखहार लिखने वाला, मुशी, लेखपाल साँचौ सो ~ कहावै १/१४२।
लिखाइ लिखवाकर पत्र ~ ५२३।
लिखाने लिखे हुए से : अब ये अक देखियत ऐसे रहे जु चित्र ~ ३६७५।
लिखि १ लिख कर कौन गुनाह जोग ~ पठयौ ३६५६। २ बनाकर, चित्रित करके : छिनक मैं मूर्ति तब ~ दिखाई ४१९७। ~ **लिखि** लिख लिखकर ~ — मम अपराध जनम कै १/१२५।
लिखित लिखा हुआ : श्री हरि जोग रुक्मिनी ~ ४१६९।
लिखी खचित, अंकित अलक-तिलक छवि चित्र ~ सी २७४४।
लिखे १ लिख दिये हैं : विधि जो ~ दरस सुख रेखें ३५८५। २ लिखते रहे : ~ गनेस जनम भरि १/१२५।
लिखैं[1] १ लिख रही हैं, खरोंच रही हैं भुव नख ~ २७९७। २ खींचे, अंकित करें, बनाएँ तेरौ चित्र ~ २५७९। △ ~ **बिनु भाल** विना भाग्य मे लिखे हुए पावै कौन ~ — १७८६।
लिखै लिखता है : विधि मम कृत दोष ~ १/१११।
लिखौ १ लिखा है भाग ~ सु पाइयै ३८६५। २ लिखा हुआ : ~ हमारौ दीजै ४०८४। ३ लिखा हुआ, होनहार, भवितव्यता ~ मेटै नहिं कोई ३०९०।
लिख्यौ[1] १ लिखा : बाँचि सुनावहु ~ कहा है ३७१७। २ लिखा है, लिख दिया है · जो विधि ~ लिलार ३७४९। ३ लिखे है : तारक मत्र ~ स्तुति द्वार २/३।
लिख्यौ[2] होनहार, लिखा हुआ : ~ मेटि न जाई १/३१६।
लिना लीन, अनुरक्त वा छवि पर मैं भई ~ १९१५।
लिपटि लिपट कर तौ लौं ~ रहत अबुज पर ३९८२।
लिपाइ लेप करवाकर चदन आँगन ~ ९५।
लिपाऊँ लिपवाऊँ . चदन भवन ~ ८७६।
लिपायौ लिपवाया : चदन भवन ~ ४।
लिपावौ लिपवा लो ललिता विसाखा अँगना ~ परि० १/११९।
लिय १ लेते हैं : कबहुँक अगर धूप नाना विधि ~ सुगन्ध सुखकारी सारा० ३१३। २ लिया, ग्रहण/धारण किया . यदुकुल ~ अवतार सारा० ५८७।
लिये १ लिया। २ लिए हुए, लेकर। ३. लेते हुए सकुचत कवि ~ नामा २१८१।
लियैं १ लिए हुए, लेकर कमल की माल कर ~ आई ८/८। २ लेकर ही . ~ दियौ चाहैं सब कोऊ १/१९५।
लियौ १ लिया, ग्रहण किया चरन पखारि ~ चरनोदक ३०५०। २. ले लिया : खेल करत गज प्रान ~ ३०८०। ३ अपनाया है : सूर प्रभु करि ~ आदर २३३०। ४. लेना, ग्रहण करना . चाहत रूप ~ २३०४। ~ **न जाई** लिए (जीते) नहीं जाते दोउ बलवत कोउ ~ — ४२१५। ~ **बसेरौ** निवास किया, विश्राम लिया · कब हरि ~ — १६१८।
लिला लीला सुक नारद सो ~ अगोचर परि० १/६२।
लिलाट ललाट, मस्तक . बलि भृकुटी ~ पर ६६४।
लिलार १ ललाट/माथे पर : दीन्हौं तिलक ~ २१८३। २ भाग्य मे : जो विधि लिख्यौ ~ ३७४९।
लिलारे माथे पर : मृगमद तिलक ~ २६३९।
लिवाइ लिवाकर, लेकर तिन्हिं ~ जमुन जल गए ११८०।
लिवाई १ लेकर, लिवाकर · ल्याए आस्रम ताहि ~ ५/३। २ ले आए · गहि बाँह ~ २७३५।
लिवायो जीता, तोडा ढियो बनाय नगर गोपुर मे काहु न जात ~ सारा० ७८९।

लिवायौ लिवाई, मँगवाई सुवि-बुधि चोरि ~ २३७७।
लिवावन लिवाने के लिए, ले जाने के लिए : कीरति महरि ~ आई ७५७।
लिवैया लेने वाला, खरीदने वाला · गोरस कौन ~ परि० १/६७।
लीक लकीर, रेखा। △ ~ **खाँची** लकीर खींचकर, दृढ़तापूर्वक . कही ~ — १७४९।
लीके लकीर, रेखा। △ **करे कहति हौं** ~ निश्चयपूर्वक कहती हूँ . और अग की सुधि नहिं जानै — ~ १४००।
लीकौं लकी, रेखा। △ **खैंचि कहत हौं** ~ लकीर खींच कर कहता हूँ अर्थात् सत्य बात कहता हूँ : कोउ न समरथ अब करिबे कौं — ~ १/१३८।
लीकौ रेखा। △ **करे कहति हौं** ~ दृढ़तापूर्वक कहता हूँ गति मैमत नाग ज्यौं नागरि — ~ १७०२।
लीजत लेते हैं पलकहि माँझ पलटि मै ~ १३२३।
लीजतु लेता . ~ है मन मानि २/३८।
लिजियें लीजिए, लें : अब ~ टहि उचाट ८/८।
लीजे ले, लीजिए . बिनु थर कहा ~ २७८८।
लीजैं लीजिए, प्राप्त कीजिए करि विवाह जग मे जस ~ ४१६७।
लीजै १ लीजिए, प्राप्त करें · जानको छोरि जम ~ ९/१३६। २ ग्रहण करें, धारण करें ~ भस्म अधारी ३८८६। ३ प्राप्त किया जाय, मिलेगा मीठी बातनि मैं कहा ~। ४ लेंगी : हाँसी करि ~ ३९६७। ५ खरीद लीजिए जोग बेचि कै तदुल ~ ३८८०।
लीजौ १ लीजिए · हमहूँ बोलि उहाँई ~ २५३९। २ लेना · मोहि ~ तुम टेरि ४००। ३ ले लेना : बेसरि ~ छीनि कै १९५३।
लीन[1] १ मग्न, समाई हुई : रही आसा ~ ४१०७। २ मग्न हैं . अवधि आस मैं ~ ३७९८।
लीन[2] लिया, पाया तऊ पार नहिं ~ मारा० १००२।
लीनी १ लिया . याही तैं पढि ~ ४२०४। २ ले लिया, ग्रहण कर लिया . जोग जुगुति जद्यपि हम ~ ३७०५। ३ ले लिया हो/है . जनु सुरसरी अधोगति ~ १०९३।
लीने[1] १ लिए हुए पैठि गए मुख ग्वाल धेनु बछरा सँग ~ ४३१। २ लिए हैं, धारण किए हुए हैं . नम जल बसन पलटि तनु ~ २१७६।
लीने[2] अनुरक्त/मग्न होकर हरि रस-रति के ~ २३७८। ~ **जात** मग्न होते जाते हैं, डूबते जाते हैं · ~ — निमिष कूल दोऊ ४११३।
लीने[3] (के) कारण/लिए : सूरदास लोभिनि कै ~ २३८८।
लीनै लेकर, लिए हुए ठाढ़ी जलजा सुत कर ~ मा०ल० ७२।
लीनो १ लिया नाय स्याम ककन कर ~ मारा० ८९४। २ लिये हुए, लिया हुआ · मोसौं कहन मोल कौं ~ ४८१।
लीनौ[1] लिया लाइ हिए मैं ~ मा० ल० ८२।
लीनौ[2] लीन, निमग्न : हरि कै रग भयौ उर ~ १४५०।
लीन्यौ १ लिया काकैं मत्र जन्म ~ है ४। २ ले लिया : हनुमत कर ~ ९/९६। ३ पाया, प्राप्त कर लिया : हरि तुम बलि कौं छलि कहा ~ ८/१५।
लीन्हीं १ लिया मेरी फिरि सुधि ~ मारा० ८५८। २ ग्रहण किया (प्रविष्ट होने के अर्थ में) घट घट जल थल व्योम धरणि में व्यापक यह ध्वनि ~ मारा० १२२।
लीन्ही १ लिया यहौ मानि ~ अपनैं सिर १७४८। २ ले लिया स्याम बैर हमसौं है ~ १८५८। △ ~ **भुजा पसारि** भुजाएँ फैला कर ली, प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण की : ताकी बलि वह देवता ~ — ८४१।
लीन्हें १ लिया, ले लिया . मैया ~ रोग ४९३। २ लिए हुए, लेकर सग रानिका ~ मारा० ८६७।
लीन्हे १ लिया : ~ विप्र बुलाइ ८४१। २ ले लिया लछिमन ~ साथ ९/३७। ३ ले लिया हो मनौ घन दामिनी कोर ~ २२०४। ४ लिये हुए थी टकनि कर दधि दूध ~ २६०१। ५ लगा लिया ढौरि जाइ उर लाइ सूर प्रभु हरषि जसोदा ~ २१९। ६ लेकर, लिये हुए · कर ~ कोटिक नाच नचावै १/४२। ७ ले लिया था · ~ बसन तजी कुल लाजैं ३८८३।
लीन्हैं लिए हुए सूर के प्रभु मसा ~ ५३२।
लीन्हे लिए हुए, ले कर घट ~ इक रही यहीं १६५५।
लीन्हौं १ लिया सरबस लूटि हमारौ ~ ३६५८। २ ग्रहण किया, उठाया कोपि कै प्रभु बान ~ ९/६०। ३ ले लेना है प्रान सहित गथ ~ ३८३२। ४ लिया, पकड़ा . भवसागर मैं पैरि न ~ १/१७५।
लीन्हौ १ लिया . छुड़ाइ ~ पल मैं ८/५। २ लिया था : इननि मैं कहिं कौनै ~ २००८। ३ ले लिया सकुचि उठी नागरि पट ~ २६२६। ४ उठाया कब ~ कब धरयौ उतारी ९५१। ५ भर लिया · गए रहि अत हँसि अक ~ १९८४। ६ लिया है/हो . मनौ गिरि चरन धरि लपकि ~ ३०५४। ७ लिया गया है, लिये गये हो मोसौं कहत मोल को ~ २१७।
लीन्ह्यौ १ लिया मोहिनी मौं अमृत माँगि ~ ८/८। २ लिए रहे, धारण किए रहे नो सुत हित मान विषम गिरि ~ १/१७।
लीपि लीपकर अरथल ~ पात्र नव धोए २६०।
लीवें लेंगे ऐसो भाग होइगो कबहूँ स्याम गोद मैं ~ ३४७४।
लीयौ लिया जान्ह माँगि सीतल जल ~ ३०६।
लीलत निगलते हो नैंमे मीन अहार लोभ ते ~ परै रे २३०७।

लीला[1] १ क्रीडा, खेल : ~ करत कनक मृग मारयौ ९/११५। २ आचरण, व्यवहार यह ~ उनि नवै जनैहै १६५०। ३ खेल खेल में ही, कौतुक में ही : ~ लाल गोबर्धन धारी १/३०। ४ (ईश्वर के द्वारा लिए गए अवतारों का) चरित्र : जो यह ~ सुनै सुनावै ५/४।
लीला[2] राधा की एक सखी • सुखमा ~ अवधा २००८।
लीलाधर विविध चरित्र करने वाले को • निर्गुन ब्रह्म सगुन ~ सोई सुत करि मान्यौ २६३।
लीली नीले रग की, नीली बदन सिर नाटक गड पर रतन जटित मनि ~ १८४६।
लीले निगले • सूर पठावन ही की ओरी रह्यौ जुगुति सौं ~ ४१२७।
लीलौ नीले रग का, नीला • कटि लहँगा ~ १/४४।
लुंजैं लूली, अपग • मदन मारि कीन्हीं हम ~ ४०६८।
लुकट लकुटी, लाठी सुबरन की ~ १४०१।
लुकाइ छिप : द्रुम चढि रहौ ~ १४९२।
लुकाई १ छिप • बालक रहैं ~ २३९। २ छिपे डर तैं तब वै रहे ~ २८९२।
लुकाऊ छिप • चार बेद ले गयौ सखासुर जल मैं रह्यौ ~ २२१।
लुकाने १ छिपे अतर दै बिच रहे ~ १/२१७। २ छिप गये : तहँ वै जाइ ~ २०७८।
लुकावत छिपाते हैं • अचल मुखहि ~ २२२।
लुकावैं छिपाती है सकुचि अग जल पैठि ~ ७९९।
लुके छिप गये • टूटत धनु नृप ~ जहाँ तहँ ९/२३।
लुगाइ स्त्रियाँ, महिलाएँ पुर लोग ~ ४/१०।
लुचुई मैदे की बनी पतली पूरी ~ ललित लापमी सोहै १२१३।
लुटयौ लुटा दिया • धर्म सुधन ~ १/६४।
लुटाइ[1] लोटी, लोट गई तरु ज्यौ धरनि ~ २९९२।
लुटाइ[2] लुटा (कर): दह्यौ देत ~ ३२८८।
लुटाए लुटाते है, बाँटते है मागध-बदी-सूत ~ ९/१८।
लुटायौ लुटा दिया, लुटवा दिया • जात ही नगर ताकौ ~ ४१९८।
लुटावत उदारता-पूर्वक वितरित करवा दे रहे है : महर-महरि ब्रज हाट ~ २२।
लुटावन उदारता-पूर्वक वितरण गोकुल हाट बजार करत जु ~ रे २८।
लुट्यौ लुट गया : मेरु ~ बडितार २७६३।
लुठत लोट रहा है, पडा हुआ है • ~ सक्र कौ सीम चरन तर ९८३।
लुठाई लुढका • दह्यौ देत ~ ३२२८।
लुठायौ लुढका दिया बालक अजौं अजान न जानै केतिक दह्यौ ~ ३५६।
लुढाई १ लुढका कर। २ लुढका माखन खाइ खवायौ ग्वालनि जो उवरयौ सो दियौ ~ ३०३।
लुनाई[1] (फसल) नष्ट हुई जा रही है • काजै कृपा-दृष्टि की बरषा, जन की जाति ~ १/१८५।
लुनाई[2] सुदरता : देखि री देखि अँग अँग ~ ३०४।
लुनिऐ काटिए जैसोइ बोइयै तैसोइ ~ १/६१।
लुनियैं काटिए, काटो : जैसौ बैयै तैसोइ ~ ३९५३।
लुनियै काटिए, काटो जो बुनियै सोई पुनि ~ १७८५।
लुनै काटे • अब नरवाई को ~ ३७४०।
लुनौ काटो • अपनौ बोय आप ~ तुम ३९०४।
लुन्यौ काटा, काटी : बयौ जैसौ ~ ९४४।
लुबधत लुब्ध/मुग्ध होते हुए मुगध मैं, ~ हूँ न डरी १८७४।
लुबधित मुग्ध होती है जैसै ~ कमलकोम मै भ्रमरा की भ्रमरी २३१५।
लुबधी लुब्ध हो गई : ~ स्याम सुदर कौ ६४७।
लुबधी लुभा गई, मोहित हो गई हौ ~ मोहन-मुख बैन ७४२।
लुबधे १ मुग्ध हो गए हैं सूरदास प्रभु सौं वै ~ २२४५। २ लालायित हैं ~ अरुन अधर को १९९८।
लुबध्यौ मुग्ध हो गया हो : ~ स्वाद मीन आमिष ज्यौं १/१०२।
लुब्ध १ निमग्न ये इतहि ~, वै उतहिं उदार चित २१२८। २ ललचाया रहता है : अति रस ~ स्वान जूठनि ज्यौं १/१११। ३ ललचकर (विगडकर) : मानहुँ ~ भयौ वारिज-दल ११३६।
लुब्धक शिकारी, बहेलिया ज्यौं ~ खग फदन ११५८।
लुब्धि १ लुभाकर। २ लुभा : चपल नैन मृग मीन कज जित अलि ज्यौं ~ परे २३६७।
लुब्धी मोहित हो गई हैं • ये ~ हरि-अग-माधुरी २४०१।
लुब्धे १ मुग्ध है • ऐसैंहि ये ~ हरि छबि पर २३०७। २ मोहित हो गए • नैना हरि अग रूप ~ री माई २२३७।
लुब्ध्यौ मोहित हो गया मन ~ हरि रूप निहारि १८४१।
लुभाइ १ मुग्ध होकर आइ रहे ~ ४१६६। २ लुभा, मोहित • देति मोहि ~ १/४५। ३ मोहित हो जाता है : देव लोक ~ १२१४।
लुभाईं मुग्ध हो गईं • निरखि हरि रूप सो सब ~ ४१९४।
लुभाई १ मुग्ध हो गई • सुरगुरु सुत कौ देखि ~ ९/१७३। २ मुग्ध होकर फिरि रहत ~ २२०१।
लुभाए रीझे, मोहित हुए : अरु न ये देखि कै मोहिं ~ ८/८।

लुभानी १ मोहित हो गई निरखि हौं ~ १८८७। २ मोहित हो गई हैं अँखियाँ हरि के रूप ~ ४०९४।

लुभाने क्रि० अ० १ लुभा गये, मुग्ध हो गये. अलप चोर बहु माल ~ २२७०। २ मोहित हैं : सूरदास प्रभु रूप ~ २३२२। वि० मोहित/लुब्ध हुए • उठि न सकत मकरंद ~ २६३६।

लुभान्यो १ आसक्त है मन मधुकर पद कमल ~ १८३९। २ आसक्त है, मोहित हो गए है सूर-स्याम-छवि-अंग ~ १८८८।

लुभाया १ मोहित हो गया. इन्द्रानी को देखि ~ ६/७। २ मुग्ध हो गये सुरपति ताके रूप ~ ९/३।

लुभावैं मोहित होते हैं • कबहूँ तिय के रूप ~ ११/३।

लू लौ, चिनगारी अगिनि की ~ त ३९१६।

लूट लूट कर. प्रेम कामरस ~ मारा० ९७५।

लूटत १ लूटते हैं ये बस भए सदा सुख ~ २२८२। २ लूटती है कहा कहा ब्रजनाथ चरित अंतरगति ~ ४०४६।

लूटति लूटती है, प्राप्त करती है सुख ~ नँदरानी ४४२।

लूटन लूटने को/के लिए कान्ह पठाइ देन घर ~ ३२३।

लूटनि लूटना • बनि गई अरस परस छवि ~ २१३४।

लूटहि १ लूटते हैं, लूट रहे है • ~ ये इहां मन मिलि कै २२६१।

लूटहु लूटो, प्राप्त करो अब सुख ~ मातु ३०९०।

लूटा लुटेरा • लोभी, लाद, मुकरवा, कारू बटौ पईलौ ~ ~ १/१८६।

लूटि क्रि० स० लूट करके, मनमाना प्राप्त या भोग करके नग सुख ~ हरष भरि हिरदै १६९३। स्त्री० लूट गए कंचुक बँद टूटि ~ हिरदै नहीं पाई ४१८८। ~ मैं प्राप्त करने/लूटने के चक्कर में. नैन परे बहु ~ — २२४३।

लूटीं लूट लिया वृन्दावन गोवर्धन कुंजनि ~ नारि पराई मारा० ७४०।

लूटी लूटा था, प्राप्त किया था : हम ~ सुख रानी ३५५५। लयौ तन ~ शरीर को लूट लिया, क्षीण कर दिया विरह — ~ ४२४८।

लूटे लूटा, प्राप्त किया : मोतिन-हार टूटे सुख ~ १६७८।

लूटैं १ लूटते हैं, प्राप्त करते हैं : सूर स्याम सुख ~ आपुन २२६७। २ लूटती है. कौतुक निरखि सखी सुख ~ २/२५।

लूटौ लूटे ले रहा है. धर्म-जमानत मिल्यो न चाहै, तातें ठाकुर ~ १/१८५।

लूट्यौ १ लूटा, प्राप्त किया सूर स्याम निमि कौ सुख ~ २५०५। २ लूट लिया, अपहरण कर लिया सूरदास प्रभु सरबस ~ ३७३४।

लै लेकर ~ उर कंठ लगाई २१६९।

लैइँ लें नाटैं न ~ बहोरी १९३८।

लेइ १ लेता है • भयहूँ करि कोउ ~ जो नाम ६/४। २ (यदि) ले ले/स्वीकार कर ले. कह्यौ, जरा तेरी सुत ~ ९/१७४। ३ लेकर सरबस ~ हमारौ देनी ३९४९। ४ लिया है : विर्षाहि कंठ धरि ~ १/२००।

लेई लेता है काम धेनु खर ~ ४१८८

लेउँ १ लूँ. नाम ~ था ताकौ १/११३। २ ले लूँ रोग ~ बलि जाउँ कन्हैया ७९। ३ लेने लगूँगी बहुरि राम रस ~ ११११। ४ लूँगा दान ~ कौडी-कौडी करि १५४५। ५ लूँगी, लगा लूँगी उर भरि हलधर ~ कन्हाई ३१२७।

लेउँगो लूँगा जोवन-दान ~ तुमसों १४६९।

लेउ लो. जो भावै ~ आनी २०८।

लेउगे लोगे अब तुम काकौ नाम ~ २७९।

लेके लेकर, ले जाकर कै सँजीवन मूरि ~ मा० ल० ५३।

लेख पत्र. किनि लिखि ~ दयौ ३८५९।

लेखत १ देखते/समझते/विचार करते हैं. सूर स्याम मन ~ १४०३। २ देखने लगे. अब काहे हम ~ २२३५।

लेखति लिखता है, सुरचनी है ~ माइ नयननि की रेखनि ३४०५।

लेखन लिखना, चित्र खींचना : जल बिनु तरँग भीति बिना ~ बिन चेतहिं चतुराइ ३३१७।

लेखनि लेखनी, कलम : लै ~ मसि लखि अपने मदेसहि ४२८०।

लेखहि समझते/देखते है जोवन जनम सुफल करि ~ ३८१८।

लेखा हिसाब किताब • जमा खरच नीकें करि राखै, ~ समुझि बतावै १/१४२।

लेखावति (लखावति) दिखाकर, दिखाती है : निज सकेत ~ अजहूँ १३५६।

लेखि[1] लिखकर, खुरच कर भू नख ~ कही २६०२।

लेखि[2] १ देखकर, विचार कर • कहौं ए अलि ! ~ तुमसौं ३७६८। १ मानो, समझो नैन भरि देखि जीवन सफल करि ~ १७३९। मन ~ मन मे देखकर अर्थात् सोचकर वही भाव — ~ २०७०।

लेखिनी लेखनी, कलम . सुर-तरुवर की साख ~ लिखत सारदा हारैं १/१८३।

लेखिहौं देखूँगा कहि रुक्मिनि मन माहैं सबै सुए ~ ४१८८।

लेखी लिखी, मानी : जोवन-आस प्रबल स्तुति ~ १/२८४।

लेखे[1] क्रि० स० जाना माना, समझा जन्म सफल करि ~ मारा० १०२०। पु० १ समझ मे, लिए मेरे ~ सुख इतनौ बहुतेरौ ३९९४।

लेखे[2] देखे हुए वे दिन दसा बीति गए ~ ३८१४।

लेखैं[1] क्रि० स० १ मानते हैं · जीवन जनम सुफल करि ~ ५०९ । २. मान ले एक बार मिलि जाहु पाहुनें जनम सफल करि ~ ४०८६ । पु० १ विचार मे, लिए : मेरे ~ मधुवन बसत उजारि ४००४ । २ गणना मे (समान) : कृपासिंधु उनहीं के ~ मम लज्जा निरवहिऐ १/११२ ।

लेखैं[2] दर्शन करने के लिए : मेरौ मन अटक्यौ नैननि ~ ३५८५ ।

लेखै १ समझा, माना : हरि उपजाई माया तब सब बहुरि पुत्र करि ~ सारा० ४४७ । २. माने, समझे : अतर कपट न ~ ११७८ ।

लेखो समझो, मानो : जीवन जन्म सफल करि ~ २६४५ ।

लेखौं[1] मानूँ, देखूँ साँच सुफल करि ~ ३५६० ।

लेखौं[2] समझता, गणना करता : कीट सम न ~ ९/१७ ।

लेखौ[1] पुं० १ हिसाब . ~ करत लाख ही निकसत १/१९६ । २ गणना, गिनती : करत गोवनि कौ ~ १४९१ । ३ विचार अब लौं यहै कियौ तुम ~ १५६९ । क्रि० स० १ समझो, मानो . जनम सुफल करि ~ ३९०७ । २. गणना करो, गिनो . बिछिया सब ~ १५४० । ३ देखो, जानो, समझो · अलख निरजन ही कौ ~ ४०४९ ।

लेखौ[2] धारण किया उर तन धीरज ~ सा० ल० ८३ ।

लेखौ[3] हाल, दशा . तिनकौ ~ ऐसौ २/१४ ।

लेख्यो लिखा हुआ छम अपराध देवकी मेरो ~ न मेट्यो जाई सारा० ३८६ ।

लेख्यौ माना, समझा धन्य जन्म अपनौ करि ~ ९८४ ।

लेजु सादर · हरि माँग्यो उन ~ समप्यो सारा० ५०२ ।

लेत १ लेता हूँ, धारण/ग्रहण करता हूँ . जनम ~ ब्रज आइ १६१४ । २ लेता है · कान तोरि वह ~ सबनि कै २२० । ३ लेते हैं हमरी सुरति ~ नहि माधव ३८४८ । ४ ले लेते हे . अभरन ~ छँडाइ कै २१९३ । ५. लेते थे : दिन प्रति ~ दान वृन्दावन ३८५९ । ६ लेती है : अचर ~ बलाइ ९/८३ । ७ लेते ही बेसर नाउँ ~ सरमानी १९५९ । ८. लेते हुए, लेने मे तुम्हरौ नाम ~ सकुचत हैं १७१२ । ~ **उपज** अलाप भर रहे थे : ~ — नागर नागरि सँग ११४३ ।

लेतहि लेते ही : डर आवत मुख ~ नाम ९६२ ।

लेति ले रही हैं . भरि भरि ~ उसास ९/४५ ।

लेति १ लेती है . जननी ~ बलाइ १३३ । २ लेते हैं क्यौ जु ~ हल मारौ ३७४२ । ३ लेती हो निर्गुन कैमें ~ ३८६१ । ४. लेती हुई : चुटकी ~ द्यौं हमहिं निहारो २१६६ । ५ लेती (थी) . तव रस अधर ~ ही मुरली ३८१७ । ६ ले रही थी, भर रही थी ~ सुघर औघर गति तान ११८० ।

लेतौ लेता : राजा तोकौं ~ गोद ४/९ ।

लेन १ लेने के लिए देवकि उर अवतार ~ कह्यौ ८५ । २. लेने से/पर एकै नाम ~ सब भाजै ९/११ । △ ~ न देन कोई मतलब/प्रयोजन नहीं हैं : मोसौं ~ — २२५१ ।

लेनी बदला ~ लेति बनाइ २४०५ ।

लेप लेपन मुख दधि ~ किए ९९ ।

लेपत लेप करते हैं . ~ देह दही २९१ ।

लेय लेता है, खरीदता है दूध दह्यौ ह्याँ ~ न कोऊ १६३६ ।

लेवा लेने वाले जानति हौं गोरस कौ ~ १६७६ । ~ **देई** लेना देना ~ — धरा धरि मैं है ३७७० ।

लेवैया लेने वाले आवहु तात गहहु गोवरधन गोपनि सग ~ ८५५ ।

लेस १ थोडा सा भी, रचमात्र भी · तुम सकुचहु जनि ~ ४०७८ । २ थोडा सा शब्द भी तथा 'लेश' नामक अलकार : सूर प्रभु की बाँसुरी मे ~ भूषन कान सा० ल० ६९ ।

लेहन चखाव (चखने के अर्थ मे) · अस्तुति करि मन हर्ष बढायो ~ जीभ कराय सारा० १३० ।

लेहि १. ले लेते हैं . कबहुँ ~ उठग बाला ११५३ । २ लें, ले लें · कहा ~ कह तजें २३०० । ३ अपना ले : जौ कबहूँ वै ~ कृपा करि १०२४ । ४ लेकर आपुन ~ औरहूँ देते २२६६ । ५ लेंगे, पावेंगे ~ ह्याँ कह आनि २३३० । ~ **अँकोरि** भेंट लेंगे झूठे नर सौं ~ — १२/३ ।

लेहिगी लेगी मोहन गए आजु तुम जाहु दाँव हम ~ हो २८७७ ।

लेहिगे लेंगे जब चैहै तब माँगि ~ १६१० ।

लेहि १ ले, स्वीकार कर मैं बर देहुँ तोहिं सो ~ १/२२९ । २. ले : की ~ छँडाई १९५३ । ३ लेता : जौ लगि ~ न नाम १/७६ ।

लेहिगी लेगी स्यामहिं बस करि ~ २२०१ ।

लेहिगौ ले लेगा ~ री प्रान सा०ल० ५३ ।

लेही १ लेते है · सहनहिं सहज प्रीति करि ~ १९०८ । २ ले लेते हैं · वै सब ~ ५२१ ।

लेहुँ १ लूँ हरि कैं गुन मैं हूँ सुनि ~ २५३० । २ लूँगा, ग्रहण करूँगा . सपति देहु ~ नहिं एकौ ३६ ।

लेहु १. लो, ग्रहण करो . आइ असुरनि कह्यौ, ~ यह अमृत तुम ८/८ । २. लेते हो, लोगे गोरस ~ कि जाहीं १६२२ । ३ लेती हो दूध दह्यौ नहिं ~ री १६२१ । ४. ला, धारण करो : ~ कोटि सिर भार ३६५९ । ५. ले लेना : जो माँगौ सो देउँ ~ माधौ सग आए ४१८८ । ~ **कंध** कधे पर चढाओ : ~ — प्रभु सौं कह्यौ ११८२ । ~ **लेहु**

लेहुगी लोगी ग्नेहिं देसरि ~ १९५३।
लेहुगे १ लोगे यहै जस ~ जान नहिं देहुगे ३०६९। २ लेना मोवत मोकों टेरि ~ वावा नद दुहाई ४१५।
लेहें लेंगे : तुमकों ~ वेइ बचाइ ९/५।
लेहौ १. लोगे, प्राप्त करोगे चरन रेनु सिर धरि गोपिनि की तुमहुँ अभय पद ~ सारा० ५४८। २ लो : बन मे वर वर्षा जब आई ताको सुधि कर ~ सारा० ८१०।
लैं १ लेकर, उठाकर • बालक धरि ~ सुरदेवा कों ८। २ ले जाकर • कहँ ~ जीव उबारौं ४। ३ ले ~ न जाहु यह जोग अपनो ३९०१।
लै १ लेकर कर दर्पन ~ देखौ १५६९। २ धारण कर, उठा कर • गिरि ~ भए महाई १/१०२। ३ ले जाकर • कपिलास्रम ~ नाकों गरयो ९/९। ४ लेनि० : मरन अन राखि ~ नद-नाना ८६८। ५ ले लो ~ मैया केवट, उतराई ९/४०। ~ मृग चद नयौं मृग महित नये चद्रमा के उदय होने पर . जिय मकुची ~ — १६७१। ~ लै ले ले कर ~ — नाम तिहारी १/१७८।
लं तक • कह ~ कीजै मुद्रुत नटाइ ३९३१।
लेके, लैके लेकर • नँद उपनँद सँग जाहु ~ २९६७।
लेन १ लेने • लागे ~ नैन जल भरि-भरि २८६। २, लेने के लिए • ना ऊपर तुम ~ पठाए ३७७०। △ ~ न देन लेना देना नहीं : अपनो पट भरत हैं निमि दिन और न ~ — २२६७। △ ~ न देनु न लेना न देना, मनमे मुक्त चलन कहाँ मन और पुरी नन जहाँ कछु ~ — ४९१।
लेनी लेती है, वसूल करती है, नमा लेती है : बहुत वित्त की ~ ९/१२।
लेनु लेने के लिए • सूर स्याम निज धाम विनानन आवत यह सुख ~ ४४८।
लेवे लेने : सूर निनहिं ~ कों आए २०७५।
लेवौ लोगे दान अधिकार मों ~ १८८५।
लैया १ लगा लिया • पाछे नद सुनन ह ठाढ़े हँसत हँसत उर ~ २१७। २ लेकर हा पय पियत पतूखिनि ~ ३३५।
लैहैं १ लेंगे, लूँगा तुम्हरौ कहा चोरि हम ~ ६७३। २ लेंगी, प्राप्त करेंगी : अनुमति सा हम ~ १५३९। ३ अधिकार मे कर लेंगे ~ लक बीम भुज भानी ९/११६।
लैहै १ लेगा : पुनि कोउ नहिं ~ १५०९। २ लेंगे स्याम उठाइ मोहिं कर ~ ९१६। ३ प्राप्त करेंगे नैस भार मब ~ सा०ल० ८१। ४. धारण करेगा • तुमहिं गए कछु धीरज ~ ३११५। ५ लेगा, अगुवानी करेगी : धाइ आइ मारग मैं ~ ३११५।
लैहौं १ लूँगा, प्राप्त करूँगा : कहा जाइ ब्रज ~ ३११६। २ लूँगी • ववा सों और ~ मँगाई री १९७४। ३ ले लूँगा . मकल विश्व कर ~ सारा० २०४। ४ ले लूँगी • सो जब तोसीं ~ १९७५।
लैहौं ले आऊँगा . रिपु हति सीता ~ ९/११३।
लैहौ १. लेना, उच्चरित करना : बहुरि नाम नहिं ~ १७०४। २ लोगे, पाओगे बहु स्रम करि का ~ ३६०९। ३ लोगी : दूध दही तुम कितनौ ~ ८२१। ४ लगाओगे भुज भरि अकम ~ १४४१।
लोइ लोग . अपजस करिहे ~ ९/९९।
लोइननि नेत्रों मे • लाल उनींदे ~ २५१०।
लोई १ लोग . बिना अन्न दुख पावे ~ १०/३। २ लोगों को मानें सजन कुटुब मब ~ १६९१। ३ लोगों से • बूझि देखियै ~ ३५४०।
लोई लुगाई, स्त्रियाँ मारग मैं अटकी मब ~ ९१९।
लोक १. लोक, लोकों . तीनि ~ को ठाकुर मनहिं ८०७। २ ममार मकल ~ सबौ लागत है ३५६९। ~ लोक सम्पूर्ण लोकों मे ~ — जम कीन्हो १/१९१। ~ लोकनि प्रत्येक लोक मे भाज्यौ फिर्यौ ~ — मैं ९/६।
लोक लोग उनी नगर के ~ ४१६०।
लोक अभिराम लोकाभिराम हैं, समार को सुदर लगते है • सूर के स्याम प्रभु ~ ५५०।
लोक उक्ती लोकोक्ति, कहावत तथा लोकोक्ति अलकार सूर टोंटा देत सिर पर, ~ देन सा० ल० ८८।
लोकन लोकों मे सब जग जीत्यो तिहुँ ~, सारा० ८४०।
लोक-नायक लोकों के स्वामी, परब्रह्म • सकल ~ सुखदायक, अजन, जन्म धरि आयो ४।
लोकनि १ सम्पूर्ण लोक . कारति ~ गावे ९/१५२। २ लोक को, निवास स्थान को यहै कहत अपनै ~ गए ८४९। ~ लोक सभी लोकों ने : ~ — अबाज १/९६। ३ लोकों मे ज जै धुनि ~ गाए ११८०।
लोक-पति १ लोकों के स्वामी हो : तुम प्रभु अजित अनादि ~ १/९८१। २. लोकों के स्वामी ह सरदास प्रभु सकल ~ ४५०।
लोक-बढाई सामाजिक प्रतिष्ठा हँसि दीन्ही प्रभु ~ ९५०।
लोक-लज्जा सामाजिक मर्यादा सुनि हौ कत ~ तें ८०८।
लोक-लाज लोक-मर्यादा, सामाजिक बधन . ~ कुलकानि की १६०१।
लोक-लीक ससार की मर्यादा को नदनँदन के नेह मेह जिन ~ लोपी ४१४८।
लोक-सकुच लोक लज्जा ~ कुल कानि तजी १६३१।
लोकहूँ लोकों मे भी सो सुख नहीं ~ सात ४६६।
लोकालोक सात समुद्रों को परिवेष्टित करने वाली पौराणिक पर्वत श्रेणी चले पश्चिम को ~ सोहायो सारा० ८५४।
लोकालोकहि दे० लोकालोक : पहुचे ~ जाइ ४३०९।

लोकेस सम्पूर्ण लोकों के स्वामी (कृष्ण) . तुला विच ~ तौलैं २१३३ ।

लोकेस्वर ब्रह्मा ने : बालक बच्छ हरे ~ ४३८ ।

लोगन १ लोगों को . यौं कहि पुनि ~ समुझायौ ४२९८ । २. लोगो के देखत ही पुर ~ ३१३९ ।

लोगनि १ लोगों · ~ कैं मन हाँसी ३५५८ । २ लोगों ने . मथुरा ~ बात सुनी यह ३०८६ । ३ लोगों को ब्रज ~ सुख दियौ कन्हाई २९२२ । ३ लोगों का सुनहु स्याम तुम बिनु उन ~ जैसे दिवस बिहात ४११९ । ४ लोगों से निज ~ कह्यौ ५/३ ।

लोचन १ आँख, नेत्र ~ नलिन भए राजत १७७७ । २. नेत्रों से · यह तौ अध बीसहूँ ~ ९/९३ । ~ **ढरतु** आँसू बहाती है बार बार रहँट के घट ज्यौं भरि भरि ~ — २८०४ । ~ **प्यास** आँखों की प्यास अर्थात् दर्शन की तीव्र इच्छा . हरहु ~ — २१८ । ~ **भरि** आँखे भरकर, आँखों मे आँसू ले आकर . उँचे चढि दसरथ ~ — सुत-मुख देखे लेत ९/३९ ।

लोचहिगे तडपा करेंगी, तरसेंगी . दरस बिन पुनि हम ~ १६१९ ।

लोटकपोटा लोटपोट, पूर्णतः सिक्त, निमग्न चपल छबीले रूप मै भई ~ परि० १/७१ ।

लोटक-पोटौ लोटपोट, उलटा बिरद आपुनौ और तिहारौ, करिहौं ~ १/१७९ ।

लोटत १. लोटता है ~ पीक पराग कीच मै ३५०४ । २ लोटते हैं, लोट रहे है : ~ सूर स्याम पुहुमी पर १५९ । ३. लोट जाते हैं, लोटने लगते हैं · यह कहि-कहि ~ बार बार ७५२ ।

लोटति लोटती हैं : जसुमति ~ भुव पर २९८५ ।

लोटति लोटती है : ~ धरनि परी सुनि सीता ९/५२ ।

लोटनि लोटना : देखि माई हरि जू की ~ १८७ ।

लोटि १ लोटकर . कब मोसौं मैया कहि बोलै पेटहि ~ झगरिहैं परि० १/१३ । ~ **लोटि** लोटलोट कर कुंज-कुंज-प्रति ~ — ४९० ।

लोटी लोट गई . तुम आँगन मैं ~ १६३ ।

लौटै १ लोटते हैं . कर धरत धरनि पर ~ १८३ । २. लोटने लगे : पटकि पूँछि माथौ धुनि ~ ९/७५ ।

लोटयौ लोट रहा था . सारँग इक सारँग है ~ १/३३ ।

लोन नमक : दाढे ऊपर ~ लगावत परि० १/१३८ । △ दाढे पर ~ **लगावै** जले पर नमक लगाता है, दु.खी को और दु खी करता है — ~ ३६३९ । ~ **लावहु** नमक लगाओ, दु खी करो : नाहु, जनि अब ~ — ३९३२ । ~ **उतारति राई** राई-नमक उतारती है, बलैया लेती है : लाल कौं ~ — परि० १/१६ ।

लोन-हरामी १. नमक-हराम है, कृतघ्न है : मन भयौ ढीठ इनहिं के कीन्हे ऐसे ~ २७५२ । २ कृतघ्न हैं : **नैन** ~ ये २२८५ ।

लोनी सुदर . नासिका परम ~ २८८६ ।

लोप नाश . भयौ इद्र कोप ~ कहत सबै ९५२ ।

लोपामुद्रा अगस्त्य ऋषि की पत्नी . ~ दिव्य वस्त्र लै दीने जनक कुमार सारा० २५९ ।

लोपी लुप्त कर दी, मिटा दी नँदनदन कैं नेह-मेह जिनि लोक लीक ~ ४१४७ ।

लोभ १. लालच · ~ ही की लहरि ८१४ । २. लालच से पुष्प गध ~ भौंर उड़ि न सकत ७५५२ । ~ **लागि** लोभ के कारण : दर दर ~ — लिए डोलति १/४२ ।

लोभ गहनि लोभ की भावना से · प्रेम धर ~ नीकै अवगाही २३७० ।

लोभहि १ लालच, लालच को · राजहु भये तजत नहिं ~ ३६७८ । २ लालच का . इत ~ नहिं पार २१२७ । ~ **लोभ** अत्यधिक लालच मे ~ — रहे हौ सानी ८८४ ।

लोभही लोभ से निठुर हियौ बाम ताकौ ~ पठाए ३०६८ ।

लोभा पुं० १ लोभ तजि स्रम सघन विषय ~ १/६९ । १. लोभ है, इच्छा है : बचन सुनिबै की ~ २१४९ । वि० लुभावने : कबहुं बाँधैं अतिहिं लगत ~ १९८८ । २ लुभावनी, आकर्षित करने वाली · तैसियै बनी मरगजी केसर ता तिय के मन ~ २५०८ । क्रि० अ० १. लुब्ध/आकृष्ट/मुग्ध हैं : वै उनकौ वै उनकौ ~ ११६४ । २ मुग्ध हो जाता है . चितवत चित ~ १८८७ । ३ मुग्ध हो गया · मोति वर दाम उर देखि ~ २०६२ । ४ आकर्षित होकर : महल महल पर आसिषा देति ~ ३०५५ ।

लोभातुर लोभ से व्याकुल ~ है काम मनोरथ, तहाँ सुनत उठि धाई १/२९५ ।

लोभि लुब्ध होकर : देखत ~ गए री ७३६२ ।

लोभित लोभी, लालची मुनि मन मधुप सदा रस ~ सारा० १००१ ।

लोभिनि लोभियो सूरदास ~ के लीने ७३८८ ।

लोभ्यौ लुब्ध रहा, लिप्त रहा भवन सँवारि नारि रस ~ १/२१६ ।

लोम रोम सत सत इद्र ~ प्रति लोमनि १२ ।

लोमनि रोमों मे सत सत इद्र लोम प्रति ~ १२ ।

लोर आँसू स्याम सुख निरखि चली घर आनद लोचन ~ ७७६ ।

लोरैं चचल होते हैं, झपटने हैं . देखौ री मल्ल इन्हैं मारन कौं

~ ३०६८ ।

लोल १ चंचल थे, भूल रहे थे · कुंडल ~ कपोल १८८५ । २ चंचल · निरखि लोचन ~ १०४३ । ३ ढंग से मन, डाँवाडोल, परिवर्तित: करत निरादर भई न ~ ११८० ।

लोलति चलाती हुई : लोचन ~ हरि के चितहिं चुरावै १४३९ ।

लोलित चलायमान है, चंचल है · ~ बैजनी चरननि पर १०१६ ।

लोलै हिलती हैं कुटिल अलक बदन की छवि अवनी परि ~ १०१ ।

लोह १ लोहा । २ हथियार, अस्त्र ~ गहैं लालच करि जिय की, औरौ सुभट लजावै ०/१५० ।

लोहपनौ लोहापन : पारस परसि होत ज्यो कंचन ~ मिटि जाइ ४३०२ ।

लोहित लाल अति ~ दृग रंगमँगे २८६३ ।

लोहु लोहा : तत्व भज वैनी हि जैटो, पारस परसें ~ ३५३९ ।

लौं[1] १ तक · अब ~ हम तुमहिं कौं जानत ६/४ । २ के समान : छाना ~ छाँह किए १/२३ । ३ पास तक · जान दई स्याम सुंदर ~ आजु ८०८ ।

लौं[2] चाव । ~ के चाव के साथ, बड़ी निष्ठा से ये देवता यान दी ~ — ९३३ ।

लौंडी दासी ~ की टीडी जग बाजी ३६५२ ।

लौंद मूर्ख · लोभी ~ मुकरवा भगरू १/१८६ ।

लौ लगन लागि रहत यह ~ री ३३७१ । ~ **लाई** ध्यान लगाया, प्रेम किया · कन्या रिपि चरननि ~ — ९/३ । ~ **लायौ** ध्यान लगाया, चित्त दिया अपथ पथ ~ — ३७४४ ।

लौटि लौटकर । ~ **लियौ** लौटा लिया · जब झुकि चली भवन तैं बाहिर तब हठि ~ — री २५३२ ।

लौन लवण, नमक ~ लगाइ तुरत तरि लाने १२१३ । △ **काटे ऊपर ~ लगावत** कटे पर नमक लगाते हो, (हम) दुखियों को और दुखी बनाते हो · — ~ — ३६७२ । ~ **मानि** कृतज्ञता/एहसान मानकर · बडे भए तब ~ — यह २२५८ ।

लौना मक्खन : ~ लिए नवावन १७७ ।

लौलीन निमग्न · ज्यों कपि मीत हरन हित गुजा सिमिट होत ~ १/१०२ ।

लौस लास-विलास · जहँ जाकौ सुख ~ बढत है ३९८२ ।

लौह लोहे मिटति ~ की खोट १/२३२ ।

लौहौ लोहा भी · ~ कनक सगावरी ३९५३ ।

ल्याइ १ ले आकर, लाकर · आतिहिं पुरुषारथ कियौ उन कमल दह के ~ ५८६ । २ ले आई, लाई जलभारी भरि ~ ६०१ ।

ल्याइयै ले आइए : कह्यौ भगवान अब वासुकी ~ ८/८ ।

ल्याइहै ले आएगा वहै ~ सिय-सुधि छिन मैं ९/७४ ।

ल्याइहौं १ ले आऊँगा कह्यौ मैं जाइकै ~ साव कौं ४२०९ । २ ले आऊँगी : कैसैं करि तिहिं ~ २७६० ।

ल्याईं ले आई हैं · बहुत दिननि तैं कान्ह, दह्यौ इहिं मारग ~ १६१८ ।

ल्याई १ ले आई, लाई · आरति साजि सुमित्रा ~ ९/१६९ । २ ले आई हूँ प्रभु तुमकौं मैं चंदन ~ ३०५० । ३ ले आकर, लाकर · छीर मैं जलधि तट धर्यौ ~ ८/८ ।

ल्याउ ले आओ, लाओ · भोजन वेगि ~ कछु मैया ३९५ ।

ल्याऊँ १ ले आऊँगा · तेरे सुत कौं मैं अब ~ ४३०९ । २ ले आऊँगी अब स्यामहिं ~ २१०८ । ३ ले आता हूँ : रामहिं गहि ~ ९/११८ । ४ ले आती हूँ ~ गिरिधर कौं २१०८ । ५ ले आऊँ कैसैं कै ~ हौं तौ मरम न पाऊँ स्याम २७७३ ।

ल्याऊँगी ले आऊँगी जौ कहूँ जाहुगे ~ तुमकौ धरि ६८१ ।

ल्याए[1] १ ले आए, लाए ~ आस्रम ताहि लिवाई ७/३ । २. ले आए हो · ~ जोग बैंचिवे कारन ३९६४ ।

ल्याए[2] लगा लिया · उर ~ धरि प्यारी २४१२ ।

ल्याएँ लाए, ले आए हार बिना ~ लडबौरी १९७५ ।

ल्याये १ ले आए मात को लछमना सहित ~ बहुरि ४२०९ । २ ले आए हो तुम जु हमकौं जोग ~ ३९३२ ।

ल्यायौ १ ले आया, लाया : पाँच छोहनी दल सँग ~ ४२०६ । २ ले आए हैं : हनू सीय सुधि ~ ९/१०२ । ३ ले आए हो ब्रज मैं जोग कहाँ तैं ~ ४०९४ । ४ ले आए थे बसुद्यौ गोकुल ~ ३६५१ ।

ल्यावत ले आते हैं : आगें दै पुनि ~ घर कौ ४२४ ।

ल्यावति ला रही थी धरे बाँह हरि ~ ३४१ ।

ल्यावन ले आने के लिए पठवौ दूत भरत कौं ~ ९/४७ ।

ल्यावहु[1] लाओ, ले आओ : ~ जाइ जनक-तनया-सुधि ९/७४ ।

ल्यावहु[2] लगाओ · ~ भस्म अंग मुख माँजे ३८८३ ।

ल्यावै ले आए, लाएगा · को तरि सिंधु सिया-सुधि ~ ९/७४ ।

ल्यावैं १ ले आती हैं · फूटी चुरी गोदि भरि ~ ३३२ । २ ले आवें दध दह्यौ अरु ~ १६१० । ३ ले आऊँ : कहौ तौ माखन ~ घर तैं ३५४ । ४ ले आएँगे इतनौ दल ~ ९/११८ । ५ ले आएँगी : कवरि सौं कहि गई स्याम ~ ११११ ।

ल्यावै १. ले आता है/आते हैं लाच्छा गृह तैं काढ़ि पाडव गृह ~ १/४। २ ले आती है : नागरि गागरि जल भरि ~ १४३८। ३. ले आए ताकौ पकरि सभा मैं ~ १/२४६। **मन नहि** ~ मन नहीं लगाती, आकर्षित नहीं होती · पै नारी तिहिं — ~ ९/२।

ल्यावौं[1] ले आऊँ . कै मारौं, जीवित धरि ~ १३९६।

ल्यावौं[2] लगाऊँ : दूध पिवाइ हृदै सौं ~ ४२९९।

ल्यावौ[1] लाओ, ले आओ : मेवनि ~ तुरत हँकारी ९२६।

ल्यावौ[2] लगाओ, केंद्रित करो : पदमासन इक चित मन ~ ४०४९।

ल्यौ लो, ले लो . घर घर फिरत पुकारत ~ ल्यौ ३८०३।

व

['व' से आरभ होने वाले प्राय शब्दो को 'व' के अन्तर्गत देखना होगा।]

वत समान, सदृश एक याम नृप को निसि युग ~ भई भारी।

वहँ वहाँ से : आज्ञा लैकै चल्यो नृपति ~ उत्तर दिशा विशाल सारा० ६१६।

वह १ वह (प्रभु) · हम जन कौ ~ हेत १/२१५। २ उसे . ~ कियौ निहाला ३०४०। ३ उन सिला तरी जल माहिं सेत बँधि, बलि ~ चरन अहिल्या तारी १/३४।

वहई वह ही, उसी : ~ देखि कुबरी भूले ३१५४।

वहऊ वह भी ~ उनसौं नातो मानै ३/१३।

वहै १. वह, वैसी उर बनमाल कहाँ जु ~ छवि २२१९। २ वही वह सुख ~ विलास ३९५९। ३ वही (काम) : बरजै ~ करी २६६१। ४ उसी निरखि निरखि प्रति बिंब ~ तन २८२६ । ५. वही, वे ही : मुनि ~ राखिहै भाई ९/७। ६ वैसा ही : ~ ध्यान उपजायो २०४८। ~ **वहै** वहीवही पुनि पुनि ~ — सुधि आवै ४०९४।

वा १ उस : बलिहारी ~ रूप की ११८०। २ उसके : ता दिन तैं ~ दरस परस बिनु ४०३१।

वाउ वही : ~ सबनि कौ चोज ३९७४।

वाकि उसकी : कहा कहौं गति ~ २८७४।

वाकी उसकी : ~ ऐसियै परनि परी री २०९४।

वाके उसके : ~ गुन मन तैं नहिं टारत २५०५।

वाकैं उसके : काल्ह गई ~ घर सब मिलि १७४५।

वाकै उसके · ~ सुनहु उपाउ १७२१।

वाकौं १ उसे, उसको : देखि ~ चकित भई १६७२। २ उसका : सिथिल रूप मन मेलत ~ ३०७०।

वाकौ १ उसका : निरबस ~ होइ ५५१। २ उनके 'सूर' सरस रस ~ सा० ल० ९१।

वातैं उससे : ~ दूनी देह धरी ४३१।

वाने उसने . गयो मारीच आश्रमहिं तबहीं ~ बहु समझायो सारा० २६१।

वानैं उस, वही चले जात रयहि बात बूझत हैं ~ ३०१८।

वार इस पार : ~ चकई पार चकवा २८३१। ~ **न पार** आदि-अंत नहीं है · जाकौ ~ — २३९१।

वारत १ न्यौछावर करता · नीराजन बहु विधि ~ है सारा० १०२२। २ न्यौछावर होते हैं नख निरखि ससि कोटि ~ १८३५। ३ न्यौछावर करते : कबहुँक ~ हैं पीतांबर २१३५। ४ न्यौछावर करता है : ता पर सेस सीसमनि ~ २१८९।

वारति न्यौछावर कर रही हैं . ता पर तन मन ~ १८०९।

वारति १. न्यौछावर कर रही थीं सूर स्याम पर तन मन ~ १५९७। २ न्यौछावर कर रही थी वा छवि पर ~ तन कौं १९३०। ३ न्यौछावर करती है, न्यौछावर कर रही है अपनी छवि निहारि तन ~ २१९८। ४ न्यौछावर करती हूँ : बार-बार तन-मन-धन ~ १७७१।

वारने बलिहारी, न्यौछावर . नट नागर के जाऊँ ~ १०५१, मनमथ कोटि ~ करिया ६८८।

वारपार सीमा, ओर-छोर · दुख समुद्र जिहिं ~ नहिं ९/१४६।

वारहु न्यौछावर कर दो तन मन धन इन पर सब ~ १६१९।

वारिए न्यौछावर कीजिए : सूर ऐसे बदन ऊपर ~ तन-प्रान ३५०।

वारियै न्यौछावर कीजिए सूर प्रभु पर ~ ज्यौं ३६०।

वारी वाली दीजै छाडि नगर ~ सब ३१७४।

वासुर ओर असुर हुर ~ छल बोल बारि गढ ३२२१।

वासौं १ उससे : ~ प्रीति करै नानि डरति २१९८। २ उसी (मुरली) से : बैठत रम ~ १२५२।

वाहि १ उसे, उसको ~ मारि तुम हमहिं उबारयौ ९५४। २. उससे · कहा कहौंगी ~ ९/७५।

वाहीं उसी मे : फिरि ~ मन दीनौ १/६५।

वाही १ उसी · ~ विधि मोसौं हिलिमिलौ ९/२। २ उनके ही . ~ बचनहिं सेवति ३९८९।

वाँहैं उसमे (उस कथन मे) : हम न वहकिहैं ~ ३६१२ ।
विन १ उन्हे देख ~ मन करत आपन सा० ल० १०७ । २ उनका : सूरज नाथ ~ उद्धार सा० ल० शेष २ ।
विनकौं उनको . तैं देसैं चितयौ कछु ~ २८२८ ।
वे १ वे । २. वही ~ मघवा विट्ठल मो आगें ~ २८३ ।
वेइ १ वे ही ~ द्रुम वेली ~ लता ३९४४ । २ वैसे ही : ~ साँवरे गाननि ३५४९ ।
वेई १ वे ही : ~ हैं सब अग ३९४४ । २ उन्हीं : ~ भूषन निरखन लागीं ४०९३ । ३. उन्हीं के : ~ गुन गुनि गावत २३१३ ।
वेउ वह भी : ~ रमिकिनि बन्यौ ममाजु २५४० ।
वेऊ १ वह भी ~ नवल त्रिये २५०६ । २ वे भी · दरसन नीकैं देत न ~ १८५० ।
वेही वही : ~ कीजै काज ८२४ ।
वेहु वह भी · फदि न होन वड ~ ३१९६ ।
वै १ वह : ~ तौ कुबिजा असुर की दासी ३९५३ । २ उसके लिए : एक ~ कुम्हिलानि ३९८३ । ३. वे : ~ वार्न जमुना तीर की ३९१४ ।
वैई वे ही : ~ अजर अमर अजित अनाथ परि० २/४१ ।
वैसहि वैसे ही सब कुछ ~ वरयौ रहै ३१८० ।
वैसिये वैसी ही : ~ नारि सुदरी छोटी २६०९ ।
वैसियै वैसे ही : ~ प्रकृति निवाहत ४०२६ ।
वैसी उस प्रकार की . सुनहु सखी ~ निधि तजिकै २२३५ ।
वैसीयै १ वैसी ही : मेरौ मन ~ सुरनि करै ३२८१ । २. ज्यों की त्यों · नीकैं वन ~ जमुना ८८१ ।
वैसे १ वैसे, उस तरह के हौं ऐसौ तुम ~ पावन १९७ । २ वैसे ही, यथावत् : वैसोइ गिरि, ~ ब्रजवासी ८७७ ।
वैसेइ १ वैसे ही, ज्यों के त्यों · ~ गिरि ~ ब्रजवासी ९४२ । २ वैसे ही ~रस उमँगि हियौ ११३२ ।
वैसेहि वेसे ही ~ दान जु माँग हम पै ३७२५ । वैसा ही, उसी प्रकार का वाही भाँति वरन वपु ~ ४३८ ।
वैसेहि उसी प्रकार से, वैसे ही · तवहीं तें ~ हां ठाढ़े २५०९ ।
वैसैं वैसे . वे ~, तुम देखैं वैसे २८२६ ।
वैसैंहि वैसे ही . कोउ ~ उठि धाई २२ ।
वैसैंहि वैसे ही · वहुरि ~ रहिहै १७२५ ।
वैसेंही वैसे ही, वही ~ ढग वहुरि ढरैं १६०३ ।
वैसो १. वैसा : छाके खात ग्वाल मडल मैं ~ तो सुख नाहीं मारा० ८६५ । २ वैसा ही, उसी प्रकार . रहत विषय वस ~ २/१४ ।
वैसोइ वैसा ही : ~ सुख सबकौ फिरि दीनौ ११३० ।
वैसौ वैसा . मोकौं वहुरि कहाँ ~ सुख ४१५० ।
वोइ वह ही, वही · कितिक वार अवतार लियौ ब्रज ऐसे वैसे ~ १ ।
वोऊ १ वह भी . अचल सुमुख जब लाइ रही ~ २७९१ । २ वे भी जैसे तुम तैसे ~ हैं १५८० ।

श

[पाठालोचकों ने केवल 'श्री' को ही इस अक्षर के अन्तर्गत रखा है । शेष शब्दों को 'स' के अन्तर्गत देखें ।]

श्री[1] १ लक्ष्मी . ~ रुदन करत अकुलानी परि० १/२३ । २. लक्ष्मी को ~ तजि निकट दास कैं आयौ १/१० । ३ लक्ष्मी रूप : कृपा दृष्टि चितवतहीं ~ भइ ३१०० ।
श्री[2] १ शोभा मकराकृत ~ मरस बनाइ ६३९ । २ काँति ~ नूतन सरस सागर सा० ल० ३२ ।
श्री[3] श्री (कृष्ण) के : ~ अग पटतर देत १७५७ ।
श्रीखंड चन्दन . मोर मुकुट सिर ~ १३७५ ।
श्रीदाम श्रीकृष्ण का एक ग्वाल सखा जिसे 'सुदामा' भी कहा जाता है . सुवल, सुदामा अरु ~ ४६५ ।
श्रीदामा श्री कृष्ण के एक सखा का नाम टेर देत ~ द्रुम चढ़ि ३९५६ ।
श्रीधर[1] विष्णु (कृष्ण) को . धनि नन्दमति तिन ~ जाए ३८४ ।
श्रीधर[2] कंस का अनुचर एक निर्दय ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण को मारने आया था, लेकिन जिसकी जीभ मरोड कर श्रीकृष्ण ने उसे अबोला कर दिया था . ~ बाँभन करम कसाई ७७ ।
श्रीनाथ विष्णु का एक नाम, लक्ष्मीपति विनु ~ मुकुट मुरारी १/२४८ ।
श्रीपति विष्णु की : ~ केलि सरोवरी सैन व नल भरपूर २६१३ ।
श्रीफल[1] बेल ~ मधुर चिराजी आनी २११ । २ बेल के समान : सुभग ~ उरज पानि परसन ११९१ । ३ बेल (उरोज) : जवहिं सरोज धरयौ ~ पर ६८२ ।
श्री बंधु १ लक्ष्मी का भाइ, अमृत . अनरुद्ध ~ लेन हरि ना० ल० ४८ । २ अधरामृत · अनरुद्ध ~ एक जी चाहत सा० ल० ७ ।
श्री वच्छ श्री वत्स स्वेत बालों की गुच्छी जो विष्णु की छाती पर भृगु की लात का चिह्न है . उर ~ मनोहर हरि नन्द १०४ ।
श्री वछ दे० श्री वच्छ · ~ चिन्ह विराजत हाँर ४०९४ ।

श्री बलदेव रास जे कहियै, तामैं भानु मिलाइ ताकी सुता हलधर, वृषभ, वृष मे भानु मिलाने से वृषभानु की पुत्री, राधा . ~ कहत चतुरानन सारा० ९५१ ।

श्री भाई लक्ष्मी के भाई, शख . है कपोल ~ सा० ल० १०२ ।

श्री भागवत एक ग्रथ का नाम : कह्यौ सुक ~ विचारि २/२ ।

श्रीमुख १ सुदर मुख (आदर सूचक) पुनि पुनि कहत स्याम ~ सौं ४४९ । २ श्रीमुख ने . ~ चारि स्लोक दए ब्रह्मा कौ १/२२५ । ३ श्री मुख से, अपने मुख से . श्रीपति ~ गाई ९/७ ।

श्रीरंग लक्ष्मीपति, विष्णु, श्री कृष्ण सूरज प्रभु ~ ३९४७ ।

श्री सुंदर बर लक्ष्मी के सुन्दर पति (कृष्ण) छमा करहिंगे ~ ९४६ ।

ष

['ष' से शुरू होने वाले शब्दों के साथ भी वे ही शर्तें हैं जो 'श' से शुरू होने वाले शब्दों के साथ हैं । अतिरिक्त शब्द निम्न है ।]

षट छह . ~ सुत-सोक सुरति उर आवति ७ ।

षट आनन कार्तिकेय के . ~ सम जान सारा० ९९४ ।

षट-आनन-बाहन कार्तिकेय का वाहन मयूर ~ कानन मैं घन ३२२२ ।

षटदस सोलह ~ कला समेत १०७० ।

षटपद भौरा : कहु ~ कैसै सैयतु है ३६०४ ।

षटरस पु० छह प्रकार के स्वाद या रस : ~ के मिष्ठान्न २१२ । वि० छह प्रकार के स्वाद वाले : ~ व्यजन छाँडि रसोई १/२४४ ।

षट-रितु छह ऋतुएँ (ग्रीष्म, वर्षा, शरत, हेमत, शिशिर, वसत) . ~ ब्रज पै आनि पुकारैं ४०६५ ।

षट्वाग एक राजर्षि, जिन्होंने इद्र की सहायता की थी और जो केवल दो घडी की साधना से मुक्त हो गए थे : नृप ~ पूर्व इक भयौ १/३४२ ।

षष्ट छह · ~ कस जे मारे ४२९९ ।

षष्ट दस सोलह : ~ सिंगार ८२९ ।

षष्ठ छह ~ बरष ३/१३ ।

षोडस १ सोलह ~ अगनि मिलि प्रजक पै १/६० । २ सोलह श्रृगारों से · ~ जुक्ति जुवति चित षोडस १/६० । ~ **षोडस** सोलह-सोलह : जुवति चित ~ — बरस निहारै १/६० ।

स

संक १. भय : लरत न मानैं ~ ९/१३४ । २ शका, सदेह · जूठनि की कछु ~ न मानी १/१३ । ~ **न करैं** झिझकती है देत न ~ — २४ ।

संकरषन श्री कृष्ण के भाई बलराम ~ के भ्रातनि ३५४९ ।

संकरहि शकर जी को सीस ~ दीजै ३३६२ ।

संकराई सकट, दु ख ताहि कहा ~ ९/१४८ ।

सकर्षण, संकर्षन श्री कृष्ण के बडे भाई बलराम · धौं ~ भैया ३३५ ।

संकल्प १ दान-पुण्य करने के पहले मन्त्रों के द्वारा अपना विचार व्यक्त करना जब नृप भुव ~ कियौ है, लागे देह पसारन सारा० ३३९ । २ पक्का विचार, दृढ , निश्चय : करि ~ अन्न जल त्याग्यौ १/३४१ ।

संकल्पित सकल्प किया हुआ नापी देह हमारी द्विजवर सो ~ कीन्हो सारा० ३४१ ।

संका १ शका । ~ **आनी** शका या सदेह लाए/हो : काहे न ~ — ४०३९ । ~ **गहि** शकित होकर : ~ — तब वदन उज्यारी ११८७ ।

संकाइ शकित होकर, भयभीत होकर तब सडामर्का ~ कह्यौ असुर पति मौं यौं जाइ ७/२ ।

सकानौ शंकित है, डरा जा रहा है : रे कातर कत मन ~ २९४१ ।

सकावै शकित होवे : मन मे सो न ~ सा० ल० ८९ ।

संकि शकित होकर पठई हौं हरि ~ २४४९ ।

संकित शकित । ~ **भयौ** शकित हुआ, डरा . सूरदास सुर-पति ~ — ८८३ ।

संकुचित सिमटा, सिकुडा हुआ . जनु रवि गत ~ कमल-जुग निसि अलि उडन न पावै ६५ । सिकुड, मुरझा : कुमुद वृन्द ~ भये २०२ ।

सके शकित हो गये मारयौ कस सुनत सब ~ ३१०९ ।

संकेतहि सकेत से अति ~ गाउँ ३३१३ ।

संकेरत सँजोती है · भय के भीतर सुरुचि ~ सा०ल० ३ ।

संकोच १ लज्जा : मेरौ अलक लडैतौ मोहन ह्वैहै करत ~

३१७५। २ डर, भय : जारौं लंक, छेदि दस मस्तक सुर ~ निवारौं ९/१३२।

संकोचै संकोच करे : सदेसहिं छाँडि ~ ४२८२।

संक्यौ शंकित या भयभीत हो गया . कम्प्यौ गिरि अरु मेष ~ १६६।

संक्षेपन संक्षेप में : वर्णन कियौ प्रथम ~ सारा० ५११।

संख[1] १० करोड़ अरब की संख्या : केतिक ~ जुगै जुग बीते ९/३२।

संख[2] एक राक्षस जो देवताओं को पराजित कर वेदों को चुरा ले गया था, जिसके कारण भगवान् को मत्स्यावतार धारण करना पड़ा था : चतुरमुख कह्यौ ~ असुर स्तुति लै गयौ ८/१६।

संखचूड एक राक्षस जो श्री कृष्ण के द्वारा मारा गया : ~ तिहिं अवसर आयौ १२०८।

संखासुर ब्रह्मा के यहाँ से वेदों को चुराकर समुद्र में जा छिपने वाला एक राक्षस, इसी को मारने के लिए भगवान् ने मत्स्यावतार धारण किया था : चारि वेद लै गयौ ~ २२१।

संखासुरहिं संखासुरको : बहुरि ~ मारि वेदऽऽनि दिए ८/१६।

संख्यावत गिनती में आती : ब्रज सुंदरि न ~ ३७१२।

संग साथ। ~ **जोरी** (अपने) साथ मिलाकर : ब्रज लरिका ~ — २५३। ~ **संग** साथ-साथ : ~ — धावत डोलत हैं २१९। △ ~ **लगाई** साथ लिए हुए : लिए अमरगन ~ — ९४७। ~ **लागे** साथ लगे हुए, साथ-साथ . उठि धाये ~ — १/४४।

संगति १ सत्संग के . छिनक भजन ~ प्रताप तें १/१९०। २ साथ, संग : ब्रज जुवतिनि की ~ त्यागौं २०१३।

संगतिहिं संगति ही : भली अनभली करतूति ~ तैं १३६३।

संगनो साथ . चित चकोर सम ~ २८३२।

संगम १ नक्षत्रों, ग्रहों या अन्य वस्तुओं से मिलने का भाव . बुध-रोहनी अष्टमी ~, वसुदेव निकट बुलायौ ४। २ मिलन : सीता-राम सूर ~ बिनु ९/७८। ३ संयोग, समागम : सघन कुंज सुरति ~ मिलि मोहन कंठ लगायौ सारा० ७१८।

संगर संग्राम : सुरति ~ साजि २४५३।

संगहिं १ साथ में : तीनि लोक कौ ठाकुर ~ ८२७। २ साथ ही : मात-पिता ~ प्रतिपालै २२९४। ~ **लागीं** साथ हो लीं, साथ ही लग चलीं : ब्रज बनिता सब ~ — ५४८। ~ **संग** साथ ही साथ : ~ — रहाइ ८२८।

संगहि साथ ही : रहौं फिरौं निसि बासर ~ १८५४। ~ **संग** साथ ही साथ : जाहिं ~ — स्वनी कहि बात सुख बहुत पैवौं ४०८१।

सँगहीं साथ ही : जब जहँ देह धरी तहँ तुम ~ ११८२। ~ **संगहीं** साथ ही साथ : फिरत स्याम ~ — २२४१।

संगिनि १ साथिनी : कपटिनि कुटिल काठ की ~ १२०९। २ संगिनी हो : सूरदास प्रभु की तुम ~ १७२६।

संगा साथ में : तात, मात निज नारि लिए हरि जू सब ~ ४२७५।

संगी १ मित्र, सखा : आए साट स्याम के ~ २९१७ २ साथियों को . ~ सबनि बराए २२७०। ३ साथी है : नाथ अनाथनि ही के ~ १/२१।

संग्रामहिं युद्ध में, संग्राम में : रनि जीत्यो ~ २१३०।

संघन एक साथ, छमाछम : पाइँनि नूपुर बाजत ~ ११८०।

सँघाती मित्र, सखा : कैसें मिले पिय स्याम ~ ४२४०।

संघातै साथ ही : दोउ दुख परे ~ ३६७९।

संघारि मार (कर) : सूर प्रभु सहित ~ टारौं ५९०।

संघारी मारा . दनुज सुता पहिले ~ २९२६।

संघारे नष्ट कर दिया, संहार कर दिया : तुरग रथ तानु के सब ~ ४२०९।

संघारौं मार डालूँ : ज्यों त्यों करि इन दुहुनि ~ २९२६।

संघारौ संहार किया, मारा : जरासंध सौं असुर ~ १/१७२।

संघारयौ संहार किया : वृषभासुर को इहाँ ~ ४०५०।

संचति संचय करती है . ज्यों मधुमाखी निरन्तर ~ १/५०।

संचरी बनाई : रचि पचि मति ~ १/१३०।

संचरे १ चलाती है : अगनि सर ~ ३७३७ २ लगे हुए हैं : सब अँग सर ~ २१२५। ३ करते संचरना हैं : दाग कादि अलि सदन ~ ३९६४। ४ संचार करता है : सीतल उर ~ ३७३०।

सँचरैं भरा करते हैं (भड़काते रहते हैं) : ~ स्रवन समीप सभीनि २७७५।

संचरै १ प्रवेश कर सकती है : किहिं विधि दुधि ~ १०५। २ रहती है : त्यौंहीं आतम तन ~ ७/२। ३. संचरण करती है . उवौ रस लै समीप ~ १/११७।

संचार प्रवेश, प्रसार : मित्र रिपु को ~ ३३८६।

संचारतौ चमचमा रही हो : घन दामिनि ~ २८३२।

संचारी संचरण करते हैं : वर बरही चातक रट द्रुम द्रुम प्रति-प्रति सदन ~ ११८८।

संचारैं दे डालें : निधू पूरन सुख दान ~ २८२२।

संचि संचित कर . यह धन तुमहीं ~ राख्यौ १५००। ~ **संचि** संचित या एकत्र कर करके : साजे निविड़ नाद रन ~ — ३३०८।

संचित एकत्र, जमा : ~ किये रहीं त्रटा सौं १२२३।

संचिबौ एकत्र या संचय करने का भाव : गत तत धन ~ २/५९।

संची सँची है, संचित है : नूतन नानि ~ २४४८।

संचे रत्नागर : प्रथमहिं ~ समान साथ हु ११२०।

संचै १ एकत्र करता है · सरद मनेह ~ सरिता उर ३३४५ । २ एकत्र या सचय करे · सुमति सुरूप ~ सद्धा विधि २/१२ ।
सँच्यो सरचना की दशही पुत्र भये ब्रह्मा के जिन ~ ससार सारा० १८ ।
सँच्यौ १. सचय या एकत्र किया: देखत आनि ~ उर अतर १३५ । २ सचित किया है · आइ इहि विधि तन ~ ३८६५ ।
सज सुमज्जित होकर · ~ सोभित ब्रज वाम ।
संजम सयम, इद्रिय निग्रह : जप तप ~ नेम धरम की ३९३० ।
सजीवन जीवन दायिनी · कै ~ मूरि लैकै सा० ल० ५३ ।
संजीवनि १ सजीवनी बूटी के श्री रघुनाथ ~ कारन ९/१५५ । २ सजीवनी विद्या या मत्र · जौ यह ~ पढि जाइ ९/१७३ ।
संजुत युक्त/लगा है मनौ मरकत कनक ~ १९८९ । २. साथ, सहित · कटि किंकिनी चद्रमनि ~ ६२५ ।
सँजूती युक्त, मिली हुई · अधर सुधा मधु-मय ~ परि० २/५९ ।
सँजोइ सजाई · चौक चदन लीपि कै धरि आरती ~ २६ ।
सँजोइल दे० सजोयल ।
संजोग १ इत्तिफाक, सयोग : नीकै पहुँचे आइ तुम भलौ बन्यौ ~ ४३७ । २ सबध, लगाव, चेतना : दियौ छाँडि तन कौं ~ १/२८४ । **बिधि** ~ बिधाता की कृपा से · तीनि पुत्र भए — ~ ९/१७४ ।
संजोगिनि सयोगिनी रस अनरस ~ बिरहिनि भरि छाँडत २८५३ ।
संजोगी जुटाकर करैं तपस्या विधि ~ ३७१६ ।
सँजोयल सँजोई है बिच बग पाँति ~ ३३०४ ।
सज्ञा सात तत्त्वो मे से एक · पृथिवी अप तेज वायु नभ ~ शब्द परस अरु गध सारा० ८ ।
संज्ञासुत सूर्य की पत्नी (सज्ञा) के पुत्र, यम. ~ वपु सदृस वसन तन सारा० ९४३ ।
सँझावलि राधा की एक सखी का नाम, सध्यावलि · कज्जल लै आई ~ २९०१ ।
सँझौखैं मध्याकाल मे ~ स्याम समय जौ पाऊँगी परि० ७/३१ ।
सँटिया छडी, साँटी : माता ~ ढूंक लगाए ३९१ ।
सठ महामूर्ख सुनि अरे ~ दसकठ कौ कौन डर ९/१२९ ।
सडामर्क शडामर्क, प्रह्लाद के शिक्षा गुरु : ~ रहे पचि हारि ७/२ ।
सडामर्कहि शडामर्क को : ~ लियौ बुलाइ ७/२ ।
संतत १ निरतर : सतनि मन ~ यह लाभा ६२५ । २ सदा, सदैव : ~ सब लोकनि सुनि गावत, यह गाथ १/१८२ ।
सतप्त दुखी · तुम जु कहत ~ हैं गोविंद ३५२८ ।
संतन सतो के · निरगुन तैं सगुन भए ~ हितकारी ३८९७ ।
सतनि १ सतों, सज्जनों : दुष्टनि बधि ~ कौं सुख दियौ १६०७ । २ सतो के . सूर स्याम ~ हित-कारन ५०२ । ३ सतों के साथ, सतों से : कहत जु सूरदास ~ मिलि २/१३ । ४. सतों को, सज्जनों को · दुष्टनि दुख, सुख ~ दीन्हौ ९/२६ । ५ सतों ने : सकल ~ तजी १/११० ।
संतानहि सतानों के रिपु कौ नासि सहित ~ ९/९५ ।
सताप १ कष्ट, दुःख : सब ~ हर्यौ १/१७ । २ सताप, मानसिक कष्ट या दुःख · दुख ~ की काटि तनी १/३९ । △ ~ **नसायौ** दुःख दूर किया मिलि ~ — ११२७ ।
सतापनि दुःखों का : पर ~ बोरौ १/१८६ ।
संतापि सताप दे · कौन सकै काकौ ~ १२/५ ।
संतापी दुःख या कष्ट देने वाला घातक, कुटिल, चबाई, कपटी, महाक्रूर ~ १/१४० ।
सतापु सताप को कहि लेइ ~ १६१८ ।
सँतापैं दुःख देता है · भूख प्यास है कबहुँ ~ ११/३ ।
संतापै सतप्त करता है अरु पुनि लोभ सदा ~ ३/१३ ।
संतोषत सतुष्ट करता है ज्यौं ठग मीठी कहि ~ ३९८० ।
संतोषादि सतोष आदि : ~ न आवन पावैं ४/१२ ।
संतोषि सतोष देकर, सतुष्ट करके सूर सुकृत ~ स्याम कौं २८२२ ।
सँतोषी सन्तुष्ट किया आहुति अगिनि जिवाइ ~ ९/१४१ ।
सँतोषे सतोष दिया : और डर नहीं सब कहि ~ २९६७ ।
सतोषौ सतोष दो, धीरज बँधाओ जसुमति कौ बेगि जाइ ~ ~ ३४३३ ।
सतौ हे सतो/सज्जनो यातैं ~ चलौ सँभार १/२२९ ।
सदीपन, सदीपन पाँडे श्री कृष्ण के गुरु का नाम . ~ सुत तुम प्रभु दीने १/१३३ ।
सदूखनि लोहे, टीन या लकडी के बने बक्स मे ~ भरि धरे सो न खोलै री १९७४ ।
सँदेसनि १ सदेशो 'सूर' स्याम ~ कैं डर ४११९ । २ सँदेशों को अब इन जोग ~ सुनि सुनि ३९७० । ३ सदेशो से ~ बिरह बिथा क्यो जाति ३७७२ । △ **होत ~ खेतइ** क्या सदेशो से खेती होती है (क्या ऐसे से काम बन सकता है ?) : हम गोकुल वै मधु बन माधौ — ~ — ३७०८ ।
सदेसहि सदेश को : ~ छाँडि मँकोचें ४२८० ।
संदेसहु सदेश भी कितिक बीच ~ दुरलभ ३२५२ ।
संदेसो सदेश को सुनौ ~ तजौ अँदेसौ ४०९३ ।
सदेसौ सदेश कछु ~ पायौ ४२४६ ।
सदेसौ १ सदेश एक ~ कहियौ ऊधौ ३६४० । २ सदेश को · अब यह जोग ~ सुनि सुनि अति अकुलानी दूखी ३५५७ ।
संदेहनि सदेहों को . तेरे सब ~ ४१२० ।
सदेहु सदेह, शका : नहिं यामैं कछु ~ ४२१० ।
सदेहै सदेहों को तेरे सब ~ दहहीं ३/१३ ।

संधान निशाना : सबै सूर ~ सफल हौं ९/१३७, सुमिरत ही अहि ड्स्यौ पारधी, कर छूट्यौ ~ १/९७।

संधानत निशाना लगाता या लक्ष्य साधता है : सोइ सधान ~ २३९८।

संधानति निशाना लगाती है कहा तू सर ~ २८०८।

संधानि निशाना लगाने से, चलाने से एक बान ~ रथ कै तुरग, ध्वजा धर धनुष सब काटि डारे ४१९८।

संधाने[1] आचार बनाने आँब आदि दै सब ~ ३९६।

संधाने[2] निशाना लगाया, लक्ष्य पर तीर छोड़े सनु नदन धनु-सर ~, देखि घन-कोदड १/३०७।

संधानै सधान या लक्ष्य करता है : सदन सान ~ १/६०।

संधानौं अचार : तुमकौं भावत पुरी ~ २११।

संधि एक काल, युग या अवस्था के अन्त और दूसरे के आरम्भ के बीच का समय बैस ~ सुख तज्यौ सूर हरि गए मधु-पुरी माहीं ३८८८। **२** दो चीजों का मेल या सयोग जैस खरी कपूर एक सम यह भई देसी ~ ३४१८। ३ दो चीजों के बीच की खाली जगह नेकु नहीं कछु ~ बचायो ५९१।

संधिथली दरार. तकि गिरि की ~ २६१९।

संधिहि जोड ही। ~ **संधि** जोड ही जोड ~ — मिरी री २५३२।

संध्या हिन्दुओं की उपासना जो प्रात, मध्याह्न और सायकाल होती है ~ करत कहूँ त्रिभुवन-पति सारा० ६७१।

संपति[1] १. सम्पत्ति, वैभव। २. विभूति जे पद-कमल सभु की ~ ५६८। **पिता** ~ कौ सपत्ति का पिता, रत्नाकर, समुद्र • जहाँ — ~ — ९/८४।

सपदा १ धन, सम्पत्ति हरि-हित लावे सबै ~ ९/५। २ वैभव देखि ब्रज की ~ २६।

संपन सम्पन्न . कोक-विद्या-निपुन सकल गुन मैं ~ २५००।

संपन्न परिपूर्ण, युक्त : मदन मील ~ सुमूरति १/६९।

संपाती एक गिद्ध जो गरुड का पुत्र और जटायु का भाई था जलनिधि तीर गये सब कपि मिल सुन ~ की बानी सारा० २७७।

संपुट १ कमल कोष : ~ माँझ गही ३२८८। २ दोने या कटोरे के आकार की कोई वस्तु, गोलार्ध जलज ~ सुभग छवि १०६। ~ **करि** अँजुली बनाकर • कर ~ — मालिका ८०९। ~ **भए** बद हो गये सरोज सर सरोज ~ — ३५७५।

संपूरन १ पूर्ण, सपूर्ण . अष्टम मास ~ होइ ३/१३। २ सफल, सिद्ध . भयौ पूरन फल ~ ३०९१।

संवत मास षष्ठ सवत् के आरम्भिक मास (चैत्र) से छठा माह, भाद्रपद . ~ वसु तिथि है सा० ल० ८१।

संवर एक राक्षस, जो कामदेव का शत्रु था नारद जाय कह्यो ~ सौं तव रिपु वपु धरि आयो सारा० ६९०।

संभरिहै सँभलेगी : द्रौपदी दीन दुखी ~ १/२९।

संभवत सम्भव ही नहिं ~ ब्यिार ४२१०।

सँभार पुं० होश हवास, सुधि : गयौ गुन ग्यान ~ ३८०८। क्रि० स० १ सँभल कर, सचेत होकर : याते मनो चलौ ~ १/२२९। २ सँभाल कर दपति अंग ~ सारा० ९८०। ३ सँभाले • रहे किन्तु जन धर्म ~ १२/३।

सँभारत १ (याद) करती हुई 'सूर' स्याम सुन सुरत ~ सा०ल० ७३। २ ठीक करता • महामूढ अग्यान मति (रे) क्यों न ~ ताहि १/३२५। ३ सँभलता है, सचेत या सावधान होता है तऊ नर मूढ नाहीं ~ ८/१६। ४ सँभालते हो, प्रयोग करते हो : ते भुज क्यौं न ~ फेरी ९/९३। ५ सँभाल पाते : तरुवर पत्र वसन न ~ ३७९८। ६ सँभाला, समाप्त किया जोगि प्रिय भूषन ~ सा० ल० ५६।

सँभारति सँभालती है . विह्वल विकल ~ छिनु छिनु ३६६२।

सँभारहि सँभल जा • तातें कहत ~ रे नर, काहे का इतरात २/२२।

सँभारहु सँभाल लो : अपना जानि कै आनि ~ ४०८८।

सँभारि स्त्री० होश हवास, चेतना . काम अध कछु रहि न ~ ६/७। क्रि०स० १ सँभाल पार्थै भट सु भड सुर जन अजहू समुझि ~ २/३१। २ सँभाल कर • गहि लीन्हो धनुष ~ ९/६५। ३ सँभल जा कह्यौ असुर, सुरपति ~ ६/५। ४ पाकर, स्मरण द्वारा सचित करके . चतुरानन बल ~ मेघनाद आयौ ९/९६। △ **मुख** ~ वाणी पर नियन्त्रण रखकर — ~ बोलत नहिं बात ३०८। **सकी न बचन** ~ वाणी पर नियन्त्रण नहीं ला सकी : — ~ ९/७९।

सँभारी सँभाल : जान देहि, कै आपु ~ ३०५२। △ **सुरति** ~ चेतना/सुधि आई . पुनि रानी जब ~ — ६/५।

सँभारे क्रि० वि० सावधानी के साथ, सँभलकर वधू, करियौ राज ~ ९/५४। क्रि० स० १ याद किया, स्मरण किया . मन बच क्रम प्रहलाद ~ १/९८। १ सँभाल लिया कुल गुन आन ~ ३५९२।

सँभारैं १ सँभाल कर बात किन कहौ ~ १४६१। २ सँभालता है • याइ वध्य कोऊ न ~ ९३२। ३ सँभाले कौन काहि कों कहै ~ ९०२।

सँभारैं १ सँभालती है जान आपु की छवि न ~ ६२७। सँभाल पाता पावक ज्यौं जरति न आपु ~ ३२९०। ३. सँभालेंगे : तो श्रीपति काहि ~ ९/७८ ४ सँभाले, रोके

विरही कहँ लौं आपु ~ ३७७८ ।

सँभारौं सँभालूँ। △ **सरन** ~ शरण सँभालूँ अर्थात् शरण मे जाऊँ या जाता हूँ सूर सकुचि जौ — ~, क्षत्री-धर्म न होइ ९/१२१ ।

सँभारौ १ स्मरण हो रहा है • वहै बल आजु काहैं न ~ ३०६६ । २ याद किया, स्मरण किया : जिहि प्रभु जहाँ ~ १/१५७ । ३ याद कीजिए अपनौ वचन ~ ९/३० । ४ सँभल रहा था : परत न देह ~ री १३५ । ५ सँभाला, रोका . दुर्वासा कौ चक्र ~ १/७२ । ६ सँभालो • सुकन्त ~ लाल सा० ल० ७१ । △ **प्रेम** ~ प्रेम का स्मरण कीजिए . स्वामी पहिलौ — ~ ४०५७ । **सुख** ~ वाणी पर नियन्त्रण रखो : वावरे वात कहि — ~ ३०५४ ।

सँभारचौ १ बचाया, रक्षा की . सखा प्रानपति तउ न ~ ४/१२ । २ भार ऊपर उठा लिया, भार उठाये रहा • इहिं भर अधिक ~ ५६७ । ३ याद किया, स्मरण किया सो प्रभु क्यो न ~ १/३३६ । ४ सँभाल लिया, उठाया चक्र सुदरसन तहाँ ~ १/१४ । **बिरद** ~ यश को सँभाला या याद किया : हरि जू अपनौ — ~ ८/७ । **बैर** ~ पिछली शत्रुता को स्मरण करके बदला लेने को प्रवृत्त हुआ : मानौ सुरपति निज — ~ ३३२० ।

सभावन होने वाली वात, एक अलकार : तौ ~ गावौं सा० ल० ६२ ।

सभावन भूषन भूषन (शोभा) द्वारा सभावना, उत्प्रेक्षा अलकार ~ कर लच्छित सा० ल० १३ ।

सभापन वातचीत, वार्तालाप • धाइ आइ हँसि कियौ ~ ४२२९ ।

सभु की सेना भूत-प्रेत, सिंह, सर्प आदि ग्रह वसु मिलत ~ सा० ल० १० ।

सभु कोप आद को महादेव (हर), कोप (रिस) शब्दों के आदि अक्षरों के मिलाने से (हरि), कृष्ण . ~ दुआर आयौ आद कौ तन मार सा० ल० ९० ।

सभु पतिनी पिता धारन शिव की पत्नी (गगा) के पिता (गिरि) को धारण करने वाले, गिरिधर ~ सा० ल० ९३ ।

सभु भख शिव का भक्षण=कनक=स्वर्ण : ~ के पत्र वन सा० ल० १०५ ।

सभु-भूषन १ शिव के भूषण, चन्द्रमा ~ वदन विलसत सा० ल० ९४ । २ चन्द्रमा के मनहुँ सोभित अभ्र-अन्तर, ~ वेष ६३५ ।

सभु सुत अति प्रिय शिव के पुत्र (गणेश) की प्रिय वस्तु, दूब और लड्डू • लै लै सिंधु ~ सा० ल० ८० ।

सभु सुत भूषन शिव के पुत्र (गणेश) का भूषण, चन्द्रमा • ~ वतावत वदन आप प्रमान सा०ल० ६९ ।

संभु सैन शिव की सेना, भूत प्रेत, सिंह, सर्प आदि ~ से मारी डोलत सा० ल० ३५ ।

संभू सुत कौ जो वाहन है सभु सुत कार्तिकेय का वाहन मोर : ~ कुहकै असल सलावत ३६२३ ।

सभोग भोग-विलास जदपि कनक मनि रची द्वारिका विषय सकल ~ ४२७१ ।

सभ्रम पु० १ भ्रम . ब्रज मैं ~ मोहिं भयौ ४१५२ । २ भ्रम से : नकवेसरि वसी के ~ १२०६ । ३ भ्रम है : सुनहु सूर यह साँच कि ~ १८०४ । **क्रि० वि० १** एकदम • सूर सुनत ~ उठि दौरे १/२४० । २ हड़बड़ी के कारण, घबराहट मे : गद गद स्वर ~ अति आतुर २४५२ । ३ भ्रमित अतिहिं ~ भई ग्वालिनी १६४५ ।

सभ्रम्यौ भ्रम मे पड गये जगत पितामह ~ ४९२ ।

समत मत/सम्मत है . यह प्रसिद्ध सबही कौं ~ वडौ वडाई पावै १/१९२ ।

सँम्हारैं सम्हालते हैं हरि तोहिं वारवार ~ २५८६ ।

सयूत सयुत, सयुक्त जहाँ आदि निज लोक महानिधि रमा सहस ~ सारा० १४ ।

संयोगनि सयोगों से सूरदास ~ यह गति रति विछुरे की अकथ कथा खग परि० २/५६ ।

संयोगी सयोग मे विजय सखा को सखी कहत है तासों रहत ~ सारा० ५६७ ।

सँवार सँवार कर, सजा कर पटरस धार ~ साज सो सबही सारा० ४८३ ।

सँवारत १ सँवारती है, बनाती है दरपन लै कजराहिं ~ २१८९ । २ सँवारते हैं : सुदर माँग ~ २६२८ । ३ (शस्त्रादि) तेज करते है : कहुँ कर लेकर शस्त्र ~ सारा० ६६६ ।

सँवारति १ वनाती है लटपट पेच ~ प्यारी २०३६ । २ सँवारती या सजाती है सेज ~ व्याकुल काम २४७८ ।

सँवारन वनाने वाले : सदा ~ काज १/१०९ ।

सँवारि १ (अस्त्र-शस्त्र) तेज करके राख्यौ सुफल ~ सान दै ९/९५ । २ वनाकर : कठ कठुला नील मनि अभोज माल ~ १६९ । ३. सँवारकर : सुहय ~ वनाइयै २५७० । ४ सजाकर . भवन ~ नारि रस लोभ्यौ १/२१६ ।

सँवारी १ वनाई गई मखर खजूरी मरम ~ २२७ । २ सँवार/वना दी प्रभु अविगत लीला आपुहिं आप ~ १/२२१ । ३ विधि पूर्वक सुरपति पूजा करो ~ ८९० । ४ सँवार कर : मानौ रतिपति ~ वनी २१६५ । ५. सँवार/वना (लो) : विगरी लेहु ~ १/११८ । ६ सँवारा, वनाया : कत गढि छोलि ~ ३६४० । ७ सँवारी है, लगाई है : अपन हाथ ~ २४८६ । ८ वनकर (गूँज रहा है) : खग रव घँटा ~ २७८४ । △ **दई** ~ विधाता की गढी हुई है (व्यग्य) .

जुवती हैं मव — ~ २०४७।

सँवारे १ तैयार किये सेव लाटू रुचिर ~ १८३। २ बनाया, सिद्ध किया : सब काज ~ १/९४। २ बनाता है . कारे कुटिल ~ ३७६२। ३. सँवारा • केसन आपु ~ सारा० १०११।

सँवारैं १ बनाकर . भुवन सौंपि समर्पि ~ २८२२। २ लगा लिए भुवन नाटक उलटे ~ ९९८।

सँवारै १ निर्माण करता है, बनाता है (हरि) सो बननीथिनि कुटी ~ ३। २ बनाये, सँवारे : अपनें कर जो माँग ~ २०५२। ३ सँवारती है, सजाती है : कबहुँ रचि माँग मोतिन ~ २१९०।

सँवारो सँवारा। काज ~ कार्य पूरा किया : कीन्हो राज राम रघुनन्दन सब विधि — ~ सारा० २७५।

सँवारो १ बनाओ, निमाण करो मम माया-मय कोट ~ ७/७। २ सँभालकर : राखो टोपि ~ ३७९७। ३ सँभालो, वश मे कर लो : बरहु तला बनस्याम ~ २७४६। △ परलोक ~ अन्त्येष्टि क्रिया करो . गजा जो ~ — ९/५०।

सँवारचो १ पहन लिया : चरननि हार ~ ११८१। २ पूरा किया, सँवारा : तैं सबको काज ~ ९/१०३। ३ बनाया नुरस लिनोननि स्वाद ~ १२१३। ४ सँवारा, ठीक ठाक किया . पट पोंछि ~ २१०८। ५ निर्माण किया, सजाया : भूठ साँच करि माया जोरी, रचि पचि भवन ~ २/३३६।

सस सशय, शका • मन मन कीन्हो ~ १५४७।

संसय शका, सन्देह . नारद मन ~ उपनाद १/२२६।

ससारी १ सासारिक या लौकिक प्रपच मिथ्या यह ~ २९७९। २ सासारिक या लौकिक प्रपच मे पड़ने वाला (व्यक्ति) भजन रहित बूडत ~ १/२१२।

ससे सदेहों को डर ~ मन खोई ९/१२१।

संसै सशय भरत तुम मास ~ नहीं कछु हर्म ४२२८।

सस्यौ सदेह : कहा ~ करन गाओ ३१०८।

सहरि मरवाकर नातरु कुटुब सकल ~ के १/२६०।

सहरी वध कर दिया, मार डाला : चक्र सुदरसन सो ~ ९/५।

संहरैं १ मरें . ऐसे असुर किते ~ ७/२। २ सहार करते है • प्रतिपारत बहुरो ~ ८/३।

सहर वध करना है विषय भोग जीवन ~ ४/१२।

सहार पु० सहार, नाश पालन अरु पुनि करन ~ ६/८। क्रि० स० मार डाल सों का वेगि ~ ०/८४।

सहारक सहार करने वाले असुरा थियन सकट ~ १६०७।

सहारत १ सहार करता है, ध्वस या नाश करता है • जग सिरजत पालत ~ ४३०२। २ सहार करते हुए दया नहिं आवनि ~ १२/२।

सहारन क्रि० स० सहार करने के लिए • कस ~ मथुरा जैहैं। १६१९। पु० सहार करने वाले असुर ~ भक्तनि तारन ३८०।

संहारि सहारकर, मारकर असुर कुलहि ~ धरनि को भार उतारौं ४३१।

सहारी १. दूर कर सकता है : को बढ पार ~ ३०५०। २ मार डाला, सहार किया : पय प्यावन पूतना ~ ३८३९।

सँहारे सहार किये, मार डाले उरदास प्रभु असुर ~ १३८९।

सँहारेउ सहार किया : सहस कवच इक असुर ~ सारा० ६८।

सँहारैं मारे जो असुर ~ ३/११।

संहारौं १ काट डालूँगा • मारि सरवारि नव सिर ~ ०/१२९। २. त्याग रही हूँ मैं प्रान ~ ४/५। ३ नष्ट कर दूँ • रद समूह ~ ९/१०८। ४ मार डालूँगा, सहार करूँगा . एक ही मुसल सबका ~ ४२०६।

संहारो सहार करो, मार डालो • भक्त हेत तुम असुर ~ ७/२।

संहारचौ १ मार डाला, सहार किया एक नरसिंह-रूप ~ ९/१५। २ सहार किया है . सकटा दना ~नहि ~ ३०८८।

संहिता वेदों का मत्र-भाग करी ~ वेद विचार १/२३०।

सइयाँ स्वामी : नहिं पत्यानि वे ~ परि० १/२०५।

सई सही हम कर दीन्ही साद ~ १७२८।

सउजल उज्ज्वल • सदल ~ सुन्दर सोरी १२/३।

सक सदेह, शक। ~ राखी सदेह (शेष) रचा नहिं मैं न कछू ~ — ४१३०।

सकट[1] १ छकडा, छकडे, गाडी बैल देत हैं ~ गिनाइ ००२। ~ जोरि छकडों को इकट्ठा करना ~ — ल चले दव-दलि ९०१।

सकट[2] शकट नामक एक राक्षस जिसे कस ने कृष्ण को मारने के लिए भेजा था, परन्तु वह स्वय कृष्ण के हाथ मारा गया, बकी, बकासुर, ~, तृनावत ४८७।

सकटनि १ छकडे, छकडों को : कोटि ~ जोरि ५८८। २ छकडा पर ~ भोजन सावत ८२६।

सकटा[1] छकडे, गाडियाँ सब गोपनि मिलि ~ साजे ८०२।

सकटा[2] **सकटासुर** दे० सकट[2] ~ तृना इनहिं मारयो ३०४४, ~ पलना टिग आयौ ६९२।

सकटै शकटासुर ने ~ गर्व बढायौ ६८।

सकत[1] १ सकता चलि नहिं ~ गरु मन [illegible] ८/४। २ सकता है ~ सृगाल सिंह को [illegible] ४१५०। ३ सकती है चलि न ~ [illegible] ४/१२। सन्ति ~ रख सकता है, बचा सकता है — ~ न [illegible] १/१०।

सकत[2] सकता को : [illegible] ~ बर बान। ३२२१।

सकति सकती : तरि ~ न सौभा ६३५।

सकति[1] १ सकता, सकती : सहि न ~ [illegible] ३८०१। २ सकता • सहि न ~ [illegible] ४२२५।

सकति[2] १ शक्ति (बाण) : [illegible] ~ [illegible] ३२६०।

सकता सकता, सकने • स्वामी [illegible] ~ [illegible]

सकरी जजीर : ~ कनक, रतन-मुक्तामय लटकन १०५५ ।
सकलंक कलक सहित : पूरन कलापति ~३५३ ।
सकल सर्व० १ सब, समस्त, सम्पूर्ण ।.२ सभी को बोले बचन ~ सुखदाई १/३ । ३ सभी : खेलत जूप ~ जुवतिनि मैं ९/२५ । पुं० समस्त (वस्तु, सम्बन्ध आदि) ~ तजि, भजि मन चरन मुरारि २/३१ ।
सकलइ सम्पूर्ण, सब • अथ सारँग पर ~ सारग २१११ ।
सकलौ समस्त, सम्पूर्ण : बिनसि जात तेज-तप ~ ६/५ ।
सकसकात डर के मारे कॉपता है : ~ तन भीजि पसीना ७४८ ।
सकसकी कँपकँपी . आए हौ सुरति किऐ टाटक रस लिऐ ~ धकधकी हीय २५५५ ।
सकात[1] सकता है • चलि चरननि न ~ २९४ ।
सकात[2] १ डर से मानौ सूर ~ सरासन उडिबे कौं अकुलात ३६६ । २ डरकर तातैं गए न ~ २७१४ । ३ डर रहे हो : अब ~ धौं का तैं २६८४ । ४ डरता है, संकोच करता है : इहै बडौ दुख गॉव बास कौ चीन्हें कोउ न ~ १५०६ । ५ सदेह या शका करते हैं देखि सैन ब्रज लोग ~ ९४८ । ६ सकुचाते . बार बार यौं कहत ~ न ९/१२१ ।
सकान डरा, भयभीत हुआ अतिहीं कोमल अजान सुनत नृपति जिय ~ ३०६४ ।
सकानी सदेह मे पड गई मधुकर मीन ~ ३४३ ।
सकाने शकित, डरे त्रासहिं मैं सब रहत ~ ३१०९ ।
सकानै डर कर छुवत नहीं देव काज ~ ८९१ ।
सकानौ सहम उठा, डर गया थरथराइ चानूर ~ ३०७० ।
सकान्यौ १ शकित हो गया . सूरदास प्रभु इंद्र ~ परि० २/५७ । २ शंकित/भयभीत हो गये देत अकुस मसकि कह ~ ३०५४ ।
सकामी फल के लोभ से कार्य करने वाला • भक्त ~ दूजो होइ ३/१६ ।
सकायौ शकित हुआ इन्द्र सुनि ~ ९/११८ ।
सकार[1] १ प्रात, सवेरे । २ सुख का सखि मेटि ~ ढकार दयौ री ३३१९ ।
सकिये सकें . जो कुछ करि ~ सोइ सब या मुरली कौं कीजे १३१२ ।
सकिलि एकत्रित हो • ~ वधू आई सबै २९०५ ।
सकिहौं सकूँगा : लखि सरूप रथ रहि नाँहि ~ २९४८ ।
सकिहौ सकोगे : ~ नहीं सम्हारि १५४५, बिथा ताहि जीति ~ नहीं ४१८९ ।
सकुच[1] पुं० १ सकोच, लज्जा • लोक - ~ - मका नहि मानति १९०० । २ झेंप : ~ मन हीं मन दुरावति २२०२ ।
सकुच[2] सकुचित होकर : नख-सिख बसन सँभारि ~ तनु कुच कपोल गहि पानि ९/७९ ।
सकुचत १ कुम्हला गया हो : तरनि किरनहि परसि मानौ कुमुद ~ भोर ३५८ । २ सकुचित, लज्जित होते तुम्हरौ नाउँ लेत ~ हैं १७१२ । ३ सकोच करते हैं समित सुभट ~ साहस करि २३८३ । ४ सकुचाते हुए : सुनहु सूर ठठकत ~ गए २६२९ । ५ सकुचा रहे हो : ~ कत सो बात सुनावहु ९४५ । ६ झिझक हो रही थी • जिय ~ अति भारी २४८१ । ७ सिकुड गया बिदुखि सिधु ~ सिव सोचन १४३ ।
सकुचति १ लज्जा लगती है तुम सौं कहत ~ महरि १४२२ । २ सकुचाती हैं . उमचि जाति तबहीं सब ~ १६११ ।
सकुचति १. लज्जित होती है : अति ~ तनु बाम २६२५ । २ सकोच करती, सकुचाती . ~ है पुनि नहीं फबै १७६० । ३ सकोच करती हूँ, सकुचाती हूँ : कहि न सकति ~ इक बात ४२२५ ।
सकुचन सकोच से • जदपि मोहि बहुतै समुझावत ~ लीजतु मानि २७४७ ।
सकुचनि १ सकोच (की) भागी जिय अपमान जानि जनु ~ ओट लई ३२६६ । २ सकोचवश सकी न ~ चाखि १२२३ ।
सकुचहु सकोच करना : तुम ~ जनि लेस ४०७८ ।
सकुचाइ १ बद या सकुचित हो जाता है : कुमुद निसि ~ ३५२ । २ लज्जित हो • तुरत गए ~ ५५६ ।
सकुचात १ सकोच करता है : यातैं जिय ~ ९/८७ । २ सकुचाने लगे, झेंप गये सूर स्याम ~ २७१४ ।
सकुचातौ सकोच करता है . कहत बात ~ १/४० ।
सकुचानि सकोच/लज्जा के कारण ठठकनि कहत प्रेम ~ २०३० ।
सकुचानी १ सकुचित होकर, लजाकर : बैठि गई तरुनी ~ ७९९ । २. सकोच करने लगी : उतहि सखी आवत ~ २१५८ । ३ सकुचा गई • निरखि भवन ~ २०२९ ।
सकुचानैं सकुचित/लज्जित हो गये . मैन अवधि ~ ४०४७ ।
सकुचानौ सकोच किया, सकोच करता रहा जहाँ गयौ तहँ भलौ न भावत सब कोऊ ~ १/१०२ ।
सकुचान्यौ लज्जित हुआ, सकुचाया • यह सुनि इद्र अतिहिं ~ ९५० ।
सकुचासन सकोच रूपी आसन : ~ कुल सील करपि करि ~ ३५३० ।
सकुचाहु सकोच कर रहे हो न्याय निरखि ~ ३२३३
सकुचि १ सिकुडकर ~ तनक ह्वै जात ३०६ । २ लज्जित होकर : हम तनु चितै ~ अचल दियौ २११३ । ३ सकोच

बग, लाज के मारे : ~ न तुमहिं कहौं १६८८। ४ सकोच से : ~ गनत अपराध समुद्रहिं १/८। ५ सकुचित . लाजनि ~ जात मुख मेरो ३९९।

सकुचीं १. सकुचित हुई : ~ मनहिं बिचारि १६२०। २ सकोच किया : ~ नहिं त्यागत गृह जन को २२१६।

सकुची सकुचित हो गई : जिन ~ लै मृग-चंद नयो १६७१। २ सिकुड/सपुटित हो गई : कुमुदिनि ~ वारिज फूले २३३।

सकुचे १ लज्जित हो गये, केसे : खंजन मीन अंजन दे ~ ~ २८०५।

सकुचैं १ सकोच करने से ~ नहीं बनत री माइ १२६१। २ सकोच करती ~ न देत गारि कगरतहूँ २९६।

सकुचैये सकोच करना चाहिए गुरु पितु-गृह बितु बोलेहु जैए, है यह नीति नाहिं ~ ४/५।

सकुचौ संकोच करो तुम जनि ~ प्यारे लालन २५५०।

सकुच्यौ सकोच किया, सकुचित हुए . सुफलक सुत मन ही मन ~ ४१९१।

सकुन शकुन, शुभ लक्षण . मानो इहिं ~ अबहिं अजु इहिं बन २९४६।

सकुनि गांधारराज सुबल का पुत्र और दुर्योधन का मामा जो बड़ा ही छली और प्रपंची था भीषम द्रोन करन अस्थामा ~ सहित काहूँ न मरी १/२४९।

सकेरौ इकट्ठे किये सुर सुता पितु राग गध पितु प्रिय जुत आदि ~ सा० ल० ३३।

सकेलत समेटने लगे : दिगपति दिग दतीनि ~ ६३।

सकेलि इकट्ठा करके : नृप सकल ~ कुलहिं जारयौ ४२१७।

सकेली इकट्ठी होकर, सिकुड़कर तबहि बहुरि सब बैठि ~ २८९२।

सकेले इकट्ठा किये जो बनिता सुत ~ १/२६६।

सकैं सकते हैं तारि ~ तौ तारै १/१८३।

सकै सकता, पाता ज्यो गज पज न ~ निवारी २२१६।

सकोच सकोच . लपट तदपि ~ न मानत २३९०।

सकोचति सिकोड़ते हुए : नासा पुटनि ~ लोचनि।

सकोरत सिकोड़ते : कैसे बदन ~ हैं १८३४।

सकोरति १ सिकोड़ती पुनि पुनि बदन ~ हौं २१९९। २ सिकोड़ती हुई : भौंह ~ चलति मद गति १६९५।

सकोरि सिकोड़कर . बदन ~ भाह मोरत ई १४१८।

सकोरें सिकोड़ते हैं, मटकाते हैं काहू सा हँसि बदन ~ १४६०।

सकोरै सिकोड़ती है कबहुँ भ्रुव निरखि रिस करि ~ २१९०।

सकोर्‌यो सकुचित किया, सिकोडा असुर तव चाव ~ ४३१।

सकोर्‌यौ १. सकुचित कर लिया, छोटा कर लिया सूरदास प्रभु अग ~ ५५६। २ सिकोड़ी : काहैं भौंह ~ १५७२।

सकौं सकता हूँ क्यों करि ~ आग्या सग ११/२।

सकौ १ सकते हो बल करि ~ नहीं लै जाइ ९/२। २ सको . मुरली ~ सँभारि २११४। ३ कर सको नाथ, ~ तौ मोहिं उबारो १/१३१।

सक्कर पारे शक्कर में पगा हुआ मैदे का बना एक पकवान ~ सद पागे १८३।

सक्ती शक्ति, शक्ति बाण . इन्द्रजीत लीन्ही तब ~ परि० १/३।

सक्यौ १ सका, समर्थ हुआ सींव न चाँपि ~ नव कोऊ ३३२४। २ सके, समर्थ हुए रहि न ~ रथ पर सुत व्याकुल २९५२।

सक्र देवताओं का राजा इन्द्र ~ कहै सम रच्छा कारन ९८१।

सक्रधनु इन्द्रधनुष चातक मोम ~ घन मैं १७७७।

सक्रोध क्रोध सहित, क्रोधित होकर रिषि ~ इक जटा उपारी ९/५।

सखन सखाओं के . गोप ~ सग खेलन टोलो मारा० ५८६।

सखनि १ सखाओं : आपुन खाइ ~ कौं दीन्हौ १५३०। २ सखाओं को पालागन कहि ~ सिखावत ९/१६७। ३ सखाओ ने ~ पुकार्‌यौ ५४०। ४ सखाओं से . ~ कह्यौ तुम जाइ चढो द्रुम १५००।

सखर कुरकुरी : ~ खजूरी सरस सँवारी २२७।

सखा १ मित्र। २ मित्रों को 'सूर' ~ सग सबै बुलावहु १९७९। ३ सदा साथ रहने वाला, हितैषी (ईश्वर) घूम बढ्यौ लोचन खस्यौ ~ न सूझ्यौ सग १/३२५।

सखाइ सखा : जय अरु विजय ~ ३०१६।

सखाई सखा/साथी ही : मधुकर तुम हौ स्याम ~ ३९६८।

सखाऊ मित्र भी तमेहिं मिले ~ ४८१।

सखानि सखाओं को ~ सग लीने ४६७।

सखाहु सखाओं को : गोप ग्वाल ~ ते सब लिये बुलाइ १२१४।

सखिनि १ सखियों ब्रज तैं आवत देखि ~ का १९५८। सखियों के : ~ साँझ कत लाजनि मारा १५५६। ३ सखियों को : सब बानी कहि ~ सुनाई १४११। ४ सखियो ने दीन्हा ~ सँवारि २११४। ५ सखियों से ~ मिलें जमुना गई १९७०।

सखियन सखियाँ गई ~ ला ७४०।

सखियनि १ सखियाँ सूर सकल ~ तैं आगें ८०२। २ सखियों का : मुसुकि मन मैं कहति ~ बिपुल लै लै नाम २२०२। ३ सखियों के ~ सग नहीं गई २८२७। ४ सखिया को ~ सग लै राधिका २७३५। ५ सखियों ने . दियो बनाइ और ~ सब ४/१३।

सख्य-भाव भक्ति का एक प्रकार जिसमें भक्त स्वयं को अपने आराध्य देव का सखा मानकर उसकी उपासना, आराधना करता है . भक्तनि ~ अनुसरै ९/५ ।

सगबगे सराबोर, लथपथ : ~ सनेह रहा परि० १/१९० ।

सगर¹ सब • महरि कही तब ग्वाल ~ कौं ९८४ ।

सगर² अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जिनके ६० हजार पुत्रों को कपिल मुनि ने भस्म कर डाला था : सौवों जग्य ~ जब ठयौ ९/९ ।

सगरी १ सभी : उरहन लै आवनि हैं ~ ३१९ । २ सारी, सम्पूर्ण • काहू कौ जागत ~ निसि २५३४ ।

सगरे १. सभी ~ बिगरे के सिर ऊपर ४०३० । २ सारे : ता दिन तें ~ या ब्रज मे रमा रूप दरशायो सारा० ४०६ ।

सगरौ सारा, सब का सब ~ माखन लै डारि देत ३३६ ।

सगाइ सम्बन्ध : तिनमाँ कीजै कहा ~ ३५९१ ।

सगाई १ सगनी/विवाह का निश्चय कहे मिलि विप्र कहत सबहिन सो बालक करन ~ सारा० ६७६ । २ सम्बन्ध, रिश्ता . तियनि कह्यो जग झूठ ~ ८०० ।

सगुन¹ सगुण, साकार . निर्गुन ब्रह्म ~ लीलाधर २६३ ।

सगुन² १ शकुन, शुभ लक्षण : इतनौ कहत नैन उर फरके ~ जनायौ अग ९/८३ ।

सगुनई सगुण ही थे • 'सूर' ~ जात मधुपुरी निरगुन नाम भये ३६४४ ।

सगुननि शकुनों, शुभ लक्षणों इनि ~ कौ यहै भरोसौ ३४५४ ।

सगुनावै शकुन बताता है उत्तम भापा ऊँचे चढि चढि अग अग ~ ३४५५ ।

सगुनौती शकुन-विचार : बैठी जननि करति ~ ९/१६४ ।

सगुर अत्यधिक भारी ~ सुमेर प्रगट देखियत ३७११ ।

सगे घनिष्ठ सम्बन्ध रखने वाले मिलि गई ऐसे मनहुँ ~ १७८१ ।

सगौ अपना • तौ लागि यह समार ~ है १/७८ ।

सघन¹ घने झुंड (लटे) • ~ आवत जात २१३० ।

सघन² घनघोर ~ बरषै मेह ४ । २ घना : अतिहिं ~ बन देखि कै ४३१ । ३ घने ~ कल्प तरु तर मनमोहन २०१९ । ४ पुष्ट, सुदृढ पीन पयोधर ~ उनत अति २४४७ ।

सघन घन कठोर पयोधर या कुच . पग रिपु लगत ~ ऊपर सा० ल० १० ।

सघन जुन्हाई चाँदनी की पिण्डी ~ है मनौ ११८० ।

सचरे प्रविष्ट हुए हिलने-मिलने या उठने बैठने लगे • जा दिन तैं ~ गोपिन मैं ७३५ ।

सचान बाज, श्येन . ऊपर झुक्यो ~ १/९७ ।

सचि एकत्र कर । ~ सचि सचित कर करके • राखे बहुत जतन करि ~ — ३४०० ।

सचिक्कन चिकने सीस ~ केस कै बिच सीमत सँवारि २६१३ ।

सचिव वजीर, मन्त्री कहौ तो ~ सबधु सकल अरि एकहिं एक पछारौं ९/१०८ ।

सची¹ १ बनाई, लगाई : जब कर बेनु ~ बलबीर परि० २/१५ । २ सजाई, सज्जित की • जो कुछ सकल लोक की सोभा लै द्वारिका ~ री ४२५६ । ३. सचित की . सुख रासि अतर ~ ११९१ ।

सची² इन्द्र-पत्नी, इन्द्राणी : ~ नृपति सो यह कहि भाषी ६/७ ।

सचु सुख . माधौ जू मैं अति ही ~ पायौ ४१५० ।

सचे बनाये, लगाये • स्तुति अवतस ~ परि० १/८४ ।

सचैन सुख के साथ, निश्चिन्त होकर पीवत हौ रस परम ~ २६३८ ।

सचोप उत्साहपूर्वक : भयौ इन्द्र को प लोप, कहत सबै ही ~ ९५२ ।

सच्चिदानद सत, चित और आनन्द से युक्त • ~ तुम देव ११७५ ।

सच्यौ¹ भरा हुआ है हरि मुख कमल ~ रस सजनी २५८२ ।

सच्यौ² १ गढा हो ~ काम सँवारि १९८९ । २ समेट लिया लै चढाइ हरि कथ ~ री ६०६ ।

सजत १ सज रही है . नखसिख ~ सिंगार भाव मा २६२८ । २ सजाते हुए : धाम ~ नहिं हारौ ३७४२ । ३ सजा रहे थे ~ रति सेज जे निगम नेती २६०४ । ४ सजाने लगे : भूषन ~ नए २१८२ ।

सजति करती है, सजाता है : बहुरि फिरि राधा ~ सिंगार २१८३ ।

सजन १ पति : कहाँ ~ गुरुजन कहँ माई १६५१ । २ सज्जन मित्र के मित्र ~ के सज्जन ३८०१ ।

सजनी १ प्रियतमा बाम बाम जिन ~ कीन्ही सा० ल० ५८ । २ हे सखी ~ निरखि हरि कौ रूप १८२२ ।

सजल १ अश्रुयुक्त हैं . लोचन ~ बचन नहिं आबे ११०३ । २ कान्तियुक्त ~ मोतिन हार २२२० । ३ जल से भरे/पूर्ण • सजे ~ कलस अरु कदलि थूप ९/१६६ ।

सजहु सजती हो, पहनती हो : कहत पुनि पुनि कहा अग अवर ~ २६७२ ।

सजाइ¹ सजाकर : जल-माँझ ~ ५८२ ।

सजाइ² सजा, दण्ड । करौं ~ दड दैंगा • मेरा बनि औरहि दा अरपन, इनको — ~ ८२२ ।

सजाई सजा : कैसी करौ ~ १४२४ ।

सजायौ सजाने गये भोग अन्न बहु भार ~ ९०० ।

सजावत १. सजाते : कठ हमेल ~ है। २. सजा रहे हे : 'सूर' बरष कर भार ~ २९८२।

सजावनौ सजा हुआ है. हाटक नहिन ~ २८३०।

सजि १. अलकृत होकर, सजकर : अग सुभग ~ है मनु मूरति ४९। २ अस्त्र शस्त्र से सज्जित या प्रस्तुत होकर : ब्रज पर ~ पावस दल आयौ ३३०४। ३ सजाकर अगम सिंधु जतननि ~ नौका १/५५।

सजियैं (सप्रेम) रखी या टाली जाय . नाहिंन मीन जीवत जल बाहर जौ घृत मैं ~ ३७७७।

सजी सुसज्जित है : मग ~ अब सेनी ९/११। Δ बुद्धि ~ उपाय किया, चतुराई की • बहुतै ~ —१६३१।

सजीवनि सजीवनी जिन स्याम ~ पायौ २/३२।

सजे[1] १ सजे थे : कचन कलस ~ २४। २ सजे हुए. ~ सिंगार नव सात जगमगि रहे १०५२। ३. सजाने थे. पट भूषन जुवतिनि ~ ११८०।

सजे[2] सोचने लगे. बुद्धि मन मन ~ १०६३।

सजोगता सुयोग्यता, तुल्योगिता अलकार : सर ~ जाई सा० ल० १६।

सजोर बलपूर्वक • मगल करे वियक ~ सा० ल० ६०।

सजौं सजूँ, करूँ। ~ साल मान करूँ • ~ — क्यौं, मन न होय २०९१।

सजौ सज्जित. देखत ~ पाडु कुमार सा० ल० ७५।

सजौना सज्जा से, शृगार मे • नटवर अँग सुभ सजे ~ २८८४।

सज्जनी सखी. ऐसे भाग हमारे ~ परि० १/७७०।

सज्जा शैया, पलग. आपुन पोढि अधर ~ पर ६५५।

सज्यौ १ सजाया है, कर डाला है आजु तन राधा ~ सिंगार १२०२। २ सजाया हो : मनु दल ~ मनसिज भूप २४४९। ३ सज्जित फिरत सृगाल ~ सव कादत ९/१५८।

सटकारि हाक दिया. सारथी पाड रुज दये ~ हय ४२२१।

सटकि सटक चला, खिसक गया : असुर यह बात तकि गयो सत ~ ४१९८।

सटिया छडी से : मैं करि पठयो ~ १/१९२।

सठ १ अरे धूर्त!. ~ हठ करि तृहीं पछितैहै ८०८। २ मूर्ख. सुनै ~ पुरुष बिरानै ३७१५। ३ धूर्त हे. मोक ~ जो कमल नयन की कहत बात विपरीति ३८५५।

सठगी शठता छुटी नहीं ~ ३२६५।

सत[1] वि० सत्य : जौ ला ~ सरूप नहिं सूझत २/२५। पु० सत्यतापूर्ण धर्म या आचरण . सतजुग ~ त्रेता तप कीजै २/२। Δ ~ नहिं टरई सत्य दृढ और अचल रहेगा • ...

सत[2] तीन गुणों (सत, रज, तम) मे से एक, सत्त्व : सतगुरु ~ गुन फलहिं प्रकासै ९५०, ~ रज तम गुन सुद्धा सार ३/१३।

सत[3] १ सात गर्भ माहिं ~ वर्ष रहि ३/११। २ सौ • ~ जोजन विस्तार ९/८९। ३ सैकडों. निरखि लजत ~ मैन २२५१। ~ सत सौ सौ, सैकडों . ~ — मदन लजावै २३०८।

सतई सप्तम राशि (तुला), बराबर. ~ तोल, आठ सी मारैं सा० ल० ७१।

सतएँ (जन्मकुंडली के) सातवें घर या स्थान मे • ~ गृह परी ई ८६।

सतगुरु १ सद्गुरू ने : ~ कह्यौ कहा तोसों हा १/५९। २ सद्-गुरु की • ~ कृपा - प्रसाद कछुक तात कहि आर्बे ४९२।

सतत सदा, निरतर नैन चकोर ~ दरसन ससि कर अरचन अभिराम २/१२।

सतदल १ सौ दल वाला, कमल • कनक बेलि ~ निर सदिन ३९४७। २ सौ दलों का : राजिव दल इदीवर ~ १८१३।

सतधन्वा एक योद्धा जिसने सत्राजित को मारा था और इस अपराध के कारण जिसे श्री कृष्ण ने मारा था ~ करतूति करी सो ४१९१।

सतभाइ सद्भाव से, सरलता पूर्वक • लेंहि मानि नृपति ~ ४/९।

सतभाई सद्भाव से भच्छ किए ~ १/१३।

सतभाउ सच्चे भाव से हँसत कहति कीधौं ~ १७०१।

सतभाए सद्भाव से, सहज स्वभाव से अवलोकति ~ ३०६२।

सतभामा श्री कृष्ण की आठ पटरानियों मे से एक, जो सत्राजित की कन्या थी ~ जु नाम तेहि कहियत सोभा कही न जाय सारा० ६५२।

सतम सातवाँ ~ जग्य को जबहिं आरभ कीन्हौ ४/११।

सतर क्रोधित, कुपित • हमसा ~ होत सूरज प्रभु ५३७।

सतरह सत्रह की सख्या जो अष्टाग योग और नवधा भक्ति की सूचक मानी जाती है। अथवा पाँसे के खेल का वह दाँव जिसमे दो छक्के और एक पजा साथ पड़ते है : सुनि ~ सुनि अठारह चोर पाँचो मारि १/३०९।

सतरहो सत्रहों (सत्रह की सख्या) • बरष सोऽप ~ न रहै १७३९।

सतराइ १ अहकार करेगा, ऐंठेगा अद्भुत निधि. . .पाइ क्यौं नहीं ~ १२६७। २. कुपित होकर, क्रोध करके • लाज नहीं तुम आवइ बोलत हौ ~ १६१८। ३. क्रोधित हो हमहीं पर ~ गए १५७८।

सतराए ... ~ १२७९।

सख्य-भाव भक्ति का एक प्रकार जिसमे भक्त स्वय को अपने आराध्य देव का सखा मानकर उसकी उपासना, आराधना करता है भक्तनि ~ अनुसरै ९/५ ।

सगबगे सराबोर, लथपथ : ~ सनेह इहा परि० १/१९० ।

सगर[1] सब • महरि कही तब ग्वाल ~ कौं ९८४ ।

सगर[2] अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जिनके ६० हजार पुत्रो को कपिल मुनि ने भस्म कर डाला था : सौवौं जग्य ~ जब ठयौ ९/९ ।

सगरी १ सभी उरहन लै आवति हैं ~ ३१९ । २ सारी, सम्पूर्ण : काहू कै जागत ~ निसि २५३४ ।

सगरे १. सभी . ~ बिगरे के सिर ऊपर ४०३० । २ सारे : ता दिन तें ~ या ब्रज मे रमा रूप दरशायो सारा० ४०६ ।

सगरौ सारा, सब का सब . ~ माखन लै डारि देत ३३६ ।

सगाइ सम्बन्ध तिनसौं कीजै कहा ~ ३५९१ ।

सगाई १ मगनी/विवाह का निश्चय कहुँ मिलि विप्र कहत सनहिन सो बालक करन ~ सारा० ६७६ । २ सम्बन्ध, रिश्ता तियनि कह्यौ जग झूठ ~ ८०० ।

सगुन[1] सगुण, साकार निर्गुन ब्रह्म ~ लीलाधर २६३ ।

सगुन[2] १ शकुन, शुभ लक्षण . इतनौ कहत नैन उर फरके ~ जनायौ अग ९/८३ ।

सगुनई सगुण ही थे . 'सूर' ~ जात मधुपुरी निरगुन नाम भये ३६४४ ।

सगुननि शकुनो, शुभ लक्षणो इनि ~ कौ यहै भरोसौ ३४५४ ।

सगुनावै शकुन बताता है उत्तम भाषा ऊँचे चढि चढि अग अग ~ ३४५५ ।

सगुनौती शकुन विचार . बैठी जननि करति ~ ९/१६४ ।

सगुर अत्यधिक भारी ~ सुमेर प्रगट देखियत ३७११ ।

सगे घनिष्ठ सम्बन्ध रखने वाले मिलि गई ऐसे मनहुँ ~ १७८१ ।

सगौ अपना तौ लागि यह ससार ~ है १/७६ ।

सघन[1] घने झुड (लटें) • ~ आवत जात २१३१ ।

सघन[2] घनघोर : ~ बरपै मेह ४ । २ घना : अतिहि ~ बन देखि के ४३१ । ३ घने ~ कल्प तरु तर मनमोहन २२१९ । ४. पुष्ट, सुदृढ पीन पयोधर ~ उनत अति २४४७ ।

सघन घन कठोर पयोधर या कुच : पग रिपु लगत ~ ऊपर सा० ल० १० ।

सघन जुन्हाई चाँदना की पिण्डी ~ है मनौ ११८० ।

सचरे प्रविष्ट हुए, हिलने-मिलने या उठने-बैठने लग • जा दिन तै ~ गोपिन मैं ७३५ ।

सचान बाज, श्येन • ऊपर झुक्यौ ~ १/९७ ।

सचि एकत्र कर । ~ सचि सचित कर करके : राखे बहुत जतन करि ~ — ३४०० ।

सचिक्कन चिकने सीस ~ केस कैं बिच सीमत सँवारि २६१३ ।

सचिव वजीर, मन्त्री कहौ तौ ~ सबधु सकल अरि एकहिं एक पछारौ ९/१०८ ।

सची[1] १ बनाई, लगाई : जब कर बेनु ~ बलबीर परि० २/१५ । २. सजाई, सज्जित की : जो कुछ सकल लोक की सोभा लै द्वारिका ~ री ४२५६ । ३ सचित की सुख-रासि अतर ~ ११९१ ।

सची[2] इन्द्र-पत्नी, इन्द्राणी ~ नृपति सौं यह कहि भाषी ६/७ ।

सचु सुख . माधौ जू मैं अति ही ~ पायौ ४१५० ।

सचे बनाये, लगाये . स्रु ति अवतस ~ परि० १/८४ ।

सचैन सुख के साथ, निश्चिन्त होकर : पीवत हौ रस परम ~ २६३८ ।

सचोप उत्साहपूर्वक भयौ इन्द्र कोप लोप, कहत सबै हा ~ ९५७ ।

सच्चिदानंद सत्, चित और आनन्द से युक्त • ~ तुम देव ११७५ ।

सच्यौ[1] भरा हुआ है हरि मुख कमल ~ रस सजनी २५८२ ।

सच्यौ[2] १ गढा हो ~ काम सँवारि १९८९ । २ समेट लिया लै चढाइ हरि कध ~ री ६०६ ।

सजत १ सज रही है . नख सिख ~ सिंगार भाव सो २६२८ । २ सजाते हुए : धाम ~ नहि हारौ ३७४२ । ३ सजा रहे थे • ~ रति सेज जे निगम नेती २६०४ । ४ सजाने लगे : भूषन ~ नए २१८२ ।

सजति करती है, सजाती है • बहुरि फिरि राधा ~ सिंगार २१८३ ।

सजन १ पति : कहाँ ~ गुरुजन कहँ भाई १६५१ । २ सज्जन मित्र के मित्र ~ के सज्जन ३८०१ ।

सजनी १ प्रियतमा बाम बाम जिन ~ कीन्ही सा० ल० ५८ । २ हे सखी • ~ निरखि हरि को रूप १८७२ ।

सजल १. अश्रुयुक्त हैं • लोचन ~ वचन नहिं आवे ११०३ । २ कान्तियुक्त • ~ मोतिन हार ७७२० । ३ जल से भरे/पूर्ण सजे ~ कलस अरु कदलि वृप ९/१६६ ।

सजहु सजती हो, पहनती हो कहत पुनि पुनि कहा अग अवर ~ २६७२ ।

सजाइ[1] सजाकर • जल-माँझ ~ ५८७ ।

सजाइ[2] सजा, दण्ड । **करौं** ~ दड दूँगा : मेरी बलि औरहि दै अरपत, इनका — ~ ८७२ ।

सजाई सजा : कैसी करा ~ १४७४ ।

सजायौ सजाये गये : भोग अन्न बहु भार ~ ९०० ।

सजावत १. सजाते : कठ हमेल ~ है। २. सजा रहे है · 'सूर' वरष कर भार ~ २९८२।

सजावनौ सजा हुआ है हाटकसहित ~ २८३२।

सजि १. अलकृत होकर, सजकर · अग सुभग ~ ह्वै मधु मूरति ४९। २ अस्त्र शस्त्र मे सज्जित या प्रस्तुत होकर : ब्रज पर ~ पावस दल आयौ ३३०४। ३ सजाकर · अगम सिंधु जतननि ~ नौका १/५५।

सजियौ (सप्रेम) रखी या टाली जाय . नाहिन मीन जीवत जल बाहर जौ घृत मैं ~ ३७२७।

सजी सुसज्जित है : मग ~ अव सैनी ९/११। △ बुद्धि ~ उपाय किना, चतुराई की बहुतै ~ —१६३१।

सजीवनि सजीवनी · जिन स्याम ~ पायौ २/३२।

सजे[1] १. सजे थे . कचन कलस ~ २४। २ सजे हुए · ~ सिंगार नव सात जगमगि रहे १०५२। ३. सजाये थे : पट भूपन जुवतिनि ~ ११८०।

सजे[2] सोचने लगे . बुद्धि मन मन ~ १०६३।

सजोगता सुयोग्यता, तुल्योगिता अलकार : तर ~ आई सा० ल० १६।

सजोर बलपूर्वक : मगल भरे विथक ~ सा० ल० ६०।

सजौं सजूँ, करूँ। ~ मान मान करूँ : ~ — क्यौं, मन न हाथ २०९१।

सजौ सज्जित : देखत ~ पाडु कुमार सा० ल० ७५।

सजौना सजा से, शृगार मे नटवर अँग सुभ सजे ~ २८८४।

सज्जनी सखी : ऐसे भाग हमारे ~ परि० १/२७०।

सज्जा शैया, पराग : आपुन पौढि अधर ~ पर ६५५।

सज्यौ १ सजाया है, कर टाला है · आजु तन राधा ~ सिंगार १२०२। २ सनाया हो : मनु दल ~ मनसिज भूप २४४१। ३ सज्जित फिरन सृगाल ~ सब काटत ९/१५८।

सटकारि हाक दिया सारथी पाइ रज दये ~ हय ४२२१।

सटकि सटक चला, खिसक गया · असुर यह बात लकि गयौ रन तें ~ ४१०८।

सटिया छुटी मे : मैं करि पठयौ ~ १/१९२।

सठ १ अरे धूर्त ! ~ हठ करि तूही पढ़ितहै ८०४। २ मूर्ख सुनै ~ पुरुष बिरानै ३७१५। ३. धूर्त ह · मोऊ ~ जो कमल नयन की कहत बात विपरीति ३८५५।

सठगी शठता . छुटी नहीं ~ ३२६५।

सत[1] वि० सत्य . जो ता ~ सरूप नहिं सूझत २/२५। पुं० सत्यतापूर्ण धर्म या आचरण : सतजुग ~ त्रेता तप कीजै २/२। △ ~ नहि टरई सत्य दृढ़ और अचल रहेगा श्री रघुनाथ प्रताप पतिव्रत सीता ~ — ९/७८।

सत[2] तीन गुणों (सत, रज, तम) मे से एक, सत्त्व : सतगुन ~ गुन फलहिं प्रकासै ९५०; ~ रज तम गुन सुरथा सार ३/१३।

सत[3] १ मास · गर्भ माहिं ~ वर्ष रहि ३/११। २ सौ · ~ जोजन विस्तार ९/८९। ३ सैकड़ों : निरखि लजत ~ मैन २२५१। ~ - सत सौ सौ, सैकड़ों ~ — मदन लजावै २३०८।

सतई सप्तम राशि (तुला), बराबर . ~ तोल, आठ सी मारै सा० ल० ७१।

सतए (जन्मकुंडली के) सातवें घर या स्थान मे · ~ राहु परे हैं ८६।

सतगुरु १ सद्गुरु ने · ~ कह्यौ कहा तोसौं हा १/५९। २ सद्गुरु की : ~ कृपा प्रसाद कछुक तार्ते कहि आवै ४९२।

सतत सदा, निरतर · नैन चकोर ~ दरसन ससि कर अरचन अभिराम २/१२।

सतदल १ सौ दल वाला, कमल . कनक बेलि ~ सिर सहित ३९४७। २ सौ दलों का . राजिव दल इंदीवर ~ १८१३।

सतधन्वा एक योद्धा जिसने सत्राजित को मारा था और इस अपराध के कारण जिसे श्री कृष्ण ने मारा था ~ करतूति करी सो ४१९१।

सतभाइ सद्भाव से, सरलता पूर्वक . लैहै मानि नृपति ~ ४/९।

सतभाई सद्भाव से . भच्छ किए ~ १/१३।

सतभाउ सच्चे भाव से हँसत कहति कीर्वी ~ १७०१।

सतभाए सद्भाव से, सहज स्वभाव से . अनलोकति ~ ३०६२।

सतभामा श्री कृष्ण की आठ पटरानियों मे से एक, जो सत्राजित की कन्या थी ~ सु नाम तेहि कहियत सोभा कही न जाय सारा० ६५२।

सतम सौवाँ · ~ जग्य को जबहिं आरभ कान्हो ४/११।

सतर क्रोधित, कुपित · हमसा ~ होत सूरज प्रभु ५३७।

सतरह सत्रह की सख्या जो अष्टाग योग और नवधा भक्ति की सूचक मानी जाती है। अथवा पाँसे के खेल का वह दाँव जिसमे दो छक्के और एक पजा साथ पड़ते ह रानि ~ सुनि अठारह चोर पाँचौ मारि १/३०९।

सतरहो सत्रहो (सत्रह की सख्या) बरष सोरप ~ न रैहै १७३९।

सतराइ १ अहकार करेगा, ऐंठेगा अघ्य निधि, . पाई क्यौं नहीं ~ १२६७। २. कुपित होकर, क्रोध करके . लाज नहीं तुम आवत बोलत हो ~ १६१८। ३. क्रोधित हो : हमरौं पर ~ गए १७२८।

सतराए चढाये, टेढी किये हम पर रहति भौंह ~ २०५९।

सख्य-भाव भक्ति का एक प्रकार जिसमें भक्त स्वय को अपने आराध्य देव का सखा मानकर उसकी उपासना, आराधना करता है : भक्तनि ~ अनुसरै ९/५ ।

सगवगे सरावोर, लथपथ : ~ सनेह इहाँ परि० १/१९० ।

सगर[1] सब : महरि कही तब ग्वाल ~ कौं ९८४ ।

सगर[2] अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जिनके ६० हजार पुत्रों को कपिल मुनि ने भस्म कर डाला था : सौवौं जग्य ~ जब ठयौ ९/९ ।

सगरी १ सभी : उरहन लै आवनि हैं ~ ३१९ । २ सारी, सम्पूर्ण : काहू कै जागत ~ निसि २५३४ ।

सगरे १. सभी ~ बिगरे के सिर ऊपर ४०३० । २. सारे : ता दिन ते ~ या ब्रज मे रमा रूप दरशायो सारा० ४०६ ।

सगरौ सारा, सब का सब . ~ माखन लै डारि देत ३३६ ।

सगाइ सम्बन्ध : तिनसों कीजै कहा ~ ३५९१ ।

सगाई १ मगनी/विवाह का निश्चय कहुँ मिलि विप्र कहत सबहिन सो बालक करन ~ सारा० ६७६। २ सम्बन्ध, रिश्ता : तियनि कह्यौ जग झूठ ~ ८०० ।

सगुन[1] सगुण, साकार . निर्गुन ब्रह्म ~ लीलाधर २६३ ।

सगुन[2] १ शकुन, शुभ लक्षण इतनौ कहत नैन उरफरके ~ जनायौ अग ९/८३ ।

सगुनई सगुण ही थे 'सूर' ~ जात मधुपुरी निर्गुन नाम भये ३६४४ ।

सगुननि शकुनो, शुभ लक्षणों · इनि ~ कौ यहै भरोसौ ३४५४ ।

सगुनावै शकुन बताता है : उत्तम भाषा ऊँचे चढि चढि अग अग ~ ३४५५ ।

सगुनौती शकुन-विचार : बैठी जननि करति ~ ९/१६४ ।

सगुर अत्यधिक भारी ~ सुमेर प्रगट देखियत ३७११ ।

सगे घनिष्ठ सम्बन्ध रखने वाले मिलि गई ऐसे मनहुँ ~ १७८१ ।

सगौ अपना · तौ लागि यह समार ~ है १/७६ ।

सघन[1] घने झुड (लटें) : ~ आवत जात २१३२ ।

सघन[2] घनघोर ~ बरपै मेह ४ । २ घना : अतिहि ~ बन देखि कै ४३१ । ३ घने ~ कल्प तरु तर मनमोहन २२१९ । ४ पुष्ट, सुदृढ . पीन पयोधर ~ उनत अति २४४७ ।

सघन घन कठोर पयोधर या कुच : पग रिपु लगत ~ ऊपर सा० ल० १० ।

सघन जुन्हाई चाँदनी की पिण्डी ~ है मनौ ११८० ।

सचरे प्रविष्ट हुए, हिलने-मिलने या उठने बैठने लगे जा दिन तै ~ गोपिन मैं ७३५ ।

सचान बाज, श्येन . ऊपर ढुक्यौ ~ १/९७ ।

सचि एकत्र कर । ~ **सचि** संचित कर करके राखे बहुत जतन करि ~ — ३४०० ।

सचिक्कन चिकने सीस ~ केस कैं बिच सीमत सँवारि २६१३ ।

सचिव वजीर, मन्त्री कहौ तौ ~ सबधु सकल अरि एकहिं एक पछारौं ९/१०८ ।

सची[1] १ बनाई, लगाई : जब कर बेनु ~ बलबीर परि० २/१५ । २ सजाई, सज्जित की : जो कुछ सकल लोक की सोभा लै द्वारिका ~ री ४२५६ । ३. संचित की . सुख रासि अतर ~ ११९१ ।

सची[2] इन्द्र-पत्नी, इन्द्राणी : ~ नृपति सौं यह कहि भाषी ६/७ ।

सचु सुख . माधौ जू मैं अति ही ~ पायौ ४१५० ।

सचे बनाये, लगाये . स्तुति अवतम ~ परि० १/८४ ।

सचैन सुख के साथ, निश्चिन्त होकर . पीवन हौ रस परम ~ २६३८ ।

सचोप उत्साहपूर्वक . भयौ इन्द्र-कोप लोप, कहत सबै ही ~ ९५२ ।

सच्चिदानद सत्, चित् और आनन्द से युक्त : ~ तुम देव ११७५ ।

सच्यौ[1] भरा हुआ है · हरि मुख कमल ~ रस सजनी २५८२ ।

सच्यौ[2] १ गढा हो ~ काम सँवारि १९८९ । २ समेट लिया लै चढाइ हरि कर ~ री ६०६ ।

सजत १ सज रही है : नखसिख ~ सिंगार भाव सा २६२८ । २ सजाते हुए धाम ~ नहि हारौ ३७४२ । ३ सजा रहे थे . ~ गति सेज जे निगम नेती २६०४ । ४ सजाने लगे · भूपन ~ नए २१८२ ।

सजति करती है, सजाती है : बहुरि फिरि राधा ~ सिंगार २१८३ ।

सजन १ पति . कहाँ ~ गुरुजन कहँ भाई १६५१ । २ सज्जन मित्र के मित्र ~ के सज्जन ३८०१ ।

सजनी १ प्रियतमा वाम वाम जिन ~ कीन्ही सा० ल० ५८ । २ हे सखी · ~ निरखि हरि कौ रूप १८२२ ।

सजल १. अश्रुयुक्त हैं : लोचन ~ बचन नहि आवै ११०३ । २ कान्तियुक्त · ~ मोतिन हार २२२० । ३ जल से भरे/पूर्ण सजे ~ कलस अरु कदलि-यूप ९/१६६ ।

सजहु सजती हो, पहनती हो कहत पुनि पुनि कहा अग अवर ~ २६७२ ।

सजाइ[1] सजाकर . जल-माँझ ~ ५८२ ।

सजाइ[2] सजा, दण्ड । **करौं** ~ दड दूँगा : मेरी बलि औरहि लै अरपत, इनकी — ~ ८२२ ।

सजाई सजा : कैसी करौं ~ १४२४ ।

सजायौ सजाये गये · भोग अन्न बहु भार ~ ९०० ।

सजावत १ सजाने · कठ हमेल ~ ह। २ सजा रहे हैं 'सूर' बरष कर भार ~ २९८२।

सजावनो सजा हुआ है हाटक सहित ~ २८३२।

सजि १. अलकृत होकर, सजकर · अग सुभग ~ है मधु मूरति ४९। २ अस्त्र शस्त्र से सज्जित या प्रस्तुत होकर · ब्रज पर ~ पावस दल आयौ ३३०४। ३ सजाकर अगन सिंधु जतननि ~ नौका १/५५।

सजियौ (सप्रेम) रखी या डाली जाय नाहिंन सान जीवन जल बाहर जौ घृत मैं ~ ३७७७।

सजी सुसज्जित है सग ~ अब सनी ९/११। △ बुद्धि ~ उपाय किया, चतुराई की · बहुतै ~ —१६३१।

सजीवनि सजीवनी जिन स्याम ~ पायौ २/३२।

सजे[1] १ सजे थे : कचन कलस ~ २४। २ सजे हुए · ~ सिंगार नव सात जगमगि रहे १०५२। ३. सजाने थे पट भूषन जुवतिनि ~ ११८०।

सजे[2] सोचने लगे बुद्धि मन मन ~ १०६३।

सजोगता सुयोग्यता, तुल्योगिता अराकार सर ~ आट सा० ल० १६।

सजोर बलपूर्वक · मगल मरे बियक ~ सा० ल० ६०।

सजौं सजूँ, करूँ। ~ मान मान करौं ~ — क्यौं, मन न हाथ २०९१।

सजौ सज्जित · देखत ~ पाडु कुमार सा० ल० ७५।

सजाना सजा से, शृगार में : नटवर अँग सुभ सजे ~ २८८४।

सज्जनी सखी : ऐसे भाग हमारे ~ पगि० १/२७०।

सज्जा शैया, पराग आपुन पौढि अधर ~ पर ६५५।

सज्यो १ सजाया है, कर डाला है आजु तन राधा ~ सिंगार १२०२। २ सजाया हो . मनु दल ~ मनमिल भूप २४४९। २ सज्जित फिरत मृगाल ~ सब काटत ९/१५८।

सटकारि हाक दिया मारथी पाइ रख दय ~ हय ४२२१।

सटकि सटक चला, खिसक गया असुर यह बात नकि गयौ रन त ~ ४१९८।

सठिया छटी से मैं करि पठयौ ~ २/१९२।

सठ १ अरे धूर्त ! ~ हठ करि तूही पछितैहै ८०४। २ मूर्ख सुने ~ पुरुष दिराने ३७२५। ३ धूर्त ह मोक्ष ~ जो कमल नयन की कहत बात विपरीति ३८५५।

सठगी शठता · छुटी नहीं ~ ३२६५।

सत[1] वि० सत्य जौ ला ~ सरुप नहिं सूझत २/२५। पु० सत्यतापूर्ण धर्म या आचरण : सतजुग ~ त्रेता तप कीजै २/२। △ ~ नहि टरई सत्य दृढ और अचल रहेगा श्री रघुनाथ प्रताप पतिव्रत सीता ~ — ९/७८।

सत[2] तीन गुणों (सत, रज, तम) में से एक, तत्त्व . सनमुख ~ गुन फलहिं प्रकासै ९५०, ~ रज तम गुन मुद्धा सार ३/१३।

सत[3] १ सात गर्भ नाहिं ~ वर्ष रहि ३/११। २ सौ · ~ जोजन विस्तार ९/८९। ३ सैकड़ों : निरखि लजत ~ मैन २२५१। ~ सत सौ सौ, सैकड़ों ~ — मदन लजावै २३०८।

सतई सप्तम राशि (तुला), बराबर ~ तोल, आठ सी मारै सा० ल० ७१।

सतएँ (जन्मकुंडली के) सातवें घर या स्थान में ~ राहु परै ई ८६।

सतगुरु १ सद्गुरु ने ~ कह्यौ कही तोसों हौं १/५९। २ सद्गुरु की ~ कृपा · प्रसाद कछुक तार्न कहि आवै ४९२।

सतत सदा, निरतर नैन चकोर ~ दरसन ससि कर अरचन अभिराम २/१२।

सतदल १ सौ दल वाला, कमल कनक वेलि ~ सिर मडित ३९४७। २ सौ दलों का : राजिव दल इदीवर ~ १८१३।

सतधन्वा एक योद्धा जिसने सत्राजित को मारा था और इस अपराध के कारण जिसे श्री कृष्ण ने मारा था ~ करतूति करी सो ४१९१।

सतभाइ सद्भाव से, सरलता पूर्वक · लेहै मानि नृपति ~ ४/९।

सतभाई सद्भाव से सच्छ किए ~ १/१३।

सतभाउ सच्चे भाव से हँसत कहति कीवौं ~ १७०१।

सतभाए सद्भाव से, सहज स्वभाव से अवलोकति ~ ३०६२।

सतभामा श्री कृष्ण की आठ पटरानियों में से एक, जो सत्राजित की कन्या थी ~ सु नाम तेहि कहियत सोभा कही न जाय सारा० ६५२।

सतम मौर्वो ~ जग्य को जबहिं आरभ कीन्हौ ४/११।

सतर क्रोधित, कुपित हमसों ~ होत सूरज प्रभु ५३७।

सतरह सत्रह की सख्या जो अष्टाग योग और नवधा भक्ति की सूचक मानी जाती है। अथवा पाँसे के खेल का वह दाँव जिसमे दो छक्के और एक पजा साथ पडते हैं · रारि ~ सुनि अठारह चोर पाँचो मारि २/३०९।

सतरहो सत्रहों (सत्रह की सख्या) : दरप सोऽप ~ न रैहै १७३९।

सतराइ १ अहकार करेगा, ऐंठेगा अछय निधि, , गई क्यौं नहीं ~ १२६७। २. कुपित होकर, क्रोध करके लाज नहीं तुम आवइ बोलत हौ ~ १६१८। ३. क्रोधित हो . हमहीं पर ~ गई १७२८।

सतराए चढाये, टेढी किये · हम पर रहति भौंह ~ १२०

सतरात १ इठलाती है का ~ अली बतरावत मा० ल० ८४। २ क्रोधित हो रहे हैं/होते हैं सूर स्याम ~ इते पर १५३७।

सतराति १ क्रोध करती हूँ मैं इन पै ~ २०४३। २. क्रोध करती हो, कुपित होती हो • इतै मान ~ ग्वाल पै १६१८।

सतरानी कुपित या क्रुद्ध हुई • मोपर कत ~ २४३२।

सतराने कुपित या क्रुद्ध हुए • तुमहि उलटि हम पर ~ १५५६।

सतरि टेढ़ी/नाराज हो : त्यौंही त्यौं अति ~ गई १४८०।

सतरुद्र शतद्रु =सतलुज पुनि ~ और चन्दभागा सारा० ८०८।

सतरूपा ब्रह्मा की एक मानसी कन्या जो स्वयंभुव मनु की पत्नी थी स्वयंभुव मनु अरु ~ तुरत भूमि पर आये सारा० ३८।

सत-संगति १ भली संगति, सत्संग अजहूं मूढ करौ ~ १/८६। २. सत्संगति की • नहिं कर लकुटि सुमति ~ १/४८।

सतसार[1] १ वास्तविक तथ्य है भर्त्ता की सेवा ~ ११८०। २ सार तत्त्व, प्राण या जीवन शक्ति : ससि मूसत ~ ३३८६।

सतसारु सार तत्त्व या सार भाग • वा ससि कौ ~ ११९६।

सताए पीडित किये : सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु मदन के ताप ~ ३६३२।

सतावै सताता है दिवस रैनि मैं विरह ~ ३७६५।

सतायौ १. सताया, पीडित किया : दुरवासा अँबरीस ~ १/३८। २, सताया है, पीडित किया है • कह्यौ सुरनि तुम रिपिहिं ~ ९/३।

सतावत १, दु.ख दे रहे हैं • हमकौं तुम बिनु सबै ~ ३६२४। २ सताता है • रे सठ तू जू ~ औरनि ३३३८। ३. सताती है • प्रभु तुव माया मोहिं ~ १/२२६।

सतावति सता रही है, दु ख दे रही है काहे जीव ~ १७१४।

सतावै सताता है, सताप या दु ख देता है मरन तैं अधिक यह दुख ~ ४२१३।

सति सीधे-सादे, सहज, सच्चे : मैं ~ भाव मिलो हँसि तुमकौ २७३३।

सति भामा दे० सतभामा ~ करि सोक पिता कौं ४१९१।

सती[1] १ सती, साध्वी। २ दक्ष प्रजापति की कन्या पार्वती, जो भव या शिव जी को ब्याही गई थी • ~ दच्छ की पुत्री भई ४/५।

सती[2] सच्चा, सत्यनिष्ठ : जती ~ तापस आराधैं १/२६३।

सत्त सत्य धर्म ~ मेरे पितु-माता ४७३८।

सत्य १ अमल, यथार्थ • कौन ~ कछु मर्म न पावत ४१६५। २ सच्ची या सच्चे : ~ प्रीति के वाहक १/१९।

सत्यव्रत एक राजा जिसने 'प्रलय' देखने की अभिलाषा या इच्छा व्यक्त की थी • ~ कह्यौ परलै दिखायौ ८/१६।

सत्यवती मत्स्यगधा नामक धीवर कन्या, जिसके गर्भ से कुमारी अवस्था मे ही पराशर के सयोग से कृष्ण द्वैपायन व्यास की उत्पत्ति हुई थी • ~ मच्छोदरि नारी १/२२९।

सत्यव्रत त्रेतायुग मे सूर्यवश के पचीसवें राजा जो त्रय्यारुण के पुत्र थे। आगे चलकर इन्हीं का नाम त्रिशकु पडा : ~ राजा रविवशी पहले भए मनु वश सारा० ९१।

सत्यहि सत्य ही : पूरन कीन्हौ नेह रुक्मनी तैं ~ जान्यौ ४१८८।

सत्यहू सत्य ही ~ सब वचन झूठौ परि० २/१९९।

सत्या[1] सीता ~ ब्याहि बहुत सुख कीन्हो मथ्यो नृपति को मान सारा० ६५६।

सत्या[2] दे० सतभामा हरि चरननि ~ चित दीन्हौ ४१९०।

सत्र उदारता : कर गहि ~ सात परि सारँग परि० २/७३।

सत्राइ शत्रुता • उनकै मन नाहीं ~ ९/५।

सत्राई शत्रुता मानत है ~ ४/५।

सत्राजित एक यादव, जो सत्यभामा के पिता और कृष्ण के श्वसुर थे, इन्होने सूर्य की तपस्या करके दिव्य स्यमतक मणि प्राप्त की थी : ~ अपनी तनया को दीन्हे त्रिभुवन राय सारा० ६५२।

सत्रुघन शत्रुघ्न, सुमित्रा से उत्पन्न राजा दशरथ के सबसे छोटे पुत्र • नाहीं भरत ~ सुन्दर जिनसौं चित्त लगायौ ९/१४६।

सत्रुघ्नहि शत्रुघ्न ही : ~ अनिरुध कहियतु है सारा० १५९।

सत्रुहन शत्रुघ्न तैसेइ लक्षमण भरत ~ खेलत डोलत पास सारा० १८३।

सत्वर शीघ्र ही • ~ सूर सहाइ करैं को ३७४५।

सथन साथ मे रमत सखी बियौ न ~ परि० १/९५।

सथिया स्वस्तिक चिन्ह (卐) • द्वार ~ देति स्यामा सात सींक बनाइ २६।

सद[1] १. शीघ्र ही, तत्काल • करहु कृपा अपने जन पर ~ ९८१। २ ताजा • माखन रोटी ~ दही, जेवन रुचि उपजाय ४३१।

सद[2] उत्तम, अच्छी जातें मेरी ~ गति होइ १/३४१।

सदका न्यौछावर सूरदास प्रभु अपनें ~ घरहिं जान हम दीजै १५७४।

सदन १ घर, भवन। २. घर मे ~ पैठि मन चोरि लियौ उन २५३३। ३ घरो को • सुख ~ सात सघाने १/६०।

सदननि घरो मे : सबे ~ आइ पहुँचे ८५०।

सदनहि भवन मे सारग ~ ले जु बसनि गई २७९८।

सदबर्ग गेंदे का फूल मनहुँ सीस ~ बाँधि कै परि० २/६४।

सदय दयालु, द्रवित • ~ भए गोपाल १०३१। ~ **हृदय हम पर करौ** हम पर दयावान् हो जाओ या हम पर दया करो ~ — ११८०।

सदल १. दल युक्त . निमि दै द्वार कपाट ~ २५२४ । २. वही दल (अधर) अधर समुद्र ~ जो सहसा सारा० ९८९ ।

सदाइ, सदाई सदैव ही : भक्त काज हरि करत ~ ४३०३ ।

सदाई सदा ही : कर अबुज मैं वास ~ परि० २/१८ ।

सदारस परमआनन्द रस की · मधुकर निकर आय पीवन रस सुखद ~ मेल सारा० ९९५ ।

सदासिव शिव, महादेव . पाइ सुधि मोहिनी की ~ चले ८/१० ।

सदेहियाँ देह या शरीर धारण करके, प्रत्यक्ष या मूर्तिमान होकर मानौ चारि हस सरवर तें वैठे आइ ~ ९/१९ ।

सद्य १ ताजा माखन रोटी ~ जम्यौ दधि २१२ । २. ताजी · लुचुई लपसी ~ जलेबी २२७ । ३ ताजे · ~ फल तरुनि प्रति लटकि लागे ९८८ ।

सद्रूप उत्तम आचरण वाला . साधु सील ~ पुरुष को १/२०३ ।

सधति अपनाये है हमहिं मूरखि वदति आप ये ढग ~ १७३० ।

सधायो सधाया, साधने को प्रवृत किया राधिका मौन-व्रत किनि ~ १७२९ ।

सधावन साधने, (प्राणायाम करने) पवन ~ भवन छुड़ावन ३५१३ ।

सधे सिखा सिखाया, अच्छी तरह सधा हुआ कवहुँक ~ अस्व चढि आपुन नाना भाँति नचावत सारा० १९० ।

सध्यौ ग्रहण किया : ~ नहिं धर्म सुचि सील तप व्रत कछू १/११० ।

सनदन कपिल मुनि के पूर्व साख्य मत का प्रवर्तन करने वाले ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों मे से एक : सनक ~ सनतकुमार वहुरि सनातन नाम ये चार ३/६ ।

सन[1] एक पौधे से निकलने वाले रेशे जिनसे रस्सी आदि वनती हैं ~ अरु सूत चीर-पाटवर ९/९८ ।

सन[2] से, के साथ : नूतन नेह कियौ कुविजा ~ ३८४४ ।

सनक ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों मे से एक जो विष्णु के सभा-सद माने गये है : ~ सनदन सनतकुमार वहुरि सनातन नाम ये चार ३/६ ।

सनकादि ब्रह्मा के चार मानस पुत्र (सनक, सनदन, सनतकुमार और सनातन) . ब्रह्मादिक ~ महा मुनि ८७७ ।

सनकादिक दे० सनकादि सिव ~ नारद सारद १९९१ ।

सनकादिकन दे० सनकादि ~ कह्यौ या भाइ ११/४।

सनकादिकनि दे० सनकादि ~ कह्यौ नहिं मान्यौ ३/७ ।

सनतकुमार, सनत्व कुमार ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों मे से एक, ये सवमे पहले प्रजापति कहे गये हैं सनक सनदन ~ वहुरि सनातन नाम ये चार ३/६ ।

सनमेप सम्मुख, सामने · बोलि धौं हरवाइ पूछै आपनै ~ ४२५१ ।

सनाक सनकी, मस्त · ~ खेलार होरी की २८७२ ।

सनातन[1] सदा रहने वाला, नित्य, शाश्वत . आदि ~ हरि अविनासी ३ ।

सनातन[2] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों मे से एक सनक, सनदन सनतकुमार वहुरि ~ नाम ये चार ३/६ ।

सनाथ १ अभीष्ट प्राप्ति मे जिसका अस्तित्व सार्थक या सफल हो गया हो भए सखि नैन ~ हमारे ३०३२ । २. सनाथ . मोहिं ~ कियौ सब भाँति ७/२ ।

सनाथा सनाथ : धरनि पावन करी भए ~ ३०८३ ।

सनान स्नान तीरथ कोटि ~ करैं फल जैसो दरसन पावन २/१७ ।

सनाल नाल सहित : जाइ मिले सम समिहिं ~ ४११२ ।

सनाह वख्तर, कवच दादुर पहिरे विविध ~ ३३१३ ।

सनि[1] मिल कर अब सो रहीं दुख मैं ~ परि० १/१३९ ।

सनि[2] शनि, नवग्रहों मे से सातवाँ ग्रह, जो अशुभ और कष्ट दायक माना जाता है · छठयेँ सुक्र तुला के ~ जुत सत्रु रहन नहिं पैहैं ८६ ।

सनी मग्न हो गई, मिल गई ~ सनेह स्यामसुन्दर सौं ३५४१ ।

सनीचर दे० सनि . कर्म भवन के ईस ~ स्याम वरन तन हैहैं ८६ ।

सनेह प्रेम, स्नेह . प्रेम मगन सब सहित ~ ११८० । २ प्रेम का सुमिरि ~ कुरग को स्रवननि राच्यौ राग १/३२५ । ३ प्रेम या आत्मीयता के सम्बन्ध . झूठे सवै ~ ८०१ । ४ प्रेम से मिले जौन ~ २२११ ।

सनेहिनि प्रेमिका . कान्ह ~ आइ ३२०० ।

सनेहि प्रिय लग रही है . केकी वोलनि पिक सुर ~ २८५० ।

सनेही प्रेमी : राधा मोहन सहज ~ १९०८ ।

सनेहु स्नेह, प्रेम जासों जुर्‍यौ ~ ३५७३, दरजन कियौ ~ ३७८५ ।

सनेहौ स्नेह, प्रेम और आत्मीयता का सम्बन्ध सवनि ~ छाँडि दियौ १/२९८ ।

सनै[1] १. विंधे . कैसें जोग ~ ३६६६ । २ मिले . काँच कचन सर्यौ ~ परि० १/४१ ।

सनैं शनैं, धीरे । ~ सनैं धीरे-धीरे ~ — तें दिखरैं ३/१३ ।

सन्नाह कवच, वख्तर कवच ~ सो छुटे तन तें २१२९ ।

सन्मुखहि सम्मुख हो, समक्ष ही 'सूर' छवि ~ धावत २२८७ ।

सन्या सेना . वने पट दल सहस कुन्त ~ १०५२ ।

सन्हारैं सहार करते ही अब ये करैं आपने मन कुरग, मोम वनै ~ ८३३ ।

सपनेहूँ स्वप्न (मे) भी ~ मैं नहीं सीस नाऊँ ४२०९।
सपनेहुँ, मपनेहु स्वप्न मे भी • मैं जिनकौं ~ नहिं देख्यौ १७३१।
सप नेहूँ, सपनेहू स्वप्न मे भी : ~ नहिं पावैं ६३१।
सप नैं १. स्वप्न ~ कौ सुख लेत ९०७। २ स्वप्न मे ~ कूदि पर्‌यौ ५१७। ३ स्वप्न मे भी : सूर स्याम ~ नहिं दरसत ४६८। ४ स्वप्न का मा मन ~ डर छायौ ४२३८।
सपनैं ही स्वप्न मे ही आजु मिले ~ २०५०।
सप नैंहु, सपनैंहूँ स्वप्न मे भी • ~ देइ न दिखाई ३६३।
सप नैं स्वप्न सौंतुष की ~ ४३९। २ स्वप्न मे दुख-सुख ~ जोइ ३/१३।
सपनैंहुँ, सपनैंहूँ स्वप्न मे भी आन देव ~ न जानौ ११७४।
सप नौ सपना, स्वप्न : ~ आहि कि सत्य ईस यह २१२३। ~ प्रगटायौ स्वप्न दिखाया : सूर स्याम ~ — ९३३।
सपाट बराबर, ममतल। △ **पारि** ~ तोड-फोड बराबर करके • — ~ चले तब आए ३१८।
सपूत सुयोग्य पुत्र पूत ~ भयौ कुल मेरैं ३२९।
सपूती सुयोग्य पुत्र उत्पन्न करने वाली : लछिमन जनि हौं भई ~ राम-काज जो आवे ९/१५२।
सपूतौ सुपुत्र कहा बहुत जो भए ~ एकै बसा ४३१।
सप्त १. सात • ~ दिवस कर पर गिरि धार्‌यौ ८७३। २ सातों ~ अतीत अनागत आवत ६४८।
सप्तक सगीत मे सात स्वरों (स, ऋ, ग, म, प, ध, नि) का समूह ~ भेद दिखावत १३७६।
सप्तदस सत्रह : प्रद्युमन लरे, ~ दो दिन सारा० ७९०।
सप्त पुरुष सात पीढी तक ~ लौं उधरै सोइ ७/२।
सप्तमो सातवीं राशि (तुला=) तुल्य, बराबर दुतिय रास मे मिलत ~ सारा० ९५३।
सप्त रिषि सात ऋषियों का समूह, इनमे गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, यमदाग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि आते हैं ~ नाव मैं बैठि आवैं ८/१६।
सप्त सुरनि १ सातों स्वरों (स, ऋ, ग, म, प, ध, नि) से ~ मुरली बाजति ११३७। २. सात स्वरों • ~ की जाति अनेक ११८०।
सफरी[1] अमरूद ~ सेव छुहारे पिस्ता २१२।
सफरी[2] मछली • भू सुत तृतिय तलफ ~ भौ सा० ल० ४०।
सबधु भाई-बन्धुओं के साथ • कहौ तौ सचिव ~ सकल अरि ९/१०८।
सबई सभी, सारा : जागे जगम जीव पसु खग और ब्रज ~ परि० २/१।
सबद शब्द, ध्वनि, आवाज • ~ सुनत अकुलाई १३२२।
सबन १ सभी, सब : यहि विधि करि उपदेश ~ को सारा० ११२। २ सभी का • एकहि लग्न ~ कर पकरे एक मुहूर्त्त विवाये सारा० ६५८।
सबनि १ सब, सभी : हरी विधाता बुद्धि ~ की ९/९८। २ सभी का हरत ~ मन १५०। ३ सभी के : बहुरि बहु रूप धरि हरि गए ~ घर ४१९४। ४ सभी को करि सनमान ~ बैठाये ४/५। ५. सभी ने ~ कह्यौ, देउ हमैं सिखाइ ७/२। ६ मबमे • भयौ इच्छवाकु ~ सिरमौर ९/२६। ७. सबसे, सबके साथ • स्याम ~ मिलि ४३७।
सबर धैर्य, सन्तोष : ~ स्नेह तज्यौ पितु-मात ९/३८।
सबरी शवर जाति की नारी, जो अत्यन्त राम भक्त थी, जिसके जूठे बेर श्री राम ने खाये थे : दरसन दे ~ उद्धरी ९८१।
सबरे सब, समस्त • सूर ~ लच्छनन जुत सा० ल० ९४।
सबल १ प्रबल, बलवान् : सू प्रभु की ~ माया १/४५। २ कठोर मुरत नहिं नैंकु अति ~ जी के २१२९। ३. सशक्त सुभट अनेक ~ दल साजे ९/८३। ४ भारी क्यौं गिरि ~ धर्‌यौ कोमल कर ९६६।
सबहि १ सभी का • तुम्हरैं भजन ~ सिंगार १/४१। २ सभी के : पेला ~ निदरिहौं १९४३।
सबहि[2] सारा • उन हमरो ब्रज ~ बचायो सारा० ५५३।
सबहि[1] २ सारे • ~ घोष मैं भयौ कुलाहल २०।
सबहि[2] सभी का • ~ बसन हरि लीन्हो सारा० ५००।
सबहिन १. सभी • जाकी नित्य प्रशसा तुम करि ~ कुं सुनायो सारा० ७१९। २. सभी ने ~ यह मॉग्यो बिनती कर सारा० ४८०।
सबहिनि १. सब, सभी ~ तैं सुदर सुकुमारी ४२०२। २. सभी की • बिसरी सुधि बुधि गति ~ ११८३। ३. सभी के • ~ मन आनद भयौ परि० १/४४। ४ सभी ने : इन ~ लखि ताहि लई १७२८।
सबही १. सब, सभी : हैं ~ भरि पूरि ३८४३। २. सब कुछ विद्यमान ~ इनि देखत १९९९। ३ सभी का : मोहित विकल जानि जिय ~ ९/२६। ४ सबने, सभी ने यह विपरीति सुनि जब ~ ९/४४।
सबहीं १. सभी, सब भली कही ~ सुधि भूली ८१३। २ सभी को : परम स्वाद ~ सु निरतर १/२। ३. सभी ने • राम कौं देखि सनमान ~ कियौ ४२२३।
सबार प्रात (बहुत जल्दी या शीघ्र) • और बार तुम उठत ~ ४०३।
सबारी सवेरे • अति उठी ~ १९७०।
सबारे सवेरे (पहले ही) • पारन की विधि करौं ~ ९८४।
सबारे १. सवेरा, प्रातः काल, सुबह • आए तब के होत ~ ४२३। २ शीघ्र ही, जल्दी ही • घर के कहत ~ काढौ १/८६।
सबारैं प्रात काल ही : भवन ~ लेहु ३५२९।

सवारे प्रात काल ही : एक दिवस गयौ गाइ चरावन ग्वालनि सग ~ ४२१ ।
सवारचौ (इतने) सवेरे • वोलि उठे वलराम, स्याम कत उठे ~ ४३१ ।
सवास्मन वासनात्मक कर्मों को • ~ नाम हरैं जदुराई १/९३ ।
सविता सूर्य : सूर महरि ~ सौं ७०२ ।
सविताहि सूर्य को • वार वार ~ मनावैं ७९९ ।
सवुज हरा • ~ विछौन विछायौ परि० १/१०७ ।
सवेर जल्दी, शीघ्र सवरि न करौ ~ ४८९ ।
सवेरी प्रात काल : जदुपति आवहिं नेंकु ~ ४१०२ ।
सवेरो सवेरा • ब्रह्म मुहूरत भयौ ~ जागे दोऊ भाई सारा० २१४ ।
सवेरौ शीघ्र, जल्दी • जो कोऊ तेरौ हितकारी सो कहै काढि ~ १/३१९ ।
सवै १ सव, सभी । २ सव कुछ मच्छ-अभच्छ ~ सो खाई ६/४ । ३ सवको, सभी को : मोहन ~ वुलायौ ४३६ । ४. सारी, समस्त : आलस वलित ~ निमि जागे २६४५ ।
सवो सव लेत न सकल ~ ते ३३०१ ।
सव्द १. आवाज, ध्वनि • सुनत ~ तिहिं छिन समीप मम आए १७८ । २ वाणी • जाकौ रूप ~ नीकौ ३८८७ । ~ **पुकारे** वाग देने लगे • तमचुर जहँ तहँ ~ — २४७९ । △ ~ **लाग्यौ** शब्द सुनाई पडने से, शब्द के लग जाने से • तवहिं तनु सुधि तजे ~ — १०६३ ।
सव्द-आघात शब्दों का आघात, जोर का शब्द करति ~ ८७७ ।
सव्दहि शब्द ही ~ सव्द भयौ ४/१३ ।
सव्दादि शब्द आदि : मन इन्द्री ~ पच २/३६ ।
सव्दादिक शब्द आदि • जामैं ~ विस्राम ४३०१ ।
सव्दाभूषन शब्द प्रमाण : सुद्ध सवन को लच्छन जानत ~ जैसौ सा० ल० १०३ ।
सभा १ राजदरवार, राजसभा • द्रुपद सुताहि दुष्ट दुरजोधन ~ माँहि पकरावे १/१०० । २ समूह, मडली • डासन कौमि कामरी ओढन बैठन गोप - ~ हीं २८२६ ।
सभागि भाग्यशाली ऐसे वडे ~ २२४५ ।
सभागी १ , भाग्यशालिनी भाग्यवती : मैं भई ~ ६८ । २ भाग्यशाली • धन्य धन्य वे परम ~ ८०० ।
सभागे भाग्यशाली, भाग्यवान् दरस परम हम भए ~ ४२२८ ।
सभासद दरवारी पोच पिसुन लस दमन ~ २७७५ ।
सभीत डरा हुआ • अकुटित रटत ~ १/४८ ।
सभीति भरा करते हैं, भडकाते रहते हैं • मँचरे स्रवन समीप ~ २७७५ ।
सम[1] १ समतल नृपति कह्यौ मारग ~ आह ५/४ ।
सम[2] वि० समान • और देव तुम ~ कोउ नाहीं ८१७ । अव्य० १. समान, वरावर : रक सुदामा कियौ इद्र ~ १/९५ । २ वरावर हैं • हारि जीति ~ दोऊ इनकें २३०९ । ३ वरावर अथवा सम अलकार 'सूर' स्याम सुजान ~ सा० ल० ३९ ।
सम[3] १ अन्त करण या इन्द्रियों का सयम, मन को विषयों से रोकना • ~ -दम उनहिं सग १/२९० ।
समए समय गत स्वारथ ~ ३५०६ ।
समकरि समान करने को • निरखि ~ किया चाहत २१३३ ।
समझाइ समझाकर मोकौं यह ~ सिधारो १५२४ ।
समझाइहौं समझाऊँगा प्रीति की रीति ~ प्रथम उन ४२०९ ।
समझाऊँ समझा लेती था अपनोइ मन ~ २३९४ ।
समझायौ १ समझाती रही जव मैं कहि ~ ९/११० । २ समझाया आज्ञा पाय चले निज पुर को प्रभुहिं गीत ~ सारा० २५३ ।
समझावत समझाती है मुख चुवत जननी ~ सारा० १६७ ।
समझावहु समझाओ • एक वार ~ सूरज ३५९६ ।
समझैगी समझेगी नागरि नारि भले ~ २६१८ ।
समझौ समझो, समझना हौं हनुमत कपट जिनि ~ ९/८७ ।
समत समस्त, वुद्धि युक्त सरम ~ सुर लीला गाव ११०७ ।
समतुल वरावर तो ~ कन्या किन उपजी ९/१३४ ।
समदत १ सौंपते हीं, समर्पित करते ही ~ भई अनाहत वानी ८ । २ मिलते हुए तनया जामातनि कौं ~ नैन नार भरि आये ९/२७ ।
समदर्सी सवको वरावर या समान समझने वाला ~ है नाम तुम्हारौ १/२२० ।
समदि खिला पिला कर, (नेग पाने वालो को) वश मे करके (भूत प्रेतों को) ~ छतीसौ पोन ४० ।
समदृष्टि वरावर देखने वाले ह जौ ~ आदि निर्गुन पद ३७९१ ।
समदे मिले, भेंटे • यह कहि कै ~ सकल जन ४२९४ ।
समदौ भेंट करके ~ सखा स्याम यह कहि कहि २९९० ।
समयें समय सुनि या ~ नहिं आवत २७८९ ।
समयौ अवसर, समय यह ~ मन भावत परि० १/१२२ ।
समर[1] स्मर, कामदेव • नसि अरु ~ लजाइ ६२६ ।
समर[2] १ युद्ध : दरवस ~ करत हठ हम सन २११७ । २ युद्ध को • ~ औन ताती १/२३ ।
समरत्थ समर्थ पार्थ तुम नहीं ~ मम युद्ध कौ ४२१५ ।
समरथ १ समर्थ ओर न ~ कोई १/११८ । २ समर्थ है/हैं तिहिं काटन कौं ~ हरि १/६८ ।
समरपे समर्पित किया जिन तन धन मोहिं प्रान ~ सील सुभाव वढाइ ९/७ ।

समरप्यो, समरप्यौ समर्पित कर दिया है . तन आतमा ~ तुमकौ ४१७१।

समरारी कामदेव के शत्रु, शिव : ~ कौ सुजस-कुजस की २६४८।

समर्पत समर्पित करते हैं : एकनि कौं गौ-दान ~ २५।

समर्पन समर्पण, अर्पित : तन-मन-प्रान ~ कीन्हौ १९०९।

समर्पि अर्पित करके : चुबन सर्पि ~ सँवारैं २८२२।

समर्पौ अर्पित कर दो : सबै ~ सूर स्याम कौं १/२६६।

समर्प्यौ समर्पित कर दिया : हरि माँग्यौ उन लेजु ~ सारा० ५०२।

समष्टि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, व्यक्ति का विपरीतार्थक : सूरदास सोई ~ करि व्यष्टि भाव मन लाव २/३८।

समसरि समान, बराबर मो ~ कोउ नाहि ५८९।

समाइ १ विलीन हो जाती है · आवै लहरनि उठैं ~ ३६१०। २ लीन हो जाय : हरि पदहि ~ ३/१३। ३ समा जाता है, विलीन हो जाता है : ज्यौं पानी मैं होत बुदबुदा, पुनि ता माहिं ~ ४३०२। ४ समाता है . घट न सिंधु ~ ३७३२। ५. समायेगी : अनत न कहूँ ~ ९/३५। ६ समा रही थी : विपति न हृदय ~ ९/५२। ७ समा सकता है, समाये सूरदास सो ~ कहाँ लौं ३९२५। ~ **गए** घुस गये, प्रविष्ट हो गये · आतुर मदिर — ~ ७४९६। **गयो** ~ प्रविष्ट हो गया . — ~ धेनु पति ह्वैके १३८७। **बात** ~ बात बैठ जाये या समझ मे आ जाये जौ तेरैं मन — ~ ८३८।

समाई १ प्रवेश हुआ है . सारग अग ~ सा० ल० ४५। २ मिल गई चोंच एक पहुनी लगाई इक आकास ~ ४२७। ३, समा . रहे उपरना बीच ~ १९९०। ४ समाता है आनद उन न ~ २२। ५ समाती है . फूले अग न आजु ~ २२१३। ६. स्थान मिला है : अरु श्री निकट ~ १/६३। △ **फूल्यौ न** ~ फूले नहीं समाये . जनक सुता चरन वदि ~ —९/९६।

समाउँ समाता है, उमड पड़ता है ह्याँ के बासी अवलोकत हाँ आनँद उर न ~ ९/१६५।

समाऊँ समाती हूँ। △ **काहूँ सुख न** ~ किसी का मुँह बद नहीं कर सकती : — ~ १६८३।

समाए १. भर सका, समा सका . अति बिसाल चचल अनियारे हरि हाथनि न ~ ६७५। २ समा लिया : पुनि सबको रचि अड आप मैं आपु ~ २/३६।

समागम मिलन, सगम . सूरदास प्रभु सत ~ आनद अभय निसान बजावैं १/२३३।

समाज २ समाज। २ सभा राखी लाज ~ माहिं १/३०। ३ ढेर, बहुत . दुःख बिसरयौ सुख करत ~ ८७०।

समाज-साज-स्वर स्वर का तालमेल बैठाकर : प्रथमहिं सँचे ~ ११३९।

समाजहि समाज मे : जहँ लीला रस सखी ~ ३७१२।

समाजैं सामग्री : पाछैं धरि राख्यौ छपाइ कै उबटन तेल ~ री १८६।

समाजै समाज मे : अस्तुति करत बहुत पूजा द्विज अति आनद ~ सारा० ८३४।

समात १ प्रवेश पा सकता है : निरगुन कहाँ ~ ३५४५। २ मिल जाता है वह तौ जाइ ~ उदधि मैं २२३०। ३ रुकता या ठहरता है लोचन जल न ~ २४५७। ४ समाता है प्रफुलित अग न ~ हियौ १४३। ५ समाती है, समा पा रही है · चमक मेरी पुतरी नहिं ~ २१७८। ६ आ जाता है महत सोइ जु ~ अँकौरी ३९७१। ७ समाते हैं, समा रहे हैं नैना घूँघट मैं न ~ २३४६। **हरष नाहि** ~ फूले नहीं समाते हैं · रहत निसि दिन सग हरि के, — ~ २३०९।

समाति समाती है : सपति घर न ~ ३६।

समातौ समा जाता, समाहित होता यह ब्यौपार उहाँ जु ~ ~ ३६६३।

समाधा[1] समाधान मन मन करत ~ ७०५।

समाधा[2] समाधि नहि पावत जो रम जोगी जन, जप तप करत ~ १६९७।

समाधानहिं समाधान के, निराकरण के · इते पर बिनु ~ क्यौं धरैं तिय धीर ३४२७।

समाधि १ ईश्वर के ध्यान मे मग्न होना, समाधि सिव जिहिं ~ नहिं ध्यान टरी १/२४९।

समानी १ समा गई, समा गई है : इन नैननि माँझ ~ १६५७। २ व्याप्त है . जाकी ज्योति जल थलहिं ~ २५८।

समाने[1] १ छिप गया है : ससि घन रूप ~ १७९८। २ प्रविष्ट हुए : स्याम-रूप-बन माँझ ~ २३९२। ३ समाई हुई है सोभा सिंधु ~ ३८४०। ४ समा गये . कबहुँ अघासुर बदन ~ ४९७। ५ समाये : रहते पेट ~ २२८९।

समाने[2] बराबर, तुल्य छिन युग बरष ~।

समानै[1] समान है यह मन एक, एक वह मूरति भृंगी कीट ~ ३९९०।

समानैं[2] समा गये पद आनद ~ ३५३०।

समानै समान हैं : भृगी कीट ~ ३८०२।

समानौ लीन हो गया : जो जिहि रूप ~ १६६७।

समान्यौ १ समा गया, भर गया : तिहूँ भुवन भरि नाद ~ १०६७। २. समाया हुआ (है) · है मन माहैं ~ ३६९६।

समाय १ समाकर : जल कौ रूप तुरत ह्वै गई वह हरि के रूप ~ सारा० ५६। २ समाता है : आनद उर न ~ सारा० ९०६। ३ समा/लीन हो (जाय) जाइ ~ सूर वा निधि मै १/८१।

समाया समाया हुआ है जगत सब प्रकृति ~ ११९५।
समायौ १ समा गया, डूब गया · तरि नहिं सक्यौ ~ १/६७।
२. घुस गया · तब तनु तजि मुख माहिं ~ १/२२६।३.
समाहित कर लिया : लीन्हो खेंचि भृगुपति को अपने रूप ~ सारा० २३८।
समावत समाता है : उर आनँद न ~ ४७९।
समावनौ सुहावना है ससि गुन रूप ~ २८३२।
समावै १ समा जाय, भर जाय . आधे मैं जल-वायु ~ ३/१३।
२ समाता है प्रेम हरि हियें न ~ री ६२९। ३. समाती है : माया हरि पद माहिं ~ १२/४।
समासोक्ति संक्षिप्त कथन, समासोक्ति अलकार : ~ कर सूर भृग कीं सा० ल० २४।
समाहि १ पहुँचकर, जाकर सूरज मरन ~ २४७२। २ समा जाते है · उतपति प्रलय ~ ४९२।
समाहिगे समायेंगी · कहौ मधुप कैसें ~ ३६०४।
समाहि १ समा जाओ, समाहित हो जाओ या मन सग ~ ४०२४। २ समाता : दुख क्यों हृदय ~ ३२३०।
समाहीं १. समा जाती है : जैसें नदी समुद्र ~ २२१६।
२. समायेगा, सहेगा : ये दुख कौन ~ ३९२४। ३ समाते · ग्वाल उमँगे न ~ ८४१।
समाहु समाओगे · तहँ तुम क्योंऽव ~ ३२३३।
समिति समन्वय · दुख-सुख विरह सँजोग ~ जनु २३१३।
समी मेंवडयों को देखत हरष होत है ~ १२१३।
समीक एक ऋषि, जिसके गले मे परीक्षित ने मरा हुआ सर्प डाल दिया था, जिससे क्रुद्ध होकर ऋषि के पुत्र ने उन्हे तक्षक नाग द्वारा डसे जाने का शाप दिया था : रिषि ~ कैं आस्रम आयौ १/२९०।
समीति प्रीति या मित्र भाव से : बातें लागे करन ~ ३५९३।
समीप १, पास, नजदीक। २ सामने, तुलना मे . हरि ~ समता नहिं पावत ३७२२।
समीपें पास/निकट ही . सुभग कर आनन ~ मुरलिया इहिं भाइ ६२७।
समीर हवा, वायु . रघुपति रिस पावक प्रचंड अति सीता स्वास ~ ९/१५८। २. फूँक मुरली बदन ~ बहै ६४६।
समीरहि वायु को : दिसि दिसि सीन ~ रोकति ४११८।
समीरे वायु, समीर तहाँ कोमल मलय ~ परि० १/५९।
समुझ स्त्री० समझ, अक्ल, बुद्धि · ऐसी ~ तुम्हारी ३९०९।
क्रि० स० १. समझ कर . निज स्वारथ रम रीति ~ उर ३८६२। २ समझा जाय ~ इनकों आन सा० ल० ६९।
समुझत १ समझ कर कुंती-सुत सुभाव चित ~ मा०ल० ४। २ समझता है : ~ नाहिं दीन दुख कोऊ ४१६९।
३ समझती है . कहत सुनत ~ मन महियाँ ३५६६। ४ समझते : भली बुरी कछु ~ नाहीं ३९५०। ५ समझते हो : तुम सब ~ बातैं ३९६१।
समुझति समझती हैं : तुम पुनि कहत सुनति हम ~ ३५७६।
समुझति १ समझती हूँ . तेरी सौं मैं कछू न ~ १७०१। २. समझती हैं : अब ~ कछु तेरी बानी १६६९। ३ समझती है : ~ नाहिं न प्रीति रीति २५९४।
समुझहीं समझती हैं : साधु असाधु न ~ २९१४।
समझहु समझो : तिनसौं कहत मनहिं मन ~ ३८४३।
समुझाइ समझाकर : दूत कह्यौ ~ ५२५।
समुझाई समझाया-बुझाया : मानैं नहीं कितौ ~ ३९१।
समुझाई १ समझाकर : कहत सूर ~ ३९४०। २ समझाने से भी ~ समुझति नहीं १६४०। ३ समझाया : मैं ~ अति अपनौ सौं ४१२५।
समुझाऊँ १ समझाऊँ : कहो तौ कहि ~ ९/१७२। २ समझाता हूँ अरु ताकौ ब्यौरौ ~ ३/१३।
समुझाए १ समझाया : तब सखियनि गहि भुज ~ २८२८।
२ समझाया है · जिहिं विधि मुनि ~ ३८६६।
समुझाएहुँ समझाने पर भी सठ ~ समुझत नाहीं ८०३।
समझात समझाता है तहँ षटपद ~ ३७१२।
समुझायें समझायें सो का कहि ~ सा० ल० ६२।
समुझायौ १ समझाया मैं मन बहुत भाँति ~ १८८९। २ समझाने से परत न मन ~ ४२४६।
समुझावत १ समझाता है, समझा रहा है : सूर इंद्र सेवनि ~ ९२९। २ समझाती है · का ~ नीठौ सा० ल० ८९।
३ समझाते हैं, समझा रहे हे · तब नदहिं हलधर ~ ३१५। ४ समझाते हो तुम काहैं न ~ १५७२।
समुझावति समझाती हैं गरजत गुहा सिंह ~ ४१४६।
समुझावति १ समझाती हूँ जद्यपि मैं ~ पुनि पुनि २३६१।
२ समझाती है चोरी की बातें ~ ३९१।
समुझावहीं समझाता या प्रबोधता है · ज्यों ज्यों सूर दुष्ट ~ त्यौं त्यौं जिय खरई ३३५८।
समुझावहु १ समझाओ वे सुनिहैं उनकों ~ ३८७१। २ समझाते हो · ऊधौ हमहिं कहा ~ ३७९८।
समुझावे १ समझाने लगी : अति दारिद्र दुखित जब जाने नव पत्नी ~ सारा० ८०७। २ समझाये · षटपद कौ ~ ३९६४।
समुझावैं १ समझाती है बार बार ~ १९२१। २ समझायें क्यों ~ छपद पठहिं ३५३४। ३ समझाते हैं · बार बार कहि कहि ~ ३११५।
समुझावैंगे समझायेंगे वचन रचन ~ २७०८।
समुझावे १ समझाता/सिखाता है : वचन रचन ~ १/१८८।
२ समझाओ : सो तू कहि ~ ३६५६। ३ समझाती है · क्रम क्रम करि ~ ३६५५। ४ समझाये · नैननि कोउ ~ री

समरप्यो, समरप्यौ समर्पित कर दिया है . तन आतमा ~ तुमको ४१७१।

समरारी कामदेव के शत्रु, शिव ~ कौ सुजस-कुजस की २६४८।

समर्पत समर्पित करते हैं · एकनि कौं गौ-दान ~ २५।

समर्पन समर्पण, अर्पित · तन-मन-प्रान ~ कीन्हौ १९०९।

समर्पि अर्पित करके . चुवन सर्पि ~ सँवारैं २८२२।

समर्पौ अर्पित कर दो · सवै ~ सूर स्याम कौं १/२६६।

समर्प्यौ समर्पित कर दिया : हरि माँग्यौ उन लेजु ~ सारा० ५०२।

समष्टि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, व्यक्ति का विपरीतार्थक . सूरदास सोई ~ करि व्यष्टि भाव मन लाव २/३८।

समसरि समान, वरावर : मो ~ कोउ नाहि ५८९।

समाइ १ विलीन हो जाती है : आवै लहरनि उठैं ~ ३६१०। २ लीन हो जाय : हरि पदहि ~ ३/१३। ३ समा जाता है, विलीन हो जाता है : ज्यौं पानी मैं होत वुदवुदा, पुनि ता माहिं ~ ४३०२। ४ समाता है : घट न सिंधु ~ ३७३०। ५. समायेगी अनत न कहूँ ~ ९/३५। ६ समा रही थी : विपति न हृदय ~ ९/५२। ७ समा सकता है, समाये सूरदास सो ~ कहाँ लौं ३९२५। ~ गए घुस गये, प्रविष्ट हो गये · आतुर मंदिर — ~ २४९६। गयो ~ प्रविष्ट हो गया . — ~ धेनु पति ह्वैके १३८७। वात ~ वात वैठ जाये या समझ मे आ जाये जौ तेरैं मन — ~ ८३८।

समाई १ प्रवेश हुआ है सारग अग ~ सा० ल० ४५। २ मिल गई : चोंच एक पहुमी लगाई इक आकास ~ ४२७। ३, समा रहे उपरना बीच ~ १९९०। ४ समाता है आनद उन न ~ २२। ५ समाती है : फूले अग न आजु ~ २२१३। ६. स्थान मिला है . अरु श्री निकट ~ १/६३। △ फूल्यौ न ~ फूले नहीं समाये जनक सुता चरन वंदि ~ —९/९६।

समाउँ समाता है, उमड पडता है ह्याँ के वासी अवलोकत हौं आनँद उर न ~ ९/१६५।

समाऊँ समाती हूं। △ काहूँ मुख न ~ किसी का मुँह वद नही कर सकती : — ~ १६८३।

समाए १. भर सका, समा सका . अति विसाल चचल अनियारे हरि-हाथनि न ~ ६७५। २ समा लिया . पुनि सवको रचि अड आप मैं आपु ~ २/३६।

समागम मिलन, सगम : सूरदास प्रभु सत ~ आनद अभय निसान वजावैं १/२३३।

समाज २ समाज। २ सभा राखी लाज ~ माहिं १/३०। ३ ढेर, वहुत दुःख विसरयौ सुख करत ~ ८७२।

समाज-साज-स्वर स्वर का तालमेल वैठाकर . प्रथमहिं सँचे ~ ११३९।

समाजहि समाज मे : जहँ लीला रस सखी ~ ३७१२।

समाजैं सामग्री : पाछैं धरि राख्यौ छपाइ कै उवटन तेल ~ री १८६।

समाजै समाज में · अस्तुति करत वहुत पूजा द्विज अति आनद ~ सारा० ८३४।

समात १ प्रवेश पा सकता है : निरगुन कहाँ ~ ३५४५। २. मिल जाता है . वह तौ जाइ ~ उदधि मैं २२३०। ३. रुकता या ठहरता है : लोचन जल न ~ २४५७। ४ समाता है प्रफुलित अग न ~ हियौ १४३। ५ समाती है, समा पा रही है · चमक मेरी पुतरी नहिं ~ २१७८। ६ आ जाता है महत सोइ जु ~ अँकौरी ३९७१। ७ समाते हैं, समा रहे हैं नैना घूँघट मैं न ~ २३४६। हरष नाहि ~ फूले नहीं समाते हैं · रहत निसि दिन सग हरि के, — ~ २३०९।

समाति समाती है . सपति घर न ~ ३६।

समातौ समा जाता, समाहित होता यह व्यौपार उहाँ जु ~ ~ ३६६३।

समाधा[1] समाधान मन मन करत ~ ७०५।

समाधा[2] समाधि नहि पावत जो रस जोगी जन, जप तप करत ~ १६९७।

समाधानहिं समाधान के, निराकरण के : इते पर विनु ~ क्यौ धरैं तिय धीर ३४२७।

समाधि १ ईश्वर के ध्यान मे मग्न होना, समाधि सिव जिहिं ~ नहि ध्यान टरी १/२४९।

समानी १ समा गई, समा गई है : इन नेननि माँझ ~ १६५७। २ व्याप्त है . जाकी ज्योति जल थलहिं ~ २५८।

समाने[1] १ छिप गया है . ससि घन रूप ~ १७९८। २ प्रविष्ट हुए . स्याम रूप-वन माझ ~ २३९२। ३ समाई हुई है सोभा सिंधु ~ ३८४०। ४ समा गये . कवहुँ अघासुर वदन ~ ४९७। ५ समाये : रहते पेट ~ २२८९।

समाने[2] वरावर, तुल्य छिन युग वरष ~।

समानै[1] समान है यह मन एक, एक वह मूरति भृगी कीट ~ ३९९०।

समानै[2] समा गये पद आनद ~ ३५३०।

समानै समान हैं . भृगी कीट ~ ३८०२।

समानौ लीन हो गया · जो जिहि रूप ~ १६६७।

समान्यौ १ समा गया, भर गया तिहूँ भुवन भरि नाद ~ १०६७। २. समाया हुआ (है) · है मन माहैं ~ ३६९६।

समाय १ समाकर : जल कौ रूप तुरत है गई वह हरि के रूप ~ सारा० ५६। २ समाता है · आनद उर न ~ सारा० ९०६। ३ समा/लीन हो (जाय) जाइ ~ सूर वा निधि मै १/८१।

समाया समाया हुआ है : जगत सब प्रकृति ~ ११९५ ।

समायौ १ समा गया, डूब गया : तरि नहिं सक्यौ ~ १/६७ । २ घुस गया • तन ननु तजि सुख माहिं ~ १/२२६ । ३ समाहित कर लिया : लीन्हो खैंचि भृगुपति को अपने रूप ~ नाग० २३८ ।

समावत समाता है : उर आनँद न ~ ४७९ ।

समावनौ सुहावना है . ससि सुन रूप ~ २८३२ ।

समावै १ समा जाय, भर जाय : जाये मैं जल-वायु ~ ३/१३ । २ समाना है . प्रेम हरि हिय न ~ री ६२० । ३ समाती है : माया हरि पद माहिं ~ १२/४ ।

समासोक्ति संक्षिप्त कथन, समासोक्ति अलकार . ~ कर सूर भृग कौं ना० ल० २४ ।

समाहि १ पहुँचकर, जाकर सूरज सरन ~ २४७२ । २ समा जाते हैं • उतपति प्रलय ~ ४९२।

समाहिंगे समायेंगी • कहाँ मधुप कैसे ~ ३६०४ ।

समाहि १ समा जाओ, समाहित हो जाओ . या मन सग ~ ४०२४ । २ समाना • दुख क्यौं हृदय ~ ३२३० ।

समाहीं १ समा जाती है जैसे नदी समुद्र ~ २२१६ । २ समायेगा, सहेगा : ये दुख कौन ~ ३९२४ । ३ समाते : ग्वाल उमँगे न ~ ८४१ ।

समाहु समाओगे • तहँ तुम क्यौंऽव ~ ३२३३ ।

समिति समन्वय : दुख-सुख विरह सँजोग ~ जनु २३१३ ।

समी सैंवस्यो को देखन हरप होन है ~ १२१३ ।

समीक एक ऋषि, जिसके गले में परीक्षित ने मरा हुआ सर्प डाल दिया था, जिससे क्रुद्ध होकर ऋषि के पुत्र ने उन्हें तक्षक नाग द्वारा डसे जाने का शाप दिया था • रिषि ~ के आश्रम आयौ १/२९० ।

समीति प्रीति या मित्र भाव से . बान लागे करन ~ ३५९३ ।

समीप १, पास, नजदीक । २ सामने, तुलना में . हरि ~ समता नहिं पावन ३७२२ ।

समीपं पास/निकट का . सुभग कर आनन ~ मुरलिया रहि माइ ६२७ ।

समीर हवा, वायु . रघुपति विरह पावक प्रचंड अति सीता स्वास ~ ९/१५८ । २. फूँक मुरली नदन ~ दहै ६४६ ।

समीरहि वायु को : डिमि डिमि मीन ~ रोकति ४११८ ।

समीरै वायु, समीर तहाँ कोमल मलय ~ परि० १/५९ ।

समुझ स्त्री० समझ, अक्ल, बुद्धि : देखी ~ तुम्हारी ३९०९ । क्रि० स० १. समझ कर निज स्वारथ रस रीति ~ उर ३८६२। २ समझा जाय ~ इनकौं आन सा० ल० ६९ ।

समुझत १ समझ कर कुन्ती-सुत सुभाव चित ~ सा०ल० ४ । २ समझता है • ~ नाहिं दीन दुख कोऊ ४१६९ । ३ समझती हैं : कहत सुनत ~ मन महियाँ ३५६६ । ४ समझते : भली बुरी कछु ~ नाहीं ३९५० । ५. समझते हो तुम सब ~ बातैं ३९६१ ।

समुझति समझती हैं तुम पुनि कहत सुनति हम ~ ३५७६ ।

समुझति १ समझती हूँ . तेरी सौं मैं कछू न ~ १७०१ । २. समझती हैं : अब ~ कछु तेरी बानी १६६९ । ३ समझती है . ~ नाहिं न प्रीति रीति २५९४ ।

समुझहीं समझती हैं : साधु असाधु न ~ २९१४ ।

समझहु समझो • तिनसौं कहत मनहिं मन ~ ३८४३ ।

समुझाइ समझाकर . दूत कह्यौ ~ ५२५ ।

समुझाई समझाया-बुझाया : मानै नहीं कितो ~ ३९१ ।

समुझाई १ समझाकर : कहत सूर ~ ३९४० । २ समझाने से भी ~ समुझति नहीं १६४० । ३. समझाया : मैं ~ अति अपनी सौं ४१२५ ।

समुझाऊँ १ समझाऊँ . कहो तो कहि ~ ९/१७२ । २ समझाता हूँ . अरु ताको ब्यौरौ ~ ३/१३ ।

समुझाए १ समझाया : तब सखियनि गहि भुज ~ २८२८ । २ समझाया है • जिहिं बिधि मुनि ~ ३८६६ ।

समुझाएहुँ समझाने पर भी . सठ ~ समुझत नाहीं ८०३ ।

समझात समझाता है तहँ षटपद ~ ३७१२ ।

समुझायें समझायें सो का कहि ~ सा० ल० ६२ ।

समुझायौ १ समझाया . मैं मन बहुत भाँति ~ १८८९ । २ समझाने से परत न मन ~ ४२४६ ।

समुझावत १ समझाता है, समझा रहा है : सूर इंद्र मेघनि ~ ९२१ । २ समझाती है का ~ सीठौ सा० ल० ८९ । ३ समझाते हैं, समझा रहे हैं तब नंदहिं हलधर ~ ३१५ । ४ समझाते हो तुम काहे न ~ १५७२ ।

समुझावति समझाती हैं • गरजत गुहा सिंह ~ ४१४६ ।

समुझावति १ समझाती हूँ जद्यपि मैं ~ पुनि पुनि २३६१ । २ समझाती है चोरी का बातें ~ ३९१ ।

समुझावहीं समझाता या प्रबोधता है : ज्यौं ज्यौं सूर दुष्ट ~ त्यौं त्यौं जिय खरई ३३५८ ।

समुझावहु १ समझाओ • वे सुनिहैं उनको ~ ३८७१ । २ समझाते हो • ऊधो हमहिं कहा ~ ३७९८ ।

समुझावे १ समझाने लगी अति दारिद्र दुखित जब जाने तब पत्नी ~ मारा० ८०७ । २ समझाये : षटपद को ~ ३९६४ ।

समुझावैं १ समझाती हैं बार बार ~ १९२१ । २ समझायें क्या ~ छपद पढ़ुहिं ३५३४ । ३ समझाते हैं • बार बार कहि कहि ~ ३११५ ।

समुझावैंगे समझायेंगे वचन रचन ~ २७०८ ।

समुझावैं १ समझाना/सिखाना है : वचन रचन ~ १/१८६ । २ समझाओ सो तू कहि ~ ३६५६ । ३ समझाती है • क्रम क्रम करि ~ ३६५५ । ४ समझाये . नैननि कोउ ~ री

२३०८। ५ समझाया जाय, दूर किया जाय : ता वाहन कैसैं ~ २७७९।

समुझाहि समझाकर बहुरि कह ~ ३३३९।

समुझि १ समझकर, विचार करके : हर, सुरेस, सुर, सेस ~ जिय २८२१। २ समझ • ब्रज घर ~ लेहु महरैटी ३२३। ३ समझ मे • कछु ~ न जाई २३२३। ~ **भई गँवारि** जानबूझ कर अनभिज्ञ बन गई : ~ — १७५९।

समुझियौ समझना गही ~ मेरी ३१८८।

समुझीं समझ गई, समझीं : अब ~ चूक हमारी १०८७।

समुझी १ समझ गई : अब ~ मैं बात सबनि की १७११। २ समझी थी तबहिं अवधि मैं कहत न ~ ४२८८।

समुझे[1] समझने-बूझने वाले : सूरदास ~ की यह गति ४/१३।

समुझे[2] समझने पर : धोखैं कियौ बस मन भीतर अब ~ भइ जाग १६१६।

समुझैं १ समझकर, समझने पर : यह ~ जिय ग्यान धरैं १९२०। २ समझते : आपौ पै ~ नहीं २९१४। ३. समझे जे ~ या माहैं ३६१२। ४ समझे हुए : बिन ~ विपरीत मालिका सा० ल० १०।

समुझै १ समझकर : 'सूर' ~ गमनपतिका सा० ल० ३६। २ समझने से : तुम ~ सब होत निबाहू १५९४।

समुझैये समझाया बुझाया जाये, समझाये चौपद होइ ताहि ~ ३९६४।

समुझैहौं १. समझाऊँगा • बार बार ~ २४३०। २ समझाऊँगी किहि बिधि कान्हहि ~ १८९।

समुझौगे समझोगे ~ मदन गोपाला १८३।

समुझ्यौं समझा, समझ सका • मैं अग्यान कछू नहिं ~ १/४६।

समुद[1] १ समुद्र : त्रिदसपति ~ कैं मथन कैं वचन जो ८/८। २ समुद्र मे • जाइ ~ कियौ गेहु ४२६०।

समुद[2] प्रसन्नतापूर्वक . जात ~ मनमथ सर जोरे २६८७।

समुदनि समुद्रों के ~ हूँ जल रीते ३२३५।

समुदाइ समूह, समुदाय • सुख संपति दारा सुत, झूठ सबै ~ १/३१७।

समुदाई १. समुदाय के सब बालक जे तेरे ~ परि० १/१६। २ समुदाय मे . बिहँसत मिलि ~ १२०८।

समुदायौ जमा धरा था जतन राखि छीकै ~ १६००।

समुद्र १ समुद्र। २ चार की संख्या • अधर ~ सदल जो सहसा धुनि उपजत सुख कद सारा० ९८९।

समुद्रहि १ समुद्र को . सकुचि गनत अपराध ~ बूँद तुल्य १/८। २ समुद्र से : मिल न ~ जाही २७४५।

समुद्रहि समुद्र का • जैसैं नीर प्रवाह ~ २३१४।

समुहाई ओर, तरफ . ग्वाल गाइ सब लैं गए बृन्दावन ~ ४३१। २ सामने आती है : त्रिगुन है ~ १/५६। ३. दौडी . सोचति चली कुवरि घर हीं तैं खरिक गई ~ ६७९।

समुहाने (उनकी) ओर चले सुनि मृदु वचन, देखि उन्नत कर हरषि सबै ~ ५०३।

समुहाय सम्मुख जाम्बवती अरपी कन्या भरि मणि राखी ~ सारा० ६४९।

समुहाहि ओर, तरफ चलीं ब्रज ~ १७६९।

समूचै भूषन समुच्चय भूषण, सम्पूर्ण अलकारिक बातें कासौं कहौं ~ सा० ल० ५४।

समूर सारा का सारा, सम्पूर्ण : रूप अनूप ~ २६६८।

समूरी समूल, सयुक्त, सहित • सूरदास दोउ परे पाइ तर भूषन चित्र ~ सा० ल० ८१।

समूरे समूल, भली प्रकार : बुद्धि बिचारि सु वचन ~ ३५७६।

समूल मूल सहित : फूलैं फिरैं जादौ कुल आनँद ~ मूल ३४।

समूहनि समूहो से : 'सूर' सु अग सुगध ~ २६१०।

समेति मिल जाती है . सब सुख मुक्ति ~ ३८६१।

समैं १ समय। २ समय मे सूर ~ रितुराज बिराज्यौ ३७५२। ~ - **समैं** समय समय पर : ~ — बरषो प्रतिपालौं ९२४।

समैबौ (जल मे) समाने या निमज्जित होने की क्रिया या भाव : कैसै बमन उतारि धरैं हम कैसैं जलहिं ~ ७७९।

समैया १ समाता है सुख पावति जो उर न ~ २२९। २. समायेगा, समाहित होगा : तिनहिं के पेट ~ ३६६४।

समैहै सम्मिलित हो जायेगा गज कौ पुत्र ~ सा० ल० ९७।

समैहौं १ समा जायेंगे . जल की तरँग जैमें जलही ~ परि० १/१२४। २ समा जाऊँगी तजि अकास पिय भवन ~ १६६८।

समोइ मिलाकर . जनु सीतल सौ तप्त सलिल दै, सुखित ~ करै ९/१७१।

समोख्यो, समोध्यौ सहेज कर कहा ठानी कथा प्रमोधि बोलि सब घोष ~ ४०९५।

समोयौ क्रि० स० मिलाया . तातौ जल आनि ~ १८३। क्रि० अ० समा गई अनायास लौ ज्योति ~ १/५४। △ **गरद** ~ धूल मे मिल गया, नष्ट हो गया . पल मैं — ~ १/४३।

समोवै भोग रहे है ते दुख नैन ~ २८२६।

समोसो (पहले) समय के समान तौ मानिबौ ~ परि० १/१३९।

समौ १ अवसर, समय धनि यह ~ धन्य ब्रज-वासी ३८४। २ समय का : सूर पाइ यह ~ लाहु १/६८। △ ~ **गए तैं** उपयुक्त समय या अवसर बीत जाने पर • सुनि सुदरि

यह ~ — २५८० । ~ सुनावत (वर्षा के) समय का (समाचार) बता आता : कोउ न ~ — ३३२३ ।

समौसौ दे० समोसो ।

सम्मति मत : सोचि विचारि सकल स्रुति ~ १/९१ ।

सम्माने सम्मान किया था दिया आये जान नृपति ~, कीन्ही अति मनुहार सारा० २३१ ।

सम्हार पुं० सुधि तनु की नहीं ~ ९९६ । क्रि० स० सँभाल कर : गो सुत मेलौ खरिक ~ ४०३ । **दीन्ही बात ~** बात सुधार या बना दी : — ~ १/१९६ ।

सम्हारत १. सँभालता : पहिले कर्म ~ नाहीं १/६१ । २ स्मरण कर के बुलाते · देव आपनौ नहीं ~ ८५८ । ३. स्मरण करते हैं : पुनि पुनि सुरहिं ~ २३८३ ।

सम्हारति १ ठीक या व्यवस्थित रख पाती थी . आनँद उर अचल न ~ २३ । २ बचाती या रक्षा करती . पट-रिपु पट अँटक्यो न ~ उलट न पलट खरी ६५९ ।

सम्हारन १ सँभालने . बसन ~ लगे ढोऊ तन १९९४ । २. समेटने, बटोरने : मरती बेर ~ लागे १/७१ । ३. सुधारने : सहज ~ लागे सा०ल० ७ ।

सम्हारहुगे याद करोगे: अपनौ बिरद ~ तो १/१३० ।

सम्हारि स्त्री० सुधि बुधि . रही कछु न ~ १००७ । क्रि० स० १ सँभाल कर . बहुरि धरयौ ~ १६७२ । २. सँभाल · सकिहौ नहीं ~ १५४५ । ३ सँभल कर : बहुरि उठे ~ भट ज्यां २४५९ । △ **नाहिन परत ~** धैर्य नहीं रह जाता, धीरज छूटने लगता है : सूर प्रभु अत देखि इनकौ — ~ ७७७ । **मुँह ~** मुँह सँभाल कर, मर्यादा पूर्वक . — ~ तू बोलत नाहीं ५३७ । **सुरति ~** होश में आओ, सचेत या सावधान हो जाओ अब तौ — ~ ७९ ।

सम्हारी १. बचाई, रक्षा की : सभा मधि लाज ~ १/२२ । २ सँभाला, रोक · देखि स्याम नहिं सके ~ ७९९ ।

सम्हारे १. याद किया . जहाँ जहाँ जिहिं काल ~ १/२९ । २ सँभाला, ध्यान दिया : ताहु पर मूढ नाहीं ~ ४१९६ । ३ सँभाले : सो निज करन ~ सा० ल० १३ ।

सम्हारैं १ याद करती हैं : हरि तुम्हैं बारबार ~ ४१३३ । २. सँभाले हुए · नखनि-छत घात नेजा ~ २१२९ । ३ सँभाल पाते हैं मगन रस ताम नहि तनु ~ १९८८ ।

सम्हारै १ धारण कर पाता था . तहाँ गयौ चित धीर न ~ १९११ । २ सँभालता है : रे मन अजहूँ क्यों न ~ १/६३ । ३ सँभालती, करती : विवस भई तनु सुधि न ~ १६४२ ।

सम्हारौं १ लगाऊँ तो · जौ बल भुजा ~ ९/१३२ । २. सम्हालना हूँ : लछन कह्यौ करवार ~ ९/१४३ ।

१०२० । ३ सम्हालते हो : उनहीं क्यों न ~ जू २५३९ ।

सम्हारयौ १. सँभाला : निरखि स्याम तन अँचर ~ परि० १/४१ । २. सँभाले रहे : सात दिवस जल प्रलय ~ ९५१ । **नहि जात ~** रोका या सँभाला नहीं जा सका : वमत रुधिर — ~ ५७४ ।

सम्हेरौ सँभाल लो, उबार लो : जाजरि नाव कुसग ~ ३९९४ ।

सयन शयन, शय्या : छीर समुद्र ~ सतत जिहिं ३९२ ।

सयन गति शयन मुद्रा को : देखि ~ त्रिभुवन कपै ६५ ।

सयान वि० १. चतुर : ऊधौ जानि परयौ ~ ३९४१ । २ चतुर है, सयानी है · परसुती दई द्वन्द्व प्रजापति तिनकी सती ~ सारा० ४८ । पुं० १. चतुरता, चालाकी, सयानपन : देख्यौ सकल ~ तिहारौ ३६६७ । २ बुद्धि, विवेक एतौ बालक अजान देखौ, उनकौ ~ कहा ३०६८ ।

सयानप १ चतुरता, चालाकी : सवै ~ भूले २८२६ । २. बड़प्पन है कौन ~ एहु ४०१७ । ~ **काँचे** चतुराई मे कच्चे हो : मतौ ~ — ४०२७ ।

सयानी[1] स्त्री० १ चतुराई, चतुरता : तू काहे कौं करति ~ १८९८ । २ अरी सयानी : जानति हौ तुम कछुक ~ १६१९ । वि० १ चतुर है/है : हम सब तैं वह बडी ~ १७४५ । २ चतुराई से भरी हुई लोग सब कहत ~ बातैं ३१८२ ।

सयानी[2] पूर्ण या परिपक्व अवस्था की, प्रौढा : बडी बैस अब भई ~ ३६८ ।

सयाने[1] १ पूर्ण या परिपक्व अवस्था के, वयस्क : द्वै बालक वैठारि ~ ६०४ । २ बडा : पाल पोषि मैं किए ~ ३१३२ । ३ बड़े . मिले कुलहिं जब भए ~ ३७५१ ।

सयाने[2] १ अरे सयाने ! . आए रति रन जीति ~ २६३६ । २ ज्ञानी . मधुकर तुम हौ चतुर ~ ३८५९ । ३ ज्ञानी हो पा लागौं तुम बडे ~ ३८१० । ४ चतुर हैं जैसी तुम तैसैं बोऊ ~ १७३९ ।

सयानैं १ चतुर हैं : इहिं ब्रज लोग ~ ३९९० । २ सार (तत्त्व) की बात है . इहिं विधि कौन ~ ३८०२ ।

सयानौ १ बुद्धिमान, चतुर जैसें बास बसत हैं कोऊ, तैसौ होत ~ ४०२७ । २ चतुर है तुमहिं तैं कौन ~ ४९२ । ३ चतुरतापूर्ण, बुद्धिमानी का · कीजै कछु उपकार परायौ, इहै ~ काज ३३४० ।

सयान्यौ चतुरता, सयानापन कहा करौं गई भूलि ~ १८८४ ।

सर[1] १. तालाब, सरोवर : तजि ~ निकट दूरि कत न्हाहु ९/३४ । २ तालाब मे विगसित गोपी मनौ कुमुद ~ ६९८ ।

२३०८। ५ समझाया जाय, दूर किया जाय • ता बाहन कैसैं ~ २७७९।

समुझाहि समझाकर • बहुरि कह ~ ३३३९।

समुझि १ समझकर, विचार करके : हर, सुरेस, सुर, सेस ~ जिय २८२१। २ समझ : ब्रज घर ~ लेहु महरैटी ३२३। ३ समझ मे : कछु ~ न जाई २३२३। ~ **भई गँवारि** जानबूझ कर अनभिज्ञ बन गई : ~ — १७५९।

समुझियौ समझना • गही ~ मेरी ३१८८।

समुझी समझ गई, समझीं अब ~ चूक हमारी १०८७।

समुझी १ समझ गई अब ~ मैं बात सबनि की १७११। २ समझी थी तबहिं अवधि मैं कहत न ~ ४७८८।

समुझे[1] समझने बूझने वाले • सूरदास ~ की यह गति ४/१३।

समुझे[2] समझने पर • धोखैं कियौ बस मन भीतर अब ~ भइ जाग १६१६।

समुझैं १ समझकर, समझने पर : यह ~ जिय ग्यान धरै १९२०। २ समझते : आपौ पै ~ नहीं २९१४। ३ समझे जे ~ या माहें ३६१२। ४ समझे हुए : बिन ~ विपरीत मालिका सा० ल० १०।

समुझैं १ समझकर : 'सूर' ~ गमनपतिका सा० ल० ३६। २. ममझने से . तुम ~ सब होत निबाहू १५९४।

समुझैये समझाया बुझाया जाये, समझायें चौपद होइ ताहि ~ ३९६४।

समुझैहौं १. समझाऊँगा : बार बार ~ २४३०। २ समझाऊँगी किहि बिधि कान्हहि ~ १८९।

समुझौगे समझोगे ~ मदन गोपाला १८३।

समुझ्यौ समझा, समझ सका . मैं अग्यान कछू नहिं ~ १/४६।

समुद[1] १ समुद्र : त्रिदसपति ~ कैं मथन कैं बचन जो ८/८। २ समुद्र मे जाइ ~ कियौ गेहु ४२६०।

समुद[2] प्रसन्नतापूर्वक : जात ~ मनमथ सर जोरे २६८७।

समुदनि समुद्रो के ~ हूँ जल रीते ३२३५।

समुदाइ समूह, समुदाय . सुख संपति दारा सुत, झूठ सबै ~ १/३१७।

समुदाई १. समुदाय के : सब बालक जे तेरे ~ परि० १/१६। २ समुदाय मे . बिहँसत मिलि ~ १२०८।

समुदायौ जमा धरा था : जतन राखि छींकै ~ १६००।

समुद्र १ समुद्र। २ चार की सख्या : अधर ~ सदल जो सहसा धुनि उपजत सुख कद सारा० ९८९।

समुद्रहि १ समुद्र को • सकुचि गनत अपराध ~ बूँद तुल्य १/८। २ समुद्र से : मिल न ~ जाही २७४५।

समुद्रहि समुद्र का • जैसै नीर प्रवाह ~ २३१४।

समुहाई ओर, तरफ ग्वाल गाइ सब लै गए बृन्दावन ~ ४३१। २ सामने आती है . त्रिगुन है ~ १/५६। ३. दौडी सोचति चली कुवरि घर हौं तैं खरिक गई ~ ६७९।

समुहाने (उनकी) ओर चले . सुनि मृदु बचन, देखि उन्नत कर हरषि सबै ~ ५०३।

समुहाय सम्मुख जाम्बवती अरपी कन्या भरि मणि राखी ~ सारा० ६४९।

समुहाहि ओर, तरफ चलीं ब्रज ~ १७६९।

समूचै भूषन समुच्चय भूषण, सम्पूर्ण अलकारिक बाते . कासौं कहौं ~ सा० ल० ५४।

समूर सारा का सारा, सम्पूर्ण • रूप अनूप ~ २६६८।

समूरी समूल, सयुक्त, सहित सूरदास दोउ परे पाइ तर भूषन चित्र ~ सा० ल० ८१।

समूरे समूल भली प्रकार • बुद्धि बिचारि सु बचन ~ ३५७६।

समूल मूल सहित फूलैं फिरैं जादौ कुल आनँद ~ मूल ३४।

समूहनि समूहो से : 'सूर' सु अग सुगध ~ २६१०।

समेति मिल जाती है : सब सुख मुक्ति ~ ३८६१।

समै १. समय। २ समय मे सूर ~ रितुराज बिराज्यौ ३७५२। ~ **समै** समय समय पर ~ — बरषौ प्रतिपालो ९२४।

समैबौ (जल मे) समाने या निमज्जित होने की क्रिया या भाव : कैसै बसन उतारि धरैं हम कैसैं जलहिं ~ ७७९।

समैया १ समाता है सुख पावति जो उर न ~ २२९। २ समायेगा, समाहित होगा : तिनहि के पेट ~ ३६६४।

समैहै सम्मिलित हो जायेगा : गज कौ पुत्र ~ सा० ल० ९७।

समैहौं १ समा जायेंगे : जल की तरँग जैसैं जलही ~ परि० १/१२४। २ समा जाऊँगी . तजि अकास पिय भवन ~ १६६८।

समोइ मिलाकर जनु सीतल सौ तप्त सलिल दै, सुखित ~ करै ९/१७१।

समोख्यो, समोध्यौ सहेज कर कहा ठानी कथा प्रमोधि बोलि सब घोष ~ ४०९५।

समोयौ क्रि० स० मिलाया तातौ जल आनि ~ १८३। क्रि० अ० समा गई अनायास लै ज्योति ~ १/५४। △ **गरद** ~ धूल मे मिल गया, नष्ट हो गया . पल मैं — ~ १/४३।

समोवै भोग रहे है ते दुख नैन ~ २८२६।

समोसो (पहले) समय के समान : तौ मानिबौ ~ परि० १/१३९।

समौ १ अवसर, समय धनि यह ~ धन्य ब्रज-बासी ३८४। २ समय का : सूर पाइ यह ~ लाहु १/६८। △ ~ **गए तैं** उपयुक्त समय या अवसर बीत जाने पर सुनि सुदरि

नट ~ — २५८०। ~ सुनावत (वर्षा के) समय का (समाचार) बता आता : कोउ न ~ — ३३०३।

समौसौ दे० समोसो।

सम्मति मत : सोचि विचारि सकल स्तुति ~ १/९१।

सम्माने सम्मान किया या दिया . आये जान नृपति ~, कीन्ही अति मनुहार सारा० २३१।

सम्हार पुं० सुधि तनु की नहीं ~ ०९६। क्रि० स० सँभाल कर : गो सुत मेलो सरिक ~ ४०३। **दीन्ही बात** ~ बात सुधार या बना दी : — ~ १/१९६।

सम्हारत १ सँभालता पछिले कर्म ~ नाहीं २/६१। २ स्मरण कर के बुलाते : देव आपनौ नहीं ~ ८५८। ३ स्मरण करते हैं : पुनि पुनि झखहि ~ २३८३।

सम्हारति १. ठीक या व्यवस्थित रख पाती थी : आनँद उर अचल न ~ २३। २ बचाती या रक्षा करती . पट-रिपु पट अँटक्यो न ~ उलट न पलट खरी ६५९।

सम्हारन १ सँभालने बसन ~ लगे टोऊ तन १९९४। २ समेटने, बटोरने . मरती बेर ~ लागे १/७१। ३. सुधारने सहज ~ लागे मा०ल० ७।

सम्हारहुगे याद करोगे : अपनौ विरद ~ तौ २/१३०।

सम्हारि स्त्री० सुधि बुधि रही कछु न ~ १००७। क्रि० स० १ सँभाल कर बहुरि धरयौ ~ १६७२। २. सँभाल . सकिहौ नहीं ~ १५४५। ३ सँभल कर . बहुरि उठे ~ भट ज्यों २४५९। △ **नाहिन परत** ~ धैर्य नहीं रह जाता, धीरज छूटने लगता है : सूर प्रभु अंत देखि इनको — ~ ७७७। **मुँह** ~ मुँह सँभाल कर, मर्यादा पूर्वक : — ~ तू बोलत नाहीं ५३७। **सुरति** ~ होश में आओ, सचेत या सावधान हो जाओ अब तौ — ~ ७०।

सम्हारी १ बचाई, रक्षा की : सभा मधि लाज ~ १/२२। २ सँभाला, रोक : देखि स्याम नहि सके ~ ७९९।

सम्हारे १. याद किया जहाँ जहाँ जिहि काल ~ १/२९। २ सँभाला, ध्यान दिया : ताहु पर मूढ नाहीं ~ ८१९६। ३ सँभाले : सो निज करन ~ मा० ल० १३।

सम्हारैं १ याद करती हैं हरि तुम्हैं बारबार ~ ४१३३। २ सँभाले हुए नखनि-छत घात सेजा ~ २१२९। ३ सँभाल पाते हैं मगन रस नाम नहि तनु ~ १९८८।

सम्हारै १ धारण कर पाता था . तहाँ गयौ चित धीर न ~ १९११। २ सँभालता है : रे मन अजहूँ क्यौं न ~ १/६३। ३ सँभालती, करती : विवस भई तनु सुधि न ~ १६४२।

सम्हारौं १ लगाऊँ तो : जौ बल भुजा ~ ९/१३२। २ सम्हालता हूँ · लछन कह्यौ करवार ~ ९/१४३।

सम्हारौ १ याद आया (चन्द्र) मुख सम बदन ~ मा० ल० ३८। २. सँभालो, मर्यादा रखो : अपनौ नाम ~ १०२०। ३ सम्हालते हो · उनहीं क्यों न ~ जू २५३९।

सम्हारयौ १. सँभाला · निरखि स्याम तन अँचर ~ परि० १/४१। २ सँभाले रहे : सात दिवस जल प्रलय ~ ९५१। **नहि जात** ~ रोका या सँभाला नहीं जा सका · वमत रुधिर — ~ ५७४।

सम्हेरौ सँभाल लो, उबार लो : जाजरि नाव कुसंग ~ ३९९४।

सयन शयन, शय्या : छीर समुद्र ~ सतत जिहि ३९२।

सयन गति शयन मुद्रा को : देखि ~ त्रिभुवन कपै ६५।

सयान वि० १ चतुर . ऊधौ जानि परयौ ~ ३९४१। २ चतुर है, सयानी है परसती दई दच्छ प्रजापति तिनकी मती ~ सारा० ४८। पु० १. चतुरता, चालाकी, सयानपन : देख्यो सकल ~ तिहारौ ३६६७। २ बुद्धि, विवेक एतौ बालक अजान देखौ, उनकौ ~ कहा ३०६८।

सयानप १ चतुरता, चालाकी · सबै ~ भूले २८२६। २ बडप्पन है कौन ~ एहु ४०१७। ~ **कॉचे** चतुराई में कच्चे हो . मतौ ~ — ४०२७।

सयानी[1] स्त्री० १ चतुराई, चतुरता : तू काहे कौं करति ~ २८९८। २ अरी सयानी जानति हौ तुम कछुक ~ १६१९। वि० १ चतुर हैं/है . हम सब तैं वह बडी ~ १७४५। २ चतुराई से भरी हुई लोग सब कहत ~ बातें ३१८२।

सयानी[2] पूर्ण या परिपक्व अवस्था की, प्रौढा : बडी बैस अब भई ~ ३६८।

सयाने[1] १ पूर्ण या परिपक्व अवस्था के, वयस्क : द्वै बालक बैठारि ~ ६०४। २ बडा · पाल पोपि मैं किए ~ ३१३०। ३ बडे . मिले कुलहि जब भए ~ ३७५१।

सयाने[2] १ अरे सयाने ! · आए रति-रन जीति ~ २६३६। २ ज्ञानी · मधुकर तुम हौ चतुर ~ ३८५९। ३ ज्ञानी हो पा लागौं तुम बडे ~ ३८१०। ४ चतुर् ह जैसी तुम नैमैं बोऊ ~ १७३९।

सयानैं १ चतुर हैं · इहि ब्रज लोग ~ ३९९०। २ सार (तत्त्व) की बात है . इहि विधि कौन ~ ३८०२।

सयानौ १ बुद्धिमान्, चतुर : जैसैं वाम बमन ई कोऊ, तैसौ होत ~ ४०२७। २ चतुर है तुमहिं तैं कौन ~ ४९२। २ चतुरतापूर्ण, बुद्धिमानी का : कीजै कछु उपकार परायौ, इहै ~ काज ३३४०।

सयान्यौ चतुरता, सयानापन कहा करौं गई भूलि ~ १८८४।

सर[1] १ तालाब, सरोवर · तजि ~ निकट दूरि कत न्हाहु ९/३४। २ तालाब मे : विगसित गोपी मनौ कुमुद ~ ६१८।

सर[2] १ वाण : सूरदास ~ लाग्यौ १/९७। २ वाण पर · स्यौं परवत ~ बैठि पवन सुत ९/१०५। ~ **सरस**

कटाच्छनि रसमय कटाक्ष-वाणों से : भौंह धनुष ~ — २३७३। ~ क्रीडा वाण को चढाने की क्रीडा (खेल) या क्रिया को : ~ — दिन देखन आवत ९/२०।

सर[३] नाभि . ~ पर कलस, कलस पर ससि भान २७४२।

सर[४] पाँच • वर्ष ~ कौ भयौ पूरन सा० ल० ३४।

सर अवसर १. जब कभी : सेवा यहै नाम ~ जो काहुहिं कहि आयौ १/१९३ । २ समय-असमय : ~ नाहिं जान्यौ १/१६८।

सरई पूरा पड सकता है, काम हो या चल सकता है : वृच्छ विना किन ~ ४।

सरक १ मद्य पात्र : वारवार ~ मदिरा की अपरस रटत उघारे ३५०४। २ मद्यपान : व्रज की ~ करन कित भावै ३९८४।

सरकि खिसक कर आसन आधी सेज ~ दै २८२२।

सरके निकल/खिसक गये हलधर देखि उतहिं कौं ~ २८९२।

सरग स्वर्ग : मोकौं पथ वनायौ सोई नरक की ~ लहौं १/१५१।

सरगम स, र, ग, म, इत्यादि सप्त स्वर ~ सुर नीकें साधि, सप्त सुरनि गाई ११५१।

सरगुन सगुण • इहिं व्रज ~ दीप प्रकास्यौ परि० १/१६३।

सरघा मधुमक्खी . सँचि ~ ज्यौं धावति २१२३।

सरजीव सजीव अधर धरत ~ होत है परि० २/५।

सरजू सरयू (नदी) : है ~ कैं तीर ९/४४।

सरत पूर्ण होता है, वनता है • कछू न काज ~ १/५५।

सरत् शरद् की • ~ चचल मीन १३८०।

सरद् १ शरद् ऋतु . मनहुँ ~ कै कमल कोष पर ३४३। २ शरद्कालीन : ~ कमल की छहियाँ ९७०।

सरदहु शरद् मे भी • कृपा करहु तौ ~ रहिऐ जल उज्जल और अमल अकास परि० १/२००।

सरधत श्रद्धापूर्वक : इन्द्र मात तेहि तात सो ~ प्रगट देखियत भोग सारा० ९६४।

सरन[१] सरों मे, तालावों मे : खुलौ चाहत ~ सार ग सा०ल० ८८।

सरन[२] १ शरण, आश्रय चकित मनमथ ~ चाहत २२२०। २ शरण मे • ~ परि मन-वच कर्म विचारी ९/११५। ~ **उवारौ** शरण मे रखकर उद्धार कीजिए : की मारौ की ~ — ९४२। ~ **सँभारौ** शरण मे ले लो : सूर सकुचि जौ ~ — ९/१२१। ~ **सरन** शरण दो, शरण दो ~ — सु पुकारयौ ५५६।

सरनगत शरण मे आया हुआ। ~ **भएे** शरण मे जाने पर : सूरदास गोपाल ~ — **न** की गति पावत १/१८१।

सरनहि शरण मे तव गज हरि की ~ आयौ ८/२।

सरनहिं शरण मे : यहै जानि मैं ~ आइ ४१९५।

सरनाइ शरण मे आयौ सरन राखि ~ ९७७।

सरनाई स्त्री० . आश्रय/शरण में हम तौ हैं तुम्हरी ~ ८००। वि शरण मे रखने वाले : राखि राखि अ सरन - ~ ६/५।

सरनागत १. शरण मे आया हुआ : अर्जुन कह्यौ जानि ~ १/२६८। २. शरण मे आये हुए • ~ की ताप निवारी १/२८। ३ शरण मे . तिमिर सकुच ~ आयौ २६११।

सरनि शरण, आश्रय : सुख ~ चह्यौ १/१६२।

सरनी[१] सीमा : व्रज जुवती सव देखि थकिन भई सुन्दरता की ~ १२३।

सरनी[२] माला फेरती रहती है राम नाम की ~ ९/७३।

सरनी[३] पगडडी . रची माँग सम भाग राग नि धि काम धाम ~ २१८४।

सरपजर वाणों का वना हुआ घेरा . ~ रोप्यो चहुँ दिसि ते सारा० ८५१।

सर-पिंजर वाणों का वना हुआ घेरा : अर्जुन तव ~ कियौ ४३०९।

सरवंगी सर्वज्ञ : समुझावत, ते साँचे ~ ३५११।

सरवज्ञ सर्वज्ञ, सव कुछ का ज्ञाता : है ~ जनावत ३८८८।

सरवरन समान, तुल्य कृष्न पद-मकरंद पावन और नहिं ~ १/३०८।

सरवरि वि० समान जाकें ~ नहिं अमरावति ४१९५। स्त्री० वरावरी, समता . ताकी ~ करै सो झूठौ १/२३४।

सरवरी वरावर हैं, समान हैं : दिननि हमहुँ तुम ~ २१९३।

सरवस सर्वस्व : ~ दयौ स्याम कें कारन ३६९५।

सरवसु सर्वस्व दियौ हमारौ ~ री परि० २/१८।

सरवस्व सर्वस्व सुफलक सुत ~ लै गयौ ३६९१।

सरभग एक महर्षि, जिनके दर्शन श्री राम ने किये थे • वदन करि ~ महामुनि अपने दोष निवारे सारा० २५५।

सरमाइ १. शरमाकर : रहति अति ~ २०४९। २ लजाती है . उरज परमत स्यामसुन्दर नागरी ~ ११६६।

सरमाई लज्जित हो : यह सुनि अमर गए ~ ९४६।

सरमाउँ लज्जित होऊँगी कृपा करैं उनकौं ~ २२५९।

सरमाऊँ लज्जित होता हूँ • सुनत वहुत ~ ११७७।

सरमाए शरमा रहे हो औरनि कौं ~ २५४३।

सरमात १ लज्जित हो जाता है : मेरौ मन ~ १८४६। २. लज्जा आती है : अव न पियहिं उचटाइहौं मोको ~ २७२३।

सरमानौ लज्जित हुई, शर्मा गई वेसरि नाउँ लेति ~ १९५९।

सरमाने लज्जित हुए : हम तौ आजु वहुत ~ २०१४।

सरमावत लज्जित करते हैं सूरदास हमकौं ~ १७५७।

सरमिष्ठा असुर राज वृषपर्वा की पुत्री जो देवयानी की चेरी

बनकर राजा ययाति के यहाँ आई थी। ययाति से इसके तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे : कह्यौ ~ , सुत कहैं पाए ९/१७४।

सरमैहौ लज्जित होंगे . यहै जानि ~ १९२३।

सरल सीधा कमल ऊपर ~ कदली सा० ल० १४।

सरवर[1] १ तालाव, सरोवर . मानौ चारि हंस ~ तें ९/१९। २ सरोवर में उर ~ भयो कमल विगास ४३०६।

सरवर[2] (सरोवर) नाभि . हरि पर ~, सर पर गिरिवर २११०।

सरवरि बराबरी, समानता • सूरदास प्रभु की ~ नहिं ४९१।

सरस १. कोमल, सुन्दर ~ दौना बहु लाए ४३७। २ भावपूर्ण . भयौ अतदगुन सर ~ वढ सा०ल० ७४। ३ मधुर दूलह दुलहिनि ~ बसत ११८०। ४ मुलायम . ~ बसन तन पोंछि ५१४। ५ रस से युक्त ~ कनिक बेसन मिलै १९८० ६ रसिक, भावुक, सहृदय जुरे रस बीर ज्यौं एक तैं एक ~ २१२८। ७ शोभावान् नीक सम मारग ~ बखानै सा० ल० ४। ८ सरस (साज) सो साजन ~ सखाए सा० ल० ११।

सर-सयन वाण शैय्या पर : ~ गंगसुत १/२१५।

सर-सर सटासट : डान्ही साँटी ~ ३७३।

सरस्याइ सरस बनी थी सोवा अरु सरसौं ~ १०१३।

सरसाये शोभित हुए : जनु सुक निकट निपट ~ २६०१।

सरसिज कमल • मानौ ~ अरुन नए २६४२। २ कमलवत् सुन्दरि ~ नैनी ९/११।

सरसी बावली : नाभि ~ मैं १२०१।

सरसीरुह कमल वदन सुधा ~ लोचन १८०९।

सरसे रसदार : ते घृत-दधि-मधु मिलि ~ १८३।

सरस्वती १ पंजाब में बहने वाली एक प्राचीन नदी, जिसकी क्षीण धारा कुरुक्षेत्र के पास अब भी है जमुना सिंधु ~ आवे १/२२४। २ विद्या की देवी, भारती, वाणी १६१।

सरहीं वाण में . खर दूषन प्रान हरे ~ ९/९१।

सराइ सराहा, अनुमोदन किया : सबहिन कह्यौ साधु नह वाणी सुर मुनि मनुज ~ सारा० ७३८।

सराप १ शाप ता ~ तें भयौ स्याम तन ३५२४। २ शाप का : सत्यवती ~ भय मान १/२२९।

सरापं शाप दे : मति माता करि कोप ~ ९/८४।

सरायो सराहना की पूजा करि भोजन करवायो उद्धव संत ~ सारा० ५५८।

सरायौ (काम) सराया/निकाल लिया पुरुष भँवर दिन चार आपने अपनौ चाड ~ २०८८।

सराव आरती के ऊपर का दीपक जिसमें घी भरा जाता है, कटोरी : सही ~ सप्त सागर घृत २/२८।

सरासन धनुप : मनौ ~ धरे कर स्मर १३७।

सराहत सराहना/प्रशंसा करते हुए . मुख लै मेलि ~ जात ४६६।

सराहि बड़ाई/प्रशंसा करके : बारबार ~ सूर प्रभु साग विदुर घर खाहीं १/२४१।

सराहौं सराहना करती हूँ : ~ तेरौ नंद हियौ ३१६५।

सराहौ प्रशंसा करो : देखौ वाके भाग कौं ताकौ न ~ १३४३।

सरि[1] स्त्री० समता, बराबरी और न ~ करिवे कौं दूजो १/१४१। वि० समान, बराबर . याकी ~ कोउ नाहिं २१२१।

सरि[2] नदी को खनि कूप मरै बालू थल, छाँडि सूर ~ पास ३७०१।

सरित नदी ज्यों ~ सिन्धु बिनु कहु न जाई १००४।

सरितनि नदियों में : नोहिं सर ~ जल बाढे परि० १/११०।

सरितापति समुद्र : तबहू और रह्यौ ~ ९/१०४।

सरिति नदी के . (मुरली) ~ तट सींचति है १३०६।

सरियै पूर्ण होगा : कहौ काज क्यौं ~ २८२६।

सरिस १ समान, सदृश . पाहन ~ कठोर ९/८३। २ समान हो हय-गय ~ समीर दसहुँ दिसि ८६७।

सरिहै पूर्ण होगा, सिद्ध होगा लाज किए कछु काज न ~ २९८९।

सरिहौं पूरा/सिद्ध करूँगा उनके सुख कह ~ १९४३।

सरी १ पूरा हुआ, सिद्ध हुआ सफल काज ~ ३०२। २ पूरा हो सकता पापा ते कछु न ~ १/११६।

सरीखौ समान अति सुन्दर तन स्याम ~ ३४२०।

सरीरहि शरीर को या ~ पाइ १/१९९।

सरुचि रुचिपूर्वक आज सखिन सग ~ साँवरी सा० ल० ७।

सरुद्र रौद्र रस के साथ सुरत ~ सगन दपति रस सारा० ९८१।

सरुस क्रोधपूर्वक, क्रोध में भरी ~ बचन जु कहति सखि आ २६९९।

सरूप[1] १ स्वरूप : जौ लौं सत ~ नहिं सूझत २/२५। २ स्व-रूप का . सो ~ हिरदै महँ आन १/२८६।

सरूप[2] सदृश, समान : जोति ~ आतमा मानौ ४३००।

सरे सिद्ध हुए रतिपति काज ~ २४६०। २ सिद्ध हो : उनकी पूजा कहा ~ ८६२।

सरैं बन जाने पर, सिद्ध हो जाने पर काज ~ उडि मिलै आपु कुल ३६५९।

सरै १ बन सकता है : काहू के बैर कहा ~ १/२३४। २ पूरा करे, सिद्ध करे कै मारै कै काज ~ ३८५३। ३ पूर्ण हो • वाकी पैज ~ १/८२। ४ पूर्ण होगा, बनेगा : और भजे तें काम ~ नहिं १/६८। ५ सिद्ध होना • हठ तें ~ न एका काम २५९१।

सरैगौ पूरा/सम्पन्न होगा राजकाज तुम तें न ~ ३५५०।

सरोज १ कमल . वंदो चरन ~ तिहारे १/९४। २ कमल

(हाथ) जबहिं ~ धरयौ श्री फल पर ६८२ ।
सरोजहि कमल के : क्यौं तुमकौ अलि ! बिना ~ ३९२१ ।
सरोजैं कमल (के समान) : चचल नैन ~ १०५५ ।
सरोरुह कमल (के समान) : कर-चरन - ~ ५५ ।
सरोवर तालाव जनु बन कमल ~ तजि कै ४३२ ।
सरोवरी सरसी, छोटा तालाव श्रीपति केलि ~ सैसव जल भरपूर २६१३ ।
सरौ[1] १ पूरा करो बपुरौ जोग ~ ३७३५ । २ सिद्ध या पूरा होगा . जियहिं कोउ जनि डरौ कहा इहिं ~, लोचन मुँदाए ५९६ ।
सरौ[2] सभी · निरगुन ~ न जानै परि० १/१७४ ।
सर्प दोई दो साँप, दोनों भुजाएँ या हाथ सिंघ ऊपर ~ सा० ल० १४ ।
सर्प बेलि नागवल्ली, पान . ~ रस जोई सा० ल० १६ ।
सर्पहि नाग (वासुकि) जे गिरि, कमठ, सुरासुर, ~ १४१ ।
सर्पि घी चुवन ~ समर्पि सवारैं २८२२ ।
सर्पु सर्प, साँप मत्स्य अरु ~ तिहिं ठौर परगट भए ८/१६ ।
सर्बगती सब स्थानों पर जाने वाला है : ~ अरु सर्व उदासी १२/४ ।
सर्ब १ सब, सभी · ~ पुरान माहिं जो सार ७/२ । २ सब कुछ . ~ तुमहीं हो देवा ११७५ । ३. सारी, पूरी . आजु सर्वरी ~ बिहानी २७९९ । अव्य० सर्वत्र · सूर-चन्द-नछत्र-पावक ~ तासु प्रकास २/२७ ।
सर्वऽलकार सभी अलकारो के · सहित ~ ३०९३ ।
सर्वज्ञ १ सब कुछ जानने वाले · सूर स्याम ~ कहावत १५५७ ।
सर्बरी शर्वरी, रात्रि आजु ~ सर्ब बिहानी २७९९ ।
सर्बस, सर्बसु सर्वस्व सहियत ~ हानि १९९९ ।
सर्बोपरि सबसे ऊपर, श्रेष्ठ : ~ आनद १/८७ ।
सरचौ १ बन पड़ा, पूर्ण हुआ कछु नहिं ~ असुर तैं ३२०४ । २ पूर्ण हो गया · सकल कारज ~ ११७६ । ३ (आयु) पूर्ण या समाप्त हो गई : सुनहु कस तव आइ ~ ५९ । **काल** ~ काल पूरा हो गया, काल आ गया ताकौ ~ — २९२४ ।
सर्वज्ञ दे० सर्वज्ञ तुम ~ सबै बिधि पूरन १/१०३ ।
सर्वस, सर्वसु सर्वस्व · जाकी जहाँ प्रतीति सूर सो ~ तहाँ सँचै री २८२१ ।
सल शल्य, मद्र देश का राजा जो द्रौपदी के स्वयवर मे भीम से मल्लयुद्ध मे हार गया था : और मल्ल मारे ~ तोसल सारा० ५२३ ।
सलकैं सलाखें मनु ब्रज की ~ परि० १/६९ ।
सलाइ बिंधी : सौतिं साल ~ बैठी डुलति इत उत नाहिं २५६६ ।
सलाकनि सलाखो से : आगि ~ जारी ३८५१ ।
सलाकैं सलाखों को : ते अलि अब ये ग्यान ~ ३५७० ।
सलावत दु ख दे रहा है : कुहुकै असल ~ ३६२३ ।
सलावन सालने, छेदने अब आए मोहिं असल ~ २६४४ ।
सलि (चिता पर) छिदकर : छूटति नाहिंन नेह सती ~ ३८६० ।
सलिल १ पानी, जल . ~ बरसि ब्रज नाउँ मिटावहिं ८५६ । २ पानी (आँसुओं) से नैन ~ भीजी सब सारी ११०५ । ३ पानी मे यह कहि कूदि परे ~ ५८९ ।
सले बिध गया : असलेहु साल ~ ३१८१ ।
सलोना सुन्दर रिझाए स्याम ~ १७४१ ।
सलोनी नमक वाली दाल भात घृत कढ़ी ~ सारा० १८७ ।
सलोनो नमकीन . लीनो मठा ~ सारा० ९०९ ।
सलोनौ सलोना, सुन्दर साँवरौ ~ अति नद कौ कँवरै री २८८६ ।
सलोल चचल कुंडल मीन ~ १०४९ ।
सलौनि सलोनी (राधा) . परे पाँय हरि चरण परस करि छिन अपराध ~ सारा० ९७४ ।
सल्य शल्य=सल द्रोण कर्ण अरु ~ मुक्त करि सारा० ७८७ ।
सल्य-करन शूल निकालने के फेर मे, शल्य क्रिया . ज्यौं त्यौं ~ कौं सजनी काहे फिरति वही ३००२ ।
सल्ल शल्य, बरछा . मल्ल उर ~ तल ताल बाजैं ३०७१ ।
सवरी शबर जाति की श्रमणा नाम्नी तपस्विनी . ~ परम भक्त रघुपति की सारा० २७२ ।
सवाँग स्वाग, बनावटी वेश नट ~ सो काछै २३४१ ।
सवाइ सवाया, अधिक : मान करौ तुम और ~ २४३७ ।
सवाए सवाया (और भी अधिक) साजत सरस ~ सा० ल० ११ ।
सवाद स्वाद तातैं लेत ~ ६४ ।
सवादी सदा खाने वाला, आदी सूरदास तिल तेल ~ १९२४ ।
सवायौ एक चौथाई और भी अधिक सूर सुता अरि बधु तात अरि भूषन वचत ~ सा० ल० २८ ।
सवार जल्दी, शीघ्र : उठि चलि क्यौ न ~ २७६३ ।
सवारि जल्दी, शीघ्र : लीन्हो छोरि ~ ।
सवारी जल्दी या शीघ्र : घर जाहु ~ २१९५ ।
सवारैं[1] शीघ्र, तुरन्त . जेहिं हठ तजै प्रान प्यारी सो जतन ~ करिए २२७५ ।
सवारैं[2] सुबह साँझ ~ आवन लागी ७१० ।
सवारै[1] सुबह : गोरस बेंचि ~ १४९६ ।
सवारै[2] सवाद, समाचार : किन बैरिन मोकों देत ~ सा० ल०

६२ ।

सवारो सवेरे, शीघ्र : वेगि ~ पावैं धारी २५४७ ।

सवारो शीघ्र ही, झटपट ही : खरे करौ अलि ! जोग ~ ४०९४ ।

सविता रवि, सूर्य ~ ता तनया सँग करत विहार परि० २/५२ ।

सप्टई षष्ट राशि (कन्या) करी ~ चाल सा० ल० ७१ ।

ससकि शंकित होकर : जनु ~ ससि लगर मारे १७९७ ।

ससकित शंकित होकर असुदित रहत मभीन ~ १/४८ ।

ससकत सिसकती हुई ~ आपु बँधावे परि० १/६७ ।

ससके शंकित हुए : महाराज झझके कहा सपने कह ~ २९३३ ।

ससक्यौ शंकित हुआ : जियहीं जिय ~ २९३३ ।

ससांक चन्द्रमा विगत सर्वरी ~ किरन हीन २०५ ।

ससि चन्द्रमा बहुरौ देख्यो ~ की ओर ५/३ । २ चन्द्रमा के समान : कमल-नैन ~ बदन मनोहर ७ । ३. (नख)-चन्द्र : हैं पतग, ~ बीस, एक फनि २११२ । ~ **किरनि कुदाल गहे** चन्द्रमा के किरण रूपी कुदाल को पकडना है : गमन कान्ह छन छन जु काम ~ — कुदार गहौ ४०३८ ।

ससि को भ्रात कहत ता वाहन चन्द्रमा का भाई (अमृत) का वाहन, अधर : ~ कुद कुसुम ललचात सारा० ९४८ ।

ससिगन चन्द्रमा के समूह को ~ पुज हरे ३६०२ ।

ससिताई चन्द्रमा का गुण तिलक भाल ससि की ~ २४३६ ।

ससि-रिपु दिन : ~ बरष, सूर रिपु जुग-बर ३९७६ ।

ससि सात (ससि=चन्द्रमा=१+सात=८=अष्ट=अष्टवसु, वसु सर्प को भी कहते हैं अत) सर्प . उर पर देखियत ~ हैं ११९८ ।

ससिसुत वेद पिता की पुत्री चन्द्रमा के पुत्र (बुध) से वेद (चौथा) ग्रह (शनि) के पिता (सूर्य) की पुत्री, यमुना : ~ सा० ल० १५ ।

ससिहि १ चद्रमा का ~ भूल्यो गवन १०६३ । २ चन्द्रमा को : ~ कहा डर कुमुद कली को २७३८ । ३ चन्द्रमा से . ~ मिलत तम के मन आए १०४ ।

ससी चन्द्रमा राजत तेरे बदन ~ री २४४७ ।

ससी पावस कपिन के विच शशि (नकल) बरषा और वानर शब्दों के बीच के अक्षरों के मिलाने से (करन) हाथों से : ~ मूँद राखे नैन सा० ल० ९२ ।

ससी सुत चन्द्रमा के पुत्र बुध : बान ~ है पुत्री के सा० ल० ८१ ।

ससुधौटी सुधा (अमृत) के पात्र के साथ : गह्यौ सुधा ~ १६४ ।

सस्तौ सहज सुलभ सुनि सुनि ~ नाम १/१९१ ।

सस्त्रनि हथियारों या शस्त्रों को . ते सब ठाढ ~ धारे ४/१२ ।

सह सहित : गिरिवर ~ ब्रज देहुँ बहाइ ९२३ ।

सहगमन सती होने जाते समय : ज्यों ~ सुंदरी कैं सग बहु बाजन हैं बाजत ९/१३० ।

सहगामिनि सग जाने वाली . सब नारिनि ~ कियौं ९/८ ।

सहचरि १ दूती : ~ चतुर चतुर लै आई २४५५ । २. सखियाँ कर सीट ~ पढिताई ७४८ । ३ सखियों को . ~ और बुलाइ २८२६ ।

सहचरी सखियाँ सहेलियाँ : फूली फिरैं ~ उर १०७४ ।

सहज वि० १ प्रकृत, साधारण तजि रही ~ सुवेस ६३३ । २ स्वाभाविक : अब रावन घर विलसि ~ सुख ९/७७ । ३ स्वाभाविक चेष्टाओं तुम्हरे तनक ~ कै कारन १९०९ । ४ स्वाभाविक रूप से : ससि सौं ~ उदास ३८१३ । क्रि० वि० १ सरल और आडम्बर रहित रूप से : ~ भजै नँद-लाल कौं सो सब सचु पावै २/९ । २ सीधेपन, सिधाई हम माँगत हे ~ सो तुम अति रिस कीन्हौ ३०३९ । ३ सुगमता से . बहुरौ ध्यान ~ ही होई ३/१३ ।

सहजहि १ सीधे सादे ढंग से . सुनहु 'उर' ~ कौवा रिस २१९१ । २ स्वाभाविक रूप से . सूर स्याम स्यामा दोउ ~ १९०८ ।

सहजहि सहज ही ललित गिरा सु नी ~ तोतरि परि० १/१४ ।

सहजही सहज रूप से ही स्याम गह्यो भुज ~ ३०४० ।

सहत[1] १ सहता है, सहन करता है ज्यों सारग सारग के कारन सारग ~ सा० ल० ४१ । २ सहते : ये इतनी जु ~ हैं ३७८९ । ३ सहती हैं : कह न ~ ने कठिन हिए ३२०० । ४ सहते हुए हँसि हँसि कहत ~ सबही की २९०७ । ५ सह पाते हैं . सूरदास सुंदर अति सीतल मृदु बेऊ न ~ २५८५ । ६ सहन करता था . तब नहिं निमिष वियोग ~ उर ३९३३ । ७ सह लेते हैं : निज भक्तनि कौ ~ ढिठाई १/३ ।

सहत[2] शहद, मधु विधीं ~ कीं ज्यौं हठि मखियाँ परि० २/४९ ।

सहति सहती है, सह रही है सनमुख ~ सरद ससि सजनी ३७६७ ।

सहति १ सहती है करहिं, निंदा ~ १६४७ । २ सह सकती है : ग्रीषम तेज ~ क्या बेली ३८७७ ।

सहदेव राजा पांडु के पाँच पुत्रों में सबसे छोटे पुत्र, जिनका जन्म माद्री के गर्भ से अश्विनीकुमारों के औरस से हुआ था . भीम द्रोण अरु कर्ण युधिष्ठिर भीमार्जुन ~ सारा० ७१२ ।

सहस हजार, हजारों : चौदह ~ जुवति अत पुर ९/७५, बीरत ~ प्रकारौ १/२०९ ।

सहसक एक हजार मन ~ केसरि लै दीन्हौ २८९२ ।

सहसफनी शेषनाग : कच्छप अध आसन अनूप अति डाँडी

~ ७/२८।

सहसबाहु राजा कृतवीर्य का पुत्र, जिसका दूसरा नाम हैहय था ~ रविबसी भयौ ९/१३।

सहसबीस द्वादस बत्तीस हजार ससि ~ उपमा १०४०।

सहसहुँ हजारों (मुख से). कहत न ~ निबही री २९।

सहसानन शेषनाग : पचानन ~ ध्यावै १२१८।

सहसौ हजार, हजारों • सेष सकुचि ~ फन पेलत ६३।

सहस्र हजार : नेता दस ~ कहि गाइ १/२३०।

सहाइ वि० १ सहायक, सहायक हैं : जाकैं सदा ~ कन्हाई ५९९, सोई 'सूर' ~ हमारें ४२११। २ सहायक हो : बिबि रबि सग ~ २२०५। स्त्री० सहायता • तब हम कियौ ~ १५१९।

सहाई सहायक : जहाँ तहाँ सो होत ~ ३९१।

सहाय वि० १ सहायक. तेरौ पुन्य ~ भयौ है ३३५। २ सहायक हो • भक्तन सदा ~ सारा० ६११। स्त्री० सहायता : कहँ न ~ करी भक्तनि की १/२५।

सहायौ सहायक/सहारा है तुमहिं बिना प्रभु कौन ~ ३९१।

सहारौ सहारा, आश्रय. है हरि नाम ~ १/१३९।

सहाही सहायक केसव भए ~ सारा० ३९।

सहि १. सहन कर मेटि भव-भरम ~ लाज गारी १००९। २. सहन : देखि दसा ~ नहीं सकी २१०८। ~ **सहि** सहन करके, सह सहकर ~ — सीत जाइ जमुना-जल १२२३।

सहिजना सहजन, एक वृक्ष जिसकी फलियो की सब्जी बनती है • फूले फूल ~ छौके १२१३।

सहित[२] प्रेमयुक्त, हितपूर्वक : ~ सब तृन तोर सा० ल० ९४।

सहिदानि, सहिदानी निशानी, चिह्न, पहचान • लेहु मातु ~ मुद्रिका ९/८३, कछु इक अगनि की ~ ९/६३।

सहिबे सहने मन मानै सोऊ कहि डारौ पालागै हम सुनि ~ को २००४।

सहिबौ सहना है, सहन करना है. तन की बिथा कहा कहौं तुमसौं यह हमकौ ~ ४०५६।

सहियत १ सहन करती हूँ : ~ सर्वस हानि १९९९। २ सहन करती हैं तौ इतनी दुख ~ ३३५२। ३. सहे लेता हूँ तातै ~ बात ९/७९।

सहिया झंडा लेकर चलने वाला : मनु ~ फरहरा फिरावत ३३०५।

सहियै १ सहन कीजिए : सजनी ~ धरि जिय लाज २९८३।

सहियै १ सहन करता है. अपनै ही तन ~ १८६५। २ सहन कीजिए : जम की त्रास न ~ १/६२। ३ सहन करे हरि वियोग क्यो ~ ४०८५। ४ सहना चाहिए : आनि परैं सब ~ ३५०१।

सहियौ[१] सहन करना • हम दासिन की इतनी ~ ४०६६।

सहियौ[२] सखियो तोहिं सौपति हौं ~ ३१३।

सही[१] १. सचमुच • गिरिराज तुम ~ ८४८। २ सच्ची • चेटक सो लाग्यौ परि गई प्रीति ~ २८१। ३ सत्य नृप सो बात आज भई ~ ६/५। ४ सीधे मैं जमुना तट जानि ~ री १९५८। **करैं** ~ सत्य मान ले, अगीकार कर लें सोइ हम — ~ ४००३। ~ **परी** सत्य हुई. बात आजु तैं ~ — २७३२।

सही[२] १ सहन किया. पलकनि सूल सलाक ~ है २२९३। २ सहन किया है • मैं तौ यह सबै ~ १६६०। **परति** ~ सही जाती है नाहिंन — ~ २९१। ~ **परति** सहन की जाती है : नाही ~ — मोपैं अब ९/९३। ~ **परी** सहन कर हो पा रहा है : कैसें ~ — ३७९०। ~ **परै** सहन हो सकता है कैसैं ~ — सुनु सजनी परि० १/२२।

सहीते सहित, साथ : आवहिंगे हरि बलभद्र ~ ३३९१।

सहुक्त सुदर उक्ति, भली बात : कहु ~ कब मिलै सूर प्रभु सा० ल० २२।

सहेलरी सहेलियाँ हरषीं सखी ~ (हो) ४०।

सहेलि सहेली, सखी : कबहुँक रहमत मचकि लै लै एक एक ~ २८३०।

सहेलिन सहेलियो सीता कहत ~ सौं सारा० ७१९।

सहेली सखी मातु पिता न ~ ९/९४।

सहै सहन करें. क्यौं ~ बियोग ३६९८।

सहैगे सहन करेंगे : बिछुरनि हृदय ~ २९६४।

सहे १. सहता है, सहन करता है. ज्यौं रन 'सूर' ~ सर सन्मुख ३९८६। २ सहे, सहन करे ~ सो क्यौं बन-बास ९/८३।

सहैगौ सहेगा ऐसौ कौन ~ २८२६।

सहैया सहायता तव करि लेत ~ १३९३।

सहौं सहन करूँ : कौनी भाँति ~ १६८४।

सहौ १ सहन करो : सनमुख है सर ~ सयानी ३८८३। २ सहोगी वह सुलाक कैसै ~ १३४३।

सह्यौ सहन किया, सहा • सन्मुख बान ~ ३२८८। **परत** ~ सहा जाता है. परस न — ~ २८८६। ~ **परत** सहा जाता है सुनैं न ~ — ३५७४।

साँइया स्वामि, पति जागिहैं मेरौ ~ ५७७।

साँईं स्वामी • सुनि ~ तैं पोच करी ८०६।

साँकर साँकल, जजीर • ~ सत्सग छूट्यौ ४०३७, मनु गज मत्त चरन ~ करि २६८६।

साँकर बेद साँकल रूपी वेद मार्ग • ~ तुराइ ग्वालि मदमाती हो २८६२।

साँकरी सकीर्ण, तग नाचत फिरत ~ खोरि ३२७।

साँकरे¹ सकट · तुम हरि ~ के साथी १/११२।

साँकरे² सँकरे, सकीर्ण सिंधु समाइ कहाँ लौ हृदय ~ ऐन ३२३९।

साँकरैं सकट तुम बिनु ~ को काकौ १/११३।

सांख्य छह भारतीय दर्शनों मे एक, जिसके रचयिता महर्षि कपिल थे . ~ तत्व गीता हरि कीन्ही सारा० ८४५।

सांख्यहि सांख्य को : कपिल ~ जो गायौ ३/१३।

सांख्यायन एक प्रसिद्ध वैदिक आचार्य, इन्होंने ही 'साँख्यायन काम सूत्र' की रचना की थी सेष कहेउ जो ~ सों सुनिके सनत्कुमार सारा० १०९४।

साग¹ सर्वांगीण, पूर्ण सफलता से सम्पन्न या पूर्ण . तव मान जग्य ~ नहिं भयौ ४/५।

साग² एक तरह की बरछी, सविन स्याम सिज ~ सों काट करि ४२२१।

साँच स्त्री० सत्यता जानि परत नहिं ~ झुठाई ५१३। वि० सत्य . मन यहै ~ मानी री १९७८। △ ~ झूँठ करि झूठे सच्चे व्यापार से, अनुचित-उचित सभी कुछ करके . ~ — माया जोरी ३०२।

साँचिले ठीक, यथार्थ सूरदास प्रभु ~ उपमा कवि गाए २५२२।

साँचिलौ प्रत्यच/सच्चा है वाकौ भाग सुहाग ~ १२७३।

साँची सच्चाई : ~ जौ तनक होइ १७३४। वि० १, सत्य, सच · ~ बात कही तुम हमसों १७७३। २ सच्ची है : ठकुरायत गिरिधर की ~ १/१८।

साँचे¹ सच्चे ~ प्रीति निवाहक १/१९। बोल के ~ बात के सच्चे, सत्य बोलने वाले सकुचन कहा ? — ~ २४८३।

साँचे² एक उपकरण विशेष, साँचा। △ ~ भरि काढ़ी साँचे मे ढालकर सुन्दर और सुडौल बनाई है . मनहुँ काम ~ — ३००।

साँचैं सचमुच . मेरे जान सूर प्रभु ~ मदन-चोर मिलि मूसे हौ २५१०।

साँचैंहि सत्य ही, सचमुच ~ सुत भयौ नँद नायक कैं २३।

साँचो¹ वि० सत्य : कौन कहै अब ~ १/८१। स्त्री० सच्चाई · ऊधौ कहि मति भाइ न्याइ तुम्हरू मुख ~ ४०९५।

साँचो² सजो लेता · मन क्रम वच अपनैं उर ~ २/११।

साँचोई सत्य ही · गावत लोग बिरद ~ २८२६।

साँचौ १ सच्चा है, सत्य है · प्रभु तेरौ वचन भरोसौ ~ १/३२। २ सच्चे . ~ त्रिभुवन नाथ १६१८।

साँझहि सायकाल (मे) ही ~ तैं हरि पथ निहारैं २४७९।

साँट² भेद, रहस्य · हम करि दीन्ही ~ मई १७२८।

साँट³ छडी : ~ सकुच नहिं मानहीं, बहु बारनि मारि २३८७, ब्रज बधुअनि मिलि ~ कटीली, कपि ज्यौं नाच नचायौ ३६५१।

साँटि¹ साँटी, छडी टर ~ कै माँग परि० १/२४।

साँटि² बदल गर्भ ~ जसुमति लियौ १६१८।

साँटी साँटी, छडी महरि हाथ लिए ~ २५४।

साँठ मेल जोल होइ कैसेहुँ ~ ३४१२।

साँतना सान्त्वना, शांति · कियो प्रमाद ~ करिकै राज विभीषण दीन्हौं सारा० २९३।

सातनु भीष्मपितामह के पिता का नाम · ~ - सुत न कहाऊँ १/२७०।

सातनु-सुत · भीष्म पितामह : तौ लाजौं गगा जननी कौं ~ न कहाऊँ १/२७०।

साँति शांति : कतहूँ ~ न पावै २६००।

साँधत निशाना साधना है हँसि हँसि नाग फाँस सर ~ ९/१४१।

साँधि चढाकर, सधान कर सप्त ताल सर ~ , बालि हनि ९/७०।

साँधे १ सधान किये हुए, चढाये राम धनुष अरु सायक ~ ९/५८। २ सधान किये : काल सदा सर ~ फिरै ४३०१।

साँधैं सधान करता है उस चारि पठे सर ~ १/६०।

साँध्यो छौंका, बघारा (जैसे दाल इत्यादि को बघारा जाता है) हींग लगाइ राइ दधि ~ १२१३।

साँध्यौ निशाना साधा, चढाया : अति रिस सौ सर ~ ४२६९।

साँपि नागिन · देखि सब ~ अवसान भूले ५५२।

साव जाववती के गर्भ से उत्पन्न होने वाला श्री कृष्ण का पुत्र स्याम सुत ~ गयौ हस्तिनापुर तुरत ८२०९।

साँमरैं साँवले ने, कृष्ण ने · ~ हँसि कर लीन्हौं परि० १/३८।

साँवत सामन, (कर्णाटकी पद्धति का एक राग) सुर ~ भूपाली इमन सारा० १०१३।

साँवर गिरि साँवले पहाड (कृष्ण के शरीर) : चली धातु मनु ~ तैं २८९२।

साँवरी वि० १ काली साँवरौ ~ रैनि की नाया ३६५१। २ स्याम वर्ण की, साँवली मनु गोरा ~ नारि ढोउ २१५०। स्त्री० स्यामा, राधिका · आन सखिन सग सरुचि ~ सा० ल० ७।

साँवरे वि० १ स्याम वर्ण के सुभग ~ गात की ४५१ २ स्याम वर्ण वाले सोभित सुभग ~ गात १५० । पु० श्रीकृष्ण ने मेरे ~ जब मुरली अधर धरी ६२३।

साँवरेहि स्याम को · ~ दरसन क्यौं हु नहीं २९१।

साँवरैं वि० साँवले · ~ मनु कुसुमि डारि २१६०। पु० १

कृष्ण को . हौं पठई तोहिं लेत ~ २७९५ । २ कृष्ण ने : राज काज चित दियौ ~ ३७६६ ।

साँवरै श्याम ने . सरवस हर्यौ ~ ३०७ । २. स्याम पर . मोही सजनी ~ १४५७ ।

साँवरौ वि० श्याम वर्ण का, श्यामल : निरखि ~ गात ३९०६ । पुं० श्याम, कृष्ण : रस की रीति ~ बूझै ३९२६ ।

साँवल श्याम, श्यामल वर्ण • उज्ज्वल ~ बपु सोभित अंग १६११ ।

साइ शयन करने वाले : पति निज थल जल ~ ३०१६ ।

साईं १ नाथ, स्वामी : आस बिरास करौ जनि ~ १०२५ । २ स्वामी हैं . सुर-नर मुनि सबहीं के ~ ९८४ ।

साई शयन करने वाला • अच्युत रहै सदा जल ~ ३ ।

साऊ साहु (साहूकार का बेटा) • आपु कहावत ~ ४८१ ।

साक[1] साग भाजी ~ छकइयै १/२३९ ।

साक[2] साख, धाक । **चलति जहँ तहँ** ~ हर जगह प्रभाव या धाक है : करज कर पर कमल वारत — ~ १८३५ ।

साक[3] सात द्वीपों मे से एक जंबू, प्लश, क्रौच, ~, साल्मसि कुश, पुष्कर भरपूर सारा० ३४ ।

साकट[1] शाक्त, शाक्त मत के अनुयायी • तुम ~ वै भगत भागवत १/२४२ ।

साकौ रोब, धाक । △ ~ **कीन्हौ** रोब या धाक जमाकर ख्याति प्राप्ति की है : तुम सरि ~ — ३५ ।

साख शाखा या डाली सुर तरुवर की ~ लेखनी १/१८३ ।

साखन सखा के, प्रेमी के : इतनैहू पर बिन ~ घर, घट निकसत नहिं प्रान परि० १/१३९ ।

साखामृग वानर तरुवर त्यागि चपल ~ ९/८३ ।

साखामृग रिपु[2] वानरों के शत्रु (चींचडी, किलनी) • ~ चीर २४५२ ।

साखि १ साक्षी, गवाही ~ सखा की ऐसी भरिहौ १५३२ । २ साक्षी है तुम्है हमारी ~ ३६८९ । △ **पुकारत** ~ गवाही देता है निगम — ~ ४००७ । **बोलैं** ~ गवाही दे अब मेरी को ~ ३३३६ । ~ **बदौ** साक्षी दो : अब तुम ~ — ४००१ ।

साखी १ साक्षी, गवाह • ग्वाल सबै हैं ~ ७७४ । २ साक्षी है : सकल देव मुनि ~ ४ । ३ साक्षी है . हम तिय मृतक जियत ससि ~ ३८४६ ।

साखें गवाही या साक्षी है . वेद पुराननि ~ १/१५ ।

सागर-सुतपति आयुध सागर सुत (ऐरावत हाथी) का पति (इन्द्र) का आयुध वज्र (बिजली) . ~ मानौ वन-रिपु-रिपु मैं देत दिखाई १८६८ ।

सागहि साग-सब्जी : सो,क्यौ ~ मान ३८२६ ।

साच्छात साक्षात, प्रत्यक्ष : ~ देख्यौ तुम तिनकौ ८०० ।

साच्छी साक्षी, गवाही : ~ व्यापक ५/२ ।

साज पुं० १ रग ढग, स्थिति, दशा : देखत अपनौ ~ १/९६ । २. वैभव, ऐश्वर्य : राज - ~ सबहीं कौं डारि १/३४१ । ३ तैयारी सूर अब डर न करि, जुद्ध कौ ~ करि ९/१४२ । ४ सज्जित, शोभायमान् सर्प पर ससि ~ सा०ल० १४ । ५ साज, सजधज . देखौ रूप सरोवर ~ १०४९ । **क्रि० स०** १ सजाई है छपी उपमा ~ सा० ल० २ । २. होता है : कहत अचभौ ~ सा० ल० ६७ । **सुख** ~ सुख ही सुख आ छाये ह्वैहै ब्रज — ~ ८२४ ।

साजत १. शोभा दे रही है कटि मेखला अलकृत ~ १८०१ । २. सजाई : ~ सौज विचित्र बनाई ९/१६९ । ३ सजाते हैं, सजा रहे हैं . रचि रचि कै रथ ~ ९/१३० । ४ सजाये हुए हैं . ~ सरस सवाए सा० ल० ११ ।

साजति सजा रही हैं माखन दधि घृत ~ मटुकी १४९७ ।

साजति १ सजाती : ~ माँजति जो री २०५१ । २ सजाती है प्यारी फेरि अभूषन ~ २१८७ ।

साजन[1] प्रिय, वल्लभ • दूरि स्याम सौं ~ ३३७० ।

साजन[2] साज-शृ गार . अग अग करि ~ ६२२ ।

साजन[3] बनना, तैयारी करना । **लग्यौ** ~ साजने/सजाने लगा : फौज मदन — ~ ३३०२ ।

साजा वेशभूषा, साज . छाँडि देहु नटवर कौ ~ १५४६ ।

साजि[1] सजाया, सजाकर : दिन दस लौं जलकुंभ ~ सुचि दीप दान करवायौ ९/५० । २ बनवाकर पटरस भोजन ~ भोग सुरपति कौं दैहौ ८४१ ।

साजी[1] १ सज गया है निसि निघटी रबि रथ रुचि ~ २३३ । २ सजाने लगी नवसत कचुकि ~ ३६४८ ।

साजी[2] ताजी एक मकूनी दै मोहि ~ ३९६ ।

साजु पुं० १. सज्जा है (आनन्द है) . रुचिर तन कौ ~ ११६१ । २ तैयारी . किये मिलन कौ ~ ८०८ । **क्रि० स०** सजाओ : उठि आभूषन ~ ९/७९ ।

साजे १. पहन लिए : उलटे भूषन अगनि ~ ११८१ । २ सजाया, सजाये : सब गोपनि मिलि सकटा ~ ४०२ । ३ (शृ गार) सजाये हैं/किये हुए हैं नवसत ~ अर्थ स्यामघन २११७ ।

साजैं १ सजाने से, साधने से : जौ हरि मिलै जोग के ~३८८३ । २ सुशोभित कर देते हैं : जानि अजातहिं ~ १/३६ । ३ सुशोभित होते हैं नटवर भेष सदा हरि ~४०४९ ।

साजै क्रि० अ० १ शृङ्गार किये डाल रही है (बज रही है) . मप्त सुरनि मिल ~ ११८३ । २ सोभित होता है नख सिख भूषन ~ सारा० ८७६ । **क्रि० स०** १ सजाये, बनाये . ले करि दुदभि ~ ३८०७ । २ सजाता है जो चाहै सो ~ मोह ६/४ ।

साजौं सजाकर तैयार करता हूं सूर ~ सबै, देहुँ डौंडी अबै

९/१२९।

साजौ ताजा या बढ़िया मीरा ~ लेहु ब्रजपती ३९६।

साज्यो सजा हुआ है, शोभित है ढेखौ माइ रूप सरोवर ~।

साज्यौ १. १ सजाया है, बनाया है : सेज रचि पचि ~ सघननि कुंज २७८७। २ सजाया हो जनु ~ अलि सैन १३७७।

साझै भाग, हिस्सा : ~ भाग नहीं काहू को २९००।

साझौ हिस्सा . बहुरि न जीवन मरन मों ~ ३३८३।

साट = साटि[२]।

साटि[१] बदले में : निरगुन ~ गोपालहिं चाहत ३७२०।

साटि[२] साँठ-गाँठ नैननि ~ करी मिलि नैननि २२२२।

साटिनि छड़ियों से . ~ मारि करौं पहुनाई ३३०।

साठि साठ ~ अरु द्वादस कन्या १/४३।

सात साथ, सहित बिंबफल है रसाल के ~ सा० ल० ५०।

सातनव सोलह (श्रृंगार) धाम-धाम तैं आतुर, ~ बनाई २८८९।

साता सात • पियौ पय मोद करि घूँट ~ ४४०।

सातू सत्तू, भूने जौ और चने का पिसा हुआ पदार्थ : बिदुर ~ साग खायौ ४१८०।

सातैं १ सातवें • ~ दिवस भयौ जब परलय तब कीन्हो नृप स्नान सारा० ९५। २ सप्तमी की (बान को) . सुनि ~ सब सजग है २९१४। △ ~ भुलैहौ सात के चक्कर में पड़ जाओगी पाँच छह निदरि ~ — १७३९। मिलवत ~ सात मिलाते हैं अर्थात् चालाकी करते हैं हमसौं — ~ ३९३१।

सातैं रासि सातवीं राशि (तुला) : ~ मेलि द्वादस मैं १८०१।

सातैं रासि मेलि द्वादस मैं बारह बानी (खरे सोने) में सातवीं राशि तुला मिलाकर अर्थात् परखे हुए खरे सोने का . ~ कटि मेखला अलंकृत साजत १८०१।

सात्यकी सत्यक का पुत्र, जिसका दूसरा नाम युयुधान था उग्र-सेन बसुदेव ~ अरु अक्रूर उदार सारा० ७०३।

सात्युक सात्विक, शुद्ध प्रेम, सात्विक भाव : ~ 'सूर' देखि दोहन कौ सा० ल० ४३।

सात्विकी सात्विक भक्ति भक्त ~ सेवै मन ३/१३।

साथरी चटाई कुस - ~ बैठि इक आसन ९/१२१।

साथहि साथ ही बैठे सखा स्याम इक ~ १६१९।

साथिया स्वस्तिका • कौरनि ~ चीतनि नव निधि ३२।

साथियें साथ में . बाँधत बंदनवारे ~ द्वारे ध्वजा सुहाई सारा० ३९५।

साथें १ साथ ही नाम लेत ~ ३०५७। २ साथ में कै लै चलियै ~ ३६०७।

साद विषाद : पग पग पग रिपु ~ सा० ल० ३५।

साध[१] १ इच्छा, कामना, अभिलाषा : हरि देखन की ~ भरी ८०६। २ इच्छाओं को, इच्छाएँ • लेहु ~ सब नारि २८८३। ३ इच्छा को : नैननि ~ निवारे ३७५८। ४ इच्छा थी यह मन ~ बहुत ही मेरैं २१५३। ५ इच्छा है • स्यामा स्याम-छबि की ~ २१३९। ~ भरौं इच्छा पूरी करूँ करौं इतनी ~ — री १८५४। ~ मुई इच्छा समाप्त हो गई . हरि दरसन की ~ — १८५५।

साध[२] साधु, महात्मा महाराज, तुम तौ हौ ~ ९/३।

साधक तपस्वी . पचि पचि रहे सिद्ध ~ मुनि १/२६३।

साधति साधना करती हैं . तप ~ ७८२।

साधनता साधन क्रिया, साधना : कही विभूति सिद्धि ~ आस्रम चार कहानौ सारा० ८४४।

साधनि सधाना है, चढ़ाना है : भौंह कमान नैन सर ~ २२८०।

साधा[१] १ इच्छा, कामना, लालसा . रही नहीं कछु ~ १८५९। २ इच्छाओं को मेटिहौं आजु मन सबै ~ २१२८। ३ इच्छा है . देखौं री मोहिं ~ २००७।

साधा[२] साधते रहते हैं : सैन रहति दिन ~ १६९६।

साधि १ साधकर, सिद्ध या सम्पन्न करके मानौ धर्म ~ सब बैठ्यौ २/८। मौन ~ रहे मौन धारण कर लिया/साध लिया है . ऊधौ — ~ — ३८८२।

साधिका लालसा : पूजी मन का ~ १०७२।

साधि हैं साधना करेंगी ~ क्यौं पौन ३९९७।

साधी १ पली हो : लुब्धक-सँग ज्यौं ~ १३१२। २ सिद्ध या सम्पन्न की, लगाई जिहिं सुख कौं समाधि सिव ~ २२।

साधु १. सत, महात्मा। २. सज्जन ~ होइ तिहिं उत्तर दीजे ३६११।

साधे[१] साधे हुए है, चढ़ाए हुए हैं पारधि ~ बान १/९७। २ पूरा किये, सम्पन्न किये . रिपु जीते, ~ देव काज ९/१६६। ३ साधे हुए सनौ सिद्ध समाधि सेवत सुरनि ~ पौन २५७४।

साधे[२] साधना स्वरूप इंदीवर स्रुत कल कपोल मैं है सिंगार रस ~ सा० ल० ६।

साधैं (साधना) करती हैं : पति कैं हेत नेम तप ~ ७९९।

साधै[१] लालसा : नैननि ~ ई जू रही २३६८।

साधै[२] १ करता है मुक्ति हेत जोगी स्रम ~ १/१०४। २ काम पड़ जाती है : असुर द्वै है जैंवरि ~ ३९१। ३. साधना करे हमरैं कौन जोग बिधि ~ ३८९५।

साधौ[१] १ लालसा, कामना अँखियनि मिटै न दरसन ~ २०७१। २. लालसा से • नैन मरत हैं ~ ३१६९।

साधौ[२] १ नाश, करने लगे . बहुरि नृप अपनौ कर्म ~ ८/१६। २ करो (धारण करो) • करि बिचार जिय साधन ~ ४०४८।

साध्यौ १ धारण कर/साध लिया • यह कहि मौन ~ ग्वारि १६७२। २ धारण कर/साध लिया है बोलत नहीं मौन कहा ~ ९/१४५। ३ लक्ष्य या सधान किया • विषम बाण ~ ३२८५। ४ सिद्ध, सम्पन्न या पूर्ण किया • लै चरनोदक निज ब्रत ~ ९/५। ५ साधी, की मोहिं कारन तुम अति तप ~ ७९९।

सानद आनन्दपूर्वक • सुनि ~ चले बलि राजा ८/१४।

सान[1] कांति, आभा : हरैगौ तन ~ सा० ल० ५३।

सान[2] वह पत्थर जिस पर घिस कर अस्त्रादि हथियार तेज किये जाते हैं। △ ~ दै सान चढाकर, तेज करके : राख्यौ सुफल सँवारि ~ — ९/०५। △ ~ धराए तेज किये हुए लै लै ते हथियार आपने ~ — १/१५१।

सानहि सानता है, मिलाता है • मृगमद रज मैं ~ ४१६९।

सानि १. घोलकर, सान कर : मिश्री ~ चटावै नँदलाल ८४। ~ **सानि** मिला मिलाकर • ~ — दधि भात लियौ कर ४१६।

सानी १ मिलाई, मिश्रित की . ता पर मधुर मिसरी ~ १८३। २, भिगो दिया, लथपथ पर दिया : लै गोरस मैं ~ ३३७। ३ रत लोभहिं लोभ रहे हौ ~ ८८४। क्रि० अ० मिला दिया, सान दिया : सम सनेह घृत ~ ३८३२। **कलक मैं** ~ कलक से भरी हुई, पापिनी : हम ~ — २०६०।

साने १ सनकर, मिलकर . राँचे रहत रैन दिन माधौ हरद चून ज्यौं ~ २८२६। २ भरे या सने हुए जैसै हरि तैसैं तुम सेवक कपट चतुरई ~ हो ३०१५।

सानै १ मिलाती/मानती है . लै तेल, उबटनौ ~ १८३। २ मिला दे : पाइ सुधा खरि ~ ३७१५।

सानौ लीन हुआ इनमै कहूँ न ~ १/२०२।

सान्यौ १ मिलाया, साना ऊख माहि ज्यौं रस है ~ ३/१३। २ मिलाया है, साना है : कहाँ घालि ~ ३८९७।

साप[1] १ शाप : ~ दियौ ताकौं इहि भाइ ९/१७३। २ शाप हे नलकूबर कौ ~ रावनहिं ९/८०।

साप[2] शीघ्रता से : ग्रीषम रिपुन मद्धे ~ सा० ल० २।

साप दग्ध अभिशप्त ~ द्वै सुत कुबेर के ३८६।

सापन शाप देने (को) . दुर्बासा ~ को आये सारा० ७७२।

सापहि शाप से : मित्रबरुन के ~ पाई ९/२।

सापे सचित किया : ~ सुख रुख जी के सा० ल० १००।

सापै शाप दे जिय अति डर्‌यौ, मोहि मति ~ ९/८३।

साफ साफ (चुकता) लिखि कीनौ है ~ १/१४३।

साबिक पहले का, पुराने समय का, बाकी ~ जमा हुती जो जोरी १/१४३।

साबित ठीक, दुरुस्त द्वै लोचन ~ नहि तेऊ १८५०।

सामवेद चारों वेदो मे तीसरा वेद भीर भई दसरथ के आँगन, ~ धुनि छाई ९/१७।

सामरी सखी सखी के छद्म वेश मे कृष्ण, श्याम सखी • यह ~ मेरे हित चक्रवाक पढि आई सा० ल० ८४।

सामा सामग्री • भई लाज की ~ तनु मैं १७१६।

सामान्य साधारण, सामान्य अलकार . 'सूरदास' ~ करन कौं मा० ल० ७८।

सामीपता सामीप्य सालोकता ~ सारूपता भुज चारि ३४३१।

सामुही सामने की • चले ~ खोरी ३०४९।

सामुहे सामने से मैं जब चली ~ पकरन ३२२।

सामैं सामने वैठे जदपि जुधिष्ठिर ~ सा० ल० ७४।

सायक २, तीर, वाण . किसलय कुसुम कुत सम ~ २११६। २ वाण रूपी (कटाक्ष, नेत्र आदि) • द्वादस ही ~ , द्वादस धनु २१७१। ३ वाण हैं दामिनि खरग, बूँद ~ ८६७।

सायकनि वाणो से पथ अकास ~ छायौ ९/१४१।

सायर १ बडा जलाशय, तालाब : सात दिवस मूसल जलधारा ~ समुद्र भरे परि० १/४६। २ समुद्र : जल ~ मसि घोरैं १/१२५।

सायर-सुत हित पति सागर का सुत (अमृत) को चाहने वाले (देवताओं) के स्वामी (कृष्ण) का सूरदास ~ देखत मदन हर्‌यौ ३३९२।

सायल याचक : कर ~ को नारि परि० १/१६६।

सायुज्यता एकरूपता . इक रही ~ सो ३४३१।

सायुज्यौ सायुज्य (ऐसा सयोग जिसमे कोई भेद न रहे) हो गया हैं हम सालोक्य, सरूप ~ ३९००।

सारँग १ एक राग : सुरन ~ के मँभारत सा० ल० ६५। २. अनुराग : ~ बिसमैं मान सा० ल० ४। ३ आकाश : सारँग पति प्रगटे ~ तै १/३३। ४ कमल . गहै ~ करन सारग सुर सम्हारन बीर सा० ल० ४२। ५ कमलिनी (सारग) आपुहिं ~ नाम कहावै २१११। ६ काम : ठाढी ~ भारि २१११। ७ कामदेव : ~ सुख दरसावै सारा० ९४४। ८ कुरग, बिगडा हुआ, दागी ~ सुमुख सुंदर फेर सा० ल० ५५। ९ कुरग, बिगडी हुई सूरदास ~ उपकारिनि २०९७। १० कोमल सरुच ~ वैन सा० ल० ६५। ११ कोयल • ब्रह्मा सुता ~ के धोखे सारा० ९४५। १२ कोयल के : कहत ~ वैन हुलगत हृदय सा०ल० ६९। १३ खजन . ~ नैन, वैन वर सारँग २१७३। १४ गजराज ~ विकल भयौ सारँग मैं १/३३। १५ चन्द्रमा • ~ गयौ अपने देस सा० ल० ५५। १६ चोटी, वेणी • सारँग वरन पीठि पर ~ २१७३। १७ दीपक सिव भख ग्रह ~ सी जोत सा० ल० ६१। १८ धनुष अरु कर धर्‌यौ ~ ९/१५८। १९ नायिका . ~ हेरत उर सारग तैं सा० ल० ४। २० पद्मिनी : ~ जति, सारँग मति भोरी २१७३। २१ पपीहा . वै ~ एक सा० ल० ५९। २२ सारग (सुन्दर) को : ~ जाइ मनावहु २०९७। २३ वाण . ज्यौं सारग

सारग के कारन ~ सहत मा० ल० ४१ । २४ वाण की : सारग दुखी होत विनु ~ १७१४ । २५. वालों : सारग नमि सारग पे सारग, ता सारग पै ~ वैनी २७९८ । २६ भौंरा, लट्टू अथवा देव-नारियाँ नचत हैं ~ सुदर मा० ल० ९४ । २७ भौंरा : ~ नाम बुलावहु २०९७ । २८ मयूर का : ~ सब्द न भावै ३७६५ । २९ मृग ज्यों ~ मारग के कारन मारग सहत सा० ल० ४१, ~ दुखी होत विनु सारग १७१४। ३० मेघ · वाचर नीतन तैं ~ अति मा०ल० २४। ३१ मेघ के · ~ तुल्य शरीर १/३३ । ३२ यमुना : ~ पुलिन, रजनि रुचि सारँग २१७३। ३३. कृष्ण को : ~ देख सुनैं मृगनेनी सारा० ९४४ । ३४ राजा सारग (खट्वाग) ~ इक सारग ह्वै लोट्यौ १/३३ । ३५. रात्रि : धिग सारग, ~ मैं सजनी सा० ल० ४३ । ३६ शख निकस ~ तैं सु सारग सा० ल० ३२ । ३७ रगीले कृष्ण . सारग सुता देख ~ को सारा० ९४६। ३८ हे सखी ! . ~ सारँगधरहि मिलावहु २०९७ । ३९ सखी को · ~ मरत जियावहु २०९७ । ४०. सरस : मारँग नैन, वैन वर ~ २१७३ । ४१ सरस, सुदर रस, शृगार रस ~ प्रकासौ सा०ल० ४६ । ४२ सरोवर · ~ ही कैं तीर १/३३ । ४३ सर्प : मारँग माल लगत ~ सी मा० ल० ४५ । ४४ साडी : गहे दुष्ट द्रुपदी कौ ~ १/३२ । ४५ सिंह की (जैसी) : ~ कटि थोरी २१७३ । ४६ स्वर्ण : ~ अग सुभग सुन जोरी २१७३ । ४७ हस : अध ~ पर सकलइ २१११ । ४८ आनन्दित होकर : ~ ही सों हँसि हँसि जात ११९५ । ४९. केलि : अरि ~ राखि सारग कौं ११९५ । ५० दपति . अरि सारग राखि ~ कौं ११९५ । ५१ नेत्र : ~ पर सारग खेलत है ११९५ । ५२ लाल : सारग स्याम थौरहू ~ ११९५ ।

सारंग-कुलहि सारग कुल अर्थात् हरिण, कमल, खजन, मोरे, चन्द्रमा आदि को : ~ लजावत १७१४ ।

सारंगधर १ कामी · ~ मन खैंचौ सा० ल० ४६ । २ शार्ङ्ग-धर (कृष्ण) : नाथ ~ कृपा करि मोहिं पर १/२१४ ।

सारँगधरहि श्रीकृष्ण से . मारँग ~ मिलावहु २०९७ ।

सारँगपति . श्री कृष्ण ~ प्रगटे सारँग तें १/३३ ।

सारंगपति ता पति ता वाहन मेघ के स्वामी (इन्द्र) के पति (श्री कृष्ण) की वाहन, मुरली . ~ सारा० ९४६ ।

सारंग पद के रहन कौ जो थान चन्द्र, द्विज (भृगु), भृगु पद के रहने का स्थान (विष्णु), श्रीकृष्ण · ध्याइयै ~ मा० ल० शेष ५ ।

सारग पलट सारग (लवा पक्षी) को पलट (उलट) देने से = वाल : ~, पलट छव टोई सा० ल० ७८ ।

सारँगपानि १ कमलवत् हाथ से : ~ मूँदि मृगनैनी २६२४ । २ 'सारग' नामक धनुष को धारण करने वाले विष्णु या उनके अवतार कृष्ण : भजत न ~ १/१०२ ।

सारँगपानी सारग नामक धनुष को धारण करने वाले विष्णु या उनके अवतार राम, कृष्ण : दै सीता, मिलि ~ ९/१६०, अति सुन्दर वर ~ ३५६७ ।

सारग पितु सुत धर सुत वाहन कमल के पिता (समुद्र) के पुत्र (चन्द्रमा) को धारण करने वाले (महादेव) के पुत्र (कार्तिकेय) का वाहन, मोर : ~, आजु न नेंकु पुकारैं मा०ल० १०१ ।

सारग वचन पपीहा का शब्द (पी-पी), घनश्याम के वचन : ~ सुनत जीवन का सा० ल० ५४ ।

सारग-वाहन सर्प रूपी वाहनों (हाथों) : ~ पर मुरली, आनि देति दुहाई ६२६ ।

सारंग-रिपु[1] १ दीपक का शत्रु, वस्त्र, अचल, घूँघट : ~ के रहत न रोकै २३७९ । २ भ्रमर का शत्रु, चपा पुष्प ~ सीस वनैहै मा० ल० ९७ । ३. सर्प का रिपु, कैंचुली = कचुकी, चोली : नैन नीर ~ भींजत ३९४३ ४ रात्रि के शत्रु, सूर्य · ~ वाजि धरा अधयौ १६७२ । ~ है वस्त्रों की ओट करके · ~ — राखति झीनी १६८० ।

सारग रिपु-सुत-सुहृद पति सारग (रात्रि) के शत्रु (सूर्य) के सुत (सुग्रीव) के सुहृद (हनुमान) के स्वामी, राम = श्रीकृष्ण : ~ विना दुख पावत वहु भाँतें ४१२० ।

सारंग-सुत १ दीपक से उत्पन्न काजल : विथुर गयौ ~ सिगरौ सा० ल० १३ । २ भौंरा (श्री कृष्ण) ~ ढिग आवै मा० ल० ४ । ३ भौंरे का बच्चा अर्थात् तिल : नामैं ~ सोभित है २११ । ४ दीपक तथा सागर के पुत्र काजल और चन्द्रमा ~ छवि विन नथुनी सा० ल० ५० ।

सारग-सुत पति-तनया सारग (जल) के सुत (कमल) के पति (सूर्य) की पुत्री, यमुना ~ के तट ठाढे नद कुमार परि० २/५२ ।

सारंग सुत प्रीतम सुत रिपु रिपु रिपु रिपु समुद्र के पुत्र (कमल) के प्रियतम (सूर्य) के पुत्र (सुग्रीव) के शत्रु (बालि) के शत्रु (राम) के शत्रु (रावण) के शत्रु, देव = सुमन, पुष्प की : ~ माल वनावैं सा० ल० ७९ ।

सारंग-सुत-वदनि समुद्र के पुत्र (चन्द्रमा) के समान मुखवाली, चन्द्रमुखी . कहै ~ सुन रही नीचें हेर मा० ल० ५५ ।

सारंग-सुत वाहन समुद्र का पुत्र (चन्द्रमा) का वाहन मृग (जैसे नेत्र) ~ की शोभा २७४० ।

सारग सुत सुत सुत अहार सारग सुत (कमल) के पुत्र (ब्रह्मा) के पुत्र (शकर) का आहार कनक, स्वर्ण : ~ सी दीपन तन में जोऊ सा० ल० १०२ ।

सारगसुता १ आह्लाद की पुत्री, आह्लादिनी शक्ति, आनद देने वाली अथवा सारग (सूर्य =) वृषभानु की पुत्री, राधा · ~ देख सारग को सारा० ९४६ । २. सूर्य की पुत्री,

यमुना ~ दिखावें सारा० ९६१।

सारंगिन[1] सखी : ~ दै दोस सूर सा० ल० ४५।

सारंगिन[2] कुमुदिनी : ~ जो फूली सा० ल० ४५।

सार[1] १ तत्त्व, निचोड : ~ जो सर्व स्तुतिनि की ११७५। २ तत्त्व है सबकौ मत यह ~।१/६८। ३ सब कुछ हो : हरता करता तुमहीं ~ ८४५। ~ **कौ सार** सर्वोत्तम तत्त्व ~ — सकल सुख कौ सुख २/८।

सार[2] शाला मे : कपट करि ~ पासा खिलाए ४१९६।

सार[3] सुधि, खबर वहुरि न कीन्ही ~ ३१८५।

सार[4] श्रेष्ठ, उत्तम . माँगि लेहु हमसौं वर ~ ४/३।

सारग स रे ग आदि स्वरों द्वारा : यह लै, डारति वन वन ~ १३०७।

सारत अडे हैं, पूरी करते हैं : पैज आपनी ~ २३०१।

सारथि, सारथी सारथी, रथवान् पारथ कौ ~ भयौ १/२६।

सारद[1] सरस्वती, वाणी सिव सनकादिक नारद ~ १९९१।

सारद[2] शरद् की . ~ निसा रस रास करायौ १३५६।

सारदा-स्वामी ब्रह्मा : ~ , सिव ध्यान जाग्यौ १०६३।

सारन[1] बाजे की ध्वनि बधु ~ सुनत बेगि धाए ४२२१।

सारन[2] रावण का एक मत्री, जो गुप्त दूत वनकर राम की सेना का भेद लेने गया था . सुक - ~ द्वै दूत पठाए ९/१२०।

सारनौ लगाना • सुरुचि सारकौ ~ २८३२।

सारस[1] एक पत्ती • मृग मृगनी, द्रुम बन, ~ पिक काहू नहीं बतायौ री १०९४।

सारस[2] कमल : ~ रस अचवन कौं मानौ १७६१।

सारसहू कमल (से) भी ~ तैं नैन बिसाला २९४५।

सार सुता यमुना : ~ की ओर २४६७।

सारि[1] गोटी, चौपड या जुआ खेलने का पासा : ढारि पासा साधु-सगाति फेरि रसना ~ १/३०९।

सारि[2] साडी : साँवरै तन कुसुंभि ~ २१६५।

सारि[3] १ ठीक करके : तुरत सिंगारनि ~ २६०७। २. ग्रहण करके . ~ ज्यौनार, कै आचमन सुद्ध भये २९५६। ३ पूरी कर लो : लेहु साध सब ~ २८८३। ३ बना : अपनौ काज ~ तुम लीन्हौ १९५२।४ बनाकर . काज अ स्वामी रहे जाइ बिदेस ४२६४। ५ लगाकर : ति कौ ~ ८५०।

सारि[4] सभी, सारी • नदा, वृदा, जमुना ~ २००८

सारिका मैना : हस, सुक, पिक,
३३१४।

सारिखे सरीखे, समान . तुम ~

सारिहैं बदला लेंगी : सो परिहास

सारु सार, तत्त्व • कीधौं ये चच्छु
१९७८।

सारूपता सारूप्य, एक रूपता : सालोकता ~ सामीपता भुज चारि ३४३१।

सारे[1] १ सभी । २ मार, तत्त्व • ताहि बतावहु, जानै याकी ~ ३५७९।

सारे[2] निर्वाह किये . भक्ति दै, तासु सब काज ~ ३०४७।

सारैं समस्त सुधुनि रही फैलि नभ पृथ्वी ~ ४१९८।

सारै बता रही है . तिय नाम न ~ २२०१।

सारौ समस्त, सारा . सुधरि रह्यौ ब्रज ~ ३७९७।

सारौ सारना। ~ **चाहत** लेना चाहत हो : ~ दाऊँ।

सार्ङ्गपानी 'शार्ङ्ग' नामक धनुष को धारण करने वाले विष्णु या उनके अवतार . फूली है जसोदा रानी सुत जायौ ~ ३४।

सार्यौ पूरा किया • काज आपनौ ~ ९/१०३।

साल स्त्री० वेदना, पीडा : सुरति - ~ - ज्वाला उर अतर ९/४६। वि० कष्ट या पीडा पहुँचाने वाला है वैरिनि कौ उर ~ १३८।

साल[2] वर्छियां मजरि ~ विषारी २७८४।

सालक १ दु:ख देने वाले बहुरि भए मम ~ ३७४५। २ बेधने वाले, सालने वाले : सूर स्याम चले गाइ चरावन कस उरहिं के ~ ४२६।

सालत १ बेधते, दु:ख देते नैन रहे मोहिं ~ २२३१। २. बेधता है सूर सुत नँद के हियै ~ सदा २१२९।

सालति सालती, पीडा पहुँचाती : अब वे ~ हैं उर महियाँ ३००२।

सालन सालन (साग का बोटा) बेसन ~ अधिकौ नागर १२१३।

सालव मेरु राज्य का राजा जो शिशुपाल का मित्र था कीन्हौ युद्ध आय ~ सो सारा० ७९२।

सालहारी नष्ट भ्रष्ट करने वाले हैं कस कुल काले अरु ~ ४२१३।

सालहि सालने, वेधने : रिस लगी दनुज उर ~ ४१८२।

सालि साल, कष्ट दे : सकति रही उर ~ ३३१३।

सालिग्राम विष्णु की एक प्रकार के गोल पत्थर की मूर्ति : ~ मेलि मुख भीतर २६३।

(कानों) मे प्रवेश की अर्थात् सुनी बाँसुरी की धुनि
वेध गई प्रीति आनि उर ~ ४०९८।
देने लगता है • दुसह सूल उर ~ ४२४७।
करता है : तौ कन कठिन कठोर होत
~ ४१५४।
की मुक्तियों मे से एक जिसमे
लोक मे वास करता है : ~
३४३१, हम ~ , सरूप,

साल्मलि एक (पौराणिक) द्वीप ~ कुस पुन्कर भरपूर मारा० ३४।
साल्यौ बेध गया . मौति साल उर मैं अति ~ ३१४२।
साल्व शाल्व • काटि करि ~ की सुधि भुलाई ४२२१।
सावंत सामत, योद्धा . केन धरि लै चले हरषि ~ २६१४।
सावक शावक, बच्चा : अलि ~ सोइ न जान्यौ री १३७।
सावकहु बच्चा भी : मृग ~ डारत वारि १८३५।
सास तपन : महा सरद रवि ~ २६००।
सासन सुआसन। ~ देइ आसन देकर . ~ — बहुत करी विनती ४२८३।
सासना बहुत अधिक शारीरिक कष्ट, साँसत : प्रहलाद भक्त कौं बहुत ~ जार्‌यौ १/१००।
सास्त्रन शस्त्रों से डारि अग्नि मैं ~ मारो नाना भाँति प्रहारो सारा० १२०।
साह[1] साहूकार को : पकरौ ~ चोर कौं छाँटौ ३९०९।
साह[2] साख दिन दस मानी ~ ३३६६।
साहनि पार्षदों (सरदारों) को ब्रज बाहिर राख्यौ ~ कौं ९४९।
साहब परमेश्वर, स्वामी पोपन भरन विसभर ~ १/३१।
साहसिनि साहसी : ~ अति नारि १३४०।
साहिब प्रभु, स्वामी • ~ सौं जो कहै सुनाई ९२३।
साहिबी साहिबी, ऐश्वर्य और अधिकार का सुख भोग • न्हात-खात सुख करत ~ ९/१७२।
साहु १. ईमानदार • ये भए चोर तैं ~ १/४०। २ ईमानदार हैं • हम टोऊ ~ ४००१। ३. सज्जन हैं : एको सुपत न ~ ३२३३।
साहुहि सेठ-महाजनों को • ~ आनि दिखावहु ३९६५।
सिंगार १ श्रृंगार, सजावट, सज्जा • देह बिहार ~ न भावै ३७६५। २ श्रृंगार है • तुम्हरें भजन सर्वहिं ~ १/४१।
सिंगार जंगमन स्वरूप जगम चलने वालों के श्रृंगार स्वरूप, घुटने खचर खिलौना हित ~ लै धारै सा० ल० शेष ८।
सिंगारत श्रृंगार कर रहे हैं : मोहन मोहिनि अंग ~ २६२८।
सिंगारनि १ श्रृंगार का . मोतिनि हार ~ डोर परि० १/११५। २. श्रृंगारों को : तुरत ~ सारी २६०७।
सिंगारि १ पहनाई है लाल माल कुच बीच बिराजति सखियनि गुही ~ २११८। २ श्रृंगार किये हुए : षष्ट-दस - ~ ८२९।
सिंगारी श्रृंगार आदि से युक्त . गोप ग्वाल सब गए ~ परि० १/४३।
सिंगी श्रृंगी : बाँधे वेनु कंठ ~ पिय ३६९३।
सिंघ सिंह (शेर) . जघ कदलि कटि ~ विरोधी ३२३३।
सिंह वाला शेरनी कंदरा तैं निकसि ~ ३०४८।
सिंचाइ सींचा गया हो मनौ वृच्छ तमाल, बेली-कनक, सुधा ~ २११९।
सिंढहि सिंधु में ढरि आई ~ १०७।
सिंध सिंधु : ~ - सुमेर-नदी वन-पर्वत २५५।
सिंधन मख आराम मद्ध तें सैंधव (लवण) मछली और आराम शब्दों के मध्य अक्षरों के मिलाने से, बछड़ा, गोवत्स . ~ आज हेरायौ स्याम सा० ल० ८६।
सिंधु १ समुद्र, सागर। २ उदधि, दधि, दही : लै लै ~ सुत अति प्रिय सा० ल० ८०।
सिंधुजा गुन लवन कीन्हौ अंत तें पहिचान समुद्र की पुत्री (रमा), नमक का गुण (खारा), रमा और खारा के अन्तिम वर्ण के मिलाने से, मारा ~ सा० ल० ३४।
सिंधु रिपु भख पति पिता कौ सत्रु उदधि = दधि के शत्रु बिलाव का भक्षण (मूषक) के पति (गणेश) के पिता (महादेव) के शत्रु, कामदेव ~ सेना साज सा० ल० १०५।
सिंधु रिपु हित तासु पतिनी भ्रात सिव कर जौन आदि सिन्धु रिपु (अगस्त्य) के हितू (राम) की पत्नी (सीता) का भाई (मगल) तथा जो शिव के हाथ में है (त्रिशूल), अब मगल और त्रिशूल के आदि वर्णों के योग से मत्र : ~ कासों पढौं सा० ल० १०७।
सिंधु रिपु हित तासु पतिनी मातु सुत के रग सिंधु के रिपु (अगस्त्य) के हितू (राम) की पत्नी (सीता) की माता (पृथ्वी) के पुत्र (मगल) का रग, लाल • ~ सा० ल० १०५।
सिंधु सत्रु भख पति पितु उदधि (दधि, दही) का शत्रु (बिलाव) के भक्षण (चूहे) के स्वामी (गणेश) के पिता, शकर : ~ मानौ , रन तें घायल आए सा० ल० १३।
सिंधु-सुत १ समुद्र से उत्पन्न, अमृत अतरिच्छन ~ से कहत सा० ल० ६९। २ समुद्र से उत्पन्न, चद्रमा : नित तुव जगति ~ मानत २८०६।
सिंधु-सुता १ समुद्र की पुत्री, लक्ष्मी ~ तुव भाग्य विलोकत मारा० ९५२। २ लक्ष्मी के ~ सम जान सारा० ९६६।
सिंधु-सुता पति सागर की पुत्री (लक्ष्मी) के पति विष्णु या उनके अवतार कृष्ण • सूरदास बिनु ~ कोपि समर कर चाप लयौ री ३३१९।
सिंधु सुता-सुत समुद्र की पुत्री (सीपी) के सुत मोती के : मेरैं ~ सगा परि० १/६३।
सिंधु सुता-सुत ता रिपु गमनी समुद्र की पुत्री (सीपी) के सुत (मोती) के शत्रु हस गामिनी, हस की सी मद चाल चलने वाली . ~ सुन मेरी तू बात सारा० ९३७।
सिंधु-सुता-सुत-वाहन समुद्र की पुत्री (लक्ष्मी) के पुत्र (काम)

यमुना ~ दिखावैं सारा० ९६१।

सारंगिन[1] सखी ~ दै दोस सुर सा० ल० ४५।

सारगिन[2] कुमुदिनी ~ जो फूली सा० ल० ४५।

सार[1] १ तत्त्व, निचोड़ : ~ जो सर्व स्तुतिनि की ११७५। २ तत्त्व है सबको मत यह ~ १/६८। ३ सब कुछ हो : हरता करता तुमहीं ~ ८४५। ~ **को सार** सर्वोत्तम तत्त्व : ~ — सकल सुख कौ सुख २/८।

सार[2] शाला मे कपट करि ~ पासा खिलाए ४१९६।

सार[3] सुधि, खबर : बहुरि न कीन्ही ~ ३१८५।

सार[4] श्रेष्ठ, उत्तम : माँगि लेहु हमसौं वर ~ ४/३।

सारग स रे ग आदि स्वरों द्वारा : यह ले, डारति वन वन ~ १३०७।

सारत अड़े हैं, पूरी करते हैं : पैज आपनी ~ २३०१।

सारथि, सारथी सारथी, रथवान् पारथ कौ ~ भयौ १/२६।

सारद[1] सरस्वती, वाणी : सिव सनकादिक नारद ~ १९९१।

सारद[2] शरद् की . ~ निसा रस रास करायौ १३५६।

सारदा स्वामी ब्रह्मा : ~, सिव ध्यान जाग्यौ १०६३।

सारन[1] बाजे की ध्वनि बधु ~ सुनत बेगि धाए ४२२१।

सारन[2] रावण का एक मन्त्री, जो गुप्त दूत बनकर राम की सेना का भेद लेने गया था सुक - ~ द्वै दूत पठाए ९/१२०।

सारनौ लगाना : सुरुचि सारकौ ~ २८३२।

सारस[1] एक पक्षी • मृग मृगनी, द्रुम बन, ~ पिक काहू नहीं बतायौ री १०९४।

सारस[2] कमल : ~ रस अचवन कौं मानौ १७६१।

सारसहू कमल (से) भी . ~ तैं नैन बिमाला २९४५।

सार-सुता यमुना • ~ की ओर २४६७।

सारि[1] गोटी, चौपड या जुआ खेलने का पासा • ढारि पासा साधु सगाति फेरि रसना ~ १/३०९।

सारि[2] साड़ी : साँवरै तन कुसुंभि ~ २१६५।

सारि[3] १ ठीक करके : तुरत सिंगारनि ~ २६०७। २ ग्रहण करके ~ ज्यौनार, कै आचमन सुद्ध भये २९५६। ३. पूरी कर लो लेहु साध सब ~ २८८३। ३ बना : अपनौ काज ~ तुम लीन्हौ १९५०। ४ बनाकर • काज आपनौ ~ स्वामी रहे जाइ विदेस ४२६४। ५ लगाकर तिलक गिरि कौ ~ ८५०।

सारि[4] सभी, सारी • नदा, वृदा, जमुना ~ २००८।

सारिका मैना • हन्, सुक, पिक, ~, अलि-गुंज नाना नाद ३३१४।

सारिखे सरीखे, समान : तुम ~ बसीठ पठाए ३५२८।

सारिहैं बदला लेंगी: सो परिहास हम ~ २९०३।

सारु सार, तत्त्व • कीधौं ये चच्छु चारु, प्यारी मुख रूप ~ १९७८।

सारूपता सारूप्य, एक रूपता सालोकता ~ सामीपता भुज चारि ३४३१।

सारे[1] १ सभी। २ सार, तत्त्व ताहि बतावहु, जानै याकी ~ ३५७९।

सारे[2] निर्वाह किये . भक्ति दै, तासु सब काज ~ ३०४७।

सारैं समस्त सुधुनि रही फैलि नभ पृथ्वी ~ ४१९८।

सारै बता रही है . तिय नाम न ~ २२०१।

सारौ समस्त, सारा सुधरि रह्यौ ब्रज ~ ३७९७।

सारौ सारना। ~ **चाहत** लेना चाहत हो • ~ दाऊँ।

सार्ङ्गपानी 'शार्ङ्ग' नामक धनुष को धारण करने वाले विष्णु या उनके अवतार फूली है जसोदा रानी सुत जायौ ~ ३४।

सार्‌यौ पूरा किया काज आपनौ ~ ९/१०३।

साल स्त्री० वेदना, पीड़ा : सुरति - ~ - ज्वाला उर अतर ९/४६। वि० कष्ट या पीड़ा पहुँचाने वाला है : बैरिनि कौ उर ~ १३८।

साल[2] बर्छियाँ मजरि ~ बिषारी २७८४।

सालक १ दुःख देने वाले : बहुरि भए मम ~ ३७४५। २ बेधने वाले, सालने वाले • सूर स्याम चले गाइ चरावन कस उरहिं के ~ ४२६।

सालत १ बेधते, दुःख देते नैन रहे मोहिं ~ २२३१। २. बेधता है सूर सुत नँद के हियैं ~ सदा २९२९।

सालति सालती, पीड़ा पहुँचाती : अब वे ~ हैं उर महियाँ ३००२।

सालन सालन (साग का बोटा) बेसन ~ अधिकौ नागर १२१३।

सालव मेरु राज्य का राजा जो शिशुपाल का मित्र था कीन्हौ युद्ध आय ~ सो सारा० ७९२।

सालहारी नष्ट भ्रष्ट करने वाले हैं कस कुल काले अरु ~ ४२१३।

सालहि सालने, बेधने • रिस लगी दनुज उर ~ ४१८२।

सालि साल, कष्ट दे : सकति रही उर ~ ३३१३।

सालिग्राम विष्णु की एक प्रकार के गोल पत्थर की मूर्ति : ~ मेलि मुख भीतर २६३।

साली १ (कानों) मे प्रवेश की अर्थात् सुनी बाँसुरी की धुनि ~ १३६७। २ बेध गई प्रीति आनि उर ~ ४०९८। ३ सालने/पीड़ा देने लगता है • दुसह सूल उर ~ ४२४७।

सालै बेधता है, पीडित करता है : तौ कत कठिन कठोर होत मन मोहिं बहुत दुख ~ ४१५४।

सालोकता, सालोक्य पाँच प्रकार की मुक्तियों मे से एक जिसमे जीव भगवान् के साथ एक लोक मे वास करता है : ~ सारूपता सामीपता भुज चारि ३४३१, हम ~, सरूप, सायुज्यौ ३९००।

सालमलि एक (पौराणिक) द्वीप ~ कुम्भ पुष्कर भरपूर मारा० ३४।
साल्यौ वेध गया मौति साल उर मैं अति ~ ३१४२।
साल्व शाल्व . काटि करि ~ की सुधि भुलाई ४२२१।
सावंत सामत, योद्धा . केस धरि लै चले हरषि ~ २६१४।
सावक शावक, बच्चा : अलि ~ सोइ न जान्यौ री १३७।
सावकहु बच्चा भी · मृग ~ डारत वारि १८३५।
सास तपन : महा सरद रवि ~ २६००।
सासन सुशासन। ~ देहु आसन टेकर : ~ — बहुत करी विनती ४२८३।
सासना बहुत अधिक शारीरिक कष्ट, साँसत : प्रहलाद भक्त कौं बहुत ~ जार्‍यौ १/१०९।
सास्त्रन शस्त्रों से डारि अग्नि मैं ~ मारो नाना भाँति प्रहारो सारा० १२०।
साह[1] साहूकार को · पकरौ ~ चोर कौं छाँडो ३९०९।
साह[2] साख दिन दस मानी ~ ३३६६।
साहनि पार्षदों (सरदारों) को · ब्रज बाहिर रार्‍यौ ~ कौं ९४९।
साहब परमेश्वर, स्वामी : पोषन भरन बिसभर ~ १/३१।
साहसिनि साहनी : ~ अति नारि १३४०।
साहिब प्रभु, स्वामी · ~ सौं जो करै ढुताई ९२३।
साहिबी साहिबी, ऐश्वर्य और अधिकार का सुख भोग न्हात-खात सुख करत ~ ९/१७२।
साहु १. ईमानदार : ये भए चोर तैं ~ १/४०। २ ईमानदार हैं हम दोऊ ~ ४००१। ३ सज्जन है · एकौ सुपत न ~ ३२३३।
साहुहि सेठ-महाजनों को · ~ आनि दिखावहु ३९६५।
सिंगार १ शृंगार, सजावट, सज्जा : देह विहार ~ न भावै ३७६५। २ शृंगार है · तुम्हरें भजन सर्वहि ~ १/४१।
सिंगार जगमन स्वरूप जगम चलने वालों के शृगार स्वरूप, घुटने सचर खिलौना हित ~ लै वारै सा० ल० शेष ८।
सिंगारत शृगार कर रहे है . मोहन मोहिनि अग ~ २६२८।
सिंगारनि १ शृगार को मोतिनि हार ~ टोर परि० १/११५। २ शृगारों को · तुरत ~ सारी २६०७।
सिंगारि १ पहनाई है लाल माल कुच बीच विराजनि सखि यनि गुही ~ २११८। २ शृगार किये हुए षष्ट-दस · ~ ८२९।
सिंगारी शृगार आदि से युक्त : गोप ग्वाल सब गए ~ परि० १/४३।
सिंगी शृगी : बाँधे बेनु कठ ~ पिय ३६९३।
सिंघ सिंह (शेर) · जघ कदलि कटि ~ विरोधी ३२३३।
सिंह वाला शेरनी कदरा तैं निकसि ~ ३०४८।
सिंचाइ सींचा गया हो . मनौ वृच्छ तमाल, बेली-कनक, सुधा ~ २११९।
सिंदहि सिंधु मे ढरि आई ~ १०७।
सिंध सिंधु · ~ - सुमेर-नदी वन पर्वत २५५।
सिंधन भख आराम मद्ध तैं सैंधव (लवण) मछली और आराम शब्दों के मध्य अक्षरों के मिलाने से, बछड़ा, गोवत्स ~ आज हेरायौ स्याम सा० ल० ८६।
सिंधु १ समुद्र, सागर। २ उदधि, दधि, दही लै लै ~ मसु सुत अति प्रिय सा० ल० ८०।
सिंधुजा गुन लवन कीन्हौ अंत तैं पहिचान समुद्र की पुत्री (रमा), नमक का गुण (खारा), रमा और खारा के अन्तिम वर्ण के मिलाने से, मारा : ~ सा० ल० ३४।
सिंधु रिपु भख पति पिता कौ सत्रु उदधि = दधि के शत्रु बिलाव का भक्षण (मूषक) के पति (गणेश) के पिता (महादेव) के शत्रु, कामदेव ~ सेना साज सा० ल० १०५।
सिंधु रिपु हित तासु पतिनी भ्रात सिव कर जौन आदि सिन्धु रिपु (अगस्त्य) के हितू (राम) की पत्नी (सीता) का भाई (मगल) तथा जो शिव के हाथ मे है (त्रिशूल), अब मगल और त्रिशूल के आदि वर्णो के योग से मत्र : ~ कासौं पढौं सा० ल० १०७।
सिंधु रिपु हित तासु पतिनी मातु सुत के रंग सिंधु के रिपु (अगस्त्य) के हितू (राम) की पत्नी (सीता) की माता (पृथ्वी) के पुत्र (मगल) का रग, लाल ~ सा० ल० १०५।
सिंधु सत्रु भख पति पितु उदधि (दधि, दही) का शत्रु (बिलाव) के भक्षण (चूहे) के स्वामी (गणेश) के पिता, शकर : ~ मानौ, रन तैं घायल आए सा० ल० १३।
सिंधु-सुत १ समुद्र मे उत्पन्न, अमृत अतरिच्छन ~ से कहत सा० ल० ६९। २ समुद्र से उत्पन्न, चद्रमा . नित तुव जरति ~ मानन २८०६।
सिंधु-सुता १ समुद्र की पुत्री, लक्ष्मी ~ तुव भाग्य विलोकत मारा० ९५२। २ लक्ष्मी के ~ सम जान सारा० ९६६।
सिंधु-सुता पति सागर की पुत्री (लक्ष्मी) के पति विष्णु या उनके अवतार कृष्ण · सूरदास बिनु ~ कोपि समर कर चाप लयौ री ३३१९।
सिंधु सुता-सुत समुद्र की पुत्री (सीपी) के सुत मोती के · मेरैं ~ सगा परि० १/६३।
सिंधु सुता सुत ता रिपु गमनी समुद्र की पुत्री (सीपी) के सुत (मोती) के शत्रु हस गामिनी, हस की सी मद चाल चलने वाली : ~ सुन मेरी तू बात सारा० ९३७।
सिंधु-सुता-सुत-वाहन समुद्र की पुत्री (लक्ष्मी) के पुत्र (काम)

का वाहन, मन ~ की गति सारा० ९५८।

सिधुहि समुद्र को 'सूर' ताहि तजि निरगुन ~ अवगाहि ३७२५। ~ भजै समुद्र का आश्रय लेती है : जैसे सरि ~ — ११८०।

सिह[1] (सिह) कमर तापर ~ ठई २७७८।

सिह[2] बारह राशियों मे से पाँचवीं . चौथैं ~ राशि के दिनकर जीति सकल महि लैहैं ८६।

सिह दुवार सिह द्वार (ड्योढी) पर : मोहन, ठाढे ~ २९०६।

सिह पौर सिंह द्वार, किले या महल आदि का वडा फाटक · भीर जानि ~ त्रियनि की जसुमति भवन दुराई सारा० १०२८।

सिहहु सिह भी : ~ चाहि थली ३१९७।

सिहारे शृंगार किया है : सुरभी वृषभ ~ बहु विधि सारा० ३९६।

सिहासनै सिंहासन पर . द्वितिया वैठि ~ २९०३।

सिहिका एक राक्षसी, जो दक्षिण समुद्र मे रह कर उडते हुए जीवों की परछाई देखकर खा जाती थी · ~ कै सून १८४।

सिहिका सुत सिंहिका राक्षसी का पुत्र, राहु : ~ हर भूषन ग्रसि ज्यौं ३२२२।

सिए सीती है : ससि संका निसि जालनि के मग वसन बनाइ ~ ४११८।

सिकदार नायक, अधिपति ब्रज-परगन - ~ महर ३२९।

सिकरी सिकडी (जजीर) : ~ कनक रतन मुकुतामय १०५५।

सिकहरैं छींके को औरनि देत ~ तोरि ३२७।

सिकारी नाग मनसिज अहेरी, सरप, अतनु शब्दों के बीच के अक्षरों को मिलाने से, हेरत, देख रही है : ~ सखिन ओर अचैन सा० ल० ९२।

सिखंड मयूर का पख या मुकुट : सीस ~ अलक बिथुरे मुख १७७५।

सिखंडी[1] १ मयूर : सिखर ~ धातु बिराजत परि० १/३६, कवरी ग्रसत ~ अहि भ्रम ११२६। २ सिर का आभूषण : बिधु बिहुरे, बिधु किये ~ ११९८।

सिखंडी[2] राजा द्रुपद का नपुसक पुत्र कियौ सारथी ~ आइ १/२७६।

सिख[1] शिक्षा : तब औरनि ~ देहु ३६१३। २ सलाह : सुनु ~ कत, दत तृन धरि कै ९/११५।

सिख[2] १ चोटी · नख ~ लौं चख ऐन १८०४। २ चोटी तक . नख ~ इक अनुहारि ८४१।

सिखइं सिखाया है : बोलौ ज्यौं ~ ६१२।

सिखई क्रि० स० सिखाया है, सिखा दिया है · तोहिं किन रूठन ~ २७५२। वि० सिखाई, सिखलाई हुई : तरुनिनि की ~ बुधि ठानी ६९५।

सिखए क्रि० स० सिखाया . ~ भाव तरग २२७५। वि० सिखलाये हुए : श्री मुख के ~ ग्रथादिक ४१३०।

सिखऐ सिखलाने से . जिय गहि लई क्रूर के ~ ३७७१।

सिखयौ सिखाया, सिखाया है · सो ब्रत ~ गोपिका छाँड़ौ विषय विकार ४०९५।

सिखर[1] चोटी पर . ~ सिखडी धातु बिराजत परि० १/३६।

सिखर[2] आकाश . मुक्त माल उन नील ~ तैं ३५६०।

सिखर[3] १ पर्वत की चोटी को . ~ देखि सब रीझे मन-मन ९०४। २ पर्वत की चोटी पर ~ ढारत छीर ८३६।

सिखरनि दही मिला हुआ गुड या चीनी का गाढ़ा शरबत : बासौंधी ~ अति सौंधी १२१३।

सिखर-बधु-अरि पर्वत (कैलास) के बधु (शिव) का शत्रु, कामदेव . ~ क्यौं न निवारत ३२२२।

सिखराई सिखाया उहिं कौनै ~ परि० १/१७।

सिखरावैं सिखाते हैं · आपुन सिखि औरनि ~ ९५१।

सिखवत क्रि० वि० समझाते-समझाते : नैननि ~ हारि परी २३८६। क्रि०स० १ सिखलाता है ~ निरगुन फीकौ ३५१४। २ सिखलाते हैं, सिखा रहे हैं ~ नँद बार बार ६१९। ३ सिखलाते हो : फिरि-फिरि बार-बार सोइ ~ ३५४७।

सिखवति १ समझाते समझाते, समझाते हुए, · सूर स्याम को ~ हारी १४२७। २ सिखाती है ~ चलन जसोदा मैया ११५।

सिखवन सीख देने, सिखलाने के लिए : जाहि ग्यान ~ तुम आए ३९२५।

सिखवहु १ शिक्षा दो · कासी के लोगनि लै ~ ३६१२। २ सिखालाओ, सिखाओ : जौ तुम कोटि जतन करि ~ ३९९०।

सिखवैं सिखलाएँ हम बालक तुमकौ कह ~ २९१९।

सिखहि शिख तक की नख ~ छबि औरि २२९५।

सिखा १ चोटी : सात ~ सिर राखि कै ४१८८। २ चोटी (मुकुट) पर मनु तमाल ~ सिखी १८२४।

सिखाइ १ सिखाकर कौनैं पठए ~ १४६२। २ सिखला (दो) · सबनि कह्यौ देउ हमैं ~ ७/२।

सिखाई सिखलाया : विश्वामित्र ~ बहु बिधि विद्या धनुष प्रकार सारा० २०३

सिखाए १. शिक्षा दी है : स्वामि-धर्म सब जगहिं ~ ९/१६८। २ शिक्षा देने से · जोग ~ क्यौं मन मानै ३९२०। ३ सिखाया : सकल धर्म गृह के ~ ४१९४।

सिखायौ सिखाया है : यह पूजा किन तुमहिं ~ ८९७।

सिखाव शिक्षा . हौं हरि यहै ~ सिखाऊँ परि० २/३२।

सिखावत १ समझा रहे हैं : पालागन कहि सखनि ~ ९/१६७। २ सिखलाते हो हमहीं कहा ~ ६८१२।

सिखावति सिखला रही हैं, अभ्यास कराती हैं : जसुमति सुत

कौं चलन ~ १३० ।

सिखावति सिखला रही है, सिखलाती है : जसुमति कान्हहिं इहै ~ २२२१ ।

सिखावन पु० शिक्षा जिहिं जिहिं भाँति ~ दीन्हौ ३८११ । क्रि० स० शिक्षा देने, सिखलाने तुम आए लैं जोग ~ ३५६३ ।

सिखावहु १ बताओ, सिखलाओ . मैं दुहिहौं, मोहिं दुहन ~ ४०१ । २ सिखलाते हो · अरु जे बुद्धि ~ हमकौं ४०२७ ।

सिखावैं सिखलाते हैं . मोहन इन त सखा ~ २८९२ । २. सिखलायें, सिखला दें : सूरज अपनौ ग्यान ~ ३५९६ । ३ सिखायेंगे काल्हि तुम्हैं जो दुहन ~ ४०० ।

सिखावें १ सिखाते या सिखलाते हैं : तिन कत जोग ~ ३६५५ । २ सिखलाये : जो कोउ कोटि ~ ४०५१ ।

सिखि[1] १ मयूर · चन्द्रचूड ~ · चन्द सरोरुह १७१ । २ मयूर की : सेहरो मनु ~ सिखंड माउ १०७४ ।

सिखि[2] १ सिखाकर : कै तुम ~ पठए हौ कुबिजा ३८९० । २ सीख (कर) · धनुष कला सु सही सब ~ कै २८०२ ।

सिखनि मयूरों पुच्छ पिच्छ सिर धारि ~ कैं ३६२४ ।

सिखिनि मयूरों ने ~ सिखर चढि टेर सुनायौ ३३२८ ।

सखिहैं सीखेंगी : जोग विधि मधुवन ~ जाइ ३७१० ।

सिखी मोर, मयूर : ~ चन्द्रिका सीस रही फवि २२१९ ।

सिखैं सीखना चाहती होंगी : जोग ~ ते राँडै ३६०४ ।

सिखे क्रि० स० १ सिखाकर हरि कौं ~ सिखावन हमकौं अब ऊधौ पग धारे ३५९४ । २ सीखे : यह अक्रूर दसा जो सुमिरैं ~ सुनै अरु गावै ४१६० । क्रि० वि० सिखा-पढाकर, समझा-बुझाकर : मानौ ~ पठाए ३८०७ ।

सिखैयै सिखलाइए ऊधौ हमहिं न जोग ~ ३६९२ ।

सिगरी १ सब (सख्यावाचक) उरहन कौं ठाढी रहैं ~ ३९१ । २ सारी, समस्त (परिमाणवाचक) : ~ रैनि नींद भरि सोवत १/१२५ ।

सिगरे सब, सभी, समस्त · ~ ग्वाल विरावत सोमा ५१० ।

सिगरोइ सारा, सब (परिमाणवाचक) : ~ दूध पियौ मेरे मोहन २५९ ।

सिगरोई सारा, समस्त · हौं तौ ढूँढि फिरि आई ~ वृन्दावन ११२५ ।

सिगरौ सारा, समस्त : विथुर गयौ मारग सुत ~ सा०ल० १३ ।

सिच्छा शिक्षा, सीख भली ~ तुम दीनी ३/११ ।

सित १ उज्ज्वल, श्वेत : अगिनि पुज ~ बान धनुष धरि ९/१३१ । २ श्वेत (सदर्भ से सभवत· असित के लिए प्रयुक्त है, जिसका अर्थ है, नीला, काला) : सेत लाल ~ पात १७५४ ।

सितपच्छ शुक्ल पक्ष · सो ~ कुहू सम बीतत ४१४७ ।

सितासित श्वेताश्वेत · विसद द्वाग अभिराम ~ परि० १/८६ ।

सिथिल १ अलसाया हुआ, आलस्य युक्त . ~ रूप मन मैलत वाकौ ३०७० । २ ढीला ~ धनुष रति पति करि डार्‌यौ २३३ । ३ ढीली · बेनी ~ गुही २८ । ४ शिथिल (अकुश त्याग कर) . रसना स्वाद ~ लपट है १/१२३ । ५ शिथिल (सुन्त) देह ~ भइ ४/१२ ।

सिथिलाने शिथिल हो गये . अति आलस ~ सारा० १०१९ ।

सिथिलित वि० शिथिल हुए अग अग ~ भए प्रेम-रस पैंडैं परि २०५३ । स्त्री० शिथिलता · तच्छन हस्त चरन गति ~ ३९८२ ।

सिथिलै शिथिल भए अग ~ ३१८१ ।

सिद्ध १ तैयार किया हुआ, बना हुआ ~ पाक इहिं आइ जुठायौ २४८ । २ सफल, सफलतापूर्वक · यह विध ~ अलकृत सूरज सा० ल० ९७ । ३ सिद्धों की · ~ समाधि थके चतुरानन ११८३ ।

सिद्धताई सिद्धता कहूँ न सेन ~ ३७६१ ।

सिद्धि[1] सिद्धियाँ (योग के अनुसार सिद्धियों की सख्या आठ है— अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व, वशित्व, पुराणानुसार अजन, गुटिका, पादुका, धातुभेद, वेताल, वज्र, रसायन, और योगिनी) : अष्ट - ~ नव-निधि सुर-सपति २०४ ।

सिध[1] बना हुआ ~ जेंवन सिरात २३६ ।

सिध[2] योगी, सिद्ध . जानी सिद्धि तुम्हारे ~ की ३६९३ ।

सिधाइ सिधार · मुनि गए वैकुठ ~ २९१७ ।

सिधाई गये : कछू काज ~ ५० ।

सिधाए गये, सिधारे, प्रस्थान किये : हरषवत निज पुरी ~ ३८६ ।

सिधाये सिधारे, गये बनहिं ~ ३/१३ ।

सिधायौ १ गया, सिधारा : ततछन हरि कैं लोक ~ ९६६ । २ चले आए . बालि-सुतहू तहाँ तैं ~ ९/१३५ ।

सिधारहु सिधारो, आओ . कबहुँक इत पग धारि ~ ४०७८ ।

सिधारिए जाइये . तहीं ~ जहाँ लाग्यौ नयौ नेहरा २५४७ ।

सिधारी १ चल पडी : प्रातकाल असनान करन कौं यमुना गोपि ~ ४७६ । २. सिधार गई पुनि तन तजि हरि-लोक ~ ९/६७ ।

सिधारे १ गये, चल दिये यह कहि स्याम राम ऊधौ मिलि अपने भवन ~ ४१६० । २ चले गये, बीत गये चौस अनेक ~ ३६८४ ।

सिधारैं १ चले जाने पर · अजहुँ रहत तन हरि कैं ~ ३६२२ । २ चले जायें फिरि ब्रजनाथ ~ ३७०८ ।

सिधारौ १ जाओ, प्रस्थान करो नद विदा होइ घोष ~ ३११९ । २ सिधार गये, चले गये . प्रीति बढाइ ~ ३१९५ ।

सिधारचौ १ चला गया, मर गया तनहूँ त्यागि ~ १/३३६। २ प्रस्थान किया . सिव वैकुठ ~ ४३०७।

सिधावै जाता है मरि सुरलोक ~ ९/१५१।

सिधाहि प्राप्त करते हैं, जाते हैं . पापी हूँ वैकुठ ~ ६/४।

सिधावहु जाओ . मदौ पर्यौ, ~ अनत लै ३७२३।

सिधि सिद्धियाँ (दे० सिद्धि) अष्ट महा ~ द्वारैं ठाढीं १/४०।

सिन से तौ का कहिये 'सूर' स्याम ~ ४०२८।

सिब शिव : स्रवत ललित ~ बिथुरी अलक २९११।

सिब आनन शिव मुख=५. ५ का अक : ~ लिखि चद बिंदु दै सा० ल० १२।

सिब छत शिव क्षत, पाला, कुहरा . ज्यौं ~ दरसन रवि पाएँ १९१३।

सिब प्रिय शिव का प्रिय (भग) अर्थात् खडित • राग मूल भौ ~ देखत सा० ल० ४३।

सिब भख शिव का भक्षण, कनक, सुवर्ण : ~ ग्रह सारग सी जोत ना० ल० ६१।

सिब भूषन शिव का भूषण, चन्द्रमा दुती लगन मे है ~ सा० ल० ८१।

सिब भूपन रिपु भख सुत बैरी पितु अरि केर सुभाव महादेव के भूषण (चन्द्रमा) के शत्रु (राहु) के भक्षण (सूर्य) के पुत्र (कर्ण) के वैरी (अर्जुन) के पिता (इन्द्र) के शत्रु (वलि) का स्वभाव, दानी अर्थात् सखी : ~ सा० ल० ६७।

सिब रिपु तिय घट मनुज गिरा रस आदि बरन जा केरौ सुत बाहन महादेव के शत्रु (जालधर) की पत्नी (तुलसी), हीन, नर, गिरा और रस के आदि वर्ण तु हि न गि र = तुहिन गिरि (हिमालय) की पुत्री (पार्वती) के पुत्र (कार्तिकेय) का वाहन (मोर) के पख से बना मुकुट, मोर मुकुट ~ सिर धरै सा० ल० ४०।

सिब रिपु तिय जल जुत महादेव के शत्रु (जालधर) की स्त्री (वृन्दा) के साथ जल अर्थात् (वन) के मिलाने से, वृन्दावन ~ काहे तें सा० ल० १०१।

सिब-सुत शिव के पुत्र (वाणासुर), वाण • सिख मैं ~ जात ११९८।

सिब-सुत-बाहन-खाद शिव के पुत्र (कार्तिकेय) के वाहन (मोर) का भक्षण, सर्प • ~ सा० ल० ३५।

सिब-सुत-बाहन रिपु भख सुत महादेव के पुत्र (गणेश) के वाहन (मूषक) के शत्रु (विलाव) का भक्षण (दूध) से उत्पन्न (दधि)=उदधि (समुद) का सुत, चन्द्रमा : ~ ते सब तन ताप तचाए सा० ल० ४४।

सिब-सुत-बाहन सत्रु भोग सुत महादेव के पुत्र (गणेश) के बाहन (मूषक) के शत्रु (बिलाव) का भोग, दधि=उदधि (समुद्र) के पुत्र, चन्द्रमा . ~ सा० ल० ५१।

सिबि एक धर्मात्मा राजा, जो अपनी दानशीलता के लिए प्रसिद्ध है, शिवि . ~ नृप अरु सनकादिक कबि मुनि परि० १/१४७।

सिमिट १ एकत्र करके : गुजा ~ होत लौलीन १/१०२। २. एकत्र होकर • बहुरि ~ व्रज सुदरि सब मिलि १०७३।

सिमिटि एकत्र होकर, सिमट कर इतनी सुनत ~ सब आए ९/३८।

सिमिटैं एकत्र होंगे • यह सुनि जहाँ-तहाँ तैं ~, आइ होइँ इक ठौरैं १/१४६।

सिय श्री राम की धर्मपत्नी सीता की : ~ अदेस जानि सूरज प्रभु ९/२३।

सियपति श्री रामचन्द्र • हा सीता, सीता, कहि ~ ९/६२।

सियराई ठडी (फीकी) पड गयी . मुकुलित कुसुम नयन निद्रा तजि रूप - सुधा ~ ३२९१।

सियराए ठडे पड गये : ध्यान दरस ~ ३७८१।

सियरानी ठडी पड गई : पौंड्रक की आयुस ~ ४२०६।

सिय रिपु पितु सुत बंधु तात हित सीता के शत्रु (जयत) के पिता (इन्द्र) के पुत्र (अर्जुन) के भाई (कर्ण) के पिता (सूर्य) के हितु अरुण, लाल . ~ जाके चरन कमल गुनकारी सा० ल० १०२।

सियरे ठडे : निकसि करत किन ~ ३७८८।

सियरौ शीतल, सुखदायी विषयासक्त रहत निसि वासर सुख ~, दुख तातौ १/३०२।

सियाए सिलवाया है फिरि फिरि फेरि ~ (चीर) ३६९३।

सिया रिपु पित सीता के शत्रु (जयत) के पिता, इन्द्र ~ हेर सा० ल० ९४।

सियौ वद कर दिया . सधिहि संधि ~ री २५३२।

सिर सिर। △ ~ **ऊपर** बहुत ही निकट : काल फिरत ~ — ८०। ~ **टेकि** माथा नवाकर : सचिव ~ — तब कह्यौ निज नृपति सौं ४१९४। ~ **ठोकी लकरी** (कपाल क्रिया के समय) सिर भी लकडी (बाँस) से फोड डाला लै देही घर-बाहर जारी, ~ — १/७१। ~ **धरि** शिरोधार्य कर • पितु-आयसु ~ — रघुनायक ९/३२। ~ **धार्यौ** शिरोधार्य किया तिनहूँ कौ कहिवौ ~ — ३५६४। ~ **धुनत** अपनी भूल के लिए पश्चात्ताप करता • वार वार ~ जात मग २७५। ~ - **धुनति** सिर पीटती हैं, अपनी भूल पर शोक और पश्चात्ताप करती है वार वार ~ — ३२४०। **सिर धुनि** सिर पीटकर . ~ — आपु सराई २९२५। ~ **धुनि धुनि** सिर पीट पीट कर : ~ — पछितायौ १/३३५। ~ **राखे** स्वीकार करता अपने जन कौ प्रसाद सादर ~ —

३०८४।

सिरटीकौ सिरमौर : जाननि हौं ~ ३७३८।

सिरजत सृष्टि करता है : जग ~ पालत महारत ४३०२।

सिरजति उत्पन्न करती है ~ तान तरंग २४१०।

सिरजी उत्पन्न किया कत हम ~ चतुर विधाता ३६४०।

सिरजी उत्पन्न की गई (हैं) · विरह सहन कौं हम ~ हैं ३८०८।

सिरताज १ नायक, मुखिया · अपने सुत को वदन दिखावहु बडे महर ~ ३६। २. सिरमौर, शिरोमणि : रहत भयो ~ १४९१। ३ सिरमौर है (हो) · तू सुंदरि ~ ९/७९।

सिरनि सिरों पर ~ लिए दधि दूध १४६१।

सिरपाव वह पूरी पोशाक जो राजदरबार में किसी को सम्मान-रूप में दी जाती थी, खिलअत : दियौ ~ नृप राव ने ५८७।

सिरपोच सिर-पेंच सिरों की भाँति ~ डोलत सुभग २०६२।

सिरपेंच पगडी के ऊपर का एक छोटा कपडा या पगडी पर बाँधने का एक आभूषण : लटपटी ~ पाग २६४३।

सिरमोर प्रधान, शिरोमणि · गोप ~ नृप ओर कर जोरि कै ५८४।

सिरहि सिर पर दोउ कर जोरि ~ लै धारनि २००।

सिराईं समाप्त होते हैं गुन गन न ~ ३१।

सिराइ १ ठडा, ठडा करके · पियत दूध ~ ४९८। २ नष्ट (हो गया) · जनम तो वादिहिं गयौ ~ १/१५५। ३ वीत जाता है ऐसैं ही जो जनम ~ ७/२। ४ शीतल या सुखी होते हैं : देखत नैन ~ ४३०८। ५ ठडे/क्षीण हो डिवि गुन गण ~ ८७७।

सिराई १ पूरी हो रही है : नैननि साध नहीं ~ २३६९। २. शीतल हो जाँय : जा तें स्रवन ~ १२५८।

सिराए १ शीतल किया : रचि रचि साँचि ~ ३३४३। २ शीतल हो गये · सूरदास के नैन ~ ९/१६८।

सिरात १ कम या क्षीण होता है प्रेम नाहिं ~ १६०१। २ ठडा हो रहा है . मात ~, तात दुख पावन २२३। ३ ठडी होती है : नहिं ~ नहिं जात छार हैं ३८३४। ४. शीतल या सुखी होते हैं/होता है : सुनत ~ हिये १/१७१, देखत मेरे नैन ~ २६१६। ५ अन्त या समाप्त होना है करत सुख न ~ ११५३।

सिराति ठंडी होती, सुख मिलता · अतिहिं पिराति ~ न कबहूँ ३५७०।

सिराति वीतती या व्यतीत होती है जाति ~ राति वातनि मैं ९/१५५।

सिरान १ मद, धीमा या निष्क्रिय हो गया : धनुष बान ~ ~ कैधौं गरुड वाहन खोर १/२५३। २ शीतल या सुखी होने (दो) इँहि सुख हृदय ~ दै ८०५।

सिरानी १ क्षीण, कम प्रीति ~ जान ३२७२। २ ठडी हुई : जसुमति रानी कोखि ~ मारा० ४२६१। ३ बीत गई . कमल नैन की अवधि ~ ३६६। ४ शान्त हुई हैं : ता दिन तैं नहिं नैंकु ~ ३५६७।

सिराने १ निराश या हतोत्साह हो गये सात दिवस जल वरषि ~ ८६९। २ शीतल या सुखी हो गये सुनत ~ स्रवन मन ११८०।

सिरानौ १ वीत गया : अजहिं वमत सब जनम ~ ५२९। २ शान्त हुए हो अजहुँ नाहिंन कहि ~ ३६९१।

सिरानौंइ वीता जा रहा है . जनम ~ मौं लाज्यौ १/७३।

सिरान्यौ निराश या हतोत्साह हो गया वज्रायुध जल वरषि ~ ९५१।

सिरायौ १ ठडा किया · मधुर आँचि मैं औटि ~ १६००। २ ठडा हुआ · पै भोजन तोहूँ न ~ ०/५। ३ वीत गये . जोगि जुग ~ ३७००। ४ शीतल या सुखी हुआ : अब कुविजा पै हियौ ~ ४०९४।

सिरावत १ ठडा करते हो : अब क्यौं नैन ~ ३६३०। २ सिराती हुई, ठडा करती हुई · एक ~ मग मैं मिली ११८०।

सिरावन १ विताने : सूली सिमा ~ के ३३१६। २. ठंडा करने को : है कह्यौ ~ सीरा १८३।

सिरावै ठडा या शीतल करे . कोटि वेर जल औटि ~ परि० १/१३९।

सिरि श्री (शोभा) है · भाल तिलक केसरि ~ १०५१।

सिरैहै १ करते बनेगा · तब तोपै कछुवै न ~ ३३५३। २ शान्त होगा यह कहि ह्वदै ~ ३४७१।

सिरोपाव दे० सिरपाव कहि खवास कौं सैन दै, ~ मँगायौ २९३९।

सिरोरुह सिर के वाल रहित सनेह ~ सब तन ३६९३।

सिल पत्थर भई सूर गति ~ की ३२६२।

सिलप कौशल, शिल्प-कला दुरलभ ~ दिखावनौ २८३२।

सिलवारचौ सिलवार, पुरस्कार दै ~ त्याग्यौ २५१९।

सिला[1] १ चट्टान, शिला डारि दियौ तिहिं ~ पर ३०४०। २ शालिग्राम की वटिया, देव-मूर्ति : वदन पमारि ~ तव देख्यौ २६२। ३ शिला (अहल्या) ~ उद्धरि गई ५६८।

सिलाई शिला मति होहि ~ ९/४२।

सिलीमुख[1] भौंरा · अरु रस कमल ~ जानत ३६९८। २ भौंरे · कुंचित अलक ~ मिलि मनु १७९८।

सिलीमुख[2] १ वाण . दधि सुत धर रिपु सहे ~ सा० ल० ४४। २ वाण = सर, सरोवर ~ मारग निहारन मा० ल० १८।

सिव-छत पाला, कुहरा ज्यौं ~ दरसन रवि पाएँ १९१३।

सिवधर शिव=जल+धर=बादल . इकटक ~ नैन न लागत ३२८२ ।
सिवता शिवत्व : सिव ~ इनहीं तैं लई ३/१३ ।
सिवरिपु कामदेव · ता दिन तैं उर-भवन भयौ सखि ~ को सचार ३३८६ ।
सिव-सुत क्रोध अथवा वाण (असुर) सिव मैं ~ जात ११९८ ।
सिवहि शिव को : आइ नवायौ ~ ललाट ४/५ ।
सिवहु शिव ने भी ~ समाधि भुलान्यौ ११७३ ।
सिवहूँ शिव जी भी · अरु ~ मोसौं न बखानी १/२६ ।
सिवा पार्वती : सूर सब दिन ~ मोहित सा० ल० शेष ५ ।
सिवाती स्वाति (नक्षत्र) : ह्वै करि बूंद ~ ३६८१ ।
सिवार शैवाल घास . उरझि मोह ~ १/९९ ।
सिवारा सिवार था अधकार ~ १९६३ ।
सिपड मयूर पच्छ : सिर ~ बन-धातु विराजत १३८२ ।
सिपि मयूर : दुति ~ - सिषड-हरनी २१८४ ।
सिप्ठ श्रेष्ठ भृगु मरीचि अगिरा वसिष्ठ अत्रि पुलह पुलस्त्य अति ~ ३/८ ।
सिप्यहि शिष्यो को : रिषि ~ भेज्यौ समुझाइ १/२९० ।
सिसकत सिसकता, रोता . ~ मुनि जसुमति अतुराई २९३६ ।
सिसिर १ पाला से . रति सायक ~ बिदूसे हौ २५१० । २ शिशिर का याही ओट सहत ~ सीत १५१६ ।
सिसु पुं० शिशु, छोटा बच्चा · ~ की बुद्धि करी मनमोहन ८६६ । **वि०** छोटे . बृन्दावन नै ~ तमाल १९०४ ।
सिसुता १ बचपन, बाल्यावस्था अति ~ मैं ताहि सँहार्यौ ९५४ । २ बचपना · ~ माँहिं दुरावत १०२ ।
सिसुताई शिशुता : मुख-मुख जोरि वत्यावई ~ ठानै ७२ ।
सिसुपाल चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा जो श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया था मुक्त भयौ ~ १००८ ।
सिसुपालहि शिशुपाल को . रुक्मिनि कौ — देहु ४१६७ ।
सिहात १ दु खी हो रहा था · तब वह मनहीं मॉझ ~ २०२१ । २, ईर्ष्या कर रहे हैं : गुन गधर्व देखि ~ १६०३ ३ तरस रही है · दुख-सुख ब्याकुल झुरत ~ २२१८ । ४. प्रसन्न कर रहा है बोलि बैन ~ १८४ । ५ ललक उठे मनही मनहिं ~ १९४६ ।
सिहाति ललचाती है : मनहीं मनहिं ~ ३२८ ।
सिहानी १ प्रसन्न हो रही थीं . दोउ जननी मुख देखि ~ १३९८ । २. मुग्ध वा हर्षित हुई मन-मन महरि ~ २५३ ।
सिहाहि तृप्त होते हैं : पियहिं के गुन गनत उर मे दरस देखि ~ २३४८ ।
सींक सींक । △ **सात ~ बनाइ** बच्चे के जन्म के छठे दिन की एक रीति जिसमे सात सींकें रखी जाती है . द्वार साथिया देत स्यामा — ~ — २६ । ~ **न बोरी** छुआ भी नहीं · जिहिं रस मुनि जन ~ — परि० १/१६४ ।
सींके छींके को : ~ छोरि माखन दधि खायौ ३२८ ।
सींकै छींके पर : अब ~ चढि माखन खायौ २९३ ।
सीगरी सीगरी (मूली की फलियाँ) · सेम ~ छौंकि ओरई १२१३ ।
सींचत १ ठडा करते हैं · कोटि जतन कर ~ तोऊ सारा० ९५४ । २ सींचता है : अति अनुराग सुधाकर ~ दाडिम बीन समान सारा० १७८ । ३ सींचती है (ठडी करती है) अति स्रम मलय कुकुमा ~ ४१४२ । ४ सींचते हैं · रति की केलि बेलि सुख ~ २६३६ ।
सींचति सींच रही ~ है बसुधा-मृग-मीनौ १३०६ ।
सींचहु सींचिए . अधर सुधारस ~ २७३९ ।
सींचि सीचकर, छिडक कर जल ~ ५८९ ।
सींचियै सिंचन कीजिए . सूर सुजल ~ १/९८ ।
सींची सींची : ~ कनकलता 'सूरज' प्रभु २१५० ।
सींचे १ सींचते थे : प्रेम सहित ~ रघुराई ९/५९ । २ सींचा : जद्यपि प्रेम उमँगि जल ~ ३८३४ ।
सींचै सीचते ह नैन मूँदि ~ परि० १/१९० ।
सींचौं सींचता हू दृगनि ~ रोइ ३९५१ ।
सींच्यौ सींचा गया भूभृत सीस नमित जो गर्वगत पावक ~ नीर ९/२६ ।
सींव १ सीमा . ~ न चाँपि सक्यौ तब कोऊ ३३२४ । २ सीमा को · रूप ~ निरुवारि २११८ ।
सींवा १ सीमा निरखि सखि सुदरता की ~ १८०८ । २. सीमा हैं : अति सुरूप सोभा की ~ ३६८० ।
सी[1] समान, सदृश, जैसी : अरु जसुमति ~ जाकी माता ५०९ ।
सी[2] सीता : हरन भयौ क्यौं ~ कौ ३८२८ ।
सीकर १ जल कण जमुना जल ~ घनी ११८० । २ पसीना, स्वेद कण, बूँदें : भूषन सार 'सूर' स्रम ~ सा० ल० ४९ ।
सीके छींका काँधे धरि लिए ~ ४३२ ।
सीकैं छींका से : ~ बासन टरिहैं परि० १/१३ ।
सीखंड मोर-पख : सीस ~ मनि जटित कुटल स्रवन १०४१ ।
सीख शिक्षा . तजी ~ सब सास ससुर की ३५६६ । ~ **बतावैं** शिक्षा दें 'सूरदास' प्रभु ~ ३९२६ ।
सीखत १. सीखते : बडे लोग ~ हैं चोरी १९७७ । २. सीखते हैं नीत बिन बलवान ~ सा० ल० ६० ।
सीखन सीखने के लिए : हलधर रहे गदा जुध ~ ४१९१ ।
सीखनहारी सीखने वाली : ~ को है ३८७५ ।
सीखब सीखना : हौं चाहै तासों सब ~ सा० ल० ६७ ।
सीखहि सीखेंगी · कुमक ~ भाइ ३७१० ।
सीखे १ सीखे : ~ हैं अप जोग ३५९० । २ सीखा है, सीख लिये हैं . हरि के चरित मबै उहि ~ १७४५ ।

सीखें माखे • ~ सुनैं पढ़ैं मन राखैं मारा० ११०६।
साखौ सीख/शिक्षा भी को ~ नाहिं गहत ३५७४।
सीख्या नाखा है प्रेम हम स्याम अब ~ १८९४।
सीझी गीली ~ धूली चूरई टारि ११८०।
सीठी फीकी, मारहीन • लागत हमैं ~ ३७८०।
सीत[१] स्त्री० शीत, सर्दी • ~ उष्न सुख दुख नहिं मानै २/११।
वि० शीतल (ठंडे) मे माव मान जल ~ अन्हाइ ४१७०।
सीत[२] कोहरा, पाला • मनहुँ चंद कन ~ ४३७, सकुचन ~ भीत जलरुह ज्यौं ३५७।
सीत[३] कण, दाना • जो टोहे इक ~ ३८५५।
सीत[४] धवल, सफेद : स्याम सुभग तन, ~ दमन दुति ७।
सीतल १ ठंडा, शीतल। २. पुलकित, सुखी • ~ भयौ मातु कौ हियौ ४/९।
सीतलताहि शीतलता को ही उभै अग्र दव दारु कीट ज्यौं ~ चहै ४१०६।
सीता सत सीता का सच्चा धर्म, पतिव्रत ~ नहिं टरई ९/७८।
सीता सत्रु पिता की सेना सीता के शत्रु (जयंत) के पिता (इन्द्र) की सेना (मेघ) पयोधर, कुच • ~ सा० ल० १३।
सीथिनि चावल के दानों से, जूठन से • उदर भरौंगे ~ ४९०।
सीधो सीधे : ~ बहुत सुरसुरानंद गाडा भरि पहुँचायौ सारा० ४२०।
सीपज १ मोतियों की ~ • माल स्याम-उर सोहै १३९। २ मोती से : मनु ~ घर कियौ बारिज पर ९३।
सीप-सुत मोती : अबुन स्रवन ~ जोटनि १८७।
सीमत स्त्रियों के सिर की माँग सिर ~ सँवारि २११८।
सीय सीता • सर ~ पछितातिं यहै कहि ९/५०।
सीर[१] शीतल, ठंडा : चचल मलयानिल चलत ~ २९१२।
सीर[२] साझे का खेत या माल • मानहुँ लेत निबेरे ~ १६१।
सीरक ठंडक परै उर ~ ३९२५।
सीरा पकाकर गाढा किया हुआ शक्कर आदि का रस, शीरा हैं कढ़ी सिरावन ~ १८३।
सीरी ठंडी, शीतल • कछु ~ कछु ताती बनी २८२६।
सीरौ शीतल : तब अलि समि ~ अब तातौ ३७३७।
सील १ शील। २ दया • इतनी ~ करें पालागैं ४०८६।
सीला राधा की एक सखी का नाम : वै निमि बसे महल ~ कै २४८१।
सीव[१] सीमा, हद : सूरदास पीवत सुदर वर ~ सुदृढ निगमनि की तोरी १२०१।
सीव[२] महादेव, शिव प्रभु तुम्हरे इक रोम प्रति कोटिक ब्रह्मा ~ ४९२।

सीवाँ सीमा, हद • सूर स्याम सोभा की ~ १५९०।
सीवा सीमा • सोभा ~ हो २६१३।
सी पछ मोर-पख : सीस रचि ~ २१३९।
सीस १ सिर। २ सिर का वस्त्र वाहन ~ खिलौना दीनौ १/२०। ३ सिर पर ~ धरि धरि माट मटुकी १४९९। △ ~ **उतारौं** सिर काट डालूँ रिपु कौ ~ — ९/१३७। ~ **डोलाए** आश्चर्य प्रकट किया जम सुनि ~ — १/१२५। ~ **टोरैं** अत्यन्त मुग्ध या चकित होकर सिर हिलाती है सुर-बधु ~ — २८३९। ~ **धरि** नत मस्तक होकर सूर स्याम कैं चरन ~ — ३८५। ~ **धुनैं** सिर पटता है ~ —, कर मारै १/२५७। ~ **नाऊँ** सिर झुकाऊँ, अधीनता स्वीकार करूँ कहा राम कौ ~ — ९/१२९। ~ **पर नाची** सिर पर मँडराई (माया मे लिप्त हो गया) • माया विषम ~ — १/१८। ~ **परी** सिर पर आ पडी देख्यौ सूर विचारि ~ — अब तुम सरन पुकारौ १/१५२। ~ **फोरि** कपाल क्रिया करके : तेई लै खोपरी, बाँस दै ~ — बिखरैहै १/८६।
सीस्पन सिर पर नाचन ~ मोर परि० १/६०।
सीस फूल सीस फूल, सिर पर पहनने का फूल के आकार का एक आभूषण ~ सिर धारति १४९८।
सीस-मनि शीश मणि नापर सेस ~ धारत २१८९।
सीसहु सिर पर : ~ तै कछु पाग रही धँमि परि० १/८७।
सुड सूँड रोमावली ~ विवि कुच मनु २६२९।
सुडनि सूँडों मे भुजा भुज धरत मनु द्विरद ~ लरत २१२९।
सुंडि सूँट उनहिं वे पूँछ गहि जात ये ~ है ३०५६।
सुद निकुंभ का पुत्र एक दैत्य, जो उपसुंद का बडा भाई था • ~ उपासुद स्वेच्छा विहारी ८/११।
सुदर आखर सु वर्ण, स्वर्ण ~ नग पै नगपति सा० ल० ६१।
सुदरई सुन्दरता • रीझे स्याम देखि वा छवि पर रिस मुख ~ २५२६।
सुदरताई सुन्दरता धनि यह ~ २५५१।
सुदरि १ सुन्दरियाँ, युवतियाँ लोक-लज्जा निदरि, भवन तजि ~ १००९। २ सुन्दरियों मे • तू ~ • सिरताज ९/७९। ३ सुन्दरियों से, युवतियों मे : हँसि हँसि स्याम कहत हैं ~ २०११। ४ सुन्दरी निरखत बदन चकित भई ~ ४३५। ५ सुंदरी को देखि ~ रहे दोउ लुभाइ ८/११।
सुदरि-गन सुंदरियाँ, युवतियाँ • ~ सब करतिं बिचार ४७४।
सु दरिहि सुंदरी (राधा) को • करत सिंगार ~ ताक्यौ २१८७।
सुमृति स्मृति सु ति ~ औ वेद पुराननि ४१३९।
सु[१] १ अच्छे 'सूर' ~ बैद बेगि टोहौ किन ३६११। २ शुभ ~ लगन गनावत रे २८। ३ सुन्दर • दधि घृत

~ मिठाई १६२। ४ उत्तम, उच्च : जहँ वे बसैं ~ जाती ३४९४। ५ शुभ, कृपापूर्ण : कृपानिधान ~ दृष्टि हेरियै १/२०५। ६ श्रेष्ठ : जाकैं दल सुग्रीव ~ मन्त्री ९/११५। ७ भली प्रकार कर परणाम देव गुरु द्विकोज जल ~ स्नान कराई सारा० २१४।

सु² १ वह : ~ धनि दिन आवन रे २८। २ उन्हे कान्ह कहत अब गाइ जे गई ~ लीजै फेरि ४३१। ३ उसे : दुसह दई ~ लहत ३८३७। ४ वह भी : चित्रगुप्त ~ होत मुस्तौफी १/१४३। ५ वही : ~ करि 'सूर' जिहिं रहै पति २७७५। ६. वे : देहि पीठि ~ अभागे १/८।

सुअन पुत्र : माता पूछति ~ कौं १९६५।

सुआखर रिपु सु वर्ण=सुवर्ण का रिपु सुहागा=सुहाग, सौभाग्य · चँद भाग सँग गयौ ~ सा०ल० ४७।

सुक¹ शुकदेव : जैसैं ~ नृप कों समुझायौ २।

सुक² एक राक्षस जो रावण का दूत था : ~ -सारन द्वै दूत पठाए १/१२०।

सुक³ १ तोता : ज्यौं ~ सेमर फूल १/१००। २ तोता (नाक) · ता पर ~ पिक मृद मद काग २११०। ३ तोते : पिक ~ विहँग पवन थकि थिर रहे ११८७। ४ तोते से : नासा ~ उपमाऊँ १५५३। ५ तोतों का : स्रोनिका ~ जाल ६२७।

सुक⁴ शुक्र तारा : लागे उदय होन ~ २७९९।

सुकदेव कृष्ण द्वैपायन व्यास तथा शुकी के रूप में पृथ्वी पर भ्रमण करती हुई घृताची के सहवास से इनका जन्म हुआ था, इसीलिए ये 'शुक' कहलाए : हर चरननि ~ सिर नाइ ८/१।

सुकबि श्रेष्ठ कवि : ~ कहा टकटोहै १५८।

सु कर सारग सुन्दर कर-कमल : अघहर एक ~ तें सा०ल० ७।

सुकहि शुकदेव को : व्यास देव जब ~ पढायौ १/२२७।

सुकाग शुभ सूचक कौआ : इतनी कहत, ~ वहाँ तैं हरी डार उडि बैठ्यौ ९/१६४।

सुकादि शुकदेव आदि . नारदादि ~ मुनिजन थके करत उपाइ १/५६।

सुकिया स्वकीया नायिका, धर्मपत्नी : सूरदास सुजान ~ सा० ल० १।

सुकुमार जिनके अग बहुत कोमल हों . अरु सुनीति कैं ध्रुव ~ ४/९।

सुकुमारि, सुकुमारी १ सुकुमारियाँ : हरष भई ~ १४९९। २ सुकुमारी, कोमल अगों वाली . गगा तट ठाढी ~ १/२२९। ३ सुकुमारी (राधा) तडित तनु ~ १८८९।

सुकुल सफेद : गैयाँ ~ मँगाइ परि० १/७।

सुकृत १ पुण्य : जिन पद-कमल ~ -जल-परस्यौ ५७०। २ पुण्य की : परकृत-सील ~ उपमा रमी १३५६। ३ सत्कर्म : प्रगट भयौ अब पुन्य ~ फल २५०।

सुकृतनि सत्कर्मों : गह्यौ सब ~ कौ फल १/२०४।

सुकृति सत्कर्मों, पुण्यात्मा : सुनहु सूर नृप पास जानि कै बीच ~ अति दरस दियौ।

सुकृती सत्कर्मी, पुण्यात्मा . ~ सुचि सेवक जन काहि न जिय भावै १/१२४।

सुकोमल सुकुमार, नरम नरम . सुपक ~ रोटी १६३।

सुक्र¹ शुक्र, सौर गृह का एक नक्षत्र : छठयें ~ तुला के सनि जुत ८६।

सुक्र² शुक्राचार्य, एक ऋषि जो भृगु के पुत्र तथा दैत्यों के गुरु थे ~ असुर कौं लेत जिवाइ ९/१७३।

सुक्र बाहन शुक्राचार्य का वाहन, मेढक ~ सी सुखानी सा० ल० ५९।

सुक्र-सुता शुक्राचार्य की पुत्री (देवयानी) · ~ दिन पथ निहार्‍यौ ९/१७३।

सुक्रित सत्कर्म · परम भाग ~ के फल तैं १/७१।

सुख-आसन पालकी या सुखपाल पर चढि ~ नृपति सिधायौ ५/४।

सुखऊँ सुखा लूँ अपनौ अचल लै ~ री ११५२।

सुखकंद सुखकारी ध्वनि उपजत ~ सारा० ९८९।

सुखकर सुखदायक : ~ सब प्रतिकूल भए हैं ३५४८।

सुखकरन सुख देने वाला · दुहू लोक ~ हरन-दुख बेद पुराननि साखि १/९०।

सुखकारी १. सुख देने वाला अग अग ~ २३७४। २. सुख देने वाली · भ्राजत सकल लोक ~ ४२०७।

सुखद १ सुख देने वाला, सुखदायक पय पीजै अति ~ कन्हैया २२९। २ सुख देने वाली : ~ कुमोदिनि प्रफुलित जाइ ११८०। ३ सुख देने वाले द्वारका बसत ~ निज धाम सारा० ८४७।

सुखदनियाँ सुख देने वाला · सुभग सकल ~ १०६।

सुखदाइ १ सुख देने वाला, सुखदाता · अतिहिं परम ~ ५००। २. सुख देने वाले हैं सूरज प्रभु ~ ५८१। ३ सुख देने वाले हो · तुम सबके ~ ४४४।

सुखदाई वि० १. सुख देने वाली : सोवत मैं ~ (मेज) २४२। २ सुख देने वाले : बोले बचन सकल ~ १/३। ३ सुख देने वाले हैं : इनकौं वै ~ २३३३। पुं० सुख देने वाले (श्री कृष्ण) ने : कर जोरे बिनती करी दुरबल ~ १/२३८।

सुखदाए १ सुख देने वाले . देख्यौ जो द्वार स्याम ठाढे ~ २५०१। २. सुख देने वाले हैं : सूरज प्रभु सबकौं ~ ३०९५।

सुखदाता सुख देने वाले हैं : सूरदास प्रभु सब ~ २११५।

सुखदान सुख देने वाली तामे बैठि सकल जग देख्यौ कन्या

नौ ~ सारा० ५३।
सुखदानि सुख देने वाले : सूरदास ~ ३१८९।
सुखदानी १ सुख देने वाली धनि त्रिय तुमकौं जो ~ २५१४। २. सुख देने वाले . ऐसे प्रभु ~ १/११२।
सुखदाय सुख देने वाले वर्ष दिवस लौं सर्वरूप हरि ब्रज-वासिन ~ सारा० ४७०।
सुखदायक १ सुख देने वाला है ~ जिय जान १२१६। २. सुख देने वाले हैं ~ सबहिन के १५६७।
सुख-दैन १. सुख देने वाली . प्रगट भई सतनि ~ ९/१२। २ सुख देने वाले : तात-मात ~ १०३।
सुख-धाम स्वर्ग, बैकुंठ पतितनि कौं दीन्हौ ~ १७९।
सुखनि १ सुख • ~ जसुमति के कारन देह धरावन २५१। २ सुख से : क्यौं दुख कैं ~ डरं ३९८६। ३ सुखों • सकल ~ कैं दानि आनि उर १/७४। ~ फली सुखों से युक्त है . नखसिख राधे ~ — री १७०३।
सुखनिधान १. सुख की खान • जदपि ~ द्वारावति ४२७२। २ समस्त सुखों के आकर (राम) मनसा नाथ मनोरथ पूरन ~ जाकी मौज घनी १/३९।
सुखपाल पालकी : तजि ~ रह्यौ गहि पाइ ५/४।
सुखमा सुषमा, राधा की एक सखी ~ लीला, अवधा २००८।
सुखमाला सुख निधि : (देवकी) अव भजन ~ ४।
सुखमावत सुन्दर • जगमनि तैं सुर सुनावत सरस ~ सा० ल० ३७।
सुखवत १. सुखाता है • सोभित सिथिल वसन मन-मोहन ~ स्रम के पागे ६८६। २ सुखा रहे हैं • मुख के पवन परस्पर अपनैं ~ गहे पानि पिय जूरी २८२६।
सुखहारे सुख देने वाले : गोकुल-जन - ~ ३४०९।
सुखहि १ सुख को जे वा ~ लहत ६२०। २ सुख से • अपनैं ~ विलास १६१८।
सुखहि सुख ही बीनहू विसैं तैं ~ पैहै १७३९।
सुखहीं आराम से, सुखपूर्वक • ~ रहसि मिलौ रावन कौं ९/७७।
सुखाइ १ सुखता जा रहा है • बिनु मोइ नीर ~ २७७६। २ सुख सकता है : विरह समुद्र ~ कौन विधि ३९१६।
सुखान्यौ सुख गया तन तप तेज ~ ३६९६।
सुखारी सुखी : मुयौ असुर, सुर भए ~ ७/२।
सुखाली सुख-प्रद सँग रस रास ~ ३८२३।
सुखावत सुखा रहे हैं मुख कैं अनिल ~ स्रम जल १२००।
सुखित सुखी। ~ करे आनन्द देता है, सुहाता है . जनु सीतल सौं तप्त सलिल दै ~ ससोइ करे ९/१७१।
सुखेत रण क्षेत्र में (रहा/मारा गया) रह्यौ अहँकार ~ सूरमा ३३१३।
सुगंधनि सुगंध से सुमन ~ सेज सँवारै २४७९।
सुगथ सुन्दर पूँजी • 'सूरज' ~ गँवाइ गाँठि कौ १९९९।
सुगम सहज, सरल . जिनकैं ~ अनीति ३८८६।
सुगात सन्देह करते हैं, अथवा सुदर शरीर • आपु जबहि द्वारैं है निकसत देखत सबै ~ १६८३।
सुगान सुन्दर गीत : गावहिं मगल ~ ९६।
सुगाने क्रोध/शका करते हैं • वा आगैं हम सबनि ~ १३१०।
सुगाहक अच्छा (सुन्दर) ग्राहक : स्याम ~ पाइ दिखायौ ४०९४।
सुग्रीव वालि का भाई, वानरों का राजा और श्री राम का सखा या सहायक : जामवत ~ वालि सुत आए परि० १/१।
सुघटनि सुगठन से जानु जघ ~ करभा १७५५।
सुघर[1] १ चतुर ~ सखी मुसकाई सा० ल० १३। २ सुन्दर : अतिहिं ~ पिय को मन मोहति ११४४।
सुघर[2] सुन्दरी ने • मन मोह्यौ पिय को ~ ११८०।
सुघराइ सुदरता . ताहि यह ~ १२३४।
सुघराई वि० सुन्दर : नद नदन ~ बाँसुरी बजाई ११५१। स्त्री० सुन्दरता • सुरति - चिन्ह नीकी ~ २७१८। क्रि० वि० सुन्दरतापूर्वक, सुरुचिपूर्वक . ग्वाल नाचत ~ ६१९।
सुघरि सुन्दर (चतुर) • महर बडी मैं ~ सुनी है ७२४।
सुघरी शुभ समय या सायत अथवा वह घडी धन्य ~ सील कुल छाँडे राँची वा अनुरागहिं ६५६।
सुचद पूर्णिमा का चाँद • 'सूर' स्याम मुख ~ ३८९९।
सुचदहि पूर्णिमा के चाँद को • (सुजग) फिरि फिरि चाटत सुभग ~ १०७।
सुच शुद्ध, पवित्र रति मे अधर तिया ~ सा० ल० १०३।
सुच ही पति पितु प्रिया पवित्र, वर, वर ही (वर्ही, मोर) के स्वामी (कार्तिकेय) के पिता (शकर) की प्रिया, पार्वती • ~ पाँइ पर सा० ल० ९।
सुचार अच्छी तरह गोपी निरखति ~ जसुमति कौ है कुमार २७६।
सुचि वि० १. पवित्र दिन दस लौं जल कुंभ साजि ~ ९/५०। २ सुन्दर तरु रिपु पति सुत की ~ साँची सा० ल० ३। स्त्री० पवित्रता : सध्यौ नहिं धर्म ~ सील तप व्रत १/११०।
सुचित १ निश्चिन्त कह्यौ रहियौ ~ सौं २९९१। २ ध्यान से • सुनि सुनि ~ स्रवन जिय सुदरि १९८७।
सुची पवित्र तेरौ नीर ~ जौ अब लौं ५६१।
सुचेत चेतना, ध्यान नैंकु नाहिं ~ २७३७।
सुच्छ साफ ~ वसन नय उर के रस मे सा० ल० ८३।
सुछद १. स्वच्छ है . चदन सरस ~ ३८१५। २ स्वतत्र, स्वाधीन • सब सखि-सखा ~ २०३।
सुछम सूक्ष्म • चित लोभी नैन द्वार अतिहिं ~ १८५७।
सुजन १ आत्मीय जन, परिवार के लोग मातु-पिता, पति,

वधु ~ नहिं ३५६४। २ भला या सज्जन पुरुष ~ वेष रचना प्रति ~ १/१२३।

सुजरनि बहुत अधिक जलन : 'सूर' ~ कहा उपजी जो दूरि होति करि ओसन ४२५८।

सुजल १. अच्छा (पवित्र) जल · मीन ~ विनु भोलै ३६४५। २ अच्छे (पवित्र) जल से : 'सूर' ~ सींचियै कृपानिधि १/९८।

सुजस सुयश, सुकीर्ति · सूर मन ~ तिहुँ लोक छायौ ९/१२८।

सुजान १ चतुर, समझदार परम ~ अखिल अधिकारी १/२१२। २ चतुर या समझदार हैं · हमहूँ चतुर ~ १०१७। ३. चतुर या समझदार है तू तौ बडी ~ १६५२। ४ विज्ञ, ज्ञानी गावत सुनत सत ~ १/२३५।

सुजानहि सुजान को पाती दीजौ स्याम ~ ४१६९।

सुजानि चतुर : (कृष्ण) आए सुदर सरस ~ १८८३।

सुझाइ दिखाई देता है। कछु न ~ कुछ समझ मे नहीं आता, कोई उपाय नहीं सूझता : मोकौं — ~ ५८९।

सुझैहौं सुझाव दूँगा तोकौं सरस ~ सा० ल० १०।

सुठान १ सुन्दर (मर्म) स्थान (हृदय) : घात कियौ उलटे ~ सौ १९६४। २ सुगठित, सुन्दर . सुनि ~ ठोडी अति सुन्दर २६१०।

सुठानी उठा बजायी हो : मनहुँ काम कर मुरलि ~ २८४६।

सुठि १ अच्छा, बढिया अति उज्ज्वल कोमल ~ सुन्दर देखि महरि मन मान ८९। २ अत्यन्त, बहुत : स्रवन सुनत ~ मीठे बोल ६३०। ३ सुन्दर : नई छरहरी ~ बैस थोरी १७५१।

सुढार १ ढली हुई कनक वरन ~ सुन्दरि सकुचि बदन दुराइ ६७६। २ सुडौल या सुन्दर ढला हुआ · आनि धरयौ नद-द्वार अतिहीं सुंदर ~ ४१।

सुढारि सुडौल : अधर सुरग ~ २११४।

सुन कमल ब्रह्मा : जुगल कमल ~ विचारत २४६६।

सुत-कुबेर यमलार्जुन · दुखित जानि कै ~ के १/१२२।

सुत कृसानु सुत अग्नि से उत्पन्न (धुएँ) से उत्पन्न, बादल : ~ प्रवल भये मिलि चारि ओर तैं आए सा० ल० ११।

सुत धरम धर्मराज का पुत्र, युधिष्ठिर : ~ आदि चित चार सा० ल० ७४।

सुत-धारि सूत्रधार, बढई : बोले बिसकरमा ~ २८३०।

सुतन सुन्दर शरीर वाली, सुदरी, सखी : ~ मोकौं सकुच आवत सा० ल० ६९।

सुतनि १ पुत्रों · अदिति ~ कौ कारज साध्यौ १२/२। २. पुत्रों के : सूर सोइ प्रभु ग्वाल ~ सग ३९०७। ३. पुत्रों को · प्रेम सहित दोउ ~ जिवावति २२८। ४ पुत्रों ने · तासु ~ जमदग्निहिं मारयौ ९/१३।

सुत पिनाकी तासु बाहन भपक भप पिनाकी (शिव) के पुत्र (कार्तिकेय) के वाहन (मोर) के भक्ष्य (सर्प) का भक्ष्य, पवन : ~ विष खानि २०८६।

सुतप्त उष्ण, गर्म : देखत ~ जल तरसै १८३।

सुत प्रहलाद तासु सुत ता पितु भ्राता प्रहलाद के पुत्र (वैरोचन) पुत्र के (वलि) के पिता (सूर्य) के भाई (हिरण्य) सुवर्ण, सोना ~ वृथा गँवायौ सारा० ९४३।

सुत मारा (प्रतिछवि, स्वरूप, मारा=कामदेव)=कामदेव स्वरूप : सुदर लिखत रूप सुन सुत ~ सा० ल० ८७।

सुतर तर किया हुआ, लगा हुआ . सुरभी ~ गमाई सा० ल० १६।

सुतल सात पाताल लोकों मे से एक ~ लोक थिर करि थाप्यो सारा० ३४३।

सुत-सुत नदनंदन, कृष्ण : ~ लखति ति पीपी गोपी सा० ल० ४३।

सुतहार शिल्पी, बढई : रचे विस्वकर्मा ~ ८४।

सुतहि पुत्र को हरिनकसिप तव ~ बुलाइ ७/२, ताकैं ~ मनावति ७७४८।

सुतहु पुत्र भी : आइ लपटे ~ नद केरे ३०५४।

सुतहू पुत्रों को . मम ~ जे कस सँहारे ४२९९।

सुता १. पुत्री · इला ~ ताकैं गृह जाई ९/२। २ पुत्री के : सुनी जरासंध वृतात मुख ~ तैं ४१६१। ३ पुत्री को . सूर ~ समुझावति जननी १७०८।

सुतादधि समुद्र-पुत्री=लक्ष्मी=राधा : ~ पति सौं क्रोध भरी २६२३।

सुतार बढई रच्यौ काम ~ २८३५।

सुतीक्षण अगस्त्य मुनि के भाई जो वनवास मे श्री राम से मिले थे · दरसन दियौ ~ गौतम पचवटी पग धारे सारा० २५६।

सुते शयन किया : परम चतुर हिय लाइ ~ २५०४।

सुतौ पुत्र को भी : ~ हमारौ लिये जात हैं २९८३।

सुथरी स्वच्छ, साफ : सोइ रहौ ~ सेजरिया ७४६।

सुथरे स्वच्छ . बिथुर अलक ~ आनन पै २०११।

सुथिर अत्यन्त स्थिर या दृढ . अति पूरन पूरे पुन्य रोपी ~ धुनी ७४।

सुदच्छिन राजा पौंड्रक का पुत्र, जो विदर्भ का राजा था : नृप ~ महादेव ध्यावै ४२०७।

सुदरसन, सुदर्सन विष्णु के चक्र का नाम : चक्र ~ करि सहारयौ ४२१९।

सुदामहि १ सुदामा को : मघवा को सुत भयौ ~ मारा० ८२१ । २ सुदामा से (कृष्ण) मिलैं ~ १/३१ ।

सुदामा[1] एक दरिद्र ब्राह्मण जो कृष्ण का सहपाठी और परम मित्र था दुर्बल विप्र कुचैल ~ ८१८ ।

सुदामा[2] कंस का एक माली, जो श्रीकृष्ण को मथुरा में मिला था : पुनि ~ कह्यौ, गेह मम अति निकट, कृपा करि तहाँ हरि चरन धारे ३०४७ ।

सुदामा[3] श्री कृष्ण का एक गोप सखा सुबल ~ अरु श्रीदामा ४१० ।

सुदृढ़ मजबूत . सुजनि धरौं भरि ~ मनोहर १९२९ ।

सुदेस[1] १ सुन्दर झूमत लटकत मुकुट ~ ११८० । २ अच्छे हैं अति घनस्याम ~ सूर प्रभु ८६८ ।

सुदेस[2] अपने देश मे एक बेर मिलौ कृपा करि, कहै सूर ~ ४२६४ ।

सुदेसनि अपने देश में : गावति सखि न ~ ३३१० ।

सुदेसी स्वदेशी, स्थानीय गावैं गीत ~ परि० १/१४१।

सुद्ध १ उत्तम, श्रेष्ठ ~ पथ पग धरतौ १/१२३ । २ शुद्धि/स्नान के : गई बन नीर तनु ~ हेनी २६०४ । ३ स्वच्छ, निर्मल . जल ~ निरखि सन्मुख है ९/११ ।

सुद्ध आखर सु वर्ण (सुवर्ण) सौन्दर्य ~ भरत ग्रीषम रिपु न मद्धे माप सा० ल० २ ।

सुद्धा शुद्धा, एक प्रकार की भक्ति मन रज तम गुन ~ सार ३/१३ ।

सुद्धासुद्ध शुद्ध-अशुद्ध ~ बोझ बहु हैं सिर १/२१६ ।

सुद्युम्न वैवस्वत मनु का पुत्र, जो इट के नाम से प्रसिद्ध था, यह शिव के शाप से स्त्री हो गया था नाम ~ ताहि रिषि धर्यौ ९/२ ।

सुधग १ कलात्मक रीति से, अच्छे ढग से गति ~ सौं भाव दिखावत २०५८ ।

सुध याद, स्मृति ~ बिसरी उन फूलनि की ३९१० ।

सुधन्वा दे० सतधन्वा निसि अँधियारी जाइ ~ ताहि मारि मनि ल्यायौ ४१९१ ।

सुधरतौ सुधर जाता, ठीक हो जाता दोऊ जन्म ~ १/२७९ ।

सुधरि दुरुस्त, ठीक • बिनु उपदेस सहजहीं जोगी ~ रह्यौ ब्रज सारौ ३७९७ ।

सुधरी सुधर गया : तातैं सब ~ ३०७२ ।

सुधर्मा धर्मनिष्ठ, धर्म परायण आपुन भए ~ भारी १५८१ ।

सुधाइ निकलवाकर, ठीक या निश्चित कराकर : नीकौ सुभ दिन ~ ४१ ।

सुधाकर चन्द्रमा . रिपु माधव, पिक बचन, ~ ३८५१ ।

सुधाकरनि चन्द्रमाओं (राधा और कृष्ण के मुखों) पर • भृग जूथ ~ मनु २१३२ ।

सुधागरि अमृत भरे • प्यारी बदन ~ कौं २०१९ ।

सुधागृह, सुधागेह, सुधाग्रह अमृत का घर, ओष्ठ मानसर वासी ~ तैं न निकसन पाव सा० ल० १ ।

सुधानिधि चन्द्रमा मुख सौरभ समिलित ~ २४४५ ।

सुधा-प्रिय देवगण अथवा पपीहा . बमत ~ कथा सुनाई ३२८२ ।

सुधारति सुधारती है : लोचन आँजि ~ करजनि २०५१ ।

सुधारन सुधारने वाले हो : तुमहिं ~ काज १/२१९ ।

सुधारि १ सुधार कर : देह ~ मोहिं पुनि छीजौ २५४८ । २ सुधार लीजे जनम ~ ७/३ ।

सुधारी[1] भोला भाला, सीधा : भोरो निपट ~ ३९६५ ।

सुधारी[2] ठीक की, या बनायी : तिनकी सेवा कछु न ~ १/३४ ।

सुधारे[1] धुआँधार, धाराबाह : बरषत सुमन ~ १०४५ ।

सुधारे[2] सजा दिया : एक लपेटि ~ ६३२ ।

सुधारौं सुधार कर लूँगा तौ हौं अपनी फेरि ~ १/१३६ ।

सुधारौ ठीक कर लो : देखौ बदन ~ २४८२ ।

सुधि[1] १ याद, स्मृति : तव जमलार्जुन की ~ आई ३९१ । २ स्मृति को 'सूर' स्याम वह ~ बिसराई ३५२८ । ३ होश, चेतना, ज्ञान • बिबस कछु ~ न अपनियाँ १०६ । ~ **आनि** ध्यान करके दीन जानि, ~ — भजन की ९/५९ । ~ **पावैं** स्मरण करेंगे 'सूरदास' प्रभु क्यौं ~ — २२९१ । ~ **हारी** सुधि भूल गये अति डरपे तन की ~ — ९२६ ।

सुधि[2] पता, समाचार, हाल, खोज खबर तब तें मैं ~ कछू न पाई ९/३ । ~ **पाइ** समझ मे आ गया : चलहु सखी ~ — ९९० ।

सुधि बुधि चेतना, होश-हवास : स्रवन सुनत ~ सब बिसरी ७४२ ।

सुधियै सीधे : ~ सिंधु समानी २५९२ ।

सुधिहुँ याद भी तन की ~ बिसारी परि० १/४० ।

सुधिहु स्मृति/याद भी . मन ब्याकुल तन ~ गई १५८९ ।

सुधिहूँ सुधि भी . मन बच यह ~ न लही री ४१९३ ।

सुधूम धुएँ के रग की . कारी घटा ~ देखियति ८६८ ।

सुधौं न जाने, पता नहीं : ~ कहाँ समाइ १/५६ ।

सुधौ होश, चेतना प्रबल अपार मोह निधि दस दिसि ~ कहा अब करई १/४८ ।

सुधौटी अमृत का पात्र : गह्यौ सुधा रस - ~ १६४ ।

सुध्यौ सुधि/स्मृति भी असन बमन की स्याम ~ गइ परि० १/१५५ ।

सुनइयै सुनाइये, सुनने को प्रवृत कीजिए • बूढहिं कहा ~ ३३१७।
सुनट नटवर . नागर ~ की री २७९७।
सुनत १. सुनकर ~ बहुत सरमाऊँ ११७७। २. सुनता है जो यह ~ कहत सोई धिक २३३९। ३ सुनती हूँ . उत मोहन मुख मुरलि ~ सखि १९१५। ४ सुनती हैं • ऊधौ ~ तिहारे बोल ३८७०। ५ सुनते . पाछैं नद ~ हैं ठाढे २१७। ६ सुनते ही : रुदन ~ राजा तहँ आयौ ६/५। ७ सुनते हैं ग्वाल गन ~ स्याम-मुख बानी १५००। ८ सुनने के लिए स्रवन ~ उतकठ रहत हैं १३६। ९ सुनने मे : ~ न नैंकु सुहात १६८३। ~ - सुनत सुनते - सुनते ~ — उपज्यौ बैराग ७/८।
सुनतहि सुनते ही . ~ भयौ अँदेसौ ३८६८।
सुनतहि सुनते ही ~ उठ्यौ रिसाई सारा० ७३८।
सुनतही सुनते ही : सूरदास प्रभु बचन ~ ९/१४९।
सुनतही सुनते ही सूर स्याम यह बात ~ २२०।
सुनति सुनती हैं : तिन स्रवननि अब ~ मधुपुरी ४०२६।
सुनति १. सुनकर : ~ हँसति मनहीं मन भारी १७१०। २ सुनती . ~ नहीं है कुंवरि राधिका २०५४। ३ सुनती हो ~ कछू घर घर की बानी १६४८।
सुनन सुनने . कहौ ~ कौ मोहिं उत्साह ४२९७। कहन ~ कहने-सुनने : सोउ — ~ कौं रही १/२३०।
सुनहि सुनती हो पिय की बात ~ किन प्यारी २५८३।
सुनहीं १. सुनते हैं मेरौ कह्यौ न ~ २२४७। २ सुनेंगे • तिनहिं मोहि कहति प्रभु सूर ~ १७०७।
सुनहु सुनो : मोसौं बात ~ ब्रजनारी १५१८। ~ - सुनहु सुनो-सुनो ~ — सबहिन के लरिका ३२८।
सुनहुगी सुनोगी सूर स्याम तब कह्यौ ~ १५८४।
सुनाइ १ सुनाकर : सबनि ~ कही यह बानी ३०४१। २ सुना देहुँ तोहिं बृत्तात ~ ६/५। ३ सुनाई दे : जा बन केहरि-सब्द ~ ६/४। ४ सुनाओ . बेगि सु बचन ~ मधुप मोहिं ३६६२। ~ सुनाइ सुना सुना कर कहत ~ — २०।
सुनाई १. सुनाकर . कहौ न हमहि ~ २०८०। २ सुनाई थी : यहै कथा तब गर्ग ~ १६१९। ३ सुनाई पड रही थी जै धुनि सब्द ~ २२। ४ सुनायी, सुना दी : भली करी यह बात ~ ८१६। ५ सुनाया है, कहा है : छेम-कुसल अरु दीनता, दंडवत ~ १/२३८।
सुनाउ सुनाओ हमकौं हरि की कथा ~ ३६१८।
सुनाऊँ १ सुनाऊँगी . यह कहि जु ~ री २१०३। २ सुनाता हूँ : रास रस लीला गाइ ~ ११७८। ३ सुनाती हू सोऊ तुमहिं ~ २२५२। ४ सुनाऊँ, बताऊँ. कहौ तौ दुख आपनौं ~ ३५३८।
सुनाए, सुनाये १ सुनाया, बताया : तब हरि अर्जुन नाम ~ ४३०३। २. बोले, सुनाये . क्रोधित बचन ~ ९/२८।
सुनाय सुनाकर : बिनती करी ~ सारा० ३२९।
सुनायौ १ सुनाना चाहत तुमहिं ~ ८६। २ सुनाया, बताया . ग्वालिनि टेर ~ ८६८।
सुनारि सुनार की स्त्री, सोनारिन है ~ जाउँ निरखि, नैननि सुख देउँ १०७५।
सुनावत १ सुनाते हैं, सुना रहे हैं : मुरली सब्द ~ सबहिनि ३९९५। २ सुनाई पड गई दहिनैं धाह ~ ५४१। ३ सुनाते हो . निरगुन कपट ~ ४०२०।
सुनावति १ सुनाती . काहें न हमहिं ~ हौ २१९९। २ सुनाती है . यह कछु नोखी बात ~ २४३१।
सुनावन सुनाने के लिए • मुरली सब्द ~ ३२०३।
सुनावहीं सुना रहे थे : सारदा, नारद, सुजस उच्चार जयति ~ ४१८६।
सुनावहु १ सुनाओ, बताओ बाँचि ~ लिख्यौ कहा है ३७१७। २ सुनाते हो बार बार अलि कहा ~ ३८७१। ३ सुनाना : तब घर घर जाइ ~ १९५४।
सुनावैं १ सुनाओ, बताओ ग्वारि इक बात ~ १६१८। २ सुनाते हैं • करि करि लेखौ दान ~ १६०७। ३ सुनायें, सुना सके जासौं कहि जु ~ २२५६। ४ सुनायेंगे : बहुरि हम ग्यान तोहिं कहि ~ ८/१६।
सुनावै १ सुनाता है • जो यह लीला सुनै - ~ ७/२। २ सुनाती है यह कहि सबनि ~ १११४। ३. सुनाती हो : सीख री हमकौं क्यौं न ~ २६६
सुनावौ सुनाइये : रिपिन कह्यौ हरि कथा ~ १/२२८।
सुनि १ सुनकर हँसी महरि बल की ~ बतियाँ ४२५; तुम घर रहौ सीख मेरी ~ ९/३४। २. सुन सुनहु सूर रानी ~ पावै ३१०६। ~ आई सुनाई दी या सुनाई पडी • बात एक ~ — २७२८। सुनि ~ सुन-सुनकर : अब डरपत ~ — यै बातैं २२१।
सुनिबे सुनने : ऐसें हम कहिबे ~ कौ हम ३६४७।
सुनियत १ सुनता : 'क्रूर' कुटिलता जे ~ है ४०१३। २. सुनकर ऊँछ्र अडाने के सुर ~ निपट नायकी लीन सारा० १०१४। ३ सुनता हूँ नित प्रति ~ कान १/१६९। ४ सुनती : ~ हैं वे मीत तुम्हारे ४२२६। ५ सुनती हूँ : ~ ताहि सुन्दरी कान्ही ३१४७। ६ सुनती हैं : ~ कथा काग कोकिल की ३५४९। ७ सुनती है • ~ दूरि भलाई ३९३८। ८ सुनते : जन के निपट निकट ~ हैं १/१९६। ९ सुनते ही • ~ जत्र तौंत तैं जानी ३७७१। १० सुनते हैं, सुना है . ऐसे दिननि नद कें ~ २२। ११ सुना जाता है,

सुनाई पड़ता है ~ परम उदार स्याम घन २३३१ । १२ सुनी जाती है : ~ अधिक बटाई ९/४० । १३ सुनी है : ~ कथा पुराननि १/१५७ ।

सुनियन सुनाई पड़ने : सख कुलाहल ~ लागे ९/१०५ ।

सुनियै १ सुन लो अब ~ आपुन मन लाइ ०४६ । २ सुनाई• कान परी ~ नाहीं बहु बाजत ताल मृदग २९०७ । ३ सुनाई पड़ती है • बोलत ~ टेरि ६७४ । ~ - **सुनियै** सुनो सुनो • ~ हो धरि ध्यान ११८३ ।

सुनिरंतर निरन्तर • यह प्रताप दीपक ~ २/२८ ।

सुनिहु सुना . देखि हू ~ नहिं ताहि १/२२३ ।

सुनिहैं १ सुनेंगी • वे ~ उनकी मम-कावहु ३८७१ । २ सुनेंगे ~ मातु-पिता लोगनि मुख ३६५० ।

सुनिहै सुनेगा ~ कथा कौन निरगुन की ३७११ ।

सुनिहौं सुनूँगी • कबहीं कमल मुख बोलिहैं ~ उन बैननि ७४ ।

सुनीति राजा उत्तानपाद की धर्मपत्नी जो ध्रुव की माता थी नाम ~ बडी निहिं दार ४/९ ।

सुनु सुनो • कह्यौ विनय करि ~ रिपिराइ ९/१७३ । ~ **सुनु** सुनो-सुनो • तेरी सौं ~ — मेरी मैया ३३५ ।

सुने १ सुना, सुनकर . ~ स्याम सुखमा कैं आए, धाई तरुनि नई २६४१ । २ सुने सूत स्याम सौं हरि गुन ~ १/२२८ ।

सुनैं १ सुनेंगी : यह उपदेस ~ ते औरीं ३९७१ । २ सुने • बिनु देखें बिनुही ~ १/४४ । ३ सुनें तो : 'सूर' यह बात जौ ~ अबहीं महर २०१४ ।

सुनैंगे सुनेंगे : हम कापै अब कथा ~ सारा० ८३० ।

सुनै १ सुनता है : ताहि ~ जो कोउ चित लाइ ६/३ । २ सुन सकती हैं : पुरुष जु ~ बिरानै ३७१५ । ३ सुनते हैं : मथुरा नर नारी ~ ३११४ । ४ सुनने लगता है • बहिरौ ~, गंग पुनि बोलै १/१ । ५ सुन लेगा तू हँसि कहति ~ कोउ औरै १६९८ । ६ सुनेगा : कहिऐ काहि ~ कत कोऊ ३९४२ । ७ सुनो : मेरी कही ~ री सुदरि २७३८ ।

सुनैऐ, सुनैयं १ सुनाना . बिनती यहै ~ ३९०८ । २ सुनाने मे : मूढहिं कहा ~ ३८१० ।

सुनैहैं सुनायेंगे खेलत तैं अब आइ भूख कहि मोहिं ~ ५८९ ।

सुनैहै सुनायेगा : माइ-माइ कहि मोहिं ~ ९/८१ ।

सुनौं १ सुनती हूँ • बन मैं ~ बहुत मैं बात ४३४ । २ सुनूँ : मुख तौ खोलि ~ तेरी बानी १६५० ।

सुनौ सुन लो, सुनो नीकी भाँति ~ सुरराई ९४५ ।

सुनौगी सुनोगी मथुरा पतिहि ~ तबहीं १५१३ ।

सुन्दरताई सुन्दरता : कहाँ लौं बरनौं ~ १०८ ।

सुन्दरि १ सुन्दरियाँ : ~ सरसिज नैनी ९/११ । २ सुन्दरी ने : सुनि ~ उठि उत्तर दीन्ह्यौ १/२४० ।

सुन्न[1] निर्जीव, जडवत् • महा कठोर ~ हिरदै कौ १/१८६ ।

सुन्न[2] शून्य सहज ~ मैं बसहिं मुरारी ४०९४ ।

सुन्न एक एक और शून्य = (१०) दस : ~, जु पाप कीने होत मा० ल० शेष १० ।

सुन्न-गुन आकाश का गुण, शब्द बेद धरत न ~ के नखत टारन फेर सा० ल० ५९ ।

सुन्न तीन पाछिल सुध ताके प्रथम ०, ३ के उलटा लिखने से '३०' अर्थात् 'तीस, और 'याद' के प्रथम अक्षर के मिलाने से (तीया) स्त्री, पत्नी . ~ आपनी छोडै मा० ल० ८९ ।

सुन्य-गुन शून्य (आकाश) का गुण, शब्द • ~ चित चाव मा० ल० १ ।

सुन्यौं सुना है • सगुन सँदेसौं हौं ~ २८५० ।

सुन्यौ १ सुना, सुना है कबहुँ न भयौ ~ नहिं देख्यौ २८२६ । २ सुना कि : जब ~ भरत-पुर निकट भूप ९/१६६ ।

सुपक १ अच्छी तरह से पका हुआ : ~ बिंब सुक खडित मटित २६६४ । २ अच्छी तरह से पकी हुई • ~ सुकोमल रोटी १६३ । ३ अच्छी तरह से पके हुए दस मुख छेदि ~ नव फल ज्यौं ९/१३१ । ४ पक्की ~ सारि ढिग ढारी १/६० ।

सुपक्क पक गया है : अति ~ मुरली कैं परसत चुइ चुइ परत उमँगि रस-राग २७७२ ।

सुपक्व भली भाँति पके हुए मनहुँ ~ बिंब तैं सजनी १२०४ ।

सुपत प्रतिष्ठित, माननीय बड़े ~ तुम दोऊ ३९७५ ।

सुपति सुन्दर या अच्छा पति हरि तैं भलौ ~ सीता कौ ४००९ ।

सुपत्याई विश्वास पात्र बन गये : हरि सौं ~ २२५३ ।

सुपन १ स्वप्न सोवत जागत ~ रैन दिन ३८८८ । २. स्वप्न की . बरजत ही बेकाज ~ ज्यौं १८८९ ।

सुपनखा रावण की बहिन, जिसकी नाक लक्ष्मण ने दडकारण्य मे काट ली थी बलि अरु बालि ~ बपुरी ३१९५ ।

सुपनातर स्वप्न में, स्वप्न काल की ~ प्रगटयौ अब आई ८४० ।

सुपनाए स्वप्न है यह प्रतच्छ, ~ ९/३१ ।

सुपनि स्वप्न मे मूक न कहै ~ जानी ज्यौं २६०० ।

सुपने १ स्वप्न : ~ में देख्यौ इहिं मूरति ८३५ । २ स्वप्न मे स्याम राम ~ खरे २९३३ ।

सुपनैं स्वप्न मे : ~ आजु मिल्यौ मोकौं ८१९ ।

सुपनैंहूँ १ स्वप्न (मे) भी : ~ मैं देखियै ३२५८ । २ स्वप्न मे भी • चितवत नहीं मोहिं ~ १८९५ ।

सुपनौ १ स्वप्न रैनि कौ ~ भयौ ३८६५ । २ स्वप्न मे :

~ परगट कियौ कन्हाई ५४४।
सुपाके अच्छी तरह पके हुए, लाल जुग फल बिंब ~ १८३०।
सुपेद सफेद घन स्याम मध्य ~ बग जुरि ७८४२।
सुप्रीति सच्ची प्रीति या भक्ति . प्रतिफल रहित ~ २/१०।
सुप्रौढा भरपूर . अति आनद ~ तातं १८११।
सुफल १ सफल, सार्थक। २ वाण की नोक : राख्यौ ~ सँवारि, सान दै ९/९५।
सुफल्क सुफलक नामक यादव जो अक्रूर के पिता थे : कासौं कहौं सूर अतर की ~ सुत कौ चाहि २९७५।
सुफलवारी सुन्दर फलों की वाटिका · पुनि हौं गयौ ~ मैं ९/१०४।
सुफलित सुफल : ~ करन घरी ३६३३।
सुबरन[1] १ सुन्दर वर्ण की : ~ माल विचित्र धातुरग अँग-अँग चित्र बनाई सारा० ३९६। २ सुन्दर वर्ण वाले : कान्ह कुंवर ठाढे हैं साँवरे ~ ६२४।
सुबरन[2] १ सोने की · ~ लक कलस-आभूषन ९/१२४। २ सोने के : ~ थार रहे हाथनि लसि ३२।
सुबरनिया सुन्दर वर्ण की : अति सुदर राजति ~ १०६।
सुबल श्री कृष्ण का एक गोप सखा : ~ सखा तब यह कह्यौ १६१८।
सुबलहि सुबल की ओर : सोर पारि हरि ~ धाए २४०।
सुबस अपने वश या अधिकार मे : ~ बसौं इहि गाउँ १/१८५।
सुबसि बसे हुए . कुन्चित केस सुगध ~ मनु १७९३।
सुबागौ सुन्दर पहनावा नद ~ अपनौ गर कौ ढाढी कों पहिरायौ परि० १/८।
सुबासत महकता है : सालन सकल कपूर ~ ३९६।
सुबाहु[1] श्री कृष्ण के एक सखा का नाम . सुबल ~ तोक श्रीदामा सकल सखा जुरि आये सारा० १०३५।
सुबाहु[2] एक राक्षस का नाम मारिच और ~ महासुर विघन करत दिन जाम सारा० १९८।
सुबिचारी सुविचारिणी भागि दुरी ~ १/१७३।
सुबिसेष अधिक : तिहिं समय सखि गगन सोभा सबहिं तैं ~ ३३१४।
सुबुध बुद्धिमान् : सो तुम ~ बिपेख्यो सारा० ५८८।
सुबेनि सुन्दर वेणी · ललित चलित ~ २८४१।
सुबैद सुयोग्य वैद्य : सूर ~ कहा लै कीजै ३५९०।
सुभ वि० १ शुभ। २. कल्याणकारी द्वादस स्कध परम ~ प्रेम भक्ति की खानि १। ३ सुन्दर मुकुट सिर ~ स्रवन कुडल ३०४६। पुं० कल्याण, मगल : सतत ~ चाहत प्रिय जन जानि १/७७।
सुभग सुन्दर · सारँग चरन ~ · कर सारँग २०९७।
सुभट १ वीर योद्धा : सूर ~ ज्यौं रन नहिं छाँडत २३०७। २. वीर योद्धाओं को . कहौ तौ अबहीं पैठि ~ हनि ९/१०८।
सुभटनि १ वीर योद्धाओ का : ~ बल बिमरे ३७६७। २ वीर योद्धाओं को : काल कौ रूप ~ जनायौ ३०५९।
सुभटहि वीर योद्धाओं को धनि जननी जो ~ जावै ९/१५२।
सुभद्रा अर्जुन की पत्नी तथा श्री कृष्ण की बहन : बहिन ~ ब्याह विचारो सारा० ८०३।
सुभर १. अच्छी तरह से भरा हुआ हस मनौ मानसर अरुन अबुज ~ ३०७८। २ अच्छी तरह से भरी हुई : नदी ~ सँदेस क्यौं पठऊँ ३३०६।
सुभष भोजन · जनु खँजरीट जुगल जठरातुर, लेत ~ अकुलाने २६०१।
सुभाइ पुं० १ प्रकृति, सहज गुण, स्वभाव जानत सकल ~ ३५७७। २ स्वभाव से : सहज~ ठगौरी डारी सीस२२२२। ३ स्वभाव है · यह मम सहज ~ ४०१०। क्रि० वि० १ बडी लगन या आत्मीयता से . अपनैं हाथ ~ ३८२२। २ स्वाभाविक रूप मे या सहज ही : सोभा बढ़ी ~ २२०५। क्रि० अ० १ प्रिय लगता है रग रूप ~ १६५९। २ सुशोभित हो रही हैं · बिथुरि अलकैं रहीं मुख पर बिनहिं बपन ~ २२५।
सुभाई पुं० १ स्वभाव : जल कौ यहै ~ परि० १/४८। २. स्वभाव का : को आवै धौं कौन ~ ८१९। क्रि० वि० सहज भाव से · सूरहू पर करौ तेहिं ~ ८/९।
सुभाउ स्वभाव, सहज गुण। △ ~ रच्यौ ऐसोइ ऐसा स्वभाव ही पड गया है सूर ~ — १७७०।
सुभाऊँ स्वाभाविक कुच घट-कनक ~ १५५३।
सुभाऊ स्वभाव ही है उहिं कुल यहै ~ ३६७०।
सुभाए वि० प्रिय लगने वाले : इन माहिं गुन हैं ~ ८/८। पुं० सहज गुण, स्वभाव, प्रकृति निज कुल बस ~ ६६१।
सुभाग १ सौभाग्य कहा कहौं महिमा ~ की २७६५। २ सौभाग्य (टीका, डिठौना) मध्य स्याम ~ मानौ अली बैठ्यौ आन १३७९।
सुभाग्य सौभाग्य . परम ~ मानि तिन लाए ३/१३।
सुभानु दाहक · भानु भानु सुत सौ ~ मम सा० ल० १६।
सुभाये सहज भाव से तेहि पहिराउ ~ सा० ल० ४६।
सुभाव पुं० १ आदत, स्वभाव . 'सूर' ~ मिटै क्यौं कारैं ३९९६। क्रि० वि० सहज भाव से : नाभि हृद रोमावली अलि चले सहज ~ १/३०७।
सुभाव उक्त स्वभाव का कथन करना, स्वाभावोक्ति अलकार : एकावरन ~ कर सा० ल० ९१।
सुभावहि स्वभाव को : धर्मसुत के अरि ~ २०८६।
सुभाषित सुन्दर स्वर या ढग से : जिहिं मुख गीत ~ गावति

३८१५ ।
सुभी मंगलकारक : द्वै बग पगति राजति मानौ, मुक्तामाल ~ १८७० ।
सुभेषज गुणकारी ओषधि : ग्यान ~ खाएँ २/३२ ।
सुमंत राजा दशरथ का मंत्री और सारथि : गुरु वसिष्ठ अरु मिलि ~ सौं ९/५४ ।
सुमदा राधा की एक गोपी सखी : नवला प्रमदा ~ नारि २००८ ।
सुमनन फूलों को : लोकपाल अति ही मन हरषे सब ~ बरसायौ सारा० ३०५ ।
सुमननि १. फूलों . रचते सेज स्व कर ~ की ४२८५ । २ फूलों का : गए गृह कुंज, अलिगुंज, ~ पुंज २१७० । ३ फूलों की : कबहुँ कर आपने रचत ~ सेज २४४३ । ४. फूलों को : सौरभजुत ~ लैं निज कर ३७६७ । ५ फूलों से : ये लट हरि ~ गूँधी ३६१९ ।
सुमन लोक देव लोक · ~ लौं अब या बेला सा० ल० ७४ ।
सुमनहुँ पुष्प (में) भी · ~ तैं हरुवाई २९५५ ।
सुमना राधा की एक सखी : ~ बहुला चंपा २००८ ।
सुमना-जात फुलेल, चमेली का तेल : सरस ~ सीस कर सौं करति २७०६ ।
सुमना सुत १ चमेली का तेल · ~ लै कमलनि मज्जति २७०७ । २ चमेली के तेल की : ~ सौंधनि २३२३ ।
सुमनि फूलों से · माँग ~ नग रोरी २६५६ ।
सुमार गिनती । ~ **लागे** बेशुमार आ लगे हैं : मदन-बान ~ — १७९४ । ~ **किये** गिने गये खग मृग मीन ~ — सब १०७० ।
सुमित्रा राजा दशरथ की एक पत्नी, जो लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता थी : ऐसेहिं मिले ~ - सुत कौं ९/१६८ ।
सुमित्रा-सुत १ शत्रुघ्न · ऐसेहिं मिले ~ कौं ९/१६८ । २ सुमित्रानन्दन लक्ष्मण : दूजौ सूर ~ बिनु ९/१४५ ।
सुमिरत १ स्मरण करता : सो हरि हरि ~ रहै ५/३ । २ स्मरण करते ही : हरि हरि ~ सब सुख होइ ४१९२ । ३ स्मरण करते हुए : ~ प्रीति लाज लागति है ३२१४ । ४ स्मरण करते हैं : सुनि ~ बहुतेरे २२७९ । ५ स्मरण करने लगी ~ नाम मुरारि ९/१५८ ।
सुमिरति स्मरण करती है : बार बार ~ करताहिं ३१६ ।
सुमिरन १. नौ प्रकार की भक्तियों में से एक जिसमें आराध्य का निरंतर स्मरण किया जाता है : श्री पति जुग जुग ~ के बस १/१७ । २ याद, स्मरण : हरि-हरि हरि-हरि ~ करौ २ । ३. स्मरण, स्मरण अलंकार : ~ जनि बिसरावो सा० ल० ९ ।
सुमिरावत स्मरण करवाते हैं · सुमिरत औ ~ २/१७ ।
सुमिरि पुं० स्मरण : मूक न तजै ~ जाती ज्यौं २६०० । क्रि० स० स्मरण कर के : नंद नंदन कर कमल ~ छबि ३७१२ । ~ - **सुमिर** बार बार स्मरण करके : लेत उसाँस जल पूरत ~ — अबिनासी ४०९१ ।
सुमिरित स्मरण करते ही : ~ तीनों लोक अघाए १/१२२ ।
सुमिरे स्मरण किया : जहाँ जहाँ ~ हरि १/७ ।
सुमिरैं स्मरण करते हैं : ज्यौं ~ त्यौं ही गति होइ ४२०६ ।
सुमिरै स्मरण करे को ~ अबिनासी ३९२६ ।
सुमिरैंगौ स्मरण करेगा . जो स्यामहिं ~ १/७५ ।
सुमिरौ स्मरण करो · वह दिन ~ आपनौ १६१८ ।
सुमिरयौ स्मरण किया · हरि हरि ~ जब जिहिं जहाँ ४१९२ ।
सुमीच अच्छी तरह बिलगपन या अलग अलग हो जाना : प्रगट हंस बपु धरयो जगत गुरु जो पै नीर ~ सारा० ८३ ।
सुमीडि अच्छी तरह से मसल कर · राहु केतु मानौ ~ बिधु, अंक छुड़ावत धोयैं ४१४३ ।
सुमुक्त पूर्णतया मुक्त . ऐसौ भक्त ~ कहावै ३/१३ ।
सुमुखी सुन्दर मुख वाली (माता) . पुलकित ~ भई १२० ।
सुमुषि सुमुखी (राधा) ने · ~ बहु सुख दियौ ११९० ।
सुमृति स्मृति, वेदों के चिंतन और मनन के पश्चात् रचे गये धर्मशास्त्र . बेद पुरानि ~ सब ढूँढौ ३८९० ।
सुमृतिहूँ स्मृति/धर्मशास्त्र भी : बेद ~ गावैं १/२४४ ।
सुमेर सुमेरु पर्वत सिंध - ~ नदी- बन-पर्वत २५५ ।
सुमेरहि १ सुमेरु पर्वत को : जौ गुंजा सम तुलत ~ १३५ । २ सुमेरु पर्वत में : मानौ ~ लागे ९/७४ ।
सुमेरु १ सुमेरु पर्वत की मनु जुग जलज ~ सृंग तें ४११२ । २. सुमेरु पर्वत के · कह ~ सम दान दिऐं १/८९ ।
सुम्रत स्मरण करते ही : ~ गज ग्राह तैं तुम छुड़ायौ १/११९ ।
सुम्रिति स्मृतियाँ : कहैं ~ भाषि ३५८४ ।
सुरंग १ सुन्दर, रंगीन · रचि सुदेस सीमंत ~ सर २४५५ । २ लाल रंग को : सेमर फूल ~ सुक निरखत १/१०२ । ३ सुन्दर रंग (लाल-अनुराग) में : स्याम ~ अनुरागी ३९०३ । ४ सुन्दर रंग वाला : चख काजर ~ तमोर २७६४ । ५. सुन्दर रंग की, लाल · ~ चूनरी भीजै ७३१ । ६ सुन्दर रंग वाले, लाल . ~ कमल मृग मीन मनोहर ३५६० । ७ सुन्दर रंगों से : (कुलही) बहु-बिधि ~ बनाई १०८ ।
सुरंगनौ सुन्दर रंग का · केसरि अंग ~ २८३२ ।
सुर[1] सुमन, फूल . देख ताहि ~ लिख कुबेर कौ बित्त तुरत समुझाई सा० ल० ८७ ।
सुर[2] स्वर : मधुर उतंग सप्त ~ निकसै ३८०७ । २ स्वर में . एक ही ~ सकल मोहे ११३३ । ~ **पूरत** स्वर भरते हैं मंद मंद ~ — मोहन १८०८ । ~ **भरति** राग भरती है :

~ परगट कियौ कन्हाई ५४४।
सुपाके अच्छी तरह पके हुए, लाल जुग फल बिंब ~ १८३२।
सुपेद सफेद घन स्याम मध्य ~ बग जुरि २८४२।
सुप्रीति सच्ची प्रीति या भक्ति . प्रतिफल रहित ~ २/१२।
सुप्रौढा भरपूर अति आनंद ~ तातैं १८११।
सुफल १ सफल, सार्थक। २ बाण की नोक · राख्यौ ~ सवारि, सान दै ९/९५।
सुफल्क सुफलक नामक यादव जो अक्रूर के पिता थे : कासौं कहौं सूर अंतर की ~ सुत कौ चाहि २९७५।
सुफलवारी सुन्दर फलों की वाटिका पुनि हौं गयौ ~ मैं ९/१०४।
सुफलित सुफल . ~ करन धरी ३६३३।
सुबरन[1] १ सुन्दर वर्ण की : ~ माल विचित्र धातुरग अँग-अँग चित्र बनाई सारा० ३९६। २ सुन्दर वर्ण वाले : कान्ह कुंवर ठाढे हैं सॉवरे ~ ६२४।
सुबरन[2] १ सोने की · ~ लक-कलस-आभूषन ९/१२४। २ सोने के : ~ थार रहे हाथनि लसि ३२।
सुबरनिया सुन्दर वर्ण की . अति सुदर राजति ~ १०६।
सुबल श्री कृष्ण का एक गोप सखा : ~ सखा तब यह कह्यौ १६१८।
सुबलहि सुबल की ओर : सोर पारि हरि ~ धाए २४०।
सुबस अपने वश या अधिकार मे · ~ बसौं इहि गाउँ १/१८५।
सुबसि बसे हुए : कुंचित केस सुगंध ~ मनु १७९३।
सुबागौ सुन्दर पहनावा नंद ~ अपनौ गर कौ ढाढी कौं पहिरायौ परि० १/८।
सुबासत महकता है . सालन सकल कपूर ~ ३९६।
सुबाहु[1] श्री कृष्ण के एक सखा का नाम · सुबल ~ तोक श्रीदामा सकल सखा जुरि आये सारा० १०३५।
सुबाहु[2] एक राक्षस का नाम मारिच और ~ महासुर विघन करत दिन जाम सारा० १९८।
सुबिचारी सुविचारिणी . भागि दुरी ~ १/१७३।
सुबिसेष अधिक · तिहि समय सखि गगन सोभा सबहिं तैं ~ ३३१४।
सुबुध बुद्धिमान् : सो तुम ~ बिसेख्यो सारा० ५८८।
सुबेनि सुन्दर वेणी · ललित चलित ~ २८४१।
सुबैद सुयोग्य वैद्य · सूर ~ कहा लै कीजै ३५९०।
सुभ वि० १ शुभ। २ कल्याणकारी · द्वादस स्कंध परम ~ प्रेम भक्ति की खानि १। ३ सुन्दर : मुकुट सिर ~ स्रवन कुंडल ३०४६। पुं० कल्याण, मगल : सतत ~ चाहत प्रिय जन जानि १/७७।
सुभग सुन्दर सारँग चरन ~ · कर सारँग २०९७।
सुभट १ वीर योद्धा : सूर ~ ज्यौं रन नहिं छाँडत २३०७। २ वीर योद्धाओं को कहौ तौ अबहीं पैठि ~ हनि ९/१०८।
सुभटनि १ वीर योद्धाओ का . ~ बल बिसरे ३७६७। २ वीर योद्धाओं को · काल कौ रूप ~ जनायौ ३०५९।
सुभटहि वीर योद्धाओं को धनि जननी जो ~ जावै ९/१५७।
सुभद्रा अर्जुन की पत्नी तथा श्री कृष्ण की बहन . बहिन ~ ब्याह बिचारी सारा० ८०३।
सुभर १. अच्छी तरह से भरा हुआ · हस मनौ मानसर अरुन अंबुज ~ ३०७८। २ अच्छी तरह से भरी हुई . नदी ~ सँदेस क्यौं पठऊँ ३३०६।
सुभष भोजन · जनु खँजरीट जुगल जठरातुर, लेत ~ अकुलाने २६०१।
सुभाइ पु० १. प्रकृति, सहज गुण, स्वभाव जानत सकल ~ ३५७७। २ स्वभाव से · सहज ~ ठगौरी डारी सीस२२२२। ३ स्वभाव है · यह मम महज ~ ४०१०। क्रि० वि० १ बडी लगन या आत्मीयता से : अपनैं हाथ ~ ३८२२। २ स्वाभाविक रूप मे या सहज ही : सोभा बढी ~ २२०५। क्रि० अ० १ प्रिय लगता है रग रूप ~ १६५९। २ सुशोभित हो रही है : बिथुर अलकैं रहीं मुख पर बिनहिं बपन ~ २२५।
सुभाई पु० १ स्वभाव जल कौ यहै ~ परि० १/४८। २. स्वभाव का . को आवै धौ कौन ~ ८१९। क्रि० वि० सहज भाव से . सूरहू पर करौ तेहि ~ ८/९।
सुभाउ स्वभाव, सहज गुण। △ ~ **रच्यौ ऐसोइ** ऐसा स्वभाव ही पड गया है सूर ~ — १७७९।
सुभाऊँ स्वाभाविक . कुच घट-कनक ~ १५७३।
सुभाऊ स्वभाव ही है : उहिं कुल यहै ~ ३६७०।
सुभाए वि० प्रिय लगने वाले · इन माहिं गुन हैं ~ ८/८। पुं० महज गुण, स्वभाव, प्रकृति · निज कुल बस ~ ६६१।
सुभाग १ सौभाग्य · कहा कहौं महिमा ~ की २७६५। २ सौभाग्य (टीका, डिठौना) मध्य स्याम ~ मानौ अली बैठ्यौ आन १३७९।
सुभाग्य सौभाग्य परम ~ मानि तिन लाए ३/१३।
सुभानु दाहक भानु भानु सुत सी ~ मम सा० ल० १६।
सुभाये सहज भाव से तेहि पहिराउ ~ सा० ल० ४६।
सुभाव पुं० १ आदत, स्वभाव . 'सूर' ~ मिटै क्यों कारैं ३९९६। क्रि० वि० महज भाव से नाभि हृद रोमावली अलि चले सहज ~ १/३०७।
सुभाव उक्त स्वभाव का कथन करना, स्वाभावोक्ति अलकार : एकावरन ~ कर सा० ल० ९१।
सुभावहि स्वभाव को : धर्मसुत के अरि ~ २०८६।
सुभाषित सुन्दर स्वर या ढग से : जिहि मुख गीत ~ गावति

३८१५ ।
सुभी मगलकारक • द्वै वग पगति राजति मानौ, मुक्तामाल ~ १८७० ।
सुभेषज गुणकारी ओषधि ग्यान ~ खाएँ २/३२ ।
सुमंत राजा दशरथ का मत्री और सारथि : गुरु वसिष्ठ अरु मिलि ~ सौं ९/५४ ।
सुमदा राधा की एक गोपी सखी : नवला प्रमदा ~ नारि २००८ ।
सुमनन फूलों को • लोकपाल अति ही मन हरषे मव ~ वरसायौ सारा० ३०५ ।
सुमननि १. फूलों रचते सेज स्व कर ~ की ४२८५ । २ फूलों का : गए गृह कुज, अलिगुज, ~ पुज २१७० । ३ फूलों की : कबहुँ कर आपने रचत ~ सेज २४४३ । ४ फूलों को : सौरभजुत ~ लै निज कर ३७९७ । ५ फूलों से • ये लट हरि ~ गूँधी ३६१९ ।
सुमन लोक देव लोक • ~ लौं अत्र या वेला सा० ल० ७४ ।
सुमनहुँ पुष्प (मे) भी • ~ त हरुवाई २९५५ ।
सुमना राधा की एक सखी : ~ बहुला चपा २००८ ।
सुमना-जात फुलेल, चमेली का तेल • सरस ~ सीस कर सौं करति २७०६ ।
सुमना सुत १ चमेली का तेल ~ लै कमलनि मज्जति २७०७ । २ चमेली के तेल की • ~ सौंधनि २३२३ ।
सुमनि फूलों से • माँग ~ नग रोरी २६५६ ।
सुमार गिनती । ~ **लागे** बेशुमार आ लगे हैं : मदन बान ~ — १७९४ । ~ **किये** गिने गये खग मृग मीन ~ — सव १०७० ।
सुमित्रा राजा दशरथ की एक पत्नी, जो लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता थी • ऐमेहिं मिले ~ - सुत कौं ९/१६८ ।
सुमित्रा-सुत १ शत्रुघ्न • ऐमेहिं मिले ~ कौं ९/१६८ । २ सुमित्रानन्दन लक्ष्मण • दूजौ सूर ~ बिनु ९/१४५ ।
सुमिरत १ स्मरण करता : सो हरि हरि ~ रहै ५/३ । २ स्मरण करते ही हरि हरि ~ सब सुख होइ ४१९२ । ३ स्मरण करते हुए • ~ प्रीति लाज लागति है ३२१४ । ४ स्मरण करते हैं • सुनि ~ बहुतेरे २२७९ । ५ स्मरण करने लगी : ~ नाम मुरारि ९/१५८ ।
सुमिरति स्मरण करती है • वार वार ~ करताहिं ३१६ ।
सुमिरन १ नौ प्रकार की भक्तियों मे से एक जिसमे आराध्य का निरतर स्मरण किया जाता है : श्री पति जुग जुग ~ के बस १/१७ । २ याद, स्मरण : हरि-हरि हरि-हरि ~ करौ २ । ३ स्मरण, स्मरण अलकार : ~ जनि बिसरावो सा० ल० ९ ।
सुमिरावत स्मरण करवाते हैं • सुमिरत औ ~ २/१७ ।
सुमिरि पु० स्मरण : मूक न तजै ~ जाती ज्यौं २६०० । **क्रि० स०** स्मरण कर के : नद नदन कर कमल ~ छबि ३७१२ । ~ - **सुमिर** बार बार स्मरण करके : लेत उसाँस जल पूरत ~ — अविनासी ४०९१ ।
सुमिरित स्मरण करते ही : ~ तीनौं लोक अघाए १/१२२ ।
सुमिरे स्मरण किया • जहाँ जहाँ ~ हरि १/७ ।
सुमिरैं स्मरण करते हैं : ज्यौं ~ त्यौं ही गति होइ ४२०६ ।
सुमिरै स्मरण करे : को ~ अविनासी ३९२६ ।
सुमिरैगौ स्मरण करेगा • जो स्यामहिं ~ १/७५ ।
सुमिरौ स्मरण करो • वह दिन ~ आपनौ १६१८ ।
सुमिरयौ स्मरण किया • हरि हरि ~ जब जिहिं जहाँ ४१९२ ।
सुमीच अच्छी तरह विलगपन या अलग अलग हो जाना : प्रगट हम वपु धरयो जगत गुरु जो पै नीर ~ सारा० ८३ ।
सुमीडि अच्छी तरह से मसल कर • राहु केतु मानौ ~ विधु, अक छुडावत धोयैं ४१४३ ।
सुमुक्त पूर्णतया मुक्त ऐसौ भक्त ~ कहावै ३/१३ ।
सुमुखी सुन्दर मुख वाली (माता) . पुलकित ~ भई १२० ।
सुमुखि सुमुखी (राधा) ने . ~ बहु सुख दियौ ११९० ।
सुमृति स्मृति, वेदों के चिंतन और मनन के पश्चात् रचे गये धर्मशास्त्र : वेद पुरानि ~ सब ढूँढौ ३८९० ।
सुमृतिहूँ स्मृति/धर्मशास्त्र भी : वेद ~ गावै १/२४४ ।
सुमेर सुमेरु पर्वत सिंध - ~ नदी- वन-पर्वत २५५ ।
सुमेरहि १ सुमेरु पर्वत को जौ गुजा सम तुलत ~ १३५ । २ सुमेरु पर्वत मे मानौ ~ लागे ९/७४ ।
सुमेरु १ सुमेरु पर्वत की मनु जुग जलज ~ सृ ग तैं ४११२ । २ सुमेरु पर्वत के : कह ~ सम दान दियैं १/८९ ।
सुम्रत स्मरण करते ही • ~ गज ग्राह तैं तुम छुडायौ १/११९ ।
सुम्रिति स्मृतियाँ कहैं ~ भाषि ३५८४ ।
सुरंग १ सुन्दर, रगीन : रचि सुदेस सीसत ~ सर २४५५ । २ लाल रग को सेमर फूल ~ सुक निरखत १/१०२ । ३ सुन्दर रग (लाल-अनुराग) मे . स्याम ~ अनुरागी ३९०३ । ४ सुन्दर रग वाला • चख काजर ~ तमोर २७६४ । ५ सुन्दर रग की, लाल • ~ चूनरी भीजै ७३१ । ६ सुन्दर रग वाले, लाल ~ कमल मृग मीन मनोहर ३५६० । ७ सुन्दर रगों से (कुलही) बहु-विधि ~ बनाई १०८ ।
सुरंगनौ सुन्दर रग का केसरि अग ~ २८३२ ।
सुर[1] सुमन, फूल देख ताहि ~ लिख कुबेर कौ वित्त तुरत समुझाई सा० ल० ८७ ।
सुर[2] स्वर . मधुर उतंग सप्त ~ निकसै ३८०७ । २ स्वर मे एक ही ~ सकल मोहे ११३३ । ~ **पूरत** स्वर भरते हैं . मद मद ~ — मोहन १८०८ । ~ **भरति** राग भरती है .

~ — पिय सग १०८३ ।

सुर[२] १ देवता सूरदास ~ जाँचत जे पद ९८१ । २ देवताओं का • असुर मारि कियौ ~ उद्धार ९/२ । ~ **जय** देवताओं को जीतकर : ~ — राज त्रिलोक पायौ ८/१२ ।

सुरऐन देव लोक • तजि गयौ ~ कौं २४५० ।

सुर-कोदड इन्द्रधनुष : (दामिनी) तापर ~ ५६६ ।

सुरगुरु देवताओं के गुरु, बृहस्पति • मानौ ~, सुक्र, भौम, सनि २११८ ।

सुर गुरु सुत देवताओं के गुरु (बृहस्पति) के पुत्र, कच ~ कौं देखि लुभाई ९/१७३ ।

सुर-गुरुहू सुर-गुरु (बृहस्पति) भी . ~ तिहिं औसर आयौ ६/५ ।

सुरचाप इन्द्रधनुष की ~ किधौं बनमाला २०५७ ।

सुरझाऊँ सुलझाऊँ : क्यौं ~ नंदलाल सौं १८९२ ।

सुरझावत सुलझाता है . को ~ आनि ३२९१ ।

सुरझावति सुलझाती हुई चली अलक ~ २०२४ ।

सुरझावै सुलझावेगा को तन तैं ~ सा० ल० ८५ ।

सुरज्ञान सुविज्ञ, सुजान : उद्धव विदुर युधिष्ठिर अर्जुन अरु भीषम ~ सारा० ६८६ ।

सुरत[१] १ काम-क्रीडा, रति-क्रीडा, सभोग : राधे रात ~ रग राती सा० ल० ५ । २ रति-क्रीडा के : ~ चिन्ह नीकी सुघराई २७१८ । ३ सुरति मे कुंज के निकट ~ निरत २०३४ ।

सुरत[२] स्मरण • ~ देव द्विज, नृप बहुलास ४३०६ । ~ **हिरानी** स्मृति भुला देंगे • अपनी ~ — १६८५ ।

सुर-तरु कल्प वृक्ष : ~ सदन सुभाग छाँडि सा० ल० शेष ७ ।

सुरतरुवर कल्प वृक्ष : ~ की साख लेखिनी १/१८३ ।

सुरतहीं रति-क्रीडा मे ही ~ सब रैनि बीती २४७१ ।

सुर-तात देवताओं के पिता (कश्यप) • कस्यप रिषि ~ २८ ।

सुरति[१] १ चित्त मे : उहि कथा को~ ध्यावौ २६२१ । २ ध्यान ब्रज करि अबों जोग ईंधन सम ~ आनि सुलगाए ३७८१ । ३ याद, स्मृति, सुधि, स्मरण . बन की घर की ~ न काहूँ १६२३ । ~ **बिसराई** सुध बुध भूल गई निरखि सिर मुकुट की छवि ~ — १८०२ । ~ **बिसारी** १ विस्मृत हो गई थीं : देखौ हम सब ~ — ८९० । २ होश-हवास खो बैठे : सूरदास प्रभु ~ — ३९८४ । ~ **सँभारी** होश मे आई, सचेत हुई पुनि रानी जब ~ — ६/५ ।

सुरति[२] १ काम केलि, भोग विलास : ~ स्रमित स्यामा रस-रजित ३६३३ । २ प्रीति, प्रेम • बच्यौ नहिं कोउ जहँ ~ मेरी १/११० ।

सुरति रति भली भाँति काम क्रीडा ~ पूरि, अति निबल कीन्हीं १९८८ । ~ **लागी** (कृष्ण) से मिलने के प्रेम मे बँधकर : चले उडाइ ~ — २२७८ ।

सुरति-रस कामानन्द राधा सग ~ भीनी १९९३ ।

सुरतिहि ध्यान को असन-बसन की ~ त्यागे ५/२ ।

सुरत्यौ याद/स्मृति भी : सो ~ नहिं आवै ५६१ ।

सुर देवी योग माया जिसने यशोदा के गर्भ से अवतार लिया था और कस द्वारा पटकते समय हाथ से छूटकर आकाश मे चली गई थी गगन गई बोली ~ ४ ।

सुरधनु इंद्रधनुष ~ की छबि रुचिर देखियत ११८८ ।

सुरधेनु, सुरधैनु कामधेनु चिन्तामनि ~ ४८७, कल्पवृक्ष ~ ४९१ ।

सुरन[१] सुर (वहीं) मोर + न = मोरन अर्थात् मोरों के : मास भाग सिर लसत ~ के सा० ल० ९१ ।

सुरन[२] (सुर=सुमन=पुष्प, न=नहीं)=पुष्प रहित • अघ-हर सोहत ~ समेत सा० ल० ९५ ।

सुरनाथा इन्द्र • आसन डारि भजे ~ ३०९५ ।

सुरनाह इन्द्र ने : तुम्हैं पठायौ है ~ ११/३ ।

सुरनि[१] १ देवताओं हरषि हरषि कै देति ~ कौं सूर सुमन की माल ४२२ । २, देवताओं का : कियौ ~ निस्तारौ ९/१५९ । ३ देवताओं के : बहुरौ ब्रह्मा ~ समेत ७/२ । ४ देवताओं को हरि जब अमृत ~ पियायौ ८/१२ । ५ देवताओं ने : देखि यह ~ वर्षा करी पुहुप की ७/६ ।

सुरनि[२] स्वरों मे . ~ साधे पौन २५७४ ।

सुरपति इन्द्र ~ तब लाग्यौ पछितान ६/५ ।

सुरपति वाहन ता सुत इन्द्र के वाहन (ऐरावत) के पुत्र (हाथी) सिंधुर, सेंदुर, सिन्दूर . ~ सिर पर सारा० ९४१ ।

सुरपति मित्र इद्र के मित्र मेघ, पयोधर = कुच : ~ के सीस नये परि० १/९६ ।

सुरपति-रिपु इन्द्र के शत्रु, हिमालय मानौ स्वर्गहिं तैं ~ कन्या सौति आइ ढरि सिंदहि १०७ ।

सुरपति रिपु ता पतिनी ता सुत सुरपति (विष्णु=कृष्ण) के रिपु (इन्द्र=बादल) की पत्नी (बिजली) का सुत (=गर्ज) बादल की गर्जना, अथवा इन्द्र के शत्रु (दैत्य) की पत्नी (विलासिता) रति के पुत्र, वसन्त भासन ~ वाहन वात सारा० ९४९ ।

सुरपतिहि १ इन्द्र को : ~ बोलि रघुबीर ९/१६३ । २. इन्द्र से • कोउ बरजत ~ डराई ८२० ।

सुरपतिहुँ इन्द्र भी : अमर ~ न पायौ ४९२ ।

सुर पुर देव लोक, स्वर्ग, अमरावती जौ मरिहौं तौ ~ जैहौ ६/५ ।

सुरपुरी इन्द्र नगरी, अमरावती कज केलि समान नाहीं ~ सुखदाइ ४१५८ ।

सुरभि गाय . निनहिं आवत ~ लीन्हे ग्वाल गो-सुत सग ४२७ ।

सुरभिगन गायें : दोलि ल्यावहु ~ नव ४२७ ।

सुरभिनि गायों : यह तौ घृत उनहीं ~ कौ ४०९० ।

सुरभी[1] १ गाय : लग्यौ फिरन ~ ज्यों सुत मन १/९ । २. गायें · ~ सबै सुदेन ३०९७ । ३ गायों को ~ कान्ह जगाय खरिक ही ८१० ।

सुरभी[2] सुगध, चदन ~ सुतर गमाई सा० ल० १६ ।

सुरभी तम जा सुत पितु सुरभी (गौ) मे तम मिलाने से (गौतम) की पुत्री (अजनी) के पुत्र (हनुमान) के पिता (पवन), साँस : ~ नाहीं सा० ल० ६६ ।

सुरभी तम जा सुत सुत की जनु माता सुरभी (गौ) मे तम मिलाने से (गौतम) की पुत्री (अजनी) के पुत्र (हनुमान) के पुत्र (मकरध्वज) की माता, मछली · ~ तलफ बढायो सा० ल० २८ ।

सुरभी रस[1] १ गाय का रस, घी ~ गुड मींचो सा० ल० ८९ । २ गाय का रस, गो रस, दूध ~ जिन रातौ सा० ल० ११ ।

सुरभी रस[2] गो रस=इन्द्रिय रस या इन्द्रिय विलास ~ रातौ नँदनदन सा० ल० ११ ।

सुरभी-सुत-पति गाय के पुत्र (बछडे) के स्वामी, गोपाल : ~ ताकौ भूषन परि० १/०७ ।

सुरमडल एक प्रकार का वाद्ययत्र जिसके एक तख्ते पर लगे हुए तार को मिजराव से बजाया जाता है ~ भनकार २८०७ ।

सुरराई देवताओं के स्वामी कह्यौ सुनो विनती ~ १/२२६ ।

सुर राज[1] इन्द्र ने : गरव कियौ ~ ८२२ ।

सुर-राज[2] इन्द्र पुरी का राज्य कह्यो ~ करो तुम राज ६/७ ।

सुर-रिपु-गुरु-वाहन ता रिपु पति ता चढि सुर-रिपु (दैत्य) गुरु (शुक्र) का वाहन (घोडा) उसके शत्रु (हाथी) का पति (इन्द्र) जिस पर चढता है, मेघ . ~ मेघ दिखावै परि० २/२२ ।

सुरलभ सुलभ . ~ सिलप दिखावनो २८३२ ।

सुरली सुरीले : अबै वचन अमृत कहति सुरनि ~ १३६३ ।

सुरलोकन देवलोकों मे : जय जयकार भयौ ~ ८३४ ।

सुरलोकहि देवलोक मे · उठि तुरतहिं ~ आए ९२८ ।

सुरस रसमय : लेनि जिवाइ सुमत्र ~ कहि १३६६ ।

सुरसती सरस्वती . मनौ ~ पच धार है १२४७ ।

सुरसमूह पुष्प राशि, फूलमाला ~ पयधार परम हित सा० ल० ९ ।

सुरसरि, सुरसरी देवनदी गगा ~ जब भुव ऊपर आवै ०/९ । ~ गारी गगा वह निकली है जे पद परसि ~ — ९८१ ।

सुरसाँई देवताओं के स्वामी, विष्णु दनुज कह्यौ हर दरि ~ १/६ ।

सुरसा एक प्रसिद्ध नागमाता, जिसका निवास स्थान समुद्र था और जिसने हनुमान को लका जाते समय रोका था : ~ मुख विस्तार ९/७४ ।

सुरसुरानँदे सुरासुरनन्द ने · सीधो बहुत ~ गाडा भरि पहुँचाओ सारा० ४१० ।

सुरहि १ स्वर में गदगद ~ प्रकास १६१८ । २ स्वर से · गौरी ~ सुनावन १२२० ।

सुरा शराव, मदिरा . चरनोदक कौं छाँडि सुधा-रस ~ · पान अँचयो १/६४ ।

सुरासुर देवता और राक्षस . रोके रहति ~ नाग २७७२ ।

सुरुच अच्छी रुचि वाली, चतुर सग न सकुच ~ सहेली सा० ल० ३५ ।

सुरुचि राजा उत्तानपाद की दो पत्नियों मे से एक, जो उत्तम की माता और ध्रुव की विमाता थी ~ दूसरी ताकी नार ४/९ ।

सुरेस इन्द्र : सिव ~ सेष औरौ बहु ३०९४ ।

सुर्लभ सुलभ, सुगम : मोकौं भयौ सा अनि ~ १/२७७ ।

सुलगत सुलगता/जलता है . कहत सारग बैन ~ सा०ल० ६९ ।

सुलगाई सुलगा/प्रज्वलित कर दिया है · बुझी अगिनी बहुरी ~ ३७९२ ।

सुलगाए प्रज्वलित किया · सुरति आनि ~ ३७८१ ।

सुलगावत सुलगाने/जलाने हो · फूँकि फूँकि हियरौ ~ ३५४५ ।

सुलगि सुलगकर । ~ · सुलगि सुलग-सुलग कर ~ — भए कारे ३८३४, उर ~ — दव लागत ४००० ।

सुलज लज्जा या मर्यादा का ध्यान रखने वाला सुदर ~ सुबंस देखियत ३४७१ ।

सुलतान बादशाह, महाराज . मैं तिनमैं ~ १/१४५ ।

सुलप १ मद, धीरे-धीरे चलि ~ गज, हस, मोहति, कोक कला प्रवीना १०८० । २ सुन्दर चमकदार या झूलती हुई · ~ लट लटकि रही, रहत नहिं चैन कौं २४५० ।

सुलभ १ आसानी से . दरस दुर्लभ ~ पाए ३८८५ । २ आसानी से प्राप्त होने वाले : सेवत ~ स्याम सुन्दर कौं ३९०० ।

सुलाक १ तपी हुई शलाका वह ~ कैसैं सह्यो १३४२ । २ दाग, छेद . अगिनि ~ देत नहिं सुरकी १३३७ ।

सुलाकत छेद करते समय, दागते समय : अगिनि ~ सुरयो न तन मन १३३० ।

सुलाकी शलाका की आग . कहा निमिष करि प्रेम ~ १३४९ ।

सुलाज लज्जा या मर्यादा (का ध्यान) : सखी ~ समुझि परस्पर सन्मुख सूल सही ३००२।
सुवटा तोता : सूरदास नलिनी कौ ~ ७/२६।
सुवन कुमार, पुत्र नंद ~ कहावै ४३९।
सुवाइ सुलाकर : दूध प्याइ कै बहुरि ~ ६/५।
सुवाऊँ सुला दूँ, सुलाऊँ : तुम सोवौ मैं तुम्हैं ~ २३०।
सुवावैं सुला दें : सोवैं तब जब वाहि ~ ५/३।
सुवावै सुलाती है : काहै न आनि ~ ४३।
सुवास पुं० सुगंधि धूप ~ ततच्छन बस करि २८२२। वि० सुवासित : भेंट लई भुज परम ~ ४३०६।
सुषमन हठयोग और तंत्र के अनुसार शरीर की तीन (इडा, पिंगला, सुषुम्ना) नाडियों मे से एक जो इडा और पिंगला नाडियों के मध्य स्थित होती है : इडा पिंगला ~ नारी ४०९४।
सुषमा सौन्दर्य : ~ करति विहार ६३१।
सुष्ठु सुन्दर : आयसु पाइ ~ रथ कर गहि २९४१।
सुसकनि सिसकियों पर : ~ की वारी हौं बलि-बलि १६०।
सुसकि सिसक कर। ~ सुसकि सिसक सिसक कर : ~ मन खीजै १९०।
सुसील उत्तम शील-स्वभाव वाली, सुशीला : परम ~ सुलच्छन जोरी ९/४५।
सुसीले नम्रता भरे, विनययुक्त : बोलत बचन ~ ३५९४।
सुसुकत सिसकते : ~ ही मुख मोरि मोरि परि० १/१२६।
सुसुकि सिसक कर, सिसकी भरकर : मूँदि मुख छिन ~ रोवत ३६०।
सुहथ अपने हाथ से · ~ सँवारि बनाइयै २५७०।
सुहाइ १. अच्छा लगता हरि बिनु मोहिं न ~ ३९४३। २ अच्छी लगती : सूनी सेज ~ न हरि बिनु ३९८७। ३ सुन्दर लगती है : सेत सींग ~ १/५६।
सुहाई क्रि० अ० १. अच्छा लगता : तब तैं मोकौं कछु न ~ १६५१। २. अच्छा लगा : जसुमति परम ~ सारा० १०३८। ३. शोभित हुई बाल घातिनी परम ~ ५०। ४ शोभित हो : मनु छवि कटि मृगराज ~ २४३६। ५. सुशोभित हो रहा है : बाँधत वदनवार साथिये द्वारे ध्वजा ~ सारा० ३९५। ६. सुशोभित हो रहे हैं : पीत वसन भुज चारि ~ १९। ७. सुहावनी लग रही है . मुख मुरली-धुनि सुभग ~ ६१६। वि० सुहावनी या अच्छी लगने वाली : स्रवन ~ गारि दै गावति २९०८।
सुहाऊँ भला लगूँ : देखत काहि ~ १/१२८।
सुहाए वि० १. सुन्दर : नाचत मेष ~ ३८६४। २. अच्छे-अच्छे . ता बन मैं फल बहुत ~ ४९९। क्रि०अ० अच्छे लगे : बाल-दसा के चिकुर ~ १०४।
सुहाग १ प्यार : कछुक दियौ ~ इनकौं तौ सबै ये लेत ३५७८। २ पति : क्यौं तुम छाँडे सुवन ~ ११८०। ३ सुहाग · प्रीति ~ भुजा सिर मंडन १७०३। वि० सौभाग्यवती . बहुत नारि ~ - सुंदरि २६। △ ~ - डहीली (अन्य गोपियों के) सुहाग से डाह करने वाली : सौतिनि भाग ~ — १७७२। ~ भरी सुहाग से भरी हुई अर्थात् सौभाग्यवती · पूरन स्याम ~ — २५२९।
सुहागि सौभाग्यवती · सूर सोइ ~ नारि ३२७७।
सुहागिनि स्त्री० सुहागिनियों की : सकल ~ गाजी ३६४८। वि० १ सुहागिन है : सकर्षन कैं सदा ~ ४२०२। २. सौभाग्यवती : अरी सुंदरि नारि ~ ९/४४।
सुहागिल सुहागिन हम जु ~ रावरी ३९५३।
सुहात अच्छा लगता : गृह बन कछु न ~ स्याम बिनु ३८६४।
सुहाति अच्छी लगती उर कंचुकि न ~ ३७७२।
सुहातीं शोभित होती हैं : ते त्रिय अधिक ~ २९६३।
सुहाती क्रि० अ० अच्छी लगती है . सुख ही माँझ ~ ४०६३। वि० अच्छी लगने वाली : बात बिचारि ~ कहिए ३८२९।
सुहातौ क्रि० अ० अच्छा लगता है . जो नहिं हमहिं ~ ३७०६। वि० भला या अच्छा लगे कीजै पच ~ १/३०२
सुहानी अच्छी लगी : और नारि उनकौं न ~ ३२२९।
सुहायो क्रि० अ० अच्छा लगा · फागुन वदि चौदश को शुभ दिन अरु रविवार ~ सारा० ५२५। वि० सुहावना . लागत परम ~ सारा० १०४२।
सुहारी सादी पूरी जैसा एक पकवान : सेव ~ घेवर घी के १२१३।
सुहावत अच्छे लगते हो . तुम मेरैं मन अतिहिं ~ ४४९।
सुहावति शोभा देता है : कैसैं धरे ~ २७४८।
सुहावन सुन्दर, मनोहर . नैंकु नहीं भावत न्यारे री नैन ~ तेरे २५८१।
सुहावना सुन्दर या भला लगने वाला : बसन बर अरुन सुदर ~ ८/८।
सुहावनौ सुहावना, मनोहर द्वै सुभ कंचन कैं मनोहर रत्न जटित ~ २८३२।
सुहावरौ सुहावना, सुन्दर . खेलत फाग ~ २८८५।
सुहावै अच्छी लगती : माटी मोहिं न ~ ७५३।
सुहाहीं अच्छे/भले लगते हैं पर्वत के ऊपर बोलत मोर ~ सारा० ८६२।
सुही[1] लाल रंग की : उर अंचल उडत न जानी सारी सुरँग ~ २४।
सुही[2] सूही, एक राग : ~ सारँग टोटी भैरव, सोरठी, केदार २८३१।
सुहृद १ अच्छे या दयार्द्र हृदय वाला : पंछी एक ~ जानत

हीं २/८३। २ प्रिय, प्यारे : ~ सखनि कर देत ४१६।
सुहृदता मित्रता : काम, क्रोध, मय, नेह ~ १००८।
सुहेस सुवेश, सुन्दर मोहन लाल प्रवाल मृदुल मन तच्छन करी ~ ४०७८।
स्रुति¹ वेद · रिच ~ की मब आहीं ११७५।
स्रुति² कानों मे ~ कुंडल धर गिरन न जाने ११३६।
स्रुतिनि वेदों ने · ~ कह्यौ कर जोरि ११७५।
सूँघति सूँघती है : ~ सोई ठाउँ ४०७०।
सूँघ फनक साँप सूँघ गया हो गोपी ग्वाल नैन जल ढारत गोकुल है रह्यौ ~ २९६२।
सूआ शुक (शुक्र) तारा ~ सरम मिलन प्रीतम सुख सारा० १०१८।
सूक शुक की (दशा मे) : सूरदास मन्त्वान बसौं हम मनौ मामुई ~ ३२२०।
सूकर १ सुअर : जैसें ~ स्वान सियार १/४१। २ सुअर के भजन विनु कूकर ~ जैसो २/१४।
सूखे सूखती है पुनि वह वेलि वढौ कै ~ ३८३९।
सूखत सूखता है · कचुकि पट ~ नहिं कबहूँ ३२३६।
सूखति सूखती है : अब ये वेली ~ हरि बिनु ३८२३।
सूखति सूख रही है ~ सूर धान अकुर सी १८५५।
सूखन सूखने · व्रज वेली सब ~ लागीं ३९५२।
सूख नितंनी बुरी तरह जलाता है · हरि-रिपु प्रीतम ~ — ४२६३।
सूखीं सूख गई है : ~ सकल सरीर ३६७७।
सूखे खिन्न या कांतिहीन ~ वदन स्रवति नैननि तैं जल-धारा उर वाढी २९९४।
सूखें शुष्क, सूखे · ~ द्रुम पल्लव फल लागे ११८२।
सूखै सूख या जल जाय ~ सकल सिंधु कर पानी ९/११६।
सूख्यौ सूख गया : ~ कमल हियौ २४२३।
सूचत १ प्रकट होता था : स्रम ~ गति भाँति अलस बस २४६१। २ बताता/जताना है : नमित मुख इमि अधर ~ ३५०। ३ सकेत करता है · वार बार रजनी सुख ~ २६३८।
सूचति सूचना दे रही थी : गूढ भाव ~ सखि सैन १७७६।
सूच्छम १. सूक्ष्म (पतली) · आगम कियौ नभ तैं जमुन-~ धार ६३४। २ बहुत छोटे · ~ चरन चलावत बल करि १२०। ~ **पथ** सूक्ष्म मार्ग (योग का) · यह ~ — घोष नारि कौं ३८७४।
सूछम १. सूक्ष्म (पतली) : अति ~ कटि तट आडे जिमि ११९४। २ सूक्ष्म, सक्षेप, एक साहित्यिक अलकार ~ तैं दुइ भाव एक कर है सा० ल० ८२।
सूझत १ देख सकती, दिखाइ पडता : उपजत दोप नैन नहिं ~ १/११४। २ बोध हो जाता : जौ लौं सत सरूप नहिं ~ २/२४। ३ सूझनी सूरदास उपमा नहिं ~ २८५८।
सूझि सूझ, समझ में · सब्द इहि विधि मनौ मोहन ~ और न परै ९९१।
सूझी दिखाई दी ~ नाहिं फँदाई १/२४७।
सूझै दिखाई पडती, दीखती और सरत ~ नहीं ११८०।
सूझैं १ दिखाई पड रहा था : अध धुंध मग कहूँ न ~ ९३२। २ विचार करती हैं, दिखाई देता है सूरदास प्रभु नदनदन विनु देखैं और ~ ३८९८।
सूझै १ दिखाई पडना नैन नाहिं कछु और ~ ८०७४। २. ध्यान में आता है · जिनकौं इक अनन्य व्रत ~ क्यौं दजौ उर आनै ३७१५। ३ सूझ/दिखाई पडे कैसै मारग ~ ३१३४।
सूझौ सूझता है, लगता है जोग लिखत हम ~ ३६५०।
सूझ्यौ १ दिखाइ दिया तब मारग ~ नैननि कछु १४५१। २ सूझता है, दिखाई देता है : नैननि पथ कहौ क्यौं ~ ३१६८।
सूत¹ एक वर्णसकर जाति, मनु के अनुसार जिनकी उत्पत्ति क्षत्रिय के औरस और ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ था। सबसे अधिक प्रसिद्ध सूत लोमहर्षण के पुत्र जो वेद व्यास के शिष्य थे और जिन्होंने नैमिषारण्य मे ऋषियों को सब पुराण सुनाये थे · ~ सौनकनि सौं पुनि कह्यौ १/२२७।
सूत² सारथी : असत कुमत रथ ~ १/१४१।
सूत³ बंदी, भाट या चारण · मागध ~ करत सब अस्तुति ३०८५।
सूतरी सुतली : पोत ~ पोहन ३६९०।
सूती सोयी सखी समुझि कहा है ~ परि० २/५९।
सूते सो गये स्वान ~, पहरुवा सब नींद उपजी गेह ५।
सूतैं ततु से, सूत से : पदुम नाल के काँचे ~ ३९१६।
सूथन एक तरह का पायजामा ~ जघन बाँधि नारा वद १०५४।
सूधी १ सरल या भोले स्वभाव की, निष्कपट · ~ निपट देखियत तुमकौं ६७४। २ सीधी स्वान पूँछ कोउ कोटिक लागै ~ कहुँ न करी ३५२६।
सूधे वि० १ सीधे · पूछैं त तुम वदन दुरावत ~ बोल न बोलत २७९। २ सीधा · सुचि करि सकल बान ~ करि ९/१५८। क्रि० वि० बिना ठहरे या रुके, सीधे : लै वसुदेव धँसे दह ~ ४।
सूधैं वि० १ सीधे ~ मारग गइ भुलाई १८६२। २ सीधी-सीधी · बात ~ हम बनावत १५५५। क्रि०वि० सीधे, सीधी तरह से ~ काहे न बोलत १९३५।
सूधै सीधे, नम्रता से · ~ गोरस माँगि कछू लै हम पैं खाहू १६१८।
सूधौ सीधा : अँग ~ कियौ ३०४७। २ सीधी, सीधे बोलत बचन न ~ ३५२९।

सून¹ पुत्र · मनु मयकहिं अक लीन्हौ सिंहिका कैं ~ १८४।
सून² सूने, निर्जन तव तू गयौ ~ भवन ९/९७।
सूनैं सूने, सूना ~ भवन गवन तैं कीन्हौ ९/१३२।
सूनौं सूना वन देख्यौ धौं ~ १५४१।
सूनौ १ सूना हरि विनु लागत है वन ~ ११२५। २ सूना (है) नगर आहि नागर विनु ~ ३९९६।
सून्य शून्य, खोखली (मुरली)अन्तर ~ सदा देखियत है ६६१।
सूपद सुललित पदो से, गीतों से पिकनि रिझावति सुदर ~ ११८०।
सूपनखा सूर्पणखा : ~ नासिका निपाती ३८३९।
सूर¹ देवता महाराज रिषिबर ~ नर १/४०।
सूर² १ सूर्य ~ - चद्र नछत्र-पावक २/२७। २ सूर्य का तिनकी किरनि ~ तनु लाजत १८०१। ३. सूर्य की ~ किरिन कुम्हिलात ९/४३।
सूर³ वीर · बादन बडे ~ की नाई ३०५३।
सूरज-सुत सूर्य के पुत्र, यम ~ के लोक पठावत सा० ल० ७४।
सूरज सुत माता सुबोध की आपुन आदि सूर्य के पुत्र (कर्ण) की माता (कुती) तथा सुबोध (जैन) शब्दों के आदि अक्षर (कु और जै) को मिलाने से कुजै, कुजे ~ ढहावे सा० ल० १५।
सूरज सुत रिपु सुत सूर्य के पुत्र (सुग्रीव) के शत्रु (वालि) के पुत्र अगद, बाजूबद ~ जे आदिक सा० ल० ७३।
सूरज सुता यमुना किन ~ नहाई सा० ल० १६।
सूरजा यमुना के . ~ तट वह मूरत देखी सा० ल० ४४।
सूरठि एक पकवान ~ मीठी मठ जिरवानी परि० १/१५३।
सूरति आकृति, मूर्ति वह ~ मन गडी हमारें परि० १/१६८।
सूरन जिमीकद, जिसकी तरकारी बनती है ~ करि तरि, सरस तोरई १२१३।
सूरमा वीर सूरदास प्रभु परम ~ २४६१।
सूर रिपु सूर्य का शत्रु, रात्रि ससि रिपु वरष, ~ जुग वर ३९७६।
सूर-सुता यमुना ~ मनु कनक भूमि पर २६४७।
सूरसुता अरि बंधु तात अरि भूषन सूर्य की पुत्री (यमुना) के अरि (बलराम) के भाई (कृष्ण) के पिता (वसुदेव) के शत्रु (कस) का भूषण, क्रोध : ~ वचन सवायो सा० ल० २८।
सूर सुता पितु राग गध पितु प्रिय जुत आदि सूर्य की पुत्री (यमुना), राग का पिता (सुर), गध के पिता (मलय) का प्रिय (तनु), अब जमुना, सुर, मलय और तनु शब्दों के प्रथम वर्णों को मिलाने से जसुमत, यशोदा . ~ सकेरौ सा० ल० ३३।
सूरहि सूर या सूरदास को . सोइ प्रसाद ~ अब दीजै १/२०४।
सूरहूँ सूर (पर) भी · ~ पर करौ तेहिं सुभाई ८/९।
सूरौ बहादुर · बिरहिनि पर भयौ ~ ३३५६।
सूर्पनखा सूर्पणखा ~ ये समाचार सब लका जाइ सुनाए ९/५७।
सूल¹ १ चुभने वाली नुकीली चीज, काँटा खेलत ~ दए तिन माँहि ९/३। २ बरछा, भाला, साग ताहि ~ पर सूली दयौ ३/५।
सूल² १ कसक, पीडा, वेदना : मिटै ~ क्यौं जी कौ १/१३८।
सूलनि १. दुःखों (ऊधौ) खरी जरी हरि ~ की ३९१०। २. दुखों या शूलों से : बिछुरत हस बिरह कैं ~ ८०१।
सूल-सईं शूल सहित, पीडित सर करि तन ~ सा० ल० ५१।
सूलसुख शूल का सुख=पीडा : सदा ~ पेरै सा० ल० २४।
सूली शूली, फाँसी माडव ऋषि जब ~ दयौ ३/५।
सूस सुइस या सूँस (जल मे रहने वाला भैंस के आकार का एक जानवर) · ~ स्वास सरोज लोचन डुलनि २५७५।
सूहो एक सकर राग · दादुर मोर सोर चातक पिक ~ निसा सिरावन के ३३१६।
सृंग¹ १, सींग पाउँ चारि सिर ~ गुंग मुख तब कैसैं गुन गैहौ १/३३१। २ सींग मे : ताहि सौं नाव मम ~ बाँधौ ८/१६।
सृंग² सीग का बना एक प्रकार का वाद्य यत्र . ~ मधुर मुहचग सारा० १०७५।
सृंगारत दे० सिंगारत।
सृंगारे शृगार किया, सजाया कहुँ गजराज बाजि ~ तापर चढे जु आप सारा० ६७७।
सृंगी¹ सींग का बना एक प्रकार का वाद्य यत्र : ऊधौ कहँ ~ अरु सेली ३५३८।
सृंगी¹ एक प्राचीन ऋषि जिसके शाप से तक्षक नाग ने परीक्षित को डसा था . ~ ऋषि सौं लरिकन कह्यौ १/२९०।
सृक माला थीं : बग पगति की ~ सौपज २०५७।
सृग हार, गजरा, माला : गर - ~ - पहरावैनी ९/११।
सृगाल सियार, गीदड : फिरन ~ सज्यौ सव काटत ९/१५८।
सृगालहि शृगाल के : लीन्हौ दलकि ~ ४१८२।
सृजत रचता है · पालत, ~ , सँहारत, सँतत ९/५८।
सृष्टि १ रचना, ससार तेरी ~ जहाँ लगि होइ ७/२। २. ससार के चर अचर प्राणी · इनतैं प्रगटी ~ अपार ३/८।
सृष्टिनि सृष्टि (पर) . जब ~ पर किरपा कीन्हीं ज्ञान कला विस्तार सारा० ६३।
सेंत मुफ्त मे यह उपदेस ~ नहिं भाए ३६१५।

सँतमेत मुफ्त मे मैं ~ न विकाऊँ १/१२८।
सँती ब्रजभाषा की करण और अपादान की विभक्ति, से : बहुरि सुक ~ कह्यो जाइ ९/१७४।
सँदुरी सिंदूर से रंग की (गाय) : कजरी धौरी ~ धूमरी मेरी गैया ६६६।
सेवार शैवाल के . सुभट मनु मकर अरु केस ~ ज्यौं ४१८३।
से १ समान, सदृश, जैसे · जाकैं हैं मनवा ~ पायक ९२२। २ समान हैं स्याम स्याम तन सवै एक ~ ३८७३।
सेइ १ सेती/पालती है जैसैं गरभक ~ विरानौ परि० १/५१। २. सेवा करके : ताकौं ~ परम गति पावहु ५/२। ३ सेवा करो गोप कुसल जौ चाहियै, गिरि गोवर्धन ~ ८४१।
सेइय उपासना कीजिए जो इन ~ कामी २८२६।
सेऊँ सेवा करूँगा निसि दिन स्याम ~ मैं तोहिं ११८०।
सेए १ उपासना/आराधना या सेवा की ~ नाहिं चरन गिरिधर के १/१४७। २ सेवा या भक्ति करने सूरजदास स्याम ~ तैं १/८२।
सेज १ पलग, शय्या · यहै ~ कौ वरनन १०१६। २ शय्या पर बैठत उठत ~ - सोवत मैं १२।
सेजरिया शय्या, पलग सोइ रहौ सुथरी ~ २४६।
सेजैं सेजें : हमकौं दु ख भइ ये ~ ३८४७।
सेज्जा शय्या : ~ पर मग लै पौढावति ५१४।
सेज्या १ सेज, शय्या कंज सदन कुसुमनि ~ पर २४६३। २ सेज पर, शय्या पर · पौढे कहा समर ~ सुत १/२९।
सेठिहि बडे आदमी (श्रेष्ठी) को सूर छोहरनि नद के नृप ~ मारयौ ३०४०।
सेत सफेद, श्वेत : सिर ~ उपरना सोहै १/४४। △ स्याम चिकुर भए ~ काले बाल सफेद हो गये, बुढापा आ गया : इतनी जनम अकारथ खोयौ — ~ १/३२२।
सेतकुली सर्पों के अष्ट कुलों मे से एक सफेद जाति का नाग विप्रनि ~ जब नारी, तब राजा निनसौं उच्चारी ५।
सेति सचित करके · वै कहा करैगी, ~ राखै री।
सेती करण और अपादान कारक की विभक्ति, से : ता ~ सनि करत विनोद ५/३।
सेतु पुल . कपि-दल जोरि और सब सैना, सागर ~ वधैहौं ९/११३।
सेन सेना चौदह सहस ~ खरदूषन ९/७९।
सेनापतिन सेनापतियों को ~ सुनाइ बात यह ६०।
सेनु सेना, दल, झुड स्याम हलधर सग सँग बहु गोप-बालक · ~ ४२७।
सेवती सफेद गुलाब, सेवा करने वाली स्त्री, सेविका · ~ सताप दाता तुम्हैं सा० ल० ७०।
सेये उपासना की सूरदास ~ न कृपानिधि जो सुख सकल मई १/२९९।
सेयौ वास किया जा कारन तुम यह बन ~ ७४८।
सेली सेल्ही, एक प्रकार की माला जिसे योगी-यती लोग पहनते हैं कहँ स्र गी अरु ~ ३५३८।
सेल्ह भाला, बरछी चमकन वीजु ~ कर मंडित ३३२८।
सेल्ही योगियों की माला, सेल्ही . औंजहु भस्म ज्ञु मुद्रा ~ ३४९२।
सेव[1] सेवा, परिचर्या राजा ~ भली विधि करै १/२८४।
सेव[2] उपासना, आराधना . तहाँ करी नृप हरि की ~ ५/३। क्रि० स० १ उपासना या आराधना करो ~ चरन सरोज सीतल १/३०७। २ सेवा करता रहता है · ज्यौं सुक सेमर ~ आस लगि, निसि वासर हठि चित्त लगायौ १/३२६। ३ सेवन करते हैं ~ समुद जल खारी ४२६६।
सेवकपन सेवकत्व : ~ रस भीन्यौ ८/१५।
सेवकाइ सेवकाई १ सेवा सदा करत मेरी ~ ९२८। २ सेवा मे : चूक परी हरि की ~ ३१६२।
सेवकिनि सेविका : रमा ~ देउँ करि ३०९०।
सेवत १ उपासना/आराधना करता है कर्म जोग करि ~ जोइ ४२९८। २ उपासना/आराधना करते हुए स्वपनहुँ श्रेष्ठ होत पद ~ १/२३३। ३ सेवा करता मानहुँ अबुज ~ हैं रवि १२०५। ४ सेवा करती है ~ सुलभ स्यामसुदर कौं ३९००। ५ सेवा करते हैं जाकौं ~ सव भूपाल ४१९४।
सेवति पालन करती है : नाहीं वचनहिं ~ ३९८९।
सेवती सफेद गुलाब जाही जुही ~ करना १०९५।
सेवनि सेवन करने का · ह्याँ ~ कौ ठौर न देखति ३७४०।
सेवर शैवाल घास से चिकुर ~ निकर अरुझति २५७५।
सेवरी शवरी · कियौ तुरत ~ कौ सेष १२/२।
सेवहिं सेवा करते हैं ~ खग मृग सुख भरे ११८०।
सेवहु १ सेवा/पूजा करो अब ~ त्रिपुरारि ७६४। २ सेवन करो ~ आइ बहुरि रजधानी ३६३७।
सेवा १ सेवा। २ पूजा, उपासना · सदा तुम्हारी ~ करिहौं ८४०।
सेवापन सेवा धर्म सेवक कौ ~ एतौ ९/९९।
सेवाल शैवाल घास मनु ~ कमल पर अरुझे १४०।
सेवाहूँ सेवा ही · ~ करत कितहिं दीन्ही है पीठि ३७८०।
सेवैं सेवा करें कर तेई जे स्यामहि ~ २/७।
सेवै क्रि० स० सेवा करता है जो जो मन सिन्धै करि ~ १/२५७, ज्यौं ~ त्यौं ही गति होइ ४२९८। पुं० सेवा सोइ करहु जिहिं चरन ~ सूर जूठनि खाइ १/१२६।
सेवौ सेवा करो : मतमग ~ हरि चरना ५/२।

सेष[1] १ लक्ष्मण, जो शेषनाग के अवतार माने जाते हैं : लगत ~ - उर, बिलखि जगत गुरु ९/६२। २ शेष नाग . ~ सहस मुख सुजस बखाने ३८०।

सेष[2] १. उच्छिष्ट, जूठन : ~ ग्वालनि कौ पाऊँ ४९२। २ शेष, बचा . ~ लिये ह्याँ आए।

सेष-गुन शेष (सत्व) गुण जुग-गुन धोइ,~ जान्यौ ९७७।

सेषनि १. शेष नाग ने . जाने गुन न सहस मुख ~ ३४०५। २ नागों ने . दादुर खाए ~ ३३१०।

सेष-भार शेष नाग का बोझ, पृथ्वी • ~ सब लैहै सा०ल० ८१।

सेष-रेख लक्ष्मण द्वारा खींची गई रेखा ~ नहिं टारी ९/१३२।

सेषासन शेष शय्या, जिस पर विष्णु शयन करते कहे जाते हैं : सप्त रसातल ~ रहे २२१।

सेस[1] शेषनाग • ~ सहस मुख जाहि बखानै ९५१।

सेस[2] शेष : भोजन ~ स्याम कर आनी ९१७।

सेस भार धर जा पति रिपु तिय जल जुत शेष जिसका भार धारण करते हैं (पर्वत) की पुत्री (पार्वती) के पति (शकर) के शत्रु (जालधर) की पत्नी वृन्दा से युक्त जल=वन अर्थात् वृन्दावन . ~ कबहुँ न हेरै सा० ल० २४।

सेसलता नागवल्ली . ~ के पत्र सुधा ग्रह गहत सा० ल० ९८।

सेहरौ सेहरा, दूल्हे का मौर लटकत सिर ~ मनु १०७४।

सैंतत इकट्ठा करता है/कर रहा है . कचन मनि तजि काँचहि ~ १/१७७।

सैंतति इकट्ठा करती है : ~ महरि खिलौना हरि कैं ७१२। २ इकट्ठा कर, सँभाल कर . धरति, ~ धाम-बासन ८५९। ३ सँभाल कर रखती है : महरि सब नेवज लै ~ ८९३।

सैंति इकट्ठा करके, सँभाल कर ते सब राखे ~ नरहरी ४०५०। ~ - **सैंति** सँभाल-सँभाल कर राख्यौ ~ — जिहिं कारज ८८०।

सैंती सँभाल कर : मानहुँ ~ तीनि रेख करि १२०४।

सैंधो सैंधव नमक : अजवाइनि ~ मिलाइ धरि १२१३।

सैन[1] १. कटाक्ष नैन सारग ~ मो तन करो जान अधीर सा० ल० ४२। २ सकेत : नैन ~ दैकै नँदतात २२१८। ३ सकेत से : गूढ भाव सूचित सखि ~ १७७६। ~ **बुझाई** सकेत बता देने से : अजहुँ कबध फिरत तिहि लालच, सुन्दर ~ — २७७३।

सैन[2] १ सेना : जनु साज्यौ अलि ~ १३७७। २ सेना ने - लुब्धक असुर ~ मिलि घेरी ४१७२।

सैन[3] १ शयन नैंकु न कबहूँ कीन्हौ ~ ३२४२। २ शय्या पर • सेस - ~ जहँ रमा सग मिलि १६०४।

- **सैननि** १ सकेतों : ~ हौं सरबस हरयौ ११८०। २ सकेतों/ सकेत से • राजिव नैन मैन की मूरति ~ दियौ बताई ९/४५।

सैनपति सेनापति : ~ कोपि कैं प्रद्युम्न सौं भिरयौ ४१९८।

सैनहूँ सेना को भी रावरी ~ साज कीजै ९/१३६।

सैना सेना : असुर ~ खरे देखि कै वै डरे ३०४८।

सैनापति १ (इन्द्र का) सेना नायक (मेघ) : बरषत मुसलधार ~ ८६३। २ (पाडव) सेना नायक (धृष्टद्युम्न अथवा शिखडी) : तदपि ~ निहारत सा० ल० ७५। ३ सेना नायकों की ~ भीर देखि फिर आऊँ ९/१७२।

सैनी[1] कटक, सेना, समूह सग सजी अघ ~ ९/११।

सैनी[2] स्त्री० शय्या सारग पति सारँग रची ~ २७९८। वि० शयन करने वाले तुम सेष सहस फन ~ परि० १/६३।

सैनु[1] सकेत, इशारा • टेरत नाउँ लेत दै ~ ५०१।

सैनु[2] शयन • महा प्रलय जल करत हौ ~ ४८९।

सैन्य सेना को : मेघवर्त सब ~ बुलाए ९२६।

सैल १ पर्वत ~ से मल्ल वै धाइ आए सरन ३०६०। २ पर्वत को • कर गहि ~ उठायौ ८६८।

सैलधरन पर्वत (गोवर्धन) को धारण करने वाले (श्री कृष्ण) इहाँ जोग अरु अगम, अगोचर, ~ आधार ३८७४।

सैल-सुता पर्वत की पुत्री, नदी : ~ पति तासु सुता पति २७४८।

सैल-सुता धरि ता रिपु पर्वत की पुत्री (गगा) को धारण करने वाले (गगाधर=महादेव) के शत्रु, कामदेव ~ बाँधत अग अग प्रिय आज सारा० ९५४।

सैल-सुता-पति पर्वत की पुत्री (पार्वती) के पति, शकर : ~ ता सुत वाहन बोल ३२८३।

सैल-सुता पति ता सुत-बाहन बोल पर्वत की पुत्री (पार्वती) के पति (शकर) के पुत्र (कार्तिकेय) के वाहन (मोर) का शब्द : ~ न जात सहे ३२८३।

सैल-सुता पति-तास सुता पति, ताके सुतहि पर्वत की पुत्री (नदी) का पति (समुद्र) की पुत्री (लक्ष्मी) के पति (विष्णु) कृष्ण के पुत्र, कामदेव को : ~ मनावति २७४८।

सैल सुता सुत ता सुत अँगना पर्वत की पुत्री (नदी) के पुत्र (जल) से उत्पन्न (कमल) के अगों मे, कोमलता : ~ सो तैं सबै बिसारी सारा० ९३८।

सैवल शैवाल मनु ~ मजरी रामी री २४४७।

सैसवता बचपन, बाल्यावस्था . ~ मैं है सखी जोवन कियौ प्रवेस २६१३।

सैहै सहेगे बिधना कैसैं ~ १५७५।

सैहै सहेगा बात झूठी को ~ १४९१।

सैहौं सहूँगी . तुम कैहौ मैं ~ १४०५।

सो से : जमुना-जल ~ पागे ४।

सो¹ तो : तुमतें होइ ~ होइ १/११८।
सो² १ उन्हें, उसे . बासुदेव है ~ पुनि हए २। २ उस : ~ मूरति नहिं नैन धरी १/११५। ३ उसका : ~ फल उनका तुरत दिखावहिं ८५६। ४ उसकी : ~ सुरत्यौ नहिं आवै ५६१। ५ उसके : और न एकौ ~ मौ मा० ल० ९९। ६ उसी . ~ रस गोकुल-गलिनि बहावै ३। ७ वह . ~ कैसें जीवै महतारी ११, वह . पुरुष पुरातन ~ निर्वानी ३। ८ वही : जिहिं बीतै ~ जानी २२९७।
सोइ¹ १. उन्हीं . ~ विचारन लीन्हौं ३८११। २ जो : राम-नाम मुख उचरै ~ ६/४। ३ वह बहु विधि सपुनौ पावै ~ ४२९८ ४ वही . छाँटि विलब करौं अब ~ ७/२। ~ - सोइ वही-वही . जोइ जोइ कहति करत पिय ~ — ११००।
सोइ² १ सोकर . ~ उठी वृपभानु कुमारी परि० १/७६। २ सो : जाइ दमोदर ~ ८४१।
सोइयत सोया जाता . नाहिंन इतौ ~ सुनि सुत २०७।
सोई¹ सो गई . यह पति सग मिलि ~ ३२२। सो कर : अलि सावक ~ न जान्यौ री १३९।
सोई² १ उसी . सूँघति ~ ठाउँ ४०७०। २ उसे ही . ~ सुन करि मान्यौ २६३। ३ वही : ~ करहु उपाइ ३५७७। ~ सोई वही-वही : ~ — कीजत अति अकुलाए १/१६३।
सोउ १ उस पर भी : ~ करि कृपा दीन्हौ मुरारी ८/८। २ उसे भी : ~ जनि डारहु मारि ३६६२। ३ वह भी : आजु मैं लखे ~ कहे तेरैं २०६२। ४ वही . घृत माखन ~ लीजे १५७४। ५ वे : मार तें ~ कायर दुरानै ४१९४।
सोऊँ १ मोऊँगी अब जननी ~ नहीं १९६६। २ सो जाऊँ : सुख ~ सुनि बचन तुम्हारे १/५१। ३ सोती हूँ : जौ ~ तौ मोहिं हरि मिलैं ३६७६।
सोऊ¹ सो रहने वाला, आलसी पेट भरे पर ~ १/१८६।
सोऊ² १ उसमें भी : ~ जीवै विरला कोउ १०/३। २. उसे भी : ~ तुमहिं सुनाऊँ २२५२। ३ वह भी आइ गयौ ~ तिहिं अवसर ४१९०। ४ वही . ~ ग्यान भक्ति कौं पावै ५/४।
सोकौं शोक (कष्ट) . तोहूँ कौं व्यापी री माई कहा कहति है ~ २२३२।
सोख चूस कर। लिये ~ सुखा डाले, प्राण खींचकर चूस लिये : छिन मैं — ~ मुनिवर ज्यौं छत्री वली अपार सारा० २९२।
सोखत सोखता जा रहा है हम वरषत, परवत जल ~ ८७९।
सोखि शोषण कर, सुखाकर : ~ समुद्र उतारौं कपि-दल ९/१०९।
सोखे खींच लिये : पूतना के प्रान ~ ४९८।
सोख्यौ सोख लिया : ~ जोवन सूर २६१३।
सोग १ शोक, दु ख, कष्ट : ते करि दैहौं ~ ५८९। २ दु ख को : हरि हरे कृपा करि उन सवहिनि कौ ~ ४१६२। ३ शोक है : हमहिं वियोगऽरु ~ स्याम कौ ३६१९।
सोच² १ चिन्ता। २ चिन्ता थी : सुर ~ जिय पोच निसा-चर ९/७३। ३ पछतावा, पश्चात्ताप : सिव ~ दीजै विदाई ८/१०। ४ विचार . पाछैं ~ न कीन्हौं १/१७५। ५ दु ख, कष्ट : ~ तो इतने दिए ३८६५।
सोचई सोचती है यह कहि मुख, मन ~ २२०१।
सोचत १ सोचते . ~ हैं पुर नारी सारा० ५०५। २ सोचते हुए : सुदामा ~ पथ चले ४२२७। ३. सोचते हैं : महा-राज दसरथ यौं ~ ९/३१। ४. सोचते हो . तुम अपनै चित ~ जाकौं १३९६।
सोचति १ सोचती नैन नीर मोचति ~ हैं ३८५०। २. सोचती है इत वृमभानु सुता मन ~ १९५०।
सोचन १ विचार/चिंता मे . मरति सोच हीं ~ १९४२। २ सोच मे पड गये : सिव ~, गरलादिक किमि जात पियौ १४३।
सोचनि १ दु खों मे, रजोगम मे . जीवत रही आजु लौं ~ ४००६। २. सोच, चिंता . ~ जाइ परयौ २७५०।
सोचहीं सोच ही। ~ सोचन सोच ही सोच मे . मरति ~ ~ १९४२।
सोचि विचारकर, सोचकर ~ जिय पवन-पूत पछिताइ ९/९९।
सोचित दीप्त, प्रकाशित कुमकुम अगरु सत ~ रेखा परि० १/५९।
सोचैंहू सोचने से भी, सोचकर भी : ~ सकुचात ३१९३।
सोचैं १ विचार करने लगे . लखि लोचन ~ हनुमान ९/७५। २ चिंता/फिक्र करो . अब हरि आइहैं जिनि ~ ४२८२।
सोचौ विचार करो सो ~ जिय माहीं ३६२१।
सोडप सोलह वरष ~, सतरहौ न रैहै १७३९।
सोत छोर पर : नैकु मान कै ~ ३८४२।
सौति सपत्नी : नोखी ~ भई यह हमकौं १२५०।
सोध¹ सुध-बुध आनँद मगन भए सव डोलत, कछू न ~ सरीर ९/१८।
सोध² समझ। ~ न पायौ समझ नहीं पाई : तिन कछु ~ — १२०८।
सोध³ १ खोज-खवर . हम तुम उनकी ~ न लहैं ६/४। २. खवर, समाचार . तुमकौं ~ वतायौ है ३४८०।
सोधि १ खोजकर, ढूँढ-ढाँढकर . ~ मैं षटमास देख्यौ ४१४४।

२. विचार कर, सोधकर गनहु द्वैज दिन ~ कै २९१४।
सोधिहौ खोजोगे, विचार करोगे : ~ मन माहिं ३८५५।
सोधी सुगंधित, सुवासित : अविर गुलाल अगरजा ~ लीन्हीं सौंज बनाय सारा० १०२७।
सोधे खोज की, पता लगाया : खग मृग-मीन पतंग लौं मैं~ सब ठौर १/३२५।
सोधैं खोज/विचार करें : आवहु री सखि सब मिलि ~ ३८८४।
सोधैं विचार करे : सब विधि ~ ताकी देव ९/१७३।
सोधौ[1] देखो, खोजो : अपनौ ही मन ~ ३८७२।
सोधौ[2] सुधि, याद, खोज-खबर : फेरि न ~ लीन्हौ ३४३९।
सोध्यौ पोंछा, साफ किया : बहराइ नीर नैननि कौ ~ ४०९५।
सोनो सोने के : आँच लगें च्यौनो ~ सौं ३४०४।
सोभ स्त्री० १. शोभा : सोडप कला ~ समि तन धरि ४१८६। २ शोभा की . अग अग ~ अपार निधि २२९९। ३ सौन्दर्य को : जिन जिनकी ~ चुराई २४३६। **वि०** सुन्दर : सेज्या ~ करी ३६३३। △ ~ **सिंगारी** शोभा का शृंगार कर रहे थे अर्थात् शोभा बढ़ा रहे थे उभय परस्पर ~ — ११९४।
सोभाइ शोभित हो रहा है . पीत बसन ~ स्याम पर ११८३।
सोभा-कारि शोभाकारी . बज्र कीलैं लगीं सुठि सुठि, सुभग ~ २८४१।
सोभाकारी शोभा बढा रहा है : केहरि नख उर पर रुरै सुठि ~ १३४।
सोभात शोभित हो रही है · गत पतग राका-ससि बिय सग घटा सघन ~ २७३४।
सोभावै शोभित होती है . कर सिर-तर करि स्याम मनोहर अलक अधिक ~ ६५।
सोभाहि शोभा ही को : बनी काति ~ जनावैं परि० १/१५०।
सोभि शोभा : ~ है का कुभ खडित परि० १/१८४।
सोभित १ शोभा दे रही है : रथ पाछे मिलि ~ यहि विधि सकल दुष्ट की खान सारा० ६३७। २ शोभा दे रहे हैं, शोभित हैं · बिनु बुधि बल विचित्र कृत ~ ४१३७। ३ सुशोभित है : ~ नाना वेस २/३८। ४ सुशोभित होती हैं . प्रभु पाछैं बैठी श्री ~ ४१८४।
सोम चन्द्रमा : चातक ~ सक्र धनु घन मैं १७७७।
सोमबस चन्द्र वंश : ~ पुररवा सौं भयौ ९/२।
सोमबंसी चन्द्रवशी (कृष्ण) अथवा सोम (चन्द्रमा) और वसी (नाक/कान के काँटे) : तिनि मैं तीन ~ बस २४६६।
सोय वह : विप्र जन्म धरि मुक्ति होयगी करि तप साधन ~ सारा० ६१५।
सोयो सोया : पुनि गृह आय सेज पर ~ नैंकु नींद नहिं आवै सारा० ३८७।
सोयौ सोना पडा, सोया : सेज छाँडि भू ~ १/४३।
सोर १. कोलाहल, शोर। २ आर्तनाद, पुकार : रोर कैं जोर तैं ~ घरनि कियौ १/५। ३ ध्वनि, रव : करत बसी ~ सा०ल० ६०। △ ~ **पारि** ललकार कर · हरि सुबलहिं ~— धाए २४०। ~ **लगाइ** कोलाहल करके : ब्रजबाला बनद्रुम ~ — ११२२। ~ **लगायौ** हल्ला/शोर मचा रखा है : तबहीं तैं उन ~ — २४३०। ~ **लगावति** चिल्ला रही हो . बिनु कारन तुम ~ — २२६०।
सोरठ एक राग : ~ गौर मलार सोहावन सारा० १०१५।
सोरठी एक रागिनी : टोडी भैरव ~ केदार २८३१।
सोरहैं सोलहवाँ नक्षत्र, विशाखा, सखी : ~ सो समुभ लागी सा० ल० शेष ४।
सोलह दलदली भूमि में उगने वाला एक झाड : पाहन तरैं ~ जौ बूडै ३८७६।
सोवत १ सोता हूँ . सिगरी रैनि नींद भरि ~ जैसैं पसु अचेत १/१२५। २ सोते : बैठत, ~, जागत १९०५। ३. सोते से · ~ मनौ जगाइ ९/१४। ४ सोते ही : ~ नींद आइ गइ स्यामहिं ५१५। ५. सोते हुए . ~ जानि मौन ह्वै कै रहि ४३। ६ सो रहे थे · चले भाज दोउ सभी उहाँ ते जहँ ~ मुचु कुन्द सारा० ६०५। ७ सो रहा है : ~ कहा चेत रे रावन ९/११४। △ ~ **जागत** सोते-जागते, हर समय : ~ — सपुन रैन दिन ३८८८।
सोवति १ सोती : एकौ पल नहिं ~ ३४०३। २ सोती थी : ~ रग भरी ३६३३। ३ सोते समय : ~ सो तिहिं बात सुनावै ४/१२।
सोवतैं सोते हुए जाइ द्वारावती ~ कुवर कौं ४१९७।
सोवन सोने के लिए : ~ निसा नैंकु नहिं पाये सारा० ५५८।
सोवहु सो जाओ : सेज जाइ ~ तुम मेरी ८९७।
सोवा एक तरह का साग : सरसौं मेथी ~ पालक ३९६।
सोवावति सुलाती है भुजा उछग ~ है ७३।
सोवावै सुला रही है : जसुदा मदन गुपाल ~ ६५।
सोवे १ सोती · ~ न सभागी १९६६। २. सो रहा है : यह कौन नींद तू ~ सारा० ४८५।
सोवैं १. सोते थे ~ तब जब वाहि सुवावैं ५/३। २ सोते हैं : कृष्न वियोगी निमिष न ~ ४०९४।
सोवै १ सोता है : भरि ~ सुख नींद १/४४। २ सोती है : का ~ उठि जाग री २८५९।
सोवौं सोऊँगा . आजु न ~ नद-दुहाई रैनि रहौंगो जागत ४२०।
सोवौ सोओ : तुम ~ मैं तुम्हैं सुवाऊँ २३०
सोष सुखा (- कर) : और कठ करि ~ २३५४।
सोषति सोख लेती है : ~ तन सेज सूर ३२१२।

सोपि सोख (कर) : स्वास कैं तेज सौं जस सकल ~ लियौ ४१९४।

सोस सोच, चिंता : हीन हिये कौ ~ परि० १/८५।

सोसौ सूखता चला जा रहा है स्रवन सुनत जिय ~ १६८२।

सोह १ अच्छा लगता है कछु न ~ दिन रानी ३३८१। २ शोभित हो रही : उर वनमाल ~ सुन्दर वर ११४३।

सोहईं शोभित होते हैं : कमल मुख पर कमल लोचन कमल मृदु पद ~ ४१८६।

सोहई १. शोभा दे रही है . पाग लटपटी ~ २५०२। २. शोभित है, शोभित हो रहा है . मोर-मुकुट सिर ~ २२१७।

सोहत १ अच्छा लगता है या लग रहा है, शोभायमान है · जावक चरननि ~ २६०८। २ अच्छा लगा ~ कित 'सूरज' अवलनि कों ३७११ । ३ सुशोभित हो रहे हैं, शोभायमान हैं : ~ घूँघर वारे वार २१८०।

सोहति शोभित होती है, शोभित है · कर पल्लवनि मुद्रिका ~ १०५३।

सोहती अच्छी लगने वाली · ऊधौ कहियै वात ~ ३९०५।

सोहन सुन्दर : वह मूरति जिय तैं नहिं विसरति, अग अंग सव ~ ३१३७।

सोहनौ सुन्दर, मनोहर गावत राग मलार रागिनी, गिरिधरन लाल छवि ~ २८३०।

सोहहीं शोभा दे रही थीं . नायिका अष्ट अष्टहु दिसा ~ १०५०।

सोहाई शोभित होती है : बाँधत वदन माल, साथिये द्वारे ध्वजा ~ सारा० ३९५।

सोहाए अच्छा/भला लगता है हरि विनु कछु न ~ ३५१०।

सोहागिनि, सौभाग्यवती स्याम ~ कीन्हां ६५६।

सोहागी सुहागिन, सौभाग्यवती जहँ बाँछुरी ~ १३५२।

सोहाय अच्छा लगता है : तब हरि कह्यो मोहिं राधा विन पल छण कछु न ~ सारा० ७०२।

सोहाये सुन्दर · मधुर मल्लिका कुसुमित कुंजन दम्पति लगत ~ सारा० १००३।

सोहायो मनभावना, रुचिकर . लै निज सग चले पश्चिम को लोकालोक ~ सारा० ८५४।

सोहारी देवताओं की पूजा के लिए वनाई जाने वाली छोटी-छोटी पूड़ियाँ : हाथ ~ भेली गुर की १८०।

सोहावन सुहावना : सोरठ गौर मलार ~ सारा० १०१५।

सोहि सामने : आवत है सब ~ परि० १/३१।

सोहिलौ सोहर : गावौं हरि कौ ~ ४०।

सोही शोभा पाती है . अकथ न कछु ~ ३८९९।

सोहैं १. शोभित हो रही हैं · मोहन लाल कैं संग ललना यौं ~ ११५०। २ शोभित हो रहे हैं, शोभायमान हैं नद-नँदन गोकुल मैं ~ २९०० ।

सोहै १ शोभा देगा : तिनहिं जोग कत ~ ३५५०। २. शोभित हो रहा है : मुकुट सीस सिखड ~ १८१९। ३ सुशोभित हो रही है, शोभा देती है : उर ~ वनमाल १४०१। ४ शोभा पाता है : (हरि) कारन करन करै ~ ३।

सौं१ १ शपथ : तेरी ~ मेरी सुनि मैया १९३। २ शपथ/सौगन्ध है : सूर स्याम मोहिं गोधन की ~ ७१५।

सौं२ समान, जैसा · तिनुका ~ अपने जनकौ गुन १/८।

सौं३ से : करत फिरत हमहूँ ~ चोरी २३०६।

सौंज सामग्री, वस्तु पठवहु ~ हमारी ३८८६।

सौंजाई सौदे (सामान, प्रसाधन) . और सकल मिथ्या ~ १/७४।

सौंति १, एकत्र कर . सखा सग लीन्हे जु ~ के १५१२। २ सँभाल · ~ धरौ यह जोग आपनौ ३५५१।

सौंतुप प्रत्यच/सत्य है . देखि वदन चकित भई ~ की सपनैं ४३९।

सौंधनि सुवास, सुगन्ध : सुमना-सुत ~ २३०३।

सौंधे १. सुगध निकट पट आवै ~ की लपट १४०१। २ सुगध से : ~ भीने गात १३७३।

सौंधैं १. सुगध मे . कचुकि ~ बोरैं २८३८। २ सुगधित घोल से : ~ भर्यौ कमोर २८६६।

सौंपति सौंपती (हू) : तोहिं ~ हौं सहियौ ३१३।

सौंपि १ सौंपकर यह तन ~ 'सूर' के प्रभु कौं ४०५३। २ सौंप दे, हवाले कर दे . अजहू सिय ~ न तरु वीस भुजा भानै ९/९७।

सौंपी १ सौंप दिया है, सौंपा है कीजै कहा बाँधि कै ~ २३४९। २ सौंपी · हरि कौं ~ आनि १६५६।

सौंपे सौंपा था, दिया था · देवकी तेरे ही कर ~ २९२३।

सौंपै सौंप दिया : जहँ जाकी निधि तहँ सब ~ ३८१४।

सौंपौ सौंप दो यह तौ 'सूर' ताहि लै ~ ३९८८।

सौंप्यौ सौंप दिया . तन ~ है आनि ३२८९।

सौंरति सँवारती है · बनि वनि भूषन ~ २०२६।

सौंरी स्वादिष्ट वनी है · डभकौरी मुगछी सुठि ~ १२१३।

सौंह १ शपथ, सौगन्ध · ताकौं ~ दिवाऊँ १९३७। २. सौगन्ध है, शपथ है तुमहिं नंद की ~ १५७१। △ ~ करी शपथ ली है : खेलत ~ — नँदलाल ३९२६। ~ करौ सौगन्ध लो : ~ मेरी मो आगैं २७३०।

सौंहन शपथ, सौगंध · दै दै अपनी ~ २१७४।

सौंहनि १ शपथ मिलत आनि दै ~ सौं २४९१। २ शपथ के साँचे ~ वोल निवाहन २६४४।

सौंहैं १ शपथ . दै-दै ~ नद बबा की २४०। २ सौगन्ध है : ऊधौ तुमहिं स्याम की ~ ४०७५।

सौ¹ समान, जैसा : जरासध ~ असुर सँघारौ १/१७२ ।

सौ² सौ (१००) । कहा कहौं ~ बार वार-बार क्या कहूँ : जौ पै जिय लज्जा नहीं — ~ — १/३२५ । △ ~ बातन की एकै बात सारांश या तात्पर्य यह है : ~ — हरि हरि हरि सुमिरौ दिन रात ४२९७ ।

सौचेत सुचवाने पर भी : चेतति नहीं चित्र की पुतरी समुझाई ~ ४११५ ।

सौज सामग्री : लीन्हों ~ बनाय सारा० १०२७ ।

सौति सपत्नी : सिर पर ~ हमारैं कुबिजा ३६३९ ।

सौतिनि १. सौत, सपत्नी ~ भाग-सुहाग-डहीली १७७२ । २ सपत्नियों की · ता ऊपर द्वै मीन चपल हैं ~ साध रही २७७८ ।

सौति साल सौतिया-डाह ~ जिय जानी २४१४ ।

सौदामिनि चपला, बिजली · उत धन उदित सहित ~ ११८९ ।

सौनकनि १ शौनक लोगों सूत ~ सौं पुनि कह्यौ १/२२७ । २. शौनक लोगों को सूत ~ कहि समुझायौ १२/४ ।

सौभरि एक ऋषि, जिसने एक दिन यमुना मे मत्स्य को मछलियों से भोग करते देखकर काम तृष्णा से दग्ध होकर राजा माधाता की पचास कन्याओं से विवाह कर के काम तृष्णा की तृप्ति की थी : ~ रिषि जमुना तट गयौ ९/८ ।

सौमित्रा दशरथ की तीन पत्नियों मे से एक तथा लक्ष्मण की माता ~ कैकई मन आनंद सारा० १६१ ।

सौरभ सुगन्ध, खुशबू : ज्यौं ~ मृग नाभि बसत है २/२६ ।

सौरै धनिया : कचरी चारु चिंचींडा ~ १२१३ ।

सौवौं सौंवाँ : ~ जग्य सगर जब ठयौ ९/९ ।

सौहनि शपथ का : को पतियाइ तुम्हारी ~ परि० १/९० ।

सौहैं शपथ, शपथें ता पाछैं ~ तुम कीजौ २५४८ ।

स्कंध स्कन्ध, खण्ड कहे सुकदेव सौं द्वादस ~ वनाइ १/२२५ ।

स्तननि स्तनों मे : आइ ~ विष पोहि २९७७ ।

स्तुति स्तुति, प्रशसा, प्रार्थना : कपिल ~ तिहिं बहु विधि कीन्हीं ९/९ ।

स्थानन स्थानों : अपने अपने ~ पर तब फगुवा दियौ चुकाय सारा० ३५ ।

स्थावर अचल, स्थिर ~ चर जगम जड करति ६५३ ।

स्थूल मोटा, पीन : तन ~ अरु दूबर होइ ५/४ ।

स्फटिक एक तरह का सफेद पारदर्शी पत्थर : फूल ~ खभ रचित कचन हौं ।

स्फुरति फडक रही है : ~ सुभ सुवाहु २९४६ ।

स्मर कामदेव : मनौ सरासन धरे कर ~ १३७ ।

स्मरण नौ प्रकार की भक्ति मे से एक, सुमिरन : स्रवण कीर्तन ~ पाद रत अरचन वदन दास सारा० ११६ ।

स्यंदन १. रथ पर : जब ~ चढि गमन कियौ हरि ३८१६ । २ रथ से उतरि ~ मिल्यौ २९५६ ।

स्यमंतक एक प्रसिद्ध मणि, जिसे सत्राजित ने सूर्य से प्राप्त किया था दीन्ही मणि आदित्य ~ कोटिक सूर्य प्रकाश सारा० ६४२ ।

स्यानि सयानी, चतुर · ~ ग्वालि वौरैया ३७१ ।

स्यानी चतुर : देखहु आइ राधिका ~ ३६३७ ।

स्यानै सयाने, चतुर/समझकर . तोकौं पठई ~ २५९० ।

स्याम १. श्री कृष्ण । २. काली है गई ~ स्याम जु की पाती ३४८७ । ३ साँवला, श्यामल पिय मम ~ शरीर ९/४४ । ४ साँवले स्याम ~ तन सबै एक से ३८७३ ।

स्यामघन घनश्याम, श्री कृष्ण . ग्वाल-मडली मध्य ~ ४६५ ।

स्यामघनहूँ श्री कृष्ण ने ही : कह्यौ ~ धौं ३८९० ।

स्यामता श्यामल, काली : तामैं देखि ~ कोर ५/३ ।

स्यामताई साँवलेपन की . मनु मधुकलस ~ की २८२६ ।

स्याम-नारी श्याम की प्रियतमा, राधा : हँसति मन ~ ६९९ ।

स्यामरौ साँवला : ~ सुन्दर कान्ह ६२९ ।

स्यामल साँवला, साँवले . तू कत ~ गात २१५ ।

स्यामलाल श्यामलाल, कृष्ण : काहि मनाऊँ ~ जू २५७१ ।

स्यामसुंदरहि श्री कृष्ण को ~ ध्यायौ ४/१० ।

स्याम-सुता सुत-धनि श्याम सुता (रति) के पुत्र (अनिरुद्ध) की स्त्री, उषा : ~ चलि आव ३२८२ ।

स्यामहि¹ १ श्याम/श्रीकृष्ण ही : सोभा मेरैं ~ पर सोहै १५८ । २ श्याम की ही : ~ छबि गिरिवर की छाजै ९१३ । ३ श्याम के ही . ~ रग ढरी १९०० । ४ श्याम को : तातैं ~ भावै ३६३९ । ५. श्याम से : द्विज पाती दै कहियौ ~ ४१६८ ।

स्यामहि² साँवला : रग ~ लीन्हे २३२३ ।

स्यामहित श्याम (नीले) रग का हित (सखा), आकाश : सूर ~ अरध फटयौ सा० ल० शेष १ ।

स्यामही श्याम के ही . सदा ~ के गुन गावै १९२५ ।

स्यामा¹ १ राधा . ~ स्याम कैं उर बसी २४११ । २ राधा के 'सूर' स्याम - ~ - बिलास-रस २१८५ ।

स्यामा² राधा की एक सखी का नाम : इदा विंदा राधिका ~ कामा नारि १६१८ ।

स्याहा १ वही खाता, रोजनामचा : वासिल वाकी ~ मुजमिल १/१४३ । २. काला · वासिल बाकी ~ मुजमिल सब अधर्म की बाकी १/१४३ ।

स्यौं समेत, सहित : ~ परवत सर बैठि पवनसुत ९/१५५ ।

स्यौ सहित : ~ सिंगार अरबिंद ३६८९ ।

स्रई बही, प्रवाहित हुई, गई : बूँदौ तौ न ~ ३९१८ ।

स्रक फूलों की माला : रचि ~ कुसुम सुगंध सेज नजि ३२९२ ।

स्रजात एक राजा, जिसकी पुत्री सुकन्या का विवाह च्यवन ऋषि से हुआ था . तब ~ रानी सौं कही ९/३ ।

स्रद्धा श्रद्धा : सुमति सुरूप सचै ~ विधि २/१२ ।

स्रम[1] १ परिश्रम, श्रम । २ श्रम (रति) में : सुखवत ~ के पागे ६८६ । ३ श्रम से निज भुज ~ सुख पायौ १/१५ । ४ श्रम से आये पसीने के : भूषन भार 'सूर' ~ सीकर सा० ल० ४९ । △ ~ साधैं कष्टपूर्वक साधना करते हैं : मुकुति हेत जोगी ~ — १/१०४ ।

स्रम[2] १ थकान, थकावट : फिरत-फिरत बहुतै ~ आवै ५/४ । २. दुःख : किहि किहि ~ न गँवायौ १/१९० । △ ~ पाई थक गई हो : बारबार कह्यौ ~ — १०८४ । ~ पायौ थक गये हो, कष्ट हुआ है . आवत जात बहुत ~ — ९५० । ~ भयौ थक गई . नृत्य करत अति ~ — ११०१ ।

स्रम-जल १ पसीना . ~ ब्रह्म-कमंडल राख्यौ २२१ । २ पसीने : ~ सो कर कजनि मौं टरि १८८५ ।

स्रम-नीर पसीने से : वदन मिलि ~ १९८६ ।

स्रमहि परिश्रम को . इत उत ~ गँवाइ देह कौ परि० १/१३४ ।

स्रमि थककर . उर भयौ बिवस कर्म-निरअतर ~ सरनि चह्यौ १/१६२ ।

स्रमित १ थक कर, थका हुआ : ~ सुभट सकुचत साहस करि २३८३ । २ परिश्रम करके वृथा ~ रज छानत १/२२१ । ३ शिथिल : पिय प्यारी तनु ~ भए २६२६ ।

स्रमिष्ठा दे० सरमिष्ठा : कह्यौ ~ अवसर पाइ ९/१७४ ।

स्रवण श्रवण, नौ प्रकार की भक्तियों में से एक : ~ कीर्तन स्मरण पाद सारा० ११६ ।

स्रवत क्रि० अ० १ चू रहा है : परसत गात ~ कुच कुकुम ३७५७ । २ बह रहा है : ~ सुलोचन नीर २४५२ । ३. बह रही है ~ सुधा की धार २६१० । ४ झड रहे हों, टपक रहे हों : मानौ ~ सुधा निधि मोती ३४९ । क्रि० वि० बहते हुए : चली साँझ समुहाइ ~ थन ९/१६९ ।

स्रवति चुवाती/उतारती हैं : धेनु नहीं पय ~ ३१५७ ।

स्रवन[1] पुं० १ कान : लोचन ~ न रसना नासा ३ । २ कानों के : सँचरैं ~ समीप सभीति २७७५ । ३ कानों में . माथ मुकुट ~ मनि कुंडल १९ । ४ कानों में : तात मरन सुनि ~ कृपानिधि ९/५२ । क्रि० स० सुनना ~ करौं निमि बासर हित सौं २/३३ । △ ~ जस पूरित कान (तुम्हारी) कीर्ति से भरे हुए हैं : मन अभिलाष ~ — ११३६ । ~ पसारी कान खोलकर : दूत सुन्यौ सो ~ — ९२२ । ~ सिरात काम शीतल होते हैं : ~ — सुनत मृदु बैन ११८० ।

स्रवन[2] श्रुति, वेद . ~ वचन ते पावन पतिनी मारग ना० ल० १०३ ।

स्रवन-कूप कान का छेद (है) . ~ की रहट घटिका २४४५ ।

स्रवनन १ कानों में : मुकुट तरनि मनि कुंडल ~ ४१८६ । २ कानों में : याकी कथा सुनी निज ~ साग० ५७० ।

स्रवननि १. कानों : ~ की सु यहै अधिकाइ २/७ । २. कानों के बारबार निकट ~ है २/३२ । ३ कानों को : राखति ~ प्याइ सुधारस ८८११ । ४ कानों में मुरली तान परी है ~ १९१४ । ५ कानों में : यह अनराति सुनी नहिं ~ ९/९८ ।

स्रवनहि कानों में मोहन, सो सुनि नाम ~ २४३७ ।

स्रवन-हीन बहरा, बहरे : ~ सुनि भए अष्टकुल नाग गरब भय चूरि ९/२६ ।

स्रवनादिक श्रवणादि . ~ मैं चित्त लगावहु ११/४ ।

स्रवैं बहा रही थीं आनंद-मगन धेनु ~ थनु पय फेनु ३० ।

स्राद्ध श्राद्ध, पितरों के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए किये गये पिंडदान, ब्राह्मण-भोजनादि कृत्य कानहूँ ~ करत पित-रन को तर्पण करि बहु भाँति सारा० ६७३ ।

स्रावग श्रावक, जैन-धर्मानुयायी : अजहूँ ~ ऐमोहि करैं ५/२ ।

स्रावगी श्रावक (जैन) भयौ ~ रिषभहिं देखि ५/२ ।

स्री श्री/लक्ष्मी के : अरु ~ निकट समाइ १/६३ ।

स्रीखंड मोर . सुभग ~ पीड मिर मोहत १२२६ ।

स्रीपति १ लक्ष्मी के पति, विष्णु (कृष्ण) को भज्यौ न ~ रानौ १/४७ । २ श्री कृष्ण ने तब ~ अति बुद्धि बिचारी २६२३ ।

स्रुत वेद : और कहति ~ वृषल व्याध की १/१२२ ।

स्रुति[1] १ वेद . नेति नेति ~ गावत ३६ । २ वेदों, श्रुतियों : ~ की मति उर लीन्हे १०१५ । ३ वेदों की सुर ~ तान बँधान अमित अति ६४८ । ४ वेदों के : माधुवाद ~ मार जानि कोउ ३७१२ । ५ वेदों ने : अनत कथा ~ गाइ १/६ ।

स्रुति[2] १ कान . मानत नहिं ~ एह ४०१८ । २ कानों के : ~ कुंडल छवि रवि नहिं तूलै ७९९ । ३ कानों में : कुंडल ~ दीन्हे २३२३ ।

स्रुति देव श्री कृष्ण के अनन्य भक्त एक ब्राह्मण का नाम : तहाँ बसत ~ महामुनि सारा० ७९९ ।

स्रुति द्वार वेद के द्वारा : तारक मंत्र लिख्यौ ~ २/३ ।

स्रुतिनि[1] वेदों के : ~ हित हरि मच्छ रूप धार्‍यौ ८/१६ ।

स्रुतिनि[2] कानों . जनु पिवत ~ पुट आन परि० २/१२ ।

स्रुति-मंडल कानों के वृत्त में . ~ कुंडल मकराकृत ६२६ ।

स्रुती वेद . ~ सुमृति सब पुरान ३९४ ।

स्रूप स्वरूप : अयौ पतिका ~ सा० ल० ३७ ।
स्रेनिका श्रेणी, पक्ति . ~ सुक-जाल ६२७ ।
स्रेनी पक्ति : सारस हस की सुक ~ ।
स्रेय (श्रेय) मगल, उसका रग लाल=महावर : बहुत ~ पुन कत अग्र मे सा० ल० ८३ ।
स्रेष्ठ श्रेष्ठ, उत्तम . स्वपचहु ~ होत पद सेवत १/२३२ ।
स्रैनि श्रेणी : सग मिलित मधुकर ~ २८४१ ।
स्रोन[1] खून, लहू . लै लै ~ हृदय लपटावति १/२९ ।
स्रोन[2] कान : मुख नासिका नयन ~ पद पानि १/७७ ।
स्रोनि श्रेणी : अलिगन ~ रटत नीरज पर परि० १/७४ ।
स्रोनित १. खून, रक्त : स्रवत सकल अंगनि ~ है २६४५ । २ खून/रक्त से : रिपु कैं ~ न्हात ९/१४७ ।
स्रौन १. कान : ~ दोउ जानै ३/१३ । २. कानों से : यह सुनि सुनि ~ १७३४ ।
स्लोक श्लोक, सस्कृत का एक पद्य : श्री मुख चारि ~ दए ब्रह्मा कौं १/२२५ ।
स्व अपने : ~ कर काटत सीस १/१०६ ।
स्वए बहने/टपकने लगे : प्रेम-जल लोचन दुहुँ ~ ५८९ ।
स्वजन आत्मीय, सबधियों : सुत सतान ~ बनिता रति १/५० ।
स्वपच १. एक निम्न जातीय भक्त : गायौ ~ परम अघपूरन १/६६ । २ चाडाल : घर कोउ न बतायौ ~ कोरिया लौं १/१५१ ।
स्वपचहु चाडाल भी : ~ स्रेष्ट होत पद सेवत १/२३३ ।
स्वयंभु चौदह मनुओं मे से प्रथम, जो स्वयभू ब्रह्मा से उत्पन्न माने गये हैं . ब्रह्मा सौं ~ मनु भयौ ३/१० ।
स्वयंवर भारत मे विवाह की एक प्राचीन परम्परा, जिसमे कन्या स्वय (खुद) वर (पति) का चुनाव करती थी . जनक बिदेह कियौ जु ~ बहु नृप विप्र बुलाये सारा० २०६ ।
स्वर १ आवाज : बाएँ काग, दाहिनैं खर . ~ ५४० । २ स्वरों मे . चापति चरन जननि अप अपनी कछुक मधुर ~ गावे सारा० १९६ ।
स्वर भानु १ राहु : लरि ~ सौं घायल आयौ २६११ । २ राहु को : जा रस कौं ~ सीस दियौ २७७३ ।
स्वर्ग स्वर्ग । △ **गयौ उडि** ~ मर गया : तुरत — ~ कौं २९७७ ।
स्वर्गहि १. स्वर्ग को : ~ देउँ पठाई ३०४१ । २ स्वर्ग (से) : मानौ ~सौं सुरपति रिपु कन्या सौति आइ ढरि सिंदहिं १०७ ।
स्वर्गहुँ स्वर्ग ही . ~ गए कस अपराधी ३९७४ ।
स्वल्प १. थोड़े से : ~ साग तैं तृप्त किए १/२८२ । २ हलकी या धीमी : सरल ~ ध्वनि उघटत सुखद ११८० ।
स्वस्ति बाचन मागलिक मंत्रों का उच्चारण : विप्र बुलाय ~ करि रोहिनि नैन सिरानी सारा० ४२१ ।
स्वस्ती बचन मागलिक मत्र : बिप्र-बुलाय बेद-धुनि कीन्हीं ~ पढायो सारा० ३९१ ।
स्वाँग १. नकल, खेल । २. बनावटी/कृत्रिम वेष : नाना ~ बनावै १/४२ । ३. रूप . चौरासी लख जोनि ~ धरि २/१३ ।
स्वाँगी बहुरूपिये के : ~ से ये भए रहत हैं २३९१ ।
स्वाँग्यौ धारण किया, बनाया : कपट करि विप्र कौ स्वाग ~ ४२१५ ।
स्वाति स्वाति, एक नक्षत्र ज्यौं चातक बस ~ बूँद कै २०६९ ।
स्वाति-सुत मोती : सुभग ~ मानौ १०५७ ।
स्वातिहि स्वाति जल के लिए . ज्यौं चातक ~ रट लावै २३१५ ।
स्वान १. कुत्ता : कत ~ सिंह-बलि खाइ ९/४७ । २ कुत्ते ~ सूते ५ ।
स्वामि १ पति : ~ मेरौ जागिहै ५७७ । २ प्रभु, स्वामी : 'सूर' के ~ , स्वामिनी राधा २१२८ ।
स्वामिनि स्वामिनी (राधा) 'सूरदास' स्वामी ~ मिलि २०३२ ।
स्वामिनी स्वामिनी (राधा) सूर-स्वामी ~ मिलि १०८२ ।
स्वामिहि स्वामी को : निसि दिन रटत सूर के ~ ६३९ ।
स्वामी १ प्रभु, भगवान् : सूरदास ~ प्रगटे हैं १७ । २ साधु : तिलक बनाइ चले ~ ह्वै १/५२ ।
स्वामी पन मालिकपन, स्वामित्व : सूरदास ~ तजि कै ८/१५ ।
स्वायभुव चौदह मनुओं मे प्रथम, जो ब्रह्मा से उत्पन्न माने जाते हैं ब्रह्मा ~ मनु जायौ ५/२ ।
स्वायंभू दे० स्वायभुव . ~ मनु के सुत दोइ ५/८ ।
स्वायौ सुलाया हुआ मनहुँ देखि रबि-कमल प्रकासत तापर भृगी सावक ~ २६११ ।
स्वारथ १. स्वार्थ ~ बस इद्री समूह पर २०९१ । २ स्वार्थ के लिए : दिन दस रहे आपने ~ ३६७० । ४ स्वार्थ है जहँ ~ तहँ सगुन साँवरौ ४०२० । △ **न आयौ** ~ काम नहीं आया, सहायक नहीं हुआ : कोउ — ~ १/२५९ ।
स्वारथिनि स्वार्थिनी सूर बडी यह आपु ~ १२४३ ।
स्वाल प्रश्न : ज्वाब ~ कौ दैहौं १४०५ ।
स्वास साँस, श्वास . जब लगि उर है ~ ८०१ । २ साँस या फूँक से ही : ~ आकास बनचर उडाऊँ ९/१२९ ।
स्वासा साँस, श्वास : ~ तासु भए स्तुति चार ४३०० ।
स्वेद १ पसीना सीतल अग ~ सौं बूडी ७४४ । २ पसीने के ~ सलिल भइ भीनी ४१०४ ।

ह

हँकराई हँकवा दी : जमुना तट मन बिचारि गाइनि ~ ६१९ ।
हँकराए १ बुलवाया . राम-लछन ~ ९/३१ । २. बुलवाया है कौन काज हमकौं ~ ८८८ ।
हँकवैया हाँकने वाला : सो रथ ~ ४/२२ ।
हँकारि १ ललकार कर, हाँक देकर : धरयौ स्याम ~ २१३ । २ ललकार : हलधर ~ उठे ३०५८ । ३ बुलवा : ग्वाल बाल ~ लिए ६१९ ।
हँकारी १ पुकारने लगे : उत ग्वाल ~ १९५७ । २ बुलाया है कौन काज हम महरि ~ ८९० । ३ बुलाकर : मेवनि ल्यावो तुरत ~ ९२६ ।
हँकारे १ बुलाया, बुलाया है • कस कुटिल मति छल करि ईहा ~ ३०३२ । २ ललकारा है • देखौ री मुष्टिक चानूर इन ~ ३०६५ ।
हँकार हुँकार/ललकार से : बचै कौन निनके जु ~ २९२२ ।
हँकारौ भेज देती हो : नैंकु काहैं न सुत कौं ~ ७५१ । २ बुलाया या बुलवाया : न्यौति नृप प्रजा कौं तब ~ ४/११ ।
हँकारयौ १ बुलाकर तैयार कराया कटक अपनौ ~ ४१६१ । २ बुलवाया है : सवनि कौं सहित पत्नी ~ ४/५ । ३ ललकारा, चिल्लाया : दियौ गज पेलि आपुन ~ ३०५६ । ४ सहार कर डाला परसुराम रेनुका ~ ९/१३
हस[1] सूर्य : मिलिहैं स्यामहिं ~ सुता तट ६५९ ।
हस[2] जीव, प्राण . जा छन ~ तजी यह काया १/७९ ।
हस[3] विष्णु का अवतार जो मनकादिक का भ्रम और गर्व दूर करने के लिये हुआ था• तब हरि ~ • रूप धरि आए ११/६ ।
हस[4] सन्यासियों का एक भेद : कहि आचार भक्ति विधि साखी ~ धर्म प्रगटायो सारा० ८४४ ।
हँसत क्रि० वि० १ हँसती हुई : ~ गई सखि भवन आपनैं २७२९ । २ हँसते हुए • ~ चले तब कुवर कन्हाई २२०८ । क्रि० अ० १ हँसता है : हँसैं ~, बिलखैं बिलखत १/१९५। २. हँसती हैं : ~ परसपर गावत रास ११८० । ३ हँसते हो नागरि ~ हँसी उर छाया २४१४ । ४ हँसते : बाहर के सब लोग ~ हैं ३२०० । ५ हँसते हैं, हँस रहे हैं सूर सखा सब ~ परस्पर ५३५ । ~ हँसत हँसते-हँसते : ~ — उर लैया २१६ ।
हँसतहि हँसने (मे) ही : ~ मैं तुम रिस कियौ २१४५ ।
हँसतही हँसते ही । ~ हँसत हँसते ही हँसते : ~ — सब मेटि डारे २१५४ ।
हँसति क्रि० अ० हँसती हैं, हँस रही हैं सुनति ~ मनहीं मन भारी १७१० । क्रि० वि० हँसती हुई : ~ नारि सब बरहि चलीं १९६२ ।
हसन हसों, सन्यासियों : नित प्रति ज्ञान कथा ~ सों कहत रहत मुनिराज सारा १०४ ।
हँसनि स्त्री० १ मुस्कान, हँसी नैंकु ~ पर मनहिं हरै १६२८ । २ हँसी का : ~ प्रकास सुमुख कुंडल मिलि ३५३० । ३ हँसी की, मुस्कान की : चकित भई मृदु ~ चमक पर २४०१ । क्रि० अ० १. हँसकर : निटर भए दै ~ अँकोर २६८१ । २. हँसने पर • ~ दुज चमक करबरनि लौं है भलक २१२१ ।
हस-सुता सूर्य की पुत्री, यमुना • ~ का सुदर कगरी ४१५७ ।
हँसहिंगे हँसेंगे : जाति पाँति के लोग ~ १५५७ ।
हंसा[1] राधा की एक सखी का नाम ~ रगा, हरषा जाइ २००८ ।
हँसा[2] हँसते है घर-बन लोग ~ ३०५५ ।
हँसाई हँसी, उपहास, निंदा : कीन्ही प्रीति ~ ३२७९ ।
हँसायौ हँसाया जुवतिनि भलै ~ १५१७ ।
हँसावत १ हँसाती है • गावत हँसत हसाय ~ ८०९ । २ हँसाते हैं • हँसत ~ करि परिहास ११८० ।
हँसावति हँसाती है : हँसति ~ दै करतारी २८९३ ।
हँसावै हँसाता है, उपहास करने को प्रवृत्त करता है : भ्रमि-भ्रमि जगहिं ~ २/१३ ।
हँसावौ हँसाते हो • समुझि बूझि मन माहिं काहे कौं लोग ~ परि० २/३८ ।
हँसि १. हँसकर . तब ~ बोले कान्हर २२१ । २ हँसी में : की तू कहति बात ~ मोसौं १७२१ । ~ हँस हँस-हँस करके : ~ — कठ लगाये ३७९१ । ~ हँसि १ अट्टहास करके ~ — नाग फाँस सर साँधत ९/१४१ । २ हँस हँसकर : ~ — दौरि मिले अकम भरि ३६ ।
हँसियत हँसी आती है . ~ बचन तुम्हारैं १५२० ।
हँसिहैं हँसेंगे : तौ ~ सब ग्वाल २२३ ।
हँसिहै हँसेगा कह ~ ससार १५५८ ।
हंसी हस की मादा, हसी सगन भई रति ~ २११५ ।
हँसे क्रि० अ० हँसे, हँसने लगे • देखि कै स्याम कौं ~ नारे ४१८३ । क्रि० वि० हँसने (पर) . ~ तैं हँसति २४१८ ।
हँसैं क्रि० अ० १ हँसते हैं सूर स्याम सुनि सुनि ~ २१९५ । २ निन्दा करते हैं ~ बिराने लोग १६६३ । क्रि० वि० हँसने पर . ~ हँसति चितऐं चितवति तुम २१९९ ।
हँसैंगे हँसी उड़ायेंगे : यह सयोग सुनि ग्वारिनी, न्याय ~ लोग १६१८ ।
हँसैहौ हँसी कराना : तुम जनि हमहिं ~ १९२३ ।
हँसौंही हँसी, उपहास . या ढग करत ~ ३४९५ ।
हँस्यौ १ हँस दिया . ~ अम्बर-ओर निहारि ७/८ । २. हँसने

लगे : इद्र ~, हर हिय बिलखान्यौ ९/१५८। २ हँसा है : जहाँ जहाँ नँदलाल ~ ३८५०।

हई क्रि० स० १ नष्ट कर दिया : घटी घटा अभिमान मोह मद तमिता तेज ~ ३३४२। २ पीडित कर दिया है, मारा है • कौन ग्यान, कौन ध्यान मनमथ ~ री १८९६। वि० हनन की हुई, मारी हुई : 'सूर' बहुर परजाइ दीन हर कुबजा कर ~ सा० ल० ५१।

हए १ झुक गये हैं, कुठित हो गये हैं : सूर स्याम बिथुरे कच मुख पर नख नाराच ~ २६३४। २ मारा बासुदेव हैं सो पुनि ~ २। ३. मारे : जुद्ध निसान ~ ३०३७।

हजूर[1] १. सेवा मे रहत ~ एक पग ठाढे १०६९। २ स्वामी या रक्षक को दधि माखन घृत लेत छडाएँ आजु ~ बुलावहु १५१३।

हजूर[2] हाजिर, पहुँचती : रजु लै होति ~ सबै तुम सहित सुता-वृषभानु ३४४५।

हटक मना, वर्जना • गई ~ करि देउँ इहै लागी ३०७३।

हटकत मना करने (पर भी) : ~ हूँ बहुत अमारग जाति १/५१।

हटकति १ रोकती सुत कौं ~ नाहि, कोटी इक गारी दीन्हीं १४९१। २ रोकती हैं • सूर जब हम हटकि ~ २४०४।

हटकनि हाँकने की क्रिया : करतल लकुट धेनु की ~ ६१८।

हटकि मना करके, रोककर कुल अभिमान ~ हठि राखी ८०६। ~ हटकि रोक-रोककर . जद्यपि ~ — राखति हौं २४००।

हटकी रोका, मना किया : जब हम ~ हरि-दरसन कौं २४०५।

हटके क्रि०स० मना किया, रोका : नैना बहुत भाँति ~ २३८९। क्रि० वि० रोकने पर : रहत न काहूँ ~ २३२२।

हटकैं रोकने/मना करने पर : नैना रहैं न मेरे ~ २३२१।

हटकौ रोको : माधौ नैंकु ~ गाइ १/५६।

हटक्यौ क्रि० अ० रोका, मना किया कापै ~ जाइ ९/७४। क्रि० वि० मना करने पर : तद्यपि यह मन रहै न ~ परि० २/३५।

हटत हटते हारेहूँ नहि ~ अमित बल २३७२।

हठ १ जिद्, हठ। △ ~ ठानौ हठ/आग्रह करो : बृथा धर्म ~ — १०२८। ~ परे जिद् कर ली है : सूर स्याम ~ — हमारे १५४८।

हठत हठ करते हैं : ~ तोरि पलास पल्लव ४९८।

हठनि हठपूर्वक : ~ ठगौरी खाई १/१८७।

हठहि हठ को। △ ~ गहौं हठ करूँ : केहि पर ~ — ११/३। ~ परे हठ ही पकड ली थी : ऊधौ वे बातैं क्यों बिसरतिं, छाँडि न ~ — ३५८१।

हठि १ हठ करके या दुराग्रहपूर्वक : मन ~ परयौ कबध जुद्ध ज्यौं ३८३८। २ दृढतापूर्वक निसि बासर ~ चित्त लगायौ १/३२६। △ ~ धारी जिद् पकड ली • कठिन प्रकृति ~ — २३७३।

हठिहै हठ करेंगी ~ न माँगत दान ३२२८।

हठै पुं० हठ : प्रगट पाप सताप सूर अब कापर ~ गहौं ३/२। क्रि० अ० हठ करता है . सूरदास प्रभु इती बात कौं कत मेरौ लाल ~ १९५।

हत[1] नष्ट : बिधि-गर्व ~ करत न लागी बार ४३७।

हत[2] मरे हुए ~ कपि कटक जियायो सारा० २९४।

हतन क्रि०स० दूर करने के . ज्यौं कपि सीत - ~ हित गुजनि सिमिट होत लौलीन १/१०२। वि० १ दूर या नष्ट करने वाला : सूर स्याम गरब - ~ नाम ३०६८। २ मारने वाले : रन राम रावन ~ ४२१५।

हता मारने वाले (होते है) : मृतकनि कै जो ~ ३९५५।

हति १ नष्ट करके : अखिल असुभ ~ राखे ३८५२। २ मार कर • लियौ निगम ~ असुर परान १२७। ~ लैहैं प्रान मार डालेंगे तोहिं ~ — ९/१२१। ~ हति मार मार कर . ~ — हुते सु दूरि किए ३६२०।

हतिहै १ मारेंगे : मैं देखौं इनकौं वह ~ ३०१३। २ विनाश करेंगे रघुबर ~ कुल दैयत की ९/१८४।

हती[1] थी : बैठी ~ अकेली सा० ल० ८७।

हती[2] मार डाला ~ राम इक बान ९/७९।

हते[1] थे : जब सिसु ~ कुमार असुर हति ३९३६।

हते[2] १ मार डाला, सहार किया सैन सहित सबै ~ ९/९६। २ मार डाले, मारे . सूरज जौ उन हमहिं ~ तौ ३६०९।

हतै मारता है . जानत आहिं ~ तन त्यागत, तापर हितै करै ३२४४।

हत्या वध। △ ~ तुम्हैं लागी तुम वध करनें के पाप के भागी बने तब सब रिषिन मिलि कह्यौ, बिप्र ~ — भाई ४२२३।

हत्यारिनी हत्यारिणी • वह ~ नारी १३१५।

हत्यारी हत्या करने वाली • ज्यौं हठ होत ~ परि० २/५१।

हत्यौ १ दूर किया, मिटाया : गर्व - ~ तनु बिरह प्रकास्यौ ११२३। २ मारा ~ पुनि सारथी एक ही बान करि ४७०९। ३ मारा था : देखौ ऊधौ ~ प्रलब जहाँ ४०५०। ४ मारा है : किहि मति मूढ ~ तनु तेरौ ९/६५।

हथ हाथ से . सूरदास प्रभु बिरह कपट ~ अत है गये न्यारे परि० १/१७९। △ पर ~ बिकाऊँ दूसरे के हाथ बिकूँ या बिक जाऊँ : काकैं द्वार जाइ सिर नाऊँ — ~ कहाँ — १/१६४।

हथन हाथों मे : हरि जू रचि धरे अपने ~ परि० १/९५।

हथियन हाथियों ने मानौ मत्त मदन के ~ ३३०२।

हथियारा हथियार : सकल सभा जिय जानि करे मारे ~ ४१८८।

हद सीमा अधर सिंधु ~ फोरी २६५६। △ ~ **पारो** मर्यादा या औचित्य का निर्वाह करो : अब इहिं तें ~ — १/१९२।

हनत मारता है, प्रहार करता है ~ मायक तानि २०८६। २ मारते हैं . ~ विषम सर तानि ३८५७।

हने मार डाला, मारा : राम अरु जादवनि सुभट ताके ~ ४१८३।

हनें १ घटा रहे हैं : ताकी वस्तु की मोल ~ ३८०३। २ मारता है : किरनि-सकति भुज भरि ~ ३३५८।

हन्यौ मार डाला, मारा ~ गजराज, त्यौं इनहु मारैं ३०६७।

हबकत हड़बड़ाते हुए, भय से : ~ हाथ परैं नाहीं गहि ३३१३।

हवि वह वस्तु जिसकी अग्नि में आहुति दी जाय : ज्यौं आवै कहि होमत मैं ~ १२०५।

हमता अहंकार : ~ जहाँ तहाँ प्रभु नाहीं १/११।

हमरी हमारी . दिलग जनि मानौ ~ बात ३५३३। △ ~ **उनकी सी मिलवत हौ** हमारी ओर उनकी बातों में हाँ में हाँ मिलाते हो : ~ — तातैं भए विहनी २९९७।

हमरे १ हमारा ~ मनरंजन कीन्हे तें, है ही भुवन नरेम ४०७८। २ हमारे : येइ हैं ~ पति प्रान ४३५।

हमरैं १. हमारा सो ~ कह कीने ३७१७। २ हमारी बिना काम ~ नहिं चाह ९/२। ३ हमारे ~ तो तुमहीं चिंता-मनि ८६७।

हमरौ हमारा : ऊधो ~ कछू दोष नहिं ३६३५।

हमहि १ हम ~ सबनि तुम बोलि पठाए ८१६। २ हमको, हमे तबहीं तैं उनि ~ भुलायौ २४०५। ३ हमको भी अब अपनी सी ~ सिखावत ३८६९। ४ हमने ही राज कौ काज यह ~ कीन्हौ ५८४। ५ हममें . ~ कहौ गोपाला १९८२। ६ हमारा : ~ तुमहि सुत तात को नातो ३११७। ७ हमारी . ~ ओढ़ाई यहै १६१८।

हमहुँ हम भी : ~ मौन धरि रहियै १७४७।

हमहूँ १ हम भी : ~ उनहिं न जानै १७०५। २ हम (से) भी ~ तें अति दोर २३९२, ~ कछु करिहैं गृह-काज ११८०।

हमारैं १. हमारी : परयौ ~ खोज ३९७४। २ हमारे : हम अजान कत डरत हैं कान्ह ~ पास ४३१। ३ हमारे (पास) : सरबस जो कछु रह्यौ ~ २३०४। ४ हमारे (यहाँ) : हरि तुम क्यौं न ~ आए १/२४४।

हमारैं हमारे : सुनु त्रिभुवन पति नाथ ~ १/१८७।

हमारौ १. हमारा कह्यौ ~ कीजौ ४। २. हमारा है बाँट कहा अब सबै ~ १५४२।

हमेल सोने या चाँदी के सिक्कों जैसे गोल टुकड़ों की माला : गर ~ कुच जुग उतग की १४७५।

हमेस सदा : जारत रहत ~ सा० ल० २६।

हमैं १ हमको, हमें। २ हममे : ~ तुम्हें अंतर कछु नाहीं ३११९। ३ हमारा : कालि्ह ~ कैसैं निदरति ही १७६४।

हमैं हमें, हमको : पुरुष चतुरभुज ~ निवारयौ ६/४।

हय १ घोड़ा . जाइ ~ ल्याउ ४/११। २ घोड़े : ~ वर, गय वर, सिंह, हंस वर १५५१। ३ घोड़ों गरज निसान घोर सख ध्वनि ~ गय हीँस चिघार ४१६२।

हयग्रीव विष्णु का एक अवतार, जो मधु और कैटभ नामक राक्षसों से वेदों का उद्धार करने के लिए हुआ था प्रगट भये ~ महानिधि परब्रह्म अवतार सारा० ९०।

हय भूषन घोड़ों का आभूषण, पैंजनी, पूजी, आरावना ~ कीनी ना सा० ल० ८५।

हर्यौ १ दूर किया, हर लिया सखा विप्र दारिद्र ~ १/२६। २ मार डाला, वध किया दनुज कुल सब ~ ३०८२।

हर[1] हरण करो सूर बहुर परजाइ दीन ~ सा० ल० ५१।

हर[2] १ शिव, महादेव : ~ की निज पद पाऊँ १/१३२। २ शिव जी का हरि किए ~ मेपु १७०।

हरई लूटता है : घर-घर माखन ~ २५४२।

हरकै मना करता/रोकता है : कबहूँ नहिं ~ २१९५।

हर कौ तिलक शंकर जी का तिलक, चन्द्रमा : ~ हरि बितु दहत ३३५४।

हरखन प्रसन्न या हर्षित होना है . ~ जिय नित नेह नए री २४७।

हरखि हर्षित होकर : ~ ब्रजनारि भरि लेति अकवारि १७४९।

हरज्यौ रोकना (मेरा कहना) तदपि न मानत ~ २३४७।

हरत १ खींच रहा था अवर ~ द्रुपद तन पर की १/२२। २ दूर करती है ~ तन की ताप सा० ल० ३२। ३ दूर करते हैं लोचन ~ अंबुज मान २२२०। ४. हरण करता है, चुराता है तदपि मन जु ~ दसौ बट ४२७१। ५. हरे ले रहे हैं : मुनि मन ~ मंजु ससि-बिंदा ११७। ६ हरते/ चुराते है : मोहन हठ करि मनहिं ~ २२२१। ७ हरण होते, हरते हुए : तिन अपनौ मन ~ न जान्यौ ३६३८।

हरता दूर करने वाले हैं : ये ~ सब पीर ८६७। ~ करता बिगाड़ने और बनाने वाले . अखिल लोक के ~ — परि० १/२४।

हरति १. दूर करती है : ~ तिमिर रजनी २/२८। २ हरती है : सुधि-बुधि ~ पराई २१६९।

हर-तिलक चन्द्रमा : जानौ ~ कुहू उग्यौ री ६९१।

हरते दूर करते : ~ तन की पीर ३९९५।

हरतौ अपहरण करता, चुराता : सुजन वेष-रचना प्रति जन

मनि, आयौ पर-धन ~ १/२०३।

हरद हल्दी : चूनै मिलि रग जैसैं होत है ~ कौ १४५९।

हरदि हल्दी : दै करवँदा ~-रग भीने १२१३।

हरन पु० हरना, लेना : एकै चीर हुतौ मेरे पै सो इन ~ न्ह्यौ १/२४७। वि० १ चुराने वाला/वाले ब्रज जन मन ~ ६२४। २. दूर करने वाले : भार भूतल ~ १/११९। ३. मारने या नाश करने वाला • सूरदास प्रभु प्रगट ~ खल ३०४३। क्रि० स० हरण करने के लिए : ~ जु प्रान हमारे ३७६१।

हरन-करन हर्ता-कर्ता : ~ ससार ३०९०।

हरनि हरने वाली : ~ सुहँसि मुसकनियाँ १०६।

हरनी[1] हिरणी . रिसनि मोहिं दहति, वन भई ~ ६९८।

हरनी[2] १. दूर करने वाली : मूरति दुसह दुख-भय - ~ ९/१०१। २ नीचा दिखा रहे हैं : सोभित केस विचित्र भाँति दुति सिखि-सिखड ~ २१८४। **मन ~** मन को लुभाने या हरण करने वाली : रुनुक-झुनुक नूपुर पग वाजत धुनि अतिहीं — ~ १२३।

हरबर शाघ्र ही : सूर स्याम राखौ ब्रज ~ ८५७।

हरबराइ हडबडाकर, घबराकर : ~ उठि चली प्रात हीं १६४१।

हरबरात शीघ्रता/उतावली करते हो : अजहू रैनि तीनि याम है जू काई कौं ~ स्याम जू २७९२।

हरबरी घबराहट है . काहं कौं ~ तिहारैं उर स्याम २७९२।

हरभूषन चन्द्रमा सिंहिका सुत ~ ग्रसि ज्यों ३२२२।

हरात हरहराते हुए : घहरात, गररात, दररात ~ ८५३।

हर-रिपु शिव का शत्रु, कामदेव : ~ कीन्हौ घात ३९७६।

हररै हरहराता है, फहराता है : काम हरष ~ हरि अबर २५८०।

हरवाइ हडबडाकर, जल्दी से : बूझियौ ~ हरि सौं परि० १/१९९।

हरष पु० १ आनन्द, प्रसन्नता, हर्ष : अनि मन ~ वढाइ १५३०। २ हर्ष से पुलकित-रोम ~ गदगद स्वर ९/१६९। वि० १ हर्षित : तव उठी सभा सव ~-गान ९/१६६। २. हर्षित थी : सुता वृषभानु की ~ मनहीं री १९७४। क्रि० वि० प्रसन्न होकर, हर्षित होकर ~ असीस देत ३१। ~ कीन्हौं आनन्दित हुए • ब्याई गाई देखिहौं जाइ, मन ~ — १९८४। ~ पायौ हर्षित हो उठे : सरद-निसि देखि हरि ~ — ९८८। ~ बढ़ाई आनन्दित हुई • नागरि ~ — २२०८। ~ बढाए प्रसन्न हुए : यातैं मन अति ~ — ४४७। ~ बढायौ हर्षित हुए : देखि स्याम मन ~ — १०१०। ~ बढ़ावति हर्षित हो रही है . यह कहि कहि मन ~ — ९५८। ~ बढैया हर्षित करने वाले हैं : नदहिं ~ — ८७५। ~ भरि पुलकित होकर : मग सुख लूटि ~ — हिरदै १६९३। ~ भरीं हर्षपूर्वक ~ — ब्रजनारि १५९७। ~ भरैं हर्षित हो उठीं : अमर-नारि अति ~ — ९८२। ~ मानै हर्ष से, हर्षित होकर • निरखि नृत्यत मोर ~ — १०४०।

हरषत क्रि० अ० प्रसन्न हो रहे हैं • छिरकत हरद दही, हिय ~ १९। क्रि० वि० हर्षित होते हुए . उत ~ हरि भवन सिधारे २२०८।

हरषति हर्षित होती है/हो रही है : मन ~ मुख खिझति सखिनि २२०३।

हरषन : हर्षण : ~ योग उदार सा० ल० ८१।

हरषवत १ हर्षित : ~ ह्वै चले तहाँ तैं ९/१०२। २ प्रसन्नता-पूर्वक या हर्षपूर्वक • ~ निज पुरी सिधाए ३८६।

हरषा राधा की एक सखी का नाम • रगा ~ जाउ २००८।

हरषाइ हर्षित होकर, हर्षपूर्वक • अमर विमान सव कहैं ~ ३०९२।

हरषाई हर्षित हुई • द्रुपद सुता सुनि मन ~ ४२९७।

हरषात १. पुलकित होता है : कठ लगि जात ~ गाता ४४०। २. हर्षित हो रही है/हैं अतिहिं हृदय ~ ११३१।

हरषानी प्रसन्न हुई, हर्षित हुइ : आनँद भरी ललिता ~ २६१५।

हरषाने हर्षित हुए सूर उपग सुत मन ~ ३४२५।

हरषावति १ प्रसन्न होती है : ब्रज तरुनी ~ री ३४५८। २. हर्षित करती (है) ऐसैं मन ~ है ११८०।

हरषावैं प्रसन्न या आनन्दित होते/करते हैं . विषय भोग हिरदै ~ ४/१२।

हरषाहीं हर्षित होती हैं : निरखि निरखि ~ १८०६।

हरषि प्रसन्न/हर्षित होकर : ~ स्याम सव सखा बुलाए २३९। ~ हरषि प्रसन्न हो होकर . ~ — कै देति सुरनि कौं सूर सुमन की माल ४२२।

हरषित क्रि० अ० प्रसन्न/हर्षित हो उठे : ~ स्वजन सखा प्रिय बालक ४२८७। वि० आनन्दित, प्रसन्न : प्रमुदित जसुमति ~ नद २०४। क्रि० वि० प्रसन्न/हर्षित होकर : ~ बेनु बजायौ छैल ११८०।

हरषीं प्रसन्न हुई : देखि लहरि तरग ~ १७५२।

हरषी हर्षित हुई/हो गई ~ सुभग नारि अनमोली ४२७६।

हरषे प्रसन्न/हर्षित हुए : ब्रज नर नारि अतिहिं मन ~ ६०७।

हरषैं खुश/प्रसन्न हो रहे हैं : कहत मुजा गहि पटकन, नद-सुवन ~ ३०६८।

हरषै हर्षित होती है : कछु ~ कछु दुख करै २०४४।

हरष्यौ १ हर्षित/प्रसन्न हुआ : बालक देखि महावत ~ ३१०९। २ हर्षित/प्रसन्न हुए : इतनौ बचन स्रवन सुनि ~

९/१४७।

हर-सुत-वाहन-असन-सनेही हर (शिव) के पुत्र (कार्तिकेय) का वाहन (मोर) का अशन (सर्प) के स्नेह की वस्तु, चंदन: ~ नो लागत अग अनल भयौ री ३३१९।

हर सुत-वाहन ता पख हर (शिव) के पुत्र (कार्तिकेय) का वाहन (मोर) का पख, मोर पख: ~ लै रहे सीस चढाई १८६८।

हर-हर ठहाकर। ~ हँस्यौ ठहाकर हँस पडा: देखि लकेस कपि भेष ~ — ९/१२९।

हरहाई छरहट, बार-बार दौडकर खेत मे जाने वाली यह (गाइ) अति ~ १/५१।

हरहु दूर करो: आरति ~ हमारी ३५७०।

हराए हरा देंगे: नहीं तौ जुद्ध निज हम ~ १/२७१।

हरि¹ १. विष्णु • छीर-समुद्र मध्य तें यौं ~ ४। २ कृष्ण गोकुल प्रगट भए ~ आइ १३। ३. कृष्ण का • (देवकी) ~ • मुख देखि हो वसुदेव ५। ४ (श्री) कृष्ण के: मेवौ ~ • चरना ५/२। ५ कृष्ण ने सो ~ जू वैकुंठ पठाई १/३।

हरि² चुराकर: इङ अस्व कौं ~ लै गयौ ९/९।

हरि³ सिंह (कमर): ~ पर सरवर, सर पर गिरिवर २११०।

हरि-अहार हरि (सिंह) का भोजन, मास, मास, महीना • ~ चलि जात सा० ल० २२।

हरि कैं लोक स्वर्ग • ततछन ~ सिधायौ ९/६६।

हरि गृह जननी हितन हरि (बदर) के घर (वृक्ष) की माता (पृथ्वी) के हितकारी (बादल), पयोधर, कुच: ~ सरस कहँ सा० ल० १६।

हरि ग्रह जा पति पतिनि सहेली हरि (बदरों) के घर (पर्वत) की पुत्री (पार्वती) के पति (महादेव) की पत्नी (गगा) की सहेली, यमुना: ~ सा० ल० ८७।

हरि-घर समुद्र, पयोधर, कुच: नीतन ~ हेरत सा० ल० ३।

हरि-जन १ हरि-भक्त जाके गृह मैं ~ जाइ ६/४। २ हरि-भक्त को ~ मारैं हत्या होइ ५/३।

हरित हरे: ~ रग भगनो औ भ्राता १९१२।

हरिन हिरण: ~ वराह मोर चातक पिक ६१५।

हरि नख बघनखा (बच्चों को पहनाये जाने वाली तावीज जिसमे बाघ या सिंह का नख बँधा हो:) ~ उर अति राजहीं ११६।

हरिनी हिरणी: भीषम भवन रहित ~ ज्यों ४१७२।

हरि-पुर स्वर्ग धाम, स्वर्ग लोक: असुर देह तजि ~ गयौ ७/२।

हरि-प्रसाद भगवत् कृपा से ~ पायौ निरवान ९/२।

हरि-वाहन विष्णु का वाहन, गरुड डर्‌यौ ~ खग सौं ५८९।

हरि-भख सिंह का भक्षण, माम, मास हरि मोको ~ कहि जु गयौ ३३८९।

हरियरि हरी-भरी तैसीयै ~ भूमि विलसति २८३०।

हरियै चुराएँ: घर घर माखन ~ ४०९३।

हरिराइ भगवान् विष्णु • करिहैं पुत्र ताहि ~ ९/२।

हरि-राज श्री कृष्ण • सुंदरि सँग ~ विराज्यौ ११९३।

हरि-रिपु ता रिपु ता पति कौ सुत हरि (मोर) का शत्रु (सर्प) का शत्रु (गरुड) के पति (विष्णु) का पुत्र, कामदेव ~ हरि बिनु प्रजरि ढहै ३३८९।

हरि-रिपु-प्रीतम हरि (मेढक) का शत्रु (सर्प) का प्रिय = चदन ~ सुख नितैनी ४२६३।

हरि-लोक स्वर्ग-लोक पुनि तन तजि ~ सिधारी ९/६७।

हरि-वर्ष जबू द्वीप के नौ खण्डों मे से एक . इलावर्त और किंपुरुष कुरु औ ~ केतुमाल सारा० ३३।

हरि-सुत¹ काम से ~ आरत जानि ३२२२।

हरि-सुत² सूर्य के पुत्र, कर्ण = कान मे: स्तुति अवतस विराजत ~ ११९९।

हरि-सुत-सुत कृष्ण के पुत्र (प्रद्युम्न) के पुत्र, कामदेव ~ हरि के तन आहि ३८४२।

हरि-सुर-भषन हरि (कृष्ण) की वाणी रूपी भोजन के ~ बिना बिरहाने ४१२०।

हरिहि १ कृष्ण का/के • ~ प्रान-धन राधा प्यारी २१८६। २ कृष्ण को . मो लै ~ दियौ २३०४, ~ पकरि लै आई परि० १/१७। ३ कृष्ण से ~ कहौंगी जाइ २३९३।

हरि हित रिपु सैन हरि (वानर) के हितु (पर्वत) के शत्रु (इन्द्र) की सेना, मेघ • जल ~ पराजित सा० ल० ५७।

हरिहीं कृष्ण के ही • मन तौ ~ हाथ विकान्यौ २२२२।

हरिही कृष्ण ही: मेरे नैन भए ~ के २२५२।

हरिहू हरि भी ~ ऐसैं भाव विचारैं ६/४।

हरिहैं १ दूर/हलका करेंगे भूमि भार येई ~ ८७। २ हरण करेंगे यमला अर्जुन विटप उपारे काली का विष ~ मारा० ५७२।

हरिहै दूर करेगा, दूर करेंगे • दुख दे सब दुख ~ परि० १/१३।

हरिहौ हारोगी, हार जाओगी . सूर स्याम जिहि हरि मिले, नहिं जीतौ, ~ १३४२।

हरी¹ १ हरि, कृष्ण: धनि यह ब्रज जहँ प्रगट ~ ८५। २ कृष्ण ने: ते वसकिये ~ २३५०। ३ कृष्ण या श्याम भी • चतुर नागर ~ २४०४।

हरी² दूर कर दिया, हर लिया: ~ सवनि की पीर ९/१६।

हरीचंद हरिश्चन्द्र, त्रिशकु का पुत्र और सूर्यवश का अट्ठाईसवाँ

राजा जो वडा ही दानी और सत्यवादी था • ~ सो को जग दाता १/२६४ ।

हरु (दु ख को) दूर कर : तू वृषभानु सुता हरि कौ ~ २८१७ ।

हरुआई हड़बड़ाकर . हरि आये ~ २९१५ ।

हरुऐ १ धीरे से, चुपके से . बोलि लए ~ सूनैं घर ३०१ । २ हलका कर के : पौढि गई ~ करि आपुन अग १९७ ।

हरुऔ हलका . बोझ पृथी को ~ भयौ ४३०९ ।

हरुवाइ जल्दी से उठि ~ जाइ मदिर चढि ३३५३ ।

हरुवाई[1] हलके • सुमनहुँ तैं ~ २९५५ ।

हरुवाई[2] हड़बड़ा कर कह्यौ जाइ हरि सौं ~ २८२८ ।

हरुवौ हलका • सबही तैं जैसैं ~ तनु ४०२३ ।

हरे[1] हरी, कृष्ण . तुमहिं महोदर वधु ~ ४२१८ ।

हरे[2] १. दूर कर दिया : छिनक मध्य हरि ~ कृपा करि उन सबहिन के सोग ४१६२ । २ हर जाने पर : व्याकुल होत ~ ज्यौं सरवस १/५० । ३ हरण करता है . मनसिज ताप ~ २४७२ । ४ हरण किया/चुराया था • एक बार रस रास हमारे मन मुरली जो ~ सौ ४०७६ । ५. हर लिया है . मोहन प्रान ~ ता दिन तै ३६७५ । △ चित्त ~ मन को लुभाया या आकर्षित किया कहौ कौन के — ~ हौ २६३७ ।

हरैं[1] १. दूर करो : आरति ~ भई तन छीन ३८६७ । २ हरण कर/छीन लेते हैं : ज्यौं मग चलत चोर धन ~ ५/४ । ३. ले पावेंगे : ~ न काहू कौ री १९३८ ।

हरैं[2] १ चुपके से : ~ बोलि जुवतिनि कौं लीन्हौ ३८१ । २ धीरे-धीरे वह गरजति ये ~ बताने १३१० । ~ - हरैं धीरे-धीरे, चुपके से : ~ — बेनी गहि पाछैं ३२२ ।

हरै १, चुरा ले : ओछी पूँजी ~ जु तस्कर ३७९३ । २. खींच रहा था : राखी लाज द्रुपद तनया की कुरुपति चीर ~ १/३७ । ३. हरता/दूर करता है : रिपु-तन-ताप ~ १/११७ । ४ दूर करे : ~ बलवीर बिना को पीर १/३३ । ५ हरण कर लिया : असुर के प्रान ~ १/८२ । ६ हरण कर/चुरा लेता है . नैंकु हँसनि पर मनहिं ~ १६२८ । ७ हरती है : चलत ध्रुव धीरज ~ ४१८७ ।

हरैगो हरण करेगा कै सँजीवन मूरि लेकै ~ तन सान सा०ल० ५३ ।

हरो छीन लो बाँधो नद ~ गोपन धन सारा० ५२४ ।

हरौं १ दूर करूँ : सोच ~ मन अबहीं ४९ । २ हरण करूँ • बरु यह गोधन ~ कस सब २९७३ ।

हरौ[1] हरा . सेत ~ रातौ अरु पियरौ रग १/६३ ।

हरौ[2] १. दूर किया : नारायण भुव भार ~ है सारा० १४५ । २ हरण/दूर करते हो : तौ लगि बेगि ~ किन पीर १/१९१ । ३ दूर करो : आरति ~ हमारी ३६०८ । ४ रिझाओ : त्यौं मेरौ मन तुमहुँ ~ ११४७ ।

हर्त्ता नाश करने वाला ~ • कर्त्ता आपै सोइ ७/२ ।

हरयौ[1] हरा-भरा • बृन्दावन ~ होत न भावत ४१२३ ।

हरयौ[2] १ दूर किया, मिटाया सब सताप ~ ९/१२२ । २ हर लिया, चुराया : सकर कौ चित ~ कामिनी १/४३ । ३ हर लिया है मेरौ मन वाकी चितवनि बक ~ री ४२८६ ।

हर्ष आनद, खुशी । ~ दए हर्षित किया • जुवतिनि कौं मिलि ~ — ११३० । ~ बढाए प्रसन्न हुए • महर मनहिं अति ~ — ९०४ । ~ बढ़ायौ हर्षित हो उठी यह सुनिकै मन ~ — १६३२ ।

हर्षन फलित ज्योतिष मे एक योग कृष्न पच्छ रोहिनी अर्द्ध निसि ~ जोग उदार ८६ ।

हर्षि प्रसन्न हो : मूढ सो ~ जाहीं ४/११ ।

हर्षे प्रसन्न हुए : ~ गोपी ग्वाल सारा० १०५० ।

हलत हिलती है : कर झटकत चक डोरि ~ ६७१ ।

हलधर हल नामक अस्त्र को धारण करने वाले, बलराम : ~ सग सखा लिए सुरभी गन घेरी २९५१ ।

हलधरहुँ बलराम को भी : ~ चलावहु १९८० ।

हलधारी बलराम ने : हरि मूरति भैंटे ~ ४२०२ ।

हलबली खलबली हृदय दुख, मुख ~ करि, दिए ब्रजहि पठाइ ५८६ ।

हलरावति हिलाती-डुलाती या झुलाती है : ~ सुत लेनि महरि कौ १८१ ।

हलरावैं हिलाते-डुलाते हैं • हरषि हरषि ~ ४५ ।

हलरावै हलराती है . ~ दुलराइ मल्हावै ४३ ।

हलरोइ झूलो : कन्हैया हालरौ ~ ५६ ।

हलाइ हिलाकर : होरी हरषि ~ कै २९१५ ।

हलाए हिलाने लगे : सैन जानि तब ग्वाल जहाँ तहँ द्रुम द्रुमडार ~ १५०३ ।

हलावै हिला रही है मानहुँ पुच्छ ~ १४३९ ।

हलाहल विष भयौ ~ प्रगट प्रथमहीं ८/८ ।

हले चलायमान या कपित हुए, बहे : तिहिं छिन आँसु ~ ३१८१ ।

हलै हिलाती है . नाक बुलाक ~ रे परि० १/११ ।

हलोरि हिलोरकर : जल ~ गागरि भरि नागरि १४०४ ।

हवाला दशा/आदत है : ऐसी बातनि झगरौ ठानत, मूरख तेरौ कौन ~ १४६७ ।

हस्त १ हाथ तच्छन ~ चरन गति सिथिलित ३९८२ । २. हाथ के मटकत भौंहनि ~ उछाह ११८० ।

हस्तक नृत्य में हाथों की मुद्रा : ~ भेद ललित गति लई ११८० ।
हस्तकनि हाथों की : इते पर ~ गति-छवि ११४५ ।
हस्तिनपुर आधुनिक दिल्ली के समीप स्थित चद्रवंशियों द्वारा बसाया हुआ नगर जो कौरवों की राजधानी थी : तुम अब बेगि जात ~ सारा० ५९० ।
हस्ती हाथी : मद के ~ समान, फिरति प्रेम लटकी १६६० ।
हस्यौ हँस पड़े . कुवर ~ आनद-प्रेम-बस १५६ ।
हहरात हरहराते, दहलाते : थहरात, गररात, दररात ~ तर-रात झहरात माथ नाए ८५३ ।
हहरि तडफडाकर, दहलकर : ~ **हहरि** तडफडा-तडफडाकर · जोधा चितवतहिं मरे ~ — धरनि परे ३०७४ ।
हहरी दहल उठी : आनि आस निरास कीन्ही सूर सुनि ~ ३९३२ ।
हहरे तडपे : बरषि-बरषि ~ सब बादर ८७९ ।
हहरयौ दहल गया, भयभीत हो गया . हारि मानि ~ ९५५ ।
हहा स्त्री० हाहकार : इन्द्रजीत लीन्हौ तब सक्ती देवनि ~ करयौ ९/१४४ । **क्रि० वि०** गिडगिडाहट के साथ, प्रार्थना करते हुए : सूर स्याम कर जोरि मातु सौं गाइ चरावन कहत ~ रे ४२३ ।
हाँक ललकार : ~ सुनत मब कौढ मुलानौ ३०७० । △ **दै दै** ~ जोर से चिल्ला-चिल्लाकर, कूक दे-दे कर : — ~ जहाँ-तहँ धावत १४३४ । △ ~ **दई** जोर से पुकारा या बुलाया : ~ — कहि नद दुहाई ७९९ । ~ **दियौ** पुकार लगाई : ~ — करि नद दुहाई १५३१ । ~ **दीन्ही** चिल्लाया, पुकारा : कहाँ सब रहे कहि ~ — १९४९ । ~ **देत** पुकारते/ ललकारते हुए : गावत ~ — किलकारत २५३ । ~ **परी** पुकार हुई : भोर भयो दधि-मथन होत, सब ग्वाल मखनि की ~ — ४०४ ।
हाँकत १. हाँकता (हूँ) : ~ हौं रथ तेरौ १/२७२ । २. हाँकते हैं : रथ ~ गोविंद अर्जुन को सारा० ७७९ ।
हाँकनहारे हाँकने वाला : अति कुबुद्धि मन ~ १/१८५ ।
हाँकि हाँककर : ~ रथ तुरग ता ठौर आए ४२२१ ।
हाँकौ १. हाँका, चलाया : अर्जुन कौ रथ ~ १/११३ । २ हाँकूँ, करूँ : अब ~ हौं आउ बयारि ११५२ । ३ हाँको, ले चलो : सुरभी वृन्दावन कौं ~ ४४६ ।
हाँक्यौ हाँक दिया, चलाया . सुफलक-सुत रथ ~ २९४२ ।
हाँथ हाथ । △ ~ **बिकानी** बस मे हो गई : सूर स्याम कैं ~ — १००३ ।
हाँसि १. उपहास : ~ औ दुख को सहै ३८६५ । २ हँसी : मनसिज मनहरनि ~ १३८४ ।
हाँसी १ उपहास, निंदा . यह ~ दुख दोऊ ३८११ । २ हँसी, परिहास, मजाक : ~ मैं कोउ नाम उचारै ६/४ ।
हा भय/शोक/दुःख सूचक शब्द, हा/हि : जारत है मोहि चक्र सुदरसन ~ प्रभु लेहु बचाई ९/७ ।
हाऊ हउआ, छोटे बच्चों को डरवाने के लिए एक मन-गढंत जगली पशु का नाम : आजु सुन्यौ बन ~ आयौ २२० ।
हाजति आवश्यकता है : निमिषनि की कह ~ ६३८ ।
हाट बाजार । △ ~ **की बेचनहारि** हाट/बाजार में सामान बेचने वाली जिन्हें अपनी मर्यादा का अधिक ध्यान न हो : ब्रज की ढीठि गुवारि, ~ — सकुच न देत गारि, झगरत हूँ २९५ ।
हाटक १. सोना : फाटक दै कें ~ माँगत ३९६५ । २. सोना है · मुख हिमकर, तनु ~ २७५१ । ३. सोने के : ~ कोट कँगूरा राजत ३०९७ । ४ सोने में : बिधु बदनी अरु ~ ढारी १६७४ ।
हाटक-पुरी स्वर्ण-पुरी, लका का : ~ कठिन पथ, बानर ९/८९ ।
हाटनि-बाटनि हाट-बाजार मे · ~ गलिनि कहूँ कोउ चलत नहीं, डरपाहिं ३२८ ।
हाडनि हड्डियों : ~ कौ तुम बज्र सँवारौ ६/५ ।
हात हाथ : कमला गहि लियो ~ सारा० ८१६ ।
हाती दूर, हट, अलग : झुकि बोली ह्याँ तैं हैं ~ कौनें लिखि पठाई २८२६ ।
हातौ अलग, दूर : कनहिं बकत हैं काम-काज बिनु होहि न ह्याँ तें ~ ३०७६ ।
हाथ कर, हाथ । △ **काहू ~ न आवै** किसी के वश या अधिकार मे नहीं आता : सूर स्याम अति करत अचगरी कैसेंहु — ~ — १४३३ । **मन नहीं** मन वश मे नहीं है : कहा करौं — ~ — १६५५ । **मीडत** ~ दुःख या निराशा प्रगट करना है, पछताता है : ~ सीस धुनि ढोरत १/२८७ । ~ **दिवावति डोलति** (भूत-प्रेत या नजर झड़वाने के लिए) हाथ रखवाती या फिरवाती फिरती है : घर-घर ~ — ८३ । ~ **न हाथनि** वश के बाहर हो गया है : ~ — मेरैं १६५३ । ~ **परयौ** हाथ आए, हाथ लगी · कह नथ ~ — सुफलक सुत ३७२१ । ~ **पसारत** हाथ फैलाता है, भीख माँगता है : ~ — कन कौं १/९ । ~ **पसारे** हाथ फलाये रहता हूँ तृष्ना ~ — निसि दिन पेट भरे पर सोऊ १/१८६ । ~ **बिकानी** वश या अधिकार मे हो गई : तबहीं तें उन ~ — १४१२ । ~ **बिकानौ** वश या अधि-कार में हो गया : भक्तनि ~ — १/२४३ । ~ **मारे जात** आगे बढा या जीता जाता है : मेरी जोरी है श्रीदामा ~ ~ — २१३ । ~ **रहैगो पछिबो** सारा श्रम नष्ट हो जायेगा · अतर गहत कनक-कामिनि कौं, ~ ~ — १/५१ ।
हायन पितु सुत हित मुनि पट हाथ + न = कर + न = करन (कर्ण) के पिता (सूर्य) के पुत्र (सुग्रीव) के हित (राम)

राजा जो बडा ही दानी और सत्यवादी था ~ सो को जग दाता १/२६४।

हरु (दु ख को) दूर कर : तू वृषभानु सुता हरि कौ ~ २८१७।

हरुआइ हडाबडाकर हरि आये ~ २९१५।

हरुऐ १ धीरे से, चुपके से • बोलि लए ~ सूनैं घर ३०१। २ हलका कर के : पौढि गई ~ करि आपुन अग १९७।

हरुऔ हलका . बोझ पृथी को ~ भयौ ४३०९।

हरुवाइ जल्दी से उठि ~ जाइ मदिर चढि ३३५३।

हरुवाई[1] हलके : सुमनहुँ तैं ~ २९५५।

हरुवाई[2] हड़बडा कर • कह्यौ जाइ हरि सौं ~ २८२८।

हरुवौ हलका : सबही तैं जैसैं ~ तनु ४०२३।

हरे[1] हरी, कृष्ण . तुमहिं सहोदर बधु ~ ४२१८।

हरे[2] १. दूर कर दिया . छिनक मध्य हरि ~ कृपा करि उन सबहिन के सोग ४१६२। २ हर जाने पर : व्याकुल होत ~ ज्यौं सरवस १/५०। ३ हरण करता है मनसिज ताप ~ २४७२। ४ हरण किया/चुराया था : एक बार रस रास हमारे मन मुरली जो ~ सौ ४०७६। ५. हर लिया है : मोहन प्रान ~ ता दिन तैं ३६७५। △ चित्त ~ मन को लुभाया या आकर्षित किया . कहौ कौन के ~ ~ हौ २६३७।

हरैं[1] १. दूर करो : आरति ~ भई तन छीन ३८६७। २ हरण कर/छीन लेते हैं : ज्यौं मग चलत चोर धन ~ ५/४। ३. ले पावैंगे : ~ न काहू कौ री १९३८।

हरैं[2] १ चुपके से . ~ बोलि जुवतिनि कौं लीन्ही ३८१। २ धीरे-धीरे . वह गरजति ये ~ बताने १३१०। ~ - हरैं धीरे-धीरे, चुपके से : ~ — बेनी गहि पाछैं ३२२।

हरै १, चुरा ले : ओछी पूँजी ~ जु तस्कर ३७९३। २. खींच रहा था • राखी लाज द्रुपद तनया की कुरुपति चीर ~ १/३७। ३. हरता/दूर करता है : रिपु तन-ताप ~ १/११७। ४ दूर करे ~ बलबीर बिना को पीर १/३३। ५ हरण कर लिया : असुर के प्रान ~ १/८२। ६ हरण कर/चुरा लेता है नैंकु हँसनि पर मनहिं ~ १६२८। ७ हरती है : चलत ध्रुव धीरज ~ ४१८७।

हरैगो हरण करेगा कै सँजीवन मूरि लेकै ~ तन सान सा०ल० ५३।

हरो छीन लो बाँधो नद ~ गोपन धन सारा० ५२४।

हरौं १ दूर करूँ : सोच ~ मन अबहीं ४९। २ हरण करूँ • बरु यह गोधन ~ कस सब २९७३।

हरौ[1] हरा . सेत ~ रातौ अरु पियरौ रग १/६३।

हरौ[2] १. दूर किया नारायण भुव भार ~ है सारा० १४५। २ हरण/दूर करते हो : तौ लगि बेगि ~ किन पीर १/१९१। ३ दूर करो : आरति ~ हमारी ३६०८। ४ रिझाओ

त्यौं मेरौ मन तुमहुँ ~ ११४७।

हर्त्ता नाश करने वाला . ~ - कर्त्ता आपै सोइ ७/२।

हर्चौ[1] हरा-भरा बृन्दावन ~ होत न भावत ४१२३।

हर्चौ[2] १ दूर किया, मिटाया सब सताप ~ ९/१२२। २ हर लिया, चुराया : सकर कौं चित ~ कामिनी १/४३। ३ हर लिया है : मेरौ मन वाकी चितवनि बक ~ री ४२८६।

हर्ष आनद, खुशी। ~ दए हर्षित किया : जुवतिनि कौं मिलि ~ — ११३०। ~ बढाए प्रसन्न हुए • महर मनहिं अति ~ — ९०४। ~ बढ़ायौ हर्षित हो उठी • यह सुनिकै मन ~ — १६३२।

हर्षन फलित ज्योतिष मे एक योग कृष्न पच्छ रोहिनी अर्द्ध निसि ~ जोग उदार ८६।

हर्षि प्रसन्न हो . मूढ सो ~ जाहीं ४/११।

हर्षे प्रसन्न हुए . ~ गोपी ग्वाल सारा० १०५०।

हलत हिलती है : कर झटकत चक डोरि ~ ६७१।

हलधर हल नामक अस्त्र को धारण करने वाले, बलराम : ~ सग सखा लिए सुरभी गन घेरी २९५१।

हलधरहुँ बलराम को भी • ~ चलावहु १९८०।

हलधारी बलराम ने • हरि मूरति भैंटे ~ ४२०२।

हलबली खलबली • हृदय दुख, सुख ~ करि, दिए ब्रजहि पठाइ ५८६।

हलरावति हिलाती-डुलाती या झुलाती है : ~ सुत लेनि महरि कौ १८१।

हलरावैं हिलाते-डुलाते हैं • हरषि हरषि ~ ४५।

हलरावै हलराती है : ~ दुलराइ मल्हावै ४३।

हलरोइ झूलो . कन्हैया हालरौ ~ ५६।

हलाइ हिलाकर : होरी हरषि ~ कै २९१५।

हलाए हिलाने लगे . सैन जानि तब ग्वाल जहाँ तहँ द्रुम द्रुमडार ~ १५०३।

हलावै हिला रही है मानहुँ पुच्छ ~ १४३९।

हलाहल विष . भयौ ~ प्रगट प्रथमहीं ८/८।

हले चलायमान या कपित हुए, बहे : तिहिं छिन आँसु ~ ३१८१।

हलै हिलाती है . नाक बुलाक ~ रे परि० १/११।

हलोरि हिलोरकर : जल ~ गागरि भरि नागरि १४०४।

हवाला दशा/आदत है : ऐसी बातनि झगरौ ठानत, मूरख तेरौ कौन ~ १४६७।

हस्त १ हाथ तच्छन ~ चरन गति सिथिलित ३९८२। २. हाथ के मटकत मौंहनि ~ उछाह ११८०।

हस्तक नृत्य में हाथों की मुद्रा . ~ भेद ललित गति लई ११८० ।

हस्तकनि हाथों की : इते पर ~ गनि अवि ११४५ ।

हस्तिनपुर आधुनिक दिल्ली के समीप स्थित चन्द्रवंशियों द्वारा बसाया हुआ नगर जो कौरवों की राजधानी थी : तुम अब बेगि जात ~ सारा० ५९० ।

हस्ती हाथी : मद के ~ समान, फिरति प्रेम लटकी १६६० ।

हस्यौ हँस पड़े कुवर ~ आनद-प्रेम-बस १५६ ।

हहरात हरहराते, दहलाते : घहरात, गररात, दररात ~ तर-रात झहरात माथ नाए ८५३ ।

हहरि तड़फड़ाकर, दहलकर : ~ हहरि तड़फड़ा-तड़फड़ाकर जोधा चितवतहिं मरे ~ — धरनि परे ३०७४ ।

हहरी दहल उठी . आनि आस निरास कीन्ही सूर सुनि ~ ३९३२ ।

हहरे तड़पे : बरषि-बरषि ~ सब बादर ८७९ ।

हहरयौ दहल गया, भयभीत हो गया हारि मानि ~ ९५५ ।

हहा स्त्री० हाहकार : इन्द्रजीत लीन्हौ तब सक्ती देवनि ~ करयौ ९/१४४ । **क्रि० वि०** गिड़गिड़ाहट के साथ, प्रार्थना करते हुए . सूर स्याम कर जोरि मातु सौं गाइ चरावन कहत ~ रे ४२३ ।

हाँक ललकार : ~ सुनत सब कौउ भुलानौ ३०७० । △ **दै दै** ~ जोर से चिल्ला-चिल्लाकर, कूक दे-दे कर : — ~ जहाँ-तहँ धावत १४३४ । △ ~ **दई** जोर से पुकारा या बुलाया : ~ — कहि नद दुहाई ७९९ । ~ **दियौ** पुकार लगाई : ~ — करि नद दुहाई १५३१ । ~ **दीन्ही** चिल्लाया, पुकारा : कहाँ सब रहे कहि ~ — १९४९ । ~ **देत** पुकारते/ललकारते हुए : गावत ~ — किलकारत २५३ । ~ **परी** पुकार हुई : भोर भयौ दधि-मथन होत, सब ग्वाल सखनि की ~ — ४०४ ।

हाँकत १ हाँकता (हूँ) : ~ हौं रथ तेरौ १/२७२ । २. हाँकते हैं : रथ ~ गोविंद अर्जुन को सारा० ७७९ ।

हाँकनहारे हाँकने वाला : अति कुबुद्धि मन ~ १/१८५ ।

हाँकि हाँककर · ~ रथ तुरग ता ठौर आए ४२२१ ।

हाँकौ १ हाँका, चलाया · अर्जुन कौ रथ ~ १/११३ । २ हाँकूँ, करूँ : अब ~ हौं आउ बयारि ११५२ । ३ हाँको, ले चलो : सुरभी बृन्दावन कौं ~ ४४६ ।

हाँक्यौ हाँक दिया, चलाया . सुफलक सुत रथ ~ २९४२ ।

हाँथ हाथ । △ ~ **बिकानी** बस में हो गई : सूर स्याम कैं ~ — १००३ ।

हाँसि १ उपहास · ~ औ दुख को सहै ३८६५ । २ हँसी : मनसिज मनहरनि ~ १३८४ ।

हाँसी १ उपहास, निंदा . यह ~ दुख दोऊ ३८११ । २. हँसी, परिहास, मजाक : ~ मैं कोउ नाम उचारै ६/८ ।

हा भय/शोक/दु.ख सूचक शब्द, हा/हि : जारन है मोहिं चक्र सुदरसन ~ प्रभु लेहु बचाई ९/७ ।

हाऊ हउआ, छोटे बच्चों को डरवाने के लिए एक मन-गढंत जगली पशु का नाम : आजु सुन्यौ बन ~ आयौ २२० ।

हाजति आवश्यकता है . निमिषनि की कह ~ ६३८ ।

हाट बाजार । △ ~ **की बेचनहारि** हाट/बाजार में सामान बेचने वाली जिसे अपनी मर्यादा का अधिक ध्यान न हो : ब्रज की ढीठि गुवारि, ~ — सकुच न देत गारि, झगरत हूँ २९५ ।

हाटक १. सोना : फाटक दै कै ~ माँगत ३९६५ । २, सोना है : मुख हिमकर, तनु ~ २७५१ । ३ सोने के : ~ कोट कँगूरा राजत ३०९७ । ४ सोने में · बिधु बदनी अरु ~ ढारी १६७४ ।

हाटक-पुरी स्वर्ण-पुरी, लका का : ~ कठिन पथ, बानर ९/८९ ।

हाटनि-बाटनि हाट-बाजार में · ~ गलिनि कहूँ कोउ चलत नहीं, डरपाहिं ३२८ ।

हाडनि हड्डियों : ~ कौ तुम बज्र सँवारौ ६/५ ।

हात हाथ : कमला गहि लियो ~ मारा० ८१६ ।

हाती दूर, हट, अलग : झुकि बोली ह्याँ नैं है ~ कोंनैं निसें पठाई २८२६ ।

हातौ अलग, दूर . कतहिं बकत हैं काम-काज बिनु होहि न ह्याँ तैं ~ ३०७६ ।

हाथ कर, हाथ । △ **काहू ~ न आवै** किसी के वश या अधिकार मे नहीं आता · सूर स्याम अति करत अचगरी कैंसहु — ~ — १४३३ । **मन नहीं** मन वश में नहीं है . कहा करौं — ~ — १६५५ । **मीड़त** ~ दु ख या निराशा प्रगट करता है, पछताता है : ~ सीस धुनि ढोरत १/२८७ । ~ **दिवावति डोलति** (भूत प्रेत या नजर झड़वाने के लिए) हाथ रखवाती या फिरवाती फिरती है : घर-घर ~ — ८३ । ~ **न हाथनि** वश के बाहर हो गया है · ~ — मेरैं १६५३ । ~ **परचौ** हाथ आए, हाथ लगी कह गथ ~ — सुफलक सुत ३७२१ । ~ **पसारत** हाथ फैलाता है, भीख माँगता है : ~ — कन कौं १/९ । ~ **पसारे** हाथ फलाये रहता हूँ तृना ~ — निसि दिन पेट भरै पर सोऊ १/१८६ । ~ **बिकानी** वश या अधिकार में हो गई नवहीं तैं उन ~ — १४१२ । ~ **बिकानौ** वश या अधि-कार में हो गया . भक्तनि ~ — १/२४३ । ~ **मारे जात** आगे बढा या जीता जाता है · मेरी जोरी है श्रीदामा ~ ~ — २१३ । ~ **रहैगो पचिवौ** मारा श्रम नष्ट हो जायेगा अतर गहत कनक-कामिनि कौं, ~ ~ — १/५९ ।

हाथन पितु सुत हित मुनि पट हाथ + न=कर + न = करन (कर्ण) के पिता (सूर्य) के पुत्र (सुग्रीव) के हित (मच)

राजा जो बड़ा ही दानी और सत्यवादी था : ~ सो को जग दाता १/२६४।
हरु (दुःख को) दूर कर : तू वृषभानु सुता हरि कौ ~ २८१७।
हरुआई हड़बड़ाकर हरि आये ~ २९१५।
हरुऐं १ धीरे से, चुपके से . बोलि लए ~ सूनैं घर ३०१।
२ हलका कर के : पौढ़ि गई ~ करि आपुन अग १९७।
हरुऔ हलका . बोझ पृथी को ~ भयौ ४३०९।
हरुवाइ जल्दी से • उठि ~ जाइ मंदिर चढ़ि ३३५३।
हरुवाई¹ हलके : सुमनहुँ तैं ~ २९५५।
हरुवाई² हड़बड़ा कर कह्यौ जाइ हरि सौं ~ २८२८।
हरुवौ हलका : सबही तैं जैसैं ~ तृनु ४०२३।
हरे¹ हरा, कृष्ण . तुमहिं सहोदर बंधु ~ ४२१८।
हरे² १. दूर कर दिया . छिनक मध्य हरि ~ कृपा करि उन सबहिन के सोग ४१६२। २ हर जाने पर : व्याकुल होत ~ ज्यौं सरबस १/५०। ३ हरण करता है • मनसिज ताप ~ २४७२। ४ हरण किया/चुराया था • एक बार रस रास हमारे मन मुरली जो ~ सौ ४०७६। ५ हर लिया है . मोहन प्रान ~ ता दिन तैं ३६७५। △ चित्त ~ मन को लुभाया या आकर्षित किया . कहौ कौन के ~ ~ हौ २६३७।
हरैं¹ १. दूर करो : आरति ~ भई तन छीन ३८६७। २ हरण कर/छीन लेते हैं : ज्यौं मग चलत चोर धन ~ ५/४। ३. ले पावैंगे . ~ न काहू कौ री १९३८।
हरैं² १ चुपके से . ~ बोलि जुवतिनि कौं लीन्हौ ३८१। २ धीरे-धीरे : वह गरजति ये ~ बताने १३१०। ~-हरैं धीरे-धीरे, चुपके से : ~ — बेनी गहि पाछैं ३२२।
हरै १, चुरा ले : ओछी पूँजी ~ जु तस्कर ३७९३। २. खींच रहा था : राखी लाज द्रुपद तनया की कुरुपति चीर ~ १/३७। ३. हरता/दूर करता है रिपु तन-ताप ~ १/११७। ४ दूर करे : ~ बलबीर बिना को पीर १/३३। ५. हरण कर लिया • असुर के प्रान ~ १/८२। ६ हरण कर/चुरा लेता है . नैंकु हँसनि पर मनहिं ~ १६२८। ७ हरती है : चलत भ्रुव धीरज ~ ४१८७।
हरैगो हरण करेगा कै सँजीवन मूरि लैकै ~ तन सान सा०ल० ५३।
हरो छीन लो बांधो नद ~ गोपन धन सारा० ५२४।
हरौं १ दूर करूँ : सोच ~ मन अबहीं ४९। २ हरण करूँ : बरु यह गोधन ~ कस सब २९७३।
हरौ¹ हरा . सेत ~ रातौ अरु पियरौ रग १/६३।
हरौ² १. दूर किया . नारायण भुव भार ~ है सारा० १४५। २ हरण/दूर करते हो : तौ लगि बेगि ~ किन पीर १/१९१। ३ दूर करो : आरति ~ हमारी ३६०८। ४ रिझाओ त्यौं मेरौ मन तुमहुँ ~ ११४७।
हर्त्ता नाश करने वाला : ~ - कर्त्ता आपै सोइ ७/२।
हर्यौ¹ हरा-भरा वृन्दावन ~ होत न भावत ४१२३।
हर्यौ² १ दूर किया, मिटाया सब सताप ~ ९/१२२। २ हर लिया, चुराया : सकर कौ चित ~ कामिनी १/४३। ३ हर लिया है : मेरौ मन वाकी चितवनि बक ~ री ४२८६।
हर्ष आनद, खुशी। ~ दए हर्षित किया • जुवतिनि कौं मिलि ~ — ११३०। ~ बढ़ाए प्रसन्न हुए महर मनहिं अति ~ — ९०४। ~ बढ़ायौ हर्षित हो उठी : यह सुनिकै मन ~ — १६३२।
हर्षन फलित ज्योतिष मे एक योग . कृष्न पच्छ रोहिनी अर्द्ध निसि ~ जोग उदार ८६।
हर्षि प्रसन्न हो • मूढ़ सो ~ जाहीं ४/११।
हर्षे प्रसन्न हुए : ~ गोपी ग्वाल सारा० १०५०।
हलत हिलती है : कर झटकत चक डोरि ~ ६७१।
हलधर हल नामक अस्त्र को धारण करने वाले, बलराम : ~ सग सखा लिए सुरभी गन घेरी २९५१।
हलधरहुँ बलराम को भी . ~ चलावहु १९८०।
हलधारी बलराम ने : हरि मूरति भैंटे ~ ४२०२।
हलबली खलबली हृदय दुख, मुख ~ करि, दिए ब्रजहि पठाइ ५८६।
हलरावति हिलाती-डुलाती या झुलाती है : ~ सुत लेनि महरि कौ १८१।
हलरावैं हिलाते-डुलाते हैं • हरषि-हरषि ~ ४५।
हलरावै हलराती है . ~ दुलराइ मल्हावै ४३।
हलरोइ झूलो . कन्हैया हालरौ ~ ५६।
हलाइ हिलाकर : होरी हरषि ~ कै २९१५।
हलाए हिलाने लगे : सैन जानि तब ग्वाल जहाँ तहँ द्रुम द्रुमडार ~ १५०३।
हलावै हिला रही है मानहुँ पुच्छ ~ १४३९।
हलाहल विष : भयौ ~ प्रगट प्रथमहीं ८/८।
हले चलायमान या कंपित हुए, बहे • तिहिं छिन आँसु ~ ३१८१।
हलै हिलाती है नाक बुलाक ~ रे परि० १/११।
हलोरि हिलोरकर : जल ~ गागरि भरि नागरि १४०४।
हवाला दशा/आदत है : ऐसी बातनि झगरौ ठानत, मूरख तेरौ कौन ~ १४६७।
हस्त १ हाथ : तच्छन ~ चरन गति सिथिलित ३९८२। २. हाथ के मटकत भौंहनि ~ उछाह ११८०।

हस्तक नृत्य में हाथों की मुद्रा : ~ भेद ललित गति लई ११८० ।

हस्तकनि हाथों की : इते पर ~ गति-छवि ११४५ ।

हस्तिनपुर आधुनिक दिल्ली के समीप स्थित चन्द्रवंशियों द्वारा बसाया हुआ नगर जो कौरवों की राजधानी थी : तुम अब बेगि जात ~ सारा० ५९० ।

हस्ती हाथी : मद के ~ समान, फिरति प्रेम लटकी १६६० ।

हस्यौ हँस पड़े कुँवर ~ आनंद-प्रेम-बस १५६ ।

हहरात हरहराते, दहलाते : थहरात, गररात, दररात ~ तररात भहरात माथ नाए ८५३ ।

हहरि तड़फड़ाकर, दहलकर : ~ हहरि तड़फड़ा-तड़फड़ाकर जोधा चितवतहिं मरे ~ — धरनि परे ३०७४ ।

हहरी दहल उठी : आनि आस निरास कीन्हीं सूर सुनि ~ ३९३० ।

हहरे तड़पे : बरषि-बरषि ~ सब बादर ८७९ ।

हहरयौ दहल गया, भयभीत हो गया हारि मानि ~ ९५५ ।

हहा स्त्री० हाहाकार : इन्द्रजीत लीन्हौ तब सक्ती देवनि ~ करयौ ९/१४४ । **क्रि० वि०** गिड़गिड़ाहट के साथ, प्रार्थना करते हुए : सूर स्याम कर जोरि मातु सौं गाइ चरावन कहत ~ रे ४२३ ।

हाँक ललकार : ~ सुनत सब कोउ भुलानौ ३०७० । △ **दै दै** ~ जोर से चिल्ला-चिल्लाकर, कूक दे-दे कर : — ~ जहाँ-तहँ धावत १४३४ । △ ~ **दई** जोर से पुकारा या बुलाया : ~ — कहि नंद दुहाई ७९९ । ~ **दियौ** पुकार लगाई : ~ — करि नंद दुहाई १५३१ । ~ **दीन्ही** चिल्लाया, पुकारा : कहाँ सब रहे कहि ~ — १९४९ । ~ **देत** पुकारते/ललकारते हुए : गावत ~ — किलकारत २५३ । ~ **परी** पुकार हुई : भोर भयौ दधि-मथन होत, सब ग्वाल सखनि की ~ — ४०४ ।

हाँकत १ हाँकता (हूँ) : ~ हौं रथ तेरौ १/२७२ । २ हाँकते हैं : रथ ~ गोविंद अर्जुन को सारा० ७७९ ।

हाँकनहारे हाँकने वाला . अति कुबुद्धि मन ~ १/१८५ ।

हाँकि हाँककर ~ रथ तुरग ता ठौर आए ४२२१ ।

हाँकौ १ हाँका, चलाया अर्जुन कौ रथ ~ १/११३ । २ हाँकूँ, करूँ अब ~ हौं आउ बयारि ११५२ । ३ हाँको, ले चलो : सुरभी वृन्दावन कौं ~ ४४६ ।

हाँक्यौ हाँक दिया, चलाया : सुफलक सुत रथ ~ २९४२ ।

हाँथ हाथ । △ ~ **बिकानी** बस मे हो गई : सूर स्याम कैं ~ — १००३ ।

हाँसि १ उपहास : ~ औ दुख को सहै ३८६५ । २ हँसी मनसिज मनहरनि ~ १३८४ ।

हाँसी १ उपहास, निंदा यह ~ दुख दोऊ ३८११ । २ हँसी, परिहास, मजाक . ~ मैं कोउ नाम उचारै ६/४ ।

हा भय/शोक/दुःख सूचक शब्द, हा/हे . भारत हैं मोहिं चक्र सुदरसन ~ प्रभु लेहु बचाई ९/७ ।

हाऊ हउआ, छोटे बच्चों को डरवाने के लिए एक मनगढ़ंत जंगली पशु का नाम आजु सुन्यौ बन ~ आयौ २२० ।

हाजति आवश्यकता है निमिपनि की कह ~ ६३८ ।

हाट बाजार । △ ~ **की बेचनहारि** हाट/बाजार मे सामान बेचने वाली जिसे अपनी मर्यादा का अधिक ध्यान न हो : ब्रज की ढीठि गुवारि, ~ — सकुच न देत गारि, भगरत हूँ २९५ ।

हाटक १. सोना फाटक है क ~ माँगत ३९६५ । २. सोना है मुख हिमकर, तनु ~ २७५१ । ३ सोने के : ~ कोट कँगूरा राजत ३०९७ । ४ सोने में बिधु बदनी अरु ~ ढारी १६७४ ।

हाटक-पुरी स्वर्ण-पुरी, लंका का ~ कठिन पथ, बानर ९/८९ ।

हाटनि-बाटनि हाट-बाजार में : ~ गलिनि कहूँ कोउ चलत नहीं, टरपाहिं ३२८ ।

हाडनि हड्डियों : ~ कौ तुम बज्र सँवारौ ६/५ ।

हात हाथ : कमला गहि लियो ~ सारा० ८१६ ।

हातौ दूर, हट, अलग : झुकि बोली ह्याँ तै है ~ कौनैं लिखे पठाई २८२६ ।

हातौं अलग, दूर कतहिं बकत हैं काम-काज बिनु होहि न ह्याँ तें ~ ३०७६ ।

हाथ कर, हाथ । △ **काहू ~ न आवै** किसी के वश या अधिकार मे नहीं आता : सूर स्याम अति करत अचगरी कैसेहु — ~ — १४३३ । **मन नहीं** मन वश में नहीं है . कहा करौं — ~ — १६५५ । **मीड़त** ~ दुःख या निराशा प्रगट करना है, पछताता है ~ सीस धुनि ढोरत १/२८७ । ~ **दिवावति डोलति** (भूत प्रेत या नजर झटवाने के लिए) हाथ रखवाती या फिरवाती फिरता है . घर-घर ~ — ८३ । ~ **न हाथनि** वश के बाहर हो गया है : ~ — मेरैं १६५३ । ~ **परचौ** हाथ आए, हाथ लगी : कह गथ ~ — सुफलक सुत ३७२१ । ~ **पसारत** हाथ फैलाता है, भीख माँगता है : ~ — कन कौं १/९ । ~ **पसारे** हाथ फलाये रहता हूँ तृना ~ — निसि दिन पेट भरे पर सोऊ १/१८६ । ~ **बिकानी** वश या अधिकार म हो गई तबहीं तैं उन ~ — १४१२ । ~ **बिकानौ** वश या अधिकार मे हो गया भक्तनि ~ — १/२४३ । ~ **मारे जात** आगे बढा या जीता जाना है : मेरी जोरी है श्रीदामा ~ ~ — २१३ । ~ **रहैगो पचिबौ** सारा श्रम नष्ट हो जायेगा अनर गहत कनक-कामिनि कौं, ~ ~ — १/४९ ।

हाथन पितु सुत हित मुनि पट हाथ + न=कर + न = करन (कर्ण) के पिता (सूर्य) के पुत्र (सुग्रीव) के हित (राम)

नक्षत्र, मुनि (७) षट (६) - ७+६ = १३ नक्षत्र=हस्त, हाथ : ~ धर सा० ल० ६३।

हाथनि १ हाथों मे · ~ लिये कनक पिचकारी २८९६। २ हाथों से : एक समय हरि अपने ~ करनफूल फहिराए ३६०१।

हाथहि हाथ मे सुभग पात दोना लिए ~ १६१९। ~ आए हाथ मे आए, पकडे जा सके अब हरि ~ २९७।

हाथा[1] हाथ से जाकै धनुष टँकोरत ~ ३०९५।

हाथा[2] ऐपन आदि से दीवाल पर हाथ के पंजे से दी जाने वाली थापें घर घर देति जुवति जन ~ ८९५।

हाथिनि हाथियो ~ कैं सँग गाँडे ३६०४।

हाथियाँ हाथी . मनौ छूटे ~ ५७७।

हाथै हाथ मे दीन की बात सकल तुव ~ १/११२।

हान १ हानि (अपूर्ण रहना, निष्फल होना) · तातैं भई जग्य की ~ ४/५। २ हानि (दुर्घटना) सुनत ग्वाल मुख ~ सा० ल० ७३। ३ हानि, क्षति ते सब करत न ~ सा० ल० ७४।

हानि १. हानि। २ नष्ट . सो तन ~ होन चाहत है सा० ल० ४६।

हानि दिनपति सीस दिनपति (सूर्य) से रहित (रात्रि) के सीस = प्रमुख = पति, चन्द्रमा : ~ सोभा सा० ल० २।

हानो हानि, क्षति : यातैं और न ~ ३०९७।

हायौ तडफडाने (लगा) · भयौ मीन जल - ~ १/६७।

हार[1] **स्त्री०** पराजय, हार। **क्रि० अ०** हार कर, हारता है प्रबल माया ठग्यौ सब जग जूआ ~ १/२९४।

हार[2] अस्थि, हड्डी : छार सुगन्ध सेज पुहुपावलि हार छुवैं हिय ~ जरैगौ ३३६८।

हारत १. थकता है · वह रितु अनरितु नहि ~ २३३२। २ हारता है . मानत नहीं हार जौ ~ २३७३। ३ हारते जद्यपि हठ हैं ~ २३८३। ४ हार बैठा है ~ सब सुख हेर सा० ल० ७६।

हारद हृदय/मन की बात मोसौं कहि तू अपनौ ~ ४/९।

हारहि हार को . उर तैं सखी दूरि करि ~ ३२५७।

हारहुँ हार होने पर भी : ~ मानत जीति ३८३८।

हारावलि मालाओ की लडी को . तोरि ~ डारी १६१८।

हारि स्त्री० हार, पराजय : ~ जीति कछु नैंकु न समझत २१४। **क्रि०अ०** १ दूर करक . भयौ द्विधा तम ~ २११८। २ हार कर : आपुन ~ सखनि सौं झगरत २१४, ~ सकल भडार-भूमि आपुन बनवास लह्यौ १/२४७। ~ कै लाचार होकर · ~ — जब टेरि दीन्ही १/१७६। ~ **परी** थक गई, हार गई . नैननि सिखवत ~ — २३८६।

हारिल एक पक्षी जो हर समय अपने पंजे मे लकडी दबाये रहता है ~ परेवा भृग पिकऽरु कपोत दुज-कुल वृ द परि० १/१०९(२)। ~ **की लकरी** ऐसी वस्तु जिसे किसी भी स्थिति मे न छोडा जा सके · हमारैं हरि ~ — ३९८८।

हारी हार गई : सासु ननद ~ दै गारी २२१६।

हारी १ हार/थक गई मैं ~ त्यौं ही तुम हारौ ११४७। २ हारी, थकी . कियौ सुरत नहि ~ २७२१। ३. थक गया : ग्राह जब गजराज घेर्‌यौ बल गयौ ~ १/१७६। ४ हारकर भाजत गोप त्रियनि सो ~ २८९३। ५. हार गई सुनि राधा तो सौं हम ~ १५५५। ६. हार जाता है सूर एक पौ नाम बिना नर फिरि फिरि बाजी ~ १/६०। ७ हार गये : रही न पैज प्रबल पारथ की जब तैं धरम-सुत घरनी ~ १/२४८। △ **चलि सत** ~ अपना सत्य या वचन छोड दे या तोड दे आध पैंड बसुधा दै राजा, नातरु — ~ ८/१४। **पत जाहु** ~ अपनी मान मर्यादा छोड दो, अप्रतिष्ठा कराओ · कै सभा माहि — ~ ४२१५। **मरजादा** ~ मर्यादा खो बैठी कुल-कानि की — ~ १६२१। **रसना** ~ बात खाली जाय, माँग पूरी न हो · जाँचक पै जाँचक कह जाँचै, जौ जाँचैं तौ — ~ १/३४।

हारे[1] १ थक/हार गए बरषत ~ मेह ८८०। २ हारकर : सूरदास प्रभु उठि चले कौरव सुत ~ १/२३८। ३ हार गये हैं · मधुकर ये नैना पै ~ ३५७९।

हारैं १ थक जायेंगी : लिखत सारदा ~ १/१८३। २ हारते रहते हैं कोटि धनुर्धर सतत ~ २९२२। ३. हारने पर भी ~ हार न मानत २३९८।

हारैंहुँ हारने पर भी ~ हार न मानत २३१०।

हारैंहूँ हार जाने पर भी ~ नहिं हटत अमित बल २३७२।

हारै खोता है · कत जनम बादि हीं ~ १/६३। △ **जन्म** ~ जीवन व्यर्थ या नष्ट करे अपनौ — ~ ४/११। **लज्जा** ~ बदनामी करावे · पर दारा कैं जाइ, आपु कत — ~ १६१८।

हारौं हारूँगा : हौं कबहूँ नहि ~ ९/१०८।

हारौ[1] १ थक/हार गया है . करत करत स्रम ~ १/१५७। २ हार/थक गये जोग जुक्ति करि ~ ३७९७। ३ थकता धाम सजत नहिं ~ ३७४२। △ **आपुनपौ** ~ अपना सर्वस्व त्याग दिया धन सुत-दारा काम न आवै, जिनहिं लागि — ~ १/८०।

हारौ[2] वाला (कर्तृत्व, स्वामित्व आदि का सूचक प्रत्यय) · सूर सुगन्ध चुरावन ~ , कैसैं दुरत दुरायौ १६९५।

हार्‌यौ १ हार गया : हौं हरि अधर दाउँ दै ~ ४१२९। २.

हार गया हो . मानौ ~ हेम जुआर ३१४० । २ हार गये, पराजित हुए . तिन ~ सब भूमि भंडार १/२४६ ।

हाल १ हालत, दशा : बलै अछन छल बल करि जीते, सूरदास प्रभु ~ ४१६६ । २ दशा (दुर्दशा, दुर्गति) : कौन ~ हमरैं ब्रज बीतत ३७९२ ।

हालई हिलती (है) : लचकनि थोंदिहा ~ हो परि० २/७ ।

हालत १ हिलने/चलने से : कनकलता मकरंद करत मनु ~ पवन सचार ११५९ । २ हिलते हुए ~ दुख दै जाइ ३९५७ ।

हालरु पु० झूला : ~ हालरौ गोपाल ८४ । क्रि० अ० झूलो : कन्हैया ~ रे ४७ ।

हालरो पु० १. झूला, पालना : ~ हलरावै माता ४६ । २ झूले में : कन्हैया ~ हलरोइ ५६ । क्रि० अ० झूलो : हालरु ~ गोपाल ८४ ।

हाव सयोग श्रृंगार में नायिका की प्रेम भाव जनित स्वाभाविक चेष्टाएँ जो पुरुष को आकर्षित करती हैं । साहित्य में हाव की संख्या ११ बतलाई गई है . ~ अरु भाव करि चलत, चितवन नवी, ऐसी को जो मोहित न होई ८/१० ।

हास १ उपहास : कवि कुल करिहै ~ री १३९ । २ हँसी, मुस्कान : ईषद ~ दत दुति विगसति २१० ।

हासी हँसी : औरनि कैं ~ खेल २८०९ ।

हास्य हास : ~ ईषद जु त्रैलोक्य मोहै ९८० ।

हा हा[1] स्वीकृति-सूचक शब्द, हाँ हाँ ~ हमसौं सोइ कहो १९५७ ।

हा हा[2] १ दीनता या विनती की पुकार, दुहाई, हा हा : ~ कत मानि विनती यह ८०३ । २ हाय ! हाय ! : ~ लकुट त्रास दिखरावति ३५६ । ३ शोक दु:ख आदि का सूचक शब्द : सुर उसाँस छाँडि ~ ब्रज जल अँखियाँ भरि लीनी ४१५४ ।

△ ~ **खाय** गिड़ गिड़ाकर : नवहिन ~ सारा० ८९१ ।

हिंडोरना हिंडोला : अब गढन हार ~ कौं ताहि लेहु झुलाइ २८३० ।

हिंडोरनि हिंडोले में . हरषि ~ गावहिं ३३८७ ।

हिंडोरनै हिंडोले पर : ~ हरि सग झूलन आई २८३७ ।

हिंडोरे हिंडोले में . झूलत सुरँग ~ सारा० ३१० ।

हिंडोरैं १ हिंडोला : झूलन आई रग ~ २८३८ । २ हिंडोले में : मरम ~ झूलै २३७१ ।

हिंडोरौ हिंडोला रच्यहु ~ सुभ सुखदाइ २८२८ ।

हिंडोल[1] हिंडोल (एक राग) कान्हरौ ~ कौतुक २८३१ ।

हिंडोल[2] हिंडोला, झूला डरत लाल ~ झूलन ३९८ ।

हिंडोलनौ हिंडोला . रच्यौ रग सुरग ~ २८३२ ।

हिएँ हृदय में : हरि बोलत न सकुच ~ २६१७ ।

हिए १ वक्ष स्थल में : राजत रुचिर ~ ९९ । २. हृदय . फाटि न जात ~ रे ८०१४ । २ हृदय में पै मनोपन आयो ~ १०/२ ।

हिएँ १ हृदय : जद्यपि वैर ~ मैं है री २८२६ । २ हृदय में ~ बुधि उपजाइ ४९८ ।

हिचिकिनि हिचकी भर-भर कर, सिसक सिसक कर : कमल नैन हरि ~ रोवै ४४६ ।

हित[1] १ के लिए : तुमिनि ~ हरि मच्छ रूप धार्यौ ८/२६ । २ लिए, हेतु, कारण, निमित्त तिन ~ जो नो दियै अवतारा ३/९ ।

हित[2] प्रेम करने वाला, प्रेमी : को ~ है अबला जी ३८५६ ।

हित[3] १ प्रेम, कल्याण तन-कुटुंब सौं ~ परिहरै ५/४ । २ प्रेम के : सूरदास गोपिन ~ कारन । ३ प्रेम या स्नेह का : ~ चित सदा करै २३०७ । ४ प्रेम है जासौं ~ ताकी गति ऐसी ३९३५ । ५ भलाई : सूर स्याम तुम्हरे ~ कारन ८१८ । ६ लाभ : वाहि कहा ~ हानि ३८३९ । ~ हित प्रेम-पूर्वक श्री भागवत सुनै जौ ~ — १/२३१ ~ आन्यो प्रेम लगा दिया है : नख चरननि ~ — १८३९ । ~ के ध्यान पूर्वक, प्रेमपूर्वक : सूरदास प्रभु ~ ~ सुमिरौ १/८३ । ~ धरैं प्रेम करें : हम सौं सहस बरस ~ — ०/२ ।

हित[4] हितकर, अनुकूल ~ रितु को अधिकाइ ३१०८ ।

हितकर हितकारी सुखदायक मनन ~ हरि १/३१२ ।

हितकाम हितेच्छु, मगलाकाक्षी मासौं कौ ~ ३५३६ ।

हितकारि हितकर, उपयोगी तन को अति ~ ४०६ ।

हितकारिनि हितकारिणी : सूरदास प्रभु की ~ २२८५ ।

हितकारी कल्याणकारी मनन भक्त मीन ~ १/२३ ।

हित-चार मेल मिलाप, भेंट, प्रेम-क्रीडा . जनु जुग चद करत ~ ६८७ ।

हितचित प्रेमी मन वाले मिटनि नहीं चितवनि ~ की २८३० ।

हितहि हित कर . हमकौं सब अनहित लागत है तुम सब ~ जनायो ३७४४ ।

हितानी हित (रक्षण) करने वाला वह किसोर उबि नीव ~ २३६५ ।

हितु हितैषी तुम तैं ~ नाहिं और बियौ १९४० ।

हितू १ मित्र : जो प्यारे की ~ हुतीं परि० १/१३२ । २ हितैषी तुमहूं तैं ब्रज ~ न कोऊ १०२१ ।

हितै हित ही, कृपा ही . तापर ~ करै ३२४४ ।

हिनती हीन, रक : प्रभुता मेटि करत ~ १६८९ ।

हिना मेहदी : हरि लै ताकौं करन ~ १९२५ ।

हिम पाला, तुषार : मानौं कमलहिं ~ तस्मारौ ३९१ ।

हिमकर १ चन्द्रमा . मनहुं मदन बन्ना पर ~ १०८७ । २. चन्द्रमा है मुख ~ २७५१ ।

हिम के उपल तलाई अर्थ हिम के उपल=ओला=करका तथा सरसी के अन्तिम वर्णों के योग से बनी, करसी ~

उघारि जननि तन ~ ४०५। ४. देखते हो : भौंह वक करि ~ १५६। क्रि० वि० देखते/खोजते हुए • चले गए उत ~ ही १९६०।

हेरति खोज रही हैं : चितवति चकित दिसनि दिसि ~ ११२५।

हेरति १. देखती थी : पग द्वै जाति ठठकि फिरि ~ १४५०। २ देखती है : नागरि कुटिल कटाच्छनि ~ २६२६।

हेरन देखने : कर भूषन तन ~ लागी सा० ल० १००।

हेरनि चितवन : चपल दृगनि की ~ ३८८९।

हेरनौ देखना : मधु मगल तन ~ २८३२।

हेरहीं देखते हैं : स्याम सकुचि अग ~ २७३१।

हेरायौ खो गया है निधव भवन आराम मद्द तैं आज ~ स्याम सा० ल० ८६।

हेरि १. खोजकर, ढूँढकर : कहूँ नहीं जो देखैं ~ ६००। २ देख (रही थी) : सखी रही राधा मुख ~ २०८२। ३ देखो : दरपि मोहिं तन ~ ९/७९। ४ देखकर, विचार कर, समझकर : इनहीं ~ मृगी गोपी नव सायक ध्यान हए ३५८८। ५. हटाकर : आंचर ~ ग्रीव दिखरायौं २००७। ~ रह्यौ खोज कर थक गया • अब हौं सब दिसि ~ — ८/६। △ ~ दै दै (गायों को इकट्ठा करने के लिए प्रयुक्त शब्द) 'हेरी-हेरी' करकर या पुकार पुकारकर : ~ — ग्वाल बालक कियौ जमुन-तट गैन ४२७। ~ हेरि देख-देखकर : विधि बिहँसत ~ — हरि १८०।

हेरियै देखिए : कृपा निधान सुदृष्टि ~ १/२०५।

हेरी[1] पुकार • ~ - टेर सुनत लरिकनि के दौरि गए नँदलाल ४१३। △ ~ देत हुर्र-हुर (शोर) मचाते हुए : ~ — चले मव बालक ६११। ~ देहि (हेरा-हेरी की) पुकार लगा रहे हैं • एक ~ — गावहिं एक भेटहिं धाइ २६।

हेरी[2] क्रि० स० १ देखा, खोजा यह वसुधा सब बुधि करि ~ ३३४१। २ देखने-ताकने लगी देखति भई चकित ग्वालि इत-उत ~ २७५। क्रि० वि० देखती हुई : जुवती सुनत रहीं मुख ~ १७३१। जात ~ दिखलाई पड़ता था दिसि-विदिसि कोउ नहिं — ~ ९/१३८।

हेरे १ खोजती है : एक पैठि मदिर मैं ~ २८९२। २ खोजने से : तुम बिन टुतिया और न ~ परि० १/५१। ३. देखा, अवलोका : जबहिं स्याम मुख ~ २३५२।

हेरैं १ खोजती हैं : मुनि सुनि नाद मृगी ज्यौं ~ २८९२। २. खोजने पर/से • कोटि करौ पावहु नहिं ~ २८९२। ३. देखकर : दृतिका हँसति हरि चरित ~ २४४३। ४ देखती हैं : जुवति परस्पर ~ २५६१। ५ देखते हैं अरु सनमुख जब ~ २२१४। ६. देखे प्रान तजैं बिन ~ ३१३१।

हेरैं १ ढूँढती-खोजती है : जहँ तहँ बन-बन ~ हो ४५२। २. देखती है . जल जुत कबहुँ न ~ सा० ल० २४। ३ देखने लगा, देखता है : बल मोहन तन ~ १३८७। ४. विचारता है, ध्यान देता है : पिता एक अवगुन नहिं ~ ५/४।

हेरो सारग मदन तिया के अंत (देखो), (वाज) तथा कामदेव की पतनी (रति) के अंतिम अक्षरों के मिलाने से = खोजति, खोज/ढूँढ रही हूँ ~ बिचारी बाम सा० ल० ८६।

हेरौं १ देखती हूँ : चलत हार चित ~ सा० ल० ६६। देखूँ : अब हौं कौन कौ मुख ~ ९/१४६।

हेरौ १ देखते या ताकते हो : हौ पर-पतिनी ~ सा०ल० ८। २ देखा : तैमेंहिं गए फेरि नहिं ~ २२५०। ३. देखा था : नैंकु स्याम मुख ~ सा० ल० ४०। ४. देखो मोहन नैंकु बदन तन ~ २९९०। ५. विचार करो : जो मेरी करनी तुम ~ १/१९४।

हेरयौ १. देखा कहति कहा काहैं हँसि ~ १५७२। २ देखा था : मो तन फिरि हँसि ~ १७२०। ३ देखा है, देख लिया है : आगैं पाछैं नीकं ~ १६६१।

हेलि आलिंगन : कहा सदन मैं ~ परि० १/१६६।

हेली हे री, हे सखी . टफ बाजन लागे ~ २९०४।

हेलुवा तालाब, सरोवर आदि में घुसकर सग साथियों पर पानी का छींटा मारने का खेल : तामैं कृष्न ~ खेलैं ५६१।

हेव थे • तबहिं कहा तुम ~ ३४९६।

हेसमि हेसमी (पकवान) : अरु सरस सँवारी १८३।

हेह हेय/व्यर्थ है नीर बिना मव ~ ४०१८।

हेहौं मार टालूँगा : एकहिं बान असुर सब ~ ९/१५७।

होंहि १ हों : ये ही पति नित ~ हमारे सारा० ६३४।

होहिगे होंगे : ऐसे कबहूँ भाग ~ ४०८५।

होहीं हो सकते : यह मैं पहिलैं ही कहि राखी, असित न अपने ~ ३५९५।

हो[1] पुकारने का एक शब्द, हे ललिता कहति देखि ~ राधा ८३८।

हो[2] १ था . पहिलै हौ ही ~ तब एक २/३८। २ है यह सुख हमकों ~ कहा ११८०।

होइँ हों : बचन ~ क्यौं हीनौ ३५६३।

होइँगे होंगे : कबहुँ प्रगट ~ ३०९०।

होइ १ हुआ तब गुरु द्वारै आनंद ~ १/९५। २. है : यह जुवतिनि कौ धरम न ~ १०१५। ३. हो : जातैं ~ अकाज आपनो २१०२। ४ होकर . भूत ~ बरि खैहैं १/८६। ५. होगा . रिषि कह्यौ पुत्र न तेरैं ~ ६/५। ६ होगी तू कुमारिका बहुरौ ~ १/२२९। ७ हो जाता : क्यौं न ~ जरि छार ९/८३। ८. हो जाय : जौ पै ~ अनुग्रह तेरैं १०७२। ९ होता है • दुहूँ लोक कौ सुख तिहिं

हुलस्यौ खिल गया, उल्लास से भर गया : रति-जल-जलज हियौ ~ २७२८ ।

हुलास १. उल्लास : करत वाउ अति अग ~ ४३०६ । २ प्रसन्न : विनती करी रुक्मिणी की सव सुनि हरि भये ~ सारा० ६२५ ।

हुलासा प्रसन्नता, उल्लास . मुरि वैठी मन भयौ ~ परि० १/४१ ।

हुलासु प्रसन्नता . तिनकौं सदा ~ सूरदास प्रभु की कृपा २८२८ ।

हुलासै पुलकित हो उठा हो : सूर अरुन आगमन देखि कै, प्रफुलित भए ~ १८०८ ।

हुसियार होशियार, सचेत : सब दल है ~ चलौ मठ घेरहिं जाई ४१८८ ।

हूँ भी : दूसरे देव कौं स्वप्न ~ माँहि नहिं हृदय ल्याऊँ १/१६७ ।

हूँकति हुँकारती है : जल समूह बरषति दोउ आँखें ~ लीने नाउँ ४०७० ।

हूँसे उलझे हुए बैननि हूँ उत ~ हौ २५१० ।

हू भी : सूर ~ पै करौ तिहिं सुभाइ ८/९ ।

हूक दर्द, पीडा : कठिन विरह की ~ ३२२० ।

हूजत हो जाता है ~ मृतक समान १३५६ ।

हूजिए हो जाइए • जाके पहरैं ~ साँचौ ताकौ नेम ४०९५ ।

हूजियत होइए, होना चाहिए : पर-मद पिये न मत्त ~ काहे कौं इतरातैं ३६८७ ।

हूजिये होइए, हो जाओगे : बातनि बडे न ~ १६१८ ।

हूजियै हो जाइये, बन जाइये • वृन्दावन द्रुम लता ~ १०४६ ।

हूजै १ हो जाओ . नैननि तैं अब न्यारैं ~ २५४१ । २ होना चाहिए : कान्ह ऐसे नहिं ~ १६१८ ।

हूज्यौ बने रहिए : परसन हमहिं सदा प्रभु ~ ९२१ ।

हूतैं ओर से : लीजै मुकुति हमारे ~ ३९१६ ।

हूतौ ओर से ~ राम कृष्न कौं ३१७८ ।

हूसे उलझा हुआ : चित चचल उत ~ हौ २६९१ ।

हृद[1] १. सरोवर : नाभि पर ~ आपु वारत १८३५ । २. कुड : नाभि • ~ अवगाह ६३७ ।

हृद[2] हृदय • जे पद कमल संभु चतुरानन ~ अन्तर लै राखे ५७१ ।

हृदय १. हृदय । २ गले : पुस्कर माल उतार ~ ते दीनी सुदरस्याम सारा० ५५४ । △ ~ **जरत** है अत्यधिक दु ख, पीडा आदि का अनुभव होता है : ~ — दावानल ज्यौं कठिन बिरह की हूक ३२२० । ~ **धरि** हृदयगम करके : सतगुरु कौ उपदेस ~ — १/३३६ । ~ **नहिं धारौ** स्मरण नहीं रखा : उन यह बचन ~ — ३/६ । ~ **ल्याऊँ** ध्यान या स्मरण करूँ : दूसरे देव कौं स्वप्नहूँ माहिं नहिं ~ — १/१६७ ।

हृदये हृदय से : जिनि ~ बिसरौ परि० १/१३१ ।

हृदैं हृदय में : कैसैं रूप ~ राखति ही २०६४ ।

हृदै १ हृदय । २ हृदय में : तेरे ~ न संसय राखौं २/३७ । △ ~ **जानि लई** हृदय या मन की बात जान ली • दूतिका-मुख निरखि राधा ~ — २४२७ ।

हृष्ट प्रसन्न : दिति दुर्बल अति अदिति ~ चित ९/२० ।

हे थे : जिहि निसि जहाँ स्याम खेलत ~ ३८४७ ।

हेट प्रेम : समुझि पुरातन ~ ३१७१ ।

हेत[1] पुं० १ प्रेम . जान्यौ नदसुवन कौ ~ ३९६२ । २ प्रेम को : कठिन ~ निरवाहे ३८६२ । ३ प्रेम के : नद जसुमति ~ - बस मुरारी ६०२ । ४ प्यार, स्नेह • कपट ~ परसैं बकी १/४; ~ बहुत करि माता ९/८७ । **क्रि० वि०** स्नेहपूर्वक, प्रेमपूर्वक : जैंवत अति रुचि पावहीं परुसति माता ~ ४३७ । ~ **करि** प्रेमपूर्वक : ताहि मान्यौ ~ — ३०४६ । ~ **लाइ** प्रेम से : मिले अति ~ — गर ४३७ ।

हेत[2] १ लिए, कारण : आइ हुती स्नान कैं ~ ९/२ । २ के लिए नृत्यत स्याम स्यामा ~ ११४८ ।

हेति लिए : सूर स्याम तजि को भुस फटकै, मधुप ! तुम्हारे ~ ३८६१ ।

हेतु[1] प्रेम : जासौं कीजै ~ १/२११ ।

हेतु[2] १ कारण • प्रीति कैं ~ जसुमति-पय-पान कियौ २०१७ । २. के लिए, रक्षार्थ . भक्त ~ अवतार सदाई ८३९ । ३ लिए : जग्य कैं ~ अस्व यह लेहु ९/९ ।

हेम[1] पाला, हिम . दाहै ~ जहाँ पानीसर ४२३७ ।

हेम[2] १ सोना, स्वर्ण : हय-गय-रतन - ~ पाटम्बर ४ । २ सोने : चौकी ~ चद्र मनि लागी १०५५ । ३ सोने के : गीध्यौ दुष्ट ~ तस्कर ज्यौं १/१०२ ।

हेम-गिरि मेरु पर्वत कुच उँचनि~अतिहिं लाजै १०४२ ।

हेम जोही स्वर्णजुही नामक पुष्प, स्वर्ण को ताकने वाली अर्थात् गणिका . ~ है न, जो रग रहै दिन पस्यात सा० ल० ७० ।

हेम पितु हेम (अर्जुन) के पिता, इन्द्र : ~ सुन सबद सैना लगा आप लजाई सा० ल० ५६ ।

हेम पुर कुदन पुर . यहै ~ अष्ट सुरन सुत सा० ल० ९६ ।

हेमलता हेमलता, स्वर्णलता : ~ तमाल गहि द्वै फल मानौ देति अँकोर परि० १/६० ।

हेम-सुता-पति कौ रिपु हेम सुता (पार्वती) के पति (महादेव) का रिपु, कामदेव : ~ ब्यापै ३६२३ ।

हेर १ देखकर उठत चहुँकत ~ सा० ल० २९ । २. देखने (लगी) : सुन रहो नीचै ~ सा० ल० ५५ । ३ देखो . हारत सब सुख ~ सा० ल० ७६ ।

हेरई देखती है : मो तन इकटक ~ २२०१ ।

हेरत क्रि०स० १ देखता है : फिरि फिरि इत कौं ~ ४१३ । २. देखती है : सु सुत सम्नु किन ~ सा०ल० ६२ । ३. देखते हैं :

उघारि जननि तन ~ ४०५। ४ देखते हो : भौंह वक्र करि ~ १५६। क्रि० वि० देखते/खोजते हुए : चले गए उत ~ ही १९६२।

हेरति खोज रही हैं : चितवति चकित दिसनि दिसि ~ ११७५।

हेरति १ देखती थी . पग द्वै जाति ठठकि फिरि ~ १४५०। २ देखती है : नागरि कुटिल कटाच्छनि ~ २६२६।

हेरन देखने : कर भूषन नन ~ लागी सा० ल० १००।

हेरनि चितवन • चपल दृगनि की ~ ३८८९।

हेरनो देखना : मधु मगल तन ~ २८३२।

हेरहीं देखते हैं . स्याम सकुचि अग ~ २७३१।

हेरायौ खो गया है • सिंधव भख आराम मद्द तें आज ~ स्याम मा० ल० ८६।

हेरि १. खोजकर, ढूँढकर • कहूँ नहीं जो देखैं ~ ६००। २ देख (रही थी) : सखी रही राधा मुख ~ २०८२। ३ देखो : हरषि मोहिं तन ~ ९/७९। ४ देखकर, विचार कर, समझकर इनहीं ~ मृगी गोपी नव नायक ग्यान हए ३५८८। ५ हटाकर : आँचर ~ ग्रीव दिखरायौ २००७। ~ रह्यौ खोज कर थक गया • अब हौं सब दिसि ~ — ८/६। △ ~ दै दै (गायों को इकट्ठा करने के लिए प्रयुक्त शब्द) 'हेरी हेरी' कहकर या पुकार पुकारकर • ~ — ग्वाल बालक कियौ जमुन-तट गैन ४२७। ~ हेरि देख-देखकर : विधि विहंसत ~ — हरि १८०।

हेरीयें देखिए : कृपा निधान सुदृष्टि ~ १/२०५।

हेरी[1] पुकार ~ • टेर सुनत लरिकनि के दौरि गए नँदलाल ४१३। △ ~ देत हुर्र-हुर्र (शोर) मचाते हुए : ~ — चले सब बालक ६११। ~ देहिं (हेरी-हेरी की) पुकार लगा रहे हैं : एक ~ — गावहिं एक मेटहिं धाइ २६।

हेरी[2] क्रि० स० १ देखा, खोजा यह वसुधा सब बुधि करि ~ ३३४१। २ देखने-ताकने लगी • देखति भई चकित ग्वालि इत-उत ~ २७५। क्रि० वि० देखती हुई . जुवती सुनत रहीं मुख ~ १७३१। जात ~ दिखलाई पड़ता था दिसि-विदिसि कोउ नहिं — ~ ९/१३८।

हेरे १ खोजती है : एक पैठि मदिर मैं ~ २८९२। २ खोजने से : तुम बिन दुतिया और न ~ परि० १/५१। ३ देखा, अवलोका • जबहिं स्याम मुख ~ २३५२।

हेरैं १ खोजती हैं : सुनि सुनि नाद मृगी ज्यौं ~ २८९२। २. खोजने पर/से कोटि करौं पावहु नहिं ~ २८९२। ३. देखकर : दूतिका हँसति हरि चरित ~ २४४३। ४ देखती हैं : जुवति परस्पर ~ २५६१। ५ देखते हैं . अरु सनमुख जब ~ २२१४। ६ देखे प्रान तजैं बिन ~ ३१३१।

हेरै १ ढूँढती-खोजती है : जहँ तहँ बन-बन ~ हो ४५२। २. देखती है : जल सुत कबहुँ न ~ सा० ल० २४। ३ देखने लगा, देखता है : बल मोहन तन ~ १३८७। ४ विचारता है, ध्यान देता है : पिता एक अवगुन नहिं ~ ५/४।

हेरो सारंग मदन तिया के अंत (देखो), (बाज) तथा कामदेव की पतनी (रति) के अंतिम अक्षरों के मिलाने से = खोजति, खोज/ढूँढ रही हूँ ~ विचारी बाम सा० ल० ८६।

हेरौं १ देखती हूँ • चलत हार नित ~ मा० ल० ६६। देखूँ : अब हौं कौन कौ मुख ~ ९/१४६।

हेरौ १ देखते या ताकते हो : हौ पर-पतिनी ~ सा०ल० ८। २ देखा : तैसेहिं गए फेरि नहिं ~ २२५०। ३ देखा था : नैंकु स्याम मुख ~ मा० ल० ४०। ४ देखो • मोहन नैंकु वदन तन ~ २९९०। ५. विचार करो : जौ मेरी करनी तुम ~ १/१९४।

हेर्यौ १. देखा कहति कहा काहैं हँनि ~ १५७२। २ देखा था : मो तन फिरि हँनि ~ १७२०। ३ देखा है, देख लिया है • आगैं पाछैं नीकैं ~ १६६१।

हेलि आलिंगन : कहा सदन मैं ~ परि० १/१६६।

हेली हे री, हे सखी टफ बाजन लागे ~ २९०४।

हेलुवा तालाब, सरोवर आदि में घुसकर सग-साथियों पर पानी का छींटा मारने का खेल • ताम कृष्न ~ खेले ५६१।

हेव थे • तबहिं कहा तुम ~ ३४९६।

हेसमि हेममी (पकवान) : अरु सरस सँवारी १८३।

हेह हेय/व्यर्थ है नीर बिना सब ~ ४०१८।

हैहौं मार डालूँगा : एकहिं बान असुर सब ~ ९/१५७।

होहि १ हों : ये ही पति नित ~ हमारे सारा० ६३४।

होंहिगे होंगे : ऐसे कबहूँ भाग ~ ४०८५।

होहीं हो सकते . यह मैं पहिलैं ही कहि राखी, असित न अपने ~ ३५९५।

हो[1] पुकारने का एक शब्द, हे ललिता कहति देखि ~ राधा ८३८।

हो[2] १ था पहिलैं हो ही ~ तब एक २/३८। २ है यह सुख हमकौं ~ कहा ११८०।

होइँ हों • बचन ~ क्यौं हीनौ ३५६३।

होइंगे होंगे . कबहुँ प्रगट ~ ३०९०।

होइ १ हुआ तब गुरु द्वारे आनंद ~ १/९५। २ है यह जुवतिनि कौ धरम न ~ २०१५। ३ हो : जातैं ~ अकाज आपनो २१०२। ४ होकर . भूत ~ घरि खैहैं १/८६। ५ होगा : रिषि कह्यौ पुत्र न तेरैं ~ ६/५। ६ होगी तू कुमारिका बहुरौ ~ १/२२९। ७ हो जाता . क्यौं न ~ जरि छार ९/८३। ८ हो जाय • जौ पै ~ अनुग्रह तेरैं १०७२। ९ होता है : दुहूँ लोक कौ सुख तिहिं

~ ९/३ । १०. होती : साँची जौ तनक ~ १७३४ । ११ होती है : हरि जन मारैं हत्या ~ ५/३ । १२ हो तो : आग्या ~ देऊ तिहिं ब्याहि ९/४ । १३ होवे . तव पुत्री मम दासी ~ ९/१७४ । △ ~ न आवै नहीं बनेगा . जोग हम पै ~ — ३९९७ ।

होइगी होगी : दूरि कौन सौं ~ १२५२ ।

होइगौ होगा : इनकौ भलौ ~ कैसैं २२८३ ।

होइसि होगी : अब कैसी कह ~ १/३३३ ।

होइहै १ उपजेगी, उगेगी : वेनु के राज मैं औषधी गिलि गई ~ सकल किरपा तुम्हारी ४/११ । २ होंगे · कलि मैं नृप ~ अन्याई १२/३ ।

होइहै होगा . ~ सोइ जो दई भायौ ९/४२ ।

होई १ हो : या छवि पर उपमा कहीं, जौ त्रिभुवन ~ ७७३१ । २ होती है : मरन काल ऐसी बुधि ~ ९७४ । ३ होगा सत्या ब्याह तासु सग ~ ४१९२ । ४. हो जाता है, हो जाते हैं . तिहिं औसर आनि तिरीछौ ~ १/१० । ५ होता . अनरग कबहुँ न ~ १/६३ । ६ होना पडता है . तन धरि के माया वस ~ १६९१ । ७ हो सकता है : नदकुमार रास-रस सुख विनु वृन्दाबन नहिं ~ १०६५ । ८ होती, वनती . गुर ते खाँड न ~ १/६३ । ९. है : नदनदन यह जुगुत न ~ ४०६३ ।

होउँ १ होऊँ : काकैं द्वार जाइ ~ ठाढौ १/१२८ । २ हो जाऊँगा : ता दरसन तैं ~ निहाला २९४५ ।

होउ १. हो : वसौ कि ऊजर ~ नहीं कछु चाह तुम्हारी परि० १/३८ । २ होकर . अति आनद मन ~ हरि तुरत सहारे सारा० ५२२ ।

होऊ हो : होनी होउ सु ~ ३९७५ ।

होठनि होठों से : मधुर-मधुर बोलति मुख ~ १८७ ।

होड १ बाजी, शर्त : हमहूँ तुम मिलि ~ लगाई ६६८ । २ स्पर्द्धा : दपति ~ करत आपस मैं ९८ । △ ~ परी शर्त लग गई है मोहिं प्रभु तुमसौं ~ — १/१३० ।

होडा-होडी स्त्री० लागडाँट, प्रतिस्पर्द्धा : ~ होति परस्पर २९१६ । क्रि० वि० स्पर्द्धापूर्वक . ~ नृत्य करैं ११४९ ।

होत १ बन रहा : घर-घर नैवज ~ है ८४१ । २ मच गया : अमी वचन सुनि ~ कुलाहल ९/१६९ । ३ हो उठता है : हरित चितै चित ~ ३८४२ । ४ होता : कीन्यौ जग्य ~ है निसफल ४ । ५ होता है : खडित वचन कहत सुख ~ ७४७६ । ६ होती है, हो रही है : गगन ~ गाजैं ९/१३९ । ७ होते . यहै मतौ मुख जोर ~ हीं २४५५ । ८ होते ही, होने पर प्रात ~ चलिबै कौं चह्यौ ९/२ । ९ होते हुए : मैं यह ~ न जान्यौ २२२२ । १० होते हैं : रामहिं जहँ तहँ ~ सहाई ७/२ । ११ होते हो, हो रहे हो कत तुम ~ दुखारी ३९०१ । १२ हो सकता है · ताकौं कैसैं ~ बखान ११८० ।

होति १. होती है . तदपि भस्म न ~ सूर सुनि ३७८४ । २. हो रही हो · अग्यान तुम ~ काहैं ३०८३ ।

होति १ वनती, होती जान देहु ~ हौं चेरी ८०७ । २. होती . ब्रज मैं ~ है हाँसी ३६६८ । ३ होती है : आवति कबहुँ ~ अति व्याकुल २३७५ । ४ होती हो सतर ~ काहे कौं माई २२६० । ५. होने वाली है : लका ~ पराई ९/११७ ।

होतौ १. होता, होता तो : यह पछी जु सहाइ न ~ ३३३४ । २ होता था : वह सुख कहाँ जु अब मन ~ ४२९० ।

होत्यौ हो जाता जरि वरि ~ छार ५८९ ।

होन १ (वडा) होना है : अवहिं तैं तू करति ये ढग तोहिं अवहीं ~ ७१९ । २ होना छाती ~ चहत है बेह ४००६, मुरली अधर विकट भौहैं करि ठाढौ ~ त्रिभग ३५६० । ३ होने : हाँसी ~ लगी है ब्रज मैं ३५४२ । ~ आयौ होने लगा : वहुरि सध्या समय ~ — ७/६ ।

होनहार पु० भवितव्यता, अवश्यमेव घटित होने वाली घटना : ~ सो होत है ९/७१ । वि० होने वाला . यह तौ ~ है नाहीं ९/७ ।

होनिहारि होनहार है, भवितव्यता है : सोइ हैहै जु ~ करनी ६९८ ।

होनहारी[1] होने वाला, भवितव्यता : ~ होइ है सोइ अब इहाँ कत ररति ३१३८ ।

होनहारी[2] भवितव्यता : जो रची सूर-प्रभु ~ ९/१२७ ।

होनी होने की क्रिया या भाव : पाछैं ~ होइ सो होइ ६/५ ।

होनौ होनहार, जो होने को हो : ~ होउ सो होउ अवहीं ब्रज अन्न न खाउँ ।

होम आहुति देने का कर्म, हवन . करत ~ बहु भाँति बेद ध्वनि सब विधि पूरण काम सारा० ६७९ ।

होमत आहुति देता है तरफत नैन हृदय ~ हवि मन-वच-कर्म और नहिं काम २७८१ ।

होय १ उत्पन्न हो : इनको पुत्र ~ जो बालक सारा० ८३१ । २ होगा : अति स्रम ~ नन्दैया ८७५ । ३ हो : सफल ~ मम काज सारा० ६२४ । ४ होकर · निर्गुण सगुण ~ मैं देख्यो तोसों भक्त न पायौ सारा० १३२ । ५ होती है, होगी : क्षत्री जन्म बहुत अघ कीन्हो ताते मुक्ति न ~ सारा० ६१५ ।

होयगी होगी : सतयें दिवस ~ परलय आवेगी इक नाव सारा० ९४ ।

होयगो, होयगौ होगा : तुम्हरो कुल सब नाश ~ सारा० ७७६ ।

होरीडाँडी डाटी होरी (होरी में टटा चलाने वाला दिन) : ~ दिवस जानिके अति फूले ब्रजराज सारा० १०५१।

होरे रेखा खींचकर, जिह करके जुग-जुग बिरह यहै चलि आई, सत्य कहत अब ~ ४८८।

होवनहारी होनी, जो बात होने वाली हो : दीसति है कछु ~ ४/५।

होवहु होओ दिन रति काल नगन नहिं ~ ९/२।

होवें होवें, होंगे : सम-दृष्टी ~ सब लोइ १२/३।

होवै १ हो : सूर स्याम सुन्दर जौ सुमिरै क्यौं ~ गति दीन २/४६। २ होता है : चित्त विषै संयोग तब ~ ११/४। ३ होती है : सूर हरि कथा ~ जहाँ १/२२४।

होहि १ हैं : ये तौ विप्र ~ नहिं राजा ८/१४। २ हों गिरिवर धर पति ~ हमारैं ९५१। ३ होंगे : बहुरि अधर्मी ~ नृप ११७०। ४ हो : 'सूर' सजीवन ~ सु नव तन ३६७५। ५ होते : जौ पै भले ~ कहुँ कारे ३७४८। ६ होते हैं : मधुकर आपुन ~ बिराने ४००८। ७ होने लगीं (होंगी) : ते क्यौं सीतल ~ 'सूर' अब ४१४२। ८ हो सकती : कज, खज, मृग, मीन ~ नहिं ३५७१।

होहिगे होंगे : ऐसे निठुर ~ तेऊ १०५४।

होहि १ होवे ननि कोउ काहू कैं बस ~ ३२९१। २ हो गइ है : मति ~ मिलाइ ९/४२। ३ होगा : कह्यौ ब्रह्मा दासी-सुत ~ ७/८। ४ होता : बेगि बड़ी किन ~ ७५। ५ होओ : अब जनि ~ अधीर २०९०।

होहीं होंगे : सुनत हँसी सुख ~ १४६१।

होहुँ होऊँ, हो जाऊँ : दाया करि मोको यह कहिये अमर ~ जेहि भाँति नारा० १५१।

होहु १ बन जाओ : ~ अब गुरु हम तुमहिं माने १७२९। २ बनते हो बड़े ~ तौ छोरि लेहु १०७३। ३ हो : भृगु के दुवार्सा तुम ~ ५/४। ४ होओ : एकौ पल जनि ~ नियारे २९६। ५ होना : डरपि कातर ~ जनि कहुँ ३६९१। ६ होता हो, हो रहा हो कत तुम ~ उदासी २४१५।

होहुगे होगे : बहुत ~ दसहि बरस कैं १५६२।

हौं सर्व० १. मुझे : कगरिनि तें ~ बहुत खिझाई १६। २ मैं : बरस सात बीतैं ~ ऐहौं ९/२। ३ मैंने : बिनु दामन ~ लीन्हौं मोल ११८०। क्रि० सहा० हूँ मैं कुलकानि किये राखति ~ २३७२।

हौंस १ हवस, इच्छा ~ होइ तौ ल्याउँ पूजा ३९६। २ इच्छा है, अभिलाषा है हमकौं ~ बहुत देखन की ३६३७। ३ हौसला, उत्साह ~ जनि मनि करौ वन बिहारी ३०४७। △ ~ राखै कामना पूरी करे, इच्छा को बाकी न रखे कछू ~ — जनि मेरी १७६।

हौंसनि लालसा से : मरियत देखिवे की ~ परि० १/१३९।

हौंसें अभिलाषा, लालसा : यह जिय ~ पै जु रही ३२१८।

हौंसौं हवस के साथ निरखत रहती ~ १८२९।

हौ १ था : कहा सुदामा कैं धन ~ १/१९। २ हो मैं जान्यौ तुम ~ रिपिराइ ५/४।

हौर उफनी जा रही हो : लोगनि देखत ~ ३२३।

ह्याँ १ यहाँ : तुम तैं कह्यौ कौन ~ प्रीतम ११८१। २ यहाँ से : जबहीं तैं हरि ~ है निकसे १८९३।

ह्याँई यहाँ ही, यहीं ~ रहौ कन्हाई २९७४।

ह्वाँ वहाँ ~ लगि नैंकु चलौ नँदरानी ३३७।

ह्वाई वहाँ ही 'सूर' स्याम ~ अब रहियै २५१६।

ह्वाऊँ वहाँ भी : ~ जाइ अकाज करैंगे २२९१।

ह्वाहीं वहाँ (से) ही : ~ तैं लखि लीन्हे तबहीं १९५२।

ह्वाहूँ वहाँ (से) ही : ~ तैं पुनि आगैं कियौ ४३०९।

ह्वै होकर : आपु गए निधरक ~ हमतैं २३३५।

ह्वै १ अवतार लेकर, जन्म लेकर वासुदेव ~ सो पुनि हुए २। २ होकर, बनकर कधौ बधिक व्याध ~ आए ३५७२। ३ हो : तरुन ~ कर उरज परसे २७२१। ४ होकर ही : पतितै ~ निस्तरिहौं १/१३४। ~ ह्वै हो-होकर : नव किसोरी मुदित ~ — २६।

ह्वैकै होकर : लोचन मिले त्रिवेनी ~ २२३०।

ह्वबे होने से प्रगट ~ डरति नाहीं २५७५।

ह्वैबा होना : ~ होइ सु होइ कर्म बस ३५६४।

ह्वैहै १ होगी ग्वाल कहत कछु पहुँची ~ ४४३। २ होंगे कहँ ~ भूखे दोउ भाइ ४५७, ~ जग्य अब देव मुरारी ७/२।

ह्वैहे १ उत्पन्न होगा, जन्मेगा ता रानी सैंती सुत ~ ६/५। २ होगा : काँपी भूमि कहा अब ~ ९/१५८। ३ होगी : पथ निहारति जसुमति ~ ३११५।

ह्वैहौं होऊँगा तबहिं बिदा सल ~ ३५।

ह्वैहो १. होगे : ~ भुवन नरेस ४०७८। २ हो जाओगी : नाती लघु ~ १३४३। ३ होना : तुम कुलवधू निलज जनि ~ १९२३।

संक्षेप

अव्य०—अव्यय
क्रि० अ०—क्रिया अकर्मक
क्रि० वि०—क्रियाविशेषण
क्रि० स०—क्रिया सकर्मक
दे०—देखिए
परि० १/—परिशिष्ट १ का पद
परि० २/—परिशिष्ट २ का पद

पुं०—पुल्लिंग संज्ञा
वि०—विशेषण
सर्व०—सर्वनाम
सारा०—सारावली
सा० ल०—साहित्य लहरी
स्त्री०—स्त्रीलिंग संज्ञा

संकेत

१, २, ३, ४. . (काला टाइप)—अर्थभेद
१/...—प्रथम स्कंध की पद संख्या
२/...—द्वितीय स्कंध की पद संख्या

इसी प्रकार ३/. , ४..., ५/ . , ६/ . , ७/ , ८/. ., ९/...,
११/ , १२/ .

जहाँ स्कंध का संकेत नहीं है, वह पद संख्या दशम स्कंध की है।

~ —मुख्य शब्द बोलिए
~ — —मुख्य शब्द के बाद पदबंध या मुहावरा का अंश जोड़िए।
— ~ —पदबंध या मुहावरा के अंश के बाद मुख्य शब्द जोड़िए।
△ —मुहावरे